पुराने और नये धर्म्म नियम

की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पर्व्वों की संख्या ।

पुराने नियम की पुस्तकें ।

नये नियम की पुस्तकें।

पुस्तकों के नाम।	अध्याय।	पुस्तकों के नाम।	अध्याय।
मत्ती रचित सुसमाचार	२८	तिमोथिय को पावल प्रेरित की पहिली पत्री	६
मार्क रचित सुसमाचार	१६	तिमोथिय को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री	४
लूक रचित सुसमाचार	२४	तीतस को पावल प्रेरित की पत्री	३
योहन रचित सुसमाचार	२१	फिलीमोन को पवित्र प्रेरित की पत्री	१
प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त	२८	इब्रियों को (पावल प्रेरित की) पत्री	१३
रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री	१६	याकूब प्रेरित की पत्री	५
करिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री	१६	पितर प्रेरित की पहिली पत्री	५
करिन्थियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री	१३	पितर प्रेरित की दूसरी पत्री	३
गलातियों को पावल प्रेरित की पत्री	६	योहन प्रेरित की पहिली पत्री	५
इफिसियों को पावल प्रेरित की पत्री	६	योहन प्रेरित की दूसरी पत्री	१
फिलिपीयों को पावल प्रेरित की पत्री	४	योहन प्रेरित की तीसरी पत्री	१
कलस्सियों को पावल प्रेरित की पत्री	४	यिहूदा की पत्री	१
थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री	५	योहन का प्रकाशितवाक्य	२२
थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री	३		

उत्पत्ति नाम पुस्तक।

(सृष्टि का वर्णन)

१. आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा ॥ २। और पृथिवी सूनी और सुनसान पड़ी थी और गहिरे जल के ऊपर अन्धियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ऊपर मण्डलाता था ॥ ३। तब परमेश्वर ने कहा उजियाला हो सो उजियाला हो गया ॥ ४। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उजियाले और अन्धियारे को अलग अलग किया ॥ ५। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा और अन्धियारे को रात कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो एक दिन हो गया ॥

६। फिर परमेश्वर ने कहा जल के बीच ऐसा एक अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए ॥ ७। सो परमेश्वर ने एक अन्तर करके उस के नीचे के जल और उस के ऊपर के जल को अलग अलग किया और वैसा ही हो गया ॥ ८। और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो दूसरा दिन हो गया ॥

९। फिर परमेश्वर ने कहा आकाश के नीचे का जल एक स्थान में एकट्ठा हो और सूखी भूमि दिखाई दे और वैसा ही हो गया ॥ १०। और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथिवी कहा और जो जल इकट्ठा हुआ उस को उस ने समुद्र कहा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ ११। फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें और जिन के बीज पृथिवी पर उन्हीं में हों उगें और वैसा ही हो गया ॥ १२। सो पृथिवी से हरी घास और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष जिन के बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं सो उगे और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १३। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो तीसरा दिन हो गया ॥

१४। फिर परमेश्वर ने कहा दिन और रात अलग अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों और बरसों के कारण हों ॥ १५। और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथिवी पर प्रकाश देनेहारी भी ठहरें और वैसा ही हो गया ॥ १६। सो परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं उन में से बड़ी ज्योति तो दिन पर प्रभुता करने के लिये और छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिये और तारागण को भी बनाया ॥ १७। और परमेश्वर ने उन को आकाश के अन्तर में इस लिये रक्खा कि वे पृथिवी पर प्रकाश दें, १८। और दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले और अन्धियारे को अलग अलग करें और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १९। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो चौथा दिन हो गया ॥

२०। फिर परमेश्वर ने कहा जल जीते प्राणियों से बहुत ही भर जाए और पक्षी पृथिवी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें ॥ २१। सो परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जलजन्तुओं को और उन सब जीते प्राणियों को भी सिरजा जो चलते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़नेहारे पक्षियों को भी सिरजा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ २२। और परमेश्वर ने यह कहके उन को आशीष दिई कि फूलो फलो और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें ॥ २३। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो पांचवां दिन हो गया ॥

२४। फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से एक एक जाति के जीते प्राणी उत्पन्न हों अर्थात् घरैले पशु और रेंगनेहारे जन्तु और पृथिवी के बनैले पशु जाति जाति के अनुसार और वैसा ही हो गया॥ २५। सो परमेश्वर ने पृथिवी के जाति जाति के बनैले पशुओं को और जाति जाति के घरैले पशुओं को और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेहारे जन्तुओं को बनाया और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ २६। फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और घरैले पशुओं और सारी पृथिवी पर और सब रेंगनेहारे जन्तुओं पर जो पृथिवी पर रेंगते हैं अधिकार रक्खें॥ २७। सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार सिरजा अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उस को सिरजा नर और नारी करके उस ने मनुष्यों को सिरजा॥ २८। और परमेश्वर ने उन को आशीष दिई और उन से कहा फूलो फलो और पृथिवी में भर जाओ और उस को अपने वश में कर लो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी पर रेंगनेहारे सब जन्तुओं पर अधिकार रक्खो॥ २९। फिर परमेश्वर ने उन से कहा सुनो जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथिवी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं सो सब मैं ने तुम को दिये हैं वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं॥ ३०। और जितने पृथिवी के पशु और आकाश के पक्षी और पृथिवी पर रेंगनेहारे जन्तु हैं जिन में जीवन का प्राण है उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिये हैं और वैसा ही हो गया॥ ३१। और परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो छठवां दिन हो गया॥

२. यों आकाश और पृथिवी और उन की सारी सेना का बनाना निपट गया॥ २। और परमेश्वर ने सातवें दिन अपना काम जो वह करता था निपटा दिया सो सातवें दिन उस ने अपने किये हुए सारे काम से विश्राम किया॥ ३। और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिई और पवित्र ठहराया क्योंकि उस में उस ने सृष्टि के अपने सारे काम से विश्राम किया॥

(मनुष्य की उत्पत्ति)

४। आकाश और पृथिवी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे सिरजे गये अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी और आकाश को बनाया, ५। तब मैदान का कोई झाड़ भूमि में न हुआ था और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी पर जल न बरसाया था और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य न था॥ ६। तौभी कुहरा पृथिवी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी॥ ७। और यहोवा परमेश्वर ने आदम[२] को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम[२] जीता प्राणी हुआ॥ ८। और यहोवा परमेश्वर ने पूरब ओर एदेन् देश में एक वारी लगाई और वहां आदम[२] को जिसे उस ने रचा था रख दिया॥ ९। और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष जो देखने में मनोहर और जिन के फल खाने में अच्छे हैं उगाये और जीवन के वृक्ष को वारी के बीच में और भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया॥ १०। और उस वारी के सींचने के लिये एक महानद एदेन् से निकलता था और वहां से आगे बहकर चार धार[३] हो गया॥ ११। पहिली धारा का नाम पीशोन् है यह वही है जो हवीला नाम सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है॥ १२। उस देश का सोना चोखा होता है और वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं॥ १३। और दूसरी नदी का नाम गीहोन् है यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है॥ १४। और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल् है यह वही है

(१) मूल में की वंशावली। (२) वा मनुष्य। (३) मूल में बटके चार सिर।

जो अश्शूर की पूरब ओर बहती है और चौथी नदी का नाम फरात् है ॥ १५ । जब यहोवा परमेश्वर ने आदम[1] को लेकर एदेन् की बारी में रख दिया कि वह उस में काम करे और उस की रक्षा करे, १६ । तब यहोवा परमेश्वर ने आदम[1] को यह आज्ञा दिई कि बारी के सब वृक्षों का फल तू विना खटके खा सकता है ॥ १७ । पर भले बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उस का फल तू न खाना क्योंकि जिस दिन तू उस का फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा ॥

१८ । फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम[1] का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये ऐसा एक सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए ॥ १९ । और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम[1] के पास ले आया कि देखे कि वह उन का क्या क्या नाम रक्खेगा और जिस जिस जीते प्राणी का जो जो नाम आदम[1] ने रक्खा सोई उस का नाम पड़ा ॥ २० । सो आदम[1] ने सब जाति के घरैले पशुओं और आकाश के पक्षियों और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रक्खे पर आदम के लिये ऐसा कोई सहायक न मिला जो उस से मेल खाए ॥ २१ । तब यहोवा परमेश्वर ने आदम[1] को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उस ने उस की एक पसुली निकालकर उस की सन्ती मांस भर दिया ॥ २२ । और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम[1] में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उस को आदम के पास ले आया ॥ २३ । और आदम[1] ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इस का नाम नारी होगा क्योंकि यह नर में से निकाली गई ॥ २४ । इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे ॥ २५ । और आदम[1] और उस की स्त्री दोनों नंगे तो थे पर लजाते न थे ॥

(१) वा मनुष्य ।

(मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन)

३. यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाये थे सब में से सर्प धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस बारी के किसी वृक्ष का फल न खाना ॥ २ । स्त्री ने सर्प से कहा इस बारी के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं ॥ ३ । पर जो वृक्ष बारी के बीच में है उस के फल के विषय परमेश्वर ने कहा कि तुम उस को न खाना न उस को छूना भी नहीं तो मर जाओगे ॥ ४ । तब सर्प ने स्त्री से कहा तुम निश्चय न मरोगे ॥ ५ । वरन परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उस का फल खाओ उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे ॥ ६ । सो जब स्त्री को जान पड़ा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है तब उस ने उस में से तोड़कर खाया और अपने पति को दिया और उस ने भी खाया ॥ ७ । तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उन को जान पड़ा कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़कर लंगोट बना लिये ॥ ८ । पीछे यहोवा परमेश्वर जो सांझ के समय[1] बारी में फिरता था उस का शब्द उन को सुन पड़ा और आदम और उस की स्त्री बारी के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गये ॥ ९ । तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा तू कहां है ॥ १० । उस ने कहा मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था इस लिये छिप गया ॥ ११ । उस ने कहा किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे वर्जा था क्या तू ने उस का फल खाया है ॥ १२ । आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया सो मैं ने खाया ॥ १३ । तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा तू ने यह क्या किया है स्त्री ने कहा

(१) मूल में दिन की वायु में ।

सर्प ने मुझे बहका दिया सो मैं ने खाया ॥ १४ । तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा तू ने जो यह किया है इस लिये तू सब घरैले पशुओं और सब बनैले पशुओं से अधिक स्रापित है तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा ॥ १५ । और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इस के वंश के बीच में बैर उपजाऊंगा वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उस की एड़ी को कुचल डालेगा ॥ १६ । फिर स्त्री से उस ने कहा मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ित होकर बालक जनेगी और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा ॥ १७ । और आदम से उस ने कहा तू ने जो अपनी स्त्री की सुनी और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दिई थी कि तू उसे न खाना उस को तू ने खाया है इस लिये भूमि तेरे कारण स्रापित है तू उस की उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा ॥ १८ । और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी और तू खेत की उपज खाएगा ॥ १९ । और अपने माथे के पसीना गारे की रोटी तू खाया करेगा और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा ॥ २० । और आदम ने अपनी स्त्री का नाम हव्वा[1] रक्खा क्योंकि जितने मनुष्य जीते हैं उन सब की आदिमाता वही हुई ॥ २१ । और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उस की स्त्री के लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उन को पहिना दिये ॥

२२ । फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है सो अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़के खाए और सदा जीता रहे ॥ २३ । सो यहोवा परमेश्वर ने उस को एदेन् की बारी में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे

(१) अर्थात् जीवन ।

जिस में से वह बनाया[1] गया था ॥ २४ । आदम को तो उस ने बरबस निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये एदेन् की बारी की पूरब ओर करूबों को और चारों ओर घूमती हुई ज्वालामय तलवार को भी ठहरा दिया ॥

(आदम के पुत्रों का वर्णन.)

४. जब आदम ने अपनी स्त्री हव्वा से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होकर कैन् को जनी और कहा मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है ॥ २ । फिर वह उस के भाई हाबिल को भी जनी और हाबिल तो भेड़ बकरियों का चरवाहा हुआ पर कैन् भूमि की खेती करनेहारा हुआ ॥ ३ । कुछ दिन बीते पर कैन् यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया ॥ ४ । और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट करके ले आया और उन की चर्बी चढ़ाई तब यहोवा ने हाबिल और उस की भेंट का तो मान किया ॥ ५ । पर कैन् और उस की भेंट का उस ने मान न किया तब कैन् अति क्रोधित हुआ और उस के मुंह पर उदासी छा गई ॥ ६ । तब यहोवा ने कैन् से कहा तू क्यों क्रोधित हुआ और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है ॥ ७ । यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न किई जाएगी और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर दबका रहता है और उस की लालसा तेरी ओर होगी और तू उस पर प्रभुता करेगा ॥ ८ । पीछे कैन् ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा और जब वे मैदान में थे तब कैन् ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया ॥ ९ । तब यहोवा ने कैन् से पूछा तेरा भाई हाबिल कहां है उस ने कहा मालूम नहीं क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं ॥ १० । उस ने कहा तू ने क्या किया है तेरे भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है ॥ ११ । सो अब भूमि जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह पसारा है उस

(१) मूल में लिया ।

की ओर से तू स्रापित है ॥ १२ । चाहे तू भूमि पर खेती करे तौभी उस की पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी[1] और तू पृथिवी पर वहेतू और भगोड़ा होगा ॥ १३ । तब कैन् ने यहोवा से कहा मेरा दण्ड सहने से[2] बाहर है ॥ १४ । देख तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से बरबस निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की ओट रहूंगा और पृथिवी पर वहेतू और भगोड़ा रहूंगा और जो कोई मुझे पाएगा सो मुझे घात करेगा ॥ १५ । यहोवा ने उस से कहा इस कारण जो कोई कैन् को घात करे उस से सातगुणा पलटा लिया जाएगा । और यहोवा ने कैन् के लिये एक चिन्ह ठहराया न हो कि कोई उसे पाकर मारे ॥

१६ । तब कैन् यहोवा के सन्मुख से निकल गया और नोद् नाम देश में जो एदेन् की पूरब ओर है रहने लगा ॥ १७ । जब कैन् ने अपनी स्त्री से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होकर हनोक् को जनी फिर कैन् एक नगर बसाने लगा और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक् रक्खा । और हनोक् से ईराद् जन्मा और ईराद् ने महूयाएल् को जन्माया और महूयाएल् ने मतूशाएल् को और मतूशाएल् ने लेमेक् को जन्माया ॥ १९ । और लेमेक् ने दो स्त्रियां व्याह लिईं जिन में से एक का नाम आदा और दूसरी का सिल्ला है ॥ २० । और आदा याबाल् को जनी वह तंबुओं में रहना और ढोरों का पालना इन दोनों रीतियों का चलानेहारा हुआ[3] ॥ २१ । और उस के भाई का नाम यूबाल् है वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का चलानेहारा हुआ[4] ॥ २२ । और सिल्ला भी तूबल्कैन् नाम एक पुत्र जनी वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेहारा हुआ और तूबल्कैन् की बहिन नामा थी ॥ २३ । और लेमेक् ने अपनी स्त्रियों से कहा

(१) मूल में वह तुझे फिर अपना बल न देगी । (२) वा, मेरा अधर्म्म क्षमा होने से । (३) मूल में तंबू में रहनेहारों और ढोरों का पिता हुआ । (४) मूल में वीणा और बांसुरी के सब पकड़नेहारों का पिता हुआ ।

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो
हे लेमेक् की स्त्रियो मेरी बात पर कान
लगाओ
मैं ने एक पुरुष को जो मेरे चोट लगाता था
अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता
था घात किया है ।
२४ । जब कैन् का पलटा सातगुणा लिया
जाएगा
तो लेमेक् का सतहत्तरगुणा लिया जाएगा ।

२५ । और आदम ने अपनी स्त्री से फिर प्रसंग किया और वह पुत्र जनी और उस का नाम यह कहके शेत् रक्खा कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की सन्ती जिस को कैन् ने घात किया एक और वंश ठहरा दिया है ॥ २६ । और शेत् के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम एनोश् रक्खा उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे ॥

(आदम की वंशावली)

५. आदम की वंशावली यह है । जब परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजा तब अपनी समानता ही में बनाया ॥ २ । नर और नारी करके उस ने मनुष्यों को सिरजा और उन्हें आशीष दिई और उन की सृष्टि के दिन उन का नाम आदम[1] रक्खा ॥ ३ । जब आदम एक सौ तीस बरस का हुआ तब उस ने अपनी समानता में अपने स्वरूप के अनुसार एक पुत्र जन्माकर उस का नाम शेत् रक्खा ॥ ४ । और शेत् को जन्माने के पीछे आदम आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ५ । और आदम की सारी अवस्था नौ सौ तीस बरस की हुई तब वह मर गया ॥

६ । जब शेत् एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस ने एनोश् को जन्माया ॥ ७ । और एनोश् को जन्माने के पीछे शेत् आठ सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

(१) वा मनुष्य ।

ताया और वह मन मे अति खेदित हुआ ॥ ७ । सो यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसे मैं ने सिरजा है पृथिवी के ऊपर से मिटा दूंगा क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या आकाश के पक्षी सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उन के बनाने से पछताता हूं ॥ ८ । परन्तु यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही ॥

९ । नूह का वृत्तान्त[१] यह है। नूह धर्म्मी पुरुष और अपने समय के लोगों मे खरा था और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा ॥ १० । और नूह ने शेम् और हाम् और येपेत् नाम तीन पुत्रों को जन्माया ॥ ११ । उस समय पृथिवी परमेश्वर की दृष्टि मे बिगड़ गई थी और उपद्रव से भर गई थी ॥ १२ । और परमेश्वर ने जो पृथिवी पर दृष्टि किई तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है क्योंकि सब प्राणियों ने पृथिवी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़ दिई थी ॥

१३ । सो परमेश्वर ने नूह से कहा सब प्राणियों का अन्त करना मेरे मन मे आ गया है[२] क्योंकि उन के कारण पृथिवी उपद्रव से भर गई है सो मैं उन को पृथिवी समेत नाश कर डालूंगा ॥ १४ । सो तू गोपेर् वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले उस में कोठरियां बनाना और भीतर बाहर उस पर राल लगाना ॥ १५ । और इस ढब से उस को बनाना जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की हो ॥ १६ । जहाज में एक खिड़की[३] बनाना और इस के एक हाथ ऊपर उस की छत पाटना और जहाज की एक अलंग में एक द्वार रखना और जहाज में पहिला दूसरा तीसरा खण्ड बनाना ॥ १७ । और सुन मैं आप पृथिवी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को जिन में जीवन का आत्मा है आकाश के तले से नाश करने पर हूं पृथिवी पर जो जो हैं उन का तो प्राण छूटेगा ॥ १८ । पर तेरे संग मैं बाचा बांधता हूं सो तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत जहाज में जाना ॥ १९ । और सब जीते प्राणियों में से तू एक एक जाति के दो दो अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज मे ले जाकर अपने साथ जिलाय रखना ॥ २० । एक एक जाति के पक्षी और एक एक जाति के पशु और एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेहारे सब में से दो दो तेरे पास आएंगे कि तू उन को जिलाय रक्खे ॥ २१ । और भांति भांति का आहार जो कुछ खाया जाता है उस को तू लेके अपने पास बटोर रखना सो तेरे और उन के भोजन के लिये होगा ॥ २२ । परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार ही नूह ने किया ॥

७. **और** यहोवा ने नूह से कहा तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा क्योंकि मैं ने इस समय के लोगों मे से केवल तुझी को अपने लेखे धर्म्मी देखा है ॥ २ । सब जाति के शुद्ध पशुओं मे से तो तू सात सात अर्थात् नर और मादा लेना पर जो पशु शुद्ध नहीं उन मे से दो दो लेना अर्थात नर और मादा ॥ ३ । और आकाश के पक्षियों मे से भी सात सात अर्थात् नर और मादा लेना कि उन का वंश बचकर सारी पृथिवी के ऊपर बना रहे ॥ ४ । क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मै पृथिवी पर जल बरसाने लगूंगा और चालीस दिन और चालीस रात लों उसे बरसाता रहूंगा और जितनी वस्तुएं मै ने बनाईं सब को भूमि के ऊपर से मिटाऊंगा ॥ ५ । यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया ॥

६ । नूह की अवस्था के छः सौवें बरस में जलप्रलय पृथिवी पर हुआ ॥ ७ । नूह अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत प्रलय के जल से बचने के लिये जहाज मे गया ॥ ८ । और शुद्ध और अशुद्ध दोनो प्रकार के पशुओं मे से और पक्षियों और भूमि पर रेंगनेहारों में से भी, ९ । दो दो अर्थात् नर और मादा जहाज में नूह के पास गये जैसा कि परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दिई थी ॥ १० । सात दिन पीछे प्रलय का जल पृथिवी पर आने लगा ॥ ११ । जब नूह की अवस्था के छः सौवें बरस के दूसरे

---

(१) मूल मे वंशावली । (२) मूल में अन्त मेरे साम्हने आ गया है । (३) मूल मे उजियाला ।

८। और शेत् की सारी अवस्था नौ सौ बारह बरस की हुई तब वह मर गया ॥

९। जब एनोश् नब्बे बरस का हुआ तब उस ने केनान् को जन्माया ॥ १०। और केनान् को जन्माने के पीछे एनोश् आठ सौ पन्द्रह बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ११। और एनोश् की सारी अवस्था नौ सौ पांच बरस की हुई तब वह मर गया ॥

१२। जब केनान् सत्तर बरस का हुआ तब उस ने महललेल् को जन्माया ॥ १३। और महललेल् को जन्माने के पीछे केनान् आठ सौ चालीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ १४। और केनान् की सारी अवस्था नौ सौ दस बरस की हुई तब वह मर गया ॥

१५। जब महललेल् पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने येरेद् को जन्माया ॥ १६। और येरेद् को जन्माने के पीछे महललेल् आठ सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ १७। और महललेल् की सारी अवस्था आठ सौ पंचानवे बरस की हुई तब वह मर गया ॥

१८। जब येरेद् एक सौ बासठ बरस का हुआ तब उस ने हनोक् को जन्माया ॥ १९। और हनोक् को जन्माने के पीछे येरेद् आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ २०। और येरेद् की सारी अवस्था नौ सौ बासठ बरस की हुई तब वह मर गया ॥

२१। जब हनोक् पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने मतूशेलह् को जन्माया ॥ २२। और मतूशेलह् को जन्माने के पीछे हनोक् तीन सौ बरस लों परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ २३। और हनोक् की सारी अवस्था तीन सौ पैंसठ बरस की हुई ॥ २४। और हनोक् परमेश्वर के साथ साथ चलता था फिर वह न रहा क्योंकि परमेश्वर ने उसे रख लिया था ॥

२५। जब मतूशेलह् एक सौ सत्तासी बरस का हुआ तब उस ने लेमेक् को जन्माया ॥ २६। और लेमेक् को जन्माने के पीछे मतूशेलह् सात सौ बयासी बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ २७। और मतूशेलह् की सारी अवस्था नौ सौ उनहत्तर बरस की हुई तब वह मर गया ॥

२८। जब लेमेक् एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस ने एक पुत्र जन्माया ॥ २९। और यह कहकर उस का नाम नूह रक्खा कि यहोवा ने जो पृथिवी को साप दिया है उस के विषय यह लड़का हमारे काम में और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं[1] हम को शांति देगा ॥ ३०। और नूह को जन्माने के पीछे लेमेक् पांच सौ पंचानवे बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ३१। और लेमेक् की सारी अवस्था सात सौ सतहत्तर बरस की हुई तब वह मर गया ॥

३२। और नूह पांच सौ बरस का हुआ और उस ने शेम् और हाम् और येपेत् को जन्माया था ॥

(जलप्रलय का वर्णन)

६. फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत होने लगे और उन के बेटियां उत्पन्न हुईं, २। तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं सो उन्हों ने जिस जिस को चाहा उन को अपनी स्त्रियां बना लिया ॥ ३। और यहोवा ने कहा मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही हैं[2] उस का समय एक सौ बीस बरस होगा ॥ ४। उन दिनों में पृथिवी पर नपील् लोग रहते थे और पीछे जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास जाते और वे उन के जन्माये पुत्र जनती थीं तब वे पुत्र भी शूरवीर होते थे जिन की कीर्त्ति प्राचीनकाल से बनी है ॥ ५। और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथिवी पर बढ़ गई है और उन के मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता सो निरन्तर बुरा ही होता है ॥ ६। और यहोवा पृथिवी पर मनुष्य को बनाने से पछ-

(१) मूल में हमारे हाथ के कठिन परिश्रम में। (२) वा वह भटक जाने से शरीर ही ठहरा।

महीने का सत्तरहवां दिन आया उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गये ॥ १२ । और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात लों पृथिवी पर होती रही ॥ १३ । ठीक उसी दिन नूह अपने शेम् हाम् येपेत् नाम पुत्रों और अपनी स्त्री और तीनों बहुओं समेत, १४ । और उन के संग एक एक जाति के सब बनैले पशु और एक एक जाति के सब घरैले पशु और एक एक जाति के सब पृथिवी पर रेंगनेहारे और एक एक जाति के सब उड़नेहारे पक्षी जहाज में गये ॥ १५ । जितने प्राणियों मे जीवन का आत्मा था उन की सब जातियों में से दो दो नूह के पास जहाज में गये ॥ १६ । और जो गये सो परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से नर और मादा गये । तब यहोवा ने उस के पीछे द्वार मूंद दिया ॥ १७ । और प्रलय पृथिवी पर चालीस दिन लों रहा और जब जल बढ़ने लगा तब उस से जहाज उभरने लगा यहां लों कि वह पृथिवी पर से ऊंचा हो गया ॥ १८ । और जल बढ़ते बढ़ते पृथिवी पर बहुत ही बढ़ गया और जहाज जल के ऊपर ऊपर तैरता रहा ॥ १९ । बरन जल पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ गया यहां लों कि सारी धरती पर[१] जितने बड़े बड़े पहाड़ थे सब डूब गये ॥ २० । जल तो पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया और पहाड़ डूब गये ॥ २१ । और क्या पक्षी क्या घरैले पशु क्या बनैले पशु पृथिवी पर सब चलनेहारे प्राणी बरन जितने जन्तु पृथिवी में बहुतायत से भर गये थे उन सभों का और सब मनुष्यों का भी प्राण छूट गया ॥ २२ । जो जो स्थल पर थे उन में से जितनों के नथनों में जीवन के आत्मा का श्वास था सब मर मिटे ॥ २३ । और क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या आकाश के पक्षी जो जो भूमि पर थे सो सब पृथिवी पर से मिट गये केवल नूह और जितने उस के संग जहाज में थे वे ही बच गये ॥ २४ । और जल पृथिवी पर एक सौ पचास दिन लों बढ़ा रहा ॥

(१) मूल में । सारे आकाश के तले ।

८. और परमेश्वर ने नूह की और जितने बनैले पशु और घरैले पशु उस के संग जहाज में थे उन सभों की सुधि लिई और परमेश्वर ने पृथिवी पर पवन बहाई तब जल घटने लगा ॥ २ । और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश के झरोखे मुंद गये और उस से जो वर्षा होती थी सो थम गई ॥ ३ । और एक सौ पचास दिन के बीते पर जल पृथिवी पर से लगातार घटने लगा ॥ ४ । सातवें महीने के सत्तरहवें दिन को जहाज अरारात् नाम पहाड़ पर टिक गया ॥ ५ । और जल दसवें महीने लों घटता चला गया सो दसवें महीने के पहिले दिन को पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं ॥ ६ । फिर चालीस दिन के पीछे नूह ने अपने बनाये हुए जहाज की खिड़की को खोलकर, ७ । एक कौवा उड़ा दिया वह जब लों जल पृथिवी पर से सूख न गया तब लों इधर उधर फिरता रहा ॥ ८ । फिर उस ने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया कि देखे कि जल भूमि पर से घट गया कि नहीं ॥ ९ । उस कबूतरी को जो अपने चंगुल के टेकने के लिये कोई स्थान न मिला सो वह उस के पास जहाज में लौट आई क्योंकि सारी पृथिवी के ऊपर जल ही जल रहा तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास जहाज में रख लिया ॥ १० । तब और सात दिन लों ठहरकर उस ने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया ॥ ११ । और कबूतरी सांझ के समय उस के पास आ गई और क्या देख पड़ा कि उस की चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है इस से नूह ने जान लिया कि जल पृथिवी पर घट गया है ॥ १२ । फिर उस ने और सात दिन ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया और वह उस के पास फिर कभी लौटकर न आई ॥ १३ । जब छः सौ बरस पूरे हुए तब दूसरे दिन[१] जल पृथिवी पर से सूख गया था तब नूह ने जहाज की छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गई है ॥ १४ । और दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन को पृथिवी पूरी रीति से सूख गई ॥

(१) मूल में । छः सौ एक बरस के पहिले महीने के पहिले दिन ।

१५। तब परमेश्वर ने नूह से कहा, १६। तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ॥ १७। क्या पक्षी क्या पशु क्या सब भांति के रेंगनेहारे जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग है उन सब को अपने साथ निकाल ले आ कि पृथिवी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न हों और वे फूलें फलें और पृथिवी पर फैल जाएं॥ १८। तब नूह और उस के पुत्र स्त्री और बहुएं निकल आईं॥ १९। और सब चौपाये रेंगनेहारे जन्तु और पक्षी और जितने जीवजन्तु पृथिवी पर चलते फिरते हैं सो सब जाति जाति करके जहाज में से निकल आये॥ २०। तब नूह ने यहोवा की एक वेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि करके चढ़ाये॥ २१। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा कि मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को कभी स्राप न दूंगा यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता सो बुरा ही होता है तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है वैसा उन को फिर कभी न मारूंगा॥ २२। अब से जब लों पृथिवी बनी रहेगी तब लों बोने और लवने के समय ठण्ड और तपन धूपकाल और शीतकाल दिन और रात निरन्तर होती चली जाएंगी।

९ फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों को यह आशीष दिई कि फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ॥ २। और तुम्हारा डर और भय पृथिवी के सब पशुओं और आकाश के सब पक्षियों और भूमि पर के सब रेंगनेहारे जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा वे सब तुम्हारे वश में कर दिये जाते हैं॥ ३। सब चलनेहारे जन्तु तुम्हारा आहार होंगे जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिये थे वैसा ही अब सब कुछ देता हूं॥ ४। पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना॥ ५। और निश्चय मैं तुम्हारे लोहू अर्थात् प्राण का पलटा लूंगा सब पशुओं और मनुष्यों दोनों से मैं उसे लूंगा मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाईबन्धु से लूंगा॥ ६। जो कोई मनुष्य का लोहू बहाए उस का लोहू मनुष्य ही से बहाया जाए क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है॥ ७। और तुम तो फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में बहुत बच्चे जन्माके उस में भर जाओ॥

८। फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों से कहा, ९। सुनो मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पीछे जो तुम्हारा वंश होगा उस के साथ भी वाचा बांधता हूं॥ १०। और सब जीते प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या घरैले पशु क्या पृथिवी के सब बनैले पशु पृथिवी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं सब के साथ भी मेरी यह वाचा बंधती है॥ ११। और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा कि सब प्राणी फिर प्रलय के जल से नाश न होंगे और पृथिवी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा॥ १२। फिर परमेश्वर ने कहा जो वाचा मैं तुम्हारे साथ और जितने जीते प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिये बान्धता हूं उस का यह चिन्ह है कि, १३। मैं ने बादल में अपना धनुष रक्खा है वह मेरे और पृथिवी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा॥ १४। और जब मैं पृथिवी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष देख पड़ेगा॥ १५। तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीते शरीरधारी प्राणियों के साथ बन्धी है उस को मैं स्मरण करूंगा सो फिर ऐसा जलप्रलय न होगा जिस से सब प्राणियों का विनाश हो॥ १६। बादल में जो धनुष होगा सो मैं उसे देखके यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और पृथिवी पर के सब जीते शरीरधारी प्राणियों के बीच बन्धी है॥ १७। फिर परमेश्वर ने नूह से कहा जो वाचा मैं ने पृथिवी भर के सब प्राणियों के साथ बांधी है उस का चिन्ह यही है॥

१८। नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले सो शेम् हाम् और येपेत् थे और हाम् तो कनान् का पिता हुआ॥ १९। नूह के तीन पुत्र ये ही हैं और इन का वंश सारी पृथिवी पर फैल गया॥

२०। पीछे नूह किसनई करने लगा और उस ने दाख की बारी लगाई ॥ २१। और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ और अपने तंबू के भीतर नंगा हो गया ॥ २२। तब कनान् के पिता हाम् ने अपने पिता को नंगा देखा और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बता दिया ॥ २३। तब शेम् और येपेत् दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कन्धों पर रक्खा और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया और वे जो अपने मुख पीछे किये थे सो उन्हों ने अपने पिता को नंगा न देखा ॥ २४। जब नूह का नशा उतर गया तब उस ने जान लिया कि मेरे छोटे पुत्र ने मुझ से क्या किया है। २५। सो उस ने कहा

कनान् स्रापित हो
वह अपने भाईबन्धुओं के दासों का दास हो।

२६। फिर उस ने कहा

शेम् का परमेश्वर यहोवा धन्य है
और कनान् शेम्[1] का दास होवे।

२७। परमेश्वर येपेत् के वंश को फैलाए
और वह शेम् के तंबुओं में बसे
और कनान् उस का दास होवे।

२८। जलप्रलय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीता रहा ॥ २९। और नूह की सारी अवस्था साढ़े नौ सौ बरस की हुई तब वह मर गया ॥

(नूह की वंशावली.)

१०. नूह के पुत्र जो शेम् हाम् और येपेत् थे जलप्रलय के पीछे उन के पुत्र उत्पन्न हुए सो उन की वंशावली यह है ॥

२। येपेत् के पुत्र गोमेर् मागोग् मादै यावान् तूबल् मेशेक् और तीरास् हुए ॥ ३। और गोमेर् के पुत्र अश्कनज् रीपत् और तोगर्मा हुए ॥ ४। और यावान् के वंश में एलीशा तर्शीश् और कित्ती और दोदानी लोग हुए ॥ ५। इन के वंश अन्यजातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बंट गये कि वे भिन्न भिन्न भाषाओं कुलों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

(१) मूल में उस।

६। फिर हाम् के पुत्र कूश् मिस्र पूत् और कनान् हुए ॥ ७। और कूश् के पुत्र सबा हवीला सब्ता रामा और सब्तका हुए और रामा के पुत्र शबा और ददान् हुए ॥ ८। और कूश् के वंश में निम्रोद् भी हुआ पृथिवी पर पहिला वीर वही हुआ ॥ ९। वह यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेहारा ठहरा इस से यह कहावत चली है कि निम्रोद् के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेहारा ॥ १०। और उस के राज्य का आरंभ शिनार् देश में बाबेल् और अक्कद् और कल्ने हुआ ॥ ११। उस देश से वह निकलकर अश्शूर् को गया और नीनवे रहोबोतीर् और कालह् को, १२। और नीनवे और कालह् के बीच जो रेसेन् है उसे भी बसाया बड़ा नगर यही है ॥ १३। और मिस्र के वंश में लूदी अनामी लहाबी नप्तूही ॥ १४। पत्रूसी कसलूही और कप्तोरी लोग हुए कसलूहियों में से तो पलिश्ती लोग निकले ॥

१५। फिर कनान् के वंश में उस का जेठा सीदोन् तब हित्त, १६। और यबूसी एमोरी गिर्गाशी, १७। हिव्वी अर्की सीनी, १८। अर्वदी समारी और हमाती लोग भी हुए और कनानियों के कुल पीछे ही फैल गये ॥ १९। और कनानियों का सिवाना सीदोन् से लेकर गरार् के मार्ग से होकर अज्जा लों और फिर सदोम् अमोरा अद्मा और सबोयीम् के मार्ग से होकर लाशा लों हुआ ॥ २०। हाम् के वंश में ये ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

२१। फिर शेम् जो सब एबेर्वंशियों का मूलपुरुष हुआ और येपेत् का जेठा भाई था[1] उस के भी पुत्र उत्पन्न हुए ॥ २२। शेम् के पुत्र एलाम् अश्शूर् अर्पक्षद् लूद् और अराम् हुए ॥ २३। और अराम् के पुत्र ऊस् हूल् गेतेर् और मश् हुए ॥ २४। और अर्पक्षद् ने शेलह् को और शेलह् ने एबेर् को जन्माया ॥ २५। और एबेर् के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग् इस कारण रक्खा गया कि उस के दिनों में पृथिवी बंट गई और उस के भाई का नाम योक्तान् है ॥ २६।

१) वा। जिस का बड़ा भाई येपेत् था।

और योक्तान् ने अल्मोदाद् शेलेप् हसर्मावेत् येरह्, २७। यदोराम् ऊजाल् दिक्ला, २८। ओवाल् अबीमाएल् शबा, २९। ओपीर् हवीला और योबाब् को जन्माया ये ही सब योक्तान् के पुत्र हुए ॥ ३०। इन के रहने का स्थान मेशा से लेकर सपारा जो पूरब में एक पहाड़ है उस के मार्ग लों हुआ ॥ ३१। शेम् के पुत्र ये ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

३२। नूह के पुत्रों के कुल ये ही हैं और उन की जातियों के अनुसार उन की वंशावलियां ये ही हैं और जलप्रलय के पीछे पृथिवी भर की जातियां इन्हीं से होकर बंट गईं ॥

(मनुष्य की भाषाओं में गड़बड़ पड़ने का वर्णन)

११. सारी पृथिवी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी ॥ २। उस समय लोग पूरब ओर चलते चलते शिनार् देश में एक मैदान पाकर उस में बस गये ॥ ३। तब वे आपस में कहने लगे आओ हम ईंटें बना बनाके भली भांति पकाएं सो उन के लिये ईंटें पत्थरों का और मिट्टी की राल गारे का काम देती थी ॥ ४। फिर उन्हों ने कहा आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें जिस की चोटी आकाश से बातें करे इस प्रकार से हम अपना नाम करें न हो कि हम को सारी पृथिवी पर फैलना पड़े ॥ ५। जब आदमी नगर और गुम्मट बनाने लगे तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया ॥ ६। और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है और उन्हों ने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया सो अब जितना वे करने का यत्न करेंगे उस में से कुछ उन के लिये अनहोना न होगा ॥ ७। सो आओ हम उतरके उन की भाषा में वहीं गड़बड़ डालें कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें ॥ ८। सो यहोवा ने उन को वहां से सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया और उन्हों ने उस नगर का बनाना छोड़ दिया ॥ ९। इस कारण उस नगर का नाम बाबेल्[1] पड़ा क्योंकि सारी पृथिवी की भाषा में जो गड़बड़ है सो यहोवा ने वहीं डाली और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया ॥

(१) अर्थात् गड़बड़।

(शेम् की वंशावली)

१०। शेम् की वंशावली यह है। जलप्रलय के दो बरस पीछे जब शेम् एक सौ बरस का हुआ तब उस ने अर्पक्षद् को जन्माया ॥ ११। और अर्पक्षद् को जन्माने के पीछे शेम् पांच सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१२। जब अर्पक्षद् पैंतीस बरस का हुआ तब उस ने शेलह् को जन्माया ॥ १३। और शेलह् को जन्माने के पीछे अर्पक्षद् चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१४। जब शेलह् तीस बरस का हुआ तब उस ने एबेर् को जन्माया ॥ १५। और एबेर् को जन्माने के पीछे शेलह् चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१६। जब एबेर् चौंतीस बरस का हुआ तब उस ने पेलेग् को जन्माया ॥ १७। और पेलेग् को जन्माने के पीछे एबेर् चार सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१८। जब पेलेग् तीस बरस का हुआ तब उस ने रू को जन्माया ॥ १९। और रू को जन्माने के पीछे पेलेग् दो सौ नौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२०। जब रू बत्तीस बरस का हुआ तब उस ने सरूग् को जन्माया ॥ २१। और सरूग् को जन्माने के पीछे रू दो सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२२। जब सरूग् तीस बरस का हुआ तब उस ने नाहोर् को जन्माया ॥ २३। और नाहोर् को जन्माने के पीछे सरूग् दो सौ बरस जीता रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२४। जब नाहोर् उनतीस बरस का हुआ तब उस ने तेरह् को जन्माया ॥ २५। और तेरह् को जन्माने के पीछे नाहोर् एक सौ उन्नीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२६ । जब तक तेरह् सत्तर बरस का हुआ तब तक उस ने अब्राम् नाहोर् और हारान् को जन्माया था ॥

२७ । तेरह् की यह वंशावली है कि तेरह् ने अब्राम् नाहोर् और हारान् को जन्माया और हारान् ने लूत को जन्माया ॥ २८ । और हारान् अपने पिता के साम्हने ही कस्दियों के ऊर् नाम नगर में जो उस की जन्मभूमि थी मर गया ॥ २९ । अब्राम् और नाहोर् ने स्त्रियां व्याह लिईं अब्राम् की स्त्री का नाम तो सारै और नाहोर् की स्त्री का नाम मिल्का है यह उस हारान् की बेटी थी जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था ॥ ३० । सारै तो बांझ थी उस के सन्तान न हुआ ॥ ३१ । और तेरह् अपना पुत्र अब्राम् और अपना पोता लूत जो हारान् का पुत्र था और अपनी बहू सारै जो उस के पुत्र अब्राम् की स्त्री थी इन सभों को लेकर कस्दियों के ऊर् नगर से निकल कनान् देश जाने को चला पर हारान् नाम देश में पहुंचकर वहीं रहने लगा ॥ ३२ । जब तेरह् दो सौ पांच बरस का हुआ तब वह हारान् देश में मर गया ॥

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाये जाने का वर्णन)

१२. यहोवा ने अब्राम् से कहा अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा ॥ २ । और मैं तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा और तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू आशीष का मूल हो ॥ ३ । और जो तुझे आशीर्वाद दें उन्हें मैं आशीष दूंगा और जो तुझे कोसे उसे मैं स्राप दूंगा और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे ॥ ४ । यहोवा के इस कहे के अनुसार अब्राम् चला और लूत भी उस के संग चला और जब अब्राम् हारान् देश से निकला तब वह पचहत्तर बरस का था ॥ ५ । सो अब्राम् अपनी स्त्री सारै और अपने भतीजे लूत को और जो धन उन्हों ने एकट्ठा किया था और जो प्राणी उन्हों ने हारान् में प्राप्त किये थे सब को लेकर कनान् देश में जाने को निकल चला और वे कनान् देश में आ भी गये ॥ ६ । उस देश के बीच से जाते जाते अब्राम् शकेम् का स्थान जहां मोरे का बांज वृक्ष है वहां लों पहुंच गया उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे ॥ ७ । तब यहोवा ने अब्राम् को दर्शन देकर कहा यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा और उस ने वहां यहोवा की जिस ने उसे दर्शन दिया था एक वेदी बनाई ॥ ८ । फिर वहां से कूच करके वह उस पहाड़ पर आया जो बेतेल् की पूरब ओर है और अपना तंबू उस स्थान में खड़ा किया जिस की पच्छिम ओर तो बेतेल् और पूरब ओर ऐ है और वहां भी उस ने यहोवा की एक वेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ९ । और अब्राम् दक्खिन देश की ओर कूच करके चलता गया ॥

१० । और उस देश में अकाल पड़ा सो वहां जो भारी अकाल पड़ा इस लिये अब्राम् मिस्र को चला कि वहां परदेशी होके रहे ॥ ११ । मिस्र के निकट पहुंचकर उस ने अपनी स्त्री सारै से कहा सुन मुझे मालूम है कि तू सुन्दरी स्त्री है ॥ १२ । इस कारण जब मिस्री तुझे देखेंगे तब कहेंगे यह उस की स्त्री है सो वे मुझ को तो मार डालेंगे पर तुझ को जीती रख लेंगे ॥ १३ । सो यह कहना कि मैं उस की बहिन हूं जिस से तेरे कारण मेरा भला हो और मेरा प्राण तेरे कारण बचे ॥ १४ । जब अब्राम् मिस्र में आया तब मिस्रियों ने उस की स्त्री को देखा कि यह बहुत सुन्दरी है ॥ १५ । और फ़िरौन के हाकिमों ने उस को देखकर फ़िरौन के साम्हने उस की प्रशंसा किई सो वह स्त्री फ़िरौन के घर में रक्खी गई ॥ १६ । और उस ने उस के कारण अब्राम् की भलाई किई सो उस को भेड़ बकरी गाय बैल गदहे दास दासियां गदहियां और ऊंट मिले ॥ १७ । तब यहोवा ने फ़िरौन और उस के घराने पर अब्राम् की स्त्री सारै के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां डालीं ॥ १८ । सो फ़िरौन ने अब्राम् को बुलवाकर कहा तू ने मुझ से क्या किया है तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि यह मेरी स्त्री है ॥

१९ । तू ने क्यों कहा कि यह मेरी बहिन है मैं ने उसे अपनी स्त्री कर लिया सो है पर अब अपनी स्त्री को लेकर चला जा ॥ २० । और फिरौन ने अपने जनों को उस के विषय में आज्ञा दिई और उन्हों ने उस को और उस की स्त्री को उस सब समेत जो उस का था विदा कर दिया ॥

(इब्राहीम और लूत के अलग अलग होने का बर्णन.)

१३. तब अब्राम् अपनी स्त्री और अपनी सारी सपत्ति समेत लूत को भी संग लिये हुए मिस्र को छोड़कर कनान् के दक्खिन देश में आया ॥ २ । अब्राम् भेड़बकरी गाय बैल और सोने रूपे का बड़ा धनी था ॥ ३ । फिर वह दक्खिन देश से चलकर बेतेल् के पास उसी स्थान को पहुंचा जहां उस का तंबू पहिले पड़ा था जो बेतेल् और ऐ के बीच में है ॥ ४ । वह उसी वेदी का स्थान है जो उस ने वहां पहिले बनाई थी और वहां अब्राम् ने फिर यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ५ । और लूत जो अब्राम् के साथ चलता था उस के भी भेड़ बकरी गाय बैल और तंबू थे ॥ ६ । सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे एकट्ठे रहें क्योंकि उन के बहुत धन था यहां तक कि वे एकट्ठे न रह सके ॥ ७ । सो अब्राम् और लूत की भेड़ बकरी और गाय बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ और उस समय कनानी और परिज्जी लोग उस देश में रहते थे ॥ ८ । तब अब्राम् लूत से कहने लगा मेरे और तेरे बीच और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए क्योंकि हम लोग भाई-बंधु हैं ॥ ९ । क्या सारा देश तेरे साम्हने नहीं सो मुझ से अलग हो यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा और यदि तू दहिनी ओर जाए तो मैं बाईं ओर जाऊंगा ॥ १० । तब लूत ने आंख उठाकर यर्दन नदी के पासवाली सारी तराई को देखा कि यह सब सिंची हुई है । जब लों यहोवा ने सदोम् और अमोरा को नाश न किया था तब लों सोअर् के मार्ग तक वह तराई यहोवा की बारी और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी ॥ ११ । सो लूत अपने लिये यर्दन की सारी तराई को चुनके पूरब ओर चला और वे एक दूसरे से अलग हो गये ॥ १२ । अब्राम् तो कनान् देश में रहा पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा और अपना तंबू सदोम् के निकट खड़ा किया ॥ १३ । सदोम् के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे ॥ १४ । जब लूत अब्राम् से अलग हो गया उस के पीछे यहोवा ने अब्राम् से कहा आंख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चारों ओर दृष्टि कर ॥ १५ । क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिये दूंगा ॥ १६ । और मैं तेरे वंश को पृथिवी की धूल के किनकों की नाईं बहुत करूंगा यहां लों कि जो कोई पृथिवी की धूल के किनकों को गिन सके वही तेरा वंश भी गिन सकेगा ॥ १७ । उठ इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर क्योंकि मैं उसे तुझी को दूंगा ॥ १८ । इस के पीछे अब्राम् अपना तंबू उखाड़के मम्रे के बांजों के बीच जो हेब्रोन् में थे जाकर रहने लगा और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई ॥

(इब्राहीम के विजय और मेल्कीसेदेक् के दर्शन देने का वर्णन)

१४. शिनार् के राजा अम्रापेल् और एल्लासार् के राजा अर्योक् और एलाम् के राजा कदोर्लाओमेर् और गोयीम् के राजा तिदाल् के दिनों में क्या हुआ कि, २ । वे सदोम् के राजा बेरा और अमोरा के राजा बिर्शा और अद्मा के राजा शिनाब् और सबोयीम् के राजा शेमेबेर् और बेला जो सोअर् भी कहावता है उस के राजा के साथ लड़े ॥ ३ । इन पांचों ने सिद्दीम् नाम तराई में जो खारे ताल के पास है एका किया ॥ ४ । बारह बरस लों तो ये कदोर्लाओमेर् के अधीन रहे पर तेरहवें बरस में उस के विरुद्ध उठे ॥ ५ । सो चौदहवें बरस में कदोर्लाओमेर् और उस के संगी राजा आये और अशतरोत्कर्नैम् में रपाइयों को और हाम् में जूजियों को और शावेकिर्यातैम् में एमियों को, ६ । और सेईर् नाम पहाड़ में होरियों

को मारते मारते उस एल्पारान् लों जो जंगल के पास है पहुंच गये ॥ ७ । वहां से वे घूमकर एन्मिश्पात् को आये जो कादेश भी कहावता है और अमालेकियों के सारे देश को और उन एमोरियों को भी जीत लिया जो हस्सोन्तामार् में रहते थे ॥ ८ । तब सदोम् अमोरा अद्मा स्वोयीम् और बेला जो सोअर् भी कहावता है इन के राजा निकले और सिद्दीम् नाम तराई में उन के साथ युद्ध के लिये पांति बन्धाई ॥ ९ । अर्थात् एलाम् के राजा कदोर्लाओमेर् गोयीम् के राजा तिदाल् शिनार् के राजा अम्रापेल् और एल्लासार् के राजा अर्योक् इन चारों के विरुद्ध उन पांचों ने पांति बधाई ॥ १० । सिद्दीम् नाम तराई में जो लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे सो सदोम् और अमोरा के राजा भागते भागते उन में गिर पड़े और बाकी लोग पहाड़ पर भाग गये ॥ ११ । तब वे सदोम् और अमोरा के सारे धन और भोजनवस्तुओं को लूटके चले गये ॥ १२ । और अब्राम् का भतीजा लूत जो सदोम् में रहता था उस को भी धन समेत वे लेकर चले गये ॥ १३ । तब एक जन जो भागकर बच गया उस ने जाकर इब्री अब्राम् को समाचार दिया अब्राम् तो एमोरी मम्रे जो एश्कोल् और आनेर् का भाई था उस के बांज वृक्षों के बीच में रहता था और ये लोग अब्राम् के संग वाचा बांधे हुए थे ॥ १४ । यह सुनके कि मेरा भतीजा बन्धुआई में गया अब्राम् ने अपने तीन सौ अठारह सीखे हुए दासों को जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे हथियार बन्धाके दान् लों उन का पीछा किया, १५ । और अपने दासों के अलग अलग दल बान्धकर रात को उन पर लपककर उन को मार लिया और होबा लों जो दमिश्क् की उत्तर ओर है उन का पीछा किया ॥ १६ । और वह सारे धन को और अपने भतीजे लूत और उस के धन को और स्त्रियों को और सब बन्धुओं को फेर ले आया ॥ १७ । वह कदोर्लाओमेर् और उस के संगी राजाओं को जीतकर लौटा आता था कि सदोम् का राजा शावे नाम तराई में जो राजा की भी कहावती है उस से भेंट करने को आया ॥ १८ । तब शालेम् का राजा मेल्कीसेदेक् जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था सो रोटी और दाखमधु ले आया ॥ १९ । और उस ने अब्राम् को यह आशीर्वाद दिया कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से जो आकाश और पृथिवी का अधिकारी है तू धन्य हो ॥ २० । और धन्य है परमप्रधान ईश्वर जिस ने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है । तब अब्राम् ने उस को सब का दशमांश दिया ॥ २१ । तब सदोम् के राजा ने अब्राम् से कहा प्राणियों को तो मुझे दे और धन को अपने पास रख ॥ २२ । अब्राम् ने सदोम् के राजा से कहा परमप्रधान ईश्वर यहोवा जो आकाश और पृथिवी का अधिकारी है उस की मैं यह किरिया खाता हूं, २३ । कि जो कुछ तेरा है उस में से न तो मैं एक सूत और न जूती की बन्धनी न कोई और वस्तु लूंगा ऐसा न हो कि तू कहने पाए कि अब्राम् मेरे ही द्वारा धनी हुआ ॥ २४ । पर जो कुछ इन जवानों ने खा लिया है और आनेर् एश्कोल् और मम्रे जो मेरे संग चले थे उन का भाग मैं फेर न दूंगा वे तो अपना अपना भाग ले रक्खें ॥

(इब्राहीम् के साथ यहोवा के वाचा बान्धने का वर्णन)

१५. इन बातों के पीछे यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम् के पास पहुंचा कि हे अब्राम् मत डर तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं ॥ २ । अब्राम् ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर् होगा सो तू मुझे क्या देगा ॥ ३ । और अब्राम् ने कहा मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया और क्या देखता हूं कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा ॥ ४ । तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि यह तेरा वारिस न होगा तेरा जो निज पुत्र होगा वही तेरा वारिस होगा ॥ ५ । और उस ने उस को बाहर ले जाके कहा आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन क्या तू उन को गिन सकता है फिर उस ने उस से कहा तेरा

वंश ऐसा ही होगा ॥ ६। उस ने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ने इस बात को उस के लेखे में धर्म्म गिना ॥ ७। और उस ने उस से कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर् नगर से बाहर ले आया कि तुझ को इस देश का अधिकार दूं ॥ ८। उस ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं इस का अधिकारी हूंगा ॥ ९। यहोवा ने उस से कहा मेरे लिये तीन बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन बरस का एक मेंढ़ा और एक पिण्डुक और पिण्डुकी का एक बच्चा ले ॥ १०। इन सभों को लेकर उस ने बीच बीच से दो दो टुकड़े कर दिया और टुकड़ों को आम्हने साम्हने रक्खा पर चिड़ियाओं को उस ने दो दो टुकड़े न किया ॥ ११। और जब जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे तब तब अब्राम् ने उन्हें उड़ा दिया ॥ १२। जब सूर्य अस्त होने लगा तब अब्राम् को भारी नींद आई और देखो अत्यन्त भय और महा अन्धकार ने उसे छा लिया ॥ १३। तब यहोवा ने अब्राम् से कहा यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराये देश में परदेशी होकर रहेंगे और उस देश के लोगों के दास हो जाएंगे और वे उन को चार सौ बरस लों दुःख देंगे ॥ १४। फिर जिस जाति के वे दास होंगे उस को मैं दण्ड दूंगा और उस के पीछे वे बड़ा धन लेकर निकल आएंगे ॥ १५। तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्टी दिई जाएगी ॥ १६। पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर आएंगे क्योंकि अब लों एमोरियों का अधर्म्म पूरा नहीं हुआ ॥ १७। जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया तब एक धूआं उठती हुई अंगेठी और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच होकर निकल गया ॥ १८। उसी दिन यहोवा ने अब्राम् के साथ यह वाचा बान्धी कि मिस्र के महानद से लेकर परात् नाम बड़े नद लों जितना देश है उसे, १९। अर्थात् केनियों कनिज्जियों कद्मोनियों, २०। हित्तियों परिज्जियों रपाइयों, २१। एमोरियों कनानियों गिर्गाशियों और यबूसियों का देश तेरे वंश को दिया है ॥

(इश्माएल् की उत्पत्ति का वर्णन)

१६. अब्राम् की स्त्री सारै तो कोई सन्तान न जनी और उस के हागार् नाम एक मिस्री लौंडी थी ॥ २। सो सारै ने अब्राम् से कहा सुन यहोवा तो मेरी कोख बन्द किये है सो मेरी लौंडी के पास जा क्या जानिये मेरा घर उस के द्वारा बस जाए। सारै की यह बात अब्राम् ने मान लिई ॥ ३। सो जब अब्राम् को कनान् देश में रहते दस बरस बीत चुके तब उस की स्त्री सारै ने अपनी मिस्री लौंडी हागार् को लेकर अपने पति अब्राम् को दिया कि वह उस की स्त्री हो ॥ ४। और वह हागार् के पास गया और वह गर्भवती हुई और जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह अपनी स्वामिनी को अपने लेखे में तुच्छ गिनने लगी ॥ ५। तब सारै ने अब्राम् से कहा जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर हो मैं ने तो अपनी लौंडी को तेरी स्त्री कर दिया पर जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह मुझे तुच्छ गिनने लगी सो यहोवा मेरे तेरे बीच में न्याय करे ॥ ६। अब्राम् ने सारै से कहा सुन तेरी लौंडी तेरे वश में है जैसा तुझे भावे तैसा ही उस से कर। सो सारै उस को दुःख देने लगी और वह उस के साम्हने से भाग गई ॥ ७। तब यहोवा के दूत ने उस को जंगल में शूर् के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर, ८। कहा हे सारै की लौंडी हागार् तू कहां से आती और कहां को जाती है उस ने कहा मैं अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई हूं ॥ ९। यहोवा के दूत ने उस से कहा अपनी स्वामिनी के पास लौटकर उस के दाब में रह ॥ १०। और यहोवा के दूत ने उस से कहा मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा वरन वह बहुतायत के मारे गिना भी न जाएगा ॥ ११। और यहोवा के दूत ने उस से कहा सुन तू गर्भवती है और पुत्र जनेगी सो उस का नाम इश्माएल्[1] रखना क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुना है ॥

(१) अर्थात् ईश्वर सुननेहारा।

१२। और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान रहेगा उस का हाथ सब के विरुद्ध उठेगा और सब के हाथ उस के विरुद्ध उठेंगे और वह अपने सब भाईबंधुओं के साम्हने बसा रहेगा॥ १३। तब उस ने यहोवा का नाम जिस ने उस से बातें किई थीं अत्ताएल्रोई[1] रखकर कहा कि क्या मैं यहां भी उस को जाते हुए देखने[2] पाई जो मेरा देखनेहारा है॥ १४। इस कारण उस कूए का नाम लहैरोई[3] कूआं पड़ा वह तो कादेश् और बेरेद् के बीच है॥ १५। सो हागार् अब्राम् का जन्माया एक पुत्र जनी और अब्राम् ने अपने पुत्र का नाम जिसे हागार् जनी इश्माएल् रक्खा॥ १६। जब हागार् अब्राम् के जन्माये इश्माएल् को जनी उस समय अब्राम् छियासी बरस का था॥

(खतना की विधि के ठहरने का वर्णन और इसहाक् की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा)

१७. जब अब्राम् निन्नानवे बरस का हो गया तब यहोवा उस को दर्शन देकर कहने लगा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं अपने को मेरे सन्मुख जानके चल[4] और खरा रह॥ २। और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा॥ ३। तब अब्राम् मुंह के बल गिरा और परमेश्वर उस से यों बातें कहता गया, ४। सुन मेरी वाचा जो तेरे साथ बन्धी रहेगी इस लिये तू जातियों के वृन्द का मूलपुरुष हो जाएगा॥ ५। सो अब तेरा नाम अब्राम्[5] न रहेगा तेरा नाम इब्राहीम[6] रक्खा गया है क्योंकि मैं तुझे जातियों के वृन्द का मूलपुरुष ठहरा देता हूं॥ ६। और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा और तेरे वंश मे राजा उत्पन्न होंगे॥ ७। और मैं तेरे साथ और तेरे पीछे पीढ़ी पीढ़ी लों तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बांधता हूं कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा॥ ८। और मैं तुझ को और तेरे पीछे तेरे वंश को भी यह सारा कनान् देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है इस रीति दूंगा कि वह युग युग उन की निज भूमि रहेगी और मैं उन का परमेश्वर रहूंगा॥ ९। फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तू भी मेरे साथ बांधी हुई वाचा का पालन करना तू और तेरे पीछे तेरे वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उस का पालन करें॥ १०। मेरे साथ बांधी हुई जो वाचा तुझे और तेरे पीछे तेरे वंश को पालनी पड़ेगी सो यह है कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो॥ ११। तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है उस का यही चिन्ह होगा॥ १२। पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं जो घर में उत्पन्न हों वा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिये जाएं ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जाएं तब उन का खतना किया जाए॥ १३। जो तेरे घर में उत्पन्न हो अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए उस का खतना अवश्य ही किया जाए सो मेरी वाचा जिस का चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी॥ १४। जो पुरुष खतनारहित रहे अर्थात् जिस की खलड़ी का खतना न हो वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए क्योंकि उस ने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया॥

१५। फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तेरी जो स्त्री सारै है उस को तू अब सारै न कहना उस का नाम सारा होगा॥ १६। और मैं उस को आशीष दूंगा और तुझ को उस के द्वारा एक पुत्र दूंगा और मैं उस को ऐसी आशीष दूंगा कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी और उस के वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे॥ १७। तब इब्राहीम मुंह के बल गिरकर हंसा और मन ही मन कहने लगा क्या सौ बरस के पुरुष के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो नब्बे बरस की है जनेगी॥

(१) अर्थात् तू सर्व्वदर्शी ईश्वर है। (२) मूल में उस के पीछे देखने। (३) अर्थात् जीते देखनेहारे का। (४) मूल में मेरे साम्हने चल। (५) अर्थात् उन्नत पिता. (६) अर्थात् बहुतों का पिता।

१८। और इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा इश्माएल् तेरी दृष्टि में बना रहे यही बहुत है॥ १९। परमेश्वर ने कहा निश्चय तेरी स्त्री सारा तेरा जन्माया एक पुत्र जनेगी और तू उस का नाम इस्हाक् रखना और मैं उस के साथ ऐसी वाचा बांधूंगा जो उस के पीछे उस के वंश के लिये युग युग की वाचा होगी॥ २०। और इश्माएल् के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है मैं उस को भी आशीष देता हूं और उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे और मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा॥ २१। पर मैं अपनी वाचा इस्हाक् ही के साथ बांधूंगा जिसे सारा अगले बरस के इसी नियत समय में तेरा जन्माया जनेगी॥ २२। तब परमेश्वर ने इब्राहीम से बातें करनी बन्द किईं और उस के पास से ऊपर चढ़ गया॥ २३। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र इश्माएल् को और उस के घर में जितने उत्पन्न हुए थे और जितने उस के रुपैये से मोल लिये हुए थे निदान उस के घर में जितने पुरुष थे उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के कहे के अनुसार उन की खलड़ी का खतना किया॥ २४। जब इब्राहीम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्नानवे बरस का था॥ २५। और जब उस के पुत्र इश्माएल् की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह बरस का हुआ था॥ २६। इब्राहीम और उस के पुत्र इश्माएल् दोनों का खतना एक ही दिन में हुआ॥ २७। और उस के साथ ही उस के घर में जितने पुरुष थे क्या घर में उत्पन्न हुए क्या परदेशियों के हाथ से मोल लिये हुए सब का भी खतना हुआ॥

१८. इब्राहीम मम्रे के बांजों के बीच कड़े घाम के समय तंबू के द्वार पर बैठा हुआ था कि यहोवा ने उसे दर्शन दिया कि, २। उस ने आंख उठाकर दृष्टि किई तो क्या देखा कि तीन पुरुष मेरे साम्हने खड़े हैं सो यह देखकर वह उन से भेंट करने को तंबू के द्वार से दौड़ा और भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहने लगा, ३। हे प्रभु यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो अपने दास के पास से चला न जा॥ ४। थोड़ा सा जल लाया जाए और अपने पांव धोओ और इस वृक्ष के तले उठंग जाओ॥ ५। फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उस से तुम अपने अपने जीव को ठण्डा करो तब उस के पीछे आगे चलो क्योंकि तुम अपने दास के पास इसी लिये आ गये हो। उन्हों ने कहा जैसा तू कहता है तैसा ही कर॥ ६। सो इब्राहीम ने तंबू में सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा तीन सआ[1] मैदा फुर्ती से गून्ध और फुलके बना॥ ७। फिर इब्राहीम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया और उस ने फुर्ती से उस को पकाया॥ ८। तब उस ने मक्खन और दूध और वह बछड़ा जो उस ने पकवाया था लेकर उन के आगे धर दिया और आप वृक्ष के तले उन के पास खड़ा रहा और वे खाने लगे॥ ९। तब उन्हों ने उस से पूछा तेरी स्त्री सारा कहां है उस ने कहा वह तो तंबू में है॥ १०। उस ने कहा मैं वसन्त ऋतु में[2] निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा तब तेरी स्त्री सारा पुत्र जनेगी। और सारा तंबू के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे था सुन रही थी॥ ११। इब्राहीम और सारा दोनों बहुत पुरनिये थे और सारा को स्त्रीधर्म्म बन्द हो गया था॥ १२। सो सारा मन में हंसकर कहने लगी मैं जो बूढ़ी हूं और मेरा पति भी बूढ़ा है तो क्या मुझे यह सुख होगा॥ १३। तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा सारा यह कहकर क्यों हंसी कि क्या मैं बुढ़िया होकर सचमुच जनूंगी॥ १४। क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है नियत समय में अर्थात् वसन्त ऋतु में[2] मैं तेरे पास फिर आऊंगा और सारा पुत्र जनेगी॥ १५। तब सारा डर के मारे यह कहकर मुकर गई कि मैं नहीं हंसी उस ने कहा नहीं तू हंसी तो थी॥

(सदोम् आदि नगरों के विनाश का वर्णन)

१६। फिर वे पुरुष वहां से चलकर सदोम् की

(१) यह नपुआ विशेष है। (२) मूल में जीवन के समय में।

ओर ताकने लगे और इब्राहीम उन्हें बिदा करने के लिये उन के संग संग चला ॥ १७ । तब यहोवा ने कहा यह जो मैं करता हूं सो क्या इब्राहीम से छिपा रक्खूं ॥ १८ । इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी और पृथिवी की सारी जातियां उस के द्वारा आशीष पाएंगी ॥ १९ । क्योंकि मैं ने इसी मनसा से उस पर मन लगाया है कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उस के पीछे रह जाएंगे ऐसी आज्ञा दे कि वे यहोवा के मार्ग को धरे हुए धर्म्म और न्याय करते रहें इस लिये कि जो कुछ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे वह उस के लिये पूरा भी करे ॥ २० । फिर यहोवा ने कहा सदोम् और अमोरा की चिल्लाहट जो बढ़ी और उन का पाप जो बहुत भारी हो गया है, २१ । इस लिये मैं उतरकर देखूंगा कि उस की जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है उन्हों ने ठीक वैसा ही काम किया कि नहीं और न किया हो तो इसे मैं जानूंगा ॥ २२ । सो वे पुरुष तो वहां से फिरके सदोम् की ओर जाने लगे पर इब्राहीम यहोवा के आगे खड़ा रह गया ॥ २३ । तब इब्राहीम उस के समीप जाकर कहने लगा क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मिटाएगा ॥ २४ । क्या जानिये उस नगर में पचास धर्म्मी हों तो क्या तू सचमुच उस स्थान को मिटाएगा और उन पचास धर्म्मियों के कारण जो उस में हों न छोड़ेगा ॥ २५ । इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मार डाले और धर्म्मी और दुष्ट दोनों की एकी दशा हो यह तुझ से दूर रहे क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय न करे ॥ २६ । यहोवा ने कहा यदि मुझे सदोम् में पचास धर्म्मी मिलें तो उन के कारण उस सारे स्थान को छोड़ूंगा ॥ २७ । फिर इब्राहीम ने कहा हे प्रभु सुन मैं तो मिट्टी और राख हूं तौभी मैं ने इतनी ढिठाई किई कि तुझ से बातें करूं ॥ २८ । क्या जानिये उन पचास धर्म्मियों में पांच घट जाएं तो क्या तू पांच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा उस ने कहा यदि मुझे उस में पैंतालीस भी मिलें तौभी उस का नाश न करूंगा ॥ २९ । फिर उस ने उस से यह भी कहा क्या जानिये वहां चालीस मिलें उस ने कहा तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा न करूंगा ॥ ३० । फिर उस ने कहा हे प्रभु क्रोध न कर तो मैं कुछ और कहूं क्या जानिये वहां तीस मिलें उस ने कहा यदि मुझे वहां तीस भी मिलें तौभी ऐसा न करूंगा ॥ ३१ । फिर उस ने कहा हे प्रभु सुन मैं ने इतनी ढिठाई तो किई है कि तुझ से बातें करूं क्या जानिये उस में बीस मिलें उस ने कहा मैं बीस के कारण भी उस का नाश न करूंगा ॥ ३२ । फिर उस ने कहा हे प्रभु क्रोध न कर मैं एक ही बार और बोलूंगा क्या जानिये उस में दस मिलें उस ने कहा तो मैं दस के कारण भी उस का नाश न करूंगा ॥ ३३ । जब यहोवा इब्राहीम से बातें कर चुका तब चला गया और इब्राहीम अपने स्थान को लौटा ॥

१९. सांझ को वे दो दूत सदोम् के पास आये और लूत सदोम् के फाटक के पास बैठा था सो उन को देखकर वह उन से भेंट करने को उठा और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा, २ । हे मेरे प्रभुओ अपने दास के घर में पधारो और रात बिताना और अपने पांव धोओ फिर भोर को उठकर अपना मार्ग लेना उन्हों ने कहा सो नहीं हम चौक में रात बिताएंगे ॥ ३ । और उस ने उन को बहुत बिनती करके दबाया सो वे उस के घर की ओर चलकर भीतर गये और उस ने उन के लिये जेवनार किई और बिन खमीर की रोटियां बनवाकर उन को खिलाईं ॥ ४ । उन के सो जाने से पहिले उस सदोम् नगर के पुरुषों ने जवानों से लेकर बूढ़ों तक बरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया, ५ । और लूत को पुकारकर कहने लगे जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये वे कहां हैं उन को हमारे पास बाहर ले आ कि हम उन से भोग करें ॥ ६ । तब लूत उन के पास द्वार के बाहर गया और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके, ७ । कहा हे मेरे भाइयो ऐसी

बुराई न करो ॥ ८ । सुनो मेरे दो बेटियां हैं जिन्हों ने अब लों पुरुष का मुंह नहीं देखा इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुम को जैसा अच्छा लगे तैसा व्यवहार उन से करो तो करो पर इन पुरुषों से कुछ न करो क्योंकि ये मेरी छत के तले आये[१] हैं ॥ ९ । उन्हों ने कहा हट जा फिर वे कहने लगे तू एक परदेशी आया तो यहां रहने के लिये पर अब न्यायी भी बन बैठा है सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आये ॥ १० । तब उन पाहुनों[२] ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास घर में खींच लिया और किवाड़ को बन्द कर दिया ॥ ११ । और उन्हों ने छोटों से ले बड़ों तक उन सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर दिया सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गये ॥ १२ । फिर उन पाहुनों[२] ने लूत से पूछा यहां तेरे और कौन कौन हैं दामाद बेटे बेटियां वा नगर में तेरा जो कोई हो उन को लेकर इस स्थान से निकल जा ॥ १३ । क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं इस लिये कि इस की चिल्लाहट यहोवा के सन्मुख बढ़ गई है और यहोवा ने हमें इस का नाश करने के लिये भेज भी दिया है ॥ १४ । तब लूत ने निकलकर अपने दामादों को जिन के साथ उस की बेटियों की सगाई हो गई थी समझाके कहा उठो इस स्थान से निकल चलो क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया चाहता है । पर वह अपने दामादों के लेखे में ठट्ठा करनेहारा सा जान पड़ा ॥ १५ । जब पह फटने लगी तब दूतों ने यह कहके लूत से फुर्ती कराई कि चल अपनी स्त्री और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म्म में भस्म हो जाएगा ॥ १६ । पर वह विलम्ब करता रहा सो यहोवा जो उस पर कोमलता करता था इस से उन पुरुषों ने उस का हाथ और उस की स्त्री और दोनों बेटियों के हाथ पकड़ लिये और उस को निकालकर नगर के बाहर खड़ा कर दिया ॥ १७ । और जब उन्हों ने उन को निकाला तब उस ने कहा अपना प्राण लेकर भाग जा पीछे की ओर न ताकना और तराई भर में न ठहरना पहाड़ पर भाग जाना नहीं तो तू भस्म हो जाएगा ॥ १८ । लूत ने उस से कहा हे प्रभु ऐसा न कर ॥ १९ । सुन तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई कि मेरे प्राण को बचाया है पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता कहीं ऐसा न हो कि यह विपत्ति मुझ पर आ पड़े और मैं मर जाऊं ॥ २० । देख वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं और वह छोटा भी है मुझे वहीं भाग जाने दे क्योंकि वह छोटा तो है और इस प्रकार मेरे प्राण की रक्षा हो ॥ २१ । उस ने उस से कहा सुन मैं ने इस विषय में भी तेरी विनती अंगीकार किई है कि जिस नगर की चर्चा तू ने किई है उस को मैं न उलटूंगा ॥ २२ । फुर्ती करके वहां भाग जा क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे तब लों मैं कुछ न कर सकूंगा । इसी कारण उस नगर का नाम सोअर्[१] पड़ा ॥ २३ । लूत के सोअर् के निकट पहुंचते ही सूर्य्य पृथिवी पर उदय हुआ ॥ २४ । तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम् और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई, २५ । और उन नगरों और उस संपूर्ण तराई को नगरों के सब निवासियों और भूमि की सारी उपज समेत उलट दिया ॥ २६ । लूत की स्त्री ने उस के पीछे से दृष्टि फेरके ताका और वह लोन का खंभा हो गई ॥ २७ । भोर को इब्राहीम उठकर उस स्थान को गया जहां वह यहोवा के सन्मुख खड़ा रहा था, २८ । और सदोम् और अमोरा और उस तराई के सारे देश की ओर ताककर क्या देखा कि उस देश में से भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है ॥ २९ । जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को जिन में लूत रहता था उलटकर नाश करना चाहा तब उस ने इब्राहीम की सुधि करके लूत को तो उलटने से बचा लिया ॥

(१) मूल में इस लिये आये । (२) मूल में मनुष्यों ।

(१) अर्थात् छोटा ।

३०। लूत जो सोअर् में रहते डरता था सो अपनी दोनों बेटियों समेत उस स्थान को छोड़कर पहाड़ पर चढ़ गया और वहां की एक गुफा में वह और उस की दोनों बेटियां रहने लगीं॥ ३१। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढ़ा है और पृथिवी[1] भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए॥ ३२। सो आ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उस के साथ सोएं और इसी रीति अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें॥ ३३। सो उन्हों ने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास सोई और उस को न तो उस के सोने के समय न उस के उठने के समय कुछ भी चेत था॥ ३४। दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा सुन कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई सो आज भी रात को हम उस को दाखमधु पिलाएं तब तू जाकर उस के साथ सो कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें॥ ३५। सो उन्हों ने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जाकर उस के पास सोई पर उस को उस के भी सोने और उठने के समय चेत न था॥ ३६। इसी प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं॥ ३७। और बड़ी एक पुत्र जनी और उस का नाम मोआब्[2] रक्खा वह मोआब् नाम जाति का जो आज लों है मूलपुरुष हुआ॥ ३८। और छोटी भी एक पुत्र जनी और उस का नाम बेनम्मी[3] रक्खा वह अम्मोन्‌वंशियों का जो आज लों हैं मूलपुरुष हुआ॥

(इस्हाक् की उत्पत्ति का वर्णन)

२०. फिर इब्राहीम वहां से कूच कर दक्खिन देश में आकर कादेश और शूर् के बीच में ठहरा और गरार् नगर में परदेशी होकर रहने लगा॥ २। और इब्राहीम अपनी स्त्री सारा के विषय में कहने लगा कि वह मेरी बहिन है सो गरार् के राजा अबीमेलेक् ने दूत भेजकर सारा को बुलवा लिया॥ ३। रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक् के पास आकर कहा सुन जिस स्त्री को तू ने रख लिया है उस के कारण तू मुआ सा है क्योंकि वह सुहागिन है॥ ४। अबीमेलेक् तो उस के पास न गया था सो उस ने कहा हे प्रभु क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा॥ ५। क्या उसी ने मुझ से नहीं कहा कि वह मेरी बहिन है और उस स्त्री ने भी आप कहा कि वह मेरा भाई है मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से[1] यह काम किया॥ ६। परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा हां मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है और मैं ने तुझे रोक भी रक्खा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया॥ ७। सो अब उस पुरुष की स्त्री को उसे फेर दे क्योंकि वह नबी है और तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा पर यदि तू उस को न फेर दे तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग हैं सब निश्चय मर जाएंगे॥ ८। बिहान को अबीमेलेक् ने तड़के उठकर अपने सब कर्म्मचारियों को बुलवाकर ये सब बातें सुनाईं और वे निपट डर गये॥ ९। तब अबीमेलेक् ने इब्राहीम को बुलवाकर कहा तू ने हम से यह क्या किया है और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है तू ने मुझ से जो काम किया है सो करने के योग्य न था॥ १०। फिर अबीमेलेक् ने इब्राहीम से पूछा तू ने ऐसा क्या देखा कि यह काम किया है॥ ११। इब्राहीम ने कहा मैं ने तो यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भय न होगा सो ये लोग मेरी स्त्री के कारण मेरा घात करेंगे॥ १२। और सचमुच वह मेरी बहिन है ही वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं सो वह मेरी स्त्री हो गई॥ १३। और जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर घूमने की आज्ञा दिई तब मैं ने उस से कहा इतनी

(१) वा देश। (२) अर्थात् पिता का वीर्य्य। (३) अर्थात् मेरे कुटुम्बी का बेटा।

(१) मूल में, अपनी हथेलियों की निर्दोषता से।

कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों जहां जहां जाएं वहां वहां तू मेरे विषय में कहना कि यह मेरा भाई है ॥ १४ । तब अबीमेलेक् ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर इब्राहीम को दिईं और उस की स्त्री सारा को भी उसे फेर दिया ॥ १५ । और अबीमेलेक् ने कहा देख मेरा देश तेरे साम्हने पड़ा है जहां तुझे भावे वहां बस ॥ १६ । और सारा से उस ने कहा सुन मैं ने तेरे भाई को रुपे के हजार टुकड़े दिये हैं सुन तेरे सारे संगियों के साम्हने वही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा और सभों के साम्हने तू ठीक होगी ॥ १७ । तब इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्थना किई और यहोवा ने अबीमेलेक् और उस की स्त्री और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगीं ॥ १८ । क्योंकि यहोवा ने इब्राहीम की स्त्री सारा के कारण अबीमेलेक् के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था ॥

२१. सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उस के साथ अपने वचन के अनुसार किया ॥ २ । अर्थात् सारा इब्राहीम से गर्भवती होकर उस के बुढ़ापे में उसी नियत समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था एक पुत्र जनी ॥ ३ । और इब्राहीम ने अपने जन्माये उस पुत्र का नाम जिसे सारा जनी थी इस्हाक्[1] रक्खा ॥ ४ । और जब उस का पुत्र इस्हाक् आठ दिन का हुआ तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उस का खतना किया ॥ ५ । और जब इब्राहीम का पुत्र इस्हाक् उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ वरस का था ॥ ६ । उन दिनों सारा ने कहा परमेश्वर ने मुझे हंसमुख कर दिया है जो कोई सुने सो मेरे कारण हंस देगा ॥ ७ । फिर उस ने कहा कोई कभी इब्राहीम से न कह सकता था कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी पर देखो मैं उस के बुढ़ापे में पुत्र जनी ॥ ८ । और वह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इस्हाक् के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी जेवनार किई ॥ ९ । तब सारा को मिस्री हागार् का पुत्र जिसे वह इब्राहीम का जन्माया जनी थी हंसी करता हुआ देख पड़ा ॥ १० । सो उस ने इब्राहीम से कहा इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इस्हाक् के साथ भागी न होगा ॥ ११ । यह बात इब्राहीम को अपने पुत्र के कारण बहुत बुरी लगी ॥ १२ । तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे जो बात सारा तुझ से कहे उसे मान क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इस्हाक् ही से चलेगा ॥ १३ । दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उपजा दूंगा इस लिये कि वह तेरा वंश है ॥ १४ । सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी हुई चमड़े की एक थैली ले हागार् को दिई और उस के कंधे पर रक्खी और उस के लड़के को भी उसे देकर उस को विदा किया सो वह चली गई और बेर्शेवा के जंगल में घूमने फिरने लगी ॥ १५ । जब थैली का जल चुक गया तब उस ने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया, १६ । और आप उस से तीर भर के टप्पे पर दूर जाकर उस के साम्हने यह सोचकर बैठ गई कि मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े तब वह उस के साम्हने बैठी हुई चिल्ला चिल्लाके रोने लगी ॥ १७ । और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी और उस के दूत ने स्वर्ग से हागार् को पुकारके कहा हे हागार् तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उस की बात परमेश्वर को सुन पड़ी है ॥ १८ । उठ अपने लड़के को उठाकर अपने हाथ से थांभ ले क्योंकि मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा ॥ १९ । परमेश्वर ने उस की आंखें खोल दिईं और उस को एक कूआं देख पड़ा सो उस ने जाकर थैली को जल से भरके लड़के को पिला दिया ॥ २० । और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा और जब वह बड़ा हुआ तब जंगल में रहते रहते धनुर्धारी हो गया ॥ २१ । वह तो पारान् नाम जंगल में रहा करता था और उस की माता ने उस के लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई ॥

(१) अर्थात् हंसी ।

२२। उन दिनों में अबीमेलेक् अपने सेनापति पीकोल् को संग लेकर इब्राहीम से कहने लगा जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है ॥ २३। सो अब मुझ से यहां परमेश्वर की इस विषय में किरिया खा कि मैं न तो तुझ से छल करूंगा श्रौर न कभी तेरे वंश से जैसी प्रीति से तू ने मेरे साथ वर्ताव किया है तैसी ही प्रीति मैं तुझ से श्रौर इस देश से जहां मैं परदेशी हूं करूंगा ॥ २४। इब्राहीम ने कहा मैं किरिया खाऊंगा ॥ २५। श्रौर इब्राहीम ने अबीमेलेक् को एक कूएं के विषय में जो अबीमेलेक् के दासों ने बरियाई से ले लिया था उलहना दिया ॥ २६। तब अबीमेलेक् ने कहा मैं नहीं जानता कि किस ने यह काम किया श्रौर तू ने भी मुझ को न जताया था श्रौर न मैं ने आज तक यह सुना था ॥ २७। तब इब्राहीम ने भेड़ बकरी श्रौर गाय बैल लेकर अबीमेलेक् को दिये श्रौर उन दोनों ने आपस में बाचा बांधी ॥ २८। श्रौर इब्राहीम ने भेड़ की सात बच्चो अलग कर रक्खीं ॥ २९। तब अबीमेलेक् ने इब्राहीम से पूछा इन सात बच्चियों का जो तू ने अलग कर रक्खी हैं क्या प्रयोजन है ॥ ३०। उस ने कहा तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ले कि मैं ने यह कूआं खोदा है ॥ ३१। उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में किरिया खाई इसी कारण उस का नाम बेर्शेबा[१] पड़ा ॥ ३२। जब उन्हों ने बेर्शेबा में परस्पर बाचा बांधी तब अबीमेलेक् श्रौर उस का सेनापति पीकोल् उठकर पलिश्तियों के देश में लौट गये ॥ ३३। श्रौर इब्राहीम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया श्रौर वहां यहोवा जो सनातन ईश्वर है उस से प्रार्थना किई ॥ ३४। श्रौर इब्राहीम पलिश्तियों के देश में परदेशी होकर बहुत दिन रहा ॥

(इब्राहीम के परीक्षा में पड़ने का वर्णन)

२२. इन बातों के पीछे परमेश्वर ने इब्राहीम से यह कहकर उस की परीक्षा किई कि हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा[२] ॥ २। उस ने कहा अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते इस्हाक् को जिस से तू प्रेम रखता है संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा श्रौर वहां उस को एक पहाड़ के ऊपर, जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा ॥ ३। सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठ अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक श्रौर अपने पुत्र इस्हाक् को संग लिया श्रौर होमबलि के लिये लकड़ी चीर लिई तब कूच करके उस स्थान की श्रोर चला जिस की चर्चा परमेश्वर ने उस से किई थी ॥ ४। तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठाकर उस स्थान को दूर से देखा ॥ ५। श्रौर उस ने अपने सेवकों से कहा गदहे के पास यहीं ठहरे रहो यह लड़का श्रौर मैं वहां लों जाकर श्रौर दण्डवत् करके फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा ॥ ६। सो इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इस्हाक् पर लादी श्रौर आग श्रौर छुरी को अपने हाथ में लिया श्रौर वे दोनों संग संग चले ॥ ७। इस्हाक् ने अपने पिता इब्राहीम से कहा हे मेरे पिता उस ने कहा हे मेरे पुत्र क्या बात है[१] उस ने कहा देख आग श्रौर लकड़ी तो हैं पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है ॥ ८। इब्राहीम ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा सो वे दोनों संग संग चले ॥ ९। श्रौर वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उस को बताया था पहुंचे तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रक्खा श्रौर अपने पुत्र इस्हाक् को बांधके वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया ॥ १०। तब इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे ॥ ११। तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उस को पुकारके कहा हे इब्राहीम हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा[१] ॥ १२। उस ने कहा उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा श्रौर न उस से कुछ कर क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र बरन अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है ॥ १३। तब इब्राहीम ने आंखें उठाईं श्रौर क्या देखा कि मेरे पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से

(१) अर्थात् किरिया का कूआ। (२) मूल में मुझे देख।

(१) मूल में, मुझे देख।

एक झाड़ में बझा हुआ है सो इब्राहीम ने जाके उस मेढ़े को लिया और अपने पुत्र की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया॥ १४। और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे[1] रक्खा इस के अनुसार आज लों भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा॥ १५। फिर यहोवा के दूत ने दूसरी वार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकारके कहा, १६। यहोवा की यह वाणी है कि मैं अपनी ही यह किरिया खाता हूं कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र वरन अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, १७। इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों[2] का अधिकारी होगा॥ १८। और पृथिवी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है॥ १९। तब इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट आया और वे सब बेर्शेबा को संग संग गये और इब्राहीम बेर्शेबा में रहता रहा॥

२०। इन बातों के पीछे इब्राहीम को यह सन्देश मिला कि मिल्का से तेरे भाई नाहोर् के सन्तान जन्मे हैं॥ २१। मिल्का के पुत्र तो ये हुए अर्थात् उस का जेठा ऊस् और ऊस का भाई बूज़् और कमूएल् जो अराम् का पिता हुआ॥ २२। फिर केसेद् हजो पिल्दाश् यिद्लाप् और बतूएल्॥ २३। इन आठों को मिल्का इब्राहीम के भाई नाहोर् के जन्माये जनी। और बतूएल् ने रिबका को जन्माया॥ २४। फिर नाहोर् के रूमा नाम एक सुरैतिन भी थी जो तेबह् गहम् तहश् और माका को जनी॥

(सारा की मृत्यु और अन्तक्रिया का वर्णन)

२३. सारा तो एक सौ सत्ताईस वरस की अवस्था को पहुंची और जब सारा की इतनी अवस्था हुई, २। तब वह किर्यतर्बा में मर गई यह तो कनान् देश में है और हेब्रोन् भी कहावता है सो इब्राहीम सारा के लिये रोने पीटने को वहां गया॥ ३। तब इब्राहीम अपने मुर्दे के पास से उठकर हित्तियों से कहने लगा, ४। मैं तुम्हारे बीच उपरी और परदेशी हूं मुझे अपने बीच में कबरिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं॥ ५। हित्तियों ने इब्राहीम से कहा, ६। हे हमारे प्रभु हमारी सुन तू तो हमारे बीच में बड़ा[1] प्रधान है सो हमारी कबरों में से जिस को तू चाहे उस में अपने मुर्दे को गाड़ हम में से कोई तुझे अपनी कबर के लेने से न रोकेगा कि तू अपने मुर्दे को उस में गाड़ने न पाए॥ ७। तब इब्राहीम उठकर खड़ा हुआ और हित्तियों के सन्मुख जो उस देश के निवासी थे दण्डवत् करके, ८। कहा यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं तो मेरी सुनकर सोहर् के पुत्र एप्रोन् से मेरे लिये बिनती करो, ९। कि वह अपनी मक्पेलावाली गुफा जो उस की भूमि के सिवाने पर है मुझे दे दे और उस का पूरा दाम ले कि वह तुम्हारे बीच कबरिस्तान के लिये मेरी निज भूमि हो जाए॥ १०। एप्रोन् तो हित्तियों के बीच वहां बैठा हुआ था सो जितने हित्ती उस के नगर के फाटक होकर भीतर जाते थे उन सभों के सुनते उस ने इब्राहीम को उत्तर दिया कि, ११। हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं मेरी सुन वह भूमि मैं तुझे देता हूं और उस में जो गुफा है वह भी मैं तुझे देता हूं अपने जातिभाइयों के सन्मुख मैं उसे तुझ को दिये देता हूं सो अपने मुर्दे को कबर में रख॥ १२। तब इब्राहीम ने उस देश के निवासियों के साम्हने दण्डवत् किई, १३। और उन के सुनते एप्रोन् से कहा यदि तू ऐसा चाहे तो मेरी सुन उस भूमि का जो दाम हो वह मैं देने चाहता हूं उसे मुझ से ले ले तब मैं अपने मुर्दे को वहां गाड़ूंगा॥ १४। एप्रोन् ने इब्राहीम को यह उत्तर दिया कि, १५। हे मेरे प्रभु मेरी सुन उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल् रूपा है पर मेरे

(१) अर्थात् यहोवा उपाय करेगा। (२) मूल में. फाटक।

(१) मूल में परमेश्वर का।

और तेरे बीच में यह क्या है अपने मुर्दे को कबर में रख ॥ १६ । इब्राहीम ने एप्रोन् की मानकर उस को उतना रुपैया तौल दिया जितना उस ने हित्तियों के सुनते कहा था अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल् जो व्योपारियों में चलते थे ॥ १७ । सो एप्रोन् की भूमि जो मम्रे के सन्मुख की मक्पेला में थी वह गुफा समेत और उन सब वृक्षों समेत भी जो उस में और उस की चारों ओर के सिवानों में थे, १८ । जितने हित्ती उस के नगर के फाटक होकर भीतर जाते थे उन सभों के साम्हने इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई ॥ १९ । इस के पीछे इब्राहीम ने अपनी स्त्री सारा को उस मक्पेलावाली भूमि की गुफा में जो मम्रे के अर्थात् हेब्रोन् के साम्हने कनान् देश में है मिट्टी दिई ॥ २० । और वह भूमि गुफा समेत हित्तियों की ओर से कबरिस्तान के लिये इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई ॥

(इसहाक् के विवाह का वर्णन)

२४. इब्राहीम बूढ़ा वरन बहुत पुरनिया हो गया और यहोवा ने सब बातों में उस को आशीष दिई थी ॥ २ । सो इब्राहीम ने अपने उस दास से जो उस के घर में पुरनिया और उस की सारी संपत्ति पर अधिकारी था कहा अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे रख, ३ । और मुझ से आकाश और पृथिवी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में किरिया खा कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के बीच तू रहनेहारा है किसी को न ले आऊंगा ॥ ४ । मैं तेरे देश में तेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर तेरे पुत्र इसहाक् के लिये एक स्त्री ले आऊंगा ॥ ५ । दास ने उस से कहा क्या जानिये वह स्त्री इस देश में मेरे पीछे आने न चाहे तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहां से तू आया है ले जाना पड़ेगा ॥ ६ । इब्राहीम ने उस से कहा चौकस रह मेरे पुत्र को वहां न ले जाना ॥ ७ । स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर मुझ से किरिया खाकर कहा कि मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा सो तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले आएगा ॥ ८ । और यदि वह स्त्री तेरे पीछे आने न चाहे तब तो तू मेरी इस किरिया से छूट जाएगा पर मेरे पुत्र को वहां न ले जाना ॥ ९ । तब उस दास ने अपने स्वामी इब्राहीम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखकर उस से इसी विषय की किरिया खाई ॥ १० । तब वह दास अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट छांटकर उस के सब उत्तम उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ लेकर चला और अरम्नहरैम्[1] में नाहोर् के नगर के पास पहुंचा ॥ ११ । और उस ने ऊंटों को नगर के बाहर एक कूएं के पास बैठाया वह सांझ का समय था जब स्त्रियां जल भरने के लिये निकलती हैं ॥ १२ । सो वह कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा आज मेरे कार्य्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी इब्राहीम से करुणा का व्यवहार कर ॥ १३ । देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं और नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं ॥ १४ । सो ऐसा हो कि जिस कन्या से मैं कहूं कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पीऊं और वह कहे कि ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक् के लिये ठहराया हो इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी से करुणा का व्यवहार किया है ॥ १५ । वह कहता ही था कि रिब्का जो इब्राहीम के भाई नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी थी सो कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकली आई ॥ १६ । वह अति सुन्दर और कुमारी थी और किसी पुरुष का मुंह न देखा था वह सोते के पास उतर गई और अपना घड़ा भरके फिर ऊपर आई ॥ १७ । तब वह दास उस से भेंट करने को दौड़ा और कहा अपने घड़े में से तनिक पानी मुझे पिला दे ॥ १८ । उस ने कहा हे मेरे प्रभु ले पी ले और उस ने फुर्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये लिये उस को पिला

(१) अर्थात् दोआब में का अराम्।

दिया ॥ १९ । जब वह उस को पिला चुकी तब कहा मैं तेरे ऊंटों के लिये भी पानी तब लों भरती रहूंगी जब लों वे पी न चुकें ॥ २० । तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेलकर फिर कूएं पर भरने को दौड़ गई और उस के सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया ॥ २१ । और वह पुरुष उस की ओर चुपचाप अचंभे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सुफल किया है कि नहीं ॥ २२ । जब ऊंट पी चुके तब उस पुरुष ने आध तोले का एक सोने का नत्थ निकालकर उस को दिया और दस तोले के सोने के कड़े उस के हाथों में पहिना दिये, २३ । और पूछा तू किस की बेटी है यह मुझ को बता दे क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है ॥ २४ । उस ने उस को उत्तर दिया मैं तो नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी हूं ॥ २५ । फिर उस ने उस से कहा हमारे यहां पुआल और चारा बहुत है और टिकने के लिये स्थान भी है ॥ २६ । तब उस पुरुष ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके कहा, २७ । धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा कि उस ने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग से मेरे स्वामी के भाईबन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है ॥ २८ । और उस कन्या ने दौड़कर अपनी माता के घर में यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया ॥ २९ । तब लाबान् जो रिब्का का भाई था सो बाहर सोते के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा ॥ ३० । और जब उस ने वह नत्थ और अपनी बहिन रिब्का के हाथों में वे कड़े भी देखे और उस की यह बात भी सुनी कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी ऐसी बातें कहीं तब उस पुरुष के पास गया और क्या देखा कि वह सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा है ॥ ३१ । उस ने कहा हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यों बाहर खड़ा है मैं ने घर को और ऊंटों के लिये भी स्थान तैयार किया है ॥ ३२ । और वह पुरुष घर में गया और लाबान् ने ऊंटों की काठियां खोलकर पुआल और चारा दिया और उस के और उस के संगी जनों के पांव धोने को जल दिया ॥ ३३ । तब इब्राहीम के दास के आगे जलपान के लिये कुछ रक्खा गया पर उस ने कहा मैं जब लों अपना प्रयोजन न कह दूं तब लों कुछ न खाऊंगा लाबान् ने कहा कह दे ॥ ३४ । तब उस ने कहा मैं तो इब्राहीम का दास हूं ॥ ३५ । और यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दिई है सो वह बढ़ गया है और उस ने उस को भेड़ बकरी गाय बैल सोना रूपा दास दासियां ऊंट और गदहे दिये हैं ॥ ३६ । और मेरे स्वामी की स्त्री सारा उस का जन्माया बुढ़ापे में एक पुत्र जनी और उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब कुछ दिया है ॥ ३७ । और मेरे स्वामी ने मुझ से यह किरिया खिलाई कि मै तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के देश में तू रहता है कोई स्त्री न ले आऊंगा ॥ ३८ । मैं तेरे पिता के घर और कुल के लोगों के पास जाकर तेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊंगा ॥ ३९ । तब मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जानिये वह स्त्री मेरे पीछे न आए ॥ ४० । उस ने मुझ से कहा यहोवा जिस के साम्हने अपने को जानकर[१] मै चलता आया हूं वह तेरे संग अपने दूत को भेजकर तेरी यात्रा को सुफल करेगा सो तू मेरे कुल और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा ॥ ४१ । तू तब ही मेरी इस किरिया से छूटेगा जब मेरे कुल के लोगों के पास पहुंचेगा अर्थात् यदि वे तुझे कोई स्त्री न दें तो तू मेरी किरिया से छूटेगा ॥ ४२ । सो मैं आज उस सोते के निकट आकर कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता हो, ४३ । तो देख मैं जल के इस सोते के निकट खड़ा हूं सो ऐसा हो कि जो कुमारी जल भरने के लिये निकल आए और मै उस से कहूं अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला, ४४ । और वह मुझ से कहे पी ले और मैं तेरे ऊंटों के पीने के लिये भी भरूंगी वह वही स्त्री हो जिस को तू ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया हो ॥ ४५ । मै मन ही मन

(१) मूल में. जिस के साम्हने ।

यह कही रहा था कि रिब्का कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकल आई फिर वह सोते के पास उतरके भरने लगी और मैं ने उस से कहा मुझे पिला दे ॥ ४६ । और उस ने फुर्ती से अपने घड़े को कन्धे पर से उतारके कहा ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पी लिया और उस ने ऊंटों को भी पिला दिया ॥ ४७ । तब मैं ने उस से पूछा कि तू किस की बेटी है और उस ने कहा मैं तो नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी हूं तब मैं ने उस की नाक में वह नत्थ और उस के हाथों में वे कड़े पहिना दिये ॥ ४८ । फिर मैं ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् किया और अपने स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उस की भतीजी को ले जाऊं ॥ ४९ । सो अब यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करने चाहते हो तो मुझ से कहो और यदि न चाहते हो तौभी मुझ से कह दो कि मैं दहिनी ओर वा बाईं ओर फिरूं ॥ ५० । तब लाबान् और बतूएल् ने उत्तर दिया यह बात यहोवा की ओर से हुई है सो हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा ॥ ५१ । देख रिब्का तेरे साम्हने है उस को ले जा और वह यहोवा के कहे के अनुसार तेरे स्वामी के पुत्र की स्त्री हो जाए ॥ ५२ । उन का यह बचन सुनकर इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके यहोवा को दण्डवत् किया ॥ ५३ । फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने और वस्त्र निकालकर रिब्का को दिये और उस के भाई और माता को भी उस ने अनमोल अनमोल वस्तुएं दिईं ॥ ५४ । तब वह अपने संगी जनों समेत खाने पीने लगा और रात वहीं बिताई और तड़के उठकर कहा मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो ॥ ५५ । रिब्का के भाई और माता ने कहा कन्या को हमारे पास कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दे फिर उस के पीछे वह चली जाएगी ॥ ५६ । उस ने उन से कहा यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया है सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे विदा कर दो कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊं ॥ ५७ । उन्हों ने कहा हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं और देखेंगे कि वह क्या कहती है ॥ ५८ । सो उन्हों ने रिब्का को बुलाकर उस से पूछा क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी उस ने कहा हां मैं जाऊंगी ॥ ५९ । तब उन्हों ने अपनी बहिन रिब्का और उस की धाई और इब्राहीम के दास और उस के जन सभों को विदा किया ॥ ६० । और उन्हों ने रिब्का को आशीर्वाद देके कहा हे हमारी बहिन तू हजारों लाखों की आदिमाता हो और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों[1] का अधिकारी हो ॥ ६१ । इस पर रिब्का अपनी सहेलियों समेत चली और ऊंट पर चढ़के उस पुरुष के पीछे हो लिई सो वह दास रिब्का को साथ लेकर चल दिया ॥ ६२ । इस्हाक् जो दक्खिन देश में रहता था सो लहैरोई नाम कूएं से होकर चला आता था ॥ ६३ । और सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था कि आंखें उठाकर क्या देखा कि ऊंट चले आते हैं ॥ ६४ । और रिब्का ने भी आंखें उठाकर इस्हाक् को देखा और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी ॥ ६५ । तब उस ने दास से पूछा जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है सो कौन है दास ने कहा वह तो मेरा स्वामी है तब रिब्का ने बुर्का लेकर अपने मुंह को ढांप लिया ॥ ६६ । और उस दास ने इस्हाक् से अपना सारा वृतान्त वर्णन किया ॥ ६७ । तब इस्हाक् रिब्का को अपनी माता सारा के तंबू में ले आया और उस को व्याहकर उस से प्रेम किया और इस्हाक् को माता की मृत्यु के पीछे[2] शान्ति हुई ॥

(इब्राहीम के उत्तरचरित्र और मृत्यु का वर्णन)

२५. इब्राहीम

ने और एक स्त्री किई जिस का नाम कतूरा है ॥ २ । और वह उस के जन्माये जिम्रान् योक्षान् मदान् मिद्यान् यिश्बाक् और शूह् को जनी ॥ ३ । और योक्षान् ने शबा और ददान् को जन्माया और

(१) मूल में फाटक । (२) मूल में अपनी माता के पीछे ।

ददान् के वंश में अश्शूरी लतूशी और लुम्मी लोग उपजे ॥ ४ । और मिद्यान् के पुत्र एपा एपेर् हनोक् अबीदा और एल्दा हुए ये सब कतूरा के सन्तान हुए ॥ ५ । इस्हाक् को तो इब्राहीम ने अपना सब कुछ दिया, ६ । पर अपनी सुरैतिनों के पुत्रों को कुछ कुछ देकर अपने जीते जी अपने पुत्र इस्हाक् के पास से पूरब देश में भेज दिया ॥ ७ । इब्राहीम की सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर बरस की हुई ॥ ८ । और इब्राहीम का दीर्घायु होने पर बरन पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला ॥ ९ । और उस के पुत्र इस्हाक् और इश्माएल् ने उस को हित्ती सोहर् के पुत्र एप्रोन् की मम्रे के सन्मुखवाली भूमि में जो मक्पेला की गुफा थी उस में मिट्टी दिई, १० । अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हित्तियों से मोल लिई थी उसी में इब्राहीम और उस की स्त्री सारा दोनों को मिट्टी दिई गई ॥ ११ । इब्राहीम के मरने के पीछे परमेश्वर ने उस के पुत्र इस्हाक् को जो लहैरोई नाम कूएं के पास रहता था आशीष दिई ॥

(इश्माएल् की वंशावली)

१२ । इब्राहीम का पुत्र इश्माएल् जिस को सारा की लौण्डी मिस्री हागार् इब्राहीम का जन्माया जनी थी उस की यह वंशावली है ॥ १३ । इश्माएल् के पुत्रों के नाम और वंशावली यह है अर्थात् इश्माएल् का जेठा पुत्र तो नबायोत् फिर केदार् अद्बेल् मिब्साम् ॥ १४ । मिश्मा दूमा मस्सा, १५ । हदर् तेमा यतूर् नापीश् और केदमा ॥ १६ । इश्माएल् के पुत्र ये ही हुए और इन्हीं के नामों के अनुसार इन के गांवों और छावनियों के नाम भी पड़े और ये ही बारह अपने अपने कुल के प्रधान[१] हुए ॥ १७ । इश्माएल् की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई तब उस का प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला ॥ १८ । और उस के वंश हवीला से शूर् लों जो मिस्र के सन्मुख अश्शूर् के मार्ग में है बस गये और उन का भाग उन के सब भाईबन्धुओं के सन्मुख पड़ा ॥

(१) मूल में अनुसार।

(इस्हाक् के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

१९ । इब्राहीम के पुत्र इस्हाक् की वंशावली यह है इब्राहीम ने इस्हाक् को जन्माया ॥ २० । और इस्हाक् ने चालीस बरस का होकर रिब्का को जो पद्दनराम्[१] के वासी अरामी बतूएल् की बेटी और अरामी लाबान् की बहिन थी व्याह लिया ॥ २१ । इस्हाक् की स्त्री जो बांझ थी सो उस ने उस के निमित्त यहोवा से बिनती किई और यहोवा ने उस की बिनती सुनी सो उस की स्त्री रिब्का गर्भवती हुई ॥ २२ । और लड़के उस के गर्भ में आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे तब उस ने कहा मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्यों जीती रहूंगी और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई ।

२३ । तब यहोवा ने उस से कहा

तेरे गर्भ में दो जातियां हैं

और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य
के लोग अलग अलग होंगे

और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी
होंगे

और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा ।

२४ । जब उस के जनने का समय आया तब क्या प्रगट हुआ कि उस के गर्भ में जुड़ैरे बालक हैं ॥ २५ । और पहिला जो निकला सो लाल निकला और उस का सारा शरीर कम्बल के समान रोंआर था सो उस का नाम एसाव्[२] रक्खा गया ॥ २६ । पीछे उस का भाई अपने हाथ से एसाव् की एड़ी पकड़े हुए निकला और उस का नाम याकूब[३] रक्खा गया और जब रिब्का उन को जनी तब इस्हाक् साठ बरस का हुआ था ॥ २७ । फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव् तो वनवासी होकर चतुर शिकार खेलनेहारा हो गया पर याकूब सीधा मनुष्य था और तंबुओं में रहा करता था ॥ २८ । और इस्हाक् जो एसाव् के अहेर का मांस खाया करता था इस लिये वह उस से प्रीति रखता था पर रिब्का याकूब से प्रीति रखती थी ॥

(१) अर्थात् अराम का मैदान । (२) अर्थात् रोंआर ।
(३) अर्थात् अड़ंगा मारनेहारा ।

२९। याकूब भोजन के लिये कुछ सिझा रहा था और एसाव् मैदान से थका हुआ आया ॥ ३० । तब एसाव् ने याकूब से कहा वह जो लाल वस्तु है उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला क्योंकि मैं थका हूं। इसी कारण उस का नाम एदोम्[1] भी पड़ा ॥ ३१। याकूब ने कहा अपना पहिलौठे का हक आज मेरे हाथ बेंच दे ॥ ३२। एसाव् ने कहा देख मैं तो अभी मरने पर हूं सो पहिलौठे के हक से मेरा क्या लाभ होगा ॥ ३३। याकूब ने कहा मुझ से अभी किरिया खा सो उस ने उस से किरिया खाई और अपना पहिलौठे का हक याकूब के हाथ बेंच डाला ॥ ३४। इस पर याकूब ने एसाव् को रोटी और सिझाई हुई मसूर की दाल दिई और उस ने खाया पिया तब उठकर चला गया यों एसाव् ने अपना पहिलौठे का हक तुच्छ जाना ॥

(इस्हाक् का वृत्तान्त)

२६. और उस देश में अकाल पड़ा वह उस पहिले अकाल से अलग था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था। सो इस्हाक् गरार् को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक् के पास गया ॥ २। वहां यहोवा ने उस को दर्शन देकर कहा मिस्र में मत जा जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह ॥ ३। इसी देश में परदेशी होकर रह और मैं तेरे संग रहूंगा और तुझे आशीष दूंगा और ये सब देश मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा और जो किरिया मैं ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी उसे मैं पूरी करूंगा ॥ ४। और मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान बहुत करूंगा और तेरे वंश को ये सब देश दूंगा और पृथिवी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी ॥ ५। क्योंकि इब्राहीम ने मेरी मानी और जो मैं ने उसे सौंपा था उस को और मेरी आज्ञाओं विधियों और व्यवस्था को पाला ॥ ६। सो इस्हाक् गरार् में रह गया ॥ ७। जब उस स्थान के लोगों ने उस की स्त्री के विषय में पूछा तब उस ने यह सोचकर कि यदि मैं उस को अपनी स्त्री कहूं तो यहां के लोग रिबका के कारण जो सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे उत्तर दिया वह तो मेरी बहिन है ॥ ८। जब उस को वहां रहते बहुत दिन बीत गये तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक् ने खिड़की में से झांकके क्या देखा कि इस्हाक् अपनी स्त्री रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है ॥ ९। तब अबीमेलेक् ने इस्हाक् को बुलवाकर कहा वह तो निश्चय तेरी स्त्री है फिर तू ने क्योंकर उस को अपनी बहिन कहा इस्हाक् ने उत्तर दिया मैं ने सोचा था कि ऐसा न हो कि उस के कारण मेरी मृत्यु हो ॥ १०। अबीमेलेक् ने कहा तू ने हम से यह क्या किया था ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी स्त्री के साथ सहज से कुकर्म्म कर सकता और तू हम को पाप में फंसाता ॥ ११। और अबीमेलेक् ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दिई कि जो कोई उस पुरुष को वा उस की स्त्री को छूएगा सो निश्चय मार डाला जाएगा ॥ १२। फिर इस्हाक् ने उस देश में जोता बोया और उसी बरस में सौ गुणा फल पाया और यहोवा ने उस को आशीष दिई ॥ १३। और वह बढ़ा और दिन दिन उस की बढ़ती होती चली गई यहां लों कि वह अति महान् हो गया ॥ १४। जब उस के भेड़ बकरी गाय बैल और बहुत से दास दासियां हुईं तब पलिश्ती उस से डाह करने लगे ॥ १५। सो जितने कूओं को उस के पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया ॥ १६। तब अबीमेलेक् ने इस्हाक् से कहा हमारे पास से चला जा क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है ॥ १७। सो इस्हाक् वहां से चला गया और गरार् के नाले में अपना तम्बू खड़ा करके वहां रहने लगा ॥ १८। तब जो कूएं उस के पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गये थे और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों ने भर दिये गये थे उन को इस्हाक् ने फिर से खुदवाया और उन के वे ही नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे

(१) अर्थात् लाल।

थे ॥ १९। फिर इस्हाक् के दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला ॥ २०। तब गरारी चरवाहों ने इस्हाक् के चरवाहों से झगड़ा करके कहा कि यह जल हमारा है सो उस ने उस कूएं का नाम एसेक्[1] रक्खा इस लिये कि वे उस से झगड़े थे ॥ २१। फिर उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उन्हों ने उस के लिये भी झगड़ा किया सो उस ने उस का नाम सित्ना[2] रक्खा ॥ २२। तब उस ने वहां से कूच करके एक और कूआं खुदवाया और उस के लिये उन्हों ने झगड़ा न किया सो उस ने उस का नाम यह कहकर रहोबोत्[3] रक्खा कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है और हम इस देश में फूलें फलेंगे ॥ २३। वहां से वह बेर्शेबा को गया ॥ २४। और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और अपने दास इब्राहीम के कारण तुझे आशीष दूंगा और तेरा वंश बढ़ाऊंगा ॥ २५। तब उस ने वहां एक वेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना किई और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया और वहां इस्हाक् के दासों ने एक कूआं खोदा ॥ २६। तब अबीमेलेक् अपने मित्र अहुज्जत् और अपने सेनापति पीकोल् को संग लेकर गरार् से उस के पास गया ॥ २७। इस्हाक् ने उन से कहा तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था सो अब मेरे पास क्यों आये हो ॥ २८। उन्हों ने कहा हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे संग रहता है सो हम ने सोचा कि तू जो यहोवा की ओर से धन्य है सो हमारे और तेरे बीच में किरिया खाई जाए और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं, २९। कि जैसे तुम ने मुझे नहीं छूआ वरन मेरे साथ निरी भलाई किई है और मुझ को कुशल क्षेम से विदा किया इस के अनुसार मैं भी तुम से कुछ बुराई न करूंगा ॥ ३०। तब उस ने उन की जेवनार किई और उन्हों ने खाया पिया ॥ ३१। बिहान को उन सभों ने तड़के उठकर आपस में किरिया खाई तब इस्हाक् ने उन को विदा किया और वे कुशल क्षेम से उस के पास से चले गये ॥ ३२। उसी दिन इस्हाक् के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कूए का वृत्तान्त सुनाके कहा कि हम को जल का एक सोता मिला है ॥ ३३। तब उस ने उस का नाम शिबा[1] रक्खा इसी कारण उस नगर का नाम आज लों बेर्शेबा[2] पड़ा है ॥

३४। जब एसाव् चालीस बरस का हुआ तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत् और हित्ती एलोन् की बेटी बाशमत् को ब्याह लिया ॥ ३५। और इन स्त्रियों के कारण इस्हाक् और रिब्का के मन को खेद हुआ ॥

(याकूब और एसाव् को आशीर्वाद मिलने का वर्णन)

२७. जब इस्हाक् बूढ़ा हो गया और उस की आंखें ऐसी धुन्धली पड़ गईं कि उस को सूझता न था तब उस ने अपने जेठे पुत्र एसाव् को बुलाकर कहा हे मेरे पुत्र उस ने कहा क्या आज्ञा ॥ २। उस ने कहा सुन मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा ॥ ३। सो अब तू अपना तर्कश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा और मेरे लिये अहेर कर ले आ ॥ ४। तब मेरी रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बनाकर मेरे पास ले आना कि मैं उसे खाकर मरने से पहिले तुझे जी से आशीर्वाद दूं ॥ ५। तब एसाव् अहेर करने को मैदान में गया। जब इस्हाक् एसाव् से यह बात कह रहा था तब रिब्का सुन रही थी ॥ ६। सो उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा सुन मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव् से यह कहते सुना कि, ७। तू मेरे लिये अहेर करके उस का स्वादिष्ठ भोजन बना कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले आशीर्वाद दूं ॥ ८। सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और मेरी यह आज्ञा मान कि, ९। बकरियों के पास जाकर बकरियों

(१) अर्थात् झगड़ा। (२) अर्थात् विरोध। (३) अर्थात् चौड़ा स्थान।

(१) अर्थात् किरिया। (२) अर्थात् किरिया का कूआ।

के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ और मैं तेरे पिता के लिये उस की रुचि के अनुसार उन के मांस का स्वादिष्ठ भोजन बनाऊंगी ॥ १० । तब तू उस को अपने पिता के पास ले जाना कि वह उसे खाकर मरने से पहिले तुझ को आशीर्वाद दे ॥ ११ । याकूब ने अपनी माता रिब्का से कहा सुन मेरा भाई एसाव् तो रोंआर पुरुष है और मैं रोमहीन पुरुष हूं ॥ १२ । क्या जानिये मेरा पिता मुझे टटोलने लगे तो मैं उस के लेखे में ठग ठहरूंगा और आशीष के बदले साप ही कमाऊंगा ॥ १३ । उस की माता ने उस से कहा हे मेरे पुत्र साप तुझ पर नहीं[1] मुझी पर पड़े तू केवल मेरी सुन और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ ॥ १४ । तब याकूब जाकर उन को अपनी माता के पास ले आया और माता ने उस के पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बना दिया ॥ १५ । तब रिब्का ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव् के सुन्दर वस्त्र जो उस के पास घर में थे लेकर अपने लहुरे पुत्र याकूब को पहिना दिये, १६ । और बकरियों के बच्चों की खालों को उस के हाथों में और उस के चिकने गले में लपेट दिया, १७ । और वह स्वादिष्ठ भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दिई ॥ १८ । सो वह अपने पिता के पास गया और कहा हे मेरे पिता उस ने कहा क्या बात है[2] हे मेरे पुत्र तू कौन है ॥ १९ । याकूब ने अपने पिता से कहा मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव् हूं मैं ने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है सो उठ और बैठकर मेरे अहेर के मांस में से खा कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे ॥ २० । इस्हाक् ने अपने पुत्र से कहा हे मेरे पुत्र क्या कारण है कि वह तुझे ऐसे झट मिल गया उस ने उत्तर दिया यह कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस को मेरे साम्हने कर दिया ॥ २१ । फिर इस्हाक् ने याकूब से कहा हे मेरे पुत्र निकट आ मैं तुझे टटोलकर जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव् है वा नहीं ॥ २२ । तब याकूब अपने पिता इस्हाक् के निकट गया और उस ने उस को टटोलकर कहा बोल तो याकूब का सा है पर हाथ एसाव् ही के से जान पड़ते हैं ॥ २३ । और उस ने उस को नहीं चीन्हा क्योंकि उस के हाथ उस के भाई एसाव् के से रोंआर थे सो उस ने उस को आशीर्वाद दिया ॥ २४ । और उस ने पूछा क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव् है उस ने कहा हां मैं हूं ॥ २५ । तब उस ने कहा भोजन को मेरे निकट ले आ कि मैं तुझ अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर तुझे जी से आशीर्वाद दूं तब वह उस को उस के निकट ले आया और उस ने खाया और वह उस के पास दाखमधु भी लाया और उस ने पिया ॥ २६ । तब उस के पिता इस्हाक् ने उस से कहा हे मेरे पुत्र निकट आकर मुझे चूम ॥ २७ । उस ने निकट जाकर उस को चूमा और उस ने उस के वस्त्रों का सुगन्ध पाकर उस को यह आशीर्वाद दिया कि

देख मेरे पुत्र का सुगन्ध जो
ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा ने आशीष
दिई हो

२८ । सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस
और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज
और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे
२९ । राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों
और देश देश के लोग तुझे दण्डवत् करें
तू अपने भाइयों का स्वामी हो
और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत् करें
जो तुझे साप दें सो आप ही सापित हों
और जो तुझे आशीर्वाद दें सो आशीष पाएं ॥

३० । यह आशीर्वाद इस्हाक् याकूब को दे ही चुका और याकूब अपने पिता इस्हाक् के साम्हने से निकलता ही था कि एसाव् अहेर लेकर आ पहुंचा ॥ ३१ । तब वह भी स्वादिष्ठ भोजन बनाकर अपने पिता के पास ले आया और उस से कहा हे मेरे पिता उठकर अपने पुत्र के अहेर का मांस खा कि तू मुझे जी से आशीर्वाद दे ॥ ३२ । उस के पिता इस्हाक् ने उस से पूछा तू कौन है उस ने कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव् हूं ॥ ३३ । तब इस्हाक् ने अत्यन्त थरथर कांपते हुए कहा फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने

(१) मूल में तेरा साप। (२) मूल में मुझे देख।

से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उस को आशीर्वाद दिया बरन उस को आशीष लगी भी रहेगी ॥ ३४ । अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव् ने अत्यन्त ऊंचे और दुःखभरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्वाद दे ॥ ३५ । उस ने कहा तेरा भाई धूर्त्तता से आया और तेरे विषय के आशीर्वाद को लेके चला गया ॥ ३६ । उस ने कहा क्या उस का नाम याकूब यथार्थ नहीं रक्खा गया उस ने मुझे दो बार अड़ंगा मारा मेरा पहिलौठे का हक तो उस ने ले ही लिया था और अब देख उस ने मेरे विषय का आशीर्वाद भी ले लिया है फिर उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रक्खा है ॥ ३७ । इस्हाक् ने एसाव् को उत्तर देकर कहा सुन मैं ने उस को तेरा स्वामी ठहराया और उस के सब भाइयों को उस के अधीन कर दिया और अनाज और नया दाखमधु देकर उस को पुष्ट किया है सो अब हे मेरे पुत्र मैं तेरे लिये क्या करूं ॥ ३८ । एसाव् ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्वाद दे यों कहकर एसाव् फूट फूटके रोया ॥ ३९ । उस के पिता इस्हाक् ने उस से कहा

सुन तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर हो
और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पड़े ॥
४० । और तू अपनी तलवार के बल से जीए
और अपने भाई के अधीन तो होए
पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा
तब उस के जूए को अपने कन्धे[1] पर से
तोड़ फेंके ।

४१ । एसाव् ने जो याकूब से अपने पिता के दिये हुए आशीर्वाद के कारण बैर रक्खा सो उस ने सोचा कि मेरे पिता के अन्तकाल[2] का दिन निकट है तब मैं अपने भाई याकूब को घात करूंगा ॥ ४२ । जब रिब्का को अपने पहिलौठे पुत्र एसाव् की ये बातें बताई गईं तब उस ने अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुलाकर कहा सुन तेरा भाई एसाव् तुझे घात करने के लिये अपने मन को धीरज दे रहा है ॥ ४३ । सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और हारान् को मेरे भाई लाबान् के पास भाग जा ॥ ४४ । और थोड़े दिन लों अर्थात् जब लों तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब लों उसी के पास रहना ॥ ४५ । फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे और जो काम तू ने उस से किया है उस को वह भूल जाए तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से रहित होना पड़े ॥

४६ । फिर रिब्का ने इस्हाक् से कहा हित्ती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूं सो यदि ऐसी हित्ती लड़कियों में से जैसी ये देशी लड़कियां हैं याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा ।

२८ तब इस्हाक् ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया और आज्ञा दिई कि तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना ॥ २ । पद्दनराम में अपने नाना बतूएल् के घर जाकर वहां अपने मामा लाबान् की एक बेटी को ब्याह लेना ॥ ३ । और सर्वशक्तिमान् ईश्वर तुझे आशीष दे और फुला फलाकर बढ़ाए और तू राज्य राज्य की मण्डली का मूल हो ॥ ४ । और वह तुझे और तेरे वंश को भी इब्राहीम की सी आशीष दे कि तू यह देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था उस का अधिकारी हो जाए ॥ ५ । और इस्हाक् ने याकूब को बिदा किया और वह पद्दनराम् को अरामी बतूएल् के उस पुत्र लाबान् के पास चला जो याकूब और एसाव् की माता रिब्का का भाई था ॥ ६ । जब इस्हाक् ने याकूब को आशीर्वाद देकर पद्दनराम् भेज दिया कि वह वहीं से स्त्री ब्याह लाए और उस को आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दिई कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना, ७ । और याकूब माता पिता की मानकर पद्दनराम् को चल दिया, ८ । तब एसाव् यह सब देखके और यह भी सोचकर कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इस्हाक् को बुरी लगती है, ९ । इब्राहीम के पुत्र इश्माएल् के पास गया और

(१) मूल में. अपनी गर्दन । (२) मूल में शोक ।

इश्माएल् की बेटी महलत् को जो नबायोत् की बहिन थी ब्याहकर अपनी स्त्रियों में मिला लिया॥

(याकूब के परदेश जाने का वर्णन.)

१०। सो याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान् की ओर चला॥ ११। और उस ने किसी स्थान में पहुंचकर रात वहीं बिताने का विचार किया क्योंकि सूर्य्य अस्त हो गया था सो उस ने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना उसीसा बनाकर रक्खा और उसी स्थान में सो गया॥ १२। तब उस ने स्वप्न में क्या देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर खड़ी है और उस का सिरा स्वर्ग लों पहुंचा है और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं, १३। और यहोवा उस के ऊपर खड़ा होकर कहता है कि मैं यहोवा तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर और इस्हाक् का भी परमेश्वर हूं, जिस भूमि पर तू पड़ा है उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा॥ १४। और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर फैलता जाएगा और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथिवी के सारे कुल आशीष पाएंगे॥ १५। और सुन मैं तेरे संग रहूंगा और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा मैं अपने कहे हुए को जब लों पूरा न कर लूं तब लों तुझ को न छोड़ूंगा॥ १६। तब याकूब जाग उठा और कहने लगा निश्चय इस स्थान में यहोवा है और मैं इस बात को न जानता था॥ १७। और भय खाकर उस ने कहा यह स्थान क्या ही भयानक है यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा॥ १८। भोर को याकूब तड़के उठा और अपने उसीसे का पत्थर लेकर उस का खंभा खड़ा किया और उस के सिरे पर तेल डाल दिया॥ १९। और उस ने उस स्थान का नाम बेतेल्[1] रखा, पर उस नगर का नाम पहिले लूज़ था॥ २०। और याकूब ने यह मन्नत मानी कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे और मुझे खाने के लिये रोटी और पहिनने के लिये कपड़ा दे, २१। और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा॥ २२। और यह पत्थर जिस का मैं ने खंभा खड़ा किया है सो परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो कुछ तू मुझे दे उस का दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा॥

(याकूब के विवाहों और उस के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

२९. फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया और पूर्व्वियों के देश में आया॥

२। और उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मैदान में एक कूआं है और उस के पास भेड़ बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं क्योंकि जो पत्थर उस कूएं के मुंह पर धरा रहता था जिस में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था वह भारी था॥ ३। जब जब सब झुण्ड वहां एकट्ठे होते तब तब चरवाहे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से लुढ़काकर भेड़ बकरियों को पानी पिलाते और फिर पत्थर को कूएं के मुंह पर ज्यों का त्यों कर देते थे॥ ४। सो याकूब ने चरवाहों से पूछा हे मेरे भाइयो तुम कहां के हो उन्हों ने कहा हम हारान् के हैं॥ ५। तब उस ने उन से पूछा क्या तुम नाहोर् के पोते लाबान् को जानते हो उन्हों ने कहा हां हम उसे जानते हैं॥ ६। फिर उस ने उन से पूछा क्या वह कुशल से है उन्हों ने कहा हां कुशल से तो है और वह देख उस की बेटी राहेल् भेड़ बकरियों को लिये हुए चली आती है॥ ७। उस ने कहा देखो अभी तो दिन बहुत है पशुओं के एकट्ठे होने का समय नहीं सो भेड़ बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ॥ ८। उन्हों ने कहा हम अभी ऐसा नहीं कर सकते जब सब झुण्ड एकट्ठे होते और पत्थर कूएं के मुंह पर से लुढ़काया जाता है तब हम भेड़-बकरियों को पानी पिलाते हैं॥ ९। उन की यह बात-चीत हो ही रही थी कि राहेल् जो पशु चराया करती

(१) अर्थात् ईश्वर का भवन।

थी सो अपने पिता की भेड़ बकरियों को लिये हुए आ गई ॥ १० । अपने मामा लाबान् की बेटी राहेल् को और उस की भेड़ बकरियों को भी देखकर याकूब ने निकट जा कूएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़काकर अपने मामा लाबान् की भेड़ बकरियों को पिला दिया ॥ ११ । तब याकूब ने राहेल् को चूमा और ऊंचे स्वर से रोया ॥ १२ । और याकूब ने राहेल् को बता दिया कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं अर्थात् रिबका का पुत्र हूं तब उस ने दौड़के अपने पिता से कह दिया ॥ १३ । अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान् उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को गले लगाकर चूमा फिर अपने घर ले आया और याकूब ने लाबान् से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया ॥ १४ । तब लाबान् ने उस से कहा तू तो सचमुच मेरा हाड़ मांस है । और याकूब उस के साथ महीना भर रहा ॥ १५ । तब लाबान् ने याकूब से कहा भाईबन्धु होने के कारण तो तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित नहीं है सो कह दे मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं ॥ १६ । लाबान् के दो बेटियां थीं जिन में से बड़ी का नाम लेआ और छोटी का राहेल् है ॥ १७ । लेआ के तो चून्धली आंखें थीं पर राहेल् रूपवती और सुन्दर थी ॥ १८ । सो याकूब ने जो राहेल् से प्रीति रखता था कहा मैं तेरी छोटी बेटी राहेल् के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा ॥ १९ । लाबान् ने कहा उसे पराये पुरुष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा सो तू मेरे पास रह ॥ २० । सो याकूब ने राहेल् के लिये सात बरस सेवा किई और वे उस को राहेल् की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े ॥ २१ । तब याकूब ने लाबान् से कहा मेरी स्त्री मुझे दे और मैं उस के पास जाऊंगा क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है ॥ २२ । सो लाबान् ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर एकट्ठा किया और उन की जेवनार किई ॥ २३ । सांझ के समय वह अपनी बेटी लेआ को याकूब के पास ले गया और उस ने उस से प्रसंग किया ॥ २४ । और लाबान् ने अपनी बेटी लेआ को उस की लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी जिल्पा दिई ॥ २५ । भोर को मालूम हुआ कि यह तो लेआ है सो उस ने लाबान् से कहा यह तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा किई सो क्या राहेल् के लिये नहीं किई फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है ॥ २६ । लाबान् ने कहा हमारे यहां ऐसी रीति नहीं कि जेठी से पहिले दूसरी का विवाह कर दें ॥ २७ । इस का अठवारा तो पूरा कर फिर दूसरी भी तुझे इस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात बरस लों करेगा ॥ २८ । सो याकूब ने ऐसा करके लेआ के अठवारे को पूरा किया तब लाबान् ने उसे अपनी बेटी राहेल् को भी दिया कि वह उस की स्त्री हो ॥ २९ । और लाबान् ने अपनी बेटी राहेल् की लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी बिल्हा को दिया ॥ ३० । तब याकूब राहेल् के पास भी गया और उस की प्रीति लेआ से अधिक उसी पर हुई और उस ने लाबान् के साथ रहकर और भी सात बरस उस की सेवा किई ॥

३१ । जब यहोवा ने देखा कि लेआ अप्रिय हुई तब उस ने उस की कोख खोली पर राहेल् बांझ रही ॥ ३२ । सो लेआ गर्भवती हुई और एक पुत्र जनी और यह कहकर उस का नाम रूबेन्[१] रक्खा कि यहोवा ने जो मेरे दुःख पर दृष्टि किई है सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रक्खेगा ॥ ३३ । फिर वह गर्भवती होकर एक पुत्र और जनी और बोली यह सुनके कि मैं अप्रिय हूं यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम शिमोन्[२] रक्खा ॥ ३४ । फिर वह गर्भवती होकर एक पुत्र और जनी और कहा अब की बार तो मेरा पति मुझ से मिल जाएगा क्योंकि मैं उस के तीन पुत्र जनी हूं इस लिये उस का नाम लेवी[३] रक्खा गया ॥ ३५ । और फिर वह गर्भवती होकर एक और पुत्र जनी और कहा अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदा[४] रक्खा तब उस को जनना बन्द हो गया ॥

(१) अर्थात् देखो बेटा । (२) अर्थात् सुन लेना । (३) अर्थात् जुटना । (४) अर्थात् जिस का धन्यवाद हुआ हो ।

३०. जब राहेल् ने देखा कि याकूब के मुझ से सन्तान नहीं होते तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी और याकूब से कहा मुझे लड़के दे नहीं तो मर जाऊंगी ॥ २। तब याकूब ने राहेल् से क्रोधित होकर कहा क्या मैं परमेश्वर हूं मेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रक्खी है ॥ ३। राहेल् ने कहा अच्छा मेरी लौंडी बिल्हा हाजिर है उसी के पास जा वह मेरे घुटनों पर जनेगी और उस के द्वारा मेरा भी घर बसेगा ॥ ४। सो उस ने उसे अपनी लौंडी बिल्हा को दिया कि वह उस की स्त्री हो और याकूब उस के पास गया ॥ ५। और बिल्हा गर्भवती होकर याकूब का जन्माया एक पुत्र जनी ॥ ६। और राहेल् ने कहा परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम दान्[1] रक्खा ॥ ७। और राहेल् की लौंडी बिल्हा फिर गर्भवती होकर याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ॥ ८। तब राहेल् ने कहा मैं ने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई सो उस ने उस का नाम नप्ताली[2] रक्खा ॥ ९। जब लेआ ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं तब उस ने अपनी लौंडी जिल्पा को लेकर याकूब की स्त्री होने के लिये दे दिया ॥ १०। और लेआ की लौंडी जिल्पा भी याकूब का जन्माया एक पुत्र जनी ॥ ११। तब लेआ ने कहा अहो, भाग्य सो उस ने उस का नाम गाद्[3] रक्खा ॥ १२। फिर लेआ की लौंडी जिल्पा याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ॥ १३। तब लेआ ने कहा मैं धन्य हूं निश्चय स्त्रियां[4] मुझे धन्य कहेंगी सो उस ने उस का नाम आशेर्[5] रक्खा ॥ १४। गेहूं की कटनी के दिनों में रूबेन् को मैदान में दूदा फल मिले और वह उन को अपनी माता लेआ के पास ले गया तब राहेल् ने लेआ से कहा अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे ॥ १५। उस ने उस से कहा तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या छोटी बात है अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है राहेल् ने कहा अच्छा तेरे पुत्र के दूदाफलों के पलटे में वह आज रात को तेरे संग सोएगा ॥ १६। सो सांझ को जब याकूब मैदान से आता था तब लेआ उस से भेंट करने को निकली और कहा तुझे मेरे ही पास आना होगा क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया है तब वह उस रात को उसी के संग सोया ॥ १७। तब परमेश्वर ने लेआ की सुनी सो वह गर्भवती होकर याकूब का जन्माया पांचवां पुत्र जनी ॥ १८। तब लेआ ने कहा मैं ने जो अपने पति को अपनी लौंडी दिई इस लिये परमेश्वर ने मुझे मेरी मजूरी दिई है सो उस ने उस का नाम इस्साकार्[1] रक्खा ॥ १९। और लेआ फिर गर्भवती होकर याकूब का जन्माया छठवां पुत्र जनी ॥ २०। तब लेआ ने कहा परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा क्योंकि मैं उस के जन्माये छः पुत्र जनी हूं सो उस ने उस का नाम जबूलून्[2] रक्खा ॥ २१। पीछे उस के एक बेटी भी हुई और उस ने उस का नाम दीना रक्खा ॥ २२। और परमेश्वर ने राहेल् की भी सुधि लिई और उस की सुनकर उस की कोख खोली ॥ २३। सो वह गर्भवती होकर एक पुत्र जनी और कहा परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है ॥ २४। सो उस ने यह कहकर उस का नाम यूसुफ[3] रक्खा कि परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा ॥

२५। जब राहेल् यूसुफ को जनी तब याकूब ने लाबान् से कहा मुझे बिदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊं ॥ २६। मेरी स्त्रियां और मेरे लड़केबाले जिन के लिये मैं ने तेरी सेवा किई है उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊं तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा किई है ॥ २७। लाबान् ने

(१) अर्थात् न्यायी। (२) अर्थात् मेरा मल्लयुद्ध। (३) अर्थात् सौभाग्य। (४) मूल में बेटियां। (५) अर्थात् धन्य।

(१) अर्थात् मजूरी में मिला। (२) अर्थात् निवास। (३) अर्थात् वह दूर करता है। या वह और भी देगा।

उस से कहा यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है तो रह जा क्योंकि मैं ने लक्षण से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दिई है ॥ २८ । फिर उस ने कहा तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं और मैं उसे दूंगा ॥ २९ । उस ने उस से कहा तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा किई और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे ॥ ३० । मेरे आने से पहिले वे कितने थे और अब कितने हो गये हैं और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशीष दिई है पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊंगा ॥ ३१ । उस ने फिर कहा मैं तुझे क्या दूं याकूब ने कहा तू मुझे कुछ न दे यदि तू मेरे लिये एक काम करे तो मैं फिर तेरी भेड़ बकरियों को चराऊंगा और उन की रक्षा करूंगा ॥ ३२ । मैं आज तेरी सब भेड़ बकरियों के बीच होकर निकलूंगा और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली वा चित्कबरी हो और जो भेड़ काली हो और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली हो उन्हें मैं अलग कर रक्खूंगा और मेरी मजूरी वे ही ठहरेंगी ॥ ३३ । और जब आगे को मेरी मजूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले तब मेरे धर्म्म की यही साक्षी होगी अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी हो और भेड़ों में से जो कोई काली न हो सो यदि मेरे पास निकले तो चोरी की ठहरेगी ॥ ३४ । तब लाबान् ने कहा तेरे कहने के अनुसार हो ॥ ३५ । सो उस ने उसी दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों और सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियों को अर्थात् जितनियों में कुछ उजलापन था उन को और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया ॥ ३६ । और उस ने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया सो याकूब लाबान् की भेड़ बकरियों को चराने लगा ॥ ३७ । और याकूब ने चिनार और बादाम और अर्मोन् वृक्षों की हरी हरी छड़ियां लेकर उन के छिलके कहीं कहीं छीलके उन्हें गंडेरीदार बना दिया, ३८ । और छीली हुई छड़ियों को भेड़ बकरियों के साम्हने उन के पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया और जब वे पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं ॥ ३९ । और छड़ियों के साम्हने गाभिन होकर भेड़ बकरियां धारीवाले चित्तीवाले और चित्कबरे बच्चे जनीं ॥ ४० । तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग अलग किया और लाबान् की भेड़ बकरियों के मुंह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया और अपने झुण्डों को उन से अलग रक्खा और लाबान् की भेड़ बकरियों से मिलने न दिया ॥ ४१ । और जब जब बलवन्त भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब तो याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उन के साम्हने रख देता था जिस से वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जाएं ॥ ४२ । पर जब निर्बल भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब वह उन्हें उन के आगे न रखता था इस से निर्बल निर्बल लाबान् की रहीं और बलवन्त बलवन्त याकूब की हो गईं ॥ ४३ । सो वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया और उस के बहुत सी भेड़बकरियां लौंडियां दास ऊंट और गदहे हुए ॥

(याकूब के घर जाने का वर्णन)

३१. फिर लाबान् के पुत्रों की ये बातें याकूब के सुनने में आईं कि याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है और हमारे पिता का जो धन था उसी से उस ने अपना यह सारा विभव कर लिया है ॥ २ । और याकूब लाबान् की चेष्टा से भी ताड़ गया कि वह आगे की नाईं अब मुझे नहीं देखता ॥ ३ । तब यहोवा ने याकूब से कहा अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा और मैं तेरे संग रहूंगा ॥ ४ । तब याकूब ने राहेल् और लेआ को मैदान पर अपनी भेड़ बकरियों के पास बुलवाकर, ५ । कहा तुम्हारे पिता की चेष्टा से मुझे समझ पड़ता है कि वह तो मुझे आगे की नाईं अब नहीं देखता पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग रहा है ॥ ६ । और तुम भी जानती हो कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर किई है ॥ ७ । और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी मजूरी को दस बार बदल

दिया परन्तु परमेश्वर ने उस को मेरी हानि करने नहीं दिया ॥ ८ । जब उस ने कहा कि चित्तीवाले बच्चे तेरी मजूरी ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं और जब उस ने कहा कि धारीवाले बच्चे तेरी मजूरी ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां धारीवाले जनने लगीं ॥ ९ । इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिये ॥ १० । भेड़ बकरियों के गाभिन होने के समय में ने स्वप्न में क्या देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं सो धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं ॥ ११ । और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा हे याकूब में ने कहा क्या आज्ञा[1] ॥ १२ । उस ने कहा आंखें उठाकर उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं देख कि वे धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं क्योंकि जो कुछ लाबान् तुझ से करता है सो मैं ने देखा है ॥ १३ । मैं उस बेतेल् का ईश्वर हूं जहां तू ने एक खंभे पर तेल डाल दिया और मेरी मन्नत मानी थी अब चल इस देश से निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा ॥ १४ । तब राहेल् और लेआ ने उस से कहा क्या हमारे पिता के घर में अब हमारा कुछ भाग वा अंश रहा है ॥ १५ । क्या हम उस के लेखे में उपरी नहीं ठहरीं देख उस ने हम को तो बेच डाला और हमारे रुपे को खा बैठा है ॥ १६ । सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है सो हमारा और हमारे लड़केबालों का है अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है सो कर ॥ १७ । तब याकूब ने अपने लड़केबालों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया, १८ । और जितने पशुओं को वह पद्दनराम् में एकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था सब को कनान् में अपने पिता इसहाक् के पास जाने की मनसा से साथ ले गया ॥ १९ । लाबान् तो अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये चला गया था । और राहेल् अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई ॥ २० । सो याकूब लाबान् अरामी के पास से चोरी से चला गया अर्थात् उस को न बताया कि मैं भागा जाता हूं ॥ २१ । वह अपना सब कुछ लेकर भागा और महानद के पार उतरके अपना मुंह गिलाद् के पहाड़ी देश की ओर किया ॥

२२ । तीसरे दिन लाबान् को समाचार मिला कि याकूब भाग गया है ॥ २३ । सो उस ने अपने भाइयों को साथ लेकर उस का पीछा सात दिन तक किया और गिलाद् के पहाड़ी देश में उस को जा लिया ॥ २४ । तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान् के पास आकर कहा सावधान रह तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा ॥ २५ । और लाबान् याकूब के पास पहुंच गया याकूब तो अपना तंबू गिलाद् नाम पहाड़ी देश में खड़ा किये पड़ा था और लाबान् ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया ॥ २६ । तब लाबान् याकूब से कहने लगा तू ने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया जैसा कोई युद्ध में जीतकर बन्धुई करके ले जाए ॥ २७ । तू क्यों चुपके से भाग आया और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साथ मृदंग और वीणा बजवाते और गीत गवाते विदा करता ॥ २८ । तू ने तो मुझे अपने बेटे बेटियों को चूमने तक न दिया तू ने मूर्खता किई है ॥ २९ । तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा सावधान रह याकूब से न तो भला कहना और न बुरा ॥ ३० । भला तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है ॥ ३१ । याकूब ने लाबान् को उत्तर दिया मैं यह सोचकर डर गया था कि क्या जानिये लाबान् अपनी बेटियों को मुझ से छीन ले ॥ ३२ । जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पाए सो जीता न बचेगा मेरे पास तेरा जो कुछ निकले सो भाईबन्धुओं के साम्हने पहिचानकर ले ले । याकूब तो न जानता था कि राहेल् गृहदेवताओं को

(१) मूल में मुझे देख ।

चुरा ले आई है॥ ३३। यह सुनकर लाबान् याकूब और लेआ और दोनों दासियों के तंबुओं में गया और कुछ न मिला तब लेआ के तंबू में से निकलकर राहेल् के तंबू में गया॥ ३४। राहेल् तो गृहदेवताओं को ऊंट की काठी में रखके उन पर बैठी थी सो लाबान् ने उस के सारे तंबू में टटोलने पर भी उन्हें न पाया॥ ३५। राहेल् ने अपने पिता से कहा हे मेरे प्रभु इस से अप्रसन्न न हो कि मैं तेरे साम्हने नहीं उठी क्योंकि मैं स्त्रीधर्म से हूं। सो उस के ढूंढ़ ढांढ़ करने पर भी गृहदेवता उस को न मिले॥ ३६। तब याकूब क्रोधित होकर लाबान् से झगड़ने लगा और कहा मेरा क्या अपराध है मेरा क्या पाप है कि तू ने इतना तेहा करके मेरा पीछा किया है॥ ३७। तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोला सो तुझ को अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला। कुछ मिला हो तो उस को यहां अपने और मेरे भाइयों के साम्हने रख दे और वे हम दोनों के बीच विचार करें॥ ३८। इन बीस बरसों से मैं तेरे पास रहता हूं इन में न तो तेरी भेड़ बकरियों के गर्भ गिरे और न तेरे मेढ़ों का मांस मैं ने कभी खाया॥ ३९। जो बनैले जन्तुओं से फाड़ा जाता उस को मैं तेरे पास न लाता था उस की हानि मैं ही उठाता था चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को तू मेरे ही हाथ से उस को भर लेता था॥ ४०। मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे सुखाये डालता था और नींद मेरी आंखों से भाग जाती थी॥ ४१। बीस बरस तक मैं तेरे घर में रहा चौदह बरस तो मैं ने तेरी दोनों बेटियों के लिये और छः बरस तेरी भेड़ बकरियों के लिये सेवा किई और तू ने मेरी मजूरी को दस बार बदल डाला॥ ४२। मेरे पिता का परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर जिस का भय इसहाक् भी मानता है सो यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय तू अब मुझे छूछे हाथ जाने देता। मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे दपटा॥ ४३। लाबान् ने याकूब से कहा ये बेटियां तो मेरी ही हैं और ये पुत्र भी मेरे ही हैं और ये भेड़ बकरियां भी मेरी ही हैं और जो कुछ तुझे देख पड़ता है सो सब मेरा ही है और अब मैं अपनी इन बेटियों वा इन के सन्तान से क्या कर सकता हूं॥ ४४। अब आ मैं और तू दोनों आपस में वाचा बांधें और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे॥ ४५। तब याकूब ने एक पत्थर लेकर उस का खंभा खड़ा किया॥ ४६। तब याकूब ने अपने भाईबन्धुओं से कहा पत्थर बटोरो यह सुनकर उन्हों ने पत्थर बटोरके एक ढेर लगाया और वहीं ढेर के पास उन्हों ने भोजन किया॥ ४७। उस ढेर का नाम लाबान् ने तो यगर्सहदूता[1] पर याकूब ने गलेद्[2] रक्खा॥ ४८। लाबान् ने जो कहा कि यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा इसी कारण उस का नाम गलेद् रक्खा गया, ४९। और मिज़्पा[3] भी क्योंकि उस ने कहा कि जब हम एक दूसरे की आंखों की ओट रहें तब यहोवा हमारे बीच में ताकता रहे॥ ५०। यदि तू मेरी बेटियों को दुःख दे वा उन से अधिक और स्त्रियां व्याह ले तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा॥ ५१। फिर लाबान् ने याकूब से कहा इस ढेर को देख और इस खंभे को भी देख जिन को मैं ने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है॥ ५२। यह ढेर और यह खंभा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लांघकर तेरे पास जाऊं न तू इस ढेर और इस खंभे को लांघकर मेरे पास आएगा॥ ५३। इब्राहीम और नाहोर् और उन के पिता तीनों का जो परमेश्वर है सो हम दोनों के बीच न्याय करे। तब याकूब ने उस की किरिया खाई जिस का भय उस का पिता इसहाक् मानता था॥ ५४। और याकूब ने उस पहाड़ पर मेलबलि चढ़ाया और अपने भाईबन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया सो उन्हों ने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई॥ ५५। बिहान को लाबान् तड़के

(१) अर्थात् अरामी भाषा में साक्षी का ढेर। (२) अर्थात् इब्रानी भाषा में, साक्षी का ढेर। (३) अर्थात् ताकने का स्थान।

३२ ने बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद दिया और अपने स्थान को लौट गया। और याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले ॥ २। उन को देखते ही याकूब ने कहा यह तो परमेश्वर का दल है सो उस ने उस स्थान का नाम महनैम्[1] रक्खा ॥

(याकूब के एसाव् से मिलने और उस के इस्राएल् नाम रक्खे जाने का वर्णन)

३। तब याकूब ने सेईर् देश में अर्थात् एदोम् देश में अपने भाई एसाव् के पास अपने आगे दूत भेज दिये ॥ ४। और उस ने उन्हें यह आज्ञा दिई कि मेरे प्रभु एसाव् से यों कहना कि तेरा दास याकूब तुझ से यों कहता है कि मैं लाबान् के यहां परदेशी होकर अब लों रहा ॥ ५। और मेरे गाय बैल गदहे भेड़ बकरियां और दास दासियां हो गई हैं सो मैं ने अपने प्रभु के पास इस लिये सदेशा भेजा है कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो ॥ ६। वे दूत याकूब के पास लौटके कहने लगे हम तेरे भाई एसाव् के पास गये थे और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है ॥ ७। तब याकूब निपट डर गया और संकट में पड़ा और यह सोचकर अपने संगवालों के और भेड़ बकरियों गाय बैलों और ऊंटों के भी अलग अलग दो दल कर लिये, ८। कि यदि एसाव् आकर पहिले दल को मारने लगे तो दूसरा दल भागकर बचेगा ॥ ९। फिर याकूब ने कहा हे यहोवा हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर हे मेरे पिता इस्हाक् के परमेश्वर तू ने तो मुझ से कहा कि अपने देश और जन्मभूमि में लौट जा और मैं तेरी भलाई करूंगा ॥ १०। तू ने जो जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किये हैं कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यर्दन नदी के पार उतर आया सो अब मेरे दो दल हो गये हैं तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं ॥ ११। मेरी बिनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव् के हाथ से बचा मैं तो उस से डरता हूं कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और मा समेत लड़कों को भी मार डाले ॥ १२। तू ने तो कहा है कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा और तेरे वंश को समुद्र की बालू के किनकों के समान बहुत करूंगा जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जाते ॥ १३। और उस ने उस दिन की रात वहीं बिताई और जो कुछ उस के पास था उस में से अपने भाई एसाव् की भेंट के लिये छांट छांटकर निकाला, १४। अर्थात् दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेढ़े, १५। बच्चों समेत दूध देती हुई तीस ऊंटनियां चालीस गायें दस बैल बीस गदहियां और गदहियों के दस बच्चे ॥ १६। इन को उस ने झुण्ड झुण्ड करके अपने दासों को सौंपकर उन से कहा मेरे आगे बढ़ जाओ और झुण्डों के बीच बीच में अन्तर रक्खो ॥ १७। फिर उस ने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दिई कि जब मेरा भाई एसाव् तुझे मिले और पूछने लगे कि तू किस का दास है और कहां जाता है और ये जो तेरे आगे हैं सो किस के हैं, १८। तब कहना कि तेरे दास याकूब के हैं हे मेरे प्रभु एसाव् ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गये हैं और वह आप भी हमारे पीछे है ॥ १९। और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी बरन उन सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दिई कि जब एसाव् तुम को मिले तब इसी प्रकार उस से कहना ॥ २०। और यह भी कहना कि तेरा दास याकूब हमारे पीछे है। क्योंकि उस ने सोचा था कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे जाती है इस के द्वारा मैं उस के क्रोध को शान्त करके तब उस का दर्शन करूंगा क्या जानिये वह मुझ से प्रसन्न हो ॥ २१। सो वह भेंट याकूब से पहिले पार उतर गई और वह आप उस रात को छावनी में रहा ॥

२२। उसी रात को वह उठ अपनी दोनों स्त्रियों और दोनों लौंडियों और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्बोक् नदी के पार उतर गया ॥ २३। और उस ने उन्हें उस नदी के पार

(१) अर्थात् दो दल।

उतार दिया वरन अपना सब कुछ उतार दिया ॥ २४ । और याकूब आप अकेला रह गया तब कोई पुरुष आकर पह फटने लों उस से मल्लयुद्ध करता रहा ॥ २५ । जब उस ने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता तब उस की जांघ की नस को छूआ सो याकूब की जांघ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई ॥ २६ । तब उस ने कहा मुझे जाने दे क्योंकि पह फटती है याकूब ने कहा जब लों तू मुझे आशीर्वाद न दे तब लों मैं तुझे जाने न दूंगा ॥ २७ । और उस ने याकूब से पूछा तेरा नाम क्या है उस ने कहा याकूब ॥ २८ । उस ने कहा तेरा नाम अब याकूब न रहेगा इस्राएल[1] रक्खा गया है क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है ॥ २९ । याकूब ने कहा मुझे अपना नाम बता उस ने कहा तू मेरा नाम क्यों पूछता है तब उस ने उस को वहीं आशीर्वाद दिया ॥ ३० । तब याकूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम पनीएल[2] रक्खा कि परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है ॥ ३१ । पनूएल् के पास से चलते चलते याकूब को सूर्य्य उदय हो गया और वह जांघ से लंगड़ाता था ॥ ३२ । इस्राएली जो पशुओं की जांघ की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन लों नहीं खाते इस का यही कारण है कि उस पुरुष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था ॥

३३. और याकूब ने आंखें उठाकर यह देखा कि एसाव् चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है तब उस ने लड़केवालों को अलग अलग बांटकर लेआ और राहेल् और दोनों लौण्डियों को सौंप दिया ॥ २ । और उस ने सब के आगे लड़कों समेत लौण्डियों को उस के पीछे लड़कों समेत लेआ को और सब के पीछे राहेल् और यूसुफ को रक्खा, ३ । और आप उन सभों के आगे बढ़ा और सात बार भूमि पर गिरके दण्डवत् किई और अपने भाई के पास पहुंचा ॥ ४ । तब एसाव् उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को हृदय में लगाकर गले से लिपटकर चूमा फिर वे दोनों रो उठे ॥ ५ । तब उस ने आंखें उठाकर स्त्रियों और लड़केवालों को देखा और पूछा ये जो तेरे साथ हैं सो कौन हैं उस ने कहा ये तेरे दास के लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझ को दिया है ॥ ६ । तब लड़कों समेत लौण्डियों ने निकट आकर दण्डवत् किई ॥ ७ । फिर लड़कों समेत लेआ निकट आई और उन्हों ने भी दण्डवत् किई पीछे यूसुफ और राहेल् ने भी निकट आकर दण्डवत् किई ॥ ८ । तब उस ने पूछा तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला उस का क्या प्रयोजन है उस ने कहा यह कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो ॥ ९ । एसाव् ने कहा हे मेरे भाई मेरे पास तो बहुत है जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे ॥ १० । याकूब ने कहा नहीं नहीं यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो मेरी भेंट ग्रहण कर क्योंकि मैं ने तेरा दर्शन पाकर मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है और तू मुझ से प्रसन्न हुआ है ॥ ११ । सो यह भेंट जो तुझे भेजी गई है ग्रहण कर क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और मेरे पास बहुत है । जब उस ने उस को दबाया तब उस ने उस को ग्रहण किया ॥ १२ । फिर एसाव् ने कहा आ हम बढ़ चलें और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा ॥ १३ । याकूब ने कहा हे मेरे प्रभु तू जानता होगा कि मेरे साथ सुकुमार लड़के और दूध देनेहारी भेड़ बकरियां और गायें हैं यदि ऐसे पशु एक दिन भी अधिक हांके जाएं तो सब के सब मर जायेंगे ॥ १४ । सो मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए और मैं इन पशुओं की गति अनुसार जो मेरे आगे हैं और लड़केबालों की गति अनुसार भी धीरे धीरे चलकर सेईर् में अपने प्रभु के पास पहुंचूंगा ॥ १५ । एसाव् ने कहा तो अपने संगवालों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं । उस ने कहा यह क्यों इतना ही बहुत है कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे ॥ १६ । तब एसाव् ने उसी दिन सेईर् जाने को अपना मार्ग लिया ॥ १७ ।

(१) अर्थात् ईश्वर से युद्ध करनेहारा । (२) अर्थात् ईश्वर का मुख ।

और याकूब वहां से कूच करके सुक्कोत् को गया और वहां अपने लिये एक घर और पशुओं के लिये झोंपड़े बनाये इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत्[1] पड़ा ॥

१८। और याकूब जो पद्दनराम् से आया था सो कनान् देश के शकेम् नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंचकर नगर के साम्हने डेरे खड़े किये ॥ १९। और भूमि के जिस खण्ड पर उस ने अपना तंबू खड़ा किया उस को उस ने शकेम् के पिता हमोर् के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों[2] मे मोल लिया ॥ २०। और वहां उस ने एक वेदी बनाकर उस का नाम एलेलोहे इस्राएल्[3] रक्खा ॥

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का वर्णन)

३४. और लेआ की बेटी दीना जिसे वह याकूब की जन्माई जनी थी उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली ॥ २। तब उस देश के प्रधान हित्ती हमोर् के पुत्र शकेम् ने उसे देखा और उसे ले जाकर उस के साथ कुकर्म्म करके उस को भ्रष्ट कर डाला ॥ ३। तब उस का जी याकूब की बेटी दीना से अटक गया और उस ने उस कन्या से प्रेम की बातें करके उस को धीरज बन्धाया ॥ ४। और शकेम् ने अपने पिता हमोर् से कहा मुझे इस लड़की को मेरे स्त्री होने के लिये दिला दे ॥ ५। और याकूब ने सुना कि शकेम् ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है और उस के पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे सो वह उन के आने लों चुप रहा ॥ ६। और शकेम् का पिता हमोर् निकलकर याकूब से बातचीत करने को उस के पास गया ॥ ७। और याकूब के पुत्र सुनते ही मैदान से निपट उदास और अति क्रोधित होकर आये क्योंकि शकेम् ने जो याकूब की बेटी के साथ कुकर्म्म किया सो इस्राएल् के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था जिस का करना अनुचित है ॥ ८। हमोर् ने उन सभों से कहा मेरे पुत्र शकेम् का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है सो उसे उस की स्त्री होने के लिये उस को दे दो ॥ ९। और हमारे साथ ब्याह किया करो अपनी बेटियां हम को दिया करो और हमारी बेटियों को आप लिया करो ॥ १०। और हमारे संग बसे रहो और यह देश तुम्हारे साम्हने पड़ा है इस में रहकर लेन देन करो और इस की भूमि निज कर लिया करो ॥ ११। और शकेम् ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो तो जो कुछ तुम मुझ से कहो सो मै दूंगा ॥ १२। तुम मुझ से कितना ही मूल्य वा बदला क्यों न मांगो तौभी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूंगा इतना हो कि उस कन्या को स्त्री होने के लिये मुझे दो ॥ १३। तब यह सोचकर कि शकेम् ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है याकूब के पुत्रों ने शकेम् और उस के पिता हमोर् को छल के साथ यह उत्तर दिया कि, १४। हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतनारहित पुरुष को अपनी बहिन दें क्योंकि इस से हमारी नामधराई होगी ॥ १५। इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि हमारी नाईं तुम में से हर एक पुरुष का खतना किया जाए ॥ १६। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे और हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएंगे ॥ १७। पर यदि तुम हमारी मानकर अपना खतना न कराओ तो हम अपनी लड़की को लेके चले जाएंगे ॥ १८। उन की इस बात पर हमोर् और उस का पुत्र शकेम् प्रसन्न हुए ॥ १९। और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था इस से उस ने वैसा करने में विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में से अधिक प्रतिष्ठित था ॥ २०। सो हमोर् और उस का पुत्र शकेम् अपने नगर के फाटक के निकट जाकर नगरवासियों को यों समझाने लगे कि, २१। वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहने चाहते हैं सो उन्हें इस देश में रहके लेन देन करने दो देखो यह

(१) अर्थात् झोपड़े। (२) इन का मूल्य सन्दिग्ध है।
(३) अर्थात् ईश्वर इस्राएल् का परमेश्वर।

देश उन के लिये भी बहुत है फिर हम लोग उन की बेटियों को व्याह लें और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें ॥ २२ । वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं कि उन की नाईं हमारे सब पुरुषों का भी खतना किया जाए ॥ २३ । क्या उन की भेड़ बकरियां गाय बैल बरन उन के सारे पशु और धन संपत्ति हमारी न हो जाएगी इतना ही हो कि हम लोग उन की मान लें तो वे हमारे संग रहेंगे ॥ २४ । सो जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे उन सभों ने हमोर् की और उस के पुत्र शकेम् की मानी हर एक पुरुष का खतना किया गया जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे ॥ २५ । तीसरे दिन जब वे लोग पीड़ित पड़े थे तब शिमोन् और लेवी नाम याकूब के दो पुत्रों ने जो दीना के भाई थे अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसकर सब पुरुषों को घात किया ॥ २६ । और हमोर् और उस के पुत्र शकेम् को उन्हों ने तलवार से मार डाला और दीना को शकेम् के घर में से निकाल ले गये ॥ २७ । और याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़कर नगर को इस लिये लूट लिया कि उस में उन की बहिन अशुद्ध किई गई थी ॥ २८ । वे भेड़ बकरी गाय बैल और गदहे और नगर और मैदान में, २९ । जितना धन था उस सब को और उन के बाल बच्चों और स्त्रियों को भी हर ले गये बरन घर घर में जो कुछ था उस को भी उन्हों ने लूट लिया ॥ ३० । तब याकूब ने शिमोन् और लेवी से कहा तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मुझ से घिन कराई है[1] इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं[2] सो अब वे एकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे और मुझे मार लेंगे सो मैं अपने घराने समेत सत्यानाश हो जाऊंगा ॥ ३१ । उन्हों ने कहा क्या वह हमारी बहिन के साथ वेश्या की नाईं बर्ताव करे ॥

(१) मूल में, परिज्जियों में मुझे दुर्गन्धित किया। (२) मूल में मैं थोड़े ही लोग हूं।

(विन्यामीन् की उत्पत्ति और राहेल् की मृत्यु का वर्णन.)

३५. तब परमेश्वर ने याकूब से कहा यहां से कूच करके बेतेल् को जा और वहीं रह और वहां उस ईश्वर के लिये वेदी बना जिस ने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव् के डर से भागा जाता था ॥ २ । तब याकूब ने अपने घराने से और उन सब से भी जो उस के संग थे कहा तुम्हारे बीच में जो पराये देवता हैं उन्हें निकाल फेंको और अपने अपने को शुद्ध करो और अपने वस्त्र बदल डालो ॥ ३ । और आओ हम यहां से कूच करके बेतेल् को जाएं वहां मैं उस ईश्वर की एक वेदी बनाऊंगा जिस ने संकट के दिन मेरी सुन लिई और जिस मार्ग से मैं चलता था उस में मेरे संग रहा ॥ ४ । सो जितने पराये देवता उन के पास थे और जितने कुण्डल उन के कानों में थे उन सभों को उन्हों ने याकूब को दिया और उस ने उन को उस बांज वृक्ष के नीचे जो शकेम् के पास है गाड़ दिया ॥ ५ । तब उन्हों ने कूच कर दिया और उन की चारों ओर के नगर-निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया कि उन्हों ने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया ॥ ६ । सो याकूब उन सब समेत जो उस के संग थे कनान् देश के लूज् नगर को आया। वह नगर बेतेल् भी कहावता है ॥ ७ । वहां उस ने एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम एल्बेतेल्[1] रक्खा क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रगट हुआ था ॥ ८ । और रिब्का की दूध पिलानेहारी धाई दबोरा मर गई और बेतेल् के नीचे बांज वृक्ष के तले उस को मिट्टी दिई गई और उस बांज का नाम अल्लोनबकूत्[2] रक्खा गया ॥

९ । फिर याकूब के पद्दनराम् से आने के पीछे परमेश्वर ने दूसरी बार उस को दर्शन देकर आशीष दिई ॥ १० । और परमेश्वर ने उस से कहा अब लों तो तेरा नाम याकूब है पर आगे को तेरा नाम याकूब

(१) अर्थात् बेतेल् का ईश्वर। (२) अर्थात् विलाप का बांज।

न रहेगा तू इस्राएल् कहाएगा सो उस ने उस का नाम इस्राएल् रक्खा ॥ ११ । फिर परमेश्वर ने उस से कहा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं तू फूले फले और बढ़े और तुझ से एक जाति बरन जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होए और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होएं ॥ १२ । और जो देश मैं ने इब्राहीम और इस्हाक् को दिया है वही देश तुझे देता हूं और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूंगा ॥ १३ । तब परमेश्वर उस स्थान में जहां उस ने याकूब से बातें किई उस के पास से ऊपर चढ़ गया ॥ १४ । और जिस स्थान में परमेश्वर ने याकूब से बातें किईं उसी में याकूब ने पत्थर का खंभा खड़ा किया और उस पर अर्घ देकर तेल डाल दिया ॥ १५ । और जहां परमेश्वर ने याकूब से बातें किईं उस स्थान का नाम उस ने बेतेल् रक्खा ॥ १६ । उन्हों ने बेतेल् से कूच किया और जब उन्हें एप्राता को पहुंचने में थोड़ी ही दूर रह गया तब राहेल् को जनने की बड़ी पीड़ें आने लगीं ॥ १७ । जब उस को बड़ी बड़ी पीड़ें उठती थीं तब जनाई धाई ने उस से कहा मत डर अब की बेर भी तेरे बेटा ही होगा ॥ १८ । तब वह मर गई और प्राण निकलते निकलते उस ने तो उस बेटे का नाम बेनोनी[1] रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिन्यामीन्[2] रक्खा ॥ १९ । यों राहेल् मर गई और एप्राता अर्थात् बेतलेहेम् के मार्ग में उस को मिट्टी दिई गई ॥ २० । और याकूब ने उस की कबर पर एक खंभा खड़ा किया राहेल् की कबर का वही खंभा आज लों बना है ॥ २१ । फिर इस्राएल् ने कूच किया और एदेर् नाम गुम्मट के आगे बढ़कर अपना तंबू खड़ा किया ॥ २२ । जब इस्राएल् उस देश में बसा था तब एक दिन रूबेन् ने जाकर अपने पिता की सुरैतिन बिल्हा के साथ कुकर्म्म किया और यह बात इस्राएल् के सुनने में आई ॥

२३ । याकूब के बारह पुत्र हुए । उन में से लेआ के तो पुत्र ये हुए अर्थात् याकूब का जेठा रूबेन् फिर शिमोन् लेवी यहूदा इस्साकार् और जबूलून् ॥ २४ । और राहेल् के पुत्र ये हुए अर्थात् यूसुफ़ और बिन्यामीन् ॥ २५ । और राहेल् की लौण्डी बिल्हा के पुत्र ये हुए अर्थात् दान् और नप्ताली ॥ २६ । और लेआ की लौण्डी जिल्पा के पुत्र ये हुए अर्थात् गाद् और आशेर् याकूब के ये ही पुत्र हुए जो उस से पद्दनराम् में जन्मे ॥

२७ । और याकूब किर्यतर्बा अर्थात् हेब्रोन् के पासवाले मम्रे में अपने पिता इस्हाक् के पास आया और वहीं इब्राहीम और इस्हाक् परदेशी होकर रहे थे ॥ २८ । इस्हाक् की अवस्था तो एक सौ अस्सी बरस की हुई ॥ २९ । और इस्हाक् का प्राण छूट गया और वह मरके अपने लोगों में जा मिला वह बूढ़ा और बहुत दिनी था और उस के पुत्र एसाव् और याकूब ने उस को मिट्टी दिई ॥

(एसाव् की वंशावली)

३६. एसाव् जो एदोम् भी कहावता है उस की यह वंशावली है ॥ २ । एसाव् ने तो कनानी लड़कियां ब्याह लिईं अर्थात् हित्ती एलोन् की बेटी आदा को और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी और हिब्वी सिबोन् की नतिनी थी ॥ ३ । फिर उस ने इश्माएल् की बेटी बासमत् को भी जो नबायोत् की बहिन थी ब्याह लिया ॥ ४ । आदा तो एसाव् के जन्माये एलीपज् को और बासमत् रूएल् को जनी ॥ ५ । और ओहोलीबामा यूश् यालाम् और कोरह् को जनी एसाव् के ये ही पुत्र कनान् देश में जन्मे ॥ ६ । और एसाव् अपनी स्त्रियों और बेटे बेटियों और घर के सब प्राणियों और अपनी भेड़ बकरी गाय बैल आदि सब पशुओं निदान अपनी सारी सम्पत्ति को जो उस ने कनान् देश में संचय किई थी लेकर अपने भाई याकूब के पास से दूसरे देश को चला गया ॥ ७ । क्योंकि उन की संपत्ति इतनी हो गई थी कि वे एकट्ठे न रह सके और पशुओं की बहुतायत के मारे उस देश में जहां वे परदेशी होकर रहते थे उन की समाई न रही ॥ ८ । एसाव् जो एदोम् भी कहावता है सो सेईर् नाम पहाड़ी देश में रहने लगा ॥

(१) अर्थात् मेरा शोकमूल पुत्र । (२) अर्थात् दहिने हाथ का पुत्र ।

९ । सेईर् नाम पहाड़ी देश में रहनेहारे एदोमियों के मूलपुरुष एसाव् की वंशावली यह है ॥ १० । एसाव् के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् एसाव् की स्त्री आदा का पुत्र एलीपज् और उसी एसाव् की स्त्री बासमत् का पुत्र रूएल् ॥ ११ । और एलीपज् के ये पुत्र हुए अर्थात् तेमान् ओमार् सपो गाताम् और कनज् ॥ १२ । और एसाव् के पुत्र एलीपज् के तिम्ना नाम एक सुरैतिन थी जो एलीपज् के जन्माये अमालेक् को जनी एसाव् की स्त्री आदा के वंश में ये ही हुए ॥ १३ । और रूएल् के ये पुत्र हुए अर्थात् नहत् जेरह् शम्मा और मिज्जा एसाव् की स्त्री बासमत् के वंश में ये ही हुए ॥ १४ । और ओहोलीबामा जो एसाव् की स्त्री और सिबोन् की नतिनी और अना की बेटी थी उस के ये पुत्र हुए अर्थात् वह एसाव् के जन्माये यूश् यालाम् और कोरह् को जनी ॥ १५ । एसाव्वंशियों के अधिपति ये हुए अर्थात् एसाव् के जेठे एलीपज् के वंश में से तो तेमान् अधिपति ओमार् अधिपति सपो अधिपति कनज् अधिपति, १६ । कोरह् अधिपति गाताम् अधिपति अमालेक् अधिपति एलीपज्वंशियों में से एदोम् देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही आदा के वंश में हुए ॥ १७ । और एसाव् के पुत्र रूएल् के वंश में ये हुए अर्थात् नहत् अधिपति जेरह् अधिपति शम्मा अधिपति मिज्जा अधिपति रूएल्वंशियों में से एदोम् देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही एसाव् की स्त्री बासमत् के वंश में हुए ॥ १८ । और एसाव् की स्त्री ओहोलीबामा के वंश में ये हुए अर्थात् यूश् अधिपति यालाम् अधिपति कोरह् अधिपति अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव् की स्त्री थी उस के वंश में ये ही हुए ॥ १९ । एसाव् जो एदोम् भी कहावता है उस के वंश ये ही हैं और उन के अधिपति भी ये ही हुए ॥

२० । सेईर् जो होरी नाम जाति का था उस के ये पुत्र उस देश में पहिले से रहते थे अर्थात् लोतान् शोबाल् सिबोन् अना, २१ । दीशोन् एसेर् और दीशान् एदोम् देश में सेईर् के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए ॥ २२ । और लोतान् के पुत्र होरी और हेमाम् हुए और लोतान् की बहिन तिम्ना थी ॥ २३ । और शोबाल् के ये पुत्र हुए अर्थात् अल्वान् मानहत् एबाल् शपो और ओनाम् ॥ २४ । और सिबोन् के ये पुत्र हुए अर्थात् अय्या और अना यह वही अना है जिस को जंगल में अपने पिता सिबोन् के गदहों को चराते चराते तप्तकुंड मिले ॥ २५ । और अना के दीशोन् नाम पुत्र हुआ और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई ॥ २६ । और दीशोन् के ये पुत्र हुए अर्थात् हेम्दान् एश्बान् यित्रान् और करान् ॥ २७ । एसेर् के ये पुत्र हुए अर्थात् बिल्हान् जावान् और अकान् ॥ २८ । दीशान् के ये पुत्र हुए अर्थात् ऊस् और अरान् ॥ २९ । होरियों के अधिपति ये हुए अर्थात् लोतान् अधिपति शोबाल् अधिपति सिबोन् अधिपति अना अधिपति, ३० । दीशोन् अधिपति एसेर् अधिपति दीशान् अधिपति सेईर् देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए ॥

३१ । फिर जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था तब भी एदोम् के देश में ये राजा हुए अर्थात्, ३२ । बोर् के पुत्र बेला ने एदोम् में राज्य किया और उस की राजधानी का नाम दिन्हाबा है ॥ ३३ । बेला के मरने पर बोस्रानिवासी जेरह् का पुत्र योबाब् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३४ । और योबाब् के मरने पर तेमानियों के देश का निवासी हूशाम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३५ । फिर हूशाम् के मरने पर बदद् का पुत्र हदद् उस के स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब् के देश में मार लिया और उस की राजधानी का नाम अवीत् है ॥ ३६ । और हदद् के मरने पर मस्रेकावासी सम्ला उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३७ । फिर सम्ला के मरने पर शाऊल् जो महानद के तटवाले रहोबोत् नगर का था सो उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३८ । और शाऊल् के मरने पर अक्बोर् का पुत्र बाल्हानान् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३९ । और अक्बोर् के पुत्र बाल्हानान् के मरने पर हदर् उस के स्थान पर राजा हुआ और उस की राजधानी का नाम पाऊ है और उस की स्त्री का नाम महेतबेल् है जो मेज़ाहाब्

की नातिनी और मत्रेद् की बेटी थी ॥ ४० । फिर एसाव्वंशियों के अधिपतियों के कुलों और स्थानों के अनुसार उन के नाम ये हैं अर्थात् तिम्ना अधिपति अल्वा अधिपति यतेत् अधिपति, ४१ । ओहोलीबामा अधिपति एला अधिपति पीनोन् अधिपति, ४२ । कनज् अधिपति तेमान् अधिपति मिब्सार् अधिपति, ४३ । मग्दीएल् अधिपति ईराम् अधिपति । एदोम्-वंशियों ने जो देश अपना कर लिया था उस के निवासस्थानों में उन के ये ही अधिपति हुए । और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव् है ॥

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन.)

३७. याकूब

तो कनान् देश में रहता था जहां उस का पिता परदेशी होकर रहा था ॥ २ । और याकूब के वंश का वृत्तान्त[1] यह है कि यूसुफ सत्तरह बरस का होकर अपने भाइयों के संग भेड़ बकरियों को चराता था और वह लड़का जो अपने पिता की स्त्री बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था सो उन की बुराइयों का समाचार उन के पिता के पास पहुंचाया करता था ॥ ३ । याकूब अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ से प्रीति रखता था क्योंकि वह उस के बुढ़ापे का पुत्र था और उस ने उस के लिये रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया ॥ ४ । सो जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है तब उन्हों ने उस से बैर किया और उस के साथ मेल की बातें न कर सकते थे ॥ ५ । यूसुफ ने एक स्वप्न देखकर अपने भाइयों से उस का वर्णन किया तब उन्हों ने उस से और भी बैर किया ॥ ६ । उस ने उन से कहा जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनो ॥ ७ । मानो हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं और मेरा पूला उठकर खड़ा हो गया तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को घेरके उसे दण्डवत् किया ॥ ८ । तब उस के भाइयों ने उस से कहा क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा वा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा सो उन्हों ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उस से और भी अधिक बैर किया ॥ ९ । फिर उस ने एक और स्वप्न देखा और अपने भाइयों से उस का भी यों वर्णन किया कि सुनो मैं ने एक और स्वप्न देखा है कि सूर्य्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं ॥ १० । यह स्वप्न उस ने अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया तब उस के पिता ने उस को दपटके कहा यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत करेंगे ॥ ११ । उस के भाई तो उस से डाह रखते थे पर उस के पिता ने उस के उस वचन को स्मरण रक्खा ॥ १२ । और उस के भाई अपने पिता की भेड़ बकरियों को चराने के लिये शकेम् को गये ॥ १३ । तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा तेरे भाई तो शकेम् में चरा रहे होंगे सो जा मैं तुझे उन के पास भेजता हूं उस ने कहा जो आज्ञा[1] ॥ १४ । उस ने उस से कहा जा अपने भाइयों और भेड़ बकरियों का हाल देखकर मेरे पास समाचार ले आ सो उस ने उस को हेब्रोन् की तराई में बिदा कर दिया और वह जाकर शकेम् के पास पहुचा था, १५ । कि किसी जन ने उस को मैदान में भ्रमते हुए पाकर उस से पूछा तू क्या ढूंढ़ता है ॥ १६ । उस ने कहा मैं तो अपने भाइयों को ढूंढ़ता हूं मुझे बता कि वे कहां चरा रहे हैं ॥ १७ । उस जन ने कहा वे तो यहां से चले गये हैं और मैं ने उन को यह कहते सुना कि आओ हम दोतान् को चलें सो यूसुफ अपने भाइयों के पास चला और उन्हें दोतान् में पाया ॥ १८ । जब उन्हों ने उस को आते दूर से देखा तब उस के निकट आने से पहिले उसे मार डालने की युक्ति विचारने लगे ॥ १९ । और वे आपस में कहने लगे देखो वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है ॥ २० । सो आओ हम उस को घात करके किसी गड़हे में डाल दें तब कहेंगे कि कोई दुष्ट जन्तु उस को खा गया फिर देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या फल होगा ॥ २१ । यह सुनके रूबेन् ने उस को उन के

(१) मूल में याकूब की वंशावली ।

(१) मूल में मुझे देख ।

हाथ से बचाने की मनसा से कहा हम उस को प्राण से तो न मारें॥ २२। फिर रूबेन् ने उन से कहा लोहू मत बहाओ उस को जंगल के इस गड़हे में डाल दो और उस पर हाथ मत उठाओ। वह उस को उन के हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुंचाना चाहता था॥ २३। सो जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंच गया तब उन्हों ने उस का अंगरखा जो वह रंगबिरंगा पहिने था उतार लिया, २४। और यूसुफ को उठाकर गड़हे मे डाल दिया गड़हा तो सूखा था उस में कुछ जल न था॥ २५। तब वे रोटी खाने को बैठ गये और आंखें उठाकर देखा कि इश्माएलियों का एक दल ऊंटों पर सुगन्ध-द्रव्य बलसान् और गन्धरस लादे हुए गिलाद् से मिस्र को चला जा रहा है॥ २६। तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा अपने भाई को घात करने और उस का खून छिपाने से क्या लाभ होगा॥ २७। आओ हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें और अपना हाथ उस पर न उठाएं क्योंकि वह हमारा भाई और हाड़ मांस ही है सो उस के भाइयों ने उस की मानी॥ २८। तब मिद्यानी ब्योपारी उधर से होकर पहुंचे सो यूसुफ के भाइयों ने उस को उस गड़हे में से खींचके निकाला और इश्माएलियों के हाथ रुपे के बीस टुकड़ों में बेच दिया और वे यूसुफ को मिस्र मे ले गये॥ २९। और रूबेन् ने गड़हे पर लौटकर क्या देखा कि यूसुफ गड़हे में नहीं है सो उस ने अपने वस्त्र फाड़े॥ ३०। और भाइयों के पास लौटकर कहा लड़का तो नहीं है अब मैं किधर जाऊं॥ ३१। सो उन्हों ने यूसुफ का अंगरखा ले एक बकरे को मारके उस के लोहू में उसे बोड़ दिया॥ ३२। और उन्हों ने उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजकर कहला दिया कि यह हम को मिला है सो देखकर पहिचान ले कि तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं॥ ३३। उस ने उस को पहिचान लिया और कहा हां मेरे पुत्र ही का अंगरखा तो है किसी दुष्ट जन्तु ने उस को खा लिया होगा निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया है॥ ३४। सो याकूब ने अपने वस्त्र फाड़के कटि में टाट पहिना और अपने पुत्र के लिये बहुत दिन लों विलाप करता रहा॥ ३५। तब उस के सब बेटे बेटियों ने उस को शान्ति देने का यत्न किया पर उस को शान्ति नहीं आई और वह कहता रहा नहीं नहीं मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा सो उस का पिता उस के लिये रोता रहा॥ ३६। और मिद्यानियों[1] ने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर् नाम फिरौन् के एक हाकिम और जल्लादों के प्रधान के हाथ बेच डाला॥

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

३८. उन्हीं दिनों में यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया और हीरा नाम एक अदुल्लाम्वासी पुरुष के पास डेरा किया॥ २। वहां यहूदा ने शू नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा और उस को व्याहकर उस के पास गया॥ ३। वह गर्भवती होकर एक पुत्र जनी और यहूदा ने उस का नाम एर् रक्खा॥ ४। और वह फिर गर्भवती होकर एक पुत्र और जनी और उस का नाम ओनान् रक्खा॥ ५। फिर वह एक पुत्र और जनी और उस का नाम शेला रक्खा और जिस समय वह इस को जनी उस समय यहूदा कजीब् में रहता था॥ ६। और यहूदा ने तामार् नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर् का विवाह कर दिया॥ ७। पर यहूदा का वह जेठा एर् जो यहोवा के लेखे में दुष्ट था इस लिये यहोवा ने उस को मार डाला॥ ८। तब यहूदा ने ओनान् से कहा अपनी भौजाई के पास जा और उस के साथ देवर का धर्म्म करके अपने भाई के लिये सन्तान जन्मा॥ ९। ओनान् तो जानता था कि सन्तान मेरा न ठहरेगा सो जब वह अपनी भौजाई के पास गया तब उस ने भूमि पर स्खलित करके नाश किया न हो कि उस को अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करे॥ १०। यह जो काम उस ने किया सो यहोवा को बुरा लगा सो उस ने उस को भी मार डाला॥ ११। तब यहूदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने

(१) मूल में मदानियों।

भाइयों की नाईं शेला भी मरे अपनी बहू तामार् से कहा जब लों मेरा पुत्र शेला समर्थ न हो तब लों अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह सो तामार् जाकर अपने पिता के घर में बैठी रही॥ १२। बहुत दिन के बीतने पर यहूदा की स्त्री जो शू की बेटी थी सो मर गई फिर यहूदा शोक से छूटकर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये गया॥ १३। और तामार् को यह समाचार मिला कि तेरा ससुर तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये जा रहा है॥ १४। तब उस ने यह सोचकर कि शेला समर्थ तो हुआ पर मैं उस की स्त्री नहीं होने पाई अपना विधवापन का पहिरावा उतारा और बुर्का डालकर अपने को ढांप लिया और एनैम् नगर के फाटक के पास जो तिम्ना के मार्ग में है जा बैठी॥ १५। उस को देखकर यहूदा ने वेश्या समझा क्योंकि वह अपना मुंह ढांपे हुए थी॥ १६। सो उस ने उसे अपनी बहू न जानकर मार्ग में उस की ओर फिरके कहा मुझे अपने पास आने दे उस ने कहा मैं तुझ को अपने पास आने दूं तो तू मुझे क्या देगा॥ १७। उस ने कहा मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा तब उस ने कहा भला उस के भेजने लों क्या तू हमारे पास कुछ बन्धक रख जाएगा॥ १८। उस ने पूछा मैं कौन सा बन्धक तेरे पास रख जाऊं। उस ने कहा अपनी वह छाप और डोरी और अपने हाथ की छड़ी। तब उस ने उस को वे वस्तुएं दिईं और उस के पास गया सो वह उस से गर्भवती हुई॥ १९। तब वह उठकर चली गई और अपना बुर्का उतारके अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिने रही॥ २०। तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया कि वह बन्धक को उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए और उस को न पाकर, २१। उस ने वहां के लोगों से पूछा कि वह देवदासी कहां है सो एनैम् में मार्ग की एक ओर बैठी थी उन्हों ने कहा यहां तो कोई देवदासी न थी॥ २२। सो उस ने यहूदा के पास लौटके कहा मुझे वह नहीं मिली बरन उस स्थान के लोगों ने कहा कि यहां तो कोई देवदासी न रही॥ २३। तब यहूदा ने कहा अच्छा वह बन्धक उसी के पास रहने दे नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे देख मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया पर वह तुझे नहीं मिली॥ २४। तीन महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया बरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हुई तब यहूदा ने कहा उस को बाहर ले आओ कि वह जलाई जाए॥ २५। जब उसे निकाल रहे थे तब उस ने अपने ससुर के पास कहला भेजा कि जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं उसी से मैं गर्भवती हूं: फिर उस ने यह भी कहलाया कि पहिचान तो सही कि यह छाप और डोरी और छड़ी किस की हैं॥ २६। यहूदा ने उन्हें पहिचानकर कहा वह तो मुझ से कम दोषी है क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया। और उस ने उस से फिर कभी प्रसंग न किया॥ २७। जब उस के जनने का समय आया तब क्या जान पड़ा कि उस के गर्भ में जुड़ौरे हैं॥ २८। और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और जनाई धाई ने लाल सूत लेकर उस के हाथ में यह कहती हुई बांध दिया कि पहिले यही निकला॥ २९। जब उस ने हाथ समेट लिया तब उस का भाई निकल पड़ा और उस ने कहा तू ने क्यों दरार कर लिया है इस कारण उस का नाम पेरेस्[1] रक्खा गया॥ ३०। पीछे उस का भाई भी निकला जिस के हाथ में वह लाल सूत बन्धा था और उस का नाम जेरह् रक्खा गया॥

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से छूटने का वर्णन)

३९. जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया तब पोतीपर् नाम एक मिस्री जो फिरौन का हाकिम और जल्लादों का प्रधान

---

(१) अर्थात् टूट पड़ना।

था उस ने उस को उस के ले आनेहारे इश्माएलियों के हाथ से मोल लिया ॥ २। जब यूसुफ अपने उस मिस्री स्वामी के घर में रहा तब यहोवा उस के संग रहा सो वह भाग्यमान पुरुष हो गया ॥ ३। और यूसुफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उस के संग रहता है और जो काम वह करता है उस को यहोवा उस के हाथ से सुफल कर देता है ॥ ४। तब उस की अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई और वह उस का टहलुआ ठहराया गया फिर उस ने उस को अपने घर का अधिकारी करके अपना सब कुछ उस के हाथ में सौंप दिया ॥ ५। और जब से उस ने उस को अपने घर और अपने सब कुछ का अधिकारी किया तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा और क्या घर में क्या मैदान में उस का जो कुछ था सब पर यहोवा की आशीष होती थी ॥ ६। सो उस ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़ वह अपनी संपत्ति का हाल कुछ न जानता था और यूसुफ सुन्दर और रूपवान था ॥ ७। इन बातों के पीछे उस के स्वामी की स्त्री ने यूसुफ की ओर आंख लगाई और कहा मेरे साथ सो ॥ ८। उस ने नकारके अपने स्वामी की स्त्री से कहा सुन जो कुछ इस घर में मेरे हाथ में है सो मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है ॥ ९। इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने तुझे छोड़ जो उस की स्त्री है मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा सो मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूं ॥ १०। तौभी वह दिन दिन यूसुफ से बातें करती रही पर उस ने उस की न सुनी कि कहीं उस के पास लेटे वा उस के संग रहे ॥ ११। एक दिन क्या हुआ कि वह अपना काम काज करने को घर में गया और घर के सेवकों में से कोई घर में न था ॥ १२। तब उस स्त्री ने उस का वस्त्र पकड़कर कहा मेरे साथ सो पर वह अपना वस्त्र उस के हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल गया ॥ १३। यह देखकर कि वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया, १४। उस स्त्री ने अपने घर के सेवकों को बुलाकर कहा देखो वह एक इब्री मनुष्य को हम से ठठोली करने के लिये हमारे पास ले आया है वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास आया और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी ॥ १५। और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा और बाहर निकल गया ॥ १६। और वह उस का वस्त्र उस के स्वामी के घर आने लों अपने पास रक्खे रही ॥ १७। तब उस ने उस से इस प्रकार की बातें कहीं कि वह इब्री दास जिस को तू हमारे पास ले आया है सो मुझ से ठठोली करने को मेरे पास आया था ॥ १८। और जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी तब वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया ॥ १९। अपनी स्त्री की ये बातें सुनकर कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का ॥ २०। और यूसुफ के स्वामी ने उस को पकड़ाकर एक गुम्मट में जहां राजा के बन्धुए बन्धे रहते थे डलवा दिया सो वह उस गुम्मट में रहने लगा ॥ २१। पर यहोवा यूसुफ के संग रहा और उस पर करुणा किई और गुम्मट के दारोगा से उस पर अनुग्रह की दृष्टि कराई ॥ २२। वरन गुम्मट के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को जो गुम्मट में थे यूसुफ के हाथ में सौंप दिया और जो जो काम वे वहां करते थे उन का करानेहारा वही होता था ॥ २३। गुम्मट के दारोगा के वश में जो कुछ था उस में से उस को कोई वस्तु देखनी न पड़ती थी क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था और जो कुछ वह करता था यहोवा उस को सुफल कर देता था ॥

४०. इन बातों के पीछे मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने स्वामी का कुछ अपराध किया ॥ २। तब फिरौन ने अपने उन दो हाकिमों पर अर्थात् पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान पर क्रोधित हो ३। उन्हें कैद कराके जल्लादों के प्रधान

के घर में के उसी गुम्मट में जहां यूसुफ बन्धुआ था डलवा दिया ॥ ४ । तब जल्लादों के प्रधान ने उन को यूसुफ के हाथ सौंपा और वह उन की टहल करने लगा सो वे कुछ दिन लों बन्दीगृह में रहे ॥ ५ । और मिस्र के राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा जो गुम्मट में बन्धुए थे उन दोनों ने एक ही रात में अपने अपने होनहार के अनुसार[१] स्वप्न देखे ॥ ६ । बिहान को जब यूसुफ उन के पास गया तब उन पर जो दृष्टि किई तो क्या देखा कि वे उदास हैं ॥ ७ । सो उस ने फिरौन के उन हाकिमों से जो उस के साथ उस के स्वामी के घरवाले बन्दीगृह में थे पूछा कि आज तुम्हारे मुंह क्यों सूखे हैं ॥ ८ । उन्हों ने उस से कहा हम दोनों ने स्वप्न देखा है और उन के फल का कोई कहनेहारा नहीं । यूसुफ ने उन से कहा क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है मुझ से अपना अपना स्वप्न बताओ ॥ ९ । तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को यों बताने लगा कि मुझे स्वप्न में क्या देख पड़ा कि मेरे साम्हने एक दाखलता है ॥ १० । और उस दाखलता में तीन डालियां हैं और उस में मानो कलियां लगीं और वह फूली और उस के गुच्छों में दाख लगकर पक गईं ॥ ११ । और फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था सो मैं ने उन दाखों को लेकर फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को फिरौन के हाथ में दिया ॥ १२ । यूसुफ ने उस से कहा इस का फल यह है कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है ॥ १३ । सो तीन दिन के भीतर फिरौन तुझे बढ़ाकर[२] तेरे पद पर फेर ठहराएगा और तू आगे की नाईं फिरौन का पिलानेहारा होकर उस का कटोरा उस के हाथ में फिर दिया करेगा ॥ १४ । सो जब तेरा भला होगा तब मुझे अपने मन में रक्खे रहना और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे छुड़वा देना ॥ १५ । क्योंकि सचमुच मैं इब्रियों के देश से चुराया गया और यहां भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं किया जिस के कारण मैं इस गड़हे में डाला जाऊं ॥ १६ । यह देखकर कि उस स्वप्न का फल अच्छा निकला पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा मैं ने भी स्वप्न देखा है वह यह है कि मानो मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियां हैं ॥ १७ । और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं ॥ १८ । यूसुफ ने कहा इस का फल यह है कि तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है ॥ १९ । सो तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाकर[१] तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरे मांस को खाएंगे ॥ २० । तीसरे दिन जो फिरौन का जन्मदिन था उस ने अपने सब कर्म्मचारियों की जेवनार किई और उन में से पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया[२] ॥ २१ । और पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे का पद फेर दिया सो वह कटोरे को फिरौन के हाथ में देने लगा ॥ २२ । पर पकानेहारों के प्रधान को उस ने टंगवा दिया जैसा कि यूसुफ ने उन के स्वप्नों का फल उन से कहा था ॥ २३ । पर पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रक्खा भूल ही गया ॥

४१. पूरे दो बरस के बीते पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा कि मैं मानो नील नदी[३] के तीर पर खड़ा हूं ॥ २ । और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं ॥ ३ । और क्या देखा कि उन के पीछे और सात गायें जो कुरूप और डांगर हैं नदी से निकली आती हैं और दूसरी गायों के निकट नदी के तीर पर खड़ी हुईं ॥ ४ । तब मानो इन कुरूप और डांगर गायों ने उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा डाला । तब फिरौन जाग उठा ॥ ५ । फिर वह सो गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठी में से सात मोटी और

(१) मूल में अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार ।
(२) मूल में तेरा सिर उठाके ।

(१) मूल में तेरा सिर तुझ पर से उठाके । (२) मूल में दोनों के सिर उठाये । (३) मूल में योर् ।

अच्छी अच्छी बालें निकली आती हैं ॥ ६। और क्या देखा कि उन के पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकली आती हैं ॥ ७ । और मानो इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया । तब फ़िरौन जागा और यह स्वप्न ही था ॥ ८ । भोर को फ़िरौन का मन व्याकुल हुआ और उस ने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों को बुलवा भेजा और उन को अपने स्वप्न को बताये पर उन में से कोई उन का फल फ़िरौन से न कह सका ॥ ९ । तब पिलानेहारों का प्रधान फ़िरौन से बोल उठा कि मुझे आज के दिन अपने अपराध चेत आते हैं ॥ १० । जब फ़िरौन अपने दासों से क्रोधित हुआ था और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घरवाले बन्दीगृह में डाल दिया था, ११ । तब हम दोनों ने एक ही रात में अपने अपने होनहार के अनुसार[1] स्वप्न देखा ॥ १२ । और वहां हमारे साथ एक इब्री जवान था जो जल्लादों के प्रधान का दास था सो हम ने उस को बताया और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा हम में से एक एक के स्वप्न का फल उस ने बता दिया ॥ १३ । और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा वैसा वैसा निकला भी अर्थात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला पर वह टांगा गया ॥ १४ । तब फ़िरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और वह झटपट गड़हे में से निकाला गया और बाल मुंड़वा वस्त्र बदलके फ़िरौन के पास आया ॥ १५ । फ़िरौन ने यूसुफ से कहा मैं ने एक स्वप्न देखा और उस के फल का कहनेहारा कोई नहीं और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न सुनते ही उस का फल कह सकता है ॥ १६ । यूसुफ ने फ़िरौन से कहा मैं तो कुछ नहीं कर सकता[2] परमेश्वर ही फ़िरौन के लिये मंगल का बखान कराए ॥ १७ । सो फ़िरौन यूसुफ से कहने लगा मैं ने अपने स्वप्न में क्या देखा कि मानो मैं नील नदी के तीर पर खड़ा हूं ॥ १८ । फिर क्या देखा कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं ॥ १९ । फिर क्या देखा कि उन के पीछे सात और गायें निकली आती हैं जो दुबली और बहुत कुरूप और डांगर हैं मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं ॥ २० । और मानो इन डांगर और कुडौल गायों ने उन पहिली सातों मोटी मोटी गायों को खा डाला ॥ २१ । और जब वे उन को खा गई थीं तब यह समझ न पड़ा कि वे उन को खा गई हैं क्योंकि उन का रूप पहिले के बराबर बुरा ही रहा तब मैं जाग उठा ॥ २२ । फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा कि मानो एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकली आती हैं ॥ २३ । फिर क्या देखता हूं कि उन के पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकलती हैं ॥ २४ । और मानो इन पतली बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया । इसे मैं ने ज्योतिषियों को बताया पर इस का समझानेहारा कोई नहीं मिला ॥ २५ । तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा फ़िरौन का स्वप्न एक ही है परमेश्वर जो काम किया चाहता है उस को उस ने फ़िरौन को जताया है ॥ २६ । वे सात अच्छी अच्छी गायें सात बरस हैं और वे सात अच्छी अच्छी बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है ॥ २७ । फिर उन के पीछे जो डांगर और कुडौल गायें निकलीं और जो सात छूछी और पुरवाई से मुर्झाई हुई बालें हुईं वे अकाल के सात बरस होंगे ॥ २८ । यह वही बात है जो मैं फ़िरौन से कह चुका हूं कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने फ़िरौन को दिखाया है ॥ २९ । सुन सारे मिस्र देश में बड़े सुकाल के सात बरस आनेहारे हैं ॥ ३० । और उन के पीछे अकाल के सात बरस आएंगे और मिस्र देश में वह सारा सुकाल बिसर जाएगा और अकाल से देश नाश होगा ॥ ३१ । और उस अकाल के कारण जो पीछे आएगा यह सुकाल देश में स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भारी

(१) मूल में अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार ।

(२) मूल में मेरे बिना ।

होगा ॥ ३२ । और फ़िरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा इस का भेद यह है कि यह बात परमेश्वर की ओर से स्थिर किई हुई है और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा ॥ ३३ । सो अब फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमान पुरुष की खोज करके उसे मिस्र देश पर प्रधान ठहराए ॥ ३४ । फ़िरौन यह करके देश पर अधिकारियों को ठहराए और जब लों सुकाल के सात बरस रहें तब लों मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे ॥ ३५ । वे इन अच्छे बरसों में सब प्रकार की भोजनवस्तु बटोर बटोरकर नगर नगर में अन्न की राशियां भोजन के लिये फ़िरौन के बश में करके उन की रक्षा करें ॥ ३६ । और वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात बरसों के लिये जो मिस्र देश में आएंगे देश के भोजन के निमित्त रक्खी रहे जिस से देश उस अकाल से सत्यानाश न हो ॥ ३७ । यह बात फ़िरौन और उस के सारे कर्म्मचारियों को अच्छी लगी ॥ ३८ । सो फ़िरौन ने अपने कर्म्मचारियों से कहा इस पुरुष के समान क्या और कोई ऐसा मिलेगा कि परमेश्वर का आत्मा उस में रहता हो ॥ ३९ । फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है और तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं, ४० । इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी हो और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी केवल राजगद्दी के विषय में तुझ से बड़ा ठहरूंगा ॥ ४१ । फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा सुन मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहरा देता हूं ॥ ४२ । तब फ़िरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दिई और उस को सूक्ष्म सनी के वस्त्र पहिनवा दिये और उस के गले में सोने की गोप डाल दिई, ४३ । और उस को अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया और लोग उस के आगे आगे यह पुकारते चले कि घुटने टेक घुटने टेक[1] सो उस ने उस को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहराया ॥ ४४ । फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा फ़िरौन तो मैं हूं और सारे मिस्र देश में कोई तेरी आज्ञा बिना हाथ पांव न हिलाएगा ॥ ४५ । और फ़िरौन ने यूसुफ का नाम सापनत्पानेह[1] रक्खा और ओन् नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत् से उस का ब्याह करा दिया । और यूसुफ निकलकर मिस्र देश में घूमने फिरने लगा ॥ ४६ । जब यूसुफ मिस्र के राजा फ़िरौन के सन्मुख खड़ा हुआ तब वह तीस बरस का था सो वह फ़िरौन के सन्मुख से निकलकर मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा ॥ ४७ । सुकाल के सातों बरसों में भूमि बहुतायत से अन्न[2] उपजाती रही ॥ ४८ । और यूसुफ उन सातों बरसों में सब प्रकार की भोजनवस्तुएं जो मिस्र देश में होती थीं बटोर बटोरके नगरों में रखता गया एक एक नगर की चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में संचय करता गया ॥ ४९ । सो यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रक्खा यहां लों कि उस ने उन का गिनना छोड़ दिया क्योंकि वे असंख्य हो गईं ॥ ५० । अकाल के प्रथम बरस के आने से पहिले यूसुफ के दो पुत्र ओन् के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत् से जन्मे ॥ ५१ । और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे[3] रक्खा कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश और मेरे पिता का सारा घराना बिसरवा दिया है ॥ ५२ । और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एप्रैम्[4] रक्खा कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है ॥ ५३ । और मिस्र देश के सुकाल के वे सात बरस निपट गये ॥ ५४ । और अकाल के सात बरस यूसुफ के कहे के अनुसार आने लगे और सब देशों में अकाल पड़ा पर सारे मिस्र देश में अन्न था ॥ ५५ । जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी मांगने लगी और वह सब मिस्रियों से कहा करता था यूसुफ के पास

(१) मूल में. अब्रेक् । इस मिस्री शब्द का अर्थ निश्चित नहीं ।

(१) इस मिस्री शब्द के अर्थ में सन्देह है । (२) मूल में मुट्ठी भर भरके । (३) अर्थात् बिसरवानेहारा । (४) अर्थात् अत्यन्त उपजाऊ ।

जाओ और जो कुछ वह तुम से कहे वही करो॥ ५६। सो जब अकाल सारी पृथिवी पर फैल गया और मिस्र देश में भारी हो गया तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा॥ ५७। सो सारी पृथिवी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने को यूसुफ के पास आने लगे क्योंकि सारी पृथिवी पर भारी अकाल था॥

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का वर्णन)

४२. जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने पुत्रों से कहा तुम एक दूसरे का मुंह क्यों ताकते हो॥ २। फिर उस ने कहा मैं ने तो सुना है कि मिस्र में अन्न है सो तुम लोग वहां जाकर हमारे लिये अन्न मोल ले आओ कि हम मरें नहीं जीते रहें॥ ३। सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गये॥ ४। पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन् को याकूब ने यह सोचकर भाइयों के साथ भेजना नकारा कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई विपत्ति पड़े॥ ५। सो और और आनेहारों की भान्ति इस्राएल् के पुत्र भी अन्न मोल लेने आये क्योंकि कनान् देश में भी अकाल था॥ ६। यूसुफ तो मिस्र देश का अधिकारी था और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था सो जब यूसुफ के भाई आये तब भूमि पर मुंह के बल गिरके उस को दण्डवत् किया॥ ७। उन को देखकर यूसुफ ने पहिचान तो लिया पर उन के साम्हने अनजान बनके कठोरता के साथ उन से पूछा तुम कहां से आते हो उन्हों ने कहा हम तो कनान् देश से अन्न मोल लेने को आये हैं॥ ८। यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचान लिया पर उन्हों ने उस को न पहिचाना॥ ९। सो यूसुफ अपने वे स्वप्न स्मरण करके जो उस ने उन के विषय देखे थे उन से कहने लगा तुम भेदिये हो इस देश की दुर्दशा[1] को देखने के लिये आये हो॥ १०। उन्हों ने उस से कहा नहीं नहीं हे प्रभु तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने को आये हैं॥ ११। हम सब एक ही पुरुष के पुत्र हैं हम सीधे मनुष्य हैं तेरे दास भेदिये नहीं॥ १२। उस ने उन से कहा नहीं नहीं तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आये हो॥ १३। उन्हों ने कहा हम तेरे दास बारह भाई हैं और कनान् देशवासी एक ही पुरुष के पुत्र हैं और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है और एक रहा नहीं॥ १४। यूसुफ ने उन से कहा मैं ने जो तुम से कहा कि तुम भेदिये हो, १५। सो इस रीति से तुम परखे जाओगे फ़िरौन के जीवन की सों जब लों तुम्हारा छोटा भाई यहां न आए तब लों तुम यहां से न निकलने पाओगे॥ १६। सो अपने में से एक को भेज दो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम लोग बन्धुआई में रहोगे इस से तुम्हारी बातें परखी जाएंगी कि तुम में सच्चाई है कि नहीं न होने से फ़िरौन के जीवन की सों निश्चय तुम भेदिये हो ठहरोगे॥ १७। तब उस ने उन को तीन दिन लों बन्दीगृह में रक्खा॥ १८। तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा एक काम करो तब जीते रहोगे क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं॥ १९। यदि तुम सीधे मनुष्य हो तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे और तुम अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ॥ २०। और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ यों तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे। सो उन्हों ने वैसा ही किया॥ २१। तब उन्हों ने आपस में कहा निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं कि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती किई तब हम ने यह देखने पर भी कि उस का जीव कैसे संकट में पड़ा है उस की न सुनी इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं॥ २२। रूबेन् ने उन से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत हो और तुम ने न सुना सो देखो अब उस के लोहू का पलटा लिया जाता है॥ २३। यूसुफ की और उन की बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी इस से उन को मालूम न था कि

(१) मूल में नंगेपन।

वह हमारी समझता है ॥ २४। और वह उन के पास से हटकर रोने लगा फिर उन के पास लौटकर और उन से बातचीत करके उन में से शिमोन् को निकाला और उन के साम्हने बन्धुआ रक्खा ॥ २५। तब यूसुफ ने आज्ञा दिई कि उन के बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में उस के रुपैया को भी रख दो और उन को मार्ग के लिये सीधा दो सो उन के साथ ऐसा ही किया गया ॥ २६। तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लादकर वहां से चल दिये ॥ २७। सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिये अपना बोरा खोला तब उस का रुपैया बोरे के मोहड़े पर रक्खा हुआ देख पड़ा ॥ २८। तब उस ने अपने भाइयों से कहा मेरा रुपैया तो फेर दिया गया है देखो वह मेरे बोरे में है तब उन के जी में जी न रहा और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे और बोले कि परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है ॥ २९। सो वे कनान् देश में अपने पिता याकूब के पास आये और अपना सारा वृत्तान्त उस से यों वर्णन किया कि, ३०। जो पुरुष उस देश का स्वामी है उस ने हम से कठोरता के साथ बातें किईं और हम को देश के भेदिये ठहराया ॥ ३१। तब हम ने उस से कहा हम सीधे लोग हैं भेदिये नहीं ॥ ३२। हम बारह भाई एक ही पुरुष के[1] पुत्र हैं एक तो रहा नहीं और छोटा इस समय कनान् देश में हमारे पिता के पास है ॥ ३३। तब उस पुरुष ने जो उस देश का स्वामी है हम से कहा इसी से मैं जान लूंगा कि तुम सीधे मनुष्य हो अपने में से एक को मेरे पास छोड़के अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये कुछ ले जाओ ॥ ३४। और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं सीधे लोग हो और तब मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें फेर दूंगा और तुम इस देश में लेन देन करने पाओगे ॥ ३५। फिर जब वे अपने अपने बोरे से अन्न निकालने लगे तब क्या देखा कि एक एक जन के रुपैया की थैली उसी के बोरे में रक्खी है सो रुपैया की थैलियों को देखकर वे और उन का पिता डर गये ॥ ३६। फिर उन के पिता याकूब ने उन से कहा मुझ को तुम ने निर्वंश किया देखो यूसुफ नहीं रहा और शिमोन् भी नहीं आया और अब तुम बिन्यामीन् को भी ले जाने चाहते हो ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं ॥ ३७। रूबेन् ने अपने पिता से कहा यदि मैं उस को तेरे पास न लाऊं तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना तू उस को मेरे हाथ में सौंप तो दे मैं उसे तेरे पास फिर पहुंचा दूंगा ॥ ३८। उस ने कहा मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा क्योंकि उस का भाई मर गया और वह अकेला रह गया सो जिस मार्ग से तुम जाओगे उस में यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा[1] ॥

(१) मूल में अपने पिता के।

(१) मूल में तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में शोक के साथ उतारोगे।

४३. और अकाल देश में और भारी हो गया ॥ २। सो जब वह अन्न जो वे मिस्र से ले आये चुक गया तब उन के पिता ने उन से कहा फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ ॥ ३। तब यहूदा ने उस से कहा उस पुरुष ने हम से चिता चिताकर कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे ॥ ४। सो यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे तब तो हम जाकर तेरे लिये भोजनवस्तु मोल ले आएंगे ॥ ५। पर यदि तू उस को न भेजे तो हम न जाएंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न हो तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे ॥ ६। तब इस्राएल् ने कहा तुम ने उस पुरुष को यह बताकर कि हमारे एक और भाई है क्यों मुझ से बुरा बर्ताव किया ॥ ७। उन्हों ने कहा जब उस पुरुष ने हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा को इस रीति पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है तब

हम ने इन प्रश्नों के अनुसार उस से वर्णन किया फिर क्या हम कुछ भी जानते थे कि वह कहेगा अपने भाई को यहां ले आओ ॥ ८ । फिर यहूदा ने अपने पिता इस्राएल् से कहा उस लड़के को मेरे संग भेज दे कि हम चले जाएं इस से हम और तू और हमारे बालबच्चे मरने न पाएंगे जीते रहेंगे ॥ ९ । मैं उस का जामिन होता हूं मेरे ही हाथ से तू उस को फेर लेना यदि मैं उस को तेरे पास पहुंचाकर साम्हने न खड़ा कर दूं तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा ॥ १० । यदि हम लोग विलम्ब न करते तो अब लों दूसरी बार लौटकर आ चुकते ॥ ११ । तब उन के पिता इस्राएल् ने उन से कहा यदि सचमुच ऐसी ही बात है तो यह करो इस देश की उत्तम उत्तम वस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ जैसे थोड़ा सा बलसान और थोड़ा सा मधु और कुछ सुगन्ध द्रव्य और गन्धरस पिस्ते और बादाम ॥ १२ । फिर अपने अपने साथ दूना रुपैया ले जाओ जो रुपैया तुम्हारे बोरों के मोहड़े पर फेर दिया गया उस को भी लेते जाओ क्या जानिये यह भूल से हुआ हो ॥ १३ । और अपने भाई को भी संग लेकर उस पुरुष के पास फिर जाओ, १४ । और सर्वशक्तिमान् ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन् को भी आने दे और मैं निर्वंश हुआ तो हुआ ॥

१५ । तब उन मनुष्यों ने वह भेंट और दूना रुपैया और बिन्यामीन् को भी संग लेकर चल दिये और मिस्र में पहुंचकर यूसुफ के साम्हने खड़े हुए ॥ १६ । उन के साथ बिन्यामीन् को देखकर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों को घर में पहुंचा और पशु मारके भोजन तैयार कर क्योंकि वे लोग दो पहर को मेरे संग भोजन करेंगे ॥ १७ । सो वह जन यूसुफ के कहने के अनुसार करके उन पुरुषों को यूसुफ के घर में ले चला ॥ १८ । वे जो यूसुफ के घर को पहुंचाये गये इस से डरकर कहने लगे जो रुपैया पहिली बार हमारे बोरों में फेर दिया गया उसी के कारण हम भीतर पहुंचाये जाते हैं कि वह पुरुष हम पर टूट पड़े और दबाकर अपने दास बनाए और हमारे गदहों को छीन ले ॥ १९ । सो वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट घर के द्वार पर जाकर यों कहने लगे कि, २० । हे हमारे प्रभु हम पहिली बार अन्न मोल लेने को आये थे, २१ । और जब हम ने सराय में पहुंचकर अपने बोरों को खोला तो क्या देखा कि एक एक जन का पूरा रुपैया उस के बोरे के मोहड़े पर रक्खा है सो हम उस को अपने साथ फिर लेते आये हैं ॥ २२ । और दूसरा रुपैया भी भोजनवस्तु मोल लेने को ले आये हैं हम नहीं जानते कि हमारा रुपैया हमारे बोरों में किस ने रख दिया था ॥ २३ । उस ने कहा तुम्हारा कुशल हो मत डरो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा तुम्हारा रुपैया मुझ को तो मिल गया था और उस ने शिमोन् को निकालकर उन के संग कर दिया ॥ २४ । तब उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में ले जाकर जल दिया और उन्हों ने अपने पांवों को धोया और उस ने उन के गदहों के लिये चारा दिया ॥ २५ । तब यह सुनके कि आज हम को यहीं भोजन करना होगा उन्हों ने यूसुफ के आने के समय लों अर्थात् दो पहर लों उस भेंट को संजोय रक्खा ॥ २६ । जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को जो उन के हाथ में थी उस के सम्मुख घर में ले गये और भूमि पर गिरके उस को दण्डवत् किया ॥ २७ । उस ने उन का कुशल पूछा और कहा क्या तुम्हारा वह बूढ़ा पिता जिस की तुम ने चर्चा किई थी कुशल से है क्या वह अब लों जीता है ॥ २८ । उन्हों ने कहा हां तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब लों जीता है तब उन्हों ने सिर झुकाकर फिर दण्डवत् किई ॥ २९ । तब उस ने आंखें उठाकर और अपने सगे भाई बिन्यामीन् को देखकर पूछा क्या तुम्हारा वह छोटा भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर उस ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे ॥ ३० । तब अपने भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और

यह सोचकर कि मैं कहां रोऊं यूसुफ फुर्ती से अपनी कोठरी में गया और वहां रो दिया ॥ ३१। फिर अपना मुंह धोकर निकल आया और अपने को रोककर कहा भोजन परोसो ॥ ३२। सो उन्हों ने उस के लिये तो अलग और भाइयों के लिये अलग और जो मिस्री उस के संग खाते थे उन के लिये अलग परोसा इस लिये कि मिस्री इब्रियों के साथ भोजन नहीं कर सकते वरन मिस्री ऐसा करने से घिन भी करते हैं ॥ ३३। सो यूसुफ के भाई उस के साम्हने बड़े बड़े पहिले और छोटे छोटे पीछे अपनी अपनी अवस्था के अनुसार क्रम से बैठाये गये यह देख वे विस्मित होकर एक दूसरे की ओर ताकने लगे ॥ ३४। तब यूसुफ अपने साम्हने से भोजनवस्तुएं उठा उठाके उन के पास भेजने लगा और बिन्यामीन् को अपने भाइयों से अधिक पचगुणी भोजनवस्तु मिली। और उन्हों ने उस के संग मनमाना पिया ॥

४४. तब उस ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दिई कि इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे और एक एक जन के रुपैये को उस के बोरे के मोहड़े पर रख दे ॥ २। और मेरा चान्दी का कटोरा छोटे के बोरे के मोहड़े पर उस के अन्न के रुपैये के साथ रख दे। यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उस ने किया ॥ ३। बिहान को भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत बिदा किये गये ॥ ४। वे नगर से निकले ही थे और दूर न जाने पाये थे कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों का पीछा कर और उन को पाकर उन से कह कि तुम ने भलाई की सन्ती बुराई क्यों किई है ॥ ५। क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है और जिस से वह शकुन भी विचारा करता है तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया ॥ ६। तब उस ने उन्हें जा लिया और ऐसी ही बातें उन से कहीं ॥ ७। उन्हों ने उस से कहा हे हमारे प्रभु तू ऐसी बातें क्यों कहता है ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे ॥ ८। देख जो रुपैया हमारे बोरों के मोहड़े पर निकला था जब हम ने उस को कनान् देश से ले आकर तुझे फेर दिया तब भला तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चांदी वा सोने की वस्तु क्योंकर चुरा सकते हैं ॥ ९। तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले वह मार डाला जाए और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएं ॥ १०। उस ने कहा तुम्हारा ही कहना सही जिस के पास वह निकले सो मेरा दास होगा और तुम लोग निरपराध ठहरोगे ॥ ११। इस पर वे फुर्ती से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे ॥ १२। तब वह ढूंढ़ने लगा और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे लों खोज किई और कटोरा बिन्यामीन् के बोरे में मिला ॥ १३। तब उन्हों ने अपने अपने वस्त्र फाड़े और अपना अपना गदहा लादकर नगर को लौट गये ॥ १४। तब यहूदा और उस के भाई यूसुफ के घर पर पहुंचे और यूसुफ वहीं था सो वे उस के साम्हने भूमि पर गिरे ॥ १५। यूसुफ ने उन से कहा तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है क्या तुम न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है ॥ १६। यहूदा ने कहा हम लोग अपने प्रभु से क्या कहें हम क्या कहकर अपने को निर्दोष ठहराएं परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म्म को पकड़ लिया है हम और जिस के पास कटोरा निकला वह भी हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं ॥ १७। उस ने कहा ऐसा करना मुझ से दूर रहे जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ ॥

१८। तब यहूदा उस के पास जाकर कहने लगा हे मेरे प्रभु तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के तू तो फिरौन् के तुल्य है ॥ १९। मेरे प्रभु ने अपने दासों से पूछा था कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है ॥ २०। और हम ने अपने प्रभु से कहा हां हमारे बूढ़ा पिता तो है और उस के बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक भी है और उस का भाई मर गया सो वह अपनी माता का अकेला रह गया और

उस का पिता उस से स्नेह रखता है ॥ २१ । तब तू ने अपने दासों से कहा था कि उस को मेरे पास ले आओ कि मैं उस को देखूं ॥ २२ । तब हम ने अपने प्रभु से कहा था कि वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता नहीं तो उस का पिता मर जाएगा ॥ २३ । और तू ने अपने दासों से कहा यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए तो तुम मेरे सन्मुख फिर आने न पाओगे ॥ २४ । सो जब हम अपने पिता तेरे दास के पास गये तब हम ने उस से अपने प्रभु की बातें कहीं ॥ २५ । तब हमारे पिता ने कहा फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ ॥ २६ । हम ने कहा हम नहीं जा सकते हां यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग रहे तब हम जाएंगे क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग न रहे तो हम उस पुरुष के सन्मुख न जाने पाएंगे ॥ २७ । तब तेरे दास मेरे पिता ने हम से कहा तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री दो पुत्र जनी ॥ २८ । और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैं ने निश्चय कर लिया कि वह फाड़ डाला गया होगा और तब से मैं ने उस का मुंह न देख पाया ॥ २९ । सो यदि तुम इस को भी मेरी आंख की ओट ले जाओ और कोई विपत्ति इस पर पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा[१] ॥ ३० । सो जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुंचूं और यह लड़का संग न रहे तब उस का प्राण जो इसी पर अटका रहता है, ३१ । इस कारण यह देखके कि लड़का नहीं है वह तुरन्त ही मर जाएगा सो तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता जो पक्के बालों की अवस्था का है सो शोक के साथ अधोलोक में उतर जाएगा[२] ॥ ३२ । फिर तेरा दास अपने पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन हुआ है कि यदि मैं इस को तेरे पास न पहुंचा दूं तो सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा ॥ ३३ । सो अब तेरा दास इस लड़के की सन्ती अपने प्रभु का दास होकर रहने पाए और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने पाए ॥ ३४ । क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा सो मुझे देखना पड़े ॥

(१) मूल में तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में दुःख के साथ उतारोगे । (२) मूल में तेरे दास हमारे पिता के पक्के बाल शोक के साथ अधोलोक में उतारेंगे ।

४५. तब यूसुफ उन सब के साम्हने जो उस के आस पास खड़े थे अपने को और रोक न सका और पुकारके कहा मेरे आस पास से सब लोगों को बाहर कर दो । भाइयों के साम्हने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा ॥ २ । तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा और मिस्रियों ने सुना और फिरौन के घर के लोगों को भी इस का समाचार मिला ॥ ३ । तब यूसुफ अपने भाइयों से कहने लगा मैं यूसुफ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है इस का उत्तर उस के भाई न दे सके क्योंकि वे उस के साम्हने घबरा गये थे ॥ ४ । फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मेरे निकट आओ यह सुनकर वे निकट गये फिर उस ने कहा मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं जिस को तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला था ॥ ५ । अब तुम लोग मत पछताओ और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला इस से उदास मत हो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया ॥ ६ । क्योंकि अब दो बरस से इस देश में अकाल है और अब पांच बरस और ऐसे ही होंगे कि उन में न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा ॥ ७ । सो परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा कि तुम पृथिवी पर बचे रहो और तुम्हारे प्राण बचने से तुम्हारा वंश बढ़े ॥ ८ । इस रीति अब मुझ को यहां पर भेजनेहारे तुम नहीं परमेश्वर ही ठहरा और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा और उस के सारे घर का स्वामी और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है ॥ ९ । सो

शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो तेरा पुत्र यूसुफ यों कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है सो तू मेरे पास बिना बिलम्ब किये चला आ॥ १०। और तेरा निवास गोशेन् देश में होगा और तू बेटे पोतों भेड़ बकरियों गाय बैलों और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा॥ ११। और अकाल के जो पांच बरस और होंगे उन में मैं वहीं तेरा पालन पोषण करूंगा ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना वरन जितने तेरे हैं सो भूखों मरें[1]॥ १२। और तुम अपनी आंखों से देखते हो और मेरा भाई बिन्यामीन् भी अपनी आंखों से देखता है कि जो हम से बातें कर रहा है सो यूसुफ है॥ १३। और तुम मेरे सब विभव का जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है उस सब का मेरे पिता से वर्णन करना और वेग मेरे पिता को यहां ले आना॥ १४। और वह अपने भाई बिन्यामीन् के गले में लिपटकर रोया और बिन्यामीन् भी उस के गले में लिपटकर रोया॥ १५। तब वह अपने सब भाइयों को चूमकर उन से मिलकर रोया और इस के पीछे उस के भाई उस से बातें करने लगे॥

१६। इस बात की चर्चा कि यूसुफ के भाई आये हैं फिरौन के भवन तक पहुंच गई और इस से फिरौन और उस के कर्म्मचारी प्रसन्न हुए॥ १७। सो फिरौन ने यूसुफ से कहा अपने भाइयों से कह कि एक काम करो अपने पशुओं को लादकर कनान् देश में चले जाओ॥ १८। और अपने पिता और अपने अपने घर के लोगों को लेकर मेरे पास आओ और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें दूंगा और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे॥ १९। और तुझे आज्ञा मिली है, तुम एक काम करो मिस्र देश से अपने बालबच्चों और स्त्रियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और अपने पिता को ले आओ॥ २०। और अपनी सामग्री का मोह न करना क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है सो तुम्हारा है॥

(१) मूल में, निर्धन हो जाय।

२१। और इस्राएल् के पुत्रों ने वैसा ही किया। और यूसुफ ने फिरौन की मानके उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के लिये सीधा भी दिया॥ २२। उन में से एक एक जन को तो उस ने एक एक जोड़ा वस्त्र दिया और बिन्यामीन् को तीन सौ रूपे के टुकड़े और पांच जोड़े वस्त्र दिये॥ २३। और अपने पिता के पास उस ने जो भेजा वह यह है अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे और अन्न और रोटी और उस के पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से लदी हुई दस गदहियां॥ २४। और उस ने अपने भाइयों को बिदा किया और वे चल दिये और उस ने उन से कहा मार्ग में कहीं झगड़ा न करना॥ २५। मिस्र से चलकर वे कनान् देश में अपने पिता याकूब के पास पहुंचे, २६। और उस से यह वर्णन किया कि यूसुफ अब लों जीता है और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है पर उस ने उन की प्रतीति न किई और वह अपने आपे में न रहा॥ २७। तब उन्हों ने अपने पिता याकूब से यूसुफ की सारी बातें जो उस ने उन से कही थीं कह दिईं और जब उस ने उन गाड़ियों को देखा जो यूसुफ ने उस के ले आने के लिये भेजीं तब उस का चित्त स्थिर हो गया॥ २८। और इस्राएल् ने कहा बस मेरा पुत्र यूसुफ अब लों जीता है मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाकर उस को देखूंगा॥

(याकूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का वर्णन)

४६. तब इस्राएल् अपना सब कुछ कूच करके बेर्शेबा को गया और वहां अपने पिता इस्हाक् के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाये॥ २। तब परमेश्वर ने इस्राएल् से रात के दर्शन में कहा हे याकूब हे याकूब उस ने कहा क्या आज्ञा[1]॥ ३। उस ने कहा मैं ईश्वर तेरे पिता का परमेश्वर हूं तू मिस्र में जाने से मत डर क्योंकि मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति उपजाऊंगा॥ ४। मैं

(१) मूल में मुझे देख।

तेरे संग संग मिस्र को चलता हूं और मैं तुझे वहां से फिर निश्चय ले आऊंगा और यूसुफ अपना हाथ तेरी आंखों पर लगाएगा ॥ ५। तब याकूब बेर्शेबा से चला और इस्राएल के पुत्र अपने पिता याकूब और अपने बालबच्चों और स्त्रियों को उन गाड़ियों पर जो फ़िरौन ने उन के ले आने को भेजी थीं चढ़ाकर ले चले ॥ ६। और वे अपनी भेड़ बकरी गाय बैल और कनान् देश में अपने बटोरे हुए सारे धन को लेकर मिस्र में आये ॥ ७। और याकूब अपने बेटे बेटियां पोते पोतियां निदान अपने वंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया ॥

८। याकूब के साथ जो इस्राएली अर्थात् उस के बेटे पोते आदि मिस्र में आये उन के नाम ये हैं याकूब का जेठा तो रूबेन् था ॥ ९। और रूबेन् के पुत्र हनोक् पल्लू हेस्रोन् और कर्म्मी थे ॥ १०। और शिमोन् के पुत्र यमूएल् यामीन् ओहद् याकीन् सोहर् और एक कनानी स्त्री का जना हुआ शाऊल् भी था ॥ ११। और लेवी के पुत्र गेर्शोन् कहात् और मरारी थे ॥ १२। और यहूदा के एर् ओनान् शेला पेरेस् और जेरह् नाम पुत्र हुए तो थे पर एर् और ओनान् कनान् देश में मर गये थे और पेरेस् के पुत्र हेस्रोन् और हामूल् थे ॥ १३। और इस्साकार् के पुत्र तोला पुव्वा योब् और शिम्रोन् थे ॥ १४। और जबूलून् के पुत्र सेरेद् एलोन् और यह्लेल् थे ॥ १५। लेआ के पुत्र जिन्हें वह याकूब से पद्दनराम् में जनी उन के बेटे पोते ये ही थे और इन से अधिक वह उस की जन्माई एक बेटी दीना को भी जनी यहां लों तो याकूब के सब वंशवाले[1] तेंतीस प्राणी हुए ॥ १६। फिर गाद् के पुत्र सिप्योन् हाग्गी शूनी एस्बोन् एरी अरोदी और अरेली थे ॥ १७। और आशेर् के पुत्र यिम्ना यिश्वा यिश्वी और बरीआ थे और उन की बहिन सेरह् थी और बरीआ के पुत्र हेबेर् और मल्कीएल् थे ॥ १८। जिल्पा जिसे लाबान् ने अपनी बेटी लेआ को दिया उस के बेटे पोते आदि ये ही थे सो उस के द्वारा याकूब के सोलह प्राणी जन्मे ॥

(१) मूल में. बेटे बेटियां।

१९। फिर याकूब की स्त्री राहेल् के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन् थे ॥ २०। और मिस्र देश में ओन् के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत् के जने यूसुफ के ये पुत्र जन्मे अर्थात् मनश्शे और एप्रैम् ॥ २१। और बिन्यामीन् के पुत्र बेला बेकेर् अश्बेल् गेरा नामान् एही रोश् मुप्पीम् हुप्पीम् और आर्द् थे ॥ २२। राहेल् के पुत्र जिन्हें वह याकूब से जनी उन के ये ही पुत्र थे उस के ये सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए ॥ २३। फिर दान् का पुत्र हूशीम् था ॥ २४। और नप्ताली के पुत्र यहसेल् गूनी येसेर् और शिल्लेम् थे ॥ २५। बिल्हा जिसे लाबान् ने अपनी बेटी राहेल् को दिया उस के बेटे पोते ये ही हैं उस के द्वारा याकूब के वंश में सात प्राणी हुए ॥ २६। याकूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्र में आये वे उस की बहुओं को छोड़ सब मिलकर छियासठ प्राणी हुए ॥ २७। और यूसुफ के पुत्र जो मिस्र में उस के जन्मे सो दो प्राणी थे सो याकूब के घराने के जो प्राणी मिस्र में आये सो सब मिलकर सत्तर हुए ॥

२८। फिर उस ने यहूदा को अपने आगे यूसुफ के पास भेज दिया कि वह उस को गोशेन् का मार्ग दिखाए सो वे गोशेन् देश में आये ॥ २९। तब यूसुफ अपना रथ जुतवाकर अपने पिता इस्राएल् से भेंट करने के लिये गोशेन् देश को गया और उस से भेंट करके उस के गले में लिपटा और कुछ देर लों उस के गले में लिपटा हुआ रोता रहा ॥ ३०। तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूं क्योंकि तुझ जीते जागते का मुंह देख चुका ॥ ३१। तब यूसुफ ने अपने भाइयों से और अपने पिता के घराने से कहा मैं जाकर फ़िरौन को यह कहकर समाचार दूंगा कि मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के लोग जो कनान् देश में रहते थे सो मेरे पास आ गये हैं ॥ ३२। और वे लोग चरवाहे हैं क्योंकि वे पशुओं को पालते आये हैं सो वे अपनी भेड़ बकरी गाय बैल और जो कुछ उन का है सब ले आये हैं ॥ ३३। जब फ़िरौन तुम को बुलाके पूछे कि तुम्हारा उद्यम क्या है, ३४। तो कहना कि तेरे दास लड़कपन से लेकर आज लों पशुओं को पालते आये

हैं वरन हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे। इस से तुम गोशेन् देश में रहोगे क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घिन करते हैं॥

४७. तब यूसुफ ने फिरौन के पास जाकर यह कहकर समाचार दिया कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की भेड़ बकरियां गाय बैल और जो कुछ उन का है सब कनान् देश से आ गया है और अभी तो वे गोशेन् देश में हैं॥ २। फिर उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेकर फिरौन के साम्हने खड़े कर दिये॥ ३। फिरौन ने उस के भाइयों से पूछा कि तुम्हारा उद्यम क्या है उन्हों ने फिरौन से कहा तेरे दास चरवाहे हैं और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे॥ ४। फिर उन्हों ने फिरौन से कहा हम इस देश में परदेशी की भान्ति रहने के लिये आये हैं क्योंकि कनान् देश में भारी अकाल होने के कारण तेरे दासों की भेड़ बकरियों के लिये चराई नहीं रही सो अपने दासों को गोशेन् देश में रहने दे॥ ५। तब फिरौन ने यूसुफ से कहा तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गये हैं, ६। और मिस्र देश तेरे साम्हने पड़ा है इस देश का जो सब से अच्छा भाग हो उस में अपने पिता और भाइयों को बसा दे अर्थात् वे गोशेन् ही देश में रहें और यदि तू जानता हो कि उन में से परिश्रमी पुरुष हैं तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे॥ ७। तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को ले आकर फिरौन के सन्मुख खड़ा किया और याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया॥ ८। तब फिरौन ने याकूब से पूछा तेरी अवस्था कितने दिन की हुई है॥ ९। याकूब ने फिरौन से कहा मैं तो एक सौ तीस बरस परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूं मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे और मेरे बापदादे परदेशी होकर जितने दिन लों जीते रहे उतने दिन का मैं अभी नहीं हुआ॥ १०। और याकूब फिरौन को आशीर्वाद देकर उस के सन्मुख से चला गया॥ ११। तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया और फिरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में अर्थात् रामसेस् नाम देश में भूमि देकर उन को निज कर दिई॥ १२। और यूसुफ अपने पिता का और अपने भाइयों का और पिता के सारे घराने का एक एक के बाल-बच्चों के घराने की गिनती के अनुसार भोजन दिला दिलाकर उन का पालन पोषण करने लगा॥

१३। और उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा क्योंकि अकाल बहुत भारी था और अकाल के कारण मिस्र और कनान् दोनों देश अत्यन्त हार गये॥ १४। और जितना रुपैया मिस्र और कनान् देश में था सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उन के निवासी मोल लेते थे एकट्ठा करके फिरौन के भवन में पहुंचा दिया॥ १५। सो जब मिस्र और कनान् देश का रुपैया चुक गया तब सब मिस्री यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे हम को भोजनवस्तु दे क्या हम रुपैये के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएं॥ १६। यूसुफ ने कहा जो रुपैये न हों तो अपने पशु दे दो और मैं उन की सन्ती तुम्हें खाने को दूंगा॥ १७। तब वे अपने पशु यूसुफ के पास ले आये और यूसुफ उन को घोड़ों भेड़ बकरियों गाय बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा सो उस बरस में वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन देकर उन का पालन पोषण करता रहा॥ १८। वह बरस तो यों कटा तब अगले बरस में उन्हों ने उस के पास आकर कहा हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा रुपैया चुक गया है और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं सो अब हमारे प्रभु के साम्हने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा॥ १९। हम तेरे देखते क्यों मरें और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाए[1] हम को और हमारी भूमि को भोजनवस्तु की सन्ती मोल ले कि हम अपनी भूमि समेत फिरौन के दास हों और हम को बीज दे कि हम मरने न पाएं जीते रहें और भूमि न उजड़े॥ २०। तब यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि को फिरौन के लिये मोल लिया क्योंकि उस कठिन अकाल के

(१) मूल में हम और हमारी भूमि क्यों मरें।

पड़ने से मिस्रियों को अपना अपना खेत बेच डालना पड़ा सो सारी भूमि फिरौन की हो गई॥ २१। और एक सिवाने से लेकर दूसरे सिवाने लों सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती थी उस को उस ने नगरों में ले आकर बसा दिया॥ २२। पर याजकों की भूमि तो उस ने न मोल लिई क्योंकि याजकों के लिये फिरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था और जो नित्य भोजन फिरौन उन को देता था वही वे खाते थे इस कारण उन को अपनी भूमि बेचनी न पड़ी॥ २३। तब यूसुफ ने प्रजा के लोगों से कहा सुनो मैं ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फिरौन के लिये मोल लिया है देखो तुम्हारे लिये यहां बीज है इसे भूमि में बोओ॥ २४। और जो कुछ उपजे उस का पंचमांश फिरौन को देना बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ और अपने अपने बालबच्चों और घर के और लोगों समेत खाया करो॥ २५। उन्हों ने कहा तू ने हम को जिलाय लिया है हमारे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे और हम फिरौन के दास होकर रहेंगे॥ २६। सो यूसुफ ने मिस्र की भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया जो आज के दिन लों चला आता है कि पंचमांश फिरौन को मिला करे केवल याजकों ही की भूमि फिरौन की नहीं हो गई॥ २७। और इस्राएली मिस्र के गोशेन् देश में रहने लगे और उस में की भूमि निज कर लेने लगे और फूले फले और अत्यन्त बढ़ गये॥

(इस्राएल् के आशीर्वादों और मृत्यु का वर्णन)

२८। मिस्र देश में याकूब सतरह बरस जीता रहा सो याकूब की सारी आयु एक सौ सैंतालीस बरस की हुई॥ २९। जब इस्राएल् के मरने का दिन निकट आ गया तब उस ने अपने पुत्र यूसुफ को बुलवाकर कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखकर किरिया खा कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा॥ ३०। जब तू अपने बापदादों के संग सो जाएगा तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जाकर उन्हीं के कबरिस्तान में रक्खूंगा तब यूसुफ ने कहा मैं तेरे वचन के अनुसार करूंगा॥ ३१। फिर उस ने कहा मुझ से किरिया खा सो उस ने उस से किरिया खाई तब इस्राएल् ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाया॥

४८. इन बातों के पीछे किसी ने यूसुफ से कहा सुन तेरा पिता बीमार है तब वह मनश्शे और एप्रैम् नाम अपने दोनों पुत्रों को संग लेकर उस के पास चला॥ २। और किसी ने याकूब को बता दिया कि तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है तब इस्राएल् अपने को सम्भालकर खाट पर बैठ गया॥ ३। और याकूब ने यूसुफ से कहा सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने कनान् देश के लूज़ नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष दिई, ४। और कहा सुन मैं तुझे फुला फलाकर बढ़ाऊंगा और तुझे राज्य राज्य की मण्डली का मूल बनाऊंगा और तेरे पीछे तेरे वंश को यह देश ऐसा दूंगा कि वह सदा लों उस की निज भूमि रहेगी॥ ५। और अब तेरे दोनों पुत्र जो मिस्र में मेरे आने से पहिले जन्मे सो मेरे ही ठहरेंगे अर्थात् जिस रीति रूबेन् और शिमोन् मेरे हैं उसी रीति एप्रैम् और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे, ॥ ६। और उन के पीछे जो सन्तान तू जन्माएगा वह तेरे तो ठहरेंगे पर भाग पाने के समय वे अपने भाइयों ही के वंश में गिने जावेंगे[१]॥ ७। जब मैं पद्दान्[२] से आता था तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल् कनान् देश में मार्ग में मेरे साम्हने मर गई और मैं ने उसे वहीं अर्थात् एप्राता जो बेत्लेहेम् भी कहावता है उसी के मार्ग में मिट्टी दिई॥ ८। तब इस्राएल् को यूसुफ के पुत्र देख पड़े और उस ने पूछा ये कौन हैं॥ ९। यूसुफ ने अपने पिता से कहा ये मेरे पुत्र हैं जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिये हैं उस ने कहा उन को मेरे पास

(१) मूल में भाइयों के नाम पर कहाएंगे। (२) अर्थात् पद्दनराम्।

ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं ॥ १० । इस्राएल् की आंखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं यहां लों कि उसे कम सूझता था सो यूसुफ उन्हें उस के पास ले गया और उस ने उन्हें चूमकर गले लगा लिया ॥ ११ । तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा मैं सोचता न था कि तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा पर देख परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है ॥ १२ । तब यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत् किई ॥ १३ । तब यूसुफ ने उन दोनों को लेकर अर्थात् एप्रैम् को अपने दहिने हाथ से कि वह इस्राएल् के बायें हाथ पड़े और मनश्शे को अपने बायें हाथ से कि वह इस्राएल् के दहिने हाथ पड़े उन्हें उस के पास ले गया ॥ १४ । तब इस्राएल् ने अपना दहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम् के सिर पर जो लहुरा था और अपना बायां हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया उस ने तो जान बूझकर ऐसा किया नहीं तो जेठा मनश्शे ही था ॥ १५ । फिर उस ने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा परमेश्वर जिस के सन्मुख मेरे बापदादे इब्राहीम और इस्हाक् अपने को जानकर[1] चलते थे और वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन लों मेरा चरवाहा बना है, १६ । और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है वही अब इन लड़कों को आशीष दे और ये मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इस्हाक् के कहलायें और पृथिवी में बहुतायत से बढ़ें ॥ १७ । जब यूसुफ ने देखा कि मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम् के सिर पर रक्खा है तब यह बात उस को बुरी लगी सो उस ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया कि एप्रैम् के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे ॥ १८ । और यूसुफ ने अपने पिता से कहा हे पिता ऐसा नहीं क्योंकि जेठा यही है अपना दहिना हाथ इस के सिर पर रख ॥ १९ । उस के पिता ने नकारके कहा हे पुत्र मैं इस बात को भली भांति जानता हूं यद्यपि इस से भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी और यह भी महान् हो जाएगा तौभी इस का छोटा भाई इस से अधिक महान् हो जाएगा और उस के वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी ॥ २० । फिर उस ने उसी दिन यह कहकर उन को आशीर्वाद दिया कि इस्राएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे कि परमेश्वर तुझे एप्रैम् और मनश्शे के समान बना दे और उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम् का नाम लिया ॥ २१ । तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा देख मैं तो मरता हूं परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुंचा देगा ॥ २२ । और मैं तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं जिस को मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है ॥

४९. फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया कि एकट्ठे हो जाओ मैं तुम को बताऊंगा कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या क्या बीतेगा ॥ २ । हे याकूब के पुत्रो एकट्ठे होकर सुनो अपने पिता इस्राएल् की ओर कान लगाओ ।

३ । हे रूबेन् तू मेरा जेठा मेरा बल और मेरे
पौरुष का पहिला फल है
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति का भी उत्तम
भाग तू ही है ।
४ । तू जो जल की नाईं उबलनेहारा है इस
लिये औरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा
क्योंकि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा
तब तू ने उस को अशुद्ध किया वह मेरे बिछौने
पर चढ़ गया ॥
५ । शिमोन् और लेवी तो भाई भाई हैं
उन की तलवारें उपद्रव के हथियार हैं ।
६ । हे मेरे जीव उन के मर्म्म में न पड़
हे मेरी महिमा उन की सभा में मत मिल
क्योंकि उन्हों ने कोप से मनुष्यों को घात किया

(१) मूल में जिस के साम्हने मेरे बापदादे इब्राहीम और इस्हाक् ।

और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलों की खूंच काटी है ॥
७। धिक्कार उन के कोप को जो प्रचण्ड था
और उन के रोष को जो निर्दय था मैं उन्हें याकूब में अलग अलग
और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूंगा ॥
८। हे यहूदा तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे
तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे ॥
९। यहूदा सिंह का डांवरू है
हे मेरे पुत्र तू अहेर करके गुफा में गया है[1]
वह सिंह वा सिंहनी की नाईं दबककर बैठ गया
फिर कौन उस को छेड़ेगा ॥
१०। जब लों शीलो न आए
तब लों न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा
न उस के वंश से[2] व्यवस्था देनेहारा अलग होगा
और राज्य राज्य के लोग उस के अधीन हो जाएंगे ॥
११। वह अपने जवान गदहे को दाखलता में
और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा
उस ने अपने वस्त्र दाखमधु में
और अपना पहिरावा दाखों के रस[3] में धोया है ॥
१२। उस की आंखें दाखमधु से चमकीली और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे ॥
१३। जबूलून् समुद्र के तीर पर वास करेगा वह जहाजों के लिये बन्दर का काम देगा
और उस का परला भाग सीदोन् के निकट पहुंचेगा ॥
१४। इस्साकार् एक बड़ा और बलवन्त गदहा है
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है ॥
१५। उस ने एक विश्रामस्थान देखकर कि अच्छा है और एक देश कि मनोहर है
अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिये झुकाया
और बेगारी में दास का सा काम करने लगा ॥
१६। दान् इस्राएल् का एक गोत्र होकर
अपने जातिभाइयों का न्याय करेगा ॥
१७। दान् मार्ग में का एक सांप
और रास्ते में का एक नाग होगा
जो घोड़े की नली को डंसता है
जिस से उस का सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है ॥
१८। हे यहोवा मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट जोहता आया हूं ॥
१९। गाद् पर एक दल चढ़ाई तो करेगा
पर वह उसी दल की पिछाड़ी पर छापा मारेगा ॥
२०। आशेर् से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा
और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा ॥
२१। नप्ताली एक छूटी हुई हरिणी है
वह सुन्दर बातें बोलता है ॥
२२। यूसुफ फलवन्त लता की एक शाखा[1] है
वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा[1] है
उस की डालियां[2] भीत पर से चढ़कर फैल जाती हैं ।
२३ धनुर्धारियों ने उस को खेदित किया
और उस पर तीर मारे और उस के पीछे पड़े हैं ॥
२४। पर उस का धनुष दृढ़ रहा
और उस की बांह और हाथ
याकूब के उसी शक्तिमान् ईश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए
जिस के पास से वह चरवाहा आएगा जो इस्राएल् का पत्थर भी ठहरेगा ॥
२५। यह तेरे पिता के उस ईश्वर का काम है
जो तेरी सहायता करेगा
उस सर्वशक्तिमान् का जो तुझे
ऊपर से आकाश में की आशीषें

(१) मूल में अहेर से चढ़ गया है। (२) मूल में उस के पैरों के बीच से। (३) मूल में लोहू।

(१) मूल में पुत्र। (२) मूल में बेटियां।

और नीचे से गहिरे जल में की आशीषें
और स्तनों और गर्भ की आशीषें देगा ॥
२६ । तेरे पिता के आशीर्वाद
मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गये हैं
और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं
की नाईं बने रहेंगे
ये यूसुफ के सिर पर
जो अपने भाइयों में से न्यारा हुआ उसी के
चोण्डे पर फलेंगे ॥
२७ । बिन्यामीन् फाड़नेहारा हुण्डार है
सबेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा
और सांझ को लूट बांट लेगा ॥

२८ । इस्राएल् के बारहों गोत्र ये ही हैं और उन के पिता ने जिस जिस वचन से उन को आशीर्वाद दिया सो ये ही हैं एक एक को उस के आशीर्वाद के अनुसार उस ने आशीर्वाद दिया ॥ २९ । तब उस ने यह कहकर उन को आज्ञा दिई कि मैं अपने लोगों के साथ मिलने पर हूं सो मुझे हित्ती एप्रोन् की भूमिवाली गुफा से मेरे बापदादों के साथ मिट्टी देना, ३० । अर्थात् उसी गुफा में जो कनान् देश में मम्रे के साम्हनेवाली मक्पेला की भूमि में है उस भूमि को तो इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन् के हाथ से इसी निमित्त मोल लिया था कि वह कबरिस्तान के लिये उस की निज भूमि हो ॥ ३१ । वहां इब्राहीम और उस की स्त्री सारा को मिट्टी दिई गई और वहीं इसहाक् और उस की स्त्री रिबका को भी मिट्टी दिई गई और वहीं मैं ने लेआ को भी मिट्टी दिई ॥ ३२ । वह भूमि और उस में की गुफा हित्तियों के हाथ से मोल लिई गई ॥ ३३ । यह आज्ञा जब याकूब अपने पुत्रों को दे चुका तब अपने पांव खाट पर समेट प्राण छोड़कर अपने लोगों में जा मिला ॥

५० १ । तब यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिरके रोया और उसे चूमा ॥ २ । और यूसुफ ने उन वैद्यों को जो उस के सेवक थे आज्ञा दिई कि मेरे पिता की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरो सो वैद्यों ने इस्राएल् की लोथ में सुगन्धद्रव्य भर दिये ॥ ३ । और उस के चालीस दिन पूरे हुए क्योंकि जिन की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे जाते हैं उन को इतने ही दिन पूरे लगते हैं । और मिस्री लोग उस के लिये सत्तर दिन लों रोते रहे ॥

४ । जब उस के विलाप के दिन बीत गये तब यूसुफ फिरौन के घराने के लोगों से कहने लगा यदि तुम्हारी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो मेरी यह विनती फिरौन को सुनाओ कि, ५ । मेरे पिता ने यह कहकर कि देख मैं मरा चाहता हूं मुझे यह किरिया खिलाई कि जो कबर तू ने अपने लिये कनान् देश में खुदवाई है उसी में मैं तुझे मिट्टी दूंगा सो अब मुझे वहां जाकर अपने पिता को मिट्टी देने की आज्ञा दे पीछे मैं लौट आऊंगा ॥ ६ । तब फिरौन ने कहा जाकर अपने पिता को खिलाई हुई किरिया के अनुसार उस को मिट्टी दे ॥ ७ । सो यूसुफ अपने पिता को मिट्टी देने के लिये चला और फिरौन के सब कर्म्मचारी अर्थात् उस के भवन के पुरनिये और मिस्र देश के सब पुरनिये उस के संग चले ॥ ८ । और यूसुफ के घर के सब लोग और उस के भाई और उस के पिता के घर के सब लोग भी संग गये पर वे अपने बाल बच्चों और भेड़ बकरियों और गाय बैलों को गोशेन् देश में छोड़ गये ॥ ९ । और उस के संग रथ और सवार गये सो भीड़ बहुत भारी हो गई ॥ १० । जब वे आताद् के खलिहान लों जो यर्दन नदी के पार है पहुंचे तब वहां अत्यन्त भारी विलाप किया और यूसुफ ने अपने पिता के लिये सात दिन का विलाप कराया ॥ ११ । आताद् के खलिहान में के विलाप को देखकर उस देश के निवासी कनानियों ने कहा यह तो मिस्रियों का कोई भारी विलाप होगा इसी कारण उस स्थान का नाम आबेल्-मिस्रैम्[1] पड़ा और वह यर्दन के पार है ॥ १२ । और इस्राएल् के पुत्रों ने उस से वही काम किया जिस की उस ने उन को आज्ञा दिई थी ॥ १३ । अर्थात् उन्हों ने उस को कनान् देश में ले जाकर मक्पेला की उस भूमिवाली गुफा में जो मम्रे के साम्हने है मिट्टी दिई जिस को इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन् के

---

(१) अर्थात् मिस्रियों का विलाप ।

हाथ से इस निमित्त मोल लिया था कि वह कबरिस्तान के लिये उस की निज भूमि हो ॥

(यूसुफ का उत्तर चरित्र)

१४। अपने पिता को मिट्टी देकर यूसुफ अपने भाइयों और उन सब समेत जो उस के पिता को मिट्टी देने के लिये उस के संग गये थे मिस्र में लौट आया ॥ १५। जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तब कहने लगे क्या जानिये यूसुफ अब हमारे पीछे पड़े और जितनी बुराई हम ने उस से किई थी सब का पूरा पलटा हम से ले ॥ १६। सो उन्हों ने यूसुफ के पास यह कहला भेजा कि तेरे पिता ने मरने से पहिले हमें यह आज्ञा दिई थी कि १७। तुम लोग यूसुफ से यों कहना कि हम बिनती करते हैं कि तू अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा कर हम ने तुझ से बुराई तो किई थी पर अब अपने पिता के परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर। उन की ये बातें सुनकर यूसुफ रो दिया ॥ १८। और उस के भाई आप भी जाकर उस के साम्हने गिर पड़े और कहा देख हम तेरे दास हैं ॥ १९। यूसुफ ने उन से कहा मत डरो क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं ॥ २०। यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया जिस से वह ऐसा करे जैसा आज के दिन प्रगट है कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं ॥ २१। सो अब मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालबच्चों का पालन पोषण करता रहूंगा यों उस ने उन को समझा बुझाकर शान्ति दिई ॥

२२। और यूसुफ अपने पिता के घराने समेत मिस्र में रहता रहा और यूसफ एक सौ दस बरस जीता रहा ॥ २३। और यूसुफ एप्रैम् के परपोतों लों देखने पाया और मनश्शे के पोते जो माकीर् के पुत्र थे सो उत्पन्न होकर यूसुफ से गोद में लिये गये[1] ॥ २४। और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मैं तो मरा चाहता हूं परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुंचा देगा जिस के देने की उस ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब से किरिया खाई थी ॥ २५। फिर यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा उन को इस विषय की किरिया खिलाई कि हम तेरी हड्डियों को यहां से उस देश में ले जाएंगे ॥ २६। निदान यूसफ एक सौ दस बरस का होकर मर गया और उस की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे गये और वह लोथ मिस्र में एक संदूक में रक्खी गई ॥

(१) मूल में यूसुफ के घुटनों पर जन्मे।

निर्गमन नाम पुस्तक।

(मिस्र में इस्राएलियों की दुर्दशा)

१. **याकूब** के साथ उस के जो पुत्र अपने अपने घराने को लेकर मिस्र देश में आये उन के नाम ये हैं अर्थात्, २। रूबेन् शिमोन् लेवी यहूदा, ३। इस्साकार् जबूलून् बिन्यामीन ४। दान् नप्ताली गाद् और आशेर् ॥ ५। और यूसुफ तो मिस्र में पहिले ही आ चुका था। याकूब के निज वंश के सब प्राणी सत्तर थे ॥ ६। और यूसुफ और उस के सब भाई और उस पीढ़ी के सारे लोग मर गये ॥ ७। और इस्राएली फूले फले और

बहुत अधिक होकर बढ़ गये और अत्यन्त सामर्थी हुए और देश उन से भर गया॥

८। मिस्र में एक नया राजा हुआ जो यूसुफ को न जानता था॥ ९। उस ने अपनी प्रजा से कहा देखो इस्राएली हम से गिनती और सामर्थ्य में अधिक हो गये हैं॥ १०। सो आओ हम उन के साथ चतुराई का वर्ताव करें ऐसा न हो कि जब वे बहुत हो जाएं तब यदि संग्राम आ पड़े तो हमारे वैरियों से मिलकर हम से लड़ें और इस देश से निकल जाएं॥ ११। सो उन्हों ने उन पर बेगारी करानेहारों को ठहराया जो उन पर भारी बोझ डालकर उन को दुःख दिया करें सो उन्हों ने फिरौन के लिये पितोम् और रामसेस् नाम भंडारवाले नगरों को बनाया॥ १२। पर ज्यों ज्यों वे उन को दुःख देते गये त्यों त्यों वे बढ़ते और फैलते गये सो वे इस्राएलियों से डर गये॥ १३। और मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ सेवा कराई॥ १४। और उन के जीवन को गारे ईंट और खेती के भांति भांति के काम की कठिन सेवा से भार सा[1] कर डाला जिस किसी काम में वे उन से सेवा कराते उस में कठोरता के साथ कराते थे॥

१५। शिप्रा और पूआ नाम दो इब्री जनाई धाइयों को मिस्र के राजा ने आज्ञा दिई कि, १६। जब जब तुम इब्री स्त्रियों को जनने के समय जन्मने के पत्थरों पर बैठी देखो तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना और बेटी हो तो जीती रहने देना॥ १७। पर वे धाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं सो मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीते छोड़ देती थीं॥ १८। तब मिस्र के राजा ने उन को बुलवाकर पूछा तुम जो लड़कों को जीते छोड़ देती हो सो ऐसा क्यों करती हो॥ १९। जनाई धाइयों ने फिरौन को उत्तर दिया कि इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं वे ऐसी फुर्तीली हैं कि जनाई धाइयों के पहुंचने से पहिले ही जन बैठती हैं॥ २०। सो परमेश्वर ने जनाई धाइयों के साथ भलाई किई और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हुए॥ २१। और जनाई धाइयां जो परमेश्वर का भय मानती थीं इस कारण उस ने उन के घर बसाये[1]॥ २२। तब फिरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दिई कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी[2] में डालना और सब बेटियों को जीती छोड़ना॥

(मूसा की उत्पत्ति और आदि चरित्र)

२. लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवीवंशिन को ब्याह लिया॥ २। और वह स्त्री गर्भिणी होकर बेटा जनी और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है उसे तीन महीने लों छिपा रक्खा॥ ३। जब वह उसे और छिपा न सकी तब उस के लिये सरकण्डों की एक पिटारी ले उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाकर उस में बालक को रखकर नील नदी[2] के तीर पर कांसों के बीच छोड़ आई॥ ४। उस बालक की बहिन दूर खड़ी रही कि देखे इस का क्या होगा॥ ५। तब फिरौन की बेटी नहाने के लिये नदी[2] के तीर आई और उस की सखियां नदी[2] के तीर तीर टहलने लगीं तब उस ने कांसों के बीच पिटारी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा॥ ६। तब उस ने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है तब उसे तरस आई और उस ने कहा यह तो किसी इब्री का बालक होगा॥ ७। तब बालक की बहिन ने फिरौन की बेटी से कहा क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे॥ ८। फिरौन की बेटी ने कहा जा तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई॥ ९। फिरौन की बेटी ने उस से कहा तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर और मैं तुझे मजूरी दूंगी तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी॥ १०। जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे

---

(१) मूल में कड़ुवा।

(१) मूल में उन के लिये घर बनाये। (२) मूल में नैार।

फिरौन की बेटी के पास ले गई और वह उस का बेटा ठहरा और उस ने यह कहकर उस का नाम मूसा[1] रक्खा कि मैं ने इस को जल से निकाल लिया ॥

११। इतने में मूसा बड़ा हुआ और बाहर अपने भाईबंधुओं के पास जाकर उन के भारों पर दृष्टि करने लगा। और उस ने देखा कि कोई मिस्री जन मेरे एक इब्री भाई को मार रहा है ॥ १२। सो जब उस ने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है तब उस मिस्री को मार डालकर बालू में छिपा दिया ॥ १३। फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उस ने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं सो उस ने अपराधी से कहा तू अपने भाई को क्यों मारता है ॥ १४। उस ने कहा किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया जिस भांति तू ने मिस्री को घात किया क्या उसी भांति मुझे भी घात करना चाहता है। तब मूसा यह सोचकर डर गया कि निश्चय वह बात खुल गई है ॥ १५। जब फिरौन ने वह बात सुनी तब मूसा को घात कराने का यत्न किया तब मूसा फिरौन के साम्हने से भागा और मिद्यान् देश में जाकर रहने लगा। और वह वहां एक कूएं के पास बैठा था ॥ १६। मिद्यान् याजक के सात बेटियां थीं और वे वहां आकर जल भरने लगीं कि कठौतों में भरके अपने पिता की भेड़बकरियों को पिलाएं ॥ १७। तब चरवाहे आकर उन को दुर्दुराने लगे तब मूसा ने खड़ा होकर उन की सहायता किई और भेड़बकरियों को पानी पिलाया ॥ १८। सो जब वे अपने पिता रूएल् के पास फिर आईं तब उस ने उन से पूछा क्या कारण है कि आज तुम ऐसी फुर्ती से आई हो ॥ १९। उन्हों ने कहा एक मिस्री पुरुष ने हम को चरवाहों के हाथ से छुड़ाया और हमारे लिये बहुत जल भरके भेड़-बकरियों को पिलाया ॥ २०। तब उस ने अपनी बेटियों से कहा वह पुरुष कहां है तुम उस को क्यों छोड़ आई हो उस को बुला ले आओ कि वह भोजन करे ॥ २१। और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को प्रसन्न हुआ और उस ने उसे अपनी बेटी सिप्पोरा को ब्याह दिया ॥ २२। और वह बेटा जनी तब मूसा ने यह कहकर कि मैं अन्य देश में परदेशी हुआ उस का नाम गेर्शोम्[1] रक्खा ॥

(यहोवा के मूसा को दर्शन देकर फिरौन के पास भेजने का वर्णन)

२३। बहुत दिन बीतने पर मिस्र का राजा मर गया और इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस लेने लगे और पुकार उठे और उन की दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई सो परमेश्वर लों पहुंची ॥ २४। और परमेश्वर ने उन का कराहना सुनकर अपनी वाचा जो उस ने इब्राहीम और इस्हाक् और याकूब के साथ बांधी थी उस की सुधि लिई ॥ २५। और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया ॥

३. मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान् के याजक की भेड़बकरियों को चराता था और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब् नाम परमेश्वर के पर्व्वत के पास ले गया ॥ २। और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उस को दर्शन दिया और उस ने दृष्टि करके देखा कि झाड़ी जल रही है पर भस्म नहीं होती ॥ ३। तब मूसा ने सोचा कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचंभे को देखूंगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती ॥ ४। जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उस को पुकारा कि हे मूसा हे मूसा मूसा ने कहा क्या आज्ञा[2] ॥ ५। उस ने कहा इधर पास मत आ और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो पवित्र भूमि है ॥ ६। फिर उस ने कहा मैं तेरे पिता का परमेश्वर और इब्राहीम का परमेश्वर इस्हाक् का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं तब मूसा

(१) अर्थात् जल से निकाला हुआ।

(१) अर्थात् वहां परदेशी या निकाल दिया जाना।
(२) मूल में मुझे देख।

जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था सो उस ने अपना मुंह ढांप लिया ॥ ७ । फिर यहोवा ने कहा मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उन के दुःख को निश्चय देखा है और उन की जो चिल्लाहट परिश्रम करानेहारों के कारण होती है उस को भी मैं ने सुना है और उन की पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है ॥ ८ । सो अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती हैं अर्थात् कनानी हित्ती एमोरी परिज्जी हिव्वी और यबूसी लोगों के स्थान में पहुंचाऊं ॥ ९ । सो अब सुन इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुन पड़ी है और मिस्रियों का उन पर अंधेर करना मुझे देख पड़ा है ॥ १० । सो आ मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए ॥ ११ । तब मूसा ने परमेश्वर से कहा मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं ॥ १२ । उस ने कहा निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूं तेरे लिये यह चिन्ह ठहरेगा कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे ॥ १३ । मूसा ने परमेश्वर से कहा जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूं कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझ से पूछें कि उस का क्या नाम है तब मैं उन को क्या बताऊं ॥ १४ । परमेश्वर ने मूसा से कहा मैं जो हूंगा सो हूंगा[१] फिर उस ने कहा तू इस्राएलियों से यह कहना कि जिस का नाम हूंगा[२] है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ॥ १५ । फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा कि तू इस्राएलियों से यों कहना कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक् का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है देख सदा लों मेरा नाम यही रहेगा और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा ॥ १६ । जाकर इस्राएली पुरनियों को एकट्ठा कर और उन से कह कि तुम्हारे पितर इब्राहीम इसहाक् और याकूब के परमेश्वर यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है कि मैं ने तुम पर और तुम से जो वर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चित्त लगाया है ॥ १७ । और मैं ने ठाना है कि तुम को मिस्र के दुःख में से निकालकर कनानी हित्ती एमोरी परिज्जी हिव्वी और यबूसी लोगों के देश में ले चलूंगा जो ऐसा देश है कि उस में दूध और मधु की धारा बहती हैं ॥ १८ । तब वे तेरी मानेंगे और तू इस्राएली पुरनियों को संग ले मिस्र के राजा के पास जाकर उस से यों कहना कि इब्रियों के परमेश्वर यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है सो अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएं ॥ १९ । मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा वरन बड़े बल से दबाये जाने पर भी जाने न देगा ॥ २० । सो मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्चर्य्यकर्म्मों से जो मिस्र के बीच करूंगा उस देश को मारूंगा और उस के पीछे वह तुम को जाने देगा ॥ २१ । तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह कराऊंगा और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे ॥ २२ । वरन तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन और अपने अपने घर की पाहुनी से सोने चान्दी के गहने और वस्त्र मांग लेगी और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना सो तुम मिस्रियों को लूटोगे ॥

४ १ । तब मूसा ने उत्तर दिया कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे वरन कहेंगे कि यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया ॥ २ । यहोवा ने उस से कहा तेरे हाथ में वह क्या है वह बोला लाठी ॥ ३ । उस ने कहा उसे भूमि पर डाल दे जब उस ने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प्प बन गई और मूसा उस के साम्हने से भागा ॥ ४ । तब यहोवा ने मूसा से कहा हाथ

(१) कितने टीकाकार कहते हैं मैं जो हूं सो हूं । (२) कितने टीकाकार कहते हैं मैं हूं ।

बढ़ाकर उस को पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम के परमेश्वर इस्हाक् के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है ॥ ५ । जब उस ने हाथ बढ़ाकर उस को पकड़ा तब वह उस के हाथ में फिर लाठी बन गई ॥ ६ । फिर यहोवा ने उस से यह भी कहा कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप सो उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांपा फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा कि मेरा हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया ॥ ७ । तब उस ने कहा अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप सो उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांपा और जब उस ने उस को छाती पर से निकाला तो क्या देखा कि वह फिर सारी देह के समान हो गया ॥ ८ । तब यहोवा ने कहा यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें और पहिले चिन्ह को न मानें तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे ॥ ९ । और यदि वे इन दोनों चिन्हों की प्रतीति न करें और तेरी बात को न मानें तो तू नील नदी[1] से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना और जो जल तू नदी से निकालेगा सो सूखी भूमि पर लोहू बन जाएगा ॥ १० । मूसा ने यहोवा से कहा हे मेरे प्रभु मैं बोलने में निपुण नहीं न तो पहिले था और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा मैं तो मुंह और जीभ का भद्दा हूं ॥ ११ । यहोवा ने उस से कहा मनुष्य का मुंह किस ने बनाया है और मनुष्य को गूंगा वा बहिरा वा देखनेहारा वा अंधा मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है ॥ १२ । अब जा मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखाता जाऊंगा ॥ १३ । उस ने कहा हे मेरे प्रभु जिस को तू चाहे उसी के हाथ से भेज ॥ १४ । तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उस ने कहा क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है मुझे तो निश्चय है कि वह कहने में निपुण है और वह तेरी भेंट के लिये निकला आता भी है और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा ॥ १५ । सो तू उसे ये बातें सिखाना[1] और मैं उस के मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा सो तुम को सिखाता जाऊंगा ॥ १६ । और वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा वह तेरे लिये मुंह और तू उस के लिये परमेश्वर ठहरेगा ॥ १७ । और तू इस लाठी को हाथ में लिये जा और इसी से इन चिन्हों को दिखाना ॥

१८ । तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और कहा मुझे विदा कर कि मैं मिस्र में रहनेहारे अपने भाइयों के पास जाकर देखूं कि वे अब लों जीते हैं वा नहीं यित्रो ने कहा कुशल से जा ॥ १९ । और यहोवा ने मिद्यान् देश में मूसा से कहा मिस्र को लौट जा क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के गाहक थे सो सब मर गये हैं ॥ २० । तब मूसा अपनी स्त्री और बेटों को गदहे पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर की उस लाठी को हाथ में लिये हुए लौटा ॥ २१ । और यहोवा ने मूसा से कहा जब तू मिस्र में पहुंचेगा तो सचेत होना कि जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किये हैं उन सभों को फ़िरौन के देखते करना पर मैं उस के मन को हठीला करूंगा और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा ॥ २२ । और तू फ़िरौन से कहना कि यहोवा यों कहता है कि इस्राएल् मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है ॥ २३ । और मैं जो तुझ से कह चुका हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे और तू ने जो अब लों उसे जाने देने को नकारा है इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे का घात करूंगा ॥ २४ । मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा ॥ २५ । तब सिप्पोरा ने चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला और मूसा के पांवों पर यह कहकर फेंक दिया कि निश्चय तू लोहू बहानेहारा मेरा पति है ॥ २६ । तब उस ने उस को छोड़ दिया और उसी समय खतने के कारण वह बोली तू लोहू बहानेहारा पति है ॥

(१) मूल में योर्।

(१) मूल में उस से बातें करना और उस के मुंह में ये बातें डालना ।

(मूसा के इस्राएलियों और फिरौन से भेंट करने का वर्णन)

२७। तब यहोवा ने हारून से कहा मूसा की भेंट करने को जंगल में जा सो वह जाकर परमेश्वर के पर्वत पर उस से मिला और उस को चूमा॥ २८। तब मूसा ने हारून को बताया कि यहोवा ने क्या क्या बातें कहकर मुझ को भेजा है और कौन कौन चिन्ह दिखाने की आज्ञा मुझे दिई है॥ २९। सो मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियों के सब पुरनियों को एकट्ठा किया॥ ३०। और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं सो सब हारून ने उन्हें सुनाईं और लोगों के साम्हने वे चिन्ह भी दिखाये॥ ३१। और लोगों ने उन की प्रतीति किई और यह सुनकर कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि लिई और हमारे दुःख पर दृष्टि किई है उन्हों ने सिर झुकाकर दण्डवत् किई॥

५ १। इस के पीछे मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिये पर्ब्ब करें॥ २। फिरौन ने कहा यहोवा कौन है जो मैं उस का वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं मैं न तो यहोवा को जानता और न इस्राएलियों को जाने दूंगा॥ ३। उन्हों ने कहा इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट किई है सो हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए वा तलवार चलवाए॥ ४। मिस्र के राजा ने उन से कहा हे मूसा हे हारून तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाने चाहते हो अपने अपने काम पर जाओ॥ ५। और फिरौन ने कहा सुनो इस देश में वे लोग बहुत हो गये हैं फिर तुम उन को परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो॥ ६। और फिरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करानेहारों को जो लोगों के ऊपर थे और उन के सरदारों को यह आज्ञा दिई कि, ७। तुम जो अब लों ईंटें बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे सो आगे को न देना वे आप ही जा जाकर अपने अपने लिये पुआल बटोरें॥ ८। तौभी जितनी ईंटें अब लों उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उन से बनवाना ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना क्योंकि वे आलसी हैं इस कारण यह कहकर चिल्लाते हैं कि हम जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें॥ ९। उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा कराई जाए कि वे उस में परिश्रम करें और झूठी बातों पर चित्त न लगाएं॥ १०। तब लोगों के परिश्रम करानेहारों और सरदारों ने बाहर जाकर उन से कहा फिरौन यों कहता है कि मैं तुम्हें पुआल नहीं देने का॥ ११। तुम ही जाकर जहां कहीं पुआल मिले वहां से उस को बटोर ले आओ पर तुम्हारा काम कुछ भी न घटाया जाएगा॥ १२। सो वे लोग सारे मिस्र देश में तितर बितर हुए कि पुआल की संती खूंटी बटोरें॥ १३। और परिश्रम करानेहारे यह कह कहकर उन से जल्दी कराते रहे कि जैसा तुम पुआल पाकर किया करते थे वैसा ही अपना दिन दिन का काम अब भी पूरा करो॥ १४। और इस्राएलियों में के जिन सरदारों को फिरौन के परिश्रम करानेहारों ने उन के अधिकारी ठहराया था उन्हों ने मार खाई और उन से पूछा गया क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती पहिले की नाईं कल और आज पूरी नहीं कराई॥ १५। तब इस्राएलियों के सरदारों ने जाकर फिरौन की दोहाई यह कहकर दिई कि तू अपने दासों से ऐसा वर्ताव क्यों करता है॥ १६। तेरे दासों को पुआल तो दिया नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं ईंटें बनाओ ईंटें बनाओ और तेरे दासों ने मार भी खाई है पर दोष तेरे ही लोगों का है॥ १७। फिरौन ने कहा तुम आलसी हो आलसी इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलि करने को जाने दे॥ १८। सो अब जाकर काम करो और पुआल तुम को न दिया जाएगा पर ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी॥ १९। जब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि तुम्हारी ईंटों की गिनती न घटेगी और दिन दिन उतना ही काम पूरा करना तब वे जान गये कि हमारे दुर्दिन आये॥ २०। जब वे

फिरौन के सन्मुख से निकले आते थे तब मूसा और हारून जो उन की भेंट के लिये खड़े थे उन्हें मिले॥ २१। और उन्हों ने मूसा और हारून से कहा यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे क्योंकि तुम ने हम को फिरौन और उस के कर्म्मचारियों की दृष्टि में घिनौना[1] ठहरवाकर हमें घात करने के लिये उन के हाथ में तलवार दे दिई है॥ २२। तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा हे प्रभु तू ने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों किई और तू ने मुझे यहां क्यों भेजा॥ २३। जब से मैं तेरे नाम से बातें करने के लिये फिरौन के पास गया तब से उस ने इस प्रजा से बुराई ही बुराई किई है और तू ने अपनी प्रजा को कुछ भी नहीं छुड़ाया॥

६ १। यहोवा ने मूसा से कहा अब तू देखेगा कि मैं फिरौन से क्या करूंगा जिस से वह उन को बरबस निकालेगा वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा॥

२। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं यहोवा हूं॥ ३। मैं अपने को सर्व्वशक्तिमान ईश्वर कहकर तो इब्राहीम इस्हाक् और याकूब को दर्शन देता था पर यहोवा नाम से अपने को उन पर प्रगट न करता था॥ ४। और मैं ने उन के साथ अपनी वाचा दृढ़ किई है कि कनान् देश जिस में वे परदेशी होकर रहते थे उसे उन्हें दूं॥ ५। और इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दास करके रखते हैं उन का कराहना भी सुनकर मैं ने अपनी वाचा की सुधि लिई है॥ ६। इस कारण तू इस्राएलियों से कह कि मैं यहोवा हूं और तुम को मिस्रियों के भारों के नीचे से निकालूंगा और उन की सेवा से तुम को छुड़ाऊंगा और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा॥ ७। और मैं तुम को अपनी प्रजा होने के लिये अपना लूंगा और तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और तुम जान लोगे कि यह जो हमें मिस्रियों के भारों के नीचे से निकालता है सो हमारा परमेश्वर यहोवा है॥ ८। और जिस देश के देने की किरिया[2] मैं ने इब्राहीम इस्हाक् और याकूब से खाई थी[1] उसी में मैं तुम्हें पहुंचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूंगा मैं तो यहोवा हूं॥ ९। ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाईं पर उन्हों ने मन की अधीरता और सेवा की कठिनता के मारे उस की न सुनी॥

१०। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ११। तू जाकर मिस्र के राजा फिरौन से कह कि इस्राएलियों को अपने देश से से जाने दे॥ १२। मूसा ने यहोवा से कहा देख इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी फिर फिरौन मुझ भद्दे बोलनेहारे[2] की क्योंकर सुनेगा॥ १३। सो यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा फिरौन के लिये आज्ञा इस मनसा से दिई कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएं॥

१४। उन के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं। इस्राएल् के जेठे रूबेन् के पुत्र हनोक् पल्लू हेस्रोन् और कर्म्मी हुए इन्हीं से रूबेन्वाले कुल निकले॥ १५। और शिमोन् के पुत्र यमूएल् यामीन् ओहद् याकीन् और सोहर् हुए और एक कनानी स्त्री का बेटा शाऊल् भी हुआ इन्हीं से शिमोन्वाले कुल निकले॥ १६। और लेवी के पुत्र जिन से उन की वंशावली चली है उन के नाम ये हैं अर्थात् गेर्शोन् कहात् और मरारी। और लेवी की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई॥ १७। गेर्शोन् के पुत्र जिन से उन के कुल चले लिब्नी और शिमी हुए॥ १८। और कहात् के पुत्र अम्राम् यिस्हार् हेब्रोन् और उज्जीएल् हुए। और कहात् की सारी अवस्था एक सौ तेंतीस बरस की हुई॥ १९। और मरारी के पुत्र महली और मूशी हुए लेवीयों के कुल जिन से उन की वंशावली चली ये ही हैं॥ २०। अम्राम् ने अपनी फूफी योकेबेद् को ब्याह लिया और वह उस के जन्माये हारून और मूसा को जनी और अम्राम् की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई॥ २१। और यिस्हार् के पुत्र कोरह् नेपेग् और जिक्री हुए॥ २२। और

(१) मूल में, दुर्गन्धित। (२) मूल में की हाथ।

(१) मूल में हाथ उठाया था। (२) मूल में खतनारहित होठवाले।

उज्जीएल् के पुत्र मीशाएल् एल्सापान् और सित्री हुए॥ २३। और हारून ने अम्मीनादाब् की बेटी और नहशोन् की बहिन एलीशेबा को ब्याह लिया और वह उस के जन्माये नादाब् अबीहू एलाजार् और ईतामार् को जनी॥ २४। और कोरह् के पुत्र अस्सीर् एल्काना और अबीआसाप् हुए इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले॥ २५। और हारून के पुत्र एलाजार् ने पूतीएल् की एक बेटी को ब्याह लिया और वह उस के जन्माए पीनहास् को जनी कुल चलानेहारे लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं॥ २६। ये वे ही हारून और मूसा हैं जिन को यहोवा ने यह आज्ञा दिई कि इस्राएलियों को दल दल करके मिस्र देश से निकाल ले जाओ॥ २७। ये वे ही मूसा और हारून हैं जिन्हों ने इस्राएलियों को मिस्र से निकालने की मनसा से मिस्र के राजा फ़िरौन से बात किई थी॥

२८। जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही, २९। कि मैं तो यहोवा हूं सो जो कुछ मैं तुम से कहूंगा वह सब मिस्र के राजा फ़िरौन से कहना, ३०। और मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया कि मैं तो बोलने में भद्दा हूं[1] सो फ़िरौन मेरी क्योंकर सुनेगा॥

७ १। तब यहोवा ने मूसा से कहा सुन मैं तुझे फ़िरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूं और तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा॥ २। जो जो आज्ञा मैं तुझे दूं सो तू कहना और हारून उसे फ़िरौन से कहेगा जिस से वह इस्राएलियों को अपने देश से निकल जाने दे॥ ३। और मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूंगा और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र देश में बहुत से दिखाऊंगा॥ ४। तौभी फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकालूंगा॥ ५। और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उन के बीच से निकालूंगा तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ ६। तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया॥ ७। और जब मूसा और हारून फ़िरौन से बात करने लगे तब मूसा तो अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था॥

८। फिर यहोवा ने मूसा और हारून से यों कहा कि, ९। जब फ़िरौन तुम से कहे कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ तब तू हारून से कहना कि अपनी लाठी को लेकर फ़िरौन के साम्हने डाल दे कि वह अजगर बन जाए॥ १०। सो मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया और जब हारून ने अपनी लाठी को फ़िरौन और उस के कर्म्मचारियों के साम्हने डाल दिया तब वह अजगर बन गई॥ ११। तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहों को बुलवाया और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही किया॥ १२। उन्हों ने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया और वे भी अजगर बन गईं पर हारून की लाठी उन की लाठियों को निगल गई॥ १३। पर फ़िरौन का मन हठीला हो गया और यहोवा के कहे के अनुसार उस ने मूसा और हारून की मानने को नकारा॥

(मिस्रियों पर दस भारी विपत्तियों के पड़ने का वर्णन.)

१४। तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन का मन कठोर हो गया है कि वह इस प्रजा को जाने नहीं देता॥ १५। सो बिहान को फ़िरौन के पास जा वह तो जल की ओर बाहर आएगा और जो लाठी सर्प्प बन गई थी उस को हाथ में लिये हुए नील नदी[1] के तीर पर उस की भेंट के लिये खड़ा रहना॥ १६। और उस से यों कहना कि इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहने को तेरे पास भेजा कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरी उपासना करें और अब लों तू ने मेरी नहीं मानी॥ १७। यहोवा यों कहता है इसी से तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं देख मैं अपने हाथ की लाठी को नील नदी[1] के जल पर मारूंगा तब वह

(१) मूल में खतनारहित होठवाला हूं।

(१) मूल में योर्।

लोहू बन जाएगा ॥ १८ । और जो मछलियां नील नदी[१] में हैं वे मर जाएंगी और नील नदी[१] बसाने लगेगी और नदी[१] का पानी पीने को मिस्रियों का जी न चाहेगा ॥ १९ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून से कह कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है अर्थात् उस की नदियां नहरें झीलें और पोखरे सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि वे लोहू बन जाएं और सारे मिस्र देश में के काठ और पत्थर दोनों भांति के जलपात्रों में भी लोहू हो जाएगा ॥ २० । तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया अर्थात् उस ने लाठी को उठाकर फ़िरौन और उस के कर्म्मचारियों के देखते नील नदी[१] के जल पर मारा और जितना उस में जल था सब लोहू बन गया ॥ २१ । और नील नदी[१] में जो मछलियां थीं सो मर गईं और नदी[१] बसाने लगी और मिस्री लोग नदी[१] का पानी न पी सके और सारे मिस्र देश में लोहू हो गया ॥ २२ । तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही किया और फ़िरौन का मन हठीला हो गया और यहोवा के कहे के अनुसार उस ने मूसा और हारून की न मानी ॥ २३ । सो फ़िरौन इस पर भी चित्त न लगाकर और मुंह फेरके अपने घर गया ॥ २४ । और सब मिस्री लोग पीने के पानी के लिये नील नदी[१] के आसपास खोदने लगे क्योंकि वे नदी[१] का जल न पी सकते थे ॥ २५ । और जब यहोवा ने नील नदी[१] को मारा उस के पीछे सात दिन

८ बीते ॥ १ । तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जाकर कह यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें ॥ २ । और यदि तू उन्हें जाने न दे तो सुन मैं मेंढ़क भेजकर तेरे सारे देश को हानि पहुंचाता हूं ॥ ३ । और नील नदी[१] मेंढ़कों से भर जाएगी और वे तेरे भवन और शयन की कोठरी में और तेरे बिछौने पर और तेरे कर्म्मचारियों के घरों में और तेरी प्रजा पर वरन तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़ जाएंगे ॥ ४ । और तुझ और तेरी प्रजा और तेरे कर्म्मचारियों सभों पर मेंढ़क चढ़ जाएंगे ॥ ५ । फिर

(१) मूल में योर ।

यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई कि हारून से कह कि नदियों नहरों और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर मेंढ़कों को मिस्र देश पर चढ़ा ले आ ॥ ६ । तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढ़कों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया ॥ ७ । और जादूगर भी अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही मिस्र देश पर मेंढ़क चढ़ा ले आये ॥ ८ । तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा यहोवा से विनती करो कि वह मेंढ़कों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा कि तुम यहोवा के लिये बलिदान करो ॥ ९ । मूसा ने फ़िरौन से कहा इतनी बात पर तो मुझ पर तेरा घमंड रहे कि मैं तेरे और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के निमित्त कब तक के लिये विनती करूं कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढ़कों को दूर करे और वे केवल नील नदी[१] में पाये जाएं ॥ १० । उस ने कहा कल तक के लिये उस ने कहा तेरे वचन के अनुसार होगा जिस से तू जान ले कि हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई नहीं है ॥ ११ । सो मेंढ़क तेरे पास से और तेरे घरों में से और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर केवल नदी में रहेंगे ॥ १२ । तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास से निकल गये और मूसा ने उन मेंढ़कों के विषय यहोवा की दोहाई दिई जो उस ने फ़िरौन पर भेजे थे ॥ १३ । और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार किया सो मेंढ़क घरों आंगनों और खेतों में मर गये ॥ १४ । और लोगों ने एकट्ठे करके उन के ढेर लगा दिये सो सारा देश बसाने लगा ॥ १५ । जब फ़िरौन ने देखा कि आराम मिला तब यहोवा के कहे के अनुसार उस ने अपने मन को कठोर किया और उन की न सुनी ॥

१६ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून को आज्ञा दे कि तू अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार कि वह मिस्र देश भर में कुटकियां बन जाए ॥ १७ । सो उन्हों ने वैसा ही किया अर्थात्

(१) मूल में योर ।

हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकी हो गई वरन सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकी बन गई ॥ १८ । तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं पर यह उन से न हो सका और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियां बनी ही रहीं ॥ १९ । तब जादूगरों ने फिरौन से कहा यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है[1] तौभी यहोवा के कहे के अनुसार फिरौन का मन हठीला हो गया और उस ने मूसा और हारून की न मानी ॥

२० । फिर यहोवा ने मूसा से कहा बिहान को तड़के उठकर फिरौन के साम्हने खड़ा होना वह तो जल की ओर आएगा और उस से कहना कि यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें ॥ २१ । यदि तू मेरी प्रजा को जाने न देगा तो सुन मैं तुझ पर और तेरे कर्म्मचारियों और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में झुंड के झुंड डांस भेजूंगा सो मिस्रियों के घर और उन के रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी ॥ २२ । उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा बसी है अलग करूंगा और उस में डांसों के झुंड न होंगे जिस से तू जान ले कि पृथिवी के बीच मैं ही यहोवा हूं ॥ २३ । और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊंगा यह चिन्ह कल होगा ॥ २४ । और यहोवा ने योंही किया सो फिरौन के भवन और उस के कर्म्मचारियों के घरों में और सारे मिस्र देश में डांसों के झुंड के झुंड भर गये और डांसों के मारे वह देश नाश हुआ ॥ २५ । तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा तुम जाकर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में बलिदान करो ॥ २६ । मूसा ने कहा ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की घिन की वस्तु बलि करेंगे सो यदि हम मिस्रियों के देखते उन की घिन की वस्तु बलि करें तो क्या वे हम पर पत्थरवाह न करेंगे ॥ २७ । हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसे वह हम से कहेगा वैसे ही बलिदान करेंगे ॥ २८ । फिरौन ने कहा मैं तुम को जंगल में जाने दूंगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो केवल बहुत दूर न जाना और मेरे लिये बिनती करो ॥ २९ । सो मूसा ने कहा सुन मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती करूंगा कि डांसों के झुण्ड तेरे और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के पास से कल ही दूर हों पर फिरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने में नाह न करे ॥ ३० । सो मूसा ने फिरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती किई ॥ ३१ । और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झुण्डों को फिरौन और उस के कर्म्मचारियों और उस की प्रजा से दूर किया यहां लों कि एक भी न रहा ॥ ३२ । तब फिरौन ने इस बार भी अपने मन को सुन्न किया और उन लोगों को जाने न दिया ॥

९. फिर यहोवा ने मूसा से कहा फिरौन के पास जाकर कह कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें ॥ २ । और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, ३ । तो सुन तेरे जो घोड़े गदहे ऊंट गाय बैल भेड़बकरी आदि पशु मैदान में हैं उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी होगी ॥ ४ । और यहोवा इस्राएलियों के पशुओं में और मिस्रियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा कि जो इस्राएलियों के हैं उन में से कोई भी न मरेगा ॥ ५ । फिर यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया कि मैं यह काम इस देश में कल करूंगा ॥ ६ । दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया और मिस्र के तो सब पशु मर गये पर इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा ॥ ७ । और फिरौन ने लोगों को भेजा पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था ।

(१) मूल में. वह परमेश्वर की अंगुली है ।

तौभी फिरौन का मन सुन्न हो गया और उस ने उन लोगों को जाने न दिया ॥

८। फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा भट्ठी में से अपनी अपनी मुट्ठी भर राख लो और मूसा उसे फिरौन के साम्हने आकाश की ओर छिटकाए ॥ ९। तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोलेवाले फोड़े बन जाएगी ॥ १०। सो वे भट्ठी में की राख लेकर फिरौन के साम्हने खड़े हुए और मूसा ने उसे आकाश की ओर छिटका दिया सो वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोलेवाले फोड़े बन गई ॥ ११। और उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के साम्हने खडे न रह सके क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्रियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे ॥ १२। तब यहोवा ने फिरौन के मन को हठीला कर दिया सो जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था उस ने उस की न सुनी ॥

१३। फिर यहोवा ने मूसा से कहा बिहान को तड़के उठकर फिरौन के साम्हने खड़ा हो और उस से कह इब्रियों का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें ॥ १४। नहीं तो अब की बार मैं तुझ पर[1] और तेरे कर्म्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियां डालूंगा इस लिये कि तू जान ले कि सारी पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं है ॥ १५। मैं ने अब हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता तो तू पृथिवी पर से सत्यानाश हो गया होता ॥ १६। पर सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाये रक्खा है कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊं और अपना नाम सारी पृथिवी पर प्रसिद्ध करूं ॥ १७। क्या तू अब भी मेरी प्रजा को बाधा सा रोकता है कि उसे जाने न दे ॥ १८। सुन कल मैं इसी समय ऐसे भारी भारी ओले बरसाऊंगा कि जिन के तुल्य मिस्र की नेव पड़ने के दिन से ले अब लों कभी नहीं पड़े ॥ १९। सो अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में तेरा जो कुछ है सब को फुर्ती से आड़ में करा ले नहीं तो जितने मनुष्य वा पशु मैदान में रहें और घर में एकट्ठे न किये जाएं उन पर ओले गिरेंगे और वे मर जाएंगे ॥ २०। सो फिरौन के कर्म्मचारियों में से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे उन्हों ने तो अपने अपने सेवकों और पशुओं को घर में हांक दिया ॥ २१। पर जिन्हों ने यहोवा के वचन पर मन न लगाया उन्हों ने अपने सेवकों और पशुओं को मैदान में रहने दिया ॥

२२। तब यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें ॥ २३। सो मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर बढ़ाया और यहोवा गरजाने और ओले बरसाने लगा और आग पृथिवी लों आती रही सो यहोवा ने मिस्र देश पर ओले गिराये ॥ २४। जो ओले गिरते थे उन के साथ आग भी लिपटती जाती थी और वे ओले ऐसे अत्यन्त भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे कभी न पड़े थे ॥ २५। सो मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य क्या पशु जितने थे सब ओलों से मारे गये और ओलों से खेत की सारी उपज मारी पड़ी और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गये ॥ २६। केवल गोशेन् देश में जहां इस्राएली बसे थे ओले न गिरे ॥ २७। तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उन से कहा कि इस बार तो मैं ने पाप किया है यहोवा धर्म्मी है और मैं और मेरी प्रजा अधर्म्मी ॥ २८। परमेश्वर का गरजाना और ओले बरसाना तो बहुत हो गया सो यहोवा से बिनती करो तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा और तुम आगे को न रोके जाओगे ॥ २९। मूसा ने उस से कहा नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा और ओले फिर न गिरेंगे इस से तू जान लेगा कि पृथिवी यहोवा ही की है ॥ ३०। तौभी मैं जानता हूं कि न तो तू और न तेरे कर्म्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे ॥ ३१। सन और यव तो मारे पड़े क्योंकि यव की बालें निकल

(१) मूल में तेरे हृदय पर।

चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे ॥ ३२ । पर गोहूं और कठिया गोहूं जो बढ़े हुए न थे इस से वे मारे न गये ॥ ३३ । जब मूसा ने फ़िरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ फैलाये तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा ॥ ३४ । यह देखकर कि मेंह और ओले और बादल का गरजना बन्द हो गया फ़िरौन ने अपने कर्म्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर करके पाप किया ॥ ३५ । और फ़िरौन का मन हठीला हुआ और उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलाया था ॥

१०. फिर यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जा क्योंकि मैं ही ने उस के और उस के कर्म्मचारियों के मन को इस लिये कठोर कर दिया कि अपने ये चिन्ह उन के बीच दिखाऊं २ । और तुम लोग अपने बेटों पोतों से इस का वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया और अपने क्या क्या चिन्ह उन के बीच प्रगट किये, जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ३ । तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर कहा कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरे आगे दबने को तू कब लों नकारता रहेगा मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें ॥ ४ । यदि तू मेरी प्रजा को जाने देना नकारता रहे तो सुन कल मैं तेरे देश में टिड्डियां ले आऊंगा ॥ ५ । और वे धरती को ऐसा छा लेंगी कि वह देख न पड़ेगी और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उस को वे चट कर जाएंगी और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान में लगे हैं उन को भी वे चट कर जाएंगी ॥ ६ । और वे तेरे और तेरे सारे कर्म्मचारियों निदान सारे मिस्रियों के घरों में भर जाएंगी इतनी टिड्डियां तेरे बापदादों ने वा उन के पुरखाओं ने जब से पृथिवी पर जन्मे तब से आज लों कभी न देखीं। और वह मुंह फेरके फ़िरौन के पास से बाहर गया ॥ ७ । तब फ़िरौन के कर्म्मचारी उस से कहने लगे वह जन कब लों हमारे लिये फन्दा बना रहेगा उन मनुष्यों को जाने दे कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें क्या तू अब लों नहीं जानता कि मिस्र भर नाश हो गया है ॥ ८ । तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास फिर बुला लिये गये और उस ने उन से कहा चले जाओ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो पर जानेहारे कौन कौन हैं ॥ ९ । मूसा ने कहा हम तो बेटों बेटियों भेड़ बकरियों गाय बैलों सब समेत बरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएंगे क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्ब्ब करना है ॥ १० । उस ने उन से कहा यहोवा योंही तुम्हारे संग रहे कि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने दूं देखो तुम बुराई ही की कल्पना करते हो ॥ ११ । नहीं ऐसा न होने पाएगा तुम पुरुष ही जाकर यहोवा की उपासना करो तुम यही तो मांगा करते थे । और वे फ़िरौन के पास से निकाल दिये गये ॥

१२ । तब यहोवा ने मूसा से कहा मिस्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि टिड्डियां मिस्र देश पर चढ़के भूमि का जितना अन्नादि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएं ॥ १३ । और मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड्डियां आईं ॥ १४ । और टिड्डियों ने चढ़के मिस्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया उन का दल बहुत भारी था, बरन न तो उन से पहिले ऐसी टिड्डियां आई थीं और न उन के पीछे ऐसी फिर आएंगी ॥ १५ । वे तो सारी धरती पर छा गईं यहां लों कि देश अंधेरा हो गया और उस का सारा अन्नादि और वृक्षों के सब फल निदान जो कुछ ओलों से बचा था सब को उन्हों ने चट कर लिया यहां लों कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत के किसी अन्नादि में ॥ १६ । तब फ़िरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवाके कहा मैं ने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है ॥ १७ । सो

अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो और अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती करो कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे ॥ १८ । तब मूसा ने फिरौन के पास से निकलकर यहोवा से बिनती किई ॥ १९ । तब यहोवा ने उलटे बहुत प्रचण्ड पछुवां बहाकर टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया और मिस्र के किसी स्थान में एक भी टिड्डी न रह गई ॥ २० । तौभी यहोवा ने फिरौन के मन को हठीला कर दिया इस से उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया ॥

२१ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिस्र देश के ऊपर अन्धकार छा जाए ऐसा अन्धकार कि उस का स्पर्श तक हो सके ॥ २२ । तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया और सारे मिस्र देश में तीन दिन लों घोर अन्धकार छाया रहा ॥ २३ । तीन दिन लों न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपने स्थान से उठा पर सारे इस्राएलियों के घरों मे उजियाला रहा ॥ २४ । तब फिरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा तुम लोग जाओ यहोवा की उपासना करो अपने बालकों को भी संग लिये जाओ केवल अपनी भेड़बकरी और गाय बैल को छोड़ जाओ ॥ २५ । मूसा ने कहा तुझ को हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पड़ेंगे जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएं ॥ २६ । सो हमारे पशु भी हमारे संग जाएंगे उन का एक खुर लों न रह जाएगा क्योंकि उन्हीं में से हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा और हम जब लों वहां न पहुंचें तब लों नहीं जानते कि क्या क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी ॥ २७ । पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया इस से उस ने उन्हें जाने न दिया ॥ २८ । सो फिरौन ने उस से कहा मेरे साम्हने से चला जा और सचेत रह मुझे अपना मुख फिर न दिखाना क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखाए उसी दिन तू मारा जाएगा ॥ २९ । मूसा ने कहा कि तू ने ठीक कहा है मैं तेरे मुंह को फिर कभी न देखूंगा ॥

११. फिर यहोवा ने मूसा से कहा एक और विपत्ति मैं फिरौन और मिस्र देश पर डालता हूं उस के पीछे वह तुम लोगों को यहां से जाने देगा और जब वह जाने देगा तब तुम सभों को निश्चय निकाल देगा ॥ २ । मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना कि एक एक पुरुष अपने अपने पड़ोसी और एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन से सोने चांदी के गहने मांग ले ॥ ३ । तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया । इस से अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में फिरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान् था ॥

४ । फिर मूसा ने कहा यहोवा यों कहता है कि आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूंगा ॥ ५ । तब मिस्र में सिंहासन पर विराजनेहारे फिरौन से लेकर चक्की पीसनेहारी दासी तक सब के पहिलौठे बरन पशुओं तक के सब पहिलौठे मर जाएंगे ॥ ६ । और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा यहां लों कि उस के समान न तो कभी हुआ और न होगा ॥ ७ । पर इस्राएलियों के विरुद्ध क्या मनुष्य क्या पशु किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा जिस से तुम जान लो कि मिस्रियों और इस्राएलियों मे मैं यहोवा अन्तर करता हूं ॥ ८ । तब तेरे ये सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत करके यह कहेंगे कि अपने सब अनुचरों समेत निकल जा और उस के पीछे मैं निकल ही जाऊंगा । यह कहके मूसा भड़के हुए कोप के साथ फिरौन के पास से निकल गया ॥

९ । यहोवा ने तो मूसा से कह दिया था कि फिरौन तुम्हारी न सुनेगा क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिस्र देश में बहुत चमत्कार करूं ॥ १० । सो मूसा और हारून ने फिरौन के साम्हने ये सब चमत्कार किये पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया इस से उस ने इस्राएलियों को अपने देश से जाने न दिया ॥

(फसह् नाम पर्व्व का विधान और इस्राएलियो का कूच करना)

१२. फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा कि, २। यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे अर्थात् बरस का पहिला महीना यही ठहरे ॥ ३। इस्राएल् की सारी मण्डली से यों कहो कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार घराने पीछे एक एक मेम्ना ले रक्खो ॥ ४। और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों तो वह अपने सब से निकट रहनेहारे पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रक्खे तुम एक एक के खाने के अनुसार मेम्ने का लेखा करना ॥ ५। तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहिले बरस का नर हो और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से ॥ ६। और इस महीने के चौदहवें दिन लों उसे रख छोड़ना और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल् की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें ॥ ७। तब वे उस के लोहू में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उन के द्वार के दोनों बाजुओं और चौखट के सिरे पर लगाएं ॥ ८। और वे उस के मांस को उसी रात में आग से भूंजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएं ॥ ९। उस को सिर पैर और अन्तरियों समेत आग में भूंजकर खाना कच्चा वा जल में कुछ भी सिझाकर न खाना ॥ १०। और उस में से कुछ विहान लों न रहने देना और यदि कुछ विहान लों रह भी जाए तो उसे आग में जला देना ॥ ११। और उस के खाने की यह विधि है कि कटि बांधे पांव में जूती पहिने और हाथ में लाठी लिये हुए उसे फुर्ती से खाना वह तो यहोवा का फसह[१] होगा ॥ १२। क्योंकि उस रात में मैं मिस्र देश के बीच होकर जाऊंगा और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु सब के पहिलौठों को मारूंगा और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा मैं तो यहोवा हूं ॥ १३। और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़[१] जाऊंगा और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे ॥ १४। और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेहारा ठहरेगा और तुम उस को यहोवा के लिये पर्व करके मानना वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्व माना जाए ॥ १५। सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना उन में से पहिले ही दिन अपने अपने घर में से खमीर उठा डालना बरन जो कोई पहिले दिन से लेकर सातवें दिन लों कोई खमीरी वस्तु खाए वह प्राणी इस्राएलियों में से नाश किया जाए ॥ १६। और पहिले दिन एक पवित्र सभा और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए केवल जिस प्राणी का जो खाना हो उस के काम करने की आज्ञा है ॥ १७। सो तुम बिन खमीर की रोटी का पर्व मानना क्योंकि उसी दिन[२] मैं तुम को दल दल करके मिस्र देश से निकालूंगा इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर माना जाए ॥ १८। पहिले महीने के चौदहवें दिन की सांझ से लेकर इक्कीसवें दिन की सांझ लों तुम अखमीरी रोटी खाया करना ॥ १९। सात दिन लों तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे बरन जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी वह प्राणी इस्राएलियों की मण्डली से नाश किया जाए ॥ २०। कोई खमीरी वस्तु न खाना अपने सब घरों में बिन खमीर ही की रोटी खाया करना ॥

२१। तब मूसा ने इस्राएल् के सब पुरनियों को बुलाकर कहा तुम अपने अपने कुल के अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर रक्खो और फसह[३] का पशु बलि करना ॥ २२। और उस का लोहू जो तसले

(१) अर्थात् लांघनपर्व।

(१) मूल में लांघके। (२) मूल में आज ही के दिन।
(३) अर्थात् लांघनपर्व।

में होगा उस में जूफा का एक गुच्छा बोरकर उसी तसले में के लोहू से द्वार के चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर कुछ लगाना और भोर लों तुम में से कोई घर से बाहर न निकले ॥ २३ । क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा सो जहां जहां वह चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर उस लोहू को देखे वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा और नाश करनेहारे को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा ॥ २४ । फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो ॥ २५ । जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहे के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो तब यह काम किया करना ॥ २६ । और जब तुम्हारे लड़केबाले तुम से पूछें कि इस काम से तुम्हारा क्या प्रयोजन है, २७ । तब तुम उन को यह उत्तर देना कि यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहते हुए हम इस्राएलियों के घरों को छोड़के हमारे घरों को बचाया इसी कारण उस के फसह[२] का यह बलिदान किया जाता है तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत् किई ॥ २८ । और इस्राएलियों ने जाके जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दिई थी उसी के अनुसार किया ॥

२९ । आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेहारे फिरौन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठों को बरन पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला ॥ ३० । और फिरौन रात ही को उठ बैठा और उस के सब कर्म्मचारी बरन सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिस में कोई मरा न हो ॥ ३१ । तब फिरौन ने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवाकर कहा तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ और अपने कहे के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो ॥ ३२ । अपने कहे के अनुसार अपनी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को साथ ले जाओ और मुझे आशीर्वाद दे जाओ ॥ ३३ । और मिस्री जो कहते थे कि हम तो सब मर मिटे हैं सो उन्हों ने इस्राएली लोगों को दबाके कहा कि देश से झटपट निकल जाओ ॥ ३४ । सो उन्हों ने अपने गूंधे गुन्धाये आटे को बिना खमीर दिये ही कठौतियों समेत कपड़ों में बान्धके अपने अपने कन्धे पर चढ़ा लिया ॥ ३५ । और इस्राएलियों ने मूसा के कहे के अनुसार मिस्रियों से सोने चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिये ॥ ३६ । और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया कि उन्हों ने जो जो मांगा सो सो दिया । सो इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया ॥

३७ । तब इस्राएली रामसेस् से कूच करके सुक्कोत् को चले और बालबच्चों को छोड़ वे कोई छः लाख पुरुष प्यादे थे ॥ ३८ । और उन के साथ मिली जुली हुई एक भीड़ गई और भेड़ बकरी गाय बैल बहुत से पशु भी साथ गये ॥ ३९ । सो जो गूंधा आटा वे मिस्र से साथ ले गये उस की उन्हों ने बिन खमीर दिये रोटियां बनाईं क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गये कि विलम्ब न कर सके और न मार्ग में खाने के लिये कुछ बना सके थे इसी से वह गूंधा आटा बिन खमीर का था ॥ ४० । मिस्र में बसे हुए इस्राएलियों को चार सौ तीस बरस बीत गये थे ॥ ४१ । और उन चार सौ तीस बरसों के बीते पर ठीक उसी दिन यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई ॥ ४२ । यहोवा जो इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया इस कारण यह रात उस के निमित्त मानने के अति योग्य है यह यहोवा की वही रात है जिस का पीढ़ी पीढ़ी में मानना इस्राएलियों को अति अवश्य है ॥

४३ । फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा फसह[१] की विधि यह है कि कोई परदेशी उस में से न खाए ॥ ४४ । पर जो किसी का मोल लिया हुआ दास हो और तुम लोगों ने उस का खतना किया हो वह तो उस में से खा सकेगा ॥ ४५ ।

(१) मूल में लाघ । (२) अर्थात् लाघनपर्व ।

(१) अर्थात् लाघनपर्व ।

पर उपरी और मजूर उस में से न खाएं ॥ ४६ । उस का खाना एक ही एक घर में हो अर्थात् तुम उस के मांस में से कुछ घर से बाहर न ले जाना । और बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना ॥ ४७ । फसह[1] का मानना इस्राएल् की सारी मण्डली का कर्त्तव्य कर्म्म है ॥ ४८ । और यदि कोई परदेशी तुम लोगों के संग रहकर यहोवा के लिये फसह[1] को मानना चाहे तो वह अपने यहां के सब पुरुषों का खतना कराए तब वह समीप आकर उस को माने और वह तो देशी मनुष्य के बराबर ठहरे पर कोई खतनारहित पुरुष उस में से न खाने पाए ॥ ४९ । उस की व्यवस्था देशी और तुम्हारे बीच में रहनेहारे परदेशी दोनों के लिये एक ही हो ॥ ५० । यह आज्ञा जो यहोवा ने मूसा और हारून को दिई उस के अनुसार सारे इस्राएलियों ने किया ॥ ५१ । और ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से दल दल करके निकाल ले गया ॥

१३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा कि, २ । क्या मनुष्य के क्या पशु के इस्राएलियों में जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों उन्हे मेरे लिये पवित्र मानना, वह तो मेरा ही है ॥

३ । फिर मूसा ने लोगों से कहा इस दिन को स्मरण रक्खो जिस में तुम लोग दासत्व के घर अर्थात् मिस्र से निकल आये हो यहोवा तो तुम को वहां से अपने हाथ के बल से निकाल लाया, खमीरी रोटी न खाई जाए ॥ ४ । आबीब् महीने के इसी दिन में तुम निकलने लगे हो ॥ ५ । सो जब यहोवा तुम को कनानी हित्ती एमोरी हिव्वी और यबूसी लोगों के देश में पहुंचाएगा जिस के तुम्हें देने की उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी और उस में दूध और मधु की धारा बहती हैं तब तुम इसी महीने में यह काम करना ॥ ६ । सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना और सातवें दिन यहोवा के लिये पर्व मानना ॥ ७ । इन सातों दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए वरन तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी न खमीर तुम्हारे पास देखने में आए ॥ ८ । और अगले समय[1] तुम अपने अपने बेटे को यह कहके समझा देना कि यह तो हम उसी काम के कारण करते हैं जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने के समय हमारे लिये किया था ॥ ९ । फिर यह तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ पर की चिन्हानी और तुम्हारी भौंओं के बीच की स्मरण करानेहारी वस्तु का काम दे जिस से यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुंह पर रहे क्योंकि यहोवा तुम्हें बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लाया है ॥ १० । इस कारण तुम इस विधि को बरस बरस नियत समय पर माना करना ॥

११ । फिर जब यहोवा उस किरिया के अनुसार जो उस ने तुम्हारे पितरों से और तुम से भी खाई है तुम्हें कनानियों के देश में पहुंचाकर उस को तुम्हें देगा, १२ । तब तुम में से जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों उन को और तुम्हारे पशुओं में जो ऐसे हों उन को भी यहोवा के लिये अर्पण करना, नर तो यहोवा के हैं ॥ १३ । और गदही के हर एक पहिलौठे की सन्ती मेम्ना देकर उस को छुड़ा लेना और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो उस का गला तोड़ देना पर अपने सब पहिलौठे पुत्रों को बदला देकर छुड़ा लेना ॥ १४ । और आगे के दिनों में जब तुम्हारे बेटे तुम से पूछें कि यह क्या है तो उन से कहना कि यहोवा हम लोगों को दासत्व के घर से अर्थात् मिस्र देश से हाथ के बल से निकाल लाया है ॥ १५ । उस समय जब फिरौन कठोर होकर हमें छोड़ना नकारता था तब यहोवा ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु लों सब के पहिलौठों को मार डाला इसी कारण पशुओं में से तो जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे नर हैं उन्हें हम यहोवा के लिये बलि करते हैं पर अपने सब पहिलौठे पुत्रों को हम बदला देकर छुड़ा लेते हैं ॥ १६ । और यह तुम्हारे हाथों पर चिन्हानी सी और तुम्हारे भौंओं के बीच

(१) अर्थात् लांघनपर्व ।

(१) मूल में, उस दिन ।

टीका सा ठहरे क्योंकि यहोवा हम लोगों को मिस्र से हाथ के बल से निकाल लाया है ॥

१७। जब फिरौन ने लोगों को जाने दिया तब यद्यपि पलिश्तियों के देश होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था तौभी परमेश्वर यह सोचके उन को उस मार्ग से न ले गया कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं ॥ १८। सो परमेश्वर उन को चक्कर खिलाकर लाल समुद्र के जंगल के मार्ग से ले चला। और इस्राएली पांति बांधे हुए मिस्र से चले गये ॥ १९। और मूसा यूसुफ की हड्डियों को साथ लेता गया क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहके कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा उन को इस विषय की दृढ़ किरिया खिलाई थी कि हम तेरी हड्डियों को अपने साथ यहां से ले जाएंगे ॥ २०। फिर उन्हों ने सुक्कोत् से कूच करके जंगल की छोर पर एताम् में डेरा किया ॥ २१। और यहोवा उन्हें दिन को तो मार्ग दिखाने के लिये बादल के खंभे में और रात को उंजियाला देने के लिये आग के खंभे में होकर उन के आगे आगे चला करता था कि वे रात और दिन दोनों में चल सकें ॥ २२। उस ने न तो बादल के खंभे को दिन में न आग के खंभे को रात में लोगों के आगे से हटाया ॥

(इस्राएल् के लाल समुद्र के पार जाने का वर्णन)

१४. यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों को आज्ञा दे कि तुम फिरके मिग्दोल् और समुद्र के बीच पीहहीरोत् के संमुख बालसपोन् के साम्हने अपने डेरे खड़े करो उसी के साम्हने समुद्र के तीर पर डेरे खड़े करो ॥ ३। तब फिरौन इस्राएलियों के विषय में सोचेगा कि वे देश में बझे हैं जंगल के कारण फंस गये हैं ॥ ४। सो मैं फिरौन के मन को हठीला कर दूंगा और वह उन का पीछा करेगा सो फिरौन और उस की सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। और उन्हों ने वैसा ही किया ॥ ५। जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गये तब फिरौन और उस के कर्म्मचारियों का मन उन के विरुद्ध फिर गया और वे कहने लगे हम ने यह क्या किया कि इस्राएलियों को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया ॥ ६। तब उस ने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना को संग लिया ॥ ७। सो उस ने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के सब रथ लिये और उन सभों पर सरदार बैठाये ॥ ८। और यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन के मन को हठीला कर दिया सो उस ने इस्राएलियों का पीछा किया और इस्राएली तो बेखटके[1] निकले चले जाते थे ॥ ९। पर फिरौन के सब घोड़ों और रथों और सवारों समेत मिस्री सेना ने उन का पीछा करके उन्हे जो पीहहीरोत् के पास बालसपोन् के साम्हने समुद्र के तीर पर डेरे डाले पड़े थे जा लिया ॥ १०। जब फिरौन निकट आया तब इस्राएलियों ने आंखें उठाकर देखा कि मिस्री हमारा पीछा किये चले आते हैं और इस्राएलियों ने अति भय खाकर चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दिई ॥ ११। और वे मूसा से कहने लगे क्या मिस्र में कबरें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है तू ने हम से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया ॥ १२। क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें। हमारे लिये जंगल में मरने से मिस्रियों की सेवा करनी अच्छी थी ॥ १३। मूसा ने लोगों से कहा डरो मत खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उन को फिर कभी न देखोगे ॥ १४। यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा सो तुम चुपचाप रहो ॥

१५। तब यहोवा ने मूसा से कहा तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है इस्राएलियों को आज्ञा दे कि यहां से कूच करो ॥ १६। और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा और वह दो भाग हो जाएगा तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल चले जाएं ॥ १७। और सुन मैं आप मिस्रियों

(१) मूल में ऊंचे हाथ के साथ।

के मन को हठीला करता हूं और वे उन का पीछा करके समुद्र में पैठेंगे तब फिरौन और उस की सारी सेना और रथों और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी ॥ १८। सो जब फिरौन और उस के रथों और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥ १९। तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता था सो जाकर उन के पीछे हो गया और बादल का खंभा उन के आगे से हटकर उन के पीछे जा ठहरा ॥ २०। सो वह मिस्रियों की सेना और इस्राएलियों की सेना के बीच आ गया और बादल और अन्धकार तो हुआ तौभी उस ने रात को प्रकाशित किया और वे रात भर एक दूसरे के पास न आये ॥ २१। और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया कि उस के बीच सूखी भूमि हो गई ॥ २२। तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले और जल उन की दहिनी और बाईं ओर भीत का काम देता था ॥ २३। तब मिस्री अर्थात् फिरौन के सब घोड़े रथ और सवार उन का पीछा किये हुए समुद्र के बीच में चले गये ॥ २४। और रात के पिछले पहर में यहोवा ने बादल और आग के खंभे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया ॥ २५। और उस ने उन के रथों के पहियों को निकाल डाला सो उन का चलाना कठिन हो गया तब मिस्री आपस में कहने लगे आओ हम इस्राएलियों से भागें क्योंकि उन की ओर से मिस्रियों के साथ यहोवा लड़ता है ॥

२६। फिर यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा कि जल मिस्रियों और उन के रथों और सवारों पर फिर बह आए ॥ २७। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और भोर होते होते क्या हुआ कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आने लगा और मिस्री उस के उलटे भागने लगे पर यहोवा ने उन को समुद्र के बीच झटक दिया ॥ २८। और जल पलटने से जितने रथ और सवार इस्राएलियों के पीछे समुद्र में आये थे सो सब वरन फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई और उस में से एक भी न बचा ॥ २९। पर इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले गये और जल उन की दहिनी और बाईं दोनों ओर भीत का काम देता था ॥ ३०। सो यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से छुड़ाया और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तीर पर मरे पड़े हुए देखा ॥ ३१। और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना हाथ बलवन्त दिखाया उस को इस्राएलियों ने देखकर यहोवा का भय माना और यहोवा की और उस के दास मूसा की भी प्रतीति किई ॥

१५. तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्हों ने कहा

मैं यहोवा का गीत गाऊंगा क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा
घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल दिया है ॥

२। याह् मेरा बल और भजन का विषय है
और वह मेरा उद्धार ठहर गया है
मेरा ईश्वर वही है मैं उस की स्तुति करूंगा
मेरे पितर का परमेश्वर वही है मैं उस को सराहूंगा ॥

३। यहोवा योद्धा है
उस का नाम यहोवा ही है ॥

४। फिरौन के रथों और सेना को उस ने समुद्र में डाल दिया
और उस के उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गये ॥

५। गहिरे जल ने उन्हें ढांप लिया
वे पत्थर की नाईं गहिरे स्थानों में डूब गये ॥

६। हे यहोवा तेरा दहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ
हे यहोवा तेरा दहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है ॥

७। और तू अपने विरोधियों को अपने अति प्रताप
  से गिरा देता है
 तू अपना कोप भड़काता और वे भूसे की नाईं
  भस्म हो जाते हैं ॥
८। और तेरे नथनों की सांस से जल की राशि हो गई
 धाराएं ढेर की नाईं थंभ गईं
 समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया ॥
९। शत्रु ने कहा था
 मैं पीछा करूंगा मैं जा पकड़ूंगा मैं लूट को
  बांट लूंगा
 उन से मेरा जी भर जाएगा
 मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उन
  को नाश कर डालूंगा ॥
१०। तू ने अपने श्वास का पवन चलाया तब समुद्र
  ने उन को ढांप लिया
 वे महाजलराशि में सीसे की नाईं डूब गये ॥
११। हे यहोवा देवताओं में तेरे तुल्य कौन है
 तू तो पवित्रता के कारण प्रतापी और अपनी
  स्तुति करनेहारों के भय के योग्य
 और आश्चर्य्यकर्म्म का कर्त्ता है ॥
१२। तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया है
 पृथिवी उन को निगले जाती है ॥
१३। अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा
  की अगुवाई किई है
 अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान
  को ले चला है ॥
१४। देश देश के लोग सुनकर कांप उठेंगे
 पलिश्तियों को मानो पीड़ें उठेंगी ॥
१५। तब एदोम् के अधिपति भभर जाएंगे
 मोआब् के महाबलियों को थरथराहट पकड़ेगी
 सब कनानुनिवासी गल जाएंगे ॥
१६। उन में त्रास और घबराहट समाएगी
 तेरी बांह के प्रताप से वे पत्थर की नाईं अन-
  बोल हो जाएंगे
 तब लों हे यहोवा तेरी प्रजा के लोग पार होंगे
 तब लों तेरी मोल लिई हुई प्रजा के लोग पार
  हो जाएंगे ॥
१७। तू उन्हें पहुंचाकर अपने निज भागवाले पहाड़
  पर रोपेगा
 यह वही स्थान है हे यहोवा जिसे तू ने अपने
  निवास के लिये बनाया
 और वही पवित्रस्थान है जिसे हे प्रभु तू ने आप
  ही स्थिर किया है ॥
१८। यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा ॥

१९। यह गीत गाने का कारण यह है कि फिरौन के घोड़े रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में पैठ गये और यहोवा उन के ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया पर इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले गये ॥ २०। और हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया और सब स्त्रियां डफ लिये नाचती हुई उस के पीछे हो लिईं ॥ २१। और मरियम उन के साथ यह टेक गाती गई कि

 यहोवा का गीत गाओ क्योंकि वह महाप्रतापी
  ठहरा है
 घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल
  दिया है ॥

२२। तब मूसा ने इस्राएलियों को लाल समुद्र से कूच कराया और वे शूर् नाम जंगल में निकल गये और जंगल में जाते हुए तीन दिन लों पानी न पाया ॥ २३। फिर मारा नाम एक स्थान पर पहुंचकर वहां का पानी जो खारा था सो उसे न पी सके इस कारण उस स्थान का नाम मारा[१] पड़ा ॥ २४। सो वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे कि हम क्या पीएं ॥ २५। तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दिई और यहोवा ने उसे एक पेड़ बतला दिया जिसे जब उस ने पानी में डाला तब वह पानी मीठा हो गया । वहीं यहोवा ने उन के लिये एक विधि और नियम ठहराया और वहीं उस ने यह कहकर उन की परीक्षा किई कि, २६। यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने और जो उस की दृष्टि में ठीक है वही करे और उस की आज्ञाओं पर कान लगाए और उस की सब विधियों को

(१) अर्थात् खारा वा कड़ुआ ।

माने तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों के उपजाये थे उन में से एक भी तेरे न उपजाऊंगा क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेहारा यहोवा हूं ॥

(इस्राएलियों को आकाश से रोटी और चटान में से पानी मिलने का वर्णन.)

२७। तब वे एलीम् को आये जहां पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे और वहां उन्हों ने जल के पास डेरे खड़े किये ॥ १। फिर

१६ एलीम् से कूच करके इस्राएलियों की सारी मण्डली मिस्र देश से निकलने के महीने के दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन को सीन् नाम जंगल में जो एलीम् और सीनै पर्वत के बीच में है आ पहुंची ॥ २। जंगल में इस्राएलियों की सारी मंडली मूसा और हारून के विरुद्ध कुड़कुड़ाई ॥ ३। और इस्राएली उन से कहने लगे कि जब हम मिस्र देश में मांस की हंडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था पर तुम हम को इस जंगल में इस लिये निकाल ले आये हो कि इस सारे समाज को भूखों मार डालो ॥ ४। तब यहोवा ने मूसा से कहा सुन मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजनवस्तु बरसाऊंगा और ये लोग दिन दिन बाहर जाकर दिन दिन का भोजन बटोरा करेंगे इस से मैं उन की परीक्षा करूंगा कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं ॥ ५। और छठवें दिन वह भोजन और दिनों से दूना होगा सो जो कुछ ये उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रक्खें ॥ ६। तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है ॥ ७। और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा क्योंकि तुम यहोवा पर जो कुड़कुड़ाते हो उसे वह सुनता है और हम क्या हैं कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो ॥ ८। फिर मूसा ने कहा यह कब होगा जब यहोवा सांझ को तो तुम्हें खाने के लिये मांस और भोर को रोटी मनमानते देगा क्योंकि तुम जो उस पर कुड़कुड़ाते हो उसे वह सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारा कुड़कुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है ॥ ९। फिर मूसा ने हारून से कहा इस्राएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे कि यहोवा के साम्हने बरन उस के समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है ॥ १०। हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था कि उन्हों ने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा कि बादल में यहोवा का तेज देख पड़ता है ॥ ११। तब यहोवा ने मूसा से कहा, १२। इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना मैं ने सुना है सो उन से कह दे कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ १३। सांझ को क्या हुआ कि बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं और भोर को छावनी की चारों ओर ओस पड़ी ॥ १४। और जब ओस सूख[1] गई तो वे क्या देखते हैं कि जंगल की भूमि पर छोटे छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनको के समान पड़े हैं ॥ १५। यह देखकर इस्राएली जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है सो आपस में कहने लगे यह तो मान्[2] है तब मूसा ने उन से कहा यह तो वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है ॥ १६। जो आज्ञा यहोवा ने दिई है वह यह है कि तुम उस में से अपने अपने खाने के योग्य बटोरा करना अर्थात् अपने अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार मनुष्य पीछे एक एक ओमेर् बटोरना जिस के डेरे में जितने हों सो उन्हीं भर के लिये बटोरा करे ॥ १७। सो इस्राएलियों ने वैसा ही किया और किसी ने अधिक किसी ने थोड़ा बटोर लिया ॥ १८। और जब उन्हों ने उस को ओमेर् से नापा तब जिस के पास अधिक था उस के कुछ अधिक न रह गया और जिस के पास थोड़ा था उस को कुछ घटी न हुई क्योंकि एक एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था ॥ १९। फिर मूसा ने उन से कहा कोई इस में से कुछ बिहान लों न रख छोड़े ॥ २०। तौभी उन्हों ने मूसा की न मानी सो जब

(१) मूल में, चढ़। (२) अर्थात् क्या या मन।

किसी किसी मनुष्य ने उस में से कुछ बिहान लों रख छोड़ा तब उस में कीड़े पड़ गये और वह बसाने लगा तब मूसा उन पर रिसियाया ॥ २१। और उसे भोर भोर को वे अपने अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे, और जब धूप कड़ी होती थी तब वह गल जाता था ॥ २२। पर छठवें दिन उन्हों ने दूना अर्थात् मनुष्य पीछे दो दो ओमेर् बटोर लिया और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया ॥ २३। उस ने उन से कहा यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही क्योंकि कल परमविश्राम अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा सो तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ और जो सिझाना हो उसे सिझाओ और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिये रख छोड़ो ॥ २४। जब उन्हों ने उस को मूसा की इस आज्ञा के अनुसार बिहान लों रख छोड़ा तब न तो वह बसाया और न उस में कीड़े पड़े ॥ २५। तब मूसा ने कहा आज उसी को खाओ क्योंकि आज जो यहोवा का विश्रामदिन है इस लिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा ॥ २६। छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे पर सातवां दिन जो विश्राम का दिन है उस में वह न मिलेगा ॥ २७। तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन बटोरने के लिये बाहर गये पर उन को कुछ न मिला ॥ २८। तब यहोवा ने मूसा से कहा तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था का मानना कब लों नकारते रहोगे ॥ २९। देखो यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है सो तुम अपने अपने यहां बैठे रहना सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना ॥ ३०। सो लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया ॥ ३१। और इस्राएल् के घरानेवालों ने उस वस्तु का नाम मान् रक्खा और वह धनिया के समान श्वेत था और उस का स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था ॥ ३२। फिर मूसा ने कहा यहोवा ने जो आज्ञा दिई वह यह है कि इस में से ओमेर् भर अपने वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिये रख छोड़ो जिस से वे जानें कि यहोवा हम को मिस्र देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था ॥ ३३। तब मूसा ने हारून से कहा एक पात्र लेकर उस में ओमेर् भर मान् रख और उसे यहोवा के आगे धर दे कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रक्खा रहे ॥ ३४। सो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी उसी के अनुसार हारून ने उस को साक्षीपत्र के आगे धर दिया कि वह वहीं रक्खा रहे ॥ ३५। इस्राएली जब लों बसे हुए देश में न पहुंचे तब लों अर्थात् चालीस बरस लों मान् को खाते रहे वे जब लों कनान् देश के सिवाने पर न पहुंचे तब लों मान् को खाते रहे ॥ ३६। ओमेर् तो एपा का दसवां भाग है ॥

१७. फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन् नाम जंगल से निकल चली और यहोवा की आज्ञा के अनुसार कूच करके रपीदीम् में अपने डेरे खड़े किये और वहां लोगों को पीने का पानी न मिला ॥ २। सो वे मूसा से झगड़ा करके कहने लगे कि हमें पीने का पानी दे मूसा ने उन से कहा तुम मुझ से क्यों झगड़ते हो और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो ॥ ३। फिर वहां लोगों को पानी की जो प्यास लगी सो वे यह कहकर मूसा पर कुड़कुड़ाये कि तू हमें लड़केवालों और पशुओं समेत प्यासों मार डालने को मिस्र से क्यों ले आया है ॥ ४। तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दिई और कहा इन लोगों से मैं क्या करूं ये तो मुझ पर पत्थरवाह करने को तैयार होने पर हैं ॥ ५। यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएल् के पुरनियों में से किसी किसी को साथ ले अपनी उसी लाठी को जिस से तू ने नील नदी[१] को मारा था हाथ में लिये हुए लोगों के आगे होकर चल ॥ ६। सुन मैं तेरे आगे जाके उधर होरेब् पहाड़ की एक चटान पर खड़ा रहूंगा और तू उस चटान पर मारना तब उस में से पानी निकलेगा कि ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल् के पुरनियों के देखते वैसा ही किया ॥ ७। और मूसा ने उस स्थान का नाम

(१) मूल में योर्।

मस्सा[1] और मरीबा[2] रक्खा क्योंकि इस्राएलियों ने वहां झगड़ा किया और यह कहकर यहोवा की परीक्षा भी किई कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं ॥

(अमालेकियो पर विजय)

८। तब अमालेकी आकर रपीदीम् में इस्राएलियों से लड़ने लगे ॥ ९। और मूसा ने यहोशू से कहा हमारे लिये कई एक पुरुषों को छांटकर निकल और अमालेकियों से लड़ और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए टीले की चोटी पर खड़ा रहूंगा ॥ १०। मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियो से लड़ने लगा और मूसा हारून और हूर् टीले की चोटी पर चढ़ गये ॥ ११। और जब तक मूसा अपना हाथ उठाये रहता तब तक तो इस्राएल् प्रबल होता था पर जब जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक् प्रबल होता था ॥ १२। और जब मूसा के हाथ भर गये तब उन्हों ने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया और हारून और हूर् एक एक अलंग में उस के हाथों को संभाले रहे सो उस के हाथ सूर्य डूबने लों स्थिर रहे ॥ १३। सो यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया ॥ १४। तब यहोवा ने मूसा से कहा स्मरण के लिये इस बात को पुस्तक में लिख दे और यहोशू को सुना दे कि यहोवा अमालेक् का स्मरण तक आकाश के तले से पूरी रीति मिटा डालेगा ॥ १५। तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उस का नाम यहोवानिस्सी[3] रक्खा, १६। और कहा याह के सिंहासन पर जो हाथ उठाया हुआ है इस लिये यहोवा की लड़ाई अमालेकियों से पीढ़ी पीढ़ी में बनी रहेगी ॥

(मूसा के अपने ससुर से भेट करने का वर्णन)

१८. और मूसा के ससुर मिद्यान् के याजक यित्रो ने यह सुना कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल् के लिये क्या क्या किया था अर्थात् यह कि किस रीति से यहोवा इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आया ॥ २। तब मूसा के ससुर यित्रो मूसा की स्त्री सिप्पोरा को जो पहिले नैहर भेज दिई गई थी, ३। और उस के दोनों बेटों को भी ले आया इन में से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम् रक्खा था कि मैं अन्यदेश में परदेशी हुआ हूं ॥ ४। और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एलीएजेर्[1] रक्खा कि मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया ॥ ५। मूसा की स्त्री और बेटों को उस का ससुर यित्रो संग लिये हुए उस के पास जंगल के उस स्थान में आया जहां उस का डेरा पड़ा था वह तो परमेश्वर के पर्वत के पास है ॥ ६। और आकर उस ने मूसा के पास यह कहला भेजा कि मैं तेरा ससुर यित्रो हूं और दोनों बेटों समेत तेरी स्त्री को तेरे पास ले आया हूं ॥ ७। तब मूसा अपने ससुर की भेंट के लिये निकला और उस को दण्डवत् करके चूमा और वे परस्पर कुशल क्षेम पूछते हुए डेरे पर आ गये ॥ ८। वहां मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फ़िरौन और मिस्रियों से क्या क्या किया और इस्राएलियो ने मार्ग में क्या क्या कष्ट उठाया फिर यहोवा उन्हें कैसे कैसे छुड़ाता आया है ॥ ९। तब यित्रो ने उस सारी भलाई के कारण जो यहोवा ने इस्राएलियों के साथ किई थी कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाया था हुलसकर, १०। कहा धन्य है यहोवा जिस ने तुम को फ़िरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया जिस ने तुम लोगों को मिस्रियों की मुट्ठी में से छुड़ाया है ॥ ११। अब मैं ने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है वरन उस विषय में भी जिस में उन्हों ने इस्राएलियो से अभिमान किया था ॥ १२। तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाये और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर के आगे भोजन करने को आया ॥ १३। दूसरे दिन

(१) अर्थात् परीक्षा । (२) अर्थात् झगड़ा । (३) अर्थात् यहोवा मेरा झण्डा है ।

(१) अर्थात्, ईश्वर सहाय ।

मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा और भोर से सांझ लों लोग मूसा के आसपास खड़े रहे ॥ १४ । यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या क्या करता है उस के ससुर ने कहा यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है और लोग भोर से सांझ लों तेरे आसपास खड़े रहते हैं ॥ १५ । मूसा ने अपने ससुर से कहा इस का कारण यह है कि लोग मेरे पास परमेश्वर से पूछने आते हैं ॥ १६ । जब जब उन का कोई मुकद्दमा होता है तब तब वे मेरे पास आते हैं और मैं उन के बीच न्याय करता और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें जताता हूं ॥ १७ । मूसा के ससुर ने उस से कहा जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं ॥ १८ । और इस से तू क्या वरन ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय हार जाएंगे क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है तू इसे अकेला नहीं कर सकता ॥ १९ । सो अब मेरी सुन ले मैं तुझ को सम्मति देता हूं और परमेश्वर तेरे संग रहे तू तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सन्मुख जाया कर और इन के मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुंचा दिया कर ॥ २० । इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके जिस मार्ग पर इन्हें चलना और जो काम इन्हें करना हो वह इन को जता दिया कर ॥ २१ । फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छांट ले जो गुणी और परमेश्वर का भय माननेहारे सच्चे और अन्याय के लाभ से घिन करनेहारे हों और उन को हजार हजार सौ सौ पचास पचास और दस दस मनुष्यों पर प्रधान होने के लिये ठहरा दे ॥ २२ । और वे सब समय इन लोगों का न्याय किया करें और सब बड़े बड़े मुकद्दमों को तो तेरे पास ले आया करें और छोटे छोटे मुकद्दमों का न्याय आप ही किया करें तब तेरा बोझ हलका होगा क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएंगे ॥ २३ । यदि तू यह उपाय करे और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे तो तू ठहर सकेगा और ये सारे लोग अपने स्थान को कुशल से पहुंच सकेंगे ॥ २४ । अपने ससुर की यह बात मानकर मूसा ने उस के सब वचनों के अनुसार किया ॥ २५ । सो उस ने सब इस्राएलियों में से गुणी गुणी पुरुष चुनकर उन्हें हजार हजार सौ सौ पचास पचास दस दस लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया ॥ २६ । और वे सब लोगों का न्याय करने लगे जो मुकद्दमा कठिन होता उसे तो वे मूसा के पास ले आते थे और सब छोटे मुकद्दमों का न्याय वे आप ही करते थे ॥ २७ । और मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और उस ने अपने देश का मार्ग लिया ॥

(सीनै पर्वत पर यहोवा के दर्शन देने का वर्णन.)

१९. इस्राएलियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके उसी दिन वे सीनै के जंगल में आये ॥ २ । और जब वे रपीदीम् से कूच करके सीनै के जंगल में आये तब उन्हों ने जंगल में डेरे खड़े किये और वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी किई ॥ ३ । तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया और यहोवा ने पर्वत पर से उस को पुकारकर कहा याकूब के घराने से ऐसा कह और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना कि, ४ । तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या किया और तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं ॥ ५ । सो अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे और मेरी वाचा को पालोगे तो सारे लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे सारी पृथिवी तो मेरी है ॥ ६ । और तुम मेरे लेखे याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे । जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं ॥ ७ । तब मूसा ने आकर लोगों के पुरनियों को बुलवाया और ये सब बातें जिन के कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दिई थी उन को समझा दिईं ॥ ८ । और सब लोग मिलकर बोल उठे जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम करेंगे । लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं ॥ ९ । तब यहोवा ने मूसा से कहा सुन मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूं इस लिये कि

जब मैं तुझ से बातें करूं तब वे लोग सुनें और सदा तेरी प्रतीति करें । और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया ॥ १० । तब यहोवा ने मूसा से कहा लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना और वे अपने वस्त्र धो लें ॥ ११ । और वे तीसरे दिन लों तैयार हो रहें क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते सीनै पर्वत पर उतर आएगा ॥ १२ । और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांध देना और उन से कहना कि तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उस के सिवाने को भी न छूओ और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला जाए ॥ १३ । उस को कोई हाथ से तो न छूए पर वह निश्चय पत्थरवाह किया जाए या तीर से छेदा जाए चाहे पशु हो चाहे मनुष्य वह जीता न बचे । जब महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द देर लों सुनाई दे तब लोग पर्वत के पास आएं ॥ १४ । तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर लोगों के पास आकर उन को पवित्र कराया और उन्हों ने अपने वस्त्र धो लिये ॥ १५ । और उस ने लोगों से कहा तीसरे दिन लों तैयार हो रहो स्त्री के पास न जाना ॥ १६ । जब तीसरा दिन आया तब भोर होते होते बादल गरजने और बिजली चमकने लगी और पर्वत पर काली घटा छा गई फिर नरसिंगे का शब्द बड़ा भारी हुआ और छावनी में जितने लोग थे सब कांप उठे ॥ १७ । तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए ॥ १८ । और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था सो सारा पर्वत धूंएं से भर गया और उस का धूंआं भट्ठे का सा उठ रहा था और सारा पर्वत बहुत कांप रहा था ॥ १९ । फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया तब मूसा बोला और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उस को उत्तर दिया ॥ २० । और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया सो मूसा ऊपर चढ़ गया ॥ २१ । तब यहोवा ने मूसा से कहा नीचे उतरके लोगों को चिता दे कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़के यहोवा के पास देखने को घुसें और उन में से बहुत नाश हो जाएं ॥ २२ । और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े ॥ २३ । मूसा ने यहोवा से कहा वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते तू ने तो आप हम को यह कहकर चिताया कि पर्वत की चारों ओर बाड़ा बांधकर उसे पवित्र रखो ॥ २४ । यहोवा ने उस से कहा उतर तो जा और हारून समेत तू ऊपर आ पर याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा तोड़के न चढ़ आएं न हो कि वह उन पर टूट पड़े ॥ २५ । ये ही बातें मूसा ने लोगों के पास उतरके उन को सुनाईं ॥

(सारे इस्राएलियों को दस आज्ञाओं के सुनाये जाने का वर्णन.)

२०. तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे कि,

२ । मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है ॥

३ । मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना ।

४ । तू अपने लिये कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में या पृथिवी पर या पृथिवी के जल में है ॥ ५ । तू उन को दंडवत् न करना न उन की उपासना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेहारा ईश्वर हूं और जो मुझ से वैर रखते हैं उन के बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दंड दिया करता हूं, ६ । और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूं ॥

७ । अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ[१] न लेना क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ[१] ले वह उस को निर्दोष न ठहराएगा ॥

८ । विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना ॥ ९ । छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा काम काज करना ॥ १० । पर सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है

(१) वा झूठी बात पर ।

उस में न तो तू किसी भान्ति का काम काज करना न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो ॥ ११ । क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उन में हैं सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दिई और उस को पवित्र ठहराया ॥

१२ । अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन लों रहने पाए ॥

१३ । खून न करना ॥

१४ । व्यभिचार न करना ॥

१५ । चोरी न करना ॥

१६ । किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना ॥

१७ । किसी के घर का लालच न करना न तो किसी की स्त्री का लालच करना न किसी के दास दासी वा बैल गदहे का न किसी की किसी वस्तु का लालच करना ॥

१८ । और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते और धूआं उठते हुए पर्वत को देखते रहे और देखके कांपकर दूर खड़े हो गये, १९ । और वे मूसा से कहने लगे तू ही हम से बातें कर तब तो हम सुन सकेंगे परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे न हो कि हम मर जाएं ॥ २० । मूसा ने लोगों से कहा डरो मत क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे और उस का भय तुम्हारे मन में बना रहे कि तुम पाप न करो ॥ २१ । और वे लोग तो दूर खड़े रहे पर मूसा उस घोर अंधकार के समीप गया जहां परमेश्वर था ॥

(मूसा से कही हुई यहोवा की व्यवस्था)

२२ । तब यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएलियों को मेरे ये वचन सुना कि तुम लोगों ने तो आप देखा है कि मैं ने तुम्हारे साथ आकाश से बातें किई हैं ॥ २३ । तुम मेरे साथी जानकर कुछ न बनाना अपने लिये चान्दी वा सोने के देवताओं को न बनाना ॥ २४ । मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाना और अपनी भेड़ बकरियों और गाय बैलों के होमबलि और मेलबलि उसी पर चढ़ाना । जहां जहां मैं अपने नाम का स्मरण कराऊं वहां वहां मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा ॥ २५ । और यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना क्योंकि जहां तुम ने उस पर अपना हथियार उठाया तहां वह अशुद्ध हुई ॥ २६ । और मेरी वेदी पर सीढ़ी से न चढ़ना न हो कि तेरा तन उस पर नंगा देख पड़े ॥

(१) मूल में तुम्हारे साम्हने ।

२१. फिर

जो नियम तुझे उन को समझाने हैं सो ये हैं ॥

२ । जब तुम कोई इब्री दास मोल लो तब वह छः बरस लों सेवा करता रहे और सातवें बरस स्वाधीन होकर सेंतमेंत चला जाए ॥ ३ । यदि वह अकेला आया हो तो अकेला ही चला जाए और यदि स्त्री सहित आया हो तो उस के साथ उस की स्त्री भी चली जाए ॥ ४ । यदि उस के स्वामी ने उस को स्त्री दिई हो और वह उस के जन्माये बेटे वा बेटियां जनी हो तो उस की स्त्री और बालक उस स्वामी के रहें और वह अकेला चला जाए ॥ ५ । पर यदि वह दास दृढ़ता से कहे कि मैं अपने स्वामी और अपनी स्त्री बालकों से प्रेम रखता हूं सो मैं स्वाधीन होकर न चला जाऊंगा, ६ । तो उस का स्वामी उस को परमेश्वर के पास ले चले फिर उस को द्वार के किवाड़ वा बाजू के पास ले जाकर उस के कान में सुतारी से छेद करे तब वह सदा उस की सेवा करता रहे ॥

७ । यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिये बेच डाले तो वह दासों की नाईं बाहर न जाए ॥ ८ । यदि उस का स्वामी उस को अपनी स्त्री करे और फिर उस से प्रसन्न न रहे तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे उस का विश्वासघात करने के पीछे उसे उपरी लोगों के हाथ बेचने का उस

(१) वा न्यायियों ।

को अधिकार न होगा ॥ ९ । और यदि उस ने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो तो उस से बेटी का सा व्यवहार करे ॥ १० । चाहे वह दूसरी स्त्री कर ले तौभी वह उस का भोजन वस्त्र और संगति न घटाए ॥ ११ । और यदि वह इन तीन बातों में घटी करे तो वह स्त्री सेंतमेंत बिना दाम चुके ही चली जाए ॥

१२ । जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए वह निश्चय मार डाला जाए ॥ १३ । यदि वह उस की घात में न बैठा हो और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उस के हाथ में पड़ गया हो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं तेरे लिये स्थान ठहराऊंगा ॥ १४ । पर यदि कोई ढिठाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे तो उस को मार डालने के लिये मेरी वेदी के पास से भी ले आना ॥

१५ । जो अपने पिता वा माता को मारे पीटे सो निश्चय मार डाला जाए ॥

१६ । जो किसी मनुष्य को चुराए चाहे उसे ले जाकर बेच डाले चाहे वह उस के यहां पाया जाए तो वह निश्चय मार डाला जाए ॥

१७ । जो अपने पिता वा माता को कोसे सो निश्चय मार डाला जाए ॥

१८ । यदि मनुष्य झगड़ते हों और एक दूसरे को पत्थर वा मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं पर बिछौने पर पड़ा रहे, १९ । तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से बाहर चलने फिरने लगे तब वह मारनेहारा निर्दोष ठहरे उस दशा में वह उस के पड़े रहने के समय की हानि तो भर दे और उस को भला चंगा भी करा दे ॥

२० । यदि कोई अपने दास वा दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उस के मारने से मर जाए तब तो उस को निश्चय दण्ड दिया जाए ॥ २१ । पर यदि वह दो एक दिन जीता रहे तो उस के स्वामी को दण्ड न दिया जाए क्योंकि वह दास उस का धन है ॥

२२ । यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी गर्भिणी स्त्री को ऐसी चोट पहुंचाएं कि उस का गर्भ गिर जाए पर और कुछ हानि न हो तो मारनेहारे से उतना दण्ड लिया जाए जितना उस स्त्री का पति विचारकों की सम्मति से ठहराए ॥ २३ । पर यदि उस को और कुछ हानि पहुंचे तो प्राण की सन्ती प्राण का, २४ । आंख की सन्ती आंख का दांत की सन्ती दांत का हाथ की सन्ती हाथ का पांव की सन्ती पांव का, २५ । दाग की सन्ती दाग का घाव की सन्ती घाव का मार की सन्ती मार का दण्ड हो ॥

२६ । जब कोई अपने दास वा दासी की आंख पर ऐसा मारे कि फूट जाए तो वह उस की आंख की सन्ती उसे स्वाधीन करके जाने दे ॥ २७ । और यदि वह अपने दास वा दासी को मारके उस का दांत तोड़ डाले तो वह उस के दांत की सन्ती उसे स्वाधीन करके जाने दे ॥

२८ । यदि बैल किसी पुरुष वा स्त्री को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए तो वह बैल तो निश्चय पत्थरवाह करके मार डाला जाए और उस का मांस खाया न जाए पर बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे ॥ २९ । पर यदि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान पड़ी हो और उस के स्वामी ने जताये जाने पर भी उस को न बांध रक्खा हो और वह किसी पुरुष वा स्त्री को मार डाले तब तो वह बैल पत्थरवाह किया जाए और उस का स्वामी भी मार डाला जाए ॥ ३० । यदि उस पर छुड़ौती ठहराई जाए तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उस के लिये ठहराया जाए उसे उतना ही देना पड़ेगा ॥ ३१ । चाहे बैल ने किसी के बेटे को चाहे बेटी को मारा हो तौभी इसी नियम के अनुसार उस के स्वामी से किया जाए ॥ ३२ । यदि बैल ने किसी दास वा दासी को सींग मारा हो तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी को तीस शेकेल् रुपा दे और उस बैल पर पत्थरवाह किया जाए ॥

३३ । यदि कोई मनुष्य गड़हा खोलकर वा खोदकर उस को न ढांपे और उस में किसी का बैल या गदहा गिर पड़े, ३४ । तो जिस का वह गड़हा हो

वह उस हानि को भर दे, वह पशु के स्वामी को उस का मोल दे और लोथ गड़हेवाले की ठहरे ॥

३५। यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए कि वह मर जाए तो वे दोनों मनुष्य जीते बैल को बेचकर उस का मोल आपस में आधा आधा बांट लें और लोथ को भी वैसा ही बांटें ॥ ३६। पर यदि यह प्रगट हो कि उस बैल को पहिले से सींग मारने की बान पड़ी थी पर उस के स्वामी ने उसे बांध नहीं रक्खा तो निश्चय वह बैल की सन्ती बैल भर दे पर लोथ उसी की ठहरे ॥

२२. यदि कोई मनुष्य बैल वा भेड़ वा बकरी चुराकर उस का घात करे वा बेच डाले तो वह बैल की सन्ती पांच बैल और भेड़ बकरी की सन्ती चार भेड़ बकरी भर दे ॥ २। यदि चोर सेंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए तो उस के खून का दोष न लगे ॥ ३। यदि सूर्य्य निकल चुके तो उस के खून का दोष लगे अवश्य है कि वह हानि को भर दे और यदि उस के पास कुछ न हो तो वह चोरी के कारण बेचा जाए ॥ ४। यदि चुराया हुआ बैल वा गदहा वा भेड़ वा बकरी उस के हाथ में जीती पाई जाए तो वह उस का दूना भर दे ॥

५। यदि कोई अपने पशु से किसी का खेत वा दाख की बारी चराए अर्थात् अपने पशु को ऐसा छोड़ दे कि वह पराये खेत को चर ले तो वह अपने खेत की और अपनी दाख की बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे ॥

६। यदि कोई आग बारे और वह कांटों में ऐसे लगे कि पूलों के ढेर वा अनाज वा खड़ा खेत जल जाए तो जिस ने आग बारी हो सो हानि को निश्चय भर दे ॥

७। यदि कोई दूसरे को रुपैये वा सामग्री की धरोहर धरे और वह उस के घर से चुराई जाए तो यदि चोर पकड़ा जाए तो दूना उसी को भर देना पड़ेगा ॥ ८। और यदि चोर न पकड़ा जाए तो घर का स्वामी परमेश्वर[१] के पास लाया जाए कि निश्चय हो जाए कि उस ने अपने भाईबंधु की संपत्ति पर हाथ लगाया है वा नहीं ॥ ९। अपराध चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ वा बकरी चाहे वस्त्र चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के विषय क्यों न लगाया जाए जिसे दो जन अपनी अपनी कहते हों तो दोनों का मुकद्दमा परमेश्वर[१] के पास आए और जिस को परमेश्वर दोषी ठहराए[२] वह दूसरे को दूना भर दे ॥

१०। यदि कोई दूसरे को गदहा वा बैल वा भेड़ बकरी वा कोई और पशु रखने के लिये सौंपे और किसी के बिन देखे वह मर जाए वा चोट खाए वा हांक दिया जाए, ११। तो उन दोनों के बीच यहोवा की किरिया खिलाई जाए कि मैं ने इस की संपत्ति पर हाथ नहीं लगाया तब संपत्ति का स्वामी इस को सच माने और दूसरे को उसे कुछ भर देना न होगा ॥ १२। यदि वह सचमुच उस के यहां से चुराया गया हो तो वह उस के स्वामी को उसे भर दे ॥ १३। और यदि वह फाड़ डाला गया हो तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिये ले आए तब उसे उस को भर देना न पड़ेगा ॥

१४। फिर यदि कोई दूसरे से पशु मांग लाए और उस के स्वामी के संग न रहते उस को चोट लगे वा वह मर जाए तो वह निश्चय उस की हानि भर दे ॥ १५। यदि उस का स्वामी संग हो तो दूसरे को उस की हानि भरना न पड़े और यदि वह भाड़े का हो तो उस की हानि उस के भाड़े में आ गई ॥

१६। यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिस के ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उस के संग कुकर्म्म करे तो वह निश्चय उस का मोल देके उसे ब्याह ले ॥ १७। पर यदि उस का पिता उसे देने को बिलकुल नाह करे तो कुकर्म्म करनेहारा कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रुपैया तौल दे ॥

(१) वा न्यायियों। (२) वा न्यायी दोषी ठहराएं।

१८ । डाइन को जीती रहने न देना ॥

१९ । जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए ॥

२० । जो कोई यहोवा को छोड़ किसी देवता के लिये बलि करे वह सत्यानाश किया जाए ॥ २१ । और परदेशी को न सताना और न उस पर अंधेर करना क्योंकि मिस्र देश में तुम भी परदेशी थे ॥ २२ । किसी विधवा वा बपमूए बालक को दुःख न देना ॥ २३ । यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुःख दो और वे कुछ भी मेरी दोहाई दें तो मैं निश्चय उन की दोहाई सुनूंगा ॥ २४ । तब मेरा कोप भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मरवाऊंगा और तुम्हारी स्त्रियां विधवा और तुम्हारे बालक बपमूए हो जाएंगे ॥

२५ । यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो रुपैये का ऋण दे तो उस से महाजन की नाईं ब्याज न लेना ॥ २६ । यदि तू कभी अपने भाईबन्धु के वस्त्र को बंधक करके रख भी ले तो सूर्य्य के अस्त होने लों उस को फेर देना ॥ २७ । क्योंकि वह उस का एक ही ओढ़ना है, उस की देह का वही अकेला वस्त्र होगा फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा सो जब वह मेरी दोहाई देगा तब मैं उस की सुनूंगा क्योंकि मैं तो करुणामय हूं ॥

२८ । परमेश्वर[1] को न कोसना और न अपने लोगों के प्रधान को स्राप देना ॥ २९ । अपने खेतों की उपज और फलों के रस में से कुछ मुझे देने में विलम्ब न करना । अपने बेटों में से पहिलौठे को मुझे देना ॥ ३० । वैसे ही अपनी गायों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे भी देना सात दिन लों तो बच्चा अपनी माता के संग रहे और आठवें दिन तू उसे मुझ को देना ॥ ३१ । और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होना इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले उस का मांस न खाना उस को कुत्तों के आगे फेंक देना ॥

---

(१) वा. न्यायियो ।

२३. झूठी बात न फैलाना, अन्यायी साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना ॥ २ । बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना और न उन के पीछे फिरके मुक़द्दमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना ॥ ३ । और कंगाल के मुकद्दमे में उस का भी पक्ष न करना ॥

४ । यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे मिले तो उसे उस के पास अवश्य फेर ले आना ॥ ५ । फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे तो चाहे उस को उस के स्वामी के लिये छुड़ाना तेरा जी न चाहता हो तौभी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ाना ॥

६ । तेरे लोगों में से जो दरिद्र हो उस के मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना ॥ ७ । झूठे मुक़द्दमे से दूर रहना और निर्दोष और धर्म्मी को घात न करना क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा ॥ ८ । घूस न लेना क्योंकि घूस देखनेहारों को भी अंधा कर देता और धर्म्मियों की बातें मोड़ देता है ॥ ९ । परदेशी पर अन्धेर न करना तुम तो परदेशी के मन की जानते हो क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे ॥

१० । छः बरस तो अपनी भूमि में बोना और उस की उपज एकट्ठी करना ॥ ११ । पर सातवें बरस में उस को पड़ती रहने देना और वैसे ही छोड़ देना सो तेरे भाईबन्धुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने पाएं और जो कुछ उन से भी बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम आए । और अपनी दाख और जलपाई की बारियों को भी ऐसे ही करना ॥ १२ । छः दिन तो अपना काम काज करना और सातवें दिन विश्राम करना कि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएं और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंढा कर सकें ॥ १३ । और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस में सावधान रहना और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना वरन वे तुम्हारे मुंह से भी निकलने न पाएं ॥

१४ । बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्ब्ब

मानना ॥ १५। अखमीरी रोटी का पर्व मानना उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब् महीने के नियत समय पर सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आये। और मुझ को कोई छूछे हाथ अपना मुंह न दिखाए ॥ १६। और जब तेरी बोई खेती का पहिली उपज तैयार हो तब कटनी का पर्व मानना और बरस के अन्त पर जब तू परिश्रम के फल बटोरके ढेर लगाए तब बटोरन का पर्व मानना ॥ १७। बरस दिन में तीनों बार तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा को अपना अपना मुंह दिखाएं ॥

१८। मेरे बलिपशु का लोहू खमीरी रोटी के संग न चढ़ाना और न मेरे पर्व के उत्तम बलिदान[1] में से कुछ बिहान लों रहने देना ॥ १९। अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उस की माता के दूध में न सिझाना ॥

२०। सुन मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उस में तुझे पहुंचाएगा ॥ २१। उस के साम्हने सावधान रहना और उस की मानना उस का विरोध न करना क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा इस लिये कि उस में मेरा नाम रहता है ॥ २२। और यदि तू सचमुच उस की माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूंगा ॥ २३। इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे एमोरी हित्ती परिज्जी कनानी हिव्वी और यबूसी लोगों के यहां पहुंचाएगा और मैं उन को सत्यानाश कर डालूंगा ॥ २४। उन के देवताओं को दण्डवत् न करना और न उन की उपासना करना न उन के से काम करना बरन उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना और उन लोगों की लाठों को टुकड़े टुकड़े कर देना ॥ २५। और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा ॥ २६। तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा ॥ २७। जितने लोगों के बीच तू जाए उन सभों के मन में मैं अपना भय पहिले से ऐसा समवा दूंगा कि उन को व्याकुल कर दूंगा और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊंगा ॥ २८। और मैं तुझ से पहिले बर्रों को भेजूंगा जो हिव्वी कनानी और हित्ती लोगों को तेरे साम्हने से भगाके दूर कर देंगी ॥ २९। मैं उन को तेरे आगे से एक ही बरस में तो न निकाल दूंगा न हो कि देश उजाड़ हो जाए और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें ॥ ३०। जब लों तू फूल फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब लों मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा थोड़ा करके निकालता रहूंगा ॥ ३१। मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों के समुद्र लों और जंगल से लेकर महानद लों के देश को तेरा कर दूंगा मैं उस देश के निवासियों को तेरे वश कर दूंगा और तू उन्हें अपने साम्हने से बरबस निकालेगा ॥ ३२। तू न तो उन से वाचा बान्धना और न उन के देवताओं से ॥ ३३। वे तेरे देश में रहने न पाएं न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएं क्योंकि यदि तू उन के देवताओं की उपासना करे तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा ॥

(यहोवा और इस्राएलियों के बीच वाचा बन्धने का वर्णन)

२४. फिर उस ने मूसा से कहा तू हारून नादाब् अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनियों समेत यहोवा के पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना ॥ २। और केवल मूसा यहोवा के समीप आए वे समीप न आएं दूसरे लोग उस के संग ऊपर न आएं ॥ ३। तब मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिये तब सब लोग एक स्वर से बोल उठे कि जितनी बातें यहोवा ने कही हैं सब

(१) मूल में की चर्बी।

हम मानेंगे ॥ ४ । तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख दिये और बिहान को सवेरे उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्राएल् के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खंभे भी बनवाये ॥ ५ । तब उस ने कई इस्राएली जवानों को भेजा जिन्हों ने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाये ॥ ६ । और मूसा ने आधा लोहू तो लेकर कटोरों में रक्खा और आधा वेदी पर छिड़क दिया ॥ ७ । तब वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ सुनाया उसे सुनकर उन्हों ने कहा जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे और उस की आज्ञा मानेंगे ॥ ८ । तब मूसा ने लोहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया और उन से कहा देखो यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बांधी है ॥ ९ । तब मूसा हारून नादाब् अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनिये ऊपर गये, १० । और इस्राएल् के परमेश्वर का दर्शन किया और उस के चरणों के तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था ॥ ११ । और उस ने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया सो उन्हों ने परमेश्वर का दर्शन किया और खाया पिया ॥

१२ । तब यहोवा ने मूसा से कहा पहाड़ पर मेरे पास चढ़कर वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियाएं और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा कि तू उन को सिखाए ॥ १३ । सो मूसा यहोशू नाम अपने टहलुए समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया ॥ १४ । और पुरनियों से वह यह कह गया कि जब लों हम तुम्हारे पास फिर न आएं तब लों तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो और सुनो हारून और हूर् तुम्हारे संग हैं सो यदि किसी का मुकद्दमा हो तो उन्हीं के पास जाए ॥ १५ । तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया और बादल ने पर्वत को छा लिया ॥ १६ । तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया और वह बादल उस पर छः दिन लों छाया रहा और सातवें दिन उस ने मूसा को बादल के बीच से बुलाया ॥ १७ । और इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पड़ता था ॥ १८ । सो मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया और मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा ॥

(सामान सहित पवित्रस्थान के बनाने की आज्ञाएं)

२५. यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से यह कहना कि मेरे लिये भेंट लिई जाए जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना ॥ ३ । और जिन वस्तुओं की भेंट उन से लेनी है वे ये हैं अर्थात् सोना चांदी पीतल, ४ । नीले बैंजनी और लाही रंग का कपड़ा सूक्ष्म सनी का कपड़ा बकरी का बाल, ५ । लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें सूइसों की खालें बबूल की लकड़ी, ६ । उजियाले के लिये तेल अभिषेक के तेल के लिये और सुगन्धित धूप के लिये सुगंध द्रव्य, ७ । एपोद् और चपरास के लिये सुलैमानी पत्थर और जड़ने के लिये मणि ॥ ८ । और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएं कि मैं उन के बीच निवास करूं ॥ ९ । जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूं अर्थात् निवासस्थान और उस के सब सामान का नमूना उसी के समान तुम लोग उसे बनाना ॥

१० । बबूल की लकड़ी का एक संदूक बनाया जाए उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई और ऊंचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की हों ॥ ११ । और उस को चोखे सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना और संदूक के ऊपर चारों ओर सोने की बाड़ बनवाना ॥ १२ । और सोने के चार कड़े ढलवाकर उस के चारों पायों पर एक अलंग दो कड़े और दूसरी अलंग भी दो कड़े लगवाना ॥ १३ । फिर बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना और उन्हें भी सोने से मढ़वाना ॥ १४ । और डण्डों को संदूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डालना कि उन के बल संदूक उठाया जाए ॥ १५ । वे डण्डे संदूक के कड़ों में लगे रहें और उस से अलग न किये जाएं ॥ १६ । और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे उसी संदूक में रखना ॥ १७ । फिर

चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना बनवाना उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो ॥ १८ । और सोना गढ़ाकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर लगवाना ॥ १९ । एक करूब तो एक सिरे और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर लगवाना और करूबों को और प्रायश्चित्त के ढकने को एक ही टुकड़े के बनाकर उस के दोनों सिरों पर लगवाना ॥ २० । और उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उन से ढपा रहे और उन के मुख आम्हने साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें ॥ २१ । और प्रायश्चित्त के ढकने को संदूक के ऊपर लगवाना और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे संदूक के भीतर रखना ॥ २२ । और मैं उस के ऊपर रहके[1] तुझ से मिला करूंगा और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी उन सभों के विषय में प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से जो साक्षीपत्र के संदूक पर होंगे तुझ से वार्त्ता किया करूंगा ॥

२३ । फिर बबूल की लकड़ी की एक मेज बनवाना उस की लंबाई दो हाथ चौड़ाई एक हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की हो ॥ २४ । उसे चोखे सोने से मढ़वाना और उस की चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना ॥ २५ । और उस की चारों ओर चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना और इस पटरी की चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना ॥ २६ । और सोने के चार कड़े बनवाकर मेज के उन चारों कोनों में लगवाना जो उस के चारों पायों में होंगे ॥ २७ । वे कड़े पटरी के पास ही हों और डंडों के घरों का काम दें कि मेज उन्हीं के बल उठाई जाए ॥ २८ । और डंडों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना और मेज उन्हीं से उठाई जाए ॥ २९ । और उस पर के परात और धूपदान और करवे और उंडेलने के कटोरे सब चोखे सोने के बनवाना ॥ ३० । और मेज पर तू मेरे आगे भेंट की रोटियां नित्य रखाना ॥

[1] मूल में, मैं बहा ।

३१ । फिर चोखे सोने का एक दीवट बनवाना सोना गढ़ाकर वह दीवट पाये और डण्डी सहित बनाया जाए उस के पुष्पकोश गांठ और फूल सब एक ही टुकड़े के हों ॥ ३२ । और उस की अलंगों से छः डालियां निकलें तीन डालियां तो दीवट की एक अलंग से और तीन डालियां उस की दूसरी अलंग से निकलें ॥ ३३ । एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोश एक एक गांठ और एक एक फूल हों । दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही ढब हो ॥ ३४ । और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के सरीखे चार पुष्पकोश अपनी अपनी गांठ और फूल समेत हों ॥ ३५ । और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ हो वे दीवट समेत एक ही टुकड़े के हों ॥ ३६ । उन की गांठें और डालियां सब दीवट समेत एक ही टुकड़ा हो चोखा सोना गढ़ाकर सारा दीवट एक ही टुकड़े का बनवाना ॥ ३७ । और सात दीपक बनवाना और दीपक बारे जाएं कि वे दीवट के साम्हने प्रकाश दें ॥ ३८ । और उस के गुलतराश और गुलदान सब चोखे सोने के हों ॥ ३९ । वह सब इस सारे सामान समेत किक्कार् भर चोखे सोने का बने ॥ ४० । और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया जाता है ॥

२६. फिर निवासस्थान के लिये दस पटों को बनवाना इन को बटी हुई सनीवाले और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बनवाना ॥ २ । एक एक पट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो सब पट एक ही नाप के हों ॥ ३ । पांच पट एक दूसरे से जोड़े हुए हों और फिर जो पांच पट रहेंगे वे भी एक दूसरे से जोड़े हुए हों ॥ ४ । और जहां ये दोनों पट जोड़े जाएं वहां की दोनों छोरों पर नीली नीली फलियां लगवाना ॥ ५ । दोनों छोरों में पचास पचास फलियां

ऐसे लगवाना कि वे आम्हने साम्हने हों ॥ ६ । और सोने के पचास अंकड़े बनवाना और पटों के पर्दों को अंकड़ों के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना कि निवासस्थान मिलकर एक ही हो जाए ॥ ७ । फिर निवास के ऊपर तंबू का काम देने के लिये बकरी के बाल के ग्यारह पट बनवाना ॥ ८ । एक एक पट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो ग्यारहों पट एक ही नाप के हों ॥ ९ । और पांच पट अलग और फिर छः पट अलग जुड़वाना और छठवें पट को तंबू के साम्हने मोड़वाना ॥ १० । और जहां पर्दा और छक्का दोनो जोड़े जाएं वहां की दोनों कोरों में पचास पचास फलियां लगवाना ॥ ११ । और पीतल के पचास अंकड़े बनवाना और अंकड़ों को फलियों में लगाकर तंबू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक ही हो जाए ॥ १२ । और तंबू के पटों का लटका हुआ भाग अर्थात् जो आधा पट रहेगा वह निवास की पिछली ओर लटका रहे ॥ १३ । और तंबू के पटों की लंबाई में से हाथ भर इधर और हाथ भर उधर निवास के ढांपने के लिये उस की दोनों अलंगों पर लटका हुआ रहे ॥ १४ । फिर तंबू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का एक ओहार और उस के ऊपर सूइसों की खालों का भी एक ओहार बनवाना ॥

१५ । फिर निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तखते खड़े रहने को बनवाना ॥ १६ । एक एक तखते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ को हो ॥ १७ । एक एक तखते मे एक दूसरे से जोड़ो हुई दो दो चूलें हों निवास के सब तखतों को इसी भांति से बनवाना ॥ १८ । और निवास के लिये जो तखते तू बनवाएगा उन में से बीस तखते तो दक्खिन ओर के लिये हों ॥ १९ । और बीसों तखतों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना अर्थात् एक एक तखते के नीचे उस के चूलों के लिये दो दो कुर्सियां ॥ २० । और निवास की दूसरी अलंग अर्थात् उत्तर ओर बीस तखते बनवाना ॥ २१ । और उन के लिये चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना अर्थात् एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां हों ॥ २२ । और निवास की पिछली अलंग अर्थात् पच्छिम ओर के लिये छः तखते बनवाना ॥ २३ । और पिछली अलंग में निवास के कोनों के लिये दो तखते बनवाना ॥ २४ । और ये नीचे से दो दो भाग के हों और दोनों भाग ऊपर के सिरे लों एक एक कड़े में मिलाये जाएं दोनों तखतों का यही ढब हो, ये तो दोनों कोनों के लिये हों ॥ २५ । और आठ तखते हों और उन की चांदी की सोलह कुर्सियां हों अर्थात् एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां हों ॥ २६ । फिर बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनवाना अर्थात् निवास की एक अलंग के तखतों के लिये पांच, २७ । और निवास की दूसरी अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े और निवास की जो अलंग पच्छिम ओर पिछले भाग में होगी उस के लिये पांच बेंड़े बनवाना ॥ २८ । और बीचवाला बेंड़ा जो तखतों के मध्य में होगा वह तंबू के एक सिरे से दूसरे सिरे लों पहुंचे ॥ २९ । फिर तखतों को सोने से मढ़वाना और उन के कड़े जो बेंड़ों के घरों का काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना और बेंड़ों को भी सोने से मढ़वाना ॥ ३० । और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया जाता है ॥

३१ । फिर नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का एक बीचवाला पर्दा बनवाना वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बने ॥ ३२ । और उस को सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खंभों पर लटकाना इन की अंकड़ियां सोने की हों और ये चांदी की चार कुर्सियों पर खड़ी रहें ॥ ३३ । और बीचवाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर उस की आड़ में साक्षीपत्र का संदूक भीतर लिवा ले जाना सो वह बीचवाला पर्दा तुम्हारे लिये पवित्रस्थान को परमपवित्रस्थान से अलग किये रहे ॥ ३४ । फिर परमपवित्रस्थान में साक्षीपत्र के संदूक पर प्रायश्चित्त के ढकने को रखना ॥ ३५ । और उस पर्दे के बाहर निवास की उत्तर अलंग मेज को रखना और उस की दक्खिन अलंग मेज

के साम्हने दीवट को रखना ॥ ३६ । फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ एक पर्दा बनवाना ॥ ३७ । और इस पर्दे के लिये बबूल के पांच खंभे बनवाना और उन को सोने से मढ़वाना उन की अंकड़ियां सोने की हों और उन के लिये पीतल की पांच कुर्सियां ढलवाना ॥

२७. फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की पांच हाथ लम्बी और पांच हाथ चौड़ी बनवाना, वेदी चौकोर हो और उस की ऊंचाई तीन हाथ की हो ॥ २ । और उस के चारों कोनों पर चार सींग बनवाना वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों और उसे पीतल से मढ़वाना ॥ ३ । और उस की राख उठाने के पात्र और फाव-ड़ियां और कटोरे और कांटे और करछे बनवाना उस का यह सारा सामान पीतल का बनवाना ॥ ४ । और उस के लिये पीतल की जाली की एक झंझरी बनवाना और उस के चारों सिरों में पीतल के चार कड़े लगवाना ॥ ५ । और उस झंझरी को वेदी की चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगवाना कि वह वेदी की ऊंचाई के मध्य लों पहुंचे ॥ ६ । और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डंडे बन-वाना और उन्हें पीतल से मढ़वाना ॥ ७ । और डंडे कड़ों में डाले जाएं कि जब जब वेदी उठाई जाए तब तब वे उस की दोनों अलंगों पर रहें ॥ ८ । वेदी को तख्तों से खोखली बनवाना जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई जाती है वैसी ही वह बनाई जाए ॥

९ । फिर निवास के आंगन को बनवाना उस की दक्खिन अलंग के लिये तो बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के सब पर्दों को मिलाकर उस की लम्बाई सौ हाथ की हो एक अलंग पर तो इतना ही हो ॥ १० । और उन के बीस खंभे बनें और इन के लिये पीतल की बीस कुर्सियां भी बनें और खंभों की अंकड़ियां और उन के जोड़ने की छड़ें चांदी की हों ॥ ११ । और उसी भांति आंगन की उत्तर अलंग की लंबाई में भी सौ हाथ लंबे पर्दे हों और उन के भी बीस खंभे और इन के लिये भी पीतल की बीस कुर्सियां हों और उन खंभों की भी अंकड़ियां और छड़ें चांदी की हों ॥ १२ । फिर आंगन की चौड़ाई में पच्छिम ओर पचास हाथ के पर्दे हों उन के खंभे दस और कुर्सियां भी दस हों ॥ १३ । और पूरब अलंग पर भी आंगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो ॥ १४ । और आंगन के द्वार की एक ओर पंद्रह हाथ के पर्दे हों और उन के खंभे तीन और कुर्सियां भी तीन हों ॥ १५ । और द्वार की दूसरी ओर भी पंद्रह हाथ के पर्दे हों उन के भी खंभे तीन और कुर्सियां तीन हों ॥ १६ । और आंगन के द्वार के लिये एक पर्दा बनवाना जो नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कारचोब का बनाया हुआ बीस हाथ का हो उस के खंभे चार और कुर्सियां भी चार हों ॥ १७ । आंगन की चारों ओर के सब खंभे चांदी की छड़ों से जुड़े हुए हों उन की अंकड़ियां चांदी की और कुर्सियां पीतल की हों ॥ १८ । आंगन की लंबाई सौ हाथ की और उस की चौड़ाई बराबर पचास हाथ और उस की कनात की ऊंचाई पांच हाथ की हो उस की कनात बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की बने और खंभों की कुर्सियां पीतल की हों ॥ १९ । निवास के भांति भांति के बरतने का सब सामान और उस के सब खूंटे और आंगन के भी सब खूंटे पीतल ही के हों ॥

२० । फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना कि मेरे पास दीवट के लिये कूटके निकाला हुआ जलपाई का निर्म्मल तेल ले आना जिस से दीपक नित्य बरा[1] करें ॥ २१ । मिलाप के तंबू में उस बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा हारून और उस के पुत्र दीवट सांझ से भोर लों यहोवा के साम्हने सजा रखें यह इस्राएलियों के लिये पीढ़ी पीढ़ी लों सदा की विधि ठहरे ॥

(१) मूल में चढ़ा ।

(याजकों के पवित्र वस्त्र बनाने और उन के संस्कार होने की आज्ञाएं)

२८. फिर तू इस्राएलियों में से अपने भाई हारून और नादाब् अबीहू एलाजार् और ईतामार् नाम उस के पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें॥ २। और तू अपने भाई हारून के लिये विभव और शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना॥ ३। और जितनों के हृदय में बुद्धि है जिन को मैं ने बुद्धि देनेहारे आत्मा से परिपूर्ण किया है उन को तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिये पवित्र बने॥ ४। और जो वस्त्र उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं अर्थात् चपरास एपोद् बागा चारखाने का अंगरखा पगड़ी और फेंटा ये ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उस के पुत्रों के लिये बनाये जाएं कि वे मेरे लिये याजक का काम करें॥ ५। और वे सोने और नीले और बैंजनी और लाही रंग का और सूक्ष्म सनी का कपड़ा लें॥

६। और वे एपोद् को बनाएं वह सोने का और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बने उस की बनावट कढ़ाई के काम की हो॥ ७। उस के दोनों सिरों में जोड़े हुए दोनों कंधों पर के बन्धन हों इसी भांति वह जोड़ा जाए॥ ८। और एपोद् पर जो काढ़ा हुआ पटुका होगा उस की बनावट उसी के समान हो और वे दोनों बिना जोड़ के हों और सोने और नीले बैंजनी और लाही रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े के हों॥ ९। फिर दो सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल् के पुत्रों के नाम खुदवाना॥ १०। उन के नामों में से छः तो एक मणि पर और शेष छः नाम दूसरे मणि पर इस्राएल् के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार खुदवाना॥ ११। मणि खोदनेहारे के काम से जैसे छापा खोदा जाता है वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल् के पुत्रों के नाम खुदवाना और उन को सोने के खानों में जड़ाना॥ १२। और दोनों मणियों को एपोद् के कंधों पर लगवाना वे इस्राएलियों के निमित्त स्मरण करानेहारे मणि ठहरेंगे अर्थात् हारून उन के नाम यहोवा के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठाये रहे॥

१३। फिर सोने के खाने बनवाना॥ १४। और डोरियों की नाईं गूंथे हुए दो तोड़े चोखे सोने के बनवाना और गूंथे हुए तोड़ों को उन खानों में जड़ाना॥ १५। फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना एपोद् की नाईं सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की उसे बनवाना॥ १६। वह चौकोर और दोहरी हो और उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक बित्ते की हों॥ १७। और उस में चार पांति मणि जड़ाना पहिली पांति में तो माणिक्य पद्मराग और लालड़ी हों॥ १८। दूसरी पांति में मरकत नीलमणि और हीरा, १९। तीसरी पांति में लशम सूर्य्यकांत और नीलम, २०। और चौथी पांति में फीरोजा सुलैमानी मणि और यशब हों ये सब सोने के खानों में जड़े जाएं॥ २१। और इस्राएल् के पुत्रों के जितने नाम हैं उतने मणि हों अर्थात् उन के नामों की गिनती के अनुसार बारह नाम खुदें बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम एक एक मणि पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है॥ २२। फिर चपरास पर डोरियों की नाईं गूंथे हुए चोखे सोने के तोड़े लगवाना॥ २३। और चपरास में सोने की दो कड़ियां लगवाना और दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगवाना॥ २४। और सोने के दोनों गूंथे तोड़ों को उन दोनों कड़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी लगवाना॥ २५। और गूंथे हुए दोनों तोड़ों के दोनों बाकी सिरों को दोनों खानों में जड़ाके एपोद् के दोनों कंधों के बंधनों पर उस के साम्हने लगवाना॥ २६। फिर सोने की दो और कड़ियां बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर उस की उस कोर पर जो एपोद् की भीतरवार होगी लगवाना॥ २७। फिर उन के सिवाय सोने की दो और कड़ियां बनवाकर एपोद् के दोनों कंधों के बन्धनों पर नीचे से उस के साम्हने पर और उस के जोड़ के पास

एपोद् के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना ॥ २८ । और चपरास अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद् की कड़ियों में नीले फीते से बान्धी जाए इस रीति वह एपोद् के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे और चपरास एपोद् पर से अलग न होने पाए ॥ २९ । और जब जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब तब वह न्याय की चपरास पर अपने हृदय के ऊपर इस्राएलियों के नामों को उठाये रहे जिस से यहोवा के साम्हने उन का स्मरण नित्य रहे ॥ ३० । और तू न्याय की चपरास में ऊरीम्[1] और तुम्मीम्[2] को रखना और जब जब हारून यहोवा के साम्हने प्रवेश करे तब तब वे उस के हृदय के ऊपर हों सो हारून इस्राएलियों के न्यायपदार्थ को अपने हृदय के ऊपर यहोवा के साम्हने नित्य उठाये रहे ॥

३१ । फिर एपोद् के बागे को संपूर्ण नीले रंग का बनवाना ॥ ३२ । और उस की बनावट ऐसी हो कि उस के बीच में सिर डालने के लिये छेद हो और उस छेद की चारों ओर बखतर के छेद की सी एक बुनी हुई कोर हो कि वह फटने न पाए ॥ ३३ । और उस के नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के अनार बनवाना और उन के बीच बीच चारों ओर सोने की घंटियां लगवाना ॥ ३४ । अर्थात् एक सोने की घंटी और एक अनार फिर एक सोने की घंटी और एक अनार इसी रीति बागे के नीचेवाले घेरे में चारों ओर हो ॥ ३५ । और हारून उस बागे को सेवा टहल करने के समय पहिना करे कि जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर यहोवा के साम्हने आए वा बाहर निकले तब तब उस का शब्द सुनाई दे नहीं तो वह मर जाएगा ॥

३६ । फिर चोखे सोने का एक टीका बनवाना और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे जाएं अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र, ३७ । और उसे नीले फीते पर बंधाना और वह पगड़ी के साम्हने पर रहे ॥ ३८ । सो वह हारून के माथे पर रहे इस लिये कि इस्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएं अर्थात् जितनी पवित्र भेंटें करें उन

(१) अर्थात् ज्योतियां । (२) अर्थात् पूर्णतार ।

पवित्र वस्तुओं का दोष हारून उठाये रहे और वह नित्य उस के माथे पर रहे जिस से यहोवा उन से प्रसन्न रहे ॥

३९ । और अंगरखे को सूक्ष्म सनी के कपड़े का और चारखानेवाला बुनाना और एक पगड़ी भी सूक्ष्म सनी के कपड़े की बनवाना और कारचोबी काम किया हुआ एक फेंटा भी बनवाना ॥

४० । फिर हारून के पुत्रों के लिये भी अंगरखे और फेंटे और टोपियां बनवाना ये वस्त्र भी विभव और शोभा के लिये बनें ॥ ४१ । अपने भाई हारून और उस के पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहिनाकर उन का अभिषेक और संस्कार[1] करना और उन्हें पवित्र करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें ॥ ४२ । और उन के लिये सनी के कपड़े की जांघियां बनवाना जिन से उन का तन ढपा रहे वे कटि से जांघ लों की हों ॥ ४३ । और जब जब हारून वा उस के पुत्र मिलापवाले तंबू में प्रवेश करें वा पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को वेदी के पास जाएं तब तब वे उन जांघियों को पहिने रहें न हो कि वे दोष उठाकर मर जाएं यह हारून के लिये और उस के पीछे उस के वंश के लिये भी सदा की विधि ठहरे ॥

२९. और उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उन से करना है कि वे मेरे लिये याजक का काम करें सो यह है कि एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेढ़े लेना ॥ २ । और अखमीरी की रोटी और तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी की पपड़ियां भी लेना ये सब गोहूं के मैदे के बनवाना ॥ ३ । इन को एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनों मेढ़ों समेत समीप ले आना ॥ ४ । फिर हारून और उस के पुत्रों को मिलापवाले तंबू के द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना ॥ ५ । तब उन वस्त्रों को

(१) यहां और जहां कहीं याजकों के संस्कार या याजकों के से संस्कार की चर्चा हो तहां जानो कि मूल का शब्दार्थ हाथ भर देना या भर लेना है ।

लेकर हारून को अंगरखा और एपोद् का बागा पहिनाना और एपोद् और चपरास बांधना और एपोद् का काढ़ा हुआ पटुका भी बांधना ॥ ६। और उस के सिर पर पगड़ी को रखना और पगड़ी पर पवित्र मुकुट को रखना ॥ ७। तब अभिषेक का तेल ले उस के सिर पर डालकर उस का अभिषेक करना ॥ ८। फिर उस के पुत्रों को समीप ले आकर उन को अंगरखे पहिनाना ॥ ९। और उन के अर्थात् हारून और उस के पुत्रों के फेंटे बांधना और उन के सिर पर टोपियां रखना जिस से याजक के पद का उन को प्राप्त होना सदा की विधि ठहरे इसी प्रकार हारून और उस के पुत्रों का संस्कार करना ॥ १०। और बछड़े को मिलापवाले तंबू के साम्हने समीप ले आना और हारून और उस के पुत्र बछड़े के सिर पर अपने अपने हाथ टेकें ॥ ११। तब उस बछड़े को यहोवा के आगे मिलापवाले तंबू के द्वार पर बलि करना ॥ १२। और बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर अपनी उंगली से वेदी के सींगों पर लगाना और और सब लोहू को वेदी के पाये पर उंडेल देना ॥ १३। और जिस चरबी से अन्तरियां छपी रहती हैं और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर होती है उन दोनों को गुर्दों और उन पर की चरबी समेत लेकर सब को वेदी पर जलाना ॥ १४। और बछड़े का मांस और खाल और गोबर छावनी से बाहर आग में जला देना क्योंकि यह पापबलिपशु होगा ॥ १५। फिर एक मेढ़ा लेना और हारून और उस के पुत्र उस के सिर पर अपने अपने हाथ टेकें ॥ १६। तब उस मेढ़े को बलि करना और उस का लोहू लेकर वेदी पर चारों ओर छिड़कना ॥ १७। और उस मेढ़े को टुकड़े टुकड़े काटना और उस की अन्तरियों और पैरों को धोकर उस के टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना ॥ १८। तब उस सारे मेढ़े को वेदी पर जलाना वह तो यहोवा के लिये होमबलि होगा वह सुखदायक सुगंध और यहोवा के लिये हव्य[१] होगा ॥ १९। फिर दूसरे मेढ़े को लेना और हारून और उस के पुत्र उस के सिर पर अपने अपने हाथ टेकें ॥ २०। तब उस मेढ़े को बलि करना और उस के लोहू में से कुछ लेकर हारून और उस के पुत्रों के दहिने कान के सिरे पर और उन के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाना और लोहू को वेदी पर चारों ओर छिड़क देना ॥ २१। फिर वेदी पर के लोहू और अभिषेक के तेल इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उस के वस्त्रों पर और उस के पुत्रों और उन के वस्त्रों पर भी छिड़क देना तब वह अपने वस्त्रों समेत और उस के पुत्र भी अपने अपने वस्त्रों समेत पवित्र हो जाएंगे ॥ २२। तब मेढ़े को संस्कारवाला जानकर उस में से चरबी और मोटी पूंछ को और जिस चरबी से अन्तरियां छपी रहती हैं उस को और कलेजे पर की झिल्ली को और चरबी समेत दोनों गुर्दों को और दहिने पुट्ठे को लेना ॥ २३। और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी होगी उस में से भी एक रोटी और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका और एक पपड़ी लेकर, २४। इन सभों को हारून और उस के पुत्रों के हाथों में रखकर हिलाये जाने की भेंट करके यहोवा के आगे हिलाना ॥ २५। तब उन वस्तुओं को उन के हाथों से लेकर होमबलि के ऊपर वेदी पर जला देना जिस से वे यहोवा के साम्हने चढ़कर सुखदायक सुगंध ठहरे वह तो यहोवा के लिये हव्य होगी ॥ २६। फिर हारून के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उस की छाती को लेकर हिलाये जाने की भेंट करके यहोवा के आगे हिलाना और वह तेरा भाग ठहरेगा ॥ २७। और हारून और उस के पुत्रों के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उस में से हिलाये जाने की भेंटवाली छाती जो हिलाई जाएगी और उठाये जाने की भेंटवाला पुट्ठा जो उठाया जाएगा इन दोनों को पवित्र ठहराना, २८। कि ये सदा की विधि की रीति पर इस्राएलियों की ओर से उस का और उस के पुत्रों का भाग ठहरें क्योंकि ये उठाये जाने की भेंटें ठहरी हैं सो यह इस्राएलियों की ओर से उन के मेलबलियों में से यहोवा के लिये उठाये जाने की भेंट होगी ॥ २९। और हारून के जो पवित्र वस्त्र होंगे सो उस

(१) अर्थात् जो वस्तु अग्नि में होमके चढ़ाई जाए।

के पीछे उस के बेटे पोते आदि को मिलते रहें कि उन्हीं को पहिने हुए उन का अभिषेक और संस्कार किया जाए ॥ ३० । उस के पुत्रों में से जो उस के स्थान पर याजक होगा सो जब पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को मिलापवाले तंबू में पहिले आए तब उन वस्त्रों को सात दिन लों पहिने रहे ॥ ३१ । फिर याजक के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसे लेकर उस का मांस किसी पवित्र स्थान में सिझाना ॥ ३२ । तब हारून अपने पुत्रों समेत उस मेढ़े का मांस और टोकरी की रोटी दोनों को मिलापवाले तंबू के द्वार पर खाए ॥ ३३ । और जिन पदार्थों से उन का संस्कार और उन्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा उन को वे तो खाएं परन्तु पराये कुल का कोई उन्हें न खाने पाए क्योंकि वे पवित्र होंगे ॥ ३४ । और यदि संस्कारवाले मांस वा रोटी में से कुछ बिहान लों बचा रहे तो उस बचे हुए को आग से जलाना वह खाया न जाए क्योंकि पवित्र होगा ॥ ३५ । और मैं ने तुझे जो जो आज्ञा दिई हैं उन सभों के अनुसार तू हारून और उस के पुत्रों से करना और सात दिन लों उन का संस्कार करते रहना, ३६ । अर्थात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिये दिन दिन चढ़ाना और वेदी के लिये भी प्रायश्चित्त करके उस को पाप छुड़ाकर पावन करना और उसे पवित्र करने के लिये उस का अभिषेक करना ॥ ३७ । सात दिन लों वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना और वेदी परमपवित्र ठहरेगी और जो कुछ उस से छू जाएगा वह पवित्र ठहरेगा ॥

३८ । जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़वाना होगा वह यह है अर्थात् दिन दिन एक एक बरस के दो भेड़ों के बच्चे ॥ ३९ । एक भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना ॥ ४० । और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन् की चौथाई कूटके निकाले हुए तेल से सना हुआ एपा का दसवां भाग मैदा और अर्घ के लिये हीन् की चौथाई दाखमधु देना ॥ ४१ । और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना और उस के साथ भोर के से अन्नबलि और अर्घ दोनों करना जिस से वह सुखदायक सुगंध और यहोवा के लिये हव्य ठहरे ॥ ४२ । तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलापवाले तंबू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे यह वह स्थान है जिस में मैं तुम लोगों से इस लिये मिला करूंगा कि तुझ से बातें करूं ॥ ४३ । और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा और वह तंबू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा ॥ ४४ । और मैं मिलापवाले तंबू और वेदी को पवित्र करूंगा और हारून और उस के पुत्रों को भी पवित्र करूंगा कि वे मेरे लिये याजक का काम करें ॥ ४५ । और मैं इस्राएलियों के बीच निवास करूंगा और उन का परमेश्वर ठहरूंगा ॥ ४६ । तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उन का वह परमेश्वर हूं जो उन को मिस्र देश से इस लिये निकाल लाया है कि उन के बीच निवास करूं मैं तो उन का परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(भांति भांति की पवित्र वस्तुएं बनाने और भांति भांति की रीति चलाने की आज्ञाएं)

३०. फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनवाना ॥ २ । उस की लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो सो वह चौकोर हो और उस की ऊंचाई दो हाथ की हो और वह और उस के सींग एकही टुकड़ा हों ॥ ३ । और इस वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर की अलंगों और सींगों को चोखे सोने से मढ़वाना और इस की चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना ॥ ४ । और इस की बाड़ के नीचे इस के दोनों पल्लों पर सोने के दो दो कड़े बनवाकर इस की दोनों ओर लगवाना वे इस के उठाने के डण्डों के खानों का काम दें ॥ ५ । और डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना ॥ ६ । और इस को उस पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के साम्हने होगा अर्थात् प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे रखना जो साक्षीपत्र के ऊपर होगा उसी स्थान में मैं तुझ से मिला करूंगा ॥ ७ । और इस वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे दिन दिन भोर को जब

वह दीपकों को ठीक करेगा तब वह धूप को जलाए॥ ८। फिर गोधूलि के समय जब वह दीपकों को बारेगा[1] तब भी उसे तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के साम्हने नित्य धूप जानके जलाए॥ ९। इस वेदी पर तुम न तो और प्रकार का धूप और न होमबलि न अन्नबलि चढ़ाना और न इस पर अर्घ देना॥ १०। और हारून बरस दिन में एक बार इस के सींगों पर प्रायश्चित्त करे तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में बरस दिन में एक बार प्रायश्चित्त के पापबलि के लोहू से इस पर प्रायश्चित्त किया जाए यह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे॥

११। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२। जब तू इस्राएलियों की गिनती लेने लगे तब वे गिनने के समय अपने अपने प्राण के लिये यहोवा को प्रायश्चित्त दें न हो कि उस समय उन पर कोई विपत्ति पड़े॥ १३। जितने लोग गिने जाएं[2] वे पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से आधा शेकेल् दें यह शेकेल् तो बीस गेरा का होता है सो यहोवा की भेंट आधा शेकेल् हो॥ १४। बीस बरस के वा उस से अधिक अवस्था के जो गिने जाएं[2] उन में से एक एक जन यहोवा की भेंट दे॥ १५। जब तुम्हारे प्राणों के प्रायश्चित्त के निमित्त यहोवा की भेंट दिई जाए तब न तो धनी लोग आधे शेकेल् से अधिक दें और न कंगाल लोग उस से कम दें॥ १६। सो इस्राएलियों से प्रायश्चित्त का रुपैया लेकर मिलापवाले तंबू के काम के लिये देना जिस से वह यहोवा के साम्हने इस्राएलियों का स्मरणचिन्ह ठहरे और उन के प्राणों का भी प्रायश्चित्त हो॥

१७। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८। धोने के लिये पीतल की एक हौदी और उस का पाया पीतल का बनवाना और उसे मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच में रखवाकर उस में जल भरामा॥ १९। और उस में हारून और उस के पुत्र अपने अपने हाथ पांव धोया करें॥ २०। जब जब वे मिलापवाले तंबू में प्रवेश करें तब तब वे हाथ पांव जल से धोएं नहीं तो मर जाएंगे और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल करने अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएं तब तब भी वे हाथ पांव धोएं न हो कि मर जाएं॥ २१। यह हारून और उस के पीढ़ी पीढ़ी के वंश के लिये सदा की विधि ठहरे॥

२२। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३। तू मुख्य मुख्य सुगंध द्रव्य अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से पांच सौ शेकेल् अपने आप निकला हुआ गंधरस और उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ शेकेल् सुगंधित दारचीनी और अढ़ाई सौ शेकेल् सुगंधित वच, २४। और पांच सौ शेकेल् तज और एक हीन् जलपाई का तेल लेकर, २५। उन से अभिषेक का पवित्र तेल अर्थात् गंधी की रीति से बासा हुआ सुगंधित तेल बनवाना यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे॥ २६। और उस से मिलापवाले तंबू का और साक्षीपत्र के संदूक का, २७। और सारे सामान समेत मेज का और सामान समेत दीवट का और धूपवेदी का, २८। और सारे सामान समेत होमवेदी का और पाये समेत हौदी का अभिषेक करना॥ २९। और उन को पवित्र करना कि वे परमपवित्र ठहरें जो कुछ उन से छू जाएगा वह पवित्र ठहरे॥ ३०। फिर पुत्रों सहित हारून का भी अभिषेक करना और यों उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने को पवित्र करना॥ ३१। और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल हो॥ ३२। वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए और मिलावट में उस के सरीखा और कुछ न बनाना वह तो पवित्र होगा वह तुम्हारे लेखे पवित्र ठहरे॥ ३३। जो कोई उस के सरीखा कुछ बनाए वा जो कोई उस में से कुछ पराये कुलवाले पर लगाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

३४। फिर यहोवा ने मूसा से कहा बोल नखी और कुन्दरू ये सुगन्ध द्रव्य निर्मल लोबान समेत ले लेना तोल में ये सब एक समान हों॥ ३५। और इन का धूप अर्थात् लोन मिलाकर गन्धी की रीति से बासा हुआ चोखा और पवित्र सुगन्ध द्रव्य

(१) मूल में. चढ़ाएगा। (२) मूल में. गिने हुओं के पास पार जाए।

बनवाना ॥ ३६ । फिर उस में से कुछ पीसकर बुकनी कर डालना तब उस में से कुछ मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के आगे जहां पर मैं तुझ से मिला करूंगा वहां रखना वह तुम्हारे लेखे परमपवित्र ठहरे ॥ ३७ । और जो धूप तू बनवाएगा मिलावट में उस के सरीखा तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना वह तुम्हारे लेखे यहोवा के लिये पवित्र ठहरे ॥ ३८ । जो कोई सूंघने के लिये उस के सरीखा कुछ बनाए सो अपने लोगों में वह नाश किया जाए ॥

३१. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। सुन मैं ऊरी के पुत्र बसलेल् को जो हूर् का पोता और यहूदा के गोत्र का है नाम लेकर बुलाता हूं ॥ ३ । और मैं उस को परमेश्वर के आत्मा से जो बुद्धि प्रवीणता ज्ञान और सब प्रकार के कार्य्यों की समझ देनेहारा आत्मा है परिपूर्ण करता हूं, ४ । जिस से वह हथौटी के कार्य्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भांति की बनावट में अर्थात् सोने चांदी और पीतल में, ५ । और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में काम करे ॥ ६ । और सुन मैं दान् के गोत्रवाले अहीसामाक् के पुत्र ओहोलीआब् को उस के संग कर देता हूं वरन जितने बुद्धिमान हैं उन सभों के हृदय में मैं बुद्धि देता हूं कि जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दिई है उन सभों को वे बनाएं, ७ । अर्थात् मिलापवाला तंबू और साक्षीपत्र का सन्दूक और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना और तंबू का सारा सामान, ८ । और सामान सहित मेज और सारे सामान समेत चोखे सोने की दीवट और धूपवेदी, ९ । और सारे सामान सहित होमवेदी और पाये समेत हौदी, १० । और काढ़े हुए वस्त्र और हारून याजक के याजकवाले काम के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र, ११ । और अभिषेक का तेल और पवित्रस्थान के लिये सुगन्धित धूप इन सभों को वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएं जो मैं ने तुझे दिई हैं ॥

१२ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १३ । तू इस्राएलियों से यह भी कहना कि निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है जिस से तुम यह बात जान रक्खो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है ॥ १४ । इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है जो उस को अपवित्र करे सो निश्चय मार डाला जाए जो कोई उस दिन में कुछ कामकाज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए ॥ १५ । छः दिन तो कामकाज किया जाए पर सातवां दिन परमविश्राम का दिन और यहोवा के लिये पवित्र है सो जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम काज करे वह निश्चय मार डाला जाए ॥ १६ । सो इस्राएली विश्रामदिन को माना करें वरन पीढ़ी पीढ़ी में उस को सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें ॥ १७ । वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिन्ह रहेगा क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथिवी को बनाया और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया ॥

१८ । जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका तब उस ने उस को अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों पटियाएं दिईं ॥

(इस्राएलियों के मूर्त्तिपूजा में फसने का वर्णन)

३२. जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हुआ तब वे हारून के पास एकट्ठे होकर कहने लगे अब हमारे लिये देवता बना जो हमारे आगे आगे चले क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है न जानिये क्या हुआ ॥ २ । हारून ने उन से कहा तुम्हारी स्त्रियों और बेटे बेटियों के कानों में सोने की जो बालियां हैं उन्हें तोड़कर उतारो और मेरे पास ले आओ ॥ ३ । तब सब लोगों ने उन के कानों में की सोनेवाली

वालियों को तोड़कर उतारा और हारून के पास ले आये ॥ ४। और हारून ने उन्हें उन के हाथ से लिया और टांकी से गढ़के एक बछड़ा ढालकर बनाया तब वे कहने लगे कि हे इस्राएल् तेरा परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है ॥ ५। यह देखके हारून ने उस के आगे एक वेदी बनवाई और यह प्रचारा कि कल यहोवा के लिये पर्व होगा ॥ ६। सो दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठकर होमबलि चढ़ाये और मेलबलि ले आये फिर बैठकर खाया पिया और उठकर खेलने लगे ॥

७। तब यहोवा ने मूसा से कहा नीचे उतर जा क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले आया है सो बिगड़ गये हैं ॥ ८। जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उन को दिई थी उस को झटपट छोड़कर उन्हों ने एक बछड़ा ढालकर बना लिया फिर उस को दंडवत किया और उस के लिये बलिदान भी चढ़ाया और यह कहा है कि हे इस्राएलियो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है सो यही है ॥ ९। फिर यहोवा ने मूसा से कहा मैं ने इन लोगों को देखा और सुन वे हठीले हैं[१] ॥ १०। सो अब मुझे मत रोक मैं उन्हें भड़के कोप से भस्म कर दूं और तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊं ॥ ११। तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहके मनाने लगा कि हे यहोवा तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है ॥ १२। मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएं कि वह उन को बुरे अभिप्राय से अर्थात् पहाड़ों में घात करके धरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया। तू अपने भड़के हुए कोप से फिर और अपनी प्रजा को ऐसी हानि से पछता ॥ १३। अपने दास इब्राहीम इसहाक् और याकूब का स्मरण कर जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाकर यह कहा था कि मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूंगा और यह सारा देश जिस की मैं ने चर्चा किई है तुम्हारे वंश को दूंगा कि वह उस का अधिकारी सदा लों रहे ॥ १४। तब यहोवा अपनी प्रजा की वह हानि करने से पछताया जो उस ने करने को कही थी ॥

१५। तब मूसा फिरकर साक्षी की दोनों पटियाएं हाथ में लिये हुए पहाड़ से उतर चला उन पटियाओं के तो इधर और उधर दोनों अलंगों पर कुछ लिखा हुआ था ॥ १६। और वे पटियाएं परमेश्वर की बनाई हुई थीं और उन पर जो लिखा था वह परमेश्वर का खोदकर लिखा हुआ था ॥ १७। जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का शब्द सुन पड़ा तब उस ने मूसा से कहा छावनी से लड़ाई का सा शब्द सुनाई देता है ॥ १८। उस ने कहा वह जो शब्द है सो न तो जीतनेहारों का है और न हारनेहारों का मुझे तो गाने का शब्द सुन पड़ता है ॥ १९। छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना देख पड़ा तब मूसा का कोप भड़क उठा और उस ने पटियाओं को अपने हाथों से पर्वत के तले पटककर तोड़ डाला ॥ २०। तब उस ने उन के बनाये हुए बछड़े को ले आग में डालके फूंक दिया और पीसकर चूर चूर कर डाला और जल के ऊपर फेंक दिया और इस्राएलियों को उसे पिलवा दिया ॥ २१। तब मूसा हारून से कहने लगा उन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू ने उन को इतने बड़े पाप में फंसाया ॥ २२। हारून ने उत्तर दिया मेरे प्रभु का कोप न भड़के तू तो उन लोगों को जानता ही है कि वे बुराई में मन लगाये रहते हैं ॥ २३। सो उन्हों ने मुझ से कहा था कि हमारे लिये देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चलें क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से छुड़ा लाया है न जानिये क्या हुआ ॥ २४। तब मैं ने उन से कहा जिस जिस के पास सोने के गहने हों वे उन को तोड़के उतारें सो जब उन्हों ने उन्हें मुझ को दिया और मैं ने उन्हें आग में डाल दिया तब यह बछड़ा निकल पड़ा ॥ २५। हारून ने उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था कि वे अपने विरोधियों के बीच उपहास[१] के योग्य हुए। सो

(१) मूल में. कड़ी गर्दनवाले।

(१) मूल में फुसफुसाहट।

उन को निरंकुश देखकर, २६। मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा जो कोई यहोवा की ओर का हो वह मेरे पास आए तब सारे लेवीय उस के पास एकट्ठे हुए॥ २७। उस ने उन से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाकर छावनी के एक निकास से ले दूसरे निकास लों घूम घूमकर अपने अपने भाइयों संगियों और पड़ोसियों को घात करो॥ २८। मूसा के इस वचन के अनुसार लेवीयों ने किया और उस दिन तीन हजार के अटकल लोग मारे गये॥ २९। फिर मूसा ने कहा आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो वरन अपने अपने बेटों और भाइयों के भी विरुद्ध होकर ऐसा करो जिस से वह आज तुम को आशीष दे॥ ३०। दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा तुम ने बड़ा ही पाप किया है अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊंगा क्या जानिये मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूं॥ ३१। सो मूसा यहोवा के पास फिर जाकर कहने लगा कि हाय हाय उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है॥ ३२। तौभी अब तू उन का पाप क्षमा करे—नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे[२]॥ ३३। यहोवा ने मूसा से कहा जिस ने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूंगा॥ ३४। अब तो तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिस की चर्चा मैं ने तुझ से किई थी देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा पर जिस दिन मैं दण्ड देने लगूं उस दिन उन को इस पाप का दण्ड दूंगा॥ ३५। और यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति डाली क्योंकि हारून के बनाये हुए बछड़े को उन्हों ने बनवाया था॥

३३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा जिस के विषय मैं ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब से किरिया खाकर कहा था कि मैं इसे तुम्हारे वंश को दूंगा॥ २। और मैं तेरे आगे आगे एक दूत को भेजूंगा और कनानी एमोरी हित्ती परिज्जी हिव्वी और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूंगा॥ ३। सो तुम लोग उस देश को जाओ जिस में दूध और मधु की धारा बहती है पर तुम जो हठीले हो इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होके न चलूंगा ऐसा न हो कि मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूं॥ ४। यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने लगे और कोई अपने गहने पहिने हुए न रहा॥ ५। क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था कि इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना कि तुम लोग तो हठीले हो जो मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूं तो तुम्हारा अन्त कर डालूंगा सो अब अपने अपने गहने अपने अंगों से उतार दो कि मैं जानूं कि तुम से क्या करना चाहिये॥ ६। तब इस्राएली होरेब् पर्वत से लेकर आगे को अपने गहिने उतारे रहे॥

(मूसा के इस्राएलियों के लिये पापमोचन मांगने का वर्णन.)

७। मूसा तो तंबू को लेकर छावनी से बाहर बरन दूर खड़ा कराया करता था और उस को मिलापवाला तंबू कहता था और जो कोई यहोवा को ढूंढता सो उस मिलापवाले तंबू के पास जो छावनी के बाहर था निकल जाता था॥ ८। और जब जब मूसा तंबू के पास जाता तब तब सब लोग उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते और जब लों मूसा उस तंबू में प्रवेश न करता तब लों उस की ओर ताकते रहते थे॥ ९। और जब मूसा उस तंबू में प्रवेश करता तब बादल का खंभा उतरके तंबू के द्वार पर ठहर जाता और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था॥ १०। और सब लोग जब बादल के खंभे को तंबू के द्वार पर ठहरा देखते तब उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत् करते थे॥ ११। और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने साम्हने बातें करता था जिस प्रकार कोई अपने भाई से

(१) मूल में अपना हाथ भरो। (२) मूल में मुझ को मिटा।

बातें करे और मूसा तो छावनी में फिर आता था पर यहोशू नाम एक जवान जो नून् का पुत्र और मूसा का टहलुआ था सो तंबू में से न निकलता था॥

१२। और मूसा ने यहोवा से कहा सुन तू मुझ से कहता है कि इन लोगों को ले चल पर यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किस को भेजेगा तौभी तू ने कहा है कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है[1] और तुझ पर मेरी अनुग्रह की दृष्टि है॥ १३। सो अब यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो मुझे अपनी गति समझा दे जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे फिर इस की भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है॥ १४। यहोवा ने कहा मैं आप चलूंगा[2] और तुझे विश्राम दूंगा॥ १५। उस ने उस से कहा यदि तू आप[3] न चले तो हमें यहां से आगे न ले जा॥ १६। यह कैसे जाना जाए कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथिवी भर के सब लोगों से अलग ठहरें॥

१७। यहोवा ने मूसा से कहा मैं यह काम भी जिस की चर्चा तू ने किई है करूंगा क्योंकि मेरी अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है[1]॥ १८। उस ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे॥ १९। उस ने कहा मैं तेरे सन्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा[4] और तेरे सन्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा और जिस पर मैं अनुग्रह करने चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा और जिस पर दया करने चाहूं उसी पर दया करूंगा॥ २०। फिर उस ने कहा तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीता नहीं रह सकता॥ २१। फिर यहोवा ने कहा सुन मेरे पास एक स्थान है सो तू उस चटान पर खड़ा हो॥ २२। और जब लों मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे[1] तब लों मैं तुझे चटान के दरार में रखूंगा और जब लों मैं तेरे साम्हने होकर न निकल जाऊं तब लों अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा॥ २३। फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा पर मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा॥

(१) मूल में मैं तुझे नाम से जानता हूं। (२) मूल में मेरा मुंह चलेगा। (३) मूल में तेरा मुंह। (४) मूल में अपनी सारी भलाई तेरे साम्हने से चलाऊंगा।

३४. फिर यहोवा ने मूसा से कहा पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले तब जो वचन उन पहिली पटियाओं पर लिखे थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला वे ही वचन मैं उन पटियाओं पर भी लिखूंगा॥ २। और बिहान को तैयार हो रहना और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उस की चोटी पर मेरे साम्हने खड़ा होना॥ ३। और तेरे संग कोई न चढ़ जाए बरन पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे और न भेड़ बकरी गाय बैल भी पर्वत के आगे चरने पाएं॥ ४। तब मूसा ने पहिली पटियाओं के समान दो और पटियाएं गढ़ीं और बिहान को सबेरे उठकर अपने हाथ में पत्थर की वे दो पटियाएं लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार सीनै पर्वत पर चढ़ गया॥ ५। तब यहोवा ने बादल में उतरके उस के संग वहां खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया॥ ६। और यहोवा उस के साम्हने होकर यों प्रचार करता हुआ चला कि यहोवा यहोवा ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय और सत्य, ७। हजारों पीढ़ियों लों निरन्तर करुणा करनेहारा अधर्म्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेहारा है पर दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा वह पितरों के अधर्म्म का दण्ड उन के बेटों बरन पोतों और परपोतों को भी देनेहारा है॥ ८। तब मूसा ने फुर्ती कर पृथिवी की ओर झुककर दण्डवत किई॥ ९। और उस ने कहा हे प्रभु यदि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चले ये लोग हठीले तो हैं तौभी हमारे अधर्म्म और पाप का

(१) मूल में मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे।

क्षमा कर और हमें अपना निज भाग मानके ग्रहण कर ॥ १० । उस ने कहा सुन मैं एक वाचा बांधता हूं तेरे सब लोगों के साम्हने मैं ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म करूंगा जैसे पृथिवी भर पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए और वे सारे लोग जिन के बीच तू रहता है यहोवा के कार्य्य को देखेंगे क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने पर हूं वह भययोग्य काम है ॥ ११। जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूं उसे तुम लोग मानना देखो मैं तुम्हारे आगे से एमोरी कनानी हित्ती परिज्जी हिव्वी और यबूसी लोगों को निकालता हूं ॥ १२ । सो सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उस के निवासियों से वाचा न बांधना न हो कि वह तेरे लिये फन्दा ठहरे ॥ १३ । वरन उन की वेदियों को गिरा देना उन की लाठों को तोड़ डालना और उन की अशेरा नाम मूर्त्तियों को काट डालना ॥१४॥ क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत करने की आज्ञा नहीं है क्योंकि यहोवा जिस का नाम जलनशील है वह जल उठनेहारा ईश्वर है ही ॥ १५ । ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बांधे और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें और उन के लिये बलिदान भी करें और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उस के बलिपशु का प्रसाद खाए, १६ । और तू उन की बेटियों को अपने बेटों के लिये बरे और उन की बेटियां जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार कराएं ॥ १७ । तुम देवताओं की मूर्त्तियां ढालकर न बना लेना ॥ १८ । अखमीरी रोटी का पर्व मानना उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब् महीने के नियत समय पर सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना क्योंकि तू मिस्र से आबीब् महीने में निकल आया ॥ १९ । हर एक पहिलौठा मेरा है और क्या बछड़ा क्या मेम्ना तेरे पशुओं में से जो नर पहिलौठे हों वे सब मेरे ही हैं ॥ २० । और गदही के पहिलौठे की सन्ती मेम्ना देकर उस को छुड़ाना यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उस की गर्दन तोड़ देना पर अपने सब पहिलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना । मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुंह न दिखाए ॥ २१ । छः दिन तो परिश्रम करना पर सातवें दिन विश्राम करना वरन हल जोतने और लवने के समय में भी विश्राम करना ॥ २२ । और तू अठवारों का पर्व मानना जो पहिले लवे हुए गेहूं का पर्व कहावता है और बरस के अन्त में बटोरन का भी पर्व मानना ॥ २३ । बरस दिन में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल् के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुंह दिखाएं ॥ २४ । मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपने मुंह दिखाने के लिये बरस दिन में तीन बार आया करे तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा ॥ २५ । मेरे बलिदान के लोहू को खमीर सहित न चढ़ाना और न फसह के पर्व के बलिदान में से कुछ बिहान लों रहने देना ॥ २६ । अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना । बकरी के बच्चे को उस की मा के दूध में न सिझाना ॥ २७ । और यहोवा ने मूसा से कहा ये वचन लिख ले क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्राएल् के साथ वाचा बांधता हूं ॥ २८ । मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन रात रहा और तब लों न तो उस ने रोटी खाई न पानी पिया । और उस ने उन पटियाओं पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएं[1] लिख दिईं ॥

२९ । जब मूसा साक्षी की दोनों पटियाएं हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतरा आता था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उस के चिहरे से किरणें[2] निकल रही थीं पर वह न जानता था कि मेरे चिहरे से किरणें निकल रही हैं ॥ ३० । जब हारून और और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उस के चिहरे से किरणें निकलती हैं तब वे उस के पास जाने से डर गये ॥ ३१ । तब मूसा ने उन को बुलाया और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत उस के पास आया और मूसा उन से बातें

(१) मूल में. वचन । (२) मूल में सींग ।

करने लगा ॥ ३२ । इस के पीछे सब इस्राएली पास आये और जितनी आज्ञाएं यहोवा ने सीनै पर्वत पर उस के साथ बात करने के समय दिई थीं वे सब उस ने उन्हें बताईं ॥ ३३ । जब मूसा उन से बात कर चुका तब अपने मुंह पर ओढ़ना डाल लिया ॥ ३४ । और जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उस के साम्हने जाता तब तब वह उस ओढ़ने को निकलते समय लों उतारे हुए रहता था फिर बाहर आकर जो जो आज्ञा उसे मिलतीं उन्हें इस्राएलियों से कह देता था ॥ ३५ । सो इस्राएली मूसा का चिहरा देखते थे कि उस से किरणें[1] निकलती हैं और जब लों वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब लों वह उस ओढ़ने को डाले रहता था ॥

(सारे सामान समेत पवित्रस्थान और याजकों के वस्त्र बनाये जाने का वर्णन)

३५. मूसा ने इस्राएलियों की सारी मंडली एकट्ठी करके उन से कहा जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दिई है वे ये हैं ॥ २ । छः दिन तो कामकाज किया जाए पर सातवां दिन तुम्हारे लेखे पवित्र और यहोवा के लिये परमविश्राम का दिन ठहरे उस में जो कोई काम काज करे वह मार डाला जाए ॥ ३ । वरन विश्राम के दिन तुम अपने अपने घरों में आग तक न बारना ॥

४ । फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दिई है वह यह है ॥ ५ । तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेंट लिई जाए अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देने चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएं ले आएं अर्थात् सोना रूपा पीतल, ६ । नीले बैंजनी और लाही रंग का कपड़ा सूक्ष्म सनी का कपड़ा बकरी का बाल, ७ । लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें सूइसों की खालें बबूल की लकड़ी, ८ । उजियाला देने के लिये तेल अभिषेक का तेल और धूप के लिये सुगंधद्रव्य, ९ । फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि ॥ १० । और तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने दिई है वे सब बनाएं, ११ । अर्थात् तंबू और ओहार समेत निवास और उस के थंकड़े तख़्ते बेंड़े खंभे और कुर्सियां, १२ । फिर डण्डों समेत सन्दूक और प्रायश्चित्त का ढकना और बीचवाला पर्दा, १३ । डण्डों और सब सामान समेत मेज़ और भेंट की रोटियां, १४ । सामान और दीपकों समेत उजियाला देनेहारा दीवट और उजियाला देने के लिये तेल, १५ । डण्डों समेत धूपवेदी अभिषेक का तेल सुगंधित धूप और निवास के द्वार का पर्दा, १६ । पीतल की झंझरी डण्डों आदि सारे सामान समेत होमवेदी पाये समेत हौदी, १७ । खंभों और उन की कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे और आंगन के द्वार के पर्दे, १८ । निवास और आंगन दोनों के खूंटे और डोरियां, १९ । पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र और याजक का काम करने के लिये हारून याजक के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र भी ॥

२० । तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के साम्हने से लौट गई ॥ २१ । और जितनों को उत्साह हुआ[1] और जितनों के मन[2] में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे मिलापवाले तंबू के काम करने और उस की सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे ॥ २२ । क्या स्त्री क्या पुरुष जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू नथुनी मुंदरी और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे इस भान्ति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेहारे थे वे सब उन को ले आये ॥ २३ । और जिस जिस पुरुष के पास नीले बैंजनी वा लाही रंग का कपड़ा वा सूक्ष्म सनी का कपड़ा वा बकरी का बाल वा लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें वा सूइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आये ॥ २४ । फिर जितने चांदी वा पीतल की भेंट के देनेहारे थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट ले आये और जिस जिस के पास

(१) मूल में. सींग ।

(१) मूल में. जितनों को उन के मन ने उठाया । (२) मूल में आत्मा ।

सेवकाई के किसी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले आये ॥ २५ । और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत कात कातकर नीले बैंजनी और लाही रंग के और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले आईं ॥ २६ । और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्हों ने बकरी के बाल भी काते ॥ २७ । और प्रधान लोग एपोद् और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि, २८ । और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के लिये सुगंधद्रव्य और तेल ले आये ॥ २९ । जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दिई थी उस उस के लिये जो कुछ आवश्यक था उसे वे सब पुरुष और स्त्रियां ले आईं जिन के हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी । सो इस्राएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आये ॥

३० । तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा सुनो यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल् को जो ऊरी का पुत्र और हूर् का पोता है नाम लेकर बुलाया है ॥ ३१ । और उस ने उस को परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उस को ऐसी बुद्धि समझ और ज्ञान मिला है, ३२ । कि वह हथौटी की युक्तियां निकालकर सोने चांदी और पीतल में, ३३ । और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में वरन बुद्धि से सब भांति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके ॥ ३४ । फिर यहोवा ने उस के मन में और दान् के गोत्रवाले अहीसामाक् के पुत्र ओहोलीआब् के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दिई है ॥ ३५ । इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है कि वे खोदने और गढ़ने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े और सूक्ष्म सनी के कपड़े में काढ़ने और बुनने वरन सब प्रकार की बनावट में और बुद्धि से काम निकालने में सब भांति के काम करें ॥

३६ १ । सो बसलेल् और ओहोलीआब् और सब बुद्धिमान जिन को यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दिई हो कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब प्रकार का काम करना जानें वे सब यह काम करें ॥

२ । तब मूसा ने बसलेल् और ओहोलीआब् और और सब बुद्धिमानों को जिन के हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था अर्थात् जिस जिस को पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था[१] उन सभों को बुलवाया ॥ ३ । और इस्राएली जो जो भेंट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उस के बनाने के लिये ले आये थे उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया । तब भी लोग भोर भोर को उस के पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे ॥ ४ । सो जितने बुद्धिमान पवित्रस्थान का काम करते थे वे सब अपना अपना काम छोड़ मूसा के पास आये, ५ । और कहने लगे जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने दिई है उस के लिये जितना चाहिये उस से अधिक वे ले आये हैं ॥ ६ । तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार कराया कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई पवित्रस्थान के लिये और भेंट न बना लाए सो लोग और लाने से रोके गये ॥ ७ । क्योंकि सब काम बनाने के लिये जितना सामान आवश्यक था उतना वरन उस से अधिक बनानेहारों के पास आ चुका था ॥

८ । सो काम करनेहारे जितने बुद्धिमान थे उन्हों ने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के दस पटों को काढ़े हुए करूबों सहित बनाया ॥ ९ । एक एक पट की लंबाई अठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई सब पट एक ही नाप के बने ॥ १० । और उस ने पांच पट एक दूसरे से जोड़ दिये और फिर दूसरे पांच पट भी एक दूसरे से जोड़ दिये ॥ ११ । और जहां ये पट जोड़े गये वहां की दोनों छोरों पर उस ने नीली नीली फलियां लगाईं ॥ १२ । उस ने दोनों छोरों में पचास पचास फलियां ऐसे लगाईं कि वे साम्हने

(१) मूल में. जिस को काम करने के लिये पास आने को उस के मन ने उठाया हो ।

साम्हने हुईं ॥ १३ । और उस ने सोने के पचास अंकड़े बनाये और उन के द्वारा पटों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर एक हो गया ॥ १४ । फिर निवास के ऊपर के तंबू के लिये उस ने बकरी के बाल के ग्यारह पट बनाये ॥ १५ । एक एक पट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई और ग्यारहों पट एक ही नाप के बने ॥ १६ । इन में से उस ने पांच पट अलग और छः पट अलग जोड़ दिये ॥ १७ । और जहां दोनों जोड़े गये वहां की छोरों में उस ने पचास पचास फलियां लगाईं ॥ १८ । और उस ने तंबू के जोड़ने के लिये पीतल के पचास अंकड़े बनाये जिस से वह एक हो जाए ॥ १९ । और उस ने तंबू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का एक ओढ़ार और उस के ऊपर के लिये सूइसों की खालों का भी एक ओढ़ार बनाया ॥

२० । फिर उस ने निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तखतों को खड़े रहने के लिये बनाया ॥ २१ । एक एक तखते की लंबाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई ॥ २२ । एक एक तखते में एक दूसरी से जोड़ी हुई दो दो चूलें बनीं निवास के सब तखतों के लिये उस ने इसी भांति बनाईं ॥ २३ । और उस ने निवास के लिये तखतों को इस रीति से बनाया कि दक्खिन ओर बीस तखते लगे ॥ २४ । और इन बीसों तखतों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां अर्थात् एक एक तखते के नीचे उस की दो चूलों के लिये उस ने दो कुर्सियां बनाईं ॥ २५ । और निवास की दूसरी अलंग अर्थात् उत्तर ओर के लिये भी उस ने बीस तखते बनाये ॥ २६ । और इन के लिये भी उस ने चांदी की चालीस कुर्सियां अर्थात् एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां बनाईं ॥ २७ । और निवास की पिछली अलंग अर्थात् पच्छिम ओर के लिये उस ने छः तखते बनाये ॥ २८ । और पिछली अलंग में निवास के कोनों के लिये उस ने दो तखते बनाये ॥ २९ । और वे नीचे से दो दो भाग के बने और दोनों भाग ऊपर के सिरे लों एक एक कड़े में मिलाये गये उस ने दोनों कोनों के लिये उन दोनों तखतों का ढब ऐसा ही बनाया ॥ ३० । सो आठ तखते हुए और उन की चांदी की सोलह कुर्सियां हुईं अर्थात् एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां हुईं ॥ ३१ । फिर उस ने बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाये अर्थात् निवास की एक अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े, ३२ । और निवास की दूसरी अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े और निवास की जो अलंग पच्छिम ओर पिछले भाग में थी उस के लिये भी पांच बनाये ॥ ३३ । और उस ने बीचवाले बेंड़े को तखतों के मध्य में तंबू के एक सिरे से दूसरे सिरे लों पहुंचने के लिये बनाया ॥ ३४ । और तखतों को उस ने सोने से मढ़ा और बेंड़ों के घर का काम देनेहारे कड़ों को सोने के बनाया और बेंड़ों को भी सोने से मढ़ा ॥

३५ । फिर उस ने नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का बीचवाला पर्दा बनाया वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बना ॥ ३६ । और उस ने उस के लिये बबूल के चार खंभे बनाये और उन को सोने से मढ़ा उन की अंकड़ियां सोने की बनीं और उस ने उन के लिये चांदी की चार कुर्सियां ढालीं ॥ ३७ । और उस ने तंबू के द्वार के लिये नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ पर्दा बनाया ॥ ३८ । और उस ने अंकड़ियों समेत उस के पांच खंभे भी बनाये और उन के सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा और उन की पांच कुर्सियां पीतल की बनीं ॥

३७. फिर बसलेल् ने बबूल की लकड़ी के सन्दूक को बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की हुई ॥ २ । और उस ने उस को भीतर बाहर चोखे सोने से मढ़ा और उस की चारों ओर सोने की बाड़ बनाई ॥ ३ । और उस के चारों पायों पर लगाने को उस ने सोने के चार कड़े ढाले

दो कड़े एक अलंग और दो कड़े दूसरी अलंग पर लगे ॥ ४ । फिर उस ने बबूल के डंडे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा, ५ । और उन को सन्दूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डाला कि उन के बल सन्दूक उठाया जाए ॥ ६ । फिर उस ने चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई ॥ ७ । और उस ने सोना गढ़कर दो करूब् प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर बनाये ॥ ८ । एक करूब् तो एक सिरे पर और दूसरा करूब् दूसरे सिरे पर बना उस ने उन को प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एकही टुकड़े के और उस के दोनों सिरों पर बनाया ॥ ९ । और करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए बने और उन पंखों से प्रायश्चित्त का ढकना ढपा हुआ बना और उन के मुख आम्हने साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किये हुए बने ॥

१० । फिर उस ने बबूल की लकड़ी की मेज को बनाया उस की लंबाई दो हाथ चौड़ाई एक हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की हुई ॥ ११ । और उस ने उस को चोखे सोने से मढ़ा और उस में चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई ॥ १२ । और उस ने उस के लिये चार अंगुल चौड़ी एक पटरी और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई ॥ १३ । और उस ने मेज के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया जो उस के चारों पायों पर थे ॥ १४ । वे कड़े पटरी के पास मेज उठाने के डंडों के खानों का काम देने को बने ॥ १५ । और उस ने मेज उठाने के लिये डंडों को बबूल की लकड़ी के बनाया और सोने से मढ़ा ॥ १६ । और उस ने मेज पर का सामान अर्थात् परात धूपदान कटोरे और उंडेलने के बर्तन सब चोखे सोने के बनाये ॥

१७ । फिर उस ने चोखा सोना गढ़के पाये और डण्डी समेत दीवट को बनाया उस के पुष्पकोश गांठ और फूल सब एकही टुकड़े के बने ॥ १८ । और दीवट से निकली हुई छः डालियां बनीं तीन डालियां तो उस की एक अलंग से और तीन डालियां उस की दूसरी अलंग से निकली हुई बनीं ॥ १९ । एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोश एक एक गांठ और एक एक फूल बना दीवट से निकली हुई उन छहों डालियों का यही ढब हुआ ॥ २० । और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के सरीखे अपनी अपनी गांठ और फूल समेत चार पुष्पकोश बने ॥ २१ । और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं ॥ २२ । गांठें और डालियां सब दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं सारा दीवट गढ़े हुए चोखे सोने का और एक ही टुकड़े का बना ॥ २३ । और उस ने दीवट के सातों दीपक और गुलतराश और गुलदान चोखे सोने के बनाये ॥ २४ । उस ने सारे सामान समेत दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया ॥

२५ । फिर उस ने धूपवेदी को बबूल की लकड़ी को बनाया उस की लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हुई वह चौकोर बनी और उस की ऊंचाई दो हाथ की हुई और उस के सींग उस के साथ बिना जोड़ के बने ॥ २६ । और ऊपरवाले पल्लों और चारों ओर की अलंगों और सींगों समेत उस ने उस वेदी को चोखे सोने से मढ़ा और उस की चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई ॥ २७ । और उस की बाड़ के नीचे उस के दोनों पल्लों पर उस ने सोने के दो कड़े बनाये जो उस के उठाने के डण्डों के खानों का काम दें ॥ २८ । और डण्डों को उस ने बबूल की लकड़ी के बनाया और सोने से मढ़ा ॥ २९ । और उस ने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगंधद्रव्य का धूप गंधी की रीति से बासा हुआ बनाया ॥

३८. फिर

उस ने होमवेदी को भी बबूल की लकड़ी को बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और चौड़ाई पांच हाथ की हुई इस प्रकार से वह चौकोर बनी और ऊंचाई

तीन हाथ की हुई ॥ २ । और उस ने उस के चारों कोनों पर उस के चार सींग बनाये वे उस के साथ बिना जोड़ के बने और उस ने उस को पीतल से मढ़ा ॥ ३ । और उस ने वेदी का सारा सामान अर्थात् उस की हांड़ियों फावड़ियों कटोरों कांटों और करछों को बनाया उस का सारा सामान उस ने पीतल का बनाया ॥ ४ । और वेदी के लिये उस की चारों ओर की कंगनी के तले उस ने पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई वह नीचे से वेदी की ऊंचाई के मध्य लों पहुंची ॥ ५ । और उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले जो डण्डों के खानों का काम दें ॥ ६ । फिर उस ने डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाया और पीतल से मढ़ा ॥ ७ । तब उस ने डण्डों को वेदी की अलंगों के कड़ों में वेदी के उठाने के लिये डाल दिया । वेदी को उस ने तखतों से खोखली बनाया ॥

८ । और उस ने हौदी और उस का पाया दोनों पीतल के बनाये वह उन सेवा करनेहारी स्त्रियों के दर्पणों के पीतल के बने जो मिलापवाले तंबू के द्वार पर सेवा करती थीं ॥

९ । फिर उस ने आंगन को बनाया दक्खिन अलंग के लिये आंगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के और सब मिलाकर सौ हाथ के बने ॥ १० । उन के बीस खंभे और इन की पीतल की बीस कुर्सियां बनीं और खंभों की अंकड़ियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं ॥ ११ । और उत्तर अलंग के लिये भी सौ हाथ के पर्दे बने उन के बीस खंभे और इन की पीतल की बीस कुर्सियां बनीं और खंभों की अंकड़ियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं ॥ १२ । और पच्छिम अलंग के लिये पचास हाथ के पर्दे बने उन के खंभे दस और कुर्सियां भी दस बनीं खंभों की अंकड़ियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं ॥ १३ । और पूरब अलंग पचास हाथ की बनी ॥ १४ । आंगन के द्वार की एक ओर के लिये पंद्रह हाथ के पर्दे बने और उन के खंभे तीन और कुर्सियां भी तीन बनीं ॥ १५ । और आंगन के द्वार की दूसरी ओर भी वैसा ही बना इधर और उधर पंद्रह पंद्रह हाथ के पर्दे बने उन के खंभे तीन तीन और इन की कुर्सियां भी तीन तीन बनीं ॥ १६ । चारों ओर आंगन के सब पर्दे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने ॥ १७ । और खंभों की कुर्सियां पीतल की और अंकड़ियां और छड़ें चांदी की बनीं और उन के सिरे चांदी से मढ़े गये और आंगन के सब खंभे चांदी की छड़ों से जोड़े गये ॥ १८ । आंगन के द्वार का पर्दा कढ़ाई का काम किया हुआ नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना और उस की लंबाई बीस हाथ की हुई और उस की चौड़ाई जो द्वार की ऊंचाई थी आंगन की कनात के समान पांच हाथ की बनी ॥ १९ । और उन के खंभे चार और खंभों की पीतलवाली कुर्सियां चार बनीं उन की अंकड़ियां चांदी की बनीं और उन के सिरे चांदी से मढ़े गये और उन की छड़ें चांदी की बनीं ॥ २० । और निवास के और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के बने ॥

२१ । साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवीयों की सेवकाई के लिये बना और जिस की गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के कहे से हुई उस का ब्योरा यह है ॥ २२ । जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी उस को यहूदा के गोत्रवाले बसलेल् ने जो हूर् का पोता और ऊरी का पुत्र था बना दिया ॥ २३ । और उस के संग दान् के गोत्रवाले अहीसामाक् का पुत्र ओहोलीआब् था जो खोदने और काढ़नेहारा और नीले बैंजनी और लाही रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कोरचोब करनेहारा था ॥

२४ । पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह उनतीस किक्कार् और पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से सात सौ तीस शेकेल् था ॥ २५ । और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेंट की चांदी सौ किक्कार् और पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से सत्तरह सौ पचहत्तर शेकेल् थी ॥ २६ । अर्थात् जितने बीस बरसवाले और उस से अधिक अवस्थावाले होके गिने गये थे उन छः लाख साढ़े तीन

हजार पचास पुरुषों में के एक एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से आधा शेकेल् जो एक बेका होता है मिला ॥ २७ । और वह सौ किक्कार् चांदी पवित्रस्थान और बीचवाले पर्दे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई सौ किक्कार् से सौ कुर्सियां बनीं एक एक कुर्सी एक किक्कार् की बनी ॥ २८ । और सत्तरह सौ पचहत्तर शेकेल् जो बच गये उन से खंभों की अंकड़ियां बनाई गईं और खंभों की चोटियां मढ़ी गईं और उन की छड़ें भी बनाई गईं ॥ २९ । और भेंट का पीतल सत्तर किक्कार् और दो हजार चार सौ शेकेल् था ॥ ३० । उस से मिलापवाले तंबू के द्वार की कुर्सियां और पीतल की वेदी पीतल की झंझरी और वेदी का सारा सामान, ३१ । और आंगन की चारों ओर की कुर्सियां और उस के द्वार की कुर्सियां और निवास और आंगन की चारों ओर के खूंटे भी बनाये गये ॥

३९. फिर उन्हों ने नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के पवित्रस्थान में की सेवकाई के लिये काढ़े हुए वस्त्र और हारून के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाये जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

२ । और उस ने एपोद् को सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया ॥ ३ । और उन्हों ने सोना पीट पीटकर उस के पत्तर बनाये फिर पत्तरों को काट काटकर तार बनाये और तारों को नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े में और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया ॥ ४ । एपोद् के जोड़ने को उन्हों ने उस के कंधों पर के बंधन बनाये वह तो अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया ॥ ५ । और उस के कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना वह उस के साथ बिन जोड़ का और उसी की बनावट के अनुसार अर्थात् सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

६ । और उन्हों ने सुलैमानी मणि काटकर उन में इस्राएल् के पुत्रों के नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे और सोने के खानों में जड़ दिये ॥ ७ । और उस ने उन को एपोद् के कंधे के बंधनों पर लगाया जिस से इस्राएलियों के लिये स्मरण करानेहारे मणि ठहरे, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

८ । और उस ने चपरास को एपोद् की नाईं सोने की और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े की और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की कढ़ाई का काम किई हुई बनाया ॥ ९ । चपरास तो चौकोर बनी और उन्हों ने उस को दोहरी बनाया और वह दोहरी होकर एक बित्ता लंबी और एक बित्ता चौड़ी बनी ॥ १० । और उन्हों ने उस में चार पांति मणि जड़े पहिली पांति में तो माणिक्य पद्मराग और लालड़ी जड़ीं ॥ ११ । और दूसरी पांति में मरकत नीलमणि और हीरा, १२ । और तीसरी पांति में लशम सूर्य्यकान्त और नीलम, १३ । और चौथी पांति में फीरोजा सुलैमानी मणि और यशब जड़े ये सब अलग अलग सोने के खानों में जड़े गये ॥ १४ । और ये मणि इस्राएल् के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसा ही खोदा गया ॥ १५ । और उन्हों ने चपरास पर डोरियों की नाईं गूंथे हुए चोखे सोने के तोड़े बनाकर लगाये ॥ १६ । फिर उन्हों ने सोने के दो खाने और सोने की दो कड़ियां बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया ॥ १७ । तब उन्हों ने सोने के दोनों गूंथे हुए तोड़ों को चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया ॥ १८ । और गूंथे हुए दोनों तोड़ों के दोनों बाकी सिरों को उन्हों ने दोनों खानों में जड़के एपोद् के साम्हने पर दोनों कंधों के बंधनों पर लगाया ॥ १९ । और उन्हों ने सोने की और दो कड़ियां बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उस की उस कोर पर जो एपोद् की भीतरवार थी लगाईं ॥ २० । और उन्हों ने सोने की दो और कड़ियां भी बनाकर एपोद् के दोनों कंधों के बंधनों

पर नीचे से उस के साम्हने और जोड़ के पास एपोद् के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाईं ॥ २१ । तब उन्हों ने चपरास को उस की कड़ियों के द्वारा एपोद् की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बांधा कि वह एपोद् के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे और चपरास एपोद् से अलग न होने पाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

२२ । फिर एपोद् का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया ॥ २३ । और उस की बनावट ऐसी हुई कि उस के बीच बखतर के छेद के समान एक छेद बना और छेद की चारों ओर एक कोर बनी कि वह फटने न पाए ॥ २४ । और उन्हों ने उस के नीचेवाले घेरे में नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के अनार बनाये ॥ २५ । और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां भी बनाकर बागे के नीचेवाले घेरे की चारों ओर अनारों के बीच बीच लगाईं, २६ । अर्थात् बागे के नीचेवाले घेरे की चारों ओर एक सोने की घंटी और एक अनार फिर एक सोने की घंटी और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहिने हुए सेवा टहल करें, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

२७ । फिर उन्हों ने हारून और उस के पुत्रों के लिये बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे, २८ । और सूक्ष्म सनी के कपड़े की पगड़ी और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुन्दर टोपियां और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जांघियां, २९ । और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले बैंजनी और लाही रंग की कारचोबी काम का फेंटा इन सभों को बनाया, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

३० । फिर उन्हों ने पवित्र मुकुट की पटरी को चोखे सोने की बनाया और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र ॥ ३१ । और उन्हों ने उस में नीला फीता लगाया जिस से वह ऊपर पगड़ी पर रहे, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

३२ । यों मिलापवाले तंबू के निवास का सब काम निपट गया और जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया ॥

३३ । तब वे निवास को मूसा के पास ले आये अर्थात् अंकड़ों तख़्तों बेंड़ों खंभों कुर्सियों आदि सारे सामान समेत तंबू, ३४ । और लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का ओहार और सूइसों की खालों का ओहार और बीच का पर्दा, ३५ । डंडों सहित साक्षीपत्र का संदूक और प्रायश्चित्त का ढकना, ३६ । सारे सामान समेत मेज़ और भेंट की रोटी, ३७ । सारे सामान सहित दीवट और उस की सजावट के दीपक और उजियाला देने के लिये तेल, ३८ । सोने की वेदी और अभिषेक का तेल और सुगंधित धूप और तम्बू के द्वार का पर्दा, ३९ । पीतल की झंझरी डंडों और सारे सामान समेत पीतल की वेदी और पाये समेत हौदी, ४० । खंभों और कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे और आंगन के द्वार का पर्दा और डोरियां और खूंटे और मिलापवाले तंबू के निवास की सेवकाई का सारा सामान, ४१ । पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र और हारून याजक के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र जिन्हें पहिने हुए वे याजक का काम करें ॥ ४२ । जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थीं उन सब के अनुसार इस्राएलियों ने यह सब काम किया ॥ ४३ । तब मूसा ने सारे काम पर दृष्टि करके देखा कि उन्हों ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया है और मूसा ने उन को आशीर्वाद दिया ॥

(यहोवा के निवास के खड़े किये जाने और उस की प्रतिष्ठा होने का वर्णन)

४०. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । पहिले महीने के पहिले दिन को तू मिलापवाले तंबू के निवास को खड़ा करा देना ॥ ३ । और उस में साक्षीपत्र के संदूक को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट में करा देना ॥ ४ । और मेज़ को भीतर ले आकर जो कुछ उस पर सजाना है

सो सजवाना तब दीवट को भीतर ले जाके उस के दीपकों को बार देना ॥ ५ । और साक्षीपत्र के संदूक के साम्हने सोने की वेदी को जो धूप के लिये है उन्हें रखना और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना ॥ ६ । और मिलापवाले तंबू के निवास के द्वार के साम्हने होमवेदी को रखना ॥ ७ । और मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच हौदी को रखके उस में जल भरना ॥ ८ । और चारों ओर के आंगन की कनात को खड़ा करना और उस आंगन के द्वार पर पर्दे को लटका देना ॥ ९ । और अभिषेक का तेल लेकर निवास को और जो कुछ उस में होगा सब का अभिषेक करना और सारे सामान समेत उस को पवित्र करना सो वह पवित्र ठहरेगा ॥ १० । और सब सामान समेत होमवेदी का अभिषेक करके उस को पवित्र करना सो वह परमपवित्र ठहरेगी ॥ ११ । और पाये समेत हौदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र करना ॥ १२ । और हारून और उस के पुत्रों को मिलापवाले तंबू के द्वार पर ले जाकर जल से नहलाना ॥ १३ । और हारून को पवित्र वस्त्र पहिनाना और उस का अभिषेक करके उस को पवित्र करना कि वह मेरे लिये याजक का काम करे ॥ १४ । और उस के पुत्रों को ले जाकर अंगरखे पहिनाना ॥ १५ । और जैसे तू उन के पिता का अभिषेक करे वैसे ही उन का भी अभिषेक करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें और उन का अभिषेक उन की पीढ़ी पीढ़ी के लिये उन के सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा ॥ १६ । और मूसा ने यों किया कि जो जो आज्ञा यहोवा ने उस को दिई थी उस के अनुसार उस ने किया ॥

१७ । और दूसरे बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को निवास खड़ा किया गया ॥ १८ । और मूसा ने निवास को खड़ा कराया और उस की कुर्सियां धर उस के तख्ते लगाके उन में बेंड़े डाले और उस के खंभों को खड़ा किया ॥ १९ । और उस ने निवास के ऊपर तंबू को फैलवाया फिर तंबू के ऊपरवार उस के ओढ़ार को लगाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २० । और उस ने साक्षीपत्र को लेके संदूक में रक्खा और संदूक में डण्डों को लगाके उस के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को धरा ॥ २१ । और उस ने संदूक को निवास में पहुंचवाया और बीचवाले पर्दे को लटकवाके साक्षीपत्र के संदूक को उस की ओट में किया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २२ । और उस ने मिलापवाले तंबू में निवास की उत्तर अलंग पर बीच के पर्दे से बाहर मेज को लगवाया ॥ २३ । और उस पर उस ने यहोवा के सन्मुख रोटी सजाकर रक्खी जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २४ । और उस ने मिलापवाले तंबू में मेज के साम्हने निवास की दक्खिन अलंग पर दीवट को रक्खा ॥ २५ । और उस ने दीपकों को यहोवा के सन्मुख बार दिया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २६ । और उस ने मिलापवाले तंबू में बीच के पर्दे के साम्हने सोने की वेदी को रक्खा ॥ २७ । और उस ने उस पर सुगंधित धूप जलाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २८ । और उस ने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया ॥ २९ । और मिलापवाले तंबू के निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ ३० । और उस ने मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उस में धोने के लिये जल डाला ॥ ३१ । और मूसा और हारून और उस के पुत्रों ने उस में अपने अपने हाथ पांव धोये ॥ ३२ । और जब जब वे मिलापवाले तंबू में वा वेदी के पास जाते तब तब वे हाथ पांव धोते थे जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ ३३ । और उस ने निवास की चारों ओर और वेदी के आसपास आंगन की कनात को खड़ा कराया और आंगन के द्वार के पर्दे को लटका दिया । यों मूसा ने सब काम को निपटा दिया ॥

३४ । तब बादल मिलापवाले तंबू पर छा गया और यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया ॥ ३५ । और बादल जो मिलापवाले तंबू पर ठहर गया और यहोवा का तेज जो निवासस्थान में भर

गया इस कारण मूसा उस में प्रवेश न कर सका ॥ ३६ । और इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर से उठ जाता तब तब वे कूच करते थे ॥ ३७ । और यदि वह न उठता तो जिस दिन लों वह न उठता उस दिन लों वे कूच न करते थे ॥ ३८ । इस्राएल् के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी ॥

लैव्यव्यवस्था नाम पुस्तक ।

(होमबलि की विधि)

१. यहोवा ने मिलापवाले तंबू में से मूसा को बुलाकर उस से कहा, २ । इस्राएलियों से कह कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए तो उस का बलिपशु गायबैलों वा भेड़बकरियों इन में से एक का हो ॥

३ । यदि वह गायबैलों में से होमबलि करे तो निर्दोष नर मिलापवाले तंबू के द्वार पर चढ़ाए कि यहोवा उसे ग्रहण करे ॥ ४ । और वह अपना हाथ होमबलिपशु के सिर पर टेके और वह उस के लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा ॥ ५ । तब वह उस बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लोहू को समीप ले जाकर उस वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें जो मिलापवाले तंबू के द्वार पर है ॥ ६ । फिर वह होमबलिपशु की खाल निकालकर उस पशु को टुकड़े टुकड़े करे ॥ ७ । तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रक्खें और आग पर लकड़ी सजाकर धरें ॥ ८ । और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजाकर धरें ॥ ९ । और वह उस की अन्तड़ियों और पैरों को जल से धोए तब याजक सब को वेदी पर जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे ॥

१० । और यदि वह भेड़ों वा बकरों में का होमबलि चढ़ाए तो निर्दोष नर को चढ़ाए ॥ ११ । और वह उस को यहोवा के आगे वेदी की उत्तरवाली अलंग पर बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उस के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें ॥ १२ । और वह उस को टुकड़े टुकड़े करे और सिर और चरबी को अलग करे और याजक इन सब को उस लकड़ी पर सजाके धरे जो वेदी की आग पर होगी ॥ १३ । और वह उस की अन्तड़ियों और पैरों को जल से धोए और याजक सब को समीप ले जाकर वेदी पर जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे ॥

१४ । और यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों में का होमबलि चढ़ाए तो पिंडुकों वा कबूतरों का चढ़ावा चढ़ाए ॥ १५ । याजक उस को वेदी के समीप ले जाकर उस का गला मरोड़के सिर को धड़ से अलग करे और वेदी पर जलाए और उस का सारा लोहू उस वेदी की अलंग पर गिराया जाए ॥ १६ । और वह उस का ओझ मल सहित निकालकर वेदी की पूरब ओर राख डालने के स्थान पर फेंक दे ॥ १७ । और वह उस को पंखों के बीच से फाड़े

पर अलग अलग न करे और याजक उस को वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥

(अन्नबलि की विधि.)

२. और जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाने चाहे तो वह मैदा चढ़ाए और उस पर तेल डाल लोबान रखे॥ २। और वह उस को हारून के पुत्रों के पास जो याजक हैं ले जाए और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से अपनी मुट्ठी भर निकाले और लोबान सारा निकाल ले और याजक उन्हें स्मरण दिलानेहारे भाग के लिये वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥ ३। और अन्नबलि में से जो बचा रहे सो हारून और उस के पुत्रों का ठहरे वह यहोवा के हव्यों में की परमपवित्र वस्तु होगी॥

४। और जब तू तंदूर में पकाया हुआ चढ़ावा अन्नबलि करके चढ़ाए तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों वा तेल से चुपड़ी हुई बिन अखमीरी पपड़ियों का हो॥ ५। और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो॥ ६। उस को टुकड़े टुकड़े करके उस पर तेल डालना वह अन्नबलि हो जाएगा॥ ७। और यदि तेरा चढ़ावा कराही में पकाया हुआ अन्नबलि हो तो वह भी तेल समेत मैदे का हो॥ ८। और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना और जब वह याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए, ९। और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेहारा भाग निकालकर वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥ १०। और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उस के पुत्रों का ठहरे वह यहोवा के हव्यों में की परमपवित्र वस्तु होगी॥ ११। कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ खमीर के साथ बनाया न जाए न तो खमीर को हव्य करके यहोवा के लिये जलाना और न मधु को॥ १२। उन्हें पहिली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना पर वे सुखदायक सुगंधवाली वस्तुएं करके वेदी पर चढ़ाये न जाएं॥ १३। फिर अपने सब अन्नबलियों को लोना करना और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बंधी हुई वाचा के लोन से रहित होने न देना अपने सब चढ़ावों के साथ लोन भी चढ़ाना॥

१४। और यदि तू यहोवा के लिये पहिली उपज का अन्नबलि चढ़ाए तो अपनी पहिली उपज के अन्नबलि के लिये आग से झुलसाई हुई हरी हरी बालें अर्थात् हरी हरी बालों का मीजके निकाला हुआ अन्न चढ़ाना॥ १५। उस पर तेल डालना और लोबान रखना वह अन्नबलि हो जाएगा॥ १६। और याजक उस में के मीजके निकाले हुए अन्न और उस पर के तेल में से कुछ और उस पर का सारा लोबान स्मरण दिलानेहारा भाग करके जलाए कि वह यहोवा के लिये हव्य ठहरे॥

(मेलबलि की विधि.)

३. और यदि उस का चढ़ावा मेलबलि का हो यदि वह गायबैलों में से चढ़ाए तो चाहे वह पशु नर हो चाहे मादीन पर जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के आगे चढ़ाए॥ २। और वह अपने चढ़ावे के सिर पर हाथ टेके और उस को मिलापवाले तंबू के द्वार पर बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उस के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें॥ ३। और वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हव्य चढ़ाए अर्थात् जिस चरबी से अन्तड़ियां ढपी रहती हैं और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, ४। और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह अलग करे॥

५। और हारून के पुत्र इन को वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जो आग की लकड़ी पर होगा जलाएं कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे ॥

६। और यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उस का चढ़ावा भेड़बकरियों में से हो तो चाहे वह नर हो चाहे मादीन पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए ॥ ७। यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो तो वह उस को यहोवा के साम्हने चढ़ाए ॥ ८। और वह अपने चढ़ावे के सिर पर हाथ टेके और उस को मिलापवाले तंबू के आगे बलि करे और हारून के पुत्र उस के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें ॥ ९। और मेलबलि में से वह चरबी को यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाए अर्थात् उस की चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे और जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, १०। और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को भी वह अलग करे ॥ ११। और याजक इन्हें वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये हव्यरूपी भोजन ठहरे ॥

१२। और यदि वह बकरा वा बकरी चढ़ाए तो वह उस को यहोवा के साम्हने चढ़ाए ॥ १३। और वह उस के सिर पर हाथ टेककर उस को मिलापवाले तंबू के आगे बलि करे और हारून के पुत्र उस के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें ॥ १४। और वह उस में से अपना चढ़ावा यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाए अर्थात् जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, १५। और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह अलग करे ॥ १६। और याजक इन्हें वेदी पर जलाए यह तो हव्यरूपी भोजन और सुखदायक सुगंध ठहरेगा क्योंकि सारी चरबी यहोवा की है ॥ १७। यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे कि तुम न तो कुछ चरबी खाओ और न कुछ लोहू ॥

(पापबलि की विधि)

४. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य उन कामों में से जो यहोवा ने बरजे हैं कोई काम भूल से करके पापी हो जाए, ३। और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे जिस से प्रजा को दोष लगे तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए ॥ ४। और वह उस बछड़े को मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उस के सिर पर हाथ टेके और बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे ॥ ५। और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तंबू में ले जाए ॥ ६। और याजक लोहू में अंगुली बोरे और उस में से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के साम्हने सात बार छिड़के ॥ ७। और याजक उस लोहू में से कुछ और लेकर सुगंधित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तंबू में है यहोवा के साम्हने लगाए फिर बछड़े के और सब लोहू को मिलापवाले तंबू के द्वार पर की होमवेदी के पाये पर उंडेले ॥ ८। फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चरबी को उस से अलग करे अर्थात् जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जितनी चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, ९। और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह ऐसे अलग करे, १०। जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किये जाएंगे और याजक इन को होमवेदी पर जलाए ॥ ११। और बछड़े की खाल पांव सिर अन्तरियां गोबर और सारा मांस, १२। निदान समूचा बछड़ा वह छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में जहां राख डाली जाएगी ले जाकर लकड़ी पर आग में जलाए जहां राख डाली जाएगी वहीं वह जलाया जाए ॥

१३। और यदि इस्राएल् की सारी मण्डली भूल में पड़के पाप करे और वह बात उस के अनजान में तो रहे तौभी वह यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध कुछ करके दोषी हो, १४। तो जब उस का किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके चढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तंबू के आगे ले जाए, १५। और मण्डली के पुरनिये अपने अपने हाथों को बछड़े के सिर पर यहोवा के आगे टेकें और वह बछड़ा यहोवा के साम्हने बलि किया जाए॥ १६। और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ मिलापवाले तंबू मे ले जाए॥ १७। और याजक लोहू में अंगुली बोरकर बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के साम्हने छिड़के॥ १८। और जो बेदी यहोवा के आगे मिलापवाले तंबू में है उस के सींगों पर वह कुछ लोहू लगाए और सब लोहू को मिलापवाले तंबू के द्वार पर की होम बेदी के पाये पर उंडेले॥ १९। और वह बछड़े की सारी चरबी निकालकर वेदी पर जलाए॥ २०। और जैसे पापबलि के बछड़े से करना है वैसे ही इस से भी करे इस भांति याजक इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे तब उन का वह पाप क्षमा किया जाएगा॥ २१। और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भांति जलाए जैसे उसे पहिले बछड़े को जलाना है यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा॥

२२। जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ करके दोषी हो, २३। और उस का पाप उस पर प्रगट हो जाए तो वह एक निर्दोष बकरा चढ़ावा करके ले आए, २४। और बकरे के सिर पर हाथ टेके और बकरे को वहां बलि करे जहां होमबलिपशु यहोवा के आगे बलि किया जाएगा यह तो पापबलि ठहरेगा॥ २५। और याजक अपनी अंगुली से पापबलिपशु के लोहू में से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस का लोहू होमवेदी के पाये पर उंडेले॥ २६। और वह उस की सारी चरबी को मेलबलि की चरबी की नाईं वेदी पर जलाए और याजक उस के पाप के विषय मे प्रायश्चित्त करे तब वह क्षमा किया जाएगा॥

२७। और यदि साधारण लोगों में से कोई भूल से पाप करे अर्थात् यहोवा का वर्जा हुआ कोई काम करके दोषी हो, २८। और उस का वह पाप उस पर प्रगट हो जाए तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी चढ़ावा करके ले आए॥ २९। और वह पापबलिपशु के सिर पर हाथ टेके और होमबलि के स्थान पर पापबलिपशु को बलि करे॥ ३०। और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस के सब लोहू को उसी वेदी के पाये पर उंडेले॥ ३१। और वह उस की सब चरबी को मेलबलिपशु की चरबी की नाईं अलग करे तब याजक उस को वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगंध करके जलाए और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह क्षमा किया जाएगा॥

३२। और यदि वह पापबलि के लिये एक भेड़ी का बच्चा चढ़ावा करके ले आए तो वह निर्दोष मादीन हो॥ ३३। और वह पापबलिपशु के सिर पर हाथ टेके और उस को पापबलि करके वहां बलि करे जहां होमबलिपशु बलि किया जाएगा॥ ३४। और याजक अपनी अंगुली से पापबलि के लोहू में से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस के और सब लोहू को वेदी के पाये पर उंडेले॥ ३५। और वह उस की सब चरबी को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की चरबी की नाईं अलग करे और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हव्यों के ऊपर जलाए और याजक उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जाएगा॥

(दोषबलि की विधि)

५. और यदि कोई साक्षी होकर ऐसा पाप करे कि सेंह खिलाकर यों पूछने पर भी कि क्या तू ने यह सुना वा जानता है बात प्रगट न करे तो उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा॥ २। और यदि कोई किसी

अशुद्ध वस्तु को अनजान में छूए तो चाहे वह अशुद्ध बनैले पशु की चाहे अशुद्ध घरैले पशु की चाहे अशुद्ध रेंगनेहारे जीवजन्तु की लोथ हो तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा ॥ ३ । और यदि कोई जन मनुष्य की किसी अशुद्ध वस्तु को अनजान में छूए चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी प्रकार की क्यों न हो जिस से लोग अशुद्ध होते हैं तो जब वह उसे जान लेगा तब दोषी ठहरेगा ॥ ४ । और यदि कोई अनजान में बुरा वा भला करने को बिना सोचे समझे सोंह खाए चाहे वह किसी प्रकार की बात बिना सोच विचार किये सोंह खाकर कहे तो जान लेने के पीछे वह ऐसी किसी बात में दोषी ठहरेगा ॥ ५ । और जब वह ऐसी किसी बात में दोषी हो तब जिस विषय में उस ने पाप किया हो उस को वह मान ले ॥ ६ । और वह यहोवा के लिये अपना दोषबलि ले आए अर्थात् उस पाप के कारण वह एक भेड़ वा बकरी पापबलि करके ले आए तब याजक उस पाप के विषय उस के लिये प्रायश्चित्त करे ॥ ७ । और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने का सामर्थ्य न हो तो अपने पाप के कारण दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि करके यहोवा के पास ले आए उन में से एक तो पापबलि और दूसरा होमबलि ठहरे ॥ ८ । और वह उन को याजक के पास ले आए और याजक पापबलिवाले को पहिले चढ़ाए और उस का सिर गले से मरोड़ डाले पर अलग न करे ॥ ९ । और वह पापबलिपशु के लोहू में से कुछ वेदी की अलंग पर छिड़के और जो लोहू बचा रहे वह वेदी के पाये पर गिराया जाए वह तो पापबलि ठहरेगा ॥ १० । और दूसरे पक्षी को वह विधि के अनुसार होमबलि करे और याजक उस के पाप का प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जाएगा ॥

११ । और यदि वह दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवां भाग मैदा पापबलि करके ले आए उस पर न तो वह तेल डाले न लोबान रक्खे क्योंकि वह पापबलि होगा ॥ १२ । वह उस को याजक के पास ले आए और याजक उस में से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलानेहारा भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हव्यों के ऊपर जलाए वह तो पापबलि ठहरेगा ॥ १३ । और इन बातों में से किसी बात के विषय में जो कोई पाप करे याजक उस का प्रायश्चित्त करे और वह पाप क्षमा किया जाएगा । और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष की नाईं याजक का ठहरे ॥

१४ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १५ । यदि कोई यहोवा की पवित्र किई हुई वस्तुओं के विषय में भूल से विश्वासघात करके पापी ठहरे तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके ले आए उस का दाम पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से उतने शेकेल् रूपैये का हो जितने याजक ठहराए ॥ १६ । और जिस पवित्र वस्तु के विषय उस ने पाप किया हो उस को वह पांचवां भाग बढ़ाकर भर दे और याजक को दे और याजक दोषबलि का मेढ़ा चढ़ाकर उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब उस का पाप क्षमा किया जाएगा ॥

१७ । और यदि कोई ऐसा पाप करे कि यहोवा का बर्जा हुआ कोई काम करे तो चाहे वह उस के अनजान में भी हुआ हो तौभी वह दोषी ठहरेगा और उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥ १८ । सो वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए और याजक उस के लिये उस की उस भूल का जो उस ने अनजाने किई हो प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किई जाएगी ॥ १९ । यह दोषबलि ठहरे क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा का दोषी ठहरेगा ॥

६. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे जैसा कि धरोहर वा लेन-देन वा लूट के विषय में अपने भाई को छले वा उस पर अंधेर करे, ३ । वा पड़ी हुई वस्तु को पाकर उस के विषय झूठ बोले और झूठी किरिया भी खाए ऐसी कोई बात क्यों न हो जिसे करके

मनुष्य पापी होते हैं, ४ । तो जब वह ऐसा पाप करके दोषी हो जाए तब चाहे कोई वस्तु हो जो उस ने लूट वा अंधेर करके या धरोहर वा पड़ी पाई हो, ५ । चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिस के विषय में उस ने झूठी किरिया खाई हो तो वह उस को पूरा करके और पांचवां भाग बढ़ाकर भर दे जिस दिन वह दोषी ठहरे उसी दिन वह उस वस्तु को उस के स्वामी को दे ॥ ६ । और वह यहोवा के लिये अपना दोषबलि भी ले आए अर्थात् एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए ॥ ७ । और याजक उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे और जो कोई काम करके वह दोषी हो गया होगा वह क्षमा किया जाएगा ॥

(भांति भांति के बलिदानों की विधि.)

८ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ९ । हारून और उस के पुत्रों को आज्ञा देकर यह कह कि होमबलि की व्यवस्था यह है अर्थात् होमबलि ईंधन के ऊपर रात भर भोर लों वेदी पर पड़ा रहे और वेदी की आग वेदी पर जलती रहे ॥ १० । और याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन पर अपनी सनी की जांघियां पहिनकर होमबलि की राख जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए उसे उठाकर वेदी के पास रक्खे ॥ ११ । तब वह अपने ये वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहिनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए ॥ १२ । और वेदी की आग वेदी पर जलती रहे वह बुझने न पाए और भोर भोर को याजक उस पर लकड़ी जलाकर उस पर होमबलि के टुकड़ों को सजाकर धर दे और उस के ऊपर मेलबलियों की चरबी को जलाए ॥ १३ । वेदी पर आग लगातार जलती रहे वह कभी बुझने न पाए ॥

१४ । अन्नबलि की व्यवस्था यह है कि हारून के पुत्र उस को यहोवा के साम्हने वेदी के आगे समीप ले आएं ॥ १५ । और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर और उस पर का सारा लोबान उठाकर अन्नबलि के स्मरण दिलानेहारे इस भाग को यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध करके वेदी पर जलाए ॥ १६ । और उस में से जो बचा रहे उसे हारून और उस के पुत्र खाएं वह बिना खमीर पवित्र स्थान में खाया जाए अर्थात् वे मिलापवाले तंबू के आंगन में उसे खाएं ॥ १७ । वह खमीर के साथ पकाया न जाए क्योंकि मैं ने अपने हव्यों में से उस को उन का निज भाग होने के लिये उन्हें दिया है सो जैसा पापबलि और दोषबलि परमपवित्र हैं वैसा ही वह भी है ॥ १८ । हारून के वंश में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के हव्यों में से यह उन का हक सदा लों बना रहे जो कोई उन हव्यों को छूए वह पवित्र ठहरे ॥

१९ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २० । जिस दिन हारून अभिषिक्त हो उस दिन वह अपने पुत्रों समेत यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए अर्थात् एपा का दसवां भाग मैदा नित्य अन्नबलि करके चढ़ाए उस में से आधा तो भोर को और आधा सांझ को चढ़ाए ॥ २१ । वह तवे पर तेल के साथ पकाया जाए जब वह तेल से तर हो जाए तब उसे ले आना इस अन्नबलि के पके हुए टुकड़े यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध करके चढ़ाना ॥ २२ । और उस के पुत्रों में से जो उस के याजकपद पर अभिषिक्त होगा वह भी उसे चढ़ाया करे यह सदा की विधि है कि वह यहोवा के लिये संपूर्ण जलाया जाए ॥ २३ । वरन याजक के सब अन्नबलि संपूर्ण जलाये जाएं वे खाये न जाएं ॥

२४ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २५ । हारून और उस के पुत्रों से यह कह कि पापबलि की व्यवस्था यह है अर्थात् जिस स्थान में होमबलिपशु बलि किया जाएगा उसी में पापबलिपशु भी यहोवा के साम्हने बलि किया जाए वह परमपवित्र है ॥ २६ । और जो याजक पापबलि का चढ़ानेहारा हो सो उसे खाए वह पवित्र स्थान में अर्थात् वह मिलापवाले तंबू के आंगन में खाया जाए ॥ २७ । जो कुछ उस के मांस से छू जाए वह पवित्र ठहरे

और यदि उस के लोहू के छींटे किसी वस्त्र पर पड़े तो जिस पर उस के छींटे पड़े हों उस को किसी पवित्र स्थान में धोना ॥ २८। और यदि वह मिट्टी के पात्र में सिझाया गया हो तब तो वह पात्र तोड़ा जाए पर जो वह पीतल के पात्र में सिझाया गया हो तो वह मांजा और जल से धोया जाए ॥ २९। याजकों में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं क्योंकि वह परमपवित्र ठहरा ॥ ३०। पर जिस पापबलिपशु के लोहू में से कुछ मिलापवाले तंबू के भीतर पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने को पहुंचाया जाए उस का मांस खाया न जाए वह आग में जलाया जाए ॥

७. फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह परमपवित्र ठहरे ॥ २। जिस स्थान पर होमबलिपशु को बलि करेंगे उसी पर दोषबलिपशु को भी बलि करें और उस के लोहू को याजक वेदी पर चारों ओर छिड़के ॥ ३। और वह उस में की सब चरबी को चढ़ाए अर्थात् मोटी पूंछ और जिस चरबी से अन्तड़ियां ढपी रहती हैं वह भी, ४। और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह अलग करे ॥ ५। और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिये हव्य करके जलाए सो वह दोषबलि ठहरेगा ॥ ६। याजकों में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं वह किसी पवित्र स्थान में खाया जाए क्योंकि वह परमपवित्र है ॥ ७। जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है उन दोनों की एक ही व्यवस्था है जो याजक उन बलियों को चढ़ाके प्रायश्चित्त करे वे उसी के ठहरें ॥ ८। और जो याजक किसी के होमबलि को चढ़ाए उस होमबलिपशु की खाल उसी याजक की ठहरे ॥ ९। और तंदूर में वा कड़ाही में वा तवे पर पके हुए सब अन्नबलि चढ़ानेहारे याजक ही के ठहरें ॥ १०। और सब अन्नबलि चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे वे हारून के सब पुत्रों के ठहरें वे एक समान उन सभों को मिलें ॥

११। और मेलबलि जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए उस की व्यवस्था यह है ॥ १२। यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए तो धन्यवादबलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां और तेल से सने हुए मैदे के तेल से तर फुलकें चढ़ाए ॥ १३। और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ खमीरी रोटियां भी चढ़ाए ॥ १४। और ऐसे एक एक चढ़ावे में से वह एक एक रोटी यहोवा को उठाई हुई भेंट करके चढ़ाए वह मेलबलि के लोहू के छिड़कनेहारे याजक की ठहरे ॥ १५। और उस के धन्यवादवाले मेलबलि का मांस चढ़ाने के दिन ही खाया जाए उस में से वह बिहान लों कुछ रहने न दे ॥ १६। पर यदि उस के बलिदान का चढ़ावा मन्नत का वा स्वेच्छा का हो तो उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाए उस दिन वह खाया जाए और उस में से जो बचा रहे वह दूसरे दिन भी खाया जाए ॥ १७। पर जो कुछ बलिदान के मांस में से तीसरे दिन लों रह जाए वह आग में जलाया जाए॥ १८। और उस के मेलबलि के मांस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए तो वह ग्रहण न किया जाएगा और न लेखे में गिना जाएगा वह घिनौना ठहरेगा और जो प्राणी उस में से खाए उसे अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥ १९। फिर जो मांस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह खाया न जाए वह आग में जलाया जाए। फिर मेलबलि का मांस जितने शुद्ध हों वे तो खाएं, २०। पर जो प्राणी अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के मांस में से कुछ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए ॥ २१। और यदि कोई प्राणी कोई अशुद्ध वस्तु छूकर यहोवा के मेलबलिपशु के मांस में से खाए तो वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु वा अशुद्ध पशु चाहे कोई भी अशुद्ध और घिनौनी वस्तु हो ॥

२२। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३। इस्राएलियों से यों कह कि तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना और न भेड़ वा बकरी की ॥

२४। और जो पशु आप से मरे और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए उस की चरबी से कोई और काम करना तो करना पर उसे किसी प्रकार से खाना नहीं॥ २५। जो प्राणी ऐसे पशु की चरबी खाए जिस में से लोग कुछ यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाया करते हैं वह खानेहारा अपने लोगों में से नाश किया जाए॥ २६। और तुम अपने किसी घर में किसी भांति का लोहू चाहे पक्षी चाहे पशु का हो न खाना॥ २७। हर एक प्राणी जो किसी भांति का लोहू खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

२८। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २९। इस्राएलियों से यों कह कि जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास चढ़ावा ले आए॥ ३०। वह अपने ही हाथों से यहोवा के हव्य को अर्थात् छाती समेत चरबी को ले आए कि छाती हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाई जाए॥ ३१। और याजक चरबी को तो वेदी पर जलाए पर छाती हारून और उस के पुत्रों की ठहरे॥ ३२। फिर तुम अपने मेलबलियों में से दहिनी जांघ को भी उठाई हुई भेंट करके याजक को देना॥ ३३। हारून के पुत्रों में से जो मेलबलि के लोहू और चरबी को चढ़ाए दहिनी जांघ उसी का भाग ठहरे॥ ३४। क्योंकि इस्राएलियों के मेलबलियों में से मैं हिलाई हुई भेंटवाली छाती और उठाई हुई भेंटवाली जांघ उन से लेकर हारून याजक और उस के पुत्रों को दे देता हूं कि वे दोनों इस्राएलियों की ओर से सदा के लिये उन का हक ठहरें॥

३५। जिस दिन हारून और उस के पुत्र यहोवा के याजक होने के लिये समीप किये गये उसी दिन यहोवा के हव्यों में से उन का यही अभिषेकवाला भाग ठहरा, ३६। अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उन का अभिषेक कराया उसी दिन उस ने आज्ञा दिई कि उन को इस्राएलियों की ओर से ये ही भाग मिला करें। सो उन की पीढ़ी पीढ़ी के लिये उन का यही हक ठहरा॥ ३७। होमबलि और अन्नबलि और पापबलि और दोषबलि और याजकों के संस्कार-वाले बलि और मेलबलि की व्यवस्था यही है॥ ३८। जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दिई कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं तब उस ने उन को यही व्यवस्था दिई॥

(याजकों के संस्कार का वर्णन)

८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। तू हारून और उस के पुत्रों को वस्त्रों और अभिषेक के तेल और पापबलि के बछड़े और दोनों मेढ़ों और अखमीरी रोटी की टोकरी सहित, ३। मिलापवाले तंबू के द्वार पर ले आ और वहीं सारी मण्डली को एकट्ठा कर॥ ४। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया और मण्डली मिलापवाले तंबू के द्वार पर एकट्ठी हुई॥ ५। तब मूसा ने मण्डली से कहा जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दिई है वह यह है॥ ६। फिर मूसा ने हारून और उस के पुत्रों को समीप ले आकर जल से नहलाया॥ ७। तब उस ने उस को अंगरखा पहिनाकर फेंटा बांधकर बागा पहिना दिया और एपोद् लगाकर एपोद् के काढ़े हुए पटुके से एपोद् को बांधकर कस दिया॥ ८। और उस ने उस के चपरास लगाकर चपरास में ऊरीम् और तुम्मीम् रख दिये॥ ९। तब उस ने उस के सिर पर पगड़ी को बांधकर पगड़ी के साम्हने पर सोने के टीके को अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी॥ १०। तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उस में था उस सब का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया॥ ११। और उस तेल में से कुछ उस ने वेदी पर सात बार छिड़का और सारे सामान समेत वेदी का और पाये समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया॥ १२। और उस ने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उस का अभिषेक करके उसे पवित्र किया॥ १३। फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को समीप ले आ अंगरखे पहिनाकर फेंटे बांधके उन के सिर पर टोपी दिई जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी॥ १४। तब

वह पापबलिवाले बछड़े को समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने अपने हाथ पापबलिवाले बछड़े के सिर पर टेके ॥ १५ । तब वह बलि किया गया और मूसा ने लोहू को लेकर अंगुली से वेदी के चारों सींगों पर लगाकर पावन किया और लोहू को वेदी के पाये पर उण्डेल दिया और उस के लिये प्रायश्चित्त करके उस को पवित्र किया ॥ १६ । और मूसा ने अन्तड़ियों पर की सब चरबी और कलेजे पर की झिल्ली और चरबी समेत दोनों गुर्दों को लेकर वेदी पर जलाया ॥ १७ । और बछड़े में से जो कुछ रह गया उस को अर्थात् गोबर समेत उस की खाल और मांस को उस ने छावनी से बाहर आग में जलाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ १८ । फिर वह होमबलिवाले मेढ़े को समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर टेके ॥ १९ । तब वह बलि किया गया और मूसा ने उस का लोहू वेदी पर चारों ओर छिड़का ॥ २० । तब मेढ़ा टुकड़े टुकड़े किया गया और मूसा ने सिर और चरबी समेत टुकड़ों को जलाया ॥ २१ । तब अन्तड़ियां और पांव जल से धोये गये और मूसा ने सम्पूर्ण मेढ़े को वेदी पर जलाया और वह सुखदायक सुगंध देनेहारा होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ २२ । फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कारवाला मेढ़ा था समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर टेके ॥ २३ । तब वह बलि किया गया और मूसा ने उस के लोहू में से कुछ लेकर हारून के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाया ॥ २४ । और वह हारून के पुत्रों को समीप ले गया और लोहू में से कुछ एक एक के दहिने कान के सिरे पर और दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाया और मूसा ने लोहू को वेदी पर चारों ओर छिड़का ॥ २५ । और उस ने चरबी और मोटी पूंछ और अन्तड़ियों पर की सब चरबी और कलेजे पर की झिल्ली और चरबी समेत दोनों गुर्दे और दहिनी जांघ ये सब लेकर अलग रक्खे, २६ । और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी थी उस में से एक रोटी और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका और एक पपड़ी लेकर चरबी और दहिनी जांघ पर रख दिईं, २७ । और ये सारी वस्तुएं हारून और उस के पुत्रों के हाथों पर धर दिईं और हिलाई हुई भेंट होने के लिये यहोवा के आगे हिलवाईं ॥ २८ । और मूसा ने इन को उन के हाथों पर से लेकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया वह सुखदायक सुगंध देनेहारी संस्कारवाली भेंट और यहोवा के लिये हव्य हुआ ॥ २९ । तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाई हुई भेंट होने के लिये यहोवा के आगे हिलाया और संस्कारवाले मेढ़े में से मूसा का भाग यही ठहरा जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥ ३० । और मूसा ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के लोहू दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उस के वस्त्रों पर और उस के पुत्रों और उन के वस्त्रों पर भी छिड़का और उस ने वस्त्रों समेत हारून को और वस्त्रों समेत उस के पुत्रों को भी पवित्र किया ॥ ३१ । और मूसा ने हारून और उस के पुत्रों से कहा मांस को मिलापवाले तंबू के द्वार पर सिझाओ और उस रोटी समेत जो संस्कारवाली टोकरी में है वहीं खाओ जैसे मैं ने आज्ञा दिई कि हारून और उस के पुत्र उसे खाएं ॥ ३२ । और मांस और रोटी में से जो बचा रहे उसे आग में जलाना ॥ ३३ । और जब लों तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न हों तब लों अर्थात् सात दिन लों मिलापवाले तंबू के द्वार के बाहर न जाना क्योंकि वह सात दिन लों तुम्हारा संस्कार करता रहेगा ॥ ३४ । जैसे आज किया गया वैसे ही यहोवा ने करने की आज्ञा दिई है कि तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए ॥ ३५ । सो तुम मिलापवाले तंबू के द्वार पर सात दिन लों दिन रात ठहरके यहोवा की आज्ञा को मानते रहो न हो कि मर जाओ क्योंकि ऐसी आज्ञा मुझे दिई गई है ॥ ३६ । यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उस ने मूसा के द्वारा दिई थीं हारून और उस के पुत्रों ने किया ॥

९. आठवें दिन मूसा ने हारून और उस के पुत्रों को और इस्राएली पुरनियों को बुलवाकर, २। हारून से कहा पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा लेकर यहोवा के साम्हने चढ़ा॥ ३। और इस्राएलियों से यह कह कि तुम पापबलि के लिये एक बकरा और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो वे दोनों बरस दिन के और वे निर्दोष हों॥ ४। और यहोवा के साम्हने मेलबलि करने को एक बैल और एक मेढ़ा और तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नबलि भी लो क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा॥ ५। सो जिस जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दिई उन सब को वे मिलापवाले तंबू के आगे ले गये और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी हुई॥ ६। तब मूसा ने कहा यहोवा ने तुम्हारे करने के लिये जिस काम की आज्ञा दिई है सो यह है और यहोवा का तेज तुम को देख पड़ेगा॥ ७। और मूसा ने हारून से कहा यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाके अपने और सारे लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों के चढ़ावे को भी चढ़ाके उन के लिये प्रायश्चित्त कर॥ ८। सो हारून ने वेदी के समीप जाकर अपने पापबलिवाले बछड़े को बलि किया॥ ९। और हारून के पुत्र लोहू को उस के पास ले गये तब उस ने अपनी अंगुली को लोहू में बोरकर लोहू को वेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को वेदी के पाये पर उंडेल दिया॥ १०। और पापबलि में की चरबी और गुर्दों और कलेजे पर की झिल्ली को उस ने वेदी पर जलाया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी॥ ११। और मांस और खाल को उस ने छावनी से बाहर आग में जलाया॥ १२। तब होमबलिपशु बलि किया गया और हारून के पुत्रों ने लोहू को उस के हाथ में दिया और उस ने उस को वेदी पर चारों ओर छिड़का॥ १३। तब उन्हों ने होमबलिपशु टुकड़ा टुकड़ा करके सिर समेत उस के हाथ में दिया और उस ने उन को वेदी पर जलाया॥ १४। और उस ने अन्तड़ियों और पांवों को धोकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया॥ १५। और उस ने लोगों के चढ़ावे को समीप ले जाकर उस पापबलिवाले बकरे को जो उन के लिये था बलि किया और पहिले के समान उसे भी पापबलि करके चढ़ाया॥ १६। और उस ने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया॥ १७। और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उस में से मुट्ठी भर वेदी पर जलाया यह भोरवाले होमबलि के सिवाय चढ़ाया गया॥ १८। और बैल और मेढ़ा अर्थात् जो मेलबलिपशु लोगों के लिये थे वे भी बलि किये गये और हारून के पुत्रों ने लोहू को उस के हाथ में दिया और उस ने उस को वेदी पर चारों ओर छिड़का॥ १९। और उन्हों ने बैल की चरबी को और मेढ़े में से मोटी पूंछ को और जिस चरबी से अन्तड़ियां ढपी रहती हैं उस को और गुर्दों समेत कलेजे पर की झिल्ली को उस के हाथ में दिया॥ २०। और उन्हों ने चरबी को छातियों पर रखा और उस ने चरबी को वेदी पर जलाया॥ २१। पर छातियों और दहिनी जांघ को हारून ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के साम्हने हिलाया॥ २२। तब हारून ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया और जहां उस ने पापबलि होमबलि और मेलबलियों को चढ़ाया वहां से वह उतर आया॥ २३। तब मूसा और हारून मिलापवाले तंबू में गये और निकलकर लोगों को आशीर्वाद दिया तब यहोवा का तेज सब लोगों को देख पड़ा॥ २४। और यहोवा के साम्हने से आग निकलकर चरबी समेत होमबलि को वेदी पर भस्म कर गई इसे देखकर सब लोगों ने जयजयकार किया और अपने अपने मुंह के बल गिरे॥

(नादाब् और अबीहू के भस्म होने का वर्णन)

१०. तब नादाब् और अबीहू नाम हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान ले उन में उपरी आग जिस की आज्ञा

यहोवा ने न दिई थी रखकर उस पर धूप दिया और उस आग को यहोवा के साम्हने ले गये ॥ २। तब यहोवा के साम्हने से आग ने निकलकर उन को भस्म कर दिया और वे यहोवा के साम्हने मर गये ॥ ३। तब मूसा हारून से बोला यह वही है जो यहोवा ने कहा था कि मैं अपने समीप आनेहारों के बीच पवित्र ठहराया जाऊंगा और सारे लोगों के साम्हने महिमा पाऊंगा और हारून चुप रहा ॥ ४। तब मूसा ने मीशाएल् और एल्सापान् को जो हारून के चचा उज्जीएल् के पुत्र थे बुलाकर कहा निकट आओ और अपने भतीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी से बाहर ले जाओ ॥ ५। मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उन को अंगरखों सहित उठाकर छावनी से बाहर ले गये ॥ ६। तब मूसा ने हारून से और उस के पुत्र एलाजार् और ईतामार् से कहा तुम लोग अपने सिरों के बाल मत बिखराओ और न अपने वस्त्रों को फाड़ो न हो कि तुम भी मर जाओ और सारी मंडली पर उस का कोप भड़के पर इस्राएल् के सब घराने के लोग जो तुम्हारे भाईबंधु हैं वे तो यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें ॥ ७। और तुम लोग मिलापवाले तंबू के द्वार के बाहर न जाना न हो कि तुम मर जाओ क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है। मूसा के इस वचन के अनुसार उन्हों ने किया ॥

८। फिर यहोवा ने हारून से कहा कि, ९। जब जब तू वा तेरे पुत्र मिलापवाले तंबू में आयें तब तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिये हो न और किसी प्रकार का मद्य न हो कि मर जाओ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह विधि ठहरी रहे, १०। जिस से तुम पवित्र अपवित्र में और शुद्ध अशुद्ध में अन्तर कर सको, ११। और इस्राएलियों को वे सब विधियां सिखा सको जो यहोवा ने उन को मूसा से सुनवा दिई हैं ॥

१२। फिर मूसा ने हारून से और उस के बचे हुए दोनों पुत्र ईतामार् और एलाजार् से भी कहा यहोवा के हव्यों में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना खमीर खाओ क्योंकि वह परमपवित्र है ॥ १३। सो तुम उसे किसी पवित्र स्थान में खाओ वह तो यहोवा के हव्यों में से तेरा और तेरे पुत्रों का हक है मैं ने ऐसी ही आज्ञा पाई है ॥ १४। और हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जांघ को तुम लोग अर्थात् तू और तेरे बेटे बेटियां सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ क्योंकि वे इस्राएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे लड़केवालों को हक करके दिई गई हैं ॥ १५। चरबी के हव्यों समेत जो उठाई हुई जांघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के साम्हने हिलाने के लिये आया करेंगी ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सदा की विधि की रीति से तेरे और तेरे लड़केबालों के होंगे ॥

१६। और मूसा ने पापबलिवाले बकरे की खो ढूंढ़ ढांढ़ किई तो क्या पाया कि वह जलाया गया है सो एलाजार् और ईतामार् जो हारून के पुत्र बचे थे उन से वह कोप करके कहने लगा, १७। पापबलि जो परमपवित्र है और यहोवा ने जो उस को तुम्हें इस लिये दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म्म का भार उठाकर उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करो सो उस का मांस तुम ने पवित्रस्थान में क्यों नहीं खाया ॥ १८। देखो उस का लोहू पवित्रस्थान के भीतर तो लाया न गया निस्सन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उस के मांस को पवित्रस्थान में खाते ॥ १९। इस का उत्तर हारून ने मूसा को यों दिया कि देख आज ही के दिन उन्हों ने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के साम्हने चढ़ाया फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियां आ पड़ी हैं सो यदि मैं ने आज पापबलि को खाया होता तो क्या यह यहोवा के लेखे में अच्छा ठहरता ॥ २०। जब मूसा ने यह सुना तब यह उस के लेखे में अच्छा ठहरा ॥

(शुद्ध अशुद्ध मांस की विधि.)

११. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २। इस्राएलियों से कहो कि जितने पशु पृथिवी पर हैं उन सभों में से

तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो ॥ ३ । पशुओं में से जितने चिरे वा फटे खुरवाले होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो ॥ ४ । पर पागुर करनेहारों वा फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना अर्थात् ऊंट जो पागुर तो करता है पर चिरे खुर का नहीं होता इस लिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है ॥ ५ । और शापान् जो पागुर तो करता पर चिरे खुर का नहीं होता वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है ॥ ६ । और खरहा जो पागुर तो करता है पर चिरे खुर का नहीं होता इस लिये वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है ॥ ७ । और सूअर जो चिरे अर्थात् फटे खुरवाला होता तो है पर पागुर नहीं करता इस लिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है ॥ ८ । इन के मांस में से कुछ न खाना बरन इन की लोथ को छूना भी नहीं ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

९ । फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो अर्थात् समुद्र वा नदियों के रहनेहारों में से जितनों के पंख और चोये होते हैं उन्हें खा सकते हो ॥ १० । और जलचारी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोये के समुद्र वा नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे लिये घिनौने हैं ॥ ११ । वे तुम्हारे लेखे घिनौने ठहरें तुम उन के मांस में से कुछ न खाना और उन की लोथों को घिनौनी जानना ॥ १२ । जल में जिस किसी जन्तु के पंख और चोये नहीं होते वह तुम्हारे लिये घिनौना है ॥

१३ । फिर पक्षियों में से इन को घिनौना जानना ये घिनौने होने के कारण खाए न जाएं अर्थात् उकाब हड़फोड़ कुरर, १४ । शाही और भांति भांति की चील, १५ । और भांति भांति के सब काग, १६ । शुतर्मुर्ग तखमास् जलकुक्कुट और भांति भांति के बाज, १७ । हवासिल हाड़गील उल्लू, १८ । राजहंस धनेश गिद्ध, १९ । लगलग भांति भांति के बगुले टिटीहरी और चमगीदड़ ॥

२० । जितने पंखवाले चार पांवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये घिनौने हैं ॥ २१ । पर रेंगनेहारे और पंखवाले जो चार पांवों के बल चलते हैं जिन के भूमि पर फांदने को टांगें होती हैं उन को तो खा सकते हो ॥ २२ । वे ये हैं अर्थात् भांति भांति की टिड्डी भांति भांति के फनगे भांति भांति के हर्गोल् और भांति भांति के हागाब् ॥ २३ । पर और सब रेंगनेहारे पंखवाले जो चार पांववाले होते हैं वे तुम्हारे लिये घिनौने हैं ॥

२४ । और इन के कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे जिस किसी से इन की लोथ छू जाए वह सांझ लों अशुद्ध ठहरे ॥ २५ । और जो कोई इन की लोथ में का कुछ भी उठाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २६ । फिर जितने पशु चीरे खुरवाले होते हैं पर न तो बिलकुल फटे खुरवाले न पागुर करनेहारे हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरे ॥ २७ । और चार पांव के बल चलनेहारों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २८ । और जो कोई उन की लोथ उठाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

२९ । और जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन में से ये रेंगनेहारे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं अर्थात् नेउला चूहा और भांति भांति के गोह, ३० । और छिपकली मगर टिकटिक सांडा और गिरगिटान ॥ ३१ । सब रेंगनेहारों में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई इन की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ३२ । और इन में से किसी की लोथ जिस किसी वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे चाहे वह काठ का कोई पात्र हो चाहे वस्त्र चाहे खाल चाहे बोरा चाहे किसी काम का कैसा ही पात्रादि क्यों न हो वह जल में डाला जाए और सांझ लों अशुद्ध रहे तब शुद्ध ठहरे ॥ ३३ । और मिट्टी का कोई पात्र हो जिस में इन जन्तुओं में से कोई पड़े तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे और पात्र को तुम तोड़ डालना ॥ ३४ । उस में जो खाने के योग्य भोजन हो जिस में पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे फिर यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे ॥ ३५ । और यदि इन

की लोथ में का कुछ तंदूर वा चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे और तोड़ डाला जाए क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा वह तुम्हारे लेखे भी अशुद्ध ठहरे ॥ ३६ । पर सोता वा तालाब जिस में जल एकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे पर जो कोई इन की लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे ॥ ३७ । और यदि इन की लोथ मे का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े तो वह बीज शुद्ध रहे ॥ ३८ । पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए तो वह तुम्हारे लेखे अशुद्ध ठहरे ॥

३९ । फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दिई गई है यदि उन में से कोई पशु मरे तो जो कोई उस की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ४० । और उस की लोथ में से जो कोई कुछ खाए सो अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे और जो कोई उस की लोथ उठाए वह भी अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ४१ । और सब प्रकार के पृथिवी पर रेंगनेहारे घिनौने हैं वे खाए न जाएं ॥ ४२ । पृथिवी पर सब रेंगनेहारों में से जितने पेट वा चार पांवों के बल चलते हैं वा अधिक पांव-वाले होते हैं उन्हें तुम न खाना क्योंकि वे घिनौने हैं ॥ ४३ । तुम किसी प्रकार के रेंगनेहारे जन्तु के द्वारा अपने आप को घिनौना न करना और न उन के द्वारा अपने को अशुद्ध करके अशुद्ध ठहरना ॥ ४४ । क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं इस कारण अपने को पवित्र करके पवित्र बने रहो क्योंकि मैं पवित्र हूं इस लिये तुम किसी प्रकार के रेंगनेहारे जन्तु के द्वारा जो पृथिवी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना ॥ ४५ । क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से इस लिये ले आया है कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरे इस कारण तुम पवित्र रहो क्योंकि मैं पवित्र हूं ॥

४६ । पशुओं पक्षियों और सब जलचारी प्राणियों और पृथिवी पर सब रेंगनेहारे प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है, ४७ । कि शुद्ध अशुद्ध और भक्ष्य अभक्ष्य जीवधारियों में भेद किया जाए ॥

(प्रसूता के विषय की विधि.)

१२. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से कह कि जो स्त्री गर्भिणी होकर लड़का जने उस को सात दिन की अशुद्धता लगे अर्थात् जैसे वह ऋतुमती होकर अशुद्ध रहा करती है वैसे ही वह जनने पर भी अशुद्ध रहे ॥ ३ । और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए ॥ ४ । फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेहारे रुधिर से तेतीस दिन रहे और जब लों उस के शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हों तब लों वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए और न पवित्रस्थान मे प्रवेश करे ॥ ५ । और यदि वह लड़की जने तो उस को ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे और फिर छियासठ दिन लों अपने शुद्ध करनेहारे रुधिर मे रहे ॥ ६ । और जब उस के शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों तब चाहे वह बेटा जना हो चाहे बेटी वह होमबलि के लिये बरस दिन का भेड़ी का बच्चा और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा वा पिंडुकी मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास ले जाए ॥ ७ । तब याजक उस को यहोवा के साम्हने चढ़ाके उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह अपने रुधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी । जो स्त्री लड़का वा लड़की जने उस की यही व्यवस्था है ॥ ८ । और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने की पूंजी न हो तो दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह शुद्ध ठहरेगी ॥

(कोढ़ की विधि.)

१३. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ । जब किसी मनुष्य के चाम में सूजन वा पपड़ी वा फूल हो और इस से उस के चाम में कोढ़ की व्याधि सा कुछ देख पड़े तो वह हारून याजक के पास वा उस के पुत्र जो याजक हैं उन में से किसी के पास पहुंचाया

जाए ॥ ३ । तब याजक उस के चाम की व्याधि को देखे और यदि उस व्याधि के स्थान के रोएं उजले हो गये हों और वह व्याधि चाम से गहिरी देख पड़े तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है सो याजक उस मनुष्य को देखकर उस को अशुद्ध ठहराए ॥ ४ । और यदि वह फूल उस के चाम में उजला तो हो पर चाम से गहिरा न देख पड़े और न उस में के रोएं उजले हो गये हों तो याजक उस को सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ ५ । और सातवें दिन याजक उस को देखे और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उस के चाम में फैली न हो तो याजक उस को और भी सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ ६ । और सातवें दिन याजक उस को फिर देखे और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम हुई और व्याधि चाम में नहीं फैली तो याजक उस को शुद्ध ठहराए उस के तो चाम में पपड़ी ठहरेगी सो वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध ठहरे ॥ ७ । और यदि उस के पीछे कि वह शुद्ध ठहरने के लिये याजक को दिखाया जाए उस की पपड़ी चाम में बहुत फैल जाए तो वह फिर याजक को दिखाया जाए ॥ ८ । और यदि याजक को देख पड़े कि पपड़ी चाम में फैल गई है तो वह उस को अशुद्ध ठहराए, कोढ़ ही तो है ॥

९ । यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो तो वह याजक के पास पहुंचाया जाए ॥ १० । और याजक उस को देखे और यदि वह सूजन उस के चाम में उजली हो और उस के कारण रोए भी उजले हो गये हों और उस सूजन में बिना चाम का मांस हो, ११ । तो याजक जाने कि उस के चाम में पुराना कोढ़ है सो वह उस को अशुद्ध ठहराए और बन्द न रक्खे, वह तो अशुद्ध है ॥ १२ । और यदि कोढ़ किसी के चाम में फूटकर यहां लों फैल जाए कि जहां कहीं याजक देखे व्याधिमान के सिर से तलुवे लों कोढ़ ने सारे चाम को छा लिया हो, १३ । तो याजक देखे और यदि कोढ़ ने उस के सारे शरीर को छा लिया हो तो वह उस व्याधिमान को शुद्ध ठहराए उस का शरीर जो बिलकुल उजला हो गया होगा सो वह शुद्ध ही ठहरे ॥ १४ । पर जब उस में चामहीन मांस देख पड़े तब तो वह अशुद्ध ठहरे ॥ १५ । और याजक चामहीन मांस को देखकर उस को अशुद्ध ठहराए क्योंकि वैसा चामहीन मांस अशुद्ध ही होता है उस में कोढ़ लगा रहता है ॥ १६ । पर यदि वह चामहीन मांस फिरकर उजला हो जाए तो वह मनुष्य याजक के पास जाए ॥ १७ । तब याजक उस को देखे और यदि वह व्याधि फिरकर उजली हो गई हो तो याजक व्याधिमान को शुद्ध जानकर शुद्ध ही ठहराए ॥

१८ । फिर यदि किसी के चाम में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो, १९ । और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन वा लाली लिये हुए उजला फूल हो तो वह याजक को दिखाया जाए ॥ २० । सो याजक उस सूजन को देखे और यदि वह चाम से गहिरा देख पड़े और उस के रोएं भी उजले हो गये हों तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए कि वह फोड़े में से फूटी हुई कोढ़ की व्याधि है ॥ २१ । और यदि याजक देखे कि उस में उजले रोएं नहीं हैं और वह चाम से गहिरी नहीं और उस की चमक कम हुई है तो याजक उस मनुष्य को सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ २२ । और यदि वह व्याधि तब लों चाम में सचमुच फैल जाए तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए, वह व्याधि तो है ॥ २३ । पर यदि वह फूल न फैले अपने स्थान ही पर बना रहे तो वह फोड़े का दाग है याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए ॥

२४ । फिर यदि किसी के चाम में जलने का घाव हो और उस जलने के घाव में चामहीन फूल लाली लिये हुए उजला वा उजला ही हो जाए, २५ । तो याजक उस को देखे और यदि उस फूल में के रोएं उजले हो गये हों और वह चाम से गहिरा देख पड़े तो उस को जलने के दाग में से फूटा हुआ कोढ़ है याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए क्योंकि उस में कोढ़ की व्याधि ठहरेगी ॥ २६ । और यदि याजक देखे कि फूल में उजले रोएं नहीं और न वह चाम से कुछ गहिरा है और उस की चमक

कम हुई है तो वह उस को सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ २७। और सातवें दिन याजक उस को देखे और यदि वह चाम में फैल गई हो तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए, उस को कोढ़ की व्याधि है ॥ २८। पर यदि वह फूल चाम में न फैला अपने स्थान ही पर बना हो और उस की चमक कम हुई हो तो वह जलने की सूजन है याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए क्योंकि उस में जलने का दाग है ॥

२९। फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के सिर पर वा पुरुष की डाढ़ी में व्याधि हो, ३०। तो याजक व्याधि को देखे और यदि वह चाम से गहिरी देख पड़े और उस में भूरे भूरे पतले बाल हों तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए वह व्याधि सेंहुआं अर्थात् सिर वा डाढ़ी का कोढ़ है ॥ ३१। और यदि याजक सेंहुएं की व्याधि को देखे कि वह चाम से गहिरी नहीं है और उस में काले काले बाल नहीं हैं तो वह सेंहुएं के व्याधिमान को सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ ३२। और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे तब यदि वह सेंहुआं फैला न हो और उस में भूरे भूरे बाल न हों और सेंहुआं चाम से गहिरा न देख पड़े, ३३। तो वह मनुष्य मूंड़ा तो जाए पर जहां सेंहुआं हो वहां न मूंड़ा जाए और याजक उस सेंहुएंवाले को और भी सात दिन लों बन्द कर रखे ॥ ३४। और सातवें दिन याजक सेंहुएं को देखे और यदि वह सेंहुआं चाम में फैला न हो और चाम से गहिरा न देख पड़े तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए और वह अपने वस्त्र धोके शुद्ध ठहरे ॥ ३५। और यदि उस के शुद्ध ठहरने के पीछे सेंहुआं चाम में कुछ भी फैले, ३६। तो याजक उस को देखे और यदि वह चाम में फैला हो तो याजक यह भूरे बाल न ढूंढ़े वह मनुष्य अशुद्ध है ॥ ३७। पर यदि उस की दृष्टि में वह सेंहुआं जैसे का तैसा बना हो और उस में काले काले बाल जमे हों तो वह जाने कि सेंहुआं चंगा हो गया है और वह मनुष्य शुद्ध है सो याजक उस को शुद्ध ही ठहराए ॥

३८। फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के चाम में उजले फूल हों, ३९। तो याजक देखे और यदि उस के चाम में वे फूल कम उजले हों तो वह जाने कि उस को चाम में निकली हुई चाईं ही हुई है वह मनुष्य शुद्ध ठहरे ॥

४०। फिर जिस के सिर के बाल झड़ गये हों तो जानना कि वह चन्दुला तो है पर शुद्ध ही है ॥ ४१। और जिस के सिर के आगे के बाल झड़ गये हों तो वह माथे का चन्दुला तो है पर शुद्ध ही है ॥ ४२। पर यदि चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर लाली लिये हुए उजली व्याधि हो तो जानना कि वह उस के चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर निकला हुआ कोढ़ है ॥ ४३। सो याजक उस को देखे और यदि व्याधि की सूजन उस के चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा चाम के कोढ़ में होता है, ४४। तो वह कोढ़ी और अशुद्ध है सो याजक उस को अवश्य अशुद्ध ठहराए उस के सिर की व्याधि है ॥

४५। और जिस में वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें और वह अपने ऊपरवाले होंठ को ढांपे हुए अशुद्ध अशुद्ध यों पुकारा करे ॥ ४६। जितने दिन लों वह व्याधि उस में रहे उतने दिन लों वह जो अशुद्ध रहेगा इस लिये अशुद्ध ठहरा भी रहे सो वह अकेला रहा करे उस के रहने का स्थान छावनी से बाहर हो ॥

४७। फिर जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी का, ४८। वह व्याधि चाहे उस सनी वा ऊन के वस्त्र के ताने में हो चाहे बाने में वा वह व्याधि चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में हो, ४९। यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में वा चमड़े में वा चमड़े की किसी वस्तु में हरी सी वा लाल सी हो तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए ॥ ५०। और याजक व्याधि को देखे और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन बन्द कर रक्खे ॥ ५१। और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे और यदि वह वस्त्र

के चाहे ताने में चाहे बाने में वा चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है इस लिये वह वस्तु चाहे कैसे ही काम क्यों न आती हो तौभी अशुद्ध ठहरेगी ॥ ५२ । सो वह उस वस्त्र को जिस के ताने वा बाने में वह व्याधि हो चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का वा उस चमड़े की वस्तु को जलाए वह व्याधि गलित कोढ़ की है वह वस्तु आग में जलाई जाए ॥ ५३ । और यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के ताने वा बाने में वा चमड़े की उस वस्तु में नहीं फैली, ५४ । तो जिस वस्तु में व्याधि हो उस के धोने की आज्ञा दे तब उसे और भी सात दिन लों बन्द कर रक्खे ॥ ५५ । और उस के धोने के पीछे याजक उस को देखे और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो और न व्याधि फैली हो तो जानना कि वह अशुद्ध है उसे आग में जलाना क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपरवार की हो तौभी वह कटाव ठहरेगा ॥ ५६ । और यदि याजक देखे कि उस के धोने के पीछे व्याधि की चमक कम हुई तो वह उस को वस्त्र के चाहे ताने चाहे बाने में से वा चमड़े में से फाड़के निकाले ॥ ५७ । और यदि वह व्याधि तब भी उस वस्त्र के ताने वा बाने में वा चमड़े की उस वस्तु में देख पड़े तो जानना कि वह फूटके निकली हुई व्याधि है और जिस में वह व्याधि हो उसे आग में जलाना ॥ ५८ । और यदि उस वस्त्र से जिस के ताने वा बाने में व्याधि हो वा चमड़े की जो वस्तु हो उस से जब धोई जाए तब व्याधि जाती रही हो तो वह दूसरी बार धुलकर शुद्ध ठहरे ॥ ५९ । ऊन वा सनी के वस्त्र में के ताने वा बाने में वा चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो उस के शुद्ध अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्था है ॥

१४.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की यह व्यवस्था है कि वह याजक के पास पहुंचाया जाए ॥ ३ । और याजक छावनी के बाहर जाए और याजक उस कोढ़ी को देखे और यदि उस की कोढ़ की व्याधि चंगी हुई हो, ४ । तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहरनेहारे के लिये दो शुद्ध और जीते पक्षी देवदारु की लकड़ी लाही रंग का कपड़ा और जूफा ये सब लिये जाएं ॥ ५ । और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि किया जाए ॥ ६ । तब वह जीते पक्षी को देवदारु की लकड़ी लाही के रंग के कपड़े और जूफा इन सभों समेत लेकर एक संग उस पक्षी के लोहू में जो बहते हुए जल के ऊपर बलि किया जाएगा बोर दे, ७ । और कोढ़ से शुद्ध ठहरनेहारे पर सात बार छिड़ककर उस को शुद्ध ठहराए तब उस जीते हुए पक्षी को मैदान में छोड़ दे ॥ ८ । और शुद्ध ठहरनेहारा अपने वस्त्रों को धो सब बाल मुंड़ाकर जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरे और उस के पीछे वह छावनी में तो आने पाए पर सात दिन लों अपने डेरे से बाहर रहे ॥ ९ । और सातवें दिन वह सिर डाढ़ी और भौंहों के सब बाल मुंडाए बरन सब अंग मुण्डन कराए और अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरेगा ॥ १० । और आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़ के बच्चे और बरस दिन की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवें अंश मैदा और लोग भर तेल लाए ॥ ११ । और शुद्ध ठहरानेहारा याजक इन वस्तुओं समेत उस शुद्ध ठहरनेहारे मनुष्य को यहोवा के सन्मुख मिलापवाले तंबू के द्वार पर खड़ा करे ॥ १२ । तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिये उसे और उस लोग भर तेल को समीप लाए और इन दोनों को हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाए ॥ १३ । और वह उस भेड़ के बच्चे को उसी स्थान में जहां वह पापबलि और होमबलिपशुओं को बलि किया करेगा अर्थात् पवित्रस्थान में बलि करे क्योंकि जैसा पापबलि याजक का ठहरेगा वैसा ही दोषबलि भी उसी का ठहरेगा वह परमपवित्र है ॥ १४ ।

तब याजक दोषबलि के लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाए ॥ १५। और याजक उस लोग् भर तेल में से कुछ लेकर अपने बायें हाथ की हथेली पर डाले ॥ १६। और याजक अपने दहिने हाथ की अंगुली को अपनी बाईं हथेली पर के तेल में बोरके उस तेल में से कुछ अपनी अंगुली से यहोवा के सन्मुख सात बार छिड़के ॥ १७। और जो तेल उस की हथेली पर रह जाएगा याजक उस में से कुछ शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर दोषबलि के लोहू के ऊपर लगाए ॥ १८। और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उस को वह शुद्ध ठहरनेहारे के सिर पर डाल दे और याजक उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे ॥ १९। और याजक पापबलि को भी चढ़ाके उस के लिये जो अपनी अशुद्धता से शुद्ध ठहरनेहारा हो प्रायश्चित्त करे और उस के पीछे होमबलिपशु को बलि करके, २०। अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाए सो याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह शुद्ध ठहरेगा ॥

२१। पर यदि वह दरिद्र हो और इतना लाने की उस के पूंजी न हो तो वह अपना प्रायश्चित्त कराने के लिये हिलाने को एक भेड़ का बच्चा दोषबलि के लिये और तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके और लोग् भर तेल लाए, २२। और दो पिंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लाए जैसे कि वह ला सके और इन में से एक तो पापबलि और दूसरा होमबलि हो ॥ २३। और आठवें दिन वह इन सभों को अपने शुद्ध ठहरने के लिये मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सन्मुख याजक के पास ले आए ॥ २४। तब याजक उस लोग् भर तेल और दोषबलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाए ॥ २५। फिर दोषबलिवाला भेड़ का बच्चा बलि किया जाए और याजक उस के लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाए ॥ २६। फिर याजक उस तेल में से कुछ अपने बायें हाथ की हथेली पर डालकर, २७। अपने दहिने हाथ की अंगुली से अपनी बाईं हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के सन्मुख सात बार छिड़के ॥ २८। फिर याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर दोषबलि के लोहू के स्थान पर लगाए ॥ २९। और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेहारे के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करने को उस के सिर पर डाल दे ॥ ३०। तब वह पिंडुकों वा कबूतरी के बच्चों में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए ॥ ३१। अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो उन में से वह एक को पापबलि करके और अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए इस रीति याजक शुद्ध ठहरनेहारे के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे ॥ ३२। जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो और उस के इतनी पूंजी न हो कि शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके उस के लिये यही व्यवस्था है ॥

३३। फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, ३४। जब तुम लोग कनान् देश में पहुंचो जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तुम्हें देता हूं उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊं, ३५। तो जिस का वह घर हो सो आकर याजक को यों बता दे कि मुझे ऐसा देख पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि है ॥ ३६। तब याजक आज्ञा दे कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहिले उसे खाली करो ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे और पीछे याजक घर देखने को भीतर जाए ॥ ३७। तब वह उस व्याधि को देखे और यदि वह व्याधि घर की भीतों पर हरी हरी सी वा लाल लाल सी मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में हो और ये लकीरें भीत में गहिरी देख पड़ती हों, ३८। तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर

को सात दिन लों बन्द कर रक्खे ॥ ३९। और सातवें दिन याजक आकर देखे और यदि वह व्याधि घर की भीतों पर फैल गई हो, ४०। तो याजक आज्ञा दे कि जिन पत्थरों को व्याधि है उन्हे निकालकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दो ॥ ४१। और वह घर के भीतर भीतर चारों ओर खुरचवा दे और वह खुरचन नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए ॥ ४२। और लोग दूसरे पत्थर लेकर पहिले पत्थरों के स्थान मे लगाएं और याजक दूसरा गारा लेकर घर पर फेरे ॥ ४३। और यदि पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और लेसे जाने के पीछे वह व्याधि फिर घर में फूट निकले, ४४। तो याजक आकर देखे और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है वह अशुद्ध है॥ ४५। और वह सब गारे समेत पत्थर लकड़ी वरन सारे घर को खुदवाकर गिरा दे और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फेंकवा दे ॥ ४६। और जब लों वह घर बन्द रहे तब लों यदि कोई उस में जाए तो वह सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ४७। और जो कोई उस घर में सोए वह अपने वस्त्रों को धोए और जो कोई उस घर में खाना खाए वह भी अपने वस्त्रों को धोए ॥ ४८। और यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया तब से उस में व्याधि नहीं फैली तो यह जानकर कि वह व्याधि दूर हो गई है घर को शुद्ध ठहराए ॥ ४९। और वह घर को पाप छुड़ाके पावन करने के लिये दो पक्षी देवदारु की लकड़ी लाही रंग का कपड़ा और जूफा लिवा लाए, ५०। और एक पक्षी को बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि करे ॥ ५१। तब वह देवदारु की लकड़ी लाही रंग के कपड़े और जूफा इन सभों समेत जीते हुए पक्षी को लेकर बलि किये हुए पक्षी के लोहू मे और बहते हुए जल में बोर दे और उस से घर पर सात बेर छिड़के ॥ ५२। और वह पक्षी के लोहू और बहते हुए जल और जीते हुए पक्षी और देवदारु की लकड़ी और जूफा और लाही रंग के कपड़े के द्वारा घर को पाप छुड़ाके पावन करे ॥ ५३। तब वह जीते हुए पक्षी को नगर से बाहर मैदान मे छोड़ दे इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह शुद्ध ठहरेगा ॥

५४। सब भांति के कोढ़ की व्याधि और सेहुएं, ५५। और वस्त्र और घर के कोढ़, ५६। और सूजन और पपड़ी और फूल के विषय मे, ५७। शुद्ध अशुद्ध ठहराने की शिक्षा की व्यवस्था यही है। सारे कोढ़ की व्यवस्था यही है ॥

(ऐसे लोगों की विधि जिन के प्रमेह हो.)

१५. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २। इस्राएलियों से यों कहो कि जिस जिस पुरुष के प्रमेह हो वह उस कारण अशुद्ध ठहरे ॥ ३। और चाहे बहता रहे चाहे बहना बन्द भी हो तौभी उस की अशुद्धता ठहरेगी ॥ ४। जिस के प्रमेह हो वह जिस जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे ॥ ५। और जो कोई उस के बिछौने को छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे ॥ ६। और जिस के प्रमेह हो वह जिस वस्तु पर बैठा हो उस पर जो कोई बैठे वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे ॥ ७। और जिस के प्रमेह हो उस से जो कोई छू जाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ८। और जिस के प्रमेह हो वह यदि किसी शुद्ध मनुष्य पर थूके तो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ९। और जिस के प्रमेह हो वह सवारी की जिस वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे ॥ १०। और जो कोई किसी वस्तु को जो उस के नीचे रही हो छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को उठाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ११। और जिस के प्रमेह हो वह जिस किसी को बिन हाथ धोये छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध

रहे ॥ १२ । और जिस के प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह तोड़ डाला जाए और काठ के सब प्रकार के पात्र जल से धोये जाएं ॥ १३ । फिर जिस के प्रमेह हो वह जब अपने रोग से चंगा हो जाए तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन गिन ले और उन के बीतने पर अपने वस्त्रों को धोकर बहते हुए जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरेगा ॥ १४ । और आठवें दिन वह दो पिंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सन्मुख जाकर उन्हें याजक को दे ॥ १५ । तब याजक उन में से एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए और याजक उस के लिये उस के प्रमेह के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे ॥

१६ । फिर यदि किसी पुरुष का वीर्य्य स्खलित हो जाए तो वह अपने सारे शरीर को जल से धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ १७ । और जिस किसी वस्त्र वा चमड़े पर वह वीर्य्य पड़े वह जल से धोया जाए और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ १८ । और जब कोई पुरुष स्त्री से प्रसंग करे तो वे दोनों जल से स्नान करें और सांझ लों अशुद्ध रहें ॥

१९ । फिर जब कोई स्त्री ऋतुमती हो तो वह सात दिन लों अशुद्ध ठहरी रहे और जो कोई उस को छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २० । और जब लों वह अशुद्ध रहे तब लों जिस जिस वस्तु पर वह लेटे और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब अशुद्ध ठहरें ॥ २१ । और जो कोई उस के बिछौने को छूए वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २२ । और जो कोई किसी वस्तु को छूए जिस पर वह बैठी हो वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २३ । और यदि बिछौने वा और किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने के समय उस का रुधिर लगा हो तो छूनेहारा सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २४ । और यदि कोई पुरुष उस से प्रसंग करे और उस का रुधिर उस के लग जाय तो वह पुरुष सात दिन लों अशुद्ध रहे और जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें ॥

२५ । फिर यदि कोई स्त्री अपने ऋतु के योग्य समय को छोड़ बहुत दिन रजस्वला रहे वा उस योग्य समय से अधिक ऋतुमती रहे तो जब लों वह ऐसी रहे तब लों वह अशुद्ध ठहरी रहे ॥ २६ । उस के ऋतुमती रहने के सब दिनों में जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उस के रजवाले बिछौने के समान ठहरें और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उस के ऋतुमती रहने के योग्य दिनों की नाईं अशुद्ध ठहरें ॥ २७ । और जो कोई उन वस्तुओं को छूए वह अशुद्ध ठहरे सो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २८ । और जब वह स्त्री अपने ऋतु से शुद्ध हो जाए तब से वह सात दिन गिन ले और उन के बीतने पर वह शुद्ध ठहरे ॥ २९ । फिर आठवें दिन वह दो पिंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास जाए ॥ ३० । तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए और याजक उस के लिये उस के रजस् की अशुद्धता के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे ॥

३१ । इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को उन की अशुद्धता से न्यारे कर रक्खो कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उन के बीच है अशुद्ध करके अपनी अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं ॥

३२ । जिस के प्रमेह हो और जो पुरुष वीर्य्य स्खलित होने से अशुद्ध हो, ३३ । और जो स्त्री ऋतुमती हो और क्या पुरुष क्या स्त्री जिस किसी के धातुरोग हो और जो पुरुष अशुद्ध स्त्री से प्रसंग करे इन सभों की यही व्यवस्था है ॥

(प्रायश्चित्त के दिन का आचार.)

१६. जब हारून के दो पुत्र यहोवा के साम्हने समीप जाकर मर गये उस के पीछे यहोवा ने मूसा से बातें किईं । और यहोवा ने मूसा से कहा, २ । अपने भाई हारून से कह कि संदूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे बीचवाले पर्दे की आड़ में के पवित्रस्थान में हर

एक समय तो प्रवेश न करना नहीं तो मर जाएगा क्योंकि मैं प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूंगा ॥ ३। और जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से करे अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए ॥ ४। वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा और अपने तन पर सनी के कपड़े की जांघियां पहिने और सनी के कपड़े की पेटी और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बांधे हुए प्रवेश करे ये जो पवित्र वस्त्र हैं सो वह जल से स्नान करके इन्हें पहिनकर आए ॥ ५। फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले ॥ ६। और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे ॥ ७। और वह दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के साम्हने खड़ा करे ॥ ८। और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी तो यहोवा के लिये और एक अजाजेल् के लिये डाली जाए ॥ ९। और जिस बकरे पर यहोवा के लिये चिट्ठी निकले उस को तो हारून समीप ले आ पापबलि करके चढ़ाए ॥ १०। पर जिस बकरे पर अजाजेल् के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के साम्हने जीता खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित्त किया जाए और वह अजाजेल् के लिये जंगल में छोड़ा जाए ॥ ११। और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा समीप ले आए और उस को बलि करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे ॥ १२। और जो वेदी यहोवा के सन्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरके वह बीचवाले पर्दे के भीतर ले आकर, १३। यहोवा के सन्मुख आग पर धूप दे कि धूप का धूआं साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने पर छा जाए नहीं तो वह मर जाएगा ॥ १४। तब वह बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर पूरब की ओर प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर उंगली से छिड़के और फिर उस लोहू में से कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के साम्हने भी सात बार छिड़क दे ॥ १५। फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण लोगों के लिये होगा बलि करके उस के लोहू को बीचवाले पर्दे की आड़ में ले आए और जैसे उस को बछड़े के लोहू से करना है वैसे ही वह बकरे के लोहू से भी करे अर्थात् उस को प्रायश्चित्त के ढकने पर और उस के साम्हने भी छिड़के ॥ १६। और वह इस्राएलियों की भान्ति भान्ति की अशुद्धता और अपराधों और उन के सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे और मिलापवाला तंबू जो उन के संग उन की भान्ति भान्ति की अशुद्धता के बीच रहता है[1] उस के लिये भी वह वैसा ही करे ॥ १७। और जब हारून प्रायश्चित्त करने के लिये पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब से जब लों वह अपने और अपने घराने और इस्राएल् की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब लों और कोई मनुष्य मिलापवाले तंबू में न रहे ॥ १८। फिर वह निकलकर उस वेदी के पास जो यहोवा के साम्हने है जाकर उस के लिये प्रायश्चित्त करे अर्थात् बछड़े के लोहू और बकरे के लोहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए, १९। और लोहू में से कुछ अपनी उंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़क कर उसे इस्राएलियों की भांति भांति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे ॥ २०। और जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तंबू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके तब जीते हुए बकरे को समीप ले आए ॥ २१। और हारून अपने दोनों हाथों को जीते हुए बकरे पर टेककर इस्राएलियों के सब अधर्म्म के कामों और उन के सब अपराधों निदान उन के सारे पापों को अंगीकार करे और उन को बकरे के सिर पर उतारे फिर उस को किसी ठहराये हुए मनुष्य के हाथ जंगल में भेजके छुड़ा दे ॥ २२। और वह बकरा अपने पर लदे हुए उन के सब अधर्म्म के कामों को किसी

(१) मूल में वास किये रहता है।

निराले देश में उठा ले जाए और वह मनुष्य बकरे को जंगल में छोड़ आए ॥ २३ । तब हारून मिलापवाले तंबू में आए और जो सनी के वस्त्र पहिने हुए वह पवित्रस्थान में प्रवेश करे उन्हें उतारके वहां रख दे ॥ २४ । फिर वह किसी पवित्र स्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहिन बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण लोगों के होमबलि को चढ़ाकर अपने और साधारण लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे ॥ २५ । और पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए ॥ २६ । और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल् के लिये छोड़ आए वह अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे और पीछे वह छावनी में आने पाए ॥ २७ । और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिन का लोहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये पहुंचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुंचाये जाएं और उन की खाल मांस और गोबर आग में जलाये जाएं ॥ २८ । और जो उन को जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे और पीछे छावनी में आने पाए ॥

२९ । और तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि ठहरे कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और उस दिन चाहे तुम्हारे निज देश का कोई हो चाहे तुम्हारे बीच रहनेहारा कोई परदेशी हो कोई किसी प्रकार का काम काज न करे ॥ ३० । क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा वरन तुम अपने सब पापों से यहोवा के साम्हने शुद्ध ठहरोगे ॥ ३१ । वह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना यह सदा की विधि है ॥ ३२ । और अपने पिता के स्थान पर याजक ठहरने के लिये जिस का अभिषेक और संस्कार किया जाए वह भी प्रायश्चित्त किया करे अर्थात् सनी के पवित्र वस्त्रों को पहिनकर, ३३ । पवित्रस्थान और मिलापवाले तंबू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी प्रायश्चित्त करे ॥ ३४ । और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि ठहरे कि इस्राएलियों के लिये बरस दिन में एक बार तुम्हारे सारे पापों का प्रायश्चित्त किया जाए । यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दिई थी हारून ने किया ॥

(बलिदान केवल पवित्र तंबू के साम्हने करने की आज्ञा)

१७. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । हारून और उस के पुत्रों से और सारे इस्राएलियों से कह कि यहोवा ने यह आज्ञा दिई है कि, ३ । इस्राएल् के घराने में से कोई मनुष्य हो जो बैल वा भेड़ के बच्चे वा बकरी को चाहे छावनी में चाहे छावनी से बाहर घात करके, ४ । मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के निवास के साम्हने यहोवा के लिये चढ़ाने के निमित्त न ले जाए तो उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा और वह मनुष्य जो लोहू बहानेहारा ठहरेगा सो वह अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए ॥ ५ । इस विधि का यह कारण है कि इस्राएली जो अपने बलिपशुओं को खुले मैदान में बलि करते हैं वे उन्हें मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास यहोवा के लिये ले जाकर उसी के लिये मेलबलि करके बलि किया करें ॥ ६ । और याजक लोहू को मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिड़के और चरबी को उस के लिये सुखदायक सुगंध करके जलाए ॥ ७ । और वे जो बकरों के पूजक[१] होकर व्यभिचार करते हैं वे फिर अपने बलिपशुओं को उन के लिये बलि न करें । तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे ॥

८ । सो तू उन से कह कि इस्राएल् के घराने के लोगों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो होमबलि वा मेलबलि चढ़ाए, ९ । और उस को मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के लिये चढ़ाने को न ले आए वह मनुष्य अपने लोगों में से नाश किया जाए ॥

(१) मूल में. के पीछे ।

(लोहू की पवित्रता)

१०। फिर इस्राएल् के घराने के लोगों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो किसी प्रकार का लोहू खाए मैं उस लोहू खानेहारे के विमुख होकर उस को उस के लोगों के बीच से नाश कर डालूंगा ॥ ११। क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है और उस को मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है॥ १२। इस कारण मैं इस्राएलियों से कहता हूं कि तुम में से कोई प्राणी लोहू न खाए और जो परदेशी तुम्हारे बीच रहे वह भी लोहू न खाए ॥

१३। सो इस्राएलियों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो अहेर करके खाने के योग्य पशु वा पक्षी को पकड़े वह उस के लोहू को उण्डेलकर धूलि से ढांपे॥ १४। क्योंकि सब प्राणियों का प्राण जो है उन का लोहू ही उन का प्राण ठहरा है इसी से मैं इस्राएलियों से कहता हूं कि किसी प्रकार के प्राणी के लोहू को तुम न खाना क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उन का लोहू ही है उस को जो कोई खाए वह नाश किया जाए॥ १५। और देशी हो वा परदेशी हो जो किसी लोथ वा फाड़े हुए पशु का मांस खाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे तब वह शुद्ध ठहरेगा ॥ १६। और यदि वह उन को न धोए और न स्नान करे तो उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥

(भान्ति भान्ति के घिनौने कामों का निषेध)

१८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों से कहो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥ ३। मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना और कनान् देश के कामों के अनुसार जहां मैं तुम्हें ले चलता हूं न करना और न उन देशों की विधियों पर चलना ॥ ४। मेरे ही नियमों को मानना और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥ ५। सो तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को मानना जो मनुष्य उन को माने वह उन के कारण जीता रहेगा मैं तो यहोवा हूं॥ ६। तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिन का तन उघाड़ने को उस के पास न जाए मैं तो यहोवा हूं ॥ ७। अपनी माता का तन जो तुम्हारे पिता का तन है न उघाड़ना वह तो तुम्हारी माता है सो तुम उस का तन न उघाड़ना ॥ ८। अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे पिता ही का तन है ॥ ९। अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर उस का तन न उघाड़ना ॥ १०। अपनी पोती वा अपनी नतिनी का तन न उघाड़ना उन की देह तो मानो तुम्हारी ही है ॥ ११। तुम्हारी सौतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई वह तुम्हारी बहिन है इस कारण उस का तन न उघाड़ना ॥ १२। अपनी फूफी का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिन है ॥ १३। अपनी मौसी का तन न उघाड़ना क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिन है ॥ १४। अपने चचा का तन न उघाड़ना अर्थात् उस की स्त्री के पास न जाना वह तो तुम्हारी चची है ॥ १५। अपनी बहू का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है सो तुम उस का तन न उघाड़ना ॥ १६। अपनी भौजी का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे भाई ही का तन है ॥ १७। किसी स्त्री और उस की बेटी दोनों का तन न उघाड़ना और उस की पोती को वा उस की नतिनी को अपनी स्त्री करके उस का तन न उघाड़ना वे तो निकट कुटुम्बिनें हैं सो ऐसा करना महापाप है ॥ १८। और अपनी स्त्री की बहिन को भी अपनी स्त्री करके उस की सौत न करना कि पहिली के जीते जी उस का तन भी उघाड़े ॥ १९। फिर जब लों कोई स्त्री अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे तब लों उस के पास उस का तन उघाड़ने को न जाना ॥ २०। फिर अपने भाईबन्धु की स्त्री से

कुकर्म्म करके अशुद्ध न हो जाना ॥ २१ । और अपने सन्तान में से किसी को मोलेक् के लिये होम करके न चढ़ाना और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना मैं तो यहोवा हूं ॥ २२ । स्त्रीगमन की रीति पुरुषगमन न करना वह तो घिनौना काम है ॥ २३ । किसी जाति के पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना और न कोई स्त्री पशु के साम्हने इस लिये खड़ी हो कि उस के संग कुकर्म्म करे यह तो उलटी बात है ॥

२४ । ऐसा ऐसा कोई काम करके अशुद्ध न हो जाना क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं वे ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई हैं ॥ २५ । और उन का देश भी अशुद्ध हुआ इस कारण मैं उस पर उस के अधर्म्म का दण्ड देता हूं और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है ॥ २६ । इस कारण तुम लोग मेरी विधियों और नियमों को मानना और चाहे देशी चाहे तुम्हारे बीच रहनेहारा परदेशी तुम में से कोई ऐसा घिनौना काम न करे ॥ २७ । क्योंकि ऐसे सब घिनौने कामों को उस देश के मनुष्य जो तुम से पहिले उस में रहते हैं वे करते आये हैं इस से वह देश अशुद्ध हो गया है ॥ २८ । सो ऐसा न हो कि जिस रीति जो जाति तुम से पहिले उस देश में रहती है उस को वह उगल देता है उसी रीति जब तुम उस को अशुद्ध करो तो वह तुम को भी उगल दे ॥ २९ । जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नाश किये जाएं ॥ ३० । यह जो आज्ञा मैं ने मानने को दिई है उसे तुम मानना और जो घिनौनी रीतियां तुम से पहिले प्रचलित हैं उन में से किसी पर न चलना और न उन के कारण अशुद्ध हो जाना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(भांति भांति का आचार.)

१९. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों की सारी मण्डली से कह कि तुम पवित्र रहना क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं ॥ ३ । तुम अपनी अपनी माता और अपने अपने पिता का भय मानना और मेरे विश्रामदिनों को पालना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ४ । तुम मूरतों की ओर न फिरना और देवताओं की प्रतिमाएं ढालकर न बना लेना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ५ । जब तुम यहोवा के लिये मेलबलि करो तब बलि ऐसा करना कि मैं तुम से प्रसन्न होऊं ॥ ६ । उस का मांस बलि करने के दिन और दूसरे दिन खाया जाए पर तीसरे दिन लों जो रह जाए वह आग में जलाया जाए ॥ ७ । और यदि उस में से कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए तो वह घिनौना ठहरेगा और ग्रहण न किया जाएगा ॥ ८ । और उस का खानेहारा जो यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराएगा इस से उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाएगा ॥

९ । फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो तब अपने खेत के कोनों को बिलकुल तो न काटना और काटे हुए खेत की सिला बिनाई न करना ॥ १० । और अपनी दाख की बारी को निझाड़के न बिन लेना और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूरों को न बटोरना उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिये छोड़ देना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ११ । तुम चोरी न करना और एक दूसरे से न कपट करना न झूठ बोलना ॥ १२ । तुम मेरे नाम की झूठी किरिया खाके अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना मैं तो यहोवा हूं ॥ १३ । एक दूसरे पर अंधेर न करना और न एक दूसरे को लूट लेना और मजूर की मजूरी तेरे पास रात भर बिहान लों न रहने पाए ॥ १४ । बहिरे को न कोसना और न अंधे के आगे ठोकर रखना और अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ॥ १५ । न्याय में कुटिलता न करना और न तो कंगाल का पक्ष करना न बड़े मनुष्यों का मुंह देखा विचार करना एक दूसरे का न्याय धर्म्म से करना ॥ १६ । लुतरे बनके अपने लोगों में न फिरा करना और एक दूसरे के लोहू बहाने की मनसा से खड़ा न होना मैं तो यहोवा हूं ॥ १७ । अपने मन

में एक दूसरे से बैर न रखना उस को अवश्य डांटना नहीं तो उस के पाप का भार तुझ को उठाना पड़ेगा ॥ १८। पलटा न लेना और न अपने जातिभाइयों से बैर रक्खे रहना बरन एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना मैं तो यहोवा हूं ॥ १९। तुम मेरी विधियों को मानना। अपने पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से जोड़ियाने न देना अपने खेत में दो प्रकार के बीज एकट्ठे न बोना और सनी और ऊन की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना ॥ २०। फिर कोई स्त्री दासी हो और उस की मंगनी किसी पुरुष से हुई हो पर वह न तो दाम से न सेंतमेंत स्वाधीन किई गई हो, उस से यदि कोई कुकर्म्म करे तो उन दोनों को दण्ड तो मिले पर उस स्त्री के स्वाधीन न होने के कारण वे मार न डाले जाएं ॥ २१। पर वह पुरुष मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के पास एक मेढ़ा दोषबलि के लिये ले आए ॥ २२। और याजक उस के किये हुए पाप के कारण दोषबलि के मेढ़े के द्वारा उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित करे तब उस का किया हुआ पाप क्षमा किया जाएगा ॥ २३। फिर जब तुम कनान् देश में पहुंचकर किसी प्रकार के फल के वृक्ष लगाओ तो उन के फल तीन बरस लों तुम्हारे लेखे मानो खतनारहित ठहरे रहें सो उन में से कुछ न खाया जाए ॥ २४। और चौथे बरस में उन के सब फल यहोवा की स्तुति करने के लिये पवित्र ठहरें ॥ २५। तब पांचवें बरस में तुम उन के फल खाना इस लिये कि उन से तुम को बहुत फल मिलें मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ २६। तुम लोहू लगा हुआ कुछ मांस न खाना और न टोना करना न शुभ अशुभ मुहूर्तों को मानना ॥ २७। अपने सिर में घेरा रखकर न मुंड़ाना न अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालना ॥ २८। मुर्दों के कारण अपने शरीर को कुछ न चीरना न उस में छाप लगाना मैं तो यहोवा हूं ॥ २९। अपनी बेटियों को वेश्या बनाकर अपवित्र न करना ऐसा न हो कि देश वेश्यागमन के कारण महापाप से भर जाए ॥ ३०। मेरे विश्रामदिनों को माना करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ॥ ३१। ओझाओं और भूत साधनावालों की ओर न फिरना और ऐसों की खोज करके उन के कारण अशुद्ध न हो जाना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ३२। पक्के बालवाले के साम्हने उठ खड़े होना और बूढ़े का आदरमान करना और अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ॥ ३३। और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे तो उस को दुःख न देना ॥ ३४। जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लेखे में देशी के समान हो बरन उस से अपने ही समान प्रेम रखना क्योंकि तुम मिस्र देश में परदेशी थे मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ३५। न्याय में परिमाण में तौल में नाप में कुटिलता न करना ॥ ३६। सच्चा तराजू धर्म्म के बटखरे सच्चा एपा और धर्म्म का हीन् तुम्हारे पास रहें मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है ॥ ३७। सो तुम मेरी सब विधियों और सब नियमों को मानते हुए पालन करो मैं तो यहोवा हूं ॥

(प्राणदण्ड के योग्य भान्ति भान्ति के पापों का वर्णन)

२०. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों से कह कि इस्राएलियों में से वा इस्राएलियों के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो अपनी कोई सन्तान मोलेक् को बलि करे वह निश्चय मार डाला जाए साधारण लोग उस पर पत्थरवाह करें ॥ ३। और मैं भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उस को उस के लोगों में से इस कारण नाश करूंगा कि उस ने अपनी सन्तान मोलेक् को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया ॥ ४। और यदि किसी के अपनी सन्तान मोलेक् को बलि करने पर साधारण लोग उस के विषय आनाकानी करें और उस को न मार डालें, ५। तो मैं आप उस मनुष्य और उस के घराने के विरुद्ध होकर उस को और

जितने उसके पीछे होकर मोलेक् के साथ व्यभिचार करें उन सभों को भी उन के लोगों के बीच से नाश करूंगा ॥ ६ । फिर जो प्राणी ओझाओं वा भूतसाधनावालों की ओर फिरके और उन के पीछे होकर व्यभिचारी बने मैं उस प्राणी के विरुद्ध होकर उस को उस के लोगों के बीच में से नाश करूंगा ॥ ७ । तुम अपने को पवित्र करके पवित्र बने रहो क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ८ । और मेरी विधियों को चौकसी करके मानना मैं तो तुम्हारा पवित्र करनेहारा यहोवा हूं ॥ ९ । कोई क्यों न हो जो अपने पिता वा माता को कोसे वह निश्चय मार डाला जाए वह जो अपने पिता वा माता का कोसनेहारा ठहरेगा इस से उस का खून उसी के सिर पर पड़ेगा ॥ १० । फिर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे तो जिस ने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिन दोनों निश्चय मार डाले जाएं ॥ ११ । और यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए वह जो अपने पिता ही का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा ॥ १२ । और यदि कोई अपनी पतोहू के साथ सोए तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं क्योंकि वे उलटा काम करनेहारे ठहरेंगे और उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा ॥ १३ । और यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे तो वे दोनों जो घिनौना काम करनेहारे ठहरेंगे इस से वे निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा ॥ १४ । और यदि कोई किसी स्त्री और उस की माता दोनों को रखे तो यह महापाप है सो वह पुरुष और वे स्त्रियां तीनों के तीनों आग में जलाये जाएं जिस से तुम्हारे बीच महापाप न हो ॥ १५ । फिर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो तो पुरुष और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएं ॥ १६ । और यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उस के संग कुकर्म्म करे तो तू उस स्त्री और पशु दोनों का घात करना वे निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा ॥ १७ । और यदि कोई अपनी बहिन को चाहे उस की सगी बहिन हो चाहे सौतेली अपनी स्त्री बनाकर उस का तन देखे और उस की बहिन भी उस का तन देखे तो यह निन्दित बात है सो वे दोनों अपने जातिभाइयों की आंखों के साम्हने नाश किये जाएं वह जो अपनी बहिन का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो उसे अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥ १८ । फिर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उस का तन उघाड़े तो वह पुरुष जो उस के रुधिर के सोते का उघाड़नेहारा ठहरेगा और वह स्त्री जो अपने रुधिर के सोते की उघारनेहारी ठहरेगी इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच से नाश किये जाएं ॥ १९ । और अपनी मौसी वा फूफी का तन न उघाड़ना क्योंकि जो उसे उघारे वह अपनी निकट कुटुम्बिन को नंगा करता है सो उन दोनों को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥ २० । और यदि कोई अपनी चाची के संग सोए तो वह अपने चचा का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों अपने पाप के भार को उठाके निर्वंश मर जाएं ॥ २१ । और यदि कोई अपनी भौजी वा भयहू को अपनी स्त्री बनाए तो इसे घिनौना काम जानना वह अपने भाई का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों निर्वंश रहेंगे ॥

२२ । तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को चौकसी करके मानना न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जाता हूं वह तुम को उगल दे ॥ २३ । और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं उस की रीतियों पर न चलना क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुकर्म्म किये इसी से मेरा जी उन से मिचला उठा है ॥ २४ । और मैं तुम लोगों से कहता हूं कि तुम तो उन की भूमि के अधिकारी होगे और मैं वह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम्हारे अधिकार में कर दूंगा मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जिस ने तुम को देश देश के लोगों से अलग किया है ॥ २५ । इस कारण तुम शुद्ध अशुद्ध पशुओं और शुद्ध अशुद्ध पक्षियों में भेद

करना और कोई पशु वा पक्षी वा किसी प्रकार का भूमि पर रेंगनेहारा जीवजन्तु क्यों न हो जिस को मैं ने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर वरजा है उस से अपने आप को घिनौना न करना॥ २६। और तुम मेरे लिये पवित्र बने रहो क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूं और मैं ने तुम को देश देश के लोगों से इस लिये अलग किया है कि तुम मेरे ही बने रहो॥

२७। यदि कोई पुरुष वा स्त्री ओझाई वा भूत की साधना करे तो वह निश्चय मार डाला जाए ऐसों पर पत्थरवाह किया जाए उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा॥

(याजकों के लिये विशेष विशेष विधियां)

२१. फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून के पुत्र जो याजक हैं उन से कह कि तुम्हारे लोगों में से कोई मरे तो उस के कारण तुम में से कोई अपने को अशुद्ध न करे॥ २। अपने निकट कुटुम्बियों अर्थात् अपनी माता वा पिता वा बेटे वा बेटी वा भाई के लिये, ३। वा अपनी कुंवारी बहिन जिस का विवाह न हुआ हो जो उस की समीपिन है उन के लिये वह अपने को अशुद्ध कर सकता, ४। पर याजक जो अपने लोगों में प्रधान है इस से वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि अपने को अपवित्र कर डाले॥ ५। सो वे न तो अपने सिर मुंड़ाएं न अपने गाल के बालों को और न अपना शरीर चीरें॥ ६। वे अपने परमेश्वर के लिये पवित्र रहें और अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराएं क्योंकि वे यहोवा के हव्य को जो उन के परमेश्वर का भोजन है चढ़ाया करते हैं इस कारण वे पवित्र रहें॥ ७। वे वेश्या वा भ्रष्टा को व्याह न लें और न त्यागी हुई को व्याह लें क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के लिये पवित्र होता है॥ ८। सो तू उस को पवित्र जान क्योंकि वह तेरे परमेश्वर का भोजन-चढ़ाया करता है सो वह तेरे लेखे में पवित्र ठहरे क्योंकि मैं यहोवा जो तुम को पवित्र करता हूं सो पवित्र हूं॥ ९। और यदि किसी याजक की बेटी वेश्या होकर अपने को अपवित्र करे तो वह जो अपने पिता को अपवित्र ठहराएगी सो वह आग में जलाई जाए॥

१०। और जो अपने भाइयों में से महायाजक हो जिस के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और उस का संस्कार इस लिये हुआ हो कि वह पवित्र वस्त्रों को पहिनने पाए वह न तो अपने सिर के बाल बिखराए और न अपने वस्त्र फाड़े॥ ११। और न वह किसी लोथ के पास जाए वरन अपने पिता वा माता के कारण भी अपने को अशुद्ध न करे॥ १२। और वह पवित्रस्थान से बाहर निकले भी नहीं न हो कि अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए क्योंकि वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण[1] किये हुए है मैं तो यहोवा हूं॥ १३। और वह कुंवारी ही स्त्री को व्याहे॥ १४। जो विधवा वा त्यागी हुई वा भ्रष्ट वा वेश्या हो ऐसी किसी को वह न व्याहे वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुंवारी कन्या को व्याहे॥ १५। और वह अपने वीर्य्य को अपने लोगों में अपवित्र न करे क्योंकि मैं उस का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं॥

१६। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७। हारून से कह कि तेरे वंश की पीढ़ी पीढ़ी में जिस किसी के कोई दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने को समीप न आए॥ १८। कोई क्यों न हो जिस के दोष हो वह समीप न आए चाहे वह अंधा हो चाहे लंगड़ा चाहे नकचपटा हो चाहे उस के कुछ अधिक अंग हो, १९। वा उस का पांव वा हाथ टूटा हो, २०। वा वह कुबड़ा वा बौना हो वा उस की आंख में दोष हो वा उस मनुष्य के चाईं वा खजुली हो वा उस के अंड पिचके हों॥ २१। हारून याजक के वंश में से जिस किसी के कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने को समीप न आए वह जो दोषयुक्त है इस से वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने को समीप न आए॥ २२। वह

(१) या का तेल जो उस के न्यारे किये जाने का चिन्ह है उसे।

अपने परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के भोजन को खाए तो खाए, २३। पर उस के जो दोष है इस से वह न तो बीचवाले पर्दे के पास भीतर आए और न वेदी के समीप न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानों को अपवित्र करे मैं तो उन का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं ॥ २४। सो मूसा ने हारून और उस के पुत्रों को वरन सारे इस्राएलियों को यह बातें कह सुनाईं ॥

२२. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। हारून और उस के पुत्रों से कह कि इस्राएलियों की पवित्र किई हुई वस्तुओं से जो वे मेरे लिये पवित्र करें न्यारे रहो न हो कि मेरा पवित्र नाम तुम्हारे द्वारा अपवित्र ठहरे मैं तो यहोवा हूं ॥ ३। और उन से कह कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपनी अशुद्धता रहते हुए उन पवित्र किई हुई वस्तुओं के पास जाए जिन्हें इस्राएली यहोवा के लिये पवित्र करें वह प्राणी मेरे साम्हने से नाश किया जाए मैं तो यहोवा हूं ॥ ४। हारून के वंश में से कोई क्यों न हो जो कोढ़ी हो वा उस के प्रमेह हो वह मनुष्य जब लों शुद्ध न हो जाए तब लों पवित्र किई हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। और जो लोथ के कारण अशुद्ध हुआ हो वा जिस का वीर्य्य स्खलित हुआ हो ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, ५। और जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु को छूए जिस से लोग अशुद्ध होते हैं वा किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता हो, ६। जो प्राणी इन में से किसी को छूए वह सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे और तब लों पवित्र वस्तुओं में से न खाए जब लों वह जल से स्नान न करे ॥ ७। तब सूर्य्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा और उस के पीछे पवित्र वस्तुओं में से खा सकेगा क्योंकि उस का भोजन वही है ॥ ८। जो जन्तु आप से मरा वा पशु से फाड़ा गया हो उस के खाने से वह अपने को अशुद्ध न करे मैं तो यहोवा हूं ॥ ९। सो याजक लोग मेरी सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करें न हो कि वे उन को अपवित्र करके पाप का भार उठाएं और इस कारण मर जाएं मैं तो उन का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं ॥ १०। पराये कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाए वरन चाहे वह याजक का पाहुन वा मजूर हो तौभी वह उसे न खाए ॥ ११। पर यदि याजक किसी प्राणी को रुपैया देकर मोल ले तो वह प्राणी उस में से खाए और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए हों वे भी उस के भोजन में से खाएं ॥ १२। और यदि याजक की बेटी पराये कुल के किसी पुरुष से ब्याही गई हो तो वह भेंट किई हुई पवित्र वस्तुओं में से न खाए ॥ १३। पर यदि याजक की बेटी विधवा वा त्यागी हुई हो और उस के सन्तान न हो और वह अपनी बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने पिता के घर में रहती हो तो वह अपने पिता के भोजन में से खाए पर पराये कुल का कोई उस में से न खाए ॥ १४। और यदि कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खाए तो वह उस का पांचवां भाग बढ़ाकर उसे याजक को भर दे ॥ १५। और वे इस्राएलियों की पवित्र किई हुई वस्तुओं को जिन्हें वे यहोवा के लिये चढ़ाएं अपवित्र न करें ॥ १६। वे उन को अपनी पवित्र वस्तुओं में से खिलाकर उन से अपराध का दोष न उठवाएं मैं उन का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं ॥

१७। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८। हारून और उस के पुत्रों से और सारे इस्राएलियों से समझाकर कह कि इस्राएल के घराने वा इस्राएलियों में रहनेहारे परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो मन्नत वा स्वेच्छाबलि करके यहोवा को कोई होमबलि चढ़ाए, १९। तो तुम्हारे ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलों वा भेड़ों वा बकरियों में से निर्दोष नर चढ़ाया जाए ॥ २०। जिस में कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा ॥ २१। और कोई हो जो बैलों वा भेड़बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने को वा स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेलबलि चढ़ाए तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो उस में कोई भी दोष न हो ॥ २२। जो अंधा वा अंग का टूटा

वा लूला हो वा उस में रसौली वा खौरा वा खजुली हो ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना उन को वेदी पर यहोवा का हव्य करके न चढ़ाना ॥ २३ । जिस किसी बैल वा भेड़े वा बकरे का कोई अंग अधिक वा कम हो उस को स्वेच्छाबलि करके चढ़ाना तो चढ़ाना पर मन्नत पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा ॥ २४ । जिस के अंड दबे वा कुचले वा टूटे वा कट गये हों उस को यहोवा के लिये न चढ़ाना अपने देश में ऐसा काम न करना ॥ २५ । फिर इन में से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाना क्योंकि उन में उन का बिगाड़ होगा उन में दोष होगा इस लिये वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे ॥

२६। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७। जब बछड़ा वा भेड़ वा बकरी का बच्चा उत्पन्न हो तो वह सात दिन लों अपनी मा के साथ रहे फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्यवाले चढ़ावे के लिये ग्रहणयोग्य ठहरेगा ॥ २८ । चाहे गाय चाहे भेड़ी वा बकरी हो उस को और उस के बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना ॥ २९ । और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि करो तो उसे इस प्रकार से करना कि ग्रहणयोग्य ठहरे ॥ ३० । वह उसी दिन खाया जाए उस में से कुछ भी बिहान लों रहने न पाए मैं तो यहोवा हूं ॥ ३१ । और तुम मेरी आज्ञाओं को चौकसी करके मानना मैं तो यहोवा हूं ॥ ३२ । और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना क्योंकि मैं अपने को इस्राएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र ठहराऊंगा मैं तो तुम्हारा पवित्र करनेहारा यहोवा हूं, ३३ । जो तुम को मिस्र देश से तुम्हारा परमेश्वर होने के लिये निकाल ले आया है मैं तो यहोवा हूं ॥

(बरस भर के नियत तिहवारों की विधियां)

२३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से कह कि यहोवा के नियत समय जिन में तुम को पवित्र सभाओं का प्रचार करना होगा मेरे वे नियत समय ये हैं ॥ ३ । छः दिन तो कामकाज किया जाए पर सातवां दिन परमविश्राम का और पवित्र सभा का दिन है उस में किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्रामदिन ठहरे ॥

४ । फिर यहोवा के नियत समय जिन में से एक एक के ठहराये हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा का प्रचार करना होगा सो ये हैं ॥ ५ । पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय यहोवा का फसह हुआ करे ॥ ६ । और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्व हुआ करे उस में तुम सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना ॥ ७ । उन में से पहिले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना ॥ ८ । और सातों दिनों तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना और सातवें दिन पवित्र सभा हो उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना ॥

९ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० । इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में पहुंचो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उस में के खेत काटो तब अपने अपने पक्के खेत की पहिली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना ॥ ११ । और वह उस पूले को यहोवा के साम्हने हिलाए कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए वह उसे विश्रामदिन के दूसरे दिन हिलाए ॥ १२ । और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ उसी दिन बरस दिन का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिये होमबलि करके चढ़ाना ॥ १३ । और उस के साथ का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो वह सुखदायक सुगंध के लिये यहोवा का हव्य हो और उस के साथ का अर्घ हीन् भर की चौथाई दाखमधु हो ॥ १४ । और जब लों तुम इस चढ़ावे को अपने परमेश्वर के पास न ले जाओ उस दिन लों नये खेत में से न तो रोटी खाना न भूना हुआ अन्न न हरी बालें यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरों में सदा की विधि ठहरे ॥

१५ । फिर उस विश्रामदिन के दूसरे दिन से

अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेहारी भेंट के पूले को दोगे उस दिन से पूरे सात विश्रामदिन गिन लेना ॥ १६ । सातवें विश्रामदिन के दूसरे दिन लों पचास दिन गिनना और पचासवें दिन यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाना ॥ १७ । तुम अपने घरों में से एपा के दो दसवें अंश मैदे की दो रोटियां हिलाने की भेंट के लिये ले आना वे खमीर के साथ पकाई जाएं और यहोवा के लिये पहिली उपज ठहरें ॥ १८ । और उस रोटी के संग बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे और एक बछड़ा और दो मेढ़े चढ़ाना वे अपने अपने साथ के अन्नबलि और अर्घ समेत यहोवा के लिये होमबलि करके चढ़ाये जाएं अर्थात् वे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य ठहरें ॥ १९ । फिर पापबलि के लिये एक बकरा और मेलबलि के लिये बरस दिन के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ २० । तब याजक उन को पहिली उपज की रोटी समेत यहोवा के साम्हने हिलाने की भेंट करके हिलाए और इन रोटियों के संग वे दो भेड़ के बच्चे भी हिलाये जाएं वे यहोवा के लिये पवित्र और याजक का भाग ठहरें ॥ २१ । और तुम उसी दिन यह प्रचार करना कि आज हमारी एक पवित्र सभा होगी और परिश्रम का कोई काम न करना यह तुम्हारे सारे घरों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे ॥

२२ । जब तुम अपने देश में के खेत काटो तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना और खेत का सिला न बिन लेना उसे दीनहीन और परदेशी के लिये छोड़ देना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

२३ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ । इस्राएलियों से कह कि सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्राम हो उस में स्मरण दिलाने को नरसिंगे फूंके जाएं और एक पवित्र सभा हो ॥ २५ । उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न करना और यहोवा के लिये एक हव्य चढ़ाना ॥

२६ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७ । उसी सातवें महीने का दसवें दिन प्रायश्चित्त का दिन माना जाए वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन ठहरे और उस में तुम अपने अपने जीव को दु:ख देना और यहोवा का हव्य चढ़ाना ॥ २८ । उस दिन तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन ठहरा है जिस में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा ॥ २९ । सो जो कोई प्राणी उस दिन दुःख न सहे वह अपने लोगों में से नाश किया जाए ॥ ३० । और कोई प्राणी हो जो उस दिन किसी प्रकार का कामकाज करे उस प्राणी को मैं उस के लोगों के बीच में से नाश कर डालूंगा ॥ ३१ । तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरों में सदा की विधि ठहरे ॥ ३२ । वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्राम का हो सो उस में तुम अपने अपने जीव को दु:ख देना और उस महीने के नवें दिन की सांझ से लेकर दूसरी सांझ लों अपना विश्रामदिन माना करना ॥

३३ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३४ । इस्राएलियों से कह कि उसी सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन लों यहोवा के लिये झोंपड़ियों का पर्व रहा करे ॥ ३५ । पहिले दिन पवित्र सभा हो उस में परिश्रम का कोई काम न करना ॥ ३६ । सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया करना फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना वह महासभा का दिन है और उस में परिश्रम का कोई काम न करना ॥

३७ । यहोवा के नियत समय ये ही हैं इन में तुम हव्य अर्थात् होमबलि अन्नबलि मेलबलि और अर्घ एक एक के अपने अपने दिन में यहोवा को चढ़ाने के लिये पवित्र सभा का प्रचार करना ॥ ३८ । इन सभों से अधिक यहोवा के विश्रामदिनों को मानना और अपनी भेंटों और सब मन्नतों और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा के लिये करोगे चढ़ाया करना ॥

३९ । फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को जब तुम देश की उपज को एकट्ठा कर चुको तब सात दिन लों यहोवा का पर्व मानना पहिले दिन परमविश्राम हो और आठवें दिन परमविश्राम हो ॥

४० । और पहिले दिन तुम अच्छे अच्छे वृक्षों की उपज और खजूर के पत्ते और घने वृक्षों की डालियां और नालों में के मजनू को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने सात दिन आनन्द करना ॥ ४१ । और बरस बरस सात दिन लों यहोवा के लिये यह पर्व माना करना यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे कि सातवें महीने में यह पर्व माना जाए ॥ ४२ । सात दिन लों तुम झोंपड़ियों में रहा करना अर्थात् जितने जन्म के इस्राएली हैं वे सब के सब झोंपड़ियों में रहें, ४३ । इस लिये कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लोग जान रक्खें कि जब यहोवा हम इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाले लाता था तब उस ने उन को झोंपड़ियों में टिकाया था मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ४४ । और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा के नियत समय कह सुनाये ॥

(पवित्र दीपकों और रोटियों की विधि)

२४. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों को यह आज्ञा दे कि मेरे पास उजियाला देने के लिये जलपाई का कूटके निकाला हुआ निर्म्मल तेल ले आना कि दीपक नित्य बरा करें[1] ॥ ३ । हारून उस को मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के बीचवाले पर्दे से बाहर यहोवा के साम्हने नित्य सांझ से भोर लों सजा रखे यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे ॥ ४ । वह दीपकों को स्वच्छ दीवट पर यहोवा के साम्हने नित्य सजाया करे ॥

५ । और तू मैदा लेकर बारह रोटियां पकवाना एक एक रोटी में एपा के दो दसवां अंश मैदा हो ॥ ६ । तब उन की दो पांति[2] करके एक एक पांति में[3] छः छः रोटियां स्वच्छ मेज पर यहोवा के साम्हने धरना ॥ ७ । और एक पांति पर[4] चोखा लोबान रखना कि वह रोटी पर स्मरण दिलानेहारी वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो ॥ ८ । एक एक विश्रामदिन को वह उसे नित्य यहोवा के सन्मुख क्रम से रक्खा करे यह सदा की वाचा की रीति इस्राएलियों की ओर से हुआ करे ॥ ९ । और वह हारून और उस के पुत्रों की ठहरे और वे उस को किसी पवित्र स्थान में खाएं क्योंकि वह यहोवा के हव्यों में से सदा की विधि के अनुसार हारून के लिये परमपवित्र वस्तु ठहरी है ॥

(यहोवा की निन्दा आदि प्राणदण्डयोग्य पापों की विधि)

१० । उन दिनों में किसी इस्राएली स्त्री का बेटा जिस का पिता मिस्री पुरुष था इस्राएलियों के बीच चला गया और वह इस्राएलिन का बेटा और एक इस्राएली पुरुष छावनी के बीच आपस में मारपीट करने लगे ॥ ११ । और वह इस्राएलिन का बेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके कोसने लगा यह सुनके लोग उस को मूसा के पास ले गये । उस की माता का नाम शलोमीत् था जो दान् के गोत्र के दिब्री की बेटी थी ॥ १२ । उन्हों ने उस को हवालात में बन्द किया इस लिये कि यहोवा के आज्ञा देने से इस बात का विचार किया जाए ॥

१३ । तब यहोवा ने मूसा से कहा, १४ । तुम लोग उस कोसनेहारे को छावनी से बाहर लिवा ले जाओ और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब अपने अपने हाथ उस के सिर पर टेकें तब सारी मण्डली के लोग उस पर पत्थरवाह करें ॥ १५ । और तू इस्राएलियों से कह कि कोई क्यों न हो जो अपने परमेश्वर को कोसे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा ॥ १६ । यहोवा के नाम की निन्दा करनेहारा निश्चय मार डाला जाए सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पत्थरवाह करें चाहे देशी हो चाहे परदेशी यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए ॥ १७ । फिर जो कोई किसी मनुष्य को प्राण से मारे वह निश्चय मार डाला जाए ॥ १८ । और जो कोई किसी घरैले पशु को प्राण से मारे वह उसे भर दे अर्थात् प्राणी की सन्ती प्राणी दे ॥ १९ । फिर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुंचाए[1] तो जैसा उस ने किया हो वैसा ही उस से

(१) मूल में चढ़ाया जाया करे । (२) या के दो ढेर । (३) वा एक एक ढेर में. (४) या एक एक ढेर पर ।

(१) मूल में यदि कोई अपने भाईबंधु में दोष दे ।

किया जाए ॥ २० । अर्थात् अंग भंग करने की सन्ती अंग भंग किया जाए आंख की सन्ती आंख दांत की सन्ती दांत जैसी चोट जिस ने किसी को पहुंचाई हो वैसी ही उस को भी पहुंचाई जाए ॥ २१ । और पशु का मार डालनेहारा उस को भर दे पर मनुष्य का मार डालनेहारा मार डाला जाए ॥ २२ । तुम्हारा नियम एक ही हो जैसी देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ २३ । और मूसा ने इस्राएलियों को यही समझाया तब उन्हों ने उस कोसनेहारे को छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पत्थरवाह किया और इस्राएलियों ने वैसा ही किया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

(सातवें बरस और पचासवे बरस के विश्रामकालो की विधि.)

२५. फिर यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं तब भूमि को यहोवा के लिये विश्राम मिला करे ॥ ३ । छः बरस तो अपना अपना खेत बोया करना और छहों बरस अपनी अपनी दाख की बारी छांट छांटकर देश की उपज एकट्ठी किया करना ॥ ४ । पर सातवें बरस भूमि को यहोवा के लिये परमविश्रामकाल मिला करे उस में न तो अपना खेत बोना न अपनी दाख की बारी छांटना ॥ ५ । जो कुछ काटे हुए खेत में अपने आप से उगे उसे न काटना और अपनी बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को न तोड़ना क्योंकि वह भूमि के लिये परमविश्राम का बरस होगा ॥ ६ । और भूमि के विश्रामकाल ही की उपज से तुम्हारा और तुम्हारे दास दासी का और तुम्हारे साथ रहनेहारे मजूरों और परदेशियों का भी भोजन मिलेगा ॥ ७ । और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उन का भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा ॥

८ । और सात विश्रामवर्ष अर्थात् सातगुना सात बरस गिन लेना सातों विश्रामवर्षों का यह समय उंचास बरस होगा ॥ ९ । तब सातवें महीने के दसवें दिन को अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन जयजयकार के महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश में सब कहीं फुंकवाना ॥ १० । और उस पचासवें बरस को पवित्र करके मानना और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना वह बरस तुम्हारे यहां जुबली[1] कहलाए उस में तुम अपनी अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने में लौटने पाओगे ॥ ११ । तुम्हारे यहां वह पचासवां बरस जुबली का बरस कहलाए उस में तुम न बोना और जो अपने आप उगे उसे भी न काटना और न बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को तोड़ना ॥ १२ । क्योंकि वह जो जुबली का बरस होगा वह तुम्हारे लेखे पवित्र ठहरे तुम उस की उपज खेत ही में से ले लेके खाना ॥ १३ । इस जुबली के बरस में तुम अपनी अपनी निज भूमि को लौटाल पाओगे ॥ १४ । और यदि तुम अपने भाईबन्धु के हाथ कुछ बेचो वा अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो तो तुम एक दूसरे पर अंधेर न करना ॥ १५ । जुबली[1] के पीछे जितने बरस बीते हों उन की गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल लेना और बाकी बरसों की उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे ॥ १६ । जितने बरस और रहें उतना ही दाम बढ़ाना और जितने बरस कम रहें उतना ही दाम घटाना क्योंकि बरसों की उपज जितनी हों उतनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा ॥ १७ । और तुम अपने अपने भाईबन्धु पर अंधेर न करना अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ १८ । सो तुम मेरी विधियों को मानना और मेरे नियमों पर चौकसी करके चलना क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे ॥ १९ । और भूमि अपनी उपज उपजाया करेगी और तुम पेट भर खाया करोगे और उस देश में निडर बसे रहोगे ॥ २० । और यदि तुम कहो कि सातवें बरस में हम क्या खाएंगे न तो हम बोएंगे न अपने खेत की उपज एकट्ठी करेंगे, २१ । तो जानो कि मैं तुम को छठवें बरस में ऐसी आशीष

(१) अर्थात् नरसिंगे का शब्द ।

दूंगा[1] कि भूमि की उपज तीन बरस लों काम आएगी ॥ २२ । सो तुम आठवें बरस में बोओगे और पुरानी उपज में से खाते रहोगे बरन नवें बरस की उपज जब लों न मिले तब लों तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे ॥ २३ । भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए क्योंकि भूमि मेरी है और उस में तुम परदेशी और उपरी होगे ॥ २४ । सो तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छूट जाने देना ॥

२५ । यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले तो उस के कुटुम्बियों में से जो सब से निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले ॥ २६ । और यदि किसी मनुष्य के लिये कोई छुड़ानेहारा न हो और वह इतना कमाए कि आप ही अपने भाग को छुड़ा सके, २७ । तो वह उस के बिकने के समय से बरसों की गिनती करके बाकी बरसों की उपज का दाम उस को जिस ने उसे मोल लिया हो फेर दे तब वह अपनी निज भूमि को फिर पाए ॥ २८ । पर यदि उस के इतनी पूंजी न हो कि उसे फिर अपनी कर ले तो उस की बेची हुई भूमि जुबली[2] के बरस लों मोल लेनेहारे के हाथ में रहे और जुबली[2] के बरस में छूट जाए तब वह मनुष्य अपनी निज भूमि को फिर पाए ॥

२९ । फिर यदि कोई मनुष्य शहरपनाहवाले नगर में बसने का घर बेचे तो वह बेचने के पीछे बरस दिन लों उसे छुड़ा सकेगा अर्थात् पूरे बरस लों तो उस मनुष्य को छुड़ाने का अधिकार रहेगा ॥ ३० । पर यदि वह बरस दिन के पूरे होने लों न छुड़ाया जाए तो वह घर जो शहरपनाहवाले नगर में हो मोल लेनेहारे का बना रहे और पीढ़ी पीढ़ी में उसी के वंश का रहे और जुबली[2] के बरस में भी न छूटे ॥ ३१ । पर बिना शहरपनाह के गांवों के घर तो देश के खेतों के समान गिने जाएं सो उन का छुड़ाना हो सकेगा और वे जुबली[2] के बरस में छूट जाएं ॥ ३२ । और लेवीयों के निज भाग के नगरों के जो घर हों उन को लेवीय जब चाहें तब छुड़ाएं ॥ ३३ । और यदि कोई लेवीय अपना भाग न छुड़ाए तो वह बेचा हुआ घर जो उस के भाग के नगर में हो जुबली[1] के बरस में छूट जाए क्योंकि इस्राएलियों के बीच लेवीयों का भाग उन के नगरों के घर ही ठहरे हैं ॥ ३४ । और उन के नगरों की चारों ओर की चराई की भूमि बेची न जाए क्योंकि वह उन का सदा का भाग होगा ॥

३५ । फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल हो जाए और उस का हाथ तेरे साम्हने दब जाए तो उस को सभालना वह परदेशी वा उपरी की नाईं तेरे संग जीता रहे ॥ ३६ । उस से ब्याज वा बढ़ती न लेना अपने परमेश्वर का भय मानना जिस से तेरा ऐसा भाईबन्धु तेरे संग जीता रहे ॥ ३७ । उस को ब्याज पर रुपैया न देना और न उस को भोजनवस्तु बढ़ती के लालच से देना ॥ ३८ । मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम्हें कनान् देश देने और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हूं ॥

३९ । फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे साम्हने कंगाल होकर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से दास की सी सेवा न कराना ॥ ४० । वह तेरे संग मजूर वा उपरी की नाईं रहे और जुबली[1] के बरस लों तेरे संग रहकर सेवा करता रहे ॥ ४१ । तब वह बालबच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए ॥ ४२ । क्योंकि वे मेरे ही दास हैं जिन को मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूं सो वे दास की रीति न बेचे जाएं ॥ ४३ । उस पर कठोरता से अधिकार न जताना अपने परमेश्वर का भय मानना ॥ ४४ । तेरे जो दास दासियां हों सो तुम्हारी चारों ओर की जातियों में से हों और दास और दासियां उन्हीं में से मोल लेना ॥ ४५ । और जो उपरी लोग तुम्हारे बीच में परदेशी होकर रहेंगे उन में से और उन के घरानों में से भी जो तुम्हारे आसपास हों जिन्हें वे तुम्हारे देश में जन्माएं तुम दास दासी मोल लो तो लो कि वे

(१) मूल में अपनी आशीष को आज्ञा दूंगा ।
(२) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द ।

(१) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द ।

तुम्हारा भाग ठहरें ॥ ४६ । और तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे पीछे होंगे उन के अधिकारी कर सकोगे और वे उन का भाग ठहरें उन में से तो सदा के दास ले सकोगे पर तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्राएली हों उन पर अपना अधिकार कठोरता से न जताना ॥

४७ । फिर यदि तेरे साम्हने कोई परदेशी वा उपरी धनी हो जाए और उस के साम्हने तेरा भाई कंगाल होकर अपने आप को तेरे साम्हने उस परदेशी वा उपरी वा उस के वंश के हाथ बेच डाले, ४८ । तो उस के बिकने के पीछे वह फिर छुड़ाया जा सकता उस के भाइयों में से कोई उस को छुड़ा सकता है, ४९ । वा उस का चचा वा चचेरा भाई वरन उस के कुल में का कोई भी निकट कुटुम्बी उस को छुड़ा सकता है वा यदि उस के इतनी पूंजी हो जाए तो वह आप ही अपने को छुड़ाए ॥ ५० । वह मोल लेनेहारे के साथ अपने बिकने के बरस से जुबली[1] के बरस लों लेखा करे और उस के बेचने का दाम बरसों की गिनती के अनुसार ठहरे अर्थात् वह दाम मजूर के दिनों के समान ठहराया जाए ॥ ५१ । यदि जुबली[1] के बहुत बरस रह जाएं तो जितने रुपैयों से वह मोल लिया गया हो उन में से वह अपने छुड़ाने का दाम उतने बरसों के अनुसार फेर दे ॥ ५२ । और यदि जुबली[1] के बरस के थोड़े बरस रहें तौभी वह अपने स्वामी के साथ लेखा करके अपने छुड़ाने का दाम उतने ही बरसों के अनुसार फेर दे ॥ ५३ । वह अपने स्वामी के संग बरस बरस के मजूर के समान रहे और उस का स्वामी उस पर तेरे साम्हने कठोरता से अधिकार न जताने पाए ॥ ५४ । और यदि वह ऐसी किसी रीति से न छुड़ाया जाए तो वह जुबली[1] के बरस में अपने बालबच्चों समेत छूट जाए ॥ ५५ । क्योंकि इस्राएली मेरे ही दास हैं वे मिस्र देश से मेरे निकाले हुए दास हैं मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(धर्म्म अधर्म्म के फल)

२६. तुम मूरतें न बना लेना और न कोई खुदी हुई मूर्त्ति वा लाठ खड़ी कर लेना और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापन करना क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ २ । मेरे विश्रामदिनों को पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ॥

३ । यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को चौकसी करके माना करो, ४ । तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा और भूमि अपनी उपज उपजाएगी और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे ॥ ५ । तुम दाख तोड़ने के समय लों दावनी करते रहोगे और बोने के समय लों दाख तोड़ते रहोगे और तुम मनमानी रोटी खाओगे और अपने देश में निडर बसे रहोगे ॥ ६ । और मैं तुम्हारे देश में चैन दूंगा और जब तुम लेटोगे तब तुम्हारा कोई डरानेहारा न होगा और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने दूंगा और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी ॥ ७ । और तुम अपने शत्रुओं को खदेड़ोगे और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे ॥ ८ । वरन तुम में से पांच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे और तुम्हारे शत्रु तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे ॥ ९ । और मैं तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करके तुम को फुलाऊं फलाऊंगा और बढ़ाऊंगा और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूरी करूंगा ॥ १० । और तुम रक्खे हुए पुराने अनाज को खाओगे और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे ॥ ११ । और मैं तुम्हारे बीच अपना निवासस्थान ठहरा रक्खूंगा और मेरा जी तुम से घिन न करेगा ॥ १२ । और मैं तुम्हारे बीच चला फिरा करूंगा और तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे ॥ १३ । मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से इस लिये निकाल लाया है कि तुम मिस्रियों के दास न रहो और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़के तुम को सीधा खड़ा कर चलाया है ॥

१४ । और यदि तुम मेरी न सुनो और इन सब आज्ञाओं को न मानो, १५ । और मेरी विधियों को निकम्मा जानो और तुम्हारा जी मेरे नियमों से घिन्न करे और तुम मेरी सब आज्ञाओं को न मानो वरन

(१) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द ।

मेरी वाचा को तोड़ो, १६ । तो मैं तुम से यह करूंगा अर्थात् मैं तुम को भभराऊंगा और क्षयीरोग और ज्वर से पीड़ित करूंगा और इन के कारण तुम्हारी आंखें धुन्धली और तुम्हारा मन अति उदास होगा और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा क्योंकि तुम्हारे शत्रु उस की उपज खा लेंगे ॥ १७ । फिर मैं तुम्हारे विरुद्ध हूंगा और तुम अपने शत्रुओं से हारोगे और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार जताएंगे वरन जब कोई तुम को खदेड़ता न हो तब भी तुम भागोगे ॥ १८ । और यदि तुम इन बातों पर भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा ॥ १९ । और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ूंगा और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और तुम्हारी भूमि को मानो पीतल की बना दूंगा ॥ २० । सो तुम्हारा बल अकारथ गवाया जाएगा क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी और देश के वृक्ष अपने फल न फलेंगे ॥ २१ । और यदि तुम मेरे विरुद्ध चलते रहो और मेरी सुनना नकारो तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार सातगुणा तुम को और भी मारूंगा ॥ २२ । और मैं तुम्हारे बीच बनैले पशु भेजूंगा जो तुम को निर्वंश करेंगे और तुम्हारे घरैले पशुओं को नाश कर डालेंगे और तुम्हारी गिनती घटाएंगे जिस से तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएंगी ॥ २३ । फिर यदि तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो और मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, २४ । तो मैं आप तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणा मारूंगा ॥ २५ । सो मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा जिस से वाचा तोड़ने का पलटा लिया जाएगा और जब तुम अपने नगरों में एकट्ठे होगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊंगा और तुम अपने शत्रुओं के वश में पड़ जाओगे ॥ २६ । जब मैं तुम्हारे लिये अन्न के आधार को दूर कर डालूंगा तब दस स्त्रियां तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर तौल तौलकर बांट देंगी सो तुम खाकर भी तृप्त न होगे ॥

२७ । फिर यदि तुम इस पर भी मेरी न सुनो वरन मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, २८ । तो मैं जलकर तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणी ताड़ना दूंगा ॥ २९ । और तुम को अपने बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा ॥ ३० । और मैं तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा और तुम्हारी सूर्य्य की प्रतिमाएं तोड़ डालूंगा और तुम्हारी लोथों को तुम्हारी तोड़ी हुई मूरतों पर फेंक दूंगा और मेरा जी तुम से मिचला जाएगा ॥ ३१ । और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूंगा और तुम्हारे पवित्रस्थानों को सूना कर दूंगा और तुम्हारा सुखदायक सुगंध ग्रहण न करूंगा ॥ ३२ । और मैं आप ही तुम्हारा देश सूना कर दूंगा और तुम्हारे शत्रु जो उस में बस जाएंगे सो उस के कारण चकित होंगे ॥ ३३ । और मैं तुम को जाति जाति के बीच तितर बितर करूंगा और तुम्हारे पीछे तलवार खींचकर चलाऊंगा और तुम्हारा देश सूना होगा और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे ॥ ३४ । तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में रहोगे उतने दिन वह अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा तब वह देश विश्राम पाएगा अर्थात् अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा ॥ ३५ । वरन जितने दिन वह सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उस को विश्राम रहेगा अर्थात् जो विश्राम उस को तुम्हारे वहां बसे रहने के समय तुम्हारे विश्रामकालों में न मिलेगा वह उस को तब मिलेगा ॥ ३६ । और तुम में से जो बच रहेंगे उन के हृदय में मैं उन के शत्रुओं के देशों में कदराई डालूंगा और वे पत्ते के खड़कने से भी भाग जाएंगे वरन वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे और किसी के बिना पीछा किये भी वे गिर पड़ेंगे ॥ ३७ । और जब कोई पीछा करनेहारा न हो तब भी मानो तलवार के भय से वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएंगे और तुम को अपने शत्रुओं के साम्हने ठहरने की कुछ शक्ति न होगी ॥ ३८ । तब तुम जाति जाति के बीच पहुंचकर नाश हो जाओगे और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा जाएगी ॥ ३९ । और तुम में

से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देशों में अपने अधर्म्म के कारण गल जाएंगे और अपने पुरखाओं के अधर्म्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं की नाईं गल जाएंगे ॥ ४० । तब वे अपने और अपने पितरों के अधर्म्म को मान लेंगे अर्थात् उस विश्वास-घात को जो वे मेरा करेंगे और यह भी मान लेंगे कि हम जो यहोवा के विरुद्ध चले, ४१ । इसी कारण वह हमारे विरुद्ध चलकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है यों उस समय उन का खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे ॥ ४२ । तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बांधी थी उस को मैं सुधि लूंगा और जो वाचा मैं ने इसहाक् से और जो वाचा मैं ने इब्राहीम से बांधी थी उन को भी सुधि लूंगा और देश को भी मैं सुधि लूंगा ॥ ४३ । देश उन से रहित होकर सूना पड़ा रहेगा और उन के बिना सूना रहकर अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा और वे लोग अपने अधर्म्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे इस कारण कि उन्हों ने मेरे नियमों को निकम्मा ठहराया और उन के जी ने मेरी विधियों से घिन किई थी ॥ ४४ । इस पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उन को ऐसा निकम्मा न ठहराऊंगा और न उन से ऐसी घिन करूंगा कि उन का अन्त कर डालूं वा अपनी उस वाचा को तोड़ूं जो मैं ने उन से बान्धी है क्योंकि मैं उन का परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ४५ । सो मैं उन के हित के लिये उन के उन पितरों से बान्धी हुई वाचा की सुधि लूंगा जिन्हें मैं मिस्र देश से जाति जाति के साम्हने निकाल लाया हूं कि उन का परमेश्वर ठहरूं, मैं तो यहोवा हूं ॥

४६ । जो जो विधि और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत के पास मूसा के द्वारा ठहराई वे ये ही हैं ॥

(विशेष संकल्प की विधि)

२७. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से यह कह कि जब कोई विशेष संकल्प माने तो एक तो संकल्प किये हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के ठहरेंगे ॥ ३ । अर्थात् यदि वह बीस बरस वा उस से अधिक और साठ बरस से कम अवस्था का पुरुष हो तो उस के लिये पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे पचास शेकेल् का रूपैया ठहरे ॥ ४ । और यदि वह स्त्री हो तो तीस शेकेल् ठहरे ॥ ५ । फिर उस की अवस्था पांच बरस वा उस से अधिक और बीस बरस से कम की हो तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल् और लड़की के लिये दस शेकेल् ठहरे ॥ ६ । और यदि उस की अवस्था एक महीने वा उस से अधिक और पांच बरस से कम की हो तो लड़के के लिये तो पांच और लड़की के लिये तीन शेकेल् ठहरे ॥ ७ । फिर यदि उस की अवस्था साठ बरस की वा उस से अधिक हो तो यदि पुरुष हो तो उस के लिये पंद्रह शेकेल् और स्त्री हो तो दस शेकेल् ठहरे ॥ ८ । पर यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके तो वह याजक के साम्हने खड़ा किया जाए और याजक उस को पूंजी ठहराए अर्थात् जितना संकल्प करनेहारे से हो सके याजक उसी के अनुसार ठहराए ॥

९ । फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते हैं यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह पवित्र ही ठहरे ॥ १० । वह उसे किसी प्रकार से न बदले न तो वह बुरे की सन्ती अच्छा न अच्छे की सन्ती बुरा दे और यदि वह उस पशु की सन्ती दूसरा पशु दे तो वह और उस का बदला दोनों पवित्र ठहरें ॥ ११ । और जिन पशुओं में से लोग यहोवा के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो तो वह उस को याजक के साम्हने खड़ा कर दे ॥ १२ । तब याजक पशु के गुण अवगुण दोनों विचारके उस का मोल ठहराए और जितना याजक ठहराए उस का मोल उतना ही ठहरे ॥ १३ । और यदि संकल्प करनेहारा उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उसे वह पांचवां भाग बढ़ाकर दे ॥

१४ । फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये

पवित्र ठहराकर संकल्प करे तो याजक उस के गुण अवगुण दोनों विचारके उस का मोल ठहराए और जितना याजक ठहराए उस का मोल उतना ही ठहरे ॥ १५ । और यदि घर का पवित्र करनेहारा उसे छुड़ाना चाहे तो जितना रुपैया याजक ने उस का मोल ठहराया हो उतना वह पांचवां भाग बढ़ाके दे तब घर उसी का रहे ॥

१६ । फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे तो उस का मोल इस के अनुसार ठहरे कि उस मे कितना बीज पड़ेगा जितनी भूमि मे होमेर् भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकल् ठहरे ॥ १७ । यदि वह अपना खेत जुबली[1] के बरस ही मे पवित्र ठहराए तो उस का दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे ॥ १८ । और यदि वह अपना खेत जुबली[1] के बरस के पीछे पवित्र ठहराए तो जितने बरस दूसरे जुबली[1] के बरस के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उस के लिये रुपैये का लेखा करे तब जितना लेखे मे आए उतना याजक के ठहराने से कम हो ॥ १९ । और यदि खेत का पवित्र ठहरानेहारा उसे छुड़ाना चाहे तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उसे वह पांचवां भाग बढ़ाकर दे तब खेत उसी का रहे ॥ २० । और यदि वह खेत को छुड़ाना न चाहे वा उस ने उस को दूसरे के हाथ बेचा हो तो खेत आगे को कभी न छुड़ाया जाए ॥ २१ । बरन जब वह खेत जुबली[1] के बरस में छूटे तब पूरी रीति अर्पण किये हुए खेत की नाईं यहोवा के लिये पवित्र ठहरे अर्थात् वह याजक की निज भूमि हो जाए ॥ २२ । फिर यदि कोई अपना एक मोल लिया हुआ खेत जो उस की निज भूमि के खेतो में का न हो यहोवा के लिये पवित्र ठहराए, २३ । तो याजक जुबली[1] के बरस लों का लेखा करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे ॥ २४ । और जुबली[1] के बरस में वह खेत उसी के अधिकार मे फिर आए जिस से वह मोल लिया गया हो अर्थात् जिस की वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए ॥ २५ । और जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उस का मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल् के लेखे से ठहरे, शेकेल् बीस गेरा का ठहरे ॥

२६ । पर घरैले पशुओं का पहिलौठा जो यहोवा का पहिलौठा ठहरा है उस को तो कोई पवित्र न ठहराए चाहे वह बछड़ा हो चाहे भेड़ वा बकरी का बच्चा वह यहोवा का है ही ॥ २७ । पर यदि वह अशुद्ध पशु का हो तो उस का पवित्र ठहरानेहारा उस को याजक के ठहराये हुए मोल के अनुसार उस का पांचवां भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है और यदि वह न छुड़ाया जाए तो याजक के ठहराये हुए मोल पर बेचा जाए ॥

२८ । पर अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे चाहे मनुष्य हो चाहे पशु चाहे उस की निज भूमि का खेत हो ऐसी कोई अर्पण किई हुई वस्तु न तो बेची और न छुड़ाई जाए जो कुछ अर्पण किया जाए सो यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे ॥ २९ । मनुष्यों में से जो कोई अर्पण किया जाए वह छुड़ाया न जाए निश्चय मार डाला जाए ॥

३० । फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल वह यहोवा का है ही वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे ॥ ३१ । यदि कोई अपने दशमांश मे से कुछ छुड़ाना चाहे तो पांचवां भाग बढ़ाकर उस को छुड़ाए ॥ ३२ । और गाय बैल और भेड़बकरियां निदान जो जो पशु गिनने के लिये लाठी के तले से निकल जानेहारे हैं उन का दशमांश अर्थात् दस दस पीछे एक एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे ॥ ३३ । कोई उस के गुण अवगुण न विचारे और न उस को बदल ले और यदि कोई उस को बदल भी ले तो वह और उस का बदला दोनों पवित्र ठहरें और वह कभी छुड़ाया न जाए ॥

३४ । जो आज्ञाएं यहोवा ने इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत के पास मूसा को दिईं वे ये ही हैं ॥

(१) अर्थात् नरसिंगे का शब्द ।

गिनती नाम पुस्तक।

(इस्राएलियों की गिनती)

१. इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे बरस के दूसरे महीने के पहिले दिन को यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तंबू में मूसा से कहा, २। इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार एक एक पुरुष की गिनती नाम ले लेके कर॥ ३। जितने इस्राएली बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था के होने के कारण युद्ध करने के योग्य हों उन सभों को उन के दलों के अनुसार तू और हारून गिन ले॥ ४। और तुम्हारे साथ एक एक गोत्र का एक एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो॥ ५। तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं अर्थात् रूबेन् गोत्र में से शदेऊर् का पुत्र एलीसूर्॥ ६। शिमोन् गोत्र में से सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल्॥ ७। यहूदा गोत्र में से अम्मीनादाब् का पुत्र नहशोन्॥ ८। इस्साकार् गोत्र में से सूआर् का पुत्र नतनेल्॥ ९। जबूलून् गोत्र में से हेलोन् का पुत्र एलीआब्॥ १०। यूसुफवंशियों में से ये हैं अर्थात् एप्रैम् गोत्र में से अम्मीहूद् का पुत्र एलीशामा और मनश्शे गोत्र में से पदासूर् का पुत्र गम्लीएल्॥ ११। बिन्यामीन् गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान्॥ १२। दान् गोत्र में से अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर्॥ १३। आशेर् गोत्र में से ओक्रान् का पुत्र पगीएल्॥ १४। गाद् गोत्र में से दूएल् का पुत्र एल्यासाप्॥ १५। नप्ताली गोत्र में से एनान् का पुत्र अहीरा॥ १६। मण्डली में से जो पुरुष अपने अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाये गये वे ये ही हैं और ये इस्राएलियों के हजारों[1] में मुख्य पुरुष थे॥ १७। सो जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उन को लिये हुए, १८। मूसा और हारून ने दूसरे महीने के पहिले दिन को सारी मण्डली एकट्ठी किई तब इस्राएलियों ने अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस बरस वा उस से अधिक अवस्थावालों के नामों की गिनती कराके अपनी अपनी वंशावली लिखाई॥ १९। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई उसी के अनुसार उस ने सीनै के जंगल में उन को गिन लिया॥

२०। इस्राएल् का पहिलौठा जो रूबेन् था उस के वंश के लोग अर्थात् अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार जितने पुरुष बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये॥ २१। और रूबेन् गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े छियालीस हजार ठहरे॥

२२। शिमोन् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने पुरुष बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने नाम से गिने गये॥ २३। और शिमोन् गोत्र के गिने हुए लोग उनसठ हजार तीन सौ ठहरे॥

२४। गाद् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये॥ २५। और गाद् गोत्र के गिने हुए लोग पैंतालीस हजार साढ़े छः सौ ठहरे॥

२६। यहूदा के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये॥ २७। और यहूदा गोत्र के गिने हुए लोग चौहत्तर हजार छः सौ ठहरे॥

२८। इस्साकार् के वंश के लोग अर्थात् अपने

(१) या कुलों।

कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ २९ । और इस्साकार् गोत्र के गिने हुए लोग चौवन हजार चार सौ ठहरे ॥

३० । जबूलून् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ३१ । और जबूलून् गोत्र के गिने हुए लोग सत्तावन हजार चार सौ ठहरे ॥

३२ । यूसुफ के वंश में से एप्रैम् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ३३ । और एप्रैम् गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े चालीस हजार ठहरे ॥

३४ । मनश्शे के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ३५ । और मनश्शे गोत्र के गिने हुए लोग बत्तीस हजार दो सौ ठहरे ॥

३६ । बिन्यामीन् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ३७ । और बिन्यामीन् गोत्र के गिने हुए लोग पैंतीस हजार चार सौ ठहरे ॥

३८ । दान् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ३९ । और दान् गोत्र के गिने हुए लोग बासठ हजार सात सौ ठहरे ॥

४० । आशेर् के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ४१ । और आशेर् गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े एकतालीस हजार ठहरे ॥

४२ । नप्ताली के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये ॥ ४३ । और नप्ताली गोत्र के गिने हुए लोग तिरपन हजार चार सौ ठहरे ॥

४४ । मूसा और हारून और इस्राएल् के बारहों प्रधान जो अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान थे उन सभों ने जिन्हें गिन लिया वे इतने ही ठहरे ॥ ४५ । सो जितने इस्राएली बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण इस्राएलियों में से युद्ध करने के योग्य होकर अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गये, ४६ । वे सब गिने हुए लोग मिलकर छ: लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ ठहरे ॥

४७ । इन में लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार न गिने गये ॥ ४८ । क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, ४९ । केवल लेवी गोत्र की गिनती इस्राएलियों के बीच न लेना॥ ५०। पर लेवीयों को साक्षीपत्र के निवास पर और उस के सारे सामान पर निदान जो कुछ उस से संबन्ध रखता है उस पर अधिकारी ठहराना सारे सामान समेत निवास को वे ही उठाया करें और उस में सेवा टहल वे ही किया करें और अपने डेरे उस की चारों ओर वे ही खड़े किया करें ॥ ५१ । और जब जब निवास का कूच हो तब तब लेवीय उस को गिरा दें और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब तब लेवीय उस को खड़ा करें और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए ॥ ५२ । और इस्राएली अपना अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में और अपने अपने झंडे के पास खड़ा किया करें ॥ ५३ । पर लेवीय अपने डेरे साक्षीपत्र के निवास ही की चारों ओर खड़े किया

करें न हो कि इस्राएलियों की मंडली पर कोप भड़के, और लेवीय साक्षीपत्र के निवास को रक्षा किया करें ॥ ५४ । ये जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दिईं इस्राएलियों ने उन के अनुसार किया ॥

(इस्राएलियों की छावनी का क्रम)

२. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ । इस्राएली मिलापवाले तंबू की चारों ओर और उस के साम्हने अपने अपने झंडे और अपने अपने पितरों के घराने के निशान के पास डेरे खड़े करें ॥ ३ । और जो पूरब दिशा जहां सूर्य्योदय होता है उस की ओर अपने अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें वे यहूदा की छावनीवाले झंडे के लोग हों और उन का प्रधान अम्मीनादाब् का पुत्र नहशोन् हो ॥ ४ । और उन के दल के गिने हुए लोग चौहत्तर हजार छः सौ हैं ॥ ५ । उन के पास जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार् के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान सूआर् का पुत्र नतनेल् हो ॥ ६ । और उन के दल के गिने हुए लोग चौवन हजार चार सौ हैं ॥ ७ । इन के पास जबूलून् के गोत्रवाले रहें और उन का प्रधान हेलोन् का पुत्र एलीआब् हो ॥ ८ । और उन के दल के गिने हुए लोग सत्तावन हजार चार सौ हैं ॥ ९ । इस रीति यहूदा की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं पहिले ये ही कूच किया करें ॥

१० । दक्खिन अलंग पर रूबेन् की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का प्रधान शदेऊर् का पुत्र एलीसूर् हो ॥ ११ । और उन के दल के गिने हुए लोग साढ़े छियालीस हजार हैं ॥ १२ । उन के पास जो डेरे खड़े किया करें सो शिमोन् के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल् हो ॥ १३ । और उन के दल के गिने हुए लोग उंसठ हजार तीन सौ हैं ॥ १४ । फिर गाद् के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप् हो ॥ १५ । और उन के दल के गिने हुए लोग पैंतालीस हजार साढ़े छः सौ हैं ॥ १६ । रूबेन् की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर डेढ़ लाख एक हजार साढ़े चार सौ हैं दूसरा कूच इन का हो ॥

१७ । उन के पीछे और सब छावनियों के बीचोबीच लेवीयों की छावनी समेत मिलापवाले तंबू का कूच हुआ करे जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपने अपने स्थान पर अपने अपने झंडे के पास होकर कूच किया करें ॥

१८ । पच्छिम अलंग पर एप्रैम् की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का प्रधान अम्मीहूद् का पुत्र एलीशामा हो ॥ १९ । और उन के दल के गिने हुए लोग साढ़े चालीस हजार हैं ॥ २० । उन के पास मनश्शे के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान पदासूर् का पुत्र गम्लीएल् हो ॥ २१ । और उन के दल के गिने हुए लोग बत्तीस हजार दो सौ हैं ॥ २२ । फिर बिन्यामीन् के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान् हो ॥ २३ । और उन के दल के गिने हुए लोग पैंतीस हजार चार सौ हैं ॥ २४ । एप्रैम् की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर एक लाख आठ हजार एक सौ पुरुष हैं तीसरा कूच इन का हो ॥

२५ । उत्तर अलंग पर दान् की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर् हो ॥ २६ । और उन के दल के गिने हुए लोग बासठ हजार सात सौ हैं ॥ २७ । उन के पास जो डेरे खड़े करें वे आशेर् के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान ओक्रान् का पुत्र पगीएल् हो ॥ २८ । और उन के दल के गिने हुए लोग साढ़े एकतालीस हजार हैं ॥ २९ । फिर नप्ताली के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान एनान् का पुत्र अहीरा हो ॥ ३० । और उन के दल के गिने हुए लोग तिरपन हजार चार सौ हैं ॥ ३१ । दान् की छावनी में जितने गिने गये वे सब मिलकर डेढ़ लाख सात हजार छः सौ हैं ये अपने अपने झंडे के पास होकर सब से पीछे कूच किया करें ॥

३२ । इस्राएलियों में से जो अपने अपने पितरों

के घराने के अनुसार गिने गये वे येही हैं और सब छावनियों के जितने लोग अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ ठहरे॥ ३३। पर यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दिई थी उस के अनुसार लेवीय तो इस्राएलियों में गिने न गये ॥ ३४। और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई इस्राएली उस उस के अनुसार अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने अपने झंडे के पास डेरे खड़े करते और कूच भी करते थे ॥

(पहिलौठों की सन्ती लेवीयों का यहोवा से ग्रहण किया जाना)

३. जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से बातें किईं उस समय हारून और मूसा की यह वंशावली थी ॥ २। हारून के पुत्रों के नाम ये हैं नादाब् जो उस का जेठा था और अबीहू एलाजार् और ईतामार् ॥ ३। हारून के पुत्र जो अभिषिक्त याजक थे और उन का संस्कार याजक का काम करने के लिये हुआ उन के नाम ये ही हैं ॥ ४। नादाब् और अबीहू तो जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के सन्मुख ऊपरी आग ले गये उस समय यहोवा के साम्हने निपुत्र ही मर गये पर एलाजार् और ईतामार् अपने पिता हारून के साम्हने याजक का काम करते रहे ॥

५। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६। लेवी गोत्रवालों को समीप ले आकर हारून याजक के साम्हने खड़ा कर कि वे उस की सेवा टहल करें ॥ ७। और जो कुछ उस की ओर से और सारी मंडली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उस की रक्षा वे मिलापवाले तंबू के साम्हने करें कि वे निवास की सेवा करें ॥ ८। वे मिलापवाले तंबू के सब सामान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें कि वे निवास की सेवा करें ॥ ९। और तू लेवीयों को हारून और उस के पुत्रों को दे दे और वे इस्राएलियों की ओर से हारून को संपूर्ण रीति से अर्पण किये हुए हों ॥ १०। और हारून और उस के पुत्रों को याजक के पद पर ठहरा रख और वे अपने याजकपद की रक्षा किया करें और यदि दूसरा मनुष्य समीप आए तो वह मार डाला जाए॥

११। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२। सुन इस्राएली स्त्रियों के सब पहिलौठों की सन्ती मैं इस्राएलियों में से लेवीयों को ले लेता हूं सो लेवीय मेरे ही ठहरेंगे ॥ १३। सब पहिलौठे मेरे हैं क्योंकि जिस दिन मैं ने मिस्र देश में के सब पहिलौठों को मारा उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु इस्राएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया सो वे मेरे ही ठहरेंगे मैं तो यहोवा हूं ॥

१४। फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, १५। लेवीयों में से जितने पुरुष एक महीने वा उस से अधिक अवस्था के हों उन को उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों के अनुसार गिन ले ॥ १६। यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे के अनुसार उन को गिन लिया ॥ १७। लेवी के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् गेर्शोन् कहात् और मरारी ॥ १८। और गेर्शोन् के पुत्र जिन से उस के कुल चले उन के नाम ये हैं अर्थात् लिब्नी और शिमी ॥ १९। कहात् के पुत्र जिन से उस के कुल चले ये हैं अर्थात् अम्राम् यिस्हार् हेब्रोन् और उज्जीएल् ॥ २०। और मरारी के पुत्र जिन से उन के कुल चले ये हैं अर्थात् महली और मूशी ये लेवीयों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं ॥

२१। गेर्शोन् से लिब्नीयों और शिमीयों के कुल चले गेर्शोन्वंशियों के कुल ये ही हैं ॥ २२। इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की था उस से अधिक थी उन सभों की गिनती साढ़े सात हजार ठहरी ॥ २३। गेर्शोन्वाले कुल निवास के पीछे पच्छिम ओर अपने डेरे डाला करें ॥ २४। और गेर्शोनियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान लाएल् का पुत्र एल्यासाप् हो ॥ २५। और मिलापवाले तंबू की जो वस्तुएं गेर्शोनवंशियों को सौंपी जाएं वे ये हों अर्थात् निवास और तंबू और उस का ओहार और मिलापवाले तंबू के द्वार का पर्दा, २६। और

जो आंगन निवास और वेदी की चारों ओर है उस के पर्दे और उस के द्वार का पर्दा और उस में बरतने की सब डोरियां॥

२७। फिर कहात् से अम्रामियों यिस्हारियों हेब्रोनियों और उज्जीएलियों के कुल चले कहातियों के कुल ये ही हैं॥ २८। इन मे से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन की गिनती आठ हजार छः सौ ठहरी। वे पवित्र-स्थान की रक्षा करनेहारे ठहरे॥ २९। कहातियों के कुल निवास की उस अलंग पर अपने डेरे डाला करें जो दक्खिन ओर है॥ ३०। और कहातवाले कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल् का पुत्र एलीसापान् हो॥ ३१। और जो वस्तुएं उन को सौंपी जाएं वे सन्दूक मेज दीवट वेदियां और पवित्रस्थान का वह सामान जिस से सेवा टहल होती है और पर्दा निदान पवित्रस्थान में बरतने का सारा सामान हो॥ ३२। और लेवीयों के प्रधानों का प्रधान हारून याजक का पुत्र एलाजार् हो और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे॥

३३। फिर मरारी से महलीयों और मूशीयों के कुल चले मरारी के कुल ये ही हैं॥ ३४। इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन सभों की गिनती छः हजार दो सौ ठहरी॥ ३५। और मरारी के कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान अबीहैल् का पुत्र सूरीएल् हो ये लोग निवास की उत्तर ओर अपने डेरे खड़े करें॥ ३६। और जो वस्तुएं मरारीवंशियों को सौंपी जाएं कि वे उन की रक्षा करें वे निवास के तख्ते बेंड़े खंभे कुर्सियां और सारा सामान निदान जो कुछ उस के बरतने में काम आए, ३७। और चारों ओर के आंगन के खंभे और उन की कुर्सियां खूंटे और डोरियां हों॥ ३८। और जो मिलापवाले तंबू के साम्हने अर्थात् निवास के साम्हने पूरब ओर जहां सूर्योदय होता है अपने डेरे डाला करें वे मूसा और पुत्रों सहित हारून हों और पवित्रस्थान जो इस्राएलियों को सौंपा गया उस की रखवाली वे ही किया करें और दूसरा जो कोई उस के समीप आए वह मार डाला जाए॥ ३९। यहोवा की यही आज्ञा पाके एक महीने की वा उस से अधिक अवस्था-वाले जितने लेवीय पुरुषों को मूसा और हारून ने उन के कुलों के अनुसार गिन लिया वे सब के सब बाईस हजार ठहरे॥

४०। फिर यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएलियों के जितने पहिलौठे पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक है उन सभों को नाम ले लेके गिन ले॥ ४१। और मेरे लिये इस्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवीयों को और इस्राएलियों के पशुओं के सब पहिलौठों की सन्ती लेवीयों के पशुओं को ले मैं तो यहोवा हूं॥ ४२। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्राएलियों के सब पहिलौठों को गिन लिया॥ ४३। और सब पहिलौठे पुरुष जिन की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन के नामों की गिनती बाईस हजार दो सौ तिहत्तर ठहरी॥

४४। तब यहोवा ने मूसा से कहा, ४५। इस्रा-एलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवीयों को और उन के पशुओं की सन्ती लेवीयों के पशुओं को ले सो लेवीय मेरे ही ठहरें मैं तो यहोवा हूं॥ ४६। और इस्राएलियों के पहिलौठों में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवीयों से अधिक हैं उन के छुड़ाने के लिये, ४७। पुरुष पीछे पांच शेकेल् ले ये पवित्रस्थानवाले अर्थात् बीस गेरा का शेकेल् हो॥ ४८। और जो रुपैया उन अधिक पहिलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून और उस के पुत्रों को देना॥ ४९। सो जो इस्राएली पहिलौठे लेवीयों के द्वारा छुड़ाये हुओं से अधिक थे उन के हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रुपिया लिया॥ ५०। सो एक हजार तीन सौ पैंसठ पवित्रस्थानवाले शेकेल् रुपिया ठहरा॥ ५१। और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाये हुओं का रुपैया हारून और उस के पुत्रों को दिया॥

(लेवीयो के कर्त्तव्य कर्म्म)

४. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २। लेवीयों में से कहातियों की उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिनती करो, ३। अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावालों की सेना में जितने मिलापवाले तंबू में कामकाज करने को भरती हैं॥ ४। मिलापवाले तंबू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों की यह सेवकाई ठहरे, ५। अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब तब हारून और उस के पुत्र भीतर आकर बीचवाले पर्दे को उतारके उस से साक्षीपत्र के सन्दूक को ढांप दें॥ ६। तब वे उस पर सूइसों की खालों का ओहार डालें और इस के ऊपर संपूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें और सन्दूक में डंडों को लगाएं॥ ७। फिर भेंटवाली रोटी की मेज पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों धूपदानों करवों और उण्डेलने के कटोरों को रक्खें और नित्य की रोटी भी उस पर हो॥ ८। तब वे उन पर लाही रंग का कपड़ा बिछाकर उस को सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें और मेज के डंडों को लगा दें॥ ९। फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों गुलतराशों और गुलदानों समेत उजियाला देनेहारे दीवट को और उस के सब तेल के पात्रों को जिन से उस की सेवा टहल होती है ढांपें॥ १०। तब वे सारे सामान समेत दीवट को सूइसों की खालों के ओहार के भीतर रखकर डंडे पर धर दें॥ ११। फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उस को सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें और उस के डंडों को लगा दें॥ १२। तब वे सेवा टहल के सारे सामान को ले जिस से पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है नीले कपड़े के भीतर रखकर सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें और डंडे पर धर दें॥ १३। फिर वे वेदी पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैंजनी रंग का कपड़ा बिछाएं॥ १४। तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब अर्थात् उस के करछे कांटे फावड़ियां और कटोरे आदि वेदी का सारा सामान उस पर रक्खें और उस के ऊपर सूइसों की खालों का ओहार बिछाकर वेदी में डंडों को लगाएं॥ १५। और जब हारून और उस के पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उस के सारे सामान का ढांप चुकें तब उस के पीछे कहाती उस के उठाने के लिये आएं पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएं न हो कि मर जाएं कहातियों का भार मिलापवाले तंबू की ये ही वस्तुएं ठहरें॥ १६। और जो वस्तुएं हारून के पुत्र एलाजार् को सौंपी जाएं वे ये हैं अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल और सुगन्धित धूप और नित्य अन्नबलि और अभिषेक का तेल और सारे निवास और उस में की सब वस्तुओं और पवित्रस्थान और उस के सारे सामान की रक्षा॥

१७। फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, १८। कहातियों के कुलों के गोत्रियों को लेवीयों में से नाश न होने देना॥ १९। उन के साथ ऐसा करो कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएं तब न मरें पर जीते रहें अर्थात् हारून और उस के पुत्र भीतर आकर एक एक के लिये उस की सेवकाई और उस का भार ठहराएं॥ २०। और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएं न हो कि मर जाएं॥

२१। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २२। गेर्शोनियों की भी गिनती उन के पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर॥ २३। तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तंबू में सेवा करने को सेना में भरती हों उन सभों को गिन ले॥ २४। सेवा करने और भार उठाने में गेर्शोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो, २५। अर्थात् वे निवास के पटों और मिलापवाले तंबू और उस के ओहार और इस के ऊपरवाले सूइसों की खालों के ओहार और मिलापवाले तंबू के द्वार के पर्दे, २६। और निवास और वेदी की चारों ओर के आंगन के पर्दों और आंगन के द्वार के पर्दे और उन की डोरियों और उन में बरतने के सारे सामान इन सभों को वे उठाया करें और इन वस्तुओं से जितना काम हो वह सब उन की सेवकाई में आए॥

२७। और गेर्शोनियों के वंश की सारी सेवकाई हारून और उस के पुत्रों के कहे से हुआ करे अर्थात् जो कुछ उन को उठाना और जो जो सेवकाई उन को करनी हो उन का सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो ॥ २८। मिलापवाले तंबू में गेर्शोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे और उन पर हारून याजक का पुत्र ईतामार् अधिकार रक्खे ॥

२९। फिर मरारीयों को भी तू उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन ले ॥ ३०। तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तंबू की सेवा करने को सेना में भरती हों उन सभों को गिन ले ॥ ३१। और मिलापवाले तंबू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उन को मिले वे ये हों अर्थात् निवास के तख्ते बेंड़े खंभे और कुर्सियां, ३२। और चारों ओर के आंगन के खंभे और इन की कुर्सियां खूंटे डोरियां और भांति भांति के बरतने का सारा सामान। और जो जो सामान ढोने के लिये उन को सौंपा जाए उस में से एक एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन दो ॥ ३३। मरारीयों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तंबू के विषय करनी होगी वह यही है वह हारून याजक के पुत्र ईतामार् के अधिकार में रहे ॥

३४। सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, ३५। तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जितने मिलापवाले तंबू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे उन सभों को गिना ॥ ३६। और जो अपने अपने कुल के अनुसार गिने गये वे दो हजार साढ़े सात सौ ठहरे ॥ ३७। कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तंबू में सेवा करनेवाले गिने गये वे इतने ही ठहरे। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दिई उस के अनुसार मूसा और हारून ने इन को गिन लिया ॥

३८। और गेर्शोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गये, ३९। अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जो मिलापवाले तंबू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, ४०। उन की गिनती उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हजार छः सौ तीस ठहरी ॥ ४१। गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तंबू में सेवा करनेवाले गिने गये वे इतने ही ठहरे। यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इन को गिन लिया ॥

४२। फिर मरारीयों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गये, ४३। अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जो मिलापवाले तंबू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, ४४। उन की गिनती उन के कुलों के अनुसार तीन हजार दो सौ ठहरी ॥ ४५। मरारीयों के कुलों में से जिन को मूसा और हारून ने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली गिन लिया वे इतने ही ठहरे ॥

४६। लेवीयों में से जिन को मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया, ४७। अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तंबू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाजिर होनेहारे थे, ४८। उन सभों की गिनती आठ हजार पांच सौ अस्सी ठहरी ॥ ४९। ये अपनी अपनी सेवा और बोझ ढोने के अनुसार यहोवा के कहे से मूसा के द्वारा गिने गये। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी उसी के अनुसार वे उस से गिने गये ॥

(कोढ़ी आदि अशुद्ध लोगों का बाहर कर दिया जाना)

५. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों को आज्ञा दे कि तुम सब कोढ़ियों को और जितनों के प्रमेह हो और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों उन सभों को छावनी से निकाल दो ॥ ३। ऐसों को चाहे पुरुष हों चाहे स्त्री छावनी से निकालकर बाहर कर दो न हो कि तुम्हारी छावनी जिस के बीच में निवास करता हूं उन के कारण अशुद्ध हो ॥ ४। और इस्राएलियों ने वैसा ही किया अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से

निकाल बाहर कर दिया जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इस्राएलियों ने वैसा ही किया ॥

(दोषी की हानि भरने की विधि)

५। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६। इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष वा स्त्री कोई ऐसा पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा का विश्वासघात करे और वह प्राणी दोषी हो, ७। तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले और पूरे मूल मे पांचवां अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे जिस के विषय दोषी हुआ हो ॥ ८। पर यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का ठहरे वह उस प्रायश्चित्तवाले मेढ़े से अधिक हो जिस से उस के लिये प्रायश्चित्त किया जाए ॥ ९। और जितनी पवित्र किई हुई वस्तुएं इस्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के पास लाएं सो उसी की ठहरें ॥ १०। सब मनुष्यों की पवित्र किई हुई वस्तुएं उसी की ठहरें कोई जो कुछ याजक को दे वह उस का ठहरे ॥

(पति के अपनी स्त्री पर जलने की व्यवस्था)

११। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२। इस्राएलियों से कह कि यदि किसी मनुष्य की स्त्री कुचाल चलकर[१] उस का विश्वासघात करे, १३। और कोई पुरुष उस के साथ कुकर्म्म करे पर यह बात उस के पति से छिपी हो और खुली न हो और वह अशुद्ध हो गई हो पर न तो उस के विरुद्ध कोई साक्षी हो और न वह कुकर्म्म करते पकड़ी गई हो, १४। और उस के पति के मन में जलन उत्पन्न हो अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो वा उस के मन में जलन उत्पन्न हो अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे पर वह अशुद्ध न हुई हो, १५। तो वह पुरुष अपनी स्त्री को याजक के पास ले जाए और उस के लिये एपा का दसवां अंश जव का मैदा चढ़ावा करके ले आए

(१) मूल में हटके।

पर उस पर न तेल डाले न लोबान रक्खे क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेहारा, अर्थात् अधर्म्म का स्मरण करानेहारा अन्नबलि होगा ॥ १६। तब याजक उस स्त्री को समीप ले जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी करे ॥ १७। और याजक मिट्टी के पात्र में पवित्र जल ले और निवासस्थान की भूमि पर की धूलि में से कुछ लेकर उस जल में डाल दे ॥ १८। तब याजक उस स्त्री को यहोवा के साम्हने खड़ी करके उस के सिर के बाल बिखराए और स्मरण दिलानेहारे अन्नबलि को जो जलनवाला है उस के हाथों पर धर दे और अपने हाथ में याजक कड़वा जल लिये रहे जो साप लगाने का कारण होगा ॥ १९। तब याजक स्त्री को किरिया धराकर कहे कि यदि किसी पुरुष ने तुझ से कुकर्म्म न किया हो और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो तो तू इस कड़वे जल के गुण से जो साप का कारण होता है बची रहे ॥ २०। पर यदि तू अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुरुष ने तुझ से प्रसंग किया हो, २१। और याजक उसे साप देनेहारी किरिया धराकर कहे यहोवा तेरी जांघ सड़ाए और तेरा पेट फुलाए और लोग तेरा नाम लेकर साप और धिक्कार[१] दिया करें ॥ २२। अर्थात् यह जल जो साप का कारण होता है तेरी अन्तड़ियों में जाकर तेरे पेट को फुलाए और तेरी जांघ को सड़ा दे। तब वह स्त्री कहे आमेन् आमेन् ॥ २३। तब याजक साप के ये शब्द पुस्तक में लिखकर उस कड़वे जल से मिटाके, २४। उस स्त्री को वह कड़वा जल पिलाए जो साप का कारण होता है सो वह जल जो साप का कारण होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा ॥ २५। और याजक स्त्री के हाथ में से जलनवाले अन्नबलि को ले यहोवा के आगे हिलाकर वेदी के समीप पहुंचाए ॥ २६। और याजक उस अन्नबलि में से उस का स्मरण दिलानेहारा भाग अर्थात् मुट्ठी भर लेकर वेदी पर जलाए और उस के पीछे स्त्री को वह जल

(१) मूल में किरिया।

पिलाए ॥ २७ । और जब वह उसे वह जल पिला चुके तब यदि वह अशुद्ध हुई और अपने पति का विश्वासघात किया हो तो वह जल जो साप का कारण होता है सो उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा और उस का पेट फूलेगा और उस की जांघ सड़ जाएगी और उस स्त्री का नाम उस के लोगों के बीच साप में लिया जाएगा ॥ २८ । पर यदि वह स्त्री अशुद्ध न हुई शुद्ध ही हो तो वह निर्दोष ठहरेगी और गर्भिणी हो सकेगी ॥ २९ । जलन की व्यवस्था यही है चाहे कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो, ३० । चाहे पुरुष के मन में जलन उत्पन्न हो और वह अपनी स्त्री पर जलने लगे तो वह उस को यहोवा के सन्मुख खड़ी कर दे और याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे ॥ ३१ । तब पुरुष अधर्म्म से बचा रहेगा और स्त्री अपने अधर्म्म का बोझ आप उठाएगी ॥

(नाजीरों की व्यवस्था)

६. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष वा स्त्री नाजीर[1] की मन्नत अर्थात् अपने को यहोवा के लिये न्यारा करने की विशेष मन्नत माने, ३ । तब वह दाखमधु आदि मदिरा से न्यारा रहे वह न दाखमधु का न और मदिरा का सिरका पीए और न दाख का कुछ रस भी पीए बरन दाख न खाए चाहे हरी हो चाहे सूखी ॥ ४ । जितने दिन वह न्यारा रहे उतने दिन लों वह बीज से ले छिलके लों जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है उस में से कुछ न खाए ॥ ५ । फिर जितने दिन उस ने न्यारे रहने की मन्नत मानी हो उतने दिन लों वह अपने सिर पर छुरा न फिराए और जब लों वे दिन पूरे न हों जिन में वह यहोवा के लिये न्यारा रहे तब लों वह पवित्र ठहरेगा और अपने सिर के बालों को बढ़ाये रहे ॥ ६ । जितने दिन वह यहोवा के लिये न्यारा रहे उतने दिन लों किसी लोथ के पास न जाए ॥ ७ । चाहे उस का पिता वा माता वा भाई वा बहिन भी मरे तौभी वह उन के कारण अशुद्ध न हो क्योंकि उस के अपने परमेश्वर के लिये न्यारे रहने का चिन्ह[1] उस के सिर पर होगा ॥ ८ । अपने न्यारे रहने के सारे दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे ॥ ९ । और यदि कोई उस के पास अचानक मर जाए और उस के न्यारे रहने का जो चिन्ह[2] उस के सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए तो वह शुद्ध होने के दिन अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए ॥ १० । और आठवें दिन वह दो पिंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास ले जाए ॥ ११ । और याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके उस के लिये प्रायश्चित्त करे क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है और याजक उसी दिन उस का सिर फिर पवित्र करे ॥ १२ । और वह अपने न्यारे रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये न्यारे ठहराए और बरस दिन का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए और जो दिन इस से पहिले बीत गये हों वे व्यर्थ गिने जाएं क्योंकि उस के न्यारे रहने का चिन्ह[3] अशुद्ध हो गया ॥

१३ । फिर जब नाजीर के न्यारे रहने के दिन पूरे हों उस समय के लिये उस की यह व्यवस्था है अर्थात् वह मिलापवाले तंबू के द्वार पर पहुंचाया जाए ॥ १४ । और वह यहोवा के लिये होमबलि करके बरस दिन का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके और बरस दिन की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची और मेलबलि करके निर्दोष मेढ़ा, १५ । और अखमीरी रोटियों की एक टोकरी अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां और उन बलियों के अन्नबलि और अर्घ ये सब चढ़ावे समीप ले आए ॥ १६ । इन सब को याजक यहोवा के साम्हने पहुंचाकर

(१) अर्थात् न्यारा किया हुआ ।

(१) वा उस के परमेश्वर का मुकुट । (२) वा उस का जो मुकुट । (३) वा उस का मुकुट ।

उस के पापबलि और होमबलि को चढ़ाए, १७। और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिये मेलबलि करके और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी चढ़ाए॥ १८। तब नाजीर् अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले[1] सिर को मिलापवाले तंबू के द्वार पर मुण्डाकर अपने बालों को उस आग पर, डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी॥ १९। फिर जब नाजीर् अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले[1] सिर को मुण्डा चुके तब याजक मेढ़े का सिझा हुआ कन्धा और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाजीर् के हाथों पर धर दे॥ २०। और याजक इन को हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाये हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जांघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें। इस के पीछे वह नाजीर् दाखमधु पी सकेगा॥ २१। नाजीर् की मन्नत की और जो चढ़ावा उस को अपने न्यारे होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उस की भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके उस से अधिक जैसी मन्नत उस ने मानी हो वैसे ही अपने न्यारे रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा॥

(याजकों के आशीर्वाद देने की रीति.)

२२। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३। हारून और उस के पुत्रों से कह कि तुम इस्राएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना कि

२४। यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे॥

२५। यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे॥

२६। यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे और तुझे शांति दे॥

२७। इस रीति वे इस्राएलियों को मेरे[2] ठहराएं और मैं आप उन्हें आशीष दिया करूंगा॥

(१) वा अपने मुकुटवाले। (२) मूल में. और वे मेरा नाम इस्राएलियो पर धरें।

(वेदी के अभिषेक के उत्सव की भेंटे.)

७. फिर जब मूसा निवास को खड़ा कर चुका और सारे सामान समेत उस का अभिषेक करके उस को पवित्र किया और सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र किया, २। तब इस्राएल् के प्रधान जो अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर ठहरे थे, ३। वे यहोवा के साम्हने भेंट ले आये और उन की भेंट छः छाई हुई गाड़ियां और बारह बैल थी अर्थात् दो दो प्रधान पीछे तो एक एक गाड़ी और एक एक प्रधान पीछे एक एक बैल इन्हें वे निवास के साम्हने यहोवा के समीप ले गये॥ ४। तब यहोवा ने मूसा से कहा, ५। उन वस्तुओं को उन से ले ले कि मिलापवाले तंबू के बरतने में लगें सो तू उन्हें लेवीयों के एक एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार उन को दे दे॥ ६। सो मूसा ने वे सब गाड़ियां और बैल लेकर लेवीयों को दे दिये॥ ७। गेर्शोनियों को सो उन की सेवकाई के अनुसार उस ने दो गाड़ियां और चार बैल दिये॥ ८। और मरारीयों को उन की सेवकाई के अनुसार उस ने चार गाड़ियां और आठ बैल दिये ये सब हारून याजक के पुत्र ईतामार् के अधिकार में किये गये॥ ९। और कहातियों को उस ने कुछ न दिया क्योंकि उन के लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वे उन को कन्धों पर उठा लें॥

१०। फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उस के संस्कार की भेंट वेदी के साम्हने समीप ले जाने लगे॥ ११। तब यहोवा ने मूसा से कहा वेदी के संस्कार के लिये प्रधान लोग अपनी अपनी भेंट अपने अपने नियत दिन पर ले आएं॥

१२। सो जो पुरुष पहिले दिन अपनी भेंट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले अम्मीनादाब् का पुत्र नहशोन् था॥ १३। उस की भेंट यह थी अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से

सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ १४ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, १५ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, १६ । पापबलि के लिये एक बकरा, १७ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे अम्मीनादाब् के पुत्र नह्शोन् की यही भेंट थी ॥

१८ । दूसरे दिन इस्साकार् का प्रधान सूआर् का पुत्र नतनेल् भेंट ले आया ॥ १९ । वह यह थी अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ २० । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, २१ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, २२ । पापबलि के लिये एक बकरा, २३ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे सूआर् के पुत्र नतनेल् की यही भेंट थी ॥

२४ । तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन् का पुत्र एलीआब् यह भेंट ले आया, २५ । अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात् और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ २६ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, २७ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, २८ । पापबलि के लिये एक बकरा, २९ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे हेलोन् के पुत्र एलीआब् की यही भेंट थी ॥

३० । चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर् का पुत्र एलीसूर् यह भेंट ले आया, ३१ । अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ३२ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ३३ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ३४ । पापबलि के लिये एक बकरा, ३५ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे शदेऊर् के पुत्र एलीसूर् की यही भेंट थी ॥

३६ । पांचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल् यह भेंट ले आया, ३७ । अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ३८ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ३९ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ४० । पापबलि के लिये एक बकरा, ४१ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे सूरीशद्दै के पुत्र शलूमीएल् की यही भेंट थी ॥

४२ । छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल् का पुत्र एल्यासाप् यह भेंट ले आया, ४३ । अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ४४ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ४५ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ४६ । पापबलि के लिये एक बकरा, ४७ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे दूएल् के पुत्र एल्यासाप् की यही भेंट थी ॥

४८ । सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद् का पुत्र एलीशामा यह भेंट ले आया, ४९ । अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का

एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ५० । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ५१ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ५२ । पापबलि के लिये एक बकरा, ५३ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे अम्मीहूद् के पुत्र एलीशामा की यही भेंट थी ॥

५४ । आठवें दिन मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर् का पुत्र गम्लीएल् यह भेंट ले आया, ५५ । अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ५६ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ५७ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ५८ । पापबलि के लिये एक बकरा, ५९ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे पदासूर् के पुत्र गम्लीएल् की यही भेंट थी ॥

६० । नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान् यह भेंट ले आया, ६१ । अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ६२ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान्, ६३ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ६४ । पापबलि के लिये एक बकरा, ६५ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे गिदोनी के पुत्र अबीदान् की यही भेंट थी ॥

६६ । दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर् यह भेंट ले आया, ६७ । अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात् और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ६८ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ६९ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ७० । पापबलि के लिये एक बकरा, ७१ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे अम्मीशद्दै के पुत्र अहीएजेर् की यही भेंट थी ॥

७२ । ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान् का पुत्र पगीएल् यह भेंट ले आया, ७३ । अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ७४ । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ७५ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ७६ । पापबलि के लिये एक बकरा, ७७ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे ओक्रान् के पुत्र पगीएल् की यही भेंट थी ॥

७८ । बारहवें दिन नप्तालीयों का प्रधान एनान् का पुत्र अहीरा यह भेंट ले आया, ७९ । अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से एक सौ तीस शेकेल् चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल् चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे ॥ ८० । फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल् सोने का एक धूपदान, ८१ । होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, ८२ । पापबलि के लिये एक बकरा, ८३ । और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे एनान् के पुत्र अहीरा की यही भेंट थी ॥

८४ । वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल् के

प्रधानों की ओर से उस के संस्कार की भेंट यही हुई अर्थात् चांदी के बारह परात चांदी के बारह कटोरे और सोने के बारह धूपदान ॥ ८५। एक एक चांदी का परात एक सौ तीस शेकेल् का और एक एक चांदी का कटोरा सत्तर शेकेल् का था सो पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से ये सब चांदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल् के थे॥ ८६। फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल् के लेखे से दस दस शेकेल् के थे वे सब धूपदान एक सौ बीस शेकेल् सोने के थे॥ ८७। फिर होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह बछड़े बारह मेढ़े और बरस बरस दिन के बारह भेड़ी के बच्चे अपने अपने अन्नबलि समेत थे फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे॥ ८८। और मेलबलि के लिये सब मिलाकर चौबीस बैल साठ मेढ़े साठ बकरे और बरस बरस दिन के साठ भेड़ी के बच्चे थे वेदी के अभिषेक होने के पीछे उस के संस्कार की भेंट यही हुई॥ ८९। और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तंबू में गया तब उस को उस की वाणी सुन पड़ी जो साक्षीपत्र के संदूक पर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से दोनों करूबों के बीच में से उस के साथ बातें कर रहा था सो यहोवा ने उस से बातें किईं॥

(दीवट के बारने की रीति)

८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। हारून को समझाकर यह कह कि जब जब तू दीपकों को बारे तब तब सातों दीपक दीवट के साम्हने को प्रकाश दें॥ ३। तब हारून वैसा ही करने लगा अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई उस के अनुसार उस ने दीपकों को बारा कि वे दीवट के साम्हने को प्रकाश दें ॥ ४। और दीवट की बनावट यह थी अर्थात् वह पाये से ले फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया गया। जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखाया था उसी के अनुसार उस ने दीवट को बनवाया॥

(लेवीयों के नियुक्त होने का वर्णन.)

५। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६। इस्राएलियों के बीच में से लेवीयों को लेकर शुद्ध कर॥ ७। उन्हें शुद्ध करने के लिये तू ऐसा कर कि उन पर पाप छुड़ाके पावन करनेवाला जल छिड़क दे फिर वे सर्वाङ्ग मुण्डन कराएं और वस्त्र धोएं और वे अपने को शुद्ध करें॥ ८। तब वे तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि समेत एक बछड़ा ले लें और तू पापबलि के लिये एक और बछड़ा लेना॥ ९। और तू लेवीयों को मिलापवाले तंबू के साम्हने समीप पहुंचाना और इस्राएलियों की सारी मण्डली को एकट्ठा करना॥ १०। तब तू लेवीयों को यहोवा के साम्हने समीप ले आना और इस्राएली अपने अपने हाथ उन पर टेकें॥ ११। तब हारून लेवीयों को यहोवा के साम्हने इस्राएलियों की ओर से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे कि वे यहोवा की सेवा करनेहारे ठहरें॥ १२। और लेवीय अपने अपने हाथ उन बछड़ों के सिरों पर टेकें तब तू लेवीयों के लिये प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना॥ १३। और लेवीयों को हारून और उस के पुत्रों के साम्हने खड़ा करना कि वे यहोवा को हिलाई हुई भेंट जानके अर्पण किये जाएं, १४। और उन्हें इस्राएलियों में से अलग करना सो वे मेरे ही ठहरेंगे॥ १५। और जब तू लेवीयों को शुद्ध करके हिलाई हुई भेंट जानकर अर्पण कर चुके उस के पीछे वे मिलापवाले तंबू संबन्धी सेवा करने को आया करें॥ १६। क्योंकि वे इस्राएलियों में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किये हुए हैं मैं ने उन को सब इस्राएलियों में से एक एक स्त्री के पहिलौठे की सन्ती अपना कर लिया है॥ १७। इस्राएलियों के पहिलौठे चाहे मनुष्य के हों चाहे पशु के सब मेरे हैं क्योंकि मैं ने उन्हें उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया जब मिस्र देश में के सारे पहिलौठों को मार डाला॥ १८। और मैं ने इस्राएलियों के सारे पहिलौठों के बदले लेवीयों को लिया है॥ १९। उन्हें लेके मैं ने हारून और उस के

पुत्रों को इस्राएलियों में से दान करके दे दिया है कि वे मिलापवाले तंबू में इस्राएलियों के निमित्त सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करें न हो कि जब इस्राएली पवित्रस्थान के समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति पड़े ॥ २० । लेवीयों के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली ने उन से ठीक ऐसा ही किया ॥ २१ । लेवीयों ने तो अपने को पाप छुड़ाके पावन किया और अपने वस्त्रों को धो डाला और हारून ने उन्हें यहोवा के साम्हने हिलाई हुई भेंट जानके अर्पण किया और उन्हें शुद्ध करने को उन के लिये प्रायश्चित्त किया ॥ २२ । और उस के पीछे लेवीय हारून और उस के पुत्रों के साम्हने मिलापवाले तंबू में की अपनी अपनी सेवकाई करने को गये और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवीयों के विषय दिई थी उस के अनुसार वे उन से वर्ताव करने लगे ॥

२३ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ । जो लेवीयों को करना है वह यह है कि पचीस बरस की अवस्था से वे मिलापवाले तंबू संबन्धी सेवा में लगे रहने को आने लगें ॥ २५ । और पचास बरस की अवस्था से वे उस सेवा में लगे रहने से छूटकर आगे को न करें ॥ २६ । पर वे अपने भाईबन्धुओं के साथ मिलापवाले तंबू के पास रक्षा का काम किया करें और किसी प्रकार की सेवकाई न करें लेवीयों को जो जो काम सौंपे जाएं उन के विषय ऐसा ही करना ॥

(दूसरी बार फसह् का माना जाना और सदा के लिये फसह् की विधि।)

९. इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले महीने में यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, २ । इस्राएली फसह् नाम पर्व को उस के नियत समय पर मानें ॥ ३ । अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय तुम लोग उसे सब विधियों और नियमों के अनुसार मानना ॥ ४ । तब मूसा ने इस्राएलियों से फसह् मानने को कह दिया ॥ ५ । सो उन्हों ने पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के जंगल में फसह् को माना और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने किया ॥ ६ । पर कितने लोग किसी मनुष्य की लोथ के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह् को न मान सके सो वे उसी दिन मूसा और हारून के साम्हने समीप जाकर, ७ । मूसा से कहने लगे हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं पर हम काहे को रुके रहें कि और इस्राएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न चढ़ाएं ॥ ८ । मूसा ने उन से कहा ठहरे रहो मैं जान लूं कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है ॥

९ । यहोवा ने मूसा से कहा, १० । इस्राएलियों से कह कि चाहे तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो वा दूर की यात्रा पर हो तौभी वह यहोवा के लिये फसह् को माने ॥ ११ । वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय मानें और फसह् के बलिपशु के मांस को अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएं, १२ । और उस में से कुछ भी बिहान लों रख न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ें वे उस पर्व को फसह् की सारी विधियों के अनुसार मानें ॥ १३ । पर जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो पर फसह् के पर्व को न माने वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा ॥ १४ । और यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह् मानूं तो वह उस की विधि और नियम के अनुसार उस को माने देशी परदेशी दोनों के लिये तुम्हारी एक ही विधि हो ॥

(इस्राएलियों की यात्रा की रीति)

१५ । जिस दिन निवास जो साक्षी का तंबू भी कहावता है खड़ा किया गया उस दिन बादल उस पर छा गया और सांझ को वह निवास पर आग

सा देख पड़ा और भोर लों दिखाई देता था ॥ १६। और नित्य ऐसा हुआ करता था अर्थात् दिन को वह बादल और रात को आग सा कुछ उस पर छा जाया करता था ॥ १७। और जब जब वह बादल तंबू पर से उठाया जाता तब तब इस्राएली कूच करते थे और जहां कहीं बादल ठहर जाता वहीं इस्राएली अपने डेरे खड़े करते थे ॥ १८। यहोवा के कहे से इस्राएली कूच करते और यहोवा के कहे से वे डेरे खड़े भी करते थे और जितने दिन लों वह बादल निवास पर ठहरा रहता उतने दिन लों वे डेरे डाले पड़े रहते थे ॥ १९। और जब जब बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता तब तब इस्राएली यहोवा की आज्ञा मानते हुए कूच न करते थे ॥ २०। और कभी कभी वह बादल थोड़े ही दिन लों निवास पर रहता तब वे यहोवा के कहे से डेरे डाले पड़े रहते थे और फिर यहोवा के कहे से कूच करते थे ॥ २१। और कभी कभी बादल केवल सांझ से भोर लों रहता और जब भोर को वह उठ जाता था तब वे कूच करते थे और यदि वह रात दिन बराबर रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे कूच करते थे ॥ २२। वह बादल चाहे दो दिन चाहे एक महीना चाहे बरस भर जब लों निवास पर ठहरा रहता तब लों इस्राएली अपने डेरों में रहते और कूच न करते थे पर जब वह उठ जाता तब वे कूच करते थे ॥ २३। यहोवा के कहे से वे अपने डेरे खड़े करते और यहोवा के कहे से वे कूच करते थे जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता उस को वे माना करते थे ॥

(चान्दी की तुरहियों के बनाने और बरतने की विधि)

१०. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। चांदी की दो तुरही गढ़ाके बनवा ले वे तुझे मण्डली के बुलाने और छावनियों के कूच करने में काम आएं ॥ ३। और जब वे दोनों फूंकी जाएं तब सारी मण्डली मिलापवाले तंबू के द्वार पर तेरे पास एकट्ठी हो ॥ ४। और यदि एक ही तुरही फूंकी जाए तो प्रधान लोग जो इस्राएल् के हजारों के मुख्य पुरुष हैं तेरे पास एकट्ठे हो जाएं ॥ ५। जब तुम लोग सांस बांधकर फूंको तो पूरब दिशा की छावनियों का कूच हो ॥ ६। और जब तुम दूसरी बेर सांस बांधकर फूंको तब दक्खिन दिशा की छावनियों का कूच हो उन के कूच करने के लिये वे सांस बांधकर फूंकें ॥ ७। और जब लोगों को एकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी फूंकना पर सांस बांधकर नहीं ॥ ८। और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूंका करें यह बात तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे ॥ ९। और जब तुम अपने देश में किसी सतानेहारे बैरी से लड़ने को निकलो तब तुरहियों को सांस बांधकर फूंकना तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा और तुम अपने शत्रुओं से बचाये जाओगे ॥ १०। और अपने आनन्द के दिन में और अपने नियत पर्वों में और महीनों के आदि में अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूंकना इस से तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(इस्राएलियों का सीनै पर्वत से प्रस्थान करना)

११। दूसरे बरस के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षी के निवास पर से उठाया गया ॥ १२। तब इस्राएली सीनै के जंगल में से निकलकर कूच करने लगे और बादल पारान् नाम जंगल में ठहर गया ॥ १३। उन का कूच यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दिई थी आरंभ हुआ ॥ १४। पहिले तो यहूदियों की छावनी के झंडे का कूच हुआ और वे दल दल होकर चले और उन का सेनापति अम्मीनादाब् का पुत्र नहशोन था ॥ १५। और इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर् का पुत्र नतनेल् था ॥ १६। और जबूलूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन् का पुत्र एलीआब् था ॥ १७। तब निवास उतारा गया और गेर्शोनियों और मरारीयों ने निवास को उठाये हुए कूच किया ॥ १८। फिर रूबेन् की छावनी के झंडे

का कूच हुआ और वे भी दल दल होकर चले और उन का सेनापति शदेऊर् का पुत्र एलीसूर् था ॥ १९ । और शिमोनियों के गोत्र का सेनापति सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल् था ॥ २० । और गादियों के गोत्र का सेनापति दूएल् का पुत्र एल्यासाप् था ॥ २१ । तब कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाये हुए कूच किया और उन के पहुंचने लों गेर्शोनियो और मरारीयो ने निवास को खड़ा किया ॥ २२ । फिर एप्रैमियों की छावनी के झंडे का कूच हुआ और वे भी दल दल होकर चले और उन का सेनापति अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था ॥ २३ । और मनश्शेइयों के गोत्र का सेनापति पदासूर् का पुत्र गम्लीएल् था ॥ २४ । और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का पुत्र अबीदान् था ॥ २५ । फिर दानियों की छावनी जो सब छावनियों के पीछे थी उस के झंडे का कूच हुआ और वे भी दल दल होकर चले और उन का सेनापति अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर् था ॥ २६ । और आशेरियों के गोत्र का सेनापति ओक्रान् का पुत्र पगीएल् था ॥ २७ । और नप्तालीयों के गोत्र का सेनापति एनान् का पुत्र अहीरा था ॥ २८ । इस्राएलियों के कूच दल बांधके ऐसे ही होते थे ॥

२९ । और मूसा ने अपने ससुर रूएल् मिद्यानी के पुत्र होबाब् से कहा हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिस के विषय यहोवा ने कहा है कि मैं उसे तुम को दूंगा सो तू भी हमारे संग चल और हम तेरी भलाई करेंगे क्योंकि यहोवा ने इस्राएल् के विषय भला ही कहा है ॥ ३० । होबाब् ने उस से कहा मैं न जाऊंगा मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट जाऊंगा ॥ ३१ । फिर मूसा ने कहा हम को न छोड़ क्योंकि हमें जंगल में कहां कहां डेरा खड़ा करना चाहिये यह तुझे तो मालूम होगा तू हमारे लिये आंखों का काम देना ॥ ३२ । और यदि तू हमारे संग चले तो निश्चय जो भलाई यहोवा हम से करे उसी के अनुसार हम भी तुझ से करेंगे ॥

३३ । सो इस्राएलियों[1] ने यहोवा के पर्वत से कूच करके तीन दिन की यात्रा किई और उन तीनों दिनों के मार्ग में यहोवा की वाचा का संदूक उन के लिये विश्राम का स्थान ढूंढ़ता हुआ उन के आगे आगे चलता रहा ॥ ३४ । और जब वे छावनी के स्थान से कूच करते तब दिन भर यहोवा का बादल उन के ऊपर छाया रहता था ॥ ३५ । और जब जब संदूक का कूच होता तब तब मूसा यह कहा करता था कि हे यहोवा उठ और तेरे शत्रु तितर बितर हों और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग जाएं ॥ ३६ । और जब जब वह ठहर जाता तब तब मूसा कहा करता था कि हे यहोवा इस्राएल् के हजारों हजार के बीच लौटकर आ ॥

(१) मूल में उन्हों ।

(इस्राएलियो का कुड़कुड़ाना और इस का दण्ड भोगना)

११. फिर वे लोग कुड़कुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे सो यहोवा ने सुना और उस का कोप भड़का और यहोवा की ओर से आग उन में जल उठी और जो छावनी के किनारे पर थे उन को भस्म कर डाला ॥ २ । तब लोग मूसा के पास जाकर चिल्लाये और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना किई तब वह आग बुझ गई ॥ ३ । सो उस स्थान का नाम तबेरा[1] पड़ा क्योंकि यहोवा की ओर से आग उन में जली थी ॥

४ । फिर जो मिली जुली हुई भीड़ उन के साथ थी वह अति तृष्णा करने लगी और इस्राएली भी फिर रोने और यह कहने लगे कि हमें मांस खाने को कौन देगा ॥ ५ । हमें वे मछलियां तो सुधि आती हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे और वे खीरे और खरबूजे और गन्दने और प्याज और लहसुन भी ॥ ६ । पर अब हमारा जी रूभ गया है यहां इस मान् को छोड़ और कुछ देख नहीं पड़ता ॥ ७ । मान् तो धनिये के समान था और उस का रंग मोती का सा था ॥ ८ । लोग इधर उधर जा उसे बटोरके चक्की में पीसते वा ओखली में कूटते थे फिर तसले में सिझाते और उस के फुलके

(१) अर्थात् जलन ।

बनाते थे और उस का स्वाद तेल में बने हुए पूए का सा था ॥ ९। और रात को जब छावनी में ओस पड़ती तब उस के साथ मान् भी पड़ता था ॥ १०। जब घराने घराने के लोग अपने अपने डेरे के द्वार पर रोते रहे तब यहोवा का कोप बहुत भड़का और मूसा ने भी सुनकर बुरा माना ॥ ११। सो मूसा ने यहोवा से कहा तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है और क्या कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया कि तू ने इन सारे लोगों का भार मुझ पर डाला है ॥ १२। क्या ये सारे लोग मेरे ही कोख में पड़े थे क्या मैं ही उन को जना कि तू मुझ से कहे कि जैसे पिता दूधपिउवे बालक को अपनी गोद में उठाये हुए चलता है वैसे ही तू इन को उठाये हुए उस देश को ले जा जिस के देने की मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई थी ॥ १३। मुझे इतना मांस कहां से मिले कि इन सब लोगों को दूं ये तो यह कहकर मेरे पास रो रहे हैं कि तू हमें मांस खाने को दे ॥ १४। मैं इन सब लोगों का भार अकेला नहीं संभाल सकता क्योंकि यह मेरे लिये बहुत भारी है ॥ १५। सो जो तू मेरे साथ ऐसा व्यवहार करने चाहता हो तो तेरा इतना अनुग्रह मुझ पर हो कि मुझे मार डाल कि मुझे अपनी दुर्दशा देखनी न पड़े ॥

१६। यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास एकट्ठे कर जिन को तू जानता हो कि वे प्रजा में के पुरनिये और उन के सरदार हैं और मिलापवाले तंबू के पास ले आ कि वे तेरे साथ यहां खड़े हों ॥ १७। तब मैं उतरके यहां तुझ से बातें करूंगा और जो आत्मा तुझ पर है उस में से लेकर उन में समवाऊंगा सो वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाये रहेंगे और तुझे उस को अकेले उठाना न पड़ेगा ॥ १८। और लोगों से कह कल के लिये अपने को पवित्र कर रक्खो तब मांस खाने को मिलेगा क्योंकि तुम यहोवा के सुनते यह कहकर रोये हो कि हमें मांस खाने को कौन देगा हम मिस्र ही में भले थे सो यहोवा तुम को मांस खाने को देगा ॥ १९। तुम एक दिन या दो या पांच वा दस वा बीस दिन उसे न खाओगे ॥ २०। पर महीने भर उसे खाते रहोगे जब लों वह तुम्हारे नथनों से न निकले और तुम को घिनौना न लगे क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे बीच में है तुच्छ जाना और उस के साम्हने यह कहकर रोये हो कि हम मिस्र से काहे को निकले ॥ २१। मूसा ने कहा जिन लोगों के बीच में हूं उन में से छः लाख तो प्यादे ही हैं और तू ने कहा है कि मांस मैं उन्हें इतना दूंगा कि वे महीने भर उसे खाते रहेंगे ॥ २२। क्या ये सब भेड़ बकरी गाय बैल उन के लिये मारे जाएं कि उन को मास मिले वा क्या समुद्र की सब मछलियां उन के लिये एकट्ठी किई जाएं कि उन को मास मिले ॥

२३। यहोवा ने मूसा से कहा क्या यहोवा की बांह छोटी हो गई है अब तू देखेगा कि मेरा वचन तेरे लिये पूरा होगा कि नहीं ॥ २४। तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं और उन के पुरनियों में से सत्तर पुरुष एकट्ठे करके तंबू की चारों ओर खड़े किये ॥ २५। तब यहोवा ने बादल में उतरके मूसा से बातें किईं और जो आत्मा उस पर था उस में से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया और जब वह आत्मा उन पर ठहर गया तब वे नबूवत करने लगे पर फिर कभी न किईं ॥ २६। पर दो मनुष्य छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम एल्दाद् और दूसरे का नाम मेदाद् था उन पर भी आत्मा ठहरा वे लिखे हुओं में के थे पर तंबू के पास न गये थे सो वे छावनी में नबूवत करने लगे ॥ २७। तब किसी जवान ने दौड़के मूसा को बतलाया कि एल्दाद् और मेदाद् छावनी में नबूवत कर रहे हैं ॥ २८। तब नून् का पुत्र यहोशू जो मूसा का टहलुआ और उस के बड़े बड़े वीरों में से था[१] उस ने मूसा से कहा हे मेरे स्वामी मूसा उन को बरज ॥ २९। मूसा ने उस से कहा क्या तू मेरे कारण जलता है आहा कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते

(१) मूल में उस के चुने हुओं में से।

और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता ॥ ३० । तब मूसा इस्राएल् के पुरनियों समेत छावनी में चला गया ॥ ३१ । तब यहोवा की ओर से एक बयार उठकर समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उस की चारों ओर इतनी इतनी ले आई कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग लों और भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊंचे पर रहीं ॥ ३२ । सो लोग उठकर उस दिन दिन भर और रात भर और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे जिस ने कम से कम बटोरा उस ने दस होमेर् बटोरा और उन्हों ने उन्हें छावनी की चारों ओर फैला दिया ॥ ३३ । मांस उन के मुंह ही में था और वे उसे चावने न पाये थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा और उस ने उन को बहुत बड़ी मार से मारा ॥ ३४ । और उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा[1] पड़ा क्योंकि जिन लोगों ने तृष्णा किई थी उन को वहां मिट्टी दिई गई ॥ ३५ । फिर इस्राएली किब्रोथत्तावा से कूच करके हसेरोत् में पहुंचे और वहीं रहे ॥

(मूसा की श्रेष्ठता का प्रमाण)

१२. मूसा ने तो एक कूशी स्त्री को व्याह लिया था सो मरियम और हारून उस की उस व्याहिता कूशिन के कारण उस की निन्दा करने लगे ॥ २ । उन्हों ने कहा क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें किई हैं क्या उस ने हम से भी बातें नहीं किईं । उन की यह बात यहोवा ने सुनी ॥ ३ । मूसा तो पृथिवी भर के रहनेहारे सारे मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र था ॥ ४ । सो यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मरियम से कहा तुम तीनों मिलापवाले तंबू के पास निकल आओ तब वे तीनों निकल आये ॥ ५ । तब यहोवा ने बादल के खंभे में उतरकर तंबू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया सो वे दोनों उस के पास निकल गये ॥ ६ । तब यहोवा ने कहा मेरी बातें सुनो यदि तुम में कोई नबी हो तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने को प्रगट करूंगा वा स्वप्न में उस से बातें करूंगा ॥ ७ । पर मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है वह तो मेरे सारे घराने में विश्वासयोग्य है ॥ ८ । उस से मैं गुप्त रीति से नहीं पर आम्हने साम्हने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूं और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते क्यों न डरे ॥ ९ । तब यहोवा का कोप उन पर भड़का और वह चला गया ॥ १० । तब वह बादल तंबू पर से उठ गया और मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई और हारून ने मरियम की ओर दृष्टि किई और देखा कि वह कोढ़िन हो गई है ॥ ११ । तब हारून मूसा से कहने लगा हे मेरे प्रभु हम दोनों ने जो मूर्खता किई बरन पाप भी किया यह पाप हम पर न लगने दे ॥ १२ । उस को उस मरे हुए के समान न रहने दे जिस की देह अपनी मा के पेट से निकलते ही अधगली हो ॥ १३ । सो मूसा ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दिई कि हे ईश्वर कृपाकर और उस को चंगा कर ॥ १४ । यहोवा ने मूसा से कहा यदि उस का पिता उस के मुंह पर थूकता तो क्या सात दिन लों उस को लाज न रहती सो वह सात दिन लों छावनी से बाहर बन्द रहे उस के पीछे वह फिर भीतर आने पाए ॥ १५ । सो मरियम सात दिन लों छावनी से बाहर बन्द रही और जब लों मरियम फिर आने न पाई तब लों लोगों ने कूच न किया ॥ १६ । उस के पीछे उन्हों ने हसेरोत् से कूच करके पारान् नाम जंगल में अपने डेरे खड़े किये ॥

(इस्राएलियों के कनान् देश में जाने से नाह करने और इस के दण्ड पाने का वर्णन)

१३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । कनान् देश जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूं उस का भेद लेने के लिये कितने पुरुषों को भेज वे उन के पितरों के एक एक गोत्र का एक एक प्रधान पुरुष हों ॥ ३ ।

(१) अर्थात् तृष्णा की कबरें ।

यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषों को पारान् जंगल से भेज दिया जो सब के सब इस्राएलियों के प्रधान थे ॥ ४। उन के नाम ये हैं अर्थात् रूबेन् गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू ॥ ५। शिमोन् गोत्र में से होरी का पुत्र शापात् ॥ ६। यहूदा गोत्र में से यपुन्ने का पुत्र कालेब् ॥ ७। इस्साकार् गोत्र में से योसेप् का पुत्र यिगाल् ॥ ८। एप्रैम् गोत्र में से नून् का पुत्र होशे ॥ ९। बिन्यामीन् गोत्र में से रापू का पुत्र पलती ॥ १०। जबूलून गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल् ॥ ११। यूसुफ वंशियों में के मनश्शे गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी ॥ १२। दान् गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल् ॥ १३। आशेर् गोत्र में से मीकाएल् का पुत्र सतूर ॥ १४। नप्ताली गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहबी ॥ १५। गाद् गोत्र में से माकी का पुत्र गूएल् ॥ १६। जो पुरुष मूसा ने देश के भेद लेने को भेजे उन के नाम ये ही हैं और नून् के पुत्र होशे का नाम उस ने यहोशू रक्खा ॥ १७। उन को कनान् देश के भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा इधर से अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ और पहाड़ी देश में जाकर, १८। सारे देश को देख लो कि कैसा है और उस में बसे हुए लोगों को भी देखो कि वे बलवान् हैं वा निर्बल थोड़े हैं वा बहुत ॥ १९। और जिस देश में वे बसे हुए हैं सो कैसा है अच्छा वा बुरा और वे कैसी कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं तंबूवालियों में कि गढ़वालियों में ॥ २०। और वह देश कैसा है उपजाऊ वा बंजर और उस में वृक्ष हैं वा नहीं और तुम हियाव बांधे चलो और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना। वह समय पहिली पक्की दाखों का था ॥ २१। सो वे चल दिये और सीन् नाम जंगल से ले रहोब् लों जो हमात् के मार्ग में है सारे देश का भेद लिया ॥ २२। सो वे दक्षिण देश होकर चले और हेब्रोन् लों गये वहां अहीमन् शेशै और तल्मै नाम अनाक्वंशी रहते थे। हेब्रोन् तो मिस्र के सोअन् से सात बरस पहिले बसाया गया था ॥ २३। तब वे एश्कोल् नाम नाले लों गये और वहां से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ लिई और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाये हुए उठा ले गये और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले गये ॥ २४। इस्राएली जो वहां से वह दाखों का गुच्छा[1] तोड़ ले आये इस कारण उस स्थान का नाम एश्कोल् नाला रक्खा गया ॥ २५। चालीस दिन के पीछे वे उस देश का भेद लेकर लौट आये, २६। और पारान् जंगल के कादेश् नाम स्थान में मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के पास पहुंचे और उन को और सारी मण्डली को संदेशा दिया और उस देश के फल उन को दिखाये ॥ २७। उन्हों ने मूसा से यह कहकर वर्णन किया कि जिस देश में तू ने हम को भेजा था उस में हम गये उस में सचमुच दूध और मधु की धाराएं बहती हैं और उस की उपज में से यही है ॥ २८। पर उस देश के निवासी बलवान हैं और उस के नगर गढ़वाले और बहुत बड़े हैं और फिर हम ने वहां अनाक्वंशियों को भी देखा ॥ २९। दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं और पहाड़ी देश में हित्ती यबूसी और एमोरी रहते हैं और समुद्र के तीर तीर और यर्दन नदी के तीर तीर कनानी बसे हुए हैं ॥ ३०। पर कालेब् ने मूसा के साम्हने प्रजा के लोगों को चुप कराने की मनसा से कहा हम अभी चढ़के उस देश को अपना कर लें क्योंकि निःसंदेह हम में ऐसा करने की शक्ति है ॥ ३१। पर जो पुरुष उस के संग गये थे उन्हों ने कहा उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है क्योंकि वे हम से बलवान हैं ॥ ३२। बरन उन्हों ने इस्राएलियों के साम्हने उस देश की जिस का भेद उन्हों ने लिया था यह कहकर निन्दा भी किई कि वह देश जिस का भेद लेने को हम गये थे ऐसा है जो अपने निवासियों को निगल जाता है और जितने पुरुष हम ने उस में देखे सो सब के सब बड़े डील डौल के हैं ॥ ३३। फिर हम ने वहां नपीलों को अर्थात् नपीली जातिवाले अनाक्वंशियों को देखा और हम अपने लेखे में फंगों के समान ठहरे और ऐसे ही उन के भी लेखे में ॥

(१) अर्थात् दाखों का गुच्छा।

१४. तब सारी मण्डली चिल्ला उठी और रात को वे लोग रोते रहे॥ २। और सब इस्राएली मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगे और सारी मण्डली उन से कहने लगी कि भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते वा इस जंगल में मर जाते ॥ ३। और यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाने चाहता है हमारी स्त्रियां और बालबच्चे तो लूट में चले जाएंगे क्या मिस्र में लौट जाना हमारे लिये अच्छा न होगा ॥ ४। फिर वे आपस में कहने लगे आओ हम किसी को अपना प्रधान ठहराके मिस्र को लौट जाएं ॥ ५। सो मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के साम्हने मुंह के बल गिरे ॥ ६। और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब् जो देश के भेद लेनेहारों में से थे सो अपने अपने वस्त्र फाड़कर, ७। इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूमकर आये हैं सो अत्यन्त उत्तम देश है ॥ ८। यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो तो हम को उस देश में जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं पहुंचाकर उस को हमें देगा ॥ ९। इतना हो कि तुम यहोवा के विरुद्ध दंगा न करो और न उस देश के लोगों से डरो क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे छाया उन के ऊपर से हट गई है और यहोवा हमारे संग है उन से न डरो ॥ १०। तब सारी मण्डली उन पर पत्थरवाह करने को बोल उठी। तब यहोवा का तेज मिलापवाले तंबू में सब इस्राएलियों को दिखाई दिया ॥

११। तब यहोवा ने मूसा से कहा वे लोग कब लों मेरा तिरस्कार करते रहेंगे और मेरे सब आश्चर्य्यकर्म्म देखने पर भी कब लों मुझ पर विश्वास न करेंगे ॥ १२। मैं उन्हें मरी से मारूंगा और उन के निज भाग उन को न दूंगा और तुझ से एक जाति उपजाऊंगा जो उन से बड़ी और बलवन्त होगी ॥ १३। मूसा ने यहोवा से कहा तब तो मिस्री जिन के बीच से तू अपना सामर्थ्य दिखाकर इन लोगों को निकाल ले आया है सो इसे सुनकर, १४। इस देश के निवासियों से कहेंगे। उन्हों ने तो यह सुना होगा कि यहोवा इन लोगों के बीच रहता और प्रत्यक्ष दिखाई देता और तेरा बादल उन के ऊपर ठहरा रहता है और दिन को बादल के खंभे में और रात को अग्नि के खंभे में होकर उन के आगे आगे चला करता है ॥ १५। सो यदि तू इन लोगों को एक ही बार में मार डाले तो जिन जातियों ने तेरी कीर्त्ति सुनी है सो कहेंगी कि, १६। यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उस ने उन्हें देने की किरिया खाई थी पहुंचा न सका इस कारण उस ने उन्हें जंगल में घात कर डाला है ॥ १७। सो अब प्रभु के सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कहने के अनुसार हो कि, १८। यहोवा कोप करने में धीरजवन्त अति करुणामय और अधर्म्म और अपराध का क्षमा करनेहारा है वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा और पितरों के अधर्म्म का दण्ड उन के बेटों और पोतों और परपोतों को देनेहारा है ॥ १९। अब इन लोगों के अधर्म्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार और जैसे तू मिस्र से ले यहां लों क्षमा करता आया है वैसे ही इसे क्षमा कर ॥ २०। यहोवा ने कहा तेरी बात के अनुसार मैं क्षमा तो करता हूं ॥ २१। पर मेरे जीवन की सोंह सचमुच सारी पृथिवी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी ॥ २२। उन सब लोगों ने जो मेरी महिमा और मिस्र और जंगल में मेरे किये हुए आश्चर्य्यकर्म्म देखने पर भी अब दस बेर मेरी परीक्षा किई और मेरी बातें नहीं मानीं, २३। इस लिये जिस देश के विषय मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई उस को वे कभी देखने न पाएंगे अर्थात् जितनों ने मेरा तिरस्कार किया है उन में से कोई भी उसे न देखने पाएगा ॥ २४। पर इस कारण से कि मेरे दास कालेब् के साथ और ही आत्मा है और वह पूरी रीति से मेरे पीछे हो लिया है मैं उस को उस देश में जिस में वह हो आया है पहुंचाऊंगा और उस का वंश उस देश का अधिकारी होगा ॥ २५। अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं सो कल तुम घूमकर कूच करो और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ ॥

२६। फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २७। यह बुरी मण्डली मुझ पर कुड़कुड़ाती रहती है उस को मैं कब लों सहता रहूं इस्राएली जो मुझ पर कुड़कुड़ाते रहते हैं उन का यह कुड़कुड़ाना मैं ने तो सुना है॥ २८। सो उन से कह कि यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौंह कि जो बात तुम ने मेरे सुनते कही है निःसंदेह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ करूंगा॥ २९। तुम्हारी लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी और तुम सब में से बीस बरस की वा उस से अधिक अवस्था के जितने गिने गये थे और मुझ पर कुड़कुड़ाये हैं, ३०। उन में से यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा जिस के विषय मैं ने किरिया खाई[1] कि तुम को उस में बसाऊंगा॥ ३१। पर तुम्हारे बालबच्चे जिन के विषय तुम ने कहा है कि ये लूट में चले जाएंगे उन को मैं उस देश में पहुंचा दूंगा और वे उस देश को जान लेंगे जिस को तुम ने तुच्छ जाना है॥ ३२। पर तुम लोगों की लोथें इस जंगल में पड़ी रहेंगी॥ ३३। और जब लों तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तब लों अर्थात् चालीस बरस लों तुम्हारे लड़केवाले जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे॥ ३४। जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे अर्थात् चालीस दिन उन की गिनती के अनुसार दिन पीछे एक बरस अर्थात् चालीस बरस लों तुम अपने अधर्म्म का दण्ड उठाये रहोगे और जान लोगे कि मेरा नटना क्या है॥ ३५। मैं यहोवा यह कह चुका हूं कि इस बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध एकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे और निःसंदेह ऐसा ही करूंगा भी॥ ३६। तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था और उन्हों ने लौटकर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उसकाया था, ३७। उस देश की वे नामधराई करनेहारे पुरुष यहोवा के मारने से उस के साम्हने मर गये॥ ३८। पर देश के भेद लेनेहारे पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब जीते रहे॥ ३९। तब मूसा ने ये बातें सब इस्राएलियों को कह सुनाईं और वे बहुत विलाप करने लगे॥ ४०। और वे बिहान को सबेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे कि हम ने पाप किया है पर अब तैयार हैं और उस स्थान को जाएंगे जिस के विषय यहोवा ने वचन दिया था॥ ४१। तब मूसा ने कहा तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो यह सुफल न होगा॥ ४२। यहोवा तुम्हारे बीच नहीं है सो मत चढ़ो नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे॥ ४३। वहां तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं सो तुम तलवार से मारे जाओगे तुम यहोवा को छोड़कर फिर गये हो इस लिये वह तुम्हारे संग न रहेगा॥ ४४। पर वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये पर यहोवा की वाचा का संदूक और मूसा छावनी के बीच से न हटे॥ ४५। तब उस पहाड़ पर रहनेहारे अमालेकी और कनानी उतरके होर्मा लों उन्हें घात करते गये॥

(अन्नबलियों और अर्घों की विधि)

१५. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों से कह कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं, ३। और यहोवा के लिये क्या होमबलि क्या मेलबलि कोई हव्य चढ़ाओ चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो फिर वह चाहे गाय बैल चाहे भेड़ बकरियों में का हो जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो, ४। तब उस होमबलि वा मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे पीछे यहोवा के लिये चौथाई हीन् तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, ५। और चौथाई हीन् दाखमधु अर्घ करके देना॥ ६। और मेढ़े पीछे तिहाई हीन् तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके

(१) मूल में. हाथ उठाया।

चढ़ाना, ७। और उस का अर्घ यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा तिहाई हीन् दाखमधु देना॥ ८। और जब तू यहोवा को होमबलि वा किसी विशेष मन्नत पूरी करने के लिये बलि वा मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाए, ९। तब बछड़े का चढ़ानेहारा उस के संग आध हीन् तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए, १०। और उस का अर्घ आध हीन् दाखमधु चढ़ाए वह यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य होगा॥ ११। एक एक बछड़े वा मेढ़े वा भेड़ के बच्चे वा बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढ़ाया जाए॥ १२। तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो उसी गिनती के अनुसार एक एक के साथ ऐसा किया करना॥ १३। जितने देशी हों सो यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य चढ़ाते समय ये काम इसी रीति से किया करें॥ १४। और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो वा तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेहारा हो और वह यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य चढ़ाने चाहे तो जैसे तुम करोगे वैसे ही वह भी करे॥ १५। मण्डली के लिये अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेहारे परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लेखे ठहरता है॥ १६। तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेहारे परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम हो॥

१७। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८। इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं तुम को लिये जाता हूं, १९। और उस देश की उपज का अन्न खाओ तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो॥ २०। अपने पहिले गूंधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उस को भी उठाया करना॥ २१। अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने पहिले गूंधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना॥

(अनजाने और जान बूझके किये हुए पापों का भेद)

२२। फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, २३। अर्थात् जिन्हें यहोवा ने मूसा के द्वारा तुम को दिया जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उस ने जितनी आज्ञाएं दिई हैं, २४। तब यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिन जाने हुआ हो तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा होमबलि करके एक बछड़ा और उस के संग नियम के अनुसार उस का अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए॥ २५। तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करे और उन को क्षमा किई जाएगी क्योंकि उन का पाप भूल से हुआ और उन्हों ने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उस के साम्हने चढ़ाया॥ २६। सो इस्राएलियों की सारी मण्डली का और उस के बीच रहनेवाले परदेशी का भी वह पाप क्षमा किया जाएगा क्योंकि वह सब लोगों के अनजान में हुआ॥ २७। फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे तो वह बरस दिन की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए॥ २८। और याजक भूल से पाप करनेहारे प्राणी के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे सो इस प्रायश्चित्त के कारण उस का वह पाप क्षमा किया जाएगा॥ २९। जो कोई भूल से कुछ करे चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो॥ ३०। पर क्या देशी क्या परदेशी जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे सो यहोवा का अनादर करनेहारा ठहरेगा और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए॥ ३१। वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता और उस की आज्ञा का टालनेहारा है इस लिये वह प्राणी निश्चय नाश किया जाए उस का अधर्म्म उसी के सिर पड़ेगा॥

३२। जब इस्राएली जंगल में रहते थे तब किसी विश्रामदिन में एक मनुष्य लकड़ी बीनता हुआ मिला॥

३३। सो जिन को वह लकड़ी बीनता हुआ मिला थे उस को मूसा और हारून और सारी मण्डली के पास ले गये ॥ ३४। उन्हों ने उस को हवालात में रक्खा क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये सो प्रगट नहीं किया गया था ॥ ३५। तब यहोवा ने मूसा से कहा वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करें ॥ ३६। सो सारी मण्डली के लोगों ने उस को छावनी से बाहर ले जाकर पत्थरवाह किया और वह मर गया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी ॥

३७। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३८। इस्राएलियों से कह कि अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने वस्त्रों के कोर पर झालर लगाया करना और एक एक कोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना ॥ ३९। और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे कि जब जब उसे देखो तब तब यहोवा की सारी आज्ञाएं तुम को स्मरण आएं जिस से उन को मानो और इस रीति तुम आगे को अपने अपने मन और अपनी अपनी दृष्टि के वश होके व्यभिचारिन की नाईं ऐसे न फिरा करो जैसे अब लों फिरते आये हो, ४०। पर तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके मानो और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहो ॥ ४१। मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया है कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(कोरह् दातान् और अबीराम् का मचाया हुआ बलवा)

१६. कोरह् जो लेवी का परपोता कहात् का पोता और यिस्हार् का पुत्र था वह एलीआब् के पुत्र दातान् और अबीराम् और पेलेत् के पुत्र ओन् इन तीनों रूबेनियों से मिलकर, २। मण्डली के अढ़ाई सौ प्रधान जो सभासद और नामी थे उन को संग लिया ॥ ३। और वे मूसा और हारून के विरुद्ध एकट्ठे हुए और उन से कहने लगे तुम बस करो क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है और यहोवा उन के बीच रहता है सो तुम यहोवा की मण्डली से ऊंचे पदवाले क्यों बन बैठे हो ॥ ४। यह सुनकर मूसा अपने मुंह के बल गिरा ॥ ५। फिर उस ने कोरह् और उस की सारी मण्डली से कहा बिहान को यहोवा जता देगा कि मेरा कौन है और पवित्र कौन है और उस को अपने समीप बुला लेगा जिस को वह आप चुन ले उसी को अपने समीप बुला भी लेगा ॥ ६। हे कोरह् तू अपनी सारी मण्डली समेत यह कर अर्थात् तुम धूपदान ठीक करो ॥ ७। और कल उन में आग रखकर यहोवा के साम्हने धूप देना तब जिस को यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा हे लेवीयो तुम ही बस करो ॥ ८। फिर मूसा ने कोरह् से कहा हे लेवीयो सुनो ॥ ९। क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इस्राएल् के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल् की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवकाई करने और मण्डली के साम्हने खड़े होकर उस की भी सेवा टहल करने को अपने समीप बुला लिया, १०। और तुझे और तेरे सब लेवीय भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है फिर तुम याजकपद के भी खोजी हो ॥ ११। और इसी कारण तू ने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरुद्ध एकट्ठी किया है। हारून क्या है कि तुम उस पर कुड़कुड़ाते हो ॥ १२। तब मूसा ने एलीआब् के पुत्र दातान् और अबीराम् को बुलवा भेजा और उन्हों ने कहा हम तेरे पास नहीं आने के ॥ १३। क्या यह एक छोटी बात है कि तू हम को ऐसे देश से जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं इस लिये निकाल लाया है कि हमें जंगल में मार डाले फिर क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बन बैठा है ॥ १४। फिर तू हमें ऐसे देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं नहीं ले आया और न हमें खेतों और दाख की बारियों के अधिकारी किया क्या तू इन लोगों की आंखों में धूलि[1] डालेगा हम नहीं आने के ॥ १५। तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा और उस ने यहोवा से कहा उन लोगों की भेंट की ओर दृष्टि न कर मैं ने तो उन से एक गदहा नहीं लिया

(१) मूल में. आंखें फोड़।

और न उन में से किसी की हानि किई है ॥ १६ । तब मूसा ने कोरह् से कहा कल तू अपनी सारी मण्डली को साथ लेकर हारून के साथ यहोवा के साम्हने हाजिर होना ॥ १७ । और तुम सब अपना अपना धूपदान लेकर उन में धूप देना फिर अपना अपना धूपदान जो सब समेत अढ़ाई सौ होंगे यहोवा के साम्हने ले जाना विशेष करके तू और हारून अपना अपना धूपदान ले जाना ॥ १८ । सो उन्हों ने अपना अपना धूपदान ले उन में आग रख उन पर धूप दिया और मूसा और हारून के साथ मिलापवाले तंबू के द्वार पर खड़े हुए ॥ १९ । और कोरह् ने सारी मण्डली को उन के विरुद्ध मिलापवाले तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर लिया तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया ॥

२० । तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २१ । उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूं ॥ २२ । तब वे मुंह के बल गिरके कहने लगे हे ईश्वर हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर एक पुरुष पाप करे तो क्या तू सारी मण्डली पर भी कोप करेगा ॥ २३ । यहोवा ने मूसा से कहा, २४ । मण्डली के लोगों से कह कि कोरह् दातान् और अबीराम् के घरों के आसपास से हट जाओ ॥ २५ । तब मूसा उठकर दातान् और अबीराम् के पास गया और इस्राएलियों के पुरनिये उस के पीछे हो लिये ॥ २६ । उस ने मण्डली के लोगों से कहा तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ और उन का कोई वस्तु न छूओ न हो कि तुम भी उन के सब पापों में फंसके मिट जाओ ॥ २७ । सो वे कोरह् दातान् और अबीराम् के घरों के आसपास से हट गये पर दातान् और अबीराम् निकलकर अपनी स्त्रियों बेटों और बालबच्चों समेत अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए ॥ २८ । तब मूसा ने कहा इस से तुम जान लोगे कि मैं ने ये सब काम अपने मन से नहीं यहोवा ही की ओर से किये ॥ २९ । यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों की सी हो और उन का दण्ड और सब मनुष्यों का सा हो तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा नहीं हूं ॥ ३० । पर यदि यहोवा अपनी अपूर्व्व शक्ति प्रगट करे[१] और पृथिवी अपना मुंह पसारकर उन को और उन का सब कुछ निगल ले और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़ें तो समझ लो कि उन मनुष्यों ने यहोवा का तिरस्कार किया है ॥ ३१ । वह ये सब बातें कह ही चुका था कि उन लोगों के पांव तले की भूमि फट गई ॥ ३२ । और पृथिवी ने मुंह पसारकर उन को और उन के घरों और कोरह् के यहां के सब मनुष्यों और उन की सारी संपत्ति को भी निगल लिया ॥ ३३ । वे और जितने उन के यहां के थे सो जीते ही अधोलोक में जा पड़े और पृथिवी ने उन को ढांप लिया और वे मण्डली के बीच में से नाश हुए ॥ ३४ । और जितने इस्राएली उन की चारों ओर थे सो उन का चिल्लाना सुन यह कहते हुए भाग गये कि कहीं पृथिवी हम को भी न निगल ले ॥ ३५ । तब यहोवा के पास से आग निकली और उन अढ़ाई सौ धूप चढ़ानेहारों को भस्म कर डाला ॥

३६ । तब यहोवा ने मूसा से कहा, ३७ । हारून याजक के पुत्र एलाजार् से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले और आग को उधर छितरा दे क्योंकि वे पवित्र हैं ॥ ३८ । जिन्हों ने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि किई है उन के धूपदानों के पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने को बनाये जाएं क्योंकि वे उन्हे यहोवा के साम्हने ले आये तो थे इस से वे पवित्र ठहरे हैं इस रीति वे इस्राएलियों के लिये चिन्हानी हो जाएंगे ॥ ३९ । सो एलाजार् याजक ने उन पीतल के धूपदानों को जिन में उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था लेकर उन के पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिये, ४० । कि इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा जो हारून के वंश का न हो यहोवा के साम्हने धूप चढ़ाने को समीप न जाए न हो कि वह भी कोरह् और उस की मण्डली के समान नाश हो जाए जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उस को आज्ञा दिई थी ॥

(१) मूल में यहोवा सृष्टि सिरजे।

४१। दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगी कि यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है ॥ ४२। और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध एकट्ठे हुए तब उन्हों ने मिलापवाले तंबू की ओर दृष्टि किई और देखा कि बादल ने उसे छा लिया और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है ॥ ४३। तब मूसा और हारून मिलापवाले तंबू के साम्हने गये ॥ ४४। तब यहोवा ने मूसा से कहा, ४५। तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से उठ जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूं तब वे मुंह के बल गिरे ॥ ४६। और मूसा ने हारून से कहा धूपदान को ले उस में वेदी पर से आग रख उस पर धूप दे मण्डली के पास फुरती से जाकर उस के लिये प्रायश्चित्त कर क्योंकि यहोवा का कोप भड़का है[1] मरी फैलने लगी है ॥ ४७। मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है उस ने धूप धरके लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया ॥ ४८। वह तो मरे और जीते हुओं के बीच खड़ा हुआ सो मरी थम गई ॥ ४९। और जो कोरह् के संग भागी होकर मर गये थे उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गये सो चौदह हजार सात सौ थे ॥ ५०। जब मरी थम गई तब हारून मिलापवाले तंबू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया ॥

(याजकों और लेवीयों की मर्य्यादा और कर्त्तव्य कर्म्म)

१७. तब यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों से बातें करके उन के पितरों के घरानों के अनुसार उन के सब प्रधानों के पास से एक एक छड़ी ले और उन बारह छड़ियों में से एक एक पर एक एक के मूल पुरुष का नाम लिख ॥ ३। और लेवीयों की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि इस्राएलियों के पितरों के घरानों के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक छड़ी होगी ॥ ४। और उन छड़ियों को मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के आगे जहां मैं तुम लोगों से मिला करता हूं रख दे ॥ ५। और जिस पुरुष को मैं चुनूंगा उस की छड़ी कलियाएगी और इस्राएली जो तुम पर कुड़कुड़ाते हैं वह कुड़कुड़ाना मैं अपने पर से दूर करूंगा ॥ ६। सो मूसा ने इस्राएलियों से यह बात कही और उन के सब प्रधानों ने अपने अपने लिये अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक एक छड़ी दिई सो बारह छड़ी हुईं और उन की छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी ॥ ७। उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तंबू में यहोवा के साम्हने रख दिया ॥ ८। दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तंबू में गया तो क्या देखा कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी कलियाई अर्थात् उस में कलियां लगीं और फूल भी फूले और बादाम पके हैं ॥ ९। सो मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के साम्हने से निकाल सब इस्राएलियों के पास ले गया और उन्हों ने अपनी अपनी छड़ी पहिचानकर ले लिई ॥ १०। फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के साम्हने फिर धर कि यह उन दंगइतों के लिये चिन्हानी होने को रक्खी रहे कि तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ पर से दूर करके आगे को रोक रखे न हो कि वे मर जाएं ॥ ११। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही मूसा ने किया ॥

१२। तब इस्राएली मूसा से कहने लगे देख हमारा प्राण निकल गया हम नाश हुए हम सब के सब नाश हुए ॥ १३। जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता सो मारा जाता है क्या हम सब मरके अन्त हो जाएंगे ॥

१८. फिर यहोवा ने हारून से कहा पवित्रस्थान में के अधर्म्म का भार तू ही अपने पुत्रों और अपने पिता के घराने समेत उठाना और अपने याजककर्म्म के अधर्म्म का भार भी तू ही अपने पुत्रों समेत उठाना ॥ २। और लेवी का गोत्र अर्थात् तेरे मूलपुरुष के गोत्रवाले जो तेरे भाई हैं उन को भी अपने साथ समीप ले आ और वे तुझ से मिल जाएं और तेरी सेवा टहल किया करें पर साक्षीपत्र के तंबू के साम्हने तू और तेरे पुत्र आया करें ॥ ३। जो

(१) मूल में यहोवा के सन्मुख से कोप निकला है।

तुझे सौंपा गया है उस की और सारे तंबू की भी वे रक्षा किया करें पर पवित्रस्थान के पात्रों के और वेदी के समीप न आएं न हो कि वे और तुम लोग भी मर जाओ ॥ ४ । सो वे तुझ से मिल जाएं और मिलापवाले तंबू में की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रक्षा किया करें पर जो तेरे कुल का न हो सो तुम लोगों के समीप न आने पाए ॥ ५ । और पवित्रस्थान और वेदी की रखवाली तुम ही किया करो जिस से इस्राएलियों पर फिर कोप न भड़के ॥ ६ । पर मैं ने आप तुम्हारे लेवीय भाइयों को इस्राएलियों के बीच से ले लिया है और वे मिलापवाले तंबू की सेवा करने के लिये तुम को और यहोवा को भी दिये गये हैं ॥ ७ । पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातों की सेवकाई के लिये तू और तेरे पुत्र अपने याजकपद की रक्षा करना सो तुम ही सेवा किया करना क्योंकि मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूं और जो तेरे कुल का न हो सो यदि समीप आए तो मार डाला जाए ॥

८ । फिर यहोवा ने हारून से कहा सुन मैं आप तुझ को उठाई हुई भेंटें सौंप देता हूं अर्थात् इस्राएलियों की पवित्र किई हुई वस्तुएं जितनी हों उन्हे मैं तेरा अभिषेकवाला भाग जानकर तुझे और तेरे पुत्रों को सदा का हक करके दे देता हूं ॥ ९ । जो परमपवित्र वस्तुएं आग में होम न किई जाएगी सो तेरी ठहरें अर्थात् इस्राएलियों के सब चढ़ावों में से उन के सब अन्नबलि सब पापबलि और सब दोषबलि जो वे मुझ को दें सो तेरे और तेरे पुत्रों के लिये परमपवित्र ठहरें ॥ १० । उन को परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना उन को हर एक पुरुष खा सकता है वे तेरे लिये पवित्र हैं ॥ ११ । फिर ये वस्तुएं भी तेरी ठहरें अर्थात् जितनी भेंटें इस्राएली हिलाने के लिये दें उन को मैं तुझे और तेरे बेटे बेटियों को सदा का हक करके दे देता हूं तेरे घराने में जितने शुद्ध हों सो उन्हें खा सकेंगे ॥ १२ । फिर उत्तम से उत्तम टटका तेल और उत्तम से उत्तम नया दाखमधु और गोहूं अर्थात् इन में की जो पहिली उपज वे यहोवा को दें सो मैं तुझ को देता हूं ॥ १३ । उन के देश की सब प्रकार की पहिली पहिली उपज जो वे यहोवा के लिये ले आएं सो तेरी ठहरें तेरे घराने में जितने शुद्ध हों सो उन्हे खा सकेंगे ॥ १४ । इस्राएलियों में जो कुछ अर्पण किया जाए[1] वह भी तेरा ठहरे ॥ १५ । सब प्राणियों में से जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों जिन्हें लोग यहोवा के लिये चढ़ाएं चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहिलौठे हों सो सब तेरे ठहरें पर मनुष्यों और अशुद्ध पशुओं के पहिलौठों को दाम लेकर छोड़ देना ॥ १६ । और जिन्हें छुड़ाना हो जब वे महीने भर के हों तब उन के लिये अपने ठहराये हुए मोल के अनुसार अर्थात् पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल् के लेखे से पांच शेकेल् लेके उन्हें छोड़ना ॥ १७ । पर गाय वा भेड़ी वा बकरी के पहिलौठे को न छोड़ना वे तो पवित्र हैं उन के लोहू को वेदी पर छिड़क देना और उन की चरबी को हव्य करके जलाना जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो ॥ १८ । पर उन का मांस तेरा ठहरे हिलाई हुई छाती और दहिनी जांघ की नाईं वह भी तेरा ठहरे ॥ १९ । सो पवित्र वस्तुओं की जितनी भेंटें इस्राएली यहोवा को दें उन सभों को मैं तुझे और तेरे बेटे बेटियों को सदा का हक करके दे देता हूं यह तो तेरे और तेरे वंश के लिये यहोवा की सदा की लोनवाली वाचा ठहरी है ॥ २० । फिर यहोवा ने हारून से कहा इस्राएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा और न उन के बीच तेरा कोई अंश होगा उन के बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं ॥

२१ । फिर मिलापवाले तंबू की जो सेवा लेवीय करते हैं उस के बदले में उन को इस्राएलियों का सब दशमांश उन का निज भाग कर देता हूं ॥ २२ । और आगे को इस्राएली मिलापवाले तंबू के समीप न आएं न हो कि उन को पाप लगे और वे मर जाएं ॥ २३ । पर लेवीय मिलापवाले तंबू की सेवा किया करें और उन के अधर्म्म का भार वे ही उठाया करें यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे और इस्राएलियों के बीच उन का कोई निज भाग न हो ॥ २४ । क्योंकि इस्राएली जो

(१) मूल में के साम्हने ।

दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देंगे उसे मैं लेवीयों को निज भाग करके देता हूं इस कारण मैं ने उन के विषय कहा है कि इस्राएलियों के बीच कोई भाग उन को न मिले ॥

२५। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २६। तू लेवीयों से कह कि जब जब तुम इस्राएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज भाग करके उन से दिलाता है तब तब उस में से यहोवा के लिये एक उठाई हुई भेंट करके दशमांश का दशमांश देना ॥ २७। और तुम्हारी उठाई हुई भेंट तुम्हारे हित के लिये ऐसी गिनी जाएगी जैसा खलिहान में का अन्न वा रसकुंड में का दाखरस गिना जाता है ॥ २८। इस रीति तुम भी अपने सब दशमांशों में से जो इस्राएलियों की ओर से लोगे यहोवा को एक उठाई हुई भेंट देना और यहोवा की यह उठाई हुई भेंट हारून याजक को दिया करना ॥ २९। जितने दान तुम पाओ उन में से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग जो पवित्र ठहरा है सो उसे यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट करके पूरी पूरी देना ॥ ३०। इस लिये तू लेवीयों से कह कि जब तुम उस में का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब यह तुम्हारे लिये खलिहान में के अन्न और रसकुंड के रस के तुल्य गिना जाएगा ॥ ३१। और उस को तुम अपने घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो क्योंकि मिलापवाले तंबू की जो सेवा तुम करोगे उस का यह बदला ठहरा है ॥ ३२। और जब तुम उस का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब उस के कारण तुम को पाप न लगेगा पर इस्राएलियों की पवित्र किई हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना न हो कि तुम मर जाओ ॥

(लोथ आदि की स्पर्शजन्य अशुद्धता के निवारण का उपाय)

१९. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २। व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा देता है सो यह है कि तू इस्राएलियों से कह कि मेरे पास एक लाल निर्दोष कलोर ले आओ जिस में कोई भी दोष न हो और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो ॥ ३। तब उसे एलाजार् याजक को दो और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए और कोई उस को उस के साम्हने बलि करे ॥ ४। तब एलाजार् याजक अपनी अंगुली से उस का कुछ लोहू लेकर मिलापवाले तंबू के साम्हने की ओर सात बार छिड़क दे ॥ ५। तब कोई उस कलोर को खाल मांस लोहू और गोबर समेत उस के साम्हने जलाए ॥ ६। और याजक देवदारु की लकड़ी जूफा और लाही रंग का कपड़ा लेकर उस आग में जिस में कलोर जलती हो डाल दे ॥ ७। तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे इस के पीछे छावनी में तो आए पर सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ८। और जो मनुष्य उस को जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ ९। फिर कोई शुद्ध पुरुष उस कलोर की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ानेहारे जल के लिये रक्खी रहे वह तो पापबलि होगी ॥ १०। और जो मनुष्य कलोर की राख बटोरे सो अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे। और यह इस्राएलियों के लिये और उन के बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे ॥ ११। जो किसी मनुष्य की लोथ छूए सो सात दिन लों अशुद्ध रहे ॥ १२। ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से अपने को पाप छुड़ाकर पावन करे और सातवें दिन शुद्ध ठहरे पर यदि वह तीसरे दिन अपने को पाप छुड़ाकर पावन न करे तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा ॥ १३। जो कोई किसी मनुष्य की लोथ छूकर अपने को पाप छुड़ाकर पावन न करे वह यहोवा के निवासस्थान का अशुद्ध करनेहारा ठहरेगा और वह प्राणी इस्राएल् में से नाश किया जाए अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल जो उस पर न छिड़का गया इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा उस की अशुद्धता उस में बनी रहेगी ॥ १४। यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है कि जितने उस डेरे में रहें या उस में

आएं सो सब सात दिन लों अशुद्ध रहें ॥ १५। और हर एक खुला हुआ पात्र जिस पर कोई ढकना लगा न लगा हो सो अशुद्ध ठहरे ॥ १६। और जो कोई मैदान में तलवार के मारे हुए को वा अपनी मृत्यु से मरे हुए को वा मनुष्य की हड्डी को वा किसी कबर को छूए सो सात दिन लों अशुद्ध रहे ॥ १७। अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाये हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए ॥ १८। तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा ले उस जल में बोरके जल को उस डेरे पर और जितने पात्र और मनुष्य उस में हों उन पर छिड़के और हड्डी के वा मारे हुए के वा अपनी मृत्यु से मरे हुए के वा कबर के छूनेहारे पर छिड़के ॥ १९। वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिडके और सातवें दिन वह उस को पाप छुडाकर पावन करे तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और जल से स्नान करके सांझ को शुद्ध ठहरे ॥ २०। और जो कोई अशुद्ध होकर अपने को पाप छुड़ाकर पावन न कराए वह प्राणी जो यहोवा के पवित्रस्थान का अशुद्ध करनेहारा ठहरेगा इस कारण मण्डली के बीच में से नाश किया जाए अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल जो उस पर न छिड़का गया इस से वह अशुद्ध ठहरेगा ॥ २१। और यह उन के लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुडानेहारा जल छिडके सो अपने वस्त्रों को धोए और जिस जन से अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल छू जाए वह भी सांझ लों अशुद्ध रहे ॥ २२। और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए सो भी अशुद्ध ठहरे, और जो प्राणी उस वस्तु को छूए सो भी सांझ लों अशुद्ध रहे ॥

(मूसा और हारून का पाप और उस पाप का दण्ड)

२०. पहिले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीन् नाम जंगल में आ गये और कादेश् में रहने लगे और वहां मरियम मर गई और वहीं उस को मिट्टी दिई गई ॥ २। वहां मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला सो वे मूसा और हारून के विरुद्ध एकट्ठे हुए ॥ ३। और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे कि भला होता कि हम उस समय मर गये होते जब हमारे भाई यहोवा के साम्हने मर गये ॥ ४। और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आये हो कि हम अपने पशुओं समेत यहां मर जाएं ॥ ५। और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है यहां तो बीज वा अंजीर वा दाखलता वा अनार कुछ नहीं है बरन पीने को कुछ पानी भी नहीं है ॥ ६। तब मूसा और हारून मण्डली के साम्हने से मिलापवाले तंबू के द्वार पर जाकर अपने मुंह के बल गिरे और यहोवा का तेज उन को दिखाई दिया ॥ ७। तब यहोवा ने मूसा से कहा, ८। लाठी को ले और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को एकट्ठा करके उन के देखते उस ढांग से बातें कर तब वह अपना जल देगी इस प्रकार से तू ढांग में से उन के लिये जल निकालकर मण्डली के लोगों और उन के पशुओं को पिला ॥ ९। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उस के साम्हने से लाठी को ले लिया ॥ १०। और मूसा और हारून ने मण्डली को उस ढांग के साम्हने एकट्ठा किया तब मूसा ने उन से कहा हे दंगइतो सुनो क्या हम को इस ढांग में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा ॥ ११। तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी ढांग पर दो बार मारी और उस में से बहुत पानी फूट निकला और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे ॥ १२। पर मूसा और हारून से यहोवा ने कहा तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया इस लिये तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है ॥ १३। उस सोते का नाम मरीबा पडा क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा से झगडा किया और वह उन के बीच पवित्र ठहराया गया ॥

(एदोमियों का इस्राएलियों को अपने पास होकर चलने से बरजना)

१४। फिर मूसा ने कादेश् से एदोम् के राजा के

पास दूत भेजे कि तेरा भाई इस्राएल् यों कहता है कि हम पर जो जो क्लेश पड़े हैं सो तू जानता होगा ॥ १५ । अर्थात् यह कि हमारे पुरुखा मिस्र में गये थे और हम मिस्र में बहुत दिन रहे और मिस्रियों ने हमारे पुरुखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया ॥ १६ । पर जब हम ने यहोवा की दोहाई दिई तब उस ने हमारी सुनी और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है सो अब हम कादेश् नगर में हैं जो तेरे सिवाने ही पर है ॥ १७ । सो हमें अपने देश में होकर जाने दे हम किसी खेत वा दाख की बारी से होकर न चलेंगे और कूओं का पानी न पीएंगे सड़क सड़क होकर चले जाएंगे और जब लों तेरे देश से बाहर न हो जाएं तब लों न दहिने न बाएं मुड़ेंगे ॥ १८ । पर एदोमियों ने उस के पास कहला भेजा कि तू मेरे देश होकर मत जा नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा साम्हना करने को निकलूंगा ॥ १९ । इस्राएलियों ने उस के पास फिर कहला भेजा हम सड़क ही सड़क चलेंगे और यदि मैं और मेरे पशु तेरा पानी पीएं तो उस का दाम दूंगा मुझ को और कुछ नहीं केवल पांव पांव निकल जाने दे ॥ २० । उस ने कहा तू आने न पाएगा और एदोम् बड़ी सेना लेकर भुजबल से उस का साम्हना करने को निकल आया ॥ २१ । यों एदोम् ने इस्राएल् को अपने देश के भीतर होकर जाने देने से नाह किया सो इस्राएल् उस की ओर से मुड़ गया ॥

(हारून की मृत्यु.)

२२ । तब इस्राएलियों की सारी मण्डली कादेश् से कूच करके होर् नाम पहाड़ के पास आ गई ॥ २३ । और एदोम् देश के सिवाने पर होर् पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २४ । हारून अपने लोगों में जा मिलेगा क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नाम सोते पर मेरा कहा छोड़कर मुझ से बलवा किया इस कारण वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है ॥ २५ । सो तू हारून और उस के पुत्र एलाजार् को होर् पहाड़ पर ले चल ॥ २६ । और हारून के वस्त्र उतारके उस के पुत्र एलाजार् को पहिना तब हारून वहीं मरके अपने लोगों में जा मिलेगा ॥ २७ । यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया और वे सारी मण्डली के देखते होर् पहाड़ पर चढ़ गये ॥ २८ । तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके उस के पुत्र एलाजार् को पहिनाये और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया तब मूसा और एलाजार् पहाड़ पर से उतर आये ॥ २९ । और जब इस्राएल् की सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है तब इस्राएल् के सब घराने के लोग उस के लिये तीस दिन लों रोते रहे ॥

(कनानी राजा पर जय.)

२१. तब अराद् का कनानी राजा जो दक्खिन देश में रहता था यह सुनकर कि जिस मार्ग से वे भेदिये आये थे उसी मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं इस्राएल् से लड़ा और उन में से कितनों को बंधुआ कर लिया ॥ २ । तब इस्राएल् ने यहोवा से यह कहकर मन्नत मानी कि यदि तू सचमुच उन लोगों को मेरे वश में कर दे तो मैं उन के नगरों को सत्यानाश करूंगा ॥ ३ । इस्राएल् की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उन के वश में कर दिया सो उन्हों ने उन के नगरों समेत उन को भी सत्यानाश किया इस से उस स्थान का नाम होर्मा[1] रक्खा गया ॥

(पीतल का बना हुआ सर्प)

४ । फिर उन्हों ने होर् पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया इस लिये कि एदोम् देश से बाहर बाहर घूमकर जाएं। और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत अधीर हो गया ॥ ५ । सो वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे और मूसा से कहा तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आये हो यहां न तो रोटी है और न पानी और हमारा जी इस निकम्मी रोटी से मिचलाता है ॥ ६ । सो यहोवा ने उन लोगों में तेज विष-

(१) अर्थात्. सत्यानाश ।

वाले[1] सांप भेजे जो उन को डंसने लगे और बहुत से इस्राएली मर गये॥ ७। तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे हम ने पाप किया है कि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें किई हैं यहोवा से प्रार्थना कर कि वह सांपों को हम से दूर करे। तब मूसा ने उन के लिये प्रार्थना किई॥ ८। यहोवा ने मूसा से कहा एक तेज विषवाले[1] सांप की प्रतिमा बनवाकर खंभे पर लटका तब जो सांप से डंसा हुआ उस को देख ले सो जीता बचेगा॥ ९। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनवाकर खंभे पर लटकाया तब सांप के डंसे हुए जिस जिस ने उस पीतल के सांप की ओर निहारा सो सो जीता बच गया॥ १०। फिर इस्राएलियों ने कूच करके ओबोत् मे डेरे डाले॥ ११। और ओबोत् से कूच करके अबारीम् नाम डीहों में डेरे डाले जो पूरब की ओर मोआब् के साम्हने के जंगल में है॥ १२। वहां से कूच करके उन्हों ने जेरेद् नाम नाले में डेरे डाले॥ १३। वहां से कूच करके उन्हों ने अर्नोन् नदी जो जंगल मे बहती और एमोरियों के देश से निकली है उस की परली ओर डेरे खड़े किये क्योंकि अर्नोन् मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब् देश का सिवाना ठहरी है॥ १४। इस कारण यहोवा के संग्राम नाम पुस्तक में यों लिखा है कि

सूपा में वाहेब्
और अर्नोन् के नाले

१५। और उन नालों की ढाल
जिस की ढाल आर् नाम वासस्थान की ओर है
और जो मोआब् के सिवाने पर हैं[2]।

१६। फिर वहां से कूच करके वे बेर् लों गये वहां वही कूआं है जिस के विषय यहोवा ने मूसा से कहा था कि उन लोगों को एकट्ठा कर और मैं उन्हें पानी दूंगा॥

१७। उस समय इस्राएल् ने यह गीत गाया कि
हे कूए उबल आ उस कूए के विषय गाओ
१८। जिस को हाकिमों ने खोदा
और इस्राएल् के रईसों ने
अपने सोंटों और लाठियों से खोद लिया॥

१९। फिर वे जंगल से मत्ताना लों और मत्ताना से नहलीएल् लों और नहलीएल् से बामोत् लों, २०। और बामोत् से कूच करके उस तराई लों जो मोआब् के मैदान में है और पिसगा के उस सिरे लों भी जो यशीमोन् की ओर झुका है पहुंच गये॥

(सीहोन् और ओग् नाम राजाओं का पराजय और उन का देश इस्राएलियों के वश में आना)

२१। तब इस्राएल् ने एमोरियों के राजा सीहोन् के पास दूतों से यह कहला भेजा कि, २२। हमें अपने देश से होकर चलने दे हम मुड़कर किसी खेत वा दाख की बारी मे तो न जाएंगे न किसी कूए का पानी पीएंगे और जब लों तेरे देश से बाहर न हो जाएं तब लों सड़क ही से चले जाएंगे॥ २३। तौभी सीहोन् ने इस्राएल् को अपने देश से होकर चलने न दिया वरन अपनी सारी सेना को एकट्ठा करके इस्राएल् का साम्हना करने को जंगल मे निकल आया और यहस् को आकर उन से लड़ा॥ २४। तब इस्राएलियों ने उस को तलवार से मार लिया और अर्नोन् से यब्बोक् नदी लों जो अम्मोनियों का सिवाना था उस के देश के अधिकारी हो गये। अम्मोनियों का सिवाना तो दृढ़ था॥ २५। सो इस्राएल् ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया और उन में अर्थात् हेश्बोन् और उस के आसपास के नगरों में रहने लगे॥ २६। हेश्बोन् एमोरियों के राजा सीहोन् का नगर था उस ने मोआब् के अगले राजा से लड़के उस का सारा देश अर्नोन् लों उस के हाथ से छीन लिया था॥ २७। इस कारण गूढ़ बात के कहनेहारे कहते हैं कि

हेश्बोन् में आओ
सीहोन् का नगर बसे और दृढ़ किया जाए
२८। क्योंकि हेश्बोन् से आग
अर्थात् सीहोन् के नगर से लौ निकली
जिस से मोआब् देश का आर् नगर
और अर्नोन् के ऊंचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए॥

(१) मूल मे, जलते हुए। (२) मूल में उठंगी है।

२९। हे मोआब् तुझ पर हाय
कमोश् देवता की प्रजा नाश हुई
उस ने अपने बेटों को भगोड़
और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन् की
बंधुई कर दिया॥
३०। हम ने उन्हें गिरा दिया है हेश्बोन् दीबोन्
लों भी नाश हुआ है
और हम ने नोपह् लों
मेदबा लों भी उजाड़ दिया है॥
३१। सो इस्राएल् एमोरियों के देश में रहने लगा॥
३२। तब मूसा ने याजेर् नगर का भेद लेने को भेजा और उन्हों ने उस के गांवों को ले लिया और वहां के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया॥ ३३। तब वे मुड़के बाशान् के मार्ग से जाने लगे और बाशान् के राजा ओग् ने उन का साम्हना किया अर्थात् लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एद्रेई में निकल आया॥ ३४। तब यहोवा ने मूसा से कहा उस से मत डर क्योंकि मैं उस को सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूं और जैसा तू ने एमोरियों के राजा हेश्बोन्वासी सीहोन् से किया है वैसा ही उस से भी करना॥ ३५। सो उन्हों ने उस को और उस के पुत्रों और सारी प्रजा को यहां लों मारा कि उस का कोई भी बचा न रहा और वे उस के देश के अधिकारी हो गये॥

२२. १। तब इस्राएलियों ने कूच करके यरीहो के पास की यर्दन नदी के इस पार मोआब् के अराबा में डेरे खड़े किये॥

(बिलाम् का चरित्र)

२। और सिप्पोर् के पुत्र बालाक् ने देखा कि इस्राएल् ने एमोरियों से क्या क्या किया है॥ ३। सो मोआब् यह जानकर कि इस्राएली बहुत हैं उन लोगों से निपट डर गया वरन मोआब् इस्राएलियों के कारण अति व्याकुल हुआ॥ ४। सो मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा अब वह दल हमारी चारों ओर के सब लोगों को ऐसे चट कर जाएगा जैसे बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है और उस समय सिप्पोर् का पुत्र बालाक् मोआब् का राजा था॥ ५। और उस ने पतोर् नगर को जो महानद के तीर पर बोर् के पुत्र बिलाम् के जातिभाइयों की भूमि में है उसी बिलाम् के पास दूत भेजे जो यह कहकर उसे बुला लाएं कि सुन एक दल मिस्र से निकल आया है और, भूमि उन से ढंक गई है और अब वे मेरे साम्हने ठहरे हैं॥ ६। सो आ और उन लोगों को मेरे निमित्त स्राप दे क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं क्या जाने मुझे इतनी शक्ति हो कि हम उन को जीत सकें और मैं उन्हें अपने देश से बरबस निकाल सकूं यह तो मैं ने जान लिया है कि जिस को तू आशीर्वाद दे सो धन्य होता है और जिस को तू स्राप दे वह स्रापित होता है॥ ७। सो मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले और बिलाम् के पास पहुंचकर बालाक् की बातें कह सुनाईं॥ ८। उस ने उन से कहा आज रात को यहां टिको और जो बात यहोवा मुझ से कहे उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूंगा सो मोआब् के हाकिम बिलाम् के यहां ठहर गये॥ ९। तब परमेश्वर ने बिलाम् के पास आकर पूछा कि तेरे यहां ये पुरुष कौन हैं॥ १०। बिलाम् ने परमेश्वर से कहा सिप्पोर् के पुत्र मोआब् के राजा बालाक् ने मेरे पास यह कहला भेजा है कि, ११। सुन जो दल मिस्र से निकल आया है उस से भूमि ढंप गई है सो आकर मेरे लिये उन्हें कोस क्या जाने मैं उन से लड़कर उन को बरबस निकाल सकूं॥ १२। परमेश्वर ने बिलाम् से कहा तू इन के संग मत जा उन लोगों को स्राप मत दे क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं॥ १३। भोर को बिलाम् ने उठकर बालाक् के हाकिमों से कहा अपने देश चले जाओ क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देता॥ १४। तब मोआबी हाकिम चल दिये और बालाक् के पास जाकर कहा बिलाम् ने हमारे साथ आने को नाह किया है॥ १५। इस पर बालाक् ने फिर और हाकिम भेजे जो पहिलों से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे॥ १६। उन्हों ने बिलाम् के पास आकर कहा सिप्पोर् का पुत्र बालाक् यों कहता है कि मेरे पास आने से

किसी कारण नाह न कर ॥ १७। क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा और जो कुछ तू मुझ से कहे सोई मैं करूंगा सो आ और उन लोगों को मेरे निमित्त कोस ॥ १८। बिलाम् ने बालाक् के कर्म्मचारियों को उत्तर दिया कि चाहे बालाक् अपने घर को सोने चांदी से भरके मुझे दे दे तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा के कहे से कुछ घट बढ़ न कर सकूंगा ॥ १९। सो अब तुम लोग आज रात को यहां टिके रहो और मैं जान लूं कि यहोवा मुझ से और क्या कहेगा ॥ २०। रात में परमेश्वर ने बिलाम् के पास आकर कहा वे पुरुष जो तुझे बुलाने आये हैं सो उठकर उन के संग जा पर जो बात मैं तुझ से कहूंगा उसी के अनुसार करना ॥ २१। तब बिलाम् भोर को उठ अपनी गदही पर काठी बांधकर मोआबी हाकिमों के संग चला ॥ २२। उस के चलने से परमेश्वर का कोप भड़क उठा और यहोवा का दूत उस का विरोध करने को मार्ग में खड़ा हुआ। वह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जा रहा था और उस के संग उस के दो सेवक थे ॥ २३। और गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा देख पड़ा तब गदही मार्ग से हटकर खेत में गई सो बिलाम् ने गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर चले ॥ २४। तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में जिस की दोनों ओर बारी की भीत थी खड़ा हुआ ॥ २५। यहोवा के दूत को देखकर गदही भीत से ऐसी सट गई कि बिलाम् का पांव भीत से दब गया सो उस ने उस को फिर मारा ॥ २६। तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकेत स्थान पर खड़ा हुआ जहां न तो दहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाईं ॥ २७। वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम् को लिये ही बैठ गई इस से बिलाम् का कोप भड़क उठा और उस ने गदही को लाठी मारी ॥ २८। तब यहोवा ने गदही का मुंह खोल दिया और वह बिलाम् से कहने लगी मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे तीन बार मारा ॥ २९। बिलाम् ने गदही से कहा यह कि तू ने मुझ से नटखटी किई सो यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता ॥ ३०। गदही ने बिलाम् से कहा क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज लों चढ़ता आया है क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी वह बोला नहीं ॥ ३१। तब यहोवा ने बिलाम् की आंखें खोलीं और उस को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा देख पड़ा तब वह झुक गया और मुंह के बल गिरके दण्डवत किई ॥ ३२। यहोवा के दूत ने उस से कहा तू ने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा सुन तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं इस लिये कि तू मेरे साम्हने उलटी चाल चलता है ॥ ३३। और यह गदही मुझे देखकर मेरे साम्हने से तीन बार हट गई जो वह मेरे साम्हने से हट न जाती तो निःसंदेह मैं अब लों तुझे तो मार डालता पर उस को जीती छोड़ देता ॥ ३४। तब बिलाम् ने यहोवा के दूत से कहा मैं ने पाप किया है मैं जानता न था कि तू मेरा साम्हना करने को मार्ग में खड़ा है सो यदि अब तुझे बुरा लगता हो तो मैं लौट जाऊंगा ॥ ३५। यहोवा के दूत ने बिलाम् से कहा इन पुरुषों के संग जा तौभी केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा सो बिलाम् बालाक् के हाकिमों के संग चला ॥ ३६। यह सुनकर कि बिलाम् आ गया बालाक् उस की अगुवानी करने को मोआब् के उस नगर लों जो उस देश के अर्नोन्वाले सिवाने पर है गया ॥ ३७। बालाक् ने बिलाम् से कहा क्या मैं ने तुझे यत्न से बुला न भेजा था फिर तू क्यों मेरे पास न आया था क्या मैं सचमुच तेरी प्रतिष्ठा नहीं कर सकता ॥ ३८। बिलाम् ने बालाक् से कहा देख मैं तेरे पास आया हूं पर अब क्या मुझे कुछ भी कहने की शक्ति है जो बात परमेश्वर मुझे सिखाएगा वही बात मैं कहूंगा ॥ ३९। तब बिलाम् बालाक् के संग संग चला और वे किर्यथूसोत् तक आये ॥ ४०। और बालाक् ने बैल और भेड़ बकरियों को बलि किया और बिलाम् और उस के साथ के हाकिमों के पास भेजा ॥ ४१। बिहान को बालाक् बिलाम्

को बाल् के ऊंचे स्थानों पर चढ़ा ले गया और वहां से उस को सब इस्राएली लोग देख पड़े॥

२३. १। तब बिलाम् ने बालाक् से कहा यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा और इसी स्थान पर सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर॥ २। तब बालाक् ने बिलाम् के कहने के अनुसार किया और बालाक् और बिलाम् ने मिलकर एक एक वेदी पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया॥ ३। फिर बिलाम् ने बालाक् से कहा तू अपने होमबलि के पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा क्या जानिये यहोवा मुझ से भेंट करने को आए और जो कुछ वह मुझे दिखाए सो मैं तुझ को बताऊंगा सो वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया॥ ४। और परमेश्वर बिलाम् से मिला और बिलाम् ने उस से कहा मैं ने सात वेदियां तैयार किईं और एक एक वेदी पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया है॥ ५। यहोवा ने बिलाम् को एक बात सिखाकर कहा बालाक् के पास लौटकर यों कहना॥ ६। सो वह उस के पास लौट गया और वह सारे मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा था॥ ७। तब बिलाम् अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा

बालाक् ने मुझे अराम् से अर्थात् मोआब् के राजा
ने मुझे पूरब के पहाड़ों से बुलवा भेजा।
आ मेरे लिये याकूब को स्राप दे
आ इस्राएल् को धमकी दे॥
८। पर जिन्हें ईश्वर ने नहीं कोसा उन्हें मैं
कैसे कोसूं
और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दिई उन्हें
मैं धमकी कैसे दूं॥
९। चटानों की चोटी पर से वे मुझे देख
पड़ते हैं
पहाड़ियों पर से मैं उन को देखता हूं
वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी रहेगी
और अन्यजातियों से अलग गिनी जाएगी॥
१०। याकूब के धूलि के किनके कौन गिन सके
वा इस्राएल् की चौथाई की गिनती कौन ले सके
मेरी मृत्यु धर्म्मियों की सी
और मेरा अन्त उन्हीं का सा हो॥

११। तब बालाक् ने बिलाम् से कहा तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तो तुझे अपने शत्रुओं के कोसने को बुलवाया था पर तू ने उन्हें आशीष ही आशीष दिई है॥ १२। उस ने कहा जो बात यहोवा मुझे सिखाए क्या मुझे सावधानी से उसी को बोलना न चाहिये॥ १३। बालाक् ने उस से कहा मेरे संग दूसरे स्थान पर चल जहां से वे तुझे देख पड़ेंगे तू उन सभों को तो नहीं केवल बाहरवालों को देख सकेगा वहां से उन्हें मेरे लिए कोसना॥ १४। सो वह उस को सोपीम् नाम मैदान में पिसगा के सिरे पर ले गया और वहां सात वेदियां बनवाकर एक एक पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया॥ १५। तब बिलाम् ने बालाक् से कहा अपने होमबलि के पास यहीं खड़ा रह और मैं उधर जाकर यहोवा से भेंट करूं॥ १६। और यहोवा ने बिलाम् से भेंट कर उस को एक बात सिखाकर कहा कि बालाक् के पास लौटकर यों कहना॥ १७। सो वह उस के पास गया और मोआबी हाकिमों समेत बालाक् अपने होमबलि के पास खड़ा था और बालाक् ने पूछा कि यहोवा ने क्या कहा है॥ १८। बिलाम् अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा

हे बालाक् मन लगाकर[1] सुन
हे सिप्पोर् के पुत्र मेरी बात पर कान लगा॥
१९। ईश्वर तो मनुष्य नहीं है कि झूठ बोले
और न वह आदमी है कि पछताए
क्या वह कहकर न करे
क्या वह वचन देकर पूरा न करे॥
२०। देख आशीर्वाद ही देने की मैं ने आज्ञा पाई
बरन वह आशीष दे चुका है और मैं उसे नहीं
पलट सकता॥
२१। उस ने याकूब में अनर्थ नहीं पाया
और न इस्राएल् में अन्याय देखा है
उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग है
और उस में राजा की सी ललकार होती है॥

---

(१) मूल में, उठकर।

२२ । उस को मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये
आता है
वह तो बनैले बैल का सा बल रखता है ॥
२३ । निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता
और न इस्राएल् पर भावी कहना
समय पर तो याकूब और इस्राएल् के विषय
यह कहा जाएगा
कि ईश्वर ने क्या ही काम किया है ॥

२४ । सुन वह दल सिंहिनी की नाईं उठेगा
और सिंह की नाईं खड़ा होगा
वह जब लों अहेर को न खाए
और मारे हुओं के लोहू को न पीए
तब लों फिर न लेटेगा ॥

२५ । तब बालाक् ने बिलाम् से कहा उन को न तो कोसना और न आशीष देना ॥ २६ । बिलाम् ने बालाक् से कहा क्या मैं ने तुझ से यह बात न कही थी कि जो कुछ यहोवा मुझ से कहे वही मुझे करना पड़ेगा ॥ २७ । बालाक् ने बिलाम् से कहा चल मैं तुझ को एक और स्थान पर ले चलता हूं क्या जानिये कि परमेश्वर की इच्छा हो कि तू वहां से उन्हें मेरे लिये कोसे ॥ २८ । सो बालाक् बिलाम् को पोर् के सिरे पर ले गया जो यशीमोन् देश की ओर झुका है ॥ २९ । और बिलाम् ने बालाक् से कहा यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा और यहां सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर ॥ ३० । बिलाम् के कहे के अनुसार करके बालाक् ने एक एक वेदी पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया ॥

२४. १ । यह देखकर कि यहोवा इस्राएल् को आशीष ही दिलाना चाहता है बिलाम् पहिले की नाईं शकुन देखने को न गया पर अपना मुंह जंगल की ओर किया ॥ २ । जब बिलाम् ने आंखें उठाईं तब इस्राएलियों को गोत्र गोत्र करके टिके हुए देखा और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा ॥ ३ । तब वह अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा कि
बोर् के पुत्र बिलाम् की यह वाणी है
जिस पुरुष की आंखें मून्दी थीं उसी की यह
वाणी है ॥
४ । ईश्वर के वचनों का सुननेहारा
जो गिरके खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है
उसी की यह वाणी है कि
५ । हे याकूब तेरे डेरे
और हे इस्राएल् तेरे निवासस्थान क्या ही मन-
भावने हैं ॥
६ । वे तो नालों की नाईं
और नदी के तीर पर की बारियों के समान
फैले हुए हैं
जैसे कि यहोवा के लगाये हुए अगर के वृक्ष
और जल के निकट के देवदारु ॥
७ । उस के डोलों से जल उमण्डा करेगा
और उस का बीज बहुतेरे जलभरे खेतों में पड़ेगा
और उस का राजा अगाग् से महान होगा
और उस का राज्य बढ़ता जाएगा ॥
८ । उस को मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये
आता है
वह तो बनैले बैल का सा बल रखता है
जाति जाति के लोग जो उस के द्रोही हैं उन
को वह खा जाएगा
और उन की हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा
और अपने तीरों से उन को बेधेगा ।
९ । वह दबका वह सिंह वा सिंहिनी की नाईं
लेट गया है
उस को कौन छेड़े
जो कोई तुझे आशीर्वाद दे सो आशीस पाए
और जो कोई तुझे साप दे सो सापित हो
१० । तब बालाक् का कोप बिलाम् पर भड़क उठा और उस ने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम् से कहा मैं ने तुझे अपने शत्रुओं के कोसने को बुलवाया पर तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है ॥ ११ । सो अब अपने स्थान पर भाग जा मैं ने कहा तो था तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा पर अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रक्खा है ॥

१२। बिलाम् ने बालाक् से कहा जो दूत तू ने मेरे पास भेजे थे क्या मैं ने उन से भी न कहा था कि, १३। चाहे बालाक् अपने घर को सोने चांदी से भरके मुझे दे तौभी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूं न बुरा जो यहोवा कहे वही मैं कहूंगा॥ १४। सो अब सुन मैं अपने लोगों के पास जाता तो हूं पर पहिले मैं तुझे चिता देता हूं कि अन्त के दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या क्या करेंगे॥ १५। फिर वह अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा कि

बोर् के पुत्र बिलाम् की यह वाणी है
जिस पुरुष की आंखें मून्दी थीं उसी की यह
वाणी है।
१६। ईश्वर के वचनों का सुननेहारा
और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेहारा
जो गिरके खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है
उसी की यह वाणी है कि
१७। मैं उस को देखूंगा तो सही पर अभी नहीं
मैं उस को निहारूंगा तो सही पर समीप
होके नहीं
याकूब में से एक तारा उदय होगा
और इस्राएल् में से एक दण्ड उठेगा
जो मोआब् की अलंगों को चूर कर देगा
और सब दंगैतों को गिरा देगा।
१८। तब एदोम् और सेईर् भी जो उस के शत्रु हैं
सो उस के वश में पड़ेंगे
और तब लों इस्राएल् वीरता दिखाता जाएगा।
१९। और याकूब में से एक प्रभुता करेगा
और नगर में से बचे हुओं को भी नाश करेगा॥
२०। फिर उस ने अमालेक् पर दृष्टि करके अपनी
गूढ़ बात उठाकर कहा
अमालेक् अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था
पर उस का अन्त विनाश ही होगा॥
२१। फिर उस ने केनियों पर दृष्टि करके अपनी
गूढ़ बात उठाकर कहा
तेरा निवासस्थान अति दृढ़ तो है
और तेरा बसेरा ढांग में तो है।
२२। तौभी केन उजड़ जाएगा
और अन्त में अश्शूर् तुझे बंधुआई में ले जाएगा॥
२३। फिर उस ने अपनी गूढ़ बात उठाकर कहा
हाय जब ईश्वर यह करेगा तब कौन जीता बचेगा॥
२४। बरन कित्तियों के पास से जहाजवाले आकर
अश्शूर् को और एबेर् को भी दुःख देंगे
और अन्त में उस का भी विनाश हो जाएगा॥

२५। तब बिलाम् चल दिया और अपने स्थान पर लौट गया और बालाक् ने भी अपना मार्ग लिया॥

(इस्राएलियों का वेश्यागमन और उस का दण्ड.)

२५. इस्राएली शित्तीम् में रहते थे और लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म्म करने लगे॥ २। और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया तब वे लोग खाकर उन के देवताओं को दण्डवत करने लगे॥ ३। सो इस्राएल् पोर्के बाल् देवता के संग मिल गया तब यहोवा का कोप इस्राएल् पर भड़का॥ ४। और यहोवा ने मूसा से कहा प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में लटका दे जिस से मेरा भड़का हुआ कोप इस्राएल् पर से दूर हो जाए॥ ५। सो मूसा ने इस्राएली न्यायियों से कहा तुम्हारे जो जो अधीन लोग पोर् के बाल् के संग मिल गये हैं उन्हें घात करो॥

६। और देखो एक इस्राएली पुरुष मूसा और मिलापवाले तंबू के द्वार के आगे रोते हुए इस्राएलियों की सारी मण्डली के देखते एक मिद्यानी स्त्री को अपने भाइयों के पास ले आया है॥ ७। इसे देखकर एलाजार् का पुत्र पीनहास् जो हारून याजक का पोता था उस ने मण्डली में से उठ हाथ में बरछी लिई, ८। और उस इस्राएली पुरुष के डेरे में जाने पर वह भी गया और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में बर्छी बेध दिई इस पर इस्राएलियों में जो मरी फैल गई थी सो थम गई॥ ९। और मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गये थे॥

१० । तब यहोवा ने मूसा से कहा, ११ । हारून याजक का पोता एलाजार् का पुत्र पीनहास् जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी उस ने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है कि मैं ने जलकर उन का अन्त नहीं कर डाला ॥ १२ । इस लिये कह कि मैं उस से शांति की वाचा बांधता हूं[१], १३ । और वह उस के लिये और उस के पीछे उस के वंश के लिये सदा के याजकपद की वाचा होगी क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी और उस ने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया ॥ १४ । जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया उस का नाम जिम्री था वह सालू का पुत्र और शिमोनियों में से अपने पितरों के घराने का प्रधान था ॥ १५ । और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई उस का नाम कोज़्बी था वह सूर् की बेटी थी जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था ॥

१६ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ । मिद्यानियों को सताना और उन्हें मारना ॥ १८ । क्योंकि पोर् के विषय और कोज़्बी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं। कोज़्बी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियों की जाति-बहिन थी और मरी के दिन में पोर् के मामले में मारी गई ॥

(इस्राएलियों की गिनती दूसरी बार लिये जाने का वर्णन)

२६. फिर यहोवा ने मूसा और एलाजार् नाम हारून याजक के पुत्र से कहा, २ । इस्राएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस बरस के वा उस से अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं उन के पितरों के घरानों के अनुसार उन सभों की गिनती करो ॥ ३ । सो मूसा और एलाजार् याजक ने यरीहो के पास यर्दन नदी के तीर पर मोआब् के अराबा में उन से समझाके कहा, ४ । बीस बरस के और उस से अधिक अवस्था के लोगों की गिनती लो। जैसे कि यहोवा ने मूसा और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दिई थी ॥

५ । रूबेन् जो इस्राएल् का जेठा था उस के ये पुत्र थे अर्थात् हनोक् जिस से हनोकियों का कुल पल्लू जिस से पल्लूइयों का कुल, ६ । हेस्रोन् जिस से हेस्रोनियों का कुल और कर्मी जिस से कर्मीयों का कुल चला ॥ ७ । रूबेन्वाले कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो तैंतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष ठहरे ॥ ८ । और पल्लू का पुत्र एलीआब् था ॥ ९ । और एलीआब् के पुत्र नमूएल् दातान् और अबीराम् थे ये वे ही दातान् और अबीराम् हैं जो सभासद थे और जिस समय कोरह् की मण्डली यहोवा से झगड़ी उस समय उस मंडली में मिलकर वे भी मूसा और हारून से झगड़े ॥ १० । और जब उन अढ़ाई सौ मनुष्यों के आग में भस्म हो जाने से वह मंडली मिट गई उसी समय पृथिवी ने मुंह खोलकर कोरह् समेत इन को भी निगल लिया सो वे एक दृष्टान्त ठहर गये ॥ ११ । पर कोरह् के पुत्र तो न मरे थे ॥

१२ । शिमोन् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् नमूएल् जिस से नमूएलियों का कुल यामीन् जिस से यामीनियों का कुल याकीन् जिस से याकीनियों का कुल, १३ । जेरह् जिस से जेरहियों का कुल और शाऊल् जिस से शाऊलियों का कुल चला ॥ १४ । शिमोन्वाले कुल ये ही थे इन में से बाईस हजार दो सौ गिने गये ॥

१५ । गाद् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् सपोन् जिस से सपोनियों का कुल हाग्गी जिस से हाग्गीयों का कुल शूनी जिस से शूनीयों का कुल, १६ । ओज़्नी जिस से ओज़्नीयों का कुल एरी जिस से एरीयों का कुल, १७ । अरोद् जिस से अरोदियों का कुल और अरेली जिस से अरेलीयों का कुल चला ॥ १८ । गाद् के वंश के

(१) मूल में मैं उसे अपनी शांतिवाली वाचा देता हूं।

कुल ये ही थे इन में से साढ़े चालीस हजार पुरुष गिने गये ॥

१९ । यहूदा के एर् और ओनान् नाम पुत्र तो हुए पर वे कनान् देश में मर गये ॥ २० । सो यहूदा के जिन पुत्रों से उन के कुल निकले वे ये थे अर्थात् शेला जिस से शेलियों का कुल पेरेस् जिस से पेरेसियों का कुल और जेरह् जिस से जेरहियों का कुल चला ॥ २१ । और पेरेस् के पुत्र ये थे अर्थात् हेसोन् जिस से हेसोनियों का कुल और हामूल् जिस से हामूलियों का कुल चला ॥ २२ । यहूदियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े छिहत्तर हजार पुरुष गिने गये ॥

२३ । इस्साकार् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् तोला जिस से तोलियों का कुल पुव्वा जिस से पुव्वियों का कुल, २४ । याशूब् जिस से याशूबियों का कुल और शिम्रोन् जिस से शिम्रोनियों का कुल चला ॥ २५ । इस्साकारियों के कुल ये ही थे इन में से चौसठ हजार तीन सौ पुरुष गिने गये ॥

२६ । जबूलून् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् सेरेद् जिस से सेरेदियों का कुल एलोन् जिस से एलोनियों का कुल और यहलेल् जिस से यहलेलियों का कुल चला ॥ २७ । जबूलूनियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े साठ हजार पुरुष गिने गये ॥

२८ । यूसुफ के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो मनश्शे और एप्रैम् थे ॥ २९ । मनश्शे के पुत्र ये थे अर्थात् माकीर् जिस से माकीरियों का कुल चला और माकीर् से गिलाद् भी जन्मा और गिलाद् से गिलादियों का कुल चला ॥ ३० । गिलाद् के तो पुत्र ये थे अर्थात् ईएजेर् जिस से ईएजेरियों का कुल हेलेक् जिस से हेलेकियों का कुल, ३१ । असीएल् जिस से असीएलियों का कुल शेकेम् जिस से शेकेमियों का कुल, ३२ । शमीदा जिस से शमीदियों का कुल और हेपेर् जिस से हेपेरियों का कुल चला ॥ ३३ । और हेपेर् के पुत्र सलोफाद् के बेटे नहीं केवल बेटियां हुईं इन बेटियों के नाम महला नोआ होग्ला मिल्का और तिर्सा हैं ॥ ३४ । मनश्शेवाले कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो बावन हजार सात सौ पुरुष ठहरे ॥

३५ । एप्रैम् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् शूतेलह् जिस से शूतेलहियों का कुल बेकेर् जिस से बेकेरियों का कुल और तहन् जिस से तहनियों का कुल चला ॥ ३६ । और शूतेलह् के यह पुत्र हुआ अर्थात् एरान् जिस से एरानियों का कुल चला ॥ ३७ । एप्रैमियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े बत्तीस हजार पुरुष गिने गये । अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे ॥

३८ । बिन्यामीन् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् बेला जिस से बेलियों का कुल अश्बेल् जिस से अश्बेलियों का कुल अहीराम् जिस से अहीरामियों का कुल, ३९ । शूपाम् जिस से शूपामियों का कुल और हूपाम् जिस से हूपामियों का कुल चला ॥ ४० । और बेला के पुत्र अर्द और नामान् थे सो अर्द से तो अर्दियों का कुल और नामान् से नामानियों का कुल चला ॥ ४१ । अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो पैंतालीस हजार छः सौ पुरुष ठहरे ॥

४२ । दान् के पुत्र जिस से उन का कुल निकला ये थे अर्थात् शूहाम् जिस से शूहामियों का कुल चला दान्वाला कुल यही था ॥ ४३ । शूहामियों में से जो गिने गये उन के कुल में चौंसठ हजार चार सौ पुरुष ठहरे ॥

४४ । आशेर् के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् यिम्ना जिस से यिम्नियों का कुल यिश्वी जिस से यिश्वीयों का कुल और बरीआ जिस से बरीइयों का कुल चला ॥ ४५ । फिर बरीआ के ये पुत्र हुए अर्थात् हेबेर् जिस से हेबेरियों का कुल और मल्कीएल् जिस से मल्कीएलियों का कुल चला ॥ ४६ । और आशेर् की बेटी का नाम सेरह् है ॥ ४७ । आशेरियों के कुल ये ही थे इन में से तिर्पन हजार चार सौ पुरुष गिने गये ॥

४८ । नप्ताली के पुत्र जिन से उन के कुल निकले

सो ये थे अर्थात् यह्सेल् जिस से यह्सेलियों का कुल गूनी जिस से गूनीयों का कुल, ४९ । येसेर् जिस से येसेरियों का कुल और शिल्लेम् जिस से शिल्लेमियों का कुल चला ॥ ५० । अपने कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो पैंतालीस हजार चार सौ पुरुष ॥

५१ । सब इस्राएलियो में से जो गिने गये थे सो ये ही थे अर्थात् छः लाख एक हजार सात सौ तीस पुरुष ठहरे ॥

५२ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ५३ । इन्हीं के बीच इन की गिनती के अनुसार देश बंटकर इन का भाग हो जाए ॥ ५४ । अर्थात् अधिकवालों को अधिक भाग और कमवालों को कम भाग देना एक एक गोत्र को उस का भाग उस के गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए ॥ ५५ । तौभी देश चिट्ठी डालकर बांटा जाए इस्राएलियो के पितरों के एक एक गोत्र का नाम जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाएं ॥ ५६ । चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो जो जो भाग बंट जाएं सो चिट्ठी डालकर बांटे जाएं ॥

५७ । फिर लेवीयों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गये सो ये हैं अर्थात् गेर्शोनियों से निकला हुआ गेर्शोनियों का कुल कहात् से निकला हुआ कहातियों का कुल और मरारी से निकला हुआ मरारीयों का कुल ॥ ५८ । लेवीयों के कुल ये हैं अर्थात् लिब्नीयों का हेब्रोनियों का मह्लीयों का मूशीयों का और कोरहियो का कुल और कहात् से अम्राम् जन्मा ॥ ५९ । और अम्राम् की स्त्री का नाम योकेबेद् है वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में जन्मी थी और वह अम्राम् के जन्माये हारून और मूसा और उन की बहिन मरियम को भी जनी ॥ ६० । और हारून के नादाब् अबीहू एलाजार् और ईतामार् जन्मे ॥ ६१ । नादाब् और अबीहू तो उस समय मर गये थे जब वे यहोवा के साम्हने उपरी आग ले गये थे ॥ ६२ । सब लेवीयों में से जो गिने गये अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के वा उस से अधिक अवस्था के थे सो तेईस हजार थे वे इस्राएलियों के बीच इस लिये न गिने गये कि उन को उन के बीच देश का कोई भाग न दिया गया ॥

६३ । मूसा और एलाजार् याजक जिन्हों ने मोआब् के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर इस्राएलियों को गिन लिया उन के गिने हुए लोग इतने ही ठहरे ॥ ६४ । पर जिन इस्राएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था उन में से एक भी पुरुष इस समय के गिने हुओं में न रहा ॥ ६५ । क्योंकि यहोवा ने उन के विषय कहा था कि वे निश्चय जंगल में मर जाएंगे । सो यपुन्ने के पुत्र कालेब् और नून् के पुत्र यहोशू को छोड़ उन में से एक पुरुष भी बचा न रहा ॥

(सलोफाद् की बेटियो की विनती)

२७. तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद् जो हेपेर् का पुत्र गिलाद् का पोता और मनश्शे के पुत्र माकीर् का परपोता था उस की बेटियां जिन के नाम मह्ला नोआ होग्ला मिल्का और तिर्सा हैं सो पास आईं ॥ २ । और वे मूसा और एलाजार् याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के साम्हने मिलापवाले तंबू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं, ३ । हमारा पिता जंगल में मर गया पर वह उस मण्डली में का न था जो कोरह् की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध एकट्ठी हुई थी वह अपने ही पाप के कारण मरा और उस के कोई पुत्र न हुआ ॥ ४ । सो हमारे पिता का नाम उस के कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए हमारे चचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे ॥ ५ । उन की यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाई ॥ ६ । यहोवा ने मूसा से कहा, ७ । सलोफाद् की बेटियां ठीक कहती हैं सो तू उन के चचाओं के बीच उन को भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे अर्थात् उन के पिता का भाग उन के हाथ सौंप दे ॥ ८ । और इस्राएलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र मरे तो उस का भाग उस की बेटी के हाथ सौंपना ॥

९। और यदि उस के कोई बेटी भी न हो तो उस का भाग उस के भाइयों को देना ॥ १०। और यदि उस के भाई भी न हों तो उस का भाग उस के चचाओं को देना ॥ ११। और यदि उस के चचा भी न हों तो उस के कुल में से उस का जो कुटुम्बी सब से समीप हो उस को उस का भाग देना कि वह उस का अधिकारी हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरे जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई ॥

(यहोशू के मूसा के स्थान पर ठहराये जाने का वर्णन)

१२। फिर यहोवा ने मूसा से कहा इस अबारीम् नाम पर्वत पर चढ़के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है ॥ १३। और जब तू उस को देख लेगा तब अपने भाई हारून की नाईं तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा, १४। क्योंकि सीन् नाम जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया और मुझे सोते के पास उन की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया। (यह मरीबा नाम सोता है जो सीन् नाम जंगल में के कादेश् में है)॥ १५। मूसा ने यहोवा से कहा, १६। यहोवा जो सारे प्राणियों के आत्माओं का परमेश्वर है सो इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को ठहरा दे, १७। जो उन के साम्हने आया जाया करे और उन का निकालने पैठानेहारा हो जिस से यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़ बकरियों के समान न हो ॥ १८। यहोवा ने मूसा से कहा तू नून् के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ टेक वह तो ऐसा पुरुष है जिस में मेरा आत्मा बसा है ॥ १९। और उस को एलाजार् याजक के और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके उन के साम्हने उसे आज्ञा दे ॥ २०। और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे इस लिये कि इस्राएलियों की सारी मण्डली उस की माना करे ॥ २१। और वह एलाजार् याजक के साम्हने खड़ा हुआ करे और एलाजार् उस के लिये यहोवा से ऊरीम् नाम न्याय के द्वारा पूछा करे और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उस के कहे से जाया करे और उसी के कहे से लौट आया भी करे ॥ २२। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को ले एलाजार् याजक और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके, २३। उस पर हाथ टेके और उस को आज्ञा दिई जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था ॥

(नियत नियत समयों के विशेष विशेष बलिदान)

२८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। इस्राएलियों को यह आज्ञा सुना कि मेरा चढ़ावा अर्थात् मुझे सुखदायक सुगंध देनेहारा मेरा हव्यरूपी भोजन तुम लोग मेरे लिये उस के नियत समयों पर चढ़ाने को स्मरण रखना ॥ ३। और तू उन से कह कि जो जो तुम्हें यहोवा के लिये चढ़ाना होगा सो ये हैं अर्थात् नित्य होमबलि के लिये दिन दिन एक एक बरस के दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे ॥ ४। एक बच्चे को भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाना ॥ ५। और भेड़ के बच्चे पीछे एक चौथाई हीन् कूटके निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना ॥ ६। यह नित्य होमबलि है जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगंधवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया ॥ ७। और उस का अर्घ एक एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन् हो मदिरा का यह अर्घ यहोवा के लिये पवित्रस्थान में देना ॥ ८। और दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना अन्नबलि और अर्घ समेत भोर के होमबलि की नाईं उसे यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना ॥

९। फिर विश्रामदिन को बरस बरस दिन के दो निर्दोष भेड़ के बच्चे और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अर्घ समेत चढ़ाना ॥ १०। नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक एक एक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा है ॥

११। फिर अपने एक एक महीने के आदि में यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना अर्थात् दो बछड़े एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे ॥ १२। और बछड़े पीछे तेल से सना हुआ एपा का

तीन दसवां अंश मैदा और उस एक मेढ़े के साथ तेल से सना एपा का दो दसवां अंश मैदा, १३। और भेड़ के बच्चे पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा उन सभों को अन्नबलि करके चढ़ाना वह सुखदायक सुगंध देनेहारा होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा॥ १४। और उन के साथ ये अर्घ हों अर्थात् बछड़े पीछे आध हीन् मेढ़े के साथ तिहाई हीन् और भेड़ के बच्चे पीछे चौथाई हीन् दाखमधु दिया जाए बरस के सब महीनों में से एक एक महीने का यही होमबलि ठहरे॥ १५। और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाए यह नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक चढ़ाया जाए॥

१६। फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे॥ १७। और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्व लगा करे सात दिन लों अखमीरी रोटी खाई जाए॥ १८। पहिले दिन पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए॥ १९। उस में तुम यहोवा के लिये एक हव्य अर्थात् होमबलि चढ़ाना सो दो बछड़े एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे हों ये सब निर्दोष हों॥ २०। और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश मैदा हो॥ २१। और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश चढ़ाना॥ २२। और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो॥ २३। भोर का होमबलि जो नित्य होमबलि ठहरा है उस से अधिक इन को चढ़ाना॥ २४। इस रीति से तुम उन सातों दिनों में भी हव्यवाला भोजन चढ़ाना जो यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हो यह नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक चढ़ाया जाए॥ २५। और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना॥

२६। फिर पहिली उपज के दिन में जब तुम अपने अठवारे नाम पर्व में यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे तब भी तुम्हारी पवित्र सभा हो और परिश्रम का कोई काम न करना॥ २७। और एक होमबलि चढ़ाना जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो अर्थात् दो बछड़े एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे॥ २८। और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश और मेढ़े के संग एपा का दो दसवां अंश, २९। और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना॥ ३०। और एक बकरा भी चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो॥ ३१। ये सब निर्दोष हों और नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक इस को भी चढ़ाना॥

२९. फिर सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो परिश्रम का कोई काम न करना वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूंकने का दिन ठहरा है॥ २। तुम होमबलि चढ़ाना जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो अर्थात् एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे॥ ३। और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां अंश और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश, ४। और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना॥ ५। और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो॥ ६। इन सभों से अधिक नये चांद का होमबलि और उस का अन्नबलि और नित्य होमबलि और उस का अन्नबलि और उन सभों के अर्घ भी अपने अपने नियम के अनुसार सुखदायक सुगंध देनेहारा यहोवा का हव्य करके चढ़ाना॥

७। फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और किसी प्रकार का कामकाज न करना॥ ८। और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध देने को

होमबलि अर्थात् एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे चढ़ाना ये सब निर्दोष हों ॥ ९ । और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां अंश मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश, १० । और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना ॥ ११ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि से और उन सभों के अर्घों से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

१२ । फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस में परिश्रम का कोई काम न करना और सात दिन लों यहोवा के लिये पर्व मानना ॥ १३ । तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना अर्थात् तेरह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह भेड़ के बच्चे ये सब निर्दोष हों ॥ १४ । और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक एक बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश दोनों मेढ़ों में से एक एक मेढ़े पीछे एपा का दो दसवां अंश, १५ । और चौदहों भेड़ के बच्चों में से बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा, १६ । और पापबलि के लिये एक बकरा चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

१७ । दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ १८ । और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ १९ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

२० । तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड के बच्चे चढ़ाना ॥ २१ । और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ २२ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

२३ । चौथे दिन दस बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ २४ । बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ २५ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

२६ । पांचवें दिन नौ बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ २७ । और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ २८ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

२९ । छठवें दिन आठ बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ ३० । और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ ३१ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

३२ । सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना ॥ ३३ । और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ ३४ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

३५ । आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा

हो उस में परिश्रम का कोई काम न करना ॥ ३६ । और उस में होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना वह एक बछड़े एक मेढ़े और बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चों का हो ॥ ३७ । बछड़े मेढ़े और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना ॥ ३८ । और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं ॥

३९ । अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों से अधिक अपने अपने नियत समयों में ये ही होमबलि अन्नबलि अर्घ और मेलबलि यहोवा के लिये चढ़ाना ॥ ४० । यह सारी आज्ञा जो यहोवा ने मूसा को दिई सो उस ने इस्राएलियों को सुनाई ॥

(मन्नत मानने की विधि)

३०. फिर मूसा ने इस्राएली गोत्रों के मुख्य मुख्य पुरुषों से कहा यहोवा ने यह आज्ञा दिई है कि, २ । जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने वा अपने आप को वाचा से बांधने के लिये किरिया खाए तो वह अपना वचन न टाले जो कुछ उस के मुंह से निकला हो उस के अनुसार वह करे ॥ ३ । और जब कोई स्त्री अपनी कुंवार अवस्था में अपने पिता के घर रहते यहोवा की मन्नत माने वा अपने को वाचा से बांधे, ४ । तो यदि उस का पिता उस की मन्नत वा उस का वह वचन सुनकर जिस से उस ने अपने आप को बांधा हो उस से कुछ न कहे तब तो उस की सब मन्नतें स्थिर बनी रहें और कोई बंधन क्यों न हो जिस से उस ने अपने आप को बांधा हो वह भी स्थिर रहे ॥ ५ । पर यदि उस का पिता उस की सुनके उसी दिन उस को बरजे तो उस की मन्नतें वा और प्रकार के बंधन जिन से उस ने अपने आप को बांधा हो उन में से एक भी स्थिर न रहे और यहोवा यह जानकर कि उस स्त्री के पिता ने उसे बरज दिया है उस का यह पाप क्षमा करेगा ॥ ६ । फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्नत माने वा बिना सोच विचार किये ऐसा कुछ कहे जिस से वह बंधन में पड़े ॥ ७ । और यदि उस का पति सुनकर उस दिन उस से कुछ न कहे तब तो उस की मन्नतें स्थिर रहें और जिन बन्धनों से उस ने अपने आप को बांधा हो सो स्थिर रहें ॥ ८ । पर यदि उस का पति सुनकर उसी दिन उसे बरज दे तो जो मन्नत उस ने मानी और जो बात बिना सोच विचार किये कहने से उस ने अपने आप को वाचा से बांधा हो सो टूट जाएगी और यहोवा उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा ॥ ९ । फिर विधवा वा त्यागी हुई स्त्री की मन्नत वा किसी प्रकार की वाचा का बंधन क्यों न हो जिस से उस ने अपने आप को बांधा हो सो स्थिर ही रहे ॥ १० । फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत माने वा किरिया खाकर अपने आप को बांधे, ११ । और उस का पति सुनकर कुछ न कहे और न उसे बरज दे तब तो उस की सब मन्नतें स्थिर बनी रहें और हर एक बंधन क्यों न हो जिस से उस ने अपने आप को बांधा हो सो स्थिर रहे ॥ १२ । पर यदि उस का पति उस की मन्नत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे तो उस की मन्नतें आदि जो कुछ उस के मुंह से अपने बन्धन के विषय निकला हो उस में से एक बात भी स्थिर न रहे उस के पति ने सब तोड़ दिया है सो यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा ॥ १३ । कोई भी मन्नत वा किरिया क्यों न हो जिस से उस स्त्री ने अपने जीव को दुःख देने की वाचा बांधी हो उस को उस का पति चाहे तो दृढ़ करे और चाहे तो तोड़े ॥ १४ । अर्थात् यदि उस का पति दिन दिन उस से कुछ भी न कहे तो वह उस की सब मन्नत आदि बंधनों को जिन से वह बंधी हो दृढ़ कर देता है उस ने उन को दृढ़ किया है क्योंकि सुनने के दिन उस ने कुछ नहीं कहा ॥ १५ । और यदि वह उन्हें सुनकर पीछे तोड़ दे तो अपनी स्त्री के अधर्म्म का भार वही उठाएगा ॥ १६ । पति पत्नी के बीच और

पिता और उस के घर में रहती हुई कुंआरी बेटी के बीच जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई से ये ही हैं ॥

(मिद्यानियों से पलटा लेने का वर्णन)

३१. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २। मिद्यानियों से इस्राएलियों का पलटा ले पीछे तू अपने लोगों में जा मिलेगा ॥ ३। सो मूसा ने लोगों से कहा अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार बंधाओ कि वे मिद्यानियों पर चढ़के उन से यहोवा का पलटा लें ॥ ४। इस्राएल् के सब गोत्रों में से एक एक गोत्र के एक एक हजार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो ॥ ५। सो इस्राएल् के सब हजारों में से एक एक गोत्र के एक एक हजार पुरुष चुने गये अर्थात् युद्ध के लिये हथियारबंद बारह हजार पुरुष ॥ ६। एक एक गोत्र में से उन हजार हजार पुरुषों को और एलाजार् याजक के पुत्र पिनहास् को मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा और उस के हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो सांस बांध बांधकर फूंकी जाती थीं ॥ ७। और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी उस के अनुसार उन्हों ने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया ॥ ८। और दूसरे जूझे हुओं को छोड़ उन्हों ने एवी रेकेम् सूर् हूर् और रेबा नाम मिद्यान् के पांचों राजाओं को घात किया और बोर् के पुत्र बिलाम् को भी उन्हों ने तलवार से घात किया ॥ ९। और इस्राएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बालबच्चों समेत बंधुई कर लिया और उन के गाय बैल भेड़ बकरी और उन की सारी संपत्ति को लूट लिया, १०। और उन के निवास के सब नगरों और सब छावनियों को फूंक दिया ॥ ११। तब वे क्या मनुष्य क्या पशु सब बन्धुओं और सारी लूट पाट को लेकर, १२। यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर मोआब् के अराबा में छावनी के निकट मूसा और एलाजार् याजक और इस्राएलियों की मंडली के पास आये ॥

१३। तब मूसा और एलाजार् याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उन की अगुवानी करने को निकले ॥ १४। और मूसा सहस्रपति शतपति आदि सेनापतियों से जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर, १५। कहने लगा क्या तुम ने सब स्त्रियों को जीती छोड़ दिया ॥ १६। देखो बिलाम् की सम्मति से पोर् के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं ने कराया और यहोवा की मण्डली में मरी फैली ॥ १७। सो अब बालबच्चों में से हर एक लड़के को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन सभों को घात करो ॥ १८। पर जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुंह न देखा हो उन सभों को तुम अपने लिये जीती रखो ॥ १९। और तुम लोग सात दिन लों छावनी के बाहर रहो और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया और जितनों ने किसी मरे हुए को छुआ हो सो सब अपने अपने बंधुओं समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें ॥ २०। और सब वस्त्रों और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो ॥ २१। तब एलाजार् याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गये थे कहा व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई है सो यह है कि, २२। सोना चांदी पीतल लोहा रांगा और सीसा, २३। जो कुछ आग में ठहर सके उस को आग में डालो तब वह शुद्ध ठहरेगा तौभी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए पर जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में बोरो ॥ २४। और सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोना तब तुम शुद्ध ठहरोगे और पीछे छावनी में आना ॥

२५। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २६। एलाजार् याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर ॥ २७। तब उन को आधा आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को

सो युद्ध करने को गये थे और दूसरा भाग मण्डली को दे ॥ २८ । फिर जो सिपाही युद्ध करने को गये थे उन के आधे में से यहोवा के लिये क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरियां पांच सौ पीछे एक को कर मानकर ले ले, २९ । और यहोवा की भेंट करके एलाजार् याजक को दे दे ॥ ३० । फिर इस्राएलियों के आधे में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरियां क्या किसी प्रकार का पशु पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेहारे लेवीयों को दे ॥ ३१ । यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दिई मूसा और एलाजार् याजक ने किया ॥ ३२ । और जो वस्तुएं सेना के पुरुषों ने अपने अपने लिये लूट लिई थीं उन से अधिक की लूट यह थी अर्थात् छः लाख पचहत्तर हजार भेड़ बकरी, ३३ । बहत्तर हजार गाय बैल, ३४ । इकसठ हजार गदहे, ३५ । और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुंह न देखा था सो सब बत्तीस हजार थीं ॥ ३६ । और इस का आधा अर्थात् उन का भाग जो युद्ध करने को गये थे उस में भेड़ बकरियां तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार, ३७ । जिन में से पौने सात सौ भेड़ बकरियां यहोवा का कर ठहरीं, ३८ । और गाय बैल छत्तीस हजार जिन में से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे, ३९ । और गदहे साढ़े तीस हजार जिन में से इकसठ यहोवा का कर ठहरे, ४० । और मनुष्य सोलह हजार जिन में से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे ॥ ४१ । इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलाजार् याजक को दिया ॥ ४२ । और इस्राएलियों की मण्डली का आधा तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार भेड़ बकरियां, ४३ । छत्तीस हजार गाय बैल, ४४ । साढ़े तीस हजार गदहे, ४५ । और सोलह हजार मनुष्य हुआ ॥ ४६ । सो इस आधे में से जिसे मूसा ने युद्ध करनेहारे पुरुषों के पास से अलग किया था यहोवा की आज्ञा के अनुसार, ४७ । मूसा ने क्या मनुष्य क्या पशु पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेहारे लेवीयों को दिया ॥ ४८ । तब सहस्रपति शतपति आदि जो सरदार सेना के हजारों के ऊपर ठहरे थे सो मूसा के पास आकर, ४९ । कहने लगे जो सिपाही हमारे अधीन थे उन की तेरे दासों ने गिनती लिई और उन में से एक भी नहीं घटा ॥ ५० । सो पायजेब कड़े मुंदरियां बालियां बाजूबन्द सोने के जो गहने जिस ने पाया है उन को हम यहोवा के साम्हने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आये हैं ॥ ५१ । तब मूसा और एलाजार् याजक ने उन से वे सब सोने के नक्काशीदार गहने ले लिये ॥ ५२ । और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेंट का सोना यहोवा की भेंट करके दिया सो सब का सब सोलह हजार साढ़े सात सौ शेकेल् का था ॥ ५३ । योद्धाओं ने तो अपने अपने लिये लूट लिई थी ॥ ५४ । यह सोना मूसा और एलाजार् याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलापवाले तंबू में पहुंचा दिया कि इस्राएलियों के लिये यहोवा के साम्हने स्मरण दिलानेहारी वस्तु ठहरे ॥

(अढ़ाई गोत्र के इस्राएलियों को यर्दन के इसी पार भाग मिलने का वर्णन)

३२. रूबेनियों और गादियों के पास बहुत ही ढोर थे सो जब उन्हों ने याजेर् और गिलाद् देशों को देखकर विचारा कि यह ढोरों के योग्य देश है, २ । तब मूसा और एलाजार् याजक और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे, ३ । अतारोत् दीबोन् याजेर् निम्रा हेश्बोन् एलाले सबाम् नबो और बोन् नगरों का देश, ४ । जिस को यहोवा ने इस्राएल् की मण्डली से जितवाया है सो ढोरों के योग्य है और तेरे दासों के पास ढोर हैं ॥ ५ । फिर उन्हों ने कहा यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उन की निज भूमि हो हमें यर्दन पार न ले चल ॥ ६ । मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएंगे तब क्या तुम यहीं बैठे रहोगे ॥

७। और इस्राएलियों से भी उस पार के देश जाने के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया है तुम क्यों नाह कराते हो॥ ८। जब मैं ने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान् देश देखने के लिये भेजा तब उन्हों ने भी ऐसा ही किया था॥ ९। अर्थात् जब उन्हों ने एश्कोल् नाम नाले लों पहुंचकर देश को देखा तब इस्राएलियों से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया था नाह करा दिया॥ १०। सो उस समय यहोवा ने कोप करके यह किरिया खाई कि, ११। निःसन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आये हैं उन में से जितने बीस बरस के वा उस से अधिक अवस्था के हैं सो उस देश को देखने न पाएंगे जिस के देने की किरिया मैं ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब से खाई है क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये॥ १२। पर यपुन्ने कनजी का पुत्र कालेब् और नून् का पुत्र यहोशू ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये तो उसे देखने पाएंगे॥ १३। सो यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का और जब लों उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ जिन्हों ने यहोवा के लेखे बुरा किया था तब लों अर्थात् चालीस बरस लों वह उन्हें जंगल मे मारे मारे फिराता रहा॥ १४। और सुनो तुम लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसी लिये अपने बापदादों के स्थान पर प्रगट हुए हो कि इस्राएल् के विरुद्ध यहोवा के भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ॥ १५। यदि तुम उस के पीछे चलने से फिर जाओ तो वह फिर हम सभों को जंगल में छोड़ देगा सो तुम इन सारे लोगों का नाश कराओगे॥ १६। तब उन्हों ने मूसा के और निकट आकर कहा हम अपने ढोरों के लिये यहीं सारे बनाएंगे और अपने बालबच्चों के लिये यहीं नगर बसाएंगे॥ १७। पर हम आप इस्राएलियों के आगे आगे हथियारबन्द तब लों चलेंगे जब लों उन को उन के स्थान में न पहुंचा दें पर हमारे बालबच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों में रहेंगे॥ १८। पर जब लों इस्राएली अपने अपने भाग के अधिकारी न हों तब लों हम अपने घरों को न लौटेंगे॥ १९। हम उन के साथ यर्दन पार वा कहीं आगे अपना भाग न लेंगे क्योंकि हमारा भाग यर्दन के इसी पार पूरब ओर मिला है॥ २०। तब मूसा ने उन से कहा यदि तुम ऐसा करो अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध करने को हथियार बांधो, २१। और हर एक हथियारबन्द यर्दन के पार तब लों चले जब लों यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को न निकाले, २२। और देश यहोवा के वश में न आए तो उस के पीछे तुम यहां लौटोगे और यहोवा के और इस्राएल् के विषय निर्दोष ठहरोगे और यह देश यहोवा के लेखे में तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा॥ २३। और यदि तुम ऐसा न करो तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे और जान रक्खो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा॥ २४। सो अपने बालबच्चों के लिये नगर बसाओ और अपनी भेड़ बकरियों के लिये भेड़साले बनाओ और जो तुम्हारे मुंह से निकला है सोई करो॥ २५। तब गादियों और रूबेनियों ने मूसा से कहा अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे॥ २६। हमारे बालबच्चे स्त्रियां भेड़ बकरी आदि सब पशु तो यहीं गिलाद् के नगरों में रहेंगे॥ २७। पर अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार बंध यहोवा के आगे आगे लड़ने को पार जाएंगे॥ २८। तब मूसा ने उन के विषय में एलाजार् याजक और नून् के पुत्र यहोशू और इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को यह आज्ञा दिई कि, २९। यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युद्ध के लिये हथियारबंध तुम्हारे संग यर्दन पार जाएं और देश तुम्हारे वश में आ जाए तो गिलाद् देश उन की निज भूमि होने को उन्हें देना॥ ३०। पर यदि वे तुम्हारे संग हथियारबंध पार न जाएं तो उन की निज भूमि तुम्हारे बीच कनान् देश में ठहरे॥ ३१। तब गादी और रूबेनी बोल उठे यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम करेंगे॥ ३२। हम हथियारबंध यहोवा के आगे आगे उस पार कनान् देश में जाएंगे पर हमारी निज भूमि यर्दन के इसी पार ठहरे॥

३३। तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन् और बाशान् के राजा ओग् दोनों के राज्यों का देश नगरों और उन के आसपास की भूमि समेत दिया ॥ ३४। तब गादियों ने दीबोन् अतारोत् अरोएर्, ३५। अत्रोत्शोपान् याजेर् योग्बहा, ३६। बेत्निम्रा और बेथारान् नाम नगरों को दृढ़ किया और उन में भेड़ बकरियों के लिये भेड़सालें बनाईं ॥ ३७। और रूबेनियों ने हेश्बोन् एलाले और किर्यातैम् को, ३८। फिर नबो और बाल्मोन् के नाम बदलकर उन को और सिब्मा को दृढ़ किया। और उन्हों ने अपने दृढ़ किये हुए नगरों के और और नाम रक्खे ॥ ३९। और मनश्शे के पुत्र माकीर् के वंशवालों ने गिलाद् देश में जाकर उसे ले लिया और जो एमोरी उस में रहते थे उन को निकाल दिया ॥ ४०। तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर् के वंश को गिलाद् दे दिया सो वे उस में रहने लगे ॥ ४१। और मनश्शेई याईर् ने जाकर गिलाद् की कितनी बस्तियां ले लिईं और उन के नाम हव्वोत्याईर्[1] रक्खे ॥ ४२। और नोबह् ने जाकर गांवों समेत कनात् को ले लिया और उस का नाम अपने नाम पर नोबह् रक्खा ॥

(इस्राएलियों के पड़ाव पड़ाव की नामावली.)

३३. जब से इस्राएली मूसा और हारून की अगुवाई से[2] दल बांधकर मिस्र देश से निकले तब से उन के ये पड़ाव हुए ॥ २। मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन के कूच उन के पड़ावों के अनुसार लिख दिये और वे ये हैं ॥ ३। पहिले महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्हों ने रामसेस् से कूच किया। फसह् के दूसरे दिन इस्राएली सब मिस्रियों के देखते बेखटके[3] निकल गये, ४। जब कि मिस्री अपने सब पहिलौठों को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था और उस ने उन के देवताओं को भी दण्ड दिया था ॥ ५। इस्राएलियों ने रामसेस् से कूच करके सुक्कोत् में डेरे डाले, ६। और सुक्कोत् से कूच करके एताम् में जो जंगल की छोर पर है डेरे डाले ॥ ७। और एताम् से कूच करके वे पीहहीरोत् को मुड़ गये जो बालसपोन् के साम्हने है और मिग्दोल् के साम्हने डेरे खड़े किये ॥ ८। तब वे पीहहीरोत् के साम्हने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गये और एताम् नाम जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले ॥ ९। फिर मारा से कूच करके वे एलीम् को गये और एलीम् में जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले और उन्हों ने वहां डेरे खड़े किये ॥ १०। तब उन्हों ने एलीम् से कूच करके लाल समुद्र के तीर पर डेरे खड़े किये, ११। और लाल समुद्र से कूच करके सीन् नाम जंगल में डेरे खड़े किये ॥ १२। फिर सीन् नाम जंगल से कूच करके उन्हों ने दोप्का में डेरा किया, १३। और दोप्का से कूच करके आलूश् में डेरा किया, १४। और आलूश् से कूच करके रपीदीम् में डेरा किया और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला ॥ १५। फिर उन्हों ने रपीदीम् से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे डाले ॥ १६। और सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोथत्तावा में डेरा किया, १७। और किब्रोथत्तावा से कूच करके हसेरोत् में डेरे डाले, १८। और हसेरोत् से कूच करके रित्मा में डेरे डाले ॥ १९। फिर उन्हों ने रित्मा से कूच करके रिम्मोन्पेरेस् में डेरे खड़े किये, २०। और रिम्मोन्पेरेस् से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किये, २१। और लिब्ना से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किये, २२। और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया ॥ २३। और कहेलाता से कूच करके शेपेर् पर्वत के पास डेरा किया ॥ २४। फिर उन्हों ने शेपेर् पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया, २५। और हरादा से कूच करके मखेलोत् में डेरा किया, २६। और मखेलोत् से कूच करके तहत् में डेरे खड़े किये, २७। और तहत् से कूच करके तेरह् में डेरे डाले, २८। और

(१) अर्थात् याईर् की बस्तियां। (२) मूल में. के हाथ से। (३) मूल में. ऊंचे हाथ से।

तेरह् से कूच करके मित्का में डेरे डाले ॥ २९ । फिर मित्का से कूच करके उन्हों ने हश्मोना में डेरे डाले, ३० । और हश्मोना से कूच करके मोसेरोत् में डेरे खड़े किये, ३१ । और मोसेरोत् से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया, ३२ । और याकानियों के बीच से कूच करके होर्हग्गिद्गाद् में डेरा किया, ३३ । और होर्हग्गिद्गाद् से कूच करके योत्वाता मे डेरा किया, ३४ । और योत्वाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किये, ३५ । और अब्रोना से कूच करके एस्योन्गेबेर् में डेरे खड़े किये, ३६ । और एस्योन्गेबेर् से कूच करके उन्हों ने सीन् नाम जंगल के कादेश् मे डेरा किया ॥ ३७ । फिर कादेश् से कूच करके होर् पर्वत के पास जो एदोम् देश के सिवाने पर है डेरे डाले ॥ ३८ । वहां इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें बरस के पांचवें महीने के पहिले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर् पर्वत पर चढ़ा और वहां मर गया ॥ ३९ । और जब हारून होर् पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस बरस का था ॥ ४० । और अराद् का कनानी राजा जो कनान् देश के दक्खिन भाग में रहता था उस ने इस्राएलियों के आने का समाचार पाया ॥ ४१ । तब इस्राएलियो ने होर् पर्वत से कूच करके सल्मोना में डेरे डाले, ४२ । और सल्मोना से कूच करके पूनोन् में डेरे डाले, ४३ । और पूनोन् से कूच करके ओबोत् में डेरे डाले, ४४ । और ओबोत् से कूच करके अबारीम् नाम डीहों में जो मोआब् के सिवाने पर हैं डेरे डाले ॥ ४५ । तब उन डीहों से कूच करके उन्हों ने दीबोन्गाद् में डेरा किया, ४६ । और दीबोन्गाद् से कूच करके अल्मोनदिब्लातैम् में डेरा किया, ४७ । और अल्मोन्दिब्लातैम् से कूच करके उन्हों ने अबारीम् नाम पहाड़ों में नबो के साम्हने डेरा किया, ४८ । फिर अबारीम् पहाड़ों से कूच करके मोआब् के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर डेरा किया ॥ ४९ । और वे मोआब् के अराबा में बेत्यशीमोत् से लेकर आबेल्-शित्तीम् लों यर्दन के तीर तीर डेरे डाले हुए रहे ॥

५० । मोआब् के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर यहोवा ने मूसा से कहा, ५१ । इस्राएलियों को समझाकर कह कि जब तुम यर्दन पार होकर कनान् देश में पहुंचो, ५२ । तब उस देश के निवासियों को उन के देश से निकाल देना और उन के सब नक्काशे पत्थरों को और ढली हुई मूर्त्तियों को नाश करना और उन के सब पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा देना ॥ ५३ । और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उस में बसना क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उस के अधिकारी हो ॥ ५४ । और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बांट लेना अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक और जो थोड़े-वाले हैं उन को थोड़ा भाग देना जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उस का भाग ठहरे अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना अपना भाग लेना ॥ ५५ । पर यदि तुम उस देश के निवासियों को न निकालो तो उन में से जिन को तुम उस में रहने दो सो मानो तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कीलें ठहरेंगे और वे उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें संकट में डालेंगे ॥ ५६ । और उन से जैसा बर्ताव करने की मनसा मैं ने किई है वैसा तुम से करूंगा ॥

(कनान् देश के सिवाने)

३४. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ । इस्राएलियों को यह आज्ञा दे कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर के सिवाने तक का कनान् देश है सो जब तुम कनान् देश में पहुंचो, ३ । तब तुम्हारा दक्खिनी प्रान्त सीन् नाम जंगल से ले एदोम् देश के किनारे किनारे होता हुआ चला जाए और तुम्हारा दक्खिनी सिवाना खारे ताल के सिरे पर आरंभ होकर पच्छिम ओर चले ॥ ४ । वहां से तुम्हारा सिवाना अक्रब्बीम् नाम चढ़ाई की दक्खिन ओर पहुंचकर मुड़े और सीन् लों आए और कादेशबर्ने की दक्खिन ओर निकले और हसरद्दार् तक बढ़के अस्मोन् लों पहुंचे ॥

५। फिर वह सिवाना अस्मोन् से घूमकर मिस्र के नाले लों पहुंचे और उस का अन्त समुद्र का तट ठहरे ॥ ६। फिर पच्छिमी सिवाना महासमुद्र हो तुम्हारा पच्छिमी सिवाना यही ठहरे ॥ ७। और तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यह हो अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर् पर्वत लों सिवाना बांधना ॥ ८। और होर् पर्वत से हमात् की घाटी लों सिवाना बांधना और वह सदाद् पर निकले ॥ ९। फिर वह सिवाना जिप्रोन् लों पहुंचे और हसरेनान् पर निकले तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यही ठहरे ॥ १०। फिर अपना पूरबी सिवाना हसरेनान् से शपाम् लों बांधना ॥ ११। और वह सिवाना शपाम् से रिब्ला लों जो ऐन् की पूरब ओर है नीचे को उतरते उतरते किन्नेरेत् नाम ताल के पूरब तीर से लग जाए ॥ १२। और वह सिवाना यर्दन लों उतरके खारे ताल के तट पर निकले तुम्हारे देश के चारों सिवाने ये ही ठहरें ॥ १३। तब मूसा ने इस्राएलियों से फिर कहा जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होगे और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दिई है सो यही है ॥ १४। पर रूबेनियों और गादियों के गोत्री तो अपने अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना अपना भाग पा चुके हैं और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग पा चुके हैं ॥ १५। अर्थात् उन अढ़ाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास की यर्दन के पार पूरब दिशा में जहां सूर्योदय होता है अपना अपना भाग पा चुके हैं ॥

१६। फिर यहोवा ने मूसा से कहा कि, १७। जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बांटेंगे उन के नाम ये हैं अर्थात् एलाजार् याजक और नून् का पुत्र यहोशू ॥ १८। और देश को बांटने के लिये एक एक गोत्र का एक एक प्रधान ठहराना ॥ १९। और इन पुरुषों के नाम ये हैं अर्थात् यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब्, २०। शिमोन्गोत्री अम्मीहूद् का पुत्र शमूएल्, २१। बिन्यामीन्गोत्री किस्लोन् का पुत्र एलीदाद्, २२। दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्की, २३। यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान एपोद् का पुत्र हन्नीएल्, २४। और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान शिप्तान् का पुत्र कमूएल्, २५। जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक् का पुत्र एलीसापान्, २६। इस्साकारियों के गोत्र का प्रधान अज्जान् का पुत्र पल्तीएल्, २७। आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद् २८। और नप्तालीयों के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद् का पुत्र पदहेल् ॥ २९। जिन पुरुषों को यहोवा ने कनान् देश को इस्राएलियों के लिये बांटने की आज्ञा दिई सो ये ही हैं ॥

(लेवीयों के नगरों की और शरणनगरों की विधि)

३५. फिर यहोवा ने मोआब् के अराबा मे यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर मूसा से कहा, २। इस्राएलियों को आज्ञा दे कि तुम अपने अपने निज भाग की भूमि मे से लेवीयों को रहने के लिये नगर देना और नगरों की चारों ओर की चराइयां भी उन को देना ॥ ३। नगर तो उन के रहने के लिये और चराइयां उन के गाय बैल भेड़ बकरी आदि उन के सब पशुओं के लिये होंगी ॥ ४। और नगरों की चराइयां जिन्हे तुम लेवीयों को दोगे सो एक एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारों ओर एक एक हजार हाथ तक की हों ॥ ५। और नगर के बाहर पूरब दक्खिन पच्छिम और उत्तर अलंग दो दो हजार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचोबीच हो लेवीयों के एक एक नगर की चराई इतनी ही भूमि की हो ॥ ६। और जो नगर तुम लेवीयों को दोगे उन मे से छः शरणनगर हों जिन्हे तुम को खूनी के भागने के लिये ठहराना होगा और उन से अधिक बयालीस नगर और भी देना ॥ ७। जितने नगर तुम लेवीयों को दोगे सो सब अड़तालीस हों और उन के साथ चराइयां देना ॥ ८। और जो नगर तुम इस्राएलियों की निज भूमि मे से दो सो जिन के बहुत नगर हों उन से बहुत और जिन के थोड़े नगर हों उन से थोड़े लेकर देना

सब अपने अपने नगरों में से लेवीयों को अपने ही अपने भाग के अनुसार दें॥

९। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १०। इस्राएलियों से कह कि जब तुम यर्दन पार होकर कनान् देश में पहुंचो, ११। तब ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरणनगर हों कि जो कोई किसी को भूल से मारके खूनी ठहरा हो सो वहां भाग जाए॥ १२। वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेनेहारे से शरण लेने के काम आएंगे कि जब लों खूनी न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब लों वह न मार डाला जाए॥ १३। और शरण के जो नगर तुम दोगे सो छः हों॥ १४। तीन नगर तो यर्दन के इस पार और तीन कनान् देश में देना शरणनगर इतने ही रहें॥ १५। ये छहों नगर इस्राएलियों के और उन के बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी शरणस्थान ठहरें कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले सो वहीं भाग जाए॥ १६। पर यदि कोई किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए॥ १७। और यदि कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर जिस से कोई मर सकता है किसी को मारे और वह मर जाए तो वह भी खूनी ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए॥ १८। वा कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर जिस से कोई मर सकता है किसी को मारे और वह मर जाए तो वह भी खूनी ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए॥ १९। लोहू का पलटा लेनेहारा आप ही उस खूनी को मार डाले जब ही मिले तब ही वह उसे मार डाले॥ २०। और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे वा घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, २१। वा शत्रुता से उस को अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए तो जिस ने मारा हो सो अवश्य मार डाला जाए वह खूनी ठहरेगा सो लोहू का पलटा लेनेहारा जब ही वह खूनी उसे मिल जाए तब ही उस को मार डाले॥ २२। पर यदि कोई किसी को बिना सोचे और बिना शत्रुता रक्खे ढकेल दे वा बिना घात लगाये उस पर कुछ फेंक दे, २३। वा ऐसा कोई पत्थर लेकर जिस से कोई मर सकता है दूसरे को बिन देखे उस पर फेंक दे और वह मर जाए पर वह न उस का शत्रु और न उस की हानि का खोजी रहा हो, २४। तो मण्डली मारनेहारे और लोहू के पलटा लेनेहारे के बीच इन नियमों के अनुसार न्याय करे॥ २५। और मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा लेनेहारे के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहां वह पहिले भाग गया हो लौटा दे और जब लों पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महायाजक न मर जाए तब लों वह वहीं रहे॥ २६। पर यदि वह खूनी उस शरणनगर के सिवाने से जिस में वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए, २७। और लोहू का पलटा लेनेहारा उस को शरणनगर के सिवाने के बाहर कहीं पाकर मार डाले तो वह लोहू बहाने का दोषी न ठहरे॥ २८। क्योंकि खूनी को महायाजक की मृत्यु लों शरणनगर में रहना चाहिये और महायाजक के मरने के पीछे वह अपनी निज भूमि को लौट सकेगा॥ २९। तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के स्थानों में न्याय की यह विधि ठहरी रहे॥ ३०। और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले सो साक्षियों के कहे पर मार डाला जाए पर एक ही साक्षी की साक्षी से कोई न मार डाला जाए॥ ३१। और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उस से प्राणदण्ड के बदले में जुरमाना न लेना वह अवश्य मार डाला जाए॥ ३२। और जो किसी शरणनगर में भागा हो उस के लिये भी इस मतलब से जुरमाना न लेना कि वह याजक के मरने से पहिले फिर अपने देश में रहने को लौटने पाए॥ ३३। सो जिस देश में तुम रहोगे उस को अशुद्ध न करना खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लोहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित्त हो सकता है॥ ३४। सो जिस देश में तुम रहनेहारे होगे उस के बीच मैं रहूंगा उस को अशुद्ध न करना मैं यहोवा तो इस्राएलियों के बीच रहता हूं॥

(गोत्र गोत्र के भाग में गड़बड़ पड़ने का निषेध)

३६. फिर यूसुफियों के कुलों में से गिलाद जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था उस के वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के साम्हने जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे कहने लगे, २। यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दिई थी कि इस्राएलियों को चिट्ठी डालकर देश बांट देना और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उस की बेटियों को देना ॥ ३। सो यदि वे इस्राएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से ब्याही जाएं तो उन का भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा और जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उसी गोत्र के भाग में मिल जाएगा सो हमारा भाग घट जाएगा ॥ ४। और जब इस्राएलियों का जुबिली[1] होगा तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उस के भाग में उन का भाग पक्की रीति से मिल जाएगा और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट जाएगा ॥ ५। तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्राएलियों से कहा यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं ॥ ६। सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दिई है कि जो वर जिस की दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाए पर वे अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में ब्याही जाएं ॥ ७। और इस्राएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने पाए इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के गोत्र के भाग पर बने रहें ॥ ८। और इस्राएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पानेवाली हो सो अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से ब्याही जाए इस लिये कि इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के भाग के अधिकारी रहें ॥ ९। किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाए इस्राएलियों के एक एक गोत्र के लोग अपने अपने भाग पर बने रहें ॥ १०। यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दिई सलोफाद की बेटियों ने किया ॥ ११। अर्थात् महला तिर्सा होग्ला मिल्का और नोआ जो सलोफाद की बेटियां थीं उन्हों ने अपने चचेरे भाइयों से ब्याह किया ॥ १२। वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में ब्याही गईं और उन का भाग उन के मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा ॥

१३। जो आज्ञाएं और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिये सो ये ही हैं ॥

(१) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द ।

व्यवस्थाविवरण नाम पुस्तक ।

(पूर्व वृत्तान्त का विवरण)

१. जो बातें मूसा ने यर्दन के पार जंगल में अर्थात् सूप के साम्हने के अराबा में और पारान् और तोपेल् के बीच और लाबान् हसेरोत् और दीजाहाब् में सारे इस्राएलियों से कहीं सो ये हैं ॥ २। होरेब् से कादेशबर्ने तक सेईर् पहाड़ का मार्ग ग्यारह दिन का है ॥ ३। चालीसवें बरस के ग्यारहवें महीने के पहिले दिन को जो कुछ यहोवा ने मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दिई थी उस के अनुसार मूसा उन से ये

बातें कहने लगा ॥ ४ । अर्थात् जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेश्बोन्वासी सीहोन् और बाशान् के राजा अश्तारोत्वासी ओग् को एद्रेई में मार डाला, ५ । उस के पीछे यर्दन के पार मोआब् देश में वह व्यवस्था का विवरण यों करने लगा कि, ६ । हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब् के पास हम से कहा था कि तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गये हैं ॥ ७ । सो अब कूच करो और एमोरियों के पहाड़ी देश को और क्या अराबा में क्या पहाड़ों में क्या नीचे के देश में क्या दक्खिन देश में क्या समुद्र के तीर पर जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं उन के देश को अर्थात् लबानोन् पर्वत लों और परात् नाम महानद लों रहनेहारे कनानियों के देश को भी चले जाओ ॥ ८ । सुनो मैं उस देश को तुम्हारे साम्हने किये देता हूं सो जिस देश के विषय यहोवा ने इब्राहीम् इस्हाक् और याकूब तुम्हारे पितरों से किरिया खाकर कहा था कि मैं इसे तुम को और तुम्हारे पीछे तुम्हारे वंश को दूंगा उस को अब जाकर अपने अधिकार में कर लो ॥ ९ । फिर उसी समय मैं ने तुम से कहा कि मैं तुम्हारा भार अकेला नहीं सह सकता ॥ १० । क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहां लों बढ़ाया है कि तुम गिन्ती में आज आकाश के तारों के समान हुए हो ॥ ११ । तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी बढ़ाए और अपने वचन के अनुसार तुम को आशीष देता रहे ॥ १२ । पर तुम्हारे जंजाल और भार और झगड़े रगड़े को मैं अकेला कहां तक सह सकता हूं ॥ १३ । सो तुम अपने एक एक गोत्र में से बुद्धिमान् और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष चुन लो और मैं उन्हें तुम पर मुखिया करके ठहराऊंगा ॥ १४ । इस के उत्तर में तुम ने मुझ से कहा जो कुछ तू हम से कहता है उस का करना अच्छा है ॥ १५ । सो मैं ने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुरुषों को जो बुद्धिमान् और प्रसिद्ध पुरुष थे चुनकर तुम पर मुखिया ठहराया अर्थात् हजार हजार सौ सौ पचास पचास और दस दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी ठहरा दिये ॥ १६ । और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा दिई कि तुम अपने भाइयों के बीच के मुकद्दमे सुना करो और उन के बीच और उन के पड़ोसवाले परदेशियों के बीच भी धर्म्म से न्याय किया करो ॥ १७ । न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना किसी का मुंह देखकर न डरना क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो सो मेरे पास ले आना और मैं उसे सुनूंगा ॥ १८ । और मैं ने उसी समय तुम्हारे सारे कर्त्तव्य कर्म्म तुम को बता दिये ॥

१९ । और हम होरेब् से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में होकर चले जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा और हम कादेशबर्ने लों आये ॥ २० । वहां मैं ने तुम से कहा तुम एमोरियों के पहाड़ी देश लों आ गये हो जिस को हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है ॥ २१ । देखो उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साम्हने किये देता है सो अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो और उसे अपने अधिकार में ले लो न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो ॥ २२ । सो तुम सब मेरे पास आकर कहने लगे हम अपने आगे पुरुषों को भेज देंगे जो उस देश का पता लगाकर हम को यह सन्देशा दें कि कौन से मार्ग होकर चलना और किस किस नगर में प्रवेश करना पड़ेगा ॥ २३ । इस बात से प्रसन्न होकर मैं ने तुम में से बारह पुरुष अर्थात् गोत्र पीछे एक पुरुष चुन लिया ॥ २४ । और वे पहाड़ पर चढ़ गये और एश्कोल् नाम नाले को पहुंचकर उस देश का भेद लिया, २५ । और उस देश के फलों में से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आये और हम को यह सन्देशा दिया कि जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है सो अच्छा है ॥ २६ । तौभी तुम ने वहां जाने से नाह किया बरन अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध हो, २७ । अपने अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे

कि यहोवा हम से बैर रखता है इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है कि हम को एमोरियों के वश में करके सत्यानाश कर डाले॥ २८। हम किधर जाएं हमारे भाइयों ने यह कहके हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहां के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं और वहां के नगर बड़े बड़े हैं और उन की शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं(१) और हम ने वहां अनाकवंशियों को भी देखा है॥ २९। मैं ने तुम से कहा उन के कारण त्रास मत खाओ और न डरो॥ ३०। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है सो आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा जैसे कि उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया॥ ३१। फिर तुम ने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के को उठाये चलता है उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को इस स्थान पर पहुंचने लों उस सारे मार्ग में जिस से हम आये हैं उठाये रहा॥ ३२। इस बात पर भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास न किया, ३३। जो तुम्हारे आगे आगे इस लिये चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिये ढूंढे और रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चलने का मार्ग दिखाए॥ ३४। सो तुम्हारी ये बातें सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा और उस ने यह किरिया खाई कि, ३५। निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा जिसे मैं ने उन के पितरों को देने की किरिया खाई थी॥ ३६। यपुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने पाएगा और जिस भूमि पर उस के पांव पड़े हैं उसे मैं उस को और उस के वंश को भी दूंगा क्योंकि वह मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिया है॥ ३७। और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण कोपित हुआ और यह कहा कि तू भी वहां जाने न पाएगा॥ ३८। नून का पुत्र यहोशू जो तेरे साम्हने खड़ा रहता है वह तो वहां जाने पाएगा सो उस को हियाव बंधा क्योंकि उस देश को इस्राएलियों के अधिकार में वही कर देगा॥ ३९। फिर तुम्हारे बालबच्चे जिन के विषय में तुम कहते हो कि ये लूट में चले जाएंगे और तुम्हारे जो लड़केवाले अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते वे वहां प्रवेश करेंगे और उन को मैं वह देश दूंगा और वे उस के अधिकारी होंगे॥ ४०। पर तुम लोग घूमकर कूच करो और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल की ओर जाओ॥ ४१। तब तुम ने मुझ से कहा हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़के लड़ेंगे। सो तुम अपने अपने हथियार बांधकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार हो गये॥ ४२। तब यहोवा ने मुझ से कहा उन से कह दे कि तुम मत चढ़ो और न लड़ो क्योंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूं कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ॥ ४३। यह बात मैं ने तुम से कह दिई पर तुम ने न मानी बरन ढिठाई से यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गये॥ ४४। तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों ने तुम्हारा साम्हना करने को निकलकर मधुमक्खियों की नाईं तुम्हारा पीछा किया और सेईर् देश के होर्मा लों तुम्हें मारते मारते चले आये॥ ४५। सो तुम लौटकर यहोवा के साम्हने रोने लगे पर यहोवा ने तुम्हारी न सुनी न तुम्हारी बातों पर कान लगाया॥ ४६। और तुम जितने दिन रहे उतने अर्थात् बहुत दिन कादेश में रहे॥

२. तब उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मुझ को दिई थी हम ने घूमकर कूच किया और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर चले और बहुत दिन तक सेईर् पहाड़ के बाहर बाहर चलते रहे॥ २। तब यहोवा ने मुझ से कहा, ३। तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गये अब घूमकर उत्तर की ओर चलो॥ ४। और तू प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना कि तुम सेईर् के निवासी

(१) मूल में नगर बड़े और आकाश लों दृढ़ हैं।

अपने भाई एसावियों के सिवाने के पास होकर जाने पर हो और वे तुम से डर जाएंगे सो तुम बहुत चौकस रहो॥ ५। उन्हें न छेड़ना क्योंकि उन के देश में से मैं तुम्हें पांव धरने का ठौर तक न दूंगा इस कारण से कि मैं ने सेईर् पर्वत एसावियों के अधिकार में कर दिया है॥ ६। तुम उन से भोजन रुपैये से मोल लेकर खा सकोगे और रुपैया देकर कूओं से पानी भरके पी सकोगे॥ ७। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशीष देता आया है इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता है इन चालीस वरसों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग रहा है तुम को कुछ घटी नहीं हुई॥ ८। यों हम सेईर्निवासी अपने भाई एसावियों के पास से होकर अराबा के मार्ग और एलत् और एस्योन्गेबेर् को पीछे छोड़कर चले॥

९। फिर हम मुड़कर मोआब् के जंगल के मार्ग से होकर चले और यहोवा ने मुझ से कहा मोआबियों को न सताना और न लड़ने को छेड़ना क्योंकि मैं उन के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न कर दूंगा क्योंकि मैं ने आर् को लूतियों के अधिकार में किया है॥ १०। अगले दिनों में वहां एमी लोग बसे हुए थे जो अनाकियों के समान बलवन्त और लंबे लंबे और गिनती में बहुत थे॥ ११। और अनाकियों की नाईं वे भी रपाई गिने जाते थे पर मोआबी उन्हें एमी कहते हैं॥ १२। और अगले दिनों सेईर् में होरी लोग बसे हुए थे पर एसावियों ने उन को उस देश से निकाल दिया और अपने साम्हने से नाश करके उन के स्थान पर आप बस गये जैसे कि इस्राएलियों ने यहोवा के दिये हुए अपने अधिकार के देश में किया॥ १३। अब तुम लोग कूच करके जेरेद् नदी के पार जाओ सो हम जेरेद् नदी के पार आये॥ १४। और हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद् नदी के पार होने लों अड़तीस बरस बीत गये उस बीच में यहोवा की किरिया के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नाश हो गये॥ १५। जब लों वे नाश न हुए तब लों यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उन के विरुद्ध बढ़ा ही रहा॥

१६। सो जब सब योद्धा मरते मरते लोगों के बीच में से नाश हो गये, १७। तब यहोवा ने मुझ से कहा, १८। अब मोआब् के सिवाने अर्थात् आर् को लांघ॥ १९। और जब तू अम्मोनियों के साम्हने जाकर उन के निकट पहुंचे तब उन को न सताना और न छेड़ना क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूंगा क्योंकि मैं ने उसे लूतियों के अधिकार में कर दिया है॥ २०। वह देश भी रपाइयों का गिना जाता था क्योंकि अगले दिनों में रपाई जिन्हें अम्मोनी जमजुम्मी कहते थे सो वहां बसे हुए थे॥ २१। वे भी अनाकियों के समान बलवान और लंबे लंबे और गिनती में बहुत थे पर यहोवा ने उन को अम्मोनियों के साम्हने से नाश कर डाला और उन्हों ने उन को उस देश से निकाल दिया और उन के स्थान पर आप बस गये॥ २२। जैसे कि उस ने सेईर् के निवासी एसावियों के साम्हने से होरियों को नाश किया और उन्हों ने उन को उस देश से निकाल दिया और आज लों उन के स्थान पर वे आप बसे हैं॥ २३। वैसा ही अव्वियों को जो अज्जा नगर लों गांवों में बसे हुए थे कप्तोरियों ने जो कप्तोर् से निकले थे नाश किया और उन के स्थान पर आप बस गये॥ २४। अब तुम लोग उठकर कूच करो और अर्नोन् के नाले के पार चलो सुन मैं देश समेत हेश्बोन् के राजा एमोरी सीहोन् को तेरे हाथ में कर देता हूं सो उस देश को अपने अधिकार में लेने का आरंभ कर और उस राजा से युद्ध छेड़ दे॥ २५। जितने लोग धरती भर पर[१] रहते हैं उन सभों के मन में मैं आज के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समवाने लगूंगा सो वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कांपेंगे और पीड़ित होंगे॥

२६। सो मैं ने कदेमोत् नाम जंगल से हेश्बोन् के राजा सीहोन् के पास मेल की ये बातें कहने

(१) मूल में आकाश के तले।

को दूत भेजे कि, २७। मुझे अपने देश में होकर जाने दे मैं सड़क सड़क चला जाऊंगा दहिने बायें न मुड़ूंगा ॥ २८। रुपैया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊं और पानी भी रुपैया लेकर मुझ को देना कि मैं पीऊं केवल मुझे पांव पांव चले जाने दे ॥ २९। जैसा सेईर् के निवासी एसावियों ने और आर् के निवासी मोआबियों ने मुझ से किया वैसा ही तू भी मुझ से कर इस रीति मैं यर्दन पार होकर उस देश में पहुंचूंगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है ॥ ३०। पर हेश्बोन् के राजा सीहोन् ने हम को अपने देश मे होकर चलने देने से नाह किया क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस का चित्त कठोर और उस का मन हठीला कर दिया था इस लिये कि उस को तेरे हाथ मे कर दे जैसा आज प्रगट है ॥ ३१। और यहोवा ने मुझ से कहा सुन मैं देश समेत सीहोन् को तेरे वश मे कर देने पर हूं उस देश को अपने अधिकार मे लेने का आरंभ कर ॥ ३२। तब सीहोन् अपनी सारी सेना समेत निकल आया और हमारा साम्हना करके युद्ध करने को यहस् लों चढ़ आया ॥ ३३। और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उस को हम से हरा दिया और हम ने उस को पुत्रों और सारी सेना समेत मार लिया ॥ ३४। और उसी समय हम ने उस के सारे नगर ले लिये और एक एक बसे हुए नगर को स्त्रियों और बालबच्चों समेत यहां लों सत्यानाश किया कि कोई न छूटा ॥ ३५। पर पशुओं को हम ने अपना कर लिया और जीते हुए नगरों की लूट भी हम ने ले लिई ॥ ३६। अर्नोन् के नाले की छोरवाले अरोएर् नगर से लेकर और उस नाले में के नगर से लेकर गिलाद् लों कोई नगर ऐसा ऊंचा न रहा जो हमारे साम्हने ठहर सकता क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने सभों को हमारे वश कर दिया ॥ ३७। पर तुम अम्मोनियों के देश के निकट बरन यब्बोक् नदी के उस पार जितना देश है और पहाड़ी देश के नगर जहां जहां जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को वर्जा वहां न गये ॥

३. तब हम मुड़कर बाशान् के मार्ग से चढ़ चले और बाशान् का ओग् नाम राजा अपनी सारी सेना समेत हमारा साम्हना करने को निकल आया कि एद्रेई में युद्ध करे ॥ २। तब यहोवा ने मुझ से कहा उस से मत डर क्योंकि मैं उस को सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में किये देता हूं और जैसा तू ने हेश्बोन् के निवासी एमोरियों के राजा सीहोन् से किया है वैसा ही उस से भी करना ॥ ३। सो हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाशान् के राजा ओग् को भी हमारे हाथ में कर दिया और हम उस को यहां लों मारते रहे कि उस का कोई भी बचा न रहा ॥ ४। उसी समय हम ने उस के सारे नगरों को ले लिया कोई ऐसा नगर न रहा जिसे हम ने उन से न ले लिया हो इस रीति अर्गोब् का सारा देश जो बाशान् में ओग् के राज्य में था और उस मे साठ नगर थे सो हमारे वश में आ गया ॥ ५। ये सब नगर गढ़वाले थे और उन के ऊंची ऊंची शहरपनाह और फाटक और बेंड़े थे और इन को छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे ॥ ६। और जैसा हम ने हेश्बोन् के राजा सीहोन् के नगरों से किया था वैसा ही हम ने इन नगरों से भी किया अर्थात् सब बसे हुए नगरों को स्त्रियों और बालबच्चों समेत सत्यानाश कर डाला ॥ ७। पर सब घरैले पशु और नगरों की लूट हम ने अपनी कर लिई ॥ ८। यों हम ने उस समय यर्दन के इस पार रहनेहारे एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन् के नाले से लेकर हेर्मोन् पर्वत तक का देश ले लिया ॥ ९। हेर्मोन् को सीदोनी लोग सिर्योन् और एमोरी लोग सनीर् कहते हैं ॥ १०। समथर देश के सब नगर और सारा गिलाद् और सल्का और एद्रेई तक जो ओग् के राज्य के नगर थे सारा बाशान् हमारे वश मे आ गया ॥ ११। जो रपाई रह गये थे उन में से केवल बाशान् का राजा ओग् रह गया था उस की चारपाई जो लोहे की है सो तो अम्मोनियों के रब्बा नगर में पड़ी है साधारण पुरुष के हाथ के लेखे से

उस की लम्वाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की है ॥ १२ । जो देश हम ने उस समय अपने अधिकार में ले लिया सो यह है अर्थात् अर्नोन् के नाले के किनारेवाले अरोएर् नगर से ले सब नगरों समेत गिलाद् के पहाड़ी देश का आधा भाग जिसे मैं ने रूबेनियों और गादियों को दे दिया, १३ । और गिलाद् का बचा हुआ भाग और सारा बाशान् अर्थात् अर्गोब् का सारा देश जो ओग् के राज्य में था इन्हें मैं ने मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया । सारा बाशान् तो रपाइयों का देश कहलाता है ॥ १४ । और मनश्शेई याईर् ने गशूरियों और माकावासियों के सिवानों लों अर्गोब् का सारा देश ले लिया और बाशान् के नगरों का नाम अपने नाम पर हव्वोत्याईर्[1] रक्खा और वही नाम आज लों बना है ॥ १५ । और मैं ने गिलाद् देश माकीर् को दे दिया ॥ १६ । और रूबेनियों और गादियों को मैं ने गिलाद् से ले अर्नोन् के नाले लों का देश दे दिया अर्थात् उस नाले का बीच उन का सिवाना ठहराया और यब्बोक् नदी लों जो अम्मोनियों का सिवाना है, १७ । और किन्नेरेत् से ले पिस्गा की सलामी के नीचे के अराबा के ताल लों जो खारा ताल भी कहावता है अराबा और यर्दन की पूरब ओर का सारा देश भी मैं ने उन्हीं को दे दिया ॥

१८ । और उस समय मैं ने तुम्हें यह आज्ञा दिई कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे अपने अधिकार में रक्खो तुम सब योद्धा हथियारबंध होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे पार चलो ॥ १९ । पर तुम्हारी स्त्रियां और बालबच्चे और पशु जिन्हें मैं जानता हूं कि बहुत से हैं सो सब तुम्हारे नगरों में जो मैं ने तुम्हें दिये हैं रह जाएं ॥ २० । और जब यहोवा तुम्हारे भाइयों को वैसा विश्राम दे जैसा कि उस ने तुम को दिया है और वे उस देश के अधिकारी हो जाएं जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें यर्दन पार देता है तब तुम भी अपने अपने अधिकार की भूमि पर जो मैं ने तुम्हें दिई है लौटोगे ॥ २१ । फिर मैं ने उसी समय यहोशू से चिताकर कहा तू ने अपनी आंखों से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन दोनों राजाओं से क्या क्या किया है वैसा ही यहोवा उन सब राज्यों से करेगा जिन में तू पार होकर जाएगा ॥ २२ । उन से न डरना क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़नेवाला है सो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है ॥

२३ । उसी समय मैं ने यहोवा से गिड़गिड़ाकर बिनती किई कि, २४ । हे प्रभु यहोवा तू अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है, स्वर्ग में और पृथिवी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के कर्म्म कर सके ॥ २५ । सो मुझे पार जाने दे कि यर्दन पार के उस उत्तम देश को अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन् को भी देखने पाऊं ॥ २६ । पर यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रूठ गया और मेरी न सुनी वरन यहोवा ने मुझ से कहा बस कर इस विषय में फिर कभी मुझ से बातें न करना ॥ २७ । पिस्गा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर दृष्टि कर करके उस देश को देख ले क्योंकि तू इस यर्दन पार जाने न पाएगा ॥ २८ । और यहोशू को आज्ञा दे और उसे हियाव बंधाकर दृढ़ कर क्योंकि इन लोगों के आगे आगे वही पार जाएगा और जो देश तू देखेगा उस को वही उन का निज भाग करा देगा ॥ २९ । सो हम बेत्पोर् के साम्हने की तराई में रहे ॥

(मूसा का उपदेश)

४. अब हे इस्राएल् जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाने चाहता हूं उन्हें सुन लो इस लिये कि उन पर चलो जिस से तुम जीते रहो और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस में जाकर उस के अधिकारी हो जाओ ॥ २ । जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना ॥ ३ । तुम ने तो अपनी आंखों से देखा है कि पोर् के

(१) अर्थात्, याईर् की बस्तियां ।

बाल् के कारण यहोवा ने क्या क्या किया अर्थात् जितने मनुष्य बाल्पोर् के पीछे हो लिये थे उन सभों को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से सत्यानाश कर डाला ॥ ४ । पर तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ साथ बने रहे सो सब के सब आज जीते हो ॥ ५ । सुन मैं ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाये हैं कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उस में तुम उन के अनुसार चलो ॥ ६ । सो तुम उन को धारण करना और मानना क्योंकि देश देश के लोगों के लेखे तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान् और समझदार है ॥ ७ । देखो कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस का देवता उस के ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा जब कि हम उस को पुकारते हैं ॥ ८ । फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस के पास ऐसी धर्म्ममय विधि और नियम हों जैसी कि यह सारी व्यवस्था जो मैं आज तुम को सुनाता हूं ॥ ९ । केवल यह अवश्य है कि तुम अपने विषय सचेत रहो और अपने मन की बड़ी चौकसी करो न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आंखों से देखीं उन को बिसरा दो वा जीवन भर में कभी अपने मन से उतरने दो बरन तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को जताया करना ॥ १० । विशेष करके उस दिन की बातें जिस में तू होरेब् के पास अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़ा था जब यहोवा ने मुझ से कहा था कि उन लोगों को मेरे पास एकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने वचन सुनाऊं इस लिये कि वे सीखें कि जितने दिन पृथिवी पर जीते रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें और अपने लड़केवालों को भी सिखाएं ॥ ११ । तब तुम समीप जाकर उस पर्वत के नीचे खड़े हुए उस पर्वत पर की लौ आकाश लों पहुंचती थी और उस पर अन्धियारा और बादल और घोर अन्धकार छाया हुआ था ॥ १२ । तब यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें किईं बातों का शब्द तो तुम को सुन पड़ा पर रूप कुछ न देख पड़ा केवल शब्द ही सुन पड़ा ॥ १३ । और उस ने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उन के मानने की आज्ञा दिई और उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिख दिया ॥ १४ । और मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दिई इस लिये कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो उस में तुम उन को माना करो ॥ १५ । सो तुम अपने विषय बहुत सचेत रहो क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब् पर्वत पर आग के बीच में से बातें किईं तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा ॥ १६ । कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, १७ । चाहे पृथिवी पर चलनेहारे किसी पशु चाहे आकाश में उड़नेहारे किसी पक्षी के, १८ । चाहे भूमि पर रेंगनेहारे किसी जन्तु चाहे पृथिवी के जल में[१] रहनेहारी किसी मछली के रूप की कोई मूर्त्ति खोदकर बनाओ, १९ । वा जब तुम आकाश की ओर आंखें उठाकर सूर्य्य चंद्रमा तारों को अर्थात् आकाश का सारा गण देखो तब बहककर उन्हें दण्डवत् और उन की सेवा करने लगो जिन को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिये रक्खा[२] है ॥ २० । और तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है इस लिये कि तुम उस की प्रजारूपी निज भाग ठहरो जैसा आज प्रगट है ॥ २१ । फिर तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझ से कोप करके यह किरिया खाई कि तू यर्दन पार जाने न पाएगा और जो उत्तम देश इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन्हें उन का निज भाग करके देता है उस में तू प्रवेश करने न पाएगा ॥ २२ । सो मुझे इसी देश में मरना है मैं तो यर्दन पार नहीं जा सकता पर तुम पार जाकर उस उत्तम देश के अधिकारी हो जाओगे ॥ २३ । सो अपने विषय सचेत रहो न हो कि तुम उस वाचा को बिसराकर जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम

---

(१) मूल में पृथिवी के नीचे जल में । (२) मूल में, बांट दिया ।

से बांधी है किसी वस्तु की मूर्त्ति खोदकर बनाओ जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे लिये बरजी है॥ २४। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेहारी आग सा जल उठनेहारा ईश्वर है॥

२५। यदि उस देश में रहते रहते बहुत दिन बीत जाने पर और अपने बेटे पोते उत्पन्न होने पर तुम बिगड़कर किसी वस्तु के रूप की मूर्त्ति खोदकर बनाओ और इस रीति अपने परमेश्वर यहोवा के लेखे बुराई करके उसे रिसिया दो, २६। तो मैं आज आकाश और पृथिवी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी करके कहता हूं कि जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यर्दन पार जाने पर हो उस में से तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे और बहुत दिन रहने न पाओगे बरन पूरी रीति से सत्यानाश हो जाओगे॥ २७। और यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुंचाएगा उन में तुम थोड़े ही रह जाओगे॥ २८। और वहां तुम मनुष्य के बनाये हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे जो न देखते न सुनते न खाते न सूंघते हैं॥ २९। पर वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढो तो उसे अपने सारे मन और सारे जीव से ढूंढ़ने पर वह तुम्हें मिलेगा॥ ३०। अन्त के दिनों में जब तू संकट में पड़ेगा और ये सब विपत्तियां तुझ पर आ पड़ेंगी तब तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरेगा और उस की मानने लगेगा॥ ३१। और तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है वह तुझे धोखा न देगा न नाश करेगा और जो वाचा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर बांधी है उस को न भूलेगा॥ ३२। देखो जब से परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजकर पृथिवी पर रक्खा तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन लों की बातें पूछ और आकाश की एक छोर से दूसरी छोर लों की बातें पूछ क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुई वा सुनने में आई है॥ ३३। क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई सुनकर जीती रही जैसे कि तू ने सुनी है॥ ३४। फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच में से निकालने को कमर बांधकर परीक्षा और चिन्ह और चमत्कार और युद्ध और बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किये जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किये॥ ३५। यह सब तुझ को दिखाया गया इस लिये कि तू जान रक्खे कि यहोवा ही परमेश्वर है उस को छोड़ और कोई है ही नहीं॥ ३६। आकाश में से उस ने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई और उस के वचन आग के बीच में से आते तुझे सुन पड़े॥ ३७। और उस ने जो तुम्हारे पितरों से प्रेम रक्खा इस कारण उन के पीछे उन के वंश को चुन लिया और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इस लिये निकाल लाया, ३८। कि तुझ से बड़ी और सामर्थी जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे उन के देश में पहुंचाए और उसे तेरा निज भाग कर दे जैसा आज के दिन देख पड़ता है॥ ३९। सो आज जान ले और अपने मन में सोच भी रख कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथिवी पर यहोवा ही परमेश्वर है और कोई नहीं॥ ४०। और तू उस की विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मान इस लिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे दिन बहुत बरन अनन्त हों॥

४१। तब मूसा ने यर्दन के पार पूरब ओर तीन नगर अलग किये, ४२। इस लिये कि जो कोई बिन जाने और बिना पहिले से बैर रक्खे अपने किसी भाई को मार डाले सो उन में से किसी नगर में भाग जाए और भाग कर जीता बचे, ४३। अर्थात् रूबेनियों का बेसेर् नगर जो जंगल के समथर देश में है और गादियों के गिलाद् का रामोत् और मनश्शेइयों के बाशान् का गोलान्॥

४४। फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्राएलियों को दिई सो यह है॥ ४५। ये वे ही चितौनियां और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इस्राएलियों को तब कह सुनाया जब

वे मिस्र से निकले थे, ४६। अर्थात् यर्दन के पार बेत्पोर् के साम्हने की तराई में एमोरियों के राजा हेश्बोन्वासी सीहोन् के देश में जिस राजा को उन्हों ने मिस्र से निकलने के पीछे मारा, ४७। और उन्हों ने उस के देश को और बाशान् के राजा ओग् के देश को अपने वश में कर लिया। यर्दन के पार सूर्योदय की ओर रहनेहारे एमोरियों के राजाओं के ये देश थे॥ ४८। यह देश अर्नोन् के नाले की छोरवाले अरोएर् से ले सीओन् जो हेर्मोन् भी कहावता है उस पर्वत लों का सारा देश, ४९। और पिस्गा की सलामी के नीचे के अराबा के ताल लों यर्दन पार पूरब ओर का सारा अराबा है॥

५. मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा हे इस्राएलियो जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं सो सुनो इस लिये कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो॥ २। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब् पर हम से वाचा बान्धी॥ ३। इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं हम ही से बन्धाया जो सब के सब आज यहां जीते हुए हैं॥ ४। यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आम्हने साम्हने बातें किईं॥ ५। उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े सो मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उस का वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा तब उस ने कहा, ६। तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है सो मैं हूं॥

७। मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना[1]॥

८। तू अपने लिये कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में वा पृथिवी पर वा पृथिवी के जल में[2] है॥ ९। तू उन को दण्डवत् न करना न उन की उपासना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेहारा ईश्वर हूं और जो मुझ से वैर रखते हैं उन के बेटों पोतों और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूं, १०। और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूं॥

११। अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ[1] ले वह उस को निर्दोष न ठहराएगा॥

१२। विश्रामदिन को मानकर पवित्र रखना जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दिई॥ १३। छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा कामकाज करना॥ १४। पर सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है उस में न तू किसी भान्ति का कामकाज करना न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल न तेरा गदहा न तेरा कोई पशु न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो जिस से तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं सुस्ताएं॥ १५। और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है॥

१६। अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दिई जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन लों रहने पाए और तेरा भला हो॥

१७। खून न करना॥

१८। और व्यभिचार न करना॥

१९। और चोरी न करना॥

२०। और किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना॥

२१। और न किसी की स्त्री का लालच करना और न किसी के घर का लालच करना न उस के

(१) वा मेरे साम्हने पराये देवताओं को न मानना।
(२) मूल में पृथिवी के नीचे के जल में।

(१) वा झूठी बात पर।

खेत का न उस के दास का न उस की दासी का न उस के बैल गदहे का न उस की किसी वस्तु का लालच करना ॥

२२। ये ही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग और बादल और घोर अन्धकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारके कहे और इस से अधिक और कुछ न कहा और उन्हें उस ने पत्थर की दो पटियाओं पर लिखकर मुझे दे दिया ॥ २३। जब पर्वत आग से जल रहा था और तुम ने उस शब्द को अन्धियारे के बीच में से आते सुना तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के सब मुख्य मुख्य पुरुष और तुम्हारे पुरनिये मेरे पास आये ॥ २४। और तुम कहने लगे हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना तेज और महिमा दिखाई है और हम ने उस का शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना आज के दिन हम को जान पड़ा है कि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तौभी मनुष्य जीता रहता है ॥ २५। अब हम क्यों मर जाएं क्योंकि इस बड़ी आग से हम भस्म हो जाएंगे और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें तो मर जाएंगे ॥ २६। सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारी नाईं जीवते और आग के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीता बचा हो ॥ २७। तू समीप जा और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे सो सुन ले फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे सो हम से कहना और हम सुनकर उसे मानेंगे ॥ २८। जब तुम मुझ से ये बातें कह रहे थे तब यहोवा ने सुना और उस ने मुझ से कहा कि इन लोगों ने जो जो बातें तुझ से कही हैं सो मैं ने सुनीं इन्हों ने जो कुछ कहा सो भला कहा ॥ २९। भला होता कि उन का मन सदा ऐसा ही बना रहे कि मेरा भय मानते और मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें जिस से उन की और उन के वंश की भलाई सदा लों बनी रहे ॥ ३०। जाकर उन से कह कि अपने अपने डेरे में फिर जाओ ॥ ३१। पर तू यहीं मेरे पास खड़ा होना और मैं वे सारी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें तुझे उन को सिखाना होगा तुझ से कहूंगा इस लिये कि वे उन्हें उस देश में जिस का अधिकार मैं उन्हें देने पर हूं मानें ॥ ३२। सो तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी करना न तो दहिने मुड़ना और न बाएं ॥ ३३। जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दिई है उस सारे मार्ग पर चलते रहो इस लिये कि तुम जीते रहो और तुम्हारा भला हो और जिस देश के तुम अधिकारी होगे उस में तुम बहुत दिन लों बने रहो ॥

६. यह वह आज्ञा और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने इस लिये आज्ञा दिई है कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिस के अधिकारी होने को पार जाने पर हो, २। और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानते हुए उस की उन सब विधियों और आज्ञाओं पर जो मैं तुझे सुनाता हूं अपने जीवन भर चलते रहें जिस से तू बहुत दिन लों बना रहे ॥ ३। सो हे इस्राएल् सुन और ऐसा ही करने की चौकसी कर इस लिये कि तेरा भला हो और तेरे पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम बहुत हो जाओ ॥

४। हे इस्राएल् सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है यहोवा एक है ॥ ५। तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना ॥ ६। और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं सो तेरे मन में बनी रहें ॥ ७। और तू इन्हें अपने लड़केवालों को समझाकर सिखाया करना और घर में बैठे मार्ग पर चलते लेटते उठते इन की चर्चा किया करना ॥ ८। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बांधना और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें ॥ ९। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना ॥

१०। और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुंचाए जिस के विषय उस ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब नाम तेरे पितरों से तुझे देने को किरिया खाई और जब वह तुझ को बड़े बड़े और अच्छे नगर जो तू ने नहीं बनाये, ११। और अच्छे अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर जो तू ने नहीं भरे और खुदे हुए कूएं जो तू ने नहीं खोदे और दाख की बारियां और जलपाई के वृक्ष जो तू ने नहीं लगाये ये सब वस्तुएं जब वह दे और तू खाके तृप्त हो, १२। तब सचेत रहना न हो कि तू यहोवा को भूल जाए जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥ १३। अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना उसी की सेवा करना और उसी के नाम की किरिया खाना॥ १४। तुम पराये देवताओं के अर्थात् अपनी चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना॥ १५। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच है वह जल उठनेहारा ईश्वर है सो ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के और वह तुझ को पृथिवी पर से नाश कर डाले॥

१६। तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना जैसे कि तुम ने मस्सा में उस की परीक्षा किई थी॥ १७। अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं चितौनियों और विधियों को जो उस ने तुझ को दिई हैं सावधानी से मानना॥ १८। और जो काम यहोवा के लेखे में ठीक और अच्छा है सोई किया करना इस लिये कि तेरा भला हो और जिस उत्तम देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाई उस में तू प्रवेश करके उस का अधिकारी हो जाए, १९। कि तेरे सब शत्रु तेरे साम्हने से धकियाए जाएं जैसे कि यहोवा ने कहा था॥

२०। फिर आगे को जब तेरा लड़का तुझ से पूछे कि ये चितौनियां और विधि और नियम जिन के मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दिई है इन का प्रयोजन क्या है॥ २१। तब अपने लड़के से कहना कि जब हम मिस्र में फिरौन के दास थे तब यहोवा बलवन्त हाथ से हम को मिस्र में से निकाल लाया॥ २२। और यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फिरौन और उस के सारे घराने को दुःख देनेहारे बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार किये॥ २३। और हम को वह वहां से निकाल लाया इस लिये कि हमें इस देश में पहुंचाकर जिस के विषय उस ने हमारे पितरों से किरिया खाई थी इस को हमें दे॥ २४। और यहोवा ने हमें ये सब विधियां पालने की आज्ञा दिई इस लिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें और इस रीति सब दिन हमारा भला हो और वह हम को जीता रक्खे जैसे कि आज है॥ २५। और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उस की आज्ञा के अनुसार इस सारी आज्ञा के मानने में चौकसी करें तो यह हमारे लिये धर्म्म ठहरेगा॥

७. फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिस के अधिकारी होने को तू जाने पर है पहुंचाए और तेरे साम्हने से हित्ती गिर्गाशी एमोरी कनानी परिज्जी हिव्वी और यबूसी नाम बहुत सी जातियों को अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी सातों जातियों को निकाल दे, २। और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुझ से हरवा दे और तू उन को जीते तब उन्हें पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना उन से वाचा न बांधना और न उन पर दया करना॥ ३। और न उन से ब्याह शादी करना न तो अपनी बेटी उन के बेटे को ब्याह देना और न उन की बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह लेना॥ ४। क्योंकि वह तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकाएगा और दूसरे देवताओं की उपासना कराएगा और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा और वह तुझ को शीघ्र सत्यानाश कर डालेगा॥ ५। उन लोगों से ऐसा बर्त्ताव करना कि उन की वेदियों को ढा देना उन की लाठों को तोड़ डालना उन की अशेरा नाम मूरतों को काट काटकर गिरा देना और उन की खुदी हुई मूर्त्तियों को आग में जला देना॥ ६। क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है यहोवा

में पृथिवी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उस की प्रजा और निज धन ठहरे ॥ ७ । यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया इस का कारण यह न था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे वरन तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे ॥ ८ । यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लिया इस का यही कारण था कि वह तुम से प्रेम रखता है और उस किरिया को भी पूरी करना चाहता था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी ॥ ९ । सो जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है वह विश्वासयोग्य ईश्वर है और जो उस से प्रेम रखते और उस की आज्ञाएं मानते हैं उन के साथ वह हजार पीढ़ी लों अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता रहता है, १० । और जो उस से बैर रखते हैं वह उन के देखते उन से बदला लेकर नाश कर डालता है अपने बैरी के विषय वह विलम्ब न करेगा उस के देखते ही उस से बदला लेगा ॥ ११ । इस लिये इन आज्ञाओं विधियों और नियमों को जो मैं आज तुझे चिताता हूं मानने में चौकसी करना ॥

१२ । और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे तो तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस करुणामय वाचा को पालेगा जो उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर बांधी थी ॥ १३ । और वह तुझ से प्रेम रक्खेगा और तुझे आशीष देगा और गिनती में बढ़ाएगा और जो देश उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर तुझ को देने कहा है उस में वह तेरी सन्तान पर और अन्न नये दाखमधु और टटके तेल आदि भूमि की उपज पर आशीष दिया करेगा और तेरी गाय बैल और भेड़बकरियों की बढ़ती करेगा ॥ १४ । तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा तेरे बीच में न पुरुष न स्त्री निर्वंश होगी और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा ॥ १५ । और यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा और मिस्र की बुरी बुरी व्याधियां जिन्हें तू जानता है उन में से किसी को तेरे न उपजाएगा तेरे सब बैरियों ही के उपजाएगा ॥ १६ । और देश देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा तू उन सभों को सत्यानाश करना उन पर तरस की दृष्टि न करना न उन के देवताओं की उपासना करना नहीं तो तू फन्दे में फंस जाएगा ॥ १७ । यदि तू अपने मन में सोचे कि वे जातियां जो मुझ से अधिक हैं सो मैं उन को क्योंकर देश से निकाल सकूं, १८ । तौभी उन से न डरना जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फिरौन से और सारे मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण रखना ॥ १९ । जो बड़े बड़े परीक्षा के काम तू ने अपनी आंखों से देखे और जिन चिन्हों और चमत्कारों और जिस बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को निकाल लाया उन के अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों से भी जिन से तू डरता है करेगा ॥ २० । इस से अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा उन के बीच बर्रें भी भेजेगा यहां लों कि उन में से जो बचकर छिप जाएंगे सो भी तेरे साम्हने से नाश हो जाएंगे ॥ २१ । उन से त्रास न खा क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच है और वह महान् और भययोग्य ईश्वर है ॥ २२ । तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरे धीरे निकाल देगा सो तू एक दम से उन का अन्त न कर सकेगा नहीं तो बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे ॥ २३ । तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तुझ से हरवा देगा और जब लों वे सत्यानाश न हो जाएं तब लों उन को अति व्याकुल करता रहेगा ॥ २४ । और वह उन के राजाओं को तेरे हाथ में करेगा और तू उन का नाम भी धरती पर से[1] मिटा डालेगा उन में से कोई भी तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा ॥ २५ । उन के देवताओं की खुदी हुई मूर्त्तियां तुम आग में जला देना जो चान्दी वा सोना उन पर मढ़ा हो उस का लालच करके

(१) मूल में. आकाश के तले से ।

न ले लेना नहीं तो तू उस के कारण फंदे में फंसेगा क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लेखे घिनौनी हैं॥ २६। और कोई घिनौनी वस्तु अपने घर मे न ले आना नहीं तो तू भी उस के समान सत्यानाश की वस्तु ठहरेगा बरन उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उस से घिन ही घिन और बैर ही बैर रखना॥

८. जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों पर चलने की चौकसी करना इस लिये कि तुम जीते और बढ़ते रहो और जिस देश के विषय यहोवा ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है उस मे जाकर उस के अधिकारी हो जाओ॥ २। और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा इन चालीस बरसों मे तुझे सारे मार्ग में इस लिये ले आया है कि वह तुझे दीन बनाए और तेरी परीक्षा करके जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है और तू उस की आज्ञाओं को पालेगा वा नहीं॥ ३। उस ने तुझ को दीन बनाया और भूखा होने दिया फिर मान् जिसे न तू न तेरे पुरखा जानते थे वही तुझ को खिलाया इस लिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन से वह जीता है॥ ४। इन चालीस बरसों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए और तेरे तन से नहीं गिरे और न तेरे पांव फूले॥ ५। फिर अपने मन में सोच कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है॥ ६। सो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उस के मार्गों पर चलना और उस का भय मानना॥ ७। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जाता है जो जल बहती हुई नदियों का और तराइयों और पहाड़ों से निकलते हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है॥ ८। फिर वह गोहूं जौ दाखलताओं अंजीरों और अनारों का देश है और तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है॥ ९। उस देश मे अन्न की महंगी न होगी बरन उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी न होगी वहां के पत्थर लोहे के हैं[1] और वहां के पहाड़ों में से तू ताम्बा खोदकर निकाल सकेगा॥ १०। और तू पेट भर खाएगा और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उस का धन्य मानेगा॥ ११। सचेत रह न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को बिसराकर उस की जो जो आज्ञा नियम और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन का मानना छोड़ दे, १२। ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो और अच्छे अच्छे घर बनाकर उन में बसे, १३। और तेरी गाय बैलों और भेड़ बकरियों की बढ़ती हो और तेरा सोना चान्दी बरन तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए॥ १४। तब तेरा मन फूल जाए और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, १५। और उस बड़े और भयानक जंगल मे से ले आया है जहां तेज विषवाले[2] सर्प और बिच्छू हैं और बिना जल के सूखे देश में उस ने तेरे लिये चकमक की चटान से जल निकाला, १६। और तुझे जंगल मे मान् खिलाया जिसे तुम्हारे पुरखा न जानते थे इस लिये कि वह तुझे दीन बनाए और तेरी परीक्षा कर करके अन्त मे तेरा भला ही करे॥ १७। और न हो कि तू सोचने लगे कि यह संपत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई॥ १८। पर तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना कि वही है जो तुझे संपत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इस लिये देता है कि जो वाचा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर बांधी थी उस को पूरा करे जैसा आज प्रगट है॥ १९। यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को बिसराकर दूसरे देवताओं के पीछे हो ले और उन की उपासना और उन को दण्डवत् करे तो मैं आज तुम को चिता देता हूं कि तुम निःसंदेह नाश हो जाओगे॥ २०। जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नाश करने

---

(१) मूल में जिस के पत्थर लोहा हैं।
(२) मूल में जलते हुए।

पर है उन्हीं की नाईं तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा को न मानने के कारण नाश हो जाओगे ॥

९. हे इस्राएल् सुन आज तू यर्दन पार इस लिये जानेवाला है कि ऐसी जातियों को जो तुझ से बड़ी और सामर्थी हैं और ऐसे बड़े नगरों को जिन की शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं[1] अपने अधिकार में ले ॥ २। उन में बड़े बड़े और लम्बे लम्बे लोग अर्थात् अनाकवंशी रहते हैं जिन का हाल तू जानता है और उन के विषय तू ने यह सुना है कि अनाकवंशियों के साम्हने कौन ठहर सकता है ॥ ३। सो आज यह जान रख कि जो तेरे आगे भस्म करनेहारी आग की नाईं पार जानेहारा है वह तेरा परमेश्वर यहोवा है और वह उन का सत्यानाश करेगा और तेरे साम्हने दबा देगा और तू यहोवा के कहे के अनुसार उन को उस देश से निकालकर शीघ्र नाश करेगा ॥ ४। जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे साम्हने से धकियाकर निकाल चुके तब यह न सोचना कि यहोवा मेरे धर्म्म के कारण मुझे इस देश का अधिकारी होने को ले आया है बरन उन जातियों की दुष्टता ही के कारण यहोवा उन को तेरे साम्हने से निकालता है ॥ ५। तू जो उन के देश का अधिकारी होने को जाने पर है इस का कारण तेरा धर्म्म वा मन की सिधाई नहीं है तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियों को तेरे साम्हने से निकालता है इस का कारण उन की दुष्टता है और यह भी कि जो वचन उस ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब तेरे पितरों को किरिया खाकर दिया था उस को वह पूरा करना चाहता है ॥ ६। सो यह जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझे वह अच्छा देश देता है कि तू उस का अधिकारी हो सो तेरे धर्म्म के कारण नहीं देता क्योंकि तू तो हठीली[2] जाति है ॥ ७। इस बात का स्मरण कर और कभी न भूल कि जंगल में तू ने किस किस रीति अपने परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया बरन जिस दिन से तू मिस्र देश से निकला जब लों तुम इस स्थान पर न पहुंचे तब लों तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते आये हो ॥ ८। फिर होरेब् के पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया और वह कोप करके तुम्हें सत्यानाश करने को उठा ॥ ९। जब मैं उस वाचा की पत्थर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बांधी थी लेने के लिये पर्वत पर चढ़ गया तब चालीस दिन और चालीस रात पर्वत पर रहा मैं ने न तो रोटी खाई न पानी पिया ॥ १०। और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ[1] की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंपा और जितने वचन यहोवा ने पर्वत पर आग के बीच में से सभा के दिन तुम से कहे थे सो सब उन पर लिखे हुए थे ॥ ११। और चालीस दिन और चालीस रात के बीते पर यहोवा ने पत्थर की वे दो वाचा की पटियाएं मुझे दिईं ॥ १२। और यहोवा ने मुझ से कहा उठ यहां से झट नीचे जा क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिन को तू मिस्र से निकाल ले आया है सो बिगड़ गये हैं जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उन्हें दिई थी उस को उन्हों ने झटपट छोड़ दिया है अर्थात् उन्हों ने एक मूर्त्ति ढालकर बना लिई है ॥ १३। फिर यहोवा ने मुझ से कहा मैं ने उन लोगों को देखा कि वे हठीली जाति[2] के हैं ॥ १४। सो अब मुझे मत रोक मैं उन्हें सत्यानाश करूं और धरती पर से[3] उन का नाम तक मिटा डालूं और उन से बढ़कर एक बड़ी और सामर्थी जाति तुझी से उत्पन्न करूं ॥ १५। तब मैं घूमकर पर्वत से उतर चला और पर्वत आग से जल रहा था और मेरे दोनों हाथों में वाचा की दोनों पटियाएं थीं ॥ १६। और मैं ने देखा कि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया और एक बछड़ा ढालकर बना लिया जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दिई थी उस को तुम ने झटपट छोड़ दिया था ॥ १७। सो मैं ने दोनों पटियाओं को अपने दोनों हाथों से

(१) मूल में आकाश लों गढ़वाले नगरों को। (२) मूल में, कड़ी गर्दनवाला।

(१) मूल में परमेश्वर की अंगुली। (२) मूल में कड़ी गर्दनवाले। (३) मूल में आकाश के तले से।

लेकर फेंक दिया और वे तुम्हारे देखते टुकड़े टुकड़े हो गईं ॥ १८ । तब तुम्हारे उस बड़े पाप के कारण जिस करके तुम ने यहोवा के लेखे में बुराई करने से उसे रिस दिलाई थी मैं यहोवा के साम्हने गिर पड़ा और पहिले की नाईं अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक न तो रोटी खाई न पानी पिया ॥ १९ । मैं तो यहोवा के उस कोप और जलजलाहट से डरता था जिस से वह तुम्हें सत्यानाश करने को उठा था और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुन लिई ॥ २० । और यहोवा हारून से इतना कोपित हुआ कि उसे भी सत्यानाश करने को उठा सो उसी समय मैं ने हारून के लिये भी प्रार्थना किई ॥ २१ । और मैं ने वह बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हुए थे ले आग में डालकर फूंक दिया और पीस पीसकर चूर चूर कर डाला और उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से उतरी थी ॥ २२ । फिर तबेरा और मस्सा और किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को रिस दिलाई थी ॥ २३ । फिर जब यहोवा ने तुम को कादेशबर्ने से यह कहकर भेजा कि जाकर उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी हो जाओ तब भी तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया और न तो उस का विश्वास किया न उस की बात मानी ॥ २४ । बरन जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं उस दिन से तुम यहोवा से बलवा करते आये हो ॥ २५ । सो मैं यहोवा के साम्हने चालीस दिन और चालीस रात पड़ा रहा इस लिये कि यहोवा ने तुम्हें सत्यानाश करने को कहा था ॥ २६ । और मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना किई कि हे प्रभु यहोवा अपना प्रजारूपी निज भाग जिसे तू ने अपने प्रताप से छुड़ा लिया और बलवन्त हाथ बढ़ाकर मिस्र से निकाल लाया है उसे नाश न कर ॥ २७ । अपने दास इब्राहीम इसहाक् और याकूब की सुधि कर और इन लोगों की कठोरता और दुष्टता और पाप पर चित्त न धर ॥ २८ । न हो कि जिस देश से तू हम को निकाल ले आया है उस के लोग यह कहने लगें कि यहोवा जो उन्हें उस देश में जिस के देने का वचन उन को दिया था पहुंचा न सका और उन से बैर भी रखता था इसी से उस ने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला है ॥ २९ । ये तेरी प्रजा और निज भाग हैं और इन को तू अपने बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल ले आया है ॥

१०. उस समय यहोवा ने मुझ से कहा पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले और उन्हें लेकर मेरे पास पर्वत पर चढ़ आ और लकड़ी का एक संदूक बनवा ले ॥ २ । और मैं उन पटियाओं पर वे ही वचन लिखूंगा जो उन पहिली पटियाओं पर थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें उस संदूक में रखना ॥ ३ । सो मैं ने बबूल की लकड़ी का एक संदूक बनवाया और पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ीं तब उन्हें हाथों में लिये हुए पर्वत पर चढ़ गया ॥ ४ । और जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर आग के बीच में से तुम से कहे थे वे ही उस ने पहिलों के समान उन पटियाओं पर लिखे और उन को मुझे सौंप दिया ॥ ५ । तब मैं फिरकर पर्वत से उतर आया और पटियाओं को अपने बनवाये हुए संदूक में धर दिया और यहोवा की आज्ञा के अनुसार वे वहीं रक्खी हुई हैं ॥ ६ । तब इस्राएली याकानियों के कूओं से कूच करके मोसेरा लों आये वहां हारून मर गया और उस को वहीं मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र एलाजार् उस के स्थान पर याजक का काम करने लगा ॥ ७ । वे वहां से कूच करके गुद्गोदा को और गुद्गोदा से योत्बाता को जो जल बहती हुई नदियों का देश है पहुंचे ॥ ८ । उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इस लिये अलग किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक उठाया करें और यहोवा के सन्मुख खड़े होकर उस की सेवाटहल किया करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें जैसे कि आज के दिन लों होता है ॥ ९ । इस कारण लेवीयों को अपने भाइयों के साथ कोई निज अंश वा भाग नहीं मिला

यहोवा ही उन का निज भाग है जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस से कहा था॥ १०। मैं तो पहिले की नाईं उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी और तुझे नाश करने की मनसा छोड़ दिई॥ ११। सो यहोवा ने मुझ से कहा तू इन लोगों की अगुवाई कर कि जिस देश के देने को मैं ने उन के पितरों से किरिया खाकर कहा था उस में वे जाकर उस को अपने अधिकार में कर लें॥

१२। और अब हे इस्राएल् तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इस को छोड़ क्या चाहता है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने उस के सारे मार्गों पर चले उस से प्रेम रक्खे और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की सेवा करे, १३। और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन को माने जिस से तेरा भला हो॥ १४। सुन स्वर्ग बरन सब से ऊंचा स्वर्ग भी और पृथिवी और उस में जो कुछ है सो सब तेरे परमेश्वर यहोवा ही का है॥ १५। तौभी यहोवा ने तेरे पितरों से स्नेह और प्रेम रक्खा और उन के पीछे तुम लोगों को जो उन के वंश हो सारे देशों के लोगों में से चुन लिया जैसा कि आज के दिन है॥ १६। सो अपने अपने हृदय का खतना करो और आगे को हठीले[1] न हो॥ १७। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु महान् पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर है जो किसी का पक्ष नहीं करता और न घूस लेता है॥ १८। वह बपमूए और विधवा का न्याय चुकाता और परदेशियों से प्रेम करके उन्हें भोजन और वस्त्र देता है॥ १९। सो तुम परदेशियों से प्रेम रखना क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे॥ २०। अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना उसी की सेवा करना उसी के बने रहना और उसी के नाम की किरिया खाना॥ २१। वही तेरे स्तुति करने के योग्य है[2] और वही तेरा परमेश्वर है जिस ने तेरे साथ ये बड़े और भयानक काम किये हैं जिन्हें तू ने अपनी आंखों से देखा है॥ २२। तेरे पुरखा तो मिस्र जाने के समय सत्तर ही मनुष्य थे पर अब तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारों के समान बहुत कर दिई है॥

११. सो तू अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना और जो कुछ उस ने तुझे सौंपा है उस का अर्थात् उस की विधियों नियमों और आज्ञाओं का नित्य पालन करना॥ २। सो तुम आज सोच रक्खो मैं तो तुम्हारे बालबच्चों से नहीं कहता जिन्हों ने न तो कुछ देखा और न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने क्या ताड़ना किई और कैसी महिमा और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा दिखाई, ३। और मिस्र में वहां के राजा फिरौन को क्या क्या चिन्ह दिखाये और उस के सारे देश में क्या क्या काम किये, ४। और उस ने मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों से क्या किया अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा किये हुए थे तब उस ने उन को लाल समुद्र में डुबोकर कैसे नाश कर डाला कि आज तक उन का पता नहीं, ५। और तुम्हारे इस स्थान में पहुंचने लों उस ने जंगल में तुम से क्या क्या किया, ६। और उस ने रूबेनी एलोआब् के पुत्र दातान् और अबीराम् से क्या क्या किया अर्थात् पृथिवी ने अपना मुंह पसारके उन को घरानों डेरों और सब अनुचरों समेत सब इस्राएलियों के देखते[1] कैसे निगल लिया॥ ७। पर यहोवा के इन सब बड़े बड़े कामों को तुम ने अपनी आंखों से देखा है॥ ८। इस कारण जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभों को माना करना इस लिये कि तुम सामर्थी होकर उस देश में जिस के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो प्रवेश करके उस के अधिकारी हो जाओ, ९। और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की किरिया यहोवा ने तुम्हारे पितरों से खाई और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं॥ १०। देखो जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो सो

(१) मूल में. कड़ी गर्दनवाले। (२) मूल में वही तेरी स्तुति है।

(१) मूल में बीच में।

मिस्र देश के समान नहीं है जहां से निकल आये हो जहां तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पांव से बरहा बनाकर सींचते थे ॥ ११ । पर जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो सो पहाड़ों और तराइयों का देश है और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है ॥ १२ । वह ऐसा देश है जिस की तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है बरन बरस के आदि से ले अन्त लों तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर लगातार लगी रहती है ॥

१३ । और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं ध्यान से सुनकर अपने सारे मन और सारे जीव के साथ अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खे हुए उस की सेवा करते रहो, १४ । तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने अपने समय पर किया करूंगा जिस से तू अपना अन्न नया दाखमधु और टटका तेल संचय कर सकेगा ॥ १५ । और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊंगा और तू पेट भर भर खा सकेगा ॥ १६ । सो अपने विषय सचेत रहो न हो कि तुम अपने मन में धोखा खाओ और बहककर दूसरे देवताओं की उपासना और उन को दण्डवत् करने लगो, १७ । और यहोवा का कोप तुम पर भड़के और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे और भूमि अपनी उपज न दे और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नाश हो जाओ ॥ १८ । सो तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और जीव में धारण किये रहना और चिन्हानी करके अपने हाथों पर बांधना और वे तुम्हारी आंखों के बीच टीके का काम दें ॥ १९ । और तुम घर में बैठे मार्ग पर चलते लेटते उठते इन की चर्चा करके अपने लड़केबालों को सिखाया करना ॥ २० । और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना, २१ । इस लिये कि जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाकर कहा कि मैं उसे तुम्हें दूंगा उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों के दिन बहुत हों बरन जब लों पृथिवी के ऊपर का आकाश बना रहे तब लों वे भी बने रहें ॥ २२ । सो यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूं पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खो और उस के सारे मार्गों पर चलो और उस के बने रहो, २३ । तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकालेगा और तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे ॥ २४ । जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांव पड़ें वे सब तुम्हारे हो जाएंगे अर्थात् जंगल से लबानोन् तक और परात् नाम महानद से ले पश्चिम के समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा ॥ २५ । तुम्हारे साम्हने कोई भी खड़ा न रह सकेगा क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पांव पड़ें उस सब पर रहनेहारों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण डर और थरथराहट उपजाएगा ॥

२६ । सुनो मैं आज के दिन तुम को आशीष और साप दोनों दिखाता हूं ॥ २७ । अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं मानो तो तुम पर आशीष होगी ॥ २८ । और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को न मानो और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूं उसे छोड़कर दूसरे देवताओं के पीछे हो लो जिन्हें तुम नहीं जानते तो तुम पर साप पड़ेगा ॥

२९ । और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को उस देश में पहुंचाए जिस के अधिकारी होने को तू जाने पर है तब आशीष गरिज्जीम् पर्वत पर से और साप एबाल् पर्वत पर से सुनाना[1] ॥ ३० । क्या वे यर्दन के पार सूर्य्य के अस्त होने की ओर अराबा के निवासी कनानियों के देश में गिलगाल् के साम्हने मोरे के बांज वृक्षों के पास नहीं हैं ॥ ३१ । तुम तो यर्दन पार इसी लिये जाने पर हो कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस के अधिकारी हो जाओ और तुम उस के अधि-

(१) मूल में पर्वत पर रखना ।

कारी होकर उस में बास करोगे ॥ ३२ । सो जितनी विधियां और नियम मैं आज तुम को सुनाता हूं उन सभों के मानने में चौकसी करना ॥

१२. जो देश तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है उस में जब लों तुम भूमि पर जीते रहो तब लों इन विधियों और नियमों के मानने मे चौकसी करना॥ २। जिन जातियों के तुम अधिकारी होगे उन के लोग ऊंचे ऊंचे पहाड़ों वा टीलों पर वा किसी भांति के हरे वृक्ष के तले जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं उन सभों को तुम पूरी रीति से नाश कर डालना ॥ ३। उन की वेदियों को ढा देना उन की लाठों को तोड़ डालना उन की अशेरा नाम मूर्त्तियों को आग में जला देना और उन के देवताओं की खुदी हुई मूर्त्तियों को काटकर गिरा देना कि उस देश में से उन के नाम तक मिट जाएं ॥ ४। फिर जैसे वे करते हैं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये वैसे न करना ॥ ५। वरन जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा कि वहां अपना नाम बनाये रक्खे उस के उसी निवासस्थान के पास जाया करना ॥ ६। और वहीं तुम अपने होमबलि मेलबलि दशमांश और उठाई हुई भेंटें और मन्नत की वस्तुएं और स्वेच्छाबलि और गायबैलों और भेड़बकरियों के पहिलौठे ले जाया करना ॥ ७। और वहीं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना और अपने अपने घराने समेत उन सब कामों पर जिन में तुम ने हाथ लगाया हो और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष मिली हो आनन्द करना ॥ ८। जैसे हम आजकल यहां जो काम जिस को भावता है सोई करते हैं वैसे तुम न करना ॥ ९। जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब लों तो नहीं पहुंचे ॥ १०। पर जब तुम यर्दन पार जाकर उस देश में जिस के भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ और वह तुम्हारी चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे और तुम निडर रहने पाओ, ११। तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी मे तुम अपने होमबलि मेलबलि दशमांश उठाई हुई भेंटें और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएं जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे निदान जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उन सभों को वहीं ले आया करना ॥ १२। और वहां तुम अपने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनन्द करे क्योंकि उस का तुम्हारे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा ॥ १३। सचेत रह कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाए ॥ १४। जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपने होमबलियों को चढ़ाया करना और जिस जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को सुनाता हूं उस को वहीं करना ॥ १५। पर तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने परमेश्वर यहोवा की दिई हुई आशीष के अनुसार पशु मारके खा सकेगा शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे जैसे कि चिकारे और हरिण का मांस ॥ १६। पर उस का लोहू न खाना उसे जल की नाईं भूमि पर उण्डेल देना ॥ १७। फिर अपने अन्न वा नये दाखमधु वा टटके तेल का दशमांश और अपने गायबैलों वा भेड़बकरियों के पहिलौठे और अपनी मन्नतों की कोई वस्तु और अपने स्वेच्छाबलि और उठाई हुई भेंटें अपने सब फाटकों के भीतर न खाना, १८। उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उसी स्थान पर जिस को वह चुने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों के और जो लेवीय तेरे फाटकों के भीतर रहेंगे उन के साथ खाना और तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपने सब कामों पर जिन में हाथ लगाया हो आनन्द करना ॥ १९। सचेत रह कि जब लों तू भूमि पर जीता रहे तब लों लेवीयों को न छोड़ना ॥

२०। जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए और तेरा जी मांस खाने चाहे और तू सोचने लगे कि मैं मांस खाऊंगा तब जो मांस तेरा जी चाहे सो खा सकेगा॥ २१। जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाये रखने के लिये चुन ले वह यदि तुझ से बहुत दूर हो तो जो गायबैल भेड़बकरी यहोवा ने तुझे दिई हों उन में से जो कुछ तेरा जी चाहे सो मेरी आज्ञा के अनुसार मारके अपने फाटकों के भीतर खा सकेगा॥ २२। जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाया जाता है वैसे ही उन को भी खा सकेगा शुद्ध अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य उन का मांस खा सकेंगे॥ २३। पर उन का लोहू किसी भांति न खाना क्योंकि लोहू जो है सो प्राण ही है और तू मांस के साथ प्राण न खाना॥ २४। उस को न खाना उसे जल की नाईं भूमि पर उण्डेल देना॥ २५। तू उसे न खाना इस लिये कि वह काम करने से जो यहोवा के लेखे ठीक है तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो॥ २६। पर जब तू कोई वस्तु पवित्र करे वा मन्नत माने तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्थान को जाना जिस को यहोवा चुन लेगा॥ २७। और वहां अपने होमबलियों के मांस और लोहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाना और मेलबलियों का लोहू उस की वेदी पर उण्डेलकर उन का मांस खाना॥ २८। इन बातों को जिन की आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं चित्त लगाकर सुन कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे भला और ठीक है तब तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी सदा लों भला होता रहे॥

२९। जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिन का अधिकारी होने को तू जाने पर है तेरे आगे से नाश करे और तू उन का अधिकारी होकर उन के देश मे बस जाए, ३०। तब सचेत रहना न हो कि उन के सत्यानाश होने के पीछे तू भी उन की नाईं फंस जाए अर्थात् यह कहकर उन के देवताओं को न पूछना कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे मैं भी वैसी ही करूंगा॥ ३१। तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा बरताव न करना क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घिन और बैर रखता है उन सभों को उन्हों ने अपने देवताओं के लिये किया है वरन अपने बेटे बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये होम करके जलाते हैं॥

३२। जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उन को चौकस होकर माना करना न तो उन में कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना॥

१३. यदि तेरे बीच कोई नबी वा स्वप्न देखनेहारा प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, २। और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे कि आओ हम पराये देवताओं के पीछे होकर जो अब लों तुम्हारे अनजाने रहे उन की उपासना करें सो पूरा हो जाए, ३। तौभी तू उस नबी वा स्वप्न देखनेहारे के वचन पर कान न धरना क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा इस लिये कि जान ले कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे जीव के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं॥ ४। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना और उस का भय मानना और उस की आज्ञाओं पर चलना और उस का वचन मानना और उस की सेवा करना और उस के बने रहना॥ ५। और ऐसा नबी वा स्वप्न देखनेहारा जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर यहोवा से फेरके जिस ने तुम को मिस्र देश से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया है तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेहारा ठहरेगा इस कारण वह मार डाला जाए। इस रीति तू अपने बीच मे से ऐसी बुराई को दूर करना॥

६। यदि तेरा सगा भाई वा बेटा वा बेटी वा तेरी अर्द्धांगिनि(१) वा प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले मे तुझ को यह कहकर फुसलाने लगे कि

(१) मूल में तुम्हारी गोद की स्त्री।

आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना करें जिन्हें न तू न तेरे पुरखा जानते थे, ७। और न तू न तेरे पुरखा उन्हें जानते थे चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेहारे आसपास के लोगों के चाहे पृथिवी की एक छोर से लेके दूसरी छोर लों दूर दूर रहनेहारों के देवता हों, ८। तो उस की न मानना बरन उस की न सुनना और न उस पर तरस खाना न कोमलता दिखाना न उस को छिपा रखना ॥ ९। उस को अवश्य घात करना उस के घात करने में पहिले तेरा हाथ उठे पीछे सब लोगों के हाथ उठें ॥ १०। उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए क्योंकि उस ने तुझ को तेरे उस परमेश्वर यहोवा की ओर से जो तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है बहकाने का यत्न किया है ॥ ११। और सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे और ऐसा बुरा काम फिर तेरे बीच न करेंगे ॥

१२। यदि तेरे किसी नगर के विषय जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के लिये देता है ऐसी बात तेरे सुनने में आए कि, १३। कितने अधम पुरुषों ने तुम्हारे बीच में से निकलकर अपने नगर के निवासियों को यह कहकर बहका दिया है कि आओ हम दूसरे देवताओं की जो अब लों तुम्हारे अनजाने रहे उपासना करें, १४। तो पूछपाछ करना और खोलना और भली भांति पता लगाना और जो यह बात सच हो और कुछ भी संदेह न रहे कि तेरे बीच ऐसा घिनौना काम किया जाता है, १५। तो अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना और पशु आदि उस सब समेत जो उस में हो उस को तलवार से सत्यानाश करना ॥ १६। और उस में की सारी लूट चौक के बीच एकट्ठी कर उस नगर को लूट समेत अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानो सर्व्वांग होम करके जलाना और वह सदा लों डीह रहे वह फिर बसाया न जाए ॥ १७। और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लगने पाए कि यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई थी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे और दया करके तुझ को गिनती में बढ़ाए ॥ १८। यह तब होगा जब तू अपने परमेश्वर यहोवा की मानते हुए जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों को मानेगा और जो तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे में ठीक है सोई करेगा ॥

१४. तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो सो मुए हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना और न भौंहों के बाल मुंड़ाना[१] ॥ २। क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र समाज है और यहोवा ने तुझ को पृथिवी भर के सब देशों के लोगों में से अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है ॥

३। तू कोई घिनौनी वस्तु न खाना ॥ ४। जो पशु तुम खा सकते हो सो ये हैं अर्थात् गाय बैल भेड़ बकरी, ५। हरिण चिकारा यखमूर बनैली बकरी साबर नीलगाव और बनैली भेड़ ॥ ६। निदान पशुओं में से जितने पशु चिरे वा फटे खुरवाले और पागुर करनेवाले होते हैं उन का मांस तुम खा सकते हो ॥ ७। पर पागुर करनेहारों वा चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को अर्थात् ऊंट खरहा और शापान् को न खाना क्योंकि ये पागुर तो करते पर चिरे खुर के नहीं होते इस से वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥ ८। फिर सूअर जो चिरे खुर का तो होता है पर पागुर नहीं करता इस से वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है सो न तो इन का मांस खाना और न इन की लोथ छूना ॥

९। फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो अर्थात् जितनों के पंख और छिलके होते हैं ॥ १०। पर जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न खाना क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

११। सब शुद्ध पक्षियों का मांस तो तुम खा सकते हो ॥ १२। पर इन का मांस न खाना अर्थात् उकाब हड़फोड़ कुरर, १३। गरुड़ चील और भांति भांति

(१) मूल में अपनी आंखों के बीच गंजापन न करना।

के शाहीं, १४। और भांति भांति के सब काग, १५। शुतर्मुर्ग तहमास् जलकुक्कुट और भांति भांति के बाज, १६। छोटा और बड़ा दोनों जाति का उल्लू और घुग्घू, १७। धनेश गिद्ध हाड़गील, १८। सारस भांति भांति के बगुले नौवा और चमगीदड़, १९। और जितने रेंगनेहारे पंखवाले हैं सो सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, वे खाए न जाएं॥ २०। पर सब शुद्ध पंखवालों का मांस तुम खा सकते हो॥

२१। जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो वा किसी बिराने के हाथ बेच सकते हो पर तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उस की माता के दूध में न सिझाना॥

२२। बीज की सारी उपज में से जो बरस बरस खेत में उपजे दशमांश अवश्य अलग करके रखना॥ २३। और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उस में अपने अन्न नये दाखमधु और टटके तेल का दशमांश और अपने गाय बैलों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाया करना जिस से तुम उस का भय नित्य मानना सीखोगे॥ २४। पर यदि वह स्थान जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाये रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो और इस कारण वहां की यात्रा तेरे लिये इतनी लम्बी हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएं वहां न ले जा सके, २५। तो उसे बेचके रुपैये को बांध हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा॥ २६। और वहां गायबैल वा भेड़बकरी वा दाखमधु वा मदिरा वा किसी भान्ति की वस्तु क्यों न हो जो तेरा जी चाहे सो उसी रुपैये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द करना॥ २७। और अपने फाटकों के भीतर के लेवीय को न छोड़ना क्योंकि तेरे साथ उस का कोई भाग वा अंश न होगा॥

२८। तीन तीन बरस के बीते पर तीसरे[1] बरस की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर एकट्ठा कर रखना॥ २९। तब लेवीय जिस का तेरे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा वह और जो परदेशी और बपमुए और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों वे भी आकर पेट भर खाएं जिस से तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे॥

१५. सात

सात बरस के बीते पर उगाही छोड़ देना, २। अर्थात् जिस किसी ऋण देनेहारे ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो सो उस की उगाही छोड़ दे और अपने पड़ोसी वा भाई से उस को बरबस न भरवा ले क्योंकि यहोवा के नाम से उगाही छोड़ देने का प्रचार हुआ है॥ ३। बिराने मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है पर जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उस को तू बिना भरवाये छोड़ देना॥ ४। तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है कि तू उस का अधिकारी हो उस में वह तुझे बहुत ही आशीष देगा॥ ५। इतना हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने और इस सारी आज्ञा के जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मानने में चौकसी करे॥ ६। तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा और तू बहुत जातियों को उधार देगा पर तुझे उधार लेना न पड़ेगा और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा पर वे तेरे ऊपर प्रभुता करने न पाएंगी॥

७। जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस के किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयो में से कोई तेरे पास दरिद्र हो तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना न अपनी मुट्ठी कड़ी करना॥ ८। जिस वस्तु की घटी उस को हो उस का जितना प्रयोजन हो

(१) मूल में उस।

उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उस को उधार देना ॥ ९ । सचेत रह कि तेरे मन में ऐसी अधम चिन्ता न समाए कि सातवां बरस जिस में उगाही छोड़ देना होगा सो निकट है और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके उसे कुछ देने से नाह करे और वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई दे और यह तेरे लिये पाप ठहरे ॥ १० । तू उस को अवश्य देना और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिन में तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा ॥ ११ । तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाये जाएंगे इस लिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू अपने देश में के अपने दीन दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना ॥

१२ । यदि तेरा कोई भाईबन्धु अर्थात् कोई इब्री वा इब्रिन तेरे हाथ बिके और वह छ: बरस तेरी सेवा कर चुके तो सातवें बरस उस को अपने पास से स्वाधीन करके जाने देना ॥ १३ । और जब तू उस को स्वाधीन करके अपने पास से जाने दे तब उसे छूछे हाथ जाने न देना ॥ १४ । बरन अपनी भेड़बकरियों और खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से उस को बहुतायत से देना तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दिई हो उस के अनुसार उसे देना ॥ १५ । और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में दास था और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूं ॥ १६ । और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता और तेरे संग आनन्द से रहता हो और इस कारण तुझ से कहने लगे कि मैं तेरे पास से न जाऊंगा, १७ । तो सुतारी लेकर उस का कान किवाड़ पर लगाकर छेदना तब वह सदा लों तेरा दास बना रहेगा । और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना ॥ १८ । जब तू उस को अपने पास से स्वाधीन करके जाने दे तब उसे छोड़ देना तुझ को कठिन न जान पड़े क्योंकि उस ने छ: बरस दो मजूरों के बराबर तेरी सेवा किई है और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझ को आशीष देगा ॥

१९ । तेरी गायों और भेड़बकरियों के जितने पहिलौठे नर हों उन सभों को अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना, अपनी गायों के पहिलौठे से कोई काम न लेना और न अपनी भेड़बकरियों के पहिलौठे की ऊन कतरना ॥ २० । उस स्थान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के साम्हने अपने अपने घराने समेत बरस बरस उस का मांस खाना ॥ २१ । पर यदि उस में किसी प्रकार का दोष हो जैसे वह लंगड़ा वा अंधा हो वा उस में किसी ही प्रकार की बुराई का दोष हो तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलि न करना ॥ २२ । उस को अपने फाटकों के भीतर खाना शुद्ध अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाते हैं वैसे ही उस का भी खा सकेंगे ॥ २३ । पर उस का लोहू न खाना उसे जल की नाईं भूमि पर उण्डेल देना ॥

१६. आबीब् महीने को स्मरण करके अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह् नाम पर्व मानना क्योंकि आबीब् महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया ॥ २ । सो जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेड़बकरियां और गायबैल फसह् करके बलि करना ॥ ३ । उस के संग कोई खमीरी वस्तु न खाना सात दिन लों अखमीरी रोटी जो दु:ख की रोटी है खाया करना क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली करके निकला था इस रीति तुझ को मिस्र देश से निकलने का दिन जीवन भर स्मरण रहेगा ॥ ४ । सात दिन लों तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी न आए और जो पशु तू पहिले दिन की सांझ को बलि करे उस के मांस में से कुछ बिहान लों रहने न पाए ॥ ५ । फसह् को अपने किसी फाटक के भीतर जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना ॥ ६ । जो स्थान तेरा

परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन ले केवल वहीं बरस के उसी समय जिस में तू मिस्र से निकला था अर्थात् सूरज डूबने पर संध्याकाल को फसह का पशु बलि करना ॥ ७ । तब उस का मांस उसी स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले भूनकर खाना फिर बिहान को उठकर अपने अपने डेरे को लौट जाना ॥ ८ । छः दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये महासभा हो उस दिन किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए ॥

९ । फिर जब तू खेत में हंसुआ लगाने लगे तब से आरंभ करके सात अठवारे गिनना ॥ १० । तब अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार उस के लिये स्वेच्छाबलि देकर अठवारों नाम पर्व मानना ॥ ११ । और उस स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले अपने अपने बेटे बेटियों दास दासियों समेत तू और तेरे फाटकों के भीतर जो लेवीय हों और जो जो परदेशी और बपमूए और विधवाएं तेरे बीच में हों सो सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करें ॥ १२ । और स्मरण रखना कि तू भी मिस्र में दास था इस लिये इन विधियों के पालन करने में चौकसी करना ॥

१३ । जब तू अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से सब कुछ एकट्ठा कर चुके तब झोंपड़ियों नाम पर्व सात दिन मानते रहना ॥ १४ । और अपने इस पर्व में अपने अपने बेटे बेटियों दास दासियों समेत तू और जो लेवीय और परदेशी और बपमूए और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों सो भी आनन्द करें ॥ १५ । जो स्थान यहोवा चुन ले उस में तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये सात दिन लों पर्व मानते रहना, इस कारण कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी सारी बढ़ती में और तेरे सब कामों में तुझ को आशीष देगा तू आनन्द ही करना ॥ १६ । बरस दिन में तीन बार अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व और अठवारों के पर्व और झोंपड़ियों के पर्व इन तीनों पर्वों में तुझ में से सब पुरुष अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उस स्थान में जो वह चुन लेगा जाएं और देखो छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न जाए ॥ १७ । सब पुरुष अपनी अपनी पूंजी और उस आशीष के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दिई हो दिया करें ॥

१८ । अपने एक एक गोत्र में से अपने सब फाटकों के भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है न्यायी और सरदार ठहरा लेना जो लोगों का न्याय धर्म्म से किया करें ॥ १९ । न्याय न बिगाड़ना पक्षपात न करना और घूस न लेना क्योंकि घूस बुद्धिमान की आंखें अंधी कर देती और धर्म्मियों की बातें उलट देती है ॥ २० । धर्म्म ही धर्म्म का पीछा पकड़े रहना इस लिये कि तू जीता रहे और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस का अधिकारी बना रहे ॥

२१ । तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी बनाएगा उस के पास किसी प्रकार की लकड़ी की बनी हुई अशेरा न थापना ॥ २२ । और न कोई लाठ खड़ी करना क्योंकि उस से तेरा परमेश्वर यहोवा घिन करता है ॥

१७. अपने

परमेश्वर यहोवा के लिये कोई ऐसी गाय वा बैल वा भेड़बकरी बलि न करना जिस में दोष वा किसी प्रकार की खोटाई हो क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौना लगता है ॥

२ । जो फाटक तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है यदि उन में से किसी में कोई पुरुष वा स्त्री ऐसी पाई जाय कि जिस ने तेरे परमेश्वर यहोवा की वाचा तोड़कर ऐसा काम किया हो जो उस के लेखे में बुरा है, ३ । अर्थात् मेरी आज्ञा उल्लंघन करके पराये देवताओं की वा सूर्य्य वा चंद्रमा वा आकाश के गण में से किसी की उपासना वा उन को दण्डवत् किया हो ४ । और यह बात तुझे बतलाई जाए और तेरे सुनने में आए तब भली भांति पूछपाछ करना और यदि यह बात सच ठहरे कि

निश्चय इस्राएल् में ऐसा घिनौना काम किया गया है, ५। तो जिस पुरुष वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो उस पुरुष वा स्त्री को बाहर अपने फाटकों के पास ले जाकर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए ॥ ६। जो प्राणदण्ड के योग्य ठहरे सो एक ही साक्षी के कहे से न मार डाला जाए दो वा तीन साक्षियों के कहे से मार डाला जाए ॥ ७। उस के मार डालने के लिये सब से पहिले साक्षियों के हाथ और उन के पीछे सब लोगों के हाथ उस पर उठें। इसी रीति से ऐसी बुराई को अपने बीच से दूर करना ॥

८। यदि तेरे फाटकों के भीतर कोई झगड़े की बात हो अर्थात् आपस के खून वा विवाद वा मारपीट का कोई मुकद्दमा उठे और उस का न्याय करना तेरे लिये कठिन जान पड़े तो उस स्थान को जाकर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा, ९। लेवीय याजकों के पास और उन दिनों के न्यायी के पास जाकर पूछना कि वे तुम को न्याय की बात बतलाएं ॥ १०। और न्याय की जैसी बात उस स्थान के लोग जो यहोवा चुन लेगा तुझे बता दें उस के अनुसार करना और जो व्यवस्था वे तुझे दें उस के अनुसार चलने में चौकसी करना ॥ ११। व्यवस्था की जो बात वे तुझे बताएं और न्याय की जो बात वे तुझ से कहें उसी के अनुसार करना जो बात वे तुझ को बताएं उस से न तो दहिने मुड़ना न बाएं ॥ १२। और जो मनुष्य अभिमान करके उस याजक की जो वहां तेरे परमेश्वर यहोवा की सेवा टहल करने को हाजिर रहेगा न माने वा उस न्यायी की न सुने वह मनुष्य मार डाला जाए। सो तुम इस्राएल् में से बुराई को दूर करना ॥ १३। इस से सब लोग सुनकर भय खाएंगे और फिर अभिमान न करेंगे ॥

१४। जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है और उस का अधिकारी हो और उस में बसकर कहने लगे कि चारों ओर की सब जातियों की नाईं मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊंगा, १५। तब जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा ठहराना किसी बिराने को जो तेरा भाई न हो तू अपने ऊपर ठहरा नहीं सकता ॥ १६। और वह बहुत घोड़े न रक्खे और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों को मिस्र में भेजे कि बहुत घोड़े लें क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है कि तुम उस मार्ग से कभी न लौटना ॥ १७। और वह बहुत स्त्रियां न करे न हो कि उस का मन यहोवा से फिर जाए और न वह अपना सोना रूपा बहुत बढ़ाए ॥ १८। और जब वह राजगद्दी पर विराजे तब इसी व्यवस्था की पुस्तक जो लेवीय याजकों के पास रहेगी उस की वह अपने लिये एक नकल कर ले ॥ १९। और वह उसे अपने पास रक्खे और अपने जीवन भर उस को पढ़ा करे इस लिये कि वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों के मानने में चौकसी करना सीखे, २०। जिस से वह घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने और आज्ञा से न तो दहिने मुड़े न बाएं, इस लिये कि वह और उस के वंश के लोग इस्राएलियों के बीच बहुत दिन लों राज्य करते रहें ॥

१८. लेवीय याजकों का बरन सारे लेवीय गोत्रियों का इस्राएलियों के संग कोई भाग वा अंश न हो उन का भोजन हव्य और यहोवा का दिया हुआ भाग हो ॥ २। उन का अपने भाइयों के बीच कोई भाग न हो क्योंकि अपने कहे के अनुसार यहोवा उन का निज भाग ठहरा ॥ ३। और चाहे गायबैल चाहे भेड़बकरी का मेलबलि हो उस के करनेहारे लोगों की ओर से याजकों का हक यह हो कि वे उस का कांधा दोनों गाल और झोझ याजक को दें ॥ ४। तू उस को अपनी पहिली उपज का अन्न नया दाखमधु और टटका तेल और अपनी भेड़ों की पहिली कतरी हुई ऊन देना ॥ ५। क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रियों में से उसी को चुन लिया है कि

वह और उस के वंश सदा लों उस के नाम से सेवा टहल करने को हाज़िर हुआ करें॥

६। फिर यदि कोई लेवीय इस्राएल् के फाटकों में से किसी से जहां वह परदेशी की नाईं रहता हो अपने मन की बड़ी अभिलाषा से उस स्थान पर जाए जिसे यहोवा चुन लेगा, ७। तो अपने सब लेवीय भाइयों की नाईं जो वहां अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने हाज़िर होंगे वह भी उस के नाम से सेवा टहल करे॥ ८। और अपने पितरों के भाग के मोल को छोड़ उस को भोजन का भाग भी उन के समान मिला करे॥

९। जब तू उस देश में पहुंचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है तब वहां की जातियों के अनुसार घिनौने काम करने को न सीखना॥ १०। तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटी को आग में होम करके चढ़ानेहारा वा भावी कहनेहारा वा शुभ अशुभ मुहूर्त्तों का माननेहारा वा टोन्हा वा तान्त्रिक, ११। वा बाजीगर वा ओझों से पूछनेहारा वा भूतसाधनावाला वा भूतों का जगानेहारा हो॥ १२। क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते सो सब यहोवा को घिनौने लगते हैं और ऐसे घिनौने कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तेरे साम्हने से निकालने पर है॥ १३। तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर खरा रहना॥ १४। वे जातियां जिन का अधिकारी तू होने पर है शुभ अशुभ मुहूर्त्तों के माननेहारों और भावी कहनेहारों की सुना करती हैं पर तुझ को तेरे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा करने नहीं दिया॥ १५। तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच से अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उठाएगा उसी की तुम सुनना॥ १६। यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा जो तू ने होरेब् पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से किई थी कि मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना और न वह बड़ी आग फिर देखनी पड़े नहीं तो मर जाऊंगा॥ १७। तब यहोवा ने मुझ से कहा था इन्हों ने जो कहा सो अच्छा कहा॥ १८। सो मैं उन के लिये उन के भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उठाऊंगा और अपने वचन उसे सिखाऊंगा सो जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वह उसे उन को कह सुनाएगा॥ १९। और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा न माने उस से मैं इस का लेखा लूंगा॥ २०। पर जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिस की आज्ञा मैं ने उसे न दिई हो वा पराये देवताओं के नाम से कुछ कहे वह नबी मार डाला जाए॥ २१। और यदि तू यह सन्देह करे कि जो वचन यहोवा ने नहीं कहा उस को हम किस रीति से पहिचान सकें, २२। तो जान रख कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए तो वह ऐसा वचन ठहरेगा जो यहोवा ने नहीं कहा उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है तू उस से भय न खाना॥

१९. जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को नाश करे जिन का देश वह तुझे देता है और तू उन के देश का अधिकारी होके उन के नगरों और घरों में रहने लगे, २। तब अपने देश के बीच जिस का अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे कर देता है तीन नगर अलग कर देना॥ ३। उन के मार्ग सुधारे रखना और अपने देश के जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे भाग करके देता है तीन अंश करना इस लिये कि हर एक खूनी वहीं भाग जाए॥ ४। और जो खूनी वहां भागकर अपने प्राण बचाए सो इस प्रकार का हो कि वह किसी से बिना पहिले बैर रक्खे उस को बिना जाने बूझे मार डाले॥ ५। जैसा कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल में जाए और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी हाथ से उठाए पर कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उस भाई को ऐसा लगे कि वह मर जाए तो वह इन नगरों में से किसी में भागकर जीता बचे॥ ६। ऐसा न हो कि मार्ग की लम्बाई के

कारण खून का पलटा लेनेहारा मन जलने के समय उस का पीछा करके उस को जा ले और मार डाले यद्यपि वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं क्योंकि उस से बैर न रखता था ॥ ७ । सो मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि अपने लिये तीन नगर अलग कर रखना ॥ ८ । और यदि तेरा परमेश्वर यहोवा उस किरिया के अनुसार जो उस ने तेरे पितरों से खाई थी तेरे सिवानों को बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे जिस के देने का वचन उस ने तेरे पितरों को दिया था यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने में जिन्हें मैं आज तुझ को सुनाता हूं चौकसी करे और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खे और सदा उस के मार्गों पर चलता रहे, ९ । तो इन तीन नगरों से अधिक और भी तीन नगर अलग कर देना, १० । इस लिये कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके देता है किसी निर्दोष का खून न हो और उस का दोष तुझ पर न लगे ॥ ११ । पर यदि कोई किसी से बैर रखकर उस की घात में लगे और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए और फिर उन नगरों में से किसी में भाग जाए, १२ । तो उस के नगर के पुरनिये किसी को भेजकर उस को वहां से मंगाकर खून के पलटा लेनेहारे के हाथ में दे दें कि वह मार डाला जाए ॥ १३ । उस पर तरस न खाना निर्दोष के खून का दोष इस्राएल से दूर करना जिस से तुम्हारा भला हो ॥

१४ । जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है उस का जो भाग तुझे मिलेगा उस में किसी का सिवाना जिसे अगले लोगों ने ठहराया हो न हटाना ॥

१५ । किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी प्रकार के अधर्म्म वा पाप के विषय में चाहे उस का पाप कैसा ही क्यों न हो एक ही जन की साक्षी न सुनना दो वा तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे ॥ १६ । यदि कोई अंधेर करनेहारा साक्षी किसी के विरुद्ध यहोवा से फिर जाने की साक्षी देने को खड़ा हो, १७ । तो वे दोनों मनुष्य जिन के बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो यहोवा के सम्मुख अर्थात् उन दिनों के याजकों और न्यायियों के साम्हने खड़े किये जाएं ॥ १८ । तब न्यायी भली भांति पूछपाछ करें और यदि यह ठहरे कि वह झूठा साक्षी है और अपने भाई के विरुद्ध झूठी साक्षी दिई है, १९ । तो जैसी हानि उस ने अपने भाई की कराने की युक्ति किई हो वैसी ही तुम उस की करना इसी रीति अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना ॥ २० । और दूसरे लोग सुनकर डरेंगे और आगे को तेरे बीच ऐसा बुरा काम न करेंगे ॥ २१ । और तू तरस न खाना प्राण की सन्ती प्राण का आंख की सन्ती आंख का दांत की सन्ती दान्त का हाथ की सन्ती हाथ का पांव की सन्ती पांव का दण्ड देना ॥

२०. जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए और घोड़े रथ और अपने से अधिक सेना को देखे तब उन से न डरना तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह तेरे संग रहेगा ॥ २ । और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं के निकट जाओ तब याजक सेना के पास आकर, ३ । कहे हे इस्राएलियो सुनो आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आये हो तुम्हारा मन कच्चा न हो तुम मत डरो और न भभरो और न उन के साम्हने त्रास खाओ ॥ ४ । क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने को तुम्हारे संग संग चलता है ॥ ५ । फिर सरदार सिपाहियों से कहें कि तुम में से जिस किसी ने नया घर बनाया हो पर उस में प्रवेश न किया हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह युद्ध में मर जाए और दूसरा उस में प्रवेश करे ॥ ६ । और जिस किसी ने दाख की बारी लगाई हो पर उस के फल न खाये हों वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह संग्राम में जूझ जाए और दूसरा उस के फल खाए ॥ ७ । फिर जिस किसी ने किसी स्त्री से ब्याह की बात लगाई हो पर उस

को व्याह न लाया हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह युद्ध में जूझ जाए और दूसरा उस को व्याह ले ॥ ८ । इस से अधिक सरदार सिपाहियों से यह भी कहें कि जो डरपोक और कच्चे मन का हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि उस की देखादेखी उस के भाइयों का भी हियाव टूट जाए ॥ ९ । और जब प्रधान सिपाहियों से यह कह चुकें तब उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियों को ठहराएं ॥

१० । जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उस के निकट जाए तब उस से सन्धि करने का प्रचार करना ॥ ११ । और यदि वह संधि करना अंगीकार करे और तेरे लिये उस के फाटक खुलें तब जितने उस में हों सो सब तेरे अधीन होकर तेरे बेगारी करनेहारे ठहरें ॥ १२ । पर यदि वे तुझ से सन्धि न करें पर तुम से लड़ने चाहें तो उस नगर को घेर लेना ॥ १३ । और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में कर दे तब उस में के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना ॥ १४ । पर स्त्रियां बालबच्चे पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना और तेरे शत्रुओं की जो लूट तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना ॥ १५ । इस प्रकार उन नगरों से करना जो तुझ से बहुत दूर हैं और इन जातियों के नगर नहीं हैं ॥ १६ । पर जो नगर इन लोगों के हैं जिन का तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को अधिकारी करने पर है उन में से किसी प्राणी को जीता न छोड़ना, १७ । पर उन को अवश्य सत्यानाश करना अर्थात् हित्तियों एमोरियों कनानियों परिज्जियों हिव्वियों और यबूसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दिई है, १८ । ऐसा न हो कि जितने घिनौने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आये हैं उन कामों के अनुसार करना वे तुम को भी सिखाएं और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करो ॥

१९ । जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर को ले लेने को उसे बहुत दिन लों घेरे रहे तब उस के वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना क्योंकि उन के फल तेरे खाने के काम आएंगे सो उन्हें न काटना क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य हैं कि तू उन को भी घेर रक्खे ॥ २० । पर जिन वृक्षों के विषय तू जाने कि इन के फल खाने के नहीं हैं उन को चाहे तो काटकर नाश करना और उस नगर के विरुद्ध तब लों धुस बांधे रहना जब लों वह तेरे वश में न आ जाए ॥

२१.

यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी मारे हुए की लोथ पड़ी हुई मिले और उस को किस ने मार डाला है यह जान न पड़े, २ । तो तेरे पुरनिये और न्यायी निकलकर उस लोथ से चारों ओर के एक एक नगर तक मापें ॥ ३ । तब जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे उस के पुरनिये एक ऐसी कलोर ले रक्खें जिस से कुछ काम न लिया गया हो और जिस पर जूआ कभी रक्खा न गया हो ॥ ४ । तब उस नगर के पुरनिये उस कलोर को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती न बोई गई हो ले जाएं और उसी तराई में उस कलोर का गला तोड़ दें ॥ ५ । और लेवीय याजक भी निकट आएं क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उन को चुन लिया है कि उस की सेवा टहल करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें और उन के कहे से हर एक झगड़े और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय हो ॥ ६ । फिर जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे उस के सब पुरनिये उस कलोर के ऊपर जिस का गला तराई में तोड़ा गया हो अपने अपने हाथ धोकर, ७ । कहें यह खून हम से नहीं किया गया और न यह हमारी आंखों का देखा हुआ काम है ॥ ८ । सो हे यहोवा अपनी छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढांपकर निर्दोष के खून का पाप अपनी इस्राएली प्रजा के सिर पर से उतार । तब उस खून का दोष उन के लिये ढांपा जाएगा ॥ ९ । यों वह काम करके जो यहोवा के लेखे में ठीक है तू निर्दोष के खून का दोष अपने बीच में से दूर करना ॥

१० । जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे और तू उन्हें बंधुआ कर ले, ११ । तब यदि तू बंधुओं में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए और उस को ब्याह लेने चाहे, १२ । तो उसे अपने घर के भीतर ले आना और वह अपना सिर मुंडाय नखून कटाय, १३ । अपने बंधुआई के वस्त्र उतारके तेरे घर में महीने भर रहकर अपने माता पिता के लिये विलाप करती रहे उस के पीछे तू उस के पास जाना और तू उस का पति और वह तेरी पत्नी हो ॥ १४ । फिर यदि वह तुझ को अच्छी न लगे तो जहां वह जाने चाहे तहां उसे जाने देना उस को रुपैया लेकर कहीं न बेचना और तू ने जो उस की पत लिई इस कारण उस से जबर्दस्ती न करना ॥

१५ । यदि किसी पुरुष के दो स्त्रियां हों और उसे एक प्रिय दूसरी अप्रिय हो और प्रिया और अप्रिया दोनों स्त्रियां बेटे जनें पर जेठा अप्रिया का हो, १६ । तो जब वह अपने पुत्रों को अपनी संपत्ति के भागी करे तब यदि अप्रिया का बेटा जो सचमुच जेठा है सो जीता हो तो वह प्रिया के बेटे को जेठांस न दे सकेगा ॥ १७ । वह यह जानकर कि अप्रिया का बेटा मेरे पौरुष का पहिला फल है और जेठे का हक उसी का है उसी को अपनी सारी संपत्ति में से दो भाग देकर जेठांसी माने ॥

१८ । यदि किसी के हठीला और दंगाइत बेटा हो जो अपने माता पिता की न माने वरन ताड़ना देने पर भी उन की न सुने, १९ । तो उस के माता पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के पुरनियों के पास ले जाएं ॥ २० । और वे नगर के पुरनियों से कहें हमारा यह बेटा हठीला और दंगाइत है यह हमारी नहीं सुनता यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है ॥ २१ । तब उस नगर के सब पुरुष उस पर पत्थरवाह करके मार डालें यों तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना और सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे ॥

२२ । फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हो और वह मार डाला जाए और तू उस की लोथ वृक्ष पर लटका दे, २३ । तो वह रात को वृक्ष पर टंगी न रहे अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना क्योंकि जो लटकाया गया हो सो परमेश्वर से शापित ठहरता है जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उस की भूमि अशुद्ध न करना ॥

२२. तू अपने भाई के गायबैल या भेड़-बकरी को भटकी हुई देखकर अनदेखी न करना उस को अवश्य उस के पास पहुंचा देना ॥ २ । पर यदि तेरा वह भाई निकट न रहता हो वा तू उसे न जानता हो तो उस पशु को अपने घर के भीतर ले आना और जब लों तेरा वह भाई उस को न ढूंढ़े तब लों वह तेरे पास रहे और जब वह उसे ढूंढ़े तब उस को दे देना ॥ ३ । और उस के गदहे वा वस्त्र के विषय वरन उस की कोई वस्तु क्यों न हो जो उस से खो गई हो और तुझ को मिले उस के विषय भी ऐसा ही करना तू देखी अनदेखी न करना ॥

४ । तू अपने भाई के गदहे वा बैल को मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न करना उस के उठाने में अवश्य उस की सहायता करना ॥

५ । कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहिने और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेहारे तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौने लगते हैं ॥

६ । यदि वृक्ष वा भूमि पर तेरे साम्हने मार्ग में किसी चिड़िया का घोंसला मिले चाहे उस में बच्चे हों चाहे अण्डे और उन बच्चों वा अण्डों पर उन की मा बैठी हुई हो तो बच्चों समेत मा को न लेना ॥ ७ । बच्चों को अपने लिये ले तो ले पर मा को अवश्य छोड़ देना इस लिये कि तेरा भला हो और तेरे दिन बहुत हों ॥

८ । जब तू नया घर बनाए तब उस की छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना ऐसा न हो कि

कोई छत पर से गिर पड़े और तू अपने घराने पर खून का दोष लगाए ॥ ९ । अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना न हो कि उस की सारी उपज अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख की बारी की उपज दोनों अपवित्र ठहरें ॥ १० । बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना ॥ ११ । ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना ॥

१२ । अपने ओढ़ने की चारों ओर की कोर पर झालर लगाया करना ॥

१३ । यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याहे और उस के पास जाने के समय वह उस को अप्रिय लगे, १४ । और वह उस स्त्री की नामधराई करे और यह कहकर उस पर कुकर्म्म का दोष लगाए कि इस स्त्री को मैं ने ब्याहा और जब उस से संगति किई तब उस में कुंवारी रहने के लक्षण न पाए, १५ । तो उस कन्या के माता पिता उस के कुंवारीपन के चिन्ह लेकर नगर के पुरनियों के पास फाटक के बाहर जाएं ॥ १६ । और उस कन्या का पिता पुरनियों से कहे मैं ने अपनी बेटी इस पुरुष को ब्याह दिई और वह उस को अप्रीय लगती, १७ । और वह तो यह कहकर उस पर कुकर्म्म का दोष लगाता है कि मैं ने तेरी बेटी में कुंवारी-पन के लक्षण नहीं पाये पर मेरी बेटी के कुंवारीपन के चिन्ह ये हैं तब उस के माता पिता नगर के पुरनियों के साम्हने उस चद्दर को फैलाएं ॥ १८ । तब नगर के पुरनिये उस पुरुष को पकड़कर ताड़ना दें, १९ । और उस पर सौ शेकेल् रूपे का दण्ड भी लगाकर उस कन्या के पिता को दें इस लिये कि उस ने एक इस्राएली कन्या की नामधराई किई है और वह उसी की स्त्री बनी रहे और वह जीवन भर उस स्त्री को त्यागने न पाए ॥ २० । पर यदि उस कन्या के कुंवारीपन के चिन्ह पाये न जाएं और उस पुरुष की बात सच ठहरे, २१ । तो वे उस कन्या को उस के पिता के घर के द्वार पर ले जाएं और उस नगर के पुरुष उस पर पत्थरवाह करके मार डालें उस ने तो अपने पिता के घर में वेश्या का काम करके मूढ़ता किई है यों तू अपने बीच से ऐसी बुराई को दूर करना ॥

२२ । यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा जाए तो जो पुरुष उस स्त्री के संग सोया हो सो और वह स्त्री दोनों मार डाले जाएं । यों तू ऐसी बुराई को इस्राएल में से दूर करना ॥

२३ । यदि किसी कुंवारी कन्या के ब्याह की बात लगी हो और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पाकर उस से कुकर्म्म करे, २४ । तो तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक के बाहर ले जाकर उन पर पत्थरवाह करके मार डालना उस कन्या पर तो इस लिये कि वह नगर में रहते भी नहीं चिल्लाई और उस पुरुष पर इस कारण कि उस ने अपने पड़ोसी की स्त्री की पत लिई है । यों तू अपने बीच से ऐसी बुराई को दूर करना ॥

२५ । पर यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिस के ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस उस से कुकर्म्म करे तो केवल वह पुरुष मार डाला जाए जिस ने उस से कुकर्म्म किया हो, २६ । और उस कन्या से कुछ न करना, उस कन्या में प्राणदण्ड के योग्य पाप नहीं क्योंकि जैसे कोई अपने पड़ोसी पर चढ़ाई करके उसे मार डाले वैसी ही यह बात भी ठहरेगी, २७ । कि उस पुरुष ने उस कन्या को मैदान में पाया और वह चिल्लाई तो सही पर उस को कोई बचानेहारा न मिला ॥

२८ । यदि किसी पुरुष को कोई कुंवारी कन्या मिले जिस के ब्याह की बात न लगी हो और वह उसे पकड़कर उस के साथ कुकर्म्म करे और वे पकड़े जाएं, २९ । तो जिस पुरुष ने उस से कुकर्म्म किया हो सो उस कन्या के पिता को पचास शेकेल् रूपा दे और वह उसी की स्त्री हो उस ने उस की पत लिई इस कारण वह जीवन भर उसे न त्यागने पाए ॥

३० । कोई अपनी सौतेली माता को अपनी स्त्री न बनाए वह अपने पिता का ओढ़ना न उघारे ॥

२३. जिस के अण्ड कुचले गये या लिंग काट डाला गया हो सो यहोवा की सभा में न आने पाए ॥

२। कोई विजन्मा यहोवा की सभा में न आने पाए बरन दस पीढ़ी लों उस के वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए ॥

३। कोई अम्मोनी वा मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए उन की दसवीं पीढ़ी लों का कोई यहोवा की सभा में कभी न आने पाए, ४। इस कारण से कि जब तुम मिस्र से निकलकर आते थे तब उन्हों ने अन्न जल लेकर मार्ग में तुम से भेंट न किई और यह भी कि उन्हों ने अरम्नहरैम् देश के पतोर् नगरवाले बोर् के पुत्र बिलाम् को तुझे स्राप देने के लिये दक्षिणा दिई ॥ ५। पर तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की न सुनी बरन तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उस के स्राप को आशीष से पलट दिया इस लिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था ॥ ६। तू जीवन भर उन का कुशल और भलाई कभी न चाहना ॥

७। किसी एदोमी से घिन न करना क्योंकि वह तेरा भाई है किसी मिस्री से भी घिन न करना क्योंकि उस के देश में तू परदेशी होकर रहा था ॥ ८। उन के जो परपोते उत्पन्न हों वे यहोवा की सभा में आने पाएं ॥

९। जब तू शत्रुओं से लड़ने को जाकर छावनी डाले तब सब प्रकार की बुरी बातों से बचा रहना ॥ १०। यदि तेरे बीच कोई पुरुष उस अशुद्धता से जो रात को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो तो वह छावनी से बाहर जाए और छावनी के भीतर न आए ॥ ११। पर सांझ से कुछ पहिले वह स्नान करे और जब सूर्य्य डूब जाए तब छावनी में आए ॥ १२। छावनी के बाहर तेरे दिशा फिरने का एक स्थान हुआ करे और वहीं दिशा फिरने को जाया करना ॥ १३। और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे और जब तू दिशा फिरने को बैठे तब उस से खोदकर अपने मल को ढांप देना ॥

१४। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के बीच घूमता रहेगा इस लिये तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये न हो कि वह तेरे बीच कोई लज्जा की वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए ॥

१५। जो दास अपने स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उस को उस के स्वामी के हाथ न पकड़ा देना ॥ १६। वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए और तू उस पर अंधेर न करना ॥

१७। इस्राएली स्त्रियों में से कोई देवदासी न हो और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करनेहारा हो ॥ १८। वेश्यापन की कमाई वा कुत्ते की कमाई कोई मन्नत पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न ले आए क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा को ये दोनों की दोनो कमाई घिनौनी लगती हैं ॥

१९। अपने किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना चाहे रुपैया हो चाहे भोजनवस्तु हो चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दिई जाती है उसे ब्याज न देना ॥ २०। बिराने को ब्याज पर ऋण दो तो दो पर अपने किसी भाई से ऐसा न करना जिस से जिस देश का अधिकारी होने को तू जाने पर है वहां जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे ॥

२१। जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत माने तो उस के पूरी करने में विलम्ब न करना क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा और विलम्ब करने से तुझ को पाप लगेगा ॥ २२। पर यदि तू मन्नत न माने तो तुझ को पाप न लगेगा ॥ २३। जो कुछ तेरे मुंह से निकले उस के पूरा करने में चौकसी करना तू अपने मुंह से वचन देकर अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्नत माने वैसी ही उसे पूरा करना ॥

२४। जब तू किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए तब पेट भर मनमानते दाख खा

तो खा पर अपने पात्र में कुछ न रखना ॥ २५। और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में जाए तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है पर किसी दूसरे के खड़े खेत पर हंसुआ न लगाना ॥

२४. यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह ले और पीछे उस में कुछ लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो तो वह उस के लिये त्यागपत्र लिख उस के हाथ में देकर उस को अपने घर से निकाल दे ॥ २। और जब वह उस के घर से निकल जाए तब दूसरे पुरुष की हो सकती है ॥ ३। पर यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे और वह उस के लिये त्यागपत्र लिख उस के हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे वा वह दूसरा पुरुष जिस ने उस को अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, ४। तो उस का पहिला पति जिस ने उस को निकाल दिया हो उस के अशुद्ध होने के पीछे उसे अपनी स्त्री न करने पाए क्योंकि यह यहोवा को घिनौना लगता है। यों तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना[1] ॥

५। जो पुरुष हाल का व्याहा हुआ हो वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए वह बरस दिन लों अपने घर में अवकाश से रहकर अपनी व्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे ॥ ६। कोई मनुष्य चक्की को वा उस के ऊपर के पाट को बंधक न रक्खे क्योंकि यह तो प्राण ही बंधक रखना है ॥

७। यदि कोई अपने किसी इस्राएली भाई को दास बनाने वा बेच डालने की मनसा से चुराता हुआ पकड़ा जाए तो ऐसा चोर मार डाला जाए यों ऐसी बुराई को अपने बीच में से दूर करना ॥

८। कोढ़ की व्याधि के विषय चौकस रहना और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हें सिखाएं उसी के अनुसार यत्न से करने में चौकसी करना जैसी आज्ञा मैं ने उन को दिई है वैसा करने में चौकसी करना ॥ ९। स्मरण रक्खो कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के पीछे मार्ग में मरियम से क्या किया ॥

१०। जब तू अपने किसी भाई को कुछ उधार दे तब बंधक की वस्तु लेने को उस के घर के भीतर न घुसना ॥ ११। तू बाहर खड़ा रहना और जिस को तू उधार देता हो वही बंधक को तेरे पास बाहर ले आए ॥ १२। और यदि वह मनुष्य कंगाल हो तो उस का बंधक अपने पास रक्खे हुए न सोना ॥ १३। सूर्य्य डूबते डूबते उसे वह बंधक अवश्य फेर देना इस लिये कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझे आशीर्वाद दे और यह तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे धर्म्म का काम ठहरेगा ॥

१४। कोई मजूर जो दीन और कंगाल हो चाहे वह तेरे भाइयों में से चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेहारे परदेशियों में से हो उस पर अंधेर न करना ॥ १५। यह जानकर कि वह दीन है और उस का मन मजूरी में लगा रहता है मजूरी करने ही के दिन सूर्य्य डूबने से पहिले तू उस की मजूरी देना न हो कि वह तेरे कारण यहोवा की दोहाई दे और तुझे पाप लगे ॥

१६। पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए ॥

१७। किसी परदेशी मनुष्य वा बपमूए बालक का न्याय न बिगाड़ना और न किसी विधवा के कपड़े को बंधक रखना ॥ १८। और इस को स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास था और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहां से छुड़ा लाया इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं ॥

१९। जब तू अपने पक्के खेत को काटे और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए तो उसे लेने को फिर न जाना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये पड़ा रहे इस लिये कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझ को आशीष दे ॥ २०। जब तू अपने जलपाई के वृक्ष को झाड़े तब डालियों को दूसरी

(१) मूल में. देश से पाप न कराना।

बार न झाड़ना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये रह जाए ॥ २१। जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े तो पीछे छूटे हुओं को न लेना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये रह जाए ॥ २२। और इस को स्मरण रखना कि तू मिस्र देश में दास था इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं ॥

२५. यदि मनुष्यों के बीच कोई झगड़ा हो और वे न्याय चुकवाने को न्यायियों के पास जाएं और वे उन का न्याय करें तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएं ॥ २। और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे तो न्यायी उस को गिरवा अपने साम्हने जैसा उस का दोष हो उस के अनुसार कोड़े गिन गिनकर लगवाए ॥ ३। वह उसे चालीस कोड़े तक लगवा सकता है इस से अधिक नहीं लगवा सकता ऐसा न हो कि इस से अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई तेरे लेखे तुच्छ ठहरे ॥

४। दांवते समय बैल का मुंह न बांधना ॥

५। जब कई भाई संग रहते हों और उन में से एक निपुत्र मर जाए तो उस की स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए उस के पति का भाई उस के पास जाकर उसे अपनी स्त्री कर ले और उस से पति के भाई का धर्म्म पालन करे ॥ ६। और जो पहिला बेटा वह स्त्री जने वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे इस लिये कि उस का नाम इस्राएल् में से मिट न जाए ॥ ७। यदि उस स्त्री के पति के भाई को उसे ब्याहना न भाए तो वह स्त्री नगर के फाटक पर पुरनियों के पास जाकर कहे कि मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इस्राएल् में बनाये रखने से नाह किया है और मुझ से पति के भाई का धर्म्म पालना नहीं चाहता ॥ ८। तब उस नगर के पुरनिये उस पुरुष को बुलवाकर उस को समझाएं और यदि वह अपनी बात पर अड़ा रहकर कहे मुझे इस को ब्याहना नहीं भावता, ९। तो उस के भाई की स्त्री पुरनियों के साम्हने उस के पास जाकर उस के पांव से जूती उतारे और उस के मुंह पर थूक दे और कहे जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाने न चाहे उस से यों ही किया जाएगा ॥ १०। तब इस्राएल् में उस पुरुष का यह नाम पड़ेगा अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का घराना ॥

११। यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों और उन में से एक की स्त्री अपने पति को मारनेहारे के हाथ से छुड़ाने के लिये पास जा अपना हाथ बढ़ाकर उस के गुह्य अंग को पकड़े, १२। तो उस स्त्री का हाथ काट डालना उस पर तरस न खाना ॥

१३। अपनी थैली में भांति भांति के अर्थात् घटती बढ़ती बटखरे न रखना ॥ १४। अपने घर में भांति भांति के अर्थात् घटती बढ़ती नपुए न रखना ॥ १५। तेरे बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म्म के हों इस लिये कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे बहुत दिन हों ॥ १६। क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं सो सब तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौने लगते हैं ॥

१७। स्मरण रखें कि जब तू मिस्र से निकलकर आता था तब अमालेक् ने तुझ से मार्ग में क्या किया ॥ १८। अर्थात् वह जो परमेश्वर का भय न मानता था इस से उस ने मार्ग में जब तू थका मांदा था तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सब से पीछे थे उन सभों को मारा ॥ १९। सो जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है तुझे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दे तब अमालेक् का नाम तक धरती पर से[१] मिटा डालना इसे न भूलना ॥

२६. फिर जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके तुझे देता है और उस का अधिकारी होकर उस में बस जाए, २। तब जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस की भूमि की

(१) मूल में. आकाश के तले से।

भांति भांति की जो पहिली उपज तू अपने घर लाएगा उस में से कुछ टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले ॥ ३ । और उन दिनों के याजक के पास जाकर यह कहना कि मैं आज तेरे परमेश्वर यहोवा के साम्हने निवेदन करता हूं कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पितरों से किरिया खाई थी उस में मैं आ गया हूं ॥ ४ । तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने धर दे ॥ ५ । तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से यों कहना कि मेरा मूलपुरुष नाश होने के निकट एक अरामी मनुष्य था और वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्र को गया और वहां परदेशी होकर रहा और वहां उस से एक बड़ी और सामर्थी और बहुत मनुष्यों से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई ॥ ६ । और मिस्रियों ने हम लोगों से बुरा वर्त्ताव किया और हमें दुख दिया और हम से कठिन सेवा कराई ॥ ७ । पर हम ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की दोहाई दिई और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुख श्रम और अंधेर पर दृष्टि किई ॥ ८ । और यहोवा बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार करके हम को मिस्र से निकाल लाया, ९ । और हमें इस स्थान पर पहुंचाकर यह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं दे दिया है ॥ १० । सो अब हे यहोवा देख जो भूमि तू ने मुझे दिई है उस की पहिली उपज मैं तेरे पास ले आया हूं । तब तू उसे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने रखना और यहोवा को दण्डवत् करना ॥ ११ । और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे उन के कारण तू लेवीयों और अपने बीच रहनेहारे परदेशियों सहित आनन्द करना ॥

१२ । तीसरे बरस जो दशमांश देने का बरस ठहरा है जब तू अपनी सब भांति की बढ़ती के दशमांश को निकाल चुके तब उसे लेवीय परदेशी बपमूए और विधवा को देना कि वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तृप्त हों ॥ १३ । और तू अपने परमेश्वर यहोवा से कहना कि मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपने घर से निकाला और लेवीय परदेशी बपमूए और विधवा को दे दिया है तेरी किसी आज्ञा को मैं ने न तो टाला है न बिसराया ॥ १४ । उन वस्तुओं में से मैं ने शोक के समय नहीं खाया और न उन में से कोई वस्तु अशुद्धता की दशा में घर से निकाली और न कुछ शोक करनेवालों को[1] दिया मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है ॥ १५ । तू स्वर्ग में से जो तेरा पवित्र धाम है दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल् को आशीष दे और इस दूध और मधु की धाराओं के देश की भूमि पर आशीष दे जो तू ने हमारे पितरों से खाई हुई किरिया के अनुसार हमें दिया है ॥

१६ । आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को इन्हीं विधियों और नियमों के मानने की आज्ञा देता है सो अपने सारे मन और सारे जीव से इन के मानने में चौकसी करना ॥ १७ । तू ने तो आज यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया है कि मैं तेरे बताये हुए मार्गों पर चलूंगा और तेरी विधियों आज्ञाओं और नियमों को माना करूंगा और तेरी सुना करूंगा ॥ १८ । और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन माना है कि तू उस की सब आज्ञाओं को माना करे, १९ । और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा नाम और शोभा के विषय तुझ को श्रेष्ठ करे और तू उस के कहे के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे ॥

(आशीष और स्राप)

२७. फिर इस्राएल् के पुरनियों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दिई कि जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सब को मानना ॥ २ । और जब तुम

(१) मूल में मुर्दे के लिये ।

यर्दन पार होके उस देश में पहुंचो जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है तब बड़े बड़े पत्थर खड़े कर लेना और उन पर चूना पोतना ॥ ३ । और पार होने के पीछे उन पर इस व्यवस्था के सारे वचनों को लिखना इस लिये कि जो देश तेरे पितरों का परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे देता है और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उस देश में तू जाने पाए ॥ ४ । फिर जिन पत्थरों के विषय मैं ने आज आज्ञा दिई है उन्हें तुम यर्दन के पार होकर एबाल् पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर चूना पोतना ॥ ५ । और वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पत्थरों की एक वेदी बनाना उन पर कोई लोखर न चलाना ॥ ६ । अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी अनगढ़े पत्थरों की बनाकर उन पर उस के लिये होमबलि चढ़ाना ॥ ७ । और वहीं मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख आनन्द करना ॥ ८ । और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सारे वचनों को साफ साफ लिख देना ॥

९ । फिर मूसा और लेवीय याजकों ने सारे इस्राएलियों से यह भी कहा कि हे इस्राएल् चुप रहकर सुन आज के दिन तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया है ॥ १० । सो अपने परमेश्वर यहोवा की मानना और उस की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन को पूरा करना ॥

११ । फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दिई कि, १२ । जब तुम यर्दन पार हो जाओ तब शिमोन् लेवी यहूदा इस्साकार् यूसफ और बिन्यामीन ये गिरिज्जीम् पहाड़ पर खड़े होकर आशीर्वाद सुनाएं ॥ १३ । और रूबेन गाद् आशेर् जबूलून् दान और नप्ताली ये एबाल् पहाड़ पर खड़े होके साप सुनाएं ॥ १४ । तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों से पुकारके कहें

१५ । सापित हो वह मनुष्य जो कोई मूर्त्ति कारीगर से खुदवाकर वा ढलवाकर निराले स्थान थापे क्योंकि यह यहोवा को घिनौना लगता है । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

१६ । सापित हो वह जो अपने पिता वा माता को तुच्छ जाने । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

१७ । सापित हो वह जो किसी दूसरे के सिवाने को हटाए । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

१८ । सापित हो वह जो अंधे को मार्ग से भटका दे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

१९ । सापित हो वह जो परदेशी बपमूए वा विधवा का न्याय बिगाड़े । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२० । सापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म्म करे क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ना उघारता है । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२१ । सापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म्म करे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२२ । सापित हो वह जो अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली उस से कुकर्म्म करे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२३ । सापित हो वह जो अपनी सास के संग कुकर्म्म करे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२४ । सापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२५ । सापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये धन ले । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२६ । सापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे । तब सब लोग कहें आमेन् ॥

२८. यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उस की सुने तो वह तुझे पृथिवी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा ॥ २ । फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे ॥ ३ । धन्य हो तू नगर में धन्य हो तू खेत में, ४ । धन्य हो तेरी सन्तान और तेरी भूमि की उपज और गाय और भेड़बकरी आदि पशुओं के बच्चे, ५ । धन्य हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती, ६ । धन्य हो

तू भीतर आते धन्य हो तू बाहर जाते ॥ ७ । यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे सो तुझ से हार जाएंगे वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे पर तेरे साम्हने से सात मार्ग होकर भाग जाएंगे ॥ ८ । तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा सो जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे आशीष देगा ॥ ९ । यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उस के मार्गों पर चले तो वह अपनी किरिया के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा ॥ १० । सो पृथिवी के देश देश के लोग यह देखकर कि तू यहोवा का कहलाता है[१] तुझ से डर जाएंगे ॥ ११ । और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाकर तुझ को देने कहा था उस में वह तेरे सन्तान भूमि की उपज और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा ॥ १२ । यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा सो तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा पर किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा ॥ १३ । और यहोवा तुझ को पूछ नहीं सिर ही ठहराएगा और तू नीचे नहीं ऊपर ही रहेगा यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं तू उन के मानने में मन लगाकर चौकसी करे, १४ । और जिन वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दहिने वा बाएं मुड़के पराये देवताओं के पीछे न हो ले और न उन की सेवा करे ॥

१५ । परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की न सुने और उस की सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी न करे पर तो ये सब स्राप तुझ पर पड़ेंगे ॥ १६ । अर्थात् स्रापित हो तू नगर में स्रापित हो तू खेत में ॥ १७ । स्रापित हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती ॥ १८ । स्रापित हो तेरी सन्तान और भूमि की उपज और गायों और भेड़बकरियों के बच्चे ॥ १९ । स्रापित हो तू भीतर आते और स्रापित हो तू बाहर जाते ॥ २० । फिर जिस जिस काम में तू हाथ लगाए उस में यहोवा तब लों तुझ को स्राप देता और भयातुर करता और धमकी देता रहेगा जब लों तू न मिट जाए और शीघ्र नाश न हो जाए इस कारण कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा ॥ २१ । यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ में फैलकर तब लों लगी रहेगी जब लों जिस भूमि के अधिकारी होने को तू जाता है उस पर से तेरा अन्त न हो जाए ॥ २२ । यहोवा तुझ को क्षयीरोग से और ज्वर और दाह और बड़ी जलन से और तलवार और झुलस और गेरुई से मारेगा और ये तब लों तेरा पीछा किये रहेंगे जब लों तू सत्यानाश न हो जाए ॥ २३ । और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का और तेरे पांव के तले भूमि लोहे की हो जाएगी ॥ २४ । यहोवा तेरे देश में पानी के बदले बालू और धूलि बरसाएगा वह आकाश से तुझ पर यहां लों बरसेगी कि तू सत्यानाश हो जाएगा ॥ २५ । यहोवा तुझ को शत्रुओं से हरवाएगा और तू एक मार्ग से उन का साम्हना करने को जाएगा पर सात मार्ग होकर उन के साम्हने से भाग जाएगा और पृथिवी के सब राज्यों में मारा मारा फिरेगा ॥ २६ । और तेरी लोथ आकाश के भांति भांति के पक्षियों और धरती के पशुओं का आहार होगी और उन का कोई हांकनेहारा न होगा ॥ २७ । यहोवा तुझ को मिस्र के से फोड़े और बवासीर दाद और खजुली से ऐसा पीड़ित करेगा कि तू चंगा न हो सकेगा ॥ २८ । यहोवा तुझे बौरहा और अंधा कर देगा और तेरे मन को अति घबरा देगा ॥ २९ । और जैसे अंधा अंधियारे में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी को टटोलता फिरेगा और तेरे कामकाज सुफल न होंगे और सब दिन तू केवल अंधेर सहता और लुटता ही रहेगा और तेरा कोई छुड़ानेहारा न होगा ॥ ३० । तू स्त्री से ब्याह की बात लगाएगा पर दूसरा पुरुष उस को भ्रष्ट करेगा घर तू बनाएगा पर उस में बसने न पाएगा दाख की बारी तू लगाएगा पर उस के फल खाने न पाएगा ॥ ३१ । तेरा बैल तेरे देखते मारा जाएगा और तू उस का

(१) मूल में. यहोवा का नाम तुझ पर पुकारा गया है ।

(१) मूल में. पिसनी ।

मांस खाने न पाएगा तेरा गदहा तेरी आंख के साम्हने लूट में चला जाएगा और तुझे फिर न मिलेगा तेरी भेड़ बकरियां तेरे शत्रुओं के हाथ लग जाएंगी और तेरी ओर से उन का कोई छुड़ानेहारा न होगा ॥ ३२ । तेरे बेटे बेटियां दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जाएंगी और उन के लिये चाव से देखते देखते तेरी आंखें रह जाएंगी और तेरा कुछ बस न चलेगा ॥ ३३ । तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के लोग खा जाएंगे और सब दिन तू केवल अंधेर सहता और पीसा जाता रहेगा, ३४ । यहां लों कि तू उन बातों के मारे जो अपनी आंखों से देखेगा बौरहा हो जाएगा ॥ ३५ । यहोवा तेरे घुटनों और टांगों में बरन नख[1] से सिख लों भी असाध्य फोड़े निकालकर तुझ को पीड़ित करेगा ॥ ३६ । यहोवा तुझ को उस राजा समेत जिस को तू अपने ऊपर ठहराएगा तेरी और तेरे पितरों की अनजानी एक जाति के बीच पहुंचाएगा और उस के बीच रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा ॥ ३७ । और उन सब जातियों में जिन के बीच यहोवा तुझ को पहुंचाएगा लोग तुझे देखकर चकित होने का और दृष्टान्त और स्राप का कारण मानेंगे ॥ ३८ । तू खेत में बीज तो बहुत सा ले जाएगा पर उपज थोड़ी ही बटोरेगा क्योंकि टिड्डियां उसे खा जाएंगी ॥ ३९ । तू दाख की बारियां लगाकर उन में काम तो करेगा पर उन की दाख का मधु पीने न पाएगा बरन फल भी तोड़ने न पाएगा क्योंकि कीड़े उन को खा जाएंगे ॥ ४० । तेरे सारे देश में जलपाई के वृक्ष तो होंगे पर उन का तेल तू अपने शरीर में लगाने न पाएगा क्योंकि वे झड़ जाएंगे ॥ ४१ । तेरे बेटे बेटियां तो उत्पन्न होंगे पर तेरे रहेंगे नहीं क्योंकि वे बन्धुआई में चले जाएंगे ॥ ४२ । तेरे सारे वृक्ष और तेरी भूमि की उपज टिड्डियां खा जाएंगी ॥ ४३ । जो परदेशी तेरे बीच रहेगा सो तुझ से बढ़ता जाएगा और तू आप घटता चला जाएगा ॥ ४४ । वह तुझ को उधार देगा पर तू उस को उधार न दे सकेगा वह तो सिर और तू पूंछ ठहरेगा ॥ ४५ । तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दिई हुई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उस की न सुनेगा इस कारण ये सब स्राप तुझ पर आ पड़ेंगे और तेरे पीछे पड़े रहेंगे और तुझ को पकड़ेंगे और अन्त में तू नाश हो जाएगा ॥ ४६ । और वे तुझ पर और तेरे वंश पर सदा लों बने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे ॥ ४७ । तू जो सब पदार्थ की बहुतायत होने पर आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा न करता रहेगा, ४८ । इस कारण तुझ को भूखा प्यासा नंगा और सब पदार्थों से रहित होकर अपने उन शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेगी जिन्हें यहोवा तेरे विरुद्ध भेजेगा और जब लों तू नाश न हो जाए तब लों वह तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ डाल रखेगा ॥ ४९ । यहोवा तेरे विरुद्ध दूर से बरन पृथिवी की छोर से वेग उड़नेहारे उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा जिस की भाषा तू न समझेगा ॥ ५० । उस जाति के लोगों की चेष्टा क्रूर होगी वे न तो बूढ़ों का मुंह देखकर आदर करेंगे न बालकों पर दया करेंगे ॥ ५१ । और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहां लों खा जाएंगे कि तू नाश हो जाएगा और वे तेरे लिये न अन्न न नया दाखमधु न टटका तेल न बछड़े न मेम्ने छोड़ेंगे यहां लों कि तू नाश हो जाएगा ॥ ५२ । और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए सारे देश के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर रक्खेंगे वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे तब तक घेरेंगे जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें जिन का तू भरोसा करेगा न गिर जाएं ॥ ५३ । तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे तू अपने निज जन्माये बेटे बेटियां जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा उन का मांस खाएगा ॥ ५४ । बरन तुझ में जो पुरुष कोमल और अति सुकुमार हो वह भी अपने भाई और अपनी प्राणप्यारी और अपने बचे हुए बालकों को क्रूर दृष्टि से देखेगा, ५५ । और वह उन में से किसी को भी अपने बालकों के मांस में से जो वह आप खाएगा कुछ न देगा

(१) मूल में पांव के तलुवे ।

क्योंकि घिर जाने और उस सकेती में जिस में तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेरके डालेंगे उस के पास कुछ न रहेगा ॥ ५६ । और तुझ में जो स्त्री यहां लों कोमल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन और कोमलता के मारे भूमि पर पांव धरते भी डरती हो वह भी अपने प्राणप्रिय पति और बेटे और बेटी को, ५७ । अपनी खेरी वरन अपने जने हुए बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी क्योंकि घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरके डालेंगे वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिपके खाएगी ॥ ५८ । यदि तू इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालने में जो इस पुस्तक में लिखे हैं चौकसी करके उस आदरयोग्य और भययोग्य नाम का जो तेरे परमेश्वर यहोवा का है भय न माने, ५९ । तो यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा वे दुष्ट और बहुत दिन रहनेहारे रोग और भारी भारी दण्ड होंगे ॥ ६० । और वह मिस्र के उन सब रोगों को फिर तेरे लगा देगा जिन से तू भय खाता था और वे तेरे लगे रहेंगे ॥ ६१ । वरन जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखे हैं उन सभों को भी यहोवा तुझ को यहां लों लगा देगा कि तू सत्यानाश हो जाएगा ॥ ६२ । और तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा इस कारण आकाश के तारों के समान अनगिनित होने की सन्ती तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे ॥ ६३ । और जैसे अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है वैसे ही तब उस को तुम्हें नाश वरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे ॥ ६४ । और यहोवा तुझ को पृथिवी की इस छोर से ले उस छोर लों के सब देशों के लोगों में तितर बितर करेगा और वहां रहके तू अपने और अपने पुरखाओं के अनजाने काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा ॥ ६५ । और उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा क्योंकि यहां यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कांपता रहेगा और तेरी आंखें धुन्धली पड़ जाएंगी और तेरा मन कलपता रहेगा ॥ ६६ । और तुझ को जीवन का नित्य सन्देह रहेगा और तू दिन रात थरथराता रहेगा और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा ॥ ६७ । तेरे मन में जो त्रास बना रहेगा और तेरी आंखों को जो कुछ दीखता रहेगा उस के कारण तू भोर को आह मारके कहेगा कि सांझ कब होगी और सांझ को आह मारके कहेगा कि भोर कब होगा ॥ ६८ । और यहोवा तुझ को नावों पर चढ़ाकर मिस्र में उस मार्ग से लौटा देगा जिस के विषय मैं ने तुझ से कहा था कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा और वहां तुम अपने शत्रुओं के हाथ दास दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहोगे पर तुम्हारा कोई गाहक न होगा ॥

२९. जिस वाचा के इस्राएलियों से बांधने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को मोआब् के देश में दिई उस के ये ही वचन हैं जो वाचा उस ने उन से होरेब् पहाड़ पर बांधी थी उस से यह अलग है ॥

२ । फिर मूसा ने सब इस्राएलियों को बुलाकर कहा जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फिरौन और उस के सब कर्म्मचारियों और उस के सारे देश से किया सो तुम ने देखा है ॥ ३ । वे बड़े बड़े परीक्षा के काम और चिन्ह और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखों के साम्हने हुए, ४ । पर यहोवा ने आज लों तुम को न तो समझने की बुद्धि और न देखने की आंखें न सुनने के कान दिये हैं ॥ ५ । मैं तो तुम को जंगल में चालीस बरस लिये फिरा और न तुम्हारे वस्त्र पुराने हो तुम्हारे तन पर न तेरी जूतियां तेरे पैरों में पुरानी पड़ीं ॥ ६ । रोटी जो तुम नहीं खाने पाये और दाखमधु और मदिरा जो तुम नहीं पीने पाये सो इस लिये हुआ कि तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं ॥ ७ । और जब तुम इस स्थान पर आये तब हेश्बोन् का राजा सीहोन् और बाशान् का राजा ओग् ये दोनों युद्ध के लिये

हमारा साम्हना करने को निकल आये और हम ने उन को जीतकर, ८। उन का देश ले लिया और रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को निज भाग करके दे दिया ॥ ९ । सो इस वाचा की बातों को पालन करो इस लिये कि जो कुछ करो सो सुफल हो ॥

१० । आज क्या पुरनिये क्या सरदार तुम्हारे मुख्य मुख्य पुरुष क्या गोत्र गोत्र के तुम सब इस्राएली पुरुष, ११ । क्या तुम्हारे बालबच्चे और स्त्रियां क्या लकड़हारे क्या पनभरे क्या तेरी छावनी में रहनेहारे परदेशी तुम सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने इस लिये खड़े हुए हो, १२ । कि जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बांधता है और जो किरिया वह आज तुझ को खिलाता है उस में तू साझी हो जाए, १३ । इस लिये कि उस वचन के अनुसार जो उस ने तुझ को दिया और उस किरिया के अनुसार जो उस ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब तेरे पितरों से खाई थी वह आज तुझ को अपनी प्रजा ठहराए और आप तेरा परमेश्वर ठहरे ॥ १४ । फिर मैं इस वाचा और इस किरिया में केवल तुम को नहीं ॥ १५ । पर उन को भी जो आज हमारे संग यहां हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े हैं और जो आज यहां हमारे संग नहीं हैं उन में साझी करता हूं ॥ १६ । तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश में रहते थे और जब मार्ग में की जातियों के बीच बीच होकर आते थे, १७ । तब तुम ने उन की कैसी कैसी घिनौनी वस्तुएं और काठ पत्थर चांदी सोने की कैसी मूरतें देखीं ॥ १८ । सो ऐसा न हो कि तुम लोगों में ऐसा कोई पुरुष वा स्त्री वा कुल वा गोत्र भर के लोग हों जिन का मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिरे कि जाकर उन जातियों के देवताओं की उपासना करें फिर ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी कोई जड़ हो जिस से विष वा कड़ुआ बीज अंकुरा हो, १९ । और ऐसा मनुष्य इस साप के वचन सुनकर अपने को आशीर्वाद के योग्य माने और यह सोचे कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलूं और तृप्त होकर प्यास को मिटा डालूं[1] तौभी मेरा कुशल होगा ॥ २० । यहोवा उस का पाप क्षमा करने से नाह करेगा वरन तब यहोवा के कोप और जलन का धूआं उस को छा देगा और जितने साप इस पुस्तक में लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे और यहोवा उस का नाम धरती पर से[2] मिटा देगा ॥ २१ । और व्यवस्था की इस पुस्तक में जिस वाचा की चर्चा है उस के सब सापों के अनुसार यहोवा उस को इस्राएल के सब गोत्रों में से हानि के लिये अलगाएगा ॥ २२ । सो होनेहारी पीढ़ियों में तुम्हारे वंश के लोग जो तुम्हारे पीछे उत्पन्न होंगे और बिराने मनुष्य भी जो दूर देश से आएंगे वे उस देश की विपत्तियां और उस में यहोवा के फैलाये हुए रोग देखकर, २३ । और यह भी देखकर कि इस की सब भूमि गंधक और लोन से भर गई और यहां लों जल गई है कि इस में न कुछ बोया जाता न कुछ जमता न घास उगती है वरन सदोम् और अमोरा अदमा और सबोयीम् के समान हो गया है जिन्हें यहोवा ने कोप और जलजलाहट करके उलट दिया था, २४ । और सब जातियों के लोग पूछेंगे यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है ॥ २५ । तब लोग यह उत्तर देंगे कि उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उन के साथ मिस्र देश से निकालने के समय बांधी थी उस को उन्हों ने तोड़ा, २६ । और पराये देवताओं की उपासना किई जिन्हें वे पहिले न जानते थे और यहोवा ने उन को नहीं दिया था, २७ । सो यहोवा का कोप इस देश पर भड़क उठा कि पुस्तक में लिखे हुए सब साप इस पर आ पड़ें ॥ २८ । और यहोवा ने कोप जलजलाहट और बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उन के देश में से उखाड़ दूसरे देश में फेंक दिया जैसा आज प्रगट है ॥

२९ । गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं पर जो प्रगट किई गई हैं सो सदा लों हमारे

(१) वा प्यास पर मतवालापन भी बढ़ाऊं या प्यासे और तृप्त दोनों को मिटा डालूं ।
(२) मूल में आकाश के तले से ।

और हमारे वंश के वश में रहेंगी इस लिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी किई जायें॥

३०. फिर जब आशीष और साप की ये सब बातें जो मैं ने तुझ को कह सुनाई हैं तुझ पर घटें और तू उन सब जातियों के बीच रहकर जहां तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बरबस पहुंचाएगा इन बातों को चेत करे, २। और अपनी सन्तान सहित अपने सारे मन और सारे जीव से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरके उस के पास आए और इन सब आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे सुनाता हूं उस की माने, ३। तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बंधुआई से लौटा ले आएगा और तुझ पर दया करके उन सब देशों के लोगों में से जिन के बीच वह तुझ को तितर बितर कर देगा फिर एकट्ठा करेगा॥ ४। चाहे धरती[1] की छोर लों तेरा बरबस पहुंचाया जाना हो तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहां से ले आके एकट्ठा करेगा॥ ५। और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिस के तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे और तू फिर उस का अधिकारी होगा और वह तेरी भलाई करेगा और तुझ को तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा॥ ६। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव के साथ प्रेम रखे जिस से तू जीता रहेगा॥ ७। और तेरा परमेश्वर यहोवा ये सब साप की बातें तेरे शत्रुओं पर जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पड़ेंगे घटाएगा॥ ८। और तू फिरके यहोवा की सुनेगा और इन सब आज्ञाओं को मानेगा जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं॥ ९। और यहोवा तेरी भलाई के लिये तेरे सब कामों में और तेरी सन्तान और पशुओं के बच्चों और भूमि की उपज में तेरी बढ़ती करेगा क्योंकि यहोवा फिर तेरे ऊपर भलाई के लिये वैसा आनन्द करेगा जैसा उस ने तेरे पितरों के ऊपर किया था॥ १०। क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सुनकर उस की आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं माना करेगा और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने सारे मन और सारे जीव से फिरेगा॥

११। देखो यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं सो न तो तेरे लिये अनोखी और न दूर है॥ १२। न तो यह आकाश में है कि तू कहे कौन हमारे लिये आकाश में चढ़ उसे हमारे पास ले आए और हम को सुनाए कि हम उसे मानें॥ १३। और न यह समुद्र पार है कि तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जा उसे हमारे पास ले आए और हम को सुनाए कि हम उसे मानें॥ १४। पर यह वचन तेरे बहुत निकट बरन तेरे मुंह और मन ही में है सो तू इस पर चल सकता है॥

१५। सुन आज मैं ने तुझ को जीवन और मरण हानि और लाभ दिखाया है॥ १६। कैसे कि मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना और उस के मार्गों पर चलना और उस की आज्ञाओं विधियों और नियमों को मानना इस लिये कि तू जीता रहे और बढ़ता जाए और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिस का अधिकारी होने को तू जाने पर है तुझे आशीष दे॥ १७। पर यदि तेरा मन फिर जाए और तू न सुने और बहककर पराये देवताओं को दण्डवत और उन की उपासना करने लगे, १८। तो मैं तुम्हें आज यह जताता हूं कि तुम निःसंदेह नाश हो जाओगे जिस देश का अधिकारी होने को तू यर्दन पार जाने पर है उस देश में तुम बहुत दिन रहने न पाओगे॥ १९। मैं आज आकाश और पृथिवी दोनों को तुम्हारे साम्हने इस बात के साक्षी करता हूं कि मैं ने जीवन और मरण आशीष और साप तुझ को दिखा दिये हैं सो जीवन ही को अपना ले कि तू और तेरा वंश दोनों जीते रहें॥ २०। सो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना और उस की मानना और उस का बना रहना क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घायु वही है और ऐसा करने से जो देश यहोवा ने इब्राहीम इसहाक् और

(१) मूल में, आकाश।

याकूब तेरे पितरों को किरिया खाकर देने कहा था उस देश में तू बसा रहेगा ॥

(मूसा का प्रसिद्ध गीत.)

३१. ये ही बातें मूसा ने सब इस्राएलियों से जाकर कहीं ॥ २ । और उस ने उन से यह भी कहा कि आज मैं एक सौ बीस बरस का हुआ हूं और अब मैं आने जाने न पाऊंगा क्योंकि यहोवा ने मुझ से कहा है कि तू इस यर्दन पार जाने न पाएगा ॥ ३ । तेरे आगे पार जानेहारा तेरा परमेश्वर यहोवा है वह उन जातियों को तेरे साम्हने से नाश करेगा और तू उन के देश का अधिकारी होगा और यहोवा के कहे के अनुसार यहोशू तेरे आगे पार जाएगा ॥ ४ । और जैसे यहोवा ने एमोरियों के राजा सीहोन् और ओग् और उन के देश को नाश किया वैसे ही वह उन सब जातियों से भी करेगा ॥ ५ । और जब यहोवा उन को तुम से हरवा देगा तब तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार उन से करना जो मैं ने तुम को सुनाई हैं ॥ ६ । हियाव बांधो और दृढ़ हो उन से न तो डरो और न त्रास खाओ क्योंकि तेरे संग चलनेहारा तेरा परमेश्वर यहोवा है वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा ॥ ७ । तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियों के सन्मुख कहा हियाव बांध और दृढ़ हो क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इन के पितरों से किरिया खाकर देने को कहा था तू जाएगा और तू उसे इन का भाग कर देगा ॥ ८ । और तेरे आगे आगे चलनेहारा यहोवा है वह तेरे संग रहेगा और न तो तुझे धोखा देगा न छोड़ देगा सो मत डर और तेरा मन कच्चा न हो ॥

९ । फिर मूसा ने यही व्यवस्था लिखकर लेवीय याजकों को जो यहोवा की वाचा के सन्दूक उठानेहारे थे और इस्राएल् के सब पुरनियों को सौंप दिई ॥ १० । तब मूसा ने उन को आज्ञा दिई कि सात सात बरस के बीते पर अर्थात् उगाही न होने के बरस के झोंपड़ीवाले पर्व्व में, ११ । जब सब इस्राएली तेरे परमेश्वर यहोवा को उस स्थान पर जिसे वह चुन लेगा हाजिर होने के लिये आएं तब यह व्यवस्था सब इस्राएलियों को पढ़कर सुनाना ॥ १२ । क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालक क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी सब लोगों को एकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें, १३ । और उन के लड़केवाले जिन्हों ने ये बातें नहीं सुनीं वे भी सुनकर सीखें कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय तब लों मानते रहें जब लों तुम उस देश में जीते रहो जिस के अधिकारी होने को तुम यर्दन पार जाने पर हो ॥

१४ । फिर यहोवा ने मूसा से कहा तेरे मरने का दिन निकट है सो यहोशू को बुलवा और तुम दोनों मिलापवाले तम्बू में आकर हाजिर हो कि मैं उस को आज्ञा दूं । सो मूसा और यहोशू आकर मिलापवाले तम्बू में हाजिर हुए ॥ १५ । तब यहोवा ने उस तंबू में बादल के खंभे में होकर दर्शन दिया और बादल का खंभा तंबू के द्वार पर ठहर गया ॥ १६ । तब यहोवा ने मूसा से कहा तू तो अपने पुरखाओं के संग सो जाने पर है और ये लोग उठकर उस देश के बिराने देवताओं के पीछे जिन के बीच वे आकर रहेंगे व्यभिचारिन की नाईं हो लेंगे और मुझे त्यागकर उस वाचा को जो मैं ने उन से बांधी है तोड़ेंगे ॥ १७ । उस समय मेरा कोप इन पर भड़केगा और मैं भी इन्हें त्यागकर इन से अपना मुंह छिपा लूंगा सो ये आहार हो जाएंगे और बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे यहां लों कि ये उस समय कहेंगे क्या ये विपत्तियां हम पर इस कारण आ नहीं पड़ीं कि हमारा परमेश्वर हमारे बीच नहीं रहा ॥ १८ । उस समय मैं उन सब बुराइयों के कारण जो ये पराये देवताओं की ओर फिरके करेंगे निःसन्देह उन से अपना मुंह छिपा लूंगा ॥ १९ । सो अब तुम यह गीत लिख लो और तू इसे इस्राएलियों को सिखाकर कंठ करा दो इस लिये कि यह गीत उन के विरुद्ध मेरा साक्षी ठहरे ॥

२०। जब मैं इन को उस देश में पहुंचाऊंगा जिसे देने को मैं ने इन के पितरों से किरिया खाई और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं और खाते खाते इन का पेट भर जाएगा और ये हृष्टपुष्ट हो जाएंगे तब ये पराये देवताओं की ओर फिरके उन की उपासना करने लगेंगे और मेरा तिरस्कार करके मेरी वाचा को तोड़ देंगे॥ २१। बरन अभी जब मैं इन्हें उस देश में जिस के विषय में मैं ने किरिया खाई है पहुंचा नहीं चुका मुझे मालूम है कि ये क्या क्या कल्पना कर रहे हैं सो जब बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे तब यह गीत इन पर साक्षी देगा क्योंकि यह इन के वंश को न बिसर जाएगा॥ २२। सो मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इस्राएलियों को सिखाया॥ २३। और उस ने नून के पुत्र यहोशू को यह आज्ञा दिई कि हियाव बांध और दृढ़ हो क्योंकि इस्राएलियों को उस देश में जिसे उन्हें देने को मैं ने उन से किरिया खाई है तू पहुंचाएगा और मैं आप तेरे संग रहूंगा॥

२४। जब मूसा इस व्यवस्था के वचन आदि से अन्त लों पुस्तक में लिख चुका, २५। तब उस ने यहोवा के सन्दूक उठानेहारे लेवीयों को आज्ञा दिई कि, २६। व्यवस्था की इस पुस्तक को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा के सन्दूक के पास रख दो कि यह वहां तुझ पर साक्षी देती रहे॥ २७। क्योंकि बलवा तेरा बलवा और हठ मुझे मालूम है देखो मेरे जीते और संग रहते भी तुम यहोवा से बलवा करते आये हो फिर मेरे मरने के पीछे क्यों न करोगे॥ २८। सो अपने गोत्रों के सब पुरनियों को और अपने सरदारों को मेरे पास एकट्ठे करो कि मैं उन को ये वचन सुनाकर उन के विरुद्ध आकाश और पृथिवी दोनों को साक्षी करूं॥ २९। क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरे मरने के पीछे तुम बिलकुल बिगड़ जाओगे और जिस मार्ग में चलने की आज्ञा मैं ने तुम को सुनाई है उस को तुम छोड़ दोगे और अन्त के दिनों में जब तुम वह काम करके जो यहोवा के लेखे बुरा है अपनी बनाई हुई वस्तुओं के पूजने से उस को रिस दिलाओगे तब तुम पर विपत्ति आ पड़ेगी॥

३०। तब मूसा ने इस्राएल् की सारी सभा को इस गीत के वचन आदि से अन्त लों सुनाये॥

३२. हे आकाश कान लगा कि मैं बोलूं
और हे पृथिवी मेरे मुंह की बातें सुन॥

२। मेरा उपदेश मेंह की नाईं बरसेगा
और मेरी बातें ओस की नाईं टपकेंगी
जैसे कि हरी घास पर झींसी
और पौधों पर झाड़ियां॥
३। मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूंगा
तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो॥
४। वह चटान है उस का काम खरा है
और उस की सारी गति न्याय की है
वह सच्चा ईश्वर है उस में कुटिलता नहीं
वह धर्म्मी और सीधा है॥
५। पर इस जाति[1] के लोग टेढ़े और तिर्छे हैं
ये बिगड़ गये ये उस के पुत्र नहीं यह उन का
कलंक है॥
६। हे मूढ़ और निर्बुद्धि लोगो
क्या तुम यहोवा को यह बदला देते हो
क्या वह तेरा पिता नहीं है जिस ने तुझ को
मोल लिया है
उस ने तुझ को बनाया और स्थिर भी किया है॥
७। प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण कर
पीढ़ी पीढ़ी के बरसों को विचारो
अपने बाप से पूछ और वह तुझे बताएगा
अपने पुरनियों से और वे तुझ से कह देंगे॥
८। जब परमप्रधान ने एक एक जाति का
निज निज भाग बांट दिया
और आदमियों को अलग अलग बसाया
तब उस ने देश देश के लोगों के सिवाने
इस्राएलियों की गिनती विचारके ठहराये॥

(१) मूल में पीढ़ी।

९। क्योंकि यहोवा का अंश उस की प्रजा है
याकूब उस का नपा हुआ निज भाग है॥
१०। उस ने उस को जंगल में
और सुनसान और गरजनेहारों से भरी हुई मरुभूमि में पाया
उस ने उस की चारों ओर रहकर उस की सुधि रक्खी
और अपनी आंख की पुतली की नाईं उस की रक्षा किई॥
११। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर
अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है
वैसे ही उस ने अपने पंख फैलाकर
उस को अपने परों पर उठा लिया॥
१२। यहोवा अकेला ही उस की अगुवाई करता रहा
और उस के संग कोई पराया देवता न था॥
१३। उस ने उस को पृथिवी के ऊंचे ऊंचे स्थानों पर असवार करा
खेतों की उपज खिलाई
उस ने उसे ढांग में से मधु
और चकमक की चटान में से तेल चाटने दिया॥
१४। गायों का दही और भेड़बकरियों का दूध
मेम्नों की चर्बी
बकरे और बाशान् की जाति के मेंढ़े
और गोहूं का उत्तम से उत्तम होर भी
और तू दाखरस का मधु पिया करता था॥
१५। परन्तु यशूरून् मोटा होकर लात मारने लगा
तू मोटा और हृष्ट पुष्ट हो गया और चर्बी से छा गया
तब उस ने अपने कर्त्ता ईश्वर को तजा
और अपने उद्धारमूल चटान को तुच्छ जाना॥
१६। उन्हों ने पराये देवताओं को मानकर उस में जलन उपजाई
और घिनौने काम करके उस को रिस दिलाई॥
१७। उन्हों ने पिशाचों के लिये बलि चढ़ाये जो ईश्वर न थे
और उन के अनजाने देवता थे
वे नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रगट हुए थे
और जिन का भय उन के पुरखा न मानते थे॥
१८। जिस चटान से तू उत्पन्न हुआ उस को तू ने विसराया
और ईश्वर जिस से तेरी उत्पत्ति हुई उस को तू भूल गया है॥
१९। इसे देखकर यहोवा ने उन्हें तुच्छ जाना
इस कारण कि उस के बेटे बेटियों ने रिस दिलाई थी॥
२०। तब उस ने कहा मैं उन से अपना मुख छिपा लूंगा
और देखूंगा उन का कैसा अन्त होगा
क्योंकि इस जाति[1] के लोग बहुत टेढ़े हैं
और धोखा देनेहारे पुत्र हैं॥
२१। उन्हों ने ऐसी वस्तु मानकर जो ईश्वर नहीं है मुझ में जलन उपजाई
और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई
सो मैं भी उन के द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं उन के मन में जलन उपजाऊंगा
और एक मूढ़ जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊंगा॥
२२। क्योंकि मेरे कोप की आग जल उठी है
और अधोलोक के तल तक जलती पहुंचेगी
और उस से अपनी उपज समेत पृथिवी भस्म हो जाएगी
और पहाड़ों की नेवें भी उस से जल जाएंगी॥
२३। मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति डालूंगा
उन पर मैं अपने सब तीर छोड़ूंगा॥
२४। वे भूख से दुबले हो जाएंगे और अंगारों से
और कठिन महारोगों से ग्रस जाएंगे
मैं उन पर पशुओं के दान्त लगवाऊंगा
और धूलि पर रेंगनेहारे सर्पों का विष॥
२५। बाहर वे तलवार से मरेंगे
और भीतर भय से
क्या कुमार क्या कुमारी

(१) मूल में पीढ़ी।

क्या दूधपिउवा बच्चा क्या पक्के बालवाला
ये मारे जाएंगे।
२६। मैं ने कहा था कि मैं उन को दूर तक
तितर बितर करूंगा
और मनुष्यों में से उन का स्मरण मिटा दूंगा॥
२७। पर मैं शत्रुओं के छेड़ने से डरता हूं
ऐसा न हो कि द्रोही इस को उलटा समझकर
कहने लगें कि हम अपने ही बाहुबल से
प्रबल हुए
और यह सब यहोवा से नहीं हुआ॥
२८। यह जाति युक्तहीन तो है
और इन में समझ है ही नहीं॥
२९। भला होता कि ये बुद्धिमान होकर इस को
समझ लेते
और अपने अंत का विचार करते॥
३०। यदि उन की चटान उन को न बेंचती
और यहोवा उन को औरों के हाथ में न
कर देता
तो यह क्योंकर हो सकता कि उन के हजार का
पीछा एक करे
और उन के दस हजार को दो भगाएं॥
३१। क्योंकि जैसी हमारी चटान है वैसी उन
की चटान नहीं है
यह हमारे शत्रुओं का भी विचार है॥
३२। उन की दाखलता सदोम् की दाखलता से
निकली
और अमोरा की दाख की बारियों में की है
उन को दाख विषभरी
और उन के गुच्छे कडुवे हैं॥
३३। उन का दाखमधु सांपों का सा विष
और काले नागों का सा हलाहल है॥
३४। क्या यह बात मेरे मन में संचित
और मेरे भंडारों में मुहरबन्द नहीं है॥
३५। पलटा लेना और बदला देना मेरा ही
काम है
यह उन के पांव फिसलने के समय प्रगट होगा
क्योंकि उन की विपत्ति का दिन निकट है
और जो दुख उन पर पड़नेहारे हैं सो शीघ्र
आ रहे हैं॥
३६। क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा
की शक्ति जाती रही
और क्या बन्धुआ क्या स्वाधीन उन में कोई
बचा नहीं रहा
तब वह उन का विचार करेगा
और अपने दासों के विषय पछताएगा॥
३७। तब वह कहेगा उन के देवता कहां रहे
अर्थात् जिस चटान की शरण वे लेते थे॥
३८। जो उन के बलियों की चर्बी खाते
और उन के तपावनों का दाखमधु पीते थे वे
क्या हो गये
वे उठकर तुम्हारी सहायता करें
और तुम्हारी आड़ हों॥
३९। अब देखो कि मैं ही हूं
और मेरे संग कोई देवता नहीं
मैं मार डालता और मैं जिलाता भी हूं
मैं घायल करता और मैं चंगा भी करता हूं
और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा सकता॥
४०। मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर
कहता हूं अपने सनातन जीवन की सोंह,
४१। यदि मैं बिजली की तलवार पर सान
धरकर लपकाऊं
और अपना हाथ न्याय करने में लगाऊं
तो अपने द्रोहियों से पलटा लूंगा
और अपने बैरियों को बदला दूंगा॥
४२। मैं अपने तीरों को लोहू से मतवाला करूंगा
और मेरी तलवार मांस खाएगी
वह मारे हुओं और बंधुओं का लोहू
और शत्रुओं के प्रधानों के सिर का मांस
होगा॥
४३। हे अन्यजातियो उस की प्रजा के कारण
जयजयकार करो
क्योंकि वह अपने दासों के लोहू बहाने का
पलटा लेगा
और अपने द्रोहियों को बदला देगा

और अपने देश और अपनी प्रजा का पाप ढांप देगा॥

४४। इस गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुत्र होशे समेत आकर लोगों को सुनाये॥ ४५। जब मूसा ये सब वचन सब इस्राएलियों से कह चुका, ४६। तब उस ने उन से कहा कि जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूं उन सब पर अपना अपना मन लगाओ और उन के अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने लड़केवालों को दो॥ ४७। क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम नहीं तुम्हारा जीवन ही है और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारे दिन बहुत होंगे जिस के अधिकारी होने को तुम यर्दन पार जाने पर हो॥

४८। फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, ४९। उस अबारीम् पहाड़ की नबो नाम चोटी पर जो मोआब् देश में यरीहो के साम्हने है चढ़कर कनान् देश जिसे मैं इस्राएलियों की निज भूमि कर देता हूं उस को देख ले॥ ५०। तब जैसा तेरा भाई हारून होर् पहाड़ पर मरके अपने लोगों में मिल गया वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर मरेगा और अपने लोगों में मिल जाएगा॥ ५१। इस का कारण यह है कि सीन् जंगल में कादेश् के मरीबा नाम सोते पर तुम दोनों ने मेरा अपराध किया कैसे कि इस्राएलियों के बीच मुझे पवित्र न ठहराया॥ ५२। सो वह देश जो मैं इस्राएलियों को देता हूं तू साम्हने देखेगा पर वहां जाने न पाएगा॥

(मूसा का इस्राएलियों को दिया हुआ आशीर्वाद.)

३३. जो आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने मरने से पहिले इस्राएलियों को दिया सो यह है॥

२। उस ने कहा
यहोवा सीनै से आया
और सेईर् से उन के लिये उदय हुआ
उस ने पारान् पर्वत पर से अपना तेज दिखाया
और लाखों पवित्रों के बीच से आया
उस के दहिने हाथ से उन को और आग निकली॥
३। वह देश देश के लोगों से भी प्रेम रखता है
पर तेरे सब पवित्र लोग तेरे हाथ में हैं
वे तेरे पांवों के पास बैठे रहते हैं
एक एक तेरे वचनों में से पाता है॥
४। मूसा ने हमें व्यवस्था दिई
यह याकूब की मंडली का निज भाग ठहरी॥
५। जब प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुष
और इस्राएल् के गोत्री एक संग होकर एकट्ठे हुए
तब वह यशूरून् में राजा ठहरा॥
६। रूबेन् न मरे जीता रहे
पर उस के यहां के मनुष्य थोड़े हों॥
७। और यहूदा पर यह आशीर्वाद हुआ मूसा ने कहा
हे यहोवा यहूदा की सुन
और उसे उस के लोगों के पास पहुंचा
वह उन के लिये हाथ से लड़ा
और तू उस के द्रोहियों के विरुद्ध उस की सहायता कर॥
८। फिर लेवी के विषय उस ने कहा
तेरे तुम्मीम् और ऊरीम् तेरे भक्त के पास रहें
जिस को तू ने मस्सा में परख लिया
और मरीबा नाम सोते पर उस से वादविवाद किया॥
९। उस ने तो अपने माता पिता के विषय कहा मैं उन को नहीं जानता
और न तो अपने भाइयों को अपने मान लिया
न अपने पुत्रों को पहिचाना
पर उन्हों ने तेरी बातें मानीं
और तेरी वाचा पाली है॥
१०। वे याकूब को तेरे नियम
और इस्राएल् को तेरी व्यवस्था सिखाएंगे
और तेरे सूंघने को धूप
और तेरी वेदी पर सर्वाङ्ग पशु को होमबलि करेंगे॥
११। हे यहोवा उस की संपत्ति पर आशीष दे

और उस के हाथ के काम से प्रसन्न हो
उस के विरोधियों और वैरियों की कमर पर
ऐसा मार
कि वे फिर न उठ सकें ॥
१२। फिर उस ने बिन्यामीन् के विषय कहा
यहोवा का वह प्रिय जन उस के पास निडर
वास करेगा
और वह दिन भर उस पर छाया करेगा
और वह उस के कंधों के बीच रहा करेगा ॥
१३। फिर यूसफ के विषय में उस ने कहा
इस का देश यहोवा से आशीष पाए
अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ और ओस
और नीचे पड़ा हुआ गहिरा जल,
१४। और जो अनमोल पदार्थ सूर्य्य के उपजाये
प्राप्त होते
और जो अनमोल पदार्थ चंद्रमा के उगाये उगते हैं,
१५। और प्राचीन पहाड़ों के उत्तम पदार्थ
और सनातन पहाड़ियों के अनमोल पदार्थ,
१६। और पृथिवी और जो अनमोल पदार्थ
उस में भरे हैं
और जो झाड़ी में रहा था उस की प्रसन्नता
इन सभों के विषय यूसफ के सिर पर
अर्थात् उसी के चोण्डे पर जो अपने भाइयों से
न्यारा हुआ था आशीष ही आशीष फले ॥
१७। वह प्रतापी है मानो गाय का पहिलौठा है
और उस के सींग बनैले बैल के से हैं
उन से वह देश देश के लोगों को बरन पृथिवी
की छोर लों के सब मनुष्यों को धकियाएगा
वे एप्रैम् के लाखों
और मनश्शे के हजारों हैं ॥
१८। फिर जबूलून् के विषय उस ने कहा
हे जबूलून् तू निकलते समय
और हे इस्साकार् तू अपने डेरों में आनन्द करे ॥
१९। वे देश देश के लोगों को पहाड़ पर बुलाएंगे
वे वहां धर्म्म से यज्ञ करेंगे
क्योंकि वे समुद्र का धन
और बालू में छिपे हुए अनमोल पदार्थ भोगेंगे ॥

२०। फिर गाद् के विषय उस ने कहा
धन्य वह है जो गाद् को बढ़ाता है
गाद् तो सिंहनी के समान रहता
और बांह को सिर के चोण्डे सहित फाड़
डालता है ॥
२१। और उस ने पहिला अंश तो अपने लिये चुन लिया
क्योंकि वहां रईस के योग्य भाग रक्खा हुआ था
सो उस ने प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुषों के संग आकर
यहोवा का ठहराया हुआ धर्म्म
और इस्राएल् के साथ होकर उस के नियम माने ॥
२२। फिर दान् के विषय उस ने कहा
दान् तो बाशान् से कूदनेहारा सिंह का डांवरू है ॥
२३। फिर नप्ताली के विषय उस ने कहा
हे नप्ताली तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तृप्त
और उस की आशीष से भरपूर है
तू पच्छिम और दक्खिन के देश का अधिकारी होए ॥
२४। फिर आशेर् के विषय उस ने कहा
आशेर् पुत्रों के विषय आशीष पाए
वह अपने भाइयों में प्रिय रहे
और अपना पांव तेल में बोरा करे ॥
२५। तेरे बेंड़े लोहे और पीतल के होएं
और तू अपने जीवन भर चैन से रहे[1] ॥
२६। हे यशूरून् ईश्वर के तुल्य कोई नहीं है
वह तेरी सहायता करने को आकाश पर
और अपना प्रताप दिखाता हुआ आकाशमण्डल
पर सवार होकर चलता है ॥
२७। अनादि परमेश्वर तेरा धाम है
और तेरे नीचे सनातन भुजाएं हैं
वह शत्रुओं को तेरे साम्हने से निकाल देता
और कहता है सत्यानाश कर ॥
२८। सो इस्राएल् निडर बसा रहता है
अन्न और नये दाखमधु के देश में
याकूब का सोता अकेला ही रहता है
और उस के ऊपर के आकाश से ओस पड़ा
करती है ॥
२९। हे इस्राएल् तू क्या ही धन्य है

(१) मूल में जैसे तेरे दिन वैसा तेरा चैन।

हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा तेरे तुल्य
कौन है
वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल
और तेरे प्रताप के लिये तलवार है
सो तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे
और तू उन के ऊंचे स्थानों को रौंदेगा ॥

(मूसा की मृत्यु.)

३४. फिर मूसा मोआब् के अराबा से नबो पहाड़ पर जो पिसगा की एक चोटी और यरीहो के साम्हने है चढ़ गया और यहोवा ने उस को दान् लों का गिलाद् नाम सारा देश, २। और नप्ताली का सारा देश और एप्रैम् और मनश्शे का देश और पच्छिम के समुद्र लों का यहूदा का सारा देश, ३। और दक्खिन देश और सोअर् लों की यरीहो नाम खजूरवाले नगर की तराई यह सब दिखाया ॥ ४। तब यहोवा ने उस से कहा जिस देश के विषय मैं ने इब्राहीम इसहाक् और याकूब से किरिया खाकर कहा था कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा वह यही है मैं ने इस को तुझे साक्षात् दिखा दिया है पर तू पार होकर वहां न जाने पाएगा ॥ ५। सो यहोवा के कहे के अनुसार उस का दास मूसा वहीं मोआब् के देश में मर गया ॥ ६। और उस ने उसे मोआब् के देश में बेत्पोर् के साम्हने एक तराई में मिट्टी दिई और आज के दिन लों कोई नहीं जानता कि उस की कबर कहां है ॥ ७। मूसा मरने के समय एक सौ बीस बरस का था पर न तो उस की आंखें धुन्धली पड़ीं और न उस का पौरुष घटा था ॥ ८। और इस्राएली मोआब् के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन रोते रहे तब मूसा के लिये रोने और विलाप करने के दिन पूरे हुए ॥ ९। और नून् का पुत्र यहोशू बुद्धि देनेहारे आत्मा से परिपूर्ण था क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर टेके थे सो इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दिई थी उस की मानते रहे ॥ १०। और मूसा के तुल्य इस्राएल् में और कोई नबी नहीं उठा कि यहोवा ने उस से आम्हने साम्हने बातें किईं[1], ११। और उस को यहोवा ने फिरौन और उस के सब कर्म्मचारियों के साम्हने और उस के सारे देश में सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा, १२। और उस ने सारे इस्राएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़ा भय दिखाया ॥

(१) मूल में. उस को आम्हने साम्हने जाना।

यहोशू नाम पुस्तक ।

(यहोशू का हियाव बंधाया जाना.)

१. यहोवा के दास मूसा के मरने के पीछे यहोवा ने उस के टहलुए यहोशू से जो नून् का पुत्र था कहा, २। मेरा दास मूसा मर गया है सो अब तू कमर बांध और इस सारी प्रजा समेत यर्दन पार होकर उस देश को जा जो मैं इसे अर्थात् इस्राएलियों को देता हूं ॥ ३। उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वे सब मैं तुम्हें दे देता हूं ॥ ४। जंगल और उस लबानोन् से ले परात् महानद लों और सूर्य्यास्त की ओर महासमुद्र लों हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा ॥ ५। तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे भी संग रहूंगा

न तो मैं तुझे धोखा दूंगा और न तुझ को छोड़ दूंगा ॥ ६ । सो हियाव बांधकर दृढ़ हो क्योंकि जिस देश के देने की किरिया मैं ने इन लोगों के पितरों से खाई थी उस के अधिकारी तू इन्हे करेगा ॥ ७ । इतना हो कि तू हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दिई है उस सब के अनुसार करने में चौकसी करना और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं इस से जहां जहां तू जाए वहां वहां तेरा काम सुफल होगा ॥ ८ । व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरे[1] इस में दिन रात ध्यान दिये रहना इस लिये कि जो कुछ उस में लिखा है उस के अनुसार करने को तू चौकसी करे क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे और तू सुभागी होगा ॥ ९ । क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दिई हियाव बांधकर दृढ़ हो त्रास न खा और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि जहां जहां तू जाए वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा ॥

(अढ़ाई गोत्रों का आज्ञा मानना.)

१० । तब यहोशू ने प्रजा के सरदारों को यह आज्ञा दिई कि, ११ । छावनी में इधर उधर जाकर प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दो कि अपने अपने लिये भोजन तैयार कर रक्खो क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम उस यर्दन पार उतरके वह देश अपने अधिकार में लेने को जाओगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधिकार में किये देता है ॥

१२ । फिर यहोशू ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों से कहा, १३ । जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से कही थी कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम देता है और यही देश तुम्हें देगा उस को सुधि करो ॥ १४ । तुम्हारी स्त्रियां बालबच्चे और पशु तो इस देश में रहें जो मूसा ने तुम्हें यर्दन के इसी पार दिया पर तुम जो शूरवीर हो सो पांति बांधे हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार उतर चलो और उन की सहायता करो ॥ १५ । और जब यहोवा उन को ऐसा विश्राम देगा जैसा वह तुम्हें दे चुका है और वे भी तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए देश के अधिकारी हो जाएंगे तब तुम अपने अधिकार के देश में जो यहोवा के दास मूसा ने यर्दन के इस पार सूर्य्योदय की ओर तुम्हें दिया है लौटकर इस के अधिकारी होगे ॥ १६ । तब उन्हों ने यहोशू को उत्तर दिया कि जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दिई है वह हम करेंगे और जहां कहीं तू हमें भेजे वहां हम जाएंगे ॥ १७ । जैसे हम सब बातों में मूसा को मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसे ही तेरे संग भी रहे ॥ १८ । कोई क्यों न हो जो तेरे विरुद्ध बलवा करे और जितनी आज्ञाएं तू दे उन को न माने वह मार डाला जाएगा पर तू दृढ़ और हियाव बांधे रह ॥

(यरीहो का भेद लिया जाना.)

२. तब नून् के पुत्र यहोशू ने दो भेदियों को शित्तीम् से चुपके भेज दिया और उन से कहा जाकर उस देश और यरीहो को देखो सो वे चल दिये और राहाब् नाम किसी वेश्या के घर में जाकर सो गये ॥ २ । तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा आज की रात कई एक इस्राएली हमारे देश का भेद लेने को यहां आये हैं ॥ ३ । तब यरीहो के राजा ने राहाब् के पास यों कहला भेजा कि जो पुरुष तेरे यहां आये हैं उन्हें बाहर ले आ क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आये हैं ॥ ४ । उस स्त्री ने दोनों पुरुषों को छिपा रक्खा और यों कहा कि मेरे पास कई पुरुष आये तो थे पर मैं नहीं जानती कहां के हैं ॥ ५ । और जब अंधेरा हुआ और फाटक बन्द होने लगा तब वे निकल गये मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गये तुम फुर्ती करके उन का पीछा करो तो उन्हें जा लोगे ॥ ६ । उस ने उन को घर की छत पर चढ़ा ले जाकर सनई में छिपा दिया था जो उस ने छत पर सजा रक्खी थी ॥ ७ । वे पुरुष तो यर्दन का मार्ग ले उन की खोज में घाट लों चले गये और ज्यों खोजनेहारे फाटक से निकले त्यों ही फाटक बन्द किया गया ॥

(१) मूल में पुस्तक तेरे मुंह से न हटे ।

८। और वे लेटने न पाये कि वह स्त्री छत पर इन के पास जाकर, ९। इन पुरुषों से कहने लगी मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है और तुम्हारा त्रास हम लोगों के मन में समाया है और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं[१] ॥ १०। क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र का जल सुखा दिया और तुम लोगों ने सीहोन् और ओग् नाम यर्दन पार रहनेहारे एमोरियों के दोनों राजाओं को सत्यानाश कर डाला है ॥ ११। और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश में और नीचे की पृथिवी में परमेश्वर है ॥ १२। सो अब मैं ने जो तुम पर दया किई है इस लिये मुझ से यहोवा की किरिया खाओ कि हम भी तेरे पिता के घराने पर दया करेंगे (और इस की सच्ची चिन्हानी मुझे दो,) १३। और हम तेरे माता पिता भाइयों और बहिनों को और उन के जितने हैं उन सभों को भी जीते रख छोड़ेंगे और तुम सभों का प्राण मरने से बचाएंगे ॥ १४। तब उन पुरुषों ने उस से कहा यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे तो तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण जाए और जब यहोवा हम को यह देश देगा तब हम तेरे साथ कृपा और सच्चाई से वर्ताव करेंगे ॥ १५। तब राहाब् जिस का घर शहरपनाह पर बना था और वह वहीं रहती थी उस ने उन को खिड़की से रस्सी के बल उतारके नगर के बाहर कर दिया ॥ १६। और उस ने उन से कहा पहाड़ को चले जाओ ऐसा न हो कि खोजनेहारे तुम को पाएं सो जब लों तुम्हारे खोजनेहारे लैाट न आएं तब लों अर्थात् तीन दिन वहीं छिपे रहना उस के पीछे अपना मार्ग लेना ॥ १७। उन्हों ने उस से कहा जो किरिया तू ने हम को खिलाई है उस के विषय हम तो निर्दोष रहेंगे ॥ १८। सुन जब हम लोग इस देश में आएंगे तब जिस खिड़की से तू ने हम को उतारा है उस में यही लाही रंग के सूत की डोरी बांध देना और अपने माता पिता भाइयों वरन अपने पिता के सारे घराने को इसी घर में अपने पास एकट्ठा कर रखना ॥ १९। तब जो कोई तेरे घर के द्वार से बाहर निकले उस के खून का दोष उसी के सिर पड़ेगा और हम निर्दोष ठहरेंगे पर यदि तेरे संग घर में रहते हुए किसी पर किसी का हाथ पड़े तो उस के खून का दोष हमारे सिर पड़ेगा ॥ २०। फिर यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट करे तो जो किरिया तू ने हम को खिलाई है उस से हम निर्बंध ठहरेंगे ॥ २१। उस ने कहा तुम्हारे वचनों के अनुसार हो तब उस ने उन को बिदा किया और वे चले गये और उस ने लाही रंग की डोरी को खिड़की में बांध दिया ॥ २२। और वे जाकर पहाड़ पर पहुंचे और वहां खोजनेहारों के लैाटने लों अर्थात् तीन दिन रहे और खोजनेहारे उन को सारे मार्ग में ढूंढ़ते रहे और कहीं न पाया ॥ २३। सो उन दोनों पुरुषों ने पहाड़ से उतर पार जा नून् के पुत्र यहोशू के पास पहुंचकर जो कुछ उन पर बीता था उस का बखान किया ॥ २४। और उन्हों ने यहोशू से कहा निःसंदेह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है फिर इस के सिवाय उस के सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं ॥

(इस्राएलियों का यर्दन पार उतर जाना.)

३. बिहान को यहोशू सबेरे उठा और सब इस्राएलियों को साथ ले शित्तीम् से कूच कर यर्दन के तीर आया और वे पार उतरने से पहिले वहीं टिक गये ॥ २। तीन दिन के बीते पर सरदारों ने छावनी के बीच जाकर, ३। प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दिई कि जब तुम को अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा का सन्दूक और उसे उठाये हुए लेवीय याजक भी देख पड़ें तब अपने स्थान से कूच करके उस के पीछे पीछे चलना ॥ ४। पर उस के और तुम्हारे

(१) मूल में. पिघल गये ।

(१) मूल में. पिघल गये ।

बीच में दो हजार हाथ के अटकल अन्तर रहे तुम सन्दूक के निकट न जाना कि तुम देख सको कि किस मार्ग से चलना होगा क्योंकि अब लों तुम उस मार्ग पर होकर नहीं चले ॥ ५ । फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा अपने अपने को पवित्र कर रक्खो क्योंकि कल यहोवा तुम्हारे बीच आश्चर्य्यकर्म्म करेगा ॥ ६ । तब यहोशू ने याजकों से कहा वाचा का संदूक उठाकर प्रजा के आगे आगे चलो । सो वे वाचा का संदूक उठाकर आगे आगे चले ॥ ७ । तब यहोवा ने यहोशू से कहा आज के दिन से मैं सब इस्राएलियों के सन्मुख तेरी बड़ाई करने का आरंभ करूंगा जिस से वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं ॥ ८ । सो तू वाचा के संदूक के उठानेहारे याजकों को यह आज्ञा दे कि जब तुम यर्दन के जल के किनारे पर पहुंचो तब यर्दन में खड़े रहना ॥

९ । तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा पास आकर अपने परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो ॥ १० । फिर यहोशू कहने लगा इस से तुम जान लोगे कि जीता हुआ ईश्वर तुम्हारे बीच है और वह तुम्हारे साम्हने से निःसंदेह कनानियों हित्तियों हिव्वियों परिज्जियों गिर्गाशियों एमोरियों और यबूसियों को उन के देश में से निकाल देगा ॥ ११ । सुनो पृथिवी भर के प्रभु की वाचा का संदूक तुम्हारे आगे आगे यर्दन के बीच जाने पर है ॥ १२ । सो अब इस्राएल् के गोत्रों में से बारह पुरुषों को चुन लो वे एक एक गोत्र में से एक पुरुष हों ॥ १३ । और जिस समय पृथिवी भर के प्रभु यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेहारे याजकों के पांव यर्दन के जल में पड़ेंगे उस समय यर्दन का ऊपर से बहता हुआ जल थम जाएगा और ढेर होकर ठहरा रहेगा ॥ १४ । सो जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से यर्दन पार जाने को कूच किया और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे आगे चले, १५ । और संदूक के उठानेहारे यर्दन पर पहुंचे और संदूक के उठानेहारे याजकों के पांव यर्दन के तीर के जल में डूब गये (यर्दन का जल तो कटनी के समय के सब दिन कड़ाड़ों के ऊपर ऊपर बहा करता है), १६ । तब जो जल ऊपर की ओर से बहा आता था सो बहुत दूर अर्थात् आदाम् नगर के पास जो सारतान् के निकट है रुककर एक ढेर हो गया और भीत सा उठा रहा और जो जल अराबा का ताल जो खारा ताल भी कहावता है उस की ओर बहा जाता था सो पूरी रीति से सूख गया और प्रजा के लोग यरीहो के साम्हने पार उतर गये ॥ १७ । सो याजक यहोवा की वाचा का संदूक उठाये हुए यर्दन के बीचोबीच पहुंचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे और सब इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे निदान उस सारी जाति के लोग यर्दन पार हो चुके ॥

४ **जब** उस सारी जाति के लोग यर्दन पार उतर चुके तब यहोवा ने यहोशू से कहा, २ । प्रजा में से बारह पुरुष अर्थात् गोत्र पीछे एक एक पुरुष को चुनकर, ३ । यह आज्ञा दे कि तुम यर्दन के बीच में जहां याजक लोग पांव धरे थे वहां से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो और जहां आज की रात पड़ाव होगा वहीं उन को रख देना ॥ ४ । तब यहोशू ने उन बारह पुरुषों को जिन्हें उस ने इस्राएलियों के एक एक गोत्र में से छांटकर ठहरा रक्खा था बुलवाकर कहा, ५ । तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सदूक के उधर यर्दन के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक एक पत्थर उठाकर अपने अपने कान्धे पर रक्खो, ६ । जिस से यह तुम लोगों के बीच चिन्हानी ठहरे और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें कि इन पत्थरों का क्या प्रयोजन है, ७ । तब तुम उन्हें यह उत्तर दो कि यर्दन का जल यहोवा की वाचा के संदूक के साम्हने से दो भाग हो गया जब वह यर्दन पार आता था तब यर्दन का जल दो भाग हो गया । सो वे पत्थर इस्राएलियों को सदा के लिये स्मरण दिलानेहारे रहेंगे ॥ ८ । यहोशू की इस आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों ने किया जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा था वैसा ही उन्हों ने इस्राएली गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर यर्दन के बीच में से उठा लिये और

उन को अपने साथ ले जाकर पड़ाव में रख दिया ॥ ९। और यर्दन के बीच जहां याजक वाचा के संदूक को उठाये हुए अपने पांव धरे थे वहां यहोशू ने बारह पत्थर खड़े कराये थे आज लों वहीं पाये जाते हैं ॥ १०। और याजक संदूक उठाये हुए तब लों यर्दन के बीच खड़े रहे जब लों वे सब बातें पूरी न हो चुकीं जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगों से कहने की आज्ञा दिई थी, तब सब लोग फुर्ती से पार उतर गये ॥ ११। और जब सब लोग पार उतर चुके तब याजक और यहोवा का संदूक भी उन के देखते पार उतरे ॥ १२। और रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग मूसा के कहे के अनुसार इस्राएलियों के आगे पांति बांधे हुए पार गये ॥ १३। अर्थात् कोई चालीस हजार पुरुष युद्ध के हथियार बांधे हुए संग्राम करने को यहोवा के साम्हने पार उतरके यरीहो के पास के अराबा में पहुंचे ॥ १४। उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियों के साम्हने यहोशू की महिमा बढ़ाई सो जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उस के जीवन भर मानते रहे ॥

१५। यहोवा ने यहोशू से कहा कि, १६। साक्षी का संदूक उठानेहारे याजकों को आज्ञा दे कि यर्दन में से निकल आओ ॥ १७। सो यहोशू ने याजकों को आज्ञा दिई कि यर्दन में से निकल आओ ॥ १८। और ज्यों यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे याजक यर्दन के बीच में से निकल आये और उन के पांव स्थल पर पड़े त्यों ही यर्दन का जल अपने स्थान पर आया और पहिले की नाईं कड़ारों के ऊपर फिर बहने लगा ॥ १९। पहिले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यर्दन में से निकलकर यरीहो के पूरबी सिवाने पर गिल्गाल् में अपने डेरे डाले ॥ २०। और जो बारह पत्थर यर्दन में से निकाले गये थे उन को यहोशू ने गिल्गाल् में खड़े किया ॥ २१। तब उस ने इस्राएलियों से कहा आगे को जब तुम्हारे लड़केवाले अपने अपने पिता से यह पूछें कि इन पत्थरों का क्या प्रयोजन है, २२। तब तुम यह कहकर उन को जताना कि इस्राएली यर्दन के पार स्थल ही स्थल चले आये थे ॥ २३। कैसे कि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रक्खा था तैसे ही उस ने यर्दन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से हटाकर सुखा रक्खा, २४। इस लिये कि पृथिवी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है और तुम सब दिन अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो ॥

(इस्राएलियों का खतना किया जाना और फसह मानना.)

५. जब यर्दन की पच्छिम ओर रहनेहारे एमोरियों के सब राजाओं ने और समुद्र के पास रहनेहारे कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना कि यहोवा ने इस्राएलियों के पार होने लों उन के साम्हने से यर्दन का जल हटाकर सुखा रक्खा है तब इस्राएलियों के डर के मारे उन का मन घबरा[१] गया और उन के जी में जी न रहा ॥

२। उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा चकमक की छुरियां बनवाकर दूसरी बार इस्राएलियों का खतना करा दे ॥ ३। सो यहोशू ने चकमक की छुरियां बनवाकर खलड़ियां नाम टीले पर इस्राएलियों का खतना कराया ॥ ४। और यहोशू ने जो खतना कराया इस का कारण यह है कि जितने युद्ध के योग्य पुरुष मिस्र से निकले थे सो सब मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गये थे ॥ ५। जो पुरुष मिस्र से निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका था पर जितने उन के मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उन में से किसी का खतना न हुआ था ॥ ६। इस्राएली तो चालीस बरस लों जंगल में फिरते रहे जब लों उस सारी जाति के लोग अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हुए क्योंकि उन्हों ने यहोवा की न मानी थी सो यहोवा ने किरिया खाकर उन से कहा था कि जो देश मैं ने तुम्हारे पितरों से

(१) मूल में गल।

किरिया खाकर तुम्हें देने को कहा था और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं वह देश मैं तुम को नहीं दिखाने का ॥ ७ । सो उन लोगों के पुत्र जिन को यहोवा ने उन के स्थान पर उत्पन्न किया था उन का खतना यहोशू ने कराया क्योंकि मार्ग में उन के खतना न होने के कारण वे खतना-रहित थे ॥ ८ । और जब उस सारी जाति के लोगों का खतना हो चुका तब वे चंगे हो जाने लों अपने अपने स्थान पर छावनी में रहे ॥ ९ । तब यहोवा ने यहोशू से कहा तुम्हारी जो नामधराई मिस्त्रियों में हुई उसे मैं ने आज दूर किई है[1] इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन लों गिल्गाल्[2] पड़ा है ॥

१० । सो इस्राएली गिल्गाल् में डेरे डाले हुए रहे और उन्हों ने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी को सांझ के समय फसह माना ॥ ११ । और फसह के दूसरे दिन ठीक उसी दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी और भुना हुआ दाना खाने लगे ॥ १२ । और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे उसी दिन के बिहान को मान् बन्द हो गया और इस्राएलियों को आगे फिर कभी मान् न मिला सो उस बरस में वे कनान् देश की उपज में से खाते थे ॥

(यरीहो का ले लिया जाना)

१३ । जब यहोशू यरीहो के पास था तब उस ने जो आंख उठाई तो क्या देखा कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष साम्हने खड़ा है सो यहोशू ने पास जाकर पूछा क्या तू हमारी ओर का है वा हमारे बैरियों की ओर का ॥ १४ । उस ने उत्तर दिया कि नहीं मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूं तब यहोशू ने पृथिवी पर मुंह के बल गिरके दण्डवत् कर उस से कहा अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है ॥ १५ । यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा अपनी जूती पांव से उतार डाल क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो पवित्र है तब यहोशू ने वैसा ही किया ॥

६. यरीहो के सब फाटक इस्राएलियों के डर के मारे लगातार बन्द रहे और कोई बाहर भीतर जाने आने न पाता था ॥ २ । फिर यहोवा ने यहोशू से कहा सुन मैं यरीहो को उस के राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूं ॥ ३ । सो तुम में जितने योद्धा हैं वे उस नगर की चारों ओर एक बार घूम आएं और छः दिन तक ऐसा ही किया करना ॥ ४ । और सात याजक संदूक के आगे आगे जुबिली के सात नरसिंगे लिये हुए चलें । फिर सातवें दिन तुम नगर की चारों ओर सात बार घूमना और याजक भी नरसिंगे फूंकते चलें ॥ ५ । और जब वे जुबिली के नरसिंगे देर लों फूंकते रहें तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी और सब लोग अपने अपने साम्हने चढ़ जाएं ॥ ६ । सो नून् के पुत्र यहोशू ने याजकों को बुलवाकर कहा वाचा के संदूक को उठा लो और सात याजक यहोवा के संदूक के आगे आगे जुबिली के सात नरसिंगे लिये चलें ॥ ७ । फिर उस ने लोगों से कहा आगे बढ़कर नगर की चारों ओर घूम आओ और हथियारबन्द पुरुष यहोवा के संदूक के आगे आगे चलें ॥ ८ । ज्यों यहोशू ये बातें लोगों से कह चुका त्यों ही वे सात याजक जो यहोवा के साम्हने सात नरसिंगे लिये हुए थे वे नरसिंगे फूंकते हुए चले और यहोवा की वाचा का संदूक उन के पीछे पीछे चला ॥ ९ । और नरसिंगे फूंकनेहारे याजकों के आगे आगे वे हथियारबन्द पुरुष चले और पीछेवाले संदूक के पीछे पीछे चले और याजक नरसिंगे फूंकते हुए चले ॥ १० । और यहोशू ने लोगों को आज्ञा दिई कि जब लों मैं तुम्हें जयजयकार करने की आज्ञा न दूं तब लों जयजयकार न करो और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए न कोई बात तुम्हारे मुंह से निकलने पाए आज्ञा पाते ही जयजयकार करना ॥ ११ । सो यहोवा का संदूक एक बार नगर की चारों ओर घूम आया तब वे छावनी में आकर वहीं टिके ॥

(१) मूल में लुढ़का दिई है । (२) अर्थात् लुढ़कना ।

१२ । बिहान को यहोशू सबेरे उठा और याजकों ने यहोवा का संदूक उठा लिया ॥ १३ । और वे ही सात याजक जुबिली के सात नरसिंगे लिये यहोवा के संदूक के आगे आगे फूंकते हुए चले और उन के आगे हथियारबन्द पुरुष चले और पीछेवाले यहोवा के संदूक के पीछे पीछे चले और याजक नरसिंगे फूंकते चले गये ॥ १४ । सो वे दूसरे दिन भी एक बार नगर की चारों ओर घूमकर छावनी में लौट आये और ऐसे ही उन्हों ने छः दिन किया ॥ १५ । फिर सातवें दिन वे भोर को बड़े तड़के उठकर उसी रीति से नगर की चारों ओर सात बार घूम आये केवल उसी दिन वे सात बार घूमे ॥ १६ । तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फूंकते थे तब यहोशू ने लोगों से कहा जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने वह नगर तुम्हें दे दिया है ॥ १७ । और नगर और जो कुछ उस में है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगा केवल राहाब् वेश्या और जितने उस के घर में हों वे जीते रहेंगे क्योंकि उस ने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रक्खा था ॥ १८ । और तुम अर्पण की वस्तुओं से बड़ी सावधानी करके अलग रहो ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर पीछे उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो और इस भान्ति इस्राएली छावनी को भी अर्पण की वस्तु बनाकर उसे कष्ट में डालो ॥ १९ । सब चान्दी सोना और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं सो यहोवा के लिये पवित्र ठहरके उसी के भण्डार में रक्खे जाएं ॥ २० । तब लोगों ने जयजयकार किया और याजक नरसिंगे फूंकते रहे और जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुनकर फिर बड़ी ही ध्वनि से जयजयकार किया तब शहरपनाह नेव से गिर पड़ी और लोग अपने अपने साम्हने से उस नगर में चढ़ गये और नगर को ले लिया ॥ २१ । और क्या पुरुष क्या स्त्री क्या जवान क्या बूढ़े बरन बैल भेड़ बकरी गदहे जितने नगर में थे उन सभों को उन्हों ने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला ॥ २२ । तब यहोशू ने उन दोनों पुरुषों से जो उस देश का भेद लेने गये थे कहा अपनी किरिया के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उस को और जो उस के पास हों उन्हें भी निकाल ले आओ ॥ २३ । सो वे जवान भेदिये भीतर जाकर राहाब् को और उस के माता पिता भाइयों और सब को जो उस के यहां रहते थे बरन उस के सब कुटुम्बियों को निकाल लाये और इस्राएल् की छावनी से बाहर बैठा दिया ॥ २४ । तब उन्हों ने नगर को और जो कुछ उस में था सब को आग लगाकर फूंक दिया केवल चान्दी सोना और जो पात्र पीतल और लोहे के थे उन को उन्हों ने यहोवा के भवन के भण्डार में रख दिया ॥ २५ । और यहोशू ने राहाब् वेश्या और उस के पिता के घराने को बरन उस के सब लोगों को जीते छोड़ दिया और आज लों उस का वंश इस्राएलियों के बीच में रहता है क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के भेद लेने को भेजे थे उन को उस ने छिपा रक्खा था ॥ २६ । फिर उसी समय यहोशू ने इस्राएलियों को यह किरिया धराई कि जो मनुष्य उठकर यह नगर यरीहो बसा दे वह यहोवा की ओर से सापित हो जब वह उस की नेव डालेगा तब तो उस का जेठा बेटा मरेगा और जब वह उस के फाटक खड़े करेगा तब उस का लहुरा मर जाएगा[1] ॥ २७ । सो यहोवा यहोशू के संग रहा और यहोशू की कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई ।

(आकान् का पाप)

७. पर इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय विश्वासघात किया अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान् जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था उस ने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया इस से यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा ॥

२ । और यहोशू ने यरीहो से ऐ नाम नगर के पास जो बेतावेन् से लगा हुआ बेतेल् की पूरब ओर है कितने पुरुषों को यह कहकर भेजा कि

(१) मूल में वह अपने जेठे के बदले में उस की नेव डालेगा और अपने लहुरे के बदले में उस के फाटक खड़े करेगा ।

जाकर देश का भेद ले आओ सो उन पुरुषों ने जाकर ऐ का भेद लिया ॥ ३। और उन्हों ने यहोशू के पास लौटकर कहा सब लोग वहां न जाएं कोई दो वा तीन हजार पुरुष जाकर ऐ को जीत सकते हैं सब लोगों को वहां जाने का कष्ट न दे क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं ॥ ४। सो कोई तीन हजार पुरुष वहां गये पर ऐ के रहनेहारों के साम्हने से भाग आये ॥ ५। तब ऐ के रहनेहारों ने उन में से कोई छत्तीस पुरुष मार डाले और अपने फाटक से शबारीम् लों उन का पीछा करके उतराई में उन को मारते गये सो लोगों का मन घबराकर[1] जल सा बन गया ॥ ६। और यहोशू ने अपने वस्त्र फाड़े और वह और इस्राएली पुरनिये यहोवा के संदूक के साम्हने मुंह के बल गिरके पृथिवी पर सांझ लों पड़े रहे और उन्हों ने अपने अपने सिर पर धूल डाली ॥ ७। और यहोशू ने कहा हाय प्रभु यहोवा तू अपनी इस प्रजा को यर्दन पार क्यों ले आया है जिस से हमें एमोरियों के वश में कराके नाश करे भला होता कि हम संतोष करके यर्दन के उस पार रह जाते ॥ ८। हाय प्रभु मैं क्या कहूं जब इस्राएलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है ॥ ९। क्योंकि कनानी वरन इस देश के सब निवासी यह सुनकर हम को घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे फिर तू अपने बड़े नाम के लिये क्या करेगा ॥ १०। यहोवा ने यहोशू से कहा उठ जा तू क्यों इस भान्ति मुंह के बल पृथिवी पर पड़ा है ॥ ११। इस्राएलियों ने पाप किया है और जो वाचा मैं ने उन से अपने साथ बन्धाई थी उस को उन्हों ने तोड़ दिया है उन्हों ने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया वरन चोरी भी किई और छल करके उस को अपने सामान में रख लिया है ॥ १२। इस कारण इस्राएली अपने शत्रुओं के साम्हने खड़े नहीं रह सकते वे अपने शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं इस लिये कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गये हैं और यदि तुम अपने बीच में से अर्पण की वस्तु को सत्यानाश न कर डालो तो मैं आगे को तुम्हारे संग न रहूंगा ॥ १३। उठ प्रजा के लोगों को पवित्र कर उन से कह कि बिहान लों अपने अपने को पवित्र कर रक्खो क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल् तेरे बीच अर्पण की कोई वस्तु है सो जब लों अर्पण की वस्तु को अपने बीच में से दूर न करे तब लों तू अपने शत्रुओं के साम्हने खड़ा न रह सकेगा ॥ १४। सो बिहान को तुम गोत्र गोत्र करके समीप खड़े किये जाओगे और जिस गोत्र के नाम पर चिट्ठी निकले[1] सो कुल कुल करके पास किया जाएगा और जिस कुल के नाम पर चिट्ठी निकले[2] सो घराना घराना करके पास किया जाएगा फिर जिस घराने के नाम पर चिट्ठी निकले[3] सो एक एक पुरुष करके पास किया जाएगा ॥ १५। तब जो पुरुष अर्पण की वस्तु रक्खे हुए पकड़ा जाएगा सो उस समेत जो उस का है आग में डालकर जलाया जाएगा क्योंकि उस ने यहोवा की वाचा को तोड़ा और इस्राएल् में मूढ़ता किई है ॥

१६। बिहान को यहोशू सवेरे उठ इस्राएलियों को गोत्र गोत्र करके समीप लिवा ले गया और चिट्ठी यहूदा के गोत्र के नाम पर निकली[4] ॥ १७। तब उस ने यहूदा के कुल कुल समीप किये और चिट्ठी जेरहवंशियों के कुल के नाम पर निकली[5] फिर जेरहवंशियों का कुल पुरुष पुरुष करके समीप किया और चिट्ठी जब्दी के नाम पर निकली[6] ॥ १८। तब उस ने उस का घराना पुरुष पुरुष करके समीप किया और यहूदा गोत्र का आकान् जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था उसी के नाम पर चिट्ठी निकली[7] ॥ १९। तब यहोशू आकान् से कहने लगा हे मेरे बेटे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा का मान करके उस के आगे अंगीकार कर और जो कुछ तू ने किया हो सो मुझ को बता और

(१) मूल में, गलकर।

(१) मूल में जो गोत्र यहोवा पकड़ेगा।
(२) मूल में जो कुल यहोवा पकड़ेगा। (३) मूल में, जो घराना यहोवा पकड़ेगा। (४) मूल में यहूदा का गोत्र पकड़ा गया। (५) मूल में जेरहवंशियों का कुल पकड़ा गया। (६) मूल में जब्दी पकड़ा गया। (७) मूल में वह पकड़ा गया।

मुझ से कुछ न छिपा ॥ २०। आकान् ने यहोशू को उत्तर दिया कि सचमुच मैं ने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है और यों यों किया है ॥ २१। जब मुझे लूट में शिनार् देश का एक सुन्दर ओढ़ना दो सौ शेकेल् चान्दी और पचास शेकेल् सोने की एक ईंट देख पड़ी तब मैं ने उन का लालच करके उन्हें रख लिया वे मेरे डेरे के बीच भूमि में गड़े हैं और सब के नीचे चान्दी है ॥ २२। सो यहोशू ने दूत भेजे और वे उस डेरे को दौड़े गये और क्या देखा कि वे वस्तुएं उस के डेरे में गड़ी हैं और सब के नीचे चान्दी है ॥ २३। उन को उन्हों ने डेरे के बीच से निकालकर यहोशू और सब इस्राएलियों के पास ले आकर यहोवा के साम्हने धर दिया ॥ २४। तब सब इस्राएलियों समेत यहोशू जेरहवंशी आकान् को और उस चान्दी और ओढ़ने और सोने की ईंट को और उस के बेटे बेटियों को और उस के बैलों गदहों और भेड़ बकरियों को और उस के डेरे को निदान जो कुछ उस का था उस सब को आकोर् नाम तराई में ले गया ॥ २५। तब यहोशू ने उस से कहा तू ने हमें क्यों कष्ट दिया है आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा इस पर सब इस्राएलियों ने उस पर पत्थरवाह किया और उन को आग में डालकर जलाया और उन के ऊपर पत्थर डाल दिये ॥ २६। और उन्हों ने उस के ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज लों बना है तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज लों आकोर्[1] तराई पड़ा है ॥

(ऐ नगर का ले लिया जाना)

८. तब यहोवा ने यहोशू से कहा मत डर और तेरा मन कच्चा न हो कमर बान्धकर सब योद्धाओं को साथ ले ऐ पर चढ़ाई कर क्योंकि मैं ने ऐ के राजा को प्रजा नगर और देश समेत तेरे वश में कर दिया है ॥ २। और जैसा तू ने यरीहो और उस के राजा से किया वैसा ही ऐ और उस के राजा से भी करना केवल तुम पशुओं समेत उस की लूट तो अपने लिये ले सकोगे उस नगर के पीछे की ओर से घात लगा ॥ ३। सो यहोशू ने सब योद्धाओं समेत ऐ पर चढ़ाई करने की तैयारी किई और यहोशू ने तीस हजार पुरुषों को जो बड़े बड़े वीर थे चुनकर रात को आज्ञा देकर भेजा कि, ४। सुनो तुम उस नगर के पीछे की ओर घात लगाये बैठे रहना नगर से बहुत दूर न जाना और सब के सब तैयार रहना ॥ ५। और मैं अपने सब साथियों समेत उस नगर के निकट जाऊंगा और जब वे पहिले की नाईं हमारा साम्हना करने को निकलें तब हम उन के आगे से भागेंगे ॥ ६। तब वे यह सोचकर कि वे पहिले की भांति हमारे साम्हने से भागे जाते हैं हमारे पीछा करेंगे सो हम उन के साम्हने से भागकर उन्हें नगर से दूर खींच ले आएंगे ॥ ७। तब तुम घात से उठकर नगर को अपना कर लेना देखो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उस को तुम्हारे हाथ में कर देगा ॥ ८। और जब नगर को ले लो तब उस में आग लगाकर फूंक देना यहोवा की आज्ञा के अनुसार करना सुनो मैं ने तुम्हें आज्ञा दिई है ॥ ९। तब यहोशू ने उन को भेज दिया और वे घात में बैठने को चले गये और बेतेल् और ऐ के बीच ऐ की पच्छिम ओर बैठे रहे पर यहोशू उस रात लोगों के बीच टिका रहा ॥

१०। बिहान को यहोशू सबेरे उठ लोगों की गिनती लेकर इस्राएली पुरनियों समेत लोगों के आगे आगे ऐ की ओर चला ॥ ११। और उस के संग के सब योद्धा चढ़ गये और ऐ नगर के निकट पहुंचकर उस के साम्हने उत्तर ओर डेरे डाले और उन के और ऐ के बीच एक तराई थी ॥ १२। तब उस ने कोई पांच हजार पुरुष चुनकर बेतेल् और ऐ के बीच नगर की पच्छिम ओर घात लगाने को ठहरा दिया ॥ १३। और जब लोगों ने नगर की उत्तर ओर की सारी सेना को और उस की पच्छिम ओर घात में बैठे हुओं को भी ठहरा दिया तब यहोशू उसी रात तराई के बीच गया ॥ १४। जब

(१) अर्थात् कष्ट देना।

ऐ के राजा ने यह देखा तब वे फुर्ती करके सवेरे उठे और राजा अपनी सारी प्रजा को ले इस्राएलियों के साम्हने उन से लड़ने को निकलकर ठहराये हुए स्थान पर जो अराबा के साम्हने है पहुंचा और वह न जानता था कि नगर की पिछली ओर लोग घात लगाये बैठे हैं ॥ १५ । तब यहोशू और सब इस्राएली उन से हार सी मानकर जंगल का मार्ग ले भाग चले ॥ १६ । तब नगर में के सब लोग इस्राएलियों का पीछा करने को पुकार पुकारके बुलाये गये सो वे यहोशू का पीछा करते हुए नगर से दूर खींचे गये ॥ १७ । और न ऐ में न बेतेल् में कोई पुरुष रह गया जो इस्राएलियों का पीछा करने को न गया हो और उन्हों ने नगर को खुला हुआ छोड़कर इस्राएलियों का पीछा किया ॥ १८ । तब यहोवा ने यहोशू से कहा अपने हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूंगा सो यहोशू ने अपने हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढ़ाया ॥ १९ । उस के हाथ बढ़ाते ही जो लोग घात में बैठे थे सो झट अपने स्थान से उठे और दौड़ दौड़ नगर में घुसकर उस को ले लिया और झट उस में आग लगा दिई ॥ २० । जब ऐ के पुरुषों ने पीछे की ओर दृष्टि किई तो क्या देखा कि नगर का धूंआं आकाश की ओर उठ रहा है और उन्हें न तो इधर भागने की शक्ति रही और न उधर और जो लोग जंगल की ओर भागे जाते थे सो फिरके अपने खदेड़नेहारों पर टूट पड़े ॥ २१ । जब यहोशू और सब इस्राएलियों ने देखा कि घातियों ने नगर को ले लिया और उस का धूंआं उठ रहा है तब घूमकर ऐ के पुरुषों को मारने लगे ॥ २२ । और उन का साम्हना करने को दूसरे भी नगर से निकल आये सो वे इस्राएलियों के बीच में पड़ गये कुछ इस्राएली तो उन के आगे और कुछ उन के पीछे थे सो उन्हों ने उन को यहां तक मार डाला कि उन में से न तो कोई बचने और न भागने पाया ॥ २३ । और ऐ के राजा को वे जीता पकड़कर यहोशू के पास ले आये ॥ २४ । और जब इस्राएली ऐ के सब निवासियों को मैदान में अर्थात् उस जंगल में जहां उन्हों ने उन का पीछा किया था घात कर चुके और वे सब तलवार से मारे गये यहां लों कि उन का अन्त ही हो गया तब सब इस्राएलियों ने ऐ को लौटकर उसे तलवार से मारा ॥ २५ । और स्त्री पुरुष सब मिलाकर जो उस दिन मारे पड़े सो बारह हजार थे और ऐ के सब पुरुष इतने ही थे ॥ २६ । क्योंकि जब लों यहोशू ने ऐ के सब निवासियों को सत्यानाश न कर डाला तब लों उस ने अपना हाथ जिस से बर्छा बढ़ाया था फिर न खींचा ॥ २७ । केवल यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोशू को दिई थी इस्राएलियों ने पशु आदि नगर की लूट अपनी कर लिई ॥ २८ । तब यहोशू ने ऐ को फुंकवा दिया और उसे सदा के लिये डीह कर दिया सो वह आज लों उजाड़ पड़ा है ॥ २९ । और ऐ के राजा को उस ने सांझ तलक वृक्ष पर लटका रक्खा और सूर्य्य डूबते डूबते यहोशू की आज्ञा से उस की लोथ वृक्ष पर से उतारके नगर के फाटक के साम्हने डाल दिई गई और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया गया जो आज लों बना है ॥

(आशीर्वाद और स्राप का सुनाया जाना.)

३० । तब यहोशू ने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये एबाल् पर्वत पर एक वेदी बनवाई ॥ ३१ । जैसा यहोवा के दास मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दिई थी और जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उस ने समूचे पत्थरों की एक वेदी बनवाई जिस पर लोहार चलाया न गया था । और उस पर उन्हों ने यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाये और मेलबलि किये ॥ ३२ । उसी स्थान पर यहोशू ने इस्राएलियों के साम्हने उन पत्थरों के ऊपर मूसा की व्यवस्था जो उस ने लिखी थी उस की नकल कराई ॥ ३३ । और क्या देशी क्या परदेशी सारे इस्राएली अपने पुरनियों सरदारों और न्यायियों समेत यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे लेवीय याजकों के साम्हने उस संदूक के इधर उधर खड़े हुए अर्थात् आधे लोग तो गिरिज्जीम् पर्वत के ओर आधे एबाल् पर्वत के

साम्हने खड़े हुए जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहिले से आज्ञा दिई थी कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दिये जाएं ॥ ३४। उस के पीछे उस ने क्या आशीष के क्या स्राप के व्यवस्था के सारे वचन जैसे जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं वैसे वैसे पढ़ पढ़कर सुनवा दिये ॥ ३५। जितनी बातों की मूसा ने आज्ञा दिई थी उन में से कोई ऐसी बात न रह गई जो यहोशू ने इस्राएल् की सारी सभा और स्त्रियों और बालबच्चों और उन के बीच रहते हुए[1] परदेशी लोगों के साम्हने भी पढ़कर न सुनवाई हो ॥

(गिबोनियों का छल)

९. यह सुनकर हित्ती एमोरी कनानी परिज्जी हिव्वी और यबूसी जितने राजा यर्दन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में और लबानोन् के साम्हने के महासागर के तीर रहते थे, २। वे एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियों से लड़ने को एकट्ठे हुए ॥

३। जब गिबोन् के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ से क्या क्या किया है, ४। तब उन्हों ने छल किया और राजदूतों का भेष बनाकर अपने गदहों पर पुराने बोरे और पुराने फटे जोड़े हुए मदिरा के कुप्पे लादकर, ५। अपने पांवों में पुरानी गांठी हुई जूतियां और तन में पुराने वस्त्र पहिने अपने भोजन के लिये सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटी ले लिई ॥ ६। सो वे गिल्गाल् की छावनी में यहोशू के पास जाकर उस से और इस्राएली पुरुषों से कहने लगे हम दूर देश से आये हैं सो अब हम से वाचा बांधो ॥ ७। इस्राएली पुरुषों ने उन हिव्वियों से कहा क्या जाने तुम हमारे बीच बसे हो फिर हम तुम से वाचा कैसे बांधें ॥ ८। उन्हों ने यहोशू से कहा हम तेरे दास हैं यहोशू ने उन से कहा तुम कौन हो और कहां से आते हो ॥ ९। उन्हों ने उस से कहा तेरे दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आये हैं क्योंकि हम ने यह सब सुना है अर्थात् उस की कीर्त्ति और जो कुछ उस ने मिस्र में किया, १०। और जो कुछ उस ने एमोरियों के दोनों राजाओं से किया जो यर्दन के उस पार रहते थे अर्थात् हेश्बोन् के राजा सीहोन् से और बाशान् के राजा ओग् से जो अश्तारोत् में था ॥ ११। सो हमारे यहां के पुरनियों ने और हमारे देश के सब निवासियों ने हम से कहा कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजनवस्तु लेकर उन से मिलने को जाओ और उन से कहना कि हम तुम्हारे दास हैं सो अब हम से वाचा बांधो ॥ १२। जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हम ने अपने अपने घर से यह रोटी टटकी लिई थी पर अब देखो यह सूख गई और इस में फफूंदी लग गई है ॥ १३। फिर ये जो मदिरा के कुप्पे हम ने भर लिये सो तब तो नये थे पर देखो अब ये फटे हुए हैं और हमारे ये वस्त्र और जूतियां बड़ी दूर की यात्रा के कारण पुरानी हो गई हैं ॥ १४। तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिये उन के भोजन में से कुछ ग्रहण किया ॥ १५। सो यहोशू ने उन से मेल करके उन से यह वाचा बान्धी कि तुम को जीते छोड़ेंगे और मण्डली के प्रधानों ने उन से किरिया भी खाई ॥ १६। उन के साथ वाचा बान्धने के तीन दिन पीछे उन को यह समाचार मिला कि वे हमारे पड़ोस के लोग हैं और हमारे बीच बसे हैं ॥ १७। सो इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उन के नगरों को जिन के नाम गिबोन् कपीरा बेरोत् और किर्यत्यारीम् हैं पहुंच गये ॥ १८। और इस्राएलियों ने उन को न मारा क्योंकि मण्डली के प्रधानों ने उन के संग इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाई थी सो सारी मण्डली के लोग प्रधानों के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे ॥ १९। तब सब प्रधानों ने सारी मण्डली से कहा हम ने उन से इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाई है सो अब उन को छू नहीं सकते ॥ २०। हम उन से यह करेंगे कि उस किरिया के अनुसार हम उन को जीते छोड़ देंगे नहीं तो हमारी खाई हुई किरिया के कारण हम पर क्रोध पड़ेगा ॥ २१। फिर प्रधानों ने उन से कहा वे जीते छोड़े जाएं। सो प्रधानों के इस वचन

(१) मूल में चलते हुए।

के अनुसार वे सारी मण्डली के लिये लकड़हारे और पनिहारे हो गये॥ २२। फिर यहोशू ने उन को बुलवाकर कहा तुम तो हमारे बीच रहनेहारे हो फिर तुम ने हम से यह कहकर क्यों छल किया है कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं॥ २३। सो अब तुम स्रापित हो और तुम में से ऐसा कोई न रहेगा जो दास अर्थात् मेरे परमेश्वर के भवन के लिये लकड़हारा और पनिहारा न हो॥ २४। उन्हों ने यहोशू से कहा तेरे दासों को यह निश्चय बतलाया गया था कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपने दास मूसा को आज्ञा दिई थी कि तुम को यह सारा देश दे और उस के सारे निवासियों को तुम्हारे साम्हने से नाश करे सो हम ने तुम लोगों के कारण अपने जीवन के बड़े डर में आकर ऐसा काम किया॥ २५। और अब हम तेरे वश में हैं जैसा बर्ताव तुझे भला और ठीक जान पड़े वैसा ही हम से कर॥२६। सो उस ने उन से वैसा ही किया और उन्हें इस्राएलियों के हाथ से ऐसा बचाया कि वे उन्हें घात करने न पाये, २७। पर यहोशू ने उसी दिन उन को मण्डली के लिये और जो स्थान यहोवा चुन ले उस में उस की वेदी के लिये लकड़हारे और पनिहारे करके ठहरा दिया। सो आज लों वे वैसे ही रहते हैं॥

(कनान के दक्खिनी भाग का जीता जाना.)

१०. जब यरूशलेम् के राजा अदोनीसेदेक् ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया और उस को सत्यानाश कर डाला है और जैसा उस ने यरीहो और उस के राजा से किया था वैसा ही ऐ और उस के राजा से भी किया है और यह भी सुना कि गिबोन् के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल किया और उन के बीच रहने लगे हैं, २। तब वे निपट डर गये क्योंकि गिबोन् बड़ा नगर वरन राजनगर के तुल्य था और ऐ से बड़ा है और उस के सब निवासी शूरवीर थे॥ ३। सो यरूशलेम् के राजा अदोनीसेदेक् ने हेब्रोन् के राजा होहाम् यर्मूत् के राजा पिराम् लाकीश् के राजा यापी और एग्लोन् के राजा दबीर् के पास यों कहला भेजा कि, ४। मेरे पास आकर मेरी सहायता करो हम गिबोन् को मार लें क्योंकि उस ने यहोशू और इस्राएलियों से मेल किया है॥ ५। सो यरूशलेम् हेब्रोन् यर्मूत् लाकीश् और एग्लोन् के पांचों एमोरी राजा अपनी अपनी सारी सेना लेकर एकट्ठे हो चढ़ गये और गिबोन् के साम्हने डेरे डालकर उस से लड़ने लगे॥ ६। तब गिबोन् के निवासियों ने गिल्गाल् की छावनी में यहोशू के पास यों कहला भेजा कि अपने दासों से तू हाथ न उठा फुर्ती से हमारे पास आकर हमें बचा और हमारी सहायता कर क्योंकि पहाड़ पर बसे हुए एमोरियों के सब राजा हमारे विरुद्ध एकट्ठे हुए हैं॥ ७। सो यहोशू सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेके गिल्गाल् से उधर गया[1]॥ ८। और यहोवा ने यहोशू से कहा उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन को तेरे हाथ में कर दिया है उन में से एक पुरुष भी तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा॥ ९। सो यहोशू रातोंरात गिल्गाल् से जाकर एकाएक उन पर टूट पड़ा॥ १०। तब यहोवा ने ऐसा किया कि वे इस्राएलियों से घबरा गये और इस्राएलियों ने गिबोन् के पास उन्हें बड़ी मार से मारा और बेथोरोन् के चढ़ाव पर उन का पीछा करके अजेका और मक्केदा लों उन्हें मारते गये॥ ११। फिर जब वे इस्राएलियों के साम्हने से भागकर बेथोरोन् की उतराई पर आये तब अजेका पहुंचने लों यहोवा ने आकाश से बड़े बड़े पत्थर उन पर गिराये और वे मर गये। जो ओलों से मारे गये सो इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थे॥

१२। उस समय अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते यों कहा

हे सूर्य्य तू गिबोन् पर
और हे चन्द्रमा तू अय्यालोन् की तराई के ऊपर
ठहरा रह॥

---

(१) मूल में चढ़ा।

१३ । सो सूर्य्य तब लों थंभा रहा और चंद्रमा तब
 लों ठहरा रहा॥
 जब लों उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं
 से पलटा न लिया ॥

यह बात याशार् नाम पुस्तक में लिखी हुई है कि सूर्य्य आकाशमण्डल के बीच ठहरा रहा और कोई चार पहर के लगभग न डूबा ॥ १४ । न तो उस से पहिले कोई ऐसा दिन हुआ न उस के पीछे जिस में यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो यहोवा तो इस्राएल् की ओर लड़ता था ॥

१५ । तब यहोशू सारे इस्राएलियों समेत गिल्गाल् की छावनी को लौट गया ॥

१६ । और वे पांचों राजा भागकर मक्केदा के पास की गुफा में छिप गये ॥ १७ । तब यहोशू को यह समाचार मिला कि पांचों राजा हमें मक्केदा के पास की गुफा में छिपे हुए मिले हैं ॥ १८ । यहोशू ने कहा गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर लुढ़काकर उन की चौकी देने के लिये मनुष्यों को उस के पास बैठा दो ॥ १९ । पर तुम मत ठहरो अपने शत्रुओं का पीछा करके उन में से पंछेवालों को मार डालो उन्हें अपने अपने नगर में पैठने न दो क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन को तुम्हारे हाथ में कर दिया है ॥ २० । जब यहोशू और इस्राएली उन्हें बड़ी मार से मारके नाश कर चुके और उन में से जो बच गये सो अपने अपने गढ़वाले नगर में घुस गये, २१ । तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोशू के पास कुशलक्षेम से लौट आये और इस्राएलियों के विरुद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई[१] ॥ २२ । तब यहोशू ने आज्ञा दिई कि गुफा का मुंह खोलकर उन पांचों राजाओं को मेरे पास निकाल ले आओ ॥ २३ । उन्हों ने ऐसा ही किया और यरूशलेम् हेब्रोन् यर्मूत् लाकीश् और एग्लोन् के उन पांचों राजाओं को गुफा में से उस के पास निकाल ले आये ॥ २४ । जब वे उन राजाओं को यहोशू के पास निकाल ले आये तब यहोशू ने इस्राएल् के सब पुरुषों को बुलाकर अपने साथ चलनेहारे योद्धाओं के प्रधानों से कहा निकट आकर अपने अपने पांव इन राजाओं की गर्दनों पर धरो सो उन्हों ने निकट आकर अपने अपने पांव उन की गर्दनों पर धर दिये ॥ २५ । तब यहोशू ने उन से कहा डरो मत और न तुम्हारा मन कच्चा हो हियाव बांधकर दृढ़ हो क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिन से तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा ॥ २६ । इस के पीछे यहोशू ने उन को मरवा डाला और पांच वृक्षों पर लटकाया और वे सांझ लों उन वृक्षों पर लटके रहे ॥ २७ । सूर्य्य डूबते डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगों ने उन्हें उन वृक्षों पर से उतारके उसी गुफा में जहां छिप गये थे डाल दिया और उस गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर दे दिये वे आज लों वहीं धरे हुए हैं ॥

२८ । उसी दिन यहोशू ने मक्केदा को ले लिया और उस को तलवार से मारा और उस के राजा को सत्यानाश किया और जितने प्राणी उस में थे उन सभों में से किसी को जीता न छोड़ा और जैसा उस ने यरीहो के राजा से किया था वैसा ही मक्केदा के राजा से भी किया ॥

२९ । तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत मक्केदा से चलकर लिब्ना को गया और लिब्ना से लड़ा ॥ ३० । और यहोवा ने उस को भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ कर दिया और यहोशू ने उस को और उस में के सब प्राणियों को तलवार से मारा और उस में किसी को जीता न छोड़ा और उस के राजा से वैसा ही किया जैसा उस ने यरीहो के राजा से किया था ॥

३१ । फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लिब्ना से चलकर लाकीश् को गया और उस के विरुद्ध छावनी डालकर लड़ा ॥ ३२ । और यहोवा ने लाकीश् को इस्राएल् के हाथ में कर दिया सो दूसरे दिन उस ने उस को ले लिया और जैसा उस ने लिब्ना में के सब प्राणियों को तलवार से मारा वैसा ही उस ने लाकीश् से भी किया ॥

३३ । तब गेजेर् का राजा होराम् लाकीश् की सहायता करने को चढ़ आया और यहोशू ने प्रजा

(१) मूल में चुप हो गया ।
(२) मूल में, सान न चढ़ाई ।

समेत उस को भी ऐसा मारा कि उस के लिये किसी को जीता न छोड़ा ॥

३४। फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लाकीश् से चलकर एग्लोन् को गया और उस के विरुद्ध छावनी डालकर लड़ने लगा ॥ ३५। और उसी दिन उन्हों ने उस को ले लिया और उस को तलवार से मारा और उसी दिन जैसा उस ने लाकीश् में के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला था वैसा ही उस ने एग्लोन् से भी किया ॥

३६। फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत एग्लोन् से चलकर हेब्रोन् को गया और उस से लड़ने लगा ॥ ३७। और उन्हों ने उसे ले लिया और उस को और उस के राजा और सब गांवों को और उन में के सब प्राणियों को तलवार से मारा जैसा यहोशू ने एग्लोन् से किया था वैसा ही उस ने हेब्रोन् में भी किसी को जीता न छोड़ा उस ने उस को और उस में के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला ॥

३८। तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत घूमकर दबीर् को गया और उस से लड़ने लगा, ३९। और राजा समेत उसे और उस के सब गांवों को ले लिया और उन्हों ने उन को तलवार से मार लिया और जितने प्राणी उन में थे सब को सत्यानाश कर डाला किसी को जीता न छोड़ा जैसा यहोशू ने हेब्रोन् और लिब्ना और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने दबीर् और उस के राजा से भी किया ॥

४०। सो यहोशू ने उस सारे देश को अर्थात् पहाड़ी देश दक्खिन देश नीचे के देश और ढालू देश को उन के सब राजाओं समेत मारा और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किसी को जीता न छोड़ा वरन जितने प्राणी थे सभों को सत्यानाश कर डाला ॥ ४१। सो यहोशू ने कादेशबर्ने से ले अज्जा लों और गिबोन् तक के सारे गोशेन् देश के लोगों को मारा ॥ ४२। इन सब राजाओं को उन के देशों समेत यहोशू ने एक ही समय में ले लिया क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियों की ओर से लड़ता था ॥ ४३। तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत गिल्गाल् की छावनी में लौट आया ॥

(कनान् के उत्तरीय भाग का जीता जाना)

११. यह सुनकर हासोर् के राजा याबीन् ने मादोन् के राजा योबाब् और शिम्रोन् और अक्षाप् के राजाओं को, २। और जो जो राजा उत्तर की ओर पहाड़ी देश में और किन्नेरेत् की दक्खिन के अराबा में और नीचे के देश में और पच्छिम ओर दोर् के ऊंचे देश में रहते थे उन को और पूरब पच्छिम दोनों ओर रहनेहारे कनानियों और एमोरियों हित्तियों परिज्जियों और पहाड़ी यबूसियों और मिस्पा देश में हेर्मोन् पहाड़ के नीचे रहनेहारे हिव्वियों को बुलवा भेजा ॥ ४। और वे अपनी अपनी सेना समेत जो समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत थी निकल आये, और उन के साथ बहुत ही घोड़े और रथ भी थे, ५। तब ये सब राजा संमति करके एकट्ठे हुए और इस्राएलियों से लड़ने को मेरोम् नाम ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली ॥ ६। सो यहोवा ने यहोशू से कहा उन से मत डर क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभों को इस्राएलियों के वश करके मरवा डालूंगा तब तू उन के घोड़ों के सुम की नस कटवाना और उन के रथ भस्म कर देना ॥ ७। सो यहोशू सब योद्धाओं समेत मेरोम् नाम ताल के पास अचानक पहुंचकर उन पर टूट पड़ा ॥ ८। और यहोवा ने उन को इस्राएलियों के हाथ कर दिया सो उन्हों ने उन्हें मार लिया और बड़े नगर सीदोन् और मिस्रपोतमैम् लों और पूरब ओर मिस्पे के मैदान लों उन का पीछा किया और उन को मारा और उन में से किसी को जीता न छोड़ा ॥ ९। तब यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन से किया अर्थात् उन के घोड़ों के सुम की नस कटवाई और उन के रथ भस्म कर दिये ॥

१०। उस समय यहोशू ने घूमकर हासोर् को जो पहिले उन सब राज्यों में मुख्य नगर था ले

लिया और उस के राजा को तलवार से मार डाला ॥ ११ । और जितने प्राणी उस में थे उन सभों को उन्हों ने तलवार से मारकर सत्यानाश किया और किसी प्राणी को जीता न छोड़ा और हासोर् को यहोशू ने आग लगाकर फुंकवा दिया ॥ १२ । और उन सारे नगरों को उन के सब राजाओं समेत यहोशू ने ले लिया और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार उन को तलवार से मारकर सत्यानाश किया ॥ १३ । पर हासोर् को छोड़कर जिसे यहोशू ने फुंकवा दिया इस्राएल् ने और किसी नगर को जो अपने टीले पर बसा था न फूंका ॥ १४ । और इन नगरों के पशु और इन की सारी लूट को इस्राएलियों ने अपना लिया पर मनुष्यों को उन्हों ने तलवार से मार डाला यहां लों कि उन को सत्यानाश कर डाला और एक भी प्राणी को जीता न छोड़ा ॥ १५ । जो आज्ञा यहोवा ने अपने दास मूसा को दिई थी उस के अनुसार मूसा ने यहोशू को आज्ञा दिई थी और वैसा ही यहोशू ने किया भी जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थीं उन में से यहोशू ने कोई भी पूरी किये विना न छोड़ी ॥

(समस्त कनान् का राजाओं समेत जीता जाना)

१६ । सो यहोशू ने उस सारे देश को अर्थात् पहाड़ी देश और सारे दक्खिन देश और सारे गोशेन् देश और नीचे के देश और अराबा और इस्राएल् के पहाड़ी देश और उस के नीचेवाले देश को, १७ । हालाक् नाम पहाड़ से ले जो सेईर् की चढ़ाई पर है बालगाद् लों जो लबानोन् के मैदान में हेर्मोन् पर्वत के नीचे है जितना देश है उस सब को ले लिया और उन देशों के सारे राजाओं को पकड़कर मार डाला ॥ १८ । उन सब राजाओं से युद्ध करते करते यहोशू को बहुत दिन लगे ॥ १९ । गिबोन् के निवासी हिव्वियों को छोड़ और किसी नगर के लोगों ने इस्राएलियों से मेल न किया और सब नगरों को उन्हों ने लड़ लड़कर ले लिया ॥ २० । क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दिई थी उन पर कुछ दया न करे वरन सत्यानाश कर डाले इस कारण उस ने उन के मन ऐसे हठीले कर दिये कि उन्हों ने इस्राएलियों का साम्हना करके उन से युद्ध किया ॥

२१ । उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन् दबीर् अनाब् वरन यहूदा और इस्राएल् दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेहारे अनाकियों को नाश किया यहोशू ने नगरों समेत उन्हें सत्यानाश कर डाला ॥ २२ । इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया केवल अज्जा गत् और अशदोद् में कोई कोई रह गये ॥ २३ । सो जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया और उसे इस्राएल् के गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति मिली ॥

१२.

यर्दन पार सूर्योदय की ओर अर्थात् अर्नोन् नाले से ले हेर्मोन् पर्वत लों के देश और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्राएलियों ने मारके देश को अपने अधिकार में कर लिया था ये हैं, २ । एमोरियों का हेशबोन्-वासी राजा सीहोन् जो अर्नोन् नाले के किनारे के अरोएर् से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर यब्बोक् नदी लों जो अम्मोनियों का सिवाना है आधे गिलाद् पर, ३ । और किन्नेरेत् नाम ताल से ले बेत्यशीमोत् से होकर अराबा के ताल लों जो खारा ताल भी कहावता है पूरब ओर के अराबा और दक्खिन ओर पिसगा की सलामी के नीचे नीचे के देश पर प्रभुता रखता था ॥ ४ । फिर बचे हुए रपाइयों में से बाशान् के राजा ओग् का देश था जो अश्तारोत् और एद्रेई में रहा करता था, ५ । और हेर्मोन् पर्वत सल्का और गशूरियों और माकियों के सिवाने लों सारे बाशान् में और हेशबोन् के राजा सीहोन् के सिवाने लों आधे गिलाद् में भी प्रभुता करता था ॥ ६ । इस्राएलियों और यहोवा के दास मूसा ने इन को मार लिया और यहोवा

के दास मूसा ने इन का देश रूबेनियों और गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को दे दिया ॥

७। और यर्दन की पच्छिम ओर लबानोन् के मैदान में के बालूगाद् से ले सेईर् की चढ़ाई में के हालाक् पहाड़ लों के देश के जिन राजाओं को यहोशू और इस्राएलियों ने मारके उन का देश इस्राएलियों को गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके दे दिया सो ये हैं, ८। हित्ती और एमोरी और कनानी और परिज्जी और हिव्वी और यबूसी जो पहाड़ी देश में और नीचे के देश में और अराबा में और ढालू देश में और जंगल में और दक्खिन देश में रहते थे ॥ ९। एक यरीहो का राजा एक बेतेल् के पास के ऐ का राजा, १०। एक यरूशलेम् का राजा एक हेब्रोन् का राजा, ११। एक यर्मूत् का राजा एक लाकीश् का राजा, १२। एक एग्लोन् का राजा एक गेजेर् का राजा, १३। एक दबीर् का राजा एक गेदेर् का राजा, १४। एक होर्मा का राजा एक अराद् का राजा, १५। एक लिब्ना का राजा एक अदुल्लाम् का राजा, १६। एक मक्केदा का राजा एक बेतेल् का राजा, १७। एक तप्पूह् का राजा एक हेपेर् का राजा, १८। एक अपेक् का राजा एक लश्शारोन् का राजा, १९। एक मादोन् का राजा एक हासोर् का राजा, २०। एक शिम्रोन्मरोन् का राजा एक अक्षाप् का राजा, २१। एक तानाक् का राजा एक मगिद्दो का राजा, २२। एक केदेश् का राजा एक कर्मेल् में के योक्नाम् का राजा, २३। एक दोर् नाम ऊंचे देश में के दोर् का राजा एक गिल्गाल् में के गोयीम् का राजा, २४। एक तिर्सा का राजा है सो सब राजा इकतीस हुए ॥

(कनान् का इस्राएली गोत्र गोत्र में बांटा जाना)

१३. यहोशू बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया और यहोवा ने उस से कहा तू बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया है और बहुत देश रह गये हैं जो इस्राएल् के अधिकार में नहीं आये ॥ २। ये देश रह गये अर्थात् पलिश्तियों का सारा प्रान्त और सारे गशूरी ॥ ३। मिस्र के आगे की शीहोर् से ले उत्तर ओर एक्रोन् के सिवाने लों जो कनानियों का भाग गिना जाता है और पलिश्तियों के पांचों सरदार अर्थात् अज्जा अश्दोद् अश्कलोन गत् और एक्रोन् के लोग और दक्खिन ओर अव्वी भी, ४। फिर अपेक् और एमोरियों के सिवाने लों कनानियों का सारा देश और सीदोनियों का मारा नाम देश, ५। फिर गबालियों का देश और सूर्य्योदय की ओर हेर्मोन् पर्वत के नीचे के बालूगाद् से ले हमात् की घाटी लों सारा लबानोन्, ६। फिर लबानोन् से ले मिस्रपोत्मैम् तक सीदोनियों के पहाड़ी देश के निवासी। इन को मैं इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दूंगा इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के अनुसार चिट्ठी डाल डाल उन का देश इस्राएल् का भाग कर दे ॥ ७। सो अब इस देश को नवों गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उन का भाग होने के लिये बांट दे ॥

८। इस के साथ रूबेनियों और गादियों को तो वह भाग मिल चुका था जो मूसा ने उन्हें यर्दन की पूरब ओर ऐसा दिया था जैसा यहोवा के दास मूसा ने उन्हें दिया था, ९। अर्थात् अर्नोन् नाम नाले के किनारे के अरोएर् से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन् लों मेदबा के पास का सारा चौरस देश, १०। और अम्मोनियों के सिवाने लों हेश्बोन् में विराजनेहारे एमोरियों के राजा सीहोन् के सारे नगर, ११। और गिलाद् देश और गशूरियों और माकावासियों का सिवाना और सारा हेर्मोन् पर्वत और सल्का लों सारा बाशान्, १२। फिर अश्तारोत् और एद्रेई में विराजनेहारे उस ओग् का सारा राज्य जो रपाइयों में से अकेला बच गया था। इन्हीं को मूसा ने मार लिया और उन की प्रजा को उस देश से निकाल दिया था ॥ १३। पर इस्राएलियों ने गशूरियों और माकियों को उन के देश से न निकाला सो गशूरी और माकी इस्राएलियों के बीच आज लों रहते हैं ॥ १४। और लेवी के गोत्रियों को उस ने कोई भाग न दिया क्योंकि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा

के कहे के अनुसार उसी के हव्य उन के भाग ठहरे हैं ॥

१५। मूसा ने रूबेन् के गोत्र को उन के कुलों के अनुसार दिया, १६। अर्थात् अर्नोन् नाम नाले के किनारे के अरोएर् से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर मेदबा के पास का सारा चौरस देश, १७। फिर चौरस देश में का हेश्बोन् और उस के सब गांव फिर दीबोन् बामोत्बाल् बेत्बाल्मोन्, १८। यहसा कदेमोत् मेपात, १९। किर्यातैम् सिब्मा और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथश्शहर्, २०। बेत्पोर् पिस्गा की सलामी और बेत्यशीमोत्, २१। निदान चौरस देश में बसे हुए हेश्बोन् में बिराजनेहारे एमोरियों के उस राजा सीहोन् के राज्य के सारे नगर जिसे मूसा ने मार लिया था। मूसा ने एवी रेकेम् सूर् हूर् और रेबा नाम मिद्यान के प्रधानों को भी मार लिया जो सीहोन् के ठहराये हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे॥ २२। और इस्राएलियों ने उन के और मारे हुओं के साथ बोर् के पुत्र भावी कहनेहारे बिलाम् को भी तलवार से मार डाला ॥ २३। और रूबेनियों का सिवाना यर्दन का तीर ठहरा। रूबेनियों का भाग उन के कुलों के अनुसार नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

२४। फिर मूसा ने गाद् के गोत्रियों को भी कुलों के अनुसार भाग दिया॥ २५। सो यह ठहरा अर्थात् याजेर् आदि गिलाद् के सारे नगर और रब्बा के साम्हने के अरोएर् लों अम्मोनियों का आधा देश, २६। और हेश्बोन् से रामत्मिस्पे और बतोनीम् लों और महनैम् से दबीर् के सिवाने लों, २७। और तराई में बेथारास् बेनिम्रा सुक्कोत् और सापोन् और हेश्बोन् के राजा सीहोन् के राज्य का बाकी भाग और किन्नेरेत् नाम ताल के सिरे लों यर्दन की पूरब ओर का वह देश जिस का सिवाना यर्दन है॥ २८। गादियों का भाग उन के कुलों के अनुसार नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

२९। फिर मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्रियों को भी भाग दिया वह मनश्शेइयों के आधे गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार ठहरा॥ ३०। सो यह है अर्थात् महनैम् से ले बाशान् के राजा ओग् के राज्य का सारा देश और बाशान् में बसी हुई याईर् की साठों बस्तियां, ३१। और गिलाद् का आधा भाग और अश्तारोत् और एद्रेई जो बाशान् में ओग् के राज्य के नगर थे ये मनश्शे के पुत्र माकीर् के वंश का अर्थात् माकीर् के आधे वंश का भाग कुलों के अनुसार ठहरे॥

३२। जो भाग मूसा ने मोआब् के अराबा में यरीहो के पास के यर्दन की पूरब ओर बांट दिये सो ये ही हैं॥ ३३। पर लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा ही अपने कहे के अनुसार उन का भाग ठहरा॥

१४.

जो भाग इस्राएलियों ने कनान् देश में पाए जिन्हें एलाजार् याजक और नून् के पुत्र यहोशू और इस्राएली गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों ने उन को दिया वे ये हैं॥ २। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढ़े नौ गोत्रों के लिये दिई थी उस के अनुसार उन के भाग चिट्ठी डाल डालकर दिये गये॥ ३। मूसा ने तो अढ़ाई गोत्रों के भाग यर्दन पार दिये थे पर लेवीयों को उस ने उन के बीच कोई भाग न दिया था॥ ४। यूसफ के वंश के तो दो गोत्र हो गये थे अर्थात् मनश्शे और एप्रैम् और उस देश में लेवीयों को कुछ भाग न दिया गया केवल रहने के नगर और पशु आदि धन रखने को चराइयां उन को मिलीं॥ ५। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दिई थी उस के अनुसार इस्राएलियों ने किया और उन्हों ने देश को बांट लिया॥

६। यहूदी यहोशू के पास गिल्गाल् में आये और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब् ने उस से कहा तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से मेरे तेरे विषय क्या कहा था॥ ७। जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने को कादेशबर्ने से भेजा तब मैं चालीस बरस

का था और मैं सच्चे मन से[1] उस के पास सन्देश ले आया॥ ८। और मेरे साथी जो मेरे संग गये थे उन्हों ने तो प्रजा के लोगों का मन निराशकर कर दिया[2] पर मैं अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे पूरी रीति से हो लिया॥ ९। सो उस दिन मूसा ने किरिया खाकर मुझ से कहा कि तू जो पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा के पीछे हो लिया है इस कारण नि:सन्देह जिस भूमि पर तू अपने पांव धर आया है वह सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी॥ १०। और अब देख जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से जो पैंतालीस वरस बीते हैं जिन में इस्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे उन में यहोवा ने अपने कहे के अनुसार मुझे जीता रक्खा है और अब मैं पचासी वरस का हुआ हूं॥ ११। जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है युद्ध करने वा भीतर बाहर आने जाने के लिये जितना उस समय मुझ में सामर्थ्य था उतना ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है॥ १२। सो अब वह पर्वत मुझे दे जिस की चर्चा यहोवा ने उस दिन किई थी तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं पर क्या जाने यहोवा मेरे संग रहे और उस के कहे के अनुसार मैं उन्हें उन के देश से निकाल दूं॥ १३। तब यहोशू ने उस को आशीर्वाद दिया और हेब्रोन् को यपुन्ने के पुत्र कालेब् का भाग कर दिया॥ १४। इस कारण हेब्रोन् कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब् का भाग आज लों बना है क्योंकि वह इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के पीछे पूरी रीति से हो लिया था॥ १५। अगले समय में तो हेब्रोन् का नाम किर्यतर्बा था यह अर्बा अनाकियों में सब से बड़ा पुरुष था। और उस देश को लड़ाई से शान्ति मिली॥

१५. यहूदियों के गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार चिट्ठी

डालने से एदोम् के सिवाने लों और दक्खिन ओर सीन् के जंगल लों जो दक्खिनी सिवाने पर है ठहरा॥ २। उन के भाग का दक्खिनी सिवाना खारे ताल के उस सिरेवाले कोल से आरंभ हुआ जो दक्खिन की ओर बढ़ा है॥ ३। और वह अक्रब्बीम् नाम चढ़ाई की दक्खिन ओर से निकल सीन् होते हुए कादेशबर्ने की दक्खिन ओर को चढ़ गया फिर हेस्रोन् के पास हो अद्दार् को चढ़कर कर्काआ की ओर मुड़ गया॥ ४। वहां से अस्मोन् होते हुए वह मिस्र के नाले पर निकला और उस सिवाने का अन्त समुद्र हुआ तुम्हारा दक्खिनी सिवाना यही होगा॥ ५। फिर पूरबी सिवाना यर्दन के मुहाने तक खारा ताल ही ठहरा और उत्तर दिशा का सिवाना यर्दन के मुहाने के पास के ताल के कोल से आरंभ करके, ६। बेथोग्ला को चढ़ बेतराबा की उत्तर ओर होकर रूबेनी बोहन्वाले नाम पत्थर लों चढ़ गया॥ ७। और वही सिवाना आकोर् नाम तराई से दबीर् की ओर चढ़ गया और उत्तर होते हुए गिल्गाल् की ओर झुका जो नाले की दक्खिन ओर की अदुम्मीम् की चढ़ाई के साम्हने है वहां से वह एन्शेमेश् नाम सोते के पास पहुंचकर एन्रोगेल् पर निकला॥ ८। फिर वही सिवाना हिन्नोम् के पुत्र की तराई से होकर यबूस्[1] जो यरूशलेम् कहावता है उस की दक्खिन अलंग से चढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुंचा जो पच्छिम ओर हिन्नोम् की तराई के साम्हने और रपाईम् की तराई के उत्तरवाले सिरे पर है॥ ९। फिर वही सिवाना उस पहाड़ की चोटी से नेप्तोह् नाम सोते को चला गया और एप्रोन् पहाड़ के नगरों पर निकला फिर वहां से बाला को जो किर्यत्यारीम् भी कहावता है पहुंचा॥ १०। फिर वह बाला से पच्छिम ओर मुड़कर सेईर् पहाड़ लों पहुंचा और यारीम् पहाड़ जो कसालोन् भी कहावता है उस की उत्तरवाली अलंग से होकर बेत्शेमेश् को उतर गया और वहां से तिम्ना पर निकला॥ ११। वहां से वह सिवाना एक्रोन् की उत्तरीय अलंग के पास होते हुए शिक्करोन् को गया और बाला

(१) मूल में जैसा मेरे मन के साथ था वैसा ही।
(२) मूल में. गला दिया।

(१) मूल में यबूसी।

पहाड़ होकर यब्नेल् पर निकला और उस सिवाने का अन्त समुद्र का तीर हुआ ॥ १२ । और पच्छिम का सिवाना महासमुद्र का तीर ठहरा। यहूदियों को जो भाग उन के कुलों के अनुसार मिला उस की चारों ओर का सिवाना यही हुआ ॥

१३ । और यपुन्ने के पुत्र कालेब् को उस ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहूदियों के बीच भाग दिया अर्थात् किर्यतर्बा जो हेब्रोन् भी कहलाता है वह अर्बा अनाक् का पिता था ॥ १४ । और कालेब् ने वहां से शेशै अहीमन् और तल्मै नाम अनाक् के तीनों पुत्रों को निकाल दिया ॥ १५ । फिर वहां से वह दबीर् के निवासियों पर चढ़ गया अगले समय तो दबीर् का नाम किर्यत्सेपेर् था ॥ १६ । और कालेब् ने कहा जो किर्यत्सेपेर् को मारके ले ले उसे मैं अपनी बेटी अक्सा को ब्याह दूंगा ॥ १७ । सो कालेब् के भाई ओत्नीएल् कनजी ने उसे ले लिया और उस ने उसे अपनी बेटी अक्सा को ब्याह दिया ॥ १८ । और जब वह उस के पास आई तब उस ने उस को पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा फिर वह अपने गदहे पर से उतर पड़ी और कालेब् ने उस से पूछा तू क्या चाहती है ॥ १९ । वह बोली मुझे आशीर्वाद दे तू ने मुझे दक्खिन देश में की कुछ भूमि तो दिई है मुझे जल के सोते भी दे सो उस ने ऊपरला और निचला दोनों सोते उसे दिये ॥

२० । यहूदियों के गोत्र का भाग तो उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा ॥

२१ । और यहूदियों के गोत्र के किनारेवाले नगर दक्खिन देश में एदोम् के सिवाने की ओर ये हैं अर्थात् कब्सेल् एदेर् यागूर्, २२ । कीना दीमोना अदादा, २३ । केदेश् हासोर् यित्नान्, २४ । जीप् तेलेम् बालोत्, २५ । हासोर्हदत्ता करिय्योथेस्रोन् जो हासोर् भी कहावता है, २६ । अमाम् शमा मोलादा, २७ । हसर्गद्दा हेश्मोन् बेत्पालेत्, २८ । हसर्शूआल् बेर्शेबा बिज्योत्या, २९ । बाला इय्यीम् एसेम्, ३० । एल्तोलद् कसील् होर्मा, ३१ । सिक्लग् मद्मन्ना सन्सन्ना, ३२ । लबाओत् शिल्हीम् ऐन् और रिम्मोन् ये सब नगर उन्तीस हैं और इन के गांव भी हैं ॥

३३ । और नीचे के देश में ये हैं अर्थात् एश्ताओल् सोरा अश्ना, ३४ । जानोह् एन्गन्नीम् तप्पूह् एनाम्, ३५ । यर्मूत् अदुल्लाम् सोको अजेका, ३६ । शारैम् अदीतैम् गदेरा और गदेरोतैम् ये सब चौदह नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

३७ । फिर सनान् हदाशा मिग्दल्गाद्, ३८ । दिलान् मिस्पे योक्तेल्, ३९ । लाकीश् बोस्कत् एग्लोन्, ४० । कब्बोन् लह्मास् कित्लीश्, ४१ । गदेरोत् बेत्दागोन् नामा और मक्केदा ये सोलह नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

४२ । फिर लिब्ना एतेर् आशान्, ४३ । यिप्ताह् अश्ना नसीब्, ४४ । कीला अक्जीब् और मारेशा ये नव नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

४५ । फिर नगरों और गांवों समेत एक्रोन्, ४६ । और एक्रोन् से ले समुद्र लों अपने अपने गांवों समेत जितने नगर अश्दोद् की अलंग पर हैं ॥

४७ । फिर अपने अपने नगरों और गांवों समेत अश्दोद् और अज्जा बरन मिस्र के नाले तक और महासमुद्र के तीर लों जितने नगर हैं ॥

४८ । और पहाड़ी देश में ये हैं अर्थात् शामीर् यत्तीर् सोको, ४९ । दन्ना किर्यत्सन्ना जो दबीर् भी कहावता है, ५० । अनाब् एश्तमो आनीम्, ५१ । गोशेन् होलोन् और गीलो ये ग्यारह नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

५२ । फिर अराब् दूमा एशान्, ५३ । यानीम् बेत्तप्पूह् अपेका, ५४ । हुम्ता किर्यतर्बा जो हेब्रोन् भी कहावता है और सीओर् ये नव नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

५५ । फिर माओन् कर्मेल् जीप् यूता, ५६ । यिज्रेल् योक्दाम् जानोह्, ५७ । कैन् गिबा और तिम्ना ये दस नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

५८ । फिर हल्हूल् बेत्सूर् गदोर्, ५९ । मरात् बेत्नोत् और एल्तकोन् ये छः नगर हैं और इन के गांव भी हैं ॥

६०। फिर किर्यत्बाल् जो किर्यत्यारीम् भी कहावता है और रब्बा ये दो नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥

६१। और जंगल में ये नगर हैं अर्थात् बेतराबा मिद्दीन् सकाका, ६२। निब्शान् लोनवाला नगर और एन्गदी ये छ: नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥

६३। यरूशलेम् के निवासी यबूसियों को यहूदी न निकाल सके सो आज के दिन लों यबूसी यहूदियों के संग यरूशलेम् में रहते हैं॥

१६. फिर यूसुफ की सन्तान का भाग चिट्ठी डालने से ठहराया गया उन का[1] सिवाना यरीहो के पास की यर्दन नदी से अर्थात् पूरब ओर यरीहो के जल से आरंभ होकर उस पहाड़ी देश होते हुए जो जंगल में है बेतेल् को पहुंचा॥ २। वहां से वह लूज् लों पहुंचा और एरेकियों के सिवाने होते हुए अतारोत् पर जा निकला, ३। और पच्छिम ओर यप्लेतियों के सिवाने उतरके फिर नीचेवाले बेथोरोन् के सिवाने होके गेजेर् को पहुंचा और समुद्र पर निकला॥ ४। सो मनश्शे और एप्रैम् नाम यूसुफ के दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना अपना भाग लिया॥ ५। एप्रैमियों का सिवाना उन के कुलों के अनुसार यह ठहरा अर्थात् उन के भाग का सिवाना पूरब से आरंभ होकर अत्रोतद्दार् से होते हुए ऊपरले बेथोरोन् लों पहुंचा॥ ६। और उत्तरी सिवाना पच्छिम ओर के मिक्मतात् से आरभ होकर पूरब ओर मुड़कर तानत्शीलो को पहुंचा और उस के पास से होते हुए यानोह् लों पहुंचा॥ ७। फिर यानोह् से वह अतारोत् और नारा को उतरता हुआ यरीहो के पास होकर यर्दन पर निकला॥ ८। फिर वही सिवाना तप्पूह् से निकलकर और पच्छिम ओर जाकर काना के नाले तक होकर समुद्र पर निकला। एप्रैमियों के गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा॥ ९। और मनश्शेइयों के भाग के बीच भी कई एक[1] नगर अपने अपने गांवों समेत एप्रैमियों के लिये अलग किये गये॥ १०। पर जो कनानी गेजेर् में बसे थे उन को, एप्रैमियों ने वहां से न निकाला सो वे कनानी उन के बीच आज के दिन लों बसे हैं और बेगारी में दास का सा काम करते हैं॥

१७. फिर यूसुफ के जेठे मनश्शे के गोत्र का भाग चिट्ठी डालने से यह ठहरा। मनश्शे का जेठा गिलाद् का पिता माकीर् जो योद्धा था इस कारण उस के वंश को गिलाद् और बाशान् मिला॥ २। सो यह भाग दूसरे मनश्शेइयों के लिये उन के कुलों के अनुसार ठहरा अर्थात् अबीएजेर् हेलेक् अस्रीएल् शेकेम् हेपेर् और शमीदा जो अपने अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के पुरुष थे उन के अलग अलग वंशों के लिये ठहरा॥ ३। पर हेपेर् जो गिलाद् का पुत्र माकीर् का पोता और मनश्शे का परपोता था उस के पुत्र सलोफाद् के बेटे नहीं बेटियां ही हुईं और उन के नाम महला नोआ होग्ला मिल्का और तिर्सा हैं॥ ४। सो वे एलाजार् याजक नून् के पुत्र यहोशू और प्रधानों के पास जाकर कहने लगीं यहोवा ने मूसा को आज्ञा दिई थी कि वह हम को हमारे भाइयों के बीच भाग दे। सो यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उन के चचाओं के बीच भाग दिया॥ ५। सो मनश्शे को यर्दन पार गिलाद् देश और बाशान् को छोड़ दस भाग मिले॥ ६। क्योंकि मनश्शेइयों के बीच मनश्शेई स्त्रियों को भी भाग मिला और दूसरे मनश्शेइयों को गिलाद् देश मिला॥ ७। और मनश्शे का सिवाना आशेर् से ले मिक्मतात् लों पहुंचा जो शकेम् के साम्हने है फिर वह दक्खिन ओर बढ़कर एन्तप्पूह् के निवासियों तक पहुंचा॥ ८। तप्पूह् की भूमि तो मनश्शे को मिली पर तप्पूह् नगर जो मनश्शे के सिवाने पर बसा है सो एप्रैमियों का ठहरा॥ ९। फिर वहां से वह सिवाना काना के नाले तक उतरके उस की दक्खिन ओर तक पहुंच गया ये नगर यद्यपि

(१) मूल में. सब।

मनश्शे के नगरों के बीच में थे तौभी एप्रैम् के ठहरे और मनश्शे का सिवाना उस नाले की उत्तर ओर से जाकर समुद्र पर निकला ॥ १० । दक्खिन ओर का देश तो एप्रैम् को और उत्तर ओर का मनश्शे को मिला और उस का सिवाना समुद्र ठहरा और वे उत्तर ओर आशेर् से और पूरब ओर इस्साकार् से लगे ॥ ११ । और मनश्शे को इस्साकार् और आशेर् अपने अपने नगरों समेत बेतशान् यिब्लाम् और अपने नगरों समेत दोर् के निवासी और अपने नगरों समेत एन्दोर् के निवासी और अपने नगरों समेत तानाक् के निवासी और अपने नगरों समेत मगिद्दो के निवासी ये तीनों ऊंचे स्थानों पर बसे हैं ॥ १२ । पर मनश्शेई उन नगरों के निवासियों को उन में से न निकाल सके सो वे कनानी उस देश में बरियाई से बसे रहे ॥ १३ । तौभी जब इस्राएली सामर्थी हो गये तब कनानियों से बेगारी तो कराने लगे पर उन को पूरी रीति से निकाल न दिया ॥

१४ । यूसुफ की सन्तान यहोशू से कहने लगी हम तो गिन्ती में बहुत हैं क्योंकि अब लों यहोवा हमें आशीष देता आया है फिर तू ने हमारे भाग के लिये चिट्ठी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है ॥ १५ । यहोशू ने उन से कहा यदि तुम गिनती में बहुत हो और एप्रैम् का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा हो तो परिज्जियों और रपाइयों का देश जो बन है उस में जाकर पेड़ों को काट डालो ॥ १६ । यूसुफ की सन्तान ने कहा वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है और क्या बेतशान् और उस के नगरों में रहनेहारे क्या यिज्रेल् की तराई में रहनेहारे जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं उन सभों के पास लोहे के रथ हैं ॥ १७ । फिर यहोशू ने क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से कहा हां तुम लोग तो गिनती में बहुत हो और तुम्हारा बड़ा सामर्थ्य भी है सो तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा ॥ १८ । पहाड़ी देश भी तुम्हारा हो जाएगा वह बन तो है पर उस के पेड़ काट डालो तब उस के आस पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा क्योंकि चाहे कनानी सामर्थी हों और उन के पास लोहे के रथ भी हों तौभी तुम उन्हें वहां से निकाल सकोगे ॥

१८. फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली ने शोलो में एकट्ठी होकर वहां मिलापवाले तंबू को खड़ा किया क्योंकि देश उन के वश में आ गया था ॥ २ । और इस्राएलियों में से सात गोत्रों के लोग अपना अपना भाग बिना पाये रह गये थे ॥ ३ । सो यहोशू ने इस्राएलियों से कहा जो देश तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब लों ढिलाई करते रहोगे ॥ ४ । अब गोत्र पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो और मैं उन्हें इस लिये भेजूंगा कि वे चलकर देश में घूमें फिरें और अपने अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उस का हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएं ॥ ५ । और वे देश के सात भाग लिखें यहूदी तो दक्खिन ओर अपने भाग में और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर ओर अपने भाग में रहें ॥ ६ । और लेवीयों का तुम्हारे बीच कोई भाग न होगा क्योंकि यहोवा का दिया हुआ याजकपद ही उन का भाग है और गाद् रूबेन् और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग यर्दन की पूरब ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना अपना भाग पा चुके हैं ॥ ७ । और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे पास ले आओ और मैं यहां तुम्हारे लिये अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डालूंगा ॥ ८ । सो वे पुरुष उठकर चल दिये और जो उस देश का हाल लिखने को चले उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा दिई कि जाकर देश में घूमो फिरो और उस का हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ और मैं यहां शोलो में यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूंगा ॥ ९ । सो वे पुरुष चल दिये और उस देश में घूमे और उस के नगरों के सात भाग कर उन का हाल पुस्तक में लिखकर शोलो की छावनी में यहोशू के पास आये ॥ १० । तब यहोशू ने शोलो में यहोवा के साम्हने उन के

लिये चिट्ठियां डालीं और वहीं यहोशू ने इस्राएलियों को उन के भागों के अनुसार देश बांट दिया ॥

११ । और बिन्यामीनियों के गोत्र की चिट्ठी उन के कुलों के अनुसार निकली और उन का भाग यहूदियों और यूसुफियों के बीच पड़ा ॥ १२ । सो उन का उत्तरी सिवाना यर्दन से आरंभ हुआ और यरीहो की उत्तर अलंग से चढ़ते हुए पच्छिम ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन् के जंगल में निकला ॥ १३ । वहां से वह लूज़् को पहुंचा जो बेतेल् भी कहावता है और लूज़् की दक्खिन अलंग से होते हुए निचले बेथोरोन् की दक्खिन ओर के पहाड़ के पास हो अत्रोतद्दार् को उतर गया ॥ १४ । फिर पच्छिमी सिवाना मुड़के बेथोरोन् के साम्हने और उस की दक्खिन ओर के पहाड़ से होते हुए किर्यत्बाल् नाम यहूदियों के एक नगर पर निकला जो किर्यत्यारीम् भी कहावता है पच्छिम का सिवाना यही ठहरा ॥ १५ । फिर दक्खिन अलंग का सिवाना पच्छिम से आरंभ कर किर्यत्यारीम् के सिरे से निकलकर नेप्तोह् के सोते पर पहुंचा, १६ । और उस पहाड़ के सिरे पर उतरा जो हिन्नोम् के पुत्र की तराई के साम्हने और रपाईम् नाम तराई की उत्तर ओर है वहां से वह हिन्नोम् की तराई में अर्थात् यबूस् की दक्खिन अलंग होकर एन्रोगेल् को उतरा ॥ १७ । वहां से वह उत्तर ओर मुड़कर एन्शेमेश् को निकल उस गलीलोत् की ओर गया जो अदुम्मीम् की चढ़ाई के साम्हने है फिर वहां से वह रूबेन् के पुत्र बोहन् के पत्थर को उतर गया ॥ १८ । वहां से वह उत्तर ओर जाकर अराबा के साम्हने के पहाड़ की अलंग से होते हुए अराबा को उतरा ॥ १९ । वहां से वह सिवाना बेथोग्ला की उत्तर अलंग से जाकर खारे ताल की उत्तर ओर के कोल में यर्दन के मुहाने पर[1] निकला दक्खिन का सिवाना यही ठहरा ॥ २० । और पूरब ओर का सिवाना यर्दन ही ठहरा । बिन्यामीनियों का भाग चारों ओर के सिवानों सहित उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा ॥ २१ । और बिन्यामीनियों के गोत्र को उन के कुलों के अनुसार ये नगर मिले अर्थात् यरीहो बेथोग्ला एमेक्कसीस्, २२ । बेतराबा समारैम् बेतेल्, २३ । अव्वीम् पारा ओप्रा, २४ । कपरम्मोनी ओप्नी और गेबा ये बारह नगर और इन के गांव मिले ॥ २५ । फिर गिबोन् रामा बेरोत्, २६ । मिस्पे कपीरा मोसा, २७ । रेकेम् यिर्पेल् तरला, २८ । सेला एलेप् यबूस् जो यरूशलेम् भी कहावता है गिबत् और किर्यत् ये चौदह नगर और इन के गांव उन्हें मिले । बिन्यामीनियों का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा ॥

१९. दूसरी

चिट्ठी शिमोन् के नाम पर अर्थात् शिमोनियों के कुलों के अनुसार उन के गोत्र के नाम पर निकली और उन का भाग यहूदियों के भाग के बीच ठहरा ॥ २ । उन के भाग में ये नगर हैं अर्थात् बेर्शेबा शेबा मोलादा, ३ । हसर्शूआल् बाला एसेम्, ४ । एल्तोलद् बतूल् होर्मा, ५ । सिक्लग् बेत्मर्काबोत् हसर्शूसा, ६ । बेत्लबाओत् और शारूहेन् ये तेरह नगर और इन के गांव उन्हें मिले ॥ ७ । फिर ऐन् रिम्मोन् एतेर् और आशान् ये चार नगर गांवों समेत, ८ । और बालत्बेर् जो दक्खिन देश का रामा भी कहावता है उस लों इन नगरों की चारों ओर के सब गांव भी उन्हें मिले । शिमोनियों के गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा ॥ ९ । शिमोनियों का भाग तो यहूदियों के अंश में से दिया गया क्योंकि यहूदियों का भाग उन के लिये बहुत था इस कारण शिमोनियों का भाग उन्हीं के भाग के बीच ठहरा ॥

१० । तीसरी चिट्ठी जबूलूनियों के कुलों के अनुसार उन के नाम पर निकली और उन के भाग का सिवाना सारीद् तक पहुंचा ॥ ११ । और उन का सिवाना पच्छिम ओर मरला को चढ़कर दब्बेशेत् को पहुंचा और योक्नाम् के साम्हने के नाले लों पहुंच गया ॥ १२ । फिर सारीद् से वह सूर्योदय की ओर मुड़कर किस्लोत्ताबोर् के सिवाने लों पहुंचा

(१) मूल में दक्खिनी सिरे पर ।

और वहां से बढ़ते बढ़ते दाबरत् में निकला और यापी की ओर चढ़ा ॥ १३। वहां से वह पूरब ओर आगे बढ़कर गथेपेर् और इत्कासीन् को गया और उस रिम्मोन् में निकला जो नेआ से लगा है ॥ १४। वहां से वह सिवाना उस की उत्तर ओर मुड़कर हन्नातोन् पर पहुंचा और यिप्तहेल् की तराई में निकला ॥ १५। कत्तात् नहलाल् शिम्रोन् यिदला और बेतलेहेम् ये बारह नगर उन के गांवों समेत उसी भाग के ठहरे ॥ १६। जबूलूनियों का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा और उस में अपने अपने गांवों समेत ये ही नगर हैं ॥

१७। चौथी चिट्ठी इस्साकारियों के कुलों के अनुसार उन के नाम पर निकली ॥ १८। और उन का सिवाना यिज्रेल् कसुल्लोत् शूनेम्, १९। हपारैम् शीओन् अनाहरत्, २०। रब्बीत् किश्योन् एबेस्, २१। रेमेत् एनगन्नीम् एनहद्दा और बेतपस्सेस् तक पहुंचा ॥ २२। फिर वह सिवाना ताबोर् शहसूमा और बेतशेमेश् लों पहुंचा और उन का सिवाना यर्दन नदी पर निकला वो उन को सोलह नगर अपने अपने गांवों समेत मिले ॥ २३। कुलों के अनुसार इस्साकारियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

२४। पांचवीं चिट्ठी आशेरियों के गोत्र के कुलों के अनुसार उन के नाम पर निकली ॥ २५। उन के सिवाने में हेल्कत् हली बेतेन् अक्षाप, २६। अलम्मेलेक् अमाद् और मिशाल् थे और वह पच्छिम ओर कर्म्मेल् लों और शीहोर्लिब्नात् लों पहुंचा ॥ २७। फिर वह सूर्योदय की ओर मुड़कर बेतदागोन् को गया और जबूलून् के भाग लों और यिप्तहेल् की तराई से उत्तर ओर होकर बेतेमेक् और नीएल् लों पहुंचा और उत्तर ओर जाकर काबूल् पर निकला ॥ २८। और वह एब्रोन् रहोब् हम्मोन् और काना से होकर बड़े सीदोन् को पहुंचा ॥ २९। वहां से वह सिवाना मुड़कर रामा से होते हुए सोर् नाम गढ़वाले नगर लों चला गया फिर सिवाना होसा की ओर मुड़कर और अकजीब् के पास के देश में होकर समुद्र पर निकला ॥ ३०। उम्मा अपेक् और रहोब् भी उन के भाग में ठहरे सो बाईस नगर अपने अपने गांवों समेत उन को मिले ॥ ३१। कुलों के अनुसार आशेरियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

३२। छठवीं चिट्ठी नप्तालीयों के कुलों के अनुसार उन के नाम पर निकली ॥ ३३। और उन का सिवाना हेलेप् से और सानन्नीम् में के बांज वृक्ष से अदामीनेकेब् और यब्नेल् से होकर और लक्कूम् को जाकर यर्दन पर निकला ॥ ३४। वहां से वह सिवाना पच्छिम ओर मुड़कर अज्नोतताबोर् को गया और वहां से हुक्कोक् को गया और दक्खिन ओर जबूलून् के भाग लों और पच्छिम ओर आशेर् के भाग लों और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग के पास की यर्दन नदी पर पहुंचा ॥ ३५। और उन के गढ़वाले नगर ये हैं अर्थात् सिद्दीम् सेर् हम्मत् रक्कत् किन्नेरेत्, ३६। अदामा रामा हासेर्, ३७। केदेश् एद्रेई एन्हासेर्, ३८। यिरोन् मिगदलेल् होरेम् बेतनात् और बेतशेमेश् ये उन्नीस नगर गांवों समेत उन को मिले ॥ ३९। कुलों के अनुसार नप्तालीयों के गोत्र का भाग नगरों और उन के गांवों समेत यही ठहरा ॥

४०। सातवीं चिट्ठी कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र के नाम पर निकली ॥ ४१। और उन के भाग के सिवाने में सोरा एश्ताओल् ईर्शेमेश्, ४२। शालब्बीन् अय्यालोन् यित्ला, ४३। एलोन् तिम्ना एक्रोन्, ४४। एलतके गिब्बतोन् बालात्, ४५। यहूद् बनेबराक् गत्रिम्मोन्, ४६। मेयर्कोन् और रक्कोन् ठहरे और यापो के साम्हने का सिवाना भी उन का था ॥ ४७। और दानियों का भाग इस से[1] अधिक हो गया अर्थात् दानी लेशेम् पर चढ़कर उस से लड़े और उसे लेकर तलवार से मार लिया और उस को अपने अधिकार में करके उस में बस गये और अपने मूलपुरुष के नाम पर लेशेम् का नाम दान् रक्खा ॥ ४८। कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

४९। जब देश का सिवानों के अनुसार बांटा जाना निपट गया तब इस्राएलियों ने नून् के पुत्र

(१) मूल में उन से।

यहोशू को भी अपने बीच में एक भाग दिया ॥ ५० । यहोवा के कहे के अनुसार उन्हों ने उस को उस का मांगा हुआ नगर दिया यह एप्रैम् के पहाड़ी देश में का तिम्नत्सेरह् है और वह उस नगर को बसाकर उस में रहने लगा ॥

५१ । जो जो भाग एलाजार् याजक और नून् के पुत्र यहोशू और इस्राएलियों के गोत्रों के घरानो के पितरों के मुख्य मुख्य पुरुषों ने शीलो में मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डाल डालके बांट दिये सो ये ही हैं निदान उन्हों ने देश बांटना निपटा दिया ॥

(शरणनगरो का ठहराया जाना)

२०. फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, २ । इस्राएलियों से यह कह कि मैं ने मूसा के द्वारा तुम से शरण नगरों की जो चर्चा किई थी उस के अनुसार उन को ठहरा लो, ३ । जिस से जो कोई भूल से बिन जाने किसी को मार डाले वह उन में से किसी में भाग जाए सो वे नगर खून के पलटा लेनेहारे से बचने के लिये तुम्हारे शरणस्थान ठहरें ॥ ४ । वह उन नगरों में से किसी को भाग जाए और उस नगर के फाटक में खड़ा होकर उस के पुरनियों को अपना मुकद्दमा कह सुनाए और वे उस को अपने नगर में अपने पास टिका लें और उसे कोई स्थान दें जिस में वह उन के साथ रहे ॥ ५ । और यदि खून का पलटा लेनेहारा उस का पीछा करे तो वे यह जानकर कि उस ने अपने पड़ोसी को बिन जाने और पहिले उस से बिन बैर रक्खे मारा उस खूनी को उस के हाथ में न दें ॥ ६ । और जब लों वह मण्डली के साम्हने न्याय के लिये खड़ा न हो और जब लों उन दिनों का महायाजक न मर जाए तब लों वह उसी नगर में रहे उस के पीछे वह खूनी अपने नगर को लौटकर जिस से वह भाग आया हो अपने घर में फिर रहने पाए ॥ ७ । सो उन्हों ने नप्ताली के पहाड़ी देश में गालील् के केदेश् को और एप्रैम् के पहाड़ी देश में शकेम् को और यहूदा के पहाड़ी देश में किर्यतर्बा को जो हेब्रोन् भी कहावता है पवित्र ठहराया ॥ ८ । और यरीहो के पास के यर्दन की पूरब ओर उन्हों ने रूबेन् के गोत्र के भाग में बेसेर् को जो जंगल में चौरस भूमि पर बसा है और गाद् के गोत्र के भाग में गिलाद् के रामोत् को और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान् के गोलान् को ठहराया ॥ ९ । सारे इस्राएलियों के लिये और उन के बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी जो नगर इस मनसा से ठहराये गये कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले सो उन में से किसी में भाग जाए और जब लों न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब लों खून का पलटा लेनेहारा उसे मार डालने न पाए सो ये ही हैं ॥

(लेवीयो को बसने के नगरो का दिया जाना)

२१. तब लेवीयों के पितरों के घरानो के मुख्य मुख्य पुरुष एलाजार् याजक और नून् के पुत्र यहोशू और इस्राएली गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर, २ । कनान् देश के शीलो नगर में कहने लगे यहोवा ने मूसा से हमें बसने के लिये नगर और हमारे पशुओं के लिये उन्ही नगरो की चराइयां भी देने की आज्ञा दिलाई थी ॥ ३ । सो इस्राएलियों ने यहोवा के कहे के अनुसार अपने अपने भाग में से लेवीयों को चराइयों समेत ये नगर दिये ॥

४ । कहातियों के कुलों के नाम पर चिट्ठी निकली सो लेवीयों में से हारून याजक के वंश को यहूदा शिमोन् और बिन्यामीन् के गोत्रों के भागो में से तेरह नगर मिले ॥

५ । और बाकी कहातियों को एप्रैम् के गोत्र के कुलों और दान् के गोत्र और मनश्शे के आधे गोत्र के भागो में से चिट्ठी डाल डालकर दस नगर दिये गये ॥

६ । और गेर्शोनियों को इस्साकार् के गोत्र के कुलों और आशेर् और नप्ताली के गोत्रों के भागो में से और मनश्शे के उस आधे गोत्र के भाग में से

भी जो आशान् में था चिट्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिये गये॥

७। और कुलों के अनुसार मरारीयों को रूबेन् गाद् और जबूलून् के गोत्रों के भागों में से बारह नगर दिये गये॥

८। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा से दिलाई थी उस के अनुसार इस्राएलियों ने लेवीयों को चराइयों समेत ये नगर चिट्ठी डाल डालकर दिये॥ ९। उन्हों ने यहूदियों और शिमोनियों के गोत्रों के भागों में से ये नगर जिन के नाम लिखे हैं दिये॥ १०। ये नगर लेवीय कहाती कुलों में से हारून् के वंश के लिये थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उन्हीं के नाम पर निकली थी॥ ११। अर्थात् उन्हों ने उन को यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की चराइयों समेत किर्यतर्बा नगर दे दिया जो अनाक् के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया और हेब्रोन् भी कहावता है, १२। पर उस नगर के खेत और उस के गांव उन्हों ने यपुन्ने के पुत्र कालेब् को उस की निज भूमि करके दे दिये॥ १३। सो उन्हों ने हारून् याजक के वंश को चराइयों समेत खूनी के शरण के नगर हेब्रोन् और अपनी अपनी चराइयों समेत लिब्ना, १४। यत्तीर् एश्तमो, १५। होलोन् दबीर्, १६। ऐन् युत्ता और बेत्शेमेश् दिये सो उन दोनों गोत्रों के भागों में से नव नगर दिये गये॥ १७। और बिन्यामीन् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत ये चार नगर दिये गये अर्थात् गिबोन् गेबा॥ १८। अनातोत् और अल्मोन्॥ १९। सो हारूनवंशी याजकों को तेरह नगर और उन की चराइयां मिलीं॥

२०। फिर बाकी कहाती लेवीयों के कुलों के भाग के नगर चिट्ठी डाल डालकर एप्रैम् के गोत्र के भाग में से दिये गये॥ २१। अर्थात् उन को चराइयों समेत एप्रैम् के पहाड़ी देश में खूनी के शरण लेने का शकेम् नगर दिया गया फिर अपनी अपनी चराइयों समेत गेजेर्, २२। किब्सैम् और बेथोरोन् ये चार नगर दिये गये॥ २३। और दान् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत एल्तके गिब्बतोन्, २४। अय्यालोन् और गत्रिम्मोन् ये चार नगर दिये गये॥ २५। और मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत तानाक् और गत्रिम्मोन् ये दो नगर दिये गये॥ २६। सो बाकी कहातियों के कुलों के सब नगर चराइयों समेत दस ठहरे॥

२७। फिर लेवीयों के कुलों में के गेर्शोनियों को मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर बाशान् का गोलान् और बेश्तरा ये दो नगर दिये गये॥ २८। और इस्साकार् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत किश्योन् दाबरत्, २९। यर्मूत् और एनगन्नीम् ये चार नगर दिये गये॥ ३०। और आशेर् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत मिशाल् अब्दोन्, ३१। हेल्कात् और रहोब् ये चार नगर दिये गये॥ ३२। और नप्ताली के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर गालील् का केदेश् फिर हम्मोत्दोर् और कर्तान् ये तीन नगर दिये गये॥ ३३। गेर्शोनियों के कुलों के अनुसार उन के सब नगर अपनी अपनी चराइयों समेत तेरह ठहरे॥

३४। फिर बाकी लेवीयों अर्थात् मरारीयों के कुलों को जबूलून् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत योक्नाम् कर्ता, ३५। दिम्ना और नहलाल् ये चार नगर दिये गये॥ ३६। और रूबेन् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत बेसेर् यहसा॥ ३७। कदेमोत् और मेपात् ये चार नगर दिये गये॥ ३८। और गाद् के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर गिलाद में का रामोत् फिर महनैम्, ३९। हेश्बोन् और याजेर् जो सब मिलाकर चार नगर हैं दिये गये॥ ४०। लेवीयों के बाकी कुलों अर्थात् मरारीयों के कुलों के अनुसार उन के सब नगर ये ही ठहरे सो उन को बारह नगर चिट्ठी डाल डालकर दिये गये॥

४१। इस्राएलियों की निज भूमि के बीच लेवीयों के सब नगर अपनी अपनी चराइयों समेत

अड़तालीस ठहरे ॥ ४२। ये सब नगर अपनी अपनी चारों ओर की चराइयों के साथ ठहरे इन सब नगरों की यही दशा थी ॥

४३। यों यहोवा ने इस्राएलियों को वह सारा देश दिया जिसे उस ने उन के पितरों को किरिया खाकर देने कहा था और वे उस के अधिकारी होकर उस में बस गये ॥ ४४। और यहोवा ने उन सब बातों के अनुसार जो उस ने उन के पितरों से किरिया खाकर कही थीं उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया और उन के शत्रुओं में से कोई भी उन के साम्हने खड़ा न रहा यहोवा ने उन सभों को उन के वश में कर दिया ॥ ४५। जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के घराने से कही थीं उन में से कोई बात न छूटी सब को सब पूरी हुईं ॥

२२. उस समय यहोशू ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों को बुलवाकर कहा, २। जो जो आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें दिई थीं सो सब तुम ने मानी हैं और जो जो आज्ञा मैं ने तुम्हें दिई हैं उन सभों को भी तुम ने माना है ॥ ३। आज के दिन लों यह जो बहुत समय बीता है इस में तुम ने अपने भाइयों को कभी नहीं त्यागा अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने चौकसी से मानी है ॥ ४। और अब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है सो अब तुम लौटके अपने अपने डेरों को और अपनी निज भूमि में जिसे यहोवा के दास मूसा ने यर्दन पार तुम्हें दिया चले जाओ ॥ ५। इतना ही कि इस में पूरी चौकसी करना कि जो आज्ञा और व्यवस्था यहोवा के दास मूसा ने तुम को दिई उस को मानकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खो उस के सारे मार्गों पर चलो उस की आज्ञाएं मानो उस की भक्ति में लवलीन रहो और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की सेवा करो ॥ ६। तब यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद देकर बिदा किया और वे अपने अपने डेरे को चले ॥

७। मनश्शे के आधे गोत्रियों को मूसा ने बाशान् में भाग दिया था पर दूसरे आधे गोत्र को यहोशू ने उन के भाइयों के बीच यर्दन की पच्छिम ओर भाग दिया। उन को जब यहोशू ने बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जाएं तब इन्हें आशीर्वाद देकर कहा, ८। बहुत से पशु और चांदी सोना पीतल लोहा और बहुत से वस्त्र और बहुत धन संपत्ति लिये हुए अपने अपने डेरे को लौट जाओ और अपने शत्रुओं के यहां की लूट अपने भाइयों के संग बांट लेना ॥

९। तब रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्री इस्राएलियों के पास से अर्थात् कनान् देश के शीलो नगर से अपनी गिलाद् नाम निज भूमि में जो मूसा से दिलाई हुई यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन की निज भूमि हो गई थी जाने की मनसा से लौट गये ॥ १०। और जब रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्री यर्दन की उस तराई में पहुंचे जो कनान् देश में है तब उन्हों ने वहां देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई ॥ ११। तब इस का समाचार इस्राएलियों के सुनने में आया कि रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने कनान् देश के साम्हने यर्दन की तराई में अर्थात् उस के उस पार जो इस्राएलियों का है एक वेदी बनाई है ॥ १२। जब इस्राएलियों ने यह सुना तब इस्राएलियों की सारी मण्डली उन से लड़ने के लिये चढ़ाई करने को शीलो में एकट्ठी हुई ॥

१३। तब इस्राएलियों ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास गिलाद् देश में एलाज़ार् याजक के पुत्र पीनहास् को, १४। और उस के संग दस प्रधानों को अर्थात् इस्राएल् के एक एक गोत्र में से पितरों के घरानों के एक एक प्रधान को भेजा और वे इस्राएल् के हज़ारों में अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे ॥ १५। सो वे गिलाद् देश में रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास जाकर कहने लगे, १६। यहोवा की सारी मण्डली यों कहती है कि यह क्या विश्वासघात है जो तुम ने इस्राएल् के

परमेश्वर यहोवा का किया है। आज जो तुम ने एक वेदी बना लिई है इस में तुम ने उस के पीछे चलना छोड़कर उस के विरुद्ध बलवा किया है॥ १७। देखो पोर् के विषय का अधर्म्म यद्यपि यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला तौभी आज के दिन लों हम उस अधर्म्म से शुद्ध नहीं हुए क्या वह तुम्हारे लेखे ऐसा थोड़ा है, १८। कि आज तुम यहोवा के पीछे चलना छोड़ देते हो। आज तुम यहोवा से फिर जाते और कल वह इस्राएल् की सारी मण्डली से क्रोधित होगा॥ १९। पर यदि तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो तो पार आकर यहोवा की निज भूमि में जहां यहोवा का निवास रहता है हम लोगों के बीच अपनी अपनी निज भूमि कर लो पर हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से फिर जाओ और न हम से॥ २०। देखो जब जेरही आकान् ने अर्पण किई हुई वस्तु के विषय विश्वासघात किया तब क्या यहोवा का इस्राएल् की सारी मण्डली पर क्रोध न भड़का और उस पुरुष के अधर्म्म का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला॥

२१। तब रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने इस्राएल् के हजारों के मुख्य पुरुषों को यह उत्तर दिया कि, २२। यहोवा जो ईश्वर वरन परमेश्वर है सोई ईश्वर परमेश्वर यहोवा इस को जानता है और इस्राएल् भी इसे जान ले कि यदि यहोवा से फिरके वा उस का विश्वासघात करके हम ने यह काम किया हो तो आज हम न बचें॥ २३। यदि हम ने वेदी को इस लिये बनाया हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़ें वा इस लिये कि उस पर होमबलि अन्नबलि वा मेलबलि चढ़ाएं तो यहोवा आप इस का लेखा ले॥ २४। हम ने इसी चिन्ता और मनसा से यह किया है कि क्या जाने आगे को तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से कहने लगे कि तुम को इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा से क्या काम, २५। हे रूबेनियो हे गादियो यहोवा ने जो हमारे तुम्हारे बीच में यर्दन को सिवाना कर दिया है सो यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं ऐसा कहकर तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान में से यहोवा का भय छुड़ा दे॥ २६। सो हम ने कहा आओ एक वेदी बना लें वह होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं, २७। पर इस लिये कि हमारे तुम्हारे और हमारे पीछे हमारे तुम्हारे वंश के बीच साक्षी का काम दे इस लिये कि हम होमबलि मेलबलि और बलिदान चढ़ाकर यहोवा के सन्मुख उस की उपासना करें और आगे के समय तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से न कहने पाए कि यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं॥ २८। सो हम ने कहा जब वे लोग आगे के समय में हम से वा हमारे वंश से यों कहने लगें तब हम उन से कहेंगे कि यहोवा की वेदी के नमूने पर बनी हुई इस वेदी को देखो इसे हमारे पुरखाओं ने होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं बनाया पर इस लिये बनाया था कि हमारे तुम्हारे बीच साक्षी का काम दे॥ २९। यह हम से दूर रहे कि यहोवा से फिरके आज उस के पीछे चलना छोड़ें और अपने परमेश्वर यहोवा की उस वेदी को छोड़ जो उस के निवास के साम्हने है होमबलि अन्नबलि वा मेलबलि के लिये दूसरी वेदी बनाएं॥

३०। रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों की इन बातों को सुनकर पीनहास् याजक और उस के संगी मण्डली के प्रधान जो इस्राएल् के हजारों के मुख्य पुरुष थे सो प्रसन्न हुए॥ ३१। और एलाजार् याजक के पुत्र पीनहास् ने रूबेनियों गादियों और मनश्शेइयों से कहा तुम ने जो यहोवा का ऐसा विश्वासघात नहीं किया इस से हम को आज निश्चय हुआ है कि यहोवा हमारे बीच है सो तुम लोगों ने इस्राएलियों को यहोवा के हाथ से बचाया है॥ ३२। तब एलाजार् याजक का पुत्र पीनहास् प्रधानों समेत रूबेनियों और गादियों के पास से गिलाद् से कनान् देश में इस्राएलियों के पास लौट गया और यह वृत्तान्त को कह सुनाया॥ ३३। तब इस्राएली प्रसन्न हुए और परमेश्वर को धन्य कहा और रूबेनियों और गादियों से लड़ने और उन के रहने का देश उजाड़ने के लिये चढ़ाई करने की चर्चा फिर न किई॥ ३४। और रूबेनियों और

गादियों ने यह कहकर कि यह वेदी हमारे और उनके बीच इस बात की साक्षी ठहरी है कि यहोवा ही परमेश्वर है उस वेदी का नाम एद[१] रक्खा ॥

(यहोशू के पिछले उपदेश)

२३. इस के बहुत दिन पीछे जब यहोवा ने इस्राएलियों को उन की चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम दिया और यहोशू बूढ़ा और बहुत दिनी हुआ था, २। तब यहोशू सब इस्राएलियों को अर्थात् पुरनियों मुख्य पुरुषों न्यायियों और सरदारों को बुलवाकर कहने लगा मैं तो बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया हूं ॥ ३। और तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या क्या किया है क्योंकि जो तुम्हारी ओर लड़ता आया है सो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है ॥ ४। देखो मैं ने इन बची हुई जातियों को चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे गोत्रों का भाग कर दिया है और यर्दन से लेकर सूर्यास्त की ओर के बड़े समुद्र लों रहनेहारी उन सब जातियों को भी ऐसा ही किया है जिन को मैं ने काट डाला है ॥ ५। और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन को तुम्हारे साम्हने से धकियाकर उन के देश से निकाल देगा और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उन के देश के अधिकारी हो जाओगे ॥ ६। सो बहुत हियाव बान्धकर जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उस के करने में चौकसी करना उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं ॥ ७। ये जो जातियां तुम्हारे बीच रह गई हैं इन के बीच न जाना इन के देवताओं के नामों की चर्चा तक न करना न उन की किरिया खिलाना न उन की उपासना न उन को दण्डवत् करना ॥ ८। परन्तु जैसे आज के दिन लों तुम अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लवलीन रहते हो वैसे ही रहा करना ॥ ९। यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जातियां निकाली हैं और तुम्हारे साम्हने आज के दिन लों कोई ठहर नहीं सका ॥ १०। तुम में से एक मनुष्य हजार मनुष्यों को भगाएगा क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है ॥ ११। सो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना ॥ १२। क्योंकि यदि तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं और इन से ब्याह शादी करके इन के साथ समधियाना करो, १३। तो निश्चय जानो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे साम्हने से न निकालेगा और ये तुम्हारे लिये जाल और फंदे और तुम्हारे पांजरों के लिये कोड़े और तुम्हारी आंखों में कांटे ठहरेंगी और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिई है नाश हो जाओगे ॥ १४। सुनो मैं तो अब सब संसारियों[१] की गति पर जानेहारा हूं और तुम सब अपने अपने हृदय और मन में जानते हो कि जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही वे सब की सब तुम पर घट गई हैं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही ॥ १५। सो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी हैं वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर घटाते घटाते तुम को इस अच्छी भूमि पर से जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है सत्यानाश कर डालेगा ॥ १६। जब तुम उस वाचा को जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है उल्लंघन करके पराये देवताओं की उपासना और उन को दण्डवत् करने लगो तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उस ने तुम को दिया है वेग नाश हो जाओगे ॥

२४. फिर यहोशू ने इस्राएल् के सब गोत्रियों को शकेम् में एकट्ठा किया और इस्राएल् के पुरनियों मुख्य पुरुषों न्यायियों

(१) अर्थात् साक्षी ।

(१) मूल में, सारी पृथिवी ।

और सरदारों को बुलवाया और वे परमेश्वर के साम्हने हाज़िर हुए ॥ २ । तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि प्राचीन काल में इब्राहीम और नाहोर् का पिता तेरह् आदि तुम्हारे पुरखा फरात् महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे ॥ ३ । और मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष इब्राहीम को महानद के उस पार से ले आकर कनान् देश के सब स्थानों में फिराया और उस का वंश बढ़ाया और उसे इसहाक् को दिया ॥ ४ । फिर मैं ने इसहाक् को याकूब और एसाव् को दिया और एसाव् को मैं ने सेईर् नाम पहाड़ी देश दिया कि वह उस का अधिकारी हो पर याकूब बेटों पोतों समेत मिस्र को गया ॥ ५ । फिर मैं ने मूसा और हारून् को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने मिस्र के बीच किये उस देश को मारा और पीछे तुम को निकाल लाया ॥ ६ । और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया और तुम समुद्र के पास पहुंचे और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग ले लाल समुद्र लों तुम्हारा पीछा किया ॥ ७ । और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दिई तब उस ने तुम लोगों और मिस्रियों के बीच अंधियारा कर दिया और उन पर समुद्र को बहाकर उन को डुबो दिया और जो कुछ मैं ने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आंखों से देखा फिर तुम बहुत दिन जंगल में रहे ॥ ८ । पीछे मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया जो यर्दन के उस पार बसे थे और वे तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया सो तुम उन के देश के अधिकारी हो गये और मैं ने उन को तुम्हारे साम्हने से सत्यानाश कर डाला ॥ ९ । फिर मोआब् के राजा सिप्पोर् का पुत्र बालाक् उठकर इस्राएल् से लड़ा और तुम्हें शाप देने के लिये बोर् के पुत्र बिलाम् को बुलवा भेजा ॥ १० । पर मैं ने बिलाम् की सुनने से नाह किया वह तुम को आशीष ही आशीष देता गया सो मैं ने तुम को उस के हाथ से बचाया ॥ ११ । तब तुम यर्दन पार होकर यरीहो के पास आये और जब यरीहो के लोग और एमोरी परिज्जी कनानी हित्ती गिर्गाशी हिव्वी और यबूसी तुम से लड़े तब मैं ने उन्हें तुम्हारे वश कर दिया ॥ १२ । और मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा और उन्हों ने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे साम्हने से भगा दिया देखो यह तुम्हारी तलवार वा धनुष का काम नहीं हुआ ॥ १३ । फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में तू ने परिश्रम न किया था और ऐसे नगर भी दिये हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था और तुम उन में बसे हो और जिन दाख और जलपाई की बारियों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने न लगाया था ॥ १४ । सो अब यहोवा का भय मानकर उस की सेवा खराई और सच्चाई से करो और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो ॥ १५ । और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे तो आज चुन लो कि किस की सेवा करोगे चाहे उन देवताओं की जिन की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिन के देश में तुम रहते हो पर मैं तो घराने समेत यहोवा ही की सेवा करूंगा ॥ १६ । तब लोगों ने उत्तर दिया यहोवा को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा करनी यह हम से दूर रहे ॥ १७ । क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हम को और हमारे पुरखाओं को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया और हमारे देखते बड़े बड़े आश्चर्यकर्म्म किये और जिस मार्ग पर और जितनी जातियों के बीच हम चले आते थे उन में हमारी रक्षा किई, १८ । और हमारे साम्हने से इस देश में रहनेहारी एमोरी आदि सब जातियों को निकाल दिया है सो हम भी यहोवा की सेवा करेंगे क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है ॥ १९ । यहोशू ने लोगों से कहा तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है वह जलन रखनेहारा ईश्वर है वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा ॥ २० । यदि तुम यहोवा को त्यागकर बिराने देवताओं की सेवा करने

लगो तो यद्यपि वह तुम्हारा भला करता आया है तौभी पीछे तुम्हारी हानि करेगा और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा ॥ २१। लोगों ने यहोशू से कहा नहीं हम यहोवा ही की सेवा करेंगे ॥ २२। यहोशू ने लोगों से कहा तुम आप ही अपने साक्षी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी अंगीकार कर लिई है। उन्हों ने कहा हां हम साक्षी हैं ॥ २३। यहोशू ने कहा अपने बीच के बिराने देवताओं को दूर करके अपना अपना मन इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ ॥ २४। लोगों ने यहोशू से कहा हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे और उसी की बात मानेंगे ॥ २५। तब यहोशू ने उसी दिन उन लोगों से वाचा बन्धाई और शकेम् में उन के लिये विधि और नियम ठहराया ॥

२६। यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहां उस बांजवृक्ष के तले खड़ा किया जो यहोवा के पवित्रस्थान में था ॥ २७। तब यहोशू ने सब लोगों से कहा सुनो यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहे हैं उन्हें इस ने सुना है सो यह तुम्हारा साक्षी रहेगा न हो कि तुम अपने परमेश्वर को मुकर जाओ ॥ २८। तब यहोशू ने लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये बिदा किया ॥

(यहोशू और एलाजार् का मरना)

२९। इन बातों के पीछे यहोवा का दास नून् का पुत्र यहोशू एक सौ दस बरस का होकर मर गया ॥ ३०। और उस को तिम्नत्सेरह में जो एप्रैम् के पहाड़ी देश में गाश् नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है उसी के भाग में मिट्टी दिई गई ॥ ३१। और यहोशू के जीवन भर और जो पुरनिये यहोशू के मरने के पीछे जीते रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल् के लिये कैसे कैसे काम किये थे उन के भी जीवन भर इस्राएली यहोवा की सेवा करते रहे ॥ ३२। फिर यूसुफ की हड्डियां जिन्हें इस्राएली मिस्र से ले आये थे सो शकेम् की भूमि के उस भाग में गाड़ी गईं जिसे याकूब ने शकेम् के पिता हमोर् से एक सौ कसीतों में मोल लिया था सो वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया ॥ ३३। फिर हारून का पुत्र एलाजार् भी मर गया और उस को एप्रैम् के पहाड़ी देश में की उस पहाड़ी पर मिट्टी दिई गई जो उस के पुत्र पीनहास् के नाम पर गिबत्पीनहास् कहलाती है और उस को दिई गई थी ॥

न्यायियों का वृत्तान्त।

(कनानियों में से किसी किसी का नाश होना और किसी किसी का रह जाना)

१. यहोशू के मरने के पीछे इस्राएलियों ने यहोवा से पूछा कि कनानियों के विरुद्ध लड़ने को हमारी ओर से पहिले कौन चढ़ाई करेगा ॥ २। यहोवा ने उत्तर दिया यहूदा चढ़ाई करेगा सुनो मैं ने इस देश को उस के हाथ में दे दिया है ॥ ३। सो यहूदा ने अपने भाई शिमोन् से कहा मेरे संग मेरे भाग में आ कि हम कनानियों से लड़ें और मैं भी तेरे भाग में जाऊंगा सो शिमोन् उस के संग चला ॥ ४। और यहूदा ने चढ़ाई किई और यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उस के हाथ में कर दिया सो उन्हों ने बेजेक् में उन में से दस हजार पुरुष मार डाले ॥ ५। और बेजेक् में अदोनीबेजेक् को पाकर वे उस से लड़े और कनानियों

और परिज्जियों को मार डाला ॥ ६ । पर अदोनी-बेज़ेक् भागा तब उन्हों ने उस का पीछा करके उसे पकड़ लिया और उस के हाथ पांव के अंगूठे काट डाले ॥ ७ । तब अदोनीबेज़ेक् ने कहा हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेज़ के नीचे टुकड़े बीनते थे जैसा मैं ने किया था वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है । तब वे उसे यरूशलेम् को ले गये और वहां वह मर गया ॥

८ । और यहूदियों ने यरूशलेम् से लड़कर उसे ले लिया और तलवार से उस के निवासियों को मार डाला और नगर को फूंक दिया ॥ ९ । और पीछे यहूदी पहाड़ी देश और दक्खिन देश और नीचे के देश में रहनेवाले कनानियों से लड़ने को गये ॥ १० । और यहूदा ने उन कनानियों पर चढ़ाई किई जो हेब्रोन् में रहते थे । हेब्रोन् का नाम तो अगले समय में किर्यतर्बा था । और उन्हों ने शेशै अहीमन् और तल्मै को मार डाला ॥ ११ । वहां से उस ने जाकर दबीर् के निवासियों पर चढ़ाई किई । दबीर् का नाम तो अगले समय में किर्यत्सेपेर् था ॥ १२ । तब कालेब् ने कहा जो किर्यत्सेपेर् को मारके ले ले उसे मैं अपनी बेटी अक्सा को ब्याह दूंगा ॥ १३ । सो कालेब् के छोटे भाई कनज़ी ओत्नीएल् ने उसे ले लिया और उस ने उसे अपनी बेटी अक्सा को ब्याह दिया ॥ १४ । और जब वह ओत्नीएल् के पास आई तब उस ने उस को पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा फिर वह अपने गदहे पर से उतरी तब कालेब् ने उस से पूछा तू क्या चाहती है ॥ १५ । वह उस से बोली मुझे आशीर्वाद दे तू ने मुझे दक्खिन देश तो दिया है जल के सोते भी दे सो कालेब् ने उस को ऊपर और नीचे के दोनों सोते दिये ॥

१६ । और मूसा के साले एक केनी मनुष्य के सन्तान यहूदी के संग खजूरवाले नगर से यहूदा के जंगल में गये जो अराद् की दक्खिन और है और जाकर इस्राएली लोगों के साथ रहने लगे ॥ १७ । फिर यहूदा ने अपने भाई शिमोन् के संग जाकर सपत् में रहनेहारे कनानियों को मार लिया और उस नगर को सत्यानाश कर डाला सो उस नगर का नाम होर्मा[1] पड़ा ॥ १८ । और यहूदा ने चारों ओर की भूमि समेत अज्जा अश्कलोन् और एक्रोन् को ले लिया ॥ १९ । और यहोवा यहूदा के साथ रहा सो उस ने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया ॥ २० । पर नीचान के निवासियों के पास लोहे के रथ थे इस लिये वह उन्हें न निकाल सका और उन्हों ने मूसा के कहे के अनुसार हेब्रोन् कालेब् को दिया और उस ने वहां से अनाक् के तीनों पुत्रों को निकाल दिया ॥ २१ । और यरूशलेम् में रहनेहारे यबूसियों को बिन्यामीनियों ने न निकाला सो यबूसी आज के दिन लों यरूशलेम् में बिन्यामीनियों के संग रहते हैं ॥

२२ । फिर यूसुफ के घराने ने बेतेल् पर चढ़ाई किई और यहोवा उन के संग था ॥ २३ । और यूसुफ के घराने ने बेतेल् का भेद लेने को लोग भेजे ॥ २४ । और उस नगर का नाम अगले समय में लूज़् था । और पहरुओं ने एक मनुष्य को उस नगर से निकलते हुए देखा और उस से कहा नगर में जाने का मार्ग हमें दिखा और हम तुझ पर दया करेंगे ॥ २५ । सो उस ने उन्हें नगर में जाने का मार्ग दिखाया तब उन्हों ने नगर को तो तलवार से मारा पर उस मनुष्य को सारे घराने समेत छोड़ दिया ॥ २६ । उस मनुष्य ने हित्तियों के देश में जाकर एक नगर बसाया और उस का नाम लूज़् रक्खा और आज के दिन लों उस का नाम वही है ॥

२७ । मनश्शे ने अपने अपने गांवों समेत बेतशान् तानाक् दोर् यिब्लाम् और मगिद्दो के निवासियों को न निकाला सो कनानी बरियाई करके उस देश में बसे रहे ॥ २८ । पर जब इस्राएली सामर्थी हुए तब उन्हों ने कनानियों से बेगारी कराई पर उन्हें पूरी रीति से न निकाला ॥

२९ । और एप्रैम् ने गेज़ेर् में रहनेवाले कनानियों को न निकाला सो कनानी गेज़ेर् में उन के बीच बसे रहे ॥

३० । ज़बूलून् ने कित्रोन् और नहलोल् के निवा-

(१) अर्थात्, सत्यानाश करना ।

सियों को न निकाला सो कनानी उन के बीच बसे रहे और बेगारी में रहे ॥

३१। आशेर् ने अक्को सीदोन् अह्लाब् अक्जीब् हेल्बा अपीक् और रहोब् के निवासियों को न निकाला ॥ ३२। सो आशेरी लोग देश के निवासी कनानियों के बीच में बस गये क्योंकि उन्हों ने उन को न निकाला था ॥

३३। नप्ताली ने बेत्शेमेश् और बेतनात् के निवासियों को न निकाला पर देश के निवासी कनानियों के बीच बस गया तौभी बेत्शेमेश् और बेतनात् के लोग उन का बेगारी करते थे ॥

३४। और एमोरियों ने दानियों को पहाड़ी देश मे भगा दिया और नीचान में आने न दिया ॥ ३५। सो एमोरी बरियाई करके हेरेस् नाम पहाड़ अय्यालोन् और शाल्बीम् में बसे रहे तौभी यूसुफ का घराना यहां लों प्रबल हो गया कि वे बेगारी करने लगे ॥ ३६। और एमोरियों का देश अक्रब्बीम् नाम चढ़ाई से और ढांग से ऊपर की ओर था ॥

(इस्राएलियों का बिगड़ना और इस का दण्ड भोगना और फिर पछताकर छुटकारा पाना)

२. और यहोवा का दूत गिल्गाल् से बोकीम् को जाकर कहने लगा कि मैं ने तुम को मिस्र से ले आकर इस देश मे पहुंचाया है जिस के विषय मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से किरिया खाई थी और मै ने कहा था कि जो वाचा मैं ने तुम से बांधी है सो मैं कभी न तोड़ूंगा ॥ २। सो तुम इस देश के निवासियों से वाचा न बांधना तुम उन की वेदियों को ढा देना पर तुम ने मेरी बात नहीं मानी तुम ने ऐसा क्यों किया है ॥ ३। सो मैं कहता हूं कि मैं उन लोगों को तुम्हारे साम्हने से न निकालूंगा वे तुम्हारे पांजर मे कांटे और उन के देवता तुम्हारे लिये फंदे ठहरेंगे ॥ ४। जब यहोवा के दूत ने सारे इस्राएलियों से ये बातें कहीं तब वे लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे ॥ ५। और उन्हों ने उस स्थान का नाम बोकीम्[1] रक्खा और वहां उन्हों ने यहोवा के लिये बलि चढ़ाया ॥

६। जब यहोशू ने लोगों को विदा किया तब इस्राएली देश को अपने अधिकार में कर लेने के लिये अपने अपने निज भाग पर गये ॥ ७। और यहोशू के जीवन भर और उन पुरनियों के जीवन भर जो यहोशू के मरने के पीछे जीते रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्राएल् के लिये कैसे कैसे बड़े काम किये इस्राएली लोग यहोवा की सेवा करते रहे ॥ ८। निदान यहोवा का दास नून् का पुत्र यहोशू एक सौ दस बरस का होकर मर गया ॥ ९। और उस को तिम्नथेरेस् मे जो एप्रैम् के पहाड़ी देश में गाश् नाम पहाड की उत्तर अलंग पर है उसी के भाग में मिट्टी दिई गई ॥ १०। और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गये तब उन के पीछे जो दूसरी पीढ़ी हुई उस के लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उस ने इस्राएल् के लिये किया था ॥

११। सो इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है और बाल् नाम देवताओं की उपासना करने लगे ॥ १२। वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था त्यागकर पराये देवताओं अर्थात् आसपास के लोगों के देवताओं के पीछे हो लिये और उन्हें दण्डवत् किया और यहोवा को रिस दिलाई ॥ १३। वे यहोवा को त्याग करके बाल् देवता और अश्तोरेत् देवियों की उपासना करने लगे ॥ १४। सो यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा और उस ने उन को लुटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे और उस ने उन को चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया और वे फिर अपने शत्रुओं के साम्हने ठहर न सके ॥ १५। जहां कहीं वे बाहर जाते वहां यहोवा का हाथ उन की बुराई में लगा रहता था जैसे कि यहोवा ने उन से कहा था बरन यहोवा ने किरिया भी खाई थी सो वे बड़े संकट मे पड़ते थे ॥ १६। तौभी यहोवा उन के लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटनेहारों के हाथ से छुड़ाते थे ॥ १७। पर वे अपने न्यायियों की न मानते बरन व्यभिचारिन की नाईं पराये देवताओं

(१) अर्थात्. रोनेहारे ।

के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत् करते थे उन के पितर जो यहोवा की आज्ञाएं मानते थे उन की उस लीक को उन्हों ने शीघ्र ही छोड़ दिया और उन के अनुसार न किया ॥ १८। और जब जब यहोवा उन के लिये न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर उस के जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था क्योंकि यहोवा उन का कराहना जो अंधेर और उपद्रव करनेहारों के कारण होता था सुनकर पछताता था ॥ १९। पर जब न्यायी मर जाता तब वे फिर पराये देवताओं के पीछे चलकर और उन की उपासना और उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते और अपने बुरे कामों और हठीली चाल को न छोड़ते थे ॥ २०। सो यहोवा का कोप इस्राएल् पर भड़क उठा और उस ने कहा इस जाति ने उस वाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बान्धी थी तोड़ दिया और मेरी नहीं मानी, २१। इस कारण जिन जातियों को यहोशू मरते समय छोड़ गया है उन में से मैं अब किसी को उन के साम्हने से न निकालूंगा, २२। जिस से उन के द्वारा मैं इस्राएलियों की परीक्षा करूं कि जैसे उन के पितर मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं ॥ २३। सो यहोवा ने उन जातियों को एकाएक न निकालकर रहने दिया और उस ने उन्हें यहोशू के वश में न कर दिया था ॥

३. इस्राएलियों में से जितने कनान् में की लड़ाइयों में भागी न हुए[१] थे उन्हें परखने के लिये यहोवा ने इन जातियों को देश में इस लिये रहने दिया, २। कि पीढ़ी पीढ़ी के इस्राएलियों में से जो लड़ाई को पहिले न जानते थे वे सीखें और जान लें, ३। अर्थात् पांचों सरदारों समेत पलिश्तियों और सब कनानियों और सीदोनियों और बाल्हेर्मोन् नाम पहाड़ से ले हमात् की घाटी लों लबानोन् पर्वत में रहनेहारे हिव्वियों को ॥ ४। ये इस लिये रहने पाये कि इन के द्वारा इस्राएलियों की इस बात में परीक्षा हो कि जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा से उन के पितरों को दिलाई थीं उन्हें वे मानेंगे वा नहीं ॥ ५। सो इस्राएली कनानियों हित्तियों एमोरियों परिज्जियों हिव्वियों और यबूसियों के बीच में बस गये ॥ ६। तब वे उन की बेटियां ब्याह लेने और अपनी बेटियां उन के बेटों को ब्याह देने और उन के देवताओं की उपासना करने लगे ॥

(ओत्नीएल् का चरित्र)

७। सो इस्राएलियों ने वह किया जो यहोवा के लेखे में बुरा है और अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल् नाम देवताओं और अशेरा नाम देवियों की उपासना करने लगे ॥ ८। तब यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का और उस ने उन को अरम्नहरैम् के राजा कूशन्रिशातैम् के अधीन कर दिया सो इस्राएली आठ बरस लों कूशन्रिशातैम् के अधीन रहे ॥ ९। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दिई और उस ने इस्राएलियों के लिये कालेब् के छोटे भाई ओत्नीएल् नाम एक कनजी छुड़ानेहारे को ठहराया और उस ने उन को छुड़ाया ॥ १०। उस पर यहोवा का आत्मा आया और वह इस्राएलियों का न्यायी हो गया और लड़ने को निकला और यहोवा ने अराम् के राजा कूशन्रिशातैम् को उस के हाथ कर दिया और वह कूशन्रिशातैम् पर प्रबल हुआ ॥ ११। तब चालीस बरस लों देश को शांति रही और कनजी ओत्नीएल् मर गया ॥

(एहूद का चरित्र।)

१२। तब इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है और यहोवा ने मोआब् के राजा एग्लोन् को इस्राएल् पर प्रबल किया क्योंकि उन्हों ने वह किया था जो यहोवा के लेखे में बुरा है ॥ १३। सो उस ने अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने पास एकट्ठा किया और जाकर इस्राएल् को मार लिया और खजूरवाले नगर को अपने वश कर लिया ॥ १४। सो इस्राएली अठारह बरस लों मोआब् के राजा एग्लोन् के अधीन रहे ॥ १५। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दिई

(१) मूल में हुए।

और उस ने गेरा के पुत्र एहूद् नाम एक बिन्यामीनी को उन का छुड़ानेहारा करके ठहराया वह बैंहत्था था । इस्राएलियों ने उसी के हाथ से मोआब् के राजा एग्लोन् के पास कुछ भेंट भेजी ॥ १६ । एहूद् ने हाथ भर लंबी एक दोधारी तलवार बनवाई थी और उस को अपने वस्त्र के नीचे दहिनी जांघ पर लटका लिया ॥ १७ । तब वह उस भेंट को मोआब् के राजा एग्लोन् के पास जो बड़ा मोटा पुरुष था ले गया ॥ १८ । जब वह भेंट को दे चुका तब भेंट के लानेहारों को बिदा किया ॥ १९ । पर वह आप गिल्गाल् के निकट की खुदी हुई मूरतों के पास से लौट गया और एग्लोन् के पास कहला भेजा कि हे राजा मुझे तुझ से एक भेद की बात कहनी है राजा ने कहा तनिक बाहर जाओ[1] तब जितने लोग उस के पास हाजिर थे सब बाहर चले गये ॥ २० । तब एहूद् उस के पास गया वह तो अपनी एक हवादार अटारी में अकेला बैठा था । एहूद् ने कहा परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात कहनी है सो वह गद्दी पर से उठ खड़ा हुआ ॥ २१ । तब एहूद् ने अपना बायां हाथ बढ़ा अपनी दहिनी जांघ पर से तलवार खींचकर उस की तोंद मे घुसेड़ दिई, २२ । और फल के पीछे मूठ भी पैठ गई और फल चर्बी मे घुसा रहा क्योंकि उस ने तलवार को उस की तोंद में से न निकाला वरन वह उस की पिछाड़ी निकल गई ॥ २३ । तब एहूद् छज्जे मे निकलकर बाहर गया और अटारी के किवाड़ खींच उस को बंद करके ताला लगा दिया ॥ २४ । उस के निकल जाते ही राजा[2] के दास आये तो क्या देखते हैं कि अटारी के किवाड़ों में ताला लगा है सो वे बोले निश्चय वह हवादार कोठरी में लघुशंका करता होगा ॥ २५ । जब वे परखते परखते रह गये तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता कुंजी लेकर उन्हें खोला तो क्या देखा कि हमारा स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है ॥ २६ । जब तक वे विलम्ब करते रहे तब तक वह भाग गया और खुदी हुई मूरतों की परली ओर होकर सेरा में जा बचा ॥ २७ । वहां पहुंचकर उस ने एप्रैम् के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूंका तब इस्राएली उस के संग होकर पहाड़ी देश से उस के पीछे पीछे नीचे गये ॥ २८ । और उस ने उन से कहा मेरे पीछे पीछे चले आओ क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हारे हाथ मे कर दिया है सो उन्हों ने उस के पीछे पीछे जाके यर्दन के घाट को जो मोआब् देश की ओर है ले लिया और किसी को उतरने न दिया ॥ २९ । उस समय उन्हों ने कोई दस हजार मोआबियों को मार डाला जो सब के सब हृष्टपुष्ट और शूरवीर थे उन में से एक भी न बचा ॥ ३० । सो उस समय मोआब् इस्राएल् के हाथ तले दब गया तब अस्सी बरस लों देश को शान्ति रही ॥

३१ । उस के पीछे अनात् का पुत्र शम्गर् हुआ उस ने छः सौ पलिश्ती पुरुषों को बैल के पैने से मार डाला सो वह भी इस्राएल् का छुड़ानेहारा हुआ ॥

(दबोरा और बाराक् का चरित्र)

४. जब एहूद् मर गया तब इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है ॥ २ । सो यहोवा ने उन को हासोर् में विराजनेहारे कनान् के राजा याबीन् के अधीन कर दिया जिस का सेनापति सीसरा था जो अन्यजातियों की हरोशेत् का निवासी था ॥ ३ । तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दिई क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नौ सौ रथ थे और वह इस्राएलियों पर बीस बरस लों बड़ा अन्धेर करता रहा ॥

४ । उस समय लप्पीदोत् की स्त्री दबोरा जो नबिया थी इस्राएलियों का न्याय करती थी ॥ ५ । वह एप्रैम् के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल् के बीच दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी और इस्राएली उस के पास न्याय के लिये आया करते थे ॥ ६ । उस ने अबीनोअम् के पुत्र बाराक् को केदेश् नप्ताली में से बुलवाकर कहा क्या इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दिई कि तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़[1] और नप्तालियों और जबूलू-

(१) मूल में चुप रहो । (२) मूल में उस ।

(१) मूल में, खींच ।

नियों में के दस हजार पुरुषों को संग ले जा॥ ७। तब मैं याबीन् के सेनापति सीसरा को रथों और भीड़भाड़ समेत कीशोन् नदी लों तेरी ओर खींच ले आऊंगा और उस को तेरे हाथ में कर दूंगा॥ ८। बाराक् ने उस से कहा जो तू मेरे संग चले तो मैं जाऊंगा नहीं तो न जाऊंगा॥ ९। उस ने कहा निःसन्देह मैं तेरे संग चलूंगी तौभी इस यात्रा से तेरी तो कुछ बड़ाई न होगी क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा। तब दबोरा उठकर बाराक् के संग केदेश् को गई॥ १०। तब बाराक् ने जबूलून् और नप्ताली के लोगों को केदेश् में बुलवा लिया और उस के पीछे दस हजार पुरुष चढ़ गये और दबोरा उस के संग चढ़ गई॥ ११। हेबेर् नाम केनी ने उन केनियों में से जो मूसा के साले होबाब् के वंश थे अपने को अलग करके केदेश् के पास के सानन्नीम् में के बांजवृक्ष लों जाकर अपना डेरा वहीं डाला था॥ १२। जब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम् का पुत्र बाराक् ताबोर् पहाड़ पर चढ़ गया है, १३। तब सीसरा ने अपने सब रथ जो लोहे के नौ सौ रथ थे और अपने संग की सारी सेना को अन्यजातियों के हरोशेत् से कीशोन् नदी पर बुलवाया॥ १४। तब दबोरा ने बाराक् से कहा उठ क्योंकि आज वह दिन है जिस में यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकला है। सो बाराक् और उस के पीछे पीछे दस हजार पुरुष ताबोर् पहाड़ से उतर पड़े॥ १५। तब यहोवा ने सारे रथों वरन सारी सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक् के साम्हने घबरा दिया और सीसरा रथ पर से उतरके पांव पांव भाग चला॥ १६। और बाराक् ने अन्यजातियों के हरोशेत् लों रथों और सेना का पीछा किया और तलवार से सीसरा की सारी सेना नाश किई गई एक भी बचा न रहा॥

१७। पर सीसरा पांव पांव हेबेर् केनी की स्त्री याएल् के डेरे को भाग गया क्योंकि हासोर् के राजा याबीन् और हेबेर् केनी के बीच मेल था॥ १८। तब याएल् सीसरा की भेंट के लिये निकलकर उस से कहने लगी हे मेरे प्रभु आ मेरे पास आ और न डर सो वह उस के पास डेरे में गया और उस ने उस के ऊपर कंबल डाल दिया॥ १९। तब सीसरा ने उस से कहा मुझे प्यास लगी है सो मुझे थोड़ा पानी पिला सो उस ने दूध की कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया और उस को ओढ़ा दिया॥ २०। तब उस ने उस से कहा डेरे के द्वार पर खड़ी रह और यदि कोई आकर तुझ से पूछे कि यहां कोई पुरुष है तब कहना कोई नहीं॥ २१। पीछे हेबेर् की स्त्री याएल् ने डेरे की एक खूंटी और अपने हाथ में एक हथौड़ा ले दबे पांव उस के पास जाकर खूंटी को उस की कनपटी में ऐसा गाड़ दिया कि खूंटी भूमि में धस गई वह तो थका था और उस को भारी नींद लग गई थी सो वह मर गया॥ २२। जब बाराक् सीसरा का पीछा करता था तब याएल् ने उस की भेंट के लिये निकलकर कहा इधर आ जिस का तू खोजी है उस को मैं तुझे दिखाऊंगी। सो वह उस के साथ गया तो क्या देखा कि सीसरा मरा पड़ा है और वह खूंटी उस की कनपटी में गड़ी है॥ २३। सो परमेश्वर ने उस दिन कनान् के राजा याबीन् को इस्राएलियों से दबवा दिया॥ २४। और इस्राएली कनान् के राजा याबीन् पर प्रबल होते गये यहां लों कि उन्हों ने कनान् के राजा याबीन् को नाश कर डाला॥

(दबोरा का गीत.)

५. उसी दिन दबोरा और अबीनोअम् के पुत्र बाराक् ने यह गीत गाया कि

२। इस्राएल् में के अगुवों ने अगुवाई जो किई
और प्रजा अपनी ही इच्छा से जो भरती हुई थी
इस से यहोवा को धन्य कहो॥

३। हे राजाओ सुनो हे अधिपतियो कान लगाओ
मैं आप यहोवा के लिये गीत गाऊंगी
इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूंगी॥

४। हे यहोवा जब तू सेईर् से निकल चला
जब तू ने एदोम् के देश से पयान किया
तब पृथिवी डोल उठी और आकाश टपकने
लगा

बादल से भी जल टपकने लगा ॥
५ । यहोवा के प्रताप से पहाड़
इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के प्रताप से वह
सीनै पिघलकर बहने लगा ॥
६ । अनात् के पुत्र शम्गर् के दिनों में
और याएल् के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी थीं
और बटोही पगडंडियों से चलते थे ॥
७ । जब लों मैं दबोरा न उठी
जब लों मैं इस्राएल् में माता होकर न उठी
तब लों गांव सूने पड़े थे[1] ॥
८ । नये नये देवता माने गये
उस समय फाटकों में लड़ाई होती थी
क्या चालीस हजार इस्राएलियों में भी
ढाल वा बर्छी कहीं देखने में आती थी ॥
९ । मेरा मन इस्राएल् के हाकिमों की ओर लगा है
जो प्रजा के बीच अपनी ही इच्छा से भरती हुए
यहोवा को धन्य कहो ॥
१० । हे उजली गदहियों पर चढ़नेहारो
हे फर्शों पर विराजनेहारो
हे मार्ग पर पैदल चलनेहारो ध्यान रक्खो ॥
११ । पनघटों के आस पास धनुर्धारियों की
बात के कारण
वहां यहोवा के धर्म्ममय कामों का
इस्राएल् के दिहातियों के लिये उस के धर्म्ममय
कामों का बखान होता है
उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकों के
पास गये ॥
१२ । जाग जाग हे दबोरा
जाग जाग गीत सुना
हे बाराक् उठ हे अबीनोअम् के पुत्र अपने
बंधुओं को बंधुआई में ले चल ॥
१३ । उस समय थोड़े से[2] रईस प्रजा समेत
उतर पड़े
यहोवा शूरवीरों के विरुद्ध[3] मेरे हित उतर
आया ॥

(१) या इस्राएलियों में कोई प्रधान न रहा ।
(२) मूल में प्रजा के बचे हुए । (३) या संग ।

१४ । एप्रैम् में से वे आये जिन की जड़ अमा-
लेक् में है
हे बिन्यामीन् तेरे पीछे तेरे दलों में
माकीर् में से हाकिम और जबूलून् मे से सेना-
पति का दण्ड लिये हुए उतरे ॥
१५ । और इस्साकार् के हाकिम दबोरा के संग
हुए
जैसा इस्साकार् वैसा ही बाराक् भी था
उस के पीछे लगे हुए वे तराई में झपटे गये
रूबेन् की नदियों के पास
बड़े बड़े काम मन में ठाने गये ॥
१६ । तू चरवाहों[1] का सीटी बजाना सुनने को
भेड़शालों के बीच क्यों बैठा रहा
रूबेन् की नदियों के पास
बड़े बड़े काम सोचे गये ॥
१७ । गिलाद् यर्दन पार रह गया
और दान् क्यों जहाजों में रहा
आशेर् समुद्र के तीर पर बैठा रहा
और उस के कोलों के पास रह गया ॥
१८ । जबूलून् अपने प्राण पर खेलनेहारे लोग
ठहरे
नप्ताली भी देश के ऊंचे ऊंचे स्थानों पर वैसा ही
ठहरा
१९ । राजा आकर लड़े
उस समय कनान् के राजा
मगिद्दो के सोतों के पास तानाक् में लड़े
पर रुपैये का कुछ लाभ न पाया ॥
२० । आकाश की ओर से भी लड़ाई हुई
तारों ने अपने अपने मंडल से सीसरा से
लड़ाई किई ॥
२१ । कीशोन् नदी ने उन को बहा दिया
उस प्राचीन नदी कीशोन् नदी ने यह किया
हे मन हियाव बांधे आगे बढ़ ॥
२२ । उस समय घोड़े अपने खुरों से टापने लगे
उन के बलवन्तों के कूदने से यह हुआ ॥

(१) मूल में भेड़ बकरियों के झुण्डों ।

२३ । यहोवा का दूत कहता है कि मेरोज़ को
साप दो
उस के निवासियों को भारी साप दो
क्योंकि वे यहोवा की सहायता करने को
शूरवीरों के विरुद्ध यहोवा की सहायता करने
को न आये
२४ । सब स्त्रियों में से केनी हेबेर् की स्त्री
याएल् धन्य ठहरेगी
डेरों में रहनेहारी सब स्त्रियों में से वह धन्य
ठहरेगी ॥
२५ । सीसरा ने पानी मांगा उस ने दूध दिया
रईसों के योग्य बर्तन में वह मक्खन ले आई ॥
२६ । उस ने अपना हाथ खूंटी की ओर
अपना दहिना हाथ बढ़ई की हथौड़े की ओर
बढ़ाया
और हथौड़े से सीसरा को मारा उस के सिर
को फोड़ डाला
और उस की कनपटी को वारपार छेद दिया ॥
२७ । उस स्त्री के पांवों पर वह झुका वह
गिरा वह पड़ा रहा
उस स्त्री के पांवों पर वह झुका वह गिरा
जहां झुका वहीं मरा पड़ा रहा ॥
२८ । खिड़की में से एक स्त्री झांककर चिल्लाई
सीसरा की माता ने झिलमिली की ओट से
पुकारा कि
उस के रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी
उस के रथों के पहियों को अबेर क्यों हुई है ॥
२९ । उस की बुद्धिमान प्रतिष्ठित स्त्रियों ने उसे
उत्तर दिया
बरन उस ने अपने आप को यों उत्तर दिया कि
३० । क्या उन्हों ने लूट पाकर बांट नहीं लिई
क्या एक एक पुरुष को एक एक बरन दो दो
कुंवारियां
और सीसरा को रंगे हुए वस्त्र की लूट
बरन बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र की लूट ।
और लूटे हुओं के गले में दोनों ओर बूटे काढ़े
हुए रंगीले वस्त्र नहीं मिले ॥
३१ । हे यहोवा तेरे सारे शत्रु ऐसेही नाश हो जाएं
पर उस के प्रेमी लोग प्रताप के साथ उदय होते
हुए सूर्य्य के समान तेजोमय हों ।
फिर देश को चालीस बरस लों शान्ति रही ॥

(गिदोन् का चरित्र.)

६. तब इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है सो यहोवा ने उन्हें मिद्यानियों के वश में सात बरस कर रक्खा ॥ २ । और मिद्यानी इस्राएलियों पर प्रबल हो गये । मिद्यानियों के डर के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों में के गहिरे खड्डों और गुफाओं और दुर्गों को अपने निवास बना लिया ॥ ३ । और जब जब इस्राएली बीज बोते तब तब मिद्यानी और अमालेकी और पूरबी लोग उन के विरुद्ध चढ़ाई करके, ४ । अज्ज़ा लों छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नाश कर डालते थे और इस्राएलियों के लिये न तो कुछ भोजनवस्तु छोड़ देते थे और न भेड़बकरी न गाय बैल न गदहा ॥ ५ । क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिये हुए चढ़ाई करते और टिड्डियों के समान बहुत आते थे और उन के ऊंट भी अनगिनित थे और वे देश के उजाड़ने को उस में आया करते थे ॥ ६ । और मिद्यानियों के कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़े तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दिई ॥

७ । जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण यहोवा की दोहाई दिई, ८ । तब यहोवा ने इस्राएलियों के पास एक नबी को भेजा जिस ने उन से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को मिस्र में से ले आया और दासत्व के घर से निकाल ले आया ॥ ९ । और मैं ने तुम को मिस्रियों के हाथ से बरन जितने तुम पर अंधेर करते थे उन सभों के हाथ से छुड़ाया और उन को तुम्हारे साम्हने से बरबस निकालकर उन का देश तुम्हें दे दिया ॥ १० । और मैं ने तुम से कहा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं एमोरी लोग जिन के देश में तुम रहते हो उन के देवताओं का भय न मानना पर तुम ने मेरी नहीं मानी ॥

११ फिर यहोवा का दूत आकर उस बांज वृक्ष के तले बैठ गया जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश् का था और उस का पुत्र गिदोन् गेहूं इस लिये एक दाखरस के कुण्ड में झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रक्खे ॥ १२। उस को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा हे महाशूर यहोवा तेरे संग है ॥ १३। गिदोन् ने उस से कहा हे मेरे प्रभु बिन्ती सुन यदि यहोवा हमारे संग होता तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़ती और जितने आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे कि क्या यहोवा हम को मिस्र से छुड़ा नहीं लाया वे कहां रहे अब तो यहोवा ने हम को त्यागकर मिद्यानियों के हाथ कर दिया है ॥ १४। तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा अपनी इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा ॥ १५। उस ने कहा हे मेरे प्रभु बिनती सुन मैं इस्राएल् को क्योंकर छुड़ाऊं देख मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है फिर मैं अपने पिता के घराने में सब से छोटा हूं ॥ १६। यहोवा ने उस से कहा निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा सो तू मिद्यानियों को ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को ॥ १७। गिदोन् ने उस से कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो मुझे इस का कोई चिन्ह दिखा कि तू ही मुझ से बात करता है ॥ १८। जब लों मैं तेरे पास फिर आकर अपनी भेंट निकालकर तेरे साम्हने न रक्खूं तब लों यहां से न पधारना उस ने कहा मैं तेरे लौटने लों ठहरूंगा ॥ १९। तब गिदोन् ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक एपा मैदे की अखमीरी रोटियां तैयार किईं तब मांस को टोकरी में और जूस को तसले में रख बांजवृक्ष के तले उस के पास ले जाकर दिया ॥ २०। परमेश्वर के दूत ने उस से कहा मांस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चटान पर रख और जूस को उण्डेल दे। सो उस ने ऐसा ही किया ॥ २१। तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियों को छूआ और चटान से आग निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियां भस्म हो गईं तब यहोवा का दूत उस की दृष्टि से अन्तर्द्धान हो गया ॥ २२। जब गिदोन् ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था तब गिदोन् कहने लगा हाय प्रभु यहोवा मैं ने तो यहोवा के दूत को साक्षात् देखा है ॥ २३। यहोवा ने उस से कहा तुझे शांति मिले मत डर तू न मरेगा ॥ २४। सो गिदोन् ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर उस का नाम यहोवाशालोम[1] रक्खा वह आज के दिन लों अबीएजेरियों के ओप्रा में बनी है ॥

२५। फिर उसी रात को यहोवा ने गिदोन् से कहा अपने पिता का जवान बैल अर्थात् दूसरा सात बरस का बैल ले और बाल् की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे और जो अशेरा देवी उस के पास है उसे काट डाल, २६। और उस दृढ़ स्थान की चोटी पर ठहराई हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना तब उस दूसरे बैल को ले और उस अशेरा की लकड़ी जो तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढ़ा ॥ २७। सो गिदोन् ने अपने दस दास संग लेकर यहोवा के वचन के अनुसार किया पर अपने पिता के घराने और नगर के लोगों के डर के मारे वह काम दिन को न कर सका सो रात मे किया ॥ २८। बिहान को नगर के लोग सवेरे उठकर क्या देखते हैं कि बाल् की वेदी गिरी पड़ी और उस के पास की अशेरा कटी पड़ी और दूसरा बैल बनाई हुई वेदी पर चढ़ाया हुआ है ॥ २९। तब वे आपस में कहने लगे यह काम किस ने किया और पूछपाछ और ढूंढ़ढांढ़ करके वे कहने लगे कि यह योआश् के पुत्र गिदोन् का काम है ॥ ३०। सो नगर के मनुष्यों ने योआश् से कहा अपने पुत्र को बाहर ले आ कि मार डाला जाए क्योंकि उस ने बाल् की वेदी को गिरा दिया और उस के पास की अशेरा को काट डाला है ॥ ३१। योआश ने उन सभों से जो उस के साम्हने खड़े हुए थे कहा क्या तुम बाल् के लिये वाद विवाद

(१) अर्थात् यहोवा शान्ति [देनेहारा है.]

करोगे क्या तुम उसे बचाओगे जो कोई उस के लिये वाद विवाद करे सो मार डाला जाएगा बिहान लों ठहरे रहो तब लों यदि वह परमेश्वर हो तो जिस ने उस की वेदी गिराई उस से वह आप ही अपना वाद विवाद करे ॥ ३२ । सो उस दिन गिदोन् का नाम यह कहकर यरुब्बाल्[1] रक्खा गया कि इस ने जो बाल् की वेदी गिराई है सो इस पर बाल् ही वाद विवाद करे ॥

३३ । इस के पीछे सब मिद्यानी और अमालेकी और और पूरबी एकट्ठे हुए और पार आकर यिज्रेल् की तराई में डेरे डाले ॥ ३४ । तब यहोवा का आत्मा गिदोन् में समाया[2] और उस ने नरसिंगा फूंका तब अबीएजेरी उस के पीछे एकट्ठे हुए ॥ ३५ । फिर उस ने सारे मनश्शे के यहां दूत भेजे और वे भी उस के पीछे एकट्ठे हुए और इस ने आशेर् जबूलून् और नप्ताली के यहां भी दूत भेजे तब वे भी उस से मिलने को चले आये ॥ ३६ । तब गिदोन् ने परमेश्वर से कहा यदि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल् को मेरे द्वारा छुड़ाएगा, ३७ । तो सुन मैं एक भेड़ी की ऊन खलिहान में रक्खूंगा और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े और उसे छोड़ सारी भूमि सूखी रहे तो मैं जान लूंगा कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल् को मेरे द्वारा छुड़ाएगा ॥ ३८ । और ऐसा ही हुआ सो जब उस ने बिहान को सवेरे उठ उस ऊन को दबाकर उस में से ओस निचोड़ी तब एक कटोरा भर गया ॥ ३९ । फिर गिदोन् ने परमेश्वर से कहा यदि मैं एक बार फिर कहूं तो तेरा कोप मुझ पर न भड़के मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूं अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रहे और सारी भूमि पर ओस पड़े ॥ ४० । उस रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रही और सारी भूमि पर ओस पड़ी ॥

(१) अर्थात्, बाल वाद विवाद करे ।

(२) मूल में आत्मा ने गिदोन् को पहिन लिया ।

७. तब गिदोन् जो यरुब्बाल् भी कहावता है और सब लोग जो उस के संग थे सवेरे उठे और हरोद् नाम सोते के पास अपने डेरे खड़े किये और मिद्यानियों की छावनी उन की उत्तर ओर मोरे नाम पहाड़ी के पास तराई में पड़ी थी ॥

२ । तब यहोवा ने गिदोन् से कहा जो लोग तेरे संग हैं सो इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उन के हाथ नहीं कर सकता नहीं तो इस्राएल् यह कहकर मेरे विरुद्ध बड़ाई मारने लगेंगे कि मैं अपने ही भुजबल के द्वारा छूटा हूं ॥ ३ । सो तू जाकर लोगों को यह प्रचार करके सुना कि जो कोई डर के मारे थरथराता हो वह गिलाद् पहाड़ से लौटकर चला जाए सो बाईस हजार लोग लौट गये और दस हजार रह गये ॥

४ । फिर यहोवा ने गिदोन् से कहा अब भी लोग अधिक हैं उन्हें सोते के पास नीचे ले चल वहां मैं उन्हें तेरे लिये परखूंगा और जिस जिस के विषय मैं तुझ से कहूं कि यह तेरे संग चले वह तेरे संग चले और जिस जिस के विषय मैं कहूं कि यह तेरे संग न चले वह न चले ॥ ५ । सो वह उन को सोते के पास नीचे ले गया तब यहोवा ने गिदोन् से कहा जितने कुत्ते की नाईं जीभ से पानी चपड़ चपड़ करके पीएं उन को अलग रख और वैसा ही उन्हें भी जो घुटने टेककर पीएं ॥ ६ । जिन्हों ने मुंह में हाथ लगा चपड़ चपड़ करके पिया उन की तो गिनती तीन सौ ठहरी और बाकी सब लोगों ने घुटने टेककर पानी पिया ॥ ७ । तब यहोवा ने गिदोन् से कहा इन तीन सौ चपड़ चपड़ करके पीनेहारों के द्वारा मैं तुम को छुड़ाऊंगा और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर दूंगा और सब लोग अपने अपने स्थान को चले जाएं ॥ ८ । सो उन लोगों ने हाथ में सीधा और अपने नरसिंगे लिये और उस ने इस्राएल् के सब पुरुषों को अपने अपने डेरे की ओर भेज दिया पर उन तीन सौ पुरुषों को अपने पास रख छोड़ा और मिद्यान् की छावनी उस के नीचे तराई में पड़ी थी ॥

९। उसी रात को यहोवा ने उस से कहा उठ छावनी पर चढ़ाई कर क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ कर देता हूं ॥ १०। पर यदि तू चढ़ाई करते डरता हो तो अपने सेवक पूरा को संग ले छावनी के पास जाकर, ११। सुन कि वे क्या क्या कह रहे हैं उस के पीछे तुझे उस छावनी पर चढ़ाई करने का हियाव बंधेगा। सो वह अपने सेवक पूरा को संग ले उन हथियारबन्दों के पास जो छावनी की छोर पर थे उतर गया ॥ १२। मिद्यानी और अमालेकी और सब पूरबी लोग तो टिड्डियों के समान बहुत से तराई में पड़े थे और उन के ऊंट समुद्रतीर की बालू के किनकों के समान गिनती से बाहर थे ॥ १३। जब गिदोन् वहां आया तब एक जन अपने किसी संगी से अपना स्वप्न यों कह रहा था कि सुन मैं ने स्वप्न में क्या देखा है कि जौ की एक रोटी लुढ़कते लुढ़कते मिद्यान् की छावनी में आई और डेरे को ऐसा टक्कर मारा कि वह गिर गया और उस को ऐसा उलट दिया कि डेरा गिरा पड़ा रहा ॥ १४। उस के संगी ने उत्तर दिया यह योआश् के पुत्र गिदोन् नाम एक इस्राएली पुरुष की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिद्यान् को सारी छावनी समेत कर दिया है ॥

१५। उस स्वप्न का वर्णन और फल सुनकर गिदोन् ने दण्डवत् किई और इस्राएल् की छावनी में लौटकर कहा उठो यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया है ॥ १६। तब उस ने उन तीन सौ पुरुषों के तीन गोल किये और एक एक पुरुष के हाथ में एक नरसिंगा और छूछा घड़ा और घड़ों के भीतर पलीते थे ॥ १७। फिर उस ने उन से कहा मुझे देखो और वैसा ही करो सुनो जब मैं उस छावनी की छोर पर पहुंचूं तब जैसा मैं करूं वैसा ही तुम भी करना ॥ १८। अर्थात् जब मैं और मेरे सब संगी नरसिंगा फूंकें तब तुम भी सारी छावनी की चारों ओर नरसिंगे फूंकना और यह कहना कि यहोवा के लिये और गिदोन् के लिये ॥

१९। बीचवाले पहर के आदि में ज्योंही पहरुओं की बदली हो गई थी त्योंही गिदोन् अपने संग के सौओं पुरुषों समेत छावनी की छोर पर गया और नरसिंगों को फूंक दिया और अपने हाथ के घड़ों को तोड़ डाला ॥ २०। तब तीनों गोलों ने नरसिंगों को फूंक दिया और घड़ों को तोड़ डाला और अपने अपने बाएं हाथ में पलीता और दहिने हाथ में फूंकने को नरसिंगा लिये हुए यहोवा की तलवार गिदोन् की तलवार ऐसा पुकारने लगे ॥ २१। तब वे छावनी की चारों ओर अपने अपने स्थान पर खड़े रहे तब सारी सेना के लोग दौड़ने लगे और उन्हों ने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया ॥ २२। और उन्हों ने तीनों सौ नरसिंगे फूंके और यहोवा ने एक एक पुरुष की तलवार उस के संगी पर और सारी सेना पर चलवाई सो सेना के लोग सरेरा की ओर बेतशित्ता लों और तब्बत् के पास के आबेल्महोला लों भाग गये ॥ २३। तब इस्राएली पुरुष नप्ताली और आशेर् और मनश्शे के सारे देश से एकट्ठे होकर मिद्यानियों के पीछे पड़े ॥ २४। और गिदोन् ने एप्रैम् के सब पहाड़ी देश में यह कहने को दूत भेज दिये कि मिद्यान् के छेंकने को आओ और यर्दन नदी को बेतबारा लों उन से पहिले अपने वश कर लो। सो सब एप्रैमी पुरुषों ने एकट्ठे होकर यर्दन नदी को बेतबारा लों अपने वश कर लिया ॥ २५। और उन्हों ने ओरेब् और जेब् नाम मिद्यान् के दो हाकिमों को पकड़ा और ओरेब् को ओरेब् नाम चटान पर और जेब् को जेब् नाम दाखरस के कुण्ड पर घात किया और वे मिद्यान् के पीछे पड़े और ओरेब् और जेब् के सिर यर्दन के पार गिदोन् के पास ले गये ॥

८. तब एप्रैमी पुरुषों ने गिदोन् से कहा तू ने हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया है कि जब तू मिद्यान् से लड़ने को चला तब हम को नहीं बुलवाया सो वे उस से बड़ा झगड़ा मचाने लगे ॥ २। उस ने उन से कहा तुम्हारे बराबर मैं ने अब क्या किया है क्या एप्रैम् की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर् की सारी फसल से अच्छी

नहीं ॥ ३ । तुम्हारे ही हाथों में परमेश्वर ने ओरेब् और जेब् नाम मिद्यान् के हाकिमों को कर दिया सो तुम्हारे बराबर में क्या कर सका । जब उस ने यह बात कही तब उन का जी उस की ओर से ठंडा हो गया ॥

४ । सो गिदोन् और उस के संग के तीनों सौ पुरुष जो थके मान्दे थे पर तौभी खदेड़ते रहे यर्दन के तीर आकर पार गये ॥ ५ । तब उस ने सुक्कोत् के लोगों से कहा मेरे पीछे इन आनेहारों को रोटियां दो क्योंकि ये थके मांदे हैं और मैं मिद्यान् के जेबह् और सल्मुन्ना नाम राजाओं का पीछा किये जाता हूं ॥ ६ । सुक्कोत् के हाकिमों ने उत्तर दिया क्या जेबह् और सल्मुन्ना तेरे हाथ में पड़ चुके हैं कि हम तेरी सेना को रोटी दें ॥ ७ । गिदोन् ने कहा जब यहोवा जेबह् और सल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा तब मैं इस बात के कारण तुम को जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ों से कूटूंगा ॥ ८ । वहां से वह पनूएल् को गया और वहां के लोगों[1] से ऐसी ही बात कही और पनूएल् के लोगों ने सुक्कोत् के लोगों का सा उत्तर दिया ॥ ९ । उस ने पनूएल् के लोगों से कहा जब मैं कुशल से लौट आऊंगा तब इस गुम्मट को ढा दूंगा ॥

१० । जेबह् और सल्मुन्ना तो कर्कोर् में थे और उन के साथ कोई पंद्रह हजार पुरुषों की सेना थी क्योंकि पूरबियों की सारी सेना में से उतने ही रह गये थे और जो मारे गये थे वे एक लाख बीस हजार हथियारबन्द थे ॥ ११ । सो गिदोन् ने नोबह् और योग्बहा की पूरब ओर डेरों में रहनेहारों के मार्ग से चढ़कर उस सेना को जो निडर पड़ी थी मार लिया ॥ १२ । और जब जेबा और सल्मुन्ना भागे तब उस ने उन का पीछा करके मिद्यानियों के उन दोनों राजाओं अर्थात् जेबह् और सल्मुन्ना को पकड़ लिया और सारी सेना को डरा दिया ॥ १३ । और योआश् का पुत्र गिदोन् हेरेस् नाम चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा[2], १४ । और सुक्कोत् के एक जवान पुरुष को पकड़कर उस से पूछा और उस ने सुक्कोत् के सतहत्तरों हाकिमों और पुरनियों के पते लिखवाये ॥ १५ । तब वह सुक्कोत् के मनुष्यों के पास जाकर कहने लगा जेबह् और सल्मुन्ना को देखो जिन के विषय तुम ने यह कहकर मुझे चिढ़ाया था कि क्या जेबह् और सल्मुन्ना अभी तेरे हाथ में हैं कि हम तेरे थके मांदे जनों को रोटी दें ॥ १६ । तब उस ने उस नगर के पुरनियों को पकड़ा और जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ लेकर सुक्कोत् के पुरुषों को कुछ सिखाया ॥ १७ । और उस ने पनूएल् के गुम्मट को ढा दिया और उस नगर के मनुष्यों को घात किया ॥ १८ । फिर उस ने जेबह् और सल्मुन्ना से पूछा वे मनुष्य तुम ने ताबोर् पर घात किये थे वे कैसे थे उन्हों ने उत्तर दिया जैसा तू वैसे ही वे भी थे अर्थात् एक एक का रूप राजकुमार का सा था ॥ १९ । उस ने कहा वे तो मेरे भाई वरन मेरे सहोदर भाई थे यहोवा के जीवन की सोंह यदि तुम ने उन को जीते छोड़ा होता तो मैं तुम को घात न करता ॥ २० । तब उस ने अपने जेठे पुत्र येतेर् से कहा उठकर इन्हें घात कर पर जवान ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि वह तब तक लड़का ही था इस लिये वह डर गया ॥ २१ । तब जेबह् और सल्मुन्ना ने कहा तू उठकर हम पर प्रहार कर क्योंकि जैसा पुरुष हो वैसा ही उस का पौरुष भी होगा । सो गिदोन् ने उठकर जेबह् और सल्मुन्ना को घात किया और उन के ऊंटों के गलों के चन्द्रहारों को ले लिया ॥

२२ । तब इस्राएल् के पुरुषों ने गिदोन् से कहा तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करे क्योंकि तू ने हम को मिद्यान् के हाथ से छुड़ाया है ॥ २३ । गिदोन् ने उन से कहा मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूंगा और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करे यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा ॥ २४ । फिर गिदोन् ने उन से कहा मैं तुम से कुछ मांगता हूं अर्थात् तुम मुझ को अपनी अपनी लूट में की नत्थ दो । वे जो इश्माएली थे इस कारण उन के नत्थ सोने के थे ॥ २५ । उन्हों ने

[1] मूल में उन । [2] वा सूर्य्य उदय न होने पाया कि योआश् का पुत्र गिदोन् लड़ाई से लौटा ।

कहा निश्चय हम देंगे सो उन्हों ने कपड़ा बिछाकर उस में अपनी अपनी लूट में के नत्थ डाल दिये ॥ २६ । जो सोने के नत्थ उस ने मांग लिये उन का तौल एक हजार सात सौ शेकेल् हुआ और उन को छोड़ चन्द्रहार झुमके और बैंगनी रंग के वस्त्र जो मिद्यानियों के राजा पहिने थे और उन के ऊंटों के गलों के कंठे थे ॥ २७ । उन का गिदोन् ने एक एपोद् बनवाकर अपने ओप्रा नाम नगर मे रक्खा और सब इस्राएल् वहां व्यभिचारिन की नाईं उस के पीछे हो लिया और यह गिदोन् और उस के घराने के लिये फन्दा ठहरा ॥ २८ । सो मिद्यान् इस्राएलियों से दब गया और फिर सिर न उठाया और गिदोन् के जीवन भर अर्थात् चालीस बरस लों देश चैन से रहा ॥

२९ । योआश् का पुत्र यरुब्बाल् तो जाकर अपने घर में रहने लगा ॥ ३० । और गिदोन् के सत्तर बेटे उत्पन्न हुए क्योंकि उस के बहुत स्त्रियां थीं ॥ ३१ । और उस की जो एक सुरैतिन शकेम् में रहती थी वह भी उस का जन्माया एक पुत्र जनी और गिदोन् ने उस का नाम अबीमेलेक् रक्खा ॥ ३२ । निदान योआश् का पुत्र गिदोन् पूरे बुढ़ापे में मर गया और अबीएजेरियों के ओप्रा नाम गांव में उस के पिता योआश् की कबर में उस को मिट्टी दिई गई ॥

३३ । गिदोन् के मरते ही इस्राएली फिर गये और व्यभिचारिन की नाईं बाल् देवताओं के पीछे हो लिये और बालबरीत् को अपना देवता मान लिया ॥ ३४ । और इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जिस ने उन को चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था स्मरण न रक्खा ॥ ३५ । और न उन्हों ने यरुब्बाल् अर्थात् गिदोन् की उस सारी भलाई के अनुसार जो उस ने इस्राएलियों के साथ किई थी उस के घराने को प्रीति दिखाई ॥

(अबीमेलेक् का चरित्र)

९. **यरुब्बाल्** का पुत्र अबीमेलेक् शकेम् को अपने मामाओं के पास जाकर उन से और अपने नाना के सारे घराने से यों कहने लगा, २ । शकेम् के सब मनुष्यों से यह पूछो कि तुम्हारे लिये क्या भला है क्या यह कि यरुब्बाल् के सत्तरों पुत्र तुम पर प्रभुता करें वा यह कि एक ही पुरुष तुम पर प्रभुता करे और यह भी स्मरण रक्खो कि मैं तुम्हारा ही हाड़ मांस हूं ॥ ३ । सो उस के मामाओं ने शकेम् के सब मनुष्यों से ऐसी ही बातें कहीं और उन्हों ने यह सोचकर कि अबीमेलेक् तो हमारा भाई है अपना मन उस के पीछे लगा दिया ॥ ४ । तब उन्हों ने बालबरीत् के मन्दिर में से सत्तर टुकड़े रूपे उस को दिये और उन्हें लगाकर अबीमेलेक् ने हलके हलके और लुच्चे जन रख लिये जो उस के पीछे हो लिये ॥ ५ । तब उस ने ओप्रा में अपने पिता के घर जाके अपने भाइयों को जो यरुब्बाल् के सत्तर पुत्र थे एक ही पत्थर पर घात किया । पर यरुब्बाल् का योताम् नाम लहुरा पुत्र छिपकर बच गया ॥

६ । तब शकेम् के सब मनुष्यों और बेत्मिल्लो के सब लोगों ने एकट्ठे होकर शकेम् में के खंभे के पासवाले बांजवृक्ष के पास अबीमेलेक् को राजा किया ॥ ७ । इस का समाचार सुनकर योताम् गरिज्जीम् पहाड़ की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ और ऊंचे स्वर से पुकारके कहने लगा हे शकेम् के मनुष्यो मेरी सुनो इस लिये कि परमेश्वर भी तुम्हारी सुने ॥ ८ । सब वृक्ष किसी का अभिषेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने को चले सो उन्हों ने जलपाई के वृक्ष से कहा तू हम पर राज्य कर ॥ ९ । जलपाई के वृक्ष ने कहा क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर जिस से लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदरमान करते हैं वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं ॥ १० । तब वृक्षों ने अंजीर के वृक्ष से कहा तू आकर हम पर राज्य कर ॥ ११ । अंजीर के वृक्ष ने उन से कहा क्या मैं अपने मीठेपन और अपने अच्छे अच्छे फलों को छोड़ वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं ॥ १२ । फिर वृक्षों ने दाखलता से कहा तू आकर हम पर राज्य कर ॥ १३ । दाखलता ने उन से कहा क्या मैं अपने नये मधु को छोड़ जिस से परमेश्वर

और मनुष्य दोनों को आनन्द होता है वृक्षों को अधिकारिन होकर इधर उधर डोलने को चलूं ॥ १४ । तब सब वृक्षों ने झड़बेड़ी से कहा तू आकर हम पर राज्य कर ॥ १५ । झड़बेड़ी ने उन वृक्षों से कहा यदि तुम अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक सच्चाई से करते हो तो आकर मेरी छांह में शरण लो और नहीं तो झड़बेड़ी से आग निकलेगी जिस से लबानोन् के देवदारु भी भस्म हो जाएंगे ॥ १६ । सो अब यदि तुम ने सचाई और खराई से अबीमेलेक् को राजा किया और यरुब्बाल् और उस के घराने से भलाई किई और उस से उस के काम के योग्य वर्ताव किया हो तो भला ॥ १७ । मेरा पिता तो तुम्हारे निमित्त लड़ा और अपने प्राण पर खेलकर तुम को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया था ॥ १८ । पर तुम ने अब मेरे पिता के घराने के विरुद्ध उठकर उस के सत्तरों पुत्र एक ही पत्थर पर घात किये और उस की लौंडी के पुत्र अबीमेलेक् को इस लिये शकेम् के मनुष्यों के ऊपर राजा ठहराया है कि वह तुम्हारा भाई है ॥ १९ । सो यदि तुम लोगों ने आज के दिन यरुब्बाल् और उस के घराने से सच्चाई और खराई से वर्ताव किया हो तो अबीमेलेक् के कारण आनन्द करो और वह भी तुम्हारे कारण आनन्द करे ॥ २० । और नहीं तो अबीमेलेक् से ऐसी आग निकले जिस से शकेम् के मनुष्य और बेत्मिल्लो भस्म हो जाएं और शकेम् के मनुष्यों और बेत्मिल्लो से ऐसी आग निकले जिस से अबीमेलेक् भस्म हो जाए ॥ २१ । तब योताम् भागा और अपने भाई अबीमेलेक् के डर के मारे बेर् को जाकर वहीं रहने लगा ॥

२२ । और अबीमेलेक् इस्राएल् के ऊपर तीन बरस हाकिम रहा ॥ २३ । तब परमेश्वर ने अबीमेलेक् और शकेम् के मनुष्यों के बीच एक बुरा आत्मा भेज दिया सो शकेम् के मनुष्य अबीमेलेक् का विश्वासघात करने लगे, २४ । जिस से यरुब्बाल् के सत्तरों पुत्रों पर किये हुए उपद्रव का फल भोगा जाए[१] और उन का खून उन के घात करनेहारे उन के भाई अबीमेलेक् को और उस के अपने भाइयों के घात करने में उस की सहायता करनेहारे शकेम् के मनुष्यों को भी लगे ॥ २५ । सो शकेम् के मनुष्यों ने पहाड़ों की चोटियों पर उस के लिये घातुओं को बैठाया जो उस मार्ग से सब आने जानेहारों को लूटते थे और इस का समाचार अबीमेलेक् को मिला ॥

२६ । तब एबेद् का पुत्र गाल् अपने भाइयों समेत शकेम् में आया और शकेम् के मनुष्यों ने उस का भरोसा किया ॥ २७ । और उन्हों ने मैदान में जाकर अपनी अपनी दाख की बारियों के फल तोड़े और उन का रस रौन्दा और स्तुति का बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में जाकर खाने पीने और अबीमेलेक् को कोसने लगे ॥ २८ । तब एबेद् के पुत्र गाल् ने कहा अबीमेलेक् कौन है शकेम् कौन है कि हम उस के अधीन रहें क्या वह यरुब्बाल् का पुत्र नहीं क्या जबूल् उस का नाइब नहीं शकेम् के पिता हमोर् के लोगों के तो अधीन हो पर हम उस के अधीन क्यों रहें ॥ २९ । और यह प्रजा मेरे वश में होती तो क्या ही भला होता तब तो मैं अबीमेलेक् को दूर करता फिर उस ने अबीमेलेक् से कहा अपनी सेना की गिन्ती बढ़ाकर निकल आ ॥ ३० । एबेद् के पुत्र गाल् की ये बातें सुनकर नगर के हाकिम जबूल् का कोप भड़क उठा ॥ ३१ । और उस ने अबीमेलेक् के पास छिपके[१] दूतों से कहला भेजा कि एबेद् का पुत्र गाल् और उस के भाई शकेम् में आके नगरवालों को तेरा विरोध करने को उसकाते हैं ॥ ३२ । सो तू अपने संगवालों समेत रात को उठकर मैदान में घात लगा ॥ ३३ । फिर बिहान को सवेरे सूर्य्य के निकलते ही उठकर इस नगर पर चढ़ाई करना और जब वह अपने संगवालों समेत तेरा साम्हना करने को निकले तब जो कुछ तुझ से बन पड़े वही उस से करना ॥

३४ । तब अबीमेलेक् और उस के संग के सब लोग रात को उठ चार गोल बांधकर शकेम् के विरुद्ध घात में बैठ गये ॥ ३५ । और एबेद् का पुत्र

(१) मूल में, उपद्रव आए ।

(१) मूल में, चतुराई से ।

गाल् बाहर आकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ तब अबीमेलेक् और उस के संगी घात छोड़कर उठ खड़े हुए ॥ ३६। उन लोगों को देखकर गाल् जबूल् से कहने लगा देख पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरे आते हैं जबूल् ने उस से कहा वह तो पहाड़ों की छाया है जो तुझे मनुष्यों के समान देख पड़ती है। गाल् ने फिर कहा देख लोग देश के बीचोबीच होकर उतरे आते और एक गोल मोनने-नीम् नाम बांजवृक्ष के मार्ग से चला आता है॥ ३८। जबूल् ने उस से कहा तेरी यह बात कहां रही कि अबीमेलेक् कौन है कि हम उस के अधीन रहें ये तो वे ही लोग हैं जिन को तू ने निकम्मा जाना था सो अब निकलकर उन से लड़॥ ३९। सो गाल् शकेम् के पुरुषों का अगुवा हो बाहर निकलकर अबीमेलेक् से लड़ा॥ ४०। और अबीमेलेक् ने उस को खदेड़ा और वह अबीमेलेक् के साम्हने से भागा और नगर के फाटक लों पहुंचते पहुंचते बहुतेरे घायल होकर गिरे॥ ४१। तब अबीमेलेक् अरूमा में रहने लगा और जबूल् ने गाल् और उस के भाइयों को निकाल दिया और शकेम् में न रहने दिया॥ ४२। दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गये और यह अबीमेलेक् को बताया गया॥ ४३। और उस ने अपने जनों के तीन गोल बांधकर मैदान में घात लगाई और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार लिया॥ ४४। अबीमेलेक् अपने संग के गोलों समेत आगे दौड़कर नगर के फाटक पर खड़ा हो गया और दो गोलों ने उन सब लोगों पर धावा करके जो मैदान में थे उन्हें मार डाला॥ ४५। उसी दिन अबीमेलेक् ने नगर से दिन भर लड़कर उस को ले लिया और उस में के लोगों को घात करके नगर को ढा दिया और उस पर लोन छितरवा दिया॥

४६। यह सुनकर शकेम् के गुम्मट के सब रहनेहारे एल्बरीत् के मन्दिर के गढ़ में जा घुसे॥ ४७। जब अबीमेलेक् को यह समाचार मिला कि शकेम् के गुम्मट के सब मनुष्य एकट्ठे हुए हैं, ४८। तब वह अपने सब संगियों समेत सल्मोन् नाम पहाड़ पर चढ़ गया और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ों में से एक डाली काटी और उसे उठाकर अपने कंधे पर रख लिई और अपने संगवालों से कहा कि जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी झट करो॥ ४९। सो उन सब लोगों ने भी एक एक डाली काट लिई और अबीमेलेक् के पीछे हो उन को गढ़ पर डालकर गढ़[१] में आग लगाई सो शकेम् के गुम्मट के सब स्त्री पुरुष जो अटकल एक हजार थे मर गये॥

५०। तब अबीमेलेक् ने तेबेस् को जा उस के साम्हने डेरे खड़े करके उस को ले लिया॥ ५१। पर उस नगर के बीच एक दृढ़ गुम्मट था सो क्या स्त्री क्या पुरुष नगर के सब लोग भागकर उस में घुसे और उसे बन्द करके गुम्मट की छत पर चढ़ गये॥ ५२। तब अबीमेलेक् गुम्मट के निकट जाकर उस के विरुद्ध लड़ने लगा और गुम्मट के द्वार लों गया कि उस में आग लगाए॥ ५३। तब किसी स्त्री ने चक्की का ऊपरला पाट अबीमेलेक् के सिर पर डाल दिया और उस की खोपड़ी फट गई॥ ५४। सो उस ने झट अपने हथियारों के ढोनेहारे जवान को बुलाकर कहा अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय कहने पाएं कि उस को एक स्त्री ने घात किया सो उस के जवान ने तलवार भोंक दिई और वह मर गया॥ ५५। यह देखकर कि अबीमेलेक् मर गया है इस्राएली अपने अपने स्थान को चले गये॥ ५६। सो जो दुष्ट काम अबीमेलेक् ने अपने सत्तरों भाइयों को घात करके अपने पिता के साथ किया था उस को परमेश्वर ने उस के सिर पर लौटा दिया॥ ५७। और शकेम् के पुरुषों के भी सब दुष्ट काम परमेश्वर ने उन के सिर पर लौटा दिये और यरुब्बाल् के पुत्र योताम् का साप उन पर घट गया॥

(१) मूल में उस के ऊपर गढ़।

(तोला और याईर् के चरित्र.)

१०. अबीमेलेक् के पीछे इस्राएल् के छुड़ाने के लिये तोला नाम एक इस्स्।कारी उठा वह दोदो का पोता और पूआ का पुत्र था और एप्रैम् के पहाड़ी देश के शामीर् नगर में रहता था ॥ २। वह तेईस बरस लों इस्राएल् का न्याय करता रहा तब मर गया और उस को शामीर् में मिट्टी दिई गई ॥

३। उस के पीछे गिलादी याईर् उठा वह वाईस बरस लों इस्राएल् का न्याय करता रहा ॥ ४। और उस के तीस पुत्र थे जो गदहियों के तीस बच्चों पर सवार हुआ करते थे और उन के तीस नगर भी थे जो गिलाद् देश में हैं और आज लों हव्वोत्याईर्[१] कहलाते हैं ॥ ५। और याईर् मर गया और उस को कामोन् में मिट्टी दिई गई ॥

(यिप्तह् का चरित्र)

६। तब इस्राएलों फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है अर्थात् बाल् देवताओं अश्तोरेत् देवियों और अराम् सीदोन् मोआब् अम्मोनियों और पलिश्तियों के देवताओं की उपासना करने लगे और यहोवा को त्याग दिया और उस की उपासना न किई ॥ ७। सो यहोवा का कोप इस्राएल् पर भड़का और उस ने उन्हें पलिश्तियों और अम्मोनियों के अधीन कर दिया ॥ ८। और उस बरस ये इस्रायेलियों को पेरते और पीसते रहे बरन यर्दन पार एमोरियों के देश गिलाद् में रहनेहारे सब इस्राएलियों पर अठारह बरस लों अंधेर करते रहे ॥ ९। अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन् से और एप्रैम् के घराने से लड़ने को यर्दन पार जाते थे यहां लों कि इस्राएल् बड़े संकट में पड़ा ॥ १०। तब इस्राएलियों ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दिई कि हम ने जो अपने परमेश्वर को त्यागकर बाल् देवताओं की उपासना किई है यह हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है ॥ ११। यहोवा ने इस्राएलियों से कहा क्या मैं ने तुम को मिस्रियों एमोरियों अम्मोनियों और पलिश्तियों से न छुड़ाया था ॥ १२। फिर जब सीदोनी और अमालेकी और माओनी लोगों ने तुम पर अंधेर किया और तुम ने मेरी दोहाई दिई तब मैं ने तुम को उन के हाथ से भी छुड़ाया ॥ १३। तौभी तुम ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना किई है इस लिये मैं फिर तुम को न छुड़ाऊंगा ॥ १४। जाओ अपने माने हुए देवताओं की दोहाई दो तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएं ॥ १५। इस्राएलियों ने यहोवा से कहा हम ने पाप किया है सो जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर पर अभी हमें छुड़ा ॥ १६। तब वे बिराने देवताओं को अपने बीच से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे और वह इस्राएलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ ॥

१७। तब अम्मोनियों ने एकट्ठे होकर गिलाद् में अपने डेरे डाले और इस्राएलियों ने भी एकट्ठे होकर मिस्पा में अपने डेरे डाले ॥ १८। तब गिलाद् में के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे कौन पुरुष अम्मोनियों से लड़ने का आरंभ करेगा वह गिलाद् के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा ॥

११. यिप्तह् नाम गिलादी बड़ा वीर था और वह वेश्या का बेटा था और गिलाद् ने यिप्तह् को जन्माया था ॥ २। गिलाद् की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए और जब वे बड़े हो गये तब यिप्तह् को यह कहकर निकाल दिया कि तू जो बिरानी का बेटा है इस कारण हमारे पिता के घराने में भाग न पाएगा ॥ ३। सो यिप्तह् अपने भाइयों के पास से भागकर तोब् देश में रहने लगा और यिप्तह् के पास हलके हलके मनुष्य एकट्ठे हुए और उस के संग बाहर जाते थे ॥

४। कितने दिन पीछे अम्मोनी इस्राएल् से लड़ने लगे ॥ ५। जब अम्मोनी इस्राएल् से लड़ते थे तब गिलाद् के पुरनिये यिप्तह् को तोब् देश से ले आने को गये, ६। और यिप्तह् से कहा चलकर हमारा प्रधान हो जा कि हम अम्मोनियों से लड़ सकें ॥ ७। यिप्तह् ने गिलाद् के पुरनियों से कहा क्या तुम

(१) अर्थात् याईर् की बस्तियां।

ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न दिया था फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्यों आये हो ॥ ८ । गिलाद् के पुरनियों ने यिप्तह् से कहा इस कारण हम अब तेरी ओर फिरे हैं कि तू हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़े तब तू हमारी ओर से गिलाद् के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा ॥ ९ । यिप्तह् ने गिलाद् के पुरनियों से पूछा यदि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने को फिर मेरे घर ले चलो और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान ठहरूंगा ॥ १० । गिलाद् के पुरनियों ने यिप्तह् से कहा निश्चय हम तेरी इस बात के अनुसार करेंगे यहोवा हमारे तेरे बीच इस वचन का सुननेवाला है ॥ ११ । सो यिप्तह् गिलाद् के पुरनियों के संग चला और लोगों ने उस को अपने ऊपर मुख्य और प्रधान ठहराया और यिप्तह् ने अपनी सारी बातें मिस्पा में यहोवा के सुनते कह दिईं ॥

१२ । तब यिप्तह् ने अम्मोनियों के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा कि तुझे मुझ से क्या काम कि तू मेरे देश में लड़ने को आया है ॥ १३ । अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह् के दूतों से कहा कारण यह है कि जब इस्राएली मिस्र से आये तब अर्नोन् से यब्बोक् और यर्दन लों जो मेरा देश था उस को उन्हों ने छीन लिया सो अब उस को बिना झगड़ा किये फेर दे ॥ १४ । तब यिप्तह् ने फिर अम्मोनियों के राजा के पास यह कहने को दूत भेजे कि, १५ । यिप्तह् तुझ से यों कहता है कि इस्राएल् ने न तो मोआब् का देश ले लिया और न अम्मोनियों का ॥ १६ । वरन जब वे मिस्र से निकले और इस्राएल् जंगल में होते हुए लाल समुद्र तक चला और कादेश् को आया, १७ । तब इस्राएल् ने एदोम् के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा कि मुझे अपने देश में होकर जाने दे और एदोम् के राजा ने उन की न मानी उसी रीति उस ने मोआब् के राजा से भी कहला भेजा और उस ने भी न माना सो इस्राएल् कादेश् में रह गया ॥ १८ । तब उस ने जंगल में चलते चलते एदोम् और मोआब् दोनों देशों के बाहर बाहर घूमकर मोआब् देश की पूरब ओर से आकर अर्नोन् के इसी पार अपने डेरे डाले और मोआब् के सिवाने के भीतर न गया क्योंकि मोआब् का सिवाना अर्नोन् था ॥ १९ । फिर इस्राएल् ने एमोरियों के राजा सीहोन् के पास जो हेश्बोन् का राजा था दूतों से यह कहला भेजा कि हमें अपने देश में होकर हमारे स्थान को जाने दे ॥ २० । पर सीहोन् ने इस्राएल् का इतना विश्वास न किया कि उसे अपने देश में होकर जाने दे वरन अपनी सारी प्रजा को एकट्ठी कर अपने डेरे यहस् में खड़े करके इस्राएल् से लड़ा ॥ २१ । और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने सीहोन् को सारी प्रजा समेत इस्राएल् के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन को मार लिया सो इस्राएल् उस देश के निवासी एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया ॥ २२ । अर्थात् वह अर्नोन् से यब्बोक् लों और जंगल से ले यर्दन लों एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया ॥ २३ । सो अब इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने अपनी इस्राएली प्रजा के साम्हने से एमोरियों को उन के देश से निकाल दिया फिर क्या तू उस का अधिकारी होने पाएगा ॥ २४ । क्या तू उस का अधिकारी न होगा जिस का तेरा कमोश् देवता तुझे अधिकारी कर दे इसी प्रकार से जिन लोगों को हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे साम्हने से निकाले उन के देश के अधिकारी हम होंगे ॥ २५ । फिर क्या तू मोआब् के राजा सिप्पोर् के पुत्र बालाक् से कुछ अच्छा है क्या उस ने कभी इस्राएलियों से कुछ भी झगड़ा किया क्या वह उन से कभी लड़ा ॥ २६ । जब कि इस्राएल् हेश्बोन् और उस के गावों में और अरोएर् और उस के गांवों में और अर्नोन् के किनारे के सब नगरों में तीन सौ बरस से बसा है तो इतने दिनों में तुम लोगों ने उस को क्यों नहीं छुड़ा लिया ॥ २७ । मैं ने तेरा अपराध नहीं किया तू ही मुझ से लड़ाई करके बुरा व्यवहार करता है सो यहोवा जो न्यायी है वह इस्राएलियों और अम्मोनियों के बीच आज न्याय करे ॥ २८ । तौभी अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह् की ये बातें न मानीं जिन को उस ने कहला भेजा था ॥

२९। तब यहोवा का आत्मा यिप्तह् पर आ गया और वह गिलाद् और मनश्शे से होकर गिलाद् के मिस्पे में आया और गिलाद् के मिस्पे से होकर अम्मोनियों की ओर चला ॥ ३०। और यिप्तह् ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी कि यदि तू निःसंदेह अम्मोनियों को मेरे हाथ कर दे, ३१। तो जब मैं कुशल के साथ अम्मोनियों से लौट आऊं तब जो कोई मेरी भेंट के लिये मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊंगा ॥ ३२। तब यिप्तह् अम्मोनियों से लड़ने को उन की ओर गया और यहोवा ने उन को उस के हाथ में कर दिया ॥ ३३। और वह अरोएर् से ले मिन्नीत् लों बरन आबेल्करामीम् लों जीतते जीतते उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया और अम्मोनी इस्राएलियों से दब गये ॥

३४। जब यिप्तह् मिस्पा को अपने घर आया तब उस की बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उस की भेंट के लिये निकल आई वह उस की एकलौती थी उस को छोड़ उस के न बेटा था न बेटी ॥ ३५। उस को देखते ही उस ने अपने कपड़े फाड़कर कहा हाय मेरी बेटी तू ने मेरी कमर तोड़ दिई[१] और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में की हो गई है क्योंकि मैं ने यहोवा को वचन दिया है और उसे टाल नहीं सकता ॥ ३६। उस ने उस से कहा हे मेरे पिता तू ने जो यहोवा को वचन दिया है सो जो बात तेरे मुंह से निकली है उसी के अनुसार मुझ से बर्ताव कर किस लिये कि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओं से तेरा पलटा लिया है ॥ ३७। फिर उस ने अपने पिता से कहा मेरे लिये यह किया जाए कि दो महीने तक मुझे छोड़े रह कि मैं अपनी सहेलियों सहित जाकर पहाड़ों पर फिरती हुई अपने कुंआरपन पर रोती रहूं ॥ ३८। उस ने कहा जा सो उस ने उसे दो महीने की छुट्टी दिई सो वह अपनी सहेलियां सहित चली गई और पहाड़ों पर अपने कुंवारपन पर रोती रही ॥ ३९। दो महीने के बीते पर वह अपने पिता के पास लौट आई और उस ने उस के विषय अपनी मानी हुई मन्नत को पूरी किया और उस कन्या ने पुरुष का मुंह कभी न देखा था। सो इस्राएलियों में यह रीति चली कि, ४०। इस्राएली स्त्रियां बरस बरस यिप्तह् गिलादी की बेटी का यश गाने को बरस दिन में चार दिन जाया करती थीं ॥

१२. तब

एप्रैमी पुरुष एकट्ठे हो सापोन् को जाकर यिप्तह् से कहने लगे कि जब तू अम्मोनियों से लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्यों न बुलवाया हम तेरा घर तुझ समेत जला देंगे ॥ २। यिप्तह् ने उन से कहा मेरा और मेरे लोगों का अम्मोनियों से बड़ा झगड़ा हुआ था और जब मैं ने तुम से सहायता मांगी तब तुम ने मुझे उन के हाथ से नहीं बचाया ॥ ३। सो यह देखकर कि ये मुझे नहीं बचाते मैं अपना प्राण हथेली पर रखकर अम्मोनियों के विरुद्ध चला और यहोवा ने उन को मेरे हाथ में कर दिया फिर तुम अब मुझ से लड़ने को क्यों चढ़ आये हो ॥ ४। तब यिप्तह् गिलाद् के सब पुरुषों को बटोरके एप्रैम् से लड़ा और एप्रैम् जो कहता था कि हे गिलादियो तुम तो एप्रैम् और मनश्शे के बीच रहनेवाले एप्रैमियों के भगोड़े हो सो गिलादियों ने उन को मार लिया ॥ ५। और गिलादियों ने यर्दन का घाट उन से पहिले अपने वश में कर लिया और जब कोई एप्रैमी भगोड़ा कहता कि मुझे पार जाने दो तब गिलाद् के पुरुष उस से पूछते थे क्या तू एप्रैमी[१] है और यदि वह कहता नहीं, ६। तो वे उस से कहते अच्छा शिब्बोलेत् कह और वह कहता सिब्बोलेत् क्योंकि उस से वह ठीक बोला न जाता था तब वे उस को पकड़कर यर्दन के घाट पर मार डालते थे सो उस समय बयालीस हजार एप्रैमी मारे गये ॥

७। यिप्तह् छः बरस लों इस्राएल का न्याय करता रहा तब यिप्तह् गिलादी मर गया और उस को गिलाद् के किसी नगर में[२] मिट्टी दिई गई ॥

(१) मूल में तू ने मुझे बहुत झुकाया है।

(१) मूल में. एप्राती। (२) मूल में. नगरों में।

८। उस के पीछे बेत्लेहेम् का निवासी इब्सान् इस्राएल् का न्याय करने लगा ॥ ९। और उस के तीस बेटे हुए और उस ने अपनी तीस बेटियां बाहर ब्याह दिईं और बाहर से अपने बेटों का ब्याह करके तीस बहू ले आया और वह इस्राएल् का न्याय सात बरस करता रहा ॥ १०। तब इब्सान् मर गया और उस को बेत्लेहेम् में मिट्टी दिई गई ॥

११। उस के पीछे जबूलूनी एलोन् इस्राएल् का न्याय करने लगा और वह इस्राएल् का न्याय दस बरस करता रहा ॥ १२। तब एलोन् जबूलूनी मर गया और उस को जबूलून् के देश के अय्यालोन् में मिट्टी दिई गई ॥

१३। उस के पीछे हिल्लेल् का पुत्र पिरातोनी अब्दोन् इस्राएल् का न्याय करने लगा ॥ १४। और उस के चालीस बेटे और तीस पोते हुए जो गदहियों के सत्तर बच्चों पर सवार हुआ करते थे। वह आठ बरस लों इस्राएल् का न्याय करता रहा ॥ १५। तब हिल्लेल् का पुत्र पिरातोनी अब्दोन् मर गया और उस को एप्रैम् के देश के पिरातोन् में जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है मिट्टी दिई गई ॥

(शिम्शोन् का चरित्र)

१३. और इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है सो यहोवा ने उन को पलिश्तियों के वश में चालीस बरस लों रक्खा ॥

२। दानियों के कुल का सोराबासी मानोह् नाम एक पुरुष था जिस की स्त्री बांझ होने के कारण न जनी थी ॥ ३। इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा सुन तू बांझ होने के कारण नहीं जनी पर अब गर्भवती होकर बेटा जनेगी ॥ ४। सो अब चौकस रह कि न तो तू दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पीए और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए ॥ ५। क्योंकि तू गर्भवती होकर एक बेटा जनेगी और उस के सिर पर छुरा न फिरे क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाज़ीर् रहेगा और इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाने में वही हाथ लगाएगा ॥ ६। उस स्त्री ने अपने पति के पास आकर कहा परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया था जिस का रूप परमेश्वर के दूत का सा अति भययोग्य था और मैं ने उस से न पूछा कि तू कहां का है और न उस ने मुझे अपना नाम बताया ॥ ७। पर उस ने मुझ से कहा सुन तू गर्भवती होकर बेटा जनेगी सो अब न तो दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पीना और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना क्योंकि वह लड़का जन्म से मरण के दिन लों परमेश्वर का नाज़ीर् रहेगा ॥ ८। तब मानोह् ने यहोवा से यह बिनती किई कि हे प्रभु बिनती सुन परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था फिर हमारे पास आए और हमें सिखलाए कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उस से हम क्या क्या करें ॥ ९। मानोह् की यह बात परमेश्वर ने सुन लिई सो जब वह स्त्री मैदान में बैठी थी और उस का पति मानोह् उस के संग न था तब परमेश्वर का वही दूत उस के पास आया ॥ १०। सो उस स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह समाचार दिया कि जो पुरुष उस दिन मेरे पास आया था उसी ने मुझे दर्शन दिया है ॥ ११। सो मानोह् उठकर अपनी स्त्री के पीछे चला और उस पुरुष के पास आकर पूछा कि क्या तू वही पुरुष है जिस ने इस स्त्री से बातें किईं थीं उस ने कहा मैं वही हूं ॥ १२। मानोह् ने कहा अब तेरे वचन पूरे हो जाएं उस बालक से कैसा व्यवहार करना चाहिये और उस का क्या काम होगा ॥ १३। यहोवा के दूत ने मानोह् से कहा जितनी वस्तुओं की चर्चा मैं ने इस स्त्री से किई थी उन सब से यह परे रहे ॥ १४। यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए और न दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पीए और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए जो जो आज्ञा मैं ने इस को दिई थी उसी को यह माने ॥ १५। मानोह् ने यहोवा के दूत से कहा हम तुझ को बिलमाने पाएं कि तेरे लिये बकरी का एक बच्चा पकाकर तैयार करें।

१६। यहोवा के दूत ने मानोह से कहा चाहे तू मुझे बिलमा रक्खे पर मैं तेरे भोजन में से कुछ न खाऊंगा और यदि तू होमबलि करने चाहे तो यहोवा ही के लिये कर। मानोह तो न जानता था कि यह यहोवा का दूत है॥ १७। मानोह ने यहोवा के दूत से कहा अपना नाम बता[1] इस लिये कि जब तेरी बातें पूरी हो तब हम तेरा आदरमान कर सकें॥ १८। यहोवा के दूत ने उस से कहा मेरा नाम तो अद्भुत है सो तू उसे क्यों पूछता है॥ १९। तब मानोह ने अन्नबलि समेत बकरी का एक बच्चा लेकर चटान पर यहोवा के लिये चढ़ाया तब उस दूत ने मानोह और उस की स्त्री के देखते देखते अद्भुत काम किया॥ २०। अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से आकाश की ओर उठ रही थी तब यहोवा का दूत उस वेदी पर की लौ में होकर मानोह और उस की स्त्री के देखते देखते चढ़ गया सो वे भूमि पर मुंह के बल गिरे॥ २१। पर यहोवा के दूत ने मानोह और उस की स्त्री को फिर कभी दर्शन न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था॥ २२। सो मानोह ने अपनी स्त्री से कहा हम निश्चय मर जाएंगे क्योंकि हम ने परमेश्वर का दर्शन पाया है॥ २३। उस की स्त्री ने उस से कहा यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता तो हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता और न वह ऐसी सब बातें हम को दिखाता और न वह इस समय हमें ऐसी बातें सुनाता॥ २४। और वह स्त्री एक बेटा जनी और उस का नाम शिम्शोन् रक्खा और वह बालक बढ़ता गया और यहोवा उस को आशीष देता रहा॥ २५। और यहोवा का आत्मा सोरा और एश्ताओल् के बीच महनेदान्[2] में उस को उभारने लगा॥

१४. शिम्शोन्

तिम्ना को गया और तिम्ना में एक पलिश्ती स्त्री को देखा॥ २। सो उस ने आकर अपने माता पिता से कहा तिम्ना में मैं ने एक पलिश्ती स्त्री को देखा है सो अब तुम उस से मेरा ब्याह करा दो॥ ३। उस के माता पिता ने उस से कहा क्या तेरे भाइयों की बेटियों में वा हमारे सब लोगों में कोई स्त्री नहीं है कि तू खतनाहीन पलिश्तियों में से स्त्री ब्याहने चाहता है। शिम्शोन् ने अपने पिता से कहा उसी से मेरा ब्याह करा दे क्योंकि मुझे वही अच्छी लगती है॥ ४। उस के माता पिता न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर से होती है कि वह पलिश्तियों के विरुद्ध दांव ढूंढ़ता है। उस समय तो पलिश्ती इस्राएल् पर प्रभुता करते थे॥

५। सो शिम्शोन् अपने माता पिता को संग ले तिम्ना को चलकर तिम्ना की दाखबारियों के पास पहुंचा वहां उस के साम्हने एक जवान सिंह गरजने लगा॥ ६। तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और यद्यपि उस के हाथ में कुछ न था तौभी उस ने उस को ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े। अपना यह काम उस ने अपने पिता वा माता को न बतलाया॥ ७। तब उस ने जाकर उस स्त्री से बातचीत किई और वह शिम्शोन् को अच्छी लगी॥ ८। कुछ दिन बीते वह उसे लाने को लौट चला और उस सिंह की लोथ देखने के लिये मार्ग से मुड़ गया तो क्या देखा कि सिंह की लोथ में मधुमक्खियों का एक झुण्ड और मधु भी है॥ ९। सो वह उस में से कुछ हाथ में लेकर खाते खाते अपने माता पिता के पास गया और उन को यह बिना बताये कि मैं ने इस को सिंह की लोथ में से निकाला है कुछ दिया और उन्हों ने उसे खाया॥ १०। तब उस का पिता उस स्त्री के यहां गया और शिम्शोन् ने जवानों की रीति के अनुसार वहां जेवनार किई॥ ११। उस को देखकर वे उस के संग रहने के लिये तीस संगियों को ले आये॥ १२। शिम्शोन् ने उन से कहा मैं तुम से एक पहेली कहता हूं यदि तुम इस जेवनार के सातों दिन के भीतर उसे बूझकर अर्थ बतला दो तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े

(१) मूल में तेरा नाम क्या है। (२) अर्थात् दान् की छावनी।

दूंगा ॥ १३ । और यदि तुम उसे न बतला सको तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे उन्हों ने उस से कहा अपनी पहेली कह कि हम उसे सुनें ॥ १४ । उस ने उन से कहा

खानेहारे में से खाना

और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली । इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर न बता सके ॥ १५ । सातवें दिन उन्हों ने शिम्शोन् की स्त्री से कहा अपने पति को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ बतलाए नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएंगे क्या तुम लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमारा नेवता किया है क्या ऐसा नहीं है ॥ १६ । सो शिम्शोन् की स्त्री यह कहकर उस के साम्हने रोने लगी कि तू तो मुझ से प्रेम नहीं बैर ही रखता है कि तू ने एक पहेली मेरी जाति के लोगों से तो कही है पर मुझ को उस का अर्थ नहीं बतलाया उस ने कहा मैं ने उसे अपनी माता वा पिता को भी नहीं बतलाया फिर क्या मैं तुझ को बतला दूं ॥ १७ । और जेवनार के सातों दिनों में वह स्त्री उस के साम्हने रोती रही और सातवें दिन जब उस ने उस को बहुत तंग किया तब उस ने उस को पहेली का अर्थ बतला दिया तब उस ने उसे अपनी जाति के लोगों को बतला दिया ॥ १८ । सो सातवें दिन सूर्य्य डूबने न पाया कि उस नगर के मनुष्यों ने शिम्शोन् से कहा मधु से अधिक क्या मीठा और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है । उस ने उन से कहा

जो तुम मेरी कलोर को हल में न जोतते

तो मेरी पहेली को कभी न बूझते ॥

१९ । तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और उस ने अश्कलोन् को जाकर वहां के तीस पुरुषों को मार डाला और उन का धन लूटकर तीस जोड़े कपड़ों को पहेली के बतानेहारों को दे दिया तब उस का कोप भड़का और वह अपने पिता के घर गया ॥ २० । और शिम्शोन् की स्त्री उस के एक संगी को जिस से उस ने मित्र का सा बर्ताव किया था ब्याह दिई गई ॥

१५. कितने दिन पीछे गेहूं की कटनी के दिनों में शिम्शोन् ने बकरी का एक बच्चा ले अपनी ससुराल जाकर कहा मैं अपनी स्त्री के पास कोठरी में जाऊंगा पर उस के ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका ॥ २ । और उस के ससुर ने कहा मैं सचमुच यह जानता था कि तू उस से बैर ही रखता है सो मैं ने उसे तेरे संगी को ब्याह दिया क्या उस की छोटी बहिन उस से सुन्दर नहीं है उस के बदले उसी को ब्याह ले ॥ ३ । शिम्शोन् ने उन लोगों से कहा अब चाहे मैं पलिश्तियों की हानि भी करूं तौभी उन के विषय निर्दोष ठहरूंगा ॥ ४ । सो शिम्शोन् ने जाकर तीन सौ लोमड़ी पकड़ीं और पलीते लेकर दो दो लोमड़ियों की पूंछ एक साथ बांधी और उन के बीच एक एक पलीता बांधा ॥ ५ । तब पलीतों को बारके उस ने लोमड़ियों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और पूलियों के ढेर बरन खड़े खेत और जलपाई की बारियां भी जल गईं ॥ ६ । सो पलिश्ती पूछने लगे यह किस ने किया है लोगों ने कहा उस तिम्नी के दामाद शिम्शोन् ने यह इस लिये किया कि उस के ससुर ने उस की स्त्री उस के संगी को ब्याह दिई तब पलिश्तियों ने जाकर उस स्त्री और उस के पिता दोनों को आग में जला दिया ॥ ७ । शिम्शोन् ने उन से कहा तुम जो ऐसा काम करते हो सो मैं तुम से पलटा लेकर तब ही चुप रहूंगा ॥ ८ । सो उस ने उन को अति निठुरता के साथ[१] बड़ी मार से मार डाला तब जाकर एताम् नाम ढांग की एक दरार में रहने लगा ॥

९ । तब पलिश्तियों ने चढ़ाई करके यहूदा देश में डेरे खड़े किये और लही में फैल गये ॥ १० । सो यहूदी मनुष्यों ने उन से पूछा तुम हम पर क्यों चढ़ाई करते हो उन्हों ने उत्तर दिया शिम्शोन् को बांधने के लिये चढ़ाई करते हैं कि जैसे उस ने हम से किया वैसे ही हम भी उस से करें ॥ ११ । सो तीन हजार यहूदी पुरुष एताम् नाम ढांग की दरार को

(१) मूल में, जांघ पर टांग ।

जाकर शिम्शोन से कहने लगे क्या तू नहीं जानता कि पलिश्ती हम पर प्रभुता करते हैं फिर तू ने हम से ऐसा क्यों किया है उस ने उन से कहा जैसा उन्हों ने मुझ से किया था वैसा ही मैं ने भी उन से किया है ॥ १२। उन्हों ने उस से कहा हम तुझे बांधकर पलिश्तियों के हाथ में कर देने के लिये आये हैं शिम्शोन् ने उन से कहा मुझ से यह किरिया खाओ कि हम आप तुझ पर प्रहार न करेंगे ॥ १३। उन्हों ने कहा ऐसा न होगा हम तुझे कसकर उन के हाथ में कर देंगे पर तुझे किसी रीति न मार डालेंगे सो वे उस को दो नई रस्सियों से बांधकर उस ढांग में से ले गये ॥ १४। वह लही तक आ गया था कि पलिश्ती उस को देखकर ललकारने लगे तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और उस की बांहों की रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गईं और उस के हाथों के बन्धन मानो गलकर टूट पड़े ॥ १५। तब उस को गदहे के जभड़े की एक नई हड्डी मिली और उस ने हाथ बढ़ा उसे लेकर एक हजार पुरुषों को मार डाला ॥ १६। तब शिम्शोन् ने कहा

गदहे के जभड़े की हड्डी से ढेर के ढेर
गदहे के जभड़े की हड्डी ही से मैं ने हजार
पुरुषों को मार डाला ॥

१७। जब वह ऐसा कह चुका तब उस ने जभड़े की हड्डी फेंक दिई और उस स्थान का नाम रामत्-लही[1] रक्खा गया ॥ १८। तब उस को बड़ी प्यास लगी और उस ने यहोवा को पुकारके कहा तू ने अपने दास से यह बड़ा छुटकारा कराया है फिर क्या मैं अब प्यासों मरके उन खतनाहीन लोगों के हाथ में पड़ूं ॥ १९। सो परमेश्वर ने लही में ओखली सा गड़हा कर दिया है और उस में से पानी निकलने लगा और जब शिम्शोन् ने पिया तब उस के जी में जी आया और वह फिर जी गया इस कारण उस सोते का नाम एन्हक्कोरे[2] रक्खा गया वह आज के दिन लों लही में है ॥ २०। शिम्शोन् तो पलिश्तियों के दिनों में बीस बरस लों इस्राएल् का न्याय करता रहा ॥

(१) अर्थात् जभड़े का टीला। (२) अर्थात् पुकारनेहारे का सोता।

१६. तब शिम्शोन् अज्जा को गया और वहां एक वेश्या को देखकर उस के पास गया ॥ २। जब अज्जियों को इस का समाचार मिला कि शिम्शोन् यहां आया है तब उन्हों ने उस को घेर लिया और रात भर नगर के फाटक पर उस की घात में लगे रहे और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे कि बिहान को भोर होते ही हम उस का घात करेंगे ॥ ३। पर शिम्शोन् आधी रात लों पड़ा रहकर आधी रात को उठ नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर बेंड़ों समेत उखाड़ लिया और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया जो हेब्रोन् के साम्हने है ॥

४। इस के पीछे वह सोरेक् नाम नाले में रहने-वाली दलीला नाम एक स्त्री से प्रीति करने लगा ॥ ५। सो पलिश्तियों के सरदारों ने उस स्त्री के पास जाके कहा तू उस को फुसलाकर बूझ ले कि उस का बड़ा बल काहे से है और कौन उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हो सकें कि उसे बांधकर दबा रक्खें तब हम तुझे ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी देंगे ॥ ६। तब दलीला ने शिम्शोन् से कहा मुझे बता दे कि तेरा बड़ा बल काहे से है और किस रीति से कोई तुझे बांधकर दबा रख सके ॥ ७। शिम्शोन् ने उस से कहा यदि मैं सात ऐसी नई नई तांतों से बांधा जाऊं जो सुखाई न गई हों तो मेरा बल घट जाएगा और मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा ॥ ८। सो पलिश्तियों के सरदार दलीला के पास ऐसी नई नई सात तांतें ले गये जो सुखाई न गई थीं और उन से उस ने शिम्शोन् को बांधा ॥ ९। उस के पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में घात लगाये बैठे थे सो उस ने उस से कहा हे शिम्शोन् पलिश्ती तेरी घात में हैं तब उस ने तांतों को ऐसा तोड़ा जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट जाता है और उस के बल का भेद न खुला ॥ १०। सो दलीला

ने शिम्शोन् से कहा सुन तू ने तो मुझ से छल किया और झूठ कहा है अब मुझे बतला दे कि तू काहे से बंध सकता है ॥ ११ । उस ने उस से कहा यदि मैं ऐसी नई नई रस्सियों से जो किसी काम में न आई हों कसकर बांधा जाऊं तो मेरा बल घट जाएगा और मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊंगा ॥ १२ । सो दलीला ने नई नई रस्सियां लेकर और उस को बांधकर कहा हे शिम्शोन् पलिश्ती तेरी घात में हैं । कितने मनुष्य तो उस कोठरी में घात लगाये हुए थे । तब उस ने उन को सूत की नाईं अपनी भुजाओं पर से तोड़ डाला ॥ १३ । सो दलीला ने शिम्शोन् से कहा अब लों तू मुझ से छल करता और झूठ बोलता आया है सो मुझे बतला दे कि तू काहे से बंध सकता है उस ने कहा यदि तू मेरे सिर की सातों लटें ताने में बुने तो बन्ध सकूंगा ॥ १४ । सो उस ने उसे खूंटी से जकड़ा तब उस से कहा हे शिम्शोन् पलिश्ती तेरी घात में हैं तब वह नींद से चौंक उठा और खूंटी को धरन में से उखाड़कर उसे ताने समेत ले गया ॥ १५ । तब दलीला ने उस से कहा तेरा मन तो मुझ से नहीं लगा फिर तू क्यों कहता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं तू ने ये तीनों बार मुझ से छल किया और मुझे नहीं बताया कि तेरा बड़ा बल काहे से है ॥ १६ । सो जब उस ने दिन दिन बातें करते करते उस को तंग किया और यहां लों हठ किया कि उस का दम नाक में हो गया, १७ । तब उस ने अपने मन का सारा भेद खोलकर उस से कहा मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा क्योंकि मैं मा के पेट ही से परमेश्वर का नाजीर् हूं यदि मैं मूड़ा जाऊं तो मेरा बल इतना घट जाएगा कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा ॥ १८ । यह देखकर कि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ से कह दिया है दलीला ने पलिश्तियों के सरदारों के पास कहला भेजा कि अब की फिर आओ क्योंकि उस ने अपने मन का सब भेद मुझे बतला दिया है सो पलिश्तियों के सरदार हाथ में रुपैया लिये हुए उस के पास गये ॥ १९ । तब उस ने उस को अपने घुटनों पर सुला रक्खा और एक मनुष्य बुलवाकर उस के सिर की सातों लटें मुण्डवा डालीं और वह उस को दबाने लगी और वह निर्बल हो गया ॥ २० । तब उस ने कहा हे शिम्शोन् पलिश्ती तेरी घात में हैं तब वह चौंककर सोचने लगा कि मैं पहिले की नाईं बाहर जाकर झटकूंगा वह तो न जानता था कि यहोवा मेरे पास से चला गया है ॥ २१ । सो पलिश्तियों ने उस को पकड़कर उस की आंखें फोड़ डालीं और उसे अज्जा को ले जाके पीतल की बेड़ियों से जकड़ दिया और वह बन्दीगृह में चक्की पीसने लगा ॥ २२ । उस के सिर के बाल मुण्ड जाने के पीछे फिर बढ़ने लगे ॥

२३ । तब पलिश्तियों के सरदार अपने दागोन् नाम देवता के लिये बड़ा यज्ञ और आनन्द करने को यह कहकर एकट्ठे हुए कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिम्शोन् को हमारे हाथ में कर दिया है ॥ २४ । और जब लोगों ने उसे देखा तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति किई कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश के नाश करनेहारे को जिस ने हम में से बहुतों को मार भी डाला हमारे हाथ में कर दिया है ॥ २५ । जब उन का मन मगन हो गया तब उन्हों ने कहा शिम्शोन् को बुलवा लो कि वह हमारे लिये तमाशा करे सो शिम्शोन् बन्दीगृह में से बुलवाया गया और उन के लिये तमाशा करने लगा और खंभों के बीच खड़ा कर दिया गया ॥ २६ । तब शिम्शोन् ने उस लड़के से जो उस का हाथ पकड़े था कहा मुझे उन खंभों को जिन से घर सम्भला हुआ है छूने दे कि मैं उन पर टेक लगाऊं ॥ २७ । वह घर तो स्त्री पुरुषों से भरा हुआ था और पलिश्तियों के सब सरदार भी वहां थे और छत पर कोई तीन हजार स्त्री पुरुष थे जो शिम्शोन् को तमाशा करते हुए देख रहे थे ॥ २८ । तब शिम्शोन् ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दिई कि हे प्रभु यहोवा मेरी सुधि ले हे परमेश्वर अब की बार मुझे बल दे कि मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का एक ही पलटा लूं ॥ २९ । तब शिम्शोन् ने उन दोनों बीचवाले खंभों को जिन से घर सम्भला हुआ था पकड़कर एक पर दहिने हाथ से और दूसरे पर

बांए हाथ से बल लगा दिया ॥ ३० । और शिम्शोन् ने कहा पलिश्तियों के संग मेरा प्राण भी जाए और वह अपना सारा बल करके झुका तब वह घर सब सरदारों और उस में के सारे लोगों पर गिर पड़ा। सो जिन को उस ने मरते समय मार डाला वे उन से भी अधिक थे जिन्हें उस ने जीते जी मार डाला था ॥ ३१ । तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने के लोग आये और उसे उठाकर ले गये और सोरा और एश्ताओल् के बीच उस के पिता मानोह् की कबर में मिट्टी दिई। उस ने तो इस्राएल् का न्याय बीस बरस तक किया था ॥

(दानियों के लैश् को जीतकर उस में बस जाने की कथा)

१७. एप्रैम् के पहाड़ी देश में मीका नाम एक पुरुष था ॥ २ । उस ने अपनी माता से कहा जो ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी तुझ से ले लिये गये जिन के विषय तू ने मेरे सुनते भी स्राप दिया था वे मेरे पास हैं मैं ही ने उन को ले लिया था। उस की माता ने कहा मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशीष होए ॥ ३ । जब उस ने वे ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी अपनी माता को फेर दिये तब माता ने कहा मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये यह रुपैया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूं कि उस से एक मूरत खोदकर और दूसरी ढालकर बनाई जाए सो अब मैं उसे तुझ को फेर देती हूं ॥ ४ । जब उस ने वह रुपैया अपनी माता को फेर दिया तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैये को दिये और उस ने उन से एक मूर्त्ति खोदकर और दूसरी ढालकर बनाई और वे मीका के घर में रहीं ॥ ५ । मीका के तो एक देवस्थान था सो उस ने एक एपोद् और कई एक गृहदेवता बनवाये और अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे अपना पुरोहित ठहरा लिया ॥ ६ । उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था ॥

७ । यहूदा के कुल का एक जवान लेवीय यहूदा के बेतलेहेम् में परदेशी होकर रहता था ॥ ८ । वह यहूदा के बेतलेहेम् नगर से इस लिये चला गया कि जहां कहीं स्थान मिले वहां मैं रहूं। चलते चलते वह एप्रैम् के पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला ॥ ९ । मीका ने उस से पूछा तू कहां से आता है उस ने कहा मैं तो यहूदा के बेतलेहेम् से आया हुआ एक लेवीय हूं और इस लिये चला जाता हूं कि जहां कहीं ठिकाना मुझे मिले वहीं रहूं ॥ १० । मीका ने उस से कहा मेरे संग रहकर मेरे लिये पिता और पुरोहित बन और मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े रुपे और एक जोड़ा कपड़ा और भोजनवस्तु दिया करूंगा सो वह लेवीय भीतर गया ॥ ११ । और वह लेवीय उस पुरुष के संग रहने को प्रसन्न हुआ, और वह जवान उस के साथ बेटा सा रहा ॥ १२ । सो मीका ने उस लेवीय का संस्कार किया और वह जवान उस का पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा ॥ १३ । और मीका सोचता था कि अब मैं जानता हूं कि यहोवा मेरा भला करेगा क्योंकि मैं ने एक लेवीय को अपना पुरोहित कर रखा है ॥

१८. उन दिनों इस्राएलियों का कोई राजा न था और उन दिनों में दानियों के गोत्र के लोग रहने के लिये कोई भाग ढूंढ़ रहे थे क्योंकि इस्राएली गोत्रों के बीच उन का भाग उस समय लों न मिला था ॥ २ । सो दानियों ने अपने सारे कुल में से पांच शूरवीरों को सोरा और एश्ताओल् से देश का भेद लेने और उस में ढूंढ़ ढांढ़ करने के लिये यह कहकर भेज दिया कि जाकर देश में ढूंढ़ ढांढ़ करो सो वे एप्रैम् के पहाड़ी देश में मीका के घर तक जाकर वहां टिक गये ॥ ३ । जब वे मीका के घर के पास आये तब उस जवान लेवीय का बोल पहचाना सो वहां मुड़कर उस से पूछा तुझे यहां कौन ले आया और तू यहां क्या करता है और यहां तेरे पास क्या है ॥ ४ । उस ने उन से कहा मीका ने मुझ से ऐसा ऐसा व्यवहार किया है और मुझे नौकर रक्खा है और मैं उस का पुरोहित हो गया हूं ॥ ५ । उन्हों ने

इस से कहा परमेश्वर से सलाह ले कि हम जान लें कि जो यात्रा हम करते हैं यह सुफल होगी या नहीं ॥ ६ । पुरोहित ने उन से कहा कुशल से चले आओ जो यात्रा तुम करते हो यह ठीक यहोवा के मते की है ॥

७ । सो वे पांच मनुष्य चल दिये और लैश को आकर उस में के लोगों को देखा कि सीदोनियों की नाईं निडर बेखटके और शान्ति से रहते हैं और इस देश का कोई अधिकारी नहीं है जो उन्हें किसी काम मे रोके[1] और वे सीदोनियों से दूर रहते हैं और दूसरे मनुष्यों से कुछ काम नहीं रखते ॥ ८ । तब वे सोरा और एश्ताओल् को अपने भाइयों के पास गये और उन के भाइयों ने उन से पूछा तुम क्या समाचार से आये हो ॥ ९ । उन्हों ने कहा आओ हम उन लोगों पर चढ़ाई करें क्योंकि हम ने उस देश को देखा कि वह बहुत ही अच्छा है सो तुम क्यों चुपचाप रहते हो वहां चलकर उस देश को अपने वश कर लेने मे आलस न करो ॥ १० । वहां पहुंचकर तुम निडर रहते हुए लोगों को और लंबा चौड़ा देश पाओगे और परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में दे दिया है वह ऐसा स्थान है जिस में पृथिवी भर के किसी पदार्थ की घटी नहीं है ॥

११ । सो वहां से अर्थात् सोरा और एश्ताओल् से दानियों के कुल के छः सौ पुरुषों ने युद्ध के हथियार बांधे कूच किया ॥ १२ । उन्हों ने जाकर यहूदा देश के किर्यत्यारीम् नगर में डेरे खड़े किये इस कारण उस स्थान का नाम महनेदान्[2] आज लों पड़ा है यह तो किर्यत्यारीम् की पच्छिम ओर है ॥ १३ । वहां से वे आगे बढ़कर एप्रैम् के पहाड़ी देश में मीका के घर के पास आये ॥ १४ । तब जो पांच मनुष्य लैश् के देश का भेद लेने गये थे वे अपने भाइयों से कहने लगे क्या तुम जानते हो कि इन घरों में एक एपोद् कई एक गृहदेवता एक खुदी और एक ढली हुई मूरत है सो अब सोचो कि क्या करना चाहिये ॥ १५ । वे उधर मुड़कर उस जवान लेवीय के घर गये जो मीका का घर था और उस का कुशलक्षेम पूछा ॥ १६ । और वे छः सौ दानी पुरुष फाटक में हथियार बांधे हुए खड़े रहे ॥ १७ । और जो पांच मनुष्य देश का भेद लेने गये थे उन्हों ने वहां घुसकर उस खुदी हुई मूरत और एपोद् और गृहदेवताओं और ढली हुई मूरत को ले लिया और वह पुरोहित फाटक में उन हथियार बांधे हुए छः सौ पुरुषों के संग खड़ा था ॥ १८ । जब वे पांच मनुष्य मीका के घर मे घुसकर खुदी हुई मूरत एपोद् गृहदेवता और ढली हुई मूरत को ले आये तब पुरोहित ने उन से पूछा यह तुम क्या करते हो ॥ १९ । उन्हों ने उस से कहा चुप रह अपने मुंह को हाथ से बन्द कर और हम लोगों के संग चलकर हमारे लिये पिता और पुरोहित बन तेरे लिये क्या अच्छा है यह कि एक ही मनुष्य के घराने का पुरोहित हो वा यह कि इस्राएलियों के एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो ॥ २० । तब पुरोहित प्रसन्न हुआ सो वह एपोद् गृहदेवता और खुदी हुई मूरत को लेकर उन लोगों के संग चला गया ॥ २१ । तब वे मुड़े और बालबच्चों पशुओं और सामान को अपने आगे करके चल दिये ॥ २२ । जब वे मीका के घर से दूर निकल गये थे तब जो मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरों मे रहते थे उन्हों ने एकट्ठे होकर दानियों को जा लिया, २३ । और दानियों को पुकारा तब उन्हों ने मुंह फेरके मीका से कहा तुझे क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल लिये आता है[1] ॥ २४ । उस ने कहा तुम तो मेरे बनवाये हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो फिर मेरे क्या रह गया सो तुम मुझ से क्यों पूछते हो कि तुझे क्या हुआ है ॥ २५ । दानियों ने उस से कहा तेरा बोल हम लोगों मे सुनाई न दे कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम लोगों पर प्रहार करें और तू अपना और अपने घर के लोगों का भी प्राण खो दे ॥ २६ । सो दानियों ने अपना मार्ग लिया और मीका यह देखके कि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं फिरके अपने घर लौट गया ॥ २७ । और वे मीका

(१) मूल में. लसयावे ।
(२) अर्थात् दान् की छावनी ।

(१) मूल में तू एकट्ठा हुआ है ।

के बनवाये हुए पदार्थों और उस के पुरोहित को साथ ले लैश् के पास आये जिस के लोग शांति से और बिना खटके रहते थे और उन्हों ने उन को तलवार से मार डाला और नगर को आग लगाकर फूंक दिया ॥ २८ । और कोई बचानेहारा न था क्योंकि वह सीदोन् से दूर था और वे और मनुष्यों से कुछ व्यवहार न रखते थे और वह बेत्रहोब् की तराई में था । तब उन्हों ने नगर को दृढ़ किया और उस में रहने लगे ॥ २९ । और उन्हों ने उस नगर का नाम इस्राएल् के एक पुत्र अपने मूलपुरुष दान् के नाम पर दान् रक्खा पर पहिले तो उस नगर का नाम लैश् था ॥ ३० । तब दानियों ने उस खुदी हुई मूरत को खड़ा कर लिया और देश की बंधुआई के समय लों योनातान् जो गेर्शोम् का पुत्र और मूसा[1] का पोता था वह और उस के वंश के लोग दान् गोत्र के पुरोहित बने रहे ॥ ३१ । और जब लों परमेश्वर का भवन शीलो में बना रहा तब लों वे मीका की खुदवाई हुई मूरत को स्थापित किये रहे ॥

(बिन्यामीनियों के पाप में अड़े रहने और प्रायः नाश किये जाने की कथा)

१९. उन दिनों में जब इस्राएलियों का कोई राजा न था तब एक लेवीय पुरुष एप्रैम् के पहाड़ी देश की परली ओर परदेशी होकर रहता था जिस ने यहूदा के बेत्लेहेम् में की एक सुरैतिन रख लिई थी ॥ २ । उस की सुरैतिन व्यभिचार करके यहूदा के बेत्लेहेम् को अपने पिता के घर चली गई और चार महीने वहीं रही ॥ ३ । तब उस का पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे लेकर चला और उस के यहां गया कि उसे समझा बुझाकर फेर ले आए । वह उसे अपने पिता के घर ले गई और उस जवान स्त्री का पिता उसे देखकर उस की भेंट से आनन्दित हुआ ॥ ४ । तब उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे बिनती करके दबाया सो वह उस के पास तीन दिन रहा सो वे वहां खाते पीते टिके रहे ॥ ५ । चौथे दिन जब वे भोर को सबेरे उठे और वह चलने को हुआ तब स्त्री के पिता ने अपने दामाद से कहा एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठण्डा कर पीछे तुम लोग चले जाना ॥ ६ । सो उन दोनों ने बैठकर संग संग खाया पिया फिर स्त्री के पिता ने उस पुरुष से कहा और एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो आनन्द कर ॥ ७ । वह पुरुष बिदा होने को उठा पर उस के ससुर ने बिनती करके उसे दबाया सो उस ने फिर उस के यहां रात बिताई ॥ ८ । पांचवें दिन भोर को वह तो बिदा होने को सबेरे उठा पर स्त्री के पिता ने कहा अपना जी ठण्डा कर और तुम दोनों दिन ढलने लों बिलमे रहो सो उन दोनों ने रोटी खाई ॥ ९ । जब वह पुरुष अपनी सुरैतिन और सेवक समेत बिदा होने को उठा तब उस के ससुर अर्थात् स्त्री के पिता ने उस से कहा देख दिन तो ढल चला है और सांझ होने पर है सो तुम लोग रात भर टिके रहो देख दिन तो डूबने पर है सो यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता और बिहान को सबेरे उठकर अपना मार्ग लेना और अपने डेरे को चला जाना ॥ १० । पर उस पुरुष ने उस रात को टिकना न चाहा सो वह उठकर बिदा हुआ और काठी बांधे हुए दो गदहे और अपनी सुरैतिन संग लिये हुए यबूस् के साम्हने लों जो यरूशलेम् कहावता है पहुंचा ॥ ११ । वे यबूस् के पास थे और दिन बहुत ढल गया था कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा आ हम यबूसियों के इस नगर में मुड़कर टिकें ॥ १२ । उस के स्वामी ने उस से कहा हम बिराने के नगर में जहां कोई इस्राएली नहीं रहता न उतरेंगे गिबा तक बढ़ जाएंगे ॥ १३ । फिर उस ने अपने सेवक से कहा आ हम उधर के स्थानों में से किसी के पास जाएं हम गिबा वा रामा में रात बिताएं ॥ १४ । सो वे आगे की ओर चले और उन के बिन्यामीन् के गिबा के निकट पहुंचते पहुंचते सूर्य्य अस्त हो गया ॥ १५ । सो वे गिबा में टिकने के लिये उस की ओर मुड़ गये और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ गया क्योंकि किसी ने उन को अपने घर में न

(१) वा मनश्शे ।

टिकाया ॥ १६ । तब एक बूढ़ा अपने खेत का काम सांझ को निपटाकर चला आया । वह तो एप्रैम् के पहाड़ी देश का था और गिबा में परदेशी होकर रहता था पर उस स्थान के लोग बिन्यामीनी थे ॥ १७ । उस ने आंखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठा देखा और उस बूढ़े ने पूछा तू किधर जाता और कहां से आता है ॥ १८ । उस ने उस से कहा हम लोग तो यहूदा के बेत्लेहेम् से आकर एप्रैम् के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं मैं तो वहीं का हूं और यहूदा के बेत्लेहेम् लों गया था और यहोवा के भवन को जाता हूं पर कोई मुझे अपने घर में नहीं टिकाता ॥ १९ । हमारे पास तो गदहों के लिये पुआल और चारा भी है और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिये भी जो तेरे दासों के संग है रोटी और दाखमधु भी है हमें किसी वस्तु की घटी नहीं है ॥ २० । बूढ़े ने कहा तेरा कल्याण हो तेरे प्रयोजन की सब वस्तुएं मेरे सिर हों पर रात को चौक में न बिता ॥ २१ । सो वह उस को अपने घर ले चला और गदहों को चारा दिया तब वे पांव धोकर खाने पीने लगे ॥ २२ । वे आनन्द कर रहे थे कि नगर के ओछों ने घर को घेर लिया और द्वार को खटखटा खटखटाकर घर के उस बूढ़े स्वामी से कहने लगे जो पुरुष तेरे घर में आया उसे बाहर ले आ कि हम उस से भोग करें ॥ २३ । घर का स्वामी उन के पास बाहर आकर उन से कहने लगा नहीं नहीं हे मेरे भाइयो ऐसी बुराई न करो यह पुरुष जो मेरे घर पर आया है इस से ऐसी मूढ़ता का काम मत करो ॥ २४ । देखो यहां मेरी कुंवारी बेटी है और उस पुरुष की सुरैतिन भी है उन को मैं बाहर ले आऊंगा और उन की पत लो तो लो और उन से तो जो चाहो सो करो पर इस पुरुष से ऐसी मूढ़ता का काम मत करो ॥ २५ । पर उन मनुष्यों ने उस की न मानी सो उस पुरुष ने अपनी सुरैतिन को पकड़कर उन के पास बाहर कर दिया और उन्हों ने उस से कुकर्म्म किया और रात भर भोर लों उस से लीला क्रीड़ा करते रहे और पह फटते ही उसे छोड़ दिया ॥ २६ । तब वह स्त्री पह फटते हुए जाके उस मनुष्य के घर के द्वार पर जिस में उस का पति था गिर गई और उजियाले के होने लों वहीं पड़ी रही ॥ २७ । सवेरे जब उस का पति उठ घर का द्वार खोल अपना मार्ग लेने को बाहर गया तो क्या देखा कि मेरी सुरैतिन घर के द्वार के पास डेवढ़ी पर हाथ फैलाये हुए पड़ी है ॥ २८ । उस ने उस से कहा उठ हम चलें जब कोई न बोला तब वह उस को गदहे पर लादकर अपन स्थान को गया ॥ २९ । जब वह अपने घर पहुंचा तब छूरी ले सुरैतिन को अंग अंग अलग करके काटा और उसे बारह टुकड़े करके इस्राएल् के सारे देश में भेज दिया ॥ ३० । जितनों ने उसे देखा सो सब आपस मे कहने लगे इस्राएलियों के मिस्र देश से चले आने के समय से लेकर आज के दिन लों ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ और न देखा गया सो इस को सोचकर सम्मति करो और कहो ॥

२०. तब दान् से लेकर बेर्शेबा लों के सारे इस्राएली और गिलाद् के लोग भी निकले और उन की मण्डली एक मत होकर मिस्पा में यहोवा के पास एकट्ठी हुई ॥ २ । और सारी प्रजा के प्रधान लोग वरन सब इस्राएली गोत्रों के लोग जो चार लाख तलवार चलानेहारे प्यादे थे परमेश्वर की प्रजा की सभा में हाजिर हुए ॥ ३ । बिन्यामीनियों ने तो सुना कि इस्राएली मिस्पा को आये हैं और इस्राएली पूछने लगे हम से कहो यह बुराई कैसे हुई ॥ ४ । उस मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने उत्तर दिया मैं अपनी सुरैतिन समेत बिन्यामीन् के गिबा में टिकने को गया था ॥ ५ । तब गिबा के पुरुषों ने मुझ पर चढ़ाई किई और रात के समय घर को घेरके मुझे घात करना चाहा और मेरी सुरैतिन से इतना कुकर्म्म किया कि वह मर गई ॥ ६ । सो मैं ने अपनी सुरैतिन को लेकर टुकड़े टुकड़े किया और इस्राएलियों के भाग के सारे देश में भेज दिया उन्हों ने तो इस्राएल् में महापाप और मूढ़ता का काम किया है ॥ ७ । सुनो हे

इस्राएलियो सब के सब यहीं बात करके सम्मति दो ॥ ८। तब सब लोग एक मन हो उठकर कहने लगे न तो हम में से कोई अपने डेरे जाएगा और न कोई अपने घर की ओर मुड़ेगा ॥ ९। पर अब हम गिबा से यह करेंगे अर्थात् हम चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे ॥ १०। और हम सब इस्राएली गोत्रों में सौ पुरुषों में से दस और हजार पुरुषों में से एक सौ और दस हजार में से एक हजार पुरुषों को ठहराएं कि वे सेना के लिये भोजनवस्तु पहुंचाएं इस लिये कि हम बिन्यामीन् के गिबा में पहुंचकर उस को उस मूढ़ता का पूरा फल भुगता सकें जो उन्हों ने इस्राएल् में किई है ॥ ११। तब सब इस्राएली पुरुष उस नगर के विरुद्ध एक पुरुष की नाईं जुटे हुए एकट्ठे हो गये ॥

१२। और इस्राएली गोत्रियों ने बिन्यामीन् के सारे गोत्रों में कितने मनुष्य यह पूछने को भेजे कि यह क्या बुराई है जो तुम लोगों में किई गई है ॥ १३। अब उन गिबावासी ओछों को हमारे हाथ कर दो कि हम उन को प्राण से मारके इस्राएल् में से बुराई नाश करें। पर बिन्यामीनियों ने अपने भाई इस्राएलियों की मानने से नाह किया ॥ १४। और बिन्यामीनी अपने अपने नगर में से आकर गिबा में इस लिये एकट्ठे हुए कि इस्राएलियों से लड़ने को निकलें ॥ १५। और उसी दिन गिबावासी पुरुषों को छोड़ जिन की गिनती सात सौ चुने हुए पुरुष ठहरी और और नगरों से आये हुए तलवार चलानेहारे बिन्यामीनियों की गिनती छब्बीस हजार पुरुष ठहरी ॥ १६। इन सब लोगों में से सात सौ बैंहत्थे चुने हुए पुरुष थे जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चूकते थे ॥ १७। और बिन्यामीनियों को छोड़ इस्राएली पुरुष चार लाख तलवार चलानेहारे थे ये सब के सब योद्धा थे ॥

१८। सो इस्राएली उठकर बेतेल् को गये और यह कहकर परमेश्वर से सलाह लिई और इस्राएलियों ने पूछा कि हम में से कौन बिन्यामीनियों से लड़ने को पहिले चढ़ाई करे यहोवा ने कहा यहूदा पहिले चढ़ाई करे ॥ १९। सो इस्राएलियों ने बिहान को उठकर गिबा के साम्हने डेरे किये ॥ २०। और इस्राएली पुरुष बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल गये और इस्राएली पुरुषों ने उन से लड़ने को गिबा के विरुद्ध पांति बान्धी ॥ २१। तब बिन्यामीनियों ने गिबा से निकल उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरुषों को मारके मिट्टी में मिला दिया ॥ २२। तौभी इस्राएली पुरुष लोगों ने हियाव बांधकर उसी स्थान में जहां उन्हों ने पहिले दिन पांति बांधी थी फिर पांति बांधी ॥ २३। और इस्राएली जाकर सांझ लों यहोवा के साम्हने रोते रहे और यह कहकर यहोवा से पूछा कि क्या हम अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को फिर पास जाएं यहोवा ने कहा हां उन पर चढ़ाई करो ॥

२४। सो दूसरे दिन इस्राएली बिन्यामीनियों के निकट पहुंचे ॥ २५। तब बिन्यामीनियों ने दूसरे दिन उन का साम्हना करने को गिबा से निकलकर फिर अठारह हजार इस्राएली पुरुषों को मारके जो सब के सब तलवार चलानेहारे थे मिट्टी में मिला दिया ॥ २६। तब सब इस्राएली वरन सब लोग बेतेल् को गये और रोते हुए यहोवा के साम्हने बैठे रहे और उस दिन सांझ लों उपवास किये रहे और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाये ॥ २७। और इस्राएलियों ने यहोवा से सलाह लिई। उस समय तो परमेश्वर की वाचा का संदूक वहीं था ॥ २८। और पीनहास् जो हारून का पोता और एलाजार् का पुत्र था उन दिनों उस के साम्हने हाजिर रहा करता था। सो उन्हों ने पूछा क्या मैं एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल जाऊं वा उन को छोड़ूं यहोवा ने कहा चढ़ाई कर क्योंकि कल मैं उन को तेरे हाथ में कर दूंगा ॥ २९। तब इस्राएलियों ने गिबा की चारों ओर लोगों को घात में बैठाया ॥

३०। तीसरे दिन इस्राएलियों ने बिन्यामीनियों पर फिर चढ़ाई किई और पहिले की नाईं गिबा के विरुद्ध पांति बांधी ॥ ३१। सो बिन्यामीनी उन लोगों का साम्हना करने को निकले और नगर के

पास से खींचे गये और जो दो सड़क एक बेतेल् को और दूसरी गिबा को गई हैं उन में लोगों को पहिले की नाईं मारने लगे और मैदान में कोई तीस इस्राएली मारे गये ॥ ३२ । बिन्यामीनी कहने लगे थे पहिले की नाईं हम से मारे जाते हैं पर इस्राएलियों ने कहा हम भागकर उन को नगर में से सड़कों में खींच ले आएं ॥ ३३ । तब सब इस्राएली पुरुषों ने अपने स्थान से उठकर बाल्तामार् में पांति बांधी और घात में बैठे हुए इस्राएली अपने स्थान से अर्थात् मारेगेबा से अचानक निकले ॥ ३४ । सो सारे इस्राएलियों में से छांटे हुए दस हजार पुरुष गिबा के साम्हने आये और लड़ाई कड़ी होने लगी पर वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी पड़ा चाहती है ॥ ३५ । सो यहोवा ने बिन्यामीनियों को इस्राएल् से हरवा दिया और उस दिन इस्राएलियों ने पचीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुरुषों को नाश किया जो सब के सब तलवार चलानेहारे थे ॥

३६ । तब बिन्यामीनियों ने देखा कि हम हार गये और इस्राएली पुरुष उन घातुओं का भरोसा करके जिन्हें उन्हों ने गिबा के पास बैठाया था बिन्यामीनियों के साम्हने से हट गये ॥ ३७ । पर घातू लोग फुर्ती करके गिबा पर झपट गये और घातुओं ने आगे बढ़कर सारे नगर को तलवार से मारा ॥ ३८ । इस्राएली पुरुषों और घातुओं के बीच तो यह चिन्ह ठहराया गया था कि वे नगर में से बहुत बड़ा धूएं का खंभा उठाएं ॥ ३९ । इस्राएली पुरुष तो लड़ाई में हटने लगे और बिन्यामीनियों ने यह कहकर कि निश्चय वे पहिली लड़ाई की नाईं हम से हारे जाते हैं इस्राएलियों को मार डालने लगे और तीस एक पुरुषों को घात किया ॥ ४० । पर जब वह धूएं का खंभा नगर में से उठने लगा तब बिन्यामीनियों ने अपने पीछे जो दृष्टि किई तो क्या देखा कि नगर का नगर धूआं होकर आकाश की ओर उड़ रहा है ॥ ४१ । तब इस्राएली पुरुष घूमे और बिन्यामीनी पुरुष यह देखकर भभर गये कि हम पर विपत्ति आ पड़ी है ॥ ४२ । सो उन्हों ने इस्राएली पुरुषों को पीठ दिखाकर जंगल का मार्ग लिया पर लड़ाई उन से लगी ही रही और जो और नगरों में से आये थे उन को इस्राएली बीच में नाश करते गये ॥ ४३ । उन्हों ने बिन्यामीनियों को घेर लिया उन्हों ने उन्हें खदेड़ा वे मनूहा में वरन गिबा की पूरब ओर तक उन्हें लताड़ते गये ॥ ४४ । और बिन्यामीनियों में से अठारह हजार पुरुष जो सब के सब शूरवीर थे मारे गये ॥ ४५ । तब वे घूमकर जंगल में की रिम्मोन् नाम ढांग की ओर तो भाग गये पर इस्राएलियों ने उन में से सड़कों में पांच हजार को बीनकर मार डाला फिर गिदोम् लों उन के पीछे पड़के उन में से दो हजार पुरुष मार डाले ॥ ४६ । सो बिन्यामीनियों में से जो उस दिन मारे गये वे पचीस हजार तलवार चलानेहारे पुरुष थे और ये सब शूरवीर थे ॥ ४७ । पर छ: सौ पुरुष घूमकर जंगल की ओर भागे और रिम्मोन् नाम ढांग में पहुंच गये और चार महीने वहां रहे ॥ ४८ । तब इस्राएली पुरुष लौटकर बिन्यामीनियों पर लपके और नगरों में क्या मनुष्य क्या पशु क्या जो कुछ मिला सब को तलवार से नाश कर डाला और जितने नगर उन्हें मिले उन सभों को आग लगाकर फूंक दिया ॥

२१. इस्राएली पुरुषों ने तो मिस्पा में किरिया खाकर कहा था कि हम में से कोई अपनी बेटी किसी बिन्यामीनी को न ब्याह देगा ॥ २ । सो वे बेतेल् को जाकर सांझ लों परमेश्वर के साम्हने बैठे रहे और फूट फूटकर बहुत रोते रहे, ३ । और कहते थे हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा इस्राएल् में ऐसा क्यों होने पाया कि आज इस्राएल् में एक गोत्र की घटी हुई है ॥ ४ । फिर दूसरे दिन उन्हों ने सवेरे उठ वहां वेदी बनाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाये ॥ ५ । तब इस्राएली पूछने लगे इस्राएल् के सारे गोत्रों में से कौन है जो यहोवा के पास सभा में न आया था । उन्हों ने तो भारी किरिया खाकर कहा था कि जो कोई मिस्पा को यहोवा के पास न आए वह निश्चय मार डाला जाएगा ॥ ६ । सो इस्राएली अपने भाई

बिन्यामीन् के विषय यह कहकर पछताने लगे कि आज इस्राएल् में से एक गोत्र कट गया है ॥ ७ । हम ने जो यहोवा की किरिया खाकर कहा है कि हम उन्हें अपनी किसी बेटी को न ब्याह देंगे सो बचे हुओं को स्त्रियां मिलने के लिये क्या करें ॥ ८ । जब उन्हों ने पूछा इस्राएल् के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा को यहोवा के पास न आया था तब यह पाया गया कि गिलादी याबेश् से कोई छावनी में सभा को न आया था ॥ ९ । कैसे कि जब लोगों की गिनती किई गई तब यह जाना गया कि गिलादी याबेश् के निवासियों में से कोई यहां नहीं है ॥ १० । सो मण्डली ने बारह हजार शूरबीरों को वहां यह आज्ञा देकर भेज दिया कि तुम जाकर स्त्रियों और बालबच्चों समेत गिलादी याबेश् को तलवार से नाश करो ॥ ११ । और तुम्हें जो करना होगा सो यह है सब पुरुषों को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन को सत्यानाश कर डालना ॥ १२ । और उन्हें गिलादी याबेश् के निवासियों में से चार सौ जवान कुमारियां मिलीं जिन्हों ने पुरुष का मुंह न देखा था और उन्हें वे शीलो को जो कनान् देश में है छावनी में ले आये ॥

१३ । तब सारी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के पास जो रिम्मोन् नाम ढांग पर थे कहला भेजा और उन से संधि का प्रचार कराया ॥ १४ । सो बिन्यामीन् उसी समय लौट गया और उन को वे स्त्रियां दिई गईं जो गिलादी याबेश् की स्त्रियों में से जीती छोड़ी गई तौभी वे उन के लिये थोड़ी थीं ॥ १५ । सो लोग बिन्यामीन् के विषय फिर यह कहके पछताये कि यहोवा ने इस्राएल् के गोत्रों में घटी किई है ॥

१६ । सो मण्डली के पुरनियों ने कहा बिन्यामीनी स्त्रियां जो नाश हुई हैं सो बचे हुए पुरुषों के लिये स्त्री पाने का हम क्या उपाय करें ॥ १७ । फिर उन्हों ने कहा बचे हुए बिन्यामीनियों के लिये कोई भाग चाहिये ऐसा न हो कि इस्राएल् में से एक गोत्र मिट जाए ॥ १८ । पर हम तो अपनी किसी बेटी को उन्हें ब्याह नहीं दे सकते क्योंकि इस्राएलियों ने यह कहकर किरिया खाई है कि शापित हो वह जो किसी बिन्यामीनी को अपनी लड़की ब्याह दे ॥ १९ । फिर उन्हों ने कहा सुनो शीलो जो बेतेल् की उत्तर ओर और उस सड़क की पूरब ओर है जो बेतेल् से शकेम् को चली गई है और लबोना की दक्खिन ओर है उस में बरस बरस यहोवा का एक पर्व माना जाता है ॥ २० । सो उन्हों ने बिन्यामीनियों को यह आज्ञा दिई कि तुम जाकर दाख की बारियों के बीच घात लगाये बैठे रहो, २१ । और देखते रहो और यदि शीलो की लड़कियां नाचने को निकलें तो तुम दाख की बारियों से निकलकर शीलो की लड़कियों में से अपनी अपनी स्त्री को पकड़कर बिन्यामीन् के देश को चले जाना ॥ २२ । और जब उन के पिता वा भाई हमारे पास झगड़ने को आएं तब हम उन से कहेंगे कि अनुग्रह करके उन को हमें दे दो क्योंकि लड़ाई के समय हम ने उन में से एक एक के लिये स्त्री न बचाई[1] और तुम लोगों ने तो उन को ब्याह नहीं दिया नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते ॥ २३ । सो बिन्यामीनियों ने ऐसा ही किया अर्थात् उन्हों ने अपनी गिनती के अनुसार उन नाचनेहारियों में से पकड़कर स्त्रियां ले लिईं तब अपने भाग को लौट गये और नगरों को बसाकर उन में रहने लगे ॥ २४ । उसी समय इस्राएली वहां से चलकर अपने अपने गोत्र और अपने अपने घराने को गये और वहां से वे अपने अपने निज भाग को गये ॥ २५ । उन दिनों इस्राएलियों का कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था ॥

(१) मूल में. लिई ।

रूत् नाम पुस्तक।

१. जिन दिनों न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनों देश में अकाल पड़ा सो यहूदा के बेत्‌लेहेम् का एक पुरुष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब् के देश में परदेशी होकर रहने के लिये चला ॥ २। उस पुरुष का नाम एलीमेलेक् और उस की स्त्री का नाम नाओमी और उस के दो बेटों के नाम महलोन् और किल्योन् थे ये एप्राती अर्थात् यहूदा के बेत्‌लेहेम् के रहनेहारे थे और मोआब् के देश में आकर वहां रहे ॥ ३। और नाओमी का पति एलीमेलेक् मर गया और नाओमी और उस के दोनों पुत्र रह गये ॥ ४। और इन्हों ने एक एक मोआबिन ब्याह लिई एक स्त्री का नाम तो ओर्पा और दूसरी का नाम रूत् था फिर वे वहां कोई दस बरस रहे ॥ ५। तब महलोन् और किल्योन् दोनों मर गये सो नाओमी अपने दोनों पुत्रों और पति से रहित हो गई ॥ ६। तब वह मोआब् के देश में यह सुनकर कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु दिई है उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली ॥ ७। सो वह अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से जहां रहती थी निकली और वे यहूदा देश को लौट जाने के मार्ग से चलीं ॥ ८। तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा तुम अपने अपने मैके लौट जाओ और जैसे तुम ने उन से जो मर गये हैं और मुझ से भी प्रीति किई है वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे ॥ ९। यहोवा ऐसा करे कि तुम फिर पति करके उन के घरों में विश्राम पाओ तब उस ने उन को चूमा और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं, १०। और उस से कहा निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी ॥ ११। नाओमी ने कहा हे मेरी बेटियो लौट जाओ तुम काहे को मेरे संग चलोगी क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों ॥ १२। हे मेरी बेटियो लौटकर चली जाओ क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूं और चाहे मैं कहती भी कि मुझे आशा है और आज की रात मेरे पति होता भी और मैं पुत्र भी जनती, १३। तौभी क्या तुम उन के सयाने होने लों आशा लगाये ठहरी रहतीं और उन के निमित्त पति करने से रुकी रहतीं हे मेरी बेटियो ऐसा न हो क्योंकि मेरा दुःख[1] तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है देखो यहोवा का हाथ मेरे विरुद्ध उठा है ॥ १४। तब वे फिर रो उठीं और ओर्पा ने तो अपनी सास को चूमा पर रूत् उस से अलग न हुई ॥ १५। सो उस ने कहा देख तेरी जिठानी[2] तो अपने लोगों और अपने देवता के पास लौट गई है सो तू अपनी जिठानी[2] के पीछे लौट जा ॥ १६। रूत् बोली तू मुझ से यह बिनती न कर कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी तेरे लोग मेरे लोग होंगे और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा ॥ १७। जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी और वहीं मुझे मिट्टी दिई जाएगी यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊं तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे ॥ १८। जब उस ने यह देखा कि वह मेरे संग चलने को स्थिर है तब उस ने उस से और बात न कही ॥ १९। सो वे दोनों चल दिईं और बेत्‌लेहेम् को पहुंचीं और उन के बेत्‌लेहेम् में पहुंचने पर सारे नगर में उन के कारण धूम मची और स्त्रियां कहने लगीं क्या यह नाओमी है ॥ २०। उस

(१) मूल में कड़वाहट। (२) वा देवरानी।

ने उन से कहा मुझे नाओमी[1] न कहो मुझे मारा[2] कहो क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दुःख दिया[3] है ॥ २१ । मैं भरी पूरी चली गई थी पर यहोवा ने मुझे छूछी लौटाया है सो जब कि यहोवा ही ने मेरे विरुद्ध साक्षी दिई और सर्वशक्तिमान् ने मुझे दुःख दिया है फिर तुम मुझे क्यों नाओमी कहती हो ॥ २२ । सो नाओमी अपनी मोआबिन बहू रूत समेत लौटी जो मोआब् देश से लौट आई और वे जौ कटने के आरंभ के समय बेत्लेहेम् में पहुंचीं ॥

२. नाओमी के पति एलीमेलेक् के कुल में उस का एक बड़ा धनी कुटुंबी था जिस का नाम बोअज़् था ॥ २ । और मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा मुझे किसी खेत में जाने दे कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे उस के पीछे पीछे मैं सिला बीनती जाऊं उस ने कहा चली जा बेटी ॥ ३ । सो वह जाकर एक खेत में लवनेहारों के पीछे बीनने लगी और जिस खेत में[4] वह संयोग से गई थी वह एलीमेलेक् के कुटुम्बी बोअज़् का था ॥ ४ । और बोअज़् बेत्लेहेम् से आकर लवनेहारों से कहने लगा यहोवा तुम्हारे संग रहे और वे उस से बोले यहोवा तुझे आशीष दे ॥ ५ । तब बोअज़् ने अपने उस सेवक से जो लवनेहारों के ऊपर ठहरा था पूछा वह किस की कन्या है ॥ ६ । जो सेवक लवनेहारों के ऊपर ठहरा था उस ने उत्तर दिया वह मोआबिन कन्या है जो नाओमी के संग मोआब् देश से लौट आई है ॥ ७ । उस ने कहा था मुझे लवनेहारों के पीछे पीछे पूलों के बीच बीनने और बालें बटोरने दे सो वह आई और भोर से अब लों बनी है केवल थोड़ी बेर तक घर में रही थी ॥ ८ । तब बोअज़् ने रूत से कहा हे मेरी बेटी क्या तू सुनती है किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना मेरी ही दासियों के संग यहीं रहना ॥ ९ । जिस खेत को वे लवती हों उसी पर तेरा ध्यान बंधा रहे और उन्हीं के पीछे पीछे चला करना क्या मैं ने जवानों को आज्ञा नहीं दिई कि तुझ से न बोलें और जब जब तुझे प्यास लगे तब तब तू बरतनों के पास जाकर जवानों का भरा हुआ पानी पीना ॥ १० । तब वह भूमि लों झुककर मुंह के बल गिरी और उस से कहने लगी क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि लिई है ॥ ११ । बोअज़् ने उसे उत्तर दिया जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपनी सास से किया है और तू किस रीति अपने माता पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिन को पहिले तू न जानती थी यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है ॥ १२ । यहोवा तेरी करनी का फल दे और इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस के पंखों तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे ॥ १३ । उस ने कहा हे मेरे प्रभु तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे क्योंकि यद्यपि मैं तेरी दासियों में से किसी के भी बराबर नहीं हूं तौभी तू ने अपनी दासी के मन में पैठनेहारी बातें कहकर मुझे शान्ति दिई है ॥ १४ । फिर खाने के समय बोअज़् ने उस से कहा यहीं आकर रोटी खा और अपना कौर सिरके में बोर । सो वह लवनेहारों के पास बैठ गई और उस ने उस को भुनी हुई बालें दिईं और वह खाकर तृप्त हुई बरन कुछ बचा भी रक्खा ॥ १५ । जब वह बीनने को उठी तब बोअज़् ने अपने जवानों को आज्ञा दिई कि उस को पूलों के बीच बीच में भी बीनने दो और दोष मत लगाओ ॥ १६ । बरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ निकालकर गिरा भी दिया करो और उस के बीनने के लिये छोड़ दो और उसे घुड़को मत ॥ १७ । सो वह सांझ लों खेत में बीनती रही तब जो कुछ बीन चुकी उसे फटका और वह कोई एपा भर जौ निकला ॥ १८ । तब वह उसे उठाकर नगर में गई और उस की सास ने उस का बीना हुआ देखा और जो कुछ उस ने तृप्त होकर बचाया था उस को उस ने

(१) अर्थात् मनोहर । (२) अर्थात् दुखियारी । मूल में कड़वी । (३) मूल में. मुझ से बहुत कड़वा व्यवहार किया । (४) मूल में जिस खेत के भाग में ।

तृप्त होकर बचाया था उस को उस ने निकालकर अपनी सास को दिया ॥ १९ । उस की सास ने उस से पूछा आज तू कहां बीनती और कहां काम करती थी धन्य वह हो जिस ने तेरी सुधि लिई है तब उस ने अपनी सास को बता दिया कि मैं ने किस के पास काम किया और कहा कि जिस पुरुष के पास मैं ने आज काम किया उस का नाम बोअज् है ॥ २० । नाओमी ने अपनी बहू से कहा वह यहोवा की ओर से आशीष पाए क्योंकि उस ने न तो जीते हुओं पर से और न मरे हुओं पर से अपनी करुणा हटाई फिर नाओमी ने उस से कहा वह पुरुष तो हमारा एक कुटुंबी है बरन उन में से है जिन को हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है ॥ २१ । फिर रूत् मोआबिन बोली उस ने मुझ से यह भी कहा कि जब लों मेरे सेवक मेरी सारी कटनी न कर चुकें तब लों उन्हीं के संग संग लगी रह ॥ २२ । नाओमी ने अपनी बहू रूत् से कहा मेरी बेटी यह अच्छा भी है कि तू उसी की दासियों के साथ साथ जाया करे और वे तुझ से दूसरे के खेत में न मिलें ॥ २३ । सो रूत् जौ और गेहूं दोनों की कटनी के अन्त लों बीनने के लिये बोअज् की दासियों के साथ साथ लगी रही और अपनी सास के यहां रहती थी ॥

३. उस की सास नाओमी ने उस से कहा हे मेरी बेटी क्या मैं तेरे लिये ठांव न ढूंढूं कि तेरा भला हो ॥ २ । अब जिस की दासियों के पास तू थी क्या वह बोअज् हमारा कुटुम्बी नहीं है वह तो आज रात को खलिहान में जौ ओसावेगा ॥ ३ । सो तू स्नान कर तेल लगा वस्त्र पहिनकर खलिहान को जा पर जब लों वह पुरुष खा पी न चुके तब लों अपने को उस पर प्रगट न करना ॥ ४ । और जब वह लेट जाए तब तू उस के लेटने के स्थान को देख लेना फिर भीतर जा उस के पांव उघारके लेट जाना तब वही तुझे बतलाएगा कि तुझे क्या करना चाहिये ॥ ५ । उस ने उस से कहा जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूंगी ॥ ६ । सो वह खलिहान को गई और अपनी सास की आज्ञा के अनुसार ही किया ॥ ७ । जब बोअज् खा पी चुका और उस का मन आनन्दित हुआ तब जाकर राशि के एक सिरे पर लेट गया सो वह चुपचाप गई और उस के पांव उघारके लेट गई ॥ ८ । आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा और आगे की ओर झुककर क्या पाया कि मेरे पांवों के पास कोई स्त्री लेटी है ॥ ९ । उस ने पूछा तू कौन है तब वह बोली मैं तो तेरी दासी रूत् हूं सो तू अपनी दासी को अपनी चद्दर ओढ़ा दे क्योंकि तू हमारी भूमि छुड़ानेहारा कुटुंबी है ॥ १० । उस ने कहा हे बेटी यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष हो क्योंकि तू ने अपनी पिछली प्रीति पहिली से अधिक दिखाई कैसे कि तू क्या धनी क्या कंगाल किसी जवान के पीछे नहीं लगी ॥ ११ । सो अब हे मेरी बेटी मत डर जो कुछ तू कहे सो मैं तुझ से करूंगा क्योंकि मेरे नगर के सब लोग[1] जानते हैं कि तू भली स्त्री है ॥ १२ । और अब सच तो है कि मैं छुड़ानेहारा कुटुंबी हूं तौभी एक और है जिसे मुझ से पहिले ही छुड़ाने का अधिकार है ॥ १३ । सो रात भर ठहरी रह और सबेरे यदि वह तेरे लिये छुड़ानेहारे का काम करना चाहे तो अच्छा वही ऐसा करे पर यदि वह तेरे लिये छुड़ानेहारे का काम करने को प्रसन्न न हो तो यहोवा के जीवन की सोंह मैं ही वह काम करूंगा भोर लों लेटी रह ॥ १४ । सो वह उस के पांवों के पास भोर लों लेटी रही और उस से पहिले कि कोई दूसरे को चीन्ह सके वह उठी और बोअज् ने कहा कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई थी ॥ १५ । तब बोअज् ने कहा जो चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर थांभ ले और जब उस ने उसे थांभा तब उस ने छः नपुए जौ नापकर उस को उठा दिया फिर वह नगर में चला गया ॥ १६ । जब रूत् अपनी सास के पास आई तब उस ने पूछा हे बेटी क्या हुआ[2] तब जो कुछ उस पुरुष ने उस

(१) मूल में मेरे लोगों का सारा फाटक ।
(२) मूल में, तू कौन है ।

से किया था वह सब उस ने उसे कह सुनाया ॥ १७। फिर उस ने कहा यह छः नपुए जौ उस ने यह कहकर मुझे दिया कि अपनी सास के पास छूछे हाथ मत जा ॥ १८। उस ने कहा हे मेरी बेटी जब लों तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा तब लों चुपचाप बैठी रह क्योंकि आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाये कल न पड़ेगी ॥

४. तब बोअज़् फाटक के पास जाकर बैठ गया और जिस छुड़ानेहारे कुटुम्बी की चर्चा बोअज़् ने किई थी वह भी आ गया सो बोअज़् ने कहा हे फुलाने इधर आकर यहीं बैठ जा सो वह उधर जाकर बैठ गया ॥ २। तब उस ने नगर के दस पुरनियों को बुलाकर कहा यहीं बैठ जाओ सो वे बैठ गये ॥ ३। तब वह उस छुड़ानेहारे कुटुम्बी से कहने लगा नाओमी जो मोआब् देश से लौट आई है वह हमारे भाई एलीमेलेक् की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है ॥ ४। सो मैं ने सोचा कि यह बात तुझ को जताकर कहूंगा कि तू उस को इन बैठे हुओं के साम्हने और मेरे लोगों के इन पुरनियों के साम्हने मोल ले सो यदि तू उस को छुड़ाना चाहे तो छुड़ा और यदि तू छुड़ाना न चाहे तो मुझे ऐसा ही बता दे कि मैं समझ लूं क्योंकि तुझे छोड़ उस के छुड़ाने का हक और किसी का नहीं है और तेरे पीछे मैं हूं उस ने कहा मैं उसे छुड़ाऊंगा ॥ ५। फिर बोअज़् ने कहा जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले तब उसे रूत् मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा कि मरे हुए का नाम उस के भाग में स्थिर कर दे ॥ ६। उस छुड़ानेहारे कुटुंबी ने कहा मैं उस को छुड़ा नहीं सकता न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए सो मेरा छुड़ाने का हक तू ले ले क्योंकि मुझ से वह छुड़ाया नहीं जाता ॥ ७। अगले दिनों इस्राएल् में छुड़ाने और बदलने के विषय सब पक्का करने के लिये यह व्यवहार था कि मनुष्य अपनी जूती उतारके दूसरे को देता था। इस्राएल् में गवाही इस रीति होती थी ॥ ८। सो उस छुड़ानेहारे कुटुंबी ने बोअज़् से यह कहकर कि तू उसे मोल ले अपनी जूती उतारी ॥ ९। सो बोअज़् ने पुरनियों और सब लोगों से कहा तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक् का और जो कुछ किल्योन् और महलोन् का था वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूं ॥ १०। फिर महलोन् की स्त्री रूत् मोआबिन को भी मैं अपनी स्त्री करने के लिये इस मनसा से मोल लेता हूं कि मरे हुए का नाम उस के निज भाग पर स्थिर करूं न हो कि मरे हुए का नाम उस के भाइयों में से और उस के स्थान के फाटक से मिट जाए तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो ॥ ११। तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्हों ने और पुरनियों ने कहा हम साक्षी हैं यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उस को यहोवा इस्राएल् के घराने की दो उपजानेहारी[1] राहेल् और लेआ के समान करे और तू एप्राता में वीरता करे और बेत्लेहेम् में तेरा बड़ा नाम हो ॥ १२। और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे उस के कारण से तेरा घराना पेरेस् का सा हो जाए जिस को तामार् यहूदा का जन्माया जनी ॥ १३। तब बोअज़् ने रूत् को ब्याह लिया और वह उस की स्त्री हो गई और जब उस ने उस से प्रसंग किया तब यहोवा की दया से उस को गर्भ रहा और वह बेटा जनी ॥ १४। सो स्त्रियों ने नाओमी से कहा यहोवा धन्य है कि जिस ने तुझे आज छुड़ानेहारे कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा इस्राएल् में इस का बड़ा नाम हो ॥ १५। और यह तेरे जी में जी ले आनेहारा और तेरा बुढ़ापे में पालनेहारा हो क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा है ॥ १६। फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोद में रखकर उस की धाई का काम करने लगी ॥ १७। और उस की पड़ोसिनों

(१) मूल में घर की बनानेहारी।

ने यह कहकर कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है लड़के का नाम ओबेद् रक्खा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ॥

१८। पेरेस् की यह वंशावली है अर्थात् पेरेस् ने हेस्रोन् को, १९। और हेस्रोन् ने राम् को और राम् ने अम्मीनादाब् को, २०। और अम्मीनादाब् ने नहशोन् को और नहशोन् ने सल्मोन् को, २१। और सल्मोन् ने बोअज् को और बोअज् ने ओबेद् को, २२। और ओबेद् ने यिशै को और यिशै ने दाऊद को जन्माया॥

शमूएल् नाम पहिली पुस्तक।

(शमूएल् के जन्म और लड़कपन का वर्णन)

१. **एप्रैम्** के पहाड़ी देश के रामातैम्-सोपीम् नाम नगर का निवासी एल्काना नाम एक पुरुष था वह एप्रैमी था और सूप् के पुत्र तोहू का परपोता एलीहू का पोता और यरोहाम् का पुत्र था॥ २। और उस के दो स्त्रियां थीं एक का तो नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था और पनिन्ना के तो बालक हुए पर हन्ना के कोई बालक न हुआ॥ ३। वह पुरुष बरस बरस अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था और वहां होप्नी और पीनहास् नाम एली के दोनों पुत्र रहते थे जो यहोवा के याजक थे॥ ४। और जब जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब तब वह अपनी स्त्री पनिन्ना को और उस के सब बेटों बेटियों को दान दिया करता था। ५। पर हन्ना को वह दूना दान दिया करता था क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था तौभी यहोवा ने उस की कोख बन्द कर रक्खी थी॥ ६। पर उस की सौत इस कारण से कि यहोवा ने उस की कोख बन्द कर रक्खी थी उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती थी॥ ७। और वह तो बरस बरस ऐसा ही करता था और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिन्ना उस को चिढ़ाती थी। सो वह रोई और खाना न खाया॥ ८। सो उस के पति एल्काना ने उस से कहा हे हन्ना तू क्यों रोती है और खाना क्यों नहीं खाती और तेरा मन क्यों उदास है क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूं॥ ९। तब शीलो में खाने और पीने के पीछे हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था॥ १०। और यह मन में व्याकुल[1] होकर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलक बिलक रोने लगी॥ ११। और उस ने यह मन्नत मानी कि हे सेनाओं के यहोवा यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे और मेरी सुधि ले और अपनी दासी को भूल न जाए और अपनी दासी को पुत्र दे तो मैं उसे उस के जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूंगी और उस के सिर पर छुरा फिरने न पाएगा॥ १२। जब वह यहोवा के साम्हने ऐसी प्रार्थना कर रही थी तब एली उस के मुंह की ओर ताक रहा था॥ १३। हन्ना मन ही मन कह रही थी उस के होंठ तो हिलते थे पर उस का शब्द न सुन पड़ता था इस लिये एली ने समझा कि वह नशे में है॥ १४। सो एली ने उस से कहा तू कब लों नशे में रहेगी अपना नशा उतार[2]॥ १५। हन्ना ने कहा नहीं हे मेरे प्रभु मैं तो दुःखिन हूं मैं ने न तो दाखमधु पिया

(१) मूल में कड़वी। (२) मूल में अपना दाखमधु अपने पर से दूर कर।

न मदिरा मैं ने अपने मन की बात खोलकर यहोवा से कही है[1] ॥ १६ । अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान जो कुछ मैं ने अब लों कहा है सो बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाई जाने के कारण कहा है ॥ १७ । एली ने कहा कुशल से चली जा इस्राएल् का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे ॥ १८ । उस ने कहा तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया और उस का मुंह फिर उदास न रहा ॥ १९ । बिहान को वे सबेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामा में अपने घर लौट गये और एल्काना ने अपनी स्त्री हन्ना से प्रसंग किया और यहोवा ने उस की सुधि लिई ॥ २० । सो हन्ना गर्भवती होकर समय पर पुत्र जनी और यों कहकर कि मैं ने इसे यहोवा से मांगा है उस का नाम शमूएल्[2] रक्खा ॥ २१ । फिर एल्काना अपने सारे घराने समेत यहोवा के साम्हने बरस बरस की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्नत पूरी करने के लिये गया ॥ २२ । पर हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई[3] कि जब बालक का दूध छूट जाए तब मैं उस को ले जाऊंगी कि वह यहोवा को मुंह दिखाए और वहां सदा रहे ॥ २३ । उस के पति एल्काना ने उस से कहा जो तुझे भला लगे वही कर जब लों तू उस का दूध न छुड़ाए तब लों यहीं ठहरी रह इतना हो कि यहोवा अपना वचन पूरा करे । सो वह स्त्री वहीं रही और अपने पुत्र के दूध छूटने के समय लों उस को पिलाती रही ॥ २४ । जब उस ने उस का दूध छुड़ाया तब वह उस को संग ले चली और तीन बछड़े और एपा भर आटा और कुप्पी भर दाखमधु भी ले गई और उस को शीलो में यहोवा के भवन में पहुंचा दिया उस समय वह लड़का ही था ॥ २५ । और उन्हों ने बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास हाज़िर कर दिया ॥ २६ । तब हन्ना ने कहा हे मेरे प्रभु तेरे जीवन की सोंह हे मेरे प्रभु मैं वही स्त्री हूं जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना करती थी ॥ २७ । यह वही बालक है जिस के लिये मैं ने प्रार्थना किई थी और यहोवा ने मुझे मुंह मांगा वर दिया है ॥ २८ । सो मैं भी इसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं[1] कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे[2] । तब एल्काना ने वहीं यहोवा को दण्डवत् किया ॥

(१) मूल में मैं ने अपना जीव यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया । (२) अर्थात, ईश्वर का सुना हुआ । (३) मूल में, न चढ़ गई ।

२. और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा
मेरा मन यहोवा के कारण हुलसता है
मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा हुआ है
मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया
क्योंकि मैं तेरे किये हुए उद्धार से आनन्दित हूं ॥
२ । यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं
क्योंकि तुझ को छोड़ कोई है ही नहीं
और हमारे परमेश्वर के समान कोई चटान नहीं है ॥
३ । फूलकर अहंकार की और बातें मत करो
अन्धेर की बातें तुम्हारे मुंह से न निकलें
क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है
और उस के काम ठीक होते हैं[3] ॥
४ । शूरबीरों के धनुष टूट गये
और ठोकर खानेवालों की कटि में बल का फेंटा कसा गया ॥
५ । जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिये मज़ूरी करनी पड़ी
जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे
वरन जो बांझ थी वह सात जनी
और अनेक बालकों की माता सूख गई ॥
६ । यहोवा मारता और जिलाता भी है
अधोलोक में उतारता और उस से निकालता है[4] ॥

(१) मूल में मैं ने इसे यहोवा का मांगा हुआ मान लिया ।
(२) मूल में यहोवा ही का मांगा हुआ ठहरे ।
(३) वा काम उस से तौले जाते हैं ।
(४) मूल में और उस ने चढ़ाया ।

७। यहोवा निर्धन करता है और धनी भी करता है
नीचा करता और ऊंचा भी करता है ॥
८। वह कङ्गाल को धूलि में से उठाता
और दरिद्र को घूरे पर से ऊंचा करता है
कि उन को रईसों के संग बिठाए
और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी करे
क्योंकि पृथिवी के खंभे यहोवा के हैं
और उस ने उन पर जगत को धरा है ॥
९। वह अपने भक्तों के पांवों को संभाले रहेगा
पर दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे
क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा ॥
१०। यहोवा से झगड़नेहारे चकनाचूर होंगे
वह उन के विरुद्ध आकाश में बादल गरजाएगा
यहोवा पृथिवी की छोर तक न्याय करेगा
और अपने राजा को बल देगा
और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊंचा करेगा ॥

११। तब एल्काना रामा को अपने घर चला गया और वह बालक एली याजक के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करने लगा ॥

१२। एली के पुत्र तो ओछे थे वे यहोवा को न जानते थे ॥ १३। और याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता तब याजक का सेवक मांस सिझाने के समय एक त्रिशूली कांटा हाथ में लिये हुए आकर, १४। उसे कड़ाही वा हांडी वा हंडे वा तसले के भीतर डालता था और जितना मांस कांटे में लग आता था उतना याजक आप लेता था। यों ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया करते थे जो वहां आते थे ॥ १५। और चर्बी जलाने से पहिले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेहारे से कहता था कि भूनने के लिये याजक को मांस दे वह तुझ से सिझाया हुआ नहीं कच्चा ही मांस लेगा ॥ १६। और जब कोई उस से कहता कि निश्चय चर्बी अभी जलाई जाएगी तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना तब वह कहता था नहीं अभी दे नहीं तो मैं छीन लूंगा ॥ १७। सो उन जवानों का पाप यहोवा के लेखे बहुत भारी हुआ क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे ॥

१८। शमूएल् जो बालक था सनी का एपोद् पहिने हुए यहोवा के साम्हने सेवा टहल किया करता था ॥ १९। और उस की माता बरस बरस उस के लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग बरस बरस की मेलबलि चढ़ाने आती तब बागे को उस के पास लाया करती थी ॥ २०। और एली ने एल्काना और उस की स्त्री को आशीर्वाद देकर कहा यहोवा इस अर्पण किये हुए बालक की सन्ती जो उस को अर्पण किया गया है[1] तुझ को इस स्त्री से वंश दे। तब वे अपने यहां चले गये ॥ २१। और यहोवा ने हन्ना की सुधि लिई और वह गर्भवती हो होकर तीन बेटे और दो बेटी जनी। और शमूएल् बालक यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया ॥

२२। एली तो अति बूढ़ा हो गया था और उस ने सुना कि मेरे पुत्र सारे इस्राएल् से कैसा कैसा व्यवहार करते हैं वरन मिलापवाले तंबू के द्वार पर सेवा करनेहारी स्त्रियों के संग कुकर्म भी करते हैं ॥ २३। तब उस ने उन से कहा तुम ऐसे ऐसे काम क्यों करते हो मैं तो इन सारे लोगों से तुम्हारे कुकर्मों की चर्चा सुना करता हूं ॥ २४। हे मेरे बेटो ऐसा न करो क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध कराते हो ॥ २५। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे तब तो परमेश्वर[2] उस का न्याय करेगा पर यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा। तौभी उन्हों ने अपने पिता की बात न मानी क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी ॥ २६। पर शमूएल् बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उस से प्रसन्न रहते थे ॥

---

(१) मूल में इस मांगी हुई वस्तु की सन्ती जो इस के निमित्त मांगी गई है। (२) वा न्यायी।

२७। और परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उस से कहने लगा यहोवा यों कहता है कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वश में था तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ था॥ २८। और मैं ने उसे इस्राएल् के सारे गोत्रों में से इस लिये चुन लिया था कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे चढ़ाए और धूप जलाए और मेरे साम्हने एपोद् पहिना करे और मैं ने तेरे मूलपुरुष के घराने को इस्राएलियों के सारे हव्य दिये थे॥ २९। सो मेरे मेलबलि और अन्नबलि जिन के मैं ने अपने धाम में चढ़ने की आज्ञा दिई है उन्हें तुम लोग क्यों पांव तले रौंदते हो और तू क्यों अपने पुत्रों का आदर मेरे आदर से अधिक करता है कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंटें खा खाके मोटे हो गये हो॥ ३०। इस लिये इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने कहा तो था कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे साम्हने सदा लों चला करेगा पर अब यहोवा की वाणी यह है कि यह बात मुझ से दूर हो क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उन का आदर करूंगा और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएंगे॥ ३१। सुन वे दिन आते हैं कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूंगा कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा न रहेगा॥ ३२। इस्राएल् का कितना ही कल्याण क्यों न हो तौभी तुझे मेरे धाम का दुःख देख पड़ेगा और तेरे घराने में कोई बूढ़ा कभी न होगा॥ ३३। मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीनूंगा पर तौभी तेरी आंखें रह जाएंगी और तेरा मन शोकित होगा और जितने मनुष्य तेरे घर में उत्पन्न होंगे वे सब जवानी ही में मरेंगे॥ ३४। और मेरी इस बात का चिन्ह यह विपत्ति होगी जो होप्नी और पीनहास् नाम तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मरेंगे॥ ३५। और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊंगा जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा और मैं उस का घर बसाऊंगा और स्थिर करूंगा[१] और वह मेरे अभिषिक्त के साम्हने सब दिन चला फिरा करेगा॥ ३६। और जो कोई तेरे घराने में बच रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चान्दी के वा एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा याजक के किसी काम में मुझे लगा कि मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले॥

३. और वह बालक शमूएल् एली के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता था और उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था दर्शन कम मिलता था॥ २। एली की आंखें तो धुंधली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था। उस समय जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था, ३। और परमेश्वर का दीपक बुझा न था और शमूएल् यहोवा के मन्दिर में जहां परमेश्वर का संदूक था लेटा था, ४। तब यहोवा ने शमूएल् को पुकारा और उस ने कहा क्या आज्ञा॥ ५। तब उस ने एली के पास दौड़कर कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा वह बोला मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह सो वह जाकर लेट गया॥ ६। तब यहोवा ने फिर पुकारके कहा हे शमूएल्। सो शमूएल् उठकर एली के पास गया और कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा है उस ने कहा हे मेरे बेटे मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह॥ ७। उस समय लों तो शमूएल् यहोवा को पहचानता न था और यहोवा का वचन उस पर प्रगट न हुआ था॥ ८। फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल् को पुकारा और वह उठके एली के पास गया और कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा होगा॥ ९। सो एली ने शमूएल् से कहा जा लेट रह और यदि वह तुझे फिर पुकारे तो कहना कि हे यहोवा कह क्योंकि तेरा दास सुनता है। सो शमूएल् अपने स्थान पर जाकर लेट गया॥ १०। तब यहोवा आ खड़ा हुआ और पहिले की नाईं शमूएल् शमूएल्

(१) मूल में मैं उस के लिये एक स्थिर घर बनाऊंगा।

ऐसा पुकारा शमूएल् ने कहा कह क्योंकि तेरा दास सुनता है ॥ ११ । यहोवा ने शमूएल् से कहा सुन मैं इस्राएल् में एक ऐसा काम करने पर हूं जिस के सारे सुननेहारे बड़े सन्नाटे में आ जाएंगे¹ ॥ १२ । उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब पूरा करूंगा जो मैं ने उस के घराने के विषय में कहा है मैं आरंभ करूंगा और अन्त भी कर दूंगा ॥ १३ । मैं तो उस को यह कहकर जता चुका हूं कि मैं उस अधर्म्म का दण्ड जिसे तू जानता है तेरे घराने को सदा देता रहूंगा क्योंकि तेरे पुत्र आप स्रापित हुए हैं और तू ने उन्हें नहीं रोका ॥ १४ । इस कारण मैं ने एली के घराने के विषय यह किरिया खाई कि एली के घराने के अधर्म्म का प्रायश्चित्त न तो मेलबलि से कभी होगा न अन्नबलि से ॥ १५ । तब शमूएल् भोर लों लेटा रहा और यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला । पर शमूएल् एली को उस दर्शन की बातें बताने से डरता था ॥ १६ । सो एली ने शमूएल् को पुकार कर कहा हे मेरे बेटे शमूएल् वह बोला क्या आज्ञा ॥ १७ । उस ने कहा वह कौन सी बात है जो उस ने तुझ से कही उसे मुझ से न छिपा जो कुछ उस ने तुझ से कहा हो यदि तू उस में से कुछ भी मुझ से छिपाए तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे ॥ १८ । सो शमूएल् ने उस को सारी बातें कह सुनाईं और कुछ न छिपा रक्खा । वह बोला वह तो यहोवा है जो कुछ वह भला जाने वही करे ॥ १९ । फिर शमूएल् बड़ा होता गया और यहोवा उस के संग रहा और उस की कोई बात निष्फल होने² न दिई ॥ २० । सो दान् से ले बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल् यहोवा का नबी होने के लिये ठहरा है ॥ २१ । और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया अर्थात् यहोवा ने अपने को शीलो में शमूएल् पर प्रगट करके यहोवा का वचन सुनाया ।

(पवित्र सन्दूक की बन्धुआई और लौटाया जाना.)

४. और शमूएल् का वचन सारे इस्राएल् के पास पहुंचा । और इस्राएली पलिश्तियों से लड़ने को निकले और उन्हों ने तो एबेनेजेर् के पास छावनी डाली और पलिश्तियों ने अपेक् में छावनी डाली ॥ २ । तब पलिश्तियों ने इस्राएल् के विरुद्ध पांति बांधी और जब लड़ाई बढ़ गई तब इस्राएल पलिश्तियों से हार गया और उन्हों ने कोई चार हजार इस्राएली-सेना के पुरुषों को खेत ही पर मार डाला ॥ ३ । सो जब वे लोग छावनी में आये तब इस्राएल् के पुरनिये कहने लगे यहोवा ने आज हमें पलिश्तियों से क्यों हरवा दिया है आओ हम यहोवा की वाचा का संदूक शीलो से मंगा ले आएं कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए ॥ ४ । सो लोगों ने शीलो में भेजकर वहां से करूबों के ऊपर विराजनेहारे सेनाओं के यहोवा की वाचा का संदूक मंगा लिया । और परमेश्वर की वाचा के संदूक के साथ एली के दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास् भी वहां थे ॥ ५ । जब यहोवा की वाचा का संदूक छावनी में पहुंचा तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे कि भूमि गूंज उठी ॥ ६ । इस ललकार का शब्द सुनकर पलिश्तियों ने पूछा इब्रियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण होगा । तब उन्हों ने जान लिया कि यहोवा का संदूक छावनी में आया है ॥ ७ । तब पलिश्ती डरकर कहने लगे उस छावनी में परमेश्वर आ गया है फिर उन्हों ने कहा हाय हम पर ऐसी बात पहिले न हुई थी ॥ ८ । हाय हम पर ऐसे प्रतापी देवताओं के हाथ से हम को कौन बचाएगा ये तो वे ही देवता हैं जिन्हों ने मिस्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियां डाली थीं ॥ ९ । हे पलिश्तियो हियाव बांधो और पुरुषार्थ करो न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन रहे हैं वैसे तुम उन के अधीन हो जाओ पुरुषार्थ करके लड़ो ॥ १० । सो पलिश्ती लड़े और इस्राएली हारके अपने अपने डेरे को भागे और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ कि तीस

(१) मूल में उस के दोनों कान सनसनाएंगे ।
(२) मूल में भूमि पर गिरने ।

हज़ार इस्राएली पैदल खेत रहे ॥ ११ । और परमेश्वर का संदूक ले लिया गया और एली के दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास् भी मारे गये ॥ १२ । तब एक बिन्यामीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर उसी दिन कपड़े फाड़े सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो में पहुंचा ॥ १३ । उस के आते समय एली जिस का मन परमेश्वर के संदूक की चिन्ता से थरथरा रहा था सो मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा था और ज्योंहीं उस मनुष्य ने नगर में पहुंचकर वह समाचार दिया त्योंहीं सारा नगर चिल्ला उठा ॥ १४ । यह चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा ऐसे हुल्लड़ मचने का क्या कारण है सो वह मनुष्य झट आकर एली को बताने लगा ॥ १५ । एली तो अट्ठानवे बरस का था और उस की आंखें धुन्धली पड़ गई थीं और उसे कुछ सूझता न था ॥ १६ । उस मनुष्य ने एली से कहा मैं वही हूं जो सेना से आया हूं और मैं सेना से आज भाग आया वह बोला हे मेरे बेटे क्या समाचार है ॥ १७ । उस समाचार देनेहारे ने उत्तर दिया कि इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भाग गये हैं और लोगों का बड़ा संहार भी हुआ और तेरे दो पुत्र होप्नी और पीनहास् मारे गये और परमेश्वर का संदूक भी छीन लिया गया है ॥ १८ । ज्योंहीं उस ने परमेश्वर के संदूक का नाम लिया त्योंहीं एली फाटक के पास कुरसी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा और बूढ़े और भारी होने के कारण उस की गर्दन टूट गई और वह मर गया । उस ने तो इस्राएलियों का न्याय चालीस बरस किया था ॥ १९ । उस की बहू पीनहास् की स्त्री गर्भवती और जनने पर थी सो जब उस ने परमेश्वर के संदूक के छीन लिये जाने और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना तब उस को पीड़ें उठीं और वह दुहर गई और जनी ॥ २० । उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस के आस पास खड़ी थीं उस से कहा मत डर क्योंकि तू पुत्र जनी है पर उस ने कुछ उत्तर न दिया और न कुछ सुरत लगाई ॥ २१ । और परमेश्वर के संदूक के छीन लिये जाने और अपने ससुर और पति के कारण उस ने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद्[1] रक्खा कि इस्राएल् में से महिमा उठ गई ॥ २२ । फिर उस ने कहा इस्राएल् में से महिमा उठ गई है क्योंकि परमेश्वर का संदूक छीन लिया गया है ॥

५. और पलिश्तियों ने परमेश्वर का संदूक एबेनेजेर् से उठाकर अश्दोद् में पहुंचा दिया ॥ २ । फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के संदूक को उठाकर दागोन् के मन्दिर में पहुंचाकर दागोन् के पास धर दिया ॥ ३ । बिहान को अश्दोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा कि दागोन् यहोवा के संदूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है सो उन्हों ने दागोन् को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया ॥ ४ । फिर बिहान को जब वे तड़के उठे तब क्या देखा कि दागोन् यहोवा के संदूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है और दागोन् का सिर और दोनों हथेलियां डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं निदान दागोन् का केवल धड़ समूचा रह गया ॥ ५ । इस कारण आज के दिन लों भी दागोन् के पुजारी और जितने दागोन् के मन्दिर में जाते हैं वे अश्दोद् में दागोन् की डेवढ़ी पर पांव नहीं धरते ॥

६ । तब यहोवा का हाथ अश्दोदियों के ऊपर भारी पड़ा और वह उन्हें नाश करने लगा और उस ने अश्दोद् और उस के आस पास के लोगों के गिलटियां निकालीं ॥ ७ । यह हाल देखकर अश्दोद् के लोगों ने कहा इस्राएल् के देवता का संदूक हमारे साथ रहने न पाएगा क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन् पर कठोरता के साथ पड़ा है ॥ ८ । सो उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा और उन से पूछा हम इस्राएल् के देवता के संदूक से क्या करें वे बोले इस्राएल् के देवता का संदूक घुमाकर गत् नगर में पहुंचाया जाए सो उन्हों ने इस्राएल् के परमेश्वर के संदूक को घुमाकर गत् में

(१) अर्थात् महिमा जाती रही ।

पहुंचा दिया ॥ ९ । जब वे उस को घुमाकर वहां पहुंचे उस के पीछे यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध उठा और उस में अत्यन्त बड़ी हलचल मची और उस ने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा कि उन के गिलटियां निकलने लगीं ॥ १० । सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक्रोन् को भेजा और ज्योंहीं परमेश्वर का संदूक एक्रोन् में पहुंचा त्योंहीं एक्रोनी यह कहकर चिल्लाने लगे कि इस्राएल् के देवता का संदूक घुमाकर हमारे पास इस लिये पहुंचाया गया है कि हम और हमारे लोगों को मार डाले ॥ ११ । सो उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को एकट्ठा किया और उन से कहा इस्राएल् के देवता के संदूक को निकाल दो कि वह अपने स्थान पर लौट जाए और न हम को न हमारे लोगों को मार डाले । उस सारे नगर में तो मृत्यु के भय की हलचल मच रही थी और परमेश्वर का हाथ वहां बहुत भारी पड़ा था ॥ १२ । और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे सो नगर की चिल्लाहट आकाश लों पहुंची ॥

६. यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के देश मे सात महीने लों रहा ॥ २ । तब पलिश्तियों ने याजकों और भावी कहनेहारों को बुलाकर पूछा कि यहोवा के संदूक[1] से हम क्या करें हमें बताओ कि क्या प्रायश्चित्त देकर हम उसे उस के स्थान पर भेजें ॥ ३ । वे बोले यदि तुम इस्राएल् के देवता का संदूक वहां भेजो तो उसे वैसे ही न भेजना उस की हानि भरने के लिये अवश्य ही दोषबलि देना तब तुम चंगे हो जाओगे और यह प्रगट होगा कि उस का हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया ॥ ४ । उन्हों ने पूछा हम उस की हानि भरने के लिये कौन सा दोषबलि दें । वे बोले पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पांच गिलटियां और सोने के पांच चूहे, क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदारों पर एक ही विपत्ति हुई ॥ ५ । सो तुम अपनी गिलटियों और अपने देश के नाश करनेहारे चूहों की भी मूरतें बनाकर इस्राएल् के देवता की महिमा मानो क्या जाने वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले ॥ ६ । तुम अपने मन क्यों ऐसे हठीले करोगे जैसे मिस्रियों और फिरौन ने अपने मन हठीले कर दिये थे जब उस ने उन के बीच अपनी इच्छा पूरी किई तब क्या उन्हों ने उन को जाने न दिया और क्या वे चले न गये ॥ ७ । सो अब तुम एक नई गाड़ी और ऐसी दो दुधार गायें लो जो जूए तले न आई हों और उन गायों को उस गाड़ी में जोतकर उन के बच्चों को उन के पास से लेकर घर को लौटा दो ॥ ८ । तब यहोवा का संदूक लेकर गाड़ी पर धर दो और सोने की जो वस्तुएं तुम उस की हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे संदूक में धरके उस के पास में रख दो फिर उसे छोड़कर चली जाने दो ॥ ९ । तब देखते रहो और यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश् को चले तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की ओर से हुई और नहीं तो हम को निश्चय होगा कि यह मार हम पर उस की ओर से नहीं संयोग ही से हुई ॥ १० । सो उन मनुष्यों ने वैसा ही किया अर्थात् दो दुधार गायें लेकर उस गाड़ी में जोतीं और उन के बच्चों को घर में बन्द कर दिया, ११ । और यहोवा का संदूक और दूसरा संदूक और सोने के चूहे और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया ॥ १२ । तब गायों ने बेतशेमेश् का सीधा मार्ग लिया वे सड़क ही सड़क बम्बाती हुई चली गईं और न दहिने मुड़ीं न बायें और पलिश्तियों के सरदार उन के पीछे पीछे बेतशेमेश् के सिवाने लों गये ॥ १३ । और बेतशेमेश् के लोग तराई में गेहूं काट रहे थे और जब उन्हों ने आंखें उठाकर संदूक को देखा तब उस के देखने से आनन्दित हुए ॥ १४ । और गाड़ी यहोशू नाम एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहां ठहर गई जहां एक बड़ा पत्थर था तब उन्हों ने गाड़ी की लकड़ी को चीर गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया ॥ १५ । और लेवीयों ने यहोवा का

(१) मूल मे उन ।

संदूक उस संदूक समेत जो साथ था जिस में सोने की वस्तुएं थीं उतारके उस बड़े पत्थर पर धर दिया और बेत्शेमेश् के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाये॥ १६। यह देखकर पलिश्तियों के पांचों सरदार उसी दिन एक्रोन् को लौट गये॥

१७। जो सोने की गिलटियां पलिश्तियों ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि करके दे दिईं उन में से एक तो अश्दोद् की ओर से एक अज्जा एक अश्कलोन् एक गत् और एक एक्रोन् की ओर से दिई गईं॥ १८। और सोने के चूहे क्या शहरपनाहवाले नगर क्या बिना शहरपनाह के गांव बरन जिस बड़े पत्थर पर यहोवा का संदूक धरा गया पलिश्तियों के पांचों सरदारों के वहां तक के भी अधिकार की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिये गये। वह पत्थर तो आज लों बेत्शेमेशी यहोशू के खेत में है॥ १९। फिर इस कारण से कि बेत्शेमेश् के लोगों ने यहोवा के संदूक के भीतर देखा उस ने उन में से सत्तर मनुष्य और फिर पचास हजार मनुष्य मारे सो लोगों ने इस लिये विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था॥ २०। सो बेत्शेमेश् के लोग कहने लगे इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के साम्हने कौन खड़ा रह सकता है और वह हमारे पास से किस के पास चला जाए॥ २१। तब उन्हों ने किर्यत्यारीम् के निवासियों के पास यों कहने को दूत भेजे कि पलिश्तियों ने यहोवा का संदूक लौटा दिया है सो तुम आकर उसे अपने पास ले जाओ॥

७. १। सो किर्यत्यारीम् के लोगों ने जाकर यहोवा के संदूक को उठाया और अबीनादाब् के घर में जो टीले पर बना था रक्खा और यहोवा के संदूक की रक्षा करने के लिये अबीनादाब् के पुत्र एलाजार् को पवित्र किया॥

(शमूएल् नबी और न्यायी के कार्य)

२। किर्यत्यारीम् में रहते रहते संदूक को बहुत दिन हुए अर्थात् बीस बरस बीत गये और इस्राएल् का सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा॥ ३। तब शमूएल् ने इस्राएल् के सारे घराने से कहा यदि तुम अपने सारे मन से यहोवा की ओर फिरे हो तो बिराने देवताओं और अश्तोरेत् देवियों को अपने बीच से दूर करो और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो तब वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा॥ ४। सो इस्राएलियों ने बाल् देवताओं और अश्तोरेत् देवियों को दूर किया और केवल यहोवा की उपासना करने लगे॥

५। फिर शमूएल् ने कहा सब इस्राएलियों को मिस्पा में एकट्ठे करो और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूंगा॥ ६। सो वे मिस्पा में एकट्ठे हुए और जल भरके यहोवा के साम्हने उंडेल दिया और उस दिन उपवास करके वहां कहा कि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। और शमूएल् ने मिस्पा में इस्राएलियों का न्याय किया॥ ७। जब पलिश्तियों ने सुना कि इस्राएली मिस्पा में एकट्ठे हुए हैं तब उन के सरदारों ने इस्राएलियों पर चढ़ाई किई यह सुनकर इस्राएलियों ने पलिश्तियों से भय खाया॥ ८। और इस्राएलियों ने शमूएल् से कहा हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़ कि वह हम को पलिश्तियों के हाथ से बचाए॥ ९। सो शमूएल् ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले सर्वांग होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया और शमूएल् ने इस्राएलियों के लिये यहोवा की दोहाई दिई और यहोवा ने उस की सुन लिई॥ १०। शमूएल् होमबलि को चढ़ा रहा था कि पलिश्ती इस्राएलियों के संग लड़ने को निकट आ गये तब उसी दिन यहोवा ने पलिश्तियों के ऊपर बादल को बड़े जोर से गरजाकर उन्हें घबरा दिया सो वे इस्राएलियों से हार गये॥ ११। तब इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलिश्तियों को खदेड़ा और उन्हें बेत्कर् के नीचे लों मारते चले गये॥ १२। तब शमूएल् ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और शेन् के बीच में खड़ा किया और यह कहकर उस का नाम एबेनेजेर्[१] रक्खा कि यहां लों तो यहोवा ने हमारी सहायता किई है॥ १३। सो पलिश्ती दब

(१) अर्थात् सहायता का पत्थर।

गये और इस्राएलियों के देश में फिर न आये और शमूएल् के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियों के विरुद्ध बना रहा ॥ १४ । और एक्रोन् और गत् लों जितने नगर पलिश्तियों ने इस्राएलियों के हाथ से छीन लिये थे वे फिर इस्राएलियों के वश में आये और उन का देश भी इस्राएलियों ने पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाया । और इस्राएलियों और एमोरियों के बीच भी सन्धि हो गई ॥ १५ । और शमूएल् जीवन भर इस्राएलियों का न्याय करता रहा ॥ १६ । वह बरस बरस बेतेल् और गिल्गाल् और मिस्पा में घूम घूमकर उन सारे स्थानों में इस्राएलियों का न्याय करता था ॥ १७ । तब वह रामा में जहां उस का घर था लौट आता और वहां भी इस्राएलियों का न्याय करता था और वहां उस ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई ॥

(शाऊल् को राजपद मिलना)

८. जब शमूएल् बूढ़ा हुआ तब उस ने अपने पुत्रों को इस्राएलियों पर न्यायी ठहराया ॥ २ । उस के जेठे पुत्र का नाम योएल् और दूसरे का नाम अबिय्याह् था ये बेर्शेबा में न्याय करते थे ॥ ३ । पर उस के पुत्र उस की सी चाल न चले अर्थात् लालच में आकर[1] घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे ॥

४ । सो सब इस्राएली पुरनिये एकट्ठे होकर रामा में शमूएल् के पास जाकर, ५ । उस से कहने लगे सुन तू तो बूढ़ा हुआ और तेरे पुत्र तेरी सी चाल नहीं चलते अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे ऊपर राजा ठहरा दे ॥ ६ । जो बात उन्हों ने कही कि हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा ठहरा यह बात शमूएल् को बुरी लगी सो शमूएल् ने यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ७ । यहोवा ने शमूएल् से कहा वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे सुन ले क्योंकि उन्हों ने तुझ को नहीं मुझी को निकम्मा जाना कि मैं उन पर राज्य न करूं ॥ ८ । जैसे जैसे काम वे उस दिन से ले जब मैं ने उन्हें मिस्र से निकाला था आज के दिन लों करते आये हैं कि मुझ को त्यागकर पराये देवताओं की उपासना करते हैं वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं ॥ ९ । सो अब उन की बात मान पर उन्हें दृढ़ता से चिताकर उस राजा की चाल बतला दे जो उन पर राज्य करेगा ॥

१० । सो शमूएल् ने उन लोगों को जो उस से राजा चाहते थे यहोवा की सारी बातें कह सुनाईं ॥ ११ । और उस ने कहा जो राजा तुम पर राज्य करेगा उस की यह चाल होगी अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों के काम पर ठहराएगा और वे उस के रथों के आगे आगे दौड़ा करेंगे ॥ १२ । फिर वह हजार हजार और पचास पचास के प्रधान कर लेगा और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा और अपने खेत कटवाएगा और अपने युद्ध और रथों के हथियार बनवाएगा ॥ १३ । फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उन से सुगन्धद्रव्य और रसोई और रोटियां बनवाएगा ॥ १४ । फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जलपाई की बारियों में से जो अच्छी से अच्छी हों उन्हें ले लेकर अपने कर्मचारियों को देगा ॥ १५ । फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवां अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्मचारियों को देगा ॥ १६ । फिर वह तुम्हारे दास दासियों को और तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानों को और तुम्हारे गदहों को भी लेकर अपने काम में लगाएगा ॥ १७ । वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवां अंश लेगा निदान तुम लोग उस के दास बन जाओगे ॥ १८ । और उस समय तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण हाय हाय करोगे पर यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा ॥ १९ । तौभी उन लोगों ने शमूएल् की बात मानने से नाह करके कहा नहीं हम निश्चय अपने ऊपर राजा ठहरवाएंगे, २० । इस लिये कि हम भी और सब जातियों के समान हो जाएं और हमारा राजा हमारा न्याय करे और हमारे आगे आगे चलकर हमारी ओर से लड़ाई किया करे ॥ २१ । लोगों की ये सारी बातें सुनकर शमूएल् ने यहोवा के कान में कह सुनाईं ॥ २२ । यहोवा ने शमूएल्

(१) मूल में, लालच के पीछे मुड़के ।

से कहा उन की बात मानकर उन के लिये राजा ठहरा दे। सो शमूएल् ने इस्राएली मनुष्यों से कहा तुम अपने अपने नगर को चले जाओ॥

९. बिन्यामीन्

के गोत्र का कीश् नाम एक पुरुष था जो अपीह् के पुत्र बकोरत् का परपोता सरोर् का पोता और अबीएल् का पुत्र था। वह एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और बड़ा धनी पुरुष था॥ २। उस के शाऊल् नाम एक जवान पुत्र था जो सुन्दर था और इस्राएलियों में कोई उस से बढ़कर सुन्दर न था वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उस के कांधे ही लों होते थे॥ ३। जब शाऊल् के पिता कीश् की गदहियां खो गई तब कीश् ने अपने पुत्र शाऊल् से कहा एक सेवक को अपने साथ ले जाकर गदहियों को ढूंढ़ ला॥ ४। सो वह एप्रैम् के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया पर उन्हें न पाया तब वे शालीम् नाम देश भी होकर गये और वहां भी न पाया फिर बिन्यामीन् के देश में गये पर गदहिया न मिलीं॥ ५। जब वे सूप् नाम देश में आये तब शाऊल् ने अपने साथ के सेवक से कहा आ हम लौट चलें न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे॥ ६। उस ने उस से कहा सुन उस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिस का बड़ा आदरमान होता है और जो कुछ वह कहता वह हुए बिना नहीं रहता अब हम उधर चलें क्या जाने वह हम को हमारा मार्ग बताए कि किधर जाएं॥ ७। शाऊल् ने अपने सेवक से कहा सुन यदि हम उस पुरुष के पास चलें तो उस के लिये क्या ले चलें देख हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई और भेंट के योग्य कोई वस्तु नहीं जो हम परमेश्वर के उस जन को दें हमारे पास क्या है॥ ८। सेवक ने फिर शाऊल् से कहा कि मेरे पास तो एक शेकेल् चान्दी की चौथाई है वही मैं परमेश्वर के जन को दूंगा कि वह हम को बताए कि किधर जाएं॥ ९। अगले समय में तो इस्राएल् में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था कि चलो हम दर्शी के पास चलें क्योंकि जो आजकल नबी कहलाता है वह अगले समय दर्शी कहलाता था॥ १०। सो शाऊल् ने अपने सेवक से कहा तू ने भला कहा है हम चलें सो वे उस नगर को चले जहां परमेश्वर का जन था॥ ११। उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियां मिलीं जो पानी भरने को निकली थीं सो उन्हों ने उन से पूछा क्या दर्शी यहां है॥ १२। उन्हों ने उत्तर दिया कि है देखो वह तुम्हारे आगे है अब फुर्ती करो आज ऊंचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है इस लिये वह आज नगर में आया है॥ १३। ज्योंहीं तुम नगर में पहुंचो त्योंहीं वह तुम को ऊंचे स्थान पर खाने को जाने से पहिले मिलेगा क्योंकि जब लों वह न पहुंचे तब लों लोग भोजन न करेंगे इस लिये कि यज्ञ के विषय वही धन्यवाद करता उस के पीछे ही न्योतहरी भोजन करते हैं सो तुम अभी चढ़ जाओ इसी बेला वह तुम्हें मिलेगा॥ १४। सो वे नगर में चढ़ गये और ज्योंहीं नगर के भीतर पहुंच गये त्योंहीं शमूएल् ऊंचे स्थान पर चढ़ने की मनसा से उन के साम्हने आ रहा था॥

१५। शाऊल् के आने से एक दिन पहिले यहोवा ने शमूएल् को यह चिता रक्खा[1] था कि, १६। कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन् के देश से एक पुरुष को भेजूंगा उसी को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने को अभिषेक करना और वह मेरी प्रजा को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा क्योंकि मैं ने अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि किई है इस लिये कि उस की चिल्लाहट मेरे पास पहुंची है॥ १७। फिर जब शाऊल् शमूएल् को देख पड़ा तब यहोवा ने उस से कहा जिस पुरुष की चर्चा मैं ने तुझ से किई थी वह यही है मेरी प्रजा पर यही अधिकार जमाएगा॥ १८। तब शाऊल् फाटक में शमूएल् के निकट जाकर कहने लगा मुझे बता कि दर्शी का घर कहां है॥ १९। उस ने कहा दर्शी तो मैं हूं मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर

(१) मूल में, शमूएल् का कान खोला।

चढ़ जा आज मेरे साथ तुम्हारा भोजन होगा और बिहान को जो कुछ तेरे मन में हो उसे मैं तुझे बताकर बिदा करूंगा ॥ २० । और तेरी गदहियां जो तीन दिन हुए खो गई थीं उन की कुछ चिन्ता न कर क्योंकि वे मिल गई और इस्राएल् में जो कुछ मनभाऊ है वह किस का है क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है ॥ २१ । शाऊल् ने उत्तर देकर कहा क्या मैं बिन्यामीनी अर्थात् सब इस्राएली गोत्रों में से छोटे गोत्र का नहीं हूं और क्या मेरा कुल बिन्यामीन् के गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है सो तू मुझ से ऐसी बात क्यों कहता है ॥ २२ । तब शमूएल् ने शाऊल् और उस के सेवक को ले कोठरी में पहुंचाकर न्योतहरी जो कोई तीस जन थे उन की पांति के सिरे पर बैठा दिया ॥ २३ । फिर शमूएल् ने रसोइये से कहा जो टुकड़ा मैं ने तुझे देकर अपने पास रख छोड़ने को कहा था उसे ले आ ॥ २४ । सो रसोइये ने जांघ को मांस समेत उठाकर शाऊल् के आगे धर दिया तब शमूएल् ने कहा जो रक्खा गया था उसे देख और अपने साम्हने धरके खा क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय लों जिस की चर्चा करके मैं ने लोगों को न्योता दिया रक्खा हुआ है । सो शाऊल् ने उस दिन शमूएल् के साथ भोजन किया ॥ २५ । तब वे ऊंचे स्थान से उतरकर नगर में आये और उस ने घर की छत पर शाऊल् से बातें किई ॥ २६ । बिहान को वे तड़के उठे और पह फटते फटते शमूएल् ने शाऊल् को छत पर बुलाकर कहा उठ मैं तुझ को बिदा करूंगा सो शाऊल् उठा और वह और शमूएल् दोनों बाहर निकल गये ॥ २७ । नगर के सिरे की उतराई पर चलते चलते शमूएल् ने शाऊल् से कहा अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे (सो वह बढ़ गया) पर तू अभी ठहरा रह मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊंगा ॥

१०. १ । तब शमूएल् ने एक कुप्पी तेल लेकर उस के सिर पर उंडेला और उसे चूमकर कहा क्या इस का कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है ॥ २ । आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा तब राहेल् की कबर के पास जो बिन्यामीन् के देश के सिवाने पर सेल्सह् में है दो जन तुझे मिलेंगे और कहेंगे कि जिन गदहियों को तू ढूंढ़ने गया था वे मिली हैं और सुन तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुढ़ता हुआ कहता है कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूं ॥ ३ । फिर वहां से आगे बढ़कर जब तू ताबोर् के बांजवृक्ष के पास पहुंचेगा तब वहां तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल् को जाते हुए तुझे मिलेंगे जिन में से एक तो बकरी के तीन बच्चे और दूसरा तीन रोटी और तीसरा एक कुप्पा दाखमधु लिये हुए होगा ॥ ४ । और वे तेरा कुशल पूछेंगे और तुझे दो रोटी देंगे और तू उन्हें उन के हाथ से ले लेना ॥ ५ । इस के पीछे तू गिबा में पहुंचेगा जो परमेश्वर का कहावता है[१] जहां पलिश्तियों की चौकी है और जब तू वहां नगर में प्रवेश करे तब अपने आगे आगे सितार डफ बांसुली और बीणा बजवाते और नबूवत करते हुए नबियों का एक दल ऊंचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा ॥ ६ । तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा और तू उन के साथ होकर नबूवत करने लगेगा और बदलकर और ही मनुष्य हो जाएगा ॥ ७ । और जब ये चिन्ह तुझे देख पड़ेंगे तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उस में लग जाना क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा ॥ ८ । और तू मुझ से पहिले गिल्गाल् को जाना और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊंगा तू सात दिन लों मेरी बाट जोहते रहना तब मैं तेरे पास पहुंचकर तुझे बताऊंगा कि तुझ को क्या क्या करना है ॥ ९ । ज्योंही उस ने शमूएल् के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंही परमेश्वर ने उस का मन बदल दिया और वे सब चिन्ह उसी दिन हुए ॥

१० । जब वे गिबा[२] में पहुंच गये तब नबियों का एक दल उन को मिला और परमेश्वर का

(१) या तू परमेश्वर की पहाड़ी को पहुंचेगा ।
(२) या पहाड़ी ।

आत्मा उस पर बल से उतरा और वह उन के बीच नबूवत करने लगा ॥ ११ । जब उन सभों ने जो उसे पहिले से जानते थे यह देखा कि वह नबियों के बीच नबूवत कर रहा है तब आपस में कहने लगे कि कीश् के पुत्र को यह क्या हुआ क्या शाऊल् भी नबियों में का है ॥ १२ । वहां के एक मनुष्य ने उत्तर दिया भला उन का बाप कौन है इस पर यह कहावत चलने लगी कि क्या शाऊल् भी नबियों में का है ॥ १३ । जब यह नबूवत कर चुका तब ऊंचे स्थान पर गया ॥

१४ । तब शाऊल् के चचा ने उस से और उस के सेवक से पूछा कि तुम कहां गये थे उस ने कहा हम तो गदहियों को ढूंढ़ने गये थे और जब हम ने देखा कि वे कहीं नहीं मिलतीं तब शमूएल् के पास गये ॥ १५ । शाऊल् के चचा ने कहा मुझे बतला दे कि शमूएल् ने तुम से क्या कहा ॥ १६ । शाऊल् ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें निश्चय करके बतलाया कि गदहियां मिल गईं पर जो बात शमूएल् ने राज्य के विषय कही थी सो उस ने उस को न बताई ॥

१७ । तब शमूएल् ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास बुलवाया ॥ १८ । तब उस ने इस्राएलियों से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं तो इस्राएल् को मिस्र देश से निकाल लाया और तुम को मिस्रियों के हाथ से और उन सब राज्यों के हाथ से जो तुम पर अंधेर करते थे छुड़ाया है ॥ १९ । पर तुम ने आज अपने परमेश्वर को जो सारी विपत्तियों और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेहारा है तुच्छ जाना और उस से कहा है कि हम पर राजा ठहरा दे । सो अब तुम गोत्र गोत्र और हजार हजार करके यहोवा के साम्हने खड़े हो जाओ ॥ २० । तब शमूएल् सारे इस्राएली गोत्रियों को समीप लाया और चिट्ठी बिन्यामीन् के नाम पर निकली[१] ॥ २१ । तब वह बिन्यामीन् के गोत्र को कुल कुल करके समीप लाया और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली[१] फिर चिट्ठी कीश् के पुत्र शाऊल् के नाम पर निकली[२] और जब वह खोजा गया तब न मिला ॥ २२ । सो उन्हों ने फिर यहोवा से पूछा क्या यहां कोई और आनेहारा है यहोवा ने कहा हां सुनो वह सामान के बीच छिपा हुआ है ॥ २३ । तब वे दौड़कर उसे वहां से लाये और वह लोगों के बीच खड़ा हुआ और वह कांधे से सिर तक[३] सब लोगों से लंबा[४] था ॥ २४ । शमूएल् ने सब लोगों से कहा क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उस के बराबर नहीं तब सब लोग ललकारके बोल उठे राजा जीता रहे ॥

२५ । तब शमूएल् ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया । और शमूएल् ने सब लोगों को अपने अपने घर जाने को विदा किया ॥ २६ । और शाऊल् गिबा को अपने घर चला गया और उस के साथ एक दल भी गया जिन के मन को परमेश्वर ने उभारा था ॥ २७ । पर कई ओछे लोगों ने कहा यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा और उन्हों ने उस को तुच्छ जाना और उस के पास भेंट न लाये तौभी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा[५] ॥

(अम्मोनियों पर शाऊल् की जय)

११. **तब** अम्मोनी नाहाश् ने चढ़ाई करके गिलाद् के याबेश् के विरुद्ध छावनी डाली सो याबेश् के सब पुरुषों ने नाहाश् से कहा हम से वाचा बांध और हम तेरी अधीनता मान लेंगे ॥ २ । अम्मोनी नाहाश् ने उन से कहा मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बान्धूंगा कि मैं तुम सभों की दहिनी आंखें फोड़कर इसे सारे इस्राएल् की नामधराई का कारण कर दूं ॥ ३ । याबेश् के पुरनियों ने उस से कहा हमें सात दिन का अवकाश दे तब लों हम इस्राएल् के सारे देश

---

(१) मूल में बिन्यामीन् का गोत्र लिया गया ।

(१) मूल में मत्री का कुल लिया गया । (२) मूल में कीश् का पुत्र शाऊल् लिया गया । (३) मूल में ऊपर । (४) मूल में सब लोग उस के कांधे लों थे । (५) मूल में वह बहिरा सा हो गया ।

में दूत भेजेंगे और यदि हम को कोई बचानेहारा न मिले तो हम तेरे पास निकल आएंगे ॥ ४ । दूतों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह संदेश सुनाया और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे ॥ ५ । तब शाऊल् ढोर के पीछे पीछे मैदान से चला आया और शाऊल् ने पूछा लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं सो याबेश् के लोगों का संदेश उसे सुनाया गया, ६ । यह संदेश सुनते ही शाऊल् पर परमेश्वर का आत्मा बल से उतरा और उस का कोप बहुत भड़क उठा ॥ ७ । सो उस ने एक जोड़ी बैल लेकर टुकड़े टुकड़े काटे और यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल् के सारे देश में भेज दिये कि जो कोई आकर शाऊल् और शमूएल् के पीछे न हो ले उस के बैलों से यों ही किया जाएगा तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर[1] निकले ॥ ८ । तब उस ने उन्हें बेजेक् में गिन लिया और इस्राएलियों के तीन लाख और यिहूदियों के तीस हजार ठहरे ॥ ९ । और उन्हों ने उन दूतों से जो आये थे कहा तुम गिलाद् में के याबेश् के लोगों से यों कहो कि कल जिस समय घाम कड़ा होगा तब छुटकारा पाओगे सो दूतों ने जाकर याबेश् के लोगों को संदेश दिया और वे आनन्दित हुए ॥ १० । सो याबेश के लोगों ने कहा कल हम तुम्हारे पास निकल जाएंगे और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना ॥ ११ । दूसरे दिन शाऊल् ने लोगों के तीन दल किये और उन्हों ने रात के पिछले पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को मारा और घाम के कड़े होने के समय लों ऐसे मारते रहे कि जो बच निकले वे यहां लों तितर बितर हुए कि दो जन एक संग कहीं न रहे ॥ १२ । तब लोग शमूएल् से कहने लगे जिन मनुष्यों ने कहा था कि क्या शाऊल् हम पर राज्य करे उन को लाओ कि हम उन्हें मार डालें ॥ १३ । शाऊल् ने कहा आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा क्योंकि आज यहोवा ने इस्राएलियों को छुटकारा दिया है ॥

(१) मूल में एक पुरुष के समान।

(सभा में शमूएल् का उपदेश.)

१४ । तब शमूएल् ने इस्राएलियों से कहा आओ हम गिल्गाल् को चलें और वहां राज्य को नये सिरे से स्थापित करें ॥ १५ । सो सब लोग गिल्गाल् को चले और वहां उन्हों ने गिल्गाल् में यहोवा के साम्हने शाऊल् को राजा बनाया और वहीं उन्हों ने यहोवा को मेलबलि चढ़ाये और वहीं शाऊल् और सब इस्राएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द किया ॥

१२. तब शमूएल् ने सारे इस्राएलियों से कहा सुनो जो कुछ तुम ने मुझ से कहा था उसे मानकर मैं ने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है ॥ २ । और अब देखो वह राजा तुम्हारे साम्हने काम करता है[1] और मैं बूढ़ा हूं और मेरे बाल पक गये हैं और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं और मैं लड़कपन से लेकर आज लों तुम्हारे साम्हने काम करता[2] रहा हूं ॥ ३ । मैं हाजिर हूं तुम यहोवा के साम्हने और उस के अभिषिक्त के साम्हने मुझ पर साक्षी दो कि मैं ने किस का बैल ले लिया वा किस का गदहा ले लिया वा किस पर अंधेर किया वा किस को पीसा वा किस के हाथ से अपनी आंखें बन्द करने के लिये घूस लिया बताओ और मैं वह तुम को फेर दूंगा ॥ ४ । वे बोले तू ने न तो हम पर अंधेर किया न हमें पीसा और न किसी के हाथ से कुछ लिया है ॥ ५ । उस ने उन से कहा आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी और उस का अभिषिक्त इस बात का साक्षी है कि मेरे यहां कुछ नहीं निकला वे बोले हां वह साक्षी है ॥ ६ । फिर शमूएल् लोगों से कहने लगा जो मूसा और हारून् को ठहराकर तुम्हारे पितरों को मिस्र देश से निकाल लाया वह यहोवा है ॥ ७ । सो अब तुम खड़े रहो और मैं यहोवा के साम्हने उस के सारे धर्म्म के कामों के विषय जिन्हें उस ने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पितरों के साथ किया है तुम्हारे साथ विचार करूंगा ॥ ८ । याकूब मिस्र में गया और तुम्हारे पितरों ने यहोवा की

(१) मूल में तुम्हारे साम्हने चल फिर रहा है। (२) मूल में तुम्हारे साम्हने चलता फिरता।

दोहाई दिई तब यहोवा ने मूसा और हारून् को भेजा और उन्हों ने तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाला और इस स्थान में बसाया ॥ ९ । फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये तब उस ने हासोर् के सेनापति सीसरा और पलिश्तियों और मोआब् के राजा के अधीन कर दिया¹ और वे उन से लड़े ॥ १० । तब उन्हों ने यहोवा की दोहाई देकर कहा हम ने यहोवा को त्यागकर और बाल् देवताओं और अश्तोरेत् देवियों की उपासना करके पाप किया तो है पर अब तू हम को हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा तब हम तेरी उपासना करेंगे ॥ ११ । सो यहोवा ने यरुब्बाल् बदान् यिप्तह् और शमूएल् को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया और तुम निडर रहने लगे ॥ १२ । पर जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश् हम पर चढ़ाई करता है तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तौभी तुम ने मुझ से कहा नहीं हम पर एक राजा राज्य करेगा ॥ १३ । अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया और जिस के लिये तुम ने प्रार्थना किई थी देखो यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर कर दिया है ॥ १४ । यदि तुम यहोवा का भय मानते उस की उपासना करते और उस की बात सुनते रहो और यहोवा की आज्ञा टाल उस से बलवा न करो और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे पीछे चलनेहारे हो तब तो भला होगा ॥ १५ । पर यदि तुम यहोवा की बात न मानो और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा करो तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध होगा ॥ १६ । अब खड़े रहो और एक बड़ा काम देखो जो यहोवा तुम्हारी आंखों के साम्हने करने पर है ॥ १७ । आज क्या गेहूं की कटनी नहीं हो रही मैं यहोवा को पुकारूंगा और वह बादल गरजाएगा और मेंह बरसाएगा तब तुम जानोगे और देखोगे कि हम ने राजा मांगकर यहोवा के लेखे बहुत बुराई किई है ॥ १८ । सो शमूएल् ने यहोवा को पुकारा और यहोवा ने उसी दिन बादल गरजाया और मेंह बरसाया और सब लोग यहोवा से और शमूएल् से निपट डर गये ॥ १९ । सो सब लोगों ने शमूएल् से कहा अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर कि हम मर न जायें हम ने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई किई है कि राजा मांगा है ॥ २० । शमूएल् ने लोगों से कहा डरो मत तुम ने तो यह सारी बुराई किई है पर अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ो अपने सारे मन से उस को उपासना करो ॥ २१ । और मत मुड़ो नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलोगे जिन से न कुछ लाभ न कुछ छुटकारा हो सकता है क्योंकि वे व्यर्थ ही हैं ॥ २२ । यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न त्यागेगा क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है ॥ २३ । फिर यह मुझ से दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरूं मैं तो तुम्हें अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता रहूंगा ॥ २४ । इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो और सच्चाई से अपने सारे मन के साथ उस की उपासना करो और यह सोचो कि उस ने हमारे लिये कैसे बड़े बड़े काम किये हैं ॥ २५ । पर यदि तुम बुराई करते ही रहो तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे ॥

(शाऊल् राजा का पहिला अपराध और उस का फल)

१३. शाऊल्—

¹ बरस का होकर राज्य करने लगा और उस ने इस्राएलियों पर दो² बरस लों राज्य किया ॥ २ । और शाऊल् ने इस्राएलियों में से तीन हजार पुरुषों को चुन लिया और उन में से दो हजार शाऊल् के साथ मिक्माश् में और बेतेल् के

(१) मूल में के हाथ बेच डाला ।

(१) जान पड़ता है कि यहां कोई संख्या छूट गई है ।

(२) जान पड़ता है कि दो से अधिक कोई संख्या यहां छूट गई है यथा बत्तीस बयालीस इत्यादि ।

पहाड़ पर रहे और एक हजार योनातान् के साथ बिन्यामीन् के गिबा में रहे और दूसरे सब लोगों को उस ने अपने अपने डेरे जाने को बिदा किया ॥ ३। तब योनातान् ने पलिश्तियों की उस चौकी को जो गेबा में थी मार लिया और इस का समाचार पलिश्तियों के कान पड़ा तब शाऊल् ने सारे देश में नरसिंगा फुंकवाकर यह कहला भेजा कि इब्री लोग सुनें ॥ ४। और सब इस्राएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल् ने पलिश्तियों की चौकी को मारा है और यह भी कि पलिश्ती इस्राएल् से घिन करने लगे हैं सो लोग शाऊल् के पीछे चलकर गिल्गाल् में एकट्ठे हो गये ॥

५। और पलिश्ती इस्राएल् से लड़ने को एकट्ठे हो गये अर्थात् तीस हजार रथ और छः हजार सवार और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत से लोग एकट्ठे हुए और बेतावेन् की पूरब ओर जा मिक्माश् में छावनी डाली ॥ ६। जब इस्राएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और सचमुच लोग संकट में पड़े थे) तब वे लोग गुफाओं झाड़ियों ढांगों गढ़ियों और गड़हों में जा छिपे ॥ ७। और कितने इब्री यर्दन पार होकर गाद् और गिलाद् के देशों में चले गये पर शाऊल् गिल्गाल् ही में रहा और सब लोग थरथराते हुए उस के पीछे हो लिये ॥

८। वह शमूएल् के ठहराये हुए समय अर्थात् सात दिन लों बाट जोहता रहा पर शमूएल् गिल्गाल् में न आया और लोग उस के पास से इधर उधर होने लगे ॥ ९। तब शाऊल् ने कहा होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ तब उस ने होमबलि को चढ़ाया ॥ १०। ज्योंहीं वह होमबलि को चढ़ा चुका त्योंहीं शमूएल् आ गया और शाऊल् उस से मिलने और नमस्कार करने को निकला ॥ ११। शमूएल् ने पूछा तू ने क्या किया शाऊल् ने कहा जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो चले हैं और तू ठहराये हुए दिनों के भीतर नहीं आया और पलिश्ती मिक्माश् में एकट्ठे हुए हैं, १२। तब मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिल्गाल् में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे और मैं ने यहोवा से बिनती नहीं किई सो मैं ने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया ॥ १३। शमूएल् ने शाऊल् से कहा तू ने मूर्खता का काम किया है तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता ॥ १४। पर अब तेरा राज्य बना न रहेगा यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूंढ लिया है सो उस के मन के अनुसार है और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना ॥

१५। तब शमूएल् चल दिया और गिल्गाल् से बिन्यामीन् के गिबा को गया और शाऊल् ने अपने साथ के लोगों को गिनकर कोई छः सौ पाये ॥ १६। और शाऊल् और उस का पुत्र योनातान् और जो लोग उन के साथ थे वे बिन्यामीन् के गेबा में रहे और पलिश्ती मिक्माश् में डेरे डाले रहे ॥ १७। और पलिश्तियों की छावनी से नाश करनेहारे तीन गोल बांधकर निकले एक गोल ने शूआल् नाम देश की ओर फिरके ओप्रा का मार्ग लिया ॥ १८। एक और गोल ने मुड़कर बेथोरोन् का मार्ग लिया और एक और गोल ने मुड़कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम् नाम तराई की ओर जंगल की तरफ है ॥

१९। और इस्राएल् के सारे देश में लोहार कहीं न मिलता था क्योंकि पलिश्तियों ने कहा था कि इब्री तलवार वा भाला बनाने न पायें ॥ २०। सो सारे इस्राएली अपने अपने हल की फाली और फाल और कुल्हाड़ी और हंसुआ पैना करने के लिये पलिश्तियों के पास जाते थे ॥ २१। और उन के हंसुओं फालों खेती के त्रिशूलों और कुल्हाड़ियों की धारें और पैनों की नोकें भोंथी रहीं ॥ २२। सो युद्ध के दिन शाऊल् और योनातान् के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी न भाला थे केवल शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् के पास रहे॥ २३। और पलिश्तियों की चौकी के सिपाही निकलकर मिक्माश् की घाटी पर ठहरे॥

(योनातान् की जय और शाऊल का हठ.)

१४. एक दिन शाऊल् के पुत्र योनातान् ने अपने पिता से बिना कुछ कहे अपने हथियार ढोनेहारे जवान से कहा आ हम उधर पलिश्तियों की चौकी के पास चलें ॥ २ । शाऊल् तो गिबा के सिरे पर मिग्रोन् में के अनार के पेड़ तले टिका हुआ था और उस के संग के लोग कोई छः सौ थे ॥ ३ । और एली जो शीलो में यहोवा का याजक था उस के पुत्र पीनहास् का पोता और ईकाबोद् के भाई अहीतूब् का पुत्र अहिय्याह् भी एपोद् पहिने हुए संग था । पर उन लोगों को मालूम न था कि योनातान् चला गया है ॥ ४ । उन घाटियों के बीच जिन से होकर योनातान् पलिश्तियों की चौकी को जाना चाहता था दोनों अलंगों पर एक एक नोकीली चटान थी एक चटान का नाम तो बोसेस् और दूसरी का नाम सेने था ॥ ५ । एक चटान तो उत्तर की ओर मिक्माश् के साम्हने और दूसरी दक्खिन की ओर गेबा के साम्हने खड़ी है ॥ ६ । सो योनातान् ने अपने हथियार ढोनेहारे जवान से कहा आ हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएं क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे क्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं कि चाहे बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे ॥ ७ । उस के हथियार ढोनेहारे ने उस से कहा जो कुछ तेरे मन में हो वही कर उधर चल मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूंगा ॥ ८ । योनातान् ने कहा सुन हम उन मनुष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएं ॥ ९ । यदि वे हम से यों कहें कि हमारे आने लों ठहरे रहो तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें और उन के पास न चढ़ें ॥ १० । पर यदि वे यह कहें कि हमारे पास चढ़ आओ तो हम यह जानकर चढ़ें कि यहोवा उन्हें हमारे हाथ कर देगा हमारे लिये यही चिन्ह हो ॥ ११ । सो उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट किया तब पलिश्ती कहने लगे देखो इब्री लोग उन बिलों में से जहां वे छिप रहे थे निकले आते हैं ॥ १२ । फिर चौकी के लोगों ने योनातान् और उस के हथियार ढोनेहारे से पुकारके कहा हमारे पास चढ़ आओ तब हम तुम को कुछ सिखाएंगे सो योनातान् ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा मेरे पीछे पीछे चढ़ आ क्योंकि यहोवा उन्हें इस्राएलियों के हाथ में कर देगा ॥ १३ । सो योनातान् अपने हाथों और पांवों के बल चढ़ गया और उस का हथियार ढोनेहारा भी उस के पीछे पीछे चढ़ गया और पलिश्ती योनातान् के साम्हने गिरते गये और उस का हथियार ढोनेहारा उस के पीछे पीछे उन्हें मारता गया ॥ १४ । यह पहिला संहार जो योनातान् और उस के हथियार ढोनेहारे से हुआ उस में आधे बीघे[1] भूमि में बीस एक पुरुष मारे गये ॥ १५ । और छावनी में और मैदान पर और उन सारे लोगों में थरथराहट हुई और चौकीवाले और नाश करनेहारे भी थरथराने लगे और भुईंडोल भी हुआ सो अत्यन्त बड़ी थरथराहट[2] हुई ॥ १६ । और बिन्यामीन् के गिबा में शाऊल् के पहरुओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती[3] जाती है और वे लोग इधर उधर चले जाते हैं ॥

१७ । तब शाऊल् ने अपने साथ के लोगों से कहा अपनी गिनती करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है उन्हों ने गिनकर देखा कि योनातान् और उस का हथियार ढोनेहारा यहां नहीं हैं ॥ १८ । सो शाऊल् ने अहिय्याह् से कहा परमेश्वर का संदूक इधर ला । उस समय तो परमेश्वर का संदूक इस्राएलियों के साथ था ॥ १९ । शाऊल् याजक से बातें कर रहा था कि पलिश्तियों की छावनी में का हुल्लड़ अधिक होता गया सो शाऊल् ने याजक से कहा अपना हाथ खींच ॥ २० । तब शाऊल् और उस के संग के सब लोग एकट्ठे होकर लड़ाई में गये वहां उन्हों ने क्या देखा कि एक एक पुरुष की तलवार अपने अपने साथी पर चल रही है और बहुत बड़ा कोलाहल मच रहा है ॥ २१ । और जो इब्री पहिले की नाईं

(१) मूल में आधे बीघे की रेघारी । (२) मूल में परमेश्वर की थरथराहट । (३) मूल में गलती ।

पलिश्तियों की ओर के थे और उन के साथ चारों ओर से छावनी में गये थे वे भी शाऊल् और योनातान् के संग के इस्राएलियों में मिल गये ॥ २२। और जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम् के पहाड़ी देश में छिप गये थे वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं लड़ाई में आ उन का पीछा करने में लग गये ॥ २३। सो यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को छुटकारा दिया और लड़नेहारे बेतावेन् की परली ओर लों चले गये ॥ २४। पर इस्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए क्योंकि शाऊल् ने उन लोगों को किरिया धराकर कहा सापित हो वह जो सांझ से पहिले कुछ खाए इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से पलटा ले सकूंगा। सो उन लोगों में से किसी ने कुछ भोजन न किया॥ २५। और सब लोग[1] किसी बन में पहुंचे जहां भूमि पर मधु पड़ा हुआ था ॥ २६। सो जब लोग बन में आये तब क्या देखा कि मधु टपक रहा है तौभी किरिया के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुंह तक न ले गया ॥ २७। पर योनातान् ने अपने पिता को लोगों को किरिया धराते न सुना था सो उस ने अपने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में बोरी और अपना हाथ अपने मुंह तक लगाया तब उस की आंखों से सूझने लगा ॥ २८। तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा तेरे पिता ने लोगों को दृढ़ता से किरिया धराके कहा सापित हो वह जो आज कुछ खाए और लोग थके मान्दे थे ॥ २९। योनातान् ने कहा मेरे पिता ने लोगों को[2] कष्ट दिया है देखो मैं ने इस मधु को थोड़ा सा चक्खा और मुझे आंखों से कैसा सूझने लगा ॥ ३०। सो यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्हों ने पाया मन माना खाते तो कितना अच्छा होता अभी तो बहुत पलिश्ती मारे नहीं गये ॥ ३१। उस दिन वे मिक्माश् से लेकर अय्यालोन् लों पलिश्तियों को मारते गये और लोग बहुत ही थक गये ॥ ३२। सो वे लूट पर टूटे और भेड़ बकरी और गाय बैल और बछड़े ले भूमि पर मारके उन का मांस लोहू समेत खाने लगे ॥ ३३। जब इस का समाचार शाऊल् को मिला कि लोग लोहू समेत मांस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं तब उस ने उन से कहा तुम ने तो विश्वासघात किया है अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास लुढ़का दो ॥ ३४। फिर शाऊल् ने कहा लोगों के बीच इधर उधर फिरके उन से कहो कि अपना अपना बैल और भेड़ शाऊल् के पास ले जाओ और वहीं बलि करके खाओ और लोहू समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो। सो सब लोगों ने उसी रात अपना अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया ॥ ३५। तब शाऊल् ने यहोवा की एक वेदी बनवाई वह तो पहिली वेदी है जो उस ने यहोवा के लिये बनवाई ॥

३६। फिर शाऊल् ने कहा हम इसी रात को पलिश्तियों का पीछा करके उन्हें भोर लों लूटते रहें और उन में से एक मनुष्य को भी जीता न छोड़ें उन्हों ने कहा जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर पर याजक ने कहा हम इधर परमेश्वर के समीप आएं ॥ ३७। सो शाऊल् ने परमेश्वर से पुछवाया कि क्या मैं पलिश्तियों का पीछा करूं क्या तू उन्हें इस्राएल् के हाथ में कर देगा पर उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला ॥ ३८। तब शाऊल् ने कहा हे प्रजा के मुख्य लोगो इधर आकर बूझो और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है ॥ ३९। क्योंकि इस्राएल् के छुड़ानेहारे यहोवा के जीवन की सोंह यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान् से हुआ हो तौभी निश्चय वह मार डाला जाएगा पर सब लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया ॥ ४०। तब उस ने सारे इस्राएलियों से कहा तुम तो एक ओर हो और मैं और मेरा पुत्र योनातान् दूसरी ओर होंगे लोगों ने शाऊल् से कहा जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर ॥ ४१। तब शाऊल् ने यहोवा से कहा हे इस्राएल् के परमेश्वर सत्य बात बता[1] तब चिट्ठी योनातान् और शाऊल् के नाम पर निकली[2] और प्रजा बच गई ॥ ४२। फिर शाऊल् ने कहा मेरे और

(१) मूल में, सारा देश। (२) मूल में, देश को।

(१) मूल में सराई दे। (२) मूल में योनातान् और शाऊल् पकड़े गये।

मेरे पुत्र योनातान् के नाम पर चिट्ठी डालो । तब चिट्ठी योनातान् के नाम पर निकली[1] ॥ ४३ । तब शाऊल् ने योनातान् से कहा मुझे बता कि तू ने क्या किया है योनातान् ने बताया और उस से कहा मैं ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया है और देख मुझे मरना है ॥ ४४ । शाऊल् ने कहा परमेश्वर ऐसा ही करे बरन इस से अधिक भी करे हे योनातान् तू निश्चय मारा जाएगा ॥ ४५ । पर लोगों ने शाऊल् से कहा क्या योनातान् मारा जाए जिस ने इस्राएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है ऐसा न होगा यहोवा के जीवन की सौंह उस के सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा क्योंकि आज के दिन उस ने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है । सो प्रजा के लोगों ने योनातान् को बचा लिया और वह मारा न गया ॥ ४६ । सो शाऊल् पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट गया और पलिश्ती भी अपने स्थान को चले गये ॥

४७ । जब शाऊल् इस्राएलियों के राज्य में स्थिर हो गया[2] तब वह मोआबी अम्मोनी एदोमी और पलिश्ती अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से और सोबा के राजाओं से लड़ा और जहां जहां वह जाता वहां जय पाता था ॥ ४८ । फिर उस ने वीरता करके अमालेकियों को जीता और इस्राएलियों को लूटनेहारों के हाथ से छुड़ाया ॥

४९ । शाऊल् के पुत्र योनातान् यिश्वी और मल्कीशू थे और उस की दो बेटियां थीं नाम ये थे बड़ी का नाम तो मेरब् और छोटी का नाम मीकल् था ॥ ५० । और शाऊल् की स्त्री का नाम अहीनोअम् था जो अहीमास् की बेटी थी और उस के प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर् था जो शाऊल् के चचा नेर् का पुत्र था ॥ ५१ । और शाऊल् का पिता कीश् था और अब्नेर् का पिता नेर् अबीएल् का पुत्र था ॥

५२ । और शाऊल् के जीवन भर पलिश्तियों से भारी लड़ाई होती रही सो जब जब शाऊल् को कोई बीर वा अच्छा योद्धा देख पड़ा तब उस ने उसे अपने पास रख लिया ॥

(शाऊल् का दूसरा अपराध और उस का फल.)

१५. शमूएल् ने शाऊल् से कहा यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल् पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था सो अब यहोवा की बातें सुन ले ॥ २ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मुझे चेत आता है कि अमालेकियों ने इस्राएलियों से क्या किया कि जब इस्राएली मिस्र से आ रहे थे तब उन्हों ने मार्ग में उन का साम्हना किया ॥ ३ । सो अब तू जाकर अमालेकियों को मार और जो कुछ उन का है उसे बिना कोमलता किये सत्यानाश कर क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बच्चा क्या दूधपिउवा क्या गाय बैल क्या भेड़ बकरी क्या ऊंट क्या गदहा सब को मार डाल ॥

४ । सो शाऊल् ने लोगों को बुलाकर एकट्ठा किया और उन्हें तलाईम् में गिना और वे दो लाख प्यादे हुए और दस हजार यहूदी भी थे ॥ ५ । तब शाऊल् ने अमालेक् नगर के पास जाकर एक नाले में घातुओं को बिठाया ॥ ६ । और शाऊल् ने केनियों से कहा कि वहां से हटो अमालेकियों के बीच से निकल जाओ न हो कि मैं उन के साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूं तुम ने तो सब इस्राएलियों पर उन के मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी । सो केनी अमालेकियों के बीच से हट गये ॥ ७ । तब शाऊल् ने हवीला से लेकर शूर् लों जो मिस्र के साम्हने है अमालेकियों को मारा, ८ । और उन के राजा अगाग् को जीता पकड़ा और उस की सारी प्रजा को तलवार से सत्यानाश कर डाला ॥ ९ । परन्तु अगाग् पर और अच्छी से अच्छी भेड़ बकरियों गाय बैलों मोटे पशुओं और मेम्नों और जो कुछ अच्छा था उस पर शाऊल् और उस की प्रजा ने कोमलता किई और उन्हें सत्यानाश करना

(१) मूल में. योनातान् पकड़ा गया । (२) मूल में. शाऊल् ने इस्राएल पर राज्य ले लिया ।

न चाहा पर जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उस को उन्हों ने सत्यानाश किया ॥

१० । तब यहोवा का यह वचन शमूएल् के पास पहुंचा कि, ११ । मैं शाऊल् को राजा करके पछताता हूं क्योंकि उस ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया और मेरी आज्ञाओं को नहीं माना । तब शमूएल् का क्रोध भड़का और वह रात भर यहोवा को दोहाई देता रहा ॥ १२ । बिहान को जब शमूएल् शाऊल् से भेंट करने के लिये सबेरे उठा तब शमूएल् को यह बताया गया कि शाऊल् कर्म्मेल् को आया था और अपने लिये एक निशानी खड़ी किई और घूमकर गिल्गाल् को चला गया है ॥ १३ । तब शमूएल् शाऊल् के पास गया और शाऊल् ने उस से कहा तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले मैं ने यहोवा की आज्ञा पूरी किई है ॥ १४ । शमूएल् ने कहा फिर भेड़ बकरियों का यह मिमियाना और गाय बैलों का यह बंबाना जो मुझे सुनाई देता है सो क्यों हो रहा है ॥ १५ । शाऊल् ने कहा वे तो अमालेकियों के यहां से आये हैं अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया और और सब को हम ने सत्यानाश किया है ॥ १६ । शमूएल् ने शाऊल् से कहा रह जा जो बात यहोवा ने आज रात को मुझ से कही है वह मैं तुझ को बताता हूं वह बोला कह दे ॥ १७ । शमूएल् ने कहा जब तू अपने लेखे छोटा था तब क्या तू इस्राएली गोत्रियों का प्रधान न हो गया और क्या यहोवा ने इस्राएल् पर राज्य करने को तेरा अभिषेक न किया ॥ १८ । सो यहोवा ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दिई और कहा जाकर उन पापी अमालेकियों को सत्यानाश कर और जब लों वे मिट न जाएं तब लों उन से लड़ता रह ॥ १९ । फिर तू ने किस लिये यहोवा की वह बात टालकर लूट पर टूटके वह काम किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ २० । शाऊल् ने शमूएल् से कहा निःसंदेह मैं यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला और अमालेकियों के राजा को ले आया हूं और अमालेकियों को सत्यानाश किया है ॥ २१ । पर प्रजा के लोग लूट में से भेड़ बकरियों और गाय बैलों अर्थात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिल्गाल् में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आये हैं ॥ २२ । शमूएल् ने कहा क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है सुन मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है ॥ २३ । देख बलवा करना और भावी कहनेहारों से पूछना एक ही समान पाप है और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना इस लिये उस ने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है ॥ २४ । शाऊल् ने शमूएल् से कहा मैं ने पाप किया है मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उन की बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है ॥ २५ । पर अब मेरे पाप को क्षमा कर और मेरे साथ लौट आ कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूं ॥ २६ । शमूएल् ने शाऊल् से कहा मैं तेरे साथ न लौटूंगा क्योंकि तू ने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है और यहोवा ने तुझे इस्राएल् के राजा होने के लिये तुच्छ जाना है ॥ २७ । तब शमूएल् चले जाने को घूमा और शाऊल् ने उस के बागे की छोर को पकड़ा और वह फट गया ॥ २८ । सो शमूएल् ने उस से कहा आज यहोवा ने इस्राएल् के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है ॥ २९ । और जो इस्राएल् का बलमूल है वह न झूठ बोलने न पछताने का क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए ॥ ३० । उस ने कहा मैं ने पाप तो किया है तौभी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल् के साम्हने मेरा आदर कर और मेरे साथ लौट कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूं ॥ ३१ । सो शमूएल् लौटकर शाऊल् के पीछे गया और शाऊल् ने यहोवा को दण्डवत् किई ॥

३२। तब शमूएल् ने कहा अमालेकियों के राजा अगाग् को मेरे पास ले आओ। सो अगाग् आनन्द के साथ यह कहता हुआ उस के पास गया कि निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा ॥ ३३। शमूएल् ने कहा जैसे स्त्रियां तेरी तलवार से निर्वंश हुई हैं वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी तब शमूएल् ने अगाग् को गिल्गाल् में यहोवा के साम्हने टुकड़े टुकड़े किया ॥

३४। तब शमूएल् रामा को चला गया और शाऊल् अपने नगर गिबा को अपने घर गया ॥ ३५। और शमूएल् ने अपने जीवन भर शाऊल् से फिर भेंट न किई क्योंकि शमूएल् शाऊल् के विषय विलाप करता रहा और यहोवा शाऊल् को इस्राएल् का राजा करके पछताता था ॥

(दाऊद का राज्याभिषेक.)

१६. और यहोवा ने शमूएल् से कहा मैं ने शाऊल् को इस्राएल् पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है सो तू कब लों उस के विषय विलाप करता रहेगा अपने सींग में तेल भरके चल मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं क्योंकि मैं ने उस के पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है ॥ २। शमूएल् बोला मैं क्योंकर जा सकता हूं यदि शाऊल् सुने तो मुझे घात करेगा यहोवा ने कहा एक बछिया साथ ले जाकर कहना कि मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं ॥ ३। और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना तब मैं तुझे जता दूंगा कि तुझ को क्या करना है और जिस को मैं तुझे बताऊं उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना ॥ ४। सो शमूएल् ने यहोवा के कहे के अनुसार किया और बेतलेहेम् को गया। उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उस से मिलने को गये और कहने लगे क्या तू मित्रभाव से आया है कि नहीं ॥ ५। उस ने कहा हां मित्रभाव से आया हूं मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं तुम अपने अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ। तब उस ने यिशै और उस के पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया ॥ ६। जब वे आये तब उस ने एलीआब् पर दृष्टि करके सोचा कि निश्चय जो यहोवा के साम्हने है वही उस का अभिषिक्त होगा ॥ ७। पर यहोवा ने शमूएल् से कहा न तो उस के रूप पर दृष्टि कर और न उस के डील की ऊंचाई पर क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है मनुष्य तो बाहर का रूप देखता पर यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है ॥ ८। तब यिशै ने अबीनादाब् को बुलाकर शमूएल् के साम्हने भेजा और उस ने कहा यहोवा ने इस को भी नहीं चुना ॥ ९। फिर यिशै ने शम्मा को साम्हने भेजा और उस ने कहा यहोवा ने इस को भी नहीं चुना ॥ १०। यों ही यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल् के साम्हने भेजा और शमूएल् यिशै से कहता गया यहोवा ने इन्हें नहीं चुना ॥ ११। तब शमूएल् ने यिशै से कहा क्या सब लड़के आ गये वह बोला नहीं लहुरा तो रह गया और वह भेड़ बकरियों को चरा रहा है। शमूएल् ने यिशै से कहा उसे बुलवा भेज क्योंकि जब लों वह यहां न आए तब लों हम खाने को[1] न बैठेंगे ॥ १२। सो वह उसे बुलाकर भीतर ले आया उस के तो लाली झलकती थी और उस की आंखें सुन्दर और उस का रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा उठकर इस का अभिषेक कर यही है ॥ १३। सो शमूएल् ने अपना तेल का सींग लेकर उस के भाइयों के मध्य में उस का अभिषेक किया और उस दिन से लेकर आगे को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा तब शमूएल् पधारा और रामा को चला गया ॥

१४। और यहोवा का आत्मा शाऊल् पर से उठ गया और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा ॥ १५। सो शाऊल् के कर्म्मचारियों ने उस से कहा सुन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है ॥ १६। हमारा प्रभु अपने कर्म्मचारियों को जो हाजिर हैं आज्ञा दे कि वे किसी अच्छे बीणा बजानेहारे को ढूंढ़ ले आएं और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा

(१) मूल में, हम चारों ओर।

तुझ पर चढ़े तब वह अपने हाथ से बजाए और तू अच्छा हो जाए ॥ १७ । शाऊल् ने अपने कर्म्मचारियों से कहा अच्छा एक उत्तम बजवैया देखो और उसे मेरे पास लाओ ॥ १८ । तब एक जवान ने उत्तर देके कहा सुन मैं ने बेत्लेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो बीणा बजाना जानता है और वह बीर और योद्धा भी और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान् भी है और यहोवा उस के साथ रहता है ॥ १९ । सो शाऊल् ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा कि अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे ॥ २० । तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा और कुप्पा भर दाखमधु और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल् के पास भेज दिया ॥ २१ । सो दाऊद शाऊल् के पास जाकर उस के साम्हने हाजिर रहने लगा और शाऊल् उस से बहुत प्रीति करने लगा और वह उस का हथियार ढोनेहारा हो गया ॥ २२ । तब शाऊल् ने यिशै के पास कहला भेजा कि दाऊद को मेरे साम्हने हाजिर रहने दे क्योंकि मैं उस से बहुत प्रसन्न हूं ॥ २३ । सो जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल् पर चढ़ता था तब तब दाऊद बीणा लेकर बजाता और शाऊल् चैन पाकर अच्छा हो जाता था और वह दुष्ट आत्मा उस पर से उतर जाता था ॥

(दाऊद का गोल्यत् को मार डालना.)

१७. पलिश्तियों ने लड़ने के लिये अपनी सेनाओं को एकट्ठा किया और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम् में डेरे डाले ॥ २ । और शाऊल् और इस्राएली पुरुषों ने भी एकट्ठे होकर एला नाम तराई में डेरे डाले और लड़ाई के लिये पलिश्तियों के विरुद्ध पांति बांधी ॥ ३ । पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे और दोनों के बीच तराई थी ॥ ४ । तब पलिश्तियों की छावनी से एक बीर गोल्यत् नाम निकला जो गत् नगर का था और उस के डील की लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी ॥ ५ । उस के सिर पर पीतल का टोप था और वह एक पत्तर का झिलम पहिने हुए था जिस का तौल पांच हजार शेकेल् पीतल का था ॥ ६ । उस की टांगों पर पीतल के कवच थे और उस के कंधों के बीच पीतल की सांग बन्धी थी ॥ ७ । उस के भाले की छड़ जुलाहे के ढेंके के समान थी और उस भाले का फल छः सौ शेकेल् लोहे का था और बड़ी ढाल लिये हुए एक जन उस के आगे आगे चलता था ॥ ८ । वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकारके बोला तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये क्यों पांति बांधी है क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं और तुम शाऊल् के अधीन नहीं हो अपने में से एक पुरुष चुनो कि वह मेरे पास उतर आए ॥ ९ । यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होकर उसे मारूं तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी ॥ १० । फिर वह पलिश्ती बोला मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं[1] किसी पुरुष को मेरे पास भेजो[2] कि हम एक दूसरे से लड़ें ॥ ११ । उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल् और सारे इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया और वे निपट डर गये ॥

१२ । दाऊद तो यहूदा में के बेत्लेहेम् के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था जिस का नाम यिशै था और उस के आठ पुत्र थे और वह पुरुष शाऊल् के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था ॥ १३ । यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल् के पीछे होकर लड़ने को गये थे और उस के तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गये थे ये थे अर्थात् जेठे का नाम एलीआब् दूसरे का अबीनादाब् और तीसरे का शम्मा है ॥ १४ । और सब से छोटा दाऊद था और तीनों बड़े पुत्र शाऊल् के पीछे होकर गये थे ॥ १५ । और दाऊद

(१) मूल में दोनों बीच का पुरुष । (२) मूल में मुझे दो ।

बेत्लेहेम् में अपने पिता की भेड़ बकरियां चराने को शाऊल् के पास से आया जाया करता था ॥

१६। वह पलिश्ती तो चालीस दिन लों सवेरे और सांझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था ॥ १७। और यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा यह एपा भर चबैना और ये दस रोटियां लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़ जा ॥ १८। और पनीर की ये दस टिकियां उन के सहस्रपति के लिये ले जा और अपने भाइयों का कुशल देखकर उन की कोई चिन्हानी ले आना ॥ १९। शाऊल् और वे भाई और सारे इस्राएली पुरुष एला नाम तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे थे ॥ २०। सो दाऊद बिहान को सवेरे उठ भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर वे वस्तुएं लेकर चला और जब सेना रणभूमि को जा रही और लड़ने को ललकार रही थी उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुंचा ॥ २१। तब इस्राएलियों और पलिश्तियों ने अपनी अपनी सेना आम्हने साम्हने करके पांति बांधी ॥ २२। सो दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़ रणभूमि को दौड़ा और अपने भाइयों के पास जाकर उन का कुशलक्षेम पूछा ॥ २३। वह उन के साथ बातें कर रहा था कि पलिश्तियों की पांतियों में से वह बीर अर्थात् गत्वासी गोल्यत् नाम वह पलिश्ती चढ़ आया और पहिले की सी बातें कहने लगा और दाऊद ने उन्हें सुना ॥ २४। उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उस के साम्हने से भागे ॥ २५। फिर इस्राएली पुरुष कहने लगे क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है निश्चय वह इस्राएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है सो जो कोई उसे मार डाले उस को राजा बहुत धन देगा और अपनी बेटी ब्याह देगा और उस के पिता के घराने को इस्राएल् में स्वाधीन कर देगा ॥ २६। सो दाऊद ने उन पुरुषों से जो उस के आस-पास खड़े थे पूछा कि जो उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियों की नामधराई दूर करे उस के लिये क्या किया जाएगा वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवते परमेश्वर की सेना को ललकारे ॥ २७। तब लोगों ने उस से वैसी ही बातें कहीं अर्थात् कहा कि जो कोई उसे मारे उस से ऐसा ऐसा किया जाएगा ॥ २८। जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था तब उस का बड़ा भाई एलीआब् सुन रहा था और एलीआब् दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा तू यहां क्यों आया है और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है तू तो लड़ाई देखने के लिये यहां आया है ॥ २९। दाऊद ने कहा मैं ने अब क्या किया है वह तो निरी बात थी ॥ ३०। तब उस ने उस के पास से मुंह फेरके दूसरे के सन्मुख होकर वैसी ही बात कही और लोगों ने उसे पहिले की नाईं उत्तर दिया ॥ ३१। जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई तब शाऊल् को भी सुनाई गईं और उस ने उसे बुलवा भेजा ॥ ३२। तब दाऊद ने शाऊल् से कहा किसी मनुष्य का मन उस के कारण कच्चा न हो तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा ॥ ३३। शाऊल् ने दाऊद से कहा तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध नहीं जा सकता क्योंकि तू तो लड़का है और वह लड़कपन ही से योद्धा है ॥ ३४। दाऊद ने शाऊल् से कहा तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियां चराता था और जब कोई सिंह वा भालू आ झुंड में से मेम्ना उठा ले गया, ३५। तब मैं ने उस का पीछा करके उसे मारा और मेम्ने को उस के मुंह से छुड़ाया और जब उस ने मुझ पर चढ़ाई किई तब मैं ने उस के केशर को पकड़कर उसे मार डाला ॥ ३६। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला और वह खतनारहित पलिश्ती उन के समान हो जाएगा क्योंकि उस ने जीवते परमेश्वर की सेना को ललकारा है ॥ ३७। फिर दाऊद ने कहा यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। शाऊल् ने दाऊद से कहा जा यहोवा तेरे साथ रहे ॥ ३८। तब शाऊल् ने अपने वस्त्र दाऊद को पहिनाये और पीतल का

टोप उस के सिर पर रख दिया और झिलम उस को पहिनाया ॥ ३९ । और दाऊद ने उस की तलवार वस्त्र के ऊपर कसी और चलने का यत्न किया उस ने तो उन को न परखा था सो दाऊद ने शाऊल् से कहा इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता क्योंकि मैं ने नहीं परखा सो दाऊद ने उन्हें उतार दिया ॥ ४० । तब उस ने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पांच चिकने पत्थर छांटकर अपनी चरवाही की थैली अर्थात् अपने झोले में रक्खे और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला ॥ ४१ । और पलिश्ती चलते चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा और जो जन उस की बड़ी ढाल लिये था वह उस के आगे आगे चला ॥ ४२ । जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा तब उसे तुच्छ जाना क्योंकि वह लड़का ही था और उस के मुख में लाली झलकती थी और वह सुन्दर था ॥ ४३ । सो पलिश्ती ने दाऊद से कहा क्या मैं कूकुर हूं कि तू लाठियां लेकर मेरे पास आता है तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा ॥ ४४ । फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा मेरे पास आ मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और बनैले पशुओं को दे दूंगा ॥ ४५ । दाऊद ने पलिश्ती से कहा तू तो तलवार और भाला और सांग लिये हुए मेरे पास आता है पर मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है और उसी को तू ने ललकारा है ॥ ४६ । आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा और मैं तुझ को मारूंगा और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथिवी के जीव जन्तुओं को दे दूंगा तब सारी पृथिवी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल् में परमेश्वर है ॥ ४७ । और यह सारी मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता । यह लड़ाई तो यहोवा की है और वह तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा ॥ ४८ । जब पलिश्ती उठकर दाऊद का साम्हना करने के लिये निकट आया तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का साम्हना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा ॥ ४९ । फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डाल उस में से एक पत्थर ले गोफन में धर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उस के माथे के भीतर पैठ गया और वह भूमि पर मुंह के बल गिरा ॥ ५० । यों दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और पत्थर ही के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला और दाऊद के हाथ में तलवार न थी ॥ ५१ । तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ और उस की तलवार पकड़कर मियान से खींची और उस को घात किया और उस का सिर उसी तलवार से काट डाला । यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गये ॥ ५२ । इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे और गत्[1] और एक्रोन् के फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गये और घायल पलिश्ती शारैम् के मार्ग में और गत् और एक्रोन् लों गिरते गये ॥ ५३ । तब इस्राएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आये और उन के डेरों को लूट लिया ॥ ५४ । और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम् में ले गया और उस के हथियार अपने डेरे में धर दिये ॥

(शाऊल् की शत्रुता का आरम्भ और बढ़ती.)

५५ । जब शाऊल् ने दाऊद को उस पलिश्ती का साम्हना करने के लिये जाते देखा तब उस ने अपने सेनापति अब्नेर् से पूछा हे अब्नेर् वह जवान किस का पुत्र है अब्नेर् ने कहा हे राजा तेरे जीवन की सौंह मैं नहीं जानता ॥ ५६ । राजा ने कहा तू पूछ ले कि वह जवान किस का पुत्र है ॥ ५७ । सो जब दाऊद पलिश्ती को मारके लौटा तब अब्नेर् ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में लिये हुए शाऊल् के साम्हने पहुंचाया ॥ ५८ । शाऊल् ने उस से पूछा हे जवान तू किस का पुत्र है दाऊद ने कहा मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूं ॥

१८. १ । जब वह शाऊल् से बातें कर चुका तब योनातान् का मन दाऊद पर ऐसा लग गया कि योनातान् उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा ॥

(१) वा तराई ।

२। और उस दिन से शाऊल् ने उसे अपने पास रक्खा और पिता के घर को फिर लौटने न दिया॥ ३। तब योनातान् ने दाऊद से वाचा बांधी क्योंकि वह उस को अपने प्राण के बराबर प्यार करता था॥ ४। और योनातान् ने अपना बागा जो वह आप पहिने था उतारके उसे अपने वस्त्र समेत दाऊद को दिया बरन अपनी तलवार और धनुष और फेंटा भी उस को दे दिये॥ ५। और जहां कहीं शाऊल् दाऊद को भेजता वहां वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था सो शाऊल् ने उसे योद्धाओं का प्रधान किया और सारी प्रजा के लोग और शाऊल् के कर्म्मचारी उस से प्रसन्न हुए॥

६। जब दाऊद उस पलिश्ती को मारके लौटा आता था और लोग आ रहे थे तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिये हुए आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई शाऊल् राजा से भेंट किई॥ ७। और वे स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के साथ यह टेक गाती गईं कि

शाऊल् ने तो हजारों को
पर दाऊद ने लाखों को मारा है।

८। तब शाऊल् अति क्रोधित हुआ और यह बात उस को बुरी लगी और वह कहने लगा उन्हों ने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही कहे राज्य को छोड़ उस को सब कुछ मिला है॥ ९। सो उस दिन से आगे को शाऊल् दाऊद की ताक में लगा रहा॥

१०। दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल् पर बल से उतरा और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा। दाऊद दिन दिन की नाईं बजा रहा था और शाऊल् के हाथ में भाला था॥ ११। सो शाऊल् ने यह सोचकर कि मैं ऐसा मारूंगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धस जाए भाले को चलाया पर दाऊद उस के साम्हने से दो बार हट गया॥ १२। फिर शाऊल् दाऊद से डर गया क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ रहा और शाऊल् के पास से अलग हो गया था॥ १३। सो शाऊल् ने उस को अपने पास से अलग करके सहस्रपति किया और वह प्रजा के साम्हने आया जाया करता था॥ १४। और दाऊद अपनी सारी चाल में बुद्धिमानी दिखाता था और यहोवा उस के साथ रहता था॥ १५। सो जब शाऊल् ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है तब वह उस से डर गया॥ १६। पर इस्राएल् और यहूदा के सारे लोग दाऊद से प्रेम रखते थे क्योंकि वह उन के देखते आया जाया करता था॥

१७। और शाऊल् ने यह सोचकर कि मेरा हाथ नहीं पलिश्तियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े उस से कहा सुन मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब् को तुझे ब्याह दूंगा, इतना हो कि तू मेरे लिये बीरता करके यहोवा की ओर से लड़े॥ १८। दाऊद ने शाऊल् से कहा मैं क्या हूं और मेरा जीवन क्या है और इस्राएल् में मेरे पिता का कुल क्या है कि मैं राजा का दामाद हो जाऊं॥ १९। जब समय आ गया कि शाऊल् की बेटी मेरब् दाऊद से ब्याही जाए तब वह महोलाई अद्रीएल् से ब्याही गई॥ २०। और शाऊल् की बेटी मीकल् दाऊद से प्रीति रखने लगी और जब इस बात का समाचार शाऊल् को मिला तब वह प्रसन्न हुआ॥ २१। शाऊल् तो सोचता था कि वह उस के लिये फन्दा हो और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े। सो शाऊल् ने दाऊद से कहा अब की बार तो तू अवश्य ही[1] मेरा दामाद हो जाएगा॥ २२। फिर शाऊल् ने अपने कर्म्मचारियों को आज्ञा दिई कि दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो कि सुन राजा तुझ से प्रसन्न है और उस के सब कर्म्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं सो अब तू राजा का दामाद हो जा॥ २३। सो शाऊल् के कर्म्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं पर दाऊद ने कहा मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूं फिर क्या तुम्हारे लेखे राजा का दामाद होना छोटी बात है॥ २४। जब शाऊल् के कर्म्मचारियों ने उसे बताया कि दाऊद ने ऐसी ऐसी बातें कहीं, २५। तब शाऊल् ने कहा तुम दाऊद से यों कहो कि

(१) मूल में. आज दूसरी रीति पर तू।

राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता केवल पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियां चाहता है कि वह अपने शत्रुओं से पलटा ले । शाऊल् की मनसा यह थी कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डालूं ॥ २६ । जब उस के कर्म्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताईं तब वह राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ । जब व्याह के दिन कुछ रह गये, २७ । तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला और पलिश्तियों के दो सौ पुरुषों को मारा तब दाऊद उन की खलड़ियों को ले आया और वे राजा को गिन गिनकर दिई गईं इस लिये कि वह राजा का दामाद हो जाए सो शाऊल् ने अपनी बेटी मीकल् को उसे व्याह दिया ॥ २८ । जब शाऊल् ने देखा और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है और मेरी बेटी मीकल् उस से प्रेम रखती है, २९ । तब शाऊल् दाऊद से और भी डर गया और शाऊल् सदा के लिये दाऊद का वैरी बन गया ॥

३० । फिर पलिश्तियों के प्रधान निकल आये और जब जब वे निकल आये तब तब दाऊद ने शाऊल् के और सब कर्म्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई इस से उस का नाम बहुत बड़ा[१] हो गया ॥

१९. सो शाऊल् ने अपने पुत्र योनातान् और अपने सब कर्म्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा किई । पर शाऊल् का पुत्र योनातान् दाऊद से बहुत प्रसन्न था ॥ २ । सो योनातान् ने दाऊद को बताया कि मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है सो तू बिहान को सावधान रहना और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना ॥ ३ । और मैं मैदान में जहां तू होगा वहां जाकर अपने पिता के पास खड़ा हूंगा और उस से तेरी चर्चा करूंगा और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊंगा ॥ ४ । सो योनातान् ने अपने पिता शाऊल् से दाऊद की प्रशंसा करके उस से कहा कि हे राजा अपने दास दाऊद का अपराधी न हो क्योंकि उस ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया वरन उस के सब काम तेरे बहुत हित के हैं ॥ ५ । उस ने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला और यहोवा ने सारे इस्राएलियों की बड़ी जय कराई इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था सो तू दाऊद को अकारण मारके निर्दोष के खून का पापी क्यों बने ॥ ६ । तब शाऊल् ने योनातान् की बात मानकर यह किरिया खाई कि यहोवा के जीवन की सोंह दाऊद मार डाला न जाएगा ॥ ७ । सो योनातान् ने दाऊद को बुलाकर ये सारी बातें उस को बताईं फिर योनातान् दाऊद को शाऊल् के पास ले गया और वह पहिले की नाईं उस के साम्हने रहने लगा ॥

८ । और फिर लड़ाई होने लगी और दाऊद जाकर पलिश्तियों से लड़ा और उन्हें बड़ी मार से मारा और वे उस के साम्हने से भागे ॥ ९ । और जब शाऊल् हाथ में भाला लिये हुए अपने घर में बैठा था और दाऊद हाथ से बजा रहा था । तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल् पर चढ़ा ॥ १० । और शाऊल् ने चाहा कि दाऊद को ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधते हुए भीत में धस जाए पर दाऊद शाऊल् के साम्हने से ऐसा बच गया कि भाला जाकर भीत ही में धस गया और दाऊद भागा और उस रात को बच गया ॥ ११ । सो शाऊल् ने दाऊद के घर पर दूत इस लिये भेजे कि वे उस की घात में रहें और बिहान को उसे मार डालें सो दाऊद की स्त्री मीकल् ने उसे यह कहकर बताया कि यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए तो बिहान को मारा जाएगा ॥ १२ । तब मीकल् ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया और वह भागकर बच निकला ॥ १३ । तब मीकल् ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया और बकरियों के रोएं की तकिया उस के सिरहाने पर रखकर उन को वस्त्र ओढ़ाये ॥ १४ । जब शाऊल् ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे तब वह बोली वह तो बीमार है ॥ १५ । तब शाऊल् ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा और कहा उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूं ॥ १६ । जब दूत भीतर गये तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं और

(१) मूल में. अनमोल ।

सिरहाने पर बकरियों के रोएं की तकिया है ॥ १७ । सो शाऊल् ने मीकल् से कहा तू ने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया तू ने मेरे शत्रु को ऐसा क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है । मीकल् ने शाऊल् से कहा उस ने मुझ से कहा कि मुझे जाने दे मैं तुझे क्यों मार डालूं ॥

१८ । सो दाऊद भागकर बच निकला और रामा में शमूएल् के पास पहुंचकर जो कुछ शाऊल् ने उस से किया था सब उसे कह सुनाया सो वह और शमूएल् जाकर नबायोत्[1] में रहने लगे ॥ १९ । जब शाऊल् को इस का समाचार मिला कि दाऊद रामा में के नबायोत्[1] में है, २० । तब शाऊल् ने दाऊद के पकड़ लाने के लिये दूत भेजे और जब शाऊल् के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए और शमूएल् को उन की प्रधानता करते हुए देखा तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा और वे भी नबूवत करने लगे ॥ २१ । इस का समाचार पाकर शाऊल् ने और दूत भेजे और वे भी नबूवत करने लगे फिर शाऊल् ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी नबूवत करने लगे ॥ २२ । तब वह आप ही रामा को चला और उस बड़े गड़हे पर जो सेकू में है पहुंचकर पूछने लगा कि शमूएल् और दाऊद कहां हैं किसी ने कहा वे तो रामा में के नबायोत्[1] में हैं ॥ २३ । सो वह उधर अर्थात् रामा के नबायोत् को चला और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा सो वह रामा के नबायोत्[1] को पहुंचने लों नबूवत करता हुआ चला गया ॥ २४ । और उस ने भी अपने वस्त्र उतारे और शमूएल् के साम्हने नबूवत करने लगा और भूमि पर गिरकर उस दिन दिन रात नङ्गा पड़ा रहा इस कारण से यह कहावत चली कि क्या शाऊल् भी नबियों में का है ॥

(दाऊद का भागना और शाऊल् के डर के मारे इधर उधर घूमना)

२०. फिर दाऊद रामा में के नबायोत्[1] से भागा और योनातान् के पास जाकर कहने लगा मैं ने क्या किया है मुझ से क्या पाप हुआ मैं ने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन अपराध किया है कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है ॥ २ । उस ने उस से कहा ऐसी बात नहीं है तू मारा न जाएगा सुन मेरा पिता मुझ को बिना जताये न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा फिर वह ऐसी बात को मुझ से क्यों छिपाएगा ऐसी कोई बात नहीं है ॥ ३ । फिर दाऊद ने किरिया खाकर कहा तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है सो वह सोचता होगा कि योनातान् इस बात को न जानने पाए न हो कि वह खेदित हो जाए पर यहोवा के जीवन की सोंह और तेरे जीवन की सोंह निःसंदेह मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है ॥ ४ । योनातान् ने दाऊद से कहा जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये करूंगा ॥ ५ । दाऊद ने योनातान् से कहा सुन कल नया चांद होगा और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूं पर तू मुझे विदा कर और मैं परसों सांझ लों मैदान में छिपा रहूंगा ॥ ६ । यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे तो कहना कि दाऊद ने अपने नगर बेत्लेहेम् को शीघ्र जाने के लिये मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी क्योंकि वहां उस के सारे कुल के लिये बरस बरस का यज्ञ है ॥ ७ । यदि वह यों कहे कि अच्छा तब तो तेरे दास के लिये कुशल होगा पर यदि उस का क्रोध बहुत भड़क उठे तो जान लेना कि उस ने बुराई ठानी है ॥ ८ । सो तू अपने दास से कृपा का व्यवहार करना क्योंकि तू ने यहोवा की किरिया खिलाकर अपने दास को अपने साथ वाचा बंधाई है पर यदि मुझ से कुछ अपराध हुआ हो तो तू आप मुझे मार डाल तू मुझे अपने पिता के पास क्यों पहुंचाए ॥ ९ । योनातान् ने कहा ऐसी बात कभी न होगी यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है तो क्या मैं तुझ को न बताता ॥ १० । दाऊद ने योनातान् से कहा यदि तेरा पिता तुझ को कठोर उत्तर दे तो कौन मुझे बताएगा ॥ ११ । योनातान् ने दाऊद से

(१) अर्थात्, कई वासस्थान ।

कहा चल हम मैदान को निकल जाएं सो वे दोनों मैदान को चले गये ॥

१२। तब योनातान् दाऊद से कहने लगा इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की सोंह जब मैं कल वा परसों इसी समय अपने पिता का भेद पाऊं तब यदि दाऊद की भलाई देखूं तो क्या मैं उसी समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊंगा ॥ १३। यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूं कि तू कुशल के साथ चला जाए तो यहोवा योनातान् से ऐसा ही बरन इस से भी अधिक करे। और यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा ॥ १४। और न केवल जब तक मैं जीता रहूं तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसा करना कि मैं न मरूं, १५। परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना बरन जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश कर चुकेगा तब भी ऐसा न करना ॥ १६। इस प्रकार योनातान् ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा बन्धाई कि यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले ॥ १७। और योनातान् दाऊद से प्रेम रखता था सो उस ने उस को फिर किरिया खिलाई क्योंकि वह उस से अपने प्राण के बराबर प्रेम रखता था ॥ १८। तब योनातान् ने उस से कहा कल नया चांद होगा और तेरी चिन्ता किई जाएगी क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी ॥ १९। और तू तीन दिन के बीतने पर फुर्ती करके आना और उस स्थान पर जाकर जहां तू उस काम के दिन छिपा था एजेल् नाम पत्थर के पास रहना ॥ २०। तब मैं उस की अलंग मानो अपने किसी ठहराये हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊंगा ॥ २१। फिर मैं अपने छोकरे को यह कहकर भेजूंगा कि जाकर तीरों को ढूंढ़ ले आ यदि मैं उस छोकरे से साफ साफ कहूं कि देख तीर इधर तेरी इस अलंग पर है तो तू उसे ले आ क्योंकि यहोवा के जीवन की सोंह तेरे लिये कुशल को छोड़ और कुछ न होगा ॥ २२। पर यदि मैं छोकरे से यों कहूं कि सुन तीर उधर तेरे उस अलंग पर हैं तो तू चला जाना क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है ॥ २३। और उस बात के विषय जिस की चर्चा मैं ने और तू ने आपस में किई है यहोवा मेरे तेरे बीच में सदा रहे ॥

२४। सो दाऊद मैदान में जा छिपा और जब नया चांद हुआ तब राजा भोजन करने को बैठा ॥ २५। राजा तो पहिले की नाईं अपने उस आसन पर बैठा जो भीत के पास था और योनातान् खड़ा हुआ और अब्नेर् शाऊल् के बगल में बैठा पर दाऊद का स्थान खाली रहा ॥ २६। उस दिन तो शाऊल् यह सोचकर चुप रहा कि उस को कोई न कोई कारण होगा वह अशुद्ध होगा निःसन्देह शुद्ध न होगा ॥ २७। फिर नये चांद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली रहा सो शाऊल् ने अपने पुत्र योनातान् से पूछा क्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था और न आज आया है ॥ २८। योनातान् ने शाऊल् से कहा दाऊद ने बेत्लेहेम् जाने के लिये मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी, २९। और कहा मुझे जाने दे क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का यज्ञ है और मेरे भाई ने मुझ को वहां हाजिर होने की आज्ञा दिई है सो अब यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो मुझे जाने दे कि मैं अपने भाइयों से भेंट कर आऊं इसी कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया ॥ ३०। तब शाऊल् का कोप योनातान् पर भड़क उठा और उस ने उस से कहा हे कुटिल दंगैतिन के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन जो यिशै के पुत्र पर लगा है इस से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा ॥ ३१। क्योंकि जब लों यिशै का पुत्र भूमि पर जीता रहे तब लों न तू न तेरा राज्य स्थिर होगा सो अभी भेजकर उसे मेरे पास ला क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा ॥ ३२। योनातान् ने अपने पिता शाऊल् को उत्तर देकर उस से कहा वह क्यों मारा जाए उस ने क्या किया है ॥ ३३। तब शाऊल् ने उस को मारने के लिये उस पर भाला चलाया इस से योनातान् ने जान लिया कि मेरे पिता ने दाऊद

को मार डालना ठान लिया है ॥ ३४ । सो योनातान् कोप से जलता हुआ मेज पर से उठ गया और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया क्योंकि वह बहुत खेदित था कि मेरे पिता ने दाऊद का अनादर किया है ॥

३५ । बिहान को योनातान् एक छोटा लड़का संग लिये हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराये हुए स्थान को गया ॥ ३६ । तब उस ने अपने छोकरे से कहा दौड़कर जो जो तीर मैं चलाऊं उन्हें ढूंढ़ ले आ । छोकरा दौड़ता ही था कि उस ने एक तीर उस के परे चलाया ॥ ३७ । जब छोकरा योनातान् के चलाये तीर के स्थान पर पहुंचा तब योनातान् ने उस के पीछे से पुकारके कहा तीर तो तेरी परली ओर है ॥ ३८ । फिर योनातान् ने छोकरे के पीछे से पुकारके कहा बड़ी फुर्ती कर ठहर मत सो योनातान् का छोकरा तीरों को बटोरके अपने स्वामी के पास ले आया ॥ ३९ । इस का भेद छोकरा तो कुछ न जानता था केवल योनातान् और दाऊद उस बात को जानते थे ॥ ४० । और योनातान् ने अपने हथियार अपने छोकरे को देकर कहा जा इन्हें नगर को पहुंचा ॥ ४१ । ज्योंहीं छोकरा चला गया त्योंहीं दाऊद दक्खिन दिशा की अलङ्ग से निकला और भूमि पर औंधे मुंह गिरके तीन बार दण्डवत् किई तब उन्हों ने एक दूसरे को चूमा और एक दूसरे के साथ रोए पर दाऊद का रोना अधिक था ॥ ४२ । तब योनातान् ने दाऊद से कहा कुशल से चला जा क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के नाम की किरिया खाई है कि यहोवा मेरे तेरे बीच और मेरे तेरे वंश के बीच सदा लों रहे । तब वह उठकर चला गया और योनातान् नगर में गया ॥

२१. और दाऊद नोब् को अहीमेलेक् याजक के पास आया और अहीमेलेक् दाऊद से भेंट करने को थरथराता हुआ निकला और उस से पूछा क्या कारण है कि तू अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं ॥ २ । दाऊद ने अहीमेलेक् याजक से कहा राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझ से कहा जिस काम को मैं तुझे भेजता और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं वह किसी पर प्रगट न होने पाए और मैं ने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है ॥ ३ । सो अब तेरे हाथ में क्या है पांच रोटी वा जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे ॥ ४ । याजक ने दाऊद से कहा मेरे पास साधारण रोटी तो कुछ नहीं है केवल पवित्र रोटी है इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग रहे हों ॥ ५ । दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उस से कहा सच है कि हम तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं फिर जब मैं निकल आया तब तो जवानों के बर्तन पवित्र थे यद्यपि यात्रा साधारण है सो आज उन के बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे ॥ ६ । तब याजक ने उस को पवित्र रोटी दिई क्योंकि दूसरी रोटी वहां न थी केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सन्मुख से उठाई गई थी कि उस के उठा लेने के दिन गरम रोटी रक्खी जाए ॥ ७ । उसी दिन वहां दोएग् नाम शाऊल् का एक कर्म्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था वह एदोमी और शाऊल् के चरवाहों का मुखिया था ॥ ८ । फिर दाऊद ने अहीमेलेक् से पूछा क्या यहां तेरे पास कोई भाला वा तलवार नहीं है क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो अपनी तलवार साथ लाया हूं न अपना और कोई हथियार ॥ ९ । याजक ने कहा हां पलिश्ती गोल्यत् जिसे तू ने एला तराई में घात किया उस की तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद् के पीछे धरी है यदि तू उसे लेना चाहे तो ले उसे छोड़ कोई और यहां नहीं है । दाऊद बोला उस के तुल्य कोई नहीं वही मुझे दे ॥

१० । तब दाऊद चला और उसी दिन शाऊल् के डर के मारे भागकर गत् के राजा आकीश् के पास गया ॥ ११ । और आकीश् के कर्म्मचारियों ने आकीश् से कहा क्या यह उस देश का राजा दाऊद नहीं है क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते नाचते एक दूसरे के साथ यह टेक न गाई थी कि

शाऊल् ने हजारों को
और दाऊद ने लाखों को मारा है ॥
१२। दाऊद ने ये बातें अपने मन में रक्खीं और गात् के राजा आकीश् से निपट डर गया ॥ १३। सो वह उन के साम्हने दूसरी चाल चला और उन के हाथ में पड़कर बौड़हा बन गया और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा ॥ १४। तब आकीश् ने अपने कर्म्मचारियों से कहा देखो वह जन तो बावला है तुम उसे मेरे पास क्यों लाये हो ॥ १५। क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है कि तुम उस को मेरे साम्हने बावलापन करने के लिये लाये हो क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा ॥

२२. सो दाऊद वहां से चला और अदुल्लाम् की गुफा में पहुंचकर बच गया और यह सुनकर उस के भाई बरन उस के पिता का सारा घराना वहां उस के पास गया ॥ २। और जितने संकट में पड़े और जितने ऋणी थे और जितने उदास थे वे सब उस के पास एकट्ठे हुए और वह उन का प्रधान हुआ और कोई चार सौ पुरुष उस के साथ हो गये ॥

३। वहां से दाऊद ने मोआब् के मिस्पे को जाकर मोआब् के राजा से कहा मेरे पिता को अपने पास आकर तब लों रहने दो जब लों कि मैं न जानूं कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा ॥ ४। सो वह उन को मोआब् के राजा के सन्मुख ले गया और जब लों दाऊद उस गढ़ में रहा तब लों वे उस के पास रहे ॥ ५। फिर गाद् नाम नबी ने दाऊद से कहा इस गढ़ में मत रह चल यहूदा के देश में जा सो दाऊद चलकर हेरेत् के वन में गया ॥

६। तब शाऊल् ने सुना कि दाऊद और उस के संगियों का पता लगा है। उस समय शाऊल् गिबा के ऊंचे स्थान पर एक झाऊ के तले हाथ में अपना भाला लिये हुए बैठा था और उस के सब कर्म्मचारी उस के आसपास खड़े थे ॥ ७। सो शाऊल् अपने कर्म्मचारियों से जो उस के आसपास खड़े थे कहने लगा हे बिन्यामीनियो सुनो क्या यिशै का पुत्र तुम सभों को खेत और दाख की बारियां देगा क्या वह तुम सभों को सहस्रपति और शतपति करेगा ॥ ८। तुम सभों ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी किई है और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बांधी तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्म्मचारी को मेरे विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है जैसा आज कल लगाये है ॥ ९। तब एदोमी दोएग् ने जो शाऊल् के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था उत्तर देकर कहा मैं ने तो यिशै के पुत्र को नोब् में अहीतूब् के पुत्र अहीमेलेक् के पास आते देखा ॥ १०। और उस ने उस के लिये यहोवा से पूछा और उसे भोजन-वस्तु दिई और पलिश्ती गोल्यत् की तलवार भी दिई ॥ ११। सो राजा ने अहीतूब् के पुत्र अहीमेलेक् याजक को और उस के पिता के सारे घराने को अर्थात् नोब् में रहनेहारे याजकों को बुलवा भेजा और जब वे सब के सब शाऊल् राजा के पास आये, १२। तब शाऊल् ने कहा हे अहीतूब् के पुत्र सुन वह बोला हे प्रभु क्या आज्ञा ॥ १३। शाऊल् ने उस से पूछा क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी किई है तू ने उसे रोटी और तलवार दिई और उस के लिये परमेश्वर से पूछा भी जिस से वह मेरे विरुद्ध उठे और ऐसा घात लगाए जैसा आजकल लगाये है ॥ १४। अहीमेलेक् ने राजा को उत्तर देकर कहा तेरे सारे कर्म्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वास-योग्य कौन है वह तो राजा का दामाद है और तेरी राजसभा में हाजिर हुआ करता और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है ॥ १५। क्या मैं ने आज ही उस के लिये परमेश्वर से पूछना आरंभ किया है यह मुझ से दूर रहे राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए न मेरे पिता के सारे घराने पर क्योंकि तेरा दास इस सारे बखेड़े के विषय कुछ भी[1] नहीं जानता ॥ १६। राजा ने कहा हे अहीमेलेक् तू और

(१) मूल में छोटा और बड़ा।

तेरे पिता का सारा घराना निश्चय मार डाला जाएगा ॥ १७ । फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उस के आसपास खड़े थे कहा मुंह फेरके यहोवा के याजकों को मार डालो क्योंकि उन्हों ने भी दाऊद की सहायता किई और उस का भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया । पर राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे ॥ १८ । सो राजा ने दोएग् से कहा तू मुंह फेरके याजकों को मार डाल तब एदोमी दोएग् ने मुंह फेरा और उसी ने याजकों को मारा और उस दिन सनीवाला एपोद् पहिने हुए पचासी पुरुषों को घात किया ॥ १९ । और याजकों के नगर नोब् को उस ने स्त्रियों पुरुषों बालबच्चों दूधपिउवों बैलों गदहों और भेड़ बकरियों समेत तलवार से मारा ॥ २० । पर अहीतूब् के पुत्र अहीमेलेक् का एब्यातार् नाम एक पुत्र बच निकला और दाऊद के पास भाग गया ॥ २१ । तब एब्यातार् ने दाऊद को बताया कि शाऊल् ने यहोवा के याजकों को बध किया, २२ । और दाऊद ने एब्यातार् से कहा जिस दिन एदोमी दोएग् वहां था उसी दिन मैं ने जान लिया कि वह निश्चय शाऊल् को बताएगा तेरे पिता के सारे घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ ॥ २३ । तू मेरे साथ निडर रहा कर मेरे प्राण का गाहक तेरे प्राण का भी गाहक है पर मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी ॥

२३. और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से लड़ रहे और खलिहानों को लूट रहे हैं ॥ २ । सो दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूं यहोवा ने दाऊद से कहा जा और पलिश्तियों को मारके कीला को बचा ॥ ३ । पर दाऊद के जनों ने उस से कहा हम तो इस यहूदा देश में भी डरते रहते हैं सो यदि हम कीला जाकर पलिश्तियों की सेना का साम्हना करें तो बहुत अधिक डर में पड़ेंगे ॥ ४ । सो दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा कमर बांधकर कीला को जा क्योंकि मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर दूंगा ॥ ५ । सो दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया और पलिश्तियों से लड़कर उन के पशुओं को हांक लाया और उन्हें बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया ॥ ६ । जब अहीमेलेक् का पुत्र एब्यातार् दाऊद के पास कीला को भाग गया तब हाथ में एपोद् लिये हुए गया था ॥

७ । तब शाऊल् को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है और शाऊल् ने कहा परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है वह तो फाटक और बेंड़ेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है ॥ ८ । सो शाऊल् ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया कि कीला को जाकर दाऊद और उस के जनों को घेर ले ॥ ९ । तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल् मेरी हानि की युक्ति कर रहा है सो उस ने एब्यातार् याजक से कहा एपोद् को निकट ले आ ॥ १० । तब दाऊद ने कहा हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल् मेरे कारण कीला नगर नाश करने को आने चाहता है ॥ ११ । क्या कीला के लोग मुझे उस के वश में कर देंगे क्या जैसे तेरे दास ने सुना है वैसे ही शाऊल् आएगा हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा अपने दास को यह बता । यहोवा ने कहा हां वह आएगा ॥ १२ । फिर दाऊद ने पूछा क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल् के वश में कर देंगे यहोवा ने कहा हां वे कर देंगे ॥ १३ । तब दाऊद और उस के जन जो कोई छः सौ थे कीला से निकल गये और इधर उधर जहां कहीं जा सके वहां गये और जब शाऊल् को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है तब उस ने वहां जाने की मनसा छोड़ दिई ॥

१४ । सो दाऊद तो जंगल के गढ़ों में रहने लगा और पहाड़ी देश में के जीप् नाम जंगल में रहा और शाऊल् उसे दिन दिन ढूंढ़ता रहा परन्तु परमेश्वर ने उसे उस के हाथ में न पड़ने दिया ॥ १५ । और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल् मेरे प्राण की खोज

और दाऊद जीप् नाम जंगल के होरेश् नाम स्थान में था, १६। कि शाऊल् का पुत्र योनातान् उठकर उस के पास होरेश् में गया और परमेश्वर की चर्चा करके उस को हियाव बंधाया[1] ॥ १७। उस ने उस से कहा मत डर क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल् के हाथ में न पड़ेगा और तू ही इस्राएल् का राजा होगा और मैं तेरे नीचे हूंगा और इस बात को मेरा पिता शाऊल् भी जानता है ॥ १८। तब उन दोनों ने यहोवा की किरिया खाकर[2] आपस में वाचा बांधी तब दाऊद होरेश् में रह गया और योनातान् अपने घर चला गया ॥ १९। तब जीपी लोग गिबा में शाऊल् के पास आकर कहने लगे दाऊद तो हमारे पास होरेश् के गढ़ों में अर्थात् उस हकीला नाम पहाड़ी पर छिपा रहता है जो यशीमोन् की दक्खिन ओर है ॥ २०। सो अब हे राजा तेरी जो इच्छा आने की है सो आ और उस को राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा ॥ २१। शाऊल् ने कहा यहोवा की आशीष तुम पर हो क्योंकि तुम ने मुझ पर दया किई है ॥ २२। तुम चलकर और भी निश्चय कर लो और देख भालकर जान लो और उस के अड्डे का पता लगा लो और बूझो कि उस को वहां किस ने देखा है क्योंकि किसी ने मुझ से कहा है कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है ॥ २३। सो जहां कहीं वह छिपा करता है उन सब स्थानों को देख देखकर पहिचानो तब निश्चय करके मेरे पास लौट आना और मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और यदि वह उस देश में कहीं भी हो तो मैं उसे यहूदा के हजारों में से ढूंढ़ निकालूंगा ॥ २४। सो वे चलकर शाऊल् से पहिले जीप् को गये पर दाऊद अपने जनों समेत माओन् नाम जंगल में चला गया था जो अराबा में यशीमोन् की दक्खिन ओर है ॥ २५। सो शाऊल् अपने जनों को साथ लेकर उस की खोज में गया। इस का समाचार पाकर दाऊद ढांग पर से उतरके माओन् जंगल में रहने लगा। यह सुन शाऊल् ने माओन् जंगल में दाऊद का पीछा किया ॥ २६। शाऊल् तो पहाड़ की एक ओर और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था और दाऊद शाऊल् के डर के मारे जल्दी जा रहा था और शाऊल् अपने जनों समेत दाऊद और उस के जनों को पकड़ने के लिये घेरा चाहता था, २७। कि एक दूत ने शाऊल् के पास आकर कहा फुर्ती से चला आ क्योंकि पलिश्तियों ने देश पर चढ़ाई किई है ॥ २८। यह सुन शाऊल् दाऊद का पीछा छोड़कर पलिश्तियों का साम्हना करने को चला इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्महलकोत्[1] पड़ा ॥ २९। वहां से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा ॥

२४. जब शाऊल् पलिश्तियों का पीछा करके लौटा तब उस को यह समाचार मिला कि दाऊद एनगदी के जंगल में है ॥ २। सो शाऊल् सारे इस्राएलियों में से तीन हजार को छांटकर दाऊद और उस के जनों को बनैले बकरों की चटानों पर खोजने गया ॥ ३। जब वह मार्ग पर के भेड़सालों के पास पहुंचा जहां एक गुफा थी तब शाऊल् दिशा फिरने को उस के भीतर गया और उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उस के जन बैठे हुए थे ॥ ४। तब दाऊद के जनों ने उस से कहा सुन आज वही दिन है जिस के विषय यहोवा ने तुझ से कहा था कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा कि तू उस से मनमाना कर ले। तब दाऊद ने उठकर शाऊल् के बागे की कोर को छिपकर काट लिया ॥ ५। इस के पीछे दाऊद शाऊल् के बागे की कोर काटने से पछताया[2], ६। और अपने जनों से कहने लगा यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं कि उस पर हाथ चलाऊं क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है ॥ ७। ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को घुड़का और उन्हें शाऊल् की कुछ हानि करने को उठने न दिया। फिर शाऊल्

(१) मूल में परमेश्वर में उस के हाथ बली किये। (२) मूल में यहोवा के साम्हने।

(१) अर्थात्, बच निकलने की चटान। (२) मूल में, दाऊद के मन ने उसे मारा।

उठकर गुफा से निकला और अपना मार्ग लिया ॥ ८। उस के पीछे दाऊद भी उठकर गुफा से निकला और शाऊल् को पीछे से पुकारके बोला हे मेरे प्रभु हे राजा। जब शाऊल् ने फिरके देखा तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर दण्डवत् किई ॥ ९। और दाऊद ने शाऊल् से कहा जो मनुष्य कहते हैं कि दाऊद तेरी हानि चाहता है उन की तू क्यों सुनता है ॥ १०। देख आज तू ने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे मारने को कहा था पर मुझे तुझ पर तरस आया और मैं ने कहा मैं अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है ॥ ११। फिर हे मेरे पिता देख अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख मैं ने तेरे बागे की छोर तो काट लिई पर तुझे घात न किया इस से निश्चय करके जान ले कि मेरे मन[1] में कोई बुराई वा अपराध का सोच नहीं है और मैं ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया पर तू मेरा प्राण लेने को मानो उस का अहेर करता रहता है ॥ १२। यहोवा मेरा तेरा विचार करे और यहोवा तुझ से मेरा पलटा ले पर मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा ॥ १३। प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार दुष्टता दुष्टों से होती है पर मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा ॥ १४। इस्राएल् का राजा किस का पीछा करने को निकला है और किस के पीछे पड़ा है एक मरे कुत्ते के पीछे एक पिस्सू के पीछे ॥ १५। सो यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए ॥ १६। दाऊद शाऊल् से ये बातें कही चुका था कि शाऊल् ने कहा हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा बोल है तब शाऊल् चिल्लाकर रोने लगा ॥ १७। फिर उस ने दाऊद से कहा तू मुझ से अधिक धर्म्मी है तू ने तो मेरे साथ भलाई किई है पर मैं ने तेरे साथ बुराई किई ॥ १८। और तू ने आज यह प्रगट किया है कि तू ने मेरे साथ भलाई किई है कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया तब तू ने मुझे घात न किया ॥ १९। भला क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से चले जाने देता है सो जो तू ने आज मेरे साथ किया है इस का अच्छा बदला यहोवा तुझे दे ॥ २०। और अब मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा और इस्राएल् का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा ॥ २१। सो अब मुझ से यहोवा की किरिया खा कि मैं तेरे वंश को तेरे पीछे नाश न करूंगा और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा ॥ २२। सो दाऊद ने शाऊल् से ऐसी ही किरिया खाई। तब शाऊल् अपने घर चला गया और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों को चढ़ गया ॥

२५. और

शमूएल् मर गया और सारे इस्राएलियों ने एकट्ठे होकर उस के लिये छाती पीटी और उस के घर ही में जो रामा में था उस को मिट्टी दिई। तब दाऊद चलकर पारान् जंगल को चला गया ॥

२। माओन् में एक पुरुष रहता था जिस का माल कर्मेल् में था और वह पुरुष बहुत बड़ा था और उस के तीन हजार भेड़ें और एक हजार बकरियां थीं और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतरा रहा था ॥ ३। उस पुरुष का नाम नाबाल् और उस की स्त्री का नाम अबीगैल् था स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवान थी पर पुरुष कठोर और बुरे बुरे काम करनेहारा था वह तो कालेबवंशी था ॥ ४। जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया कि नाबाल् अपनी भेड़ों का ऊन कतरा रहा है, ५। तब दाऊद ने दस जवानों को वहां भेज दिया और दाऊद ने उन जवानों से कहा कि कर्मेल् में नाबाल् के पास जाकर मेरी ओर से उस का कुशलक्षेम पूछो ॥ ६। और उस से यों कहो कि तू चिरंजीव रहे तेरा कल्याण रहे और तेरा घराना कल्याण से रहे और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे ॥ ७। मैं ने सुना है कि तू ऊन कतरा रहा है तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे और न तो हम ने उन की

[1] मूल में हाथ।

कुछ हानि किई न उन का कुछ खोया गया ॥ ८ । अपने जवानों से यह बात पूछ ले और वे तुझ को बतायेंगे सो इन जवानों पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो हम तो आनन्द के समय में आये हैं सो जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे ॥ ९ । ऐसी ऐसी बातें दाऊद के जवान जा उस के नाम से नाबाल् को सुनाकर चुप रहे[1] ॥ १० । नाबाल् ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उन से कहा दाऊद कौन है यिशै का पुत्र कौन है आजकल बहुत से दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं ॥ ११ । क्या मैं अपनी रोटी पानी और जो पशु मैं ने अपने कतरनेहारों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूं जिन को मैं नहीं जानता कि कहां के हैं ॥ १२ । सो दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया और लौटकर उस को ये सारी बातें ज्यों की त्यों सुना दिई ॥ १३ । तब दाऊद ने अपने जनों से कहा अपनी अपनी तलवार बांध लो सो उन्हों ने अपनी अपनी तलवार बांध लिई और दाऊद ने भी अपनी तलवार बांध लिई और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे पीछे चले और दो सौ सामान के पास रह गये ॥ १४ । पर एक सेवक ने नाबाल् की स्त्री अबीगैल् को बताया कि दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे और उस ने उन्हें ललकार दिया ॥ १५ । पर वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे और जब तक हम मैदान में रहते हुए उन के साथ आया जाया करते थे तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई[2] न हमारा कुछ खोया गया ॥ १६ । जब तक हम उन के साथ भेड़ बकरियां चराते रहे तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे ॥ १७ । सो अब सोचकर विचार कर कि क्या करना चाहिये क्योंकि उन्हों ने हमारे स्वामी की और उस के सारे घराने की हानि ठानी होगी वह तो ऐसा दुष्ट है कि उस से कोई बोल भी नहीं सकता ॥ १८ । तब अबीगैल् ने फुर्ती से दो सौ रोटी दो कुप्पी दाखमधु पांच भेड़ियों का मांस पांच सआ[1] भूना हुआ अनाज एक सौ गुच्छे किशमिश और अंजीरों की दो सौ टिकिया लेकर गदहों पर लदवाईं और उस ने अपने जवानों से कहा तुम मेरे आगे आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं पर उस ने अपने पति नाबाल् से कुछ न कहा ॥ २० । वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी आती थी कि दाऊद अपने जनों समेत उस के साम्हने उतरा आता था सो वह उन को मिली ॥ २१ । दाऊद ने तो सोचा था कि मैं ने जो जंगल में उस के सारे माल की ऐसी रक्षा किई कि उस का कुछ नहीं खो गया यह निःसंदेह व्यर्थ हुआ क्योंकि उस ने भलाई के पलटे मुझ से बुराई ही किई है ॥ २२ । यदि बिहान को उजियाले होने तक उस जन के सारे लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीता छोड़ूं तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा वरन इस से भी अधिक करे ॥ २३ । दाऊद को देख अबीगैल् फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी और दाऊद के सन्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत् किई ॥ २४ । फिर वह उस के पांव पर गिरके कहने लगी हे मेरे प्रभु यह अपराध मेरे ही सिर पर हो तेरी दासी तुझ से कुछ कहने पाए और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले ॥ २५ । मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल् पर चित्त न लगाए क्योंकि जैसा उस का नाम है वैसा वह आप है उस का नाम तो नाबाल्[2] है और सचमुच उस में मूढ़ता पाई जाती है पर मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तू ने भेजा था न देखा था ॥ २६ । और अब हे मेरे प्रभु यहोवा के जीवन की सौंह और तेरे जीवन की सौंह कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रक्खा है इस लिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेहारे नाबाल् ही के समान ठहरें ॥ २७ । और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है उन जवानों को दिई जाए जो

(१) मूल में हम को लजवाया। (२) मूल में विश्राम किया। (३) मूल में, न हम लजवाये गये।

(१) यह नपुए विशेष का नाम है। (२) मूर्ख मूढ़।

मेरे प्रभु के साथ चलते हैं ॥ २८ । अपनी दासी का अपराध क्षमा कर क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा इस लिये कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है और जन्म भर तुझ में कोई बुराई न पाई जाएगी ॥ २९ । और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का गाहक होने को उठा है तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बन्धा रहेगा और तेरे शत्रुओं के प्राण को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा ॥ ३० । सो जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये वह सारी भलाई करेगा जो उस ने तेरे विषय में कही है और तुझे इस्राएल् पर प्रधान करके ठहराएगा, ३१ । तब तुझे इस कारण पछताना वा मेरे प्रभु को छाती धकधकाना न[1] पड़ेगा कि तू ने अकारण खून किया और मेरे प्रभु ने अपना पलटा आप लिया है फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना ॥ ३२ । दाऊद ने अबीगैल् से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने आज के दिन तुझे मेरी भेंट के लिये भेजा है ॥ ३३ । और तेरा विवेक धन्य है और तू आप भी धन्य है कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने से रोक लिया है ॥ ३४ । क्योंकि सचमुच इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस ने मुझे तेरी हानि करने से रोका है उस के जीवन की सौंह यदि तू फुर्ती करके मुझ से भेंट करने को न आती तो निःसन्देह बिहान को उजियाले होने लों नाबाल् का कोई लड़का भी न बचता ॥ ३५ । तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया सो वह उस के लिये लाई थी फिर उस से उस ने कहा अपने घर कुशल से जा सुन मैं ने तेरी बात मानी और तेरी बिनती अंगीकार किई है ॥ ३६ । सो अबीगैल् नाबाल् के पास लौट गई और क्या देखती है कि वह घर में राजा की सी जेवनार कर रहा है और नाबाल् का मन मगन है और वह नशे में अति चूर हो गया है सो उस ने भोर के उजियाले होने से पहिले उस से कुछ[1] भी न कहा ॥ ३७ । बिहान को जब नाबाल् का नशा उतर गया तब उस की स्त्री ने उसे सारा हाल सुना दिया तब उस के मन का हियाव जाता रहा[2] और वह पत्थर सा सुन्न हो गया ॥ ३८ । और दस एक दिन के पीछे यहोवा ने नाबाल् को ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ ३९ । नाबाल् के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा धन्य है यहोवा जो नाबाल् के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़ा और अपने दास को बुराई से रोक रक्खा और यहोवा ने नाबाल् की बुराई को उसी के सिर पर लौटा दिया है । तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल् के पास इस लिये भेजा कि वे उस से उस की स्त्री होने की बातचीत करें ॥ ४० । सो जब दाऊद के सेवक कर्मेल् को अबीगैल् के पास पहुंचे तब उस से कहने लगे दाऊद ने हमें तेरे पास इस लिये भेजा है कि तू उस की स्त्री बने ॥ ४१ । तब वह उठी और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये लौंडी बने ॥ ४२ । तब अबीगैल् फुर्ती से उठी और गदहे पर चढ़ी और उस की पांच सहेलियां उस के पीछे पीछे हो लिईं और वह दाऊद के दूतों के पीछे पीछे गई और उस की स्त्री हो गई ॥ ४३ । और दाऊद ने यिज्रेल् नगर की अहीनोअम् को भी ब्याह लिया सो वे दोनों उस की स्त्रियां हुईं ॥ ४४ । पर शाऊल् ने अपनी बेटी दाऊद की स्त्री मीकल् को लैश् के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था ॥

२६. फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल् के पास जाकर कहने लगे क्या दाऊद उस हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन् के साम्हने है छिपा नहीं रहता ॥ २ । तब शाऊल् उठकर इस्राएल् के तीन हजार छांटे हुए योद्धा संग लिये हुए गया कि दाऊद को जीप् के जंगल में खोजे ॥ ३ । और शाऊल् ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला पहाड़ी पर जो यशीमोन् के

(१) मूल में हृदय का ठोकर खाना न ।

(१) मूल में छोटा और बड़ा कुछ । (२) मूल में, उस का हृदय उस के अन्तर में मर गया ।

साम्हने है डाली पर दाऊद जंगल में रहा और उस ने जान लिया कि शाऊल् मेरा पीछा करने को जंगल में आया है ॥ ४ । सो दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल् सचमुच आ गया है ॥ ५ । तब दाऊद उठ उस स्थान पर गया जहां शाऊल् पड़ा था और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहां शाऊल् अपने सेनापति नेर् के पुत्र अब्नेर् समेत पड़ा था शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उस के लोग उस की चारों ओर डेरे डाले हुए थे ॥ ६ । सो दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक् और जरूयाह् के पुत्र योआब् के भाई अबीशै से कहा मेरे साथ उस छावनी में शाऊल् के पास कौन चलेगा अबीशै ने कहा तेरे साथ मैं चलूंगा ॥ ७ । सो दाऊद और अबीशै रातों रात उन लोगों के पास गये और क्या देखते हैं कि शाऊल् गाड़ियों की आड़ में सोया हुआ पड़ा है और उस का भाला उस के सिर्हाने भूमि में गड़ा है और अब्नेर् और और लोग उस की चारों ओर पड़े हुए हैं ॥ ८ । तब अबीशै ने दाऊद से कहा परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है सो अब मैं उस को एक बार ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धस जाए और मुझ को उसे दूसरी मारना न पड़ेगा ॥ ९ । दाऊद ने अबीशै से कहा बार उसे नाश न कर क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता ॥ १० । फिर दाऊद ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह यहोवा ही उस को मारेगा या वह अपनी मृत्यु से मरेगा[१] या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा ॥ ११ । यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर बढ़ाऊं अब उस के सिर्हाने से भाला और पानी की झारी उठा ले और हम चले जाएं ॥ १२ । तब दाऊद ने भाले और पानी की झारी को शाऊल् के सिर्हाने से उठा लिया और वे चले गये और किसी ने इसे न देखा और न जाना न कोई जागा क्योंकि वे सब इस कारण से सोते थे कि यहोवा की ओर से उन को भारी नींद पड़ गई थी ॥ १३ । तब दाऊद परली ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था ॥ १४ । और दाऊद ने उन लोगों को और नेर् के पुत्र अब्नेर् को पुकारके कहा हे अब्नेर् क्या तू नहीं सुनता अब्नेर् ने उत्तर देकर कहा तू कौन है जो राजा को पुकारता है ॥ १५ । दाऊद ने अब्नेर् से कहा क्या तू पुरुष नहीं है इस्राएल् में तेरे तुल्य कौन है तू ने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं किई एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नाश करने घुसा था ॥ १६ । जो काम तू ने किया है वह अच्छा नहीं यहोवा के जीवन की सोंह तुम लोग मार डालने के योग्य हो क्योंकि तुम ने अपने स्वामी यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं किई और अब देख राजा का भाला और पानी की झारी जो उस के सिर्हाने थी सो कहां हैं ॥ १७ । तब शाऊल् ने दाऊद का बोल पहिचानकर कहा हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा बोल है दाऊद ने कहा हां मेरे प्रभु राजा मेरा ही बोल है ॥ १८ । फिर उस ने कहा मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता है मैं ने क्या किया है और मुझ से कौन सी बुराई हुई है[१] ॥ १९ । अब मेरा प्रभु राजा अपने दास की बातें सुन ले । यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध उसकाया हो तब तो वह भेंट ग्रहण करे[२] पर यदि आदमियों ने ऐसा किया हो तो वे यहोवा की ओर से स्रापित हों क्योंकि उन्हों ने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं और उन्हों ने कहा है कि जा पराये देवताओं की उपासना कर ॥ २० । सो अब मेरा लोहू यहोवा की आंखों की ओट में भूमि पर न बहने[३] पाए इस्राएल् का राजा तो एक पिस्सू ढूंढने आया है जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर करे ॥ २१ । शाऊल् ने कहा मैंने पाप किया है हे मेरे बेटे दाऊद लौट आ मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा इस कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा सुन मैं ने मूर्खता किई

(१) मूल में उस का दिन आएगा और वह मरेगा ।

(१) मूल में मेरे हाथ में क्या बुराई है । (२) मूल में. सूंघे ।
(३) मूल में. गिरने ।

और मुझ से बड़ी भूल हुई है ॥ २२। दाऊद ने उत्तर देकर कहा हे राजा भाले को देख कोई जवान इधर आकर इसे ले जाए ॥ २३। यहोवा एक एक को अपने अपने धर्म और सच्चाई का फल देगा देख आज यहोवा ने तुझ को मेरे हाथ में कर दिया था पर मैं ने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाना न चाहा ॥ २४। सो जैसे तेरा प्राण आज मेरी दृष्टि में प्रिय[1] ठहरा वैसे ही मेरा प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय[1] ठहरे और वह मुझे सारी विपत्तियों से छुड़ाए ॥ २५। शाऊल् ने दाऊद से कहा हे मेरे बेटे दाऊद तू धन्य है तू बड़े बड़े काम करेगा और तेरे काम सुफल होंगे। तब दाऊद ने अपना मार्ग लिया और शाऊल् भी अपने स्थान को लौट गया ॥

(दाऊद का पलिश्तियों के यहां शरण लेना और शाऊल् और योनातान् का मारा जाना)

२७. और दाऊद सोचने लगा अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल् के हाथ से नाश हो जाऊंगा सो मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं तब शाऊल् मेरे विषय निराश होगा और मुझे इस्राएल् के देश के किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा यों मैं उस के हाथ से बच निकलूंगा ॥ २। सो दाऊद अपने छः सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया और गत् के राजा माओक् के पुत्र आकीश् के पास गया ॥ ३। और दाऊद और उस के जन अपने अपने परिवार समेत गत् में आकीश् के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो स्त्रियों के साथ अर्थात् यिज्रेली अहीनोअम् और नाबाल् की स्त्री कर्मेली अबीगैल् के साथ रहा ॥ ४। जब शाऊल् को यह समाचार मिला कि दाऊद गत् को भाग गया है तब उस ने उसे फिर कभी न ढूंढ़ा ॥

५। दाऊद ने आकीश् से कहा यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहां मैं रहूं तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे ॥ ६। सो आकीश् ने उसे उसी दिन सिक्लग् बस्ती दिई इस कारण से सिक्लग् आज के दिन लों यहूदा के राजाओं का बना है ॥

७। पलिश्तियों के देश में रहते रहते दाऊद को एक बरस चार महीने बीते ॥ ८। और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों गिर्जियों और अमालेकियों पर चढ़ाई किई ये जातियां तो प्राचीनकाल से उस देश में रहती थीं जो शूर् के मार्ग में मिस्र देश तक है ॥ ९। दाऊद ने उस देश को नाश किया और स्त्री पुरुष किसी को जीता न छोड़ा और भेड़ बकरी गाय बैल गदहे ऊंट और वस्त्र लेकर लौटा और आकीश् के पास गया ॥ १०। आकीश् ने पूछा आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं किई दाऊद ने कहा हां यहूदा यरह्मेलियों और केनियों की दक्खिन दिशा में ॥ ११। दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीता न छोड़ा कि उन्हें गत् में पहुंचाए उस ने सोचा था कि ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया है बरन जब से वह पलिश्तियों के देश में रहता है तब से उस का काम ऐसा ही है ॥ १२। सो आकीश् ने दाऊद की बात सच मानकर कहा यह अपने इस्राएली लोगों को अति घिनौना लगा है सो यह सदा लों मेरा दास बना रहेगा ॥

२८. उन दिनों में पलिश्तियों ने इस्राएल् से लड़ने के लिये अपनी सेना एकट्ठी किई और आकीश् ने दाऊद से कहा निश्चय जान कि तुझे अपने जनों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा ॥ २। दाऊद ने आकीश् से कहा इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा आकीश् ने दाऊद से कहा इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊंगा ॥

३। शमूएल् तो मर गया था और सारे इस्राएलियों ने उस के विषय छाती पीटी और उस को उस के नगर रामा में मिट्टी दिई थी। और शाऊल् ने ओझों और भूतसिद्धि करनेहारों को देश से निकाल दिया था ॥

(१) मूल में. बड़ा।

४। जब पलिश्ती एकट्ठे हुए तब शूनेम् में छावनी डाली और शाऊल् ने सब इस्राएलियों को एकट्ठा किया और उन्हों ने गिल्बो में छावनी डाली ॥ ५। पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल् डर गया और उस का मन अत्यन्त थरथरा उठा ॥ ६। और जब शाऊल् ने यहोवा से पूछा तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया और न ऊरीम् न नबियों के द्वारा ॥ ७। सो शाऊल् ने अपने कर्म्मचारियों से कहा मेरे लिये किसी भूत सिद्धि करनेहारी को खोजो कि मैं उस के पास जाकर उस से पूछूं उसके कर्म्मचारियों ने उस से कहा एन्दोर् में एक भूत सिद्धि करनेहारी रहती है ॥ ८। तब शाऊल् ने अपना भेष बदला और दूसरे कपड़े पहिनकर दो मनुष्य संग ले रातोरात चलकर उस स्त्री के पास गया और कहा अपने सिद्ध भूत से मेरे लिये भावी कहवा और जिस का नाम मैं लूंगा उसे बुला[१] ला ॥ ९। स्त्री ने उस से कहा तू जानता है कि शाऊल् ने क्या किया है कि उस ने ओझों और भूत सिद्धि करनेहारों को देश से नाश किया है फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले ॥ १०। शाऊल् ने यहोवा की किरिया खाकर उस से कहा यहोवा के जीवन की सोंह इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा ॥ ११। स्त्री ने पूछा मैं तेरे लिये किस को बुलाऊं[२] उस ने कहा शमूएल् को मेरे लिये बुला[१] ॥ १२। जब स्त्री ने शमूएल् को देखा तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई और शाऊल् से कहा तू ने मुझे क्यों धोखा दिया तू तो शाऊल् है ॥ १३। राजा ने उस से कहा मत डर तुझे क्या देख पड़ता है स्त्री ने शाऊल् से कहा मुझे एक देवता पृथिवी में से चढ़ता हुआ देख पड़ता है ॥ १४। उस ने उस से पूछा उस का कैसा रूप है उस ने कहा एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है सो शाऊल् ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल् है औंधे मुंह भूमि पर गिरके दण्डवत् किई ॥ १५। शमूएल् ने शाऊल् से पूछा तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है शाऊल् ने कहा मैं बड़े संकट में पड़ा हूं कि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया और अब मुझे न तो नबियों के द्वारा उत्तर देता है और न स्वप्नों के सो मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं ॥ १६। शमूएल् ने कहा जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया तब तू मुझ से क्यों पूछता है ॥ १७। यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहवाया था वैसा ही उस से व्यवहार किया है अर्थात् उस ने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है ॥ १८। तू ने जो यहोवा की न मानी और न अमालेकियों को उस के भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया ॥ १९। फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा ॥ २०। तब शाऊल् तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा और शमूएल् की बातों के कारण अत्यन्त डर गया उस ने उस सारे दिन और सारी रात को भोजन न किया था इस से उस में बल कुछ न रहा ॥ २१। तब स्त्री शाऊल् के पास गई और उस को अति व्याकुल देखकर उस से कहा सुन तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी और मैं ने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तू ने मुझ से कहे ॥ २२। सो अब तू भी अपनी दासी की बात मान और मैं तेरे साम्हने एक टुकड़ा रोटी रक्खूं तू उसे खाना कि जब तू अपना मार्ग ले सके तब तुझे बल आ जाए ॥ २३। उस ने नकारके कहा मैं न खाऊंगा पर उस के सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहां लों उसे दबाया कि वह उन की बात मान भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया ॥ २४। स्त्री के घर में सो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था सो उस ने फुर्ती करके उसे मारा फिर आटा लेकर गूंधा और अखमीरी रोटी बनाकर, २५। शाऊल् और उस के सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने खाया तब वे उठकर उसी रात चले गये ॥

---

(१) मूल में चढ़ा। (२) मूल में चढ़ाऊं।

२९. पलिश्तियों ने अपनी सारी सेना को अपेक् में एकट्ठा किया और इस्राएली यिज्रेल् के निकट के सोते के पास डेरे डाले हुए थे ॥ २ । तब पलिश्तियों के सरदार अपने अपने सैकड़ों और हजारों समेत आगे बढ़ गये और सेना की पिछाड़ी में आकीश् के साथ दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया ॥ ३ । सो पलिश्ती हाकिमों ने पूछा उन इब्रियों का यहां क्या काम है आकीश् ने पलिश्ती सरदारों से कहा क्या वह इस्राएल् के राजा शाऊल् का कर्म्मचारी दाऊद नहीं है जो क्या जाने कितने दिनों से बरन बरसों से मेरे साथ रहता है और जब से वह भाग आया तब से आज तक मैं ने उस में कोई दोष नहीं पाया ॥ ४ । तब पलिश्ती हाकिम उस से क्रोधित हुए और उस से कहा उस पुरुष को लौटा दे कि वह उस स्थान पर जाए जो तू ने उस के लिये ठहराया है वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा न हो कि वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए फिर वह अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे क्या लोगों के सिर कटवाकर न करेगा ॥ ५ । क्या वह वही दाऊद नहीं है जिस के विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे कि

शाऊल् ने हजारों को
पर दाऊद ने लाखों को मारा है ॥

६ । तब आकीश् ने दाऊद को बुलाकर उस से कहा यहोवा[१] के जीवन की सोंह तू तो सीधा है और सेना में तेरा मेरे संग आना जाना भी मुझे भावता है क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैं ने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई तौभी सरदार लोग तुझे नहीं चाहते ॥ ७ । सो अब तू कुशल से लौट जा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझ से अप्रसन्न हों ॥ ८ । दाऊद ने आकीश् से कहा मैं ने क्या किया है और जब से मैं तेरे साम्हने आया तब से आज लों तू ने अपने दास में क्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं ॥ ९ । आकीश् ने दाऊद को उत्तर देकर कहा हां यह मुझे मालूम है तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है तौभी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है कि वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा ॥ १० । सो अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आये हैं बिहान को तड़के उठना और तुम बिहान को तड़के उठकर उजियाला होते ही चले जाना ॥ ११ । सो बिहान को दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तियों के देश को लौट गया । और पलिश्ती यिज्रेल् को चढ़ गये ॥

३०. तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिक्लग् में पहुंचा तब उन्हों ने क्या देखा कि अमालेकियों ने दक्खिन देश और सिक्लग् पर चढ़ाई किई और सिक्लग् को मारके फूंक दिया, २ । और उस में के स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे सब को बंधुआई में ले गये उन्हों ने किसी को मार तो नहीं डाला सभों को लेकर अपना मार्ग लिया ॥ ३ । सो जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा तब नगर तो जला पड़ा था और स्त्रियां और बेटे बेटियां बंधुआई में चली गई थीं ॥ ४ । सो दाऊद और वे लोग जो उस के साथ थे चिल्लाकर इतना रोये कि फिर उन्हें रोने की शक्ति न रही ॥ ५ । और दाऊद की दो स्त्रियां यिज्रेली अहीनोअम् और कर्मेली नाबाल् की स्त्री अबीगैल् बन्धुआई में गई थीं ॥ ६ । और दाऊद बड़े संकट में पड़ा क्योंकि लोग अपने बेटों बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे पर दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बान्धा ॥

७ । तब दाऊद ने अहीमेलेक् के पुत्र एब्यातार् याजक से कहा एपोद् को मेरे पास ला सो एब्यातार् एपोद् को दाऊद के पास ले आया ॥ ८ । और दाऊद ने यहोवा से पूछा क्या मैं इस दल का पीछा करूं क्या उस को जा पकड़ूंगा उस ने उस से कहा

(१) मूल में यहोवा में ।

पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उस को पकड़ेगा और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा ॥ ९ । तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर् नाम नाले तक पहुंचा । वहां कुछ लोग छोड़े जाकर रह गये ॥ १० । दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किये चला गया पर दो सौ जो ऐसे थक गये थे कि बसोर् नाले के पार न जा सके वहीं रहे ॥ ११ । उन को एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला सो उन्हों ने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दिई और उस ने उसे खाया तब उसे पानी पिलाया ॥ १२ । फिर उन्हों ने उस को अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिये और जब उस ने खाया तब उस के जी में जी आया उस ने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई न पानी पिया था ॥ १३ । तब दाऊद ने उस से पूछा तू किस का जन है और कहां का है उस ने कहा मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूं और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया ॥ १४ । हम लोगों ने करेतियों की दक्खिन दिशा में और यहूदा के देश में और कालेब् की दक्खिन दिशा में चढ़ाई किई और सिक्लग् को आग लगाकर फूंक दिया था ॥ १५ । दाऊद ने उस से पूछा क्या तू मुझे उस दल के पास पहुंचा देगा उस ने कहा मुझ से परमेश्वर की यह किरिया खा कि मैं तुझे न तो प्राण से मारूंगा और न तेरे स्वामी के हाथ कर दूंगा तब मैं तुझे उस दल के पास पहुंचा दूंगा ॥ १६ । जब उस ने उसे पहुंचाया तब देखने में क्या आया कि वे सारी भूमि पर छिटके हुए खाते पीते और उस बड़ी लूट के कारण जो वे पलिश्तियों के देश और यहूदा देश से लाये थे नाच रहे हैं ॥ १७ । सो दाऊद उन्हें रात के पहिले पहर से लेकर दूसरे दिन की सांझ तक मारता रहा यहां लों कि चार सौ जवान छोड़ जो ऊंटों पर चढ़कर भाग गये उन में से एक भी मनुष्य न बचा ॥ १८ । और जो कुछ अमालेकी ले गये थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया ॥ १९ । बरन उन के क्या छोटे क्या बड़े क्या बेटे क्या बेटियां क्या लूट का माल सब कुछ जो अमालेकी ले गये थे उस में से कोई वस्तु न रही जो उन को न मिली हो क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया ॥ २० । और दाऊद ने सब भेड़ बकरियां और गाय बैल भी लूट लिये और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने ढोरों के आगे हांकते गये कि यह दाऊद की लूट है ॥ २१ । तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया जो ऐसे थक गये थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके थे और बसोर् नाले के पास छोड़ दिये गये थे और वे दाऊद से और उस के संग के लोगों से मिलने को चले और दाऊद ने उन के पास पहुंचकर उन का कुशलक्षेम पूछा ॥ २२ । तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गये थे सब दुष्ट और ओछे लोगों ने कहा वे लोग हमारे साथ न चले थे इस कारण हम उन्हें अपने छुड़ाये हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे केवल एक एक मनुष्य को उस की स्त्री और बाल बच्चे देंगे कि वे उन्हें लेकर चले जाएं ॥ २३ । पर दाऊद ने कहा हे मेरे भाइयो तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है और उस ने हमारी रक्षा किई और उस दल को जिस ने हमारे ऊपर चढ़ाई किई थी हमारे हाथ में कर दिया है ॥ २४ । और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा लड़ाई में जानेहारे का जैसा भाग हो सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा दोनों एक ही समान भाग पाएंगे ॥ २५ । और दाऊद ने इस्राएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया और वह उस दिन से लेकर आगे को बरन आज लों बना है ॥

२६ । फिर सिक्लग् में पहुंचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो उस के मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा और यह कहलाया कि यहोवा के शत्रुओं से लिई हुई लूट में से तुम्हारे लिये यह भेंट है ॥ २७ । अर्थात् बेतेल् दक्खिन देश में के रामोत् यत्तीर्, २८ । अरोएर् सिप्मोत् एश्तमो, २९ । राकाल् यरह्मेलियों के नगरों केनियों के नगरों, ३० । होर्मा कोराशान् अताक्, ३१ । हेब्रोन्

आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था उन सब के पुरनियों के पास उस ने कुछ कुछ भेजा ॥

३१. पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े और इस्राएली पुरुष पलिश्तियों के साम्हने से भागे और गिल्बो नाम पहाड़ पर मारे गये ॥ २। और पलिश्ती शाऊल् और उस के पुत्रों के पीछे लगे रहे और पलिश्तियों ने शाऊल् के पुत्र योनातान् अबीनादाब् और मल्कीशू को मार डाला ॥ ३। और शाऊल् के साथ लड़ाई और भारी होती गई और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया और वह उन के कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया ॥ ४। तब शाऊल् ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा अपनी तलवार खींचकर मेरे भोंक दे ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरे भोंक दें और मेरा ठट्ठा करें। पर उस के हथियार ढोनेहारे ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करना नकारा तब शाऊल् अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा ॥ ५। यह देखकर कि शाऊल् मर गया उस का हथियार ढोनेहारा भी अपनी तलवार पर आप गिरके उस के साथ मर गया ॥ ६। यों शाऊल् और उस के तीनों पुत्र और उस का हथियार ढोनेहारा और उस के सारे जन उसी दिन एक संग मर गये ॥ ७। यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गये और शाऊल् और उस के पुत्र मर गये उस तराई की परली ओरवाले और यर्दन के पारवाले भी इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगर को छोड़ भाग गये और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे ॥

८। दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आये तब उन को शाऊल् और उस के तीनों पुत्र गिल्बो पहाड़ पर पड़े हुए मिले ॥ ९। सो उन्हों ने शाऊल् का सिर काटा और हथियार लूट लिये और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इस लिये भेजा कि उन के देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएं ॥ १०। तब उन्हों ने उस के हथियार तो अश्तोरेत् नाम देवियों के मन्दिर में रक्खे और उस की लोथ बेत्शान् की शहरपनाह में जड़ दिई ॥ ११। जब गिलाद् में के याबेश् के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल् से क्या क्या किया है, १२। तब सब शूरवीर चले और रातोंरात जाकर शाऊल् और उस के पुत्रों की लोथें बेत्शान् की शहरपनाह पर से याबेश् में ले आये और वहीं फूंक दिईं ॥ १३। तब उन्हों ने उन की हड्डियां लेकर याबेश् में के झाऊ के नीचे गाड़ दिईं और सात दिन का उपवास किया ॥

शमूएल् नाम दूसरी पुस्तक ।

(दाऊद का शाऊल् के खून का दण्ड देना)

१. शाऊल् के मरने के पीछे जब दाऊद अमालेकियों को मारके लौटा और दाऊद को सिक्लग् में रहते दो दिन हो गये, २। तब तीसरे दिन छावनी में से शाऊल् के पास से एक पुरुष कपड़े फाड़े सिर पर धूलि डाले हुए आया और जब वह दाऊद के पास पहुंचा तब भूमि पर गिरके दण्डवत् किई ॥ ३। दाऊद ने उस से पूछा तू कहां से आया है उस ने उस से कहा मैं इस्राएली छावनी में से बचकर आया हूं ॥ ४। दाऊद ने उस से पूछा वहां क्या बात हुई मुझे बता उस ने कहा यह कि लोग रणभूमि

छोड़कर भाग गये और बहुत लोग मारे गये और शाऊल् और उस का पुत्र योनातान् भी मारे गये हैं ॥ ५ । दाऊद ने उस समाचार देनेहारे जवान से पूछा कि तू कैसे जानता है कि शाऊल् और उस का पुत्र योनातान् मर गये ॥ ६ । समाचार देनेहारे जवान ने कहा संयोग से मैं गिल्बो पहाड़ पर था तो क्या देखा कि शाऊल् अपने भाले की टेक लगाये हुए है फिर मैं ने यह भी देखा कि उस का पीछा किये हुए रथ और सवार बड़े वेग से दौड़े आते हैं ॥ ७ । उस ने पीछे फिरके मुझे देखा और मुझे पुकारा मैं ने कहा क्या आज्ञा ॥ ८ । उस ने मुझ से पूछा तू कौन है मैं ने उस से कहा मैं तो अमालेकी हूं ॥ ९ । उस ने मुझ से कहा मेरे पास[1] खड़ा होकर मुझे मार डाल क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है पर प्राण नहीं निकलता[2] ॥ १० । सो मैं ने यह निश्चय करके कि वह गिर जाने के पीछे नहीं बच सकता उस के पास[3] खड़े होकर उसे मार डाला और मैं उस के सिर का मुकुट और उस के हाथ का कंकन लेकर यहां अपने प्रभु के पास आया हूं ॥ ११ । तब दाऊद ने अपने कपड़े पकड़कर फाड़े और जितने पुरुष उस के संग थे उन्हों ने भी वैसा ही किया ॥ १२ । और वे शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् और यहोवा की प्रजा और इस्राएल् के घराने के लिये छाती पीटने और रोने लगे और सांझ लों कुछ न खाया इस कारण कि वे तलवार से मारे गये थे ॥ १३ । फिर दाऊद ने उस समाचार देनेहारे जवान से पूछा तू कहां का है उस ने कहा मैं तो परदेशी का बेटा अर्थात् अमालेकी हूं ॥ १४ । दाऊद ने उस से कहा तू यहोवा के अभिषिक्त को नाश करने के लिये हाथ बढ़ाने से क्यों नहीं डरा ॥ १५ । तब दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा निकट जाकर उस पर प्रहार कर । सो उस ने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ १६ । और दाऊद ने उस से कहा तेरा खून तेरे ही सिर पर पड़े क्योंकि तू ने यह कहकर कि मैं ही ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला अपने मुंह से अपने ही विरुद्ध साक्षी दिई है ॥

(शाऊल् और योनातान् के लिये दाऊद का बनाया हुआ विलापगीत)

१७ । तब दाऊद ने शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् के विषय यह विलापगीत बनाया, १८ । और यहूदियों को यह धनुष नाम गीत सिखाने की आज्ञा दिई । यह याशार् नाम पुस्तक में लिखा हुआ है ॥

१९ । हे इस्राएल् तेरा शिरोमणि तेरे ऊंचे स्थानों पर मारा गया
शूरवीर क्योंकर गिर पड़े हैं ।
२० । गत् में यह न बताओ
और न अश्कलोन् की सड़कों में प्रचारो
न हो कि पलिश्ती स्त्रियां आनन्दित हों
न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियां हुलसने लगें ।
२१ । हे गिल्बो पहाड़ो
तुम पर न ओस पड़े न वर्षा हो न भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाये जाएं
क्योंकि वहां शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं
और शाऊल् की ढाल बिना तेल लगाये रह गई ।
२२ । जूझे हुओं के लोहू बहाने से और शूरवीरों की चर्बी खाने से
योनातान् का धनुष लौट न जाता था
और न शाऊल् की तलवार छूछी फिर आती थी ।
२३ । शाऊल् और योनातान् जीते जी तो प्रिय और मनभाऊ थे
और मृत्यु के समय अलग न हुए
वे उकाब से भी वेग चलनेहारे
और सिंह से अधिक पराक्रमी थे ।
२४ । हे इस्राएली स्त्रियो शाऊल् के लिये रोओ
वह तो तुम्हें लाही रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता
और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता था ।

(१) वा मुझ पर । (२) मूल में मेरा प्राण मुझ में अब लों समूचा है । (३) वा. उस पर ।

२५ । युद्ध के बीच शूरवीर कैसे गिर गये
हे योनातान् हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए,
२६ । हे मेरे भाई योनातान् मैं तेरे कारण दुःख
में हूं
तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था
तेरा प्रेम मुझ पर अनूप
बरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था ॥
२७ । शूरवीर क्योंकर गिर गये
और युद्ध के हथियार कैसे नाश हो गये हैं ।

(दाऊद के हेब्रोन् में राज्य करने का वृत्तान्त.)

२. इस के पीछे दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं यहोवा ने उस से कहा हां जा दाऊद ने फिर पूछा किस नगर में जाऊं उस ने कहा हेब्रोन् में ॥ २ । सो दाऊद यिज्रेली अहीनोअम् और कर्मेली नाबाल् की स्त्री अबीगैल् नाम अपनी दोनों स्त्रियों समेत वहां गया ॥ ३ । और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत वहां ले गया और वे हेब्रोन् के गांवों में रहने लगे ॥ ४ । और यहूदी लोग गये और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो ॥

और दाऊद को यह समाचार मिला कि जिन्हों ने शाऊल् को मिट्टी दिई सो गिलाद् के याबेश् नगर के लोग हैं ॥ ५ । सो दाऊद ने दूतों से गिलाद् के याबेश् के लोगों के पास यह कहला भेजा यहोवा की आशीष तुम पर हो क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल् पर यह कृपा करके उस को मिट्टी दिई ॥ ६ । सो अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्त्ताव करे और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूंगा क्योंकि तुम ने यह काम किया है ॥ ७ । और अब हियाव बान्धो और पुरुषार्थ करो क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल् मर गया और यहूदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक किया है ॥

८ । पर नेर् का पुत्र अब्नेर् जो शाऊल् का प्रधान सेनापति था उस ने शाऊल् के पुत्र ईश्बोशेत् को संग ले पार जाकर महनैम् में पहुंचाया, ९ । और उसे गिलाद् अशूरियों के देश यिज्रेल् एप्रैम् बिन्यामीन् बरन सारे इस्राएल् के देश पर राजा किया ॥ १० । शाऊल् का पुत्र ईश्बोशेत् चालीस बरस का था जब वह इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा पर यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा ॥ ११ । और दाऊद के हेब्रोन् में यहूदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े सात बरस था ॥

१२ । और नेर् का पुत्र अब्नेर् और शाऊल् के के पुत्र ईश्बोशेत् के जन महनैम् से गिबोन् को आये ॥ १३ । तब सरूयाह् का पुत्र योआब् और दाऊद के जन हेब्रोन् से निकलकर उन से गिबोन् के पोखरे के पास मिले और दोनों दल उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गये ॥ १४ । तब अब्नेर् ने योआब् से कहा जवान लोग उठकर हमारे साम्हने खेलें योआब् ने कहा अच्छा वे उठें ॥ १५ । सो वे उठे और बिन्यामीन् अर्थात् शाऊल् के पुत्र ईश्बोशेत् के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले ॥ १६ । और उन्हों ने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी अपनी तलवार एक दूसरे के पांजर में भोंक दिई सो वे एक ही संग मरे इस से उस स्थान का नाम हेल्कथस्सूरीम्[1] पड़ा वह गिबोन् में है ॥ १७ । और उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ और अब्नेर् और इस्राएल् के पुरुष दाऊद के जनों से हार गये ॥ १८ । वहां तो योआब् अबीशै और असाहेल् नाम सरूयाह् के तीनों पुत्र थे और असाहेल् बनैले चिकारे के समान वेग दौड़नेहारा था ॥ १९ । सो असाहेल् अब्नेर् का पीछा करने लगा और उस का पीछा करते हुए न तो दहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर ॥ २० । अब्नेर् ने पीछे फिरके पूछा क्या तू असाहेल् है उस ने कहा हां मैं वही हूं ॥ २१ । अब्नेर् ने उस से कहा चाहे दहिनी चाहे बाईं ओर मुड़ किसी जवान को पकड़कर उस का बकतर ले ले पर असाहेल् ने उस का पीछा छोड़ने से नाह किया ॥ २२ । अब्नेर् ने असाहेल् से फिर कहा मेरा पीछा छोड़ दे मुझ को क्यों तुझे

(१) अर्थात् छूरियों का खेत ।

मारके मिट्टी में मिला देना पड़े ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब् को अपना मुख कैसे दिखाऊंगा ॥ २३ । तौभी उस ने हट जाने को नकारा सो अब्नेर् ने अपने भाले की पिछाड़ी उस के पेट में ऐसे मारी कि भाला वारपार होकर पीछे निकला सो वह वहीं गिरके मर गया और जितने लोग उस स्थान पर आये जहां असाहेल् गिरके मर गया सो सब खड़े रहे ॥ २४ । पर योआब् और अबीशै अब्नेर् का पीछा किये रहे और सूर्य डूबते डूबते वे अम्मा नाम उस पहाड़ी लों पहुंचे जो गिबोन् के जंगल के मार्ग में गीह् के साम्हने है ॥ २५ । और बिन्यामीनी अब्नेर् के पीछे होकर एक दल हो गये और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए ॥ २६ । तब अब्नेर् योआब् को पुकारके कहने लगा क्या तलवार सदा लों मारती रहे क्या तू नहीं जानता कि इस का फल दुःखदाई[1] होगा तू कब लों अपने लोगों को आज्ञा न देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो ॥ २७ । योआब् ने कहा परमेश्वर के जीवन की सोंह कि यदि तू न बोला होता तो निःसंदेह लोग सबेरे ही चले जाते और अपने अपने भाई का पीछा न करते ॥ २८ । तब योआब् ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और फिर इस्राएलियों का पीछा न किया और लड़ाई फिर न किई ॥ २९ । और अब्नेर् अपने जनों समेत उसी दिन रातोंरात अराबा से होकर गया और यर्दन् के पार हो सारे बित्रोन् देश होकर महनैम् में पहुंचा ॥ ३० । और योआब् अब्नेर् का पीछा छोड़कर लौटा और जब उस ने सब लोगों को एकट्ठा किया तब क्या देखा कि दाऊद के जनों में से उन्नीस पुरुष और असाहेल् भी नहीं हैं ॥ ३१ । पर दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर् के जनों को ऐसा मारा कि उन में से तीन सौ साठ जन मर गये ॥ ३२ । और उन्हों ने असाहेल् को उठाकर उस के पिता के कबरिस्तान में जो बेत्लेहेम् में था मिट्टी दिई तब योआब् अपने जनों समेत रात भर चलकर पह फटते हेब्रोन् में पहुंचा ॥

(१ मूल में, कड़वाहट ।

३. शाऊल् के घराने और दाऊद के घराने के बीच बहुत दिन लों लड़ाई होती रही पर दाऊद प्रबल होता गया और शाऊल् का घराना निर्बल पड़ता गया ॥

२ । और हेब्रोन् में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए । उस का जेठा बेटा अम्नोन् था जो यिज्रेली अहीनोअम् से जन्मा था ॥ ३ । और उस का दूसरा किलाब् था जिस की मा कर्मेली नाबाल् की स्त्री अबीगैल् थी तीसरा अबशालोम् जो गशूर् के राजा तल्मै की बेटी माका से जन्मा था, ४ । चौथा अदोनिय्याह् जो हग्गीत् से जन्मा था पांचवां शपत्याह् जिस की मा अबीतल् थी, ५ । छठवां यित्राम् जो एग्ला नाम दाऊद की स्त्री से जन्मा । हेब्रोन् में दाऊद से ये ही उत्पन्न हुए ॥

६ । जब शाऊल् और दाऊद दोनों के घरानों के बीच लड़ाई हो रही थी तब अब्नेर् शाऊल् के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया ॥ ७ । शाऊल् के तो एक रखेली थी जिस का नाम रिस्पा था वह अय्या की बेटी थी और ईश्बोशेत् ने अब्नेर् से पूछा तू मेरे पिता की रखेली के पास क्यों गया ॥ ८ । ईश्बोशेत् की बातों के कारण अब्नेर् अति क्रोधित होकर कहने लगा क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं आज लों मैं तेरे पिता शाऊल् के घराने और उस के भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूं कि तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय दोष लगाता है ॥ ९ । यदि मैं दाऊद के साथ ईश्वर की किरिया के अनुसार बर्ताव न करूं तो परमेश्वर अब्नेर् से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे ॥ १० । अर्थात् मैं राज्य को शाऊल् के घराने से छीनूंगा और दाऊद की राजगद्दी दान् से लेकर बेर्शेबा लों इस्राएल् और यहूदा के ऊपर स्थिर करूंगा ॥ ११ । और वह अब्नेर् को कोई उत्तर न दे सका इस लिये कि वह उस से डरता था ॥

१२ । तब अब्नेर् ने उस के नाम से दाऊद के पास दूतों से कहला भेजा कि देश किस का है

२५। युद्ध के बीच शूरवीर कैसे गिर गये
हे योनातान् हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए,
२६। हे मेरे भाई योनातान् मैं तेरे कारण दुःख
में हूं
तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था
तेरा प्रेम मुझ पर अनूप
बरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था॥
२७। शूरवीर क्योंकर गिर गये
और युद्ध के हथियार कैसे नाश हो गये हैं।

(दाऊद के हेब्रोन् में राज्य करने का वृत्तान्त.)

२. इस के पीछे दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं यहोवा ने उस से कहा हां जा दाऊद ने फिर पूछा किस नगर में जाऊं उस ने कहा हेब्रोन् में॥ २। सो दाऊद यिज्रेली अहीनोअम् और कर्मेली नाबाल् की स्त्री अबीगैल् नाम अपनी दोनों स्त्रियों समेत वहां गया॥ ३। और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत वहां ले गया और वे हेब्रोन् के गांवों में रहने लगे॥ ४। और यहूदी लोग गये और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो॥

और दाऊद को यह समाचार मिला कि जिन्हों ने शाऊल् को मिट्टी दिई सो गिलाद् के याबेश् नगर के लोग हैं॥ ५। सो दाऊद ने दूतों से गिलाद् के याबेश् के लोगों के पास यह कहला भेजा यहोवा की आशीष तुम पर हो क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल् पर यह कृपा करके उस को मिट्टी दिई॥ ६। सो अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्ताव करे और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूंगा क्योंकि तुम ने यह काम किया है॥ ७। और अब हियाव बान्धो और पुरुषार्थ करो क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल् मर गया और यहूदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक किया है॥

८। पर नेर् का पुत्र अब्नेर् जो शाऊल् का प्रधान सेनापति था उस ने शाऊल् के पुत्र ईश्बोशेत् को संग ले पार जाकर महनैम् में पहुंचाया, ९। और उसे गिलाद् अशूरियों के देश यिज्रेल् एप्रैम् बिन्यामीन् बरन सारे इस्राएल् के देश पर राजा किया॥ १०। शाऊल् का पुत्र ईश्बोशेत् चालीस बरस का था जब वह इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा पर यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा॥ ११। और दाऊद के हेब्रोन् में यहूदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े सात बरस था॥

१२। और नेर् का पुत्र अब्नेर् और शाऊल् के के पुत्र ईश्बोशेत् के जन महनैम् से गिबोन् को आये॥ १३। तब सरूयाह् का पुत्र योआब् और दाऊद के जन हेब्रोन् से निकलकर उन से गिबोन् के पोखरे के पास मिले और दोनों दल उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गये॥ १४। तब अब्नेर् ने योआब् से कहा जवान लोग उठकर हमारे साम्हने खेलें योआब् ने कहा अच्छा वे उठें॥ १५। सो वे उठे और बिन्यामीन् अर्थात् शाऊल् के पुत्र ईश्बोशेत् के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले॥ १६। और उन्हों ने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी अपनी तलवार एक दूसरे के पांजर में भोक दिई सो वे एक ही संग मरे इस से उस स्थान का नाम हेल्कथस्सूरीम्[1] पड़ा वह गिबोन् में है॥ १७। और उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ और अब्नेर् और इस्राएल् के पुरुष दाऊद के जनों से हार गये॥ १८। वहां तो योआब् अबीशै और असाहेल् नाम सरूयाह् के तीनों पुत्र थे और असाहेल् बनैले चिकारे के समान वेग दौड़नेहारा था॥ १९। सो असाहेल् अब्नेर् का पीछा करने लगा और उस का पीछा करते हुए न तो दहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर॥ २०। अब्नेर् ने पीछे फिरके पूछा क्या तू असाहेल् है उस ने कहा हां मैं वही हूं॥ २१। अब्नेर् ने उस से कहा चाहे दहिनी चाहे बाईं ओर मुड़ किसी जवान को पकड़कर उस का बकतर ले ले पर असाहेल् ने उस का पीछा छोड़ने से नाह किया॥ २२। अब्नेर् ने असाहेल् से फिर कहा मेरा पीछा छोड़ दे मुझ को क्यों तुझे

(१) अर्थात् छुरियों का खेत।

मारके मिट्टी में मिला देना पड़े ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब् को अपना मुख कैसे दिखाऊंगा ॥ २३ । तौभी उस ने हट जाने को नकारा सो अब्नेर् ने अपने भाले की पिछाड़ी उस के पेट में ऐसे मारी कि भाला वारपार होकर पीछे निकला सो वह वहीं गिरके मर गया और जितने लोग उस स्थान पर आये जहां असाहेल् गिरके मर गया सो सब खड़े रहे ॥ २४ । पर योआब् और अबीशै अब्नेर् का पीछा किये रहे और सूर्य्य डूबते डूबते वे अम्मा नाम उस पहाड़ी लों पहुंचे जो गिबोन् के जंगल के मार्ग में गीह् के साम्हने है ॥ २५ । और बिन्यामीनी अब्नेर् के पीछे होकर एक दल हो गये और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए ॥ २६ । तब अब्नेर् योआब् को पुकारके कहने लगा क्या तलवार सदा लों मारती रहे क्या तू नहीं जानता कि इस का फल दुःखदाई[1] होगा तू कब लों अपने लोगों को आज्ञा न देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो ॥ २७ । योआब् ने कहा परमेश्वर के जीवन की सोंह कि यदि तू न बोला होता तो निःसंदेह लोग सवेरे ही चले जाते और अपने अपने भाई का पीछा न करते ॥ २८ । तब योआब् ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और फिर इस्राएलियों का पीछा न किया और लड़ाई फिर न किई ॥ २९ । और अब्नेर् अपने जनों समेत उसी दिन रातों-रात अराबा से होकर गया और यर्दन् के पार हो सारे बित्रोन् देश होकर महनैम् में पहुंचा ॥ ३० । और योआब् अब्नेर् का पीछा छोड़कर लौटा और जब उस ने सब लोगों को एकट्ठा किया तब क्या देखा कि दाऊद के जनों में से उन्नीस पुरुष और असाहेल् भी नहीं हैं ॥ ३१ । पर दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर् के जनों को ऐसा मारा कि उन में से तीन सौ साठ जन मर गये ॥ ३२ । और उन्हों ने असाहेल् को उठाकर उस के पिता के कबरिस्तान में जो बेत्लेहेम् में था मिट्टी दिई तब योआब् अपने जनों समेत रात भर चलकर पह फटते हेब्रोन् में पहुंचा ॥

[1] मूल में, कड़वाहट ।

३. शाऊल् के घराने और दाऊद के घराने के बीच बहुत दिन लों लड़ाई होती रही पर दाऊद प्रबल होता गया और शाऊल् का घराना निर्बल पड़ता गया ॥

२ । और हेब्रोन् में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए । उस का जेठा बेटा अम्नोन् था जो यिज्रेली अहीनोअम् से जन्मा था ॥ ३ । और उस का दूसरा किलाब् था जिस की मा कर्मेली नाबाल् की स्त्री अबीगैल् थी तीसरा अब्शालोम् जो गशूर् के राजा तल्मै की बेटी माका से जन्मा था, ४ । चौथा अदोनिय्याह् जो हग्गीत् से जन्मा था पांचवां शपत्याह् जिस की मा अबीतल् थी, ५ । छठवां यित्राम् जो एग्ला नाम दाऊद की स्त्री से जन्मा । हेब्रोन् में दाऊद से ये ही उत्पन्न हुए ॥

६ । जब शाऊल् और दाऊद दोनों के घरानों के बीच लड़ाई हो रही थी तब अब्नेर् शाऊल् के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया ॥ ७ । शाऊल् के तो एक रखेली थी जिस का नाम रिस्पा था वह अय्या की बेटी थी और ईश्बोशेत् ने अब्नेर् से पूछा तू मेरे पिता की रखेली के पास क्यों गया ॥ ८ । ईश्बोशेत् की बातों के कारण अब्नेर् अति क्रोधित होकर कहने लगा क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं आज लों मैं तेरे पिता शाऊल् के घराने और उस के भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूं कि तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय दोष लगाता है ॥ ९ । यदि मैं दाऊद के साथ ईश्वर की किरिया के अनुसार बर्ताव न करूं तो परमेश्वर अब्नेर् से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे ॥ १० । अर्थात् मैं राज्य को शाऊल् के घराने से छीनूंगा और दाऊद की राजगद्दी दान् से लेकर बेर्शेबा लों इस्राएल् और यहूदा के ऊपर स्थिर करूंगा ॥ ११ । और वह अब्नेर् को कोई उत्तर न दे सका इस लिये कि वह उस से डरता था ॥

१२ । तब अब्नेर् ने उस के नाम से दाऊद के पास दूतों से कहला भेजा कि देश किस का है

और यह भी कहला भेजा कि तू मेरे साथ वाचा बांध और मैं तेरी सहायता करूंगा कि सारे इस्राएल् के मन तेरी ओर फेर दूं ॥ १३ । दाऊद ने कहा भला मैं तेरे साथ वाचा तो बांधूंगा पर एक बात मैं तुझ से चाहता हूं कि जब तू मुझ से भेंट करने आए तब यदि तू पहिले शाऊल् की बेटी मीकल् को न ले आए तो मुझ से भेंट न होगी ॥ १४ । फिर दाऊद ने शाऊल् के पुत्र ईश्बोशेत् के पास दूतों से यह कहला भेजा कि मेरी स्त्री मीकल् जिसे मैं ने एक सौ पलिश्तियों की खलड़ियां देकर अपनी कर लिया था उस को मुझे दे दे ॥ १५ । सो ईश्बोशेत् ने लोगों को भेजकर उसे लैश् के पुत्र पल्तीएल् के पास से छीन लिया ॥ १६ । और उस का पति उस के साथ चला और बहूरीम् लों उस के पीछे रोता हुआ चला गया तब अब्नेर् ने उस से कहा लौट जा सो वह लौट गया ॥

१७ । और अब्नेर् ने इस्राएल् के पुरनियों के संग इस प्रकार की बातचीत किई कि पहिले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद हमारे ऊपर राजा हो ॥ १८ । सो अब वैसा करो क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय यह कहा है कि अपने दास दाऊद के द्वारा मैं अपनी प्रजा इस्राएल को पलिश्तियों वरन उन के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाऊंगा ॥ १९ । फिर अब्नेर् ने बिन्यामीन् से भी बातें किईं फिर अब्नेर् हेब्रोन् को चला गया कि इस्राएल् और बिन्यामीन् के सारे घराने को जो कुछ अच्छा लगा सो दाऊद को सुनाए ॥ २० । सो अब्नेर् बीस पुरुष संग लेकर हेब्रोन् मे आया और दाऊद ने उस के और उस के संगी पुरुषों के लिये जेवनार किई ॥ २१ । तब अब्नेर् ने दाऊद से कहा मैं उठकर जाऊंगा और अपने प्रभु राजा के पास सब इस्राएल् को एकट्ठा करूंगा कि वे तेरे साथ वाचा बांधें और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके । सो दाऊद ने अब्नेर् को बिदा किया और वह कुशल से चला गया ॥ २२ । तब दाऊद के कई एक जन योआब् समेत कहीं चढ़ाई करके[१] बहुत सी लूट लिये हुए आ गये और अब्नेर् दाऊद के पास हेब्रोन् में न था क्योंकि उस ने उस को बिदा कर दिया था और वह कुशल से चला गया था ॥ २३ । जब योआब् और उस के साथ की सारी सेना आई तब लोगों ने योआब् को बताया कि नेर् का पुत्र अब्नेर् राजा के पास आया था और उस ने उस को बिदा कर दिया और वह कुशल से चला गया ॥ २४ । सो योआब् ने राजा के पास जाकर कहा तू ने यह क्या किया है अब्नेर् जो तेरे पास आया था सो क्या कारण है कि तू ने उस को जाने दिया और वह चला गया है ॥ २५ । तू नेर् के पुत्र अब्नेर् को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने और तेरे आने जाने और सारे काम का भेद लेने आया था ॥ २६ । योआब् ने दाऊद के पास से निकलकर दाऊद के अनजाने अब्नेर् के पीछे दूत भेजे और वे उस को सीरा नाम कुण्ड से लौटा ले आये ॥ २७ । जब अब्नेर् हेब्रोन् को लौट आया तब योआब् उस से एकान्त में बातें करने के लिये उस को फाटक के भीतर अलग ले गया और वहां अपने भाई असाहेल् के खून के पलटे में उस के पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ २८ । इस के पीछे जब दाऊद ने यह सुना तब कहा नेर् के पुत्र अब्नेर् के खून के विषय मैं अपनी प्रजा समेत यहोवा की दृष्टि में सदा निर्दोष रहूंगा ॥ २९ । वह योआब् और उस के पिता के सारे घराने को लगे और योआब् के वंश में प्रमेह का रोगी और कोढ़ी और बैसाखी का टेक लगानेहारा और तलवार से खेत आनेहारा और भूखों मरनेहारा सदा होते रहे ॥ ३० । योआब् और उस के भाई अबीशै ने अब्नेर् को इस कारण घात किया कि उस ने उन के भाई असाहेल् को गिबोन् में लड़ाई के समय मार डाला था ॥

३१ । तब दाऊद ने योआब् और अपने सब संगी लोगों से कहा अपने वस्त्र फाड़ो और कमर में टाट बांधकर अब्नेर् के आगे आगे चलो । और दाऊद राजा आप अर्थी के पीछे पीछे चला ॥ ३२ । सो अब्नेर् को हेब्रोन् में मिट्टी दिई गई और राजा अब्नेर् की कबर के पास फूट फूटकर रोया और

(१) मूल में. दल से ।

सब लोग भी रोये ॥ ३३ । तब दाऊद ने अब्नेर् के विषय यह विलापगीत बनाया कि

क्या उचित था कि अब्नेर् मूढ़ की नाईं मरे ॥
३४। न तो तेरे हाथ बांधे गये न तेरे पांवों में बेड़ियां डाली गईं
जैसे कोई कुटिल मनुष्यों से मारा जाए वैसे ही तू मारा गया ।

तब सब लोग उस के विषय फिर रो उठे ॥ ३५ । तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आये पर दाऊद ने किरिया खाकर कहा यदि मैं सूर्य्य के अस्त होने से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु खाऊं तो परमेश्वर मुझ से ऐसा ही बरन इस से भी अधिक करे ॥ ३६ । सब लोगों ने इस को जाना और इस से प्रसन्न हुए वैसे ही जो कुछ राजा करता था उस से सब लोग प्रसन्न होते थे ॥ ३७ । सो उन सब लोगों ने बरन सारे इस्राएल् ने भी उसी दिन जान लिया कि नेर् के पुत्र अब्नेर् का मार डाला जाना राजा की ओर से नहीं हुआ ॥ ३८ । और राजा ने अपने कर्म्मचारियों से कहा क्या तुम लोग नहीं जानते कि इस्राएल् में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है ॥ ३९ । और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूं तौभी आज निर्बल हूं और वे सरूयाह् के पुत्र मुझ से अधिक प्रचण्ड हैं पर यहोवा बुराई के करनेहारे को उस की बुराई के अनुसार ही पलटा दे ॥

४. जब शाऊल् के पुत्र ने सुना कि अब्नेर् हेब्रोन् में मारा गया तब उस के हाथ ढीले पड़ गये और सब इस्राएली भी घबरा गये ॥ २ । शाऊल् के पुत्र के दो जन थे जो दलों के प्रधान थे एक का नाम बाना और दूसरे का नाम रेकाब् था ये दोनों बेरोत्वासी बिन्यामीनी रिम्मोन् के पुत्र थे क्योंकि बेरोत् भी बिन्यामीन् के भाग में गिना जाता है, ३ । और बेरोती लोग गित्तैम् को भाग गये और आज के दिन लों वहीं परदेशी होकर रहते हैं ॥

४ । शाऊल् के पुत्र योनातान् के एक लंगड़ा बेटा था । वह पांच बरस का हुआ कि यिज्रेल् से शाऊल् और योनातान् का समाचार आया तब उस की धाई उसे उठाकर भागी और उस के उतावली से भागने के कारण वह गिरके लंगड़ा हो गया और उस का नाम मपीबोशेत् था ॥

५ । उस बेरोती रिम्मोन् के पुत्र रेकाब् और बाना जाकर कड़े घाम के समय ईश्बोशेत् के घर में जब वह दोपहर को विश्राम कर रहा था घुस गये ॥ ६ । सो वे गेहूं ले जाने के बहाने से घर के बीच घुस गये और उस के पेट में मारा तब रेकाब् और उस का भाई बाना भाग निकले ॥ ७ । जब वे घर में घुसे और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सोता था तब उन्हों ने उसे मार डाला और उस का सिर काट लिया और उस का सिर लेकर रातोंरात अराबा के मार्ग से चले ॥ ८ । और वे ईश्बोशेत् का सिर हेब्रोन् में दाऊद के पास ले जाकर राजा से कहने लगे देख शाऊल् जो तेरा शत्रु और तेरे प्राण का गाहक था उस के पुत्र ईश्बोशेत् का यह सिर है सो आज के दिन यहोवा ने शाऊल् और उस के वंश से मेरे प्रभु राजा का पलटा लिया है ॥ ९ । दाऊद ने बेरोती रिम्मोन् के पुत्र रेकाब् और उस के भाई बाना को उत्तर देकर उन से कहा यहोवा जो मेरे प्राण को सारी विपत्तियों से छुड़ाता आया है उस के जीवन की सोंह, १० । जब किसी ने यह जानकर कि मैं शुभ समाचार देता हूं सिक्लग् में मुझ को शाऊल् के मरने का समाचार दिया तब मैं ने उस को पकड़कर घात कराया सो उस को समाचार का यही बदला मिला ॥ ११ । फिर जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के घर में बरन उस की चारपाई ही पर घात किया तो मैं अब अवश्य ही उस के खून का पलटा तुम से लूंगा और तुम्हें धरती पर से नाश कर डालूंगा ॥ १२ । सो दाऊद ने जवानों को आज्ञा दिई और उन्हों ने उन को घात करके उन के हाथ पांव काट दिये और उन की लोथों को हेब्रोन् के पोखरे के पास टांग दिया तब ईश्बोशेत् के सिर को

उठाकर हेब्रोन् में अब्नेर् की कबर में गाड़ दिया॥

(दाऊद के यरूशलेम् मे राज्य करने का आरंभ)

५. तब इस्राएल् के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन् में आकर कहने लगे सुन हम लोग और तू एक ही हाड मांस हैं॥ २। फिर अगले दिनों में जब शाऊल् हमारा राजा था तब भी इस्राएल् का अगुआ तू ही था और यहोवा ने तुझ से कहा कि मेरी प्रजा इस्राएल् का चरवाहा और इस्राएल् का प्रधान तू ही होगा॥ ३। सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन् में राजा के पास आये और दाऊद राजा ने उन के साथ हेब्रोन् में यहोवा के साम्हने वाचा बांधी और उन्हों ने इस्राएल् का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया॥

४। दाऊद तीस बरस का होकर राज्य करने लगा और चालीस बरस तक राज्य करता रहा॥ ५। साढ़े सात बरस तक तो उस ने हेब्रोन् में यहूदा पर राज्य किया और तेंतीस बरस तक यरूशलेम् में सारे इस्राएल् और यहूदा पर राज्य किया॥ ६। तब राजा ने अपने जनों को साथ लिये हुए यरूशलेम् को जाकर यबूसियों पर चढ़ाई किई जो उस देश के निवासी थे। उन्हों ने यह समझकर कि दाऊद यहां पैठ न सकेगा उस से कहा जब लों तू अन्धों और लंगड़ों को दूर न करे तब लों यहां पैठने न पाएगा॥ ७। तौभी दाऊद ने सिय्योन् नाम गढ़ को ले लिया वही दाऊदपुर भी कहावता है॥ ८। उस दिन दाऊद ने कहा जो कोई यबूसियों को मारने चाहे सो चाहिये कि मोरही से होकर चढ़े और अन्धे और लंगड़े जिन से दाऊद जी से घिन करता है उन्हें मारे। इस से यह कहावत चली कि अन्धे और लंगड़े भवन में आने न पाएंगे॥ ९। और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा और उस का नाम दाऊदपुर रक्खा और दाऊद ने चारों ओर मिल्लो से लेकर भीतर की ओर शहरपनाह बनवाई॥ १०। और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहता था॥

११। और सोर् के राजा हीराम् ने दाऊद के पास दूत और देवदारु की लकड़ी और बढ़ई और राज भेजे और उन्हों ने दाऊद के लिये एक भवन बनाया॥ १२। और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल् का राजा करके स्थिर किया और अपनी इस्राएली प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढ़ाया है॥

१३। जब दाऊद हेब्रोन् से आया उस के पीछे उस ने यरूशलेम् की और और रखेलियां रख लिईं और स्त्रियां कर लिईं और उस के और बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १४। उस के जो सन्तान यरूशलेम् में उत्पन्न हुए उन के ये नाम हैं अर्थात् शम्मू शोबाब् नातान् सलैमान्, १५। यिभार् एलीशू नेपेग् यापी, १६। एलीशामा एल्यादा और एलीपेलेत्॥

१७। जब पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएल् का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले यह सुनकर दाऊद गढ़ में चला गया॥ १८। तब पलिश्ती आकर रपाईम् नाम तराई में फैल गये॥ १९। सो दाऊद ने यहोवा से पूछा क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा यहोवा ने दाऊद से कहा चढ़ाई कर क्योंकि मैं निश्चय पलिश्तियों को तेरे हाथ कर दूंगा॥ २०। सो दाऊद बालपरासीम् को गया और दाऊद ने उन्हें वहीं मारा तब उस ने कहा यहोवा मेरे साम्हने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है इस कारण उस ने उस स्थान का नाम बालपरासीम्[१] रक्खा॥ २१। वहां उन्हों ने अपनी मूरतों को छोड़ दिया और दाऊद और उस के जन उन्हें उठा ले गये॥

२२। फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम् नाम तराई में फैल गये॥ २३। जब दाऊद ने यहोवा से पूछा तब उस ने कहा चढ़ाई न कर उन के पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार॥ २४। और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे

(१) अर्थात् टूट पड़ने का स्थान।

सुन पड़े तब यह जानकर फुर्ती करना कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है ॥ २५। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार करके दाऊद गेबा से लेकर गेजेर् लों पलिश्तियों को मारता गया ॥

(पवित्र संदूक का यरूशलेम् में पहुंचाया जाना.)

६. फिर दाऊद ने एक और बार इस्राएल् में से सब बड़े वीरों को जो तीस हजार थे एकट्ठा किया ॥ २। तब दाऊद और जितने लोग उस के संग थे वे सब उठकर यहूदा के बाले नाम स्थान से चले कि परमेश्वर का वह संदूक ले आएं जो करूबों पर विराजनेहारे सेनाओं के यहोवा का कहावता है[१] ॥ ३। सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहनेहारे अबीनादाब् के घर से निकाला और अबीनादाब् के उज्जा और अह्यो नाम दो पुत्र उस नई गाड़ी को हांकने लगे ॥ ४। सो उन्हों ने उस को परमेश्वर के संदूक समेत टीले पर रहनेहारे अबीनादाब् के घर से बाहर निकाला और अह्यो संदूक के आगे आगे चला ॥ ५। और दाऊद और इस्राएल् का सारा घराना यहोवा के आगे सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे और वीणा सारंगियां डफ डमरू झांझ बजाते रहे ॥ ६। जब वे नाकोन् के खलिहान तक आये तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के संदूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई ॥ ७। तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा और परमेश्वर ने उस के दोष के कारण उस को वहां ऐसा मारा कि वह वहां परमेश्वर के संदूक के पास मर गया ॥ ८। तब दाऊद अप्रसन्न हुआ इस लिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था और उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा[२] रक्खा यह नाम आज के दिन लों पड़ा है ॥ ९। और उस दिन दाऊद यहोवा से डरकर कहने लगा यहोवा का संदूक मेरे यहां क्योंकर आए ॥ १०। सो दाऊद ने यहोवा के संदूक को अपने यहां दाऊदपुर में पहुंचाना न चाहा पर गतवासी ओबेदेदोम् के यहां पहुंचाया ॥ ११। और यहोवा का संदूक गती ओबेदेदोम् के घर में तीन महीने रहा और यहोवा ने ओबेदेदोम् और उस के सारे घराने को आशीष दिई ॥ १२। तब दाऊद राजा को यह बताया गया कि यहोवा ने ओबेदेदोम् के घराने पर और जो कुछ उस का है उस पर भी परमेश्वर के संदूक के कारण आशीष दिई है सो दाऊद ने जाकर परमेश्वर के संदूक को ओबेदेदोम् के घर से दाऊदपुर में आनन्द के साथ पहुंचा दिया ॥ १३। जब यहोवा के सन्दूक के उठानेहारे छः कदम चल चुके तब दाऊद ने एक बैल और एक पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया ॥ १४। और दाऊद सनी का एपोद् कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा ॥ १५। सो दाऊद और इस्राएल् का सारा घराना यहोवा के सन्दूक को जयजयकार करते और नरसिंगा फूंकते हुए ले चला ॥ १६। जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था तब शाऊल् की बेटी मीकल् ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा और उसे मन ही मन तुच्छ जाना ॥ १७। सो लोग यहोवा का संदूक भीतर ले आये और उस के स्थान में अर्थात् उस तंबू में रक्खा जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा कराया था और दाऊद ने यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाये ॥ १८। जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका तब उस ने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया ॥ १९। तब उस ने सारी प्रजा को अर्थात् क्या स्त्री क्या पुरुष सारी इस्राएली भीड़ के लोगों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दिई। तब प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गये ॥ २०। तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिये लौटा और शाऊल् की बेटी मीकल् दाऊद से मिलने

(१) मूल में जिस पर नाम करूबो पर विराजनेहारे सेनाओं के यहोवा का नाम पुकारा गया।
(२) अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

को निकलकर कहने लगी आज इस्राएल् का राजा जब अपना शरीर अपने कर्म्मचारियों की लौंडियों के साम्हने ऐसा उघाड़े हुए था जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघारे रहता है तब क्या ही प्रतापी देख पड़ता था ॥ २१ । दाऊद ने मीकल् से कहा यहोवा जिस ने तेरे पिता और उस के सारे घराने की सन्ती मुझ को चुनकर अपनी प्रजा इस्राएल् का प्रधान होने को ठहरा दिया है उस के सम्मुख मैं ऐसा खेला और मैं यहोवा के सम्मुख खेला करूंगा भी ॥ २२ । और इस से भी मैं अधिक तुच्छ बनूंगा और अपने लेखे नीच ठहरूंगा और जिन लौंडियों की तू ने चर्चा किई वे भी मेरा आदरमान करेंगी ॥ २३ । और शाऊल् की बेटी मीकल् के मरने के दिन लों उस के कोई सन्तान न हुआ ॥

(दाऊद का मन्दिर बनवाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

७. जब राजा अपने भवन में रहता था और यहोवा ने उस को उस के चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया था, २ । तब राजा नातान् नाम नबी से कहने लगा देख मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूं परन्तु परमेश्वर का संदूक तंबू में रहता है ॥ ३ । नातान् ने राजा से कहा जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर क्योंकि यहोवा तेरे संग है ॥ ४ । उसी दिन रात को यहोवा का यह वचन नातान् के पास पहुंचा कि, ५ । जाकर मेरे दास दाऊद से कह यहोवा यों कहता है कि क्या तू मेरे निवास के लिये घर बनवाएगा ॥ ६ । जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन लों मैं कभी घर में नहीं रहा तंबू के निवास में आया जाया करता हूं ॥ ७ । जहां जहां मैं सारे इस्राएलियों के बीच आया जाया किया क्या मैं ने कहीं इस्राएल् के किसी गोत्र से जिसे मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल् की चरवाही करने को ठहराया हो ऐसी बात कभी कही कि तुम ने मेरे लिये देवदारु का घर क्यों नहीं बनवाया ॥ ८ । सो अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने तो तुझे भेड़शाला से और भेड़बकरियों के पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल् का प्रधान हो जाए ॥ ९ । और जहां कहीं तू आया गया वहां वहां मैं तेरे संग रहा और तेरे सारे शत्रुओं को तेरे साम्हने से नाश किया है । फिर मैं तेरे नाम को पृथिवी पर के बड़े बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूंगा ॥ १० । और मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उस को स्थिर करूंगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहेगी और कभी चलायमान न होगी और कुटिल लोग उसे फिर दुःख न देने पाएंगे जैसे कि पहिले दिनों में, ११ । बरन उस समय से भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के ऊपर न्यायी ठहराता था और मैं तुझे तेरे सारे शत्रुओं से विश्राम दूंगा । और यहोवा तुझे यह भी बताता है कि यहोवा तेरा घर बनाये रक्खेगा[1] ॥ १२ । जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा तब मैं तेरे निज वंश को[2] तेरे पीछे खड़ा करके उस के राज्य को स्थिर करूंगा ॥ १३ । मेरे नाम का घर वही बनवाएगा और मैं उस की राजगद्दी को सदा लों स्थिर रक्खूंगा ॥ १४ । मैं उस का पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा यदि वह अधर्म्म करे तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से और आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूंगा ॥ १५ । पर मेरी करुणा उस पर से ऐसे न हटेगी जैसे मैं ने शाऊल् पर से हटाकर उस को तेरे आगे से दूर किया ॥ १६ । बरन तेरा घराना और तेरा राज्य तेरे साम्हने सदा अटल बना रहेगा तेरी गद्दी सदा लों बनी रहेगी ॥ १७ । इन सब बातों और इस सारे दर्शन के अनुसार नातान् ने दाऊद को समझा दिया ॥

१८ । तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा और कहने लगा हे प्रभु यहोवा मैं तो क्या हूं और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचा दिया है ॥ १९ । पर तौभी हे प्रभु यहोवा

(१) मूल में तेरे लिये घर बनाएगा । (२) मूल में तेरे वंश को जो तेरी अन्तड़ियों से निकलेगा ।

यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई क्योंकि तू ने अपने दास के घराने के विषय आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा किई है। और हे प्रभु यहोवा यह तो मनुष्य का नियम है॥ २०। दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है हे प्रभु यहोवा तू तो अपने दास को जानता है॥ २१। तू ने अपने वचन के निमित्त और अपने ही मन के अनुसार यह सब बड़ा काम किया है कि तेरा दास उस को जान ले॥ २२। इस कारण हे यहोवा परमेश्वर तू महान् है क्योंकि जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है उस के अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है॥ २३। फिर तेरी प्रजा इस्राएल् के भी तुल्य कौन है वह तो पृथिवी भर में एक ही जाति है। उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया इस लिये कि वह अपना नाम करे और तुम्हारे लिये बड़े बड़े काम करे और तू अपनी प्रजा के साम्हने जिसे तू ने मिस्री आदि जाति जाति के लोगों और उन के देवताओं से छुड़ा लिया अपने देश के लिये भयानक काम करे॥ २४। और तू ने अपनी प्रजा इस्राएल् को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया और हे यहोवा तू आप उस का परमेश्वर ठहर गया॥ २५। सो अब हे यहोवा परमेश्वर तू ने जो वचन अपने दास के और उस के घराने के विषय दिया है उसे सदा के लिये स्थिर कर और अपने कहे के अनुसार ही कर॥ २६। और लोग यह कहकर तेरे नाम की महिमा सदा किया करें कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल् के ऊपर परमेश्वर है। और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे साम्हने अटल रहे॥ २७। क्योंकि हे सेनाओं के यहोवा हे इस्राएल् के परमेश्वर तू ने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाये रखूंगा[१] इस कारण तेरे दास को तुझ से यह प्रार्थना करने का हियाव हुआ है॥ २८। और अब हे प्रभु यहोवा तू ही परमेश्वर है और तेरे वचन सत्य ठहरते हैं और तू ने अपने दास से यह भलाई करने का वचन दिया है॥ २९। सो अब प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दे कि वह तेरे सन्मुख सदा लों बना रहे क्योंकि हे प्रभु यहोवा तू ने ऐसा ही कहा है और तेरे दास का घराना तुझ से आशीष पाकर सदा लों धन्य रहे॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन.)

८. इस के पीछे दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया और दाऊद ने पलिश्तियों की राजधानी की प्रभुता[१] उन के हाथ से छीन लिई॥ २। फिर उस ने मोआबियों को भी जीत उन को भूमि पर लिटाकर डोरी से मापा तब दो डोरी के लोग मापकर घात किये और डोरी भर के लोग जीते छोड़ दिये। तब मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे॥ ३। फिर जब सोबा का राजा रहोब् का पुत्र हददेजेर् महानद के पास अपना राज्य[२] फिर ज्यों का त्यों करने को जा रहा था तब दाऊद ने उस को जीत लिया॥ ४। और दाऊद ने उस से एक हजार सात सौ सवार और बीस हजार प्यादे छीन लिये और सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई पर एक सौ रथवाले घोड़े बचा रक्खे॥ ५। और जब दमिश्क् के अरामी सोबा के राजा हददेजेर् की सहायता करने को आये तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हजार पुरुष मारे॥ ६। तब दाऊद ने दमिश्क् के अराम् में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं सो अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था॥ ७। और हददेजेर् के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम् को आया॥ ८। और बेतह् और बेरोतै नाम हददेजेर् के नगरों से दाऊद राजा बहुत ही पीतल ले आया॥ ९। और जब हमात् के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर् की सारी सेना को जीत लिया, १०। तब तोई ने योराम् नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा

(१) मूल में तेरे लिये घर बनाऊंगा।

(१) मूल में, पलिश्तियों की माता का बाग।
(२) मूल में, हाथ।

के पास उस का कुशल क्षेम पूछने और उसे इस लिये बधाई देने को भेजा कि उस ने हददेजेर् से लड़ करके उस को जीत लिया था क्योंकि हददेजेर् तोई से लड़ा करता था। और योराम् चांदी सोने और पीतल के पात्र लिये हुए आया॥ ११। इन को दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रक्खा और वैसा ही अपनी जीती हुई सब जातियों के सोने चांदी से भी किया, १२। अर्थात् अरामियों मोआबियों अम्मोनियों पलिश्तियों और अमालेकियों के सोने चांदी को और रहोब् के पुत्र सोबा के राजा हददेजेर् की लूट को रखा॥ १३। और जब दाऊद लोनवाली तराई में अठारह हजार अरामियों को मारके लौट आया तब उस का बड़ा नाम हो गया॥ १४। फिर उस ने एदोम् में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं सारे एदोम् में उस ने सिपाहियों की चौकियां बैठाईं सो सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गये। और दाऊद जहां जहां जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था॥

(दाऊद के कर्म्मचारियों की नामावली)

१५। दाऊद तो सारे इस्राएल् पर राज्य करता था और दाऊद अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और धर्म्म के काम करता था॥ १६। और प्रधान सेनापति सरूयाह् का पुत्र योआब् था इतिहास का लिखनेहारा अहीलूद् का पुत्र यहोशापात् था, १७। प्रधान याजक अहीतूब् का पुत्र सादोक् और एब्यातार् का पुत्र अहीमेलेक् थे मंत्री सरायाह् था, १८। करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह् था और दाऊद के पुत्र भी मंत्री[1] थे॥

(मपीबोशेत् का ऊंचा पद प्राप्त करना)

९. दाऊद ने पूछा क्या शाऊल् के घराने में से कोई अब लों बचा है जिस को मैं योनातान् के कारण प्रीति दिखाऊं॥ २। शाऊल् के घराने का तो सीबा नाम एक कर्म्मचारी था वह दाऊद के पास बुलाया गया और जब राजा ने उस से पूछा क्या तू सीबा है तब उस ने कहा हां तेरा दास वही है॥ ३। राजा ने पूछा क्या शाऊल् के घराने में से कोई अब लों बचा है जिस को मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं सीबा ने राजा से कहा हां योनातान् का एक बेटा तो है जो लंगड़ा है॥ ४। राजा ने उस से पूछा वह कहां है सीबा ने राजा से कहा वह तो लोदबार् नगर में अम्मीएल् के पुत्र माकीर् के घर में रहता है॥ ५। सो राजा दाऊद ने दूत भेजकर उस को लोदबार् से अम्मीएल् के पुत्र माकीर् के घर से बुलवा लिया॥ ६। जब मपीबोशेत् जो योनातान् का पुत्र और शाऊल् का पोता था दाऊद के पास आया तब मुंह के बल गिरके दण्डवत् किई। दाऊद ने कहा हे मपीबोशेत् उस ने कहा तेरे दास को क्या आज्ञा॥ ७। दाऊद ने उस से कहा मत डर तेरे पिता योनातान् के कारण मैं निश्चय तुझ को प्रीति दिखाऊंगा और तेरे दादा शाऊल् की सारी भूमि तुझे फेर दूंगा और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर॥ ८। उस ने दण्डवत् करके कहा तेरा दास क्या है कि तू मुझ ऐसे मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे॥ ९। तब राजा ने शाऊल् के कर्म्मचारी सीबा को बुलवाकर उस से कहा जो कुछ शाऊल् और उस के सारे घराने का था सो मैं ने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है॥ १०। सो तू अपने बेटों और सेवकों समेत उस की भूमि पर खेती करके उस की उपज ले आया करना कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे पर तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत् मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करेगा। सीबा के तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे॥ ११। सीबा ने राजा से कहा मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो जो आज्ञा दे उन सभों के अनुसार तेरा दास करेगा। दाऊद ने कहा मपीबोशेत् राजकुमारों की नाईं मेरी मेज पर भोजन किया करे॥ १२। मपीबोशेत् के भी मीका नाम एक छोटा बेटा था और सीबा के घर में जितने रहते थे सो सब मपीबोशेत् की सेवा करते थे॥ १३। और मपीबोशेत् यरूशलेम् में रहता था क्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था और वह दोनों पांवों का पंगुला था॥

[1] मू. याजक।

(अम्मोनियों के साथ युद्ध होने और दाऊद के पाप में फसने का वर्णन)

१०. इस के पीछे अम्मोनियों का राजा मर गया और उस का हानून् नाम पुत्र उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २ । तब दाऊद ने यह सोचा कि जैसे हानून् के पिता नाहाश् ने मुझ को प्रीति दिखाई थी वैसे ही मैं भी हानून् को प्रीति दिखाऊंगा सो दाऊद ने अपने कई कर्म्मचारियों को उस के पास उस के पिता के विषय शांति देने के लिये भेज दिया । और दाऊद के कर्म्मचारी अम्मोनियों के देश में आये ॥ ३ । पर अम्मोनियों के हाकिम अपने स्वामी हानून् से कहने लगे दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेहारे भेजे हैं सो क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे हैं क्या दाऊद ने अपने कर्म्मचारियों को तेरे पास इसी मनसा से नहीं भेजा कि इस नगर में ढूंढ़ढांढ़ करके और इस का भेद लेकर इस को उलट दें ॥ ४ । सो हानून् ने दाऊद के कर्म्मचारियों को पकड़ा और उन की आधी आधी डाढ़ी मुड़वाकर और आधे वस्त्र अर्थात् नितम्ब लों कटवाकर उन को जाने दिया ॥ ५ । इस का समाचार पाकर दाऊद ने लोगों को उन से मिलने के लिये भेजा क्योंकि वे बहुत लजाते थे और राजा ने यह कहा कि जब लों तुम्हारी डाढ़ियां बढ़ न जाएं तब लों यरीहो में ठहरे रहो तब लौट आना ॥ ६ । जब अम्मोनियों ने देखा कि हम दाऊद को घिनौने लगे हैं तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब् और सोबा के बीस हजार अरामी प्यादों को और हजार पुरुषों समेत माका के राजा को और बारह हजार तोबी पुरुषों को वेतन पर बुलवाया ॥ ७ । यह सुनकर दाऊद ने योआब् और शूरवीरों की सारी सेना को भेजा ॥ ८ । तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पांति बांधी और सोबा और रहोब् के अरामी और तोब् और माका के पुरुष उन से न्यारे मैदान में थे ॥ ९ । यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बन्धी है योआब् ने सब बड़े बड़े इस्राएली बीरों में से कितनों को छांटकर अरामियों के साम्हने उन की पांति बन्धाई, १० । और और लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया और उस ने अम्मोनियों के साम्हने उन की पांति बन्धाई ॥ ११ । फिर उस ने कहा यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें तो तू मेरी सहायता करना और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें तो मैं आकर तेरी सहायता करूंगा ॥ १२ । तू हियाव बांध और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें और यहोवा जैसा उस को अच्छा लगे वैसा करे ॥ १३ । तब योआब् और जो लोग उस के साथ थे अरामियों से युद्ध करने को निकट गये और वे उस के साम्हने से भागे ॥ १४ । यह देखकर कि अरामी भाग गये हैं अम्मोनी भी अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे । तब योआब् अम्मोनियों के पास से लौटकर यरूशलेम् को आया ॥ १५ । फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये अरामी एकट्ठे हुए ॥ १६ । और हददेजेर् ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया और वे हददेजेर् के सेनापति शोबक् को अपना प्रधान बनाकर हेलाम् को आये ॥ १७ । इस का समाचार पाकर दाऊद ने सारे इस्राएलियों को एकट्ठा किया और यर्दन के पार होकर हेलाम् में पहुंचा तब अराम् दाऊद के विरुद्ध पांति बांधकर उस से लड़ा ॥ १८ । पर अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला और उन के सेनापति शोबक् को ऐसा घायल किया कि वह वहीं मर गया ॥ १९ । यह देखकर कि हम इस्राएल् से हार गये हैं जितने राजा हददेजेर् के अधीन थे उन सभों ने इस्राएल् के साथ संधि किई और उस के अधीन हो गये । और अरामी अम्मोनियों की और सहायता करने से डर गये ॥

११. फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं उस समय अर्थात् बरस के आरंभ में दाऊद ने योआब् को और उस के संग अपने सेवकों और

सारे इस्राएलियों को भेजा और उन्हों ने अम्मोनियों को नाश किया और रब्बा नगर को घेर लिया। पर दाऊद यरूशलेम् में रह गया॥

२। सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था और छत पर से उस को एक स्त्री जो अति सुन्दर थी नहाती हुई देख पड़ी॥ ३। जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया तब किसी ने कहा क्या यह एलीआम् की बेटी और हित्ती ऊरिय्याह् की स्त्री बतशेबा नहीं है॥ ४। तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया और वह दाऊद के पास आई और उस ने उस से प्रसंग किया वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी तब वह अपने घर लौट गई॥ ५। सो वह स्त्री गर्भवती हुई तब दाऊद के पास कहला भेजा कि मुझे गर्भ है॥ ६। सो दाऊद ने योआब् के पास कहला भेजा कि हित्ती ऊरिय्याह् को मेरे पास भेज तब योआब् ने ऊरिय्याह् को दाऊद के पास भेज दिया॥ ७। जब ऊरिय्याह् उस के पास आया तब दाऊद ने उस से योआब् और सेना का कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा॥ ८। तब दाऊद ने ऊरिय्याह् से कहा अपने घर जाकर अपने पांव धो सो ऊरिय्याह् राजभवन से निकला और उस के पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया॥ ९। पर ऊरिय्याह् अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया और अपने घर न गया॥ १०। जब दाऊद को यह समाचार मिला कि ऊरिय्याह् अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने ऊरिय्याह् से कहा क्या तू यात्रा करके नहीं आया सो अपने घर क्यों नहीं गया॥ ११। ऊरिय्याह् ने दाऊद से कहा जब सन्दूक और इस्राएल् और यहूदा झोंपड़ियों में रहते हैं और मेरा स्वामी योआब् और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे किये हुए हैं तो क्या मैं घर जाकर खाऊं पीऊं और अपनी स्त्री के साथ सोऊं तेरे जीवन की सोंह और तेरे प्राण की सोंह कि मैं ऐसा काम नहीं करने का॥ १२। दाऊद ने ऊरिय्याह् से कहा आज यहीं रह और कल मैं तुझे बिदा करूंगा सो ऊरिय्याह् उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम् में रहा॥ १३। तब दाऊद ने उसे नेवता दिया और उस ने उस के साम्हने खाया पिया और उस ने उसे मतवाला किया और सांझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला पर अपने घर न गया॥ १४। बिहान को दाऊद ने योआब् के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह् के हाथ से भेज दिई॥ १५। उस चिट्ठी में यह लिखा था कि सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह् को ठहराओ तब उसे छोड़कर लौट आओ कि वह घायल होकर मर जाए॥ १६। और योआब् ने नगर को अच्छी रीति से देख भालकर जिस स्थान में वह जानता था कि वीर हैं उसी में ऊरिय्याह् को ठहरा दिया॥ १७। तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब् से युद्ध किया और लोगों में से अर्थात् दाऊद के सेवकों में से कितने खेत आये और उन में हित्ती ऊरिय्याह् भी मर गया॥ १८। तब योआब् ने भेजकर दाऊद को युद्ध का सारा हाल बताया, १९। और दूत को आज्ञा दिई कि जब तू युद्ध का सारा हाल राजा को बता चुके, २०। तब यदि राजा जलकर कहने लगे तुम लोग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्यों गये क्या तुम न जानते थे कि वे शहरपनाह पर से तीर छोड़ेंगे॥ २१। यरूब्बेशेत् के पुत्र अबीमेलेक् को किस ने मार डाला क्या एक स्त्री ने शहरपनाह पर से चक्की का उपरला पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबेस् में मर गया फिर तुम शहरपनाह के ऐसे निकट क्यों गये, तो तू यों कहना कि तेरा दास ऊरिय्याह् हित्ती भी मर गया॥ २२। सो दूत चल दिया और जाकर दाऊद से योआब् की सारी बातें वर्णन किईं॥ २३। दूत ने दाऊद से कहा कि वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आये फिर हम ने उन्हें फाटक लों खदेड़ा॥ २४। तब धनुर्धारियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों पर तीर छोड़े और राजा के कितने जन मर गये और तेरा दास ऊरिय्याह् हित्ती भी मर गया॥ २५। दाऊद ने दूत से कहा योआब् से यों कहना कि इस बात के कारण उदास न हो क्योंकि तलवार

जैसे इस को वैसे उस को नाश करती है सो तू नगर के विरुद्ध अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दे और तू उसे हियाव बंधाना ॥ २६ । जब ऊरिय्याह् की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया तब वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी ॥ २७ । और जब उस के विलाप के दिन बीत चुके तब दाऊद ने भेजकर उस को अपने घर में बुलवा रख लिया सो वह उस की स्त्री हो गई और बेटा जनी । पर यह काम जो दाऊद ने किया सो यहोवा को बुरा लगा ॥

१२. सो यहोवा ने दाऊद के पास नातान् को भेजा और वह उस के पास जाकर कहने लगा एक नगर में दो मनुष्य रहते थे जिन में से एक धनी और एक निर्धन था ॥ २ । धनी के पास तो बहुत सी भेड़बकरियां और गाय बैल थे ॥ ३ । पर निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ कुछ भी न था और उस को उस ने मोल लेकर जिलाया था और वह उस के यहां उस के बालबच्चों के साथ ही बढ़ी थी वह उस के टुकड़े में से खाती और उस के कटोरे में से पीती और उस की गोद में सोती थी और वह उस की बेटी सी बनी थी ॥ ४ । और धनी के पास एक बटोही आया और उस ने उस बटोही के लिये जो उस के पास आया था भोजन बनवाने को अपनी भेड़बकरियों वा गाय बैलों में से कुछ न लिया पर उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिये जो उस के पास आया था भोजन बनवाया ॥ ५ । तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का और उस ने नातान् से कहा यहोवा के जीवन की सोंह जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया सो प्राणदण्ड के योग्य है ॥ ६ । और उस को वह भेड़ की बच्ची का चौगुणा भर देना होगा इस लिये कि उस ने ऐसा काम किया और कुछ दया नहीं किई ॥

७ । तब नातान् ने दाऊद से कहा तू ही वह मनुष्य है । इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरा अभिषेक कराके तुझे इस्राएल् का राजा ठहराया और मैं ने तुझे शाऊल् के हाथ से बचाया ॥ ८ । फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया और तेरे स्वामी की स्त्रियां तेरे भोग के लिये दिईं और मैं ने इस्राएल् और यहूदा का घराना तुझे दिया था और यदि यह थोड़ा था तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देनेवाला था ॥ ९ । तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उस के लेखे बुरा है हित्ती ऊरिय्याह् को तू ने तलवार से घात किया और उस की स्त्री को अपनी कर लिया है और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मार डाला है ॥ १० । सो अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह् की स्त्री को अपनी स्त्री कर लिया है ॥ ११ । यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा और तेरी स्त्रियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा और वह दिनदुपहरी तेरी स्त्रियों से कुकर्म्म करेगा ॥ १२ । तू ने तो वह काम छिपाकर किया पर मैं यह काम सारे इस्राएल् के साम्हने दिनदुपहरी कराऊंगा ॥ १३ । तब दाऊद ने नातान् से कहा मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है । नातान् ने दाऊद से कहा यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है तू न मरेगा ॥ १४ । तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है सो अवश्य ही मरेगा ॥ १५ । तब नातान् अपने घर चला गया ॥

और जो बच्चा ऊरिय्याह् की स्त्री दाऊद का जन्माया जनी थी वह यहोवा का मारा बहुत रोगी हो गया ॥ १६ । सो दाऊद उस लड़के के लिये परमेश्वर से विनती करने लगा और उपवास किया और भीतर जाकर रात भर भूमि पर पड़ा रहा ॥ १७ । तब उस के घराने के पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिये उस के पास गये पर उस ने नाह किई और उन के संग रोटी न खाई ॥ १८ । सातवें दिन बच्चा मर गया और दाऊद के कर्म्मचारी उस को बच्चे के मरने का समाचार देने से

डरे उन्हों ने तो कहा था कि जब लों बच्चा जीता रहा तब लों उस ने हमारे समझाने पर मन न लगाया यदि हम उस को बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएं तो वह बहुत ही अधिक दुःखी होगा ॥ १९। अपने कर्म्मचारियों को आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया कि बच्चा मर गया सो दाऊद ने अपने कर्म्मचारियों से पूछा क्या बच्चा मर गया उन्हों ने कहा हां मर गया है ॥ २०। तब दाऊद ने भूमि पर से उठ नहा तेल लगा वस्त्र बदल यहोवा के भवन जाकर दण्डवत् किई फिर अपने भवन में आया और उस के आज्ञा देने पर रोटी उस को परोसी गई और उस ने भोजन किया ॥ २१। तब उस के कर्म्मचारियों ने उस से पूछा तू ने यह क्या काम किया है जब लों बच्चा जीता रहा तब लों तू उपवास करता हुआ रोता रहा पर ज्योंहीं बच्चा मर गया त्योंहीं तू उठकर भोजन करने लगा ॥ २२। उस ने उत्तर दिया कि जब लों बच्चा जीता रहा तब लों तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा कि क्या जानिये यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीता रहे ॥ २३। पर अब वह मर गया फिर मैं उपवास क्यों करूं क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूं मैं तो उस के पास जाऊंगा पर वह मेरे पास लौट न आएगा ॥ २४। तब दाऊद ने अपनी स्त्री बतशेबा को शांति दिई और उस के पास जाकर उस से प्रसंग किया और वह बेटा जनी और उस ने उस का नाम सुलैमान रक्खा और यहोवा ने उस से प्रेम रक्खा ॥ २५। और उस ने नातान् नबी के द्वारा भेज दिया और उस ने यहोवा के कारण उस का नाम यदीद्याह्[१] रक्खा ॥

२६। और योआब् ने अम्मोनियों के रब्बा नगर से लड़कर राजनगर को ले लिया ॥ २७। तब योआब् ने दूतों से दाऊद के पास यह कहला भेजा कि मैं रब्बा से लड़ा और जलवाले नगर को ले लिया है ॥ २८। सो अब रहे हुए लोगों को एकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूं और वह मेरे नाम पर कहलाए[१] ॥ २९। सो दाऊद सब लोगों को एकट्ठा करके रब्बा को गया और उस से युद्ध करके उसे ले लिया ॥ ३०। तब उस ने उन के राजा[२] का मुकुट जो तौल में किक्कार् भर सोने का था और उस में मणि जड़े थे उस को उस के सिर पर से उतारा और वह दाऊद के सिर पर रक्खा गया। फिर उस ने उस नगर की बहुत ही लूट पाई ॥ ३१। और उस ने उस के रहनेहारों को निकालकर आरों से दो दो टुकड़े कराया और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाये और लोहे की कुल्हाड़ियों से उन्हें कटवाया और ईंट के पजावे पर से चलवाया[३] और अम्मोनियों के सब नगरों से भी उस ने वैसा ही किया। तब दाऊद सारे लोगों समेत यरूशलेम् को लौट आया ॥

(अम्नोन् का कुकर्म्म करना और मार डाला जाना)

१३. इस के पीछे तामार् नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम् की बहिन थी उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन् मोहित हुआ ॥ २। और अम्नोन् अपनी बहिन तामार् के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया क्योंकि वह कुंवारी थी और उस के साथ कुछ करना अम्नोन् को कठिन जान पड़ता था ॥ ३। अम्नोन् के योनादाब् नाम एक मित्र था जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था और वह बड़ा चतुर था ॥ ४। सो उस ने अम्नोन् से कहा हे राजकुमार क्या कारण है कि तू दिन दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा अम्नोन् ने उस से कहा मैं तो अपने भाई अबशालोम् की बहिन तामार् पर मोहित हूं ॥ ५। योनादाब् ने उस से कहा अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए तब उस से कहना मेरी बहिन तामार् आकर मुझे रोटी खिलाए और भोजन को मेरे साम्हने बनाए कि मैं उस को देखकर उस के हाथ से

(१) अर्थात् यहोवा का प्रिय।

(१) मूल में मेरा नाम उस पर पुकारा जावे। (२) वा मल्काम्। (३) वा. आरों लोहे के हेंगों और लोहे की कुल्हाड़ियों के काम पर लगाया और उन से ईंट के पजावे में परिश्रम कराया।

खाऊं ॥ ६। सो अम्नोन् लेटकर बीमार बना और जब राजा उसे देखने आया तब अम्नोन् ने राजा से कहा मेरी बहिन तामार् आकर मेरे देखते दो पूरी बनाए कि मैं उस के हाथ से खाऊं ॥ ७। सो दाऊद ने अपने घर तामार् के पास यह कहला भेजा कि अपने भाई अम्नोन् के घर जाकर उस के लिये भोजन बना ॥ ८। तब तामार् अपने भाई अम्नोन् के घर गई और वह पड़ा हुआ था सो उस ने आटा लेकर गूंधा और उस के देखते पूरियां बनाकर पकाईं ॥ ९। तब उस ने थाल लेकर उन को उसे परोसा पर उस ने खाने से नाह किई तब अम्नोन् ने कहा मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो तब सब लोग उस के पास से निकल गये ॥ १०। तब अम्नोन् ने तामार् से कहा भोजन को कोठरी में ले आ कि मैं तेरे हाथ से खाऊं सो तामार् अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर अपने भाई अम्नोन् के पास कोठरी में ले गई ॥ ११। जब वह उन को उस के खाने के लिये निकट ले गई तब उस ने उसे पकड़कर कहा हे मेरी बहिन आ मुझ से मिल ॥ १२। उस ने कहा हे मेरे भाई ऐसा नहीं मुझे भ्रष्ट न कर क्योंकि इस्राएल् में ऐसा काम होना नहीं चाहिये ऐसी मूढ़ता का काम न कर ॥ १३। और फिर मैं अपनी नामधराई लिये हुए कहां जाऊंगी और तू इस्राएलियों में एक मूढ़ गिना जाएगा सो राजा से बातचीत कर वह मुझ को तुझे ब्याह देने से नाह न करेगा ॥ १४। पर उस ने उस की न सुनी पर उस से बलवान होने के कारण उस के साथ कुकर्म्म करके उसे भ्रष्ट किया ॥ १५। तब अम्नोन् उस से अत्यन्त बैर रखने लगा यहां लों कि यह बैर उस के पहिले मोह से बढ़कर हुआ सो अम्नोन् ने उस से कहा उठकर चली जा ॥ १६। उस ने कहा ऐसा नहीं क्योंकि यह बड़ा उपद्रव अर्थात् मुझे निकाल देना उस पहिले से बढ़कर है जो तू ने मुझ से किया है। पर उस ने उस की न सुनी ॥ १७। तब उस ने अपने टहलुए जवान को बुलाकर कहा इस स्त्री को मेरे पास से बाहर निकाल दे और उस के पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा ॥ १८। वह तो रंगबिरंगी कुर्ती पहिने थी क्योंकि जो राजकुमारियां कुंवार रहती थीं सो ऐसे ही वस्त्र पहिनती थीं सो अम्नोन् के टहलुए ने उसे बाहर निकालकर उस के पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दिई ॥ १९। तब तामार् ने अपने सिर पर राख डाली और अपनी रंगबिरंगी कुर्ती को फाड़ डाला और सिर पर हाथ रक्खे चिल्लाती हुई चली गई ॥ २०। उस के भाई अब्शालोम् ने उस से पूछा क्या तेरा भाई अम्नोन् तेरे साथ रहा है पर अब हे मेरी बहिन चुप रह वह तो तेरा भाई है इस बात की चिन्ता न कर। तब तामार् अपने भाई अब्शालोम् के घर में मनमारे बैठी रही ॥ २१। जब ये सारी बातें दाऊद राजा के कान पड़ीं तब वह बहुत जल उठा ॥ २२। और अब्शालोम् ने अम्नोन् से भला बुरा कुछ न कहा क्योंकि अम्नोन् ने उस की बहिन तामार् को भ्रष्ट किया था इस कारण अब्शालोम् उस से बैर रखता था ॥

२३। दो बरस के बीतने पर अब्शालोम् ने एप्रैम् निकट के बाल्हासोर् में अपनी भेड़ों की ऊन कतराया और अब्शालोम् ने सब राजकुमारों को नेवता दिया ॥ २४। वह राजा के पास जाकर कहने लगा बिनती यह है कि तेरे दास की भेड़ों की ऊन कतरी जाती है सो राजा अपने कर्म्मचारियों समेत अपने दास के संग चले ॥ २५। राजा ने अब्शालोम् से कहा हे मेरे बेटे ऐसा नहीं हम सब न चलेंगे न हो कि तुझे अधिक कष्ट हो। तब अब्शालोम् ने उसे बिनती करके दबाया पर उस ने जाने को नकारा तौभी उसे आशीर्वाद दिया ॥ २६। तब अब्शालोम् ने कहा यदि तू नहीं तो मेरे भाई अम्नोन् को हमारे संग जाने दे। राजा ने उस से पूछा वह तेरे संग क्यों चले ॥ २७। पर अब्शालोम् ने उसे ऐसा दबाया कि उस ने अम्नोन् और सब राजकुमारों को उस के साथ जाने दिया ॥ २८। और अब्शालोम् ने अपने सेवकों को आज्ञा दिई कि सावधान रहो और जब अम्नोन् दाखमधु पीकर नशे में आ जाए और मैं तुम से कहूं अम्नोन् को मारो तब निडर होकर उस को मार डालना क्या

इस आज्ञा का देनेहारा मैं नहीं हूं हियाव बांधकर पुरुषार्थ करना ॥ २९ । सो अबशालोम् के सेवकों ने अम्नोन् से अबशालोम् की आज्ञा के अनुसार किया । तब सब राजकुमार उठ अपने अपने खच्चर पर चढ़कर भाग गये ॥ ३० । वे मार्ग ही में थे कि दाऊद को यह हूहा सुन पड़ा कि अबशालोम् ने सब राजकुमारों को मार डाला और उन में से एक भी नहीं बचा ॥ ३१ । सो दाऊद ने उठकर अपने वस्त्र फाड़े और भूमि पर गिर पड़ा और उस के सब कर्म्मचारी वस्त्र फाड़े हुए उस के पास खड़े रहे ॥ ३२ । तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनादाब् ने कहा मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान अर्थात् राजकुमार मार डाले गये हैं केवल अम्नोन् मारा गया है क्योंकि जिस दिन उस ने अबशालोम् की बहिन तामार् को भ्रष्ट किया उसी दिन से अबशालोम् की आज्ञा से ऐसो ही बात ठनी थी ॥ ३३ । सो अब मेरा प्रभु राजा अपने मन में यह समझकर कि सब राजकुमार मर गये उदास न हो क्योंकि केवल अम्नोन् ही मर गया है ॥ ३४ । इतने में अबशालोम् भाग गया ॥ ३४ । और जो जवान पहरा देता था उस ने आंखें उठाकर देखा कि पोछे की ओर से पहाड़ के पास के मार्ग से बहुत लोग चले आते हैं ॥ ३५ । तब योनादाब् ने राजा से कहा देख राजकुमार तो आ गये हैं जैसा तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ ॥ ३६ । वह कह ही चुका था कि राजकुमार पहुंच गये और चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे और राजा भी अपने सब कर्म्मचारियों समेत बिलक बिलक रोने लगा ॥ ३७ । अबशालोम् तो भागकर गशूर् के राजा अम्मीहूर् के पुत्र तल्मै के पास गया । और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन दिन विलाप करता रहा ॥

(अबशालोम् की राजद्रोह की गोष्ठी)

३८ । जब अबशालोम् भागकर गशूर् को गया तब वहां तीन बरस रहा ॥ ३९ । और दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही क्योंकि अम्नोन् जो मर गया था इस से उस ने उस के विषय शांति पाई ॥

१४. और

सरूयाह् का पुत्र योआब् ताड़ गया कि राजा का मन अबशालोम् की ओर लगा है ॥ २ । सो योआब् ने तको नगर में दूत भेजकर वहां से एक बुद्धिमान स्त्री बुलवाई और उस से कहा शोक करनेवाली बन अर्थात् शोक का पहिरावा पहिन और तेल न लगा पर ऐसी स्त्री बन जो बहुत दिन से मुए के लिये विलाप करती रही हो ॥ ३ । तब राजा के पास जाकर ऐसी ऐसी बातें कहना । और योआब् ने उस को जो कुछ कहना था सो सिखा दिया ॥ ४ । जब वह तकोइन राजा से बातें करने लगी तब मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहने लगी राजा की दोहाई ॥ ५ । राजा ने उस से पूछा तुझे क्या चाहिये उस ने कहा सचमुच मेरा पति मर गया और मैं विधवा हो गई ॥ ६ । और तेरी दासी के दो बेटे थे और उन दोनों ने मैदान में मारपीट किई और उन का छुटानेहारा कोई न था सो एक ने दूसरे को ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ ७ । और सुन सारे कुल के लोग तेरी दासी के विरुद्ध उठकर यह कहते हैं कि जिस ने अपने भाई को घात किया उस को हमें सौंप दे कि उस के मारे हुए भाई के प्राण के पलटे में उस को प्राणदण्ड दें और वारिस को भी नाश करें सो वे मेरे अंगारे को जो बच गया है बुझाएंगे और मेरे पति का नाम और सन्तान धरती पर से मिटाएंगे ॥ ८ । राजा ने स्त्री से कहा अपने घर जा और मैं तेरे विषय आज्ञा दूंगा ॥ ९ । तकोइन ने राजा से कहा हे मेरे प्रभु हे राजा दोष मुझी को और मेरे पिता के घराने ही को लगे और राजा अपनी गद्दी समेत निर्दोष ठहरे ॥ १० । राजा ने कहा जो कोई तुझ से कुछ बोले उस को मेरे पास ला तब वह फिर तुझे छूने न पाएगा ॥ ११ । उस ने कहा राजा अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करे कि खून का पलटा लेनेहारा और नाश करने न पाए और मेरे बेटे का नाश न होने पाए । उस ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने न

पाएगा ॥ १२। स्त्री बोली तेरी दासी अपने प्रभु राजा से एक बात कहने पाए। उस ने कहा कहे जा ॥ १३। स्त्री कहने लगी फिर तू ने परमेश्वर की प्रजा की हानि के लिये ऐसी ही युक्ति क्यों किई है राजा ने जो यह वचन कहा है इस से वह दोषी सा ठहरता है क्योंकि राजा अपने निकाले हुए को लौटा नहीं लाता ॥ १४। हम को तो मरना ही है और भूमि पर गिरे हुए जल के समान ठहरेंगे जो फिर उठाया नहीं जाता तौभी परमेश्वर प्राण नहीं लेता वरन ऐसी युक्ति करता है कि निकाला हुआ उस के पास से निकाला हुआ न रहे ॥ १५। और अब मैं जो अपने प्रभु राजा से यह बात कहने को आई हूं इस का कारण यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था सो तेरी दासी ने सोचा कि मैं राजा से बोलूंगी क्या जानिये राजा अपनी दासी की बिनती को पूरी करे ॥ १६। नि:संदेह राजा सुनकर अपनी दासी को उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को परमेश्वर के भाग में से नाश करना चाहता है ॥ १७। सो तेरी दासी ने सोचा, कि मेरे प्रभु राजा के वचन से शांति मिले क्योंकि मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत की नाईं भले बुरे का विवेक कर सकता है सो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहे ॥ १८। राजा ने उत्तर देकर उस स्त्री से कहा जो बात मैं तुझ से पूछता हूं सो मुझ से न छिपा। स्त्री ने कहा मेरा प्रभु राजा कहे जाए ॥ १९। राजा ने पूछा इस बात में क्या योआब् तेरा संगी है। स्त्री ने उत्तर देकर कहा हे मेरे प्रभु हे राजा तेरे प्राण की सोंह कि जो कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है उस से कोई न दहिनी ओर मुड़ सकता है न बाईं तेरे दास योआब् ही ने मुझे आज्ञा दिई और ये सब बातें उसी ने तेरी दासी को सिखाईं ॥ २०। तेरे दास योआब् ने यह काम इस लिये किया कि बात का रंग बदले और मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान है यहां तक कि धरती पर जो कुछ होता है उस सब को वह जानता है ॥ २१। तब राजा ने योआब् से कहा सुन मैं ने यह बात मानी है सो जाकर अब्शालोम् जवान को लौटा ला ॥ २२। तब योआब् ने भूमि पर मुंह के बल गिर दण्डवत् कर राजा को आशीर्वाद दिया और योआब् कहने लगा हे मेरे प्रभु हे राजा आज तेरा दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है क्योंकि राजा ने अपने दास की बिनती सुनी है ॥ २३। सो योआब् उठकर गशूर् को गया और अब्शालोम् को यरूशलेम् ले आया ॥ २४। तब राजा ने कहा वह अपने घर जाकर रहे और मेरा दर्शन न पाए। सो अब्शालोम् अपने घर जा रहा और राजा का दर्शन न पाया ॥

२५। सारे इस्राएल् में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अब्शालोम् के तुल्य और कोई न था वरन उस में नख से सिख लों कुछ दोष न था ॥ २६। और वह बरसएं दिन अपना सिर मुंड़ाता था उस के बाल जो उस को भारी जान पड़ते थे इस कारण वह उसे मुड़ाता था सो जब जब वह उसे मुड़ाता तब तब अपने सिर के बाल तौलकर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल् भर पाता था ॥ २७। और अब्शालोम् के तीन बेटे और तामार् नाम एक बेटी उत्पन्न हुई थी और यह रूपवती स्त्री थी ॥

२८। सो अब्शालोम् राजा का दर्शन बिना पाये यरूशलेम् में दो बरस रहा ॥ २९। तब अब्शालोम् ने योआब् को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे पर योआब् ने उस के पास आने से नाह किई और उस ने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा पर तब भी उस ने आने से नाह किई ॥ ३०। तब उस ने अपने सेवकों से कहा सुनो योआब् का एक खेत मेरी भूमि के निकट है और उस में उस का जव खड़ा है तुम जाकर उस में आग लगाओ। सो अब्शालोम् के सेवकों ने उस खेत में आग लगाई ॥ ३१। तब योआब् उठ अब्शालोम् के घर में उस के पास जाकर उस से पूछने लगा तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई है ॥ ३२। अब्शालोम् ने योआब् से कहा मैं ने तो तेरे पास यह कहला भेजा था कि यहां आ कि मैं तुझे राजा के पास यह

कहने को भेजूं कि मैं गशूर् से क्यों आया मैं अब लों वहां रहता तो अच्छा होता सो अब राजा मुझे दर्शन दे और यदि मैं दोषी हूं तो वह मुझे मार डाले ॥ ३३। सो योआब् ने राजा के पास जाकर उस को यह बात सुनाई और राजा ने अब्शालोम् को बुलवाया और वह उस के पास गया और उस के सम्मुख भूमि पर मुंह के बल गिरके दण्डवत् किई और राजा ने अब्शालोम् को चूमा ॥

१५. **इस** के पीछे अब्शालोम् ने रथ और घोड़े और अपने आगे आगे दौड़नेवाले पचास मनुष्य रख लिये ॥ २। फिर अब्शालोम् सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास न्याय के लिये आता तब तब अब्शालोम् उस को पुकारके पूछता था तू किस नगर से आता है और वह कहता था कि तेरा दास इस्राएल् के फुलाने गोत्र का है ॥ ३। तब अब्शालोम् उस से कहता था कि सुन तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है पर राजा की ओर से तेरी सुननेहारा कोई नहीं है ॥ ४। फिर अब्शालोम् यह भी कहा करता था कि भला होता कि मैं इस देश मे न्यायी ठहराया जाता कि जितने मुकद्दमावाले होते सो सब मेरे ही पास आते और मैं उन का न्याय चुकाता ॥ ५। फिर जब कोई उसे दण्डवत् करने को निकट आता तब वह हाथ बढ़ाकर उस को पकड़के चूम लेता था ॥ ६। और जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुकद्दमा तै करने को आते उन सभों से अब्शालोम् ऐसा ही व्यवहार करता था सो अब्शालोम् ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया ॥

७। चार[१] बरस के बीते पर अब्शालोम् ने राजा से कहा मुझे हेब्रोन् जाकर अपनी उस मन्नत को पूरी करने दे जो मैं ने यहोवा की मानी है ॥ ८। तेरा दास तो जब अराम् के गशूर् में रहता था तब यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम् को लौटा ले जाए तो मैं यहोवा की उपासना करूंगा ॥ ९। राजा ने उस से कहा कुशलक्षेम से जा सो वह चलकर हेब्रोन् को गया ॥ १०। तब अब्शालोम् ने इस्राएल् के सारे गोत्रों में यह कहने को भेदिये भेजे कि जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुन पड़े तब कहना कि अब्शालोम् हेब्रोन् में राजा हुआ ॥ ११। और अब्शालोम् के संग दो सौ नेवतहरी यरूशलेम् से गये वे सीधे मन से इस का भेद बिना जाने गये ॥ १२। फिर जब अब्शालोम् का यज्ञ हुआ तब उस ने गीलोवासी अहीतोपेल् को जो दाऊद का मंत्री था बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। और राजद्रोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा क्योंकि अब्शालोम् के पक्ष के लोग बढ़ते गये ॥

(दाऊद का भागना.)

१३। तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया कि इस्राएली मनुष्यों के मन अब्शालोम् की ओर हो गये हैं ॥ १४। तब दाऊद ने अपने सब कर्म्मचारियों से जो यरूशलेम् में उस के संग थे कहा आओ हम भाग चलें नहीं तो हम में से कोई अब्शालोम् से न बचेगा सो फुर्ती करके चलो ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ ले और हमारी हानि करे और इस नगर को तलवार से मार ले ॥ १५। राजा के कर्म्मचारियों ने उस से कहा जैसा हमारा प्रभु राजा अच्छा जाने वैसा ही करने के लिये तेरे दास तैयार हैं ॥ १६। तब राजा निकल गया और उस के पीछे उस का सारा घराना निकला और राजा दस रखेलियों को भवन की चौकसी करने के लिये छोड़ गया ॥ १७। सो राजा निकल गया और उस के पीछे[१] सब लोग निकले और वे बेत्मेर्हक्[२] में ठहर गये ॥ १८। और उस के सब कर्म्मचारी उस के पास से होकर आगे गये और सब करेती और सब पलेती और सब गती अर्थात् जो छः सौ पुरुष गत् से उस के पीछे हो लिये थे सो सब राजा के साम्हने होकर आगे चले ॥ १९। तब राजा ने गती इत्तै से पूछा हमारे संग तू क्यों

(१) वा चालीस।

(१) मूल में उस के पांवों पर। (२) अर्थात्, दूरभवन।

चलता है लौटकर राजा के पास रह क्योंकि तू परदेशी और अपने देश से दूर है सो अपने स्थान को लौट जा॥ २०। तू तो कल ही आया है क्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा मारा फिराऊं मैं तो जहां जा सकूं वहां जाऊंगा तू लौट जा और अपने भाइयों को भी लौटा दे ईश्वर की करुणा और सच्चाई तेरे संग रहे॥ २१। इत्तै ने राजा को उत्तर देकर कहा यहोवा के जीवन की सोंह और मेरे प्रभु राजा के जीवन की सोंह जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहे चाहे मरने के लिये हो चाहे जीते रहने के लिये उसी स्थान में तेरा दास रहेगा॥ २२। तब दाऊद ने इत्तै से कहा पार चल सो गती इत्तै अपने सारे जनों और अपने साथ के सब बाल-बच्चों समेत पार हो गया॥ २३। सब रहनेहारे[1] चिल्ला चिल्लाकर रो रहे थे और सब लोग पार हुए और राजा भी किद्रोन् नाम नाले के पार हुआ और सब लोग नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार होकर चले॥ २४। तब क्या देखने में आया कि सादोक् भी और उस के संग सब लेवीय परमेश्वर की वाचा का संदूक उठाये हुए हैं और उन्हों ने परमेश्वर के संदूक को धर दिया तब एब्यातार् चढ़ा और जब लों सब लोग नगर से न निकले तब लों वहीं रहा॥ २५। तब राजा ने सादोक् से कहा परमेश्वर के संदूक को नगर में लौटा ले जा यदि यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो वह मुझे लौटाकर उस को और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा॥ २६। पर यदि वह मुझ से ऐसा कहे कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं तौभी मैं हाजिर हूं जैसा उस को भाए वैसा ही वह मेरे साथ बर्त्ताव करे॥ २७। फिर राजा ने सादोक् याजक से कहा क्या तू दर्शी नहीं है सो कुशलक्षेम से नगर में लौट जा और तेरा पुत्र अहीमास् और एब्यातार् का पुत्र योनातान् दोनों तुम्हारे संग लौटें॥ २८। सुनो मैं जंगल के घाट के पास तब लों ठहरा रहूंगा जब लों तुम लोगों से मुझे हाल का समाचार न मिले॥ २९। सो सादोक् और एब्यातार् ने परमेश्वर के संदूक को यरूशलेम् में लौटा दिया और आप वहीं रहे॥

३०। तब दाऊद जलपाइयों के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे नंगे पांव रोता हुआ चढ़ने लगा और जितने लोग उस के संग थे सो भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गये॥ ३१। तब दाऊद को यह समाचार मिला कि अबशालोम् के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल् है। दाऊद ने कहा हे यहोवा अहीतोपेल् की सम्मति को मूर्खता की बना दे॥ ३२। जब दाऊद चोटी लों पहुंचा जहां परमेश्वर को दण्डवत् किया करते थे तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े सिर पर मिट्टी डाले हुए उस से मिलने को आया॥ ३३। दाऊद ने उस से कहा यदि तू मेरे संग आगे जाए तब तो मेरे लिये भार ठहरेगा॥ ३४। पर यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम् से कहने लगे हे राजा मैं तेरा कर्म्मचारी हूंगा जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्म्मचारी रहा वैसा ही अब तेरा हूंगा तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल् की सम्मति को निष्फल कर सकेगा॥ ३५। और क्या वहां तेरे संग सादोक् और एब्यातार् याजक न रहेंगे सो राजभवन में से जो हाल तुझे सुन पड़े उसे सादोक् और एब्यातार् याजकों को बताया करना॥ ३६। उन के साथ तो उन के दो पुत्र अर्थात् सादोक् का पुत्र अहीमास् और एब्यातार् का पुत्र योनातान् वहां रहेंगे सो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना॥ ३७। सो दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया और अबशालोम् भी यरूशलेम् में पहुंच गया॥

१६. दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़ गया था कि मपीबोशेत् का कर्म्मचारी सीबा एक जोड़ी जीन बांधेहुए गदहों पर दो सौ रोटी किशमिश की एक सौ टिकिया धूपकाल के फल की एक सौ टिकिया और कुप्पी भर दाखमधु लादे हुए उस से आ मिला॥ २। राजा ने सीबा से पूछा इन से तेरा क्या प्रयोजन है सीबा ने कहा गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिये हैं और रोटी और

(१) मूल में सारा देश।

धूपकाल के फल जवानों के खाने के लिये है और दाखमधु इस लिये है कि जो कोई जंगल में थक जाए सो उसे पीए ॥ ३। राजा ने पूछा फिर तेरे स्वामी का बेटा कहां है सीबा ने राजा से कहा वह तो यह कहकर यरूशलेम् में रह गया कि अब इस्राएल् का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा ॥ ४। राजा ने सीबा से कहा जो कुछ मपीबोशेत् का था सो सब तुझे मिल गया सीबा ने कहा प्रणाम हे मेरे प्रभु हे राजा मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे ॥

५। जब दाऊद राजा बहूरीम् लों पहुंचा तब शाऊल् का एक कुटुम्बी वहां से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी नाम था और वह कोसता हुआ चला आया, ६। और दाऊद पर और दाऊद राजा के सब कर्म्मचारियों पर पत्थर फेंकने लगा और शूरवीरों समेत सब लोग उस की दहिनी बाईं दोनों ओर थे ॥ ७। और शिमी कोसता हुआ यों बकता गया कि रे खूनी रे ओछे निकल जा निकल जा ॥ ८। यहोवा ने तुझ से शाऊल् के घराने के खून का पूरा पलटा लिया है जिस के स्थान पर तू राजा हुआ है। यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अब्शालोम् के हाथ कर दिया है और तू जो खूनी है इस से तू अपनी बुराई में आप फंस गया ॥ ९। तब सरूयाह् के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों कोसने पाए मुझे उधर जाकर उस का सिर काटने दे ॥ १०। राजा ने कहा हे सरूयाह् के बेटो मुझ से तुम से क्या काम वह जो कोसता है और यहोवा ने जो उस से कहा है कि दाऊद को कोस सो उस से कौन पूछ सकता है कि तू ने ऐसा क्यों किया ॥ ११। फिर दाऊद ने अबीशै और अपने सब कर्म्मचारियों से कहा जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का ग्राहक है तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे उस को रहने दो और कोसने दो क्योंकि यहोवा ने उस से कहा है ॥ १२। क्या जानिये यहोवा इस उपद्रव पर जो मुझ पर हो रहा है दृष्टि करके आज के कोसने की सन्ती मुझे भला बदला दे ॥ १३। सो दाऊद अपने जनों समेत मार्ग में चला गया और शिमी उस के साम्हने के पहाड़ की अलंग पर से कोसता और उस पर पत्थर और धूलि फेंकता हुआ चला गया ॥ १४। निदान राजा अपने संग के सब लोगों समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुंचा और वहां सुस्ताया ॥

१५। अब्शालोम् सब इस्राएली लोगों समेत यरूशलेम् को आया और उस के संग अहीतोपेल् भी आया ॥ १६। जब दाऊद का मित्र एरेकी हूशै अब्शालोम् के पास पहुंचा तब हूशै ने अब्शालोम् से कहा राजा जीता रहे राजा जीता रहे ॥ १७। अब्शालोम् ने उस से कहा क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र से रखता है तू अपने मित्र के संग क्यों नहीं गया ॥ १८। हूशै ने अब्शालोम् से कहा ऐसा नहीं जिस को यहोवा और ये लोग क्या बरन सब इस्राएली लोग चाहें उसी का मैं हूं और उसी के संग मैं रहूंगा ॥ १९। और फिर मैं किस की सेवा करूं क्या उस के पुत्र के साम्हने रहकर सेवा न करूं जैसा मैं तेरे पिता के साम्हने रहकर सेवा करता था वैसा ही तेरे साम्हने रहकर सेवा करूंगा ॥ २०। तब अब्शालोम् ने अहीतोपेल् से कहा तुम लोग अपनी सम्मति दो कि क्या करना चाहिये ॥ २१। अहीतोपेल् ने अब्शालोम् से कहा जिन रखेलियों को तेरा पिता भवन की चौकसी करने को छोड़ गया उन के पास तू जा और जब सब इस्राएली यह सुनेंगे कि अब्शालोम् का पिता उस से घिनाता है तब तेरे सब संगी हियाव बांधेंगे ॥ २२। सो उस के लिये भवन की छत के ऊपर एक तंबू खड़ा किया गया और अब्शालोम् सारे इस्राएल् के देखते अपने पिता की रखेलियों के पास गया ॥ २३। उन दिनों जो सम्मति अहीतोपेल् देता था सो ऐसी होती थी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ लेता, था अहीतोपेल् चाहे दाऊद को चाहे अब्शालोम् को जो जो सम्मति देता सो वैसी ही होती थी ॥

१७. फिर अहीतोपेल् ने अब्शालोम् से कहा मुझे बारह हजार पुरुष छांटने दे और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद

का पीछा करूंगा ॥ २ । और जब वह थका और निर्बल होगा तब मैं उसे पकड़ूंगा और डराऊंगा और जितने लोग उस के साथ हैं सब भागेंगे और मैं राजा ही को मारूंगा ॥ ३ । और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊंगा जिस मनुष्य का तू खोजी है उस के मिलने से सारी प्रजा का मिलना हो जाएगा सो सारी प्रजा कुशलक्षेम से रहेगी ॥ ४ । यह बात अब्शालोम् और सब इस्राएली पुरनियों को ठीक जची ॥

५ । फिर अब्शालोम् ने कहा एरेकी हूशै को भी बुला ला और जो वह कहेगा हम उसे भी सुनें ॥ ६ । जब हूशै अब्शालोम् के पास आया तब अब्शालोम् ने उस से कहा अहीतोपेल् ने तो इस प्रकार की बात कही है क्या हम उस की बात मानें कि नहीं जो नहीं तो तू कह दे ॥ ७ । हूशै ने अब्शालोम् से कहा जो सम्मति अहीतोपेल् ने इस बार दिई सो अच्छी नहीं ॥ ८ । फिर हूशै ने कहा तू तो अपने पिता और उस के जनों को जानता है कि वे शूरवीर हैं और बच्चा छिनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे और तेरा पिता योद्धा है और और लोगों के साथ रात नहीं बिताता ॥ ९ । इस समय तो वह किसी गड़हे वा किसी ऐसे स्थान में छिपा होगा सो जब इन में से पहिले पहिल कोई कोई मारे जाएं तब इस के सब सुननेहारे कहने लगेंगे कि अब्शालोम् के पक्षवाले हार गये ॥ १० । तब वीर का हृदय जो सिंह का सा हो उस का भी सारा हियाव छूट जाएगा, सारा इस्राएल् तो जानता है कि तेरा पिता वीर है और उस के संगी बड़े योद्धा हैं ॥ ११ । सो मेरी सम्मति यह है कि दान् से ले बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएली तेरे पास समुद्रतीर की वालू के किनकों के समान एकट्ठे किये जाएं और तू आप ही[1] युद्ध को जाए ॥ १२ । सो जब हम उस को किसी न किसी स्थान में जहां वह मिले जा पकड़ेंगे तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेंगे तब न तो वह बचेगा न उस के संगियों में से कोई बचेगा ॥ १३ । और यदि वह किसी नगर में घुसा हो तो सब इस्राएली उस नगर के पास रस्सियां ले आएंगे और हम उसे नाले में खींचेंगे यहां तक कि उस का एक छोटा सा पत्थर न रह जाएगा ॥ १४ । तब अब्शालोम् और सब इस्राएली पुरुषों ने कहा एरेकी हूशै की सम्मति अहीतोपेल् की सम्मति से उत्तम है । यहोवा ने तो अहीतोपेल् की अच्छी सम्मति निष्फल करने को ठाना था इस लिये कि वह अब्शालोम् ही पर विपत्ति डाले ॥

१५ । तब हूशै ने सादोक् और एब्यातार् याजकों से कहा अहीतोपेल् ने तो अब्शालोम् और इस्राएली पुरनियों को इस इस प्रकार की सम्मति दिई और मैं ने इस इस प्रकार की सम्मति दिई है ॥ १६ । सो अब फुर्ती कर दाऊद के पास कहला भेजो कि आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना अवश्य पार ही हो जाना ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उस के संग हों सब नाश हो जाएं ॥ १७ । योनातान् और अहीमास् एन्रोगेल् के पास ठहरे रहे और एक लौंडी जाकर उन्हें संदेशा दे आती थी और वे जाकर राजा दाऊद को संदेशा देते थे क्योंकि वे किसी के देखते नगर में न जा सकते थे ॥ १८ । एक छोकरे ने तो उन्हें देखकर अब्शालोम् को बताया पर वे दोनों फुर्ती से चले गये और एक बहूरीम्वासी मनुष्य के घर पहुंचकर जिस के आंगन में कूंआ था उस में उतर गये ॥ १९ । तब उस की स्त्री ने कपड़ा लेकर कूंए के मुंह पर बिछाया और उस के ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया सो कुछ मालूम न पड़ा ॥ २० । तब अब्शालोम् के सेवक उस घर में उस स्त्री के पास जाकर कहने लगे अहीमास् और योनातान् कहां हैं स्त्री ने उन से कहा वे तो उस छोटी नदी के पार गये । सो उन्हों ने उन्हें ढूंढा और न पाकर यरूशलेम् को लौटे ॥ २१ । जब वे चले गये तब ये कूंए में से निकले और जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया और दाऊद से कहा तुम लोग चलो फुर्ती करके नदी के पार हो जाओ क्योंकि अहीतोपेल् ने तुम्हारी हानि की ऐसी ऐसी सम्मति दिई है ॥ २२ । तब दाऊद अपने सब संगियों समेत उठ-

(१) मूल में. तेरा मुख ।

कर यर्दन पार हो गया और यह फटने लों उन में से एक भी न रह गया जो यर्दन के पार न हो गया हो ॥ २३ । जब अहीतोपेल् ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ तब उस ने अपने गदहे पर काठी कसी और अपने नगर जाकर अपने घर में गया और अपने घराने के विषय जो जो आज्ञा देनी थी सो देकर अपने फांसी लगाई सो वह मरा और अपने पिता के कबरिस्तान में उसे मिट्टी दिई गई ॥

२४ । दाऊद तो महनैम् में पहुंचा । और अब्शालोम् सब इस्राएली पुरुषों समेत यर्दन के पार गया ॥ २५ । और अब्शालोम् ने अमासा को योआब् के स्थान पर प्रधान सेनापति ठहराया । यह अमासा एक पुरुष का पुत्र था जिस का नाम इस्राएली यित्रा था और इस ने योआब् की माता सरूयाह् की बहिन अबीगल् नाम नाहाश की बेटी से प्रसंग किया था ॥ २६ । और इस्राएलियों और अब्शालोम् ने गिलाद् देश में छावनी डाली ॥

२७ । जब दाऊद महनैम् में आया तब अम्मोनियों के रब्बा के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी और लोदबार्वासी अम्मीएल् का पुत्र माकीर् और रोगलीम्वासी गिलादी बर्जिल्लै, २८ । चारपाइयां तसले मिट्टी के बर्तन गेहूं जब मैदा लोबिया मसूर चबेना, २९ । मधु मक्खन भेड़बकरियां और गाय के दही का पनीर दाऊद और उस के संगियों के खाने को यह सोचकर ले आये कि जंगल में वे लोग भूखे थके प्यासे होंगे ॥

१८. तब दाऊद ने अपने संग के लोगों की गिनती लिई और उन पर सहस्रपति और शतपति ठहराये ॥ २ । फिर दाऊद ने लोगों की एक तिहाई तो योआब् के और एक तिहाई सरूयाह् के पुत्र योआब् के भाई अबीशै के और एक तिहाई गती इत्तै के अधिकार में करके युद्ध में भेज दिया । और राजा ने लोगों से कहा मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ चलूंगा ॥ ३ । लोगों ने कहा तू जाने न पाएगा क्योंकि चाहे हम भाग जाएं तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे बरन चाहे हम में से आधे मारे भी जाएं तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे क्योंकि हमारे सरीखे दस हजार पुरुष हैं सो उत्तम यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने को तैयार रहे ॥ ४ । राजा ने उन से कहा जो कुछ तुम्हें भाए सोई मैं करूंगा । सो राजा फाटक की एक ओर खड़ा रहा और सब लोग सौ सौ और हजार हजार करके निकलने लगे ॥ ५ । और राजा ने योआब् अबीशै और इत्तै को आज्ञा दिई कि मेरे निमित्त उस जवान अर्थात् अब्शालोम् से कोमलता करना । यह आज्ञा राजा ने अब्शालोम् के विषय सब प्रधानों को सब लोगों के सुनते दिई ॥ ६ । सो लोग इस्राएल् का साम्हना करने को मैदान में निकले और एप्रैम् नाम बन में युद्ध हुआ ॥ ७ । वहां इस्राएली लोग दाऊद के जनों से हार गये और उस दिन ऐसा बड़ा संहार हुआ कि बीस हजार खेत आये ॥ ८ । और वहां युद्ध उस सारे देश में फैल गया और उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गये उन से भी अधिक बन के कारण मर गये ॥ ९ । संयोग से अब्शालोम् और दाऊद के जनों की भेंट हो गई अब्शालोम् तो एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा था कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया और उस का सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया और वह अधर में लटका रहा और उस का खच्चर निकल गया ॥ १० । इस को देखकर किसी मनुष्य ने योआब् को बताया कि मैं ने अब्शालोम् को बांज वृक्ष में टंगा हुआ देखा ॥ ११ । योआब् ने बतानेहारे से कहा तू ने यह देखा फिर क्यों उसे वहीं मारके भूमि पर न गिरा दिया तो मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और एक फेंटा देता ॥ १२ । उस मनुष्य ने योआब् से कहा चाहे मेरे हाथ में हजार टुकड़े चांदी तौलकर दिये जाएं तौभी राजकुमार के विरुद्ध हाथ न बढ़ाऊंगा क्योंकि हम लोगों के सुनते राजा ने तुझे और अबीशै और इत्तै को यह आज्ञा दिई कि तुम में से कोई क्यों न हो उस जवान अर्थात् अब्शालोम् को न छूए ॥ १३ । नहीं तो यदि

धोखा देकर उस का प्राण लेता तो तू आप मेरा विरोधी हो जाता क्योंकि राजा से कोई बात छिपी नहीं रहती ॥ १४ । योआब् ने कहा मैं तेरे संग ऐसा ठहर नहीं सकता । सो उस ने तीन लकड़ी हाथ में लेकर अब्शालोम् के हृदय में जो बांज वृक्ष में जीता लटका था गाड़ दिई ॥ १५ । तब योआब् के दस हथियार ढोनेहारे जवानों ने अब्शालोम् को घेरके ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ १६ । फिर योआब् ने नरसिंगा फूंका श्रीर लोग इस्राएल् का पीछा करने से लौटे क्योंकि योआब् प्रजा को बचाने चाहता था ॥ १७ । तब लोगों ने अब्शालोम् को उतारके उस वन में के एक बड़े गड़हे में डाल दिया श्रीर उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया श्रीर सब इस्राएली अपने अपने डेरे को भाग गये ॥ १८ । अपने जीते जी अब्शालोम् ने यह सोचकर कि मेरे नाम का स्मरण करानेहारा कोई पुत्र मेरे नहीं है अपने लिये वह लाठ खड़ी कराई थी जो राजा की तराई में है श्रीर लाठ का अपना ही नाम रक्खा सो वह आज के दिन लों अब्शालोम् की लाठ कहलाती है ॥

१९ । श्रीर सादोक् के पुत्र अहीमास् ने कहा मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार देने दे कि यहोवा ने न्याय करके तुझे तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है ॥ २० । योआब् ने उस से कहा तू आज के दिन समाचार न दे दूसरे दिन समाचार देने पाएगा पर आज समाचार न दे इस लिये कि राज-कुमार मर गया है ॥ २१ । तब योआब् ने एक कूशी से कहा जो कुछ तू ने देखा है सो जाकर राजा को बता दे । सो वह कूशी योआब् को दण्डवत् करके दौड़ा गया ॥ २२ । फिर सादोक् के पुत्र अहीमास् ने दूसरी बार योआब् से कहा जो हो सो हो पर मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे । योआब् ने कहा हे मेरे बेटे तेरे समाचार का कुछ बदला न मिलेगा सो तू क्यों दौड़ जाने चाहता है ॥ २३ । उस ने कहा यह जो हो सो हो पर मुझे दौड़ जाने दे उस ने उस से कहा दौड़ तब अहीमास् दौड़ा श्रीर तराई से होकर कूशी के आगे बढ़ गया ॥

२४ । दाऊद तो दो फाटकों के बीच बैठा था कि पहरुआ जो फाटक की छत से होकर शहरपनाह पर चढ़ गया था उस ने आंखें उठाकर क्या देखा कि एक मनुष्य अकेला दौड़ा आता है ॥ २५ । जब पहरुए ने पुकारके राजा को यह बता दिया तब राजा ने कहा यदि अकेला आता हो तो सन्देश लाता होगा । वह दौड़ते दौड़ते निकट आया ॥ २६ । फिर पहरुए ने एक श्रीर मनुष्य को दौड़ते हुए देख फाटक के रखवाले को पुकारके कहा सुन एक श्रीर मनुष्य अकेला दौड़ा आता है । राजा ने कहा वह भी सन्देश लाता होगा ॥ २७ । पहरुए ने कहा मुझे तो ऐसा देख पड़ता है कि पहिले का दौड़ना सादोक् के पुत्र अहीमास् का सा है राजा ने कहा वह तो भला मनुष्य है सो भला सन्देश लाता होगा ॥ २८ । तब अहीमास् ने पुकारके राजा से कहा कल्याण फिर उस ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने मेरे प्रभु राजा के विरुद्ध हाथ उठानेहारे मनुष्यों को तेरे बश कर दिया है ॥ २९ । राजा ने पूछा क्या उस जवान अब्शालोम् का कल्याण है अहीमास् ने कहा जब योआब् ने राजा के कर्मचारी को श्रीर तेरे दास को भेज दिया तब मुझे बड़ी भीड़ देख पड़ी पर मालूम न हुआ कि क्या हुआ था ॥ ३० । राजा ने कहा हटकर यहीं खड़ा रह सो वह हटकर खड़ा रहा ॥ ३१ । तब कूशी भी आ गया श्रीर कूशी कहने लगा मेरे प्रभु राजा के लिये समाचार है यहोवा ने आज न्याय करके तुझे उन सभों के हाथ से बचाया है जो तेरे विरुद्ध उठे थे ॥ ३२ । राजा ने कूशी से पूछा क्या वह जवान अर्थात् अब्शालोम् कल्याण से है कूशी ने कहा मेरे प्रभु राजा के शत्रु श्रीर जितने तेरी हानि के लिये उठे हैं उन की दशा उस जवान की सी हो ॥ ३३ । तब राजा बहुत घबराया श्रीर फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा श्रीर चलते चलते यों कहता गया कि हाय मेरे बेटे अब्शालोम् मेरे बेटे हाय मेरे बेटे अब्शालोम् भला होता कि मैं आप तेरी सन्ती मरता हाय अब्शालोम् मेरे बेटे मेरे बेटे ॥

(दाऊद का यरूशलीम् को लौटना.)

१९. तब योआब् को यह समाचार मिला कि राजा अब्शालोम् के लिये रो रहा और विलाप कर रहा है ॥ २ । सो उस दिन का विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गया क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेदित है ॥ ३ । और उस दिन लोग ऐसा मुंह चुराकर नगर में घुसे जैसा लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुंह चुराते हैं ॥ ४ । और राजा मुंह ढांपे हुए चिल्ला चिल्लाकर पुकारता रहा कि हाय मेरे बेटे अब्शालोम् हाय अब्शालोम् मेरे बेटे मेरे बेटे ॥ ५ । सो योआब् घर में राजा के पास जाकर कहने लगा तेरे कर्म्मचारियों ने आज के दिन तेरा और तेरे बेटों बेटियों का और तेरी स्त्रियों और रखेलियों का प्राण तो बचाया है पर तू ने आज के दिन उन सभों का मुंह काला किया है ॥ ६ । कैसे कि तू अपने बैरियों से प्रेम और अपने प्रेमियों से बैर रखता है । तू ने आज यह प्रगट किया कि तुझे हाकिमों और कर्म्मचारियों की कुछ चिन्ता नहीं बरन मैं ने आज जान लिया कि यदि हम सब आज मारे जाते और अब्शालोम् जीता रहता तो तू बहुत प्रसन्न होता ॥ ७ । सो अब उठकर बाहर जा और अपने कर्म्मचारियों को शांति दे नहीं तो मैं यहोवा की किरिया खाकर कहता हूं कि यदि तू बाहर न जाए तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा और तेरे बचपन से लेकर अब लों जितनी विपत्तियां तुझ पर पड़ी हैं उन सब से यह विपत्ति बड़ी होगी ॥ ८ । सो राजा उठकर फाटक में जा बैठा और जब सब लोगों को यह बताया गया कि राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के साम्हने आये ॥

और इस्राएली अपने अपने डेरे को भाग गये थे ॥ ९ । और इस्राएल् के सब गोत्रों में सब लोग आपस में यह कहकर झगड़ते थे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचाया था और पलिश्तियों के हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया पर अब वह अब्शालोम् के डर के मारे देश छोड़कर भाग गया ॥ १० । और अब्शालोम् जिस का हम ने अपना राजा होने को अभिषेक किया था सो युद्ध में मर गया है सो अब तुम क्यों चुप रहते और राजा को लौटा ले आने की चर्चा क्यों नहीं करते ॥

११ । तब राजा दाऊद ने सादोक् और एब्यातार् याजकों के पास कहला भेजा कि यहूदी पुरनियों से कहो कि तुम लोग राजा को भवन पहुंचाने के लिये सब से पीछे क्यों होते हो जब कि सारे इस्राएल् की बातचीत राजा के सुनने में आई है कि उस को भवन में पहुचाए ॥ १२ । तुम लोग तो मेरे भाई बरन हाड़ ही मांस हो सो तुम राजा को लौटाने में सब के पीछे क्यों होते हो ॥ १३ । फिर अमासा से यह कहो कि क्या तू मेरा हाड़ मांस नहीं है और यदि तू योआब् के स्थान पर सदा के लिये सेनापति न ठहरे तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे ॥ १४ । सो उस ने सब यहूदी पुरुषों के मन ऐसे अपनी ओर खींच लिया कि मानो एक ही पुरुष था और उन्हों ने राजा के पास कहला भेजा कि तू अपने सब कर्म्मचारियों को संग लेकर लौट आ ॥ १५ । सो राजा लौटकर यर्दन तक आ गया और यहूदी लोग गिल्गाल् गये कि उस से मिलकर उसे यर्दन पार ले आएं ॥

१६ । यहूदियों के संग गेरा का पुत्र बिन्यामीनी शिमी भी जो बहूरीमी था फुर्ती करके राजा दाऊद से भेंट करने को गया ॥ १७ । उस के संग हजार बिन्यामीनी पुरुष थे और शाऊल् के घराने का कर्म्मचारी सीबा अपने पन्द्रहों पुत्रों और बीसों दासों समेत था और वे राजा के साम्हने यर्दन के पार पांव पांव उतर गये ॥ १८ । और एक बेड़ा राजा के परिवार को पार ले आने और जिस काम में वह उसे लगाने चाहे उसी में लगने के लिये पार गया । और जब राजा यर्दन पार जाने पर था तब गेरा का पुत्र शिमी उस के पांवों पर गिरके, १९ । राजा से कहने लगा मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न करे और जिस दिन मेरा प्रभु राजा यरूशलेम् को छोड़ आया उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया

उसे ऐसा स्मरण न कर कि राजा उसे अपने ध्यान में रक्खे ॥ २० । क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैं ने पाप किया सो देख आज अपने प्रभु राजा से भेंट करने के लिये यूसुफ के सारे घराने में से मैं ही पहिला आया हूं ॥ २१ । तब सरूयाह् के पुत्र अबीशै ने कहा शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त को कोसा था इस कारण क्या उस को वध करना न चाहिये ॥ २२ । दाऊद ने कहा हे सरूयाह् के बेटो मुझ से तुम से क्या काम कि तुम आज मेरे विरोधी ठहरे हो आज क्या इस्राएल् में किसी को प्राणदण्ड मिलेगा क्या मैं नहीं जानता कि आज इस्राएल् का राजा हुआ हूं ॥ २३ । फिर राजा ने शिमी से कहा तुझे प्राणदण्ड न मिलेगा और राजा ने उस से किरिया भी खाई ॥

२४ । तब शाऊल् का पोता मपीबोशेत् राजा से भेंट करने को आया उस ने राजा के चले जाने के दिन से उस के कुशलक्षेम से फिर आने के दिन लों न अपने पावों के नखून काटे न अपनी डाढ़ी बनवाई और न अपने कपड़े धुलवाये थे ॥ २५ । सो जब यरूशलेमी राजा से मिलने को गये तब राजा ने उस से पूछा हे मपीबोशेत् तू मेरे संग क्यों न गया था ॥ २६ । उस ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा मेरे कर्म्मचारी ने मुझे धोखा दिया था तेरा दास जो पंगु है इस लिये तेरे दास ने सोचा कि मैं गदहे पर काठी कसाकर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊंगा ॥ २७ । और मेरे कर्म्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के साम्हने मेरी चुगली खाई है पर मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है सो जो कुछ तुझे भाए वही कर ॥ २८ । मेरे पिता का सारा घराना तेरी ओर से प्राणदण्ड के योग्य था पर तू ने अपने दास को अपनी मेज पर खानेहारों में गिना है मुझे क्या हक है कि मैं राजा को और दोहाई दूं ॥ २९ । राजा ने उस से कहा तू अपनी बात की चर्चा क्यों करता रहता है मेरी आज्ञा यह है कि उस भूमि को तू और सीबा दोनों आपस में बांट लो ॥ ३० । मपीबोशेत् ने राजा से कहा मेरा प्रभु राजा जो कुशलक्षेम से अपने घर आया है इस लिये सीबा ही सब कुछ रक्खे ॥

३१ । तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम् से आया और राजा को यर्दन पार पहुंचाने को राजा के संग यर्दन पार गया ॥ ३२ । बर्जिल्लै तो बहुत पुरनिया अर्थात् अस्सी बरस का था और जब लों राजा महनैम् में रहता था तब लों वह उस का पालन पोषण करता रहा क्योंकि वह बहुत धनी था ॥ ३३ । सो राजा ने बर्जिल्लै से कहा मेरे संग पार चल और मैं तुझे यरूशलेम् में अपने पास रखकर तेरा पालन पोषण करूंगा ॥ ३४ । बर्जिल्लै ने राजा से कहा मुझे कितने दिन जीना है कि मैं राजा के संग यरूशलेम् को जाऊं ॥ ३५ । आज मैं अस्सी बरस का हूं क्या मैं भले बुरे का विवेक कर सकता हूं क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता है उस का स्वाद पहिचान सकता क्या मुझे गानेहारों वा गानेहारियों का शब्द अब सुन पड़ता है सो तेरा दास अब अपने प्रभु राजा के लिये भार क्यों ठहरे ॥ ३६ । तेरा दास राजा के संग यर्दन पार ही तक जाएगा राजा इस का ऐसा बड़ा बदला मुझे क्यों दे ॥ ३७ । अपने दास को लौटने दे कि मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता के कबरिस्तान के पास मरूं । पर तेरा दास किम्हाम् हाजिर है मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए और जैसा तुझे भाए वैसा ही उस से व्यवहार करना ॥ ३८ । राजा ने कहा हां किम्हाम् मेरे संग पार चलेगा और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उस से व्यवहार करूंगा बरन जो कुछ तू मुझ से चाहेगा सो मैं तेरे लिये करूंगा ॥ ३९ । तब सब लोग यर्दन पार गये और राजा भी पार हुआ तब राजा ने बर्जिल्लै को चूमकर आशीर्वाद दिया और वह अपने स्थान को लौट गया ॥

(शेबा की राजद्रोह की गोष्ठी)

४० । सो राजा गिलगाल् की ओर पार गया और उस के संग किम्हाम् पार हुआ और सब यहूदी लोगों ने और आधे इस्राएली लोगों ने राजा को पार किया ॥ ४१ । तब सब इस्राएली पुरुष राजा के पास आये और राजा से कहने लगे क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आये और परिवार समेत राजा को और उस के सब जनों को

भी यर्दन पार लाये हैं ॥ ४२ । सब यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों को उत्तर दिया कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का है सो तुम लोग इस बात से क्यों रूठ गये हो क्या हम ने राजा का दिया हुआ कुछ खाया वा उस ने हमें कुछ दान दिया है ॥ ४३ । इस्राएली पुरुषों ने यहूदी पुरुषों को उत्तर दिया राजा में दस अंश हमारे हैं और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है सो तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना क्या अपने राजा के लौटा ले आने की चर्चा पहिले हम ही ने न किई थी । और यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों से अधिक कड़ी बातें कहीं ॥

२० वहां संयोग से शेबा नाम एक बिन्यामीनी ओछा था जो बिक्री का पुत्र था वह नरसिंगा फूंककर कहने लगा दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है हे इस्राएलियो अपने अपने डेरे को चले जाओ ॥ २ । सो सब इस्राएली पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिये पर सब यहूदी पुरुष यर्दन से यरूशलेम् लों अपने राजा के संग लगे रहे ॥

३ । तब दाऊद यरूशलेम् को अपने भवन में आया और राजा ने उन दस रखेलियों को जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया था अलग एक घर में रक्खा और उन का पालन पोषण करता रहा पर उन से प्रसंग न किया सो वे अपनी अपनी मृत्यु के दिन लों विधवापन की सी दशा में जीती हुई बन्द रहीं ॥

४ । तब राजा ने अमासा से कहा यहूदी पुरुषों को तीन दिन के भीतर मेरे पास बुला ला और तू भी यहां हाज़िर होना ॥ ५ । सो अमासा यहूदियों को बुला लाने गया पर उस के ठहराये हुए समय से अधिक रहा ॥ ६ । सो दाऊद ने अबीशै से कहा अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम् से भी हमारी अधिक हानि करेगा सो तू अपने प्रभु के लोगों को लेकर उस का पीछा कर ऐसा न हो कि वह गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए[1] ॥ ७ । तब योआब् के जन और करेती और पलेती लोग और सारे शूरवीर उस के पीछे हो लिये और बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को यरूशलेम् से निकले ॥ ८ । वे गिबोन् में के भारी पत्थर के पास पहुंचे ही थे कि अमासा उन से आ मिला। योआब् तो योद्धा का वस्त्र फेंटे से कसे हुए था और उस फेंटे में एक तलवार उस की कमर पर अपनी मियान में बन्धी हुई थी और जब वह चला तब वह निकलकर गिर पड़ी ॥ ९ । सो योआब् ने अमासा से पूछा हे मेरे भाई क्या तू कुशल से है तब योआब् ने अपना दहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिये उस की दाढ़ी पकड़ी ॥ १० । पर अमासा ने उस तलवार की कुछ चिन्ता न किई जो योआब् के हाथ में थी सो उस ने उसे अमासा के पेट में भोंककर उस की अन्तड़ियां गिरा दिईं और उस को दूसरी बार न मारा और वह मरा । तब योआब् और उस का भाई अबीशै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को चले ॥ ११ । और उस के पास योआब् का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा जो कोई योआब् के पक्ष और दाऊद की ओर का हो सो योआब् के पीछे हो ले ॥ १२ । अमासा तो सड़क के बीच अपने लोहू में लोट रहा था सो जब उस मनुष्य ने देखा कि सब लोग खड़े हो जाते हैं तब अमासा को सड़क पर से मैदान में सरका दिया और जब देखा कि जितने उस के पास आते सो खड़े हो जाते हैं तब उस के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया ॥ १३ । उस के सड़क पर से सरकाये जाने पर सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को योआब् के पीछे हो लिये ॥ १४ । और वह सब इस्राएली गोत्रों में होकर आबेल् और बेतमाका और बेरियों के सारे देश तक पहुंचा और वे भी एकट्ठे होकर उस के पीछे हो लिये ॥ १५ । तब उन्हों ने उस को बेतमाका के आबेल् में घेर लिया और नगर के साम्हने ऐसा धुस बांधा कि वह कोट से सट गया और योआब् के संग के

(१) मूल में, हमारी आंख निकाले ।

सब लोग शहरपनाह को गिराने के लिये धक्का देने लगे ॥ १६ । तब एक बुद्धिमान स्त्री ने नगर में से पुकारा सुनो सुनो योआब् से कहो कि यहां आ एक स्त्री[1] तुझ से बातें करना चाहती है ॥ १७ । जब योआब् उस के निकट गया तब स्त्री ने पूछा क्या तू योआब् है उस ने कहा हां मैं वही हूं फिर उस ने उस से कहा अपनी दासी के वचन सुन उस ने कहा मैं तो सुन रहा हूं ॥ १८ । वह कहने लगी प्राचीनकाल में तो लोग कहा करते थे कि आबेल् में पूछा जाए और इस रीति झगड़े को निपटा देते थे ॥ १९ । मैं तो मेलमिलापवाले और विश्वासयोग्य इस्राएलियों में से हूं पर तू एक प्रधान नगर[2] नाश करने का यत्न करता है तू यहोवा के भाग को क्यों निगल जाएगा ॥ २० । योआब् ने उत्तर देकर कहा यह मुझ से दूर हो दूर कि मैं निगल जाऊं वा नाश करूं ॥ २१ । बात ऐसी नहीं है शेबा नाम एप्रैम् के पहाड़ी देश का एक पुरुष जो बिक्री का पुत्र है उस ने दाऊद राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है सो तुम लोग केवल उसी को सौंप दो तब मैं नगर को छोड़कर चला जाऊंगा । स्त्री ने योआब् से कहा उस का सिर शहरपनाह पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा ॥ २२ । तब स्त्री अपनी बुद्धिमानी से सब लोगों के पास गई सो उन्हों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब् के पास फेंक दिया । तब योआब् ने नरसिंगा फूंका और सब लोग नगर के पास से फूट फाटकर अपने अपने डेरे को गये और योआब् यरूशलेम् को राजा के पास लौट गया ॥

२३ । योआब् तो सारी इस्राएली सेना के ऊपर रहा और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों के ऊपर था, २४ । और अदोराम् बेगारों के ऊपर था और अहीलूद् का पुत्र यहोशापात् इतिहास का लिखनेहारा था और शवा मंत्री था और सादोक् और एब्यातार् याजक थे और याईरी ईरा भी दाऊद का एक मंत्री था ॥

(१) मूल में. मैं । (२) मूल में नगर और मा ।

(गिबोनियों का पलटा लिया जाना)

२१. दाऊद के दिनों में बरस बरस तीन बरस तक अकाल हुआ सो दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना किई[1] । यहोवा ने कहा यह शाऊल् और उस के खूनी घराने के कारण हुआ कि उस ने गिबोनियों को मरवा डाला था ॥ २ । तब राजा ने गिबोनियों को बुलाकर उन से बातें किईं । गिबोनी लोग तो इस्राएलियों में से नहीं थे वे बचे हुए एमोरियों में से थे और इस्राएलियों ने उन के साथ किरिया खाई थी पर शाऊल् को जो इस्राएलियों और यहूदियों के लिये जलन हुई थी इस से उस ने उन्हें मार डालने के लिये यत्न किया था ॥ ३ । तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा मैं तुम्हारे लिये क्या करूं और क्या करके ऐसा प्रायश्चित्त करूं कि तुम यहोवा के निज भाग को आशीर्वाद दे सको ॥ ४ । गिबोनियों ने उस से कहा हमारे और शाऊल् वा उस के घराने के बीच रुपये पैसे का कुछ झगड़ा नहीं और न हमारा काम है कि किसी इस्राएली को मार डालें । उस ने कहा जो कुछ तुम कहो सो मैं तुम्हारे लिये करूंगा ॥ ५ । उन्हों ने राजा से कहा जिस पुरुष ने हम को नाश कर दिया और हमारे विरुद्ध ऐसी युक्ति किई कि हम ऐसे सत्यानाश हो जाएं कि इस्राएल् के देश में आगे को न रह जाएं, ६ । उस के वंश के सात जन हमें सौंप दिये जाएं और हम उन्हें यहोवा के लिये यहोवा के चुने हुए शाऊल् की गिबा नाम बस्ती में फांसी देंगे । राजा ने कहा मैं उन को सौंप दूंगा ॥ ७ । पर दाऊद ने और शाऊल् के पुत्र योनातान् ने आपस में यहोवा की किरिया खाई थी इस कारण राजा ने योनातान् के पुत्र मपीबोशेत् को जो शाऊल् का पोता था बचा रक्खा ॥ ८ । पर अर्मोनी और मपीबोशेत् नाम अय्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो वह शाऊल् के जन्माये जनी थी और शाऊल् की बेटी मीकल् के

(१) मूल में यहोवा का दर्शन ढूंढा । (२) मूल में सोने चान्दी ।

पांचों बेटे जो वह महोलावासी बर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल् के जन्माये जनी थी इन को राजा ने पकड़वाकर, ९। गिबोनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के साम्हने फांसी दिई और सातों एक साथ नाश हुए। उन का मार डाला जाना तो कटनी के पहिले दिनों अर्थात् जव की कटनी के आरंभ में हुआ॥ १०। तब अय्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर कटनी के आरंभ से लेकर जब लों आकाश से उन पर अत्यन्त वृष्टि न पड़ी तब लों चटान पर उसे अपने नीचे बिछाये रही और न तो दिन में आकाश के पक्षियों को न रात में बनैले पशुओं को उन्हे छूने[1] दिया॥ ११। जब अय्या की बेटी शाऊल् की रखेली रिस्पा के इस काम का समाचार दाऊद को मिला, १२। तब दाऊद ने जाकर शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् की हड्डियों को गिलादी याबेश् के लोगों से ले लिया जिन्हों ने उन्हें बेत्शान् के उस चौक से चुरा लिया था जहां पलिश्तियों ने उन्हें उस दिन टांगा था जब पलिश्तियों ने शाऊल् को गिल्बो पहाड़ पर मार डाला था॥ १३। सो वह वहां से शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् की हड्डियों को लिया ले आया और फांसी पाये हुओं की हड्डियां भी एकट्ठी किई गईं॥ १४। और शाऊल् और उस के पुत्र योनातान् की हड्डियां बिन्यामीन् के देश के सेला में शाऊल् के पिता कीश् के कबरिस्तान में गाड़ी गईं और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ और उस के पीछे परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन लिई॥

(दाऊद का पलिश्तियों पर विजय)

१५। पलिश्तियों ने इस्राएल् से फिर युद्ध किया और दाऊद अपने जनों समेत जाकर पलिश्तियों से लड़ने लगा पर दाऊद थक गया॥ १६। तब यिश्बोबनोब् जो रपाई के वंश का था और उस के भाले का फल तौल में तीन सौ शेकेल् पीतल का था और वह नई तलवार[2] बांधे हुए था उस ने दाऊद को मारने को ठाना॥ १७। पर सरूयाह् के पुत्र अबीशै ने दाऊद की सहायता करके उस पलिश्ती को ऐसा मारा कि वह मर गया। तब दाऊद के जनों ने किरिया खाकर उस से कहा तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न पाएगा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल् का दिया बुझ जाए॥

१८। इस के पीछे पलिश्तियों के साथ गोब् में फिर युद्ध हुआ उस समय हूशाई सिब्बकै ने रपाईवंशी सप् को मारा॥ १९। और गोब् में पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ उस में बेत्लेहेम्वासी यारेओरगीम् के पुत्र एल्हनान् ने गती गोल्यत् को मार डाला जिस के बर्छे की छड़ कपड़े बुननेवाले के ढेंके के समान थी॥ २०। फिर गत् में भी युद्ध हुआ और वहां एक बड़ी डील का रपाईवंशी पुरुष था जिस के एक एक हाथ पांव में छः छः अंगुली अर्थात् गिनती में चौबीस अंगुली थीं॥ २१। जब उस ने इस्राएल् को ललकारा तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र यहोनातान् ने उसे मारा॥ २२। ये ही चार गत् में उस रपाई से उत्पन्न हुए थे और वे दाऊद और उस के जनों से मार डाले गये॥

(दाऊद का एक भजन।)

२२. और जिस समय यहोवा ने दाऊद को उस के सारे शत्रुओं और शाऊल् के हाथ से बचाया था तब उस ने यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाये, २। उस ने कहा

यहोवा मेरी ढांग और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेहारा

३। मेरा चटानरूपी परमेश्वर है जिस का मैं शरणागत हूं

मेरी ढाल मेरा बचानेहारा सींग मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा शरणस्थान है॥

हे मेरे उद्धारकर्त्ता तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है॥

४। मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा॥

५। मृत्यु के तरंगों ने मेरे चारों ओर घेरे

(१) मूल में उन पर विश्राम करने। (२) मूल में उस।
(३) वा नई हथियार।

नीचपन की धाराओं ने मुझ को घबरा दिया था ॥
६। अधोलोक की रस्सियां मेरी चारों ओर थीं
मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ॥
७। अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा
और अपने परमेश्वर को पुकारा
और उस ने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुना
और मेरी दोहाई उस के कानों पड़ी ॥
८। तब पृथिवी हिल गई और डोल उठी
और आकाश की नेवें कांपकर
बहुत ही हिल गईं
क्योंकि वह क्रोधित हुआ था ॥
९। उस के नथनों से धूंआं निकला
और उस के मुंह से आग निकलकर भस्म करने लगी
जिस से कोयले दहक उठे ॥
१०। और वह स्वर्ग को नीचे करके उतर आया
और उस के पांवों तले घोर अन्धकार था ॥
११। और वह करूब् पर चढ़ा हुआ उड़ा
और पवन के पंखों पर चढ़कर दिखाई दिया ॥
१२। और उस ने अपनी चारों ओर के अंधियारे को मेघों[1] के समूह और आकाश की काली घटाओं का अपना मण्डप ठहराया ॥
१३। उस के सम्मुख की झलक से
कोयले दहक उठे ॥
१४। यहोवा आकाश में गरजा
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई ॥
१५। उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को[2] तितर बितर किया
और बिजली गिरा गिराकर उन को घबरा दिया
१६। तब समुद्र की थाह देख पड़ी
जगत की नेवें खुल गईं
यह तो यहोवा की डांट से
और उस के नथनों की सांस की झोंक से हुआ ॥
१७। उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थांभ लिया
और गहिरे में से खींच लिया ॥
१८। उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से
मेरे बैरियों से जो मुझ से अधिक सामर्थी थे मुझे छुड़ाया ॥
१९। उन्हों ने मेरी विपत्ति के दिन मेरा साम्हना तो किया
पर यहोवा मेरा आश्रय था ॥
२०। और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया ।
उस ने मुझ को छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था ॥
२१। यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार व्यवहार किया
मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे बदला दिया ॥
२२। क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा
और अपने परमेश्वर से फिरके दुष्ट न बना ॥
२३। उस के सारे नियम तो मेरे साम्हने बने रहे
और उस की विधियों से मैं हट न गया ॥
२४। और मैं उस के साथ खरा बना रहा
और अधर्म्म से अपने को बचाये रहा जिस में मेरे फसने का डर था[1] ॥
२५। सो यहोवा ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार बदला दिया
मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था ॥
२६। दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता
खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है ॥
२७। शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता
और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है ॥

(१) मूल में जलों । (२) मूल में उन को ।

(१) मूल में, अपने अधर्म्म से ।

२८ । और दीन लोगों को तो तू बचाता है ।
पर अभिमानियों पर दृष्टि करके उन्हें नीचा
करता है ॥
२९ । हे यहोवा तू ही मेरा दीपक है
और यहोवा मेरे अन्धियारे को दूर करके
उजियाला कर देता है ॥
३० । तेरी सहायता से मैं दल पर धावा करता
अपने परमेश्वर की सहायता से मैं शहरपनाह
को लांघ जाता हूं ॥
३१ । ईश्वर की गति खरी है यहोवा का वचन
ताया हुआ है
वह अपने सब शरणागतों की ढाल ठहरा
है ॥
३२ । यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है
हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चटान
है ॥
३३ । यह वही ईश्वर है जो मेरा अति दृढ़ स्थान
ठहरा
वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिये चलता
है ॥
३४ । वह मेरे पैरों को हरिणियों के से करता
है और मुझे ऊंचे स्थानों पर खड़ा
करता है ॥
३५ । वह मुझे युद्ध करना सिखाता है
मेरी बांहों से पीतल का धनुष नवता है ॥
३६ । और तू ने मुझ को अपने बचाव की ढाल
दिई
और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है ।
३७ । तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा करता है
और मेरे टखने नहीं डिगे ॥
३८ । मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें
सत्यानाश करूंगा
और जब लों उन का अन्त न करूं तब लों न
फिरूंगा ॥
३९ । और मैं ने उन का अन्त किया और उन्हें
ऐसा मारा कि वे उठ न सकेंगे
वे मेरे पांवों के नीचे पड़े हैं ॥
४० । और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर बंधाई
और मेरे विरोधियों को मेरे तले दबा दिया ॥
४१ । और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे
दिखाई
कि मैं अपने बैरियों को सत्यानाश करूं ॥
४२ । उन्हों ने बाट तो जोही पर कोई बचाने-
हारा न मिला
उन्हों ने यहोवा की भी बाट जोही पर उस ने
उन की न सुन लिई ॥
४३ । मैं ने उन को कूट कूट कर भूमि की धूलि
के समान कर दिया
मैं ने उन्हें सड़कों की कीच की नाईं पटक कर
फैलाया ॥
४४ । फिर तू मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाकर
अन्यजातियों का प्रधान होने को मेरी रक्षा किई
जिन लोगों को मैं न जानता था सो भी मेरे
अधीन हो जाएंगे ॥
४५ । परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे
कान से सुनते ही वे मेरे वश में आएंगे ॥
४६ । परदेशी मुर्झाएंगे
और अपने कोटों में से थरथराते हुए निकलेंगे ॥
४७ । यहोवा जीता है और जो मेरी चटान
ठहरा सो धन्य है
और परमेश्वर जो मेरे उद्धार के लिये चटान
ठहरा उस की बड़ाई हो ॥
४८ । धन्य है मेरा पलटा लेनेहारा ईश्वर
जो देश देश के लोगों को मेरे तले दबा देता है,
४९ । और मुझे मेरे शत्रुओं के बीच से निका-
लता है
तू मुझे मेरे विरोधियों से ऊंचा करता है
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
५० । इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा
धन्यवाद करूंगा
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ॥
५१ । वह अपने ठहराये हुए राजा का बड़ा
उद्धार करता है

(१) मूल में मेरे [illegible] । (२) मूल में मेरे हाथ ।

वह अपने अभिषिक्त दाऊद और उस के वंश पर
युग युग करुणा करता रहेगा ॥

(दाऊद के जीवन के अन्तसमय के वचन)

२३. दाऊद के पिछले वचन ये हैं
यिशै के पुत्र की यह
वाणी है
उस पुरुष की वाणी है जो ऊंचे पर खड़ा किया गया
और याकूब के परमेश्वर का अभिषिक्त
और इस्राएल् का मधुर भजन गानेहारा है ॥
२ । यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला
और उसी का वचन मेरे मुंह में[1] आया ॥
३ । इस्राएल् के परमेश्वर ने कहा है
इस्राएल् की चटान ने मुझ से बातें किई हैं कि
मनुष्यों में प्रभुता करनेहारा एक धर्म्मी होगा
जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता
करेगा ॥
४ । वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य्य
निकलता है
ऐसा भोर जिस में बादल न हों
जैसा वर्षा के पीछे के निर्म्मल प्रकाश के
कारण
भूमि से हरी हरी घास उगती है ॥
५ । क्या मेरा घराना ईश्वर के लेखे में ऐसा
नहीं है
उस ने तो मेरे साथ एक ऐसी सदा की वाचा
बांधी है
जो सब बातों में ठीक किई हुई और अटल भी है
क्योंकि चाहे वह उस को प्रगट न करे[2]
तौभी[3] मेरा सारा उद्धार और सारी अभिलाषा
का विषय वही है ॥
६ । पर ओछे सब के सब निकम्मी झाड़ियों
के समान हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं
जातीं ।
७ । सो जो पुरुष उन को छूने चाहे
उसे लोहर और भाले की छड़ लिये[1] जाना पड़ता
है ।
सो वे आग लगाकर अपने ही स्थान में भस्म
किई जाती हैं ॥

(दाऊद के वीरों की नामावली)

८ । दाऊद के शूरवीरों के नाम ये हैं अर्थात्
तह्कमोनी योशेब्बश्शेबेत् जो सरदारों में मुख्य था
वह एस्नी अदीनो भी कहलाता था उस ने एक ही
समय में आठ सौ पुरुष मार डाले गये ॥ ९ । उस के
पीछे अहोही दोदै का पुत्र एलाजार् था वह उस
समय दाऊद के संग के तीनों वीरों में से था जब उन्हों
ने युद्ध के लिये बटुरे हुए पलिश्तियों को ललकारा
और इस्राएली पुरुष चले गये थे ॥ १० । वह कमर
बांधकर पलिश्तियों को तब लों मारता रहा जब लों
उस का हाथ थक न गया और तलवार हाथ से
चिपट न गई और उस दिन यहोवा ने बड़ा विजय
किया और जो लोग उस के पीछे हो लिये उन को
केवल लूटना ही रह गया ॥ ११ । उस के पीछे आगे
नाम एक पहाड़ी का पुत्र शम्मा था । पलिश्तियों ने
एकट्ठे होकर एक स्थान में दल बान्धा जहां मसूर
का एक खेत था और लोग उन के डर के मारे
भागे ॥ १२ । तब उस ने खेत के बीच खड़े होकर उसे
बचाया और पलिश्तियों को मार लिया और
यहोवा ने बड़ा विजय किया ॥ १३ । फिर तीसों मुख्य
सरदारों में से तीन जन कटनी के दिनों में दाऊद
के पास अदुल्लाम् नाम गुफा में आये और पलिश्तियों
का दल रपाईम् नाम तराई में छावनी किये हुए
था ॥ १४ । उस समय दाऊद गढ़ में था और उस
समय पलिश्तियों की चौकी बेत्लेहेम् में थी ॥ १५ । तब
दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा कौन मुझे
बेत्लेहेम् के फाटक के पास के कूंए का पानी
पिलाएगा ॥ १६ । सो वे तीनों वीर पलिश्तियों की

(१) मूल में मेरी जीभ पर । (२) मूल में. न उगाए । वा सो क्या वह उस को न फलाएगा । (३) वा. इस कारण ।

(१) मूल में. से भरा ।

छावनी में टूट पड़े और बेत्लेहेम् के फाटक के कूएं से पानी भरके दाऊद के पास ले आये पर उस ने पीने से नाह किई और यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेलकर, १७। कहा हे यहोवा मुझ से ऐसा करना दूर रहे क्या मैं उन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राण पर खेलकर गये थे सो उस ने वह पानी पीने से नाह किई। इन तीन वीरों ने ऐसे ही काम किये ॥ १८। और अबीशै जो सरूयाह् के पुत्र योआब् का भाई था वह तीनों में से मुख्य था। उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में नामी हो गया ॥ १९। क्या वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित न था और इसी से वह उन का प्रधान हो गया पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा ॥ २०। फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह् था जो कब्सेल्वासी एक बड़े काम करनेहारे वीर का पुत्र था। उस ने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला और बरफ के समय उस ने एक गड़हे में उतरके एक सिंह को मार डाला ॥ २१। फिर उस ने एक रूपवान मिस्री पुरुष को मार डाला मिस्री तो हाथ में भाला लिये हुए था पर बनायाह् एक लाठी ही लिये हुए उस के पास गया और मिस्री के हाथ से भाले को छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया ॥ २२। ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह् उन तीनों वीरों में नामी हो गया ॥ २३। वह तीसों से अधिक प्रतिष्ठित तो था पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उस को दाऊद ने अपनी निज सभा का सभासद किया ॥

२४। फिर तीसों में योआब् का भाई असाहेल् बेत्लेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान्, २५। हेरोदी शम्मा और एलीका, २६। पेलेती हेलेस् तकोई इक्केश् का पुत्र ईरा, २७। अनातोती अबीएजेर् हूशाई मबुन्ने, २८। अहोही सल्मोन् नतोपाही महरै, २९। एक और नतोपाई बाना का पुत्र हेलेब् बिन्यामीनियों के गिबा नगर के रीबै का पुत्र इत्तै, ३०। पिरातोनी बनायाह् गाश् के नालों के पास रहनेहारा हिद्दै, ३१। अराबा का अबीअल्बोन् बर्होमी अज्मावेत्, ३२। शाल्बोनी एल्यह्बा याशेन् के वंश में से योनातान्, ३३। पहाड़ी शम्मा अरारी शाराए् का पुत्र अहीआम्, ३४। अहस्बै का पुत्र एलीपेलेत् माका देश के एक जन का पुत्र गीलोई अहीतोपेल् का पुत्र एलीआम्, ३५। कर्म्मेली हेस्रो अराबी पारै, ३६। सोबाई नातान् का पुत्र यिगाल् गादी बानी, ३७। अम्मोनी सेलेक् बेरोती नहरै जो सरूयाह् के पुत्र योआब् का हथियार ढोनेहारा था, ३८। येतेरी ईरा और गारेब्, ३९। और हित्ती ऊरिय्याह् था सब मिलाकर सैंतीस थे ॥

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना और इस पाप का दण्ड भोगना और पापमोचन पाना.)

२४. और

यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का और उस ने दाऊद को उन की हानि के लिये यह कहकर उभारा कि इस्राएल् और यहूदा की गिनती ले ॥ २। सो राजा ने योआब् सेनापति से जो उस के पास था कहा तू दान् से बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएली गोत्रों में इधर उधर घूम और तुम लोग प्रजा की गिनती लो कि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है ॥ ३। योआब् ने राजा से कहा प्रजा के लोग कितने ही क्यों न हों तेरा परमेश्वर यहोवा उन को सौ गुणा बढ़ा दे और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी आंखों से देखने भी पाए पर हे मेरे प्रभु हे राजा यह बात तू क्यों चाहता है ॥ ४। तौभी राजा की आज्ञा योआब् और सेनापतियों पर प्रबल हुई सो योआब् और सेनापति राजा के सन्मुख से इस्राएली प्रजा की गिनती लेने को निकल गये ॥ ५। उन्हों ने यर्दन पार जाकर अरोएर् नगर की दक्खिन ओर डेरे खड़े किये जो गाद् के नाले के बीच है और याजेर् की ओर ॥ ६। तब वे गिलाद् में और तह्तीम्होद्शी नाम देश में गये फिर दान्यान् को गये और चक्कर लगाकर सीदोन् में पहुंचे ॥ ७। तब वे सोर् नाम दृढ़ गढ़ और हिव्वियों और कनानियों के सब नगरों में गये और उन्हों ने यहूदा देश की दक्खिन दिशा में बेर्शेबा में दौरा निपटाया ॥ ८। सो सारे देश में इधर उधर घूम घूमकर वे नौ

महीने और बीस दिन के बीते पर यरूशलेम् को आये ॥ ९ । तब योआब् ने प्रजा की गिनती का जोड़ राजा को सुनाया और तलवारिये योद्धा इस्राएल् के तो आठ लाख और यहूदा के पांच लाख ठहरे ॥

१० । प्रजा की गिनती कराने के पीछे दाऊद का मन छिद गया और दाऊद ने यहोवा से कहा यह जो काम मैं ने किया सो बड़ा ही पाप है सो अब हे यहोवा अपने दास का अधर्म्म दूर कर क्योंकि मुझ से बड़ी मूर्खता हुई ॥ ११ । बिहान को जब दाऊद उठा तब यहोवा का यह वचन गाद् नाम नबी के पास जो दाऊद का दर्शी था पहुंचा कि, १२ । जाकर दाऊद से कह कि यहोवा यों कहता है कि मैं तुझ को तीन विपत्तिया दिखाता हूं उन में से एक को चुन ले कि मै उसे तुझ पर डालूं ॥ १३ । सो गाद् ने दाऊद के पास जाकर इस का समाचार दिया और उस से पूछा क्या तेरे देश मे सात बरस का अकाल पड़े वा तीन महीने लों तेरे शत्रु तेरा पीछा करते रहें और तू उन से भागता रहे वा तेरे देश में तीन दिन लों मरी फैली रहे अब सोच विचार कर कि मैं अपने भेजनेहारे को क्या उत्तर दूं ॥ १४ । दाऊद ने गाद् से कहा मैं बड़े संकट में पड़ा हूं हम यहोवा के हाथ मे पड़ें क्योंकि उस की दया बड़ी है पर मनुष्य के हाथ में मै न पड़ूं ॥ १५ । सो यहोवा इस्राएलियों में बिहान से ले ठहराये हुए समय तक मरी फैलाये रहा और दान् से लेकर बेर्शेबा लों रहनेहारी प्रजा मे से सत्तर हजार पुरुष मर गये ॥ १६ । पर जब दूत ने यरूशलेम् का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया तब यहोवा वह विपत्ति डालकर पछताया और प्रजा के नाश करनेहारे दूत से कहा बस कर अब अपना हाथ खींच । और यहोवा का दूत अरौना नाम एक यबूसी के खलिहान के पास था ॥ १७ । सो जब प्रजा का नाश करनेहारा दूत दाऊद को देख पड़ा तब उस ने यहोवा से कहा देख पाप तो मै ही ने किया और कुटिलता में ही ने किई है पर इन भेड़ों ने क्या किया है सो तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो ॥

१८ । उसी दिन गाद् ने दाऊद के पास आकर उस से कहा जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा ॥ १९ । सो दाऊद यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद् का वह वचन मानकर वहां गया ॥ २० । तब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्म्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा सो अरौना ने निकलकर भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् किई ॥ २१ । और अरौना ने कहा मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों पधारा है दाऊद ने कहा तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूं कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊं इस लिये कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर किई जाए ॥ २२ । अरौना ने दाऊद से कहा मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए देख होमबलि के लिये तो बैल हैं और दांवने के हथियार और बैलों का सामान इंधन का काम देंगे ॥ २३ । यह सब अरौना राजा ने राजा को दे दिया । फिर अरौना ने राजा से कहा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न होए ॥ २४ । राजा ने अरौना से कहा ऐसा नहीं मै ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का । सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास शेकेल् में मोल लिया ॥ २५ । तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनवाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाये और यहोवा ने देश के निमित्त बिनती सुन लिई सो वह व्याधि इस्राएल् पर से दूर हो गई ॥

राजाओं का वृत्तान्त। पहिला भाग।

(अदोनिय्याह् की राजद्रोह की गोष्ठी और उस का तोड़ा जाना.)

१. दाऊद राजा बूढ़ा बरन बहुत पुरनिया हुआ और यद्यपि उस को कपड़े ओढ़ाये जाते थे तौभी वह गर्माता न था॥ २। सो उस के कर्म्मचारियों ने उस से कहा हमारे प्रभु राजा के लिये कोई जवान कुंवारी खोजी जाए जो राजा के सम्मुख रहकर उस की टहलुइन हो और तेरे पास[1] लेटा करे कि हमारा प्रभु राजा गर्माए॥ ३। तब उन्हों ने सारे इस्राएली देश में सुन्दर कुंवारी खोजते खोजते अबीशग् नाम एक शूनेमिन को पाया और राजा के पास ले आये॥ ४। वह कन्या बहुत ही सुन्दर थी और वह राजा की टहलुइन होकर उस की सेवा करती रही पर राजा ने उस से प्रसंग न किया॥ ५। तब हग्गीत् का पुत्र अदोनिय्याह् सिर ऊंचा करके कहने लगा कि मैं राजा हूंगा सो उस ने रथ और सवार और अपने आगे आगे दौड़ने को पचास पुरुष रख लिये॥ ६। उस के पिता ने तो जन्म से लेकर उसे कभी यह कहकर उदास न किया था कि तू ने ऐसा क्यों किया। वह बहुत रूपवान था और अबशालोम् के पीछे उस का जन्म हुआ था॥ ७। और उस ने सरूयाह् के पुत्र योआब् से और एब्यातार् याजक से बातचीत किई और उन्हों ने उस के पीछे होकर उस की सहायता किई॥ ८। पर सादोक् याजक यहोयादा का पुत्र बनायाह् नातान् नबी शिमी रेई और दाऊद के शूरवीरों ने अदोनिय्याह् का साथ न दिया॥ ९। और अदोनिय्याह् ने जोहेलेत् नाम पत्थर के पास जो एनरोगेल् के निकट है भेड़ बैल और तैयार किये हुए पशु बलि किये और अपने भाई सब राजकुमारों को और राजा के सब यहूदी कर्म्मचारियों को बुला लिया॥ १०। पर नातान् नबी और बनायाह् और शूरवीरों को और अपने भाई सुलैमान को उस ने न बुलाया॥ ११। तब नातान् ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा क्या तू ने सुना है कि हग्गीत् का पुत्र अदोनिय्याह् राजा बन बैठा है और हमारा प्रभु दाऊद इसे नहीं जानता॥ १२। सो अब आ मैं तुझे ऐसी सम्मति देता हूं जिस से तू अपना और अपने पुत्र सुलैमान का प्राण बचाए॥ १३। तू दाऊद राजा के पास जाकर उस से यों पूछ कि हे मेरे प्रभु हे राजा क्या तू ने किरिया खाकर अपनी दासी से नहीं कहा कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी राजगद्दी पर विराजेगा फिर अदोनिय्याह् क्यों राजा बन बैठा है॥ १४। और अब तू वहां राजा से ऐसी बातें करती रहेगी तब मैं तेरे पीछे आकर तेरी बातों को पुष्ट करूंगा॥ १५। तब बतशेबा राजा के पास कोठरी में गई। राजा तो बहुत बूढ़ा था और उस की सेवा टहल शूनेमिन अबीशग् करती थी॥ १६। सो बतशेबा ने झुककर राजा को दण्डवत् किई और राजा ने पूछा तू क्या चाहती है॥ १७। उस ने उत्तर दिया हे मेरे प्रभु तू ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की किरिया खाकर अपनी दासी से कहा था कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा॥ १८। अब देख अदोनिय्याह् राजा बन बैठा है और अब लों मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता॥ १९। और उस ने बहुत से बैल तैयार किये पशु और भेड़ें बलि किईं और सब राजकुमारों को और एब्यातार् याजक और योआब् सेनापति को बुलाया है पर तेरे दास सुलैमान को नहीं बुलाया॥ २०। और हे मेरे प्रभु हे राजा सब इस्राएली तुझे ताक रहे हैं कि तू उन से कहे कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उस के पीछे कौन बैठेगा॥ २१। नहीं तो अब हमारा प्रभु राजा अपने पुरखाओं के संग सोएगा तब मैं और

(१) मूल में तेरी गोद में।

मेरा पुत्र सुलैमान दोनों अपराधी गिने जाएंगे ॥ २२। यों बत्शेबा राजा से बातें कर रही थी कि नातान् नबी भी आया ॥ २३। और राजा से कहा गया कि नातान् नबी हाज़िर है तब वह राजा के सन्मुख आया और मुंह के बल गिरके राजा को दण्डवत् किई ॥ २४। और नातान् कहने लगा हे मेरे प्रभु हे राजा क्या तू ने कहा है कि अदोनिय्याह् मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा ॥ २५। देख उस ने आज नीचे जाकर बहुत से बैल तैयार किये हुए पशु और भेड़ें बलि किई हैं और सब राजकुमारों और सेनापतियों को और एब्यातार् याजक को भी बुला लिया है और वे उस के सन्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं कि अदोनिय्याह् राजा जीता रहे ॥ २६। पर मुझ तेरे दास को और सादोक् याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह् और तेरे दास सुलैमान को उस ने नहीं बुलाया ॥ २७। क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से हुआ। तू ने तो अपने दास को यह न जताया है कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन उस के पीछे विराजेगा ॥ २८। दाऊद राजा ने कहा बत्शेबा को मेरे पास बुला लाओ तब वह राजा के पास आकर उस के साम्हने खड़ी हुई ॥ २९। राजा ने किरिया खाकर कहा यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है उस के जीवन की सोंह, ३०। जैसा मैं ने तुझ से इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाकर कहा था कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर विराजेगा वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूंगा ॥ ३१। तब बत्शेबा ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा लों जीता रहे ॥ ३२। तब दाऊद राजा ने कहा मेरे पास सादोक् याजक नातान् नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह् को बुला लाओ सो वे राजा के साम्हने आये ॥ ३३। राजा ने उन से कहा अपने प्रभु के कर्म्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ और गीहोन् को ले जाओ ॥ ३४। और वहां सादोक् याजक और नातान् नबी इस्राएल का राजा होने को उस का अभिषेक करें तब तुम सब नरसिंगा फूंककर कहना राजा सुलैमान जीता रहे ॥ ३५। और तुम उस के पीछे पीछे इधर आना और वह आकर मेरे सिंहासन पर विराजे क्योंकि मेरे बदले में वही राजा होगा और उसी को मैं ने इस्राएल् और यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है ॥ ३६। तब यहोयादा के पुत्र बनायाह् ने कहा आमेन् मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे ॥ ३७। जिस रीति यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे और उस का राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य से भी अधिक बढ़ाए ॥ ३८। सो सादोक् याजक और नातान् नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह् करेतियों और पलेतियों को संग लिये हुए नीचे गये और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन् को ले चले ॥ ३९। तब सादोक् याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला और सुलैमान का राज्याभिषेक किया और वे नरसिंगे फूंकने लगे और सब लोग बोल उठे राजा सुलैमान जीता रहे ॥ ४०। तब सब लोग उस के पीछे पीछे बांसुली बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गये कि उन की ध्वनि से पृथिवी डोल उठी[१] ॥ ४१। जब अदोनिय्याह् और उस के सब नेवतहरी खा चुके थे तब यह ध्वनि उन को सुनाई पड़ी और योआब् ने नरसिंगे का शब्द सुनकर पूछा नगर में हौरे का शब्द क्यों होता है ॥ ४२। वह यह कहता ही था कि एब्यातार् याजक का पुत्र योनातान् आया और अदोनिय्याह् ने उस से कहा भीतर आ तू तो भला मनुष्य है और भला समाचार भी लाया होगा ॥ ४३। योनातान् ने अदोनिय्याह् से कहा सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया ॥ ४४। और राजा ने सादोक् याजक नातान् नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह् और करेतियों और पलेतियों को उस के संग भेज दिया और उन्हों ने उस को राजा के खच्चर पर चढ़ाया ॥ ४५। और सादोक् याजक और

(१) मूल में फट गई।

नातान् नबी ने गीहोन् में उस का राज्याभिषेक किया है और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर गये हैं कि नगर में हैारा मचा जो शब्द तुम को सुन पड़ा सो वही है॥ ४६। और सुलैमान राजगद्दी पर विराज भी रहा है॥ ४७। फिर राजा के कर्म्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आये कि तेरा परमेश्वर सुलैमान का नाम तेरे नाम से भी बड़ा करे और उस का राज्य तेरे राज्य से भी अधिक बढ़ाए और राजा ने अपने पलंग पर दण्डवत् किई॥ ४८। फिर राजा ने यह भी कहा कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने आज मेरे देखते एक को मेरी गद्दी पर विराजमान किया है॥ ४९। तब जितने नेवतहरी अदोनिय्याह् के संग थे सो सब थरथरा गये और उठकर अपना अपना मार्ग लिया॥ ५०। और अदोनिय्याह् सुलैमान से डरकर उठा और जाकर वेदी के सींगों को पकड़ा॥ ५१। तब सुलैमान को यह समाचार मिला कि अदोनिय्याह् सुलैमान राजा से ऐसा डर गया है कि उस ने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है कि आज राजा सुलैमान किरिया खाए कि अपने दास को तलवार से न मार डालूंगा॥ ५२। सुलैमान ने कहा यदि वह भलमनसी दिखाए तो उस का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा पर यदि उस में दुष्टता पाई जाए तो वह मारा जाएगा॥ ५३। तब राजा सुलैमान ने कितनों को भेज दिया जो उस को वेदी के पास से उतार ले आये तब उस ने आकर राजा सुलैमान को दण्डवत किई और सुलैमान ने उस से कहा अपने घर चला जा॥

(दाऊद की मृत्यु और सुलैमान के राज्य का आरंभ)

२. जब दाऊद के मरने का समय निकट आया तब उस ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा कि, २। मैं लोक की रीति पर कूच करनेवाला हूं सो तू हियाव बांधकर पुरुषार्थ[1] दिखा॥ ३। और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है उस की रक्षा करके उस के मार्गों पर चला कर और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसा ही उस की विधियों आज्ञाओं और नियमों और चितौनियों को मानता रह जिस से जो कुछ तू करे और जिधर तू फिरे उस में तू बुद्धि से काम करे, ४। और जिस से यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उस ने मेरे विषय कहा था कि यदि तेरे सन्तान अपनी चाल के विषय ऐसे सावधान रहें कि अपने सारे हृदय और सारे जीव से सच्चाई के साथ अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलते रहें[1] तो इस्राएल् की राजगद्दी पर विराजनेहारे की तेरे कुल में घटी कभी न होगी॥ ५। फिर तू आप जानता है कि सरूयाह् के पुत्र योआब् ने मुझ से क्या क्या किया अर्थात् उस ने नेर् के पुत्र अब्नेर् और येतेर् के पुत्र अमासा इस्राएल् के दो सेनापतियों से क्या किया उस ने उन दोनों को घात किया और मेल के समय युद्ध का लोहू बहाकर उस से अपनी कमर का फेंटा और अपने पांवों की जूतियां भिगो दिईं॥ ६। सो तू अपनी बुद्धि के अनुसार करके उस पक्के बालवाले को अधोलोक में शांति से उतरने न देना॥ ७। फिर गिलादी बर्जिल्लै के पुत्रों पर कृपा रखना और वे तेरी मेज पर खानेहारों में रहें क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशालोम् के साम्हने से भागा जाता था तब उन्हों ने मेरे पास आकर वैसा ही किया था॥ ८। फिर सुन तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहूरीमी शिमी रहता है जिस दिन मैं महनैम् को जाता था उस दिन उस ने मुझे कड़ाई से कोसा था पर जब वह मेरी भेंट के लिये यर्दन को आया तब मैं ने उस से यहोवा की यह किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से न मार डालूंगा॥ ९। पर अब तू उसे निर्दोष न ठहराना तू तो बुद्धिमान पुरुष है सो तुझे मालूम होगा कि उस से क्या करना चाहिये, और उस पक्के बालवाले का लोहू बहाकर उसे अधोलोक में उतार देना॥ १०। तब दाऊद अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे दाऊदपुर में उसे मिट्टी दिई गई॥ ११। दाऊद ने इस्राएल् पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस

(१) मूल में, पुरुष।

(१) मूल में, मेरे साम्हने चलते रहें।

सो उस ने हेब्रोन् में और तैंतीस बरस यरूशलेम् में राज्य किया था ।

१२ । तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की गद्दी पर विराजा और उस का राज्य बहुत दृढ़ हुआ ॥ १३ । और हग्गीत् का पुत्र अदोनिय्याह् सुलैमान की माता बत्शेबा के पास आया और बत्शेबा ने पूछा क्या तू मित्रभाव से आता है उस ने उत्तर दिया हां मित्रभाव से ॥ १४ । फिर वह कहने लगा मुझे तुझ से एक बात कहनी है उस ने कहा कह ॥ १५ । उस ने कहा तुझे तो मालूम है कि राज्य मेरा हो गया था और सारे इस्राएली मेरी ओर मुख किये थे कि मैं राज्य करूं पर अब राज्य पलटकर मेरे भाई का हो गया है क्योंकि वह यहोवा की ओर से उस को मिला है ॥ १६ । सो अब मैं तुझ से एक बात मांगता हूं मुझ से नाह न करना उस ने कहा कहे जा ॥ १७ । उस ने कहा राजा सुलैमान तुझ से नाह न करेगा सो उस से कह कि वह मुझे शूनेमिन अबीशग् को व्याह दे ॥ १८ । बत्शेबा ने कहा अच्छा मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी ॥ १९ । सो बत्शेबा अदोनिय्याह् के लिये राजा सुलैमान से बातचीत करने को उस के पास गई और राजा उस की भेंट के लिये उठा और उसे दण्डवत् करके अपने सिंहासन पर बैठ गया फिर राजा ने अपनी माता के लिये एक सिंहासन धरा दिया और वह उस की दहिनी ओर बैठ गई ॥ २० । तब वह कहने लगी मैं तुझ से एक छोटी सी बात मांगती हूं सो मुझ से नाह न करना राजा ने कहा हे माता मांग मैं तुझ से नाह न करूंगा ॥ २१ । उस ने कहा वह शूनेमिन अबीशग् तेरे भाई अदोनिय्याह् को व्याह दिई जाए ॥ २२ । राजा सुलैमान ने अपनी माता को उत्तर दिया तू अदोनिय्याह् के लिये शूनेमिन अबीशग् ही को क्यों मांगती है उस के लिये राज्य भी मांग क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है और उसी के लिये क्या, एब्यातार् याजक और सरूयाह् के पुत्र योआब् के लिये भी मांग ॥ २३ । और राजा सुलैमान ने यहोवा की किरिया खाकर कहा यदि अदोनिय्याह् ने यह बात अपने प्राण पर खेलकर न कही हो तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे ॥ २४ । अब यहोवा जिस ने मुझे स्थिर किया और मेरे पिता दाऊद की राजगद्दी पर विराजमान किया और अपने वचन के अनुसार मेरा घर बसाया है उस के जीवन की सोंह आज ही अदोनिय्याह् मार डाला जाएगा ॥ २५ । और राजा सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह् को भेज दिया और उस ने जाकर उस को ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ २६ । और एब्यातार् याजक से राजा ने कहा अनातोत् में अपनी भूमि को जा क्योंकि तू भी प्राणदण्ड के योग्य है आज के दिन तो मैं तुझे न मार डालूंगा क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के साम्हने प्रभु यहोवा का संदूक उठाया करता था और उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े थे तू भी दुःखी था ॥ २७ । और सुलैमान ने एब्यातार् को यहोवा के याजक होने के पद से उतार दिया इस लिये कि जो वचन यहोवा ने एली के वंश के विषय शीलो में कहा था सो पूरा हो जाए ॥ २८ । और इस का समाचार योआब् तक पहुंचा । योआब् अब्शालोम् के पीछे तो न फिरा था पर अदोनिय्याह् के पीछे फिरा था । सो योआब् यहोवा के तंबू को भाग गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया ॥ २९ । और राजा सुलैमान को यह समाचार मिला कि योआब् यहोवा के तंबू को भाग गया है और वह वेदी के पास है सो सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह् को यह कहकर भेज दिया कि तू जाकर उसे मार डाल ॥ ३० । सो बनायाह् ने यहोवा के तंबू के पास जाकर उस से कहा राजा की यह आज्ञा है कि निकल आ उस ने कहा नहीं मैं यहीं मर जाऊंगा सो बनायाह् ने लौटकर यह सन्देशा राजा को दिया कि योआब् ने मुझे येों ही उत्तर दिया ॥ ३१ । राजा ने उस से कहा उस के कहने के अनुसार उस को मार डाल और उसे मिट्टी दे ऐसा करके निर्दोषों का जो खून योआब् ने किया है उस का दोष तू मुझ पर से और मेरे पिता के घराने पर से दूर करेगा ॥ ३२ । और यहोवा उस के सिर वह खून लौटा देगा उस ने तो मेरे पिता दाऊद के बिन जाने अपने से अधिक धर्म्मी और

भले दो पुरुषों पर अर्थात् इस्राएल् के प्रधान सेनापति नेर् के पुत्र अब्नेर् और यहूदा के प्रधान सेनापति येतेर् के पुत्र अमासा पर टूटकर उन को तलवार से मार डाला था ॥ ३३ । यों योआब् के सिर पर और उस की सन्तान के सिर पर खून सदा लों रहेगा पर दाऊद और उस के वंश और उस के घराने और उस के राज्य पर[१] यहोवा की ओर से शांति सदा लों रहेगी ॥ ३४ । तब यहोयादा के पुत्र बनायाह् ने जाकर योआब् को मार डाला और उस को जंगल में उसी के घर में मिट्टी दिई गई ॥ ३५ । तब राजा ने उस के स्थान पर यहोयादा के पुत्र बनायाह् को प्रधान सेनापति ठहराया और एब्यातार् के स्थान पर सादोक् याजक को ठहराया ॥ ३६ । और राजा ने शिमी को बुलवा भेजा और उस से कहा तू यरूशलेम् में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना और नगर से बाहर कहीं न जाना ॥ ३७ । तू निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर किद्रोन् नाले के पार उतरे उसी दिन तू निःसंदेह मार डाला जाएगा और तेरा लोहू तेरे ही सिर पर पड़ेगा ॥ ३८ । शिमी ने राजा से कहा बात अच्छी है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा दास करेगा सो शिमी बहुत दिन यरूशलेम् में रहा ॥ ३९ । पर तीन बरस के बीते पर शिमी के दो दास गत् नगर के राजा माका के पुत्र आकीश् के पास भाग गये और शिमी को यह समाचार मिला कि तेरे दास गत् में हैं ॥ ४० । तब शिमी उठकर अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दास ढूंढने के लिये गत् को आकीश् के पास गया और अपने दासों को गत् से ले आया ॥ ४१ । जब सुलैमान राजा को इस का समाचार मिला कि शिमी यरूशलेम् से गत् को गया और फिर लौट आया है, ४२ । तब उस ने शिमी को बुलवा भेजा और उस से कहा क्या मैं ने तुझे यहोवा की किरिया न खिलाई थी और तुझ से चिताकर न कहा था कि यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा और क्या तू ने मुझ से न कहा था कि जो बात मैं ने सुनी, सो अच्छी है ॥ ४३ । फिर तू ने यहोवा की किरिया और मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी ॥ ४४ । और राजा ने शिमी से कहा कि तू आप ही अपने मन में उस सारी दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से किई थी सो यहोवा तेरे सिर पर तेरी दुष्टता लौटा देगा ॥ ४५ । पर राजा सुलैमान धन्य रहेगा और दाऊद का राज्य यहोवा के साम्हने सदा लों दृढ़ रहेगा ॥ ४६ । तब राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह् को आज्ञा दिई और उस ने बाहर जाकर उस को ऐसा मारा कि वह मर गया । और सुलैमान के हाथ में राज्य दृढ़ हो गया ॥

३. फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फिरौन की बेटी ब्याह कर उस का दामाद हो गया और उस को दाऊदपुर में ले आकर जब लों अपना भवन और यहोवा का भवन और यरूशलेम् की चारों ओर शहरपनाह न बनवा चुका तब लों उस को वहीं रक्खा । २ । क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे उन दिनों तक यहोवा के नाम का कोई भवन न बना था ॥ ३ । और सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा पर वह ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था ॥

४ । और राजा गिबोन् को बलि चढ़ाने गया क्योंकि मुख्य ऊंचा स्थान वही था सो वहां की वेदी पर सुलैमान ने एक हजार होमबलि चढ़ाये ॥ ५ । गिबोन् में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं सो मांग ॥ ६ । सुलैमान ने कहा तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा इस कारण से कि वह अपने को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म्म और मन की सीधाई से चलता रहा और तू ने यहां तक उस पर करुणा किई थी कि उसे उस की गद्दी पर विराजनेहारा एक

(१) मूल में, उस की राजगद्दी पर ।

पुत्र दिया है जैसा कि आज है ॥ ७ । और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है पर मैं छोटा लड़का सा हूं जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता ॥ ८ । फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के बीच है जिन की गिनती बहुतायत के मारे नहीं होती ॥ ९ । सो अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति[1] दे कि मैं भले बुरे का विवेक कर सकूं क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके ॥ १० । इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने ऐसा वर मांगा ॥ ११ । सो परमेश्वर ने उस से कहा इस लिये कि तू ने यह वर मांगा है और न तो दीर्घायु न धन न अपने शत्रुओं का नाश मांगा पर समझने के विवेक का वर मांगा है, १२ । सुन मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूं मैं तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं यहां लों कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ और न तेरे पीछे कोई होगा ॥ १३ । फिर जो तू ने नहीं मांगा अर्थात् धन और महिमा सो भी मैं तुझे यहां लों देता हूं कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा ॥ १४ । फिर यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मेरे मार्गों में चलता हुआ मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहे तो मैं तेरी आयु बढ़ाऊंगा ॥ १५ । तब सुलैमान जाग उठा और देखा कि यह स्वप्न हुआ फिर वह यरूशलेम् को गया और यहोवा की वाचा के संदूक के साम्हने खड़ा होकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाये और अपने सब कर्म्मचारियों के लिये जेवनार किई ॥

१६ । उस समय दो वेश्या राजा के पास आकर उस के सन्मुख खड़ी हुईं ॥ १७ । उन में से एक स्त्री कहने लगी हे मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं और इस के संग घर में रहते मैं लड़का जनी ॥ १८ । फिर मेरे जनने के तीन दिन बीते पर यह स्त्री भी लड़का जनी हम तो संग ही संग थीं हम दोनों को छोड़ घर में और कोई न था ॥ १९ । और रात में इस स्त्री का बालक इस के नीचे दबकर मर गया ॥ २० । तब इस ने आधी रात को उठकर जब तेरी दासी सो रही थी तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रक्खा और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया ॥ २१ । भोर को जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी तब उसे मरा पाया पर भोर को मैं ने चित्त लगाकर यह देखा कि जो पुत्र मैं जनी थी सो यह नहीं है ॥ २२ । तब दूसरी स्त्री ने कहा नहीं जीता मेरा पुत्र है और मरा तेरा पुत्र है पर वह कहती रही नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र है यों वे राजा के साम्हने बातें करती रहीं ॥ २३ । राजा ने कहा एक तो कहती है जो जीता है सोई मेरा पुत्र है और मरा तेरा पुत्र है और दूसरी कहती है नहीं जो मरा है सोई तेरा पुत्र है और जो जीता है वह मेरा पुत्र है ॥ २४ । फिर राजा ने कहा मेरे पास तलवार ले आओ सो एक तलवार राजा के साम्हने लाई गई ॥ २५ । तब राजा बोला जीते हुए बालक को दो टुकड़े करके आधा इस को आधा उस को दो ॥ २६ । तब जीते हुए बालक की माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया और उस ने राजा से कहा हे मेरे प्रभु जीता हुआ बालक उसी को दे पर उस को किसी भांति न मार । दूसरी स्त्री ने कहा वह न तो मेरा हो न तेरा वह दो टुकड़े किया जाए ॥ २७ । तब राजा ने कहा पहिली को जीता हुआ बालक दो किसी भांति उस को न मारो क्योंकि उस की माता वही है ॥ २८ । जो न्याय राजा ने चुकाया था उस का समाचार सारे इस्राएल् को मिला और उन्हों ने राजा का भय माना क्योंकि उन्हों ने यह देखा कि उस के मन में न्याय करने को परमेश्वर की बुद्धि है ॥

(सुलैमान का राजप्रबन्ध और माहात्म्य.)

४. राजा सुलैमान तो सारे इस्राएल् के ऊपर राजा हुआ था ॥ २ । और उस के हाकिम ये थे अर्थात् सादोक् का पुत्र

(१) मूल में. सुननेहारा मन ।

अजर्याह् याजक शोशा के पुत्र एलीहोरेप् और अहिय्याह् प्रधान मन्त्री थे अहीलूद् का पुत्र यहोशापात् इतिहास का लेखक था ॥ ४ । फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह् प्रधान सेनापति था और सादोक् और एब्यातार् याजक थे ॥ ५ । और नातान् का पुत्र अजर्याह् भण्डारियों पर था और नातान् का पुत्र जाबूद् याजक और राजा का मित्र भी था ॥ ६ । और अहीशार् राजपरिवार के ऊपर था और अब्दा का पुत्र अदोनीराम् बेगारों के ऊपर मुखिया था ॥ ७ । और सुलैमान के बारह भण्डारी थे जो सारे इस्राएलियों के अधिकारी होकर राजा और उस के घराने के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे एक एक पुरुष बरस दिन में अपने अपने महीने में प्रबन्ध करता था ॥ ८ । और उन के नाम ये थे अर्थात् एप्रैम् के पहाड़ी देश में बेन्हूर् ॥ ९ । और माकस् शाल्बीम् बेत्शेमेश् और एलोन्बेथानान् में बेन्देकेर् था ॥ १० । अरुब्बोत् में बेन्हेसेद् जिस के अधिकार में सोको और हेपेर् का सारा देश था ॥ ११ । दोर् के सारे ऊंचे देश में बेनबीनादाब् जिस की स्त्री सुलैमान की बेटी तापत् थी ॥ १२ । और अहीलूद् का पुत्र बाना जिस के अधिकार में तानाक् मगिद्दो और बेत्शान् का वह सारा देश था जो सारतान् के पास और यिज्रेल् के नीचे और बेत्शान् से ले आबेल्महोला लों अर्थात् योक्मास् की परली ओर लों है ॥ १३ । और गिलाद् के रामोत् में बेन्गेबेर् था इस के अधिकार में मनश्शेई याईर् के गिलाद् के गांव थे अर्थात् इसी के अधिकार में बाशान् के अर्गोब् का देश था जिस में शहरपनाह और पीतल के बेंड़ेवाले साठ बड़े बड़े नगर थे ॥ १४ । और इद्दो के पुत्र अहीनादाब् के हाथ में महनैम् था ॥ १५ । नप्ताली में अहीमास् था जिस ने सुलैमान की बासमत् नाम बेटी को ब्याह लिया था ॥ १६ । और आशेर् और आलोत् में हूशै का पुत्र बाना, १७ । इस्साकार में पारूह् का पुत्र यहोशापात्. १८ । और बिन्यामीन् में एला का पुत्र शिमी था ॥ १९ । ऊरी का पुत्र गेबेर् गिलाद् में अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन् और बाशान् के राजा ओग् के देश में था इस सारे देश में वही भण्डारी था ॥ २० । यहूदा और इस्राएल् के लोग बहुत थे वे समुद्र के तीर पर की बालू के किनकों के समान बहुत थे और खाते पीते और आनन्द करते रहे ॥

२१ । सुलैमान तो महानद से ले पलिश्तियों के देश और मिस्र के सिवाने लों के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था और उन के लोग सुलैमान के जीवन भर भेंट लाते और उस के अधीन रहते थे ॥ २२ । और सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठता था अर्थात् तीस कोर् मैदा साठ कोर् आटा, २३ । दस तैयार किये हुए बैल और चराइयों में से बीस बैल और सौ भेड़ बकरी और इन को छोड़ हरिण चिकारे यखमूर और तैयार किये हुए पक्षी ॥ २४ । क्योंकि महानद के इस पार के सारे देश पर अर्थात् तिप्सह् से ले अज्जा लों जितने राजा थे उन सभों पर सुलैमान प्रभुता करता और अपनी चारों ओर के सब रहनेहारों से मेल रखता था ॥ २५ । और दान् से बेर्शेबा लों के सारे यहूदी और इस्राएली अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले सुलैमान के जीवन भर निडर रहते थे ॥ २६ । फिर उस के रथ के घोड़ों के लिये सुलैमान के चालीस हजार थान थे और उस के बारह हजार सवार थे ॥ २७ । और वे भण्डारी अपने अपने महीने में राजा सुलैमान के लिये और जितने उस की मेज पर आते थे उन सभों के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे किसी वस्तु की घटी होने न पाती थी ॥ २८ । और घोड़ों और वेग चलनेहारे घोड़ों के लिये जव और पुआल जहां प्रयोजन पड़ता था वहां आज्ञा के अनुसार एक एक जन पहुंचाया करता था ॥

२९ । और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दिई और उस की समझ बहुत ही बढ़ाई और उस के हृदय में समुद्रतीर की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनित गुण[१] दिये ॥ ३० । और सुलैमान की बुद्धि पूरब देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी सारी बुद्धि से बढ़कर थी ॥ ३१ । वह तो और सब मनुष्यों से बरन एतान् एज्राही और हेमान् और माहोल् के

(१) मूल में हृदय की चौड़ाई ।

पुत्र कल्कोल् और दर्दा से भी अधिक बुद्धिमान था और उस की कीर्त्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई ॥ ३२ । उस ने तीन हजार नीतिवचन कहे और उस के एक हजार पांच गीत भी हैं ॥ ३३ । फिर उस ने लबानोन् के देवदारुओं से लेकर भीत में से उगते हुए जूफा तक के सब पेड़ों की चर्चा और पशुओं पक्षियों रेंगनेहारे जन्तुओं और मछलियों की चर्चा किई ॥ ३४ । और देश देश के लोग पृथिवी के सब राजाओं की ओर से जिन्हों ने सुलैमान की बुद्धि की कीर्त्ति सुनी थी उस की बुद्धि की बातें सुनने को आते थे ॥

(मन्दिर के बनने की तैयारी)

५. और सोर् नगर के हीराम् राजा ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे क्योंकि उस ने सुना था कि वह अभिषिक्त होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है और दाऊद के जीवन भर हीराम् उस का मित्र बना रहा ॥ २ । और सुलैमान ने हीराम् के पास यों कहला भेजा कि, ३ । तुझे मालूम है कि मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इस लिये न बनवा सका कि वह चारों ओर लड़ाइयों में तब लों बझा रहा जब लों यहोवा ने उस के शत्रुओं को उस के पांव तले न कर दिया ॥ ४ । पर अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया और न तो कोई विरोधी है न कुछ विपत्ति देख पड़ती है ॥ ५ । सो मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है अर्थात उस बात के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी कि तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गद्दी पर बैठाऊंगा वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा ॥ ६ । सो अब तू मेरे लिये लबानोन् पर से देवदारु काटने की आज्ञा दे और मेरे दास तेरे दासों के संग रहेंगे और जो कुछ मजूरी तू ठहराए वही मैं तुझे तेरे दासों के लिये दूंगा तुझे मालूम तो है कि सीदोनियों के बराबर लकड़ी काटने का भेद हम लोगों में से कोई नहीं जानता ॥ ७ । सुलैमान की ये बातें सुनकर हीराम् बहुत आनन्दित हुआ और कहा आज यहोवा धन्य है जिस ने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिये एक बुद्धिमान पुत्र दिया है ॥ ८ । सो हीराम् ने सुलैमान के पास यों कहला भेजा कि जो तू ने मेरे पास कहला भेजा सो मेरी समझ में आ गया देवदारु और सनौवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे सो मैं करूंगा ॥ ९ । मेरे दास लकड़ी को लबानोन् से समुद्र लों पहुंचाएंगे फिर मैं उन के बेड़े बनवाकर जो स्थान तू मेरे लिये ठहराए वहां समुद्र के मार्ग से उन को पहुंचवा दूंगा वहां मैं उन को खोलकर डलवा दूंगा और तू उन्हे ले लेना और तू मेरे परिवार के लिये भोजन देकर मेरी भी इच्छा पूरी करना ॥ १० । सो हीराम् सुलैमान की सारी इच्छा के अनुसार उस को देवदारु और सनौवर की लकड़ी देने लगा ॥ ११ । और सुलैमान ने हीराम् के परिवार के खाने के लिये उसे बीस हजार कोर् गेहूं और बीस कोर् पेरा हुआ तेल दिया यों सुलैमान हीराम् को बरस बरस दिया करता था ॥ १२ । और यहोवा ने सुलैमान को अपने वचन के अनुसार बुद्धि दिई और हीराम् और सुलैमान के बीच मेल रहा वरन उन दोनों ने आपस में वाचा भी बांधी ॥

१३ । और राजा सुलैमान ने सारे इस्राएल् में से तीस हजार पुरुष बेगारी लगाये, १४ । और उन्हें लबानोन् पहाड़ पर पारी पारी करके महीने महीने दस हजार भेज दिया एक महीना तो वे लबानोन् पर और दो महीने घर पर रहा करते थे और बेगारियों के ऊपर अदोनीराम् ठहराया गया ॥ १५ । और सुलैमान के सत्तर हजार बोझ ढोनेहारे और पहाड़ पर अस्सी हजार वृक्ष काटनेहारे और पत्थर निकालनेहारे थे ॥ १६ । इन को छोड़ सुलैमान के तीन हजार तीन सौ मुखिये थे जो काम करनेहारों के ऊपर थे ॥ १७ । फिर राजा की आज्ञा से बड़े बड़े अनमोल पत्थर इस लिये खोदकर निकाले गये कि भवन की नेव गढ़े हुए पत्थरों से डाली जाए ॥ १८ । और सुलैमान के कारीगरों और हीराम् के कारीगरों और गबालियों ने उन को गढ़ा और भवन के बनाने के लिये लकड़ी और पत्थर तैयार किये ॥

(मन्दिर आदि की बनावट)

६. **इस्राएलियों** के मिस्र देश से निकलने का चार सौ अस्सीवां बरस जो सुलैमान के इस्राएल् पर राज्य करने का चौथा बरस था उस जीव् नाम दूसरे महीने में वह यहोवा का भवन बनाने लगा ॥ २ । और जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया उस की लंबाई साठ हाथ चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की थी ॥ ३ । और भवन के मन्दिर के साम्हने के ओसारे की लंबाई बीस हाथ की अर्थात् भवन की चौड़ाई के बराबर थी और ओसारे की चौड़ाई जो भवन के साम्हने थी सो दस हाथ की थी ॥ ४ । फिर उस ने भवन में स्थिर झिलमिलीदार खिड़कियां बनाईं ॥ ५ । और उस ने भवन के आस-पास की भीतों से सटे हुए महलों को बनाया अर्थात् भवन के मन्दिर और परमपवित्रस्थान दोनों भीतों के आसपास उस ने कोठरियां बनाईं ॥ ६ । सब से नीचेवाली महल की चौड़ाई पांच हाथ और बीचवाली की छः हाथ और ऊपरवाली की सात हाथ की हुई क्योंकि उस ने भवन के आसपास भीत को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया इस लिये कि कड़ियां भवन की भीतों में घुसेरी न जाएं ॥ ७ । और बनते समय भवन ऐसे पत्थरों का बनाया गया जो वहां ले आने से पहिले गढ़कर ठीक किये गये थे और भवन के बनते समय हथौड़े बसूली वा और किसी प्रकार के लोहर का शब्द कभी सुनाई न पड़ा ॥ ८ । बाहर की बीचवाली कोठरियों का द्वार भवन की दहिनी अलंग में था और लोग चक्करदार सीढ़ियों पर होकर बीचवाली कोठरियों में जाते और उन से ऊपरवाली कोठरियों पर जाते थे ॥ ९ । उस ने भवन को बनाकर पूरा किया और उस की छत देवदारु की कड़ियों और तख्तों से बनी ॥ १० । और सारे भवन से लगी हुई जो महलें उस ने बनाई सो पांच पांच हाथ ऊंची थीं और वे देवदारु की कड़ियों के द्वारा भवन से मिलाई गई थीं ॥

११ । तब यहोवा का यह वचन सुलैमान के पास पहुंचा कि, १२ । यह भवन तो तू बना रहा है यदि तू मेरी विधियों पर चलेगा और मेरे नियमों को मानेगा और मेरी सब आज्ञाओं पर चलता हुआ उन्हें मानेगा तो जो वचन मैं ने तेरे विषय तेरे पिता दाऊद को दिया उस को मैं पूरा करूंगा ॥ १३ । और मैं इस्राएलियों के बीच वास करूंगा और अपनी इस्राएली प्रजा को न त्यागूंगा ॥

१४ । सो सुलैमान ने भवन को बनाकर पूरा किया ॥ १५ । और उस ने भवन की भीतों पर भीतरवार देवदारु की तखताबंदी किई उस ने भवन के फर्श से छत लों भीतों में भीतरवार लकड़ी की तखता-बंदी किई और भवन के फर्श को उस ने सनौबर के तख्तों से बनाया ॥ १६ । और भवन की पिछली अलंग में भी उस ने बीस हाथ की दूरी पर फर्श से ले भीतों के ऊपर तक देवदारु की तखताबन्दी किई इस प्रकार उस ने परमपवित्र स्थान के लिये भवन की एक भीतरी कोठरी बनाई ॥ १७ । और उस के साम्हने की भवन अर्थात् मन्दिर की लम्बाई चालीस हाथ की थी ॥ १८ । और भवन की भीतों पर भीतरवार देवदारु की लकड़ी की तखताबन्दी थी और उस में इन्द्रायन और खिले हुए फूल खुदे थे देवदारु ही देवदारु था पत्थर कुछ न देख पड़ता था ॥ १९ । भवन के भीतर उस ने एक भीतरी कोठरी यहोवा की वाचा का संदूक रखने के लिये तैयार किई ॥ २० । और उस भीतरी कोठरी की लम्बाई चौड़ाई और ऊंचाई बीस बीस हाथ की थी और उस ने उस पर चोखा सोना मढ़ाया और वेदी की तखताबन्दी देवदारु से किई ॥ २१ । फिर सुलैमान ने भवन को भीतर भीतर चोखे सोने से मढ़ाया और भीतरी कोठरी के साम्हने सोने की सांकलें लगाईं और उस को भी सोने से मढ़ाया ॥ २२ । और उस ने सारे भवन को सोने से मढ़ाकर उस का सारा काम निपटा दिया और भीतरी कोठरी की सारी वेदी को भी उस ने सोने से मढ़ाया ॥ २३ । और भीतरी कोठरी में उस ने दस दस हाथ ऊंचे जलपाई की लकड़ी के दो करूब बना रखे ॥

२४। एक करूब् का एक पंख पांच हाथ का था और उस का दूसरा पंख पांच हाथ का था एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे लों दस हाथ थे॥ २५। और दूसरा करूब् भी दस हाथ का था दोनों करूब् एक ही नाप और एक ही आकार के थे॥ २६। एक करूब् की ऊंचाई दस हाथ की और दूसरे की भी इतनी ही थी॥ २७। और उस ने करूबों को भीतरवाले स्थान में धरवा दिया और करूबों के पंख ऐसे फैले थे कि एक करूब का एक पंख एक भीत से और दूसरे का दूसरा पंख दूसरी भीत से लगा हुआ था फिर उन के दूसरे दो पंख भवन के बीच एक दूसरे से लगे हुए थे॥ २८। और करूबों को उस ने सोने से मढ़ाया॥ २९। और उस ने भवन की भीतों में बाहर और भीतर चारों ओर करूब् खजूर और खिले हुए फूल खुदाये॥ ३०। और भवन के भीतर और बाहरवाले फरश उस ने सोने से मढ़ाये॥ ३१। और भीतरी कोठरी के द्वार पर उस ने जलपाई की लकड़ी के किवाड़ लगाये चौखट के सिरहाने और बाजुओं की लंबाई भवन की चौड़ाई का पांचवां भाग थी॥ ३२। दोनों किवाड़ जलपाई की लकड़ी के थे और उस ने उन में करूब् खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाये और सोने से मढ़ा और करूबों और खजूरों के ऊपर सोना चढ़ा दिया गया॥ ३३। इस रीति उस ने मन्दिर के द्वार के लिये भी जलपाई की लकड़ी के चौखट के बाजू बनाये और वह भवन की चौड़ाई की चौथाई थी॥ ३४। दोनों किवाड़ सनौवर की लकड़ी के थे जिन में से एक किवाड़ के दो पल्ले थे और दूसरे किवाड़ के दो पल्ले थे जो पलटकर दुहर जाते थे॥ ३५। और उन पर भी उस ने करूब् खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदाये और खुदे हुए काम पर उस ने सोना मढ़ा॥ ३६। और उस ने भीतरवाले आंगन के घेरे को गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे और एक परत देवदारु की कड़ियां लगाकर बनाया॥ ३७। चौथे बरस के जीव् नाम महीने में यहोवा के भवन की नेव डाली गई, ३८। और ग्यारहवें बरस के बूल् नाम आठवें महीने में वह भवन उस सब समेत जो उस में उचित समझा गया बन चुका इस रीति सुलैमान को उस के बनाने में सात बरस लगे॥

७. और सुलैमान ने अपने भवन को बनाया और उस के पूरा करने में तेरह बरस लगे॥ २। और उस ने लबानोनी बन नाम भवन बनाया जिस की लम्बाई सौ हाथ चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की थी वह तो देवदारु के खंभों की चार पांति पर बना और खंभों पर देवदारु की कड़ियां धरी गईं॥ ३। और खंभों के ऊपर देवदारु की छतवाली पैंतालीस कोठरियां अर्थात् एक एक महल में पन्द्रह कोठरियां बनीं॥ ४। तीनों महलों में कड़ियां धरी गईं और तीनों में खिड़कियां आम्हने साम्हने बनीं॥ ५। और सब द्वार और बाजुओं की कड़ियां भी चौकोर थीं और तीनों महलों में खिड़कियां आम्हने साम्हने बनीं॥ ६। और उस ने एक खंभेवाला ओसारा भी बनाया जिस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ की थी और इन खंभों के साम्हने एक खंभेवाला ओसारा और उस के साम्हने डेवढ़ी बनाई॥ ७। फिर उस ने न्याय के सिंहासन के लिये भी एक ओसारा बनाया जो न्याय का ओसारा कहलाया और उस में एक फरश से दूसरे फरश लों देवदारु की तखताबन्दी थी॥ ८। और उसी के रहने का भवन जो उस ओसारे के भीतर के एक और आंगन में बना सो उसी ढब से बना। फिर उसी ओसारे के ढब से सुलैमान ने फिरौन की बेटी के लिये जिस को उस ने ब्याह लिया था एक और भवन बनाया॥ ९। ये सब घर बाहर भीतर नेव से मुंडेर लों ऐसे अनमोल और गढ़े हुए पत्थरों के बने जो नापकर और आरों से चीरके तैयार किये गये थे और बाहर के आंगन से ले बड़े आंगन तक लगाये गये॥ १०। उन की नेव तो बड़े मोल के बड़े बड़े अर्थात् दस दस और आठ आठ हाथ के पत्थरों की डाली गई थी॥ ११। और ऊपर भी बड़े मोल के पत्थर थे जिन की नाप गढ़े हुए पत्थरों की सी थी और देवदारु की लकड़ी

भी थी ॥ १२ । और बड़े आंगन की चारों ओर के घेरे में गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे और देवदारु की कड़ियों का एक परत था जैसे कि यहोवा के भवन के भीतरवाले आंगन और भवन के ओसारे में लगे थे ॥

१३ । फिर राजा सुलैमान ने सोर् से हीराम् को बुलवा भेजा ॥ १४ । वह नप्ताली के गोत्र की किसी विधवा का बेटा था और उस का पिता एक सोर्‌वासी ठठेरा था और वह पीतल की सब प्रकार की कारीगरी में पूरी बुद्धि निपुणता और समझ रखता था सो वह राजा सुलैमान के पास आकर उस का सारा काम करने लगा ॥ १५ । उस ने पीतल ढालकर अठारह अठारह हाथ ऊंचे दो खंभे बनाये और एक एक का घेरा बारह हाथ के सूत का था ॥ १६ । और उस ने खंभों के सिरों पर लगाने को पीतल ढालकर दो कंगनी बनाईं एक एक कंगनी की ऊंचाई पांच पांच हाथ की थी ॥ १७ । और खंभों के सिरों पर की कंगनियों के लिये चार-खाने की सात सात जालियां और सांकलों की सात सात झालरें बनीं ॥ १८ । और उस ने खंभों को यों भी बनाया कि खंभों[1] के सिरों पर की एक एक कंगनी के ढांपने को चारों ओर जालियों की एक एक पांति पर अनारों की दो पांति बनाईं ॥ १९ । और जो कंगनियां ओसारों में खंभों के सिरों पर बनीं उन में चार चार हाथ ऊंचा सोसन फूल का था ॥ २० । और एक एक खंभे के सिरे पर उस गोलाई के पास जो जाली से लगी थी एक और कंगनी बनी और एक एक कंगनी पर जो अनार चारों ओर पांति पांति करके बने सो दो सौ थे ॥ २१ । इन खंभों को उस ने मन्दिर के ओसारे के पास खड़ा किया और दहिनी ओर के खंभे को खड़ा करके उस का नाम याकीन्[2] रक्खा फिर बाईं ओर के खंभे को खड़ा करके उस का नाम बोआज़्[3] रक्खा ॥ २२ । और खंभों के सिरों पर सोसन फूल का काम बना खंभों का काम इसी रीति निपट गया ॥ २३ । फिर उस ने एक ढाला हुआ गंगाल बनाया जो एक छोर से दूसरी छोर लों दस हाथ चौड़ा था उस का आकार गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस की चारों ओर का घेर तीस हाथ के सूत का था ॥ २४ । और उस की चारों ओर मोहड़े के नीचे एक एक हाथ में दस दस इन्द्रायन बने जो गंगाल को घेरे थीं जब वह ढाला गया तब ये इन्द्रायन भी दो पांति करके ढाले गये ॥ २५ । और वह बारह बने हुए बैलों पर धरा गया जिन में से तीन उत्तर तीन पच्छिम तीन दक्खिन और तीन पूरब की ओर मुंह किये हुए थे और उन ही के ऊपर गंगाल था और उन सभों के पिछले अंग भीतरी पड़ते थे ॥ २६ । और उस का दल चौवा भर का था और उस का मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं सोसन के फूलों के काम से बना था और उस में दो हजार बत् समाता था ॥ २७ । फिर उस ने पीतल के दस पाये बनाये एक एक पाये की लंबाई चार हाथ चौड़ाई भी चार हाथ और ऊंचाई तीन हाथ की थी ॥ २८ । उन पायों की बनावट यों थी उन के पटरियां थीं और पटरियों के बीच बीच जोड़ भी थे ॥ २९ । और जोड़ों के बीच बीच की पटरियों पर सिंह बैल और करूब् बने और जोड़ों के ऊपर भी एक एक और पाया बना और सिंहों और बैलों के नीचे लटके हुए हार बने ॥ ३० । और एक एक पाये के लिये पीतल के चार पहिये और पीतल की धुरियां बनीं और एक एक के चारों कोनों से लगे ढलुवे कंधे भी ढालकर बनाये गये जो हौदी के नीचे तक पहुंचते थे और एक एक कंधे के पास हार थे ॥ ३१ । और हौदी का मोहड़ा जो पाये की कंगनी के भीतर और ऊपर भी था सो एक हाथ ऊंचा था और पाये का मोहड़ा जिस की चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी सो पाये की बनावट के समान गोल बना और पाये के उसी मोहड़े पर भी कुछ खुदा हुआ था और उन की पटरियां गोल नहीं चौकोर थीं ॥ ३२ । और चारों पहिये पटरियों के नीचे थे और एक एक पाये के पहियों में धुरियां भी थीं और एक एक पहिये की ऊंचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की थी ॥ ३३ ।

(१) मूल में अनारों । (२) अर्थात् वह स्थिर रक्खे । (३) अर्थात् उसी में बल ।

पहियों की बनावट रथ के पहिये की सी थी और उन की धुरियां पुट्ठियां आरे और नाभें सब ढाली हुई थीं ॥ ३४ । और एक एक पाये के चारों कोनों पर चार कंधे थे और कंधे और पाये दोनों एक ही टुकड़े के थे ॥ ३५ । और एक एक पाये के सिरे पर आध हाथ ऊंची चारों ओर गोलाई थी और पाये के सिरे पर की टेकें और पटरियां पाये से एक टुकड़े की थीं ॥ ३६ । और टेकों के पाटों और पटरियों पर जितनी जगह जिस पर थी उस में उस ने करूब् सिंह और खजूर के वृक्ष खोदकर भर दिये और चारों ओर हार भी बनाये ॥ ३७ । इसी ढब से उस ने दसों पायों को बनाया सभों का एक ही सांचा एक ही नाप और एक ही आकार था ॥ ३८ । और उस ने पीतल की दस हौदी बनाई एक एक हौदी में चालीस चालीस बत् समाता था और एक एक चार चार हाथ चौड़ी थीं और दसों पायों में से एक एक पर एक एक हौदी थी ॥ ३९ । और उस ने पांच हौदी भवन की दक्खिन ओर और पांच उस की उत्तर ओर रख दिईं और गंगाल को भवन की दहनी ओर अर्थात् पूरब की ओर और दक्खिन के साम्हने धर दिया ॥ ४० । और हीराम् ने हौदियों(१) फावड़ियों और कटोरों को भी बनाया । सो हीराम् ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन में जितना काम करना था सो सब निपटा दिया, ४१ । अर्थात् दो खंभे और उन कंगनियों की गोलाइयां जो दोनों खंभों के सिरे पर थीं और दोनों खंभों के सिरों पर की गोलाइयों के ढांपने को दो दो जालियां, ४२ । और दोनों जालियों के लिये चार चार सौ अनार अर्थात् खंभों के सिरों पर जो गोलाइयां थीं उन के ढांपनेहारी एक एक जाली के लिये अनारों की दो दो पांति, ४३ । दस पाये और इन पर की दस हौदी, ४४ । एक गंगाल और उस के नीचे के बारह बैल, ४५ । और हंडे फावड़ियां और कटोरे बने । ये सब पात्र जिन्हें हीराम् ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिये बनाया सो झलकाये हुए पीतल के बने ॥ ४६ । राजा ने उन को यर्दन की तराई में अर्थात् सुक्कोत् और सारतान् के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढाला ॥ ४७ । और सुलैमान ने सब पात्रों को बहुत अधिक होने के कारण बिना तौले छोड़ दिया पीतल के तौल का कुछ लेखा न हुआ ॥ ४८ । यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब बनाये अर्थात् सोने की वेदी और सोने की वह मेज़ जिस पर भेंट की रोटी रक्खी जाती थी, ४९ । और चोखे सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पांच तो दक्खिन ओर और पांच उत्तर ओर रक्खी गईं और सोने के फूल दीपक और चिमटे, ५० । और चोखे सोने के तसले कैंचियां कटोरे धूपदान और करछे और भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्थान कहावता है और भवन जो मन्दिर कहावता है दोनों के किवाड़ों के लिये सोने के कब्जे बने ॥ ५१ । निदान जो जो काम राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये किया सो सब निपट गया । तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किये हुए सोने चांदी और पात्रों को भीतर पहुंचा कर यहोवा के भवन के भण्डारों में रख दिया ॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

८. तब राजा सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के प्रधान थे उन को भी यरूशलेम् में अपने पास इस मनसा से एकट्ठा किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर अर्थात सिय्योन् से ऊपर लिवा ले आएं ॥ २ । सो सब इस्राएली पुरुष एतानीम् नाम सातवें महीने के पर्व के समय राजा सुलैमान के पास एकट्ठे हुए ॥ ३ । जब सब इस्राएली पुरनिये आये तब याजकों ने संदूक को उठा लिया ॥ ४ । और यहोवा का संदूक और मिलाप का तंबू और जितने पवित्र पात्र उस तंबू में थे उन सभों को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गये ॥ ५ । और राजा सुलैमान और सारी इस्राएली मंडली जो उस के पास एकट्ठी हुई थी वे सब संदूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि कर रहे थे जिन की गिनती किसी रीति से

(१) वा हंडों ।

न हो सकती थी ॥ ६। तब याजकों ने यहोवा की वाचा का संदूक उस के स्थान को अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है पहुंचाकर करूबों के पंखों के तले रख दिया ॥ ७। करूब् तो संदूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाये हुए थे कि वे ऊपर से संदूक और उस के डंडों को ढांपे थे ॥ ८। डंडे तो ऐसे लम्बे थे कि उन के सिरे उस पवित्रस्थान से जो भीतरी कोठरी के साम्हने था देख पड़ते थे पर बाहर से तो वे देख न पड़ते थे। वे आज के दिन लों वहीं हैं ॥ ९। संदूक में कुछ नहीं था, उन दो पटियाओं को छोड़ जो मूसा ने होरेब् में उस के भीतर उस समय रक्खीं जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उन के साथ वाचा बांधी थी ॥ १०। जब याजक पवित्रस्थान से निकले तब यहोवा के भवन में बादल भर आया ॥ ११। और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था ॥

१२। तब सुलैमान कहने लगा यहोवा ने कहा था कि मैं घोर अंधकार में वास किये रहूंगा ॥ १३। सचमुच मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है जिस में तू युगयुग रहे ॥ १४। और राजा ने इस्राएल् की सारी सभा की ओर मुंह फेरके उस को आशीर्वाद दिया और सारी सभा खड़ी रही ॥ १५। और उस ने कहा धन्य है इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था और अपने हाथ से उसे पूरा किया है कि, १६। जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इस्राएल् को मिस्र से निकाल लाया तब से मैं ने किसी इस्राएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए पर मैं ने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी प्रजा इस्राएल् का अधिकारी हो ॥ १७। मेरे पिता दाऊद की यह मनसा तो थी कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं ॥ १८। पर यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा यह जो तेरी मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया ॥ १९। तौभी तू उस भवन को न बनाएगा तेरा जो निज पुत्र होगा वही मेरे नाम का भवन बनाएगा ॥ २०। यह जो वचन यहोवा ने कहा था उसे उस ने पूरा भी किया है और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल् की गद्दी पर विराजता हूं और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया ॥ २१। और इस में मैं ने एक स्थान उस संदूक के लिये ठहराया है जिस में यहोवा की वह वाचा है जो उस ने हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय उन से बांधी थी ॥

२२। तब सुलैमान ने इस्राएल् की सारी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाकर, २३। कहा हे यहोवा हे इस्राएल् के परमेश्वर तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में और न नीचे पृथिवी पर कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[१] चलते हैं उन के लिये तू अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है ॥ २४। जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था उस का तू ने पालन किया है जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था वैसा ही अपने हाथ से उस को पूरा किया है जैसा आज है ॥ २५। सो अब हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा इस वचन को भी पूरा कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल् की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे, इतना हो कि जैसे तू अपने को मेरे सन्मुख जानकर[१] चलता रहा वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चालचलन में ऐसी ही चौकसी करें ॥ २६। सो अब हे इस्राएल् के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था उसे सच्चा कर ॥ २७। क्या परमेश्वर सचमुच पृथिवी पर वास करेगा स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता फिर मेरे बनाये हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा ॥ २८। तौभी हे मेरे पर-

(१) मूल में तेरे साम्हने।

मेश्वर यहोवा अपने दास की प्रार्थना और गिड़-गिड़ाहट की ओर कान लगाकर मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्थना सुन जो मैं आज तेरे साम्हने कर रहा हूं, २९ । कि तेरी आंखें इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिस के विषय तू ने कहा है कि मेरा नाम वहां रहेगा रात दिन खुली रहें और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे उसे तू सुन ले ॥ ३० । और मैं अपने दास और अपनी प्रजा इस्राएल् की प्रार्थना जिस को वे इस स्थान की ओर गिड़गिड़ाके करें उसे सुनना, स्वर्ग में जो तेरा निवासस्थान है सुन लेना और सुनकर क्षमा करना ॥ ३१ । जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे और उस को किरिया खिलाई जाए और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने किरिया खाए, ३२ । तब तू स्वर्ग में सुनकर अर्थात् अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को दुष्ट ठहरा और उस की चाल उसी के सिर लौटा दे और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर उस के धर्म्म के अनुसार उस को फल देना ॥ ३३ । फिर जब तेरी प्रजा इस्राएल् तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें और इस भवन में तुझ से गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करे, ३४ । तब तू स्वर्ग में सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल् का पाप क्षमा करना और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था ॥ ३५ । जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें और इस कारण आकाश बन्द हो जाए कि वर्षा न होए ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें और तू जो उन्हें दुःख देता है इस कारण अपने पाप से फिरें, ३६ । तो तू स्वर्ग में सुनकर क्षमा करना अपने दासों अपनी प्रजा इस्राएल् के पाप को क्षमा करना, तू जो उन को वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये इस लिये अपने इस देश पर जो तू ने अपनी प्रजा का भाग कर दिया है पानी बरसा देना ॥ ३७ । जब इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उन के शत्रु उन के देश के फाटकों में उन्हें घेर रक्खें, कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हो, ३८ । तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी सारी प्रजा इस्राएल् अपने अपने मन का दुःख जान लें और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएं, ३९ । तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में सुनकर क्षमा करना और काम करना और एक एक को मन को जानकर उस की सारी चाल के अनुसार उस को फल देना, तू ही तो सारे आदमियों के मन का जाननेहारा है ॥ ४० । तब वे जितने दिन इस देश में रहें जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था उतने दिन लों तेरा भय मानते रहें ॥ ४१ । फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल् का न हो जब वह तेरा नाम सुनकर दूर देश से आए, ४२ । वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई बांह का समाचार पाए सो जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करे, ४३ । तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में सुने और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे उसी के अनुसार करना जिस से पृथिवी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल् की नाईं तेरा भय मानें और निश्चय करें कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है सो तेरा ही कहलाता है ॥ ४४ । जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है यहोवा से प्रार्थना करें, ४५ । तब तू स्वर्ग में उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे ॥ ४६ । निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है सो यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे और वे उन को बंधुआ करके अपने देश को चाहे वह दूर हो चाहे निकट ले जाएं, ४७ । तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें और फिरकर अपने बंधुआ करनेहारों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें कि हम ने पाप किया और कुटिलता और दुष्टता किई है, ४८ ।

और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बंधुआ करके ले गये हों अपने सारे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है तुझ से प्रार्थना करें, ४९ । तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना और उन का न्याय करना, ५० । और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे और जितने अपराध वे तेरे करेंगे सब को क्षमा करके उन के बंधुआ करनेहारों के मन में ऐसी दया उपजाना कि उन पर दया करें ॥ ५१ । क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के बीच से अर्थात् मिस्र से निकाल लाया है ॥ ५२ । सो तेरी आंखें तेरे दास की गिड़गिड़ाहट और तेरी प्रजा इस्राएल् की गिड़गिड़ाहट की ओर ऐसे खुली रहें कि जब जब वे तुझे पुकारें तब तब तू उन की सुने ॥ ५३ । क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार जो तू ने हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था तू ने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथिवी की सब जातियों से अलग किया है ॥

५४ । जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ कर चुका तब वह जो घुटने टेके आकाश की ओर हाथ फैलाये हुए था सो यहोवा की वेदी के साम्हने से उठा, ५५ । और खड़ा हो सारी इस्राएली सभा को ऊंचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया कि, ५६ । धन्य है यहोवा जिस ने ठीक अपने कहे के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल् को विश्राम दिया है जितनी भलाई की बातें उस ने अपने दास मूसा के द्वारा कही थीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही ॥ ५७ । हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता था वैसे ही हमारे संग भी रहे वह हम को न त्यागे और न हम को छोड़ दे ॥ ५८ । वह हमारे मन अपनी ओर ऐसा फेर रक्खे कि हम उस के सारे मार्गों पर चला करें और उस की आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें उस ने हमारे पुरखाओं को दिया था माना करें ॥ ५९ । और मेरी ये बातें जिन करके मैं ने यहोवा के साम्हने बिनती किई है सो दिन रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें[1] और जैसा दिन दिन प्रयोजन हो वैसा ही वह अपने दास का और अपनी प्रजा इस्राएल् का न्याय किया करे, ६० । और इस से पृथिवी की सब जातियां यह जान लें कि यहोवा हो परमेश्वर है और कोई दूसरा नहीं ॥ ६१ । सो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे कि आज की नाईं उस की विधियों पर चलते और उस की आज्ञाएं मानते रहो ॥ ६२ । तब राजा सारे इस्राएल् समेत यहोवा के संमुख मेलबलि चढ़ाने लगा ॥ ६३ । और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि करके यहोवा को चढ़ाये सो बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें थीं । इस रीति राजा ने सब इस्राएलियों समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा किई ॥ ६४ । उस दिन राजा ने यहोवा के भवन के साम्हनेवाले आंगन के बीच भी एक स्थान पवित्र करके होमबलि अन्नबलि और मेलबलियों की चरबी वहीं चढ़ाई क्योंकि जो पीतल की वेदी यहोवा के साम्हने थी सो उन के लिये छोटी थी ॥ ६५ । और सुलैमान ने और उस के संग सारे इस्राएल् की एक बड़ी सभा ने जो हमात् की घाटी से ले मिस्र के नाले तक के सारे देश से इकट्ठी हुई थी दो अठवारे अर्थात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने पर्व को माना ॥ ६६ । आठवें दिन उस ने प्रजा के लोगों को बिदा किया और वे राजा को धन्य धन्य कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्राएल् से किई थी आनन्दित और मगन होकर अपने अपने डेरे को चले गये ॥

(१) मूल में. यहोवा के निकट रहें ।

९. जब सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका और जो कुछ उस ने करना चाहा था उसे कर चुका, २। तब यहोवा ने जैसे गिबोन् में उस को दर्शन दिया था वैसे ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया॥ ३। और यहोवा ने उस से कहा जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से किई है उस को मैं ने सुना है यह जो भवन तू ने बनाया है उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे॥ ४। और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मन की खराई और सीधाई से अपने को मेरे साम्हने जानकर[1] चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे तो मैं तेरा राज्य[2] इस्राएल् के ऊपर सदा के लिये स्थिर करूंगा, ५। जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था कि तेरे कुल में इस्राएल् की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे॥ ६। पर यदि तुम लोग वा तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो मैं ने तुम को दिई हैं न मानें और जाकर पराये देवताओं की उपासना और उन्हें दण्डवत् करने लगें, ७। तो मैं इस्राएल् को इस देश में से जो मैं ने उन को दिया है काट डालूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से उतार दूंगा और सब देशों के लोगों में इस्राएल् की उपमा दिई जाएगी और उस का दृष्टान्त चलेगा॥ ८। और यह भवन जो ऊंचे पर रहेगा सो जो कोई इस के पास होकर चलेगा वह चकित होगा और ताली बजाएगा और वे पूछेंगे कि यहोवा ने इस देश और इस भवन के साथ क्यों ऐसा किया है, ९। तब लोग कहेंगे कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जो उन के पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया था तजकर पराये देवताओं को पकड़ लिया और उन को दण्डवत् किई और उन की उपासना किई इस कारण यहोवा ने यह सब विपत्ति उन पर डाल दिई॥

१०। सुलैमान को तो यहोवा के भवन और राजभवन दोनों के बनाने में बीस बरस लगे॥ ११। तब सुलैमान ने सोर् के राजा हीराम् को जिस ने उस के मनमाने देवदारु और सनौवर की लकड़ी और सोना दिया था गालील् देश के बीस नगर दिये॥ १२। जब हीराम् ने सोर् से जाकर उन नगरों को देखा जो सुलैमान ने उस को दिये थे तब वे उस को अच्छे न लगे॥ १३। सो उस ने कहा हे मेरे भाई ये क्या नगर तू ने मुझे दिये हैं। और उस ने उन का नाम कबूल् देश रक्खा और यही नाम आज के दिन लों पड़ा है॥ १४। फिर हीराम् ने राजा के पास साठ किक्कार् सोना भेज दिया॥

१५। राजा सुलैमान ने जो लोगों को बेगारी में रक्खा इस का प्रयोजन यह था कि यहोवा का और अपना भवन बनाए और मिल्लो और यरूशलेम् की शहरपनाह और हासोर् मगिद्दो और गेजेर् नगरों को दृढ़ करे॥ १६। गेजेर् पर तो मिस्र के राजा फिरौन ने चढ़ाई करके उसे ले लिया और आग लगाकर फूंक दिया और उस नगर में रहनेहारे कनानियों को मार डालकर उसे अपनी बेटी सुलैमान की रानी का निज भाग करके दिया था॥ १७। सो गेजेर् को सुलैमान ने दृढ़ किया और नीचेवाले बेथोरोन्, १८। बालात् और तामार् को जो जंगल में हैं। ये तो देश में हैं॥ १९। फिर सुलैमान के जितने भण्डार के नगर थे और उस के रथों और सवारों के नगर उन को बरन जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम् लबानोन् और अपने राज्य के सारे देश में बनाना चाहा उस सब को उस ने दृढ़ किया॥ २०। एमोरी हित्ती परिज्जी हिव्वी और यबूसी जो रह गये थे जो इस्राएलियों में के न थे, २१ उन के वंश जो उन के पीछे देश में रह गये और उन को इस्राएली सत्यानाश न कर सके उन को तो सुलैमान ने दास करके बेगारी में रक्खा और आज लों उन की यही दशा है॥ २२। पर इस्राएलियों में से सुलैमान ने किसी

(१) मूल में. मेरे साम्हने। (२) मूल में. राजगद्दी।

को दास न बनाया वे तो योद्धा और उस के कर्म्म-चारी उस के हाकिम उस के सरदार और उस के रथों और सवारों के प्रधान हुए ॥ २३ । जो मुख्य हाकिम सुलैमान के कामों के ऊपर ठहरके काम करनेहारों पर प्रभुता करते थे सो पांच सौ पचास थे ॥ २४ । जब फ़िरौन की बेटी दाऊदपुर में से अपने उस भवन को आ गई जो उस ने उस के लिये बनाया था तब उस ने मिल्लो को बनाया ॥ २५ । और सुलैमान उस वेदी पर जो उस ने यहोवा के लिये बनायी थी बरस बरस में तीन बार होमबलि और मेलबलि चढ़ाया करता और साथ ही उस वेदी पर जो यहोवा के सन्मुख थी धूप जलाया करता था यों ही उस ने उस भवन को तैयार कर दिया ॥

(सुलैमान की धनसम्पत्ति और व्योपार और शबा की रानी का आना)

२६ । फिर राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर् में जो एदोम् देश में लाल समुद्र के तीर एलोत् के पास है जहाज बनाये ॥ २७ । और जहाजों में हीराम् ने अपने अधिकार के मल्लाहों को जो समुद्र के जानकार थे सुलैमान के सेवकों के संग भेज दिया ॥ २८ । उन्हों ने ओपीर् को जाकर वहां से चार सौ बीस किक्कार् सोना राजा सुलैमान को ला दिया ॥

१०. जब शबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्त्ति सुनी तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उस की परीक्षा करने को चली ॥ २ । वह तो बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए यरूशलेम् को आई और सुलैमान के पास पहुंचकर अपने मन की सारी बातों के विषय उस से बातें करने लगी ॥ ३ । सुलैमान ने उस के सब प्रश्नों का उत्तर दिया कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उस को न बता सका ॥ ४ । जब शबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धि-मानी और उस का बनाया हुआ भवन, ५ । और उस की मेज पर का भोजन देखा और उस के कर्म्मचारी किस रीति बैठते और उस के टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे कैसे कपड़े पहिने रहते हैं और उस के पिलानेहारे कैसे हैं और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है यह सब जब उस ने देखा तब वह चकित हो गई ॥ ६ । सो उस ने राजा से कहा तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति मैं ने अपने देश में सुनी सो सच ही है ॥ ७ । पर जब लों मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा तब लों मैं ने उन बातों की प्रतीति न किई पर इस का आधा भी मुझे न बताया गया था तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्त्ति से भी बढ़कर है जो मैं ने सुनी थी ॥ ८ । धन्य हैं तेरे जन धन्य हैं तेरे ये सेवक जो नित्य तेरे सन्मुख हाज़िर रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं ॥ ९ । धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे इस्राएल् की राजगद्दी पर विराजमान किया यहोवा इस्राएल् से सदा प्रेम रखता है इस कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म्म करने को राजा कर दिया है ॥ १० । और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार् सोना बहुत सा सुगंधद्रव्य और मणि दिये जितना सुगंधद्रव्य शबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिया उतना फिर कभी नहीं आया ॥ ११ । फिर हीराम् के जहाज भी जो ओपीर् से सोना लाते थे सो बहुत सी चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाये ॥ १२ । और राजा ने चन्दन की लकड़ी के यहोवा के भवन और राजभवन के लिये जंगले और गानेहारों के लिये वीणाएं और सारंगियां बनवाईं ऐसी चन्दन की लकड़ी आज लों फिर नहीं आई और न देख पड़ी है ॥ १३ । और शबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उस की इच्छा के अनुसार उस को दिया फिर राजा सुलैमान ने उस को अपनी उदारता से बहुत कुछ दिया तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई ॥

१४ । जो सोना बरस दिन में सुलैमान के पास पहुंचा करता था उस का तौल छः सौ छियासठ किक्कार् था ॥ १५ । इस से अधिक सौदागरों से

(१) मूल में. कोई बात राजा से न छिपी ।

और ब्योपारियों के लेन देन से और दोगली जातियों के सब राजाओं और अपने देश के गवर्नरों से भी बहुत कुछ मिलता था ॥ १६ । और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनाईं एक एक ढाल में छः छः सौ शेकेल् सोना लगा ॥ १७ । फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनाईं एक एक छोटी ढाल में तीन माने सोना लगा और राजा ने उन को लबानोनी वन नाम भवन में रखवा दिया ॥ १८ । और राजा ने हाथी-दांत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और उत्तम कुन्दन से मढ़ाया ॥ १९ । उस सिंहासन में छः सीढ़ियां थीं और सिंहासन का सिरहाना पिछाड़ी की ओर गोल था और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थीं और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था ॥ २० । और छहों सीढ़ियों की दोनों अलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था सो बारह हुए किसी राज्य में ऐसा कभी न बना ॥ २१ । और राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे और लबानोनी वन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे चांदी का कोई भी न था सुलैमान के दिनों में उस का कुछ लेखा न था ॥ २२ । क्योंकि समुद्र पर हीराम् के जहाजों के साथ राजा भी तर्शीश् के जहाज रखता था और तीन तीन बरस पीछे तर्शीश् के जहाज सोना चान्दी हाथीदांत बन्दर और मोर ले आते थे ॥ २३ । सो राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथिवी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया ॥ २४ । और सारी पृथिवी के लोग उस की बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उस के मन में उपजाई थीं सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे ॥ २५ । और वे बरस बरस अपनी अपनी भेंट अर्थात् चांदी और सोने के पात्र वस्त्र शस्त्र सुगंधद्रव्य घोड़े और खच्चर ले आते थे ॥ २६ । और सुलैमान ने रथ और सवार एकट्ठे कर लिये सो उस के चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार हुए और उन को उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम् में राजा के पास ठहरा रक्खा ॥ २७ । और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम् में चांदी का लेखा पत्थरों का सा और देवदारु का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया ॥ २८ । और जो घोड़े सुलैमान रखता था सो मिस्र से आते थे और राजा के व्यापारी उन्हें झुण्ड झुण्ड करके ठहराये हुए दाम पर लिया करते थे ॥ २९ । एक रथ तो छः सौ शेकेल् चांदी पर और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल् पर मिस्र से आता था और इसी दाम पर वे हित्तियों और अराम् के सारे राजाओं के लिये भी व्यापारियों के द्वारा आते थे ॥

(सुलैमान का बिगाड़ और ईश्वर का कोप और सुलैमान की मृत्यु)

११. पर राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी और बहुतेरी और बिरानी स्त्रियों से जो मोआबी अम्मोनी एदोमी सीदोनी और हित्ती थीं प्रीति करने लगा ॥ २ । वे उन जातियों की थीं जिन के विषय यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था कि तुम उन के बीच न जाना और न वे तुम्हारे बीच आने पाएं वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया ॥ ३ । और उस के सात सौ रानियां और तीन सौ रखेलियां हो गईं और उस की इन स्त्रियों ने उस का मन बहका दिया ॥ ४ । सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ तब उस की स्त्रियों ने उस का मन पराये देवताओं की ओर बहका दिया और उस का मन अपने पिता दाऊद की नाईं अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा ॥ ५ । सुलैमान तो सीदोनियों की अश्तोरेत् नाम देवी और अम्मोनियों के मिल्कोम् नाम घिनौने देवता के पीछे चला ॥ ६ । और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा के लेखे में बुरा है और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला ॥ ७ । उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम् के साम्हने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश् नाम घिनौने देवता के लिये और अम्मोनियों के मोलेक् नाम घिनौने देवता के लिये एक एक ऊंचा स्थान बनाया ॥ ८ । और अपनी

सब बिरानी स्त्रियों के लिये भी जो अपने अपने देवताओं को धूप जलाती और बलि करती थीं उस ने ऐसा ही किया ॥

९। सो यहोवा ने सुलैमान पर कोप किया क्योंकि उस का मन इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा से फिर गया जिस ने दो बार उस को दर्शन दिया था ॥ १०। और उस ने इसी बात के विषय आज्ञा दिई थी कि पराये देवताओं के पीछे न हो लेना तौभी उस ने यहोवा की आज्ञा न मानी ॥ ११। और यहोवा ने सुलैमान से कहा तुझ से जो ऐसा ही काम हुआ है और मेरी बन्धाई हुई वाचा और दिई हुई विधि तू ने नहीं पाली इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर तेरे एक कर्म्मचारी को दूंगा ॥ १२। तौभी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में तो ऐसा न करूंगा पर तेरे पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूंगा ॥ १३। परन्तु मैं सारा राज्य तो न छीन लूंगा पर अपने दास दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूशलेम् के कारण मैं तेरे पुत्र के हाथ में एक गोत्र छोड़ूंगा ॥

१४। सो यहोवा ने एदोमी हदद् को जो एदोमी राजवंश का था सुलैमान का शत्रु कर दिया ॥ १५। और जब दाऊद एदोम् में था और योआब् सेनापति मारे हुओं को मिट्टी देने गया, १६। (योआब् तो सारे इस्राएल् समेत वहां छ: महीने रहा था जब तक कि उस ने एदोम् के सब पुरुषों को नाश न किया था) ॥ १७। तब हदद् जो छोटा लड़का था अपने पिता के कई एक एदोमी सेवकों के संग मिस्र को जाने की मनसा से भागा ॥ १८। और वे मिद्यान् से होकर पारान् को आये और पारान् में से कई पुरुषों को संग लेकर मिस्र में फिरौन् राजा के पास गये और फिरौन ने उस को घर दिया और उस को भोजन मिलने की आज्ञा दिई और कुछ भूमि भी दिई ॥ १९। और हदद् पर फिरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई और उस ने उस को अपनी साली अर्थात् तहपनेस् रानी की बहिन व्याह दिई ॥ २०। और तहपनेस् की बहिन उस के जन्माये गनूबत् को जनी और इस का दूध तहपनेस् ने फिरौन् के भवन में छुड़ाया तब गनूबत् फिरौन के भवन में उसी के पुत्रों के बीच रहा था ॥ २१। जब हदद् ने मिस्र में रहते यह सुना कि दाऊद अपने पुरखाओं के संग सो गया और योआब् सेनापति भी मर गया है तब उस ने फिरौन से कहा मुझे आज्ञा दे कि मैं अपने देश को जाऊं ॥ २२। फिरौन ने उस से कहा क्यों मेरे यहां तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला जाने चाहता है उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं हुई तौभी मुझे अवश्य जाने दे ॥

२३। फिर परमेश्वर ने उस का एक और शत्रु कर दिया अर्थात् एल्यादा के पुत्र रजोन् को वह तो अपने स्वामी सोबा के राजा हददेजेर् के पास से भागा था, २४। और जब दाऊद ने सोबा के जनों को घात किया तब रजोन् अपने पास कई पुरुषों को एकट्ठे करके एक दल का प्रधान हो गया और वे दमिश्क् को जाकर वहां रहने और उस का राज्य करने लगे ॥ २५। और उस हानि को छोड़ जो हदद् ने किई रजोन् भी सुलैमान के जीवन भर इस्राएल् का शत्रु बना रहा और वह इस्राएल् से घिन रखता हुआ अराम् पर राज्य करता था ॥

२६। फिर नबात् का और सरूआह् नाम एक विधवा का पुत्र यारोबाम् नाम एक एप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का कर्म्मचारी था उस ने भी राजा के विरुद्ध सिर[१] उठाया ॥ २७। उस के राजा के विरुद्ध सिर[१] उठाने का यह कारण हुआ कि सुलैमान मिल्लो को बना रहा और अपने पिता दाऊद के नगर के दरार बन्द कर रहा था ॥ २८। यारोबाम् बड़ा शूरवीर था और जब सुलैमान ने जवान को देखा कि यह कामकाजी है तब उस ने उस को यूसुफ के घराने के सब परिश्रम पर मुखिया ठहराया ॥ २९। उन्हीं दिनों में यारोबाम् यरूशलेम् से निकलकर जा रहा था कि शीलोवासी अहिय्याह् नबी नई चद्दर ओढ़े हुए मार्ग पर उस से मिला और केवल वे दो दोनों मैदान में थे ॥ ३०। और अहिय्याह् ने अपनी उस

(१) मूल में हाथ।

नई चद्दर को ले लिया और उसे फाड़कर बारह टुकड़े कर दिये ॥ ३१ । तब उस ने यारोबाम् से कहा दस टुकड़े ले ले क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुन मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीनकर दस गोत्र तेरे हाथ कर दूंगा ॥ ३२ । पर मेरे दास दाऊद् के कारण और यरूशलेम के कारण जो मैं ने इस्राएल् के सारे गोत्रों में से चुना है उस का एक गोत्र बना रहेगा ॥ ३३ । इस का कारण यह है कि उन्हों ने मुझे त्यागकर सीदोनियों की देवी अश्तोरेत् मोआबियों के देवता-कमोश् और अम्मोनियों के देवता मिल्कोम् को दण्डवत् किई और मेरे मार्गों पर नहीं चले और जो मेरी दृष्टि में ठीक है सो नहीं किया और मेरी विधियों और नियमों को नहीं पाला जैसा कि उस के पिता दाऊद् ने किया ॥ ३४ । तौभी मैं उस के हाथ से सारा राज्य न ले लूंगा पर मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएं और विधियां पालता रहा उस के कारण मैं उस को जीवन भर प्रधान ठहराये रक्खूंगा ॥ ३५ । पर उस के पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूंगा ॥ ३६ । और उस के पुत्र को मैं एक गोत्र दूंगा इस लिये कि यरूशलेम् नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैं ने चुना है मेरे दास दाऊद का मेरे साम्हने सदा दीपक बना रहे ॥ ३७ । पर तुझे मैं ठहरा लूंगा और तू अपनी इच्छा भर इस्राएल् पर राज्य करेगा ॥ ३८ । और यदि तू मेरे दास दाऊद की नाईं मेरी सब आज्ञाएं माने और मेरे मार्गों पर चले और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है सोई करे और मेरी विधियां और आज्ञाएं पालता रहे तो मैं तेरे संग रहूंगा और जैसे मैं ने दाऊद का घराना बनाये रखा है वैसे ही तेरा भी घराना बनाये रक्खूंगा और तेरे हाथ इस्राएल् को दूंगा ॥ ३९ । इस पाप के कारण मैं दाऊद के वंश को दुःख दूंगा तौभी सदा लों नहीं ॥ ४० । और सुलैमान ने यारोबाम् को मार डालना चाहा पर यारोबाम् मिस्र में राजा शीशक् के पास भाग गया और सुलैमान के मरने तक वहीं रहा ॥

४१ । सुलैमान की और सब बातें और उस के सारे काम और उस की बुद्धिमानी का वर्णन क्या सुलैमान के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ४२ । सुलैमान को यरूशलेम में सारे इस्राएल् पर राज्य करते हुए चालीस बरस बीते ॥ ४३ । और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र रहबाम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(इस्राएल् के राज्य का दो भाग हो जाना)

१२. रहबाम तो शकेम् को गया क्योंकि सारा इस्राएल् उस को राजा करने के लिये वहीं गया था ॥ २ । और नबात् के पुत्र यारोबाम् ने यह सुना (वह तो तब तक मिस्र में रहता था क्योंकि यारोबाम् सुलैमान राजा के डर के मारे भागकर मिस्र में रहता था) ॥ ३ । और उन लोगों ने उस को बुलवा भेजा और यारोबाम् और इस्राएल् की सारी सभा रहबाम् के पास जाकर यों कहने लगी कि, ४ । तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रक्खा था सो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जो उस ने हम पर डाल रक्खा है कुछ हलका कर तब हम तेरे अधीन रहेंगे ॥ ५ । उस ने कहा अभी तो जाओ और तीन दिन पीछे मेरे पास फिर आना सो वे चले गये ॥ ६ । तब राजा रहबाम् ने उन बूढ़ों से जो उस के पिता सुलैमान के जीवन भर उस के साम्हने हाजिर रहा करते थे सम्मति लिई कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है इस में तुम क्या सम्मति देते हो ॥ ७ । उन्हों ने उस को यह उत्तर दिया कि यदि तू अभी प्रजा के लोगों का दास बनकर उन के अधीन हो और उन से मधुर बातें कहे तो वे सदा लों तेरे अधीन बने रहेंगे ॥ ८ । रहबाम् ने उस सम्मति को छोड़ा जो बूढ़ों ने उस को दिई थी और उन जवानों से सम्मति लिई जो उस के संग बढ़े हुए थे और उस के सन्मुख हाजिर रहा करते थे ॥ ९ । उन से उस ने पूछा मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं इस में तुम क्या सम्मति देते हो उन्हों ने तो मुझ

से कहा है कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रक्खा है उसे तू हलका कर ॥ १० । जवानों ने जो उस के संग बड़े हुए थे उस को यह उत्तर दिया कि उन लोगों ने तुझ से कहा है कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था पर तू उसे हमारे लिये हलका कर तू उन से यों कहना कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कटि से भी मोटी ठहरेगी ॥ ११ । मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रक्खा था उसे मैं और भी भारी करूंगा मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था पर मैं बिच्छूओं से दूंगा ॥ १२ । तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना वैसे ही यारोबाम् और सारी प्रजा रहबाम् के पास हाजिर हुई ॥ १३ । तब राजा ने प्रजा से कड़ी बातें किईं और बूढ़ों की दिई हुई सम्मति छोड़कर, १४ । जवानों की सम्मति के अनुसार उन से कहा कि मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया पर मैं उसे और भी भारी कर दूंगा मेरे पिता ने तो कोड़ों से तुम को ताड़ना दिई पर मैं तुम को बिच्छूओं से ताड़ना दूंगा ॥ १५ । सो राजा ने प्रजा की न मानी इस का कारण यह है कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह् के द्वारा नबात् के पुत्र यारोबाम् से कहा था उस को पूरा करने के लिये उस ने ऐसा ही ठहराया था ॥ १६ । जब सारे इस्राएल् ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता तब वे बोले[1] कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है इस्राएल् अपने अपने डेरे को चले जाओ अब हे दाऊद अपने ही घराने की चिन्ता कर। सो इस्राएल् अपने अपने डेरे को चले गये ॥ १७ । केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे उन पर रहबाम् राज्य करता रहा ॥ १८ । तब राजा रहबाम् ने अदोराम् को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया और सब इस्राएलियों ने उस पर पत्थरवाह किया वह मर गया सो रहबाम् फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम् को भाग गया ॥ १९ । सो इस्राएल् दाऊद के घराने से फिर गया और आज लों फिरा हुआ है ॥ २० । यह सुनकर कि यारोबाम् लौट आया है सारे इस्राएल् ने उस को मण्डली में बुलवा भेजकर सारे इस्राएल् के ऊपर राजा किया और यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा ॥

२१ । जब रहबाम् यरूशलेम् को आया तब उस ने यहूदा के सारे घराने को और बिन्यामीन् के गोत्र को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे एकट्ठा किया इस लिये कि इस्राएल् के घराने के साथ लड़ने से राज्य सुलैमान के पुत्र रहबाम् के वश में फिर आए ॥ २२ । तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह् के पास पहुंचा कि, २३ । यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम् से और यहूदा और बिन्यामीन् के सारे घरानों से और और सब लोगों से कह, २४ । यहोवा यों कहता है कि अपने भाई इस्राएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो तुम अपने अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा का यह वचन मानकर उन्हों ने उस के अनुसार लौट जाने को अपना अपना मार्ग लिया ॥

(यारोबाम् का मूर्त्ति पूजा चलाना)

२५ । तब यारोबाम् एप्रैम् के पहाड़ी देश के शकेम् नगर को दृढ़ करके उस में रहने लगा फिर वहां से निकलकर पनूएल् को भी दृढ़ किया ॥ २६ । तब यारोबाम् सोचने लगा कि अब राज्य फिर दाऊद के घराने का हो जाएगा ॥ २७ । यदि प्रजा के ये लोग यरूशलेम् में बलि करने को जाएं तो उन का मन अपने स्वामी यहूदा के राजा रहबाम् की ओर फिरेगा और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा रहबाम् के हो जाएंगे ॥ २८ । सो राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाये और लोगों से कहा यरूशलेम् को तो बहुत चढ़ गये हो सो हे इस्राएल् अपने देवताओं को देखो जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाये हैं ॥ २९ । सो उस ने एक बछड़े को बेतेल् और

(१) मूल में राजा को उत्तर दिया।

दूसरे को दान् में स्थापित किया ॥ ३०। और यह बात पाप के कारण हुई और लोग एक के साम्हने दण्डवत् करने को दान् लों जाने लगे ॥ ३१। और उस ने ऊंचे स्थानों के भवन बनाये और सब प्रकार के लोगों[1] में से जो लेवीवंशी न थे याजक ठहराये ॥ ३२। फिर यारोबाम् ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहूदा में के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा इस रीति उस ने बेतेल् में अपने बनाये हुए बछड़ों के लिये वेदी पर बलि किया और अपने बनाये हुए ऊंचे स्थानों के याजकों को बेतेल् में ठहरा दिया ॥

(यहूदी नबी की कथा)

३३। और जिस महीने की उस ने अपने मन में कल्पना किई थी अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल् में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उस ने इस्राएलियों के लिये एक पर्व्व ठहरा दिया और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया ॥

१३.

तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल् को आया और यारोबाम् धूप जलाने को वेदी के पास खड़ा था ॥ २। उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा कि वेदी हे वेदी यहोवा यों कहता है कि सुन दाऊद के कुल में योशिय्याह् नाम एक लड़का उत्पन्न होगा वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं तुझ पर बलि कर देगा और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी ॥ ३। और उस ने उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है इस का चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी और इस पर की राख गिर जाएगी ॥ ४। परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उस बेतेल् की विरुद्ध पुकारके कहा यारोबाम् ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा उस को पकड़ लो तब उस का हाथ जो उस की ओर बढ़ाया था सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका ॥ ५। और वेदी फट गई और उस पर की राख गिर गई सो वह चिन्ह पूरा हुआ जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था ॥ ६। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए सो परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया ॥ ७। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा मेरे संग घर चलकर अपना जी ठंडा कर और मैं तुझे दान भी दूंगा ॥ ८। परमेश्वर के जन ने राजा से कहा चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे तौभी तेरे घर न चलूंगा और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा न पानी पीऊंगा ॥ ९। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है कि न तो रोटी खाना न पानी पीना और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा ॥ १०। सो वह उस मार्ग से जिस से बेतेल् को गया था न लौटकर दूसरे मार्ग से चला गया ॥

११। बेतेल् में एक बूढ़ा नबी रहता था और उस के एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल् में किये थे और जो बातें उस ने राजा से कही थीं उन को भी उस ने अपने पिता से कह सुनाया ॥ १२। उस के बेटों ने तो यह देखा था कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था किस मार्ग से चला गया सो उन के पिता ने उन से पूछा वह किस मार्ग से चला गया ॥ १३। और उस ने अपने बेटों से कहा मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो सो उन्हों ने गदहे पर काठी बांधी और वह उस पर चढ़ा, १४। और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांजवृक्ष के तले बैठा हुआ पाया और उस से पूछा परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था क्या तू वही है उस ने कहा हां वही हूं ॥ १५। उस ने उस से कहा मेरे संग घर चलकर भोजन कर ॥ १६। उस ने उस से कहा मैं न तो

(१) मूल में अन्त के लोगों।

तेरे संग लौट न सकता न तेरे संग घर में जा सकता और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा वा पानी पीऊंगा ॥ १७ । क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है कि वहां न तो रोटी खाना न पानी पीना और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना ॥ १८ । उस ने कहा जैसा तू वैसा ही मैं भी नबी हूं और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ कि वह रोटी खाए और पानी पीए । यह उस ने उस से झूठ कहा ॥ १९ । सो वह उस के संग लौटा और उस के घर में रोटी खाई और पानी पिया ॥ २० । वे मेज पर बैठे ही थे कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा जो दूसरे को लौटा ले आया था ॥ २१ । और उस ने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था पुकारके कहा यहोवा यों कहता है कि तू ने यहोवा का वचन न माना और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दिई थी उसे नहीं माना, २२ । पर जिस स्थान के विषय उस ने तुझ से कहा था कि उस में न रोटी खाना न पानी पीना उसी में तू ने लौटकर रोटी खाई और पानी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कबरिस्तान में मिट्टी न दिई जाएगी ॥ २३ । जब वह खा पी चुका तब उस ने परमेश्वर के उस जन के लिये जिस को वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बंधाई ॥ २४ । वह मार्ग में चल रहा था कि एक सिंह उसे मिला और उस को मार डाला और उस की लोथ मार्ग पर पड़ी रही और गदहा उस के पास खड़ा रहा और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा ॥ २५ । जो लोग उधर से चले उन्हों ने यह देखकर कि मार्ग पर एक लोथ पड़ी है और उस के पास सिंह खड़ा है उस नगर में जाकर जहां वह बूढ़ा नबी रहता था यह समाचार सुनाया ॥ २६ । यह सुनकर उस नबी ने जो उस को मार्ग पर से लौटा ले आया था कहा परमेश्वर का वही जन होगा जिस ने यहोवा के कहे के विरुद्ध किया था इस कारण यहोवा ने उस को सिंह के पंजे में पड़ने दिया और यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने उस से कहा था सिंह ने उसे फाड़कर मार डाला होगा ॥ २७ । तब उस ने अपने बेटों से कहा मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो जब उन्हों ने काठी बांधी, २८ । तब उस ने जाकर उस जन की लोथ मार्ग पर पड़ी हुई और गदहे और सिंह दोनों को लोथ के पास खड़े हुए पाया और यह भी कि सिंह ने न तो लोथ को खाया और न गदहे को फाड़ा है ॥ २९ । तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन की लोथ उठाकर गदहे पर लाद लिई और उस के लिये छाती पीटने और उसे मिट्टी देने को अपने नगर में लौटा ले गया ॥ ३० । और उस ने उस की लोथ को अपने कबरिस्तान में रक्खा और लोग हाय मेरे भाई यह कहकर छाती पीटने लगे ॥ ३१ । फिर उसे मिट्टी देकर उस ने अपने बेटों से कहा जब मैं मर जाऊं तब मुझे इसी कबरिस्तान में रखना जिस में परमेश्वर का यह जन रक्खा गया है और मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के पास धर देना ॥ ३२ । क्योंकि जो वचन उस ने यहोवा से पाकर बेतेल् में की वेदी और शोमरोन् के नगरों में के सब ऊंचे स्थानों के भवनों के विरुद्ध पुकारके कहा है सो निश्चय पूरा हो जाएगा ॥

(यारोबाम् का अन्तकाल)

३३ । इस के पीछे यारोबाम् अपनी बुरी चाल से न फिरा । उस ने फिर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक बनाये वरन जो कोई चाहता था उस का संस्कार करके वह उस को ऊंचे स्थानों का याजक होने को ठहरा देता था ॥ ३४ । और यह बात यारोबाम् के घराने का पाप ठहरी इस कारण उस का विनाश हुआ और वह धरती पर से नाश किया गया ॥

१४. उस समय यारोबाम् का बेटा अबिय्याह् रोगी हुआ ॥ २ । सो यारोबाम् ने अपनी स्त्री से कहा ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहिचान न सके कि यह यारोबाम् की स्त्री है और शीलो को चली जा वहां तो अहिय्याह्

नबी रहता है जिस ने मुझ से कहा था कि तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा ॥ ३ । उस के पास तू दस रोटी और पपड़ियां और एक कुप्पी मधु लिये हुए जा और वह तुझे बताएगा कि लड़के को क्या होगा ॥ ४ । यारोबाम् की स्त्री ने वैसा ही किया और चलकर शीलो को पहुंची और अहिय्याह् के घर पर आई अहिय्याह् को तो कुछ सूझ न पड़ता था क्योंकि बुढ़ापे के कारण उस की आंखें धुन्धली पड़ गई थीं ॥ ५ । और यहोवा ने अहिय्याह् से कहा सुन यारोबाम् की स्त्री तुझ से अपने बेटे के विषय जो रोगी है कुछ पूछने को आती है सो तू उस से यों यों कहना वह तो आकर अपने को दूसरी बताएगी ॥ ६ । सो जब अहिय्याह् ने द्वार में आते हुए उस के पांव की आहट सुनी तब कहा हे यारोबाम् की स्त्री भीतर आ तू अपने को क्यों दूसरी बताती है मुझे तेरे लिये भारी सन्देशा मिला है ॥ ७ । तू जाकर यारोबाम् से कह इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि मैं ने तो तुझ को प्रजा में से बढ़ाकर अपनी प्रजा इस्राएल् पर प्रधान किया, ८ । और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझ को दिया पर तू मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी आज्ञाओं को मानता और अपने सारे मन से मेरे पीछे पीछे चलता और केवल वही करता था जो मेरे लेखे ठीक है ॥ ९ । तू ने उन सभों से बढ़कर जो तुझ से पहिले थे बुराई किई है और जाकर पराये देवता मान लिये और मूरतें ढालकर बनाईं जिस से मुझे रिस उपजी और मुझे तो पीठ पीछे कर दिया है ॥ १० । इस कारण मैं यारोबाम् के घराने पर विपत्ति डालूंगा बरन मैं यारोबाम् के कुल में से हर एक लड़के को और क्या बन्धुए क्या स्वाधीन इस्राएल् के बीच हर एक रहनेहारे को भी नाश कर डालूंगा और जैसा कोई लीद तब लों उठाता रहता है जब लों वह सब उठ नहीं जाती वैसे ही मैं यारोबाम् के घराने को उठा दूंगा ॥ ११ । यारोबाम् के घराने का जो कोई नगर में मर जाए उस को कुत्ते खाएंगे और जो मैदान में मरे उस को आकाश के पक्षी खा जाएंगे क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥ १२ । सो तू अपने घर चली जा और नगर के भीतर तेरे पांव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा ॥ १३ । उसे तो सारे इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे, यारोबाम् के घराने में से उसी को कबर मिलेगी क्योंकि यारोबाम् के घराने में से यहोवा के विषय उस में कुछ अच्छा पाया जाता है ॥ १४ । फिर यहोवा इस्राएल् का ऐसा राजा कर लेगा जो उसी दिन यारोबाम् का घराना नाश कर डालेगा बरन वह कर ही चुका है ॥ १५ । क्योंकि यहोवा इस्राएल् को ऐसा मारेगा जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है और वह उन को इस अच्छी भूमि में से जो उस ने उन के पुरखाओं को दिई थी उखाड़कर महानद के पार तित्तर बित्तर करेगा क्योंकि उन्हों ने अशेरा नाम मूरतें बनाकर यहोवा को रिस दिलाई है ॥ १६ । और उन पापों के कारण जो यारोबाम् ने किये और इस्राएल् से कराये थे यहोवा इस्राएल् को त्याग देगा ॥ १७ । तब यारोबाम् की स्त्री बिदा होकर चली और तिर्सा को आई और वह भवन की डेवढ़ी पर पहुंची ही थी कि बालक मर गया ॥ १८ । तब यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने अपने दास अहिय्याह् नबी से कहवाया था सारे इस्राएल् ने उस को मिट्टी देकर उस के लिये छाती पीटी ॥ १९ । यारोबाम् के और काम अर्थात् उस ने कैसा कैसा युद्ध किया और कैसा राज्य किया यह सब इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है ॥ २० । यारोबाम् बाईस बरस लों राज्य करके अपने पुरखाओं के साथ सोया और उस का नादाब् नाम पुत्र उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(रहबाम् का राज्य)

२१ । और सुलैमान् का पुत्र रहबाम् यहूदा में राज्य करने लगा । रहबाम् इकतालीस बरस का होकर राज्य करने लगा और यरूशलेम् जिस को यहोवा ने सारे इस्राएली गोत्रों में से अपना नाम रखने के लिये चुन लिया था उस नगर में वह सत्रह बरस तक राज्य करता रहा और उस की माता का

नामा नामा था जो अम्मोनी स्त्री थी ॥ २२ । और यहूदी लोग वह करने लगे जो यहोवा के लेखे बुरा है और अपने पुरखाओं से भी अधिक पाप करके उस की जलन भड़काई ॥ २३ । उन्हों ने तो सब ऊंचे टीलों पर और सब हरे वृक्षों के तले ऊंचे स्थान और लाठें और अशेरा नाम मूरतें बना लिईं ॥ २४ । और उन के देश में पुरुषगामी भी थे निदान वे उन जातियों के से सब घिनौने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दिया था ॥ २५ । राजा रहबाम् के पांचवें बरस में मिस्र का राजा शीशक् यरूशलेम् पर चढ़ाई करके, २६ । यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं सब की सब उठा ले गया और सोने की जो फरियां सुलैमान ने बनाई थीं उन सब को वह ले गया ॥ २७ । सो राजा रहबाम् ने उन के बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे ॥ २८ । और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता तब तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे ॥ २९ । रहबाम् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ ३० । रहबाम् और यारोबाम् के बीच तो लड़ाई सदा होती रही ॥ ३१ । और रहबाम् जिस की माता नामा नाम एक अम्मोनिन थी अपने पुरखाओं के साथ सो गया और उन्हीं के पास दाऊदपुर में उस को मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र अबिय्याम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(अबिय्याम् का राज्य)

१५. नबात् के पुत्र यारोबाम् के राज्य के अठारहवें बरस में अबिय्याम् यहूदा पर राज्य करने लगा ॥ २ । और वह तीन बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा उस की माता का नाम माका था जो अबशालोम् की बेटी थी ॥ ३ । वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उस के पिता ने उस के पहिले किये और उस का मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद की नाईं पूरी रीति से लगा न था, ४ । तौभी दाऊद के कारण उस के परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम् में उसे एक दीपक देकर उस के पुत्र को उस के पीछे ठहराया और यरूशलेम् को बनाये रक्खा ॥ ५ । क्योंकि दाऊद वह किया करता था जो यहोवा के लेखे में ठीक है और हित्ती ऊरिय्याह् की बात छोड़ और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से जीवन भर कभी न मुड़ा ॥ ६ । रहबाम् के जीवन भर तो उस के और यारोबाम् के बीच लड़ाई होती रही ॥ ७ । अबिय्याम् के और सब काम जो उस ने किये क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं । और अबिय्याम् की यारोबाम् के साथ लड़ाई होती रही ॥ ८ । निदान अबिय्याम् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आसा उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(आसा का राज्य)

९ । इस्राएल् के राजा यारोबाम् के बीसवें बरस में आसा यहूदा पर राज्य करने लगा, १० । और यरूशलेम् में इकतालीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता अबशालोम् की नातिनी माका थी ॥ ११ । और आसा ने अपने मूलपुरुष दाऊद की नाईं वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है ॥ १२ । उस ने तो पुरुषगामियों को देश से निकाल दिया और जितनी मूरतें उस के पुरखाओं ने बनाई थीं उन सभों को उस ने दूर किया ॥ १३ । बरन उस की माता माका जिस ने अशेरा के पास रहने को एक घिनौनी मूरत बनाई उस को उस ने राजमाता के पद से उतार दिया और आसा ने उस की मूरत को काट डाला और किद्रोन् नाले में फूंक दिया ॥ १४ । ऊंचे स्थान तो न ढाए गये तौभी आसा का मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी रीति से लगा रहा ॥ १५ । और जो सोना चांदी और पात्र उस के पिता ने अर्पण किये थे और जो उस ने आप अर्पण किये थे उन सभों को उस ने यहोवा के भवन

में पहुंचा दिया ॥ १६ । और आसा और इस्राएल् के राजा बाशा के बीच उन के जीवन भर लड़ाई होती रही ॥ १७ । और इस्राएल् का राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई किई और रामा को इस लिये दृढ़ किया कि कोई यहूदा के राजा आसा के पास आने जाने न पाए ॥ १८ । तब आसा ने जितना सोना चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में रह गया था उस सब को निकाल अपने कर्म्मचारियों के हाथ सौंपकर दमिश्कवासी अराम् के राजा बेन्हदद् के पास जो हेज्योन् का पोता और तब्रिम्मोन् का पुत्र था भेजकर यह कहा कि, १९ । जैसे मेरे तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी वाचा बान्धी जाए देख मैं तेरे पास चांदी सोने की भेंट भेजता हूं सो आ इस्राएल् के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को टाल दे इस लिये कि वह मुझ पर से दूर हो ॥ २० । राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद् ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई कराकर इय्योन् दान् आबेल्बेत्माका और सारे किन्नेरेत् को नप्ताली के सारे देश समेत जीत लिया ॥ २१ । यह सुनकर बाशा ने रामा का दृढ़ करना छोड़ दिया और तिर्सा में रहा ॥ २२ । तब राजा आसा ने सारे यहूदा में प्रचार कराके किसी को विना छोड़े सभों को बुलाया सो वे रामा के पत्थरों और लकड़ी को जिन से बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गये और उन से राजा आसा ने बिन्यामीन् में के गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया ॥ २३ । आसा के और काम और उस की वीरता और जो कुछ उस ने किया और जो नगर उस ने दृढ़ किये यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। बुढ़ापे में तो उसे पांवों का रोग लगा ॥ २४ । निदान आसा अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उस के मूलपुरुष दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दिई और उस का पुत्र यहोशापात् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(नादाब् का राज्य)

२५ । यहूदा के राजा आसा के दूसरे बरस में यारोबाम् का पुत्र नादाब् इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा ॥ २६ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उस ने इस्राएल् से कराया था ॥ २७ । नादाब् सब इस्राएल् समेत पलिश्तियों के देश के गिब्बतोन् नगर को घेरे था कि इस्साकार् के गोत्र के अहिय्याह् के पुत्र बाशा ने उस के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके गिब्बतोन् के पास उस को मार डाला ॥ २८ । और यहूदा के राजा आसा के तीसरे बरस में बाशा ने नादाब् को मार डाला और उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २९ । राजा होते ही बाशा ने यारोबाम् के सारे घराने को मार डाला, उस ने यारोबाम् के वंश को यहां लों विनाश किया कि एक भी जीता न रहा यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह् से कहवाया था ॥ ३० । यह इस कारण हुआ कि यारोबाम् ने आप पाप किये और इस्राएल् से भी कराये थे और उस ने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई थी ॥ ३१ । नादाब् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ ३२ । आसा और इस्राएल् के राजा बाशा के बीच तो उन के जीवन भर लड़ाई होती रही ॥

(बाशा का राज्य)

३३ । यहूदा के राजा आसा के तीसरे बरस में अहिय्याह् का पुत्र बाशा तिर्सा में सारे इस्राएल् पर राज्य करने लगा और चौबीस बरस लों राज्य करता रहा ॥ ३४ । और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और यारोबाम् के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जिसे उस ने इस्राएल् से कराया था ॥

१६. १ । और बाशा के विषय यहोवा का यह वचन हनानी के पुत्र येहू के पास पहुंचा कि, २ । मैं ने तुझ को मिट्टी पर से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल् का प्रधान किया पर तू यारोबाम् की सी चाल

चलता और मेरी प्रजा इस्राएल् से ऐसे पाप कराता आया है जिन से वे मुझे रिस दिलाते हैं ॥ ३ । सुन मैं बाशा को घराने समेत पूरी रीति से उठा दूंगा और तेरे घराने को नबात् के पुत्र यारोबाम् का सा कर दूंगा ॥ ४ । बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए उस को कुत्ते खा डालेंगे और उस का जो कोई मैदान में मर जाए उस को आकाश के पक्षी खा डालेंगे ॥ ५ । बाशा के और सब काम जो उस ने किये और उस की वीरता यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ६ । निदान बाशा अपने पुरखाओं के संग सोया और तिर्सा में उसे मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र एला उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ७ । यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र येहू के द्वारा बाशा और उस के घराने के विरुद्ध आया सो न केवल उस सारी बुराई के कारण आया जो उस ने यारोबाम् के घराने के समान होकर यहोवा के लेखे किई और अपने कामों से उस को रिस दिलाई बरन इस कारण भी आया कि उस ने उस को मार डाला था ॥

(एला का राज्य)

८ । यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें बरस में बाशा का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा ॥ ९ । जब वह तिर्सा में अर्सा नाम भण्डारी के घर में जो उस के तिर्सा में के भवन का प्रधान था दारू पीकर मतवाला हो गया था तब उस के जिम्री नाम एक कर्म्मचारी ने जो उस के आधे रथों का प्रधान था राजद्रोह की गोष्ठी किई. १० । और भीतर जाकर उस को मार डाला और उस के स्थान पर राजा हुआ । यह यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें बरस में हुआ ॥ ११ । और जब वह राज्य करने लगा तब गद्दी पर बैठते ही उस ने बाशा के सारे घराने को मार डाला बरन उस ने न तो उस के कुटुम्बियों और न उस के मित्रों में से एक लड़के को भी जीता छोड़ा ॥ १२ । इस रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने येहू नबी से बाशा के विरुद्ध कहा था जिम्री ने बाशा का सारा घराना विनाश किया ॥ १३ । इस का कारण बाशा के सब पाप और उस के पुत्र एला के भी पाप थे जो उन्हों ने आप करके और इस्राएल् से भी कराके इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों से रिस दिलाई थी ॥ १४ । एला के और सब काम जो उस ने किये सो क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥

(जिम्री का राज्य)

१५ । यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें बरस में जिम्री तिर्सा में राज्य करने लगा और तिर्सा में सात दिन लों राज्य करता रहा । उस समय लोग पलिश्तियों के देश में के गिब्बतोन् के विरुद्ध डेरे किये हुए थे ॥ १६ । सो जब उन डेरे लगाये हुए लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजद्रोह की गोष्ठी करके राजा को मार डाला तब उसी दिन सारे इस्राएल् ने ओम्री नाम प्रधान सेनापति को छावनी में इस्राएल् का राजा किया ॥ १७ । तब ओम्री ने सारे इस्राएल् को संग ले गिब्बतोन् को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया ॥ १८ । जब जिम्री ने देखा कि नगर ले लिया गया है तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दिई और उसी में आप भी जल मरा ॥ १९ । यह उस के पापों के कारण हुआ कि उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे में बुरा है क्योंकि वह यारोबाम् की सी चाल और उस के किये हुए और इस्राएल् से कराये हुए पाप की लीक पर चला ॥ २० । जिम्री के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उस ने किई यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥

(ओम्री का राज्य.)

२१ । तब इस्राएली प्रजा दो भाग हो गई प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नाम गीनत् के पुत्र को राजा करने के लिये उसी के पीछे हो लिये और आधे ओम्री के पीछे हो लिये ॥ २२ । अन्त में जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत् के पुत्र तिब्नी के पीछे हो लिये थे सो तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ ॥ २३ ।

यहूदा के राजा आसा के इकतीसवें बरस में ओम्री इस्राएल् पर राज्य करने लगा और बारह बरस लों राज्य करता रहा उस ने छः बरस तो तिर्सा में राज्य किया ॥ २४ । और उस ने शेमेर् से शोमरोन् पहाड़ को दो किक्कार् चांदी में मोल लेकर उस पर एक नगर बसाया और अपने बसाये हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर् के नाम पर शोमरोन् रक्खा ॥ २५ । और ओम्री ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है बरन उन सभों से भी जो उस से पहिले थे अधिक बुराई किई ॥ २६ । वह नबात् के पुत्र यारोबाम् की सी सारी चाल चला और उस के सारे पापों के अनुसार जो उस ने इस्राएल् से ऐसे कराये कि उन्हों ने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा को अपनी व्यर्थ बातों से रिस दिलाई ॥ २७ । ओम्री के और काम जो उस ने किये और जो वीरता उस ने दिखाई यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक मे नहीं लिखा है ॥ २८ । निदान ओम्री अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन् में उस को मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र अहाब् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(अहाब् के राज्य का आरम)

२९ । यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें बरस मे ओम्री का पुत्र अहाब् इस्राएल् पर राज्य करने लगा और इस्राएल् पर शोमरोन् में बाईस बरस लों राज्य करता रहा ॥ ३० । और ओम्री के पुत्र अहाब् ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ ३१ । उस ने तो नबात् के पुत्र यारोबाम् के पापों मे चलना हलकी सी बात जानकर सीदोनियों के राजा एत्बाल् की बेटी ईजेबेल् को व्याहकर बाल् देवता की उपासना और उस को दण्डवत् किई ॥ ३२ । और उस ने बाल् का एक भवन शोमरोन् में बनाकर उस में बाल् की एक वेदी बनाई ॥ ३३ । और अहाब् ने एक अशेरा भी बनाया बरन उस ने उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलानेहारे काम किये ॥ ३४ । उस के दिनों में बेतेल्वासी हीएल् ने यरीहो को फिर बसाया जब उस ने उस की नेव डाली तब उस का जेठा पुत्र अबीराम् मर गया और जब उस ने उस के फाटक खड़े किये तब उस का लहुरा पुत्र सगूब् मर गया यह यहोवा के उस कहे के अनुसार हुआ जो उस ने नून् के पुत्र यहोशू के द्वारा कहा था ॥

(एलिय्याह् के काम का आरम)

१७. और तिश्बी एलिय्याह् जो गिलाद् के परदेश रहनेहारों में से था उस ने अहाब् से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस के सन्मुख मैं हाजिर रहता हूं उस के जीवन की सेंह इन बरसों में मेरे बिना कहे न तो मेंह बरसेगा और न ओस पड़ेगी ॥ २ । तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, ३ । यहां से चल पूरब ओर मुख करके करीत् नाम नाले में जो यर्दन के साम्हने है छिप जा ॥ ४ । उसी नाले का पानी तू पिया कर और मैं ने कौवों को आज्ञा दिई है कि वे तुझे वहां खिलाएं[1] ॥ ५ । यहोवा का यह वचन मानकर वह यर्दन के साम्हने के करीत् नाम नाले में जा रहा ॥ ६ । और सबेरे और सांझ को कौवे उस के पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह नाले का पानी पीता था ॥ ७ । कुछ दिन बीते पर उस देश मे वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया ॥

८ । तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, ९ । चल सीदोन् में के सारपत् नगर को जाकर वहां रह सुन मै ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दिई है ॥ १० । सो वह चल दिया और सारपत् को गया । नगर के फाटक के पास पहुंचकर उस ने क्या देखा कि एक विधवा लकड़ी बीन रही है उस को बुलाकर उस ने कहा किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ ॥ ११ । वह उसे ले आने को जा रही थी कि उस ने उसे पुकारके कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ ॥ १२ । उस ने कहा तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की सेंह मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े मे मुट्ठी भर मैदा और

(१) मूल में तेरे पालने पोसने की ।

कुप्पी में थोड़ा सा तेल है और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिये जाती हूं कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं और हम उसे खाएं फिर मर जाएं॥ १३। एलिय्याह् ने उस से कहा मत डर जाकर अपनी बात के अनुसार कर पर पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ फिर इस के पीछे अपने और अपने बेटे के लिये बनाना॥ १४। क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जब लों यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाए तब लों न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा और न उस कुप्पी का तेल घट जाएगा॥ १५। तब वह चली गई और एलिय्याह् के वचन के अनुसार किया तब से वह और स्त्री और उस का घराना बहुत दिन लों खाते रहे॥ १६। यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह् के द्वारा कहा था न तो उस घड़े का मैदा चुका और न उस कुप्पी का तेल घट गया॥ १७। इन बातों के पीछे उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी सो रोगी हुआ और उस का रोग यहां तक बढ़ा कि उस का सांस लेना बन्द हो गया॥ १८। तब वह एलिय्याह् से कहने लगी हे परमेश्वर के जन मेरा तुझ से क्या काम क्या तू इस लिये मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो मेरे पाप का स्मरण दिलाए॥ १९। उस ने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे तब वह उसे उस की गोद से लेकर उस अटारी में ले गया जहां वह आप रहता था और अपनी खाट पर लिटा दिया॥ २०। तब उस ने यहोवा को पुकारके कहा हे मेरे परमेश्वर यहोवा क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर जिस के यहां मैं टिका हूं इस पर भी विपत्ति ले आया है॥ २१। तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकारके कहा हे मेरे परमेश्वर यहोवा इस बालक का प्राण इस में फिर डाल दे॥ २२। एलिय्याह् की यह बात यहोवा ने सुन लिई सो बालक का प्राण उस में फिर आया और वह जी उठा॥ २३। तब एलिय्याह् बालक को अटारी में से नीचे घर में ले गया और एलिय्याह् ने यह कहकर उस की माता के हाथ में सौंप दिया कि देख तेरा बेटा जीता है॥ २४। स्त्री ने एलिय्याह् से कहा अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है सो सच होता है॥

(यहोवा का विजय और बाल् का पराजय।)

१८. बहुत दिनों के पीछे तीसरे बरस में यहोवा का यह वचन एलिय्याह् के पास पहुंचा कि जाकर अपने आप को अहाब् को दिखा और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा॥ २। तब एलिय्याह् अपने आप को अहाब् को दिखाने गया। उस समय शोमरोन् में अकाल भारी था॥ ३। सो अहाब् ने ओबद्याह् को जो उस के घराने के ऊपर था बुलवाया। ओबद्याह् तो यहोवा का भय यहां लों मानता था, ४। कि जब ईज़ेबेल् यहोवा के नबियों को नाश करती थी तब ओबद्याह् ने एक सौ नबियों को लेकर पचास पचास करके गुफाओं में छिपा रक्खा और अन्न जल देकर पालता रहा॥ ५। और अहाब् ने ओबद्याह् से कहा कि देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा क्या जाने कि इतनी घास मिले कि घोड़ों और खच्चरों को जीते बचा सकें और हमारे सब पशु न मर जाएं॥ ६। और उन्हों ने आपस में देश बांटा कि उस में होकर चलें एक ओर अहाब् और दूसरी ओर ओबद्याह् चला॥ ७। ओबद्याह् मार्ग में था कि एलिय्याह् उस को मिला उसे चीन्हकर वह मुंह के बल गिरा और कहा हे मेरे प्रभु एलिय्याह् क्या तू है॥ ८। उस ने कहा हां मैं ही हूं जाकर अपने स्वामी से कह कि एलिय्याह् मिला है॥ ९। उस ने कहा मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने के लिये अहाब् के हाथ करना चाहता है॥ १०। तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की सोंह कोई ऐसी जाति या राज्य नहीं जिस में मेरे स्वामी ने तुझे ढूंढने को न भेजा हो और जब उन लोगों ने कहा कि वह यहां नहीं है तब उस ने उस राज्य या जाति को इस की किरिया खिलाई कि एलिय्याह् नहीं मिला॥ ११। और अब तू कहता

है कि जाकर अपने स्वामी से कह कि एलिय्याह् मिला ॥ १२ । फिर ज्यों ही मैं तेरे पास से चला जाऊंगा त्यों ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहां उठा ले जाएगा सो जब मैं जाकर अहाब् को बताऊंगा और तू उसे न मिलेगा तब वह मुझे मार डालेगा पर मैं तेरा दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूं ॥ १३ । क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया कि जब ईज़ेबेल् यहोवा के नबियों को घात करती थी तब मैं ने क्या किया कि यहोवा के नबियों में से एक सौ लेकर पचास पचास करके गुफाओं में छिपा रक्खे और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा ॥ १४ । फिर अब तू कहता है जाकर अपने स्वामी से कह कि एलिय्याह् मिला है । तब वह मुझे घात करेगा ॥ १५ । एलिय्याह् ने कहा सेनाओं का यहोवा जिस के साम्हने मैं रहता हूं उस के जीवन की सोंह आज मैं अपने आप को उसे दिखाऊंगा ॥ १६ । तब ओबद्याह् अहाब् से मिलने गया और उस को बता दिया सो अहाब् एलिय्याह् से मिलने चला ॥ १७ । एलिय्याह् को देखते ही अहाब् ने कहा हे इस्राएल् के सतानेहारे क्या तू ही है ॥ १८ । उस ने कहा मैं ने इस्राएल् को कष्ट नहीं दिया पर तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टालकर बाल् देवताओं के पीछे हो लिये ॥ १९ । अब भेजकर सारे इस्राएल् को और बाल् के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं मेरे पास कर्म्मेल् पर्वत पर एकट्ठा कर ले ॥ २० । तब अहाब् ने सारे इस्राएलियों मे भेजकर नबियों को कर्म्मेल् पर्वत पर एकट्ठा किया ॥ २१ । और एलिय्याह् सब लोगों के पास आकर कहने लगा तुम कब लों दो विचारों में लटके रहोगे यदि यहोवा परमेश्वर हो तो उस के पीछे हो लेओ और यदि बाल् हो तो उस के पीछे हो लेओ लोगों ने उस के उत्तर में एक भी बात न कही ॥ २२ । तब एलिय्याह् ने लोगों से कहा यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूं और बाल् के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं ॥ २३ । सो दो बछड़े लाकर हमें दिये जाएं, और वे एक अपने लिये चुन उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें और कुछ आग न लगाएं और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रक्खूंगा और कुछ आग न लगाऊंगा ॥ २४ । तब तुम तो अपने देवता से प्रार्थना करना और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे तब सब लोग बोल उठे अच्छी बात ॥ २५ । और एलिय्याह् ने बाल् के नबियों से कहा पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो क्योंकि तुम तो बहुत हो तब अपने देवता से प्रार्थना करना पर आग न लगाना ॥ २६ । सो उन्हों ने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया लेकर तैयार किया और भोर से ले दो पहर लों यह कहकर बाल् से प्रार्थना करते रहे कि हे बाल् हमारी सुन हे बाल् हमारी सुन पर न कोई शब्द न कोई उत्तर देनेहारा हुआ तब वे अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे ॥ २७ । दो पहर को एलिय्याह् ने यह कहकर उन का ठट्ठा किया कि ऊंचे शब्द से पुकारो वह देवता तो है वह तो ध्यान लगाये होगा वा कहीं गया वा यात्रा में होगा वा क्या जानिये सोता हो और उसे जगाना चाहिये ॥ २८ । और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार पुकारके अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने अपने को यहां लों घायल किया कि लोहूलुहान हो गये ॥ २९ । वे दोपहर के पीछे बरन भेंट चढ़ाने के समय लों नबूवत करते रहे पर कोई शब्द सुन न पड़ा और न तो किसी ने उत्तर दिया न कान लगाया ॥ ३० । तब एलिय्याह् ने सब लोगों से कहा मेरे निकट आओ और सब लोग उस के निकट आये तब उस ने यहोवा की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत किई ॥ ३१ । फिर एलिय्याह् ने याकूब के पुत्रों की गिनती के अनुसार जिस के पास यहोवा का यह वचन आया था कि तेरा नाम इस्राएल् होगा बारह पत्थर छांटे, ३२ । और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई और उस की चारों ओर इतना बड़ा एक गड़हा

खोद दिया कि उस में दो सआ बीज समा सके ॥ ३३ । तब उस ने वेदी पर लकड़ी को सजाया और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया और कहा चार घड़े पानी भरके होमबलिपशु और लकड़ी पर उण्डेल दो ॥ ३४ । तब उस ने कहा दूसरी बार वैसा ही करो सो लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया फिर उस ने कहा तीसरी बार करो सो लोगों ने तीसरी बार भी किया ॥ ३५ । और जल वेदी की चारों ओर बह गया और गड़हे को भी उस ने जल से भर दिया ॥ ३६ । फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह् नबी समीप जाकर कहने लगा हे इब्राहीम् इसहाक् और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा आज यह विदित हो कि इस्राएल् में तू ही परमेश्वर है और मैं तेरा दास हूं और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किये हैं ॥ ३७ । हे यहोवा मेरी सुन मेरी सुन कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा तू ही परमेश्वर है और तू ही उन का मन लौटा लेता है ॥ ३८ । तब यहोवा की आग आकाश से पड़ी और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया और गड़हे में का जल सुखला दिया ॥ ३९ । यह देख सब लोग मुंह के बल गिरके बोल उठे यहोवा ही परमेश्वर है यहोवा ही परमेश्वर है ॥ ४० । एलिय्याह् ने उन से कहा बाल् के नबियों को पकड़ लो उन में से एक भी छूटने न पाए सो उन्हों ने उन को पकड़ लिया और एलिय्याह् ने उन्हें नीचे कीशोन् के नाले में ले जाकर वहां मार डाला ॥ ४१ । फिर एलिय्याह् ने अहाब् से कहा उठकर खा पी क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है ॥ ४२ । सो अहाब् खाने पीने चला गया और एलिय्याह् कर्म्मेल् की चोटी पर चढ़ गया और भूमि पर गिर अपना मुंह घुटनों के बीच किया ॥ ४३ । और उस ने अपने सेवक से कहा चढ़कर समुद्र की ओर ताक सो उस ने चढ़कर ताका और लौटकर कहा कुछ नहीं दीखता एलिय्याह् ने कहा फिरके सात बार जा ॥ ४४ । सातवीं बार उस ने कहा कि सुन समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है एलिय्याह् ने कहा अहाब् के पास जाकर कह रथ जुतवाकर नीचे जा न हो कि तू वर्षा से रुक जाए ॥ ४५ । थोड़ी ही बेर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं और वायु से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी और अहाब् सवार होकर यिज्रेल् को चला ॥ ४६ । तब यहोवा की शक्ति[१] एलिय्याह् पर ऐसी हुई कि वह कमर बांधकर अहाब् के आगे आगे यिज्रेल् लों दौड़ता गया ॥

(एलिय्याह का निराश होना और फिर हियाव बांधना)

१९. तब अहाब् ने ईज़ेबेल् को एलिय्याह् के सारे काम विस्तार से बताये कि उस ने सब नबियों को तलवार से कैसे मार डाला ॥ २ । तब ईज़ेबेल् ने एलिय्याह् के पास एक दूत से कहला भेजा कि यदि मैं कल इसी समय लों तेरा प्राण उन का सा न करूं तो देवता मेरे साथ वैसा ही बरन उस से भी अधिक करें ॥ ३ । यह देख एलिय्याह् अपना प्राण लेकर भागा और यहूदा में के बेर्शेबा को पहुंचकर अपना सेवक वहीं छोड़ दिया, ४ । और आप जंगल में एक दिन का मार्ग जा एक झाऊ के पेड़ तले बैठ गया वहां उस ने यह कहकर अपनी मृत्यु मांगी कि हे यहोवा बस है अब मेरा प्राण ले ले क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूं ॥ ५ । वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो रहा था कि एक दूत ने उसे छूकर कहा उठकर खा ॥ ६ । उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर पकी हुई एक रोटी और एक सुराही पानी धरा है सो उस ने खाया और पिया और फिर लेट गया ॥ ७ । दूसरी बार यहोवा के दूत ने आ उसे छूकर कहा उठकर खा क्योंकि तुझे बहुत भारी यात्रा करनी है ॥ ८ । तब उस ने उठकर खाया पिया और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात लों चलते चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब् को पहुंचा ॥ ९ । वहां वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि हे एलिय्याह् तेरा यहां क्या काम ॥ १० । उस ने

(१) मूल में. का हाथ।

उत्तर दिया सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दिई तेरी वेदियों को गिरा दिया और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है और मैं ही अकेला रह गया हूं और वे मेरे भी प्राण के खोजी हैं कि उसे हर ले ॥ ११ । उस ने कहा निकलकर यहोवा के सन्मुख पर्वत पर खड़ा हो । और यहोवा पास से होकर चला और यहोवा के साम्हने एक बड़ी प्रचण्ड वायु से पहाड़ फटने और ढांग टूटने लगीं तौभी यहोवा उस वायु में न था फिर वायु के पीछे भुईंडोल हुआ तौभी यहोवा उस भुईंडोल में न था ॥ १२ । फिर भुईंडोल के पीछे आग दिखाई दिई तौभी यहोवा उस आग में न था फिर आग के पीछे एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया ॥ १३ । यह सुनते ही एलिय्याह् ने अपना मुंह चद्दर से ढांपा और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया कि हे एलिय्याह् तेरा यहां क्या काम ॥ १४ । उस ने कहा मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दिई तेरी वेदियों को गिरा दिया और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है और मैं ही अकेला रह गया हूं और वे मेरे भी प्राण के खोजी हैं कि उसे हर लें ॥ १५ । यहोवा ने उस से कहा लौटकर दमिश्क के जंगल को जा और वहां पहुंचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल् का, १६ । और इस्राएल् का राजा होने को निम्शी के पोते येहू का और अपने स्थान पर नबी होने के लिये आबेल्महोला के शापात् के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना ॥ १७ । और हजाएल् की तलवार से जो कोई बच जाए उस को येहू मार डालेगा और जो कोई येहू की तलवार से बच जाए उस को एलीशा मार डालेगा ॥ १८ । तौभी मैं सात हजार इस्राएलियों को बचा रक्खूंगा ये तो वे सब हैं जिन्हों ने न तो बाल् के आगे घुटने टेके और न मुंह से उसे चूमा है ॥ १९ । सो वह वहां से चल दिया और शापात् का पुत्र एलीशा उसे मिला वो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किये हुए आप बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था उस के पास जाकर एलिय्याह् ने अपनी चद्दर उस पर डाल दिई ॥ २० । तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह् के पीछे दौड़ा और कहने लगा मुझे अपने माता पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा उस ने कहा लौट जा मैं ने तुझ से क्या किया है ॥ २१ । तब वह उस के पीछे से लौट गया और एक जोड़ी बैल लेकर बलि किये और बैलों का सामान जलाकर उन का मांस पकाके अपने लोगों को दे दिया और उन्हों ने खाया तब वह कमर बांधकर एलिय्याह् के पीछे चला और उस की सेवा टहल करने लगा ॥

(अरामियों पर विजय)

२०. और अराम् के राजा बेन्हदद् ने अपनी सारी सेना एकट्ठी किई और उस के साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे सो उन्हें संग लेकर उस ने शोमरोन पर चढ़ाई किई और उसे घेरके उस के विरुद्ध लड़ा ॥ २ । और उस ने नगर में इस्राएल् के राजा अहाब् के पास दूतों को यह कहने के लिये भेजा कि बेन्हदद् तुझ से यों कहता है, ३ । कि तेरी चान्दी सोना मेरा है और तेरी स्त्रियों और लड़केवालों में जो जो उत्तम हैं सो भी सब मेरे हैं ॥ ४ । इस्राएल् के राजा ने उस के पास कहला भेजा हे मेरे प्रभु हे राजा तेरे वचन के अनुसार मैं और मेरा जो कुछ है सब तेरा है ॥ ५ । उन्हीं दूतों ने फिर आकर कहा बेन्हदद् तुझ से यों कहता है कि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा था कि तुझे अपनी चान्दी सोना और स्त्रियां और बालक भी मुझे देने पड़ेंगे ॥ ६ । पर कल इसी समय मैं अपने कर्म्मचारियों को तेरे पास भेजूंगा और वे तेरे और तेरे कर्म्मचारियों के घरों में ढूंढ़ ढांढ करेंगे और तेरी जो जो मनभावनी वस्तुएं निकलें सो वे अपने अपने हाथ में लेकर आएंगे ॥ ७ । तब इस्राएल् के राजा ने अपने देश के सब पुरनियों को बुलवाकर कहा सोच विचार करो कि यह मनुष्य हमारी हानि ही का अभिलाषी

है उस ने मुझ से मेरी स्त्रियां बालक चान्दी सोना मंगा भेजा और मैं ने नाह न किई ॥ ८। तब सब पुरनियों ने और सब साधारण लोगों ने उस से कहा उस की न सुनना और न मानना ॥ ९। सो राजा ने बेन्हदद् के दूतों से कहा मेरे प्रभु राजा से मेरी ओर से कहो जो कुछ तू ने पहिले अपने दास से चाहा था सो तो मैं करूंगा पर यह मुझ से न होगा सो बेन्हदद् के दूतों ने जाकर उसे यह उत्तर सुना दिया ॥ १०। तब बेन्हदद् ने अहाब् के पास कहला भेजा यदि शोमरोन् में इतनी धूलि निकले कि मेरे सब पीछे चलनेहारों की मुट्ठी भरकर अटे तो देवता मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे ॥ ११। इस्राएल् के राजा ने उत्तर देकर कहा उस से कहो कि जो हथियार बांधता हो सो उस की नाईं न फूले जो उन्हें उतारता हो ॥ १२। यह वचन सुनते ही वह जो और राजाओं समेत डेरों में पी रहा था उस ने अपने कर्म्मचारियों से कहा पांति बांधो सो उन्हों ने नगर के विरुद्ध पांति बांधी ॥ १३। तब एक नबी ने इस्राएल् के राजा अहाब् के पास जाकर कहा यहोवा तुझ से यों कहता है यह बड़ी भीड़ जो तू ने देखी है उस सब को मैं आज तेरे हाथ कर दूंगा इस से तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं ॥ १४। अहाब् ने पूछा किस के द्वारा उस ने कहा यहोवा यों कहता है कि प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों के द्वारा फिर उस ने पूछा युद्ध का कौन आरंभ करे उस ने उत्तर दिया तू ही ॥ १५। तब उस ने प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों की गिनती लिई और वे दो सौ बत्तीस निकले और उन के पीछे उस ने सब इस्राएली लोगों की गिनती लिई और वे सात हजार हुए ॥ १६। ये दोपहर को निकल गये उस समय बेन्हदद् अपने सहायक बत्तीसों राजाओं समेत डेरों में दारू पीकर मतवाला हो रहा था ॥ १७। सो प्रदेशों के हाकिमों के सेवक पहिले निकले तब बेन्हदद् ने दूत भेजे और उन्हों ने उस से कहा शोमरोन् से कुछ मनुष्य निकले आते हैं ॥ १८। उस ने कहा चाहे वे मेल करने को निकले हों चाहे लड़ने को तौभी उन्हें जीते ही पकड़ ले आओ ॥ १९। जो प्रदेशों के हाकिमों के सेवक और उन के पीछे की सेना के सिपाही नगर से निकले ॥ २०। और वे अपने अपने साम्हने के पुरुष को मारने लगे और अरामी भागे और इस्राएल् उन के पीछे पड़ा और अराम् का राजा बेन्हदद् सवारों के संग घोड़े पर चढ़ा और भागकर बच गया ॥ २१। तब इस्राएल् के राजा ने भी निकलकर घोड़ों और रथों को मारा और अरामियों को बड़ी मार से मारा ॥ २२। तब उस नबी ने इस्राएल् के राजा के पास जाकर कहा जाकर लड़ाई के लिये अपने को दृढ़ कर और सचेत होकर सोच कि क्या करना है क्योंकि नये बरस के लगते ही अराम् का राजा फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा ॥

२३। तब अराम् के राजा के कर्म्मचारियों ने उस से कहा उन लोगों का देवता पहाड़ी देवता है इस कारण वे हम पर प्रबल हुए सो हम उन से चौरस भूमि पर लड़ें तो निश्चय हम उन पर प्रबल हो जाएंगे ॥ २४। और यह भी काम कर अर्थात् सब राजाओं का पद ले ले और उन के स्थान पर सेनापतियों को ठहरा दे ॥ २५। फिर एक और सेना अपने लिये गिन ले जो तेरी उस सेना के बराबर होए जो नाश हो गई है घोड़े के बदले घोड़ा और रथ के बदले रथ तब हम चौरस भूमि पर उन से लड़ें और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएंगे। उन की यह सम्मति मानकर बेन्हदद् ने वैसा ही किया ॥ २६। और नये बरस के लगते ही बेन्हदद् ने अरामियों को एकट्ठा किया और इस्राएल् से लड़ने के लिये अपेक् को गया ॥ २७। और इस्राएली भी एकट्ठे किये गये और उन के भोजन की तैयारी हुई तब वे उन का साम्हना करने को गये और इस्राएली उन के साम्हने डेरे डालकर बकरियों के दो छोटे झुण्ड से देख पड़े पर अरामियों से देश भर गया ॥ २८। तब परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल् के राजा के पास जाकर कहा यहोवा यों कहता है कि अरामियों ने यह कहा है कि यहोवा पहाड़ी देवता है पर नीची भूमि का नहीं है इस कारण मैं उस सारी बड़ी भीड़ को तेरे हाथ कर

दूंगा तब तुम जान लेगो कि मैं यहोवा हूं ॥ २९ । जब वे सात दिन आम्हने साम्हने डेरे डाले हुए रहे तब सातवें दिन लड़ाई होने लगी और एक दिन में इस्राएलियों ने एक लाख अरामी पियादे मार डाले ॥ ३० । जो बच गये सो अपेक् को भागकर नगर में घुसे और वहां उन बचे हुए लोगों में से सत्ताईस हजार पुरुष शहरपनाह के गिरने से दब मरे । बेन्हदद् भी भाग गया और नगर की एक भीतरी कोठरी में गया ॥ ३१ । तब उस के कर्म्मचारियों ने उस से कहा सुन हम ने तो सुना है कि इस्राएल् के घराने के राजा दयालु राजा होते हैं सो हमें कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बांधे इस्राएल् के राजा के पास जाने दे क्या जाने वह तेरा प्राण बचाए ॥ ३२ । सो वे कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बांध इस्राएल् के राजा के पास जाकर कहने लगे तेरा दास बेन्हदद् तुझ से कहता है मेरा प्राण छोड़ । राजा ने उत्तर दिया क्या वह अब लों जीता है वह तो मेरा भाई है ॥ ३३ । उन लोगों ने शकुन जानकर फुर्ती से बूझ लेने का यत्न किया कि यह उस के मन की बात है कि नहीं और कहा हां तेरा भाई बेन्हदद् । राजा ने कहा जाकर उस को ले आओ सो बेन्हदद् उस के पास निकल आया और उस ने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया ॥ ३४ । तब बेन्हदद ने उस से कहा जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिये थे उन को मैं फेर दूंगा और जैसे मेरे पिता ने शोमरोन् में अपने लिये सड़कें बनवाईं वैसे ही तू दमिश्क में सड़कें बनवाना अहाब ने कहा मैं इसी वाचा पर तुझे छोड़ देता हूं तब उस ने बेन्हदद् से वाचा बांधकर उसे छोड़ दिया ॥

३५ । इस के पीछे नबियों के चेलों में से एक जन ने यहोवा से वचन पाकर अपने संगी से कहा मुझे मार जब उस मनुष्य ने उसे मारने से नाह किई, ३६ । तब उस ने उस से कहा तू ने यहोवा का वचन नहीं माना इस कारण सुन ज्योंही तू मेरे पास से चला जाएगा त्योंहीं सिंह से मार डाला जाएगा । सो ज्योंहीं वह उस के पास से चला गया त्योंहीं उसे एक सिंह मिला और उस को मार डाला ॥ ३७ । फिर उस को दूसरा मनुष्य मिला और उस से भी उस ने कहा मुझे मार और उस ने उस को ऐसा मारा कि वह घायल हुआ ॥ ३८ । तब वह नबी चला गया और आंखों को पगड़ी से ढांपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग पर खड़ा रहा ॥ ३९ । जब राजा पास होकर जा रहा था तब उस ने उस की दोहाई देकर कहा जब तेरा दास युद्ध के बीच गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया और मुझ से कहा इस मनुष्य की चौकसी कर यदि यह किसी रीति छूट जाए तो उस के प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा नहीं तो किक्कार् भर चान्दी देना पड़ेगा ॥ ४० । पीछे तेरा दास इधर उधर काम में फंस गया फिर वह न मिला । इस्राएल् के राजा ने उस से कहा तेरा ऐसा ही न्याय होगा तू ने आप अपना न्याय किया है ॥ ४१ । नबी ने झट अपनी आंखों से पगड़ी उठाई तब इस्राएल् के राजा ने उसे चीन्ह लिया कि यह कोई नबी है ॥ ४२ । तब उस ने राजा से कहा यहोवा तुझ से यों कहता है इस लिये कि तू ने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया जिसे मैं ने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था[१] तुझे उस के प्राण की सन्ती अपना प्राण और उस की प्रजा की सन्ती अपनी प्रजा देनी पड़ेगी ॥ ४३ । तब इस्राएल् का राजा उदास और अनमना होकर घर की ओर चला और शोमरोन् को आया ॥

(नाबोत् की हत्या और ईश्वर का कोप.)

२१. नाबोत् नाम एक यिज्रेली की एक दाख की बारी शोमरोन् के राजा अहाब् के राजमन्दिर के पास यिज्रेल् में थी । इन बातों के पीछे, २ । अहाब् ने नाबोत् से कहा तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है सो उसे मुझे दे कि मैं उस में सागपात की बारी लगाऊं

(१) मूल में मेरे सत्यानाश के मनुष्य को हाथ से जाने दिया ।

और मैं उस के बदले तुझे उस से अच्छी एक बारी दूंगा नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उस का मोल दे दूंगा ॥ ३ । नाबोत् ने अहाब् से कहा यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग तुझे दूं ॥ ४ । यिज्रेली नाबोत् के इस वचन के कारण कि मैं तुझे अपने पुरखाओं का निज भाग न दूंगा अहाब् उदास और अनमना होकर अपने घर गया और बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर लिया और कुछ भोजन न किया ॥ ५ । तब उस की स्त्री ईज़ेबेल् ने उस के पास आकर पूछा तेरा मन क्यों ऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं करता ॥ ६ । उस ने कहा कारण यह है कि मैं ने यिज्रेली नाबोत् से कहा कि रुपैया लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे नहीं तो यदि तुझे भाए तो मैं उस की सन्ती दूसरी दाख की बारी दूंगा और उस ने कहा मैं अपनी दाख की बारी तुझे न दूंगा ॥ ७ । उस की स्त्री ईज़ेबेल् ने उस से कहा क्या तू इस्राएल् पर राज्य करता है कि नहीं उठकर भोजन कर और तेरा मन आनन्दित होए यिज्रेली नाबोत् की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूंगी ॥ ८ । तब उस ने अहाब् के नाम से चिट्ठी लिखकर उस की अंगूठी की छाप लगाकर उन पुरनियों और रईसों के पास भेज दिईं जो उसी नगर में नाबोत् के पड़ोस में रहते थे ॥ ९ । उस चिट्ठी में उस ने यों लिखा कि उपवास का प्रचार करो और नाबोत् को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाना ॥ १० । तब दो ओछे जनों को उस के साम्हने बैठाना जो साक्षी देकर उस से कहें तू ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा किई(१) तब तुम लोग उसे बाहर ले जाकर उस पर पत्थरवाह करना कि वह मर जाए ॥ ११ । ईज़ेबेल् की चिट्ठी में की आज्ञा के अनुसार करके नगर में रहनेहारे पुरनियों और रईसों ने, १२ । उपवास का प्रचार किया और नाबोत् को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाया ॥ १३ । तब दो ओछे जन आकर उस के सन्मुख बैठ गये और उन ओछे जनों ने लोगों साम्हने नाबोत् के विरुद्ध यह साक्षी दिई कि नाबोत् ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा किई इस पर उन्हों ने उसे नगर के बाहर ले जाकर उस पर पत्थरवाह किया और वह मर गया ॥ १४ । तब उन्हों ने ईज़ेबेल् के पास यह कहला भेजा कि नाबोत् पत्थरवाह करके मार डाला गया है ॥ १५ । यह सुनते ही कि नाबोत् पत्थरवाह करके मार डाला गया है ईज़ेबेल् ने अहाब् से कहा उठकर यिज्रेली नाबोत् की दाख की बारी को जिसे वह तुझे रुपैया लेकर देने से नट गया था अपने अधिकार में ले क्योंकि नाबोत् जीता नहीं वह मर गया है ॥ १६ । यिज्रेली नाबोत् की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब् उस की दाख की बारी अपने अधिकार में लेने के लिये वहां जाने को उठा ॥

१७ । तब यहोवा का यह वचन तिश्बी एलिय्याह् के पास पहुंचा कि, १८ । चल शोमरोन् में रहनेहारे इस्राएल् के राजा अहाब् से मिलने को जा वह तो नाबोत् की दाख की बारी में है उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां गया है ॥ १९ । और उस से यह कहना कि यहोवा यों कहता है कि क्या तू ने घात किया और अधिकारी भी बन बैठा फिर तू उस से यह भी कहना कि यहोवा यों कहता है कि जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत् का लोहू चाटा उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे ॥ २० । एलिय्याह् को देखकर अहाब् ने कहा हे मेरे शत्रु क्या तू ने मेरा पता लगाया है उस ने कहा हां लगाया तो है और इस का कारण यह है कि जो यहोवा के लेखे बुरा है उसे करने के लिये तू ने अपने को बेच डाला है ॥ २१ । मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा और अहाब् के घर के हर एक लड़के को और क्या बन्धुए क्या स्वाधीन इस्राएल् में हर एक रहनेहारे को भी नाश कर डालूंगा ॥ २२ । और मैं तेरा घराना नबात् के पुत्र यारोबाम् और अहिय्याह् के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा इस लिये कि तू ने मुझे रिस दिलाई और इस्राएल् से पाप कराया है ॥ २३ । और ईज़ेबेल् के

(१) मूल में ईश्वर को बिदा किया ।

विषय यहोवा यह कहता है कि यिज्रेल् के घुस के पास कुत्ते ईज़ेबेल् को खा डालेंगे ॥ २४ । अहाब् का जो कोई नगर में मर जाए उस को कुत्ते खा लेंगे और जो कोई मैदान में मर जाए उस को आकाश के पक्षी खा जाएंगे ॥ २५ । सचमुच अहाब् के तुल्य और कोई न था जो अपनी स्त्री ईज़ेबेल् के उसकाने से वह करने को जो यहोवा के लेखे बुरा है अपने को बेच डाला है ॥ २६ । वह तो उन एमोरियों की नाईं जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था अर्थात् मूरतों के पीछे चलता था ॥ २७ । एलिय्याह् के ये वचन सुनकर अहाब् ने अपने वस्त्र फाड़े और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने और दबे पांवों चलने लगा ॥ २८ । और यहोवा का यह वचन तिश्बी एलिय्याह् के पास पहुंचा कि, २९ । क्या तू ने देखा है कि अहाब् मेरे साम्हने दबा रहता है सो इस कारण कि वह मेरे साम्हने दबा रहता है मैं वह विपत्ति उस के जीते जी न डालूंगा उस के पुत्र के दिनों में मैं उस के घराने पर वह विपत्ति डालूंगा ॥

(अहाब् की मृत्यु)

२२. अरामी और इस्राएली तीन बरस लों आपस में बिन लड़े रहे ॥ २ । तब तीसरे बरस में यहूदा का राजा यहोशापात् इस्राएल् के राजा के यहां गया ॥ ३ । तब इस्राएल् के राजा ने अपने कर्म्मचारियों से कहा क्या तुम को मालूम है कि गिलाद् का रामोत् हमारा है फिर हम क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम् के राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते ॥ ४ । और उस ने यहोशापात् से पूछा क्या तू मेरे संग गिलाद् के रामोत् से लड़ने के लिये जाएगा यहोशापात् ने इस्राएल् के राजा को उत्तर दिया जैसा तू वैसा मैं भी हूं जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी भी प्रजा और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं ॥ ५ । फिर यहोशापात् ने इस्राएल् के राजा से कहा कि आज यहोवा की आज्ञा ले ॥ ६ । सो इस्राएल् के राजा ने नबियों को जो कोई चार सौ पुरुष थे एकट्ठा करके उन से पूछा क्या मैं गिलाद् के रामोत् से युद्ध करने को चढ़ाई करूं वा रुका रहूं उन्हों ने उत्तर दिया चढ़ाई कर क्योंकि प्रभु उस को राजा के हाथ कर देगा ॥ ७ । पर यहोशापात् ने पूछा क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें ॥ ८ । इस्राएल् के राजा ने यहोशापात् से कहा हां यिम्ला का पुत्र मीकायाह् एक पुरुष और है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं पर मैं उस से घिन रखता हूं क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की नबूवत करता है । यहोशापात् ने कहा राजा ऐसा न कहे ॥ ९ । तब इस्राएल् के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा यिम्ला के पुत्र मीकायाह् को फुर्ती से ले आ ॥ १० । इस्राएल् का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात् अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए शोमरोन् के फाटक में एक खुले स्थान में अपने अपने सिंहासन पर विराज रहे थे और सब नबी उन के साम्हने नबूवत कर रहे थे ॥ ११ । तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह् ने लोहे के सींग बनाकर कहा यहोवा यों कहता है कि इन से तू अरामियों को मारते मारते नाश कर डालेगा ॥ १२ । और सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत करके कहा गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर देगा ॥ १३ । और जो दूत मीकायाह् को बुलाने गया था उस ने उस से कहा सुन नबी-लोग एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं सो तेरी बातें उन की सी हों तू भी शुभ वचन कहना ॥ १४ । मीकायाह् ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह जो कुछ यहोवा मुझ से कहे सोई मैं कहूंगा ॥ १५ । जब वह राजा के पास आया तब राजा ने उस से पूछा हे मीकायाह् क्या हम गिलाद् के रामोत् से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करें वा रुके रहें उस ने उस को उत्तर दिया हां चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो और यहोवा उस को राजा के हाथ कर दे ॥ १६ । राजा ने उस से कहा मुझे कितनी बार तुझे किरिया धराकर चिताना होगा कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ

से सच ही कह ॥ १७ । मीकायाह् ने कहा मुझे सारा इस्राएल् विना चरवाहे की भेड़ बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तित्तर बित्तर देख पड़ा और यहोवा का यह वचन आया कि वे तो अनाथ हैं सो अपने अपने घर कुशलक्षेम से लौट जाएं ॥ १८ । तब इस्राएल् के राजा ने यहोशापात् से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की नबूवत करेगा ॥ १९ । मीकायाह् ने कहा इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उस के पास दहिने बायें खड़ी हुई स्वर्ग की सारी सेना देख पड़ी ॥ २० । तब यहोवा ने पूछा अहाब् को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा ॥ २१ । निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सन्मुख खड़ा हुआ और कहने लगा मैं उस को बहकाऊंगा यहोवा ने पूछा किस उपाय से ॥ २२ । उस ने कहा मैं जाकर उस के सब नबियों में पैठकर उन से झूठ बुलवाऊंगा[1] यहोवा ने कहा तेरा उस को बहकाना सुफल होगा जाकर ऐसा ही कर ॥ २३ । सो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब नबियों के मुंह में एक झूठ बोलनेहारा आत्मा पैठाया है और यहोवा ने तेरे विषय हानि की कही है ॥ २४ । तब कनाना के पुत्र सिद्किय्याह् ने मीकायाह् के निकट जा उस के गाल पर थपेड़ा मारके पूछा यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया ॥ २५ । मीकायाह् ने कहा जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा तब जानेगा ॥ २६ । इस पर इस्राएल् के राजा ने कहा मीकायाह् को नगर के हाकिम आमोन् और योआश् राजकुमार के पास लौटाकर. २७ । उन से कह राजा यों कहता है कि इस को बन्दीगृह में डालो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों इसे दुख की रोटी और पानी दिया करो ॥ २८ । और मीकायाह् ने कहा यदि तू कभी कुशल से लौटे तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा । फिर उस ने कहा हे देश देश के लोगो तुम सब के सब सुन रक्खो ॥

२९ । तब इस्राएल् के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात् दोनों ने गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई किई ॥ ३० । और इस्राएल् के राजा ने यहोशापात से कहा मैं तो भेष बदलकर लड़ाई में जाऊंगा पर तू अपने ही वस्त्र पहिने रह सो इस्राएल् का राजा भेष बदलकर लड़ाई में गया ॥ ३१ । और अराम् के राजा ने तो अपने रथों के बत्तीसों प्रधानों को आज्ञा दिई थी कि न तो छोटे से लड़ो न बड़े से केवल इस्राएल् के राजा से लड़ो ॥ ३२ । सो जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात् को देखा तब कहा निश्चय इस्राएल् का राजा वही है और वे उसी से लड़ने को मुड़े सो यहोशापात् चिल्ला उठा ॥ ३३ । यह देखकर कि वह इस्राएल् का राजा नहीं है रथों के प्रधान उस का पीछा छोड़कर लौट गये ॥ ३४ । तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल् के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा सो उस ने अपने सारथी से कहा मैं घायल हुआ सो बाग[1] फेरके मुझे सेना में से बाहर ले चल ॥ ३५ । और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और राजा अपने रथ में औरों के सहारे अरामियों के सन्मुख खड़ा रहा और सांझ को मर गया और उस के घाव का लोहू बहकर रथ के पौदान में भर गया ॥ ३६ । सूर्य्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई कि हर एक अपने नगर और अपने देश को लौट जाए ॥ ३७ । जब राजा मर गया तब शोमरोन् को पहुंचाया गया और शोमरोन् में उसे मिट्टी दिई गई ॥ ३८ । और यहोवा के वचन के अनुसार जब उस का रथ शोमरोन् के पोखरे में धोया गया तब कुत्तों ने उस का लोहू चाट लिया और वेश्याएं नहा रही थीं ॥ ३९ । अहाब् के और सब काम जो उस ने किये और हाथीदांत का जो भवन उस ने बनाया और जो जो नगर उस ने बसाये यह सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ४० । निदान अहाब् अपने पुरखाओं के संग

(१) मूल में, झूठा आत्मा हूंगा ।

(१) मूल में अपना हाथ ।

सोया और उस का पुत्र अहज्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(यहोशापात् का राज्य.)

४१। इस्राएल् के राजा अहाब् के चौथे बरस में आसा का पुत्र यहोशापात् यहूदा पर राजा हुआ ॥ ४२। जब यहोशापात् राज्य करने लगा तब वह पैंतीस बरस का था और पचीस बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अजूबा था जो शिल्ही की बेटी थी ॥ ४३। और उस की चाल सब प्रकार से उस के पिता आसा की सी थी अर्थात् जो यहोवा के लेखे मे ठीक है सोई वह करता रहा और उस से कुछ न मुड़ा। तौभी ऊंचे स्थान ढाये न गये प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर तब भी बलि किया और धूप जलाया करते थे ॥ ४४। यहोशापात् ने इस्राएल् के राजा से मेल किया ॥ ४५। और यहोशापात् के काम और जो बीरता उस ने दिखाई और उस ने जो जो लड़ाइयां किईं यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ४६। पुरुषगामियों में से जो उस के पिता आसा के दिनों में रह गये थे उन को उस ने देश में से नाश किया ॥ ४७। उस समय एदोम् मे कोई राजा न था एक नाइब राज्य का काम करता था ॥ ४८। फिर यहोशापात् ने तर्शीश् के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर् जाने को बनवा लिये पर वे एस्योन्गेबेर् में टूट गये सो वहां न जा सके ॥ ४९। तब अहाब् के पुत्र अहज्याह् ने यहोशापात् से कहा मेरे जहाजियों को अपने जहाजियों के संग जहाजों में जाने दे पर यहोशापात् ने नाह कर दिई ॥ ५०। निदान यहोशापात् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पुरखाओं के बीच उस के मूलपुरुष दाऊद के पुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र यहोराम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(अहज्याह का राज्य)

५१। यहूदा के राजा यहोशापात् के सत्रहवें बरस में अहाब् का पुत्र अहज्याह् शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों इस्राएल् पर राज्य करता रहा ॥ ५२। और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और उस की चाल उस के माता पिता और नबात् के पुत्र यारोबाम् की सी थी जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था ॥ ५३। जैसे उस का पिता बाल् की उपासना और उसे दण्डवत् करने से इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाता रहा वैसे ही अहज्याह् भी करता रहा ॥

राजाओं के वृत्तान्त का दूसरा भाग।

(अहज्याह की मृत्यु)

१. अहाब् के मरने के पीछे मोआब् इस्राएल् से फिर गया ॥ २। और अहज्याह् एक झिलमिलीदार खिड़की में से जो शोमरोन् में उस की अटारी में थी गिर पड़ा और पीड़ित हुआ सो उस ने दूतों को यह कहकर भेजा कि तुम जाकर एक्रोन् के बाल्जबूब[१] नाम देवता से यह पूछ आओ कि क्या मैं इस पीड़ा से बचूंगा कि नहीं ॥ ३। तब यहोवा के दूत ने तिश्बी एलिय्याह् से कहा उठकर शोमरोन् के राजा के दूतों से मिलने को जा और उन से कह क्या इस्रा-

(१) अर्थात् मक्खियों का नाथ।

एल् में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एक्रोन् के बाल्-जबूब् देवता से पूछने जाते हो ॥ ४। सो यहोवा तुझ से यों कहता है कि जिस पलंग पर तू पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ही जाएगा सो एलिय्याह् चला गया ॥ ५। जब अहज्याह के दूत उस के पास लौट आये तब उस ने उन से पूछा तुम क्यों लौट आये हो ॥ ६। उन्हों ने उस से कहा कि एक मनुष्य हम से मिलने को आया और कहा कि जिस राजा ने तुम को भेजा उस के पास लौटकर कहो यहोवा यों कहता है कि क्या इस्राएल् में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एक्रोन् के बाल्जबूब् देवता से पूछने को भेजता है इस कारण जिस पलंग पर तू पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ही जाएगा ॥ ७। उस ने उन से पूछा जो मनुष्य तुम से मिलने को आया और तुम से ये बातें कहीं उस का कैसा ढंग था ॥ ८। उन्हों ने उस को उत्तर दिया वह तो रोंआर मनुष्य और अपनी कमर में चमड़े का फेंटा बांधे हुए था उस ने कहा वह तिशबी एलिय्याह् होगा ॥ ९। तब उस ने उस के पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को उस के पचासों सिपाहियों समेत भेजा। प्रधान ने उस के पास जाकर क्या देखा कि वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। और उस ने उस से कहा हे परमेश्वर के जन राजा ने कहा है कि उतर आ ॥ १०। एलिय्याह् ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से कहा यदि मैं परमेश्वर का जन हूं तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले। तब आकाश से आग गिरी और उस से वह अपने पचासों समेत भस्म हो गया ॥ ११। फिर राजा ने उस के पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया। प्रधान ने उस से कहा हे परमेश्वर के जन राजा ने कहा है कि फुर्ती से उतर आ ॥ १२। एलिय्याह् ने उत्तर देकर उन से कहा यदि मैं परमेश्वर का जन हूं तो आकाश से आग गिरके तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले तब आकाश से परमेश्वर की आग गिरी और उस से वह अपने पचासों समेत भस्म हो गया ॥ १३। फिर राजा ने तीसरी बार पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया और पचास का वह तीसरा प्रधान चढ़कर एलिय्याह् के साम्हने घुटनों के बल गिरा और गिड़गिड़ाहट के साथ उस से कहने लगा हे परमेश्वर के जन मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरे लेखे अनमोल ठहरें ॥ १४। पचास पचास सिपाहियों के जो दो प्रधान अपने अपने पचासों समेत पहिले आये थे उन को तो आग ने आकाश से गिरकर भस्म कर डाला पर अब मेरा प्राण तेरे लेखे अनमोल ठहरे ॥ १५। तब यहोवा के दूत ने एलिय्याह् से कहा उस के संग नीचे जा उस से मत डर तब एलिय्याह् उठकर उस के संग राजा के पास नीचे गया, १६। और उस से कहा यहोवा यों कहता है कि तू ने तो एक्रोन् के बाल्जबूब् देवता से पूछने को दूत भेजे सो क्या इस्राएल् में कोई परमेश्वर नहीं कि जिस से तू पूछ सके इस कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ही जाएगा ॥ १७। यहोवा के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह् ने कहा था वह मर गया। और उस के निपुत्र होने के कारण योराम् उस के स्थान पर यहूदा के राजा यहोशापात् के पुत्र यहोराम् के दूसरे बरस में राजा हुआ ॥ १८। अहज्याह् के और काम जो उस ने किये सो क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥

(एलिय्याह् का स्वर्गारोहण)

२. जब यहोवा एलिय्याह् को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था तब एलिय्याह् और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल् से चले ॥ २। एलिय्याह् ने एलीशा से कहा यहोवा मुझे बेतेल् तक भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह एलीशा ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सौंह मैं तुझे नहीं छोड़ने का सो वे बेतेल् को चले गये ॥ ३। और बेतेल्वासी नबियों के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है उस ने कहा हां मुझे भी यह मालूम है तुम

चुप रहो ॥ ४ । और एलिय्याह् ने उस से कहा हे एलीशा यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह उस ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे नहीं छोड़ने का सो वे यरीहो को आये ॥ ५ । और यरीहोवासी नबियों के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है उस ने उत्तर दिया हां मुझे भी मालूम है तुम चुप रहो ॥ ६ । फिर एलिय्याह् ने उस से कहा यहोवा मुझे यर्दन तक भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह उस ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे नहीं छोड़ने का सो वे दोनों आगे चले ॥ ७ । और नबियों के चेलों में से पचास जन जाकर उन के साम्हने दूर खड़े हुए और वे दोनों यर्दन के तीर खड़े हुए ॥ ८ । तब एलिय्याह् ने अपनी चद्दर पकड़कर ऐंठ लिई और जल पर मारी तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और वे दोनों स्थल ही स्थल पार गये ॥ ९ । उन के पार पहुंचने पर एलिय्याह् ने एलीशा से कहा उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं सो मांग एलीशा ने कहा तुझ में जो आत्मा है उस में से दूना भाग मुझे मिल जाए ॥ १० । एलिय्याह् ने कहा तू ने कठिन बात मांगी है तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के पीछे देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा नहीं तो न होगा ॥ ११ । वे चलते चलते बातें कर रहे थे कि अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया और एलिय्याह् बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया ॥ १२ । और इसे एलीशा देखता और पुकारता रहा कि हाय मेरे पिता हाय मेरे पिता हाय इस्राएल् के रथ और सवारो । जब वह उस को फिर देख न पड़ा तब उस ने अपने वस्त्र पकड़े और फाड़कर दो भाग कर दिये ॥ १३ फिर उस ने एलिय्याह् की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी थी और वह लौट गया और यर्दन के तीर पर खड़ा हो, १४ । एलिय्याह् की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी पकड़कर जल पर मारी और कहा एलिय्याह् का परमेश्वर यहोवा कहां है । जब उस ने जल पर मारा तब वह इधर उधर दो भाग हुआ और एलीशा पार गया ॥ १५ । उसे देखकर नबियों के चेले जो यरीहो में उस के साम्हने थे कहने लगे एलिय्याह् में जो आत्मा था वही एलीशा पर ठहर गया है सो उन्हों ने उस से मिलने को जाकर उस के साम्हने भूमि लों झुककर दण्डवत् किई ॥ १६ । तब उन्हों ने उस से कहा सुन तेरे दासों के पास पचास बलवान पुरुष हैं वे जाकर तेरे स्वामी को ढूंढ़ें क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उस को उठाकर किसी पहाड़ पर वा किसी तराई में डाल दिया हो । उस ने कहा मत भेजो ॥ १७ । जब उन्हों ने उस को दबाते दबाते निरुत्तर कर दिया तब उस ने कहा भेज दो सो उन्हों ने पचास पुरुष भेज दिये और वे उसे तीन दिन ढूंढ़ते रहे पर न पाया ॥ १८ । तब लों वह यरीहो में ठहरा रहा सो जब वे उस के पास लौट आये तब उस ने उन से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था मत जाओ ॥

(एलीशा के दो आश्चर्यकर्म)

१९ । उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा देख यह नगर मनभावने स्थान पर बसा है जैसा मेरा प्रभु देखता है पर पानी बुरा है और भूमि गर्भ गिरानेहारी है ॥ २० । उस ने कहा एक नई थाली में लोन डालकर मेरे पास ले आओ । जब वे उसे उस के पास ले आये, २१ । तब वह जल के सोते के पास निकल गया और उस में लोन डालकर कहा यहोवा यों कहता है कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूं सो वह फिर कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न होगा ॥ २२ । एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया और आज लों ऐसा ही है ॥

२३ । वहां से वह बेतेल् को चला और मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था कि नगर से छोटे लड़के निकलकर उस का ठट्ठा करके कहने लगे हे चन्दुए चढ़ जा हे चन्दुए चढ़ जा ॥ २४ । तब उस ने पीछे की ओर फिरकर उन पर दृष्टि किई और यहोवा के

नाम से उन को स्राप दिया तब बन में से दो रीछिनियों ने निकलकर उन में से बयालीस लड़के फाड़ डाले ॥ २४ । वहां से वह कर्म्मेल् को गया और फिर वहां से शोमरोन् को लौट गया ॥

(योराम् के राज्य का आरम्भ.)

३. यहूदा के राजा यहोशापात् के अठारहवें बरस में अहाब् का पुत्र यहोराम् शोमरोन् में राज्य करने लगा और बारह बरस लों राज्य करता रहा ॥ २ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है तौभी उस ने अपने माता पिता के बराबर नहीं किया बरन अपने पिता की बनवाई हुई बाल् की लाठ को दूर किया ॥ ३ । तौभी वह नबात् के पुत्र यारोबाम् के ऐसे पापों में जैसे उस ने इस्राएल् से भी कराये लिपटा रहा और उन से न फिरा ॥

(मोआब पर विजय)

४ । मोआब् का राजा मेशा बहुत सी भेड़ बकरियां रखता था और इस्राएल् के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़े कर की रीति से दिया करता था ॥ ५ । जब अहाब् मर गया तब मोआब् के राजा ने इस्राएल् के राजा से बलवा किया ॥ ६ । उस समय राजा यहोराम् ने शोमरोन् से निकलकर सारे इस्राएल् की गिनती लिई ॥ ७ । और उस ने जाकर यहूदा के राजा यहोशापात् के पास यों कहला भेजा कि मोआब् के राजा ने मुझ से बलवा किया है क्या तू मेरे संग मोआब् से लड़ने को चलेगा उस ने कहा हां मैं चलूंगा जैसा तू वैसा मैं जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी प्रजा और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे घोड़े हैं ॥ ८ । फिर उस ने पूछा हम किस मार्ग से जाएं उस ने उत्तर दिया एदोम् के जंगल होकर ॥ ९ । सो इस्राएल् का राजा और यहूदा का राजा और एदोम् का राजा चले और जब सात दिन लों घूमकर चल चुके तब सेना और उस के पीछे पीछे चलनेहारे पशुओं के लिये कुछ पानी नहीं मिला ॥ १० । और इस्राएल् के राजा ने कहा हाय यहोवा ने इन तीन राजाओं को इस लिये इकट्ठा किया कि उन को मोआब् के हाथ कर दे ॥ ११ । पर यहोशापात् ने कहा क्या यहां यहोवा का कोई नबी नहीं है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछें इस्राएल् के राजा के किसी कर्म्मचारी ने उत्तर देकर कहा हां शापात् का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह् के हाथों को धुलाया करता था वह तो यहां है ॥ १२ । तब यहोशापात् ने कहा उस के पास यहोवा का वचन पहुंचा करता है । सो इस्राएल् का राजा और यहोशापात् और एदोम् का राजा उस के पास गये ॥ १३ । तब एलीशा ने इस्राएल् के राजा से कहा मेरा तुझ से क्या काम है अपने पिता के नबियों और अपनी माता के नबियों के पास जा इस्राएल् के राजा ने उस से कहा ऐसा न कह क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इस लिये इकट्ठा किया कि इन को मोआब् के हाथ में कर दे ॥ १४ । एलीशा ने कहा सेनाओं का यहोवा जिस के सन्मुख मैं हाजिर रहा करता हूं उस के जीवन की सोंह यदि यहूदा के राजा यहोशापात् का आदरमान न करता तो मैं न तो तेरी ओर मुंह करता और न तुझ पर दृष्टि करता ॥ १५ । अब कोई बजानेहारा मेरे पास ले आओ । जब बजानेहारा बजाने लगा तब यहोवा की शक्ति[१] एलीशा पर हुई, १६ । और उस ने कहा इस नाले में तुम लोग इतना खोदो कि इस में गड़हे ही गड़हे हो जाएं ॥ १७ । क्योंकि यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे साम्हने न तो वायु चलेगी और न वर्षा होगी तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा और अपने गाय बैलों और और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे ॥ १८ । और इस को हलकी सी बात जानकर यहोवा मोआब् को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा ॥ १९ । तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश करना और सब अच्छे वृक्षों को काट डालना और जल के सब सोतों को भर देना और सब अच्छे खेतों में पत्थर फेंककर उन्हें बिगाड़ देना ॥ २० । बिहान को अन्नबलि चढ़ाने के समय एदोम् की ओर से जल यह आया और देश जल से भर गया ॥ २१ । यह सुनकर कि राजाओं ने हम से लड़ने को चढ़ाई

(१) मूल में, हाथ ।

किई है जितने मोआबियों की अवस्था हथियार बांधने के योग्य थी सो सब बुलाकर एकट्ठे किये गये और सिवाने पर खड़े हुए ॥ २२। बिहान को जब वे सबेरे उठे उस समय सूर्य्य की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ीं कि वह मोआबियों को परली ओर से लोहू सा लाल देख पड़ा ॥ २३। सो वे कहने लगे यह तो लोहू होगा निःसन्देह वे राजा एक दूसरे को मारके नाश हो गये हैं सो अब हे मोआबियो लूट लेने को जाओ ॥ २४। वे इस्राएल् की छावनी के पास आये ही थे कि इस्राएली उठकर मोआबियो को मारने लगे और वे उन से भाग गये और वे मोआब् को मारते मारते उन के देश में[1] पहुंच गये ॥ २५। और उन्हों ने नगरों को ढा दिया और सब अच्छे खेतों में एक एक पुरुष अपना अपना पत्थर डालकर उन्हें भर दिया और जल के सब सोतों को भर दिया और सब अच्छे अच्छे वृक्षों को काट डाला यहां तक कि कीर्हरेशेत् के पत्थर तो रह गये पर उस को भी चारों ओर गोफन चलानेहारों ने जाकर उस को मारा ॥ २६। यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले मोआब् के राजा ने सात सौ तलवार रखनेवाले पुरुष संग लेकर एदोम् के राजा तक पांति भेदकर पहुंचने का यत्न किया पर पहुंच न सका ॥ २७। तब उस ने अपने जेठे बेटे को जो उस के स्थान में राज्य करनेवाला था पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि चढ़ाया इस से इस्राएल् पर बड़ा ही कोप हुआ सो वे उसे छोड़कर अपने देश को लौट गये ॥

(एलीशा के चार आश्चर्य्यकर्म्म)

४. नबियों के चेलों की स्त्रियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा तेरा दास मेरा पति मर गया और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेहारा था और उस का व्यवहरिया मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये आया है ॥ २। एलीशा ने उस से पूछा मैं तेरे लिये क्या करूं मुझ से कह कि तेरे घर में क्या है उस ने कहा तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है ॥ ३। उस ने कहा तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से छूछे बरतन मांग ले आ, और थोड़े नहीं ॥ ४। फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा और द्वार बन्द करके उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना और जो भर जाए उन्हें अलग रखना ॥ ५। तब वह उस के पास से चली गई और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया तब वे तो उस के पास बरतन ले आते गये और वह उण्डेलती गई ॥ ६। जब बरतन भर गये तब उस ने अपने बेटे से कहा मेरे पास एक और भी ले आ उस ने उस से कहा और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया ॥ ७। तब उस ने जाकर परमेश्वर के जन को यह बता दिया और उस ने कहा जा तेल बेचकर ऋण भर दे और जो रह जाए उस से तू अपने बेटों सहित अपना निर्वाह करना ॥

८। फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम् को गया जहां एक कुलीन स्त्री थी और उस ने उसे रोटी खाने के लिये बिनती करके दबाया और जब जब वह उधर से जाता तब तब वह वहां रोटी खाने को उतरता था ॥ ९। और उस स्त्री ने अपने पति से कहा सुन यह जो बार बार हमारे यहां से होकर जाया करता है सो मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र जन जान पड़ता है ॥ १०। सो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं और उस में उस के लिये एक खाट एक मेज एक कुर्सी और एक दीवट रक्खें कि जब जब वह हमारे यहां आए तब तब उसी में टिका करे ॥ ११। एक दिन की बात है कि वह वहां जाकर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में सो गया ॥ १२। और उस ने अपने सेवक गेहजी से कहा उस शूनेमिन को बुला ले। जब उस के बुलाने से वह उस के साम्हने खड़ी हुई, १३। तब उस ने गेहजी से कहा इस से कह कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता किई है सो तेरे लिये क्या किया जाए क्या तेरी चर्चा राजा वा प्रधान सेनापति से किई जाए। उस ने उत्तर

(१) मूल में उस में।

दिया मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं ॥ १४ । फिर उस ने कहा तो इस के लिये क्या किया जाए । गेहजी ने उत्तर दिया निश्चय उस के कोई लड़का नहीं और उस का पति बूढ़ा है ॥ १५ । उस ने कहा उस को बुला ले और जब उस ने उसे बुलाया तब वह द्वार में खड़ी हुई ॥ १६ । तब उस ने कहा वसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी स्त्री ने कहा हे मेरे प्रभु हे परमेश्वर के जन ऐसा नहीं अपनी दासी को धोखा न दे ॥ १७ । और स्त्री को गर्भ रहा और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था उसी समय जब दिन पूरे हुए तब वह बेटा जनी ॥ १८ । और जब लड़का बड़ा हो गया तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवनेहारों के निकट निकल गया ॥ १९ । और उस ने अपने पिता से कहा आह मेरा सिर आह मेरा सिर तब पिता ने अपने सेवक से कहा इस को इस की माता के पास ले जा ॥ २० । वह उसे उठाकर उस की माता के पास ले गया फिर वह दोपहर लों उस के घुटनों पर बैठा रहा तब मर गया ॥ २१ । तब उस ने चढ़कर उस को परमेश्वर के जन की खाट पर लिटा दिया और निकलकर किवाड़ बन्द किया तब उतर गई ॥ २२ । और उस ने अपने पति से पुकारकर कहा मेरे पास एक सेवक और एक गदही भेज दे कि मैं परमेश्वर के जन के यहां झट हो आऊं ॥ २३ । उस ने कहा आज तू उस के यहां क्यों जाएगी आज न तो नये चांद का और न विश्राम का दिन है उस ने कहा कल्याण होगा[1] ॥ २४ । तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बांधकर अपने सेवक से कहा हांके चल और मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना ॥ २५ । सो वह चलते चलते कर्मेल पर्वत को परमेश्वर के जन के निकट पहुंची । उसे दूर से देखकर परमेश्वर के जन ने अपने सेवक गेहजी से कहा देख उधर तो वह शूनेमिन है ॥ २६ । अब उस से मिलने को दौड़ जा और उस से पूछ कि तू कुशल से है तेरा पति भी कुशल से है और लड़का भी कुशल से है । पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया हां कुशल से हैं ॥ २७ । वह पहाड़ पर परमेश्वर के जन के पास पहुंची और उस के पांव पकड़ने लगी तब गेहजी उस के पास गया कि उसे धक्का देकर हटाए परन्तु परमेश्वर के जन ने कहा उसे छोड़ दे उस का मन व्याकुल है पर यहोवा ने मुझ को नहीं बता दिया छिपा ही रक्खा है ॥ २८ । तब वह कहने लगी क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था क्या मैं ने न कहा था मुझे धोखा न दे ॥ २९ । तब एलीशा ने गेहजी से कहा अपनी कमर बांध और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उस का कुशल न पूछना और कोई तेरा कुशल पूछे तो उस को उत्तर न देना और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुंह पर धर देना ॥ ३० । तब लड़के की मा ने एलीशा से कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे न छोड़ूंगी सो वह उठकर उस के पीछे पीछे चला ॥ ३१ । उन से आगे बढ़कर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रक्खा पर कोई शब्द सुन न पड़ा और न उस ने कान लगाया सो वह एलीशा से मिलने को लौट आया और उस को बतला दिया कि लड़का नहीं जागा ॥ ३२ । जब एलीशा घर में आया तब क्या देखा कि लड़का मरा हुआ मेरी खाट पर पड़ा है ॥ ३३ । सो उस ने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द किया और यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ३४ । तब वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उस के मुंह से अपनी आंखें उस की आंखों से और अपने हाथ उस के हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया तब लड़के की देह गर्माने लगी ॥ ३५ । और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर टहलने लगा और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया तब लड़का सात बार छींका और अपनी आंखें खोलीं ॥ ३६ । तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा शूनेमिन को बुला ले जब उस के बुलाने से वह उस के पास आई तब उस ने कहा अपने बेटे को उठा ले ॥ ३७ । वह भीतर गई और उस के पांवों पर गिर भूमि लों झुककर दण्डवत किई फिर अपने बेटे को उठाकर निकल गई ॥

(१) मूल में, उस ने कहा कुशल ।

३८। और एलीशा गिल्गाल् को लौट गया। उस समय देश में अकाल था और नबियों के चेले उस के साम्हने बैठे हुए थे और उस ने अपने सेवक से कहा हण्डा चढ़ाकर नबियों के चेलों के लिये कुछ सिझा॥ ३९। तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया और कोई बनैली लता पाकर अपनी अंकवार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया और फांक फांक करके सिझाने के हण्डे में डाल दिया और वे उस को न चीन्हते थे॥ ४०। सो उन्हों ने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे हे परमेश्वर के जन हण्डे में माहुर[१] है और वे उस में से खा न सके॥ ४१। तब एलीशा ने कहा अच्छा कुछ मैदा ले आओ तब उस ने उसे हण्डे में डालकर कहा उन लोगों के खाने के लिये परोस दे फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही॥

४२। और कोई मनुष्य बाल्शालीशा से पहिले उपजे हुए जव की बीस रोटियां और अपनी बोरी में हरी बालें परमेश्वर के जन के पास ले आया सो एलीशा ने कहा उन लोगों को खाने के लिये दे॥ ४३। उस के टहलुए ने कहा क्यों मैं सौ मनुष्यों के साम्हने इतना ही धर दूं उस ने कहा लोगों को दे दे कि खाएं क्योंकि यहोवा यों कहता है उन के खाने पर कुछ बच भी जाएगा॥ ४४। तब उस ने उन के आगे धर दिया और यहोवा के वचन के अनुसार उन के खाने पर कुछ बच भी गया॥

(नामान् कोढ़ी का शुद्ध किया जाना)

५. अराम् के राजा का नामान् नाम सेनापति अपने स्वामी के लेखे बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था क्योंकि यहोवा ने उस के द्वारा अरामियों का विजय किया था और यह शूरवीर था पर कोढ़ी था॥ २। अरामी लोग दल बांध इस्राएल् के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बंधुई करके ले आये थे और वह नामान् की स्त्री की टहलुइन हो गई॥ ३। उस ने अपनी स्वामिन से कहा जो मेरा स्वामी शोमरोन् के नबी के पास होता तो क्या ही अच्छा होता क्योंकि वह उस को कोढ़ से चंगा कर देता॥ ४। सो किसी ने उस के प्रभु के पास जाकर कह दिया कि इस्राएली लड़की यों यों कहती है॥ ५। अराम् के राजा ने कहा तू जा मैं इस्राएल् के राजा के पास एक पत्र भेजूंगा सो वह दस किक्कार् चान्दी और छः हजार टुकड़े सोना और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर चल दिया॥ ६। और वह इस्राएल् के राजा के पास वह पत्र ले गया जिस में यह लिखा था कि जब यह पत्र तुझे मिले तब जानना कि मैं ने नामान् नाम अपने एक कर्म्मचारी को तेरे पास इस लिये भेजा है कि तू उस का कोढ़ दूर कर दे॥ ७। इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल् का राजा अपने वस्त्र फाड़कर बोला क्या मैं मारनेहारा और जिलानेहारा परमेश्वर हूं कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इस लिये भेजा है कि मैं उस का कोढ़ दूर करूं, सोच विचार करो कि वह मुझ से झगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा॥ ८। यह सुनकर कि इस्राएल् के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं परमेश्वर के जन एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा कि तू ने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं वह मेरे पास आए तब जान लेगा कि इस्राएल् में नबी तो है॥ ९। सो नामान् घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ॥ १०। तब एलीशा ने एक दूत से उस के पास यह कहला भेजा कि तू जाकर यर्दन में सात बार डुबकी मार तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा और तू शुद्ध होगा॥ ११। पर नामान् कोपित हो यह कहता हुआ चला गया कि मैं ने तो सोचा था कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा और खड़ा हो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा॥ १२। क्या दमिश्क् की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल् के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता। सो वह फिरके जलजलाहट से भरा हुआ चला गया॥ १३। तब उस के सेवक पास आकर कहने लगे हे हमारे पिता यदि नबी

(१) मूल में मृत्यु।

तुझे कोई भारी काम बताता तो क्या तू उसे न करता फिर क्यों नहीं जब वह कहता है कि स्नान करके शुद्ध हो॥ १४। तब उस ने परमेश्वर के जन के कहे के अनुसार यर्दन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी और उस का शरीर छोटे लड़के का सा हो गया और वह शुद्ध हुआ ॥ १५। तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के जन के यहां लौट गया और उस के सन्मुख खड़ा होकर कहने लगा सुन अब मैं ने जान लिया है कि सारी पृथिवी में इस्राएल् को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है सो अब अपने दास की भेंट ग्रहण कर ॥ १६। एलीशा ने कहा यहोवा जिस के सन्मुख में हाजिर रहता हूं उस के जीवन की सोंह मैं कुछ भेंट न लूंगा और जब उस ने उस को बहुत दबाया कि उसे ग्रहण करे तब भी वह नाह ही करता रहा ॥ १७। तब नामान् ने कहा अच्छा तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी मिले क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी ईश्वर को होमबलि वा मेलबलि न चढ़ाएगा ॥ १८। एक बात तो यहोवा तेरे दास के लिये क्षमा करे कि जब मेरा स्वामी रिम्मोन् के भवन में दण्डवत् करने को जाए और वह मेरे हाथ का सहारा ले और यों मुझे भी रिम्मोन् के भवन में दण्डवत् करनी पड़े तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा करे कि मैं रिम्मोन के भवन में दण्डवत् करूं॥ १९। उस ने उस से कहा कुशल से विदा हो। वह उस के यहां से थोड़ी दूर चला गया था कि. २०। परमेश्वर के जन एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा कि मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया था उस को उस ने न लिया पर यहोवा के जीवन की सोंह मैं उस के पीछे दौड़कर उस से कुछ न कुछ लूंगा ॥ २१। तब गेहजी नामान् के पीछे दौड़ा और नामान् किसी को अपने पीछे दौड़ता हुआ देखकर उस से मिलने को रथ से उतर पड़ा और पूछा सब कुशल क्षेम तो है ॥ २२। उस ने कहा हां सब कुशल है पर मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है कि एप्रैम् के पहाड़ी देश से नबियों के चेलों में से दो जवान मेरे यहां अभी आये हैं सो उन के लिये एक किक्कार् चान्दी और दो जोड़े वस्त्र दे ॥ २३। नामान् ने कहा दो किक्कार लेने को प्रसन्न हो तब उस ने उस से बहुत बिनती करके दो किक्कार् चान्दी अलग थैलियों में बांधकर दो जोड़े वस्त्र समेत अपने दो सेवकों पर लाद दिया और वे उन्हें उस के आगे आगे ले चले ॥ २४। जब वह टीले के पास पहुंचा तब उन वस्तुओं को उन से लेकर घर में रख दिया और उन मनुष्यों को बिदा किया सो वे चले गये॥ २५। और वह भीतर जाकर अपने स्वामी के साम्हने खड़ा हुआ। एलीशा ने उस से पूछा हे गेहजी तू कहां से आता है उस ने कहा तेरा दास तो कहीं नहीं गया ॥ २६। उस ने उस से कहा जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा तब वह सारा हाल मुझे मालूम था[1] क्या यह समय चान्दी वा वस्त्र वा जलपाई वा दाख की बारियां भेड़ बकरियां गाय बैल और दास दासी लेने का है ॥ २७। इस कारण से नामान् का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। सो वह हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर उस के साम्हने से चला गया॥

(एलीशा का एक आश्चर्य्यकर्म्म.)

६. और नबियों के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा यह स्थान जिस में हम तेरे साम्हने रहते हैं सो हमारे लिये सकेत है ॥ २। सो हम यर्दन तक जाएं और वहां से एक एक बल्ली लेकर वहां अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें उस ने कहा अच्छा जाओ ॥ ३। तब किसी ने कहा अपने दासों के संग चलने को प्रसन्न हो उस ने कहा चलता हूं ॥ ४। सो वह उन के संग चला और वे यर्दन के तीर पहुंचकर लकड़ी काटने लगे ॥ ५। पर एक जन बल्ली काट रहा था कि कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई सो वह चिल्लाकर कहने लगा हाय मेरे प्रभु वह तो मंगनी की थी ॥ ६। परमेश्वर के जन ने पूछा वह कहां गिरी जब उस ने स्थान दिखाया तब उस ने

(१) मूल में क्या मेरा मन न गया।

एक लकड़ी काटकर वहां डाल दिई और वह लोहा उतराने लगा ॥ ७ । उस ने कहा उसे उठा ले सो उस ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया ॥

(एलीशा का अरामी दल से बचना)

८ । और अराम् का राजा इस्राएल् से युद्ध कर रहा था और सम्मति करके अपने कर्म्मचारियों से कहा कि फुलाने स्थान पर मेरी छावनी होगी ॥ ९ । तब परमेश्वर के जन ने इस्राएल् के राजा के पास कहला भेजा कि चौकसी कर और फुलाने स्थान होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करनेवाले हैं ॥ १० । तब इस्राएल् के राजा ने उस स्थान को जिस की चर्चा करके परमेश्वर के जन ने उसे चिताया था भेजकर अपनी रक्षा किई और यह दो एक बार नहीं बहुत बार हुआ ॥ ११ । इस कारण अराम् के राजा का मन बहुत घबरा गया सो उस ने अपने कर्म्मचारियों को बुलाकर उन से पूछा क्या तुम मुझे न बता दोगे कि हमारे लोगों में से कौन इस्राएल् के राजा की ओर का है ॥ १२ । उस के एक कर्म्मचारी ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा ऐसा नहीं एलीशा जो इस्राएल् में नबी है वह इस्राएल् के राजा को वे बातें भी बताया करता है जो तू शयन की कोठरी में बोलता है ॥ १३ । राजा ने कहा जाकर देखो कि वह कहां है तब मैं भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। जब उस को यह समाचार मिला कि वह दोतान् में है, १४ । तब उस ने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा और उन्हों ने रात को आकर नगर को घेर लिया ॥ १५ । भोर को परमेश्वर के जन का टहलुआ उठ निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे है सो उस के सेवक ने उस से कहा हाय मेरे स्वामी हम क्या करें ॥ १६ । उस ने कहा मत डर क्योंकि जो हमारी ओर हैं सो उन से अधिक हैं जो उन की ओर हैं ॥ १७ । तब एलीशा ने यह प्रार्थना किई कि हे यहोवा इस की आंखें खोल दे कि यह देख सके सो यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दिईं और जब वह देख सका तब क्या देखा कि एलीशा की चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है ॥ १८ । जब अरामी उस के पास आये तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना किई कि इस गोल को अन्धा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उस ने उन्हें अन्धा कर डाला ॥ १९ । तब एलीशा ने उन से कहा यह तो मार्ग नहीं है और न यह नगर है मेरे पीछे हो लो मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम खोजते हो पहुंचाऊंगा तब उस ने उन्हें शोमरोन् को पहुंचा दिया ॥ २० । जब वे शोमरोन् में आ गये तब एलीशा ने कहा हे यहोवा इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें सो यहोवा ने उन की आंखें खोलीं और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम शोमरोन् के बीच हैं ॥ २१ । उन को देखकर इस्राएल् के राजा ने एलीशा से कहा हे मेरे पिता क्या मैं इन को मार लूं मार ॥ २२ । उस ने उत्तर दिया मत मार क्या तू अपनी तलवार और धनुष के बन्धुओं को मार लेता है। इन को अन्न जल दे कि खा पीकर अपने स्वामी के पास चले जाएं ॥ २३ । तब उस ने उन के लिये बड़ी जेवनार किई और जब वे खा पी चुके तब उस ने उन्हें बिदा किया और वे अपने स्वामी के पास चले गये । इस के पीछे अराम् के दल फिर इस्राएल् के देश में न आये ॥

(शोमरोन् में बड़ी महंगी का होना और छूट जाना.)

२४ । पर इस के पीछे अराम् का राजा बेन्हदद् ने अपनी सारी सेना एकट्ठी करके शोमरोन् पर चढ़ाई किई और उस को घेर लिया ॥ २५ । सो शोमरोन् में बड़ी महंगी हुई और वह यहां लों घिरा रहा कि अन्त में एक गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ों में और कब् की चौथाई भर कबूतर की बीट पांच टुकड़े चान्दी तक बिकने लगी ॥ २६ । और इस्राएल् का राजा शहरपनाह पर टहल रहा था कि एक स्त्री ने पुकारके उस से कहा हे प्रभु हे राजा बचा ॥ २७ । उस ने कहा यदि यहोवा तुझे न बचाए तो मैं कहां से तुझे बचाऊं क्या खलिहान में से वा दाखरस के कुण्ड में से ॥ २८ । फिर राजा ने उस से पूछा तुझे क्या हुआ उस ने उत्तर दिया इस स्त्री ने मुझ से कहा था मुझे अपना बेटा दे कि

हम आज उसे खा लें फिर कल मैं अपना बेटा दूंगी और हम उसे भी खाएंगी ॥ २९ । सो मेरा बेटा सिझाकर हम ने खा लिया फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें तब इस ने अपने बेटे को छिपा रक्खा ॥ ३० । उस स्त्री की ये बातें सुनते ही राजा ने अपने वस्त्र फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा था) सो जब लोगों ने देखा तब उन को यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहिने है ॥ ३१ । तब वह बोल उठा यदि मैं शापात् के पुत्र एलीशा का सिर आज उस के धड़ पर रहने दूं तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से अधिक भी करे ॥ ३२ । इतने में एलीशा अपने घर में बैठा हुआ था और पुरनिये भी उस के संग बैठे थे सो जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा तब उस दूत के पहुंचने से पहिले उस ने पुरनियों से कहा देखो कि इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है सो जब वह दूत आए तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना क्या उस के स्वामी के पांव की आहट उस के पीछे नहीं सुन पड़ती ॥ ३३ । वह उन से यों बातें कर ही रहा था कि दूत उस के यहां आ पहुंचा । और राजा कहने लगा यह विपत्ति यहोवा की ओर से है सो मैं आगे को भी यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूं ॥ १ । तब एलीशा

७. ने कहा यहोवा का वचन सुनो यहोवा यों कहता है कि कल इसी समय शोमरोन् के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल् में और दो सआ जव भी शेकेल् में बिकेगा ॥ २ । तब उस सरदार ने जिस के हाथ पर राजा टेक लगाये था परमेश्वर के जन को उत्तर देकर कहा सुन चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी उस ने कहा सुन तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा पर उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा ॥

३ । और चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे वे आपस में कहने लगे हम क्यों यहां बैठे बैठे मर जाएं ॥ ४ । यदि हम कहें कि नगर में जाएं तो वहां मर जाएंगे क्योंकि वहां महंगी पड़ी है और जो हम यहीं बैठे रहें तौभी मर ही जाएंगे सो आओ हम अराम् की सेना में पकड़े जाएं यदि वे हम को जिलाये रक्खें तो हम जीते रहेंगे और यदि वे हम को मार डालें तौभी हम को मरना ही है ॥ ५ । सो वे सांझ को अराम् की छावनी में जाने को चले और अराम् की छावनी की छोर पर पहुंचकर क्या देखा कि वहां कोई नहीं है ॥ ६ । क्योंकि प्रभु ने अराम् की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी सो वे आपस में कहने लगे थे कि सुनो इस्राएल् के राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं को वेतन पर बुलवाया कि हम पर चढ़ाई करें ॥ ७ । सो वे सांझ को उठकर ऐसे भाग गये कि अपने डेरे घोड़े गदहे और छावनी जैसी की तैसी छोड़ छाड़ अपना अपना प्राण लेकर भाग गये ॥ ८ । सो जब वे कोढ़ी छावनी की छोर के डेरों के पास पहुंचे तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया और उस में से चान्दी सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा रक्खा फिर लौटकर दूसरे डेरे में पैठे और उस में से भी ले जाकर छिपा रक्खा ॥ ९ । तब वे आपस में कहने लगे जो हम कर रहे हैं सो अच्छा काम नहीं है यह आनन्द के समाचार का दिन है पर हम किसी को नहीं बताते। जो हम पह फटने लों ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें ॥ १० । सो वे चले और नगर के डेवढ़ीदारों को बुलाकर बताया कि हम जो अराम् की छावनी में गये तो क्या देखा कि वहां कोई नहीं है और मनुष्य की कुछ आहट नहीं है केवल बंधे हुए घोड़े और गदहे हैं और डेरे जैसे के तैसे हैं ॥ ११ । तब डेवढ़ीदारों ने पुकारके राजभवन के भीतर समाचार दिलाया ॥ १२ । और राजा रात ही को उठा और अपने कर्म्मचारियों से कहा मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया है वे जानते हैं कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गये हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे तब हम उन को जीते ही पकड़कर नगर में घुसने पाएंगे ।

१३। पर राजा के किसी कर्म्मचारी ने उत्तर देकर कहा कि जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उन में से लोग पांच घोड़े लें और उन को भेजकर हम हाल जान लें। वे तो इस्राएल् की सारी भीड़ सी हैं जो नगर में रह गई है वरन वे इस्राएल् की जो भीड़ मर मिट गई है उसी के समान हैं॥ १४। सो उन्हों ने दो रथ और उन के घोड़े लिये और राजा ने उन को अराम की सेना के पीछे भेजा और उस ने कहा जाओ देखो॥ १५। सो वे यर्दन तक उन के पीछे चले गये और क्या देखा कि सारा मार्ग वस्त्रों और पात्रों से भरा पड़ा है जिन्हे अरामियों ने उतावली के मारे फेंक दिया तब दूत लौट आये और राजा से यह कह सुनाया॥ १६। सो लोगों ने निकलकर अराम् के डेरों को लूट लिया और यहोवा के वचन के अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल् मे और दो सआ जव शेकेल् मे बिकने लगा॥ १७। और राजा ने उस सरदार को जिस के हाथ पर वह टेक लगाता था फाटक का अधिकारी ठहराया तब वह फाटक में लोगों के नीचे दबकर मर गया यह परमेश्वर के जन के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने राजा के अपने यहां आने के समय कहा था॥ १८। परमेश्वर के जन ने जैसा राजा से यह कहा था कि कल इसी समय शोमरोन् के फाटक में दो सआ जव एक शेकेल् में और एक सआ मैदा एक शेकेल् में बिकेगा वैसा ही हुआ, १९। और उस सरदार ने परमेश्वर के जन को उत्तर देकर कहा था कि सुन चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी और उस ने कहा था सुन तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा पर उस अन्न मे से खाने न पाएगा, २०। यह उस पर ठीक घट गया सो वह फाटक में लोगों के नीचे दबकर मर गया॥

(एलीशा के आश्चर्य्यकर्म्मों की कीर्त्ति)

८. जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने जिलाया था उस से उस ने कहा था अपने घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े[1] वह इस देश में सात बरस लों बना रहेगा॥ २। परमेश्वर के जन के इस वचन के अनुसार वह स्त्री अपने घराने समेत पलिश्तियों के देश में जा सात बरस रही॥ ३। सात बरस के बीते पर वह पलिश्तियों के देश से लौट आई और अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने को राजा के पास गई॥ ४। राजा परमेश्वर के जन के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था और उस ने कहा था जो बड़े बड़े काम एलीशा ने किये हैं उन्हें मुझ से वर्णन कर॥ ५। जब वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने जिलाया था वही आकर अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने लगी सो गेहजी ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा यह वही स्त्री है और यही उस का बेटा है जिसे एलीशा ने जिलाया था॥ ६। जब राजा ने स्त्री से पूछा तब उस ने उस से सब कह दिया सो राजा ने एक हाकिम को यह कहकर उस के साथ कर दिया कि जो कुछ इस का था वरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब से इस के खेत की जितनी आमदनी अब लों हुई हो सब को इसे भरवा दे॥

(हजाएल् का अराम् की गद्दी छीन लेना)

७। और एलीशा दमिश्क् को गया और जब अराम् के राजा बेन्हदद् को जो रोगी था यह समाचार मिला कि परमेश्वर का जन यहां भी आया है, ८। तब उस ने हजाएल् से कहा भेंट लेकर परमेश्वर के जन से मिलने को जा और उस के द्वारा यहोवा से यह पूछ कि क्या बेन्हदद् जो रोगी है सो बचेगा कि नहीं॥ ९। तब हजाएल् भेंट के लिये दमिश्क् की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट लदवाकर उस से मिलने को चला और उस के सन्मुख खड़ा होकर कहने लगा तेरे पुत्र अराम् के राजा बेन्हदद् ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है कि क्या मैं जो रोगी हूं सो

(१) मूल में यहोवा ने अकाल बुलाया है।

बचूंगा कि नहीं ॥ १० । एलीशा ने उस से कहा जाकर कह तू निश्चय न बचेगा क्योंकि यहोवा ने मुझ पर प्रगट किया है कि वह निःसंदेह मर जाएगा ॥ ११ । और वह उस की ओर टकटकी बांधकर देखता रहा यहां लों कि वह लज्जित हुआ तब परमेश्वर का जन रोने लगा ॥ १२ । तब हजाएल् ने पूछा मेरा प्रभु क्यों रोता है उस ने उत्तर दिया इस लिये कि मुझे मालूम है कि तू इस्राएलियों पर क्या क्या उपद्रव करेगा उन के गढ़वाले नगरों को तू फूंक देगा उन के जवानों को तू तलवार से घात करेगा उन के बालबच्चों को तू पटक देगा और उन की गर्भवती स्त्रियों को तू चीर डालेगा ॥ १३ । हजाएल् ने कहा तेरा दास जो कुत्ते सरीखा है सो क्या है कि ऐसा बड़ा काम करे एलीशा ने कहा यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू अराम् का राजा हो जाएगा ॥ १४ । तब वह एलीशा से विदा होकर अपने स्वामी के पास गया और उस ने उस से पूछा एलीशा ने तुझ से क्या कहा उस ने उत्तर दिया उस ने मुझ से कहा कि बेन्हदद् निःसन्देह बचेगा ॥ १५ । दूसरे दिन उस ने रजाई को लेकर जल से भिगो दिया और उस को उस के मुंह पर ओढ़ा दिया और वह मर गया। तब हजाएल् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(इस्राएली योराम् का राज्य.)

१६ । इस्राएल् के राजा अहाब् के पुत्र योराम् के पांचवें बरस में जब यहूदा का राजा यहोशापात् जीता था तब यहोशापात् का पुत्र यहोराम् यहूदा पर राज्य करने लगा ॥ १७ । जब वह राजा हुआ तब बत्तीस बरस का था और आठ बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा ॥ १८ । वह इस्राएल् के राजाओं की सी चाल चला जैसे अहाब् का घराना चलता था क्योंकि उस की स्त्री अहाब् की बेटी थी और वह उस काम को करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ १९ । तौभी यहोवा ने यहूदा को नाश करना न चाहा यह उस के दास दाऊद के कारण हुआ क्योंकि उस ने उस को वचन दिया था कि तेरे वंश के निमित्त मैं सदा तेरे लिये एक दीपक बरा हुआ रखूंगा ॥ २० । उस के दिनों में एदोम् ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपना एक राजा बना लिया ॥ २१ । तब योराम् अपने सब रथ साथ लिये हुए साईर् को गया और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों को भी मारा और लोग अपने अपने डेरे को भाग गये ॥ २२ । यों एदोम् यहूदा के वश से छूट गया और आज लों वैसा ही है। उस समय लिब्ना ने भी यहूदा की अधीनता छोड़ दिई ॥ २३ । योराम् के और सब काम और जो कुछ उस ने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ २४ । निदान योराम् अपने पुरखाओं के संग सोया और उन के बीच दाऊदपुर में उसे मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र अहज्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(यहूदी अहज्याह् का राज्य)

२५ । अहाब् के पुत्र इस्राएल् के राजा योराम् के बारहवें बरस में यहूदा के राजा यहोराम् का पुत्र अहज्याह् राज्य करने लगा ॥ २६ । जब अहज्याह् राजा हुआ तब बाईस बरस का था और यरूशलेम् में एक ही बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतल्याह् था जो इस्राएल् के राजा ओम्री की पोती थी ॥ २७ । वह अहाब् के घराने की सी चाल चला और अहाब् के घराने की नाई वह काम करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है क्योंकि वह अहाब् के घराने का दामाद था ॥ २८ । और वह अहाब् के पुत्र योराम् के संग गिलाद् के रामोत् में अराम् के राजा हजाएल् से लड़ने को गया और अरामियों ने योराम् को घायल किया ॥ २९ । सो राजा योराम् इस लिये लौट गया कि यिज्रेल् में उन घावों का इलाज कराए जो उस को अरामियों के हाथ से उस समय लगे जब वह हजाएल् के साथ लड़ रहा था और अहाब् का पुत्र योराम् जो यिज्रेल् में रोगी रहा इस से यहूदा के राजा यहोराम् का पुत्र अहज्याह् उस को देखने गया ॥

(येहू का अभिषेक और राज्य)

९. तब एलीशा नबी ने नबियों के चेलों में से एक को बुलाकर उस से कहा कमर बांध हाथ में तेल की यह कुप्पी लेकर गिलाद् के रामोत् को जा ॥ २। और वहां पहुंचकर येहू को जो यहोशापात् का पुत्र और निम्शी का पोता है ढूंढ़ लेना तब भीतर जा उस को खड़ा कराकर उस के भाइयों से अलग एक भीतरी कोठरी में ले जाना ॥ ३। तब तेल की यह कुप्पी लेकर तेल को उस के सिर पर यह कहकर डालना कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल् का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं तब द्वार खोलकर भागना विलम्ब न करना ॥ ४। सो वह जवान नबी गिलाद् के रामोत् को गया ॥ ५। वहां पहुंचकर उस ने क्या देखा कि सेनापति बैठे हुए हैं तब उस ने कहा हे सेनापति मुझे तुझ से कुछ कहना है येहू ने पूछा हम सभों में किस से उस ने कहा हे सेनापति तुझी से ॥ ६। जब वह उठकर घर में गया तब उस ने यह कहकर उस के सिर पर तेल डाला कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं अपनी प्रजा इस्राएल् पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं ॥ ७। सो तू अपने स्वामी अहाब् के घराने को मार डालना जिस से मुझे अपने दास नबियों के वरन अपने सब दासों के खून का जो ईज़ेबेल् ने बहाया पलटा मिले ॥ ८। अहाब् का सारा घराना नाश हो जाएगा और मैं अहाब् के वंश के हर एक लड़के को और इस्राएल् में के क्या बन्धुए क्या स्वाधीन हर एक को नाश कर डालूंगा ॥ ९। और मैं अहाब् का घराना नबात् के पुत्र यारोबाम् का सा और अहिय्याह् के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा ॥ १०। और ईज़ेबेल् को यिज्रेल् की भूमि में कुत्ते खाएंगे और उस को मिट्टी देनेहारा कोई न होगा। तब वह द्वार खोलकर भाग गया ॥ ११। तब येहू अपने स्वामी के कर्म्मचारियों के पास निकल आया और एक ने उस से पूछा क्या कुशल है वह बावला क्यों तेरे पास आया था उस ने उन से कहा तुम को मालूम होगा कि वह कौन है और उस से क्या बातचीत हुई ॥ १२। उन्हों ने कहा झूठ है हमें बता दे उस ने कहा उसने मुझसे कहा तो बहुत पर मतलब यह कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल् का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं ॥ १३। तब उन्हों ने झट अपना अपना वस्त्र उतारकर उस के नीचे सीढ़ी ही पर बिछाया और नरसिंगे फूंककर कहने लगे कि येहू राजा है ॥ १४। यों येहू जो निम्शी का पोता और यहोशापात् का पुत्र था उस ने योराम् से राजद्रोह की गोष्ठी किई। योराम् तो सारे इस्राएल् समेत अराम् के राजा हज़ाएल् से गिलाद् के रामोत् की रक्षा कर रहा था ॥ १५। पर राजा यहोराम् आप जो घाव अराम् के राजा हज़ाएल् से युद्ध करने के समय उस को अरामियों से लगे थे उन का इलाज कराने के लिये यिज्रेल् को लौट गया था। सो येहू ने कहा यदि तुम्हारा ऐसा मन हो तो इस नगर में से कोई निकलकर यिज्रेल् में सुनाने को न जाने पाए ॥ १६। तब येहू रथ पर चढ़कर यिज्रेल् को चला जहां योराम् पड़ा हुआ था और यहूदा का राजा अहज्याह् योराम् के देखने को वहां आया था ॥ १७। यिज्रेल् में के गुम्मट पर जो पहरुआ खड़ा था उस ने येहू के संग आते हुए दल को देखकर कहा मुझे एक दल दीखता है, यहोराम् ने कहा एक सवार को बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और वह उन से पूछे क्या कुशल है ॥ १८। सो एक सवार उस से मिलने को गया और उस से कहा राजा पूछता है क्या कुशल है येहू ने कहा कुशल से तेरा क्या काम हटकर मेरे पीछे चल। सो पहरुए ने कहा वह दूत उन के पास पहुंचा तो था पर लौट नहीं आता ॥ १९। तब उस ने दूसरा सवार भेजा और उस ने उन के पास पहुंचकर कहा राजा पूछता है क्या कुशल है येहू ने कहा कुशल से तेरा क्या काम हटकर मेरे पीछे चल ॥ २०। तब पहरुए ने कहा वह भी उन के पास पहुंचा तो था पर लौट नहीं आता और हांकना निम्शी के पोते येहू का सा है वह तो बौड़हे की नाईं हांकता

है॥ २१। योराम् ने कहा मेरा रथ जुतवा जब उस का रथ जुत गया तब इस्राएल् का राजा यहोराम् और यहूदा का राजा अहज्याह् दोनों अपने अपने रथ पर चढ़कर निकल गये और येहू से मिलने को बाहर जाकर यिज्रेली नाबोत् की भूमि में उस से भेंट किई॥ २२। येहू को देखते ही यहोराम् ने पूछा हे येहू क्या कुशल है येहू ने उत्तर दिया जब लों तेरी माता ईज़ेबेल् बहुत सा छिनाला और टोना करती रहे तब लों कुशल कहां॥ २३। तब यहोराम् रास[1] फेरके और अहज्याह् से यह कहकर कि हे अहज्याह् विश्वासघात है भाग चला॥ २४। तब येहू ने धनुष को कान तक खींचकर[2] यहोराम् के पखौड़ों के बीच ऐसा तीर मारा कि वह उस का हृदय फोड़कर निकल गया और वह अपने रथ में झुककर गिर पड़ा॥ २५। तब येहू ने बिद्कर् नाम अपने एक सरदार से कहा उसे उठाकर यिज्रेली नाबोत् की भूमि में फेंक दे स्मरण तो कर कि जब मैं और तू हम दोनों एक संग सवार होकर उस के पिता अहाब् के पीछे पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उस से यह भारी वचन कहवाया कि, २६। यहोवा की यह वाणी है कि नाबोत् और उस के पुत्रों का जो खून हुआ उसे मैं ने देखा है और यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा। सो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर इसी भूमि में फेंक दे॥ २७। यह देखकर यहूदा के राजा अहज्याह् बारी के भवन के मार्ग से भाग चला और येहू ने उस का पीछा करके कहा उस को भी रथ ही पर मारो सो वह यिब्लाम् के पास की गूर् की चढ़ाई पर मारा गया और मगिद्दो तक भागकर मर गया॥ २८। तब उस के कर्मचारियों ने उसे रथ पर यरूशलेम् को पहुंचाकर दाऊदपुर में उस के पुरखाओं के बीच मिट्टी दिई॥

२९। अहज्याह् तो अहाब् के पुत्र योराम् के ग्यारहवें बरस में यहूदा पर राज्य करने लगा था॥

३०। जब येहू यिज्रेल् को आया तब ईज़ेबेल् यह सुन अपनी आंखों में सुर्मा लगा अपना सिर संवारकर खिड़की में से झांकने लगी॥ ३१। सो जब येहू फाटक होकर आ रहा था तब उस ने कहा हे अपने स्वामी के घात करनेहारे जिम्री क्या कुशल है॥ ३२। तब उस ने खिड़की की ओर मुंह उठाकर पूछा मेरी ओर कौन है कौन। इस पर दो तीन खोजों ने उस की ओर झांका॥ ३३। तब उस ने कहा उसे नीचे गिरा दो सो उन्हों ने उस को नीचे गिरा दिया और उस के लोहू की कुछ छींटें भीत पर और कुछ घोड़ों पर पड़ीं और उस ने उस को पांव से लताड़ दिया॥ ३४। तब वह भीतर जाकर खाने पीने लगा और कहा जाओ उस स्रापित स्त्री को देख लो और उसे मिट्टी दो वह तो राजा की बेटी है॥ ३५। जब वे उसे मिट्टी देने गये तब उस की खोपड़ी पावों और हथेलियों को छोड़कर उस का और कुछ न पाया॥ ३६। सो उन्हों ने लौटकर उस से कह दिया तब उस ने कहा यह यहोवा का वह वचन है जो उस ने अपने दास तिश्बी एलिय्याह् से कहवाया था कि ईज़ेबेल् का मांस यिज्रेल् की भूमि में कुत्तों से खाया जाएगा॥ ३७। और ईज़ेबेल् की लोथ यिज्रेल् की भूमि पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी यहां लों कि कोई न कहेगा कि यह ईज़ेबेल् है॥

१०. अहाब् के तो सत्तर बेटे पोते शोमरोन् में रहते थे सो येहू ने शोमरोन् में उन पुरनियों के पास जो यिज्रेल् के हाकिम थे और अहाब् के लड़केबालों के पालनेहारों के पास पत्र लिखकर भेजे कि॥ २। तुम्हारे स्वामी के बेटे पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं और तुम्हारे रथ और घोड़े भी हैं और तुम्हारे एक गढ़वाला नगर और हथियार भी हैं सो इस पत्र के हाथ लगते ही, ३। अपने स्वामी के बेटों में से जो सब से अच्छा और योग्य हो उस को छांटकर उस के पिता की गद्दी पर बैठाओ और अपने स्वामी के घराने के लिये लड़ो॥ ४। पर वे निपट डर गये और कहने लगे

(१) मूल में, पलटे हाथ। (२) मूल में अपना हाथ धनुष से भरके।

उस के साम्हने दो राजा भी ठहर न सके फिर हम कहां ठहर सकेंगे ॥ ५ । तब जो राजघराने के काम पर था और जो नगर के ऊपर था उन्हों ने और पुरनियों और लड़केवालों के पालनेहारों ने येहू के पास यों कहला भेजा कि हम तेरे दास हैं जो कुछ तू हम से कहे उसे हम करेंगे हम किसी को राजा न बनाएंगे, जो तुझे भाए सोई कर ॥ ६ । सो उस ने दूसरा पत्र लिखकर उन के पास भेजा कि यदि तुम मेरी ओर के हो और मेरी मानो तो अपने स्वामी के बेटों पोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्रेल् में हाजिर होना । राजपुत्र तो जो सत्तर मनुष्य थे सो उस नगर के रईसों के पास पलते थे ॥ ७ । यह पत्र उन के हाथ लगते ही उन्हों ने उन सत्तरों राजपुत्रों को पकड़कर मार डाला और उन के सिर टोकरियों में रखकर यिज्रेल् को उस के पास भेज दिये ॥ ८ । और एक दूत ने उस के पास जाकर बता दिया कि राजकुमारों के सिर आ गये हैं तब उस ने कहा उन्हें फाटक में दो ढेर करके बिहान लों रक्खो ॥ ९ । बिहान को उस ने बाहर जा खड़े होकर सारे लोगों से कहा तुम तो निर्दोष हो मैं ने अपने स्वामी से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे घात किया पर इन सभों को किस ने मार डाला ॥ १० । अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने अपने दास एलिय्याह के द्वारा कहा था उसे उस ने पूरा किया है जो वचन यहोवा ने अहाब् के घराने के विषय कहा उस में से एक भी बात बिना पूरी हुए न रहेगी[१] ॥ ११ । सो अहाब् के घराने के जितने लोग यिज्रेल् में रह गये उन सभों को और उस के जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे उन सभों को येहू ने मार डाला यहां लों कि उस ने किसी को जीता न छोड़ा ॥ १२ । तब वह वहां से चलकर शोमरोन् को गया और मार्ग में चरवाहों के ऊन कतरने के स्थान पर पहुंचा, १३ । कि यहूदा के राजा अहज्याह् के भाई येहू को मिले और जब उस ने पूछा कि तुम कौन हो तब उन्हों ने उत्तर दिया हम अहज्याह् के भाई हैं और राजपुत्रों और राजमाता के बेटों का कुशलक्षेम पूछने को जाते हैं ॥ १४ । तब उस ने कहा इन्हें जीते पकड़ो सो उन्हों ने उन को जो बयालीस पुरुष थे जीते पकड़ा और ऊन कतरने के स्थान की बावली पर मार डाला उस ने उन में से किसी को न छोड़ा ॥

१५ । जब वह वहां से चला तब रेकाब् का पुत्र यहोनादाब् साम्हने से आता हुआ उस को मिला । उस का कुशल उस ने पूछकर कहा मेरा मन तो तेरी ओर निष्कपट है सो क्या तेरा मन भी वैसा ही है यहोनादाब् ने कहा हां ऐसा ही है फिर उस ने कहा ऐसा हो तो अपना हाथ मुझे दे उस ने अपना हाथ उसे दिया और वह यह कहकर उसे अपने पास रथ पर चढ़ाने लगा कि, १६ । मेरे संग चल और देख कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है सो वह उस के रथ पर चढ़ा दिया गया ॥ १७ । शोमरोन् को पहुंचकर उस ने यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह् से कहा था अहाब् के जितने शोमरोन् में बचे रहे उन सभों को मारके विनाश किया ॥ १८ । तब येहू ने सब लोगों को एकट्ठा करके कहा अहाब् ने तो बाल् की थोड़ी ही उपासना किई थी अब येहू उस की उपासना बढ़के करेगा ॥ १९ । सो अब बाल् के सब नबियों सब उपासकों और सब याजकों को मेरे पास बुला लाओ उन में से कोई भी न रह जाए क्योंकि बाल् के लिये मेरा एक बड़ा यज्ञ होनेवाला है जो कोई न आए सो जीता न बचेगा । येहू ने यह काम कपट करके बाल् के सब उपासकों को नाश करने के लिये किया ॥ २० । तब येहू ने कहा बाल् की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो सो लोगों ने प्रचार किया ॥ २१ । और येहू ने सारे इस्राएल् में दूत भेजे सो बाल् के सब उपासक आये यहां लों कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो । और वे बाल् के भवन में इतने आये कि वह एक सिरे से दूसरे सिरे लों भर गया ॥ २२ । तब उस ने उस मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था कहा बाल् के सब उपासकों के लिये

(१) मूल में भूमि पर न गिरेगी ।

वस्त्र निकाल ले आ सो वह उन के लिये वस्त्र निकाल ले आया ॥ २३। तब येहू रेकाब् के पुत्र यहोनादाब् को संग लेकर बाल् के भवन में गया और बाल् के उपासकों से कहा ढूंढ़कर देखो कि यहां तुम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो नहीं है केवल बाल् ही के उपासक हैं ॥ २४। तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को भीतर गये येहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहराकर उन से कहा था यदि उन मनुष्यों में से जिन्हें मैं तुम्हारे हाथ कर दूं कोई भी बचने पाए तो जो उसे जाने दे उस का प्राण उस के प्राण की सन्ती जाएगा ॥ २५। फिर जब होमबलि चढ़ चुका तब येहू ने पहरुओं और सरदारों से कहा भीतर जाकर उन्हें मार डालो कोई निकलने न पाए सो उन्हों ने उन्हें तलवार से मारा और पहरुए और सरदार उन को बाहर फेंककर बाल् के भवन के नगर को गये ॥ २६। और उन्हों ने बाल् के भवन में की लाठें निकालकर फूंक दिईं ॥ २७। और बाल् की लाठ को उन्हों ने तोड़ डाला और बाल् के भवन को ढाकर पायखाना बना दिया और वह आज लों ऐसा ही है ॥ २८। यों येहू ने बाल् को इस्राएल् में से नाश करके दूर किया ॥ २९। तौभी नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार करने से अर्थात् बेतेल् और दान् में के सोने के बछड़ों की पूजा उस से तो येहू अलग न हुआ ॥ ३०। और यहोवा ने येहू से कहा इस लिये कि तू ने वह किया जो मेरे लेखे ठीक है और अहाब् के घराने से मेरी पूरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया है तेरे परपोते के पुत्र लों तेरी सन्तान इस्राएल् की गद्दी पर विराजती रहेगी ॥ ३१। पर येहू ने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर सारे मन से चलने की चौकसी न किई वरन यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ ॥

३२। उन दिनों यहोवा इस्राएल् को घटाने लगा सो हजाएल् ने इस्राएल् का वह सारा देश मारा, ३३। जो यर्दन से पूरब ओर है गिलाद् का सारा देश और गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश अर्थात् अरोएर् से लेकर जो अर्नोन् की तराई के पास है गिलाद और बाशान् तक ॥ ३४। येहू के और सब काम जो कुछ उस ने किया और उस की सारी वीरता यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ३५। निदान येहू अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन् में उस को मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र यहोआहाज् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३६। येहू के शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने का समय तो अट्ठाईस बरस का था ॥

(यहोआश् का घात से बचकर राजा हो जाना.)

११. जब अहज्याह् की माता अतल्याह् ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया तब उस ने सारे राजवंश को नाश कर डाला ॥ २। पर यहोशेबा जो राजा योराम् की बेटी और अहज्याह् की बहिन थी उस ने अहज्याह् के पुत्र योआश् को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच में से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया और उन्हों ने उसे अतल्याह् से ऐसा छिपा रक्खा कि वह मार डाला न गया ॥ ३। और वह उस के पास यहोवा के भवन में छः बरस छिपा रहा और अतल्याह् देश पर राज्य करती रही ॥

४। सातवें बरस में यहोयादा ने अल्लाहों और पहरुओं के शतपतियों को बुला भेजा और उन को यहोवा के भवन में अपने पास ले आया और उन से वाचा बान्धी और यहोवा के भवन में उन को किरिया खिलाकर उन को राजपुत्र दिखाया ॥ ५। और उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि यह काम करो अर्थात् तुम में से एक तिहाई के लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हों सो राजभवन के पहरे की चौकसी करें ॥ ६। और एक तिहाई के लोग सूर नाम फाटक में ठहरे रहें और एक तिहाई के लोग पहरुओं के पीछे के फाटक में रहें यों तुम भवन की चौकसी करके लोगों को रोके रहना ॥ ७। और

तुम्हारे दो दल अर्थात् जितने विश्रामदिन को बाहर जानेवाले हों सो राजा के आसपास होकर यहोवा के भवन की चौकसी करें॥ ८। और तुम अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा को चारों ओर रहना और जो कोई पांतियों के भीतर घुसना चाहे वह मार डाला जाए और तुम राजा के आते जाते उस के संग रहना॥ ९। यहोयादा याजक की इन सारी आज्ञाओं के अनुसार शतपतियों ने किया। वे विश्रामदिन को आनेहारे और विश्रामदिन को जानेहारे दोनों दलों के अपने अपने जनों को संग लेकर यहोयादा याजक के पास गये॥ १०। तब याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और ढालें जो यहोवा के भवन में थीं दे दिईं॥ ११। सो वे पहरूए अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर उत्तरी कोने लों वेदी और भवन के पास राजा की चारों ओर उस की आड़ करके खड़े हुए॥ १२। तब उस ने राजकुमार को बाहर लाकर उस के सिर पर मुकुट और साक्षीपत्र धर दिया तब लोगों ने उस का अभिषेक करके उस को राजा बनाया फिर ताली बजा बजाकर बोल उठे राजा जीता रहे॥ १३। जब अतल्याह् को पहरुओं और लोगों का हौरा सुन पड़ा तब वह उन के पास यहोवा के भवन में गई॥ १४। और उस ने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार खम्भे के पास खड़ा है और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेहारे खड़े हैं और सब लोग आनन्द करते और तुरहियां बजा रहे हैं तब अतल्याह् अपने वस्त्र फाड़कर राजद्रोह राजद्रोह यों पुकारने लगी॥ १५। तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को आज्ञा दिई कि उसे अपनी पांतियों के बीच से निकाल ले जाओ और जो कोई उस के पीछे चले उसे तलवार से मार डालो सो याजक ने तो यह कहा कि वह यहोवा के भवन में मार डाली न जाए॥ १६। सो उन्हों ने दोनों ओर से उस को जगह दिई और वह उस मार्ग से चली गई जिस से घोड़े राजभवन में जाया करते थे और वहां वह मार डाली गई॥

१७। तब यहोयादा ने यहोवा के और राजा प्रजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बन्धाई और उस ने राजा और प्रजा के बीच भी वाचा बन्धाई॥ १८। तब सब लोगों ने बाल् के भवन को जाकर ढा दिया और उस की वेदियां और मूरतें भली भांति तोड़ दिईं और मत्तान् नाम बाल् के याजक को वेदियों के साम्हने ही घात किया। और याजक ने यहोवा के भवन पर अधिकारी ठहरा दिये॥ १९। तब वह शतपतियों जल्लादों और पहरुओं और सब लोगों को साथ लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और पहरुओं के फाटक के मार्ग से राजभवन को पहुंचा दिया और राजा राजगद्दी पर विराजमान हुआ॥ २०। सो सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह् तो राजभवन के पास तलवार से मार डाली गई थी॥

(यहोआश् का राज्य)

१२. जब यहोआश् राजा हुआ तब वह सात बरस का था। येहू के सातवें बरस में यहोआश् राज्य करने लगा और यरूशलेम् में चालीस बरस लों राज्य करता रहा उस की माता का नाम सिब्या था जो बेर्शेबा की थी॥ २। और जब लों यहोयादा याजक यहोआश् को शिक्षा देता रहा तब लों वह वही काम करता रहा जो यहोवा के लेखे ठीक है॥ ३। तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग तब भी ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे॥

४। और यहोआश् ने याजकों से कहा पवित्र किई हुई वस्तुओं का जितना रुपैया यहोवा के भवन में पहुंचाया जाए अर्थात् गिने हुए लोगों का रुपैया और जितने रुपैये के जो कोई योग्य ठहराया जाए और जितना रुपैया जिस की इच्छा यहोवा के भवन में ले आने की हो, ५। इस सब को याजक लोग अपनी जान पहचान के लोगों से लिया करें और भवन में जो कुछ टूटा फूटा हो उस को सुधरा दें॥ ६। तौभी याजकों ने भवन में जो टूटा फूटा था उसे यहोआश् राजा के तेईसवें बरस तक न सुधराया था॥ ७। सो राजा यहोआश् ने

यहोयादा याजक और और याजकों को बुलवाकर पूछा भवन में जो कुछ टूटा फूटा है उसे तुम क्यों नहीं सुधारते भला अब से अपनी जान पहचान के लोगों से और रुपैया न लेना जो तुम्हें मिल चुका हो उसे भवन के सुधारने के लिये दे दो ॥ ८। तब याजकों ने मान लिया कि न तो हम प्रजा से और रुपैया लें और न भवन को सुधराएं ॥ ९। पर यहोयादा याजक ने एक संदूक ले उस के ढकने में छेद करके उस को यहोवा के भवन में आनेहारे के दहिने हाथ पर वेदी के पास धर दिया और डेवढ़ी की रखवाली करनेहारे याजक उस में वह सब रुपैया डाल देने लगे जो यहोवा के भवन में लाया जाता था ॥ १०। जब उन्हों ने देखा कि संदूक में बहुत रुपैया है तब राजा के प्रधान और महायाजक ने आकर उसे थैलियों में बांध दिया और यहोवा के भवन में पाये हुए रुपैये को गिन लिया ॥ ११। तब उन्हों ने उस तौले हुए रुपैये को उन काम करानेहारों के हाथ में दिया जो यहोवा के भवन में अधिकारी थे और इन्हों ने उसे यहोवा के भवन के बनानेहारे बढ़इयों, १२। राजों और संगतराशों को दिया और लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में वरन जो कुछ भवन में के टूटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता था उस में लगाया ॥ १३। पर जो रुपैया यहोवा के भवन में आता था उस में से चान्दी के तसले चिमटे कटोरे तुरहियां आदि सोने वा चान्दी के किसी प्रकार के पात्र न बने ॥ १४। पर वह काम करानेहारों को दिया गया और उन्हों ने उसे लेकर यहोवा के भवन की मरम्मत किई ॥ १५। और जिन के हाथ में काम करनेहारों को देने के लिये रुपैया दिया जाता था उन से कुछ लेखा न लिया जाता था क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे ॥ १६। जो रुपैया दोष-बलियों और पापबलियों के लिये दिया जाता था वह तो यहोवा के भवन में न लगाया गया वह याजकों को मिलता था ॥

१७। तब अराम् के राजा हजाएल् ने गत् नगर पर चढ़ाई किई और उस से लड़ाई करके उसे ले लिया तब वह यरूशलेम् पर भी चढ़ाई करने को अपना मुंह किया ॥ १८। तब यहूदा के राजा यहोआश् ने उन सब पवित्र वस्तुओं को जिन्हें उस के पुरखा यहोशापात् यहोराम् और अहज्याह् नाम यहूदा के राजाओं ने पवित्र किया था और अपनी पवित्र किई हुई वस्तुओं को भी और जितना सोना यहोवा के भवन के भण्डारों में और राजभवन में मिला उस सब को लेकर अराम् के राजा हजाएल् के पास भेज दिया और वह यरूशलेम् के पास से चला गया ॥ १९। योआश् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ २०। योआश् के कर्म्मचारियों ने राजद्रोह की गोष्ठी करके उस को सिल्ला के भवन में जो सिल्ला की उतराई पर था मार डाला ॥ २१। अर्थात् शिमात् का पुत्र योजाकार् और शोमेर् का पुत्र यहोजाबाद् जो उस के कर्म्मचारी थे उन्हों ने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया तब उसे उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दिई और उस का पुत्र अमस्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(यहोआहाज का राज्य)

१३. अहज्याह के पुत्र यहूदा के राजा योआश् के तेईसवें

बरस में येहू का पुत्र यहोआहाज् शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और सत्रह बरस लों राज्य करता रहा ॥ २। और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन को छोड़ न दिया ॥ ३। सो यहोवा का कोप इस्राएल् के विरुद्ध भड़क उठा और वह उन को अराम् के राजा हजाएल् और उस के पुत्र बेन्हदद् के हाथ में लगातार किये रहा ॥ ४। तब योआहाज् ने यहोवा को मनाया और यहोवा ने उस की सुन लिई क्योंकि उस ने इस्राएल् पर का अंधेर देखा कि अराम् का राजा उन पर कैसा अन्धेर करता था ॥ ५। सो

यहोवा ने इस्राएल् को एक छुड़ानेहारा दिया था और वे अराम् के वश से छूट गये और इस्राएली अगले दिनों की नाईं फिर अपने अपने डेरे में रहने लगे॥ ६। तौभी वे ऐसे पापों से न फिरे जैसे यारोबाम् के घराने ने किया और जिन के अनुसार उस ने इस्राएल् से पाप कराये थे पर उन में चलते रहे और शोमरोन् में अशेरा भी खड़ी रही॥ ७। अराम् के राजा ने तो यहोआहाज् की सेना में से केवल पचास सवार दस रथ और दस हजार प्यादे छोड़ दिये थे क्योंकि उस ने उन को नाश किया और मरद मरदके धूलि में मिला दिया था[1]॥ ८। योआहाज् के और सब काम जो उस ने किये और उस की वीरता यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ९। निदान यहोआहाज् अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन् मे उसे मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र योआश् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योआश का राज्य और एलीशा की मृत्यु)

१०। यहूदा के राजा योआश् के राज्य के सैंतीसवें बरस में यहोआहाज् का पुत्र यहोआश् शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और सोलह बरस राज्य करता रहा॥ ११। और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से अलग न हुआ॥ १२। योआश् के और सब काम जो उस ने किये और जिस वीरता से वह यहूदा के राजा अमस्याह् से लड़ा यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ १३। निदान योआश् अपने पुरखाओं के संग सोया और यारोबाम् उस की गद्दी पर विराजने लगा और योआश् को शोमरोन् में इस्राएल् के राजाओं के बीच मिट्टी दिई गई॥

१४। और एलीशा को वह रोग लग गया था जिस से वह पीछे मर गया सो इस्राएल् का राजा योआश् उस के पास गया और उस के ऊपर रोकर कहने लगा हाय मेरे पिता हाय मेरे पिता हाय इस्राएल् के रथ और सवारो॥ १५। एलीशा ने उस से कहा धनुष और तीर ले आ। जब वह उस के पास धनुष और तीर ले आया, १६। तब उस ने इस्राएल् के राजा से कहा धनुष पर अपना हाथ लगा। जब उस ने अपना हाथ लगाया तब एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथों पर धर दिये॥ १७। तब उस ने कहा पूरब की खिड़की खोल। जब उस ने उसे खोल दिया तब एलीशा ने कहा तीर छोड़ दे सो उस ने तीर छोड़ा और एलीशा ने कहा यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात् अराम् से छुटकारे का चिन्ह है सो तू अपेक् में अराम् को यहां लों मार लेगा कि उन का अन्त कर डालेगा॥ १८। फिर उस ने कहा तीरों को ले और जब उस ने उन्हें लिया तब उस ने इस्राएल् के राजा से कहा भूमि पर मार। तब वह तीन बार मारकर ठहर गया॥ १९। और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा तुझे तो पांच छः बार मारना चाहिये था ऐसा करने से तो तू अराम् को यहां लों मारता कि उन का अन्त कर डालता पर अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा॥

२०। सो एलीशा मर गया और उसे मिट्टी दिई गई। बरस दिन के बीते पर मोआब के दल देश में आये थे॥ २१। लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे कि एक दल उन्हें देख पड़ा सो उन्हों ने उस लोथ को एलीशा की कबर में डाल दिया तब एलीशा की हड्डियों के छूते ही वह जी उठा और अपने पांवों के बल खड़ा हो गया॥

२२। यहोआहाज् के जीवन भर अराम् का राजा हजाएल् इस्राएल् पर अंधेर करता रहा॥ २३। पर यहोवा ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दया करके अपनी उस वाचा के कारण जो उस ने इब्राहीम् इस्हाक् और याकूब से बान्धी थी उन पर कृपादृष्टि किई और तब भी न तो उन्हें नाश किया और न अपने साम्हने से निकाल दिया॥ २४।

(१) मूल में रौंदने के लिये धूलि के समान कर दिया था।

सो अराम् का राजा हजाएल् मर गया श्रोर उस का पुत्र बेन्हदद् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २५ । श्रोर यहोआहाज़् के पुत्र यहोआश् ने हजाएल् के पुत्र बेन्हदद् के हाथ से वे नगर फिर ले लिये जिन्हें उस ने युद्ध करके उस के पिता यहोआहाज़् के हाथ से छीन लिया था । योआश् ने उस को तीन बार जीतकर इस्राएल् के नगर फिर ले लिये ॥

(अमस्याह् का राज्य.)

१४. **इस्राएल्** के राजा योआहाज़् के पुत्र योआश् के दूसरे बरस में यहूदा के राजा योआश् का पुत्र अमस्याह् राजा हुआ ॥ २ । जब वह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था श्रोर यरूशलेम् में उनतीस बरस लों राज्य करता रहा श्रोर उस की माता का नाम यहोअद्दीन् था जो यरूशलेम् की थी ॥ ३ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है तौभी अपने मूलपुरुष दाऊद की नाईं न किया उस ने ठीक अपने पिता योआश् के से काम किये ॥ ४ । उस के दिनों में ऊंचे स्थान गिराये न गये लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते श्रोर धूप जलाते रहे ॥ ५ । जब राज्य उस के हाथ में स्थिर हो गया तब उस ने अपने उन कर्म्मचारियों को मार डाला जिन्हों ने उस के पिता राजा को मार डाला था ॥ ६ । पर उन खूनियों के लड़केबालों को उस ने न मार डाला क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए श्रोर पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए ॥ ७ । उसी अमस्याह् ने लोन की तराई में दस हजार एदोमी पुरुष मार डाले श्रोर सेला नगर से युद्ध करके उसे ले लिया श्रोर उस का नाम योक्तेल्[1] रक्खा श्रोर यह नाम आज लों चलता है ॥

८ । तब अमस्याह् ने इस्राएल् के राजा यहोआश् के पास जो येहू का पोता श्रोर यहोआहाज़् का पुत्र था दूतों से कहला भेजा कि आ हम एक दूसरे का साम्हना करें ॥ ९ । इस्राएल् के राजा यहोआश् ने यहूदा के राजा अमस्याह् के पास यों कहला भेजा कि लबानोन् पर के एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदारु के पास कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को व्याह दे इतने में लबानोन् में का एक बनैला पशु पास से चला गया श्रोर उस झड़बेरी को रौंद डाला ॥ १० । तू ने एदोमियों को जीता तो है इस लिये तू फूल उठा है[1] उसी पर बड़ाई मारता हुआ घर में रह जा तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ डालेगा जिस से तू क्या वरन यहूदा भी नीचा खाएगा। ११ ॥ पर अमस्याह् ने न माना सो इस्राएल् के राजा यहोआश् ने चढ़ाई किई श्रोर उस ने श्रोर यहूदा के राजा अमस्याह् ने यहूदा देश के बेतशेमेश् में एक दूसरे का साम्हना किया ॥ १२ । श्रोर यहूदा इस्राएल् से हार गया श्रोर एक एक अपने अपने डेरे को भागा ॥ १३ । तब इस्राएल् का राजा यहोआश् यहूदा के राजा अमस्याह् को जो अहज्याह् का पोता श्रोर यहोआश् का पुत्र था बेतशेमेश् में पकड़ा श्रोर यरूशलेम् को गया श्रोर यरूशलेम् की शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक लों चार सौ हाथ गिरा दिये ॥ १४ । श्रोर जितना सोना चांदी श्रोर जितने पात्र यहोवा के भवन में श्रोर राजभवन के भण्डारों में मिले उन सब को श्रोर बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन् को लौट गया ॥ १५ । यहोआश् के श्रोर काम जो उस ने किये श्रोर उस की वीरता श्रोर उस ने किस रीति यहूदा के राजा अमस्याह् से युद्ध किया यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ १६ । निदान योआश् अपने पुरखाओं के संग सोया श्रोर उसे इस्राएल् के राजाओं के बीच शोमरोन् में मिट्टी दिई गई श्रोर उस का पुत्र यारोबाम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

१७ । यहोआहाज़् के पुत्र इस्राएल् के राजा यहोआश् के मरने के पीछे योआश् का पुत्र यहूदा

(१) अर्थात् ईश्वर का दबाया।

(१) मूल में तेरे मन ने तुझे उठाया है।

का राजा अमस्याह् पन्द्रह बरस जीता रहा ॥ १८। अमस्याह् के और काम क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ १९। जब यरूशलेम् में उस के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी किई गई तब वह लाकीश् को भाग गया सो उन्हों ने उस के लिये लाकीश् लों भेजकर उस को वहां मार डाला ॥ २०। तब वह घोड़ों पर रखकर यरूशलेम् में पहुंचाया गया और वहां उस के पुरखाओं के बीच उस को दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई ॥ २१। तब सारी यहूदी प्रजा ने अजर्याह् को जो सोलह बरस का था लेकर उस के पिता अमस्याह के स्थान पर राजा कर दिया ॥ २२। जब राजा अमस्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया उस के पीछे अजर्याह ने एलत् को दृढ़ करके यहूदा के वश में फिर कर लिया ॥

(दूसरे यारोबाम् का राज्य.)

२३। यहूदा के राजा योआश् के पुत्र अमस्याह् के राज्य के पन्द्रहवें बरस में इस्राएल् के राजा योआश् का पुत्र यारोबाम् शोमरोन् में राज्य करने लगा और एकतालीस बरस लों राज्य करता रहा ॥ २४। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग न हुआ ॥ २५। उस ने इस्राएल् का सिवाना हमात् की घाटी से ले अराबा के ताल लों ज्यों का त्यों कर दिया जैसे कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने अमित्तै के पुत्र अपने दास गथेपेर्वासी योना नबी के द्वारा कहा था ॥ २६। क्योंकि यहोवा ने इस्राएल् का दुःख देखा कि बहुत ही कठिन[१] है वरन क्या बंधुआ क्या स्वाधीन कोई भी बचा न रहा और न इस्राएल् के लिये कोई सहायक था ॥ २७। यहोवा ने न कहा था कि मैं इस्राएल् का नाम धरती पर[२] से मिटा डालूंगा परन्तु उस ने योआश् के पुत्र यारोबाम् के द्वारा उन को छुटकारा दिया ॥ २८। यारोबाम् के और सब काम जो उस ने किये और कैसे पराक्रम के साथ उस ने युद्ध किया और दमिश्क् और हमात् को जो पहिले यहूदा के राज्य में थे इस्राएल् के वश में फिर कर लिया यह सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ २९। निदान यारोबाम् अपने पुरखाओं के संग जो इस्राएल् के राजा थे सोया और उस का पुत्र जकर्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(१) मूल में कडुवा। (२) मूल में आकाश के तले।

(अजर्याह् का राज्य)

१५. इस्राएल् के राजा यारोबाम् के सताईसवें बरस में

यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा हुआ ॥ २। जब वह राज्य करने लगा तब सोलह बरस का था और यरूशलेम् में बावन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यकोल्याह् था जो यरूशलेम् की थी ॥ ३। जैसे उस का पिता अमस्याह् वह किया करता था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसे ही वह भी करता था ॥ ४। तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे ॥ ५। यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा कि वह मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और अलग एक घर में रहता था और योताम् नाम राजपुत्र उस के घराने के काम पर ठहरकर देश के लोगों का न्याय करता था ॥ ६। अजर्याह् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ ७। निदान अजर्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में उस के पुरखाओं के बीच मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र योताम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(जकर्याह का राज्य)

८। यहूदा के राजा अजर्याह् के अड़तीसवें बरस में यारोबाम् का पुत्र जकर्याह् इस्राएल् पर शोमरोन् में राज्य करने लगा और छः महीने राज्य किया ॥ ९। उस ने अपने पुरखाओं की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों

के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग न हुआ ॥ १० । और याबेश् के पुत्र शल्लूम् ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके उस को प्रजा के साम्हने मारा और उस का घात करके उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ११ । जकर्याह् के और काम इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं ॥ १२ । यों ही यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो उस ने येहू से कहा था कि तेरे परपोते के पुत्र लों तेरी सन्तान इस्राएल् की गद्दी पर विराजती जाएगी और वैसा ही हुआ ॥

(शल्लूम का राज्य)

१३ । यहूदा के राजा उज्जिय्याह्[1] के उनतालीसवें बरस में याबेश् का पुत्र शल्लूम् राज्य करने लगा और महीने भर शोमरोन् में राज्य करता रहा ॥ १४ । क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम् ने तिर्सा से शोमरोन् को जाकर याबेश् के पुत्र शल्लूम् को वहीं मारा और उसे घात करके उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ १५ । शल्लूम् के और काम और उस ने राजद्रोह की जो गोष्ठी किई यह सब इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है ॥ १६ । तब मनहेम् ने तिर्सा से जाकर सब निवासियों और आस पास के देश समेत तिप्सह् को इस कारण मार लिया कि तिप्सहियों ने उस के लिये फाटक न खोले थे सो उस ने उसे मार लिया और उस में जितनी गर्भवती स्त्रियां थीं उन सभों को चीर डाला ॥

(मनहेम का राज्य)

१७ । यहूदा के राजा अजर्याह् के उनतालीसवें बरस में गादी का पुत्र मनहेम् इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दस बरस लों शोमरोन् में राज्य करता रहा ॥ १८ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह जीवन भर अलग न हुआ ॥ १९ । अश्शूर् के राजा पूल् ने देश पर चढ़ाई किई और मनहेम् ने उस को हजार किक्कार् चान्दी इस इच्छा से दिई कि वह मेरा सहायक होकर राज्य को मेरे हाथ में स्थिर रक्खे ॥ २० । यह चान्दी अश्शूर् के राजा को देने के लिये मनहेम् ने बड़े बड़े धनवान इस्राएलियों से ले लिई एक एक पुरुष को पचास पचास शेकेल् चान्दी देनी पड़ी सो अश्शूर् का राजा देश को छोड़कर लौट गया ॥ २१ । मनहेम् के और काम जो उस ने किये वे सब क्या इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ २२ । निदान मनहेम् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का पुत्र पकह्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(पकह्याह का राज्य)

२३ । यहूदा के राजा अजर्याह् के पचासवें बरस में मनहेम् का पुत्र पकह्याह् शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा ॥ २४ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग न हुआ ॥ २५ । उस के सर्दार रमल्याह् के पुत्र पेकह् ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके शोमरोन् के राजभवन के गुम्मट में उस को और उस के संग अर्गोब् और अर्ये को मारा और पेकह् के संग पचास गिलादी पुरुष थे और वह उस का घात करके उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २६ । पकह्याह् के और सब काम जो उस ने किये सो इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं ॥

(पेकह् का राज्य)

२७ । यहूदा के राजा अजर्याह् के बावनवें बरस में रमल्याह् का पुत्र पेकह् शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और बीस बरस लों राज्य करता रहा ॥ २८ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् जैसे पाप नबात् के पुत्र यारोबाम् जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग न हुआ ॥ २९ । इस्राएल् के राजा पेकह् के दिनों में

(१) अर्थात् अजर्याह् ।

अश्शूर् के राजा तिग्लतिपलेसेर् ने आकर इय्योन् आबेल्बेत्माका यानोह् केदेश् और हासोर् नाम नगरों को और गिलाद् और गालील बरन नप्ताली के सारे देश को भी ले लिया और उन के लोगों को बंधुआ करके अश्शूर् को ले गया ॥ ३० । उज्जिय्याह् के पुत्र योताम् के बीसवें बरस में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह् के पुत्र पेकह् से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मारा और उसे घात करके उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३१ । पेकह् के और सब काम जो उस ने किये सो इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं ॥

(योताम् का राज्य)

३२ । रमल्याह् के पुत्र इस्राएल् के राजा पेकह् के दूसरे बरस में यहूदा के राजा उज्जिय्याह् का पुत्र योताम् राजा हुआ ॥ ३३ । जब वह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम् में सोलह बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यरूशा था वही सादोक् की बेटी थी ॥ ३४ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है अर्थात् जैसा उस के पिता उज्जिय्याह् ने किया था ठीक वैसा ही उस ने किया ॥ ३५ । तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग उन पर तब भी बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे । यहोवा के भवन के ऊपरले फाटक को इसी ने बनाया ॥ ३६ । योताम् के और सब काम जो उस ने किये वे क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ ३७ । उन दिनों में यहोवा अराम् के राजा रसीन् को और रमल्याह् के पुत्र पेकह् को यहूदा के विरुद्ध भेजने लगा ॥ ३८ । निदान योताम् अपने पुरखाओं के संग सोया और अपने मूलपुरुष दाऊद के पुर में अपने पुरखाओं के बीच उस को मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आहाज् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(आहाज् का राज्य)

१६. **र**मल्याह् के पुत्र पेकह् के सत्रहवें बरस में यहूदा के राजा योताम् का पुत्र आहाज् राज्य करने लगा ॥ २ । जब आहाज् राज्य करने लगा तब वह बीस बरस का था और सोलह बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम नहीं किया जो उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे ठीक है ॥ ३ । परन्तु वह इस्राएल् के राजाओं की सी चाल चला बरन उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था उस ने अपने बेटे को आग में होम कर दिया ॥ ४ । और ऊंचे स्थानों पर और पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था ॥ ५ । तब अराम् के राजा रसीन् और रमल्याह् के पुत्र इस्राएल् के राजा पेकह् ने यरूशलेम् पर लड़ने के लिये चढ़ाई किई और उन्हों ने आहाज् को घेर लिया पर युद्ध करके उन से कुछ न बन पड़ा ॥ ६ । उस समय अराम् के राजा रसीन् ने एलत् को अराम् के वश में करके यहूदियों को वहां से निकाल दिया तब अरामी लोग एलत् को गये और आज के दिन लों वहां रहते हैं ॥ ७ । और आहाज् ने दूत भेजकर अश्शूर् के राजा तिग्लत्पिलेसेर् के पास कहला भेजा कि मुझे अपना दास बरन बेटा जानकर चढ़ाई कर और मुझे अराम् के राजा और इस्राएल् के राजा के हाथ से बचा जो मेरे विरुद्ध उठे हैं ॥ ८ । और आहाज् ने यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में जितना सोना चान्दी मिली उसे अश्शूर् के राजा के पास भेंट करके भेज दिया ॥ ९ । उस की मानकर अश्शूर् के राजा ने दमिश्क् पर चढ़ाई किई और उसे लेकर उस के लोगों को बंधुआ करके कीर् को ले गया और रसीन् को मार डाला ॥ १० । तब राजा आहाज् अश्शूर् के राजा तिग्लत्पिलेसेर् से भेंट करने के लिये दमिश्क् को गया और वहां की बेदी देखकर उस की सारी बनावट के अनुसार उस का नकशा ऊरिय्याह् याजक के पास नमूना करके भेज दिया ॥ ११ । ठीक इसी नमूने के अनुसार जिसे राजा आहाज् ने दमिश्क् से भेजा था ऊरिय्याह् याजक ने राजा आहाज् के दमिश्क् से आने लों एक वेदी बना दिई ॥ १२ । जब राजा

दमिश्क् से आया तब उस ने उस वेदी को देखा और उस के निकट जाकर उस पर बलि चढ़ाये॥ १३। उसी वेदी पर उस ने अपना होमबलि और अन्नबलि जलाया और अर्घ दिया। और मेलबलियों का लोहू छिड़क दिया॥ १४। और पीतल की जो वेदी यहोवा के साम्हने रहती थी उस को उस ने भवन के साम्हने से अर्थात् अपनी वेदी और यहोवा के भवन के बीच से हटाकर उस वेदी की उत्तर ओर रखा दिया॥ १५। तब राजा आहाज् ने ऊरिय्याह् याजक को यह आज्ञा दिई कि भोर के होमबलि सांझ के अन्नबलि राजा के होमबलि और उस के अन्नबलि और सब साधारण लोगों के होमबलि अन्नबलि और अर्घ बड़ी वेदी पर चढ़ाया कर और होमबलियों और मेलबलियों का सब लोहू उस पर छिड़क और पीतल की वेदी के विषय में विचार करूंगा॥ १६। राजा आहाज् की इस आज्ञा के अनुसार ऊरिय्याह् याजक ने किया॥ १७। फिर राजा आहाज् ने पायों की पटरियों को काट डाला और हौदियों को उन पर से उतार दिया और गंगाल को उन पीतल के बैलों पर से जो उस के तले थे उतारकर पत्थरों के फर्श पर धर दिया॥ १८। और विश्राम के दिन के लिये जो छाया हुआ स्थान भवन में बना था और राजा के बाहर से प्रवेश करने का फाटक उन दोनों को उस ने अश्शूर् के राजा के कारण यहोवा के भवन में छिपा दिया॥ १९। आहाज के और काम जो उस ने किये थे वह यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥ २०। निदान आहाज् अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र हिजकिय्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(होशे का राज्य और इस्राएली राज्य का टूट जाना)

१७. यहूदा के राजा आहाज् के बारहवें बरस में एला का पुत्र होशे शोमरोन् में इस्राएल् पर राज्य करने लगा और नौ बरस लों राज्य करता रहा॥ २। उस ने वही किया जो यहोवा के लेखे बुरा है पर इस्राएल् के उन राजाओं के बराबर नहीं जो उस से पहिले थे॥ ३। उस पर अश्शूर् के राजा शल्मनेसेर् ने चढ़ाई किई और होशे उस के अधीन होकर उस को भेंट देने लगा॥ ४। पर अश्शूर् के राजा ने होशे को राजद्रोह की गोष्ठी करनेहारा जान लिया क्योंकि उस ने सो नाम मिस्र के राजा के पास दूत भेजे और अश्शूर् के राजा के पास सालियाना भेंट भेजनी छोड़ दिई इस कारण अश्शूर् के राजा ने उस को बन्द किया और बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया॥ ५। तब अश्शूर् के राजा ने सारे देश पर चढ़ाई किई और शोमरोन् को जाकर तीन बरस लों उसे घेरे रहा॥ ६। होशे के नौवें बरस में अश्शूर् के राजा ने शोमरोन् को ले लिया और इस्राएल् को अश्शूर् में ले जाकर हलह् में और हाबोर् और गोज़ान् नदियों के पास और मादियों के नगरों में बसाया॥ ७। इस का यह कारण है कि यद्यपि इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन को मिस्र के राजा फ़िरौन् के हाथ से छुड़ाकर मिस्र देश से निकाल लाया था तौभी उन्हों ने उस के विरुद्ध पाप किया और पराये देवताओं का भय माना था, ८। और जिन जातियों को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था उन की रीति पर और अपने राजाओं की चलाई हुई रीतियों पर चले थे॥ ९। और इस्राएलियों ने कपट करके अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध अनुचित काम किये अर्थात् पहरुओं के गुम्मट से ले गढ़वाले नगर लों अपनी सारी बस्तियों में ऊंचे स्थान बना लिये थे, १०। और सब ऊंची पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले लाठें और अशेरा खड़े कर लिये थे, ११। और ऐसे ऊंचे स्थानों में उन जातियों की नाईं जिन को यहोवा ने उन के साम्हने से निकाल दिया था धूप जलाया और यहोवा को रिस दिलाने के योग्य बुरे काम किये थे, १२। और मूरतों की उपासना किई जिस के विषय यहोवा ने उन से कहा था कि तुम यह काम न करना॥ १३। तौभी यहोवा ने सब नबियों

१ मूल में, दूसरा।

और सब दर्शियों के द्वारा इस्राएल् और यहूदा को यह कहकर चिताया था कि अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिई थी और अपने दास नबियों के हाथ तुम्हारे पास पहुंचाई है मेरी आज्ञाओं और विधियों को माना करो ॥ १४। पर उन्हों ने न माना बरन अपने उन पुरखाओं की नाईं जिन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वास न किया था वे भी हठीले[1] बने ॥ १५। और वे उस की विधियां और अपने पुरखाओं के साथ उस की वाचा और जो चितौनियां उस ने उन्हें दिई थीं उन को तुच्छ जानकर निकम्मी बातों के पीछे हो लिये जिस से वे आप निकम्मे हो गये और अपनी चारों ओर की उन जातियों के पीछे भी जिन के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दिई थी कि उन के से काम न करना ॥ १६। बरन उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया और दो बछड़ों की मूरतें ढालकर बनाईं और अशेरा भी बनाई और आकाश के सारे गण को दण्डवत् किई और बाल् की उपासना किई, १७। और अपने बेटे बेटियों को आग में होम करके चढ़ाया और भावी कहनेहारों से पूछने और टोना करने लगे और जो यहोवा के लेखे बुरा है जिस से वह रिसियाता भी है उस के करने को अपनी इच्छा से बिक गये[2] ॥ १८। इस कारण यहोवा इस्राएल् से अति क्रोधित हुआ और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया, यहूदा का गोत्र छोड़ और कोई बचा न रहा ॥ १९। और यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं न मानीं बरन जो विधियां इस्राएल् ने चलाईं थीं उन पर चलने लगे ॥ २०। सो यहोवा ने इस्राएल् की सारी सन्तान को छोड़कर उन को दुःख दिया और लूटनेहारों के हाथ कर दिया और अन्त में उन्हें अपने साम्हने से निकाल दिया ॥ २१। उस ने इस्राएल् को तो दाऊद के घराने के हाथ से छीन लिया और उन्हों ने नबात् के पुत्र यारोबाम् को अपना राजा किया और यारोबाम् ने इस्राएल् को यहोवा के पीछे चलने से खींचकर उन से बड़ा पाप कराया ॥ २२। सो जैसे पाप यारोबाम् ने किये थे वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे और उन से अलग न हुए ॥ २३। अन्त को यहोवा ने इस्राएल् को अपने साम्हने से दूर कर दिया जैसे कि उस ने अपने सब दास नबियों के द्वारा कहा था। सो इस्राएल् अपने देश से निकालकर अश्शूर् को पहुंचाया गया जहां वह आज के दिन लों रहता है ॥

(इस्राएल् के देश में अन्यजातिवालों का बसाया जाना)

२४। और अश्शूर् के राजा ने बाबेल् कूता अव्वा हमात् और सपर्वैम् नगरों से लोगों को लाकर इस्राएलियों के स्थान पर शोमरोन् के नगरों में बसाया सो वे शोमरोन् के अधिकारी होकर उस के नगरों में रहने लगे ॥ २५। जब वे वहां पहिले पहिल रहने लगे तब यहोवा का भय न मानते थे इस कारण यहोवा ने उन के बीच सिंह भेजे जो उन को मार डालने लगे ॥ २६। इस कारण उन्हों ने अश्शूर् के राजा के पास कहला भेजा कि जो जातियां तू ने उन के देशों से निकालकर शोमरोन् के नगरों में बसा दिई हैं वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानतीं इस से उस ने उन के बीच सिंह भेजे हैं जो उन को इस लिये मार डालते हैं कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते ॥ २७। तब अश्शूर् के राजा ने आज्ञा दिई कि जिन याजकों को तुम उस देश से ले आये उन में से एक को वहां पहुंचा दो और वे वहां जाकर रहें और वह उन को उस देश के देवता की रीति सिखाए ॥ २८। सो जो याजक शोमरोन् से निकाले गये थे उन में से एक जाकर बेतेल् में रहने लगा और उन को सिखाने लगा कि यहोवा का भय किस रीति मानना चाहिये ॥ २९। तौभी एक एक जाति के लोगों ने अपने अपने निज देवता बनाकर अपने अपने बसाये हुए नगर में उन ऊंचे स्थानों के भवनों में रक्खे जो शोमरोनियों ने बनाये थे ॥ ३०। बाबेल् के मनुष्यों ने तो सुक्कोतबनोत् को कूत् के मनुष्यों ने नेर्गल् को हमात् के मनुष्यों ने अशीमा को, ३१। और अव्वियों ने

(१) मूल में कड़ी गर्दनवाले। (२) मूल में उन्हों ने अपने को बेच डाला।

निभज़ और तर्त्तक् को स्थापन किया और सपर्वैमी लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलेक् और अनम्मेलेक् नाम सपर्वैस् के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे ॥ ३२ । यों वे यहोवा का भय मानते तो थे पर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे जो ऊंचे स्थानों के भवनों में उन के लिये बलि करते थे ॥ ३३ । वे यहोवा का भय मानते तो थे पर उन जातियों की रीति पर जिन के बीच से वे निकाले गये थे अपने अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे ॥ ३४ । आज के दिन लों वे अपनी पहिली रीतियों पर चलते हैं वे यहोवा का भय नहीं मानते और न तो अपनी विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दिई थी जिस का नाम उस ने इस्राएल् रक्खा था ॥ ३५ । उन से यहोवा ने वाचा बांधकर उन्हें यह आज्ञा दिई थी कि तुम पराये देवताओं का भय न मानना न उन्हें दण्डवत् करना न उन की उपासना करना न उन को बलि चढ़ाना ॥ ३६ । परन्तु यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया तुम उसी का भय मानना उसी को दण्डवत् करना और उसी को बलि चढ़ाना ॥ ३७ । और जो जो विधियां और नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएं उस ने तुम्हारे लिये लिखीं उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो और पराये देवताओं का भय न मानना ॥ ३८ । और जो वाचा मैं ने तुम्हारे साथ बांधी है उसे न बिसराना और पराये देवताओं का भय न मानना ॥ ३९ । केवल अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा[१] ॥ ४० । तौभी उन्हों ने न माना पर वे अपनी पहिली रीति के अनुसार करते रहे ॥ ४१ । सो वे जातियां यहोवा का भय मानती तो थीं और अपनी खुदी हुई मूरतों की उपासना भी करती रहीं और जैसे वे करते थे वैसे ही उन के बेटे पोते भी आज के दिन लों करते हैं ॥

१ मूल में हाथ से छुड़ाएगा ।

(हिजकिय्याह के राज्य का आरम्भ)

१८. एला के पुत्र इस्राएल् के राजा होशे के तीसरे बरस में यहूदा के राजा आहाज् का पुत्र हिज़किय्याह् राजा हुआ ॥ २ । जब वह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और उनतीस बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अबी था जो जकर्याह् की बेटी थी ॥ ३ । जैसे उस के मूलपुरुष दाऊद ने वही किया था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसा ही उस ने भी किया ॥ ४ । उस ने ऊंचे स्थान गिरा दिये लाठों को तोड़ दिया अशेरा को काट डाला और पीतल का जो सांप मूसा ने बनाया था उस को उस ने इस कारण चूर चूर कर दिया कि उन दिनों तक इस्राएली उस के लिये धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम नहुश्तान्[१] रक्खा ॥ ५ । वह इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था, और उस के पीछे यहूदा के सब राजाओं में कोई उस के बराबर न हुआ और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ था ॥ ६ । और वह यहोवा से लगा रहा और उस के पीछे चलना न छोड़ा और जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दिई थीं उन का वह पालन करता रहा ॥ ७ । सो यहोवा उस के संग रहा और जहां कहीं वह जाता था वहां उस का काम सुफल होता था और उस ने अश्शूर् के राजा से बलवा करके उस की अधीनता छोड़ दिई ॥ ८ । उस ने आस पास के देश समेत अज्जा लों क्या पहरुओं के गुम्मट क्या गढ़वाले नगर के सब पलिश्तियों को मार लिया ॥

९ । राजा हिज़किय्याह् के चौथे बरस में जो एला के पुत्र इस्राएल् के राजा होशे का सातवां बरस था अश्शूर् के राजा शल्मनेसेर् ने शोमरोन् पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया ॥ १० । और तीन बरस के बीतने पर उन्हों ने उस को ले लिया सो हिज़किय्याह् के छठवें बरस में जो इस्राएल् के राजा होशे का नौवां बरस था शोमरोन् ले लिया गया ॥ ११ । तब अश्शूर् का राजा इस्राएल् को बंधुआ करके

(१) अर्थात्, पीतल का टुकड़ा ।

अश्शूर् में ले गया और हलह् में और हाबोर् और गोज़ान् नदियों के पास और मादियों के नगरों में बसा दिया ॥ १२। इस का कारण यह था कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी वरन उस की वाचा को तोड़ा और जितनी आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने दिई थीं उन को टाला और न उन को सुना न उन के अनुसार किया ॥

(सन्हेरीब् की चढ़ाई और उस की सेना का विनाश)

१३। हिज़किय्याह राजा के चौदहवें बरस में अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उन को ले लिया ॥ १४। तब यहूदा के राजा हिज़किय्याह् ने अश्शूर् के राजा के पास लाकीश् को कहला भेजा कि मुझ से अपराध हुआ मेरे पास से लौट जा और जो भार तू मुझ पर डाले उस को मैं उठाऊंगा। सो अश्शूर् के राजा ने यहूदा के राजा हिज़किय्याह् के लिये तीन सौ किक्कार् चांदी और तीस किक्कार् सोना ठहरा दिया ॥ १५। तब जितनी चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली उस सब को हिज़किय्याह् ने उसे दे दिया ॥ १६। उस समय हिज़किय्याह् ने यहोवा के मन्दिर के किवाड़ों से और उन खंभों से भी जिन पर यहूदा के राजा हिज़किय्याह् ने सोना मढ़ाया था सोने को छीलकर अश्शूर् के राजा को दे दिया ॥ १७। तौभी अश्शूर् के राजा ने तर्तान् रब्सारीस् और रब्शाके को बड़ी सेना देकर लाकीश् से यरूशलेम् के पास हिज़किय्याह् राजा के विरुद्ध भेज दिया सो वे यरूशलेम् को गये और वहां पहुंचकर ऊपरले पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए ॥ १८। और जब उन्हों ने राजा को पुकारा तब हिल्किय्याह् का पुत्र एल्याकीम् जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मंत्री था और आसाप् का पुत्र योआह् जो इतिहास का लिखनेहारा था ये तीनों उन के पास बाहर निकल गये ॥ १९। रब्शाके ने उन से कहा हिज़किय्याह् से कहो कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर् का राजा यों कहता है कि तू यह क्या भरोसा करता है ॥ २०। तू जो कहता है कि मेरे यहां युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम हैं सो केवल बात ही बात है तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है ॥ २१। सुन तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उस के हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फ़िरौन अपने सब भरोसा रखनेहारों के लिये ऐसा ही होता है ॥ २२। फिर यदि तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है तो क्या वह वही नहीं है जिस के ऊंचे स्थानों और वेदियों को हिज़किय्याह् ने दूर करके यहूदा और यरूशलेम् से कहा कि तुम इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम् में है दण्डवत् करना ॥ २३। सो अब मेरे स्वामी अश्शूर् के राजा के पास कुछ बंधक रख तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं ॥ २४। फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्म्मचारी का भी कहा नकारके[1] क्योंकर रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है ॥ २५। क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस स्थान को उजाड़ने के लिये चढ़ाई किई है यहोवा ने मुझ से कहा है कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे ॥ २६। तब हिल्किय्याह् के पुत्र एल्याकीम् और शेब्ना और योआह् ने रब्शाके से कहा अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर क्योंकि हम उसे समझते हैं और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर ॥ २७। रब्शाके ने उन से कहा क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के वा तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं इस लिये कि तुम्हारे संग उन को भी अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़े ॥ २८। तब रब्शाके ने खड़ा हो यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर् के राजा की

(१) मूल में, कर्म्मचारियों में से एक गवर्नर का भी मुंह फेर के।

निभज् और तर्त्तक् को स्थापन किया और सपर्वैमी लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलेक् और अनम्मेलेक् नाम सपर्वैम् के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे ॥ ३२ । यों वे यहोवा का भय मानते तो थे पर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे जो ऊंचे स्थानों के भवनों में उन के लिये बलि करते थे ॥ ३३ । वे यहोवा का भय मानते तो थे पर उन जातियों की रीति पर जिन के बीच से वे निकाले गये थे अपने अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे ॥ ३४ । आज के दिन लों वे अपनी पहिली रीतियों पर चलते हैं वे यहोवा का भय नहीं मानते और न तो अपनी विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दिई थी जिस का नाम उस ने इस्राएल् रक्खा था ॥ ३५ । उन से यहोवा ने वाचा बांधकर उन्हें यह आज्ञा दिई थी कि तुम पराये देवताओं का भय न मानना न उन्हें दण्डवत् करना न उन की उपासना करना न उन को बलि चढ़ाना ॥ ३६ । परन्तु यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया तुम उसी का भय मानना उसी को दण्डवत् करना और उसी को बलि चढ़ाना ॥ ३७ । और जो जो विधियां और नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएं उस ने तुम्हारे लिये लिखीं उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो और पराये देवताओं का भय न मानना ॥ ३८ । और जो वाचा मैं ने तुम्हारे साथ बांधी है उसे न बिसराना और पराये देवताओं का भय न मानना ॥ ३९ । केवल अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा ॥ ४० । तौभी उन्हों ने न माना पर वे अपनी पहिली रीति के अनुसार करते रहे ॥ ४१ । सो वे जातियां यहोवा का भय मानती तो थीं और अपनी खुदी हुई मूरतों की उपासना भी करती रहीं और जैसे वे करते थे वैसे ही उन के बेटे पोते भी आज के दिन लों करते हैं ॥

(१) मूल में उन के पुरखा।

(हिजकिय्याह के राज्य का आरंभ.)

१८. एला के पुत्र इस्राएल् के राजा होशे के तीसरे बरस में यहूदा के राजा आहाज् का पुत्र हिज़्किय्याह् राजा हुआ ॥ २ । जब वह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और उनतीस बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अबी था जो जकर्याह् की बेटी थी ॥ ३ । जैसे उस के मूलपुरुष दाऊद ने वही किया था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसा ही उस ने भी किया ॥ ४ । उस ने ऊंचे स्थान गिरा दिये लाठों को तोड़ दिया अशेरा को काट डाला और पीतल का जो सांप मूसा ने बनाया था उस को उस ने इस कारण चूर चूर कर दिया कि उन दिनों तक इस्राएली उस के लिये धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम नहुश्तान्[1] रक्खा ॥ ५ । वह इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था. और उस के पीछे यहूदा के सब राजाओं में कोई उस के बराबर न हुआ और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ था ॥ ६ । और वह यहोवा से लगा रहा और उस के पीछे चलना न छोड़ा और जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दिई थीं उन का वह पालन करता रहा ॥ ७ । सो यहोवा उस के संग रहा और जहां कहीं वह जाता था वहां उस का काम सुफल होता था और उस ने अश्शूर् के राजा से बलवा करके उस की अधीनता छोड़ दिई ॥ ८ । उस ने आस पास के देश समेत अज्जा लों क्या पहरुओं के गुम्मट क्या गढ़वाले नगर के सब पलिश्तियों को मार लिया ॥

९ । राजा हिज़्किय्याह् के चौथे बरस में जो एला के पुत्र इस्राएल् के राजा होशे का सातवां बरस था अश्शूर् के राजा शल्मनेसेर् ने शोमरोन् पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया ॥ १० । और तीन बरस के बीतने पर उन्हों ने उस को ले लिया सो हिज़्किय्याह् के छठवें बरस में जो इस्राएल् के राजा होशे का नौवां बरस था शोमरोन् ले लिया गया ॥ ११ । तब अश्शूर् का राजा इस्राएल् को बंधुआ करके

(१) अर्थात्, पीतल का टुकड़ा।

अश्शूर् में ले गया और हलह् में और हाबोर् और गोजान् नदियों के पास और मादियों के नगरों में बसा दिया ॥ १२। इस का कारण यह था कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी वरन उस की वाचा को तोड़ा और जितनी आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने दिई थीं उन को टाला और न उन को सुना न उन के अनुसार किया ॥

(सन्हेरीब् की चढ़ाई और उस की सेना का विनाश)

१३। हिजकिय्याह राजा के चौदहवें बरस में अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उन को ले लिया ॥ १४। तब यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् ने अश्शूर् के राजा के पास लाकीश् को कहला भेजा कि मुझ से अपराध हुआ मेरे पास से लौट जा और जो भार तू मुझ पर डाले उस को मैं उठाऊंगा। सो अश्शूर् के राजा ने यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् के लिये तीन सौ किक्कार् चांदी और तीस किक्कार् सोना ठहरा दिया ॥ १५। तब जितनी चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली उस सब को हिज़्किय्याह् ने उसे दे दिया ॥ १६। उस समय हिज़्किय्याह् ने यहोवा के मन्दिर के किवाड़ों से और उन खंभों से भी जिन पर यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् ने सोना मढ़ाया था सोने को छीलकर अश्शूर् के राजा को दे दिया ॥ १७। तौभी अश्शूर् के राजा ने तर्तान् रब्सारीस् और रब्शाके को बड़ी सेना देकर लाकीश् से यरूशलेम् के पास हिज़्किय्याह् राजा के विरुद्ध भेज दिया सो वे यरूशलेम् को गये और वहां पहुंचकर ऊपरले पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए ॥ १८। और जब उन्हों ने राजा को पुकारा तब हिल्किय्याह् का पुत्र एल्याकीम् जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मंत्री था और आसाप् का पुत्र योआह् जो इतिहास का लिखनेहारा था ये तीनों उन के पास बाहर निकल गये ॥ १९। रब्शाके ने उन से कहा हिज़्किय्याह् से कहो कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर् का राजा यों कहता है कि तू यह क्या भरोसा करता है ॥ २०। तू जो कहता है कि मेरे यहां युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम हैं सो केवल बात ही बात है तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है ॥ २१। सुन तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उस के हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फ़िरौन अपने सब भरोसा रखनेहारों के लिये ऐसा ही होता है ॥ २२। फिर यदि तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है तो क्या वह वही नहीं है जिस के ऊंचे स्थानों और वेदियों को हिज़्किय्याह् ने दूर करके यहूदा और यरूशलेम् से कहा कि तुम इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम् में है दण्डवत् करना ॥ २३। सो अब मेरे स्वामी अश्शूर् के राजा के पास कुछ बंधक रख तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं ॥ २४। फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्म्मचारी का भी कहा नकारके[१] क्योंकर रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है ॥ २५। क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस स्थान को उजाड़ने के लिये चढ़ाई किई है यहोवा ने मुझ से कहा है कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे ॥ २६। तब हिल्किय्याह् के पुत्र एल्याकीम् और शेब्ना और योआह् ने रब्शाके से कहा अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर क्योंकि हम उसे समझते हैं और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर ॥ २७। रब्शाके ने उन से कहा क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के वा तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं इस लिये कि तुम्हारे संग उन को भी अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़े ॥ २८। तब रब्शाके ने खड़ा हो यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर् के राजा की

(१) मूल में, कर्म्मचारियों में से एक गवर्नर का भी मुंह फेर के।

बात सुनो ॥ २९ । राजा यों कहता है कि हिज़्किय्याह् तुम को भुलाने न पाए क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा ॥ ३० । और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भी भरोसा कराने न पाए कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर् के राजा के वश में न पड़ेगा ॥ ३१ । हिज़्किय्याह् की मत सुनो अश्शूर् का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो¹ और मेरे पास निकल आओ तब अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाओ और अपने अपने कुण्ड का पानी पीओ ॥ ३२ । पीछे मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश, रोटी और दाखबारियों का देश, जलपाइयों और मधु का देश है - वहां तुम मरोगे नहीं जीते रहोगे सो जब हिज़्किय्याह् यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम को बचाएगा तब उस की न सुनना ॥ ३३ । क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से कभी बचाया है ॥ ३४ । हमात् और अर्पाद् के देवता कहां रहे सपर्वैम् हेना और इव्वा के देवता कहां रहे क्या उन्हों ने शोमरोन् को मेरे हाथ से बचाया है ॥ ३५ । देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो फिर क्या यहोवा यरूशलेम् को मेरे हाथ से बचाएगा ॥ ३६ । पर सब लोग चुप रहे और उस के उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उस को उत्तर न देना ॥ ३७ । तब हिज़्किय्याह् का पुत्र एल्याकीम् जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप् का पुत्र योआह् जो इतिहास का लिखनेहारा था इन्हों ने हिज़्किय्याह् के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रब्शाके की बातें कह सुनाईं ॥

१९. जब हिज़्किय्याह् राजा ने यह सुना तब वह अपने वस्त्र फाड़ टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया ॥ २ । और उस ने एल्याकीम् को जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना मन्त्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी के पास भेज दिया ॥ ३ । उन्हों ने उस से कहा हिज़्किय्याह् यों कहता है कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जननी को जनने का बल न रहा ॥ ४ । क्या जानिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा रब्शाके की सब बातें सुने जिसे उस के स्वामी अश्शूर् के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे सो तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गये हैं प्रार्थना कर¹ ॥ ५ । सो हिज़्किय्याह् राजा के कर्म्मचारी यशायाह् के पास आये ॥ ६ । तब यशायाह् ने उन से कहा अपने स्वामी से कहो कि यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने सुने हैं जिन के द्वारा अश्शूर् के राजा के जनों ने मेरी निन्दा किई है उन के कारण मत डर ॥ ७ । सुन मैं उस के मन में प्रेरणा करूंगा कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए और मैं उस को उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा ॥

८ । सो रब्शाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश् के पास से उठ गया है ॥ ९ । और जब उस ने कूश् के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह मुझ से लड़ने को निकला है तब उस ने हिज़्किय्याह् के पास दूतों को यह कहकर भेजा कि, १० । तुम यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् से यों कहना कि तेरा परमेश्वर जिस का तू भरोसा करता है यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम् अश्शूर् के राजा के वश में न पड़ेगा ॥ ११ । देख तू ने तो सुना है कि अश्शूर् के राजाओं ने सब देशों से कैसा किया है कि उन्हें सत्यानाश ही किया है फिर क्या तू बचेगा ॥ १२ । गोज़ान् और हारान् और रेसेप् और तलस्सार् में रहनेहारे एदेनी जिन जातियों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया क्या उन में से किसी जाति

(१) मूल में मेरे साथ आशीर्वाद करो ।

(१) मूल में . प्रार्थना उठा ।

के देवताओं ने उस को बचा लिया ॥ १३ । हमात् का राजा और अर्पाद् का राजा और सपर्वैम् नगर का राजा और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहां रहे ॥ १४ । इस पत्री को हिज़्किय्याह् ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा तब यहोवा के भवन में जाकर उस को यहोवा के साम्हने फैला दिया ॥ १५ । और यहोवा से यह प्रार्थना किई कि हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा हे करूबों पर विराजनेहारे पृथिवी के सारे राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है आकाश और पृथिवी को तू ही ने बनाया है ॥ १६ । हे यहोवा कान लगाकर सुन हे यहोवा आंख खोलकर देख और सन्हेरीब् के वचनों को सुन ले जो उस ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को कहला भेजे हैं ॥ १७ । हे यहोवा सच तो है कि अश्शूर् के राजाओं ने जातियों को और उन के देशों को उजाड़ा है. १८ । और उन के देवताओं को आग में झोंका है क्योंकि वे ईश्वर न थे वे मनुष्यों के बनाये हुए काठ और पत्थर ही के थे इस कारण वे उन को नाश करने पाये ॥ १९ । सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें उस के हाथ से बचा कि पृथिवी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है ॥

२० । तब आमोस् के पुत्र यशायाह् ने हिज़्किय्याह् के पास यह कहला भेजा कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जो प्रार्थना तू ने अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् के विषय मुझ से किई उसे मैं ने सुनी है ॥ २१ । उस के विषय में यहोवा ने यह वचन कहा है कि सिय्योन् की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे ठट्ठों में उड़ाती है यरूशलेम् की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है ॥ २२ । तू ने जो नामधराई और निन्दा किई है सो किस की किई है और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया[1] है सो किस के विरुद्ध किया है इस्राएल् के पवित्र के विरुद्ध तू ने किया है ॥ २३ । अपने दूतों के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर बरन लबानोन् के बीच तक चढ़ आया हूं सो मैं उस के ऊंचे ऊंचे देवदारुओं और अच्छे अच्छे सनौवरों को काट डालूंगा और उस में जो सब से ऊंचा टिकने का स्थान हो उस में और उस के बन में की फलदाई बारियों में घुसूंगा ॥ २४ । मैं ने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया और मिस्र की नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा ॥ २५ । क्या तू ने नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैं ने यही ठहराया और अगले दिनों से इस की तैयारी किई थी सो अब मैं ने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे ॥ २६ । इसी कारण उन में के रहनेहारों का बल घट गया वे विस्मित और लज्जित हुए वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास और ऐसे अनाज के समान हो गये जो बढ़ने से पहिले सूख जाता है ॥ २७ । मैं तो तेरा बैठा रहना और कूच करना और लौट आना जानता हूं और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है ॥ २८ । इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डालकर और तेरे मुंह में अपना लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी से तुझे लौटा दूंगा ॥ २९ । और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस बरस तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे और दूसरे बरस उस से जो उत्पन्न हो सो खाओगे और तीसरे बरस बीज बोने और उसे लवने पाओगे दाख की बारियां लगाने और उन का फल खाने पाओगे ॥ ३० । और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे[1] और फलेंगे भी ॥ ३१ । क्योंकि यरूशलेम् में से बचे हुए और सिय्योन् पर्वत के भागे हुए लोग निकलेंगे । यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा ॥ ३२ । सो यहोवा अश्शूर् के राजा के विषय में यों कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने बरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा और न वह ढाल लेकर इस के साम्हने आने वा इस के विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा ॥

(१) मूल में अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं ।

(१) मूल में, नीचे की ओर जड़ ।

३३ । जिस मार्ग से वह आया उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ३४ । और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा ॥

३५ । उसी रात में क्या हुआ कि यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा और भोर को जब लोग सवेरे उठे तब क्या देखा कि लोथ ही लोथ पड़ी हैं ॥ ३६ । सो अश्शूर् का राजा सन्हेरीब् चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने लगा ॥ ३७ । वहां वह अपने देवता निस्रोक् के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था कि अद्रम्मेलेक और शरेसेर् ने उस को तलवार से मारा और अरारात् देश में भाग गये और उसी का पुत्र एसर्हद्दोन् उस के स्थान पर राज्य करने लगा ॥

(हिज़्किय्याह् का मृत्यु से बचना ।)

२०. उन दिनों में हिज़्किय्याह् ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था और आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी ने उस के पास जाकर कहा यहोवा यों कहता है कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो सो दे क्योंकि तू नहीं बचेगा मर जाएगा ॥ २ । तब उस ने भीत की ओर मुंह फेर यहोवा से प्रार्थना करके कहा, ३ । हे यहोवा मैं बिनती करता हूं स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर[1] चलता आया हूं और जो तुझे अच्छा लगता है सोई मैं करता आया हूं तब हिज़्किय्याह् बिलक बिलक रोया ॥ ४ । यशायाह् नगर के बीच में जाने न पाया कि यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, ५ । लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिज़्किय्याह् से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं सुन मैं तुझे चंगा करने पर हूं परसों तू यहोवा के भवन में जाने पाएगा ॥ ६ । और मैं तेरी आयु पन्द्रह बरस और बढ़ा दूंगा और अश्शूर् के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा ॥ ७ । तब यशायाह् ने कहा अंजीरों की एक टिकिया लो जब उन्हों ने उसे लेकर फोड़े पर बांधा तब वह चंगा हो गया ॥ ८ । हिज़्किय्याह् ने तो यशायाह् से पूछा था यहोवा जो मुझे ऐसा चंगा करेगा कि मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूंगा इस का क्या चिन्ह होगा ॥ ९ । यशायाह् ने कहा था यहोवा जो अपने इस कहे हुए वचन को पूरा करेगा इस बात का तेरे लिये यहोवा की ओर से यह चिन्ह होगा क्या धूपघड़ी की छाया दस अंश बढ़ जाए वा दस अंश लौट जाए ॥ १० । हिज़्किय्याह् ने कहा छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात है सो ऐसा न होए छाया दस अंश पीछे लौट जाए ॥ ११ । तब यशायाह् नबी ने यहोवा को पुकारा और आहाज की धूपघड़ी की छाया जो दस अंश ढल चुकी थी यहोवा ने उस को पीछे की ओर लौटा दिया ॥

(हिज़्किय्याह का गर्व्व और उस का दण्ड ।)

१२ । उस समय बलदान् का पुत्र बरोदक्बलदान् जो बाबेल् का राजा था उस ने हिज़्किय्याह् के रोगी होने की चर्चा सुनकर उस के पास पत्री और भेंट भेजी ॥ १३ । उन के लानेहारों की मानकर हिज़्किय्याह् ने उन को अपने अनमोल पदार्थों का सारा भण्डार और चान्दी और सोना और सुगंध द्रव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का सारा घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं सो सब दिखाईं हिज़्किय्याह् के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई हो ॥ १४ । तब यशायाह् नबी ने हिज़्किय्याह् राजा के पास जाकर पूछा वे मनुष्य क्या कह गये और कहां से तेरे पास आये थे हिज़्किय्याह् ने कहा वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल् से आये थे ॥ १५ । फिर उस ने पूछा तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है हिज़्किय्याह ने कहा जो कुछ मेरे भवन में है सो सब उन्हों ने देखा मेरे भण्डारों में कोई ऐसी

[1] मूल में, तेरे साम्हने ।

वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो ॥ १६ । यशायाह ने हिज़्किय्याह् से कहा यहोवा का वचन सुन ले ॥ १७ । ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में जो कुछ तेरे भवन मे है और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रक्खा हुआ आज के दिन लों भण्डारों में हैं सो सब बाबेल् को उठ जाएगा यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी ॥ १८ । और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों उन में से भी कितनों को वे बन्धुआई में ले जाएंगे और वे खोजे बनकर बाबेल् के राजभवन में रहेंगे ॥ १९ । हिज़्किय्याह् ने यशायाह से कहा यहोवा का वचन जो तू ने कहा है सो भला ही है फिर उस ने कहा क्या मेरे दिनों में शांति और सच्चाई बनी न रहेंगी ॥ २० । हिज़्किय्याह् के और सब काम और उस की सारी वीरता और किस रीति उस ने एक पोखरा और नाली खुदवाकर नगर में पानी पहुंचा दिया यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ २१ । निदान हिज़्किय्याह् अपने पुरखाओं के संग सो गया और उस का पुत्र मनश्शे उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(मनश्शे का राज्य)

२१. जब मनश्शे राज्य करने लगा तब बारह बरस का था और यरूशलेम् में पचपन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम हेप्सीबा था ॥ २ । उस ने उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ ३ । उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिन को उस के पिता हिज़्किय्याह् ने नाश किया था फिर बनाया और इस्राएल् के राजा अहाब् की नाईं बाल् के लिये वेदियां और एक अशेरा बनवाई और आकाश के सारे गण को दण्डवत् करता और उन की उपासना करता रहा ॥ ४ । और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिस के विषय यहोवा ने कहा था कि यरूशलेम् में मैं अपना नाम रखूंगा । ५ । बरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के सारे गण के लिये वेदियां बनाईं ॥ ६ । फिर उस ने अपने बेटे को आग में होम करके चढ़ाया और शुभ अशुभ मुहूर्तों को मानता और टोना करता और ओझों और भूत सिद्धिवालों से व्यवहार करता था बरन उस ने ऐसे बहुत से काम किये जो यहोवा के लेखे बुरे हैं और जिन से वह रिसियाता है ॥ ७ । और अशेरा की जो मूरत उस ने खुदवाई उस को उस ने उस भवन में स्थापन किया जिस के विषय यहोवा ने दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान से कहा था कि इस भवन में और यरूशलेम् में जिस को मैं ने इस्राएल् के सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं सदा लों अपना नाम रखूंगा ॥ ८ । और यदि वे मेरी सब आज्ञाओं के और मेरे दास मूसा की दिई हुई सारी व्यवस्था के अनुसार करने की चौकसी करें तो मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने इस्राएल् के पुरखाओं को दिया था उस से वे फिर निकलकर मारे मारे फिरेंगे ॥ ९ । पर उन्हों ने न माना बरन मनश्शे ने उन को यहां लों भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई किई जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था ॥ १० । सो यहोवा ने अपने दास नबियों के द्वारा कहा कि, ११ । यहूदा के राजा मनश्शे ने जो ये घिनौने काम किये और जितनी बुराइयां एमोरियों ने जो उस से पहिले थे किई थीं उन से भी अधिक बुराइयां किईं और यहूदियों से अपनी बनाई हुई मूरतों की पूजा कराके उन्हें पाप में फंसाया है ॥ १२ । इस कारण इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं यरूशलेम् और यहूदा पर ऐसी विपत्ति डाला चाहता हूं कि जो कोई उस का समाचार सुने वह बड़े सन्नाटे में आ जायेगा[1] ॥ १३ । और जो मापने की डोरी मैं ने शोमरोन् पर डाली और जो साहुल मैं ने अहाब् के घराने पर लटकाया सोई यरूशलेम् पर डालूंगा और मैं यरूशलेम् को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई थाली को पोंछता है वह उसे पोंछकर उलट देता है ॥ १४ । और मैं अपने निज भाग के बचे हुओं को

(१) मूल में, उस के दोनो कान सनसना जाएंगे ।

त्यागकर शत्रुओं के हाथ कर दूंगा और वे अपने सब शत्रुओं की लूट और धन हो जाएंगे॥ १५। इस का कारण यह है कि जब से उन के पुरखा मिस्र से निकले तब से आज के दिन लों वे वह काम करके जो मेरे लेखे में बुरा है मुझे रिस दिलाते आते हैं॥ १६। मनश्शे ने तो न केवल वह काम कराके जो यहोवा के लेखे बुरा है यहूदियों से पाप कराया बरन निर्दोषों का खून बहुत किया यहां लों कि उस ने यरूशलेम् को एक सिरे से दूसरे सिरे लों खून से भर दिया॥ १७। मनश्शे के और सब काम जो उस ने किये और जो पाप उस ने किया यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ १८। निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे अपने भवन की बारी में जो उज्जा की बारी कहावती थी मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आमोन् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आमोन् का राज्य)

१९। जब आमोन् राज्य करने लगा तब वह बाईस बरस का था और यरूशलेम् में दो बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम मशुल्लेमेत् था जो योत्बावासी हारूस् की बेटी थी॥ २०। और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है॥ २१। और वह अपने पिता की सी सारी चाल चला और जिन मूरतों की उपासना उस का पिता करता था उन की वह भी उपासना करता और उन्हें दण्डवत् करता था॥ २२। और उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया और यहोवा के मार्ग पर न चला॥ २३। और आमोन् के कर्म्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके राजा को उसी के भवन में मार डाला॥ २४। तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला जिन्हों ने राजा आमोन् से द्रोह की गोष्ठी किई थी और लोगों ने उस के पुत्र योशिय्याह् को उस के स्थान पर राजा किया॥ २५। आमोन् के और काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥ २६। उसे भी उज्जा की बारी में उस की निज कबर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र योशिय्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योशिय्याह् के राज्य में व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

२२. जब योशिय्याह् राज्य करने लगा तब आठ बरस का था और यरूशलेम् में एकतीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यदीदा था जो बोस्कत्वासी अदाया की बेटी थी॥ २। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है और जिस मार्ग पर उस का मूलपुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर वह भी चला और उस से न तो दहिनी ओर मुड़ा और न बाईं ओर॥

३। अपने राज्य के अठारहवें बरस में राजा योशिय्याह् ने असल्याह् के पुत्र शापान् मंत्री को जो मशुल्लाम् का पोता था यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा कि, ४। हिल्किय्याह् महायाजक के पास जाकर कह कि जो चान्दी यहोवा के भवन में लाई गई है और डेवढ़ीदारों ने प्रजा से एकट्ठी किई है उस को जोड़कर, ५। उन काम करानेहारों को सौंप दे जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिये हैं फिर वे उस को यहोवा के भवन में काम करनेहारे कारीगरों को दें इस लिये कि उस में जो कुछ टूटा फूटा हो उस की वे मरम्मत करें, ६। अर्थात् बढ़इयों राजों और संगतराशों को दें और भवन की मरम्मत के लिये लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में लगाएं॥ ७। पर जिन के हाथ में वह चान्दी सौंपी गई उन से लेखा न लिया गया क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे॥ ८। और हिल्किय्याह् महायाजक ने शापान् मंत्री से कहा मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है तब हिल्किय्याह् ने शापान् को वह पुस्तक दिई और वह उसे पढ़ने लगा॥ ९। तब शापान् मंत्री ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश दिया कि जो चान्दी भवन में मिली उसे तेरे कर्म्मचारियों ने थैलियों में डालकर उन को सौंप दिया जो यहोवा

के भवन के काम करानेहारे हैं ॥ १० । फिर शापान् मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिल्किय्याह् याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है तब शापान् उसे राजा को पढ़कर सुनाने लगा ॥ ११ । व्यवस्था की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े ॥ १२ । फिर उस ने हिल्किय्याह् याजक शापान् के पुत्र अहीकाम् मीकायाह् के पुत्र अक्बोर् शापान् मंत्री और असाया नाम अपने एक कर्म्मचारी को आज्ञा दिई कि, १३ । यह पुस्तक जो मिली है उस की बातों के विषय तुम जाकर मेरी और प्रजा की और सारे यहूदियों की ओर से यहोवा से पूछो क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की बाते न मानी थीं और जो कुछ हमारे लिये लिखा है उस को न माना था ॥ १४ । सो हिल्किय्याह् याजक और अहीकाम् अक्बोर् शापान् और असाया ने हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से बातें किईं वह तो उस शल्लूम् की स्त्री थी जो तिक्वा का पुत्र और हर्हस् का पोता और वस्त्रों का रखवाला था और वह स्त्री यरूशलेम् के नये टोले में रहती थी ॥ १५ । उस ने उन से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा उस से यह कहो कि, १६ । यहोवा यों कहता है कि सुन जिस पुस्तक को यहूदा के राजा ने पढ़ा है उस की सब बातों के अनुसार मैं इस स्थान और इस के निवासियों पर विपत्ति डाला चाहता हूं ॥ १७ । उन लोगों ने मुझे त्याग करके पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़केगी और फिर शांत न होगी ॥ १८ । पर यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया उस से तुम यों कहो कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है इस लिये कि तू वे बातें सुनकर, १९ । दीन हुआ और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इस के निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे और साप दिया करेंगे तू ने यहोवा के साम्हने अपना सिर नवाया और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है इस कारण मैं ने भी तेरी सुनी है यहोवा की यही वाणी है ॥ २० । इस लिये सुन मैं ऐसा करूंगा कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा और तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया जाएगा और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डाला चाहता हूं उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ देखना न पड़ेगा । तब उन्हों ने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया ॥

(योशिय्याह् का मूर्त्तिपूजा को बन्द करना.)

२३. राजा ने यहूदा और यरूशलेम् के सब पुरनियों को अपने पास एकट्ठा बुलवा भेजा ॥ २ । और राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम् के सब निवासियों और याजकों और नबियों वरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उस की सारी बातें उन को पढ़कर सुनाईं ॥ ३ । तब राजा ने खंभे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बांधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की आज्ञाएं चितौनियां और विधियां पाला करूंगा और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूंगा । और सारी प्रजा वाचा में भागी[1] हुई ॥ ४ । तब राजा ने हिल्किय्याह् महायाजक और उस के नीचे के याजकों और डेवढ़ीदारों को आज्ञा दिई कि जितने पात्र बाल् और अशेरा और आकाश के सारे गण के लिये बने हैं उन सभों को यहोवा के मन्दिर में से निकाल ले आओ तब उस ने उन को यरूशलेम् के बाहर किद्रोन् के खेतों में फूंककर उन की राख बेतेल् को पहुंचा दिई ॥ ५ । और जिन पुजारियों को यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूशलेम् के आस पास के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन को और जो बाल् और सूर्य्य चन्द्रमा राशिचक्र और आकाश के सारे गण

(१) मूल में खड़ी ।

को धूप जलाते थे उन को भी राजा ने दूर कर दिया ॥ ६। और वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यरूशलेम् के बाहर किद्रोन् नाले में लिवा ले गया और वहीं उस को फूंक दिया और पीसकर बुकनी कर दिया तब वह बुकनी साधारण लोगों की कबरों पर फेंक दिई ॥ ७। फिर पुरुषगामियों के घर जो यहोवा के भवन में थे जहां स्त्रियां अशेरा के लिये पर्दे बिना करती थीं उन को उस ने ढा दिया ॥ ८। और उस ने यहूदा के सब नगरों से याजकों को बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा लों के उन ऊंचे स्थानों को जहां उन याजकों ने धूप जलाया था अशुद्ध कर दिया और फाटकों में के ऊंचे स्थान अर्थात् जो स्थान नगर के यहोशू नाम हाकिम के फाटक पर थे और नगर के फाटक के भीतर जानेवाले की बाईं ओर थे उन को उस ने ढा दिया ॥ ९। तौभी ऊंचे स्थानों के याजक यरूशलेम् में यहोवा की वेदी के पास न आये वे अखमीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाते थे ॥ १०। फिर उस ने तोपेत् जो हिन्नोम्वंशियों की तराई में था अशुद्ध कर दिया इस लिये कि कोई अपने बेटे वा बेटी को मोलेक् के लिये आग में होम करके न चढ़ाए ॥ ११। और जो घोड़े यहूदा के राजाओं ने सूर्य्य को अर्पण करके यहोवा के भवन के द्वार पर नतन्मेलेक् नाम खोजे की बाहर की कोठरी में रक्खे थे उन को उस ने दूर किया और सूर्य्य के रथों को आग में फूंक दिया ॥ १२। और आहाज़् की अटारी की छत पर जो वेदियां यहूदा के राजाओं की बनाई हुई थीं और जो वेदियां मनश्शे ने यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में बनाई थीं उन को राजा ने ढाकर पीस डाला और उन की बुकनी किद्रोन् नाले में फेंक दिई ॥ १३। और जो ऊंचे स्थान इस्राएल् के राजा सुलैमान ने यरूशलेम् की पूरब ओर और विकारी नाम पहाड़ी की दक्खिन अलंग अश्तोरेत् नाम सीदोनियों की घिनौनी देवी और कमोश् नाम मोआबियों के घिनौने देवता और मिल्कोम् नाम अम्मोनियों के घिनौने देवता के लिये बनवाये थे उन को राजा ने अशुद्ध कर दिया ॥ १४। और उस ने लाठों को तोड़ दिया और अशेरों को काट डाला और उन के स्थान मनुष्यों की हड्डियों से भर दिये ॥ १५। फिर बेतेल् में जो वेदी थी और जो ऊंचा स्थान नबात् के पुत्र यारोबाम् ने बनाया था जिस ने इस्राएल् से पाप कराया था उस वेदी और उस ऊंचे स्थान को उस ने ढा दिया और ऊंचे स्थान को फूंककर बुकनी कर दिया और अशेरा को फूंक दिया ॥ १६। और योशिय्याह् ने फिरके वहां के पहाड़ पर की कबरों को देखा सो उस ने भेजकर उन कबरों से हड्डियां निकलवा दिईं और वेदी पर जलवाकर उस को अशुद्ध किया यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो परमेश्वर के उस जन ने पुकारकर कहा था जिस ने इन्हीं बातों की चर्चा पुकारके किई थी ॥ १७। तब उस ने पूछा जो खंभा मुझे देख पड़ता है वह क्या है तब नगर के लोगों ने उस से कहा वह परमेश्वर के उस जन की कबर है जिस ने यहूदा से आकर इसी काम की चर्चा पुकारके किई जो तू ने बेतेल् की वेदी पर किया है ॥ १८। तब उस ने कहा उस को छोड़ दो उस की हड्डियों को कोई न हटाए सो उन्हों ने उस की हड्डियां उस नबी की हड्डियों के संग जो शोमरोन् से आया था रहने दिईं ॥ १९। फिर ऊंचे स्थान के जितने भवन शोमरोन् के नगरों में थे जिन को इस्राएल् के राजाओं ने बनाकर यहोवा को रिस दिलाई थी उन सभों को योशिय्याह् ने गिरा दिया और जैसा जैसा उस ने बेतेल् में किया था वैसा वैसा उन से भी किया ॥ २०। और उन ऊंचे स्थानों के जितने याजक वहां थे उन सभों को उस ने उन्हीं वेदियों पर बलि किया और उन पर मनुष्यों की हड्डियां जलाकर यरूशलेम् को लौट गया ॥

(योशिय्याह का उत्तर चरित्र)

२१। और राजा ने सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दिई कि इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है उस के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह् का पर्व मानो ॥ २२। निश्चय ऐसा फसह् न तो उन न्यायियों के दिनों में माना गया था जो इस्राएल् का न्याय करते थे और न इस्राएल् वा

यहूदा के राजाओं के सारे दिनों में माना गया था ॥ २३। राजा योशिय्याह् के अठारहवें बरस में यहोवा के लिये यरूशलेम् में यह फसह् माना गया ॥ २४। फिर ओझे भूतसिद्धिवाले गृहदेवता मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुएं यहूदा देश और यरूशलेम् में जहां कहीं देख पड़ीं उन सभों को योशिय्याह् ने इस मनसा से नाश किया कि व्यवस्था की जो बातें उस पुस्तक में लिखी थीं जो हिल्किय्याह् याजक को यहोवा के भवन में मिली थी उन को वह पूरी करे ॥ २५। और उस के तुल्य न तो उस से पहिले कोई ऐसा राजा हुआ और न उस के पीछे ऐसा कोई राजा उठा जो मूसा् की सारी व्यवस्था के अनुसार अपने सारे मन और सारे जीव और सारी शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो ॥ २६। तौभी यहोवा का भड़का हुआ बड़ा कोप शान्त न हुआ जो इस कारण से यहूदा पर भड़का हुआ था कि मनश्शे ने यहोवा को रिस पर रिस दिलाई थी ॥ २७। सो यहोवा ने कहा था जैसे मैं ने इस्राएल् को अपने साम्हने से दूर किया वैसे ही यहूदा को भी दूर करूंगा और इस यरूशलेम् नगर से जिसे मैं ने चुना और इस भवन से जिस के विषय मैं ने कहा कि यह मेरे नाम का निवास होगा मैं हाथ उठाऊंगा ॥ २८। योशिय्याह् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ २९। उस के दिनों में फ़िरौन्-नको नाम मिस्र का राजा अश्शूर् के राजा के विरुद्ध परात् महानद लों गया सो योशिय्याह् राजा उस का साम्हना करने को गया और उस ने उस को मगिद्दो में देखकर मार डाला ॥ ३०। तब उस के कर्म्मचारियों ने उस की लोथ एक रथ पर रख मगिद्दो से ले जाकर यरूशलेम् को पहुंचाई और उस की निज कबर में रख दिई। तब साधारण लोगों ने योशिय्याह् के पुत्र यहोआहाज् को लेकर उस का अभिषेक करके उस के पिता के स्थान पर राजा किया ॥

(यहोआहाज का राज्य)

३१। जब यहोआहाज् राज्य करने लगा तब वह तेईस बरस का था और तीन महीने लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम हमूतल् था जो लिब्नावासी यिर्मयाह् की बेटी थी ॥ ३२। उस ने ठीक अपने पुरखाओं की नाईं वही किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ ३३। उस को फ़िरौन्-नको ने हमात् देश के रिब्ला नगर में बांध रक्खा इस लिये कि वह यरूशलेम् में राज्य न करने पाए फिर उस ने देश पर सौ किक्कार् चान्दी और किक्कार् भर सोना जुरमाना किया ॥ ३४। तब फ़िरौन्-नको ने योशिय्याह् के पुत्र एल्याकीम् को उस के पिता के स्थान पर राजा किया और उस का नाम बदलकर यहोयाकीम् रक्खा और यहोआहाज् को ले गया सो यहोआहाज् मिस्र में जाकर वहीं मर गया ॥ ३५। यहोयाकीम् ने फ़िरौन् को वह चान्दी और सोना तो दिया पर देश पर इस लिये कर लगाया कि फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके अर्थात् देश के सब लोगों में से जितना जिस पर लगान लगा उतनी चान्दी और सोना उस से फ़िरौन्-नको को देने के लिये ले लिया ॥

(यहोयाकीम् का राज्य)

३६। जब यहोयाकीम् राज्य करने लगा तब वह पचीस बरस का था और ग्यारह बरस तक यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम जबीदा था जो रूमावासी पदायाह् की बेटी थी ॥ ३७। उस ने ठीक अपने पुरखाओं की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥

२४. १। उस के दिनों में बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् ने चढ़ाई किई और यहोयाकीम् तीन बरस लों उस के अधीन रहा पीछे उस ने फिरके उस से बलवा किया ॥ २। तब यहोवा ने उस के विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के लिये उस के विरुद्ध कस्दियों अरामियों मोआबियों और अम्मोनियों के दल भेज दिये, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास नबियों के द्वारा कहा था ॥ ३। निःसंदेह यह यहूदा पर यहोवा की आज्ञा से हुआ इस लिये कि वह उन को अपने साम्हने से दूर करे यह मनश्शे के सब पापों के कारण हुआ ॥ ४। और निर्दोषों

के उस खून के कारण जो उस ने किया था क्योंकि उस ने यरूशलेम् को निर्दोषों के खून से भर दिया था जिस को यहोवा क्षमा करने का न था ॥ ५ । यहोयाकीम् के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ ६ । निदान यहोयाकीम् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का पुत्र यहोयाकीन् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ७ । और मिस्र का राजा अपने देश से बाहर फिर कभी न आया क्योंकि बाबेल् के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर परात् महानद लों जितना देश मिस्र के राजा का था उस सब को अपने वश में कर लिया था ॥

(यहोयाकीन् का राज्य)

८ । जब यहोयाकीन् राज्य करने लगा तब वह अठारह बरस का था और तीन महीने लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम नहुश्ता था जो यरूशलेम् के एल्नातान् की बेटी थी ॥ ९ । उस ने ठीक अपने पिता की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ १० । उस के दिनों में बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर के कर्म्मचारियों ने यरूशलेम् पर चढ़ाई करके नगर को घेर लिया ॥ ११ । और जब बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् के कर्म्मचारी नगर को घेरे हुए थे तब वह आप वहां आ गया ॥ १२ । और यहूदा का राजा यहोयाकीन् अपनी माता और कर्म्मचारियों हाकिमों और खोजों को संग लेकर बाबेल् के राजा के पास गया और बाबेल् के राजा ने अपने राज्य के आठवें बरस में उन को पकड़ लिया ॥ १३ । तब उस ने यहोवा के भवन में और राजभवन में रक्खा हुआ सारा धन वहां से निकाल लिया और सोने के जो पात्र इस्राएल् के राजा सुलैमान् ने बनाकर यहोवा के मन्दिर में रक्खे थे उन सभों को उस ने टुकड़े टुकड़े कर डाला जैसे कि यहोवा ने कहा था ॥ १४ । फिर वह सारे यरूशलेम् को अर्थात् सब हाकिमों और सब धनवानों को जो मिलकर दस हजार थे और सब कारीगरों और लोहारों को बंधुआ करके ले गया यहां लों कि साधारण लोगों में से कंगालों को छोड़ और कोई न रह गया ॥ १५ । और वह यहोयाकीन् को बाबेल् में ले गया और उस की माता और स्त्रियों और खोजों को और देश के बड़े लोगों को वह बंधुआ करके यरूशलेम् से बाबेल् को ले गया ॥ १६ । और सब धनवान जो सात हजार थे और कारीगर और लोहार जो मिलकर एक हजार थे और वे सब बीर और युद्ध के योग्य थे उन्हें बाबेल् का राजा बंधुआ करके बाबेल् को ले गया ॥ १७ । और बाबेल् के राजा ने उस के स्थान पर उस के चचा मत्तन्याह् को राजा ठहराया और उस का नाम बदलकर सिद्किय्याह् रक्खा ॥

(सिद्किय्याह् का राज्य)

१८ । जब सिद्किय्याह् राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम् में ग्यारह बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम हमूतल् था जो लिब्नावासी यिर्मयाह् की बेटी थी ॥ १९ । उस ने ठीक यहोयाकीम् की लीक पर चलकर वही किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ २० । क्योंकि यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम् और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उन को अपने साम्हने से दूर किया । और सिद्किय्याह् ने बाबेल् के राजा से बलवा किया ॥

२५. १ । उस के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् ने अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम् पर चढ़ाई किई और उस के पास छावनी करके उस की चारों ओर कोट बनाये ॥ २ । और नगर सिद्किय्याह् राजा के ग्यारहवें बरस लों घेरा हुआ रहा ॥ ३ । चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां लों बढ़ गई कि देश के लोगों के लिये कुछ खाने को न रहा ॥ ४ । तब नगर की शहरपनाह में दरार किई गई और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस मार्ग से सब योद्धा रात ही रात निकल भागे । कसदी तो नगर को घेरे हुए थे पर राजा ने अराबा का मार्ग लिया ॥ ५ । तब कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और उस को यरीहो के पास के अराबा में जा लिया और

उस की सारी सेना उस के पास से तितर बितर हो गई ॥ ६ । सो वे राजा का पकड़कर रिब्ला में बाबेल् के राजा के पास ले गये और उस के दण्ड की आज्ञा दिई गई ॥ ७ । और उन्हों ने सिद्‌किय्याह् के पुत्रों का उस के साम्हने घात किया और सिद्‌किय्याह् की आंखें फोड़ डालीं और उसे पीतल की बेड़ियों से जकड़कर बाबेल् को ले गये ॥

(यरूशलेम् का विनाश)

८ । बाबेल् के राजा नबूकद्‌नेस्सर् के उन्नीसवें बरस के पांचवे महीने के सातवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् जो बाबेल् के राजा का एक कर्म्मचारी था सो यरूशलेम् में आया ॥ ९ । और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम् के सब घरों को अर्थात् हर एक बड़े घर को आग लगाकर फूंक दिया ॥ १० । और यरूशलेम् की चारों ओर की सब शहरपनाह् को कस्‌दियों की सारी सेना ने जो जल्लादों के प्रधान के संग थी ढा दिया ॥ ११ । और जो लोग नगर में रह गये थे और जो लोग बाबेल् के राजा के पास भाग गये थे और साधारण लोग जो रह गये थे इन सभों को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् बंधुआ करके ले गया ॥ १२ । पर जल्लादों के प्रधान ने देश के कंगालों में से कितनों को दाख की बारियों की सेवा और किसनई करने को छोड़ दिया ॥ १३ । और यहोवा के भवन में जो पीतल के खंभे थे और पाये और पीतल का गंगाल जो यहोवा के भवन में था इन को कस्‌दी तोड़कर उन का पीतल बाबेल् को ले गये ॥ १४ । और हण्डियों फावड़ियों चिमटाओं धूपदानों और पीतल के सब पात्रों को जिन से सेवा टहल होती थी वे ले गये ॥ १५ । और करछे और कटोरियां जो सोने की थीं और जो कुछ चान्दी का था सो सब सोना चांदी जल्लादों का प्रधान ले गया ॥ १६ । दोनों खंभे एक गंगाल और जो पाये सुलैमान् ने यहोवा के भवन के लिये बनाये थे इन सब वस्तुओं का पीतल तौल से बाहर था ॥ १७ । एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह अठारह हाथ की थी और एक एक खंभे के ऊपर तीन तीन हाथ ऊंची पीतल की एक एक कंगनी थी और एक एक कंगनी पर चारों ओर जाली और अनार जो बने थे सो सब पीतल के थे ॥ १८ । और जल्लादों के प्रधान ने सरायाह् महायाजक और उस के नीचे के याजक सपन्याह् और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया ॥ १९ । और नगर में से उस ने एक हाकिम पकड़ लिया जो योद्धाओं के ऊपर ठहरा था और जो पुरुष राजा के सन्मुख रहा करते थे उन में से पांच जन जो नगर में मिले और सेनापति का मुंशी जो लोगों को सेना में भरती किया करता था और लोगों में से साठ पुरुष जो नगर में मिले, २० । इन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् पकड़कर रिब्ला में बाबेल् के राजा के पास ले गया ॥ २१ । तब बाबेल् के राजा ने उन्हें हमात् देश के रिब्ला में ऐसा मारा कि वे मर गये । यों यहूदी बंधुआ करके अपने देश से निकाल लिये गये ॥ २२ । और जो लोग यहूदा देश में रह गये जिन को बाबेल् के राजा नबूकद्‌नेस्सर् ने छोड़ दिया उन पर उस ने अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् को जो शापान् का पोता था अधिकारी ठहराया ॥

(गदल्याह् की हत्या)

२३ । जब दलों के सब प्रधानों ने अर्थात् नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् कारेह् के पुत्र योहानान् नतोपाई तन्हूमेत् के पुत्र सरायाह् और किसी माकाई के पुत्र याजन्याह् ने और उन के जनों ने यह सुना कि बाबेल् के राजा ने गदल्याह् को अधिकारी ठहराया है तब वे अपने अपने जनों समेत मिस्पा में गदल्याह् के पास आये ॥ २४ । और गदल्याह् ने उन से और उन के जनों से किरिया खाकर कहा कस्‌दियों के सिपाहियों से न डरो देश में रहते हुए बाबेल् के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा ॥ २५ । परन्तु सातवें महीने में नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् जो एलीशामा का पोता और राजवंश का था उस ने दस जन संग ले गदल्याह् के पास जाकर उसे ऐसा मारा कि वह मर गया और जो यहूदी और कस्‌दी उस के संग मिस्पा में रहते थे उन को भी मार डाला ॥ २६ । तब क्या छोटे क्या बड़े सारी

प्रजा के लोग और दलों के प्रधान कर्सदियों के डर के मारे उठकर मिस्र में जाकर रहे ॥

(यहोयाकीन् का बढ़ाया जाना.)

२७। फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन् की बंधुआई के सैंतीसवें बरस में अर्थात् जिस बरस में बाबेल् का राजा एवील्मरोदक् राजगद्दी पर विराजमान हुआ उसी के बारहवें महीने के सताईसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन् को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया, २८। और उस से मधुर मधुर बचन कहकर जो राजा उस के संग बाबेल् में बन्धुए थे उन के सिंहासनों से उस के सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, २९। और उस के बन्दीगृह के वस्त्र बदला दिये और उस ने जीवन भर नित्य राजा के सन्मुख भोजन किया ॥ ३०। और दिन दिन के खर्च के लिये राजा के यहां से नित्य का खर्च ठहराया गया सो उस के जीवन भर लगातार मिलता रहा ॥

इतिहास नाम पुस्तक। पहिला भाग।

(आदम आदि की वंशावलियां.)

१. आदम् शेत् एनोश्, २। केनान् महललेल् येरेद्, ३। हनोक् मतूशेलह् लेमेक्, ४। नूह शेम् हाम् और येपेत् ॥

५। येपेत् के पुत्र, गोमेर् मागोग् मादै यावान् तूबल् मेशेक् और तीरास् ॥ ६। और गोमेर् के पुत्र, अश्कनज् दीपत् और तोगर्मा ॥ ७। और यावान् के पुत्र, एलीशा तर्शीश् और कित्ती और रोदानी लोग ॥

८। हाम् के पुत्र, कूश् मिस्र पूत् और कनान् ॥ ९। और कूश् के पुत्र, सबा हवीला सब्ता रामा और सब्तका, और रामा के पुत्र, शबा और ददान् ॥ १०। और कूश् ने निम्रोद् को जन्माया, पृथिवी पर पहिला वीर वही हुआ ॥ ११। और मिस्र ने लूदी अनामी लहाबी नप्तूही पत्रूसी कसलूही (वहां से पलिश्ती निकले) और कप्तोरी जन्माये ॥ १३। कनान् ने अपना जेठा सीदोन् और हित्त, १४। और यबूसी एमोरी गिर्गाशी, १५। हिव्वी अर्की सीनी, १६। अर्वदी समारी और हमाती जन्माये ॥

१७। शेम् के पुत्र, एलाम् अश्शूर् अर्पक्षद् लूद् अराम ऊस् हूल् गेतेर् और मेशेक् ॥ १८। और अर्पक्षद् ने शेलह् और शेलह् ने एबेर् को जन्माया ॥ १९। और एबेर् के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग् इस कारण रक्खा गया कि उस के दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के भाई का नाम योक्तान् था ॥ २०। और योक्तान् ने अल्मोदाद् शेलेप् हसर्मावेत् येरह्, २१। हदोराम् ऊजाल् दिक्ला, २२। एबाल् अबीमाएल् शबा, २३। ओपीर् हवीला और योबाब् को जन्माया ये ही सब योक्तान् के पुत्र हुए ॥

२४। शेम् अर्पक्षद् शेलह्, २५। एबेर् पेलेग् रू, २६। सरूग् नाहोर् तेरह्, २७। अब्राम् सोई इब्राहीम् भी कहलाता है ॥ २८। इब्राहीम् के पुत्र, इसहाक् और इश्माएल् ॥

२९। इन की वंशावलियां ये हैं। इश्माएल् का जेठा नबायोत्, फिर केदार् अद्बेल् मिब्साम्, ३०। मिश्मा दूमा मस्सा हदद् तेमा, ३१। यतूर् नापीश् केदमा, ये इश्माएल् के पुत्र हुए ॥

३२। फिर कतूरा जो इब्राहीम् की रखेली थी उसके ये पुत्र हुए अर्थात् वह जिम्रान् योक्षान् मदान् मिद्यान् यिश्बाक् और शूह को जनी। योक्षान् के पुत्र, शबा और ददान् ॥ ३३। और मिद्यान् के पुत्र, एपा एपेर् हनोक् अबीदा और एल्दा, ये सब कतूरा के पुत्र हुए ॥

३४ । इब्राहीम ने इस्हाक् को जन्माया । इस्हाक् के पुत्र, एसाव् और इस्राएल् ॥

३५ । एसाव् के पुत्र, एलीपज् रूएल् यूश् यालाम् और कोरह ॥ ३६ । एलीपज् के पुत्र, तेमान् ओमार् सपी गाताम् कनज् तिम्ना और अमालेक् ॥ ३७ । रूएल् के पुत्र, नहत् जेरह् शम्मा और मिज्जा ॥ ३८ । फिर सेईर् के पुत्र, लोतान् शोबाल् सिबोन अना दीशोन् एसेर् और दीशान् ॥ ३९ । और लोतान् के पुत्र, होरी और होमाम्, और लोतान् की बहिन तिम्ना थी ॥ ४० । शोबाल् के पुत्र, अल्यान् मानहत् एबाल् शपी और ओनाम्, और सिबोन् के पुत्र, अय्या और अना ॥ ४१ । अना का पुत्र, दीशोन् । और दीशोन् के पुत्र, हम्रान् एश्बान् यित्रान् और करान् ॥ ४२ । एसेर् के पुत्र, बिल्हान् जावान् और याकान् । और दीशान् के पुत्र, ऊस् और अरान् ॥

४३ । जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था तब एदोम् के देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर् का पुत्र बेला और उस की राजधानी का नाम दिन्हाबा था ॥ ४४ । बेला के मरने पर बोस्राई जेरह् का पुत्र योबाब् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ४५ । और योबाब् के मरने पर तेमानियों के देश का हूशाम् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ४६ । फिर हूशाम् के मरने पर बदद् का पुत्र हदद् उस के स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब् के देश में मार लिया और उस की राजधानी का नाम अवीत् था ॥ ४७ । और हदद् के मरने पर मस्रेकाई सम्ला उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ४८ । फिर सम्ला के मरने पर शाऊल् जो महानद के तट पर के रहोबोत् नगर का था सो उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ४९ । और शाऊल् के मरने पर अक्बोर् का पुत्र बाल्हानान् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ५० । और बाल्हानान् के मरने पर हदद् उस के स्थान पर राजा हुआ और उस की राजधानी का नाम पाई था और उस की स्त्री का नाम महेतबेल् था जो मेजाहाब् की नतिनी और मत्रेद् की बेटी थी ॥ ५१ । और हदद् मर गया फिर एदोम् के अधिपति ये थे अर्थात् तिम्ना अधिपति अल्या अधिपति यतेत् अधिपति, ५२ । ओहोलीबामा अधिपति एला अधिपति पीनोन् अधिपति, ५३ । कनज् अधिपति तेमान् अधिपति मिब्सार् अधिपति, ५४ । मग्दीएल् अधिपति ईराम् अधिपति । एदोम् के ये अधिपति हुए ॥

२. इस्राएल् के ये पुत्र हुए रूबेन् शिमोन् लेवी यहूदा इस्साकार् जबूलून्, २ । दान् यूसुफ बिन्यामीन् नप्ताली गाद् और आशेर् ॥

(यहूदा की वंशावली)

३ । यहूदा के ये पुत्र हुए एर् ओनान् और शेला उस के ये तीनों पुत्र बतशू नाम एक कनानी स्त्री जनी और यहूदा का जेठा एर् यहोवा के लेखे बुरा था इस कारण उस ने उस को मार डाला ॥ ४ । यहूदा की बहू तामार् उस के जन्माये पेरेस् और जेरह् को जनी । यहूदा के सब पुत्र पांच हुए ॥ ५ । पेरेस् के पुत्र, हेस्रोन् और हामूल् ॥ ६ । और जेरह् के पुत्र, जिम्री एतान् हेमान् कल्कोल् और दारा सब मिलकर पांच ॥ ७ । फिर कर्मी का पुत्र, आकार् जो अर्पण किई हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात करके इस्राएलियों का कष्ट देनेहारा हुआ ॥ ८ । और एतान् का पुत्र, अजर्याह् ॥ ९ । हेस्रोन् के जो पुत्र उत्पन्न हुए, यरह्मेल् राम् और कलूबै ॥ १० । और राम् ने अम्मीनादाब् को और अम्मीनादाब् ने नहशोन् को जन्माया जो यहूदियों का प्रधान हुआ ॥ ११ । और नहशोन् ने सल्मा को और सल्मा ने बोअज् को, १२ । और बोअज् ने ओबेद् को और ओबेद् ने यिशै को जन्माया ॥ १३ । और यिशै ने अपने जेठे एलीआब् को और दूसरे अबीनादाब् को तीसरे शिमा को, १४ । चौथे नतनेल् को पांचवें रद्दै को, १५ । छठवें ओसेम् को और सातवें दाऊद को जन्माया ॥ १६ । इन की बहिनें सरूयाह् और अबीगैल् थीं । और सरूयाह् के पुत्र, अबीशै योआब् और असाहेल् ये तीन ॥ १७ । और अबीगैल् अमासा को जनी और अमासा का पिता इश्माएली येतेर् था ॥ १८ । हेस्रोन् के पुत्र कालेब् ने अजूबा नाम एक स्त्री से और

यरीओत् से बेटे जन्माये और इस के पुत्र ये हुए[१] अर्थात् येशेर् शोबाब् और अर्दोन् ॥ १९ । जब अजूबा मर गई तब कालेब् ने एप्रात् को व्याह लिया और वह उस के जन्माये हूर् को जनी ॥ २० । और हूर् ने ऊरी को और ऊरी ने बसलेल् को जन्माया ॥ २१ । इस के पीछे हेस्रोन् ने गिलाद् के पिता माकीर् की बेटी से प्रसंग किया जिसे उस ने तब व्याह लिया जब वह साठ बरस का था और यह उस के जन्माये सगूब् को जनी ॥ २२ । और सगूब् ने याईर् को जन्माया जिस के गिलाद् देश में तेईस नगर थे ॥ २३ । और गशूर् और अराम् ने याईर् की बस्तियों को और गांवों समेत कनत् को उन से ले लिया ये सब नगर मिलकर साठ थे । ये सब गिलाद् के पिता माकीर् के पुत्र हुए ॥ २४ । और जब हेस्रोन् कालेबेप्राता में मर गया तब उस की अबिय्याह् नाम स्त्री उस के जन्माये अशहूर् को जनी जो तको का पिता हुआ ॥ २५ । और हेस्रोन् के जेठे यरह्मेल् के ये पुत्र हुए अर्थात् राम् जो उस का जेठा था और बूना ओरेन् ओसेम् और अहिय्याह् ॥ २६ । और यरह्मेल् की एक और स्त्री थी जिस का नाम अतारा था वह ओनाम् की माता हुई ॥ २७ । और यरह्मेल् के जेठे राम् के ये पुत्र हुए अर्थात् मास् यामीन् और एकेर् ॥ २८ । और ओनाम् के पुत्र शम्मै और यादा हुए और शम्मै के पुत्र नादाब् और अबीशूर् हुए ॥ २९ । और अबीशूर् की स्त्री का नाम अबीहैल् था और वह उस के जन्माये अह्बान् और मोलीद् को जनी ॥ ३० । और नादाब् के पुत्र सेलेद् और अप्पैम् हुए सेलेद् तो निःसन्तान मर गया ॥ ३१ । और अप्पैम् के पुत्र, यिशी । और यिशी का पुत्र शेशान् । और शेशान् का पुत्र अह्लै, ३२ । फिर शम्मै के भाई यादा के पुत्र, येतेर् और योनातान् हुए येतेर् तो निःसन्तान मर गया ॥ ३३ । योनातान् के पुत्र, पेलेत् और जाजा । यरह्मेल् के पुत्र ये हुए ॥ ३४ । शेशान् के तो बेटा न हुआ केवल बेटियां हुईं । शेशान् के तो यर्हा नाम एक मिस्री दास था ॥ ३५ । सो शेशान् ने उस को अपनी बेटी व्याह दिई और वह उस के जन्माये अत्तै को जनी ॥ ३६ । और अत्तै ने नातान् को नातान् ने जाबाद् को, ३७ । जाबाद् ने एप्लाल् को एप्लाल् ने ओबेद् को, ३८ । ओबेद् ने येहू को येहू ने अजर्याह् को, ३९ । अजर्याह् ने हेलेस् को हेलेस् ने एलासा को, ४० । एलासा ने सिस्मै को सिस्मै ने शल्लूम् को, ४१ । शल्लूम् ने यकम्याह् को और यकम्याह् ने एलीशामा को जन्माया ॥ ४२ । फिर यरह्मेल् के भाई कालेब् के ये पुत्र हुए अर्थात् उस का जेठा मेशा जो जीप् का पिता हुआ और हेब्रोन् के पिता मारेशा के पुत्र भी उसी के वंश में हुए ॥ ४३ । और हेब्रोन् के पुत्र, कोरह् तप्पूह् रेकेम् और शेमा ॥ ४४ । और शेमा ने योर्काम् के पिता रहम् को और रेकेम् ने शम्मै को जन्माया ॥ ४५ । और शम्मै का पुत्र माओन् हुआ और माओन् बेत्सूर् का पिता हुआ ॥ ४६ । फिर एपा जो कालेब् की रखेली थी सो हारान् मोसा और गाजेज् को जनी और हारान् ने गाजेज् को जन्माया ॥ ४७ । फिर याह्दै के पुत्र, रेगेम् योताम् गेशान् पेलेत् एपा और शाप् ॥ ४८ । और माका जो कालेब् की रखेली थी सो शेबेर् और तिर्हाना को जनी ॥ ४९ । फिर वह मद्मन्ना के पिता शाप को और मक्बेना और गिबा के पिता शवा को जनी । और कालेब् की बेटी अक्सा थी ॥ ५० । कालेब् के सन्तान ये हुए अर्थात् एप्राता के जेठे हूर् का पुत्र किर्यत्यारीम् का पिता शोबाल् ॥ ५१ । बेत्लेहेम् का पिता सल्मा और बेत्गादेर् का पिता हारेप् ॥ ५२ । और किर्यत्यारीम् के पिता शोबाल् के वंश में हारोए आधे मनुहोत्‌वासी, ५३ । और किर्यत्यारीम् के कुल अर्थात् यित्री पूती शूमाती और मिश्राई और इन से सोराई और एश्ताओली निकले ॥ ५४ । फिर सल्मा के वंश में बेत्लेहेम् और नतोपाई अत्रोत्‌बेत्योआब् और आधे मानहती सोरी, ५५ । और याबेस् में रहनेहारे लेखकों के कुल अर्थात् तिराती शिमाती और सूकाती हुए । ये रेकाब् के घराने के मूलपुरुष हम्मत् के वंशवाले केनी हैं ॥

---

(१) या कालेब ने अजूबा नाम अपनी स्त्री से यरीओत् को जन्माया और (यरीओत्) के ये पुत्र हुए ।

३. दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन् में उस के जन्मे सो ये हैं जेठा अम्नोन् जो यिज्रेली अहीनोअम् से दूसरा दानिय्येल् जो कर्मेली अबीगैल् से उत्पन्न हुआ, २। तीसरा अब्शालोम् जो गशूर् के राजा तल्मै की बेटी माका का पुत्र था, चौथा अदोनिय्याह् जो हग्गीत् का पुत्र था, ३। पांचवा शपत्याह् जो अबीतल् से और छठवां यित्राम् जो उस की स्त्री एग्ला से उत्पन्न हुआ ॥ ४। दाऊद के जन्माये हेब्रोन् में छ: पुत्र उत्पन्न हुए और वहां उस ने साढ़े सात बरस राज्य किया और यरूशलेम् में तेंतीस बरस राज्य किया ॥ ५। और यरूशलेम् में उस के ये पुत्र उत्पन्न हुए अर्थात् शिमा शोबाब् नातान् और सुलैमान् ये चारों अम्मीएल् की बेटी बतशू से उत्पन्न हुए ॥ ६। और यिभार् एलीशामा एलीपेलेत्, ७। नोगह् नेपेग् यापी, ८। एलीशामा एल्यादा और एलीपेलेत् ये नौ पुत्र, ९। ये सब दाऊद के पुत्र थे और इन को छोड़ रखेलियों के भी पुत्र थे और इन की बहिन तामार् थी ॥ १०। फिर सुलैमान् का पुत्र रहबाम् हुआ रहबाम् का अबिय्याह् अबिय्याह् का आसा आसा का यहोशापात्, ११। यहोशापात् का योराम् योराम् का अहज्याह् अहज्याह् का योआश्, १२। योआश् का अमस्याह् अमस्याह् का अजर्याह् अजर्याह् का योताम्, १३। योताम् का आहाज् आहाज् का हिज़्किय्याह् हिज़्किय्याह् का मनश्शे, १४। मनश्शे का आमोन् और आमोन् का योशिय्याह् पुत्र हुआ ॥ १५। और योशिय्याह् के पुत्र, उस का जेठा योहानान् दूसरा यहोयाकीम् तीसरा सिद्किय्याह् चौथा शल्लूम् ॥ १६। और यहोयाकीम् के पुत्र, यकोन्याह्, इस का पुत्र सिद्किय्याह् ॥ १७। और यकोन्याह् के पुत्र. अस्सीर्, उस का पुत्र शाल्तीएल्, १८। और मल्कीराम् पदायाह् शेनस्सर् यकम्याह् होशामा और नदब्याह् ॥ १९। और पदायाह् के पुत्र, जरुब्बाबेल् और शिमी हुए और जरुब्बाबेल् के पुत्र, मशुल्लाम् और हनन्याह् जिन की बहिन शलोमीत् थी, २०। और हशूबा ओहेल् बेरेक्याह् हसद्याह् और यूशब्हेसेद् पांच ॥ २१। और हनन्याह् के पुत्र, पलत्याह् और यशायाह्। और रपायाह् के पुत्र, अर्नान् के पुत्र ओबद्याह् के पुत्र और शकन्याह् के पुत्र ॥ २२। और शकन्याह् का पुत्र, शमायाह्। और शमायाह् के पुत्र, हत्तूश् यिगाल् बारीह् नार्याह् और शापात् छ. ॥ २३। और नार्याह् के पुत्र, एल्योएनै हिज़्किय्याह् और अज्रीकाम् तीन ॥ २४। और एल्योएनै के पुत्र, होदव्याह् एल्याशीब् पलायाह् अक्कूब् योहानान् दलायाह् और अनानी सात ॥

४. यहूदा के पुत्र, पेरेस् हेस्रोन् कर्मी हूर् और शोबाल् ॥ २। और शोबाल् के पुत्र, रायाह् ने यहत् को और यहत् ने अहूमै और लहद् को जन्माया ये सोराई कुल हैं ॥ ३। और एताम् के पिता के ये पुत्र हुए अर्थात् यिज्रेल् यिश्मा और यिद्बाश् जिन की बहिन का नाम हस्सलेल्पोनी था, ४। और गदोर् का पिता पनूएल् और हूशा का पिता एज़ेर्। ये एप्राता के जेठे हूर् के सन्तान हैं जो बेत्लेहेम् का पिता हुआ ॥ ५। और तको के पिता अशहूर् के हेला और नारा नाम दो स्त्रियां थीं ॥ ६। और नारा तो उस के जन्माये अहुज्जाम् हेपेर् तेमनी और हाहश्तारी को जनी नारा के ये ही पुत्र हुए ॥ ७। और हेला के पुत्र, सेरेत् यिसहर् और एत्नान् ॥ ८। फिर कोस् ने आनूब् और सोबेबा को जन्माया और उस के वंश में हारूम् के पुत्र अहर्हेल् के कुल भी उत्पन्न हुए ॥ ९। और याबेस् अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित हुआ और उस की माता ने यह कहकर उस का नाम याबेस्[1] रक्खा कि मैं इसे पीड़ित होकर जनी ॥ १०। और याबेस् ने इस्राएल् के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा कि भला होता कि तू मुझे सचमुच आशीष देता और मेरा देश बढ़ाता और तेरा हाथ मेरे साथ रहता और तू मुझे बुराई[2] से ऐसा बचा रखता कि मैं उस से पीड़ित न होता। और जो कुछ उस ने मांगा सो परमेश्वर ने दे दिया ॥ ११। फिर शूहा के भाई कलूब् ने एश्तोन् के पिता महीर् को जन्माया ॥ १२। और एश्तोन् के वंश में रापा का घराना और

(१) अर्थात् पीड़ा। (२) वा विपत्ति।

पासेह और ईर्नाहाश् का पिता तहिन्ना उत्पन्न हुए रेका के लोग ये ही हैं ॥ १३ । और कनज् के पुत्र, ओत्नीएल् और सरायाह् । और ओत्नीएल् का पुत्र, हतत् ॥ १४ । मोनोतै ने ओप्रा को और सरायाह् ने योआब् को जन्माया जो गेहराशीम् का पिता हुआ वे तो कारीगर थे ॥ १५ । और यपुन्ने के पुत्र कालेब् के पुत्र, ईरू एला और नाम् । और एला के पुत्र, कनज् ॥ १६ । और यहल्लेलेल् के पुत्र, जीप् जीपा तीरया और असरेल् ॥ १७ । और एज्रा के पुत्र, येतेर् मेरेद् एपेर् और यालोन् और उस की स्त्री मिर्य्याम् शम्मै और एश्तमो के पिता यिशबह् को जनी ॥ १८ । और उस की यहूदिन स्त्री गदोर् के पिता येरेद् सोको के पिता हेबेर् और जानोह् के पिता यकूतीएल् को जनी ये फिरौन की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेद् ने व्याह लिया था ॥ १९ । और होदिय्याह् की स्त्री जो नहम् की बहिन थी उस के पुत्र, कीला का पिता एक गेरेमी और एश्तमो का पिता एक माकाई ॥ २० । और शीमोन् के पुत्र, अम्नोन् रिन्ना बेन्हानान् और तीलोन् । और यिशी के पुत्र, जोहेत् और बेन्जोहेत् ॥ २१ । यहूदा के पुत्र शेला के पुत्र, लेका का पिता एर् मारेशा का पिता लादा और अश्बे के घराने के कुल जिस में सन के कपड़े का काम होता था, २२ । और योकीम् और कोजेबा के मनुष्य और योआश् और साराप् जो मोआब् में प्रभुता करते थे और याशूबोलेहेम् । इन का वृत्तान्त प्राचीन है ॥ २३ । ये कुम्हार थे और नताईम् और गदेरा में रहते थे जहां वे राजा का कामकाज करते हुए उस के पास रहते थे ॥

(शिमोन् की वंशावली)

२४ । शिमोन् के पुत्र, नमूएल् यामीन् यारीब् जेरह् और शाऊल् ॥ २५ । और शाऊल् का पुत्र शल्लूम् शल्लूम् मिब्साम् और मिब्साम् का मिश्मा हुआ ॥ २६ । और मिश्मा के पुत्र, उस का पुत्र हम्मूएल् उस का पुत्र जक्कूर और उस का पुत्र शिमी ॥ २७ । शिमी के सोलह बेटे और छः बेटी हुई पर उस के भाइयों के बहुत बेटे न हुए और उन का सारा कुल यहूदियों के बराबर न बढ़ा ॥ २८ । वे बेर्शेबा मोलादा हसर्शूआल्, २९ । बिल्हा एसेम् तोलाद्, ३० । बतूएल् होर्मा सिक्लग्, ३१ । बेत्मर्काबोत् हसर्सूसीम् बेतबिरी और शारैम् में बस गये । दाऊद के राज्य के समय लों उन के ये ही नगर रहे ॥ ३२ । और उन के गांव एताम् ऐन् रिम्मोन् तोकेन् और आशान् नाम पांच नगर, ३३ । और बाल् तक जितने गांव इन नगरों के आसपास थे । उन के बसने के स्थान ये ही थे और उन की वंशावली है ॥ ३४ । फिर मशोबाब् और यम्लेक् और अमस्याह् का पुत्र योशा, ३५ । और योएल् और योशिब्याह् का पुत्र येहू जो सरायाह् का पोता और असीएल् का परपोता था, ३६ । और एल्योएनै और याकोबा और यशोहायाह् और असायाह् और अदीएल् और यसीमीएल् और बनायाह्, ३७ । और शिपी का पुत्र जीजा जो अल्लोन् का पुत्र यह यदायाह् का पुत्र यह शिम्री का पुत्र यह शमायाह् का पुत्र था, ३८ । ये जिन के नाम लिखे हुए हैं अपने अपने कुल में प्रधान थे और उन के पितरों के घराने बहुत बढ़ गये ॥ ३९ । ये अपनी भेड़ बकरियों के लिये चराई ढूंढ़ने को गदोर् की घाटी की तराई की पूरब ओर तक गये ॥ ४० । और उन को उत्तम से उत्तम चराई मिली और देश लम्बा चौड़ा चैन और शांति का था क्योंकि वहां के पहिले रहनेहारे हाम् के वंश के थे ॥ ४१ । और जिन के नाम ऊपर लिखे हैं उन्हों ने यहूदा के राजा हिज्किय्याह् के दिनों में वहां आकर जो मूनी वहां मिले उन को डेरों समेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आज लों उन का पता नहीं है और वे उन के स्थान में रहने लगे क्योंकि वहां उन की भेड़ बकरियों के लिये चराई थी ॥ ४२ । और उन में से अर्थात् शिमोनियों में से पांच सौ पुरुष अपने ऊपर पलत्याह् नार्याह् रपायाह् और उज्जीएल् नाम यिशी के पुत्रों को अपने प्रधान ठहराकर सेईर् पहाड़ को गये, ४३ । और जो अमेलेकी बचकर रह गये थे उन को मारा और आज के दिन लों वहां रहते हैं ॥

(रूबेन् और गाद् की वंशावलियां और मनश्शे के आधे गोत्र की वंशावली)

५. इस्राएल् का जेठा तो रूबेन् था पर उस ने जो अपने पिता के बिछौने को अशुद्ध किया इस कारण जेठाई का अधिकार इस्राएल् के पुत्र यूसुफ के पुत्रों को दिया गया। वंशावली जेठाई के अधिकार के अनुसार नहीं ठहरी ॥ २। क्योंकि यहूदा अपने भाइयों पर प्रबल हो गया और प्रधान उस के वंश से हुआ पर जेठाई का अधिकार यूसुफ का था ॥ ३। इस्राएल् के जेठे पुत्र रूबेन् के पुत्र ये हुए अर्थात् हनोक् पल्लू हेसोन् और कर्मी ॥ ४। और योएल् के पुत्र, उस का पुत्र शमायाह् शमायाह् का गोग् गोग् का शिमी, ५। शिमी का मीका मीका का रायाह् रायाह् का बाल्, ६। और बाल् का पुत्र बेरा, इस को अश्शूर् का राजा तिलगत्पिलनेसेर् बंधुआई में ले गया और वह रूबेनियों का प्रधान था ॥ ७। और उस के भाइयों की वंशावली के लिखते समय वे अपने अपने कुल के अनुसार ये ठहरे अर्थात् मुख्य तो यीएल् फिर जकर्याह्, ८। और अजाज् का पुत्र बेला जो शेमा का पोता और योएल् का परपोता था वह अरोएर् में और नबो और बालमोन् लों रहता था ॥ ९। और पूरब ओर वह उस जंगल के सिवाने तक रहा जो परात् महानद लों पहुंचता है क्योंकि उन के पशु गिलाद् देश में बढ़ गये थे ॥ १०। और शाऊल् के दिनों में उन्हों ने हग्रियों से युद्ध किया और हग्री उन के हाथ से मारे गये तब वे गिलाद् की सारी पूरबी अलंग में उन के डेरों में रहने लगे ॥

११। गादी उन के साम्हने सल्का लों बाशान् देश में रहते थे, १२। अर्थात् मुख्य तो योएल् और दूसरा शापाम् फिर यानै और शापात् ये बाशान् में रहते थे ॥ १३। और उन के भाई अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, मीकाएल् मशुल्लाम् शेबा योरै याकान् जी और एबेर् सात ॥ १४। ये अबीहैल् के पुत्र थे जो हूरी का पुत्र था यह योराह् का पुत्र यह गिलाद् का पुत्र यह मीकाएल् का पुत्र यह यशीशै का पुत्र यह यहदो का पुत्र यह बूज् का पुत्र था ॥ १५। इन के पितरों के घरानों का मुख्य पुरुष अब्दीएल् का पुत्र और गूनी का पोता अही था ॥ १६। ये लोग बाशान् में गिलाद् में और उस के गांवों में और शारोन् की सब चराइयों में उन की परली ओर तक रहते थे ॥ १७। इन सभों की वंशावली यहूदा के राजा योताम् के दिनों और इस्राएल् के राजा यारोबाम् के दिनों में लिखी गई ॥

१८। रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र में के योद्धा जो ढाल बान्धने तलवार चलाने और धनुष से तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करने को सीखे हुए थे सो चौवालीस हजार सात सौ साठ थे जो युद्ध में जाने के योग्य थे ॥ १९। इन्हों ने हग्रियों और यतूर् नापीश् और नोदाब् से युद्ध किया ॥ २०। उन के विरुद्ध इन को सहायता मिली और हग्री उन सब समेत जो उन के साथ थे इन के हाथ में कर दिये गये क्योंकि युद्ध में इन्हों ने परमेश्वर की दोहाई दिई और उस ने उन की बिनती इस कारण सुनी कि इन्हों ने उस पर भरोसा रक्खा था ॥ २१। और इन्हों ने उन के पशु हर लिये अर्थात् ऊंट तो पचास हजार भेड़ बकरी अढ़ाई लाख गदहे दो हजार और मनुष्य एक लाख बंधुए करके ले गये ॥ २२। बहुत से मारे तो पड़े क्योंकि वह लड़ाई परमेश्वर की ओर से हुई। सो ये उन के स्थान में बन्धुआई के समय लों बसे रहे ॥

२३। फिर मनश्शे के आधे गोत्र की सन्तान उस देश में बसे और वे बाशान् से ले बालहेर्मोन् और सनीर् और हेर्मोन् पर्वत लों फैल गये ॥ २४। और उन के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये थे अर्थात् एपेर् यिशी एलीएल् अज्रीएल् यिर्मयाह् होदव्याह् और यहदीएल् ये बड़े वीर और नामी और अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे ॥

२५। और उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर से विश्वासघात किया और उस देश के लोग जिन को परमेश्वर ने उन के साम्हने से विनाश किया था उन के देवताओं के पीछे व्यभिचारिन की नाईं हो लिये ॥ २६। सो इस्राएल् के परमेश्वर ने अश्शूर् के

राजा पूल् का और अश्शूर् के राजा तिलगत्पिलनेसेर् का मन उभारा और इस ने उन्हें अर्थात् रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को बंधुआ करके हलह् हाबोर् और हारा को और गोजान् नदी के पास पहुंचा दिया और आज के दिन लों वे वहीं रहते हैं ॥

(लेवी की वंशावली और लेवीयों के वासस्थान)

६. लेवी के पुत्र, गेर्शोन् कहात् और मरारी ॥ २ । और कहात् के पुत्र, अम्राम् यिस्हार् हेब्रोन् और उज्जीएल् ॥ ३ । और अम्राम् के सन्तान, हारून् मूसा और मरियम । और हारून् के पुत्र, नादाब् अबीहू एलाजार् और ईतामार् ॥ ४ । एलाजार् ने पीनहास् को जन्माया पीनहास् ने अबीशू को, ५ । अबीशू ने बुक्की को बुक्की ने उज्जी को, ६ । उज्जी ने जरह्याह् को जरह्याह् ने मरायोत् को, ७ । मरायोत् ने अमर्याह् को अमर्याह् ने अहीतूब् को, ८ । अहीतूब् ने सादोक् को सादोक् ने अहीमास् को, ९ । अहीमास् ने अजर्याह् को अजर्याह् ने योहानान् को, १० । और योहानान् ने अजर्याह् को जन्माया जो सुलैमान के यरूशलेम् में बनाये हुए भवन में याजक का काम करता था ॥ ११ । फिर अजर्याह् ने अमर्याह् को अमर्याह् ने अहीतूब् को, १२ । अहीतूब् ने सादोक् को सादोक् ने शल्लूम् को, १३ । शल्लूम् ने हिल्किय्याह् को हिल्किय्याह् ने अजर्याह् को, १४ । अजर्याह् ने सरायाह् को और सरायाह् ने यहोसादाक् को जन्माया ॥ १५ । और जब यहोवा यहूदा और यरूशलेम् को नबूकदनेस्सर् के द्वारा बन्धुआ करके ले गया तब यहोसादाक् भी बंधुआ होकर गया ॥

१६ । लेवी के पुत्र, गेर्शोम् कहात् और मरारी ॥ १७ । और गेर्शोम् के पुत्रों के नाम ये थे अर्थात् लिब्नी और शिमी ॥ १८ । और कहात् के पुत्र, अम्राम् यिस्हार् हेब्रोन् और उज्जीएल् ॥ १९ । और मरारी के पुत्र, महली और मूशी । और अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार लेवीयों के कुल ये हुए अर्थात्, २० । गेर्शोम् का पुत्र लिब्नी हुआ लिब्नी का यहत् यहत् का जिम्मा, २१ । जिम्मा का योआह् योआह् का इद्दो इद्दो का जेरह् और जेरह् का पुत्र यातैर् हुआ ॥ २२ । फिर कहात् का पुत्र अम्मीनादाब् हुआ अम्मीनादाब् का कोरह् कोरह् का अस्सीर्, २३ । अस्सीर् का एल्काना एल्काना का एब्यासाप् एब्यासाप् का अस्सीर्, २४ । अस्सीर् का तहत् तहत् का ऊरीएल् ऊरीएल् का उज्जिय्याह् और उज्जिय्याह् का पुत्र शाऊल् हुआ ॥ २५ । फिर एल्काना के पुत्र, अमासै और अहीमोत् ॥ २६ । एल्काना का पुत्र सोपै सोपै का नहत्, २७ । नहत् का एलीआब् एलीआब् का यरोहाम् और यरोहाम् का पुत्र एल्काना हुआ ॥ २८ । और शमूएल् के पुत्र, उस का जेठा योएल्[1] और दूसरा अबिय्याह हुआ ॥ २९ । फिर मरारी का पुत्र महली महली का लिब्नी लिब्नी का शिमी शिमी का उज्जा, ३० । उज्जा का शिमा शिमा का हग्गिय्याह् और हग्गिय्याह् का पुत्र असायाह् हुआ ॥

३१ । फिर जिन को दाऊद ने संदूक के ठिकाना पाने के पीछे यहोवा के भवन में गाने के अधिकारी ठहरा दिया सो ये हैं ॥ ३२ । जब लों सुलैमान यरूशलेम् में यहोवा के भवन को बनवा न चुका तब लों वे मिलापवाले तंबू के निवास के साम्हने गाने के द्वारा सेवा करते थे और इस सेवा में नियम के अनुसार हाजिर हुआ करते थे ॥ ३३ । जो अपने अपने पुत्रों समेत हाजिर हुआ करते थे सो ये हैं अर्थात् कहातियों में से हेमान् गवैया जो योएल् का पुत्र था और योएल् शमूएल् का, ३४ । शमूएल् एल्काना का एल्काना यरोहाम् का यरोहाम् एलीएल् का एलीएल् तोह् का, ३५ । तोह् सूप का सूप एल्काना का एल्काना महत् का महत् अमासै का, ३६ । अमासै एल्काना का एल्काना योएल् का योएल् अजर्याह् का अजर्याह् सपन्याह् का, ३७ । सपन्याह् तहत् का तहत् अस्सीर् का अस्सीर् एब्यासाप् का एब्यासाप् कोरह् का, ३८ । कोरह् यिस्हार् का यिस्हार् कहात् का कहात् लेवी का और लेवी इस्राएल् का पुत्र था ॥ ३९ । और उस का भाई आसाप् जो

(१) अरानी में योएल् । फिर देखो पद ३३ ।

उस के दहिने खड़ा हुआ करता था और बेरेक्याह् का पुत्र था और बेरेक्याह् शिमा का, ४० । शिमा मीकाएल् का मीकाएल् बासेयाह् का बासेयाह् मल्किय्याह् का, ४१ । मल्किय्याह् एत्नी का एत्नी जेरह् का जेरह् अदायाह् का, ४२ । अदायाह् एतान् का एतान् जिम्मा का जिम्मा शिमी का, ४३ । शिमी यहत् का यहत् गेर्शाम् का गेर्शाम् लेवी का पुत्र था ॥ ४४ । और बाईं ओर उन के भाई मरारीय खड़े होते थे अर्थात् एतान् जो कीशी का पुत्र था और कीशी अब्दी का अब्दी मल्लूक् का, ४५ । मल्लूक् हशब्याह् का हशब्याह् अमस्याह् का अमस्याह् हिल्किय्याह् का, ४६ । हिल्किय्याह् अमसी का अमसी बानी का बानी शेमेर् का, ४७ । शेमेर् महली का महली मूशी का मूशी मरारी का और मरारी लेवी का पुत्र था ॥ ४८ । और इन के भाई जो लेवीय थे सो परमेश्वर के भवन के निवास में की सब प्रकार की सेवा के लिये अर्पण किये[१] हुए थे ॥

४९ । परन्तु हारून और उस के पुत्र होमबलि की वेदी और धूप की वेदी दोनों पर चढ़ाते और परमपवित्रस्थान का सब काम करते और इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करते थे जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आज्ञाएं दिई थीं ॥ ५० । और हारून् के वंश में ये हुए अर्थात् उस का पुत्र एलाजार् हुआ और एलाजार् का पीनहास् पीनहास् का अबीशू, ५१ । अबीशू का बुक्की बुक्की का उज्जी उज्जी का जरह्याह्, ५२ । जरह्याह् का मरायोत् मरायोत् का अमर्याह् अमर्याह् का अहीतूब्, ५३ । अहीतूब् का सादोक् और सादोक् का अहीमास् पुत्र हुआ ॥

५४ । और उन के भागों में उन की छावनियों के अनुसार उन की बस्तियां ये हैं अर्थात् कहात् के कुलों में से पहिली चिट्ठी जो हारून् की सन्तान के नाम पर निकली, ५५ । सो चारों ओर की चराइयों समेत यहूदा देश का हेब्रोन् उन्हें मिला, ५६ । पर उस नगर के खेत और गांव यपुन्ने के पुत्र कालेब् को दिये गये ॥ ५७ । और हारून् की सन्तान को शरणनगर हेब्रोन् और चराइयों समेत लिब्ना और यत्तीर् और अपनी अपनी चराइयों समेत एश्तमो, ५८ । हीलेन् दबीर्, ५९ । आशान् और बेत्शेमेश्, ६० । और बिन्यामीन् के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गेबा अल्लेमेत् और अनातोत् दिये गये । उन के सब कुल मिलाकर उन के सब नगर तेरह ठहरे ॥ ६१ । और शेष कहातियों को गोत्र के कुल अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र में से चिट्ठी डालकर दस नगर दिये गये ॥ ६२ । और गेर्शोमियों के कुलों के अनुसार उन्हें इस्साकार् आशेर् और नप्ताली के गोत्र और बाशान् में रहनेहारे मनश्शे के गोत्र में से तेरह नगर मिले ॥ ६३ । मरारियों के कुलों के अनुसार उन्हें रूबेन् गाद् और जबूलून् के गोत्रों में से चिट्ठी डालकर बारह नगर दिये गये ॥ ६४ । और इस्राएलियों ने लेवीयों को ये नगर चराइयों समेत दिये ॥ ६५ । और उन्हों ने यहूदियों शिमोनियों और बिन्यामीनियों के गोत्रों में से वे नगर दिये जिन के नाम ऊपर लिये गये हैं ॥ ६६ । और कहातियों के कितने एक कुलों को उन के भाग के नगर एप्रैम् के गोत्र में से मिले ॥ ६७ । सो उन को अपनी अपनी चराइयों समेत एप्रैम् के पहाड़ी देश का शकेम् जो शरणनगर था फिर गेजेर्, ६८ । योक्माम् बेथोरोन्, ६९ । अय्यालोन् और गत्रिम्मोन्, ७० । और मनश्शे के आधे गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत आनेर् और बिलाम् दिये गये शेष कहातियों के कुल को ये ही नगर मिले ॥ ७१ । फिर गेर्शोमियों को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत बाशान् का गोलान् और अश्तारोत्, ७२ । और इस्साकार् के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत केदेश् दाबरत्, ७३ । रामोत् और आनेम्, ७४ । और आशेर् के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत माशाल् अब्दोन्, ७५ । हूकोक् और रहोब्, ७६ । और नप्ताली के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गालील् का केदेश् हम्मोन् और किर्यातैम् मिले ॥ ७७ । फिर शेष लेवीयों अर्थात् मरारीयों को जबूलून् के गोत्र में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत रिम्मोन् और ताबोर्, ७८ । और यरीहो के पास की यर्दन नदी

(१) मूल में, दिये ।

की पूरब ओर रूबेन् के गोत्र में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत जंगल में का बेसेर् यहसा, ॥ ७९ । कदेमोत् और मेपात्, ८० । और गाद् के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गिलाद् का रामोत् महनैम्, ८१ । हेश्बोन् और याजेर् दिये गये ॥

(इस्साकार् बिन्यामीन् नप्ताली मनश्शे एप्रैम् और आशेर् की वंशावलियां)

७. इस्साकार् के पुत्र तोला पूआ याशूब और शिम्रोन् चार ॥ २ । और तोला के पुत्र, उज्जी रपायाह् यरीएल् यह्मै यिब्साम् और शमूएल् । ये अपने अपने पितरों के घरानों अर्थात् तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे और दाऊद के दिनों में उन के वंश की गिनती बाईस हजार छः सौ थी ॥ ३ । और उज्जी का पुत्र, यिज्रह्याह् । और यिज्रह्याह् के पुत्र, मीकाएल् ओबद्याह् योएल् और यिश्शिय्याह् पांच । ये सब मुख्य पुरुष थे ॥ ४ । और उन के साथ उन की वंशावलियों और पितरों के घरानों के अनुसार सेना के दलों के छत्तीस हजार योद्धा थे क्योंकि उन के बहुत स्त्रियां और बेटे हुए ॥ ५ । और उन के भाई जो इस्साकार् के सब कुलों में से थे सो सत्तासी हजार बड़े वीर थे जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने गये ॥

६ । बिन्यामीन् के पुत्र, बेला बेकेर् और यदीएल् तीन ॥ ७ । बेला के पुत्र, एस्बोन् उज्जी उज्जीएल् यरीमोत् और ईरी पांच । ये अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे और अपनी अपनी वंशावली के अनुसार उन की गिनती बाईस हजार चौंतीस हुई ॥ ८ । और बेकेर् के पुत्र, जमीरा योआश एलीएजेर् एल्योएनै ओम्री यरेमोत् अबिय्याह् अनातोत् और आलेमेत् ये सब बेकेर् के पुत्र हुए ॥ ९ । ये जो अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे इन के वंश की गिनती अपनी अपनी वंशावली के अनुसार बीस हजार दो सौ ठहरी ॥ १० । और यदीएल् का पुत्र, बिल्हान् । और बिल्हान् के पुत्र यूश् बिन्यामीन् एहूद् कनाना जेतान् तर्शीश् और अहीशहर् ॥ ११ । ये सब जो यदीएल् के सन्तान और अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े बीर थे इन के वंश सेना में युद्ध करने के योग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष थे ॥ १२ । और ईर् के पुत्र शुप्पीम् और हुप्पीम् और अहेर् के पुत्र हूशी थे ॥

१३ । नप्ताली के पुत्र, यहसीएल् गूनी येसेर् और शल्लूम् ये बिल्हा के पोते थे ॥

१४ । मनश्शे के पुत्र, असीएल् जिस को उस की अरामी रखेली जनी और अरामी गिलाद् के पिता माकीर् को भी जनी ॥ १५ । और माकीर् जिस की बहिन का नाम माका था उस ने हुप्पीम् और शुप्पीम् के लिये स्त्रियां ब्याह लिईं । और दूसरे का नाम सलोफाद् था और सलोफाद् के बेटियां हुईं ॥ १६ । फिर माकीर् की स्त्री माका एक बेटा जनी और उस का नाम पेरेश् रक्खा और उस के भाई का नाम शेरेश् था और इस के पुत्र ऊलाम् और राकेम् हुए ॥ १७ । और ऊलाम् का पुत्र, बदान् । ये गिलाद् के सन्तान हुए जो माकीर् का पुत्र और मनश्शे का पोता था ॥ १८ । फिर उस की बहिन हम्मोलेकेत् ईशहोद् अबीएजेर् और महला को जनी ॥ १९ । और शमीदा के पुत्र, अह्यान् शेकेम् लिखी और अनीआम् हुए ॥

२० । और एप्रैम् के पुत्र, शूतेलह् और शूतेलह् का बेरेद् बेरेद् का तहत् तहत् का एलादा एलादा का तहत्, २१ । तहत् का जाबाद् और जाबाद् का पुत्र शूतेलह् हुआ और एजेर् और एलाद् भी जिन्हें गत् के मनुष्यों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इस लिये घात किया कि वे उन के पशु हर लेने को आये थे ॥ २२ । सो उन का पिता एप्रैम् उन के लिये बहुत दिन शोक करता रहा और उस के भाई उसे शांति देने को आये ॥ २३ । तब उस ने अपनी स्त्री से प्रसंग किया और वह गर्भवती होकर एक बेटा जनी और एप्रैम् ने उस का नाम इस कारण बरीआ[1] रक्खा कि उस के घराने में विपत्ति पड़ी थी ॥ २४ । और उस की बेटी शेरा थी जिस ने निचले और उपरले दोनों बेथोरान् नाम

(१) अर्थात् विपत्ति ।

नगरों और उज्जेनश्शेरा को दृढ़ कराया॥ २५। और उस का बेटा रेपा था और रेशेप् भी और उस का पुत्र तेलह् तेलह् का तहन्, २६। तहन् का लादान् लादान् का अम्मीहूद् अम्मीहूद् का एलीशामा, २७। एलीशामा का नून् और नून् का पुत्र यहोशू हुआ॥ २८। और उन की निज भूमि और बस्तियां गांवों समेत बेतेल् और पूरब ओर नारान् और पच्छिम ओर गांवों समेत गेजेर् फिर गांवों समेत शकेम् और गांवों समेत अज्जा थीं, २९। और मनश्शेइयों के सिवाने के पास अपने अपने गांवों समेत बेत्शान् तानाक् मगिद्दो और दोर्। इन में इस्राएल् के पुत्र यूसुफ के सन्तान रहते थे॥

३०। आशेर् के पुत्र. यिम्ना यिश्वा यिश्वी और बरीआ और उन की बहिन सेरह् हुई॥ ३१। और बरीआ के पुत्र, हेबेर् और मल्कीएल् और यह बिर्जोत् का पिता हुआ॥ ३२। और हेबेर् ने यप्लेत् शोमेर् होताम् और उन की बहिन शूआ को जन्माया॥ ३३। और यप्लेत् के पुत्र, पासक् बिम्हाल् और अश्वात्। यप्लेत् के ये ही पुत्र हुए॥ ३४। और शेमेर् के पुत्र, अही रोहगा यहुब्बा और अराम्॥ ३५। और उस के भाई हेलेम् के पुत्र, सोपह् यिम्ना शेलेश् और आमाल्॥ ३६। और सोपह् के पुत्र, सूह् हर्नेपेर् शूआल् बेरी यिम्रा, ३७। बेसेर् होद् शम्मा शिल्शा यित्रान् और बेरा॥ ३८। और येतेर् के पुत्र यपुन्ने, पिस्पा और अरा॥ ३९। और उल्ला के पुत्र, आरह् हन्नीएल् और रिस्या॥ ४०। ये सब आशेर् के वंश में हुए और अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े से बड़े बीर और प्रधानों में मुख्य थे और ये जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार सेना में युद्ध करने के लिये गिने गये इन की गिनती छब्बीस हजार ठहरी॥

(बिन्यामीन् की वंशावली)

८. बिन्यामीन् ने अपने जेठे बेला को दूसरे अश्बेल् तीसरे अह्रह्, २। चौथे नोहा और पांचवें रापा को जन्माया॥ ३। और बेला के पुत्र अद्दार् गेरा अबीहूद्, ४। अबीशू नामान् अहोह्, ५। गेरा शपूपान् और हूराम् हुए॥ ६। और एहूद् के पुत्र ये हुए गेबा के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष ये थे जो बन्धुए करके मानहत् को पहुंचाये गये॥ ७। और नामान् अहिय्याह् और गेरा हुए यही उन्हें बन्धुआ करके मानहत् को ले गया और उस ने उज्जा और अहीलूद् को जन्माया॥ ८। और शहरैम् ने हूशीम् और बारा नाम अपनी स्त्रियों को छोड़ देने के पीछे मोआब् देश में लड़के जन्माये॥ ९। सो उस ने अपनी स्त्री होदेश् से योबाब् सिब्या मेशा मल्काम्, १०। यूस् सोक्या और मिर्मा को जन्माया। उस के ये पुत्र अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे॥ ११। और हूशीम् से उस ने अबीतूब् और एल्पाल् को जन्माया॥ १२। एल्पाल् के पुत्र, एबेर् मिशाम् और शेमेर् इसी ने ओनो और गांवों समेत लोद् को बसाया, १३। फिर बरीआ और शेमा जो अय्यालोन् के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे और गत् के निवासियों को भगा दिया, १४। और अह्यो शाशक् यरेमोत्, १५। जबद्याह् अराद् एदेर्, १६। मीकाएल् यिश्पा योहा जो बरीआ के पुत्र थे जबद्याह् मशुल्लाम् हिज्की हेबेर्, १८। यिश्मरै यिज्लीआ योबाब् जो एल्पाल् के पुत्र थे, १९। और याकीम् जिक्री जब्दी, २०। एलीएनै सिल्लतै एलीएल्, २१। अदायाह् बरायाह् और शिम्रात् जो शिमी के पुत्र थे, २२। और यिश्पान् एबेर् एलीएल्, २३। अब्दोन् जिक्री हानान्, २४। हनन्याह् एलाम् अन्तोतिय्याह्, २५। यिप्दयाह् और पनूएल् जो शाशक् के पुत्र थे, २६। और शम्शरै शहर्याह् अतल्याह्, २७। यारेश्याह् एलिय्याह् और जिक्री जो यरोहाम के पुत्र थे॥ २८। ये अपनी अपनी पीढ़ी में अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और प्रधान थे। ये यरूशलेम् में रहते थे॥ २९। और गिबोन् में गिबोन् का पिता रहता था जिस की स्त्री का नाम माका था, ३०। और उस का जेठा बेटा अब्दोन् हुआ फिर सूर् कीश् बाल् नादाब्, ३१। गदोर् अह्यो जेकेर्॥ ३२। और मिक्लोत् ने शिमा को जन्माया। और ये भी अपने भाइयों के साम्हने अपने भाइयों के संग यरूशलेम् में रहते थे॥ ३३। और नेर् ने कीश् को जन्माया कीश् ने

आऊल् को और आऊल् ने योनातान् मल्कीशू अबीनादाव् और एश्बाल् को जन्माया ॥ ३४ । और योनातान् का पुत्र मरीब्बाल् हुआ और मरीब्बाल् ने मीका को जन्माया ॥ ३५ । और मीका के पुत्र, पीतोन् मेलेक् तारे और आहाज् ॥ ३६ । और आहाज् ने यहोअद्दा को जन्माया और यहोअद्दा ने आलेमेत् अज़्मावेत् और जिम्री को और जिम्री ने मोसा को, ३७ । और मोसा ने बिना को जन्माया और इस का पुत्र रापा हुआ रापा का एलासा और एलासा का पुत्र आसेल् हुआ ॥ ३८ । और आसेल् के छः पुत्र हुए जिन के ये नाम थे अर्थात् अज्रीकाम बोकरू यिश्माएल् शार्याह् ओबद्याह् और हानान् ये ही सब आसेल् के पुत्र हुए ॥ ३९ । और उस के भाई एशेक् के ये पुत्र हुए अर्थात् उस का जेठा ऊलाम् दूसरा यूश् तीसरा एलीपेलेत् ॥ ४० । और ऊलाम् के पुत्र शूरवीर और धनुर्धारी हुए और उन के बहुत बेटे पोते अर्थात् डेढ़ सौ हुए । ये ही सब बिन्यामीन् के वंश के थे ॥

(यरूशलेम् में रहनेहारों का प्रबंध)

९. यों सब इस्राएली अपनी अपनी वंशावली के अनुसार जो इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं गिने गये। और यहूदी अपने विश्वासघात के कारण बंधुए करके बाबेल् को पहुंचाये गये ॥ २ । जो लोग अपनी अपनी निज भूमि अर्थात् अपने नगरों में रहते थे सो इस्राएली, याजक, लेवीय और नतीन् थे ॥ ३ । और यरूशलेम् में कुछ यहूदी कुछ बिन्यामीनी और कुछ एप्रैमी और मनश्शेई रहते थे, ४ । अर्थात् यहूदा के पुत्र पेरेस् के वंश में से अम्मीहूद् का पुत्र ऊतै जो ओम्री का पुत्र और इम्री का पोता और बानी का परपोता था, ५ । और शीलोइयों में से उस का जेठा बेटा असायाह् और उस के पुत्र, ६ । और जेरह् के वंश में से यूएल् और इन के भाई ये छः सौ नव्वे हुए ॥ ७ । फिर बिन्यामीन् के वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम् का पुत्र होदव्याह् का पोता और हस्सनूआ का परपोता था, ८ । और यिब्निय्याह् जो यरोहाम् का पुत्र था और एला जो उज्जी का पुत्र और मिक्री का पोता था और मशुल्लाम् जो शपत्याह् का पुत्र रूएल् का पोता और यिब्निय्याह् का परपोता था, ९ । और इन के भाई जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ छप्पन ठहरे । ये सब पुरुष अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार पितरों के घरानों में मुख्य थे ॥

१० । फिर याजकों में में, यदायाह् यहोयारीब् और याकीन्, ११ । और अजर्याह् जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्किय्याह् का पुत्र था यह मशुल्लाम् का पुत्र यह सादोक् का पुत्र यह मरायोत् का पुत्र यह अहीतूब् का पुत्र था, १२ । और अदायाह् जो यरोहाम् का पुत्र था यह पशहूर् का पुत्र यह मल्किय्याह् का पुत्र यह मासै का पुत्र यह अदीएल् का पुत्र यह यहजेरा का पुत्र यह मशुल्लाम् का पुत्र यह मशिल्लीत् का पुत्र यह इम्मेर् का पुत्र था ॥ १३ । और इन के भाई थे जो अपने अपने पितरों के घरानों में सत्रह सौ साठ मुख्य पुरुष थे वे परमेश्वर के भवन की सेवा के काम में बहुत निपुण पुरुष थे ॥ १४ । फिर लेवीयों में से मरारी के वंश में से शमायाह् जो हश्शूब् का पुत्र अज्रीकाम् का पोता और हशब्याह् का परपोता था, १५ । और बक्बक्कर् हेरेश् और गालाल् और आसाप् के वंश में से मत्तन्याह् जो मीका का पुत्र और जिक्री का पोता था, १६ । और ओबद्याह् जो शमायाह् का पुत्र गालाल् का पोता और यदूतून् का परपोता था और बेरेक्याह् जो आसा का पुत्र और एल्काना का पोता था जो नतोपाइयों के गांवों में रहता था ॥ १७ । और डेवढ़ीदारों में से अपने अपने भाइयों सहित शल्लूम् अक्कूब् तल्मोन् और अहीमान्, इन में से मुख्य तो शल्लूम् था, १८ । और वह तब लों पूरब ओर राजा के फाटक के पास डेवढ़ीदारी करता था । लेवीयों की छावनी के डेवढ़ीदार ये ही थे ॥ १९ । और शल्लूम् जो कोरे का पुत्र एब्यासाप् का पोता और कोरह् का परपोता था और उस के भाई जो उस के मूलपुरुष के घराने के अर्थात् कोरही थे सो इस काम के अधिकारी थे कि वे तंबू के डेवढ़ीदार हों । उन के पुरखा तो

यहोवा की छावनी के अधिकारी और पैठाव के रखवाल थे ॥ २० । और अगले समय में एलाजार् का पुत्र पीनहास् जिस के संग यहोवा रहा सो उन का प्रधान था ॥ २१ । मेशेलेम्याह् का पुत्र जकर्याह् मिलापवाले तंबू का डेवढ़ीदार था ॥ २२ । ये सब जो डेवढ़ीदार होने को चुने गये सो दो सै बारह थे । ये जिन के पुरखाओं को दाऊद और शमूएल् दर्शी ने विश्वासयोग्य जानकर ठहराया था सो अपने अपने गांव में अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने गये ॥ २३ । सो वे और उन के सन्तान यहोवा के भवन अर्थात् तंबू के भवन के फाटकों का अधिकार बारी बारी रखते थे ॥ २४ । डेवढ़ीदार पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों दिशा की ओर चौकी देते थे ॥ २५ । और उन के भाई जो गांवों में रहते थे उन को सात सात दिन पीछे बारी बारी करके उन के संग रहने के लिये आना पड़ता था ॥ २६ । क्योंकि चारों प्रधान डेवढ़ीदार जो लेवीय थे सो विश्वासयोग्य जानकर परमेश्वर के भवन की कोठरियों और भण्डारों के अधिकारी ठहराये गये थे ॥ २७ । और वे परमेश्वर के भवन के आस पास इस लिये रात बिताते थे कि उस की रक्षा उन्हें सौंपी गई थी और भोर भोर को उसे खोलना उन्हीं का काम था ॥ २८ । और उन में से कुछ उपासना के पात्रों के अधिकारी थे क्योंकि ये गिनकर भीतर पहुंचाये और गिनकर बाहर निकाले भी जाते थे ॥ २९ । और उन में से कुछ सामान के और पवित्रस्थान के पात्रों के और मैदे दाखमधु तेल लोबान और सुगंधद्रव्यों के अधिकारी ठहराये गये ॥ ३० । और याजकों के बेटों में से कुछ सुगन्धद्रव्यों में गंधी का काम करते थे ॥ ३१ । और मत्तित्याह् नाम एक लेवीय जो कोरही शल्लूम् का जेठा था सो विश्वासयोग्य जानकर तवों पर बनाई हुई वस्तुओं का अधिकारी था ॥ ३२ । और उस के भाइयों अर्थात् कहातियों में से कुछ तो भेंटवाली रोटी के अधिकारी थे कि एक एक विश्रामदिन को उसे तैयार किया करें ॥ ३३ । और ये गवैये थे जो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य थे और कोठरियों में रहते और और काम से छूटे थे क्योंकि वे दिन रात अपने काम में लगे रहते थे ॥ ३४ । ये ही अपनी अपनी पीढ़ी में लेवीयों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे । ये यरूशलेम् में रहते थे ॥

३५ । और गिबोन् में गिबोन् का पिता यीएल् रहता था जिस की स्त्री का नाम माका था ॥ ३६ । उस का जेठा बेटा अब्दोन् हुआ फिर सूर् कीश् बाल् नेर् नादाब्, ३७ । गदोर् अह्यो जकर्याह् और मिक्लोत् ॥ ३८ । और मिक्लोत् ने शिमाम् को जन्माया और ये भी अपने भाइयों के साम्हने अपने भाइयों के संग यरूशलेम् में रहते थे ॥ ३९ । और नेर् ने कीश को जन्माया कीश् ने शाऊल् को और शाऊल् ने योनातान् मल्कीशू अबीनादाब् और एश्बाल् को जन्माया ॥ ४० । और योनातान् का पुत्र मरीब्बाल् हुआ और मरीब्बाल् ने मीका को जन्माया ॥ ४१ । और मीका के पुत्र, पीतोन् मेलेक् और तहे[1] ॥ ४२ । और आहाज् ने यारा को जन्माया और यारा ने आलेमेत् अज्मावेत् और जिम्री को जन्माया और जिम्री ने मोसा को, ४३ । और मोसा ने बिना को जन्माया और इस का पुत्र रपायाह् हुआ रपायाह् का एलासा और एलासा का पुत्र आसेल् हुआ, ४४ । और आसेल् के छः पुत्र हुए जिन के ये नाम थे अर्थात् अज्रीकाम् बोकरू यिश्माएल् शार्याह् ओबद्याह् और हानान् । आसेल् के ये ही पुत्र हुए ॥

(शाऊल् की मृत्यु और दाऊद के राज्य का आरंभ.)

१०. पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े और इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भागे और गिल्बो नाम पहाड़ पर मारे गये ॥ २ । और पलिश्ती शाऊल् और उस के पुत्रों के पीछे लगे रहे और पलिश्तियों ने शाऊल् के पुत्र योनातान् अबीनादाब् और मल्कीशू को मार डाला ॥ ३ । और शाऊल् के साथ लड़ाई और भारी होती गई और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया और वह उन के कारण व्याकुल हो गया ॥ ४ । तब शाऊल् ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा अपनी तलवार

(१) देखो ८ : ३१ ।

खींचकर मेरे भोंक दे ऐसा न हो कि वे खतनारहित लाग आकर मेरा ठट्ठा करें। पर उस के हथियार ढोनेहारे ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करना नकारा तब शाऊल् अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा ॥ ५। यह देखकर कि शाऊल् मर गया उस का हथियार ढोनेहारा भी अपनी तलवार पर आप गिरकर मर गया ॥ ६। यों शाऊल् और उस के तीनों पुत्र और उस के सारे घराने के लोग एक संग मर गये ॥ ७। यह देखकर कि वे भाग गये और शाऊल् और उस के पुत्र मर गये उस तराई में रहनेहारे सब इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगर को छोड़कर भाग गये और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे ॥

८। दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आये तब उन को शाऊल् और उस के पुत्र गिल्बो पहाड़ पर पड़े हुए मिले ॥ ९। सो उन्हों ने उस के वस्त्रों को उतार उस का सिर और हथियार ले लिये और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इस लिये भेज दिया कि उन के देवताओं और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएं ॥ १०। तब उन्हों ने उस के हथियार तो अपने देवालय में रक्खे और उस की खोपड़ी दागोन् के मन्दिर में जड़ दिई ॥ ११। जब गिलाद् के यावेश् के सारे लोगों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल् से क्या क्या किया है, १२। तब सब शूरवीर चले और शाऊल् और उस के पुत्रों की लोथें उठाकर यावेश् में ले आये और उन की हड्डियों को यावेश् में के बांज वृक्ष के तले गाड़ दिया और सात दिन का उपवास किया ॥ १३। सो शाऊल् उस विश्वासघात के कारण मर गया जो उस ने यहोवा से किया था क्योंकि उस ने यहोवा का वचन टाला था फिर उस ने भूतसिद्धि करनेवाली से पूछकर सम्मति लिई थी, १४। उस ने यहोवा से न पूछा था। सो यहोवा ने उसे मारकर राज्य यिशै के पुत्र दाऊद का कर दिया ॥

११. तब सब इस्राएली दाऊद के पास हेब्रोन् में एकट्ठे होकर कहने लगे सुन हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस हैं ॥ २। अगले दिनों में जब शाऊल् राजा था तब भी इस्राएलियों का अगुआ तू ही था और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ से कहा कि मेरी प्रजा इस्राएल् का चरवाहा और मेरी प्रजा इस्राएल् का प्रधान तू ही होगा ॥ ३। सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन् में राजा के पास आये और दाऊद ने उन के साथ हेब्रोन् में यहोवा के साम्हने वाचा बांधी और उन्हों ने यहोवा के वचन के अनुसार जो उस ने शमूएल् से कहा था इस्राएल् का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया ॥ ४। तब सब इस्राएलियों समेत दाऊद यरूशलेम् को गया जो यबूस् भी कहलाता था और यबूसी नाम उस देश के निवासी वहां रहते थे ॥ ५। सो यबूस् के निवासियों ने दाऊद से कहा तू यहां आने न पाएगा। तौभी दाऊद ने सिय्योन् नाम गढ़ को ले लिया वही दाऊदपुर भी कहावता है ॥ ६। और दाऊद ने कहा जो कोई यबूसियों को सब से पहिले मारेगा सो मुख्य सेनापति होगा तब सरूयाह् का पुत्र योआब् सब से पहिले चढ़ गया और मुख्य ठहर गया ॥ ७। और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा सो उस का नाम दाऊदपुर पड़ा ॥ ८। और उस ने नगर की चारों ओर अर्थात् मिल्लो से लेकर चारों ओर शहरपनाह बनवाई और योआब् ने शेष नगर के खण्डहरों को फिर बसाया[1] ॥ ९। और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई और सेनाओं का यहोवा उस के संग था ॥

(दाऊद के शूरवीर)

१०। यहोवा ने इस्राएल् के विषय जो वचन कहा था उस के अनुसार दाऊद के जिन शूरवीरों ने सारे इस्राएलियों समेत उस के राज्य में उस के पक्ष में होकर उसे राजा बनाने को बल किया उन में से मुख्य पुरुष ये हैं ॥ ११। दाऊद के शूरवीरों की नामावली[2] यह है अर्थात् किसी हक्मोनी का पुत्र याशोबाम् जो तीसों में मुख्य था उस ने तीन सौ पुरुषों पर भाला चलाकर उन्हें एक ही समय मार डाला ॥ १२। उस के पीछे दोदो का पुत्र एक अहोही

(१) मूल में. बाकी नगर जिलाता था। (२) मूल में गिनती।

एलाज़ार् नाम था जो तीनों बड़े बीरों में से एक था॥ १३। वह पसदम्मीम् में जहां जव का एक खेत था दाऊद के संग रहा और पलिश्ती वहां युद्ध करने को एकट्ठे हुए थे और लोग पलिश्तियों के साम्हने से भाग गये थे॥ १४। तब उन्हों ने उस खेत के बीच खड़े होकर उस की रक्षा किई और पलिश्तियों को मारा और यहोवा ने उन का बड़ा उद्धार किया॥ १५। और तीसों मुख्य पुरुषों में से तीन दाऊद के पास चटान को अर्थात् अदुल्लाम् नाम गुफा में गये और पलिश्तियों की छावनी रपाईम् नाम तराई में पड़ी हुई थी॥ १६। उस समय दाऊद गढ़ में था और उसी समय पलिश्तियों की एक चौकी बेत्लेहेम् में थी॥ १७। तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा कौन मुझे बेत्लेहेम् के फाटक के पास के कूंए का पानी पिलाएगा॥ १८। सो वे तीनों जन पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े और बेत्लेहेम् के फाटक के कूंए से पानी भरकर दाऊद के पास ले आये पर दाऊद ने पीने से नाह किई और यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेला॥ १९। और उस ने कहा मेरा परमेश्वर मुझ से ऐसा करना दूर रक्खे क्या मैं इन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राण पर खेले हैं ये तो अपने प्राण पर खेलकर उसे ले आये हैं। सो उस ने वह पानी पीने से नाह किई। इन तीन वीरों ने तो ये ही काम किये॥ २०। और अबीशै जो योआब् का भाई था सो तीनों में मुख्य था और उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में नामी हो गया॥ २१। दूसरी श्रेणी के तीनों में से वह अधिक प्रतिष्ठित था और उन का प्रधान हो गया पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा॥ २२। यहोयादा का पुत्र बनायाह् था जो कब्सेल् के एक वीर का पुत्र था जिस ने बड़े बड़े काम किये थे। उस ने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला और बरफ के समय उस ने एक गड़हे में उतरके एक सिंह को मार डाला॥ २३। फिर उस ने एक डीलवाले अर्थात् पांच हाथ लंबे मिस्री पुरुष को मार डाला मिस्री तो हाथ में जुलाहों का ढेका सा एक भाला लिये हुए था पर बनायाह् एक लाठी ही लिये हुए उस के पास गया और मिस्री के हाथ से भाले को छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया॥ २४। ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह् उन तीनों वीरों में नामी हो गया॥ २५। वह तो तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उस को दाऊद ने अपनी निज सभा में सभासद किया॥

२६। फिर दलों के वीर ये थे अर्थात् योआब् का भाई असाहेल् बेत्लेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान्, २७। हरोरी शम्मोत् पलोनी हेलेस्, २८। तकोई इक्केश् का पुत्र ईरा अनातोती अबीएजेर्, २९। हूशाई सिब्बकै अहोही ईलै, ३०। नतोपाई महरै एक और नतोपाई बाना का पुत्र हेलेद्, ३१। बिन्यामीनियों के गिबा नगरवासी रीबै का पुत्र इत्तै पिरातोनी बनायाह्, ३२। गाश् के नालों के पास रहनेहारा हूरै अराबावासी अबीएल्, ३३। बहूरीमी अज़्मावेत् शाल्बोनी एल्यहबा, ३४। गीजोई हाशेम् के पुत्र, फिर पहाड़ी शागे का पुत्र योनातान्, ३५। पहाड़ी साकार् का पुत्र अहीआम् ऊर् का पुत्र एलीपाल्, ३६। मकेराई हेपेर् पलोनी अहिय्याह् कर्मली हेसो एज्बै का पुत्र नारै, ३८। नातान् का भाई योएल् हग्री का पुत्र मिभार्, ३९। अम्मोनी सेलेक् बेरोती नहरै जो सरूयाह् के पुत्र योआब् का हथियार ढोनेहारा था, ४०। येतेरी ईरा और गारेब्, ४१। हित्ती ऊरिय्याह् अहलै का पुत्र जाबाद्, ४२। तीस पुरुषों समेत रूबेनी शीजा का पुत्र अदीना जो रूबेनियों का मुखिया था, ४३। माका का पुत्र हानान् मेतेनी योशापात्, ४४। अश्तारोती उज्जिय्याह् अरोएरी होताम् के पुत्र शामा और यीएल्, ४५। शिम्री का पुत्र यदीएल् और उस का तीसी भाई योहा, ४६। महवीमी एलीएल् एल्नाम् के पुत्र यरीबै और योशव्याह् मोआबी यित्मा, ४७। एलीएल् ओबेद् और मसोबाई यासीएल्॥

(दाऊद के अनुचर)

१२. जब दाऊद सिक्लग् में कीश् के पुत्र शाऊल् के डर के मारे छिपा[1] रहता था तब ये उस के पास वहां आये और

(१) मूल में बन्द।

ये उन वीरों में के थे जो युद्ध में उस के सहायक थे॥ २। ये धनुर्धारी थे जो दहिने बायें दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे और ये शाऊल् के भाइयों में से बिन्यामीनी थे॥ ३। मुख्य तो अहीएजेर् और दूसरा योआश् था ये गिबावासी शमाआ के पुत्र थे फिर अज्मावेत् के पुत्र यजीएल् और पेलेत् फिर बराका और अनातोती येहू, ४। और गिबोनी यिश्मायाह् जो तीसों में से एक वीर और उन के ऊपर भी था फिर यिर्मयाह् यहजीएल् योहानान् गदेरावासी योजाबाद्, ५। एलूजै यरीमोत् बाल्याह् शमर्याह् हारूपी शपत्याह, ६। एल्काना यिश्शिय्याह् अजरेल् योएजेर् याशोबाम् जो सब कोरहवंशी थे, ७। और गदोर्वासी यरोहाम् के पुत्र योएला और जबद्याह्॥ ८। फिर जब दाऊद जंगल के गढ़ में रहता था तब ये गादी जो शूरवीर थे और युद्ध करने को सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेहारे थे और उन के मुंह सिंह के से और वे पहाड़ी चिकारे से वेग दौड़नेहारे थे ये और गादियों से अलग होकर उस के पास आये, ९। अर्थात् मुख्य तो एजेर् दूसरा ओबद्याह् तीसरा एलीआब्, १०। चौथा मिश्मन्ना पांचवां यिर्मयाह्, ११। छठां अत्तै सातवां एलीएल्, १२। आठवां योहानान् नौवां एल्जाबाद्, १३। दसवां यिर्मयाह् और ग्यारहवां मक्बन्नै था॥ १४। ये गादी मुख्य योद्धा थे उन में से जो सब से छोटा था सो तो एक सौ के बराबर और जो सब से बड़ा था सो हजार के बराबर था॥ १५। ये ही वे हैं जो पहिले महीने में जब यर्दन नदी सब कड़ाड़ों के ऊपर ऊपर बहती थी तब उस के पार उतरे और पूरब और पच्छिम दोनों ओर के सब तराई के रहनेहारों को भगा दिया॥ १६। और कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में आये॥ १७। उन से मिलने को दाऊद निकला और उन से कहा यदि तुम मेरे पास मित्रभाव से मेरी सहायता करने को आये हो तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा पर जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आये हो तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डांटे क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ॥ १८। तब आत्मा अमासै में समाया जो तीसों वीरों में मुख्य था और उस ने कहा हे दाऊद हम तेरे हैं हे यिशै के पुत्र हम तेरी ओर के हैं तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है सो दाऊद ने उन को रख लिया और अपने दल के मुखिये ठहरा दिया॥ १९। फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय दाऊद के पास भाग गये जब वह पलिश्तियों के साथ होकर शाऊल् से लड़ने को गया पर उन की कुछ सहायता न किई क्योंकि पलिश्तियों के सरदारों ने सम्मति लेने पर यह कहकर उसे विदा किया कि वह हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल् से फिर मिल जाएगा॥ २०। जब वह सिक्लग् को जा रहा था तब ये मनश्शेई उस के पास भाग गये अर्थात् अद्ना योजाबाद् यदीएल् मीकाएल् योजाबाद् एलीहू और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारों के मुखिये थे॥ २१। इन्हों ने लुटेरों के दल के विरुद्ध दाऊद की सहायता किई क्योंकि ये सब शूरवीर थे और सेना के प्रधान भी बन गये॥ २२। वरन दिन दिन लोग दाऊद की सहायता करने को उस के पास आते रहे यहां लों कि परमेश्वर की सी एक बड़ी सेना बन गई॥

२३। फिर जो लड़ने को हथियार बांधे हुए हेब्रोन् में दाऊद के पास इस लिये आये कि यहोवा के वचन के अनुसार शाऊल् का राज्य उस के हाथ कर दें उन के मुखियों की यह गिनती है॥ २४। यहूदी तो ढाल और भाला लिये हुए लड़ने को हथियारबन्द छः हजार आठ सौ आये॥ २५। शिमोनी लड़ने को तैयार सात हजार एक सौ शूरवीर आये॥ २६। लेवीय चार हजार छः सौ आये॥ २७। और हारून् के घराने का प्रधान यहोयादा था और उस के साथ तीन हजार सात सौ आये॥ २८। और सादोक् नाम एक जवान वीर भी आया और उस के पिता के घराने के बाईस प्रधान आये॥ २९। और शाऊल् के भाई बिन्यामीनियों में से तीन हजार हो

आये क्योंकि उस समय लों आधे बिन्यामीनियों से अधिक शाऊल् के घराने का पक्ष करते रहे ॥ ३० । फिर एप्रैमियों में से बड़े बीर और अपने अपने पितरों के घरानों में नामी पुरुष बीस हजार आठ सौ आये ॥ ३१ । और मनश्शे के आधे गोत्र में से दाऊद को राजा करने के लिये अठारह हजार आये जिन के नाम बताये गये थे ॥ ३२ । और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे कि इस्राएल् को क्या करना उचित है उन के प्रधान दो सौ थे और उन के सब भाई उन की आज्ञा में रहते थे ॥ ३३ । फिर जबूलून् में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिये हुए लड़ने को पांति बांधनेहारे योद्धा पचास हजार आये ये पांति बांधनेहारे थे और चंचल न थे[1] ॥ ३४ । फिर नप्ताली में से प्रधान तो एक हजार और उन के संग ढाल और भाला लिये सैंतीस हजार आये ॥ ३५ । और दानियों में से लड़ने के लिये पांति बांधनेहारे अठाईस हजार छ: सौ आये ॥ ३६ । और आशेर् में से लड़ने को पांति बांधनेहारे चालीस हजार योद्धा आये ॥ ३७ । और यर्दन पार रहनेहारे रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्रियों में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिये हुए एक लाख बीस हजार आये ॥ ३८ । ये सब युद्ध के लिये पांति बांधनेहारे योद्धा दाऊद को सारे इस्राएल् का राजा करने के लिये हेब्रोन् में सच्चे मन से आये और और सब इस्राएली भी दाऊद को राजा करने के लिये एक मन हुए थे ॥ ३९ । और वे वहां तीन दिन दाऊद के संग खाते पीते रहे क्योंकि उन के भाइयों ने उन के लिये तैयारी किई थी ॥ ४० । और जो उन के निकट बरन इस्साकार् जबूलून् और नप्ताली लों रहते थे वे भी गदहों ऊंटों खच्चरों और बैलों पर मैदा अंजीरों और किशमिश की टिकियां दाखमधु और तेल आदि भोजनवस्तु लादकर लाये और बैल और भेड़ बकरियां बहुतायत से लाये क्योंकि इस्राएल् में आनन्द हो रहा था ॥

(१) मूल में मन और मन के बिना।

(पवित्र संदूक के यरूशलेम् में पहुंचाये जाने का वर्णन)

१३. और दाऊद ने सहस्रपतियों शतपतियों और सब प्रधानों से सम्मति लिई ॥ २ । तब दाऊद ने इस्राएल् की सारी मण्डली से कहा यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो तो इस्राएल् के सब देशों में हमारे जो भाई रह गये और उन के साथ जो याजक और लेवीय अपने अपने चराई-वाले नगरों में रहते हैं उन के पास भी यह हर कहीं कहला भेजें कि हमारे पास एकट्ठे हो जाओ ॥ ३ । और हम अपने परमेश्वर के संदूक को अपने यहां ले आएं क्योंकि शाऊल् के दिनों हम उस के समीप न जाते थे ॥ ४ । और सारी मण्डली ने कहा हम ऐसा ही करेंगे क्योंकि यह बात उन सब लोगों को ठीक जची ॥ ५ । सो दाऊद ने मिस्र के शीहोर् से ले हमात् की घाटी लों के सब इस्राएलियों को इस लिये एकट्ठा किया कि परमेश्वर के संदूक को किर्यत्यारीम् से ले आएं ॥ ६ । तब दाऊद सब इस्राएलियों को संग लेकर बाला को गया जो किर्यत्यारीम् भी कहावता और यहूदा के भाग में था कि परमेश्वर यहोवा का संदूक वहां से ले आएं वह तो करूबों पर विराजनेहारा है और उस का नाम भी लिया जाता है ॥ ७ । सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर अबीनादाब् के घर से निकाला और उज्जा और अह्यो उस गाड़ी को हांकने लगे ॥ ८ । और दाऊद और सारे इस्राएली परमेश्वर के साम्हने तन मन से गीत गाते और बीणा सारंगी डफ झांझ और तुरहियां बजाते थे ॥ ९ । जब वे कीदोन् के खलिहान तक आये तब उज्जा ने अपना हाथ संदूक थामने को बढ़ाया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी ॥ १० । तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा और उस ने उस को मारा क्योंकि उस ने संदूक पर हाथ लगाया था वह वहीं परमेश्वर के साम्हने मर गया ॥ ११ । तब दाऊद अप्रसन्न हुआ इस लिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था और

उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा[१] रक्खा यह नाम आज लों बना है ॥ १२ । और उस दिन दाऊद परमेश्वर से डरकर कहने लगा मैं परमेश्वर के संदूक को अपने यहां क्योंकर ले आऊं ॥ १३ । सो दाऊद ने संदूक को अपने यहां दाऊदपुर में न पहुंचाया पर ओबेदेदोम् नाम गती के यहां हटा ले गया ॥ १४ । और परमेश्वर का संदूक ओबेदेदोम् के यहां उस के घराने के पास तीन महीने रहा और यहोवा ने ओबेदेदोम् के घराने पर और जो कुछ उस का था उस पर भी आशीष दिई ॥

१४. और सोर् के राजा हीराम् ने दाऊद के पास दूत और उस का भवन बनाने को देवदारु की लकड़ी और राज और बढ़ई भेजे ॥ २ । और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल् का राजा करके स्थिर किया क्योंकि उस की प्रजा इस्राएल् के निमित्त उस का राज्य अत्यन्त बढ़ गया था ॥

३ । और यरूशलेम् में दाऊद ने और स्त्रियां ब्याह लिईं और और बेटे बेटियां जन्माईं ॥ ४ । उस के जो सन्तान यरूशलेम् में उत्पन्न हुए उन के ये नाम हैं अर्थात् शम्मू शोबाब् नातान् सुलैमान, ५ । यिभार् एलीशू एल्पेलेत्, ६ । नोगह् नेपेग् यापी, ७ । एलीशामा बेल्यादा और एलीपेलेत् ॥

८ । जब पलिश्तियों ने सुना कि सारे इस्राएल् का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ तब सब पलिश्तियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई किई यह सुनकर दाऊद उन का साम्हना करने को निकल गया ॥ ९ । सो पलिश्ती आये और रपाईम् नाम तराई में धावा किया था ॥ १० । तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं और क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा यहोवा ने उस से कहा चढ़ाई कर क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ कर दूंगा ॥ ११ । सो जब वे बाल्परासीम् को आये तब दाऊद ने उन को वहीं मार लिया तब दाऊद ने कहा परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है इस कारण उस स्थान का नाम बाल्परासीम्[१] रक्खा गया ॥ १२ । वहां वे अपने देवताओं को छोड़ गये और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूंक दिये गये ॥ १३ । फिर दूसरी बार पलिश्तियों ने उसी तराई में धावा किया ॥ १४ । तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा और परमेश्वर ने उस से कहा उन का पीछा मत कर उन से मुड़कर तूत् वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार ॥ १५ । और जब तूत् वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुन पड़े तब यह जानकर युद्ध करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिश्तियों की सेना मारने को मेरे आगे पधारा है ॥ १६ । परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया और इस्राएलियों ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन् से लेकर गेजेर् लों मार लिया ॥ १७ । तब दाऊद की कीर्त्ति सब देशों में फैल गई और यहोवा ने सब जातियों के मन में उस का डर उपजाया ॥

१५. तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाये और परमेश्वर के संदूक के लिये एक स्थान तैयार करके एक तंबू खड़ा किया ॥ २ । तब दाऊद ने कहा लेवीयों को छोड़ और किसी को परमेश्वर का संदूक उठाना नहीं चाहिये क्योंकि यहोवा ने उन्हीं को इस लिये चुना है कि परमेश्वर का संदूक उठाएं और उस की सेवा टहल सदा किया करें ॥ ३ । सो दाऊद ने सब इस्राएलियों को यरूशलेम् में इस लिये एकट्ठा किया कि यहोवा का संदूक उस स्थान पर पहुंचाएं जिसे उस ने उस के लिये तैयार किया था ॥ ४ । तब दाऊद ने हारून के सन्तानों और इन लेवीयों को एकट्ठा किया, ५ । अर्थात् कहातियों में से ऊरीएल् नाम प्रधान को और उस के एक सौ बीस भाइयों को, ६ । मरारीयों में से असायाह् नाम प्रधान को और उस के दो सौ बीस भाइयों को, ७ । गेर्शोमियों में से योएल् नाम प्रधान को और उस के एक सौ तीस भाइयों को, ८ । एलीसापानियों में से शमायाह् नाम प्रधान को और उस के दो सौ भाइयों को,

(१) अर्थात्, उज्जा पर टूट पड़ना ।

(१) अर्थात् टूट पड़ने का स्थान ।

९। हेब्रोनियों में से एलीएल् नाम प्रधान को और उस के अस्सी भाइयों को, १०। और उज्जीएलियों में से अम्मीनादाब् नाम प्रधान को और उस के एक सौ बारह भाइयों को॥ ११। तब दाऊद ने सादोक् और एब्यातार् नाम याजकों को और ऊरीएल् असायाह् योएल् शमायाह् एलीएल् और अम्मीनादाब् नाम लेवीयों को बुलवाकर, १२। उन से कहा तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष हो सो अपने भाइयों समेत अपने अपने को पवित्र करो कि तुम इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा का संदूक उस स्थान पर पहुंचा सको जिस को मैं ने उस के लिये तैयार किया है॥ १३। क्योंकि पहिली बार तुम लोग उस को न लाये थे इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा क्योंकि हम उस की खोज में नियम के अनुसार न लगे थे॥ १४। सो याजकों और लेवीयों ने अपने अपने को पवित्र किया कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा का संदूक ले जा सकें॥ १५। तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दिई थी लेवीयों ने संदूक को डंडों के बल अपने कंधों पर उठा लिया॥ १६। और दाऊद ने प्रधान लेवीयों को आज्ञा दिई कि अपने भाई गानेहारों को बाजे अर्थात् सारंगी वीणा और झांझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊंचे स्वर से गाने को ठहराओ॥ १७। सो लेवीयों ने योएल् के पुत्र हेमान् को और उस के भाइयों में से बेरेक्याह् के पुत्र आसाप् को और अपने भाई मरारीयों में से कूशायाह् के पुत्र एतान् को ठहराया॥ १८। और उन के साथ उन्हों ने दूसरे पद के अपने भाइयों को अर्थात् जकर्याह् बेन् याजीएल् शमीरामोत् यहीएल् उन्नी एलीआब् बनायाह् मासेयाह् मत्तित्याह् एलीपलेहू मिक्नेयाह् और ओबेदेदोम् और यीएल् को जो डेवढ़ीदार थे ठहराया॥ १९। यों हेमान् आसाप् और एतान् नाम गानेहारे तो पीतल की झांझ बजा बजाकर राग चलाने को, २०। और जकर्याह् अजीएल् शमीरामोत् यहीएल् उन्नी एलीआब् मासेयाह् और बनायाह् अलामोत् नाम राग में सारंगी बजाने को, २१। और मत्तित्याह् एलीपलेहू मिक्नेयाह् ओबेदेदोम् यीएल् और अजज्याह् वीणा खर्ज में छेड़ने को ठहराये गये॥ २२। और उठाने का अधिकारी कनन्याह् नाम लेवीयों का प्रधान था वह उठाने के विषय शिक्षा देता था क्योंकि वह निपुण था॥ २३। और बेरेक्याह् और एल्काना संदूक के डेवढ़ीदार थे॥ २४। और शबन्याह् योशापात् नतनेल् अमासै जकर्याह् बनायाह् और एलीएजेर् नाम याजक परमेश्वर के संदूक के आगे आगे तुरहियां बजाते हुए चले और ओबेदेदोम् और यहिय्याह् उस के डेवढ़ीदार थे॥ २५। और दाऊद और इस्राएलियों के पुरनिये और सहस्रपति सब मिलकर यहोवा की वाचा का संदूक ओबेदेदोम् के घर से आनन्द के साथ ले आने को गये॥ २६। जब परमेश्वर ने यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे लेवीयों की सहायता किई तब उन्हों ने सात बैल और सात मेढ़े बलि किये॥ २७। दाऊद और यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे सब लेवीय और गानेहारे और गानेहारों के साथ उठानेहारों का प्रधान कनन्याह् ये सब तो सन के कपड़े के बागे पहिने थे और दाऊद सन के कपड़े का एपोद् पहिने था॥ २८। यों सारे इस्राएली यहोवा की वाचा के संदूक को जयजयकार करते और नरसिंगे तुरहियां और झांझ बजाते और सारंगियां और वीणा सुनाते हुए ले चले॥ २९। जब यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर लों पहुंचा तब शाऊल् की बेटी मीकल् ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा और उसे मन ही मन तुच्छ जाना॥

१६. तब परमेश्वर का संदूक ले आकर उस तंबू में रक्खा गया जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा कराया था और परमेश्वर के साम्हने होमबलि और मेलबलि चढ़ाये गये॥ २। जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका तब उस ने यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया॥ ३। और उस ने क्या पुरुष क्या स्त्री सब इस्राएलियों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दिई॥

४ । तब उस ने कितने एक लेवीयों को इस लिये ठहरा दिया कि यहोवा के संदूक के साम्हने से सेवा टहल किया करें और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की चर्चा और उस का धन्यवाद और स्तुति किया करें ॥ ५ । उन का मुखिया तो आसाप् था और उस के नीचे जकर्याह् था फिर यीएल् शमीरा-मोत् यहीएल् मत्तित्याह् एलीआब् बनायाह् ओबेदेदोम् और यीएल् थे ये तो सारंगियां और वीणाएं लिये हुए थे और आसाप् झांझ बजाकर राग चलाता था ॥ ६ । और बनायाह् और यहजीएल् नाम याजक परमेश्वर की वाचा के संदूक के साम्हने तुरहियां नित्य बजाने को ठहराये गये ॥

७ । पहिले उसी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद करने का काम आसाप् और उस के भाइयों को सौंप दिया

८ । यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो
देश देश में उस के कामों का प्रचार करो ।
९ । उस का गीत गाओ उस का भजन गाओ
उस के सब आश्चर्य्यकर्म्मों का ध्यान करो ।
१० । उस के पवित्र नाम पर बड़ाई करो
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो ।
११ । यहोवा और उस के सामर्थ को खोज करो
उस के दर्शन के लगातार खोजी रहो ।
१२ । उस के किये हुए आश्चर्य्यकर्म्म
उस के चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो ।
१३ । हे उस के दास इस्राएल् के वंश
हे याकूब की सन्तान तुम जो उस के चुने हुए हो,
१४ । वही हमारा परमेश्वर यहोवा है
उस के न्याय के काम पृथिवी भर में होते हैं ।
१५ । उस की वाचा को सदा लों स्मरण रक्खो
सो वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहरा[1] दिया ।
१६ । वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बांधी
और उसी के विषय उस ने इसहाक् से किरिया खाई ।
१७ । और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके
इस्राएल् के लिये यह कहकर सदा की वाचा बांधकर दृढ़ किया कि,
१८ । मैं कनान् देश तुझी को दूंगा
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा ।
१९ । उस समय तो तुम गिनती में थोड़े थे
बरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे ।
२० । और वे एक जाति से दूसरी जाति में
और एक राज्य से दूसरे में फिरते तो रहे,
२१ । पर उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया
और वह राजाओं को उन के निमित्त यह धमकी देता था कि,
२२ । मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ
और न मेरे नबियों की हानि करो ।
२३ । हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का गीत गाओ
दिन दिन उस के किये हुए उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो ।
२४ । अन्यजातियों में उस की महिमा का
और देश देश के लोगों में उस के आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करो ।
२५ । क्योंकि यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है
वह तो सारे देवताओं से अधिक भययोग्य है ।
२६ । क्योंकि देश देश के सब देवता मूरतें ही हैं
पर यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है ।
२७ । उस की चारों ओर विभव और ऐश्वर्य्य है
उस के स्थान में सामर्थ्य और आनन्द है ।
२८ । हे देश देश के कुलो यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो ।
२९ । यहोवा के नाम की महिमा मानो
भेंट लेकर उस के सम्मुख आओ

(१) मूल में जिस की आज्ञा उस ने हजार पीढ़ियों के लिये दिई ।

पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो ॥
३० । हे सारी पृथिवी के लोगो उस के साम्हने थरथराओ
जगत ऐसा स्थिर भी है कि वह टलने का नहीं ॥
३१ । आकाश आनन्द करे और पृथिवी मगन हो
और जाति जाति में लोग कहें कि यहोवा राजा हुआ है ॥
३२ । समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें
मैदान और जो कुछ उस में है सो प्रफुल्लित हो ॥
३३ । उसी समय वन के वृक्ष यहोवा के साम्हने जयजयकार करें
क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है ॥
३४ । यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है
उस की करुणा सदा की है ॥
३५ । और यह कहो कि हे हमारे उद्धार करनेहारे परमेश्वर हमारा उद्धार कर
और हम को एकट्ठा करके अन्यजातियों से छुड़ा
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बड़ाई मारें ॥
३६ । अनादिकाल से अनन्तकाल लों
इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा धन्य है ।
तब सारी प्रजा ने आमेन् कहा और यहोवा की स्तुति किई ॥

३७ । तब उस ने वहां अर्थात् यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने आसाप् और उस के भाइयों को छोड़ दिया कि दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार वे संदूक के साम्हने नित्य सेवा टहल किया करें, ३८ । और अड़सठ भाइयों समेत ओबेदेदोम् को और डेवढ़ीदारी के लिये यदूतून् के पुत्र ओबेदेदोम् और होसा को छोड़ दिया ॥ ३९ । फिर उस ने सादोक् याजक और उस के भाई याजकों को यहोवा के निवास के साम्हने जो गिबोन् के ऊंचे स्थान में था ठहरा दिया, ४० । कि वे नित्य सवेरे और सांझ को होमबलि की वेदी पर यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें और उस सब के अनुसार किया करें जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा है जिसे उस ने इस्राएल् को दिया था ॥ ४१ । और उन के संग उस ने हेमान् और यदूतून् और उन दूसरों को भी जो नाम लेकर चुने गये थे ठहरा दिया कि यहोवा की सदा की करुणा के कारण उस का धन्यवाद करें ॥ ४२ । और उन के संग उस ने हेमान् और यदूतून् को बजानेहारों के लिये तुरहियां और झांझें और परमेश्वर के गीत गाने के लिये बाजे दिये और यदूतून् के बेटों को फाटक की रखवाली करने को ठहरा दिया ॥ ४३ । निदान प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गये और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया ॥

(दाऊद का मन्दिर बनाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

१७. जब दाऊद अपने भवन में रहता था तब दाऊद नातान् नबी से कहने लगा देख मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूं पर यहोवा की वाचा का संदूक तंबू में रहता है ॥ २ । नातान् ने दाऊद से कहा जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है ॥ ३ । उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान् के पास पहुंचा कि, ४ । जाकर मेरे दास दाऊद से कह यहोवा यों कहता है कि मेरे निवास के लिये तू घर बनवाने न पाएगा ॥ ५ । क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया आज के दिन लों मैं कभी घर में नहीं रहा पर एक तंबू से दूसरे तंबू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूं ॥ ६ । जहां जहां मैं सारे इस्राएलियों के बीच आया जाया किया क्या मैं ने इस्राएल् के न्यायियों में से जिन को मैं ने अपनी प्रजा की चरवाही करने को ठहराया था किसी से ऐसी बात कभी कही कि तुम लोगों ने मेरे लिये देवदारु का घर क्यों नहीं बनवाया ॥ ७ । सो अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने तो तुझ को भेड़शाला से और भेड़बकरियों के पीछे पीछे फिरने से

इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल् का प्रधान हो जाए ॥ ८। और जहां कहीं तू आया गया वहां वहां मैं तेरे संग रहा और तेरे सारे शत्रुओं को तेरे साम्हने से नाश किया है। फिर मैं तेरे नाम को पृथिवी पर के बड़े बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूंगा॥ ९। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उस को स्थिर करूंगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहेगी और कभी चलायमान न होगी। और कुटिल लोग उन को नाश न करने पाएंगे जैसे कि पहिले दिनों में करते थे, १०। और उस समय से भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के ऊपर न्यायी ठहराता था और मैं तेरे सारे शत्रुओं को दबा दूंगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूं कि यहोवा तेरा घर बनाये रक्खेगा॥ ११। जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तुझे अपने पितरों के संग रहना पड़ेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे वंश को जो तेरे पुत्रों में से होगा खड़ा करके उस के राज्य को स्थिर करूंगा ॥ १२। मेरे लिये एक घर वही बनाएगा और मैं उस की राजगद्दी को सदा लों स्थिर रक्खूंगा ॥ १३। मैं उस का पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा और जैसे मैं ने अपनी करुणा उस पर से जो तुझ से पहिले था हटाई वैसे मैं उसे उस पर से न हटाऊंगा॥ १४। वरन मैं उस को अपने घर और अपने राज्य में सदा लों स्थिर रक्खूंगा और उस की राजगद्दी सदा लों अटल रहेगी ॥ १५। इन सब बातों और इस सारे दर्शन के अनुसार नातान् ने दाऊद को समझा दिया॥

१६। तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सन्मुख बैठा और कहने लगा हे यहोवा परमेश्वर मैं तो क्या हूं और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया है ॥ १७। और हे परमेश्वर यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई क्योंकि तू ने अपने दास के घराने के विषय आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा किई है और हे यहोवा परमेश्वर तू ने मुझे ऊंचे पद का मनुष्य सा[1] जाना है ॥ १८। जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है उस के विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है तू तो अपने दास को जानता है ॥ १९। हे यहोवा तू ने अपने दास के निमित्त और अपने मन के अनुसार यह सब बड़ा काम किया है कि तेरा दास उस को जान ले ॥ २०। हे यहोवा जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है उस के अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है ॥ २१। फिर तेरी प्रजा इस्राएल् के भी तुल्य कौन है वह तो पृथिवी भर में एक ही जाति है उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया इस लिये कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे और अपनी प्रजा के साम्हने से जो तू ने मिस्र से छुड़ा लिई थी जाति जाति के लोगों को निकाल दे ॥ २२। क्योंकि तू ने अपनी प्रजा इस्राएल् को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया और हे यहोवा तू आप उस का परमेश्वर ठहर गया ॥ २३। सो अब हे यहोवा तू ने जो वचन अपने दास के और उस के घराने के विषय दिया है सो सदा लों अटल रहे और अपने कहे के अनुसार ही कर ॥ २४। और तेरा नाम सदा लों अटल रहे और यह कहकर उस की बड़ाई सदा किई जाए कि सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो इस्राएल् के हित का परमेश्वर है और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे साम्हने स्थिर हुआ है ॥ २५। क्योंकि हे मेरे परमेश्वर तू ने यह कहकर अपने दास पर यह प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाये रक्खूंगा इस कारण तेरे दास को तेरे सन्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है ॥ २६। और अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है और तू ने अपने दास से यह भलाई करने का वचन दिया है ॥ २७। और अब तू ने प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दिई है कि वह तेरे सन्मुख सदा लों बना रहे क्योंकि हे यहोवा तू आशीष दे चुका है सो वह सदा के लिये धन्य है ॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

१८. इस के पीछे दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया और गांवों समेत गत् नगर को पलिश्तियों के

(१) या. ऊपर से आनेहारे आदम।

हाथ से छीन लिया ॥ २ । फिर उस ने मोआबियों को भी जीत लिया और मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट लाने लगे ॥ ३ । फिर जब सोबा का राजा हदरेजेर् परात् महानद के पास अपना राज्य[१] स्थिर करने को जा रहा था तब दाऊद ने उस को हमात् के पास जीत लिया ॥ ४ । और दाऊद ने उस से एक हजार रथ सात हजार सवार और बीस हजार पियादे हर लिये और दाऊद ने सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई पर एक सौ रथवाले घोड़े बचा रक्खे ॥ ५ । और जब दमिश्क् के अरामी सोबा के राजा हदरेजेर् की सहायता करने को आये तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हजार पुरुष मारे ॥ ६ । तब दाऊद ने दमिश्क् के अराम् में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं सो अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे । और जहां जहां दाऊद जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था ॥ ७ । और हदरेजेर् के कर्म्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं उन्हे दाऊद लेकर यरूशलेम् को आया ॥ ८ । और हदरेजेर् के तिभत् और कून् नाम नगरों से दाऊद बहुत ही पीतल ले आया और उसी से सुलैमान् ने पीतल के गंगाल और खंभों और पीतल के पात्रों को बनवाया ॥ ९ । और जब हमात् के राजा तोऊ ने सुना कि दाऊद ने सोबा के राजा हदरेजेर् की सारी सेना को जीत लिया, १० । तब उस ने हदोराम् नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उस का कुशल क्षेम पूछने और इस लिये उसे बधाई देने को भी भेजा कि उस ने हदरेजेर् से लड़कर उसे जीत लिया था क्योंकि हदरेजेर् तोऊ से लड़ा करता था । और हदोराम् सोने चांदी और पीतल के सब प्रकार के पात्र लिये हुए आया ॥ ११ । इन को दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रक्खा और वैसा ही सब जातियों से अर्थात् एदोमियों मोआबियों अम्मोनियों पलिश्तियों और अमालेकियों से हरे हुए सोने चान्दी से किया ॥ १२ । फिर सरूयाह् के पुत्र अबीशै ने लोन् की तराई में अठारह हजार एदोमियों को मार लिया ॥ १३ । तब उस ने एदोम् में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गये । और दाऊद जहां जहां जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था ॥

(दाऊद के कर्म्मचारियों की नामावली.)

१४ । दाऊद तो सारे इस्राएल् पर राज्य करता था और वह अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और धर्म्म के काम करता था ॥ १५ । और प्रधान सेनापति सरूयाह् का पुत्र योआब् था इतिहास का लिखनेहारा अहीलूद् का पुत्र यहोशापात् था, १६ । प्रधान याजक अहीतूब् का पुत्र सादोक् और एब्यातार् का पुत्र अबीमेलेक् थे मंत्री शवृशा था, १७ । करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह् था और दाऊद के पुत्र राजा के पास मुखिये होकर रहते थे ॥

(अम्मोनियों पर विजय)

१९. इस के पीछे अम्मोनियों का राजा नाहाश् मर गया और उस का पुत्र उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २ । तब दाऊद ने यह सोचा कि हानून् के पिता नाहाश् ने जो मुझ पर प्रीति दिखाई थी सो मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊंगा सो दाऊद ने उस के पिता के विषय शांति देने के लिये दूत भेजे । और दाऊद के कर्म्मचारी अम्मोनियों के देश में हानून् के पास उसे शांति देने को आये ॥ ३ । पर अम्मोनियों के हाकिम हानून् से कहने लगे दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेहारे भेजे हैं सो क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे हैं क्या उस के कर्म्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नहीं आये कि ढूंढ़ ढांढ़ करें और उलट दें और देश का भेद लें ॥ ४ । तब हानून् ने दाऊद के कर्म्मचारियों को पकड़ा और उन के बाल मुंड़वाये और आधे वस्त्र अर्थात् नितम्ब लों कटवाकर उन को जाने दिया ॥ ५ । तब कितनों ने जाकर दाऊद को बता दिया कि उन पुरुषों के साथ कैसा बर्ताव किया गया सो उस ने लोगों को उन से मिलने के लिये

(१) मूल में हाथ ।

भेजा क्योंकि वे पुरुष बहुत लजाते थे और राजा ने कहा जब लों तुम्हारी डाढ़ियां बढ़ न जाएं तब लों यरीहो में ठहरे रहो और पीछे लौट आना ॥ ६। जब अम्मोनियों ने देखा कि हम दाऊद को घिनौने लगे हैं तब हानून् और अम्मोनियों ने एक हजार किक्कार् चान्दी अरम्नहरैम् और अरम्माका और सोबा को भेजी कि रथ और सवार वेतन पर बुलाएं ॥ ७। सो उन्हों ने बत्तीस हजार रथ और माका के राजा और उस की सेना को वेतन पर बुलाया और इन्हों ने आकर मेदबा के साम्हने अपने डेरे खड़े किये। और अम्मोनी अपने अपने नगर में से एकट्ठे होकर लड़ने को आये ॥ ८। यह सुनकर दाऊद ने योआब् और शूरवीरों की सारी सेना को भेजा ॥ ९। तब अम्मोनी निकले और नगर के फाटक के पास पांति बांधी और जो राजा आये थे सो उन से न्यारे मैदान में थे ॥ १०। यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बंधी हैं योआब् ने सब बड़े बड़े इस्राएली वीरों में से कितनों को छांटकर अरामियों के साम्हने उन की पांति बंधाई, ११। और शेष लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने अम्मोनियों के साम्हने पांति बांधी ॥ १२। और उस ने कहा यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें तो तू मेरी सहायता करना और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें तो मैं तेरी सहायता करूंगा ॥ १३। तू हियाव बांध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें और यहोवा जैसा उस को अच्छा लगे वैसा ही करेगा ॥ १४। तब योआब् और जो लोग उस के साथ थे अरामियों से युद्ध करने को उन के साम्हने गये और वे उस के साम्हने से भागे ॥ १५। यह देखकर कि अरामी भाग गये हैं अम्मोनी भी उस के भाई अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब् यरूशलेम् को लौट आया ॥ १६। फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये अरामियों ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया और हदरेजेर् के सेनापति शोपक् को अपना प्रधान बनाया ॥ १७। इस का समाचार पाकर दाऊद ने सारे इस्राएलियों को एकट्ठा किया और यर्दन पार होकर उन पर चढ़ाई किई और उन के विरुद्ध पांति बंधाई और जब दाऊद ने अरामियों के विरुद्ध पांति बंधाई तब वे उस से लड़ने लगे ॥ १८। पर अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने उन में से सात हजार रथियों और चालीस हजार प्यादों को मार डाला और शोपक् सेनापति को भी मार डाला ॥ १९। यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये हैं हदरेजेर् के कर्म्मचारियों ने दाऊद से संधि किई और उस के अधीन हो गये और अरामियों ने अम्मोनियों की सहायता फिर करनी न चाही ॥

२०. फिर नये बरस के लगने के समय जब राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं तब योआब् ने भारी सेना संग ले जाकर अम्मोनियों का देश उजाड़ दिया और आकर रब्बा को घेर लिया पर दाऊद यरूशलेम् में रह गया। और योआब् ने रब्बा को जीतकर ढा दिया तब दाऊद ने उन के राजा का मुकुट उस के सिर से उतारके क्या पाया कि इस का तौल किक्कार् भर सोने का है और उस में मणि भी जड़े थे सो वह दाऊद के सिर पर रक्खा गया। फिर उस ने उस नगर से बहुत ही लूट पाई ॥ ३। और उस ने उस के रहनेहारों को निकालकर आरों और लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ियों से कटवाया और अम्मोनियों के सब नगरों से दाऊद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब लोगों समेत यरूशलेम को लौट गया ॥

४। इस के पीछे गेजेर् में पलिश्तियों के साथ युद्ध हुआ उस समय हूशाई सिब्बकै ने सिप्पै को जो रापा की सन्तान का था मार डाला और वे दब गये ॥ ५। और पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ उस में याईर् के पुत्र एल्हानान् ने गती गोल्यत् के भाई लह्मी को मार डाला जिस के बर्छे की छड़ ढेंके के समान थी ॥ ६। फिर गत् में भी युद्ध हुआ और वहां एक बड़ी डील का पुरुष था जो

रापा की सन्तान का था और उस के एक एक हाथ पांव में छः छः अंगुली अर्थात् सब मिलाकर चौबीस अंगुली थीं ॥ ७। जब उस ने इस्राएलियों को ललकारा तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनातान् ने उस को मारा ॥ ८। ये ही गत् में रापा से उत्पन्न हुए थे और वे दाऊद और उस के जनों से मार डाले गये ॥

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना और इस पाप के दण्ड और पापमोचन के द्वारा मन्दिर का स्थान ठहराया जाना)

२१. और शैतान ने इस्राएल् के विरुद्ध उठकर दाऊद को उसकाया कि इस्राएलियों की गिनती ले ॥ २। सो दाऊद ने योआब् और प्रजा के हाकिमों से कहा तुम जाकर बेर्शेबा से ले दान् लों के इस्राएल् की गिनती लेकर मुझे बताओ कि मैं जान लूं कि वे कितने हैं ॥ ३। योआब् ने कहा यहोवा की प्रजा के कितने ही क्यों न हों वह उन को सौ गुना बढ़ा दे पर हे मेरे प्रभु हे राजा क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है वह इस्राएल् पर दोष लगने का कारण क्यों बने ॥ ४। तौभी राजा की आज्ञा योआब् पर प्रबल हुई सो योआब् विदा हो सारे इस्राएल् में घूमकर यरूशलेम् को लौट आया ॥ ५। तब योआब् ने प्रजा की गिनती का जोड़ दाऊद को सुनाया और सब तलवरिये पुरुष इस्राएल् के तो ग्यारह लाख और यहूदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे ॥ ६। पर इन में योआब् ने लेवी और बिन्यामीन् को न गिना क्योंकि वह राजा की आज्ञा से घिन करता था ॥ ७। और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी सो उस ने इस्राएल् को मारा ॥ ८। और दाऊद ने परमेश्वर से कहा यह काम जो मैं ने किया सो बड़ा पाप है पर अब अपने दास का अधर्म्म दूर कर मुझ से तो बड़ी मूर्खता हुई है ॥ ९। तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी गाद् से कहा, १०। जाकर दाऊद से कह कि यहोवा यों कहता है कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं उन में से एक को चुन ले कि मैं उसे तुझ पर डालूं ॥ ११। सो गाद् ने दाऊद के पास आकर उस से कहा यहोवा यों कहता है कि जिस को तू चाहे उसे चुन ले. १२। कह तो तीन बरस का काल पड़े वा तीन महीने लों तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे वा तीन दिन लों यहोवा की तलवार चले अर्थात् मरी देश में फैले और यहोवा का दूत सारे इस्राएली देश में विनाश करता रहे। अब सोच कि मैं अपने भेजनेहारे को क्या उत्तर दूं ॥ १३। दाऊद ने गाद् से कहा मैं बड़े सङ्कट में पड़ा हूं मैं यहोवा के हाथ में पड़ूं क्योंकि उस की दया बहुत बड़ी है पर मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े ॥ १४। सो यहोवा ने इस्राएल् में मरी फैलाई और इस्राएल् में से सत्तर हजार पुरुष मर मिटे ॥ १५। फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम् को भी उसे नाश करने को भेजा और वह नाश करने ही पर था कि यहोवा देखकर दुःख देने से पछताया और नाश करनेहारे दूत से कहा बस कर अब अपना हाथ खींच। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान् के खलिहान के पास खड़ा था ॥ १६। और दाऊद ने आंखें उठाकर देखा कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम् के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए पृथिवी और आकाश के बीच खड़ा है सो दाऊद और पुरनिये टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे ॥ १७। तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा जिस ने प्रजा की गिनती लेने की आज्ञा दिई थी सो क्या मैं नहीं हूं हां जिस ने पाप किया और बहुत बुराई किई है सो तो मैं ही हूं पर इन भेड़ बकरियों ने क्या किया है सो हे मेरे परमेश्वर यहोवा तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो पर तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो कि वे मारे जाएं ॥ १८। तब यहोवा के दूत ने गाद् को दाऊद से यह कहने की आज्ञा दिई कि दाऊद चढ़कर यबूसी ओर्नान् के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनाए ॥ १९। गाद् के इस वचन के अनुसार जो उस ने यहोवा के नाम से कहा था दाऊद चढ़ गया ॥ २०। तब ओर्नान् ने पीछे फिरके दूत को देखा और उस के चारों बेटे जो उस के संग थे छिप गये

ओर्नान् तो गेहूं दांवता था ॥ २१। जब दाऊद ओर्नान् के पास आया तब ओर्नान् ने दृष्टि करके दाऊद को देखा और खलिहान से बाहर जाकर भूमि लों झुककर दाऊद को दण्डवत् किई ॥ २२। तब दाऊद ने ओर्नान् से कहा इस खलिहान का स्थान मुझे दे दे कि मैं इस पर यहोवा की एक वेदी बनाऊं उस का पूरा दाम लेकर उसे मुझ को दे कि यह विपत्ति प्रजा पर से दूर किई जाए ॥ २३। ओर्नान् ने दाऊद से कहा इसे ले ले और मेरे प्रभु राजा को जो कुछ भाए सोई वह करे सुन मैं तुझे होमबलि के लिये बैल और ईंधन के लिये दांवने के हथियार और अन्नबलि के लिये गेहूं यह सब मैं दे देता हूं ॥ २४। राजा दाऊद ने ओर्नान् से कहा सो नहीं मैं अवश्य इस का पूरा दाम देकर इसे मोल लूंगा क्योंकि जो तेरा है सो मैं यहोवा के लिये न लूंगा और न संतमेंत का होमबलि चढ़ाऊंगा ॥ २५। सो दाऊद ने उस स्थान के लिये ओर्नान् को छ सौ शेकेल् सोना तौलकर दिया॥ २६। तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से प्रार्थना किई और उस ने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिराकर उस की सुन लिई ॥ २७। तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दिई और उस ने अपनी तलवार मियान में फिर रक्खी ॥

२८। उसी समय यह देखकर कि यहोवा ने यबूसी ओर्नान् के खलिहान में मेरी सुन लिई है दाऊद ने वहां बलिदान किया॥ २९। यहोवा का निवास तो जो मूसा ने जंगल में बनाया था और होमबलि की वेदी ये दोनो उस समय गिबोन् के ऊंचे स्थान पर थे॥ ३०। पर दाऊद परमेश्वर के पास उस के साम्हने न जा सका क्योंकि वह यहोवा के दूत की तलवार से डर गया था॥

२२. १। तब दाऊद कहने लगा यहोवा परमेश्वर का भवन यही है और इस्राएल् के लिये होमबलि की वेदी यही है ॥

(मन्दिर के बनाने की तैयारी और उस में की भान्ति भान्ति की उपासना और उपासकों का प्रबंध)

२। सो दाऊद ने इस्राएल् के देश में के परदेशियों को एकट्ठा करने की आज्ञा दिई और परमेश्वर का भवन बनाने को पत्थर गढ़ने के लिये राज ठहरा दिये ॥ ३। फिर दाऊद ने फाटकों के किवाड़ों की कीलों और जोड़ों के लिये बहुत सा लोहा और तौल से बाहर बहुत पीतल, ४। और गिनती से बाहर देवदारु के पेड़ एकट्ठे किये क्योंकि सीदोन् और सोर् के लोग दाऊद के पास बहुत से देवदारु के पेड़ लाये॥ ५। और दाऊद ने कहा मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और लड़का है और जो भवन यहोवा के लिये बनना है सो अत्यन्त तेजोमय और सब देशों में प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिये मैं उस के लिये तैयारी करूंगा। सो दाऊद ने मरने से पहिले बहुत तैयारी किई ॥

६। फिर उस ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाकर इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये भवन बनाने की आज्ञा दिई ॥ ७। दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा मेरी मनसा तो थी कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं ॥ ८। पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि तू ने लोहू बहुत बहाया और बड़े बड़े युद्ध किये हैं तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा क्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाया है ॥ ९। सुन तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा जो शांत पुरुष होगा और मैं उस को चारों ओर के शत्रुओं से शांति दूंगा उस का नाम तो सुलैमान[1] होगा और उस के दिनों में मैं इस्राएल् को शांति और चैन दूंगा ॥ १०। वही मेरे नाम का भवन बनाएगा और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उस का पिता ठहरूंगा और उस की राजगद्दी को मैं इस्राएल् के ऊपर सदा लों स्थिर रक्खूंगा ॥ ११। अब हे मेरे पुत्र यहोवा तेरे संग रहे और तू कृतार्थ होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है उस का भवन बनाना ॥ १२। इतना हो कि यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इस्राएल् का अधिकारी ठहरा दे और तू अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे ॥ १३। तू तब ही कृतार्थ होगा जब

(१) अर्थात् शांतिवाला।

उन विधियों और नियमों पर चलने की चौकसी करे जिन की आज्ञा यहोवा ने इस्राएल् के लिये मूसा को दिई थी दियाव बांध और दृढ़ हो मत डर और तेरा मन कच्चा न हो ॥ १४ । सुन मैं ने अपने क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिये एक लाख किक्कार् सोना और दस लाख किक्कार् चांदी और पीतल और लोहा इतना एकट्ठा किया है कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है और लकड़ी और पत्थर मैं ने एकट्ठे किये हैं और तू उन को बढ़ा सकेगा ॥ १५ । और तेरे पास बहुत कारीगर हैं अर्थात् पत्थर और लकड़ी के काटने और गढ़नेहारे बरन सब भांति के काम के लिये सब प्रकार के प्रवीण पुरुष हैं ॥ १६ । सोने चांदी पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है सो उठ काम में लग जा और यहोवा तेरे संग रहे ॥ १७ । फिर दाऊद ने इस्राएल् के सब हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दिई कि, १८ । क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है क्या उस ने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया उस ने तो देश के निवासियों को मेरे वश कर दिया है और देश यहोवा और उस की प्रजा के साम्हने दबा हुआ है ॥ १९ । अब तन मन से[1] अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाया करो और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना कि तुम यहोवा की वाचा का संदूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बननेवाला है ॥

२३.

दाऊद तो बूढ़ा बरन बहुत पुरनिया हो गया था सो उस ने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल् पर राजा ठहराया ॥ २ । तब उस ने इस्राएल् के सब हाकिमों और याजकों और लेवीयों को एकट्ठा किया ॥ ३ । और जितने लेवीय तीस बरस के और उस से अधिक अवस्था के थे सो गिने गये और एक एक पुरुष के गिनने से उन की गिनती अड़तीस हजार ठहरी ॥ ४ । इन में से चौबीस हजार तो यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये हुए और छ: हजार सरदार और न्यायी, ५ । और चार हजार द्वेवढ़ीदार हुए और चार हजार उन बाजों से यहोवा की स्तुति करने के लिये ठहरे जो दाऊद[1] ने स्तुति करने को बनाये थे ॥ ६ । फिर दाऊद ने उन को गेर्शोन् कहात् और मरारी नाम लेवी के पुत्रों के अनुसार दलों में अलग अलग कर दिया ॥ ७ । गेर्शोनियों में से तो लादान् और शिमी थे ॥ ८ । और लादान् के पुत्र, मुख्य यहीएल् फिर जेताम् और योएल्, तीन ॥ ९ । और शिमी के पुत्र, शलोमीत् हजीएल् और हारान, तीन । लादान् के कुल के पितरों के घरानो के मुख्य पुरुष ये ही थे ॥ १० । फिर शिमी के पुत्र, यहत् जीना यूश् और बरीआ के पुत्र शिमी, ये ही चार थे ॥ ११ । यहत् मुख्य था और जीजा दूसरा, यूश् और बरीआ के बहुत बेटे न हुए इस कारण वे मिलकर पितरों का एक ही घराना ठहरे ॥ १२ । कहात् के पुत्र, अम्राम् यिस्हार् हेब्रोन् और उज्जीएल्, चार ॥ १३ । अम्राम् के पुत्र, हारून् और मूसा और हारून् तो इस लिये अलग किया गया कि वह और उस के सन्तान सदा लों परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र करें और सदा लों यहोवा के सन्मुख धूप जलाया करें और उस की सेवा टहल करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें ॥ १४ । परन्तु परमेश्वर के जन मूसा के पुत्रों के नाम लेवी के गोत्र के बीच गिने गये ॥ १५ । मूसा के पुत्र, गेर्शोम् और एलीएजेर् ॥ १६ । और गेर्शोम् के पुत्र, शबूएल् मुख्य, १७ । और एलीएजेर् के पुत्र, रहब्याह् मुख्य, और एलीएजेर् के और कोई पुत्र न हुआ पर रहब्याह् के बहुत ही बेटे हुए ॥ १८ । यिस्हार् के पुत्रों में से शलोमीत मुख्य ठहरा ॥ १९ । हेब्रोन् के पुत्र, यरिय्याह् मुख्य दूसरा अमर्याह् तीसरा यहजीएल् और चौथा यकमाम् ॥ २० । उज्जीएल् के पुत्रों में से मुख्य तो मीका और दूसरा यिश्शिय्याह् था ॥ २१ । मरारी के पुत्र, महली और

(१) मूल में अपना मन और अपना जीव देकर ।

(१) मूल में मैं ।

मूशी। महली के पुत्र, एलाजार् और कीश्॥ २२। एलाजार् निपुत्र मर गया उस के केवल बेटियां हुईं सो कीश् के पुत्रों ने जो उन के भाई थे उन्हें व्याह लिया॥ २३। मूशी के पुत्र, महली एदेर् और यरेमोत्, तीन॥ २४॥ लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे ये नाम ले लेकर एक एक पुरुष करके गिने गये और बीस बरस की वा उस से अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन में सेवा का काम करते थे॥ २५। क्योंकि दाऊद ने कहा इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्राम दिया है और वह तो यरूशलेम् में सदा के लिये बस गया है, २६। और लेवीयों को निवास और उस में की उपासना का सामान फिर उठाना न पड़ेगा॥ २७। क्योंकि दाऊद की पिछली आज्ञाओं के अनुसार बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था के लेवीय गिने गये॥ २८। क्योंकि उन का काम तो हारून की सन्तान की सेवा टहल करना था अर्थात् यह कि वे आंगनों और कोठरियों में और सब पवित्र वस्तुओं के शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन में की उपासना के सारे कामों में सेवा टहल करें, २९। और भेंट की रोटी का अन्नबलियों के मैदे का और अखमीरी पपड़ियों का और तवे पर बनाये हुए और सने हुए का और मापने और तोलने के सब प्रकार का काम करें॥ ३०। और भोर भोर और सांझ सांझ को यहोवा का धन्यवाद और उस की स्तुति करने के लिये खड़े रहा करें, ३१। और विश्रामदिनों और नये चान्द के दिनों और नियत पर्वों में गिनती के नियम के अनुसार नित्य यहोवा के सब होमबलियों को चढ़ाएं. ३२। और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले तंबू और पवित्रस्थान की रक्षा करें और अपने भाई हारूनियों के सौंपे हुए काम को चौकसी से करें॥

२४. फिर हारून् की सन्तान के दल ये ठहरे। हारून् के पुत्र तो नादाब् अबीहू एलाजार और ईतामार् हुए॥ २। पर नादाब् और अबीहू अपने पिता के साम्हने निपुत्र मर गये सो याजक का काम एलाजार् और ईतामार् करते थे॥ ३। और दाऊद और एलाजार् के वंश के सादोक् और ईतामार् के वंश के अहीमेलेक् ने उन को अपनी अपनी सेवा के अनुसार दल दल करके बांट दिया॥ ४। और एलाजार् के वंश के मुख्य पुरुष ईतामार् के वंश के मुख्य पुरुषों से अधिक थे सो वे यों बांटे गये अर्थात् एलाजार् के वंश के पितरों के घरानों के सोलह और ईतामार के वंश के पितरों के घरानों के आठ मुख्य पुरुष ठहरे॥ ५। सो वे चिट्ठी डालकर बराबर बराबर बांटे गये क्योंकि एलाजार् और ईतामार् दोनों के वंशों में पवित्रस्थान के हाकिम और परमेश्वर के हाकिम हुए थे॥ ६। और नतनेल् के पुत्र शमायाह् ने जो लेवीय था उन के नाम राजा और हाकिमों और सादोक् याजक और एब्यातार् के पुत्र अहीमेलेक् और याजकों और लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने लिखे अर्थात् पितरों का एक घराना तो एलाजार् के वंश में से और एक ईतामार् के वंश में से लिया गया॥ ७। पहिली चिट्ठी तो यहोयारीब् के और दूसरी यदायाह् के, ८। तीसरी हारीम् के चौथी सोरीम् के, ९। पांचवीं मल्किय्याह् के छठवीं मिय्यामीन् के, १०। सातवीं हक्कोस् के आठवीं अबिय्याह् के, ११। नौवीं येशू के दसवीं शकन्याह् के, १२। ग्यारहवीं एल्याशीब् के बारहवीं याकीम् के, १३। तेरहवीं हुप्पा के चौदहवीं येसेबाब् के, १४। पंद्रहवीं बिलगा के सोलहवीं इम्मेर् के, १५। सत्रहवीं हेज़ीर् के अठारहवीं हप्पिस्सेस् के, १६। उन्नीसवीं पतह्याह् के बीसवीं यहेज़केल् के, १७। इक्कीसवीं याकीन् के बाईसवीं गामूल् के, १८। तेईसवीं दलायाह् के और चौबीसवीं माज्याह् के नाम पर निकली॥ १९। उन की सेवकाई के लिये उन का यही नियम ठहराया गया कि वे अपने उस नियम के अनुसार जो इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन के मूलपुरुष हारून ने चलाया था यहोवा के भवन में आया करें॥

२०। फिर लेवीय अम्राम् के वंश में से शूबाएल्, शूबाएल् के वंश में से येहदयाह् ॥ २१। रहब्याह् के, रहब्याह् के वंश में से यिश्शिय्याह् मुख्य था ॥ २२। यिस्हारियों में से शलोमोत् और शलोमोत् के वंश में से यहत् ॥ २३। और हेब्रोन् के वंश में से मुख्य तो यरिय्याह् दूसरा अमर्याह् तीसरा यहजीएल् और चौथा यकमाम् ॥ २४। उज्जीएल् के वंश में से मीका और मीका के वंश में से शामीर् ॥ २५। मीका का भाई, यिश्शिय्याह्। यिश्शिय्याह् के वंश में से जकर्याह् ॥ २६। मरारी के पुत्र, महली और मूशी, और याजिय्याह् का पुत्र बनो ॥ २७। मरारी के पुत्र, याजिय्याह् के, बनो और शोहम् जक्कूर् और इब्री ॥ २८। महली के, एलाजार् जिस के कोई पुत्र न हुआ ॥ २९। कीश् के, कीश् के वंश में यरह्मेल् ॥ ३०। और मूशी के पुत्र महली एदेर् और यरीमोत्। अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार ये ही लेवीय थे ॥ ३१। इन्हों ने भी अपने भाई हारून् के सन्तानों की नाईं दाऊद राजा और सादोक् और अहीमेलेक् और याजकों और लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने चिट्ठियां डालीं अर्थात् मुख्य पुरुष के पितरों का घराना उस के छोटे भाई के पितरों के घराने के बराबर ठहरा ॥

२५. फिर दाऊद और सेनापतियों ने आसाप् हेमान् और यदूतून् के कितने पुत्रों को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे वीणा सारंगी और झांझ बजा बजाकर नबूवत करें और इस सेवकाई का काम करनेहारे मनुष्यों की गिनती यह थी. २। अर्थात् आसाप् के पुत्रों में से तो जक्कूर् योसेप् नतन्याह् और अशरेला आसाप् के ये पुत्र आसाप् ही की आज्ञा में थे जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत करता था ॥ ३। फिर यदूतून् के पुत्रों में से गदल्याह् सरी यशायाह् हशब्याह् मत्तित्याह् ये ही छः अपने पिता यदूतून् की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूवत करता था वीणा बजाते थे ॥ ४। और हेमान् के पुत्रों में से बुक्किय्याह् मत्तन्याह् उज्जीएल् शबूएल् यरीमोत् हनन्याह् हनानी एलीआता गिद्दल्ती रोमम्तीएजेर् योश्बकाशा मल्लोती होतीर् और महजीओत् थे। ये सब हेमान् के पुत्र थे जो राजा का दर्शी होकर नरसिंगा बजाता हुआ परमेश्वर के वचन सुनाता था ॥ ५। और परमेश्वर ने हेमान् को चौदह बेटे और तीन बेटियां दिईं ॥ ६। ये सब यहोवा के भवन में गाने के लिये अपने अपने पिता के अधीन रहकर परमेश्वर के भवन की सेवकाई में झांझ सारंगी और वीणा बजाते थे और आसाप् यदूतून् और हेमान् आप राजा के अधीन रहते थे ॥ ७। भाइयों समेत इन सभों की गिनती जो यहोवा के गीत सीखे हुए थे और सब निपुण थे दो सौ अठासी थी ॥ ८। और उन्हों ने क्या बड़ा क्या छोटा क्या गुरु क्या चेला अपनी अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली ॥ ९। और पहिली चिट्ठी आसाप् के बेटों में से योसेप् के नाम पर निकली दूसरी गदल्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १०। तीसरी जक्कूर् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ ११। चौथी यिस्री के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १२। पांचवीं नतन्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १३। छठीं बुक्किय्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १४। सातवीं यसरेला के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १५। आठवीं यशायाह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १६। नौवीं मत्तन्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १७। दसवीं शिमी के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १८। ग्यारहवीं अजरेल् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ १९। बारहवीं हशब्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ २०। तेरहवीं शूबाएल् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ २१। चौदहवीं मत्तित्याह् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ २२। पन्द्रहवीं यरेमोत् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे ॥ २३। सोलहवीं हनन्याह् के नाम पर

जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ २४। सत्रहवीं योश्बकाशा के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ २५। अठारहवीं हनानी के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ २६। उन्नीसवीं मल्लोती के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ २७। बीसवीं एलिय्याता के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बरह थे॥ २८। इक्कीसवीं होतीर् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ २९। बाईसवीं गिद्दल्ती के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ ३०। तेईसवी महजीओत् के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥ ३१। और चौबीसवीं चिट्ठी रोमम्तीएजेर् के नाम पर निकली जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥

२६. फिर डेवढ़ीदारों के दल ये थे, कोरहियों में से तो मशेलेम्याह् जो कोरे का पुत्र और आसाप् के सन्तानों में से था॥ २। और मशेलेम्याह् के पुत्र हुए अर्थात् उस का जेठा जकर्याह् दूसरा यदीएल् तीसरा जबद्याह् चौथा यतीएल्, ३। पांचवां एलाम् छठवां यहोहानान् और सातवां एल्यहोएनै॥ ४। फिर ओबेदेदोम् के भी पुत्र हुए उस का जेठा शमायाह् दूसरा यहोजाबाद् तीसरा योआह् चौथा साकार् पांचवां नतनेल्, ५। छठवां अम्मीएल् सातवां इस्साकार् और आठवां पुल्लतै क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दिई थी॥ ६। और उस के पुत्र शमायाह् के भी पुत्र उत्पन्न हुए जो शूरवीर होने के कारण अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे॥ ७। शमायाह् के पुत्र ये थे अर्थात् ओत्नी रपाएल् ओबेद् एल्जाबाद् और उन के भाई एलीहू और समक्याह् बलवान थे॥ ८। ये सब ओबेदेदोम् की सन्तान में से थे वे और उन के पुत्र और भाई इस सेवकाई के लिये बलवान और शक्तिमान् थे ये ओबेदेदोमी बासठ थे॥ ९। और मशेलेम्याह् के पुत्र और भाई थे सो अठारह बलवान थे॥ १०। फिर मरारी के वंश में से होसा के भी पुत्र थे अर्थात् मुख्य तो शिम्री जिस को जेठा न होने पर भी उस के पिता ने मुख्य ठहराया॥ ११। दूसरा हिल्किय्याह् तीसरा तबल्याह् और चौथा जकर्याह् था होसा के सब पुत्र और भाई मिलकर तेरह हुए॥ १२। डेवढ़ीदारों के दल इन मुख्य पुरुषों के थे ये अपने भाइयों के बराबर ही यहोवा के भवन में सेवा टहल करते थे॥ १३। इन्हों ने क्या छोटे क्या बड़े अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक एक फाटक के लिये चिट्ठी डाली॥ १४। पूरब ओर की चिट्ठी शेलेम्याह् के नाम पर निकली तब उन्हों ने उस के पुत्र जकर्याह् के नाम की चिट्ठी डाली (वह बुद्धिमान मंत्री था) और चिट्ठी उत्तर ओर के लिये निकली॥ १५। दक्खिन ओर के लिये ओबेदेदोम् के नाम पर चिट्ठी निकली और उस के बेटों के नाम पर खजाने की कोठरी के लिये॥ १६। फिर शुप्पीम् और होसा के नामों की चिट्ठी पच्छिम ओर के लिये निकली कि वे शल्लेकेत् नाम फाटक के पास चढ़ाई की सड़क पर आम्हने साम्हने चौकी दिया करें॥ १७। पूरब ओर तो छः लेवीय थे उत्तर ओर दिन दिन चार दक्खिन ओर दिन दिन चार और खजाने की कोठरी के पास दो दो ठहरे॥ १८। पच्छिम ओर के पर्बार् नाम स्थान पर सड़क के पास तो चार और पर्बार् ही के पास दो रहे॥ १९। डेवढ़ीदारों के दल तो ये थे इन में से कितने तो कोरह् के और कितने मरारी के वंश के थे॥

२०। फिर लेवीयों में से अहिय्याह् परमेश्वर के भवन और पवित्र किई हुई वस्तुओं दोनों के भण्डारों का अधिकारी ठहरा॥ २१। लादान् के सन्तान ये थे अर्थात् गेर्शोनियों के सन्तान जो लादान् के कुल के थे अर्थात् लादान् गेर्शोनी के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे अर्थात् यहीएली॥ २२। यहीएली के पुत्र ये थे अर्थात् जेताम् और उस का भाई योएल् जो यहोवा के भवन के अधिकारी थे॥ २३। अम्रामियों यिसहारियों हेब्रोनियों और उज्जीएलियों में से, २४। शबूएल् जो मूसा के पुत्र गेर्शोम् के वंश का था सो खजानों का मुख्य अधिकारी था॥ २५। और उस के भाइयों का वृत्तान्त यह है एलीएजेर् के

कुल में उस का पुत्र रहब्याह् रहब्याह् का पुत्र यशायाह् यशायाह् का पुत्र योराम् योराम् का पुत्र जिक्री और जिक्री का पुत्र शलोमोत् था ॥ २६ । यही शलोमोत् अपने भाइयों समेत उन सब पवित्र किई हुई वस्तुओं के भण्डारों का अधिकारी था जो राजा दाऊद और पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों शतपतियों और मुख्य सेनापतियों ने पवित्र किई थीं ॥ २७ । जो लूट लड़ाइयों में मिलती थी उस में से उन्हों ने यहोवा का भवन दृढ़ करने के लिये कुछ पवित्र किया ॥ २८ । वरन जितना शमूएल् दर्शी कीश् के पुत्र शाऊल् नेर् के पुत्र अब्नेर् और सरूयाह् के पुत्र योआब् ने पवित्र किया था और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र कर रक्खा था सो सब शलोमोत् और उस के भाइयों के अधिकार में था ॥ २९ । यिस्हारियों में से कनन्याह् और उस के पुत्र इस्राएल् के देश का काम अर्थात् सरदार और न्यायी का काम करने के लिये ठहरे थे ॥ ३० । और हेब्रोनियों में से हशब्याह् और उस के भाई जो सत्रह सौ बलवान पुरुष थे सो यहोवा के सब काम और राजा की सेवा के विषय यर्दन की पच्छिम ओर रहनेहारे इस्राएलियों के अधिकारी ठहरे ॥ ३१ । हेब्रोनियों में से यरिय्याह् मुख्य था अर्थात् हेब्रोनियों की पीढ़ी पीढ़ी के पितरों के घरानों के अनुसार दाऊद के राज्य के चालीसवें बरस में वे ढूंढ़े गये और उन में से कई शूरवीर गिलाद् के याजेर् में मिले ॥ ३२ । और उस के भाई जो वीर थे पितरों के घरानों के दो हजार सात सौ मुख्य पुरुष थे। इन को दाऊद राजा ने परमेश्वर के सब विषयों और राजा के विषय में रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के अधिकारी ठहराया ॥

(देश का प्रबन्ध)

२७. इस्राएलियों की गिनती अर्थात् पितरों के घरानों के

मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और शतपतियों और उन के सरदारों की गिनती जो बरस भर के महीने महीने हाजिर होने और छुट्टी पानेहारे दलों के सब विषयों में राजा की सेवा टहल करते थे, एक एक दल में चौबीस हजार थे ॥ २ । पहिले महीने के लिये पहिले दल का अधिकारी जब्दीएल् का पुत्र याशोबाम् ठहरा और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ ३ । वह पेरेस् के वंश का था और पहिले महीने में सब सेनापतियों का अधिकारी था ॥ ४ । और दूसरे महीने के दल का अधिकारी दोदै नाम एक अहोही था और उस के दल का प्रधान मिक्लोत् था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ ५ । तीसरे महीने के लिये तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का पुत्र बनायाह् था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ ६ । यह वही बनायाह् है जो तीसों शूरों में और और तीसों में श्रेष्ठ भी था और उस के दल में उस का पुत्र अम्मीजाबाद् था ॥ ७ । चौथे महीने के लिये चौथा सेनापति योआब् का भाई असाहेल् था और उस के पीछे उस का पुत्र जबद्याह् था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ ८ । पांचवें महीने के लिये पांचवां सेनापति यिज्राही शम्हूत् था और उस के दल मे चौबीस हजार थे ॥ ९ । छठवें महीने के लिये छठवां सेनापति तकोई इक्केश् का पुत्र ईरा था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ १० । सातवें महीने के लिये सातवां सेनापति एप्रैम् के वंश का हेलेस् पलोनी था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ ११ । आठवें महीने के लिये आठवां सेनापति जेरह् के वंश में से हूशाई सिब्बकै था और उस के दल मे चौबीस हजार थे ॥ १२ । नौवें महीने के लिये नौवां सेनापति बिन्यामीनी अबीएजेर् अनातोत्वासी था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ १३ । दसवें महीने के लिये दसवां सेनापति जेरही महरै नतोपावासी था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ १४ । ग्यारहवें महीने के लिये ग्यारहवां सेनापति एप्रैम् के वंश का बनायाह् पिरातोन्वासी था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥ १५ । बारहवें महीने के लिये बारहवां सेनापति ओत्नीएल् के वंश का हेल्दै नतोपावासी था और उस के दल मे चौबीस हजार थे ॥

१६ । फिर इस्राएली गोत्रों के ये अधिकारी ठहरे अर्थात् रूबेनियों का प्रधान जिक्री का पुत्र एली-

एलेर् ग्मिोनियों का, माका का पुत्र शपत्याह्, १७। लेवी का, कमूएल् का पुत्र हशव्याह् हारून् की सन्तान का सादोक्, १८। यहूदा का, एलीहू नाम दाऊद का एक भाई इस्साकार् का, मीकाएल् का पुत्र ओम्री, १९। जबूलून् का, ओबद्याह् का पुत्र यिश्मायाह् नप्ताली का, अज्रीएल् का पुत्र यरीमोत्, २०। एप्रैम् का, अजज्याह् का पुत्र होशे मनश्शे के आधे गोत्र का, पदायाह् का पुत्र योएल्, २१। गिलाद् में आधे मनश्शे का, जकर्याह् का पुत्र इद्दो बिन्यामीन् का, अब्नेर् का पुत्र यासीएल्, २२। और दान् का, यारोहाम् का पुत्र अजरेल् ठहरा। इस्राएल् के गोत्रों के हाकिम ये ही ठहरे॥ २३। पर दाऊद ने उन की गिनती बीस वरस की अवस्था के नीचे न किई क्योंकि यहोवा ने इस्राएल् की गिनती आकाश के तारों के बराबर लों बढ़ाने को कहा था॥ २४। सरूयाह् का पुत्र योआब् गिनती लेने लगा तो सही पर न निपटाया और इस कारण ईश्वर का कोप इस्राएल् पर भड़का और यह गिनती राजा दाऊद के इतिहास में नहीं लिखी गई॥

२५। फिर राजभण्डारों का अधिकारी अदीएल् का पुत्र अज्मावेत् था और दिहात और नगरों और गांवों और गुम्मटों के भण्डारों का अधिकारी उज्जिय्याह् का पुत्र यहोनातान् था॥ २६। और जो भूमि को जोत बोकर खेती करते थे उन का अधिकारी कलूब् का पुत्र एज्री था॥ २७। और दाख की बारियों का अधिकारी रामाई शिमी और दाख की बारियों की उपज जो दाखमधु के भण्डारों में रखने के लिये थी उस का अधिकारी शपामी जब्दी था॥ २८। और नीचे के देश के जलपाई और गूलर के वृक्षों का अधिकारी गदेरी बाल्हानान् था और तेल के भण्डारों का अधिकारी योआश् था॥ २९। और शारोन् में चरनेहारे गाय बैलों का अधिकारी शारोनी शित्रै था और तराइयों में के गाय बैलों का अधिकारी अद्लै का पुत्र शापात् था॥ ३०। और ऊंटों का अधिकारी इश्माएली ओबील् और गदहियों का अधिकारी मेरोनोतवासी येहदयाह्, ३१। और भेड़-बकरियों का अधिकारी हग्री याजीज् था। राजा दाऊद के धन संपत्ति के अधिकारी ये ही सब ठहरे॥

३२। और दाऊद का भतीजा[1] योनातान् एक समझदार मंत्री और शास्त्री था और किसी हक्मोनी का पुत्र यहीएल् राजपुत्रों के संग रहा करता था॥ ३३। और अहीतोपेल् राजा का मंत्री था और एरेकी हूशै राजा का मित्र था॥ ३४। और अहीतोपेल् के पीछे बनायाह् का पुत्र यहोयादा और एब्यातार् मंत्री ठहरे और राजा का प्रधान सेनापति योआब् था॥

(दाऊद की पिछली सभा और उस की मृत्यु)

२८. और दाऊद ने इस्राएल् के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों और राजा की सेवा टहल करनेहारे दलों के हाकिमों को और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा और उस के पुत्रों के पशु आदि सब धन संपत्ति के अधिकारियों सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यरूशलेम् में बुलवाया॥ २। तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा हे मेरे भाइयो और हे मेरी प्रजा के लोगो मेरी सुनो मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की वाचा के संदूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊं और मैं ने उस के बनाने की तैयारी किई थी॥ ३। परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा क्योंकि तू युद्ध करनेहारा है और तू ने लोहू बहाया है॥ ४। तौभी इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया कि इस्राएल् का राजा सदा बना रहूं अर्थात् उस ने यहूदा को प्रधान होने के लिये और यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से वह मुझी को सारे इस्राएल् का राजा करने के लिये प्रसन्न हुआ॥ ५। और मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिये हैं) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है कि वह इस्राएल् के ऊपर

(१) वा चचा।

यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे ॥ ६ । और उस ने मुझ से कहा कि तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनों को बनाएगा क्योंकि मैं ने उस को चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे और मैं उस का पिता ठहरूंगा ॥ ७ । और यदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमों के मानने में आजकल की नाईं दृढ़ रहे तो मैं उस का राज्य सदा लों स्थिर रक्खूंगा ॥ ८ । सो अब इस्राएल् के देखते अर्थात् यहोवा की मण्डली के देखते और अपने परमेश्वर के सुनते अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो इस लिये कि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो और इसे अपने पीछे अपने वंश का सदा का भाग होने के लिये छोड़ जाओ ॥ ९ । और हे मेरे पुत्र सुलैमान तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख और खरे मन और प्रसन्न जीव से उस की सेवा करता रह क्योंकि यहोवा मन मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है यदि तू उस की खोज में रहे तो वह तुझ से मिलेगा पर यदि तू उस को त्यागे तो वह सदा के लिये तुझ को छोड़ देगा ॥ १० । अब चौकस रह यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है जो पवित्रस्थान ठहरे हियाव बांधकर इस काम में लग जाना ॥

११ । तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे कोठरियों भण्डारों अटारियों भीतरी कोठरियों और प्रायश्चित्त के ढकने के स्थान का नमूना, १२ । और यहोवा के भवन के आंगनों और चारों ओर की कोठरियों और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र किई हुई वस्तुओं के भण्डारों का जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की प्रेरणा से[१] उस को मिले थे सो सब दे दिये ॥ १३ । फिर याजकों और लेवीयों के दलों और यहोवा के भवन में की सेवा के सब कामों और यहोवा के भवन में की सेवा के सारे सामान, १४ । अर्थात् सब प्रकार की सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त सोना तौलकर और सब प्रकार की सेवा के लिये चान्दी के पात्रों के निमित्त चांदी तौलकर, १५ । और सोने की दीवटों के लिये और उन के दीपकों के लिये एक एक दीवट और उस के दीपकों का सोना तौलकर और चान्दी के दीवटों के लिये एक एक दीवट और उस के दीपकों की चांदी एक एक दीवट के काम के अनुसार तौलकर, १६ । और भेंट की रोटी की मेजों के लिये एक एक मेज का सोना तौलकर और चांदी की मेजों के लिये चांदी, १७ । और चोखे सोने के कांटों कटोरों और प्यालों और सोने की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी का सोना तौलकर और चान्दी की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी की चान्दी तौलकर, १८ । और धूप की वेदी के लिये ताया हुआ सोना तौलकर और रथ अर्थात् यहोवा की वाचा का सन्दूक ढांकनेहारे और पंख फैलाये हुए करूबों के नमूने का सोना दे दिया ॥ १९ । मैं ने यहोवा की शक्ति से, जो मुझ को मिली यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है ॥ २० । फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा हियाव बांध और दृढ़ होकर इस काम में लग जाना मत डर और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है सो तेरे संग है और जब लों यहोवा के भवन में जितना काम करना हो सो न हो चुके तब लों वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा ॥ २१ । और सुन परमेश्वर के भवन के सब काम के लिये याजकों और लेवीयों के दल ठहराये गये हैं और सब प्रकार की सेवा के लिये सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेहारे बुद्धिमान पुरुष भी तेरा साथ देंगे और हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो कुछ तू कहेगा वही करेंगे ॥

२९. फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है काम तो भारी है क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा ॥ २ । मैं ने तो अपनी शक्ति भर अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिये

(१) वा अपने आत्मा में ।

सोना चान्दी की वस्तुओं के लिये चान्दी पीतल की वस्तुओं के लिये पीतल लोहे की वस्तुओं के लिये लोहा और लकड़ी की वस्तुओं के लिये लकड़ी और सुलैमानी पत्थर और जड़ने के योग्य मणि और पच्ची के काम के लिये रंग रंग के नग और सब भांति के मणि और बहुत सा संगमर्मर एकट्ठा किया है ॥ ३। फिर मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिये एकट्ठा किया है उस सब से अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चांदी का मेरे पास है अपने परमेश्वर के भवन के लिये दे देता हूं, ४। अर्थात् तीन हजार किक्कार् ओपीर् का सोना और सात हजार किक्कार् ताई हुई चान्दी जिस से कोठरियों की भीतें मढ़ी जाएं, ५। और सोने की वस्तुओं के लिये सोना और चान्दी की वस्तुओं के लिये चान्दी और कारीगरों से बननेवाले सब प्रकार के काम के लिये मैं उसे देता हूं। और कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पण[1] कर देता है[1] ॥ ६। तब पितरों के घरानों के प्रधानों और इस्राएल् के गोत्रों के हाकिमों और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा के काम के अधिकारियों ने अपनी अपनी इच्छा से, ७। परमेश्वर के भवन के काम के लिये पांच हजार किक्कार् और दस हजार दर्कनोन् सोना दस हजार किक्कार् चांदी अठारह हजार किक्कार् पीतल और एक लाख किक्कार् लोहा दे दिया ॥ ८। और जिन के पास मणि थे उन्हों ने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये गेर्शोनी यहीएल् के हाथ में दे दिया ॥ ९। तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दिई थी और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ ॥ १०। सो दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया और दाऊद ने कहा हे यहोवा हे हमारे मूलपुरुष इस्राएल् के परमेश्वर अनादिकाल से अनन्तकाल लों तू धन्य है ॥ ११। हे यहोवा महिमा पराक्रम शोभा सामर्थ्य और विभव तेरा ही है क्योंकि आकाश और पृथिवी में जो कुछ है सो तेरा ही है हे यहोवा राज्य तेरा है और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है ॥ १२। धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है ॥ १३। सो अब हे हमारे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं ॥ १४। मैं तो क्या हूं और मेरी प्रजा क्या है कि हम को इस रीति अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले तुझी से तो सब कुछ मिलता है और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है ॥ १५। हम तो अपने सब पुरखाओं की नाईं तेरे लेखे उपरी और परदेशी हैं पृथिवी पर हमारे दिन छाया की नाईं बीते जाते हैं और हमारा कुछ ठिकाना नहीं ॥ १६। हे हमारे परमेश्वर यहोवा यह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये एकट्ठा किया है सो तेरे ही हाथ से हमें मिला था और सब तेरा ही है ॥ १७। और हे मेरे परमेश्वर मैं जानता हूं कि तू मन को जांचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है और अब मैं ने आनन्द से देखा है कि तेरी प्रजा के लोग जो यहां हाजिर हैं सो अपनी इच्छा से तेरे लिये भेंट देते हैं ॥ १८। हे यहोवा हे हमारे पुरखा इब्राहीम् इस्हाक् और इस्राएल् के परमेश्वर अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाये रख और उन के मन अपनी ओर लगाये रख ॥ १९। और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं चितौनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे और उस भवन को बनाए जिस की तैयारी मैं ने किई है ॥ २०। तब दाऊद ने सारी सभा से कहा तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो सो सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया और अपना अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत् किई ॥ २१। और उस दिन के विहान

(१) मूल में अपना हाथ भरता है।

को उन्हों ने यहोवा के लिये बलिदान किये अर्थात् अर्घों समेत एक हजार बैल एक हजार मेढ़े और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाये और सारे इस्राएल् के लिये बहुत से मेलबलि करके. २२। उसी दिन यहोवा के साम्हने बड़े आनन्द से खाया और पिया। फिर उन्हों ने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा ठहराकर यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिये उस का और याजक होने के लिये सादोक् का अभिषेक किया ॥ २३। तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और भाग्यमान हुआ और सारे इस्राएल् ने उस की मानी ॥ २४। और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार किई ॥ २५। और यहोवा ने सुलैमान को सारे इस्राएल् के देखते बहुत बढ़ाया और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य्य दिया जैसा उस से पहिले इस्राएल् के किसी राजा का न हुआ था ॥

२६। यों यिशै के पुत्र दाऊद ने सारे इस्राएल् के ऊपर राज्य किया ॥ २७। और उस के इस्राएल् पर राज्य करने का समय चालीस बरस था, उस ने सात बरस तो हेब्रोन् और तैंतीस बरस यरूशलेम् में राज्य किया ॥ २८। और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और विभव मनमाना भोगकर[१] मर गया और उस का पुत्र सुलैमान उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ २९। आदि से अन्त लों राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त, ३०। और उस के सारे राज्य और पराक्रम का और उस पर और इस्राएल् पर बरन देश देश के सब राज्यों पर जो कुछ बीता इस का भी वृत्तान्त शमूएल् दर्शी और नातान् नबी और गाद् दर्शी की लिखी हुई पुस्तकों में[२] लिखा हुआ है ॥

(१) मूल में दिनों धन और विभव से तृप्त। (२) मूल में, के बचनों में।

इतिहास नाम पुस्तक। दूसरा भाग।

(सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

१. दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया और उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहा और उस को बहुत ही बढ़ाया ॥ २। और सुलैमान ने सारे इस्राएल् से अर्थात् सहस्रपतियों शतपतियों न्यायियों और सारे इस्राएल् में के सब रईसों से जो पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष थे बातें किईं ॥ ३। और सुलैमान सारी मण्डली समेत गिबोन् के ऊंचे स्थान पर गया क्योंकि परमेश्वर का मिलापवाला तंबू जिसे यहोवा के दास मूसा ने जंगल में बनाया था सो वहीं था ॥ ४। परन्तु परमेश्वर के संदूक को दाऊद किर्यत्यारीम् से उस स्थान पर ले आया था जो उस ने उस के लिये तैयार किया था उस ने तो उस के लिये यरूशलेम् में एक तंबू खड़ा कराया था ॥ ५। और पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र बसलेल् ने जो हूर् का पोता था बनाई थी सो गिबोन् में[१] यहोवा के निवास के साम्हने थी सो सुलैमान मण्डली समेत उस के पास गया ॥ ६। और वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर जो यहोवा के साम्हने मिलापवाले तंबू के

(१) मूल में, वहां।

पास थी सुलैमान ने उस पर एक हजार होमबलि चढ़ाये॥

७। उसी दिन रात को परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन देकर उस से कहा जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं सो मांग॥ ८। सुलैमान ने परमेश्वर से कहा तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा और मुझ को उस के स्थान पर राजा किया है॥ ९। अब हे यहोवा परमेश्वर जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था सो पूरा हो तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा किया जो भूमि की धूलि के किनकों के समान बहुत है॥ १०। अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे कि मैं इस प्रजा के साम्हने आया जाया कर सकूं क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके॥ ११। परमेश्वर ने सुलैमान से कहा तेरी जो ऐसी ही मनसा हुई अर्थात् तू ने न तो धन संपत्ति मांगी है न ऐश्वर्य्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु मांगी केवल बुद्धि और ज्ञान का वर मांगा है जिस से तू मेरी प्रजा का जिस के ऊपर मैं ने तुझे राजा किया है न्याय कर सके, १२। इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है और मैं तुझे इतना धन संपत्ति और ऐश्वर्य्य दूंगा जितना न तो तुझ से पहिले किसी राजा को मिला और न तेरे पीछे किसी राजा को मिलेगा॥ १३। तब सुलैमान गिबोन् के ऊंचे स्थान से अर्थात् मिलापवाले तंबू के साम्हने से यरूशलेम् को आया और वहां इस्राएल् पर राज्य करने लगा॥

१४। फिर सुलैमान ने रथ और सवार एकट्ठे कर लिये और उस के चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार हुए और उन को उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम् में राजा के पास ठहरा रक्खा॥ १५। और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम् में सोने चान्दी का लेखा पत्थरों का सा और देवदारुओं का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया॥ १६। और जो घोड़े सुलैमान रखता था सो मिस्र से आते थे और राजा के व्यापारी उन्हें झुंड झुंड करके ठहराये हुए दाम पर लिया करते थे॥ १७। एक रथ तो छः सौ शेकेल् चान्दी पर और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल् पर मिस्र से आता था और इसी दाम पर वे हित्तियों के सारे राजाओं और अराम् के राजाओं के लिये उन्हीं के द्वारा लाया करते थे॥

(मन्दिर का बनना)

२. और सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने की मनसा किई॥ २। सो सुलैमान ने सत्तर हजार बोझिये और अस्सी हजार पहाड़ पर पत्थर निकालनेहारे और वृक्ष काटनेहारे और इन पर तीन हजार छः सौ मुखिये गिनती करके ठहराये॥ ३। तब सुलैमान् ने सोर् के राजा हूराम् के पास कहला भेजा कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से बर्त्ताव किया अर्थात् उस के रहने का भवन बनाने को देवदारु भेजे थे वैसा ही अब मुझ से भी बर्त्ताव कर॥ ४। सुन मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूं कि उसे उस के लिये पवित्र करूं और उस के सन्मुख सुगन्धित धूप जलाऊं और नित्य भेंट की रोटी उस में रक्खी जाए और दिन दिन सबेरे और सांझ को और विश्राम और नये चान्द के दिनों और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पर्व्वों में होमबलि चढ़ाया जाए। इस्राएल् के लिये ऐसी ही सदा की विधि है॥ ५। और जो भवन मैं बनाने पर हूं सो महान् होगा क्योंकि हमारा परमेश्वर सब देवताओं से महान् है॥ ६। पर किस की इतनी शक्ति है कि उस के लिये भवन बनाए वह तो स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं समाता सो मैं क्या हूं कि उस के साम्हने धूप जलाने को छोड़ और किसी मनसा से उस का भवन बनाऊं॥ ७। सो अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे जो सोने चान्दी पीतल लोहे और बैंजनी लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराये हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो मेरे पास यहूदा और यरूशलेम् में रहते हैं काम करे॥ ८। फिर लबानोन् से मेरे पास देवदारु सनौवर और चन्दन की लकड़ी

भेजना मैं तो जानता हूं कि तेरे दास लबानोन् मे वृक्ष काटना जानते हैं और तेरे दासों के संग मेरे दास भी रहकर, ९ । मेरे लिये बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्योंकि जो भवन मैं बनाने चाहता हूं सो बड़ा और अचंभे के योग्य होगा ॥ १० । और तेरे दास जो लकड़ी काटेंगे उन को मैं बीस हजार कोर् कूटा हुआ गेहूं बीस हजार कोर् जव बीस हजार बत् दाखमधु और बीस हजार बत् तेल दूंगा ॥ ११ । तब सोर् के राजा हूराम् ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी कि यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता है इस से उस ने तुझे उन का राजा कर दिया ॥ १२ । फिर हूराम् ने यह भी लिखा[1] कि धन्य है इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जो आकाश और पृथिवी का सिरजनेहारा है और उस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान चतुर और समझदार पुत्र दिया है जो यहोवा का एक भवन और अपना राजभवन भी बनाए ॥ १३ । सो अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार पुरुष को अर्थात् अपने बाबा हूराम् को भेजता हूं ॥ १४ । वह तो एक दानी स्त्री का बेटा है और उस का पिता सोर् का पुरुष था और वह सोने चान्दी पीतल लोहे पत्थर लकड़ी बैंजनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम और सब प्रकार की नक्काशी का जानता और सब भांति की कारीगरी बना सकता है सो तेरे चतुर मनुष्यों के संग और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों के संग उस को भी काम मिले ॥ १५ । सो अब मेरे प्रभु ने जो गेहूं जव तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा किई है उसे अपने दासों के पास भिजवा दे ॥ १६ । और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन् पर से काटेंगे और बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से यापो को पहुंचाएंगे और तू उसे यरूशलेम् को ले जाना ॥ १७ । तब सुलैमान ने इस्राएली देश में के सब परदेशियों की गिनती लिई यह उस गिनती के पीछे हुई जो उस के पिता दाऊद ने लिई थी और वे डेढ़ लाख तीन हजार छः सौ पुरुष निकले ॥ १८ । उन में से उस ने सत्तर हजार बोझिये अस्सी हजार पहाड़ पर पत्थर निकालनेहारे और वृक्ष काटनेहारे और तीन हजार छः सौ उन लोगों से काम करानेहारे मुखिये ठहरा दिये ॥

(१) मूल मे. कहा ।

३. तब सुलैमान ने यरूशलेम् में मोरिय्याह् नाम पहाड़ पर उसी स्थान मे यहोवा का भवन बनाना आरंभ किया जिसे उस के पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी ओर्नान् के खलिहान में तैयार किया था ॥ २ । उस ने अपने राज्य के चौथे बरस के दूसरे महीने के दूसरे दिन को बनाना आरंभ किया ॥ ३ । परमेश्वर का जो भवन सुलैमान ने बनाया उस का यह ढब है अर्थात् उस की लंबाई तो प्राचीनकाल की नाप के अनुसार साठ हाथ और उस की चौड़ाई बीस हाथ की थी ॥ ४ । और भवन के साम्हने के ओसारे की लंबाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की और उस की ऊंचाई एक सौ बीस हाथ की थी और सुलैमान ने उस को भीतरवार चोखे सोने से मढ़वाया ॥ ५ । और भवन के बड़े भाग की छत उस ने सनौवर की लकड़ी से पटवाई और उस को अच्छे सोने से मढ़वाया और उस पर खजूर के वृक्ष की और सांकलों की नक्काशी कराई ॥ ६ । फिर शोभा देने के लिये उस ने भवन में मणि जड़वाये । और यह सोना पर्वैम् का था ॥ ७ । और उस ने भवन को अर्थात् उस की कड़ियों डेवढ़ियों भीतों और किवाड़ों को सोने से मढ़वाया और भीतों पर करूब् खुदवाये ॥ ८ । फिर उस ने भवन के परमपवित्र स्थान को बनवाया उस की लंबाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की थी और उस की चौड़ाई बीस हाथ की थी और उस ने उसे छः सौ किक्कार् चोखे सोने से मढ़वाया ॥ ९ । और सोने की कीलों का तौल पचास शेकेल् था और उस ने अटारियों को भी सोने से मढ़वाया ॥ १० । फिर भवन के परमपवित्र स्थान में उस ने नक्काशी के काम के दो करूब् बनवाये और वे सोने से मढ़ाये गये ॥ ११ । करूबों के पंख तो सब मिलाकर बीस हाथ लंबे थे

अर्थात् एक करूब् का एक पंख पांच हाथ का और भवन की भीत लों पहुंचा हुआ था और उस का दूसरा पंख पांच हाथ का था और दूसरे करूब् के पंख से छुआ था ॥ १२। और दूसरे करूब् का भी एक पंख पांच हाथ का और भवन की दूसरी भीत लों पहुंचा था और दूसरा पंख पांच हाथ का और पहिले करूब् के पंख से सटा हुआ था ॥ १३। उन करूबों के पंख बीस हाथ लों फैले हुए थे और वे अपने अपने पांवों के बल खड़े थे और अपना अपना मुख भीतर की ओर किये हुए थे ॥ १४। फिर उस ने बीचवाले पर्दे को नीले बैंजनी और लाल रंग के सन के कपड़े का बनवाया और उस पर करूब् कढ़वाये ॥ १५। और भवन के साम्हने उस ने पैंतीस पैंतीस हाथ ऊंचे दो खंभे बनवाये और जो कंगनी एक एक के ऊपर थी सो पांच पांच हाथ की थी ॥ १६। फिर उस ने भीतरी कोठरी में सांकलें बनवाकर खंभों के ऊपर लगाईं और एक सौ अनार भी बनवाकर सांकलों पर लटकाये ॥ १७। इन खंभों को उस ने मन्दिर के साम्हने एक तो उस की दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर खड़ा कराया और दहिने खंभे का नाम याकीन् और बायें खंभे का नाम बोअज़् रक्खा ॥

४. फिर उस ने पीतल की एक वेदी बनाई उस की लंबाई और चौड़ाई बीस बीस हाथ की और ऊंचाई दस हाथ की थी ॥ २। फिर उस ने एक ढाला हुआ गंगाल बनवाया जो छोर से छोर लों दस हाथ चौड़ा था उस का आकार गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस की चारों ओर का घेर तीस हाथ सूत का था ॥ ३। और उस के तले उस की चारों ओर एक एक हाथ में दस दस बैलों की प्रतिमाएं बनी थीं जो गंगाल को घेरे थीं जब वह ढाला गया तब ये बैल भी दो पांति करके ढाले गये ॥ ४। और वह बारह बने हुए बैलों पर धरा गया जिन में से तीन उत्तर तीन पच्छिम तीन दक्खिन और तीन पूरब की ओर मुंह किये हुए थे और इन के ऊपर गंगाल धरा था और उन सभों के पिछले अंग भीतरी पड़ते थे ॥ ५। और गंगाल की मोटाई चौवा भर की थी और उस का मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं सोसन के फूलों के काम से बना था और उस में तीन हजार बत् भरकर समाता था ॥ ६। फिर उस ने धोने के लिये दस हौदी बनवाकर पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रख दिईं उन में तो होमबलि की वस्तुएं धोई जाती थीं पर गंगाल याजकों के धोने के लिये था ॥ ७। फिर उस ने सोने की दस दीवट विधि के अनुसार बनवाईं और पांच दहिनी ओर और पांच बाईं ओर मन्दिर में धरा दिईं ॥ ८। फिर उस ने दस मेज बनवाकर पांच दहिनी ओर और पांच बाईं ओर मन्दिर में रखा दिईं। और उस ने सोने के एक सौ कटोरे बनवाये ॥ ९। फिर उस ने याजकों के आंगन और बड़े आंगन को बनवाया और इस आंगन के फाटक[1] बनवाकर उन के किवाड़ों पर पीतल मढ़वाया ॥ १०। और उस ने गंगाल को भवन की दहिनी ओर अर्थात् पूरब और दक्खिन के कोने की ओर धरा दिया ॥ ११। और हूराम् ने हण्डों फावड़ियों और कटोरों को बनाया। सो हूराम् ने राजा सुलैमान के लिये परमेश्वर के भवन में जो काम करना था उसे निपटा दिया, १२। अर्थात् दो खंभे और गोलों समेत वे कंगनियां जो खंभों के सिरों पर थीं और खंभों के सिरों पर के गोलों के ढांपने को जालियों की दो दो पांति, १३। और दोनों जालियों के लिये चार सौ अनार और खंभों के सिरों पर जो गोले थे उन के ढांपने को एक एक जाली के लिये अनारों की दो दो पांति बनाई ॥ १४। फिर उस ने पाये और पायों पर की हौदियां, १५। एक गंगाल और उस के नीचे के बारह बैल बनाये ॥ १६। फिर हण्डों फावड़ियों कांटों और इन के सारे सामान को उस के पावा हूराम् ने यहोवा के भवन के लिये राजा सुलैमान की आज्ञा से झलकाये हुए पीतल के बनवाया ॥ १७। राजा ने उन को यर्दन

(१) मूल में किवाड़।

की तराई में अर्थात् सुक्कोत् और सरेदा के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढलवाया ॥ १८ । ये सब पात्र सुलैमान ने बहुत ही बनवाये यहां लों कि पीतल के तौल का कुछ लेखा न हुआ ॥ १९ । और सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के सब पात्र और सोने की वेदी और वे मेजें जिन पर भेंट की रोटी रक्खी जाती थी, २० । और दीपकों समेत चोखे सोने की दीवटें जो विधि के अनुसार भीतरी कोठरी के साम्हने बरा करें, २१ । और सोने बरन निरे सोने के फूल दीपक और चिमटे, २२ । और चोखे सोने की कैंचियां कटोरे धूपदान और करछे बनवाये । फिर भवन के द्वार और परमपवित्र स्थान के भीतरी किवाड़ और भवन अर्थात् मन्दिर के किवाड़ सोने के बने ॥

५. १ । निदान जो जो काम सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया सो सब निपट गया । तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किये हुए सोने चांदी और सब पात्रों को भीतर पहुंचाकर परमेश्वर के भवन के भण्डारों में रखा दिया ॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

२ । तब सुलैमान ने इस्राएल् के पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के प्रधान थे उन को भी यरूशलेम् में इस मनसा से एकट्ठा किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर से अर्थात् सिय्योन् से ऊपर लिवा ले आएं ॥ ३ । सो सब इस्राएली पुरुष सातवें महीने के पर्व के समय राजा के पास एकट्ठे हुए ॥ ४ । जब इस्राएल् के सब पुरनिये आये तब लेवीयों ने संदूक को उठा लिया ॥ ५ । और संदूक और मिलाप का तंबू और जितने पवित्र पात्र उस तंबू में थे उन सभों को लेवीय याजक ऊपर ले गये ॥ ६ । और राजा सुलैमान और सारी इस्राएली मण्डली के लोग जो उस के पास एकट्ठे हुए थे उन्हों ने संदूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि किये जिन की गिनती और लेखा बहुतायत के कारण न हो सकता था ॥ ७ । तब याजकों ने यहोवा की वाचा का संदूक उस के स्थान में अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है पहुंचाकर करूबों के पंखों के तले रख दिया ॥ ८ । करूब् तो संदूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाये हुए थे कि वे ऊपर से संदूक और उस के डण्डों को ढांपे थे ॥ ९ । डण्डे तो ऐसे लंबे थे कि उन के सिरे संदूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के साम्हने देख पड़ते थे पर बाहर से तो वे देख न पड़ते थे । वे आज के दिन लों वहीं हैं ॥ १० । संदूक में पत्थर की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न था जिन्हें मूसा ने होरेब् में उस के भीतर उस समय रक्खा जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकालने के पीछे उन के साथ वाचा बांधी थी ॥ ११ । जब याजक पवित्रस्थान से निकले (जितने याजक हाजिर थे उन सभों ने तो अपने अपने को पवित्र किया था और अलग अलग दलों में होकर सेवा न करते थे, १२ । और जितने लेवीय गानेहारे थे वे अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप् हेमान् और यदूतून् सब के सब सन के वस्त्र पहिने झांझ सारंगियां और वीणाएं लिये हुए वेदी की पूरब अलंग खड़े थे और उन के साथ एक सौ बीस याजक तुरहियां बजा रहे थे), १३ । सो जब तुरहियां बजानेहारे और गानेहारे एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे और तुरहियां झांझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे अर्थात् वह भला है और उस की करुणा सदा की है तब यहोवा के भवन में बादल भर आया, १४ । और बादल के कारण याजक लोग सेवा टहल करने को खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था ॥

६. तब सुलैमान कहने लगा यहोवा ने कहा था कि मैं घोर अंधकार में वास किये रहूंगा ॥ २ । पर मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान बरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है जिस में तू युग युग रहे ॥ ३ । और राजा ने इस्राएल् की सारी सभा की ओर मुंह फेरकर उस को आशीर्वाद

दिया और इस्राएल् की सारी सभा खड़ी रही॥ ४। और उस ने कहा धन्य है इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था और अपने हाथों से इसे पूरा किया है कि, ५। जिस दिन से मैं अपनी प्रजा को मिस्र देश से निकाल लाया तब से मैं ने न तो इस्राएल् के किसी गोत्र का कोई नगर चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल् पर प्रधान हो, ६। पर मैं ने यरूशलेम् को इस लिये चुना है कि मेरा नाम वहां हो और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इस्राएल् पर प्रधान हो॥ ७। मेरे पिता दाऊद की यह मनसा तो थी कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं॥ ८। पर यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा यह जो तेरी मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊ ऐसी मनसा करके तू ने भला किया॥ ९। तौभी तू उस भवन को न बनाएगा तेरा जो निज पुत्र होगा वही मेरे नाम का भवन बनाएगा॥ १०। यह जो वचन यहोवा ने कहा था उसे उस ने पूरा भी किया है और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल् की गद्दी पर विराजता हूं और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है॥ ११। और इस में मैं ने उस संदूक को रक्खा दिया है जिस में यहोवा की वह वाचा है जो उस ने इस्राएलियों से बांधी थी॥

१२। तब वह इस्राएल् की सारी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाये॥ १३। सुलैमान ने तो पांच हाथ लंबा पांच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा पीतल की एक चौकी बनाकर आंगन के बीच रक्खाई थी सो उस पर वह खड़ा हो इस्राएल् की सारी सभा के देखते घुटने टेककर स्वर्ग की ओर हाथ फैलाये हुए कहा, १४। हे यहोवा हे इस्राएल् के परमेश्वर तेरे समान न तो स्वर्ग में और न पृथिवी पर कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[१] चलते हैं उन के लिये तू अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है॥ १५। जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था उस का तू ने पालन किया है जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था वैसा ही अपने हाथ से उस को हमारी आंखों के साम्हने[२] पूरा किया है॥ १६। सो अब हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा इस वचन को भी पूरा कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल् की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे इतना हो कि जैसे तू अपने को मेरे सन्मुख जानकर[१] चलता रहा वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें कि मेरी व्यवस्था पर चलें॥ १७। सो अब हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा अपना जो वचन तू ने अपने दास दाऊद को दिया था वह सच्चा किया जाए॥ १८। परन्तु क्या परमेश्वर सचमुच मनुष्यों के संग पृथिवी पर वास करेगा स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता फिर मेरे बनाये हुए इस भवन में तू क्योंकर समाएगा॥ १९। तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर फिरके मेरी पुकार और यह प्रार्थना सुन जो मैं तेरे साम्हने कर रहा हूं॥ २०। वह यह है तेरी आंखें इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिस के विषय तू ने कहा है कि मैं उस में अपना नाम रक्खूंगा रात दिन खुली रहें और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे उसे तू सुन ले॥ २१। और अपने दास और अपनी प्रजा इस्राएल् की प्रार्थना जिस को वे इस स्थान की ओर मुंह किये हुए गिड़गिड़ाकर करें उसे सुनना, स्वर्ग में से जो तेरा निवास स्थान है सुन लेना और सुनकर क्षमा करना॥ २२। जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे और उस को किरिया खिलाई जाए और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने किरिया खाए, २३। तब तू स्वर्ग में से

(१) मूल में तेरे साम्हने। (२) मूल में आज के दिन की नाईं।

सुनना और मानना और अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को बदला देना और उस की चाल उसी के सिर लौटा देना और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर उस के धर्म्म के अनुसार उस को फल देना ॥ २४ । फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल् तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाएं और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें और इस भवन में तुझ से प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट करें, २५। तो तू स्वर्ग में से सुनना और अपनी प्रजा इस्राएल् का पाप क्षमा करना और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तू ने उन को और उन के पुरखाओं को दिया है ॥ २६ । जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें और इस कारण आकाश ऐसा बन्द हो जाए कि वर्षा न हो ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें और तू जो उन्हें दुःख देता है इस कारण अपने पाप से फिरें, २७ । तो तू स्वर्ग में से सुनना और अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल् के पाप को क्षमा करना, तू जो उन को वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये इस लिये अपने इस देश पर जिसे तू ने अपनी प्रजा का भाग कर दिया है पानी बरसा देना ॥ २८ । जब इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उन के शत्रु उन के देश के फाटकों में उन्हें घेर रक्खें कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हो. २९ । तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी सारी प्रजा इस्राएल् जो अपना अपना दुःख और अपना अपना खेद जान ले और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाए, ३० । तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान से सुनकर क्षमा करना और एक एक के मन की जानकर उस की चाल के अनुसार उसे फल देना, तू ही तो आदमियों के मन की जाननेहारा है, ३१ । कि वे जितने दिन इस देश में रहें जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था उतने दिन लों तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें ॥ ३२ । फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल् का न हो जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई बांह के कारण दूर देश से आए जब वे आकर इस भवन की ओर मुंह किये हुए प्रार्थना करें, ३३ । तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुने और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे उस के अनुसार करना जिस से पृथिवी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल् की नाईं तेरा भय मानें और निश्चय करें कि यह भवन जो मैं ने बनाया है सो तेरा ही कहलाता है ॥ ३४ । जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है मुंह किये हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३५। तब तू स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे ॥ ३६ । निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है सो यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे और वे उन्हें बंधुआ करके किसी देश को चाहे वह दूर हो चाहे निकट ले जाएं, ३७ । तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें और फिरकर अपनी बंधुआई करनेहारों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें कि हम ने पाप किया और कुटिलता और दुष्टता किई है, ३८ । यदि वे अपनी बंधुआई के देश में जहां वे उन्हें बंधुआ करके ले गये हों अपने सारे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है मुंह किये हुए तुझ से प्रार्थना करें ३९। तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करें उन्हें क्षमा करना॥ ४० । और हे मेरे परमेश्वर जो प्रार्थना इस स्थान में किई जाए उस की ओर अपनी आंखें खोले और अपने कान लगाये रख ॥ ४१ । अब हे यहोवा परमेश्वर उठकर अपने सामर्थ्य के संदूक समेत अपने विश्रामस्थान में आ हे यहोवा परमेश्वर तेरे याजक उद्धाररूपी

वस्त्र पहिने रहें और तेरे भक्त लोग भलाई के कारण आनन्द करते रहें ॥ ४२। हे यहोवा परमेश्वर अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को सुनी अनसुनी न कर[१] तू अपने दास दाऊद पर की करुणा के काम स्मरण रख ॥

७. जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों और और बलियों को भस्म किया और यहोवा का तेज भवन में भर आया ॥ २। और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था ॥ ३। और जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन पर छा गया तब सब इस्राएली देखते रहे और फर्श पर झुककर अपना अपना मुंह भूमि पर किये हुए दण्डवत् किई और यों कहकर यहोवा का धन्यवाद किया कि वह भला है उस की करुणा सदा की है ॥ ४। तब सारी प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बलि चढ़ाये ॥ ५। और राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ बकरियां चढ़ाईं यों सारी प्रजा समेत राजा ने यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा किई ॥ ६। और याजक अपना अपना कार्य्य करने को खड़े रहे और लेवीय भी यहोवा के वे गीत के बाजे लिये हुए खडे थे जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा की सदा की करुणा के कारण उस का धन्यवाद करने को बनाकर उन के द्वारा स्तुति कराई थी और इन के साम्हने याजक लोग तुरहियां बजाते रहे और सारे इस्राएली खड़े रहे ॥ ७। फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन के साम्हने आंगन के बीच एक स्थान पवित्र करके होमबलि और मेलबलियों की चर्बी वहीं चढ़ाई क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की वेदी होमबलि और अन्नबलि और चर्बी के लिये छोटी थी ॥ ८। उसी समय सुलैमान ने और उस के संग हमात् की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सारे इस्राएल् की एक बहुत बड़ी सभा ने सात दिन लों पर्व को माना ॥ ९। और आठवें दिन को उन्हों ने महासभा किई उन्हों ने वेदी की प्रतिष्ठा सात दिन किई और पर्व को भी सात दिन माना ॥ १०। निदान सातवें महीने के तेईसवें दिन को उस ने प्रजा के लोगों को विदा किया कि वे अपने अपने डेरे को जाएं और वे उस भलाई के कारण जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और अपनी प्रजा इस्राएल् पर किई थी आनन्दित थे ॥

११। यों सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका और यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उस ने बनाना चाहा उस में उस का मनोरथ पूरा हुआ ॥ १२। तब यहोवा ने रात में उस को दर्शन देकर उस से कहा मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान को यज्ञ के भवन के लिये अपनाया है ॥ १३। यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूं कि वर्षा न हो वा टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूं वा अपनी प्रजा में मरी फैलाऊं, १४। तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें तो मैं स्वर्ग से सुनकर उन का पाप क्षमा करूंगा और उन के देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा ॥ १५। अब से जो प्रार्थना इस स्थान में किई जाएगी उस पर मेरी आंखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे ॥ १६। और अब मैं ने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा लों इस में बना रहे, मेरी आंखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे ॥ १७। और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं अपने को मेरे सन्मुख जानकर[१] चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, १८। तो मैं तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूंगा जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बांधी थी कि तेरे कुल में इस्राएल् पर प्रभुता करनेहारा सदा बना रहेगा ॥ १९। पर यदि तुम लोग फिरो और मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं

(१) मूल में अपने अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

(१) मूल में मेरे साम्हने।

ने तुम को दिई हैं त्यागो और जाकर पराये देवताओं की उपासना और उन्हें दण्डवत् करो, २० । तो मैं उन को अपने देश में से जो मैं ने उन को दिया है जड़ से उखाड़ूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और ऐसा करूंगा कि देश देश के लोगों के बीच उस की उपमा और नामधराई चलेगी ॥ २१ । और यह भवन जो इतना ऊंचा है उस के पास से आने जानेहारे चकित होकर पूछेंगे यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है ॥ २२ । तब लोग कहेंगे कि उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उन को मिस देश से निकाल लाया था त्यागकर पराये देवताओं को ग्रहण किया और उन्हें दण्डवत् और उन की उपासना किई इस कारण उस ने यह सारी विपत्ति उन पर डाली है ॥

(सुलैमान का भांति भांति का चरित्र)

८. सुलैमान को तो यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में बीस बरस लगे, २ । तब जो नगर हूराम् ने सुलैमान को दिये उन्हें सुलैमान ने दृढ़ करके उन में इस्राएलियों को बसाया ॥

३ । तब सुलैमान सोबा के हमात् को जाकर उस पर जयवन्त हुआ ॥ ४ । और उस ने तद्मोर् को जो जंगल में है और हमात् के सब भण्डारनगरों को दृढ़ किया ॥ ५ । फिर उस ने उपरले और निचले दोनों बेथोरोन् को शहरपनाह फाटकों और बेंड़ों से दृढ़ किया ॥ ६ । और बालात् और सुलैमान के जितने भण्डारनगर थे और उस के रथों और सवारों के जितने नगर थे उन को और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम् लबानोन् और अपने राज्य के सारे देश में बनाना चाहा उस सब को उस ने बनाया ॥ ७ । हित्तियों एमोरियों परिज्जियों हिव्वियों और यबूसियों के बचे हुए लोग जो इस्राएल् के न थे, ८ । उन के वंश जो उन के पीछे देश मे रह गये और उन का इस्राएलियो ने अन्त न किया था उन में से तो कितनों को सुलैमान ने बेगार में रक्खा और आज लों उन की वही दशा है ॥ ९ । पर इस्राएलियों मे से सुलैमान ने अपने काम के लिये किसी को दास न बनाया वे तो योद्धा और उस के हाकिम उस के सरदार और उस के रथों और सवारों के प्रधान हुए ॥ १० । और सुलैमान के सरदारों के प्रधान जो प्रजा के लोगों पर प्रभुता करनेहारे थे सो अढ़ाई सौ थे ॥ ११ । फिर सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में ले आया जो उस ने उस के लिये बनाया था उस ने तो कहा कि जिस जिस स्थान में यहोवा का संदूक आया है वे पवित्र हैं सो मेरी रानी इस्राएल् के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी ॥

१२ । तब सुलैमान ने यहोवा की उस वेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे बनाई थी यहोवा को होमबलि चढ़ाया ॥ १३ । वह मूसा की आज्ञा के और दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार अर्थात् विश्राम और नये चांद के दिनों में और अखमीरी रोटी के पर्व्व और अठवारों के पर्व्व और झोंपड़ियों के पर्व्व बरस दिन के इन तीनों नियत समयों मे बलि चढ़ाया करता था ॥ १४ । और उस ने अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकों की सेवकाई के लिये उन के दल ठहराये और लेवीयों को उन के कामों पर ठहराया कि दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की स्तुति और याजकों के साम्हने सेवा टहल किया करें और एक एक फाटक के पास डेवढ़ीदारों को दल दल करके ठहरा दिया क्योंकि परमेश्वर के जन दाऊद ने ऐसी आज्ञा दिई थी ॥ १५ । और राजा ने भण्डारो वा किसी और बात मे याजकों और लेवीयों के लिये जो जो आज्ञा दिई थी उस को उन्हों ने न टाला ॥ १६ । और सुलैमान का सब काम जो उस ने यहोवा के भवन की नेव डालने से ले उस के पूरा करने लों किया सो ठीक किया गया । निदान यहोवा का भवन पूरा हुआ ॥

१७ । तब सुलैमान एस्योनगेबेर् और एलोत् को गया जो एदोम् के देश में समुद्र के तीर हैं ॥ १८ । और हूराम् ने उस के पास अपने जहाजियों के द्वारा जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह भेज दिये

और इन्हों ने सुलैमान के जहाजियों के संग ओपीर् को जाकर वहां से साढ़े चार सौ किक्कार् सोना राजा सुलैमान को ला दिया ॥

(शबा की रानी का सुलैमान का दर्शन करना.)

९. जब शबा की रानी ने सुलैमान की कीर्त्ति सुनी तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उस की परीक्षा करने के लिये यरूशलेम् को चली। वह तो बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए आई और सुलैमान के पास पहुंचकर अपने मन की सारी बातों के विषय उस से बातें करने लगी॥ २। सुलैमान ने उस के सब प्रश्नों का उत्तर दिया कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसे न बता सका॥ ३। जब शबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और उस का बनाया हुआ भवन, ४। और उस की मेज पर का भोजन देखा और उस के कर्म्मचारी किस रीति बैठते और उस के टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे कैसे कपड़े पहिने रहते हैं और उस के पिलानेहारे कैसे हैं और वे भी कैसे कपड़े पहिने हैं और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है यह सब जब उस ने देखा तब वह चकित हो गई॥ ५। सो उस ने राजा से कहा तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति मैं ने अपने देश में सुनी सो सच ही है॥ ६। पर जब लों मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा तब लों मैं ने उन की प्रतीति न किई पर तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई थी तू उस कीर्त्ति से बढ़कर है जो मैं ने सुनी थी॥ ७। धन्य हैं तेरे जन धन्य हैं तेरे ये सेवक जो नित्य तेरे संमुख हाजिर रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं॥ ८। धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे अपनी राजगद्दी पर इस लिये विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे तेरा परमेश्वर जो इस्राएल् से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये स्थिर करने चाहता था इसी कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म्म करने को उन का राजा कर दिया॥ ९। और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार् सोना बहुत सा सुगन्धद्रव्य और मणि दिये जैसे सुगन्धद्रव्य शबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिये वैसे देखने में नहीं आये॥ १०। फिर हूराम् और सुलैमान दोनों के जहाजी जो ओपीर् से सोना लाते थे सो चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाते थे॥ ११। और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये चबूतरे और गानेहारों के लिये वीणाएं और सारंगियां बनाईं ऐसी वस्तुएं उस से पहिले यहूदा देश में न देख पड़ी थीं॥ १२। और शबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उस को उस की इच्छा के अनुसार दिया यह उस के सिवाय था जो वह राजा के पास ले आई थी तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई॥

(सुलैमान का माहात्म्य और मृत्यु)

१३। जो सोना बरस दिन में सुलैमान के पास पहुंचा करता था उस का तौल छः सौ छियासठ किक्कार था॥ १४। यह उस से अधिक था जो सौदागर और व्यापारी लाते थे और अरब देश के सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना चान्दी लाते थे॥ १५। और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनाईं एक एक ढाल में छः छ. सौ शेकेल् गढ़ा हुआ सोना लगा॥ १६। फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ फरियां भी बनाईं एक एक छोटी ढाल में तीन सौ शेकेल् सोना लगा और राजा ने उन को लबानोनी बन नाम भवन में रखा दिया॥ १७। और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और चोखे सोने से मढ़ाया॥ १८। उस सिंहासन में छः सीढ़ियां और सोने का एक पावदान था ये सब सिंहासन से जुड़े थे और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थी और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था॥ १९। और छवों सीढ़ियों की दोनों अलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था सो

(१) मूल में कोई बात सुलैमान से न छिपी।

बारह हुए किसी राज्य में ऐसा कभी न बना॥ २०। और राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे और लबानोनी बन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे सुलैमान के दिनों में चांदी का कुछ लेखा न था॥ २१। क्योंकि हूराम् के जहाजियों के संग राजा के तर्शीश् को जानेवाले जहाज थे और तीन तीन बरस के पीछे वे तर्शीश् के जहाज सोना चांदी हाथीदांत बन्दर और मोर ले आते थे॥ २२। सो राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथिवी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया॥ २३। और पृथिवी के सब राजा सुलैमान की उस बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उस के मन में उपजाई थी उस का दर्शन करने चाहते थे॥ २४। और वे बरस बरस अपनी अपनी भेंट अर्थात् चांदी और सोने के पात्र वस्त्र शस्त्र सुगन्धद्रव्य घोड़े और खच्चर ले आते थे॥ २५। और अपने घोड़ों और रथों के लिये सुलैमान के चार हजार थान और बारह हजार सवार भी थे जिन को उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम् में राजा के पास ठहरा रक्खा॥ २६। और वह महानद से ले पलिश्तियों के देश और मिस्र के सिवाने लों के सब राजाओं पर प्रभुता करता था॥ २७। और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम् में चांदी का लेखा पत्थरों का और देवदारु का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया॥ २८। और लोग मिस्र से और और सब देशों से सुलैमान के लिये घोड़े लाते थे॥

२९। आदि से अन्त लों सुलैमान के और सारे काम क्या नातान् नबी की पुस्तक[१] में और शीलोवासी अहिय्याह् की नबूवत की पुस्तक में और नबात् के पुत्र यारोबाम् के विषय इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥ ३०। सुलैमान ने यरूशलेम् में सारे इस्राएल् पर चालीस बरस लों राज्य किया॥ ३१। और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पिता दाऊद के पुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र रहबाम् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(१) मूल में के वचनों।

(इस्राएल् के राज्य का दो भाग हो जाना)

१०. **रहबाम्** तो शकेम् को गया क्योंकि सारा इस्राएल् उस को राजा करने के लिये वहीं गया था॥ २। और नबात् के पुत्र यारोबाम् ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता था जहां वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया था) सो यारोबाम् मिस्र से लौट आया॥ ३। तब उन्हों ने उस को बुलवा भेजा सो यारोबाम् और सब इस्राएली आकर रहबाम् से कहने लगे, ४। तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रक्खा था सो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जो उस ने हम पर डाल रक्खा है कुछ हलका कर तब हम तेरे अधीन रहेंगे॥ ५। उस ने उन से कहा तीन दिन के पीछे मेरे पास फिर आना सो वे चले गये॥ ६। तब राजा रहबाम् ने उन बूढ़ों से जो उस के पिता सुलैमान के जीवन भर उस के साम्हने हाजिर रहा करते थे यह कहकर सम्मति लिई कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है इस में तुम क्या सम्मति देते हो॥ ७। उन्हों ने उस को यह उत्तर दिया कि यदि तू इस प्रजा के लोगों से अच्छा वर्त्ताव करके उन्हें प्रसन्न करे और उन से मधुर बातें कहे तो वे सदा लों तेरे अधीन बने रहेंगे॥ ८। पर उस ने उस सम्मति को छोड़ा जो बूढ़ों ने उस को दिई थी और उन जवानों से सम्मति लिई जो उस के संग बड़े हुए थे और उस के सम्मुख हाजिर रहा करते थे॥ ९। उन से उस ने पूछा मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं इस में तुम क्या सम्मति देते हो उन्हों ने तो मुझ से कहा है कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रक्खा है उसे तू हलका कर॥ १०। जवानों ने जो उस के संग बड़े हुए थे उस को यह उत्तर दिया कि उन लोगों ने तुझ से कहा है कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था पर तू उसे हमारे लिये हलका कर तू उन से यों कहना कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कटि से भी मोटी ठहरेगी॥ ११। मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रक्खा था उसे मैं और भी भारी करूंगा मेरा पिता तो तुम को कोड़ों

से ताड़ना देता था पर मैं बिच्छुओं से दूंगा ॥ १२ । तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना वैसे ही यारोबाम् और सारी प्रजा रहबाम् के पास हाजिर हुई ॥ १३ । तब राजा ने उन से कड़ी बातें किईं और रहबाम् राजा ने बूढ़ों की दिई हुई सम्मति छोड़कर, १४ । जवानों की सम्मति के अनुसार उन से कहा मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया पर मैं उसे और भी भारी कर दूंगा मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ों से ताड़ना दिई पर मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूंगा ॥ १५ । सो राजा ने प्रजा की न मानी इस का कारण यह है कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह् के द्वारा नबात् के पुत्र यारोबाम् से कहा था उस को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया था ॥ १६ । जब सारे इस्राएल् ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता तब वे बोले कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है हे इस्राएलियो अपने अपने डेरे को चले जाओ अब हे दाऊद अपने ही घराने की चिन्ता कर । सो सारे इस्राएली अपने अपने डेरे को चले गये ॥ १७ । केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे उन पर तो रहबाम् राज्य करता रहा ॥ १८ । तब राजा रहबाम् ने हदोराम् को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया और इस्राएलियों ने उस पर पत्थरवाह किया और वह मर गया सो रहबाम् फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम् को भाग गया । सो इस्राएल् दाऊद के घराने से फिर गया और आज लों फिरा हुआ है ॥

(रहबाम् का राज्य)

११. जब रहबाम् यरूशलेम् को आया तब उस ने यहूदा और बिन्यामीन् के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे एकट्ठा किया कि इस्राएल् के साथ लड़ने से राज्य रहबाम् के वश में फिर आए ॥ २ । तब यहोवा का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह् के पास पहुंचा कि, ३ यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम् से और यहूदा और बिन्यामीन् में के सब इस्राएलियों से कह, ४ । यहोवा यों कहता है कि अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो तुम अपने अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है । यहोवा के ये वचन मानकर वे यारोबाम् पर चढ़ाई बिना किये लौट गये ॥ ५ । तब रहबाम् यरूशलेम् में रहने लगा और यहूदा में बचाव के लिये ये नगर दृढ़ किये, ६ । अर्थात् बेत्लेहेम् एताम् तको, ७ । बेत्सूर् सोको अदुल्लाम्, ८ । गत् मारेशा जीप्, ९ । अदोरैम् लाकीश् अजेका, १० । सोरा अय्यालोन् और हेब्रोन् । ये यहूदा और बिन्यामीन् में दृढ़ नगर हैं ॥ ११ । और उस ने दृढ़ नगरों को और भी दृढ़ करके उन में प्रधान ठहराये और भोजनवस्तु तेल और दाखमधु के भण्डार रखा दिये ॥ १२ । फिर एक एक नगर में उस ने ढालें और भाले रखवाकर उन को अत्यन्त दृढ़ कर दिया । यहूदा और बिन्यामीन् तो उस के थे ॥ १३ । और सारे इस्राएल् में के याजक और लेवीय भी अपने सारे देश से उठकर उस के पास गये ॥ १४ । यों लेवीय अपनी चराइयां और निज भूमि छोड़कर यहूदा और यरूशलेम् में आये क्योंकि यारोबाम् और उस के पुत्रों ने उन को निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम न करें ॥ १५ । और उस ने ऊंचे स्थानों और बकरों और अपने बनाये हुए बछड़ों के लिये अपनी ओर से याजक ठहरा लिये थे ॥ १६ । और लेवीयों के पीछे इस्राएल् के सब गोत्रों में से जितने इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के खोजी होने को मन लगाते थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम् को आये ॥ १७ । और उन्हों ने यहूदा का राज्य स्थिर किया और सुलैमान के पुत्र रहबाम् को तीन बरस लों दृढ़ कराया क्योंकि तीन बरस लों वे दाऊद और सुलैमान की लीक पर चलते रहे ॥ १८ । और रहबाम् ने एक स्त्री को ब्याह लिया अर्थात् महलत् को जिस का पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत् और माता यिशै के पुत्र एलीआब् की बेटी अबीहैल् थी ॥ १९ । वह उस के जन्माये यूश् शमर्याह् और

(१) मूल में राजा को उत्तर दिया ।

आहम् नाम पुत्र जनी ॥ २० । और उस के पीछे उस ने अब्शालोम् की नातिनी माका को व्याह लिया और वह उस के जन्माये अबिय्याह् अत्तै जीजा और शलोमीत् को जनी ॥ २१ । रहबाम् ने अठारह रानियां तो व्याह लिईं और साठ रखेलियां रक्खीं और अठाईस बेटे और साठ बेटियां जन्माईं पर अब्शालोम् की नातिनी माका से वह अपनी सारी रानियों और रखेलियों से अधिक प्रेम रखता था ॥ २२ । सो रहबाम् ने माका के बेटे अबिय्याह् को मुख्य और सब भाइयों में प्रधान इस मनसा से ठहरा दिया कि उसे राजा करे ॥ २३ । और वह समझ बूझकर काम करता था और उस ने अपने सब पुत्रों को अलग अलग करके यहूदा और बिन्यामीन् के सारे देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया और उन्हें भोजनवस्तु बहुतायत से दिई और उन के लिये बहुत सी स्त्रियां ढूंढीं ॥

१२. परन्तु जब रहबाम् का राज्य दृढ़ हो गया और वह आप स्थिर हो गया तब उस ने और उस के साथ सारे इस्राएल् ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया ॥ २। उन्हों ने जो यहोवा से विश्वासघात किया इस कारण राजा रहबाम् के पांचवें बरस में मिस्र के राजा शीशक् ने, ३ । बारह सौ रथ और साठ हजार सवार लिये हुए यरूशलेम् पर चढ़ाई किई और जो लोग उस के संग मिस्र से आये अर्थात् लूबी सुक्किय्यी कूशी सो अनगिनित थे ॥ ४ । और उस ने यहूदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया और यरूशलेम् तक आया ॥ ५। तब शमायाह् नबी रहबाम् और यहूदा के हाकिमों के पास जो शीशक् के डर के मारे यरूशलेम् में एकट्ठे हुए थे आकर कहने लगा यहोवा यों कहता है कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है सो मैं ने तुम को छोड़कर शीशक् के हाथ में कर दिया है ॥ ६ । तब इस्राएल् के हाकिम और राजा दीन हो गये और कहा यहोवा धर्म्मी है ॥ ७। जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं तब यहोवा का यह वचन शमायाह् के पास पहुंचा कि वे दीन हो गये हैं मैं उन को नाश न करूंगा मैं उन का कुछ बचाव करूंगा. और मेरी जलजलाहट, शीशक् के द्वारा यरूशलेम् पर न भड़केगी ॥ ८ । वे उस के अधीन तो रहेंगे इस लिये कि वे मेरी सेवा जान लें और देश देश के राज्यों की भी सेवा जान लें ॥ ९ । सो मिस्र का राजा शीशक् यरूशलेम् पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं उठा ले गया वह सब की सब को उठा ले गया और सोने की जो फरियां सुलैमान ने बनाई थीं उन को भी वह ले गया ॥ १० । सो राजा रहबाम् ने उन के बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे ॥ ११ । और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता तब तब पहरुए आकर उन्हें उठा ले चलते और फिर पहरुओं की कोठरी में लौटाकर रख देते थे ॥ १२ । जब रहबाम् दीन हुआ तब यहोवा का कोप उस पर से उतर गया और उस ने उस का पूरा विनाश न किया फिर यहूदा में बातें अच्छी हुईं ॥ १३ । सो राजा रहबाम् यरूशलेम् में दृढ़ हो राज्य करता रहा । जब रहबाम् राज्य करने लगा तब एकतालीस बरस का था और यरूशलेम् में अर्थात् उस नगर में जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाये रखने के लिये इस्राएल् के सारे गोत्रों में से चुन लिया था सत्रह बरस लों राज्य करता रहा । उस की माता का नाम नामा था जो अम्मोनी स्त्री थी ॥ १४ । उस ने वह किया जो बुरा है अर्थात् उस ने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया ॥ १५ । आदि से अन्त लों रहबाम् के काम क्या शमायाह् नबी और इद्दो दर्शी की पुस्तकों[1] में वंशावलियों की रीति पर नहीं लिखे हैं । रहबाम् और यारोबाम् के बीच तो लड़ाई सदा होती रही ॥ १६ । और रहबाम् अपने पुरखाओं के संग सोया और दाऊदपुर में उस को मिट्टी दिई गई । और उस का पुत्र अबिय्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(१) मूल में वचनों ।

(अबिय्याह् का राज्य)

१३. यारोबाम् के अठारहवें बरस में अबिय्याह् यहूदा पर राज्य करने लगा॥ २। वह तीन बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम मीकायाह् था जो गिबावासी ऊरीएल् की बेटी थी। और अबिय्याह् और यारोबाम् के बीच लड़ाई हुई॥ ३। सो अबिय्याह् ने तो बड़े बड़े योद्धाओं का दल अर्थात् चार लाख छांटे हुए पुरुष लेकर लड़ने के लिये पांति बन्धाई और यारोबाम् ने आठ लाख छांटे हुए पुरुष जो बड़े शूरवीर थे लेकर उस के विरुद्ध पांति बन्धाई॥ ४। तब अबिय्याह् समारैम् नाम पहाड़ पर जो एप्रैम् के पहाड़ी देश में है खड़ा होकर कहने लगा हे यारोबाम् हे सब इस्राएलियो मेरी सुनो॥ ५। क्या तुम को न जानना चाहिये कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने लोनवाली[1] वाचा बांधकर दाऊद को और उस के वंश को इस्राएल् का राज्य सदा के लिये दे दिया है॥ ६। तौभी नबात् का पुत्र यारोबाम् जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का कर्म्मचारी था सो अपने स्वामी के विरुद्ध उठा॥ ७। और उस के पास हलके और ओछे मनुष्य बटुर गये और जब सुलैमान का पुत्र रहूबाम् लड़का और अल्हड़ मन का था और उन का साम्हना न कर सकता था तब वे उस के विरुद्ध सामर्थी हो गये॥ ८। और अब तुम सोचते हो कि हम यहोवा के राज्य का साम्हना करेंगे जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है तुम मिलकर बड़ा समाज बने हो और तुम्हारे पास वे सोने के बछड़े भी हैं जिन्हें यारोबाम् ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया॥ ९। क्या तुम ने यहोवा के याजकों को अर्थात् हारून की सन्तान और लेवीयों को निकालकर देश देश के लोगों की नाईं याजक ठहरा नहीं लिये जो कोई एक बछड़ा और सात मेढ़े अपना संस्कार कराने को ले आता सो उन का याजक हो जाता है जो ईश्वर नहीं हैं॥ १०। पर हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है और हम ने उस को नहीं त्यागा और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल करनेहारे याजक हारून की सन्तान और अपने अपने काम में लगे हुए लेवीय हैं॥ ११। और वे नित्य सबेरे और सांझ को यहोवा के लिये होमबलि और सुगन्धद्रव्य का धूप जलाते हैं और शुद्ध मेज पर भेंट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उस के दीपक सांझ सांझ को बारते हैं हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते रहते हैं पर तुम ने उस को त्याग दिया है॥ १२। और सुनो हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है और तुम्हारे विरुद्ध सांस बांधकर फूंकने को तुरहियां लिये हुए उस के याजक भी हमारे साथ हैं। हे इस्राएलियो अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा से मत लड़ो क्योंकि तुम कृतार्थ न होगे॥ १३। पर यारोबाम् ने घातुओं को घुमाकर उन के पीछे भेज दिया सो वे तो यहूदा के साम्हने थे और घातू उन के पीछे थे॥ १४। और जब यहूदियों ने पीछे को मुंह फेरा तो क्या देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनों ओर से लड़ाई होनेवाली है तब उन्हों ने यहोवा की दोहाई दिई और याजक तुरहियों को फूंकने लगे॥ १५। तब यहूदी पुरुषों ने जयजयकार किया और जब यहूदी पुरुषों ने जयजयकार किया तब परमेश्वर ने अबिय्याह् और यहूदियों के साम्हने यारोबाम् और सारे इस्राएल् को मारा॥ १६। और इस्राएली यहूदा के साम्हने से भागे और परमेश्वर ने उन्हें उन के हाथ में कर दिया॥ १७। और अबिय्याह् और उस की प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा यहां लों कि इस्राएल् में से पांच लाख छांटे हुए पुरुष मारे गये॥ १८। सो उस समय इस्राएली दब गये और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रक्खा था॥ १९। तब अबिय्याह् ने यारोबाम् का पीछा करके उस से बेतेल् यशाना और एप्रोन् नगरों और उन के गांवों को ले लिया॥ २०। और अबिय्याह् के जीवन भर यारोबाम् फिर सामर्थी न हुआ निदान यहोवा ने उस को ऐसा मारा कि वह मर गया॥ २१। पर अबिय्याह् और भी सामर्थी हो गया और चौदह स्त्रियां

(१) अर्थात् अटल।

व्याहकर बाईस बेटे और सोलह बेटियां जन्माईं ॥ २२। और अबिय्याह् के और काम और उस की चाल चलन और उस के वचन इद्दो नबी के लिखे हुए वृत्तान्त में लिखे हैं ॥

(आसा का राज्य.)

१४. निदान अबिय्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आसा उस के स्थान पर राजा हुआ । इस के दिनों में दस बरस लों देश चैन से रहा ॥ २। और आसा ने वही किया जो उस के परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक है ॥ ३। उस ने तो पराई वेदियों को और ऊंचे स्थानों को दूर किया और लाठों को तुड़वा डाला और अशेरा नाम मूरतों को तोड़ डाला. ४। और यहूदियों को आज्ञा दिई कि अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज करो और व्यवस्था और आज्ञा को मानो ॥ ५। और उस ने ऊंचे स्थानों और सूर्य्य की प्रतिमाओं को यहूदा के सब नगरों में से दूर किया और राज्य उस के साम्हने चैन से रहा ॥ ६। और उस ने यहूदा में गढ़वाले नगर बसाये क्योंकि देश चैन से रहा और उन बरसों में इस कारण उस को किसी से लड़ाई न हुई कि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था ॥ ७। उस ने यहूदियों से कहा आओ हम इन नगरों को बसाएं और उन की चारों ओर शहरपनाह, गुम्मट और फाटकों के पल्ले और बेंड़े बनाएं देश अब लों हमारे साम्हने पड़ा है क्योंकि हम ने अपने परमेश्वर यहोवा की खोज किई है हम ने उस की खोज किई और उस ने हम को चारों ओर से विश्राम दिया है । सो उन्हों ने उन नगरों को बसाया और कृतार्थ हुए ॥ ८। फिर आसा के पास ढाल और बर्छी रखनेहारों की एक सेना थी अर्थात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष और बिन्यामीन् में से फरी रखनेहारे और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार ये सब शूरवीर थे ॥ ९। और उन के विरुद्ध दस लाख पुरुषों की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह् नाम एक कूशी निकला और मारेशा लों आ गया ॥ १०। तब आसा उस का साम्हना करने को चला और मारेशा के निकट सपाता नाम तराई में युद्ध की पांति बांधी गई ॥ ११। तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की यों दोहाई दिई कि हे यहोवा जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है वैसे ही शक्तिहीन की भी हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारी सहायता कर क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरुद्ध आये हैं हे यहोवा तू हमारा परमेश्वर है मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाए ॥ १२। तब यहोवा ने कूशियों को आसा और यहूदियों के साम्हने मारा और कूशी भाग गये ॥ १३। और आसा और उस के संग के लोगों ने उन का पीछा गरार् तक किया और इतने कूशी मारे गये कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उस की सेना से हार गये और यहूदी बहुत ही लूट ले गये ॥ १४। और उन्हों ने गरार् के आस पास के सब नगरों को मार लिया क्योंकि यहोवा का भय उन के रहनेहारों के मन में समा गया और उन्हों ने उन नगरों को लूट लिया क्योंकि उन में बहुत सा धन था ॥ १५। फिर वे पशुशालाओं को जीतकर बहुत सी भेड़ बकरियां और ऊंट लूटकर यरूशलेम् को लौटे ॥

१५. तब परमेश्वर का आत्मा ओदेद् के पुत्र अजर्याह् में समा गया ॥ २। और वह आसा से भेंट करने को निकला और उस से कहा हे आसा और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन् मेरी सुनो जब लों तुम यहोवा के संग रहोगे तब लों वह तुम्हारे संग रहेगा और यदि तुम उस की खोज में लगे रहो तब तो वह तुम से मिला करेगा पर यदि तुम उस को त्याग दो तो वह तुम को त्याग देगा ॥ ३। बहुत दिन इस्राएल् बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेहारे याजक के और बिना व्यवस्था के रहा ॥ ४। पर जब जब वे संकट में पड़कर इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे और उस को ढूंढ़ा तब तब वह

उन को मिला ॥ ५ । उन समयों में न तो जानेहारे को कुछ शांति होती थी और न आनेहारे की बरन सारे देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था ॥ ६ । और जाति से जाति और नगर से नगर चूर किये जाते थे क्योंकि परमेश्वर नाना प्रकार का कष्ट देकर उन्हें घबरा देता था । ७ ॥ पर तुम लोग हियाव बांधो और तुम्हारे हाथ ढीले न पड़ें क्योंकि तुम्हारे काम का बदला मिलेगा ॥ ८ । जब आसा ने ये वचन और ओदेद् नबी की नबूवत सुनी तब उस ने हियाव बांधकर यहूदा और बिन्यामीन् के सारे देश में से और उन नगरों में से भी जो उस ने एप्रैम् के पहाड़ी देश में ले लिये थे सब घिनौनी वस्तुएं दूर किईं और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे के साम्हने थी उस को नये सिरे से बनाया ॥ ९ । और उस ने सारे यहूदा और बिन्यामीन् को और एप्रैम् मनश्शे और शिमोन् में से जो लोग उन के संग रहते थे उन को एकट्ठा किया क्योंकि वे यह देखकर कि उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहता है इस्राएल् में से उस के पास बहुत चले आये ॥ १० । सो आसा के राज्य के पन्द्रहवें बरस के तीसरे महीने में वे यरूशलेम् में एकट्ठे हुए ॥ ११ । और उसी समय उन्हों ने उस लूट में से जो वे ले आये थे सात सौ बैल और सात हजार भेड़ बकरियां यहोवा को बलि करके चढ़ाईं ॥ १२ । और उन्हों ने वाचा बांधी कि हम अपने सारे मन और सारे जीव से अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे, १३ । और क्या बड़ा क्या छोटा क्या स्त्री क्या पुरुष जो कोई इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे सो मार डाला जाएगा ॥ १४ । और उन्हों ने जयजयकार के साथ तुरहियां और नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे शब्द से यहोवा की किरिया खाई ॥ १५ । और सारे यहूदी यह किरिया खाकर आनन्दित हुए क्योंकि उन्हों ने अपने सारे मन से किरिया खाई और बड़ी अभिलाषा से उस को ढूंढ़ा और वह उन को मिला और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया ॥ १६ । बरन आसा राजा की माता माका जिस ने अशेरा के पास रहने को एक घिनौनी मूरत बनाई उस को उस ने राजमाता के पद से उतार दिया और आसा ने उस की मूरत काटकर पीस डाला और किद्रोन् नाले में फूंक दिया ॥ १७ । ऊंचे स्थान तो इस्राएलियों में से न ढाये गये तौभी आसा का मन जीवन भर निष्कपट रहा ॥ १८ । और जो सोना चान्दी और पात्र उस के पिता ने अर्पण किये थे और जो उस ने आप अर्पण किये थे उन को उस ने परमेश्वर के भवन में पहुंचवा दिया ॥ १९ । और राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें बरस लों फिर लड़ाई न हुई ॥

१६. आसा के राज्य के छत्तीसवें बरस में इस्राएल् के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई किई और रामा को इस लिये दृढ़ किया कि यहूदा के राजा आसा के पास कोई आने जाने न पाए ॥ २ । तब आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भंडारों में से चांदी सोना निकाल दमिश्कवासी अराम् के राजा बेन्हदद् के पास भेजकर यह कहा कि, ३ । जैसे मेरे तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी वाचा बन्धे देख मैं तेरे पास चांदी सोना भेजता हूं सो आ इस्राएल् के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को तोड़ दे इस लिये कि वह मुझ पर से दूर हो ॥ ४ । राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद् ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई कराकर इय्योन् दान् आबेल्मैम् और नप्ताली के सब भण्डारवाले नगरों को जीत लिया ॥ ५ । यह सुनकर बाशा ने रामा का दृढ़ करना छोड़ दिया और अपना यह काम बन्द करा दिया ॥ ६ । तब राजा आसा ने सारे यहूदा को साथ लिया और वे रामा के पत्थरों और लकड़ी को जिन से बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गये और उन से उस ने गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया ॥ ७ । उस समय हनानी दर्शी यहूदा के राजा आसा के पास जाकर कहने लगा तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं लगाया बरन अराम् के राजा ही पर भरोसा

लगाया है इस कारण अराम् के राजा की सेना तेरे हाथ से छूट गई है ॥ ८ । क्या कूशियों और लूबियों की सेना बड़ी न थी और क्या उस में बहुत ही रथ और सवार न थे तौभी तू ने यहोवा पर भरोसा लगाया इस कारण उस ने उन को तेरे हाथ में कर दिया ॥ ९ । देख यहोवा की दृष्टि सारी पृथिवी पर इस लिये फिरती रहती है कि जिन का मन उस की ओर निष्कपट रहता है उन की सहायता में वह अपना सामर्थ्य दिखाए यह काम तू ने मूर्खता से किया है सो अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा ॥ १० । तब आसा दर्शी पर रिसियाया और उसे काठ में ठोंकवा दिया क्योंकि वह इस कारण उस पर क्रोधित था और उसी समय आसा प्रजा के कुछ लोगों को पीसने भी लगा ॥ ११ । आदि से लेकर अन्त लों आसा के काम यहूदा और इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त[1] में लिखे हैं ॥ १२ । अपने राज्य के उनतालीसवें बरस में आसा को पांव का रोग लगा और वह रोग अत्यन्त बढ़ गया तौभी उस ने रोगी होकर यहोवा की नहीं वैद्यों ही की शरण लिई ॥ १३ । निदान आसा अपने राज्य के एकतालीसवें बरस में मरके अपने पुरखाओं के संग सोया ॥ १४ । तब उस को उसी की कबर में जो उस ने दाऊदपुर में खुदवा लिई थी मिट्टी दिई गई और वह सुगंधद्रव्यों और गंधी के काम के भांति भांति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया गया और बहुत सा सुगंधद्रव्य उस के लिये जलाया गया ॥

(यहोशापात् का राज्य.)

१७. और उस का पुत्र यहोशापात् उस के स्थान पर राजा हुआ और इस्राएल् के विरुद्ध अपना बल बढ़ाया ॥ २ । और उस ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिये और यहूदा के देश में और एप्रैम् के उन नगरों में भी जो उस के पिता आसा ने ले लिये थे सिपाहियों की चौकियां बैठा दिईं ॥ ३ । और यहोवा यहोशापात् के संग रहा क्योंकि वह अपने मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल सी चाल चला और बाल् देवताओं की खोज में न लगा ॥ ४ । बरन वह अपने पिता के परमेश्वर ही की खोज में लगा रहता और उसी की आज्ञाओं पर चलता था और इस्राएल् के से काम न करता था ॥ ५ । इस कारण यहोवा ने राज्य को उस के हाथ में दृढ़ किया और सारे यहूदी उस के पास भेंट लाया करते थे और उस के बहुत धन और विभव हो गया ॥ ६ । और यहोवा के मार्गों पर चलते चलते उस का मन उभर गया फिर उस ने यहूदा में से ऊंचे स्थान और अशेरा नाम मूरतें दूर किईं ॥ ७ । और अपने राज्य के तीसरे बरस में उस ने बेन्हैल् ओबद्याह् जकर्याह् नतनेल् और मीकायाह् नाम अपने हाकिमों को यहूदा के नगरों में शिक्षा देने को भेज दिया ॥ ८ । और उन के साथ शमायाह् नतन्याह् जबद्याह् असाहेल् शमीरामोत् यहोनातान् अदोनिय्याह् तोबिय्याह् और तोबअदोनिय्याह् नाम लेवीय और उन के संग एलीशामा और यहोराम् नाम याजक थे ॥ ९ । सो उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दिई बरन वे यहूदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे ॥ १० । और यहूदा के आस पास के देशों के राज्य राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया कि उन्हों ने यहोशापात् से युद्ध न किया ॥ ११ । बरन कितने पलिश्ती यहोशापात् के पास भेंट और कर समझकर चांदी लाये और अरबी सात हजार सात सौ मेढ़े और सात हजार सात सौ बकरे ले आये ॥ १२ । और यहोशापात् बहुत ही बढ़ता गया और उस ने यहूदा में गढ़ियां और भण्डार के नगर तैयार किये ॥ १३ । और यहूदा के नगरों में उस के बहुत काम होता था और यरूशलेम् में योद्धा जो शूरवीर थे रहते थे ॥ १४ । और इन के पितरों के घरानों के अनुसार इन की यह गिनती थी अर्थात् यहूदी सहस्रपति तो ये थे अर्थात् अदना प्रधान जिस के साथ तीन लाख शूरवीर थे ॥ १५ । और उस के पीछे यहोहानान् प्रधान जिस के साथ दो लाख अस्सी हजार पुरुष थे ॥ १६ । और इस के पीछे जिक्री का पुत्र अमस्याह्

(१) मूल में पुस्तक।

जिस ने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण किया था और उस के साथ दो लाख शूरवीर थे ॥ १७ । फिर बिन्यामीन् में से एल्यादा नाम एक शूरवीर जिस के संग ढाल रखनेहारे दो लाख धनुर्धारी थे ॥ १८ । और उस के पीछे यहोजाबाद् जिस के संग युद्ध के हथियार बांधे हुए एक लाख अस्सी हजार पुरुष थे ॥ १९ । ये वे हैं जो राजा की सेवा में लवलीन थे और ये उन से अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया ॥

१८. यहोशापात्

बड़ा धनवान और ऐश्वर्य्यवान हो गया और उस ने अहाब् के साथ समधियाना किया ॥ २ । कुछ बरस पीछे वह शोमरोन् में अहाब् के पास गया तब अहाब् ने उस के और उस के संगियों के लिये बहुत सी भेड़ बकरियां और गाय बैल काटकर उसे गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई करने को उसकाया ॥ ३ । और इस्राएल् के राजा अहाब् ने यहूदा के राजा यहोशापात् से कहा क्या तू मेरे संग गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई करेगा उस ने उसे उत्तर दिया जैसा तू वैसा मैं भी हूं और जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी भी प्रजा है हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे ॥ ४ । फिर यहोशापात् ने इस्राएल् के राजा से कहा आज यहोवा की आज्ञा ले ॥ ५ । सो इस्राएल् के राजा ने नबियों को जो चार सौ पुरुष थे एकट्ठा करके उन से पूछा क्या हम गिलाद् के रामोत् पर युद्ध करने को चढ़ाई करें वा मैं रुका रहूं उन्हों ने उत्तर दिया चढ़ाई कर क्योंकि परमेश्वर उस को राजा के हाथ कर देगा ॥ ६ । पर यहोशापात् ने पूछा क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें ॥ ७ । इस्राएल् के राजा ने यहोशापात् से कहा हां एक पुरुष और है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं पर मैं उस से घिन रखता हूं क्योंकि वह मेरे विषय कभी कल्याण की नहीं सदा हानि ही की नबूवत करता है वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह् है । यहोशापात् ने कहा राजा ऐसा न कहे ॥ ८ । तब इस्राएल् के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा यिम्ला के पुत्र मीकायाह् को फुर्ती से ले आ ॥ ९ । इस्राएल् का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात् अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए अपने अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे वे शोमरोन् के फाटक में एक खुले स्थान में विराज रहे थे और सब नबी उन के साम्हने नबूवत कर रहे थे ॥ १० । तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह् ने लोहे के सींग बनवाकर कहा यहोवा यों कहता है कि इन से तू अरामियों को मारते मारते नाश कर डालेगा ॥ ११ । और सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत करके कहा कि गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ होए क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर देगा ॥ १२ । और जो दूत मीकायाह् को बुलाने गया था उस ने उस से कहा सुन नबी लोग एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं सो तेरी बात उन की सी हो तू भी शुभ वचन कहना ॥ १३ । मीकायाह् ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह जो कुछ मेरा परमेश्वर कहे सोई मैं भी कहूंगा ॥ १४ । जब वह राजा के पास आया तब राजा ने उस से पूछा हे मीकायाह् क्या हम गिलाद् के रामोत् पर युद्ध करने को चढ़ाई करें वा मैं रुका रहूं उस ने कहा हां तुम लोग चढ़ाई करो और कृतार्थ होओ और वे तुम्हारे हाथ में कर दिये जाएं ॥ १५ । राजा ने उस से कहा मुझे कितनी बार तुझे किरिया धराकर चिताना होगा कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह ॥ १६ । मीकायाह् ने कहा मुझे सारा इस्राएल् बिना चरवाहे की भेड़ बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तितर बितर देख पड़ा और यहोवा का यह वचन आया कि वे तो अनाथ हैं सो अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएं ॥ १७ । तब इस्राएल् के राजा ने यहोशापात् से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की नबूवत करेगा ॥ १८ । मीकायाह् ने कहा इस कारण तुम लोग यहोवा का यह वचन सुनो । मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उस के दहिने बायें खड़ी हुई स्वर्ग की सारी

होगा देख पड़ी ॥ १९ । तब यहोवा ने पूछा इस्राएल् के राजा अहाब् को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा ॥ २० । निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सन्मुख खड़ा हुआ और कहने लगा मैं उस को बहकाऊंगा यहोवा ने पूछा किस उपाय से ॥ २१ । उस ने कहा मैं जाकर उस के सब नबियों में पैठके उन से झूठ बुलवाऊंगा[1] । यहोवा ने कहा तेरा उस को बहकाना सुफल होगा जाकर ऐसा ही कर ॥ २२ । सो अब सुन यहोवा ने तेरे इन नबियों के मुंह में एक झूठ बोलनेहारा आत्मा पैठाया है और यहोवा ने तेरे विषय हानि की कही है ॥ २३ । तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह् ने मीकायाह् के निकट जा उस के गाल पर थपेड़ा मारके पूछा यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया ॥ २४ । मीकायाह् ने कहा जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा तब जानेगा ॥ २५ । इस पर इस्राएल् के राजा ने कहा कि मीकायाह् को नगर के हाकिम आमोन् और योआश् राजकुमार के पास लौटाकर, २६ । उन से कहो राजा यों कहता है कि इस को बन्दीगृह में डालो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों इसे दुःख की रोटी और पानी दिया करो ॥ २७ । तब मीकायाह् ने कहा यदि तू कभी कुशल से लौटे तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा । फिर उस ने कहा हे देश देश के लोगो तुम सब के सब सुन रक्खो ॥

२८ । तब इस्राएल् के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात् दोनों ने गिलाद् के रामोत् पर चढ़ाई किई ॥ २९ । और इस्राएल् के राजा ने यहोशापात् से कहा मैं तो भेष बदलकर युद्ध में जाऊंगा पर तू अपने ही वस्त्र पहिने रह सो इस्राएल् के राजा ने भेष बदला और वे दोनों युद्ध में गये ॥ ३० । अराम् के राजा ने तो अपने रथों के प्रधानों को आज्ञा दिई थी कि न तो छोटे से लड़ो न बड़े से केवल इस्राएल् के राजा से लड़ो ॥ ३१ । सो जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात् को देखा तब कहा इस्राएल् का राजा यही है और वे उसी से लड़ने को मुड़े सो यहोशापात् चिल्ला उठा तब यहोवा ने उस की सहायता किई और परमेश्वर ने उन को उस के पास से फिर जाने की प्रेरणा किई ॥ ३२ । सो यह देखकर कि वह इस्राएल् का राजा नहीं है रथों के प्रधान उस का पीछा छोड़के लौट गये ॥ ३३ । तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल् के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा सो उस ने अपने सारथी से कहा मैं घायल हुआ सो बाग[1] फेरके मुझे सेना में से बाहर ले चल ॥ ३४ । और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल् का राजा अपने रथ में अरामियों के सन्मुख सांझ तक खड़ा रहा पर सूर्य अस्त होते वह मर गया ॥

१९. और

यहूदा का राजा यहोशापात् यरूशलेम् को अपने भवन में कुशल से लौट गया ॥ २ । तब हनानी का पुत्र येहू नाम दर्शी यहोशापात् राजा से भेंट करने को जाकर कहने लगा क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिये इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर कोप भड़का है ॥ ३ । तौभी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं तू ने तो देश में से अशेरों को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है ॥

४ । सो यहोशापात् यरूशलेम् में रहता था और बेर्शेबा से ले एप्रैम् के पहाड़ी देश लों अपनी प्रजा में फिर दौरा करके उन को उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर फेर दिया ॥ ५ । फिर उस ने यहूदा के एक एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया ॥ ६ । और उस ने न्यायियों से कहा सोचो कि क्या करते हो क्योंकि तुम जो न्याय करोगे सो मनुष्य के लिये नहीं यहोवा के लिये करोगे और वह न्याय करते समय तुम्हारे संग रहेगा ॥ ७ । सो अब यहोवा

(१) मूल में झूठा आत्मा हूंगा ।

(१) मूल में अपना हाथ ।

का भय तुम में समाया रहे चौकसी से काम करना क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है और न वह किसी का पक्ष करता न घूस लेता है ॥ ८ । और यरूशलेम् में भी यहोशापात् ने लेवीयों और याजकों और इस्राएल् के पितरों के घरानो के कुछ मुख्य पुरुषों को यहोवा की ओर से न्याय करने और मुकद्दमों के जांचने के लिये ठहराया । और वे यरूशलेम् को लौटे ॥ ९ । और उस ने उन को आज्ञा दिई कि यहोवा का भय मानकर सच्चाई और निष्कपट मन से ऐसा करना ॥ १० । तुम्हारे भाई जो अपने अपने नगर में रहते हैं उन में से जिस जिस का कोई मुकद्दमा तुम्हारे साम्हने आए चाहे वह खून का हो चाहे व्यवस्था वा किसी आज्ञा वा विधि वा नियम के विषय हो उन को चिता देना कि यहोवा के विषय दोषी न होओ न हो कि तुम और तुम्हारे भाइयों दोनों पर उस का कोप भड़के । ऐसा करने से तुम दोषी न ठहरोगे ॥ ११ । और सुनो यहोवा के विषय के सब मुकद्दमों में तो अमर्याह् महायाजक और राजा के विषय के सब मुकद्दमों में यहूदा के घराने का प्रधान यिश्माएल् का पुत्र जबद्याह् तुम्हारे ऊपर ठहरा है और लेवीय तुम्हारे साम्हने सरदारों का काम करेंगे सो हियाव बांधकर काम करो और भले मनुष्य के संग यहोवा रहे ॥

२०. इस के पीछे मोआबियों और अम्मोनियों ने और उन के संग कितने मूनियों[1] ने युद्ध करने के लिये यहोशापात् पर चढ़ाई किई ॥ २ । तब लोगों ने आकर यहोशापात् को बता दिया कि ताल के पार से एदोम्[2] देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुझ पर चढ़ाई कर रही है और सुन वह हससोन्तामार् लों जो एनगदी भी कहावता है पहुंच गई है ॥ ३ । सो यहोशापात् डर गया और यहोवा की खोज में लग गया और सारे यहूदा में उपवास का प्रचार कराया ॥ ४ । सो यहूदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये एकट्ठे हुए वरन वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आये ॥ ५ । तब यहोशापात् यहोवा के भवन में नये आंगन के साम्हने यहूदियों और यरूशलेमियों की मण्डली में खड़ा होकर, ६ । यह कहने लगा कि हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई नहीं कर सकता ॥ ७ । हे हमारे परमेश्वर क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल् के साम्हने से निकालकर इसे अपने प्रेमी इब्राहीम् के वंश को सदा के लिये नहीं दे दिया ॥ ८ । सो वे इस में बस गये और इस में तेरे नाम का एक पवित्रस्थान बनाकर कहा कि, ९ । यदि तलवार वा मरी वा अकाल वा और कोई विपत्ति हम पर पड़े तौभी हम इसी भवन के साम्हने और तेरे साम्हने (कि तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर अपने क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा ॥ १० । और अब अम्मोनी और मोआबी और सेईर् के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तू ने इस्राएल् को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया और वे उन की ओर से मुड़ गये और उन को विनाश न किया, ११ । देख वे ही लोग हम को तेरे दिये हुए अधिकार के इस देश में से जिस का अधिकार तू ने हमें दिया है निकालने को आकर कैसा बदला हम को दे रहे हैं ॥ १२ । हे हमारे परमेश्वर क्या तू उन का न्याय न करेगा यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है उस के साम्हने हमारा तो बस नहीं चलता और क्या करना चाहिये यह हमें तो कुछ सूझता नहीं पर हमारी आंखें तेरी ओर लगी हैं ॥ १३ । और सब यहूदी अपने अपने बालबच्चों स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सन्मुख खड़े थे ॥ १४ । तब आसाप् के वंश में से यहजीएल् नाम एक लेवीय जो जकर्याह् का पुत्र बनायाह् का पोता और मत्तन्याह् के पुत्र यीएल् का परपोता था उस में यहोवा का आत्मा मण्डली के बीच समाया ॥ १५ । और वह कहने लगा हे सब यहूदियो हे यरूशलेम्

(१) मूल में. अम्मोनियों । (२) मूल में अराम् ।

के रहनेहारो हे राजा यहोशापात् तुम सब ध्यान दो यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं परमेश्वर का काम है ॥ १६ । कल उन का साम्हना करने को जाना, देखो वे सीस् की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं और यरूएल् नाम जंगल के साम्हने नाले के सिरे पर तुम्हें मिलेंगे ॥ १७ । इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा हे यहूदा और हे यरूशलेम् ठहरे रहना और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो कल उन का साम्हना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे संग रहेगा ॥ १८ । तब यहोशापात् मुंह भूमि की ओर करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम् के निवासियों ने यहोवा के साम्हने गिरके यहोवा को दण्डवत् किई ॥ १९ । और कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय खड़े होकर इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊंचे स्वर से करने लगे ॥ २० । बिहान को वे सबेरे उठकर तको के जंगल की ओर निकल गये और चलते समय यहोशापात् ने खड़े होकर कहा हे यहूदियो हे यरूशलेम् के निवासियो मेरी सुनो अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रक्खो तब तुम स्थिर रहोगे उस के नबियों की प्रतीति करो तब तुम कृतार्थ हो जाओगे ॥ २१ । तब प्रजा के साथ सम्मति करके उस ने कितनों को ठहराया जो पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं और उस की स्तुति यह कहते हुए करें कि यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि उस की करुणा सदा की है ॥ २२ । जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों मोआबियों और सेईर् के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे घातुओं को बैठा दिया और वे मारे गये ॥ २३ । कैसे कि अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर् के पहाड़ी देश के निवासियों को मारने और सत्यानाश करने के लिये उन पर चढ़ाई किई और जब वे सेईर् के पहाड़ी देश के निवासियों का अन्त कर चुके तब उन सभों ने एक दूसरे के नाश करने में हाथ लगाया ॥ २४ । सो जब यहूदियों ने जंगल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि किई तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़ी हुई लोथ ही हैं और कोई नहीं बचा ॥ २५ । सो यहोशापात् और उस की प्रजा लूट लेने को गये तो लोथों के बीच बहुत सी संपत्ति और मनभावने गहने मिले ये उन्हों ने इतने उतार लिये कि इन को न ले जा सके वरन लूट इतनी मिली कि बटोरते बटोरते तीन दिन बीत गये ॥ २६ । चौथे दिन वे बराका[१] नाम तराई में एकट्ठे हुए और वहां यहोवा का धन्यवाद किया इस कारण उस स्थान का नाम बराका की तराई पड़ा और आज लों वही पड़ा है ॥ २७ । तब वे अर्थात् यहूदा और यरूशलेम् नगर के सब पुरुष और उन के आगे आगे यहोशापात् आनन्द के साथ यरूशलेम् लौटने को चले क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया था ॥ २८ । सो वे सारंगियां वीणाएं और तुरहियां बजाते हुए यरूशलेम् में यहोवा के भवन को आये ॥ २९ । और जब देश देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्राएल् के शत्रुओं से यहोवा लड़ा तब परमेश्वर का डर उन के मन में समा गया ॥ ३० । और यहोशापात् के राज्य को चैन मिला क्योंकि उस के परमेश्वर ने उस को चारों ओर से विश्राम दिया ॥

३१ । यों यहोशापात् ने यहूदा पर राज्य किया । जब वह राज्य करने लगा तब वह पैंतीस बरस का था और पचीस बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अजूबा था जो शिल्ही की बेटी थी ॥ ३२ । और वह अपने पिता आसा की लीक पर चला और उस से न मुड़ा अर्थात् जो यहोवा के लेखे ठीक है सोई वह करता रहा ॥ ३३ । तौभी ऊंचे स्थान ढाये न गये वरन तब लों प्रजा के लोगों ने अपना मन अपने पितरों के परमेश्वर की ओर तत्पर न किया था ॥ ३४ । और आदि से अन्त लों यहोशापात् के और काम हनानी के

(१) अर्थात् धन्यवाद वा आशीष ।

पुत्र येहू के लिखे हुए उस वृत्तान्त में लिखे हैं जो इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता है॥

३५। इस के पीछे यहूदा के राजा यहोशापात् ने इस्राएल् के राजा अहज्याह् से जो बड़ी दुष्टता करता था मेल किया॥ ३६। अर्थात् उस ने उस के साथ इस लिये मेल किया कि तर्शीश् जाने को जहाज बनवाए और उन्हों ने ऐसे जहाज एस्योन्-गेबेर् में बनवाए॥ ३७। तब दोदावाह् के पुत्र मारेशावासी एलीएजेर् ने यहोशापात् के विरुद्ध यह नबूवत कही कि तू ने जो अहज्याह् से मेल किया इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा। सो जहाज टूट गये और तर्शीश् को न जा सके॥

(यहोराम् का राज्य)

२१. निदान यहोशापात् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र यहोराम् उस के स्थान पर राजा हुआ॥ २। इस के भाई ये थे जो यहोशापात् के पुत्र थे अर्थात् अजर्याह् यहीएल् जकर्याह् अजर्याह् मीकाएल् और शपत्याह् ये सब इस्राएल् के राजा यहोशापात् के पुत्र थे॥ ३। और उन के पिता ने उन्हें चान्दी सोना और अनमोल वस्तुएं और बड़े बड़े दान और यहूदा में गढ़वाले नगर दिये थे पर यहोराम् को उस ने राज्य दे दिया क्योंकि वह जेठा था॥ ४। जब यहोराम् अपने पिता के राज्य पर ठहरा और बलवन्त भी हो गया तब उस ने अपने सब भाइयों को और इस्राएल् के कुछ हाकिमों को भी तलवार से घात किया॥ ५। जब यहोराम् राजा हुआ तब बत्तीस बरस का था और वह आठ बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा॥ ६। वह इस्राएल् के राजाओं की सी चाल चला जैसे अहाब् का घराना चलता था क्योंकि उस की स्त्री अहाब् की बेटी थी और वह उस काम को करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है॥ ७। तौभी यहोवा ने दाऊद के घराने को नाश करना न चाहा यह उस वाचा के कारण था जो उस ने दाऊद से बान्धी थी और उस वचन के अनुसार था जो उस ने उस को दिया था कि मैं ऐसा करूंगा कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न बुझेगा॥ ८। उस के दिनों में एदोम् ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपने ऊपर एक राजा बना लिया॥ ९। सो यहोराम् अपने हाकिमों और अपने सब रथों को साथ लेकर उधर गया और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों को मारा॥ १०। यों एदोम् यहूदा के वश से छूट गया और आज लों वैसा ही है। उसी समय लिब्ना ने भी उस की अधीनता छोड़ दिई यह इस कारण हुआ कि उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था॥ ११। और उस ने यहूदा के पहाड़ों पर ऊंचे स्थान बनाये और यरूशलेम् के निवासियों से व्यभिचार कराया और यहूदा को बहका दिया॥ १२। सो एलिय्याह् नबी का एक पत्र उस के पास आया कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि तू जो न तो अपने पिता यहोशापात् की लीक पर चला है और न यहूदा के राजा आसा की लीक पर, १३। बरन इस्राएल् के राजाओं की लीक पर चला है और अहाब् के घराने की नाईं यहूदियों और यरूशलेम् के निवासियों से व्यभिचार कराया है और अपने पिता के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे घात किया है, १४। इस कारण यहोवा तेरी प्रजा पुत्रों स्त्रियों और सारी संपत्ति को बड़ी मार से मारेगा. १५। और तू अन्तरियों के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा यहां लों कि उस रोग के कारण तेरी अन्तरियां दिन दिन निकलती जाएंगी॥ १६। और यहोवा ने पलिश्तियों को और कूशियों के पास रहनेहारे अरबियों को यहोराम् के विरुद्ध उभारा॥ १७। और वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर टूट पड़े और राजभवन में जितनी संपत्ति मिली उस सब को और राजा के पुत्रों और स्त्रियों को भी ले गये यहां लों कि उस के लहुरे बेटे यहोआहाज् को छोड़ उस के पास कोई भी पुत्र न रहा॥ १८। इस सब के पीछे यहोवा ने उसे अन्तरियों के असाध्य रोग से पीड़ित कर दिया॥ १९। और कुछ समय

के पीछे अर्थात् दो बरस के अन्त में उस रोग के कारण उस की अन्तरियां निकल पड़ीं और वह अत्यन्त पीड़ित होकर मर गया और उस की प्रजा ने जैसे उस के पुरखाओं के लिये सुगन्धद्रव्य जलाया था वैसा उस के लिये कुछ न जलाया ॥ २० । वह जब राज्य करने लगा तब बत्तीस बरस का था और यरूशलेम् में आठ बरस लों राज्य करता रहा और सब को अप्रिय होकर जाता रहा और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई पर राजाओं के कबरिस्तान में नहीं ॥

(यहूदी अहज्याह् का राज्य)

२२. तब यरूशलेम् के निवासियों ने उस के लहुरे पुत्र अहज्याह् को उस के स्थान पर राजा किया क्योंकि जो दल अरबियों के संग छावनी में आया था उस ने उस के सब बड़े बेटों को घात किया था सो यहूदा के राजा यहोराम् का पुत्र अहज्याह् राजा हुआ ॥ २ । जब अहज्याह् राजा हुआ तब बयालीस[1] बरस का था और यरूशलेम् में एक ही बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतल्याह् था जो ओम्री की पोती थी ॥ ३ । वह अहाब् के घराने की सी चाल चला क्योंकि उस की माता उसे दुष्टता करने की संमति देती थी ॥ ४ । और वह अहाब् के घराने की नाईं वह काम करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है क्योंकि उस के पिता की मृत्यु के पीछे वे उस को ऐसी सम्मति देते थे जिस से उस का विनाश हुआ ॥ ५ । और वह उन की सम्मति के अनुसार चलता था और इस्राएल् के राजा अहाब् के पुत्र यहोराम् के संग गिलाद् के रामोत् में अराम् के राजा हजाएल् से लड़ने को गया और अरामियों ने योराम् को घायल किया ॥ ६ । सो राजा यहोराम् इस लिये लौट गया कि यिज्रेल् में उन घावों का इलाज कराए जो उस को अरामियों के हाथ से उस समय लगे जब वह हजाएल् के साथ लड़ रहा था और अहाब् का पुत्र योराम् जो यिज्रेल् में रोगी रहा इस से यहूदा के राजा यहोराम् का पुत्र अहज्याह्[2] उस को देखने गया ॥ ७ । और अहज्याह् का विनाश यहोवा की ओर से हुआ क्योंकि वह योराम् के पास गया था कैसे कि जब वह वहां पहुंचा तब उस के संग निम्शी के पोते येहू का साम्हना करने को निकल गया जिस का अभिषेक यहोवा ने इस लिये कराया था कि वह अहाब् के घराने को नाश करे ॥ ८ । और जब येहू अहाब् के घराने को दण्ड दे रहा था तब उस को यहूदा के हाकिम और अहज्याह् के भतीजे जो अहज्याह् के टहलुए थे मिले सो उस ने उन को घात किया ॥ ९ । तब उस ने अहज्याह् को ढूंढा वह तो शोमरोन् में छिपा था सो लोगों ने उस को पकड़ लिया और येहू के पास पहुंचाकर उस को मार डाला तब यह कहकर उस को मिट्टी दिई कि यह यहोशापात् का पोता है जो अपने सारे मन से यहोवा की खोज करता था। और अहज्याह् के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रह गया ॥

(यहोआश् का राज्य.)

१० । जब अहज्याह् की माता अतल्याह् ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया तब उस ने उठकर यहूदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया ॥ ११ । पर यहोशबत् जो राजा की बेटी थी उस ने अहज्याह् के पुत्र योआश् को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया यों राजा यहोराम् की बेटी यहोशबत् जो यहोयादा याजक की स्त्री और अहज्याह् की बहिन थी उस ने योआश् को अतल्याह् से ऐसा छिपा रक्खा कि वह उसे मार डालने न पाई ॥ १२ । और वह उन के पास परमेश्वर के भवन में छः बरस छिपा रहा इतने में अतल्याह् देश पर राज्य करती रही ॥

२३. सातवें बरस में यहोयादा ने हियाव बांधकर यरोहाम् के पुत्र अजर्याह् यहोहानान् के पुत्र यिश्माएल् ओबेद् के पुत्र अजर्याह् अदायाह् के पुत्र मासेयाह् और जिक्री के पुत्र एलीशापात् इन शतपतियों से वाचा

(१) २ राजा ८ . २६ में बाईस । (२) मूल में अजर्याह् ।

बान्धी ॥ २। तब वे यहूदा में घूमकर यहूदा के सब नगरों में से लेवीयों को और इस्राएल् के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को एकट्ठा करके यरूशलेम् को ले आये ॥ ३। और उस सारी मण्डली ने परमेश्वर के भवन में राजा के साथ वाचा बांधी और यहोयादा ने उन से कहा सुनो यह राजकुमार राज्य करेगा जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय कहा है ॥ ४। सो तुम यह काम करो अर्थात् तुम याजकों और लेवीयों की एक तिहाई के लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हों सो डेवढ़ीदारी करें ॥ ५। और एक तिहाई के लोग राजभवन पर रहें और एक तिहाई के लोग नेव के फाटक के पास रहें और सारे लोग यहोवा के भवन के आंगनों में रहें ॥ ६। पर याजकों और सेवा टहल करनेहारे लेवीयों को छोड़ और कोई यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए वे तो भीतर आएं क्योंकि वे पवित्र हैं पर सब लोग यहोवा के भवन की चौकसी करें ॥ ७। और लेवीय लोग अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा की चारों ओर रहें और जो कोई भवन के भीतर घुसे सो मार डाला जाए और तुम राजा के आते जाते उस के संग रहना ॥ ८। यहोयादा याजक की इन सारी आज्ञाओं के अनुसार लेवीयों और सब यहूदियों ने किया उन्हों ने विश्रामदिन को आनेहारे और विश्रामदिन को जानेहारे दोनों दलों के अपने अपने जनों को अपने साथ कर लिया क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी दल के लेवीयों को विदा न किया था ॥ ९। तब यहोयादा याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और फरियां और ढालें जो परमेश्वर के भवन में थीं दे दिईं ॥ १०। फिर उस ने उन सब लोगों को अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर उत्तरी कोने लों वेदी और भवन के पास राजा की चारों ओर उस की आड़ करके खड़ा कर दिया ॥ ११। तब उन्हों ने राजकुमार को बाहर ला उस के सिर पर मुकुट और साक्षीपत्र धरकर उसे राजा किया तब यहोयादा और उस के पुत्रों ने उस का अभिषेक किया और लोग बोल उठे राजा जीता रहे ॥ १२। जब अतल्याह् को उन लोगों का हौरा जो दौड़ते और राजा को सराहते थे सुन पड़ा तब वह लोगों के पास यहोवा के भवन में गई ॥ १३। और उस ने क्या देखा कि राजा द्वार के निकट खंभे के पास खड़ा है और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेहारे खड़े हैं और सब लोग आनन्द करते और तुरहियां बजा रहे हैं और गाने बजानेहारे बाजे बजाते और स्तुति करते हैं, तब अतल्याह् अपने वस्त्र फाड़कर राजद्रोह राजद्रोह यों पुकारने लगी ॥ १४। तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को बाहर लाकर उन से कहा कि उसे अपनी पांतियों के बीच से निकाल ले आओ और जो कोई उस के पीछे चले सो तलवार से मार डाला जाए। याजक ने तो यह कहा कि उसे यहोवा के भवन में न मार डालो ॥ १५। सो उन्हों ने दोनों ओर से उस को जगह दिई और वह राजभवन के घोड़ाफाटक के द्वार लों गई और वहां उन्हों ने उस को मार डाला ॥

१६। तब यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बंधाई ॥ १७। तब सब लोगों ने बाल् के भवन को जाकर ढा दिया और उस की वेदियों और मूरतों को टुकड़े टुकड़े किया और मत्तान् नाम बाल् के याजक को वेदियों के साम्हने ही घात किया ॥ १८। तब यहोयादा ने यहोवा के भवन के अधिकारी उन लेवीय याजकों के अधिकार में ठहरा दिये जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन पर दल दल करके इस लिये ठहराया था कि जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसे ही वे यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें और दाऊद की चलाई हुई विधि[1] के अनुसार आनन्द करें और गाएं ॥ १९। और उस ने यहोवा के भवन के फाटकों पर डेवढ़ीदारों को इस लिये खड़ा किया कि जो किसी रीति से अशुद्ध हो सो भीतर जाने न पाए ॥ २०। और वह शतपतियों और रईसों और प्रजा पर प्रभुता करनेहारों और देश के सब लोगों को साथ करके राजा को यहोवा के भवन से नीचे

(१) मूल में, दाऊद के हाथों।

ले गया और ऊंचे फाटक से होकर राजभवन में आया और राजा को राजगद्दी पर बैठाया ॥ २१ । सो सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शांति हुई । अतल्याह् तो तलवार से मार डाली गई थी ॥

२४. जब योआश् राजा हुआ तब वह सात बरस का था और यरूशलेम् में चालीस बरस राज्य करता रहा उस की माता का नाम सिब्या था जो बेर्शबा की थी ॥ २ । और जब लों यहोयादा याजक जीता रहा तब लों योआश् वह काम करता रहा जो यहोवा के लेखे ठीक है ॥ ३ । और यहोयादा ने उस के दो ब्याह कराये और उस ने बेटे बेटियां जन्माईं ॥ ४ । इस के पीछे योआश् के मन में यहोवा के भवन की मरम्मत करने की मनसा उपजी ॥ ५ । सो उस ने याजकों और लेवीयों को एकट्ठा करके कहा बरस बरस यहूदा के नगरों में जा जाकर सब इस्राएलियों से रुपैया लिया करो जिस से तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो देखो इस काम में फुर्ती करो । तौभी लेवीयों ने कुछ फुर्ती न किई ॥ ६ । सो राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलवाकर पूछा क्या कारण है कि तू ने लेवियों को दृढ़ आज्ञा नहीं दिई कि यहूदा और यरूशलेम् से उस चन्दे का रुपैया ले आओ जिस का नियम यहोवा के दास मूसा और इस्राएल् की मण्डली ने साक्षीपत्र के तंबू के निमित्त चलाया था ॥ ७ । उस दुष्ट स्त्री अतल्याह् के बेटों ने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया और यहोवा के भवन की सब पवित्र किई हुई वस्तुएं बाल् देवताओं को दे दिई थीं ॥ ८ । और राजा ने एक संदूक बनाने की आज्ञा दिई और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रक्खा गया ॥ ९ । तब यहूदा और यरूशलेम् में यह प्रचार किया गया कि जिस चंदे का नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इस्राएल् में चलाया था उस का रुपैया यहोवा के निमित्त ले आओ ॥ १० । सो सारे हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपैया ले आकर जब लों चन्दा पूरा न हुआ तब लों संदूक में डालते गये ॥ ११ । और जब जब वह संदूक लेवीयों के हाथ से राजा के प्रधानों के पास पहुंचाया जाता और यह जान पड़ता था कि उस में रुपैया बहुत है तब तब राजा के प्रधान और महायाजक का नाइब आकर संदूक को खाली करते तब उसे लेकर फिर उस के स्थान पर रख देते थे ॥ १२ । उन्हों ने दिन दिन ऐसा किया और बहुत रुपैया एकट्ठा किया तब राजा और यहोयादा ने वह रुपैया यहोवा के भवन का काम करानेहारों को दे दिया और उन्हों ने राजों और बढ़इयों को यहोवा के भवन के सुधारने के लिये और लोहारों और ठठेरों को यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये मजूरी पर रक्खा ॥ १३ । सो कारीगर काम करते गये और काम पूरा होता गया[१] और उन्हों ने परमेश्वर का भवन जैसे का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया ॥ १४ । जब उन्हों ने वह काम निपटा दिया तब वे शेष रुपैये को राजा और यहोयादा के पास ले गये और उस से यहोवा के भवन के लिये पात्र बनाये गये अर्थात् सेवा टहल करने और होमबलि चढ़ाने के पात्र और धूपदान आदि सोने चांदी के पात्र । और जब लों यहोयादा जीता रहा तब लों यहोवा के भवन में होमबलि नित्य चढ़ाये जाते थे ॥ १५ । पर यहोयादा बूढ़ा हो गया और दीर्घायु होकर मर गया । जब वह मरा तब एक सौ तीस बरस का हुआ था ॥ १६ । और उस को दाऊदपुर में राजाओं के बीच मिट्टी दिई गई क्योंकि उस ने इस्राएल् में और परमेश्वर के और उस के भवन के विषय भला किया था ॥

१७ । यहोयादा के मरने के पीछे यहूदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर उसे दण्डवत किई और राजा ने उन की मानी ॥ १८ । तब वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे सो उन के ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम् पर भड़का ॥ १९ । तौभी उस

(१) मूल में काम पर पट्टी चढ़ी ।

ने उन के पास नबी भेजे कि उन को यहोवा के पास फेर लाएं और इन्हों ने इन्हें चिता दिया पर उन्हों ने कान न लगाया॥ २०। और परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह् में समा गया और वह लोगों से ऊपर खड़ा होकर उन से कहने लगा परमेश्वर यों कहता है कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो ऐसा करके तुम भाग्यवान नहीं हो सकते देखो तुम ने तो यहोवा को त्याग दिया है इस कारण उस ने भी तुम को त्याग दिया है॥ २१। तब लोगों ने उस से द्रोह की गोष्ठी करके राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आंगन में उस पर पत्थरवाह किया॥ २२। यों राजा योआश् ने वह प्रीति बिसराकर जो यहोयादा ने उस से किई थी उस के पुत्र को घात किया और मरते समय उस ने कहा यहोवा इस पर दृष्टि करके इस का लेखा ले॥ २३। नये बरस के लगते अरामियों की सेना ने उस पर चढ़ाई किई और यहूदा और यरूशलेम् को आकर प्रजा में से सब हाकिमों को नाश किया और उन का सारा धन लूटकर दमिश्क के राजा के पास भेजा॥ २४। अरामियों की सेना थोड़े ही पुरुषों की तो आई पर यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना उन के हाथ कर दिई इस कारण कि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर को त्याग दिया था। और यहोआश् को भी उन्हों ने दण्ड दिया॥ २५। और जब वे उसे बहुत ही रोगी छोड़ गये तब उस के कर्मचारियों ने यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण उस से द्रोह की गोष्ठी करके उसे उस के बिछौने ही पर ऐसा मारा कि वह मर गया और उन्हों ने उस को दाऊदपुर में मिट्टी दिई पर राजाओं के कबरिस्तान में नहीं॥ २६। जिन्हों ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी किई सो ये थे अर्थात् शिमात् अम्मोनिन् का पुत्र जाबाद् और शिम्रीत् मोआबिन् का पुत्र यहोजाबाद्॥ २७। उस के बेटों के विषय और उस के विरुद्ध जो बड़े दण्ड की नबूवत हुई उस के और परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उस का पुत्र अमस्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(अमस्याह् का राज्य.)

२५. जब अमस्याह् राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम् में उनतीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यहोअद्दान् था जो यरूशलेम् की थी॥ २। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है पर खरे मन से न किया॥ ३। जब राज्य उस के हाथ में स्थिर हो गया तब उस ने अपने उन कर्मचारियों को मार डाला जिन्हों ने उस के पिता राजा को मार डाला था॥ ४। पर उन के लड़केबालों को उस ने न मार डाला क्योंकि उस ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार किया जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो सोई उस पाप के कारण मार डाला जाए॥ ५। और अमस्याह् ने यहूदा को बरन सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को एकट्ठा करके उन के पितरों के घरानों के अनुसार सहस्रपतियों और शतपतियों के अधिकार में ठहराया और उन में से जितनों की अवस्था बीस बरस की वा उस से अधिक थी उन की गिनती करके तीन लाख भाला चलानेहारे और ढाल उठानेहारे बड़े बड़े योद्धा पाये॥ ६। फिर उस ने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को भी एक सौ किक्कार् चान्दी दे बुलवाकर रक्खा॥ ७। परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उस के पास आकर कहा हे राजा इस्राएल् की सेना तेरे संग जाने न पाए क्योंकि यहोवा इस्राएल् अर्थात् एप्रैम् की सारी सन्तान के संग नहीं रहता॥ ८। तौभी तू जाकर पुरुषार्थ कर और युद्ध के लिये हियाव बांध परमेश्वर तुझे शत्रुओं के साम्हने गिराएगा क्योंकि सहायता करने और गिरा देने दोनों के लिये परमेश्वर सामर्थी है॥ ९। अमस्याह् ने परमेश्वर के जन से पूछा फिर जो सौ किक्कार् चान्दी मैं इस्राएली दल को दे चुका हूं उस के

विषय क्या करूं । परमेश्वर के जन ने उत्तर दिया यहोवा तुझे इस से भी बहुत अधिक दे सकता है ॥ १० । तब अमस्याह् ने उन्हें अर्थात् उस दल को जो एप्रैम् की ओर से उस के पास आया था अलग कर दिया कि वे अपने स्थान को लौट जाएं । तब उन का कोप यहूदियों पर बहुत भड़क उठा और वे अत्यन्त कोपित होकर अपने स्थान को लौट गये ॥ ११ । पर अमस्याह् हियाव बांधकर अपने लोगों को ले चला और लोन की तराई को जाकर दस हजार सेईरियों को मार दिया ॥ १२ । और और दस हजार को यहूदियों ने बंधुआ करके ढांग की चोटी पर ले जाकर ढांग की चोटी पर से गिरा दिया सो सब चूर चूर हो गये ॥ १३ । पर उस दल के पुरुष जिसे अमस्याह् ने लौटा दिया कि वे उस के संग युद्ध करने को न जाएं शोमरोन् से बेथोरोन् लों यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े और उन के तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले लिई ॥

१४ । जब अमस्याह् एदोमियों का संहार करके लौट आया उस के पीछे उस ने सेईरियों के देवताओं को ले आकर अपने देवता करके खड़ा किया और उन्हीं के साम्हने दण्डवत् करने और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा ॥ १५ । सो यहोवा का कोप अमस्याह् पर भड़क उठा और उस ने उस के पास एक नबी भेजा जिस ने उस से कहा जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सके उन की खोज में तू क्यों लगा ॥ १६ । वह उस से बातें कही रहा था कि उस ने उस से पूछा क्या हम ने तुझे राजमंत्री ठहरा दिया है चुप रह क्या तू मार खाना चाहता है । तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया कि मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को ठाना है क्योंकि तू ने ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी ॥

१७ । तब यहूदा के राजा अमस्याह् ने सम्मति लेकर इस्राएल् के राजा योआश् के पास जो येहू का पोता और यहोआहाज् का पुत्र था यों कहला भेजा कि आ हम एक दूसरे का साम्हना करें ॥ १८ । इस्राएल् के राजा योआश् ने यहूदा के राजा अमस्याह् के पास यों कहला भेजा कि लबानोन् पर की एक झड़बेरी ने लबानोन् के एक देवदारु के पास कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को व्याह दे इतने में लबानोन् में का कोई बनैला पशु पास से चला गया और उस झड़बेरी को रौंद डाला ॥ १९ । तू कहता है कि मैं ने एदोमियों को जीत लिया है इस कारण तू फूल उठा और बड़ाई मारता है । अपने घर में रह जा तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ डालेगा जिस से तू क्या वरन यहूदा भी नीचा खाएगा ॥ २० । पर अमस्याह् ने न माना । यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ कि वह उन्हें उन के शत्रुओं के हाथ कर दे क्योंकि वे एदोम् के देवताओं की खोज में लग गये थे ॥ २१ । सो इस्राएल् के राजा योआश् ने चढ़ाई किई और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह् ने यहूदा देश के बेतशेमेश् में एक दूसरे का साम्हना किया ॥ २२ । और यहूदा इस्राएल् से हार गया और एक एक अपने अपने डेरे को भागा ॥ २३ । तब इस्राएल् के राजा योआश् ने यहूदा के राजा अमस्याह् को जो यहोआहाज् का पोता और योआश् का पुत्र था बेतशेमेश् में पकड़ा और यरूशलेम् को ले गया और यरूशलेम् की शहरपनाह् में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक लों चार सौ हाथ गिरा दिये ॥ २४ । और जितना सोना चान्दी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में ओबेदेदोम् के पास मिले और राजभवन में जितना खजाना था उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन् को लौट गया ॥

२५ । यहोआहाज् के पुत्र इस्राएल् के राजा योआश् के मरने के पीछे योआश् का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह् पन्द्रह बरस लों जीता रहा ॥ २६ । आदि से अन्त लों अमस्याह् के और काम क्या यहूदा और इस्राएल् के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ॥ २७ । जिस समय अमस्याह् यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया उस समय से यरूशलेम् में उस के विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी और वह लाकीश् को भाग गया सो दूतों ने लाकीश्

लों उस का पीछा करके उस को वहीं मार डाला ॥ २८ । तब वह घोड़ों पर रखकर पहुंचाया गया और उसे उस के पुरखाओं के बीच यहूदा के पुर में मिट्टी दिई गई ॥

(उज्जियाह् का राज्य)

२६. तब सारी यहूदी प्रजा ने उज्जियाह् को जो सोलह बरस का था लेकर उस के पिता अमस्याह् के स्थान पर राजा कर दिया ॥ २ । जब राजा अमस्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया उस के पीछे उज्जियाह् ने एलोत् नगर को दृढ़ करके यहूदा के वश में फिर कर लिया ॥ ३ । जब उज्जियाह् राज्य करने लगा तब सोलह बरस का था और यरूशलेम् में बावन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यकोल्याह् था जो यरूशलेम् की थी ॥ ४ । जैसे उस का पिता अमस्याह् वह किया करता था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसे ही वह भी करता था ॥ ५ । और जकर्याह् के दिनों में जो परमेश्वर के दर्शन के विषय समझ रखता था[१] वह परमेश्वर की खोज में लगा रहता था और जब तक वह यहोवा की खोज में लगा रहा तब तक परमेश्वर उस को भाग्यवान किये रहा ॥ ६ । सो उस ने जाकर पलिश्तियों से युद्ध किया और गत् यब्ने और अश्दोद् की शहरपनाहें गिरा दिईं और अश्दोद् के आसपास और पलिश्तियों के बीच बीच नगर बसाये ॥ ७ । और परमेश्वर ने पलिश्तियों और गूर्बाल्वासी अरबियों और मूनियों के विरुद्ध उस की सहायता किई ॥ ८ । और अम्मोनी उज्जियाह् को भेंट देने लगे बरन उस की कीर्त्ति मिस्र के सिवाने लों भी फैल गई क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था ॥ ९ । फिर उज्जियाह् ने यरूशलेम् में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट बनवाकर दृढ़ किये ॥ १० । और उस के बहुत ढोर थे सो उस ने जंगल में और नीचे के देश और चौरस देश में गुम्मट बनवाये और बहुत से कुण्ड खुदवाये और पहाड़ों पर और कर्म्मेल् में उस के किसान और दाख की बारियों के माली थे क्योंकि वह खेती का चाहनेहारा था ॥ ११ । फिर उज्जियाह् के योद्धाओं की एक सेना थी, जो गिनती यीएल् मुंशी और मासेयाह् सरदार हनन्याह् नाम राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे उस के अनुसार वह दल दल करके लड़ने को जाती थी ॥ १२ । पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे उन की पूरी गिनती दो हजार छः सौ थी ॥ १३ । और उन के अधिकार में तीन लाख साढ़े सात हजार की एक बड़ी सेना थी जो शत्रुओं के विरुद्ध राजा की सहायता करने को बड़े बल से युद्ध करनेहारे थे ॥ १४ । इन के लिये अर्थात् सारी सेना के लिये उज्जियाह् ने ढालें भाले टोप झिलम धनुष और गोफन के पत्थर तैयार किये ॥ १५ । फिर उस ने यरूशलेम् में गुम्मटों और कंगूरों पर रखने को चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाये जिन के द्वारा तीर और बड़े बड़े पत्थर फेंके जाएं । और उस की कीर्त्ति दूर दूर लों फैल गई क्योंकि उसे अद्भुत सहायता यहां तक मिली कि वह सामर्थी हो गया ॥

१६ । परन्तु जब वह सामर्थी हो गया तब उस का मन फूल उठा और उस ने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया ॥ १७ । और अजर्याह् याजक उस के पीछे भीतर गया और उस के संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे गये ॥ १८ । और उन्हों ने उज्जियाह् राजा का साम्हना करके उस से कहा हे उज्जियाह् यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं हारून की सन्तान अर्थात् उन याजकों ही का है जो धूप जलाने को पवित्र किये गये हैं तू पवित्रस्थान से निकल जा तू ने विश्वासघात किया है यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा ॥ १९ । तब उज्जियाह् धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला उठा और वह याजकों पर झुंझला रहा था कि याजकों के देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उस के माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ ॥ २० । और अजर्याह् महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि किई

(१) वा. जो परमेश्वर के भय मानने की शिक्षा देता था ।

और क्या देखा कि उस के माथे पर कोढ़ निकला है सो उन्हों ने उस को वहां से झटपट निकाल दिया वरन यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है उस ने आप बाहर जाने को उतावली किई॥ २१। और उज्जिय्याह् राजा मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था वह तो यहोवा के भवन में जाने न पाता था[1] और उस का पुत्र योताम् राजघराने के काम पर ठहरा और लोगों का न्याय करता था॥ २२। आदि से अन्त लों उज्जिय्याह् के और कामों का वर्णन तो आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी ने लिखा॥ २३। निदान उज्जिय्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पुरखाओं के निकट राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दिई गई। उन्हों ने तो कहा कि वह कोढ़ी था। और उस का पुत्र योताम् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योताम् का राज्य)

२७. जब योताम् राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम् में सोलह बरस तक राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यरूशा था जो सादोक् की बेटी थी॥ २। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है अर्थात् जैसा उस के पिता उज्जिय्याह् ने किया था ठीक वैसा ही उस ने किया तौभी वह यहोवा के मन्दिर में न घुसा। और प्रजा के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते थे॥ ३। उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरले फाटक को बनाया और ओपेल् की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया॥ ४। फिर उस ने यहूदा के पहाड़ी देश में कई एक नगर दृढ़ किये और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाये॥ ५। और वह अम्मोनियों के राजा से युद्ध करके उन पर प्रबल हो गया सो उसी बरस में अम्मोनियों ने उस को सौ किक्कार् चांदी और दस दस हजार कोर् गेहूं और जव दिये और फिर दूसरे और तीसरे बरस में भी उन्हों ने उसे उतना ही दिया॥ ६। यों योताम् सामर्थी हो गया क्योंकि वह अपने आप को अपने परमेश्वर यहोवा के सन्मुख जानकर खरी चाल चलता था॥ ७। योताम् के और काम और उस के सब युद्ध और उस की चाल चलन इन बातों का वर्णन तो इस्राएल् और यहूदा के राजाओं के वृतान्त की पुस्तक में लिखा है॥ ८। जब वह राजा हुआ तब तो पचीस बरस का था और यरूशलेम् में सोलह बरस तक राज्य करता रहा॥ ९। निदान योताम् अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आहाज् उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आहाज् का राज्य)

२८. जब आहाज् राज्य करने लगा तब वह बीस बरस का था और सोलह बरस तक यरूशलेम् में राज्य करता रहा और अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम नहीं किया जो यहोवा के लेखे ठीक है॥ २। परन्तु वह इस्राएल् के राजाओं की सी चाल चला और बाल् देवताओं की मूर्त्तियां ढलवाकर बनाईं, ३। और हिन्नोम् के बेटे की तराई में धूप जलाया और उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राए-लियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था अपने लड़केबालों को आग में होम कर दिया॥ ४। और ऊंचे स्थानों पर और पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था॥ ५। सो उस के परमेश्वर यहोवा ने उस को अरामियों के राजा के हाथ कर दिया और वे उस को जीतकर उस के बहुत से लोगों को बंधुआ करके दमिश्क को ले गये। और वह इस्राएल् के राजा के वश में कर दिया गया जिस ने उसे बड़ी मार से मारा॥ ६। और रमल्याह् के पुत्र पेकह् ने यहूदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हजार लोगों को जो सब के सब वीर थे घात किया क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था॥ ७। और जिक्री नाम एक एप्रैमी वीर ने मासेयाह् नाम एक राजपुत्र को और राजभवन के प्रधान अज्रीकाम् को और एल्काना को जो राजा के नीचे था मार डाला॥ ८। और

(१) मूल में भवन से कटा था।

इस्राएली अपने भाइयों में से स्त्रियों बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बंधुआ करके और उन की बहुत लूट भी छीनकर शोमरोन् की ओर ले चले ॥ ९ । पर ओदेद् नाम यहोवा का एक नबी वहां था वह शोमरोन् को आनेवाली सेना से मिलने को जाकर कहने लगा सुनो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने यहूदियों पर झुंझलाकर उन को तुम्हारे हाथ कर दिया है और तुम ने उन को ऐसा क्रोध करके घात किया जिस की चिल्लाहट स्वर्ग लों पहुंच गई है॥ १० । और अब तुम ने ठाना है कि यहूदियों और यरूशलेमियों को अपने दास दासी करके दबाये रक्खें क्या तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा के यहां दोषी नहीं हो ॥ ११ । सो अब मेरी सुनो और इन बन्धुओं को जिन्हें तुम अपने भाइयों में से बन्धुआ करके ले आये हो लौटा दो यहोवा का कोप तो तुम पर भड़का है ॥ १२ । तब एप्रैमियों के कितने मुख्य पुरुष अर्थात् योहानान् का पुत्र अजर्याह् मशिल्लेमोत् का पुत्र बेरेक्याह् शल्लूम् का पुत्र यहिज़्किय्याह् और हद्लै का पुत्र अमासा लड़ाई से आनेहारों का साम्हना करके, १३ । उन से कहने लगे तुम इन बंधुओं को यहां मत ले आओ क्योंकि तुम ने वह ठाना है जिस के कारण हम यहोवा के यहां दोषी हो जाएंगे और उस से हमारा पाप और दोष बढ़ जाएगा, हमारा दोष तो बड़ा है और इस्राएल् पर बहुत कोप भड़का है ॥ १४ । सो उन हथियारबंदों ने बंधुओं और लूट को हाकिमों और सारी सभा के साम्हने छोड़ दिया ॥ १५ । तब जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उन्हों ने उठकर बंधुओं को ले लिया और लूट में से सब नंगे लोगों को कपड़े और जूतियां पहिनाईं और खाना खिलाया और पानी पिलाया और तेल मला और सब निर्बल लोगों को गदहों पर चढ़ाकर यरीहो को जो खजूर का नगर कहावता है उन के भाइयों के पास पहुंचा दिया तब शोमरोन् को लौट गये ॥

१६ । उस समय राजा आहाज़् ने अश्शूर् के राजाओं के पास भेजकर सहायता मांगी ॥ १७ । क्योंकि एदोमियों ने यहूदा में आकर उस को मारा और बंधुओं को ले गये थे ॥ १८ । और पलिश्तियों ने नीचे के देश और यहूदा के दक्खिन देश के नगरों पर चढ़ाई करके बेत्शेमेश् अय्यालोन् और गदेरोत् को और अपने अपने गांवों समेत सोको तिम्ना और गिम्ज़ो को ले लिया और उन में रहने लगे थे॥ १९ । यों यहोवा ने इस्राएल् के राजा आहाज़् के कारण यहूदा को दबा दिया क्योंकि वह निरंकुश होकर चला और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया ॥ २० । सो अश्शूर् का राजा तिल्गत्पिल्नेसेर् उस के विरुद्ध आया और उस को कष्ट दिया बल नहीं दिया ॥ २१ । आहाज़् ने तो यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से धन निकालकर[1] अश्शूर् के राजा को दिया पर इस से उस की कुछ सहायता न हुई ॥ २२ । और क्लेश के समय इस राजा आहाज़् ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया ॥ २३ । और उस ने दमिश्क के देवताओं के लिये जिन्हों ने उस को मारा था बलि चढ़ाया क्योंकि उस ने यह सोचा कि अरामी राजाओं के देवताओं ने उन की सहायता किई सो मैं उन के लिये बलि करूंगा कि वे मेरी सहायता करें। परन्तु वे उस के और सारे इस्राएल् के नीचा खाने के कारण हुए ॥ २४ । फिर आहाज़् ने परमेश्वर के भवन के पात्र बटोरकर तुड़वा डाले और यहोवा के भवन के द्वारों को बन्द कर दिया और यरूशलेम् के सब कोनों में वेदियां बनाईं ॥ २५ । और यहूदा के एक एक नगर में उस ने पराये देवताओं को धूप जलाने के लिये ऊंचे स्थान बनाये और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई॥ २६ । और उस के और कामों और आदि से अन्त लों उस की सारी चाल चलन का वर्णन यहूदा और इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखा है ॥ २७ । निदान आहाज़् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को यरूशलेम् नगर में मिट्टी दिई गई पर वह इस्राएल् के राजाओं के कबरिस्तान में पहुंचाया न गया । और उस का पुत्र हिज़्किय्याह् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

---

(१) मूल में बांटकर ।

(हिज़्किय्याह् की किई हुई सुधराई)

२९. जब हिज़्किय्याह् राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और उनतीस बरस लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अबिय्याह् था जो जकर्याह् की बेटी थी॥ २। जैसे उस के मूलपुरुष दाऊद ने वही किया था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसा ही उस ने भी किया॥ ३। अपने राज्य के पहिले बरस के पहिले महीने में उस ने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिये और उन की मरम्मत भी कराई॥ ४। तब उस ने याजकों और लेवीयों को ले आकर पूरब के चौक में एकट्ठा किया, ५। और उन से कहने लगा हे लेवीयो मेरी सुनो अब अपने अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो और पवित्रस्थान में से मैल निकालो॥ ६। देखो हमारे पुरखाओं ने विश्वासघात करके वह किया था जो हमारे परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है और उस को त्याग करके यहोवा के निवास से मुंह फेरकर उस को पीठ दिखाई थी॥ ७। फिर उन्हों ने ओसारे के द्वार बन्द किये और दीपकों को बुझा दिया था और पवित्रस्थान में इस्राएल् के परमेश्वर के लिये न तो धूप जलाया न होमबलि चढ़ाया था॥ ८। सो यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम् पर भड़का है और उस ने ऐसा किया कि वे मारे मारे फिरे और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएं जैसे कि तुम अपनी आंखों से देख सकते हो॥ ९। देखो इस कारण हमारे बाप तलवार से मारे गये और हमारे बेटे बेटियां और स्त्रियां बंधुआई में चली गई है॥ १०। अब मेरे मन में यह है कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा से वाचा बांधूं इस लिये कि उस का भड़का हुआ कोप हम पर से उतर जाए॥ ११। हे मेरे बेटो ढीलाई न करो देखो यहोवा ने अपने सन्मुख खड़े रहने और अपनी सेवा टहल करने और अपने टहलुए और धूप जलानेहारे होने के लिये तुम्हीं को चुन लिया है॥

१२। सो ये लेवीय उठ खड़े हुए अर्थात् कहातियों में से अमासै का पुत्र महत् और अजर्याह् का पुत्र योएल् और मरारीयों में से अब्दी का पुत्र कीश् और यहल्लेलेल् का पुत्र अजर्याह् और गेर्शोनियों में से जिम्मा का पुत्र योआह् और योआह् का पुत्र एदेन्, १३। और एलीसापान् की सन्तान में से शिम्री और यूएल् और आसाप् की सन्तान में से जकर्याह् और मत्तन्याह् १४। और हेमान् की सन्तान में से यहूएल् और शिमी और यदूतून् की सन्तान में से शमायाह् और उज्जीएल्॥ १५। ये अपने भाइयो को एकट्ठा कर अपने अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोवा से वचन पाकर दिई थी यहोवा के भवन के शुद्ध करने के लिये भीतर गये॥ १६। तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी भाग के शुद्ध करने के लिये उस में जाकर यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएं मिलीं उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के आंगन में ले गये और लेवीयों ने उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन् के नाले में पहुंचा दिया॥ १७। पहिले महीने के पहिले दिन को उन्हों ने पवित्र करने का आरंभ किया और उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे लों आ गये सो उन्हों ने यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया और पहिले महीने के सोलहवें दिन को उन्हों ने उसे निपटा दिया॥ १८। तब उन्हों ने राजा हिज़्किय्याह् के पास भीतर जाकर कहा हम यहोवा के सारे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर चुके॥ १९। और जितने पात्र राजा आहाज़् ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिये उन को हम ने ठीक करके पवित्र किया है और वे यहोवा की वेदी के साम्हने रक्खे हुए हैं॥

२०। सो राजा हिज़्किय्याह् सवेरे उठकर नगर के हाकिमों को एकट्ठा करके यहोवा के भवन को गया॥ २१। तब वे राज्य और पवित्रस्थान और यहूदा के निमित्त सात बछड़े सात मेढ़े सात भेड़ के बच्चे और पापबलि के लिये सात बकरे ले आये और उस ने हारून की सन्तान के लेवीयों को उन्हें यहोवा की वेदी पर चढ़ाने की आज्ञा दिई॥ २२। सो उन्हों

ने बकड़े बलि किये और याजकों ने उन का लोहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया तब उन्हों ने मेढ़े बलि किये और उन का लोहू भी वेदी पर छिड़क दिया और भेड़ के बच्चे बलि किये और उन का भी लोहू वेदी पर छिड़क दिया॥ २३। तब वे पापबलि के बकरों को राजा और मण्डली के साम्हने समीप ले आये और उन पर अपने अपने हाथ टेके॥ २४। तब याजकों ने उन को बलि करके उन का लोहू वेदी पर पापबलि किया जिस से सारे इस्राएल् के लिये प्रायश्चित्त किया जाए क्योंकि राजा ने होमबलि और पापबलि सारे इस्राएल् के लिये किये जाने की आज्ञा दिई थी॥ २५। फिर उस ने दाऊद और राजा के दर्शी गाद् और नातान् नबी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उस के नबियों के द्वारा आई थी झांझ सारंगियां और वीणाएं लिये हुए लेवीयों को यहोवा के भवन में खड़ा किया॥ २६। सो लेवीय दाऊद के चलाये बाजे लिये हुए और याजक तुरहियां लिये हुए खड़े हुए॥ २७। तब हिज़्किय्याह् ने वेदी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दिई और जब होमबलि चढ़ने लगा तब यहोवा का गीत आरंभ हुआ और तुरहियां और इस्राएल् के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे॥ २८। और सारी मण्डली के लोग दण्डवत् करते और गानेहारे गाते और तुरही फूंकनेहारे फूंकते रहे यह सब तब लों होता रहा जब लों होमबलि चढ़ न चुका॥ २९। और जब बलि चढ़ चुका तब राजा और जितने उस के संग वहां थे उन सभों ने सिर झुकाकर दण्डवत् किई॥ ३०। और राजा हिज़्किय्याह् और हाकिमों ने लेवीयों को आज्ञा दिई कि दाऊद और आसाप् दर्शी के भजन[1] गाकर यहोवा की स्तुति करो सो उन्हों ने आनन्द के साथ स्तुति किई और सिर नवाकर दण्डवत् किई॥ ३१। तब हिज़्किय्याह् कहने लगा अब तुम ने यहोवा के निमित्त अपना संस्कार किया है सो समीप आकर यहोवा के भवन में मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचाओ। सो मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचा दिये और जितने अपनी

(१) मूल में वचन।

इच्छा से देने चाहते थे उन्हों ने होमबलि भी पहुंचाये॥ ३२। जो होमबलिपशु मण्डली के लोग ले आये उन की गिनती सत्तर बैल एक सौ मेढ़े और दो सौ भेड़ के बच्चे थी ये सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम में आये॥ ३३। और पवित्र किये हुए पशु छः सौ बैल और तीन हजार भेड़बकरियां थीं॥ ३४। परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे कि वे सब होमबलिपशुओं की खालें न उतार सके सो उन के भाई लेवीय तब लों उन की सहायता करते रहे जब लों वह काम निपट न गया और याजकों ने अपने को पवित्र न किया क्योंकि लेवीय अपने को पवित्र करने के लिये याजकों से अधिक सीधे मन के थे॥ ३५। और फिर होमबलिपशु बहुत थे और मेलबलिपशुओं की चर्बी भी बहुत थी और एक एक होमबलि के साथ अर्घ भी देना पड़ा। यों यहोवा के भवन में की उपासना ठीक किई गई॥ ३६। तब हिज़्किय्याह् और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण आनन्दित हुए जो यहोवा ने अपनी प्रजा के लिये तैयार किया था क्योंकि वह काम अचानक हो गया था॥

(हिज़्किय्याह् का माना हुआ फसह्)

३०. फिर हिज़्किय्याह् ने सारे इस्राएल् और यहूदा में कहला भेजा और एप्रैम् और मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे कि तुम यरूशलेम् को यहोवा के भवन में इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह् मानने को आओ॥ २। राजा और उस के हाकिमों और यरूशलेम् की मण्डली ने तो सम्मति किई थी कि हम फसह् को दूसरे महीने में मानेंगे॥ ३। क्योंकि वे उसे उस समय में इस कारण न मान सकते थे कि थोड़े ही याजकों ने अपने अपने को पवित्र किया था और प्रजा के लोग यरूशलेम् में एकट्ठे न हुए थे॥ ४। और यह बात राजा और सारी मण्डली को अच्छी लगी॥ ५। तब उन्हों ने यह ठहरा दिया कि बेर्शेबा से ले दान् लों के सारे इस्राएलियों में यह प्रचार किया जाए कि यरूशलेम् में इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह् मानने को चले आओ। बहुत लोगों ने तो उस को वैसा न माना

था जैसा लिखा है सो हरकारे राजा और उस के हाकिमों से चिट्ठियां लेकर राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल् और यहूदा में घूमे और यह कहते गये कि हे इस्राएलियो इब्राहीम इस्हाक् और इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो कि वह तुम बचे हुए लोगों की ओर फिरे जो अश्शूर् के राजाओं के हाथ से बचे हुए हो ॥ ७। और अपने पुरखाओं और भाइयों के समान मत बनो जिन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था और उस ने उन्हें चकित होने का कारण कर दिया जैसे कि तुम्हें देख पड़ता है ॥ ८। अब अपने पुरखाओं की नाईं हठ न करो यहोवा को वचन[1] देकर उस के उस पवित्रस्थान को आओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया है और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो कि उस का भड़का हुआ कोप तुम पर से उतर जाए ॥ ९। यदि तुम यहोवा की ओर फिरो तो जो तुम्हारे भाइयों और लड़केवालों को बन्धुआ करके ले गये हैं सो उन पर दया करेंगे और वे इस देश में लौटने पाएंगे क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है और यदि तुम उस की ओर फिरो तो वह अपना मुंह तुम से फेरे न रहेगा॥ १०। यों हरकारे एप्रैम् और मनश्शे के देशों में नगर नगर होते हुए जबूलून् तक गये पर उन्हों ने उन की हंसी किई और उन्हें ठट्ठों में उड़ाया॥ ११। तौभी आशेर् मनश्शे और जबूलून् में से कुछ लोग दीन होकर यरूशलेम् को आये ॥ १२। और यहूदा में भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति हुई कि वे एक मन होकर जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने यहोवा के वचन के अनुसार दिई थी उसे मानने को तत्पर हुए॥ १३। सो बहुत लोग यरूशलेम् में इस लिये एकट्ठे हुए कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व्व मानें और बहुत भारी सभा हो गई ॥ १४। और उन्हों ने उठकर यरूशलेम् में की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किद्रोन् नाले में फेंक दिया ॥ १५। तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्हों ने फसह् के पशु बलि किये सो याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आये ॥ १६। और वे अपने नियम के अनुसार अर्थात् परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने अपने स्थान पर खड़े हुए और याजकों ने लोहू को लेवीयों के हाथ से लेकर छिड़क दिया ॥ १७। क्योंकि सभा में बहुतेरे थे जिन्हों ने अपने को पवित्र न किया था सो सब अशुद्ध लोगों के फसह् के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया कि उन को यहोवा के लिये पवित्र करें ॥ १८। बहुत से लोगों ने अर्थात् एप्रैम् मनश्शे इस्साकार् और जबूलून् में से बहुतों ने अपने को शुद्ध न किया था तौभी वे फसह् के पशु का मांस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकि हिज़किय्याह् ने उन के लिये यह प्रार्थना किई थी कि यहोवा जो भला है सो उन सभों के पाप ढांप दे, १९। जो परमेश्वर को अर्थात् अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाये हैं चाहे वे पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न हों ॥ २०। और यहोवा ने हिज़किय्याह् की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया था ॥ २१। और जो इस्राएली यरूशलेम् में हाजिर थे सो सात दिन लों अखमीरी रोटी का पर्व्व बड़े आनन्द से मानते रहे और दिन दिन लेवीय और याजक ऊंचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे ॥ २२। और जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धिमानी के साथ करते थे उन को हिज़किय्याह् ने धीरज बन्धाया। यों वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करके उस नियत पर्व्व के सातों दिन खाते रहे ॥ २३। तब सारी सभा ने सम्मति किई कि हम और सात दिन मानेंगे सो उन्हों ने और सात दिन आनन्द से माने ॥ २४। क्योंकि यहूदा के राजा हिज़किय्याह् ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़ बकरियां दे दिईं

(१) मूल में हाथ।

(१) मूल में हाथ।

और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़ बकरियां दिईं[1] और बहुत से याजकों ने अपने को पवित्र किया ॥ २५ । तब याजकों और लेवीयों समेत यहूदा की सारी सभा और इस्राएल् में से आये हुओं की सभा और इस्राएल् के देश से आये हुए और यहूदा में रहनेहारे परदेशी इन सभी ने आनन्द किया ॥ २६ । सो यरूशलेम् में बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल् के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम् में न हुई थी ॥ २७ । निदान लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया और उन की सुनी गई और उन की प्रार्थना उस के पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुंची ॥

(हिज़्किय्याह् का किया हुआ उपासना का प्रबन्ध.)

३१. जब यह सब हो चुका तब जितने इस्राएली हाजिर थे उन सभों ने यहूदा के नगरों में जाकर सारे यहूदा और बिन्यामीन् और एप्रैम् और मनश्शे में की लाठों को तोड़ दिया अशेरों को काट डाला और ऊंचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया यहां लों कि उन्हों ने उन सब का अन्त कर दिया । तब सब इस्राएली अपने अपने नगर को लौटकर अपनी अपनी निज भूमि में पहुंचे ॥ २ । और हिज़्किय्याह् ने याजकों के दलों को और लेवीयों को बरन याजकों और लेवीयों दोनों को दल दल के अनुसार और एक एक मनुष्य को उस की सेवकाई के अनुसार इस लिये ठहरा दिया कि वे यहोवा की छावनी के द्वारों के भीतर होमबलि मेलबलि सेवा टहल धन्यवाद और स्तुति किया करें ॥ ३ । फिर उस ने अपनी संपत्ति में से राजभाग को होमबलियों के लिये ठहरा दिया अर्थात् सवेरे और सांझ के होमबलि और विश्राम और नये चांद के दिनों और नियत समयों के होमबलि के लिये जैसे कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है ॥ ४ । और उस ने यरूशलेम् में रहनेहारे लोगों को याजकों और लेवीयों के भाग देने की आज्ञा दिई इस लिये कि वे यहोवा की व्यवस्था के काम मन लगाकर कर सकें[1] ॥ ५ । यह आज्ञा सुनते ही[2] इस्राएली अन्न नये दाखमधु टटके तेल मधु आदि खेती की सब भांति की पहिली उपज बहुतायत से देने और सब वस्तुओं का दशमांश बहुत लाने लगे ॥ ६ । और जो इस्राएली और यहूदी यहूदा के नगरों में रहते थे वे भी बैलों और भेड़ बकरियों का दशमांश और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश जो उन के परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र किई गई थीं ले आकर राशि राशि करके रखने लगे ॥ ७ । यह राशि लगाना उन्हों ने तीसरे महीने में आरंभ किया और सातवें महीने में पूरा किया ॥ ८ । जब हिज़्किय्याह् और हाकिमों ने आकर राशियों को देखा तब यहोवा को और उस की प्रजा इस्राएल् को भी धन्य धन्य कहा ॥ ९ । तब हिज़्किय्याह् ने याजकों और लेवीयों से उन राशियों के विषय पूछा ॥ १० । और अजर्याह् महायाजक ने जो सादोक् के घराने का था उस से कहा जब से लोग यहोवा के भवन में उठाई हुई भेंटें लाने लगे तब से हम लोग पेट भर खाने को पाते हैं बरन बहुत बचा भी करता है क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को आशीष दिई है और जो बच रहा है उसी का यह बड़ा ढेर है ॥ ११ । तब हिज़्किय्याह् ने यहोवा के भवन में कोठरियां तैयार करने की आज्ञा दिई और वे तैयार किई गईं ॥ १२ । तब लोगों ने उठाई हुई भेंटें दशमांश और पवित्र किई हुई वस्तुएं सच्चाई से पहुंचाईं और उन के अधिकारी मुख्य तो कोनन्याह् नाम एक लेवीय और दूसरा उस का भाई शिमी था ॥ १३ । और कोनन्याह् और उस के भाई शिमी के नीचे हिज़्किय्याह् राजा और परमेश्वर के भवन के प्रधान अजर्याह् दोनों की आज्ञा से यहीएल् अजज्याह् नहत् असाहेल् यरीमोत् योजाबाद् एलीएल् यिस्मक्याह् महत् और बनायाह् भी अधिकारी थे ॥ १४ । और परमेश्वर को दिये हुए स्वेच्छाबलियों का अधिकारी यिम्ना लेवीय का पुत्र कोरे था जो पूरबी फाटक का डेवढ़ीदार

(१) मूल में उठाई ।

(१) मूल में व्यवस्था में बल पकड़ें । (२) मूल में यह आज्ञा फूटते ही ।

था कि वह यहोवा की उठाई हुई भेंटें और परमपवित्र वस्तुएं बांटा करे॥ १५। और उस के अधिकार में एदेन् मिन्यामीन् येशू शमायाह् अमर्याह् और शकन्याह् याजकों के नगरों में रहते थे कि वे क्या बड़े क्या छोटे अपने भाइयों को उन के दलों के अनुसार सच्चाई से दिया करें, १६। और उन से अलग उन को भी दें जो पुरुषों की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन बरस की अवस्था के वा उस से अधिक थे और अपने अपने दल के अनुसार अपनी अपनी सेवकाई निबाहने को दिन दिन के काम के अनुसार यहोवा के भवन में जाया करते थे, १७। और उन याजकों को भी दें जिन की वंशावली तो उन के पितरों के घरानों के अनुसार किई गई और उन लेवीयों को भी जो बीस बरस की अवस्था से ले आगे को अपने अपने दल के अनुसार अपने अपने काम निबाहते थे, १८। और सारी सभा में उन के बालबच्चों स्त्रियों बेटों और बेटियों को भी दें जिन की वंशावली थी क्योंकि वे सच्चाई से अपने को पवित्र करते थे॥ १९। फिर हारून की सन्तान के याजकों को भी जो अपने अपने नगरों के चराईवाले मैदान में रहते थे देने के लिये वे पुरुष ठहरे थे जिन के नाम ऊपर लिखे हुए थे कि वे याजकों के सब पुरुषों और उन सब लेवीयों को भी भाग दिया करें जिन की वंशावली थी॥ २०। और सारे यहूदा में भी हिज़किय्याह् ने ऐसा ही प्रबंध किया और जो कुछ उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे भला और ठीक और सच्चाई का था उसे वह करता था॥ २१। और जो जो काम उस ने परमेश्वर के भवन में की उपासना और व्यवस्था और आज्ञा के विषय अपने परमेश्वर की खोज में किया सो उस ने अपना सारा मन लगाकर किया और उस में कृतार्थ हुआ॥

(सन्हेरीब् की सेना की चढ़ाई और विनाश.)

३२. इन बातों और इस सच्चाई के पीछे अश्शूर् का राजा सन्हेरीब् आकर यहूदा में पैठा और गढ़वाले नगरों के विरुद्ध डेरे डालकर उन में अपने लाभ के लिये नाका करने की आशा किई॥ २। यह देखकर कि सन्हेरीब् निकट आया और यरूशलेम् से लड़ने की मनसा[1] करता है, ३। हिज़किय्याह् ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति किई कि नगर के बाहर के सोतों को पाटेंगे। और उन्हों ने उस की सहायता किई॥ ४। सो बहुत से लोग एकट्ठे हुए और यह कहकर कि अश्शूर् के राजा यहां आकर क्यों बहुत पानी पाएं सब सोतों को पाट दिया और उस नदी को सुखा दिया जो देश के बीच होकर बहती थी॥ ५। फिर हिज़किय्याह् ने हियाव बांधकर शहरपनाह जहां कहीं टूटी थी वहां उस को बनवाया और उस को गुम्मटों के बराबर ऊंचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई और दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़ किया और बहुत से तीर और ढालें बनवाईं॥ ६। तब उस ने प्रजा के ऊपर सेनापति ठहराकर उन को नगर के फाटक के चौक में एकट्ठा किया और यह कहकर उन को धीरज बन्धाया कि, ७। हियाव बांधो और दृढ़ हो तुम न तो अश्शूर् के राजा से डरो और न उस के संग की सारी भीड़ से और तुम्हारा मन कच्चा न हो क्योंकि जो हमारे संग है सो उस के संगियों से बड़ा है॥ ८। अर्थात् उस का सहारा तो मनुष्य ही हैं[2] पर हमारे संग हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है। सो प्रजा के लोग यहूदा के राजा हिज़किय्याह् की बातों पर भरोसा किये रहे॥

९। इस के पीछे अश्शूर् का राजा सन्हेरीब् जो सारी सेना[3] समेत लाकीश् के साम्हने पड़ा था उस ने अपने कर्म्मचारियों को यरूशलेम् के पास यहूदा के राजा हिज़किय्याह् और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम् में थे यों कहने के लिये भेजा कि, १०। अश्शूर् का राजा सन्हेरीब् यों कहता है कि तुम किस का भरोसा करते हो कि तुम घेरे हुए यरूशलेम् में बैठे रहते हो॥ ११। क्या हिज़किय्याह् तुम से यह कहता हुआ कि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को अश्शूर् के राजा के पंजे से बचाएगा

(१) मूल में का मुख। (२) मूल में, उस के संग मांस की बांह। (३) मूल में राज्य।

तुम्हें नहीं भरमाता कि तुम को भूखों प्यासों मारे ॥ १२ । क्या उसी हिज़्किय्याह् ने उस के ऊंचे स्थान और वेदियां दूर करके यहूदा और यरूशलेम् को आज्ञा नहीं दिई कि तुम एक ही वेदी के साम्हने दण्डवत् करना और उसी पर धूप जलाना ॥ १३ । क्या तुम को मालूम नहीं कि मैं ने और मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगों से क्या क्या किया है क्या उन देशों में की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके ॥ १४ । जितनी जातियों को मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश किया उन के सब देवताओं में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा ॥ १५ । सो अब हिज़्किय्याह् तुम को इस रीति भुलाने वा बहकाने न पाए और तुम उस की प्रतीति न करो क्योंकि किसी जाति वा राज्य का कोई देवता अपनी प्रजा को न तो मेरे हाथ से बचा सका न मेरे पुरखाओं के हाथ से सो निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से न बचा सकेगा ॥ १६ । इस से भी अधिक उस के कर्म्मचारियों ने यहोवा परमेश्वर की और उस के दास हिज़्किय्याह् की निन्दा किई ॥ १७ । फिर उस ने ऐसा एक पत्र भेजा जिस में इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की ये बातें लिखी थीं कि जैसे देश देश की जातियों के देवताओं ने अपनी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचाया वैसे ही हिज़्किय्याह् का देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से न बचा सकेगा ॥ १८ । और उन्हों ने ऊंचे शब्द से उन यरूशलेमियों को जो शहरपनाह पर बैठे थे यहूदी बोली में पुकारा कि उन को डराकर घबराएं जिस से नगर को ले लें ॥ १९ । और उन्हों ने यरूशलेम् के परमेश्वर की ऐसी चर्चा किई कि मानो पृथिवी के देश देश के लोगों के देवताओं के बराबर था जो मनुष्यों के बनाये हुए हैं ॥ २० । और इस के कारण राजा हिज़्किय्याह् और आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी दोनों ने प्रार्थना किई और स्वर्ग की ओर दोहाई दिई ॥ २१ । तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया जिस ने अश्शूर् के राजा की छावनी में के सब शूरवीरों प्रधानों और सेनापतियों को नाश किया सो वह लज्जित होकर अपने देश को लौट गया और जब वह अपने देवता के भवन में था तब उस के निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला ॥ २२ । यों यहोवा ने हिज़्किय्याह् और यरूशलेम् के निवासियों को अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् और और सभों के हाथ से बचाया और चारों ओर उन की अगुवाई किई ॥ २३ । और बहुत लोग यरूशलेम् को यहोवा के लिये भेंट और यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् के लिये अनमोल वस्तुएं ले आने लगे और उस समय से वह सब जातियों के लेखे महान ठहरा ॥

(हिज़्किय्याह् का उत्तर चरित्र)

२४ । उन दिनों हिज़्किय्याह् ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था तब उस ने यहोवा से प्रार्थना किई और उस ने उस से बातें करके उस के लिये एक चमत्कार दिखाया ॥ २५ । पर हिज़्किय्याह् ने उस उपकार का बदला न दिया क्योंकि उस का मन फूल उठा था इस कारण कोप उस पर और यहूदा और यरूशलेम् पर भड़का ॥ २६ । तौभी हिज़्किय्याह् यरूशलेम् के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के कारण दीन हो गया सो यहोवा का कोप उन पर हिज़्किय्याह् के दिनों में न भड़का ॥

२७ । और हिज़्किय्याह् को बहुत ही धन और विभव मिला और उस ने चांदी सोने मणियों सुगंध-द्रव्य ढालों और सब प्रकार के मनभावने पात्रों के लिये भण्डार बनवाये ॥ २८ । फिर उस ने अन्न नये दाखमधु और टटके तेल के लिये भण्डार और सब भांति के पशुओं के लिये थान और भेड़ बकरियों के लिये भेड़शालाएं बनवाईं ॥ २९ । और उस ने नगर बसाये और बहुत ही भेड़ बकरियों और गाय बैलों की संपत्ति कर लिई क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत धन दिया था ॥ ३० । उसी हिज़्किय्याह् ने गीहोन् नाम नदी के उपरले सोते को पाटकर उस नदी को नीचे की ओर दाऊदपुर की पच्छिम अलंग को सीधा पहुंचाया और हिज़्किय्याह् अपने सब कामों में कृतार्थ होता था ॥ ३१ । तौभी जब बाबेल् के

हाकिमों ने उस के पास उस के देश मे किये हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे तब परमेश्वर ने उस को इस लिये छोड़ दिया कि उस को परखकर उस के मन का सारा भेद जान ले॥ ३२। हिज्किय्याह् के और काम और उस के भक्ति के काम आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी के दर्शन नाम पुस्तक में और यहूदा और इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखे हैं॥ ३३। निदान हिज्किय्याह् अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊद की सन्तान के कबरिस्तान की चढ़ाई पर मिट्टी दिई गई और सब यहूदियों और यरूशलेम् के निवासियों ने उस की मृत्यु पर उस का आदरमान किया। और उस का पुत्र मनश्शे उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(मनश्शे का राज्य)

३३. जब मनश्शे राज्य करने लगा तब बारह बरस का था और यरूशलेम् मे पचपन बरस तक राज्य करता रहा॥ २। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है, उन जातियो के घिनौने कामों के अनुसार जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था॥ ३। उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिन्हें उस के पिता हिज्किय्याह् ने तोड़ दिया था फिर बनाया और बाल् नाम देवताओं के लिये वेदियां और अशेरा नाम मूरतें बनाईं और आकाश के सारे गण को दण्डवत् करता और उन की उपासना करता रहा॥ ४। और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिस के विषय यहोवा ने कहा था कि यरूशलेम् में मेरा नाम सदा लों बना रहेगा॥ ५। बरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के सारे गण के लिये वेदियां बनाईं॥ ६। फिर उस ने हिन्नोम् के बेटे की तराई में अपने लड़केबालों को होम करके चढ़ाया और शुभ अशुभ मुहूर्तों को मानता और टोना और तंत्रमंत्र करता और ओझों और भूतसिद्धिवालों से व्यवहार करता था बरन उस ने ऐसे बहुत से काम किये जो यहोवा के लेखे बुरे हैं और जिन से वह रिसियाता है॥ ७। और उस ने अपनी खुदवाई हुई मूर्त्ति परमेश्वर के उस भवन में स्थापन किई जिस के विषय परमेश्वर ने दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान से कहा था कि इस भवन में और यरूशलेम् में जिस को मैं ने इस्राएल् के सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं सदा लों अपना नाम रक्खूंगा, ८। और मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था उस में से इस्राएल् फिर मारा मारा फिरे इतना हो कि वे मेरी सब आज्ञाओं अर्थात् मूसा की दिई हुई सारी व्यवस्था और विधियों और नियमों के करने की चौकसी करें॥ ९। और मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम् के निवासियों को यहां लों भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई किई जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था॥ १०। और यहोवा ने मनश्शे और उस की प्रजा से बातें किईं पर उन्हों ने कुछ ध्यान न दिया॥ ११। सो यहोवा ने उन पर अश्शूर् के राजा के सेनापतियों से चढ़ाई कराई और वे मनश्शे के नकेल डालकर और पीतल की बेड़ियां जकड़कर उसे बाबेल् को ले गये॥ १२। तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने लगा और अपने पितरों के परमेश्वर के साम्हने बहुत दीन हुआ, १३। और उस से प्रार्थना किई तब उस ने प्रसन्न होकर उस की बिनती सुनी और उस को यरूशलेम् में पहुंचाकर उस का राज्य फेर दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है॥

१४। इस के पीछे उस ने दाऊदपुर से बाहर गीहोन् की पच्छिम ओर नाले में मच्छीफाटक लों एक शहरपनाह बनवाई फिर ओपेल् को घेरकर बहुत ऊंचा कर दिया और यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सेनापति ठहरा दिये॥ १५। फिर उस ने पराये देवताओं को और यहोवा के भवन में की मूर्त्ति को और जितनी वेदियां उस ने यहोवा के भवन के पर्वत पर और यरूशलेम् में बनवाई थीं उन सभों को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया॥ १६। तब उस ने यहोवा की वेदी की मरम्मत किई और उस पर मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाने लगा और यहूदियों को इस्राएल् के

परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दिई ॥ १७ । तौभी प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान करते रहे पर केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिये ॥ १८ । मनश्शे के और काम और उस ने जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से किई और उन दर्शियों के वचन जो इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम से उस से बातें करते थे यह सब इस्राएल् के राजाओं के वृत्तान्त में लिखा हुआ है ॥ १९ । और उस की प्रार्थना और वह कैसे सुनी गई और उस का सारा पाप और विश्वासघात और उस ने दीन होने से पहिले कहां कहां ऊंचे स्थान बनवाये और अशेरा नाम और खुदी हुई मूर्त्तियां खड़ी कराईं यह सब होजै के वचनों में लिखा है ॥ २० । निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उसी के घर में मिट्टी दिई गई और उस का पुत्र आमोन् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(आमोन् का राज्य)

२१ । जब आमोन् राज्य करने लगा तब वह बाईस बरस का था और यरूशलेम् में दो बरस लों राज्य करता रहा ॥ २२ । और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और जितनी मूर्त्तियां उस के पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई थीं वह उन सभों के साम्हने बलिदान और उन सभों की उपासना करता था ॥ २३ । और जैसे उस का पिता मनश्शे यहोवा के साम्हने दीन हुआ वैसे वह दीन न हुआ बरन यह आमोन् अधिक दोषी होता गया ॥ २४ । और उस के कर्म्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके उस को उसी के भवन में मार डाला ॥ २५ । तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला जिन्हों ने राजा आमोन् से द्रोह की गोष्ठी किई थी और लोगों ने उस के पुत्र योशिय्याह् को उस के स्थान पर राजा किया ॥

(योशिय्याह् का किया हुआ सुधराव और व्यवस्था की पुस्तक का मिलना.)

३४. जब योशिय्याह् राज्य करने लगा तब आठ बरस का था और यरूशलेम् में एकतीस बरस तक राज्य करता रहा ॥ २ । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है और जिन मार्गों पर उस का मूलपुरुष दाऊद चलता रहा उन्हीं पर वह भी चला और उस से न तो दहिनी ओर मुड़ा और न बाईं ओर ॥ ३ । वह लड़का ही था अर्थात् उस को गद्दी पर बैठे आठ बरस पूरे न हुए थे कि अपने मूलपुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा और बारहवें बरस में वह ऊंचे स्थानों और अशेरा नाम मूरतों को और खुदी और ढली हुई मूरतों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध करने लगा ॥ ४ । और बाल् देवताओं की वेदियां उस के साम्हने तोड़ डालीं गईं और सूर्य्य की प्रतिमाएं जो उन के ऊपर ऊंचे पर थीं उस ने काट डालीं और अशेरा नाम और खुदी और ढली हुई मूरतों को उस ने तोड़कर पीस डाला और उन की बुकनी उन लोगों की कबरों पर छितरा दिई जो उन को बलि चढ़ाते थे ॥ ५ । और पुजारियों की हड्डियां उस ने उन्हीं की वेदियों पर जलाईं । यों उस ने यहूदा और यरूशलेम् को शुद्ध किया ॥ ६ । फिर मनश्शे एप्रैम् और शिमोन् के बरन नप्ताली तक के नगरों के खण्डहरों में, ७ । उस ने वेदियों को तोड़ डाला और अशेरा नाम और खुदी हुई मूरतों को पीसकर बुकनी कर डाला और इस्राएल् के सारे देश में की सूर्य्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम् को लौट गया ॥

८ । फिर अपने राज्य के अठारहवें बरस में जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर चुका तब उस ने असल्याह् के पुत्र शापान् और नगर के हाकिम मासेयाह् और योआहाज् के पुत्र इतिहास के लिखनेहारे योआह् को अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत कराने के लिये भेज दिया ॥ ९ । सो उन्हों ने हिल्किय्याह् महायाजक के पास जाकर जो रुपैया परमेश्वर के भवन में लाया गया था अर्थात् जो लेवीय डेवढ़ीदारों ने मनश्शियों एप्रैमियों और सब बचे हुए इस्राएलियों से और सब यहूदियों और बिन्यामीनियों से और यरूशलेम् के निवासियों के हाथ से लेकर एकट्ठा किया था उस को सौंप दिया अर्थात् उन्हों ने उसे उन काम करानेहारों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के

भवन के काम पर मुखिये थे और यहोवा के भवन के उन काम करनेहारों ने उसे भवन में जो कुछ टूटा फूटा था उस की मरम्मत करने मे लगाया ॥ ११ । अर्थात् उन्हों ने उसे बढ़इयों और राजों को दिया कि वे गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिये लकड़ी मोल लें और उन घरों को पाटें जो यहूदा के राजाओं ने नाश कर दिये थे ॥ १२ । और वे मनुष्य सच्चाई से काम करते थे और उन के अधिकारी मरारीय यहत् और ओबद्याह् लेवीय और कहाती जकर्याह् और मशुल्लाम् काम चलानेहारे और गाने बजाने का भेद सब जाननेहारे लेवीय भी थे ॥ १३ । फिर वे बोझियों के अधिकारी थे और भान्ति भान्ति की सेवकाई और काम चलानेहारे थे और कुछ लेवीय मुन्शी सरदार और डेवढ़ीदार थे ॥

१४ । जब वे उस रुपैये को जो यहोवा के भवन में पहुंचाया गया था निकाल रहे थे तब हिल्किय्याह् याजक को मूसा के द्वारा दिई हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली ॥ १५ । तब हिल्किय्याह् ने शापान् मंत्री से कहा मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है सो हिल्किय्याह् ने शापान् को वह पुस्तक दिई ॥ १६ । तब शापान् उस पुस्तक को राजा के पास ले गया और यह संदेश दिया कि जो जो काम तेरे कर्मचारियों को सौंपा गया था उसे वे कर रहे हैं ॥ १७ । और जो रुपैया यहोवा के भवन में मिला उस को उन्हों ने उण्डेलकर मुखियों और कारीगरों के हाथों में सौंप दिया है ॥ १८ । फिर शापान् मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिल्किय्याह् याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है तब शापान् ने उस में से राजा को पढ़कर सुनाया ॥ १९ । व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े ॥ २० । फिर राजा ने हिल्किय्याह् शापान् के पुत्र अहीकाम् मीका के पुत्र अब्दोन् शापान् मंत्री और असायाह् नाम अपने कर्मचारी को आज्ञा दिई कि, २१ । तुम जाकर मेरी ओर से और इस्राएल् और यहूदा में रहे हुओं की ओर से इस पाई हुई पुस्तक के वचनों के विषय यहोवा से पूछो क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस लिये भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने यहोवा का वचन न माना और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाएं न पाली थीं ॥ २२ । सो हिल्किय्याह् ने राजा के और और दूतों समेत हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से उसी बात के अनुसार बातें किईं वह तो उस शल्लम् की स्त्री थी जो तोखत् का पुत्र और हस्रा का पोता और वस्त्रालय का रखवाला था और वह स्त्री यरूशलेम् के नये टोले में रहती थी ॥ २३ । उस ने उन से कहा इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा उस से यह कहो कि, २४ । यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इस स्थान और इस के निवासियों पर विपत्ति डालकर यहूदा के राजा के साम्हने जो पुस्तक पढ़ी गई उस में जितने स्राप लिखे हैं उन सभों को पूरा करूंगा ॥ २५ । उन लोगों ने मुझे त्याग करके पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़क उठी है और शांत न होगी ॥ २६ । पर यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया उस से तुम यों कहो कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि इस लिये कि तू वे बातें सुनकर, २७ । दीन हुआ और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया और उस की बातें सुनकर जो उस ने इस स्थान और इस के निवासियों के विरुद्ध कहीं तू ने मेरे साम्हने अपना सिर नवाया और वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है इस कारण मैं ने तेरी सुनी है यहोवा की यही वाणी है ॥ २८ । सुन मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा मिलाऊंगा कि तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया जाएगा और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर और इस के निवासियों पर डाला चाहता हूं उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ देखना न पड़ेगा । तब उन लोगों ने लौटकर राजा को यही संदेशा दिया ॥

२९ । तब राजा ने यहूदा और यरूशलेम् के सब पुरनियों को एकट्ठे होने को बुलवा भेजा ॥ ३० ।

और राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम् के सब निवासियों और याजकों और लेवीयों बरने छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उस में की सारी बातें उन को पढ़कर सुनाईं ॥ ३१ । तब राजा ने अपने स्थान पर खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बांधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की आज्ञाएं चितौनियां और विधियां पाला करूंगा और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूंगा ॥ ३२ । और उस ने उन सभों से जो यरूशलेम् में और बिन्यामीन् में थे वैसी ही वाचा बन्धाई । और यरूशलेम् के निवासी परमेश्वर जो उन के पितरों का परमेश्वर था उस की वाचा के अनुसार करने लगे ॥ ३३ । और योशिय्याह् ने इस्राएलियों के सब देशों में से सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके जितने इस्राएल् में मिले उन सभों से उपासना कराई अर्थात् उन के परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई । सो उस के जीवन भर उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा ॥

(योशिय्याह् का किया हुआ फसह्)

३५. और योशिय्याह् ने यरूशलेम् में यहोवा के लिये फसह् माना और पहिले महीने के चौदहवें दिन को फसह् का पशु बलि किया गया ॥ २ । और उस ने याजकों को अपने अपने काम में ठहराया और यहोवा के भवन में की सेवा करने को उन का हियाव बन्धाया ॥ ३ । फिर लेवीय जो सब इस्राएलियों को सिखाते और यहोवा के लिये पवित्र ठहरे थे उन से उस ने कहा तुम पवित्र संदूक को उस भवन में रक्खो जो दाऊद के पुत्र इस्राएल् के राजा सुलैमान ने बनवाया था अब तुम को कंधों पर बोझ उठाना न होगा सो अब अपने परमेश्वर यहोवा की और उस की प्रजा इस्राएल् की सेवा करो ॥ ४ । और इस्राएल् के राजा दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के अनुसार अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार अपने अपने दल में तैयार रहो ॥ ५ । और तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े रहो अर्थात् उन के एक भाग के लिये लेवीयों के एक एक पितर के घराने का एक भाग हो ॥ ६ । और फसह् के पशुओं को बलि करो और अपने अपने को पवित्र करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार कर सकें जो उस ने मूसा के द्वारा कहा था ॥ ७ । फिर योशिय्याह् ने सब लोगों को जो वहां हाजिर थे तीस हजार भेड़ों और बकरियों के बच्चे और तीन हजार बैल दिये ये सब फसह् के बलिदानों के लिये और राजा की संपत्ति में से दिये गये ॥ ८ । और उस के हाकिमों ने प्रजा के लोगों याजकों और लेवीयों को स्वेच्छाबलियों के लिये पशु दिये । और हिल्किय्याह् जकर्याह् और यहीएल् नाम परमेश्वर के भवन के प्रधानों ने याजकों को दो हजार छः सौ भेड़ बकरियां और तीन सौ बैल फसह् के बलिदानों के लिये दिये ॥ ९ । और कोनन्याह् ने और शमायाह् और नतनेल् जो उस के भाई थे और हशब्याह् यीएल् और योजाबाद् नाम लेवीयों के प्रधानों ने लेवीयों को पांच हजार भेड़ बकरियां और पांच सौ बैल फसह् के बलिदानों के लिये दिये ॥ १० । यों उपासना की तैयारी हो गई और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपने अपने स्थान पर और लेवीय अपने अपने दल में खड़े हुए ॥ ११ । तब फसह् के पशु बलि किये गये और याजक बलि करनेहारों के हाथ से लोहू को लेकर छिड़क देते और लेवीय उन की खाल उतारते गये ॥ १२ । तब उन्हों ने होमबलि के पशु इस लिये अलग किये कि उन्हें लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार दें कि वे उन्हें यहोवा के लिये चढ़ाएं दें जैसे कि मूसा की पुस्तक में लिखा है । और बैलों को भी उन्हों ने वैसा ही किया ॥ १३ । तब उन्हों ने फसह् के पशुओं का मांस विधि के अनुसार आग में भूंजा और पवित्र वस्तुएं हंडियों और हंडों और थालियों में सिझा कर फुर्ती से लोगों को पहुंचा दिया ॥ १४ । और पीछे उन्हों ने अपने लिये और याजकों के लिये तैयारी किई

क्योंकि हारून् की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चरबी रात लों चढ़ाते रहे इस कारण लेवीयों ने अपने लिये और हारून की सन्तान के याजकों के लिये तैयारी किई ॥ १५। और आसाप् के वंश के गवैये दाऊद आसाप् हेमान् और राजा के दर्शी यदूतून् की आज्ञा के अनुसार अपने अपने स्थान पर रहे और हेवढ़ीदार एक एक फाटक पर रहे उन्हें अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा क्योंकि उन के भाई लेवीयों ने उन के लिये तैयारी किई ॥ १६। यों उसी दिन राजा योशिय्याह् की आज्ञा के अनुसार यहोवा की सारी उपासना की तैयारी किई गई कि फसह् मानना और यहोवा की वेदी पर होमबलि चढ़ाना हो सका ॥ १७। सो जो इस्राएली वहां हाजिर थे उन्हों ने फसह् को उसी समय और अखमीरी रोटी के पर्व को सात दिन तक माना ॥ १८। इस फसह् के बराबर शमूएल् नबी के दिनों से इस्राएल् में कोई फसह् माना न गया था और न इस्राएल् के किसी राजा ने ऐसा माना जैसा योशिय्याह् और याजकों लेवीयों और जितने यहूदी और इस्राएली हाजिर थे उन्हो ने और यरूशलेम् के निवासियों ने माना ॥ १९। यह फसह् योशिय्याह् के राज्य के अठारहवें बरस में माना गया ॥

(योशिय्याह् की मृत्यु)

२०। इस सब के पीछे जब योशिय्याह् भवन को तैयार कर चुका तब मिस्र के राजा नको ने परात् के पास के कर्कमीश् नगर से लड़ने को चढ़ाई किई और योशिय्याह् उस का साम्हना करने को गया ॥ २१। पर उस ने उस के पास दूतों से कहला भेजा कि हे यहूदा के राजा मेरा तुझ से क्या काम आज मैं तुझ पर नहीं उसी कुल पर चढ़ाई कर रहा हूं जिस के साथ मैं युद्ध करता हूं फिर परमेश्वर ने मुझ से फुर्ती करने को कहा है सो परमेश्वर जो मेरे संग है उस से अलग रह ऐसा न हो कि वह तुझे नाश करे ॥ २२। पर योशिय्याह् ने उस से मुंह न मोड़ा वरन उस से लड़ने के लिये भेष बदला और नको के उन वचनों को न माना जो उस ने परमेश्वर की ओर से कहे थे और मगिद्दो की तराई में उस से युद्ध करने को गया ॥ २३। तब धनुर्धारियों ने राजा योशिय्याह् की ओर तीर छोड़े और राजा ने अपने सेवकों से कहा मैं तो बहुत घायल हुआ सो मुझे यहां से ले जाओ ॥ २४। तब उस के सेवकों ने उस को रथ पर से उतारकर उस के दूसरे रथ पर चढ़ाया और यरूशलेम् को ले गये और वह मर गया और उस के पुरखाओं के कबरिस्तान में उस को मिट्टी दिई गई और सब यहूदियों और यरूशलेमियों ने योशिय्याह् के लिये विलाप किया ॥ २५। और यिर्मयाह् ने योशिय्याह् के लिये विलाप का गीत बनाया और सब गानेहारे और गानेहारियां अपने विलाप के गीतों में योशिय्याह् की चर्चा आज तक करती है और इन का गाना इस्राएल् में विधि करके ठहराया गया और ये बातें विलापगीतों में लिखी हुई हैं ॥ २६। योशिय्याह् के और काम और भक्ति के जो काम उस ने उसी के अनुसार किये जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा हुआ है, २७। और आदि से अन्त लों उस के सब काम इस्राएल् और यहूदा के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥

(यहोआहाज् यहोयाकीम् यहोयाकीन् और सिदकिय्याह् के राज्य)

३६.

तब देश के लोगों ने योशिय्याह् के पुत्र यहोआहाज् को लेकर उस के पिता के स्थान पर यरूशलेम् में राजा किया ॥ २। जब योआहाज् राज्य करने लगा तब वह तेईस बरस का था और तीन महीने लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा ॥ ३। तब मिस्र के राजा ने उस को यरूशलेम् में राजगद्दी से उतार दिया और देश पर सौ किक्कार् चान्दी और किक्कार् भर सोना जुरमाना लगाया ॥ ४। तब मिस्र के राजा ने उस के भाई एल्याकीम् को यहूदा और यरूशलेम् पर राजा किया और उस का नाम बदलकर यहोयाकीम् रक्खा। और नको उस के भाई योआहाज् को मिस्र में ले गया ॥

५। जब यहोयाकीम् राज्य करने लगा तब वह पचीस बरस का था और ग्यारह बरस तक यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस ने वह काम किया जो उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है ॥ ६। उस पर बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् ने चढ़ाई किई

और बाबेल् ले जाने के लिये उस के बेड़ियां डाल दिईं ॥ ७। फिर नबूकद्नेस्सर् ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल् ले जाकर अपने मन्दिर में जो बाबेल् में था रख दिये ॥ ८। यहोयाकीम् के और काम और उस ने जो जो घिनौने काम किये और उस में जो जो बुराइयां पाई गईं सो इस्राएल् और यहूदा के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उस का पुत्र यहोयाकीन् उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

९। जब यहोयाकीन् राज्य करने लगा तब वह आठ बरस का था और तीन महीने और दस दिन लों यरूशलेम् में राज्य करता रहा और उस ने वह किया जो परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है ॥ १०। नये वरस के लगते ही नबूकद्नेस्सर् ने भेजकर उसे और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बाबेल् में पहुंचा दिया और उस के भाई सिदकिय्याह् को यहूदा और यरूशलेम् पर राजा किया ॥

११। जब सिदकिय्याह् राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम् में ग्यारह वरस लों राज्य करता रहा ॥ १२। और उस ने वही किया जो उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है, यद्यपि यिर्मयाह् नबी यहोवा की ओर से बातें कहता था तौभी वह उस के साम्हने दीन न हुआ ॥ १३। फिर नबूकद्नेस्सर् जिस ने उसे परमेश्वर की किरिया खिलाई थी उस से उस ने बलवा किया और उस ने हठ किया[१] और अपना मन ऐसा कठोर किया कि वह इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरा ॥

(यहूदियों की बंधुआई)

१४। बरन सब प्रधान याजकों ने और लोगों ने भी अन्यजातियों के से घिनौने काम करके बहुत बड़ा विश्वासघात किया और यहोवा के भवन को जो उस ने यरूशलेम् में पवित्र किया था अशुद्ध कर डाला ॥ १५। और उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके[२] अपने दूतों से उन के पास कहला भेजा क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था ॥ १६। पर वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते उस के वचनों को तुच्छ जानते और उस के नबियों की हंसी करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुंझला उठा कि बचने का कोई उपाय न रहा ॥ १७। सो उस ने उन पर कसदियों के राजा से चढ़ाई कराई और इस ने उन के जवानों को उन के पवित्र भवन ही में तलवार से मार डाला और क्या जवान क्या कुंवारी क्या बूढ़े क्या पक्के बालवाले किसी पर भी कोमलता न किई यहोवा ने सभों को उस के हाथ कर दिया ॥ १८। और क्या छोटे क्या बड़े परमेश्वर के भवन के सब पात्र और यहोवा के भवन और राजा और उस के हाकिमों के खजाने इन सभों को वह बाबेल् में ले गया ॥ १९। और कसदियों ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया और यरूशलेम् की शहरपनाह को तोड़ डाला और आग लगाकर उस में के सब भवनों को जलाया और उस में का सारा मनभावना सामान नाश किया ॥ २०। और जो तलवार से बच गये उन्हें वह बाबेल् को ले गया और फारस के राज्य के प्रबल होने लों वे उस के और उस के बेटों पोतों के अधीन रहे ॥ २१। यह सब इस लिये हुआ कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह् के मुंह से निकला था सो पूरा हो कि देश अपने विश्रामकालों में सुख भोगता रहे सो जब लों वह सून पड़ा रहा तब लों अर्थात् सत्तर बरस के पूरे होने लों उस को विश्राम रहा ॥

(यहूदियों का फिर भाग्यमान होना.)

२२। फारस के राजा कुस्रू के पहिले बरस में यहोवा ने उस के मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह् के मुंह से निकला था सो पूरा हो, सो उस ने अपने सारे राज्य में यह प्रचार कराया और इस आशय की चिट्ठियां लिखाईं कि, २३। फारस का राजा कुस्रू यों कहता है कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने तो पृथिवी भर का राज्य मुझे दिया है और उसी ने मुझे आज्ञा दिई कि यरूशलेम् जो यहूदा में है मेरा एक भवन बनवा सो हे उस की सारी प्रजा के लोगो तुम में से जो कोई चाहे उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहे और वह वहां जाए[१] ॥

---

(१) मूल में अपनी गर्दन कठोर किई।
(२) मूल में तड़के उठ उठकर।

(१) मूल में, चढ़े।

एज्रा नाम पुस्तक।

(बंधुए यहूदियों का यरूशलेम् को लौट जाना)

१. फारस के राजा कुस्रू के पहिले बरस में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह् के मुंह से निकला था सो पूरा हो जाए सो उस ने अपने सारे राज्य में यह प्रचार कराया और लिखा भी दिया कि, २। फारस का राजा कुस्रू यों कहता है कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथिवी भर का राज्य मुझे दिया है और उस ने मुझे आज्ञा दिई कि यहूदा के यरूशलेम् में मेरा एक भवन बनवा॥ ३। उस की सारी प्रजा के लोगों में से तुम्हारे बीच जो कोई हो उस का परमेश्वर उस के संग रहे और वह यहूदा के यरूशलेम् को जाकर इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए जो यरूशलेम में है वही परमेश्वर है॥ ४। और जो कोई किसी स्थान में रह गया हो जहां वह रहता हो उस स्थान के मनुष्य चान्दी सोना धन और पशु देकर उस की सहायता करें और इस से अधिक परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन के लिये अपनी अपनी इच्छा से भी भेंट करें॥ ५। तब यहूदा और बिन्यामीन् के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेवीयों का मन परमेश्वर ने उभारा कि जाकर यहोवा के यरूशलेम् में के भवन को बनाएं सो सब उठ खड़े हुए॥ ६। और उन के आसपास सब रहनेवालों ने चान्दी के पात्र सोना धन पशु और अनमोल वस्तुएं देकर उन की सहायता किई यह उस सब से अधिक था जो लोगों ने अपनी अपनी इच्छा से दिया॥ ७। फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नबूकद्नेस्सर् ने यरूशलेम् से निकालकर अपने देवता के भवन में रक्खे थे उन को कुस्रू राजा ने, ८। मिथ्रदात् खजांची से निकलवाकर यहूदियों के शेश्बस्सर् नाम प्रधान को गिनकर सौंप दिया॥ ९। उन की गिनती यह थी अर्थात् सोने के तीस और चांदी के एक हजार परात और उनतीस छुरी, १०। सोने के तीस और मध्यम प्रकार के चांदी के चार सौ दस कटोरे और और प्रकार के पात्र एक हजार॥ ११। सोने चांदी के पात्र सब मिलकर पांच हजार चार सौ हुए। इन सभों को शेश्बस्सर् उस समय ले आया जब बंधुए बाबेल् से यरूशलेम् को आये॥

(लौटे हुए यहूदियों का ब्योरा.)

२. जिन को बाबेल् का राजा नबूकद्नेस्सर् बाबेल् को बंधुआ करके ले गया था उन में से प्रान्त के जो लोग बंधुआई से छूटकर यरूशलेम् और यहूदा को अपने अपने नगर में लौटे सो ये हैं। ये जरुब्बाबेल् येशू नहेम्याह् सरायाह् रेलायाह् मोर्दकै बिल्शान् मिस्पार् बिग्वै रहूम् और बाना के संग आये॥ २। इस्राएली प्रजा के मनुष्यों की यह गिनती है अर्थात्, ३। परोश् के सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर, ४। शपत्याह् के सन्तान तीन सौ बहत्तर, ५। आरह् के सन्तान सात सौ पचहत्तर, ६। पहत्मोआब् के सन्तान येशू और योआब् की सन्तान में से दो हजार आठ सौ बारह, ७। एलाम् के सन्तान बारह सौ चौवन, ८। जत्तू के सन्तान नौ सौ पैंतालीस, ९। जक्कै के सन्तान सात सौ साठ, १०। बानी के सन्तान छः सौ बयालीस, ११। बेबै के सन्तान छ. सौ तेईस, १२। अज्गाद् के सन्तान बारह सौ बाईस, १३। अदोनीकाम् के सन्तान छ सौ छियासठ, १४। बिग्वै के सन्तान दो हजार छप्पन, १५। आदीन् के सन्तान चार सौ चौवन, १६। यहिज्किय्याह् के सन्तान आतेर् की सन्तान में से अट्ठानवे, १७। बेसै के सन्तान

तीन सौ तेईस, १८। योरा के लोग एक सौ बारह, १९। हाशूम् के लोग दो सौ तेईस, २०। गिब्बार् के लोग पंचानवे, २१। बेत्लेहेम् के लोग एक सौ तेईस, २२। नतोपा के मनुष्य छप्पन, २३। अनातोत् के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस, २४। अज्मावेत् के लोग बयालीस, २५। किर्यतारीम् कपीरा और बेरोत् के लोग सात सौ तैंतालीस, २६। रामा और गेवा के लोग छः सौ इक्कीस, २७। मिक्मास् के मनुष्य एक सौ बाईस, २८। बेतेल् और ऐ के मनुष्य दो सौ तेईस, २९। नबो के लोग बावन, ३०। मग्बीश् के सन्तान एक सौ छप्पन, ३१। दूसरे एलाम् के सन्तान बारह सौ चौवन, ३२। हारीम् के सन्तान तीन सौ बीस, ३३। लोद् हादीद् और ओनो के लोग सात सौ पचीस, ३४। यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस, ३५। सना के लोग तीन हज़ार छ. सौ तीस ॥ ३६। फिर याजकों अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह् के सन्तान नौ सौ तिहत्तर, ३७। इम्मेर् के सन्तान एक हजार बावन, ३८। पश्हूर् के सन्तान बारह सौ सैंतालीस, ३९। हारीम् के सन्तान एक हज़ार सतरह ॥ ४०। फिर लेवीय अर्थात् येशू के सन्तान और होद्व्याह् के सन्तान, कद्मीएल् की सन्तान में से चौहत्तर ॥ ४१। फिर गवैयों में से आसाप् के सन्तान एक सौ अट्ठाईस ॥ ४२। फिर डेवढ़ीदारों के सन्तान, शल्लूम् के संतान आतेर् के संतान तल्मोन् के संतान अक्कूब् के संतान हतीता के संतान और शोबै के संतान ये सब मिलकर एक सौ उनतालीस हुए ॥ ४३। फिर नतीन के संतान, सीहा के संतान हसूपा के संतान तब्बाओत् के संतान ॥ ४४। केरोस् के संतान सीअहा के संतान पादोन् के संतान, ४५। लबाना के संतान हगाबा के संतान अक्कूब् के संतान, ४६। हागाब् के संतान शम्लै के संतान हानान् के संतान, ४७। गिद्देल् के संतान गहर् के संतान रायाह् के संतान, ४८। रसीन् के संतान नकोदा के संतान गज्जाम् के संतान, ४९। उज्जा के संतान पासेह् के संतान बेसै के संतान, ५०। अस्ना के संतान मूनीम् के संतान नपीसीम् के संतान, ५१। बक्बूक् के संतान हकूपा के संतान हर्हूर् के संतान, ५२। बसलूत् के संतान महीदा के संतान हर्शा के संतान, ५३। बर्कोस् के संतान सीसरा के संतान तेमह् के संतान, ५४। नसीह् के संतान और हतीपा के संतान ॥ ५५। फिर सुलैमान के दासों के संतान, सोतै के संतान हस्सोपेरेत् के संतान परूदा के संतान, ५६। याला के संतान दर्कोन् के संतान गिद्देल् के संतान, ५७। शपत्याह् के संतान हत्तील् के संतान पोकरेत्-सबायीम् के संतान और आमी के संतान ॥ ५८। सब नतीन और सुलैमान के दासों के संतान तीन सौ बानवे थे ॥

५९। फिर जो तेल्मेलह् तेल्हर्शा करूब् अद्दान् और इम्मेर् से आये पर वे अपने अपने पितर के घराने और वंशावली[1] न बता सके कि इस्राएल् के हैं सो ये हैं, ६०। अर्थात् दलायाह् के संतान तोबियाह् के संतान और नकोदा के संतान जो मिलकर छः सौ बावन थे ॥ ६१। और याजकों की संतान में से हबायाह् के संतान हक्कोस् के संतान और बर्जिल्लै के संतान जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की एक बेटी को ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया था ॥ ६२। इन सभों ने अपनी अपनी वंशावली का पत्र औरों की वंशावली की पोथियों में ढूंढा पर वे न मिले इस लिये वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गये ॥ ६३। और अधिपति[2] ने उन से कहा कि जब लों ऊरीम् और तुम्मीम् धारण करनेहारा कोई याजक न हो तब लों तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाओगे ॥

६४। सारी मण्डली मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ की थी ॥ ६५। इन को छोड़ इन के सात हजार तीन सौ सैंतीस दास दासियां और दो सौ गानेवाले और गानेवालियां थीं ॥ ६६। उन के घोड़े सात सौ छत्तीस खच्चर दो सौ पैंतालीस, ६७। ऊंट चार सौ पैंतीस और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे ॥ ६८। और पितरों के घरानों के कुछ मुख्य मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के यरूशलेम् में के भवन को आये तब परमेश्वर के भवन को उसी के स्थान में खड़ा करने के लिये अपनी अपनी इच्छा से कुछ दिया ॥ ६९। उन्हों ने अपनी अपनी

(१) मूल में वंश। (२) मूल में, तिर्शाता।

पूंजी के अनुसार एकसठ हजार दर्कमोन् सोना और पांच हजार माने चांदी और याजकों के योग्य एक सौ अंगरखे अपनी अपनी इच्छा से उस काम के खजाने में दे दिये ॥ ७० । सो याजक और लेवीय और लोगों में से कुछ और गवैये और डेवढ़ीदार और नतीन लोग अपने अपने नगर में और सब इस्राएली अपने अपने नगर में फिर बस गये ॥

(वेदी का बनाया जाना)

३. जब सातवां महीना आया और इस्राएली अपने अपने नगर में बसे थे तब लोग यरूशलेम् में एक मन होकर एकट्ठे हुए ॥ २ । तब अपने भाई याजकों समेत योसादाक् के पुत्र येशू ने और अपने भाइयों समेत शालतीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल् ने कमर बांधकर इस्राएल् के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर होमबलि चढ़ाएं जैसे कि परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था में लिखा है ॥ ३ । सो उन्हों ने वेदी को उस के स्थान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें देश देश के लोगों का भय रहा सो वे उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात् दिन दिन सबेरे और सांझ के होमबलि चढ़ाने लगे ॥ ४ । और उन्हों ने झोंपड़ियों के पर्व्व को माना जैसे कि लिखा है और दिन दिन के होमबलि एक एक दिन की गिनती और नियम के अनुसार चढ़ाये ॥ ५ । और उस के पीछे नित्य होमबलि और नये नये चान्द और यहोवा के पवित्र किये हुए सब नियत पर्व्वों के बलि और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये सब स्वेच्छाबलि देनेहारों के बलि चढ़ाए ॥ ६ । सातवें महीने के पहिले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे परन्तु यहोवा के मन्दिर की नेव तब लों न डाली गई थी ॥ ७ । सो उन्हों ने पत्थर गढ़नेहारों और कारीगरों को रुपैया और सोदेनी और सोरी लोगों को खाने पीने की वस्तुएं और तेल दिया कि वे फारस के राजा कुस्रू के परवाने के अनुसार देवदारु की लकड़ी लबानोन् से यापो के पास के समुद्र में पहुंचाएं ॥

(मन्दिर की नेव डाली जानी)

८ । परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन को आने के दूसरे बरस के दूसरे महीने में शालतीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल् ने और योसादाक् के पुत्र येशू ने और उन के और भाइयों ने जो याजक और लेवीय थे और जितने बंधुआई से यरूशलेम् से आये थे उन्हों ने भी काम का आरंभ किया और बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था के लेवीयों को यहोवा के भवन का काम चलाने को ठहराया ॥ ९ । सो येशू और उस के बेटे और भाई और कद्मीएल् और उस के बेटे जो यहूदा के सन्तान थे और हेनादाद् के सन्तान और उन के बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरों का काम चलाने को खड़े हुए ॥ १० । और जब राजों ने यहोवा के मन्दिर की नेव डाली तब अपने वस्त्र पहिने हुए और तुरहियां लिये हुए याजक और झांझ लिये हुए आसाप् के वंश के लेवीय इस लिये ठहराये गये कि इस्राएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति[१] के अनुसार यहोवा की स्तुति करें ॥ ११ । सो वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे कि वह भला है और उस की करुणा इस्राएल् पर सदा की है । और जब वे यहोवा की स्तुति करने लगे तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नेव अब पड़ रही है ऊंचे शब्द से जयजयकार किया ॥ १२ । परन्तु बहुतेरे याजक और लेवीय और पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष अर्थात् वे बूढ़े जिन्हों ने पहिला भवन देखा था जब इस भवन की नेव उन की आंखों के साम्हने पड़ी तब फूट फूटकर रोये और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊंचे शब्द से जयजयकार कर रहे थे ॥ १३ । सो लोग आनन्द के जयजयकार का शब्द लोगों के रोने के शब्द से अलग पहिचान न सके क्योंकि लोग ऊंचे शब्द से जयजयकार कर रहे थे और वह शब्द दूर लों सुनाई देता था ॥

(यहूदियों के शत्रुओं से मन्दिर के बनने का रोका जाना)

४. जब यहूदा और बिन्यामीन् के शत्रुओं ने यह सुना कि बंधुआई से छूटे हुए लोग इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये

(१) मूल में. दाऊद के हाथ ।

मन्दिर बना रहे हैं, २। तब वे जरुब्बाबेल् और पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर उन से कहने लगे हमें भी अपने संग बनाने दो क्योंकि तुम्हारी नाईं हम भी तुम्हारे परमेश्वर की खोज में लगे हैं और अश्शूर् का राजा एसर्हद्दोन् जिस ने हमें यहां पहुंचाया उस के दिनों से हम उसी को बलि चढ़ाते हैं॥ ३। जरुब्बाबेल् येशू और इस्राएल् के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों ने उन से कहा हमारे परमेश्वर के लिये भवन बनाने में तुम को हम से कुछ काम नहीं हम ही लोग एक संग होकर फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के लिये उसे बनाएंगे॥ ४। तब उस देश के लोग यहूदियों के हाथ ढीले करने और उन्हें डराकर बनाने में रोकने लगे, ५। और रुपैया देकर उन का विरोध करने को वकील करके फारस के राजा कुस्रू के जीवन भर वरन फारस के राजा दारा के राज्य के समय लों यहूदियों की युक्ति निष्फल कर रक्खी॥

६। क्षयर्ष के राज्य के पहिले दिनों में तो उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम् के निवासियों का दोषपत्र लिख भेजा॥ ७। फिर अर्तक्षत्र के दिनों में बिश्लाम् मिथ्रदात् और ताबेल् ने अपने और सहचारियों समेत फारस के राजा अर्तक्षत्र को चिट्ठी लिखी और चिट्ठी अरामी अक्षरों और अरामी भाषा में लिखी गई॥ ८। अर्थात् रहूम् राजमंत्री और शिम्शै मंत्री ने यरूशलेम् के विरुद्ध राजा अर्तक्षत्र को इस आशय की चिट्ठी लिखी॥ ९। उस समय रहूम् राजमंत्री और शिम्शै मंत्री और उन के और सहचारियों ने अर्थात् दीनी अपर्सत्की तर्पली अफारसी एरेकी बाबेली शूशनी देहवी एलामी, १०। आदि जातियों ने जिन्हें महान् और प्रधान ओस्नप्पर् ने पार ले आकर शोमरोन् नगर में और महानद के इस पार के शेष देश में बसाया एक चिट्ठी लिखी इत्यादि॥ ११। जो चिट्ठी उन्हों ने अर्तक्षत्र राजा को लिखी उस की यह नकल है, तेरे दास जो महानद के पार के मनुष्य हैं इत्यादि॥ १२। राजा को यह विदित हो कि जो यहूदी तेरे पास से चले आये सो हमारे पास यरूशलेम् को पहुंचे हैं वे उस दंगैत और घिनौने नगर को बसा रहे हैं बरन उस की शहरपनाह को खड़ा कर चुके और उस की नेव को जोड़ चुके हैं॥ १३। अब राजा को विदित हो कि यदि वह नगर बसाया जाए और उस की शहरपनाह बन चुके तो वे लोग कर चूंगी और राहदारी फिर न देंगे और अन्त में राजाओं की हानि होगी॥ १४। हम लोग तो राजमन्दिर का नमक खाते हैं और उचित नहीं कि राजा का अनादर हमारे देखते हो इस कारण हम यह चिट्ठी भेजकर राजा को चिता देते हैं, १५। इस लिये कि तेरे पुरखाओं के इतिहास की पुस्तक में खोज किई जाए तब इतिहास की पुस्तक में तू यह पाकर जान लेगा कि वह नगर बलवा करनेहारा और राजाओं और प्रान्तों की हानि करनेहारा है और प्राचीन काल से उस में बलवा मचता आया है और इस कारण वह नगर नाश भी किया गया॥ १६। हम राजा को चिता रखते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उस की शहरपनाह बन चुके तो इस कारण से महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह जाएगा॥ १७। तब राजा ने रहूम् राजमंत्री और शिम्शै मंत्री और शोमरोन् और महानद के इस पार रहनेहारे उन के और सहचारियों के पास यह उत्तर भेजा कि कुशल इत्यादि॥ १८। जो चिट्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी सो मेरे साम्हने पढ़कर साफ साफ सुनाई गई॥ १९। और मेरी आज्ञा से खोज किये जाने पर जान पड़ा है कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया और उस में दंगा और बलवा होता आया है॥ २०। यरूशलेम् के सामर्थी राजा भी हुए जो महानद के पार के सारे देश पर राज्य करते थे और कर चूंगी और राहदारी उन को दिई जाती थी॥ २१। सो अब आज्ञा प्रचारो कि वे मनुष्य रोके जाएं और जब लों मेरी ओर से आज्ञा न मिले तब लों वह नगर बसाया न जाए॥ २२। और चौकस रहो कि इस बात में ढीले न होना राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई क्यों बढ़ने पाए॥ २३। जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी रहूम् और

शिम्शै मंत्री और उन के सहचारियों को पढ़कर सुनाई गई तब वे उतावली करके यरूशलेम् को यहूदियों के पास गये और भुजबल और बरियाई से उन को रोक दिया ॥ २४ । तब परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन का काम रुक गया और फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे बरस लों रुका रहा ॥

(मन्दिर के बनने का राजा की आज्ञा से निपटाया जाना)

५. तब हाग्गै नाम नबी और इद्दो का पोता जकर्याह् यहूदा और यरूशलेम् के यहूदियों से नबूवत करने लगे इस्राएल् के परमेश्वर के नाम से उन्हों ने उन से नबूवत किई ॥ २ । सो शालतीएल् का पुत्र जरुब्बाबेल् और योसादाक् का पुत्र येशू कमर बान्धकर परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन को बनाने लगे और परमेश्वर के वे नबी उन का साथ देते रहे ॥ ३ । उसी समय महानद के इस पार का तत्तनै नाम अधिपति और शतर्बोजनै अपने सहचारियों समेत उन के पास आकर यों पूछने लगे कि इस भवन के बनाने और इस शहरपनाह के खड़े करने की किस ने तुम को आज्ञा दिई है ॥ ४ । तब हम लोगों ने उन से यह कहा कि इस भवन के बनानेवालों के क्या क्या नाम हैं ॥ ५ । परन्तु यहूदियों के पुरनियों के परमेश्वर की दृष्टि उन पर रही सो जब लों इस बात की चर्चा दारा से न किई गई और इस के विषय चिट्ठी के द्वारा उत्तर न मिला तब लों उन्हों ने इन को न रोका ॥

६ जो चिट्ठी महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और महानद के इस पार के उन के सहचारी अपार्सकियों ने राजा दारा के पास भेजी उस की नकल यह है ॥ ७ । उन्हों ने उस को एक चिट्ठी लिखी जिस में यह लिखा था कि राजा दारा का कुशल क्षेम सब प्रकार से हो ॥ ८ । राजा को विदित हो कि हम लोग यहूदा नाम प्रान्त में महान् परमेश्वर के भवन के पास गये थे, वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है और उस की भीतों में कड़ियां जुड़ रही हैं और यह काम उन लोगों से फुर्ती के साथ हो रहा और सुफल भी हो जाता है ॥ ९ । सो हम ने उन पुरनियों से यों पूछा कि यह भवन बनवाने और यह शहरपनाह खड़ी करने की आज्ञा किस ने तुम्हें दिई ॥ १० । और हम ने उन के नाम भी पूछे कि हम उन के मुख्य पुरुषों के नाम लिखकर तुझ को जता सकें ॥ ११ । और उन्हों ने हमें यों उत्तर दिया कि हम तो आकाश और पृथिवी के परमेश्वर के दास हैं और जिस भवन को बहुत बरस हुए इस्राएलियों के एक बड़े राजा ने बनाकर तैयार किया था उसी को हम बना रहे हैं ॥ १२ । जब हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई थी तब उस ने उन्हें बाबेल् के कस्दी राजा नबूकद्नेस्सर् के हाथ में कर दिया और उस ने इस भवन को नाश किया और लोगों को बंधुआ करके बाबेल् को ले गया ॥ १३ । पर बाबेल् के राजा कुस्रू के पहिले बरस में उसी कुस्रू राजा ने परमेश्वर के इस भवन के बनाने की आज्ञा दिई ॥ १४ । और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चान्दी के पात्र नबूकद्नेस्सर् यरूशलेम् में के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल् में के मन्दिर में ले गया था उन को राजा कुस्रू ने बाबेल् में के मन्दिर में से निकलवाकर शेशबस्सर् नाम एक पुरुष को जिसे उस ने अधिपति ठहरा दिया सौंप दिया ॥ १५ । और उस ने उस से कहा ये पात्र ले जाकर यरूशलेम् में के मन्दिर में रख और परमेश्वर का वह भवन अपने स्थान पर बनाया जाए ॥ १६ । तब उसी शेशबस्सर् ने आकर परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन की नेव डाली और तब से अब लों यह बन रहा है पर अब लों नहीं बन चुका ॥ १७ । सो अब यदि राजा को भाए तो बाबेल् में के राजभण्डार में इस बात की खोज किई जाए कि राजा कुस्रू ने सचमुच परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन के बनवाने की आज्ञा दिई थी वा नहीं तब राजा इस विषय में अपनी इच्छा हम को जताए ॥

६. तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल् के पुस्तकालय में जहां खजाना भी रहता था खोज किई गई ॥ २ । और मादै नाम

प्रान्त के अहमता नगर के राजगढ़ में एक पुस्तक मिली जिस में यह वृत्तान्त लिखा था कि, ३। राजा कुसू के पहिले बरस मे उसी कुसू राजा ने यह आज्ञा दिई कि परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन के विषय, वह भवन अर्थात् वह स्थान जिस में वलिदान किये जाते थे सो वनाया जाए और उस की नेव दृढ़ता से डाली जाए उस की ऊंचाई और चैाड़ाई साठ साठ हाथ की हों ॥ ४। उस में तीन रद्दे भारी भारी पत्थरों के हों और एक परत नई लकड़ी का हो और इन की लागत राजभवन मे से दिई जाए ॥ ५। और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चांदी के पात्र नबूकद्नेस्सर् ने यरूशलेम् मे के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल् को पहुंचा दिये थे सो लैाटाकर यरूशलेम् में के मन्दिर के अपने अपने स्थान पर पहुंचाये जाएं और तू उन्हें परमेश्वर के भवन में रख देना ॥ ६। सो अब हे महानद के पार के अधिपति तत्तनै हे शतर्वाेजनै तुम अपने सहचारी महानद के पार के अपार्सकियों समेत वहां से अलग रहो ॥ ७। परमेश्वर के उस भवन के काम को रहने दो यहूदियों का अधिपति और यहूदियों के पुरनिये परमेश्वर के उस भवन को उसी के स्थान पर बनाने पाएं ॥ ८। बरन मैं आज्ञा देता हूं कि तुम्हें यहूदियों के उन पुरनियों से ऐसा बर्ताव करना होगा कि परमेश्वर का वह भवन बनाया जाए अर्थात् राजा के धन में से महानद के पार के कर में से उन पुरुषों को फुर्ती के साथ खर्चा दिया जाए ऐसा न हो उन को रुकना पड़े ॥ ९। और क्या बछड़े क्या मेढ़े क्या मेम्ने स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियों के लिये जिस जिस वस्तु का उन्हें प्रयोजन हो और जितना गेहूं लोन दाखमधु और तेल यरूशलेम् में के याजक कहें सो सब उन्हें विना भूल चूक दिन दिन दिया जाए, १०। इस लिये कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को सुखदायक सुगंधवाले बलि चढ़ाकर राजा और राजकुमारों के दीर्घायु के लिये प्रार्थना किया करें ॥ ११। फिर मैं ने आज्ञा दिई है कि जो कोई यह आज्ञा टाले उस के घर में से कड़ी निकाली जाए और उस पर वह आप चढ़ाकर जकड़ा जाए और उस का घर इस अपराध के कारण घूरा बनाया जाए ॥ १२। और परमेश्वर जिस ने वहां अपने नाम का निवास ठहराया है सो क्या राजा क्या प्रजा उन सभों को उलट दे जो यह आज्ञा टालने और परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम् में है नाश करने के लिये हाथ बढ़ाएं। मुझ दारा ने यह आज्ञा दिई है फुर्ती से ऐसा ही करना ॥

१३। तब महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्वाेजनै और उन के सहचारियों ने दारा राजा के चिट्ठी भेजने के कारण उसी के अनुसार फुर्ती से किया ॥ १४। सो यहूदी पुरनिये हाग्गै नबी और इद्दो के पोते जकर्याह् के नबूवत करने से मन्दिर को बनाते रहे और कृतार्थ भी हुए और इस्राएल् के परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुसू दारा और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के अनुसार बनाते बनाते उसे पूरा करने पाये ॥ १५। सो वह भवन राजा दारा के राज्य के छठवें बरस में अदार् महीने के तीसरे दिन को बन चुका ॥ १६। तब इस्राएली अर्थात् याजक लेवीय और और जितने बंधुआई से आये थे उन्हों ने परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा उत्सव के साथ किई ॥ १७। और उस भवन की प्रतिष्ठा में उन्हों ने एक सौ बैल दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और फिर सारे इस्राएल् के निमित्त पापबलि करके इस्राएल् के गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह बकरे चढ़ाये ॥ १८। तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है वैसे उन्हों ने परमेश्वर की आराधना के लिये जो यरूशलेम् में है बारी बारी के याजकों और दल दल के लेवीयों को ठहरा दिया ॥

१९। फिर पहिले महीने के चैादहवें दिन को बंधुआई से आये हुए लोगों ने फसह् माना ॥ २०। क्योंकि याजकों और लेवीयों ने एक मन होकर अपने अपने को शुद्ध किया था सो वे सब के सब शुद्ध थे और उन्हों ने बंधुआई से आये हुए सब लोगों और अपने भाई याजकों के और अपने अपने लिये फसह् के पशु बलि किये ॥ २१। तब बंधुआई से लैाटे हुए इस्राएली और जितने उस देश की अन्यजातियों की अशुद्धता से

इस लिये अलग होकर यहूदियों से मिल गये थे कि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की खोज करें उन सभों ने भोजन किया, २२। और अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन लों आनन्द के साथ मानते रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया था और अश्शूर् के राजा का मन उन की ओर ऐसा फेर दिया था कि उस ने परमेश्वर अर्थात् इस्राएल् के परमेश्वर के भवन के काम में उन को हियाव बंधाया था ॥

(एज्रा का राजा की ओर से यरूशलेम् को भेजा जाना.)

७. इन बातों के पीछे अर्थात् फारस के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में एज्रा बाबेल् से यरूशलेम् को गया वह सरायाह् का पुत्र था और सरायाह् अजर्याह् का पुत्र था अजर्याह् हिल्किय्याह् का, २। हिल्किय्याह् शल्लूम् का शल्लूम् सादोक् का सादोक् अहीतूब् का, ३। अहीतूब् अमर्याह् का अमर्याह् अजर्याह् का अजर्याह् मरायोत् का, ४। मरायोत् जरह्याह् का जरह्याह् उज्जी का उज्जी बुक्की का, ५। बुक्की अबीशू का अबीशू पीनहास् का पीनहास् एलाजार् का और एलाजार् हारून महायाजक का पुत्र था ॥ ६। वह एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने दिई थी निपुण शास्त्री था और उस के परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि[1] जो उस पर रही इस के अनुसार राजा ने उस का सारा मांगा वर दे दिया ॥ ७। और कितने इस्राएली और याजक लेवीय गवैये और नतीन अर्तक्षत्र राजा के सातवें बरस में यरूशलेम् को गये ॥ ८। और वह राजा के सातवें बरस के पांचवें महीने में यरूशलेम् को पहुंचा ॥ ९। पहिले महीने के पहिले दिन को तो वह बाबेल् से चल दिया और उस के परमेश्वर की कृपादृष्टि[2] उस पर रही इस से पांचवें महीने के पहिले दिन वह यरूशलेम् को पहुंचा ॥ १०। क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ बूझ लेने और उस के अनुसार चलने और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था ॥

११। जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा याजक और शास्त्री को दिई जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का और उस की इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था उस की नकल यह है अर्थात्, १२। एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है उस को अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की ओर से इत्यादि ॥ १३। मैं यह आज्ञा देता हूं कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उन के याजक और लेवीय अपनी इच्छा से यरूशलेम् जाने चाहें सो तेरे संग जाने पाएं ॥ १४। तू तो राजा और उस के सातों मंत्रियों की ओर से इस लिये भेजा जाता है कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है यहूदा और यरूशलेम् की दशा बूझ ले, १५। और जो चांदी सोना राजा और उस के मंत्रियों ने इस्राएल् के परमेश्वर को जिस का निवास यरूशलेम् में है अपनी इच्छा से दिया है, १६। और जितना चांदी सोना सारे बाबेल् प्रान्त में तुझे मिलेगा और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यरूशलेम् में है देंगे उस को ले जाए ॥ १७। इस कारण तू उस रुपैये से फुर्ती के साथ बैल मेढ़े और मेम्ने उन के योग्य अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल ले और उस वेदी पर चढ़ाना जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम् में के भवन में है ॥ १८। और जो चांदी सोना बचा रहे उस से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े सोई अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना ॥ १९। और तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं उन्हें यरूशलेम् के परमेश्वर के साम्हने दे देना ॥ २०। और इन से अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े सो राजखजाने में से दे देना ॥ २१। मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता हूं कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की

(१) मूल में हाथ। (२) मूल में भला हाथ।

व्यवस्था का शास्त्री है तुम लोगों से चाहे वह फुर्ती के साथ किया जाए, २२। अर्थात् सौ किक्कार् तक चांदी सौ कोर् तक गेहूं सौ बत् लों दाखमधु सौ बत् लों तेल और लोन जितना चाहिये उतना दिया जाए॥ २३। जो जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिले ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिये किया जाए राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध तो क्यों भड़कने पाए॥ २४। फिर हम तुम को चिता देते हैं कि परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक लेवीय गवैये डेवढ़ीदार नतीन वा और किसी सेवक से कर चुंगी वा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है॥ २५। फिर हे एज्रा तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है न्यायियों और विचार करनेहारों को ठहराना जो महानद के पार रहनेहारे उन सब लोगों में जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हों न्याय किया करें और जो जो उन्हें न जानते हों उन को तुम सिखाया करो॥ २६। और जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने उस को दण्ड फुर्ती से दिया जाए चाहे प्राणदण्ड चाहे देश निकाला चाहे माल जब्त किया जाना चाहे कैद करना॥

२७। धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा जिस ने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न किई है कि यहोवा के यरूशलेम् में के भवन को संवारे, २८। और मुझ पर राजा और उस के मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों को दयालु किया। सो मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि[1] जो मुझ पर हुई उस के अनुसार मैं ने हियाव बांधा और इस्राएल् में से कितने मुख्य पुरुषों को एकट्ठे किया कि वे मेरे संग चलें॥

(एज्रा का सहचारियों समेत यरूशलेम् को पहुंचना)

८. उन के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ये हैं और जो लोग राजा अर्तक्षत्र के राज्य में बाबेल् से मेरे संग यरूशलेम् को गये उन की वंशावली यह है॥ २। अर्थात् पीनहास् के वंश में से गेर्शोम् ईतामार् के वंश में से दानिय्येल् दाऊद के वंश में से हत्तूश्, ३। शकन्याह् के वंश के, परोश् के वंश में से जकर्याह् जिस के संग डेढ़ सौ पुरुषों की वंशावली हुई॥ ४। पहत्मोआब् के वंश में से जरह्याह् का पुत्र एल्यहोएनै जिस के संग दो सौ पुरुष थे॥ ५। शकन्याह् के वंश में से यहजीएल् का पुत्र जिस के संग तीन सौ पुरुष थे॥ ६। आदीन् के वंश में से योनातान् का पुत्र एबेद् जिस के संग पचास पुरुष थे॥ ७। एलाम् के वंश में से अतल्याह् का पुत्र यशायाह् जिस के संग सत्तर पुरुष थे॥ ८। शपत्याह् के वंश में से मीकाएल् का पुत्र जबद्याह् जिस के संग अस्सी पुरुष थे॥ ९। योआब् के वंश में से यहीएल् का पुत्र ओबद्याह् जिस के संग दो सौ अठारह पुरुष थे॥ १०। शलोमीत् के वंश में से योसिप्याह् का पुत्र जिस के संग एक सौ साठ पुरुष थे॥ ११। बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह् जिस के संग अट्ठाईस पुरुष थे॥ १२। अज्गाद् के वंश में से हक्कातान् का पुत्र योहानान् जिस के संग एक सौ दस पुरुष थे॥ १३। अदोनीकाम् के वंश में से जो पीछे गये उन के ये नाम हैं अर्थात् एलीपेलेत् यीएल् और शमायाह् और उन के संग साठ पुरुष थे॥ १४। और बिग्वै के वंश में से ऊतै और जब्बूद् थे और उन के संग सत्तर पुरुष थे।

१५। इन को मैं ने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है एकट्ठा कर लिया और वहां हम लोग तीन दिन डेरे डाले रहे और मैं ने वहां लोगों और याजकों को देख लिया पर किसी लेवीय को न पाया॥ १६। सो मैं ने एलीएजेर् अरीएल् शमायाह् एल्नातान् यारीब् एल्नातान् नातान् जकर्याह् और मशुल्लाम् को जो मुख्य पुरुष थे और योयारीब् और एल्नातान् को जो बुद्धिमान थे बुलवाकर, १७। इद्दो के पास जो कासिप्या नाम स्थान का प्रधान था भेज दिया और उन को समझा दिया कि कासिप्या स्थान में इद्दो और उस के भाई नतीन लोगों से क्या क्या कहना कि वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा टहल करनेहारों को

(१) मूल में, हाथ।

ले आएं ॥ १८ । और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि[1] जो हम पर हुई इस के अनुसार वे हमारे पास ईश्शेकेल्[2] को जो इस्राएल् के परपोता और लेवी के पोता महली के वंश में से था और शेरेब्याह् को और उस के पुत्रों और भाइयों को अर्थात् अठारह जनों को, १९ । और हशब्याह् को और उस के संग मरारी के वंश में से यशायाह् को और उस के पुत्रों और भाइयों को अर्थात् बीस जनों को, २० । और नतीन लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने लेवीयों की सेवा करने को ठहराया था दो सौ बीस नतीनों को ले आये । इन सभों के नाम लिखे हुए थे ॥ २१ । तब मैं ने वहां अर्थात् अहवा नदी के तीर पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम परमेश्वर के साम्हने दीन हों और उस से अपने और अपने बालबच्चों और अपनी सारी संपत्ति के लिये सरल यात्रा मांगें ॥ २२ । क्योंकि मैं मार्ग में के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से मांगने से लजाता था क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे कि हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर तो उन की भलाई के लिये कृपादृष्टि[3] रखता पर जो उसे त्याग देते हैं उस का बल और कोप उन के विरुद्ध है ॥ २३ । सो इस विषय हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उस ने हमारी सुनी ॥ २४ । तब मैं ने मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को अर्थात् शेरेब्याह् हशब्याह् और इन के दस भाइयों को अलग करके, २५ । जो चांदी सोना और पात्र राजा और उस के मंत्रियों और उस के हाकिमों और जितने इस्राएली हाजिर थे उन्हों ने हमारे परमेश्वर के भवन के लिये भेंट दिये थे उन्हें तौलकर उन को दिया ॥ २६ । अर्थात् मैं ने उन के हाथ में साढ़े छः सौ किक्कार् चांदी सौ किक्कार् चांदी के पात्र सौ किक्कार् सोना, २७ । हजार दर्कमोन् के सोने के बीस कटोरे और सोने सरीखे अनमोल चोखे

(१) मूल में भला हाथ । (२) वा एक बुद्धिमान पुरुष ।
(३) मूल में हाथ ।

चमकनेहारे पीतल के दो पात्र तौलकर दे दिये ॥ २८ । और मैं ने उन से कहा तुम तो यहोवा के लिये पवित्र हो और ये पात्र भी पवित्र हैं और यह चांदी और सोना भेंट[1] का है जो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दिई गई ॥ २९ । सो जागते रहो और जब लों तुम इन्हें यरूशलेम् में प्रधान याजकों और लेवीयों और इस्राएल् के पितरों के घरानों के प्रधानों के साम्हने यहोवा के भवन की कोठरियों में तौलकर न दो तब लों इन की रक्षा करते रहो ॥ ३० । तब याजकों और लेवीयों ने चांदी सोने और पात्रों को तौलकर लिया कि उन्हें यरूशलेम् को हमारे परमेश्वर के भवन में पहुंचाएं ॥

३१ । पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच करके यरूशलेम् का मार्ग लिया और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि[1] हम पर रही और उस ने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेहारों के हाथ से बचाया ॥ ३२ । निदान हम यरूशलेम् को पहुंचे और वहां तीन दिन रहे ॥ ३३ । फिर चौथे दिन वह चांदी सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह् के पुत्र मरेमोत् याजक के हाथ में तौलकर दिये गये और उस के संग पीनहास् का पुत्र एलाजार् था और उन के संग येशू का पुत्र योजाबाद् लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह् लेवीय थे ॥ ३४ । वे सब वस्तुएं गिनी और तौली गईं और उन की सारी तौल उसी समय लिखी गई ॥ ३५ । जो बंधुआई से आये थे उन्हों ने इस्राएल् के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाये अर्थात् सारे इस्राएल् के निमित्त बारह बछड़े छियानवे मेढ़े और सतहत्तर मेम्ने और पापबलि के लिये बारह बकरे यह सब यहोवा के लिये होमबलि था ॥ ३६ । तब उन्हों ने राजा की आज्ञाएं महानद के इस पार के उस के अधिकारियों और अधिपतियों को दिईं और उन्हों ने इस्राएली लोगों और परमेश्वर के भवन के काम की सहायता किई ॥

(१) मूल में हाथ ।

(यहूदा के पाप के कारण एज्रा की प्रार्थना)

९. जब ये काम हो चुके तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे न तो इस्राएली लोग न याजक न लेवीय देश देश के लोगों से न्यारे हुए बरन उन के से अर्थात् कनानियों हित्तियों परिज्जियों यबूसियों अम्मोनियों मोआबियों मिस्रियों और एमोरियों के से घिनौने काम करते हैं ॥ २। क्योंकि उन्हों ने उन की बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये स्त्रियां कर लिई हैं और पवित्र वंश देश देश के लोगों में मिल गया है बरन हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं॥ ३। यह बात सुनकर मैं ने अपने वस्त्र और बागे को फाड़ा और अपने सिर और डाढ़ी के बाल नोचे और विस्मित होकर बैठा रहा ॥ ४। तब जितने लोग इस्राएल् के परमेश्वर के वचन सुनकर बंधुआई से आये हुए लोगों के विश्वासघात के कारण थरथराते थे सब मेरे पास एकट्ठे हुए और मैं सांझ की भेंट के समय लों विस्मित होकर बैठा रहा ॥ ५। पर सांझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा फिर घुटनों के बल झुका और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर. ६। कहा हे मेरे परमेश्वर मुझे तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है और हे मेरे परमेश्वर मेरा मुंह काला है क्योंकि हम लोगों के अधर्म्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गये हैं और हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश लों पहुंचा है ॥ ७। अपने पुरखाओं के दिनों से ले आज के दिन लों हम बड़े दोषी हैं और अपने अधर्म्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश देश के राजाओं के हाथ में किये गये कि तलवार बंधुआई लूटे जाने और मुंह काले हो जाने की विपत्तियों में पड़े जैसे कि आज हमारी दशा है ॥ ८। और अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है कि हम में से कोई कोई बच निकले और हम को उस के पवित्र स्थान में एक खूंटी मिली और हमारे परमेश्वर ने हमारी आंखों में ज्योति आने दिई और दासत्व में हम को थोड़ा सा नया जीवन मिला ॥ ९। हम दास तो हैं ही पर हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया बरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने और उस के खंडहरों को सुधारने पाये और हमें यहूदा और यरूशलेम् में आड़ मिली ॥ १०। और अब हे हमारे परमेश्वर इस के पीछे हम क्या कहें यही कि हम ने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है, ११। जो तू ने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दिईं कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो वह तो देश देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उन के घिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है उन्हों ने तो उसे एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों अपनी अशुद्धता से भर दिया है ॥ १२। सो अब तुम न तो अपनी बेटियां उन के बेटों को ब्याह देना न उन की बेटियों से अपने बेटों का ब्याह करना और न कभी उन का कुशल क्षेम चाहना इस लिये कि तुम बल पकड़ो और उस देश के अच्छे अच्छे पदार्थ खाने पाओ और उसे ऐसा छोड़ जाओ कि वह तुम्हारे वंश का अधिकार सदा बना रहे ॥ १३। और उस सब के पीछे जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है जब हे हमारे परमेश्वर तू ने हमारे अधर्म्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया बरन हम में से इतनों को बचा रक्खा है, १४। तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर तोड़कर इन घिनौने काम करनेहारे लोगों से समधियाना करें। क्या तू हम पर यहां तक कोप न करेगा कि हम मिट जाएंगे और न तो कोई बचेगा न कोई छूटा रहेगा॥ १५। हे इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा तू तो धर्म्मी है हम बचकर छूटे हुए हैं जैसे कि आज देख पड़ता है देख हम तेरे साम्हने दोषी हैं इस कारण से कोई तेरे साम्हने खड़ा नहीं रह सकता ॥

(यहूदियों का अन्यजाति स्त्रियों को दूर करना)

१०. जब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने पड़ा रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था तब इस्राएल् में से

पुरुषों स्त्रियों और लड़केवालों की एक बहुत बड़ी मण्डली उस के पास जुड़ गई और लोग बिलक बिलक रो रहे थे ॥ २। तब यहीएल् का पुत्र शकन्याह् जो एलाम् की सन्तान में का था एज्रा से कहने लगा हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियां व्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है पर इस दशा में भी इस्राएल् के लिये आशा है ॥ ३। सो अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बांधें कि हम प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेहारों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उन के लड़केवालों को दूर करें और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए ॥ ४। तू उठ क्योंकि यह काम तेरा ही है और हम तेरे साथ हैं सो हियाव बांधकर इस काम में लग जा ॥ ५। तब एज्रा उठा और याजकों लेवीयों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को यह किरिया खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे और उन्हों ने वैसी ही किरिया खाई ॥ ६। तब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने से उठा और एल्याशीब् के पुत्र योहानान् की कोठरी में गया और वहां पहुंचकर न तो रोटी खाई न पानी पिया क्योंकि वह बंधुआई से आये हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा ॥ ७। तब उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम् में रहनेहारे बंधुआई से आये हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया कि तुम यरूशलेम् में एकट्ठे हो, ८। और जो कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति न माने और दिन लों न आए उस की सारी धनसंपत्ति सत्यानाश किई जाएगी और वह आप बंधुआई से आये हुओं की सभा से अलग किया जाएगा ॥ ९। सो यहूदा और बिन्यामीन् के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम् में एकट्ठे हुए यह तो नौवें महीने के बीसवें दिन हुआ और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और झड़ी के मारे कांपते हुए बैठे रहे ॥ १०। तब एज्रा याजक खड़ा होकर उन से कहने लगा तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति स्त्रियां व्याह लिई और इस से इस्राएल् का दोष बढ़ गया है ॥ ११। सो अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपना पाप मान लो और उस की इच्छा पूरी करो और इस देश के लोगों से और अन्यजाति स्त्रियों से न्यारे हो जाओ ॥ १२। तब सारी मण्डली के लोगों ने ऊंचे शब्द से कहा जैसा तू ने कहा है वैसा ही हमें करना उचित है ॥ १३। पर लोग बहुत हैं और झड़ी का समय है और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते और यह दो एक दिन का काम नहीं है क्योंकि हम ने इस बात में बड़ा अपराध किया है ॥ १४। सारी मण्डली की ओर से हमारे हाकिम ठहराये जाएं और जब लों हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप हम पर से दूर न हो और यह काम निपट न जाए तब लों हमारे नगरों के जितने निवासियों ने अन्यजाति स्त्रियां व्याह लिई हों सो नियत समयों पर आया करें और उन के संग एक एक नगर के पुरनिये और न्यायी आएं ॥ १५। इस के विरुद्ध केवल असाहेल् के पुत्र योनातान् और तिक्वा के पुत्र यहूजयाह् खड़े हुए और मशुल्लाम् और शब्बतै लेवीयों ने उन का सहारा किया ॥ १६। पर बंधुआई से आये हुए लोगों ने वैसा ही किया। सो एज्रा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किये गये और दसवें महीने के पहिले दिन को इस बात की तहकीकात के लिये बैठने लगे ॥ १७। और पहिले महीने के पहिले दिन लों उन्हों ने उन सब पुरुषों की बात निपटा दिई जिन्हों ने अन्यजाति स्त्रियों को व्याह लिया था ॥ १८। और याजकों की सन्तान में से ये जन पाये गये जिन्हों ने अन्यजाति स्त्रियों को व्याह लिया था अर्थात् योशादाक् के पुत्र येशू के पुत्र और उस के भाई मासेयाह् एलीएजेर् यारीब् और गदल्याह् ॥ १९। इन्हों ने हाथ मारकर वचन दिया कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे, और उन्हों ने दोषी ठहरकर अपने अपने दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया ॥ २०। और इम्मेर् की सन्तान में से हनानी और जबद्याह्, २१। और हारीम् की संतान में से मासेयाह् एलिय्याह्

शमायाह् यहीएल् और उज्जिय्याह्, २२। और पशहूर् की संतान में से एल्योएनै मासेयाह् इश्माएल् नतनेल् योजाबाद् और एलासा॥ २३। फिर लेवीयों में से योजाबाद् शिमी केलायाह् जो कलीता कहलाता है पतह्याह् यहूदा और एलीएजेर्॥ २४। और गानेहारों में से एल्याशीब् और डेवढ़ीदारों में से शल्लूम् तेलेम् और ऊरी॥ २५। और इस्राएल् में से परोश् की संतान में से रम्याह् यिज्जिय्याह् मल्किय्याह् मिय्यामीन् एलाजार् मल्किय्याह् और बनायाह्, २६। और एलाम् की संतान में से मत्तन्याह् जकर्याह् यहीएल् अब्दी यरेमोत् और एलिय्याह्, २७। और जत्तू की संतान में से एल्योएनै एल्याशीब् मत्तन्याह् यरेमोत् जाबाद् और अजीजा, २८। और बेबै की संतान में से यहोहानान् हनन्याह् जब्बै और अत्लै, २९। और बानी की सन्तान में से मशुल्लाम् मल्लूक् अदायाह् याशूब् शाल् और यरामोत्, ३०। और पहत्मोआब् की सन्तान में से अद्ना कलाल् बनायाह् मासेयाह् मत्तन्याह् बसलेल् बिन्नूई और मनश्शे, ३१। और हारीम् की सन्तान में से एलीएजेर् यिश्शिय्याह् मल्किय्याह् शमायाह् शिमोन्, ३२। बिन्यामीन् मल्लूक् और शमर्याह्, ३३। और हाशूम् की सन्तान में से मत्तनै मत्तत्ता जाबाद् एलीपेलेत् यरेमै मनश्शे और शिमी, ३४। और बानी की सन्तान में से मादै अम्राम् ऊएल्, ३५। बनायाह् बेदयाह् कलूही, ३६। वन्याह् मरेमोत् एल्याशीब्, ३७। मत्तन्याह् मत्तनै यासू, ३८। बानी बिन्नूई शिमी, ३९। शेलेम्याह् नातान् अदायाह्, ४०। मक्नद्बै शाशै शारै, ४१। अजरेल् शेलेम्याह् शमर्याह्, ४२। शल्लूम् अमर्याह् और योसेप्, ४३। और नबो की सन्तान में से योएल् मत्तित्याह् जाबाद् जबीना इद्दो योएल् और बनायाह्॥ ४४। इन सभों ने अन्यजाति स्त्रियां ब्याह लिई थीं और कितनों की स्त्रियों से लड़के भी उत्पन्न हुए थे॥

नहेम्याह् नाम पुस्तक।

(नहेम्याह् का राजा से आज्ञा पाकर यरूशलेम् को जाना)

१. हकल्याह् के पुत्र नहेम्याह् के वचन। बीसवें बरस के किस्लेव् नाम महीने में जब मैं शूशन् नाम राजगढ़ में रहता था, २। तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आये हुए कई एक पुरुष आये तब मैं ने उन से उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बंधुआई से छूट गये थे और यरूशलेम् के विषय पूछा॥ ३। उन्हों ने मुझ से कहा जो बचे हुए लोग बंधुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं से बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं और उन की निन्दा होती है क्योंकि यरूशलेम् की शहरपनाह टूटी हुई और उस के फाटक जले हुए हैं॥ ४। ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास और यह कहकर प्रार्थना करता रहा कि, ५। हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा हे महान और भययोग्य ईश्वर तू जो अपने प्रेम रखनेहारों और आज्ञा माननेहारों के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है, ६। तू कान लगाये और आंखें खोले रह कि जो प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिये दिन रात करता रहता हूं उसे तू सुन ले। मैं इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किये हैं मान लेता हूं मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है॥ ७। हम ने तेरे साम्हने बहुत बुराई किई है और जो आज्ञाएं विधियां और नियम तू ने अपने दास मूसा

को दिये थे उन को हम ने नहीं माना ॥ ८ । उस वचन की सुधि ले जो तू ने अपने दास मूसा से कहा था कि यदि तुम लोग विश्वासघात करो तो मैं तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करूंगा, ९ । पर यदि तुम मेरी ओर फिरो और मेरी आज्ञाएं मानो और उन पर चलो तो चाहे तुम में से धकियाये हुए लोग आकाश की छोर में भी हों तौभी मैं उन को वहां से एकट्ठा करके उस स्थान में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है ॥ १० । अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिन को तू ने अपने बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है ॥ ११ । हे प्रभु बिनती यह है कि तू अपने दास की प्रार्थना पर और अपने उन दासों की प्रार्थना पर जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं कान लगा और आज अपने दास का काम सुफल कर और उस पुरुष को उस पर दयालु कर । मैं तो राजा का पिलानेहारा था ॥

२. अर्तक्षत्र

राजा के बीसवें बरस के नीसान् नाम महीने में जब उस के साम्हने दाखमधु था तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया । उस से पहिले तो मैं उस के साम्हने उदास कभी न हुआ था ॥ २ । सो राजा ने मुझ से पूछा तू तो रोगी नहीं है फिर तेरा मुंह क्यों उतरा है यह तो मन ही की उदासी होगी । तब मैं अत्यन्त डर गया, ३ । और राजा से कहा राजा सदा जीता रहे जब वह नगर जिस में मेरे पुरखाओं की कबरें हैं उजाड़ पड़ा और उस के फाटक जले हुए हैं तो मेरा मुंह क्यों न उतरे ॥ ४ । राजा ने मुझ से पूछा फिर तू क्या मांगता है तब मैं ने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके, ५ । राजा से कहा यदि राजा को भाए और तू अपने दास से प्रसन्न हो तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कबरों के नगर को भेज कि मैं उसे बनाऊं ॥ ६ । तब राजा ने जिस के पास रानी बैठी थी मुझ से पूछा तू कितने दिन लों परदेश रहेगा और कब लौटेगा । सो राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ और मैं ने उस के लिये एक समय ठहराया ॥ ७ । फिर मैं ने राजा से कहा यदि राजा को भाए तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियां मुझे दिई जाएं कि जब लों मैं यहूदा को न पहुंचूं तब लों वे मुझे अपने अपने देश से होकर जाने दें ॥ ८ । और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप् के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दिई जाए कि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये और शहरपनाह के और उस घर के लिये जिस में मैं जाकर रहूंगा लकड़ी दे । मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि[1] मुझ पर रही इस से राजा ने मुझे यह दिया । तब मैं ने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियां दिईं । राजा ने तो मेरे संग सेनापति और सवार भेजे थे ॥ १० । यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है होरोनी सम्बल्लत् और तोबिय्याह् नाम कर्म्मचारी जो अम्मोनी था उन दोनों को बहुत बुरा लगा ॥ ११ । जब मैं यरूशलेम् में पहुंच गया तब वहां तीन दिन रहा ॥ १२ । तब मैं थोड़े पुरुषों समेत रात को उठा मैं ने तो किसी को न बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम् के हित के लिये मेरे मन में क्या उपजाया था और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु भी मेरे संग न था ॥ १३ । सो मैं रात को तराई के फाटक होकर निकला और अजगर के सोते की ओर और कूड़ा-फाटक के पास गया और यरूशलेम् की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा ॥ १४ । तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया पर मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था ॥ १५ । तब मैं रात ही रात नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर आया और यों लौट गया ॥ १६ । और हाकिम न जानते थे कि मैं कहां गया और क्या करता था बरन मैं ने तब तक न तो यहूदियों को

[1] (१) मूल में भला हाथ ।

कुछ बताया था न याजकों न रईसों न हाकिमों न दूसरे काम करनेहारों को॥ १७। तब मैं ने उन से कहा तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं कि यरूशलेम् उजाड़ पड़ा और उस के फाटक जले हुए हैं सो आओ हम यरूशलेम् की शहरपनाह को उठाएं कि आगे को हमारी नामधराई न रहे॥ १८। फिर मैं ने उन को बतलाया कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि[1] मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कही थीं तब उन्हों ने कहा आओ हम कमर बान्धकर बनाने लगें और उन्हों ने वह भला काम करने को हियाव बांध लिया॥ १९। यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत् और तोबिय्याह् नाम कर्मचारी जो अम्मोनी था और गेशेम् नाम एक अरबी हमें ठट्ठों में उड़ाने लगे और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे यह तुम क्या काम करते हो क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करोगे॥ २०। तब मैं ने उन को उत्तर देकर उन से कहा स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सुफल करेगा इस लिये हम उस के दास कमर बांधकर बनाएंगे पर यरूशलेम् में तुम्हारा न तो भाग न हक न स्मरण है॥

(यरूशलेम् की शहरपनाह का फेर बनाया जाना.)

३. तब एल्याशीब् महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बान्धकर भेड़-फाटक को बनाया उन्हों ने उस की प्रतिष्ठा किई और उस के पल्लों को भी लगाया और हम्मेआ नाम गुम्मट लों वरन हननेल् के गुम्मट के पास लों उन्हों ने शहरपनाह की प्रतिष्ठा किई॥ २। उस से आगे यरीहो के मनुष्यों ने बनाया और इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया॥ ३। फिर मछलीफाटक को हस्सना के बेटों ने बनाया उन्हीं ने उस की कड़ियां लगाईं और उस के पल्ले ताले और बेंड़े लगाये॥ ४। और इन से आगे मरेमोत् ने जो हक्कोस् का पोता और ऊरिय्याह् का पुत्र था मरम्मत किई और इन से आगे मशुल्लाम् ने जो मशेजबेल् का पोता और बेरेक्याह् का पुत्र था मरम्मत किई और इन से आगे बाना के पुत्र सादोक् ने मरम्मत किई॥ ५। और इन से आगे तकोइयों ने मरम्मत किई पर उन के रईसों ने अपने प्रभु की सेवा का जूआ अपनी गर्दन पर न लिया॥ ६। फिर पुराने फाटक की मरम्मत पासेह् के पुत्र योयादा और बसोदयाह् के पुत्र मशुल्लाम् ने किई उन्हीं ने उस की कड़ियां लगाईं और उस के पल्ले ताले और बेंड़े लगाये॥ ७। और उन से आगे गिबोनी मलत्याह् और मेरोनोती यादोन् ने और गिबोन् और मिस्पा के मनुष्यों ने महानद के पार के अधिपति के सिंहासन की ओर मरम्मत किई॥ ८। उन से आगे हर्हयाह् के पुत्र उज्जीएल् ने और और सुनारों ने मरम्मत किई और इस से आगे हनन्याह् ने जो गंधियों के समाज का था[1] मरम्मत किई और उन्हों ने चौड़ी शहरपनाह लों यरूशलेम् को दृढ़ किया॥ ९। और उन से आगे हूर् के पुत्र रपायाह् ने जो यरूशलेम् के आधे जिले का हाकिम था मरम्मत किई॥ १०। और उन से आगे हरूमप् के पुत्र यदायाह् ने अपने ही घर के साम्हने मरम्मत किई और इस से आगे हशब्नयाह् के पुत्र हत्तूश् ने मरम्मत किई॥ ११। हारीम् के पुत्र मल्किय्याह् और पहत्मोआब् के पुत्र हश्शूब् ने एक और भाग की और भट्ठों के गुम्मट को मरम्मत किई॥ १२। इस से आगे यरूशलेम् के आधे जिले के हाकिम हल्लोहेश् के पुत्र शल्लूम् ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत किई॥ १३। तराई के फाटक की मरम्मत हानून् और जानोह् के निवासियों ने किई उन्हों ने उस को बनाया और उस के ताले बेंड़े और पल्ले लगाये और हजार हाथ की शहरपनाह को भी अर्थात् कूड़ाफाटक तक बनाया॥ १४। और कूड़ाफाटक की मरम्मत रेकाब् के पुत्र मल्किय्याह् ने किई जो बेथक्केरेम् के जिले का हाकिम था उसी ने उस को बनाया और उस के ताले बेंड़े और पल्ले लगाये॥ १५। और सोताफाटक की मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम् ने किई जो मिस्पा के जिले का हाकिम था उसी ने उस को बनाया और पाटा और उस के ताले बेंड़े और पल्ले लगाये और उसी ने राजा की

(१) मूल में भला हाथ।

(१) मूल में जो गंधियों का बेटा था।

यारी के पास के शेलह् नाम कुण्ड की शहरपनाह को भी दाऊदपुर से उतरनेहारी सीढ़ी लों बनाया ॥ १६ । इस के पीछे अज़्बूक् के पुत्र नहेम्याह् ने जो बेत्सूर् के आधे जिले का हाकिम था दाऊद के कबरिस्तान के साम्हने तक और बनाये हुए पोखरे लों वरन वीरों के घर तक भी मरम्मत किई ॥ १७ । इस के पीछे बानी के पुत्र रहूम् ने कितने लेवीयों समेत मरम्मत किई । इस से आगे कीला के आधे जिले के हाकिम हशब्याह् ने अपने जिले की ओर से मरम्मत किई ॥ १८ । उस के पीछे उन के भाइयों समेत कीला के आधे जिले के हाकिम हेनादाद् के पुत्र बव्वै ने मरम्मत किई ॥ १९ । उस से आगे एक और भाग की मरम्मत जो शहरपनाह के मोड़ के पास शस्त्रों के घर की चढ़ाई के साम्हने है येशू के पुत्र एज़ेर् ने किई जो मिस्पा का हाकिम था ॥ २० । उस के पीछे एक और भाग की अर्थात् उसी मोड़ से ले एल्याशीब् महायाजक के घर के द्वार लों की मरम्मत जब्बै के पुत्र बारूक् ने तन मन से किई ॥ २१ । इस के पीछे एक और भाग की अर्थात् एल्याशीब् के घर के द्वार से ले उसी घर के सिरे लों की मरम्मत मरेमोत् ने किई जो हक्कोस् का पोता और ऊरिय्याह् का पुत्र था ॥ २२ । उस के पीछे उन याजकों ने मरम्मत किई जो तराई के मनुष्य थे ॥ २३ । उन के पीछे बिन्यामीन् और हश्शूब् ने अपने घर के साम्हने मरम्मत किई और इन के पीछे अजर्याह् ने जो मासेयाह् का पुत्र और अनन्याह् का पोता था अपने घर के पास मरम्मत किई ॥ २४ । उस के पीछे एक और भाग की अर्थात् अजर्याह् के घर से ले शहरपनाह के मोड़ वरन उस के कोने लों की मरम्मत हेनादाद् के पुत्र बिन्नूई ने किई ॥ २५ । फिर उसी मोड़ के साम्हने जो ऊंचा गुम्मट राजभवन से उभरा हुआ पहरे के आंगन के पास है उस के साम्हने ऊजै के पुत्र पालाल् ने मरम्मत किई इस के पीछे परोश् के पुत्र पदायाह् ने मरम्मत किई ॥ २६ । नतीन लोग तो ओपेल् में पूरब ओर जलफाटक के साम्हने लों और उभरे गुम्मट लों रहते थे ॥ २७ । पदायाह् के पीछे तकोइयों ने एक और भाग की मरम्मत किई जो बड़े उभरे हुए गुम्मट के साम्हने और ओपेल् की शहरपनाह लों है ॥ २८ । फिर घोड़ाफाटक के ऊपर याजकों ने अपने अपने घर के साम्हने मरम्मत किई ॥ २९ । इन के पीछे इम्मेर् के पुत्र सादोक् ने अपने घर के साम्हने मरम्मत किई और इस के पीछे पूरबी फाटक के रखवाले शकन्याह् के पुत्र शमायाह् ने मरम्मत किई ॥ ३० । इस के पीछे शेलेम्याह् के पुत्र हनन्याह् और सालाप् के छठवें पुत्र हानून् ने एक और भाग की मरम्मत किई । इन के पीछे बेरेक्याह् के पुत्र मशुल्लाम् ने अपनी कोठरी के साम्हने मरम्मत किई ॥ ३१ । उस के पीछे मल्किय्याह् ने जो सुनार था[1] नतीनों और व्योपारियों के स्थान लों ठहराये हुए स्थान के फाटक[2] के साम्हने और कोने के कोठे तक मरम्मत किई ॥ ३२ । और कोनेवाले कोठे से ले भेड़फाटक लों सुनारों और व्योपारियों ने मरम्मत किई ॥

(यहूदियों के शत्रुओं का विरोध करना)

४. जब सम्बल्लत् ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं तब उस ने बुरा माना और बहुत रिसियाकर यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाने लगा ॥ २ । वह अपने भाइयों के और शोमरोन् की सेना के साम्हने यों कहने लगा वे निर्बल यहूदी क्या किया चाहते हैं क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे[3] क्या वे अपना स्थान दृढ़ करेंगे क्या वे यज्ञ करेंगे क्या वे आज ही सब काम निपटा डालेंगे क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएंगे[4] ॥ ३ । उस के पास तो अम्मोनी तोबिय्याह् था सो वह कहने लगा जो कुछ वे बना रहे हैं यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े तो वह उन की बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा ॥ ४ । हे हमारे परमेश्वर सुन ले कि हमारा अपमान हो रहा है और उन की किई हुई नामधराई को उन्हीं के सिर पर लौटा दे और उन्हें बंधुआई के देश में लुटवा दे ॥ ५ । और उन का अधर्म्म तू ढांप न दे न उन का पाप तेरे

(१) मूल में जो सुनारों का बेटा था । (२) वा हम्मिफ्काद् नाम फाटक । (३) मूल में वे अपने लिये छोड़ेंगे (४) मूल में जिलाएंगे ।

मन से भूल जाए[1] क्योंकि उन्हों ने तुझे शहरपनाह बनानेहारों के साम्हने रिस दिलाई ॥ ६ । और हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया और सारी शहरपनाह आधी ऊंचाई लों जुड़ गई क्योंकि लोगों का मन उस काम में लगा रहा ॥

७। जब सम्बल्लत् और तोबिय्याह् और अरबियों अम्मोनियों और अश्दोदियों ने सुना कि यरूशलेम् की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है[2] और उस में के नाके बन्द होने लगे तब उन्हों ने बहुत ही बुरा माना, ८। और सभों ने एक मन से गोष्ठी किई कि हम जाकर यरूशलेम् से लड़ेंगे और उस में गड़बड़ डालेंगे ॥ ९। पर हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उन के डर के मारे उन के विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिये ॥ १०। और यहूदी कहने लगे ढोनेहारों का बल घट गया और मिट्टी बहुत पड़ी है सो शहरपनाह हम से नहीं बन सकती ॥ ११। और हमारे शत्रु कहने लगे कि जब लों हम उन के बीच में न पहुंचें और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें तब लों उन को न कुछ मालूम होगा और न कुछ देख पड़ेगा ॥ १२। फिर जो यहूदी उन के पास रहते थे उन्हों ने सब स्थानों से दस बार आ आकर हम लोगों से कहा हमारे पास लौटना चाहिये ॥ १३। इस कारण मैं ने लोगों को तलवारें बर्छियां और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सब से नीचे के खुले स्थानों में घराने घराने के अनुसार बैठा दिया ॥ १४। तब मैं देखकर उठा और रईसों और हाकिमों और और सब लोगों से कहा उन से मत डरो प्रभु जो महान् और भययोग्य है उसी को स्मरण करके अपने भाइयों बेटों बेटियों स्त्रियों और घरों के लिये लड़ना ॥ १५। सो जब हमारे शत्रुओं ने सुना कि यह उन्हें मालूम हो गया और परमेश्वर ने हमारी युक्ति निष्फल किई है तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने अपने काम पर लौट गये ॥ १६। और उस दिन से मेरे आधे सेवक तो उस काम में लगे और आधे बर्छियों तलवारों धनुषों और झिलमों को धारण किये रहते थे और यहूदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे ॥ १७। शहरपनाह के बनानेहारे और बोझ के ढोनेहारे दोनों भार उठाते थे अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे ॥ १८। और राज अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाये हुए बनाते थे। और नरसिंगे का फूंकनेहारा मेरे पास रहता था ॥ १९। सो मैं ने रईसों हाकिमों और सब लोगों से कहा काम तो बड़ा और फैला हुआ है और हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं ॥ २०। सो जिधर से नरसिंगा तुम्हें सुनाई दे उधर ही हमारे पास एकट्ठे हो जाना हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा ॥ २१। यों हम काम में लगे रहे और उन में से आधे पह फटने से तारों के निकलने लों बर्छियां लिये रहते थे ॥ २२। फिर उसी समय मैं ने लोगों से यह भी कहा कि एक एक मनुष्य अपने दास समेत यरूशलेम् के भीतर रात बिताया करे कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें और दिन को काम में लगे रहें ॥ २३। और न तो मैं अपने कपड़े उतारता था और न मेरे भाई न मेरे सेवक न वे पहरुए जो मेरे अनुचर थे अपने कपड़े उतारते थे सब कोई पानी के पास हथियार लिये हुए जाते थे ॥

(यहूदियों में अन्धेर पाया जाना)

५. तब लोग और उन की स्त्रियों की अपने भाई यहूदियों के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट मची ॥ २। कितने तो कहते थे हम अपने बेटे बेटियों समेत बहुत प्राणी हैं इस लिये हमें अन्न मिलना चाहिये जिसे खाकर जीते रहें ॥ ३। और कितने कहते थे कि हम अपने अपने खेतों दाख की बारियों और घरों को बंधक रखते हैं महंगी के कारण हमें अन्न मिलना चाहिये ॥ ४। फिर कितने यह कहते थे कि हम ने राजा के कर के लिये अपने अपने खेतों और दाख की बारियों पर रुपैया उधार लिया ॥ ५। पर हमारा और हमारे भाइयों का शरीर और हमारे और उन के लड़केवाले एक ही समान हैं तौभी हम अपने बेटों बेटियों को दास बनाते हैं

(१) मूल में तेरे साम्हने से न मिटे।
(२) मूल में शहरपनाह पर पट्टी चढ़ी।

बरन हमारी कोई कोई बेटी दासी हो चुकी भी हैं और हमारा कुछ बस नहीं चलता क्योंकि हमारे खेत और दाख की बारियां औरों के हाथ पड़ी हैं॥ ६। यह चिल्लाहट और ये बातें सुनकर मैं ने बहुत बुरी मानीं॥ ७। तब अपने मन में सोच विचार करके मैं ने रईसों और हाकिमों को घुड़ककर कहा तुम अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो। तब मैं ने उन के विरुद्ध एक बड़ी सभा किई॥ ८। और मैं ने उन से कहा हम लोगों ने तो अपनी शक्ति भर अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यजातियों के हाथ बिक गये थे दाम देकर छुड़ाया है फिर क्या तुम अपने भाइयों को बेचने पाओगे क्या वे हमारे हाथ बिकेंगे। तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके॥ ९। फिर मैं कहता गया जो काम तुम करते हो सो अच्छा नहीं है क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर का भय मानकर चलना न चाहिये कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं सो हमारी नामधराई करते हैं॥ १०। मैं भी और मेरे भाई और सेवक उन को रुपैया और अनाज उधार देते हैं पर हम इस का ब्याज छोड़ दें॥ ११। आज ही उन को उन के खेत और दाख और जलपाई की बारियां और घर फेर दो और जो रुपैया अन्न नया दाखमधु और टटका तेल तुम उन से ले लेते हो उस का सौवां भाग फेर दो॥ १२। उन्हों ने कहा हम उन्हें फेर देंगे और उन से कुछ न लेंगे जैसा तू कहता है वैसा ही हम करेंगे। तब मैं ने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह किरिया खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे॥ १३। फिर मैं ने अपने कपड़े की छोर झाड़कर कहा इसी रीति जो कोई इस वचन को पूरा न करे उस को परमेश्वर झाड़कर उस का घर और कमाई उस से छुड़ाए इसी रीति वह झाड़ा जाए और छूछा हो जाए। तब सारी सभा ने कहा, आमेन् और यहोवा की स्तुति किई और लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया॥ १४। फिर जब से मैं यहूदा देश में उन का अधिपति ठहराया गया अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें बरस से ले उस के बत्तीसवें बरस लों अर्थात् बारह बरस लों मैं और मेरे भाई अधिपति के हक का भोजन न खाते थे॥ १५। पर पहिले अधिपति जो मुझ से आगे थे सो प्रजा पर भार डालते थे और उन से रोटी और दाखमधु और इस से अधिक[1] चालीस शेकेल् चान्दी लेते थे बरन उन के सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे पर मैं ऐसा न करता था क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था॥ १६। फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न लिई और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहां एकट्ठे रहते थे॥ १७। फिर मेरी मेज पर खानेहारे एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आते थे॥ १८। और जो दिन दिन के लिये तैयार किया जाता था सो एक बैल छः अच्छी अच्छी भेड़ें वा बकरियां थीं और मेरे लिये चिड़ियाएं भी तैयार किई जाती थीं और दस दस दिन पीछे भांति भांति का बहुत दाखमधु भी पर तौभी मैं ने अधिपति के हक का भोज नहीं लिया क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था॥ १९। हे मेरे परमेश्वर जो कुछ मैं ने इस प्रजा के लिये किया है उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख॥

(शत्रुओं के विरोध करने पर भी शहरपनाह का बन चुकना)

६. जब सम्बल्लत् तोबियाह् और अरबी गेशेम् और हमारे और शत्रुओं को यह समाचार मिला कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका और यद्यपि उस समय लों भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था तौभी शहरपनाह में कोई नाका न रह गया था, २। तब सम्बल्लत् और गेशेम् ने मेरे पास यों कहला भेजा कि आ हम ओनो के मैदान के किसी गांव में एक दूसरे से भेंट करें। पर वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे॥ ३। पर मैं ने उन के पास दूतों से कहला भेजा कि मैं तो भारी काम में लगा हूं सो वहां नहीं जा सकता मेरे यह काम छोड़कर तुम्हारे पास जाने से यह क्यों बन्द रहे॥ ४। फिर उन्हों ने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी और मैं ने उन को वैसा

(१) मूल में पीछे।

ही उत्तर दिया॥ ५। तब पांचवीं बार सम्बल्लत् ने अपने सेवक को खुली हुई चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, ६। जिस में यों लिखा था कि जाति जाति के लोगों में यह कहा जाता है और गेशेम् भी यही बात कहता है कि तुम्हारी और यहूदियों की मनसा बलवा करने की है और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है और तू इन बातों के अनुसार उन का राजा बनना चाहता है॥ ७॥ और तू ने यरूशलेम् में नबी ठहराये हैं जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें कि यहूदियों में एक राजा है अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा सो अब आ हम एक साथ सम्मति करें॥ ८। तब मैं ने उस के पास कहला भेजा कि जैसा तू कहता है वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है॥ ९। वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे कि उन के हाथ ढीले पड़ेंगे और काम बन्द हो जाएगा। पर अब तू मुझे हियाव दे॥

१०। और मैं शमायाह् के घर में गया जो दलायाह् का पुत्र और महेतबेल् का पोता था वह तो बन्द घर में था उस ने कहा आ हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें और मन्दिर के द्वार बन्द करें क्योंकि वे लोग तुझे घात करने को आएंगे रात ही को वे तुझे घात करने आएंगे॥ ११। पर मैं ने कहा क्या मुझ ऐसा मनुष्य भागे और मुझ ऐसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे[1] मैं नहीं जाने का॥ १२। फिर मैं ने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है पर उस ने वह बात ईश्वर का वचन कहकर[2] मेरी हानि के लिये कही है और तोबिय्याह् और सम्बल्लत् ने उसे रुपैया दे रक्खा था॥ १३। उन्हों ने उसे इस कारण रुपैया देकर रक्खा था कि मैं डर जाऊं और वैसा ही काम करके पापी ठहरूं और उन को अपवाद लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सकें॥ १४। हे मेरे परमेश्वर तोबिय्याह् सम्बल्लत् और नोअद्याह् नबिया और और जितने नबी मुझे डराने चाहते थे उन सब के ऐसे ऐसे कामों की सुधि रख॥

१५। एलूल् महीने के पचीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बन चुकी॥ १६। जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना तब हमारी चारों ओर रहनेहारे सब अन्यजाति डर गये और बहुत लजा गये क्योंकि उन्हों ने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ॥ १७। उन दिनों में भी यहूदी रईसों और तोबिय्याह् के बीच चिट्ठी बहुत आया जाया करती थी॥ १८। क्योंकि वह आरह् के पुत्र शकन्याह् का दामाद था और उस के पुत्र यहोहानान् जिस ने बेरेक्याह् के पुत्र मशुल्लाम् की बेटी को ब्याह लिया था इस कारण बहुत से यहूदी उस का पक्ष करने की किरिया खाये हुए थे॥ १९। और वे मेरे सुनते उस के भले कामों की चर्चा किया करते और मेरी बातें भी उस को सुनाया करते थे। और तोबिय्याह् मुझे डराने के लिये चिट्ठियां भेजा करता था॥

(यरूशलेम् का बसाया जाना)

७. जब शहरपनाह बन गई और मैं ने उस के फाटक खड़े किये और डेवढ़ीदार गवैये और और लेवीय लोग ठहराये गये, २। तब मैं ने अपने भाई हनानी और राजगढ़ के हाकिम हनन्याह् को यरूशलेम् के अधिकारी ठहराया क्योंकि यह सच्चा पुरुष और बहुतेरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेहारा था॥ ३। और मैं ने उन से कहा जब लों घाम कड़ा न हो तब लों यरूशलेम् के फाटक न खोले जाएं और जब पहरुए पहरा देते रहें तब ही फाटक बन्द किये और बेंड़े लगाये जाएं फिर यरूशलेम् के निवासियों में से तू रखवाले ठहरा जो अपना अपना पहरा अपने अपने घर के साम्हने दिया करें॥ ४। नगर तो लम्बा चौड़ा था पर उस में लोग थोड़े थे और घर बने न थे॥ ५। सो मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया कि रईसों हाकिमों और प्रजा के लोगों को इस लिये एकट्ठे करूं कि वे अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने जाएं। और मुझे पहिले पहिल

(१) वा. जो मन्दिर में घुसकर जीता रहे।
(२) मूल में वह नबूवत।

यरूशलेम् को आये हुओं का वंशावलीपत्र मिला और उस में मैं ने यों लिखा हुआ पाया कि, ६। जिन को बाबेल् का राजा नबूकदनेस्सर् बन्धुआ करके ले गया था उन में से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से छूटकर, ७। जरुब्बाबेल् येशू नहेम्याह् अजर्याह् राम्याह् नहमानी मोर्दकै बिल्शान् मिस्पेरेत् बिग्वै नहूम् और बाना के संग यरूशलेम् और यहूदा के अपने अपने नगर को आये सो ये हैं। इस्राएली प्रजा के लोगों की गिनती यह है॥ ८। अर्थात् परोश् के संतान दो हजार एक सौ बहत्तर, ९। सपत्याह् के संतान तीन सौ बहत्तर, १०। आरह् के सन्तान छः सौ बावन, ११। पहत्मोआब् के सन्तान, येशू और योआब् के संतान दो हजार आठ सौ अठारह, १२। एलाम् के संतान बारह सौ चौवन, १३। जत्तू के संतान आठ सौ पैंतालीस, १४। जक्कै के संतान सात सौ साठ, १५। बिन्नूई के संतान छ: सौ अड़तालीस, १६। बेबै के संतान छः सौ अट्ठाईस, १७। अज्गाद् के संतान दो हजार तीन सौ बाईस, १८। अदोनीकाम् के संतान छः सौ सड़सठ, १९। बिग्वै के संतान दो हजार सड़सठ, २०। आदीन् के संतान छ: सौ पचपन, २१। हिज्किय्याह् के संतान आतेर् के वंश में से अट्ठानवे, २२। हाशूम् के संतान तीन सौ अट्ठाईस, २३। बेसै के संतान तीन सौ चौबीस, २४। हारीप् के सन्तान एक सौ बारह, २५। गिबोन् के लोग पंचानवे, २६। बेत्लेहेम् और नतोपा के मनुष्य एक सौ अट्ठासी, २७। अनातोत् के मनुष्य एक सौ अट्ठाइस, २८। बेतज्मावेत् के मनुष्य बयालीस, २९। किर्यत्यारीम् कपीरा और बेरोत् के मनुष्य सात सौ तैंतालीस, ३०। रामा और गेबा के मनुष्य छः सौ इक्कीस, ३१। मिक्मास् के मनुष्य एक सौ बाईस, ३२। बेतेल् और ऐ के मनुष्य एक सौ तेईस, ३३। दूसरे नबो के मनुष्य बावन, ३४। दूसरे एलाम् के संतान बारह सौ चौवन, ३५। हारीम् के संतान तीन सौ बीस, ३६। यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस, ३७। लोद् हादीद् और ओनो के लोग सात सौ इक्कीस, ३८। सना के लोग तीन हजार नौ सौ तीस॥ ३९। फिर याजक अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह् के संतान नौ सौ तिहत्तर, ४०। इम्मेर् के संतान एक हजार बावन, ४१। पशहूर् के संतान बारह सौ सैंतालीस, ४२। हारीम् के संतान एक हजार सत्रह॥ ४३। फिर लेवीय ये थे अर्थात् होदवा के वंश में से कद्मीएल् के संतान येशू के संतान चौहत्तर॥ ४४। फिर गवैये ये थे अर्थात् आसाप् के संतान एक सौ अड़तालीस॥ ४५। फिर डेवढ़ीदार ये थे अर्थात् शल्लूम् के संतान आतेर् के संतान तल्मोन् के संतान अक्कूब् के संतान हतीता के संतान और शोबै के संतान सो सब मिलकर एक सौ अड़तीस हुए॥ ४६। फिर नतीन अर्थात् सीहा के संतान हसूपा के संतान तब्बाओत् के संतान, ४७। केरोस् के संतान सीआ के संतान पादोन् के संतान, ४८। लबाना के संतान हगाबा के संतान शल्मै के संतान॥ ४९। हानान् के संतान गिद्देल् के संतान गहर् के संतान ५०। रायाह के संतान रसीन् के संतान नकोदा के संतान, ५१। गज्जाम् के संतान उज्जा के संतान पासेह् के संतान, ५२। बेसै के संतान मूनीम् के संतान नपूशस् के संतान, ५३। बकबूक् के संतान हकूपा के संतान हर्हूर् के संतान, ५४। बस्लीत् के संतान महीदा के संतान हर्शा के संतान, ५५। बर्कोस् के संतान सीसरा के संतान तेमह् के संतान, ५६। नसीह् के संतान और हतीपा के संतान॥ ५७। फिर सुलैमान के दासों के संतान अर्थात् सोतै के संतान सोपेरेत् के संतान परीदा के संतान, ५८। याला के संतान दर्कोन् के संतान गिद्देल् के संतान, ५९। शपत्याह् के संतान हत्तील् के संतान पोकेरेत्-सबायीम् के संतान और आमोन् के संतान॥ ६०। नतीन और सुलैमान के दासों के संतान मिलकर तीन सौ बानवे थे॥

६१। और ये वे हैं जो तेल्मेलह् तेलहर्शा करूब् अद्दोन् और इम्मेर् से यरूशलेम् को गये पर अपने अपने पितर के घराने और वंशावली न बता सके कि इस्राएल् के हैं वा नहीं॥ ६२। अर्थात् दलायाह् के संतान तोबिय्याह् के संतान और नकोदा के संतान जो सब मिलकर छः सौ बयालीस थे॥ ६३। और याजकों में से होबायाह् के संतान हक्कोस् के संतान

और बर्जिल्लै के संतान जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की बेटियों में से एक को व्याह लिया और उन्हीं का नाम रख लिया था ॥ ६४। इन्हों ने अपना अपना वंशावलीपत्र और और वंशावलीपत्रों में ढूंढ़ा पर न पाया इस लिये वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गये ॥ ६५। और अधिपति[1] ने उन से कहा कि जब लों ऊरीम् और तुम्मीम् धारण करनेहारा कोई याजक न उठे तब लों तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाओगे ॥

६६। सारी मण्डली के लोग मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ ठहरे ॥ ६७। उन को छोड़ उन के सात हजार तीन सौ सैंतीस दास दासियां और दो सौ पैंतालीस गानेहारे और गानेहारियां थीं ॥ ६८। उन के घोड़े सात सौ छत्तीस खच्चर दो सौ पैंतालीस, ६९। ऊंट चार सौ पैंतीस और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे ॥ ७०। और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य पुरुषों ने काम के लिये दिया। अधिपति[1] ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन् सोना पचास कटोरे और पांच सौ तीस याजकों के अंगरखे दिये ॥ ७१। और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य मुख्य पुरुषों ने उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन् सोना और दो हजार दो सौ माने चांदी दिई ॥ ७२। और शेष प्रजा ने जो दिया सो बीस हजार दर्कमोन सोना दो हजार माने चांदी और सड़सठ याजकों के अंगरखे हुए ॥ ७३। सो याजक लेवीय डेवढ़ीदार गवैये प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इस्राएली अपने अपने नगर में बस गये ॥

(यहूदियों को व्यवस्था सुनाई जानी)

जब सातवां महीना निकट आया तब सारे इस्राएली अपने अपने नगर में थे ॥ १। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर जलफाटक के साम्हने के चौक में एकट्ठे होकर एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल् को दिई थी उस की पुस्तक ले आ ॥ २। सो एज्रा याजक सातवें महीने के पहिले दिन को क्या स्त्री क्या पुरुष क्या जितने सुनकर समझ सकते थे उन सभों के साम्हने व्यवस्था को ले आया ॥ ३। और वह उस की बातें भोर से दो पहर लों उस चौक के साम्हने जो जलफाटक के साम्हने था क्या स्त्री क्या पुरुष सब समझनेहारों को पढ़कर सुनाता रहा और सब लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाये रहे ॥ ४। एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था खड़ा हो गया और उस की दहिनी अलंग मत्तित्याह् शेमा अनायाह् ऊरिय्याह् हिल्किय्याह् और मासेयाह् और बाईं अलंग पदायाह् मीशाएल् मल्किय्याह् हाशूम् हश्बद्दाना जकर्याह् और मशुल्लाम् खड़े हुए ॥ ५। तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊंचे पर था सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया और जब उस ने उस को खोला तब सब लोग उठ खड़े हुए ॥ ६। तब एज्रा ने महान् परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन् आमेन् कहा और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेककर यहोवा को दण्डवत् किई ॥ ७। और येशू बानी शेरेब्याह् यामीन् अक्कूब शब्बतै होदिय्याह् मासेयाह् कलीता अजर्याह् योजाबाद् हानान् पलायाह् नाम लेवीय लोगों को व्यवस्था समझाते गये और लोग अपने स्थान पर खड़े रहे ॥ ८। और उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में पढ़कर और टीका लगाकर अर्थ समझा दिया और लोगों ने पाठ को समझ लिया ॥ ९। तब नहेम्याह् जो अधिपति[1] था और एज्रा जो याजक और शास्त्री था और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे उन्हों ने सब लोगों से कहा आज का दिन तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है सो विलाप न करो और न रोओ क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे ॥ १०। फिर उस ने उन से कहा कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो और जिन के लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उन के पास बैना भेजो क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है फिर

(१) मूल में. तिर्शाता।

(१) मूल में तिर्शाता।

उदास मत रहो क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है ॥ ११। यों लेवीयों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया कि चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है और उदास मत रहो ॥ १२। सो सब लोग खाने पीने बैना भेजने और बड़ा आनन्द करने को चले गये इस कारण कि जो वचन उन को समझाये गये थे उन्हें वे समझ गये थे ॥

१३। और दूसरे दिन को भी सारी प्रजा के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने को एकट्ठे हुए ॥ १४। और उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला कि यहोवा ने मूसा से यह आज्ञा दिलाई थी कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोंपड़ियों में रहा करें, १५। और अपने सब नगरों और यरूशलेम् में यों सुनाया और प्रचार किया जाए कि पहाड़ पर जाकर जलपाई तैलवृक्ष मेंहदी खजूर और घने घने वृक्षों की डालियां ले आकर झोंपड़ियां बनाओ जैसे कि लिखा है ॥ १६। सो लोग बाहर जाकर डालियां ले आये और अपने अपने घर की छत पर और अपने आंगनों में और परमेश्वर के भवन के आंगनों में और जलफाटक के चौक में और एप्रैम् के फाटक के चौक में झोंपड़ियां बना लिईं ॥ १७। बरन जितने बंधुआई से छूटकर लौट आये थे उन की सारी मण्डली के लोग झोंपड़ियां बनाकर उन में टिके। नून् के पुत्र येशू के दिनों से ले उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा न किया था। सो बहुत बड़ा आनन्द हुआ ॥ १८। फिर पहिले दिन से पिछले दिन लों एज्रा ने दिन दिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। यों वे सात दिन लों पर्व को मानते रहे और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई ॥

(पाप का अंगीकार)

९. फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास किये टाट पहिने और सिर पर धूलि डाले हुए एकट्ठे हो गये ॥ २। तब इस्राएल् के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से न्यारे हो गये और खड़े होकर अपने अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म्म के कामों को मान लिया ॥ ३। तब उन्हों ने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक तो अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते और एक और पहर अपने पापों को मानते और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करते रहे ॥ ४। और येशू बानी कद्मीएल् शबन्याह् बुन्नी शेरेब्याह् बानी और कनानी ने लेवीयों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊंचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई दिई ॥ ५। फिर येशू कद्मीएल् बानी हशब्नयाह् शेरेब्याह् होदिय्याह् शबन्याह् और पतह्याह् नाम लेवीयों ने कहा खड़े हो अपने परमेश्वर यहोवा को अनादिकाल से अनन्तकाल लों धन्य कहो और तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए जो सारे धन्यवाद और स्तुति से बढ़कर है ॥ ६। तू ही अकेला यहोवा है स्वर्ग बरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उस के सारे गण और पृथिवी और जो कुछ उस में हैं और समुद्र और जो कुछ उस में है सभों को तू ही ने बनाया और सभों की रक्षा तू ही करता है और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती हैं ॥ ७। हे यहोवा तू वही परमेश्वर है जो अब्राम् को चुनकर कस्दियों के ऊर् नगर में से निकाल लाया और उस का नाम इब्राहीम् रक्खा, ८। और उस के मन को अपने साथ सच्चा पाकर उस से वाचा बांधी कि मैं तेरे वंश को कनानियों हित्तियों एमोरियों परिज्जियों यबूसियों और गिर्गाशियों का देश दूंगा और तू ने अपना वह वचन पूरा भी किया क्योंकि तू धर्म्मी है ॥ ९। फिर तू ने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दुःख पर दृष्टि किई और लाल समुद्र के तीर पर उन की दोहाई सुनी ॥ १०। और फिरौन और उस के सब कर्म्मचारी बरन उस के देश के सारे लोगों को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार दिखाये क्योंकि तू जानता था कि वे उन से अभिमान करते हैं और तू ने अपना ऐसा बड़ा नाम किया जैसा आज लों बना है ॥ ११। और तू ने उन के आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हुए और जो उन के पीछे पड़े

थे उन को तू ने गहिरे स्थानों में ऐसा डाल दिया जैसा पत्थर महाजलराशि में डाला जाए ॥ १२ । फिर तू ने दिन को बादल के खंभे में होकर और रात को आग के खंभे में होकर उन की अगुआई किई कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था उस में उन को उजियाला मिले ॥ १३ । फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उन के साथ बातें किईं और उन को सीधे नियम सच्ची व्यवस्था और अच्छी विधियां और आज्ञाएं दिईं, १४ । और उन्हें अपने पवित्र विश्रामदिन का ज्ञान दिया और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दिईं, १५ । और उन की भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उन की प्यास बुझाने को चटान में से उन के लिये पानी निकाला और उन्हें आज्ञा दिई कि जिस देश के तुम्हें देने की मैंने किरिया खाई है[1] उस के अधिकारी होने को तुम उस में जाओ ॥ १६ । परन्तु उन्हों ने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया और हठीले बने और तेरी आज्ञाएं न मानीं, १७ । और आज्ञा मानने को नाह किई और जो आश्चर्य्यकर्म्म तू ने उन के बीच किये थे उन का स्मरण न किया बरन हठ करके यहां लों बलवा करनेहारे बने कि एक प्रधान ठहराया कि अपने दासत्व की दशा में लौटें। पर तू क्षमा करनेहारा अनुग्रहकारी और दयालु विलम्ब से कोप करनेहारा और अतिकरुणामय ईश्वर है तू ने उन को न त्यागा॥ १८। बरन जब उन्हों ने बछड़ा ढालकर कहा कि तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है सो यही है और तेरा बहुत तिरस्कार किया, १९ । तब भी तू जो अति दयालु है सो उन को जंगल में न त्यागा न तो दिन को अगुवाई करनेहारा बादल का खंभा उन पर से हट गया और न रात को उजियाला देनेहारा और उन का मार्ग दिखानेहारा आग का खंभा ॥ २० । बरन तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया और अपना मान् उन्हें खिलाना न छोड़ा और उन की प्यास बुझाने को पानी देता रहा ॥ २१ । चालीस बरस लों तू जंगल में उन का ऐसा पालन पोषण करता रहा कि उन को कुछ घटी न हुई न तो उन के वस्त्र पुराने हो गये और न उन के पांव सूजे ॥ २२ । फिर तू ने राज्य राज्य और देश देश के लोगों को उन के वश कर दिया और दिशा दिशा में उन को बांट दिया सो वे हेश्बोन् के राजा सीहोन् और बाशान् के राजा ओग् दोनों के देशों के अधिकारी हो गये ॥ २३ । फिर तू ने उन की संतान को आकाश के तारों के समान बहुत करके उन्हें उस देश में पहुंचा दिया जिस के विषय तू ने उन के पितरों से कहा था कि वे उस में जाकर उस के अधिकारी हो जाएंगे ॥ २४ । सो यह सन्तान जाकर उस के अधिकारिन हो गई और तू ने उन से देश के निवासी कनानियों को दबाया और राजाओं और देश के लोगों समेत उन को उन के हाथ कर दिया कि वे उन से जो चाहें सोई करें ॥ २५ । और उन्हों ने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले लिई और सब भांति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के और खुदे हुए हौदों के और दाख और जलपाई की बारियों के और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गये सो वे खा खाकर तृप्त हुए और हृष्टपुष्ट हो गये और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख मानते रहे ॥ २६ । परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा करनेहारे हुए और तेरी व्यवस्था को पीठ पीछे कर दिया और तेरे जो नबी तेरी ओर फेरने के लिये उन को चिताते रहे उन को घात किया और तेरा बहुत तिरस्कार किया ॥ २७ । इस कारण तू ने उन को उन के शत्रुओं के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन को संकट में डाल दिया तौभी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दोहाई देते तब तब तू स्वर्ग से उन की सुनता और तू जो अति दयालु है सो उन के छुड़ानेहारे ठहराता था जो उन को शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे ॥ २८। पर जब जब उन को चैन मिला तब तब वे फिर तेरे साम्हने बुराई करते थे इस कारण तू उन को शत्रुओं के हाथ में कर देता था और वे उन पर प्रभुता करते थे तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते तब तू स्वर्ग से उन की सुनता और तू जो

(१) मूल में. हाथ उठाया है ।

दयालु है सो बार बार उन को छुड़ाता, २९ । और उन को चिताता था इस लिये कि उन को फिर अपनी व्यवस्था के अधीन कर दे । पर वे अभिमान करते और तेरी आज्ञाएं न मानते थे और तेरे नियम जिन को यदि मनुष्य माने तो उन के कारण जीता रहे उन के विरुद्ध पाप करते और हठ करके अपना कन्धा हटाते और न सुनते थे ॥ ३० । तू तो बहुत बरस लों उन की सहता रहा और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा पर वे कान न लगाते थे सो तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया ॥ ३१ । तौभी तू ने जो अति दयालु है सो उन का अंत न कर डाला और न उन को त्याग दिया क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है ॥ ३२ । अब तो हे हमारे परमेश्वर हे महान् पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है जो बड़ा कष्ट अश्शूर् के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन लों हमें और हमारे राजाओं हाकिमों याजकों नबियों पुरखाओं बरन तेरी सारी प्रजा को भोगना पड़ा है सो तेरे लेखे थोड़ा न ठहरे ॥ ३३ । तौभी जो कुछ हम पर बीता है उस के विषय तू तो धर्म्मी है तू ने तो सच्चाई से काम किया है पर हम ने दुष्टता किई है ॥ ३४ । और हमारे राजाओं और हाकिमों याजकों और पुरखाओं ने न तो तेरी व्यवस्था को माना है न तेरी आज्ञाओं और चितौनियों की ओर ध्यान दिया जिन से तू ने उन को चिताया था ॥ ३५ । उन्हों ने अपने राज्य में और उस बड़े कल्याण के समय जो तू ने उन्हें दिया था और इस लंबे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा न किई और न अपने बुरे कामों से फिरे ॥ ३६ । हम आज कल दास हैं जो देश तू ने हमारे पितरों को दिया था कि उस की उत्तम उपज खाएं इसी में हम दास हैं ॥ ३७ । और इस की उपज से उन राजाओं को जिन्हें तू ने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है बहुत धन मिलता है और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं सो हम बड़े संकट में पड़े हैं ॥ ३८ । और इस सब के कारण हम सच्चाई के साथ वाचा बांधते और लिख भी देते हैं और हमारे हाकिम लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं ॥

(व्यवस्था के अनुसार चलने की वाचा बांधनी)

१०. जिन्हों ने छाप लगाई सो ये हैं अर्थात् हकल्याह् का पुत्र नहेम्याह् जो अधिपति[1] था और सिद्किय्याह्, २ । सरायाह् अजर्याह् यिर्मयाह्, ३ । पश्हूर् अमर्याह् मल्किय्याह्, ४ । हत्तूश् शबन्याह् मल्लूक्, ५ । हारीम् मरेमोत् ओबद्याह्, ६ । दानिय्येल् गिन्नतोन् बारूक्, ७ । मशुल्लाम् अबिय्याह् मिय्यामीन् ८ । माज्याह् बिल्गै और शमायाह् ये ही तो याजक थे ॥ ९ । फिर इन लेवीयों ने छाप लगाई अर्थात् आजन्याह् का पुत्र येशू हेनादाद् की संतान में से बिन्नूई और कद्मीएल्, १० । और उन के भाई शबन्याह् होदिय्याह् कलीता पलायाह् हानान्, ११ । मीका रहोब् हशब्याह्, १२ । जक्कूर् शेरेब्याह् शबन्याह्, १३ । होदिय्याह् बानी और बनीनू ॥ १४ । फिर प्रजा के इन प्रधानों ने छाप लगाई अर्थात् परोश् पहत्मोआब् एलाम् जत्तू बानी, १५ । बुन्नी अज्गाद् बेबै, १६ । अदोनिय्याह् बिग्वै आदीन्, १७ । आतेर् हिज्किय्याह् अज्जूर्, १८ । होदिय्याह् हाशूम् बेसै, १९ । हारीप् अनातोत् नोबै, २० । मग्पीआश् मशुल्लाम् हेजीर्, २१ । मशेजबेल् सादोक् यद्दू, २२ । पलत्याह् हानान् अनायाह्, २३ । होशे हनन्याह् हश्शूब्, २४ । हल्लोहेश् पिल्हा शोबेक्, २५ । रहूम् हशब्ना मासेयाह्, २६ । अहिय्याह् हानान् आनान्, २७ । मल्लूक् हारीम् और बाना ॥ २८ । और शेष लोग अर्थात् याजक लेवीय डेवढ़ीदार गवैये और नतीन लोग निदान जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से न्यारे हुए थे उन सभों ने अपनी अपनी स्त्रियों और उन बेटों बेटियों समेत जो समझनेहारे थे, २९ । अपने भाई रईसों से मिलकर किरिया खाई[2] कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उस के दास मूसा के द्वारा दिई गई और अपने प्रभु यहोवा को सब

(१) मूल में तिर्शाता ।
(२) मूल में स्राप और किरिया में प्रवेश किया ।

आज्ञाएं नियम और विधियां मानने में चौकसी करेंगे, ३०। और हम न तो अपनी बेटियां इस देश के लोगों को ब्याह देंगे और न अपने बेटों के लिये उन की बेटियां ब्याह लेंगे, ३१। और जब इस देश के लोग विश्रामदिन को अन्न वा और बिकाऊ वस्तुएं बेचने को ले आएं तब हम उन से न तो विश्रामदिन को न किसी पवित्र दिन को कुछ लेंगे और सातवें सातवें बरस में भूमि पड़ी रहने देंगे और अपने अपने ऋण की उगाही छोड़ देंगे॥ ३२। फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बांध लिया जिस से हम को अपने परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये एक एक तिहाई शेकेल् देना पड़े, ३३। अर्थात् भेंट की रोटी और नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि और विश्रामदिनों और नये चांद और नियत पर्वों के बलिदानों और और पवित्र भेंटों और इस्राएल् के प्रायश्चित्त के निमित्त पापबलियों निदान अपने परमेश्वर के भवन के सारे काम के खर्च के लिये॥ ३४। फिर क्या याजक क्या लेवीय क्या साधारण लोग हम सभों ने इस बात के ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं कि अपने पितरों के घरानों के अनुसार बरस बरस में ठहराये हुए समयों पर लकड़ी की भेंट व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार हम अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर के भवन में लाया करेंगे, ३५। और अपनी अपनी भूमि की पहिली उपज और सब भांति के वृक्षों के पहिले फल बरस बरस यहोवा के भवन में ले आएंगे, ३६। और व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार अपने अपने पहिलौठे बेटों और पशुओं अर्थात् पहिलौठे बछड़ों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन याजकों के पास लाया करेंगे जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा टहल करते हैं, ३७। और अपना पहिला गूंधा हुआ आटा और उठाई हुई भेंटें और सब प्रकार के वृक्षों के फल और नया दाखमधु और टटका तेल अपने परमेश्वर के भवन की कोठरियों में याजकों के पास और अपनी अपनी भूमि की उपज का दशमांश लेवीयों के पास लाया करेंगे क्योंकि लेवीय वे हैं जो हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं॥ ३८। और जब जब लेवीय दशमांश लें तब तब उन के संग हारून की सन्तान का कोई याजक रहा करे और लेवीय दशमांशों का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों में अर्थात् भण्डार में पहुंचाया करेंगे॥ ३९। क्योंकि जिन कोठरियों में पवित्र स्थान के पात्र और सेवा टहल करनेहारे याजक और डेवढ़ीदार और गवैये रहते हैं उन में इस्राएली और लेवीय अनाज नये दाखमधु और टटके तेल की उठाई हुई भेंटें पहुंचाएंगे। निदान हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे॥

(यहूदी कहां कहां बस गये.)

११. प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम् में रहते थे और शेष लोगों ने यह ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं कि दस में से एक मनुष्य यरूशलेम् में जो पवित्र नगर है बसे और नौ मनुष्य और और नगरों में बसें॥ २। और जिन्हों ने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम् में बसना ठाना उन सभों को लोगों ने धन्य धन्य कहा॥ ३। उस प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो यरूशलेम् में रहते थे सो ये हैं पर यहूदा के नगरों में एक एक मनुष्य अपनी निज भूमि में रहता था अर्थात् इस्राएली याजक लेवीय नतीन और सुलैमान के दासों के सन्तान॥ ४। यरूशलेम् में तो कुछ यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे। यहूदियों में से तो पेरेस् के वंश का अतायाह् जो उज्जिय्याह् का पुत्र था यह जकर्याह् का पुत्र यह अमर्याह् का पुत्र यह शपत्याह् का पुत्र यह महललेल् का पुत्र था, ५। और मासेयाह् जो बारूक् का पुत्र था यह कोल्होजे का पुत्र यह हजायाह् का पुत्र यह अदायाह् का पुत्र यह योयारीब् का पुत्र यह जकर्याह् का पुत्र यह शीलोई का पुत्र था॥ ६। पेरेस् के वंश के जो यरूशलेम् में रहते थे सो सब मिलाकर चार सौ अड़सठ शूरवीर थे॥ ७। और बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम् का पुत्र था यह योएद् का पुत्र यह पदायाह् का पुत्र यह कोलायाह् का पुत्र यह मासेयाह् का पुत्र यह ईतीएल् का पुत्र यह यशायाह् का पुत्र था॥

८। और उस के पीछे गब्बैसल्लै जिस के साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे ॥ ९। इन का रखवाल जिक्री का पुत्र योएल् था और हस्सनूआ का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नाइब था ॥ १०। फिर याजकों में से योयारीब् का पुत्र यदायाह् और याकीन्, ११। और सरायाह् जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्किय्याह् का पुत्र था यह मशुल्लाम् का पुत्र यह सादोक् का पुत्र यह मरायोत् का पुत्र यह अहीतूब् का पुत्र था, १२। और इन के आठ सौ बाईस भाई जो उस भवन का काम करते थे और अदायाह् जो यरोहाम् का पुत्र था यह पलल्याह् का पुत्र यह अम्सी का पुत्र यह जकर्याह् का पुत्र यह पशहूर् का पुत्र यह मल्किय्याह् का पुत्र था, १३। और इस के दो सौ बयालीस भाई जो पितरों के घरानों के प्रधान थे, और अमशसै जो अजरेल् का पुत्र था यह अहजै का पुत्र यह मशिल्लेमोत का पुत्र यह इम्मेर् का पुत्र था। और इन के एक सौ अट्ठाईस शूरवीर भाई ॥ १४। इन का रखवाल हग्गदोलीम् का पुत्र जब्दीएल् था ॥ १५। फिर लेवीयों में से शमायाह् जो हश्शूब् का पुत्र था यह अज्रीकाम् का पुत्र यह हशब्याह् का पुत्र यह बुन्नी का पुत्र था, १६। और शब्बतै और योजाबाद् जो मुख्य लेवीयों में से और परमेश्वर के भवन के बाहरी काम पर ठहरे थे, १७। और मत्तन्याह् जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता और आसाप् का परपोता था और प्रार्थना में धन्यवाद करनेहारों का मुखिया था और बक्बुक्याह् जो अपने भाइयों में दूसरा था और अब्दा जो शम्मू का पुत्र और गालाल् का पोता और यदूतून् का परपोता था ॥ १८। जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे सो सब मिलाकर दो सौ चौरासी थे ॥ १९। और अक्कूब् और तल्मोन् नाम डेवढ़ीदार और उन के भाई जो फाटकों के रखवाले थे एक सौ बहत्तर थे ॥ २०। और शेष इस्राएली याजक और लेवीय यहूदा के सब नगरों में अपने अपने भाग पर रहते थे ॥ २१। और नतीन लोग ओपेल् में रहते और नतीनों के ऊपर सीहा और गिश्पा ठहरे थे ॥ २२। और जो लेवीय यरूशलेम् में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे उन का मुखिया आसाप् के वंश के गवैयों में का उज्जी था। जो बानी का पुत्र था यह हशब्याह् का पुत्र यह मत्तन्याह् का पुत्र यह हशब्याह् का पुत्र था ॥ २३। क्योंकि उन के विषय राजा की आज्ञा थी और गवैयों के दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था ॥ २४। और प्रजा के सारे काम के लिये मशेजबेल् का पुत्र पतह्याह् जो यहूदा के पुत्र जेरह् के वंश में से था सो राजा के पास रहता था ॥ २५। फिर गांव और उन के खेत, कुछ यहूदी किर्यतर्बा और उस के गांवों में, कुछ दीबोन् और उस के गांवों में, कुछ यकब्सेल् और उस के गांवों में रहते थे, २६। फिर येशू मोलादा बेत्पेलेत्, २७। हसर्शूआल् और बेर्शेबा और उस के गांवों में, २८। और सिक्लग् और मकोना और उन के गांवों में, २९। एन्रिम्मोन् सोरा यर्मूत्, ३०। जानोह् और अदुल्लाम् और उन के गांवों में लाकीश् और उस के खेतों में अजेका और उस के गांवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम् की तराई लों डेरे डाले हुए रहते थे ॥ ३१। और बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिक्मश् अय्या और बेतेल् और उस के गांवों में, ३२। अनातोत् नोब् अनन्याह्, ३३। हासोर् रामा गित्तैम्, ३४। हादीद् सबोईम् नबल्लत्, ३५। लोद् ओनो और कारीगरों की तराई लों रहते थे ॥ ३६। और कितने यहूदी लेवीयों के दल बिन्यामीन् से मिलाये गये ॥

(याजकों और लेवीयों का ब्योरा)

१२. जो याजक और लेवीय शालतीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल् के और येशू के संग यरूशलेम् को गये[1] थे सो ये थे अर्थात् सरायाह् यिर्मयाह् एज्रा, २। अमर्याह् मल्लूक् हत्तूश्, ३। शकन्याह् रहूम् मरेमोत्, ४। इद्दो गिन्नतोई अबिय्याह्, ५। मिय्यामीन् माद्याह् बिल्गा, ६। शमायाह् योयारीब् यदायाह्, ७। सल्लू आमोक् हिल्किय्याह् और यदायाह्। येशू के दिनों में तो याजकों और

(१) मूल में चढ़ गये।

उन के भाइयों के मुख्य मुख्य पुरुष ये ही थे ॥ ८। फिर ये लेवीय गये अर्थात् येशू बिन्नूई कद्मीएल् शेरेब्याह् यहूदा और वह मत्तन्याह् जो अपने भाइयों समेत धन्यवाद के काम पर ठहरा था ॥ ९। और उन के भाई बक्बुक्याह् और उन्नो उन के साम्हने अपनी अपनी सेवकाई में लगे रहते थे ॥

१०। और येशू ने योयाकीम् को जन्माया और योयाकीम् ने एल्याशीब् को और एल्याशीब् ने योयादा को, ११। और योयादा ने योनातान् को और योनातान् ने यद्दू को जन्माया ॥ १२। योयाकीम् के दिनों में ये याजक अपने अपने पितर के घराने के मुख्य पुरुष थे अर्थात् सरायाह् का तो मरायाह् यिर्मयाह् का हनन्याह्, १३। एज्रा का मशुल्लाम् अमर्याह् का यहोहानान्, १४। मल्लूकी का योनातान् शबन्याह् का योसेप्, १५। हारीम् का अदना मरायोत् का हेल्कै, १६। इद्दो का जकर्याह् गिन्नतोन् का मशुल्लाम्, १७। अबिय्याह् का जिक्री मिन्यामीन्, का मोअद्याह् का पिल्तै, १८। बिल्गा का शम्मू शमायाह् का यहोनातान्, १९। योयारीब् का मत्तनै यदायाह् का उज्जी, २०। सल्लै का कल्लै आमोक् का एबेर्, २१। हिल्किय्याह् का हशब्याह् और यदायाह् का नतनेल् ॥ २२। एल्याशीब् योयादा योहानान् और यद्दू के दिनों में लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते थे और दारा फारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे जाते थे ॥ २३। जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे उन के नाम एल्याशीब् के पुत्र योहानान् के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे ॥ २४। और लेवीयों के मुख्य पुरुष ये थे अर्थात् हशब्याह् शेरेब्याह् और कद्मीएल् का पुत्र येशू और उन के साम्हने उन के भाई परमेश्वर के जन दाऊद की आज्ञा के अनुसार आम्हने साम्हने स्तुति और धन्यवाद करने पर ठहरे थे ॥ २५। मत्तन्याह् बक्बुक्याह् ओबद्याह् मशुल्लाम् तल्मोन् और अक्कूब् फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेहारे डेवढ़ीदार थे ॥ २६। योयाकीम् के दिनों में जो योसादाक् का पोता और येशू का पुत्र था और नहेम्याह् अधिपति और एज्रा अधिपति याजक और शास्त्री के दिनों में ये ही थे ॥

(यरूशलेम् की शहरपनाह की प्रतिष्ठा.)

२७। और यरूशलेम् की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों में ढूंढ़े गये कि यरूशलेम् को पहुंचाये जाएं जिस से आनन्द और धन्यवाद करके और झांझ सारंगी और वीणा बजाकर और गाकर उस की प्रतिष्ठा करें ॥ २८। सो गवैयों के सन्तान यरूशलेम् की चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गांवों से २९। और बेत्गिल्गाल् से और गेबा और अज्मावेत् के खेतों से एकट्ठे हुए क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम् के आस पास गांव बसा लिये थे ॥ ३०। तब याजकों और लेवीयों ने अपने अपने को शुद्ध किया और उन्हों ने प्रजा को और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया ॥ ३१। तब मैं ने यहूदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराये जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इन में से एक दल तो दक्खिन ओर अर्थात् कूड़ाफाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर ऊपर से चला ॥ ३२। और उस के पीछे पीछे ये चले अर्थात् होशायाह् और यहूदा के आधे हाकिम, ३३। और अजर्याह् एज्रा मशुल्लाम्, ३४। यहूदा बिन्यामीन् शमायाह् और यिर्मयाह्, ३५। और याजकों के कितने पुत्र तुरहियां लिये हुए अर्थात् जकर्याह् जो योहानान् का पुत्र था यह शमायाह् का पुत्र यह मत्तन्याह् का पुत्र यह मीकायाह् का पुत्र यह जक्कूर् का पुत्र यह आसाप् का पुत्र था, ३६। और उस के भाई शमायाह् अजरेल् मिललै गिललै माऐ नतनेल् यहूदा और हनानी परमेश्वर के जन दाऊद के बाजे लिये हुए। और उन के आगे आगे एज्रा शास्त्री चला ॥ ३७। ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़ शहरपनाह की ऊंचाई पर से चलकर दाऊद के भवन के ऊपर से होकर पूरब की ओर जलफाटक तक पहुंचे ॥ ३८। और धन्यवाद करने और धूमधाम से चलनेहारों का दूसरा दल और उन के पीछे पीछे मैं और आधे लोग उन से मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर

से भट्ठों के गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक, ३९। और एप्रैम् के फाटक और पुराने फाटक और मछलीफाटक और हननेल् के गुम्मट और हम्मेआ नाम गुम्मट के पास से होकर भेड़ फाटक लों चले और पहरुओं के फाटक के पास खड़े हो गये ॥ ४०। तब धन्यवाद करनेहारों के दोनों दल परमेश्वर के भवन में खड़े हो गये और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम ४१। और एल्याकीम् मासेयाह् मिन्यामीन् मीकायाह् एल्योएनै जकर्याह् और हनन्याह् नाम याजक तुरहियां लिये हुए, ४२। और मासेयाह् शमायाह् एलाजार् उज्जी यहो हानान् मल्किय्याह् एलाम् और एजेर् खड़े हुए । और गवैये जिन का मुखिया यिज्रह्याह् था सो ऊंचे स्वर से गाते बजाते रहे ॥ ४३। उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाये और आनन्द किया क्योंकि परमेश्वर ने उन को बहुत ही आनन्दित किया था सो स्त्रियों और बालबच्चों ने भी आनन्द किया और यरूशलेम् के आनन्द की ध्वनि दूर दूर लों पहुंच गई ॥

(उपासना आदि का प्रबन्ध)

४४। उसी दिन खजानों के उठाई हुई भेंटों के पहिली पहिली उपज और दशमांशों की कोठरियों के अधिकारी ठहराये गये कि उन में नगर नगर के खेतों के अनुसार वे वस्तुएं संचय करें जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवीयों के भाग ठहरी थीं क्योंकि यहूदी हाजिर होनेहारे याजकों और लेवीयों के कारण आनन्दित हुए ॥ ४५। सो वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय चौकसी करते रहे और गवैये और डेवढ़ीदार भी दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे ॥ ४६। प्राचीनकाल अर्थात् दाऊद और आसाप् के दिनों में तो गवैयों के प्रधान होते थे और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाये जाते थे ॥ ४७। और जरुब्बाबेल् और नहेम्याह् के दिनों में सारे इस्राएली गवैयों और डेवढ़ीदारों के दिन दिन के भाग देते रहे और लेवीयों के अंश पवित्र करके देते थे और लेवीय हारून की सन्तान के अंश पवित्र करके देते थे ॥

(कुरीतियों का सुधारा जाना)

१३. उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगों को पढ़कर सुनाई गई और उस में यह लिखा हुआ मिला कि कोई अम्मोनी वा मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए, २। क्योंकि उन्हों ने अन्न जल लेकर इस्राएलियों से भेंट न किई वरन बिलाम् को उन्हें स्राप देने के लिये दक्षिणा देकर बुलवाया । तौभी हमारे परमेश्वर ने स्राप की सन्ती आशीष ही दिलाई ॥ ३। यह व्यवस्था सुनकर उन्हों ने इस्राएल् में से मिली जुली हुई भीड़ को अलग कर दिया ॥

४। इस से पहिले एल्याशीब् याजक जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का अधिकारी और तोबिय्याह् का संबन्धी था, ५। उस ने तोबिय्याह् के लिये एक बड़ी कोठरी ठहरा रक्खी थी जिस में पहिले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश जिन्हें लेवीयों गवैयों और डेवढ़ीदारों को देने की आज्ञा थी और याजकों के लिये उठाई हुई भेंटें भी रक्खी जाती थीं ॥ ६। पर उस सारे समय मैं यरूशलेम् में न रहता था क्योंकि बाबेल् के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें बरस में मैं राजा के पास गया फिर कितने दिन पीछे राजा से छुट्टी मांगकर मैं यरूशलेम् को आया तब मैं ने जान लिया कि एल्याशीब् ने तोबिय्याह् के लिये परमेश्वर के भवन के आंगनों में एक कोठरी ठहराकर क्या ही बुराई किई है ॥ ८। सो मैं ने बहुत बुरा माना और तोबिय्याह् का सारा घरेलू सामान उस कोठरी में से फेंक दिया ॥ ९। तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियां शुद्ध किई गईं और मैं ने परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि का सामान और लोबान उन में फिर रखा दिया ॥ १०। फिर मैं ने जान लिया कि लेवीयों के भाग नहीं दिये गये और इस कारण काम करनेहारे लेवीय और गवैये अपने अपने खेत को भाग गये

हैं ॥ ११ । तब मैं ने हाकिमों को डांटकर कहा परमेश्वर का भवन क्यों त्यागा गया है । फिर मैं ने उन को एकट्ठा करके एक एक के स्थान पर ठहरा दिया ॥ १२ । तब से सब यहूदी अनाज नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश भण्डारों में लाने लगे ॥ १३ । और मैं ने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह् याजक और सादोक् मुंशी को और लेवीयों में से पदायाह् को और उन के नीचे हानान् को जो मत्तन्याह् का पोता और जक्कूर् का पुत्र था ठहरा दिया वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे और अपने भाइयों के बीच बांटना उन का काम था ॥ १४ । हे मेरे परमेश्वर मेरा यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख और जो जो सुकर्म्म मैं ने अपने परमेश्वर के भवन और उस में की आराधना के विषय किये हैं उन्हें न बिसरा[1] ॥

१५ । उन्हीं दिनों में मैं ने यहूदा में कितनों को देखा जो विश्रामदिन को हौदों में दाख रौंदते और पूलियों को ले आते और गदहों पर लादते थे वैसे ही वे दाखमधु दाख अंजीर और भांति भांति के बोझ विश्रामदिन को यरूशलेम् में लाते थे तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते थे उसी दिन मैं ने उन को चिता दिया ॥ १६ । फिर उस में सोरी लोग रहकर मछली और भांति भांति का सौदा ले आकर यहूदियों के हाथ यरूशलेम् में विश्रामदिन को बेचा करते थे ॥ १७ । सो मैं ने यहूदा के रईसों को डांटकर कहा तुम लोग यह क्या बुराई करते हो जो विश्रामदिन को अपवित्र करते हो ॥ १८ । क्या हमारे पुरखा ऐसा न करते थे और क्या हमारे परमेश्वर ने यह सारी विपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली तौभी तुम विश्रामदिन को अपवित्र करने से इस्राएल् पर परमेश्वर का कोप और भी भड़काते हो ॥ १९ । सो जब विश्रामदिन के पहिले दिन को यरूशलेम् के फाटकों के आसपास अंधेरा होने लगा तब मैं ने आज्ञा दिई कि उन के पल्ले बन्द किये जाएं और यह भी आज्ञा दिई कि वे विश्रामदिन के पूरे होने तक खोले न जाएं तब मैं ने अपने कितने सेवकों को फाटकों के अधिकारी ठहरा दिया इस लिये कि विश्रामदिन को कोई बोझ भीतर आने न पाए ॥ २० । सो व्योपारी और भांति भांति के सौदे के बेचनेहारे यरूशलेम् के बाहर दो एक बेर टिके ॥ २१ । तब मैं ने उन को चिताकर कहा तुम लोग शहरपनाह के साम्हने क्यों टिकते हो यदि तुम फिर ऐसा करो तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊंगा । सो उस समय से वे फिर विश्रामदिन को न आये ॥ २२ । तब मैं ने लेवीयों को आज्ञा दिई कि अपने अपने को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने के लिये आया करो इस लिये कि विश्रामदिन पवित्र माना जाए । हे मेरे परमेश्वर मेरे हित के लिये यह भी स्मरण रख और अपनी बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर तरस कर ॥

२३ । फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहूदी देख पड़े जिन्हों ने अश्दोदी अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह लिई थीं ॥ २४ । और उन के लड़केवालों की आधी बोली अश्दोदी थी और वे यहूदी बोली न बोल सकते थे दोनों जाति की बोली बोलते थे ॥ २५ । सो मैं ने उन को डांटा और कोसा और उन में से कितनों को पिटवा दिया और उन के बाल नुचवाये और उन को परमेश्वर की यह किरिया खिलाई कि हम अपनी बेटियां उन के बेटों के साथ न ब्याहेंगे और न अपने लिये वा अपने बेटों के लिये उन की बेटियां ब्याह लेंगे ॥ २६ । क्या इस्राएल् का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फंसा था तौभी बहुतेरी जातियों में उस के तुल्य कोई राजा न हुआ और वह अपने परमेश्वर का प्रिय भी था और परमेश्वर ने उसे सारे इस्राएल् के ऊपर राजा किया पर उस को भी अन्यजाति स्त्रियों ने पाप में फंसाया ॥ २७ । सो क्या हम तुम्हारी सुनकर ऐसी बड़ी बुराई करें कि बिरानी स्त्रियां ब्याहकर अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें ॥ २८ । और एल्याशीब् महायाजक के पुत्र योयादा का एक पुत्र होरोनी सम्बल्लत् का दामाद हुआ था सो मैं ने उस को अपने पास से भगा दिया ॥ २९ । हे मेरे परमेश्वर उन की हानि के लिये

(१) मूल में मिटा ।

याजकपद और याजकों और लेवीयों की वाचा का तोड़ा जाना स्मरण रख ॥ ३० । सो मैं ने उन को सब अन्यजातियों से शुद्ध किया और एक एक याजक और लेवीय की बारी और काम ठहराया ॥ ३१ । फिर मैं ने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिये और पहिली पहिली उपज के देने का प्रबंध किया । हे मेरे परमेश्वर मेरे हित के लिये मेरा स्मरण रख ॥

एस्तेर नाम पुस्तक।

(क्षयर्ष की जेवनार के समय वश्ती का पटरानी के पद से उतारा जाना)

१. क्षयर्ष नाम राजा के दिनों में ये बातें हुईं । यह वही क्षयर्ष है जो एक सौ सत्ताईस प्रान्तों पर अर्थात् हिन्दुस्तान से लेकर कूश् देश लों राज्य करता था ॥ २ । उन्हीं दिनों में जब क्षयर्ष राजा अपनी उस राजगद्दी पर विराज रहा था जो शूशन् नाम राजगढ़ में थी, ३ । उस ने अपने राज्य के तीसरे बरस में अपने सब हाकिमों और कर्म्मचारियों की जेवनार किई। फारस और मादै के सेनापति और प्रान्त प्रान्त के प्रधान और हाकिम उस के सन्मुख आ गये ॥ ४ । और वह उन्हें बहुत दिन बरन एक सौ अस्सी दिन लों अपने राजविभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा ॥ ५ । इतने दिनों के बीतने पर राजा ने क्या छोटे क्या बड़े उन सभों की भी जो शूशन् नाम राजगढ़ में एकट्ठे हुए थे राजभवन की बारी के आंगन मे सात दिन की जेवनार किई ॥ ६ । वहां के पर्दे श्वेत और नीले सूत के थे और सन और बैंजनी रंग की डोरियों से चांदी के छल्लों में जो संगमर्मर के खंभों से लगे हुए थे और वहां की चौकियां सोने चांदी की थीं और लाल और श्वेत और पीले और काले संगमर्मर के बने हुए फर्श पर धरी हुई थीं ॥ ७। उस जेवनार में राजा के योग्य दाखमधु डौल डौल के सोने के पात्रों में डालकर राजा की उदारता से बहुतायत के साथ पिलाया जाता था ॥ ८ । पीना तो नियम के अनुसार होता था किसी को बरबस नहीं पिलाया जाता क्योंकि राजा ने तो अपने भवन के सब भण्डारियों को आज्ञा दिई थी कि जो पाहुन जैसा चाहे उस के साथ वैसा ही बर्ताव करना ॥ ९ । वश्ती रानी ने भी राजा क्षयर्ष के राजभवन में स्त्रियों की जेवनार किई ॥ १० । सातवें दिन जब राजा का मन दाखमधु में मगन था तब उस ने महूमान् बिज़्ता हर्बोना बिग्ता अबग्ता जेतेर और कर्कस् नाम सातों खोजों को जो क्षयर्ष राजा के सन्मुख सेवा टहल किया करते थे आज्ञा दिई कि, ११ । वश्ती रानी को राजमुकुट धारण किये हुए राजा के सन्मुख ले आओ इस लिये कि देश देश के लोगों और हाकिमों पर उस की सुन्दरता प्रगट हो । वह तो देखने में रूपवती थी ॥ १२ । खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर वश्ती रानी ने आने से नाह किई सो राजा बड़े क्रोध से जलने लगा ॥ १३ । तब राजा ने समय समय का भेद जाननेहारे पण्डितों से पूछा, राजा तो नीति और न्याय के सब जाननेहारों से ऐसा किया करता था ॥ १४ । और उस के पास कर्शना शेतार् अद्माता तर्शीश् मेरेस् मर्सना और ममूकान् नाम फारस और मादै के सातों खोजे थे जो राजा का दर्शन करते और राज्य में मुख्य मुख्य पदों पर विराजते थे ॥ १५ । राजा ने पूछा कि वश्ती रानी ने राजा क्षयर्ष की खोजों से दिलाई हुई आज्ञा न मानी सो हमें नीति के अनुसार उस से क्या करना चाहिये ॥ १६ । तब ममूकान् ने राजा

और हाकिमों के सुनते उत्तर दिया वश्ती रानी ने जो टेढ़ा काम किया सो न केवल राजा से किया सारे हाकिमों से और उन सारे देशों के लोगों से भी किया जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं ॥ १७ । कैसे कि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों को मिलेगी और जब यह कहा जाएगा कि राजा क्षयर्ष ने तो वश्ती रानी को अपने साम्हने ले आने की आज्ञा दिई पर वह न आई तब वे अपने अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी ॥ १८ । और आज के दिन फारसी और मादी हाकिमों की स्त्रियां रानी का काम सुनकर राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी जिस से बहुत ही अपमान और कोप होगा ॥ १९ । यदि राजा को भाए तो उस की ओर से यह आज्ञा निकले और फारसियों और मादियों के कानून में लिखी भी जाए जिस से न बदल सके कि वश्ती राजा क्षयर्ष के सन्मुख फिर आने न पाए और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे जो उस से अच्छी हो ॥ २० । और जब राजा की यह आज्ञा उस के सारे बड़े राज्य में सुनाई जाएगी तब सब पत्नियां छोटे बड़े अपने अपने पति का आदरमान करती रहेंगी ॥ २१ । यह वचन राजा और हाकिमों को भाया और राजा ने ममूकान् का कहा माना, २२ । और अपने राज्य में अर्थात् एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक जाति की बोली में चिट्ठियां भेजीं कि सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएं और अपने लोगों की बोली बोला करें ॥

(एस्तेर् का पटरानी बन जाना)

२. इन बातों के पीछे जब राजा क्षयर्ष की जलजलाहट ठंढी हो गई तब उस ने वश्ती की और जो काम उस ने किया था और जो उस के विषय ठाना गया था उस की भी सुधि लिई ॥ २ । तब राजा के सेवक जो उस के टहलुए थे कहने लगे राजा के लिये सुन्दर सुन्दर जवान कुंवारियां ढूंढ़ी जाएं ॥ ३ । और राजा अपने राज्य के सब प्रान्तों में लोगों को इस लिये ठहराए कि सब सुन्दर जवान कुंवारियों को शूशन् गढ़ के रनवास में एकट्ठी करके स्त्रियों के रखवाले राजा के खोजे हेगे को सौंप दें और शुद्ध करने के योग्य वस्तुएं उन्हें दिई जाएं ॥ ४ । तब उन में से जो कुंवारी राजा की दृष्टि में उत्तम होए सो वश्ती के स्थान पर पटरानी हो जाए । यह बात राजा को अच्छी लगी सो उस ने ऐसा ही किया ॥

५ । शूशन् गढ़ में मोर्दकै नाम एक यहूदी रहता था जो कीश् नाम एक बिन्यामीनी का परपोता शिमी का पोता और याईर् का पुत्र था ॥ ६ । वह उन बन्धुओं के साथ यरूशलेम् से बन्धुआई में गया था जिन्हें बाबेल् का राजा नबूकदनेस्सर् यहूदा के राजा यकोन्याह् के संग बन्धुआ करके ले गया था ॥ ७ । उस ने हदस्सा नाम अपनी चचेरी बहिन को पाला पोसा था जो एस्तेर् भी कहावती थी । क्योंकि उस के माता पिता कोई न था और वह लड़की सुन्दर और रूपवती थी और जब उस के माता पिता मर गये तब मोर्दकै ने उस को अपनी बेटी करके पाला ॥ ८ । जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाये गये और बहुत सी जवान स्त्रियां शूशन् गढ़ में हेगे के अधिकार में एकट्ठी किई गईं तब एस्तेर् भी राजभवन में स्त्रियों के रखवाले हेगे के अधिकार में सौंपी गई ॥ ९ । और वह जवान स्त्री उस की दृष्टि में अच्छी लगी और वह उस से प्रसन्न हुआ सो उस ने बिना विलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की वस्तुएं और उस का भोजन और उस के लिये चुनी हुई सात सहेलियां भी दिईं और उस को और उस की सहेलियों को रनवास में सब से अच्छा रहने का स्थान दिया ॥ १० । एस्तेर् ने न अपनी जाति बताई थी न अपना कुल क्योंकि मोर्दकै ने उस को आज्ञा दिई थी कि उसे न बताना ॥ ११ । मोर्दकै तो दिन दिन रनवास के आंगन के साम्हने टहलता था इस लिये कि जाने कि एस्तेर् कैसी है और उस को क्या होगा ॥ १२ । जब एक एक कन्या की बारी हुई कि वह क्षयर्ष राजा के पास जाए (और यह उस समय हुआ जब उस के संग स्त्रियों के लिये ठहराये हुए नियम के अनुसार बारह मास

लों व्यवहार किया गया था अर्थात् उन के शुद्ध करने के दिन इस रीति से बीत गये कि छः मांस लों गंधरस का तेल लगाया जाता था और छः मांस लों सुगंधद्रव्य और स्त्रियों के शुद्ध करने का और और सामान लगाया जाता था) १३। तब इस प्रकार से कन्या राजा के पास आती थी कि जो कुछ उस ने मांगा वह उसे दिया गया और वह उसे लिये हुए रनवास से राजभवन में गई॥ १४। सांझ को तो वह गई और बिहान को वह लौटकर रनवास के दूसरे घर में जाकर रखेलियों के रखवाले राजा के खोजे शाश्गज़ के अधिकार में हो गई और यदि राजा ने उस से प्रसन्न हो उस को नाम लेकर न बुलवाया हो तो वह उस के पास फिर न गई॥ १५। जब मोर्दकै के चचा अबीहैल् की बेटी एस्तेर् जिस को मोर्दकै ने बेटी करके रक्खा था उस की राजा के पास जाने की बारी पहुंच गई तब जो कुछ स्त्रियों के रखवाले राजा के खोजे हेगे ने उस के लिए ठहराया था उस से अधिक उस ने और कुछ न मांगा। और जितनों ने एस्तेर् को देखा वे सब उस से प्रसन्न हुए॥ १६। यों एस्तेर् राजभवन में राजा क्षयर्ष के पास उस के राज्य के सातवें बरस के तेबेत् नाम दसवें महीने में पहुंचाई गई॥ १७। और राजा ने एस्तेर् से और सब स्त्रियों से अधिक प्रीति किई और और सब कुंवारियों से अधिक उस के अनुग्रह और कृपा की दृष्टि उसी पर हुई इस कारण उस ने उस के सिर पर राजमुकुट धरा और उस को वशती के स्थान पर रानी किया॥ १८। तब राजा ने अपने सब हाकिमों और कर्म्मचारियों की बड़ी जेवनार करके उसे एस्तेर् की जेवनार कहा और प्रान्तों में छुट्टी दिलाई और अपनी उदारता के योग्य इनाम भी बांटे॥ १९। जब कुंवारियां दूसरी बार एकट्ठी किई गई तब मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा था॥ २०। तब तक एस्तेर् ने अपनी जाति और कुल न बताये थे क्योंकि मोर्दकै ने उस को ऐसी आज्ञा दिई थी और एस्तेर् मोर्दकै की बात ऐसी मानती थी जैसे कि उस के यहां पलने के समय मानती थी॥ २१। उन्हीं दिनों में जब मोर्दकै राजा राजभवन के फाटक में बैठा करता था राजा के खोजे जो डेवढ़ीदार भी थे उन में से बिग्तान् और तेरेश् नाम दो जनों ने राजा क्षयर्ष से रूठकर उस पर हाथ चलाने की युक्ति किई॥ २२। यह बात मोर्दकै को मालूम हुई और उस ने एस्तेर् रानी को बताई और एस्तेर् ने मोर्दकै का नाम लेकर राजा को जता दिया॥ २३। तब तहकीकात होने पर यह बात सच निकली और वे दोनों वृक्ष पर लटकाये गये और यह वृत्तान्त राजा के साम्हने इतिहास की पुस्तक में लिखा गया॥

(हामान् के द्रोह के कारण यहूदियों के सत्यानाश की आज्ञा दिई जानी)

३. इन बातों के पीछे राजा क्षयर्ष ने अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान् को बड़ा पद दिया और उस को बढ़ाकर उस के लिये उस के संग के सब हाकिमों के सिंहासनों से ऊंचा सिंहासन ठहराया॥ २। और राजा के सारे कर्म्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे हामान् के साम्हने झुककर दण्डवत करते थे क्योंकि राजा ने उस के विषय ऐसी आज्ञा दिई थी पर मोर्दकै न तो झुकता और न उस को दण्डवत् करता था॥ ३। सो राजा के कर्म्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे उन्हों ने मोर्दकै से पूछा तू राजा की आज्ञा क्यों टाल देता है॥ ४। जब वे उस से दिन दिन ऐसा ही कहते रहे और उस ने उन की न मानी तब उन्हों ने यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की बातें ठहरेंगी कि नहीं हामान् को बता दिया। उस ने उन को तो बताया था कि यहूदी हूं॥ ५। जब हामान् ने देखा कि मोर्दकै नहीं झुकता और न मुझ को दण्डवत् करता है तब बहुत ही जल उठा॥ ६। और उस ने केवल मोर्दकै पर हाथ चलाना तुच्छ जाना क्योंकि उन्हों ने हामान् को यह बता दिया था कि मोर्दकै किस जाति का है सो हामान् ने क्षयर्ष के राज्य भर में रहनेहारे सारे यहूदियों को भी मोर्दकै की जाति जानकर विनाश कर डालने का यत्न

किया ॥ ७ । राजा क्षयर्ष के बारहवें बरस के नीसान् नाम पहिले महीने में हामान् ने अदार् नाम बारहवें महीने लों के एक एक दिन और एक एक महीने के लिये पूर् अर्थात् चिट्ठी अपने साम्हने डलवाया ॥ ८ । और हामान् ने राजा क्षयर्ष से कहा तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेहारे देश देश के लोगों के बीच तितर बितर और छिटकी हुई एक जाति है जिस के नियम और सब लोगों के नियमों से अलग हैं और वे राजा के कानून पर नहीं चलते इस लिये उन्हें रहने देना राजा को उचित नहीं है ॥ ९ । सो यदि राजा को भाए तो उन्हें नाश करने की आज्ञा लिखी जाए और मैं राजा के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डार में पहुंचाने के लिये दस हजार किक्कार् चांदी दूंगा ॥ १० । तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान् को जो यहूदियों का वैरी था दे दिई ॥ ११ । और राजा ने हामान् से कहा वह चांदी तुझे दिई गई है और वे लोग भी कि तू उन से जैसा तेरा जी चाहे वैसाही वर्ताव करे ॥ १२ । सो उसी पहिले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाये गये और हामान् की सारी आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों और सब प्रान्तों के प्रधानों और देश देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिट्ठियां एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की बोली में राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गईं और उन में राजा की अंगूठी की छाप लगाई गई ॥ १३ । और राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियां हरकारों के द्वारा भेजी गईं कि एक ही दिन में अर्थात् अदार् नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को क्या जवान क्या बूढ़ा क्या स्त्री क्या बालक सब यहूदी विध्वंस घात और नाश किये जाएं और उन की धन संपत्ति लूटी जाए ॥ १४ । उस आज्ञा के लेख की नकलें सारे प्रान्तों में खुली हुई भेजी गईं कि सब देशों के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाएं ॥ १५ । यह आज्ञा शूशन् गढ़ में दिई गई और हरकारे राजा की आज्ञा से फुर्ती के साथ निकल गये तब राजा और हामन् तो जेवनार में बैठ गये पर शूशन् नगर में घबराहट हुई ॥

(मोर्दकै एस्तेर् को विन्ती करने के लिये उसकाता है)

४. जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया तब वस्त्र फाड़ टाट पहिन राख डालकर नगर के बीच जाकर ऊंचे और दुखभरे शब्द से चिल्लाने लगा ॥ २ । और वह राजभवन के फाटक के साम्हने पहुंचा, टाट पहिने राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने का हुकम न था ॥ ३ । और एक एक प्रान्त में जहां जहां राजा की आज्ञा और नियम पहुंचा वहां वहां यहूदी बड़ा विलाप और उपवास करने और रोने पीटने लगे बरन बहुतेरे टाट पहिने और राख डाले हुए पड़े रहे ॥ ४ । और एस्तेर् रानी की सहेलियों और खोजों ने जाकर उस को बता दिया तब रानी शोक से भर गई[१] और मोर्दकै के पास वस्त्र भेजकर यह कहवाया कि टाट उतारकर इन्हें पहिन ले पर उस ने उन्हें न लिया ॥ ५ । तब एस्तेर् ने राजा के खोजों में से हताक् को जिसे राजा ने उस के पास रहने को ठहराया था बुलाकर आज्ञा दिई कि मोर्दकै के पास जाकर बूझ ले कि यह क्या बात है और इस का क्या कारण है ॥ ६ । सो हताक् नगर के उस चौक में जो राजभवन के फाटक के साम्हने था मोर्दकै के पास निकल गया ॥ ७ । तब मोर्दकै ने उस को बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है और हामन् ने यहूदियों के नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में कितनी चांदी भर देने का वचन दिया यह भी ठीक बतला दिया ॥ ८ । फिर यहूदियों को विनाश करने की जो आज्ञा शूशन् में दिई गई थी उस की एक नकल भी उस ने हताक् के हाथ में एस्तेर् को दिखाने के लिये दिई और उसे सब हाल बताने और यह आज्ञा देने को कहा कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती कर ॥ ९ । तब हताक् ने एस्तेर् के पास आ मोर्दकै की

(१) मूल में पीड़ा से ऐंठ गई।

बातें कह सुनाईं ॥ १०। तब एस्तेर् ने हताक् को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा दिई कि, ११। राजा के सारे कर्म्मचारियों बरन राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्यों न हो जो आज्ञा बिना पाये भीतरी आंगन में राजा के पास जाए उस के मार डालने ही की आज्ञा है केवल जिस की ओर राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है पर मैं अब तीस दिन से राजा के पास बुलाई नहीं गई ॥ १२। सो एस्तेर् की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं ॥ १३। तब मोर्दकै ने एस्तेर् के पास यह कहला भेजा कि तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूंगी ॥ १४। क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे तो और किसी न किसी उपाय से[1] यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा पर तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही समय के लिये राजपद मिल गया हो ॥ १५। तब एस्तेर् ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा कि, १६। तू जाकर शूशन् के सब यहूदियों को एकट्ठा कर और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ और न कुछ पीओ और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूंगी और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी और जो नाश हो गई तो हो गई ॥ १७। सो मोर्दकै चला गया और एस्तेर् की आज्ञा के अनुसार ही किया ॥

५. तीसरे दिन एस्तेर् अपने राजकीय वस्त्र पहिन राजभवन के भीतरी आंगन में जाकर राजभवन के साम्हने खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में राजगद्दी पर भवन के द्वार के साम्हने विराजमान था ॥ २। और जब राजा ने एस्तेर् रानी को आंगन में खड़ी हुई देखा तब वह उस से प्रसन्न हुआ और अपने हाथ का सोने का राजदण्ड उस की ओर बढ़ाया सो एस्तेर् ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छूई ॥ ३। तब राजा ने उस से पूछा हे एस्तेर् रानी तुझे क्या चाहिये और तू क्या मांगती है, मांग, और तुझे आधे राज्य तक दिया जाएगा ॥ ४। एस्तेर् ने कहा यदि राजा को भाए तो आज हामान् को साथ लेकर उस जेवनार में आए जो मैं ने राजा के लिये तैयार किई है ॥ ५। तब राजा ने आज्ञा दिई कि हामान् को फुर्ती से ले आओ कि एस्तेर् की बात मानी जाए। सो राजा और हामान् एस्तेर् की किई हुई जेवनार में आये ॥ ६। जेवनार के समय जब दाखमधु पिया जाता था तब राजा ने एस्तेर् से कहा तेरा क्या निवेदन है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या मांगती है, मांग, और आधे राज्य लों तुझे दिया जाएगा ॥ ७। एस्तेर् ने उत्तर दिया मेरा निवेदन और जो मैं मांगती हूं सो यह है. ८। कि यदि राजा मुझ पर प्रसन्न हो और मेरा निवेदन सुनना और जो वर मैं मांगूं वही देना राजा को भाए तो राजा और हामान् कल उस जेवनार में आएं जिसे मैं उन के लिये करूंगी और कल मैं राजा के कहे के अनुसार करूंगी ॥ ९। उस दिन हामान् आनन्दित और मन में प्रसन्न होकर बाहर गया पर जब उस ने मोर्दकै को राजभवन के फाटक में देखा कि वह मेरे साम्हने न तो खड़ा होता और न थरथराता है तब वह मोर्दकै के विरुद्ध क्रोध से भर गया ॥ १०। तौभी वह अपने को रोककर अपने घर गया और अपने मित्रों और अपनी स्त्री जेरेश् को बुलवा भेजा ॥ ११। तब हामान् ने उन से अपने धन का विभव और अपने लड़केबालों की बढ़ती और राजा ने उस को कैसे कैसे बढ़ाया और और सब हाकिमों और अपने और सब कर्म्मचारियों से ऊंचा पद दिया था इस सब का बखान किया ॥ १२। हामान् ने यह भी कहा कि एस्तेर् रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग अपनी किई हुई जेवनार में आने न दिया और कल के लिये भी राजा के संग उस ने मुझी को नेवता दिया है ॥ १३। तौभी जब जब मुझे वह यहूदी मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा हुआ देख पड़ता है तब

(१) मूल में स्थान से।

तब यह सब मेरे लेखे में कुछ नहीं है¹ ॥ १४ । उस की स्त्री जेरेश् और उस के सब मित्रों ने उस से कहा पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खंभा बनाया जाए और बिहान को राजा से कहना कि उस पर मोर्दकै लटका दिया जाए तब राजा के संग आनन्द से जेवनार में जाना । इस बात से प्रसन्न होकर हामान् ने ऐसा ही एक फांसी का खम्भा बनवाया ॥

६. उस रात राजा को नींद न आई सो उस की आज्ञा से इतिहास की पुस्तक लाई गई और वह पढ़कर राजा को सुनाई गई ॥ २ । और यह लिखा हुआ मिला कि जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो डेवढ़ीदार भी थे उन में से बिग्ताना और तेरेश् नाम दो जनों ने उस पर हाथ चलाने की युक्ति किई तब मोर्दकै ने इसे प्रगट किया था ॥ ३ । तब राजा ने पूछा इस के बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई किई गई राजा के जो सेवक उस की सेवा टहल कर रहे थे उन्हों ने उस को उत्तर दिया उस के लिये कुछ भी नहीं किया गया ॥ ४ । राजा ने पूछा आंगन में कौन है उसी समय तो हामान् राजा के भवन के बाहरी आंगन में इस मनसा से आया था कि जो खंभा उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था उस पर उस को लटका देने की चर्चा राजा से करे ॥ ५ । सो राजा के सेवकों ने उस से कहा आंगन में तो हामान् खड़ा है राजा ने कहा उसे भीतर लाओ ॥ ६ । जब हामान् भीतर आया तब राजा ने उस से पूछा जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस से क्या करना उचित होगा हामान् ने यह सोचकर कि मुझ से अधिक राजा किस की प्रतिष्ठा करना चाहता होगा ७ । राजा को उत्तर दिया जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे उस के लिये, ८ । कोई राजकीय वस्त्र लाया जाए जो राजा पहिनता हो और एक घोड़ा भी जिस पर राजा सवार होता हो और उस के सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता हो सो लाया जाए ॥ ९ । फिर वह वस्त्र और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपे जाएं कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस को वह वस्त्र पहिनाया जाए और उस घोड़े पर सवार करके नगर के चौक में फिराया जाए और उस के आगे आगे यह प्रचार किया जाए कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस से यों ही किया जाएगा ॥ १० । राजा ने हामान् से कहा फुर्ती करके अपने कहे के अनुसार उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर उस यहूदी मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है वैसा ही कर जो कुछ तू ने कहा है उस में कुछ भी कम होने न पाए ॥ ११ । सो हामान् ने उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर मोर्दकै को पहिनाया और उसे घोड़े पर चढ़ाकर नगर के चौक में यों पुकारता हुआ फिराया कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस से यों ही किया जाएगा ॥ १२ । तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया पर हामान् झट शोक करते और सिर ढांपे हुए अपने घर गया ॥ १३ । और हामान् ने अपनी स्त्री जेरेश् और अपने सब मित्रों से सब कुछ बखान किया जो उस पर बीता था ॥ १४ । तब उस के बुद्धिमान मित्रों और उस की स्त्री जेरेश् ने उस से कहा मोर्दकै जिस से तू नीचा खाने लगा है यदि वह यहूदियों के वंश में का है तो तू उस पर प्रबल न होगा उस से पूरी रीति नीचा ही खाएगा ॥ १४ । वे उस से बातें कर ही रहे थे कि राजा के खोजों ने आकर हामान् को एस्तेर् की किई हुई जेवनार में फुर्ती से पहुंचा दिया ॥

७. सो राजा और हामान् एस्तेर् रानी की जेवनार में आ गये ॥ २ । उस दूसरे दिन को दाखमधु पीते पीते राजा ने एस्तेर् से फिर पूछा हे एस्तेर् रानी तेरा क्या निवेदन है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या मांगती है, मांग, और आधे राज्य तक तुझे दिया जाएगा ॥ ३ । एस्तेर् रानी ने उत्तर दिया हे राजा यदि तू मुझ पर प्रसन्न हो और राजा को यह भाए भी तो मेरे निवेदन से मुझे और मेरे मांगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले ॥ ४ । क्योंकि मैं और

(१) मूल में, यह सब मेरे बराबर नहीं ।

मेरी जाति के लोग बेच डाले गये हैं कि हम सब विध्वंस घात और नाश किये जाएं। यदि हम केवल दास दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते तो मैं चुप रहती चाहे उस दशा में भी वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता ॥ ५। तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर् रानी से पूछा वह कौन है और कहां है जिस ने ऐसा करने की मनसा किई है ॥ ६। एस्तेर् बोली वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान् है तब हामान् राजा रानी के साम्हने भय खा गया ॥ ७। राजा तो जलजलाहट में आ मधु पीने से उठकर राजभवन की बारी में निकल गया और हामान् यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी होगी एस्तेर् रानी से प्राणदान मांगने को खड़ा हुआ ॥ ८। जब राजा राजभवन की बारी से दाखमधु पीने के स्थान को लौट आया तब क्या देखा कि हामान् उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर् बैठी है पड़ा है और राजा ने कहा क्या यह घर ही में मेरे साम्हने ही रानी से बरबस करना चाहता है। राजा के मुंह से यह वचन निकला ही था कि सेवकों ने हामान् का मुंह ढांप दिया ॥ ९। तब राजा के साम्हने हाजिर रहनेहारे खोजों में से हर्बोना नाम एक ने राजा से कहा हामान् के यहां पचास हाथ ऊंचा एक फांसी का खंभा खड़ा है जो उस ने मोर्दकै के लिये बनवाया है जिस ने राजा के हित की बात कही थी। राजा ने कहा उस को उसी पर लटका दो ॥ १०। सो हामान् उसी खंभे पर जो उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था लटका दिया गया। इस पर राजा की जलजलाहट ठंढी हो गई ॥

(यहूदियों को अपने शत्रुओं के घात करने की अनुमति मिलनी)

८. उसी दिन राजा क्षयर्ष ने यहूदियों के विरोधी हामान् का घरबार एस्तेर् रानी को दे दिया और मोर्दकै राजा के साम्हने आया क्योंकि एस्तेर् ने राजा को बताया था कि वह मेरा कौन है ॥ २। तब राजा ने अपनी वह अंगूठी जो उस ने हामान् से ले लिई थी उतारकर मोर्दकै को दे दिई। और एस्तेर् ने मोर्दकै को हामान् के घरबार पर अधिकारी ठहराया ॥ ३। फिर एस्तेर् दूसरी बार राजा से बोली और उस के पांव पर गिर आंसू बहा उस से गिड़गिड़ाकर बिन्ती किई कि अगागी हामान् की बुराई और यहूदियों की हानि की उस की किई हुई युक्ति निष्फल किई जाए ॥ ४। तब राजा ने एस्तेर् की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया सो एस्तेर् उठकर राजा के साम्हने खड़ी हुई, ५। और कहने लगी यदि राजा को यह भाए और वह मुझ पर प्रसन्न हो और यह बात उस को ठीक जान पड़े और मैं भी उस को अच्छी लगती हूं तो जो चिट्ठियां हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान् ने राजा के सब प्रान्तों के यहूदियों को नाश करने की युक्ति करके लिखाई थीं उन को पलटने के लिये लिखा जाए ॥ ६। क्योंकि मैं तो अपने जाति के लोगों पर पड़नेवाली वह विपत्ति किस रीति देख सकूंगी और अपने भाइयों के सत्यानाश को मैं क्योंकर देख सकूंगी ॥ ७। तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर् रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा मैं हामान् का घरबार तो एस्तेर् को दे चुका हूं और वह फांसी के खंभे पर लटकाया गया है इस लिये कि उस ने यहूदियों पर हाथ बढ़ाया था ॥ ८। सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो और राजा की अंगूठी की छाप भी लगाओ क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए और उस पर उस की अंगूठी की छाप लगाई जाए उस को कोई भी पलट नहीं सकता ॥ ९। सो उसी समय अर्थात् सीवान् नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन को राजा के लेखक बुलाये गये और जिस जिस बात की आज्ञा मोर्दकै ने उन्हें दिई सो यहूदियों और अधिपतियों और हिन्दुस्तान से ले कूश लों जो एक सौ सताईस प्रान्त हैं उन सभों के अधिपतियों और हाकिमों को एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की बोली में और यहूदियों को उन के अक्षरों और बोली में लिखी गईं ॥ १०। मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के नाम से चिट्ठियां लिखाकर और उन पर राजा की अंगूठी की छाप लगाकर वेग चलनेहारे सरकारी घोड़ों खच्चरों और सांड़नियों की डाक लगाकर

हरकारों के हाथ भेज दिईं ॥ ११। इन चिट्ठियों में सब नगरों के यहूदियों को राजा की ओर से अनुमति दिई गई कि वे एकट्ठे हो अपना अपना प्राण बचाने के लिये खड़े होकर जिस जाति वा प्रान्त के लोग बल करके उन को वा उन की स्त्रियों और बालबच्चों को दुःख देना चाहें उन को विध्वंस घात और नाश करने और उन को धन संपत्ति लूट लेने पाएं ॥ १२। और यह राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में एक दिन को किया जाए अर्थात् अदार् नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को ॥ १३। इस आज्ञा के लेख की नक़लें सारे प्रान्तों में सब देशों के लोगों के पास खुली हुई भेजी गईं इस लिये कि यहूदी उस दिन के लिये अपने शत्रुओं से पलटा लेने को तैयार हों ॥ १४। सो हरकारे वेग चलनेहारे सर्कारी घोड़ों पर सवार होकर राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जल्दी चले गये और यह आज्ञा शूशन् राजगढ़ में दिई गई थी ॥ १५। तब मोर्दकै नील और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहिने सिर पर सोने का बड़ा मुकुट धरे और सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग का बागा पहिने हुए राजा के सन्मुख से निकल गया। और शूशन् नगर के लोग आनन्द के मारे ललकार उठे ॥ १६। यहूदियों को आनन्द हर्ष और प्रतिष्ठा हुई ॥ १७। और जिस जिस प्रान्त और जिस जिस नगर में जहां कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुंचे वहां वहां यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उन्हों ने जेवनार करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहूदी बन गये इस कारण से कि उन के मन में यहूदियों का डर समा गया ॥

(पूरीम् नाम पर्व का ठहराया जाना।)

९. अदार् नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को जिस दिन राजा की आज्ञा और नियम पूरा होने को थे और यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे पर इस के उलटे यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए उस दिन, २। यहूदी लोग राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में अपने अपने नगर में इकट्ठे हुए कि जो उन की हानि करने का यत्न करें उन पर हाथ डालें। और कोई उन का साम्हना न कर सका क्योंकि उन का डर देश देश के सब लोगों के मन में समाया था ॥ ३। बरन प्रान्तों के सब हाकिमों और अधिपतियों और प्रधानों और राजा के कर्म्मचारियों ने यहूदियों की सहायता किई क्योंकि उन के मन में मोर्दकै का डर समा गया ॥ ४। मोर्दकै तो राजा के यहां बहुत प्रतिष्ठित था और उस की कीर्त्ति सब प्रान्तों में फैल गई बरन उस पुरुष मोर्दकै की महिमा बढ़ती चली गई ॥ ५। सो यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को तलवार से मारकर और घात करके नाश कर डाला और अपने बैरियों से अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया ॥ ६। और शूशन् राजगढ़ में यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को घात करके नाश किया ॥ ७। और उन्हों ने पर्शन्दाता दल्फोन् अस्पाता. ८। पोराता अदल्या अरीदाता. ९। पर्मशूता अरीसै अरीदै और वैजाता नाम, १०। हम्मदाता के पुत्र यहूदियों के विरोधी हामान् के दसों पुत्रों को भी घात किया पर उन के धन को न लूटा ॥ ११। उसी दिन शूशन् राजगढ़ में घात किये हुओं की गिनती राजा को सुनाई गई ॥ १२। तब राजा ने एस्तेर् रानी से कहा यहूदियों ने शूशन् राजगढ़ ही में पांच सौ मनुष्य और हामान् के दसों पुत्र भी घात करके नाश किये हैं फिर राज्य के और और प्रान्तों में उन्हों ने न जाने क्या क्या किया होगा अब इस से अधिक तेरा निवेदन क्या है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या मांगती है वह भी तुझे दिया जाएगा ॥ १३। एस्तेर् ने कहा यदि राजा को भाए तो शूशन् के यहूदियों को आज की नाईं कल भी करने दिया जाए और हामान् के दसों पुत्र फांसी के खंभों पर लटकाये जाएं ॥ १४। राजा ने कहा ऐसा किया जाए सो आज्ञा शूशन् में दिई गई और हामान् के दसों पुत्र लटकाये गये ॥ १५। और शूशन् के यहूदियों ने अदार् महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर शूशन् में तीन सौ पुरुषों को घात किया पर धन को न लूटा ॥ १६। राज्य के और और प्रान्तों के यहूदी एकट्ठे होकर अपना

अपना प्राण बचाने को खड़े हुए और अपने बैरियों में से पचहत्तर हजार मनुष्यों को घात करके अपने शत्रुओं से विश्राम पाया पर धन को न लूटा ॥ १७। यह अदार् महीने के तेरहवें दिन को किया गया और चौदहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार और आनन्द का दिन ठहराया ॥ १८। परशूशन् के यहूदी अदार् महीने के तेरहवें दिन को और उसी महीने के चौदहवें दिन को एकट्ठे हुए और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार और आनन्द का दिन ठहराया ॥ १९। इस कारण दिहाती यहूदी जो विना शहरपनाह की बस्तियों में रहते हैं वे अदार् महीने के चौदहवें दिन को आनन्द और जेवनार और खुशी और आपस में बैना भेजने का दिन करके मानते हैं ॥

२०। इन बातों का वृत्तान्त लिखकर मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में क्या निकट क्या दूर रहनेहारे सारे यहूदियों के पास चिट्ठियां भेजकर, २१। यह आज्ञा दिई कि अदार् महीने के चौदहवें और उसी महीने के पंद्रहवें दिनों को बरस बरस माना करें, २२। जिन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया और यह महीना माना करें जिस में शोक आनन्द से और विलाप खुशी से बदला गया और उन को जेवनार और आनन्द और एक दूसरे के पास बैना भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें ॥ २३। और यहूदियों ने जैसा आरंभ किया था और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा वैसा ही करना ठान लिया ॥ २४। क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान् जो सब यहूदियों का विरोधी था उस ने यहूदियों के नाश करने की युक्ति किई और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी, २५। पर जब राजा ने यह जान लिया तब उस ने आज्ञा देकर लिखाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान् ने यहूदियों के विरुद्ध किई सो उसी के सिर पर पलट आए सो वह और उस के पुत्र फांसी के खंभों पर लटकाये गये ॥ २६। इस कारण उन दिनों का नाम पूर शब्द से पूरीम् रक्खा गया। इस चिट्ठी की सब बातों के कारण और जो कुछ उन्हों ने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीती थी उस के कारण भी, २७। यहूदियों ने अपने अपने लिये और अपनी सन्तान के लिये और उन सभों के लिये भी जो उन में मिल जाएं यह अटल प्रण किया कि उस लेख के अनुसार बरस बरस उस के ठहराये हुए समय में हम ये दो दिन मानें, २८। और पीढ़ी पीढ़ी कुल कुल प्रान्त प्रान्त, नगर नगर में ये दिन स्मरण किये और माने जाएं और इन पूरीम् नाम दिनों का मानना यहूदियों में से जाता न रहे और न उन का स्मरण उन के वंश से मिट जाए ॥ २९। फिर अबीहैल् की बेटी एस्तेर् रानी और मोर्दकै यहूदी ने पूरीम् के विषय की यह दूसरी चिट्ठी स्थिर करने को बड़े अधिकार के साथ लिखा ॥ ३०। इस की नकलें मोर्दकै ने क्षयर्ष के राज्य के एक सौ सत्ताईसों प्रान्तों के सब यहूदियों के पास शान्ति देनेहारी और सच्ची बातों के साथ इस आशय से भेजीं, ३१। कि पूरीम् के उन दिनों के विशेष ठहराये हुए समयों में मोर्दकै यहूदी और एस्तेर् रानी की आज्ञा के अनुसार और जो यहूदियों ने अपने और अपनी संतान के लिये ठान लिया था उस के अनुसार भी उपवास और विलाप किये जाएं ॥ ३२। और पूरीम् के विषय का यह नियम एस्तेर् की आज्ञा से भी स्थिर किया गया और उन की चर्चा पुस्तक में लिखी गई ॥

(मोर्दकै का माहात्म्य)

१०. और राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापू दोनों पर कर लगाया ॥ २। और उस के माहात्म्य और पराक्रम के कामों और मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा जो राजा ने उस की कर दिई सो क्या मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥ ३। निदान यहूदी मोर्दकै क्षयर्ष राजा ही के नीचे था और यहूदियों के लेखे में बड़ा था और उस के सब भाई उस से प्रसन्न रहे, वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था ॥

अय्यूब नाम पुस्तक।

(अय्यूब का भारी परीक्षा में पड़ना.)

१. उस देश में अय्यूब नाम एक पुरुष था सो खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से परे रहता था ॥ २। उस के सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ३। फिर उस के सात हजार भेड़-बकरियां तीन हजार ऊंट पांच सै जोड़ी बैल और पांच सै गदहियां और बहुत ही दास दासियां थीं बरन उस के इतनी संपत्ति थी कि पूर्वियों में वह सब से बड़ा था ॥ ४ ॥ उस के बेटे अपने अपने दिन पर एक दूसरे के घर में खाने पीने को आया करते और अपनी तीनों बहिनों को अपने संग खाने पीने के लिये बुलवा भेजते थे ॥ ५। और जब जब जेवनार के दिन पूरे होते तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता और बड़ी भोर उठकर उन की गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था क्योंकि अय्यूब सोचता था कि क्या जाने मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो। इसी रीति अय्यूब किया करता था ॥

६। एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उस के साम्हने हाजिर होने को आये और उन के बीच शैतान भी आया ॥ ७। यहोवा ने शैतान से पूछा तू कहां से आता है शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया पृथिवी पर इधर उधर घूमते फिरते और डोलते डालते आया हूं ॥ ८। यहोवा ने शैतान से पूछा क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथिवी पर उस के तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेहारा और बुराई से परे रहनेहारा मनुष्य और कोई नहीं है ॥ ९। शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है ॥ १०। क्या तू ने उस की और उस के घर की और उस के सब कुछ की चारों ओर बाड़ा नहीं बांधा तू ने तो उस के काम पर आशीष दिई है और उस की संपत्ति देश भर में फैल गई है ॥ ११। पर अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उस का है उसे छू तब वह निश्चय तुझे निधड़क[१] छोड़ देगा ॥ १२। यहोवा ने शैतान से कहा सुन जो कुछ उस का है सो सब तेरे हाथ में है केवल उस के शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया ॥

१३। एक दिन अय्यूब के बेटे बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे ॥ १४। तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा हम तो बैलों से हल जोत रहे थे और गदहियां उन के पास चर रही थीं, १५। कि शबाई लोग धावा करके उन को ले गये और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं ॥ १६। वह कहता ही था कि दूसरा भी आकर कहने लगा कि परमेश्वर की आग आकाश से पड़ी और उस से भेड़बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गये और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं ॥ १७। वह कह ही रहा था कि एक और आकर कहने लगा कि कसदी लोग तीन गोल बांधकर ऊंटों पर धावा करके उन्हें ले गये और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं ॥ १८। वह कह ही रहा था कि एक और आकर कहने लगा तेरे बेटे बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, १९। कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों

(१) मूल में. तेरे मुख के साम्हने।

पर गिर पड़ा और वे मर गये और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं ॥ २० । तब अय्यूब उठा और बागा फाड़ सिर मुंड़ा भूमि पर गिर दण्डवत् करके, २१ । कहा मैं अपनी मा के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया यहोवा का नाम धन्य है ॥ २२ । इन सारी बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया और न परमेश्वर पर मूर्खता का दोष लगाया ॥

२. फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उस के साम्हने हाजिर होने को आये और उन के बीच शैतान भी उस के साम्हने हाजिर होने को आया ॥ २। यहोवा ने शैतान से पूछा तू कहां से आता है शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया पृथिवी पर इधर उधर घूमते फिरते और डोलते डोलते आया हूं ॥ ३ । यहोवा ने शैतान से पूछा क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथिवी पर उस के तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेहारा और बुराई से परे रहनेहारा मनुष्य और कोई नहीं है और यद्यपि तू ने मुझे उस को बिना कारण सत्यानाश करने को उभारा तौभी वह अब लों अपनी खराई पर बना है ॥ ४ । शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया खाल के बदले खाल पर प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है ॥ ५ । परन्तु अपना हाथ बढ़ाकर उस की हड्डियां और मांस छू तब निश्चय वह तुझे निधड़क[१] छोड़ देगा ॥ ६ । यहोवा ने शैतान से कहा सुन वह तेरे हाथ में है केवल उस का प्राण छोड़ देना ॥ ७ । सो शैतान यहोवा के साम्हने से निकला और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी लों बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया ॥ ८। तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख के बीच बैठ गया ॥ ९ । तब उस की स्त्री उस से कहने लगी क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है परमेश्वर को छोड़ दे तब चाहे मर जाए तो मर जा ॥ १० । उस ने उस से कहा तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है कह तो हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं सो क्या दुःख भी न लें । इन सारी बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप न किया ॥

११ । जब तेमानी एलीपज् और शूही बिल्दद् और नामाती सोपर् अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सारी विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थी तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उस के संग विलाप करेंगे और उस को शांति देंगे अपने अपने यहां से उस के पास चले ॥ १२ । जब उन्हों ने दूर से आंख उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न चीन्ह सके तब चिल्लाकर रो उठे और अपना अपना बागा फाड़ा और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने अपने सिर पर डाली ॥ १३ । तब वे सात दिन और सात रात उस के संग भूमि पर बैठे रहे पर उस का दुःख बहुत ही बड़ा जानकर किसी ने उस से एक भी बात न कही ॥

(अय्यूब का अपने जन्म दिन को धिक्कारना.)

३. इस के पीछे अय्यूब मुंह खोलकर अपने जन्मदिन को, २ । यों धिक्कारने लगा कि

३ । वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ
और वह रात भी जिस में कहा गया कि बेटे
का गर्भ रहा ॥
४ । वह दिन अंधियारा होए
ऊपर से ईश्वर उस की सुधि न ले
और न उस में प्रकाश होए ॥
५ । अंधियारा बरन घोर अन्धकार उस पर
छाया रहे[१]
उस में बादल छाये रहें
और जो कुछ दिन को अंधेरा कर सकता है
सो उस को डराए ॥
६ । फिर उस रात को घोर अंधकार पकड़े
बरस के दिनों के बीच वह आनन्द न करने
पाए

(१) मूल में, तेरे मुख के साम्हने ।

(१) मूल में उस का दाम देकर उसे अपना लें ।

और महीनों में उस की गिनती न किई जाए॥
७। सुनो वह रात बांझ होए
उस में गाने का शब्द न सुन पड़े॥
८। जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं
और लिव्यातान् को छेड़ने में निपुण हैं सो उसे धिक्कारें॥
९। उस दिन की भोर के तारे प्रकाश न दें
वह उजियाले की वाट जोहे पर वह उसे न मिले
वह भोर की पलकों को देखने न पाए॥
१०। क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख बन्द न किई[1]
और मुझे कष्ट देखने दिया॥
११। मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया
पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा॥
१२। मैं घुटनों पर क्यों लिया गया
मैं छातियों को क्यों पीने पाया॥
१३। ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता
मैं सोता रहता और विश्राम करता॥
१४। मैं पृथिवी के उन राजाओं और मंत्रियों के साथ होता
जिन्हों ने सूने स्थान बनवा लिये थे,
१५। वा मैं उन सोना रखनेवाले हाकिमों के साथ होता
जिन्हों ने अपने घरों को चांदी से भर दिया था,
१६। वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाईं हुआ न होता
वा ऐसे बच्चों के समान होता जो उजियाले को देखने नहीं पाते॥
१७। उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते
और थके मांदे विश्राम करते हैं॥
१८। उस में बंधुए एक संग सुख से रहते हैं
और परिश्रम करानेहारे का बोल नहीं सुनते।
१९। उस में छोटे बड़े सब रहते हैं
और दास अपने स्वामी से छूटा रहता है॥
२०। दुःखियों को उजियाला
और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है॥
२१। वे मृत्यु की वाट जोहते हैं पर वह आती नहीं
और गड़े हुए धन से अधिक उस की खोज करते हैं[1]॥
२२। वे कबर को पहुंचकर आनन्दित
और अत्यन्त मगन होते हैं॥
२३। उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है
जिस का मार्ग छिपा
जिस की चारों ओर ईश्वर ने घेरा बांध दिया हो॥
२४। मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी लम्बी सांसें आती हैं
और मेरा विलाप धारा की नाईं बहता रहता है[2]॥
२५। क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूं सोई मुझ पर आ पड़ती है
और जिस से मैं भय खाता हूं सोई मुझ पर आ जाता है॥
२६। मुझे न तो चैन न शान्ति न विश्राम मिलता है
पर दुःख आता है॥

(एलीपज् का वचन)

४. तब तेमानी एलीपज् ने कहा,

२। यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे तो क्या तुझे बुरा लगेगा
पर बात करने से कौन रुक सके॥
३। सुन तू ने बहुतों को शिक्षा दिई
और निर्बल लोगों[3] को बल तो दिया॥

(१) मूल में उस ने मेरी कोख के किवाड़ बन्द न किये और मेरी आंखों से कष्ट छिपाया।

(१) मूल में उस के लिये खोदते हैं। (२) मूल में मेरे गर्जन जल की नाईं उंडेले जाते हैं। (३) मूल में, निर्बल हाथ।

४। गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों से संभाल लिया
और लड़खड़ाते हुए लोगों[1] को तू ने बल दिया था,
५। पर अब विपत्ति जो तुझ पर आ पड़ी सो तू उकताता है
और उस के छुवाव ही से तू भभर उठा है ॥
६। परमेश्वर का भय जो तू मानता है क्या इस पर तेरा आसरा नहीं
और तेरी चालचलन जो खरी है क्या इस से तुझे आशा नहीं ॥
७। सोच कि क्या कोई निर्दोष कभी नाश हुआ
और खरे लोग कहां विलाय गये ॥
८। मेरे देखने में तो जो अनर्थ जोतते
और उत्पात बोते हैं सो वैसा ही लवते हैं ॥
९। वे तो ईश्वर की फूंक से नाश होते
और उस की कोप की सांस लगते ही उन का अन्त होता है ॥
१०। सिंह का गरजना और भयंकर सिंह का शब्द बन्द हो जाता है
और जवान सिंहों के दांत तोड़े जाते हैं ॥
११। शिकार न पाने से बूढ़ा सिंह मर जाता
और सिंहिनी के डांवरू तितर बितर हो जाते हैं ॥
१२। मेरे पास तो एक बात चुपके से पहुंची
और उस की कुछ भनक मेरे कान में पड़ी ॥
१३। रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच जब मनुष्य भारी नींद में पड़े थे,
१४। मुझे ऐसी थरथराहट और कंपकंपी लगी कि मेरी सब हड्डियां तक थरथरा उठीं ॥
१५। तब एक आत्मा[2] मेरे साम्हने से होकर चला इस से मेरी देह के रोएं खड़े हो गये ॥
१६। वह ठहर गया और उस का आकार मुझे ठीक न देख पड़ा
पर मेरी आंखों के साम्हने कुछ रूप था
पहिले सन्नाटा रहा फिर शब्द सुन पड़ा कि,

(१) मूल में, टिकते हुए। (२) या वायु।

१७। क्या मनुष्य ईश्वर के लेखे धर्मी ठहरे
क्या पुरुष अपने सिरजनहार के लेखे शुद्ध ठहरे ॥
१८। सुन वह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता
और अपने दूतों को मूर्ख ठहराता है ॥
१९। फिर जो मिट्टी के घरों में रहते हैं
जिन की नेव धूल में डाली गई है
और वे पतंगों की नाईं पिस जाते हैं उन का क्या लेखा ॥
२०। वे भोर से सांझ लों टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं
वे सदा के लिये नाश होते हैं
और कोई ध्यान नहीं देता ॥
२१। क्या उन के डेरे की डोरी नहीं कट जाती
वे बिना बुद्धि मर जाते हैं ॥

५. पुकार तो पुकार पर कौन तुझे उत्तर देगा
पवित्रों में से तू किस की ओर फिरेगा ॥
२। मूढ़ तो खेद करते करते नाश होता
और भोला जलते जलते मर जाता है ॥
३। मैं ने मूढ़ को जड़ पकड़ते देखा
पर अचानक मैं ने उस के वासस्थान को धिक्कारा ॥
४। उस के लड़केवाले चट्टान से दूर हैं
और जब वे कचहरी में[1] पीसे जाते
तब कोई छुड़ानेहारा नहीं रहता ॥
५। उस के खेत की उपज भूखे लोग खा लेते
बरन कटीली बाड़ में से भी निकाल लेते
और उन के धन के लिये फन्दा लगा है ॥
६। विपत्ति तो धूल से उत्पन्न नहीं होती
और न कष्ट भूमि से उगता है ॥
७। जैसे चिंगारे ऊपर ही ऊपर उड़ जाते
वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये उत्पन्न होता है ॥
८। पर मैं तो ईश्वर को खोजता
और अपना मुकद्दमा परमेश्वर पर छोड़ देता ॥
९। वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिन की थाह नहीं लगती

(१) मूल में फाटक में।

और इतने आश्चर्य्यकर्म्म करता है जो गिने
नहीं जाते ॥
१० । वही पृथिवी के ऊपर वर्षा करता
और खेतों पर जल बरसाता है ॥
११ । इस रीति वह नम्र लोगों को ऊंचे स्थान
पर रखता
और शोक का पहिरावा पहिने हुए लोग ऊंचे
पर पहुंचकर बचते हैं ॥
१२ । वह तो धूर्त्त लोगों की कल्पनाएं व्यर्थ कर
देता है
कि उन के हाथों से कुछ बन नहीं पड़ता ॥
१३ । वह बुद्धिमानों को उन की धूर्त्तता ही में
फंसाता
और कुटिल लोगों की युक्ति दूर किई जाती है ॥
१४ । उन पर दिन को अंधेरा छा जाता है
और दिनदुपहरी वे रात की नाईं टटोलते
फिरते हैं ॥
१५ । पर वह दरिद्रों को उन के वचनरूपी
तलवार से[१]
और बलवानों के हाथ से बचाता है ॥
१६ । सो कंगालों को आशा होती है
और कुटिल मनुष्यों का मुंह बन्द हो जाता है ॥
१७ । सुन क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस को
ईश्वर डांटे
सो तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना तुच्छ मत जान ॥
१८ । क्योंकि वही घायल करता और वही पट्टी
बांधता है
वही मारता और वही अपने हाथों से चंगा करता
है ॥
१९ । वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा
वरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी ॥
२० । अकाल में वह तुझे मृत्यु से
और युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा ॥
२१ । तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा[२]

(१) मूल में तलवार से उन के मुंह से। (२) मूल में छिपाया जाएगा।

और जब उजाड़ होगा तब भी तुझे डरना न
होगा ॥
२२ । उजाड़ और अकाल के दिनों में तू हंस-
मुख रहेगा
और तुझे बनैले जन्तुओं से भी डर न लगेगा ॥
२३ । वरन मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा
बांधे रहेंगे
और बनैले पशु तुझ से मेल रक्खेंगे ॥
२४ । और तुझे निश्चय होगा कि मेरा डेरा कुशल
से है
और जब तू अपने निवास में देखे तब कोई
वस्तु खोई न होगी ॥
२५ । तुझे यह भी निश्चय होगा कि मेरे बहुत
वंश होंगे
और मेरे सन्तान पृथिवी की घास के तुल्य बहुत
होंगे ॥
२६ । जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान
में रखा जाता है
वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर कबर को
पहुंचेगा ॥
२७ । इसी को सुन हम ने खोज खोजकर ऐसा ही
पाया
सो तू सुन और अपने ध्यान में रख ॥

(अय्यूब का उत्तर)

६. फिर अय्यूब ने कहा

२ । भला होता कि मेरा खेद तौला जाता
और मेरी सारी विपत्ति तुला में धरी जाती ॥
३ । क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी
ठहरती
इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं ॥
४ । क्योंकि सर्वशक्तिमान् के तीर मेरे चुभे हैं
और उन का विष मेरे आत्मा में पैठ गया है[१]
ईश्वर की भयंकर बातें मेरे विरुद्ध पांति बांधे हैं ॥
५ । जब बनैले गदहे को घास मिलती तब क्या
वह रेंकता है

(१) मूल में मेरे आत्मा को पी लेता है।

और बैल चारा पाकर क्या डकारता है ॥
६। जो फीका है सो क्या बिना लोन खाया जाता है
क्या अण्डे की सुफेदी में कुछ स्वाद होता है ॥
७। जिन वस्तुओं के छूने को मैं नकारता था
वे ही मानो मेरा घिनौना अहार ठहरी हैं ॥
८। भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता
और जिस बात की मैं आशा करता हूं सो ईश्वर मुझे दे देता,
९। कि ईश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता
और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता ॥
१०। मेरी शांति का यह कारण बना रहता
वरन भारी पीड़ा में भी मैं इस कारण से उछल पड़ता
कि मैं उस पवित्र के वचनों को कभी नहीं मुकरा ॥
११। मुझ में क्या बल है कि मैं आशा रक्खूं
और मेरा अन्त क्या होगा कि मैं धीरज धरूं ॥
१२। क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों की सी है
क्या मेरा शरीर पीतल का है ॥
१३। क्या मैं निरुपाय नहीं हूं
क्या बने रहने की शक्ति मुझ से दूर नहीं हो गई ॥
१४। जो निराश है उस पर तो पड़ोसी को कृपा करनी चाहिये
नहीं तो क्या जाने वह सर्वशक्तिमान् का भय मानना भी छोड़ दे ॥
१५। मेरे पड़ोसी नाले के समान विश्वासघाती हो गये हैं
वरन उन नालों के समान जिन की धार रहती ही नहीं.
१६। और वे बरफ के कारण काले से हो जाते हैं
और उन में हिम छिपा रहता है ॥
१७। पर जब गरमी होने लगती तब उन की धाराएं घटने लगती हैं
और जब कड़ा घाम होता है तब वे जहां का तहां बिलाय जाती हैं[१] ॥
१८। वे घूमते घूमते सूख जाती
और सुनसान स्थान में बहकर नाश होती है ॥
१९। तेमा के बनजारों ने उन के लिये ताका
और शबा के काफिलेवालों ने उन की आशा रखी ॥
२०। भरोसा करने के कारण उन की आशा टूटी
और वहां पहुंचकर उन के मुंह सूख गये ॥
२१। उसी प्रकार अब तुम भी न रहे
मेरी विपत्ति देखकर तुम डर गये हो ॥
२२। क्या मैं ने तुम से कहा था कि मुझे कुछ दो
वा अपनी संपत्ति में से मेरे लिये दान दो ॥
२३। वा मुझे सतानेहारे के हाथ से बचाओ
वा उपद्रव करनेहारों के वश से छुड़ा लो ॥
२४। मुझे शिक्षा दो मैं चुप रहूंगा
और मुझे समझाओ कि मैं किस बात से चूका हूं ॥
२५। सीधाई के वचनों में कितना गुण होता है
पर तुम्हारे डाटने से क्या सिद्ध होता है ॥
२६। क्या तुम बातें पकड़ने[२] की कल्पना करते हो
निराश जन की बातें तो वायु सी हैं ॥
२७। तुम बपमुओं पर चिट्ठी डालते
और अपने मित्र को बेचकर लाभ उठाते ॥
२८। अब कृपा करके मुझे देखो
निश्चय मैं तुम्हारे साम्हने झूठ न बोलूंगा ॥
२९। फिरो कुटिलता कुछ न होने पाए
फिरो इस मुकद्दमे में मेरा धर्म्म ज्यों का त्यों बना है ॥
३०। क्या मेरे वचनों में[३] कुछ कुटिलता है
क्या मैं[४] दुष्टता नहीं पहचान सकता ॥

७. क्या मनुष्य को पृथिवी पर कठिन सेवा करनी नहीं पड़ती
क्या उस के दिन मजूर के से नहीं होते ॥

(१) मूल में बिना होडने की पीका से।

(१) मूल में उन के मार्ग की डगरें घूमती हैं। (२) मूल में डाटने। (३) मूल में मेरी जीभ पर। (४) मूल में, मेरा तालू।

२। जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे
वा मजूर अपनी मजूरी की आशा रखे.
३। वैसा ही मेरा भाग महीनों तक का अनर्थ है
और मेरे लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई गई हैं॥
४। जब मैं लेट जाता तब कहता हूं
मैं कब उठूंगा और रात कब बीतेगी
और पह फटने लों छटपटाते छटपटाते थकता
जाता हूं॥
५। मेरी देह कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से
ढकी हुई है
मेरा चमड़ा सिमट जाता और फिर गल
जाता है
६। मेरे दिन करघे से अधिक फुर्ती से चलने-
हारे हैं
और निराशा से बीते जाते हैं॥
७। सोच कर कि मेरा जीवन वायु ही है
मैं अपनी आंखों से कल्याण फिर न देखूंगा॥
८। जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई
न दूंगा
तेरी आंखें मेरी ओर होंगी पर मैं न मिलूंगा॥
९। जैसे बादल छटकर विलाय जाता है
वैसे ही अधोलोक में उतरनेहारा फिर वहां से
नहीं निकल आता॥
१०। वह अपने घर को फिर लौट न आएगा
और न अपने स्थान में फिर मिलेगा[१]॥
११। इस लिये मैं अपना मुंह बन्द न रखूंगा
अपने मन का खेद खोलकर कहूंगा
और अपने जीव की कड़वाहट के कारण
कुड़कुड़ाता रहूंगा॥
१२। क्या मैं समुद्र वा मगरमच्छ हूं
कि तू मुझ पर चौकी बैठाता है॥
१३। जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट पर
शांति मिलेगी
और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हलका होगा.
१४। तब तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा देता
और दर्शनों से भयभीत कर देता है,

(१) मूल में उस का स्थान उसे फिर न चीन्हेगा।

१५। यहां लों कि मेरा जी सांस का बन्द
होना ही
और अपनी हड्डियों के बने रहने से मरना ही
अधिक चाहता है॥
१६। मुझे अपने जीवन से घिन आती है मैं सदा
लों जीता रहने नहीं चाहता
मेरा जीवनकाल सांस सा है सो मुझे छोड़ दे॥
१७। मनुष्य तो क्या है कि तू उसे बड़ा जानकर
अपना मन उस पर लगाए.
१८। और भोर भोर को उस की सुधि लेकर
क्षण क्षण उसे जांचता रहे॥
१९। तू कब लों मेरी ओर आंख लगाये रहेगा
और इतनी देर लों भी मुझे न छोड़ेगा कि मैं
अपना थूक लील जाऊं॥
२०। हे मनुष्यों के ताकनेहारे मैं ने पाप तो
किया होगा मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा
तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना ठहराया
यहां लों कि मैं अपने ऊपर आप ही बोझ
हुआ हूं॥
२१। और तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं करता
और मेरा अधर्म्म क्यों दूर नहीं करता
अब तो मैं मिट्टी में सो रहूंगा
और तू मुझे यत्न से ढूंढ़ेगा पर मेरा पता कहां॥

(बिल्दद् का वचन.)

८. तब शूही बिल्दद् ने कहा

२। तू कब लों ऐसी ऐसी बातें करता रहेगा
और तेरे मुंह की बातें कब लों प्रचण्ड वायु सी
रहेंगी॥
३। क्या ईश्वर न्याय को टेढ़ा करता
और क्या सर्वशक्तिमान् धर्म्म को उलटा
करता है॥
४। यदि तेरे लड़केवालों ने उस के विरुद्ध पाप
किया हो
तो उस ने उन को उन के अपराध का फल
भुगताया है[१]॥

(१) मूल में उन को अपराध के हाथ में भेजा है।

५। पर यदि तू आप ईश्वर को यत्न से ढूंढे
और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर बिनती करे,
६। और यदि तू पवित्र और सीधा है
तो निश्चय वह तेरे लिये जागेगा
और तुझ निर्दोष का निवास फिर ज्यों का त्यों
कर देगा ॥
७। वरन चाहे तेरा भाग पहिले छोटा ही रहा हो
पर अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होगी ॥
८। अगली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ
और जो कुछ उन के पुरखाओं ने निकाला है
उस में ध्यान दे ॥
९। क्योंकि हम तो कल ही के हैं और कुछ नहीं
जानते
और पृथिवी पर हमारे दिन छाया की नाईं
बीतते जाते हैं ॥
१०। क्या वे लोग तुझ से शिक्षा की बातें न
कहेंगे
क्या वे अपने मन से बातें न निकालेंगे ॥
११। क्या सरकण्डा बिना कीच बढ़ता है
क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है ॥
१२। चाहे वह हरी हो और काटी भी न गई हो
तौभी वह और सब भांति की घास से पहिले
ही सूख जाती है ॥
१३। ईश्वर के सब बिसरानेहारों की गति ऐसी
ही होती है
और भक्तिहीन की आशा टूट जाती है ॥
१४। उस की आशा का मूल कट जाता
और जिस का वह भरोसा करता है सो मकरी
का जाल ठहरता है ॥
१५। चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए पर
वह न ठहरेगा
वह उसे थांभे तो थांभे पर वह स्थिर न रहेगा ॥
१६। वह घाम पाकर हरा भरा होता
और उस की डालियां बारी में चारों ओर
फैलती हैं ॥
१७। उस की जड़ कंकरों के ढेर में लिपटी हुई
रहती है
और वह पत्थर के स्थान को देख लेता है ॥
१८। पर जब वह अपने स्थान पर से नाश
किया जाए
तब वह स्थान उसे मुकरेगा कि मैं ने उसे कभी
नहीं देखा ॥
१९। सुन उस की आनन्दभरी चाल यही है
फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे ॥
२०। सुन ईश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा
जानकर छोड़ देता
और न बुराई करनेहारों को संभालता[1] है ॥
२१। वह तो तुझे हंसमुख करेगा
और तुझ से[2] जयजयकार कराएगा ॥
२२। तेरे बैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे
और दुष्टों का डेरा कहीं रहने न पाएगा ॥

(अय्यूब बिल्दद् को उत्तर देता)

९. तब अय्यूब ने कहा
मैं निश्चय जानता हूं कि बात ऐसी
ही है
पर मनुष्य ईश्वर के लेखे क्योंकर धर्मी ठहरे ॥
३। चाहे वह उस से मुकद्दमा लड़ने को प्रसन्न
भी होए
तौभी मनुष्य हजार बातों में से एक का भी
उत्तर न दे सकेगा ॥
४। वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है
उस के विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल
हुआ ॥
५। वह तो पर्वतों को अचानक हटा देता
वह कोप में आकर उन्हें उलट भी देता है ॥
६। वह पृथिवी को कंपाकर उस के स्थान से
अलग करता है
और उस के खंभे डोल उठते हैं ॥
७। उस की आज्ञा बिना सूर्य्य उदय नहीं
होता
और वह तारों पर छाप लगाता है ॥
८। वह आकाशमण्डल को अकेला ही फैलाता

(१) मूल में, का हाथ थाम्भता है। (२) मूल में, तेरे होठों से।

और समुद्र की ऊंची ऊंची लहरों पर चलता है ॥
९ । वह सप्तर्षि मृगशिरा और कचपचिया
और दक्खिन के नक्षत्रों[1] का बनानेहारा है ॥
१० । वह तो ऐसे बड़े कर्म्म करता है जिन की थाह नहीं लगती
और इतने आश्चर्य्यकर्म्म करता है जो गिने नहीं जाते ॥
११ । सुनो वह मेरे साम्हने से होकर तो चलता है पर मुझ को नहीं देख पड़ता
और आगे को बढ़ जाता है पर मुझे सूझ नहीं पड़ता ॥
१२ । सुनो जब वह छीनने लगे तब उस को कौन रोकेगा
कौन उस से कह सकता कि तू यह क्या करता है ॥
१३ । ईश्वर अपना कोप ठंडा नहीं करता
अभिमानी[2] के सहायकों को उस के पांव तले झुकना पड़ता है ॥
१४ । फिर मैं क्या हूं जो उसे उत्तर दूं
और बातें छांट छांटकर उस से विवाद करूं ॥
१५ । चाहे मैं निर्दोष होता भी पर उस को उत्तर न दे सकता
मैं अपने मुद्दई से गिड़गिड़ाकर बिनती करता ॥
१६ । चाहे मेरे पुकारने से वह उत्तर भी देता
तौभी मैं इस बात की प्रतीति न करता कि वह मेरी बात सुनता है ॥
१७ । वह तो आंधी चलाकर मुझे तोड़ डालता
और बिना कारण मेरे चोट पर चोट लगाता है ॥
१८ । वह मुझे सांस भी लेने नहीं देता
और मुझे कड़वाहट से भरता है ॥
१९ । जो सामर्थ्य की चर्चा होए तो देखो वह बलवान है
और यदि न्याय की चर्चा हो तो वह कहेगा मुझ से कौन मुकद्दमा लड़ेगा[3] ॥

(१) मूल में कोठरियों । (२) मूल में रहब् । (३) मूल में मेरे लिये कौन समय ठहराएगा ।

२० । चाहे मैं निर्दोष होऊं भी पर अपने ही मुंह से दोषी ठहरूंगा
खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल ठहराएगा ॥
२१ । मैं खरा तो हूं पर अपना भेद नहीं जानता
अपने जीवन से मुझे घिन आती है ॥
२२ । बात तो एक ही है इस से मैं यह कहता हूं
कि ईश्वर खरे और दुष्ट दोनों को नाश करता है ॥
२३ । जब लोग विपत्ति[1] से अचानक मरने लगते
तब वह निर्दोष लोगों के गल आने पर हंसता है ॥
२४ । देश दुष्टों के हाथ में दिया हुआ है
वह उस के न्यायियों की आंखों को मून्द देता है[2]
इस का करनेहारा वही न हो तो कौन है ॥
२५ । मेरे दिन हरकारे से अधिक वेग चले जाते हैं
वे भागे जाते और उन में कल्याण कुछ दिखाई नहीं देता ॥
२६ । वे नरकट की नावों की नाईं चले जाते हैं
वा अहेर पर झपटते हुए उकाब की नाईं ॥
२७ । जो मैं कहूं कि विलाप करना भूल जाऊंगा
और उदासी[3] छोड़कर अपना मन हरा कर लूंगा,
२८ । तो मैं अपने सारे दुखों से डरता हूं
मैं तो जानता हूं कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा ॥
२९ । मैं तो दोषी ठहरूंगा
फिर क्यों व्यर्थ परिश्रम करूं ॥
३० । चाहे मैं हिम के जल में स्नान करूं
और अपने हाथ खार से निर्मल करूं,
३१ । तौभी तू मुझे गड़हे में डाल देगा
और मेरे वस्त्र भी मुझ से घिनाएंगे ॥

(१) मूल में कोड़े । (२) मूल में के मुंह ढांपता है । (३) मूल में मुंह ।

३२ । क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि
मैं उस से वाद विवाद कर सकूं
और हम दोनों एक दूसरे से मुकद्दमा लड़ सकें ॥
३३ । हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है
जो हम दोनों पर अपना हाथ रक्खे ॥
३४ । वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे
और न भय दिखाकर मुझे घबरा दे
३५ । तब मैं उस से निडर होकर कुछ कह सकूंगा
क्योंकि मैं अपने लेखे में ऐसा नहीं हूं ॥

१०. मेरा जी जीते रहने से उकताता है
सो मैं बिन रुके कुड़कुड़ाऊंगा[1]
और अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें करूंगा ॥
२ । मैं ईश्वर से कहूंगा मुझे दोषी न ठहरा
मुझे बता दे कि तू किस कारण मुझ से मुकद्दमा लड़ता है ॥
३ । क्या तुझे अंधेर करना
और दुष्टों की युक्ति को सुफल करके[2]
अपने हाथों के बनाये हुए[3] को निकम्मा जानना भला लगता है ॥
४ । क्या तेरे देहधारियों की सी आंखें हैं
और क्या तेरा देखना मनुष्य का सा है ॥
५ । क्या तेरे दिन मनुष्य के से
वा तेरे बरस पुरुष के से हैं,
६ । कि तू मेरा अधर्म्म ढूंढ़ता
और मेरा पाप पूछता है ।
७ । तुझे तो मालूम ही है कि मैं दुष्ट नहीं हूं
और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेहारा नहीं ॥
८ । तू ने अपने हाथों से मुझे ठीक रचा और जोड़कर बनाया है
तौभी मुझे नाश किये डालता है ॥

(१) मूल में अपनी कुड़कुड़ाहट अपने ऊपर छोड़ूंगा । (२) मूल में. युक्ति पर चमकके । (३) मूल में हाथों के परिश्रम ।

९ । स्मरण कर कि तू ने मुझ को मिट्टी की नाईं बनाया
क्या तू मुझे फिर मिट्टी में मिलाएगा ॥
१० । क्या तू ने मुझे दूध की नाईं उण्डेलकर
और दही के समान जमाकर नहीं बनाया ॥
११ । फिर तू ने मुझ पर चमड़ा और मांस चढ़ाया
और हड्डियां और नसें गूंथकर मुझे बनाया है ॥
१२ । तू ने मुझे जीवन दिया और मुझ पर करुणा किई है
और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है ॥
१३ । तौभी तू ने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रखा
मैं तो जान गया कि तू ने ऐसा ही करना ठाना था ॥
१४ । जो मैं पाप करूं तो तू उस का लेखा लेगा
और अधर्म्म करने पर मुझे निर्दोष न ठहराएगा ॥
१५ । जो मैं दुष्ट होऊं तो हाय मुझ पर
और जो मैं धर्मी होऊं तौभी मैं सिर न उठाऊंगा
क्योंकि मैं अपमान से छक गया
और अपने दुःख पर ध्यान रखता हूं ॥
१६ । और चाहे सिर उठाऊं तौभी तू सिंह की नाईं मुझे अहेर करता
और फिरके मेरे विरुद्ध आश्चर्य्यकर्म्म करता है ॥
१७ । तू मेरे साम्हने अपने नये नये साक्षी ले आता
और मुझ पर अपनी रिस बढ़ाता है
और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है ॥
१८ । तू ने मुझे गर्भ से क्यों निकाला
नहीं तो मैं वहीं प्राण छोड़ता और कोई मुझे देखने न पाता ॥
१९ । मेरा होना न होने के समान होता
और पेट ही से कबर को पहुंचाया जाता ।
क्या मेरे दिन थोड़े नहीं । सो मुझे छोड़कर
मेरी ओर से मुंह फेर ले कि मेरा मन थोड़ा हरा हो जाए,
२१ । उस से पहिले कि मैं वहां जाऊं जहां से न लौटूंगा
अर्थात् अंधियारे और घोर अंधकार के देश में,

२२। जो अंधकार ही अंधकार
और घोर अंधकार का देश है जिस में सब कुछ गड़बड़ है
और उस में का प्रकाश अंधकार के समान ही है ॥

(सोपर् का वचन)

११. तब नामाती सोपर् ने कहा ॥

२। बहुत सी बातें जो कही गई हैं क्या उन का उत्तर देना न चाहिये
क्या बकवादी मनुष्य धर्म्मी ठहराया जाए ॥
३। क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग चुप रहें
और जब तू ठट्ठा करता है तो क्या कोई तुझे लज्जित न करे ॥
४। तू तो यह कहता है कि मेरा सिद्धान्त शुद्ध है
और मैं ईश्वर[1] के लेखे में पवित्र हूं ॥
५। पर भला होता कि ईश्वर तनिक बातें करे
और तेरे विरुद्ध मुंह खोले,
६। और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगट करे
कि उन का मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर[2] है
जान ले कि ईश्वर तेरे अधर्म्म में से बहुत कुछ बिसराता है ॥
७। क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता
और सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता ॥
८। आकाश सा ऊंचा तू क्या कर सकता
अधोलोक से गहिरा तू कहां समझ सकता ॥
९। उस की माप पृथिवी से भी लंबी
और समुद्र से चौड़ी है ॥
१०। जब ईश्वर पास जाकर बन्द करे
और सभा में बुलाए तो कौन उस को रोक सकता ॥
११। वह तो पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है
और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किये भी जान लेता है ॥
१२। पर मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है
क्योंकि मनुष्य जन्म ही से बनैले गदहे के बच्चे के समान होता है ॥
१३। यदि तू अपना मन सिद्ध करे
और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए,
१४। और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर करे
और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे,
१५। तो तू निश्चय अपना मुंह निष्कलंक दिखा[1] सकेगा
और तू स्थिर होकर न डरेगा ॥
१६। तब तू अपना दुःख बिसराएगा वा उस का स्मरण बहे हुए जल का सा होगा ॥
१७। और तेरा जीवनकाल दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा
और चाहे अंधेरा भी होए तौभी वह भोर सा हो जाएगा ॥
१८। और तुझे आसरा जो होएगा इस कारण तू निडर रहेगा
और अपनी चारों ओर देख देखकर तू निडर सो सकेगा ॥
१९। और जब तू लेटेगा तब कोई तुझे न डराएगा
और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे ॥
२०। पर दुष्ट लोगों की आंखें रह जाएंगी
और उन्हें शरण का कोई स्थान न रहेगा
और उन की आशा प्राण निकलना ही होगी ॥

(अय्यूब सोपर् को उत्तर देता है.)

१२. तब अय्यूब ने कहा

२। निःसन्देह तुम हो वे[2]
और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी ॥
३। पर तुम्हारी नाईं मेरे भी बुद्धि है
मैं तुम लोगों से कुछ घटकर नहीं हूं
कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो ॥
४। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता था और वह मेरी सुन लिया करता था

(१) मूल में, तेरे। (२) मूल में दुगना।

(१) मूल में बिना कलंक उठा। (२) मूल में, देश के लोग है।

पर अब मेरे पड़ोसी मुझ पर हंसते हैं
जो धर्म्मी और खरा मनुष्य है उस की हंसी हो रही है ॥
५ । दुःखी लोग तो सुखियों की समझ में तुच्छ ठहरते हैं
और जिन के पांव फिसला चाहते हैं उन का अपमान अवश्य ही होता है ॥
६ । लुटेरुओं के डेरे कुशल क्षेम से रहते हैं
और जो ईश्वर को रिस दिलाते हैं सो बहुत ही निडर रहते हैं
और उन के हाथ में ईश्वर बहुत देता है ॥
७ । पशुओं से तो पूछ और वे तुझे सिखाएंगे
और आकाश के पक्षियों से और वे तुझे बता देंगे ॥
८ । पृथिवी पर ध्यान दे तब उस से तुझे शिक्षा मिलेगी
और समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी ॥
९ । इन सभों के द्वारा कौन नहीं जानता
कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है ॥
१० । उस के हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण
और एक एक देहधारी मनुष्य का आत्मा भी रहता है ॥
११ । जैसे जीभ[1] से भोजन चीखा जाता है
क्या वैसे ही कान से वचन नहीं परखे जाते ॥
१२ । बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती तो है
और दिनी लोगों में समझ होती तो है ॥
१३ । ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाये जाते हैं
युक्ति और समझ उसी के हैं ॥
१४ । देखो जिस को वह ढा दे सो फिर बनाया नहीं जाता
जिस मनुष्य को वह बन्द करे सो फिर खोला नहीं जाता ॥
१५ । देखो जब वह वर्षा को रोक रखता तब जल सूख जाता है
फिर जब वह जल छोड़ देता तब पृथिवी उलट जाती है ॥
१६ । उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई जाती है
भूलनेहारे और भुलानेहारे दोनों उसी के हैं ॥
१७ । वह मन्त्रियों को लूटकर बन्धुआई में ले जाता
और न्यायियों को मूर्ख बना देता है ॥
१८ । वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता
और उन की कमर पर बंधन बन्धवाता है ॥
१९ । वह याजकों को लूटकर बंधुआई में ले जाता
और सामर्थियों को उलट देता है ॥
२० । वह विश्वासयोग्य पुरुषों से बोलने की शक्ति
और पुरनियों से विवेक की शक्ति[1] हर लेता है ॥
२१ । वह हाकिमों को अपमान से लादता
और बलवानों के हाथ ढीले कर देता है[2] ॥
२२ । वह अंधियारे से गहरी बातें प्रगट करता
और घोर अन्धकार में भी प्रकाश कर देता है ॥
२३ । वह जातियों को बढ़ाता और उन को नाश करता
वह उन को फैलाता और बंधुआई में ले जाता है ॥
२४ । वह पृथिवी के मुख्य लोगों की बुद्धि हरता
और उन को निर्जन स्थानों में जहां रास्ता नहीं है भटकाता है ॥
२५ । वे बिन उजियाले के अंधेरे में टटोलते फिरते हैं
और वह उन्हें मतवाले की नाईं डगमगाते चलाता है ॥

१३ सुनो मैं यह सब कुछ अपनी आंख से देख चुका
और अपने कान से सुन चुका और समझ भी चुका हूं ॥
२ । जो कुछ तुम जानते हो सो मैं भी जानता हूं
मैं तुम लोगों से कुछ घटकर नहीं हूं ॥

(१) मूल में तालू ।

(१) मूल में होठ । (२) मूल में फेंटा ढीला करता है ।

३ । मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूंगा
और मेरी अभिलाषा ईश्वर से वादविवाद करने की है ॥
४ । पर तुम लोग झूठी बात के गढ़नेहारे हो
तुम सब के सब निकम्मे वैद्य हो ॥
५ । भला होता कि तुम बिलकुल चुप रहते
और इस से तुम बुद्धिमान ठहरते ॥
६ । मेरा विवाद सुनो
और मेरी बहस की बातों पर कान लगाओ ॥
७ । क्या तुम ईश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे
और उस के पक्ष में कपट से बोलोगे ॥
८ । क्या तुम उस का पक्षपात करोगे
और ईश्वर के लिये मुकद्दमा चलाओगे ॥
९ । क्या यह भला होगा कि वह तुम को जांचे
क्या जैसा कोई मनुष्य को ठगे वैसा ही तुम उस को भी ठगोगे ॥
१० । जो तुम छिपकर पक्षपात करो
तो वह निश्चय तुम को डांटेगा ॥
११ । क्या तुम उस के माहात्म्य से भय न खाओगे
क्या उस का डर तुम्हारे मन में न समाएगा ॥
१२ । तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख के समान हैं
तुम्हारे कोट मिट्टी ही के ठहरे हैं ॥
१३ । मुझ से बात करना छोड़ो कि मैं भी कुछ कहने पाऊं
फिर मुझ पर जो चाहे सो आ पड़े ॥
१४ । मैं क्यों अपना मांस अपने दान्तों से चबाऊं
और क्यों अपना प्राण हथेली पर रखूं ॥
१५ । वह मुझे घात करेगा मुझे कुछ आशा नहीं
तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा ॥
१६ । और यह भी मेरे बचाव का कारण होगा
कि भक्तिहीन जन उस के साम्हने नहीं जा सकता ॥
१७ । चित्त लगाकर मेरी बात सुनो
और मेरी बिनती तुम्हारे कान में पड़े ॥
१८ । सुनो मैं ने अपने मुकद्दमे की पूरी तैयारी किई है
मै ने निश्चय किया कि मैं निर्दोष ठहरूंगा ॥
१९ । कौन है जो मुझ से मुकद्दमा लड़ सकेगा
ऐसा कोई पाया जाए तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूंगा ॥
२० । दो ही काम मुझ से न कर
तो मैं तुझ से छिप न जाऊंगा ॥
२१ । अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर
और अपने भय से मुझे न घबरा ॥
२२ । तब तेरे बुलाने पर मैं बोलूंगा
नहीं तो मैं प्रश्न करूं और तू मुझे उत्तर दे ॥
२३ । मुझ से कितने अधर्म्म के काम और पाप हुए
मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे ॥
२४ । तू किस कारण अपना मुंह फेर लेता[1]
और मुझे अपना शत्रु गिनता है ॥
२५ । क्या तू उड़ते हुए पत्ते को भी कंपाएगा
और सूखे भूसे को खदेड़ेगा ॥
२६ । तू मेरे लिये कठिन दुःखों[2] की आज्ञा देता
और मेरी जवानी के अधर्म्म का फल मुझे भुगता देता है[3],
२७ । और मेरे पांवों को काठ में ठोकता और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता
और मेरे पांवों की चारों ओर सीमा बांध लेता है ॥
२८ । और मैं सड़ी गली वस्तु
और कीड़ा खाये कपड़े के समान हूं ॥

१४. मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है
सो थोड़े दिनों का और संताप से भरा रहता है ॥
२ । वह फूल की नाईं खिलता फिर तोड़ा जाता है
वह छाया की रीति पर ढल[4] जाता और कहीं नहीं ठहरता ॥
३ । फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता
क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है

(१) मूल में छिपाता । (२) मूल में कड़वी बातें । (३) मूल मे अधर्म्म के कर्म्मों का भागी मुझे करता है। (४) मूल में भाग ।

४ । अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है । कोई नहीं ।
५ । मनुष्य के दिन ठहराये गये हैं
और उस के महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है
और तू ने उस के लिये ऐसा सिवाना बांधा है जिसे वह नहीं लांघ सकता
६ । इस कारण उस से अपना मुंह फेर, ले कि वह आराम करे
जब लों कि वह मजूर की नाईं अपना दिन पूरा न कर ले ॥
७ । वृक्ष को तो आशा रहती है
कि चाहे वह काट डाला भी जाए तौभी फिर पनपेगा
और उस से कनखाएं निकलती ही रहेंगी ॥
८ । चाहे उस की जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए ।
और उस का ठूंठ मिट्टी में सूख भी जाए,
९ । तौभी वर्षा[1] की गंध पाकर वह फिर पनपेगा
और पौधे की नाईं उस से शाखाएं फूटेंगी ॥
१० । पर पुरुष मर जाता और पड़ा रहता है
जब उस का प्राण छूट गया तब वह कहां रहा ॥
११ । जैसे नील नदी[2] का जल घट जाता
और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख जाता है,
१२ । वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता
जब लों आकाश बना रहेगा तब लों लोग न जागेंगे
और न उन की नींद टूटेगी ॥
१३ । भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता
और जब लों तेरा कोप ठंढा न होता तब लों मुझे छिपाये रखता
और मेरे लिये समय ठहराकर फिर मेरी सुधि लेता ॥

(१) मूल में, जल । (२) मूल में जैसे समुद्र ।

१४ । यदि पुरुष मर जाए तो क्या वह फिर जीएगा
जब लों मेरा छुटकारा न होता[1]
तब लों मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाये रहता ॥
१५ । तू मुझे बुलाता और मैं बोलता
तुझे अपने हाथ के बनाये हुए काम की अभिलाषा होती ॥
१६ । पर अब तू मेरे पग पग को गिनता है
क्या तू मेरे पाप को नहीं देखता रहता ॥
१७ । मेरे अपराध थैली में रखकर छाप लगाई गई है
और तू मेरे अधर्म्म को अधिक बढ़ाता है ॥
१८ । पहाड़ भी गिरते गिरते नाश हो जाता है
और चटान अपने स्थान से हट जाती है,
१९ । और पत्थर जल से घिस जाते हैं
और भूमि की धूलि उस की बाढ़ से बहाई जाती है
उसी प्रकार तू मनुष्य का आसरा मिटा देता है ॥
२० । तू सदा उस पर प्रबल होता और वह जाता रहता है
तू उस का चिहरा बिगाड़कर उसे निकाल देता है ॥
२१ । उस के पुत्रों की बड़ाई होती और यह उसे नहीं सूझता
और उन की घटी होती पर वह उन का हाल नहीं जानता ॥
२२ । केवल अपने ही कारण उस की देह को दुःख होता है
और अपने ही कारण उस का जीव शोकित रहता है ॥

(एलीपज् का वचन)

१५. तब तेमानी एलीपज् ने कहा
२ । क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता[2] के साथ उत्तर दे

(१) मूल में मेरा बदल न आता । (२) मूल में, वायु के ज्ञान ।

या अपने अन्तःकरण को पूरबी पवन से भरे।
३। क्या वह निष्फल वचनों से
या व्यर्थ बातों से वादविवाद करे॥
४। वरन तू भय मानना छोड़ देता
और ईश्वर का ध्यान करना औरों से छुड़ाता है॥
५। तू अपने मुंह से अपना अधर्म्म प्रगट करता
और धूर्त्त लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है[1]।
६। मैं तो नहीं पर तेरा मुंह ही तुझे दोषी ठहराता है
और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं॥
७। क्या पहिला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ
क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहिले हुई॥
८। क्या तू ईश्वर की सभा में बैठा सुनता था
क्या सारी बुद्धि अपने लिये तू ही रखता है॥
९। तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते
तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं॥
१०। हम लोगों में तो पक्के बालवाले और अति पुरनिये मनुष्य हैं
जो तेरे पिता से भी बहुत दिनों हैं॥
११। ईश्वर की शांति देनेहारी बातें
और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं क्या ये तेरे लेखे में तुच्छ हैं॥
१२। तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है
और तू आंख से क्यों सैन करता है॥
१३। तू तो अपना जी ईश्वर के विरुद्ध फेरता
और अपने मुंह से व्यर्थ बातें निकलने देता है॥
१४। मनुष्य क्या है कि निष्कलंक हो
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सो क्या है कि निर्दोष हो सके॥
१५। सुन वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता
और स्वर्ग[2] भी उस की दृष्टि में निर्मल नहीं है॥
१६। फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है
जो कुटिलता को पानी की नाईं पीता है॥
१७। मैं तुझे समझा दूंगा सो मेरी सुन ले

(१) मूल में धूर्तों की जीभ चुनता है। (२) वा आकाश।

जो मैं ने देखा है उसी का वर्णन मैं करता हूं॥
१८। (वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर
बिना छिपाये बताया है॥
१९। केवल उन्हीं को देश दिया गया था
और उन के बीच कोई विदेशी आता जाता न था)॥
२०। दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता है
और बलात्कारी के बरसों की गिनती ठहराई हुई है॥
२१। उस के कान में डरावना शब्द बना रहता है
कुशल के समय भी नाश करनेहारा उस पर आ पड़ता है॥
२२। उसे अंधियारे में से फिर निकलने की कुछ आशा नहीं होती
और तलवार उस की घात में रहती है॥
२३। रोटी रोटी ऐसा चिल्लाता हुआ[1] वह मारा मारा फिरता है
उसे निश्चय रहता है कि अंधकार का दिन मेरे पास ही है॥
२४। संकट और सकेती से उस को डर लगता रहता है
ऐसे राजा की नाईं जो युद्ध के लिये तैयार हो वे उस पर प्रबल होते हैं॥
२५। उस ने तो ईश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है
और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल ठोंकता है,
२६। और सिर उठाकर[2] और अपनी मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ[3]
वह उस पर धावा करता है॥
२७। फिर उस के मुंह पर चिकनाई छा गई है
और उस की कमर में चर्बी जमी है॥
२८। और वह उजाड़े हुए नगरों में
और जो घर रहने योग्य नहीं
और ढीह होने को छोड़े गये हैं उन में बस गया है॥

(१) मूल में रोटी कहां। (२) मूल में गर्दन से। (३) मूल में अपनी ढालों की मोटी पीठों से।

२९। वह धनी न रहेगा और न उस की संपत्ति बनी रहेगी
और ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने पाएगी॥
३०। वह अंधियारे से न छूटेगा
और उस की डालियां लौ से झुलस जाएंगी
और ईश्वर के मुंह की फूंक से वह उड़ जाएगा॥
३१। वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों का भरोसा न करे
क्योंकि उस का बदला धोखा ही होगा॥
३२। वह उस के नियत दिन से पहिले पूरा पूरा दिया जाएगा
उस की डालियां हरी न रहेंगी॥
३३। दाख की नाईं उस के कच्चे फल झड़ जाएंगे
और उस के फूल जलपाई के वृक्ष के से गिरेंगे॥
३४। क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा[1]
और जो घूस लेते हैं उन के तंबू आग से जल जाएंगे॥
३५। उन के उपद्रव का पेट रहता और अनर्थ उत्पन्न होता है
और वे अपने अन्तःकरण में छल की बातें गढ़ते हैं॥

(अय्यूब का वचन)

१६. तब अय्यूब ने कहा,

२। ऐसी ऐसी बातें मैं बहुत सी सुन चुका हूं
तुम सब के सब उकतानेहारे शान्तिदाता हो॥
३। क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा
नहीं तो तुझे उत्तर देने के लिये क्या उसकाता है॥
४। मैं भी तुम्हारी सी बातें कर सकता हूं
जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती
तो मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता
और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला सकता॥
५। पर मैं वचनों से तुम को हियाव बन्धाता
और बातों[2] से शांति देकर तुम्हारा शोक घटा देता॥

६। चाहे मैं बोलूं पर मेरा शोक न घटेगा
चाहे मैं चुप रहूं तौभी मेरा दुःख कुछ कम न होगा[1]॥
७। पर अब उस ने मुझे उकता दिया
तू ने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है॥
८। और तू ने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है सो मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है
और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है॥
९। उस ने कोप में आकर मुझ को फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा है
वह मेरे विरुद्ध दांत पीसता
और मेरा वैरी मुझ को आंखें दिखाता है॥
१०। अब लोग मुझ पर मुंह पसारते हैं
और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थपेड़ा मारते
और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं॥
११। ईश्वर ने मुझे कुटिलों के वश में कर दिया
और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक दिया है॥
१२। मैं सुख से रहता था और उस ने मुझे चूर चूर कर डाला
उस ने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े टुकड़े कर दिया
फिर उस ने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है॥
१३। उस के तीर मेरी चारों ओर उड़ रहे हैं
वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है
और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है॥
१४। वह शूर की नाईं मुझ पर धावा करके
मुझे चोट पर चोट पहुंचाकर घायल करता है॥
१५। मैं ने टाट सी सीकर अपनी खाल पर ओढ़ा
और अपना सींग मिट्टी में मैला कर दिया है॥
१६। रोते रोते मेरा मुंह सूज गया
और मेरी आंखों पर घोर अन्धकार छा गया है॥
१७। तौभी मुझ से कोई उपद्रव नहीं हुआ
और मेरी प्रार्थना पवित्र है॥

(१) मूल में परिवार बांझ होगा। (२) मूल में, होंठों।

(१) मूल में मुझ से क्या किया जाएगा।

१८। हे पृथिवी तू मेरे लोहू को न ढांपना
और मेरी दोहाई कहीं न रुके॥
१९। अब भी स्वर्ग से मेरा साक्षी है
और मेरा गवाही देनेहारा ऊपर है॥
२०। मेरे मित्र मेरे ठट्ठा करनेहारे हो गये हैं
पर मैं ईश्वर के साम्हने आंसू बहाता हूं,
२१। कि कोई ईश्वर के विरुद्ध सज्जन का
और आदमी का मुकद्दमा उस के पड़ोसी के
विरुद्ध लड़े॥
२२। क्योंकि थोड़े ही बरसों के बीतने पर
मैं उस मार्ग से चला जाऊंगा जिस से मैं नहीं
लौटूंगा॥

१७. मेरा जीव नाश हुआ है मेरे दिन हो चुके[1] हैं

मेरे लिये कबर तैयार है॥
२। निश्चय जो मेरे संग हैं सो ठट्ठा करनेहारे हैं
जो मुझे लगातार दिखाई देता है सो उन का
झगड़ा रगड़ा है॥
३। बन्धक धर दे अपने और मेरे बीच में तू ही
जामिन हो
कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे॥
४। तू ने इन का मन समझने से रोका है
इस कारण तू इन को प्रबल न करेगा॥
५। जो अपने मित्रों को चुगली खाकर लुटा देता
उस के लड़कों की आंखें रह जाएंगी॥
६। उस ने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा
देते हैं
और लोग मेरे मुंह पर थूकते हैं,
७। और खेद के मारे मेरी आंखों में धुंधलापन
छा गया
और मेरे सब अंग छाया की नाईं हो गये हैं॥
८। इसे देखकर सीधे लोग चकित होते
और जो निर्दोष हैं सो भक्तिहीन के विरुद्ध
उभरते हैं॥
९। धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे
और शुद्ध काम करनेहारे[1] सामर्थ्य पर सामर्थ्य
पाते जाएंगे॥
१०। तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ
पर मुझे तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा॥
११। मेरे दिन तो बीत चुके और मेरी मनसाएं
मिट गईं
और जो मेरे मन में था सो नाश हुआ है॥
१२। वे रात को दिन ठहराते
वे कहते हैं अन्धियारे के निकट उजियाला है॥
१३। यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक
मेरा धाम होगा
यदि मैं अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा चुका
होऊं,
१४। यदि मैं विनाश से कह चुका होऊं कि
तू मेरा पिता है
और कीड़े से कि तू मेरी मा और मेरी बहिन है,
१५। तो मेरी क्या आशा रही
और मेरी आशा किस के देखने में आएगी॥
१६। वह तो अधोलोक में[2] उतर जाएगी
और उस समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम मिलेगा॥

(शूही बिल्दद् का वचन)

१८. तब शूही बिल्दद् ने कहा

२। तुम कब लों फंदे लगा लगाकर वचन
पकड़ते रहोगे
चित्त लगाओ तब हम बोलेंगे॥
३। हम लोग तुम्हारे लेखे क्यों पशु सरीखे
और अशुद्ध ठहरे हैं॥
४। हे अपने को कोप के मारे चीथनेहारे
क्या तेरे निमित्त पृथिवी उजड़ जाएगी
और चटान अपने स्थान से हट जाएगी॥
५। तौभी दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा
और दुष्ट की आग की लौ न चमकेगी॥
६। उस के डेरे में का उजियाला अंधेरा
हो जाएगा
और उस के ऊपर का दिया बुझ जाएगा॥

(१) मूल में बुझ गये।

(१) मूल में शुद्ध हाथवाला। (२) मूल में अधोलोक के बेंडो में।

७। उस के बड़े बड़े फाल छोटे हो जाएंगे
और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा गिरेगा॥
८। वह अपने ही पांव जाल में फंसाएगा
वह वागुर पर चलता है॥
९। उस की एड़ी फंदे में फंस जाएगी
और वह वागुर में पकड़ा जाएगा॥
१०। फंदे की रस्सियां उस के लिये भूमि में
और वागुर डगर में छिपा रहता है॥
११। चारों ओर से डरावनी वस्तुएं उसे डराती
और उस के पीछे पड़कर उस को भगाती हैं॥
१२। उस का बल दुःख से घट जाएगा
और विपत्ति उस के पास ही तैयार रहेगी॥
१३। उस के अंग खाये जाएंगे
काल का पहिलौठा उस के अंगों को[1] खा लेगा॥
१४। अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता है
उस में से वह छीन लिया जाएगा
और वह भयंकर राजा के पास पहुंचाया जाएगा॥
१५। जो उस के यहां का नहीं है सो उस के
डेरे में बास करेगा
और उस के घर पर गंधक छितराई जाएगी॥
१६। उस की जड़ तो सूख जाएगी
और डालियां कट जाएंगी॥
१७। पृथिवी पर से उस का स्मरण मिट जाएगा
और हाट[2] में उस का नाम कभी न सुन पड़ेगा॥
१८। वह उजियाले से अंधियारे में ढकेल दिया
जाएगा
और जगत में से भी भगाया जाएगा॥
१९। उस के कुटुंबियों में उस के कोई पुत्र
पौत्र न रहेगा
और जहां वह रहता था वहां कोई बचा हुआ
न रह जाएगा॥
२०। उस का दिन देखकर पूरबी लोग चकित होंगे
और पश्चिम के निवासियों के रोएं खड़े हो
जाएंगे॥
२१। निःसंदेह कुटिल लोगों के निवास ऐसे हो
जाते हैं
और जिस को ईश्वर का ज्ञान नहीं रहता उस
का स्थान ऐसा ही हो जाता है॥

(अय्यूब का वचन)

१९. तब अय्यूब ने कहा,

२। तुम कब लों मेरे जीव को दुःख देते रहोगे
और बातों से मुझे चूर चूर करोगे॥
३। इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा करते
और निर्लज्ज होकर मुझे भभराते हो॥
४। और चाहे मुझ से भूल हुई भी हो
तौभी वह भूल मेरे ही सिर रहेगी॥
५। जो तुम सचमुच मेरे विरुद्ध बड़ाई मारोगे
और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करोगे,
६। तो जानो कि ईश्वर ने मेरा न्याय बिगाड़ा
और मुझे अपने जाल में फंसा लिया है॥
७। सुनो मैं उपद्रव उपद्रव यों चिल्लाता रहता
हूं पर कोई नहीं सुनता
मैं दोहाई देता रहता हूं पर कोई न्याय नहीं
करता॥
८। उस ने मेरे मार्ग को ऐसा रूंधा है कि मैं
आगे चल नहीं सकता
और मेरी डगरें अंधेरी कर दिई हैं॥
९। मेरा विभव उस ने हर लिया
और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है॥
१०। उस ने चारों ओर से मुझे तोड़ दिया सो
मैं जाता रहा
और मेरा आसरा उस ने वृक्ष की नाईं उखाड़
डाला है॥
११। उस ने मुझ पर अपना कोप भड़काया
और अपने शत्रुओं में मुझे गिनता है॥
१२। उस के दल एकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध धुस
बांधते हैं
और मेरे डेरे की चारों ओर छावनी डालते हैं॥
१३। उस ने मेरे भाइयों को मुझ से दूर किया है
और जो मेरी जान पहचान के थे सो बिलकुल
अनजान हो गये हैं॥

(१) मूल में उस के चमड़े के बेंड़ा को। (२) अथवा जगल।

१४। मेरे कुटुम्बी मुझे छोड़ गये
और जो मुझे जानते थे सो मुझे भूल गये हैं॥
१५। जो मेरे घर में रहा करते वे वरन मेरी
दासियां भी मुझे अनजाना गिनने लगीं
उन के लेखे मैं परदेशी हो गया हूं॥
१६। जब मैं अपने दास को बुलाता हूं तब वह
नहीं बोलता
मुझे उस से गिड़गिड़ाना पड़ता है॥
१७। मेरी सांस मेरी स्त्री को
और मेरा गन्ध मेरे भाइयों[१] के लेखे में अनजान
का सा लगता है॥
१८। लड़के भी मुझे तुच्छ जानते
और जब मैं उठने लगता तब वे मेरे विरुद्ध
बोलते हैं॥
१९। मेरे सब परम मित्र[२] मुझ से घिन करते हैं
और जिन से मैं ने प्रेम किया सो पलटकर मेरे
विरोधी हो गये हैं॥
२०। मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट
गये हैं
और अपने दांतों का छिलका ही लिये हुए मैं
बच गया हूं॥
२१। हे मेरे मित्रो मुझ पर दया करो दया
क्योंकि ईश्वर ने मुझे मारा है॥
२२। तुम ईश्वर की नाईं क्यों मेरे पीछे पड़े हो
और मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए॥
२३। भला होता कि मेरी बातें अब लिखी जातीं
भला होता कि वे पुस्तक में लिखी जातीं,
२४। और लोहे की टांकी और शीशे से
वे सदा के लिये चटान पर खोदी होतीं॥
२५। मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेहारा
जीता है
और वह अन्त में मिट्टी पर खड़ा होगा॥
२६। सो जब मेरे शरीर का यों नाश हो जाएगा
तब शरीर से अलग होकर मैं ईश्वर का दर्शन
पाऊंगा॥

(१) मूल में मेरे गर्भ के लड़कों।　　(२) मूल में भेद के मनुष्य।

२७। उस का दर्शन मैं आप अपनी आंखों से
अपने लिये करूंगा और न कोई दूसरा
मेरा हृदय फट चला है॥
२८। मुझ में तो धर्म[१] का मूल पाया जाता है
सो तुम जो कहते हो हम इस को क्योंकर
सताएं,
२९। इस कारण तुम तलवार से भय खाओ
क्योंकि जलजलाहट से तलवार का दण्ड
मिलता है
जिस से तुम जान लो कि न्याय होता है॥

(सोपर् का वचन)

२०. तब नामाती सोपर् ने कहा
२। मेरा जी चाहता है कि उत्तर दूं
और इस से बोलने को फुर्ती करता हूं॥
३। मैं ने ऐसी शिक्षा सुनी जिस से मेरी निन्दा
हुई
और मेरा आत्मा अपनी समझ में से मुझे उत्तर
देता है॥
४। क्या तू यह नियम नहीं जानता जो सनातन
और उस समय का है
जब मनुष्य पृथिवी पर बसाया गया,
५। कि दुष्टों का ताली बजाना जल्दी बन्द हो
जाता
और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का
होता है॥
६। चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश तक
पहुंचे
और उस का सिर बादलों से लगे,
७। तौभी वह अपनी विष्ठा की नाईं सदा के
लिये नाश हो जाएगा
और जो उस को देखते थे सो पूछेंगे कि वह
कहां रहा॥
८। वह स्वप्न की नाईं विलाय जाएगा और
किसी को फिर न मिलेगा

(१) मूल में बात।

रात में देखे हुए रूप की नाईं वह रहने न पाएगा॥
९। जिस ने उस को देखा हो सो फिर उसे न देखेगा
और अपने स्थान पर उस का कुछ पता न रहेगा[1]॥
१०। उस के लड़केवाले कंगालों से भी बिन्ती करेंगे
और वह अपना छीना हुआ माल फेर देगा॥
११। उस की हड्डियों में जवानी का बल भरा हुआ है
पर वह उसी के साथ मिट्टी में मिल[2] जाएगा॥
१२। चाहे बुराई उस को मीठी लगे
और वह उसे अपनी जीभ के नीचे छिपा रक्खे,
१३। और वह उसे बचा रक्खे और न छोड़े
वरन उसे अपने तालू के बीच दबा रक्खे,
१४। तौभी उस का भोजन उस के पेट में पलटेगा
वह उस के बीच नाग का सा विष बन जाएगा॥
१५। उस ने जो धन निगल लिया उसे वह फिर उगल देगा
ईश्वर उसे उस के पेट में से निकाल देगा॥
१६। वह नागों का विष चूस लेगा
वह करैत के डसने से मर जाएगा॥
१७। वह नदियों अर्थात् मधु और दही की नदियों को
देखने न पाएगा॥
१८। जिस के लिये उस ने परिश्रम किया उस को उसे फेर देना पड़ेगा और वह उसे निगलने न पाएगा
उस की मोल लिई हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना चाहिये उतना सो उसे न मिलेगा॥
१९। क्योंकि उस ने कंगालों को पीसकर छोड़ दिया
उस ने घर को छीन लिया उस को वह बढ़ाने[3] न पाएगा॥

(१) मूल में उस का स्थान उसे फिर न ताकेगा। (२) मूल में लेट। (३) मूल में बनाने।

२०। लालसा[1] के मारे जो उस को कभी शांति न मिलती[2] थी
इस लिये वह अपनी कोई मनभावनी वस्तु बचा न सकेगा॥
२१। कोई वस्तु उस का कौर बिना हुए न बचती थी
इस लिये उस का कुशल बना न रहेगा॥
२२। पूरी संपत्ति रहते भी वह सकेती में पड़ेगा
तब सब दुःखियों के हाथ उस पर उठेंगे॥
२३। ऐसा होगा कि उस के पेट भरने के लिये ईश्वर अपना कोप उस पर भड़काएगा
और रोटी खाने के समय[3] वह उस पर पड़ेगा[4]॥
२४। वह लोहे के हथियार से भागेगा
और पीतल के धनुष से मारा जाएगा॥
२५। वह उस तीर को खींचकर अपने पेट से निकालेगा
उस की चमकनेहारी नोक[5] उस के पित्ते से होकर निकलेगी
भय उस में समाएगा॥
२६। उस के गड़े हुए धन पर घोर अंधकार छा जाएगा[6]
वह ऐसी आग से भस्म होगा जो मनुष्य की फूंकी हुई न हो
और उसी से उस के डेरे में जो बचा हो वही भस्म हो जाएगा॥
२७। आकाश उस का अधर्म्म प्रगट करेगा
और पृथिवी उस के विरुद्ध खड़ी होगी॥
२८। उस के घर में की बढ़ती जाती रहेगी
वह उस के कोप के दिन बह जाएगी॥
२९। परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंश
और उस के लिये ईश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है॥

(१) मूल में पेट। (२) मूल में जान पड़ती। (३) वा उस की रोटी ठहराकर वा उस के मांस में। (४) मूल में उस पर बरसाएगा। (५) मूल में बिजली। (६) मूल में उस के छिपे हुओं के लिये सब अंधकार छिपा है।

(अय्यूब का वचन.)

२१. तब अय्यूब ने कहा

२। चित्त लगाकर मेरी बात सुनो
और तुम्हारी शान्ति यही ठहरे॥
३। मेरी कुछ तो सहो कि मैं भी बातें करूं
और जब मैं बातें कर चुकूं तब पीछे ठट्ठा करना॥
४। क्या मैं किसी मनुष्य की दोहाई देता हूं
फिर मैं अधीर क्यों न होऊं॥
५। मेरी ओर चित्त लगाकर चकित हो
और अपनी अपनी अंगुली[1] दांत तले दबाओ॥
६। जब मैं स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूं
और मेरी देह में कंपकंपी लगती है॥
७। क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीते रहते हैं
वरन बूढ़े भी हो जाते और उन का धन बढ़ता जाता है॥
८। उन की सन्तान उन के संग
और उन के बालबच्चे उन की आंखों के साम्हने बने रहते हैं॥
९। उन के घर में बेडर का कुशल रहता है
और ईश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती॥
१०। उन का सांड़ गाभिन करता और चूकता नहीं
उन की गायें वियाती हैं और गाभ कभी नहीं गिरातीं॥
११। वे अपने लड़कों को झुण्ड के झुण्ड बाहर जाने देते
और उन के बच्चे नाचते हैं॥
१२। वे डफ और वीणा बजाते हुए गाते
और बांसुरी के शब्द से आनन्दित होते हैं॥
१३। वे अपने दिन सुख से बिताते
और पल भर ही में अधोलोक को उतर जाते हैं॥
१४। तौभी वे ईश्वर से कहते थे कि हम से दूर हो
तेरी गति जानने की हम को इच्छा नहीं रहती॥
१५। सर्वशक्तिमान क्या है कि हम उस की सेवा करें
और जो हम उस से बिनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा॥
१६। देखो उन का कुशल उन के हाथ में नहीं रहता
दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे॥
१७। कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता
और उन पर विपत्ति आ पड़ती है
और ईश्वर कोप करके उन के बांट में दुःख देता है,
१८। और वे वायु से उड़ाये हुए भूसे की
और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी की नाईं होते हैं॥
१९। ईश्वर उस के अधर्म्म का दण्ड उस के लड़केबालों के लिये रख छोड़ता है
वह उसे उसी को दे कि उस का बोध उसी को हो॥
२०। दुष्ट अपना नाश अपनी ही आंखों से देखे
और सर्वशक्तिमान की जलजलाहट में से आप पी ले॥
२१। क्योंकि जब उस के महीनों की गिनती कट चुके
तब पीछे रहनेहारे अपने घराने से उस का क्या काम रहा॥
२२। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा
वह तो ऊंचे पर रहनेहारों का भी न्याय करता है॥
२३। कोई तो अपने पूरे बल में
बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है॥
२४। उस की दोहनियां दूध से
और उस की हड्डियां गूदे से भरी रहती हैं॥
२५। और कोई अपने जीव के दुःख[1] ही में

(१) मूल में हाथ मुंह पर रक्खोगे।

(१) मूल में कड़वाहट।

बिना कभी सुख भोगे मर जाता है ॥
२६ । वे दोनों बराबर मिट्टी में मिल[1] जाते
और कीड़ों से ढंप जाते हैं[2] ॥
२७ । सुनो मैं तुम्हारी कल्पनाएं जानता हूं
और उन युक्तियों को भी जो तुम मेरे विषय अन्याय से करते हो ॥
२८ । तुम कहते तो हो कि रईस का घर कहां रहा
दुष्टों के निवास के डेरे कहां रहे ॥
२९ । पर क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा
तुम उन के इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो,
३० । कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन रक्खा जाता है
और रोष के समय के लिये ऐसे लोग बचाये जाते[2] हैं ॥
३१ । उस की चाल उस के मुंह पर कौन कहेगा
और उस ने जो किया है उस का पलटा कौन देगा ॥
३२ । तौभी वह कबर को पहुंचाया जाता
और लोग उस कबर की रखवाली करते रहते[3] हैं ॥
३३ । नाले के ढेले उस को सुखदायक लगते हैं
और जैसे अगले लोग अनगिनित जा चुके
वैसे ही सब मनुष्य उस के पीछे भी चले जाएंगे ॥
३४ । सो तुम्हारे उत्तरों में जो झूठ ही पाया जाता है
तो तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो ॥

(एलीपज् का वचन.)

२२. तब तेमानी एलीपज् ने कहा
२ । क्या पुरुष से ईश्वर को लाभ पहुंच सकता
जो बुद्धिमान है सो अपने ही लाभ का कारण होता है ॥
३ । क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता
तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता ॥
४ । वह जो तुझे डांटता है और तुझ से मुकद्दमा लड़ता है
क्या इस का कारण तेरी भक्ति हो सकती है ॥
५ । क्या तेरी बुराई बहुत नहीं
तेरे अधर्म्म के कामों का कुछ अन्त नहीं ॥
६ । तू ने तो अपने भाई का बंधक अकारण रख लिया
और नंगे के वस्त्र उतार लिये थे ॥
७ । थके हुए को तू ने पानी न पिलाया
और भूखे को रोटी देने से नाह किई थी ॥
८ । जो बरियार था उसी को भूमि मिली
और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा हुई थी सोई उस में बस गया ॥
९ । तू ने विधवाओं को छूछे हाथ लौटाल दिया
और बपमूओं की बांहें तोड़ डाली गई थीं ॥
१० । इस कारण तेरी चारों ओर फंदे लगे हैं
और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है ॥
११ । क्या तू अंधियारे को नहीं देखता
और उस बाढ़ को जिस में तू डूब रहा है ॥
१२ । क्या ईश्वर स्वर्ग के ऊंचे स्थान में नहीं है
ऊंचे से ऊंचे तारों को देख कि वे कितने ऊंचे हैं ॥
१३ । फिर तू कहता है कि ईश्वर क्या जानता है
क्या वह घोर अंधकार की आड़ में होकर न्याय कर सकता है ॥
१४ । काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि कुछ नहीं देख सकता
वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता फिरता है ॥
१५ । क्या तू उस पुरानी डगर को पकड़े रहेगा
जिस पर वे अनर्थ करनेहारे चलते थे,
१६ । जो असमय कट गये
और उन के घर की नेव नदी सी बह गई ॥

(१) मूल में लेट । (२) मूल में पहुंचाये जाते हैं । (३) वा और कबर पर पहरा देता रहता है ।

१७। उन्हों ने ईश्वर से कहा था हम से दूर हो जा
और सर्वशक्तिमान हमारा[1] क्या कर सकता है ॥
१८। तौभी उस ने उन के घर अच्छे अच्छे पदार्थों से भर दिये थे
दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे ॥
१९। धर्म्मी लोग देखकर आनन्दित होते
और निर्दोष लोग उन की हंसी करते हैं कि,
२०। जो हमारे विरुद्ध उठे थे सो निःसंदेह मिट गये
और उन का बड़ा धन आग का कौर हो गया है ॥
२१। उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शांति मिलेगी
और इस से तेरी भलाई होगी ॥
२२। उस के मुंह से शिक्षा सुन ले
और उस के वचन अपने मन में रख ॥
२३। यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके समीप जाए
और अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे तो तू बन जाएगा ॥
२४। तू अपनी अनमोल वस्तुओं को[2] धूलि पर
वरन ओपीर् का कुन्दन भी नालों के पत्थरों में डाल दे ॥
२५। तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु[3]
और तेरे लिये चमकनेहारी चांदी होगा ॥
२६। तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा
और ईश्वर की ओर अपना मुंह बेखटके उठा सकेगा ॥
२७। और तू उस से प्रार्थना करेगा
और वह तेरी सुनेगा
और तू अपनी मन्नतों को पूरी करेगा ॥
२८। और जो बात तू ठाने सो तुझ से बन भी पड़ेगी
और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा ॥

(१) मूल में उन का। (२) मूल में खान से निकाला हुआ सोना चांदी। (३) मूल में तेरा धातु।

२९। चाहे दुर्भाग्य हो[1] तो तू कहेगा कि सुभाग्य हो[2]
क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है ॥
३०। वरन जो निर्दोष न हो उस को भी वह बचाता है
अर्थात् वह तेरे शुद्ध कामों[3] के कारण छुड़ाया जाएगा ॥

(अय्यूब का वचन)

२३. तब अय्यूब ने कहा

२। मेरी कुड़कुड़ाहट अब भी नहीं रुक सकती[4]
मेरी मार[5] मेरे कराहने से भारी है ॥
३। भला होता कि मैं जानता कि वह कहां मिल सकता
और उस के विराजने के स्थान तक जा सकता ॥
४। मैं उस के साम्हने अपना मुकद्दमा पेश करता
और बहुत से[6] प्रमाण देता ॥
५। मैं जान लेता कि वह मुझ से उत्तर में क्या कह सकता
और जो कुछ वह मुझ से कहता सो मैं समझ लेता ॥
६। क्या वह अपना बड़ा बल दिखाकर मुझ से मुकद्दमा लड़ता
नहीं वह मुझ पर ध्यान देता ॥
७। तब सज्जन उस से विवाद कर सकता
और इस रीति मैं अपने न्यायी के हाथ से सदा के लिये छूट जाता ॥
८। सुनो मैं आगे जाता पर वह नहीं मिलता
मैं पीछे हटता हूं पर वह देख नहीं पड़ता ॥
९। जब वह बाईं ओर में काम करता है तब वह मुझे दिखाई नहीं देता
जब वह दहिनी ओर मुड़ता है तब वहां भी मुझे देख नहीं पड़ता ॥

(१) मूल में वे नीचे होए। (२) मूल में उभार। (३) मूल में, हाथों। (४) मूल में, ढिठाई है। (५) मूल में, हाथ। (६) मूल में, मुंह भर के।

१० । पर वह जानता है कि मैं कैसी चाल चला हूं
और जब वह मुझे ता ले तब मैं सोने के समान निकलूंगा ॥
११ । मेरे पैर उस की डगरों में स्थिर रहे
और मैं उसी का मार्ग विना मुड़े पकड़े रहा ॥
१२ । उस की[1] आज्ञा के पालने से मैं न हटा
और मैं ने उस के[2] वचन अपनी इच्छा[3] से कहीं अधिक काम के जानकर रख छोड़े ॥
१३ । पर वह एक ही बात पर अड़ा रहता
और कोई उस को उस से फेर नहीं सकता
सो वह आप चाहता है सोई वह करता है ॥
१४ । जो कुछ मेरे लिये ठना है उसी को वह पूरा करता है
और उस के मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं ॥
१५ । इस कारण मैं उस को देखते घबराता जाता हूं
जब मैं सोचता हूं तब उस से थरथरा उठता हूं ॥
१६ । क्योंकि मेरा मन ईश्वर ही ने कच्चा कर दिया
और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को घबरवा दिया है ॥
१७ । सो मेरा सत्यानाश न तो अंधियारे के कारण हुआ
और न इस कारण कि घोर अंधकार मेरे मुंह पर छा गया है ॥

२४. सर्वशक्तिमान से समय क्यों नहीं ठहराये जाते

और जो लोग उस का ज्ञान रखते हैं सो उस के दिन क्यों देखने नहीं पाते ॥
२ । कुछ लोग मेंड़ों को बढ़ाते
और भेड़ बकरियां छीनकर चराते हैं ॥
३ । और वे बपमूओं का गदहा हांक ले जाते
और विधवा का बैल बंधक कर रखते हैं ॥
४ । वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते
और देश के दीनों को एकट्ठे छिपना पड़ता है ॥
५ । देखो वे बनैले गदहों की नाईं
अपने काम को अर्थात् कुछ खाना यत्न से[1] ढूंढ़ने को निकल जाते हैं
उन के लड़केवालों का भोजन उन को जंगल से मिलता है ॥
६ । उन को खेत में चारा काटना
और दुष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है ॥
७ । रात को उन्हें विना वस्त्र उघारा पड़ना
और जाड़े के समय विन ओढ़े रहना पड़ता है ॥
८ । वे पहाड़ों पर की झड़ियों से भींगे रहते
और शरण न पाकर चटान से लिपट जाते हैं ॥
९ । कुछ लोग बपमुए बालक को मा की छाती पर से छीन लेते
और दीन लोगों से बंधक लेते हैं,
१० । जिस से वे विना वस्त्र उघारे फिरते हैं
और पूलियां ढोते समय भी भूखे रहते हैं ॥
११ । वे उन की भीतों के भीतर तेल पेरते
और उन के कुण्डों में दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं ॥
१२ । वे बड़े नगर में कराहते
और घायल किये हुओं का जी दोहाई देता है
पर ईश्वर मूर्खता का लेखा नहीं लेता ॥
१३ । फिर कुछ लोग उजियाले से बैर रखते
वे उस के मार्गों को नहीं पहचानते
और न उस की डगरों में बने रहते हैं ॥
१४ । खूनी पह फटते ही उठकर
दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता
और रात को चोर बन जाता है ॥
१५ । व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए

(१) मूल में उस के होठों की । (२) मूल में उस के मुंह के । (३) मूल में. विधि ।

(१) मूल में. तड़के उठकर ।

दिन डूबने की राह देखता रहता
और वह अपना मुंह छिपा भी रखता है ॥
१६। वे अंधियारे के समय घरों में सेंध मारते
और दिन को छिपे रहते हैं
वे उजियाले को जानते भी नहीं ॥
१७। सो उन सभों को भोर का प्रकाश घोर अंधकार सा जान पड़ता है
क्योंकि घोर अंधकार का भय वे जानते हैं ॥
१८। वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं
उन के भाग को पृथिवी के रहनेहारे कोसते हैं
और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते ॥
१९। जैसे सूखे और घाम से हिम का जल विलाय[1] जाता है
वैसे ही पापी लोग अधोलोक में विलाय जाते हैं ॥
२०। माता[2] भी उस को भूल जाती और कीड़े उसे चूसते हैं
आगे को उस का स्मरण न रहेगा
इस रीति टेढ़े काम करनेहारा वृक्ष की नाईं कट जाता है ॥
२१। वह बांझ स्त्री को जो कभी नहीं जनी लूटता
और विधवा से भलाई करना नकारता है ॥
२२। बलात्कारियों की भी ईश्वर अपनी शक्ति से रक्षा करता है
जो जीने की आशा नहीं रखता वह भी फिर उठ बैठता है ॥
२३। ईश्वर उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है कि वे संभले रहते हैं
और उस की कृपादृष्टि उन की चाल पर लगी रहती है ॥
२४। वे बढ़ते हैं तब थोड़ी बेर में विलाय जाते
वे दबाये जाते और सभों की नाईं रख लिये जाते हैं
और अनाज की बाल की नाईं काटे जाते हैं ॥
२५। क्या यह सब सच नहीं कौन मुझे झुठलाएगा
कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा ।

(शूही बिल्दद् का वचन)

२५. तब शूही बिल्दद् ने कहा ।

१। प्रभुता करना और डराना यह उसी का काम है
वह अपने ऊंचे ऊंचे स्थानों में संधि कर रखता है ॥
३। क्या उस की सेनाओं की गिनती हो सकती
और कौन है जिस पर उस का प्रकाश नहीं पड़ता ॥
४। फिर मनुष्य ईश्वर के लेखे धर्म्मी क्योंकर ठहर सकता
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है सो क्योंकर निर्मल हो सकता है ॥
५। देख उस की दृष्टि में चंद्रमा भी अंधेरा ठहरता
और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते ॥
६। फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है
और आदमी कहां रहा जो केंचुआ है ॥

(अय्यूब का वचन ।)

२६. तब अय्यूब ने कहा

२। निर्बल जन की तू ने क्या ही बड़ी सहायता किई
और जिस की बांह में सामर्थ्य नहीं उस को तू ने कैसा संभाला है ॥
३। निर्बुद्धि मनुष्य को तू ने क्या ही अच्छी संमति दिई
और अपनी खरी बुद्धि कैसी ही भली भांति प्रगट किई है ॥
४। तू ने किस के हित के लिये बातें कहीं
और किस के मन की[1] बातें तेरे मुंह से निकलीं

(१) मूल में डीमा (२) मूल में गर्भ ।

(१) मूल में किस की सांस तुझ से निकली ।

५। बहुत दिन के मरे हुए लोग भी
जलनिधि और उस के निवासियों के तले तड़पते हैं ॥
६। अधोलोक उस के साम्हने उघड़ा रहता है
और विनाश का स्थान ढंप नहीं सकता ॥
७। वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाये रहता है
और बिना टेक[1] पृथिवी को लटकाये रखता है ॥
८। वह जल को अपनी काली घटाओं में बांध रखता
और बादल उस के बोझ से नहीं फटता ॥
९। वह अपने सिंहासन के साम्हने बादल फैलाकर
उस को छिपाये रखता है ॥
१०। उजियाले और अंधियारे के बीच जहां सिवाना बंधा है
वहां लों उस ने जलनिधि का सिवाना ठहरा रक्खा है ॥
११। उस की घुड़की से
आकाश के खंभे थरथराकर चकित होते हैं ॥
१२। वह अपने बल से समुद्र को उछालता
और अपनी बुद्धि से रहब् को पटक देता है ॥
१३। उस के आत्मा से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता है
वह अपने हाथ से भागनेहारा नाग मार देता है ॥
१४। देखो ये तो उस की गति के किनारे ही हैं
और उस की आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है
फिर उस के पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है ॥

२७. अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा,

२। मैं ईश्वर के जीवन की सौं खाता हूं जिस ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया
अर्थात उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिस ने मेरा जीव कड़ुआ कर दिया ॥
३। क्योंकि अब लों मेरी सांस बराबर आती है
और ईश्वर का आत्मा[1] मेरे नथुनों में बना है ॥
४। मैं यह कहता हूं कि मेरे मुंह से कोई कुटिल बात न निकलेगी
और न मैं[2] कपट की बातें बोलूंगा ॥
५। ऐसा न हो कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊं
जब लों मेरा प्राण न छूटे तब लों मैं अपनी खराई न मुकरूंगा[3] ॥
६। मैं अपना धर्म्म पकड़े हूं और उस को हाथ से जाने न दूंगा
क्योंकि मेरा मन जीवन भर के किसी दिन के विषय मुझे दोषी नहीं ठहराता ॥
७। मेरा शत्रु दुष्टों के समान
और जो मेरे विरुद्ध उठता है सो कुटिलों के तुल्य ठहरे ॥
८। जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण निकालकर हर ले
तब उस की क्या आशा रहेगी ॥
९। जब वह संकट में पड़े
तब क्या ईश्वर उस की दोहाई सुनेगा ॥
१०। क्या वह सर्वशक्तिमान में सुख पा सकेगा
और हर समय ईश्वर को पुकार सकेगा ॥
११। मैं तुम्हें ईश्वर के काम[4] के विषय शिक्षा दूंगा
और सर्वशक्तिमान की बातें[5] मैं न छिपाऊंगा ॥
१२। सुनो तुम लोग सब के सब उसे आप देख चुके हो
फिर तुम व्यर्थ विचार क्यों पकड़े रहते हो ॥
१३। दुष्ट मनुष्य का भाग ईश्वर की ओर से यह है

(१) मूल में नास्ति के ऊपर ।

(१) वा ईश्वर का दिया हुआ प्राण । (२) मूल में मेरी जीभ । (३) मूल में हटाऊंगा । (४) मूल में ईश्वर के हाथ । (५) मूल में जो सर्वशक्तिमान के संग है ।

और बलात्कारियों का अंश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते हैं सो यह है कि,
१४। चाहे उस के लड़केवाले गिनती में बढ़ भी जाएं तौभी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे
और उस की सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी ॥
१५। उस के जो लोग बचे रहें सो मरकर कबर को पहुंचेंगे
और उस के यहां की विधवाएं न रोएंगी ॥
१६। चाहे वह रूपैया धूलि के समान बटोर रक्खे
और वस्त्र मिट्टी के किनकों के तुल्य अनगिनित तैयार कराए,
१७। वह उन्हें तैयार कराए तो सही पर धर्म्मी उन्हें पहिन लेगा
और उस का रूपैया निर्दोष लोग आपस में बांटेंगे ॥
१८। उस ने अपना घर कीड़े का सा बनाया
और खेत के रखवाले की झोंपड़ी की नाईं बनाया ॥
१९। वह धनी होकर लेट जाए पर ऐसा फिर करने न पाएगा
पलक मारते ही वह न रह जाएगा ॥
२०। भय की धाराएं उसे बहा ले जाएंगी[१]
रात को बवण्डर उस को उड़ा ले जाएगा ॥
२१। पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी कि वह जाता रहेगा
और उस को उस के स्थान से उड़ा ले जाएगी ॥
२२। क्योंकि ईश्वर उस पर विपत्तियां विना तरस खाये डाल देगा
उस के हाथ से वह भाग जाने चाहेगा ॥
२३। लोग उस पर ताली बजाएंगे
और उस पर ऐसी हथोड़ी पीटेंगे कि वह अपने यहां न रह सकेगा ॥

२८. चांदी की खानि तो होती है

और उस सोने के लिये भी स्थान होता है जिसे लोग ताते हैं ॥

(१) मूल में जा लेगी।

२। लोहा मिट्टी में से निकाला जाता और पत्थर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है ॥
३। मनुष्य अंधियारे को दूर कर
दूर दूर लों खोद खोदकर
अंधियारे और घोर अंधकार में के पत्थर ढूंढ़ते हैं ॥
४। जहां लोग रहते हैं वहां से दूर वे खानि खोदते हैं
वहां पृथिवी पर चलनेहारों के बिसराये[१] हुए
वे मनुष्यों से दूर लटके हुए डोलते रहते हैं ॥
५। यह भूमि जो है इस से रोटी तो मिलती है
पर उस के नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिये जाते हैं ॥
६। उस के पत्थर नीलमणि का स्थान हैं
और उसी में सोने की धूलि भी है ॥
७। उस की डगर कोई मांसाहारी पक्षी नहीं जानता
और किसी चील की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी ॥
८। उस पर अभिमानी पशुओं ने पांव नहीं धरा
और न उस से होकर कोई सिंह कभी गया है ॥
९। वह चकमक के पत्थर पर हाथ लगाता
और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है ॥
१०। वह चटान खोदकर नालियां बनाता
और उस की आंखों को हर एक अनमोल वस्तु देख पड़ती है ॥
११। वह नदियों को ऐसा रोक देता है कि उन से एक बून्द भी पानी नहीं टपकता[२]
और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है ॥
१२। पर बुद्धि कहां मिल सकती
और समझ का स्थान कहां है ॥
१३। उस का मोल मनुष्य को मालूम नहीं
जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती ॥
१४। अथाह सागर कहता है वह मुझ में नहीं है
और समुद्र भी कहता है वह मेरे पास नहीं है ॥
१५। चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता
और न उस के दाम के लिये चान्दी तौली जाती है ॥

(१) मूल में पाव से। (२) मूल में आंसू बहाने से।

१६। न तो उस के साथ ओपीर् के कुन्दन की
बराबरी हो सकती है
और न अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नील-
मणि की ॥
१७। न सोना न कांच उस के बराबर ठहर
सकता है
कुन्दन के गहनो के बदले भी वह नहीं
मिलती ॥
१८। मूंगे और स्फटिकमणि की उस के आगे
क्या चर्चा
बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है ॥
१९। कूश् देश के पद्मराग उस के तुल्य नहीं
ठहर सकते
और न उस से चोखे कुन्दन की बराबरी हो
सकती है ॥
२०। फिर बुद्धि कहां मिल सकती है
और समझ का स्थान कहां ॥
२१। वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है
और आकाश के पक्षियों के देखाव में नहीं है ॥
२२। विनाश और मृत्यु कहती हैं
कि हम ने उस की चर्चा सुनी है ॥
२३। परन्तु परमेश्वर उस का मार्ग समझता है
और उस का स्थान उस को मालूम है ॥
२४। वह तो पृथिवी की छोर लों ताकता रहता
और सारे आकाशमण्डल के तले देखता
भालता है ॥
२५। जब उस ने वायु का तौल ठहराया
और जल को नपुए में नापा,
२६। और मेंह के लिये विधि
और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया,
२७। तब उस ने बुद्धि को देखकर उस का बखान
भी किया
और उस को सिद्ध करके उस का सारा भेद
बूझ लिया ॥
२८। तब उस ने मनुष्य से कहा
सुन प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है
और बुराई से दूर रहना यही समझ है ॥

(अय्यूब का वचन.)

२९. अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़
बात उठाई और कहा,
२। भला होता कि मेरी दशा बीते हुए महीनों
की सी होती
जिन दिनों में ईश्वर मेरी रक्षा करता था,
३। जब उस के दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर
रहता था
और उस से उजियाला पाकर मैं अंधेरे में
चलता था ॥
४। वे तो मेरी जवानी[1] के दिन थे
जब ईश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट
होती थी ॥
५। तब लों तो सर्वशक्तिमान् मेरे संग रहता था
और मेरे लड़केबाले मेरी चारों ओर रहते थे ॥
६। तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था
और मेरे पास की चटानों से तेल की धाराएं
बहा करती थीं ॥
७। जब जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर
खुले स्थान में अपने बैठने का स्थान तैयार
करता था ॥
८। तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते
और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे ॥
९। हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते
और हाथ से मुंह मूंदे रहते थे ॥
१०। प्रधान लोग चुप रहते थे[2]
और उन की जीभ तालू से सट जाती थी ॥
११। क्योंकि जब कोई[3] मेरा समाचार सुनता तब
वह मुझे धन्य कहता था
और जब कोई मुझे देखता तब मेरे विषय साक्षी
देता था,
१२। इस कारण कि मैं दोहाई देनेहारे दीन
जन को
और असहाय बपमूए को भी छुड़ाता था ॥

(१) मूल में फल पकने के समय। (२) मूल में प्रधानो की वाणी छिप जाती थी। (३) मूल में कान।

१३। जो नाश होने पर था सो मुझे आशीर्वाद देता था
और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती थी ॥
१४। मैं धर्म्म को पहिने रहा और वह मुझे पहिने रहा
मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और सुन्दर पगड़ी का काम देता था ॥
१५। मैं अन्धों के लिये आंखें
और लंगड़ों के लिये पांव ठहरता था ॥
१६। दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता
और जो मेरी पहिचान का न था उस के मुकद्दमे का हाल मैं पूछपांछ करके जान लेता था ॥
१७। मैं कुटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता
और उन का शिकार उन के मुंह से छीनकर बचा लेता था ॥
१८। तब मैं सोचता था कि मेरे दिन बालू के किनकों के समान अनगिनित होंगे
और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा ॥
१९। मेरी जड़ जल की ओर फैली[1]
और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी
२०। मेरी महिमा ज्यों की त्यों[2] बनी रहेगी
और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा नया होता जाएगा ॥
२१। लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरते
और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे ॥
२२। जब मैं बोल चुकता था तब वे कुछ और न बोलते थे
मेरी बातें उन पर मेंह की नाईं बरसा करती थीं ॥
२३। जैसे लोग बरसात की वैसे ही मेरी भी बाट देखते थे
और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे आंखें लगाते[3] थे ॥

२४। जब उन को कुछ आशा न रहती तब मैं हंसकर उन को प्रसन्न करता था
और कोई मेरे मुंह को बिगाड़ न सकता था ॥
२५। मैं उन का मार्ग चुन लेता और उन में मुख्य ठहरकर बैठा करता
और जैसा सेना में राजा वा विलाप करनेहारों के बीच शांतिदाता
वैसा ही मैं रहता था ॥

३०. पर अब जिन की अवस्था मुझ से कम है वे मेरी हंसी करते
जिन के पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य न जानता था[1] ॥
२। उन के भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था
उन का पौरुष तो जाता रहा था ॥
३। वे घटी और काल के मारे दुबले पड़े हुए हैं
वे अन्धेरे और सुनसान स्थानों में सूखी धूल फांकते हैं ॥
४। वे झाड़ी के आस पास का लोनिया साग तोड़ लेते
और झाऊ की जड़ें खाते हैं ॥
५। वे मनुष्यों के बीच में से निकाले जाते हैं
उन के पीछे ऐसी पुकार होती है जैसी चोर के पीछे ॥
६। डरावने नालों में भूमि के बिलों में
और चटानों में उन्हें रहना पड़ता है ॥
७। वे झाड़ियों के बीच रेंकते
और बिच्छू पौधों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं ॥
८। वे मूढ़ों और नीच लोगों[2] के वंश हैं
जो मार मारके इस देश से निकाले गये थे ॥
९। ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते
और मुझ पर ताना मारते हैं ॥
१०। वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते

(१) मूल में गुली। (२) मूल में टटकी। (३) मूल में मुंह खोलते।

(१) मूल में कुत्तों के साथ ठहराना नकारता था। (२) मूल में, नामरहितों।

वा मेरे मुंह पर थूकने से भी नहीं डरते[1] ॥
११ । ईश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर मुझे दु:ख
दिया है
सो वे मेरे साम्हने मुंह मे लगाम नहो रखते ॥
१२ । मेरी दहिनी अलंग पर बजारू लोग उठ
खड़े होते हैं
वे मेरे पांव सरका देते
और मेरे नाश के लिये धुस[2] बांधते है ॥
१३ । जिन के कोई सहायक नहीं
सो भी मेरी डगरों को बिगाड़ते
और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं[3] ॥
१४ । मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते
और उजाड़ के बीच हो मुझ पर धावा करते
है ॥
१५ । मुझ को घबराहट आ गई है[4]
और मेरा रईसपन मानो वायु से उड़ाया गया
और मेरा कुशल बादल की नाईं जाता रहा है ॥
१६ । और अब मै शोकसागर में डूबा जाता हू[5]
दु:ख के दिन आये हैं[6] ॥
१७ । रात को मेरी हड्डियां छिद जाती हैं[7]
और मेरी नसों मे चैन नहीं पड़ती[8] ॥
१८ । ईश्वर के बड़े बल से मेरे वस्त्र का रूप
बदल गया है
वह मेरे कुर्त्ते के गले की नाईं मुझे जकड़
रखता है ॥
१९ । उस ने मुझ को कीच में फेंक दिया है
और मैं मिट्टी और राख के तुल्य हो गया हूं ॥
२० । मै तेरी दोहाई देता पर तू नहीं सुनता
मै खड़ा होता हू पर तू मेरी ओर मुंह किये
रहता है ॥
२१ । तू मेरे लिये क्रूर हो गया है
और अपने बली हाथ से मुझे सताता है ॥

(१) मूल में मुह से थूक नहीं रख छोड़ते । (२) मूल में अपनी डगरें । (३) मूल में विपत्ति की सहायता करते हैं । (४) मूल में मुझ पर घबराहट घुमाई गई । (५) मूल में मेरा जीव मेरे ऊपर उण्डेला जाता है । (६) मूल में. दु:ख के दिनो ने मुझे पकड़ा है । (७) मूल में. मुझ पर से छिदती हैं । (८) मूल में मेरी नसें सोतीं ।

२२ । तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता
और आंधी के पानी में मुझे गला देता है ॥
२३ । मुझे निश्चय है कि तू मुझे काल के वश
कर देगा
और उस घर में पहुचाएगा जिस में सब प्राणी
मिल जाते हैं ॥
२४ । तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ न
बढ़ाए
और क्या कोई विपत्ति के समय[1] दोहाई न
दे ॥
२५ । मै तो उस के लिये रोता था जिस के
दुर्दिन आये थे
और दरिद्र जन के कारण मै जी से दु:खित
होता था ॥
२६ । जब मै कुशल का मार्ग जोहता था तब
विपत्ति पड़ो
और जब मै उजियाले का आसरा लगाये रहा
तब अंधकार छा गया ॥
२७ । मेरा हृदय निरंतर जलता रहता है[2]
मेरे दु:ख के दिन आ गये हैं ॥
२८ । मै शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो
बिना सूर्य्य के चलता फिरता था
और सभा मे खड़ा होकर दोहाई देता था ॥
२९ । मैं गीदड़ों का भाई
और शुतर्मुर्गों का संगी हो गया हू ॥
३० । मेरा चमड़ा काला होकर उघलता जाता है
और तप के मारे मेरी हड्डियां जलती हैं ॥
३१ । इस कारण मेरा वीणा बजाना विलाप से
और मेरा बांसुरी बजाना रोने से बदल गया है ॥

३१. मैं ने अपनी आंखों के विषय वाचा
बांधी थी
सो मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर आंख लगाऊं ॥
२ । क्योंकि ईश्वर स्वर्ग से कौन अंश
और सर्वशक्तिमान् ऊपर से कौन भाग बांटता है ॥

(१) मूल में. होते इस कारण ।
(२) मूल में. खौलती हैं और चुप नहीं होतीं ।

३ । क्या वह कुटिल मनुष्यों की विपत्ति
और अनर्थ काम करनेहारों का सत्यानाश
नहीं है ॥
४ । क्या वह मेरी गति नहीं देखता
क्या वह मेरे पग पग नहीं गिनता ॥
५ । यदि मैं व्यर्थ चाल चला होऊं
वा कपट करने के लिये दौड़ा होऊं[१],
६ । तो मैं धर्म्म के तराजू में तौला जाऊं
कि ईश्वर मेरी खराई जान ले ॥
७ । यदि मेरे पग मार्ग से मुड़े हों
वा मेरा मन आंखों के पीछे हो लिया हो
वा मेरे हाथों को कुछ कलंक लगा हो,
८ । तो मैं बीज बोऊं पर दूसरा खाए
वरन मेरा खेत उखाड़ डाला जाए ॥
९ । यदि मैं किसी स्त्री के फन्दे में फंसा होऊं
वा अपने पड़ोसी के द्वार पर घात
लगाई हो,
१० । तो मेरी स्त्री दूसरे की पिसनहारी होए
और पराये पुरुष उस को भ्रष्ट करें ॥
११ । क्योंकि वह तो महापाप
और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म्म का
काम होता ॥
१२ । क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर
नाश कर देती है
और वह मेरी सारी उपज उखाड़ देती ॥
१३ । जब मेरे दास वा दासी मुझ से झगड़ती रहीं
तब यदि मैं उन का हक तुच्छ जानता,
१४ । तो ईश्वर के उठ खड़े होने के समय मैं
क्या करता
और उस के लेखा लेने पर मैं क्या लेखा दे
सकता ॥
१५ । जिस ने मुझ को पेट में गढ़ा क्या उस ने
उस को भी न गढ़ा
क्या एक ही ने हम दोनों को गर्भ में न
रचा था ॥
१६ । यदि मैं ने कंगालों की इच्छा पूरी न किई हो
वा मेरे कारण विधवा की आंखें कभी रह
गई हों,
१७ । वा मैं ने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो
और उस में से बपमुए न खाने पाये हों,
१८ । (पर वह मेरे लड़कपन ही से मुझे पिता
जानकर मेरे संग बढ़ा है
और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूं),
१९ । यदि मैं ने किसी को वस्त्र विना मरते हुए
वा किसी दरिद्र को बिन ओढ़ने देखा हो
२० । और उस को अपनी भेड़ों की ऊन के
कपड़े न दिये हों
और उस ने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न
दिया हो[१],
२१ । वा यदि मै ने फाटक में अपने सहायक
देखकर
बपमुओं के मारने को अपना हाथ उठाया
हो,
२२ । तो मेरी बांह पखौड़े से उखड़कर गिर पड़े
और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए[२] ॥
२३ । ईश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा न कर
सकता था
क्योंकि उस की ओर की विपत्ति के कारण मैं
थरथराता था ॥
२४ । यदि मै ने सोने का भरोसा किया होता
वा कुन्दन को अपना आसरा कहा होता,
२५ । वा अपने बहुत से धन
वा अपनी बड़ी कमाई के कारण आनन्द
किया होता,
२६ । वा सूर्य को चमकते
वा चन्द्रमा को महाशोभा से चलते हुए देखकर,
२७ । मैं मन ही मन बहक जाता
और अपने मुंह से अपना हाथ चूमा होता[३],
२८ । तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य
अधर्म्म का काम होता

(१) मूल में मेरा पांव दौड़ा हो ।

(१) मूल में, उस की कमर ने मुझे आशीर्वाद न दिया हो । (२) मूल में मेरी भुजा नरट से टूट जाए । (३) मूल में मेरा हाथ मेरे मुंह को चूमता ।

क्योंकि ऐसा करके मैं ऊपर के ईश्वर के विषय
पाखण्ड करता ॥
२९ । यदि मैं ने अपने बैरी के नाश से आनन्द
किया होता
वा जब उस पर विपत्ति पड़ी तब उस पर फूल
उठा होता,
३० । (पर मैं ने न तो उस को साप देते हुए न
उस के प्राणदण्ड की प्रार्थना करते हुए
अपने मुंह[1] से पाप किया है),
३१ । यदि मेरे डेरे के रहनेहारों ने यह न कहा
होता
कि ऐसा कोई कहां मिलेगा जो इस के यहां
का मांस खाकर तृप्त न हुआ हो,
३२ । (परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था
मैं बटोही[2] के लिये अपना द्वार खुला रखता था),
३३ । यदि मैं ने आदम की नाईं अपना अपराध
इस लिये ढांपा होता
और अपना अधर्म्म मन में[3] छिपाया होता,
३४ । कि मैं बड़ी भीड़ से त्रास खाता
वा कुलीनों[4] से तुच्छ किये जाने का भय मानता
जिस से मैं द्वार से बिना निकले चुपचाप
रहता—
३५ भला होता कि मेरे कोई सुननेहारा होता
सर्वशक्तिमान अभी मेरा न्याय चुकाए देखो मेरा
दस्तखत यही है
भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने
लिखा है सो मेरे पास होता ॥
३६ । निश्चय मैं उस को अपने कंधे पर उठाये
फिरता
और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने सिर में बांधे
रहता ॥
३७ । मैं उस को अपने पग पग का लेखा देता
मैं उस के निकट प्रधान की नाईं निडर जाता ॥
३८ । यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दोहाई देती हो
और उस की रेघारियां मिलकर रोती हों,

(१) मूल में तालू । (२) मूल में. बाट । (३) मूल में अपनी गोद में । (४) मूल में कुलो ।

३९ । यदि मैं ने अपनी भूमि की उपज बिना
मजूरी[1] दिये खाई
वा उस के मालिक का प्राण छुड़ाया हो,
४० । तो गेहूं के बदले झड़बेड़ी
और जव के बदले जंगली घास उगे ॥
अय्यूब के वचन पूरे हुए हैं ॥

(एलीहू का वचन)

३२. तब उन तीनों पुरुषों ने यह देखकर कि अय्यूब अपने लेखे में निर्दोष है उस को उत्तर देना छोड़ दिया ॥ २ । और बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू जो राम के कुल का था उस का कोप भड़क उठा, अय्यूब पर उस का कोप इस लिये भड़क उठा कि उस ने परमेश्वर को नहीं अपने ही को निर्दोष ठहराया ॥ ३ । फिर अय्यूब के तीनों मित्रों के विरुद्ध भी उस का कोप इस कारण भड़का कि वे अय्यूब को उत्तर न दे सके तौभी उस को दोषी ठहराया ॥ ४ । एलीहू तो अपने को उन से छोटा जानकर अय्यूब की बातों के अन्त की बाट जोहता रहा ॥ ५ । पर जब एलीहू ने देखा कि ये तीनों पुरुष कुछ उत्तर नहीं देते तब उस का कोप भड़क उठा ॥

६ । सो बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू कहने लगा कि
मैं तो जवान हूं और तुम बहुत बूढ़े हो
इस कारण मैं रुका रहा और अपना मत तुम
को बताने से डरता था ॥
७ । मैं सोचता था कि जो दिनी हैं वे ही
बातें करें
और जो बहुत बरस के हैं वे ही बुद्धि सिखाएं ॥
८ । परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही
और सर्वशक्तिमान अपनी दिई हुई सांस से है
उन्हें समझने की शक्ति देता है ॥
९ । जो बुद्धिमान हैं सो बड़े बड़े लोग ही नहीं
और न्याय के समझनेहारे बूढ़े ही नहीं होते ॥
१० । इस लिये मैं कहता हूं कि मेरी भी सुनो[2]
मैं भी अपना मत बताऊंगा ॥
११ । मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा

(१) मूल में रुपैये । (२) मूल में सुन ।

में तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये ठहरा रहा
जब कि तुम कहने के लिये कुछ खोजते रहे ॥
१२। मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता रहा
पर किसी ने अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया
और न उस की बातों का उत्तर दिया ॥
१३। तुम लोग मत समझो कि हम को ऐसी बुद्धि मिली है
उस का खण्डन मनुष्य नहीं ईश्वर ही कर सकता है ॥
१४। जो बातें उस ने कही सो मेरे विरुद्ध तो नहीं कहीं
और न मैं तुम्हारी सी बातों से उस को उत्तर दूंगा ॥
१५। वे विस्मित हुए और फिर कुछ उत्तर नहीं देते हैं
उन्हों ने बातें करना छोड़ दिया[1] ॥
१६। सो वे जो कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े रहते हैं
इस कारण मैं ठहरा रहा ॥
१७। पर अब मैं भी कुछ कहूंगा[2]
मैं भी अपना मत प्रगट करूंगा ॥
१८। क्योंकि मेरे मन मे बातें भरी हैं
और मेरा आत्मा मुझे उभारता है ॥
१९। मेरा मन उस दाखमधु के समान है जो खोला न गया हो
वह नई कुप्पियों की नाईं फटा चाहता है ॥
२०। शान्ति पाने के लिये मैं बोलूंगा
मै मुंह खोलकर उत्तर दूंगा ॥
२१। कहीं मैं किसी का पक्ष न करूं
और किसी मनुष्य से ठकुरसोहाती बातें न करूं ॥
२२। मैं तो ठकुरसोहाती कहने को जानता भी नहीं
नहीं तो मेरा सिरजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता ॥

(१) मूल में बातें मे उन से कूच किया ।
(२) मूल में अपना अंश उत्तर दूंगा ।

३३.

तौभी हे अय्यूब मेरी बातें सुन
और मेरे सब वचनों पर कान लगा ॥
२। मैं ने तो अपना मुंह खोला है
और मेरी जीभ मुंह मे चुलबुला रही है[1] ॥
३। मेरी बातें अपने मन की सिधाई से होंगी
जो ज्ञान मैं रखता हूं सो खराई के साथ कहूंगा[2] ॥
४। मैं ईश्वर के आत्मा का रचा हुआ हूं
और सर्वशक्तिमान् की सांस से मुझे जीवन मिला है ॥
५। यदि तू मुझे उत्तर दे सके तो दे
मेरे साम्हने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा ॥
६। देख मैं ईश्वर के लेखे तुझ सा हूं
मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूं ॥
७। सुन तुझे मेरे डर के मारे घबराना न पड़ेगा
और न तू मेरे बोझ से दबेगा ॥
८। नि:संदेह तेरी ऐसी बात मेरे कान पड़ी
और मै ने तेरे ऐसे वचन सुने हैं कि,
९। मैं तो पवित्र और निरपराध
और निष्कलंक हूं और मुझ में अधर्म नहीं है ॥
१०। देख वह मुझ से झगड़ने के दांव ढूंढ़ ढूंढ़कर
मुझे अपना शत्रु गिनता है ॥
११। वह मेरे पांवों को काठ में ठोंकता
और मेरी सारी चाल ताकता रहता है ॥
१२। सुन इस में तो तू सच्चा नहीं है
मैं तुझे उत्तर देता हूं
ईश्वर तो मनुष्य से बढ़कर है ॥
१३। तू उस से क्यों मुकद्दमा लड़ता है
कि वह तो अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता ॥
१४। ईश्वर तो एक क्या वरन दो प्रकार से भी बातें करता है
पर लोग उस पर चित्त नहीं लगाते ॥
१५। स्वप्न में वा रात को दिये हुए दर्शन में
जब मनुष्य भारी नीन्द में पड़े रहते हैं
वा बिछौने पर ऊंघते हैं,

(१) मूल में बोली है । (२) मूल में मेरे होंठ कहेंगे ।

१६। तब वह मनुष्यों के कान खोलता
और उन की शिक्षा पर छाप लगाता है,
१७। जिस से वह मनुष्य को उस के काम से रोके
और पुरुष में गर्व न अकुरने पाए[1] ॥
१८। वह उस को कबर में पड़ने नहीं देता
और उस का जीवन हथियार से खाने नहीं देता ॥
१९। यह ताड़ना किसी को होती है कि
वह बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है
और उस की हड्डी हड्डी में लगातार गड़बड़ होता है,
२०। यहां तक कि उस का जीव रोटी से
और उस का मन स्वादिष्ट भोजन से घिन खाता है ॥
२१। उस की देह यहां लों गल जाती कि वह देखी नहीं जाती
और उस की हड्डियां जो पहिले दिखाई न देती थीं सो निकली देख पड़ती हैं[2] ॥
२२। निदान वह कबर के निकट पहुंचता
और उस का जीवन नाश करनेहारों के वश में हो जाता है ॥
२३। यदि उस के लिये कोई बिचवई दूत मिले
जो हजार में से एक ही हो
और मनुष्य को सिधाई बता सके,
२४। तो ईश्वर उस पर अनुग्रह करके कहेगा
उसे बचाकर कबर में न पड़ने दे
मुझे छुड़ौती मिली है ॥
२५। उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक ताजी हो जाएगी
उस की जवानी के दिन फिर आएंगे ॥
२६। वह ईश्वर से बिनती करेगा और वह उस से प्रसन्न होगा
सो वह आनन्द करके ईश्वर का दर्शन करेगा
और ईश्वर मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्म्मी कर देता है ॥
२७। वह मनुष्यों के साम्हने गाकर कहता है कि
मैं ने पाप किया और सीधे को टेढ़ा कर दिया था
पर उस का बदला मुझे दिया नहीं गया ॥
२८। उस ने मेरा जीव कबर में पड़ने से बचाया है
सो मैं[1] उजियाले को देखूंगा ॥
२९। सुन ऐसे ऐसे के सब काम
ईश्वर पुरुष के साथ दो बार क्या बरन तीन बार भी करता है ॥
३०। जिस से उस को कबर से बचाए[2]
और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए ॥
३१। हे अय्यूब कान लगाकर मेरी सुन
चुप रह मैं बोलता रहूं ॥
३२। यदि तुझे बात कहनी हो तो मुझे उत्तर दे
कह दे क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना चाहता हूं ॥
३३। नहीं तो तू मेरी सुन
चुप रह मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊंगा ॥

(एलीहू का वचन)

३४. फिर एलीहू यों भी कहता गया,
२। हे बुद्धिमानो मेरी बातें सुनो
और हे ज्ञानियो मेरी बातों पर कान लगाओ ॥
३। क्योंकि जैसे जीभ से[3] चखा जाता है
वैसे ही वचन कान से परखे जाते हैं ॥
४। हम न्याय की बात चुन लें
और मिलाकर भली बात बूझ लें ॥
५। अय्यूब ने कहा है कि मैं निर्दोष हूं
पर ईश्वर ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया है ॥
६। मैं सच्चाई पर हूं तौभी झूठा ठहरता हूं
मैं निरपराध हूं पर मेरा घाव[4] असाध्य है ॥
७। अय्यूब के तुल्य कौन पुरुष है
जो ईश्वर की निन्दा पानी की नाईं पीता है,
८। जो अनर्थ करनेहारों का साथ देता

(१) मूल में और पुरुष से गर्व छिपाए। (२) वा उस के अंग सूखते सूखते मानो अनदेखे हो जाते हैं।

(१) मूल में मेरा जीवन। (२) मूल में फेर लाए। (३) मूल में तालू से। (४) मूल में तीर।

और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता है ॥
९। उस ने तो कहा है कि मनुष्य को इस से कुछ लाभ नहीं
कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रक्खे ॥
१०। इस लिये हे समझवालो मेरी सुनो कि
दुष्ट काम करना यह ईश्वर से दूर रहे
और सर्वशक्तिमान से यह दूर हो कि टेढ़ा काम करे ॥
११। वह मनुष्य की करनी का बदला देता
और एक एक को अपनी अपनी चाल का फल भुगताता है ॥
१२। निःसन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं करता
और न सर्वशक्तिमान् न्याय बिगाड़ता है ॥
१३। किस ने पृथिवी को उस के हाथ सौंपा
वा किस ने सारे जगत का प्रबन्ध किया ॥
१४। यदि उस का ध्यान अपनी ही ओर हो
और वह अपना आत्मा और सांस अपने ही में समेट ले,
१५। तो सब देहधारी एक संग नाश होंगे
और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा ॥
१६। सो इस को सुनकर समझ रख
और मेरी इन बातों पर कान लगा ॥
१७। जो न्याय का बैरी हो क्या वह शासन करे
जो पूर्ण धर्म्मी है क्या तू उसे दुष्ट ठहराएगा ॥
१८। क्या किसी राजा से ऐसा कहना उचित है कि तू ओछा है
वा प्रधानों से कि तुम दुष्ट हो ॥
१९। ईश्वर तो हाकिमों का पक्ष नहीं करता
और धनी और कंगाल दोनों को अपने बनाये हुए जानकर
उन में कुछ भेद नहीं करता
२०। आधी रात को पल भर में वे मर जाते हैं
और प्रजा के लोग लड़खड़ाकर जाते रहते हैं
और प्रतापी लोग बिना हाथ लगाये उठा लिये जाते हैं ॥
२१। क्योंकि ईश्वर की आंखें मनुष्य की चाल चलन पर लगी रहतीं
और वह उस के पग पग को देखता रहता है ॥
२२। ऐसा अंधियारा वा घोर अंधकार नहीं है
जिस में अनर्थ करनेहारे छिप सकें ॥
२३। क्योंकि उस को मनुष्य पर चित्त लगाने का कुछ प्रयोजन नहीं
सो मनुष्य उस के साथ क्यों मुकद्दमा लड़े ॥
२४। वह बड़े बड़े बलवानों को पूछपाछ के बिना चूर चूर करता
और उन के स्थान पर औरों को खड़ा कर देता है ॥
२५। सो वह उन के कामों को भली भांति जानता है
वह उन्हें रात में ऐसा उलट देता कि वे चूर चूर हो जाते हैं ॥
२६। वह उन्हें दुष्ट जानकर
सभों के देखते मारता है ॥
२७। क्योंकि उन्हों ने उस के पीछे चलना छोड़ दिया
और उस के किसी मार्ग पर चित्त न लगाया ॥
२८। सो उन के कारण कंगालों की दोहाई उस तक पहुंची
और दीन लोगों की दोहाई उस को सुन पड़ी ॥
२९। जब वह चैन देता तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है
और जब वह मुंह फेर लेता तब कौन उस का दर्शन पा सकता है
जाति भर और अकेले मनुष्य दोनों के साथ उस का यही नियम है.
३०। जिस से भक्तिहीन राज्य करता न रहे.
और प्रजा फंसाई न जाए ॥
३१। क्या किसी ने कभी ईश्वर से कहा कि
मैं ने दण्ड सहा मैं आगे को बुराई न करूंगा,
३२। जो कुछ मुझे नहीं सूझ पड़ता सो तू मुझे दिखा दे
और यदि मैं ने टेढ़ा काम किया हो तो आगे को वैसा न करूंगा ॥
३३। क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला दे

तू तो उस से अप्रसन्न है
सो मुझे नहीं तुझी को चुनना होगा
इस कारण जो तुझे समझ पड़ता है सो कह दे ॥
३४ । सब ज्ञानी पुरुष
वरन जितने बुद्धिमान मेरी सुनते हैं सो मुझ से कहेंगे कि,
३५ । अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता
और न उस के वचन समझ के साथ होते हैं ॥
३६ । भला होता कि अय्यूब अन्त लों परीक्षा में रहता
क्योंकि उस ने अनर्थियों के से उत्तर दिये हैं ॥
३७ । और वह अपने पाप में विरोध बढ़ाता
और हमारे बीच ताली बजाता
और ईश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें कहता है ॥

(एलीहू की वाणी.)

३५. फिर एलीहू यों भी कहता गया कि

२ । क्या तू इसे अपना हक समझता है
क्या तू कहता है मेरा धर्म्म ईश्वर के धर्म्म से अधिक है,
३ । कि तू कहता है कि मुझे क्या लाभ
अपने पाप के छूट जाने से क्या लाभ उठाऊंगा ॥
४ । मैं ही तुझे
और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूं ॥
५ । आकाश की ओर दृष्टि करके देख
और आकाशमडल को ताक जो तुझ से ऊंचा है
६ । यदि तू ने पाप किया हो तो ईश्वर का क्या बिगड़ता
चाहे तेरे अपराध बहुत ही हों तौभी तू उस के साथ क्या करता ॥
७ । यदि तू धर्म्मी हो तो उस को क्या लाभ
और तुझ से उस को क्या मिलता ॥
८ । तेरी दुष्टता का फल तुझ ऐसे ही पुरुष को
और तेरे धर्म्म का फल भी तुझ ऐसे ही मनुष्य को प्राप्त होता है ॥
९ । बहुत अंधेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं
और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई देते हैं ॥
१० । पर कोई यह नहीं कहता कि मेरा सिरजनहार ईश्वर कहां है
जो रात में भी गीत गवाता है,
११ । और हमें पृथिवी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता
और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धिमान करता है ॥
१२ । वे दोहाई देते पर कोई उत्तर नहीं देता
यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण होता है ॥
१३ । निश्चय ईश्वर व्यर्थ बातें नहीं सुनता
और न सर्वशक्तिमान् उन पर चित्त लगाता है ॥
१४ । तू तो कहता है कि वह मुझे दर्शन नहीं देता
पर यह मुकद्दमा उस के साम्हने है सो तू उस की बाट जोहता रह ॥
१५ । पर अभी तो उस ने कोप करके दण्ड नहीं दिया
और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया ॥
१६ । इस कारण अय्यूब मुंह व्यर्थ खोलकर
अज्ञानता की बातें बहुत बढ़ाता है ॥

३६. फिर एलीहू यों भी कहता गया

२ । कुछ ठहरा रह मैं तुझ को समझाऊंगा
क्योंकि ईश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है ॥
३ । मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊंगा
और अपने सिरजनहार को धर्म्मी ठहराऊंगा ॥
४ । निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी
जो तेरे संग है सो पूरा ज्ञानी है ॥
५ । सुन ईश्वर सामर्थी है पर किसी को तुच्छ नहीं जानता
वह समझने की शक्ति में समर्थ है ॥
६ । वह दुष्टों को जिलाये नहीं रखता
और दीनों को उन का हक देता है ॥
७ । वह धर्म्मियों से अपनी आंखें नहीं फेरता

वरन उन को राजाओं के संग सदा के लिये
सिंहासन पर बैठालता
और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं ॥
८ । और चाहे वे सांकलों में जकड़े जाएं
और दुःखदाई रस्सियों से बांधे जाएं,
९ । तो ईश्वर उन पर उन के काम
और उन का यह अपराध प्रगट करता है कि
इन्हों ने गर्व किया है ॥
१० । वह उन के कान शिक्षा सुनने को खोलता
और उन को अनर्थ काम छोड़ने को कहता है ॥
११ । यदि वे सुनकर उस की सेवा करें
तो वे अपने दिन कल्याण से
और अपने बरस सुख से काटेंगे ॥
१२ । पर यदि वे न सुनें तो वे हथियार से नाश
हो जाएंगे
और उन का प्राण अज्ञानता में छूटेगा ॥
१३ । पर जो मन ही मन भक्तिहीन होकर क्रोध
बढ़ाते
और जब वह उन को बांधता है तब भी दोहाई
नहीं देते ॥
१४ । वे तो जवानी में मर जाते
और उन का जीवन लुच्चों का सा नाश होता है ॥
१५ । वह दुखियों को उन के दुःख ही के द्वारा
छुड़ाता
और उपद्रव ही के द्वारा उन का कान
खोलता है ॥
१६ । वह तुझ को भी लुभाकर क्लेश के मुंह में से
निकालता
और ऐसे चौड़े स्थान में जहां सकेती नहीं है
पहुंचाता
और चिकना चिकना भोजन तेरी मेज पर
लगाता[१] है ॥
१७ । पर तू ने दुष्टों का सा निर्णय किया है[२]
निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं ॥
१८ । देख तू जलजलाहट से उभरके ठट्ठा मत कर
और न प्रायश्चित्त को अधिक बड़ा जानकर
मार्ग से मुड़ जा ॥
१९ । क्या तू चिल्लाने ही के कारण
वा बड़ा बल करके क्लेश से छूट जाएगा ॥
२० । उस रात की अभिलाषा न कर
जिस में देश देश के लोग अपने अपने स्थान से
मिट जाएंगे ॥
२१ । चौकस रह अनर्थ काम की ओर मत फिर
तू ने तो दुःख[१] से अधिक इसी को चाहा है
२२ । सुन ईश्वर अपने सामर्थ्य से ऊंचे ऊंचे काम
करता है
उस के समान सिखानेहारा कौन है ॥
२३ । किस ने उस के चलने का मार्ग ठहराया है
और कौन उस से कह सकता है कि तू ने टेढ़ा
काम किया है ॥
२४ । उस की करनी की महिमा करने को
स्मरण रख
जिस का गीत मनुष्यों ने गाया है ॥
२५ । सब मनुष्य उस को ध्यान से देखते आये हैं
और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है ॥
२६ । सुन ईश्वर महान् और हमारे ज्ञान से
परे है
और उस के बरसों की गिनती अनन्त है ॥
२७ । वह तो जल की बूंदें खींच लेता है
वे कुहरे के साथ मेंह होकर गिरती हैं ॥
२८ । वे ऊंचे ऊंचे बादलों से पड़ती हैं
और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसती हैं ॥
२९ । फिर क्या कोई बादलों का फैलना
और उस के मंडल में का गरजना समझ
सकता है ॥
३० । देख वह अपने साम्हने उजियाला फैलाता
और समुद्र की थाह को[२] ढांपता है ॥
३१ । इस प्रकार से वह देश देश के लोगों का
न्याय करता
और भोजनवस्तुएं बहुतायत से देता है ॥

(१) मूल में और तेरी मेज की उतराई चिकनाई से भरी
(२) मूल में दुष्ट के निर्णय से भर गया ।

(१) या दीनता । (२) मूल में जड़ को ।

३२। वह बिजली को दोनों हाथ मे भरके[1]
उसे निशाने में लगने को[2] आज्ञा देता है ॥
३३। उस की कड़क से उस का समाचार
मिलता है
ढोर भी प्रगट करते हैं कि वह चढ़ा आता है ॥

३७. फिर इस पर मेरा हृदय थरथराता

और अपने ठिकाने नहीं रहता ॥
२। उस के बोलने का शब्द
और जो शब्द उस के मुंह से निकलता है उस
को सुनो ॥
३। वह उस को सारे आकाश के तले
और अपनी बिजली[3] पृथिवी की छोर लों
भेजता है ॥
४। उस के पीछे गरजने का शब्द होता है
वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है
और जब वह अपना शब्द सुनाता तब बिजली
लगातार चमकने लगती है[4] ॥
५। ईश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत रीति से
सुनाता है
और बड़े बड़े काम करता है जिन को हम
नहीं समझते ॥
६। वह तो हिम से कहता है पृथिवी पर गिर
और मेंह को और भारी वर्षा को भी
ऐसी ही आज्ञा देता है ॥
७। वह सब मनुष्यों का काम[5] बन्द कर देता है
जिस से उस के बनाये हुए सब मनुष्य उस को
पहचानें ॥
८। तब बनपशु आड़ में जाते
और अपनी अपनी मान्दों में रहते हैं ॥

(१) मूल में दोनों हाथ उजियाले से ढांपकर ।
(२) मूल में निशाना मारनेहारे की नाई ।
(३) मूल में अपने उजियाले ।
(४ मूल में तब उन्हें नहीं रोकता ।
(५) मूल में हाथ ।

९। दक्खिन दिशा से[1] बवंडर
और उतरहिया से[2] जाड़ा आता है ॥
१०। ईश्वर की सांस की फूंक से बरफ पड़ता है
तब जलाशयों का पाट जम जाता है ॥
११। फिर वह घटाओं को भाफ से लादता
और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का
बादल फैलाता है ॥
१२। और वह उस की बुद्धि की युक्ति से
घुमाये हुए फिरता है
इस लिये कि जो जो आज्ञा वह उन को दे
सोई वे बसाई हुई पृथिवी के ऊपर पूरी करें ॥
१३। चाहे ताड़ना देने चाहे अपनी पृथिवी की
भलाई करने
चाहे मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उस
को ले आता है ॥
१४। हे अय्यूब इस पर कान लगा
खड़ा रह और ईश्वर के आश्चर्य्यकर्म्मों का
विचार कर ॥
१५। क्या तू जानता है कि ईश्वर क्योंकर
अपने बादलों को आज्ञा देता
और अपने बादल की बिजली चमकाता है ॥
१६। क्या तू घटाओं का तौलना
या सर्वज्ञानी के आश्चर्य्यकर्म्म जानता है ॥
१७। जब पृथिवी पर दक्खिनही के कारण
सब कुछ चुपचाप रहता है[3]
तब तो तेरे वस्त्र तुझे गर्म लगते हैं ॥
१८। फिर क्या तू उस का संगी होकर उस
आकाशमण्डल को तान सकता है
जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य पोढ़ है ॥
१९। तू हमें यह सिखा कि उस से क्या कहना
चाहिये
हम तो अंधियारे के मारे अपने वचन ठीक नहीं
रच सकते ॥
२०। क्या उस को बताया जाए कि मैं बोलने
चाहता हूं

(१) मूल में कोठरी से । (२) मूल मे बिखेरनेहारों से ।
(३) मूल में जब पृथिवी दक्खिनही से चुपचाप होती है ।

क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है॥
२१। अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता
पर वायु चलकर उस को शुद्ध करता है॥
२२। उत्तर दिशा से सोने की सी ज्योति आती है
ईश्वर कैसे ही भययोग्य तेज से आभूषित है॥
२३। सर्वशक्तिमान् जो अति सामर्थी है और जिस का भेद हम से पाया नहीं जाता
सो न्याय और पूर्ण धर्म्म को नहीं बिगाड़ने[१] का॥
२४। इसी से सज्जन उस का भय मानते हैं
और जो अपने लेखे बुद्धिमान हैं उन पर वह दृष्टि नहीं करता॥

(यहोवा और अय्यूब का संवाद)

३८. तब यहोवा अय्यूब से आंधी में से कहने लगा,
२। यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ने चाहता है[२]॥
३। पुरुष की नाईं अपनी कमर बांध
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं और तू मुझे बता दे॥
४। जब मैं ने पृथिवी की नेव डाली तब तू कहां था
यदि तू समझदार हो तो बता दे॥
५। उस की नाप किस ने ठहराई क्या तू जानता है
उस पर किस ने डोरी डाली॥
६। उस की कुर्सियां कौन सी वस्तु पर रक्खी गईं[३]
किस ने उस के कोने का पत्थर बिठाया,
७। जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते
और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे॥
८। फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला
तब किस ने द्वार मूंदकर उस को रोक दिया,
९। जब कि मैं ने उस को बादल पहिराया
और घोर अन्धकार में लपेट दिया,
१०। और उस के लिये सिवाना बांधा[१]
और यह कहकर बेंड़े और किवाड़े लगा दिये कि,
११। यहीं तक आ और आगे न बढ़
और तेरी उमंडनेहारी लहरें यहीं थम जाएं॥
१२। क्या तू ने जीवन भर में कभी भोर को आज्ञा दिई
और पह को उस का स्थान जताया है,
१३। कि वह पृथिवी की छोरों को उठाकर
दुष्ट लोगों को उस पर से झाड़ दे॥
१४। वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर की छाप के नीचे मिट्टी बदलती है
और सब वस्तुएं मानो वस्त्र पहिने हुए दिखाई देती हैं[२],
१५। और दुष्टों का उजियाला[३] उन पर से उठा लिया जाता है
और उन की बढ़ाई हुई बांह तोड़ी जाती है॥
१६। क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक पहुंचा है
वा गहिरे सागर की थाह में कभी चला फिरा है॥
१७। क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट हुए
क्या तू घोर अंधकार के फाटकों को कभी देखने पाया है॥
१८। क्या तू ने पृथिवी का पाट पूरी रीति से समझ लिया
जो तू यह सब जानता हो तो बतला दे॥
१९। उजियाले के निवास का मार्ग कहां है
और अंधियारे का स्थान कहां है॥
२०। क्या तू उसे उस के सिवाने तक हटा सकता
और उस के घर की डगर पहिचान सकता है॥
२१। निःसंदेह तू यह सब कुछ जानता होगा
क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न हुआ था

(१) मूल में दबाने। (२) मूल में, अन्धेरा कर देता है। (३) मूल में, बैठाई गईं।

(१) मूल में, तोड़ा। (२) मूल में खड़ी हो जाती हैं। (३) अर्थात् अंधियारा।

और तू बहुत दिनों होगा ॥
२२। फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार में पैठा
या कभी ओलों के भण्डार को देखा है,
२३। जिस को मैं ने संकट के समय
और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है ॥
२४। किस मार्ग से उजियाला फैलाया जाता
और पुरवाई पृथिवी पर बहाई[1] जाती है ॥
२५। महावृष्टि के लिये किस ने नाला काटा
और कड़कनेहारी बिजली के लिये मार्ग बनाया है,
२६। कि निर्जन देश में
और जंगल में जहां कोई मनुष्य नहीं रहता पानी बरसाकर,
२७। उजाड़ ही उजाड़ देश को सींचे
और हरी घास उगाए ॥
२८। क्या मेंह का कोई पिता है
और ओस की बूंदें किस ने जन्माई ॥
२९। किस के गर्भ से बरफ निकला
और आकाश से गिरे हुए पाले को कौन जनी ॥
३०। जल पत्थर के समान जम[2] जाता है
और गहिरे पानी के ऊपर जमावट होती है ॥
३१। क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूंथ सकता
या मृगशिरा के बंधन खोल सकता है ॥
३२। क्या तू राशियों को ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता[3]
वा सप्तर्षि को साथियों समेत लिये चल सकता है ॥
३३। क्या तू आकाशमण्डल की विधियां जानता
और पृथिवी पर उन का अधिकार ठहरा सकता है ॥
३४। क्या तू बादलों को अपनी वाणी सुनाए[4]
कि बहुत जल तुझ पर बरसे ॥

(१) मूल में छितराई। (२) मूल में छिप। (३) मूल में निकाल सकता। (४) मूल में उठाए।

३५। क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है[1]
कि वह निकलकर कहे क्या आज्ञा ॥
३६। किस ने अन्तःकरण में[2] बुद्धि उपजाई
और मन में[3] समझने की शक्ति किस ने दिई है ॥
३७। कौन बुद्धि से बादलों को गिन सकता
और आकाश के कुप्पों को[4] उण्डेल सकता,
३८। जब धूलि जम जाती
और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं ॥
३९। क्या तू सिंहनी के लिये अहेर पकड़ सकता
और जवान सिंहों का पेट भर सकता है ॥
४०। वे मांद में बैठते
और आड़ में घात लगाये दबकर रहते हैं ॥
४१। फिर जब कौवे के बच्चे ईश्वर की दोहाई देते हुए
निराहार उड़ते फिरते हैं
तब उन को आहार कौन देता है ॥

३९. क्या तू ढांग पर की बनैली बकरियों के जनने का समय जानता है

जब हरिणियां बियाती हैं तब क्या तू देखता रहता है ॥
२। क्या तू उन के महीने गिन सकता
क्या तू उन के बियाने का समय जानता है ॥
३। वे बैठकर अपने बच्चों को जनतीं
वे अपनी पीड़ों से छूट जाती हैं ॥
४। उन के बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान में बढ़ जाते
वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते ॥
५। किस ने बनैले गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है
किस ने उस के बंधन खोले हैं ॥
६। उस का घर मैं ने निर्जल देश को
और उस का निवास लोनिया भूमि को ठहराया है ॥

(१) मूल में भेज सकता है। (२) मूल में गुर्दों में। (३) या कुक्कुट में। (४) अर्थात् बादलों को।

७। वह नगर के कोलाहल पर हंसता
और हांकनेहारे की हांक सुनता भी नहीं॥
८। पहाड़ों पर जो कुछ मिलता है सोई वह चरता
वह सब भांति की हरियाली ढूंढ़ता फिरता है॥
९। क्या बनैला बैल तेरा काम करने को प्रसन्न होगा
क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा॥
१०। क्या तू बनैले बैल को रस्से से बांधकर रेघारियों में चलाएगा
क्या वह नालों में तेरे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा॥
११। क्या तू इस कारण उस पर भरोसा रखेगा कि उस का बल बड़ा है
वा जो परिश्रम का काम तेरा हो क्या तू उसे उस पर छोड़ेगा॥
१२। क्या तू उस का विश्वास करेगा कि वह मेरा अनाज घर ले आएगा
और मेरे खलिहान का अन्न एकट्ठा कर लाएगा॥
१३। फिर शुतरमुर्गी अपने पंखों को आनन्द से फुलाती है
पर क्या ये पंख और पर स्नेह के काम आते हैं॥
१४। वह तो अपने अंडे भूमि में देती
और धूलि में उन्हें गर्म करती है,
१५। और इस की सुधि नहीं रखती कि ये पांव से दब जाएंगे
वा कोई वनपशु इन्हें कुचल डालेगा॥
१६। वह अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उस के नहीं हैं
यद्यपि उस का कष्ट अकारथ होता है तौभी वह निश्चिन्त रहती है॥
१७। क्योंकि ईश्वर ने उस को बुद्धिरहित बनाया[१]
और उसे समझने की शक्ति बांट नहीं दिई॥
१८। जिस समय वह उभरके अपने पंख फैलाती
तब घोड़े और उस के सवार दोनों को हंसी करती है॥

(१) मूल में उस से बुद्धि भुलाई।

१९। क्या तू घोड़े को उस का बल देता
वा उस को गर्दन में फहराती हुई अयाल जमाता है॥
२०। क्या उस को टिड्डी की सी उछलने की शक्ति तू देता है
उस के फुरकने का शब्द डरावना होता है॥
२१। वह तराई में टापता और अपने बल से हर्षित रहता है
वह हथियारबन्दों का साम्हना करने को पयान करता है॥
२२। वह डर की बात पर हंसता और नहीं घबराता
और तलवार से पीछे नहीं हटता॥
२३। तर्कश और चमकता हुआ सांग और भाला उस पर खड़खड़ाती है॥
२४। वह रिस और क्रोध के मारे भूमि को निगलता है
जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता तब उस से खड़ा नहीं रहा जाता॥
२५। जब जब नरसिंगा बजता तब तब वह आहा कहता है
और लड़ाई और अफसरों की ललकार और जयजयकार
दूर से मानो सूंघ लेता है॥
२६। क्या तेरे समझाने से बाज उड़ता
और दक्खिन की ओर उड़ने को अपने पंख फैलाता है॥
२७। क्या उकाब तेरी आज्ञा से चढ़ जाता
और ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है॥
२८। वह ढांग पर रहता
और चटान की चोटी और दृढ़स्थान पर बसेरा करता है॥
२९। वह अपनी आंखों से दूर तक देखता
वहां से वह अपने अहेर को ताक लगाता है॥
३०। उस के बच्चे लोहू पीते हैं
और जहां घात किये हुए लोग होते वहां वह होता है॥

४०. फिर यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा कि,

२। क्या सुधारनेहारा सर्वशक्तिमान् से मुकद्दमा लड़े
जो ईश्वर से विवाद करना चाहे सो इस का उत्तर दे॥
३। तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया,
४। देख मैं तो तुच्छ हूं मै तुझे क्या उत्तर दूं
सो अपनी अंगुली दांत तले दबाता हूं[१]॥
५। एक बार तो मैं कह चुका पर और कुछ न कहूंगा।
हां दो बार भी मैं कह चुका पर अब कुछ और न कहूंगा॥
६। तब यहोवा अय्यूब से आंधी में से यह भी कहने लगा
७। पुरुष की नाईं अपनी कमर बांध
मै तुझ से प्रश्न करता हूं तू मुझे सिखा दे॥
८। क्या तू मेरा न्याय भी बिगाड़ेगा
क्या तू आप निर्दोष ठहरने को मनसा से मुझ को भी दोषी ठहराएगा॥
९। क्या तेरा बाहुबल ईश्वर का सा है
क्या तू मेरा सा शब्द करके गरज सकता है॥
१०। अपने को महिमा और प्रताप से संवार
और ऐश्वर्य्य और तेज के वस्त्र पहिन ले॥
११। अपना सारा कोप भड़काकर प्रगट कर
और एक एक घमंडी को देखते ही नीचा कर॥
१२। हर एक घमंडी को देखकर झुका दे
और दुष्ट लोगों को जहां के तहां गिरा दे॥
१३। उन को एक संग मिट्टी में मिला[२] दे
और अधोलोक[३] में उन के मुंह बांध रख॥
१४। तब मैं भी मान लूंगा
कि तू अपने ही दहिने हाथ से अपना उद्धार कर सकता है॥
१५। उस बलगज को देख जिस को मैं ने तेरे साथ बनाया है
वह बैल की नाईं घास खाता है॥
१६। देख उस की कमर में कैसा ही बल
और उस के पेट की नसों में कितना ही सामर्थ्य रहता है॥
१७। वह अपनी पूंछ को देवदारु की नाईं हिलाता
उस की जांघों की नसें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं॥
१८। उस की हड्डियां मानो पीतल की नलियां
उस की पसुलियां मानो लोहे के बेंड़े है॥
१९। वह ईश्वर का मुख्य कार्य्य[१] है
जो उस का सिरजनहार है सोई उस की तलवार दे देता है॥
२०। उस का चारा पहाड़ों पर मिलता है
जहां और सब बनैले पशु कलोल करते हैं॥
२१। वह छतनार वृक्षों के तले
नरकटों की आड़ मे और कीच पर लेटा करता है॥
२२। छतनार वृक्ष उस पर छाया करते हैं
वह नाले के मजनू वृक्षों से घिरा रहता है॥
२३। चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह न घबराएगा
चाहे यर्दन भी बढ़कर उस के मुंह तक आए पर वह निडर रहेगा॥
२४। जब वह देखता भालता रहे तब[२] क्या कोई उस को पकड़ सकेगा
वा फंदे लगाकर उस को नाथ सकेगा॥

४१. फिर क्या तू लिव्यातान् को बंसी के द्वारा खींच सकता

वा डोरी से उस की जीभ दबा सकता है॥
२। क्या तू उस की नाक में नकेल लगा सकता
वा उस का जभड़ा कील से बेध सकता है॥

---

(१) मूल में अपना हाथ अपने मुह पर रक्खूंगा।
(२) मूल में छिपा। (३) मूल में गुप्त।

(१) मूल में मार्गों का पहिला है।
(२) मूल में, उस की आंखों में।

३। क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट करेगा
वा तुझ से मीठी मीठी बातें बोलेगा॥
४। क्या वह तुझ से वाचा बांधेगा
कि मैं सदा तेरा दास रहूंगा॥
५। क्या तू उस से ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से
वा अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे
बांध रक्खेगा॥
६। क्या मछुओं के दल उसे बिकाऊ माल
समझेंगे
वा उसे व्योपारियों में बांट देंगे॥
७। क्या तू उस का चमड़ा आंकड़ोंवाले
कांटों से
वा उस का सिर मछुवे के शूलों से भर सकता है॥
८। तू उस पर अपना हाथ भी धरे
तो लड़ाई तू कभी न भूलेगा[1] और आगे को
कभी ऐसा न करेगा॥
९। सुन उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है
उस के देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है॥
१०। कोई ऐसा साहसी[2] नहीं जो उस को
भड़काए
फिर ऐसा कौन है जो मेरे साम्हने ठहर सके॥
११। किस ने मुझे पहिले दिया है जिस का
बदला मुझे देना पड़े
देख सारी धरती पर[3] जो कुछ है सो मेरा है॥
१२। मैं उस के अंगों के विषय
और उस के बड़े बल और उस की बनावट की
शोभा के विषय चुप न रहूंगा॥
१३। उस के आगे के पहिरावे को कौन उतार
सकता
उस के दांतों की दोनों पांतियों[4] के बीच कौन
पैठेगा॥
१४। उस के मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल
सकता
उस के दांत चारों ओर डरावने हैं॥

(१) मूल में बू स्मरण रख। (२) मूल में क्रूर।
(३) मूल में सारे आकाश के तले।
(४) मूल में दुहरे बाग।

१५। उस के छिलकों[1] की रेखाएं घमंड का
कारण हैं
वे मानो कड़ी छाप से बन्द किये हुए हैं॥
१६। वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं
कि उन के बीच कुछ वायु भी नहीं पैठ
सकती॥
१७। वे आपस में मिले हुए
और ऐसे सटे हुए हैं कि अलग अलग नहीं हो
सकते॥
१८। फिर उस के छींकने से उजियाला चमक
जाता
और उस की आंखें भोर की पलकों के समान हैं॥
१९। उस के मुंह से जलते हुए पलीते निकलते
और आग की चिंगारियां छूटती हैं।
२०। उस के नथुनों से धूआं ऐसा निकलता
जैसा खौलती हुई हांडी और जलते हुए नरकटों से॥
२१। उस की सांस से कोएले सुलगते
और उस के मुंह से आग की लौ निकलती है॥
२२। उस की गर्दन में सामर्थ्य बना रहता है
और उस के साम्हने निराशी छा जाती है[2]॥
२३। उस के मांस पर मांस चढ़ा हुआ है
और ऐसा पोढ़ है कि हिलने का नहीं॥
२४। उस का हृदय पत्थर सा पोढ़ है
बरन चक्की के निचले पाट के समान पोढ़ है॥
२५। जब वह उठने लगता तब सामर्थी भी
डर जाते
और डर के मारे उन की सुध बुध जाती
रहती है॥
२६। यदि कोई उस पर तलवार चलाए तो
उस से कुछ न बन पड़ेगा[3]॥
और न बर्छे वा बर्छी वा तीर से॥
२७। वह लोहे को पुआल सा
और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है॥

(१) मूल में उस की ढालों के नाले।
(२) मूल में नाचती है।
(३) मूल में खड़ी न होगी।

२८। वह तीर[1] से भगाया नहीं जाता
गोफन के पत्थर उस के लेखे भूसे से ठहरते हैं ॥
२९। लाठियां भी भूसे के समान गिनी जाती हैं
वह बर्छी की हड़हड़ाहट पर हंसता है ॥
३०। उस के निचले भाग पैने पैने ठीकरे से हैं
कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है ॥
३१। वह गहिरे जल को हंडे की नाईं मथता है
उन के कारण नील नदी[2] मरहम की हांड़ी के
समान होती है ॥
३२। उस के पीछे लीक चमकती है
मानो गहिरा जल पक्के बालवाला हो जाता है ॥
३३। धरती पर उस के तुल्य और कोई नहीं है
वह ऐसा बनाया गया है कि उस को कुछ भय न लगे॥
३४। जो कुछ ऊंचा है उसे वह ताकता ही रहता
वह सब घमंडियों के ऊपर राजा है ॥

(अय्यूब का वचन)

४२. तब अय्यूब ने यहोवा से कहा

२। मैं जान गया कि तू सब कुछ कर सकता है
और तेरी युक्तियों में से कोई नहीं रुकने की ॥
३। तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति को
बिगाड़ने चाहता है[3]
मैं तो जो नहीं समझता था उसे बोला
अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और
मेरी समझ से बाहर थीं ॥
४। सुन मैं कुछ कहूंगा
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं तू मुझे सिखा दे ॥
५। मैं ने सुनी सुनाई तो तेरे विषय सुनी थी
पर अब अपनी आंख से तुझे देखता हूं ॥
६। इस लिये मैं अपनी बातो को तुच्छ जानता
और धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूं ॥

(अय्यूब का घोर परीक्षा से छूटना.)

७। जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका
तब उस ने तेमानी एलीपज़ से कहा मेरा कोप तेरे
और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि जैसी
ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है
वैसी तुम लोगों ने नहीं कही ॥ ८। सो अब तुम
सात बैल और सात मेढ़े छांट मेरे दास अय्यूब के
पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ तब
मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि
उसी को मैं ग्रहण करूंगा और नहीं तो मैं तुम से
तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूंगा क्योंकि तुम
लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक
बात नहीं कही ॥ ९। यह सुन तेमानी एलीपज़ शूही
बिल्दद् और नामाती सोपर् ने जाकर यहोवा की
आज्ञा के अनुसार किया और यहोवा ने अय्यूब को
ग्रहण किई ॥ १०। तब अय्यूब ने अपने मित्रों के
लिये प्रार्थना किई तब यहोवा ने उस का सारा
दुःख दूर किया[1] और जितना अय्यूब का पहिले था
उस का दुगना यहोवा ने उसे दिया ॥ ११। तब उस
के सब भाई और सब बहिनें और जितने पहिले
उस को जानते पहिचानते थे उन सभों ने आकर
उस के यहां उस के संग भोजन किया और जितनी
विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी उस सब के
विषय उन्हों ने विलाप किया और उसे शांति दिई
और उसे एक एक कसीता और सोने की एक एक
बाली दिई ॥ १२। और यहोवा ने अय्यूब के पिछले
दिनों में उस को अगले दिनों से अधिक आशीष दिई
और उस के चौदह हज़ार भेड़ बकरियां छः हज़ार ऊंट
हज़ार जोड़ी बैल और हज़ार गदहियां हो गईं ॥
१३। और उस के सात बेटे और तीन बेटियां भी
उत्पन्न हुईं ॥ १४। इन में से उस ने जेठी बेटी का
नाम तो यमीमा दूसरी का कसीआ और तीसरी का
केरेन्हप्पूक् रक्खा ॥ १५। और उस सारे देश में
ऐसी स्त्रियां कहीं न थीं जो अय्यूब की बेटियों के
समान सुन्दर हों और उन के पिता ने उन को
उन के भाइयों के संग ही भाग दिये ॥ १६। इस
के पीछे अय्यूब एक सौ चालीस बरस जीता रहा
और चार पीढ़ी लों अपना वंश[2] देखने पाया ॥ १७।
निदान अय्यूब पुरनिया और दीर्घायु[3] होकर मर गया ॥

(१) मूल में धनुष के पुत्र। (२) मूल में समुद्र। (३) मूल में अन्धेरा कर देता है।

(१) मूल में. उस को बंधुआई से लौटा दिया। (२) मूल में बेटे पोते। (३) मूल में पुरनिया और दिनों से तृप्त।

भजन संहिता।

पहिला भाग।

---

१. क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चला
और न पापियों के मार्ग में खड़ा हुआ
न ठट्ठा करनेहारों के बैठक में बैठा हो ॥
२। वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता
और उस की व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है ॥
३। सो वह उस वृक्ष के समान होता है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया हो
और अपनी ऋतु में फलता हो
और जिस के पत्ते मुरझाने के नहीं
और जो कुछ वह पुरुष करे सो सफल होता है ॥
४। दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते
वे उस भूसी के समान होते हैं जो पवन से उड़ाई जाती है ॥
५। इस कारण दुष्ट लोग न्याय में स्थिर न रह सकेंगे
और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे ॥
६। क्योंकि यहोवा धर्मियों के मार्ग की सुधि लेता है
और दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा ॥

२. जाति जाति के लोग हुल्लड़ क्यों मचाते और देश देश के लोग क्यों व्यर्थ बात सोच रहे हैं ॥
२। यहोवा के और उस के अभिषिक्त के विरुद्ध पृथिवी के राजा खड़े होते हैं
और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं कि,
३। आओ हम उन के बान्धे हुए बन्धन तोड़ डालें
और उन की रस्सियों को फेंक दें ॥
४। जो स्वर्ग में विराजमान है सो हंसेगा
प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ाएगा ॥
५। तब वह उन से कोप करके बातें करेगा
और क्रोध में आकर उन्हें घबरवाएगा कि,
६। मैं तो अपने ठहराये हुए राजा को
अपने पवित्र पर्वत सिय्योन् [की राजगद्दी] पर बैठा चुका हूं ॥
७। मैं उस वचन का प्रचार करूंगा
जो यहोवा ने कहा कि तू मेरा पुत्र है
आज मैं ही ने तुझे जन्माया है ॥
८। मुझ से मांग और मैं जाति जाति के लोगों को तेरे भाग में दे दूंगा
और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि कर दूंगा ॥
९। तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा
तू मिट्टी के बर्तन की नाईं उन्हें चकनाचूर करेगा ॥
१०। सो अब हे राजाओ बुद्धिमान हो
हे पृथिवी के न्यायियो यह उपदेश मान लो ॥
११। यहोवा की सेवा डरते हुए करो
और थरथराते हुए मगन हो ॥
१२। पुत्र को चूमो न हो कि वह कोप करे
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ
क्योंकि क्षण भर में उस का कोप भड़केगा।
क्या ही धन्य हैं वे सब जो उस के शरणागत हैं ॥

दाऊद का भजन। उस समय का जब वह अपने पुत्र अबूशालोम् के साम्हने से भागा जाता था।

३. हे यहोवा मेरे सतानेहारे क्या ही बढ़ गये हैं
बहुत से लोग मेरे विरुद्ध उठे हैं ॥
२। बहुत से लोग मेरे विषय में कहते हैं

कि उस का बचाव परमेश्वर से नहीं हो सकता[1] । सेला ॥
३ । पर हे यहोवा तू तो मेरी चारों ओर ढाल है
तू मेरी महिमा और मेरे सिर का ऊंचा करनेहारा है ॥
४ । मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं
और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मेरी सुन लेता है ॥ सेला ।
५ । मैं तो लेटा और सो गया
फिर जाग उठा क्योंकि यहोवा मेरा संभालनेहारा है ॥
६ । मैं उन दस दस हजार लोगों से नहीं डरता
जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बांधे खड़े हैं ॥
७ । हे यहोवा उठ हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा
क्योंकि तू मेरे सब शत्रुओं के जभड़ों पर मारता
और दुष्टों की दाढ़ों को तोड़ डालता आया है ॥
८ । उद्धार यहोवा ही से होता है
हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो । सेला ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । दाऊद का भजन ।

४. हे मेरे धर्म्ममय परमेश्वर जब मैं पुकारूं तब तू मेरी सुन ले
जब मैं सकेती में पड़ा तब तू ने मुझे फैलाव दिया
मुझ पर अनुग्रह कर मेरी प्रार्थना सुन ॥
२ । हे महापुरुषो मेरी महिमा के बदले कब लों अनादर होता रहेगा
तुम कब लों व्यर्थ बात में प्रीति रक्खोगे और झूठी युक्ति विचारते रहोगे । सेला ॥
३ । पर यह जान रक्खो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रक्खा है
जब मैं यहोवा को पुकारूं तब वह सुनेगा ॥
४ । भय करो और पाप न करो
अपने अपने बिछौने पर मन ही मन सोचो और चुपके रहो । सेला ॥
५ । धर्म के बलिदान चढ़ाओ
और यहोवा पर भरोसा रक्खो ॥
६ । बहुत से लोग तो कहते हैं कि कौन हम से भलाई की भेंट कराएगा
हे यहोवा अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका ॥
७ । उन के अन्न और दाखमधु की बढ़ती के समय की अपेक्षा
तू ने मेरे मन में अधिक आनन्द दिया है ॥
८ । मैं शान्ति से लेटते ही सो जाऊंगा
क्योंकि हे यहोवा तू मुझ को एकान्त में निडर रहने देता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । बांसुलियों के साथ । दाऊद का भजन ॥

५. हे यहोवा मेरे वचनों पर कान धर
मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा ॥
२ । हे मेरे राजा हे मेरे परमेश्वर मेरी दोहाई पर ध्यान दे
क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं ॥
३ । हे यहोवा भोर को मेरा शब्द तुझे सुनाई देगा
भोर को मैं तेरे लिये अपनी भेंट सजाकर ताकता रहूंगा ॥
४ । क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो
बुराई तेरे पास टिकने न पाएगी ॥
५ । घमण्डी तेरे साम्हने खड़े होने न पाएंगे
तू सब अनर्थकारियों से बैर रखता है ॥
६ । तू झूठ बोलनेहारों को नाश करेगा
हे यहोवा तू हत्यारे और छली से घिन खाता है ॥
७ । पर मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊंगा

(१) मूल में परमेश्वर में नहीं है ।

मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूंगा ॥
८। हे यहोवा मेरे द्रोहियों के कारण अपने धर्म्म के मार्ग में मेरी अगुआई कर
मुझे अपना मार्ग सीधा दिखा ॥
९। क्योंकि उन की बातों का कुछ ठिकाना नहीं
उन के मन में निरी दुष्टता है
उन का गला खुली हुई कबर है
वे चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं ॥
१०। हे परमेश्वर उन को दोषी ठहरा
वे अपनी युक्तियों से आप ही गिर जाएं
उन को बहुत से अपराधों में फंसे हुए धकिया दे
क्योंकि वे तेरे विरुद्ध उठे हैं ॥
११। पर जितने तेरे शरणागत हैं सो सब आनन्द करें
वे सदा ऊंचे स्वर से गाते रहें और तू उन की आड़ रह
और तेरे नाम के प्रेमी तेरे कारण प्रफुल्लित हों ॥
१२। क्योंकि हे यहोवा तू धर्म्मी को आशीष देगा
तू उस को अपनी प्रसन्नतारूपी ढाल से घेरे रहेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । खर्ज में । दाऊद का भजन ॥

६. हे यहोवा मुझे कोप करके न डांट
न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर ॥
२। हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं कुम्हला गया हूं
हे यहोवा मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी हड्डियां हिल गई हैं ॥
३। मेरा जीव भी बहुत थरथरा उठा है
पर तू हे यहोवा कब लों—
४। हे यहोवा लौटकर मेरा प्राण बचा
अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर ॥
५। क्योंकि मरने पर तेरा कुछ स्मरण नहीं होता
अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद कर सकता है ॥
६। मैं कराहते कराहते थक गया
रात रात मेरा बिछौना आंसुओं से भीज जाता है
मैं अपनी खाट को उन से भिगोता हूं ॥
७। मेरी आंखें शोक से धुन्धली हो गई
मेरे सब सतानेहारों के कारण वे धुन्धला गई हैं ॥
८। हे सब अनर्थकारियो मुझ से दूर हो
क्योंकि यहोवा ने मेरा रोना सुना है ॥
९। यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है
वह मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा ॥
१०। मेरे सब शत्रु लजाएंगे और बहुत ही घबराएंगे
वे लौट जाएंगे और एकाएक लज्जित होंगे ॥

दाऊद का शिग्गायोन् नाम भजन जो उस ने बिन्यामीनी कूश् की बातों के कारण । यहोवा के साम्हने गाया

७. हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं तेरा ही शरणागत हूं
मुझे सब खदेड़नेहारों से बचा और छुटकारा दे,
२। न हो कि वे मुझ को सिंह की नाईं फाड़कर टुकड़े टुकड़े करें
और कोई मेरा छुड़ानेहारा न हो ॥
३। हे मेरे परमेश्वर यहोवा यदि मैं ने यह किया हो
वा मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो,
४। यदि मैं ने अपने मेल रखनेहारे से बुरा व्यवहार किया हो
वा उस को जो अकारण मेरा सतानेहारा था बचाया न हो,
५। तो शत्रु मेरा पीछा करके मुझे पकड़े
वरन मुझ को भूमि पर रौंदे
और मेरी महिमा को मिट्टी में मिलाए । सेला ॥
६। हे यहोवा कोप करके उठ
मेरे क्रोधभरे सतानेहारों के विरुद्ध खड़ा हो,
और मेरे लिये जाग तू ने न्याय की आज्ञा तो दिई है ॥

७। और देश देश के लोगों की मण्डली तेरी चारों ओर आएगी
और तू उन के ऊपर से होकर ऊंचे पर लौट जा ॥
८। हे यहोवा तू समाज समाज का न्याय करेगा
मेरे धर्म्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।
९। भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए पर धर्म्मी को तू स्थिर कर
क्योंकि तू जो धर्म्मी परमेश्वर है सो मन और मर्म का जांचनेहारा है ॥
१०। मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है
वह सीधे मनवालों को बचाता है ॥
११। परमेश्वर धर्म्मी और न्याय करनेहारा है
और ऐसा ईश्वर है जो दिन दिन क्रोध करता है ॥
१२। यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा
वह अपना धनुष चढ़ाकर तीर सन्धान चुका है ॥
१३। और उस मनुष्य के लिये उस ने मृत्यु के हथियार तैयार किये हैं
वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाएगा ॥
१४। देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ें लगी हैं
उस को उत्पात का पेट रहा और वह झूठ को जनता है ॥
१५। उस ने गड़हा खोदकर गहिरा किया
पर जो गड़हा उस ने खना उस में वही आप गिरा ॥
१६। उस का उत्पात पलटकर उसी के सिर पर पड़ेगा
और उस का उपद्रव उसी के चोंडे पर पड़ेगा ॥
१७। मैं यहोवा के धर्म्म के अनुसार उस का धन्यवाद करूंगा
और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। गित्तीत् में। दाऊद का भजन।

८. हे यहोवा हमारे प्रभु
तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है
तू ने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया है ॥
२। तू ने अपने वैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउवों के द्वारा[1] सामर्थ्य की नेव डाली है
इस लिये कि तू शत्रु और पलटा लेनेहारे को रोक रक्खे ॥
३। जब मैं आकाश को जो तेरे हाथों[2] का कार्य्य है
और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने ठहराये हैं देखता हूं.
४। तो मनुष्य क्या है कि तू उस का स्मरण करता है
और आदमी क्या कि तू उस की सुधि लेता है ॥
५। तू ने उस को परमेश्वर[3] से थोड़ा ही घटिया बनाया
और महिमा और प्रताप का मुकुट उस के सिर पर रक्खा है ॥
६। तू ने उसे अपने हाथों के कार्य्यों पर प्रभुता दिई
तू ने उस के पांव तले सब कुछ कर दिया है,
७। भेड़ बकरी और गाय बैल सब के सब
और जितने वनपशु हैं.
८। आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां
और जितने जीव जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं ॥
९। हे यहोवा हे हमारे प्रभु
तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। मूत्लब्बेन् में। दाऊद का भजन।

९. हे यहोवा मैं अपने सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा
मैं तेरे सब आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करूंगा ॥

---

(१) मूल में मुंह से। (२) मूल में, अंगुलियों। (३) वा, स्वर्गदूतों से।

२। मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित हूंगा
हे परमप्रधान मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा ॥
३। क्योंकि मेरे शत्रु उलटे फिरे हैं
वे तेरे साम्हने से ठोकर खाकर नाश होते हैं ॥
४। तू ने मेरा न्याय और मुकद्दमा चुकाया है
तू सिंहासन पर विराजमान होकर धर्म्म से न्याय करता है ॥
५। तू ने अन्यजातियों को घुड़का और दुष्ट को नाश किया
तू ने उस का नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है ॥
६। शत्रु जो हैं सो विलाय गये वे अनन्तकाल के लिये उजड़ गये
और जिन नगरों को तू ने ढा दिया उन का नाम भी मिट गया है ॥
७। पर यहोवा सदा विराजमान रहेगा
उस ने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है ॥
८। और वह आप जगत का न्याय धर्म्म से करेगा
वह देश देश के लोगों का मुकद्दमा खराई से निपटाएगा ॥
९। और यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊंचा गढ़
वह संकट के समय के लिये भी ऊंचा गढ़ ठहरेगा ॥
१०। और तेरे नाम के जाननेहारे तुझ पर भरोसा रखेंगे
क्योंकि हे यहोवा तू ने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया ॥
११। यहोवा जो सिय्योन् में विराजता है उस का भजन गाओ
जाति जाति के लोगों के बीच उस के महाकर्म्मों का प्रचार करो ॥
१२। क्योंकि खून के पलटा लेनेहारे ने उन का स्मरण किया है
और दीन लोगों की दोहाई को नहीं बिसराया ॥
१३। हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर
तू मेरे दु:ख को देख जो मेरे बैरी मुझे दे रहे हैं
तू जो मुझे मृत्यु के फाटकों के पास से उठाता है,
१४। इस लिये कि मैं सिय्यान्[1] के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूं
और तेरे किये हुए उद्धार से मगन होऊं ॥
१५। अन्यजातिवालों ने जो गड़हा खोदा था उसी में वे आप गिर पड़े
जो जाल उन्हों ने लगाया था उस में उन्हीं का पांव फंस गया ॥
१६। यहोवा ने अपने को प्रगट किया उस ने न्याय चुकाया है
दुष्ट अपने किये हुए कामों में फंस जाता है।
हिग्गायोन् । सेला ॥
१७। दुष्ट अधोलोक में लौटा दिये जाएंगे
जितनी जातियां परमेश्वर को भूल जाती हैं ॥
१८। क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल लों बिसरे हुए न रहेंगे
नम्र लोगों की आशा सदा के लिये नाश न होगी ॥
१९। हे यहोवा उठ मनुष्य प्रबल न हो
जातियों का न्याय तेरे साम्हने किया जाए ॥
२०। हे यहोवा उन को भय दिखा
जातियां अपने को मनुष्यमात्र जानें । सेला ॥

१०. हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है

संकट के समय में क्यों छिपा रहता है ॥
२। दुष्टों के अहंकार के कारण दीन मनुष्य खदेड़े जाते हैं
वे अपने निकाली हुई युक्तियों में फंस जाएं ॥
३। क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता
और लोभी यहोवा का त्याग और तिरस्कार करता है ॥
४। दुष्ट अपने अभिमान के कारण कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का

(१) मूल में, सिय्योन् की पुत्री ।

उस का सारा विचार यही है कि परमेश्वर
है ही नहीं ॥
५। वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है
तेरे न्याय के विचार ऐसे ऊंचे पर होते हैं कि
उन को देख नहीं पड़ते
जितने उस के विरोधी हैं उन पर वह
फुफकारता है ॥
६। उस ने सोचा है कि मैं नहीं टलने का
मैं दुःख से पीढ़ी से पीढ़ी लों बचा रहूंगा ॥
७। उस का मुंह स्राप और छल और अंधेर से
भरा है
वह उत्पात और अनर्थ की बातें बोला करता
है ॥
८। वह गांवों के टूका लगाने के स्थानों में
बैठा करता
और छिपने के स्थानों में निर्दोष को घात
करता है
उस की आंखें लाचार को छिपकर ताकती हैं ॥
९। जैसा सिंह अपनी झाड़ी में तैसा वह भी
छिपकर घात में बैठा करता है
वह दीन को पकड़ने के लिये उस की घात में
लगता है
जब वह दीन को अपने जाल में फंसाकर घसीट
लाता है तब उसे पकड़ लेता है ॥
१०। वह झुक जाता और दबक बैठता है
और लाचार लोग उस के महाबल से पटके
जाते हैं।
११। उस ने अपने मन में सोचा है कि ईश्वर
भूल गया
उस ने अपना मुंह फेर लिया[१] वह कभी नहीं
देखने का।
१२। हे यहोवा उठ हे ईश्वर अपना हाथ उठा
दीन लोगों को भूल न जा ॥
१३। परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है
उस ने सोचा कि तू लेखा न लेगा ॥
१४। तू ने देखा है क्योंकि तू उत्पात और
कलपाने पर दृष्टि रखता है कि उस का
पलटा ले[१]
लाचार अपने को तेरे हाथ में छोड़ता है
बपमूए का सहायक तू ही बना है ॥
१५। दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल
और दुर्जन की दुष्टता का लेखा तब लों लेता
जा जब लों वह बनी रहे ॥
१६। यहोवा अनन्तकाल के लिये राजा है
उस के देश में से अन्यजाति लोग नाश हो
गये हैं ॥
१७। हे यहोवा तू ने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी
तू उस का मन तैयार करेगा तू कान लगाएगा,
१८। इस लिये कि तू बपमूए और पिसे हुए का
न्याय चुकाएगा
कि मनुष्य जो मिट्टी से बना है फिर भय दिखाने
न पाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का।

११. मैं यहोवा का शरणागत हूं

तुम लोग मुझ से क्योंकर कह सकते हो
कि चिड़िया की नाईं अपने पहाड़ पर उड़ जा ॥
२। क्योंकि देख दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते
और अपना तीर धनुष की डोरी से जोड़ते है
कि सीधे मनवालों पर अंधेरे में तीर चलाएं ॥
३। नेवें ढाई जाती हैं
धर्म्मी से क्या बना ॥
४। यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है
यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है
वह अपनी आंखों से मनुष्यों को ताकता और
आंख गड़ाकर उन को जांचता है[२] ॥
५। यहोवा धर्म्मी को तो जांचता है

---

(१) मूल में छिपाया।

(१) मूल में उसे अपने हाथ में रक्खे।
(२) मूल में अपनी पलकों से।

पर वह उन से जी भर बैर रखता है जो दुष्ट हैं और उपद्रव में प्रीति रखते हैं ॥
६ । वह दुष्टों पर फन्दे बरसाएगा
आग और गन्धक और प्रचण्ड लूह उन के कटोरों में बांट दिई जाएंगी ॥
७ । क्योंकि यहोवा धर्म्ममय है वह धर्म्म के कामों से प्रसन्न रहता है
सीधे लोग उस का दर्शन पाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । सुर्ग में । दाऊद का भजन ॥

१२. हे यहोवा बचा क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा
मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग मर मिटे हैं ॥
२ । सब कोई एक दूसरे से व्यर्थ ही बात बकते हैं
वे चापलूसी के साथ दुरंगी बातें कहते हैं ॥
३ । यहोवा सब चापलूसों को नाश करे
और उस जीभ को जिस से बड़ा बोल निकलता है ॥
४ । वे कहते हैं कि हम बात करने ही से[१] जीतेंगे
हमारे मुंह हमारे वश में हैं हमारा कौन प्रभु है ॥
५ । दीन लोगों के लुट जाने और दरिद्रों के कराहने के कारण
यहोवा कहता है कि अब मैं उठूंगा
जिस बचाव की लालसा वह करता वह उसे दूंगा[२] ।
६ । यहोवा के वचन खरे हैं
वे उस चांदी के समान हैं जो पृथिवी पर घड़िया में ताई गई
और सात बार निर्मल किई गई हो ॥
७ । हे यहोवा तू उन की रक्षा करेगा
तू उन को इस काल के लोगों से सदा बचा रक्खेगा ॥

(१) मूल में अपनी जीभ के द्वारा ।
(२) वा जिस पर लोग फुफकार मारते हैं उस को मैं अभयदान दूंगा ।

८ । जब मनुष्यों में नीचपन का आदर होता तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ॥

१३. हे यहोवा तू कब लों मुझे लगातार भूला रहेगा
कब लों अपना मुख मुझ से छिपाये रहेगा ॥
२ । मैं कब लों अपने मन में युक्तियां करता रहूंगा
और दिन भर मेरा जी उदास रहेगा
कब लों मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा ॥
३ । हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर निहारके मुझे उत्तर दे
मेरी आंखों में ज्योति आने दे नहीं तो मुझे मृत्यु की नीन्द आ जाएगी,
४ । न हो कि मेरा शत्रु कहे कि मैं उस पर प्रबल हुआ
और मेरे सतानेहारे मेरे डगमगाने पर मगन हों ॥
५ । पर मैं तो तेरी करुणा पर भरोसा रखता हूं
मेरा हृदय तेरे किये हुए उद्धार से मगन होगा ।
६ । मैं यहोवा के नाम का गीत गाऊंगा
क्योंकि उस ने मेरी भलाई किई है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का ।

१४. मूढ़ ने अपने मन में कहा है कि परमेश्वर है ही नहीं
वे बिगड़ गये उन्हों ने घिनौने काम किये सुकर्म्मी कोई नहीं ॥
२ । यहोवा ने स्वर्ग में से मनुष्यों को निहारा है
कि देखे कि कोई बुद्धि से चलता
वा परमेश्वर को पूछता है ॥
३ । वे सब के सब भटक गये सब एक साथ बिगड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ॥
४ । क्या किसी अनर्थकारी को कुछ ज्ञान नहीं रहता

वे मेरे लोगों को रोटी जानकर खा जाते हैं
और यहोवा का नाम नहीं लेते ॥
५। वहां वे भयभीत हुए
क्योंकि परमेश्वर धर्म्मी लोगों के बीच रहता है ॥
६। तुम तो दीन की युक्ति को तुच्छ जानते हो
इस लिये कि यहोवा उस का शरणस्थान है ॥
७। भला हो कि इस्राएल् का उद्धार सिय्योन् से प्रगट हो
जब यहोवा अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल् आनन्दित होगा ॥

दाऊद का भजन।

१५. हे यहोवा तेरे तंबू में कौन टिकने पाएगा तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा ॥
२। जो खराई से चलता और धर्म्म के काम करता
और मन में सच्चाई का विचार करता है ॥
३। जो चुगली नहीं करता
और न किसी दूसरे से बुराई करता
न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है,
४। जिस के लेखे में निकम्मा मनुष्य तो तुच्छ है
पर वह यहोवा के डरवैयों का आदर करता है
जो किरिया खाने पर हानि भी देखकर नहीं बदलता,
५। जो अपना रुपैया व्याज पर नहीं देता
न निर्दोष की हानि करने के लिये घूस लेता है
जो कोई ऐसी चाल चलता है सो कभी न टलेगा ॥

मिक्ताम्। दाऊद का।

१६. हे ईश्वर मेरी रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं ॥
२। हे मन तू ने यहोवा से कहा है कि तू मेरा प्रभु है
तुझे छोड़ मेरा कुछ भला नहीं ॥
३। पृथिवी पर जो पवित्र लोग हैं
सोई आदर के योग्य हैं और उन्हीं से मैं प्रसन्न रहता हूं ॥
४। जो यहोवा को किसी दूसरे से बदल लेते हैं उन के दुःख बहुत होंगे
मैं उन के लोहूवाले तपावन नहीं देने का
और उन का नाम तक नहीं लेने का[१]।
५। यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे में का हिस्सा है
मेरे बाट को तू स्थिर रखता है ॥
६। मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी
और मेरा भाग मुझे भावता है ॥
७। मैं यहोवा को धन्य कहता हूं क्योंकि उस ने मुझे सम्मति दिई
मेरा मन भी रात में मुझे चिता देता है ॥
८। मैं यहोवा को निरन्तर अपने सन्मुख जानता[२] आया हूं
वह मेरे दहिने रहता है इस लिये मैं नहीं टलने का ॥
९। इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरा आत्मा[३] मगन हुआ
मेरा शरीर भी बेखटके रहेगा ॥
१०। क्योंकि तू मेरे जीव को अधोलोक में न छोड़ेगा
न अपने भक्त को सड़ने देगा ॥
११। तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा
तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है
तेरे दहिने हाथ में सुख सदा बना रहता है ॥

दाऊद की प्रार्थना।

१७. हे यहोवा धर्म्म के वचन सुन मेरी पुकारकी ओर ध्यान दे

(१) मूल में अपने होठों पर नहीं लेने का।
(२) मूल में रखता। (३) मूल में महिमा ॥

मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुंह से निकलती है कान लगा ॥
२। मेरे मुकद्दमे का निर्णय कर
तेरी आंखें न्याय पर लगी रहें ॥
३। तू ने मेरे हृदय को जांचा तू रात को देखने के लिये आया
तू ने मुझे ताया पर कुछ नहीं पाया
मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुंह से अपराध की बात न निकलेगी ॥
४। मनुष्यों के कामों के विषय—मैं तेरे मुंह के वचन के द्वारा
बरियाई करनेहारे की सी चाल से अपने को बचाये रहा ॥
५। मेरे पांव तेरे पथों में स्थिर हैं
मेरे पैर नहीं टलने के ॥
६। हे ईश्वर मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि तू मेरी सुन लेगा
अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी बात सुन ॥
७। तू जो अपने दहिने हाथ के द्वारा अपने शरणागतों को उन के विरोधियों से बचाता है
अपनी अद्भुत करुणा दिखा ॥
८। आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर
अपने पंखों तले मुझे छिपा रख,
९। उन दुष्टों से जो मेरा नाश किया चाहते हैं
मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं ॥
१०। वे मोटे हो गये हैं
उन के मुंह से घमण्ड की बातें निकलती हैं ॥
११। हमारे पगों को वे अब घेर चुके हैं
वे हम को भूमि पर पटक देने के लिये टकटकी लगाये हुए हैं ॥
१२। वह सिंह की नाईं फाड़ने की लालसा करता है
और जवान सिंह की नाईं टूका लगाने के स्थानों में बैठा रहता है ॥
१३। हे यहोवा उठ
उसे छेंक उस को दबा दे
अपनी तलवार के बल मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ॥
१४। अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा मुझे मनुष्यों से बचा ॥
संसारी मनुष्यों से जिन का भाग इसी जीवन में है
और जिन का पेट तू अपने भण्डार में से भरता है
वे लड़केबालों से तृप्त होते
और जो वे बचाते हैं सो अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं ॥
१५। पर मैं तो धर्म्मी ठहरके तेरे मुख को निहारूंगा
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप को देखकर तृप्त हूंगा ॥

प्रधान बजानेहारेके लिये। यहोवाके दास दाऊद का गीत जिस के वचन उस ने यहोवा के लिये उस समय गाये जब यहोवा ने उस को उस के सारे शत्रुओं के हाथ से और शाऊल के हाथ से बचाया था। उस ने कहा

१८. हे यहोवा हे मेरे बल मैं तुझ से स्नेह रखता हूं ॥
२। यहोवा मेरी ढांग और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेहारा
मेरा ईश्वर और मेरी चटान है जिस का मैं शरणागत हूं
वह मेरी ढाल मेरा बचानेहारा सींग और मेरा ऊंचा गढ़ है ॥
३। मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा
और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा ॥
४। मैं मृत्यु की रस्सियों से चारों ओर घिर गया
और नीचपन की धारों ने मुझ को घबरा दिया था ॥
५। अधोलोक की रस्सियां मेरी चारों ओर थीं
और मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ॥
६। अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा
मैं ने अपने परमेश्वर की दोहाई दिई
और उस ने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुना

और मेरी दोहाई उस के पास पहुंचकर उस के कानों में पड़ी ॥
७। तव पृथिवी हिल गई और डोल उठी
और पहाड़ों की नेवें कांपकर वहुत ही हिल गईं
क्योंकि वह क्रोधित हुआ था ॥
८। उस के नथनों से धूआं निकला
और उस के मुंह से आग निकलकर भस्म करने लगी
जिस से कोएले दहक उठे ॥
९। और वह स्वर्ग को नीचे करके उतर आया
और उस के पांवों तले घोर अन्धकार था ॥
१०। और वह करूव पर चढ़ा हुआ उड़ा
और पवन के पंखों पर चढ़कर वेग से उड़ा ॥
११। उस ने अन्धियारे को अपने छिपने का स्थान और अपनी चारो ओर का मण्डप ठहराया
मेघों का[1] अंधकार और आकाश की काली घटाएं ॥
१२। उस के सन्मुख की झलक से उस की काली घटाएं फट गईं
ओले और अंगारे ॥
१३। तव यहोवा आकाश में गरजा
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई
ओले और अंगारे ॥
१४। और उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को तितर वितर किया
और विजली गिरा गिराकर उन को घवरा दिया ॥
१५। तव जल के नाले देख पड़े
और जगत की नेवें खुल गईं
यह तो हे यहोवा तेरी डांट से
और तेरे नथनों की सांस की झोंक से हुआ ॥
१६। उस ने ऊपर से हाथ वढ़ाकर मुझे थांभ लिया
और गहिरे जल में से खींच लिया ॥
१७। उस ने मेरे वलवन्त शत्रु से
और मेरे वैरियों से जो मुझ से अधिक सामर्थी थे मुझे छुड़ाया ॥
१८। मेरी विपत्ति के दिन उन्हों ने मेरा साम्हना तो किया
पर यहोवा मेरा आश्रय था ॥
१९। और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया
उस ने मुझ को छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था ॥
२०। यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार व्यवहार किया
मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे वदला दिया ॥
२१। क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा
और अपने परमेश्वर से फिरके दुष्ट न वना ॥
२२। उस के सारे नियम मेरे साम्हने वने रहे
और उस की विधियों से मैं हट न गया ॥
२३। और मैं उस के साथ खरा वना रहा
और अधर्म्म से[1] अपने को वचाये रहा ॥
२४। सो यहोवा ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार वदला दिया
मेरे कामों[2] की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था ॥
२५। दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता
खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है ॥
२६। शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता
और टेढ़े के साथ तू तिर्छा वनता है।
२७। क्योंकि तू दीन लोगों को तो वचाता है
पर घमण्ड भरी आंखों को नीची करता है ॥
२८। तू ही मेरे दीपक को वारता है
मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अंधियारे को दूर करके उजियाला कर देता है ॥
२९। तेरी सहायता से मैं दल पर धावा करता

(१) मूल में जलों का।

(१) मूल में, अपने अधर्म्म से। (२) मूल में मेरे हाथों।

ओर अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह
को लांघ जाता हूं ॥
३० । ईश्वर की गति खरी है
यहोवा का वचन ताया हुआ है
वह अपने सब शरणागतों की ढाल ठहरा है ॥
३१ । यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है
हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई
चटान है ॥
३२ । यह वही ईश्वर है जो मेरी कमर बंधाता
और मेरे मार्ग को ठीक करता है ॥
३३ । वह मेरे पैरों को हरिणियों के से करता
और मुझे ऊंचे स्थानों पर[१] खड़ा करता है ॥
३४ । वह मुझे[२] युद्ध करना सिखाता है
मेरी बांहों से पीतल का धनुष नवता है ॥
३५ । तू ने मुझ को बचाव[३] की ढाल दिई
और तू अपने दहिने हाथ से मुझे संभाले हुए है
और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है ॥
३६ । तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा करता है
और मेरे टकने नहीं डिगे ॥
३७ । मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़
लूंगा
और जब लों उन का अन्त न करूं तब लों न
फिरूंगा ॥
३८ । मैं उन्हें ऐसा मारूंगा कि वे उठ न सकेंगे
पर मेरे पांवों के नीचे पड़ेंगे ॥
३९ । और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर बन्धाई
और मेरे विरोधियों को मेरे तले दबा दिया ॥
४० । और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखाई
कि मैं अपने वैरियों का सत्यानाश करूं ।
४१ । उन्हों ने दोहाई तो दिई, पर उन्हें कोई
बचानेहारा न मिला
उन्हों ने यहोवा की भी दोहाई दिई पर उस ने
उन की न सुन लिई ॥
४२ । मैं ने उन को कूट कूटकर पवन से उड़ाई
हुई धूल के समान कर दिया
मैं ने उन्हें सड़कों की कीच के समान निकाल
फेंका ॥
४३ । तू ने मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाकर
अन्यजातियों का प्रधान ठहराया
जिन लोगों को मैं न जानता वे मेरे अधीन हो
गये ॥
४४ । कान से सुनते ही वे मेरे वश में आएंगे
परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे[१] ॥
४५ । परदेशी लोग मुर्झाएंगे
और अपने कोटों में से थरथराते हुए निकलेंगे ॥
४६ । यहोवा जीता है और जो मेरी चटान
ठहरा सो धन्य है
और मेरे बचानेहारे परमेश्वर की बड़ाई हो ॥
४७ । धन्य है मेरा पलटा लेनेहारा ईश्वर
जिस ने देश देश के लोगों को मेरे तले दबा
दिया है.
४८ । और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है
तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊंचा करता
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
४९ । इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा
धन्यवाद करूंगा
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ॥
५० । वह अपने ठहराये हुए राजा का बड़ा
उद्धार करता है
वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उस के
वंश पर युगयुग करुणा करता रहेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ॥

१९. आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है

आकाशमण्डल उस के हाथों के काम प्रगट
करता है ॥
२ । दिन से दिन बातें करता
और रात को रात ज्ञान सिखाती है ॥
३ । न तो बातें न वचन
न उन का कुछ शब्द सुनाई देता है ॥

(१) मूल में मेरे ऊंचे स्थानों पर । (२) मूल में मेरे हाथों को । (३) मूल में, अपने बचाव ।

(१) मूल में परदेशी के लड़के मुझ से झूठ बोलेंगे।

४। उन के स्वर सारी पृथिवी पर
और उन के वचन जगत की छोर लों पहुंच गये हैं
उन में उस ने सूर्य्य के लिये एक डेरा खड़ा किया है ॥
५। सूर्य्य मण्डप से निकलते हुए दुल्हे के समान है
वह वीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है ॥
६। वह आकाश की एक छोर से निकलता है
और वह उस की दूसरी छोर लों चक्कर मारता है
और उस का घाम[1] सब को पहुंचता है ॥
७। यहोवा की व्यवस्था खरी है जी में जी ले आनेहारी
यहोवा की चितौनी विश्वासयोग्य है भोले को बुद्धि देनेहारी ॥
८। यहोवा के उपदेश सीधे हैं हृदय को आनन्दित करनेहारे
यहोवा की आज्ञा निर्मल है आंखों में ज्योति ले आनेहारी ॥
९। यहोवा का भय शुद्ध है अनन्तकाल लों ठहरनेहारा
यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्म्ममय हैं ॥
१०। वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनभाऊ हैं
वे मधु से और टपकनेहारे छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं ॥
११। फिर उन से तेरा दास चिताया जाता है
उन के पालन करने से बड़ा ही बदला मिलता है ॥
१२। अपनी भूलचूक को कौन समझ सके
मेरे गुप्त पापों से तू मुझे निर्दोष ठहरा दे ॥
१३। और ढिठाई[2] से भी अपने दास को रोक रख
वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं तब मैं खरा हूंगा
और बड़े अपराध के विषय निर्दोष ठहरूंगा ॥
१४। हे यहोवा हे मेरी चटान और मेरे छुड़ानेहारे

(१) मूल में गर्मी। (२) वा ढीठों।

मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तुझे भाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

२०. संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले
याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान पर बैठाए ॥
२। वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे
और सिय्योन् से तुझे संभाल ले ॥
३। वह तेरे सब अन्नबलियों को स्मरण करे
और तेरे होमबलि को ग्रहण करे[1]। सेला ॥
४। वह तेरे मन की इच्छा पूरी करे
और तेरी सारी युक्ति को सुफल करे ॥
५। तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे स्वर से गाएंगे
और अपने परमेश्वर के नाम से अपने झण्डे खड़े करेंगे
यहोवा तेरे सब मुंह मांगे वर दे ॥
६। अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार करता है
वह अपने पवित्र स्वर्ग से उस की सुनकर
अपने दहिने हाथ के उद्धार करनेहारे पराक्रम के कामों से सहायता करेगा ॥
७। कोई तो रथों की और कोई घोड़ों की
पर हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम ही की चर्चा करेंगे ॥
८। वे तो झुक गये और गिर पड़े
पर हम उठे और सीधे खड़े हैं ॥
९। हे यहोवा बचा ले
जिस दिन हम पुकारें उस दिन राजा हमारी सुन ले ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का।

२१. हे यहोवा तेरे सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा

(१) मूल में. चिकनाई जानकर ग्रहण करे।

और तेरे किये हुए उद्धार से वह अति मगन
होगा ॥
२ । तू ने उस के मनोरथ को पूरा किया
और उस के मुंह की बिनती को तू ने नाह नहीं
किया । सेला ॥
३ । तू उत्तम आशीषें देता हुआ उस से मिलता है
तू उस के सिर पर कुन्दन का मुकुट पहि-
नाता है ॥
४ । उस ने तुझ से जीवन मांगा
तू ने उस को युग युग का जीवन दिया ॥
५ । उस की महिमा तेरे किये हुए उद्धार के
कारण बड़ी है
विभव और ऐश्वर्य्य तू उस को देता है ॥
६ । तू उस को सदा के लिये आशीषों का
भण्डार ठहराता है
तू उस को अपने सन्मुख हर्ष और आनन्द से
भर देता है ॥
७ । क्योंकि राजा यहोवा पर भरोसा रखता है
और परमप्रधान की करुणा से वह नहीं
टलने का ॥
८ । तू अपने हाथ से अपने सब शत्रुओं को
पकड़ेगा
और अपने दहिने हाथ से अपने वैरियों को
धर लेगा ॥
९ । तू प्रगट होने के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे
की नाईं जलाएगा[1]
यहोवा अपने कोप के मारे उन्हें निगल जाएगा
और आग उन को भस्म कर डालेगी ॥
१० । तू उन की संतान को पृथिवी पर से
और उन के वंश को मनुष्यों में से नाश करेगा ॥
११ । क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि का यत्न किया
उन्हों ने युक्ति निकाली तो है पर उस को पूरी
न कर सकेंगे ॥
१२ । क्योंकि तू अपना धनुष उन के विरुद्ध
चढ़ाएगा

(१) मूल में रखेगा ।

और वे पीठ दिखाकर भागेंगे ॥
१३ । हे यहोवा अपने सामर्थ्य से महान् हो
और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन
सुनाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । अय्येलेतशहर[1] में ।
दाऊद का भजन ।

२२.

हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने
मुझे क्यों छोड़ दिया
मेरी पुकार से क्या बनता मेरा बचाव कहां[2]
२ । हे मेरे परमेश्वर मैं दिन को पुकारता तो
हूं पर तू नहीं सुनता
और रात को भी मैं चुप नहीं रहता ॥
३ । पर हे इस्राएल् की स्तुति के सिंहासन पर
विराजमान
तू तो पवित्र है
४ । हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे
वे भरोसा रखते थे और तू उन्हें छुड़ाता था ॥
५ । वे तेरी ही ओर चिल्लाते और छुड़ाये जाते थे
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और उन की आशा
न टूटती थी ॥
६ । पर मैं कीड़ा हूं मनुष्य नहीं
मनुष्यों में मेरी नामधराई और लोगों में मेरा
अपमान होता है ॥
७ । जितने मुझे देखते हैं सो ठट्ठा करते
और होंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर
हिलाते हैं,
८ । कि यहोवा पर अपना भार डाल वह उस
को छुड़ाए
वह उस को उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न तो है ॥
९ । पर तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला
जब मैं दूध पिउवा बच्चा था तब भी तू ने मुझे
भरोसा रखना सिखाया[3]

(१) अर्थात् भोरवाली हरिणी ।
(२) मूल में मेरे गोहराने के वचन मेरे उद्धार से दूर हैं ।
(३) मूल में भरोसा दिया ।

१० । मैं जन्मते ही तुझ पर डाल दिया गया
माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है ॥
११ । मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है
और कोई सहायक नहीं ॥
१२ । बहुत से सांड़ों ने मुझे घेरा
बाशान् के बलवन्त मेरी चारों ओर आये हैं ॥
१३ । फाड़ने और गरजनेहारे सिंह की नाईं
उन्हों ने मेरे लिये अपना मुंह पसारा है ॥
१४ । मैं जल की नाईं बह गया
और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गये
मेरा हृदय मोम हो गया
वह मेरी देह के भीतर पिघल गया ॥
१५ । मेरा बल टूट गया मैं ठीकरा हो गया
और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई
और तू मुझे मारके मिट्टी में मिला देता है ॥
१६ । क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेरा
कुकर्म्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर आई
उन्हों ने मेरे हाथों और पैरों को छेदा है ॥
१७ । मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं
वे मुझे देखते और निहारते हैं ॥
१८ । वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते
और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं ॥
१९ । पर हे यहोवा तू दूर न रह
हे मेरे सहायक मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥
२० । मेरे प्राण को तलवार से
मेरे जीव को[1] कुत्ते के पंजे से बचा ले ॥
२१ । मुझे सिंह के मुंह से बचा
तू ने मेरी सुनकर बनैले बैलों के सींगों से बचा
लो लिया है ॥
२२ । मैं अपने भाइयों के साम्हने तेरे नाम का
प्रचार करूंगा
सभा के बीच मैं तेरी स्तुति करूंगा ॥
२३ । हे यहोवा के डरवैयो उस की स्तुति करो
हे याकूब के सारे वंश तुम उस की बड़ाई करो
और हे इस्राएल् के सारे वंश तुम उस का
भय मानो ॥

(१) मूल में मेरी एकली को ।

२४ । क्योंकि उस ने दुःखी को तुच्छ नहीं जाना
न उस से घिन किई है
और न उस से अपना मुख छिपा लिया
पर जब उस ने उस की दोहाई दिई तब उस
की सुन लिई ॥
२५ । बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही
ओर से होता है
मैं अपनी मन्नतें उस के डरवैयों के साम्हने पूरी
करूंगा ॥
२६ । नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे
जो यहोवा के खोजी हैं वे उस की स्तुति
करेंगे
तुम्हारे जीव सदा जीते रहें ॥
२७ । पृथिवी के सब दूर दूर देशों के लोग चेत
करके यहोवा की ओर फिरेंगे
और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने
दण्डवत करेंगे ॥
२८ । क्योंकि राज्य यहोवा ही का है
और सब जातियों पर वही प्रभुता करनेहारा है ॥
२९ । पृथिवी के सब हृष्ट पुष्ट लोग भोजन करके
दण्डवत् करेंगे
जितने मिट्टी में मिल जानेहारे हैं
और अपना अपना प्राण नहीं बचा सकते वे
सब उसी के साम्हने घुटने टेकेंगे ॥
३० । उस की सेवा करनेहारा एक वंश होगा
दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा ॥
३१ । लोग आकर उस का धर्म्मी होना
बताएंगे
वे उत्पन्न होनेहारे लोगों से कहेंगे कि उस ने
काम किया है ॥

दाऊद का भजन ।

२३. यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ
घटी न होगी ॥
२ । वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है
वह मुझे सुखदाई जल के पास ले चलता है ॥
३ । वह मेरे जी में जी ले आता है

धर्म्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त
मेरी अगुवाई करता है ॥
४ । चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई
में होकर चलूं
तौभी हानि से न डरूंगा क्योंकि तू मेरे साथ
रहता है
तेरे सोंटे और लाठी से मुझे शांति मिलती
है ॥
५ । तू मेरे सतानेहारों के साम्हने मेरे लिये मेज
लगाता है
तू ने मेरे सिर पर तेल डाला है
मेरा कटोरा उमण्ड रहा है ॥
६ । सचमुच भलाई और करुणा जीवन भर
मेरे पीछे पीछे बनी रहेंगी
और मैं यहोवा के घर में पहुंचकर[१] ढेर दिन
रहूंगा ॥

दाऊद का भजन ।

२४. पृथिवी और जो कुछ उस में है सो
यहोवा ही का है
जगत अपने वासियों समेत उसी का है ॥
२ । क्योंकि उसी ने उस को समुद्रों के ऊपर दृढ़
करके रक्खा
और महानदों के ऊपर स्थिर किया है ॥
३ । यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता
और उस के पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो
सकता है ॥
४ । जिस के काम[२] निर्दोष और हृदय शुद्ध है
जिस ने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं
लगाया
और न कपट से किरिया खाई है ॥
५ । वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा
और अपने उद्धार करनेहारे परमेश्वर की ओर
से धर्म्मी ठहरेगा ॥
६ । ऐसे ही लोग उस के खोजी हैं

(१) मूल में, लौटकर । (२) मूल में के हाथ ।

वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं । सेला ॥
७ । हे फाटको खुल जाओ[१]
और हे सनातन द्वारो खुल जाओ[२]
कि प्रतापी राजा प्रवेश करे ॥
८ । वह प्रतापी राजा कौन है
वह तो सामर्थी और पराक्रमी यहोवा है
वह युद्ध में पराक्रमी यहोवा है ॥
९ । हे फाटको खुल जाओ[१]
और हे सनातन द्वारो तुम भी खुल जाओ[२]
कि प्रतापी राजा प्रवेश करे ॥
१० । वह जो प्रतापी राजा है सो कौन है
सेनाओं का यहोवा वही प्रतापी राजा है । सेला ॥

दाऊद का ।

२५. हे यहोवा मैं अपने मन को तेरी ओर
लगाता[३] हूं ॥
२ । हे मेरे परमेश्वर मैं ने तुझी पर भरोसा
रक्खा है
मेरी आशा टूटने न पाए
मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएं ॥
३ । बरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उन में से
किसी की आशा न टूटेगी
पर जो अकारण विश्वासघाती हैं उन्हीं की
आशा टूटेगी ॥
४ । हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को दिखा दे
अपने पथ मुझे बता दे ॥
५ । मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे
क्योंकि मेरा उद्धार करनेहारा परमेश्वर तू है
दिन भर मैं तेरी ही बाट जोहता रहता हूं ॥
६ । हे यहोवा अपनी दया और करुणा के कामों
को स्मरण कर
क्योंकि वे तो सदा से होते आये हैं ॥
७ । हे यहोवा अपनी भलाई के कारण

(१) मूल में अपने सिर उठाओ । (२) मूल में अपने
को उठाओ । (३) मूल में, उठाता ।

मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को
स्मरण न कर
अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर॥
८। यहोवा भला और सीधा है
इस कारण वह पापियों को अपना मार्ग
दिखाएगा॥
९। वह नम्र लोगों को न्याय पर चलाएगा
और नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखाएगा॥
१०। जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को
पालन करते हैं
उन के लिये उस का सारा व्यवहार करुणा
और सच्चाई का होता है॥
११। हे यहोवा अपने नाम के निमित्त
मेरे अधर्म्म को जो बड़ा है क्षमा कर॥
१२। कोई भी मनुष्य जो यहोवा का भय
मानता हो
यहोवा उस के चुने हुए मार्ग में उस की
अगुवाई करेगा॥
१३। वह कुशल से टिका रहेगा
और उस का वंश पृथिवी का अधिकारी
होगा॥
१४। यहोवा अपने डरवैयों के साथ गाढ़ी मित्रता
रखता है
और अपनी वाचा खोलकर उन को बताता है
१५। मेरी आंखें यहोवा पर टकटकी बान्धे हैं
क्योंकि मेरे पांवों को जाल में से वही
छुड़ाएगा॥
१६। हे यहोवा मेरी ओर फिरके मुझ पर
अनुग्रह कर
क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं॥
१७। मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया
तू मुझे सकेती से निकाल॥
१८। मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर
और मेरे सारे पापों को क्षमा कर॥
१९। मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गये हैं
और मुझ से बड़ा वैर रखते हैं॥
२०। मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा
मेरी आशा टूटने न पाए क्योंकि मैं तेरा
शरणागत हूं॥
२१। खराई और सीधाई मेरी रक्षा करें
क्योंकि मैं तेरी बाट जोहता हूं॥
२२। हे परमेश्वर इस्राएल् को
उस के सारे संकटों से छुड़ा ले॥

दाऊद का।

२६. हे यहोवा मेरा न्याय चुका क्योंकि
मैं खराई से चला हूं
और मेरा भरोसा यहोवा पर अचल बना है॥
२। हे यहोवा मुझ को जांच और परख
मेरे मन और हृदय को ताव॥
३। तेरी करुणा तो मुझे दीखती रहती है
और मैं तेरे सत्य पर चलता फिरता हूं॥
४। मैं निकम्मी चाल चलनेहारों के संग
नहीं बैठा
और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाऊंगा॥
५। मैं कुकर्म्मियों की संगति से बैर रखता हूं
और दुष्टों के संग न बैठूंगा॥
६। मैं अपने हाथों को निर्दोषता के जल से
धोऊंगा
तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा
करूंगा.
७। कि तेरा धन्यवाद ऊंचे शब्द से करूं
और तेरे सब आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करूं॥
८। हे यहोवा मैं तेरे धाम से
तेरी महिमा के निवासस्थान से प्रीति रखता हूं॥
९। मेरे प्राण को पापियों के साथ
और मेरे जीवन को हत्यारों के साथ न मिला दे॥
१०। वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं
और उन का दहिना हाथ घूस से भरा रहता है॥
११। पर मैं तो खराई से चलूंगा
तू मुझे छुड़ा ले और मुझ पर अनुग्रह कर॥
१२। मेरा पांव चौरस स्थान में स्थिर है
सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूंगा॥

दाऊद का।

२७. यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है सो मैं किस से डरूं
यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है सो मैं किस का भय खाऊं॥
२। जब कुकर्म्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से बैर रखते थे
मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई किई थी तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े॥
३। चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी करे
तौभी मैं न डरूंगा
चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई उठे
उस दशा में भी मैं हियाव वान्धे रहूंगा॥
४। एक बर मैं ने यहोवा से मांगा है उसी के यत्न में लगा रहूंगा
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं
जिस से यहोवा की मनोहरता पर टकटकी लगाये रहूं
और उस के मन्दिर में ध्यान किया करूं॥
५। वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रक्खेगा
अपने तंबू के गुप्तस्थान में वह मुझे गुप्त रक्खेगा
और चटान पर चढ़ाये रक्खेगा॥
६। सो अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊंचा होगा
और मैं यहोवा के तंबू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा
और उस का भजन गाऊंगा॥
७। हे यहोवा सुन मैं ऊंचे शब्द से पुकारता हूं
सो तू मुझ पर अनुग्रह करके मेरी सुन ले॥
८। तू ने कहा है कि मेरे दर्शन के खोजी हो इस लिये मेरा मन तुझ से कहता है कि
हे यहोवा तेरे दर्शन का मैं खोजी होता हूं॥
९। अपना मुख मुझ से न छिपा
अपने दास को कोप करके न हटा
तू मेरा सहायक बना है
हे मेरे उद्धार करनेहारे परमेश्वर मेरा त्याग न कर और मुझे छोड़ न दे॥
१०। मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है
पर यहोवा मुझे रख लेगा॥
११। हे यहोवा अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर
और मेरे द्रोहियों के कारण
मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल॥
१२। मुझ को मेरे सतानेहारों की इच्छा पर न छोड़
क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुन में हैं सो मेरे विरुद्ध उठे हैं॥
१३। मैं विश्वास करता हूं[1] कि यहोवा की भलाई को
जीते जी देखने पाऊंगा॥
१४। यहोवा की बाट जोह
हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ रहे
यहोवा की बाट जोहता ही रह॥

दाऊद का।

२८. हे यहोवा मैं तुझी को पुकारूंगा
हे मेरी चटान मेरी सुनी अनसुनी न कर
नहीं तो तेरे चुप लगाये रहने से
मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊंगा॥
२। जब मैं तेरी दोहाई दूं
और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊं
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुनना॥
३। उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट
जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं
पर हृदय में बुराई रखते हैं॥
४। उन के कामों के और उन की करनी की बुराई के अनुसार उन से बर्ताव कर
उन के हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे
उन के कामों का पलटा उन्हें दे॥

(१) मूल में. यदि मैं विश्वास न करता।

५। वे तो यहोवा की क्रिया को
और उस के हाथों के काम को नहीं विचारते
इस लिये वह उन्हें पछाड़ेगा और न उठाएगा ॥
६। यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है ॥
७। यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल ठहरा है
उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है
इस लिये मेरा हृदय हुलसता है
और मैं गा गाकर उस का धन्यवाद करूंगा ॥
८। यहोवा उन का बल है
और अपने अभिषिक्त के बचाव के लिये दृढ़ गढ़ ठहरा है ॥
९। हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे
और उन की चरवाही कर और सदा लों उन्हें संभाले रह ॥

दाऊद का भजन।

२९. हे बलवन्तों के पुत्रो[1] यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ को मानो ॥
२। यहोवा के नाम की महिमा को मानो
पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो ॥
३। यहोवा की वाणी मेघों[2] के ऊपर सुन पड़ती है
प्रतापी ईश्वर गरजता है
यहोवा घने मेघों[3] के ऊपर रहता है ॥
४। यहोवा की वाणी शक्तिमान है
यहोवा की वाणी प्रतापमय है ॥
५। यहोवा की वाणी देवदारुओं को तोड़ डालती है
यहोवा लबानोन् के देवदारुओं को भी तोड़ डालता है ॥

(१) वा ईश्वर के पुत्रो। (२) मूल में, जल। (३) मूल में बहुत जल।

६। वह उन्हें बछड़े की नाईं कुदाता है
वह लबानोन् और शिर्योन् को बनैली गायों के बच्चों के समान उछालता है ॥
७। यहोवा की वाणी बिजली को चमकाती[1] है ॥
८। यहोवा की वाणी वन को कंपाती
यहोवा कादेश् के वन को भी कंपाता है ॥
९। यहोवा की वाणी से हरिणियों का गर्भपात
और अरण्य में पतझड़ होती है
और उस के मन्दिर में सब कुछ महिमा महिमा बोलता रहता है ॥
१०। जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान था
और यहोवा सदा का राजा होकर विराजमान रहता है ॥
११। यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा
यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा ॥

भजन। भवन की प्रतिष्ठा का गीत। दाऊद का।

३०. हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा क्योंकि तू ने मुझे खींचकर निकाला है
और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया ॥
२। हे मेरे परमेश्वर यहोवा
मैं ने तेरी दोहाई दिई थी और तू ने मुझे चंगा किया है ॥
३। हे यहोवा तू ने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है
तू ने मुझ को जीता रक्खा और कबर में पड़ने से बचाया है ॥
४। हे यहोवा के भक्तो उस का भजन गाओ
और जिस पवित्र नाम से उस का स्मरण होता है उस का धन्यवाद करो ॥
५। क्योंकि उस का कोप तो क्षण भर का होता है
पर उस की प्रसन्नता जीवन भर की होती है

(१) मूल में आग की लौवों को चीरती है।

सांझ को रोना आकर रहे तो रहे
पर बिहान को जयजयकार होगा ॥
६। मैं ने तो अपने चैन के समय कहा था
कि मैं कभी नहीं टलने का ॥
७। हे यहोवा अपनी प्रसन्नता से तू ने मेरे पहाड़ को दृढ़ और स्थिर किया था
जब तू ने अपना मुख फेर लिया[1] तब मैं घबरा गया ॥
८। हे यहोवा मैं ने तुझी को पुकारा
और यहोवा से गिड़गिड़ाकर यह बिनती किई कि,
९। मेरे लोहू के बहने के और कबर में पड़ने के समय क्या लाभ होगा
क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती क्या वह तेरी सच्चाई प्रचार कर सकती है ॥
१०। हे यहोवा सुनकर मुझ पर अनुग्रह कर
हे यहोवा तू मेरा सहायक हो ॥
११। तू ने मेरे विलाप को दूर करके मुझे आनन्द से नचाया
तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का फेंटा बांधा है,
१२। इस लिये कि मेरा आत्मा[2] तेरा भजन गाता रहे और कभी चुप न हो
हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं सदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

३१. हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं मेरी आशा कभी टूटने न पाए
तू जो धर्म्मी है सो मुझे छुड़ा ॥
२। अपना कान मेरी ओर लगाकर झट मुझे छुड़ा
मेरे बचाने को दृढ़ चटान और गढ़ का काम दे ॥
३। क्योंकि तू मेरे लिये ढांग और गढ़ ठहरा है
सो अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई कर और मुझे ले चल ॥

(१) मूल में छिपाया। (२) मूल में महिमा।

४। जो जाल उन्हों ने मेरे लिये लगाया है उस में से तू मुझ को छुड़ा
तू तो मेरा दृढ़ स्थान ठहरा है ॥
५। मैं अपने आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूं
हे यहोवा हे सत्यवादी ईश्वर तू ने मुझे छुड़ा लिया है ॥
६। जो व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं उन का मैं बैरी हूं
और मेरा भरोसा यहोवा ही पर है ॥
७। मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित हूंगा
क्योंकि तू ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है
मेरे कष्ट के समय तू ने मेरी सुधि लिई है ॥
८। और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया
तू ने मुझे बेखटका कर दिया है[1] ॥
९। हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं संकट में हूं
मेरी आंखें शोक से धुन्धली पड़ गईं मेरा जीव और पेट सूख गया है ॥
१०। मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी अवस्था कराहते कराहते घट चली
मेरा बल मेरे अधर्म्म के कारण जाता रहा और मेरी हड्डियों में घुन लग गया है ॥
११। मेरे सब सतानेहारों के कारण मेरी नामधराई हुई है
और विशेष करके मेरे पड़ोसियों में हुई है और मैं अपने चिन्हारों के लिये डर का कारण हूं
जो मुझ को सड़क पर देखते सो मुझ से भाग जाते हैं ॥
१२। मैं मुर्दे की नाईं लोगों के मन से बिसर गया
मैं टूटे बासन के समान हो गया हूं ॥
१३। मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना
चारों ओर भय ही भय है
जब उन्हों ने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति किई

(१) मूल में, मेरे पांवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है।

तब मेरा प्राण लेने की युक्ति किई ॥
१४। पर हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रक्खा है
मैं ने कहा कि तू मेरा परमेश्वर है ॥
१५। मेरे दिन[१] तेरे हाथ में हैं
तू मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से और मेरे पीछे पड़नेहारों से बचा ॥
१६। अपने दास पर अपने मुंह का प्रकाश चमका
अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर ॥
१७। हे यहोवा मेरी आशा टूटने न पाए क्योंकि मै ने तुझ को पुकारा है
दुष्टों की आशा टूटे और वे अधोलोक में चुपचाप पड़े रहें ॥
१८। जो अहंकार और अपमान से
धर्म्मी की निन्दा करते हैं
उन के झूठ बोलनेहारे मुंह बन्द किये जाएं ॥
१९। आहा तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी
और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट भी किई है ॥
२०। तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रक्खेगा
तू उन को अपने मण्डप में झगड़े रगड़े से छिपा रक्खेगा ॥
२१। यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मुझे गढ़वाले नगर मे रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा किई है ॥
२२। मै ने तो घबराकर कहा था कि मै यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दिई तब तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना ॥
२३। हे यहोवा के सब भक्तों उस से प्रेम रक्खो
यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता
पर जो अहंकार करता है उस को वह भली भांति बदला देता है ॥
२४। हे यहोवा के सब आशा रखनेहारो
हियाव बांधो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें ॥

(१) मूल में, समय।

दाऊद का। मस्कील्।

३२. क्या ही धन्य है वह जिस का अपराध क्षमा किया गया और जिस का पाप ढांपा गया हो ॥
२। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिस के अधर्म्म का यहोवा लेखा न ले
और उस के आत्मा में कपट न हो ॥
३। जब लों मैं चुप रहा
तब लों दिन भर चीखते चीखते मेरी हड्डियों में घुन लगा रहा ॥
४। क्योंकि रात दिन मै तेरे हाथ के नीचे दबा रहा
और मेरी तरावट धूपकाल की सी झुराहट बनती गई। सेला ॥
५। जब मै ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म्म न छिपाया
और कहा कि मै यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा
तब तू ने मेरे अधर्म्म और पाप को क्षमा किया। सेला ॥
६। इस कारण हर एक भक्त जब उस का पाप उस पर खुल जाए[१] तब तुझ से प्रार्थना करेगा
जल की बड़ी बाढ़ हो तो हो पर निश्चय उस भक्त के पास न पहुंचेगी ॥
७। तू मेरे छिपने का स्थान है तू संकट से मेरी रक्षा करेगा
तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीत सुनवाएगा[२]। सेला ॥
८। मैं तुझे बुद्धि दूंगा और जिस मार्ग मे तुझे चलना हो उस में तेरी अगुवाई करूंगा
मैं तुझ पर कृपादृष्टि करके[३] सम्मति दिया करूंगा ॥

(१) वा जब तू मिल सकता है।
(२) मूल में, तू मुझे छुटकारे के गीतों से घेरेगा।
(३) मूल में, आंख लगाकर।

९। घोड़े और खच्चर के समान न होना जो
समझ नहीं रखते
उन की उमंग लगाम और बाग से रोकनी
पड़ती है
नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के ॥
१०। दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी
पर जो यहोवा पर भरोसा रखता है सो करुणा
से घिरा रहेगा ॥
११। हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन हो
और हे सब सीधे मनवालो जयजयकार करो ॥

३३. हे धर्म्मियो यहोवा के कारण जय-
जयकार करो
क्योंकि सीधे लोगों को स्तुति करनी सजती है ॥
२। वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद
करो
दसतारवाली सारङ्गी बजा बजाकर उस का
भजन गाओ ॥
३। उस के लिये नया गीत गाओ
जयजयकार के साथ भली भांति बजाओ ॥
४। क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है
और उस का सारा काम सच्चाई से होता है ॥
५। वह धर्म्म और न्याय पर प्रीति रखता है
यहोवा की करुणा से पृथिवी भरपूर है ॥
६। आकाशमण्डल यहोवा के वचन से बन गया
और उस सारा गण उस के मुंह की सांस से बना ॥
७। वह समुद्र का जल ढेर की नाईं एकट्ठा करता
वह गहिरे सागर को अपने भण्डार में रखता है ॥
८। सारी पृथिवी के लोग यहोवा से डरें
जगत के सब निवासी उस का भय मानें ॥
९। क्योंकि जब उस ने कहा तब हो गया
जब उस ने आज्ञा दिई तब स्थिर हुआ ॥
१०। यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को व्यर्थ
कर देता
वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को
निष्फल करता है ॥
११। यहोवा की युक्ति सदा स्थिर रहेगी
उस के मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी लों
बनी रहेंगी ॥
१२। क्या ही धन्य है वह जाति जिस का
परमेश्वर यहोवा है
और वह समाज जिसे उस ने अपना निज भाग
होने के लिये चुन लिया हो ॥
१३। यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता
वह सारे मनुष्यों को निहारता है ॥
१४। अपने निवास के स्थान से
वह पृथिवी के सब रहनेहारों को ताकता है ॥
१५। वही है जो उन सभों के मन को गढ़ता
और उन के सब कामों को बूझ लेता है ॥
१६। कोई ऐसा राजा नहीं जो सेना की
बहुतायत के कारण बच सके
बीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता ॥
१७। घोड़ा बचाव के लिये व्यर्थ है
वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं
बचा सकता ॥
१८। देखो यहोवा की दृष्टि उस के डरवैयों पर
और उन पर जो उस की करुणा की आशा
रखते हैं बनी रहती है,
१९। कि वह उन के प्राण को मृत्यु से बचाए
और अकाल के समय उन को जीता रक्खे ॥
२०। हम यहोवा का आसरा तकते आये हैं
वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है ॥
२१। हमारा हृदय उस के कारण आनन्दित
होगा
क्योंकि हम ने उस के पवित्र नाम का भरोसा
रक्खा है ॥
२२। हे यहोवा हम ने जो तेरी आशा रक्खी है
इस लिये तेरी करुणा हम पर हो ॥

दाऊद का। जब वह अबीमेलेक् के साम्हने बौरहा बना और
अबीमेलेक् ने उसे निकाल दिया और वह चला गया।

३४. मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा
करूंगा

उस की स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी ॥
२ । मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा
नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे
३ । मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो
और आओ हम मिलकर उस के नाम की सराहें ॥
४ । मैं यहोवा के पास गया तब उस ने
　मेरी सुन लिई
और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया ॥
५ । जिन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई
उन्हों ने ज्योति पाई
और उन का मुंह कभी काला न होने पाए ॥
६ । इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने
　सुन लिया
और इस को इस के सारे कष्टों से छुड़ा लिया ॥
७ । यहोवा के डरवैयों की चारों ओर उस का
　दूत छावनी किये हुए
उन को बचाता है ॥
८ । परखकर[१] देखो कि यहोवा कैसा भला है
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उस की शरण
　लेता है ॥
९ । हे यहोवा के पवित्र लोगो उस का भय मानो
क्योंकि उस के डरवैयों को किसी बात की
　घटी नहीं होती ॥
१० । जवान सिंहों को घटी हो और वे भूखे रह
　जाएं
पर यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु
　की घटी न होवेगी ॥
११ । हे लड़को आओ मेरी सुनो
मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊंगा,
१२ । कि जो कोई जीवन की इच्छा रखता
और दीर्घायु चाहता हो कि कुशल से रहे,
१३ । अपनी जीभ बुराई से रोक रख
और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल
　की बात न निकले ॥
१४ । बुराई को छोड़ और भलाई कर
मेल को ढूंढ़ और उस का पीछा न छोड़ ॥
१५ । यहोवा की आंखें धर्म्मियों पर लगी
　रहती हैं
और उस के कान भी उन की दोहाई की ओर
　लगे रहते हैं ॥
१६ । यहोवा बुराई करनेहारों के विमुख
　रहता है
कि उन का नाम[१] पृथिवी पर से मिटा डाले ॥
१७ । लोग दोहाई देते और यहोवा सुनता
और उन को सारी विपत्तियों से छुड़ाता है ॥
१८ । यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है
और पिसे हुओं का उद्धार करता है ॥
१९ । धर्म्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती
　तो हैं
पर यहोवा उस को उन सब से छुड़ाता है ॥
२० । वह उस की हड्डी हड्डी की रक्षा करता है
सो उन में से एक भी टूटने नहीं पाती ॥
२१ । दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा पड़ेगा
और धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे ॥
२२ । यहोवा अपने दासों का प्राण बचा लेता है
और जितने उस के शरणागत हैं उन में से कोई
　दोषी न ठहरेगा ॥

दाऊद का ।

३५. हे यहोवा जो मेरे साथ मुकद्दमा
　लड़ते हैं
उन के साथ तू भी मुकद्दमा लड़
जो मुझ से युद्ध करते हैं उन से तू युद्ध कर ॥
२ । ढाल और फरी लेकर मेरी सहायता करने
　को खड़ा हो ॥
३ । और बर्छी को खींच और मेरा पीछा करने-
　हारों के साम्हने आकर उन को रोक
और मुझ से कह कि मैं तेरा उद्धार हूं ॥
४ । जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं उन की आशा
　टूट जाए और वे निरादर हों

(१) मूल में चखकर ।

(१) मूल में स्मरण ।

जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं सो पीछे
हटाये जाएं और उन का मुंह काला हो ॥
५। वे वायु से उड़ जानेहारी भूसी के समान हों
और यहोवा का दूत उन्हें धकियाता जाए ॥
६। उन का मार्ग अंधियारा और फिसलहा हो
और यहोवा का दूत उन को खदेड़ता जाए ॥
७। क्योंकि अकारण उन्हों ने मेरे लिये अपना
जाल गड़हे में लगाया
अकारण ही उन्हों ने मेरा प्राण लेने के लिये गड़हा
खोदा है ॥
८। अचानक उन की विपत्ति हो
और जो जाल उन्हों ने लगाया है उसी में वे
आप फंसें
उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें ॥
९। तब मैं यहोवा के कारण जी से मगन
हूंगा
मैं उस के किये हुए उद्धार से हर्षित हूंगा ॥
१०। मेरी हड्डी हड्डी कहेंगी कि हे यहोवा तेरे
तुल्य कौन है
जो दीन जन को बड़े बड़े बलवन्तों से
बचाता है
और लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों की रक्षा करता है ॥
११। द्रोह करनेहारे साक्षी खड़े होते हैं
और जो बात मैं नहीं जानता वही लोग मुझ
से पूछते हैं ॥
१२। वे मुझ से भलाई के बदले बुराई करते हैं
मैं बन्धुहीन हुआ हूं ॥
१३। मैं तो जब वे रोगी थे तब टाट पहिने रहा
और उपवास कर करके दुःख उठाता था
और मेरी प्रार्थना का फल मुझी को मिलेगा[१] ॥
१४। मैं ऐसा भाव रखता था कि मानो वे मेरे
संगी वा भाई हैं
जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो
वैसा ही मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए
झुका चलता था ॥

(१) मूल में मेरी प्रार्थना मेरी गोद में लौट आएगी ।

१५। पर वे लोग जब मैं लंगड़ाने लगा तब
आनन्दित होकर एकट्ठे हुए
नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था सो
मेरे विरुद्ध एकट्ठे हुए
वे मुझे लगातार फाड़ते रहे ॥
१६। उन पाखण्डी भांड़ों की नाईं जो पेट के
लिये उपहास करते हैं
वे भी मुझ पर दांत पीसते हैं ॥
१७। हे प्रभु तू कब लों देखता रहेगा
इस विपत्ति से जिस में उन्हों ने मुझे डाला है
मुझ को छुड़ा
जवान सिंहों से मेरे जीव[१] को बचा ले ॥
१८। तब मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूंगा
बहुतेरे लोगों के बीच में तेरी स्तुति करूंगा ॥
१९। मेरे झूठ बोलनेहारे शत्रु मेरे विरुद्ध आनन्द
न करने पाएं
जो अकारण मेरे बैरी हैं सो आपस में नैन से
सैन न करने पाएं ॥
२०। क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते
पर देश में जो चुपचाप रहते हैं उन के विरुद्ध
छल की कल्पनाएं करते हैं ॥
२१। और उन्हों ने मेरे विरुद्ध मुंह पसारके कहा
आहा आहा हम ने अपनी आंखों से
देखा है ॥
२२। हे यहोवा तू ने तो देखा है सो चुप न रह
हे प्रभु मुझ से दूर न रह ॥
२३। उठ मेरे न्याय के लिये जाग
हे मेरे परमेश्वर हे मेरे प्रभु मेरा मुकद्दमा निप-
टाने के लिये आ ॥
२४। हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू जो धर्मी है इस
लिये मेरा न्याय चुका
और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे ॥
२५। वे मन में न कहने पाएं कि आहा हमारी
इच्छा पूरी हुई
हम उस को निगल गये हैं ॥

(१) मूल में मेरी एकली ।

२६। जो मेरी हानि से आनन्दित हैं उन के मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं सो लज्जा और अनादर से ढंप जाएं॥
२७। जो मेरे धर्म्म से प्रसन्न रहते हैं सो जयजयकार और आनन्द करें
और निरन्तर कहते रहें कि यहोवा की बड़ाई हो
जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है॥
२८। तब मेरे मुंह से तेरे धर्म्म की चर्चा होगी
और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। यहोवा के दास दाऊद का।

३६. दुष्ट जन के हृदय के भीतर अपराध की वाणी हुआ करती है

परमेश्वर का भय उस के मन[1] में नहीं आता॥
२। वह अपने अधर्म्म के खुलने और घिनौने ठहरने के विषय
अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है॥
३। उस की बातें अनर्थ और छल की हैं
उस ने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ उठाया है॥
४। वह अपने बिछौने पर पड़े पड़े अनर्थ की कल्पना करता है
वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है
बुराई से वह हाथ नहीं उठाता॥
५। हे यहोवा तेरी करुणा स्वर्ग में है
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है॥
६। तेरा धर्म्म ईश्वर के पर्वतों के समान है
तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं
हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है॥
७। हे परमेश्वर तेरी करुणा कैसी अनमोल है
मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं॥
८। वे तेरे भवन में के चिकने भोजन से तृप्त होंगे

(१) मूल में उस की आंखों के साम्हने।

और तू अपनी सुखनदी में से उन्हें पिलाएगा॥
९। क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे।
१०। अपने जाननेहारों पर करुणा करता रह
और अपने धर्म्म के काम सीधे मनवालों से करता रह।
११। अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए
और न दुष्ट अपने हाथ के बल से मुझे भगाने पाए॥
१२। वहां अनर्थकारी गिर पड़े हैं
वे ढकेल दिये गये और फिर उठ न सकेंगे॥

दाऊद का।

३७. कुकर्म्मियों के कारण मत कुढ़

कुटिल काम करनेहारों के विषय डाह न कर॥
२। क्योंकि वे घास की नाईं झट कट जाएंगे
और हरी घास की नाईं मुर्झा जाएंगे॥
३। यहोवा पर भरोसा रख और भला कर
देश में बसा रह और सच्चाई में मन लगाये रह॥
४। यहोवा को अपने सुख का मूल जान
और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा॥
५। अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़
और उस पर भरोसा रख वही पूरा करेगा॥
६। और वह तेरा धर्म्म ज्योति की नाईं
और तेरा न्याय दो पहर के उंजियाले की नाईं प्रगट करेगा॥
७। यहोवा के साम्हने चुपचाप रह और धीरज से उस का आसा रख
उस के कारण न कुढ़ जिस के काम सुफल होते हैं
और वह बुरी युक्तियों को निकालता है।
८। कोप से परे रह और जलजलाहट को छोड़ दे
मत कुढ़ उस से बुराई ही निकलेगी।
९। कुकर्म्मी लोग काट डाले जाएंगे
और जो यहोवा की बाट जोहते हैं सोई पृथिवी के अधिकारी होंगे॥

१० । थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेहीगा नहीं
और तू उस के स्थान को भली भांति देखने पर भी उस को न पाएगा ॥
११ । पर नम्र लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे
और बड़ी शांति के कारण सुख मानेंगे ॥
१२ । दुष्ट धर्म्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता
और उस पर दांत पीसता है ॥
१३ । प्रभु उस पर हंसेगा
क्योंकि वह देखता है कि उस का दिन आनेहारा है ॥
१४ । दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष चढ़ाये हैं
कि दीन दरिद्र को गिरा दें
और सीधी चाल चलनेहारों को वध करें ॥
१५ । उन की तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे
और उन के धनुष तोड़े जाएंगे ॥
१६ । धर्म्मी का थोड़ा सा
बहुत से दुष्टों के ढेर से उत्तम है ॥
१७ । क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तो तोड़ी जाएंगी
पर यहोवा धर्म्मियों को संभालता है ॥
१८ । यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है
और उन का भाग सदा लों बना रहेगा ॥
१९ । विपत्ति के समय उन की आशा न टूटेगी
और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे ॥
२० । दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास की नाईं नाश होंगे
वे धूएं की नाईं बिलाय जाएंगे ॥
२१ । दुष्ट ऋण लेता है और भरता नहीं
पर धर्म्मी अनुग्रह करके दान देता है ॥
२२ । क्योंकि जो उस से आशीष पाते हैं सो तो पृथिवी के अधिकारी होंगे
पर जो उस से सापित होते हैं सो नाश हो जाएंगे ॥
२३ । मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है
और उस के चलन से वह प्रसन्न रहता है ॥
२४ । चाहे वह गिरे तौभी पिछा न दिया जाएगा
क्योंकि यहोवा उस का हाथ थांभे रहता है ॥
२५ । मैं लड़कपन से ले बुढ़ापे लों देखता आया हूं
पर न तो कभी धर्म्मी को त्यागा हुआ
और न उस के वंश को टुकड़े मांगते देखा है ॥
२६ । वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है
और उस के वंश पर आशीष फलती रहती है ॥
२७ । बुराई को छोड़ और भलाई कर
और तू सदा लों बना रहेगा ॥
२८ । क्योंकि यहोवा न्याय में प्रीति रखता
और अपने भक्तों को न तजेगा
उन की तो रक्षा सदा होती है
पर दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा ॥
२९ । धर्म्मी लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे
और उस पर सदा बसे रहेंगे ॥
३० । धर्म्मी अपने मुंह से बुद्धि की बातें करता
और न्याय का वचन कहता है ॥
३१ । उस के परमेश्वर की व्यवस्था उस के हृदय में बनी रहती है
उस के पैर नहीं फिसलते ॥
३२ । दुष्ट धर्म्मी की ताक में रहता
और उस के मार डालने का यत्न करता है ॥
३३ । यहोवा उस को उस के हाथ में न छोड़ेगा
और जब उस का विचार किया जाए तब वह उसे दोषी न ठहराएगा ॥
३४ । यहोवा की बाट जोहता रह और उस के मार्ग पर बना रह
और वह तुझे बढ़ाकर पृथिवी का अधिकारी कर देगा
जब दुष्ट काट डाले जाएंगे तब तू देखेगा ॥
३५ । मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुआ देखा
जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज देश में फैले ॥

३६ । पर किसी ने उधर से जाते हुए क्या देखा कि वह है ही नहीं
और मैं ने भी उसे ढूंढ़कर कहीं न पाया ॥
३७ । खरे को ताक और सीधे को देख रख
क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल होगा ॥
३८ । पर अपराधी एक साथ सत्यानाश किये जाएंगे
दुष्टों का अन्तफल काटा जाएगा ॥
३९ । धर्म्मियों का बचाव यहोवा की ओर से होता है
संकट के समय वह उन का दृढ़ स्थान ठहरता है ॥
४० । और यहोवा उन की सहायता करके उन को छुड़ाता है
वह उन को दुष्टों से छुड़ाकर उन का उद्धार करता है
इस लिये कि वे उस के शरणागत हैं ॥

दाऊद का भजन । स्मरण कराने के लिये ।

३८. हे यहोवा क्रोध करके मुझे न डांट

न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर ॥
२ । क्योंकि तेरे तीर मेरे बिध गये
और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूं ॥
३ । तेरे रोष के कारण मेरे शरीर में कुछ आरोग्यता नहीं
मेरे पाप के हेतु मेरी हड्डियों में कुछ चैन नहीं ॥
४ । क्योंकि मेरे अधर्म्म के कामों में मेरा सिर डूब गया
और वे भारी बोझ की नाईं मेरे सहने से बाहर हो गये हैं ॥
५ । मेरी मूढ़ता के कारण
मेरे कोड़े खाने के घाव बसाते और सड़ते हैं ॥
६ । मैं झुक गया मैं बहुत ही निहुड़ गया
दिन भर मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता हूं ॥
७ । क्योंकि मेरी कटि भर में जलन है
और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं ॥
८ । मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया
मैं अपने मन की घबराहट से चिल्लाता हूं ॥
९ । हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सन्मुख है
और मेरा कराहना तुझ को सुन पड़ता है[१] ॥
१० । मेरा हृदय धड़कता है मेरा बल जाता रहा
और मेरी आंखों में भी कुछ ज्योति नहीं रही ॥
११ । मेरे मित्र और मेरे संगी मेरी विपत्ति में अलग खड़े हैं
मेरे कुटुम्बी भी दूर खड़े हो गये हैं ॥
१२ । और मेरे प्राण के गाहक फन्दे लगाते
और मेरी हानि के यत्न करनेहारे दुष्टता की बात बोलते
और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं ॥
१३ । पर मैं बहिरे की नाईं सुनता नहीं
और गूंगे के समान हूं जो बोल नहीं सकता ॥
१४ । मैं ऐसे मनुष्य के सरीखा हूं जो कुछ नहीं सुनता
और जिस के मुंह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती ॥
१५ । क्योंकि हे यहोवा मैं ने तेरी ही आशा लगाई है
हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर तू ही उत्तर देगा ॥
१६ । मैं ने कहा ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें
क्योंकि जब मेरा पांव टल जाता तब वे मुझ पर बड़ाई मारते हैं ॥
१७ । और मैं तो अब लंगड़ाने ही पर हूं
और लगातार पीड़ा ही भोगता रहता हूं ॥
१८ । मैं तो अपने अधर्म्म को प्रगट करूंगा
मैं अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा ॥
१९ । पर मेरे शत्रु फुर्तीले और सामर्थी हैं
और मेरे झूठ बोलनेहारे वैरी बहुत हो गये हैं ॥
२० । और जो भलाई के पलटे में बुराई करते हैं

(१) मूल में तुझ से छिपा नहीं ।

सो मेरे भलाई के पीछे चलने के कारण मुझ से विरोध करते हैं ॥
२१। हे यहोवा मुझे न छोड़
हे मेरे परमेश्वर मुझ से दूर न रह ॥
२२। हे यहोवा हे मेरे उद्धार
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥

यदूतून् प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

३९. मैं ने कहा मैं अपनी चालचलन में चौकसी करूंगा
न हो कि वचन से पाप करूं
जब लों दुष्ट मेरे साम्हने रहे
तब लों मैं ठाठी लगाये अपना मुंह बन्द किये रहूंगा ॥
२। मैं मौन गहकर गूंगा बन गया भली बात भी न बोला
और मेरी पीड़ा बढ़ती गई ॥
३। मेरा हृदय जल उठा
मेरे सोचते सोचते आग भड़क उठी
तब मैं बोल उठा कि,
४। हे यहोवा मेरा अन्त मुझे जता
और यह कि मेरे दिन कितने हैं
जिस से मैं जान लूं कि कैसा अनित्य हूं ॥
५। देख तू ने मेरे दिनों को चौवे भर के किये
और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं
सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तौभी सांस ठहरे हैं। सेला ॥
६। सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है
सचमुच उस की घबराहट व्यर्थ है
वह धन का संचय तो करता है पर नहीं जानता कि किस के भण्डार में पड़ेगा ॥
७। और अब हे प्रभु मैं किस बात की बाट जोहूं
मेरी आशा तेरी ओर लगी है ॥
८। मुझे मेरे सब अपराधों के बंधन से छुड़ा
मूढ़ को मेरी नामधराई न करने दे ॥
९। मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला
क्योंकि यह काम तू ने किया है ॥
१०। तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे दूर कर
क्योंकि मैं तेरे हाथ की मार से मिट चला ॥
११। जब तू मनुष्य को अधर्म्म के कारण दपट दपटकर ताड़ना देता है
तब तू उस की मनभावनी वस्तुओं को कीड़े की नाईं नाश करता है
सचमुच सब मनुष्य सांस ठहरे हैं। सेला ॥
१२। हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई पर कान धर
मेरा रोना सुनने से कान न मूंद
क्योंकि मैं तेरे संग उपरी होकर रहता हूं
और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं ॥
१३। उस से पहिले कि मैं जाता रहूं और आगे को न रहूं
मेरी ओर से मुंह फेर कि मेरा मन हरा हो जाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

४०. मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा
और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी ॥
२। उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा
और मुझ को ढांग पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है ॥
३। और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है
बहुतेरे यह देखकर डरेंगे
और यहोवा पर भरोसा रक्खेंगे ॥
४। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने यहोवा को अपना आधार माना हो
और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेहारों की ओर मुंह न फेरता हो ॥
५। हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने बहुत से काम किये हैं

जो आश्चर्य्यकर्म्म और कल्पनाएं तू हमारे लिये करता है सो बहुत सी हैं
तेरे तुल्य कोई नहीं
मैं तो चाहता हूं कि खोलकर उन की चर्चा करूं
पर उन की गिनती कुछ भी नहीं हो सकती ॥
६। मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता
तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं
होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा ॥
७। तब मैं ने कहा देख मैं आया हूं
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है ॥
८। हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं
और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बनी है ॥
९। मैं ने बड़ी सभा में धर्म्म का शुभ समाचार प्रचारा है
देख मैं ने अपना मुंह बन्द नहीं किया
हे यहोवा तू इसे जानता है ॥
१०। मैं ने तेरा धर्म्म मन ही में नहीं रक्खा
मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किये हुए उद्धार की चर्चा किई है
मैं ने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रक्खी ॥
११। हे यहोवा तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले
तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे ॥
१२। क्योंकि मैं अनगिनित बुराइयों से घिरा हुआ हूं
मेरे अधर्म्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं कर सकता
वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं
सो मेरे जी में जी नहीं रहा ॥
१३। हे यहोवा कृपा करके मुझे छुड़ा
हे यहोवा मेरी सहायता के लिये फुर्त्ती कर ॥
१४। जो मेरे प्राण की खोज में हैं
उन सभों की आशा टूट जाए और उन के मुंह काले हों
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
सो पीछे हटाये और निरादर किये जाएं ॥
१५। जो मुझ से आहा आहा कहते हैं
सो अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों ॥
१६। जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों
जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि यहोवा की बड़ाई हो ॥
१७। मैं तो दीन और दरिद्र हूं
तौभी प्रभु मेरी चिन्ता करता है
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

४१. क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की सुधि रखता है

विपत्ति के दिन यहोवा उस को बचाएगा ॥
२। यहोवा उस की रक्षा करके उस को जीता रक्खेगा और वह पृथिवी पर भाग्यवान होगा
तू उस को शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़ ॥
३। जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो तब यहोवा उसे संभालेगा
तू रोग में उस के सारे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा ॥
४। मैं ने कहा हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर
मुझ को चंगा कर मैं ने तो तेरे विरुद्ध पाप किया है ॥
५। मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई कहते हैं
कि वह कब मरेगा और उस का नाम कब मिटेगा ॥
६। और जब कोई मुझे देखने आता है तब वह व्यर्थ बातें बकता है
वह मन में अनर्थ की बातें सचय करता है

और बाहर जाकर उन की चर्चा करता है ॥
७। मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं
वे मेरे ही विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं ॥
८। वे कहते हैं कि वह किसी ओछेपन का फल भोग रहा होगा
और वह जो पड़ा है सो फिर न उठेगा ॥
९। मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था और वह मेरी रोटी खाता था
उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है ॥
१०। पर हे यहोवा तू मुझ पर अनुग्रह करके मुझ को उठा
कि मैं उन को बदला दूं ॥
११। मेरा शत्रु जो मुझ पर जयजयकार करने नहीं पाता
इस से मैं ने जान लिया है कि तू मुझ से प्रसन्न है ॥
१२। और मुझे तो तू खराई में संभालता
और सदा के लिये अपने सन्मुख स्थिर करता है ॥
१३। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा
सदा से सदा लों धन्य है
आमेन् फिर आमेन् ॥

दूसरा भाग ।

प्रधान बजानेहारे के लिये । मस्कील् । कोरहवंशियों का ।

४२. जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हांफती है
वैसे ही हे परमेश्वर मैं तेरे लिये हांफता हूं ॥
२। जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं[1] प्यासा हूं
मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा ॥
३। मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं
और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं कि तेरा परमेश्वर कहां रहा ॥
४। मैं भीड़ के संग जाया करता था
मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेहारी भीड़ के बीच परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था
यह स्मरण करके मेरा जी उदास होता है[2] ॥
५। हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह
क्योंकि मैं उस के दर्शन से उद्धार पाकर
फिर उस का धन्यवाद करने पाऊंगा ॥
६। हे मेरे परमेश्वर मेरा जीव ढया जाता है
इस लिये मैं यर्दन के पास के देश में
और हेर्मोन् के पहाड़ों और मिसार् की पहाड़ी के पास रहते हुए तुझे स्मरण करता हूं ॥
७। तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल जल को पुकारता है
तेरे सारे तरंगों और ढेवों में मैं डूब गया हूं ॥
८। पर दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा
और रात को भी मैं उस का गीत गाऊंगा
और मेरे जीवनदाता ईश्वर से मेरी प्रार्थना होगी ॥
९। मैं ईश्वर से जो मेरी ढांग ठहरा है कहूंगा
कि तू ने मुझे क्यों बिसरा दिया है
मुझे शत्रु के अंधेर के मारे क्यों शोक का पहिरावा पहिने हुए चलना पड़ता है ॥
१०। मेरे सतानेहारे जो मुझे चिढ़ाते हैं उस से मेरी हड्डियां कटार से छिदी जाती हैं ।

---

(१) मूल में मैं अपना जीव अपने ऊपर उंडेलता हूं ।
(२) मूल में, मेरा जीव ।

क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते हैं कि
तेरा परमेश्वर कहां रहा ॥
११। हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि मैं फिर
उस का धन्यवाद करने पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक[1] और मेरा परमेश्वर है ॥

४३ हे परमेश्वर मेरा न्याय चुका और
अभक्त जाति से मेरा मुकद्दमा लड़
मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा ॥
२। क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा दृढ़ गढ़ है तू ने
क्यों मुझे त्याग दिया है
मुझे शत्रु के अंधेर के मारे शोक का पहिरावा
पहिने हुए क्यों चलना पड़ता है ॥
३। अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को प्रगट
कर कि वे मेरी अगुवाई करें
वे मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर
तेरे निवास में पहुंचाएं ॥
४। तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा
उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का सार है
हे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर मैं वीणा बजा बजा-
कर तेरा धन्यवाद करूंगा ॥
५। हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि मैं फिर
उस का धन्यवाद करने पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक[1] और मेरा परमेश्वर है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरहवंशियों का । मस्कील ।

४४. हे परमेश्वर हम ने अपने कानों से
सुना हमारे बापदादों ने हम से
वर्णन किया है
कि तू ने उन के दिनों और प्राचीनकाल में
क्या काम किया था ॥
२। तू ने अपने हाथ से जातियों को निकाल
दिया और उन को बसाया
तू ने देश देश के लोगों को दुःख दिया और
उन को फैला दिया ॥
३। क्योंकि वे अपनी तलवार के बल से इस
देश के अधिकारी न हुए
और न अपने बाहुबल से
पर तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे
प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हो गये
क्योंकि तू उन को चाहता था ॥
४। हे परमेश्वर तू ही हमारा राजा है
तू याकूब के उद्धार की आज्ञा दे ॥
५। तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर
गिरा देंगे
तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को
रौंदेंगे ॥
६। क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूंगा
और न अपनी तलवार के बल से बचूंगा ॥
७। तू ही ने हम को द्रोहियों से बचाया
और हमारे वैरियों को निराश किया है ॥
८। हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर जताते हैं
और सदा लों तेरे नाम का धन्यवाद करते
रहेंगे । सेला ॥
९। पर अब तू ने हम को त्याग दिया और
हमारा अनादर किया है
और हमारे दलों के साथ पयान नहीं करता ॥
१०। तू हम को शत्रु के साम्हने से हटा देता है
और हमारे वैरी मनमानते लूट लेते हैं ॥
११। तू हमें कसाई की भेड़ों के समान कर देता है
और हम को अन्यजातियों में तितर बितर
करता है ॥
१२। तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत बेच डालता है
उन के मोल से तू धनी नहीं होता ॥
१३। तू हमारे पड़ोसियों से हमारी नामधराई
कराता है
और हमारी चारों ओर के रहनेहारे हम से हंसी
ठट्ठा करते हैं ॥
१४। तू हम को अन्यजातियों के बीच उपमा
ठहराता है

(१) मूल में का उद्धार ।

और देश देश के लोग हमारे कारण सिर हिलाते हैं॥
१५। दिन भर हमें अनादर सहना पड़ता है
और उस कलंक लगाने और निन्दा करनेहारे के बोल से,
१६। जो शत्रु होकर बैर लेता है
हमारे मुंह पर लज्जा छा गई है॥
१७। यह सब कुछ हम पर बीतने पर भी हम तुझे नहीं भूले
न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है॥
१८। हमारा मन पीछे नहीं हटा
न हमारे पैर तेरी बाट से फिर गये हैं॥
१९। तौभी तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला
और हम पर घोर अंधकार छवा दिया है॥
२०। यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते
वा किसी पराये देवता की ओर अपने हाथ फैलाते,
२१। तो क्या परमेश्वर इस का विचार न करता
वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है॥
२२। पर हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते
और कसाई की भेड़ों के समान ठहरते हैं॥
२३। हे प्रभु उठ क्यों सोता है
जाग हम को सदा के लिये त्याग न दे॥
२४। तू क्यों अपना मुख फेर लेता[1]
और हमारा दुःख और दब जाना भूल जाता है॥
२५। हमारा जीव मिट्टी से लग गया
हमारा पेट भूमि से सट गया है॥
२६। हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो
और अपनी करुणा के निमित्त हम को छुड़ा ले॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। शोशन्नीम् में। कोरहवंशियों का। मस्कील्। प्रेम प्रीति का गीत।

४५. मेरे मन में भली बात उबल रही है
जो बात मैं ने राजा के विषय में रची है उस को सुनाता हूं
मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी बनी है॥
२। तू मनुष्यों में सब से अति सुन्दर है
तेरे होंठों में अनुग्रह भरा हुआ है
इस कारण परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दिई है॥
३। हे वीर अपना विभव और प्रताप
अपनी तलवार कटि पर बांध॥
४। और अपने प्रताप के साथ सवार होकर
सत्यता नम्रता और धर्म्म के निमित्त भाग्यवान हो
और अपने दहिने हाथ से भयानक काम करता जाए[1]॥
५। तेरे तीर तो तेज हैं
तेरे साम्हने देश देश के लोग गिरेंगे
राजा के शत्रुओं के हृदय उन से छिदेंगे॥
६। हे परमेश्वर तेरा सिंहासन[2] सदा सर्वदा बना रहेगा
तेरा राजदण्ड न्याय का है॥
७। तू ने धर्म्म में प्रीति और दुष्टता से बैर रक्खा है
इस कारण परमेश्वर ने तेरे परमेश्वर ने
तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है॥
८। तेरे सारे वस्त्र गन्धरस अगर और तज से सुगन्धित हैं
तू हाथीदांत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है॥
९। तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियां भी हैं
तेरी दहिनी ओर पटरानी ओपीर् के कुन्दन से विभूषित खड़ी है॥
१०। हे राजकुमारी सुन और कान लगाकर ध्यान दे
अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा॥
११। और राजा तेरे रूप की चाह करेगा
वह तो तेरा प्रभु है सो तू उसे दण्डवत् कर॥

(१) मूल में छिपाता।

(१) मूल में तेरा दहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखाए।
(२) वा तेरा सिंहासन परमेश्वर का है और।

१२। सोर् की राजकुमारी भी भेंट लिये हुए उपस्थित होगी
प्रजा में के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे ॥
१३। राजकुमारी रनवास में अति शोभायमान है
उस के वस्त्र में सोनहले बूटे कढ़े हुए हैं ॥
१४। वह बूटेदार वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुंचाई जाएगी
जो कुमारियां उस की सहेलियां हैं
सो उस के पीछे पीछे चलती हुई तेरे पास पहुंचाई जाएंगी ॥
१५। वे आनन्दित और मगन होकर पहुंचाई जाएंगी
और राजा के मन्दिर में प्रवेश करेंगी ॥
१६। तेरे पितरों के बदले तेरे पुत्र होंगे
जिन को तू सारी पृथिवी पर हाकिम ठहराएगा ॥
१७। मैं ऐसा करूंगा कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी लों होती रहेगी
इस कारण देश देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियो का। अलामोत् में। गीत।

४६. परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है

संकट में सहायक जो अति सहज से मिलता है ॥
२। इस कारण हम न डरेंगे चाहे पृथिवी उलट जाए
और पहाड़ समुद्र के मध्य में डोलकर गिरें ॥
३। चाहे समुद्र गरजे और फेनाए
और पहाड़ उस के बढ़ने से कांप उठें। सेला ॥
४। एक नदी है जिस की नहरों से परमेश्वर के नगर में
परमप्रधान के पवित्र निवास में आनन्द होता है ॥
५। परमेश्वर उस नगर के बीच में है वह नहीं टलने का
पह फटते ही परमेश्वर उस की सहायता करता है ॥
६। जाति जाति के लोग गरज उठे राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे
वह बोल उठा और पृथिवी पिघल गई ॥
७। सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है। सेला ॥
८। आओ यहोवा के महाकर्म्म देखो
कि उस ने पृथिवी पर कैसा उजाड़ किया है ॥
९। वह पृथिवी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है
वह धनुष को तोड़ता और भाले को दो टुकड़े करता
और रथों को आग में झोंक देता है ॥
१०। रह जाओ और जान लो कि परमेश्वर मैं ही हूं
मैं जातियों में महान् हूंगा
मैं पृथिवी भर में महान् हूंगा ॥
११। सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है। सेला ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियो का। भजन।

४७. हे देश देश के सब लोगो तालियां बजाओ

ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो ॥
२। क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है
वह सारी पृथिवी के ऊपर महान् राजा है ॥
३। वह देश देश के लोगों को हमारे तले दबाता
और अन्यजातियों को हमारे पांवों के नीचे कर देता है ॥
४। वह हमारे लिये उत्तम भाग निकालता है
जो उस के प्रिय याकूब के घमण्ड का कारण है। सेला ॥
५। परमेश्वर जयजयकार सहित
यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है ॥
६। परमेश्वर का भजन गाओ भजन गाओ
हमारे राजा का भजन गाओ भजन गाओ ॥
७। क्योंकि परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा है
समझ बूझकर भजन गाओ ॥

८। परमेश्वर जाति जाति पर राजा हुआ है
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान हुआ है ॥
९। राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा होकर एकट्ठे हुए हैं
क्योंकि पृथिवी की ढालें परमेश्वर के वश में हैं
वह तो अति महान् हुआ है ॥

गीत । भजन । कोरहवंशियों का ।

४८. हमारे परमेश्वर के नगर में और उस के पवित्र पर्वत पर
यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है ॥
२। सिय्योन् पर्वत ऊंचाई में सुन्दर और सारी पृथिवी के हर्ष का कारण
राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे पर है ॥
३। परमेश्वर उस के महलों में ऊंचा गढ़ माना गया है ॥
४। देखो राजा लोग एकट्ठे हुए
वे एक संग आगे बढ़ गये ॥
५। उन्हों ने आप देखा और देखते ही विस्मित हुए
वे घबराकर भाग गये ॥
६। वहीं कपकपी ने उन को पकड़ा
और जननेहारी स्त्री की सी पीड़ें उन्हें उठीं ॥
७। तू पुरवाई से
तर्शीश् के जहाजों को तोड़ डालता है ॥
८। सेनाओं के यहोवा के नगर में
अपने परमेश्वर के नगर में जैसा हम ने सुना था वैसा देखा भी है
परमेश्वर उस को सदा दृढ़ रक्खेगा । सेला ॥
९। हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर
तेरी करुणा पर ध्यान किया है ॥
१०। हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य
तेरी स्तुति पृथिवी की छोर लों होती है
तेरा दहिना हाथ धर्म्म से भरा है ॥
११। तेरे न्याय के कामों के कारण
सिय्योन् पर्वत आनन्द करे
और यहूदा के नगर[1] मगन हों ॥
१२। सिय्योन् की चारों ओर चलो और उस की परिक्रमा करो
उस के गुम्मटों को गिन लो ॥
१३। उस की शहरपनाह पर मन लगाओ उस के महलों को ध्यान से देखो
कि तुम आनेहारी पीढ़ी के लोगों से इस बात का वर्णन कर सको ॥
१४। क्योंकि यह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर रहेगा
वह मृत्यु लों हमारी अगुवाई करेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियों का । भजन ।

४९. हे देश देश के सब लोगो यह सुनो
हे संसार के सब निवासियो,
२। क्या बड़े क्या छोटे
क्या धनी क्या दरिद्र कान लगाओ ॥
३। मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी
और मेरे मन की बातें समझ की होंगी ॥
४। मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊंगा
मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त बात खोलकर कहूंगा ।
५। विपत्ति के दिनों में जब मैं अपने अड़ंगा मारनेहारों की बुराइयों में घिरूं
तब मैं क्यों डरूं ॥
६। जो अपनी संपत्ति पर भरोसा रखते
और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं,
७। उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता
न परमेश्वर को उस की सन्ती प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है ॥
८। क्योंकि उन के प्राण की छुड़ौती भारी है
यहां लों कि वह कभी न मिलेगी ॥
९। कोई ऐसा नहीं जो सदा जीता रहे

(१) मूल में बेटियां ।

वा उस को सा न पड़े ॥
१० । क्योंकि देखने में आता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं
और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनों नाश होते हैं
और अपनी संपत्ति औरों के लिये छोड़ जाते हैं ॥
११ । वे मन ही मन यह सोचते हैं कि हमारे घर सदा ठहरेंगे
और हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहेंगे
इस लिये वे अपनी अपनी भूमि का नाम अपने अपने नाम पर रखते हैं ॥
१२ । पर मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी ठहरने का नहीं
वह पशुओं के समान होता है जो मर मिटते हैं ॥
१३ । उन की यह चाल उन की मूर्खता है
तौभी जो उन के पीछे आते हैं सो उन की बात से प्रसन्न होते हैं । सेला ॥
१४ । वे अधोलोक की मानो भेड़ बकरियां ठहराये गये हैं
मृत्यु उन की चरानेहारी ठहरी
और विहान को सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे
और उन का रूप अधोलोक में मिटता जाएगा और उस का कोई आधार न रहेगा ॥
१५ । परन्तु परमेश्वर मुझ को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा
वह तो मुझे रख लेगा । सेला ॥
१६ । जब कोई धनी होए और उस के घर का विभव बढ़ जाए
तब तू न डरना ॥
१७ । क्योंकि वह मरने के समय कुछ भी न ले जाएगा
न उस का विभव उस के साथ कबर में जाएगा ॥
१८ । चाहे वह जीते जी अपने आप को धन्य गिने
(जब तू अपनी भलाई करता है तब तो लोग तेरी प्रशंसा करते हैं),
१९ । तौभी वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा
जो कभी उजियाला न देखेंगे ॥
२० । मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हो पर समझ न रखे
तो पशुओं के समान है जो मर मिटते हैं ॥

आसाप् का भजन ।

५०. **ईश्वर** परमेश्वर यहोवा ने कहा है
और उदयाचल से ले अस्ताचल लों पृथिवी के लोगों को बुलाया है ॥
२ । सिय्योन् से जो परम सुन्दर है
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है ॥
३ । हमारा परमेश्वर आएगा और चुप न रहेगा
उस के आगे आगे आग भस्म करती आएगी
और उस की चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी ॥
४ । वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये
ऊपर के आकाश को और पृथिवी को भी पुकारेगा,
५ । कि मेरे भक्तों को मेरे पास एकट्ठा करो
जिन्हों ने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बांधी है ॥
६ । और स्वर्ग उस के धर्म्मी होने का प्रचार करेगा
परमेश्वर तो आप ही न्यायी है । सेला ॥
७ । हे मेरी प्रजा सुन मैं बोलता हूं
हे इस्राएल् मैं तेरे विषय साक्षी देता हूं
परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूं ॥
८ । मैं तुझ पर तेरे मेलबलियों के विषय दोष नहीं लगाता
तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं ॥
९ । मैं न तो तेरे घर से बैल
न तेरे पशुशालों से बकरे ले लूंगा ॥
१० । क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु
और हजारों पहाड़ों के ढोर मेरे ही हैं ॥
११ । पहाड़ों के सब पंछियों को मैं जानता हूं
और मैदान के चलने फिरनेहारे मेरे ही हैं ॥
१२ । यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता
क्योंकि जगत और जो कुछ उस में है सो मेरा है ॥

१३। क्या मैं बैलों का मांस खाऊं
वा बकरों का लोहू पीऊं॥
१४। परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा
और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर,
१५। और संकट के दिन मुझे पुकार
मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा करने पाएगा॥
१६। पर दुष्ट से परमेश्वर कहता है
तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम
तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है॥
१७। तू तो शिक्षा से बैर करता
और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है॥
१८। जब तू ने चोर को देखा तब उस की संगति से प्रसन्न हुआ
और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ॥
१९। तू ने अपना मुंह बुराई करने के लिये खोला
और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती हैं॥
२०। तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता
और अपने सगे भाई की चुगली खाता है॥
२१। यह काम तू ने किया और मैं चुप रहा॥
सो तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिलकुल मेरे समान है
पर मैं तुझे समझाऊंगा और तेरी आंखों के साम्हने सब कुछ अलग अलग दिखाऊंगा॥
२२। हे ईश्वर के बिसरानेहारो यह बात विचारो
न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं और कोई छुड़ानेहारा न हो॥
२३। धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेहारा मेरी महिमा करता है
और मार्ग के सुधारनेहारे को
मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊंगा॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन। जब नातान् नबी उस के पास इस लिये आया कि दाऊद बतशेबा के पास गया था।

५१. हे परमेश्वर अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर
अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे॥
२। मुझे भली भांति धोकर मेरा अधर्म्म दूर कर
और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर॥
३। मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है॥
४। मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया
और जो तेरे लेखे में बुरा है वही किया है
सो तू बोलने में धर्म्मी
और न्याय करने में निष्कलंक ठहरेगा॥
५। देख मैं अधर्म्म के साथ उत्पन्न हुआ
और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा॥
६। देख तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है
और मेरे मन[1] में ज्ञान सिखाएगा॥
७। जूफा के द्वारा मेरा पाप दूर कर और मैं शुद्ध हो जाऊंगा
मुझे धो और मैं हिम से अधिक श्वेत बनूंगा॥
८। मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना
तब जो हड्डियां तू ने तोड़ डालीं सो मगन हो जाएंगी॥
९। अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर
और मेरे सारे अधर्म्म के कामों को मिटा॥
१०। हे परमेश्वर मेरे लिये शुद्ध मन सिरज
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उपजा॥
११। मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से न ले ले॥
१२। अपने किये हुए उद्धार का हर्ष मुझे फेर दे
और उदार आत्मा देकर मुझे संभाल॥
१३। तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग बताऊंगा
और पापी तेरी ओर फिरेंगे॥
१४। हे परमेश्वर हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर मुझे खून से छुड़ा
मैं तेरे धर्म्म का जयजयकार करूंगा॥
१५। हे प्रभु मेरा मुंह खोल
तब मैं तेरा गुणानुवाद करूंगा॥

(१) मूल में गुप्त स्थान।

१६। तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता
होमबलि को भी तू नहीं चाहता॥
१७। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है
हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता॥
१८। प्रसन्न होकर सिय्योन् की भलाई कर
यरूशलेम् की शहरपनाह को तू बना॥
१९। तब तू धर्म्म के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ाएंगे॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। मस्कील्। दाऊद का। जब दोएग् एदोमी ने आकर शाऊल् से कहा कि दाऊद अहीमेलेक् के घर में गया था।

५२. हे वीर तू बुराई करने पर क्यों बड़ाई मारता है

ईश्वर की करुणा तो लगातार बनी रहती है॥
२। तेरी जीभ दुष्टता गढ़ती है
सान धरे हुए छुरे की नाईं वह छल का काम करती है॥
३। तू भलाई से बढ़कर बुराई में
और धर्म्म की बात से बढ़कर झूठ में प्रीति रखता है। सेला॥
४। हे छली जीभवाले
तू सब विनाश करनेवाले वचनों में प्रीति रखता है॥
५। निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा
वह तुझ को पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा
और जीवन के लोक से भी उखाड़ डालेगा। सेला॥
६। तब धर्म्मी लोग देखकर डरेंगे
और यह कहकर उस पर हंसेंगे कि,
७। देखो यह वही पुरुष है जिस ने परमेश्वर को अपना आधार नहीं माना
पर अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था
और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता था॥
८। पर मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के समान हूं
मैं ने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रक्खा है॥
९। मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूंगा इस लिये कि तू ने काम किया है
और तेरे भक्तों के साम्हने तेरे नाम की बाट जोहूंगा क्योंकि वह उत्तम है॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। महलत् में। दाऊद का मस्कील्।

५३. मूढ़ ने अपने मन में कहा है कि परमेश्वर है ही नहीं

वे बिगड़ गये वे कुटिलता के घिनौने काम करते हैं
सुकर्म्मी कोई नहीं॥
२। परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों को निहारा है
कि देखे कोई बुद्धि से चलता
वा परमेश्वर को पूछता है कि नहीं॥
३। वे सब के सब हट गये सब एक साथ बिगड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं॥
४। क्या अनर्थकारी कुछ ज्ञान नहीं रखते
वे मेरे लोगों को रोटी जानकर खा जाते हैं
और परमेश्वर का नाम नहीं लेते॥
५। वहां वे भयभीत हुए जहां कुछ भय का कारण न था
क्योंकि जो तुझे छावनी करके घेरते थे उन की हड्डियों को उस ने छितरा दिया है
परमेश्वर ने जो उन्हें निकम्मा ठहराया है इस लिये तू ने उन की आशा तोड़ी है॥
६। भला हो कि इस्राएल् का पूरा उद्धार सिय्योन् से निकले
जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल् आनन्दित होगा॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील् । तारवाले बाजों के साथ । जब जीफियों ने आकर शाऊल् से कहा क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता ।

५४. हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर
और अपने पराक्रम से मेरा न्याय चुका ॥
२ । हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन
मेरे मुंह के वचनों की ओर कान लगा ॥
३ । क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे
और बलात्कारी मेरे प्राण के ग्राहक हुए हैं
वे परमेश्वर को अपने साम्हने नहीं जानते । सेला ॥
४ । देखो परमेश्वर मेरा सहायक है
प्रभु मेरे सभालनेहारों में का है ॥
५ । वह मेरे द्रोहियों की बुराई उन्हीं पर लौटा देगा
हे परमेश्वर अपनी सच्चाई के कारण उन्हें विनाश कर ॥
६ । मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा
हे यहोवा मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि वह उत्तम है ॥
७ । क्योंकि उस ने मुझे सारे कष्ट से छुड़ाया है
और मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हुआ हूं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । दाऊद का मस्कील् ।

५५. हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा
और मेरी गिड़गिड़ाहट से दूर न रह[1] ॥
२ । मेरी ओर ध्यान देकर मेरी सुन ले
मैं चिन्ता के मारे छटपटाता और विकल रहता हूं ॥
३ । क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव करते हैं
कि वे मुझ से अनर्थ काम करते
और क्रोध करके मुझे सताते हैं ॥
४ । मेरा मन संकट में है
और मृत्यु का भय मुझ में समाया है ॥
५ । भय और कपकपी ने मुझे पकड़ा
और मेरे रोंए खड़े हो गये हैं ॥
६ । और मैं ने कहा यदि मेरे कबूतर के से पंख होते
तो मैं उड़ जाता और ठिकाना पाता ॥
७ । देखो मैं दूर उड़ते उड़ते
जंगल में बसेरा लेता । सेला ॥
८ । मैं प्रचण्ड बयार और आंधी से भागकर शरण लेता ॥
९ । हे प्रभु उन को सत्यानाश कर और उन की भाषा में गड़बड़ डाल
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है ॥
१० । रात दिन वे उस की शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं
और उस के भीतर अनर्थ काम और उत्पात होता है ॥
११ । उस के भीतर दुष्टता हो रही है
और अंधेर और छल उस के चौक से दूर नहीं होते ॥
१२ । जो मेरी नामधराई करता है सो शत्रु नहीं है
नहीं तो मैं सह सकता
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है सो मेरा बैरी नहीं है
नहीं तो मैं उस से छिप जाता ॥
१३ । पर तू ही है जो मेरी बराबरी का मनुष्य
मेरा परममित्र और मेरी जान पहचान का था ॥
१४ । हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी बातें करते थे
हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे ॥
१५ । वे उजड़ जाएं

(१) मूल में छिप मत जा ।

वे जीते जी अधोलोक में जाएं
क्योंकि उन के घर और मन दोनों में बुराइयां
होती हैं ॥
१६। मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा
और यहोवा मेरा उद्धार करेगा ॥
१७। सांझ को भोर को दोपहर को तीनों बेला
मैं ध्यान करूंगा और कहरूंगा
और वह मेरी सुनेगा ॥
१८। जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उस से उस
ने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है
उन्हों ने तो बहुतों को संग लेकर मेरा साम्हना
किया था ॥
१९। ईश्वर सुनकर उन को उत्तर देगा
वह तो आदि से विराजमान है। सेला ॥
उन की दशा कभी बदलती नहीं
और वे परमेश्वर का भय नहीं मानते ॥
२०। उस ने अपने मेल रखनेहारों पर भी हाथ छोड़ा
उस ने अपनी वाचा को तोड़ दिया है ॥
२१। उस के मुंह की बातें तो मक्खन सी
चिकनी थीं
पर उस के मन का विचार लड़ाई का था
उस के वचन तेल से नरम तो थे
पर नंगी तलवार से थे ॥
२२। जो भार यहोवा ने तुझ पर रक्खा है सो
उसी पर डाल दे और वह तुझे संभालेगा
वह धर्म्मी को कभी टलने न देगा ॥
२३। पर हे परमेश्वर तू उन लोगों को विनाश
के गड़हे में गिरा देगा
हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु लों
जीते न रहेंगे
सो मैं तुझ पर भरोसा रक्खे रहूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। योनतेलेम्रहोकीम्[1] में। दाऊद
का मिक्ताम्। जब पलिश्तियों ने उस को गत् नगर
में पकड़ा था।

५६. हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि
मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं
वे लगातार लड़ते हुए मुझ पर अंधेर करते हैं ॥
२। मेरे द्रोही लगातार मुझे निगलने को चाहते हैं
बहुत से लोग अभिमान करके मुझ से लड़ते हैं ॥
३। जिस समय मैं डरूं
उसी समय मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा ॥
४। परमेश्वर की सहायता से मैं उस के वचन
की प्रशंसा करूंगा
परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा
कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है ॥
५। वे लोग लगातार मेरे वचनों का उलटा अर्थ
लगाते हैं
उन की सारी कल्पनाएं मेरी ही हानि करने की
होती हैं ॥
६। वे एकट्ठे होते और छिपकर बैठते हैं
वे आप मेरा पीछा करते हैं
और मेरे प्राण की घात में ताक लगाये हुए बैठे
रहते हैं ॥
७। क्या वे अनर्थ काम करने पर बचेंगे
हे परमेश्वर अपने कोप से देश देश के लोगों
को गिरा दे ॥
८। मेरे मारे मारे फिरने का वृत्तान्त तू ने लिख
रक्खा है
तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रख
क्या उन की चर्चा[1] तेरी पुस्तक में नहीं है ॥
९। जिस समय मैं पुकारूं उसी समय मेरे शत्रु
उलटे फिरेंगे
यह मैं जानता हूं कि परमेश्वर मेरी ओर है ॥
१०। परमेश्वर की सहायता से मैं उस के वचन
की प्रशंसा करूंगा
यहोवा की सहायता से मैं उस के वचन की
प्रशंसा करूंगा ॥
११। मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ॥
१२। हे परमेश्वर तेरी मन्नतों का भार मुझ पर बना है
सो मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा ॥
१३। क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया है

(१) अर्थात् दूरदेशियों की मौनी कबूतरी।

(१) मूल में. वे।

क्या तू मेरे पैरों को भी फिसलने से न बचाएगा
कि मैं जीवनदायक उजियाले में अपने को ईश्वर
के साम्हने जानकर चलूं फिरूं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । अल्तशृहेत्[1] में । दाऊद
का । मिक्ताम् । जब वह शाऊल् से भागकर
गुफा में छिप गया था ।

५७. हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर
मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं
और जब लों ये बलाएं निकल न जाएं
तब लों मैं तेरे पंखों के तले शरण लिये रहूंगा ॥
२ । मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा
उस ईश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध
करता है ॥
३ । ईश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा
जब मेरा निगलनेहारा निन्दा कर रहा हो । सेला ॥
तब परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट
करेगा ॥
४ । मेरा प्राण सिंहों के बीच है
मुझे जलते हुओं के बीच लेटना पड़ता है
ऐसे मनुष्यों के बीच जिन के दांत बर्छी और
तीर हैं
और जिन की जीभ तेज तलवार है ॥
५ । हे परमेश्वर स्वर्ग के ऊपर ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर हो ॥
६ । उन्हों ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया
मेरा जीव ऊपा हुआ है
उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा
और आप ही उस में गिर पड़े हैं । सेला ॥
७ । हे परमेश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा मन
स्थिर है
मैं गा गाकर भजन करूंगा ॥
८ । हे मेरे आत्मा[2] जाग हे सारंगी और बीणा
जागो
मैं भी पह फटते जाग उठूंगा ॥

(१) अर्थात् नाश न कर ।
(२) मूल में हे मेरी महिमा ।

९ । हे प्रभु मैं देश देश के लोगों के बीच तेरा
धन्यवाद करूंगा
मैं राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन
गाऊंगा ॥
१० । क्योंकि तेरी करुणा इतनी बड़ी है कि
स्वर्ग लों पहुंचती
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है ॥
११ । हे परमेश्वर स्वर्ग के ऊपर ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर हो ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । अल्तशृहेत्[1] में ।
दाऊद का । मिक्ताम् ।

५८. हे मनुष्यो धर्म्म की बात तो बोलनी
चाहिये क्या तुम सचमुच चुप रहते
क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो ॥
२ । नहीं तुम कुटिल काम मन से करते हो
तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो[2] ॥
३ । दुष्ट लोग जन्मते ही बिराने हो जाते
वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक
जाते हैं ॥
४ । उन में सर्प का सा विष है
वे उस नाग के समान हैं जो सुनना नहीं चाहता,
५ । और सपेरे कैसी ही निपुणता से क्यों न
बाजीगरी करें
तौभी उस की नहीं सुनता ॥
६ । हे परमेश्वर उन के मुंह में से दांतों को तोड़
दे यहोवा उन जवान सिंहों की दाढ़ों को
उखाड़ डाल ॥
७ । वे गलकर जल सरीखे हों जो बहकर चला
जाता है
जब वे अपने तीर चढ़ाएं तब तीर मानो दो
टुकड़े हो जाएं ॥
८ । वे घोंघे के समान हों जो गलकर जाता
रहता है
और स्त्री के गिरे हुए गर्भ के सरीखे होकर
उजियाले को कभी न देखें ॥

(१) अर्थात् नाश न कर ।
(२) मूल में तुम अपने हाथों का उपद्रव देश में तौल देते हो।

९ । उस से पहिले कि तुम्हारी हांडियों में कांटों की आंच लगे
वह जले बिनजले दोनों को आंधी की नाईं उड़ा ले जाएगा ॥
१० । धर्म्मी ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा
वह अपने पांव दुष्ट के लोहू में धोएगा ॥
११ । और मनुष्य कहने लगेंगे निश्चय धर्म्मी के लिये फल तो है
निश्चय परमेश्वर तो है जो पृथिवी पर न्याय करता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । अलुतशहेत्[1] । दाऊद का ।
मिक्ताम् । जब शाऊल् के भेजे हुए लोगों ने घर
का पहरा दिया कि उस को मार डालें ।

५९. हे मेरे परमेश्वर मुझ को शत्रुओं से बचा

मुझे ऊंचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा ॥
२ । मुझ को अनर्थकारियों से बचा
और हत्यारों से मेरा उद्धार कर ॥
३ । क्योंकि देख वे मेरी घात में लगे हैं
बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध एकट्ठे हुए हैं
हे यहोवा यह बिना मेरे किसी अपराध या पाप के होता है ॥
४ । मेरे दोष के बिना वे दौड़कर लड़ने को तैयार हो जाते हैं
मुझ से मिलने के लिये जाग उठ और यह देख ॥
५ । हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
हे इस्राएल् के परमेश्वर सब अन्यजातिवालों को दण्ड देने के लिये जाग
किसी विश्वासघाती अनर्थकारी पर अनुग्रह न कर । सेला ॥
६ । वे लोग सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राते हैं
और नगर की चारों ओर घूमते हैं ॥
७ । देख वे डकारते हैं
उन के मुंह में तलवारें हैं
वे कहते हैं कि कौन सुनता है ॥

(१) अर्थात् नाश न कर ।

८ । पर हे यहोवा तू उन पर हंसेगा
तू सब अन्यजातिवालों को ठट्ठों में उड़ाएगा ॥
९ । उस के बल के कारण मैं तेरी ओर ताकता रहूंगा
क्योंकि परमेश्वर मेरा ऊंचा गढ़ है ॥
१० । परमेश्वर करुणा करता हुआ मुझ से मिलेगा
परमेश्वर मेरे द्रोहियों के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा[1] ॥
११ । उन्हें घात न कर न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए
हे प्रभु हे हमारी ढाल
अपनी शक्ति से उन्हें तित्तर बित्तर कर उन्हें दबा दे ॥
१२ । अपने मुंह के वचनों के
और स्राप देने और झूठ बोलने के कारण
वे अभिमान में फंसे हुए पकड़े जाएं ॥
१३ । जलजलाहट में आकर उन का अन्त कर उन का अन्त कर दे कि वे आगे को न रहें
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर
बरन पृथिवी की छोर लों प्रभुता करता है । सेला ॥
१४ । चाहे वे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राएं
और नगर की चारों ओर घूमें,
१५ । और टुकड़े के लिये मारे मारे फिरें
और तृप्त न होने पर रात भर वहीं ठहरे रहें,
१६ । पर मैं तेरे सामर्थ्य का यश गाऊंगा
और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूंगा
क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़
और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है ॥
१७ । हे मेरे बल मैं तेरा भजन गाऊंगा
क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा गढ़ और मेरा करुणामय परमेश्वर है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का । मिक्ताम् । शूशनेदूत्[2] में । शिक्षादायक । जब वह अरम्नहरैम् और
अरम्सोबा से लड़ता था और योआब् ने
लौटकर लोन की तराई में एदोमियों में से
बारह हजार पुरुष मार लिये ।

६०. हे परमेश्वर तू ने हम को त्याग दिया और हम को तोड़ डाला है

(१) मूल में मेरे द्रोहियों को मुझे दिखाएगा ।
(२) अर्थात् साक्षी के सोसन ।

तू कोपित तो हुआ फिर हम को ज्यों के त्यों
कर दे ॥
२ । तू ने भूमि को कंपाया और फाड़ डाला है
उस के दरारों को भर दे[1] क्योंकि वह डगमगा
रही है ॥
३ । तू ने अपनी प्रजा को कठिन दुःख भुगताया
तू ने हमें लड़खड़ी का दाखमधु पिलाया है ॥
४ । तू ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है
कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए । सेला ॥
५ । इस लिये कि तेरे प्रिय छुड़ाये जाएं
तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन ले ॥
६ । परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है
मैं प्रफुल्लित हूंगा
मैं शकेम् को बांट लूंगा और सुक्कोत् की तराई
को नपवाऊंगा
७ । गिलाद् मेरा है मनश्शे भी मेरा है
और एप्रैम् मेरे सिर का टोप
यहूदा मेरा राजदण्ड है ॥
८ । मोआब् मेरे धोने का पात्र है
मैं एदोम् पर अपना जूता फेंकूंगा
हे पलिश्त् मेरे ही कारण जयजयकार कर ॥
९ । मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा
एदोम् लों मेरी अगुवाई किस ने किई है ॥
१० । हे परमेश्वर क्या तू ने हम को त्याग नहीं दिया
और हे परमेश्वर तू हमारी सेना के साथ पयान
नहीं करता ॥
११ । द्रोही के विरुद्ध हमारी सहायता कर
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ
होता है ॥
१२ । परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएंगे
हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजे के
साथ । दाऊद का ।

६१. हे परमेश्वर मेरा चिल्लाना सुन

मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे ॥
२ । मूर्छा खाते समय मैं पृथिवी की छोर से
भी तुझे पुकारूंगा
जो चटान मेरे लिये ऊंची है उस पर मुझ को
ले चल ॥
३ । क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है
और शत्रु से बचने के लिये दृढ़ गुम्मट है ॥
४ । मैं तेरे तंबू में युग युग रहूंगा
मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिये रहूंगा । सेला ॥
५ । क्योंकि हे परमेश्वर तू ने मेरी मन्नतें सुनीं
जो तेरे नाम के डरवैये हैं उन का सा भाग
तू ने मुझे दिया है ॥
६ । तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा
उस के बरस पीढ़ी पीढ़ी के बराबर होंगे ॥
७ । वह परमेश्वर के सन्मुख सदा बना रहेगा
तू अपनी करुणा और सच्चाई को उस की रक्षा
के लिये ठहरा रख ॥
८ । और मैं सदा लों तेरे नाम का भजन
गा गाकर
अपनी मन्नतें दिन दिन पूरी किया करूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।
यदूतून् को ।

६२. सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाये हूं

मेरा उद्धार उसी से होता है ॥
२ । सचमुच वही मेरी चटान और मेरा उद्धार है
वह मेरा गढ़ है मैं बहुत न डिगूंगा ॥
३ । तुम कब लों एक पुरुष पर धावा करते
रहोगे
कि सब मिलकर उस का घात करो
वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते हुए बाड़े के
समान है ॥
४ । सचमुच वे उस को उस के ऊंचे पद से
गिराने की सम्मति करते हैं
वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं

(१) मूल में, चंगा कर ।

मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं। सेला॥
५। हे मेरे मन परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह
क्योंकि मेरी आशा उसी से है॥
६। सचमुच वही मेरी चटान और मेरा उद्धार है
वह मेरा गढ़ है सो मैं न डिगूंगा॥
७। मेरे उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है
मेरी दृढ़ चटान और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है॥
८। हे लोगो हर समय उस पर भरोसा रक्खो
उस से[1] अपने अपने मन की बातें खोलकर कहो[2]
परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। सेला॥
९। सचमुच छोटे लोग तो सांस और बड़े लोग मिथ्या ही हैं
तौल में वे हलके निकलते हैं
वे सब के सब सांस से भी हलके हैं॥
१०। अन्धेर करने पर भरोसा मत रक्खो
और लूट पाट करने पर मत फूलो
चाहे धन संपत्ति बढ़े तौभी उस पर मन न लगाना॥
११। परमेश्वर ने एक बार कहा है
दो बार मैं ने यह सुना है
कि सामर्थ्य परमेश्वर का है॥
१२। और हे प्रभु करुणा भी तेरी है
क्योंकि तू एक एक जन को उस के काम के अनुसार फल देता है॥

दाऊद का भजन। जब वह यहूदा के जंगल में था।

६३. हे परमेश्वर तू मेरा ईश्वर है मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा
सूखी और जल बिना ऊसर[3] भूमि पर
मेरा मन तेरा प्यासा है मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है॥
२। इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ को ताका था
कि तेरा सामर्थ्य और महिमा निहारूं॥
३। इस लिये कि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है
मैं तेरी प्रशंसा करूंगा॥
४। सो मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा
और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा॥
५। मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा
और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा॥
६। जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा
तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा॥
७। क्योंकि तू मेरा सहायक बना है
सो मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूंगा॥
८। मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है
और मुझे तो तू अपने दहिने हाथ से थांभ रखता है॥
९। पर वे जो मेरे प्राण के खोजी हैं
सो पृथिवी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे॥
१०। वे तलवार से मारे जाएंगे
और गीदड़ों का आहार हो जाएंगे॥
११। पर राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा
जो कोई ईश्वर की किरिया खाए सो बड़ाई करने पाएगा
पर झूठ बोलनेहारों का मुंह बन्द किया जाएगा॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

६४. हे परमेश्वर जब मैं तेरी दोहाई दूं तब मेरी सुन
शत्रु के उपजाये हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर॥
२। कुकर्म्मियों की गोष्ठी से
और अनर्थकारियों के हुल्लड़ से मेरी आड़ हो॥

(१) मूल में. उस के साम्हने। (२) मूल में उण्डेल दो।
(३) मूल में. थकी।

३। उन्हों ने अपनी जीभ को तलवार की नाईं तेज किया
और अपने कड़ुवे वचनों के तीरों को चढ़ाया है,
४। कि छिपकर खरे मनुष्य को मारें
वे निडर होकर उस को अचानक मारते भी हैं॥
५। वे बुरे काम करने को हियाव बांधते हैं
वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं
और कहते हैं कि हम को कौन देखेगा॥
६। वे कुटिलता की युक्तियां निकालते
और कहते हैं कि हम ने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है
एक एक का मन और हृदय अथाह है॥
७। परन्तु परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा
वे अचानक घायल हो जाएंगे॥
८। वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे
जितने उन पर दृष्टि करेंगे सो सब अपने अपने सिर हिलाएंगे॥
९। और सारे मनुष्य भय खाएंगे
और परमेश्वर के कर्म्म का बखान करेंगे
और उस के काम पर ध्यान करेंगे॥
१०। धर्म्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उस का शरणागत होगा
और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।
गीत।

६५. हे परमेश्वर सिय्योन् में तेरे साम्हने चुपचाप रहना ही स्तुति है
और तेरे लिये मन्नतें पूरी किई जाएंगी॥
२। हे प्रार्थना के सुननेहारे
सारे प्राणी तेरे ही पास आएंगे॥
३। अधर्म्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं
हमारे अपराधों को तू ढांप देगा॥
४। क्या ही धन्य है वह जिस को तू चुनकर अपने समीप ले आए
कि वह तेरे आंगनों में वास करे
हम तेरे भवन के अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे॥
५। हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर
हे पृथिवी के सब दूर दूर देशों के
और दूर के समुद्र पर के रहनेहारों के आधार
तू धर्म से किये हुए भयानक कामों के द्वारा हमारा मुंह मांगा देगा॥
६। तू पराक्रम का फेंटा कसे हुए
अपने सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर करता है॥
७। तू समुद्र का महाशब्द उस की तरङ्गों का महाशब्द
और देश देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है॥
८। सो दूर दूर देशों के रहनेहारे तेरे चिन्ह देखकर डर गये हैं
तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता है॥
९। तू भूमि की सुधि लेकर उस को सींचता है
तू उस को बहुत फलदायक करता है
परमेश्वर की नहर जल से भरी रहती है
तू पृथिवी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है॥
१०। तू रेघारियों को भली भांति सींचता
और उन के बीच बीच की मिट्टी को बैठाता है
तू भूमि को मेंह से नरम करता
और उस की उपज पर आशीष देता है॥
११। अपनी भलाई से भरे हुए बरस पर तू ने मानो मुकुट धर दिया है
तेरी लीकों में उत्तम उत्तम पदार्थ पाये जाते हैं[१]॥
१२। वे जंगल की चराइयों में पाये जाते हैं
और पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बांधे हुए हैं॥
१३। चराइयां भेड़ बकरियों से भरी हुई
और तराइयां अन्न से ढंपी हुई हैं
वे जयजयकार करतीं और गाती भी हैं॥

(१) मूल में चिकनाई टपकती है।

प्रधान बजानेहारे के लिये । गीत । भजन ।

६६. हे सारी पृथिवी के लोगो परमेश्वर के लिये जयजयकार करो ॥

२। उस के नाम की महिमा का भजन गाओ
उस की स्तुति करते हुए उस की महिमा करो ॥
३। परमेश्वर से कहो कि तेरे काम क्या ही भयानक हैं
तेरे महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे ॥
४। सारी पृथिवी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे
और तेरा भजन गाएंगे
वे तेरे नाम का भजन गाएंगे । सेला ॥
५। आओ परमेश्वर के कामों को देखो
वह अपने कार्य्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है ॥
६। उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला
वे महानद में से पांव पांव उतरे
वहां हम उस के कारण आनन्दित हो ॥
७। वह अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है
और अपनी आंखों से जाति जाति को ताकता है
हठीले अपने सिर न उठाएं । सेला ॥
८। हे देश देश के लोगो हमारे परमेश्वर को धन्य कहो
और उस की स्तुति की धुनि सुनाओ ॥
९। वही है जो हम को जीते रखता है
और हमारे पांव को टलने नहीं देता ॥
१०। क्योंकि हे परमेश्वर तू ने हम को जांचा
तू ने हमें चांदी की नाईं ताया था ॥
११। तू ने हम को जाल में फंसाया
और हमारी कटि पर भारी बोझ बांधा था ॥
१२। तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया
हम आग और जल से होकर गये तो थे
पर तू ने हम को उबारके सुख से भर दिया है ॥
१३। मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊंगा
मैं उन मन्नतों को तेरे लिये पूरी करूंगा,
१४। जो मैं ने मुंह[1] खोलकर मानीं
और संकट के समय कही थीं ॥
१५। मैं तुझे मोटे पशुओं के होमबलि
मेढ़ों की चर्बी के धूप समेत चढ़ाऊंगा
मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा । सेला ॥
१६। हे परमेश्वर के सब डरवैयो आकर सुनो
मैं वर्णन करूंगा कि उस ने मेरे लिये क्या क्या किया है ॥
१७। मैं ने उसी को पुकारा
और उस का गुणानुवाद मुझ से हुआ ॥
१८। यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता
तो प्रभु मेरी न सुनता ॥
१९। परन्तु परमेश्वर ने सुना तो है
उस ने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है ॥
२०। धन्य है परमेश्वर
जिस ने न तो मेरी प्रार्थना सुनी अनसुनी किई
न मुझ से अपनी करुणा दूर कर दिई है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । भजन । गीत ।

६७. परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हम को आशीष दे
वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए[2] । सेला ॥
२। जिस से तेरी गति पृथिवी पर
और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए ॥
३। हे परमेश्वर देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ॥
४। राज्य राज्य के लोग आनन्द करें और जयजयकार करें
क्योंकि तू देश देश के लोगों का न्याय धर्म्म से करेगा

---

(१) मूल में होठ ।　(२) मूल में हमारे साथ अपना मुख चमकाए ।

और पृथिवी के राज्य राज्य के लोगों की अगुआई करेगा । सेला ॥

५ । हे परमेश्वर देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ॥

६ । भूमि ने अपनी उपज दिई है
परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है सो हमें आशीष देगा ॥

७ । परमेश्वर हम को आशीष देगा
और पृथिवी के दूर दूर देशों के सारे लोग उस का भय मानेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

६८. परमेश्वर उठे उस के शत्रु तित्तर बित्तर हों

और उस के बैरी उस के साम्हने से भाग जाएं ॥

२ । जैसा धूंआं उड़ जाता है तैसे ही तू उन को उड़ा दे
जैसा मोम आग की आंच से गल जाता है
वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के दर्श से नाश हों ॥

३ । पर धर्म्मी आनन्दित हों वे परमेश्वर के साम्हने प्रफुल्लित हों
वे आनन्द में मगन हों ॥

४ । परमेश्वर का गीत गाओ उस के नाम का भजन गाओ
जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है उस के लिये सड़क बनाओ
उस का नाम याह् है सो तुम उस के साम्हने प्रफुल्लित हो ॥

५ । परमेश्वर अपने पवित्र धाम में
अपमूओं का पिता और विधवाओं का न्यायी है ॥

६ । परमेश्वर अनाथों का घर बसाता
और बंधुओं को छुड़ाकर भाग्यवान करता है
पर हठीलों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है ॥

७ । हे परमेश्वर जब तू अपनी प्रजा के आगे आगे पयान करता था
जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चलता था । सेला ॥

८ । तब पृथिवी कांप उठी
और आकाश परमेश्वर के साम्हने टपकने लगा
उधर सीनै पर्वत परमेश्वर के इस्राएल् के परमेश्वर के साम्हने कांप उठा ॥

९ । हे परमेश्वर तू ने बहुत से बरदान बरसाये[1]
तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था पर तू ने उस को हरा भरा[2] किया है ॥

१० । तेरा झुंड इस में बसने लगा
हे परमेश्वर तू ने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी किई है ॥

११ । प्रभु आज्ञा देता है
तब शुभ समाचार सुनानेहारियों की बड़ी सेना हो जाती है ॥

१२ । अपनी अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं
और गृहस्थिन लूट को बांट लेती हैं ॥

१३ । क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे
और ऐसी कबूतरी के सरीखे होगे जिस के पंख चान्दी से
और उस के पर पीले सोने से मढ़े हुए हों ॥

१४ । जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को तित्तर बित्तर किया
तब मानो सल्मोन् पर्वत पर हिम पड़ा ॥

१५ । बाशान् का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ तो है
बाशान् का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ तो है ॥

१६ । पर हे शिखरवाले पहाड़ो तुम क्यों उस पर्वत को घूरते हो
जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है
वहां यहोवा सदा वास किये ही रहेगा ॥

१७ । परमेश्वर के रथ हजारों बरन हजारों हजार हैं

(१) मूल में स्वेच्छादानो की दृष्टि हिलाई ।
(२) मूल में. स्थिर ।

प्रभु उन के बीच है
सीनै पवित्रस्थान में है ॥
१८। तू ऊंचे पर चढ़ा तू लोगों को बन्धुआई में ले गया
तू ने मनुष्यों के वरन हठीले मनुष्यों के बीच भी भेंटें लिईं
जिस से याह् परमेश्वर उन में वास करे ॥
१९। धन्य है प्रभु जो दिन दिन हमारा बोझ उठाता है
वही हमारा उद्धारकर्त्ता ईश्वर है। सेला ॥
२०। वही हमारे लिये बचानेहारा ईश्वर ठहरा
यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है[1] ॥
२१। निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर
और जो अधर्म्म के मार्ग पर चलता रहता है
उस के बाल भरे चोंडे पर मार मारके उसे चूर करेगा ॥
२२। प्रभु ने कहा है कि मैं उन्हें बाशान् से गहिरे सागर के तल से भी फेर ले आऊंगा ॥
२३। कि तू अपने पांव को लोहू में डुबोए
और तेरे शत्रु तेरे कुत्तों का भाग ठहरें ॥
२४। हे परमेश्वर तेरी गति देखी गई
मेरे ईश्वर मेरे राजा की गति पवित्रस्थान में दिखाई दिई है
२५। गानेहारे आगे आगे तारवाले बाजों के बजानेहारे पीछे पीछे गये
चारों ओर कुमारियां डफ बजाती थीं ॥
२६। सभाओं में परमेश्वर का
हे इस्राएल् के सोते से निकले हुए लोगो प्रभु का धन्यवाद करो ॥
२७। वहां उन का प्रभु छोटा बिन्यामीन् है
वहां यहूदा के हाकिम अपने अनुचरों समेत हैं
वहां जबूलून् और नप्ताली के भी हाकिम हैं ॥
२८। तेरे परमेश्वर ने आज्ञा दिई कि तुझे सामर्थ्य मिले
हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे लिये किया है उसे दृढ़ कर ॥

(१) मूल में यहोवा प्रभु के पास मृत्यु से निकास है।

२९। यरूशलेम् के ऊपरवाले तेरे मन्दिर के कारण राजा तेरे लिये भेंट ले आएंगे ॥
३०। नरकटों में रहनेहारे झुंड को
सांढ़ों के झुंड को और देश देश के बछड़ों को घुड़क
वे चांदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे
जो लोग युद्ध से प्रसन्न रहते हैं उन को उस ने तितर बितर किया है ॥
३१। मिस्र से रईस आएंगे
कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएंगे ॥
३२। हे पृथिवी पर के राज्य राज्य के लोगो परमेश्वर का गीत गाओ
प्रभु का भजन गाओ। सेला ॥
३३। जो सब से ऊंचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है
वह अपनी वाणी सुनाता है वह गंभीर वाणी है ॥
३४। परमेश्वर के सामर्थ्य की स्तुति करो
उस का प्रताप इस्राएल् पर छाया हुआ है
और उस का सामर्थ्य आकाशमण्डल में है ॥
३५। हे परमेश्वर तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है
इस्राएल् का ईश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति देनेहारा है
परमेश्वर धन्य है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। शोशन्नीम्[1] में। दाऊद का।

६९. हे परमेश्वर मेरा उद्धार कर
मैं जल में डूबा चाहता हूं ॥
२। मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते
मैं गहिरे जल में आ गया और धारा में डूबा जाता हूं ॥

(१) अर्थात् पुष्पविशेष।

३। मैं पुकारते पुकारते थक गया मेरा गला सूख गया है
अपने परमेश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें रह गई हैं॥
४। जो अकारण मेरे वैरी हैं सो गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं
मेरे विनाश करनेहारे जो अनर्थ से मेरे शत्रु हैं सो सामर्थी हैं
सो जो मैं ने लूट न लिया था वह भी मुझ को देना पड़ा॥
५। हे परमेश्वर तू तो मेरी मूढ़ता को जानता है
और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं॥
६। हे प्रभु हे सेनाओं के यहोवा जो तेरी बाट जोहते हैं उन की आशा मेरे कारण न टूटे
हे इस्राएल् के परमेश्वर जो तुझे ढूंढ़ते हैं उन का मुंह मेरे कारण काला न हो॥
७। तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है
और मेरा मुंह लज्जा से ढंपा है॥
८। मैं अपने भाइयों के लेखे बिराना हुआ
और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में उपरी ठहरा हूं॥
९। क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म हुआ
और जो निन्दा वे तेरी करते हैं वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है॥
१०। जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था
तब उस से भी मेरी नामधराई ही हुई॥
११। और जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था
तब मेरा दृष्टान्त उन में चलता था॥
१२। फाटक के पास बैठनेहारे मेरे विषय बातचीत करते हैं
और मदिरा पीनेहारे मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं॥
१३। पर हे यहोवा मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है
हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायत से
और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार[1] मेरी सुन ले॥
१४। मुझ को दलदल में से उबार कि मैं धस न जाऊं
मैं अपने वैरियों से और गहिरे जल में से बच जाऊं॥
१५। मैं धारा में डूब न जाऊं
और न मैं गहिरे जल में डूब मरूं
और कूएं का मुंह मेरे ऊपर बन्द न हो॥
१६। हे यहोवा मेरी सुन ले क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है
अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर फिर॥
१७। और अपने दास से अपना मुंह फेरे हुए न रह
क्योंकि मैं संकट में हूं सो फुर्ती से मेरी सुन ले॥
१८। मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे॥
१९। मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू जानता है
मेरे सब द्रोही तेरे साम्हने हैं॥
२०। मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया और मेरा रोग असाध्य है
और मैं ने किसी तरस खानेहारे की आशा तो किई पर किसी को न पाया
और शान्ति देनेहारे ढूंढ़ता तो रहा पर कोई न मिला॥
२१। और लोगों ने मेरे खाने के लिये विष दिया
और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया॥
२२। उन का भोजन[2] बागुर
और उन के सुख के समय फन्दा बने॥
२३। उन की आंखों पर अंधेरा छा जाए कि वे देख न सकें
और तू उन की कटि को निरन्तर कंपाता रह॥

(१) मूल में अपने उद्धार की सचाई से। (२) मूल में, उन की मेज।

२४। उन के ऊपर अपना रोष भड़का
और तेरे कोप की आंच उन को लगे ॥
२५। उन की छावनी उजड़ जाए
उन के डेरों में कोई न रहे ॥
२६। क्योंकि जिस को तू ने मारा थे उस के पीछे पड़े हैं
और जिन को तू ने घायल किया वे उन की पीड़ा की चर्चा करते हैं ॥
२७। उन के अधर्म्म पर अधर्म्म बढ़ा
और वे तेरे धर्म्म को प्राप्त न करें ॥
२८। उन का नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए
और धर्म्मियों के संग लिखा न जाए ॥
२९। पर मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं
सो हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर बैठा ॥
३०। मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूंगा
और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा ॥
३१। यह यहोवा को बैल से अधिक
वरन सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा ॥
३२। नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे
हे परमेश्वर के खोजियो तुम्हारा मन हरा हो जाए ॥
३३। क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता
और अपने लोगों को जो बंधुए हैं तुच्छ नहीं जानता ॥
३४। स्वर्ग और पृथिवी
और सारा समुद्र अपने सब जीव जन्तुओं समेत उस की स्तुति करें ॥
३५। क्योंकि परमेश्वर सिय्योन् का उद्धार करेगा
और यहूदा के नगरों को बसाएगा
और लोग फिर वहां बसकर उस के अधिकारी हो जाएंगे ॥
३६। उस के दासों का वंश उस को अपने भाग में पाएगा
और उस के नाम के प्रेमी उस में वास करेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का। स्मरण कराने के लिये।

७०. हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिये

हे यहोवा मेरी सहायता करने को फुर्ती कर ॥
२। जो मेरे प्राण के खोजी हैं
उन की आशा टूटे और मुंह काला हो जाए
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
सो पीछे हटाये और निरादर किये जाएं ॥
३। जो कहते हैं आहा आहा
सो अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएं ॥
४। जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों
और जो तेरा उद्धार चाहते हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि परमेश्वर की बड़ाई हो ॥
५। मैं तो दीन और दरिद्र हूं
हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
हे यहोवा विलंब न कर ॥

७१. हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं

मेरी आशा कभी टूटने न पाए ॥
२। तू जो धर्म्मी है सो मुझे छुड़ा और उबार
मेरी ओर कान लगा और मेरा उद्धार कर ॥
३। मेरे लिये ऐसा चटानवाला धाम बन जिस में मैं नित्य जा सकूं
तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दिई है
क्योंकि तू मेरी ढांग और मेरा गढ़ ठहरा है ॥
४। हे मेरे परमेश्वर दुष्ट के
और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर ॥
५। क्योंकि हे प्रभु यहोवा मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूं
बचपन से मेरा आधार तू है ॥

६। मैं गर्भ से निकलते ही तुझ से संभाला गया
मुझे मा की कोख से तू ही ने निकाला
सो मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूंगा॥
७। मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूं
पर तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है॥
८। मेरे मुंह से तेरा गुणानुवाद
और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे॥
९। बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर
जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे॥
१०। क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विप्रय बातें करते हैं
और जो मेरे प्राण की ताक में हैं
सो आपस में यह सम्मति करते हैं कि,
११। परमेश्वर ने उस को छोड़ दिया है
उस का पीछा करके उसे पकड़ लो क्योंकि उस का कोई छुड़ानेहारा नहीं॥
१२। हे परमेश्वर मुझ से दूर न रह
हे मेरे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर॥
१३। जो मेरे प्राण के विरोधी हैं उन की आशा टूटे और उन का अन्त हो जाए
जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं सो नामधराई और अनादर में गड़ जाएं॥
१४। मैं तो निरन्तर आशा लगाये रहूंगा
और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता जाऊंगा॥
१५। मैं अपने मुंह से तेरे धर्म्म का
और तेरे किये हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता तो रहूंगा
पर उन का पूरा ब्योरा जाना भी नहीं जाता॥
१६। मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊंगा
मैं केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा किया करूंगा॥
१७। हे परमेश्वर तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है
और अब लों मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का प्रचार करता आया हूं॥
१८। सो हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊं और मेरे बाल पक जाएं तब भी मुझे न छोड़
तब लों मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहुबल
और सब उत्पन्न होनेहारों को तेरा पराक्रम सुनाता रहूंगा॥
१९। और हे परमेश्वर तेरा धर्म्म अति महान है
और तू जिस ने महाकार्य्य किये हैं
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है॥
२०। तू ने तो हम से बहुत और कठिन कष्ट भुगताये तो हैं
पर अब फिरके हम को जिलाएगा
और पृथिवी के गहिरे गड़हे में से उबार लेगा॥
२१। तू मेरी बड़ाई को बढ़ाएगा
और फिरके मुझे शान्ति देगा॥
२२। हे मेरे परमेश्वर
मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊंगा
हे इस्राएल् के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा॥
२३। जब मैं तेरा भजन गाऊंगा तब अपने मुंह से
और अपने जीव से भी जो तू ने बचा लिया है जयजयकार करूंगा॥
२४। और मैं तेरे धर्म्म की चर्चा दिन भर करता रहूंगा
क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे उन की आशा टूट गई और मुंह काले हो गये हैं॥

सुलैमान का।

७२. हे परमेश्वर राजा को अपने नियम बता
राजपुत्र को अपना धर्म्म सिखा॥
२। वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म्म से
और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक चुकाएगा॥
३। पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये
धर्म्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी॥
४। वह प्रजा में के दीन लोगों का न्याय करेगा

और दरिद्र लोगों को बचाएगा
और अन्धेर करनेहारे को चूर करेगा ॥
५। जब लों सूर्य्य और चन्द्रमा बने रहेंगे
तब लों लोग पीढ़ी पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे ॥
६। वह घास की खूंटी पर बरसनेहारे मेंह
और भूमि सींचनेहारी झड़ियों के समान होगा ॥
७। उस के दिनों में धर्म्मी फूलें फलेंगे
और जब लों चंद्रमा बना रहेगा तब लों शान्ति बहुत रहेगी ॥
८। और वह समुद्र से समुद्र लों
और महानद से पृथिवी की छोर लों प्रभुता करेगा ॥
९। उस के साम्हने जंगल के रहनेहारे घुटने टेकेंगे
और उस के शत्रु माटी चाटेंगे ॥
१०। तर्शीश् और द्वीप द्वीप के राजा भेंट ले आएंगे
शबा और सबा दोनों के राजा द्रव्य पहुंचाएंगे ॥
११। सारे राजा उस को दण्डवत् करेंगे
जाति जाति के लोग उस के अधीन हो जाएंगे ॥
१२। क्योंकि वह दोहाई देनेहारे दरिद्र को
और दुःखी और असहाय मनुष्य को उबारेगा ॥
१३। वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा
और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा ॥
१४। वह उन के प्राणों को अंधेर और उपद्रव से छुड़ा लेगा
और उन का लोहू उस की दृष्टि में अनमोल ठहरेगा ॥
१५। वह तो जीता रहेगा और शबा के सोने में से उस को दिया जाएगा
लोग उस के लिये नित्य प्रार्थना करेंगे
और दिन भर उस को धन्य कहते रहेंगे ॥
१६। देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अन्न होगा
जिस की बालें लबानोन् के देवदारुओं की नाईं झूमेंगी
और नगर के लोग घास की नाईं लहलहाएंगे ॥
१७। उस का नाम सदा बना रहेगा
जब लों सूर्य्य बना रहेगा तब लों उस का नाम नित्य नया होता रहेगा
और लोग अपने को उस के कारण धन्य गिनेंगे
सारी जातियां उस को भाग्यवान कहेंगी ॥
१८। धन्य है यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल् का परमेश्वर है
आश्चर्य्यकर्म्म केवल वही करता है ॥
१९। और उस का महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा
और सारी पृथिवी उस की महिमा से परिपूर्ण होगी
आमेन् फिर आमेन् ॥

२०। यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं।

तीसरा भाग।

आसाप् का भजन।

७३. सचमुच इस्राएल् के अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये
परमेश्वर भला है ॥
२। मेरे पांव तो टला चाहते थे
मेरे पैर फिसल जाने ही पर थे ॥
३। क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था
तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था ॥
४। क्योंकि उन की मृत्युकारक बाधाएं नहीं होतीं

उन का बल अटूट रहता है ॥
५। उन को दूसरे मनुष्यों की नाईं कष्ट नहीं होता
और और मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति नहीं पड़ती ॥
६। इस कारण अहंकार उन के गले का हार बना
उन का ओढ़ना उपद्रव है ॥
७। उन की आंखें चर्बी में से झलकती हैं
उन के मन की भावनाएं उमण्डती हैं ॥
८। वे ठट्ठा मारते और दुष्टता से अंधेर की बात बोलते हैं
वे डींगमारते हैं[1] ॥
९। वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं[1]
और वे पृथिवी में बोलते फिरते हैं[2] ॥
१०। तौभी उस की प्रजा इधर लौट आएगी
और उन को भरे हुए प्याले का जल मिलेगा ॥
११। फिर वे कहते हैं कि ईश्वर कैसे जानता है
क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है ॥
१२। देखो ये तो दुष्ट लोग हैं
तौभी सदा सुभागी रहकर धन संपत्ति बटोरते रहते हैं ॥
१३। निश्चय मैं ने जो अपने हृदय को शुद्ध किया
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया है सो सब व्यर्थ है ॥
१४। क्योंकि मैं लगातार मार खाता आया हूं
और भोर भोर को मेरी ताड़ना होती आई है ॥
१५। यदि मैं ऐसा ही कहना ठानता
तो मैं तेरे लड़कों के समाज को धोखा खिलाता ॥
१६। इस बात के समझने के लिये सोचते सोचते
यह मेरी दृष्टि में तब लों अति कठिन ठहरी,
१७। जब लों मैं ने ईश्वर के पवित्रस्थान में जाकर
उन लोगों के परिणाम को न विचारा ॥

(१) मूल में वे ऊंचे पर से बोलते हैं।
(२) मूल में, उन की जीभ पृथिवी में चलती है।

१८। निश्चय तू उन्हें फिसलहे स्थानों में रखता
और गिराकर सत्यानाश कर देता है ॥
१९। अहा वे क्षण भर में कैसे उजड़ गये हैं
वे मिट गये वे घबराते घबराते नाश हो गये हैं ॥
२०। जैसे जागनेहारा स्वप्न को तुच्छ जानता है
वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा तब उन को छाया सा समझकर तुच्छ जानेगा ॥
२१। मेरा मन तो चिड़चिड़ा हो गया
मेरा अन्तःकरण छिद गया था ॥
२२। मै तो पशु सरीखा था और समझता न था
मैं तेरे संग रहकर भी पशु बन गया था ॥
२३। तौभी मै निरन्तर तेरे संग ही था
तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रक्खा ॥
२४। तू सम्मति देता हुआ मेरी अगुवाई करेगा
और पीछे मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रक्खेगा ॥
२५। स्वर्ग में मेरा और कौन है
तेरे संग रहते हुए मैं पृथिवी पर भी कुछ नहीं चाहता ॥
२६। मेरे तन और मन दोनों तो हार गये हैं
परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे मन की चटान बना है ॥
२७। जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे
जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता है उस को तू विनाश करता है ॥
२८। परन्तु परमेश्वर के समीप रहना यही मेरे लिये भला है
मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है
जिस से तेरे सब कामों का वर्णन करूं ॥

आसाप् का मस्कील्।

७४. हे परमेश्वर तू ने हमें क्यों सदा के लिये छोड़ दिया है
तेरी कोपाग्नि का धूआं तेरी चराई की भेड़ों के विरुद्ध क्यों उठ रहा है ॥
२। अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीनकाल में मोल लिया था

और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये
छुड़ा लिया था
और इस सिय्योन् पर्वत को भी जिस पर तू ने
वास किया था स्मरण कर ॥
३। सदा के उजाड़ों की ओर पधार
शत्रु ने तो पवित्रस्थान में सब कुछ बिगाड़ दिया है॥
४। तेरे द्रोही तेरे सभास्थान के बीच गरजे
उन्हों ने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया॥
५। वे ऐसे देख पड़े
कि मानो घने वन के पेड़ों पर कुल्हाड़े उठा
रहे हैं ॥
६। और अब वे उस भवन की नक्काशी को
कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से एक दम तोड़
डालते हैं ॥
७। उन्हों ने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक
दिया
और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर
डाला है ॥
८। उन्हों ने मन में कहा है कि हम इन को
एक दम दबा दें
उन्हों ने इस देश में ईश्वर के सब सभास्थानों
को फूंक दिया है ॥
९। हम को अपने संकेत नहीं देख पड़ते
अब कोई नबी नहीं रहा
न हमारे बीच कोई जानता है कि कब लों ॥
१०। हे परमेश्वर द्रोही कब लों नामधराई
करता रहेगा
क्या शत्रु तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा॥
११। तू अपना दहिना हाथ क्यों रोके रहता है
उसे अपनी छाती पर से उठाकर उन का अन्त
कर दे ॥
१२। परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है
वह पृथिवी पर उद्धार के काम करता आया है॥
१३। तू ने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो
भाग किया
तू ने तो जल में मगरमच्छों के सिरों को फोड़
दिया ॥
१४। तू ने तो लिव्यातानों के सिर टुकड़े टुकड़े
करके
जंगली जन्तुओं को खिला दिये ॥
१५। तू ने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई
तू ने तो बारहमासी नदियों को सुखा डाला ॥
१६। दिन तेरा है रात भी तेरी है
सूर्य्य और चंद्रमा को तू ने स्थिर किया है ॥
१७। तू ने तो पृथिवी के सब सिवानों को
ठहराया
धूपकाल और जाड़ा दोनों तू ने ठहराये हैं ॥
१८। हे यहोवा स्मरण कर कि शत्रु ने नामधराई
किई है
और मूढ़ लोगों ने तेरे नाम की निन्दा किई है॥
१९। अपनी पिण्डुकी के प्राण को वनपशु के
वश में न कर दे
अपने दीन जनों को सदा के लिये न बिसरा ॥
२०। अपनी वाचा की सुधि ले
क्योंकि देश के अंधेरे स्थान अंधेर के घरों से
भरपूर हैं ॥
२१। पिसे हुए जन को निरादर होकर लौटना
न पड़े
दीन और दरिद्र लोग, तेरे नाम की स्तुति
करने पाएं ॥
२२। हे परमेश्वर उठ अपना मुकद्दमा आप ही लड़
तेरी जो नामधराई मूढ़ से दिन भर होती रहती
है सो स्मरण कर ॥
२३। अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल
तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता
रहता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। अल्तशहेत्[१]।
आसाप् का भजन। गीत।

७५. हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद
करते
हम तेरा धन्यवाद करते हैं क्योंकि तेरा नाम
प्रगट[२] हुआ है

(१) अर्थात् नाश न कर। (२) मूल में, निकट।

तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हो रहा है ॥
२। जब ठीक समय आएगा
तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय करूंगा ॥
३। पृथिवी अपने सब रहनेहारों समेत गल रही है
मैं उस के खंभों को थांभे हूं। सेला ॥
४। मैं ने घमंडियों से कहा कि घमण्ड मत करो
और दुष्टों से कि सींग ऊंचा मत करो ॥
५। अपना सींग बहुत ऊंचा मत करो
न सिर उठाकर[1] ढिठाई की बात बोलो ॥
६। क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से
और न जंगल की ओर से आती है ॥
७। परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है
वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है ॥
८। यहोवा के हाथ में एक कटोरा है जिस में का दाखमधु फेना रहा है
उस में मसाला मिला है और वह उस में से उंडेलता है
निश्चय उस की तलछट तक पृथिवी के सब दुष्ट लोग पी जाएंगे[2] ॥
९। पर मैं तो सदा प्रचार करता रहूंगा
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊंगा ॥
१०। और दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूंगा
पर धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। तारवाले बाजों के साथ। आसाप् का भजन। गीत।

७६. परमेश्वर यहूदा में जाना गया है

उस का नाम इस्राएल् में महान् हुआ है ॥
२। और उस का मण्डप शालेम् में
और उस का धाम सिय्योन् में है ॥
३। वहां उस ने चमचमाते तीरों को
और ढाल और तलवार तोड़कर निदान लड़ाई ही को तोड़ डाला है। सेला ॥
४। हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है

(१) मूल में म गर्दन से।
(२) मूल में निचोड़ निचोड़कर पीएंगे।

तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक महान है ॥
५। दृढ़ मनवाले लुट गये और भारी नींद में पड़े हैं
और शूरवीरों में से किसी का हाथ न चला[1] ॥
६। हे याकूब के परमेश्वर तेरी घुड़की से
रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े ॥
७। केवल तू ही भययोग्य है
और जब तू कोप करने लगे तब तेरे साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा ॥
८। तू ने स्वर्ग से निर्णय का वचन सुनाया
पृथिवी उस समय सुनकर डर गई और चुप रही,
९। जब परमेश्वर न्याय करने को
और पृथिवी के सब नम्र लोगों का उद्धार करने को उठा। सेला ॥
१०। निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी
और जो जलजलाहट रह जाए उस को तू रोकेगा ॥
११। अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो और पूरी भी करो
वह जो भय के योग्य है सो उस के आस पास के सब रहनेहारे भेंट ले आएं ॥
१२। वह तो प्रधानों का अभिमान[2] मिटा देगा
वह पृथिवी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। यदूतून् को। आसाप् का। भजन।

७७. मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दूंगा

मैं परमेश्वर की दोहाई दूंगा और वह मेरी ओर कान लगाएगा ॥
२। संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा
रात को मेरा हाथ फैला रहा और ढीला न हुआ

(१) मूल में. मिला। (२) मूल में. आत्मा।

मुझ को शान्ति आई ही नहीं ॥
३ । मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कहरता हूं
मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो चला हूं । सेला ॥
४ । तू मुझे झपकी लगने नहीं देता
मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह से बात नहीं निकलती ॥
५ । मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को
और युग युग के बरसों को सोचा है ॥
६ । मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता
और मन में ध्यान करता
और जी में भली भांति विचार करता हूं ॥
७ । क्या प्रभु युग युग के लिये छोड़ देगा
और फिर कभी प्रसन्न न होगा ॥
८ । क्या उस की करुणा सदा के लिये जाती रही
क्या उस का वचन पीढ़ी पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है ॥
९ । क्या ईश्वर अनुग्रह करने को भूल गया
क्या उस ने कोप करके अपनी सारी दया को रोक रक्खा है । सेला ॥
१० । मैं ने कहा यह तो मेरी दुर्बलता ही है
परन्तु परमप्रधान के दहिने हाथ के बरसों को विचारता हूं ॥
११ । मैं याह् के बड़े कामों की चर्चा करूंगा
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को स्मरण करूंगा ॥
१२ । मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा
और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा ॥
१३ । हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है
कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है ॥
१४ । अद्भुत काम करनेहारा ईश्वर तू ही है
तू ने देश देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट किई है ॥
१५ । तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा
याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया । सेला ॥
१६ । हे परमेश्वर जल ने तुझे देखा
जल को तुझे देखने से पीड़ें उठीं
गहिरा सागर भी व्याकुल हुआ ॥
१७ । मेघों से बड़ी वर्षा हुई
आकाश से शब्द हुआ
फिर तेरे तीर इधर उधर चले ॥
१८ । बवण्डर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा
जगत बिजली से प्रकाशित हुआ
पृथिवी कांपी और हिल गई ॥
१९ । तेरा मार्ग समुद्र में
और तेरा रास्ता गहिरे जल में हुआ
और तेरे पांवों के चिन्ह देख न पड़े ॥
२० । तू ने मूसा और हारून के द्वारा
अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी किई ॥

आसाप् का मस्कील् ।

७८. हे मेरी प्रजा मेरी शिक्षा सुन
मेरे वचनों की ओर कान लगा ॥
२ । मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा
मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा ॥
३ । जिन बातों को हम ने सुना और जान लिया
और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है,
४ । उन्हे हम उन की सन्तान से गुप्त न रक्खेंगे
पर होनहार पीढ़ी के लोगों से
यहोवा का गुणानुवाद और उस के सामर्थ्य और आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करेंगे ॥
५ । उस ने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई
और इस्राएल् में एक व्यवस्था चलाई
उन के विषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा दिई
कि तुम इन्हें अपने अपने लड़केबालों को बताना,
६ । इस लिये कि आनेहारी पीढ़ी के लोग अर्थात् जो लड़केबाले उत्पन्न होनेहारे हैं सो इन्हें जानें

और अपने अपने लड़केबालों से इन का बखान
करने में उद्यत हों,
७। जिस से वे परमेश्वर का आसरा करें
और ईश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं
और उस की आज्ञाओं को पालते रहें,
८। और अपने पितरों के समान न हों,
क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और
दंगइत थे
और उन्हों ने अपना मन दृढ़ न किया था
और न उन का आत्मा ईश्वर की ओर सच्चा
रहा ॥
९। एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और धनुर्धारी
होने पर भी
युद्ध के समय पीठ फेरी ॥
१०। उन्हों ने परमेश्वर की वाचा पूरी न
किई
और उस की व्यवस्था पर चलने को नकारा,
११। और उस के बड़े कामों को और जो
आश्चर्य्यकर्म्म उस ने उन के साम्हने किये थे
उन को बिसरा दिया ॥
१२। उस ने तो उन के बापदादों के सन्मुख
मिस्र देश के सोअन् के मैदान में अद्भुत कर्म्म
किये थे ॥
१३। उस ने समुद्र को दो भाग करके उन्हें
पार कर दिया
और जल को ढेर की नाईं खड़ा कर दिया ॥
१४। और उस ने दिन को तो बादल के
और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा उन
की अगुवाई किई ॥
१५। वह जंगल में चटानें फाड़ फाड़कर
उन को मानो गहिरे जलाशयों से मनमानते
पिलाता था ॥
१६। उस ने ढांग से भी धाराएं निकालीं
और नदियों का सा जल बहाया ॥
१७। तौभी वे फिर उस के विरुद्ध अधिक पाप
करते गये
और निर्जल देश में परमप्रधान के विरुद्ध उठते रहे ॥
१८। और अपनी चाह के अनुसार[1] भोजन मांगकर
मन ही मन ईश्वर की परीक्षा किई ॥
१९। और वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले
और कहने लगे क्या ईश्वर जंगल में मेज लगा
सकता ॥
२०। उस ने चटान पर मारके जल बहा तो दिया
और धाराएं उमण्ड चलीं
पर क्या वह रोटी भी दे सकता
क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस भी तैयार
कर सकता ॥
२१। सो यहोवा सुनकर रोष से भर गया
तब याकूब के बीच आग लगी
और इस्राएल् के विरुद्ध कोप भड़का ॥
२२। इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर पर
विश्वास न रक्खा
न उस की उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया ॥
२३। तौभी उस ने आकाश को आज्ञा दिई
और स्वर्ग के द्वारों को खोला ॥
२४। और उन के लिये खाने को मान् बरसाया
और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया ॥
२५। उन को शूरवीरों की सी रोटी मिली
उस ने उन को मनमानते भोजन दिया ॥
२६। उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया
और अपनी शक्ति से दखिनहिया बहाई ॥
२७। और उन के लिये मांस धूलि की नाईं
बहुत बरसाया
और समुद्र की बालू के समान अनगिनित पंछी
भेजे,
२८। और उन की छावनी के बीच
उन के निवासों की चारों ओर गिराये ॥
२९। सो वे खाकर अति तृप्त हुए
और उस ने उन की कामना पूरी किई ॥
३०। उन की कामना बनी ही रही[2]
उन का भोजन उन के मुंह ही में था,

(१) मूल में जीव। (२) मूल में, वे अपनी वाञ्छा से बिराने न हुए थे।

३१। कि परमेश्वर का कोप उन पर भड़का
और उस ने उन के हृष्टपुष्टों को घात किया
और इस्राएल् के जवानों को गिरा दिया॥
३२। इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गये
और परमेश्वर के आश्चर्य्यकर्म्मों की प्रतीति न किई॥
३३। सो उस ने उन के दिनों को व्यर्थ श्रम में
और उन के बरसों को घबराहट में कटवाया॥
३४। जब जब वह उन्हें घात करने लगता तब तब वे उस को पूछते थे
और फिरके ईश्वर को यत्न से खोजते थे॥
३५। और उन को स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चटान है
और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ानेहारा है॥
३६। तौभी उन्हों ने उस से चापलूसी किई
और वे उस से झूठ बोले॥
३७। क्योंकि उन का हृदय उस की ओर दृढ़ न था,
न वे उस की वाचा के विषय सच्चे थे॥
३८। पर वह जो दयालु है सो अधर्म्म को ढांपता और नाश नहीं करता
वह बार बार अपने कोप को ठण्डा करता
और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता॥
३९। सो उस का स्मरण हुआ कि ये नाशमान[1] हैं
ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट नहीं आती॥
४०। उन्हों ने कितनी ही बार जंगल में उस से बलवा किया
और निर्जल देश में उस को उदास किया॥
४१। वे फिरके ईश्वर की परीक्षा करते
और इस्राएल् के पवित्र को खेदित करते थे॥
४२। उन्हों ने न तो उस का भुजबल स्मरण किया
न वह दिन जब उस ने उन को द्रोही के वश से छुड़ाया था,
४३। कि उस ने क्योंकर अपने चिन्ह मिस्र में
और अपने चमत्कार सोअन् के मैदान में किये थे॥
४४। उस ने तो मिस्रियों[1] की नहरों को लोहू बना डाला
और वे अपनी नदियों का जल पी न सके॥
४५। उस ने उन के बीच डांस भेजे जिन्हों ने उन्हें काट खाया॥
और मेण्ढक भी भेजे जिन्हों ने उन का बिगाड़ किया॥
४६। और उस ने उन की भूमि की उपज कीड़ों को
और उन की खेतीबारी टिड्डियों को खिला दिई थी॥
४७। उस ने उन की दाखलताओं को ओलों से
और उन की गूलरों को बड़े बड़े पत्थर बरसाकर नाश किया॥
४८। उस ने उन के पशुओं को ओलों से
और उन के ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया॥
४९। उस ने उन के ऊपर अपना प्रचण्ड कोप क्रोध और रोष भड़काया
और उन्हें संकट में डाला
और दुखदाई दूतों का दल भेजा॥
५०। उस ने अपने कोप का मार्ग खोला[2]
और उन के प्राणों को मृत्यु से न बचाया
पर उन को मरी के वश कर दिया,
५१। और मिस्र में के सब पहिलौठों को मारा
जो हाम् के डेरों में पौरुष के पहिले फल थे,
५२। पर अपनी प्रजा को भेड़ बकरियों की नाईं पयान कराया
और जंगल में उन की अगुवाई पशुओं के झुण्ड की सी किई॥
५३। सो वे तो उस के चलाने से बेखटके चले
और उन को कुछ भय न हुआ

(१) मूल में, मास।

(१) मूल में उन।
(२) मूल में समथर किया।

पर उन के शत्रु समुद्र में डूब गये ॥
५४ । और उस ने उन को अपने पवित्र देश के सिवाने लों
इसी पहाड़ी देश में पहुंचाया जो उस ने अपने दहिने हाथ से प्राप्त किया था ॥
५५ । और उस ने उन के साम्हने से अन्यजातियों को भगा दिया
और उन की भूमि को डोरी से माप मापकर बांट दिया
और इस्राएल् के गोत्रों को उन के डेरों में बसाया ॥
५६ । परन्तु उन्हों ने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा किई और उस से बलवा किया
और उस की चितौनियों को न माना,
५७ । और मुड़कर अपने पुरखाओं की नाईं विश्वासघात किया
उन्हों ने निकम्मे[1] धनुष की नाईं धोखा दिया,[2]
५८ । और उन्हों ने ऊंचे स्थान बनाकर उस को रिस दिलाई
और खुदी हुई मूर्त्तियों के द्वारा उस के जलन उपजाई ॥
५९ । परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया
और इस्राएल् को बिलकुल तज दिया ॥
६० । और शीलो में के निवास
अर्थात् उस तंबू को जो उस ने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था त्याग दिया ॥
६१ । और अपने सामर्थ्य को बंधुआई में जाने दिया।
और अपनी शोभा को द्रोही के वश कर दिया,
६२ । और अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया
और अपने निज भाग के लोगों पर रोष से भर गया ॥
६३ । उन के जवान आग से भस्म हुए
और उन की कुमारियों के विवाह के गीत न गाये गये ॥
६४ । उन के याजक तलवार से मारे गये
और उन की विधवाएं रोने न पाईं ॥

(१) मूल में धोखा देनेहारे। (२) मूल में मुड़ गये।

६५ । तब प्रभु नींद से चौंक उठा
और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो ॥
६६ । और उस ने अपने द्रोहियों को मारके पीछे हटा दिया
और उन की सदा की नामधराई कराई ॥
६७ । फिर उस ने यूसुफ के तंबू को तज दिया
और एप्रैम् के गोत्र को न चुना,
६८ । पर यहूदा ही के गोत्र को
और अपने प्रिय सिय्योन् पर्वत को चुन लिया ॥
६९ । और अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊंचा बना दिया
और पृथिवी के समान स्थिर बनाया जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली है ॥
७० । फिर उस ने अपने दास दाऊद को चुनकर
भेड़शालाओं में से ले लिया ॥
७१ । वह उस को बच्चेवाली भेड़ों के पीछे पीछे फिरने से ले आया
कि वह उस की प्रजा याकूब की
अर्थात् उस के निज भाग इस्राएल् की चरवाही करे ॥
७२ । सो उस ने खरे मन से उन की चरवाही किई
और अपने हाथ की कुशलता से उन की अगुवाई किई ॥

आसाप् का भजन ।

७९. हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे निज भाग में घुस आईं
उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया
और यरूशलेम् को डीह ही डीह कर दिया है ॥
२ । उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया
और तेरे भक्तों का मांस बनैले पशुओं को खिला दिया है ॥
३ । उन्हों ने उन का लोहू यरूशलेम् की चारों ओर जल की नाईं बहाया
और उन को मिट्टी देनेहारा कोई न रहा ॥

४। पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई हुई
चारों ओर के रहनेहारे हम पर हंसते और ठट्ठा
करते हैं ॥
५। हे यहोवा तू कब लों लगातार कोप करता
रहेगा
तुझ में आग की सी जलन कब लों भड़कती
रहेगी ॥
६। जो जातियां तुझ को नहीं जानतीं
और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं
करते
उन्हीं पर अपनी सारी जलजलाहट भड़का[१] ॥
७। क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया
और उस के वासस्थान को उजाड़ दिया है ॥
८। हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं के
अधर्म्म के कामों को स्मरण न कर
तेरी दया हम पर शीघ्र हो
क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं ॥
९। हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर अपने नाम
की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर
और अपने नाम के निमित्त हम को छुड़ाकर
हमारे पापों को ढांप दे ॥
१०। अन्यजातियां क्यों कहने पाएं कि उन का
परमेश्वर कहां रहा
अपने दासों के खून का पलटा लेना
अन्यजातियों के बीच हमारे देखते मालूम
हो जाए ॥
११। बंधुओं का कराहना तेरे कान लों पहुंचे
घात होनेहारों को अपने भुजबल के द्वारा बचा ॥
१२। और हे प्रभु हमारे पड़ोसियों ने जो तेरी
निन्दा किई है
उस का सातगुणा बदला उन को दे ॥
१३। तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई
की भेड़ें हैं
सो तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे
और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरा गुणानुवाद करते
रहेंगे ॥

(१) मूल में, अपनी जलजलाहट उण्डेल ।

प्रधान बजानेहारे के लिये । शोशन्नीमेदूत्[१] में ।
आसाप् का । भजन ।

८०.

हे इस्राएल् के चरवाहे
तू जो यूसुफ की अगुवाई भेड़ों की सी करता
है सो कान लगा
तू जो करूबों पर विराजमान है सो अपना
तेज दिखा ॥
२। एप्रैम् बिन्यामीन् और मनश्शे के साम्हने
अपना पराक्रम दिखाकर
हमारा उद्धार करने को आ ॥
३। हे परमेश्वर हम को ज्यों के त्यों कर दे
और अपने मुख का प्रकाश चमका तब हमारा
उद्धार हो जाएगा ॥
४। हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
तू कब लों अपनी प्रजा की प्रार्थना पर
क्रोधित रहेगा[२] ॥
५। तू ने आंसुओं को उन का आहार कर दिया
और मटके भर भरके उन्हें आंसू पिलाये हैं ॥
६। तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का
कारण कर देता है
और हमारे शत्रु मनमानते ठट्ठा करते हैं ॥
७। हे सेनाओं के परमेश्वर हम को ज्यों के
त्यों कर दे
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका तब
हमारा उद्धार हो जाएगा ॥
८। तू मिस्र से एक दाखलता ले आया
और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया ॥
९। तू ने उस के लिये स्थान तैयार किया
और उस ने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को
भर दिया ॥
१०। उस की छाया पहाड़ों पर फैल गई
और उस की डालियां ईश्वर के देवदारुओं के
समान हुईं ॥
११। उस की शाखाएं समुद्र लों बढ़ गईं

(१) अर्थात् सोसन साक्षी ।
(२) मूल में, धूआं उठाता रहेगा ।

और उस के अंकुर महानद लों फैल गये ॥
१२। फिर तू ने उस के बाड़ों को क्यों गिरा दिया
कि सारे बटोही उस के फलों को तोड़ लेते ॥
१३। बनसूअर उस को नाश किये डालता है
और मैदान के सब पशु उसे चरे लेते हैं ॥
१४। हे सेनाओं के परमेश्वर फिर आ
स्वर्ग से ध्यान देकर देख और इस दाखलता की सुधि ले ॥
१५। और जो पौधा तू ने अपने दहिने हाथ से लगाया
और जिस लता की शाखा[1] तू ने अपने लिये दृढ़ किई है उन की सुधि ले।
१६। वह जल गई वह कट गई है
तेरी घुड़की से वे नाश होते हैं ॥
१७। तेरे दहिने हाथ के सभाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रक्खा रहे
उस आदमी पर जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है ॥
१८। तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे
तू हम को जिला और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे ॥
१९। हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा हम को ज्यों के त्यों कर दे
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका तब हमारा उद्धार हो जाएगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। गित्तीथ् में। आसाप्।

८१. परमेश्वर जो हमारा बल है उस का गीत आनन्द से गाओ

याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो ॥
२। भजन उठाओ डफ और मधुर बजनेहारी वीणा
और सारंगी को ले आओ ॥
३। नये चान्द के दिन
और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूंको ॥

(१) मूल में, बेटा।

४। क्योंकि यह इस्राएल् के लिये विधि
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है ॥
५। इस को उस ने यूसुफ में चितौनी की रीति पर तब चलाया
जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला
वहां मैं ने एक अनजानी भाषा सुनी ॥
६। मैं ने उन के कन्धों पर से बोझ को उतार दिया
उन का टोकरी ढोना छूट गया ॥
७। तू ने संकट में पड़कर पुकारा तब मैं ने तुझे छुड़ाया
बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैं ने तेरी सुनी
और मरीबा नाम सोते के पास तेरी परीक्षा किई। सेला ॥
८। हे मेरी प्रजा सुन मैं तुझे चिता देता हूं
हे इस्राएल् भला हो कि तू मेरी सुने ॥
९। तेरे बीच पराया ईश्वर न हो
न तू और किसी के माने हुए ईश्वर को दण्डवत् करना ॥
१०। तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूं
जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है
तू अपना मुंह पसार मैं उसे भर दूंगा ॥
११। पर मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी
इस्राएल् ने मुझ को न चाहा ॥
१२। सो मैं ने उस को उस के मन के हठ पर छोड़ दिया
कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले ॥
१३। यदि मेरी प्रजा मेरी सुने
यदि इस्राएल् मेरे मार्गों पर चले ॥
१४। तो मैं क्षण भर में उन के शत्रुओं को दबाऊं
और अपना हाथ उन के द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊं ॥
१५। यहोवा के बैरियों को तो उस[1] की चापलूसी करनी पड़े

(१) मूल में उस।

पर वे सदाकाल लों बने रहें ॥
१६ । और वह उन को उत्तम से उत्तम गेहूं खिलाए
और मैं चटान में के मधु से उन को तृप्त करूं ॥

आसाप् का भजन ।

८२. परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है

वह ईश्वरों के मध्य में न्याय करता है ॥
२ । तुम लोग कब लों टेढ़ा न्याय करते
और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे । सेला ॥
३ । कंगाल और बपमूए का न्याय चुकाओ
दीन दरिद्र का विचार धर्म से करो ॥
४ । कंगाल और निर्धन को बचा लो
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ ॥
५ । वे न तो कुछ समझते और न कुछ बूझते
पर अंधेरे में चलते फिरते रहते हैं
पृथिवी की सारी नेव हिल जाती है ॥
६ । मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो
और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो,
७ । तौभी तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे
और किसी हाकिम के समान उतारे जाओगे ॥
८ । हे परमेश्वर उठ पृथिवी का न्याय कर
क्योंकि सारी जातियों को अपने भाग में तू ही लेगा ॥

गीत । आसाप् का भजन ।

८३. हे परमेश्वर मौन न रह

हे ईश्वर चुप न रह और न सुस्ता
२ । क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है ॥
३ । वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते
और तेरे रक्षित[1] लोगों के विरुद्ध युक्तियां निकालते हैं ॥
४ । उन्हों ने कहा आओ हम उन को ऐसा नाश करें कि राज्य[2] न रहे

(१) मूल में छिपाये हुए । (२) मूल में जाति ।

और इस्राएल् का नाम आगे को स्मरण न रहे ॥
५ । उन्हों ने एक मन होकर युक्ति निकाली
और तेरे ही विरुद्ध वाचा बांधी है ॥
६ । ये तो एदोम् के तंबूवाले
और इश्माएली मोआबी और हग्री,
७ । गबाली अम्मोनी अमालेकी
और सोर् समेत पलिश्ती हैं ॥
८ । इन के संग अश्शूरी भी मिल गये
उन से भी लोतवंशियों को सहारा मिला है । सेला ॥
९ । इन से ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से
और कीशोन् नाले में सीसरा और याबीन् से किया था ॥
१० । जो एन्दोर् में नाश हुए
और भूमि के लिये खाद बन गये ॥
११ । इन के रईसों को ओरेब् और जेब् के सरीखे
और इन के सब प्रधानों को जेबह् और सल्मुन्ना के समान कर दे ॥
१२ । जिन्हों ने कहा था
कि हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप हो जाएं ॥
१३ । हे मेरे परमेश्वर इन को बवण्डर की धूलि के
वा पवन से उड़ाये हुए भूसे के सरीखे कर दे ॥
१४ । उस आग की नाईं जो बन को भस्म करती
और उस लौ की नाईं जो पहाड़ों को जला देती है,
१५ । तू इन्हें अपनी आंधी से भगा
और अपने बवण्डर से घबरा दे ॥
१६ । इन के मुंह को अति लज्जित कर
कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूंढ़ें ॥
१७ । ये सदा लों लज्जित और घबराये रहें
इन के मुंह काले हों और इन का नाश हो जाए,

१८। जिस से ये जानें कि केवल तू जिस का नाम यहोवा है
सारी पृथिवी के ऊपर परमप्रधान है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । गित्तीथ् में । कोरहवंशियों का । भजन ।

८४. हे सेनाओं के यहोवा

तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं ॥
२। मेरा जीव यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला
मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे हैं ॥
३। हे सेनाओं के यहोवा हे मेरे राजा और मेरे परमेश्वर तेरी वेदियों में,
गौरैया को बसेरा
और सूपाबेनी को घोंसला मिला तो है
जिस में वह अपने बच्चे रखे ॥
४। क्या ही धन्य हैं वे जो तेरे भवन में रहते हैं
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे । सेला ॥
५। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता[1]
और वे जिन को सिय्योन् की सड़क की सुधि रहती है ॥
६। वे रोने की तराई में जाते हुए उस को सोतों का स्थान बनाते हैं
फिर बरसात की अगली वृष्टि उस में आशीष ही आशीष उपजाती है ॥
७। वे बल पर बल पाते जाते हैं
उन में से हर एक जन सिय्योन् में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा ॥
८। हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा मेरी प्रार्थना सुन
हे याकूब के परमेश्वर कान लगा । सेला ॥
९। हे परमेश्वर हे हमारी ढाल दृष्टि कर
और अपने अभिषिक्त का मुख देख ॥

(१) मूल में जिस की शक्ति तुझ में है ।

१०। क्योंकि तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है
दुष्टों के डेरों में वास करने से
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है ॥
११। क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य्य और ढाल है
यहोवा अनुग्रह करेगा और महिमा देगा
और जो लोग खरी चाल चलते हैं उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा ॥
१२। हे सेनाओं के यहोवा
क्या ही धन्य वह मनुष्य है जो तुझ पर भरोसा रखता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरहवंशियों का । भजन ।

८५. हे यहोवा तू अपने देश पर प्रसन्न हुआ

तू याकूब को बंधुआई से लौटा ले आया है ॥
२। तू ने अपनी प्रजा के अधर्म्म को क्षमा किया
और उस के सारे पाप को ढांप दिया है । सेला ॥
३। तू ने अपने सारे रोष को शान्त किया
और अपने भड़के हुए कोप को दूर किया है ॥
४। हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर हम को फेर
और अपनी रिस हम पर से दूर कर ॥
५। क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी लों कोप करता रहेगा ॥
६। क्या तू हम को फिर न जिलाएगा
कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे ॥
७। हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा
और तू हमारा उद्धार कर[1] ॥
८। मैं कान लगाये रहूंगा कि ईश्वर यहोवा क्या कहता है
वह तो अपनी प्रजा से जो उस के भक्त हैं शांति की बातें कहेगा
पर वे फिरके मूर्खता करने न लगें ॥
९। निश्चय उस के डरवैयों के उद्धार का समय निकट है
तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा ॥

(१) मूल में अपना उद्धार हमें दे ।

१० । करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं
धर्म्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है ॥
११ । पृथिवी में से सच्चाई उगती
और स्वर्ग से धर्म्म झुकता है ॥
१२ । फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा
और हमारी भूमि अपनी उपज देगी ॥
१३ । धर्म्म उस के आगे आगे चलेगा
और उस के पांवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा ॥

दाऊद की प्रार्थना ।

८६. हे यहोवा कान लगाकर मेरी सुन ले
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं ॥
२ । मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं भक्त हूं
तू जो मेरा परमेश्वर है सो अपने दास का जिस का भरोसा तुझ पर है उद्धार कर ॥
३ । हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूं ॥
४ । अपने दास के मन को आनन्दित कर
क्योंकि हे प्रभु मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं ॥
५ । क्योंकि हे प्रभु तू भला और क्षमा करनेहारा है
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति-करुणामय है ॥
६ । हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन ॥
७ । संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा
क्योंकि तू मेरी सुन लेगा ॥
८ । हे प्रभु देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं
और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं ॥
९ । हे प्रभु जितनी जातियों को तू ने बनाया है सब आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी
और तेरे नाम की महिमा करेंगी ॥
१० । क्योंकि तू महा और आश्चर्य्यकर्म्म करनेहारा है
केवल तू ही परमेश्वर है ॥
११ । हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा
मुझ को एकचित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूं ॥
१२ । हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा
और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा ॥
१३ । क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी है
और तू ने मुझ को अधोलोक के तल में जाने से बचा लिया है ॥
१४ । हे परमेश्वर अभिमानी लोग तो मेरे विरुद्ध उठे
और बलात्कारियों का समाज मेरे प्राण का खोजी हुआ
और वे तेरा कुछ विचार नहीं रखते ॥
१५ । पर हे प्रभु तू दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर है
तू विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है ॥
१६ । मेरी ओर फिरके मुझ पर अनुग्रह कर
अपने दास को तू शक्ति दे
और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर ॥
१७ । मेरी भलाई का लक्षण दिखा
जिसे देखकर मेरे वैरी निराश हों
क्योंकि हे यहोवा तू ने आप मेरी सहायता किई और मुझे शान्ति दिई है ॥

कोरहवंशियों का । भजन । गीत ।

८७. यहोवा पवित्र पर्वतों पर की अपनी डाली हुई नेव में,
२ । और सिय्योन् के फाटकों में
याकूब के सारे निवासों से बढ़कर
प्रीति रखता है ॥
३ । हे परमेश्वर के नगर
तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं[1] । सेला ॥

---
(१) वा तेरी नगरी महिमा के साथ हुई ।

४। मैं अपने चिन्हारों की चर्चा चलाते समय
रहब् और बाबेल् की भी चर्चा करूंगा
पलिश्त् सोर् और कूश् को देखो
यह वहां उत्पन्न हुआ है ॥
५। और सिय्योन् के विषय यह कहा जाएगा कि
फुलाना फुलाना मनुष्य उस में उत्पन्न हुआ
और परमप्रधान आप ही उस को स्थिर रक्खेगा ॥
६। यहोवा जब देश देश के लोगों के नाम
लिखकर गिन लेगा तब यह कहेगा
कि यह वहां उत्पन्न हुआ है। सेला ॥
७। गानेहारे और नाचनेहारे दोनों कहेंगे
कि हमारे सारे सोते तुझी में पाये जाते हैं ॥

गीत। कोरहवंशियों का भजन। प्रधान बजानेहारे के लिये।
महलतुलन्नोत् में। एज्राहवंशी हेमान् का मस्कील्।

८८. हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा

मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता
आया हूं ॥
२। मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे
मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा ॥
३। क्योंकि मेरा जीव क्लेश से भरा हुआ है
और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा है ॥
४। मैं कबर में पड़नेहारों में गिना गया
मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं ॥
५। मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया[1] हूं
और जो घात होकर कबर में पड़े हैं
जिन को तू फिर स्मरण नहीं करता
और वे तेरी सहायता से रहित हैं[2]
उन के समान मैं हुआ हूं ॥
६। तू ने मुझे गड़हे के तल ही में
अंधेरे और गहिरे स्थान में रक्खा है ॥
७। तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है

(१) मूल में स्वाधीन।
(२) मूल में तेरे हाथ से कटे हुए।

और तू ने अपने सारे तरंगों से मुझे दुःख दिया
है। सेला ॥
८। तू ने मेरे चिन्हारों को मुझ से दूर किया
और मुझ को उन के लेखे घिनौना किया है
मैं बन्द हूं और निकल नहीं सकता।
९। दुःख भोगते भोगते मेरी आंख धुंधला गई है ॥
हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने
हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूं ॥
१०। क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा
क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे।
सेला ॥
११। क्या कबर में तेरी करुणा का
वा विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन
किया जाएगा,
१२। क्या तेरे अद्भुत काम अन्धकार में
वा तेरा धर्म्म बिसरने की दशा[1] में जाना जाएगा ॥
१३। पर हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दिई है
और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचेगी ॥
१४। हे यहोवा तू मुझ को क्यों छोड़ता है
तू अपना मुख मुझ से क्यों फेरे[2] रहता है ॥
१५। मैं बचपन ही से दुःखी बरन अधमूआ हूं
तुझ से भय खाते खाते मैं अति व्याकुल हो
गया हूं ॥
१६। तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है
उस भय से मैं मिट गया हूं।
१७। वह दिन भर जल की नाईं मुझे घेरे रहता है
वह मेरी चारों ओर दिखाई देता है ॥
१८। तू ने मित्र और भाईबन्धु दोनों को मुझ
से दूर किया है
मेरा चिन्हार अंधकार ही है ॥

एतान् एज्राहवंशी का मस्कील्।

८९. मैं यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूंगा

मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बताता
रहूंगा ॥

(१) मूल में. देश। (२) मूल में. छिपाये।

२। क्योंकि मैं ने कहा है कि करुणा सदा बनी रहेगी
तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रक्खेगा ॥
३। मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बांधी
मैं ने अपने दास दाऊद से किरिया खाई है,
४। कि मैं तेरे वंश को सदा लों स्थिर रक्खूंगा
और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी लों बनाये रक्खूंगा। सेला॥
५। और हे यहोवा स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की
और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी॥
६। क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा
बलवंतों[1] के पुत्रों में से कौन है जिस के साथ यहोवा की उपमा दिई जाएगी॥
७। ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त त्रास के योग्य
और अपनी चारों ओर सब रहनेहारों से अधिक भययोग्य है॥
८। हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
हे याह् तेरे तुल्य कौन सामर्थी है तेरी सच्चाई तो तेरी चारों ओर है॥
९। समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता
जब उस के तरंग उठते हैं तब तू उन को शान्त कर देता है॥
१०। तू ने रहब् को घात किये हुए के समान कुचल डाला
और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल से तितर बितर किया है॥
११। आकाश तेरा है पृथिवी भी तेरी है
जगत और जो कुछ उस में है उसे तू ही ने स्थिर किया है॥
१२। उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा
ताबोर् और हेर्मोन् तेरे नाम का जयजयकार करते हैं॥
१३। तेरी भुजा बलवन्त है
तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दहिना हाथ प्रबल है॥
१४। तेरे सिंहासन का मूल धर्म्म और न्याय है
करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती हैं॥
१५। क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के महाशब्द को पहिचानता है
हे यहोवा वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं॥
१६। वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं
और तेरे धर्म्म के कारण महान् हो जाते हैं॥
१७। क्योंकि तू उन के बल की शोभा है
और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊंचा करेगा॥
१८। क्योंकि हमारी ढाल यहोवा के वश में है
हमारा राजा इस्राएल् के पवित्र के हाथ में है॥
१९। एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें किईं
और कहा मैं ने सहायता करने का भार एक वीर पर रक्खा
और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है॥
२०। मैं ने अपने दास दाऊद को लेकर
अपने पवित्र तेल से उस का अभिषेक किया है॥
२१। मेरा हाथ उस के साथ बना रहेगा
और मेरी भुजा उसे दृढ़ रक्खेगी॥
२२। शत्रु उस को तंग करने न पाएगा
और न कुटिल जन उस को दुःख देने पाएगा॥
२३। और मैं उस के द्रोहियों को उस के साम्हने से नाश करूंगा
और उस के बैरियों पर विपत्ति डालूंगा॥
२४। पर मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी
और मेरे नाम के द्वारा उस का सींग ऊंचा हो जाएगा॥

(१) वा॰ ईश्वरों।

२५। और मैं समुद्र को उस के हाथ के नीचे
और महानदों को उस के दहिने हाथ के नीचे कर दूंगा ॥
२६। वह मुझे पुकारके कहेगा कि तू मेरा पिता
मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चटान है ॥
२७। फिर मैं उस को अपना पहिलौठा
और पृथिवी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा ॥
२८। मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाये रहूंगा
और मेरी वाचा उस के लिये अटल रहेगी ॥
२९। और मैं उस के वंश को सदा बनाये रक्खूंगा
और उस की राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा रहेगी ॥
३०। यदि उस के वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें
और मेरे नियमों के अनुसार न चलें,
३१। यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें
और मेरी आज्ञाओं को न मानें,
३२। तो मैं उन के अपराध का दण्ड सोंटे से
और उन के अधर्म्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा ॥
३३। पर मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊंगा
और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूंगा ॥
३४। मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा
और जो मेरे मुंह से निकल चुका है उसे न बदलूंगा ॥
३५। एक बार मैं अपनी पवित्रता की किरिया खा चुका हूं
और दाऊद को कभी धोखा न दूंगा ॥
३६। उस का वंश सर्वदा रहेगा
और उस की राजगद्दी सूर्य्य की नाईं मेरे सन्मुख ठहरी रहेगी ॥
३७। वह चन्द्रमा की नाईं सदा बना रहेगा
आकाशमण्डल में का साक्षी विश्वासयोग्य है । सेला ॥
३८। तौभी तू ने अपने अभिषिक्त को छोड़ा
और तज दिया
और उस पर अति रोष किया है ॥
३९। तू अपने दास के साथ की वाचा से घिनाया
और उस के मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है ॥
४०। तू ने उस के सब बाड़ों को तोड़ डाला
और उस के गढ़ों को उजाड़ दिया है ॥
४१। सब बटोही उस को लूट लेते हैं
और उस के पड़ोसियों से उस की नामधराई होती है ॥
४२। तू ने उस के द्रोहियों को प्रबल[1] किया
और उस के सब शत्रुओं को आनन्दित किया है ॥
४३। फिर तू उस की तलवार की धार को मोड़ देता है
और युद्ध में उस के पांव जमने नहीं देता ॥
४४। तू ने उस का तेज हर लिया[2]
और उस के सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है ॥
४५। तू ने उस की जवानी को घटाया
और उस को लज्जा से ढांप दिया है । सेला ॥
४६। हे यहोवा तू कब लों लगातार मुंह फेरे[3] रहेगा
तेरी जलजलाहट कब लों आग की नाईं भड़की रहेगी ॥
४७। मेरा स्मरण तो कर कि मैं कैसा अनित्य हूं
तू ने सारे मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है ॥
४८। कौन पुरुष सदा अमर रहेगा[4]
क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता । सेला ॥
४९। हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहां रही

---

(१) मूल में द्रोहियों का दहिना हाथ ऊंचा। (२) मूल में, बन्द किया। (३) मूल में अपने को छिपाये। (४) मूल में जीता रहेगा और मृत्यु न देखेगा।

जिस के विषय तू ने अपनी सच्चाई की किरिया दाऊद से खाई॥
५०। हे प्रभु अपने दासों की नामधराई की सुधि कर
मैं तो सारी सामर्थी जातियों का बोझ लिये[1] रहता हूं॥
५१। तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा
तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर उस की[1] नामधराई किई है॥
५२। यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा
आमेन् फिर आमेन्॥

(१) मूल में अपनी गोद में लिये।

(१) मूल में. तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की।

चौथा भाग।

परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना।

९०. हे प्रभु तू पीढ़ी पीढ़ी
हमारे लिये धाम बना है॥
२। उस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए
और तू ने पृथिवी और जगत को रचा
वरन अनादिकाल से अनन्तकाल लों तू ही ईश्वर है॥
३। तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता
और कहता है कि हे आदमियो लौट आओ॥
४। क्योंकि हजार बरस तेरी दृष्टि में
बीते हुए कल के दिन के
वा रात के एक पहर के सरीखे हैं॥
५। तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है वे स्वप्न ठहरते हैं,
भोर को वे बढ़नेहारी घास के सरीखे होते हैं॥
६। वह भोर को फूलती और बढ़ती है
और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है॥
७। क्योंकि हम तेरे कोप से नाश हुए
और तेरी जलजलाहट से घबरा गये हैं॥
८। तू ने हमारे अधर्म्म के कामों को अपने सम्मुख
और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रक्खा है॥
९। क्योंकि हमारे सारे दिन तेरे रोष में बीत जाते हैं
हम अपने बरस शब्द की नाईं बिताते हैं॥
१०। हमारी आयु के बरस सत्तर तो होते हैं
और चाहे बल के कारण अस्सी बरस भी हों
तौभी उन पर का घमण्ड कष्ट और व्यर्थ बात ठहरता है
क्योंकि वह जल्दी कट[1] जाती है और हम जाते रहते हैं॥
११। तेरे क्रोध की शक्ति को
और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता॥
१२। हम को अपने दिन गिनने की समझ दे
कि हम बुद्धिमान हो जाएं[2]॥
१३। हे यहोवा लौट आ, कब लों।
और अपने दासों पर तरस खा॥
१४। भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर
कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें॥

(१) मूल में उड़। (२) मूल में. बुद्धिवाला मन ले आएं।

१५ । जितने दिन तू हमें दुःख देता आया और
जितने बरस हम क्लेश भोगते आये हैं
उतने बरस हम को आनन्द दे ॥
१६ । तेरा काम तेरे दासों को
और तेरा प्रताप उन की सन्तान पर प्रगट हो ॥
१७ । और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता
हम पर प्रगट हो
तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर
हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर ॥

९१. जो परमप्रधान के छाये हुए स्थान में बैठा रहे

सो सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा ॥
२ । मैं यहोवा के विषय कहूंगा कि वह मेरा
शरणस्थान और गढ़ है
वह मेरा परमेश्वर है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा ॥
३ । वह तो तुझे बहेलिये के जाल से
और महामरी से बचाएगा ॥
४ । वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा
और तू उस के परों के नीचे शरण पाएगा
उस की सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी ॥
५ । तू न तो रात के भय से
और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
६ । न उस मरी से जो अंधेरे में फैलती है डरेगा
और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी
उजाड़ता है ॥
७ । तेरे निकट हजार
और तेरी दहिनी ओर दस हजार गिरेंगे
पर वह तेरे पास न आएगा ॥
८ । तू आंखों से निहारके
दुष्टों के कामों के बदले को केवल देखेहोगा ॥
९ । हे यहोवा तू मेरा शरणस्थान ठहरा है
तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
१० । इस लिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा ॥
११ । क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त
आज्ञा देगा
कि जहां कहीं तू जाए[1] वे तेरी रक्षा करें ॥
१२ । वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे
न हो कि तेरे पावों में पत्थर से ठेस लगे ॥
१३ । तू सिंह और नाग को कुचलेगा
तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा ॥
१४ । उस ने जो मुझ से स्नेह किया है इस लिये
मैं उस को छुड़ाऊंगा
मैं उस को ऊंचे स्थान पर रक्खूंगा क्योंकि उस
ने मेरे नाम को जान लिया है ॥
१५ । जब वह मुझ को पुकारे तब मैं उस की
सुनूंगा
संकट में मैं उस के संग रहूंगा
मैं उस को बचाकर उस की महिमा बढ़ाऊंगा ॥
१६ । मैं उस को दीर्घायु से तृप्त करूंगा।
और अपने किये हुए उद्धार का दर्शन दिलाऊंगा ॥

भजन । विश्राम के दिन के लिये गीत ।

९२. यहोवा का धन्यवाद करना भला है

हे परमप्रधान तेरे नाम का भजन गाना,
२ । प्रातःकाल को तेरी करुणा
और रात रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना,
३ । दस तारवाले बाजे और सारंगी पर
और वीणा पर गंभीर स्वर से गाना भला है ॥
४ । क्योंकि हे यहोवा तू ने मुझ को अपने काम
से आनन्दित किया है
और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार
करूंगा ॥
५ । हे यहोवा तेरे काम क्या ही बड़े हैं
तेरी कल्पनाएं बहुत गंभीर हैं ॥
६ । पशुसरीखा मनुष्य इस को नहीं समझता
और मूर्ख इस का विचार नहीं करता ॥
७ । दुष्ट जो घास की नाईं फूलते फलते
और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं
यह इस लिये होता है कि वे सर्वदा के लिये
नाश हो जाएं ॥

(१) मूल में तेरे सब मार्गों में ।

८। पर हे यहोवा तू सदा विराजमान रहेगा॥
९। क्योंकि हे यहोवा तेरे शत्रु
तेरे शत्रु नाश होंगे
सब अनर्थकारी तित्तर बित्तर होंगे,
१०। पर मेरा सींग तू ने बनैले बैल का सा ऊंचा किया है
मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं॥
११। और मैं अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके
और उन कुकर्म्मियों का हाल जो मेरे विरुद्ध उठे थे सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूं॥
१२। धर्म्मी लोग खजूर की नाईं फूलें फलेंगे
और लबानोन् के देवदारु की नाईं बढ़ते रहेंगे॥
१३। वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर
हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूलें फलेंगे॥
१४। वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे
और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,
१५। जिस से यह प्रगट हो कि यहोवा सीधा है
वह मेरी चटान है और उस मे कुटिलता कुछ भी नहीं॥

९३.

यहोवा राजा हुआ है उस ने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है
यहोवा पहिरावा पहिने हुए और सामर्थ्य का फेंटा बांधे है
फिर जगत स्थिर है वह नहीं टलने का॥
२। हे यहोवा तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है
तू सर्वदा से है॥
३। हे यहोवा महानदों का कोलाहल हो रहा है
महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है
महानद गरजते हैं॥
४। महासागर के शब्द से
और समुद्र की महातरंगों से
विराजमान यहोवा अधिक महान् है॥
५। तेरी चितौनियां अति विश्वासयोग्य हैं
हे यहोवा तेरे भवन को युग युग पवित्रता ही फबती है॥

९४.

हे यहोवा हे पलटा लेनेहारे ईश्वर
हे पलटा लेनेहारे ईश्वर अपना तेज दिखा॥
२। हे पृथिवी के न्यायी उठ
घमण्डियों को बदला दे॥
३। हे यहोवा दुष्ट लोग कब लों
दुष्ट लोग कब लों डींग मारते रहेंगे॥
४। वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते हैं
सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं॥
५। हे यहोवा ये तेरी प्रजा को पीस डालते
वे तेरे निज भाग को दुःख देते हैं॥
६। वे विधवा और परदेशी का घात करते
और बपमूओं को मार डालते हैं,
७। और कहते हैं कि याह् न देखेगा
याकूब का परमेश्वर विचार न करेगा॥
८। तुम जो प्रजा में पशुसरीखे हो विचार करो
और हे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान हो जाओगे॥
९। जिस ने कान दिया क्या वह आप नहीं सुनता
जिस ने आंख रची क्या वह आप नहीं देखता॥
१०। जो जाति जाति को ताड़ना देता और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है॥
क्या वह न समझाएगा॥
११। यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को जानता तो है
कि वे सांस ही हैं॥
१२। हे याह् क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस को तू ताड़ना देता
और अपनी व्यवस्था सिखाता है॥
१३। क्योंकि तू उस को विपत्ति के दिनों के रहते तब लों चैन देता रहता है
तब लों दुष्ट के लिये गड़हा खोदा नहीं जाता॥
१४। क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा
वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा॥

१७। पर न्याय फिर धर्म्म के अनुसार किया जाएगा
और सारे सीधे मनवाले उस के पीछे पीछे हो लेंगे
१६। कुकर्म्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा
मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन साम्हना करेगा॥
१७। यदि यहोवा मेरा सहायक न होता
तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता॥
१८। जब मैं ने कहा कि मेरा पांव फिसलने लगा
तब हे यहोवा मैं तेरी करुणा से थांभ लिया गया॥
१९। जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं होती हैं
तब हे यहोवा तेरी दिई हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है॥
२०। क्या तेरे और खलता के सिंहासन के बीच सन्धि होगी
जिस की ओर से कानून की रीति उत्पात होता है॥
२१। वे धर्म्मी का प्राण लेने को दल बांधते हैं
और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं॥
२२। पर यहोवा मेरा गढ़
और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चटान ठहरा है
२३। और उस ने उन का अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है
और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा सत्यानाश करेगा
हमारा परमेश्वर यहोवा उन को सत्यानाश करेगा॥

९५. आओ हम यहोवा के लिये ऊंचे स्वर से गाएं

अपने उद्धार की चटान का जयजयकार करें॥
२। हम धन्यवाद करते हुए उस के सन्मुख आएं
और भजन गाते हुए उस का जयजयकार करें॥
३। क्योंकि यहोवा महान् ईश्वर है
और सारे देवताओं के ऊपर महान् राजा है॥
४। पृथिवी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं
और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं॥
५। समुद्र उस का है और उसी ने उस को बनाया
और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है॥
६। आओ हम झुककर दण्डवत् करें
और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें॥
७। क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है
और हम उस की चराई की प्रजा और उस के हाथ की भेड़ें हैं
भला होता कि तुम आज तुम उस की बात सुनते॥
८। अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो जैसा मरीबा में
वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ था॥
९। उस समय तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा
उन्हों ने मुझ को जांचा और मेरे काम को भी देखा॥
१०। चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी के लोगों से रूठा रहा
और मैं ने कहा ये तो भरमनेहारे मन के हैं
और इन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना॥
११। इस कारण मैं ने कोप में आकर किरिया खाई
कि ये मेरे विश्रामस्थान में प्रवेश न करने पाएंगे॥

९६. यहोवा के लिये नया गीत गाओ

हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का गीत गाओ॥
२। यहोवा का गीत गाओ उस के नाम को धन्य कहो
दिन दिन उस के किये हुए उद्धार का शुभ-समाचार सुनाते रहो॥
३। अन्यजातियों में उस की महिमा का
और देश देश के लोगों में उस के आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करो॥
४। क्योंकि यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है

वह तो सारे देवताओं से अधिक भययोग्य है ॥
५ । क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं
पर यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है ॥
६ । उस की चारों ओर विभव और ऐश्वर्य है
उस के पवित्रस्थान मे सामर्थ्य और शोभा है ॥
७ । हे देश देश के कुलो यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो ॥
८ । यहोवा के नाम की महिमा को मानो
भेंट लेकर उस के आंगनों में आओ ॥
९ । पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो
हे सारी पृथिवी के लोगो उस के साम्हने थरथराओ ॥
१० । जाति जाति में कहो कि यहोवा राजा हुआ है
और जगत ऐसा स्थिर है कि वह टलने का नहीं
वह देश देश के लोगों का न्याय सीधाई से करेगा ॥
११ । आकाश आनन्द करे और पृथिवी मगन हो
समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें ॥
१२ । मैदान और जो कुछ उस में है सो प्रफुल्लित हो
उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करें ॥
१३ । यह यहोवा के साम्हने हो क्योंकि वह आनेहारा है
वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है
वह धर्म्म से जगत का
और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा ॥

९७ यहोवा राजा हुआ है पृथिवी मगन हो

और द्वीप जो बहुतेरे हैं सो आनन्द करें ॥
२ । बादल और अन्धकार उस की चारों ओर हैं
उस के सिंहासन का मूल धर्म्म और न्याय हैं ॥
३ । उस के आगे आगे आग चलती हुई
उस के द्रोहियों को चारों ओर भस्म करती है ॥
४ । उस की बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ
पृथिवी देखकर थरथरा गई है ॥
५ । पहाड़ यहोवा के साम्हने से
सारी पृथिवी के प्रभु के साम्हने से मोम की नाईं पिघल गये ॥
६ । आकाश ने उस के धर्म्म की साक्षी दिई
और देश देश के सब लोगों ने उस की महिमा देखी है ॥
७ । जितने खुदी हुई मूर्त्तियों की उपासना करते
और मूरतों पर फूलते हैं सो लज्जित हो
हे सारे देवताओ तुम उसी को दण्डवत् करो ॥
८ । सिय्योन् सुनकर आनन्दित हुई
और यहूदा की बेटियां मगन हुईं
यह हे यहोवा तेरे नियमों के कारण हुआ ॥
९ । क्योंकि हे यहोवा तू सारी पृथिवी के ऊपर परमप्रधान है
तू सारे देवताओं से अधिक महान् ठहरा है ॥
१० । हे यहोवा के प्रेमियो बुराई के वैरी हो
वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता
और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है ॥
११ । धर्म्मी के लिये ज्योति
और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया हुआ है ॥
१२ । हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित हो
और जिस पवित्र नाम से उस का स्मरण होता है उस का धन्यवाद करो ॥

भजन ।

९८. यहोवा का नया गीत गाओ

क्योंकि उस ने आश्चर्य्यकर्म्म किये हैं
उस के दहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उस के लिये उद्धार किया है ॥

२। यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार प्रकाशित किया
उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म्म प्रगट किया है ॥
३। उस ने इस्राएल् के घराने पर की अपनी करुणा और सच्चाई की सुधि लिई
और पृथिवी के सब दूर दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है ॥
४। हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का जयजयकार करो
उमंग में आकर जयजयकार करो और भजन गाओ ॥
५। वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ
वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ ॥
६। तुरहियां और नरसिंगे फूंक फूंककर
यहोवा राजा का जयजयकार करो ॥
७। समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें
जगत और उस के निवासी महाशब्द करें ॥
८। नदियां तालियां बजाएं
पहाड़ मिलकर जयजयकार करें ॥
९। यह यहोवा के साम्हने हो क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है
वह धर्म्म से जगत का
और सीधाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा ॥

९९. यहोवा राजा हुआ है देश देश के लोग कांप उठें
वह करूबों पर विराजमान है पृथिवी डोल उठे ॥
२। यहोवा सिय्योन् में महान् है
और वह देश देश के लोगों के ऊपर प्रधान है ॥
३। वे तेरे महान् और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें
वह तो पवित्र है ॥
४। राजा का सामर्थ्य न्याय से मेल रखता है
तू ही ने सीधाई को स्थापित किया
न्याय और धर्म्म को याकूब में तू ही ने किया है ॥
५। हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के चरणों की चौकी के साम्हने दण्डवत् करो
वह तो पवित्र है ॥
६। उस के याजकों में से मूसा और हारून
और उस के प्रार्थना करनेहारों में से शमूएल्
यहोवा को पुकारते थे और वह उन की सुन लेता था ॥
७। वह बादल के खंभे में होकर उन से बातें करता था
और वे उस की चितौनियों और उस की दिई हुई विधियों पर चलते थे ॥
८। हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उन की सुन लेता था
तू उन के कामों का पलटा तो लेता था
तौभी उन के लिये क्षमा करनेहारा ईश्वर ठहरता था ॥
९। हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है ॥

धन्यवाद का भजन ।

१००. हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का जयजयकार करो ॥
२। आनन्द से यहोवा की सेवा करो
जयजयकार के साथ उस के सम्मुख आओ ॥
३। निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है
उसी ने हम को बनाया और हम उसी के हैं[1]
हम उस की प्रजा और उस की चराई की भेड़ें हैं ॥
४। उस के फाटकों से धन्यवाद
और उस के आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो
उस का धन्यवाद करो और उस के नाम को धन्य कहो ॥
५। क्योंकि यहोवा भला है उस की करुणा सदा लों

(१) या न कि हम अपने को ।

और उस की सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है ॥

दाऊद का भजन ।

१०१. मैं करुणा और न्याय के विषय गाऊंगा

हे यहोवा मैं तेरा ही भजन गाऊंगा ॥

२। मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा
तू मेरे पास कब आएगा
मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूंगा ॥

३। मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा
मैं कुमार्ग पर चलनेहारों के काम से घिन रखता हूं
ऐसे काम में मैं न लगूंगा ॥

४। टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा
मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं ॥

५। जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए उस को मैं सत्यानाश करूंगा
जिस की आंखें चढ़ी और जिस का मन घमण्डी है उस की मैं न सहूंगा ॥

६। मेरी आंखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें
जो खरे मार्ग पर चलता हो सोई मेरा टहलुआ होगा ॥

७। जो छल करता हो सो मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा
जो झूठ बोलता हो सो मेरे साम्हने बना न रहेगा ॥

८। भोर भोर को मैं देश के सब दुष्टों को सत्यानाश किया करूंगा
इस लिये कि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूं ॥

दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दुःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के साम्हने खोलकर कहता हो[१] ।

१०२. हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन

मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे ॥

२। मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझ से न फेर ले[१]
अपना कान मेरी ओर लगा
जिस समय मैं पुकारूं उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले ॥

३। क्योंकि मेरे दिन धूएं की नाईं[२] बिलाय गये
और मेरी हड्डियां लुकटी के समान जल गई हैं ॥

४। मेरा मन झुलसी हुई घास की नाईं सूख गया
और मुझे अपनी रोटी खाना भी बिसर जाता है ॥

५। कहरते कहरते
मेरा चमड़ा हड्डियों में सट गया है ॥

६। मैं जंगल के धनेश के समान हो गया
मैं उजाड़ स्थानों के उल्लू के सरीखा बन गया हूं ॥

७। मैं पड़ा जागता हूं और गौरे के समान हो गया
जो छत के ऊपर अकेला बैठता है ॥

८। मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं
जो मेरे विरोध की धुन में बावले हो रहे हैं सो मेरा नाम लेकर किरिया खाते हैं ॥

९। मैं रोटी की नाईं राख खाता और आंसू मिलाकर पानी पीता हूं ॥

१०। यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ
क्योंकि तू ने मुझे उठाया और फिर फेंक दिया है ॥

११। मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है
और मैं आप घास की नाईं सूख चला हूं ॥

१२। पर तू हे यहोवा सदा लों विराजमान रहेगा
और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है सो पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा ॥

१३। तू उठकर सिय्योन् पर दया करेगा
क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है ॥

१४। क्योंकि तेरे दास उस के पत्थरों को चाहते हैं

(१) मूल में उण्डेलता हो ।

(१) मूल में छिपा । (२) मूल में धूए में ।

और उस की धूल पर तरस खाते हैं॥
१५। सो अन्यजातियां यहोवा के नाम का भय मानेंगी
और पृथिवी के सारे राजा तेरे प्रताप से डरेंगे॥
१६। क्योंकि यहोवा सिय्योन् को फिर बसाता
और अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है॥
१७। वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुंह करता
और उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता॥
१८। यह बात आनेहारी पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी
और एक जाति जो सिरजी जाएगी सो याह् की स्तुति करेगी॥
१९। क्योंकि यहोवा ने अपने ऊंचे और पवित्र स्थान से दृष्टि करके
स्वर्ग से पृथिवी की ओर देखा,
२०। कि बंधुओं का कराहना सुने
और घात होनेहारों के बन्धन खोले,
२१। और सिय्योन् में यहोवा के नाम का वर्णन हो
और यरूशलेम् में उस की स्तुति किई जाए॥
२२। यह तब होगा जब देश देश और राज्य राज्य के लोग
यहोवा की उपासना करने को एकट्ठे होंगे॥
२३। उस ने मुझे जीवनयात्रा में दुःख देकर
मेरे बल और आयु को घटाया॥
२४। मैं ने कहा हे मेरे ईश्वर मुझे आधी आयु में न उठा ले
तेरे बरस पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहेंगे॥
२५। आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है॥
२६। वह तो नाश होगा पर तू बना रहेगा
और वह सब का सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा
तू उस को वस्त्र की नाईं बदलेगा और वह तो बदल जाएगा॥
२७। पर तू वही है
और तेरे बरसों का अन्त नहीं होने का॥
२८। तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी
और उन का वंश तेरे साम्हने स्थिर रहेगा॥

दाऊद का।

१०३. हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
और जो कुछ मुझ में है सो उस के पवित्र नाम को धन्य कहे॥
२। हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
और उस के किसी उपकार को न बिसराना॥
३। वही तो तेरे सारे अधर्म्म को क्षमा करता
और तेरे सब रोगों को चंगा करता है॥
४। वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता
और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बांधता है॥
५। वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है
जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है॥
६। यहोवा सब पीसे हुओं के लिये
धर्म्म और न्याय के काम करता है॥
७। उस ने मूसा को अपनी गति
और इस्राएलियों को अपने काम जताये॥
८। यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी
विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है॥
९। वह सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा
न उस का कोप सदा लों भड़का रहेगा॥
१०। उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया
न हमारे अधर्म्म के कामों के अनुसार हम को बदला दिया है॥
११। जैसे आकाश पृथिवी के ऊपर ऊंचा है
वैसे ही उस की करुणा उस के डरवैयों के ऊपर प्रबल है॥
१२। उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है

उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी दूर
किया है ॥
१३। जैसे पिता अपने बालकों पर दया
करता है
वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है ॥
१४। क्योंकि वह हमारा रच जानता है
और उस को स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी
ही हैं[1] ॥
१५। मनुष्य की आयु घास के समान होती है
वह मैदान के फूल ही की नाईं फूलता है,
१६। जो पवन लगते ही रह नहीं जाता
और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है[2] ॥
१७। पर यहोवा की करुणा उस के डरवैयों
पर युगयुग
और उस का धर्म उन के नाती पोतों पर भी
प्रगट होता रहता है,
१८। अर्थात् उन पर जो उस की वाचा को
पालते
और उस के उपदेशों को स्मरण करके उन पर
चलते हैं ॥
१९। यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में
स्थिर किया है
और उस का राज्य सारी सृष्टि पर है ।
२०। हे यहोवा के दूतो तुम जो बड़े वीर हो
और उस के वचन के मानने से उस को पूरा
करते हैं
उस को धन्य कहो ॥
२१। हे यहोवा की सारी सेनाओ हे उस के
टहलुओ
तुम जो उस की इच्छा पूरी करते हो उस को
धन्य कहो
२२। हे यहोवा की सारी रचनाओ
उस के राज्य के सब स्थानों में उस को धन्य
कहो
हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह ॥

(१) मूल में हम धूल ही हैं। (२) मूल में न उस का स्थान
उसे फिर चीन्हेगा।

१०४. हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह

हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू
अत्यन्त महान् है
तू विभव और ऐश्वर्य्य का वस्त्र पहिने है ॥
२। वह उजियाले को चादर की नाईं ओढ़े
रहता
वह आकाश को तंबू के समान ताने रहता है ॥
३। वह अपनी अटारियों की कड़ियां जल में धरता
और मेघों को अपना रथ बनाता
और पवन के पंखों पर चलता है ॥
४। वह पवनों को अपने दूत
और धधकती आग को अपने टहलुए
बनाता है ॥
५। उस ने पृथिवी को आधार पर स्थिर किया
वह सदा सर्वदा नहीं टलने की ॥
६। तू ने उस को गहिरे सागर से मानो वस्त्र से
ढांप दिया
जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया ॥
७। तेरी घुड़की से वह भाग गया
तेरे गरजने का शब्द सुनते ही वह उतावली
करके बह गया ॥
८। वह पहाड़ों पर चढ़ गया और तराइयों के
मार्ग से उस स्थान में उतर गया
जिसे तू ने उस के लिये तैयार किया था ॥
९। तू ने एक सिवाना ठहराया जिस को वह
नहीं लांघ सकता
न फिरके स्थल को ढांप सकता ॥
१०। वह नालों में सोतों को बहाता है
वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं ॥
११। उन से मैदान के सब जीव जन्तु जल
पीते हैं
बनैले गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं ॥
१२। उन के पास आकाश के पक्षी बसेरा करते
और डालियों के बीच से बोलते हैं ॥
१३। वह अपनी अटारियों में से पहाड़ों को
सींचता है

तेरे कामों के फल से पृथिवी तृप्त रहती है॥
१४। वह पशुओं के लिये घास
और मनुष्यों के काम के लिये अन्नादि उपजाता
और इस रीति भूमि से भोजनवस्तुएं उत्पन्न करता है,
१५। और दाखमधु जिस से मनुष्य का मन आनन्दित होता है
और तेल जिस से उस का मुख चमकता है
और अन्न जिस से वह संभल जाता है॥
१६। यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं
अर्थात् लबानोन् के देवदारु जो उसी के लगाये हुए हैं॥
१७। उन में चिड़ियाएं अपने घोंसले बनाती हैं
लगलग का बसेरा सनौवर वृक्षों में होता है॥
१८। ऊंचे पहाड़ बनैले बकरों के लिये हैं
और ढांगें शापानों के शरणस्थान हैं॥
१९। उस ने नियत समयों के लिये चन्द्रमा को बनाया
सूर्य्य अपने अस्त होने का समय जानता है॥
२०। तू अंधकार करता है
तब रात हो जाती है
जिस में वन के सब जीवजन्तु घूमते फिरते हैं॥
२१। जवान सिंह अहेर के लिये गरजते
और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं॥
२२। सूर्य्य उदय होते ही वे चले जाते
और अपनी मान्दों में जा बैठते हैं॥
२३। तब मनुष्य अपने काम के लिये
और संध्याकाल लों परिश्रम करने के लिये निकलता है॥
२४। हे यहोवा तेरे काम कितने ही हैं
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया
पृथिवी तेरी संपत्ति से परिपूर्ण है॥
२५। यह समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है
और उस में अनगिनित जलचारी[१] जीव जन्तु क्या छोटे क्या बड़े भरे हैं॥
२६। उस में जहाज भी आते जाते हैं
और लिव्यातान् भी जिसे तू ने वहां खेलने के लिये बनाया है॥
२७। ये सब तेरा आसरा ताकते हैं
कि तू उन का आहार समय पर दिया करे॥
२८। तू उन्हें देता है वे चुन लेते हैं
तू मुट्ठी खोलता है वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं॥
२९। तू मुख फेर लेता[१] है वे घबराये जाते हैं
तू उन की सांस ले लेता है उन के प्राण छूटते
और वे मिट्टी में फिर मिल जाते हैं॥
३०। फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है वे सिरजे जाते हैं
और तू धरती को नया कर देता है॥
३१। यहोवा की महिमा सदा लों रहे
यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे॥
३२। उस के निहारते ही पृथिवी कांप उठती है
और उस के छूते ही पहाड़ों से धूंआं निकलता है॥
३३। मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा
जब लों मैं बना रहूंगा तब लों अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा॥
३४। मेरा ध्यान करना उस को प्रिय लगे
मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा॥
३५। पापी लोग पृथिवी पर से मिट जाएं
और दुष्ट लोग आगे को न रहें
हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह। याह् की स्तुति करो[२]॥

१०५. यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो

देश देश के लोगों में उस के कामों का प्रचार करो॥
२। उस का गीत गाओ उस का भजन गाओ
उस के सब आश्चर्य्यकर्म्मों का ध्यान करो॥
३। उस के पवित्र नाम पर बड़ाई मारो
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो॥

(१) मूल में, रेंगनेहारे।

(१) मूल में छिपाता। (२) मूल में हल्लूयाह्।

४ । यहोवा और उस के सामर्थ को पूछो
उस के दर्शन के लगातार खोजी रहो ॥
५ । उस के किये हुए आश्चर्य्यकर्म्म स्मरण करो
उस के चमत्कार और निर्णय स्मरण करो ॥
६ । हे उस के दास इब्राहीम के वंश
हे याकूब की सन्तान तुम जो उस के चुने हुए हो,
७ । वही हमारा परमेश्वर यहोवा है
पृथिवी भर में उस के निर्णय होते हैं ॥
८ । वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है
सो वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया ॥
९ । वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बांधी
और उस के विषय उस ने इसहाक् से किरिया खाई ॥
१० । और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके
और इस्राएल् के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया,
११ । कि मैं कनान् देश तुझी को दूंगा
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा ॥
१२ । उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे
वरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे ॥
१३ । और वे एक जाति से दूसरी जाति में
और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते तो रहे ॥
१४ । पर उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया
और वह राजाओं को उन के निमित्त यह धमकी देता था,
१५ । कि मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ
और न मेरे नबियों की हानि करो ॥
१६ । फिर उस ने उस देश में अकाल डाला
और अन्न के सारे आधार को दूर कर दिया[1] ॥

(१) मूल में, सारी छड़ी को तोड़ दिया ।

१७ । उस ने यूसुफ नाम एक पुरुष को उन से पहिले भेजा था
जो दास होने के लिये बेचा गया था ॥
१८ । लोगों ने उस के पैरों में बेड़ियां डालकर उसे दुःख दिया
वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया[1] ॥
१९ । जब लों उस की बात पूरी न हुई
तब लों यहोवा का वचन उसे ताता रहा ॥
२० । तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया
देश देश के लोगों के स्वामी ने उस के बन्धन खुलवाये ॥
२१ । उस ने उस को अपने भवन का प्रधान
और अपनी सारी संपत्ति का अधिकारी ठहराया,
२२ । कि वह उस के हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार बंधाए
और पुरनियों को ज्ञान सिखाए ॥
२३ । फिर इस्राएल् मिस्र में आया
और याकूब हाम् के देश में परदेशी रहा ॥
२४ । तब उस ने अपनी प्रजा को गिन्ती में बहुत बढ़ाया
और उस के द्रोहियों से अधिक बलवन्त किया ॥
२५ । उस ने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया कि वे उस की प्रजा से बैर रखने
और उस के दासों से छल करने लगे ॥
२६ । उस ने अपने दास मूसा को
और अपने चुने हुए हारून को भेजा ॥
२७ । उन्हों ने उन के बीच उस की ओर से भांति भांति के चिन्ह
और हाम् के देश में चमत्कार किये ॥
२८ । उस ने अन्धकार कर दिया और अंधियारा हो गया
और उन्हों ने उस की बातों को न टाला ॥
२९ । उस ने मिस्रियों के जल को लोहू कर डाला
और मछलियों को मार डाला ॥
३० । मेंढक उन की भूमि में वरन उन के राजा की कोठरियों में भी भर गये ॥

(१) मूल में उस का जीव लोहे में समाया ।

३१। उस ने आज्ञा दिई तब डांस आ गये
और उन के सारे देश में कुटकियां आ गईं॥
३२। उस ने उन के लिये जलवृष्टि की सन्ती ओले
और उन के देश में धधकती आग बरसाई॥
३३। और उस ने उन की दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को
वरन उन के देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला॥
३४। उस ने आज्ञा दिई तब टिड्डियां
और अनगिनित कीड़े आये,
३५। और उन्हों ने उन के देश के सारे अन्नादि को खा डाला
और उन की भूमि के सब फलों को चट कर गये॥
३६। उस ने उन के देश में के सब पहिलौठों को
उन के पौरुष के सब पहिले फल को नाश किया॥
३७। वह अपने गोत्रियों को सोना चान्दी दिलाकर निकाल लाया
और उन में से कोई निर्बल न था॥
३८। उन के जाने से मिस्री आनन्दित हुए
क्योंकि उन का डर उन में समा गया था॥
३९। उस ने छाया के लिये बादल फैलाया
और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट किई॥
४०। उन्हों ने मांगा तब उस ने बटेरें पहुंचाईं
और उन को स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया॥
४१। उस ने चटान फाड़ी तब पानी बह निकला
और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी॥
४२। क्योंकि उस ने अपने पवित्र वचन
और अपने दास इब्राहीम को स्मरण किया॥
४३। वह अपनी प्रजा को हर्षित करके
और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया।
४४। और उन को अन्यजातियों के देश दिये
और वे और लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किये गये,
४५। कि वे उस की विधियों को मानें
और उस की व्यवस्था को पूरी करें।
याह की स्तुति करो[१]॥

(१) मूल में हल्लूयाह्।

१०६. याह की स्तुति करो[१] यहोवा का धन्यवाद करो

क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सदा की है॥
२। यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता
उस का पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता॥
३। क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते
और हर समय धर्म्म के काम करते हैं॥
४। हे यहोवा तेरी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर
मेरे उद्धार के लिये[२] मेरी सुधि ले,
५। कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं
और तेरी प्रजा के आनन्द से आनन्दित होऊं
और तेरे निज भाग के संग बड़ाई मारने पाऊं॥
६। हम ने तो अपने पुरुखाओं की नाईं[३] पाप किया
हम ने कुटिलता किई हम ने दुष्टता किई है॥
७। मिस्र में हमारे पुरुखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्म्मों पर मन न लगाया
न तेरी अपार करुणा को स्मरण रक्खा
उन्हों ने समुद्र के तीर पर अर्थात् लाल समुद्र के तीर पर बलवा किया॥
८। तौभी उस ने अपने नाम के निमित्त उन का उद्धार किया
जिस से वह अपने पराक्रम को प्रसिद्ध करे॥
९। सो उस ने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया
और वह उन्हें गहिरे जल के बीच से मानो जंगल में ले चला
१०। और उस ने उन्हें वैरी के हाथ से उबारा
और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया॥
११। और उन के द्रोही जल में डूब गये
उन में से एक भी न बचा॥

(१) मूल में, हल्लूयाह्। (२) मूल में अपना उद्धार लिये हुए। (३) मूल में, पितरों के साथ।

१२। सो उन्हों ने उस के वचनों का विश्वास किया
और उस की स्तुति गाने लगे ॥
१३। पर वे झट उस के कामों को भूल गये
और उस की युक्ति के लिये न ठहरे ॥
१४। उन्हों ने जंगल में अति लालसा किई
और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा किई ॥
१५। सो उस ने उन्हें मुंह मांगा वर तो दिया
पर उन को दुबला कर दिया ॥
१६। उन्हों ने छावनी में मूसा के
और यहोवा के पवित्र जन हारून के विषय डाह किई
१७। भूमि फटकर दातान् को निगल गई
और अबीराम् के झुण्ड को ग्रस लिया[१] ॥
१८। और उन के झुण्ड में आग भड़की
और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गये ॥
१९। उन्हों ने होरेब् में बछड़ा बनाया
और ढली हुई मूर्त्ति को दण्डवत् किई ॥
२०। यों उन्हों ने अपनी महिमा अर्थात् ईश्वर को
घास खानेहारे बैल की प्रतिमा से बदल डाला ॥
२१। वे अपने उद्धारकर्त्ता ईश्वर को भूल गये
जिस ने मिस्र में बड़े बड़े काम किये थे ॥
२२। उस ने तो हाम् के देश में आश्चर्य्यकर्म्म
और लाल समुद्र के तीर पर भयंकर काम किये थे ॥
२३। सो उस ने कहा कि मैं इन्हें सत्यानाश करूंगा
पर उस का चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में[२] खड़ा हुआ
कि उस की जलजलाहट को ठण्डा करे[३]
न हो कि वह उन्हें नाश कर डाले ॥
२४। उन्हों ने मनभावने देश को निकम्मा जाना
और उस के वचन की प्रतीति न किई ॥
२५। वे अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाये
और यहोवा का कहा न माना ॥
२६। तब उस ने उन के विषय में किरिया खाई[१]
कि मैं इन को जंगल में नाश करूंगा,
२७। और इन के वंश को अन्यजातियों के बीच गिरा दूंगा
और देश देश में तित्तर बित्तर करूंगा ॥
२८। वे पोर्वाले बाल् देवता से मिल गये
और मुर्दों को चढ़ाये हुए पशुओं का मांस खाने लगे ॥
२९। यों उन्हों ने अपने कामों से उस को रिस दिलाई
और मरी उन में फूट पड़ी ॥
३०। तब पीनहास् ने उठकर न्यायदण्ड दिया
जिस से मरी थम गई ॥
३१। और यह उस के लेखे में पीढ़ी से पीढ़ी लों
सर्वदा के लिये धर्म्म गिना गया ॥
३२। उन्हों ने मरीबा के सोते के पास भी यहोवा का कोप भड़काया
और उन के कारण मूसा की हानि हुई ॥
३३। क्योंकि उन्हों ने उस के आत्मा से बलवा किया
तब मूसा[२] बिन सोचे बोला ॥
३४। जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दिई थी
उन को उन्हों ने सत्यानाश न किया,
३५। वरन उन्हीं जातियों से हिलमिल गये
और उन के व्यवहारों को सीख लिया,
३६। और उन की मूर्त्तियों की पूजा करने लगे
और वे उन के लिये फन्दा बन गईं ॥
३७। वरन उन्हों ने अपने बेटे बेटियां पिशाचों के लिये बलि किईं ॥
३८। और अपने निर्दोष बेटे बेटियों का खून किया
जिन्हें उन्हों ने कनान् की मूर्त्तियों को बलि किया
सो देश खून से अपवित्र हो गया ॥

(१) मूल में छिपा लिया। (२) मूल में मूसा भीत के नाके में। (३) मूल में फेर दे।

(१) मूल में हाथ उठाया। (२) मूल में वह।

३९ । और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गये
और अपने कार्य्यों के द्वारा व्यभिचारी बन गये ॥
४० । तब यहोवा का कोप अपनी प्रजा पर भड़का
और उस को अपने निज भाग से घिन आई ॥
४१ । सो उस ने उन को अन्यजातियों के वश में कर दिया
और उन के वैरियों ने उन पर प्रभुता किई ॥
४२ । उन के शत्रुओं ने उन पर अंधेर किया
और वे उन के हाथ तले दब गये ॥
४३ । बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया
पर वे उस के विरुद्ध युक्ति करते गये
और अपने अधर्म्म के कारण दबते गये ॥
४४ । तौभी जब जब उन का चिल्लाना उस के कान में पड़ा
तब तब उस ने उन के संकट पर दृष्टि किई,
४५ । और उन के हित अपनी वाचा को स्मरण करके
अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया,
४६ । और जो उन्हें बंधुए करके ले गये थे
उन सब से उन पर दया कराई ॥
४७ । हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारा उद्धार कर
और हमें अन्यजातियों में से एकट्ठा कर
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बड़ाई करें ॥
४८ । इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा
अनादिकाल से अनन्तकाल लों धन्य है
और सारी प्रजा कहे आमेन् ।
याह् की स्तुति करो[1] ॥

(१) मूल में. हल्लूयाह् ।

पांचवां भाग ।

१०७. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सदा की है ॥
२ । यहोवा के छुड़ाये हुए ऐसा ही कहें
जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से छुड़ा लिया है,
३ । और उन्हें देश देश से
पूरब पच्छिम उत्तर और दक्खिन से[1] एकट्ठा किया है ॥
४ । वे जंगल में मरुभूमि के मार्ग पर भटके आते थे
और कोई बसा हुआ नगर न पाया ॥
५ । भूख और प्यास के मारे
वे विकल हो गये ॥
६ । तब उन्हों ने संकट में यहोवा की दोहाई दिई
और उस ने उन को सकेती से छुड़ाया,
७ । और उन को ठीक मार्ग पर चलाया
कि वे बसे हुए नगर को पहुंचें ॥
८ । लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें ॥
क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता
और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है ॥
१० । जो अंधियारे और घोर अन्धकार में बैठे
और दुःख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे ॥

(१) मूल में समुद्र से ।

११। इस लिये कि वे ईश्वर के वचनों के विरुद्ध चले
और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना ॥
१२। सो उस ने उन को कष्ट के द्वारा दबाया
वे ठोकर खाकर गिर पड़े और उन को कोई सहायक न मिला ॥
१३। तब उन्हों ने संकट में यहोवा की दोहाई दिई
और उस ने सकेती से उन का उद्धार किया ॥
१४। उस ने उन को अंधियारे और घोर अन्धकार से उबारा
और उन के बंधनों को तोड़ डाला ॥
१५। लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें ॥
१६। क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को तोड़ा
और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े टुकड़े किया ॥
१७। मूढ़ अपनी कुचाल
और अधर्म्म के कामों के कारण अति दुःखित होते हैं ॥
१८। उन का जी सब भांति के भोजन से घिनलाता है
और वे मृत्यु के फाटक लों पहुंचते हैं ॥
१९। तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं
और वह सकेती से उन का उद्धार करता है ॥
२०। वह अपने वचन के द्वारा[१] उन को चंगा करता
और जिस गड़हे में वे पड़े हैं उस से उबारता है ॥
२१। लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें,
२२। और धन्यवादबलि चढ़ाएं
और जयजयकार करते हुए उस के कामों का वर्णन करें ॥

(१) मूल में अपना वचन भेजकर ।

२३। जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते
और महासागर पर होकर व्योपार करते हैं,
२४। वे यहोवा के कामों को
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों को जो वह गहिरे समुद्र में करता है देखते हैं ॥
२५। क्योंकि वह आज्ञा देता है तब प्रचण्ड बयार उठकर
तरंगों को उठाती है ॥
२६। वे आकाश लों चढ़ जाते फिर गहिरे में उतर आते हैं
और क्लेश के मारे उन के जी में जी नहीं रहता ॥
२७। वे चक्कर खाते और मतवाले की नाईं लड़खड़ाते हैं
और उन की सारी बुद्धि मारी[१] जाती है ॥
२८। तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं
और वह उन को सकेती से निकालता है ॥
२९। वह आंधी से नीवा कर देता है
और तरंगें बैठ जाती हैं ॥
३०। तब वे उन के बैठने से आनन्दित होते हैं
और वह उन को मन चाहे बन्दर में पहुंचा देता है ॥
३१। लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें,
३२। और सभा में उस को सराहें
और पुरनियों के बैठक में उस की स्तुति करें ॥
३३। वह नदियों को जंगल बना डालता
और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है ॥
३४। वह फलवन्त भूमि को नोनी करता है
यह रहनेहारों की दुष्टता के कारण होता है ॥
३५। वह जंगल को जल का ताल
और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है ॥
३६। और वहां वह भूखों को बसाता है
कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें,

(१) मूल में, निगली ।

३७। और खेती करें और दाख की बारियां लगाएं
और भांति भांति के फल उपजा लें ॥
३८। और वह उन को ऐसी आशीष देता है
कि वे बहुत बढ़ जाते हैं
और उन के पशुओं को भी वह घटने नहीं देता ॥
३९। फिर अंधेर विपत्ति और शोक के कारण
वे घटते और दब जाते हैं ॥
४०। और वह हाकिमों को अपमान से लादकर
बेराह सुन में भटकाता है ॥
४१। वह दरिद्रों को दु:ख से छुड़ाकर ऊंचे पर
रखता
और उन को भेड़ों के झुण्ड सा परिवार देता है ॥
४२। सीधे लोग इसे देखकर आनन्दित होते हैं
और सब कुटिल लोग अपने मुंह बन्द करते हैं ॥
४३। जो कोई बुद्धिमान हो सो इन बातों पर
ध्यान करेगा
और यहोवा की करुणा के कामों को विचारेगा ॥

गीत। दाऊद का भजन।

१०८. हे परमेश्वर मेरा हृदय स्थिर है
मैं गाऊंगा मैं अपने आत्मा[1] से भी भजन गाऊंगा ॥
२। हे सारङ्गी और वीणा जागो
मैं आप पह फटते जाग उठूंगा ॥
३। हे यहोवा मैं देश देश के लोगों के बीच
तेरा धन्यवाद करूंगा
और राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा
भजन गाऊंगा ॥
४। क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊंची है
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है ॥
५। हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर हो
और तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर हो ॥
६। इस लिये कि तेरे प्रिय छुड़ाये जाएं
तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी
सुन ले ॥
७। परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है
मैं प्रफुल्लित होकर शकेम् को बांट लूंगा
और सुक्कोत् की तराई को नपवाऊंगा ॥
८। गिलाद् मेरा मनश्शे भी मेरा है
और एप्रैम् मेरे सिर का टोप
यहूदा मेरा राजदण्ड है ॥
९। मोआब् मेरे धोने का पात्र है
मैं एदोम् पर अपना जूता फेंकूंगा
पलिश्त् पर मैं जयजयकार करूंगा ॥
१०। मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा
एदोम् लों मेरी अगुवाई किस ने किई है ॥
११। हे परमेश्वर क्या तू ने हम को नहीं
त्याग दिया
और हे परमेश्वर तू हमारी सेना के साथ पयान
नहीं करता ॥
१२। द्रोहियों के विरुद्ध हमारी सहायता
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ
है ॥
१३। परमेश्वर की सहायता से हम वीरता
दिखाएंगे
हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का। भजन।

१०९. हे परमेश्वर तू जिस की मैं स्तुति
करता हूं चुप न रह ॥
२। क्योंकि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मेरे विरुद्ध
मुंह खोला है
वे मेरे विषय झूठ बोलते हैं ॥
३। और उन्हों ने बैर के वचन मेरी चारों ओर
कहे हैं
और अकारण मुझ से लड़े हैं ॥
४। मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से विरोध
करते हैं
पर मैं तो प्रार्थना में लवलीन रहता हूं ॥
५। उन्हों ने भलाई के पलटे में मुझ से बुराई
और मेरे प्रेम के बदले में बैर किया है ॥
६। तू उस को किसी दुष्ट के अधिकार में रख
और विरोधी उस की दहिनी ओर खड़ा रहे ॥
७। जब उस का न्याय किया जाए तब वह
दोषी निकले,

(१) मूल में महिमा।

और उस की प्रार्थना पाप गिनी जाए ॥
८। उस के दिन थोड़े हों
और उस के पद को दूसरा ले ॥
९। उस के लड़केवाले बपमूए
और उस की स्त्री विधवा हो जाए ॥
१०। और उस के लड़के मारे मारे फिरें और भीख मांगा करें
उन को अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े मांगना पड़े ॥
११। महाजन फन्दा लगाकर उस का सर्वस्व ले ले
और परदेशी उस की कमाई को लूटें ॥
१२। कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे
और उस के बपमूए बालकों पर कोई अनुग्रह न करे ॥
१३। उस का वंश नाश हो
दूसरी पीढ़ी में उस का नाम मिट जाए ॥
१४। उस के पितरों का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे
और उस की माता का पाप न मिटे ॥
१५। वह निरन्तर यहोवा के सन्मुख रहे
कि वह उन का नाम पृथिवी पर से मिटा डाले ॥
१६। क्योंकि वह दुष्ट कृपा करना बिसराता था
बरन दीन और दरिद्र के पीछे
और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ता था ॥
१७। वह साप देने में प्रीति रखता था और साप उस पर आ पड़े
वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था और आशीर्वाद उस से दूर रह गया ॥
१८। वह साप देना वस्त्र की नाईं पहिनता था
और वह उस के पेट में जल की नाईं
और उस की हड्डियों में तेल की नाईं समा गया ॥
१९। वह उस के लिये ओढ़ने का काम दे
और फेंटे की नाईं उस की कटि में नित्य कसा रहे ॥
२०। यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को
और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले ॥
२१। पर मुझ से हे यहोवा प्रभु तू अपने नाम के निमित्त बर्ताव कर
तेरी करुणा तो बड़ी[1] है सो तू मुझे छुटकारा दे ॥
२२। क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं
और मेरा हृदय घायल हुआ है ॥
२३। मैं ढलती हुई छाया की नाईं जाता रहा
मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं ॥
२४। उपवास करते करते मेरे घुटने निर्बल हो गये
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूं ॥
२५। और मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है
जब वे मुझे देखते तब सिर हिलाते हैं ॥
२६। हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी सहायता कर
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर ॥
२७। जिस से वे जानें कि यह तेरा काम है
और हे यहोवा तू ही ने यह किया है ॥
२८। वे कोसते तो रहें पर तू आशीष दे
वे तो उठते ही लज्जित हों पर तेरा दास आनन्दित हो ॥
२९। मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहिनाया जाए
और वे अपनी लज्जा को कम्बल की नाईं ओढ़ें ॥
३०। मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूंगा
और बहुत लोगों के बीच उस की स्तुति करूंगा ॥
३१। क्योंकि वह दरिद्र की दहिनी ओर खड़ा रहेगा
कि उस को घात करनेहारे न्यायियों से बचाए ॥

दाऊद का भजन।

११०. मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है कि तू मेरे दहिने बैठकर तब लों रह

(१) मूल में भली।

जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं॥
२। तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन् से बढ़ाएगा
तू अपने शत्रुओं के मध्य में शासन करे॥
३। तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं
तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान
और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं॥
४। यहोवा ने किरिया खाई और न पछताएगा
कि तू मेल्कीसेदेक् की रीति पर सर्वदा का याजक है॥
५। प्रभु तेरी दहिनी ओर होकर
अपने कोप के दिन राजाओं को चूर कर देगा॥
६। वह जाति जाति में न्याय चुकाएगा
रणभूमि लोथों से भर जाएगी
वह लम्बे चौड़े देश के प्रधान को चूर कर देगा॥
७। वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा
इस कारण वह सिर उठाएगा॥

१११. याह् की स्तुति करो[1]

मैं सारे मन से यहोवा का धन्यवाद
सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में भी करूंगा॥
२। यहोवा के काम बड़े हैं
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं सो उन में ध्यान लगाते हैं॥
३। उस के काम विभवमय और ऐश्वर्य्यमय होते हैं
और उस का धर्म्म सदा लों बना रहेगा॥
४। उस ने अपने आश्चर्य्यकर्म्मों का स्मरण कराया है
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है॥
५। उस ने अपने डरवैयों को आहार दिया है
वह अपनी वाचा को सदा लों स्मरण रक्खेगा॥
६। उस ने अपनी प्रजा को अन्यजातियों का भाग देने के लिये
अपने कामों का प्रताप दिखाया है॥
७। सच्चाई और न्याय उस के हाथों के काम हैं
उस के सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं॥
८। वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे
वे सच्चाई और सीधाई से किये हुए हैं॥
९। उस ने अपनी प्रजा का उद्धार कराया है
उस ने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है
उस का नाम पवित्र और भययोग्य है॥
१०। बुद्धि का मूल यहोवा का भय है
जितने उस की आज्ञाओं को मानते हैं उन की बुद्धि अच्छी होती है
उस की स्तुति सदा बनी रहेगी॥

(१) मूल में हल्लूयाह्।

११२. याह् की स्तुति करो[1]

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता
और उस की आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है॥
२। उस का वंश पृथिवी पर पराक्रमी होगा
सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी॥
३। उस के घर में धन संपत्ति रहती है
और उस का धर्म्म सदा बना रहेगा॥
४। सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच ज्योति उदय होती है
वह अनुग्रहकारी दयावन्त और धर्म्मी होता है॥
५। जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार देता है उस का कल्याण होता है
वह न्याय में अपने मुकद्दमे को जीतेगा॥
६। वह तो सदा लों अटल रहेगा
धर्म्मी का स्मरण सदा लों बना रहेगा॥
७। वह बुरे समाचार से नहीं डरता

(१) मूल में हल्लूयाह्।

उस का हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है ॥'

८। उस का हृदय संभला हुआ है सो वह न डरेगा
वरन अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा ॥
९। उस ने उदारता से दरिद्रों को दान दिया
उस का धर्म्म सदा बना रहेगा
और उस का सींग महिमा के साथ ऊंचा किया जाएगा ॥
१०। दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा
वह दांत पीस पीसकर गल जाएगा
दुष्टों की लालसा पूरी न होगी[1] ॥

११३. याह्

की स्तुति करो[2]
हे यहोवा के दासो स्तुति करो
यहोवा के नाम की स्तुति करो ॥
२। यहोवा का नाम
अब से ले सर्वदा लों धन्य कहा जाए ॥
३। उदयाचल से ले अस्ताचल लों
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है ॥
४। यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान् है
और उस की महिमा आकाश से भी ऊंची है ॥
५। हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है
वह तो ऊंचे पर विराजमान है,
६। और आकाश और पृथिवी पर
दृष्टि करने के लिये झुकता है ॥
७। वह कंगाल को मिट्टी पर से
और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊंचा करता है,
८। कि उस को प्रधानों के संग
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए ॥
९। वह बांझ को घर में लड़कों की आनन्द करनेहारी माता बनाता है
याह् की स्तुति करो[2] ॥

(१) मूल में. नाश होगी। (२) मूल में हल्लूयाह्।

११४. जब

इस्राएल् ने मिस्र से
अर्थात् याकूब के घराने ने
अन्यभाषावालों के बीच से पयान किया,
२। तब यहूदा यहोवा[1] का पवित्रस्थान
और इस्राएल् उस के राज्य के लोग हो गये ॥
३। समुद्र देखकर भागा
यर्दन नदी उलटी बही ॥
४। पहाड़ मेढ़ों की नाईं उछलने लगे
और पहाड़ियां भेड़ बकरियों के बच्चों की नाईं उछलने लगीं ॥
५। हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागा
और हे यर्दन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बही ॥
६। हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ कि तुम मेढ़ों की नाईं
और हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ कि तुम भेड़ बकरियों के बच्चों की नाईं उछलीं ॥
७। हे पृथिवी प्रभु के साम्हने
याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा उठ ॥
८। वह चटान को जल का ताल
चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है ॥

११५. हे

यहोवा हमारी नहीं हमारी नहीं
अपने ही नाम की महिमा
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर ॥
२। जाति जाति के लोग क्यों कहने पाएं
कि उन का परमेश्वर कहां रहा ॥
३। हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है
उस ने जो चाहा सो किया है ॥
४। उन लोगों की मूरतें सोने चांदी ही हैं
वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं ॥
५। उन के मुंह तो रहता पर वे बोल नहीं सकतीं
उन के आंखें तो रहतीं पर वे देख नहीं सकतीं ॥
६। उन के कान तो रहते पर वे सुन नहीं सकतीं

(१) मूल में उस।

उन के नाक तो रहती पर वे सूंघ नहीं सकतीं ॥
७। उन के हाथ तो रहते पर वे स्पर्श नहीं कर सकतीं
उन के पांव तो रहते पर वे चल नहीं सकतीं
और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं ॥
८। जैसी वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे
और उन पर सब भरोसा रखनेहारे भी हो जाएंगे ॥
९। हे इस्राएल् यहोवा पर भरोसा रख
तेरा[1] सहायक और ढाल वही है ॥
१०। हे हारून के घराने यहोवा पर भरोसा रक्खे
तेरा[1] सहायक और ढाल वही है ॥
११। हे यहोवा के डरवैयो यहोवा पर भरोसा रक्खो
तेरा[1] सहायक और ढाल वही है ॥
१२। यहोवा ने हम को स्मरण किया है वह आशीष देगा
वह इस्राएल् के घराने को आशीष देगा
वह हारून के घराने को आशीष देगा ॥
१३। क्या छोटे क्या बड़े
जितने यहोवा के डरवैये हैं वह उन्हें आशीष देगा ॥
१४। यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी
अधिक बढ़ाता जाए ॥
१५। यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है
उस की ओर से तुम आशीष पाये हो ॥
१६। स्वर्ग जो है सो तो यहोवा का है
पर पृथिवी उस ने मनुष्यों को दिई है ॥
१७। मुर्दे जितने चुपचाप पड़े हैं
सो तो याह् की स्तुति नहीं कर सकते ॥
१८। पर हम लोग याह् को

(१) मूल में. उन का ।

अब से ले सर्वदा लों धन्य कहते रहेंगे
याह् की स्तुति करो[1]

११६. मैं प्रेम रखता हूं इस लिये कि यहोवा ने
मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है ॥
२। उस ने जो मेरी ओर कान लगाया है
इस लिये मैं जीवन भर उस को पुकारा करूंगा ॥
३। मृत्यु की रस्सियां मेरी चारों ओर थीं
मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा
मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा ॥
४। तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना किई
कि हे यहोवा बिनती सुनकर मेरे प्राण को बचा ले ॥
५। यहोवा अनुग्रहकारी और धर्म्मी है
और हमारा परमेश्वर दया करनेहारा है ॥
६। यहोवा भोलों की रक्षा करता है
मैं बलहीन हो गया था और उस ने मेरा उद्धार किया ॥
७। हे मेरे मन तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ
क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है ॥
८। तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से
मेरी आंख को आंसू बहाने से
और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है ॥
९। मैं जीते जी
अपने को यहोवा के साम्हने जानकर[2] चलता रहूंगा ॥
१०। मैं ने जो ऐसा कहा सो विश्वास करके कहा
मैं तो बहुत ही दुःखित हुआ ॥
११। मैं ने उतावली से कहा
कि सारे मनुष्य झूठे हैं ॥
१२। यहोवा ने मेरे जितने उपकार किये हैं
उन का बदला मैं उस को क्या दूं ॥
१३। मैं उद्धार का कटोरा उठाकर
यहोवा से प्रार्थना करूंगा ॥

(१) मूल में हल्लूयाह् । (२) मूल में, यहोवा के साम्हने ।

१४। मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें
प्रगट में उस की सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा ॥
१५। यहोवा के भक्तों की मृत्यु
उस के लेखे में अनमोल है ॥
१६। हे यहोवा सुन मैं तो तेरा दास हूं
मैं तेरा दास और तेरी दासी का बेटा भी हूं
तू ने मेरे बंधन खोल दिये हैं ॥
१७। मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा ॥
और यहोवा से प्रार्थना करूंगा ॥
१८। मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें
प्रगट में उस की सारी प्रजा के साम्हने,
१९। यहोवा के भवन के आंगनों में
हे यरूशलेम् तेरे मध्य में पूरी करूंगा
याह् की स्तुति करो[१] ॥

११७. हे जाति जाति के सब लोगो यहोवा की स्तुति करो

हे राज्य राज्य के सब लोगो उस की प्रशंसा करो ॥
२। क्योंकि उस की करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है
और यहोवा की सच्चाई सदा की है
याह् की स्तुति करो[१] ॥

११८. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है

और उस की करुणा सदा की है ॥
२। इस्राएल् कहे
कि उस की करुणा सदा की है ॥
३। हारून का घराना कहे
कि उस की करुणा सदा की है ॥
४। यहोवा के डरवैये कहें
कि उस की करुणा सदा की है ॥
५। मैं ने सकेती में याह् को पुकारा
याह् ने मेरी सुनकर मुझे चौड़े स्थान में पहुंचाया ॥

(१) मूल में, हल्लूयाह् ।

६। यहोवा मेरी ओर है मैं न डरूंगा
मनुष्य मेरा क्या कर सकता ॥
७। यहोवा मेरी ओर मेरे सहायकों में का है
सो मैं अपने बैरियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हूंगा ॥
८। यहोवा की शरण लेनी
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है ॥
९। यहोवा की शरण लेनी
प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है ॥
१०। सब जातियों ने मुझ को घेर लिया है
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
११। उन्हों ने मुझ को घेर लिया वे मुझे घेर चुके भी हैं
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
१२। उन्हों ने मुझे मधुमक्खियों की नाईं घेर लिया है
पर कांटों की आग की नाईं बुझ गये
यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
१३। तू ने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था कि मैं गिर पड़ूं
पर यहोवा ने मेरी सहायता किई ॥
१४। याह् मेरा बल और भजन का विषय
और वह मेरा उद्धार ठहर गया है ॥
१५। धर्म्मियों के तंबुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है ॥
१६। यहोवा का दहिना हाथ महान् हुआ है
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है ॥
१७। मैं न मरूंगा जीता रहूंगा
और याह् के कामों का वर्णन करता रहूंगा ॥
१८। याह् ने मेरी बड़ी ताड़ना तो किई
पर मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया ॥

१९ । मेरे लिये धर्म्म के द्वार खोलो
मैं उन से प्रवेश करके याह् का धन्यवाद करूंगा ॥
२० । यहोवा का द्वार यही है
इस से धर्म्मी प्रवेश करने पाएंगे ॥
२१ । हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने मेरी सुन लिई
और मेरा उद्धार ठहर गया है ॥
२२ । राजों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था
सो कोने के सिरे का हो गया है ॥
२३ । यह तो यहोवा की ओर से हुआ
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है ॥
२४ । आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है
हम इस में मगन और आनन्दित हों ॥
२५ । हे यहोवा बिनती सुन उद्धार कर
हे यहोवा बिनती सुन सफलता कर दे ॥
२६ । धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है
हम ने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है ॥
२७ । यहोवा ईश्वर है और उस ने हम को प्रकाश दिया है
यज्ञपशु को रस्सियों से वेदी के सींगों तक बांधो ॥
२८ । हे यहोवा तू मेरा ईश्वर है सो मैं तेरा धन्यवाद करूंगा
तू मेरा परमेश्वर है मैं तुझ को सराहूंगा ॥
२९ । यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सदा की है ॥

११९. क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं

और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं ॥
२ । क्या ही धन्य हैं वे जो उस की चितौनियों पर चलते
और सारे मन से उस के पास आते हैं ॥
३ । फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते
वे उस के मार्गों में चलते हैं ॥
४ । तू ने अपने उपदेश इस लिये दिये हैं
कि वे यत्न से माने जाएं ॥
५ । भला हो कि मेरी चालचलन
तेरी विधियों के मानने के लिये दृढ़ हो जाए ॥
६ । जब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाये रक्खूंगा
तब मेरी आशा न टूटेगी ॥
७ । जब मैं तेरे धर्म्ममय नियमों को सीखूंगा
तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूंगा ॥
८ । मैं तेरी विधियों को मानूंगा
तू मुझे पूरी रीति से न तज ॥

९ । जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध करे
तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से ॥
१० । मैं सारे मन से तेरी खोज में लगा हूं
मुझे अपनी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे ॥
११ । मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है
कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं ॥
१२ । हे यहोवा तू धन्य है
मुझे अपनी विधियां सिखा ॥
१३ । तेरे सब कहे हुए[१] नियमों का वर्णन
मैं ने अपने मुंह से कहा है ॥
१४ । मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से
मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूं ॥
१५ । मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा
और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रक्खूंगा ।
१६ । मै तेरी विधियों से सुख पाऊंगा
और तेरे वचन को न भूलूंगा ॥

१७ । अपने दास का उपकार कर मैं जीता रहूंगा
और तेरे वचन पर चलता रहूंगा ॥
१८ । मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बात निहारूं ॥
१९ । मै तो पृथिवी पर परदेशी हूं
अपनी आज्ञाओं को मुझ से छिपाये न रख ॥

(१) मूल में तेरे मुख के ।

२० । मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है ॥
२१ । तू ने अभिमानियों को जो स्रापित हैं घुड़का है
वे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटके हुए हैं ॥
२२ । मेरी नामधराई और अपमान दूर कर
क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूं ॥
२३ । फिर हाकिम बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते थे
पर तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा ॥
२४ । फिर तेरी चितौनियां मेरे सुखमूल
और मेरे मंत्री हैं ॥

२५ । मैं[1] धूल में पड़ा हूं
तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥
२६ । मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया और तू ने मेरी मानी
तू मुझ को अपनी विधियां सिखा ॥
२७ । अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता
तब मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान करूंगा ॥
२८ । मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है
तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल ॥
२९ । मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर
और करुणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे ॥
३० । मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है
तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाये रहता हूं ॥
३१ । मैं तेरी चितौनियों में लवलीन हूं
हे यहोवा मेरी आशा न तोड़ ॥
३२ । जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा ॥

३३ । हे यहोवा मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे
तब मैं उसे अन्त लों पकड़े रहूंगा ॥
३४ । मुझे समझ दे मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा
और सारे मन से उस पर चलूंगा ॥
३५ । अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं ॥
३६ । मेरे मन को लोभ की ओर नहीं
अपनी चितौनियों ही की ओर फेर ॥
३७ । मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे
तू अपने मार्ग में मुझे जिला ॥
३८ । तेरा जो वचन तेरे भय माननेहारों के लिये है
उस को अपने दास के निमित्त भी पूरा कर ॥
३९ । जिस नामधराई से मैं डरता हूं उसे दूर कर
क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं ॥
४० । देख मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं
अपने धर्म्म के कारण मुझ को जिला ॥

४१ । हे यहोवा तेरी करुणा और तेरा किया हुआ उद्धार
तेरे वचन के अनुसार मुझ को भी मिले ॥
४२ । तब मैं अपनी नामधराई करनेहारों को कुछ उत्तर दे सकूंगा
क्योंकि मेरा भरोसा तेरे वचन पर है ॥
४३ । मुझे अपने सत्य वचन के कहने से न रोक[1]
क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है ॥
४४ । तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार
सदा सर्वदा चलता रहूंगा ॥
४५ । और मैं चौड़े स्थान में चलूं फिरूंगा
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि रक्खी है ॥
४६ । और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा
और संकोच न करूंगा ॥
४७ । और मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूंगा
क्योंकि मैं उन में प्रीति रखता हूं ॥
४८ । और मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में मैं प्रीति रखता हूं हाथ फैलाऊंगा
और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा ॥

(१) मूल में, मेरा जीव ॥

(१) मूल में, मेरे मुह में से बिलकुल न छीन ।

४९। जो वचन तू ने अपने दास को दिया है
उसे स्मरण कर
क्योंकि तू ने मुझे आशा तो दिई है॥
५०। मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है
क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं जी गया हूं॥
५१। अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में
उड़ाया है
मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा॥
५२। हे यहोवा मैं ने तेरे प्राचीन नियमों को
स्मरण करके
शान्ति पाई है॥
५३। जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं
उन के कारण मैं सन्ताप से जलता हूं॥
५४। जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं तहां तेरी
विधियां
मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं॥
५५। हे यहोवा मैं ने रात को तेरा नाम स्मरण किया
और तेरी व्यवस्था पर चला हूं॥
५६। यह मुझ को इस कारण हुआ
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था॥

५७। यहोवा मेरा भाग है
मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलना ठाना है॥
५८। मैं ने सारे मन से तुझे मनाया
सो अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर॥
५९। मैं ने अपनी चालचलन को सोचा
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया॥
६०। मैं ने तेरी आज्ञाओं के मानने में
विलम्ब नहीं फुर्ती किई॥
६१। मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया
मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला॥
६२। तेरे धर्म्ममय नियमों के कारण
मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को
उठूंगा॥
६३। जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों
पर चलते हैं
उन का मैं संगी हूं॥

६४। हे यहोवा तेरी करुणा पृथिवी में भरी हुई है
तू मुझे अपनी विधियां सिखा॥

६५। हे यहोवा तू ने अपने वचन के अनुसार
अपने दास के संग भला किया है॥
६६। मुझे भली विवेकशक्ति और ज्ञान दे
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का विश्वास
किया है॥
६७। उस से पहिले कि मैं दुःखित हुआ मैं
भटकता था
पर अब मैं तेरे वचन को मानता हूं॥
६८। तू भला है और भला करता भी है
मुझे अपनी विधियां सिखा॥
६९। अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ बात
गढ़ी है
पर मैं तेरे उपदेशों को सारे मन से पकड़े रहूंगा॥
७०। उन का मन मोटा[1] हो गया है
पर मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूं॥
७१। मुझे जो दुःख हुआ सो मेरे लिये भला
ही हुआ
जिस से मैं तेरी विधियों को सीख सकूं॥
७२। तेरी दिई हुई व्यवस्था मेरे लिये
हजारों रुपैयों और मुहरों से भी भली है॥

७३। तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूं
मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं॥
७४। तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे
क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा लगाई है॥
७५। हे यहोवा मैं जान गया कि तेरे नियम
धर्म्ममय हैं
और तू ने अपनी सच्चाई के अनुसार मुझे दुःख
दिया है॥
७६। मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे
क्योंकि तू ने अपने दास को ऐसा ही वचन
दिया है॥

(१) मूल में चर्बी के समान भोला।

७७। तेरी दया मुझ पर हो तब मैं जी जाऊंगा
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं॥
७८। अभिमानियों की आशा टूटे क्योंकि उन्हों ने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया
पर मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा॥
७९। जो तेरा भय मानते हैं सो मेरी ओर फिरें
तब वे तेरी चितौनियों को समझ लेंगे॥
८०। मेरा मन तेरी विधियों के विषय खरा हो
न हो कि मेरी आशा टूटे॥

८१। मुझे तुझ से उद्धार पाने की आशा करते करते जी मे जी न रहा
पर मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है॥
८२। मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की वाट जोहते जोहते रह गईं
और मैं कहता हूं कि तू मुझे कब शांति देगा॥
८३। क्योंकि मैं धूएं में की कुप्पी के समान हो गया हू
तौभी तेरी विधियों को नहीं भूला॥
८४। तेरे दास के कितने दिन रह गये हैं
तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा॥
८५। अभिमानी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते
उन्हों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं॥
८६। तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं
वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं तू मेरी सहायता कर॥
८७। वे मुझ को पृथिवी पर से मिटा डालने ही पर थे
पर मैं ने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा॥
८८। अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला
तब मैं तेरी दिई हुई[१] चितौनी को मानूंगा॥

८९। हे यहोवा तेरा वचन
आकाश में सदा लों स्थिर रहता है॥
९०। तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है
तू ने पृथिवी को स्थिर किया सो वह बनी है॥
९१। वे आज के दिन लों तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं
क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है॥
९२। यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता
तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता॥
९३। मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है॥
९४। मैं तेरा ही हूं तू मेरा उद्धार कर
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूं॥
९५। दुष्ट मेरा नाश करने के लिये मेरी घात में लगे हैं
मैं तेरी चितौनियों को विचारता हूं॥
९६। जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं उन सब को तो मैं ने अधूरी पाया है[१]
पर तेरी आज्ञा का अति विस्तार है॥

९७। अहा मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं
दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है॥
९८। तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है
क्योंकि वे सदा मेरी मन में रहती हैं॥
९९। मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं
क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है॥
१००। मैं पुरनियों से भी समझदार हूं
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हूं॥
१०१। मै ने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रक्खा है
जिस से तेरे वचन के अनुसार चलूं॥
१०२। मैं तेरे नियमों से नहीं हटा
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दिई है॥
१०३। तेरे वचन मुझ को[२] कैसे मीठे लगते हैं
वे मुह में के मधु से भी मीठे हैं॥
१०४। तेरे उपदेशों के कारण मै समझदार हो जाता हूं

(१) मूल में तेरे मुख की।

(१) मूल में सारी पूर्णता का मैं ने अन्त देखा है।
(२) मूल में मेरे तालू को।

इस लिये मैं सब असत् मार्गों से वैर रखता हूं॥

१०५। तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक
और मेरे पथ के लिये उजियाला है॥
१०६। मैं ने किरिया खाई और ठाना भी है
कि मैं तेरे धर्म्ममय नियमों के अनुसार चलूंगा॥
१०७। मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूं
हे यहोवा अपने वचन के अनुसार मुझे जिला॥
१०८। हे यहोवा मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि
जानकर अंगीकार कर
और अपने नियमों को मुझे सिखा॥
१०९। मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया॥
११०। दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है
पर मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका॥
१११। मैं ने तेरी चितौनियों को सदा के लिये
अपना निज भाग कर लिया है
क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण हैं॥
११२। मैं ने अपने मन को इस बात पर
लगाया है
कि अन्त लों तेरी विधियों पर सदा चलता रहूं॥

११३। मैं दुचित्तों से तो वैर रखता
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता हूं॥
११४। तू मेरी आड़ और ढाल है
मेरी आशा तेरे वचन पर है॥
११५। हे कुकर्म्मियो मुझ से दूर हो जाओ
कि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूं॥
११६। हे यहोवा अपने वचन के अनुसार मुझे
संभाल कि मैं जीता रहूं
और मेरी आशा को न तोड़॥
११७। मुझे थांभ रख तब मैं बचा रहूंगा
और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त
लगाये रहूंगा॥
११८। जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते
हैं उन सब को तू तुच्छ जानता है
क्योंकि उन की चतुराई झूठ है॥

११९। तू ने पृथिवी के सब दुष्टों को धातु के
मैल के समान दूर किया है
इस कारण मैं तेरी चितौनियों में प्रीति रखता हूं॥
१२०। तेरे भय से मेरे रोएं खड़े हुए हैं
और मैं तेरे नियमों से डरता हूं॥

१२१। मैं ने तो न्याय और धर्म्म किया है
तू मुझे अंधेर करनेहारों के हाथ में न छोड़॥
१२२। अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो
अभिमानी मुझ पर अंधेर न करने पाएं॥
१२३। मेरी आंखें तुझ से उद्धार पाने की और
तेरे धर्म्ममय वचन के पूरे होने की
बाट जोहते जोहते रह गई हैं॥
१२४। अपने दास के संग अपनी करुणा के
अनुसार बर्ताव कर
और अपनी विधियां मुझे सिखा॥
१२५। मैं तेरा दास हूं तू मुझे समझ दे
कि मैं तेरी चितौनियों को समझूं॥
१२६। वह समय आया है कि यहोवा काम करे
क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है॥
१२७। इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं में
सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रीति रखता हूं॥
१२८। इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब
विषयों में ठीक जानता हूं
और सब असत् मार्गों से वैर रखता हूं॥

१२९। तेरी चितौनियां अनूप हैं
इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हूं॥
१३०। तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है
उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं॥
१३१। मैं मुंह खोलकर हांफने लगा
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था॥
१३२। जैसी तेरी रीति अपने नाम की प्रीति
रखनेहारों से है
वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर॥
१३३। मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर जमा
और कोई अनर्थ बात मुझ पर प्रभुता न करने दे॥

१३४ । मुझे मनुष्यों के अंधेर से छुड़ा ले
तब मैं तेरे उपदेशों को मानूंगा ॥
१३५ । अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका
और अपनी विधियां मुझे सिखा ॥
१३६ । मेरी आंखों से जल की धारा बहती
रहती है ॥
इस कारण कि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते ॥

१३७ । हे यहोवा तू धर्म्मी है
और तेरे नियम सीधे हैं ॥
१३८ । तू ने अपनी चितौनियों को
धर्म्म और पूरी सत्यता से कहा है ॥
१३९ । मै धुन के मारे भस्म हुआ हूं
इस कारण कि मेरे सतानेहारे तेरे वचनों को
भूल गये हैं ॥
१४० । तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है
और तेरा दास उस में प्रीति रखता है ॥
१४१ । मैं छोटा और तुच्छ हूं
मैं तेरे उपदेशों को भूल नहीं गया ॥
१४२ । तेरा धर्म्म सदा का धर्म्म है
और तेरी व्यवस्था सत्य है ॥
१४३ । मैं संकट और सकेती में फंसा हूं
मै तेरी आज्ञाओं से सुखी हू ॥
१४४ । तेरी चितौनियां सदा धर्म्ममय हैं
तू मुझ को समझ दे कि मैं जीता रहूं ॥

१४५ । मैं ने सारे मन से पुकारा है हे यहोवा मेरी
सुन ले
मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूंगा ॥
१४६ । मैं ने तुझ को पुकारा है तू मेरा उद्धार कर
और मैं तेरी चितौनियों को माना करूंगा ॥
१४७ । मै ने पह फटने से पहिले दोहाई दिई
मेरी आशा तेरे वचनों पर थी ॥
१४८ । मेरी आंखें रात के एक एक पहर से
पहिले खुल गईं
कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं ॥
१४९ । अपनी करुणा के अनुसार मेरी सुन ले
हे यहोवा अपनी रीति के अनुसार मुझे जिला ॥
१५० । जो दुष्टता में धुन लगाते हैं सो निकट
आ गये हैं
वे तेरी व्यवस्था से दूर पड़े हैं ॥
१५१ । हे यहोवा तू निकट है
और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं ॥
१५२ । बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों से जानता हूं
कि तू ने उन की नेव सदा के लिये डाली है ॥

१५३ । मेरे दुःख को देखकर मुझे छुड़ा
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया ॥
१५४ । मेरा मुकद्दमा लड़ और मुझे छुड़ा ले
अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥
१५५ । दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है[1]
क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते ॥
१५६ । हे यहोवा तेरी दया तो बड़ी है
सो अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला ॥
१५७ । मेरा पीछा करनेहारे और मेरे सतानेहारे
बहुत हैं
मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटा ॥
१५८ । मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ
क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते ॥
१५९ । देख कि मैं तेरे उपदेशों में कैसी प्रीति
रखता हूं
हे यहोवा अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला ॥
१६० । तेरा सारा वचन[2] सत्य ही है
और तेरा एक एक धर्म्ममय नियम सदा का है ॥

१६१ । हाकिम अकारण मेरे पीछे पड़े तो हैं
पर मेरा हृदय तेरे वचनों से भय करता है ॥
१६२ । जैसा कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है
वैसा ही मै तेरे वचन के कारण हर्षित हूं ॥
१६३ । झूठ से तो मैं वैर और घिन रखता हूं
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता हूं ॥

(१) मूल में उद्धार दुष्टों से दूर है । (२) मूल में तेरे वचन का जोड़ ।

१६४। तेरे धर्म्ममय नियमों के कारण मैं दिन दिन
सात बेर तेरी स्तुति करता हूं ॥
१६५। तेरी व्यवस्था में प्रीति रखनेहारों को
बड़ी शान्ति होती है
और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती ॥
१६६। हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की
आशा रखता
और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं ॥
१६७। मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता
और उन में बहुत प्रीति रखता आया हूं ॥
१६८। मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को
मानता आया हूं
क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सन्मुख प्रगट है ॥

१६९। हे यहोवा मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे ॥
१७०। मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे
तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ॥
१७१। मेरे मुंह से स्तुति निकला करे[१]
क्योंकि तू मुझे अपनी विधियां सिखाता है ॥
१७२। मैं तेरे वचन का गीत गाऊं
क्योंकि तेरी सारी आज्ञाएं धर्म्ममय हैं ॥
१७३। तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहे
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों को अपनाया है ॥
१७४। हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की
अभिलाषा करता हूं
मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं ॥
१७५। मुझे जिला और मैं तेरी स्तुति करूंगा
तेरे नियमों से मेरी सहायता हो ॥
१७६। मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटका हूं तू
अपने दास को ढूंढ़
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया ॥

यात्रा का गीत।

१२०. संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा

और उस ने मेरी सुन लिई ॥

(१) मूल में मेरे होंठ स्तुति बहाएं।

२। हे यहोवा झूठ बोलनेहारे मुंह से
और छली जीभ से मेरी रक्षा कर ॥
३। हे छली जीभ
तुझ को क्या मिले और तेरे साथ क्या अधिक
किया जाए ॥
४। वीर के नोकीले तीर
और झाऊ के अंगारे ॥
५। हाय हाय क्योंकि मुझे मेशेक् में परदेशी
होकर रहना
और केदार् के तंबुओं के बीच बसना पड़ा है ॥
६। बहुत काल से मुझ को
मेल के बैरियों के बीच बसना पड़ा है ॥
७। मैं तो मेल चाहता हूं
पर मेरे बोलते ही वे लड़ने चाहते हैं ॥

यात्रा का गीत।

१२१. मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर लगाऊंगा[१]

मुझे सहायता कहां से मिलेगी ॥
२। मुझे सहायता यहोवा की ओर से
मिलती है
जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है ॥
३। वह तेरे पांव को टलने न देवे
तेरा रक्षक कभी न ऊंघे ॥
४। सुन इस्राएल् का रक्षक
न ऊंघेगा न सो जाएगा ॥
५। यहोवा तेरा रक्षक है
यहोवा तेरी दहिनी ओर तेरी आड़ है ॥
६। न तो दिन को धूप से
और न रात को चान्दनी से तेरी कुछ हानि
होगी ॥
७। यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा ॥
८। यहोवा तेरे आने जाने में
तेरी रक्षा अब से ले सदा लों करता रहेगा ॥

(१) मूल में, उठाऊंगा।

यात्रा का गीत । दाऊद का ।

१२२. जब लोगों ने मुझ से कहा कि हम यहोवा के भवन को चलें
तब मैं आनन्दित हुआ ॥
२ । हे यरूशलेम् तेरे फाटकों के भीतर
हम खड़े हो गये हैं ॥
३ । हे यरूशलेम् तू ऐसे नगर के समान बना है
जिस के घर एक दूसरे से मिले हुए हैं ॥
४ । वहां याह् के गोत्र गोत्र के लोग
यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं
यह इस्राएल् के लिये चितौनी है ॥
५ । वहां तो न्याय के सिंहासन
दाऊद के घराने के लिये धरे हुए हैं ॥
६ । यरूशलेम् की शांति का वर मांगो
तेरे प्रेमी कुशल से रहें ॥
७ । तेरी शहरपनाह के भीतर शांति
और तेरे महलों में कुशल होवे ॥
८ । अपने भाइयों और संगियों के निमित्त
मैं कहूंगा कि तुझ में शांति होवे ॥
९ । अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त
मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा ॥

यात्रा का गीत ।

१२३. हे स्वर्ग में विराजमान
मैं अपनी आंखें तेरी ओर लगाता[1] हूं ॥
२ । देख जैसे दासों की आंखें स्वामियों के हाथ की ओर
और जैसे दासियों की आंखें स्वामी के हाथ की ओर लगी रहती हैं
वैसे ही हमारी आंखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर लगी तब लों रहेंगी
जब लों वह हम पर अनुग्रह न करे ॥
३ । हम पर अनुग्रह कर हे यहोवा हम पर अनुग्रह कर
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गये हैं ॥
४ । हमारा जीव सुखियों के ठट्ठों से
और अहंकारियों के अपमान से
बहुत ही भर गया है ॥

(१) मूल में उठाता ।

यात्रा का गीत । दाऊद का ।

१२४. इस्राएल् यह कहे
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता,
२ । यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता
जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई किई,
३ । तो वे हम को तब ही जीते निगल जाते
जब उन का कोप हम पर भड़का था ॥
४ । हम तब ही जल में डूब जाते
और धारा में बह जाते[1] ॥
५ । उमंडते[2] जल में हम तब ही बह जाते ॥
६ । धन्य है यहोवा
कि उस ने हम को उन के दांतों से काटे जाने न दिया ॥
७ । हमारा जीव पक्षी की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया
जाल फट गया हम बच निकले ॥
८ । यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है
हमारी सहायता उसी के नाम से होती है ॥

यात्रा का गीत ।

१२५. जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं
सो सिय्योन् पर्वत के समान हैं जो टलता नहीं सदा बना रहता है ॥
२ । जिस प्रकार यरूशलेम् की चारों ओर पहाड़ हैं
उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा की चारों ओर
अब से ले सर्वदा लों रहेगा ॥
३ । क्योंकि दुष्टों का राजदण्ड धर्म्मियों के भाग पर बना न रहेगा

(१) मूल में, नदी हमारे प्राण के ऊपर से जाती ।
(२) मूल में अभिमानी ।

ऐसा न हो कि धर्म्मी अपने हाथ कुटिल काम
की ओर बढ़ाएं ॥
४। हे यहोवा भलों का
और सीधे मनवालों का भला कर ॥
५। पर जो मुड़कर टेढ़े पथों में चलते हैं
उन को यहोवा अनर्थकारियों के संग चला देगा
इस्राएल् को शांति मिले ॥

यात्रा का गीत।

१२६. जब यहोवा सिय्योन् के लौटनेहारों को लौटा ले आया

तब हम स्वप्न देखनेहारे से हो गये ॥
२। तब हम आनन्द से हंसने
और जयजयकार करने लगे[1]
तब जाति जाति के बीच कहा जाता था
कि यहोवा ने इन के साथ बड़े बड़े काम
किये हैं ॥
३। यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किये
सो हैं
और इस से हम आनन्दित हुए ॥
४। हे यहोवा दक्खिन देश के नालों की नाईं
हमारे बंधुओं[2] को लौटा ले आ ॥
५। जो आंसू बहाते हुए बोते हैं
सो जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे ॥
६। चाहे बोनेहारा बीज लिये रोता हुआ चला
जाए
पर वह फिर पूलियां लिये जयजयकार करता
हुआ निश्चय लौट आएगा ॥

यात्रा का गीत। सुलैमान का।

१२७. यदि घर को यहोवा न बनाए

तो उस के बनानेहारों का परिश्रम व्यर्थ होगा
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा ॥

(१) मूल में हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ ऊंचे स्वर के गीत से भर गई। (२) मूल में, हमारी बंधुआई।

२। तुम जो सवेरे उठते और अबेर करके विश्राम
करते
और दुःखभरी रोटी खाते हो तुम्हारे लिये यह
सब व्यर्थ ही है
क्योंकि वह अपने प्रियों को योंही नींद दान
करता है ॥
३। देखो लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं
गर्भ का फल उस की ओर से बदला है ॥
४। जैसे वीर के हाथ में के तीर
वैसे ही जवान के लड़के होते हैं ॥
५। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने अपने
तर्कश को उन से भर लिया हो
वे फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते संकोच
न करेंगे ॥

यात्रा का गीत।

१२८. क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता

और उस के मार्गों पर चलता है ॥
२। तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा
तू क्या ही धन्य होगा और तेरा क्या ही भला होगा ॥
३। तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाख-
लता सी होगी
तेरी मेज की चारों और तेरे बालक जलपाई के
पौधे से होंगे ॥
४। सुन जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो
सो ऐसी ही आशीष पाएगा ॥
५। यहोवा तुझे सिय्योन् से आशीष देवे
और तू जीवन भर यरूशलेम् का कुशल देखता रहे ॥
६। वरन तू अपने नाती पोतों को देखने पावे
इस्राएल् को शान्ति मिले ॥

यात्रा का गीत।

१२९. इस्राएल् यह कहे

कि मेरे बचपन से लोग मुझे बार बार क्लेश
देते आये हैं ॥

२। मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश
देते तो आये हैं
पर मुझ पर प्रबल नहीं हुए॥
३। हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया
और लम्बी लम्बी रेखाएं किईं॥
४। यहोवा धर्म्मी है
उस ने दुष्टों के फंदों को काट डाला है॥
५। जितने सिय्योन् से बैर रखते हैं
उन सभों की आशा टूटे और उन को पीछे
हटना पड़े॥
६। वे छत पर की घास के समान हों
जो बढ़ते न बढ़ते सूख जाती है,
७। जिस से कोई लवैया अपनी मुट्ठी नहीं भरता
न पूलियों का कोई बांधनेहारा अपनी अकवार
भर लेता है॥
८। और न आने जानेहारे कहते हैं
कि यहोवा की आशीष तुम पर होवे
हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद
देते हैं॥

यात्रा का गीत।

१३०. हे

यहोवा मैं ने गहिरे स्थानों में से
तुझ को पुकारा है॥
२। हे प्रभु मेरी सुन
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से
लगे रहें॥
३। हे याह् यदि तू अधर्म्म के कामों का
लेखा ले
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा॥
४। पर तू क्षमा करनेहारा है[1]
जिस से तेरा भय माना जाए॥
५। मैं यहोवा की बाट जोहता हूं मैं जी से
उस की बाट जोहता हूं
और मेरी आशा उस के वचन पर है॥
६। पहरुए जितना भोर को चाहते हैं
पहरुए जितना भोर को चाहते हैं

(१) मूल में तेरे पास क्षमा है।

उस से भी अधिक मैं यहोवा को जी से चाहता हूं॥
७। इस्राएल् यहोवा की आशा लगाये रहे
क्योंकि यहोवा करुणा करनेहारा
और पूरा छुटकारा देनेहारा है[1]॥
८। इस्राएल् को सारे अधर्म्म के कामों से
वही छुटकारा देगा॥

यात्रा का गीत। दाऊद का।

१३१. हे

यहोवा न तो मेरा मन गर्वी है
और न मेरी दृष्टि घमण्ड भरी
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक
कठिन हैं
उन से मैं काम नहीं रखता॥
२। निश्चय मैं ने अपने मन को[2] शान्त और
चुप कर दिया है
जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मा की
गोद में[3] रहता है
वैसे ही दूध छुड़ाये हुए लड़के के समान मेरा
मन भी रहता[4] है॥
३। इस्राएल् अब से ले सदा लों
यहोवा की आशा लगाये रहे॥

यात्रा का गीत।

१३२. हे

यहोवा दाऊद के लिये
उस की सारी दुर्दशा को स्मरण कर॥
२। उस ने यहोवा से किरिया खाई
और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी,
३। कि निश्चय मैं तब लों न अपने घर में[5]
प्रवेश करूंगा
न अपने पलंग पर चढूंगा,
४। न अपनी आंखों से नींद
न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा,
५। जब लों मैं यहोवा के लिये एक स्थान

(१) मूल में यहोवा के पास करुणा और उसी के पास बहुत छुटकारा है। (२) मूल में जीव को। (३) मूल में मा पर। (४) मूल में मेरे ऊपर रहता। (५) मूल में, अपने घर के डेरे में।

अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास न पाऊं ॥
६। देखो हम ने एप्राता में इस की चर्चा सुनी हम ने इस को वन के खेतों में पाया है ॥
७। आओ हम उस के निवास में प्रवेश करें हम उस के चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें ॥
८। हे यहोवा उठकर अपने विश्रामस्थान में अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत आ ॥
९। तेरे याजक धर्म्म के वस्त्र पहिने रहें और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें ॥
१०। अपने दास दाऊद के लिये अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को सुनी अनसुनी न कर[१] ॥
११। यहोवा ने दाऊद से सच्ची किरिया खाई और वह उस से न मुकरेगा कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊंगा ॥
१२। यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालें और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा उस पर चलें तो उन के वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग युग बैठते चले जाएंगे ॥
१३। क्योंकि यहोवा ने सिय्योन् को अपनाया और अपने निवास के लिये चाहा है ॥
१४। यह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है यहीं मैं रहूंगा क्योंकि मैं ने इस को चाहा है ॥
१५। मैं इस में की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा और इस में के दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा ॥
१६। और मैं इस में के याजकों को उद्धार का वस्त्र पहिनाऊंगा और इस में के भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे ॥
१७। वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रक्खा है ॥
१८। मैं उस के शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा पर उसी के सिर पर उस का मुकुट शोभायमान रहेगा ॥

यात्रा का गीत । दाऊद का ।

१३३. देखो यह क्या ही भली और क्या ही मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें ॥
२। यह तो उस उत्तम तेल के समान है जो हारून के सिर पर डाला गया और उस की दाढ़ी पर बहकर उस के वस्त्र की छोर तक पहुंच गया,
३। वा हेर्मान् की उस ओस के समान है जो सिय्योन् के पहाड़ों पर गिरे यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है ॥

यात्रा का गीत ।

१३४. हे यहोवा के सब सेवको सुनो तुम जो रात रात यहोवा के भवन में खड़े रहते हो यहोवा को धन्य कहो ॥
२। अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर यहोवा को धन्य कहो ॥
३। यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है सो सिय्योन् में से तुझे आशीष देवे ॥

१३५. याह् की स्तुति करो[१] यहोवा के नाम की स्तुति करो हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो ॥
२। तुम जो यहोवा के भवन में

(१) मूल में, अभिषिक्त का मुंह न फेर दे ।

(१) मूल में हल्लूयाह् ।

अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में
खड़े रहते हो,
३। याह् की स्तुति करो[1] क्योंकि यहोवा
भला है
उस के नाम का भजन गाओ क्योंकि यह
मनभाऊ है ॥
४। याह् ने तो याकूब को अपने लिये चुना
अर्थात् इस्राएल् को अपना निज धन होने के
लिये चुन लिया है ॥
५। मैं तो जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा
सारे देवताओं से महान् है ॥
६। जो कुछ यहोवा ने चाहा
सो उस ने आकाश और पृथिवी और समुद्र और
सब गहिरे स्थानों में किया है ॥
७। वह पृथिवी की छोर से कुहरे उठाता
और वर्षा के लिये बिजली बनाता
और पवन को अपने भंडार में से निकालता है ॥
८। उस ने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु
सब के पहिलौठों को मार डाला ॥
९। हे मिस्र उस ने तेरे मध्य में
फिरौन और उस के सब कर्म्मचारियों के बीच
चिन्ह और चमत्कार किये[2] ॥
१०। उस ने बहुत सी जातियां नाश किईं
और सामर्थी राजाओं को,
११। अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन् को
और बाशान् के राजा ओग् को
और कनान् के सारे राजाओं को घात किया,
१२। और उन के देश को बांटकर
अपनी प्रजा इस्राएल् के भाग होने के लिये दे
दिया ॥
१३। हे यहोवा तेरा नाम सदा का है
हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण होता है सो
पीढ़ी पीढ़ी बना रहेगा ॥
१४। यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय चुकाएगा
और अपने दासों की दुर्दशा देखकर तरस खाएगा ॥
१५। अन्यजातियों की मूरतें सोना चान्दी ही है
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं ॥
१६। उन के मुंह तो रहता है पर वे बोल नहीं
सकतीं
उन के आंखें तो रहती हैं पर वे देख नहीं
सकतीं ॥
१७। उन के कान तो रहते हैं पर वे सुन नहीं
सकतीं
न उन के कुछ भी सांस चलती है ॥
१८। जैसी वे है वैसे ही उन के बनानेहारे
और उन पर के सब भरोसा रखनेहारे
भी हो जाएंगे ॥
१९। हे इस्राएल् के घराने यहोवा को धन्य कह
हे हारून के घराने यहोवा को धन्य कह ॥
२०। हे लेवी के घराने यहोवा को धन्य कह
हे यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य कहो ॥
२१। यहोवा जो यरूशलेम् में वास करता है
सो सिय्योन् में धन्य कहा जावे
याह् की स्तुति करो[1] ॥

(१) मूल में हल्लूयाह् । (२) मूल में भेजे ।

१३६. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है

उस की करुणा सदा की है ॥
२। जो ईश्वरों का परमेश्वर है उस का धन्यवाद
करो ॥
उस की करुणा सदा की है ॥
३। जो प्रभुओं का प्रभु है उस का धन्यवाद करो
उस की करुणा सदा की है ॥
४। उस को छोड़कर कोई बड़े बड़े आश्चर्य्यकर्म्म
नहीं करता
उस की करुणा सदा की है ॥
५। उस ने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया
उस की करुणा सदा की है ॥
६। उस ने पृथिवी को जल के ऊपर फैलाया
उस की करुणा सदा की है ॥
७। उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियां बनाईं
उस की करुणा सदा की है,

(१) मूल में, हल्लूयाह् ।

८। दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य्य को
उस की करुणा सदा की है,
९। और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा
और तारागण को
उस की करुणा सदा की है,
१०। उस ने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा
उस की करुणा सदा की है,
११। और उन के बीच से इस्राएलियों को
उस की करुणा सदा की है,
१२। बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से
निकाला
उस की करुणा सदा की है ॥
१३। उस ने लाल समुद्र को खण्ड खण्ड कर
दिया
उस की करुणा सदा की है,
१४। और इस्राएल् को उस के बीच से पार
कर दिया
उस की करुणा सदा की है,
१५। और फ़िरौन को सेना समेत लाल समुद्र
में झटक दिया
उस की करुणा सदा की है ॥
१६। वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला
उस की करुणा सदा की है ॥
१७। उस ने बड़े बड़े राजा मारे
उस की करुणा सदा की है ॥
१८। उस ने प्रतापी राजाओं को
उस की करुणा सदा की है,
१९। एमोरियों के राजा सीहोन् को
उस की करुणा सदा की है,
२०। और बाशान् के राजा ओग् को घात किया
उस की करुणा सदा की है,
२१। और उन के देश को भाग होने के लिये
उस की करुणा सदा की है,
२२। अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के
लिये दे दिया
उस की करुणा सदा की है ॥
२३। उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि लिई
उस की करुणा सदा की है,
२४। और हम को द्रोहियों से छुड़ाया है
उस की करुणा सदा की है ॥
२५। वह सारे प्राणियों को आहार देता है
उस की करुणा सदा की है ॥
२६। स्वर्गवासी ईश्वर का धन्यवाद करो
उस की करुणा सदा की है ॥

१३७. बाबेल् की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गये

और सिय्योन् को स्मरण करके रो दिये ॥
२। उस के बीच के मजनूवृक्षों पर
हम ने अपनी वीणाओं को टांग दिया ॥
३। क्योंकि जो हम को बंधुए करके ले गये थे
उन्हों ने वहां हम से गीत[1] गवाना चाहा
और हमारे रुलानेहारों ने हम से आनन्द चाहकर
कहा
सिय्योन् के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत
गाओ ॥
४। हम यहोवा के गीत को
पराये देश में क्योंकर गाएं ॥
५। हे यरूशलेम् यदि मैं तुझे भूल जाऊं
तो मेरा दहिना हाथ झूठा हो जाए[2] ॥
६। यदि मैं तुझे स्मरण न रक्खूं
यदि मैं यरूशलेम् को
अपने सारे आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं
तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए ॥
७। हे यहोवा यरूशलेम् के दिन को एदोमियों
के विषय स्मरण कर
कि वे क्योंकर कहते थे ढाओ उस को नेव से
ढा दो ॥
८। हे बाबेल्[3] तू जो उजड़नेवाली है
क्या ही धन्य वह होगा जो तुझ से ऐसा ही
बर्ताव करेगा
जैसा तू ने हम से किया है ॥

(१) मूल में गीत के वचन। (२) मूल में भूल जाए।
(३) मूल में हे बाबेल् की बेटी।

९। क्या ही धन्य वह होगा जो तेरे बच्चों को पकड़कर
ढांग पर पटक देगा ॥

दाऊद का।

१३८. मैं सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा
देवताओं के साम्हने भी मैं तेरा भजन गाऊंगा ॥
२। मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा
और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा
क्योंकि तू ने ऐसा वचन दिया है जो तेरे बड़े नाम से भी बढ़कर है ॥
३। जिस दिन मैं ने पुकारा उसी दिन तू ने मेरी सुन लिई
और मुझ में बल देकर हियाव बंधाया ॥
४। हे यहोवा पृथिवी के सारे राजा तेरा धन्यवाद करेंगे
क्योंकि उन्हों ने तेरे वचन सुने हैं ॥
५। और वे यहोवा की गति के विषय गाएंगे
क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है ॥
६। यद्यपि यहोवा महान् है तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है
पर अहंकारी को दूर ही से पहिचानता है ॥
७। चाहे मैं संकट के बीच में रहूं[1] तौभी तू मुझे जिलाएगा
तू मेरे कोपित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा
और अपने दहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा ॥
८। यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा
हे यहोवा तेरी करुणा सदा की है
तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न कर ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

१३९. हे यहोवा तू ने मुझे जांचकर जान लिया है ॥
२। तू मेरा उठना बैठना जानता
और मेरे विचारों को दूर से भी समझ लेता है ॥
३। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता
और मेरी सारी चालचलन का भेद जानता है ॥
४। और हे यहोवा मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं
जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो ॥
५। तू ने मुझे आगे पीछे घेर रक्खा
और अपना हाथ मुझ पर रक्खे रहता है ॥
६। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है
यह गंभीर[1] और मेरी समझ से बाहिर है ॥
७। मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं
वा तेरे साम्हने से किधर भागूं ॥
८। यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है
और यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है ॥
९। यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर[2] समुद्र के पार बसूं[3] ॥
१०। तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा
और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा ॥
११। और यदि मैं कहूं अंधकार में तो मैं छिप जाऊंगा
और मेरी चारों ओर का उजियाला रात का अंधेरा हो जाएगा,
१२। तौभी अंधकार तुझ से न छिपाएगा
रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी
अंधियारा और उजियाला दोनों एक समान होंगे ॥
१३। मेरे मन का स्वामी तो तू है
तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा ॥
१४। मैं तेरा धन्यवाद करूंगा इस लिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया
तेरे काम तो आश्चर्य्य के हैं
और मैं इसे भली भांति जानता हूं ॥

---
(१) मूल में चलूं।

(१) मूल में ऊंचे पर। (२) मूल में के पंख उठाकर। (३) मूल में पिछले भाग में बसूं।

१५। जब मैं गुप्त में बनाया जाता
और पृथिवी के नीचे स्थानों में रचा जाता था
तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं॥
१६। तू मुझे गर्भ में देखता था
और मेरे सब अङ्ग जो दिन दिन बनते जाते थे
सो रचे जाने से पहिले
तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे॥
१७। और मेरे लिये तो हे ईश्वर तेरे विचार क्या ही प्रिय हैं
उन की संख्या का जोड़ क्या ही बड़ा है॥
१८। यदि मैं उन को गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते
जब मैं जाग उठता हूं तब भी तेरे संग रहता हूं॥
१९। हे ईश्वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा
हे हत्यारो मुझ से दूर हो जाओ॥
२०। क्योंकि वे तेरा चर्चा चतुराई से करते हैं
तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं॥
२१। हे यहोवा क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूं
और तेरे विरोधियों से रूठ न जाऊं॥
२२। हां मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं
मैं उन को अपने शत्रु करके मानता हूं॥
२३। हे ईश्वर मुझे जांचकर जान ले
मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले॥
२४। और देख कि मुझ में कोई संताप करनेहारी चाल है कि नहीं
और सदा के मार्ग में मेरी अगुवाई कर॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का। भजन।

१४०. हे यहोवा मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर॥
२। क्योंकि उन्होंने मन में बुरी कल्पनाएं किई हैं
वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं॥
३। उन का बोलना सांप का काटना सा है[1]
उन के मुंह में नाग का सा विष रहता है। सेला॥
४। हे यहोवा मुझे दुष्ट के हाथों से बचा
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर
क्योंकि उन्हों ने मेरे पैरों के उखाड़ने की युक्ति किई है॥
५। घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा और पासे लगाये
और पथ के किनारे जाल बिछाया
उन्हों ने मेरे लिये फंसरियां लगाई हैं। सेला॥
६। हे यहोवा मैं ने तुझ से कहा है कि तू मेरा ईश्वर है
हे यहोवा मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा॥
७। हे यहोवा प्रभु हे मेरे सामर्थी उद्धारकर्ता[2]
तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा किई है॥
८। हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न कर
उस की बुरी युक्ति को सफल न कर नहीं तो वह घमण्ड करेगा। सेला॥
९। मेरे घेरनेहारों के सिर पर
उन्हीं का बिचारा हुआ उत्पात[3] पड़े॥
१०। उन पर अंगारे डाले जाएं
वे आग में गिरा दिये जाएं
और ऐसे गड़हों में गिरें कि वे फिर उठ न सकें॥
११। बकवादी पृथिवी पर स्थिर नहीं होने का
उपद्रवी पुरुष को बुराई गिराने के लिये अहेर करेगी॥
१२। हे यहोवा मुझे निश्चय है कि तू दीन जन का
और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा॥
१३। निःसंदेह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएंगे
सीधे लोग तेरे सन्मुख वास करेंगे॥

दाऊद का। भजन।

१४१. हे यहोवा मैं ने तुझे पुकारा है मेरे लिये फुर्ती कर
जब मैं तुझ को पुकारूं तब मेरी ओर कान लगा॥

(१) मूल में, उन्हों ने सांपों की नाईं अपनी जीभ तेज किई है।

(१) मूल में, होंठों के नीचे। (२) मूल में हे मेरे उद्धार के बल। (३) मूल में, उन्हीं के होंठों का उत्पात।

२। मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्धधूप
और मेरा हाथ फैलाना संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे ॥
३। हे यहोवा मेरे मुख पर पहरा बैठा
मेरे होठों के द्वार की रखवाली कर ॥
४। मेरा मन किसी बुरी बात की ओर फिरने न दे
मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग
दुष्ट कामों में न लगूं
और मैं उन के स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊं ॥
५। धर्म्मी मुझ को मारे तो यह कृपा मानी जाएगी
और वह मुझे ताड़ना दे तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा
मैं अपने सिर के लिये उसे नाह न करूं
लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं प्रार्थना में लवलीन रहूंगा ॥
६। उन के न्यायी ढांग के पास गिराये गये
और उन्हों ने मेरे वचन सुन लिये क्योंकि वे मधुर हैं ॥
७। जैसे भूमि में हल चलने और ढेले फूटने के समय
हमारी हड्डियां अधोलोक के मुह पर छितराई हुई हैं ॥
८। पर हे यहोवा प्रभु मेरी आंखें तेरी ही ओर लगी हैं
मैं तेरा शरणागत हूं तू मेरा प्राण जाने न दे ॥
९। मेरे लिये लगाये हुए फंदे से
और अनर्थकारियों की फंसरियों से मेरी रक्षा कर ॥
१०। दुष्ट लोग अपने जालों मे आप ही फंसें
और उस अवसर मे मैं बच निकलूं ॥

दाऊद का मस्कील । जब वह गुफा में था । प्रार्थना ।

१४२. मैं यहोवा की दोहाई देता
मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं ॥
२। मैं अपने शोक की बातें उस से खोलकर कहता[1]
मैं अपना संकट उस के आगे प्रगट करता हूं ॥
३। जब मेरा आत्मा ढया हुआ था तब तू मेरी दशा[1] को जानता था
जिस रास्ते से मैं जानेवाला था उसी में उन्हों ने मेरे लिये फंदा लगाया ॥
४। मेरी दहिनी ओर देख कोई मुझ को नहीं पहिचानता
मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही मुझ को कोई नहीं पूछता ॥
५। हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दिई है
मैं ने कहा तू मेरा शरणस्थान है
मेरे जीते जी तू मेरा भाग है ॥
६। मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है
जो मेरे पीछे पड़े है उन से मुझे बचा ले क्योंकि वे मुझ से अधिक सामर्थी है ॥
७। मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूं
धर्म्मी लोग मेरी चारों ओर आएंगे
इस लिये कि तू मेरा उपकार करेगा ॥

दाऊद का भजन ।

१४३. हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा
तू जो सच्चा और धर्म्मी है सो[2] मेरी सुन ले ॥
२। और अपने दास से मुकद्दमा न उठा
क्योंकि कोई प्राणी तेरे लेखे में निर्दोष नहीं ठहर सकता ॥
३। शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ
उस ने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया
और मुझे ढेर दिन के मुरे हुओं के समान अंधेरे स्थान में डाल दिया है ॥
४। मेरा आत्मा ढया हुआ है
मेरा मन विकल है ॥
५। मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं
मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता

(१) मूल में उस के साम्हने उण्डेलूंगा ।

(१) मूल में, मेरा पथ ।
(२) मूल मे अपनी सच्चाई और धार्म्मिकता से ।

और तेरे काम को सोचता हूं ॥
६। मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाये हूं
सूखी भूमि की नाईं मैं तेरा प्यासा हूं । सेला ॥
७। हे यहोवा फुर्ती करके मेरी सुन ले
क्योंकि मेरा प्राण निकलने पर है[1]
मुझ से अपना मुंह न फेर ले
ऐसा न हो कि मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊं ॥
८। अपनी करुणा की बात मुझे तड़के सुना
क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रक्खा है
जिस मार्ग से मुझे चलना है सो मुझ को बता दे
क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता[2] हूं ॥
९। हे यहोवा मुझे शत्रुओं से बचा ले
मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूं ॥
१०। मुझ को यह सिखा कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है
तेरा आत्मा तो भला है सो मुझ को धर्म्म के मार्ग में ले चल ॥
११। हे यहोवा मुझे अपने नाम के निमित्त जिला
तू जो धर्म्मी है सो[3] मुझ को संकट से छुड़ा ॥
१२। और करुणा करके मेरे शत्रुओं को सत्यानाश कर
और मेरे सब सतानेहारों को नाश कर
क्योंकि मैं तेरा दास हूं ॥

दाऊद का।

१४४. धन्य है यहोवा जो मेरी चटान है
वह मेरे हाथों को लड़ने
और[4] युद्ध करने के लिये तैयार करता है ॥
२। वह मेरे लिये करुणानिधान और गढ़
ऊंचा स्थान और छुड़ानेहारा
ढाल और शरणस्थान है

(१) मूल में मेरा आत्मा मिट गया। (२) मूल में, उठाता।
(३) मूल में, अपनी धार्म्मिकता से। (४) मूल में, अंगुलियों से।

मेरी प्रजा को मेरे वश में वही रखता है ॥
३। हे यहोवा मनुष्य क्या है कि तू उस की सुधि लेता है
आदमी क्या है कि तू उस का कुछ लेखा करता है ॥
४। मनुष्य तो सांस के समान है
उस के दिन मिटती हुई छाया के समान हैं ॥
५। हे यहोवा अपने स्वर्ग को नीचे करके उतर आ
पहाड़ों को छू तब उन से धूंआं उठेगा ॥
६। बिजली कड़काकर उन को तित्तर बित्तर कर
अपने तीर चलाकर उन को घबरा दे ॥
७। अपने हाथ ऊपर से बढ़ाकर
मुझे उबार और महासागर से
अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा ॥
८। उन के मुंह से तो व्यर्थ बातें निकलती हैं
और उन के दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं[1] ॥
९। हे परमेश्वर मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊंगा
मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊंगा ॥
१०। तू राजाओं का उद्धार करता
और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है ॥
११। तू मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा
जिन के मुंह से व्यर्थ बातें निकलतीं
और उन के दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं
१२। हमारे बेटे जो जवानी के समय पौधों की नाईं बढ़े हुए हों
हमारी बेटियां जो उन कोनेवाले पत्थरों के समान हों जो मन्दिर के पत्थरों की नाईं बनाये जाएं,

(१) मूल में उन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है।

१३। हमारे खत्ते जो भरे रहें और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए
हमारी भेड़ बकरियां जो हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें,
१४। हमारे बैल जो खूब लदे हुए हों
हम पर जो न टूट पड़ना और न हमारा निकल जाना
और न हमारे चौकों में कुछ रोना पीटना हो,
१५। इस दशा में जो राज्य हो सो क्या ही धन्य होगा
जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है सो क्या ही धन्य है॥

स्तुति। दाऊद का।

१४५. हे मेरे परमेश्वर हे राजा मैं तुझे सराहूंगा
और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूंगा॥
२। दिन दिन मैं तुझ को धन्य कहा करूंगा
और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूंगा॥
३। यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है
और उस की बड़ाई अगम है॥
४। तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन
पीढ़ी पीढ़ी होता चला जाएगा॥
५। मैं तेरे ऐश्वर्य्य की महिमा के प्रताप पर
और तेरे भांति भांति के आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान करूंगा॥
६। और लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे
और मैं तेरे बड़े बड़े कामों का वर्णन करूंगा॥
७। लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उस की चर्चा करेंगे
और तेरे धर्म्म का जयजयकार करेंगे॥
८। यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु
विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है॥
९। यहोवा सभों के लिये भला है
और उस की दया उस की सारी सृष्टि पर है॥
१०। हे यहोवा तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी
और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे॥
११। वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे
और तेरे पराक्रम के विषय बातें करेंगे,
१२। इस लिये कि वे आदमियों को तेरे पराक्रम के काम
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें॥
१३। तेरा राज्य युग युग का
और तेरी प्रभुता सारी पीढ़ियों की है॥
१४। यहोवा सब गिरते हुओं को संभालता
और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है॥
१५। सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं
और तू उन को आहार समय पर देता है॥
१६। तू अपनी मुट्ठी खोलकर
सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है॥
१७। यहोवा अपनी सारी गति में धर्म्मी
और अपने सब कामों में करुणामय है॥
१८। जितने यहोवा को पुकारते हैं अर्थात् जितने उस को सच्चाई से पुकारते हैं
उन सभों के वह निकट होता है॥
१९। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा
और उन की दोहाई सुनकर उन का उद्धार करेगा॥
२०। यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा
पर सब दुष्टों को सत्यानाश करता है॥
२१। मैं यहोवा की स्तुति करूंगा
और सारे प्राणी उस के पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें॥

१४६. याह की स्तुति करो[1]

हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर॥
२। मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा

(१) मूल में हल्लूयाह्।

जब लों मैं बना रहूंगा तब लों मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ॥
३ । तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना
न किसी आदमी पर क्योंकि उस में उद्धार करने की शक्ति नहीं ॥
४ । उस का प्राण निकलेगा वह मिट्टी में मिल जाएगा
उसी दिन उस की सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी ॥
५ । क्या ही धन्य वह है जिस का सहायक याकूब का ईश्वर हो
और जिस का आसरा अपने परमेश्वर यहोवा पर हो ॥
६ । वह आकाश और पृथिवी और समुद्र
और उन में जो कुछ है सब का कर्त्ता है
और वह अपना वचन सदा लों पूरा करता रहेगा ॥
७ । वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता
और भूखों को रोटी देता है
यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है ॥
८ । यहोवा अंधों को आंखें देता है
यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है
यहोवा धर्म्मियों से प्रेम रखता है ॥
९ । यहोवा परदेशियों की रक्षा करता
और बपमूए और विधवा को तो सम्भालता है
पर दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा करता है ॥
१० । हे सिय्योन् यहोवा सदा लों
तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य करता रहेगा
याह् की स्तुति करो[1] ॥

१४७. याह् की स्तुति करो[1]

क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है
वह मनभावना है स्तुति करनी फबती है ॥
२ । यहोवा यरूशलेम् को बसा रहा है
वह निकाले हुए इस्राएलियों को एकट्ठा कर रहा है ॥

(१) मूल में, हल्लूयाह् ।

३ । वह खेदित मनवालों को चंगा करता
और उन के शोक पर पट्टी बांधता है ॥
४ । वह तारों को गिनता
और उन में से एक एक का नाम रखता है ॥
५ । हमारा प्रभु महान् और अति सामर्थी है
उस की बुद्धि अपार है ॥
६ । यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता
और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता है ॥
७ । धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ
वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ ॥
८ । वह आकाश को मेघों से छा देता
और पृथिवी के लिये मेंह की तैयारी करता
और पहाड़ों पर घास उगाता है ॥
९ । वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं
आहार देता है ॥
१० । न तो वह घोड़े के बल को चाहता
और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है ॥
११ । यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है
अर्थात् उन से जो उस की करुणा की आशा लगाये रहते हैं ॥
१२ । हे यरूशलेम् यहोवा की प्रशंसा कर
हे सिय्योन् अपने परमेश्वर की स्तुति कर ॥
१३ । क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के बेण्डों को दृढ़ किया
और तेरे लड़केबालों को[1] आशीष दिई है ॥
१४ । वह तेरे सिवानों में शान्ति देता
और तुझ को उत्तम से उत्तम गेहूं से तृप्त करता है ॥
१५ । वह पृथिवी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है
उस का वचन अति वेग से दौड़ता है ॥
१६ । वह ऊन के समान हिम देता
और राख की नाईं पाला छितराता है ॥
१७ । वह बरफ के टुकड़े गिराता है

(१) मूल में तेरे भीतर तेरे लड़कों को ।

उस की किई हुई ठण्ड को कौन सह सकता है॥
१८। वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है
वह वायु बहाता है तब जल बहने लगता है॥
१९। वह याकूब को अपना वचन
इस्राएल् को अपनी विधियां और नियम बताता है॥
२०। किसी और जाति से उस ने ऐसा बर्ताव नहीं किया
और उस के नियमों को औरों ने नहीं जाना
याह् की स्तुति करो[1]॥

१४८. याह् की स्तुति करो[1]

यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो
उस की स्तुति ऊंचे स्थानों में करो॥
२। हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति करो
हे उस की सारी सेना उस की स्तुति कर॥
३। हे सूर्य्य और चंद्रमा उस की स्तुति करो
हे सारे ज्योतिमय तारो उस की स्तुति करो॥
४। हे सब से ऊंचे आकाश
और हे आकाश के ऊपरवाले जल तुम दोनों उस की स्तुति करो॥
५। ये यहोवा के नाम की स्तुति करें
क्योंकि उसी ने आज्ञा दिई और ये सिरजे गये॥
६। और उस ने उन को सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है
और ऐसी विधि ठहराई है जो टलने की नहीं॥
७। पृथिवी में से यहोवा की स्तुति करो
हे मगरमच्छो और गहिरे सागर,
८। हे अग्नि और ओलो हे हिम और कुहरे
हे उस का वचन माननेहारी प्रचण्ड बयार,
९। हे पहाड़ो और सब टीलो
हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारुओ,
१०। हे बनैले पशुओ और सब घरैले पशुओ
हे रेंगनेहारे जन्तुओ और हे पंछियो,

(१) मूल में हल्लूयाह्।

११। हे पृथिवी के राजाओ और राज्य राज्य के सब लोगो
हे हाकिमो और पृथिवी के सब न्यायियो,
१२। हे जवानो और कुमारियो
हे पुरनियो और बालको,
१३। यहोवा के नाम की स्तुति करो[1]
क्योंकि केवल उसी का नाम महान् है
उस का ऐश्वर्य्य पृथिवी और आकाश के ऊपर है॥
१४। और उस ने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊंचा किया है
यह उस के सारे भक्तों के
अर्थात् इस्राएलियों के[1] उस के समीप रहनेहारी प्रजा के स्तुति करने का विषय है
याह् की स्तुति करो[2]॥

१४९. याह् की स्तुति करो[2]

यहोवा के लिये नया गीत
भक्तों की सभा में उस की स्तुति गाओ॥
२। इस्राएल् अपने कर्त्ता के कारण आनन्दित हो
सिय्योन् के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों॥
३। वे नाचते हुए उस के नाम की स्तुति करें
और डफ और वीणा बजाते हुए उस का भजन गाएं॥
४। क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है
वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायमान करेगा॥
५। भक्त लोग महिमा के कारण हुलसें
और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें॥
६। उन के कंठ से ईश्वर की सराहना हो

(१) मूल में करे। (२) मूल में हल्लूयाह्।

और उन के हाथ में दोधारी तलवार रहे,
७ । कि वे अन्यजातियों से पलटा लें
और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें,
८ । और उन के राजाओं को सांकलों से
और उन के प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की
बेड़ियों से जकड़ रक्खें,
९ । और उन को ठहराया हुआ[1] दण्ड दें
उस के सारे भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी
याह् की स्तुति करो[2] ॥

१५०. याह् की स्तुति करो[2]

ईश्वर के पवित्रस्थान में उस की स्तुति करो
उस के सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में
उसी की स्तुति करो ॥
२ । उस के पराक्रम के कामों के कारण उस
की स्तुति करो
उस की अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उस की
स्तुति करो ॥
३ । नरसिंगा फूंकते हुए उस की स्तुति करो
सारंगी और वीणा बजाते हुए उस की स्तुति
करो ॥
४ । डफ बजाते और नाचते हुए उस की
स्तुति करो
तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उस
की स्तुति करो ॥
५ । ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए उस की
स्तुति करो
आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उ
की स्तुति करो ॥
६ । जितने प्राणी हैं
सब के सब याह् की स्तुति करें
याह् की स्तुति करो[1] ॥

(१) मूल में लिखा हुआ । (२) मूल में हल्लूयाह् ।

(१) मूल में हल्लूयाह् ।

नीतिवचन ।

१. दाऊद के पुत्र इस्राएल् के राजा सुलैमान के नीतिवचन ॥
२ । इन के द्वारा पढ़नेहारा बुद्धि और शिक्षा
प्राप्त करे
और समझ की बातें समझे,
३ । और काम करने में प्रवीणता
और धर्म्म न्याय और सीधाई की शिक्षा पाए,
४ । और भोलों को चतुराई
और जवान को ज्ञान और विवेक मिले,
५ । और बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए
और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,
६ । जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त को
और बुद्धिमानों के वचन और दृष्टकूटों को
समझें ॥
७ । यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है
बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ
जानते हैं ॥
८ । हे मेरे पुत्र अपने पिता की शिक्षा को सुन
और अपनी माता की सीख को न तज ॥
९ । क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट
और तेरे गले के लिये कण्ठे बनेंगी ॥

१० । हे मेरे पुत्र यदि पापी लोग तुझे फुसलाएं
तो उन की बात न मानना ॥
११ । यदि वे कहें कि हमारे संग चल
हम खून करने के लिये घात लगाएं
हम निर्दोषों की ताक[1] में रहें,
१२ । हम अधोलोक की नाईं उन को जीते
और कबर में पड़ते हुओं के समान उन्हें समूचे निगल जाएं,
१३ । हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे
हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे,
१४ । तू हमारा साझी हो जा
हम सभों का एक ही बटुआ हो,
१५ । तो हे मेरे पुत्र उन के संग मार्ग में न चलना
वरन उन की डगर में पांव भी न धरना ॥
१६ । क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते
और खून करने को फुर्ती करते हैं ॥
१७ । किसी पक्षी के देखते
जाल फैलाना व्यर्थ होता है ॥
१८ । ये लोग तो अपने खून के लिये घात लगाते हैं
और अपने ही प्राण की घात की ताक में रहते हैं ॥
१९ । सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है
उन का प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है ॥
२० । बुद्धि[2] सड़क में ऊंचे स्वर से बोलती
और चौकों में प्रचार करती है ॥
२१ । वह हाटों के सिरे पर पुकारती
और फाटकों के बीच —
और नगर के भीतर भी ये बातें बोलती है कि,
२२ । हे भोले लोगो तुम कब लों भोलेपन से प्रीति रक्खोगे
और हे ठट्ठा करनेहारो तुम कब लों ठट्ठा करना चाहोगे
और हे मूर्खो तुम कब लों ज्ञान से बैर रक्खोगे ॥

(१) मूल में अकारण छूका । (२) मूल में बुद्धिया ।

२३ । मेरा डांटना सुनकर फिरो
सुनो मैं अपना आत्मा तुम्हारे लिये उण्डेल दूंगी
मैं तुम को अपने वचन बताऊंगी ॥
२४ । मैं ने तो पुकारा पर तुम ने नाह किई
और मैं ने हाथ फैलाया पर किसी ने ध्यान न दिया ॥
२५ । वरन तुम ने मेरी सारी सम्मति को सुनी अनसुनी किया
और मेरे डांटने को नहीं चाहा ॥
२६ । इस लिये मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हंसूंगी
और जब तुम पर भय आ पड़ेगा,
२७ । वरन आंधी की नाईं तुम पर भय आ पड़ेगा
और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी
और तुम संकट और सकेती में फंसोगे तब मैं ठट्ठा करूंगी ॥
२८ । उस समय वे मुझे पुकारेंगे और मैं न सुनूंगी
वे मुझे यत्न से तो ढूंढेंगे पर न पाएंगे ॥
२९ । उन्हों ने ज्ञान से बैर किया
और यहोवा का भय मानना उन को न भाया ॥
३० । उन्हों ने मेरी सम्मति न चाही
वरन मेरी सारी डांट का तिरस्कार किया ॥
३१ । इस लिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे
और अपनी युक्तियों के फल से अघाएंगे ॥
३२ । क्योंकि भोले लोगों का हट जाना उन के घात किये जाने का कारण होगा
और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ़ लोग नाश होंगे ॥
३३ । पर जो मेरी सुनेगा सो निडर बसा रहेगा
और बेखटके सुख से रहेगा ॥

२. हे मेरे पुत्र यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे
और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े,
२ । और बुद्धि की बात ध्यान देके सुने

और समझ की बात मन लगाके सोचे,
३। और प्रवीणता और समझ का
अति यत्न करे ॥
४। यदि उस को चांदी की नाईं ढूंढ़े
और गुप्त धन के समान उस की खोज में लगे,
५। तो तू यहोवा के भय को समझ सकेगा
और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा ॥
६। क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है
ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं ॥
७। वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता
जो खराई से चलते हैं उन के लिये वह ढाल ठहरता है ॥
८। वह न्याय के पथों की देख भाल करता
और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है ॥
९। सो तू धर्म्म और न्याय
और सीधाई को निदान सब भली भली चाल समझ सकेगा ॥
१०। बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी
और ज्ञान तुझ को मनभाऊ लगेगा ॥
११। विवेक तुझे बचाएगा
और समझ से तेरी रक्षा होगी ॥
१२। इस से तू बुराई के मार्ग से
और उलट फेर की बातों के कहनेहारों से बचेगा ॥
१३। जो सीधाई की बाट को छोड़कर
अंधेरे मार्ग में चलते हैं,
१४। और बुराई करने से आनन्दित
और दुष्ट जन की उलट फेर की बातों से मगन होते हैं,
१५। उन की चाल चलन टेढ़ी
और चाल बिगड़ी होती है ॥
१६। फिर तू पराई स्त्री से भी बचेगा
जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है,
१७। और अपनी सवानी के परम प्रिय को छोड़ देती
और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है ॥
१८। उस का घर मृत्यु की ओर ढुलकता है
और उस की डगरें मरे हुओं के बीच पहुंचाती हैं ॥
१९। जो उस के पास जाते हैं उन में से कोई भी लौट नहीं आता
और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं ॥
२०। तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल
और धर्म्मियों की बाट को पकड़े रह ॥
२१। क्योंकि सीधे ही लोग देश में बसे रहेंगे
और खरे ही लोग उस में बने रहेंगे ॥
२२। दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे
और विश्वासघाती उस में से उखाड़े जाएंगे ॥

३. हे मेरे पुत्र मेरी शिक्षा को न भूलना

अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रक्खे रहना ॥
२। क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु[1] बढ़ेगी
और तू अधिक कुशल से रहेगा ॥
३। कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं
वरन उन को अपने गले का हार बनाना
और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना,
४। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा
तू अति बुद्धिमान होगा,
५। और अपनी समझ का सहारा न लेना
वरन सारे मन से यहोवा पर भरोसा रखना,
६। उसी को स्मरण करके सब काम करना
तब वह तेरे लिये सीधी बाट निकालेगा ॥
७। अपने लेखे बुद्धिमान न होना
यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना ॥
८। ऐसा करने से तेरा शरीर[2] भला चंगा
और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी ॥
९। अपनी संपत्ति के द्वारा

(१) मूल में दिनों की बढ़ाई और जीवन के बरस।
(२) मूल में तेरी नाभि।

और अपनी भूमि की सारी पहिली उपज दे
देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना,
१० । और तेरे खत्ते भरे पूरे रहेंगे
और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा ॥

११ । हे मेरे पुत्र यहोवा की शिक्षा से मुंह न मोड़ना
और जब वह तुझे डांटे तब तू बुरा न मानना ॥
१२ । क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता उस को डांटता है
जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है ॥
१३ । क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए
और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे ॥
१४ । क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से बड़ी
और उस का लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है ॥
१५ । वह मूंगे से अधिक अनमोल है
और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है
उन में से कोई भी उस के तुल्य न ठहरेगी ॥
१६ । उस के दहिने हाथ में दीर्घायु
और उस के बाएं हाथ में धन और महिमा हैं ॥
१७ । उस के मार्ग मनभाऊ
और उस की सारी डगरें कुशल की हैं ॥
१८ । जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं उन के लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है
और जो उस को पकड़े रहते हैं सो धन्य हैं ॥
१९ । यहोवा ने पृथिवी की नेव बुद्धि ही से डाली
और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर बनाया ॥
२० । उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट निकले
और आकाशमण्डल से ओस टपकती है ॥
२१ । हे मेरे पुत्र ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएं
खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर ॥
२२ । तब इन से तुझे जीवन मिलेगा
और ये तेरे गले का हार बनेंगे ॥
२३ । और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा
और तेरे पांव में ठेस न लगेगी ॥
२४ । जब तू लेटेगा तब भय न खाएगा
जब तू लेटेगा तब सुख की नींद आएगी ॥
२५ । अचानक आनेहारे भय से न डरना
और जब दुष्टों की विपत्ति आ पड़े तब न घबराना ॥
२६ । क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा
और तेरे पांव को फन्दे में फंसने न देगा ॥
२७ । जिन का भला करना चाहिये यदि तुझे शक्ति रहे
तो भला करने से न रुकना ॥
२८ । यदि तेरे पास देने को कुछ हो
तो अपने पड़ोसी से न कहना कि
जा कल फिर आना कल मैं तुझे दूंगा ॥
२९ । जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है
तब उस के विरुद्ध बुरी युक्ति न बांधना ॥
३० । जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो
उस से अकारण मुकद्दमा न खड़ा करना ॥
३१ । उपद्रवी पुरुष के विषय डाह न करना
न उस की सी चाल चलना ॥
३२ । क्योंकि यहोवा कुटिल से घिन करता है
पर वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है[१] ॥
३३ । दुष्ट के घर पर यहोवा का साप
और धर्म्मियों के वासस्थान पर उस की आशीष होती है ॥
३४ । ठट्ठा करनेहारों से वह निश्चय ठट्ठा करता है
और दीनों पर अनुग्रह करता है ॥
३५ । बुद्धिमान् महिमा को अपने भाग में पाएंगे
और मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी ॥

(१) मूल में उस का भेद सीधे लोगों के पास है।

४. हे मेरे पुत्रो पिता की शिक्षा सुनो
और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ ॥
२। क्योंकि मैं ने तुम को उत्तम शिक्षा दिई है
मेरी शिक्षा को न छोड़ो ॥
३। देखो मैं भी अपने पिता का पुत्र था
और माता का एकला दुलारा था,
४। और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था कि
तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे
तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर तब जीता रहेगा॥
५। बुद्धि को प्राप्त कर समझ को भी प्राप्त कर
उन को भूल न जाना न मेरी बातों को छोड़ना॥
६। बुद्धि को न छोड़ वह तेरी रक्षा करेगी
उस से प्रीति रख वह तेरा पहरा देगी ॥
७। बुद्धि का आरंभ उस की प्राप्ति में यत्न करना है
सो जो कुछ तू प्राप्त करे उसे तो प्राप्त करे
पर समझ की प्राप्ति घटने न पाए ॥
८। उस की बड़ाई कर वह तुझ को बढ़ाएगी
जब तू उस से लिपट जाए तब वह तेरी महिमा करेगी ॥
९। वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण बांधेगी
और तुझे सुन्दर मुकुट देगी ॥

१०। हे मेरे पुत्र मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर
तब तू बहुत बरस लों जीता रहेगा ॥
११। मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया
और सीधाई के पथ पर चलाया है ॥
१२। चलने में तुझे रोक टोक न होगी
और चाहे तू दौड़े तौभी ठोकर न खाएगा ॥
१३। शिक्षा को पकड़े रह उसे छोड़ न दे
उस की रक्षा कर क्योंकि वही तेरा जीवन है ॥
१४। दुष्टों की बाट में पांव मत धर
और न बुरे लोगों के मार्ग पर चल ॥
१५। उसे छोड़ दे उस के पास से भी न चल
उस के निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा ॥
१६। क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें तो उन को नींद नहीं आती
और जब लों वे किसी को ठोकर न खिलाएं तब लों उन्हें नींद नहीं पड़ती ॥
१७। वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते
और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ दाखमधु पीते हैं ॥
१८। पर धर्म्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है
जिस का प्रकाश दोपहर लों अधिक अधिक बढ़ता रहता है ॥
१९। दुष्टों का मार्ग घोर अन्धकारमय है
वे नहीं जानते कि हम किस से ठोकर खाते हैं॥
२०। हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन
और अपना कान मेरी बातों पर लगा ॥
२१। इन को अपनी आंखों की ओट न होने दे
वरन अपने मन में धारण कर ॥
२२। क्योंकि जिन को वे प्राप्त होती हैं वे उन के जीते रहने का
और उन के सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं ॥
२३। सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर
क्योंकि जीवन के निकास उसी से होते हैं ॥
२४। टेढ़ी बात बोलने से परे रह
और उलट फेर की बातें कहने से दूर रह ॥
२५। तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें
और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें ॥
२६। अपने पांव धरने के लिये डगर को समथर कर
और तेरे सारे मार्ग ठीक किये जाएं ॥
२७। न तो दहिनी ओर मुड़ और न बाईं ओर
अपने पांव को बुराई के मार्ग पर रखने से रुका रह ॥

५. हे मेरे पुत्र मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे
मेरे समझाने की ओर कान लगा,

२। जिस से तुझे विवेक बना रहे
और तू ज्ञान के वचनों को पकड़े रहे॥
३। पराई स्त्री के होंठों से मधु टपकता है
और उस की बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं॥
४। पर इस का परिणाम नागदौना सा कड़ुआ
और दोधारी तलवार सा पैना होता है॥
५। उस के पांव मृत्यु की ओर बढ़ते
और उस के पग अधोलोक की ओर पड़ते हैं॥
६। इस से वह जीवन की चौरस बाट को नहीं पा सकती
वह चाल चलन में चंचल है पर आप नहीं जानती॥
७। सो अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
और मेरी बातों से मुंह न मोड़ो॥
८। ऐसी स्त्री से दूर ही रह
और न उस की डेवढ़ी के पास जा॥
९। ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ
और अपना जीवन क्रूर जन के वश कर दे,
१०। और बिराने तेरी कमाई से अपने पेट भरें
और उपरी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें,
११। और तू अपने अन्त समय में
जब तेरा शरीर क्षीण हो तब यह कहकर हाय मारने लगे कि,
१२। मैं ने शिक्षा से कैसा बैर किया
और डांटनेहारे का कैसा तिरस्कार किया,
१३। और मैं ने अपने गुरुओं की बातें न मानीं
और अपने सिखानेहारों की ओर कान न लगाया॥
१४। मैं लगभग सब बुराइयों में पड़ने पर था
और यह सभा और मण्डली के बीच हुआ॥
१५। तू पानी अपने ही कुण्ड से
और अपने ही कूएं के सोते का जल पिया कर॥
१६। क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में
और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए॥
१७। यह केवल तेरे ही लिये रहे
और तेरे संग बिरानों के लिये न हो॥
१८। तेरा सोता धन्य रहे
और अपनी जवानी की स्त्री के साथ आनन्दित रह॥
१९। वह प्रिय हरिणी वा सुन्दर सांबरनी के समान ठहरे
सो तू उसी के स्तनों से सर्वदा सन्तुष्ट रह
और नित्य उसी के प्रेम से मोहित रह॥
२०। हे मेरे पुत्र तू पराई स्त्री पर क्यों मोहित हो
और बिरानी को क्यों छाती से लगाए॥
२१। क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं
और वह उस के सारे पथों का विचार करता है॥
२२। दुष्ट अपने ही अधर्म्म के कामों से फंसेगा
और अपने ही पाप के बन्धनों से बंधा रहेगा॥
२३। वह शिक्षा बिना मर जाएगा
और अपनी बड़ी मूढ़ता के कारण भटकता रहेगा॥

६. हे मेरे पुत्र यदि तू अपने पड़ोसी का जामिन हुआ हो
वा बिराने के हाथ पर हाथ मारा हो,
२। तो तू अपने ही मुंह के वचनों से फंसा
और उन से बन्ध गया है॥
३। सो हे मेरे पुत्र एक काम कर
तू जो अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है
इस लिये जा उस को साष्टांग प्रणाम करके मना ले॥
४। तू न तो अपनी आंखों में नींद
और न अपनी पलकों में झपकी आने दे॥
५। अपने को छुड़ा

जैसे हरिणी वा चिड़िया व्याध के हाथ से,
६। हे आलसी च्यूंटियों के पास जा
उन के काम सोच सोचकर बुद्धिमान हो॥
७। उन के न तो कोई न्यायी होता है
और न प्रधान न प्रभुता करनेहारा॥
८। तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती
और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं॥
९। हे आलसी तू कब लों सोता रहेगा
तेरी नींद कब टूटेगी॥
१०। तनिक और सो लेना
तनिक और झपकी ले लेना
तनिक और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना,
११। तब तेरा कंगालपन बटमार की नाईं
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी॥
१२। ओछे और अनर्थकारी को देखो
वह टेढ़ी टेढ़ी बातें बकता फिरता है॥
१३। वह नैन से सैन और पांव से इशारा करता
और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है॥
१४। उस के मन में उलट फेर की बातें रहती हैं
वह लगातार बुराई गढ़ता है
और झगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता है॥
१५। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी
वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा कि बचने का कोई उपाय न रहेगा॥
१६। छः वस्तुओं से यहोवा वैर रखता है
वरन सात हैं जिन से उस का जीव घिनाता है॥
१७। अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई[1] आंखें झूठ बोलनेहारी जीभ
और निर्दोष का लोहू बहानेहारे हाथ,
१८। अनर्थ कल्पना गढ़नेहारा मन
बुराई करने को वेग दौड़नेहारे पांव,
१९। झूठ बोलनेहारा साक्षी
और भाइयों के बीच झगड़ा उत्पन्न करनेहारा मनुष्य॥
२०। हे मेरे पुत्र मेरी आज्ञा को मान
और अपनी माता की शिक्षा को न तज॥
२१। इन को अपने हृदय में सदा गांठ बांधे रह
और अपने गले का हार बना॥
२२। वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई
और सोते समय तेरी रक्षा
और जागते समय तुझ से बातें करेगी॥
२३। आज्ञा तो दीपक और शिक्षा ज्योति ठहरी
और सिखानेहारे की डांट जीवन का मार्ग ठहरी है,
२४। कि तू बुरी स्त्री की
और बिरानी स्त्री की चिकनी चुपड़ी बातों से बचे॥
२५। उस की सुन्दरता देखकर अपने मन में उस की अभिलाषा न कर
वह तुझे अपने कटाक्षों[1] से फंसाने न पाए॥
२६। क्योंकि वेश्यागमन के कारण एक ही रोटी रह जाती है
पर व्यभिचारिन अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है॥
२७। क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले
और उस के कपड़े न जलें॥
२८। क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले
और उस के पांव न जलें॥
२९। जो पराई स्त्री के पास जाता है उस की दशा ऐसी है
वरन जो कोई उस को छूएगा सो दण्ड से न बचेगा॥
३०। जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे

(१) मूल में ऊंची।

(१) मूल में पलकों।

उस को तो लोग तुच्छ नहीं जानते ॥
३१ । तौभी यदि पकड़ा जाए तो उस को सातगुणा भर देना
बरन अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा ॥
३२ । पर जो परस्त्रीगमन करता है सो निरा निर्बुद्धि है
सो अपने प्राण को नाश करने चाहता है वही ऐसा करता है ॥
३३ । उस को घायल और अपमानित होना पड़ेगा
और उस की नामधराई कभी न मिटेगी ॥
३४ । क्योंकि जलन रखने से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है
और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं करता ॥
३५ । वह घूस पर दृष्टि न करेगा
और चाहे तू उस को बहुत कुछ दे तौभी वह न मानेगा ॥

७. हे मेरे पुत्र मेरी बातों को माना कर
और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़ ॥
२ । मेरी आज्ञाओं को मान इस से तू जीता रहेगा
और मेरी शिक्षा को आंख की पुतली जान ॥
३ । उन को अपनी अंगुलियों में बांध
और अपनी हृदय की पटिया पर लिख ले ॥
४ । बुद्धि से कह कि तू मेरी बहिन है
और समझ को अपनी साथिन कह ॥
५ । तब तू पराई स्त्री से बचेगा
जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है ॥
६ । मैं ने एक दिन अपने घर की खिड़की से
अपने झरोखे से झांका,
७ । तब मैं ने भोले लोगों में से
एक निर्बुद्धि जवान को देखा ॥
८ । वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क से चला जाता था
और उस ने उस के घर का मार्ग लिया ॥
९ । तब दिन ढल गया और संध्याकाल आ गया था
बरन रात का घोर अंधकार छा गया था,
१० । और उस से एक स्त्री मिली
जिस का भेष वेश्या का सा था और वह बड़ी धूर्त्त थी ॥
११ । वह शान्तिरहित और चंचल थी
वह अपने घर में न ठहरती थी ॥
१२ । कभी वह सड़क में कभी चौक में पाई जाती थी
और एक एक कोने पर वह बाट जोहती थी ॥
१३ । सो उस ने उस जवान को पकड़कर चूमा
और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस से कहा,
१४ । मुझे मेलबलि चढ़वाने थे
सो मैं ने अपनी मन्नतें आज ही पूरी किई हैं ॥
१५ । इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को निकली
मैं तेरे दर्शन की खोजी थी सो अभी पाया है ॥
१६ । मैं ने अपने पलंग पर बिछौने
बरन मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाये हैं ॥
१७ । मैं ने अपने बिछौने पर
गन्धरस अगर और दारचीनी छिड़की हैं ॥
१८ । सो चल हम प्रेम से भोर लों जी बहलाते रहें
हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें ॥
१९ । क्योंकि मेरा पति घर में नहीं
वह दूर देश को चला गया है ॥
२० । वह चान्दी की थैली ले गया
और पूर्णमासी को लौट आएगा ॥
२१ । ऐसी ही बातें कह कहकर उस ने उस को अपनी प्रबल माया में फंसा लिया
और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उस को अपने वश कर लिया ॥
२२ । वह तुरन्त उस के पीछे हो लिया
जैसे बैल कसाई खाने को
या जैसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ़ ताड़ना पाने को जाता है,

२३। अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा,
वह उस चिड़िया के समान है जो फंदे की ओर वेग से उड़े
और न जानती हो कि उस में मेरा प्राण जाएगा॥
२४। अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
और मेरी बातों पर मन लगाओ॥
२५। तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर न फिरे
और न उस की डगरों में भटककर जा॥
२६। क्योंकि बहुत लोग उस से मारे पड़े हैं
उस के घात किये हुओं की एक बड़ी संख्या होगी॥
२७। उस का घर अधोलोक का मार्ग है
वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है॥

८. क्या बुद्धि नहीं पुकारती

क्या समझ ऊंचे शब्द से नहीं बोलती॥
२। वह तो ऊंचे स्थानों पर मार्ग की एक ओर
और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है॥
३। फाटकों के पास नगर के पैठाव में
और द्वारों ही में वह ऊंचे स्वर से कहती है कि,
४। हे मनुष्यो मैं तुम को पुकारती हूं
और मेरी बात सब आदमियों के लिये है॥
५। हे भोलो चतुराई सीखो
और हे मूर्खो अपने मन में समझ लो॥
६। सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगी
और जब मुंह खोलूंगी तब उस से सीधी बातें निकलेंगी॥
७। और मुझ से सच सच बातों का वर्णन होगा
और दुष्टता की बातों से मुझ को घिन आती है॥
८। मेरे मुंह की सब बातें धर्म्म की होती हैं
उन में से कोई टेढ़ी या उलट फेर की बात नहीं है॥
९। समझवाले के लिये वे सब सहज
और ज्ञान के प्राप्त करनेहारों के लिये निरी सीधी हैं॥
१०। चान्दी नहीं मेरी शिक्षा ही लो
और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो॥
११। क्योंकि बुद्धि मूंगे से भी अच्छी है
और सब मनभावनी वस्तुएं उस के तुल्य नहीं॥
१२। मैं जो बुद्धि हूं सो चतुराई में बास करती
और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूं॥
१३। यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है
घमण्ड अहंकार और बुरी चाल से
और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं॥
१४। उत्तम युक्ति और खरी बुद्धि मेरी ही हैं
मैं तो समझ हूं और पराक्रम भी मेरा है॥
१५। मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते
और अधिकारी धर्म्म से विचार करते हैं॥
१६। मेरे ही द्वारा हाकिम और रईस
और पृथिवी के सब न्यायी शासन करते हैं॥
१७। जो मुझ से प्रेम रखते हैं उन से मैं भी प्रेम रखती हूं
और जो मुझ को यत्न करके[1] खोजते हैं सो मुझे पाते हैं॥
१८। मेरे पास धन और प्रतिष्ठा
ठहरनेहारा धन और धर्म्म भी हैं॥
१९। मेरा फल चोखे सोने से बरन कुन्दन से भी उत्तम है
और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है॥
२०। मैं धर्म्म की बाट में
और न्याय की डगरों के बीच चलती हूं,
२१। जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूं
और उन के भण्डारों को भर दूं॥
२२। यहोवा ने मुझे काम करने के आरंभ में
बरन अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहिले उत्पन्न किया॥
२३। मैं सदा से बरन आदि ही से
पृथिवी के होने से पहिले ठहराई गई॥

(१) मूल में तड़के उठकर।

२४। जब न तो गहिरा सागर था
और न जल के सोते थे तब ही मैं उत्पन्न हुई॥
२५। जब पहाड़ वा पहाड़ियां स्थिर न किई गई थीं
२६। जब यहोवा ने न तो पृथिवी और न मैदान
न जगत की धूलि के परमाणु बनाये थे
तब ही मैं उत्पन्न हुई॥
२७। जब उस ने आकाश को स्थिर किया तब मैं वहां थी
जब उस ने गहिरे सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया,
२८। जब उस ने आकाशमण्डल को ऊपर से स्थिर किया
और गहिरे सागर के सोते फूटने लगे
२९। जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया
कि जल उस की आज्ञा का उल्लंघन न कर सके
और जब वह पृथिवी की नेव की डोरी लगाता था,
३०। तब मैं कारीगर सी उस के पास थी
और दिन दिन सुख करते हुए
हर समय उस के साम्हने हुलसती हुई थी॥
३१। मैं उस की बसाई हुई पृथिवी पर हुलसती हुई थी
और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से होता था॥
३२। सो अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
क्या ही धन्य वे हैं जो मेरे मार्ग पकड़े रहते हैं॥
३३। शिक्षा को सुनो और बुद्धिमान हो जाओ
उस के विषय सुनी अनसुनी न करो॥
३४। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता
बरन मेरी डेवढ़ी पर दिन दिन खड़ा
और मेरे द्वारों के खंभों के पास ताक लगाये रहता है॥
३५। क्योंकि जो मुझे पाता सो जीवन को पाता है
और यहोवा उस से प्रसन्न होता है॥
३६। पर जो मेरा अपराध करता[1] सो अपने ही पर उपद्रव करता है
जितने मुझ से बैर रखते सो मृत्यु से प्रीति रखते हैं॥

९. बुद्धि ने[2] अपना घर बनाया

और उस के सातों खंभे गढ़े हैं॥
२। उस ने अपने पशु वध करके अपने दाखमधु में मसाला मिलाया
और अपनी मेज लगाई है॥
३। उस ने अपनी सहेलियां सब को बुलाने के लिये भेजी हैं
वह नगर के ऊंचे स्थानों की चोटी पर पुकारती है कि,
४। जो कोई भोला है सो मुड़कर यहीं आए
और जो निर्बुद्धि है उस से वह कहती है कि,
५। आओ मेरी रोटी खाओ
और मेरे मसाला मिलाये हुए दाखमधु को पीओ॥
६। भोलों का संग छोड़ो और जीते रहो
समझ के मार्ग में सीधे चलो॥

७। जो ठट्ठा करनेहारे को शिक्षा देता सो अपमान
और जो दुष्ट जन को डांटता सो कलंक पाता है॥
८। ठट्ठा करनेहारे को न डांट न हो कि वह तुझ से बैर रक्खे
बुद्धिमान् को डांट वह तो तुझ से प्रेम रक्खेगा॥
९। बुद्धिमान् को शिक्षा दे वह अधिक बुद्धिमान् होगा
धर्म्मी को चिता वह अपनी विद्या बढ़ाएगा॥
१०। बुद्धि का आरंभ यहोवा का भय मानना है
और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है॥
११। मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी

(१) वा जिस की मुझ से भूल के कारण भेंट नहीं होती।
(२) मूल में बुद्धियों ने।

और तेरे जीवन के बरस अधिक होंगे॥
१२। यदि तू बुद्धिमान् हो तो बुद्धि का फल तू ही भोगेगा
और यदि तू ठट्ठा करे तो दण्ड केवल तू ही भोगेगा॥

१३। मूर्खतारूपी स्त्री हौरा मचानेहारी है
वह तो भोली है और कुछ नहीं जानती॥
१४। वह अपने घर के द्वार में
और नगर के ऊंचे स्थानों में मचिया पर बैठी हुई.
१५। जो बटोही अपना अपना मार्ग पकड़े हुए सीधे चले जाते हैं
उन को यह कह कहकर पुकारती है कि,
१६। जो कोई भोला है सो मुड़कर यहीं आए
और जो निर्बुद्धि है उस से वह कहती है कि,
१७। चोरी का पानी मीठा होता है
और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती है,
१८। और वह नहीं जानता है कि वहां मरे हुए पड़े हैं
और उस स्त्री के नेवतहरी अधोलोक के निचले स्थानों में पहुंचे हैं॥

१०. सुलैमान के नीतिवचन।

बुद्धिमान् पुत्र से पिता आनन्दित होता है
पर मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास रहती है॥
२। दुष्टों के रक्खे हुए धन से लाभ नहीं होता
पर धर्म्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है॥
३। धर्म्मी को यहोवा भूखों मरने नहीं देता
पर दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता॥
४। जो काम में ढिलाई करता है सो निर्धन हो जाता है
पर कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं॥
५। जो बेटा धूपकाल में बटोरता सो बुद्धि से काम करनेहारा है
पर जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा करता है सो लज्जा का कारण होता है॥
६। धर्म्मी[1] पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं
पर उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है॥
७। धर्म्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं
पर दुष्टों का नाम मिट जाता है॥
८। जो बुद्धिमान् है सो आज्ञाओं को स्वीकार करता है
पर जो बकवादी और मूढ़ है सो गिरा दिया जाता है॥
९। जो खराई से चलता सो निडर चलता है
पर जो टेढ़ी चाल चलता उस की चाल प्रगट हो जाती है॥
१०। जो नैन से सैन करता उस से औरों को दुःख मिलता है
और जो बकवादी और मूढ़ है सो गिरा दिया जाता है॥
११। धर्म्मी का मुंह तो जीवन का सोता है
पर उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है॥
१२। बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं
पर प्रेम से सब अपराध छप जाते हैं॥
१३। समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है
पर निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।
१४। बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं
पर मूढ़ के बोलने से विनाश निकट आता है॥
१५। धनी का धन उस का दृढ़ नगर है
पर कंगाल लोग निर्धन होने के कारण विनाश होते हैं॥
१६। धर्म्मी का परिश्रम जीवन के लिये होता है
पर दुष्ट के लाभ से पाप होता है॥
१७। जो शिक्षा पर चलता सो औरों के लिये जीवन की बाट है
पर जो डांट से मुंह मोड़ता सो औरों को भटका देता है॥

(१) मूल में धर्म्मी के सिर।

१८। जो बैर को छिपा रखता सो झूठ बोलता है
और जो अपवाद फैलाता है सो मूर्ख है ॥
१९। जहां बहुत बातें होती हैं वहां अपराध भी होता है
पर जो अपने मुंह को बन्द रखता सो बुद्धि से काम करता है ॥
२०। धर्म्मी के वचन तो उत्तम चांदी हैं
पर दुष्टों का मन बहुत हलका है ॥
२१। धर्म्मी के वचनों से बहुतों का पालन पोषण होता है
पर मूढ़ लोग निर्बुद्धि होने के कारण मर जाते हैं ॥
२२। धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है
और वह उस के साथ दुःख नहीं मिलाता ॥
२३। मूर्ख को तो महापाप करना हंसी की बात जान पड़ती है
पर समझवाले पुरुष में बुद्धि रहती है ॥
२४। दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है सोई उस पर आ पड़ती है
और धर्म्मियों की लालसा पूरी होती है ॥
२५। बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन रहता नहीं
पर धर्म्मी सदा के लिये नेव है ॥
२६। जैसे दांत को सिरका और आंख को धूआं
वैसे आलसी उन को लगता है जो उस को कहीं भेजते हैं ॥
२७। यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है
पर दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है ॥
२८। धर्म्मियों को आशा रखने मे आनन्द मिलता है
पर दुष्टों की आशा टूट जाती है ॥
२९। यहोवा की गति खरे मनुष्य का गढ़ ठहरती है
पर उसी गति से अनर्थकारियों का विनाश होता है ॥
३०। धर्म्मी सदा अटल रहेगा
पर दुष्ट पृथिवी पर बसे रहने न पाएंगे ॥
३१। धर्म्मी के मुंह से बुद्धि टपकती हैं
पर उलट फेर की बात कहनेहारे की जीभ काटी जाती है ॥
३२। धर्म्मी ग्रहणयोग्य बात समझकर बोलता है
पर दुष्टों के मुंह से उलट फेर की बातें निकलती हैं ॥

११. छल के तराजू से यहोवा को घिन आती है

पर वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है ॥
२। जब अभिमान होता तब अपमान भी होता है
पर नम्र लोगों में बुद्धि होती है ॥
३। सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं
पर विश्वासघाती अपने कपट से विनाश होते हैं ॥
४। कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता
पर धर्म्म मृत्यु से भी बचाता है ॥
५। खरे मनुष्य का मार्ग धर्म्म के कारण सीधा होता है
पर दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है ॥
६। सीधे लोगो का बचाव उन के धर्म्म के कारण होता है,
पर विश्वासघाती लोग अपनी दुष्टता के कारण फंसते हैं ॥
७। जब दुष्ट मरता तब उस की आशा टूट जाती है
और अनर्थ पर जो आशा रक्खी जाती सो नाश होती है ॥
८। धर्म्मी विपत्ति से छूट जाता
पर दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है[1] ॥
९। भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुंह की बात से बिगाड़ता है
पर धर्म्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं ॥
१०। जब धर्म्मियों का कल्याण होता है तब नगर के लोग हुलसते हैं

(१) मूल में दुष्ट उस के स्थान पर आता है।

पर जब दुष्ट नाश होते तब जयजयकार होता है॥
११। सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है
पर दुष्टों के मुंह की बात से वह ढाया जाता है।
१२। जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है सो निर्बुद्धि है
पर समझदार पुरुष चुपचाप रहता है॥
१३। जो लुतराई करता फिरता सो तो भेद प्रगट करता है
पर विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है॥
१४। जहां बुद्धि की युक्ति नहीं वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है
पर सम्मति देनेहारों की बहुतायत के कारण बचाव होता है॥
१५। जो बिराने का जामिन होता सो बड़ा दुःख उठाता है
पर जो जमानत से घिन करता सो निडर रहता है॥
१६। अनुग्रह करनेहारी स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती
और बलात्कारी लोग धन को नहीं खोते॥
१७। कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है
पर जो क्रूर है सो अपनी ही देह को दुःख देता है॥
१८। दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है
पर जो धर्म्म का बीज बोता उस को निश्चय फल मिलता है॥
१९। जो धर्म्म में दृढ़ रहता सो जीवन पाता है
पर जो बुराई का पीछा करता सो मृत्यु का कौर हो जाता है॥
२०। जो मन के टेढ़े हैं उन से यहोवा को घिन आती है
पर वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है॥
२१। मैं दृढ़ता के साथ कहता हूं कि[१] बुरा मनुष्य तो निर्दोष न ठहरेगा
पर धर्म्मी का वंश बचाया जाएगा॥
२२। जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती
सो थूथुन में सोने की नत्थ पहिने हुए सूअर के समान है॥
२३। धर्म्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है
पर दुष्टों की आशा का फल कोप ही होता है॥
२४। ऐसे हैं जो छितरा देते हैं तौभी उन की बढ़ती ही होती है
और ऐसे भी हैं जो हक्क से कम देते हैं और इस से उन की घटती ही होती है॥
२५। उदार प्राणी हृष्टपुष्ट हो जाता है
और जो औरों की खेती सींचता है उस की भी सींची जाएगी॥
२६। जो अपना अनाज रख छोड़ता है उस को लोग कोसते हैं
पर जो उसे बेच देता है उस को आशीर्वाद दिया जाता है॥
२७। जो यत्न से भलाई करता सो औरों की प्रसन्नता खोजता है
पर जो दूसरे की बुराई का खोजी होता उसी पर बुराई आ पड़ती है॥
२८। जो अपने धन पर भरोसा रखता सो गिर जाता है
पर धर्म्मी लोग नये पत्ते की नाईं लह-लहाते हैं॥
२९। जो अपने घराने को दुःख देता उस का भाग वायु ही होगा
और मूढ़ बुद्धिमान् का दास हो जाता है॥
३०। धर्म्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है
और बुद्धिमान् मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है॥
३१। देख धर्म्मी को पृथिवी पर फल मिलेगा
तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा॥

(१) मूल में हाथ पर हाथ।

१२. जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता सो ज्ञान ही में प्रीति रखता है
पर जो डांट से बैर रखता सो पशु सरीखा है॥
२। भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है
पर बुरी युक्ति करनेहारे को वह दोषी ठहराता है॥
३। कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता
पर धर्म्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं॥
४। भली स्त्री अपने पति का मुकुट है
पर जो लज्जा के काम करती सो मानो उस की हड्डियों के सड़ने का कारण होती है॥
५। धर्म्मियों की कल्पनाएं न्याय ही की होती हैं
पर दुष्टों की युक्तियां छल की हैं॥
६। दुष्टों की बातचीत खून करने के लिये घात लगाने के विषय होती है
पर सीधे लोग अपने मुंह की बात के द्वारा छुड़ानेहारे होते हैं॥
७। जब दुष्ट लोग उलटे जाते तब वे रहते ही नहीं
पर धर्म्मियों का घर स्थिर रहता है॥
८। मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उस की प्रशंसा होती है
पर कुटिल तुच्छ जाना जाता है॥
९। जो रोटी का दुखिया होता है पर बड़ाई मारता है
उस से दास रखनेहारा तुच्छ मनुष्य भी उत्तम है॥
१०। धर्म्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है
पर दुष्टों की दया भी निर्दयता है॥
११। जो अपनी भूमि को जोतता सो पेट भर खाता है
पर जो निकम्मों की संगति करता सो निर्बुद्धि ठहरता है॥
१२। दुष्ट जन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं
पर धर्म्मियों की जड़ हरी भरी रहती है॥
१३। बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फन्दे में फंसता है
पर धर्म्मी संकट से निकास पाता है॥
१४। सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है
और जैसी जिस की करनी वैसी उस की भरनी[1]॥
१५। मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है
पर जो सम्मति मानता सो बुद्धिमान् है॥
१६। मूढ़ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है
पर चतुर अपमान को छिपा रखता है॥
१७। जो सच बोलता सो धर्म्म
पर जो झूठी साक्षी देता सो छल प्रगट करता है॥
१८। ऐसे लोग हैं जिन का बिना सोच विचार का बोलना तलवार की नाईं चुभता है
पर बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं॥
१९। सच्चाई[2] सदा लों बनी रहेगी
पर झूठ[3] पल ही भर का होता है॥
२०। बुरी युक्ति करनेहारों के मन में छल रहता है
पर मेल की युक्ति करनेहारों को आनन्द होता है॥
२१। धर्म्मी को हानि नहीं होती
पर दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते हैं[4]॥
२२। झूठे से यहोवा को घिन आती है

(१) मूल में मनुष्य के हाथों का फल उस को लौट जाता है। (२) मूल में, सच्चाई का होठ।
(३) मूल में झूठी जीभ। (४) मूल में विपत्ति से भर जाते हैं।

पर जो विश्वास से काम करते हैं उन से वह प्रसन्न होता है ॥

२३। चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता
पर मूढ़ अपने मन की मूढ़ता ऊंचे शब्द से प्रचार करता है ॥

२४। कामकाजी प्रभुता करते हैं
पर आलसी बेगारी में पकड़े जाते हैं ॥

२५। उदास मन दब जाता है
पर भली बात से वह आनन्दित होता है ॥

२६। धर्म्मी अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है
पर दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं ॥

२७। आलसी अहेर का पीछा नहीं करता
पर कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है ॥

२८। धर्म्म की बाट में जीवन मिलता है
और उस के पथ में मृत्यु का पता भी नहीं ॥

१३. बुद्धिमान् पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है

पर ठट्ठा करनेहारा घुड़की को भी नहीं सुनता ॥

२। सज्जन अपनी बातों के कारण
उत्तम वस्तु खाने को पाता है
पर विश्वासघाती लोगों का पेट[१] उपद्रव से भरता है ॥

३। जो अपने मुंह की चौकसी करता सो अपने प्राण की रक्षा करता है
पर जो गाल बजाता उस का विनाश हो जाता है ॥

४। आलसी जन जी से लालसा तो करता है पर उस को कुछ नहीं मिलता
पर कामकाजी हृष्टपुष्ट हो जाते हैं ॥

५। धर्म्मी झूठे वचन से बैर रखता है
पर दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है ॥

६। धर्म्म खरी चाल चलनेहारे की रक्षा करता है
पर पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है ॥

७। कोई तो धन बटोरता पर उस के पास कुछ नहीं रहता
और कोई धन उड़ा देता तौभी उस के पास बहुत रहता है ॥

८। प्राण की छुड़ौती मनुष्य का धन है
पर निर्धन घुड़की को सुनता भी नहीं ॥

९। धर्म्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है
पर दुष्टों का दिया बुझ जाता है ॥

१०। झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं
पर जो लोग सम्मति मानते हैं उन के बुद्धि रहती है ॥

११। फोकट का[१] माल नहीं ठहरता
पर जो अपने परिश्रम से बटोरता उस की बढ़ती होती है ॥

१२। जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता तो मन शिथिल होता है
पर जब लालसा पूरी होती तब जीवन का वृक्ष लगता है ॥

१३। जो वचन को तुच्छ जानता सो नाश हो जाता है
पर आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है ॥

१४। बुद्धिमान् की शिक्षा जीवन का सोता है
और उस के द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच सकते हैं ॥

१५। सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है
पर विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है ॥

१६। सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं
पर मूर्ख अपनी मूढ़ता फैलाता है ॥

१७। दुष्ट दूत बुराई में फंसता है
पर विश्वासयोग्य एलची से कुशलक्षेम होता है ॥

१८। जो शिक्षा को सुनी अनसुनी करता सो निर्धन होता और अपमान पाता है

(१) मूल में भाग।

(१) मूल में अपने को निर्धन करता।

पर जो डांट को मानता उस की महिमा होती है ॥
१९। लालसा का पूरा होना तो जीव को मीठा लगता है
पर बुराई से हटना मूर्खों को घिनौना लगता है ॥
२०। बुद्धिमानों की संगति कर तब तू भी बुद्धिमान् हो जाएगा
पर मूर्खों का साथी नाश हो जाएगा ॥
२१। बुराई पापियों के पीछे पड़ती है
और धर्म्मियों को अच्छा फल मिलता है ॥
२२। भला मनुष्य अपने नाती पोतों के लिये भाग छोड़ जाता है
पर पापी की संपत्ति धर्म्मी के लिये रक्खी जाती है ॥
२३। निर्धन लोगों को खेतीबारी से बहुत भोजनवस्तु मिलती है
पर ऐसे लोग भी हैं जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं ॥
२४। जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता सो उस का बैरी है
पर जो उस से प्रेम रखता सो यत्न से उस को शिक्षा देता है ॥
२५। धर्म्मी पेट भर खाने पाता है
पर दुष्ट भूखे ही रहते हैं ॥

१४.

हर बुद्धिमान् स्त्री अपने घर को बनाती है
पर मूढ़ स्त्री उस को अपने ही हाथों से ढा देती है ॥
२। जो सीधाई से चलता सो यहोवा का भय माननेहारा
पर जो टेढ़ी चाल चलता सो उस को तुच्छ जाननेहारा ठहरता है ॥
३। मूढ़ के मुंह में गर्व का अंकुर है
पर बुद्धिमान् लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं ॥
४। जहां बैल नहीं वहां गोशाला निर्मल तो रहती है
पर बैल के बल से बड़ा ही लाभ होता है ॥
५। सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता
पर झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है ॥
६। ठट्ठा करनेहारा बुद्धि को ढूंढ़ता पर नहीं पाता
पर समझवाले को ज्ञान सहज से मिलता है ॥
७। मूर्ख से अलग हो जा
तू उस से ज्ञान की बात न पाएगा[१] ॥
८। चतुर की बुद्धि अपनी चाल का जानना है
पर मूर्खों की मूढ़ता छल करना है ॥
९। मूढ़ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं
पर सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है ॥
१०। मन अपना ही दुःख जानता है
और बिराना उस के आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता ॥
११। दुष्टों का घर विनाश हो जाता है
पर सीधे लोगों के तंबू में लहलहाना होता है ॥
१२। ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है
पर उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है ॥
१३। हंसी के समय भी मन उदास होता है
और आनन्द के अन्त में शोक होता है ॥
१४। जिस का मन ईश्वर की ओर से हट जाता वह अपनी चाल चलन का फल भोगता है
पर भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट होता है ॥
१५। भोला तो हर एक बात को सच मानता है
पर चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है ॥
१६। बुद्धिमान् डरकर बुराई से हटता है
पर मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता है ॥
१७। जो झट क्रोध करे सो मूढ़ता का काम भी करेगा
पर जो बुरी युक्तियां निकालता है उस से लोग बैर रखते हैं ॥

(१) मूल में न जानेगा ।

१८। भोलों का भाग मूढ़ता ही होता है
पर चतुरों को ज्ञानरूपी मुकुट बांधा जाता है॥
१९। बुरे लोग भलों के सन्मुख
और दुष्ट लोग धर्म्मी के फाटक पर दण्डवत् करते हैं॥
२०। निर्धन का पड़ोसी भी उस से घिन करता है
पर धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं॥
२१। जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता सो पाप करता है
पर जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता सो धन्य होता है॥
२२। जो बुरी युक्ति निकालते हैं सो क्या भ्रम में नहीं पड़ते
पर भली युक्ति निकालनेहारों से करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है॥
२३। परिश्रम से सदा लाभ होता है
पर बकवाद करने से केवल घटती होती है॥
२४। बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट ठहरता है
पर मूर्खों की मूढ़ता निरी मूढ़ता है॥
२५। सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण बचाता है
पर जो झूठी बातें उड़ाया करता है उस से धोखा ही होता है॥
२६। यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है
और उस के पुत्रों को शरणस्थान मिलता है॥
२७। यहोवा का भय मानना जीवन का सोता है
और उस के द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच सकते हैं॥
२८। राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है
पर जहां प्रजा नहीं वहां हाकिम नाश हो जाता है॥
२९। जो विलम्ब से कोप करनेहारा है सो बड़ा समझवाला है
पर जो अधीर है सो मूढ़ता की बढ़ती करता है॥
३०। शान्त मन तन का जीवन है
पर मन के जलने से हड्डियां भी जल[1] जाती हैं॥
३१। जो कंगाल पर अंधेर करता सो उस के कर्त्ता की निन्दा
पर जो दरिद्र पर अनुग्रह करता सो उस की महिमा करता है॥
३२। दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है॥
पर धर्म्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है॥
३३। समझवाले के मन में बुद्धि वास किये रहती है
पर मूर्खों के अन्तःकरण में जो कुछ है सो प्रगट हो जाता है॥
३४। जाति की बढ़ती धर्म्म ही से होती है
पर पाप से देश के लोगों[2] का अपमान होता है॥
३५। जो कर्म्मचारी बुद्धि से काम करता उस पर राजा प्रसन्न होता है
पर जो लज्जा के काम करता उस पर वह रोष करता है॥

१५. कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है

पर कटुवचन से कोप धधक उठता है॥
२। बुद्धिमान् ज्ञान का ठीक बखान करते हैं
पर मूर्खों के मुंह से मूढ़ता उबल आती है॥
३। यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं
वह बुरे भले दोनों को ताकता रहता है॥
४। शान्ति देनेहारी बात जीवनवृक्ष है
पर उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होता है॥
५। मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है
पर जो डांट को मानता सो चतुर हो जाता है॥

(१) मूल में सड़।
(२) मूल में समुदाय समुदाय के लोगों।

६। धर्म्मी के घर में बहुत धन रहता है
पर दुष्ट के उपार्जन में दुःख रहता है ॥
७। बुद्धिमान् लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं
पर मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता ॥
८। दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा घिन करता है
पर वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है ॥
९। दुष्ट की चाल चलन से यहोवा को घिन आती है
पर जो धर्म्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है ॥
१०। जो मार्ग को छोड़ देता उस को बड़ी ताड़ना मिलती है
और जो डांट से बैर रखता सो मर ही जाता ॥
११। जब कि अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के साम्हने खुले रहते हैं
तो निश्चय मनुष्यों के मन भी ॥
१२। ठट्ठा करनेहारा डांटे जाने से प्रसन्न नहीं होता
और न वह बुद्धिमानों के पास जाता है ॥
१३। मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है
पर मन के दुःख से आत्मा निराश होता है ॥
१४। समझनेहारे का मन ज्ञान की खोज में रहता है
पर मूर्ख लोग मूढ़ता से पेट भरते हैं ॥
१५। दुखिया के सब दिन दुःख भरे रहते हैं
पर जिस का मन प्रसन्न रहता है सो मानो नित्य भोज में जाता है ॥
१६। घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से
यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है ॥
१७। बैर रहते पोसे हुए बैल का मांस खाने से
प्रेम रहते सागपात का भी भोजन उत्तम है ॥
१८। क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है
पर जो विलम्ब से क्रोध करनेहारा है सो मुक-द्दमों को दबा देता है ॥
१९। आलसी का मार्ग कांटों से रुन्धा हुआ होता है
पर सीधे लोगों की बाट राजमार्ग ठहरती है ॥
२०। बुद्धिमान् पुत्र से पिता आनन्दित होता है
पर मूर्ख अपनी माता को तुच्छ जानता है ॥
२१। निर्बुद्धि को मूढ़ता से आनन्द होता है
पर समझवाला मनुष्य सीधी चाल चलता है ॥
२२। बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ करती हैं
पर बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है ॥
२३। सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है
और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है ॥
२४। बुद्धिमान के लिये जीवन की बाट ऊपर की ओर जाती है
इस रीति वह अधोलोक में पड़ने से बच सकता है ॥
२५। यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देता
पर विधवा के सिवाने को अटल रखता है ॥
२६। बुरी कल्पनाएं यहोवा को घिनौनी लगतीं
पर मनभावने वचन शुद्ध हैं ॥
२७। लालची अपने घराने को दुःख देता है
पर घूस से घिन करनेहारा जीता रहता है ॥
२८। धर्म्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूं
पर दुष्टों के मुंह से बुरी बातें उबल आती हैं ॥
२९। यहोवा दुष्टों से दूर रहता है
पर धर्म्मियों की प्रार्थना सुनता है ॥
३०। आंखों की चमक से मन को आनन्द होता है
और अच्छे समाचार से हड्डियां पुष्ट होती हैं ॥
३१। जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है
सो बुद्धिमानों के संग ठिकाना पाता है ॥
३२। जो शिक्षा को सुनी अनसुनी करता सो अपने प्राण को तुच्छ जानता है

पर जो डांट को सुनता सो बुद्धि प्राप्त करता है॥
३३। यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है
और महिमा से पहिले नम्रता होती है॥

१६. मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है॥

पर मुंह से कहना यहोवा की ओर से होता है॥
२। मनुष्य की सारी चाल चलन अपने लेखे में पवित्र ठहरती है
पर यहोवा मन को तौलता है॥
३। अपने कामों को यहोवा पर डाल
इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी॥
४। यहोवा ने सब वस्तुएं उस के प्रयोजन के लिये
वरन दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है॥
५। सब मन के घमण्डियों से यहोवा घिन करता है॥
मैं दृढ़ता से कहता हूं कि[1] ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे॥
६। अधर्म्म का प्रायश्चित्त कृपा और सच्चाई से होता है
और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं॥
७। जब किसी की चाल चलन यहोवा को भावती है
तब वह उस के शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है॥
८। अन्याय के बड़े लाभ से
न्याय से थोड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है॥
९। मनुष्य मन में अपने मार्ग को विचारता है
पर यहोवा ही उस के पैरों को स्थिर करता है॥
१०। राजा के मुंह से दैवीवाणी निकलती है
न्याय करने में उस से चूक नहीं होती॥

(१) मूल में, हाथ पर हाथ।

११। सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं
थैली में जितने बटखरे हैं सब उसी के बनवाये हुए हैं॥
१२। दुष्टता करना राजाओं के लिये घिनौना काम है
क्योंकि उन की गद्दी धर्म्म ही से स्थिर रहती है॥
१३। धर्म्म की बात बोलनेहारों से राजा प्रसन्न होते हैं
और जो सीधी बातें बोलता है उस से वे प्रेम रखते हैं॥
१४। राजा का कोप मृत्यु के दूत के समान है
पर बुद्धिमान् मनुष्य उस को ठण्डा करता है॥
१५। राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है
और उस की प्रसन्नता बरसात के अन्त की घटा के समान होती है॥
१६। बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है
और समझ की प्राप्ति चान्दी से चुनने योग्य है॥
१७। बुराई से हटना सीधे लोगों के लिये राजमार्ग है
जो अपनी चाल चलन की चौकसी करता सो अपने प्राण की भी रक्षा करता है॥
१८। विनाश से पहिले गर्व
और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है॥
१९। घमण्डियों के संग लूट बांट लेने से दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है॥
२०। जो वचन पर मन लगाता सो कल्याण पाता है
और जो यहोवा पर भरोसा रखता सो धन्य होता है॥
२१। जिस के हृदय में बुद्धि है सो समझवाला कहावता है
और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है॥

२२। जिस के बुद्धि है उस के लिये वह जीवन का सोता है
पर मूढ़ों को शिक्षा देना मूढ़ता ही होती है ॥
२३। बुद्धिमान् का मन उस के मुंह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता[1]
और वचन में विद्या रहती है ॥
२४। मनभावने वचन मधु भरे छत्ते की नाईं जीव को मीठे लगते और हड्डियों को हरी भरी करते हैं ॥
२५। ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है
पर उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है ॥
२६। परिश्रमी की लालसा उस के लिये परिश्रम करती है
उस की भूख[2] तो उस को उभारती रहती है ॥
२७। अधम मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है
और उस के वचनों से आग लग जाती है ॥
२८। टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़ों को उठाता है
और कानाफूसी करनेहारा परम मित्रों में भी फूट करा देता है।
२९। उपद्रवी मनुष्य अपने पड़ोसी को फुसलाकर कुमार्ग पर चलाता है ॥
३०। आंख मूंदनेहारा छल की कल्पनाएं करता है
और होंठ दबानेहारा बुराई करता है ॥
३१। पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं
वे धर्म्म के मार्ग पर चलने से प्रसन्न होते हैं ॥
३२। विलम्ब से कोप करना वीरता से
और अपने मन को वश में रखना नगर के जीत लेने से उत्तम है ॥
३३। चिट्ठी डाली जाती तो है
पर उस का निकलना यहोवाही की ओर से होता है॥

१७. चैन के साथ सूखा टुकड़ा उस घर की अपेक्षा उत्तम है

जो मेलबलि पशुओं से भरा हो पर उस में झगड़े रगड़े हों ॥
२। बुद्धि से चलनेहारा दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा
और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा ॥
३। चान्दी के लिये घरिया और सोने के लिये भट्ठी होती है
पर मनों को यहोवा तावता है ॥
४। कुकर्म्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है
और झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है ॥
५। जो निर्धन को ठट्ठों में उड़ाता सो उस के कर्त्ता की निन्दा करता है
और जो किसी की विपत्ति पर हंसता सो निर्दोष नहीं ठहरता ॥
६। बूढ़ों की शोभा उन के नाती पोते हैं
और बाल बच्चों की शोभा उन के माता पिता हैं॥
७। मूढ़ को उत्तम बात फबती नहीं
और अधिक करके प्रधान को झूठी बात नहीं फबती ॥
८। देनेहारे के हाथ में घूस मोहनेहारे मणि का काम देता है
जिधर ऐसा पुरुष फिरता उधर ही उस का काम सुफल होता है ॥
९। जो दूसरे के अपराध को ढांप देता सो प्रेम का खोजी ठहरता है
पर जो बात की चर्चा बार बार करता है सो परम मित्रों में भी फूट करा देता है ॥
१०। एक घुड़की समझवाले के मन में जितनी गड़ जाती है
उतनी सौ बार मार खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता ॥
११। बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है
इस लिये उस के पास क्रूर दूत भेजा जाएगा ॥
१२। बच्चा छीनी हुई रीछनी का मिलना तो भला है

---
(१) मूल में उस के मुंह को बुद्धिमान करता है।
(२) मूल में उस का मुंह।

पर मूढ़ता में डूबे हुए मूर्ख से मिलना भला नहीं ॥
१३। जो कोई भलाई के बदले में बुराई करे
उस के घर से बुराई दूर न होगी ॥
१४। झगड़े का आरंभ बान्ध में के छेद के
समान है
झगड़ा बढ़ने से पहिले उस को छोड़ देना ॥
१५। जो दोषी को निर्दोष और जो निर्दोष को
दोषी ठहराता है
उन दोनों से यहोवा घिन करता है ॥
१६। बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने हाथ
में दाम क्यों लिये है
वह उसे चाहता ही नहीं ॥
१७। मित्र सब समयों में प्रेम रखता है
और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है ॥
१८। निर्बुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता
और अपने पड़ोसी के यहां जामिन होता है ॥
१९। जो झगड़े रगड़े में प्रीति रखता सो
अपराध करने में भी प्रीति रखता है
और जो अपने फाटक को बड़ा करता सो अपने
विनाश के लिये यत्न करता है ॥
२०। जो मन का टेढ़ा है उस का कल्याण
नहीं होता
और उलटफेर की बात करनेहारा विपत्ति में
पड़ता है ॥
२१। जो मूर्ख को जन्माता सो उस से दुःख
ही पाता है
और मूढ़ के पिता को आनन्द नहीं होता ॥
२२। मन का आनन्द अच्छी औषध है
पर मन के टूटने से हड्डियां सूख जाती हैं ॥
२३। दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये
अपनी गांठ[१] से घूस निकालता है ॥
२४। बुद्धि समझवाले के साम्हने ही रहती है
पर मूर्ख की आंखें पृथिवी के दूर दूर देशों में
लगी रहती हैं ॥
२५। मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता
और जननी को शोक होता है ॥
२६। फिर धर्म्मी से दण्ड लेना
और प्रधानों को सिधाई के कारण पिटवाना
दोनों काम अच्छे नहीं ॥
२७। जो संभालकर बोलता है वही ज्ञानी
ठहरता
और जिस का आत्मा शान्त रहता है सोई
समझवाला पुरुष ठहरता है ॥
२८। मूढ़ भी जब चुप रहता तब बुद्धिमान्
गिना जाता है
और जो अपना मुंह बन्द रखता सो समझवाला
गिना जाता है ॥

१८. जो औरों से अलग हो जाता है सो अपनी ही इच्छा पूरी करने के
लिये ऐसा करता
और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर[१] करता है ॥
२ मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता
वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना
चाहता है ॥
३। जहां दुष्ट आता वहां अपमान भी आता है
और निन्दित काम के साथ नामधराई होती है ॥
४। मनुष्य के मुंह के वचन गहिरा जल
वा उमण्डनेहारी नदी वा बुद्धि के सोते हैं ॥
५। दुष्ट का पक्ष करना
और धर्म्मी का हक मारना अच्छा नहीं है ॥
६। मूर्ख बात बढ़ाने से मुकद्दमा खड़ा करता
और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है[२] ॥
७। मूर्ख का विनाश उस की बातों से होता
और उस के वचन उस के प्राण के लिये फंदे
होते हैं।
८। कानाफूसी करनेहारे के वचन स्वादिष्ट भोजन
की नाईं
पेट के भीतर पहुंच जाते हैं ॥

(१) मूल में गोद।

(१) मूल में सहाई।
(२) मूल में उस का मुंह मार बुलाता है।

९। फिर जो काम में आलस करता है
सो खोनेहारे का भाई ठहरता है॥
१०। यहोवा का नाम दृढ़ कोट है
धर्मी उस में भागकर सब जोखिम से बचता है॥
११। धनी की धन उस के लेखे में गढ़वाला नगर
और ऊंचे पर बनी हुई शहरपनाह है॥
१२। नाश होने से पहिले मनुष्य के मन में घमण्ड
और महिमा पाने से पहिले नम्रता होती है॥
१३। जो बिना बात सुने उत्तर देता
सो मूढ़ ठहरता और उस का अनादर होता है॥
१४। रोग में मनुष्य अपने आत्मा से सम्भलता है
पर जब आत्मा हार जाता तब इसे कौन सह सकता है॥
१५। समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता
और बुद्धिमान् ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं॥
१६। भेंट मनुष्य के लिये राह खोल देती
और उसे बड़े लोगों के साम्हने पहुंचाती है॥
१७। मुकद्दमे में जो पहिले बोलता वही धर्मी जान पड़ता
पर पीछे दूसरा पक्षवाला[1] आकर उसे खोज लेता है॥
१८। चिट्ठी डालने से झगड़े बन्द होते
और बलवन्तों की लड़ाई का अन्त होता है॥
१९। चिढ़े हुए भाई का मनाना दृढ़ नगर के लेने से कठिन होता है
और ऐसे झगड़े राजभवन के बेण्डों के समान हैं॥
२०। मनुष्य का पेट मुंह की बातों के फल से भरता है
और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता उस से वह तृप्त होता है॥
२१। जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं
और जो उसे काम में लाना चाहे वह उसी का फल भोगेगा॥

(१) मूल में उस का बन्धु।

२२। जिस ने स्त्री ब्याह लिई उस ने उत्तम पदार्थ पाया
और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है॥
२३। निर्धन गिड़गिड़ाकर बोलता है
पर धनी कड़ा उत्तर देता है॥
२४। संगियों के बढ़ाने से तो नाश होता है
पर कोई ऐसा प्रेमी होता है जो भाई से भी अधिक मिला रहता है॥

१९. जो निर्धन खराई से चलता है
सो उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है॥
२। फिर मन का बिन ज्ञान रहना अच्छा नहीं
और जो उतावली से दौड़ता सो चूक जाता है॥
३। मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है
और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है॥
४। धनी के तो बहुत संगी हो जाते हैं
पर कंगाल के संगी उस से अलग हो जाते हैं॥
५। झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता
और जो झूठ बोला करता है सो न बचेगा॥
६। उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं
और दानी पुरुष का मित्र सब कोई बनता है॥
७। जब निर्धन के सब भाई उस से बैर रखते हैं
तो निश्चय है कि उस के संगी उस से दूर हो जाते हैं
वह बातें करते करते उन का पीछा करता है पर उन को नहीं पाता॥
८। जो बुद्धि प्राप्त करता सो अपने प्राण का प्रेमी ठहरता है
और जो समझ को धरे रहता उस का कल्याण होता है॥
९। झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता
और जो झूठ बोला करता है सो नाश होता है॥
१०। जब सुख से रहना मूर्ख को नहीं फबता
तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना कहां फबे॥

११। जो मनुष्य बुद्धि से चलता सो विलम्ब से कोप करता है
और अपराध से आनाकानी करना मनुष्य को सोहता है॥
१२ राजा का क्रोध सिंह की गरजना सा
पर उस की प्रसन्नता घास पर की ओस सरीखी होती है॥
१३। मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता है
और स्त्री के झगड़े रगड़े लगातार टपकने के तुल्य होते हैं॥
१४। घर और धन पुरखाओं से भाग में
पर बुद्धिमती स्त्री यहोवा ही से मिलती है॥
१५। आलस से भारी नीन्द आ जाती है
और जो प्राणी ढिलाई से काम करता सो भूखा ही रहता है॥
१६। जो आज्ञा को मानता सो अपने प्राण की रक्षा करता है
पर जो अपनी चाल चलन के विषय निश्चिन्त रहता सो मर जाता है॥
१७। जो कंगाल पर अनुग्रह करता सो यहोवा को उधार देता है
और वह उस काम का प्रतिफल देगा॥
१८। अपने पुत्र की ताड़ना कर क्योंकि अब लों आशा है
जान बूझकर उस को मार न डाल॥
१९। जो बड़ा क्रोधी है उसे दण्ड उठाने दे
क्योंकि यदि तू उसे बचाए तो फिर फिर बचाना पड़ेगा॥
२०। सम्मति को सुन ले और शिक्षा को ग्रहण कर
कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान् ठहरे॥
२१। मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती हैं
पर जो युक्ति यहोवा करता है सोई स्थिर रहती है॥
२२। मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है
और निर्धन जन झूठ बोलनेहारे से उत्तम है॥
२३। यहोवा के भय मानने से जीवन बढ़ता है
और उस का भय माननेहारा ठिकाना पाकर सुखी रहता है
उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की॥
२४। आलसी अपना हाथ थाली में डालता है
पर अपने मुंह तक कौर नहीं उठाता॥
२५। ठट्ठा करनेहारे को मार और इस से भोला चतुर हो जाएगा
और समझवाले को डांट तब वह अधिक ज्ञान पाएगा॥
२६। जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता और अपनी मा को भगा देता है
सो अपमान और लज्जा का कारण होगा॥
२७। हे मेरे पुत्र यदि भटकना चाहता है
तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे॥
२८। अधम साक्षी न्याय को ठट्ठों में उड़ाता है
और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल लेते हैं॥
२९। ठट्ठा करनेहारों के लिये दण्ड की
और मूर्खों के लिये पीठने की तैयारी हुई है॥

२०.

दाखमधु ठट्ठा करनेहारा और मदिरा हौरा मचानेहारी है
जो कोई उस के कारण चूक करता है सो बुद्धिमान् नहीं॥
२। राजा का भय दिखाना सिंह का गरजना है
जो उस पर रोष करता सो अपने प्राण का अपराधी होता है॥
३। मुकद्दमे से हाथ उठाना पुरुष की महिमा ठहरती है
पर सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं॥
४। आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता
इस लिये कटनी के समय वह भीख मांगता और कुछ नहीं पाता॥
५। मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है

तौभी समझवाला मनुष्य उस को निकाल लेता है ॥

६। बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार करते हैं
पर सच्चा पुरुष कौन पा सकता है ॥

७। धर्म्मी जो खराई से चलता रहता है
उस के पीछे उस के लड़केबाले धन्य होते हैं ॥

८। राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है
सो अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को उड़ा देता है ॥

९। कौन कह सकता है कि मैं ने अपने हृदय को पवित्र किया
मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं ॥

१०। घटती बढ़ती बटखरे और घटती बढ़ती नपुए[1]
इन दोनों से यहोवा घिन करता है ॥

११। लड़का भी अपने कामों से पहिचाना जाता है
कि उस का काम पवित्र और सीधा है वा नहीं ॥

१२। सुनने के लिये कान और देखने के लिये आंख जो हैं
दोनों को यहोवा ने बनाया है ॥

१३। नीन्द से प्रीति न रख नहीं तो दरिद्र हो जाएगा
आंखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा ॥

१४। मोल लेने के समय ग्राहक तुच्छ तुच्छ कहता है
पर चले जाने पर बड़ाई करता है ॥

१५। सोना और बहुत से मूंगे तो हैं
पर ज्ञान की बातें अनमोल मणि ठहरी हैं ॥

१६। जो अनजाने[2] का जामिन हुआ उस का कपड़ा
और जो बिरानों का जामिन हुआ उस से बंधक की वस्तु ले रख ॥

१७। चोरी छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है
पर पीछे उस का मुंह कंकड़ से भर जाता है ॥

१८। सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं
और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये ॥

१९। जो लुतराई करता फिरता सो भेद प्रगट करता है
इस लिये बकवादी से मेल जोल न रखना ॥

२०। जो अपने माता पिता को कोसता
उस का दिया बुझ जाता और घोर अन्धकार हो जाता है ॥

२१। जो भाग पहिले उतावली से तो मिलता है
अन्त में उस पर आशीष नहीं होती ॥

२२। मत कह कि मैं बुराई का पलटा लूंगा
बरन यहोवा की बाट जोहता रह वह तुझ को छुड़ाएगा ॥

२३। घटती बढ़ती बटखरों से यहोवा घिन करता है
और छल का तराजू अच्छा नहीं ॥

२४। मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है
आदमी क्योंकर अपना चलना समझ सके ॥

२५। जो मनुष्य विना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए[1]
और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे सो फन्दे में फंसेगा ॥

२६। बुद्धिमान् राजा दुष्टों को उसाकर उड़ा देता
और उन पर दावने का पहिया चलवाता है ॥

२७। मनुष्य का आत्मा यहोवा का दीपक है
वह मन की सब बातों की खोज करता है ॥

२८। राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है
और कृपा करने से उस की गद्दी संभलती है ॥

२९। जवानों की शोभा उन का बल है
पर बूढ़ों की शो उन के पक्के बाल हैं ॥

३०। चोट लगने से जो घाव होते हैं सो बुराई दूर करते हैं
और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है ॥

(१) मूल में एपा। (२) मूल में, पराये।

(१) मूल में, कहे कि पवित्र वस्तु।

२१. राजा का मन नालियों के जल की नाईं यहोवा के हाथ में रहता है
जिधर वह चाहता उधर उस को फेरता है ॥
२। मनुष्य की सारी चाल चलन अपने लेखे में तो ठीक होती है
पर यहोवा मन मन को जांचता है ॥
३। धर्म्म और न्याय करना
यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है ॥
४। चढ़ी आंखें घमण्डी मन
और दुष्टों की खेती तीनों पापमय हैं ॥
५। कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है
पर उतावली करनेहारे को केवल घटती होती है ॥
६। जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो
सो वायु से उड़ जानेहारा कुहरा है उस के ढूंढ़नेहारे मृत्यु ही को ढूंढ़ते हैं ॥
७। जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं उस से उन्हीं का नाश होता है
क्योंकि वे न्याय का काम करने से नाह करते हैं ॥
८। पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है
पर जो पवित्र है उस का कर्म्म सीधा होता है ॥
९। लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू स्त्री के संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है ॥
१०। दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है
वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नहीं करता ॥
११। जब ठट्ठा करनेहारे को दण्ड दिया जाता तब भोला बुद्धिमान् हो जाता है
और बुद्धिमान् को जब उपदेश दिया जाता तब ज्ञान प्राप्त करता है ॥
१२। ईश्वर जो धर्म्मी है सो दुष्टों के घराने में मन रखता
पर उन को बुराइयों में उलट देता है ॥
१३। जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे
सो आप पुकारेगा और उस की सुनी न जाएगी ॥
१४। गुप्त में दिई हुई भेंट से कोप ठण्डा होता
और चुपके से दिई हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है ॥
१५। न्याय का काम करना धर्म्मी को तो आनन्द
पर अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है ॥
१६। जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए
उस का ठिकाना मरे हुओं के बीच होगा ॥
१७। जो रागरंग[1] में प्रीति रखता है सो कंगाल होता है
और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने में प्रीति रखता सो धनी नहीं होता ॥
१८। दुष्ट जन धर्म्मी की छुड़ौती ठहरता है
और विश्वासघाती सीधे लोगों की सन्ती दण्ड भोगते हैं ॥
१९। झगड़ालू और चिढ़नेहारी स्त्री के संग रहने से
जंगल में रहना उत्तम है ॥
२०। बुद्धिमान् के घर में उत्तम धन और तेल पाये जाते हैं
पर मूर्ख उन को उड़ा डालता है ॥
२१। जो धर्म्म और कृपा का पीछा पकड़ता है
सो जीवन धर्म्म और महिमा भी पाता है ॥
२२। बुद्धिमान शूरवीरों के नगर पर चढ़कर
उन के बल को जिस पर वे भरोसा करते हैं नाश करता है ॥
२३। जो अपने मुंह को वश में रखता है
सो अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है ॥
२४। जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है
उस का नाम अभिमानी और अहंकारी ठट्ठा करनेहारा पड़ता है ॥
२५। आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है

(१) मूल में आनन्द।

क्योंकि उस के हाथ काम करने से नाह करते हैं ॥
२६ । कोई ऐसा है जो दिन भर लालसा ही किया करता है
पर धर्म्मी लगातार दान करता रहता है ॥
२७ । दुष्टों का बलिदान घिनौना लगता है
विशेष करके जब वह महापाप के निमित्त चढ़ाता है ॥
२८ । झूठा साक्षी नाश होता है
जिस ने जो सुना है वही कहता हुआ स्थिर रहेगा ॥
२९ । दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता है
और जो सीधा है सो अपनी चाल सीधी करता है ॥
३० । यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि और न कुछ समझ
न कोई युक्ति चलती है ॥
३१ । युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है
पर जय यहोवा ही से मिलता है ॥

२२. बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है
और सोने चांदी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है ॥
२ । धनी और निर्धन दोनों मिलते हैं
यहोवा उन दोनों का कर्त्ता है ॥
३ । चतुर मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है
पर भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं ॥
४ । नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल धन महिमा और जीवन होता है ॥
५ । टेढ़े मनुष्य के मार्ग में कांटे और फंदे रहते है
पर जो अपने प्राण की रक्षा करता सो उन से दूर रहता है ॥
६ । लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उस को चलना चाहिये
वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा ॥
७ । धनी निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है
और उधार लेनेहारा उधार देनेहारे का दास होता है ॥
८ । जो कुटिलता का बीज बोता है सो अनर्थ ही लवेगा
और उस के रोष का सोंटा टूटेगा ॥
९ । दया करनेहारे पर आशीष फलती है
क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है ॥
१० । ठट्ठा करनेहारे को निकाल दे तब झगड़ा मिट जाएगा
और वाद विवाद और अपमान दोनों टूट जाएंगे ॥
११ । जो मन की शुद्धता में प्रीति रखता है
उस के वचन मनोहर होते और राजा उस का मित्र होता है ॥
१२ । यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके उस की रक्षा करता
पर विश्वासघाती की बातें उलट देता है ॥
१३ । आलसी कहता है कि बाहर तो सिंह होगा
मैं चौक के बीच घात किया जाऊंगा ॥
१४ । पराई स्त्रियों का मुंह गहिरा गड़हा है
जिस से यहोवा क्रोधित होता सोई उस में गिरता है ॥
१५ । लड़के के मन में मूढ़ता बंधी रहती है
पर छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उस से दूर किई जाती है ॥
१६ । जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अन्धेर करता
और जो धनी को भेंट देता वे दोनों केवल हानि ही उठाते है ॥
१७ । कान लगाकर बुद्धिमानों के वचन सुन
और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा ॥
१८ । यदि तू उन को अपने मन में रक्खे

और वे सब तेरे मुंह से भी निकला करें तो यह
मनभावनी बात होगी ॥
१९। मैं आज इस लिये ये बातें तुझ को जता
देता हूं
कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो ॥
२०। मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश
और ज्ञान की बातें लिखता आया हूं,
२१। कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूं
जिस से जो तुझे काम में लगाएं उन को सच्चा
उत्तर दे सके ॥
२२। कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करना
की वह कंगाल है
और न दीन जन को कचहरी[१] में पीसना ॥
२३। क्योंकि यहोवा उन का मुकद्दमा लड़ेगा
और जो लोग उन का धन हर लेते हैं उन का
प्राण भी वह हर लेगा,
२४। क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना
और झट कोप करनेहारे के संग न चलना,
२५। कहीं ऐसा न हो कि तू उस की चाल
सीखे
और तेरा प्राण फन्दे में फंस जाए ॥
२६। जो लोग हाथ पर हाथ मारते
और ऋणियों के जामिन होते हैं उन में तू
न होना ॥
२७। यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो
तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट ले ॥
२८। जो सिवाना तेरे पुरखाओं ने बांधा हो
उस पुराने सिवाने को न बढ़ाना ॥
२९। तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज में निपुण हो
वह राजाओं के सन्मुख खड़ा होगा छोटे लोगों
के सन्मुख नहीं ॥

२३. जब तू किसी हाकिम के संग भोजन
करने को बैठे
तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे
साम्हने कौन है ॥

(१) मूल में फाटक।

२। और यदि तू खाऊ हो
तो थोड़ा खाकर भूखा उठ आना ॥
३। उस की स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा
न करना
क्योंकि वह धोखे का भोजन है ॥
४। धनी होने के लिये परिश्रम न करना
अपनी समझ का भरोसा छोड़ना ॥
५। क्या तू अपनी दृष्टि उस पर लगाएगा वह
तो है ही नहीं
वह उकाब पक्षी की नाईं पंख लगाकर
निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है ॥
६। जो डाह से देखता है उस की रोटी न
खाना
और न उस की स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की
लालसा करना ॥
७। क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचारता
है वैसा वह आप है
वह तुझ से कहता तो है कि खा पी
पर उस का मन तुझ से लगा नहीं ॥
८। जो कौर तू ने खाया हो उसे उगलना पड़ेगा
और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा ॥
९। मूर्ख के साम्हने न बोलना
नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ
जानेगा ॥
१०। पुराने सिवाने को न बढ़ाना
और न बपमूओं के खेत में घुसना ॥
११। क्योंकि उन का छुड़ानेहारा सामर्थी है
उन का मुकद्दमा तेरे संग वही लड़ेगा ॥
१२। अपना हृदय शिक्षा की ओर
और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना
१३। लड़के की ताड़ना न छोड़ना
क्योंकि यदि तू उस को छड़ी से मारे तो वह
न मरेगा ॥
१४। तू उस को छड़ी से मारके
उस का प्राण अधोलोक से बचाएगा ॥
१५। हे मेरे पुत्र यदि तू[१] बुद्धिमान् हो

(१) मूल में, तेरा मन।

तो विशेष करके मेरा ही मन आनन्दित होगा ॥
१६। और जब तू सीधी बातें बोले
तब मेरा मन हुलसेगा ॥
१७। तू पापियों के विषय मन में डाह न करना
दिन भर यहोवा का भय मानते रहना ॥
१८। क्योंकि अन्त में फल होगा
और तेरी आशा न टूटेगी ॥
१९। हे मेरे पुत्र तू सुनकर बुद्धिमान् हो
और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला ॥
२०। दाखमधु के पीनेहारों में न होना
न मांस के अधिक खानेहारों की संगति करना ॥
२१। क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ अपना भाग खोते
और पीनकवाले को चिथड़े पहिनने पड़ते हैं ॥
२२। अपने जन्मानेहारे की सुनना
और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए तब भी उसे तुच्छ न जानना ॥
२३। सच्चाई को मोल लेना बेचना नहीं
और बुद्धि और शिक्षा और समझ को मोल लेना भी ॥
२४। धर्म्मी का पिता बहुत मगन होता
और बुद्धिमान् का जन्मानेहारा उस के कारण आनन्दित होता है ॥
२५। तेरे कारण माता पिता आनन्दित
और तेरी जननी मगन होए ॥
२६। हे मेरे पुत्र अपना मन मेरी ओर लगा
और तेरी दृष्टि मेरी चाल चलन पर लगी रहे ॥
२७। वेश्या गहिरा गड़हा ठहरती
और पराई स्त्री सकेत कूएं के समान है ॥
२८। वह डाकू की नाईं घात लगाती
और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती कर देती है ॥
२९। कौन कहता है हाय कौन कहता है हाय हाय कौन झगड़े रगड़े में फंसता है
कौन बक बक करता है किस के अकारण घाव होते हैं
किस की आंखें लाल हो जाती हैं ॥
३०। उन की जो दाखमधु देर तक पीते हैं
और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं ॥
३१। जब दाखमधु लाल दिखाई देता है
कटोरे में उस का कैसा सुन्दर रंग होता
जब वह कैसा ठीक उण्डेला जाता है तब उस को न देखना ॥
३२। क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता
और करैत के समान काटता है ॥
३३। तू पराई स्त्रियां देखता
और उलट फेर की बातें बकता रहेगा ॥
३४। और तू समुद्र के बीच लेटनेहारे
वा मस्तूल के सिरे पर सोनेहारे के समान रहेगा ॥
३५। मैं ने मार तो खाई पर दुःखित न हुआ
मैं पिट तो गया पर मुझे कुछ सुधि न थी
मैं होश में कब आऊं मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा ॥

२४. बुरे लोगों के विषय डाह न करना
और न उन की संगति चाहना ॥
२। क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं
और उन के मुंह से उपाधि की बात निकलती है ॥
३। घर बुद्धि से बनता
और समझ के द्वारा स्थिर होता है ॥
४। और उस की कोठरियां ज्ञान के द्वारा
सब प्रकार की अनमोल और मनभाऊ वस्तुओं से भर जाती हैं ॥
५। बुद्धिमान् पुरुष बलवान भी होता
और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान होता है ॥
६। इस लिये जब तू युद्ध करे तब युक्ति के साथ करना
और जय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होता है ॥
७। बुद्धि इतने ऊंचे पर है कि मूढ़ उसे पा नहीं सकता

वह सभा[1] में अपना मुंह खोल नहीं सकता ॥
८ । जो सोच विचारके बुराई करता है
उस को लोग खल कहते हैं ॥
९ । मूढ़ता का विचार भी पाप है
और ठट्ठा करनेहारे से मनुष्य घिन करते हैं ॥
१० । क्या तू विपत्ति के समय हियाव छोड़ता है
तो तेरी शक्ति थोड़ी ही है ॥
११ । जिन को मार डालने के लिये ले जाते हों उन को छुड़ाना
और जो घात होने को थरथराते हुए चले जाते हों उन्हें रोक लेना ॥
१२ । यदि तू कहे कि भला मैं इस को जानता न था
तो क्या मन का जांचनेहारा इसे नहीं समझता
और क्या तेरे प्राण का रक्षक इसे नहीं जानता
और क्या वह एक एक मनुष्य के काम का फल उसे न भुगताएगा ॥
१३ । हे मेरे पुत्र मधु खा की वह अच्छा है
और मधु का छत्ता भी कि वह तेरे मुंह में मीठा लगेगा ॥
१४ । इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही मीठी लगेगी
यदि तू उसे पाए तो अन्त में उस का फल भी मिलेगा
और तेरी आशा न टूटेगी ॥
१५ । हे दुष्ट धर्मी का वासस्थान नाश करने को घात न लगा
और उस का विश्रामस्थान मत बिगाड़ ॥
१६ । क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठता है
पर दुष्ट लोग विपत्ति में गिरते हैं ॥
१७ । जब तेरा शत्रु गिरे तब तू आनन्दित न हो
और जब वह ठोकर खाए तब तेरा मन मगन न हो ॥

(१) मूल में फाटक ।

१८ । कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर बुरा माने
और अपना कोप उस पर से उतारे ॥
१९ । कुकर्म्मियों के विषय मत कुढ़
दुष्ट लोगों के विषय डाह न कर ॥
२० । क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ फल न मिलेगा
दुष्टों का दिया बुझाया जाएगा ॥
२१ । हे मेरे पुत्र यहोवा और राजा दोनों का भय मानना
और बलवा करनेहारों में न मिलना ॥
२२ । क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी
और दोनों की आपत्ति कौन जानता है ॥
२३ । बुद्धिमानों के वचन ये भी हैं
न्याय में पक्षपात करना किसी रीति अच्छा नहीं ॥
२४ । जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है
उस को तो समाज समाज के लोग कोसते
और जाति जाति के लोग धमकी देते हैं ॥
२५ । पर जो लोग दुष्ट को डांटते उन का भला होता
और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है ॥
२६ । जो सीधे उत्तर देता है
सो सुननेहारे[1] को चूमता है ॥
२७ । अपना बाहर का कामकाज ठीक करना
और खेत में उसे तैयार कर लेना
पीछे अपना घर बनाना ॥
२८ । अकारण अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी न देना
और न उस को फुसलाना ॥
२९ । मत कह कि जैसा उस ने मेरे साथ किया वैसा ही मैं भी उस के साथ करूंगा
और उस को उस के काम के अनुसार पलटा दूंगा ॥
३० । मैं आलसी के खेत के

(१) मूल में, होठ ।

और निर्बुद्धि मनुष्य की दाखबारी के पास होकर
 जाता था,
३१। तो क्या देखा कि वहां सब कहीं कटीले
 पेड़ भर गये
और वह बिच्छू पेड़ों से छप गई
और उस का पत्थर का बाड़ा गिर गया है॥
३२। तब मैं ने निहारके विचार किया
मैं ने देखकर शिक्षा प्राप्त किई॥
३३। तनिक और सो लेना
तनिक और झपकी ले लेना
तनिक और छाती पर हाथ रक्खे[1] लेटे रहना,
३४। तब तेरा कंगालपन डाकू की नाईं
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी॥

२५. सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं जिन्हें यहूदा के राजा हिज़किय्याह के जनों ने नकल कर दिया॥

२। परमेश्वर की महिमा तो बात के छिपा
 रखने में
पर राजाओं की महिमा बात के भेद निकालने
 में होती है॥
३। स्वर्ग की ऊंचाई पृथिवी की नीचाई
और राजाओं का मन इन तीनों का अन्त नहीं
 मिलता॥
४। चांदी में से मैल निकाल
तब सुनार के लिये एक पात्र की यकिया हो
 जाएगी॥
५। राजा के साम्हने से दुष्ट को निकाल
तब उस की गद्दी धर्म्म के कारण स्थिर होगी॥
६। राजा के साम्हने बड़ाई न मारना
और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना॥
७। क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन किया हो
उस के साम्हने तेरा अपमान होना नहीं
उत्तम यह है कि तुझ से कहा जाए कि यहां
 पर विराज[2]॥

(१) मूल में दोनो हाथ मिलाये। (२) मूल में इधर चढ आ।

८। मुकद्दमा उतावली करके न चलाना
नहीं तो उस के अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा
 मुंह काला करेगा
तब तू क्या कर सकेगा॥
९। अपने पड़ोसी के साथ वादविवाद एकान्त
 में करना
और पराया भेद न खोलना॥
१०। ऐसा न हो कि सुननेहारा तेरी निन्दा करे
और तेरा अपवाद बना रहे॥
११। जैसे चान्दी की टोकरियों में सोनहले
 सेब हों
वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन
 होता है॥
१२। जैसा सोने का नत्थ और कुन्दन की गोप
 अच्छी लगती है
वैसा ही माननेहारे के कान में बुद्धिमान् की
 डांट भी अच्छी लगती है॥
१३। जैसा कटनी के समय बरफ की ठण्ड से
वैसा ही विश्वासयोग्य दूत से भी
भेजनेहारों का जी ठण्डा होता है॥
१४। जैसे बादल और पवन विना वृष्टि निर्लाभ
 होते हैं
वैसा ही झूठ मूठ दान देनेहारे का बड़ाई
 मारना होता है॥
१५। धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता
और कोमल बात हड्डी को भी तोड़ती है॥
१६। यदि तू ने मधु पाया हो तो जितना पचे[1]
 उतना ही खाना
न हो कि अधिक खाकर[2] उसे छांट करना पड़े॥
१७। अपने पड़ोसी के घर में बहुत न जाना[3]
न हो कि वह तुझ से अघाकर बैर करने
 लगे॥
१८। जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी
 देता है

(१) मूल में जितनी चाहिये। (२) मूल में अघाकर।
(३) मूल में घर से अपना पांव बहुमूल्य करना।

सो मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर
होता है॥

१९। विपत्ति के समय विश्वासघाती पर का भरोसा
टूटे हुए दांत वा उखड़े पांव के समान होता है॥

२०। जैसा जाड़े के दिनों में किसी का वस्त्र
उतारना वा सज्जी पर सिरका डालना
वैसा ही उदास मनवाले के साम्हने गीत गाना
होता है॥

२१। यदि तेरा वैरी भूखा हो तो उस को
रोटी खिलाना
और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना॥

२२। क्योंकि इस रीति तू उस के सिर पर अंगारे
डालेगा
और यहोवा तुझे इस का फल देगा॥

२३। जैसे उत्तरही वायु वर्षा को
वैसे ही चुगली करने[१] से मुख पर क्रोध छा जाता है॥

२४। लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू स्त्री के संग
रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है॥

२५। जैसा थके मान्दे के लिये ठण्डा पानी
वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार
भी होता है॥

२६। जो धर्म्मी दुष्ट के कहे में आता है
सो गदले सोते और बिगड़े हुए कुण्ड के
समान है॥

२७। बहुत मधु खाना अच्छा नहीं
पर कठिन बातों की पूछपाछ महिमा का कारण
होती है॥

२८। जिस का आत्मा वश में नहीं
सो ऐसे नगर के समान है जिस की शहरपनाह
नाका करके तोड़ दिई गई हो॥

२६.

जैसा धूपकाल में हिम का और
कटनी के समय जल का
पड़ना
वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती॥

(१) मूल में छिपी जीभ।

२। जैसे गौरिया घूमते घूमते और सूपाबेनी
उड़ते उड़ते नहीं बैठती
वैसा ही अकारण स्राप नहीं पड़ता॥

३। घोड़े के लिये कोड़ा गदहे के लिये बाग
और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी॥

४। मूर्ख को उस की मूढ़ता के अनुसार उत्तर
न देना
ऐसा न हो कि तू भी उस के तुल्य ठहरे॥

५। मूर्ख को उस की मूढ़ता के अनुसार उत्तर देना
ऐसा न हो कि वह अपने लेखे में बुद्धिमान् ठहरे॥

६। जो मूर्ख के हाथ से सन्देशा भेजता है
सो मानो अपने पांव में कुल्हाड़ा मारता और
विष[१] पीता है॥

७। जैसे लंगड़े के पांव लटके हुए रहते
वैसे ही मूर्खों के मुंह में नीतिवचन होता है॥

८। जैसी पत्थरों के ढेर में मणियों की थैली
वैसी ही मूर्ख को महिमा देनी होती है॥

९। जैसा मतवाले के हाथ में कांटा गड़ता है
वैसा ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी
दुःखदाई होता है॥

१०। जैसे कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को
मारता हो
वैसा ही मूर्खों वा बटोहियों का मजूरी में लगाने-
हारा भी होता है॥

११। जैसे कुत्ता अपनी छांट को चाटता[२] है
वैसा ही मूर्ख अपनी मूढ़ता को दुहराता है॥

१२। यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपने लेखे में
बुद्धिमान् हो
तो उस से अधिक मूर्ख ही की आशा है॥

१३। आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह होगा
चौक में सिंह होगा॥

१४। जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है
वैसे आलसी अपनी खाट पर करवट लेता है॥

१५। आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता
पर आलस्य के मारे कौर मुंह तक नहीं उठाता॥

१६। ठीक उत्तर देनेहारे सात मनुष्यों से भी

(१) मूल में. उपद्रव। (२) मूल में खाट की ओर फिरता।

आलसी अपने को अधिक बुद्धिमान् समझता है॥

१७। जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में रिसियाता है
सो ऐसा होता है जैसा कोई कुत्ते के कानों को पकड़े॥

१८। जैसा कोई पागल जो लुकटियां
तीर और मृत्यु की फेंकता हो,

१९। वैसा ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी को धोखा देकर
कहता है क्या मैं खेल ही न करता था॥

२०। जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है
उसी रीति जहां कानाफूसी करनेहारा नहीं वहां झगड़ा मिट जाता है॥

२१। जैसा अंगारों में कोएला और आग में लकड़ी होती है
वैसा ही झगड़े के बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है॥

२२। कानाफूसी करनेहारे के वचन
स्वादिष्ठ भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं॥

२३। जैसा कोई चांदी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्त्तन हो
वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन[१] होते हैं॥

२४। जो बैरी बात से तो अपने को अनजान बनाता
पर अपने भीतर छल रखता है,

२५। जब वह मीठी बातें बोले तब उस की प्रतीति न करना
क्योंकि उस के मन में सात घिनौनी वस्तुएं रहती हैं॥

२६। चाहे उस का बैर छल के कारण छिप भी जाए
तौभी उस की बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी॥

(१) मूल में जलते हुए होठ।

२७। जो गड़हा खोदे सो उस में गिरेगा
और जो पत्थर लुढ़काए वह उस पर लुढ़क आएगा॥

२८। जिस ने जिस को झूठी बातों से घायल किया हो सो उस से बैर रखता है
और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेहारा बिनाश का कारण होता है॥

२७. कल के दिन के विषय मत फूल क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा॥

२। तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें पर तू आप न करना
बिराना तुझे सराहे तो सराहे पर तू अपनी सराहना न करना॥

३। पत्थर तो भारी और बालू गरू होती है
पर मूढ़ की रिस उन दोनों से भी भारी है॥

४। क्रोध तो क्रूर और कोप धारा के समान होता है
पर जब कोई जल उठता है तब कौन ठहर सकता है॥

५। साफ साफ डांट
छिपे हुए प्रेम से उत्तम है॥

६। मित्र की चोटें विश्वासयोग्य हैं
पर बैरी बहुत चूमता है॥

७। अघाने पर मधु का छत्ता फीका लगता है[१]
पर भूखे को सब कड़वी वस्तुएं भी मीठी जान पड़ती हैं॥

८। स्थान छोड़कर घूमनेहारा मनुष्य उस चिड़िया के समान है
जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है॥

९। जैसा तेल और सुगन्ध से
वैसा मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है॥

१०। जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना

(१) मूल में तृप्त जीव छत्ता रौंदता है।

और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना
क्योंकि प्रेम करनेहारा पड़ोसी प्रेम न करनेहारे भाई से कहीं उत्तम है॥
११। हे मेरे पुत्र बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर
और मैं अपनी निन्दा करनेहारे को उत्तर दे सकूंगा॥
१२। चतुर मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है
पर भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं॥
१३। जो अनजाने पुरुष का जामिन हुआ उस का कपड़ा
और जो अनजानी स्त्री का जामिन हुआ उस से बन्धक की वस्तु ले रख॥
१४। जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को ऊंचे शब्द से आशीर्वाद देता
उस के लिये यह स्राप गिना जाता है॥
१५। झड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना
और झगड़ालू स्त्री दोनों तुल्य हैं,
१६। जो उस को रोक रक्खे सो वायु को भी रोक रक्खेगा
और दहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा॥
१७। जैसे लोहा लोहे से चमकदार होता है
वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार होता है॥
१८। जो अंजीर के पेड़ की रक्षा करता सो उस का फल खाता है
इस रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता उस की महिमा होती है॥
१९। जैसे जल में मुख की परछाईं मुख से मिलती है
वैसे ही एक मनुष्य का मन दूसरे मनुष्य के मन से मिलता है
२०। जैसे अधोलोक और विनाशलोक
वैसे ही मनुष्य की आंखें भी तृप्त नहीं होतीं॥
२१। जैसे चांदी ताने के पात्र में और सोना घड़िया में ताया जाता है
वैसे ही मनुष्य प्रशंसा करने से
२२। चाहे तू मूढ़ को दानों के बीच दलकर ओखली में मूसल से कूटे
तौभी उस की मूढ़ता नहीं जाने की॥
२३। अपनी भेड़बकरियों की दशा भली भांति बूझ लेना
और अपने सब पशुओं के झुण्डों की सुधि रखना॥
२४। क्योंकि संपत्ति सदा लों नहीं ठहरती
और क्या राजमुकुट भी पीढ़ी पीढ़ी बना रहता है॥
२५। कटी हुई घास उठ गई नई घास दिखाई दिई
पहाड़ों की हरियाली काटकर एकट्ठी किई गई॥
२६। भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये हैं
और बकरों के द्वारा खेत का दाम दिया जाएगा,
२७। और बकरियों का इतना दूध होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरके पिया करेगा
और तेरी लौण्डियों की भी जीविका होगी॥

२८. दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं
पर धर्म्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं॥
२। देश में पाप होने के कारण उस के हाकिम बदलते जाते हैं
पर समझनेहारे और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुदशा बहुत दिन लों ठहरती है॥
३। जो निर्धन पुरुष कंगालों पर अन्धेर करता है
सो ऐसी भारी वर्षा के समान है जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती॥
४। जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते सो दुष्ट की प्रशंसा करते हैं

पर व्यवस्था के पालनेहारे उन से लड़ते हैं॥
५। बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते
पर यहोवा के ढूंढ़नेहारे सब कुछ समझते हैं॥
६। टेढ़ी चाल चलनेहारे धनी मनुष्य से
खराई से चलनेहारा निर्धन ही जन उत्तम है॥
७। जो व्यवस्था को पालता सो समझवाला सुपूत होता है
पर खाउओं का संगी अपने पिता का मुंह काला करता है॥
८। जो अपना धन ब्याज आदि बढ़ती से बढ़ाता है
वह उस के लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है॥
९। जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है
उस की प्रार्थना घिनौनी ठहरती है॥
१०। जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग में कर देता
सो अपने खोदे हुए गड़हे में आप गिरता है
पर खरे लोग कल्याण के भागी होते हैं॥
११। धनी पुरुष अपने लेखे में बुद्धिमान् होता है
पर समझदार कंगाल उस का मर्म बूझ लेता है॥
१२। जब धर्म्मी लोग हुलसते हैं तब बड़ी शोभा होती है
पर जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं तब मनुष्य अपने आप को छिपाता है[१]॥
१३। जो अपने अपराध छिपा रखता उस का कार्य्य सुफल नहीं होता
पर जो उन को मान लेता और छोड़ भी देता उस पर दया किई जाती है॥
१४। जो मनुष्य निरन्तर भय मानता रहता है सो धन्य है
पर जो अपना मन कठोर कर लेता सो विपत्ति में पड़ता है॥
१५। कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेहारा दुष्ट गरजनेहारे सिंह और घूमनेहारे रीछ के समान है॥

(१) मूल में मनुष्य ढूंढे जाते।

१६। जो प्रधान मन्दबुद्धि होता है सोई बहुत अन्धेर करता है
और जो लालच का वैरी होता सो दीर्घायु होता है॥
१७। जो किसी प्राणी के खून का अपराधी हो वह भागकर गड़हे में गिरेगा कोई उस को न रोकेगा॥
१८। जो सीधाई से चलता सो बचाया जाता है
पर जो टेढ़ी चाल चलता सो अचानक गिर पड़ता है॥
१९। जो अपनी भूमि को जोता बोया करता उस का तो पेट भरता है
पर जो निकम्मे लोगों की संगति करता सो कंगालपन से घिरा रहता है[१]॥
२०। सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते हैं
पर जो धनी होने में उतावली करता है सो निर्दोष नहीं ठहरता॥
२१। पक्षपात करना अच्छा नहीं
और यह भी अच्छा नहीं कि पुरुष एक टुकड़े रोटी के लिये अपराध करे॥
२२। जो डाह करता है वह धन प्राप्त करने में उतावली करता है
और नहीं जानता कि मैं घटी में पड़ूंगा॥
२३। जो किसी मनुष्य को डांटता है सो पीछे चापलूसी करनेहारे से अधिक प्यारा हो जाता है॥
२४। जो अपने मा बाप को लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं
सो नाश करनेहारे का संगी ठहरता है॥
२५। लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है
और जो यहोवा पर भरोसा रखता सो हृष्टपुष्ट हो जाता है॥
२६। जो अपने ऊपर भरोसा रखता है सो मूर्ख है
और जो बुद्धि से चलता है सो बचता है॥
२७। जो निर्धन को दान देता उस को घटी नहीं होती

(१) मूल में अघाता।

पर जो उस से दृष्टि फेर लेता सो स्राप पर स्राप पाता[1] है॥
२८। जब दुष्ट लोग प्रबल[2] होते तब तो मनुष्य छिप जाते हैं
पर जब वे नाश होते तब धर्म्मी लोग बहुत होते हैं॥

२९. जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है

सो अचानक नाश होगा और कुछ उपाय न चलेगा॥
२। जब धर्म्मी लोग बहुत होते तब प्रजा आनन्दित होती है
पर जब दुष्ट प्रभुता करता तब प्रजा हाय मारती है॥
३। जो पुरुष बुद्धि से प्रीति रखता उस का पिता आनन्दित होता है
पर वेश्याओं की संगति करनेहारा धन को खो देता है॥
४। राजा न्याय करने से देश को स्थिर करता है
पर जो बहुत भेंटें लेता सो उस को उलट देता है॥
५। जो पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है
सो उस के पैरों के लिये जाल लगाता है॥
६। बुरे मनुष्य का अपराध फंदा होता है
पर धर्म्मी आनन्दित होकर जयजयकार करता है॥
७। धर्म्मी पुरुष कंगालों के मुकद्दमे में मन लगाता है
पर दुष्ट जन उसे जानने की समझ नहीं रखता॥
८। ठट्ठा करनेहारे लोग नगर को फूंक देते हैं
पर बुद्धिमान लोग कोप को ठण्डा करते हैं॥
९। जब बुद्धिमान् मूढ़ के साथ वादविवाद करता
तब चाहे वह रोष करे चाहे हंसे तौभी चैन नहीं मिलता॥

(१) मूल में छिपाता। (२) मूल में खड़े।

१०। हत्यारे लोग खरे पुरुष से बैर रखते हैं
और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं॥
११। मूर्ख अपने सारे मन की बात प्रगट करता है
पर बुद्धिमान् अपने मन को रोकता और शान्त कर देता है॥
१२। जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है
तब उस के सब टहलुए दुष्ट हो जाते हैं॥
१३। निर्धन और अन्धेर करनेहारा पुरुष इस में एक समान हैं
कि यहोवा दोनों की आंखों में ज्योति देता है॥
१४। जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता
उस की गद्दी सदा लों स्थिर रहती है॥
१५। छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है
पर जो लड़का योंहीं छोड़ा जाता सो अपनी माता की लज्जा का कारण होता है॥
१६। दुष्टों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है
पर अन्त में धर्म्मी लोग उन का गिरना देख लेते हैं॥
१७। अपने बेटे की ताड़ना कर तब उस से तुझे चैन मिलेगा
और तेरा मन सुखी हो जाएगा॥
१८। जहां दर्शन की बात नहीं होती वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं
और जो व्यवस्था को मानता है सो धन्य होता है॥
१९। दास बातों ही के द्वारा सुधारा नहीं जाता
क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता॥
२०। तू बातें करने में उतावली करनेहारे मनुष्य को देखता है
उस से अधिक मूर्ख ही से आशा है॥
२१। जो अपने दास को उस के लड़कपन से सुकुमारपन में पालता
वह दास अन्त में उस का बेटा बन बैठता है॥
२२। क्रोध करनेहारा मनुष्य झगड़ा मचाता है
और अत्यन्त क्रोध करनेहारा अपराधी भी होता है॥

२३। मनुष्य गर्व्व के कारण नीचा खाता है
पर नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है ॥
२४। जो चोर की संगति करता से अपने प्राण का वैरी होता है
सोंह धराने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता ॥
२५। मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता[1] है
पर जो यहोवा पर भरोसा रखता सो ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है ॥
२६। हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं
पर मनुष्य का चुकाव यहोवा ही से मिलता है ॥
२७। धर्म्मी लोग कुटिल मनुष्य से घिन करते हैं
और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेहारे से घिन करता है ॥

३०. याके के पुत्र आगूर् के वचन। भारी वचन।

उस पुरुष की ईतीएल् और उक्काल् से यह वाणी है कि,
२। निश्चय मैं पशु सरीखा हूं बरन मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं
और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है ॥
३। और न मैं ने बुद्धि प्राप्त किई है
न परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है ॥
४। कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया
किस ने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रक्खा है
किस ने महासागर को अपने वस्त्र में बान्ध लिया है
किस ने पृथिवी के सिवानों को ठहराया है
उस का नाम क्या है और उस के पुत्र का नाम क्या है यदि तू जानता हो तो बता ॥
५। ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है
वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है ॥
६। उस के वचनों में कुछ मत बढ़ा
ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे ॥
७। मैं ने तुझ से दो वर मांगे हैं
सो मेरे मरने से पहिले उन्हें नाह न करना,
८। अर्थात् व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख
मुझे न निर्धन कर न धनी
मेरी दिन दिन की[1] रोटी मुझे खिलाया कर ॥
९। ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भरे तब मैं तुझे मुकरके कहूं कि यहोवा कौन है
वा अपना भाग खोकर चोरी करूं
और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं ॥
१०। किसी दास की उस के स्वामी से चुगली न खाना
न हो कि वह तुझे स्राप दे और तू दोषी ठहराया जाए ॥
११। ऐसे लोग हैं जो अपने पिता को कोसते
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते ॥
१२। ऐसे लोग हैं जो अपने लेखे में शुद्ध हैं
पर तौभी उन का मैल धोया नहीं गया ॥
१३। ऐसे लोग हैं जिन की दृष्टि क्या ही घमण्ड भरी है
और उन की आंखें क्या ही चढ़ी हुई हैं ॥
१४। ऐसे लोग हैं जिन के दांत तलवार और उन की दाढ़ छूरियां ठहरती हैं
वे दीन लोगों को पृथिवी पर से और दरिद्रों को मनुष्यों में से खाकर मिटा डालें ॥
१५। जैसे जोंक की दो बेटियां होती हैं जो कहती हैं दे दे
वैसे ही तीन वस्तुएं हैं जो तृप्त नहीं होतीं
बरन चार हैं जो कभी नहीं कहतीं बस ॥
१६। अधोलोक और बांझ की कोख
भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती
और आग जो कभी नहीं कहती बस ॥
१७। जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे
और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने

(१) मूल में देता।

(१) मूल में, मेरे भाग की।

उस आंख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे
और उकाब के बच्चे खा डालेंगे ॥
१८। तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं
वरन चार हैं जो मेरी समझ से परे हैं,
१९। आकाश में उकाब पक्षी का ढंग
चटान पर सर्प की चाल
समुद्र में जहाज की चाल
कन्या के संग पुरुष की चाल ॥
२०। व्यभिचारिन स्त्री की चाल भी वैसा ही है
वह भोजन करके मुंह पोंछती
और कहती है कि मैं ने कोई अनर्थ काम नहीं किया ॥
२१। तीन बातों के कारण पृथिवी कांपती
वरन चार हैं जो उस से सही नहीं जातीं,
२२। दास का राजा हो जाना
मूढ़ का पेट भरना,
२३। घिनौनी स्त्री का व्याहा जाना
और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना ॥
२४। पृथिवी पर चार छोटे जन्तु हैं
जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं ॥
२५। चूंटियां निर्बल जाति तो हैं
पर धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं ॥
२६। शापान् बली जाति नहीं
तौभी उन की मान्दें ढांगों पर होती हैं ॥
२७। टिड्डियों के राजा तो नहीं होता
तौभी वे सब की सब दल बांध बांधकर पयान करती हैं ॥
२८। और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है
तौभी राजभवनों में रहती है ॥
२९। तीन सुन्दर चलनेहारे प्राणी हैं
वरन चार हैं जिन की चाल सुन्दर है,
३०। सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी है
और किसी के डर से नहीं हटता,
३१। शिकारी कुत्ता और बकरा
और अपनी सेना समेत राजा.
३२। यदि तू ने अपनी बड़ाई करने से मूढ़ता किई
वा कोई बुरी युक्ति बांधी हो
तो अपने मुंह पर हाथ धर ॥
३३। क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन
और नाक के मरोड़ने से लोहू निकलता है
वैसे ही कोप के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है ॥

३१. लमूएल् राजा के वचन ।

वह भारी वचन जो उस की माता ने उसे चिताया ॥
२। हे मेरे पुत्र क्या, हे मेरे निज बेटे क्या,
हे मेरी मन्नतों के पुत्र क्या कहूं ॥
३। अपना बल स्त्रियों को न देना
न अपना जीवन उन के वश कर देना
जो राजाओं का पौरुष खो देती हैं ॥
४। हे लमूएल् राजाओं को दाखमधु पीना यह राजाओं को उचित नहीं
और मदिरा चाहना रईसों को नहीं फबता ॥
५। न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूलें
और किसी दुःखी के मुकद्दमे को बिगाड़ें ॥
६। मदिरा नाश होनेहारे को
और दाखमधु उदास मनवालों ही को देना ॥
७। ऐसा मनुष्य पीकर अपना कंगालपन भूले
और अपना कठिन श्रम फिर स्मरण न करे ॥
८। अनबोल के लिये बोलना
और सब अनाथों का न्याय चुकाना ॥
९। मुंह खोलना और धर्म से न्याय करना
और दीन दरिद्रों का मुकद्दमा लड़ना ॥
१०। भली स्त्री कौन पा सकता है
उस का मूल्य मूंगों से बहुत अधिक है ॥
११। उस के पति का मन उस पर भरोसा रखता है
और उस पति को लाभ की घटी नहीं होती ॥

१२। अपने जीवन के सारे दिन
वह उस से बुरा नहीं भला ही व्यवहार करती है॥
१३। वह ऊन और सन ढूंढ़ ढूंढ़कर
अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है॥
१४। वह व्योपार के जहाजों की नाईं
अपनी भोजनवस्तुएं दूर से मंगवाती है॥
१५। वह रात रहते उठकर
अपने घराने को भोजन
और अपनी लौंडियों को अलग अलग काम देती है॥
१६। वह खेत सोच विचारकर लेती
और अपनी कमाई से दाख की बारी लगाती है॥
१७। वह अपनी कटि से बल का फेंटा कसती
और अपनी बांहों को बली करती है॥
१८। वह परखकर लेती है कि मेरा वनिज अच्छा चलता है
और रात को उस का दिया नहीं बुझता॥
१९। वह अटेरन में हाथ लगाती
और चरखा पकड़ती है॥
२०। वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती
और दरिद्र के संभालने को हाथ बढ़ाती है॥
२१। वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती
क्योंकि उस के घर के सब लोग लाल कपड़े पहिनते हैं॥
२२। वह तकिये बना लेती है
उस के वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग के होते हैं॥
२३। जब उस का पति सभा[1] में देश के पुरनियों के संग बैठता है
तब उस का सन्मान होता है॥
२४। वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती
और व्योपारी को फेंटे देती है॥
२५। वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती
और आनेहारे काल के विषय पर हंसती है॥
२६। वह बुद्धि की बात बोलती है
और उस के वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं॥
२७। वह अपने घराने की चाल चलन को ध्यान से देखती
और अपनी रोटी बिना कमाये नहीं खाती॥
२८। उस के पुत्र उठ उठकर उस को धन्य कहते हैं
उस का पति भी उठकर उस की ऐसी प्रशंसा करता है कि,
२९। बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किये हैं
पर तू उन सभों से श्रेष्ठ ठहरी॥
३०। शोभा तो झूठी और सुन्दरता बुलबुला[2] है
पर जो स्त्री यहोवा का भय मानती है उस की प्रशंसा किई जाएगी॥
३१। उस के हाथों के काम का फल उसे दो
और वह सभा में अपने कामों के योग्य प्रशंसा पाए[3]॥

(१) मूल में फाटकों। (२) मूल में सांस। (३) मूल में उस के काम फाटकों में उस की स्तुति करें।

सभोपदेशक।

---

१. सभा का उपदेशक जो दाऊद का पुत्र और यरूशलेम् का राजा था उस के वचन।

२। सभा के उपदेशक का यह वचन है कि व्यर्थ ही व्यर्थ व्यर्थ ही व्यर्थ सब कुछ व्यर्थ है॥ ३। उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर[1] करता है उस को क्या लाभ होता है॥ ४। एक पीढ़ी जाती और दूसरी पीढ़ी आती है और पृथिवी सदा लों बनी रहती है॥ ५। फिर सूर्य उदय होकर अस्त होता है और अपने उदय की दिशा को वेग से जाता है॥ ६। वायु दक्खिन की ओर बहती और उत्तर की ओर घूमती जाती है वह घूमती बहती रहती और अपने चक्करों में लौट आती है॥ ७। सारी नदियां समुद्र में जा मिलती हैं तौभी समुद्र भर नहीं जाता जिस स्थान में नदियां जाती हैं उसी में वे फिर जाती हैं॥ ८। सब बातें परिश्रम से भरी हैं इस का वर्णन किया नहीं जाता न तो आंखें देखते देखते सफल होती हैं न कान सुनते सुनते तृप्त॥ ९। जो कुछ हुआ था वही होगा और जो कुछ किया गया वही किया जाएगा धरती पर[1] कोई नई बात नहीं होती॥ १०। क्या ऐसी कोई बात है जिस के विषय लोग कह सकें कि देख यह नई है सो नहीं वह बीते हुए युगों में हो चुकी है॥ ११। प्राचीन लोगों का कुछ स्मरण नहीं रहा और होनेहारे लोगों का कुछ स्मरण उन के पीछे होनेहारों को न रहेगा॥

१२। मैं सभा का उपदेशक यरूशलेम् में इस्राएल् का राजा हुआ॥ १३। और मैं ने मन लगाया कि जो कुछ धरती पर[1] किया जाता है उस का भेद बुद्धि से सोच सोचकर निकालूं यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे रहें॥ १४। मैं ने उन सब कामों को देखा जो धरती पर[1] किये जाते हैं देखो वे सब व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥ १५। जो टेढ़ा है सो सीधा नहीं हो सकता और जितनी वस्तुओं में घटी है वे गिनी नहीं जातीं॥ १६। मैं ने मन में कहा कि देख जितने यरूशलेम् में मुझ से पहिले थे उन सभों से मैं ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त किई और मुझ को बहुत बुद्धि और ज्ञान मिल गया है॥ १७। और मैं ने मन लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और बावलेपन और मूर्खता को भी जान लूं पर मुझे जान पड़ा कि यह भी वायु को पकड़ना है॥ १८। क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है और जो अपना ज्ञान बढ़ाता वह अपना दुःख भी बढ़ाता है॥

२. मैं ने अपने मन से कहा चल मैं तुझे आनन्द के द्वारा जांचूंगा सो तू सुख मान पर देखो यह भी व्यर्थ है॥ २। मैं ने हंसी के विषय कहा यह तो बावलापन है और आनन्द के विषय कि उस से क्या होता है॥ ३। मैं ने मन में सोचा कि किस प्रकार से मेरी बुद्धि भी बनी रहे और मैं अपने जी को दाखमधु पीने से ऐसा बहला भी दूं कि मूर्खता को पकड़े रहूं जब लों न देखूं कि वह अच्छा काम कौन है जो मनुष्य अपने जीवन भर करते रहें॥ ४। मैं ने बड़े बड़े काम किये मैं ने अपने लिये घर बनवा लिये मैं ने अपने लिये दाख की बारियां लगवा लिईं, ५। मैं ने अपने लिये बारियां और बाग लगवा लिये और उन में भान्ति भान्ति के फलदाई वृक्ष रुपवाये, ६। मैं ने अपने लिये कुण्ड खुदवा लिये कि उन से वह बन सींचा जाए जिस में पौधे सेये जाते थे॥ ७। मैं ने दास और दासियां मोल लिईं और मेरे घर में दास उत्पन्न भी हुए मेरे इतनी गाय बैल और भेड़ बकरियां हुईं जितनी मुझ से पहिले किसी यरूशलेम्वासी के न हुई थीं॥ ८। मैं ने

---

(१) मूल में सूरज के नीचे।

चान्दी और सोना भी और राजाओं और प्रान्तों के बहुमूल्य पदार्थों का संग्रह किया मैं ने अपने लिये गानेहारों और गानेहारियों को रक्खा और बहुत सी कामिनियां भी जिन से मनुष्य सुख पाते हैं अपनी कर लिईं॥ ९। सो मैं अपने से पहिले के सब यरूशलेमवासियों से अधिक बड़ा और धनाढ्य हो गया तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही॥ १०। और जितनी वस्तुओं के देखने की मुझे लालसा हुई उन सभों को देखने से मैं न रुका मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका वरन मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला॥ ११। तब मैं ने फिरके अपने हाथों के सब कामों को और अपने सब परिश्रम को देखा तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है और धरती पर[1] कुछ लाभ नहीं होता॥

१२। फिर मैं ने अपना मन फेरा कि बुद्धि और बावलेपन और मूर्खता को देखूं क्योंकि जो मनुष्य राजा के पीछे आए सो क्या कर सकेगा केवल वही जो लोग कर चुके हैं॥ १३। तब मैं ने देखा कि उंजियाला अंधियारे से जितना उत्तम है उतना बुद्धि भी मूर्खता से उत्तम है॥ १४। जो बुद्धिमान् है उस के सिर में आंखें रहती हैं पर मूर्ख अंधियारे में चलता है तौभी मैं ने जान लिया कि दोनों की एक सी दशा होती है॥ १५। सो मैं ने मन में कहा जैसी मूर्ख की दशा होगी वैसी ही मेरी भी होगी फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान् हुआ तब मैं ने मन में कहा यह भी व्यर्थ ही है॥ १६। क्योंकि बुद्धिमान् और मूर्ख दोनों सदा लों बिसरे रहेंगे क्योंकि आनेहारे दिनों में सब कुछ बिसर जाएगा इस रीति बुद्धिमान् का मरना मूर्ख ही का सा ठहरता है॥ १७। तब मैं ने अपने जीवन से घिन किई क्योंकि जो काम धरती पर[1] किया जाता है सो मुझे बुरा ही लगा क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

१८। और मैं ने अपने सारे परिश्रम से जो मैं ने धरती पर[1] किया था घिन किई क्योंकि मुझे उस का फल किसी मनुष्य के लिये जो मेरे पीछे आएगा छोड़ जाना पड़ेगा॥ १९। और वह मनुष्य बुद्धिमान् होगा वा मूर्ख यह कौन जानता है तौभी जितना परिश्रम मैं ने किया और उस में धरती पर[1] बुद्धि प्रगट किई उस के फल का वही अधिकारी होगा यह भी व्यर्थ ही है॥ २०। सो मैं पलटकर उस सारे परिश्रम के विषय जो मैं ने धरती पर[1] किया था निराश होने पर हुआ॥ २१। क्योंकि कोई ऐसा मनुष्य होता है जिस का परिश्रम बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी होता है तौभी उस को ऐसे मनुष्य के लिये जिस ने उस में कुछ परिश्रम न किया हो छोड़ जाना पड़ता है कि उसी का भाग हो जाए यह भी व्यर्थ और बहुत ही बुरा है॥ २२। क्योंकि मनुष्य जो परिश्रम धरती पर[1] मन लगा लगाकर करता है उस से उस को क्या लाभ होता है॥ २३। उस के सारे दिन तो दुःखों से भरे रहते और उस का काम खेद के साथ होता है वरन रात को भी उस का मन चैन नहीं पाता यह भी व्यर्थ ही है॥

२४। मनुष्य के लिये खाने पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुख सुगाने से बढ़कर और कुछ अच्छा नहीं मैं ने इस को भी देखा कि यह परमेश्वर की ओर से मिलता है॥ २५। क्योंकि खाने पीने और सुख भोगने में मुझ से कौन अधिक समर्थ है॥ २६। जो मनुष्य परमेश्वर के लेखे में अच्छा है उस को वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है पर पापी को वह दुःखभरा काम ही देता है कि वह उस को देने के लिये संचय कर करके ढेर लगाए जो परमेश्वर के लेखे में अच्छा हो यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

३. एक एक बात का अवसर और धरती पर[1] जितने विषय होते हैं सब का एक एक समय होता है॥ २। जन्म का समय और मरन का भी समय रोपने का समय और

(१) मूल में सूरज के नीचे।

(१) मूल में सूरज के नीचे।

रोपे हुए को उखाड़ने का भी समय है ॥ ३ । घात करने का समय और चंगा करने का भी समय ढा देने का समय और बनाने का भी समय है ॥ ४ । रोने का समय और हंसने का भी समय छाती पीटने का समय और नाचने का भी समय है ॥ ५ । पत्थर फेंकने का समय और पत्थर बटोरने का भी समय गले लगाने का समय और गले लगाने से रुकने का भी समय है ॥ ६ । ढूंढ़ने का समय और खो देने का भी समय बचा रखने का समय और फेंक देने का भी समय है ॥ ७ । फाड़ने का समय और सीने का भी समय चुप रहने का समय और बोलने का भी समय है ॥ ८ । प्रेम करने का समय और बैर करने का भी समय लड़ाई का समय और मेल का भी समय है ॥ ९ । काम करनेहारे को अपने परिश्रम से क्या लाभ होता है ॥ १० । मैं ने उस दु.खभरे काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे रहें ॥ ११ । उस ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं फिर उस ने मनुष्यों के मन में अनादि अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है सो मनुष्य आदि से अन्त लों बूझ नहीं सकता ॥ १२ । मै ने जान लिया कि मनुष्यों के लिये आनन्द करने और जीवन भर भलाई करने को छोड़ और कुछ अच्छा नहीं ॥ १३ । और फिर यह परमेश्वर का दान है कि सब मनुष्य खाएं पीएं और अपने अपने सब परिश्रम में सुख मानें ॥ १४ । मैं ने यह भी जान लिया कि जो कुछ परमेश्वर करे सो सदा लों ठहरेगा न तो उस में कुछ बढ़ाया जाता है न कुछ घटाया जाता और परमेश्वर इस लिये ऐसा करता है कि लोग उस का भय मानें ॥ १५ । जो हुआ सो उस से पहिले भी हो चुका था और जो होनेहारा है सो हो भी चुका है और परमेश्वर बीती[1] हुई बात को पूछता है ॥

१६ । फिर मैं ने धरती पर[2] क्या देखा कि न्याय के स्थान में दुष्टता होती है और धर्म्म के स्थान में भी दुष्टता होती है ॥ १७ । मैं ने मन में कहा कि परमेश्वर धर्म्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा क्योंकि उस के यहां एक एक विषय और एक एक काम का समय है ॥ १८ । मैं ने मन में कहा कि यह तो मनुष्यों के कारण इस लिये होता है कि परमेश्वर उन को जांचे और वे देख सकें कि हम पशु के समान हैं ॥ १९ । क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है दोनों की वही दशा होती है जैसे यह मरता वैसे ही वह भी मरता है और सभों का एक सा प्राण है और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं क्योंकि सब कुछ व्यर्थ ही है ॥ २० । सब एक स्थान में जाते हैं सब मिट्टी से बने और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं ॥ २१ । मनुष्यों का प्राण क्या ऊपर की ओर चढ़ता और पशुओं का प्राण क्या नीचे की ओर जाकर मिट्टी में मिल जाता है यह कौन जानता है ॥ २२ । सो मैं ने देखा कि इस से अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य अपने कामों में आनन्दित रहे क्योंकि उस का भाग यही है और उस के पीछे होनेहारी बातों के देखने के लिये कौन उस को लौटा ले आए ॥

(१) मूल में. हांक दिई । (२) मूल में. सूरज के नीचे ।

४. तब मैं ने फिरकर वह सब अन्धेर देखा जो धरती पर[1] किया जाता है और क्या देखा कि अन्धेर सहनेहारों के आंसू बह रहे हैं और उन को कोई शांति देनेहारा नहीं और अन्धेर करनेहारों के तो शक्ति है पर उन को कोई शांति देनेहारा नहीं ॥ २ । इस लिये मैं ने मरे हुओं को जो मर चुके हैं उन जीवतों से जो अब लों जीते हैं अधिक सराहा ॥ ३ । वरन उन दोनों से अधिक सुभागी वह है जो अब लों हुआ ही नहीं क्योंकि उस ने ये बुरे काम नहीं देखे जो धरती पर[1] होते हैं ॥

४ । तब मैं ने सब परिश्रम और सब सफल काम देखा और क्या देखा कि इस के कारण लोग एक दूसरे से जलते हैं यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना

(१) मूल में सूरज के नीचे ।

है॥ ५। मूर्ख छाती पर हाथ रक्खे रहता[1] और अपना मांस खाता है॥ ६। चैन के साथ एक मुट्ठी भर परिश्रम करने और वायु के पकड़ने के साथ दो मुट्ठी भर से अच्छा है॥

७। तब मैं ने पलटकर धरती पर[2] यह भी व्यर्थ बात देखी॥ ८। कोई अकेला रहता और उस का कोई नहीं है न उस के बेटा है न भाई है तौभी उस के परिश्रम का अन्त नहीं होता और न उस की आंखें धन से सन्तुष्ट होती हैं यह कहता है कि मैं किस के लिये परिश्रम करता और अपने जीव को सुखरहित रखता हूं यह भी व्यर्थ और निरा दुःखभरा काम है॥ ९। एक से दो अच्छे हैं क्योंकि उन के परिश्रम का अच्छा फल मिलता है॥ १०। क्योंकि यदि उन में से एक गिरे तो दूसरा उस को उठाएगा पर हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उस का कोई उठानेहारा न होए॥ ११। फिर यदि दो जन एक संग सोएं तो वे गर्म रहेंगे पर कोई अकेला क्योंकर गर्म रह सके॥ १२। और कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो पर दो उस का साम्हना कर सकेंगे और जो डोरी तीन तागे से बटी हो सो जल्दी न टूटेगी॥

१३। बुद्धिमान् जवान दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से जो फिर उपदेश ग्रहण न करे कहीं उत्तम है॥ १४। क्योंकि यद्यपि उस के राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ तौभी वह बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ॥ १५। मैं ने सब जीवतों को जो धरती पर[2] चलते फिरते हैं देखा कि वे उस दूसरे अर्थात् उस जवान के संग हो लिये हैं जो पहिले के स्थान में खड़ा हुआ॥ १६। अनगिनित थे वे सब लोग जिन पर वह प्रधान हुआ था तौभी पीछे होनेहारे लोग उस के कारण आनन्दित न होंगे निःसंदेह यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

५. जब तू परमेश्वर के घर में जाए तब सावधानी से चलना[3] क्योंकि सुनने के लिये समीप जाना मूर्खों के बलिदान चढ़ाने से अच्छा है इस लिये कि वे नहीं जानते कि हम बुरा करते हैं॥ २। बातें करने में उतावली न करना और अपने मन से कोई बात उतावली करके परमेश्वर के साम्हने न निकालना क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में पर तू पृथिवी पर है इस लिये तेरे वचन थोड़े ही हों॥ ३। क्योंकि जैसे बहुत से धन्धों के कारण स्वप्न देखा जाता है वैसे ही बहुत सी बातों का बोलनेहारा मूर्ख ठहरता है॥ ४। जब तू परमेश्वर की कोई मन्नत माने तब उस के पूरे करने में विलम्ब न करना क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता सो जो मन्नत तू ने मानी हो उसे पूरी करना॥ ५। मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत न मानना ही अच्छा है॥ ६। कोई वचन कहकर अपना शरीर पाप में न फंसाना न ईश्वर के दूत के साम्हने कहना कि यह भूल से हुआ परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर रिसियाए और तेरा काम नाश करे॥ ७। क्योंकि बहुत स्वप्नों और व्यर्थ कामों और बहुत बातों से ऐसा होता है पर तू परमेश्वर का भय मानना॥

८। यदि तू किसी प्रान्त में निर्धनों का अन्धेर सहना और न्याय और धर्म्म का बरियाई से बिगाड़ना देखे तो इस बात से चकित न होना क्योंकि उन बड़ों से भी एक बड़ा है और उस को इन बातों की सुधि रहती है और उन दोनों से भी अधिक बड़े हैं॥ ९। फिर सब प्रकार से देश का लाभ इस से होता है कि राजा खेती की सुधि लेता है॥

१०। जो रूपैये में प्रीति रक्खे सो रूपैये से तृप्त न होगा और जो बहुत धन में प्रीति रक्खे उस को कुछ फल न होगा यह भी व्यर्थ है॥ ११। जब संपत्ति बढ़ती है तब उस के खानेहारे भी बढ़ते हैं तब उस के स्वामी को इसे छोड़ क्या लाभ हुआ कि उस ने उस संपत्ति को अपनी आंखों से देखा है॥ १२। परिश्रम करनेहारा चाहे थोड़ा खाए चाहे बहुत तौभी उस की नींद सुखदाई होती है पर धनी के धन के बढ़ने के कारण उस को नींद नहीं आती॥

१३। एक बड़े शोक की बात है जिसे मैं ने

(१) मूल में दोनों हाथ मिलाता। (२) मूल में सूरज के नीचे। (३) मूल में अपने पैर की रक्षा करना।

धरती पर[1] देखा है अर्थात् वह धन जिस के रखने से उस के स्वामी की निरी हानि होती है ॥ १४ । क्योंकि उस का धन बड़े दुःखभरे काम करते करते उड़ जाता है और यदि उस के बेटा हुआ हो तो उस के हाथ में कुछ नहीं लगता ॥ १५ । जैसा वह मा के पेट से निकला वैसा ही वह नंगा लौट जाएगा और उस के परिश्रम का कुछ भी न रहेगा जो वह अपने हाथ में ले जा सके ॥ १६ । सो यह भी बड़े शोक की बात है कि जैसा वह आया ठीक वैसा ही वह जाएगा भी फिर उस परिश्रम से क्या लाभ वह व्यर्थ ही हुआ ॥ १७ । फिर वह जीवन भर अन्धेरे में खाता और बहुत ही रिसियाता और रोगी रहता और क्रोध भी करता है ॥

१८ । सुन जो मैं ने देखा है सो यह है कि जिस परिश्रम मे कोई धरती पर[1] लगा रहे उस में वह खाए पीए और परमेश्वर के ठहराये हुए अपने जीवन भर सुख भी माने यही अच्छा और उचित है क्योंकि उस का भाग यही है ॥ १९ । बरन जिस किसी मनुष्य को परमेश्वर ने धन संपत्ति दिई हो और उसे भोगने और उस से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने की शक्ति भी दिई हो तो यह परमेश्वर का वरदान है ॥ २० । क्योंकि इस जीवन के दिन उस को बहुत स्मरण न रहेंगे और परमेश्वर उस की सुन सुनकर उस के मन को आनन्दित करता है ॥

६. एक बला है जो मैं ने धरती पर[1] देखी है वह मनुष्यों को बहुत दबाये रहती है ॥ २ । अर्थात् किसी मनुष्य को परमेश्वर धन संपत्ति और प्रतिष्ठा यहां लों देता है कि जो कुछ उस का जी चाहता है उस में से कुछ भी नहीं घटता तौभी परमेश्वर उस को उस में से खाने नहीं देता कोई बिराना ही उसे खाता है यह व्यर्थ और बड़े शोक[2] की बात है ॥ ३ । यदि कोई पुरुष सौ लड़के जन्माए और बहुत बरस जीता रहे और उस की अवस्था बढ़ जाए पर उस का जी

(१) मूल में सूरज के नीचे। (२) मूल में रोग।

सुख से तृप्त न हो और न उस की अन्तक्रिया किई जाए तो मैं कहता हूं कि ऐसे मनुष्य से मरा बच्चा ही उत्तम है ॥ ४ । क्योंकि वह व्यर्थ होता और अन्धेरे में जाता है और उस का नाम कभी लिया नहीं जाता[1] ॥ ५ । और ज्योति[2] को वह न देखने न जानने पाया सो इस को उस मनुष्य से अधिक चैन मिला ॥ ६ । बरन चाहे वह दो हजार बरस जीता रहे और कुछ सुख भोगने न पाए तो उसे क्या हुआ क्या सब के सब एक ही स्थान में नहीं जाते ॥ ७ । मनुष्य का सारा परिश्रम उस के पेट के लिये होता तो है तौभी उस का जी नहीं भरता ॥ ८ । जो बुद्धिमान् है सो मूर्ख से किस बात में बढ़कर है और दीन जन जो यह जानता है कि इस जीवन में किस प्रकार से चलना चाहिये सो भी उस से किस बात में बढ़कर है ॥ ९ । आंखों का सुफल होना जी के डांवांडोल होने से उत्तम है यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है ॥

१० । जो हुआ है उस का नाम बहुत दिनों से रक्खा गया है और यह प्रगट है कि वह आदमी[3] है और न वह उस से जो उस से अधिक शक्तिमान् है मुकद्दमा लड़ सकता है ॥ ११ । बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन के कारण जीवन और भी व्यर्थ होता है फिर मनुष्य को क्या लाभ ॥ १२ । क्योंकि मनुष्य के व्यर्थ जीवन के सब दिनों में जो वह परछांई की नाईं बिताता है उस के लिये क्या क्या अच्छा है सो कौन जानता है और मनुष्य के पीछे धरती पर[4] क्या होगा सो भी उसे कौन बता सकता है ॥

७. अच्छा नाम अनमोल तेल से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है ॥ २ । जेवनार के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है क्योंकि सब मनुष्यों के लिये अन्त में मृत्यु का शोक यही है और जो जीता है सो इसे मन लगाकर सोचे ॥ ३ । खेद हंसी से उत्तम है क्योंकि जब मुंह पर शोक छा जाता है तब मन सुधरता है ॥ ४ । बुद्धिमानों का मन शोक

(१) मूल मे छिपा है। (२) मूल में सूर्य्य। (३) अर्थात् मिट्टी का बना हुआ। (४) मूल मे सूरज के नीचे।

करनेहारों के घर की ओर लगा रहता पर मूर्खों का मन आनन्द के घर में लगा रहता है ॥ ५ । मूर्खों के गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुनना उत्तम है ॥ ६ । क्योंकि मूर्ख की हंसी हांडी के नीचे जलते हुए कांटों की चरचराहट के समान होती है यह भी व्यर्थ है ॥ ७ । निश्चय अन्धेर में पड़ने से बुद्धिमान् बावला हो जाता है और घूस लेने से बुद्धि नाश होती है ॥ ८ । किसी काम के आरम्भ से उस का अन्त उत्तम है और धीरजवन्त पुरुष गर्वी से उत्तम है ॥ ९ । अपने मन मे उतावली करके न रिसियाना क्योंकि रिस मूर्खों ही के हृदय में रहती है ॥ १० । तू न कहना कि इस का क्या कारण है कि बीते दिन इन से उत्तम थे क्योंकि यह तू बुद्धिमानी से नहीं पूछता ॥ ११ । बुद्धि बपौती के समान है वरन जीवतों[1] के लिये उस से श्रेष्ठ है ॥ १२ । क्योंकि बुद्धि आड़ का काम देती है रुपैया भी आड़ का काम देता है पर ज्ञान की यह श्रेष्ठता है कि बुद्धि से उस के रखनेहारों के जीवन की रक्षा होती है ॥ १३ । परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर जिस वस्तु को उस ने टेढ़ी किया हो उसे कौन सीधी कर सकता है ॥ १४ । सुख के दिन सुख मान और दुःख के दिन सोच क्योंकि परमेश्वर ने दोनों को एक ही संग रक्खा है जिस से मनुष्य न बूझ सके कि मेरे पीछे क्या होनेहारा है ॥

१५ । मैं ने अपने व्यर्थ दिनों में सब कुछ देखा है ऐसा धर्म्मी होता है जो धर्म्म करते हुए नाश हो जाता है और ऐसा दुष्ट है जो बुराई करते हुए दीर्घायु होता है ॥ १६ । अति धर्म्मी न बन और न अपने को अधिक बुद्धिमान् ठहरा तू क्यों अपने ही नाश का कारण हो ॥ १७ । अत्यन्त दुष्ट भी न बन और न मूर्ख हो तू असमय मे क्यों मरे ॥ १८ । यह अच्छा है कि तू इस बात को पकड़े रहे और उस बात से भी हाथ न उठाए क्योंकि जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयों से पार हो जाएगा ॥

१९ । बुद्धि ही से नगर में के दस हाकिमों की अपेक्षा बुद्धिमान् को अधिक सामर्थ प्राप्त होता है ॥ २० । निःसन्देह पृथिवी पर कोई ऐसा धर्म्मी मनुष्य नहीं जो बिना चूके भलाई करे ॥ २१ । फिर जितनी बातें कही जाएं सब पर कान न लगाना ऐसा न हो कि तू अपने दास को तुझे ही कोसते हुए सुने ॥ २२ । क्योंकि तू आप जानता है कि मैं ने भी बहुत बेर औरों को कोसा है ॥

२३ । यह सब मै ने बुद्धि से जांच लिया है मैं ने कहा कि मैं बुद्धिमान् हो जाऊंगा पर यह मुझ से दूर रहा ॥ २४ जो हुआ है सो दूर और अत्यन्त गहिरा है उस का भेद कौन पा सकता है ॥ २५ । मैं अपना मन लगाता हुआ फिरता रहा कि बुद्धि के विषय जान लूं उस का भेद जानूं और खोज निकालूं और यह भी जानूं कि दुष्टता निरी मूर्खता है और मूर्खता निरा बावलापन है ॥ २६ । और मै ने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई एक वस्तु पाई अर्थात् वह स्त्री जिस का मन फन्दे और जाल के और जिस के हाथ बन्धन के सरीखे हैं जो पुरुष परमेश्वर को भाए वही उस से बचेगा पापी उस से बझाया जाएगा ॥ २७ । सभा का उपदेशक कहता है कि मैं ने लेखा करने के लिये अलग अलग बातें मिलाकर जांचीं और यह बात निकाली, २८ । उसे भी मेरा मन ढूंढ़ रहा है पर नहीं पाया अर्थात् हजार मे से मै न पुरुष तो पाया पर उन में एक भी स्त्री नहीं पाई ॥ २९ । देखो विशेष करके मैं ने यह बात पाई तो है कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया था पर मनुष्यों ने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं ॥

८. बुद्धिमान् के तुल्य कौन है और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है मनुष्य की बुद्धि के कारण उस का मुख चमकता और उस के मुख की ढिठाई दूर हो जाती है ॥ २ । मैं कहता हूं कि परमेश्वर की किरिया के कारण राजा की आज्ञा मानना ॥ ३ । राजा के साम्हने से उतावली करके न फिरना और न बुरी बात पर बने रहना क्योंकि वह जो कुछ चाहे सो करेगा ॥ ४ । क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहता है और कौन उस से कह सके कि

(१) मूल में सूर्य्य के देखनेहारों ।

तू क्या करता है॥ ५। जो आज्ञा को मानता है सो बुरी बात में भागी नहीं होता क्योंकि बुद्धिमान् का मन समय और न्याय का भेद जानता है॥ ६। एक एक विषय का समय और न्याय तो होता है इस कारण मनुष्य की दुर्दशा उस के लिये[1] बहुत भारी है॥ ७। वह नहीं जानता कि क्या होनेहारा है और कब होगा यह उस को कौन बता सकता है॥ ८। कोई ऐसा मनुष्य नहीं जिस का वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले और न कोई मृत्यु के दिन में अधिकारी होता है और न उस लड़ाई से छुट्टी मिल सकती है और न दुष्ट लोग अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं॥ ९। यह सब कुछ मैं ने देखा और जितने काम धरती पर[2] किये जाते हैं सब को मन लगाकर विचारा कि ऐसा समय होता है कि एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य के वश में रहने से उस की हानि होती है॥

१०। और फिर मैं ने दुष्टों को मिट्टी पाते देखा अर्थात् उन की कबर तो बनी पर जिन्हों ने ठीक काम किया था सो पवित्र स्थान से निकल गये और उन का स्मरण नगर में न रहा यह भी व्यर्थ ही है॥ ११। बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से पूरी नहीं होती इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है॥ १२। चाहे पापी सौ बार पाप करे और अपने दिन भी बढ़ाए तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते और अपने तईं उस के सम्मुख जानकर भय मानते हैं उन का तो भला ही होगा॥ १३। पर दुष्ट का भला नहीं होने का और उस की जीवनरूपी छाया लम्बी होने न पाएगी क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता॥ १४। एक व्यर्थ बात पृथिवी पर होती है अर्थात् ऐसे धर्म्मी हैं जिन की दुष्टों के काम के योग्य दशा होती है और ऐसे दुष्ट भी हैं जिन की धर्म्मियों के काम के योग्य दशा होती है सो मैं ने कहा कि यह भी व्यर्थ ही है॥ १५। तब मैं ने आनन्द को सराहा इस लिये कि धरती पर[2] मनुष्य के लिये खाने पीने और आनन्द करने को छोड़ कुछ अच्छा नहीं क्योंकि उस के जीवन भर में जो परमेश्वर उस के लिये धरती पर[1] ठहराए उस के परिश्रम में यही उस के संग बना रहेगा॥

१६। जब मैं ने बुद्धि जानने और सारे दुःखभरे काम देखने के लिये जो पृथिवी पर किये जाते हैं अपना मन लगाया कि कोई कोई मनुष्य रात दिन जागते रहते हैं, १७। तब मैं ने परमेश्वर का सारा काम देखा कि जो काम धरती पर[1] किया जाता है उस की थाह मनुष्य नहीं पा सकता चाहे मनुष्य उस की खोज में परिश्रम भी करे तौभी उस को न पाएगा वरन बुद्धिमान् भी कहे कि मैं उसे समझूंगा तौभी वह उस की थाह न पा सकेगा॥

९. १। क्योंकि मैं ने यह सब कुछ मन लगाकर विचारा कि इन सब बातों का भेद पाऊं अर्थात् यह कि धर्म्मी और बुद्धिमान् लोग और उन के काम परमेश्वर के हाथ में हैं चाहे प्रेम हो चाहे बैर मनुष्य नहीं जानता उन के आगे सब प्रकार की बातें हैं॥ २। सब घटनाएं सब को बराबर होती हैं धर्म्मी दुष्ट भले शुद्ध अशुद्ध यज्ञ करने और न करनेहारे सभों की एक सी दशा होती है जैसी भले मनुष्य की दशा वैसा ही पापी की दशा जैसी किरिया खानेहारे की दशा वैसा ही वह है जो किरिया खाते डरे॥ ३। जो कुछ धरती पर[1] किया जाता है उस में यह एक दोष है कि सब लोगों की एक सी दशा होती है और फिर मनुष्यों के मन में बुराई भरी हुई है और उन के जीते जी उन के मन में बावलापन रहता है और पीछे वे मरे हुओं में जा मिलते हैं॥ ४। क्योंकि उस को जो सब जीवतों में मिला हुआ हो उस को भरोसा है वरन जीवता कुत्ता तो मरे हुए सिंह से बढ़कर है॥ ५। क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि हम मरेंगे पर मरे हुए कुछ भी नहीं जानते और न उन को बदला मिल सकता है क्योंकि उन का स्मरण मिट गया है॥ ६। उन का प्रेम और उन का बैर और उन की डाह अब नाश हो चुके और जो कुछ धरती पर[1] किया जाता है उस में उन का फिर सदा लों कोई भाग न होगा॥

(१) मूल में ऊपर। (२) मूल में सूरज के नीचे।

(१) मूल में सूरज के नीचे।

७। चल अपनी रोटी आनन्द से खाया कर और अपना दाखमधु मन से सुख मानकर पिया कर क्योंकि परमेश्वर तेरे कामों से प्रसन्न हो चुका है॥ ८। तेरे वस्त्र सदा उजले रहें और तेरे सिर पर तेल की घटी न हो॥ ९। अपने जीवन के सारे व्यर्थ दिन जो उस ने धरती पर[1] तेरे लिये ठहराये हैं अपनी प्यारी स्त्री के संग अपने व्यर्थ जीवन के दिन बिताना क्योंकि तेरे जीवन में और तेरे परिश्रम से जो तू धरती पर[1] करता है तेरा यही भाग है॥ १०। जो काम तुझे मिले सो अपनी शक्ति भर करना क्योंकि अधोलोक में जहां तू जानेवाला है न काम न युक्ति न ज्ञान न बुद्धि चलती है॥

११। मैं ने फिर कर धरती पर[1] देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेहारे और न युद्ध में शूरवीर जीतते हैं फिर न तो बुद्धिमान् लोग रोटी पाते हैं और न समझवाले धन और न प्रवीणों पर अनुग्रह होता है ये सब समय और संयोग के वश में हैं॥ १२। क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता जैसे मछलियां दुखदाई जाल में बझतीं और चिड़ियाएं फंदे में फंसती हैं वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है फंस जाते हैं॥

१३। मैं ने धरती पर[1] इस प्रकार की भी बुद्धि देखी है और वह मुझे बड़ी जान पड़ी॥ १४। अर्थात् एक छोटा सा नगर था और उस में थोड़े ही लोग थे और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया और उस के विरुद्ध बड़े बड़े कोट बनाये॥ १५। और उस में एक दरिद्र बुद्धिमान् पुरुष पाया गया और उस ने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया पर किसी ने उस दरिद्र पुरुष का स्मरण न रक्खा॥ १६। तब मैं ने कहा बुद्धि पराक्रम से उत्तम है तौभी उस दरिद्र की बुद्धि तुच्छ किई जाती है और उस के वचन कोई नहीं सुनता॥

१७। बुद्धिमानों के वचन जो धीमे धीमे कहे जाते हैं सो मूर्खों के बीच प्रभुता करनेहारे के चिल्ला चिल्लाकर कहने से अधिक सुने जाते हैं॥ १८। बुद्धि लड़ाई के हथियारों से उत्तम है और एक पापी से बहुत भलाई नाश होती है॥

१०.

१। मरी हुई मक्खियों के कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा से भारी होती है॥ २। बुद्धिमान् का मन दहिनी ओर रहता पर मूर्ख का मन बाईं ओर रहता है॥ ३। बरन जब मूर्ख मार्ग पर चलता है तब उस का मन काम में नहीं आता और वह मानो सब से कहता है कि मैं मूर्ख हूं॥ ४। यदि हाकिम का कोप तुझ पर भड़के तो अपना स्थान न छोड़ना क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रुकते हैं॥ ५। एक बुराई है जो मैं ने धरती पर[1] देखी है सो हाकिम की भूल से होती हुई जान पड़ती है॥ ६। अर्थात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के स्थानों में ठहराये जाते हैं और धनवान लोग नीचे बैठते हैं॥ ७। मैं ने दासों को घोड़ों पर चढ़े और रईसों को दासों की नाईं भूमि पर चलते हुए देखा है॥ ८। जो गड़हा खोदे सो उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़े उस को सर्प डसेगा॥ ९। जो पत्थर उठाए सो उन से घायल होगा और जो लकड़ी काटे उसी से कटने का डर होगा॥ १०। यदि लोहा भोथा हो और मनुष्य उस की धार को पैनी न करे तब तो अधिक बल करना पड़ेगा पर काम चलाने के लिये बुद्धि से लाभ होता है॥ ११। यदि मंत्र न होने के कारण सर्प डसे तो पीछे मंत्र पढ़नेहारे को कुछ लाभ नहीं॥ १२। बुद्धिमान् के वचनों के कारण अनुग्रह होता है पर मूर्ख अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं॥ १३। उस की बात आरंभ में मूर्खता की और अन्त में दुखदाई बावलेपन की होती है॥ १४। मूर्ख बहुत बातें बोलता है तौभी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा और मनुष्य के पीछे क्या होनेवाला है सो कौन उसे बता सकता है॥ १५। मूर्खों के परिश्रम से थकावट ही होती है वह नहीं जानता कि नगर को कैसे जाए॥ १६। हे देश तुझ पर

(१) मूल में सूरज के नीचे। (२) मूल में तेरे हाथ को करने के लिये।

(१) मूल में सूरज के नीचे।

हाय कि तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रातःकाल को भोजन करते हैं॥ १७। हे देश तू धन्य है कि तेरा राजा कुलीन का पुत्र है और तेरे हाकिम समय पर भोजन करते हैं और यह भी मतवाले होने को नहीं बरन बल बढ़ाने के लिये॥ १८। आलस्य के कारण छत की कड़ियां दब जाती हैं और हाथों की सुस्ती से घर चूता है॥ १९। भोज हंसी खुशी के लिये किया जाता और दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है और रुपैयों से सब कुछ प्राप्त होता है॥ २०। राजा को मन ही मन भी न कोसना और न धनवान को अपने शयन की कोठरी में भी कोसना क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरे वचन को ले जाएगा और कोई उड़नेहारा जन्तु उस बात को प्रगट करेगा॥

११. अपनी भोजनवस्तु जल के ऊपर डाल दे क्योंकि बहुत दिन के पीछे तू उसे फिर पाएगा॥ २। सात बरन आठ जनों को भी भाग दे क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथिवी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी॥ ३। जब बादल जल भर लाते हैं तब उस को भूमि पर उण्डेल देते हैं और वृक्ष चाहे दक्खिन की ओर गिरे चाहे उत्तर की ओर तौभी जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा वहीं पड़ा रहेगा॥ ४। जो वायु की सुधि रक्खेगा सो बीज बोने न पाएगा और जो बादलों को देखता रहेगा सो लवने न पाएगा॥ ५। जैसे तू नहीं जानता कि वायु के चलने का क्या मार्ग होगा और गर्भवती के पेट में हड्डियां किस रीति होती हैं वैसे ही परमेश्वर जो सब कुछ करता है उस के काम की रीति तू नहीं जानता॥ ६। भोर को अपना बीज बो और सांझ को भी अपना हाथ न रोक क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सुफल होगा चाहे यह चाहे वह या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे॥ ७। उजियाला मनभावना होता है और धूप के देखने से आंखों को सुख होता है॥ ८। सो यदि मनुष्य बहुत बरस जीता रहे तो उन सभों में आनन्दित तो रहे पर अन्धियारे के दिनों को भी सुधि रक्खे क्योंकि वे बहुत होंगे जो कुछ होनेहारा है सो व्यर्थ है॥

९। हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह और अपनी मनमानी चाल चल और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल पर यह जान रख कि इन सारी बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा॥ १०। सो अपने मन से खेद और अपनी देह से दुःख दूर कर क्योंकि जवानी और चटक व्यर्थ हैं॥

१२. १। अपनी जवानी के दिनों में अपने सिरजनहार को भी स्मरण रख कि अब लों विपत्ति के दिन और वे बरस नहीं आये जिन में तू कहेगा कि मेरा मन इन में नहीं लगता॥ २। तब सूर्य्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाएंगे और वर्षा होने के पीछे बादल फिर घिर आएंगे॥ ३। उस समय घर के पहरुए कांपेंगे और बलवन्त झुकेंगे और पिसनहारियां थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी और झरोखों में से देखनेहारियां अंधी हो जाएंगी॥ ४। और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा और तड़के चिड़िया बोलते ही नींद खुलेगी[1] और सब गानेहारियों का शब्द धीमा हो जाएगा[2]॥ ५। फिर जो ऊंचा हो उस से भय खाया जाएगा और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी जाएंगी और बादाम का पेड़ फूलेगा और टिड्डी भी भारी लगेगी और भूख बढ़ानेहारा फल फिर काम न देगा क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जानेहारा होगा और रोने पीटनेहारे सड़क सड़क फिरेंगे॥ ६। उस समय चांदी का तार दो टूक होगा और सोने का कटोरा टूटेगा और सोते के पास घड़ा फूटेगा और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा॥ ७। तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगा॥ ८। सभा का उपदेशक कहता है कि सब व्यर्थ ही व्यर्थ सब कुछ व्यर्थ है॥

९। और फिर सभा का उपदेशक जो बुद्धिमान् था

(१) मूल में नींद से उठा जाएगा। (२) मूल में, गाने बजाने की सब बेटियां नीची किई जाएंगी।

इस लिये वह प्रजा को ज्ञान सिखाता रहा और कान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत से नीति-वचन क्रम से रखता था॥ १०। सभा का उपदेशक मनभावनी बातें खोजकर निकालता था और ये बातें सच्ची हैं जो सीधाई से लिखी गई थीं॥

११। बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं और सभाओं के प्रधानों की बातें गाड़ी हुई कीलों के सरीखी हैं सो एक ही चरवाहे की ओर से मिलती हैं॥ १२। और फिर हे मेरे पुत्र चौकसी इन्हीं से सीख बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता और बहुत पाठ करने से देह थक जाती है॥

१३। सब कुछ सुना गया अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उस की आज्ञाओं को पाल क्योंकि सब मनुष्यों का काम यही है॥ १४। और परमेश्वर सब कामों का और सब गुप्त बातों का चाहे वे भली हों चाहे बुरी न्याय करेगा॥

श्रेष्ठगीत।

---

१. श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है॥

२। तू अपने मुंह से मुझे चूम
क्योंकि तेरा प्यार दाखमधु से उत्तम है॥
३। तेरे भांति भांति के तेल का सुगन्ध उत्तम है
तेरा नाम उंडाया हुआ तेल सा है
इस कारण कुमारियां तुझ से प्रेम रखती हैं॥
४। मुझे खींच हम तेरे पीछे दौड़ेंगी
राजा मुझे अन्तःपुर में ले आया है
हम तेरे कारण मगन और आनन्दित होंगी
हम दाखमधु से अधिक तेरे प्यार की चर्चा करेंगी
सच्चे मन से वे तुझ से प्रेम रखती हैं॥
५। हे यरूशलेम् की स्त्रियो
मैं काली तो हूं पर सुन्दर हूं
केदार् के तंबुओं के सरीखी
सुलैमान के पटों के समान हूं॥
६। इस कारण मुझ को न निहारना कि मैं काली सी हूं
मैं धूप से झुलस गई[१]
मेरे सगे भाई मुझ पर क्रोधित हुए
उन्हों ने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन ठहराया
अपनी निज दाख की बारी की रखवाली मैं करने न पाई॥
७। हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता
कि तू अपनी भेड़बकरियां कहां चराता और दोपहर को कहां बैठाता है
मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़बकरियों के पास क्यों घूंघट काढ़े हुए भटकनेहारी सी होऊं॥
८। हे स्त्रियों में सुन्दरी यदि तू यह न जानती हो
तो भेड़बकरियों के खुरों के चिन्हों पर चल
और चरवाहों के घरों के पास अपनी बकरियों की बच्चियां चरा॥
९। हे मेरी प्यारी मैं ने तुझे
फ़िरौन के रथों में जुते हुए घोड़ों से उपमा दिई है॥
१०। तेरे गाल बन्दी के बीच

(१) मूल में सूर्य्य ने मुझे जलाया।

और तेरा गला रत्नों की कण्ठी के कारण क्या ही
सुन्दर लगता है ॥
११। हम तेरे लिये चांदी के बोर मिलाये हुए
सोने की लड़ियां बनवाएंगे ॥
१२। राजा अपनी मेज के पास बैठा हुआ था
कि मेरी जटामासी का सुगन्ध फैलने लगा ॥
१३। मेरा प्यारा मेरे लिये गन्धरस की पोटली
ठहरा है
जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहे ॥
१४। मेरा प्यारा मेरे लिये मेंहदी के फूलों का
ऐसा गुच्छा है
जो एनगदी की दाख की बारियों में
होता ॥
१५। तू सुन्दर है हे मेरी प्यारी तू सुन्दर है
तेरी आंखें कबूतरी की सी हैं ॥
१६। हे मेरे प्यारे तू सुन्दर और मनभावना है
और हमारा बिछौना हरा है ॥
१७। देवदारु हमारे घर की कड़ियां
और सनौवर हमारी छत के बरगे है ॥

२. मैं शारोन् देश का केसर

और तराइयों में का सोसन फूल हूं ॥
२। जैसे सोसन फूल कटीले पेड़ों के बीच
वैसे मेरी प्यारी और युवतियों के बीच है ॥
३। जैसे सेब का वृक्ष जंगली वृक्षों के बीच
वैसे मेरा प्यारा और जवानों के बीच है
मैं उस की छाया में हर्षित होकर बैठ गई
और उस का फल मुझे खाने में मीठा लगा ॥
४। वह मुझे दाखमधु पीने के घर में ले आया
और उस का जो झण्डा मेरे ऊपर फहराता था
सो प्रेम था ॥
५। मुझे सूखी दाखों से संभालो सेब खिलाकर
बल दो
क्योंकि मैं प्रेम से विवश[1] हूं ॥
६। उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे है
और वह अपने दहिने हाथ से मुझे आलिंगन
कर रहा है ॥
७। हे यरूशलेम् की स्त्रियो मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिणियों की सोंह
धराकर कहती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
८। मेरे प्यारे का शब्द सुन पड़ता है
देखो वह पहाड़ों पर कूदता और पहाड़ियों पर
फान्दता हुआ आता है ॥
९। मेरा प्यारा चिकारे वा जवान हरिन के
समान है
देखो वह हमारी भीत के पीछे खड़ा
और खिड़कियों से झांकता
और झंझरी से ताकता है ॥
१०। मेरा प्यारा मुझ से कह रहा है
हे मेरी प्यारी हे मेरी सुन्दरी उठकर चली आ ॥
११। क्योंकि देख कि जाड़ा जाता रहा
मेंह छूट गया और जाता रहा है ॥
१२। पृथिवी पर फूल दिखाई देते
चिड़ियों के बोलने का समय आ पहुंचा
और हमारे देश में पिण्डुक का शब्द सुनाई
देता है ॥
१३। अंजीर पकने लगे
और दाखलताएं फूलतीं
और सुगन्ध दे रही हैं
हे मेरी प्यारी हे मेरी सुन्दरी उठकर चली आ ॥
१४। हे मेरी कबूतरी हे ढांग की दरारों
और चढ़ाई की झाड़ी में रहनेहारी
अपना मुख मुझे दिखा
अपना बोल मुझे सुना
क्योंकि तेरा बोल मीठा और तेरा मुख सुन्दर है ॥
१५। जो छोटी लोमड़ियां[1] दाख की बारियों
को बिगाड़ती हैं उन्हें पकड़ लो
क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं ॥
१६। मेरा प्यारा मेरा है और मैं उस की हूं

(१) मूल में बीमार ।

(१) मूल में लोमड़िया छोटी लोमड़िया ।

वह अपनी भेड़बकरियां सोसन फूलों के बीच
चराता है ॥
१७। जब लों दिन का ठण्ढा समय न आए और
छाया लम्बी होते होते मिट न जाए
तब लों हे मेरे प्यारे फिर और उस चिकारे
वा जवान हरिन के समान बन
जो बेतेर्[1] के पहाड़ों पर फिरता हो ॥

३. रात के समय में अपने पलंग पर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढ़ती रही
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही पर पाया नहीं ॥
२। मैं ने कहा मैं उठकर नगर में
और सड़कों और चौकों में घूमकर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढूंगी
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही पर पाया नहीं ॥
३। जो पहरुए नगर में घूमते हैं सो मुझे मिले
मैं ने उन से पूछा क्या तुम ने मेरे प्राणप्रिय को
देखा है ॥
४। मुझ को उन के पास से बढ़े हुए थोड़ी ही
बेर हुई
कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिला
मैं ने उस को पकड़ लिया
और जब लों उसे अपनी माता के घर
अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में न ले आई
तब लों उस को जाने न दिया ॥
५। हे यरूशलेम् की स्त्रियो मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिणियों की सोंह
धराकर कहती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
६। यह क्या है जो धूएं के खंभों के सरीखा
गन्धरस और लोबान से सुगन्धित
और व्योपारी की सब भांति की बुकनी लगाये हुए
जंगल से निकला आता है ॥
७। देखो यह सुलैमान की पालकी है
उस की चारों ओर साठ वीर चल रहे हैं
जो इस्राएल् के शूरवीरों में से हैं ॥
८। वे सब के सब तलवार बांधनेहारे और युद्ध
की विद्या सीखे हैं
एक एक पुरुष रात को डर के मारे
जांघ पर तलवार लटकाये हुए रहता है ॥
९। सुलैमान राजा ने एक महाडोल
लबानोन् के काठ का बनवा लिया है ॥
१०। उस ने उस के खंभे चान्दी के
उस का सिरहाना सोने का और गद्दी अर्गवानी
रंग की बनवाई
और उस के बीच का स्थान
यरूशलेम् की स्त्रियों की ओर से प्रेम से जड़ा
गया है ॥
११। हे सिय्योन् की स्त्रियो निकलकर सुलैमान
राजा पर दृष्टि करो
देखो वह वही मुकुट पहिने हुए है
जो उस की माता ने उस के विवाह के दिन
और उस के मन के आनन्द के दिन उस के
सिर पर रक्खा है ॥

४. हे मेरी प्यारी तू सुन्दर है तू सुन्दर है

तेरी आंखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों की
सी दिखाई देती हैं
तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं
जो गिलाद् पहाड़ के ढलान पर लेटी हुई देख
पड़ती हों ॥
२। तेरे दान्त उन कन कतरी हुई भेड़ियों के
झुण्ड के समान हैं
जो नहाकर ऊपर आती हों
और जुड़वां जुड़वां होती हैं
और उन में से किसी का साथी नहीं जाता रहा ॥
३। तेरे होंठ लाही रंग की डोरी के
समान हैं
और तेरा मुंह सजीला है
तेरी कनपटियां तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक सी देख पड़ती हैं ॥

(१) अर्थात् अलगाई ।

४। तेरा गला दाऊद के गुम्मट के समान है
जो कुर्सी पर कुर्सी बना हुआ हो
और जिस पर हजार ढालें टंगी हुई हों
सब ढालें शूरवीरों की हैं ॥
५। तेरी दोनों छातियां मृगी के दो जुड़वे बच्चों के सरीखे हैं
जो सोसन फूलों के बीच चरते हों ॥
६। जब लों दिन ठण्डा न हो और छाया लम्बी होते होते मिट न जाए
तब लों मैं गन्धरस के पहाड़
और लोबान की पहाड़ी पर चला जाऊंगा ॥
७। हे मेरी प्यारी तू सर्वाङ्ग सुन्दरी है
तुझ में कुछ पप नहीं ॥

८। हे दुल्हिन तू मेरे संग लबानोन् से
मेरे संग लबानोन् से चल
तू अमाना की चोटी पर से
शनीर् और हेर्मोन् की चोटी पर से
सिंहों की गुफाओं से
चीतों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर ॥
९। हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन तू ने मेरा मन मोह लिया
तू ने अपनी आंखों की एक ही चितवन से
और अपने गले की एक ही कण्ठी से मेरा हृदय मोह लिया है ॥
१०। हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन तेरा प्यार क्या ही मनोहर है
तेरा प्यार दाखमधु से क्या ही उत्तम है
और तेरे तेलों का सुगन्ध सब प्रकार के मसालों के गन्ध से क्या ही अच्छा है ॥
११। हे दुल्हिन तेरे होंठों से मधु टपकता है
तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध रहते हैं
और तेरे वस्त्रों का सुगन्ध लबानोन् का सा है ॥
१२। मेरी बहिन मेरी दुल्हिन किवाड़ लगाई हुई बारी
किवाड़ बन्द किया हुआ सोता और छाप लगाया हुआ झरना है ॥

१३। तेरे अंकुर उत्तम उत्तम फलवाली अनार की बारी से हैं
मेंहदी और जटामासी,
१४। जटामासी और केसर
लोबान के सब भांति के पेड़ों समेत बच और दारचीनी
गन्धरस अगर आदि सब मुख्य मुख्य सुगन्धद्रव्य होते हैं ॥
१५। तू बारियों का सोता
फूटते हुए जल का कूआ
और लबानोन् से बहती हुई धाराएं है ॥

१६। हे उत्तरहिया जाग और हे दक्खिनहिया चली आ
मेरी बारी पर बहो जिस से उस का सुगन्ध फैले
मेरा प्यारा अपनी बारी में आकर
अपने उत्तम उत्तम फल खा ले ॥

५. हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन मैं अपनी बारी में आया हूं
मैं ने अपना गन्धरस और बलसान चुन लिया
मैं ने मधु समेत छत्ता खा लिया
मैं ने दूध और दाखमधु पी लिया
हे संगियो तुम भी खाओ
हे प्यारो पियो मनमाना पियो ॥

२। मैं सोती हुई तो थी पर मेरा मन जागता था
मेरे प्यारे का बोल सुन पड़ा वह खटखटाता है
हे मेरी बहिन हे मेरी प्यारी हे मेरी कबूतरी हे मेरी निर्मल मेरे लिये द्वार खोल दे
क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है
और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दों से भीगी हैं ॥
३। मैं ने अपनी कुर्ती उतार डाली मैं क्योंकर उसे फिर पहिनूं
मैं ने अपने पांव धोये मैं क्योंकर उन्हें फिर मैला करूं ॥

४। मेरे प्यारे ने अपना हाथ किवाड़ के छेद से
 भीतर डाल दिया
तब मेरा हृदय उस के कारण घबराने लगा ॥
५। मैं अपने प्यारे के लिये द्वार खोलने को उठी
और मेरे हाथों से गंधरस
और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गंधरस
बेण्ढे की मूठों पर टपकता था ॥
६। मैं ने अपने प्यारे के लिये द्वार तो खोला
पर मेरा प्यारा फिरके चला गया था
जब वह बोलता था तब मेरा जी ठिकाने न रहा
मैं ने उस को ढूंढ़ा पर न पाया
मैं ने उस को पुकारा पर वह न बोला ॥
७। जो पहरुए नगर में घूमते हैं सो मुझ को मिले
उन्हों ने मुझ को पीटकर घायल किया
शहरपनाह के पहरुओं ने मेरी चद्दर छीन
 लिई ॥
८। हे यरूशलेम् की स्त्रियो मैं तुम को सोंह
 धराकर कहती हूं कि यदि मेरा प्यारा तुम
 को मिले
तो उस को बताओ कि मैं प्रेम से विवश हूं ॥

९। हे स्त्रियों में सुन्दरी
तेरा प्यारा और प्यारों से किस बात में उत्तम है
तेरा प्यारा और प्यारों से किस बात में उत्तम है
कि तू हम को ऐसी सोंह धराती है ॥

१०। मेरा प्यारा गोरा और लाल सा है
वह दस हजार में उत्तम है ॥
११। उस का सिर चोखा कुन्दन सा है
उस की लटें लटकी हुई और काले कौवे की
 नाईं काली हैं ॥
१२। उस की आंखें नदीतीर के कबूतरों के
 समान हैं
वे दूध से धोई हुई और अपने गोलकों में ठीक
 जड़ी हुई हैं ॥
१३। उस के गाल बलसान की कियारियों
वा सुगंधी पेड़ लगाये हुए टीलों के समान हैं
उस के होंठ सोसन फूल हैं जिन से टपकता
 हुआ गंधरस टपकता है ॥
१४। उस के हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने के
 किवाड़ हैं
उस का पेट नीलमों से जड़े हुए हाथीदांत
 का है ॥
१५। उस की टांगें कुन्दन की कुर्सियों पर
 बैठाये हुए संगमर्मर के खंभे हैं
वह देखने में लबानोन् और देवदारु वृक्षों सा
 उत्तम है ॥
१६। उस का बोल[१] अति मधुर है वह सर्वाङ्ग
 मनभावना है
हे यरूशलेम् की स्त्रियो
मेरा प्यारा और सखा ऐसा ही है ॥

६. हे स्त्रियों में सुन्दरी
तेरा प्यारा कहां गया
तेरा प्यारा कहां चला गया
हम तेरे संग होकर उस को ढूंढ़ें ॥
२। मेरा प्यारा अपनी बारी अर्थात् बलसान
 की कियारियों में उतर गया
कि बारी में अपनी भेड़बकरियां चराए और
 सोसन फूल तोड़े ॥
३। मैं अपने प्यारे की हूं और वह मेरा है
वह अपनी भेड़ बकरियां सोसन फूलों के बीच
 चराता है ॥
४। हे मेरी प्यारी तू तिर्सा की नाईं सुन्दरी
यरूशलेम् के समान मनभावनी
और झण्डे फहराती हुई सेना की सरीखी
 भयंकर है ॥
५। अपनी आंखें मेरी ओर से फेर ले
क्योंकि मैं उन से हार गया हूं
तेरे बाल ऐसी बकरियों के झुण्ड के समान हैं
जो गिलाद् के ढलान पर लेटी हुई देख पड़ती
 हों ॥
६। तेरे दांत ऐसी भेड़ों के झुण्ड के समान हैं

(१) मूल में तालू ।

जो नहाकर ऊपर आती हों
और जुड़वां जुड़वां होती हैं
और उन में से किसी का साथी नहीं जाता रहा ॥
७। तेरी कनपटियां तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक सी देख पड़ती हैं ॥
८। साठ रानियां और अस्सी सुरैतिनें
और असंख्य कुमारियां हैं ॥
९। मेरी कबूतरी मेरी विमल एक ही है
वह अपनी माता की एकलौती है
वह अपनी जननी की दुलारी है
स्त्रियों ने उस को देखकर धन्य माना
रानियों और सुरैतिनों ने देखकर उस की प्रशंसा किई ॥
१०। यह कौन है जो पह की नाईं दिखाई देती
वह चंद्रमा के समान सुन्दर
सूर्य्य के सरीखे निर्मल
और भण्डे फहराती हुई सेना की रीति भयंकर देख पड़ती है ॥
११। मैं अखरोट की बारी में उतर गई
कि नाले में के अंकुर देखूं
और देखूं कि दाखलता में कली लगी
और अनारों में के फूल खिल गये हैं कि नहीं ॥
१२। तब अपने अनजाने में मन ही मन
अपने कुलीन जातिभाइयों के रथ में बैठाई गई ॥
१३। लौट आ लौट आ
हे शूलम्मिन[1] लौट आ लौट आ कि हम तुझ पर दृष्टि करें
शूलम्मिन[1] में तुम किस बात पर दृष्टि करोगी
माना महनैम् के नाच पर ॥

७. हे कुलीन पुरुष की पुत्री तेरे पांव पनहियों में क्या ही सुन्दर हैं
तेरी जांघों की गोलाई ऐसे अलंकारों के समान है

(१) अर्थात् शान्तिवाली.

जो कारीगर के बनाये हुए हों ॥
२। तेरी नाभि मानो गोल कटोरा है
जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो
तेरा पेट सोसन फूलों से घिरे हुए
गेहूं के ढेर के समान है ॥
३। तेरी दोनों छातियां
मृगी के दो जुड़ोड़े बच्चों के समान हैं ॥
४। तेरा गला हाथीदांत का गुम्मट है
तेरी आंखें हेश्बोन् के उन कुण्डों के समान हैं
जो बत्रब्बीम् के फाटक के पास हैं
तेरी नाक लबानोन् के उस गुम्मट के सरीखी है
जिस का मुंह दमिश्क् की ओर है ॥
५। तेरा सिर कर्म्मेल् के समान है
और तेरे सिर के लटके हुए बाल अर्गवानी रंग के कपड़े के समान हैं
राजा उन लटों में बंधुआ हो गया है ॥
६। हे प्रिये[1] तू सुख के लिये
कैसी सुन्दर और कैसी मनोहर है ॥
७। तेरी डील खजूर की सी
और तेरी छातियां दाख के गुच्छों सी देख पड़ती हैं ॥
८। मैं ने कहा मैं खजूर पर चढ़कर
उस की डालियों को पकड़ूंगा
तब तेरी छातियां दाख के गुच्छों के
और तेरी नाक का सुगंध सेवों के समान ठहरीं,
९। और तेरा बोल उत्तम दाखमधु से मेल खाता हो
जो मेरे प्यारे[2] के लिये ठीक उण्डेला जाए
और सोये हुओं के होंठों में भी धीरे धीरे बहे[3] ॥
१०। मैं अपने प्यारे की हूं
और उस की लालसा मेरी ओर है ॥
११। हे मेरे प्यारे चल हम मैदान में निकल जाएं
और गांवों में रात बिताएं ॥
१२। हम सवेरे उठकर दाख की बारियों में चलें

(१) मूल में हे प्रेम। (२) मूल में तालू। (३) मूल में चले।

हम देखें कि दाखलता में कली लगी और फूल खिले
और अनार फूले हैं वा नहीं
वहां मैं तुझ को अपना प्यार दिखाऊंगी[1] ॥
१३। दोदाफलों का सुगंध आ रहा है
और हमारे द्वारों पर क्या नये क्या पुराने सब भांति के उत्तम फल हैं
जो मैं ने हे मेरे प्यारे तेरे लिये रख छोड़े हैं ॥

८. भला होता कि तू मेरे भाई के समान होता जिस ने मेरी माता की छातियों को पिया
तो मैं तुझे बाहर भी पाकर चूमती
और कोई मेरी निन्दा न करता ॥
२। मैं तुझ को अपनी माता के घर ले चलती
और तू मुझ को सिखाता
मैं तुझे मसाला मिला हुआ दाखमधु
और अपने अनारों का रस पिलाती,
३। उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता
और वह अपने दहिने हाथ से मुझे आलिंगन करता ॥
४। हे यरूशलेम् की स्त्रियो मैं तुम को सौंह धराती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
५। यह कौन है जो अपने प्यारे पर उठंगी हुई जंगल से चली आती है ॥
सेब के पेड़ के नीचे मैं ने तुझे जगाया
वहीं तेरी माता ने तुझे जन डाला
वहीं तेरी जननी को पीड़ें लगीं ॥
६। मुझे मुद्रा की नाईं अपने हृदय पर
मुझे मुद्रा की नाईं अपनी बांह पर रख
क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी
और जलन अधोलोक के समान निठुर है
उस की लपट आग की सी लपट
बरन याह् ही की ज्वाला है ॥
७। प्रेम तो बहुत जल से भी नहीं बुझता
और न महानदों में भी डूब सकता है
चाहे कोई अपने घर की सारी संपत्ति प्रेम की सन्ती दे
तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी ॥
८। हमारी एक छोटी बहिन है
जिस की छातियां अभी नहीं उभरीं
जिस दिन हमारी बहिन के ब्याह की बात लगे
उस दिन हम उस के लिये क्या करें ॥
९। यदि वह शहरपनाह ठहरे
तो हम उस पर चांदी का कंगूरा बनाएंगे
और यदि वह फाटक का किवाड़ ठहरे
तो हम उस पर देवदारु की लकड़ी के पटरे लगाएंगे ॥
१०। मैं तो शहरपनाह और मेरी छातियां उस के गुम्मट ठहरीं
इस लिये मैं अपने प्यारे की दृष्टि में शान्ति पानेहारी सी हो गई हूं ॥
११। बाल्हामोन् में सुलैमान की दाख की बारी हुई
उस ने वह दाख की बारी रखवालों को सौंपी
और एक एक रखवाले को उस के फलों के लिये चांदी के हजार हजार टुकड़े देने पड़े ॥
१२। मेरी निज दाख की बारी मेरे साम्हने है
हे सुलैमान हजार तो तुझी को
और उस के फल के रखवालों को दो सौ मिलेंगे ॥
१३। तू जो बारियों में रहती है
संगी लोग तेरा बोल सुनने को ध्यान दे रहे हैं
उसे मुझ को सुना ॥
१४। हे मेरे प्यारे फुर्ती कर
और सुगन्धद्रव्यों के पहाड़ों पर
चिकारे वा जवान हरिन के सरीखा बन ॥

(१) मूल में दूंगी।

यशायाह् नाम पुस्तक।

१. आमोस् के पुत्र यशायाह् का दर्शन जिस को उस ने यहूदा और यरूशलेम् के विषय में उज्जिय्याह् योताम् आहाज् और हिज़किय्याह् नाम यहूदा के राजाओं के दिनों में पाया॥

२। हे स्वर्ग सुन और हे पृथिवी कान लगा क्योंकि यहोवा कहता है कि मैं ने बालबच्चों का पालन पोषण किया और उन को बढ़ाया भी और उन्हों ने मुझ से बलवा किया है॥ ३। बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है पर इस्राएल् मुझे नहीं जानता और मेरी प्रजा सोच विचार नहीं करती॥

४। हाय यह जाति पाप से कैसी भरी है यह समाज अधर्म्म से कैसा लदा हुआ है इस वंश के लोग कैसे कुकर्म्मी हैं और ये लड़केवाले कैसे बिगड़े हुए हैं उन्हों ने यहोवा को छोड़ दिया और इस्राएल् के पवित्र को तुच्छ जाना है वे बिराने बनकर पीछे हट गये हैं॥ ५। तुम क्यों अधिक बलवा कर करके अधिक मार खाना चाहते हो तुम्हारा सिर घावों से भर गया और तुम्हारा सारा हृदय दुःख से भरा है॥ ६। नख से सिख लों कहीं कुछ आरोग्यता नहीं चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं जो न दबाये न बांधे न तेल लगाकर नरमाये गये हैं॥ ७। तुम्हारा देश उजड़ा हुआ तुम्हारे नगर फूंके हुए हैं तुम्हारे खेतों को परदेशी लोग तुम्हारे देखते ही खा रहे हैं। वह परदेशियों से नाश किये हुए देश के समान उजाड़ है॥ ८। और सिय्योन्[1] दाख की बारी में की झोंपड़ी वा ककड़ी के खेत में की छपरिया वा घिरे हुए नगर के समान अकेली खड़ी है॥ ९। यदि सेनाओं का यहोवा हमारे थोड़े से लोगों को न बचा रखता तो हम सदोम् के समान हो जाते और अमोरा के सरीखे ठहरते॥ १०। हे सदोम् के न्याइयो यहोवा का वचन सुनो हे अमोरा की प्रजा हमारे परमेश्वर की शिक्षा पर कान लगा॥ ११। यहोवा यह कहता है कि तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पोसे हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं, मैं बछड़ों वा भेड़ के बच्चों वा बकरों के लोहू से प्रसन्न नहीं होता॥ १२। तुम जो अपने मुंह मुझे दिखाने के लिये आते और मेरे आंगनों को पांव से रौंदते हो यह तुम से कौन चाहता है॥ १३। व्यर्थ अन्नबलि फिर मत ले आओ धूप से मुझे घिन आती है, नये चांद और विश्रामदिन का मानना और सभाओं का प्रचार करना यह मुझे बुरा लगता है महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझ से सहा नहीं जाता॥ १४। तुम्हारे नये चांदों और नियत पर्व्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं, वे सब मुझे भार जान पड़ते हैं मैं उन को सहते सहते उकता गया॥ १५। जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ तब मैं तुम से मुख फेर[1] लूंगा तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा क्योंकि खून करने का दोष तुम्हें लगा है[2]॥ १६। अपने को धोकर पवित्र करो मेरी आंखों के साम्हने से अपने बुरे कामों को दूर करो आगे को बुराई करना छोड़ दो, १७। भलाई करना सीखो यत्न से न्याय करो[3] उपद्रवी को सुधारो बपमूए का न्याय चुकाओ विधवा का मुकद्दमा लड़ो॥

(१) मूल में सिय्योन् की बेटी।

(१) मूल में छिपा। (२) मूल में तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। (३) मूल में न्याय ढूंढो।

१८ । यहोवा कहता है कि आओ हम आपस में वादविवाद करें तुम्हारे पाप चाहे लाही रङ्ग के हों तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे और चाहे लाल रङ्ग के हों तौभी वे ऊन के सरीखे हो जाएंगे ॥ १९ । यदि तुम प्रसन्न होकर मेरी मानो तो इस देश के उत्तम पदार्थ खाओगे ॥ २० । और यदि तुम न मानो और बलवा करो तो तलवार से मारे जाओगे, यहोवा का यही वचन है ॥

२१ । जो नगरी सती थी सो क्योंकर व्यभिचारिन हो गई वह न्याय से भरीपूरी तो थी और धर्म्म ही उस में पाया जाता तो था पर अब ,उस में हत्यारे ही पाये जाते हैं ॥ २२ । तेरी चांदी धातु का मैल हो गई तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है ॥ २३ । तेरे हाकिम हठीले और चोरों से मिले हैं वे सब के सब घूस खानेहारे और भेंट के लालची हैं और न तो वे बपमूए का न्याय करते और न विधवा का मुकद्दमा अपने पास आने देते हैं ॥

२४ । इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा इस्राएल् के शक्तिमान् की यह वाणी है कि सुनो मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शांति पाऊंगा और अपने बैरियों से पलटा लूंगा ॥ २५ । और मैं तुझ पर फिर हाथ बढ़ाकर तेरा धातु का मैल पूरी रीति से[1] भस्म करूंगा और तेरा रांगा पूरा पूरा दूर करूंगा ॥ २६ । और मैं तुझ में पहिले की नाईं न्यायी और आदिकाल के समान मंत्री फिर ठहराऊंगा उस के पीछे तू धर्म्मपुरी और सती नगरी कहाएगी ॥ २७ । और सिय्योन् न्याय के द्वारा और जो उस में फिरेंगे सो धर्म्म के द्वारा छुड़ा लिये जाएंगे ॥ २८ । पर बलवाइयों और पापियों का एक संग नाश होगा और जिन्हों ने यहोवा को त्यागा है उन का अन्त हो जाएगा ॥ २९ । और जिन बांजवृक्षों से तुम प्रीति रखते थे उन से वे लज्जित होंगे, जिन बारियों से तुम प्रसन्न रहते थे उन के कारण तुम्हारे मुंह काले होंगे ॥ ३० । क्योंकि तुम पत्ते मुर्झाये हुए बांजवृक्ष के और विना जल की बारी के समान हो जाओगे ॥ ३१ । और बलवान् तो सन और उस का काम चिंगारी बनेगा सो वे दोनों एक साथ जलेंगे और कोई बुझानेहारा न होगा ॥

(१) मूल में मानो खार डालकर ।

२. आमोस् के पुत्र यशायाह् का वचन जिस का दर्शन उस ने यहूदा और यरूशलेम् के विषय पाया ॥

२ । ऐसा होगा कि अन्त के दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा और हर जाति के लोग धारा की नाईं उस की ओर चलेंगे ॥ ३ । और बहुत देशों के लोग जाएंगे और आपस में कहेंगे कि आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा और हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन् से और उस का वचन यरूशलेम् से निकलेगा ॥ ४ । वह जाति जाति का न्याय करेगा और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी और लोग आगे को युद्ध की विद्या न सीखेंगे ॥

५ । हे याकूब के घराने आ हम यहोवा के प्रकाश में चलें ॥ ६ । तू ने अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है क्योंकि वे पूर्व्वियों के व्यवहार पर तन मन से चलते[1] और पलिश्तियों की नाईं टोना करते हैं और परदेशियों के साथ हाथ मिलाते हैं ॥ ७ । उन का देश चांदी और सोने से भरपूर है और उन के रक्खे हुए धन की सीमा नहीं उन का देश घोड़ों से भरपूर है और उन के रथ अनगिनित हैं ॥ ८ । उन का देश मूरतों से भरा है वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्हों ने अपनी अंगुलियों से संवारा है दण्डवत् करते हैं ॥ ९ । साधारण मनुष्य झुकते और बड़े मनुष्य प्रणाम करते हैं इस कारण उन को क्षमा

(१) मूल में पूरब से भर गये ।

न कर॥ १० । यहोवा के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे चटान में घुस और मिट्टी में छिप जा॥ ११ । क्योंकि आदमियों की घमण्डभरी आंखें नीची किई जाएंगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा और उस दिन केवल यहोवा ऊंचे पर विराजमान रहेगा॥ १२ । क्योंकि सेनाओं के यहोवा का एक दिन सब फूले हुए और ऊंचे और उन्नत पर आता है और वे नवाये जाएंगे॥ १३ । और लबानोन् के सब देवदारुओं पर जो ऊंचे और उन्नत हैं और बाशान् के सब बांजवृक्षों पर, १४ । और सब ऊंचे पहाड़ों और सब उन्नत पहाड़ियों पर, १५ । और सब ऊंचे गुम्मटों और सब दृढ़ शहरपनाहों पर, १६ । और तर्शीश् के सब जहाजों और सब सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन आता है॥ १७ । और आदमी का गर्व्व निकाला जाएगा और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा और उस दिन केवल यहोवा ऊंचे पर विराजमान रहेगा॥ १८ । और मूरतें सब की सब विलाय जाएंगी॥ १९ । और जब यहोवा पृथिवी के कंपाने के लिये उठेगा तब उस के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे लोग चटानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में घुसेंगे॥ २० । उस दिन लोग अपनी चान्दी सोने की मूरतों को जिन्हें उन्हों ने दण्डवत् करने के लिये बनाया है छछून्दरों और चमगीदड़ों के आगे फेंकेंगे, २१ । कि यहोवा के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे चटानों की दरारों और ढांगों के छेदों में घुस जाएं जब कि वह पृथिवी के कंपाने को उठेगा॥ २२ । मनुष्य जिस की सांस उस के नथनों में है उस से परे रहो, वह किस लेखे में है॥

३. सुनो प्रभु सेनाओं का यहोवा यरूशलेम् के और यहूदा के सब प्रकार का आधार[१] दूर करेगा अर्थात् अन्न का सारा आधार और जल का सारा आधार, २ । वीर और योद्धा को न्यायी और नबी को भावी कहनेहारे और पुरनिये को, ३ । पचास सिपाहियों के सरदार और प्रतिष्ठित पुरुष को मंत्री और चतुर कारीगर को और निपुण टोन्हे को भी दूर करेगा॥ ४ । और मैं लड़कों को उन के हाकिम कर दूंगा और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे॥ ५ । और प्रजा के लोग आपस में एक दूसरे पर अंधेर करेंगे और लड़का पुरनिये से और नीच जन रईस से ढिठाई करेगा॥ ६ । उस समय कोई अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा कि तेरे पास तो कपड़े हैं सो तू हमारा न्यायी हो जा और यह उजाड़ तेरे हाथ में हो॥ ७ । उस समय वह बोल उठेगा कि मैं चंगा करनेहारा न हूंगा क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न कपड़े सो मुझ को प्रजा का न्यायी मत ठहराओ॥ ८ । यरूशलेम् तो डगमगाता और यहूदा गिरता है क्योंकि उन के वचन और उन के काम यहोवा के विरुद्ध हैं कि उस की तेजोमय आंखों के साम्हने बलवा करें॥ ९ । उन का चिहरा ही उन के विरुद्ध साक्षी देता है वे सदोमियों की नाईं अपने पाप को आप ही बखानते और नहीं छिपाते। उन[१] पर हाय क्योंकि उन्हों ने अपनी हानि आप किई है॥ १० । धर्म्मियों के विषय में कहो कि भला होगा क्योंकि वे अपने कामों का फल भोगेंगे॥ ११ । दुष्ट पर हाय उस का बुरा होगा क्योंकि उस के कामों का फल उस को मिलेगा॥ १२ । मेरी प्रजा पर बच्चे अंधेर करते और स्त्रियां उस पर प्रभुता करती हैं हे मेरी प्रजा तेरे अगुए तुझे भटका देते और तेरे चलने का मार्ग मिटा देते हैं[२]॥ १३ । यहोवा देश देश के लोगों से मुकद्दमा लड़ने और उन का न्याय करने के लिये खड़ा है॥ १४ । यहोवा अपनी प्रजा के पुरनियों और हाकिमों के साथ यह विवाद करेगा कि तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है और दीन लोगों का धन तुम लूटकर अपने घरों में रखते हो॥ १५ । तुम कौन हो कि मेरी प्रजा को दलते और दीन लोगों को[३] पीस डालते हो प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

(१) मूल में लाठा और लाठी।

(१) मूल में उन के प्राण। (२) मूल में निगल लेते हैं। (३) मूल में दीन लोगों के मुंह को।

१६ । यहोवा ने यह भी कहा है कि सिय्योन् की स्त्रियां जो घमण्ड करतीं और सिर ऊंचे किये आंखें मटकातीं और घुंघुरुओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक चलती हैं, १७ । इस लिये प्रभु यहोवा उन के चोण्डे को गंजा करेगा और उन के तन को उघरवाएगा ॥ १८ । उस समय प्रभु घुंघुरुओं जालियों चंद्रहारों, १९ । झुमकों कड़ों घूंघटों, २० । पगड़ियों पैकरियों पटुकों सुगन्धपात्रों गण्डों, २१ । अंगूठियों नत्थों, २२ । सुन्दर वस्त्रों कुर्त्तियों चद्दरों बटुओं, २३ । दर्पणों मलमल के वस्त्रों बन्दियों दुपट्टों इन सभों की शोभा को दूर करेगा ॥ २४ । और सुगंध की सन्ती सड़ाहट होगी और सुन्दर कर्धनी की सन्ती बंधन की रस्सी और गुन्धे हुए बालों की सन्ती गंजापन और सुन्दर पटुके की सन्ती टाट की पेटी और सुन्दरता की संती दाग होगा ॥ २५ । तुझ में के पुरुष तलवार से और शूरवीर युद्ध में मारे जाएंगे ॥ २६ । और उस के फाटकों से सांस भरना और विलाप करना होगा[1] और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी[2] ॥

४. १ । उस समय सात स्त्रियां एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी कि हम रोटी तो अपनी ही खाएंगी और वस्त्र अपने ही पहिनेंगी केवल हम तेरी कहलाएं हमारी नामधराई दूर कर ॥

२ । उसी समय इस्राएल् के बचे हुओं के लिये यहोवा का पल्लव भूषण और महिमा ठहरेगा और भूमि की उपज बड़ाई और शोभा ठहरेगी ॥ ३ । और जो कोई सिय्योन् में बचा रहे और जो कोई यरूशलेम् में बचा रहे अर्थात् यरूशलेम् में जितनों के नाम जीवनपत्र में[3] लिखे हों सो पवित्र कहाएंगे ॥ ४ । यह तब होगा जब प्रभु न्याय करनेहारे और भस्म करनेहारे आत्मा के द्वारा सिय्योन् की स्त्रियों के मल को निकाल[4] चुकेगा और यरूशलेम् के बीच से खून को दूर कर चुकेगा ॥ ५ । तब यहोवा सिय्योन् पर्वत के एक एक घर के ऊपर और उस के सभास्थानों के ऊपर दिन को तो धूएं का बादल और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा और सारे विभव के ऊपर मण्डप छाया रहेगा ॥ ६ । और दिन को घाम से बचाने के लिये और आंधी पानी और झड़ी में शरण और आड़ के लिये एक तंबू होगा ॥

५. अब मैं अपने प्रिय के लिये उस की दाख की बारी के विषय गीत गाऊं । एक अति उपजाऊ टीले पर[1] मेरे प्रिय के एक दाख की बारी थी ॥ २ । उस ने उस की मिट्टी गोड़ दिई और उस के पत्थर बीनकर उस में उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई और बीच में एक गुम्मट बनाया और उस में दाखरस के लिये एक कुंड भी खोदा तब वह दाख की आशा करने लगा पर उस में निकम्मी ही दाखें लगीं ॥ ३ । सो अब हे यरूशलेम् के निवासियो और हे यहूदा के मनुष्यो मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो ॥ ४ । मेरी दाख की बारी के लिये और क्या करने को रह गया जो मैं ने उस के लिये न किया हो फिर क्या कारण है कि जब मैं ने दाख की आशा किई तब उस में निकम्मी दाखें लगीं ॥ ५ । अब मैं तुम को जताता हूं कि अपनी दाख की बारी से क्या करूंगा मैं उस के कांटेवाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह चट किई जाए और उस की भीत को ढा दूंगा कि वह रौंदी जाए ॥ ६ । मैं उसे उजाड़ दूंगा और वह न तो फिर छांटी और न गोड़ी जाएगी और उस में भांति भांति के कटीले पेड़ उगेंगे और मैं मेघों को आज्ञा दूंगा कि उस पर जल न बरसाना ॥ ७ । क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल् का घराना और उस का मनभाऊ पौधा यहूदा के लोग हैं और उस ने उन में न्याय की आशा तो किई पर अन्याय देख पड़ा उस ने धर्म्म की आशा तो किई पर उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी ॥

८ । हाय उन पर जो घर से घर और खेत से खेत यहां लों मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं

(१) मूल में उस के फाटक ठण्ढी सांस भरेंगे और विलाप करेंगे । (२) मूल में वह शून्य होकर भूमि पर बैठेगी । (३) मूल में जीवन के लिये । (४) मूल में मल को धो ।

(१) मूल में एक तेल के बेटे सींग पर ।

बचता कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ॥ ९। सेनाओं के यहोवा ने मेरे कानों में कहा है कि निश्चय बहुत से घर सून हो जाएंगे और बड़े बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो जाएंगे॥ १०। और दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत् दाखरस मिलेगा और होमेर् भर के बीज से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा॥

११। हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात लों दाखमधु पीते रहते जब लों उन को गर्मी चढ़ न जाए॥ १२। उन की जेवनारों में वीणा सारंगी डफ बांसली और दाखमधु ये सब पाये जाते हैं और वे यहोवा के कार्य्य की ओर दृष्टि नहीं करते और उस के हाथों के काम को नहीं देखते॥ १३। इस लिये मेरी प्रजा अज्ञानता के कारण बंधुआई में गई और उस में के प्रतिष्ठित पुरुष भूखों और साधारण लोग प्यासों मरे॥ १४। इस लिये अधोलोक ने अत्यन्त लालसा करके अपना मुंह बिना परिमाण पसारा और उन का विभव और भीड़ भाड़ और हौरा और आनन्द करनेहारे सब के सब उस के मुंह में जा पड़ते हैं॥ १५। साधारण मनुष्य दबाये और बड़े मनुष्य नीचे किये जाते और ऊंचे पदवालों की आंखें नीची किई जाती हैं॥ १६। और सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण महान् ठहरता और पवित्र धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है॥ १७। और भेड़ों के बच्चे तो मानो अपने खेत में चरेंगे पर हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को चराई के लिये मिलेंगे॥

१८। हाय उन पर जो अधर्म्म को अनर्थ की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच ले आते हैं, १९। और कहते हैं कि वह फुर्ती तो करे और अपने काम को शीघ्र कर डाले कि हम उस को देखें और इस्राएल् के पवित्र की युक्ति प्रगट और पूरी हो जाए[१] कि हम उस को समझें॥

२०। हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते और अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं॥

२१। हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान् हैं॥

२२। हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज बनाने में बहादुर हैं, २३। और घूस लेकर दुष्टों को निर्दोष और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं॥ २४। इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती और सूखी घास जलकर बैठ जाती है वैसे ही उन की जड़ सड़ जाएगी और उन के फूल धूल होकर उड़ जाएंगे क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना और इस्राएल् के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है॥

२५। इस कारण यहोवा का कोप अपनी प्रजा पर भड़का है और उस ने उन के विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उन को मारा है और पहाड़ कांप उठे और लोगों की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी हैं। इतने पर भी उस का कोप शान्त नहीं हुआ उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है॥ २६। और वह दूर दूर की जातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा और सीटी बजाकर उन को पृथिवी की छोर से बुलाएगा देखो वे फुर्ती करके वेग आएंगे॥ २७। उन में कोई थकनेहारा वा ठोकर खानेहारा नहीं कोई ऊंघने वा सोनेहारा नहीं किसी का फेंटा नहीं खुलता और किसी के जूतों का बन्धन नहीं टूटता॥ २८। उन के तीर चोखे और उन के सब धनुष चढ़ाये हुए हैं उन के घोड़ों के खुर वज्र के से और रथों के पहिये बवण्डर सरीखे हैं॥ २९। वे सिंह वा जवान सिंह की नाईं गरजते हैं वे गुर्राकर अहेर को पकड़ लेते और उस को कुशल से ले भागते हैं और कोई उसे उन से नहीं छुड़ाता॥ ३०। उस समय वे उन पर समुद्र के गर्जन की नाईं गर्जेंगे और यदि कोई देश की ओर देखे तो उसे अंधकार और संकट देख पड़ेंगे और ज्योति मेघों से छिप जाएगी॥

(१) मूल में निकट आए।

६. जिस बरस उज्जिय्याह् राजा मर गया मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा और उस के वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया है ॥ २ । उस से ऊंचे पर साराप् दिखाई देते हैं और उन के छः छः पंख हैं दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे और दो से अपने पांवों को ढांपे हैं और दो से उड़ रहे हैं ॥ ३ । और वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे हैं कि सेनाओं का यहोवा पवित्र पवित्र पवित्र है सारी पृथिवी उस के तेज से भरपूर है ॥ ४ । और पुकारनेहारे के शब्द से डेवढ़ियों की नेवें डोल उठीं और भवन धूंए से भर गया ॥ ५ । तब मैं ने कहा हाय हाय मैं मारा पड़ा क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूं और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूं और मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आंखों से देखा है ॥ ६ । तब एक साराप् हाथ में अंगारा लिये हुए जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था मेरे पास उड़ आया ॥ ७ । और उस ने उस से मेरे मुंह को छूकर कहा देख इस ने तेरे होंठों को छू लिया है सो तेरा अधर्म्म दूर हो गया और तेरे पाप ढांपे गये ॥ ८ । तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना कि मैं किस को भेजूं और हमारी ओर से कौन जाएगा तब मैं ने कहा मैं हाज़िर हूं मुझे भेज ॥ ९ । उस ने कहा जाकर इन लोगों से कह कि सुनते तो रहो पर न समझो और देखते तो रहो पर न बूझो ॥ १० । तू इन लोगों के मन को मोटे और उन के कानों को भारी कर और उन की आंखों को बन्द कर न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से बूझें और फिरें और चंगे हो जाएं ॥ ११ । तब मैं ने पूछा कि हे प्रभु कब लों उस ने कहा जब लों कि नगर यहां लों न उजड़ें कि उन में कोई रह न जाए और घर भी यहां लों न उजड़े कि उन में कोई मनुष्य न रह जाए और देश उजाड़ और सुनसान न हो जाए, १२ । और यहोवा मनुष्यों को उस में से दूर न कर दे और उस के बहुत से स्थान निर्जन न हो जाएं ॥ १३ । चाहे उस के निवासियों[1] का दसवां अंश रह जाए तो वह फिर नाश किया जाएगा[2] पर जैसे छोटे वा बड़े बांजवृक्ष के काट डालने पर भी उस का ठूंठ बना रहता है वैसे ही पवित्र वंश उस दसवें अंश का ठूंठ ठहरेगा ॥

७. यहूदा का राजा आहाज़ जो योताम् का पुत्र और उज्जिय्याह् का पोता था उस के दिनों में अराम् का राजा रसीन् और इस्राएल् का राजा रमल्याह् का पुत्र पेकह् इन्हों ने यरूशलेम् से लड़ने के लिये चढ़ाई तो किई पर युद्ध करके उन से कुछ बन न पड़ा ॥ २ । और दाऊद के घराने को यह समाचार मिला था कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि किई है और उन का और प्रजा का भी मन ऐसा कांप उठा जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं ॥

३ । तब यहोवा ने यशायाह् से कहा अपने पुत्र शार्याशूब्[3] को लेकर ऊपरली पोखरे की नाली के सिरे पर धोबियों के खेत की सड़क पर आहाज़् से भेंट करने के लिये जा ॥ ४ । और उस से कह कि सावधान रह और शान्त हो और उन दोनों धूंआ निकलती लुकटियों से[4] अर्थात् रसीन् के और अरामियों के भड़के हुए कोप से और रमल्याह् के पुत्र से मत डर और न तेरा मन कच्चा हो ॥ ५ । क्योंकि अरामियों और रमल्याह् के पुत्र समेत एप्रैमियों ने यह कहकर तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति विचारी है कि, ६ । आओ हम यहूदा पर चढ़ाई करके उस को घबरा दें और उस को अपने वश में लाकर[5] ताबेल् के पुत्र को राजा ठहरा दें ॥ ७ । सो प्रभु यहोवा ने यह कहा है कि यह युक्ति न तो सफल होगी और न पूरी ॥ ८ । क्योंकि अराम् का सिर दमिश्क् और दमिश्क् का सिर रसीन् है फिर एप्रैम् का सिर शोमरोन् और शोमरोन् का सिर रमल्याह् का पुत्र है ॥ ९ । पैंसठ बरस के भीतर एप्रैम् का बल टूट

(१) मूल में उस में। (२) मूल में फिर खा डाला जाएगा (३) अर्थात् बचा हुआ भाग फिरेगा। (४ मूल में लुकटियों के पुच्छों से। (५) मूल में, अपने निमित्त फाड़कर।

जाएगा और वह जाति बनी न रहेगी । यदि तुम लोग इस बात की प्रतीति न करो तो निश्चय तुम स्थिर न रहोगे ॥

१० । फिर यहोवा ने आहाज़ से कहा, ११ । अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग चाहे वह गहिरे स्थान का हो वा ऊपर का हो ॥ १२ । आहाज़ ने कहा मैं नहीं मांगने का और मैं यहोवा की परीक्षा न करूंगा ॥ १३ । तब उस ने कहा हे दाऊद के घराने सुनो क्या तुम मनुष्यों को उकताना देना छोटी बात समझकर अब मेरे परमेश्वर को भी उकता दोगे ॥ १४ । इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा सुनो एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम इम्मानूएल[१] रक्खेगी ॥ १५ । वह तब मक्खन और मधु खाएगा जब[२] वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जानेगा ॥ १६ । क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने जिस देश के दोनों राजाओं के विषय तू घबरा रहा है सो निर्जन हो जाएगा ॥ १७ । यहोवा तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से एप्रैम् यहूदा से अलग हो गया तब से वैसे दिन कभी नहीं आये अर्थात् अश्शूर के राजा को ॥

१८ । उस समय यहोवा उन मक्खियों को जो मिस्र की नहरों के उधर रहती हैं और उन मधुमक्खियों को जो अश्शूर् देश में रहती हैं सीटी बजाकर बुलाएगा ॥ १९ । और वे सब की सब आकर इस देश के पहाड़ी नालों में और ढांगों के दरारों में और सब भटकटैयों और सब चराइयों पर बैठ जाएंगी ॥

२० । उसी समय प्रभु महानद के पारवाले अश्शूर के राजारूपी भाड़े के छुरे से सिर और पांवों के रोएं मूंड़ेगा उस छुरे से डाढ़ी भी पूरी मुंड़ जाएगी ॥

२१ । उस समय कोई एक कलोर और दो भेड़ों को पालेगा ॥ २२ । और वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा क्योंकि जितने इस देश में रह जाएंगे सो सब मक्खन और मधु खाया करेंगे ॥

२३ । उस समय जिन जिन स्थानों में हजार टुकड़े चांदी की हजार दाखलताएं हैं उन सब स्थानों में कटीले ही कटीले पेड़ होंगे ॥ २४ । तीर और धनुष लेकर लोग वहां जाया करेंगे क्योंकि सारे देश में कटीले पेड़ हो जाएंगे ॥ २५ । और जितने पहाड़ कुदाल से गोड़े जाते हैं उन सभों पर कटीले पेड़ों के डर के मारे कोई न जाएगा वे गाय बैलों के चरने के और भेड़ बकरियों के रौंदने के लिये होंगे ॥

८. फिर यहोवा ने मुझ से कहा एक बड़ी पटिया लेकर उस पर साधारण अक्षरों से[१] यह लिख कि महेर्शालाल्हाशबज़्[२] के लिये ॥ २ । और मैं विश्वासयोग्य पुरुषों को अर्थात् ऊरिय्याह् याजक और येबेरेक्याह् के पुत्र जकर्याह् को इस बात के साक्षी करूंगा ॥ ३ । और मैं अपनी स्त्री[३] के पास गया और वह गर्भवती होकर पुत्र जनी तब यहोवा ने मुझ से कहा उस का नाम महेर्शालाल्हाशबज़्[२] रख ॥ ४ । क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बप्पा और अम्मा पुकारना जाने दमिश्क् और शोमरोन् दोनों की धन संपत्ति लूटकर अश्शूर् का राजा अपने देश को भेजेगा ॥

५ । फिर यहोवा ने मुझ से दूसरी बार कहा कि, ६ । लोग शीलोह् के धीरे धीरे बहनेहारे सोते को निकम्मा जानते हैं और रसीन् के और रमल्याह् के पुत्र के संग एका करके आनन्द करते हैं, ७ । इस कारण सुन प्रभु उन पर उस प्रबल और गहिरे महानद को अर्थात् अश्शूर् के राजा को उस के सारे प्रताप के साथ चढ़ा लाएगा वह अपने सारे नालों को भर देगा और अपने सारे कड़ाड़ों से उमटकर बहेगा ॥ ८ । और वह यहूदा पर भी चढ़ आएगा और बढ़ते बढ़ते वह उस पर चलेगा और गले लों पहुंचेगा, हे इम्मा

(१) अर्थात् ईश्वर हमारे संग है । (२) या इस लिये कि ।

(१) मूल में मनुष्य के कलम से । (२) अर्थात् लूट शीघ्र आती छिन जाना फुर्ती करता है । (३) मूल में नबियेन ।

तुरल् तेरा सारा देश उस के पंखों के फैलने से ढंप जाएगा ॥

९। हे देश देश के लोगो हौरा करो तो करो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा हे पृथिवी के दूर दूर देश के सब लोगो कान लगाकर सुनो अपनी अपनी कमर कसो तो कसो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा अपनी कमर कसो तो कसो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा ॥ १०। युक्ति करो तो करो पर वह निष्फल हो जाएगी कहो तो कहो पर तुम्हारा कहा ठहरेगा नहीं क्योंकि ईश्वर हमारे संग है ॥ ११। क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझ से बोला और इन लोगों की सी चाल चलने से वरजकर कहा, १२। जिस किसी बात को ये लोग राजद्रोह की गोष्ठी कहें उस को तुम राजद्रोह की गोष्ठी न कहना और जिस बात से वे डरते उस से तुम न डरना और न भय खाना ॥ १३। सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना और उसी का डर मानना और उसी का भय खाना ॥ १४। और वह पवित्रस्थान ठहरेगा पर इस्राएल् के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चटान और यरूशलेम् के निवासियों के लिये फन्दा और फंसड़ी ठहरेगा ॥ १५। और उन में से बहुत से लोग ठोकर खाकर गिरेंगे और घायल भी हो जाएंगे और फंसाकर पकड़े जाएंगे ॥

१६। मेरे चेलों के बीच चितौनी का पत्र बांध दे और शिक्षा पर छाप कर ॥ १७। और मैं उस यहोवा की जो अपने मुख को याकूब के घराने से फेरता[1] है बाट जोहता रहूंगा और उसी पर आशा लगाये रहूंगा ॥ १८। देखो मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे दिये हैं हम उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन् पर्वत पर वास किये रहता है इस्राएलियों में चिन्ह और चमत्कार ठहरे हैं ॥ १९। जब लोग तुम से कहें कि ओझों और टोनहों के पास जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं जाकर पूछो, क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये और क्या जीवतों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये ॥ २०। व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा हो यदि वे लोग इन के अनुसार न बोलें तो निश्चय उन के लिये पह न फटेगी ॥ २१। और वे इस देश में क्लेशित और भूखे फिरते रहेंगे और जब उन को भूख लगे तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को कोसेंगे और चाहे अपना मुख ऊपर की ओर करें, २२। चाहे पृथिवी की ओर दृष्टि करें तो उन्हें क्या देख पड़ेगा कि संकट और अन्धियारा और अंधकार भरी सकेती ही है और वे घोर अंधकार में ढकेल दिये जाएंगे ॥

९. तौभी जो सकेती में पड़ेगी वह अंधकार में पड़ी न रहेगी, पहिले तो उस ने जबूलून् और नप्ताली के देशों का अपमान किया पर पीछे उस ने ताल की ओर यर्दन के पार की अन्यजातियों के गालील् की महिमा किई ॥ २। तब जो लोग अंधियारे में चलते थे उन्हें बड़ा उजियाला देख पड़ा जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए देश में रहे उन पर ज्योति चमकी है ॥ ३। तू ने जाति को बढ़ाया तू ने उस को बहुत आनन्द दिया[1] वह तेरे साम्हने कटनी के समय का सा आनन्द करेगी और ऐसी मगन होगी जैसे लोग लूट बांटने के समय होते हैं ॥ ४। क्योंकि तू ने उस की गर्दन पर के भारी जूए और उस के बहंगे के बांस और उस पर अंधेर करनेहारे की लाठी इन सभों को ऐसा तोड़ दिया जैसे मिद्यानियों के दिन हुआ था ॥ ५। क्योंकि लड़नेहारे सिपाहियों के जूते और लोहू में लथड़े हुए कपड़े सब आग का कौर हो जाएंगे ॥

६। क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न होता हमें एक पुत्र दिया जाता है और वह प्रभुता का भार उठाएगा[2] और उस का नाम अद्भुत और युक्ति करनेहारा और पराक्रमी ईश्वर और अनन्तकाल का पिता और शान्ति का प्रधान रक्खा जाएगा ॥ ७। दाऊद की राजगद्दी पर उस की प्रभुता सदा बढ़ती

(१) मूल में छिपाता।

(१) वा तू ने बहुत आनन्द न दिया।
(२) मूल में प्रभुता उस के कन्धे पर होगी।

रहेगी श्रीर उस की शांति का अन्त न होगा[1] इस लिये वह उस को इस समय से लेकर सर्वदा लों न्याय श्रीर धर्म्म के द्वारा स्थिर किये श्रीर संभाले रहेगा । सेनाश्रों के यहोवा की धुन के द्वारा यह काम हो जाएगा ॥

८ । प्रभु ने याकूब के पास एक वचन कहला भेजा है श्रीर वह वचन इस्राएल् पर घटा है ॥ ९ । श्रीर सारी प्रजा को एप्रैमियों श्रीर शोमरोनुवासियों को मालूम होगा जो गर्व श्रीर श्रहंकार करके कहते हैं कि, १० । ईंटें तो गिर गई हैं पर हम गढ़े हुए पत्थरों से घर बनाएंगे गूलर के वृक्ष तो कट गये हैं पर हम उन की सन्ती देवदारुश्रों से काम लेंगे ॥ ११ । इस कारण यहोवा उन पर रसीन् के वैरियों को प्रबल करेगा श्रीर उन के शत्रुश्रों को, १२ । श्रागे श्राराम् को श्रीर पीछे पलिश्तियों को उभारेगा श्रीर वे मुंह खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे । इतने पर भी उस का कोप शान्त नहीं हुश्रा श्रीर उस का हाथ श्रब लों बढ़ा हुश्रा है ॥

१३ । तौभी ये लोग श्रपने मारनेहारे सेनाश्रों के यहोवा की श्रोर नहीं फिरे श्रीर न उन्हों ने उस को पूछा है ॥ १४ । इस कारण यहोवा इस्राएल् में से सिर श्रीर पूंछ को खजूर की डालियों श्रीर सरकंडे को एक ही दिन काट डालेगा ॥ १५ । पुरनिया श्रीर प्रतिष्ठित पुरुष तो सिर हैं श्रीर झूठ सिखानेहारा नबी पूंछ है ॥ १६ । जो इन लोगों की श्रगुवाई करते हैं सो इन को भटका देते हैं श्रीर जिन की श्रगुवाई होती है सो नाश हो जाते हैं ॥ १७ । इस कारण प्रभु न तो इन के जवानों से प्रसन्न होगा श्रीर न इन के बपमूए बालकों श्रीर विधवाश्रों पर दया करेगा क्योंकि हर एक भक्तिहीन श्रीर कुकर्म्मी है श्रीर हर एक के मुख से मूढ़ता की बात निकलती है । इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुश्रा श्रीर उस का हाथ श्रब लों बढ़ा हुश्रा है ॥

१८ । क्योंकि दुष्टता श्राग की नाईं धधकती है वह ऊंटकटारों श्रीर कांटों को भस्म करती है वह घने बन में भी लगती है श्रीर उस से बड़ा धूश्रां चकरा चकराकर उठता है ॥ १९ । सेनाश्रों के यहोवा के रोष के मारे यह देश जल जाता श्रीर ये लोग श्राग का कौर होते हैं वे श्रापस में एक दूसरे से दया का व्यवहार नहीं करते ॥ २० । श्रीर दहिनी श्रोर कोई भोजनवस्तु छीनकर भी भूखा रहेगा श्रीर बायें कोई खाकर भी तृप्त न होगा श्रीर वे श्रपनी श्रपनी बांहों का मांस भी खाएंगे ॥ २१ । मनश्शे एप्रैम् को श्रीर एप्रैम् मनश्शे को खा डालेगा श्रीर वे दोनों यहूदा के विरुद्ध होंगे । इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुश्रा श्रीर उस का हाथ श्रब लों बढ़ा हुश्रा है ॥

१०. हाय उन न्यायियों पर जो श्रनर्थ विचार करते हैं श्रीर उन पर जो उत्पात करने की श्राज्ञा लिख देते हैं, २ । कि वे कंगालों का न्याय बिगाड़ें श्रीर मेरी प्रजा में के दीन लोगों का हक मारें श्रीर विधवाश्रों को लूटें श्रीर बपमूश्रों का माल श्रपना कर लें ॥ ३ । दण्ड के दिन जब श्रांधी दूर से श्राएगी तब क्या करोगे रक्षा के लिये कहां भाग जाश्रोगे श्रीर श्रपने विभव को कहां रख जाश्रोगे ॥ ४ । वे केवल बंधुश्रों के पैरों के पास[1] गिर पड़ेंगे श्रीर मारे हुश्रों से दबे पड़े रहेंगे । इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुश्रा श्रीर उस का हाथ श्रब लों बढ़ा हुश्रा है ॥

५ । हे श्रश्शूर् तू मेरे कोप का लठ है श्रीर तेरे हाथ में का सोंटा मेरा क्रोध है ॥ ६ । मैं उस को एक भक्तिहीन जाति के विरुद्ध भेजूंगा श्रीर जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उन के विषय उस को श्राज्ञा दूंगा कि वह छीन छोर करे श्रीर लूट ले श्रीर उन को सड़कों की कीच के समान लताड़े ॥ ७ । पर उस की ऐसी मनसा न होगी श्रीर उस के मन में ऐसा विचार न होगा, क्योंकि उस के मन में यही होगा कि मैं बहुत सी जातियों का नाश श्रीर श्रंत कर डालूं ॥ ८ । वह कहता है क्या मेरे सब हाकिम राजा के बराबर नहीं ॥ ९ । क्या

(१) मूल में प्रभुता की बढ़ती श्रीर शांति का श्रन्त नहीं ।

(१) मूल में बन्धुश्रों के नीचे ।

कल्नो कर्कमीश् के समान नहीं क्या हमात् अर्पद् के और शोमरोन् दमिश्क् के समान नहीं ॥ १०। जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतों से भरे हुए उन राज्यों पर पहुंचा जिन की मूरतें यरूशलेम् और शोमरोन् की मूरतों से बढ़िया थीं, ११। और जिस प्रकार मैं ने शोमरोन् और उस की मूरतों से किया क्या मैं उसी प्रकार यरूशलेम् से और उस की मूरतों से भी न करूं ॥

१२। इस कारण जब प्रभु सिय्योन् पर्वत पर और यरूशलेम् में अपना सारा काम कर चुकेगा तब मैं अश्शूर् के राजा के गर्व की बातों का और उस की घमण्ड भरी आंखों का पलटा दूंगा ॥ १३। उस ने तो कहा है कि अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैं ने यह काम किया है क्योंकि मैं चतुर हो गया हूं सो मैं ने देश देश के सिवानों को हटा दिया और उन के रक्खे हुए धन को लूट लिया और वीर की नाईं गद्दी पर विराजमानों को उतार दिया है ॥ १४। और देश देश के लोगों की धन संपत्ति चिड़ियाओं के घोंसलों की नाईं मेरे हाथ आई और जैसा कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैं ने सारी पृथिवी को बटोर लिया है और कोई पंख फड़फड़ाने वा चोंच खोलने वा चीं चीं करनेहारा न रहा ॥ १५। क्या कुल्हाड़ा उस के विरुद्ध जो उस से काटता हो डींग मारे वा आरी उस के विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई मारे क्या सोंटा अपने चलानेहारों को चलाए वा छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है ॥

१६। इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबले कर देगा और उस की सजी हुई सेना के जंगल में अपने कोप की आग लगाएगा[1] ॥ १७। और इस्राएल् की ज्योति तो आग ठहरेगी और इस्राएल् का पवित्र तो ज्वाला ठहरेगा और वह उस के झाड़ झंखार को एक ही दिन में भस्म करेगी ॥ १८। उस से उस के वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति से[2] नाश होगी और रोगी के क्षीण हो जाने पर जैसी दशा होती है वैसी ही उस की होगी ॥ १९। और उस वन के इतने थोड़े वृक्ष बच जाएंगे कि लड़का भी उन्हें गिन सकेगा ॥

२०। उस समय इस्राएल् के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए अपने मारनेहारे पर फिर कभी टेक न लगाएंगे यहोवा जो इस्राएल् का पवित्र है उसी पर वे सच्चाई से टेक लगाएंगे ॥ २१। याकूब में से बचे हुए लोग पराक्रमी ईश्वर की ओर फिरेंगे ॥ २२। हे इस्राएल् चाहे तेरे लोग समुद्र की बालू के किनकों के समान भी बहुत होते तौभी निश्चय होता कि उन में से बचे ही लोग बचकर फिरेंगे, और सत्यानाश पूरे धर्म्म के साथ[3] ठाना गया है ॥ २३। क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा ने सारे देश का सत्यानाश करना ठाना है ॥

२४। इस लिये प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि हे सिय्योन् में रहनेहारी मेरी प्रजा अश्शूर् से मत डर चाहे वह सोंटे से तुझे मारे और मिस्र की नाईं तेरे ऊपर छड़ी उठाए ॥ २५। क्योंकि अब थोड़े ही दिनों के बीतने पर मेरी जलन और कोप उन का सत्यानाश करके शान्त होगा[3] ॥

२६। और सेनाओं का यहोवा उस के विरुद्ध कोड़ा खींचकर उस को ऐसा मारेगा जैसा उस ने ओरेब् नाम चटान पर मिद्यानियों को मारा था और जैसा उस ने समुद्र पर मिस्रियों की ओर लाठी बढ़ाई वैसा ही उस की ओर भी बढ़ाएगा ॥ २७। सो उस समय उस का बोझ तेरे कंधे पर से और उस का जूआ तेरी गर्दन पर से उतरेगा और तेल[4] के कारण जूआ तोड़ डाला जाएगा ॥

२८। वह अय्यात् को आया और मिग्रोन् से होकर आगे बढ़ा है मिक्माश् में वह अपना सामान रख रहा है ॥ २९। वे घाटी से पार हो गये वे गेबा में टिक गये रामा थरथरा उठा शाऊल् का गिबा भाग गया ॥ ३०। हे गल्लीम् के निवासियो[5] चिल्लाओ

---

(१) मूल में और उस के ऐश्वर्य्य के नीचे आग की सी जलन होगी।

(१) मूल में जीव से मास लों। (२) मूल में धर्म्म से उमण्डता। (३) मूल में. करने से चुकेगा। (४) वा अभिषेक। (५) मूल में गल्लीम् की बेटी।

हे लैशा के लोगो कान लगाओ हाय बपुरे अनातोत्॥ ३१। मद्मेना मारा मारा फिरता है गेबीम् के निवासी अपना अपना सामान भागने के लिये एकट्ठा कर रहे हैं॥ ३२। आज ही के दिन वह नोब् में टिकेगा वह सिय्योन्[१] पहाड़ पर और यरूशलेम् की पहाड़ी पर हाथ हिलाकर धमकाएगा॥

३३। देखो प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ों को भयानक रूप से छांट डालेगा और ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे और जो ऊंचे हैं सो नीचे किये जाएंगे॥ ३४। वह घने वन को लोहे से काट डालेगा और लबानोन् एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा॥

११.

तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूटेगी और उस की जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी॥ २। और यहोवा का आत्मा बुद्धि और समझ का आत्मा युक्ति और पराक्रम का आत्मा और यहोवा के ज्ञान और भय का आत्मा उस पर ठहरा रहेगा॥ ३। और उस को यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा और वह न तो मुंह देखा न्याय करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार चुकाव करेगा॥ ४। पर वह कंगालों का न्याय धर्म्म से करेगा और पृथिवी के नम्र लोगों के लिये खराई से चुकाव करेगा और वह पृथिवी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मार डालेगा॥ ५। और उस की कटि का फेंटा धर्म्म और उस की कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥ ६। और हुंडार भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा और बछड़ा और जवान सिंह और पोसा हुआ बैल तीनों एकट्ठे रहेंगे और छोटा लड़का उन्हें फिराया करेगा॥ ७। और गाय और रीछनी चरेंगी और उन के बच्चे एकट्ठे बैठेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा॥ ८। और दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा और नाग की बामी में दूध छुड़ाया हुआ लड़का हाथ डालेगा॥ ९। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा क्योंकि पृथिवी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा समुद्र जल से भरा रहता है[१]॥

१०। उसी समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के झंडे के लिये खड़ी हो जाएगी और उसी के पास अन्यजातियां चली आएंगी और उस का विश्रामस्थान तेजोमय होगा॥

११। उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर अपनी प्रजा के बचे हुओं को जो रह जाएंगे अश्शूर् और मिस्र और पत्रोस् और कूश् और एलाम् और शिनार् और हमात् और समुद्र के द्वीपों से मोल लेकर छुड़ाएगा॥ १२। और वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करके इस्राएल् के सब निकाले हुओं को और यहूदा के सब बिखरी हुइयों को पृथिवी की चारों दिशाओं से एकट्ठा करेगा॥ १३। और एप्रैम् फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग करनेहारे काट डाले जाएंगे न तो एप्रैम् यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम् को तंग करेगा॥ १४। पर वे पच्छिम और पलिश्तियों के कंधे पर झपट्टा मारेंगे और मिलकर पूर्वियों को लूटेंगे, वे एदोम् और मोआब् पर हाथ बढ़ाएंगे और अम्मोनी उन के अधीन हो जाएंगे॥ १५। और यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा डालेगा और महानद पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लूह से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा और लोग जूती पहिने हुए भी पार जाएंगे॥ १६। सो उस की प्रजा के बचे हुओं के लिये अश्शूर् से एक ऐसा मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल् के लिये हुआ था॥

१२.

उस समय तू कहेगा कि हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करता हूं क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर कोपित हुआ था पर अब तेरा कोप शान्त हुआ[२] और तू ने मुझे शान्ति दिई है॥

(१) मूल में सिय्योन् की बेटी।

(१) मूल में जैसा जल समुद्र को ढांपता है।
(२) मूल में फिर गया।

२। ईश्वर मेरा उद्धार है सो मैं भरोसा रखूंगा और न थरथराऊंगा क्योंकि याह् यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है और वह मेरा उद्धार ठहर गया है ॥ ३। तुम उद्धार के सोतों से आनन्द के साथ जल भरोगे ॥ ४। और उस समय तुम कहोगे कि यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो सब जातियों में उस के बड़े कामों का प्रचार करो और इस की चर्चा करो कि उस का नाम महान् है ॥ ५। यहोवा का भजन गाओ क्योंकि उस ने प्रतापमय काम किये हैं यह सारी पृथिवी पर जाना जाए ॥ ६। हे सिय्योन् की रहनेहारी जयजयकार कर और ऊंचे स्वर से गा क्योंकि इस्राएल् का पवित्र तेरे बीच में महान् है ॥

१३. बाबेल् के विषय का भारी वचन जिस को आमोस् के पुत्र यशायाह् ने दर्शन में पाया ॥

२। मुंडे पहाड़ पर झंडा खड़ा करो हाथ उठाकर उन को पुकारो कि वे रईसों के फाटकों में प्रवेश करें ॥ ३। मैं ने आप अपने पवित्र किये हुओं को आज्ञा दिई है मैं ने अपने कोप के कारण अपने वीरों को जो मेरे प्रताप के कारण हुलसते हैं बुलाया है ॥ ४। पहाड़ों पर बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है राज्य राज्य की एकट्ठी किई हुई जातियां हौरा मचा रही है सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिये अपनी सेना की गिनती ले रहा है ॥ ५। वे दूर देश से तो क्या पृथिवी[1] की छोर से आये हैं यहोवा अपने क्रोध के हथियारों समेत सारे देश को नाश करने के लिये आया है ॥ ६। हाय हाय करो क्योंकि यहोवा का दिन निकट है सर्वशक्तिमान् की ओर से मानो सत्यानाश आता है ॥ ७। इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे और हर एक मनुष्य का कलेजा कांप जाएगा[2] ॥ ८। और वे घबरा जाएंगे उन को दुःख और पीड़ा लगेगी उन को जननेहारी की सी पीड़ें उठेंगी वे चकित होकर एक दूसरे को ताकेंगे उन के मुंह सूख जाएंगे[1] ॥ ९। देखो यहोवा का दिन रोष और कोप और निर्दयता के साथ आता है जिस से पृथिवी उजाड़ हो जाएगी और पापी उस में से नाश किये जाएंगे ॥ १०। और आकाश के तारागण और बड़े नक्षत्र न झलकेंगे और सूर्य्य उदय होते ही छिप जाएगा और चंद्रमा अपना प्रकाश न देगा ॥ ११। और मैं जगत के लोगों को उन की बुराई का और दुष्टों को उन के अधर्म्म का दण्ड दूंगा और अभिमानियों के अभिमान को दूर करूंगा और उपद्रव करनेहारों के घमण्ड को तोड़ूंगा ॥ १२। मैं मनुष्य को कुन्दन से और आदमी को ओपीर् के सोने से अधिक महंगा करूंगा ॥ १३। और मैं आकाश को कंपाऊंगा और पृथिवी अपने स्थान से टल जाएगी, यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण और उस के भड़के हुए कोप के दिन में होगा ॥ १४। और वे खदेड़े हुए हरिण वा बिन चरवाहे की भेड़ों की नाईं अपने अपने लोगों की ओर फिरेंगे और अपने अपने देश को भाग जाएंगे ॥ १५। जो कोई मिले सो बेधा जाएगा और जो कोई पकड़ा जाए सो तलवार से मार डाला जाएगा ॥ १६। और उन के बालक उन के साम्हने पटक दिये जाएंगे और उन के घर लूटे जाएंगे और उन की स्त्रियां भ्रष्ट किई जाएंगी ॥ १७। देखो मैं उन के विरुद्ध मादी लोगों को उभारूंगा जो न तो चांदी का कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे ॥ १८। और वे तीरों से जवानों को मारेंगे और बच्चों पर कुछ दया और लड़कों पर कुछ तरस न करेंगे ॥ १९। और बाबेल् जो सब राज्यों का शिरोमणि और उस की शोभा पर कस्दी लोग फूलते हैं सो ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम् और अमोरा परमेश्वर से उलट दिये जाने पर हो गये थे ॥ २०। वह फिर कभी न बसेगा और उस में युग युग कोई वास न करेगा और अरबी लोग भी उस में डेरा खड़ा न करेंगे और न चरवाहे उस में अपने पशु बैठाएंगे ॥ २१। वहां जंगली जन्तु बैठेंगे और हुहानेहारे जन्तु उन के घरों में भरे

(१) मूल में आकाश। (२) मूल में मनुष्य का सारा हृदय गलेगा।

(१) मूल में उन के लौआले मुंह होंगे।

रहेंगे और शुतर्मुर्ग वहां बसेंगे और बनैले बकरे वहां नाचेंगे और उस नगर के राजभवनों में हुंडार और उस के सुख विलास के मन्दिरों में गीदड़ बोला करेंगे उस के नाश होने का समय निकट आ गया और उस के दिन अब बहुत नहीं रहे ॥

१४. १। क्योंकि यहोवा याकूब पर दया करेगा और इस्राएल् को फिर अपनाकर उन्हीं के देश में बसाएगा और परदेशी उन से मिल जाएंगे और अपने अपने को याकूब के घराने से मिलाएंगे[1]॥ २। और देश देश के लोग उन को उन्हीं के स्थान में पहुंचाएंगे और इस्राएल् का घराना यहोवा की भूमि पर उन को दास दासियां करके उन के अधिकारी होगा और जो उन्हें बन्धुआई में ले गये थे उन्हें वे बन्धुए करेंगे और जो उन से परिश्रम कराते थे उन पर वे प्रभुता करेंगे ॥

३। जिस दिन यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से और उस कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया विश्राम देगा, ४। उस दिन तू बाबेल् के राजा पर ताना मारकर कहेगा कि परिश्रम करानेहारा कैसा नाश हो गया है सोनहले मन्दिरों से भरी नगरी[2] कैसी नाश हो गई है ॥ ५। यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को और प्रभुता करनेहारों के उस लठ को तोड़ दिया है, ६। जिस से वे मनुष्यों को रोष से लगातार मारते जाते और जाति जाति पर कोप से प्रभुता करते और लगातार उन के पीछे पड़े रहते थे ॥ ७। सारी पृथिवी को विश्राम मिला है वह चैन से है लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं ॥ ८। सनौवर और लबानोन् के देवदारु भी तुझ पर आनन्द करते हैं कि जब से तू पड़ा हुआ है तब से कोई हमें काटने को नहीं आया ॥ ९। नीचे से अधोलोक में तुझ से मिलने को हलचल हो रही है, वे मरे हुए जो पृथिवी पर प्रधान थे सो तेरे कारण जाग उठे हैं और जाति जाति के सब राजा अपने अपने सिंहासन पर से उठे हैं ॥ १०। ये सब तुझ से कहते हैं क्या तू भी हमारी नाईं निर्बल हो गया है क्या तू हमारे समान ही बन गया ॥ ११। तेरा विभव और तेरी सारंगियों का शब्द अधोलोक में उतारा गया है कीड़े तेरा बिछौना और केंचुए तेरा ओढ़ना हैं ॥ १२। हे भोर के चमकनेहारे तारे[1] तू आकाश से कैसा गिर पड़ा है तू जो जाति जाति को हरा देता था सो अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है ॥ १३। तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूंगा ॥ १४। मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा ॥ १५। पर तू अधोलोक में बरन उस गड़हे की छोर लों उतारा जाएगा ॥ १६। जो तुझे देखते सो तुझ को ध्यान से ताकेंगे और तेरे विषय सोच सोचकर कहते हैं कि जो पृथिवी को चैन से रहने न देता था और राज्य राज्य में घबराहट डाल देता था, १७। जो जगत को जंगल बनाता और उस के नगरों को ढा देता था और अपने बन्धुओं को घर जाने न देता था क्या यह वही पुरुष है ॥ १८। जाति जाति के राजा सब के सब अपने अपने घर पर महिमा के साथ पड़े हैं ॥ १९। पर तू निकम्मी शाखा की नाईं अपनी कबर में से फेंका गया तू उन मारे हुओं की लोथों से घिरा है[2] जो तलवार से बिधकर गड़हे में पत्थरों के बीच पड़े हैं और तू लताड़ी हुई लोथ के समान है ॥ २०। उन के साथ तुझे मिट्टी न मिली क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़ दिया और अपनी प्रजा का घात किया है, कुकर्म्मियों के वंश का नाम भी न रहेगा[3] ॥ २१। उन के पितरों के अधर्म्म के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो ऐसा न हो कि वे फिर पृथिवी के अधिकारी हो जाएं और जगत में बहुत से नगर बसाएं ॥ २२। और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन के विरुद्ध उठूंगा और बाबेल् का नाम और निशान मिटा डालूंगा और बेटे पोते को

---

(१) मूल में वह कहावत उठाएगी कि। (२) मूल में सोने का ढेर।

(१) मूल में बेटे। (२) मूल में लोथें पहिने है। (३) मूल में नाम कभी लिया न जाएगा।

काट डालूंगा[1] यहोवा की यही वाणी है ॥ २३। मै उस को साही की मान्द और जल की झीलें कर दूंगा और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़ डालूंगा सेनाओं के यहोवा की यह भी वाणी है ॥

२४। सेनाओं के यहोवा ने यह किरिया खाई है कि निःसन्देह जैसा मैं ने ठाना वैसा ही होगा और जैसी मैं ने युक्ति किई है वैसी ही ठहरी रहेगी. २५। कि मैं अश्शूर् को अपने देश में तोड़ दूंगा और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूंगा तब उस का जूआ उन की गर्दनों पर से और उस का बोझ उन के कंधों पर से उतर जाएगा ॥ २६। यह वही युक्ति है जो सारी पृथिवी के लिये किई गई है और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है ॥ २७। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति किई है कौन उस को टाल सकता है और उस का हाथ बढ़ा हुआ है उसे कौन फेर सकता है ॥

२८। जिस बरस में आहाज् राजा मर गया उसी में यह भारी वचन पहुंचा ॥

२९। हे सारे पलिश्त् तू इस लिये आनन्द न कर कि तेरे मारनेहारे की लाठी टूट गई है क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न होगा और इस से एक उड़नेहारा और तेज विषवाला सर्प उत्पन्न होगा ॥ ३०। और कंगाल से कंगाल खाने और दरिद्र लोग निडर बैठने तो पाएंगे पर मैं तेरे वंश को भूख से मार डालूंगा और तेरे बचे हुए लोग घात किये जाएंगे ॥ ३१। हे फाटक हाय हाय कर हे नगर चिल्ला हे पलिश्त् तू सब का सब पिघल गया है क्योंकि उत्तर से धूआं आता है और कोई अपनी पांति से बिछुर नहीं जाता ॥ ३२। तब अन्यजातियों के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा यह कि यहोवा ने सिय्योन् की नेव डाली है और उस की प्रजा में के दीन लोग उस में शरण लिये हैं ॥

१५. मोआब् के विषय भारी वचन।

निश्चय मोआब् का आर् नगर एक ही रात में उजड़ और नाश हो गया है निश्चय मोआब् का कीर् नगर एक ही रात में उजड़ और नाश हो गया है ॥ २। बैत् और दीबोन् ऊंचे स्थानों पर रोने के लिये चढ़ गये हैं नबो और मेदबा के ऊपर मोआब् हाय हाय करता है उन सभों के सिर मुंड़े हुए और सभों की डाढ़ियां मुंड़ी हुई हैं ॥ ३। सड़कों में लोग टाट पहिने हैं छतों पर और चौकों में सब कोई आंसू बहाते हुए हाय हाय करते हैं ॥ ४। और हेश्बोन् और एलाले चिल्ला रहे हैं उन का शब्द यहस् लों सुन पड़ता है इस कारण मोआब् के हथियारबन्द लोग चिल्ला रहे है उस का जी अति उदास है ॥ ५। मेरा मन मोआब् के कारण दुःखित है क्योंकि उन के रईस सोअर् और एग्लत्शलीशिय्या लों भागे जाते हैं देखो लूहीत् की चढ़ाई में वे रोते हुए चढ़ रहे हैं सुनो होरोनैम् के मार्ग में वे नाश की चिल्लाहट उठाते हैं ॥ ६। और निम्रीम् का जल सूख गया और घास मुर्झा गई कोमल घास सूख गई हरियाली कुछ नहीं रही ॥ ७। इस लिये जो धन उन्हों ने बचा रक्खा और जो कुछ उन्हों ने जमा किया उस सब को वे उस नाले के पार लिये जा रहे हैं जिस में मजनूवृक्ष हैं ॥ ८। इस कारण मोआब् के चारों ओर के सिवाने मे चिल्लाहट हो रही है उस में का हाहाकार एग्लैम् और बेरेलीम् में भी सुन पड़ता है ॥ ९। क्योंकि दीमोन् का सोता लोहू से भरा हुआ है मैं तो दीमोन् पर और भी दुःख डालूंगा मैं बचे हुए मोआबियों और उन के देश से भागे हुओं के विरुद्ध सिंह भेजूंगा ॥

१६. देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों को जंगल की ओर के सेला नगर से सिय्योन्[1] के पर्वत पर भेजो ॥

२। और जैसे उजाड़े हुए घोंसले से वैसे ही मोआब् की बेटियां अर्नोन् के घाट पर होंगी ॥ ३। संमति करो न्याय चुकाओ, दोपहर ही अपनी छाया को रात के समान करो घर से निकाले हुओं को छिपा रक्खो

(१) मूल में बाबेल् का नाम और बचती और बेटे पोते को काट डालूंगा।

(१) मूल में सिय्योन् की बेटी।

जो मारे मारे फिरते हैं, उन को मत पकड़ाओ ॥ ४। मेरे लोग जो निकाले हुए हैं सो तेरे बीच रहने पाएं नाश करनेहारे से मोआब् को बचाओ क्योंकि पीसनेहारा नहीं रहा लूट पाट फिर न होगी देश में से अन्धेर करनेहारे नाश हो गये हैं ॥ ५। और दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तंबू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचारकर न्याय करेगा[1] और धर्म्म के काम फुर्ती से पूरा करेगा ॥

६। हम ने मोआब् के गर्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त गर्वी है उस के अभिमान और गर्व और रोष तो है पर उस का बड़ा बोल व्यर्थ ठहरेगा ॥ ७। क्योंकि मोआब् मोआब् के लिये हाय हाय करेगा सब के सब हाहाकार करेंगे कीर्-हरेसेत् की दाख की टिकियों के लिये वे अति निराश होकर लम्बी लम्बी सांस लिया करेंगे ॥ ८। क्योंकि हेश्बोन् के खेत और सिब्मा की दाखलताएं मुर्झा जाती हैं अन्यजातियों के अधिकारियों ने उन की उत्तम उत्तम लताओं को काट काटकर गिरा दिया है वे याजेर् लों पहुंचीं वे जंगल में भी फैलती थीं और बढ़ते बढ़ते ताल के पार भी बढ़ गई थीं ॥ ९। सो मैं याजेर् के साथ सिब्मा की दाखलताओं के लिये रोऊंगा हे हेश्बोन् और एलाले मैं तुम्हें अपने आंसुओं से सींचूंगा क्योंकि तुम्हारे धूपकाल के फलों के और अनाज की कटनी के समय ललकार सुनाई पड़ी है ॥ १०। और फलदाई बारियों में से आनन्द और मगनता जाती रही और दाख की बारियों में गीत न गाया जाएगा न हर्ष का शब्द सुनाई देगा दाखरस के कुण्डों में कोई दाख न रौंदेगा क्योंकि मैं उन के हर्ष के शब्द को बन्द करूंगा ॥ ११। इस लिये मेरा मन मोआब् के कारण और मेरा हृदय कीर्हेरेस् के कारण वीणा का सा शब्द देता है ॥१२। और जब मोआब् ऊंचे स्थान पर मुंह दिखाते दिखाते थक जाए और प्रार्थना करने को अपने पवित्र स्थान में आए तब उस से कुछ न बन पड़ेगा ॥

(१) मूल में जो न्याय करेगा और न्याय पूछेगा।

१३। यही तो वह बात है जो यहोवा ने इस से पहिले मोआब् के विषय कही थी ॥ १४। पर अब यहोवा ने यों कहा है कि मजूर के बरसों के समान तीन बरस के भीतर मोआब् का विभव और उस की भीड़ भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी और जो बचें सो थोड़े ही होंगे और कुछ लेखे में न रहेंगे ॥

१७. दमिश्क् के विषय भारी वचन।

सुनो दमिश्क् तो नगर न रहा वह खण्डहर ही खण्डहर हो जाएगा ॥ २। अरोएर् के नगर निर्जन हो जाएंगे वे पशुओं के झुण्डों के स्थान बनेंगे पशु उन में बैठेंगे और उन का कोई भगानेहारा न होगा ॥ ३। एप्रैम् के गढ़वाले नगर और दमिश्क् का राज्य और बचे हुए अरामी तीनों आगे को न रहेंगे वे इस्राएलियों के विभव के समान होंगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

४। और उस समय याकूब का विभव घट जाएगा और उस की मोटी देह दुबली होगी ॥ ५। और ऐसा होगा जैसा लवनेहारा अनाज काटकर बालों को अपनी अंकवार में समेट लाया हो वा रपाईम् नाम तराई में कोई सिला बिनता हो ॥ ६। तौभी जैसा जलपाई वृक्ष के झाड़ते समय कुछ कुछ फल रह जाते हैं अर्थात् फुनगी पर दो तीन फल और फलवन्त डालियों में कहीं चार कहीं पांच फल रह जाते हैं वैसा ही उन में सिला बिनाई होगी। इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥ ७। उस समय मनुष्य अपने कर्त्ता की ओर दृष्टि करेगा और उस की आंखें इस्राएल् के पवित्र की ओर लगी रहेंगी ॥ ८। और वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा और न अपनी बनाई हुई अशेरा नाम मूरतों वा सूर्य्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा ॥ ९। उस समय उन के गढ़वाले नगर घने वन के और पहाड़ों की चोटियों के उन निर्जन स्थानों के समान होंगे जो इस्राएलियों के डर के मारे छोड़ दिये गये थे और वे उजाड़ पड़े रहेंगे ॥ १०। क्योंकि तू अपने उद्धारकर्त्ता

परमेश्वर को भूल गई और अपनी दृढ़ चटान का स्मरण नहीं रक्खा इस कारण तू मनभावने पौधे लगाती और विदेशी कलमें रोप देती है ॥ ११। रोपने के दिन तू उन की चारों ओर बाड़ा बांधती है और बिहान को फूल खिलने लगते हैं पर सन्ताप और असाध्य दुःख के दिन उस का फल नाश हो जाता है ॥

१२। अहो देश देश के बहुत से लोगों की कैसी गरजना हो रही है जो समुद्र की नाईं गरजते हैं और राज्य राज्य के लोगों का कैसा नाद हो रहा है जो प्रचण्ड धारा के समान नाद करते हैं ॥ १३। राज्य राज्य के लोग बहुत से जल की नाईं नाद करते तो हैं पर वह उन को घुड़केगा तब वे दूर भाग जाएंगे और ऐसे उड़ाये जाएंगे जैसे पहाड़ों पर की भूसी वायु से और धूलि बवण्डर से घुमाकर उड़ाई जाती है ॥ १४। सांझ को तो देखो घबराहट और भोर से पहिले वे जाते रहे। हमारे धन के छीननेहारों का यही भाग और हमारे लूटनेहारों का यही हाल होगा ॥

१८. अहो पंखों की संसनाहट से भरे हुए देश तू जो कूश की नदियों के परे है, २। और समुद्र पर दूतों को नरकट की नावों में बैठाकर जल के मार्ग से यह कहके भेजता है कि हे फुर्तीले दूतो उस जाति के पास जाओ जिस के लोग लम्बे और चिकने हैं और वे आदि ही से डरावने होते आये हैं, वे मापने और रौंदनेहारे भी हैं और उन का देश नदियों से विभाग किया हुआ है ॥ ३। हे जगत के सब रहनेहारो और पृथिवी के सब निवासियो जब झंडा पहाड़ों पर खड़ा किया जाए तब उसे देखो और जब नरसिंगा फूंका जाए तब सुनो ॥ ४। क्योंकि यहोवा ने मुझ से यों कहा है कि धूप की तेज गर्मी या कटनी के समय के ओसवाले बादल की नाईं मैं शान्त होकर निहारूंगा ॥ ५। पर दाख तोड़ने के समय से पहिले जब फूल फूल चुकें और दाख के गुच्छे पकने लगें तब वह टहनियों को हंसुओं से काट डालेगा और सूतों को तोड़ तोड़कर अलग फेंक देगा ॥ ६। वे पहाड़ों के मांसाहारी पक्षियों और बनैले पशुओं के लिये एकट्ठे पड़े रहेंगे और मांसाहारी पक्षी तो उन को नोचते नोचते[1] धूपकाल बिताएंगे और सब भान्ति के[2] बनैले पशु उन को खाते खाते[1] जाड़ा काटेंगे ॥

७। उस समय जिस जाति के लोग लम्बे और चिकने हैं और वे आदि ही से डरावने होते आये हैं और वे मापने और रौंदनेहारे हैं और उन का देश नदियों से विभाग किया हुआ है उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्थान सिय्योन् पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेंट पहुंचाई जाएगी ॥

१९. मिस्र के विषय भारी वचन । देखो यहोवा शीघ्र उड़नेहारे बादल पर चढ़ा हुआ मिस्र में आ रहा है और मिस्र की मूरतें उस के आने से थरथरा उठेंगी और मिस्रियों का कलेजा कांप जाएगा ॥ २। और मैं मिस्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध उभारूंगा सो वे आपस में लड़ेंगे भाई से भाई पड़ोसी से पड़ोसी नगर से नगर राज्य से राज्य लड़ेंगे ॥ ३। और मिस्रियों की बुद्धि मारी पड़ेगी[3] और मैं उन की युक्तियों को व्यर्थ कर दूंगा और वे अपनी मूरतों के पास और ओझों और फुसफुसानेहारे टोनहों[4] के पास जा जाकर उन से पूछेंगे ॥ ४। और मैं मिस्रियों को कठोर स्वामी के हाथ में कर दूंगा और क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ ५। और समुद्र का जल घट जाएगा और महानद सूखते सूखते सूख जाएगा ॥ ६। और उस की शाखाएं बसाने लगेंगी और मिस्र[5] की नहरें भी घटते घटते सूख जाएंगी और नरकट और हूगले कुम्हलाएंगे ॥ ७। नील नदी के तीर पर के कछार की घास और नील नदी के पास

---

(१) मूल में उन पर। (२) मूल में और भूमि के सब। (३) मूल में मिस्र का आत्मा उस के भीतर छूछा होगा। (४) मूल में और फुसफुसानेहारो और ओझो और टोनहो। (५) मूल में मासोर्।

जो कुछ बोया जाएगा सो सूखकर नाश होगा[1] और उस का पता तक न रहेगा ॥ ८ । तब मछुए विलाप करेंगे और जितने नील नदी में बंसी डालते सो लम्बी लम्बी सांस लेंगे और जो जल के ऊपर जाल फेंकते हैं सो निर्बल हो जाएंगे[2] ॥ ९ । फिर जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उन की आशा टूटेगी ॥ १० । और मिस्र के रईस तो निराश[3] और उस में के सब मजूर उदास हो जाएंगे ॥ ११ । निश्चय सोअन् के सब हाकिम मूर्ख हैं और फिरौन के बुद्धिमान मंत्रियों की युक्ति पशु की सी हुई है फिरौन से तुम कैसे कह सकते हो कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र और प्राचीन राजाओं का पुत्र हूं ॥ १२ । तेरे बुद्धिमान् तो कहां रहे, सेनाओं के यहोवा ने मिस्र के विरुद्ध जो युक्ति किई है उस को वे तुझे बताएं वरन आप उस को जान लें ॥ १३ । सोअन् के हाकिम मूढ़ बने हैं नोप् के हाकिमों ने धोखा खाया है और मिस्र के गोत्रों के प्रधान लोगों[4] ने मिस्र को भरमा दिया है ॥ १४ । यहोवा ने उस के बीच भ्रमता उत्पन्न किई है उन्हों ने मिस्र को उस के सारे कामों में वमन करते हुए मतवाले की नाईं डगमगा दिया है ॥ १५ । और मिस्र के लिये कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर या पूंछ से खजूर की डाली वा सरकंडे से हो सके ॥

१६ । उस समय मिस्री लोग स्त्रियों के समान हो जाएंगे और सेनाओं का यहोवा जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उस के डर के मारे वे थरथराएंगे और कांप उठेंगे ॥ १७ । और यहूदा का देश मिस्र के लिये यहां लों भय का कारण होगा कि जिस के सुनने में उस की चर्चा किई जाए सो थरथरा उठेगा सेनाओं के यहोवा की उस युक्ति का यही फल होगा जो वह मिस्र के विरुद्ध करता है ॥

१८ । उस समय मिस्र देश के पांच नगर होंगे जिन के लोग कनान् की भाषा बोलेंगे और यहोवा की किरिया खाएंगे उन में से एक का नाम हेरेस् नगर[1] रक्खा जाएगा ॥

१९ । उस समय मिस्र देश के मध्य में यहोवा के लिये एक वेदी होगी और उस के सिवाने के पास यहोवा के लिये एक खंभा खड़ा होगा ॥ २० । और वह मिस्र देश में सेनाओं के यहोवा का चिन्ह और साक्षी ठहरेगा और जब वे अन्धेर करनेहारों के कारण यहोवा की दोहाई देंगे तब वह उन के पास एक उद्धारकर्त्ता और वीर भेजेगा और वह उन्हें छुड़ाएगा ॥ २१ । तब यहोवा अपने को मिस्रियों पर प्रगट करेगा और मिस्री लोग उस समय यहोवा का ज्ञान पाकर मेलबलि और अन्नबलि चढ़ाकर उस की उपासना करेंगे और यहोवा की मन्नत मानकर पूरी करेंगे ॥ २२ । और यहोवा मिस्र को कूटेगा वह कूटेगा और चंगा भी करेगा और वे यहोवा की ओर फिरेंगे और वह उन की बिन्ती सुनकर उन को चंगा करेगा ॥

२३ । उस समय मिस्र से अश्शूर् जाने का एक राजमार्ग होगा सो अश्शूरी लोग मिस्र में और मिस्री लोग अश्शूर् में जाएंगे और अश्शूरियों के संग मिस्री उपासना करेंगे ॥

२४ । उस समय इस्राएल् मिस्र और अश्शूर् तीनों मिलकर पृथिवी के मध्य में आशीष का कारण होंगे ॥ २५ । क्योंकि सेनाओं का यहोवा कह कहकर उन तीनों को आशीष देगा कि धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र और मेरा रचा हुआ अश्शूर् और मेरा निज भाग इस्राएल् ॥

२०.

जिस बरस में अश्शूर् के राजा सर्गोन् की आज्ञा से तर्तान् ने अश्दोद् के पास आकर उस से युद्ध किया और उस को ले भी लिया, २ । उसी बरस में यहोवा ने आमोस् के पुत्र यशायाह् से कहा जाकर अपनी कमर का टाट खोल और अपनी जूतियां उतार सो उस ने वैसा किया और उघाड़ा और नंगे पांव

(१) मूल में सूखकर भगाया जाएगा । (२) मूल में सो कुम्हलाएंगे । (३) मूल में उस के खम्भे तो टूट पड़ेंगे । (४) मूल में, गोत्रों के कोने ।

(१) अर्थात् ढह जानेवाला नगर ।

चलने लगा ॥ ३। और यहोवा ने कहा कि जिस प्रकार मेरा दास यशायाह् तीन बरस से उघाड़ा और नंगे पांव चलता आया है कि मिस और कूश् के लिये चिन्ह और चमत्कार हो, ४। उसी प्रकार अश्शूर् का राजा मिस और कूश् के क्या लड़के क्या बूढ़े सभों को बंधुए करके उघाड़े और नंगे पांव और नितम्ब खुले ले जाएगा जिस से मिस को लाज हो॥ ५। और वे कूश् के कारण जिस पर वे आशा रखते हैं और मिस के हेतु जिस पर वे फूलते हैं व्याकुल और लज्जित हो जाएंगे ॥ ६। और समुद्र के इस किनारे के रहनेहारे उस समय कहेंगे देखो जिन पर हम आशा रखते थे और जिन के पास हम अश्शूर् के राजा से बचने के लिये भागने को थे उन की तो ऐसी दशा हो गई है फिर हम लोग कैसे बचेंगे ॥

२१. समुद्र के पास के जंगल के विषय भारी वचन। जैसे दक्खिन देश में बवण्डर जोर से चलते हैं वैसे ही वह जंगल से अर्थात् डरावने देश से आता है ॥ २। कष्ट की बातों का दर्शन दिखाया गया है कि विश्वासघाती विश्वासघात करता और नाश करनेहारा नाश करता है, हे एलाम् चढ़ाई कर हे मादै घेर ले उस का सारा कराहना मैं ने बन्द किया है ॥ ३। इस कारण मेरी कटि में कठिन पीड़ा उपजी जननेहारी की सी पीड़ें मुझे उठी हैं मैं ऐसे संकट में हूं कि कुछ सुन नहीं पड़ता मैं ऐसा घबरा गया कि कुछ देख नहीं पड़ता ॥ ४। मेरा हृदय धड़क उठा मैं अत्यन्त भयभीत हूं जिस सांझ को मैं चाहता था उसे उस ने मेरी थरथराहट का कारण कर दिया है ॥ ५। भोजन[1] की तैयारी हो रही है, पहरुए बैठाये जा रहे हैं खाना पीना हो रहा है हे हाकिमो उठो ढाल में तेल लगाओ ॥ ६। प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि जाकर एक पहरुआ खड़ा कर दे और वह जो कुछ देखे सो बताए ॥ ७। और जब वह दो दो करके चलते हुए सवारों का दल और गदहों का दल और ऊंटों का दल देखे तब बहुत ही ध्यान देकर कान लगाए ॥ ८। और उस ने सिंह के से शब्द से पुकारा हे प्रभु मैं तो दिन भर लगातार खड़ा पहरा देता हूं और रात भर भी अपनी चौकी पर ठहरा रहता हूं ॥ ९। और क्या देखता हूं कि मनुष्यों का दल और दो दो करके चलते हुए सवार आ रहे हैं, और वह बोल उठा बाबेल् गिर गया गिर और उस के देवताओं की सब खुदी हुई मूरतें भूमि पर चकनाचूर कर डाली गई हैं ॥ १०। हे मेरे दाए हुए लोगो हे मेरे खलिहान के अन्न जो बातें मैं ने इस्राएल् के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी हैं उन को मैं ने तुम्हें जता दिया है ॥

११। दूमा के विषय भारी वचन। सेईर् में से कोई मुझे पुकार रहा है कि हे पहरुए रात कितनी रही है हे पहरुए रात कितनी रही है ॥ १२। पहरुआ कहता है कि भोर तो होने पर है और रात भी, यदि पूछो तो पूछो फिरो आओ ॥

१३। अरब के विरुद्ध भारी वचन। हे ददानी बटोहियों के दलो तुम को अरब के जंगल में रात बितानी पड़ेगी ॥ १४। प्यासे के पास वे जल लाये तेमा देश के रहनेहारे भागते हुए से मिलने को रोटी लिये हुए आ रहे हैं ॥ १५। वे तो तलवार से बरन नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और घोर युद्ध से भागे हैं ॥ १६। क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि मजूर के बरसों के अनुसार एक बरस में केदार् का सारा विभव विलाय जाएगा ॥ १७। और केदार् के धनुर्धारी शूरवीरों में से थोड़े ही रह जाएंगे क्योंकि इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

२२. दर्शन की तराई के विषय भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब के सब छतों पर चढ़ गये हो ॥ २। हे कोलाहल और हौरे से भरी नगरी हे हुलसनेहारे नगर तुझ में जो मारे हुए हैं सो न तो तलवार के मारे और न लड़ाई में मर गये हैं ॥ ३। तेरे सब न्यायी एक संग भागे और धनुर्धारियों से बान्धे गये

(१) मूल में मेज।

हैं और तेरे जितने पाये गये सो एक संग बान्धे गये वे दूर से भागे थे ॥ ४ । इस कारण मैं ने कहा मेरी ओर से मुंह फेर लो कि मैं बिलक बिलक रोऊं, मेरे नगर[1] के सत्यानाश होने के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्न मत करो ॥ ५ । वह तो सेनाओं के यहोवा प्रभु का ठहराया हुआ दिन होगा जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदा जाना और चौंधियाना होगा और शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दोहाई का शब्द पहाड़ों लों पहुंचेगा ॥ ६ । और एलाम् पैदलों के दल और सवारों समेत तर्कश बांधे हुए है और कीर् ढाल खोले हुए है ॥ ७ । और तेरी उत्तम उत्तम तराइयां रथों से भरी हुई होंगी और सवार फाटक के साम्हने पांति बांधेंगे ॥

८ । और उस ने यहूदा की आड़ खोल दिई और उस समय तू ने वन नाम भवन में के अस्त्र शस्त्र की सुधि लिई ॥ ९ । और तुम ने दाऊदपुर की शहरपनाह के दरारों को देखा कि बहुत से हैं और निचले पोखरे के जल को एकट्ठा किया, १० । और यरूशलेम् के घरों को गिनकर शहरपनाह के दृढ़ करने के लिये घरों को ढा दिया, ११ । और दोनों भीतों के बीच पुराने पोखरे के जल के लिये एक कुंड खोदा तुम ने उस के कर्त्ता की सुधि नहीं लिई और जिस ने प्राचीनकाल से उस को ठहरा रक्खा[2] है उस को और तुम ने दृष्टि नहीं किई ॥ १२ । और प्रभु सेनाओं के यहोवा ने उस समय रोने पीटने सिर मुंड़ाने और टाट पहिनने के लिये कहा था ॥ १३ । पर क्या देखा कि हर्ष और आनन्द गाय बैल का घात और भेड़ बकरी का वध मांस खाना और दाखमधु पीना और यह कहना कि खा पी ले कल तो मरना है ॥ १४ । सेनाओं के यहोवा ने मेरे कान में अपने मन की बात प्रगट किई कि निश्चय तुम लोगों के इस अधर्म्म का कुछ प्रायश्चित्त तुम्हारे मरने लों न हो सकेगा प्रभु सेनाओं का यहोवा यही कहता है ॥

१५ । प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि शेब्ना नाम उस भण्डारी के पास जो राजघराने के काम पर है जाकर कह कि, १६ । यहां तू क्या करता है और यहां तेरा कौन है कि तू ने यहां अपनी कबर खुदवाई है तू तो अपनी कबर ऊंचे स्थान में खुदवाता और अपने रहने का स्थान ढांग में खुदवा लेता है ॥ १७ । सुन यहोवा तुझ को पहलवान की नाईं बल से पकड़कर बड़ी दूर फेंक देगा ॥ १८ । वह तुझे मरोड़कर गेन्द की नाईं लम्बे चौड़े देश में फेंक देगा हे अपने स्वामी के घराने के लजवानेहारे वहां तू मरेगा और तेरे विभव के रथ वहीं रह जाएंगे ॥ १९ । मैं तुझ को तेरे स्थान पर से ढकेल दूंगा और वह तेरे पद से तुझे उतार देगा ॥ २० । और उस समय मैं हिल्किय्याह् के पुत्र अपने दास एल्याकीम् को बुलाकर, २१ । तेरा ही अंगरखा पहिनाऊंगा और उस की कमर में तेरी ही पेटी कसकर बान्धूंगा और तेरी प्रभुता उस के हाथ में दूंगा और वह यरूशलेम् के रहनेहारों और यहूदा के घराने का पिता ठहरेगा ॥ २२ । और मैं दाऊद के घराने की कुंजी उस के कंधे पर रक्खूंगा और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा ॥ २३ । और मैं उस को दृढ़ स्थान में खूंटी की नाईं गाड़ूंगा और वह अपने पिता के घराने के लिये विभव का कारण[1] होगा ॥ २४ । और उस के पिता के घराने का सारा विभव वंश और संतान सब छोटे छोटे पात्र क्या कटोरे क्या सुराहियां सो सब उस पर टांगी जाएंगी ॥ २५ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय वह खूंटी जो दृढ़ स्थान में गड़ेगी सो ढीली हो जाएगी और काटकर गिराई जाएगी और उस पर का बोझ कट जाएगा क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥

२३. सोर

के विषय भारी वचन । हे तर्शीश् के जहाजो हाय हाय करो क्योंकि वह ऐसा सत्यानाश हुआ कि उस में न तो घर न प्रवेश रहा यह बात उन को कित्तियों

(१) मूल में, बेटी । (२) मूल में रचा ।

(१) मूल में महिमायुक्त सिंहासन ।

के देश में से प्रगट किई गई है ॥ २। हे समुद्र के तीर के रहनेहारो चुपकर रहो तू जिस को समुद्र के पार जानेहारे सीदोनी व्योपारियों ने धन से भर दिया है, ३। और शीहोर्[1] का अन्न और नील नदी के पास की उपज महासागर के मार्ग से उस को मिलती थी सो वह और और जातियों के लिये व्योपार का स्थान हुआ ॥ ४। हे सीदोन् लज्जित हो क्योंकि समुद्र ने अर्थात् समुद्र के दृढ़ स्थान ने यह कहा है कि मैं ने न तो कभी जनने की पीड़ा जानी न बालक जनी और न बेटों को पाला न बेटियों को पोसा है ॥ ५। जब सोर् का समाचार मिस्र में पहुंचे तब वे सुनकर संकट में पड़ेंगे ॥ ६। हे समुद्र के तीर के रहनेहारो हाय हाय करो पार होकर तर्शीश् को जाओ ॥ ७। क्या यह तुम्हारी हुलस से भरी हुई नगरी है जो प्राचीनकाल से बसी थी जिस के पांव उसे बसने को दूर ले जाते थे ॥ ८। सोर् जो राजाओं को गद्दी पर बैठाती थी[2] जिस के व्योपारी हाकिम हुए थे और जिस के महाजन पृथिवी भर में प्रतिष्ठित थे उस के विरुद्ध किस ने ऐसी युक्ति किई है ॥ ९। सेनाओं के यहोवा ही ने ऐसी युक्ति किई है कि सारी शोभा के घमण्ड को तुच्छ करा दे और पृथिवी के प्रतिष्ठितों का अपमान कराए ॥ १०। हे तर्शीश् के निवासियो[3] नील नदी की नाईं अपने देश में फैल जाओ क्योंकि अब कुछ बंधन[4] नहीं रहा ॥ ११। उस ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाकर राज्य राज्य को हिला दिया है यहोवा ने कनान के दृढ़ स्थानों के नाश करने की आज्ञा दिई है ॥ १२। और उस ने कहा है हे सीदोन् हे भ्रष्ट किई हुई कुमारी तू फिर हुलसने की नहीं उठ पार होकर कित्तियों के पास जा तो जा पर वहां भी तुझे चैन न मिलेगा ॥ १३। कसदियों के देश को देखो यह जाति अब न रही अश्शूर् ने उस देश को जंगली जन्तुओं का स्थान ठहराया उन्हों ने गुम्मट उठाए और राजभवनों को ढा दिया और उस को खण्डहर कर दिया ॥ १४। हे तर्शीश् के जहाजो हाय हाय करो क्योंकि तुम्हारा दृढ़ स्थान उजड़ गया है ॥ १५। उस समय एक राजा के दिनों के अनुसार सत्तर बरस लों सोर् बिसरा हुआ रहेगा और सत्तर बरस के बीते पर सोर् वेश्या की नाईं गीत गाने लगेगा ॥ १६। हे बिसरी हुई वेश्या वीणा लेकर नगर में घूम भली भांति बजा बहुत गीत गा जिस से तू फिर स्मरण में आए ॥ १७। और सत्तर बरस के बीते पर यहोवा सोर् की सुधि लेगा और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर धरती भर के सब राज्यों के संग छिनाला करेगी ॥ १८। और उस के व्योपार की प्राप्ति और उस के छिनाले की कमाई यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी वह न भण्डार में रक्खी जाएगी न संचय किई जाएगी क्योंकि उस के व्योपार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के साम्हने रहा करेंगे कि उन को पूरा भोजन और चमकीला वस्त्र मिले ॥

(१) अर्थात् मिस्र का उत्तरवाला भाग। (२) मूल में मुकुट रखनेहारी सोर। (३) मूल में तर्शीश की बेटी। (४) मूल में फेंटा।

२४. सुनो

यहोवा पृथिवी को निर्जन और सुनसान करने पर है वह उस को उलटकर उस के रहनेहारों को तितर बितर करेगा ॥ २। और जैसा यजमान वैसा याजक जैसा दास वैसा स्वामी जैसी दासी वैसी स्वामिनी जैसा लेनेहारा वैसा बेचनेहारा जैसा उधार देनेहारा वैसा उधार लेनेहारा जैसा व्याज लेनेहारा वैसा व्याज देनेहारा सभों की एक ही दशा होगी ॥ ३। पृथिवी सून ही सून और नाश ही नाश हो जाएगी क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है ॥ ४। पृथिवी विलाप करेगी और मुर्झाएगी जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा पृथिवी के महान लोग कुम्हला जाएंगे ॥ ५। क्योंकि पृथिवी अपने रहनेहारों के कारण[1] अशुद्ध हो गई है क्योंकि उन्हों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला और सनातन वाचा को तोड़ दिया है ॥ ६। इस कारण साप पृथिवी को ग्रसेगा और उस के रहनेहारे दोषी ठहरेंगे और इसी कारण पृथिवी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे ॥ ७। नया

(१) मूल में नीचे।

दाखमधु जाता रहेगा[1] दाखलता मुर्भा जाएगी और जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी लम्बी सांस लेंगे ॥ ८। डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा हुलसनेहारों का कोलाहल जाता रहेगा वीणा का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा ॥ ९। वे गाकर दाखमधु न पीएंगे पीनेहारों को मदिरा कड़ुवी लगेगी ॥ १०। सुनसान होनेहारी नगरी नाश होगी उस का हर एक घर ऐसा बंद किया जाएगा कि कोई पैठ न सकेगा ॥ ११। सड़कों में लोग दाखमधु के लिये चिल्लाएंगे आनन्द मिट जाएगा[2] देश का सारा हर्ष जाता रहेगा ॥ १२। नगर में उजाड़ ही रह जाएगा और उस के फाटक तोड़कर नाश किये जाएंगे ॥ १३। और पृथिवी के बीच देश देश के मध्य वह ऐसा होगा जैसा कि जलपाइयों के झाड़ने के समय वा दाख तोड़ने के समय के अन्त में कोई कोई फल रह जाते हैं ॥ १४। वे लोग गला खोलकर जयजयकार करेंगे और यहोवा के माहात्म्य को देखकर समुद्र से पुकारेंगे ॥ १५। इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो और समुद्र के द्वीपों में इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो ॥

१६। पृथिवी की छोर से हम को ऐसे गीत सुन पड़ते हैं कि धर्मी के लिये शोभा है। पर मैं ने कहा हाय हाय मैं नाश हो गया नाश[3] विश्वासघाती विश्वासघात करते वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं ॥ १७। हे पृथिवी के रहनेहारो तुम्हारे लिये भय और गड़हा और फन्दा हैं॥ १८। और जो कोई भय के शब्द से भागे सो गड़हे में गिरेगा और जो कोई गड़हे में से निकले सो फंदे में फंसेगा क्योंकि आकाश के झरोखे खुल जाएंगे और पृथिवी की नेव डोल उठेगी ॥ १९। पृथिवी फट फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाएगी पृथिवी अत्यंत कांप उठेगी ॥ २०। पृथिवी मतवाले की नाईं बहुत डगमगाएगी और मचान की नाईं डोलेगी वह अपने पाप के बोझ से दबकर गिरेगी और फिर न उठेगी ॥ २१। उस समय यहोवा आकाश की सेना को आकाश में और पृथिवी के राजाओं को पृथिवी ही पर दण्ड देगा ॥ २२। और वे बंधुओं की नाईं गड़हे में एकट्ठे किये जाएंगे और बन्दीगृह में बंद किये जाएंगे और बहुत दिन के पीछे उन की सुधि लिई जाएगी ॥ २३। तब चन्द्रमा संकुचित[1] हो जाएगा और सूर्य्य लजाएगा क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन् पर्वत पर और यरूशलेम् में अपनी प्रजा के पुरनियों के साम्हने प्रताप के साथ राज्य करेगा ॥

(१) मूल में विलाप करेगा। (२) मूल में अन्धेरा होगा। (३) मूल में क्षीण हो गया क्षीण।

२५. हे यहोवा तू मेरा परमेश्वर है मैं तुझे सराहूंगा मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने आश्चर्य्य कर्म्म किये हैं तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां किई हैं ॥ २। तू ने तो नगर को डीह और उस गढ़वाले नगर को खण्डहर कर डाला है तू ने परदेशियों की राजपुरी को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा वह फिर कभी बसाई न जाएगी ॥ ३। इस कारण बलवन्त राज्य के लोग तेरी महिमा करेंगे भयानक अन्यजातियों के नगर में तेरा भय माना जाएगा ॥ ४। क्योंकि तू दीन और दरिद्र के संकट में उन का दृढ़स्थान हुआ जब भयानक लोगों का झोंका भीत पर के बौछार के समान होता था तब तू उस बौछार से बचने के लिये शरणस्थान और तपन में छाया का ठौर हुआ ॥ ५। जैसा निर्जल देश में तपन बादल की छाया से ठण्ढी होती है वैसा ही तू परदेशियों का हौरा और भयानकों का जयजयकार बन्द करता[1] है ॥

६। और सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसी जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और थिराया हुआ दाखमधु होगा चिकना भोजन तो उत्तम से उत्तम और थिराया हुआ दाखमधु खूब थिराया हुआ होगा ॥ ७। और जो पर्दा[2] सब देशों के लोगों

(१) मूल में चन्द्रमा का मुंह काला। (२) मूल में झुका देता। (२) मूल में परदे का जो मुंह।

पर पड़ा है और जो ओाहार सब अन्यजातियों पर पड़ा हुआ है उन दोनों को वह इसी पर्वत पर नाश करेगा ॥ ८ । वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथिवी पर से दूर करेगा क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

९ । और उस समय यह कहा जाएगा कि देखो हमारा परमेश्वर यही है हम इस की बाट जोहते आये हैं यह हमारा उद्धार करेगा यहोवा यही है हम इस की बाट जोहते आये हैं हम इस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे ॥ १० । क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का हाथ ठहरेगा और मोआब् अपने ही स्थान में ऐसा लताड़ा जाएगा जैसा पुआल घूरे के जल में लताड़ा जाता है ॥ ११ । और वह उस में अपने हाथ पैरने के समय की नाईं फैलाएगा पर वह उस के गर्व को तोड़ेगा और उस की चतुराई की युक्तियों[1] को निष्फल कर देगा[2] ॥ १२ । और वह तेरी ऊंची ऊंची और मजबूत मजबूत शहरपनाहों को झुकाएगा और नीचा करेगा और भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देगा ॥

२६. उस समय यह गीत यहूदा देश में गाया जाएगा कि हमारे तो एक दृढ़ नगर है उस की शहरपनाह और धुस का काम देने के लिये वह उद्धार को ठहराता है ॥ २ । फाटकों को खोलो कि सच्चाई का पालन करनेहारी एक धर्मी जाति प्रवेश करे ॥ ३ । जिस का मन धीरज धरे हुए है उस की तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है क्योंकि वह तुझ पर भरोसा किये हुए रहता है ॥ ४ । यहोवा पर सदा सर्वदा भरोसा किये हुए रहो क्योंकि याह् यहोवा युग युग की चटान ठहरा है ॥ ५ । वह तो ऊंचे पदवालों को झुका देता जो नगर ऊंचे पर बसा है उस को वह नीचे कर देता वह उस को भूमि पर गिराकर मिट्टी ही में मिला देता है ॥ ६ । वह दीनों के पांवों और दरिद्रों के पैरों से रौंदा जाएगा[1] ॥

७ । धर्मी के लिये मार्ग सीधा है तू जो आप सीधा है सो धर्मी के रास्ते को चौरस कर देता है ॥ ८ । हे यहोवा सचमुच हम लोग तेरे न्याय के कामों की बाट जोहते आये हैं तेरे नाम और तेरे स्मरण की हमारे जीव में लालसा बनी रहती है ॥ ९ । रात के समय मैं ने अपने जी से तेरी लालसा किई है मैं अपने सारे मन से यत्न के साथ तुझे ढूंढ़ता हूं क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथिवी पर प्रगट होते हैं तब जगत के रहनेहारे धर्म्म को सीखते हैं ॥ १० । दुष्ट पर चाहे दया भी किई जाए तौभी वह धर्म्म को न सीखेगा धर्म्मराज्य[2] में भी वह कुटिलता करेगा और यहोवा का माहात्म्य उसे सूझ नहीं पड़ने का ॥

११ । हे यहोवा तेरा हाथ बढ़ाया हुआ तो है पर वे देखते नहीं, वे देखेंगे कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन है और लजाएंगे और तेरे बैरी आग से भस्म होंगे ॥ १२ । हे यहोवा तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा जो कुछ हम ने किया है सो तू ही ने हमारे लिये किया है ॥ १३ । हे हमारे परमेश्वर यहोवा तुझे छोड़ और और स्वामी हम पर प्रभुता करते तो थे पर तेरी कृपा से हम तेरे ही नाम का गुणानुवाद करने पाते हैं ॥ १४ । वे मर गये हैं फिर नहीं जीने के उन को मरे बहुत दिन हुए फिर नहीं उठने के, तू ने उन का विचार करके उन को ऐसा नाश किया कि वे फिर स्मरण में न आएंगे ॥ १५ । तू ने जाति को बढ़ाया हे यहोवा तू ने जाति को बढ़ाया है तू ने अपनी महिमा दिखाई है और इस देश के सब सिवानों को तू ने बढ़ाया है ॥

१६ । हे यहोवा दुःख में वे तुझे स्मरण करते थे जब तू उन्हें ताड़ना देता था तब वे दबे स्वर से अपने मन की बात तुझ पर प्रगट करते थे[3] ॥ १७ । जैसे गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती और पीड़ों

(१) मूल में उस के हाथों की चतुर युक्तियों । (२) मूल में नीचा कर देगा ।

(१) मूल में उस को पांव रौंदेगा दीन के पांव कंगालों के कदम । (२) मूल में धर्म्म के देश । (३) मूल में उण्डेल दिई ।

के कारण चिल्ला उठती है हम लोग भी हे यहोवा तेरे साम्हने वैसे ही हो गये हैं ॥ १८ । हम भी गर्भवती हुए हम भी ऐंठे हम मानो वायु ही जने हम ने देश के लिये उद्धार का कोई काम नहीं किया और न जगत के रहनेहारे उत्पन्न[1] हुए ॥ १९ । तेरे मरे हुए लोग जीएंगे मेरे मुर्दे उठ खड़े होंगे हे मिट्टी में मिले हुओ जागकर जयजयकार करो क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है और पृथिवी बहुत दिन के मरे हुओं को लौटा देगी ॥

२० । हे मेरे लोगो आओ अपनी अपनी कोठरी मे प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो जब लों क्रोध शान्त न हो[2] तब लों अर्थात् पल भर अपने को छिपा रक्खो ॥ २१ । क्योंकि देखो यहोवा पृथिवी के निवासियों को अधर्म्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता है और पृथिवी अपना खून उघारेगी और घात किये हुओं को फिर न छिपा रक्खेगी ॥

२७. उस समय यहोवा अपनी कड़ी और बड़ी और पोढ़ तलवार से लिव्यातान् नाम वेग चलनेहारे सर्प और लिव्यातान् नाम टेढ़े सर्प दोनों को दण्ड देगा और जो अजगर समुद्र में रहता है उस को भी घात करेगा ॥

२ । उस समय एक दाख की बारी होगी तुम उस का यश गाओ ॥ ३ । मैं यहोवा उस की रक्षा करता हूं मैं क्षण क्षण उस को सींचता रहूंगा मैं रात दिन उस की रक्षा करता रहूंगा न हो कि कोई उस की हानि करने पाए ॥ ४ । मेरे मन में जलजलाहट नहीं होती यदि कोई भांति भांति के कटीले पेड़ मुझ से लड़ने को खड़े करता तो मैं उन पर पांव बढ़ाकर उन को पूरी रीति से भस्म कर देता. ५ । वा वह मेरे साथ मेल करने को मेरी शरण ले वह मेरे साथ मेल कर ले ॥ ६ । आनेहारे काल में याकूब जड़ पकड़ेगा और इस्राएल् फूले फलेगा और उस के फलों से जगत भर जाएगा ॥

७ । क्या उस ने उस को ऐसा मारा जैसा उस ने उस के मारनेहारों को मारा था क्या वह ऐसा घात किया गया जैसे उस के घात किये हुए घात किये गये हैं ॥ ८ । जब तू उस को निकाल देता है तब सोच सोचकर और विचार विचारकर उस को दु:ख देता है,[1] उस ने पुरवाई बहने के दिन में उस को प्रचण्ड वायु से अलग कर दिया ॥ ९ । सो इस से याकूब के अधर्म्म का प्रायश्चित्त किया जाएगा और उस के पाप के दूर होने का फल यही होगा कि वे वेदी के सब पत्थरों को चूना बनाने के पत्थरों के समान जानकर चकनाचूर करेंगे और अशेरा नाम मूर्त्तियां और सूर्य्य की प्रतिमाएं फिर न खड़ी किई जाएंगी ॥ १० । गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है वह छोड़ी हुई बस्ती हुआ है और त्यागे हुए जंगल के समान हो गया है वहां बछड़े चरेंगे और वहीं बैठेंगे और वहीं पेड़ों की डालियों की फुनगी को खा लेंगे ॥ ११ । जब उन की शाखाएं सूख जाएं तब तोड़ी जाएंगी स्त्रियां आ उन को तोड़कर जला देंगी क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि हैं इस लिये उन का कर्त्ता उनपर दया न करेगा और उन का रचनेहारा उन पर अनुग्रह न करेगा ॥

१२ । उस समय यहोवा महानद से ले मिस्र के नाले लों अपने अन्न को झाड़ देगा और हे इस्राएलियो तुम एक एक करके बटोरे जाओगे ॥

१३ । उस समय बड़ा नरसिंगा फूंका जाएगा और अश्शूर् देश में के नाश होनेहारे और मिस्र देश में के परवस बसाये हुए यरूशलेम् में आ आकर पवित्र पर्वत पर यहोवा को दण्डवत् करेंगे ॥

२८. हाय एप्रैम् के मतवालों के घमण्ड के मुकुट पर हाय उन के सुन्दर भूषणरूपी मुर्झानेहारे फूल पर जो दाखमधु के पियक्कड़ों की अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है ॥ २ । सुनो प्रभु के एक बलवन्त और सामर्थी है जो ओले की वर्षा वा रोग उपजानेहारी आंधी वा उमंडनेहारी प्रचण्ड धारा की नाई बल से उस को भूमि पर गिरा देगा ॥ ३ । एप्रैमी मतवालों के घमण्ड का

---

(१) वा जन्मे । (२) मूल में. निकल न जाए ।

(१) मूल में उस के साथ झगड़ा किया।

मुकुट पांव से लताड़ा जाएगा ॥ ४ । और उन का सुन्दर भूषणरूपी मुर्झानेहारा फूल जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है सो उस अंजीर के समान होगा जो धूपकाल से पहिले पके और देखनेहारा देखते समय हाथ में लेते ही उसे निगल जाए ॥ ५ । उस समय अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिये सेनाओं का यहोवा आप ही सुन्दर मुकुट और शोभायमान किरीट ठहरेगा ॥ ६ । और जो न्याय करने को बैठते हैं उन के लिये न्याय करानेहारा आत्मा और जो चढ़ाई करते हुए शत्रुओं को[1] नगर के फाटक से हटा देते हैं उन के लिये वह वीरता ठहरेगा॥

७ । पर ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा के द्वारा लड़खड़ाते हैं याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं दाखमधु ने उन्हीं को पी लिया वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते हैं वे दर्शन पाते हुए डगमगाते और विचार करते हुए लटपटाते हैं ॥ ८ । और सब मेजें वमन और मैल से भरी हैं उन पर कुछ स्थान नहीं रहा ॥ ९ । वह किस को ज्ञान सिखाएगा और किस को अपने समाचार का अर्थ समझाएगा क्या उन को जो दूध छुड़ाये हुए और स्तन से अलगाये हुए हैं ॥ १० । आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा नियम पर नियम नियम पर नियम कहीं थोड़ा कहीं थोड़ा ऐसा होता है[2] ॥ ११ । वह तो इन लोगों से अशुद्ध बोली और दूसरी भाषा के द्वारा बातें करेगा ॥ १२ । उस ने उन से कहा तो था विश्राम इसी से मिलेगा इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो और चैन इसी से मिलेगा पर उन्हों ने सुनना न चाहा ॥ १३ । पर यहोवा का वचन उन के पास आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा नियम पर नियम नियम पर नियम कहीं थोड़ा कहीं थोड़ा इस रीति पर पहुंचेगा जिस से वे ठोकर खा चित्त गिरकर घायल हो जाएं और फंदे में फंसकर पकड़े जाएं॥

१४ । इस कारण हे ठट्ठा करनेहारो जो इस यरूशलेम्वासी प्रजा के हाकिम हो यहोवा का वचन सुनो॥ १५ । तुम ने तो कहा है कि हम ने मृत्यु से वाचा बांधी और अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है इस कारण विपत्ति जब बाढ़ की नाईं बढ़ आए तब हमारे पास न आएगी क्योंकि हम ने झूठ को शरण लिई और मिथ्या की आड़ में छिपे हुए हैं ॥ १६ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं ने सिय्योन् में नेव का एक पत्थर रक्खा है सो परखा हुआ पत्थर और कोने का अनमोल और अति दृढ़ और नेव के योग्य पत्थर है और जो विश्वास रक्खे उसे उतावली करनी न पड़ेगी ॥ १७ । और मैं न्याय को डोरी और धर्म्म को साहुल ठहराऊंगा और तुम्हारा झूठरूपी शरणस्थान ओलों से बह जाएगा और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूबेगा ॥ १८ । और जो वाचा तुम ने मृत्यु से बांधी सो टूट जाएगी और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई सो न ठहरेगी जब विपत्ति बाढ़ की नाईं बढ़ आए तब तुम उस में डूब[1] हो जाओगे ॥ १९ । जब जब वह बढ़ आए तब तब वह तुम को ले जाएगी वह तो भोर भोर वरन रात दिन बढ़ा करेगी तब इस समाचार का समझना व्याकुल होने ही का कारण होगा ॥ २० । बिछौना तो टांग फैलाने के लिये छोटा और ओढ़ना ओढ़ने के लिये तंग है ॥

२१ । क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम् नाम पर्वत पर खड़ा हुआ था और जैसा गिबोन् की तराई में उस ने क्रोध दिखाया था वैसा ही वह अब क्रोध दिखाएगा जिस से वह अपना ऐसा काम करे जो बिराना है और वह कार्य्य करे जो अनोखा है ॥ २२ । सो अब ठट्ठा मत मारो नहीं तो तुम्हारे बंधन कसे जाएंगे क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा प्रभु से यह सुना है कि सारे देश का सत्यानाश ठाना गया है ॥

२३ । कान लगाकर मेरी सुनो ध्यान धरकर मेरा वचन सुनो ॥ २४ । क्या हल जोतनेहारा बीज बोने के लिये लगातार जोतता रहता है क्या वह सदा धरती को चीरता और हेंगाता रहता है ॥ २५ ।

(१) मूल में लड़ाई को। (२) मूल में थोड़ा यहां थोड़ा वहां।

(१) मूल में लताड़े।

क्या वह उस को चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता और जीरे को नहीं बखेरता और गेहूं को पांति पांति करके और जव को उस के निज स्थान पर और कठिये गेहूं को खेत की छोर पर नहीं बोता ॥ २६ । क्योंकि उस का परमेश्वर उस को ठीक ठीक करना सिखाता और बतलाता है ॥ २७ । दांवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर चलाया नहीं जाता पर सौंफ छड़ी से और जीरा सोंटे से झाड़ा जाता है ॥ २८ । क्या रोटी का अन्न चूर चूर किया जाता है, सो नहीं कोई उस को सदा दांवता नहीं रहता और न गाड़ी के पहिये और न घोड़े उस पर चलाता है वह उसे चूर चूर नहीं करता ॥ २९ । यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से होता है, वह अद्भुत युक्ति और महाबुद्धि दिखाता है ॥

२९. हाय

हाय अरीएल्[1] पर हाय अरीएल् पर उस नगर पर जिस में दाऊद छावनी किये हुए रहा बरस पर बरस जोड़ते जाओ उत्सव के पर्व अपने अपने समय आते रहें ॥ २ । मैं तो अरीएल् को सकेती में डालूंगा और रोना पीटना होगा और वह मेरे लेखे में सचमुच अरीएल् सा ठहरेगा ॥ ३ । और मैं चारों ओर तेरे विरुद्ध छावनी करके तुझे कोठों से घेर लूंगा और तेरे विरुद्ध गढ़ भी बनाऊंगा ॥ ४ । तब तू गिराकर भूमि में धसाया जाएगा और धूल पर से बोलेगा और तेरी बातें भूमि से धीमी धीमी सुनाई देंगी और तेरा बोल भूमि से ओझे का सा होगा और तू धूल से गुनगुना गुनगुनाकर बोलेगा ॥ ५ । तब तेरे परदेशी वैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूलि की नाईं और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसे की नाईं उड़ाई जाएगी और यह बात अचानक पल भर में होगी ॥ ६ । सेनाओं का यहोवा बादल गरजाता और भूमि को कम्पाता और महाध्वनि करता और बवण्डर और आंधी चलाता और नाश करनेहारी अग्नि भड़काता हुआ उस के पास आएगा ॥ ७ । और जातियों की सारी भीड़भाड़ जो अरीएल् से युद्ध करेगी और जितने लोग उस के और उस के गढ़ के विरुद्ध लड़ेंगे और उस को सकेती में डालेंगे सो सब रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे ॥ ८ । और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखे कि मैं खा रहा हूं पर जागकर क्या देखे कि मेरा पेट जलता[2] है वा कोई प्यासा स्वप्न में तो देखे कि मैं पी रहा हूं पर जागकर क्या देखे कि मेरा गला सूखा जाता[3] और मैं प्यासों मरता हूं[3] वैसी ही उन सब जातियों की भीड़भाड़ की दशा होगी जो सिय्योन् पर्वत से युद्ध करेंगी ॥

९ । विलम्ब करो और चकित हो जाओ अपने तईं अन्धे करो और अन्धे हो जाओ वे मतवाले तो हैं पर दाखमधु पीने से नहीं वे डगमगाते तो हैं पर मदिरा पीने से नहीं ॥ १० । यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया[4] और उस ने तुम्हारी नबीरूपी आंखों को बन्द कर दिया और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर पर्दा डाला है ॥ ११ । सो सारा दर्शन तुम्हारे लिये एक लपेटी और छाप किई हुई पुस्तक की बातों के समान ठहरा जिसे कोई पढ़े लिखे हुए मनुष्य को यह कहकर दे कि इसे पढ़ और वह कहे कि मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर छाप किई हुई है, १२ । तब वही पुस्तक अनपढ़े को यह कहकर दिई जाए कि इसे पढ़ और वह कहे कि मैं तो अनपढ़ा हूं ॥

१३ । प्रभु ने कहा है ये लोग जो मुंह की बातों[5] से मेरा आदर करते हुए समीप तो आते पर अपना मन मुझ से दूर रखते हैं और ये जो मेरा भय मानते हैं सो मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर मानते हैं[6], १४ । इस कारण सुन मैं इन के साथ अद्भुत काम बरन अति अद्भुत और अचंभे का काम करूंगा तब इन के बुद्धिमानों की बुद्धि नाश होगी और इन के प्रवीणों की प्रवीणता जाती रहेगी[7] ॥

१५ । हाय उन पर जो अपनी युक्ति को यहोवा

(१) अर्थात् ईश्वर का अग्निकुण्ड वा ईश्वर का सिंह ।

(१) मूल में शून्य । (२) मूल में कि मैं थका । (३) मूल में मेरा जीव लालसा करता है । (४) मूल में तुम पर भारी नींद का आत्मा उण्डेला । (५) मूल में मुंह और होंठों । (६) मूल में सो मनुष्यों की सिखाई हुई आज्ञा है । (७) मूल में छिप जाएगी ।

से छिपाने का बड़ा यत्न करते[1] और अपने काम अन्धेरे में करके कहते हैं कि हम को कौन देखता और हम को कौन जानता है ॥ १६ । हाय तुम्हारी कैसी उलटी समझ है क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य गिना जाएगा क्या कार्य्य अपने कर्त्ता के विषय कहेगा कि उस ने मुझे नहीं बनाया वा रची हुई वस्तु अपने रचनेहारे के विषय कहे कि वह कुछ समझ नहीं रखता ॥ १७ । क्या अब बहुत ही थोड़े दिन के बीते पर लबानोन् फिर फलदाई बारी न बन जाएगा और फलदाई बारी जंगल न गिनी जाएगी ॥ १८ । और उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लगेंगे और अन्धे जिन्हें अब कुछ नहीं सूझता सो देखने लगेंगे[2] ॥ १९ । और नम्र लोग यहोवा के कारण अधिक आनन्दित और दरिद्र मनुष्य इस्राएल् के पवित्र के कारण मगन होंगे ॥ २० । क्योंकि उपद्रवी फिर न रहेंगे और ठट्ठा करनेहारों का अन्त होगा और जो अनर्थ काम करने के लिये जागते रहते हैं, २१ । और जो मनुष्यों को वचन से पाप में फंसाते हैं और उन के लिये जो सभा[3] में उलहना देते हैं फंदा लगाते और धर्म्मी को व्यर्थ बात के द्वारा बिगाड़ देते हैं सो सब मिट जाएंगे ॥ २२ । इस कारण इब्राहीम् का छुड़ानेहारा यहोवा याकूब के घराने के विषय यों कहता है कि याकूब को फिर लजाना न पड़ेगा और न उस का मुख फिर नीचा[4] होगा ॥ २३ । और जब उस के सन्तान मेरा काम देखेंगे जो मैं उन के मध्य में करूंगा तब वे मेरे नाम को पवित्र ठहराएंगे, वे याकूब के पवित्र को पवित्र ही ठहराएंगे और इस्राएल् के परमेश्वर का अति भय मानेंगे ॥ २४ । उस समय जिन का मन भटक गया सो बुद्धि सीख लेंगे और जो कुड़कुड़ाते हैं सो शिक्षा पाएंगे ॥

३०. **य**होवा की यह वाणी है कि हाय उन बलवा करनेहारे लड़कों पर जो युक्ति करते तो हैं पर मेरी ओर से नहीं और वाचा बान्धते तो हैं पर वह मेरे आत्मा की सिखाई हुई नहीं और इस प्रकार पाप पर पाप बढ़ाते हैं ॥ २ । वे मुझ से बिन पूछे मिस्र को चले जाते हैं कि फिरौन के शरणस्थान से बलवान हों और मिस्र की छाया में शरण लें । ३ ॥ फिरौन का शरणस्थान तुम्हारे आशा टूटने का और मिस्र की छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा का कारण होगा ॥ ४ । उस के हाकिम सोअन् में तो आये हैं और उस के दूत अब हानेस् में पहुंचे हैं ॥ ५ । वे सब एक ऐसी जाति के कारण लजाएंगे जिस से उन का कुछ लाभ न होगा और वह सहायता और लाभ के बदले लज्जा और नामधराई का कारण होगी ॥

६ । दक्खिन देश के पशुओं के विषय भारी वचन । वे अपनी धन सम्पत्ति को जवान गदहों की पीठ पर और अपने खजानों को ऊंटों के कूबड़ों पर लादे हुए संकट और सकेती के देश में होकर जहां[1] सिंह और सिंहनी नाग और उड़नेहारे तेज विषवाले सर्प रहते हैं उन लोगों के पास जा रहे हैं जिन से उन का लाभ न होगा ॥ ७ । क्योंकि मिस्र का सहायता करना व्यर्थ और अकारथ होगा इस कारण मैं ने उस को बैठा रहनेहारा रहब्[2] कहा है ॥ ८ । अब जाकर इस को उन के साम्हने पत्तर पर खोद और पुस्तक में लिख कि यह आनेहारे दिनों के लिये सदा सर्वदा लों बना रहे ॥ ९ । क्योंकि वे बलवा करनेहारे लोग और झूठ बोलनेहारे लड़के हैं जो यहोवा की शिक्षा को सुनने नहीं चाहते ॥ १० । वे दर्शियों से कहते हैं कि दर्शी का काम मत करो और नबियों से कहते हैं कि हमारे लिये ठीक नबूवत मत करो, हम से चिकनी चुपड़ी बातें बोलो धोखा देनेहारी नबूवत करो ॥ ११ । मार्ग से मुड़ो पथ से हटो और इस्राएल् के पवित्र को हमारे साम्हने से दूर[3] करो ॥ १२ । इस कारण इस्राएल् का पवित्र यों कहता है कि तुम लोग जो मेरे इस वचन को निकम्मा जानते और अन्धेर और कुटिलता पर भरोसा करके उन्हीं पर टेक लगाते हो, १३ । इस

(१) मूल में नीचे जाते हैं । (२) मूल में अन्धों की आंखें तिमिर और अन्धकार से देखेंगी । (३) मूल में फाटक । (४) मूल में विवर्ण ।

(१) मूल में जिन से । (२) अर्थात् अभिमान । (३) मूल में बन्द ।

कारण यह अधर्म्म तुम्हारे लिये ऐसा होगा जैसा ऊंची भीत का फूला हुआ भाग जो फटकर गिरने पर हो और वह अचानक पल भर में टूटकर गिर पड़े ॥ १४। और वह उस को ऐसा नाश करेगा जैसा कोई मिट्टी का घड़ा छोह विना ऐसा चकनाचूर करे कि उस के टुकड़ों में ऐसा भी ठीकरा न रहे जिस से अंगेठी में से आग लिई जाए वा गड़हे में से जल निकाला जाए ॥ १५। प्रभु यहोवा इस्राएल् के पवित्र ने यों कहा था कि लौटने और शान्त रहने से तुम्हारा उद्धार होगा चुपचाप रहने और भरोसा रखने से तुम्हारी वीरता ठहरेगी पर तुम ने ऐसा करना नहीं चाहा ॥ १६। तुम ने कहा कि नहीं हम घोड़ों पर भागेंगे इस कारण तुम्हें भागना पड़ेगा और यह भी कहा हम तेज सवारी पर चलेंगे इस कारण तुम्हारा पीछा करनेहारे तेज चलेंगे ॥ १७। एक हजार एक ही की धमकी से भागेंगे तुम पांच ही की धमकी से भागोगे और अन्त को तुम पहाड़ की चोटी पर के डण्डे वा टीले के ऊपर की ध्वजा के समान विरले रह जाओगे ॥

१८। और यहोवा इस लिये विलम्ब करेगा कि तुम पर अनुग्रह करे और इस लिये ऊंचे पर चढ़ेगा कि तुम पर दया करे क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है सो क्या ही धन्य हैं वे सब जो उस पर आशा धरे रहते हैं ॥ १९। प्रजा के लोग तो यरूशलेम् अर्थात् सिय्योन् में बसे रहेंगे तू फिर कभी न रोएगा वह तेरी दोहाई सुनते ही तुझ पर निश्चय अनुग्रह करेगा सुनते ही वह तेरी मानेगा ॥ २०। और चाहे प्रभु तुम्हारी रोटी की कमी और जल की तंगी करे तौभी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिप जाएंगे और तुम अपनी आंखों से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे ॥ २१। और जब कभी तुम दहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा कि मार्ग यही है इसी पर चलो ॥ २२। और तुम वह चांदी जिस से तुम्हारी गढ़ी हुई मूर्त्तियां मढ़ी हैं और वह सोना जिस से तुम्हारी ढली हुई मूर्त्तियां आभूषित हैं अशुद्ध करोगे तुम उन को मैले कुचैले वस्त्र की नाईं फेंक दोगे और कहोगे कि दूर हो ॥ २३। और वह तेरे बीज के लिये जल बरसाएगा कि तुम खेत में बीज बो सको और भूमि की उपज भी अच्छी देगा और वह उत्तम और स्वादिष्ट होगी और उस समय तुम्हारे ढोरों को लम्बी चौड़ी चराई मिलेगी ॥ २४। बैल और गदहे जो तुम्हारी खेती के काम में आएंगे सो सूप और डलिया से उसाया हुआ स्वादिष्ट चारा खाएंगे ॥ २५। और उस महासंहार के समय जब गुम्मट गिर पड़ेंगे सब ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर नालियां और सोते पाये जाएंगे ॥ २६। उस समय जब यहोवा अपनी प्रजा के लोगों का घाव बांधेगा और उन की चोट चंगी करेगा तब चंद्रमा का प्रकाश सूर्य्य का सा हो जाएगा और सूर्य्य का प्रकाश सातगुणा होगा अर्थात् अठवारे भर का प्रकाश एक दिन में होगा ॥

२७। देखो यहोवा का नाम भड़के हुए कोप और घने धूंएं के साथ दूर से आता है उस के होंठ क्रोध से भरे हुए और उस की जीभ भस्म करनेहारी आग के समान हैं ॥ २८। और उस की सांस ऐसी उमण्डनेहारी नदी के समान है जो गले तक पहुंचती है वह सब जातियों को नाश के सूप से फटकेगा और देश देश के लोगों को भटकाने के लिये उन के मुंह[1] में लगाम लगाया जाएगा ॥ २९। तुम पवित्र पर्व्व की रात का सा गीत गाओगे और जैसे लोग यहोवा के पर्वत की ओर उसी से मिलने को जो इस्राएल् की चट्टान ठहरा है बांसुली बजाते हुए जाते हैं वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा ॥ ३०। पर यहोवा अपनी प्रतापवाली वाणी सुनाएगा और अपना कोप भड़काता और आग की लौ से भस्म करता हुआ और प्रचण्ड आंधी और अति वर्षा और ओले गिरने के साथ अपना भुजबल[2] दिखाएगा[3] ॥ ३१। और अश्शूर् यहोवा के शब्द की शक्ति से हार जाएगा वह उसे सोंटे से मारेगा ॥

---

(१) मूल में जबड़ों। (२) मूल में अपनी भुजा का उतरना।

३२। और जब जब यहोवा उस को मन ठाना दण्ड देगा[1] तब तब साथ ही डफ और वीणा बजेंगी और वह हाथ बढ़ा बढ़ाकर उस को लगातार मारता रहेगा ॥ ३३। और बहुत काल से फूंकने का स्थान तैयार किया गया है वह राजा ही के लिये ठहराया गया है वह लम्बा चौड़ा और गहिरा भी बनाया गया है वहां की चिता में आग और बहुत सी लकड़ी हैं यहोवा की सांस जलती हुई गन्धक की धारा की नाईं उस को सुलगाएगी ॥

३१. हाय

हाय उन पर जो मिस्र को सहायता पाने के लिये जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं और रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं और सवारों पर क्योंकि वे अति बलवान हैं पर इस्राएल् के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज में लगते हैं ॥ २। वह भी बुद्धिमान है और दुःख देगा और अपने वचन न टालेगा वह उठकर कुकर्म्मियों के घराने पर और अनर्थकारियों के सहायकों पर भी चढ़ाई करेगा ॥ ३। मिस्री लोग तो ईश्वर नहीं मनुष्य ही हैं और उन के घोड़े आत्मा नहीं शरीर ही हैं और जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा तब सहायता करनेहारे और सहायता चाहनेहारे दोनों ठोकर खाकर गिरेंगे और वे सब के सब एक संग बिलाय जाएंगे ॥ ४। फिर यहोवा ने मुझ से यों कहा है कि जिस प्रकार सिंह वा जवान सिंह अपने अहेर पर गुर्राता हो और चाहे चरवाहे एकट्ठे होकर उस के विरुद्ध बड़ी भीड़ लगाएं तौभी वह उन के बोल से न घबराएगा न उन के कोलाहल के कारण दबेगा उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा सिय्योन् पर्वत और यरूशलेम् की पहाड़ी पर युद्ध करने को उतरेगा ॥ ५। पंख फैलाई हुई चिड़ियाओं की नाईं सेनाओं का यहोवा यरूशलेम् की रक्षा करेगा वह उस की रक्षा करके बचाएगा और उस को बिन छूए ही[2] उद्धार करेगा ॥ ६। हे इस्राएलियो जिस के विरुद्ध तुम ने भारी[1] बलवा किया उसी की ओर फिरो ॥ ७। उस समय तुम लोग सोने चांदी की अपनी अपनी मूर्त्तियों से जिन्हें तुम[2] बनाकर पापी हो गये हो घिन करोगे ॥ ८। तब अश्शूर् उस तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं वह उस तलवार का कौर हो जाएगा जो आदमी की नहीं और वह तलवार के साम्हने से भागेगा और उस के जवान बेगार में पकड़े जाएंगे ॥ ९। और उस की ढाग भय के मारे जाती रहेगी और उस के हाकिम ध्वजा के कारण विस्मित होंगे, यहोवा जिस की अग्नि सिय्योन् में और जिस का भट्ठा यरूशलेम् में है उसी की यह वाणी है ॥

३२. सुनो

सुनो एक राजा धर्म्म से राज्य करेगा और हाकिम न्याय से हुकूमत करेंगे ॥ २। और एक पुरुष मानो वायु से छिपने का स्थान और बौछार से आड़ होगा वह मानो निर्जल देश में जल की नालियां और मानो तप्त-भूमि में बड़ी ढांग की छाया होगा ॥ ३। और देखनेहारों की आंखें धुन्धली न होंगी और सुननेहारों के कान लगे रहेंगे ॥ ४। और उतावलों के मन ज्ञान की बातें समझेंगे और तुतलानेहारों की जीभ फुर्ती से साफ बोलेगी ॥ ५। मूढ़ फिर उदार न कहाएगा और न ठग प्रतिष्ठित कहा जाएगा ॥ ६। क्योंकि मूढ़ तो मूढ़ता ही की बातें बोलता और मन में अनर्थ ही की बातें गढ़ता रहता है कि वह बिन भक्ति के काम करे और यहोवा के विरुद्ध झूठ कहे और भूखे को भूखा ही रहने दे और प्यासे का जल रोक रक्खे ॥ ७। ठग के उपाय बुरे होते हैं वह दुष्ट युक्तियां करता है कि जब दरिद्र लोग ठीक बोलते हों तब भी नम्रों को उस की झूठी बातों में फंसाए ॥ ८। पर उदार तो उदारता ही की युक्तियां निकालता है वह तो उदारता के कारण स्थिर रहेगा ॥

९। हे सुखी स्त्रियो उठकर मेरी सुनो हे निश्चिन्त

(१) मूल में उस पर नेवबाला दण्ड रखेगा। (२) मूल में और लांघकर।

(१) मूल में गहिरा करके। (२) मूल में जिन्हें तुम्हारे हाथ।

स्त्रियो मेरे वचन की ओर कान लगाओ ॥ १० । हे निश्चिन्त स्त्रियो बरस दिन से अधिक तुम विकल रहोगी क्योंकि तोड़ने को दाख न होगी और न किसी भांति के फल हाथ लगेंगे ॥११॥ हे सुखी स्त्रियो थरथराओ हे निश्चिन्त स्त्रियो विकल हो अपने अपने वस्त्र उतारकर अपनी अपनी कमर में टाट कसो॥ १२ । लोग मनभाऊ खेतों और फलवन्त दाखलताओं के लिये छाती पीटेंगे ॥ १३ । मेरे लोगों के बरन हुलसनेहारे नगर के सब हर्ष भरे घरों में भी भांति भांति के कटीले पेड़ उपजेंगे ॥ १४ । क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा कोलाहल से भरा नगर सुनसान हो जाएगा और पहाड़ी और पहरुओं का घर सदा के लिये मांदें और बनैले गदहों का विहारस्थान और घरैले पशुओं की चराई तब लों बना रहेगा १५ । जब लों आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाए और जंगल फलदायक बारी न बने और फलदायक बारी वन न गिनी जाए ॥ १६ । तब उस जंगल में न्याय बसेगा और उस फलदायक बारी में धर्म्म रहेगा ॥ १७ । और धर्म्म का फल शान्ति और उस का परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा ॥ १८ । और मेरे लोग शांति से निश्चिन्त रहने के स्थानों में और सुख और विश्राम के स्थानों में रहेंगे ॥ १९ । पर ओले गिरेंगे और वन के वृक्ष नाश होंगे और नगर पूरी रीति से चौपट हो जाएगा ॥ २० । क्या ही धन्य हो तुम लोग जो सब जलाशयों के पास बीज बोते और बैलों और गदहों को चलाते हो ॥

३३. हाय

हाय तुझ लुटेरे पर जो लूटा नहीं गया हाय तुझ विश्वासघाती पर जिस के साथ विश्वासघात नहीं किया गया जब तू लूट चुके तब तू लूटा जाएगा और जब तू विश्वासघात कर चुके तब तेरे साथ विश्वासघात किया जाएगा ॥ २ । हे यहोवा हम लोगों पर अनुग्रह कर क्योंकि हम तेरी ही बाट जोहते आये हैं तू भोर भोर को इन का भुजबल और संकट के समय हमारा उद्धारकर्त्ता ठहर ॥ ३ । हुल्लड़ सुनते ही देश देश के लोग भाग गये तेरे उठने पर अन्यजातियां तितर बितर हुईं ॥ ४ । और जैसे टिड्डियां चट करती हैं वैसे ही तुम्हारी लूट चट किई जाएगी और जैसे टिड्डियां टूट पड़ती हैं वैसे ही वे उस पर टूट पड़ेंगे॥ ५ । यहोवा महान् हुआ है वह ऊंचे पर रहता है उस ने सिय्योन् को न्याय और धर्म्म से परिपूर्ण किया है ॥ ६ । और उद्धार और बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत तेरे दिनों का आधार होगी और यहोवा का भय उस का धन होगा ॥

७ । सुनो उन के शूरवीर बाहर चिल्ला रहे हैं संधि के दूत बिलक बिलक रो रहे हैं ॥ ८ । राजमार्ग सुनसान पड़े हैं अब उन पर बटोही नहीं चलते उस ने वाचा को टाल दिया उस ने नगरों को तुच्छ जाना उस ने मनुष्य को कुछ न समझा ॥ ९ । पृथिवी विलाप करती और मुर्झा गई है लबानोन् कुम्हला गया और उस पर सियाही छा गई है शारोन् मरुभूमि के समान हो गया और बाशान् और कर्म्मेल् में पतझड़ हो रहा है ॥ १० । यहोवा कह रहा है कि अब मैं उठूंगा अब मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा[१] अब मैं महान् ठहरूंगा ॥ ११ । तुम्हें सूखी घास का पेट रहेगा तुम भूसी जनोगी तुम्हारी सांस आग है जो तुम्हें भस्म करेगी ॥ १२ । देश देश के लोग फूंके हुए चूने के समान हो जाएंगे और कटे हुए कटीले पेड़ों की नाईं आग में जलाये जाएंगे ॥

१३ । हे दूर दूर के लोगो सुनो कि मैं ने क्या किया है और तुम भी जो निकट हो मेरा पराक्रम जान लो ॥ १४ । सिय्योन् में के पापी थरथरा गये भक्तिहीनों को कंपकंपी लगी है हम में से कौन प्रचण्ड आग के साथ रह सकता हम में से कौन उस आग के साथ रह सकता जो कभी न बुझेगी ॥ १५ । जो धर्म्म से चलता और सीधी बातें बोलता और अन्धेर के लाभ से घिन रखता और घूस नहीं लेता[२] और खून की बात सुनने से कान बन्द करता और बुराई देखने से आंख मूंद लेता है, १६ । वही ऊंचे स्थानों में वास

(१) मूल में. गदहों के पैर भेजते।

(१) मूल में अपने को ऊपर करूंगा। (२) मूल में घूस थाम्भने से अपने हाथ झटक देता।

करेगा वह ढांगों में के गढ़ों में शरण लिये हुए रहेगा उस को रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी[1] ॥ १७ । तू अपनी आंखों से राजा को उस की सुन्दरता में निहारेगा और लम्बे चौड़े देश को देखेगा ॥ १८ । तू भय के दिनों को स्मरण करेगा कर का गिननेहारा और तौलनेहारा कहां रहा गुम्मटों का गिननेहारा कहां रहा ॥ १९ । तू उन निर्दय लोगों को न देखेगा जिन की कठिन भाषा[2] तू नहीं समझता और जिन की लड़बड़ाती जीभ की तू नहीं बूझता ॥ २० । हमारे पर्व के नगर सिय्योन् पर दृष्टि कर तू अपनी आंखों से यरूशलेम् को देखेगा कि वह विश्राम का स्थान और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया न जाएगा और जिस का कोई खूंटा कभी उखाड़ा न जाएगा और कोई रस्सी कभी न टूटेगी ॥ २१ । और वहां महाप्रतापी यहोवा हमारी ओर रहेगा सो बहुत बड़ी बड़ी नदियों और नहरों का स्थान होगा जिस में डांड़वाली नाव न चलेगी और न शोभायमान जहाज उस के पास होकर जाएगा ॥ २२ । क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी यहोवा हमारा हाकिम यहोवा हमारा राजा है वही हमारा उद्धार करेगा ॥ २३ । तेरी रस्सियां ढीली हुईं वे मस्तूल की जड़ को दृढ़ न कर सके और न पाल को चढ़ा सके. तब बड़ी लूट छीनकर बांटी गई लंगड़े लोग भी लूट के भागी हुए ॥ २४ । और कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं और जो लोग इस में रहेंगे उन का अधर्म्म क्षमा किया जाएगा ॥

३४. हे जाति जाति के लोगो सुनने को निकट आओ और हे राज्य राज्य के लोगो ध्यान से सुनो पृथिवी और जो कुछ उस में है जगत और जो कुछ उस में उत्पन्न होता है सो सुने ॥ २ । यहोवा सब जातियों पर कोप कर रहा है और उन की सारी सेना पर उस की जलजलाहट भड़की हुई है उस ने उन को सत्यानाश किया और संहार होने को छोड़ दिया है ॥ ३ । उन में के मारे हुए फेंक दिये जाएंगे और उन की लोथों की दुर्गंध उठेगी और उन के लोहू से पहाड़ गल जाएंगे ॥ ४ । और आकाश में का सारा गण जाता रहेगा और आकाश कागज की नाईं लपेटा जाएगा और जैसे दाखलता वा अंजीर के वृक्ष के पत्ते मुर्झा मुर्झाकर जाते रहते हैं वैसे ही उस का सारा गण धुंधला होकर जाता रहेगा ॥ ५ । क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तृप्त हुई देखो वह न्याय करने को एदोम् पर और उन पर पड़ेगी जिन पर मेरा स्राप है ॥ ६ । यहोवा की तलवार लोहू से भर गई वह चर्बी से और भेड़ों के बच्चों और बकरों के लोहू से और मेढ़ों के गुर्दों की चर्बी से तृप्त हुई है क्योंकि बोस्रा नगर में यहोवा का एक यज्ञ और एदोम् देश में बड़ा संहार है ॥ ७ । और उन के संग बनैले और घरैले बैल और सांड़ गिर जाएंगे और उन की भूमि लोहू से छक जाएगी और वहां की मिट्टी चर्बी से अघाएगी ॥ ८ । क्योंकि पलटा लेने को यहोवा का एक दिन और सिय्योन् का मुकद्दमा चुकाने के लिये बदला देने को एक बरस ठहराया हुआ है ॥ ९ । और एदोम् की नदियां राल से और उस की मिट्टी गंधक से बदल जाएगी और उस की भूमि जलती हुई राल बन जाएगी ॥ १० । वह रात दिन न बुझेगी उस का धूआं सदा लों उठता रहेगा. वह युगयुग उजाड़ पड़ा रहेगा सदा लों कोई उस में से होकर न चलेगा ॥ ११ । उस में धनेशपक्षी और साही पाये जाएंगे और उल्लू और कौवे का बसेरा होगा और वह उस पर गड़बड़ की डोरी और सुनसानी का साहूल[1] तानेगा ॥ १२ । वहां न तो रईस होंगे और न ऐसा कोई होगा जो राज्य करने को ठहराया[2] जाए और उस के सारे हाकिमों का अन्त होगा ॥ १३ । और उस के महलों में कटीले पेड़ और गढ़ों में बिच्छू पौधे और झाड़ उगेंगे और वह गीदड़ों का वासस्थान और शुतर्मुर्गों का आंगन हो जाएगा ॥ १४ । वहां निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर बसेंगे और रोंआर जन्तु एक

(१) मूल में उस का पानी अटल है ।
(२) मूल में गहिरे होठवाले लोग ।

(१) मूल में पत्थर ।　(२) मूल में बुलाया ।

दूसरे को बुलाएंगे और वहां लीलीत् नाम जन्तु वासस्थान पाकर चैन से रहेगा ॥ १५ । वहां सांपिन बाम्बी चुन अण्डे देकर उन्हें सेवेगी और अपने नीचे[१] बटोर लेगी और वहां गिद्धिनें अपनी अपनी साथिन के साथ एकट्ठी रहेंगी ॥ १६ । यहोवा की पुस्तक में ढूंढ़कर पढ़ो इन में से एक भी बिन आये न रहेगी और न बिना साथिन होगी क्योंकि मैं ने अपने मुंह में यह आज्ञा दिई और उसी के आत्मा ने उन्हें एकट्ठा किया है ॥ १७ । और उसी ने उन के लिये चिट्ठी डाली और उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर उस देश को उन के लिये बांट दिया है और वह सदा लों उन का बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी लों उस मे बसे रहेंगे ॥

३५. जंगल

और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे और मरुभूमि मगन होकर केसर की नाईं फूलेगी ॥ २ । वह तो अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी उस की शोभा लबानोन् की सी होगी और वह कर्मेल् और शारोन् के तुल्य तेजोमय हो जाएगी वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे ॥

३ । ढीले हाथों को दृढ़ और थरथराते घुटनों को स्थिर करो ॥ ४ । घबरानेहारों से कहो कि हियाव बांधो मत डरो देखो तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने को बरन परमेश्वर के योग्य बदला लेने को आएगा वही आकर तुम्हारा उद्धार करेगा ॥ ५ । तब अन्धों की आंखें खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे ॥ ६ । तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियां भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे और जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरुभूमि में नदियां बहने लगेंगी ॥ ७ । और मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उस में घास और नरकट और सरकंडे होंगे ॥ ८ । और वहां सड़क अर्थात् मार्ग होगा और उस का नाम पवित्र मार्ग होगा कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे सो चाहे मूर्ख भी हों तौभी भटक न जाएंगे ॥ ९ । वहां सिंह न होगा और कोई हिंसक जन्तु चढ़ने न पाएगा ऐसे वहां मिलेंगे नहीं पर छुड़ाये हुए लोग उस में चलेंगे ॥ १० । और यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन् में आएंगे और उन के सिर पर सदा का आनन्द होगा वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा ॥

३६. हिज़्किय्याह्

राजा के चौदहवें बरस में अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उन को ले लिया ॥ २ । और अश्शूर् के राजा ने रब्शाके को बड़ी सेना देकर लाकीश् से यरूशलेम् के पास हिज़्किय्याह् राजा के विरुद्ध भेज दिया और वह उपरले पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़ा हुआ ॥ ३ । तब हिल्किय्याह् का पुत्र एल्याकीम् जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मंत्री था और आसाप् का पुत्र योआह् जो इतिहास का लिखनेहारा था ये तीनों उस से मिलने को बाहर निकल गये ॥ ४ । रब्शाके ने उन से कहा हिज़्किय्याह् से कहो कि महाराजाधिराज अश्शूर् का राजा यों कहता है कि तू यह क्या भरोसा करता है ॥ ५ । मेरा कहना यह है कि युद्ध के लिये पराक्रम और युक्ति केवल बात ही बात है अब तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है ॥ ६ । सुन तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उस के हाथ में चुभकर छेदेगा । मिस्र का राजा फिरौन अपने सब भरोसा रखनेहारों के लिये ऐसा ही होता है ॥ ७ । फिर यदि तू मुझ से कहे कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है तो

(१) मूल में अपनी छाया में।

क्या वह वही नहीं है जिस के ऊंचे स्थानों और वेदियों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम् के लोगों से कहा कि तुम इसी वेदी के साम्हने दण्डवत् करना ॥ ८ । सो अब मेरे स्वामी अश्शूर् के राजा के पास कुछ बन्धक रख तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं ॥ ९ । फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्म्मचारी का भी कहा नकारकर[1] क्योंकर रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है ॥ १० । क्या मैं ने यहोवा के विना कहे इस देश को उजाड़ने के लिये चढ़ाई किई है यहोवा ने मुझ से कहा है कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे ॥ ११ । तब एल्याकीम् और शेब्ना और योआह् ने रब्शाके से कहा अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर क्योंकि हम उसे समझते हैं और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर ॥ १२ । रब्शाके ने कहा क्या मेरे स्वामी ने मुझे तेरे स्वामी ही के वा तेरे ही पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं इस लिये कि तुम्हारे संग उन को भी अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़े ॥ १३ । तब रब्शाके ने खड़ा हो यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा महाराजाधिराज अश्शूर् के राजा की बातें सुनो ॥ १४ । राजा यों कहता है कि हिज़किय्याह् तुम को भुलाने न पाए क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा ॥ १५ । और हिज़किय्याह् तुम से यह कहकर यहोवा पर भी भरोसा कराने न पाए कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर् के राजा के वश में न पड़ेगा ॥ १६ । हिज़किय्याह् की मत सुनो अश्शूर् का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो[2] और मेरे पास निकल आओ तब अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाओ और अपने अपने कुण्ड का पानी पीओ ॥ १७ । पीछे मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश, रोटी और दाखबारियों का देश है ॥ १८ । ऐसा न हो कि हिज़किय्याह् यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम को बचाएगा । क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर् के राजा के हाथ से बचाया है ॥ १९ । हमात् और अर्पाद् के देवता कहां रहे सपर्वैम् के देवता कहां रहे क्या उन्हों ने शोमरोन् को मेरे हाथ से बचाया ॥ २० । देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो फिर क्या यहोवा यरूशलेम् को मेरे हाथ से बचाएगा ॥ २१ । पर वे चुप रहे और उस के उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उस को उत्तर न देना ॥ २२ । तब हिल्किय्याह् का पुत्र एल्याकीम् जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप् का पुत्र योआह् जो इतिहास का लिखनेहारा था इन्हों ने हिज़किय्याह् के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रब्शाके की बातें कह सुनाईं ॥

३७.

जब हिज़किय्याह् राजा ने यह सुना तब वह अपने वस्त्र फाड़ टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया ॥ २ । और उस ने एल्याकीम् को जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना मंत्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी के पास भेज दिया ॥ ३ । उन्हों ने उस से कहा हिज़किय्याह् यों कहता है कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जननी को जनने का बल न रहा ॥ ४ । क्या जानिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा रब्शाके की बातें सुने जिसे उस के स्वामी अश्शूर् के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे सो तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गये हैं

(१) मूल में कर्म्मचारियों में से एक अधिपति का भी मुंह फेरके । (२) मूल में मेरे साथ आशीर्वाद करो ।

प्रार्थना कर[1]॥ ५। सो हिज़्किय्याह् राजा के कर्म्मचारी यशायाह् के पास आये॥ ६। तब यशायाह् ने उन से कहा अपने स्वामी से कहो कि यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने सुने हैं जिन के द्वारा अश्शूर् के राजा के जनों ने मेरी निन्दा किई है उन के कारण मत डर॥ ७। सुन मैं उस के मन में प्रेरणा करूंगा कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए और मैं उस को उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥

८। सो रब्शाके ने लौटकर अश्शूर् के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश् के पास से उठ गया है॥ ९। और उस ने कूश् के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह मुझ से लड़ने को निकला है तब उस ने हिज़्किय्याह् के पास दूतों को यह कहकर भेजा कि, १०। तुम यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् से यों कहना कि तेरा परमेश्वर जिस का तू भरोसा करता है यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम् अश्शूर् के राजा के वश में न पड़ेगा॥ ११। देख तू ने तो सुना है कि अश्शूर् के राजाओं ने सब देशों से कैसा किया है कि उन्हें सत्यानाश ही किया है फिर क्या तू बचेगा॥ १२। गोज़ान् और हारान् और रेसेप् और तलस्सार् में रहनेहारे एदेनी जिन जातियों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया क्या उन में से किसी जाति के देवताओं ने उस को बचा लिया॥ १३। हमात् का राजा और अर्पाद् का राजा और सपर्वैम् नगर का राजा और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहां रहे॥ १४। सो इस पत्री को हिज़्किय्याह् ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा तब यहोवा के भवन में जाकर पत्री को यहोवा के साम्हने फैला दिया, १५। और यहोवा से यह प्रार्थना किई कि, १६। हे सेनाओं के यहोवा हे करूबों पर विराजनेहारे इस्राएल् के परमेश्वर पृथिवी के सारे राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है आकाश और पृथिवी को तू ही ने बनाया है॥ १७। हे यहोवा कान लगाकर सुन हे यहोवा आंख खोलकर देख और सन्हेरीब् के सारे वचनों को सुन ले जिस ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है॥ १८। हे यहोवा सच तो है कि अश्शूर् के राजाओं ने सब जातियों के देशों को[1] उजाड़ा है, १९। और उन के देवताओं को आग में झोंका है क्योंकि वे ईश्वर न थे वे मनुष्यों के बनाये हुए काठ और पत्थर ही के थे इस कारण वे उन को नाश करने पाए॥ २०। सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें उस के हाथ से बचा कि पृथिवी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है॥

२१। तब आमोस् के पुत्र यशायाह् ने हिज़्किय्याह् के पास यह कहला भेजा कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि तू ने जो अश्शूर् के राजा सन्हेरीब् के विषय मुझ से प्रार्थना किई है, २२। सो उस के विषय में यहोवा ने यह वचन कहा है कि सिय्योन् की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और ठट्ठों में उड़ाती है यरूशलेम् की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है॥ २३। तू ने जो नामधराई और निन्दा किई है सो किस की किई है और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है[2] सो किस के विरुद्ध किया है इस्राएल् के पवित्र के विरुद्ध तू ने किया है॥ २४। अपने कर्म्मचारियों के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर बरन लबानोन् के बीच तक चढ़ आया हूं सो मैं उस के ऊंचे ऊंचे देवदारुओं और अच्छे अच्छे सनौवरों को काट डालूंगा और उस के दूर दूर के ऊंचे ऊंचे स्थानों में और उस के वन में की फलदाई बारियों में घुसूंगा॥ २५। मैं ने तो खुदवाकर पानी पिया और मिस्र की नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा॥ २६। क्या तू ने नहीं सुना कि प्राचीन काल से मैं ने यही ठहराया और अगले दिनों से इस की तैयारी किई थी सो अब मैं ने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही

(१) मूल में प्रार्थना उठा।

(१) मूल में सब देशों और उन की भूमि को। (२) मूल में अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

खण्डहर कर दे ॥ २७। इसी कारण उन में के रहनेहारों का बल घट गया वे विस्मित और लज्जित हुए वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास और ऐसे अनाज[1] के समान हो गये जो बढ़ने से पहिले ही सूख जाता है ॥ २८। मैं तो तेरा बैठा रहना और कूच करना और लौट आना जानता हूं और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है ॥ २९। इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं मैं तेरी नाक में नकेल डालकर और तेरे मुंह में अपना लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी से तुझे लौटा दूंगा ॥ ३०। और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस बरस तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे और दूसरे बरस उस से जो उत्पन्न हो सो खाओगे और तीसरे बरस बीज बोने और उसे लवने पाओगे दाख की बारियां लगाने और उन का फल खाने पाओगे ॥ ३१। और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़[2] पकड़ेंगे और फलेंगे[3] भी ॥ ३२। क्योंकि यरूशलेम् में से बचे हुए और सिय्योन् पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे सेनाओं का यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा[4] ॥ ३३। सो यहोवा अश्शूर् के राजा के विषय में यों कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने बरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा और न वह ढाल लेकर इस के साम्हने आने वा इस के विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा ॥ ३४। जिस मार्ग से वह आया उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ३५। और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा ॥

३६। सो यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा और भोर को जब लोग सवेरे उठे तब क्या देखा कि लोथ ही लोथ पड़ी हैं ॥ ३७। सो अश्शूर् का राजा सन्हेरीब् चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने लगा ॥ ३८। वहां वह अपने देवता निस्रोक् के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था कि उस के पुत्र अद्रम्मेलेक् और शरेसेर् ने उस को तलवार से मारा और अरारात् देश में भाग गये और उसी का पुत्र एसर्हद्दोन् उस के स्थान पर राज्य करने लगा ॥

३८. उन दिनों में हिज़्किय्याह् ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था और आमोस् के पुत्र यशायाह् नबी ने उस के पास जाकर कहा यहोवा यों कहता है कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो सो दे क्योंकि तू न बचेगा मर जाएगा ॥ २। तब हिज़्किय्याह् ने भीत की ओर मुंह फेर यहोवा से प्रार्थना करके कहा, ३। हे यहोवा मैं बिनती करता हूं स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[1] चलता आया हूं जो तुझे अच्छा लगता है सोई मैं करता आया हूं, तब हिज़्किय्याह् बिलक बिलक रोया ॥ ४। तब यहोवा का यह वचन यशायाह् के पास पहुंचा कि, ५। जाकर हिज़्किय्याह् से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं सुन मैं तेरी आयु पन्द्रह बरस और बढ़ा दूंगा ॥ ६। और अश्शूर् के राजा के हाथ से मैं तेरी और इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा ॥ ७। और यहोवा जो अपने इस कहे हुए वचन को पूरा करेगा इस बात का तेरे लिये यहोवा की ओर से यह चिन्ह होगा कि, ८। मैं धूपघड़ी की छाया को जो आहाज़् की धूपघड़ी में ढल गई है दस अंश पीछे की ओर लौटा दूंगा सो छाया दस अंश जो वह ढल चुकी थी लौट गई ॥

९। यहूदा के राजा हिज़्किय्याह् ने जो लेख

(१) मूल में खेत। (२) मूल में नीचे की ओर जड़। (३) मूल में ऊपर की ओर फलेंगे। (४) मूल में सेनाओं के यहोवा की जलन यह करेगी।

(१) मूल में तेरे साम्हने।

उस समय लिखा जब वह रोगी होकर चंगा हो गया था सो यह है ॥

१० । मैं ने कहा था कि अपनी आयु के बीचों बीच[1] अधोलोक के फाटकों में प्रवेश करूंगा ॥
क्योंकि मेरी शेष आयु हर लिई गई है ॥
११ । मैं ने कहा था मैं याह् को फिर न देखूंगा जीते जी मैं याह् को न देखने पाऊंगा
मैं परलोकवासियों का साथी होकर मनुष्यों को फिर न देखूंगा ॥
१२ । मेरा घर[2] चरवाहे के तंबू की नाईं उठा लिया गया
मैं ने बुननेहारे की नाईं अपने जीवन को लपेट दिया वह मुझे ताने से काट लेगा
एक ही दिन में[3] तू मेरा अन्त कर डालेगा ॥
१३ । मैं भोर लों अपने मन को शान्त करता रहा वह सिंह की नाईं मेरी सब हड्डियों को तोड़ता है
एक ही दिन में तू मेरा अंत कर डालेगा ॥
१४ । मैं सूपावेने वा सारस की नाईं चूं चूं करता
और पिण्डुक की नाईं विलाप करता था मेरी आंखें ऊपर देखते देखते रह गईं
हे यहोवा मुझ पर अन्धेर हो रहा है तू मेरा जामिन हो ॥
१५ । मैं क्या कहूं उस ने मुझ से कहा और किया भी है
मैं जीवन भर जीव की कड़ुवाहट के साथ दीनता से चलता रहूंगा ॥
१६ । हे प्रभु इन्हीं बातों से लोग जीते हैं
और इन सभों से मेरे आत्मा का जीवन होता है
सो तू मुझे चंगा करके जिलाएगा ॥
१७ । देख शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी कड़ुआहट मिली
और तू ने स्नेह करके मुझे विनाश के गड़हे से निकाला है

(१) मूल में भोग में। (२) वा मेरी आयु। (३) मूल में. दिन से रात लों।

क्योंकि तू ने मेरे सब पापों को अपनी पीठ के पीछे कर[1] दिया था ॥
१८ । अधोलोक तो तेरा धन्यवाद नहीं करता न मृत्यु तेरी स्तुति करती है
जो कबर में पड़े हैं सो तेरी सच्चाई की आशा नहीं रखते ॥
१९ । जो जीता है सोई[2] तेरा धन्यवाद करता है जैसा मैं आज कर रहा हूं
पिता पुत्रों को तेरी सच्चाई जताता है ॥
२० । यहोवा मेरा उद्धार करने को तैयार हुआ
सो हम जीवन भर यहोवा के भवन में
तारवाले बाजों पर अपने[3] रचे हुए गीत गाते रहेंगे ॥

२१ । यशायाह् ने तो कहा था अंजीरों की एक पोलटिस लेकर हिज़किय्याह् के दुष्ट फोड़े पर बांधी जाए तब वह बचेगा ॥ २२ । और हिज़किय्याह् ने पूछा था कि इस का क्या चिन्ह है कि मैं यहोवा के भवन को फिर जाने पाऊंगा ॥

३९. **उस** समय बलदान् का पुत्र मरोदक्-बलदान् जो बाबेल् का राजा था उस ने हिज़किय्याह् के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उस के पास पत्री और भेंट भेजी ॥ २ । इन से हिज़किय्याह् ने प्रसन्न होकर उन को अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चांदी और सोना और सुगंध द्रव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का सारा घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं सो सब दिखाईं, हिज़किय्याह् के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई हो ॥ ३ । तब यशायाह् नबी ने हिज़किय्याह् राजा के पास जाकर पूछा वे मनुष्य क्या कह गये और कहां से तेरे पास आये थे हिज़किय्याह् ने कहा वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल् से मेरे पास आये थे ॥ ४ । फिर उस ने पूछा तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है हिज़किय्याह्

(१) मूल में फेंक। (२) मूल में जीयता जीयता। (३) मूल में मेरे।

ने कहा जो कुछ मेरे भवन में है सो सब उन्हों ने देखा मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो॥ ५। यशायाह् ने हिज़्किय्याह् से कहा सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले॥ ६। ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रक्खा हुआ आज के दिन लों तेरे भण्डारों में है सो सब बाबेल् को उठ जाएगा यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी॥ ७। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों उन में से भी कितनों को वे बन्धुआई में ले जाएंगे और वे खोजे बनकर बाबेल् के राजभवन में रहेंगे॥ ८। हिज़्किय्याह् ने यशायाह् से कहा यहोवा का वचन जो तू ने कहा है सो भला ही है फिर उस ने कहा मेरे दिनों में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेगी॥

४०. तुम्हारा

४०. तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है कि मेरी प्रजा को शांति दो शान्ति॥ २। यरूशलेम् से शान्ति की बातें कहो और उस से पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है तेरे अधर्म्म का दण्ड अंगीकार किया गया है और यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना दण्ड पा चुका है॥

३। किसी को पुकार सुनाई देती है कि जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो॥ ४। हर एक तराई भरी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दिई जाए जो टेढ़ा है सो सीधा और जो ऊंच नीच है सो मैदान किया जाए॥ ५। तब यहोवा का तेज प्रगट हो जाएगा और सब प्राणी उस को एक संग देखेंगे क्योंकि यहोवा ने आप ऐसा कहा है॥

६। बोलनेहारे का वचन है कि प्रचार कर। और किसी ने कहा मैं क्या प्रचार करूं सब प्राणी घास हैं उन की सारी शोभा मैदान के फूल के समान है॥ ७। घास सूख गई फूल मुर्झा गया है क्योंकि यहोवा की सांस उस पर चली निःसन्देह प्रजा घास है॥ ८। घास तो सूख जाती और फूल मुर्झा जाता है पर हमारे परमेश्वर का वचन सदा लों अटल रहेगा॥

९। हे सिय्योन् को शुभ समाचार सुनानेहारे[१] ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे यरूशलेम् को शुभ समाचार सुनानेहारे[१] बहुत ऊंचे शब्द से सुना ऊंचे शब्द से सुना मत डर यहूदा के नगरों से कह कि अपने परमेश्वर को देखो॥ १०। देखो प्रभु यहोवा सामर्थ्य दिखाता हुआ आता है और वह अपने भुजबल से प्रभुता कर लेगा[२] देखो जो मजूरी देने की है सो उस के पास और जो बदला देने का है सो उस के हाथ में है॥ ११। वह चरवाहे की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिये चलेगा और दूध पिलानेहारियों को धीरे धीरे ले चलेगा॥

१२। किस ने महासागर को अपने चुल्लू से मापा और किस के बित्ते से आकाश का परिमाण हुआ और किस ने पृथिवी की मिट्टी को नपवे में समवा लिया और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को कांटे में तौला है॥ १३। फिर किस ने यहोवा के आत्मा का परिमाण किया वा उस का मन्त्री होकर उस को ज्ञान सिखाया है॥ १४। किस ने उस को सम्मति दिई और समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया॥ १५। देखो जातियां तो डोल पर की बून्द वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरीं देखो वह द्वीपों को धूलि के किनकों के सरीखे उठाता है॥ १६। और लबानोन् ईंधन के लिये थोड़ा होगा और उस में के जीव जन्तु होमबलि के लिये थोड़े ठहरेंगे॥ १७। सारी जातियां उस के साम्हने कुछ हैं ही नहीं वे उस के लेखे में लेश और सुनसान सी ठहरीं॥ १८। सो तुम ईश्वर को किस के समान बताओगे और उस को किस की उपमा दोगे॥ १९। कारीगर मूरत ढालता है और सोनार उस को सोने से मढ़ता और उस के लिये चान्दी की सांकलें

(१) मूल में सुनानेहारी। (२) मूल में उस की भुजा उस के लिये प्रभुता करेगी।

ढालकर बनाता है ॥ २०। जो कंगाल इतना अर्पण नहीं कर सकता वह ऐसा वृक्ष चुन लेता है जो सड़ने का न हो और निपुण कारीगर ढूंढ़कर मूरत खुदवाता और उसे ऐसा स्थिर कराता है कि वह न डिग सके ॥ २१। क्या तुम नहीं जानते क्या तुम नहीं सुनते क्या तुम को प्राचीनकाल से बताया नहीं गया क्या तुम ने पृथिवी की नेव पड़ने का विचार नहीं किया ॥ २२। जो पृथिवी की चारों ओर के आकाशमण्डल पर विराजमान है, और पृथिवी के रहनेहारे टिड्डी से हैं, जो आकाश को मलमल की नाईं फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है, २३। जो बड़े बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है वही पृथिवी के अधिकारियों को सूने के समान करता है ॥ २४। वरन वे लगाये न गये वे बोये न गये उन के ठूंठ ने भूमि में जड़ न पकड़ी, कि उस ने उन पर पवन बहाई और वे सूख गये और आंधी उन्हें भूसे की नाईं ले गई ॥ २५। सो तुम मुझ को किस के समान बताओगे कि मैं उस के तुल्य ठहरूं, पवित्र का यही वचन है ॥ २६। अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो कि किस ने इन को सिरजा कौन इन के गण को गिन गिनकर निकालता वह उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है वह ऐसा बड़ा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उन में से कोई बिन आये नहीं रहता ॥

२७ हे याकूब तू क्यों कहता है और हे इस्राएल् तू क्यों कहता है कि मेरा मार्ग यहोवा से छिपा हुआ है मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता[१] ॥ २८। क्या तुम नहीं जानते क्या तुम ने नहीं सुना कि यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथिवी भर का सिरजनहार है सो न थकता और न श्रमित होता है और उस की बुद्धि अगम है ॥ २९। वह थके हुए को बल देता और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है ॥ ३०। तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं और जवान ठोकर खाकर गिरते तो हैं ॥ ३१। पर जो यहोवा की बाट जोहते हैं सो नया बल प्राप्त करते जाएंगे वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे[१] वे दौड़ते दौड़ते श्रमित न होंगे और चलते चलते थक न जाएंगे ॥

(१) मूल में, मेरा न्याय मेरे परमेश्वर के पास होकर निकल गया ।

४१. हे द्वीपो मेरे साम्हने चुप रहो और देश देश के लोग नया बल प्राप्त करें वे समीप आकर बोलें हम दोनों आपस में न्याय चुकाने के लिये एक दूसरे के समीप आएं ॥ २। किस ने पूरब दिशा से एक को उभारा है जिस को वह धर्म्म के साथ अपने पांव के पास बुलाता है वह उस के वश में जातियों को कर देता और उस को राजाओं पर अधिकारी ठहराता है, वह उन्हें उस की तलवार को धूल के समान और उस के धनुष को उड़ाये हुए भूसे के समान देता है ॥ ३। वह उन्हें खदेड़ता और ऐसे मार्ग से जिस पर वह कभी न चला था बिना रोक टोक आगे बढ़ता है ॥ ४। किस ने यह काम किया है, उस ने जो आदि से पीढ़ी पीढ़ी को लगातार बुलाता आया है अर्थात् मैं यहोवा जो सब से पहिला हूं और अन्त के समय रहूंगा मैं वही हूं ॥ ५। द्वीप देखकर डरते हैं पृथिवी के दूर दूर देश कांप उठते और निकट आ गये हैं ॥ ६। वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और उन में से एक एक अपने भाई से कहता है कि हियाव बांध ॥ ७। और बढ़ई सोनार को और हथौड़े से बराबर करनेहारा निहाई पर मारनेहारे को यह कहकर हियाव बंधा रहा है कि मढ़न तो अच्छी है सो वह कील ठोंक ठोंककर उस को ऐसा दृढ़ करता है कि नहीं डिग सकती ॥

८। हे मेरे दास इस्राएल् हे मेरे चुने हुए याकूब हे मेरे प्रेमी इब्राहीम के वंश, ९। तू जिसे मैं ने पृथिवी के दूर दूर देशों से लेकर पहुंचाया और पृथिवी की छोर छोर से बुलाकर यह कहा कि तू मेरा दास है मैं ने तुझे चुना है और नहीं तजा,

(१) मूल में, चढ़ेंगे ।

१० । सो मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं इधर उधर मत ताक क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं मैं तुझे दृढ़ करता और तेरी सहायता करता और अपने धर्म्ममय दहिने हाथ से तुझे संभालता रहूंगा ॥ ११ । देख जो तुझ से क्रोधित हैं वे सब लज्जित होंगे और उन के मुंह काले हो जाएंगे जो तुझ से झगड़ते हैं सो नाश होकर बिलाय जाएंगे ॥ १२ । जो तुझ से लड़ते हैं उन्हें तू ढूंढ़ने पर भी न पाएगा जो तुझ से युद्ध करते हैं सो नाश होकर बिलाय ही जाएंगे ॥ १३ । और मैं तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा दहिना हाथ पकड़े हूं मैं ही तुझ से कहता हूं कि मत डर क्योंकि मैं तेरी सहायता करूंगा ॥ १४ । हे कीड़े सरीखे याकूब हे इस्राएल् के मनुष्यो मत डरो क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरी सहायता करूंगा तेरा छुड़ानेहारा इस्राएल् का पवित्र है ॥ १५ । सुन मैं ने तुझे छूरीवाली दांवने की एक नई और चोखी कल ठहराया है सो तू पहाड़ों को दांय दांयकर सूक्ष्म धूलि कर देगा और पहाड़ियों को भूसे के समान कर देगा ॥ १६ । तू तो उन को ओसाएगा और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी और आंधी उन्हें तितर बितर कर देगी और तू यहोवा के कारण मगन होगा और इस्राएल् के पवित्र के कारण बड़ाई मारेगा ॥ १७ । दीन और दरिद्र लोग जल ढूंढ़ने पर भी नहीं पाते और उन का तालू प्यास के मारे सूख गया है पर मैं यहोवा उन की बिनती सुनूंगा मैं इस्राएल् का परमेश्वर उन को त्याग न दूंगा ॥ १८ । मैं मुण्डे टीलों से भी नदियां और मैदानों के बीच में सोते बहाऊंगा[१] मैं जंगल को ताल और निर्जल देश को सोते ही सोते कर दूंगा ॥ १९ । मैं जंगल में देवदारु और बबूर और मेंहदी और जलपाई उगाऊंगा[२] मैं अराबा में सनौबर तिधार् वृक्ष और सीधा सनौबर एकट्ठे लगाऊंगा, २० । जिस से लोग देखकर जान लें और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ का किया हुआ और इस्राएल् के पवित्र का सिरजा हुआ है ॥

२१ । यहोवा कहता है कि अपना मुकद्दमा लड़ो याकूब का राजा कहता है कि अपने दृढ़ प्रमाण दो ॥ २२ । वे उन्हें देकर हम को बताएं कि होनहार में क्या होगा पूर्वकाल की घटनाएं बताओ कि आदि में क्या क्या हुआ जिस से हम उन्हें सोचकर जान सकें कि आगे को उन का क्या फल होगा वा होनेहारी घटनाएं हम को सुना दो ॥ २३ । आगे को जो कुछ घटेगा सो बताओ तब हम जानेंगे कि तुम ईश्वर हो वा मंगल वा अमंगल कुछ तो करो कि हम देखकर एक संग चकित हो जाएं ॥ २४ । देखो तुम कुछ नहीं हो और तुम से कुछ नहीं बनता जो कोई तुम को चाहता सो घिनौना ही है ॥

२५ । मैं ने एक को उत्तर दिशा से उभारा वह आ भी गया है वह पूरब दिशा से भी मेरा नाम लेता है जैसा कुम्हार गीली मिट्टी को लताड़ता है वैसा ही वह हाकिमों को कीच के समान लताड़ देगा[१]॥ २६ । किस ने इस बात को पहिले से बताया था जिस से हम जान सकते किस ने पूर्वकाल से यह प्रगट किया जिस से हम कह सकते कि वह धर्म्मी है कोई भी बतानेहारा नहीं कोई भी सुनानेहारा नहीं तुम्हारी बातों का कोई भी सुननेहारा नहीं है ॥ २७ । पहिले मैं ने सिय्योन् से कहा कि देख उन्हें देख और मैं ने यरूशलेम् के पास शुभ समाचार देनेहारे को भेजा है ॥ २८ । मैं ने देखने पर भी किसी को न पाया उन में से कोई मंत्री नहीं जो मेरे पूछने पर कुछ उत्तर दे सके ॥ २९ । सुनो उन सभों के काम अनर्थ और तुच्छ हैं और उन की ढली हुई मूर्त्तियां वायु और गड़बड़ ही हैं ॥

४२.

मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं मेरे चुने हुए को देखो जिस से मेरा जी प्रसन्न है मैं ने उस में अपना आत्मा समवाया है सो वह अन्यजातियों के लिये न्याय को प्रगट करेगा ॥ २ । वह न चिल्लाएगा न ऊंचे शब्द से बोलेगा न सड़क में अपनी वाणी सुनाएगा ॥ ३ । वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा न धुंधली बरती हुई बत्ती को बुझाएगा वह सच्चाई से न्याय

(१) मूल में खोलूंगा । (२) मूल में. दूंगा ।

(१) मूल में को आएगा ।

चुकाएगा ॥ ४ । वह आप तब लों न धुंधलाएगा न कुचला जाएगा जब लों वह न्याय को पृथिवी पर स्थिर न करे और द्वीपों के लोग उस की व्यवस्था की बाट जोहेंगे ॥ ५ । ईश्वर जो आकाश का सिरजनेहारा और ताननेहारा और उपज समेत पृथिवी का विस्तारनेहारा और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलनेहारों को आत्मा देनेहारा यहोवा है सो यों कहता है कि, ६ । मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म्म की रीति से बुला लिया और मैं तेरा हाथ पकड़कर तेरी रक्षा करूंगा मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा, ७ । कि तू अन्धों की आंखें खोले और बंधुओं को बन्दीगृह से और जो अंधियारे मे बैठे हैं उन को कालकोठरी से निकाले ॥ ८ । मैं यहोवा हूं मेरा नाम यही है और मैं अपनी महिमा दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है सो खुदी हुई मूरतों को मिलने न दूंगा ॥ ९ । सुनो पहिली बातें तो हो चुकी हैं और मैं नई बातें बताता हूं उन के होने से पहिले मैं उन्हें तुम को सुनाता हूं ॥

१० । हे समुद्र पर चलनेहारो[1] हे समुद्र के सब रहनेहारो हे द्वीपो अपने रहनेहारों समेत तुम सब यहोवा के लिये नया गीत गाओ और पृथिवी की छोर से उस की स्तुति करो ॥ ११ । जंगल और उस में की बस्तियां और केदार के बसे हुए गांव जयजयकार करें सेला के रहनेहारे जयजयकार करें वे पहाड़ों की चोटियों पर से ऊंचे शब्द से गाएं ॥ १२ । वे यहोवा की महिमा करें और द्वीपों में उस का गुणानुवाद करें ॥ १३ । यहोवा वीर की नाईं पयान करेगा और योद्धा के समान अपनी जलन भड़काएगा वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और अपने शत्रुओं पर वीरता दिखाएगा ॥

१४ । बहुत काल से तो मैं चुप रहा हूं और मौन गहे हूं और अपने को रोकता आया पर अब जननेहारी की नाईं चिल्लाऊंगा मैं हांफ हांफकर सांस भरूंगा ॥ १५ । मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को सुखा डालूंगा और उन की सब हरियाली को झुलसा दूंगा और नदियों को द्वीप कर दूंगा और तालों को सुखा डालूंगा ॥ १६ । मैं अंधों को एक मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे न जानते हों मैं उन को उन पथों से चलाऊंगा जिन्हे वे न जानते हों मैं उन के आगे अंधियारे को उंजियाला करूंगा और टेढ़े मार्ग को सीधा करूंगा मैं ऐसे ऐसे काम करके उन को त्याग न दूंगा ॥ १७ । जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते हैं और ढली हुई मूरतों से कहते हैं कि तुम हमारे ईश्वर हो उन को पीछे हटना और अत्यन्त लजाना पड़ेगा ॥ १८ । हे बहिरो सुनो हे अंधो आंख खोलो कि तुम देख सको ॥ १९ । मेरे दास को छोड़ कौन अंधा है और मेरे भेजे हुए दूत के सरीखा कौन बहिरा है मेरे मित्र के समान कौन अंधा है और यहोवा के दास के सरीखा अंधा कौन है ॥ २० । तू ने बहुत सी बातें देखी तो हैं पर उन की चिन्ता नहीं करता उस के कान खुले तो रहते हैं पर वह नहीं सुनता ॥

२१ । यहोवा को अपने ही धर्म्म के निमित्त यह भावा था कि वह व्यवस्था की बड़ाई अधिक करे ॥ २२ । पर ये लोग लुट पट गये हैं ये सब के सब गड़हियों में फंसे हुए और कालकोठरियों में बन्द किये हुए हैं ये पकड़े गये और कोई इन को नहीं छुड़ाता इन का धन छिन गया है और कोई उसे फेर देने की आज्ञा नहीं देता ॥ २३ । तुम में से कौन इस पर कान लगाएगा कौन ध्यान धरके होनहार के लिये सुनेगा ॥ २४ । किस ने याकूब को लुटाया और इस्राएल को लूटपाट करनेहारों के वश कर दिया क्या यहोवा ने यह नहीं किया जिस के विरुद्ध हम ने पाप किया और जिस के मार्गों पर उन्हों ने चलने न चाहा और जिस की व्यवस्था को उन्हों ने न माना ॥ २५ । इस कारण उस ने उस के ऊपर अपने कोप की आग भड़काई[1] और युद्ध का बल चलाया और यद्यपि आग उस की चारों ओर लग गई तौभी वह न जानता था वरन यह बल भी गया तौभी उस ने कुछ मन नहीं लगाया ॥

(१) मूल में उतरनेहारो ।

(१) मूल में उण्डेली ।

४३. हे याकूब तेरा सिरजनेहारा यहोवा और हे इस्राएल् तेरा रचनेहारा अब यों कहता है कि तू मत डर क्योंकि मैं ने तुझ को छुड़ा लिया मैं ने तुझ को नाम लेकर बुलाया है तू तो मेरा ही है॥ २। जब तू जल में होकर जाए तब मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले तब तू उन में न डूबेगा जब तू आग में होकर जाए तब तू न जलेगा और न लौ से तुझे आंच लगेगी॥ ३। क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं मैं इस्राएल् का पवित्र तेरा उद्धारकर्त्ता हूं मैं मिस्र को तेरी छुड़ौती में देता और कूश और सबा को तेरी सन्ती देता हूं॥ ४। तू जो मेरे लेखे में अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा और मैं जो तुझ से प्रेम रखता हूं इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्यों को और तेरे प्राण के पलटे में राज्य राज्य के लोगों को दूंगा॥ ५। मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं मैं तेरे वंश को पूरब से ले आऊंगा और पच्छिम से भी एकट्ठा करूंगा॥ ६। मैं उत्तर से कहूंगा कि दे दे और दक्खिन से कि रोक मत रख मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथिवी की छोर से ले आ अर्थात् हर एक को जो मेरा कहलाता है जिस को मैं ने अपनी महिमा के लिये सिरजा जिस को मैं ने रचा और बनाया है॥ ८। आंख रखते हुए अंधों को और कान रखते हुए बहिरों को निकाल ले आ॥ ९। जाति जाति के लोग एकट्ठे किये जाएं और राज्य राज्य के लोग जुट जाएं उन में से कौन यह बात बता सकता वा बीती हुई बातें हम को सुना सकता है वे अपने साक्षी ले आएं जिस से वे सच्चे ठहरें वा वे सुन लें और कहें हां सत्य वचन है॥ १०। यहोवा की यह वाणी है कि तुम मेरे साक्षी और मेरा दास हो जिस को मैं ने इस लिये चुना है कि तुम समझकर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूं मुझ से पहिले कोई ईश्वर न बना और न मेरे पीछे होगा॥ ११। मैं ही यहोवा हूं और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं॥ १२। मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार कर दिया और वर्णन भी किया और तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न था सो यहोवा की यह वाणी है कि तुम मेरे साक्षी हो और मैं ही ईश्वर हूं॥ १३। और अब से आगे को भी मैं वही रहूंगा और मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा जब मैं काम करने चाहूं तब कौन मुझे रोक[1] सकेगा॥

१४। फिर यहोवा जो तुम्हारा छुड़ानेहारा और इस्राएल् का पवित्र है सो यों कहता है कि तुम्हारे निमित्त मैं ने बाबेल् को भेजा है और उस के सब रहनेहारे कस्दियों को उन्हीं जहाजों पर चढ़ाकर जिन के विषय वे बड़ा बोल बोलते हैं[2] भगा दूंगा[3]॥ १५। मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र हूं मैं इस्राएल् का सिरजनहार तुम्हारा राजा हूं॥ १६। यहोवा तो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है, १७। और रथ और घोड़ों को और शूरवीरों समेत सेना को निकाल लाता है और वे तो एक संग वहीं रह जाते और फिर नहीं उठ सकते वे बुत गये वे सन की बत्ती की नाईं बुझ गये हैं॥ १८। सो वह यों कहता है कि अब बीती हुई घटनाओं को स्मरण मत करो और न प्राचीन काल की घटनाओं पर मन लगाओ॥ १९। देखो मैं एक नई बात करता हूं सो अभी प्रगट होगी और निश्चय तुम उस को जान लोगे अर्थात् मैं जंगल में मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा॥ २०। गीदड़ और शुतर्मुर्ग आदि बनैले जन्तु मेरी महिमा करेंगे क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा॥ २१। इस प्रजा को मैं ने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें॥ २२। हे याकूब तू ने मुझ से प्रार्थना नहीं किई हे इस्राएल् तू मुझ से उकताया है॥ २३। तू मेरे लिये होमबलि करने को भेड़ें नहीं लाया और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा किई है देख मैं ने अन्नबलि चढ़ाने की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई और न तुझ से धूप दिलाकर तुझे थका दिया है॥ २४। तू मेरे लिये सुगंधित नरकट रुपैये से मोल नहीं लाया और न मेल

(१) मूल में फेर। (२) मूल में उन के शब्द से बोलते हैं। (३) मूल में भगोड़े करके उतारूंगा।

बलियों की चर्बी से मुझे तृप्त किया पर तू ने पाप करके मुझ से कठिन सेवा कराई और अपने अधर्म्म के कामों से मुझे थका दिया है॥ २५। मैं वही हूं जो अपने निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा॥ २६। मुझे स्मरण करा हम आपस में न्याय चुकाएं तू ही ऐसा वर्णन कर जिस से तू निर्दोष ठहरे॥ २७। तेरा मूलपुरुष पापी हुआ था और जो जो मेरे तुम्हारे बिचवई हुए सो मुझ से बलवा करते चले आये हैं॥ २८। इस कारण मैं ने पवित्रस्थान के हाकिमों को अपवित्र ठहराया और याकूब को सत्यानाश और इस्राएल् को निन्दित होने दिया है॥

४४. १। अब हे मेरे दास याकूब हे मेरे चुने हुए इस्राएल् सुन ले॥ २। तेरा कर्त्ता यहोवा जो तुझे गर्भ ही में से बनाता आया है और वह तेरी सहायता करेगा सो यों कहता है कि हे मेरे दास याकूब हे मेरे चुने हुए यशूरून्[1] मत डर॥ ३। क्योंकि मैं प्यासे पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उंडेलूंगा॥ ४। सो वे उन मजनूओं की नाईं बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के मध्य में होते हैं॥ ५। कोई तो कहेगा कि मैं यहोवा का हूं और कोई अपना नाम याकूब रक्खेगा और कोई इस के विषय दस्तखत करेगा कि मैं यहोवा का हूं और अपनी पदवी इस्राएली बताएगा॥

६। यहोवा जो इस्राएल् का राजा है अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उस का छुड़ानेहारा है सो यों कहता है कि मैं सब से पहिला हूं और अन्त लों भी मैं ही रहूंगा और मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं॥ ७। और जब से मैं ने प्राचीनकाल के मनुष्यों को ठहराया तब से कौन हुआ जो मेरी नाईं उस को प्रचार करे या बताए वा मेरे लिये रचे अथवा होनहार बातें जो घटा चाहती हैं उन्हें प्रगट करे॥ ८। तुम मत थरथराओ और भयमान न हो क्या मैं ये बातें उस समय से ले तुम्हें सुना सुनाकर बताता नहीं आया तुम तो मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है नहीं मुझे छोड़ कोई चटान नहीं मैं तो किसी को नहीं जानता॥ ९। जो मूरत खोदकर बनाते हैं सो सब के सब व्यर्थ हैं और उन की चाही हुई वस्तुओं से कुछ लाभ न होगा और उन के जो साक्षी हैं सो आप न तो कुछ देखते न कुछ जानते हैं इस लिये उन को लज्जित होना पड़ेगा॥ १०। किस ने देवता वा निष्फल मूरत ढाली है॥ ११। देख उस के सब संगियों को तो लजाना पड़ेगा और कारीगर जो हैं सो मनुष्य ही हैं वे सब के सब एकट्ठे होकर खड़े हों वे थरथरा उठेंगे और उन सभों के मुंह काले होंगे॥ १२। लोहार एक बसूला लेकर मूरत को अंगारों में बनाता और हथौड़ों से गढ़ गढ़कर तैयार करता है वह उस को भुजबल से बनाता है फिर वह भूखा हो जाता और उस का बल घटता है वह पानी न पीकर थक जाता है॥ १३। बढ़ई सूत लगाकर टांकी से रेखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है और उस का आकार और सुन्दरता मनुष्य की सी करता है कि लोग उसे घर में रक्खें[2]॥ १४। कोई देवदारु को काटता वा वन के वृक्षों में से जाति जाति के बांजवृक्ष चुनकर सेवता है वा वह एक तूस का वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल पाकर बढ़ता है॥ १५। वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है वह उस में से कुछ लेकर तापता है फिर उस को जलाकर रोटी बनाता है फिर वह देवता भी बनाकर उस को दण्डवत् करता है वह मूरत खुदवाकर उस के साम्हने प्रणाम करता है॥ १६। उस का एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता है वह मांस भूनकर तृप्त होता फिर तापकर कहता है वाह मैं अच्छा तापा हूं मुझे आंच जान पड़ी है॥ १७। और उस के बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूरत खोदकर बनवाता है

(१) अर्थात् सीधा।

(१) मूल में सो सब शून्यता हैं। (२) मूल में, जिस से घर में रहे।

तब वह उस के साम्हने प्रणाम और दण्डवत् करता और उस से प्रार्थना करके कहता है मुझे बचा ले क्योंकि तू मेरा देवता है ॥ १८ । वे कुछ नहीं जानते और न कुछ समझ रखते हैं क्योंकि उन की आंखें ऐसी मून्दी[१] गई हैं कि वे देख नहीं सकते और उन का हृदय ऐसा हुआ है कि वे बूझ नहीं सकते ॥ १९ । और कोई इस बात की ओर मन नहीं लगाता और न किसी को इतना ज्ञान वा समझ रहती है कि कह सके कि उस का एक भाग तो मैं ने जला दिया और उस के कोयलों पर रोटी बनाई और मांस भूनकर खाया है फिर क्या मैं उस के बचे हुए भाग को घिनौनी वस्तु बनाऊं क्या मैं काठ[२] को प्रणाम करूं ॥ २० । वह तो राख खाता है वह भूले हुए मन से भटकाया हुआ है और वह न तो अपने को बचा सकता न कह सकता है कि क्या मेरे दहिने हाथ में मिथ्या नहीं है ॥

२१ । हे याकूब हे इस्राएल् इन बातों को स्मरण रख क्योंकि तू मेरा दास है मैं ने तुझे रचा है तू मेरा दास है हे इस्राएल् मैं तुझ को न बिसराऊंगा ॥ २२ । मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है मेरी ओर फिर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है ॥

२३ । हे आकाश ऊंचे स्वर से गा क्योंकि यहोवा ने काम किया है हे पृथिवी के गहिरे स्थानो जयजयकार करो हे पहाड़ो हे वन हे वन के सब वृक्षो गला खोलकर ऊंचे स्वर से गाओ क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल् के द्वारा अपने को शोभायमान दिखाएगा ॥ २४ । यहोवा जिस ने तुझे छुड़ा लिया और तुझे गर्भ ही से बनाता आया है सो यों कहता है कि मैं यहोवा ही सब काम पूरा करनेहारा हूं मैं ही अकेला आकाश का ताननेहारा और पृथिवी का अपनी ही शक्ति से विस्तारनेहारा हूं ॥ २५ । मैं झूठे लोगों कहे हुए के चिन्हों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेहारों को बावला कर देता हूं और बुद्धिमानों को पीछे हटा देता और उन की पण्डिताई को मूर्खता बनाता हूं, २६ । और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सुफल करता हूं, मैं यरूशलेम् के विषय कहता हूं कि वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के नगरों के विषय कि वे फिर बसाए जाएंगे और मैं उन के खण्डहरों को सुधारूंगा ॥ २७ । मै गहिरे जल से कहता हूं कि तू सूख जा और मैं तेरी नदियों को सुखाऊंगा ॥ २८ । मैं कुस् के विषय में कहता हूं कि वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा और यरूशलेम् के विषय कहता हूं कि वह बसाई जाएगी और मन्दिर की नेव डाली जाएगी ॥

(१) मूल में लेसी । (२) मूल मे पेड़ के ठूठ को ।

४५. यहोवा

अपने अभिषिक्त कुस् के विषय यों कहता हूं कि मैं ने उस[१] के दहिने हाथ को इस लिये थांभ लिया है कि उस के साम्हने जातियों को दबा दूं और राजाओं की कमर ढीली करूं और फाटकों को उस के साम्हने खोल दूं और फाटक बन्द न किये जाएं ॥ २ । मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंचे नीचे को चौरस करूंगा मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूंगा और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूंगा ॥ ३ । मै तुझ को अन्धकार मे छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा इस लिये कि तू जाने कि मैं इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा हूं और मैं ही तुझे नाम लेकर बुलाता हूं ॥ ४ । अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल् के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है यद्यपि तू मुझे नहीं जानता तौभी मै ने तुझे पदवी दिई है ॥ ५ । मै यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं यद्यपि तू मुझे नहीं जानता तौभी मै तेरी कमर कसूंगा, ६ । जिस से उदयाचल से लेकर अस्ताचल लों लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं मैं यहोवा हूं दूसरा कोई नहीं है ॥ ७ । मैं उजियाले का बनानेहारा और अन्धियारे का सिरजनहार हूं मैं शान्ति का करनेहारा और विपत्ति का सिरजनहार हूं मैं यहोवा ही

(१) मूल में जिस ।

इन सभों का कर्त्ता हूं ॥ ८। हे आकाश ऊपर से धर्म्म बरसा और आकाशमण्डल से धर्म्म की वर्षा हो[1] फिर पृथिवी खुलकर उद्धार उत्पन्न करे और धर्म्म को उस के संग ही उगाए मुझ यहोवा ही ने उस को सिरजा है ॥

९। हाय उस पर जो अपने रचनेहारे से झगड़ता है वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी कि तू यह क्या करता है क्या कारीगर का[2] बनाया हुआ कार्य्य उस के विषय कहेगा कि उस के हाथ नहीं हैं ॥ १०। हाय उस पर जो अपने पिता से कहे कि अब तू क्या जन्माता वा स्त्री से कहे कि तू क्या जनती है[3] ॥ ११। यहोवा जो इस्राएल् का पवित्र और उस का बनानेहारा है सो यों कहता है क्या तुम आनेहारी घटनाएं मुझ से पूछोगे क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे ॥ १२। मैं ही ने पृथिवी को बनाया और उस के ऊपर मनुष्यों को सिरजा है मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को तान दिया और उस के सारे गण को आज्ञा दिई है ॥ १३। मैं ही ने उस पुरुष को धर्म्म की रीति से उभारा है और मैं उस के सब मार्गों को सीधा करूंगा सो वही मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम वा बदला लिये छुड़ा देगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

१४। यहोवा यों कहता है कि मिस्रियों के श्रम की कमाई और कूशियों के व्योपार का लाभ तुझ को मिलेगा और सबाई लोग जो डील डौलवाले हैं सो तेरे पास चले आएंगे और तेरे ही हो जाएंगे वे तेरे पीछे पीछे चलेंगे बरन सांकलों में बंधे हुए चले आएंगे और तेरे साम्हने दण्डवत् कर तुझ से बिनती करके कहेंगे कि निश्चय तेरे बीच ईश्वर है और दूसरा कोई नहीं कोई और परमेश्वर नहीं ॥

१५। हे इस्राएल् के परमेश्वर हे उद्धारकर्त्ता निश्चय तू ऐसा ईश्वर है जो अपने को गुप्त रखता है ॥ १६। मूर्त्तियों के गढ़नेहारे सब के सब लज्जित और निरादर होंगे और उन के मुंह काले हो जाएंगे ॥ १७। पर इस्राएल् का यहोवा के द्वारा युग युग का उद्धार हो जाएगा तुम युग युग बरन अनन्त काल लों लज्जित न होगे न तुम्हारे मुंह काले हो जाएंगे ॥

१८। क्योंकि यहोवा जो आकाश का सिरजनहार है सोई परमेश्वर है जिस ने पृथिवी को रचा और बनाया उसी ने उस को स्थिर भी किया और सुनसान होने के लिये नहीं सिरजा पर बसने के लिये उसे रचा वही यों कहता है कि मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं है ॥ १९। मैं ने न किसी गुप्त स्थान में न अन्धकार के देश के किसी स्थान में बातें किईं मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा कि मुझे व्यर्थ ढूंढ़ो[1] मैं यहोवा धर्म्म की बात कहता और ठीक बातें बताता आया हूं ॥ २०। हे अन्यजातियों में के बचे हुए लोगो एकट्ठे होकर आओ एक संग निकट आओ जो अपनी काठ की खुदी हुई मूरत लिये फिरते हैं और जिस देवता से उद्धार नहीं हो सकता उस से प्रार्थना करते हैं वे कुछ ज्ञान नहीं रखते ॥ २१। बताओ तो और उन को लाओ, वे आपस में संमति करें, कौन इस को प्राचीनकाल से सुनाता आया और अगले दिनों से बताता आया है क्या मैं यहोवा ही ऐसा करता नहीं आया और मुझे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है मैं तो धर्म्मी और उद्धारकर्त्ता ईश्वर हूं और मुझे छोड़ दूसरा कोई नहीं है ॥ २२। हे पृथिवी के दूर दूर के देश के लोगो तुम मेरी ओर फिरकर उद्धार पाओ क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं है ॥ २३। मैं ने अपनी ही किरिया खाई और यह वचन धर्म्म के अनुसार मेरे मुख से निकल चुका और न बदलेगा[2] कि हर कोई मेरे ही साम्हने घुटने टेकेगा हर एक के मुख से मेरी ही किरिया खाई जाएगी ॥ २४। लोग मेरे विषय कहेंगे कि केवल यहोवा से धर्म्म और शक्ति मिलती हैं लोग उस के पास आएंगे और जो उस से रूठे रहेंगे उन्हें लज्जित होना पड़ेगा ॥ २५। तब इस्राएल् के सारे वंश के

---

(१) मूल में धर्म्म बहे। (२) मूल में. तेरा। (३) मूल में तुझे किस से पीड़ें उठीं।

(१) मूल में सुनसान स्थान में ढूंढ़ो। (२) मूल में न लौटेगा।

लोग यहोवा ही के कारण धर्म्मी ठहरेंगे और बड़ाई मारेंगे ॥

४६. बेल् देवता झुक गया नबो देवता निहुड़ गया उन की प्रतिमाएं पशुओं पर वरन घरैले पशुओं पर लदी हैं जिन वस्तुओं को तुम लिये फिरते थे सो अब भारी बोझ ठहर गईं वे थकित पशु के लिये भार हुई हैं ॥ २। वे निहुड़ गये वे एक संग झुक गये वे भार को छुड़ा नहीं सके वरन आप भी बंधुआई में चले गये हैं ॥

३। हे याकूब के घराने हे इस्राएल् के घराने के सारे बचे हुए लोगो मेरी ओर कान धरकर सुनो तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाये रहता और जन्म ही से लिये फिरता आया हूं ॥ ४। तुम्हारे बुढ़ापे लों भी मैं वैसा ही बना रहूंगा तुम्हारे बाल पकने के समय लों भी मैं तुम्हें उठाये रहूंगा मैं ने तुम्हें बनाया है और तुम को लिये फिरता रहूंगा मैं तुम्हें उठाये रहूंगा और छुड़ाता भी रहूंगा ॥ ५। तुम मुझे किस की उपमा दोगे और किस के समान बताओगे और किस से मेरा मिलान करोगे कि वह मेरे समान ठहरे ॥ ६। वे थैली से सोना उण्डेलते वा कांटे में चान्दी तौलते तब सोनार को मजूरी देकर उस से देवता बनवाते हैं फिर उस देवता को प्रणाम वरन दण्डवत् भी करते हैं ॥ ७। वे उस को कन्धे पर उठाकर लिये फिरते तब उसे उस के स्थान में रख देते हैं और वह वहां खड़ा रहता है और अपने स्थान से हटता नहीं चाहे कोई उस की दोहाई दे तौभी वह न सुन सकेगा न विपत्ति से उस का उद्धार कर सकेगा ॥

८। हे अपराधियो इस बात को स्मरण करके स्थिर हो इस की ओर मन लगाओ ॥ ९। प्राचीनकाल की अगली बातें स्मरण करो क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं दूसरा कोई नहीं परमेश्वर मैं ही हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है ॥ १०। मैं तो आदि से अन्त की बात को और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब लों नहीं हुई मैं कहता हूं कि मेरी युक्ति ठहरेगी और मैं अपनी सारी इच्छा को पूरी करता हूं ॥ ११। मैं पूरब से एक मांसाहारी पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेहारे पुरुष को बुलाता हूं मैं ने बात तो कही और उसे पूरी भी करूंगा मैं ने बात को ठहराया है और उसे सुफल भी करूंगा ॥ १२। हे कठोर मनवालो तुम जो धर्म्महीन हो[१] सो कान धरकर मेरी सुनो ॥ १३। मैं अपनी धार्म्मिकता प्रगट करने[२] पर हूं सो वह छिपी[३] न रहेगी और मेरे उद्धार करने में विलम्ब न लगेगा मैं सिय्योन् का उद्धार करूंगा और इस्राएल् को शोभायमान कर दूंगा[४] ॥

४७. हे बाबेल् की कुमारी बेटी उतरकर धूलि में बैठ जा हे कस्दियों की बेटी बिना सिंहासन भूमि पर बैठ जा क्योंकि तू फिर कोमल और सुकुमार न कहाएगी ॥ २। चक्की लेकर आटा पीस अपना बुर्का उतार घाघरा उठा और उघारी टांगों नदियों को पार कर ॥ ३। तू नंगी किई जाएगी और तेरी नंगाई प्रगट होगी क्योंकि मैं पलटा लूंगा और किसी मनुष्य को न छोड़ूंगा[५] ॥

४। हमारा छुड़ानेहारा जो है उस का नाम सेनाओं का यहोवा और इस्राएल् का पवित्र है ॥

५। हे कस्दियों की बेटी चुपचाप बैठी रह और अंधियारे में जा क्योंकि तू फिर राज्य राज्य की स्वामिन न कहाएगी ॥ ६। मैं ने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया तब तू ने उस पर कुछ दया न किई और बूढ़ों पर अपना अत्यन्त भारी जूआ रख दिया ॥ ७। तू ने तो कहा कि मैं सदा स्वामिन बनी रहूंगी सो तू ने इन बातों पर मन न लगाया और न स्मरण किया कि उन का क्या फल होता है ॥

८। सो हे राग रंग में बझी हुई तू जो निडर बैठी रहती है और मन में कहती है कि मैं ही हूं

(१) मूल में तुम जो धर्म्म से दूर हो। (२) मूल में निकट ले आने। (३) मूल में दूर। (४) मूल में मैं सिय्योन् में उद्धार इस्राएल् के लिये अपनी शोभा दूंगा।
(५) मूल में मनुष्य से न मिलूंगा।

और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं मैं विधवा न हूंगी और न मेरे लड़केवाले जाते रहेंगे सो तू अब यह बात सुन कि, ९। ये दोनों बातें लड़कों का जाता रहना और विधवा हो जाना अचानक एक ही दिन तुझ पर आ पड़ेंगी ये तेरे बहुत से टोनों और तेरे अति भारी तन्त्र मन्त्रों के रहते भी तुझ पर अपने पूरे बल से पड़ेंगी॥ १०। तू ने तो अपनी दुष्टता पर भरोसा रक्खा है तू ने कहा है कि कोई मुझे नहीं देखता, तेरी बुद्धि और ज्ञान जो है उसी ने तुझे बहकाया है सो तू ने मन में कहा है कि मैं ही हूं और कोई दूसरा नहीं॥ ११। इस कारण तेरी ऐसी दुर्गति होगी कि तुझे सूझ न पड़ेगा कि किस मन्त्र करके उसे दूर करूं और तुझ पर ऐसी विपत्ति पड़ेगी कि तू प्रायश्चित्त करके उसे निवारण न कर सकेगी और तेरे बिन जाने अचानक तेरा विनाश होगा॥ १२। तू अपने तन्त्र मन्त्र और बहुत से टोने करके जिन में तू बचपन से परिश्रम करती आई है खड़ी हो क्या जाने तू उन से लाभ उठा सके वा उन के बल से औरों को भय दिखा सके॥ १३। तू तो युक्ति करते करते थक गई है सो अब तेरे ज्योतिषी जो नक्षत्रों को ध्यान से देखते और नये नये चांद को देखकर होनहार बताते हैं सो खड़े होकर तुझे उन बातों से जो तुझ पर घटेंगी बचाएं॥ १४। देख वे भूसे के समान होकर आग से भस्म हो जाएंगे वे अपने ही प्राण ज्वाला से न बचा सकेंगे वह आग तो तापने के लिये अंगारा न होगी न ऐसी होगी जिस के साम्हने कोई बैठे॥ १५। जिन बातों में तू परिश्रम करती आई है सो तेरे लिये वैसी ही हो जाएंगी और जो तेरे बचपन से तेरे संग व्यापार करते आये हैं सो अपनी अपनी दिशा की ओर जाएंगे और तेरा कोई उद्धारकर्त्ता न होगा॥

४८. हे याकूब के घराने यह बात सुन तुम जो इस्राएली कहावते और यहूदा के वंश में उत्पन्न हुए हो[१] जो यहोवा के नाम की किरिया तो खाते और इस्राएल् के परमेश्वर की चर्चा तो करते हो पर सच्चाई और धर्म्म से नहीं करते॥ २। वे तो अपने को पवित्र नगर के बताते हैं और इस्राएल् के परमेश्वर पर जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है टेक लगाये रहते हैं॥ ३। अगली बातों को तो मैं ने प्राचीन काल से बताया और उन की चर्चा उठाकर सुनाई मैं ने अचानक उन्हें किया और वे हुईं॥ ४। मैं जो जानता था कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा पीतल का है, ५। इस कारण मैं ने अगली बातें प्राचीन काल से तुझे बताया उन के घटने से पहिले ही मैं ने तुझे सुनाया ऐसा न हो कि तू कहने पाए कि यह मेरी मूरत का काम है और मेरी खुदी और ढली हुई मूर्त्तियों की आज्ञा से हुआ॥ ६। तू ने सुना है, इस सब का घटना देख, क्या तुम उस का प्रचार न करोगे अब से मैं तुझे नई नई बातें और ऐसी गुप्त बातें जिन्हें तू न जानता था सुनाता हूं॥ ७। वे तो अभी सिरजी गईं और इस से पहिले न हुई थीं तू ने आज से पहिले उन्हें न सुना था कहीं ऐसा न हो कि तू कहने पाए कि मैं तो इन्हें जानता था॥ ८। निश्चय तू ने उन्हें न तो सुना न जाना और इस से पहिले तेरा कान न खुला था क्योंकि मैं जानता था कि तू निश्चय विश्वासघात करता है और उत्पत्ति ही से तेरा नाम अपराधी पड़ा है॥ ९। मैं अपने ही नाम के निमित्त कोप करने में विलम्ब करूंगा और अपने यश के निमित्त अपने तईं रोक रक्खूंगा ऐसा न हो कि मैं तुझे नाश करूं॥ १०। देखो मैं ने तुझे सोधा तो सही पर चांदी की नाईं नहीं मैं ने तुझे दुःख की भट्ठी में अपनाया है॥ ११। अपने निमित्त अपने ही निमित्त मैं यह करूंगा मेरा नाम क्यों अपवित्र ठहरे और मैं अपनी महिमा दूसरे को न दूंगा॥

१२। हे याकूब हे मेरे बुलाये हुए इस्राएल् मेरी ओर कान धरकर सुन क्योंकि मैं ही हूं मैं आदि[१] से हूं और अन्त[२] लों भी मैं ही रहूंगा॥ १३। मेरे ही हाथ से पृथिवी की नेव डाली गई और मेरे ही दहिने हाथ से आकाश फैलाया गया फिर जब मैं

(१) मूल में यहूदा के जल से निकले हो।

(१) मूल में पहिला। (२) मूल में पिछला।

उन को बुलाता हूं तब वे एक साथ खड़े हो जाते हैं ॥ १४ । तुम सब के सब एकट्ठे होकर सुनो उन में से किस ने कभी इन बातों को बताया है । जिस से यहोवा प्रेम रखता है वही बाबेल् पर उस की इच्छा पूरी करेगा और कस्दियों पर उसी का भुज-बल पड़ेगा ॥ १५ । मैं ही ने बातें किईं और मैं ने उस को बुलाया है मैं उस को ले आया और उस का काम सुफल होगा ॥ १६ । मेरे निकट आकर इस बात को सुनो आदि से लेकर मैं ने कोई बात गुप्त में नहीं कही जब से यह हुई तब से मैं हूं और अब प्रभु यहोवा और उस के आत्मा ने मुझे भेज दिया है[1] ॥ १७ । यहोवा जो तेरा छुड़ानेहारा और इस्राएल् का पवित्र है सो यों कहता है कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हूं और जिस मार्ग से तुझे चलना है उसी से तुझे चलाता हूं ॥ १८ । भला होता कि तू ने मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता तो तेरी शान्ति नदी के और तेरा धर्म्म समुद्र की लहरों के समान होता ॥ १९ । और तेरा वंश बालू के किनकों के सरीखा और तेरी निज सन्तान उस के कणों के समान होती और उस का नाम मेरे साम्हने से नाश न होता न मिट जाता ॥

२० । बाबेल् में से निकल जाओ कस्दियों के बीच से भाग जाओ जयजयकार करते हुए इस बात को प्रचार करके सुनाओ पृथिवी की छोर लों भी इस की चर्चा फैलाओ कि यहोवा ने अपने दास याकूब को छुड़ा लिया है ॥ २१ । और जब वह उन्हें निर्जल देशों में ले चलता था तब वे प्यासे न रहे, उस ने उन के लिये पानी बहाया उस ने चटान को फाड़ा और पानी फूट निकला ॥ २२ । दुष्टों के लिये कुछ शान्ति नहीं यहोवा का यही वचन है ॥

४९. हे द्वीपो मेरी ओर कान लगाकर सुनो और हे दूर दूर के राज्यों के लोगो ध्यान धरकर मेरी सुनो क्योंकि यहोवा ने मुझे गर्भ ही में रहते बुलाया जब मैं माता के पेट में था तब भी उस ने मेरे नाम की चर्चा किई ॥ २ । और उस ने मेरे वचनों[1] को चोखी तलवार के समान कर दिया और अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रक्खा फिर मुझ को चमकीला तीर बनाकर अपने तर्कश में गुप्त रक्खा, ३ । और मुझ से कहा कि तू मेरा दास इस्राएल् है तेरे द्वारा मैं अपने को शोभायमान दिखाऊंगा ॥ ४ । तब मैं ने कहा कि मैं ने तो अकारथ परिश्रम किया और व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है तौभी यहोवा मेरा न्याय चुकाएगा[2] और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है ॥ ५ । और अब यहोवा जिस ने मुझे जन्म ही से इस लिये रचा कि मैं उस का दास होकर याकूब को उस की ओर फेर ले आऊं अर्थात् इस्राएल् को उस के पास एकट्ठा करूं और यहोवा की दृष्टि में मैं प्रतापमय हूंगा और मेरा परमेश्वर मेरा बल होगा, ६ । उसी ने मुझ से अब कहा है यह तो हलकी सी बात होती कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल् के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा दास ठहरता सो मैं तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि तू पृथिवी की छोर छोर लों भी मेरी ओर से उद्धार का मूल हो ॥ ७ । जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता और इस जाति से घिनौना समझा जाता और अधिकारियों का दास है उस से इस्राएल् का छुड़ानेहारा और उसी का पवित्र अर्थात् यहोवा यों कहता है कि राजा देखकर खड़े हो जाएंगे और हाकिम दण्डवत् करेंगे और यह यहोवा के निमित्त होगा जो सच्चा और इस्राएल् का पवित्र है और उस ने तुझे चुन लिया है ॥ ८ । यहोवा यों कहता है कि अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन लिई और उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहायता किई है सो मैं तेरी रक्षा करके तेरे द्वारा लोगों के साथ वाचा बांधूंगा[3] कि तू देश को सुभागी[4] करे और उजड़े हुए स्थानों को

(१) वा प्रभु यहोवा ने मुझे और अपने आत्मा को भेज दिया है ।

(१) मूल में मुंह । (२) मूल में मेरा न्याय यहोवा के पास है । (३) मूल में तुझे लोगों को वाचा ठहराऊंगा । (४) मूल में. खड़ा ।

उन के अधिकारियों के हाथ में फेर दे, ९। और बंधुओं से कहे कि बन्दीगृह से निकल आओ और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे कि प्रकाश में आओ[१]। वे मार्गों के किनारे किनारे चरने पाएंगे और सब मुण्डे टीलों पर भी उन को चराई मिलेगी ॥ १०। वे न भूखे होंगे न प्यासे और न लूह न घाम उन्हें लगेगा क्योंकि जो उन पर दया करता सो उन को ले चलेगा और जल के सोतों के पास पास से चलाएगा ॥ ११। और मैं अपने सब पहाड़ों को मार्ग कर दूंगा और मेरे राजमार्ग ऊंचे हो जाएंगे ॥ १२। देखो ये तो दूर से आएंगे और ये उत्तर और पच्छिम से और ये सीनियों के देश से आएंगे ॥ १३। हे आकाश जयजयकार कर हे पृथिवी मगन हो हे पहाड़ो गला खोलकर जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दिई और अपने दीन लोगों पर दया किई है ॥

१४। परन्तु सिय्योन् ने कहा है कि यहोवा ने मुझे त्याग दिया मेरे प्रभु ने मुझे बिसरा दिया है ॥ १५। क्या कोई स्त्री अपने दूधपिउवे बच्चे को ऐसा बिसरा सकती कि अपने उस जने हुए लड़के पर दया न करे हां वह तो भूल सकती है पर मैं तुझे भूल नहीं सकता ॥ १६। सुनो मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है तेरी शहरपनाह मेरी दृष्टि में लगातार बनी रहती है ॥ १७। तेरे लड़के तो फुर्ती से आ रहे हैं और तेरे ढानेहारे और उजाड़नेहारे तेरे मध्य से निकले जा रहे हैं ॥ १८। अपनी आंखें उठाकर चारों ओर देख कि वे सब के सब एकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सेंह कि तू उन सभों को गहिने के समान पहिनेगी और दुल्हिन की नाईं अपने शरीर में बांध लेगी ॥ १९। और तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं और तेरे जो देश खण्डहर हो खण्डहर है उन[२] में निवासी अब न समाएंगे और तेरे नाश करनेहारे दूर हो जाएंगे ॥ २०। तेरे जो पुत्र जाते रहे[३] सो तेरे कान में कहने पाएंगे कि यह स्थान हमारे लिये सकेत है हमें और स्थान दे कि उस में रहें ॥ २१। तब तू मन में कहेगी कि किस ने मेरे लिये इन को जन्माया मेरे पुत्र तो जाते रहे थे और मैं बांझ हो गई मैं बंधुई और भगोड़ू हो गई सो इन को किस ने पाला देख मैं अकेली रह गई थी अब ये कहां से आये ॥

२२। प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं अपना हाथ जाति जाति के लोगों की ओर बढ़ाऊंगा[१] और देश देश के साम्हने अपना झण्डा खड़ा करूंगा तब वे तेरे बेटों को अपनी गोद में ले आएंगे और तेरी बेटियों को अपने कन्धे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुंचाएंगे ॥ २३। और राजा तेरे बच्चों के निज सेवक और उन की रानियां तेरी दूध पिलानेहारियां होंगी वे अपनी नाक भूमि पर रगड़कर तुझे दण्डवत् करेंगे और तेरे पांवों की धूलि चाट लेंगे, सो तू यह जान लेगी कि मैं यहोवा हूं और मेरी बाट जोहनेहारों की आशा कभी नहीं टूटने की ॥ २४। क्या वीर के हाथ से लूट छीन लिई जाए वा धर्म्मी के बन्धुए छुड़ाये जाएं ॥ २५। तौभी यहोवा यों कहता है कि हां वीर के भी बंधुए उस से छीन लिये जाएंगे और बलात्कारी की लूट उस के हाथ से छुड़ाई जाएगी क्योंकि जो तुझ से मुकद्दमा लड़ते हैं उन से मैं आप मुकद्दमा लड़ूंगा और तेरे लड़केवालों का मैं आप उद्धार करूंगा ॥ २६। और जो तुझ पर अंधेर करते हैं उन को मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा और वे अपना लोहू पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते हैं तब सब प्राणी जान लेंगे कि तेरा उद्धारकर्त्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेहारा याकूब का शक्तिमान मैं ही हूं ॥

५०. तुम्हारी माता का त्यागपत्र जिसे मैं ने उस को छोड़ देने के समय दिया सो कहां है और व्योहारियों में से मैं ने किस के हाथ तुम्हें बेच दिया है। यहोवा यों कहता है कि सुनो तुम अपने अधर्म्म के कामों के

(१) मूल में उजाले को प्रगट करो। (२) मूल में. तुझ।
(३) मूल में. तेरे लड़कों के जाते रहने के बेटे।

(१) मूल में उठाऊंगा।

कारण बिक गये और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़ दिई गई ॥ २। इस का क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला और जब मैं ने पुकारा तब कोई न बोला क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता और क्या मुझ में इतनी शक्ति नहीं कि न उबार सकूं देखो मैं तो समुद्र को घुड़कते ही सुखा डालता और महानदों को जंगल बना देता हूं उन की मछलियां जल बिना मर जाती और बसाती हैं ॥ ३। मैं तो आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहिनाता और टाट ओढ़ा देता हूं ॥

४। प्रभु यहोवा ने मुझे शिष्यों की जीभ दिई है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालने जानूं वह भोर भोर को मुझे जगाकर मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य की रीति सुनूं ॥ ५। प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है और मैं ने हठ न किया न पीछे हट गया ॥ ६। मैं ने मारनेहारों की ओर अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेहारों की ओर अपने गाल किये मैं ने अपमानित होने और उन के थूकने से मुंह न मोड़ा[१] ॥ ७। क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करेगा इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया वरन अपना माथा चकमक की नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मेरी आशा न टूटेगी ॥ ८। जो मुझे धर्म्मी ठहराता है सो मेरे निकट है कौन मेरे साथ मुकद्दमा करेगा हम एक संग खड़े हों जो कोई मेरा मुद्दई बनेगा वह मेरे निकट आए ॥ ९। सुनो प्रभु यहोवा मेरी सहायता करेगा मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा देखो वे सब कीड़े खाये हुए पुराने कपड़े की नाईं नाश हो जाएंगे ॥

१०। तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उस के दास की सुनता है सो चाहे अन्धियारे में चलता हो और उसे कुछ उजियाला न दिखाई देता हो तौभी यहोवा के नाम का भरोसा रक्खे रहे और अपने परमेश्वर पर टेक लगाये रहे ॥ ११। देखो तुम जो आग बारते और अग्निबाणों को कमर में बांधते हो तुम सब अपनी बारी हुई आग में और अपने जलाये हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चले जाओ। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी कि तुम सन्ताप में पड़े रहोगे ॥

(१) मूल में न छिपाया।

५१. हे धर्म्म के पीछे चलनेहारो हे यहोवा के ढूंढ़नेहारो कान लगाकर मेरी सुनो जिस चटान में से तुम खोदे गये और जिस खानि में से तुम निकाले गये उस पर ध्यान करो ॥ २। अपने मूलपुरुष इब्राहीम और अपनी माता सारा पर ध्यान करो जब वह अकेला था तब ही मैं ने उस को बुलाया और आशीष दिई और बढ़ा दिया ॥ ३। यहोवा ने सिय्योन् को शान्ति दिई है उस ने उस के सब खंडहरों को शान्ति दिई है और उस के जंगल को एदेन् के समान और उस के निर्जल देश को यहोवा की बारी के समान कर दिया है उस में हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा ॥

४। हे मेरी प्रजा के लोगो मेरी ओर ध्यान धरो हे मेरे लोगो कान लगाकर मेरी सुनो मेरी ओर से व्यवस्था दिई जाएगी[१] और मैं अपना नियम देश देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर रक्खूंगा ॥ ५। मेरा धर्म्म प्रगट होने पर है[२] मैं उद्धार करने लगा हूं[३] मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों के न्याय के काम करूंगा द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रक्खेंगे ॥ ६। आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ और पृथिवी को निहारो क्योंकि आकाश धूंएं की नाईं विलाय जाएगा और पृथिवी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी और उस के रहनेहारे यों ही जाते रहेंगे पर जो उद्धार मैं करूंगा सो सदा लों ठहरेगा और मेरा धर्म्म जाता न रहेगा ॥

७। हे धर्म्म के जाननेहारो जिन के मन में मेरी व्यवस्था है तुम कान लगाकर मेरी सुनो मनुष्यों की किई हुई नामधराई से मत डरो और

(१) मूल में निकलेगी। (२) मूल में निकट है।
(३) मूल में मेरा उद्धार निकला है।

उन के निन्दा करने से विस्मित न हो ॥ ८। क्योंकि घुन उन्हें कपड़े की नाईं और कीड़ा उन्हें ऊन की नाईं खाएगा पर मेरा धर्म्म सदा लों ठहरेगा और मेरा किया हुआ उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा ॥

९। हे यहोवा की भुजा जाग जाग बल धारण कर जैसे प्राचीन काल के दिनों में और अगली पीढ़ियों के समय में वैसे ही अब भी जाग क्या तू वही नहीं है जिस ने रहब् को टुकड़े टुकड़े किया और मगरमच्छ को घायल किया था ॥ १०। क्या तू वही नहीं है जिस ने समुद्र को अर्थात् गहिरे सागर के जल को सुखा डाला और उस की थाह में अपने छुड़ाये हुओं के पार जाने के लिये मार्ग निकाला था ॥ ११। सो यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन् में आएंगे और उन को सदा का आनन्द मिलेगा[१] वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे और शोक और लम्बी सांस भरना जाता रहेगा ॥

१२। मैं तो मैं ही तेरा शान्तिदाता हूं सो तू कौन है जो विनाशी मनुष्य से और घास सरीखे मुर्झानेहारे[२] आदमी से डरता है, १३। और आकाश के ताननेहारे और पृथिवी की नेव डालनेहारे अपने कर्त्ता यहोवा को भूल जाता है और जब जब द्रोही नाश करने को तैयार होता है तब तब उस की जलजलाहट से दिन भर लगातार थरथराता है पर द्रोही की जलजलाहट कहां रही ॥ १४। जो झुकाया हुआ है सो शीघ्र छुड़ाया जाएगा वह गड़हे में न मरेगा और उस का आहार न घटेगा ॥ १५। जो समुद्र को विलोड़ता और उस की लहरों को गरजाता है सो मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है ॥ १६। और मैं ने तुझे अपने वचन सिखाये[३] और अपने हाथ की आड़ में छिपा रक्खा है कि मैं आकाश तानूं[४] और पृथिवी की नेव डालूं और सिय्योन् से कहूं कि तू मेरी प्रजा है ॥

१७। हे यरूशलेम् जाग उठ जाग उठ खड़ी हो आ तू ने यहोवा के हाथ से उस की जलजलाहट के कटोरे में से पिया है तू ने कटोरे में का लड़खड़ा देनेहारा मद पूरा पूरा पी लिया है ॥ १८। जितने लड़के वह जनी है उन में से कोई न रहा जो उसे धीरे धीरे ले चले और जितने लड़के उस ने पाले पोसे उन में से कोई न रहा जो उस के हाथ को थाम्भ ले ॥ १९। ये दो विपत्तियां तुझ पर आ पड़ी हैं सो कौन तेरे संग विलाप करेगा उजाड़ और विनाश और महंगी और तलवार आ पड़ी हैं मैं किस रीति[१] तुझे शान्ति दे सकता ॥ २०। तेरे लड़के मूर्छित होकर एक एक सड़क के सिरे पर महाजाल में फंसे हुए हरिण की नाईं पड़े हैं यहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की घुड़की के कारण वे अचेत पड़े हैं[२] ॥ २१। इस कारण हे दुखियारी तू मतवाली तो है पर दाखमधु पीकर नहीं तू यह बात सुन ॥ २२। तेरा प्रभु यहोवा जो अपनी प्रजा का मुकद्दमा लड़नेहारा तेरा परमेश्वर है सो यों कहता है कि सुन मैं लड़खड़ा देनेहारे मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूं सो तुझे उस में से फिर कभी पीना न पड़ेगा ॥ २३। और मैं उसे तेरे उन दुःख देनेहारों के हाथ में दूंगा जिन्हों ने तुझ से कहा कि लेट जा कि हम तुझ पर पांव देकर चलें[३] और तू ने औंधे मुंह भूमि पर गिरकर अपनी पीठ को सड़क सी बना दिया[४] ॥

५२. हे सिय्योन् जाग जाग अपना बल धारण कर हे पवित्र नगर यरूशलेम् अपने शोभायमान वस्त्र पहिन ले क्योंकि तेरे बीच खतनारहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे ॥ २। अपने पर से धूलि झाड़ दे हे यरूशलेम् उठकर विराजमान हो हे सिय्योन् की बंधुई बेटी अपने गले के बंधन को खोल दे ॥

---

(१) मूल में उन के सिर पर सदा का आनन्द होगा।
(२) मूल में सरीखे बननेहारे।
(३) मूल में मैं ने तेरे मुंह में अपने वचन डाले। (४) मूल में आकाश को पौधे की नाईं लगाऊं।

(१) मूल में मैं कौन। (२) मूल में घुड़की से भरे हैं।
(३) मूल में कि हम आगे चलें। (४) मूल में, तू ने आगे चलनेहारों के लिये अपनी पीठ भूमि और सड़क के समान रक्खी।

३। यहोवा ते यों कहता है कि तुम जो सेंतमेंत बिक गये थे से बिना रुपैया दिये छुड़ाये भी जाओगे ॥ ४। फिर प्रभु यहोवा यों भी कहता है कि मेरी प्रजा ते पहिले पहिल मिस्र में परदेशी होकर रहने को गई थी और अश्शूरियों ने भी उस पर बिन कारण अंधेर किया ॥ ५। से अब यहोवा की यह वाणी है कि मैं यहां क्या करता हूं मेरी प्रजा सेंतमेंत हर लिई गई है यहोवा की यह भी वाणी है कि जो उस पर प्रभुता करते हैं से जयजयकार करते हैं और मेरे नाम की निन्दा दिन भर लगातार होती रहती है ॥ ६। इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी इसी कारण वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है से यहोवा ही है देखो मैं वही हूं ॥

७। पहाड़ों पर उस के पांव क्या ही सोहते हैं जो शुभ समाचार देता और शान्ति की बात सुनाता और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार होने का सन्देश देता और सिय्योन् से कहता है कि तेरा परमेश्वर राजा हुआ है ॥ ८। सुन तेरे पहरुए पुकार रहे हैं वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं क्योंकि वे साक्षात् देखते हैं कि यहोवा सिय्योन् को क्योंकर लैटाये लाता है ॥ ९। हे यरूशलेम् के खंडहरो एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शांति दिई और यरूशलेम् को छुड़ा लिया है ॥ १०। यहोवा ने सारी जातियों के साम्हने अपनी पवित्र भुजा प्रगट किई है और पृथिवी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखते हैं ॥ ११। दूर हो दूर वहां से निकल जाओ कोई अशुद्ध वस्तु मत छूओ उस के बीच से निकल जाओ हे यहोवा के पात्रों के ढोनेहारो अपने को शुद्ध करो ॥ १२। क्योंकि तुम को न उतावली से निकलना न भागते हुए चलना पड़ेगा क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे और इस्राएल् का परमेश्वर तुम्हारे पीछे पीछे चलेगा ॥

१३। देखो मेरा दास बुद्धि से काम करेगा वह ऊंचा महान् और अति उन्नत हो जाएगा ॥ १४। जैसे बहुत से लोग तुझे देखकर चकित हुए (क्योंकि उस का रूप यहां लों बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ा और उस की सुन्दरता भी कि आदमियों की सी न रह गई), १५। वैसे ही वह बहुत सी जातियों को भड़काएगा और उस को देखकर राजा चुपचाप रहेंगे[1] क्योंकि वे तब ऐसी बात देखेंगे जिस का वर्णन उन के सुनते कभी न किया गया हो और ऐसी बात समझ लेंगे जो उन्हों ने कभी न सुनी हो ॥

५३. जो समाचार हम को दिया गया था उस का किस ने विश्वास किया और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ ॥ २। वह तो उस के साम्हने अंकुर की नाईं और ऐसी जड़ की शाखा के समान बढ़ा होता गया जो निर्जल भूमि में हो उस की न तो कुछ सुन्दरता थी और न कुछ तेज और जब हम उस को देखते थे तब उस का ऐसा रूप हमें न देख पड़ता था कि हम उस को चाहते ॥ ३। वह तुच्छ जाना जाता था और पुरुषों का त्यागा हुआ था वह दुःखी पुरुष था और रोग से उस की जान पहिचान थी और जैसा कोई जिस से लोग मुख फेर लेते हैं वैसा वह तुच्छ जाना जाता था और हम उसे लेखे में न लाते थे ॥

४। निश्चय वह हमारे ही रोगों को उठाता था और हमारे ही दुःखों से लदा हुआ था तौभी हम लोग उस को पिटा हुआ और परमेश्वर का मारा हुआ और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझते थे ॥ ५। पर वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म्म के कामों के हेतु कुचला गया था जिस ताड़ना से हमारे लिये शांति उपजे से उस पर पड़ी और उस के कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो सकें[2] ॥ ६। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गये थे वरन हम ने अपना अपना मार्ग लिया पर यहोवा ने हम सभों के अधर्म्म का भार उसी पर डाल दिया ॥

(१) मूल में राजा अपने मुंह मूंदेंगे। (२) मूल में, हमारे लिये चगापन हैं।

७। उस पर अंधेर किया गया पर वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला जैसे भेड़ वध होने को लाने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप रहती है वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला॥ ८। अंधेर और निर्णय से वह उठा लिया गया और उस के समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच से उठा लिया जाता है मेरे लोगों ही के अपराध के कारण उस पर मार पड़ी है॥ ९। और उस की कबर दुष्टों के संग और उस की मृत्यु के समय धनवान के संग ठहराई गई तौभी[1] उस ने कुछ उपद्रव न किया था और न उस के मुंह से कभी छल की बात निकली थी॥

१०। तौभी यहोवा को यह भावा कि उसे कुचले उसी ने उस को रोगी कर दिया जब तू उस का प्राण दोषबलि करे तब वह अपना वंश देखने पाएगा और बहुत दिन जीता रहेगा और उस के हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी॥ ११। वह अपने मन के खेद का फल देखकर शांति पाएगा[2] अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्म्मी दास बहुतेरों को धर्म्मी ठहराएगा और वह उन के अधर्म्म के कामों का भार आप उठाये रहेगा॥ १२। इस कारण मैं उसे बड़ों के संग भाग दूंगा और वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा यह इस का पलटा होगा कि उस ने अपना प्राण मृत्यु के वश कर दिया[3] और वह अपराधियों के संग गिना गया पर उस ने बहुतों के पाप का भार उठा लिया और अपराधियों के लिये बिनती करता है॥

५४.

हे बांझ तू जो कभी न जनी जयजयकार कर तू जिसे जनने की पीड़ें न हुईं गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक हैं यहोवा का यही वचन है॥ २। अपने तंबू का स्थान चौड़ा कर और तेरे डेरे के पट लंबे किये जाएं हाथ मत रोक रस्सियों को लम्बी और खूंटों को दृढ़ कर॥ ३। क्योंकि तू दहिने बाएं फैलेगी और तेरा वंश जाति जाति का अधिकारी होगा और उजड़े हुए नगरों को बसाएगा॥ ४। तू मत डर क्योंकि तेरी आशा न टूटेगी और तू लज्जित न हो क्योंकि तुझ पर सियाही न छाएगी क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी और अपने विधवापन की नामधराई फिर स्मरण न करेगी॥ ५। क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है और इस्राएल् का पवित्र तेरा छुड़ानेहारा है और वह सारी पृथिवी का भी परमेश्वर कहलाएगा॥ ६। क्योंकि यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया स्त्री और जवानी में निकाली हुई स्त्री है तेरे परमेश्वर का यही वचन है॥ ७। क्षण भर ही के लिये मैं ने तुझे छोड़ तो दिया था पर अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा॥ ८। क्रोध के झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया तो था पर करुणा करके मैं तुझ पर सदा के लिये दया करूंगा तेरे छुड़ानेहारे यहोवा का यही वचन है॥ ९। यह तो मेरे लेखे में नूह के समय के जलप्रलय के समान है क्योंकि जैसा मैं ने किरिया खाई थी कि नूह के समय के जलप्रलय से पृथिवी फिर न डूबेगी वैसे ही मैं ने यह भी किरिया खाई है कि आगे को तुझ पर क्रोध न करूंगा और न तुझ को घुड़कूंगा॥ १०। चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं तौभी मेरी करुणा तुझ पर से न हटेगी और मेरी शांतिवाली वाचा न टलेगी यहोवा का जो तुझ पर दया करता है यही वचन है॥

११। हे दुःखियारी तू जो आंधी की सताई है और जिस को शांति नहीं मिली सुन मैं तेरे पत्थरों को पच्चीकारी करके बैठाऊंगा और तेरी नेव में नीलमणि डालूंगा॥ १२। और मैं तेरे कलश माणिकों के और तेरे फाटक लालड़ियों के और तेरे सब सिवानों को मनोहर रत्नों के बनाऊंगा॥ १३। और तेरे सब लड़के यहोवा के सिखाये हुए होंगे और उन को बड़ी शांति

(१) वा क्योंकि। (२) मूल में तृप्त होगा। (३) मूल में मृत्यु के लिये उण्डेल दिया।

मिलेगी ॥ १४ । तू धर्म्मी होने के द्वारा स्थिर होगी तू अंधेर से बचेगी क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा और तू भयभीत होने से बचेगी क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा ॥ १५ । सुन लोग भीड़ लगाएंगे पर मेरी ओर से नहीं जितने तेरे विरुद्ध भीड़ लगाएं सो तेरे कारण गिरेंगे ॥ १६ । सुन जो कारीगर आग में के कोयले फूंक फूंककर अपनी कारीगरी के अनुसार हथियार बनाता है सो मेरा ही सिरजा हुआ है और उजाड़ने के लिये नाश करनेहारा भी मेरा ही सिरजा हुआ है ॥ १७ । जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाये जाएं उन में से कोई सफल न होगा और जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें[1] उन सभों से तू जीत जाएगा । यहोवा के दासों का यही भाग होगा और वे मेरे ही कारण धर्म्मी ठहरेंगे यहोवा की यही वाणी है ॥

५५. अहो सब प्यासे लोगो पानी के पास आओ और जिन के पास कुछ रुपैया न हो तुम भी आकर मोल लो और खाओ बरन आकर दाखमधु और दूध बिन रुपैये और बिन दाम ले लो ॥ २ । जो भोजनवस्तु नहीं है उस के लिये तुम क्यों रुपैया लगाते हो और जिस से पेट नहीं भरता उस के लिये क्यों परिश्रम करते हो मेरी ओर मन लगाकर सुनो तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे ॥ ३ । कान लगाओ और मेरे पास आओ सुनो तब तुम जीते रहोगे[2] और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बांधूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की ॥ ४ । सुनो मैं ने उस को राज्य राज्य के लोगों के लिये साक्षी और प्रधान और आज्ञा देनेहारा ठहराया है ॥ ५ । सुन तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं तेरे पास दौड़ी आएंगी वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है ॥

६ । जब लों यहोवा मिल सकता है तब लों उस की खोज में रहो जब लों वह निकट है तब लों उस को पुकारो ॥ ७ । दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे और वह उस पर दया करेगा वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उस को क्षमा करेगा ॥ ८ । क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मेरे और तुम्हारे सोच विचार एक समान नहीं और न तुम्हारी और मेरी गति एक सी है ॥ ९ । क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में आकाश और पृथिवी का अन्तर है[1] ॥ १० । जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते बरन भूमि पर पड़कर[2] उपज उपजाते और इसी रीति बोनेहारे को बीज और खानेहारे को रोटी मिलती है, ११ । उसी प्रकार से मेरा वचन भी जो मेरे मुख से निकलता है सो व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा जो मेरी इच्छा हुई हो उस को वह पूरी ही करेगा और जिस काम के लिये मैं ने उस को भेजा हो सो पूरा होगा[3] ॥ १२ । सो तुम आनन्द के साथ निकलोगे और शान्ति के साथ पहुंचाये जाओगे तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाड़ियां गला खोलकर जयजयकार करेंगी और मैदान के सारे वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएंगे ॥ १३ । तब भटकटैयों की सन्ती सनौबर उगेंगे और बिच्छू पेड़ों की सन्ती मेंहदी उगेगी और इस से यहोवा का नाम होगा और सदा का चिन्ह रहेगा जो कभी मिट न जाएगा ॥

५६. यहोवा यों कहता है कि न्याय का पालन करो और धर्म्म के काम करो क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार

(१) मूल में जितनी जीभें तेरे साथ उठें ।
(२) मूल में तुम्हारे प्राण जीएंगे ।

(१) मूल में आकाश पृथिवी से ऊंचा है वैसे ही मेरी गति तुम्हारी गति से और मेरे सोच विचार तुम्हारे सोच विचारों से ऊंचे हैं । (२) मूल में भूमि को सींचकर । (३) मूल में, उस में सुफल होगा ।

करूंगा[1] और मेरा धर्म्मी होना प्रगट होने पर है ॥ २। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा ही करता और वह आदमी जो इस को धरे रहता है जो विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचा रहता और अपने हाथ को सब भांति की बुराई करने से रोकता है ॥ ३। और जो जो परदेशी यहोवा से मिले हुए हों सो न कहें कि यहोवा हमें अपनी प्रजा से निश्चय अलग करेगा और खोजे भी न कहें कि हम तो सूखे वृक्ष हैं ॥ ४। क्योंकि जो खोजे मेरे विश्रामदिन मानते और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूं उसी को अपनाते और मेरी वाचा को पालते हैं उन के विषय यहोवा यों कहता है कि, ५। मैं अपने भवन और अपनी शहरपनाह के भीतर उन को ऐसा स्थान और नाम दूंगा जो बेटे बेटियों से कहीं उत्तम होगा बरन मैं उन का नाम सदा बनाये रक्खूंगा[2] और वह कभी मिट न जाएगा ॥ ६। परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उस की सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रक्खें और उस के दास हो जाएं जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी वाचा को पालते हैं, ७। उन को मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा उन के होमबलि और मेलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किये जाएंगे क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहाएगा ॥ ८। प्रभु यहोवा जो निकाले दिये हुए इस्राएलियों को एकट्ठे करनेहारा है उस की यह वाणी है कि जो एकट्ठे किये गये हैं उन से मैं औरों को भी एकट्ठे करके मिला दूंगा ॥

९। हे मैदान के सारे जन्तुओ हे वन के सब जन्तुओ खा डालने के लिये आओ ॥ १०। उस के पहरुए अंधे हैं वे सब के सब अज्ञानी वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भूंक नहीं सकते वे स्वप्न देखनेहारे और लेटनेहारे और उंघने के चाहनेहारे हैं ॥ ११। वे तो मरभूखे कुत्ते हैं जो तृप्त कभी नहीं होते[1] और वे ही चरवाहे हैं उन में समझ की शक्ति नहीं उन सभों ने अपने अपने लाभ के लिये अपना अपना मार्ग लिया है ॥ १२। वे कहते हैं कि आओ हम दाखमधु ले आएं और मदिरा पीकर छक जाएं कल का दिन तो आज के सरीखा अत्यन्त बड़ा दिन होगा ॥

५७. धर्म्मी जन नाश होता है पर कोई इस बात की चिन्ता नहीं

करता और भक्त मनुष्य उठा लिये जाते हैं पर कोई नहीं सोचता कि धर्म्मी जन विपत्ति के होने से पहिले उठा लिया जाता है ॥ २। वह शांति को पहुंचता है, जो सीधा चला जाता है सो अपनी खाट पर विश्राम करता है ॥

३। हे टोनहाइन के लड़को हे व्यभिचारी और व्यभिचारिनी की सन्तान इधर निकट आ ॥ ४। तुम किस पर हंसी करते और मुंह बनाकर चिराते हो[2] क्या तुम पाखण्डी और झूठे[3] नहीं हो ॥ ५। तुम तो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों में ढांगों की दरारों के बीच[4] बालबच्चों को बध करते हो ॥ ६। नालों के चिकने पत्थर ही तेरा भाग और अंश ठहरे[5] ऐसी ही वस्तुओं को तू तपावन देती और अन्नबलि चढ़ाती है क्या मैं इन बातों पर शान्त होऊं ॥ ७। बड़े ऊंचे पहाड़ पर तू ने अपना बिछौना बिछाया है वहीं तू बलि चढ़ाने को चढ़ गई है ॥ ८। तू ने अपनी चिन्हानी अपने द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही में रक्खी और तू मुझे छोड़कर औरों को अपने तईं दिखाने के लिये चढ़ी तू ने अपनी खाट चौड़ी किई और उन से वाचा बांध लिई और तू ने उन की खाट में प्रीति रक्खी जहां तू ने

---

(१) मूल में मेरा उद्धार आने को निकट है।
(२) मूल में उस को सदा का नाम दूंगा।

(१) मूल में फिर कुत्ते मरभूखे हैं वे तृप्ति नहीं जानते।
(२) मूल में मुंह खोलकर जीभ बढ़ाते हो।
(३) मूल में तुम अपराध के सन्तान झूठ का वंश।
(४) मूल में के नीचे। (५) मूल में, वे ही वे ही तेरी चिट्ठी।

उस को देखा ॥ ९। और तू तेल लिये हुए राजा के पास गई और बहुत सुगंधित तेल अपने काम में लाई और अपने दूत दूर लों भेज दिये और अधोलोक लों अपने को नीचा किया ॥ १०। तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण थक गई तौभी तू ने न कहा कि व्यर्थ है क्योंकि तेरा बल कुछ थोड़ा सा अधिक हो गया[1], इसी कारण तू हार नहीं गई[2] ॥ ११। तू ने जो झूठ कहा और मुझ को स्मरण नहीं रक्खा और चिन्ता न किई सो किस के डर से और किस का भय मानकर ऐसा किया क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा इस कारण तू मुझ से तो नहीं डरती ॥ १२। मैं आप तेरे धर्म्म और कर्म्म का वर्णन करूंगा पर उन से तुझे कुछ लाभ न होगा ॥ १३। जब तू दोहाई दे तब तेरी बटोरी हुई वस्तुएं तुझे छुड़ाएं वे तो सब की सब वायु से बरन एक फूंक से भी उड़ जाएगी पर जो मेरी शरण ले सो देश को भाग में पाएगा और मेरे पवित्र पर्वत का अधिकारी हो जाएगा ॥ १४। और यह कहा जाएगा कि धुस बांध बांधकर राजमार्ग बनाओ और मेरी प्रजा के मार्ग पर से ठोकर दूर करो ॥

१५। क्योंकि जो महान् और उन्नत और सदा बना रहता है और जिस का नाम पवित्र ईश्वर है सो यों कहता है कि मैं ऊंचे पर पवित्र स्थान में निवास करता हूं और उस के संग भी रहता हूं जो खेदित और नम्र हैं कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हरा करूं[3] ॥ १६। मैं तो सदा मुकद्दमा लड़ता न रहूंगा और न सर्वदा क्रोधित रहूंगा नहीं तो आत्मा और मेरे बनाये हुए जीव मेरे साम्हने मूर्छित हो जाते ॥ १७। उस के लोभ के पाप के कारण मैं ने क्रोधित होकर उस को दुःख दिया था और क्रोध के मारे उस से मुंह फेरा[4] था और वह अपने मनमाने मार्ग में दूर चलता गया था ॥ १८। मैं जो उस की चाल देखता आया हूं सो अब उस को चंगा करूंगा और उसे ले चलूंगा और उस को विशेष करके उस में के शोक करनेहारों को शांति दूंगा ॥ १९। मैं मुंह के फल का सिरजनहार हूं यहोवा ने कहा है कि जो दूर है और जो निकट है दोनों को पूरी शांति मिले और मैं उस को चंगा करूंगा ॥ २०। दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के सरीखे हैं जो स्थिर नहीं हो सकता और उस के जल में से मैल और कीच निकलती है ॥ २१। दुष्टों के लिये कुछ शांति नहीं मेरे परमेश्वर का यही वचन है ॥

(१) मूल में तू ने अपने हाथ का जीवन पाया।
(२) मूल में तू बीमार नहीं हुई।
(३) मूल में नम्रों का आत्मा जिलाने को और चूर्णों का मन जिलाने को। (४) मूल मे छिपाया।

५८.

गला खोलकर पुकार रख मत छोड़ नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर मेरी प्रजा को उस का अपराध अर्थात् याकूब के घराने को उन का पाप जता ॥ २। वे तो दिन दिन मेरे पास आते हैं और मेरी गति बूझने की इच्छा ऐसे रखते हैं मानो वे धर्म्म करनेहारे लोग हैं जिन्हों ने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला वे तो मुझ से धर्म्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं ॥ ३। वे कहते हैं कि क्या कारण है कि हम ने तो उपवास किया पर तू ने इस की सुधि नहीं लिई और हम ने तो दुःख उठाया पर तू ने कुछ विचार नहीं किया इस का कारण यह है कि तुम उपवास के दिन अपनी ही इच्छा पूरी करते और अपने सब कठिन कामों को कराते हो ॥ ४। सुनो तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में झगड़ते और लड़ते और अन्याय से घूंसे मारते हो जैसा उपवास तुम आजकल करते हो उस से तुम्हारा शब्द ऊंचे पर सुनाई नहीं देता ॥ ५। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं अर्थात् जिस में मनुष्य दुःख उठाए क्या वह इस प्रकार का होता है क्या तुम सिर को झाऊ की नाईं झुकाना और अपने नीचे टाट बिछाना और राख फैलाना ही उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का उपाय[1] कहते हो ॥ ६। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं सो क्या यह नहीं है कि अन्याय से बनाये हुए दासों और अन्धेर सहनेहारों का जूआ

(१) मूल में. दिन।

तोड़कर[1] उन को छुड़ा देना और सब जूओं को टुकड़े टुकड़े करना ॥ ७ । क्या वह यह भी नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देनी और बपुरे मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना और किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना ॥ ८ । तब तेरा प्रकाश पह फटने की नाईं चमकेगा और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा और तेरा धर्म्म तेरे आगे आगे चलेगा और यहोवा का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा ॥ ९ । तब तू पुकारेगा और यहोवा सुन लेगा तू दोहाई देगा और वह कहेगा कि मैं सुनता हूं[2] । यदि तू अन्धेर करना[3] और अंगुली मटकानी और अनर्थ बात बोलनी छोड़ दे, १० । और प्रेम से भूखे की सहायता करे[4] और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे तो अंधियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा ॥ ११ । और यहोवा तुझे लगातार लिये चलेगा और भूरा पड़ने के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा और तू सींची हुई बारी के और ऐसे सोते के समान रहेगा जिस का जल कभी नहीं घटता ॥ १२ । और तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे और तू पीढ़ी पीढ़ी की पड़ी हुई नेव पर घर उठाएगा तब तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारनेहारा और पथों[5] का ठीक करनेहारा पड़ेगा ॥ १३ । यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे[6] अर्थात् मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे और विश्राम-दिन को आनन्द का दिन और यहोवा के पवित्र किये हुए दिन को मान्य समझकर उस दिन अपने ही मार्ग पर न चलने और अपनी ही इच्छा पूरी न करने और अपनी ही बातें न बोलने से उस का मान करे, १४ । तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा और मैं तुझे देश के ऊंचे स्थानों पर चलने दूंगा और तेरे मूलपुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा यहोवा ने यों कहा है ॥

(१) मूल में कि दुष्टता के बंधन खोलूंगा और जूए की रस्सियां खोलना । (२) मूल में मुझे देख । (३) मूल में जूआ । (४) मूल में और भूखे के लिये अपना जीव नीचे निकाले । (५) मूल में रहने के लिये पथो । (६) मूल में यदि तू विश्रामदिन से अपना पांव मोड़े ।

५९. सुनो यहोवा का हाथ ऐसा निर्बल[1] नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके और न वह ऐसा बहिरा[2] हो गया है कि न सुन सके ॥ २ । पर तुम्हारे अधर्म्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों कारण उस का मुंह तुम से ऐसा फिरा[3] है कि वह नहीं सुनता ॥ ३ । क्योंकि तुम्हारे हाथ[4] खून और अधर्म्म करने से अपवित्र हो गये हैं तुम्हारे मुंह से तो झूठ और तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें कही जाती हैं ॥ ४ । कोई धर्म्म के साथ नालिश नहीं करता और न कोई सच्चाई से मुकद्दमा लड़ता है वे मिथ्या पर भरोसा रखते और व्यर्थ बातें बकते उन को मानो उत्पात का गर्भ रहता और वे अनर्थ को जनते हैं ॥ ५ । वे सांपिन के अण्डे सेवते और मकरी के जाले बनाते हैं जो कोई उन के अण्डे खाता सो मर जाता है और जब कोई उस को फोड़ता तब उस में से सपोला निकलता है[5] ॥ ६ । फिर उन के जाले कपड़े का काम न देंगे और न वे अपने कामों से अपने को ढांपेंगे क्योंकि उन के काम अनर्थ ही के होते हैं और उन के हाथों से उपद्रव का काम होता है ॥ ७ । वे बुराई[6] करने को दौड़ते और निर्दोष का खून करने को फुर्ती करते हैं उन की युक्तियां अनर्थ की हैं और जहां जहां वे जाते हैं वहां वहां उजाड़ और विनाश होते हैं ॥ ८ । शांति का मार्ग वे जानते नहीं और उन की लीकों में न्याय नहीं है उन के पथ टेढ़े हैं उन पर जो कोई चले सो शांति न पाएगा ॥

(१) मूल में छोटा । (२) मूल में उस का कान ऐसा भारी । (३) मूल में छिपा । (४) मूल में और तुम्हारी अंगुलियां । (५) मूल में और कुचला हुआ सपोला फूटता है । (६) मूल में उन के पांव बुराई ।

९। इस कारण न्याय का चुकाना हम से दूर है और धर्म्म हम से नहीं मिला हम उजियाले की बाट तो जोहते पर अंधियारा ही बना रहता है हम प्रकाश की आशा तो लगाये हैं पर घोर अंधकार ही में चलना पड़ता है॥ १०। हम अंधों के समान हैं जो भीत टटोलते हैं हम बिन आंख के लोगों की नाईं टटोलते हैं हम दिन दुपहरी रात की नाईं ठोकर खाते हैं हम हृष्टपुष्टों के बीच मुर्दों के समान हैं॥ ११। हम सब के सब रीछों की नाईं चिल्लाते हैं और पिण्डुकों के समान चूं चूं करते हैं हम निर्णय की बाट तो जोहते हैं पर कुछ नहीं होता और उद्धार की पर वह हम से दूर रहता है॥ १२। कारण यह है कि हमारे अपराध तेरे साम्हने बहुत हुए हैं और हमारे पाप हमारे विरुद्ध साक्षी देते हैं हमारे अपराध बने रहते हैं[1] और हम अपने अधर्म्म के काम जानते हैं, १३। कि हम ने यहोवा का अपराध किया और उस को मुकर गये और अपने परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ा और अंधेर करने और फेर की बातें कहीं और झूठी बातें मन में गढ़ीं और कही भी हैं॥ १४। और न्याय का चुकाना तो पीछे हटाया गया और धर्म्म दूर रह गया सच्चाई पाई नहीं जाती[2] और सिधाई प्रवेश करने नहीं पाती॥ १५। वरन सच्चाई मिलती ही नहीं और जो बुराई से फिर जाता है सो लूटा जाता है॥

यह देखकर यहोवा ने बुरा माना क्योंकि न्याय कुछ नहीं रहा॥ १६। और उस ने देखा कि कोई पुरुष नहीं और उस ने इस से अचंभा किया कि कोई विनती करनेहारा नहीं तब उस ने अपने ही भुजबल से उद्धार किया[3] और अपने धर्म्मी होने से वह संभल गया॥ १७। और उस ने धर्म्म को झिलम की नाईं पहिन लिया और उस के सिर पर उद्धार का टोप रक्खा गया उस ने पलटा लेने का वस्त्र धारण किया और जलन को बागे की नाईं पहिन लिया है॥ १८। वह उन की करनी के अनुसार उन को फल देगा वह अपने द्रोहियों पर अपनी रिस भड़काएगा और अपने शत्रुओं को उन की कमाई देगा वह द्वीपवासियों को भी उन की कमाई भर देगा॥ १९। तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का और पूर्व की ओर उस की महिमा का भय मानेंगे क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करे तब यहोवा का आत्मा उस के विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा॥ २०। और याकूब में जो अपराध से फिरते हैं उन के लिये सिय्योन् में एक छुड़ानेहारा आएगा यहोवा की यही वाणी है॥ २१। और यहोवा यह कहता है कि जो वाचा मैं ने उन से बांधी है सो यह है कि मेरा जो आत्मा तुझ पर ठहरा है और अपने जो वचन मैं ने तुझे सिखाये[1] हैं सो अब से लेकर सर्वदा लों तेरी जीभ पर[2] और तेरे बेटों पोतों की जीभ पर भी चढ़े रहेंगे[3] यहोवा का यही वचन है॥

६०. उठ

प्रकाशमान हो क्योंकि तुझे प्रकाश मिल गया है और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है॥ २। देख पृथिवी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर तो घोर अन्धकार छाया हुआ है पर तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा और उस का तेज तुझ पर दिखाई देगा॥ ३। और अन्यजातियां तेरे प्रकाश की ओर राजा तेरी चमक की ओर चलेंगे॥ ४। अपनी आंखें चारों ओर उठाकर देख वे सब के सब एकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं तेरे बेटे तो दूर से आ रहे हैं और तेरी बेटियां गोद में पहुंचाई जा रही हैं॥ ५। तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा और तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा[4] क्योंकि समुद्र का सारा धन और अन्यजातियों की धन संपत्ति तुझ को मिलेगी॥ ६। तेरे देश[5] में ऊंटों के झुण्ड और मिद्यान् और एपा देशों

(१) मूल में हमारे अपराध हमारे संग हैं। (२) मूल में सच्चाई ने चौक में ठोकर खाई। (३) मूल में उसी की भुजा ने उस के लिये उद्धार किया।

(१) मूल में तेरे मुंह में डाले। (२) मूल में तेरे मुंह से। (३) मूल में के मुंह से भी न हटेंगे। (४) मूल में और बढ़ेगा। (५) मूल में तुझ में।

की सांड़नियां भरेंगी शबा के सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का गुणानुवाद आनन्द से सुनाएंगे ॥ ७ । केदार् की सब भेड़ बकरियां एकट्ठी होकर तेरी हो जाएंगी नबायोत् के मेढ़े तेरी सेवा टहल के काम में आएंगे वे चढ़ावे में[1] मुझ से ग्रहण किये जाएंगे और मैं अपने शोभायमान भवन को और भी शोभायमान कर दूंगा ॥ ८ । ये कौन हैं जो बादल की नाईं और दर्बाओं की ओर उड़ते हुए पिण्डुकों की नाईं उड़े आते हैं ॥ ९ । निश्चय द्वीप मेरी ही बाट जोहेंगे पहिले तो तर्शीश् के जहाज आएंगे कि तेरे बेटों को सोने चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात् इस्राएल् के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहुंचाएं क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है ॥ १० । और परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएंगे और उन के राजा तेरी सेवा टहल करेंगे क्योंकि मैं ने क्रोध में आकर तुझे दुःख तो दिया था पर अब तुझ से प्रसन्न होकर तुझ पर दया करता हूं ॥ ११ । और तेरे फाटक लगातार खुले रहेंगे और न दिन को न रात को बन्द किये जाएंगे जिस से अन्यजातियों की धन संपत्ति और उन के राजा बंधुए होकर तेरे पास पहुंचाये जाएं ॥ १२ । क्योंकि जिस जाति और राज्य के लोग तेरे अधीन न होंगे सो नाश होंगे वरन ऐसी जातियां पूरी रीति से सत्यानाश हो जाएंगी ॥ १३ । लबानोन् का विभव अर्थात् सनैाबर और तिधार् और सीधे सनैाबर के पेड़ एक साथ तेरे पास आएंगे कि मेरे पवित्रस्थान के ठांव को शोभा दें और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूंगा ॥ १४ । और तेरे दुःख देनेहारों के सन्तान तेरे पास सिर झुकाये हुए आएंगे और जिन्हों ने तेरा तिरस्कार किया था सो सब तेरे पांवों पर[2] गिरकर दण्डवत् करेंगे और वे तुझ को यहोवा का नगर और इस्राएल् के पवित्र का सिय्योन् कहेंगे ॥ १५ । तू जो छोड़ी और घिन किई हुई है यहां लों कि कोई तुझ से होकर नहीं जाता इस की सन्ती मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी पीढ़ी के हर्ष का कारण ठहराऊंगा ॥ १६ । और तू अन्यजातियों का दूध और राजाओं की छाती से पीएगी और तू जान लेगी कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्त्ता और छुड़ानेहारा और याकूब का शक्तिमान हूं ॥ १७ । मैं तुझे पीतल की सन्ती सोना और लोहे की सन्ती चान्दी और काठ की सन्ती पीतल और पत्थरों की सन्ती लोहा दूंगा[1] और मैं मेल मिलाप को तेरे हाकिम और धर्म्म को तेरे चैाधरी ठहराऊंगा ॥ १८ । न तेरे देश में फिर उपद्रव की न तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अंधेर की चर्चा सुन पड़ेगी, तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रक्खेगी ॥ १९ । दिन में तो उजियाला पाने के लिये तुझे सूर्य्य का और रात में प्रकाश के लिये चन्द्रमा का फिर कुछ काम न पड़ेगा क्योंकि यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा ॥ २० । तेरा सूर्य्य फिर अस्त न होगा और तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन न होगी[2] क्योंकि यहोवा तेरी सदा की ज्योति ठहरेगा सो तेरे विलाप के दिन अन्त हो जाएंगे ॥ २१ । तेरे लोग सब के सब धर्म्मी होंगे वे देश के अधिकारी सदा रहेंगे वे मेरे लगाये हुए पैाधे और मेरे रचे हुए[3] ठहरेंगे जिस से मैं शोभायमान ठहरूं ॥ २२ । जो कम है सो हजार हो जाएगा और जो थोड़ा है सो सामर्थी जाति बन जाएगी । मैं यहोवा इस को इस के ठीक समय पर शीघ्र पूरा करूंगा ॥

६१. प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर ठहरा है क्योंकि यहोवा ने नम्र लोगों को शुभसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इस लिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शांति दूं और बन्धुओं के साम्हने स्वाधीन होने का और कैदियों के साम्हने छुटकारे का प्रचार करूं, २ । और यहोवा के प्रसन्न रहने के बरस का और हमारे परमेश्वर के पलटा

(१) मूल में वे मेरी वेदी पर । (२) मूल में. तेरे पावों के तलुए पर ।

(१) मूल में- लाऊगा । (२) मूल में. और तेरा चन्द्रमा न सिमटेगा । (३) मूल में. मेरे हाथों का काम ।

लेने के दिन का प्रचार करूं और सब विलाप करनेहारों को शांति दूं, ३। और सिय्योन् में के विलाप करनेहारों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बांध दूं और उन का विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उन की उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं जिस से वे धर्म्म के बांजवृक्ष और यहोवा के लगाये हुए कहलाएं कि वह शोभायमान ठहरे॥ ४। सो वे बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे और अगले दिनों से पड़े हुए खण्डहरों में फिर घर बनाएंगे और उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी पीढ़ी से उजड़े हुए हों फिर नये सिरे से बसाएंगे॥ ५। और परदेशी तो खड़े खड़े तुम्हारी भेड़बकरियों को चराएंगे और विदेशी लोग तुम्हारे हरवाहे और दाख की बारी के माली होंगे॥ ६। पर तुम यहोवा के याजक कहाओगे लोग तुम को हमारे परमेश्वर के टहलुए कहेंगे और तुम अन्यजातियों की धन संपत्ति को भोगोगे और उन के विभव की वस्तुएं पाकर बड़ाई मारोगे॥ ७। तुम्हारी नामधराई की सन्ती दूना भाग मिलेगा और अनादर की सन्ती वे अपने भाग के कारण जयजयकार करेंगे सो वे अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे और सदा आनन्दित रहेंगे॥ ८। क्योंकि मैं यहोवा न्याय में प्रीति रखता और बलिदान[१] के साथ चोरी करनी घिनौनी समझता हूं और मैं उन को उन का प्रतिफल सच्चाई से दूंगा और उन के साथ सदा की वाचा बांधूंगा॥ ९। और उन का वंश अन्यजातियों में और उन की सन्तान देश देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी जितने उन को देखेंगे सो उन्हे चीन्ह लेंगे कि यहोवा की ओर से धन्य वंश के ये ही हैं॥

१०। मैं यहोवा के कारण अति हर्ष करता हूं और अपने परमेश्वर के हेतु मगन हूं क्योंकि उस ने मुझे उद्धार के वस्त्र ऐसे पहिनाये और धर्म्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दिई है जैसे वर याजक की सी सुन्दर पगड़ी बान्धता वा दुलहिन गहने पहिनती है॥ ११। क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती और बारी में जो कुछ बोया जाता है उस को वह उपजाती है वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धर्म्म और यश उगाएगा॥

(१) वा अन्याय।

६२. सिय्योन् के निमित्त मैं तब लों चुप न हूंगा और यरूशलेम् के निमित्त मैं तब लों चैन न लूंगा जब लों उस का धर्म्म अरुणोदय की नाईं और उस का उद्धार जलते हुए पलीते के समान दिखाई न दे॥ २। तब अन्यजातियां तेरा धर्म्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे और तेरा एक नया नाम रक्खा जाएगा जिसे यहोवा आप[१] ठहराएगा॥ ३। और तू यहोवा के हाथ में का एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजकीय पगड़ी ठहरेगी॥ ४। न तो तू फिर छोड़ी हुई और न तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई कहाएगी तू तो हेप्सीबा[२] और तेरी भूमि बूला[३] कहाएगी क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है और तेरी भूमि सुहागिन हो जाएगी॥ ५। जैसे जवान पुरुष कुमारी को व्याहता है वैसे ही तेरे लड़के तुझे व्याहेंगे और जैसे वर दुलहिन के कारण हर्षित होता है वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा॥

६। हे यरूशलेम् मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाये हैं जो दिन भर और रात भर भी लगातार पुकारते रहेंगे[४] हे यहोवा को स्मरण करानेहारो चैन न लो, ७। और जब लों वह यरूशलेम् को स्थिर करके उस की प्रशंसा पृथिवी पर न फैला दे तब लों उस को भी चैन लेने न दो॥ ८। यहोवा ने अपने दहिने हाथ की और अपने बलवन्त भुजा की किरिया खाई है कि मैं फिर तेरा अन्न तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न दूंगा और न विराने लोग तेरा नया दाखमधु जिस के लिये तू ने परिश्रम किया हो पीने पाएंगे॥ ९। पर जिन्हों ने उसे खत्ते में रक्खा हो सोई उस को खाकर यहोवा की स्तुति करेंगे और जिन्हों ने दाखमधु भण्डारों में

(१) मूल में यहोवा का मुख। (२) अर्थात् जिस से मैं प्रसन्न हूं। (३) अर्थात् सुहागिन। (४) मूल में लगातार चुप न रहेंगे।

रक्खा हो वे ही उसे मेरे पवित्रस्थान के आंगनों में पीने पाएंगे॥

१०। फाटकों से निकल आओ निकल प्रजा के लिये मार्ग सुधारो धुस बांधकर राजमार्ग बनाओ उस में के पत्थर बीन बीनकर फेंक दो देश देश के लोगों के लिये झण्डा खड़ा करो॥ ११। सुनो यहोवा पृथिवी की छोर लों इस आज्ञा का प्रचार करता है कि सिय्योन् से[1] कहो कि देख तेरा उद्धार-कर्त्ता आता है देख जो मजूरी उस को देनी है सो उस के पास और जो बदला उस को देना है सो उस के हाथ में[2] हैं॥ १२। और लोग उन को पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाये हुए कहेंगे और तेरा नाम पूछी हुई और न छोड़ी हुई नगरी पड़ेगा॥

६३. यह कौन है जो एदोम् देश के बोस्रा नगर से वैजनी वस्त्र पहिने हुए चला आता है और अति बलवान और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए झूमता चला आता है। मैं ही हूं जो धर्म्म से बोलता और पूरा उद्धार करता हूं[3]॥

२। तेरा पहिरावा क्यों लाल है और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदनेहारे के से हैं॥

३। मैं ने तो हौद में अकेला ही दाखें रौंदी हैं और देश देश के लोगों में से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया सो मैं ने कोप में आकर उन्हें रौंदा और जलकर उन्हें लताड़ा उन के लोहू के छींटे जो मेरे वस्त्रों पर पड़े सो मेरा सारा पहिरावा मैला हो गया है॥ ४। क्योंकि पलटा लेने का दिन मैं ने ठहराया था[4] और मेरे जनों के छुड़ाने का बरस आ गया है॥ ५। और मेरे ताकने पर कोई सहायक न देख पड़ा और मैं ने इस से अचंभा भी किया कि कोई संभालनेहारा नहीं मिलता तब मैं ने अपने ही भुजबल से अपने लिये उद्धार किया और मेरी जल-जलाहट मेरी संभालनेहारी है॥ ६। मैं ने तो कोप में आकर देश देश के लोगों को लताड़ा और अपनी जलजलाहट से उन्हें मतवाला किया और उन के लोहू को भूमि पर बहा दिया॥

७। जितना उपकार यहोवा ने हम लोगों का किया अर्थात् इस्राएल् के घराने पर दया और अत्यन्त करुणा करके उस ने हम से जितनी भलाई किई उस सब के अनुसार मैं यहोवा के करुणामय कामों की चर्चा और उस का गुणानुवाद करूंगा॥ ८। उस ने कहा कि निःसंदेह ये मेरी प्रजा के लोग और ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे सो वह उन का उद्धारकर्त्ता हो गया॥ ९। उन के सारे संकट में उस ने भी संकट पाया[1] और उस का प्रत्यक्षरूप करनेहारा दूत उन का उद्धार करता था, प्रेम और कोमलता से वह आप उन को छुड़ा लेता था और प्राचीन काल के सब दिनों में उन्हें उठाये रहा॥ १०। तौभी उन्हों ने बलवा किया और उस के पवित्र आत्मा को खेदित किया इस कारण वह पलटकर उन का शत्रु हो गया और आप उन से लड़ने लगा॥ ११। तब उस के लोगों को प्राचीन दिन अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आये वे कहने लगे कि जो अपनी भेड़ों को उन के चरवाहे समेत समुद्र में से निकाल लाया सो कहां है जिस ने अपनी प्रजा के बीच अपना पवित्र आत्मा समवाया सो कहां है॥ १२। जो अपने भुजबल के प्रताप से मूसा के दहिने हाथ को संभालता गया[2] और अपने लोगों के साम्हने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया सो कहां है॥ १३। जो उन को गहिरे समुद्र में ऐसा ले चला जैसा घोड़े को जंगल में कि उन को ठोकर न लगी सो कहां है॥ १४। जैसे घरैला पशु नीचान में उतर जाता है वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उन को विश्राम दिया इसी प्रकार से तू ने अपनी प्रजा को पहुंचाकर अपना नाम सुशोभित किया॥ १५। स्वर्ग से जो तेरा पवित्र और शोभायमान वास-

---

(१) मूल में सिय्योन् की बेटी से। (२) मूल में उस के साम्हने। (३) मूल में उद्धार करने को बड़ा। (४) मूल में मेरे मन में था।

(१) वा वह संकट देनेहारा न था। (२) मूल में जो अपनी शोभायमान भुजा को मूसा के दहिने हाथ पर चलाता था।

स्थान है दृष्टि कर, तेरी जलन और पराक्रम कहां रहा तेरी दया और मया मुझ पर से हट[१] गई है ॥ १६ ॥ तू तो हमारा पिता है, इब्राहीम् तो हमें नहीं पहिचानता और इस्राएल् हमारी सुधि नहीं लेता तौभी हे यहोवा तू हमारा पिता है, प्राचीन काल से भी हमारा छुड़ानेहारा यही तेरा नाम है ॥ १७ । हे यहोवा तू क्यों हम को अपने मार्गों से भटका देता और हमारा मन ऐसा कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते । अपने दासों अपने निज भाग के गोत्रों के निमित्त लौट आ ॥ १८ । तेरी पवित्र प्रजा तो थोड़े ही काल लों अधिकारी रही हमारे द्रोहियों ने तेरे पवित्रस्थान को लताड़ दिया है ॥ १९ । हम लोग तो ऐसे हो गये हैं कि मानो हम[२] पर तू ने कभी प्रभुता नहीं किई और न हम कभी तेरे कहलाये ॥

६४.

१ । भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे साम्हने से कांप उठें, २ । जैसे आग झाड़ झंखाड़ जला देती है वा जल को उबालती है उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से कांप उठें ॥ ३ । जब तू ने ऐसे भयानक काम किये जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे तब तू उतर आया और पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे ॥ ४ । प्राचीन काल से तो ऐसा परमेश्वर जो अपनी बाट जोहनेहारों के लिये काम करे तुझे छोड़ न तो कभी देखा[३] गया न कान से उस की चर्चा सुनी गई ॥ ५ । जो लोग धर्म्म के काम हर्ष के साथ करते हैं और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं उन से तो तू मिलता है पर तू क्रोधित हुआ है क्योंकि हम पापी हुए और यह दशा बहुत काल से है सो हमारा उद्धार कहां हो सकता है ॥ ६ । देख हम सब के सब अशुद्ध मनुष्य से हो गये और हमारे सारे धर्म्म के काम कुचैले चिथड़े के सरीखे हैं फिर हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा गये और हमारे अधर्म्म के कामों ने वायु की नाईं हमें उड़ा दिया है ॥ ७ । कोई तुझ से प्रार्थना नहीं करता और न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये उद्यत होता है क्योंकि तू ने अपना मुख हम से फेर[१] लिया और हमारे अधर्म्म के कामों के द्वारा हम को भस्म कर दिया है ॥ ८ । तौभी हे यहोवा तू हमारा पिता है देख हम तो मिट्टी और तू कुम्हार ठहरा हम सब के सब तेरे बनाये हुए[२] हैं ॥ ९ सो हे यहोवा अत्यन्त क्रोधित न हो और न अनन्तकाल लों हमारे अधर्म्म को स्मरण रख विचार करके देख हम सब तेरी प्रजा हैं ॥ १० । देख तेरे पवित्र नगर जंगल हो गये सिय्योन् तो जंगल हो गया यरूशलेम उजड़ गया है ॥ ११ । हमारा पवित्र और शोभायमान भवन जिस में हमारे पितर तेरी स्तुति करते थे सो आग का कौर हो गया और हमारी सब मनभावनी वस्तुएं नाश हो गई हैं ॥ १२ । हे यहोवा क्या इन बातों के रहते भी तू अपने को रोके रहेगा क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा में रहने देगा ॥

६५.

जो मुझ को पूछते न थे वे मुझे खोजने लगे हैं और जो मुझे ढूंढ़ते न थे उन को मैं मिलता हूं और जो जाति मेरी नहीं कहलाई उस से भी मैं कहता हूं कि देख देख मैं हूं[३] ॥ २ । मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाये रहता हूं जो अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्ग में चलते हैं ॥ ३ । सो ये लोग हैं जो मेरे साम्हने ही बारियों में बलि चढ़ा चढ़ाकर और ईंटों पर धूप जला जलाकर मुझे लगातार रिस दिलाते हैं ॥ ४ । ये कबरों के बीच बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात बिताते और सूअर का मांस खाते और घिनौनी वस्तुओं का जूस अपने बर्तनों में रखते, ५ । और कहते हैं कि हट जा मेरे निकट मत आ क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूं । ये मेरी नाक में धूंए के और दिन भर जलती हुई आग के समान हैं ॥ ६ । देखो मेरे साम्हने यह बात लिखी हुई है मैं चुप न रहूंगा मैं निश्चय पलटा दूंगा, ७ । बरन

(१) मूल में रुक । (२) मूल में उन । (३) मूल में आंख से देखा ।

(१) मूल में छिपा । (२) मूल में तेरे हाथ का काम । (३) मूल में कि मुझे देख मुझे देख ।

उन की गोद में पलटा भर दूंगा अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं के भी अधर्म्म के कामों का जो उन्हों ने पहाड़ों पर धूप जलाकर और पहाड़ियों पर मेरी निन्दा करके किये। मैं यहोवा कहता हूं कि इन की कमाई मैं पहिले इन की गोद में माप दूंगा॥

८। यहोवा यों कहता है कि जिस भांति जब दाख के किसी गुच्छे में रस[1] भर आता है तब लोग कहते हैं कि उसे नाश मत कर क्योंकि उस में आशीष है उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूंगा कि सभों को नाश न करूं॥ ९। और मैं याकूब में से एक वंश और यहूदा में से अपने पर्वतों का एक अधिकारी उत्पन्न करूंगा सो मेरे चुने हुए उस के अधिकारी होंगे और मेरे दास वहां बसेंगे॥ १०। और मेरी प्रजा जो मुझे खोजती है उस की तो भेड़बकरियां शारोन् मे चरेंगी और उस के गाय बैल आकोर् नाम तराई में बैठे रहेंगे॥ ११। पर तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते और भाग्य देवता के लिये मेज पर भोजन की वस्तुएं सजाते और भावी देवी के लिये मसाला मिला हुआ दाखमधु भर देते हो, १२। मैं तुम्हारी यह भावी कर दूंगा कि तुम्हें तलवार के लिये ठहराऊंगा और तुम सब घात होने के लिये झुकोगे इस का कारण यह है कि जब मैं ने तुम्हें बुलाया तब तुम न बोले और जब मैं ने तुम से बातें किईं तब तुम ने मेरी न सुनी वरन जो मुझे बुरा लगता है सोई तुम ने किया और जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं उसी को तुम ने अपनाया॥

१३। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मेरे दास तो खाएंगे पर तुम भूखे रहोगे मेरे दास तो पीएंगे पर तुम प्यासे रहोगे मेरे दास तो आनन्द करेंगे पर तुम्हारी आशा टूटेगी॥ १४। सुनो मेरे दास तो हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे पर तुम शोक से चिल्लाओगे और खेद के मारे हाय हाय करोगे॥ १५। और प्रभु यहोवा तुम को तो नाश करेगा और मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा देकर स्राप देंगे[1] और प्रभु यहोवा तुझ को तो नाश करेगा पर अपने दासों का दूसरा नाम रक्खेगा॥ १६। तब देश भर में जो कोई अपने को धन्य कहे सो सच्चे परमेश्वर[2] का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा और देश भर में जो कोई किरिया खाए सो सच्चे परमेश्वर[2] की किरिया खाएगा क्योंकि अगले कष्ट बिसर जाएंगे और मेरी आंखों से छिप जाएंगे॥ १७। क्योंकि सुनो मैं नया आकाश और नई पृथिवी सिरजने पर हूं और अगली बातें स्मरण न रहेंगी और न फिर मन में आएंगी॥ १८। सो जो मैं सिरजने पर हूं उस के कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो क्योंकि देखो मैं यरूशलेम् को मगन होने का और उस की प्रजा को हर्ष का कारण ठहराऊंगा[3]॥ १९। और मैं आप यरूशलेम् के कारण मगन और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा और उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुन पड़ेगा॥ २०। उस में फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिस ने अपनी आयु पूरी न किई हो क्योंकि जो लड़कपन में मरे सो सौ बरस का होकर मरेगा पर पापी तो सौ बरस का होकर स्रापित ठहरेगा॥ २१। वे घर बनाकर उन में बसेंगे और दाख की बारियां लगाकर उन का फल खाएंगे॥ २२। ऐसा न होगा कि वे तो बनाएं और दूसरा बसे वा वे तो लगाएं और दूसरा खाए क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे॥ २३। उन का परिश्रम व्यर्थ न होगा और न उन के बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश हैं और उन के बालबच्चे उन से अलग न होंगे॥ २४। फिर उन के पुकारने से भी पहिले मैं उन की सुनूंगा और उन के मांगते ही मैं उन की सुन लूंगा॥ २५। भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा

(१) मूल में नया दाखमधु।

(१) मूल में तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं के लिये किरिया छोड़ोगे। (२) मूल में आमेन् [अर्थात् सत्य वचन] के परमेश्वर। (३) मूल में सिरजूंगा।

श्रीर सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगी। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा श्रीर न कोई किसी की हानि करेगा यहोवा का यही वचन है ॥

६६. यहोवा यों कहता है कि मेरा सिंहासन आकाश श्रीर मेरे चरणों की पीढ़ी पृथिवी है सो तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाश्रोगे श्रीर मेरे विश्राम का कैसा स्थान होगा ॥ २। यहोवा की यह वाणी है कि ये सब वस्तुएं तो मेरे हाथ की बनाई हुई हैं सो ये सब हो गईं, मैं तो उसी की श्रोर दृष्टि करूंगा जो दीन श्रीर खेदित मन का हो श्रीर मेरा वचन सुनकर थरथराता हो ॥ ३। बैल का बलि करनेहारा मनुष्य के मार डालनेहारे के समान भेड़ का चढ़ानेहारा कुत्ते का गला काटनेहारे के समान अन्नबलि का चढ़ानेहारा सूअर का लोहू चढ़ानेहारे के समान श्रीर लोबान् का चढ़ानेहारा[1] मूरत के धन्य कहनेहारे के समान ठहरता है। वे जो अपने ही मार्ग निकालते श्रीर घिनौनी वस्तुश्रों से प्रसन्न रहते हैं, ४। इस लिये मैं भी उन के दुःख की बातें निकालूंगा श्रीर जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊंगा क्योंकि जब मैं ने उन्हें बुलाया तब कोई न बोला श्रीर जब मैं ने उन से बातें किईं तब उन्हों ने मेरी न सुनी बरन जो मुझे बुरा लगता है सोई वे करते रहे श्रीर जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं उसी को वे अपना लेते थे ॥

५। तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते हो उस का यह वचन सुनो कि तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते श्रीर तुम को मेरे नाम के निमित्त अलग कर देते हैं उन्हों ने तो कहा है कि भला यहोवा की महिमा बढ़े जिस से हम तुम्हारा आनन्द देखने पाएं पर अन्त में उन्हीं को लजाना पड़ेगा ॥ ६। सुनो नगर से कोलाहल मन्दिर से भी शब्द सुनाई देता है से यहोवा का शब्द है जो अपने शत्रुओं को उन की करनी का फल देता है ॥ ७। उस की पीड़ें उठने से पहिले ही वह जन चुकी उस को पीड़ें लगने से पहिले ही उस से बेटा जन्मा ॥ ८। ऐसी बात किस ने कभी सुनी ऐसी बातें किस ने कभी देखीं क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता वा जाति क्षणमात्र में उत्पन्न हो सकती है तौभी सिय्योन् पीड़ें लगते ही बालकों को जनी ॥ ९। यहोवा कहता है कि क्या मैं बालकों को जन्मने लों पहुंचाकर न जनाऊं फिर तेरा परमेश्वर कहता है कि मैं जो जनाता हूं सो क्या कोख बन्द करूं ॥

१०। हे यरूशलेम् के सब प्रेम रखनेहारो उस के साथ आनन्द करो श्रीर उस के कारण मगन हो हे उस के विषय सब विलाप करनेहारो उस के साथ बहुत हर्षित हो, ११। जिस से तुम उस के शांतिरूपी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो श्रीर दूध निकालकर उस की महिमा की बहुतायत से अत्यन्त सुखी हो ॥ १२। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं उस की श्रोर शांति को नदी की नाईं श्रीर अन्यजातियों के विभव को बढ़ी हुई नदी के समान उस में बहा दूंगा श्रीर तुम उस में से पीश्रोगे श्रीर गोद में उठाये श्रीर घुटनों पर दुलारे जाश्रोगे ॥ १३। जैसे माता पुत्र को[1] शांति देती है वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूंगा सो तुम को यरूशलेम् में शांति मिलेगी ॥ १४। तुम यह देखकर प्रफुल्लित होगे श्रीर तुम्हारी हड्डियां घास की नाईं हरी भरी होंगी श्रीर यहोवा का हाथ उस के दासों पर श्रीर उस के शत्रुओं के ऊपर उस का क्रोध प्रगट होगा ॥ १५। सुनो यहोवा आग के साथ आएगा श्रीर उस के रथ बवण्डर के समान होंगे जिस से वह भड़के हुए कोप के साथ दण्ड श्रीर भस्म करनेहारी लौ के साथ घुड़की दे ॥ १६। क्योंकि यहोवा सारे प्राणियों के साथ आग श्रीर अपनी तलवार लिये हुए न्याय चुकाएगा सो यहोवा के मारे हुए बहुतेरे होंगे ॥ १७। जो लोग अपने को इस लिये पवित्र श्रीर शुद्ध करते हैं कि बारियों के बीच में जा किसी के पीछे खड़े होकर सूअर वा मूस का मांस श्रीर श्रीर

(१) मूल में स्मरण करानेहारा।

(१) मूल में पुरुष को।

घिनौनी वस्तुएं खाएं सो एक ही संग बिलाय जाएंगे यहोवा की यही वाणी है ॥ १८ । क्योंकि मैं उन के काम और कल्पनाएं दोनों जानता हूं और वह समय आता है कि मैं सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों को एकट्ठे करूंगा और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे ॥ १९ । और मैं उन में चिन्ह प्रगट करूंगा और उन में के बचे हुओं को मैं उन अन्य-जातियों के पास भेजूंगा जिन्हों ने न तो मेरा समाचार सुना और न मेरी महिमा देखी हो अर्थात् तर्शीशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास फिर तूबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भेज दूंगा और वे अन्यजातियों में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे ॥ २० । और वे तुम्हारे सब भाइयों को घोड़ों रथों पालकियों खच्चरों और सांड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम् पर यहोवा के लिये भेंट ऐसा ले आएंगे जैसा इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले आते हैं यहोवा का यही वचन है ॥ २१ । और उन में से भी मैं कितने लोगों को याजक और लेवीय होने के लिये चुन लूंगा ॥ २२ । क्योंकि जिस प्रकार जो नया आकाश और नई पृथिवी मैं बनाने पर हूं सो मेरे साम्हने बनी रहेगी उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा यहोवा की यही वाणी है ॥ २३ । और नये चांद के दिन से नये चांद के दिन लों और विश्राम दिन से विश्राम दिन लों सारे प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत् करने को आया करेंगे यहोवा का यही वचन है ॥ २४ । तब वे, निकलकर उन लोगों की लोथों को जिन्हों ने मुझ से बलवा किया देख लेंगे कि उन में पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे और न उन की आग कभी बुझेगी और सारे मनुष्यों को उन से अत्यन्त घिन होगी ॥

यिर्मयाह् नाम पुस्तक ।

---

१. हिल्किय्याह् का पुत्र यिर्मयाह् जो बिन्यामीन् देश के अनातोत् में रहनेहारे याजकों में से था उस के ये वचन हैं ॥ २ । यहोवा का वचन उस के पास आमोन् के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह् के दिनों में अर्थात् उस के राज्य के तेरहवें बरस में पहुंचा ॥ ३ । फिर योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के दिनों में भी और योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा सिदकिय्याह् के राज्य के ग्यारहवें बरस के अंत लों भी अर्थात् जब लों उस बरस के पांचवें महीने में यरूशलेम् के निवासी बंधुआई में न गये तब लों पहुंचा किया ॥

४ । सो यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि ५ । गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया था और उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे पवित्र किया मैं ने तुझे जातियों का नबी ठहराया था ॥ ६ । तब मैं ने कहा अहह प्रभु यहोवा सुन मैं तो बोलना नहीं जानता क्योंकि लड़का ही हूं ॥ ७ । यहोवा ने मुझ से कहा मत कह कि मैं लड़का हूं क्योंकि जहां कहीं मैं तुझे भेजूंगा वहां तू जाएगा और जो कुछ मैं तुझ को कहने की आज्ञा दूं सो

तू कहेगा ॥ ८ । तू उन से मत डर क्योंकि बचाने के लिये मैं तेरे संग हूं यहोवा की यही वाणी है ॥ ९ । तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छूआ यहोवा ने मुझ से कहा सुन मैं ने अपने वचन तेरे मुंह में डाले हैं ॥ १० । सुन मैं ने आज के दिन गिराने और ढा देने और नाश करने और काट डालने के लिये और बनाने और रोपने के लिये तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है ॥

११ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि हे यिर्मयाह् तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा बादाम की एक टहनी मुझे देख पड़ती है ॥ १२ । तब यहोवा ने मुझ से कहा तुझे ठीक देख पड़ता है क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये सचेत रहता हूं ॥ १३ । फिर यहोवा का वचन मेरे पास दूसरी बार पहुंचा और उस ने पूछा तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मुझे खौलते हुए जल का एक हण्डा देख पड़ता है जिस का मुंह उत्तर दिशा से फेरा हुआ है ॥ १४ । तब यहोवा ने मुझ से कहा इस देश के सब रहनेहारों पर विपत्ति उत्तर दिशा से आ पड़ेगी ॥ १५ । यहोवा की यह वाणी है कि मैं उत्तर दिशा के राज्यों और कुलों को बुलाऊंगा और वे आकर यरूशलेम् के फाटकों में और उस की चारों ओर की शहरपनाह और यहूदा के और सब नगरों के साम्हने अपना अपना सिंहासन रखेंगे ॥ १६ । और उन की सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड होने की आज्ञा दूंगा इस लिये कि उन्हों ने मुझ को त्यागकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत किया है ॥ १७ । सो तू कमर कसकर उठ और जो कुछ मैं तुझ को कहने की आज्ञा दूं सो उन से कहना तू उन के साम्हने न घबराना ऐसा न हो कि मैं तुझे उन के साम्हने घबरा दूं ॥ १८ । सो सुन मैं ने आज तुझ को इस सारे देश और यहूदा के राजाओं हाकिमों और याजकों और साधारण लोगों के विरुद्ध गढ़वाला नगर और लोहे का खंभा और पीतल की शहरपनाह कर दिया है ॥ १९ । वे तुझ से लड़ेंगे तो सही पर तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि मैं बचाने के लिये तेरे संग हूं यहोवा की यही वाणी है ॥

२. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। जाकर यरूशलेम् को पुकारके यह सुना दे कि यहोवा का यह वचन है कि तेरे विषय तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आते हैं कि तू जंगल में जहां भूमि जोती बोई न थी वहां मेरे पीछे पीछे चली आती थी ॥ ३ । इस्राएल् यहोवा की पवित्र वस्तु और उस की पहिली उपज थी जितने उसे खाते थे सो दोषी ठहरते और विपत्ति में पड़ते थे यहोवा की यही वाणी है ॥

४ । हे याकूब के घराने हे इस्राएल् के घराने के सारे कुलों के लोगो यहोवा का वचन सुनो, ५ । यहोवा ने यों कहा है कि तुम्हारे पुरखाओं ने मुझ में कौन ऐसी कुटिलता पाई कि वे मेरी ओर से हट गये और निकम्मी वस्तुओं के पीछे होकर आप भी निकम्मे हो गये ॥ ६ । उन्हों ने इतना भी न कहा कि यहोवा जो हम को मिस्र देश से ले आया और जंगल में और रेत और गड़हों से भरे हुए निर्जल और घोर अंधकार के देश में जिस से होकर कोई नहीं चलता और जिस में कोई मनुष्य नहीं रहता ऐसे देश में जो हम को ले चला वह कहां है ॥ ७ । मैं तो तुम को इस उपजाऊ देश में ले आया कि उस का फल और उत्तम उपज खाओ पर तुम ने मेरे इस देश में आकर इस को अशुद्ध किया और मेरे इस निज भाग को घिनौना कर दिया ॥ ८ । याजक भी न पूछते थे कि यहोवा कहां है और जो व्यवस्था से काम रखते थे वे मुझ को जानते न थे फिर चरवाहों ने मुझ से बलवा किया और नबियों ने बाल् देवता के नाम से नबूवत किई और निष्फल बातों के पीछे चले थे ॥ ९ । इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं फिर तुम्हारा मुकद्दमा चलाऊंगा और तुम्हारे बेटे

पोतों का भी चलाऊंगा ॥ १० । कित्तियों के द्वीपों में पार उतरके देखो और केदार् में दूत भेजकर भली भांति विचारो और देखो कि ऐसा काम कहीं हुआ है कि नहीं ॥ ११। क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को जो परमेश्वर नहीं हैं बदल दिया पर मेरी प्रजा ने अपनी महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है ॥ १२ । यहोवा की यह वाणी है कि इस कारण चाहिये था कि आकाश चकित होता और बहुत ही थरथराता और बहुत सूख भी जाता[1] ॥ १३ । क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां किई हैं उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया और उन्हों ने हौद बना लिये बरन ऐसे हौद जो फट गये हैं और उन में जल नहीं ठहरता ॥ १४ । क्या इस्राएल् दास है क्या वह घर में जन्मा हुआ दास है[2] फिर वह क्यों लूटा गया है ॥ १५ । जवान सिंहों ने उस के विरुद्ध गरजकर नाद किया उन्हों ने उस के देश को उजाड़ दिया और उस के नगरों को ऐसा फूंक दिया कि उन में कोई नहीं रह गया ॥ १६ । और नोप् और तहपन्हेस् के निवासी तेरे देश की उपज[3] चट कर गये हैं ॥ १७ । क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं क्योंकि जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे मार्ग में लिये चलता था तब तू ने उस को छोड़ दिया ॥ १८। और अब तुझे मिस्र के मार्ग से क्या काम है कि तू सीहोर्[4] का जल पीए और तुझे अश्शूर् के मार्ग से भी क्या काम कि तू महानद का जल पीए ॥ १९ । तेरी बुराई के कारण तेरी ताड़ना होगी और हट जाने से तू डांटी जाती है सो निश्चय करके देख कि तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया और तुझे मेरा भय नहीं रहा सो बुरी और कड़वी बात है प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ २० । मैं ने तो कब ही तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोले पर तू ने कहा कि मैं सेवा न करूंगी और सब ऊंचे ऊंचे टीलों पर और सब हरे पेड़ों के तले तू व्यभिचारिन का सा काम करती रही ॥ २१ । मैं ने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और सच्चाई का बीज करके रोपा[1] फिर तू क्यों मेरे देखने में पराये देश की निकम्मी दाखलता की शाखाएं बन गई है ॥ २२ । चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी काम में ले आए तौभी तेरे अधर्म्म का दाग मेरे साम्हने पक्का बना रहेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २३ । तू क्योंकर कह सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं मैं बाल् देवताओं के पीछे नहीं चली तू तराई में की अपनी चाल देख और जान कि तू ने क्या किया है । तू वेग से चलनेहारी और इधर उधर फिरनेहारी सांड़नी है, २४ । जंगल में पली हुई और कामातुर होकर वायु सूंघनेहारी बनैली गदही जब काम के वश होती तब कौन उस को लौटा सकता है जितने उस को ढूंढ़ेंगे सो व्यर्थ परिश्रम न करेंगे क्योंकि वे उस को उस के ऋतु में[2] पाएंगे ॥ २५ । तू नंगे पांव और गला सुखाये न रह। पर तू ने कहा है कि नहीं ऐसा तो नहीं हो सकता क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से लग गया है सो उन के पीछे चलती रहूंगी ॥ २६ । जैसा चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है वैसा ही इस्राएल् का घराना राजाओं हाकिमों याजकों और नबियों समेत लज्जित होता है ॥ २७ । वे काठ से कहते हैं कि तू मेरा बाप है और पत्थर से कहते हैं कि तू मुझे जनी है इस प्रकार उन्हों ने मेरी ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है । पर विपत्ति के समय वे कहेंगे कि उठकर हमें बचा ॥ २८ । पर जो देवता तू ने बना लिये हैं सो कहां रहे क्योंकि हे यहूदा तेरे देवता तेरे नगरों के बराबर बहुत हैं यदि वे तेरी विपत्ति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें ॥

२९ । तुम मेरे संग क्यों वादविवाद करोगे तुम सभों ने मुझ से बलवा किया है यहोवा की यही

---

(१) मूल में इस कारण हे आकाश चकित हो रोमांचित हो और बहुत सूख जा। (२) वा क्या इस्राएल् दास है क्या वह घर में उत्पन्न हुआ। (३) मूल में तेरा चोपड़ा। (४) अर्थात् नील नदी।

(१) मूल में मैं ने तुझे उत्तम जाति की दाखलता बिल्कुल सच्चा बीज लगाया। (२) मूल में अपने महीने में।

वाणी है ॥ ३० । मैं ने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों को दु:ख दिया उन्हों ने ताड़ना से भी नहीं माना तुम ने अपने नबियों को अपनी तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा सिंह नाश[१] करता है ॥ ३१ । हे इस समय के लोगो यहोवा के इस वचन को सोचो कि क्या मैं इस्राएल् के लिये जंगल वा घोर अन्धकार का देश बना हूं मेरी प्रजा क्यों कहती है कि हम जो छूटे हैं सो तेरे पास फिर न आएंगे ॥ ३२ । क्या कुमारी अपने सिंगार वा दुल्हिन अपना पटुका भूल सकती तौभी मेरी प्रजा ने मुझे अनगिनित दिनों से बिसरा दिया है ॥ ३३ । प्रेम लगाने के लिये तू कैसी सुन्दर चाल चलती है तू ने बुरी स्त्रियों को भी अपनी सी चाल सिखाई है ॥ ३४ । फिर तेरे घांघरे में निर्दोष दरिद्र लोगों के लोहू का चिन्ह पाया जाता है तू ने उन्हें सेंध मारते नहीं पाया पर इन सब के कारण उन्हें वध किया ॥ ३५ । तौभी तू कहती है कि मैं तो निर्दोष हूं निश्चय उस का कोप मुझ पर से उतरा होगा सुन तू जो कहती है कि मैं ने पाप नहीं किया इस लिये मैं तुझ से मुकद्दमा लडूंगा ॥ ३६ । तू क्यों नया मार्ग पकड़ने के लिये इतनी डांवाडोल फिरती है जैसे अश्शूरियों से तेरी आशा टूटी वैसे ही मिस्रियों से भी टूटेगी ॥ ३७ । वहां से भी तू सिर पर हाथ रक्खे हुए यों ही चली आएगी क्योंकि जिन पर तू ने भरोसा रक्खा है यहोवा ने उन को निकम्मा ठहराया है और तेरा प्रयोजन उन के कारण सफल न होगा ॥

३. कहते हैं कि यदि कोई अपनी स्त्री को त्याग दे और वह उस के पास से जाकर दूसरे पुरुष की हो जाए तो क्या वह उस के पास फिर लौटेगा क्या वह देश अति अशुद्ध न हो जाएगा । यहोवा की यह वाणी है कि तू ने बहुत से यारों के साथ व्यभिचार तो किया है तौभी तू मेरे पास फिर आ ॥ २ । मुण्डे टीलों की ओर आंखें उठाकर देख कि ऐसा कौन स्थान है जहां तू ने कुकर्म्म न किया हो मार्गों में तू ऐसी बैठी हुई थी जैसे अरबी जंगल में और तू ने अपने देश को व्यभिचार आदि बुराइयों से अशुद्ध किया है ॥ ३ । इसी कारण झड़ियां और बरसात की पिछली वर्षा नहीं हुई इस पर भी तेरा माथा वेश्या का सा है तू लजाने जानती ही नहीं[१] ॥ ४ । क्या तू अब से मुझे पुकारके न कहने लगेगी कि हे मेरे पिता तू ही मेरी जवानी का रखवाल है ॥ ५ । क्या वह मन में सदा क्रोध रक्खे रहेगा क्या वह उस को सदा बनाये रहेगा । तू ने ऐसा कहा तो है पर बुरे काम चपलता के साथ किये हैं ॥

६ । फिर योशिय्याह् राजा के दिनों में यहोवा ने मुझ से यह भी कहा कि क्या तू ने देखा है कि संग छोड़नेहारी इस्राएल् ने क्या किया है उस ने तो सब ऊंचे पहाड़ों पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जाकर व्यभिचार किया है ॥ ७ । और जब वह ये सब काम कर चुकी थी तब मैं ने कहा यह मेरी ओर फिरेगी पर वह न फिरी और उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा ने यह देखा ॥ ८ । फिर मैं ने देखा कि जब मैं ने संग छोड़नेहारी इस्राएल् को उस के व्यभिचार करने के कारण त्यागकर त्यागपत्र दिया तब उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा न डरी बरन जाकर आप भी व्यभिचारिन बनी ॥ ९ । और उस के निर्लज्ज व्यभिचारिन होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया और उस ने पत्थर और काठ के साथ भी व्यभिचार किया था ॥ १० । इतने पर भी उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा सारे मन से नहीं पर कपट से मेरी ओर फिरी यहोवा की यही वाणी है ॥ ११ । और यहोवा ने मुझ से कहा संग छोड़नेहारी इस्राएल् विश्वासघातिन यहूदा से कम दोषी निकली है ॥ १२ । तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचारके कह कि यहोवा की यह वाणी है कि हे संग छोड़नेहारी इस्राएल् लौट आ तब मैं तुझ पर कोप की दृष्टि न रक्खूंगा क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं करुणामय हूं मैं सदा लों क्रोध रक्खे न रहूंगा ॥ १३ । यहोवा की यह वाणी है कि केवल अपना यह अधर्म्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर

(१) मूल में, तुम्हारी तलवार ने नाशक की नाईं ।

(१) मूल में लजाने को नकारा ।

यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों के तले इधर उधर दूसरों के पास गई मेरी नहीं सुनी ॥ १४। यहोवा की यह वाणी है कि हे संग छोड़नेहारे लड़को लौट आओ क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं और मैं तुम्हारे नगर पीछे एक और कुल पीछे दो लेकर सिय्योन् में पहुंचा दूंगा ॥ १५। और मैं तुम्हारे ऊपर अपने मन के अनुसार चरवाहे ठहराऊंगा जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे ॥ १६। और यहोवा की यह भी वाणी है कि उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ोगे और फूलो फलोगे तब लोग फिर यहोवा की वाचा का संदूक ऐसा न कहेंगे और न वह सुधि वा स्मरण में आएगा न लोग उस के न रहने से चिन्ता करेंगे और न वह फिर से बनाया जाएगा ॥ १७। उस समय यरूशलेम् यहोवा का सिंहासन कहाएगी और सब जातियां उसी यरूशलेम् में मेरे नाम के निमित्त एकट्ठी हुआ करेंगी और वे फिर अपने बुरे मन के हठ पर न चलेंगी ॥ १८। उन दिनों में यहूदा का घराना इस्राएल् के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे मैं ने उन के पितरों को निज भाग करके दिया था ॥ १९। पर मैं ने सोचा कि मैं तुझे क्योंकर लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश जो सब जातियों के देशों का शिरोमणि है दे सकता हूं तब मैं ने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी और मेरे पीछे हो लेना न छोड़ेगी ॥ २०। इस में तो सन्देह नहीं कि जैसे स्त्री अपने प्रिय से फिर जाती है वैसे ही हे इस्राएल् के घराने तू मुझ से फिर गया है यहोवा की यही वाणी है ॥ २१। मुंडे टीलों पर से इस्राएलियों के रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई देता है क्योंकि वे टेढ़ी चाल चले और अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये हैं ॥ २२। हे संग छोड़नेहारे लड़को लौट आओ मैं तुम्हारा संग छोड़ना दूर[1] करूंगा। देख हम तेरे पास आये हैं क्योंकि तू हमारा परमेश्वर यहोवा है ॥ २३। निश्चय पहाड़ों और पहाड़ियों पर जो कोलाहल होता है सो व्यर्थ ही है निश्चय इस्राएल् का उद्धार हमारे परमेश्वर यहोवा ही से है ॥ २४। वह आशा तोड़नेहारी वस्तु हमारे बचपन से हमारे पुरखाओं की कमाई अर्थात् उन की भेड़बकरी और गायबैल और उन के बेटे बेटियों को भी खाती आई है ॥ २५। हम लज्जा के साथ लेट जाएं और हमारा संकोच हमारी ओढ़नी बने क्योंकि हमारे पुरखा और हम भी बचपन से लेकर आज के दिन लों अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करते आये हैं और अपने परमेश्वर यहोवा की बात हम ने नहीं मानी ॥

(१) मूल में चंगा।

४. यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल् यदि तू फिरना चाहता है तो मेरी ओर फिर और यदि तू घिनौनी वस्तुओं को मेरे साम्हने से दूर करे तो तुझे मारा मारा फिरना न पड़ेगा ॥ २। और तू सच्चाई और न्याय और धर्म्म से यहोवा के जीवन की किरिया खाएगा और अन्यजातियां अपने अपने को उसी के कारण धन्य गिनेंगी और उसी के विषय बड़ाई मारेंगी ॥

३। फिर यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम् के लोगों से यों कहा कि अपनी पड़ती भूमि में हल जोतो और कटीले झाड़ों के बीच में बीज मत बोओ ॥ ४। हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम् के निवासियो यहोवा के लिये अपना खतना करो और अपने मन की खलड़ी दूर करो नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा कोप आग की नाईं भड़केगा और ऐसा जलता रहेगा कि कोई उसे बुझा न सकेगा ॥ ५। यहूदा में यह प्रचार करो और यरूशलेम् नगर में यह सुनाओ कि देश भर में नरसिंगा फूंको और गला खोलकर यह पुकारो कि आओ हम एकट्ठे हों और गढ़वाले नगरों में जाएं ॥ ६। सिय्योन् के मार्ग में झंडा खड़ा करो अपना सामान बटोरके भागो खड़े मत रहो क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यानाश ले आया चाहता हूं ॥ ७। सिंह अपनी झाड़ी से निकला अर्थात् जाति जाति का नाश करनेहारा चढ़ाई करके आ रहा है वह तो कूंच करके अपने स्थान से इस लिये निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे और तुम्हारे नगरों

को ऐसे सूने कर दे कि उन में कोई भी न रह जाए ॥ ८ । इस कारण कमर में टाट बांधो विलाप और हाय हाय करो क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ कोप हम पर से नहीं उतरा ॥ ९ । और यहोवा की यह भी वाणी है कि उस समय राजा और हाकिमों का कलेजा कांप उठेगा और याजक चकित होंगे और नबी अचंभित हो जाएंगे ॥

१० । तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा तू ने तो यह कहकर कि तुम को शान्ति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यरूशलेम् को भी बड़ा धोखा दिया है क्योंकि तलवार प्राण लों छेदने पर है ॥ ११ । उस समय तेरी इस प्रजा से और यरूशलेम् से भी कहा जाएगा कि जंगल में के मुण्डे टीलों पर से प्रजा के लोगों की ओर[1] लूह बह रही है सो ऐसी वायु नहीं जिस से ओसाना या फरछाना हो, १२ । पर ऐसे कामों के लिये अधिक प्रचण्ड वायु मेरे निमित्त बहेगी अब मैं उन को दण्ड मिलने की आज्ञा दूंगा ॥ १३ । देखो वह बादलों की नाईं चढ़ाई करके आ रहा है उस के रथ बवण्डर के समान और उस के घोड़े उकाबों से अधिक वेग चलते हैं हम पर हाय कि हम नाश हुए ॥ १४ । हे यरूशलेम् अपना मन बुराई से धो कि तुम्हारा उद्धार हो जाए तुम अनर्थ कल्पनाएं कब लों करते रहोगे[2] ॥ १५ । क्योंकि दान् नगर से शब्द सुन पड़ता है और एप्रैम् के पहाड़ी देश से विपत्ति का समाचार सुनाई देता है ॥ १६ । अन्यजातियों में इस की चर्चा करो यरूशलेम् के विरुद्ध भी इस का समाचार सुनाओ कि घेरनेहारे[3] दूर देश से आकर यहूदा के नगरों के विरुद्ध ललकार रहे हैं ॥ १७ । वे खेत के रखवालों की नाईं उस की चारों ओर से घेर रहे हैं क्योंकि वह मुझ से फिर गई है यहोवा की यही वाणी है ॥ १८ । ये तेरी चाल और कामों का फल हैं तेरी यह दुष्टता दुखदाई है कि इस से तेरा हृदय छिद जाता है ॥

१९ । हाय हाय[4] मेरा हृदय भीतर भीतर तड़पता और मेरा मन घबराता है मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि हे मेरे जीव नरसिंगे का शब्द और युद्ध की ललकार तुझ लों पहुंची है ॥ २० । नाश पर नाश का समाचार आता है अब सारा देश लूटा गया है मेरे डेरे अचानक और मेरे तंबू एका एक लूटे गये हैं ॥ २१ । मुझे और कितने दिन लों उन का झण्डा देखना और नरसिंगे का शब्द सुनना पड़ेगा ॥ २२ । क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है वे मुझ को नहीं जानते वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं कि उन को कुछ भी समझ नहीं है बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं पर भलाई करना नहीं जानते ॥

२३ । मैं ने पृथिवी को देखा कि वह सूनी और सुनसान पड़ी है और आकाश को कि उस में ज्योति नहीं रही ॥ २४ । मैं ने पहाड़ों को देखा कि वे हिल रहे और सब पहाड़ियां को कि वे डोल रही हैं ॥ २५ । फिर मैं क्या देखता हूं कि कोई मनुष्य नहीं रहा सब पक्षी भी उड़ गये हैं ॥ २६ । फिर मैं क्या देखता हूं कि उपजाऊ देश जंगल और यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए कोप के कारण उस के सारे नगर खंडहर हो गये हैं ॥ २७ । क्योंकि यहोवा ने यह बताया कि सारा देश उजाड़ हो जाएगा तौभी मैं उस का अंत न कर डालूंगा ॥ २८ । इस कारण पृथिवी विलाप करेगी और आकाश शोक का काला वस्त्र पहिनेगा क्योंकि मैं ने ऐसा ही करना ठाना और कहा भी है और इस से नहीं पछताया और न अपने प्रण को छोड़ूंगा ॥

२९ । इस सारे नगर के लोग सवारों और धनुर्धारियों का कोलाहल सुनकर भाग जाते हैं वे झाड़ियों में घुस जाते और चटानों पर चढ़ जाते हैं सब नगर निर्जन हो गये और उन में कोई न रहा ॥ ३० । तू जब उजड़ेगी तब क्या करेगी चाहे तू लाही रंग के वस्त्र पहिने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आंखों में अंजन लगाए पर तू व्यर्थ ही अपना सिंगार करेगी क्योंकि तेरे यार तुझे निकम्मी जानते और तेरे प्राण के खोजी हैं ॥ ३१ । मैं ने जननेहारी का सा शब्द पहिलौठा जनती

(१) मूल में मेरी प्रजा की बेटी की ओर । (२) मूल में कब लो तुझ में बनी रहेंगी । (३) मूल में पहरुए । (४) मूल में मेरी अन्तड़िया मेरी ।

हुई स्त्री की सी चिल्लाहट सुनी है यह सिय्योन् की बेटी का शब्द है वह हांफती और हाथ फैलाये हुए यों कहती है कि हाय मुझ पर मैं हत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूं ॥

५. यरूशलेम् की सड़कों में इधर उधर दौड़कर देखो और उस के चौकों में ढूंढ़ो यदि ऐसा कोई मिल सकता है जो न्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो तो मैं उस का पाप क्षमा करूंगा ॥ २ । यद्यपि उस के निवासी यहोवा के जीवन की सों ऐसा कहते हैं तौभी निश्चय वे झूठी किरिया खाते हैं ॥

३ । हे यहोवा क्या तू सच्चाई पर दृष्टि नहीं लगाता तू ने उन को दुःख दिया पर वे शोकित नहीं हुए तू ने उन का नाश किया पर उन्हों ने ताड़ना से नहीं माना उन्हों ने अपना मन चटान से भी अधिक कड़ा किया और फिरने को नकारा है ॥ ४ । फिर मैं ने सोचा कि ये लोग तो कंगाल और अबोध हैं ये यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम नहीं जानते ॥ ५ । सो मैं बड़े लोगों के पास जाकर उन को सुनाऊंगा क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम जानते होंगे पर उन्हों ने मिलकर जूए को तोड़ दिया और बंधनों को खोल डाला है ॥

६ । इस कारण सिंह वन में से आकर उन्हें मार डालेगा और निर्जल देश का भेड़िया उन को नाश करेगा और चीता उन के नगरों के पास घात लगाये रहेगा और जो कोई उन से निकले सो फाड़ा जाएगा इस कारण से कि उन के अपराध बढ़ गये और वे मुझ से बहुत ही दूर हट गये हैं ॥ ७ । मैं किस प्रकार से तेरा पाप क्षमा करूं तेरे लोगों ने[1] मुझ को छोड़कर उन की किरिया खाई है जो परमेश्वर नहीं हैं और जब मैं ने उन का पेट भर दिया तब उन्हों ने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों में भीड़ की भीड़ जाते थे ॥ ८ । वे खिलाये हुए और घूमते फिरते घोड़ों के समान हुए वे अपने अपने पड़ोसी की स्त्री के लिये हिनहिनाने लगे ॥ ९ । यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसे कामों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं ॥ १० । शहरपनाह पर चढ़ाई करके नाश तो करो तौभी उस का अन्त मत कर डालो उस की जड़ तो रहने दो पर उस की डालियों को तोड़कर फेंक दो क्योंकि वे यहोवा की नहीं हैं ॥ ११ । यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल् और यहूदा के घरानों ने मुझ से बड़ा ही विश्वासघात किया है ॥ १२ । उन्हों ने यहोवा की बातें झुठलाकर कहा कि यह वह नहीं है विपत्ति हम पर न पड़ेगी और हम न तो तलवार को और न महंगी को देखेंगे ॥ १३ । और नबी हवा हो जाएंगे और उन में ईश्वर का वचन नहीं सो उन के साथ ऐसा ही किया जाएगा ॥ १४ । इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि ये लोग जो ऐसा कहते हैं इस लिये देख मैं अपने वचन तेरे मुंह में आग और यह प्रजा काठ बनाता हूं और वह उन्हें खाएगी ॥ १५ । यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल् के घराने सुन मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से ऐसी जाति को चढ़ाई कराऊंगा जो सामर्थी और प्राचीन जाति है और उस की भाषा तुम न समझोगे और न जानोगे कि वे लोग क्या कह रहे हैं ॥ १६ । उन का तर्कश खुली कबर सा है और वे सब के सब शूरवीर हैं ॥ १७ । वे तुम्हारे पक्के खेत और भोजनवस्तुएं खा जाएंगे जो तुम्हारे बेटे बेटियों के खाने के लिये होतीं वे तुम्हारी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को खा डालेंगे वे तुम्हारी दाखों और अंजीरों को खा जाएंगे और जिन गढ़वाले नगरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वे तलवार के बल से गिरा देंगे ॥ १८ । तौभी यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में भी मैं तुम्हारा अन्त न कर डालूंगा ॥ १९ । सो जब तुम पूछोगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से ये सब काम किस के पलटे में किये हैं तब तू उन से कहना कि जिस प्रकार से तुम ने मुझ को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा अपने देश में किई है उसी प्रकार से तुम

(१) मूल में तेरे लड़के ।

को पराये देश में परदेशियों की सेवा करनी पड़ेगी॥

२०। याकूब के घराने में यह प्रचार करो और यहूदा में यह सुनाओ, २१। हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो तुम जो आंखें रहते हुए नहीं देखते और कान रहते हुए नहीं सुनते यह सुनो॥ २२। यहोवा की यह वाणी है कि क्या तुम लोग मेरा भय नहीं मानते मैं ने तो बालू को समुद्र का सिवाना ठहराकर युग युग का ऐसा विधान किया कि वह उस को न लांघे, जब जब उस की लहरें उठें तब तब वे प्रबल न होएं और जब जब गरजें तब तब वे उस को न लांघें फिर क्या तुम मेरे साम्हने नहीं थरथराते॥ २३। पर इस प्रजा के हठीला और बलवा करनेहारा मन है वे हठ करके चले गये हैं॥ २४। फिर वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसाता और कटनी के नियत अठवारे हमारे लिये रखता है सो हम उस का भय मानें॥ २५। पर वे तुम्हारे अधर्म्म के कामों ही के कारण रुक गये और तुम्हारे पापों के हेतु तुम्हारी भलाई नहीं होती[1]॥ २६। मेरी प्रजा में दुष्ट लोग भी पाये जाते हैं जैसे चिड़ीमार ताक में रहते हैं वैसे ही वे भी घात लगाये रहते हैं वे फंदा लगाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेते हैं॥ २७। जैसा पिंजरा चिड़ियाओं से भरापूरा होता है वैसे ही उन के घर छल से भरे पूरे रहते हैं इसी प्रकार से वे बढ़ गये और धनी हो गये हैं॥ २८। वे मोटे चिकने हो गये हैं वे बुरे कामों में सीमा को लांघ गये हैं वे न्याय और विशेष करके बपमूओं का न्याय नहीं चुकाते इस से उन का काम सफल नहीं होता फिर वे कंगालों का हक नहीं दिलाते॥ २९। सो यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं इन बातों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी जाति से पलटा न लूं॥

३०। देश में ऐसा काम होता है जिस से चकित और रोमांचित होना चाहिये॥ ३१। नबी तो झूठमूठ नबूवत करते हैं और याजक उन के सहारे से प्रभुता करते हैं और मेरी प्रजा को यह भावता भी है सो इस के अन्त में तुम क्या करोगे॥

(१) मूल में तुम्हारे अधर्म्मों ने इन्हें मोड़ा और तुम्हारे पापों ने भलाई तुम से रोकी।

६.

हे बिन्यामीनियो यरूशलेम् में से अपना अपना सामान लेकर भागो और तकोमें नरसिंगा फूंको और बेथक्केरेम् पर झण्डा खड़ा करो क्योंकि उत्तर की दिशा से आनेहारी विपत्ति और बड़ा विनाश दिखाई देता है॥ २। सुन्दर और सुकुमार सिय्योन् को मैं नाश करने पर हूं॥ ३। चरवाहे अपनी अपनी भेड़ बकरियां संग लिये हुए उस पर चढ़कर उस की चारों ओर अपने तंबू खड़े करेंगे और अपने अपने पास की घास चरा लेंगे॥ ४। आओ उस के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो उठो हम दो पहर को चढ़ाई करें हाय हाय दिन ढलने लगा और सांझ की परछाईं लम्बी हो चली है॥ ५। उठो हम रात ही रात चढ़ाई करें और उस के महलों को नाश करें॥ ६। सेनाओं का यहोवा तुम से कहता है कि वृक्ष काट काटकर यरूशलेम् के विरुद्ध धुस बांधो यह वही नगर है जिस का दण्ड हुआ चाहता इस में अन्धेर ही अन्धेर भरा हुआ है॥ ७। जैसा कूए में से नित्य नया जल निकला करता है वैसा ही इस नगर में नित्य नई बुराई निकलती है इस में उत्पात और उपद्रव का कोलाहल मचा करता है चोट और मारपीट मेरे देखने में निरन्तर आती है॥ ८। हे यरूशलेम् ताड़ना से मान ले नहीं तो तू मेरे जीव से उतर जाएगी और मैं तुझ को उजाड़कर निर्जन कर डालूंगा॥ ९। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि दाखलता की नाईं इस्राएल् के बचे हुए सब तोड़े जाएंगे दाख के तोड़नेहारे की नाईं उस लता की डालियों पर फिर फिर हाथ लगा॥

१०। मैं किस से बोलूं और चिताकर कहूं कि वह माने। देख ये ऊंचा सुनते हैं[1] और ध्यान भी नहीं दे सकते देख वे यहोवा के वचन की निन्दा

(१) मूल में उन का कान खतनारहित है।

करते और उस को नहीं चाहते ॥ ११। इस कारण यहोवा का क्रोध मेरे मन में भर दिया गया और मैं उसे रोकते रोकते उकता गया उसे सड़क पर के बच्चों और जवानों की सभा में भड़का[1] दे क्योंकि स्त्री पुरुष अधेड़ बूढ़ा सब के सब पकड़े जाएंगे ॥ १२। और यहोवा की यह वाणी है कि उन लोगों के घर और खेत और स्त्रियां सब औरों की हो जाएंगी क्योंकि मैं इस देश के रहनेहारों पर हाथ बढ़ाऊंगा ॥ १३। क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक वे सब के सब लालची हैं और क्या नबी क्या याजक वे सब के सब छल से काम करते हैं ॥ १४। और उन्हों ने शांति है शांति ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा[2] के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया पर शांति कुछ भी नहीं ॥ १५। क्या वे घिनौना काम करके लजा गये। नहीं वे कुछ भी नहीं लजाये वे लजाना जानते ही नहीं इस कारण सब और लोग नीचा खाएंगे सब वे भी नीचा खाएंगे और जब मैं उन को दण्ड देने लगूं तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे यहोवा का यही वचन है ॥

१६। यहोवा यों भी कहता है कि सड़कों पर खड़े होकर देखो और पूछो कि प्राचीन काल का अच्छा मार्ग कौन सा है उसी में चलो और तुम अपने अपने मन में चैन पाओगे। पर उन्हों ने कहा हम न चलेंगे ॥ १७। फिर मैं ने तुम्हारे लिये पहरुए बैठाकर कहा है नरसिंगे का शब्द ध्यान से सुनो। पर उन्हों ने कहा है हम न सुनेंगे ॥ १८। इस लिये हे अन्यजातियो सुनो और हे मण्डली देख कि इन लोगों में क्या हो रहा है ॥ १९। हे पृथिवी सुन और देख कि मैं इस जाति पर वह विपत्ति ले आऊंगा जो उन की कल्पनाओं का फल है क्योंकि इन्हों ने मेरे वचनों पर ध्यान नहीं लगाया और मेरी शिक्षा को इन्हों ने निकम्मी जाना है ॥ २०। मेरे लिये लोबान जो शबा से और सुगन्धित नरकट जो दूर देश से आता है इस का क्या प्रयोजन है तुम्हारे होमबलियों से मैं प्रसन्न नहीं होता और न तुम्हारे मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं ॥ २१। इस कारण यहोवा ने यों कहा है कि सुनो मैं इस प्रजा के आगे ठोकर रखूंगा और बाप बेटा पड़ोसी और संगी वे सब के सब ठोकर खाकर नाश होंगे ॥

२२। यहोवा यों कहता है कि देखो उत्तर से वरन पृथिवी की छोर से एक बड़ी जाति के लोग इस देश पर उभारे जाएंगे ॥ २३। वे धनुष और बर्छी धारण किये आएंगे वे क्रूर और निर्दय हैं और जब वे बोलते तब मानो समुद्र गरजता है वे घोड़ों पर चढ़े हुए आएंगे हे सिय्योन्[2] वे वीर की नाईं हथियार बन्द होकर[1] तुझ पर चढ़ाई करेंगे ॥ २४। इस का समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले पड़ गये हैं हम संकट में पड़े हैं जननेहारी की सी पीड़ हम को उठी है ॥ २५। मैदान में मत निकल जाओ मार्ग में भी न चलो क्योंकि वहां शत्रु की तलवार और चारों ओर भय देख पड़ता है ॥ २६। सो हे मेरी प्रजा[3] कमर में टाट बांध और राख में लोट जैसा विलाप एकलौते पुत्र के लिये होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर क्योंकि नाश करनेहारा हम पर अचानक आ पड़ेगा ॥

२७। मैं ने तुझ को अपनी प्रजा के बीच गुम्मट वा गढ़ इस लिये ठहरा दिया कि तू उन की चाल परखे और जान ले ॥ २८। वे सब बहुत ही हठीले हैं वे लुतराई करते फिरते हैं उन सभों की चाल बिगड़ी है वे निरा ताम्बा और लोहा ही निकले हैं ॥ २९। धौंकनी जल गई शीशा आग में जल गया सो ढालनेहारे ने व्यर्थ ही ढाला है बुरे लोग निकाले नहीं गये ॥ ३०। उन का नाम खोटी चांदी पड़ेगा क्योंकि यहोवा ने उन को खोटा पाया है ॥

७.

जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह् के पास पहुंचा सो यह है कि, २। यहोवा के भवन के फाटक में खड़ा हो यह वचन प्रचारके कह कि हे सब यहूदियो तुम जो यहोवा

(१) मूल में उण्डेल। (२) मूल में, मेरी प्रजा की पुत्री।

(१) मूल में जैसा युद्ध के लिये पुरुष। (२) मूल में, हे सिय्योन् की बेटी। (३) मूल में, प्रजा की पुत्री।

को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से प्रवेश करते हो सो यहोवा का वचन सुनो ॥ ३ । सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो यों कहता है कि अपनी अपनी चाल और काम सुधारो तब मैं तुम को इस स्थान में बसे रहने दूंगा ॥ ४ । यह जो तुम लोग कहा करते हो कि भूठी बातों पर भरोसा रखकर मत कहो कि यहोवा का मन्दिर ये हैं यहोवा का मन्दिर यहोवा का मन्दिर ॥ ५ । यदि तुम सचमुच अपनी अपनी चाल और काम सुधारो और सचमुच मनुष्य मनुष्य के बीच न्याय करो, ६ । और परदेशी और बपमूए और विधवा पर अंधेर न करो और इस स्थान में निर्दोष का खून न करो और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिस से तुम्हारी हानि होती है, ७ । तो मैं तुम को इस नगर में और इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया युगयुग बसा रहने दूंगा ॥ ८ । सुनो तुम भूठी बातों पर जिन से कुछ लाभ नहीं हो सकता भरोसा रखते हो ॥ ९ । तुम जो चोरी हत्या और व्यभिचार करते और भूठी किरिया खाते और बाल् देवता के लिये धूप जलाते और दूसरे देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहिले न जानते थे चलते हो, १० । सो क्या उचित है कि तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहावता है और मेरे साम्हने खड़े होकर कहो कि हम इस लिये छूट गये हैं कि ये सब घिनौने काम करें ॥ ११ । क्या यह भवन जो मेरा कहलाता है तुम्हारे लेखे डाकूओं की गुफा हो गया है मैं ही ने यह देखा है यहोवा की यही वाणी है ॥ १२ । मेरा जो स्थान शीलो में था जहां मैं ने पहिले अपने नाम का निवास ठहराया था वहां जाकर देखो कि मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल् की बुराई के कारण उस की क्या दशा कर दिई है ॥ १३ । सो अब यहोवा की यह वाणी है कि तुम तो ये सब काम करते आये हो और यद्यपि मैं तुम से बातें करता आया हूं वरन बड़े यत्न से[1] कहता आया हूं पर तुम ने नहीं सुना और यद्यपि मैं तुम्हें बुलाता आया हूं पर तुम नहीं बोले, १४ । इस लिये यह भवन जो मेरा कहावता है जिस पर तुम भरोसा रखते हो और यह स्थान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे पितरों को दिया इन की दशा मैं शीलो की सी कर दूंगा ॥ १५ । और जैसा मैं ने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने साम्हने से दूर कर दिया है वैसा ही तुम को भी दूर कर दूंगा ॥

१६ । तू इस प्रजा के लिये प्रार्थना मत कर न तो इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से प्रार्थना कर न मुझ से बिनती कर क्योंकि मैं तेरी न सुनूंगा ॥ १७ । क्या तू नहीं देखता कि ये लोग यहूदा के नगरों और यरूशलेम् की सड़कों में क्या करते हैं ॥ १८ । देख लड़केवाले तो ईंधन बटोरते और बाप आग बारते और स्त्रियां आटा गूंधती हैं कि मुझे रिसियाने को स्वर्ग की रानी के लिये रोटियां चढ़ाएं और दूसरे देवताओं के लिये तपावन दें ॥ १९ । यहोवा की यह वाणी है कि क्या वे मुझी को रिस दिलाते हैं क्या वे अपने ही को नहीं जिस से उन के मुंह पर सियाही छाए ॥ २० । सो प्रभु यहोवा ने यों कहा है कि क्या मनुष्य क्या पशु क्या मैदान के वृक्ष क्या भूमि की उपज उन सब पर जो इस स्थान में हैं मेरी कोप की आग भड़कने पर है और जलती भी रहेगी और कभी न बुझेगी ॥

२१ । सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो यों कहता है कि अपने मेलबलियों में अपने होमबलि बढ़ाओ और मांस खाओ ॥ २२ । क्योंकि जिस समय में तुम्हारे पितरों को मिस्र देश में से निकाल ले आया उस समय मैं ने उन से होमबलि और मेलबलि के विषय कुछ आज्ञा न दिई ॥ २३ । मैं ने तो उन को यही आज्ञा दिई कि मेरी सुना करो तब मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और जिस किसी मार्ग की मैं तुम्हें आज्ञा दूं उसी में चलो तब तुम्हारा भला होगा ॥ २४ । पर उन्हों ने मेरी न सुनी और न कान लगाया वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और आगे न बढ़े पर पीछे हट गये ॥ २५ । जिस दिन तुम्हारे पुरखा मिस्र देश से निकले उस दिन से आज लों मैं तो अपने सारे दास

(१) मूल में तड़के उठकर ।

नबियों को तुम्हारे पास लगातार बड़े यत्न से भेजता आया हूं ॥ २६ । पर उन्हों ने मेरी नहीं सुनी न कान लगाया उन्हों ने हठ किई और अपने पुरखाओं से बढ़कर बुराई किई है ॥

२७ । यह सब बातें उन से कह तो सही पर वे तेरी न सुनेंगे और उन को बुला तो सही पर वे न बोलेंगे ॥ २८ । तब तू उन से कहना कि यह वही जाति है जो अपने परमेश्वर यहोवा की नहीं सुनती और ताड़ना से भी नहीं मानती सच्चाई नाश हो गई और उन के मुंह से दूर रही ॥

२९ । अपने बाल मुंड़ाकर फेंक दे और मुण्डे टीलों पर चढ़कर विलाप का गीत गा क्योंकि यहोवा ने इस समय के निवासियों पर कोप किया और उन्हें[१] निकम्मा जानकर त्याग दिया है ॥ ३० । यहोवा की यह वाणी है कि इस का कारण यह है कि यहूदियों ने वह किया है जो मेरे लेखे बुरा है जो भवन मेरा कहावता है उस में भी उन्हों ने अपनी घिनौनी वस्तुएं रखकर उसे अशुद्ध किया है ॥ ३१ । और उन्हों ने हिन्नोमवंशियों की तराई में तोपेत् नाम ऊंचे स्थान बनाकर अपने बेटे बेटियों को आग में जलाया है जिस की आज्ञा मैं ने कभी नहीं दिई और न वह मेरे मन में कभी आया ॥ ३२ । यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन इस लिये आते हैं कि वह तराई फिर न तो तोपेत् की और न हिन्नोमवंशी की कहाएगी घात ही की तराई कहाएगी और तोपेत् में इतनी कबरें होंगी कि और स्थान न रहेगा ॥ ३३ । सो इन लोगों की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के जीवजन्तुओं का आहार होंगी और उन का हांकनेहारा कोई न रहेगा ॥ ३४ । उस समय मैं ऐसा करूंगा कि यहूदा के नगरों और यरूशलेम् की सड़कों में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे वा दुल्हिन का क्योंकि देश उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा ॥

८. **य**होवा की यह वाणी है कि उस समय यहूदा के राजाओं हाकिमों याजकों और नबियों और यरूशलेम् के और और रहनेहारों की हड्डियां कबरों में से निकाल कर, २ । सूर्य्य चन्द्रमा और आकाश के सारे गण के साम्हने फैलाई जाएंगी क्योंकि वे उन्हीं से प्रेम रखते और उन्हीं की सेवा करते और उन्हीं के पीछे चलते और उन्हीं के पास जाया करते और उन्हीं को दण्डवत् करते थे और वे न तो ढेर किई जाएंगी और न कबर में रक्खी जाएंगी बरन खाद के समान भूमि के ऊपर पड़ी रहेंगी ॥ ३ । और इस बुरे कुल में से जो लोग उन सब स्थानों में जिन में मैं उन को बरबस कर दूंगा रह जाएंगे सो जीवन से अधिक मृत्यु ही को चाहेंगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

४ । फिर तू उन से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि जब कोई गिरता तब क्या वह फिर नहीं उठता जब कोई भटक जाता तब क्या वह लौट नहीं आता ॥ ५ । फिर क्या कारण है कि ये यरूशलेमी लोग सदा अधिक अधिक दूर भटकते जाते हैं ये छल को नहीं छोड़ते और लौटने को नकारते हैं ॥ ६ । मैं ने ध्यान देकर सुना पर ये ठीक नहीं बोलते इन में से किसी ने अपनी बुराई से पछताकर नहीं कहा कि हाय मैं ने क्या किया है जैसा घोड़ा लड़ाई में वेग से दौड़ता है वैसे ही इन में से एक एक जन अपनी दौड़ में दौड़ता है ॥ ७ । आकाश का लगलग अपने नियत समयों को जानता है और पिण्डुकी और सूपाबेना और सारस भी अपने आने का समय रखते हैं पर मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानती ॥ ८ । तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम तो बुद्धिमान हैं यहोवा की दिई हुई व्यवस्था हमारे पास है । पर उन के शास्त्रियों ने उस का झूठा विवरण लिखकर उस को[१] झूठा बना दिया है ॥ ९ । बुद्धिमान लज्जित हुए वे विस्मित हुए और पकड़े गये देखो उन्हों ने यहोवा के वचन को निकम्मा जाना है सो बुद्धि उन में कहां रही ॥ १० । इस कारण मैं उन की स्त्रियों को दूसरे पुरुषों के और उन के खेत दूसरे अधिकारियों के वश कर दूंगा क्योंकि छोटे से लेकर

(१) मूल में यहोवा ने अपनी ललसलाहट की पीठा को ।

(१) मूल में शास्त्रियों के झूठे कलम ने उस को ।

बड़े लों वे सब के सब लालची हैं और क्या नबी क्या याजक वे सब के सब छल से काम करते हैं॥ ११। और उन्हों ने शांति है शांति ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा[१] के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया पर शांति कुछ भी नहीं है॥ १२। क्या वे घिनौना काम करके लजा गये नहीं वे कुछ भी नहीं लजाये वे लजाना जानते ही नहीं इस कारण जब और लोग नीचा खाएंगे तब वे भी नीचा खाएंगे और जब उन के दण्ड का समय आएगा तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे यहोवा का यही वचन है॥१३। यहोवा की यह भी वाणी है कि मैं उन सभों का अन्त कर दूंगा न तो उन की दाखलताओं में दाख पाई जाएंगी और न अंजीर के वृक्ष में अंजीर बरन उन के पत्ते भी सूख जाएंगे इस प्रकार जो कुछ मैं ने उन्हें दिया है सो उन के पास से जाता रहेगा॥ १४। हम क्यों बैठे हैं आओ हम चलकर गढ़वाले नगरों में एकट्ठे नाश हों क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को नाश किया चाहता है हम ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया है इस लिये उस ने हम को विष पिलाया है॥ १५। हम शांति की बाट जोहते तो थे पर कुछ कल्याण नहीं मिला और अच्छी दशा के हो जाने की आशा तो करते थे पर घबरना ही पड़ा है॥ १६। घोड़ों का फुरकना दान् से सुन पड़ता है और उन के बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश कांप उठा और उन्हो ने आकर हमारे देश को और जो कुछ उस में है और हमारे नगर को वासियों समेत नाश किया है॥ १७। क्योंकि देखो मैं तुम्हारे बीच ऐसे सांप और नाग भेजूंगा जिन पर मंत्र न चलेगा और वे तुम को डसेंगे यहोवा की यही वाणी है॥

१८। हाय हाय इस शोक की दशा में मुझे शांति कहां से मिलेगी मेरा हृदय भीतर भीतर तड़पता है॥ १९। क्योंकि मुझे अपने लोगों[२] की चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है कि क्या यहोवा सिय्योन् में नहीं रहा क्या उस का राजा उस में नहीं रहा। उन्हों ने मुझ को अपनी खोदी हुई मूरतों और परदेश की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा क्यों रिस दिलाई है॥ २०। कटनी का समय बीत गया फल तोड़ने की ऋतु भी बीत गई और हमारा उद्धार नहीं हुआ॥ २१। सो अपने लोगों के[३] दुःख से मैं भी दु.खित हुआ मैं शोक का पहिरावा पहिने अति अचंभे में डूबा हूं॥ २२। क्या गिलाद् देश में कुछ बलसान की औषध नहीं क्या उस मे अब कोई वैद्य नहीं यदि है तो मेरे लोगों[३] के घाव क्यों चंगे नहीं हुए॥

(१) मूल में प्रजा की बेटी। (२) अपने लोगों की बेटी।

९. भला होता कि मेरा सिर जल ही जल और मेरी आंखें आंसुओं का सोता होतीं कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों[३] के लिये रोता रहता॥ २। भला होता कि मुझे जंगल में बटोहियों का कोई टिकाव मिलता कि मैं अपने लोगों को छोड़कर वहीं चला जाता क्योंकि वे सब व्यभिचारी और उन का समाज विश्वासघातियों का है॥ ३। और वे अपनी अपनी जीभ को धनुष की नाईं झूठ बोलने के लिये तैयार करते हैं और देश में बलवन्त तो हो गये पर सच्चाई के लिये नहीं वे बुराई पर बुराई बढ़ाते जाते हैं और वे मुझ को जानते ही नहीं यहोवा की यही वाणी है॥ ४। अपने अपने संगी से चौकस रहो और अपने भाई पर भी भरोसा न रक्खो क्योंकि सब भाई निश्चय अड़ंगा मारेंगे और सब संगी लुतराई करते फिरेंगे॥ ५। वे एक दूसरे को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे वे झूठ ही बोलना सीखे हैं[४] और कुटिलता ही में परिश्रम करते हैं॥ ६। तेरा निवास छल के बीच है और छल के कारण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते यहोवा की यही वाणी है॥

७। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुन मैं उन को तपाकर परखूंगा क्योंकि अपनी प्रजा[५] के कारण मैं उन से और क्या कर

(१) मूल में अपने लोगो की बेटी के। (२) मूल में मेरे लोगो की बेटी के। (३) मूल में मेरे लोगो की बेटी के मारे हुओ के। (४) मूल में उन्हो ने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है। (५) प्रजा की बेटी।

सकता हूं ॥ ८। पर उन की जीभ काल के तीर सरीखी बेधनेहारी होती है उस से छल की बातें निकलती हैं वे मुंह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते पर मन ही मन एक दूसरे की घात लगाते हैं ॥ ९। यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसी बातों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं ॥

१०। मैं पहाड़ों के लिये रो उठूंगा और शोक का गीत गाऊंगा और जंगल में की चराइयों के लिये विलाप का गीत गाऊंगा क्योंकि वे ऐसे जल गये कि कोई उन से होकर नहीं चलता और उन में ढोर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता पशु पक्षी सब दूर हो गये हैं ॥ ११। और मैं यरूशलेम् को डीह ही डीह करके गीदड़ों का स्थान बनाऊंगा और यहूदा के नगरों को ऐसा उजाड़ दूंगा कि कोई उन में न रह जाएगा ॥ १२। जो बुद्धिमान् पुरुष हो सो इस का भेद समझ ले और जिस ने यहोवा के मुख से इस का कारण सुना हो सो बता दे कि देश क्यों नाश हुआ और क्यों जंगल की नाईं जल गया और क्यों कोई उस से होकर नहीं चलता ॥

१३। फिर यहोवा ने कहा उन्हों ने तो मेरी व्यवस्था को जो मैं ने उन को सुनवा दिई छोड़ दिया और न तो मेरी बात मानी और न उस व्यवस्था के अनुसार चले हैं, १४। वरन अपने हठ पर और बाल् नाम देवताओं के पीछे चले जैसे कि उन के पुरखाओं ने उन को सिखाया ॥ १५। इस कारण सेनाओं का यहोवा इस्राएल् का परमेश्वर यों कहता है कि सुन मैं अपनी इस प्रजा को कड़ुवी वस्तु खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा ॥ १६। और मैं उन लोगों को ऐसी जातियों में जिन्हें न तो वे न उन के पुरखा जानते तितर बितर करूंगा और मेरी ओर से तलवार उन के पीछे पड़ेगी जब तक कि उन का अन्त न हो जाए ॥

१७। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि विलाप करनेहारियों को सोच विचारके बुलाओ और बुद्धिमान् स्त्रियों को बुलवा भेजो, १८। कि फुर्ती करके हम लोगों के लिये शोक का गीत गाएं कि हमारी आंखों से आंसू बह चलें और हमारी पलकें जल बहाएं ॥ १९। सिय्योन् से शोक का यह गीत सुन पड़ता है कि हम क्या ही नाश हो गये हम लज्जा में गड़ गये हैं क्योंकि हम को अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर गिरा दिये गये हैं ॥ २०। सो हे स्त्रियो यहोवा का यह वचन सुनो और उस की यह आज्ञा मानो कि तुम अपनी अपनी बेटियों को शोक का गीत और अपनी अपनी पड़ोसिनों को विलाप का गीत सिखाओ ॥ २१। क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों से होकर हमारे महलों में घुस आई कि हमारी सड़कों में बच्चों को और चौकों में जवानों को मिटा दे ॥ २२। तू कह कि यहोवा की वाणी यों हुई है कि मनुष्यों की लोथें ऐसी पड़ी रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर और पूलियां काटनेहारे के पीछे पड़ी रहती हैं और उन का कोई उठानेहारा न होगा ॥

२३। यहोवा यों कहता है कि न तो बुद्धिमान् अपनी बुद्धि पर घमण्ड करे और न वीर अपनी वीरता पर न धनवान अपने धन पर घमण्ड करे ॥ २४। पर जो घमण्ड करे सो इसी बात पर घमण्ड करे कि वह मुझ को जानता है और यह समझता है कि यहोवा वही है जो पृथिवी पर करुणा न्याय और धर्म्म के काम करता है क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं यहोवा की यही वाणी है ॥ २५। सुनो यहोवा की यह भी वाणी है कि ऐसे दिन आनेहारे हैं कि जिन का खतना हुआ है उन के खतना रहित होने के कारण मैं उन्हें दण्ड दूंगा, २६। अर्थात् मिस्रियों यहूदियों एदोमियों अम्मोनियो मोआबियों को और उन वनवासियों को भी जो अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं, क्योंकि सब अन्यजातिवाले तो खतनारहित हैं और इस्राएल् का सारा घराना मन में खतनारहित है ॥

१०. हे इस्राएल् के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है सो सुन ॥ २। यहोवा यों कहता है कि अन्यजातियों की चाल मत सीखो और न उन की नाईं आकाश के चिन्हों से विस्मित

हो उन से तो अन्यजाति के लोग विस्मित होते हैं॥ ३। और देशों के लोगों की रीतियां तो निकम्मी हैं यह मूरत तो वन में से किसी का काटा हुआ काठ है कारीगर ने उसे वसूले से बनाया है॥ ४। लोग उस को सोने चांदी से सजाते और हथौड़े से कील ठोंक ठोंककर दृढ़ करते हैं कि वह हिल डोल न सके॥ ५। वे खरादकर ताड़ के पेड़ के समान गोल बनाई जाती हैं और बोल नहीं सकतीं उन्हें उठाये फिरना पड़ता है क्योंकि वे नहीं चल सकतीं तुम उन से मत डरो क्योंकि वे न तो कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला॥

६। हे यहोवा तेरे समान कोई नहीं है तू तो महान् है और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है॥ ७। हे सब जातियों के राजा तुझ से कौन न डरेगा क्योंकि तू इस के योग्य है और अन्यजातियों के सारे बुद्धिमानों में और उन के सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है॥ ८। पर वे पशु सरीखे निरे मूर्ख ही हैं निकम्मी वस्तुओं की शिक्षा काठ ही है उन से क्या शिक्षा मिल सकती हैं॥ ९। पत्तर बनाई हुई चांदी तर्शीश् से लाई जाती है और सोना ऊफ़ाज़् से कारीगर का और सोनार के हाथों का काम, उन के पहिरावे नीले और बैंजनी रंग के वस्त्र हैं निदान उन में जो कुछ है सो निपुण लोगों का काम है॥ १०। परन्तु यहोवा सचमुच परमेश्वर है जीवता परमेश्वर और सदा का राजा वही है उस के कोप से पृथिवी कांपती और जाति जाति के लोग उस के क्रोध को सह नहीं सकते॥

११। तुम उन से ऐसा कहना कि ये देवता जिन्हों ने आकाश और पृथिवी को नहीं बनाया सो पृथिवी पर से और आकाश के तले से नाश हो जाएंगे॥

१२। उस ने पृथिवी को अपने सामर्थ्य से बनाया और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है॥ १३। जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है वह पृथिवी की छोर से कुहरे उठाता और वर्षा के लिये बिजली बनाता और अपने भण्डार में से पवन निकाल ले आता है॥ १४। सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञान रहित हैं सब सोनारों की आशा अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण टूटती है क्योंकि उन की ढाली हुई मूरतें झूठी हैं और उन के सांस है ही नहीं॥ १५। वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं जब उन के नाश किये जाने का समय आएगा[1] तब वे नाश होंगी॥ १६। पर याकूब का निज भाग उन के समान नहीं है वह तो इस सब का बनानेहारा है और इस्राएल् उस के निज भाग का गोत्र है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है॥

१७। हे घेरे हुए नगर की रहनेहारी अपनी गठरी भूमि पर से उठा॥ १८। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि मैं अब की बेर इस देश के रहनेहारों को मानो गोफन में धरके फेंक दूंगा और उन्हें ऐसे संकट में डालूंगा कि उन को समझ पड़ेगा॥१९। मुझ पर हाय मेरी चोट चंगी होने की नहीं फिर मैं सोचता हूं कि यह तो मेरा ही रोग है सो मुझ को इसे सहना ही चाहिये॥ २०। मेरा तंबू लूटा गया और सब रस्सियां टूट गईं मेरे लड़केवाले निकल गये और नहीं मिलते अब कोई नहीं रहा जो मेरे तंबू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे॥ २१। क्योंकि चरवाहे पशु सरीखे हो गये और यहोवा को नहीं पूछा इस कारण वे बुद्धि से नहीं चलते और उन की सब भेड़ें तितर बितर हो गई हैं॥ २२। एक शब्द सुनाई देता है उत्तर की दिशा से बड़ा हुल्लड़ मच रहा है वह आ रहा है कि यहूदा के नगरों को उजाड़कर गीदड़ों का स्थान बनाए॥ २३। हे यहोवा मैं जान गया हूं कि मनुष्य की गति उस के वश में नहीं रहती मनुष्य चलता तो है पर अपने पैर स्थिर नहीं कर सकता॥ २४। हे यहोवा मेरी ताड़ना बिचार करके कर पर कोप में आकर नहीं ऐसा न हो कि मैं नाश हो जाऊं[2]॥ २५। जो जाति तुझे नहीं जानतीं और जो कुल तुझ से प्रार्थना नहीं करता उन्हों पर अपनी जलजलाहट भड़का[3] क्योंकि उन्हों ने याकूब को

(१) मूल में उन के दण्ड होने के समय। (२) मूल में तू मुझे घटाएगा। (३) मूल में अपनी जलजलाहट उंडेल।

निगल लिया वरन खाकर अन्त कर दिया और उस के वासस्थान को उजाड़ दिया है ॥

११. यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि इस वाचा के वचन सुनो और यहूदा के पुरुषों और यरूशलेम् के रहनेहारों से बातें करो ॥ ३। और उन से कह इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सापित हो वह मनुष्य जो इस वाचा के वचन न माने , ४। जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं के साथ लोहे की भट्ठी अर्थात् मिस्र देश में से निकालने के समय यह कहके बांधी थी कि मेरी सुनो और जितनी आज्ञाएं मैं तुम्हें दूं उन सभों को मानो तब तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा ॥ ५। और इस प्रकार जो किरिया मैं ने तुम्हारे पितरों से खाई थी कि जिस देश में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं सो मैं तुम को दूंगा उस किरिया को पूरी करूंगा। और अब देखो वह पूरी तो हुई है । यह सुनकर मैं ने कहा कि हे यहोवा सत्य वचन है[१] ॥

६। तब यहोवा ने मुझ से कहा ये सब वचन यहूदा के नगरों और यरूशलेम् की सड़कों में प्रचार करके कह कि इस वाचा के वचन सुनो और इस के अनुसार काम करो, ७। कि जिस समय से मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से छुड़ा ले आया आज के दिन लों मैं उन को दृढ़ता से चिताता आया हूं कि मेरी बात सुनो ॥ ८। पर उन्हों ने मेरी न सुनी न मेरी ओर कान लगाया वरन अपने अपने बुरे मन के हठ पर चले और मैं ने उन के विषय इस वाचा की सब बातों को जिस के मानने की मैं ने उन्हें आज्ञा दिई और उन्हों ने न मानी पूरा किया है ॥

९। फिर यहोवा ने मुझ से कहा यहूदियों और यरूशलेम् के वासियों में द्रोह की गोष्ठी पाई गई है ॥ १०। जैसे इन के पुरखा मेरे वचन सुनने से नकारते थे वैसे ही ये उन के अधर्म्मों के अनुसार करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उन की उपासना करते हैं इस्राएल् और यहूदा के घरानों ने उस वाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी तोड़ दिया है ॥ ११। इस लिये यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इन पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं जिस से ये बच न सकेंगे और चाहे ये मेरी दोहाई दें पर मैं इन की न सुनूंगा ॥ १२। उस समय यरूशलेम् आदि यहूदा के नगरों के निवासी जाकर उन देवताओं की जिन के लिये वे धूप जलाते हैं दोहाई देंगे पर वे उन की विपत्ति के समय उन को कुछ भी न बचा सकेंगे ॥ १३। हे यहूदा जितने तेरे नगर उतने तेरे देवता भी हैं और यरूशलेम् के निवासियों ने एक एक सड़क में उस लजवानेहारे बाल् की वेदियां बना बनाकर उस के लिये धूप जलाया है ॥ १४। सो तू मेरी इस प्रजा के लिये प्रार्थना मत कर न तो इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से प्रार्थना कर क्योंकि जिस समय ये अपनी विपत्ति के मारे मेरी दोहाई देंगे तब मैं इन की न सुनूंगा ॥

१५। मेरी प्यारी को मेरे घर में तेरा क्या काम है उस ने तो बहुतों के साथ कुकर्म्म किया और तेरी पवित्रता पूरी रीति से जाती रही है[१] क्योंकि जब तू बुराई करती है तब तू हुलसती है ॥ १६। यहोवा ने तुझ को हरी मनोहर सुन्दर फलवाल जलपाई तो कहा था पर उस ने बड़े जोर शोर से उस में आग लगाई और उस की डालियां तोड़ डाली गई ॥ १७। और सेनाओं का यहोवा जिस ने तुझे लगाया उस ने तुझ पर विपत्ति डालने के लिये कहा है[२] इस का कारण इस्राएल् और यहूदा के घराने की वह बुराई है जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने के लिये बाल के निमित्त धूप जलाकर किया॥

१८। और यहोवा ने मुझे बताया सो यह बात मुझे मालूम हो गई क्योंकि हे यहोवा तू ने उन की युक्तियां मुझ पर प्रगट किईं ॥ १९। मैं तो वध होनेहारे[३] भेड़ के पालतू बच्चे के समान अनजान था मैं जानता न था कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियां

(१) मूल में हे यहोवा आमेन् ।

(१) मूल में पवित्र मांस तुझ पर से चला गया । (२) मूल में उस ने तेरे विषय बुराई कही । (३) मूल में बध के लिये पहुंचाये जानेहारे ।

यह कहकर करते हैं कि आओ हम फल[1] समेत इस वृक्ष को उखाड़ दें और जीवतों के बीच में से काट डालें तब इस का नाम फिर स्मरण न रहे ॥ २० । पर अब हे सेनाओं के यहोवा हे धर्म्मी न्यायी हे मन की जाननेहारे जब तू उन्हें पलटा दे तब मैं उसे देखने पाऊं क्योंकि मैं ने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है[2] ॥ २१ । इस लिये यहोवा ने मुझ से कहा अनातोत् के लोग जो तेरे प्राण के खोजी हैं और यह कहते हैं कि तू यहोवा का नाम लेकर नबूवत न कर नहीं तो हमारे हाथों से मरेगा, २२ । सो उन के विषय सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं उन को दण्ड दूंगा उन में के जवान तो तलवार से और उन के लड़के लड़कियां भूख से मरेंगी ॥ २३ । और उन में से कोई भी बचा न रहेगा मैं अनातोत् के लोगों पर विपत्ति डालूंगा उन के दण्ड का दिन[3] आनेहारा है ॥

१२. हे यहोवा यदि मैं तुझ से मुकद्दमा लड़ूं तो तू धर्म्मी ठहरेगा तौभी मुझे अपने संग इस विषय वादविवाद करने दे कि दुष्टों की चाल क्यों सफल होती है क्या कारण है कि जितने बड़ा विश्वासघात करते हैं सो बहुत सुख से रहते हैं ॥ २ । तू ने उन को रोपा और उन्हों ने जड़ भी पकड़ी वे बढ़ते और फूलते फलते भी हैं वे मुंह से तो तुझे निकट ठहराते पर मन से दूर रहते हैं ॥ ३ । हे यहोवा तू मुझे जानता है तू मुझे देखता और मेरे मन को जांचकर जान भी लिया है कि मैं तेरी ओर कैसा रहता हूं सो जैसे भेड़बकरियां घात होने के लिये झुंड में से निकाली जाती हैं वैसे ही उन को भी निकाल ले और वध के दिन के लिये तैयार[4] कर रख ॥ ४ । कब लों देश विलाप करता रहेगा और सारे मैदान की घास सूखी रहेगी देश के निवासियों की बुराई के कारण पशु पक्षी सब बिलाय गये हैं क्योंकि उन लोगों ने कहा कि वह हमारे अन्त को देखने न पाएगा ॥

(१) मूल में सोजभवस्तु । (२) मूल में तुझी को प्रगट किया है । (३) मूल में बरस । (४) मूल में पवित्र ।

५ । तू जो प्यादों के संग दौड़कर थक गया तो घोड़ों के संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा और अब लों तो तू शांति के इस देश में निडर है पर यर्दन के आस पास के घने जंगल में[1] तू क्या करेगा । ६ । तेरे भाई और तेरे घराने के लोगों ने भी तेरा विश्वासघात किया है वे भी तेरे पीछे ललकारते आये इस कारण चाहे वे तुझ से मीठी बातें भी कहें तौभी उन की प्रतीति न करना ॥ ७ । मैं ने अपना घर छोड़ दिया और अपना निज भाग त्याग दिया मैं ने अपनी प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में कर दिया है ॥ ८ । क्योंकि मेरा निज भाग मेरे देखने में वन में के सिंह के समान हुआ वह मेरे विरुद्ध गरजा है इस कारण मैं ने उस से बैर किया है ॥ ९ । क्या मेरा निज भाग मेरे लेखे में चित्तीवाले और मांसाहारी पक्षी के समान नहीं हुआ जिसे और मांसाहारी पक्षी घेर लेते हों सब बनैले जन्तुओं के भी खा डालने के लिये एकट्ठे करो ॥ १० । मेरी दाख की बारी को बहुत से चरवाहों ने नाश कर दिया उन्हों ने मेरे भाग को लताड़ा वरन मेरे मनोहर भाग के खेत को निर्जन जंगल बना दिया है ॥ ११ । उन्हों ने उस को उजाड़ दिया और वह उजड़कर मेरे साम्हने विलाप कर रहा है सारा देश उजड़ गया इस का कारण यह है कि कोई नहीं सोचता ॥ १२ । जंगल में के सब मुंडे टीलों पर नाश करनेहारे चढ़े हैं यहोवा की तलवार देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे लों नाश करती जाती है किसी मनुष्य को शांति नहीं मिलती ॥ १३ । उन्हों ने गेहूं तो बोया पर कटीले पेड़ काटे उन्हों ने कष्ट तो उठाया पर उस से कुछ लाभ न हुआ यहोवा के कोप भड़कने के कारण अपने खेतों की उपज के विषय में तुम्हारी आशा टूटेगी ॥

१४ । मेरे जो दुष्ट पड़ोसी उस भाग पर जिस का भागी मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल् को किया हाथ लगाते हैं उन के विषय यहोवा यों कहता है कि मैं उन को उन की भूमि में से उखाड़ डालूंगा पीछे यहूदा के घराने को उन के बीच से उखाड़ूंगा ॥

(१) मूल में यर्दन की बढ़ाई में ।

१५। फिर उन्हें उखाड़ने के पीछे मैं उन पर दया करूंगा और उन में से एक एक को उस के निज भाग और देश में फिर रोपूंगा ॥१६। और यदि जिस प्रकार से उन्हों ने मेरी प्रजा को बाल् की किरिया खाना सिखाया है उसी प्रकार से वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही नाम की किरिया यह कहकर खाने लगें कि यहोवा के जीवन की सों तो मेरी प्रजा के बीच उन का भी वंश बढ़ेगा[१] ॥ १७। पर यदि वे न मानें तो मैं ऐसी जाति को ऐसा उखाड़ूंगा कि वह फिर कभी न पनपेगी यहोवा की यही वाणी है ॥

१३. यहोवा ने मुझ से यों कहा कि जाकर सनी की एक पेटी मोल ले और कमर में बांध और जल में मत भीगने दे॥ २। सो मैं ने यहोवा के वचन के अनुसार एक पेटी मोल लेकर अपनी कमर में बांध लिई ॥ ३। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ४। जो पेटी तू ने मोल लेकर कटि में कसी है सो परात् के तीर पर ले जा और वहां उस को कड़ाड़े में की एक दरार में छिपा दे ॥ ५। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मैं ने उस को परात् के तीर पर ले जाकर छिपा रक्खा ॥ ६। बहुत दिनों के पीछे यहोवा ने मुझ से कहा फिर परात् के पास जा और जिस पेटी को मैं ने तुझे वहां छिपाने की आज्ञा दिई सो वहां से ले ले॥ ७। सो मैं ने फिर परात् के पास जा खोदकर जिस स्थान में मैं ने पेटी को छिपाया था वहां से उस को निकाल लिया और देखो पेटी बिगड़ गई वह किसी काम की न रही॥ ८। तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ९। यहोवा यों कहता है कि इसी प्रकार से मैं यहूदियों का गर्व्व और यरूशलेम् का बड़ा गर्व्व तोड़ दूंगा ॥ १०। इस दुष्ट जाति के लोग जो मेरे वचन सुनने को नाह करते और अपने मन के हठ पर चलते और दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उन की उपासना और उन को दण्डवत करते हैं सो इस पेटी के समान होंगे जो किसी काम की नहीं रही ॥ ११। यहोवा की यह वाणी है कि जिस प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी जाती है उसी प्रकार से मैं ने इस्राएल् के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपनी कटि में बांध लिया है कि वे मेरी प्रजा ठहरके मेरे नाम और कीर्त्ति और शोभा का कारण हों पर उन्हों ने न माना ॥ १२। सो तू उन से यह वचन कह कि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिये जाते हैं तब वे तुझ से कहेंगे क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिये जाते हैं॥ १३। तब तू उन से कहना यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं इस देश के सब रहनेहारों को विशेष करके दाऊद-वंश की गद्दी पर विराजनेहारे राजा और याजक और नबी आदि यरूशलेम् के सब निवासियों को अपने कोपरूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर दूंगा[१] ॥ १४। तब मैं उन्हें एक दूसरे पर बाप को बेटे पर और बेटे को बाप पर पटक दूंगा। यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन पर न कोमलता न तरस करूंगा और न दया करके उन को नाश होने से बचाऊंगा ॥

१५। सुनो और कान लगाओ गर्व्व मत करो क्योंकि यहोवा ने यों कहा है ॥ १६। अपने परमेश्वर यहोवा की महिमा उस से पहिले करो कि वह अन्धकार करे और तब रात को पहाड़ों पर ठोकर खाओ और जब तुम प्रकाश का आसरा देखते रहो तब वह उस को सन्ती तुम पर घोर अंधकार और बड़ा अन्धियारा छा दे ॥ १७। यदि तुम इसे न सुनो तो मैं निराले स्थानों में तुम्हारे गर्व्व के कारण रोऊंगा। और आंख से आंसुओं की धारा बहती रहेगी क्योंकि यहोवा की भेड़ें हर लिई गई हैं ॥

१८। राजा और राजमाता से कह कि नीचे बैठ जाओ क्योंकि तुम्हारे सिरों पर जो शोभायमान मुकुट हैं सो उतार लिये जाएंगे ॥ १९। दक्खिन देश के नगर घेरे गये कोई उन्हें बचा[२] न सकेगा

(१) मूल में वे बन जायेंगे।

(१) मूल में नियासियों को मतवालेपन से भरूंगा।
(२) मूल में खोल्।

यहूदी जाति सब बंधुई हो गई वह तो बिलकुल बंधुआई में चली गई है ॥

२० । अपनी आंखें उठाकर उन को देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं वह सुन्दर भुण्ड कहां है सो तुझे सौंपा गया ॥ २१ । जब वह तेरे उन मित्रों को जिन्हें तू ने अपनी हानि करने की शिक्षा दिई है तेरे ऊपर प्रधान ठहराएगा तब तू क्या कहेगी क्या उस समय तुझे जननेहारी की सी पीड़ें न उठेंगी ॥ २२ । और यदि तू अपने मन में सोचे कि मुझ पर ये बातें किस कारण पड़ी हैं तो तेरा घांघरा जो उठाया गया और तेरी एड़ियां जो बरियाई से नंगी किई गईं इस का कारण तेरा बड़ा अधर्म्म है ॥ २३ । क्या हबशी अपना चमड़ा वा चीता अपने धब्बे बदल सकता यदि कर सकें तो तू भी जो बुराई करना सीख गई है भलाई कर सकेगी ॥ २४ । इस कारण मैं उन को ऐसा तितर बितर करूंगा जैसा भूसा जंगल के पवन से तितर बितर किया जाता है ॥ २५ । यहोवा की यह वाणी है कि तेरा बांट और मुझ से ठहराया हुआ तेरा भाग यही है इस लिये कि तू ने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रक्खा है ॥ २६ । सो मैं भी तेरा घांघरा तेरे मुंह लों उठाऊंगा तब तेरी पत उतर जाएगी ॥ २७ । व्यभिचार और चोचला[1] और छिनाला आदि तेरे घिनौने काम जो तू ने मैदान के टीलों पर किये सो सब मैं ने देखा है हे यरूशलेम् तुझ पर हाय तू तो शुद्ध नहीं होती, और कितने दिन लों बनी रहेगी ॥

१४. यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास सूखा पड़ने के विषय

पहुंचा कि, २ । यहूदा विलाप करता और फाटकों में लोग शोक का पहिरावा पहिरे हुए भूमि पर उदास बैठे हैं और यरूशलेम् की चिल्लाहट आकाश लों पहुंच गई है[2] ॥ ३ । और उन के बड़े लोग उन के छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं और वे गड़हों पर आकर पानी नहीं पाते सो छूछे बर्तन लिये हुए घर लौट जाते हैं वे लज्जित और निराश होकर सिर ढांप लेते हैं ॥ ४ । देश में पानी न पड़ने से भूमि में दरार पड़ गये इस कारण किसान लोग निराश होकर सिर ढांप लेते हैं ॥ ५ । हरिणी मैदान में बच्चा जनकर छोड़ जाती है इस लिये कि हरी घास नहीं मिलती ॥ ६ । और बनैले गदहे भी मुंडे टीलों पर खड़े हुए गीदड़ों की नाईं हांपते हैं उन की आंखें धुंधला जाती हैं इस लिये कि हरियाली कुछ नहीं है ॥

७ । हे यहोवा हमारे अधर्म्म के काम हमारे विरुद्ध साक्षी देते तौभी हे कि हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गये और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया तौभी तू अपने नाम के निमित्त काम कर ॥ ८ । हे इस्रा-एल् के आधार हे संकट के समय उस के बचानेहारे तू ही है तू इस देश में परदेशी की नाईं क्यों रहता है तू क्यों उस बटोही के समान है जो कहीं रात भर रहने के लिये टिकता हो ॥ ९ । तू विस्मित पुरुष के और ऐसे वीर के सरीखा क्यों होता है जो बचा न सकता हो हे यहोवा तू हमारे बीच में और हम तेरे कहलाये हैं सो हम को न तज ॥

१० । यहोवा ने इन लोगों के विषय यों कहा कि इन को ऐसा भटकना अच्छा लगता है और कुमार्ग में चलने से ये नहीं रुके इस लिये यहोवा इन से प्रसन्न नहीं और इन का अधर्म्म स्मरण करेगा और इन के पाप का दण्ड देगा ॥ ११ । फिर यहोवा ने मुझ से कहा मेरी इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर ॥ १२ । चाहे वे उपवास भी करें तौभी मैं इन की दोहाई न सुनूंगा और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएं तौभी मैं इन से प्रसन्न न हूंगा मैं तलवार महंगी और मरी के द्वारा इन का अन्त कर डालूंगा ॥ १३ । तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा देख नबी इन से कहते हैं कि न तो तुम पर तलवार चलेगी और न महंगी होगी यहोवा तुम को इस स्थान में सदा की शांति[1] देगा ॥ १४ । और यहोवा ने मुझ से कहा नबी मेरा नाम लेकर झूठी नबूवत करते हैं मैं ने इन को न

(१) मूल में हिनहिनाना । (२) मूल में चिल्लाहट चढ गई है ।

(१) मूल में सच्चाई की शांति ।

तो भेजा और न कुछ आज्ञा दिई और न उन से कोई भी बात कही वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से भावी कहने की व्यर्थ और धोखे की नबूवत करते हैं ॥ १५। इस कारण जो नबी लोग मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर नबूवत करते हैं कि इस देश में न तो तलवार चलेगी और न महंगी होगी उन के विषय यहोवा यों कहता है कि वे नबी आप तलवार और महंगी से नाश किये जाएंगे ॥ १६। और जिन लोगों से वे नबूवत करते हैं न तो उन का और न उन की स्त्रियों और बेटे बेटियों का कोई मिट्टी देनेहारा रहेगा सो महंगी और तलवार के द्वारा मर जाने पर वे यरूशलेम् की सड़कों में फेंक दिये जाएंगे यों मैं उन की बुराई उन्हीं को भुगताऊंगा[1] ॥ १७। सो तू उन से यह बात कह कि मेरी आंखों से रात दिन आंसू लगातार बहते रहेंगे क्योंकि मेरे लोगों की कुंवारी कन्या बहुत ही तोड़ी गई और घायल हुई है ॥ १८। यदि मैं मैदान में जाऊं तो देखने में क्या आएगा कि तलवार के मारे हुए पड़े हैं और यदि मैं फिर नगर के भीतर आऊं तो देखने में क्या आएगा कि भूख से अधमूए पड़े हैं[2] फिर नबी और याजक अनजाने देश में मारे मारे फिरते हैं ॥

१९। क्या तू ने यहूदा से बिलकुल हाथ उठा लिया क्या तू सिय्योन् से घिना गया है नहीं तो तू ने क्यों हम को ऐसा मारा है कि हम चंगे नहीं हो सकते हम शान्ति की बाट जोहते आये हैं तौभी हमें कुछ कल्याण नहीं मिला और यद्यपि हम अच्छे हो जाने की आशा करते आये हैं तौभी घबराना ही पड़ा है ॥ २०। हे यहोवा हम अपनी दुष्टता और अपने पुरखाओं के अधर्म्म को भी मान लेते हैं कि हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है ॥ २१। तौभी अपने नाम के निमित्त हमारा तिरस्कार न कर और अपने तेजोमय सिंहासन का अपमान न कर जो वाचा तू ने हमारे साथ बांधी है उसे स्मरण कर और न तोड़ ॥ २२। क्या अन्यजातियों के निकम्मों में से कोई वर्षा कर सकता है क्या आकाश झड़ियां लगा सकता है हे हमारे परमेश्वर यहोवा क्या तू ही ऐसा करनेहारा नहीं है सो हम लोग ही आसरा देखते रहेंगे क्योंकि इन सारी वस्तुओं का रचनेहारा तू ही है ॥

(१) मूल में उन्हीं पर उंडेलूंगा। (२) मूल में भूख के रोगी हैं।

१५. फिर यहोवा ने मुझ से कहा यदि मूसा और शमूएल् भी मेरे साम्हने खड़े होते तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता सो इन को मेरे साम्हने से निकाल और वे निकल जाएं ॥ २। और यदि ये तुझ से पूछें कि हम कहां निकल जाएं तो कहना कि यहोवा यों कहता है कि जो मरनेवाले हैं सो मरने को चले जाएं और जो तलवार से मरनेवाले हैं सो तलवार से मरने को और जो भूखों मरनेवाले हैं सो भूखों मरने को और जो बंधुए होनेहारे हैं सो बंधुआई में चले जाएं ॥ ३। और यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन के विरुद्ध चार प्रकार की वस्तु[1] ठहराऊंगा अर्थात् मार डालने के लिये तलवार और फाड़ डालने के लिये कुत्ते और नोच डालने के लिये आकाश के पक्षी और फाड़ खाने के लिये मैदान के जीवजन्तु ॥ ४। और मैं उन्हें ऐसा करूंगा कि वे पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे यह हिज़किय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा मनश्शे के उन कामों के कारण होगा जो उस ने यरूशलेम् में किये ॥ ५। हे यरूशलेम् तुझ पर कौन तरस खाएगा और कौन तेरे लिये शोक करेगा वा कौन तेरा कुशल पूछने को मुड़ेगा ॥ ६। यहोवा की यह वाणी है कि तू जो मुझ को त्यागकर पीछे हट गई है इस लिये मैं तुझ पर हाथ बढ़ाकर तेरा नाश करूंगा क्योंकि मैं तरस खाते खाते उकता गया हूं ॥ ७। सो मैं ने उन को देश के फाटकों में सूप से फटक दिया है उन्हों ने जो कुमार्ग को नहीं छोड़ा इस से मैं ने अपनी प्रजा को निर्वंश किया और नाश भी किया ॥ ८। उन की विधवाएं मेरे देखने में समुद्र की बालू के किनकों से अधिक हो गई हैं उन में के जवानों की माता के विरुद्ध मैं

(१) मूल में चार कुल।

दुपहरी को लूटनेहारा लाया हूं मैं ने उन को अचानक संकट में डाल दिया और घबरा दिया है ॥ ९ । सात लड़कों की माता भी सूख गई और प्राण भी छोड़ दिया उस का सूर्य्य दोपहर ही को अस्त हो गया उस की आशा टूट गई और उस के मुंह पर सियाही छा गई और जो बचेंगे उन को भी मैं शत्रुओं की तलवार से मरवा डालूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

१० । हे मेरी माता मुझ पर हाय कि तू मुझ ऐसे मनुष्य को जनी जो संसार भर से झगड़ा और वादविवाद करनेहारा ठहरा है न तो मैं ने ब्याज के लिये रुपैये दिये और न किसी ने मुझ को ब्याज पर रुपैये दिये हैं तौभी सब लोग मुझे कोसते हैं ॥

११ । यहोवा ने कहा निश्चय मैं तेरी भलाई के लिये तुझे दृढ़ करूंगा निश्चय मैं विपत्ति और कष्ट के समय शत्रु से भी तेरी बिनती कराऊंगा ॥ १२ । क्या कोई पीतल वा लोहा वा उत्तर दिशा का लोहा तोड़ सकता है ॥ १३ । मैं तेरी धन संपत्ति और खजाने उस के सब पापों के कारण जो सारे देश में हुए बिना दाम लिये लुट जाने दूंगा ॥ १४ । मैं ऐसा करूंगा कि तेरा धन शत्रुओं के साथ ऐसे देश में जिसे तू नहीं जानती चला जाएगा क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है और वह तुम में लग जाएगी ॥

१५ । हे यहोवा तू तो जानता है मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेहारों से मेरा पलटा ले तू धीरज के साथ कोप करनेहारा है इस लिये मुझे न उठा ले जान रख कि तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है ॥ १६ । जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा मैं तेरा कहलाता हूं ॥ १७ । तेरी छाया मुझ पर हुई मैं मन बहलानेहारों के बीच बैठकर नहीं हुलसा तेरे हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा क्योंकि तू ने मुझे क्रोध से भर दिया है ॥ १८ । मेरी पीड़ा क्यों लगातार बनी रहती मेरी चोट का क्यों कुछ उपाय नहीं है क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देनेहारी नदी और सूखनेहारे जल के सरीखा होगा ॥

१९ । यह सुनकर यहोवा ने यों कहा कि यदि तू फिरे तो मैं तुझे फिरके अपने साम्हने खड़ा करूंगा और यदि तू अनमोल को निकम्मे में से निकाले तो मेरे मुख के समान होगा । वे लोग तेरी ओर फिरें तो फिरें पर तू उन की ओर न फिरना ॥ २० । और मैं तुझ को उन लोगों के साम्हने पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा वे तुझ से लड़ेंगे पर तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने के लिये तेरे संग हूं यहोवा की यही वाणी है ॥ २१ । और मैं तुझे दुष्ट लोगों के हाथ से बचाऊंगा और उपद्रवी लोगों के पंजे से छुड़ाऊंगा ॥

१६. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । इस स्थान में विवाह करके बेटे बेटियां मत जन्मा ॥ ३ । क्योंकि जो बेटे बेटियां इस स्थान में उत्पन्न हों और उन की माताएं जो उन्हें जनी हों और उन के पिता जो उन्हें इस देश में जन्माये हों उन के विषय यहोवा यों कहता है कि, ४ । वे बुरी बुरी रीतियों से मरेंगे और न कोई उन के लिये छाती पीटेगा न उन को मिट्टी देगा वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़े रहेंगे और तलवार और महंगी से मर मिटेंगे और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के जीवजन्तुओं का आहार होंगी ॥ ५ । यहोवा ने कहा कि जिस घर में रोना पीटना हो उस में न जाना और न छाती पीटने के लिये कहीं जाना न इन लोगों के लिये शोक करना क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने अपनी शांति और करुणा और दया इन लोगों पर से खींच लिई है ॥ ६ । सो इस देश में के छोटे बड़े सब मरेंगे न तो इन को मिट्टी दिई जाएगी और न इन के लिये लोग छाती पीटेंगे न अपना शरीर चीरेंगे न सिर मुंडाएंगे, ७ । न लोग इन के लिये शोक करनेहारों को रोटी बांटेंगे कि शोक में इन को शांति दें और न लोग पिता वा माता

के मरने पर भी किसी को शांति के कटोरे में दाखमधु पिलाएंगे ॥ ८। फिर तू जेवनार के घर में भी इन के संग खाने पीने के लिये न जाना॥ ९। क्योंकि सेनाओं का यहोवा इस्राएल् का परमेश्वर यों कहता है कि सुन मैं इन लोगों के देखते इन्हीं दिनों में ऐसा करूंगा कि इस स्थान में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे वा दुल्हिन का शब्द ॥ १०। और जब तू इन लोगों से ये सब बातें कहे और वे तुझ से पूछें कि यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी विपत्ति डालने को क्यों कहा है हमारा क्या अधर्म्म है और हम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कौन सा पाप किया है, ११। तो तू इन लोगों से कहना कि यहोवा की यह वाणी है कि तुम्हारे पुरखा तो मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के पीछे चले और उन की उपासना करते और उन को दण्डवत् करते थे और इस प्रकार उन्हों ने मुझ को त्याग दिया और मेरी व्यवस्था पर न चले ॥ १२। और जितनी बुराई तुम्हारे पुरखाओं ने किई थी उस से अधिक तुम करते हो तुम अपने बुरे मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते ॥ १३। इस कारण मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूंगा जिस को न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा जानते थे और वहां तुम रात दिन दूसरे देवताओं की उपासना करते रहोगे और वहां मैं तुम पर कुछ अनुग्रह न करूंगा ॥

१४। फिर यहोवा की यह वाणी हुई कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में यह फिर न कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों ॥ १५। वरन यह कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों को उत्तर के देश से और उन सब देशों से वहां उस ने उन को बरबस कर दिया था छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों क्योंकि मैं उन को उन के निज देश में जो मैं ने उन के पितरों को दिया था लौटा ले आऊंगा ॥ १६। सुनो यहोवा की यह वाणी है कि मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजूंगा कि वे इन लोगों को पकड़ लें और फिर मैं बहुत से बहेलियों को बुलवा भेजूंगा और वे इन को अहेर करके सब पहाड़ों और पहाड़ियों पर से और ढांगों की दरारों में से निकालेंगे ॥ १७। क्योंकि उन की सारी चालचलन मेरी आंखों के साम्हने प्रगट है न तो वह मेरी दृष्टि से छिपी है और न उन का अधर्म्म मेरी आंखों से गुप्त है॥ १८। सो पहिले मैं उन के अधर्म्म और पाप का दूना दण्ड दूंगा इस लिये कि उन्हों ने मेरे देश को अपनी घिनौनी वस्तुओं की लोथों से अशुद्ध किया और मेरे निज भाग को अपनी घिनौनी वस्तुओं से भर दिया है ॥

१९। हे यहोवा हे मेरे बल और दृढ़ गढ़ और संकट के समय मेरे शरणस्थान अन्यजातियों के लोग पृथिवी की छोर छोर से तेरे पास आकर कहेंगे निश्चय हमारे पुरखा झूठी व्यर्थ और निष्फल वस्तुओं को अपने भाग में करते आये हैं ॥ २०। क्या मनुष्य ईश्वरों को बना लें नहीं वे तो ईश्वर नहीं हो सकते ॥

२१। इस कारण मैं अब की वार इन लोगों को अपना भुजबल और पराक्रम जताऊंगा और ये जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है ॥

१७. १। यहूदा का पाप लोहे की टांकी और हीरे की नोक से लिखा हुआ है वह उन के हृदयरूपी पटिया और उन की वेदियों के सींगों पर भी खुदा हुआ है ॥ २। फिर उन की जो वेदियां और अशेरा नाम देवियां हरे पेड़ों के पास और ऊंचे टीलों के ऊपर हैं सो उन के लड़कों को भी स्मरण रहती हैं ॥ ३। हे मेरे पर्वत तू जो मैदान में है मैं तेरी धन संपत्ति और सारा भण्डार और पूजा के ऊंचे स्थान जो तेरे सारे देश में पाये जाते हैं तेरे पाप के कारण लुट जाने दूंगा॥ ४। और तू अपने ही दोष के कारण अपने उस भाग का जो मैं ने तुझे दिया है अधिकारी न रहने पाएगा और मैं ऐसा करूंगा कि तू अनजाने देश में अपने शत्रुओं की सेवा करेगा क्योंकि तू ने मेरे कोप की आग ऐसी भड़काई कि वह सदा लों जलती रहेगी ॥

५। यहोवा यों कहता है कि स्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता और उसी का[१]

(१) मूल में मांस का।

सहारा लेता और जिस का मन यहोवा से फिर जाता है ॥ ६ । वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा जब कल्याण होगा तब तो उस के लिये नहीं होगा पर वह निर्जल और निर्जन और लोनी भूमि पर रहनेहारा होगा ॥ ७ । धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है और उस को अपना आधार मानता है ॥ ८ । वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा और उस की जड़ जल के पास फैली हो सो जब घाम होगा तब वह उस को न लगेगा और उस के पत्ते हरे बने रहेंगे और सूखे के बरस में उस के विषय कुछ चिन्ता न होगी क्योंकि तब भी वह फलता रहेगा ॥ ९ । मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेहारा होता है और उस मे असाध्य रोग लगा है उस का भेद कौन समझ सकता है ॥ १० । मैं यहोवा मन मन को खोजता और जांचता हूं कि एक एक जन को उस की चाल के अनुसार उस के कामों का फल दूं ॥ ११ । जो अन्याय से धन बटोरता सो उस तीतर के समान होता है जो दूसरी चिड़िया के[1] दिये हुए अण्डों को सेवे वैसा ही वह धन उस मनुष्य को आधी आयु में छोड़ जाता है और अंत में वह मूढ़ ही ठहरता है ॥

१२ । हमारा पवित्र स्थान आदि से ऊंचे स्थान पर रक्खा हुआ एक तेजोमय सिंहासन है ॥ १३ । हे यहोवा हे इस्राएल् के आधार जितने तुझ को छोड़ देते हैं उन सभों की आशा टूटेगी और जो मुझ से फिर जाते हैं उन के नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे इस लिये कि उन्हों ने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है ॥ १४ । हे यहोवा मुझे चंगा कर तब मैं चंगा हूंगा मुझे बचा तब मैं बचूंगा क्योंकि मै तेरी ही स्तुति करता हूं[2] ॥ १५ । सुन वे मुझ से कहते हैं कि यहोवा का वचन कहां रहा वह अभी पूरा हो जाए ॥ १६ । पर तू मेरा हाल जानता है कि तेरे पीछे चलते हुए मैं ने उतावली करके चरवाहे का काम नहीं छोड़ा और न मैं ने उस आनेवाली निरुपाय विपत्ति की लालसा किई है बरन जो कुछ मैं बोलता था सो तुझ पर प्रगट होता था ॥ १७ । सो तू मुझे न घबरा दे संकट के दिन मेरा शरणस्थान तू ही है ॥ १८ । हे यहोवा मेरी आशा टूटने न दे पर मेरे सतानेहारों की आशा टूटे मुझे विस्मित न होना पड़े उन्हीं को विस्मित होना पड़े उन पर विपत्ति डाल और उन को चूर चूर कर ॥

१९ । यहोवा ने मुझ से यों कहा कि जाकर सदर फाटक में खड़ा हो जिस से यहूदा के राजा भीतर बाहर आया जाया करते हैं बरन यरूशलेम् के सब फाटकों में भी खड़ा हो, २० । और उन से कह हे यहूदा के राजाओ और सब यहूदियो और यरूशलेम् के सब निवासियो हे सब लोगो जो इन फाटकों से होकर भीतर जाते हो यहोवा का वचन सुनो ॥ २१ । यहोवा यों कहता है कि सावधान रहो विश्राम के दिन कोई बोझ मत उठा ले जाओ और न कोई बोझ यरूशलेम् के फाटकों के भीतर ले आओ ॥ २२ । फिर विश्रामदिन अपने अपने घर से भी कोई बोझ बाहर मत ले जाओ और न किसी रीति का कामकाज करो बरन उस आज्ञा के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिई थी विश्रामदिन को पवित्र माना करो ॥ २३ । पर उन्हों ने न सुनी और न कान लगाया पर इस लिये हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें ॥ २४ । और यहोवा की यह वाणी है कि यदि तुम सचमुच मेरी सुनो और विश्रामदिन इस नगर के फाटकों के भीतर कोई बोझ न ले आओ बरन विश्रामदिन को पवित्र मानो और उस मे किसी रीति का काम काज न करो, २५ । तब तो इस नगर के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए हाकिमों और यहूदा के लोग और यरूशलेम् के निवासी प्रवेश किया करेंगे और यह नगर सदा लों बसा रहेगा ॥ २६ । और यहूदा के नगरों से और यरूशलेम् के आस पास से और बिन्यामीन् के देश से और नीचे के देश से और पहाड़ी देश से और दक्खिन देश से लोग होमबलि मेलबलि अन्नबलि लोबान् और धन्यवादबलि लिये

(१) मूल में अपने न । (२) मूल में तू ही मेरी स्तुति है ।

हुए यहोवा के भवन में आया करेंगे ॥ २७ । पर यदि तुम मेरी सुनकर विश्रामदिन को पवित्र न मानो पर उस दिन यरूशलेम् के फाटकों से बोझ लिये हुए प्रवेश करते रहो तो मैं यरूशलेम् के फाटकों में आग लगाऊंगा और उस से यरूशलेम् के महल भी भस्म हो जाएंगे और वह आग फिर न बुझेगी ॥

१८. यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २ । उठकर कुम्हार के घर जा और वहां मैं तुझे अपने वचन सुनाऊंगा ॥ ३ । सो मैं कुम्हार के घर गया तो क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है ॥ ४ । और जो बासन वह मिट्टी का बनाता था सो बिगड़ गया तब उस ने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया ॥

५ । तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ६ । हे इस्राएल् के घराने यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता देख जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है वैसा ही हे इस्राएल् के घराने तुम भी मेरे हाथ में हो ॥ ७ । जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय में कहूं कि उसे उखाडूंगा वा ढा दूंगा वा नाश करूंगा, ८ । तब यदि उस जाति के लोग जिस के विषय मैं ने वह बात कही हो बुराई से फिरें तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊंगा ॥ ९ । फिर जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि मैं उसे बनाऊंगा और रोपूंगा, १० । तब यदि वे उस काम को करें सो मेरे लेखे बुरा है और मेरी बात न मानें तो मैं उस कल्याण के विषय जिसे मैं ने उन के लिये करने को कहा हो पछताऊंगा ॥ ११ । सो अब तू यहूदा के लोगों और यरूशलेम् के निवासियों से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध कल्पना कर रहा हूं सो तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिरो और अपना अपना चालचलन और काम सुधारो ॥ १२ । वे तो कहते हैं ऐसा होने की आशा नहीं हो सकती हम तो अपनी ही अपनी कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे ॥ १३ । इस कारण मैं यहोवा यों कहता हूं कि अन्यजातियों में पूछ कि ऐसी बातें कभी किसी के सुनने में आई हैं, इस्राएल् की कुमारी ने जो काम किया है उस के सुनने से रोंए खड़े होते हैं ॥ १४ । क्या लबानोन् का हिम जो चटान पर से मैदान में बहता है बन्द हो सकता है क्या वह ठण्डा जल जो दूर से[1] बहता है कभी सूख[2] सकता है ॥ १५ । मेरी प्रजा तो मुझे भूल गई है और निकम्मी वस्तुओं के लिये धूप जलाया है और उन्हों ने उन के प्राचीन काल के मार्गों में ठोकर खिलाकर उन्हें पगडण्डियों और बेहड़[3] मार्गों में चलाया है, १६ । कि उन का देश उजड़ जाए और लोग उस पर सदा ताली बजाते रहें जो कोई उस के पास से चले सो चकित होगा और सिर हिलाएगा ॥ १७ । मैं उन को पुरवाई से उड़ाकर शत्रु के साम्हने से तितर बितर कर दूंगा मैं उन की विपत्ति के दिन उन को मुंह नहीं पर पीठ दिखाऊंगा ॥

१८ । तब वे कहने लगे चलो हम यिर्मयाह् के विरुद्ध युक्तियां करें क्योंकि न याजक से व्यवस्था न ज्ञानी से सम्मति न नबी से वचन दूर हो जाएंगे सो आओ हम उस की कोई बात पकड़कर उसे नाश कराएं[4] और फिर उस की किसी बात पर ध्यान न दें ॥

१९ । हे यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और जो लोग मेरे साथ झगड़ते हैं उन की बातें सुन ॥ २० । क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार किया जाए, तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उन की भलाई के लिये तेरे साम्हने प्रार्थना करने को खड़ा हुआ कि तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए और अब उन्हों ने मेरे प्राण लेने के लिये गड़हा खोदा है ॥ २१ । इस लिये उन के लड़केबालों को भूख से मरने दे और वे तलवार से कट मरें[5] और उन की

(१) मूल में. सो परदेशी । (२) मूल में. उखड़ । (३) मूल में. अनचने । (४) मूल में. हम उस की जीभ मारें ।
(५) मूल में. उन्हें तलवार के हाथों में सौंप दे ।

स्त्रियां निर्वंश और विधवा हो जाएं और उन के पुरुष मरी से मरें और जवान लड़ाई में तलवार से मारे जाएं॥ २२। जब तू उन पर अचानक दल चढ़ाएगा तब उन के घरों से चिल्लाहट सुनाई दे क्योंकि उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा और मेरे फंसाने को फन्दे लगाये हैं॥ २३। हे यहोवा तू तो उन की सब युक्तियां जानता है जो वे मेरी मृत्यु के लिये करते हैं सो तू उन के इस अधर्म्म को ढांप न देना न उन के पाप को अपने साम्हने से मिटा देना वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएं तू कोप में आकर उन से इसी प्रकार का व्यवहार कर॥

१९. यहोवा ने यों कहा जाकर कुम्हार की बनाई हुई मिट्टी की एक सुराही मोल ले और प्रजा के पुरनियों में से और याजकों के पुरनियों में से भी कितनों को साथ लेकर हिन्नोमियों की तराई में उस फाटक के निकट चला जा जहां ठीकरे फेंक दिये जाते हैं और जो वचन मैं कहूं उसे वहां प्रचार कर॥ ३। तू यह कहना कि हे यहूदा के राजाओ और यरूशलेम् के सब निवासियो यहोवा का वचन सुनो इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं इस स्थान पर ऐसी विपत्ति डाला चाहता हूं कि जो कोई उस का समाचार सुने वह सन्नाटे में आ जाएगा[1]॥ ४। क्योंकि यहां के लोगों ने मुझे त्याग दिया और इस स्थान को पराया कर दिया और इस में दूसरे देवताओं के लिये जिन को न तो वे जानते हैं और न उन के पुरखा वा यहूदा के पुराने राजा जानते थे धूप जलाया और इस स्थान को निर्दोषों के लोहू से भर दिया है, ५। और बाल् की पूजा के ऊंचे स्थानों को बनाकर अपने लड़केवालों को बाल् के लिये होम कर दिया यद्यपि इस की आज्ञा मैं ने कभी न दिई न उस की चर्चा किई न वह कभी मेरे मन में आया॥ ६। इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान फिर तोपेत् वा हिन्नोमियों की तराई न कहाएगा घात ही की तराई कहाएगा॥ ७। और मैं इस स्थान में यहूदा और यरूशलेम् की युक्तियों को निष्फल कर दूंगा और उन को उन के प्राण के शत्रुओं के हाथ से तलवार चलवाकर गिरा दूंगा और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और भूमि के जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा॥ ८। और मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इसे देख के ताली बजाएंगे और जो कोई इस के पास से चले सो इस की सारी विपत्तियों के कारण चकित होगा और ताली बजाएगा॥ ९। और घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में उन के प्राण के शत्रु इन को डालेंगे मैं इन्हें इन्हीं के बेटे बेटियों का और एक दूसरे का भी मांस खिलाऊंगा॥ १०। तब तू उस सुराही को उन मनुष्यों के साम्हने जो तेरे संग जाएंगे तोड़ देना॥ ११। और उन से कहना कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार यह मिट्टी का बासन जो टूट गया सो फिर बनाया न जाएगा इसी प्रकार मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूंगा और तोपेत् नाम तराई में इतनी कबरें होंगी की कबर के लिये और स्थान न रहेगा॥ १२। यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस स्थान और इस के रहनेहारों से ऐसा ही काम करूंगा मैं इस नगर को तोपेत् के तुल्य बना दूंगा॥ १३। और यरूशलेम् के सब घर और यहूदा के राजाओं के भवन जिन की छतों पर आकाश की सारी सेना के लिये धूप जलाया और दूसरे देवताओं के लिये तपावन दिया गया है सो तोपेत् के बराबर अशुद्ध हो जाएंगे॥

१४। तब यिर्मयाह् तोपेत् से जहां यहोवा ने उसे नबूवत करने को भेजा था लौट आकर यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा हुआ और सब लोगों से कहने लगा, १५। इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं सब गांवों समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति जो मैं ने इस

(१) मूल में उस के कान सनसनावेंगे।

पर डालने को कहा है डाला चाहता हूं क्योंकि उन्हों ने हठ करके मेरे वचन को न माना है ॥

२०. जब यिर्मयाह् यह नबूवत कर रहा था तब इम्मेर् का पुत्र पशहूर् जो याजकऔर यहोवा के भवन का प्रधान रखवाल था सो सुन रहा था ॥ २ । सो पशहूर् ने यिर्मयाह् नबी को मारा और उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के भवन के ऊपरवार बिन्यामीन् के फाटक के पास है॥ ३। फिर बिहान को पशहूर् ने यिर्मयाह् को काठ में से निकलवाया तब यिर्मयाह् ने उस से कहा यहोवा ने तेरा नाम पशहूर् नहीं मागोर्मिस्साबीब्[१] रक्खा है ॥ ४ । क्योंकि यहोवा ने यों कहा है कि सुन मैं तुझे तेरे ही लिये और तेरे सब मित्रों के लिये भी भय का कारण ठहराऊंगा और वे अपने शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही मर जाएंगे और मैं सारे यहूदियों को बाबेल् के राजा के वश में कर दूंगा और वह उन को बन्धुए करके बाबेल् में ले जाएगा और तलवार से मार डालेगा ॥ ५ । फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इस में की कमाई और इस में की सब अनमोल वस्तुएं और यहूदा के राजाओं का जितना रक्खा हुआ धन है उस सब को उन के शत्रुओं के वश में कर दूंगा और वे उस को लूटकर अपना कर लेंगे और बाबेल् में ले जाएंगे ॥ ६ । और हे पशहूर् तू उन सब समेत जो तेरे घर में रहते हैं बन्धुआई में चला जाएगा और तू अपने उन मित्रों समेत जिन से तू ने झूठी नबूवत किई बाबेल् जाएगा और वहीं मरेगा और वहीं तुझे और उन्हें मिट्टी दिई जाएगी ॥

७ । हे यहोवा तू ने मुझे धोखा दिया और मैं ने धोखा खाया तू मुझ से बलवन्त है इस से तू मुझ पर प्रबल हो गया मेरी दिन भर हंसी होती है और सब कोई मुझ से ठट्ठा करते हैं ॥ ८ । जब जब मैं बातें करता हूं तब तब उपद्रव हुआ उपद्रव उत्पात हुआ उत्पात ऐसा चिल्लाना पड़ता है क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठट्ठे का कारण होता रहता है ॥ ९ । और यदि मैं कहूं कि मैं उस की चर्चा न करूंगा न उस के नाम से बोलूंगा तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी कि मानो मेरी हड्डियों में भड़की हुई आग है और मैं अपने को रोकते रोकते हार जाता और सह नहीं सकता ॥ १० । मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना चारों ओर भय ही भय है मेरे सब जानी पहिचानी जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते हैं सो कहते हैं कि उस के दोष बताओ तब हम उन की चर्चा फैला देंगे क्या जानिये वह धोखा खाए तो हम उस पर प्रबल होकर उस से पलटा लेंगे ॥ ११ । पर यहोवा भयंकर वीर सा है वह मेरे संग है इस कारण मेरे सतानेहारे प्रबल न होंगे वे ठोकर खाकर गिरेंगे वे बुद्धि से काम नहीं करते सो उन्हें बहुत लजाना पड़ेगा उन का अनादर सदा बना रहेगा और कभी बिसर न जाएगा ॥ १२ । और हे सेनाओं के यहोवा हे धर्म्मियों के जांचनेहारे और मन की जाननेहारे जो पलटा तू उन से लेगा सो मैं देखने पाऊं क्योंकि मैं ने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है ॥ १३ । यहोवा के लिये गाओ यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को कुकर्म्मियों के हाथ से बचाता है ॥

१४ । स्रापित हो वह दिन जिस में मैं उत्पन्न हुआ जिस दिन मेरी माता मुझ को जनी सो धन्य न हो ॥ १५ । स्रापित हो वह जन जिस ने मेरे पिता को यह समाचार देकर कि तेरे लड़का उत्पन्न हुआ उस को बहुत आनन्दित किया ॥ १६ । उस जन की दशा उन नगरों की सी हो जिन्हें यहोवा ने बिन पछताये ढा दिया और उसे सबेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की ललकार सुन पड़ा करे ॥ १७ । क्योंकि उस ने मुझे गर्भ ही में न मार डाला कि मेरी माता का गर्भ मेरी कबर होती और मैं उसी में सदा पड़ा रहता ॥ १८ । मैं क्यों उत्पात और शोक भोगने और अपना जीवनकाल नामधराई में काटने को जन्मा ॥

(१) अर्थात् चारों ओर भय ही भय ।

२१. यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह् के पास उस समय पहुंचा, जब सिद्किय्याह् राजा ने उस के पास मल्किय्याह् के पुत्र पशहूर् और मासेयाह् याजक के पुत्र सपन्याह् के हाथ से यह कहला भेजा कि, २। हमारे लिये यहोवा से पूछ क्योंकि बाबेल् का राजा नबूकद्रेस्सर् हमारे विरुद्ध युद्ध करता है क्या जानिये यहोवा हम से अपने सब आश्चर्य्यकर्म्मों के अनुसार ऐसा व्यवहार करे कि वह हमारे पास से उठ जाए ॥ ३। तब यिर्मयाह् ने उन से कहा तुम सिद्किय्याह् से यों कहो कि, ४। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुनो युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में हैं जिन से तुम बाबेल् के राजा और शहरपनाह् के बाहर घेरनेहारे कस्दियों से लड़ते हो उन को मैं लौटाकर इस नगर के बीच में एकट्ठा करूंगा ॥ ५। और मैं आप तुम्हारे साथ बढ़ाये हुए हाथ और बलवन्त भुजा से और कोप और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर लड़ूंगा ॥ ६। और मैं क्या मनुष्य क्या पशु इस नगर के सब रहनेहारों को मार डालूंगा, वे बड़ी मरी से मरेंगे ॥ ७। और यहोवा की यह वाणी है कि उस के पीछे हे यहूदा के राजा सिद्किय्याह् मैं तुझे और तेरे कर्म्मचारियों और लोगों को बरन जो लोग इस नगर में मरी तलवार और महंगी से बचे रहेंगे उन को बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् और उन के प्राण के शत्रुओं के वश में कर दूंगा और वह उन को तलवार से मार डालेगा वह उन पर न तो तरस खाएगा और न कुछ कोमलता करेगा न कुछ दया ॥ ८। और इस प्रजा के लोगों से यों कह कि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे साम्हने जीवन का उपाय और मृत्यु का भी उपाय बताता हूं ॥ ९। जो कोई इस नगर में रहे सो तलवार महंगी और मरी से मरेगा पर जो कोई निकलकर उन कस्दियों के पास जो तुम को घेर रहे हैं भाग जाए सो जीता रहेगा और उस का प्राण बचेगा ॥ १०। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिये नहीं बुराई ही के लिये किया है सो यह बाबेल् के राजा के वश में पड़ जाएगा और वह इस को फुंकवा देगा ॥

११। और यहूदा के राजकुल के लोगों से कह कि यहोवा का वचन सुनो कि, १२। हे दाऊद के घराने यहोवा यों कहता है कि भोर भोर को न्याय चुकाओ और लुटे हुए को अंधेर करनेहारे के हाथ से छुड़ाओ नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे कोप की आग भड़केगी और जलती रहेगी और कोई उसे बुझा न सकेगा ॥ १३। यहोवा की यह वाणी है कि हे तराई में और समथर देश की चटान में रहनेहारी मैं तेरे विरुद्ध हूं तुम तो कहते हो कि हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा और हमारे वासस्थान में कौन पैठ सकेगा पर मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं ॥ १४। और यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हें दण्ड देकर तुम्हारे कामों का फल तुम्हें भुगताऊंगा और मैं उस के वन में आग लगाऊंगा जिस से उस की चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा ॥

२२. यहोवा ने यों कहा कि यहूदा के राजा के भवन में उतर जाकर यह वचन कह कि, २। हे दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारे यहूदा के राजा तू अपने कर्म्मचारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत जो इन फाटकों से आया करते हैं यहोवा का वचन सुन ॥ ३। यहोवा यों कहता है कि न्याय और धर्म्म के काम करो और लुटे हुए को अंधेर करनेहारे के हाथ से छुड़ाओ और परदेशी और बपमूए और विधवा पर अन्धेर और उपद्रव न करो और इस स्थान में निर्दोषों का लोहू मत बहाओ ॥ ४। और देखो यदि तुम ऐसा करो तो इस भवन के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारे राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने अपने कर्म्मचारियों और प्रजा समेत प्रवेश किया करेंगे ॥ ५। पर यदि तुम इन बातों को न मानो तो यहोवा की यह वाणी है कि मैं अपनी ही किरिया खाता हूं कि यह भवन उजाड़ हो जाएगा ॥ ६। यहोवा यहूदा

के राजा के इस भवन के विषय यों कहता है कि तू मुझे गिलाद् देश और लबानोन् का शिखर सा देख पड़ता है पर निश्चय में तुझे जंगल और निर्जन नगर बनाऊंगा ॥ ७ । और मैं नाश करनेहारों को हथियार देकर तेरे विरुद्ध भेजूंगा वे तेरे सुन्दर देवदारुओं को काटकर आग में झोंक देंगे ॥ ८ । और जाति जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलें तब एक दूसरे से पूछेंगे कि यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों किई है ॥ ९ । तब लोग कहेंगे कि इस का कारण यह है कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् और उन की उपासना किई ॥

१० । मरे हुए के लिये मत रोओ उस के लिये विलाप मत करो जो परदेश चला गया है उसी के लिये फूट फूटकर रोओ क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्मभूमि को फिर कभी देखने न पाएगा ॥ ११ । क्योंकि यहूदा के राजा योशिय्याह् का पुत्र शल्लूम् जो अपने पिता योशिय्याह् के स्थान पर राजा हुआ और इस स्थान से निकल गया उस के विषय यहोवा यों कहता है कि वह फिर यहां लौटकर न आने पाएगा ॥ १२ । जिस स्थान में वह बन्धुआ होकर गया उसी में मर जाएगा और इस देश को फिर देखने न पाएगा ॥

१३ । उस पर हाय जो अपने घर को अधर्म्म से और अपनी ऊपरौठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है और अपने पड़ोसी से बेगारी काम कराता और उस की मजूरी नहीं देता ॥ १४ । वह कहता है कि मैं लम्बा चौड़ा घर और हवादार कोठा बनवा लूंगा और वह खिड़कियां रखवा लेता है फिर वह देवदारु की लकड़ी से पाटा और सिन्दूर से रंगा जाता है ॥ १५ । तू जो देवदारु की लकड़ी के विषय देखादेखी करता है क्या इस रीति तेरा राज्य बना रहेगा देख तेरा पिता न्याय और धर्म्म के काम करता था और वह खाता पीता और सुख से रहता था ॥ १६ । वह इस कारण सुख से रहता था कि दीन और दरिद्र लोगों का न्याय चुकाता था । यहोवा की यह वाणी है क्या ऐसा करना मुझे जानना नहीं है ॥ १७ । पर तू केवल अपना ही लाभ उठाने और निर्दोषों का खून करने और अन्धेर और उपद्रव करने पर मन और दृष्टि लगाता है ॥ १८ । इस लिये योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के विषय यहोवा यह कहता है कि जैसे लोग इस रीति कहकर रोते हैं कि हाय मेरे भाई वा हाय मेरी बहिन वा हाय मेरे प्रभु वा हाय तेरा विभव ऐसा तेरे लिये कोई विलाप न करेगा ॥ १९ । बरन उस को गदहे की नाईं मिट्टी दिई जाएगी वह घसीटकर यरूशलेम् के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा ॥

२० । लबानोन् पर चढ़कर हाय हाय कर तब बाशान् जाकर ऊंचे स्वर से चिल्ला फिर अबारीम् पहाड़ पर जाकर हाय हाय कर क्योंकि तेरे सब यार नाश हो गये ॥ २१ । मैं ने तेरे सुख के समय तुझ को चिताया था पर तू ने कहा कि मैं तेरी न सुनूंगी । तेरी बचपन ही से ऐसी बान पड़ी है कि तू मेरी नहीं सुनती ॥ २२ । तेरे सारे चरवाहे वायु से उड़ाये जाएंगे और तेरे यार बन्धुआई में चले जाएंगे निश्चय तू उस समय अपनी सारी बुराई के कारण लज्जित होगी और तेरे मुंह पर सियाही छाएगी ॥ २३ । हे लबानोन् की रहनेहारी हे देवदारु में अपना घोंसला बनानेहारी जब तुझ को जननेहारी की सी पीड़ें उठें तब तू बपुरी हो जाएगी ॥ २४ । यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौं चाहे यहोयाकीम् का पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह् मेरे दहिने हाथ की अंगूठी भी होता तौभी मैं उसे उतार फेंकता ॥ २५ । मैं तुझे तेरे प्राण के खोजियों के हाथ और जिन से तू डरता है उन के अर्थात् बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् और कसदियों के हाथ में कर दूंगा ॥ २६ । और मैं तुझे जननी समेत दूसरे एक देश में जो तुम्हारी जन्मभूमि नहीं है फेंक दूंगा और वहीं तुम मर जाओगे ॥ २७ । और जिस देश में वे लौटने की बड़ी लालसा करते हैं वहां लौटने न पाएंगे ॥

२८ । क्या यह पुरुष कोन्याह् तुच्छ और टूटा

हुआ बासन है क्या यह निकम्मा बरतन है फिर यह वंश समेत अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक दिया जाएगा ॥ २९। हे पृथिवी हे पृथिवी हे पृथिवी यहोवा का वचन सुन ॥ ३०। यहोवा यों कहता है कि इस पुरुष को निर्वंश लिखो इस का जीवनकाल तो कुशल से न बीतेगा और इस के वंश में से कोई भाग्यमान होकर दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारा वा यहूदियों पर प्रभुता करनेहारा न होगा ॥

२३. यहोवा की यह वाणी है कि उन चरवाहों पर हाय जो मेरी चराई की भेड़ बकरियों को नाश और तितर बितर करते हैं ॥ २। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरानेहारे चरवाहों से यों कहता है कि तुम ने जो मेरी भेड़ बकरियों की सुधि नहीं लिई बरन उन को तितर बितर किया और बरबस निकाल दिया इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूंगा ॥ ३। और मेरी जो भेड़ बकरियां बची हैं उन को मैं उन सब देशों में से जिन में मैं ने उन्हें बरबस कर दिया है आप फेर लाकर उन्हीं की भेडशाला में एकट्ठी करूंगा और वे फिर फूलें फलेंगी ॥ ४। और मैं उन के ऐसे चरवाहे ठहराऊंगा जो उन्हें चराएंगे और तब से वे फिर न तो डरेंगी न विस्मित होंगी और न उन में से कोई खो जाएगी यहोवा की यही वाणी है ॥

५। यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि मैं दाऊद के कुल में एक धर्म्मी पल्लव को उगाऊंगा और वह राजा होकर बुद्धि से राज्य करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म्म करेगा ॥ ६। उस के दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे और उस का यहोवा हमारी धार्म्मिकता नाम रक्खा जाएगा ॥ ७। सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं जिन में लोग फिर न कहेंगे कि यहोवा जो हम इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों ॥ ८। वे यही कहेंगे कि यहोवा जो हम इस्राएल् के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी जहां उस ने हमें बरबस कर दिया छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों और वे अपने ही देश में बसे रहेंगे ॥

९। नबियों के विषय मेरा हृदय भीतर भीतर फटा जाता है मेरी सब हड्डियां थरथराती हैं यहोवा ने जो पवित्र वचन कहे हैं उन्हें सुनकर मैं ऐसे मनुष्य के समान हो गया हूं जो दाखमधु के नशे में चूर हो गया हो ॥ १०। क्योंकि यह देश व्यभिचारियों से भरा है इस पर ऐसा स्राप पड़ा है कि यह विलाप कर रहा है वन में की चराइयां भी सूख गईं और लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं पर बुराई ही की ओर, और वीरता तो करते हैं पर अन्याय ही में[१] ॥ ११। क्योंकि नबी और याजक दोनों भक्तिहीन हो गये अपने भवन में भी मैं ने उन की बुराई पाई है यहोवा की यही वाणी है ॥ १२। इस कारण उन का मार्ग अन्धेरा और फिसलहा होगा जिस में वे ढकेलकर गिरा दिये जाएंगे और यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन के दण्ड के बरस में उन पर विपत्ति डालूंगा ॥ १३। शोमरोन् के नबियों में तो मैं ने यह मूर्खता देखी थी कि वे बाल् के नाम से नबूवत करते और मेरी प्रजा इस्राएल को भटका देते थे ॥ १४। पर यरूशलेम् के नबियों में मैं ने ऐसे काम देखे हैं जिन से रोएं खड़े हो जाते हैं अर्थात् व्यभिचार और पाखण्ड, और वे कुकर्म्मियों को ऐसा हियाव बन्धाते हैं कि ये अपनी अपनी बुराई से नहीं फिरते सब निवासी मेरे लेखे में सदोमियों और अमोरियों के समान हो गये हैं ॥ १५। इस कारण सेनाओं का यहोवा यरूशलेम् के नबियों के विषय यों कहता है कि सुन मैं उन को कड़वी वस्तुएं खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा क्योंकि उन के कारण सारे देश में भक्तिहीनता फैल गई है ॥

१६। सेनाओं के यहोवा ने तुम से यों कहा है कि इन नबियों की बातें की ओर जो तुम से नबूवत करते हैं कान मत लगाओ क्योंकि ये तुम को व्यर्थ

(१) मूल में और उन की दौड़ बुरी और उन की वीरता नाहक है।

बातें सिखाते हैं ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं अपने ही मन की बातें कहते हैं ॥ १७ । जो लोग मेरा तिरस्कार करते हैं उन से ये नबी सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है कि तुम्हारा कल्याण होगा और जितने लोग अपने हठ ही पर चलते हैं उन से ये कहते हैं कि तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी ॥ १८ । भला कौन यहोवा की गुप्त सभा में खड़ा होकर उस का वचन सुनने और समझने[1] पाया वा किस ने ध्यान देकर मेरा वचन सुना है ॥ १९ । सुनो यहोवा की जलजलाहट की आंधी और प्रचण्ड बवण्डर चलने लगा है और उस का झोंका दुष्टों के सिर पर बल से लगेगा ॥ २० । और जब लों यहोवा अपना काम और अपनी युक्तियों को पूरा न कर चुके तब लों उस का कोप शान्त न होगा । अन्त के दिनों में तुम इस बात को भली भांति समझ सकोगे ॥ २१ । ये नबी मेरे बिना भेजे दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे नबूवत करने लगते हैं ॥ २२ । और यदि ये मेरी गुप्त सभा में खड़े होते तो मेरी प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते और वे अपनी बुरी चाल और कामों से फिर जाते ॥ २३ । यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूं जो दूर नहीं निकट ही रहता हो ॥ २४ । फिर यहोवा की यह वाणी है कि क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है कि मैं उसे न देख सकूं क्या स्वर्ग और पृथिवी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं ॥ २५ । मैं ने इन नबियों की भी बातें सुनी हैं जो मेरे नाम से यह कह कहकर झूठी नबूवत करते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है स्वप्न ॥ २६ । जो नबी झूठमूठ नबूवत करते और अपने छली मन ही के नबी हैं इन के मन में यह बात कब लों समाई रहेगी ॥ २७ । जैसा मेरी प्रजा के लोगों के पुरखा मेरा नाम भूलकर बाल् का नाम लेने लगे थे वैसा ही अब ये नबी उन से अपने अपने स्वप्न बता बताकर मेरा नाम बिसरवाने चाहते हैं ॥ २८ । जो किसी नबी ने स्वप्न देखा हो तो वह उसे बताए और जो किसी ने मेरा वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए यहोवा की यह वाणी है कि कहां भूसा और कहां गेहूं ॥ २९ । यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले ॥ ३० । यहोवा की यह वाणी है कि सुनो जो नबी मेरे वचन औरों से चुरा चुराकर बोलते हैं इन के मैं विरुद्ध हूं ॥ ३१ । फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो नबी उस को यह वाणी है ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी अपनी जीभ डुलाते हैं उन के भी मैं विरुद्ध हूं ॥ ३२ । फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो मेरे बिना भेजे वा मेरी बिना आज्ञा पाये स्वप्न देखने का झूठा दावा करके नबूवत करते हैं और उस का वर्णन करके मेरी प्रजा को झूठे घमण्ड में आकर भरमाते हैं उन के भी मैं विरुद्ध हूं और उन से मेरी प्रजा के लोगों का कुछ लाभ न होगा ॥

३३ । यदि साधारण लोगों में से कोई जन वा कोई नबी वा याजक तुझ से पूछे कि यहोवा ने क्या भारी वचन कहा है तो उस से कहना कि क्या भारी वचन, यहोवा की यह वाणी है मैं तुम को त्याग दूंगा ॥ ३४ । और जो नबी वा याजक वा साधारण मनुष्य यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा कहता रहे उस को घराने समेत मैं दण्ड दूंगा ॥ ३५ । सो तुम लोग एक दूसरे से और अपने अपने भाई से यों पूछना कि यहोवा ने क्या उत्तर दिया वा यहोवा ने क्या कहा है ॥ ३६ । यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा तुम आगे को न कहना नहीं तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीता परमेश्वर है उस के वचन तुम लोगों ने मोड़ दिये हैं ॥ ३७ । सो तू नबी से यों पूछ कि यहोवा ने तुझे क्या उत्तर दिया वा यहोवा ने क्या कहा है ॥ ३८ । यदि तुम यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा ही कहोगे तो यहोवा का यह वचन सुनो कि मैं ने तो तुम्हारे पास कहला भेजा है कि यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा आगे को न कहना पर तुम यह कहते ही रहते हो कि

(1) मूल में देखने और सुनने ।

यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ॥ ३९ । इस कारण सुनो मैं तुम को बिलकुल भूलूंगा और तुम को और इस नगर को जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को और तुम को भी दिया है त्यागकर अपने साम्हने से दूर कर दूंगा ॥ ४० । और मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हारी नामधराई और अनादर सदा बना रहेगा और कभी बिसर न जाएगा ॥

२४.

जब बाबेल् का राजा नबूकद्रेस्सर् यहोयाकीम् के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह् को और यहूदा के हाकिमों और लोहारों और और कारीगरों को बन्धुए करके यरूशलेम् से बाबेल् को ले गया उस के पीछे यहोवा ने मुझ को अपने मन्दिर के साम्हने रक्खे हुए अंजीरों के दो टोकरे दिखाये ॥ २ । एक टोकरे में तो पहिले पके से अच्छे अच्छे अंजीर थे और दूसरे टोकरे में बहुत निकम्मे अंजीर थे बरन वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के योग्य न थे ॥ ३ । फिर यहोवा ने मुझ से पूछा हे यिर्मयाह् तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा अंजीर, जो अंजीर अच्छे हैं सो तो बहुत ही अच्छे हैं पर जो निकम्मे हैं सो बहुत ही निकम्मे हैं बरन ऐसे निकम्मे हैं कि खाने के योग्य नहीं है ॥ ४ । तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ५ । इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जैसे अच्छे अंजीरों को वैसे ही मैं यहूदी बन्धुओं को जिन्हें मैं ने इस स्थान से कस्दियों के देश में भेज दिया है देखकर प्रसन्न हूंगा ॥ ६ । और मैं उन पर कृपादृष्टि रक्खूंगा और उन को इस देश में लौटा ले आऊंगा और उन्हें नाश न करूंगा पर बनाऊंगा और उखाड़ न डालूंगा पर लगाये रक्खूंगा ॥ ७ । और मैं उन का ऐसा मन कर दूंगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा क्योंकि वे मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे ॥ ८ । और जैसे निकम्मे अंजीर निकम्मे होने के कारण खाये नहीं जाते उसी प्रकार से मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह् और उस के हाकिमों और बचे हुए यरूशलेमियों को जो इस देश में वा मिस्र में रह गये हैं छोड़ दूंगा ॥ ९ । और मेरे छोड़ने के कारण वे पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरते हुए दुःख भोगते रहेंगे और जितने स्थानों में मैं उन्हें बरबस कर दूंगा उन सभों में वे नामधराई और दृष्टान्त और स्राप का विषय होंगे ॥ १० । और मैं उन में तलवार चलाऊंगा और महंगी और मरी फैलाऊंगा और अन्त में वे इस देश में से जो मैं ने उन के पुरखाओं को और उन को दिया मिट जाएंगे ॥

२५.

योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के राज्य के चौथे बरस में जो बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के राज्य का पहिला बरस था यहोवा का जो वचन यिर्मयाह् नबी के पास पहुंचा सो यह है ॥ २ । सो यिर्मयाह् नबी ने उसी वचन के अनुसार सब यहूदियों और यरूशलेम् के सब निवासियों से कहा कि, ३ । आमोन् के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह् के राज्य के तेरहवें बरस से लेकर आज के दिन लों अर्थात् तेईस बरस से यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचता आया है और मैं तो उसे बड़े यत्न के साथ[1] तुम से कहता आया हूं पर तुम ने उसे नहीं सुना ॥ ४ । और यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को भी यह कहने को बड़े यत्न से[1] भेजता आया है पर तुम ने न तो सुना न कान लगाया है, ५ । वे ऐसा कहते आये हैं कि अपनी अपनी बुरी चाल और अपने अपने बुरे कामों से फिरो तब जो देश यहोवा ने प्राचीन काल में तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सदा के लिये दिया है उस पर बसे रहने पाओगे ॥ ६ । और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उन की उपासना और उन को दण्डवत् मत करो और न अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूंगा ॥ ७ । यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नहीं मानी बरन अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आये हो जिस से तुम्हारी हानि ही हो

(१) मूल में तड़के उठकर ।

सकती है यहोवा की यही वाणी है ॥ ८ । इस लिये सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, ९ । इस लिये सुनो मैं उत्तर में रहनेहारे सब कुलों को बुलाऊंगा और अपने दास बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् को बुलवा भेजूंगा और उन सभों को इस देश और इस के निवासियों के विरुद्ध और इस के आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊंगा और इन सब देशों को मैं सत्यानाश करके ऐसा उजाड़ूंगा कि लोग इन्हें देखकर ताली बजाएंगे वरन ये सदा उजड़े ही रहेंगे यहोवा की यही वाणी है॥ १० । और मैं ऐसा करूंगा कि इन में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे वा दुल्हिन का और न चक्की का भी शब्द सुन पड़ेगा और न इन में दिया जलेगा ॥ ११ । और सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा और ये सब जातियां सत्तर बरस लों बाबेल् के राजा के अधीन रहेंगी ॥ १२ । और यहोवा की यह वाणी है कि जब सत्तर बरस बीत चुकें तब मैं बाबेल् के राजा और उस जाति के लोगों और कस्दियों के देश के सब निवासियों को अधर्म्म का दण्ड दूंगा और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूंगा ॥ १३ । और मैं उस देश में अपने वे सब वचन जो मैं ने उस के विषय में कहे हैं और जितने वचन यिर्मयाह् ने सारी जातियों के विरुद्ध नबूवत करके पुस्तक में लिखे हैं पूरे करूंगा ॥ १४ । और बहुत सी जातियों के लोग और बड़े बड़े राजा उन से भी अपनी सेवा कराएंगे और मैं उन को उन की करनी का फल भुगताऊंगा ॥

१५ । इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने मुझ से यों कहा कि मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दे जिन के पास मैं तुझे भेजता हूं ॥ १६ । और वे पीकर उस तलवार के कारण जो मैं उन के बीच चलाऊंगा लड़खड़ाएंगे और बावले हो जाएंगे ॥ १७ । सो मैं ने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दिया जिन के पास यहोवा ने मुझे भेज दिया ॥ १८ । अर्थात् यरूशलेम् और यहूदा के और नगरों के निवासियों को और उन के राजाओं और हाकिमों को पिलाया कि उन का देश उजाड़ होए और लोग ताली बजाएं और उस की उपमा देकर स्राप दिया करें जैसा आजकल होता है ॥ १९ । और मिस्र के राजा फिरौन् और उस के कर्म्मचारियों और हाकिमों और सारी प्रजा को, २० । और सब दोगले मनुष्यों की जातियों को और ऊस् देश के सब राजाओं को और पलिश्तियों के देश के सब राजाओं को और अश्कलोन् अज्जा और एक्रोन् के और अश्दोद् के बचे हुए लोगों को, २१ । और एदोमियों मोआबियों और अम्मोनियों को, २२ । और सोर् के सारे राजाओं को और सीदोन् के सब राजाओं को और समुद्र पार के देशों के राजाओं को, २३ । फिर ददानियों तेमाइयों और बूजियों को और जितने अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं उन सभों को भी, २४ । और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेहारे दोगले मनुष्यों के सब राजाओं को, २५ । और जिम्री एलाम् और मादै के सब राजाओं को, २६ । और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया निदान धरती भर पर रहनेहारे जगत के राज्यों के सब लोगों को मैं ने पिलाया और इन सब के पीछे शेशक्[१] के राजा को भी पीना पड़ेगा ॥

२७ । तू उन से यह कह कि सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है यों कहता है कि पीओ और मतवाले हो और छांट करो और गिर पड़ो और फिर कभी न उठो यह उस तलवार के कारण से होगा जो मैं तुम्हारे बीच चलाऊंगा ॥ २८ । और यदि वे तेरे हाथ से यह कटोरा लेकर पीने को नकारें तो उन से कहना सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम को निश्चय पीना पड़ेगा ॥ २९ । देखो जो नगर मेरा कहलाता है मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके बचोगे तुम तो निर्दोष ठहरके न बचोगे क्योंकि मैं पृथिवी के सब रहनेहारों पर तलवार चलाने पर हूं सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ ३० । इतनी बातें नबूवत की रीति उन

(१) अनुमान है कि यह बाबेल् का एक नाम है ।

से कहकर यह भी कहना कि यहोवा ऊपर से गरजेगा और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध बल से गरजेगा, वह पृथिवी के सारे निवासियों के विरुद्ध भी दाख लताड़नेहारों की नाईं ललकारेगा॥ ३१। पृथिवी की छोर लों भी कोलाहल होगा क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुकद्दमा है वह सारे मनुष्यों से वादविवाद करेगा और दुष्टों को वह तलवार के वश में कर देगा॥

३२। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति में फैलेगी और बड़ी आंधी पृथिवी की छोर से उठेगी॥ ३३। उस समय यहोवा के मारे हुओं की लोथें पृथिवी की एक छोर से दूसरी छोर लों पड़ी रहेंगी उन के लिये कोई रोने पीटनेहारा न रहेगा और उन की लोथें न तो बटोरी जाएंगी न कबरों में रक्खी जाएंगी वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़ी रहेंगी॥ ३४। हे चरवाहो हाय हाय करो और चिल्लाओ हे बलवन्त मेढ़ो और बकरो राख मे लोटो क्योंकि तुम्हारे वध होने के दिन आ चुके हैं और मैं तुम को मनभाऊ बरतन की नाईं सत्यानाश करूंगा॥ ३५। उस समय न तो चरवाहों के भागने के लिये कोई स्थान रहेगा और न बलवन्त मेढ़े और बकरे भागने पाएंगे॥ ३६। चरवाहों की चिल्लाहट और बलवन्त मेढ़ों और बकरों के मिमियाने का शब्द सुन पड़ता है क्योंकि यहोवा उन की चराई को नाश करता है॥ ३७। और यहोवा के कोप भड़कने के कारण शांति के स्थान नाश हो जाएंगे जिन वासस्थानों में अब शांति है वे नाश हो जाएंगे॥ ३८। युवा सिंह की नाईं वह अपने ठौर को छोड़कर निकलता है क्योंकि अंधेर करनेहारी तलवार और उस के भड़के हुए कोप के कारण उन का देश उजाड़ हो गया॥

२६. योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के

राज्य के आरंभ में यहोवा की ओर से यह वचन पहुंचा कि, २। यहोवा यों कहता है कि यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा होकर यहूदा के सब नगरों के लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में दण्डवत् करने को आएं ये वचन कह दे जिन के विषय उन से कहने की आज्ञा मैं तुझे देता हूं उन में से कोई वचन रख मत छोड़॥ ३। क्या जानिये वे सुनकर अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उन को उस हानि से जो उन के बुरे कामों के कारण करने की कल्पना करता हूं पछताऊंगा॥ ४। सो तू उन से कह यहोवा यों कहता है कि यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम को सुनवा दिई है[1] न चलो, ५। और न मेरे दास नबियों के वचनों पर कान धरो जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके[2] भेजता आया हूं पर तुम ने उन की नहीं सुनी, ६। तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ कर दूंगा और इस नगर को ऐसा सत्यानाश कर दूंगा कि पृथिवी की सारी जातियों के लोग उस की उपमा दे देकर शाप दिया करेंगे॥ ७। जब यिर्मयाह् ये वचन यहोवा के भवन में कह रहा था तब याजक और नबी और सब साधारण लोग सुन रहे थे॥ ८। और जब यिर्मयाह् सब कुछ जिस के सारी प्रजा से कहने की आज्ञा यहोवा ने दिई थी कह चुका तब याजकों और नबियों और सब साधारण लोगों ने यह कहकर उस को पकड़ लिया कि निश्चय तेरा प्राणदण्ड होगा॥ ९। तू ने यहोवा के नाम से क्यों यह नबूवत किई कि यह भवन शीलो के समान उजाड़ हो जाएगा और यह नगर ऐसा उजड़ेगा कि उस में कोई न रह जाएगा। इतना कहकर सब साधारण लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह् के विरुद्ध भीड़ लगाई॥

१०। यह बातें सुनकर यहूदा के हाकिम राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ गये और उस के नये फाटक में बैठ गये॥ ११। तब याजकों और नबियों ने हाकिमों और सब लोगों से कहा यही मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है क्योंकि इस ने इस नगर के विरुद्ध ऐसी नबूवत किई है कि जिसे तुम

(१) मूल में तुम्हारे साम्हने रक्खी है। (२) मूल में तड़के उठके।

भी अपने कानों से सुन चुके हो॥ १२। तब यिर्मयाह् ने सब हाकिमों और सब लोगों से कहा जो वचन तुम ने सुने हैं सो यहोवा ही ने मुझे इस भवन और इस नगर के विरुद्ध नबूवत की रीति कहने के लिये भेज दिया है॥ १३। सो अब अपनी चाल चलन और अपने काम सुधारो और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानो तब यहोवा उस विपत्ति के विषय में जिस की चर्चा उस ने तुम से किई है पछताएगा॥ १४। देखो मैं तुम्हारे वश में हूं जो कुछ तुम्हारे लेखे में भला और ठीक हो सोई मेरे साथ करो॥ १५। यह निश्चय जानो कि यदि तुम मुझे मार डालो तो अपने को और इस नगर और इस के निवासियों को निर्दोष के खूनी बनाओगे क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास ये सब वचन सुनाने के लिये भेजा है॥ १६। तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और नबियों से कहा यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं क्योंकि उस ने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हम से कहा है॥ १७। और देश के पुरनियों में से कितनों ने उठकर प्रजा की सारी मण्डली से कहा॥ १८। यहूदा के राजा हिज़किय्याह् के दिनों में मोरसेती मीकायाह् नबूवत करता था सो उस ने यहूदा के सारे लोगों से कहा सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सिय्योन् जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम् डीह ही डीह हो जाएगा और भवनवाला पर्वत वनवाला स्थान हो जाएगा[1]॥ १९। क्या यहूदा के राजा हिज़किय्याह् ने वा किसी यहूदी ने उस को कहीं मरवा डाला क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना और उस से बिनती न किई और तब यहोवा ने जो विपत्ति उन पर डालने को कहा था उस के विषय क्या वह न पछताया। ऐसा करके हम अपने प्राणों की बड़ी हानि करेंगे॥ २०। फिर शमायाह् का पुत्र ऊरिय्याह् नाम किर्यत्यारीम् का एक पुरुष यहोवा के नाम से नबूवत करता था और उस ने भी इस नगर और इस देश के विरुद्ध ठीक ऐसी ही नबूवत किई जैसी यिर्मयाह् ने अभी किई है॥ २१। और जब यहोयाकीम् राजा और उस के सब वीरों और सब हाकिमों ने उस के वचन सुने तब राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न किया और ऊरिय्याह् यह सुनकर डर के मारे मिस्र में भाग गया॥ २२। सो यहोयाकीम् राजा ने मिस्र में लोग भेजे अर्थात् अक्बोर् के पुत्र एल्नातान् को कितने और पुरुषों समेत मिस्र में भेजा॥ २३। और वे ऊरिय्याह् को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम् राजा के पास ले आये और उस ने उसे तलवार से मरवाकर उस की लोथ को साधारण लोगों की कबरों में फेंकवा दिया॥ २४। पर शापान् का पुत्र अहीकाम् यिर्मयाह् का सहारा करने लगा और वह लोगों के वश में मार डालने के लिये दिया न गया॥

(1) मूल में, और भवन का पर्वत अरण्य के ऊंचे स्थान।

२७. योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम्[1] के

राज्य के आरंभ में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २। बन्धन और जूए बनवाकर अपनी गर्दन पर रख॥ ३। तब उन्हें एदोम् और मोआब् और अम्मोन् और सोर् और सीदोन् के राजाओं के पास उन दूतों के हाथ भेजना जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह् के पास यरूशलेम में आये हैं॥ ४। और उन को उन के स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना कि इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अपने अपने स्वामी से यों कहो कि, ५। पृथिवी को और पृथिवी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा से मैं ने बनाया और जिस किसी को मैं चाहता हूं उसी को मैं उन्हें दिया करता हूं॥ ६। सो अब मैं ने ये सब देश अपने दास बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् को आप दे दिये हैं और मैदान के जीवजन्तुओं को भी मैं ने उसे दिया है कि वे उस के अधीन रहें॥ ७। और ये सब जातियां उस के और उस के पीछे उस के बेटे और

(1) जान पड़ता है कि यहोयाकीम् की सन्ती सिदकिय्याह् समझना चाहिये।

पोते के अधीन तब लों रहेंगी जब लों उस के भी देश का दिन न आ ले और बहुत सी जातियां और बड़े बड़े राजा उस से अपनी सेवा करायेंगे ॥ ८। सो जो जाति वा राज्य बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् के अधीन न हो और उस का जूआ अपनी गर्दन पर न ले ले उस जाति को मैं तलवार महंगी और मरी का दण्ड तब लों देता रहूंगा जब लों उस को उस के हाथ के द्वारा न मिटा दूं यहोवा की यही वाणी है ॥ ९। सो तुम लोग अपने नबियों और भावी कहनेहारे और स्वप्न देखनेहारों और टोनहों और तांत्रिकों की ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से कहते हैं कि तुम को बाबेल् के राजा के अधीन होना न पड़ेगा ॥ १०। क्योंकि वे तुम से झूठी नबूवत करते हैं जिस से तुम अपने अपने देश से दूर हो जाओ और मैं आप तुम को दूर करके नाश कर दूं ॥ ११। पर जो जाति बाबेल् के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर लेकर उस के अधीन रहे उस को मैं उसी के देश में रहने दूंगा और वह उस में खेती करती हुई बसी रहेगी यहोवा की यही वाणी है ॥

१२। और यहूदा के राजा सिद्किय्याह् से भी मैं ने ऐसी सब बातें कहीं कि अपनी प्रजा समेत तू बाबेल् के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर ले और उस के और उस की प्रजा के अधीन रहकर जीता रह ॥ १३। जब यहोवा ने उस जाति के विषय में जो बाबेल् के राजा के अधीन न हो यह कहा है कि वह तलवार महंगी और मरी से नाश होगी तो फिर तू अपनी प्रजा समेत क्यों मरना चाहता है ॥ १४। जो नबी तुझ से कहते हैं कि तुझ को बाबेल् के राजा के अधीन हो जाना न पड़ेगा उन की मत सुन क्योंकि वे तुझ से झूठी नबूवत करते हैं ॥ १५। यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा वे मेरे नाम से झूठी नबूवत करते हैं और इस का फल यही होगा कि मैं तुझ को देश से निकाल दूंगा और तू उन नबियों समेत जो तुझ से नबूवत करते हैं नाश हो जाएगा ॥

१६। फिर याजकों और साधारण लोगों से भी मैं ने कहा यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे जो नबी तुम से यह नबूवत करते हैं कि यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबेल् से लौटा दिये जाएंगे उन के वचनों की ओर कान मत धरो क्योंकि वे तुम से झूठी नबूवत करते हैं ॥ १७। उन की मत सुनो बाबेल् के राजा के अधीन होकर और सेवा करके जीते रहो यह नगर क्यों उजाड़ हो जाए ॥ १८। और यदि वे नबी भी हों और यहोवा का वचन उन के पास हो तो वे सेनाओं के यहोवा से विनती करें कि जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम् में रह गये हैं सो बाबेल् न जाने पाएं ॥ १९। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो खंभे और पीतल का गंगाल और पाये और और पात्र इस नगर में रह गये हैं, २०। जिन्हें बाबेल् का राजा नबूकद्नेस्सर् उस समय न ले गया जब वह यहोयाकीम् के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह् को और यहूदा और यरूशलेम् के सब कुलीनों को बंधुआ करके यरूशलेम् से बाबेल् को ले गया, २१। जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम् में रह गये हैं उन के विषय इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि, २२। वे भी बाबेल् में पहुंचाये जाएंगे और जब लों मैं उन की सुधि न लूं तब लों वहीं रहेंगे और तब मैं उन्हें ले आकर इस स्थान में फिर रखाऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

२८. फिर उसी बरस के अर्थात् यहूदा के राजा सिद्किय्याह् के राज्य के चौथे बरस के पांचवें महीने में अज्जूर् का पुत्र हनन्याह् जो गिबोन् का एक नबी था उस ने मुझ से यहोवा के भवन में याजकों और सब लोगों के साम्हने कहा, २। इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने बाबेल् के राजा के जूए को तोड़ डाला है ॥ ३। यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबेल् का राजा नबूकद्नेस्सर् इस स्थान से उठाकर बाबेल् ले गया उन्हें मैं दो बरस

के भीतर फिर इसी स्थान में ले आऊंगा ॥ ४ । और यहूदा का राजा यहोयाकीम् का पुत्र यकोन्याह् और सब यहूदी बंधुए जो बाबेल् को गये हैं उन को भी मैं इस स्थान में फेर ले आऊंगा क्योंकि मैं ने बाबेल् के राजा के जूए को तोड़ दिया है यहोवा की यही वाणी है ॥ ५ । यिर्मयाह् नबी ने हनन्याह् नबी से याजकों और उन सब लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में खड़े हुए थे कहा, ६ । आमेन् यहोवा ऐसा ही करे जो बातें तू ने नबूवत करके कही हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब बन्धुए बाबेल् से इस स्थान में फिर आएंगे उन्हें यहोवा पूरा करे ॥ ७ । तौभी मेरा यह वचन सुन जो मैं तुझे और सब लोगों को कह सुनाता हूं ॥ ८ । जो नबी प्राचीन काल से मेरे और तेरे पहिले होते आये थे उन्हों ने तो बहुत से देशों और बड़े बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध और विपत्ति और मरी के विषय में नबूवत किई थी ॥ ९ । जो नबी कुशल के विषय में नबूवत करे तब उस का वचन पूरा हो तब ही उस नबी के विषय निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है ॥ १० । तब हनन्याह् नबी ने उस जूए को जो यिर्मयाह् नबी की गर्दन पर था उतारके तोड़ दिया ॥ ११ । और हनन्याह् ने सब लोगों के साम्हने कहा यहोवा यों कहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो बरस के भीतर बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् के जूए को सब जातियों की गर्दन पर से उतारके तोड़ दूंगा । तब यिर्मयाह् नबी चला गया ॥ १२ । जब हनन्याह् नबी ने यिर्मयाह् नबी की गर्दन पर से जूआ उतारके तोड़ दिया उस के पीछे यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, १३ । जाकर हनन्याह् से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि तू ने काठ का जूआ तो तोड़ दिया पर ऐसा करके तू ने उस की सन्ती लोहे का जूआ बना लिया है ॥ १४ । क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं इन सब जातियों की गर्दन पर लोहे का जूआ रखता हूं कि बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् के अधीन रहें और इन को उस के अधीन होना पड़ेगा और मैदान के जीवजन्तु भी मैं उस के वश कर देता हूं ॥ १५ । सो यिर्मयाह् नबी ने हनन्याह् नबी से यह भी कहा हे हनन्याह् सुन यहोवा ने तुझे नहीं भेजा तू ने इन लोगों को झूठ पर भरोसा दिया है ॥ १६ । इस लिये यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं तुझ को पृथिवी के ऊपर से उठा दूंगा इसी बरस में तू मरेगा क्योंकि तू ने यहोवा की ओर से फिरने की बातें कही हैं । इस वचन के अनुसार हनन्याह् उसी बरस के सातवें महीने में मर गया ॥

२९.

यिर्मयाह् नबी ने इस आशय की पत्री उन पुरनियों और नबियों और साधारण लोगों के पास भेजी थी जो बन्धुओं में से बचे थे । उन को नबूकद्नेस्सर् यरूशलेम् से बाबेल् को ले गया था ॥ २ । यह पत्री तब भेजी गई जब यकोन्याह् राजा और राजमाता और खोजे और यहूदा और यरूशलेम् के हाकिम और लोहार आदि कारीगर यरूशलेम् से चले गये ॥ ३ । यह पत्री शापान् के पुत्र एलासा और हिल्किय्याह् के पुत्र गमर्याह् के हाथ भेजी गई जिन्हें यहूदा का राजा सिदकिय्याह् बाबेल् के राजा नबूकद्नेस्सर् के पास बाबेल् को भेजता था ॥ ४ । जितने लोगों को मैं ने यरूशलेम् से बंधुआ कराकर बाबेल् में पहुंचवा दिया उन सभों से इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि, ५ । घर बनाकर उन में बस जाओ और बारियां लगाकर उन के फल खाओ ॥ ६ । ब्याह करके बेटे बेटियां जन्माओ और अपने बेटों के लिये स्त्रियां बरो और अपनी बेटियां पुरुषों को ब्याह दो कि वे भी बेटे बेटियां जनें और वहां घटो नहीं बढ़ते जाओ ॥ ७ । और जिस नगर में मैं ने तुम को बंधुआ कराके भेज दिया है उस के कुशल का यत्न किया करो और उस के हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो क्योंकि उस के कुशल रहने से तुम भी कुशल के साथ रहोगे ॥ ८ । इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम्हारे जो नबी और भावी कहनेहारे तुम्हारे

बीच में हैं सो तुम को बहकाने न पाएं और जो स्वप्न वे तुम्हारे निमित्त देखते हैं उन की ओर कान मत धरो॥ ९। क्योंकि वे मेरे नाम से तुम को झूठी नबूवत सुनाते हैं मुझ यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा॥ १०। यहोवा यों कहता है कि बाबेल् के सत्तर बरस पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूंगा और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में फेर ले आऊंगा पूरा करूंगा॥ ११। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं कि वे हानि की नहीं कुशल ही की हैं कि अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा¹॥ १२। उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा॥ १३। और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी क्योंकि तुम अपने सारे मन से मेरे पास आओगे॥ १४। और यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम को मिलूंगा और बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिन में मैं ने तुम को बरबस कर दिया है एकट्ठा करके इस स्थान में फेर ले आऊंगा जहां से मैं ने तुम्हें बन्धुआ कराके निकाल दिया है यहोवा की यही वाणी है॥ १५। तुम तो कहते हो कि यहोवा ने हमारे लिये बाबेल् में नबी प्रगट किये हैं॥ १६। पर जो राजा दाऊद की गद्दी पर विराजमान है और जो सारी प्रजा इस नगर में रहती है अर्थात् तुम्हारे जो भाई तुम्हारे संग बन्धुआई में नहीं गये उन सभों के विषय सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि, १७। सुनो मैं उन के बीच तलवार चलाऊंगा और महंगी करूंगा और मरी फैलाऊंगा और उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरों के सरीखे करूंगा जो निकम्मे होने के कारण खाये नहीं जाते॥ १८। और मैं तलवार महंगी और मरी लिये हुए उन का पीछा करूंगा और ऐसा करूंगा कि वे पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे और उन सब जातियों में जिन के बीच में उन्हें बरबस कर दूंगा उन की ऐसी दशा करूंगा कि लोग उन्हें देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे और उन की नामधराई करेंगे और उन की उपमा देकर साप दिया करेंगे॥ १९। यहोवा की यह वाणी है कि यह इस के बदले में होगा कि जो वचन मैं ने अपने दास नबियों के द्वारा उन के पास बड़ा यत्न करके¹ कहला भेजे हैं उन को उन्हों ने नहीं सुना यहोवा की यही वाणी है॥

२०। सो हे सारे बंधुओ जिन्हें मैं ने यरूशलेम् से बाबेल् को भेजा है तुम उस का यह वचन सुनो॥ २१। कोलायाह् का पुत्र अहाब् और मासेयाह् का पुत्र सिदकिय्याह् जो मेरे नाम से तुम को झूठी नबूवत सुनाते हैं उन के विषय इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं उन को बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के हाथ में कर दूंगा और वह उन को तुम्हारे साम्हने मार डालेगा॥ २२। और सब यहूदी बंधुए जो बाबेल् में रहते हैं सो उन की उपमा देकर यह साप दिया करेंगे कि यहोवा तुझे सिदकिय्याह् और अहाब् के समान करे जिन्हें बाबेल् के राजा ने आग में भून डाला॥ २३। इस का कारण यह है कि उन्हों ने इस्राएलियों में मूढ़ता के काम किये अर्थात् पराई स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया और मेरी बिन आज्ञा पाये मेरे नाम से झूठे वचन कहे और इस का जाननेहारा और साक्षी मैं आप ही हूं यहोवा की यही वाणी है॥

२४। और नेहेलामी शमायाह् से तू यह कह कि, २५। इस्राएल् के परमेश्वर यहोवा ने यों कहा है कि इस लिये कि तू ने यरूशलेम् के सब रहनेहारों और सब याजकों को सुनाने के लिये मासेयाह् के पुत्र सपन्याह् याजक के नाम पर अपने ही नाम की इस आशय की पत्री भेजी कि, २६। यहोवा ने जो यहोयादा याजक के स्थान पर तुझे याजक ठहरा दिया कि तू यहोवा के भवन में रखवाल होकर जितने वहां पागलपन करते और नबी बन बैठते हैं उन्हें काठ में ठोके और उन के गले में लोहे के पट्टे डाले॥ २७। सो यिर्मयाह् अनातोती जो तुम्हारा नबी बन बैठा है उस को तू ने क्यों नहीं घुड़का॥ २८। उस ने तो हम लोगों के पास बाबेल् में यह कहला

(१) मूल में तुम्हें अन्तफल और आशा देने को।

(१) मूल में तड़के उठके।

भेजा है कि यघुआई तो बहुत काल लों रहेगी सो घर बनाकर उन में बसो और बारियां लगाकर उन के फल खाओ ॥ २९। यह पत्री सपन्याह् याजक ने यिर्मयाह् नबी को पढ़ सुनाई ॥ ३०। तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, ३१। सब बंधुओं के पास यह कहला भेज कि यहोवा नेहेलामी शमायाह् के विषय यों कहता है कि शमायाह् ने जो मेरे विना भेजे तुम से नबूवत किई और तुम को झूठ पर भरोसा दिलाया है, ३२। इस लिये यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं उस नेहेलामी शमायाह् और उस के वंश को दण्ड दिया चाहता हूं उस के घर में से कोई इन प्रजाओं में न रह जाएगा ॥ ३३। और जो भलाई मैं अपनी प्रजा की करनेवाला हूं उस को वह देखने न पाएगा क्योंकि उस ने यहोवा से फिरने की बातें कही हैं यहोवा की यही वाणी है ॥

३०. यहोवा का जो वचन यिर्मयाह् को पास पहुंचा सो यह है, २। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि जो वचन मैं ने तुझ से कहे हैं उन सभों को पुस्तक में लिख दे ॥ ३। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को बन्धुआई से लौटा लूंगा और जो देश मैं ने उन के पितरों को दिया था उस में उन्हें फेर ले आऊंगा और वे फिर उस के अधिकारी होंगे यहोवा का यही वचन है ॥

४। जो वचन यहोवा ने इस्राएलियों और यहूदियों के विषय कहे थे सो ये हैं ॥ ५। यहोवा यों कहता है कि थरथरा देनेहारा शब्द सुनाई दे रहा है शान्ति नहीं भय ही होता है ॥ ६। पूछो तो और देखो क्या पुरुष भी कहीं जनता है फिर क्या कारण है कि सब पुरुष जननेहारी की नाईं अपनी अपनी कमर अपने हाथों से दबाये हुए देख पड़ते हैं और सब के मुख फीके रंग के हो गये हैं ॥ ७। हाय हाय वह दिन क्या ही भारी होगा उस के समान और कोई दिन नहीं वह याकूब के संकट का समय तो होगा पर वह उस से भी छुड़ाया जाएगा ॥ ८। और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन मैं उस का रक्खा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूंगा और तुम्हारे बन्धनों को टुकड़े २ कर डालूंगा और परदेशी फिर उन से अपनी सेवा न कराने पाएंगे ॥ ९। पर वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिस को मैं उन का राज्य करने के लिये ठहराऊंगा ॥ १०। सो हे मेरे दास याकूब तुझ से यहोवा की यह वाणी है कि मत डर और हे इस्राएल् विस्मित न हो क्योंकि मैं दूर देश से तुझे और तेरे वंश को बन्धुआई के देश से छुड़ा ले आऊंगा सो याकूब लौटकर चैन और सुख से रहेगा और कोई उस को डराने न पाएगा ॥ ११। यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारा उद्धार करने के लिये तुम्हारे संग हूं सो मैं उन सब जातियों का जिन में मैं ने तुम्हें तितर बितर किया है अन्त कर डालूंगा पर तुम्हारा अन्त न करूंगा तुम्हारी ताड़ना मैं विचार करके करूंगा और तुम्हें किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा ॥

१२। यहोवा यों कहता है कि तेरे दुःख का कोई उपाय नहीं और तेरी चोट कठिन है ॥ १३। तेरा मुकद्दमा लड़ने के लिये कोई नहीं तेरा घाव बांधने के लिये न पट्टी न मरहम है ॥ १४। तेरे सब यार तुझे भूल गये वे तुम्हारी सुधि नहीं लेते क्योंकि तेरे बड़े अधर्म्म और भारी पापों के कारण मैं ने शत्रु बनकर तुझे मारा, मैं ने क्रूर बनकर ताड़ना दिई ॥ १५। तू अपने घाव के मारे क्यों चिल्लाती है तेरी पीड़ा का कोई उपाय नहीं तेरे बड़े अधर्म्म और भारी पापों के कारण मैं ने तुझ से ऐसा व्यवहार किया है ॥ १६। पर जितने तुझे अब खाये लेते हैं सो आप खाये जाएंगे और तेरे द्रोही आप सब के सब बन्धुआई में जाएंगे और तेरे लूटनेहारे आप लुटेंगे और जितने तेरा धन छीनते हैं उन का धन मैं छिनवाऊंगा ॥ १७। यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरा इलाज करके तेरे घावों को चंगा करूंगा तेरा नाम धकियाई हुई पड़ा है और लोग

कहते हैं कि वह तो सिय्योन् है उस की चिन्ता कौन करे ॥

१८। यहोवा कहता है कि मैं याकूब के तंबू बन्धुआई से लौटाता हूं और उस के घरों पर दया करूंगा और नगर अपने ही डीह पर फिर बसेगा और राजभवन पहिली रीति के अनुसार बस जाएगा॥ १९। और वहां से धन्य कहने और आनन्द करने का शब्द सुन पड़ेगा और मैं उन का विभव बढ़ाऊंगा वे थोड़े न होंगे॥ २०। फिर उन के लड़केवाले प्राचीन काल के समान होंगे और उन की मण्डली मेरे साम्हने स्थिर रहेगी और जितने उन पर अन्धेर करते हैं उन को मैं दण्ड दूंगा॥ २१। और उन का महा पुरुष उन्हीं में से होगा और उन पर जो प्रभुता करेगा सो उन्हीं में से उत्पन्न होगा और मैं उसे अपने समीप बुलाऊंगा और वह मेरे समीप आ भी जाएगा क्योंकि कौन है जो अपने जीव पर खेला है यहोवा की यही वाणी है॥ २२। उस समय तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा॥

२३। यहोवा की जलजलाहट की आंधी चलती है वह अति प्रचण्ड आंधी है वह दुष्टों के सिर पर बल से लगेगी॥ २४। जब लों यहोवा अपना काम न कर चुके और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके तब लों उस का भड़का हुआ कोप शान्त न होगा[1]। अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे॥

३१. उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे यहोवा की यही वाणी है॥ २। यहोवा यों कहता है कि जो प्रजा तलवार से बच निकली जंगल में उन पर अनुग्रह हुआ मैं इस्राएल् को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ[2]॥

३। यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है कि मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं इस कारण मैं ने तुझे करुणा करके खींच लिया है॥ ४। हे इस्राएली कुमारी कन्या मैं तुझे फिर बसाऊंगा वहां तू फिर सिंगार करके डफ बजाने लगेगी और आनन्द करनेहारों के बीच में नाचती हुई निकलेगी॥ ५। तू शोमरोन् के पहाड़ों पर दाख की बारियां फिर लगाएगी और जो उन्हें लगाएंगे सो उन के फल भी खाने पाएंगे[1]॥ ६। क्योंकि ऐसा दिन आएगा जिस में एप्रैम् के पहाड़ी देश में के पहरुए पुकारेंगे कि उठो हम अपने परमेश्वर यहोवा के पास सिय्योन् को जाएं॥ ७। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि याकूब की श्रेष्ठ जाति के कारण आनन्द से जयजयकार करो फिर ऊंचे शब्द से स्तुति करो और कहो कि हे यहोवा अपनी प्रजा इस्राएल् के छूटे हुए लोगों का भी उद्धार कर॥ ८। मैं उन को उत्तर देश से ले आऊंगा और पृथिवी की छोर छोर से एकट्ठे करूंगा और उन के बीच अन्धे लंगड़े गर्भवती और जननेहारी स्त्रियां भी आएंगी, बड़ी मण्डली यहां लौट आएगी॥ ९। वे आंसू बहाते हुए आएंगे और गिड़गिड़ाते हुए मुझ से पहुंचाये जाएंगे और मैं उन्हें नदियों के किनारे किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊंगा कि वे ठोकर न खाने पाएंगे क्योंकि मैं इस्राएल् का पिता हूं और एप्रैम् मेरा जेठा है॥

१०। हे जाति जाति के लोगो यहोवा का वचन सुनो और दूर दूर के द्वीपों में भी इस का प्रचार करो कहो कि जिस ने इस्राएलियों को तितर बितर किया था सोई उन्हें एकट्ठे भी करेगा और उन की ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है॥ ११। यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया और उस शत्रु के पंजे से जो उस से अधिक बलवन्त है छुटकारा दिया है॥ १२। सो वे सिय्योन् की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे और अनाज नया दाखमधु टटका तेल और भेड़ बकरियों और गाय बैलों के बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान यहोवा से पाने के लिये तांता बांधकर[2] चलेंगे और उन का जीव सींची हुई बारी के समान बनेगा और वे फिर कभी उदास न होंगे॥ १३। उस समय उन में

(१) मूल में न फिरेगा। (२) मूल में, चलूंगा।

(१) मूल में साधारण भी ठहराएंगे। (२) मूल में महानद की नाईं बहेंगे।

की कुमारियां नाचती हुई आनन्द करेंगी और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे क्योंकि मैं उन के शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूंगा और शांति दूंगा और दुःख के बदले आनन्द दूंगा॥ १४। और मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा वरन मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी यहोवा की यही वाणी है॥

१५। यहोवा यह भी कहता है कि सुन रामा नगर में विलाप और बिलक बिलक रोने का शब्द सुनने में आता है राहेल् अपने लड़कों के लिये रो रही है और अपने लड़कों के कारण शांत नहीं होती क्योंकि वे जाते रहे॥ १६। सो यहोवा यों कहता है कि रोने पीटने और आंसू बहाने से रुक जा क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है और वे शत्रुओं के देश से लौट आएंगे॥ १७। यहोवा की यह वाणी है कि अन्त में तेरी आशा पूरी होगी तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आएंगे॥ १८। निश्चय मैं ने एप्रैम् को ये बातें कहकर विलपते सुना है कि तू ने मेरी ताड़ना किई और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो निकाला न गया हो पर अब तू मुझे फेर तब मैं फिरूंगा क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है॥ १९। मैं फिर जाने के पीछे पछताया और सिखाये जाने के पीछे छाती पीटी पुराने पापों को सोचकर मैं लज्जित हुआ और मेरे मुंह पर सियाही छा गई॥ २०। क्या एप्रैम् मेरा प्रिय पुत्र नहीं है क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं है जब जब मैं उस के विरुद्ध बातें करता हूं तब तब मुझे उस का स्मरण आता है इस लिये मेरा मन उस के कारण भर आता है और मैं निश्चय उस पर दया करूंगा यहोवा की यही वाणी है॥

२१। हे इस्राएली कुमारी जिस राजमार्ग से तू गई थी उसी में खंभे और दण्डे खड़े कर और अपने इन नगरों में लौट आने पर मन लगा॥ २२। हे संग छोड़नेहारी कन्या तू कब लों इधर उधर फिरती रहेगी यहोवा की तो एक नई सृष्टि पृथिवी पर प्रगट होगी अर्थात् नारी पुरुष को घेर लेगी॥

२३। इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जब मैं यहूदी बन्धुओं को उन के देश के नगरों में लौटाऊंगा तब उन में यह आशीर्वाद[1] फिर दिया जाएगा कि हे धर्म्मभरे वासस्थान हे पवित्र पर्वत यहोवा तुझे आशीष दे॥ २४। और यहूदा और उस के सब नगरों के लोग और किसान और चरवाहे[2] भी उस में एकट्ठे बसेंगे॥ २५। और मैं ने थके हुए लोगों का जीव तृप्त किया और उदास लोगों के जीव को भर दिया है॥

२६। इस पर मैं जाग उठा और देखा और मेरी नींद मुझे मीठी लगी॥

२७। सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं जिन में मैं इस्राएल् और यहूदा के घरानों के लड़केवाले और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊंगा[3]॥ २८। और जिस प्रकार से मैं सोच सोचकर[4] उन को गिराता और ढाता और नाश करता और काट डालता और सत्यानाश ही करता था उसी प्रकार से मैं अब सोच सोचकर उन को रोपूंगा और बढ़ाऊंगा यहोवा की यही वाणी है॥ २९। उन दिनों वे फिर न कहेंगे कि जंगली दाख खाई तो पुरखा लोगों ने पर दांत खट्टे हो गये हैं उन के वंश के॥ ३०। क्योंकि जो कोई जंगली दाख खाए उसी के दांत खट्टे हो जाएंगे हर एक मनुष्य अपने ही अपने अधर्म्म के कारण मारा जाएगा॥

३१। फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि मैं इस्राएल् और यहूदा के घरानों से नई वाचा बांधूंगा॥ ३२। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उन के पुरखाओं से उस समय बांधी थी जब मैं उन का हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया क्योंकि यद्यपि मैं उन का पति हुआ तौभी उन्हों ने मेरी वह वाचा तोड़ी॥ ३३। यहोवा की यह वाणी है कि जो वाचा मैं उन दिनों के पीछे इस्राएल् के घराने से बांधूंगा सो यह है कि मैं अपनी व्यवस्था उन के मन में समवाऊंगा और उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं

---

(१) मूल में वचन। (२) मूल में घूम घूमकर झुण्ड के चरानेहारे। (३) मूल में, घरानों में मनुष्य का बीज और पशु का बीज बोऊंगा। (४) मूल में जाग जागकर।

उन का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे ॥ ३४ । और तब से उन्हें फिर एक दूसरे से यह कहना न पड़ेगा कि यहोवा का ज्ञान सीखो क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े लों वे सब के सब मेरा ज्ञान रक्खेंगे क्योंकि मैं उन का अधर्म्म क्षमा करूंगा और उन का पाप फिर स्मरण न करूंगा ॥ ३५ । जिस ने दिन को प्रकाश देने के लिये सूर्य्य के और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराये और समुद्र को उछालता और उस की लहरों को गरजाता है और जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है सोई यहोवा यों कहता है कि, ३६ । जब वे नियम मेरे साम्हने से टल जाएं तब ही यह हो सकेगा कि इस्राएल् का वंश मेरे लेखे एक जाति ठहरने से सदा के लिये छूट जाए ॥ ३७ । यहोवा यों भी कहता है कि जब ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे से पृथिवी की नेव खोद खोदकर पाई जाए तब ही मैं इस्राएल् के सारे वंश के सब पापों के कारण उन से हाथ उठाऊंगा ॥ ३८ । सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि जिन में यह नगर हननेल् के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक लों यहोवा के लिये बनाया जाएगा ॥ ३९ । और मापने की रस्सी फिर आगे बढ़कर सीधी गारेब् पहाड़ी लों और वहां से घूमकर गोआ को पहुंचेगी ॥ ४० । और लोथों और राख की सारी तराई और किद्रोन् नाले लों जितने खेत हैं और घोड़ों के पूरबी फाटक के कोने लों जितनी भूमि है सो सब यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी वह नगर सदा लों फिर कभी न तो गिराया और न ढाया जाएगा ॥

३२. यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के दसवें बरस में जो नबूकद्रेस्सर् के राज्य का अठारहवां बरस था यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा ॥ २ । उस समय बाबेल् के राजा की सेना ने यरूशलेम् को घेर लिया था और यिर्मयाह् नबी यहूदा के राजा के पहरे के भवन के आंगन में कैद किया गया था ॥ ३ । क्योंकि यहूदा के राजा सिदकिय्याह् ने यह कहकर उसे कैद किया कि तू ऐसी नबूवत क्यों करता है कि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं यह नगर बाबेल् के राजा के वश में कर दूंगा सो वह इस को ले लेगा, ४ । और यहूदा का राजा सिदकिय्याह् कसदियों के हाथ से न बचेगा वह बाबेल् के राजा के वश में अवश्य ही पड़ेगा और वह और बाबेल् का राजा आपस में आम्हने साम्हने बातें करेंगे और उन की चार आंखें होंगी, ५ । और वह सिदकिय्याह् को बाबेल् में ले जाएगा और यहोवा की यह वाणी है कि जब लों मैं उस की सुधि न लूं तब लों वह वहीं रहेगा सो तुम लोग कसदियों से लड़ो तो लड़ो पर तुम्हारे लड़ने से कुछ बन न पड़ेगा ॥

६ । और यिर्मयाह् ने कहा यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचा कि, ७ । सुन शल्लूम् का पुत्र हनमेल् जो तेरा चचेरा भाई है सो तेरे पास यह कहने को आने पर है कि मेरा जो खेत अनातोत् में है सो मोल ले क्योंकि उसे मोल लेकर छुड़ाने का अधिकार तेरा ही है ॥ ८ । सो यहोवा के कहे के अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल् पहरे के आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा मेरा जो खेत बिन्यामीन् देश के अनातोत् में है सो मोल ले क्योंकि उस के स्वामी होने और उस के छुड़ा लेने का अधिकार तेरा ही है सो तू उसे मोल ले। तब मैं ने जान लिया कि वह यहोवा का वचन था ॥ ९ । सो मैं ने उस अनातोत् के खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल्से मोल लिया और उस का दाम चांदी के सत्तरह शेकेल् तौलकर दिये ॥ १० । और मैं ने दस्तावेज में दस्तखत और मोहर हो जाने पर गवाहों के साम्हने वह चांदी कांटे में तौलकर उसे दिया ॥ ११ । तब मोल लेने की दोनों दस्तावेजें जिन में सब शर्तें लिखी हुई थीं और जिन में से एक पर मोहर थी और दूसरी खुली थी उन्हें लेकर मैं ने, १२ । अपने चचेरे भाई हनमेल् के और उन गवाहों के साम्हने जिन्हों ने दस्तावेज में दस्तखत किया था और उन सब यहूदियों के साम्हने भी जो पहरे

के आंगन में बैठे हुए थे नेरिय्याह् के पुत्र बारूक् को जो महसेयाह् का पोता था सौंप दिया ॥ १३ । तब मैं ने उन के साम्हने बारूक् को यह आज्ञा दिई कि, १४ । इस्राएल् के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा ने यों कहा कि जिस पर मोहर किई हुई है और जो खुली हुई है मोल लेने की दस्तावेजों को लेकर मिट्टी के बर्तन में रख इस लिये कि ये बहुत दिन लों बनी रहें ॥ १५ । क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि इस देश में घर और खेत और दाख की बारियां फिर मोल लिई जाएंगी ॥

१६ । जब मैं ने मोल लेने की वह दस्तावेज नेरिय्याह् के पुत्र बारूक् के हाथ में दिई उस के पीछे मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना किई कि, १७ । अहो प्रभु यहोवा तू ने तो बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथिवी को बनाया और तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है ॥ १८ । तू हजारों पर करुणा करता रहता और पितरों के अधर्म्म का बदला उन के पीछे उन के वंश के लोगों को देता है । तू तो वह महान् और पराक्रमी ईश्वर है जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है ॥ १९ । तू बड़ा युक्ति करनेहारा और सामर्थी काम करनेहारा है तेरी दृष्टि मनुष्यों की सारी चालचलन पर लगी रहती है और तू एक एक को उस की चालचलन और करनी का फल भुगताता है ॥ २० । तू ने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किये और आज लों इस्राएलियों बरन सारे मनुष्यों के बीच करता आया है और इस भांति तू ने अपना ऐसा नाम किया है जो आज के दिन लों बना है ॥ २१ । और तू अपनी प्रजा इस्राएल् को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों और बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से बड़े भयानक कामों के द्वारा निकाल लाया ॥ २२ । फिर तू ने यह देश जिस के देने की तू ने उन के पितरों से किरिया खाई थी और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उन्हें दिया ॥ २३ । और वे आकर इस के अधिकारी हुए तौभी तेरी नहीं मानी और न तेरी व्यवस्था पर चले बरन जो कुछ तू ने उन को करने की आज्ञा दिई थी उस में से उन्हों ने कुछ भी नहीं किया इस कारण तू ने उन पर यह सारी विपत्ति डाली है ॥ २४ । अब इन धुसों को देख वे लोग इस नगर के ले लेने के लिये आ गये हैं और यह नगर तलवार महंगी और मरी के कारण इन चढ़े हुए कस्दियों के वश में किया गया है और जो तू ने कहा था सो अब पूरा हुआ और तू इसे देखता भी है ॥ २५ । तौभी हे प्रभु यहोवा तू ने मुझ से कहा है कि गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले पर यह नगर कस्दियों के वश में कर दिया गया है ॥

२६ । तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २७ । मैं तो सारे प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूं क्या कोई काम मेरे लिये कठिन है ॥ २८ । सो यहोवा यों कहता है कि देख मैं यह नगर कस्दियों और बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के वश में कर देने पर हूं सो वह इस को ले लेगा ॥ २९ । और जो कस्दी इस नगर से युद्ध कर रहे हैं वे आकर इस में आग लगाकर फूंक देंगे और जिन घरों की छतों पर उन्हों ने बाल् के लिये धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को तपावन देकर मुझे रिस दिलाई है वे घर जला दिये जाएंगे ॥ ३० । क्योंकि इस्राएल् और यहूदा जो काम मुझे बुरा लगता है वही लड़कपन से करते आये हैं और इस्राएली अपनी बनाई हुई वस्तुओं से मुझ को रिस ही रिस दिलाते आये हैं ॥ ३१ । यहोवा की यह वाणी है कि यह नगर जब से बसा तब से आज के दिन लों मेरे कोप और जलजलाहट के भड़कने का कारण हुआ है सो अब मैं इस को अपने साम्हने से इस कारण दूर करूंगा , ३२ । कि इस्राएल् और यहूदा अपने राजाओं हाकिमों याजकों और नबियों समेत क्या यहूदा देश के क्या यरूशलेम् के निवासी सब के सब बुराई पर बुराई करके मुझ को रिस दिलाते आये हैं ॥ ३३ । उन्हों ने तो मेरी ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है मैं उन्हें बड़े यत्न से[1]

(१) मूल में तड़के उठकर ।

सिखाता आया हूं पर उन्हों ने मेरी शिक्षा नहीं मानी ॥ ३४ । बरन जो भवन मेरा कहावता है उस में भी उन्हों ने अपनी घिनौनी वस्तुएं स्थापन करके उसे अशुद्ध किया है ॥ ३५ । और उन्हों ने हिन्नोमियों की तराई में बाल् के ऊंचे ऊंचे स्थान बनाकर अपने बेटे बेटियों को मोलेक् के लिये होम किये जिस की आज्ञा मैं ने कभी नहीं दिई और न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घिनौना काम किया जाए जिस से यहूदी लोग पाप में फंसें ॥

३६ । पर अब इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय जिसे तुम लोग तलवार महंगी और मरी के द्वारा बाबेल् के राजा के वश मे पड़ा हुआ कहते हो यों कहता है कि, ३७ । सुनो मैं उन को उन सब देशों से जिनमें मैं कोप और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर उन्हें बरबस कर दूंगा लौटा ले आकर इसी नगर में एकट्ठे करूंगा और निडर करके बसा दूंगा ॥ ३८ । और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा ॥ ३९ । और मैं उन का एक ही मन और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें जिस से उन का और उन के पीछे उन के वंश का भी भला हो ॥ ४० । और मैं उन से यह वाचा बांधूंगा कि मै कभी तुम्हारा संग[1] छोड़कर तुम्हारा भला करना न छोड़ूंगा । और मैं अपना भय उन के मन में ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे ॥ ४१ । और मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उन का भला करता रहूंगा और सचमुच उन्हें इस देश में अपने सारे मन और सारे जी से बसा दूंगा ॥ ४२ । देख यहोवा यों कहता है कि जैसे मैं ने अपनी इस प्रजा पर यह सारी बड़ी विपत्ति डाल दिई वैसे ही निश्चय इन से वह सारी भलाई भी करूंगा जिस के करने का वचन मैं ने दिया है ॥ ४३ । सो यह देश जिस के विषय तुम लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हुआ है इस मे न तो मनुष्य रह गये हैं और न पशु यह तो कस्दियों के वश में पड़ चुका है इसी में खेत फिर मोल लिये जाएंगे ॥ ४४ । बिन्यामीन् के देश में और यरूशलेम् के आसपास और यहूदा देश के अर्थात् पहाड़ी देश नीचे के देश और दक्खिन देश के नगरों में लोग गवाह बुलाकर खेत मोल लेंगे और दस्तावेज में दस्तखत और मोहर करेंगे क्योंकि मैं उन के बंधुओं को लौटा ले आऊंगा । यहोवा की यही वाणी है ॥

(१) मूल में पीछा ।

३३.

जिस समय यिर्मयाह् पहरे के आंगन में बन्द ही रहा उस समय यहोवा का वचन दूसरी बार उस के पास पहुंचा कि, २ । यहोवा जो पूरा करनेहारा है यहोवा जो उस के स्थिर होने की तैयारी करता है[1] उस का नाम यहोवा है, ३ । वह यह कहता है कि मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी बड़ी और कठिन[2] बातें बताऊंगा जिन्हें तू अब नहीं समझता ॥

४ । क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा इस नगर के घरों और यहूदा के राजाओं के भवनों के विषय जो इस लिये गिराये जाते हैं कि धुसों और तलवार के साथ सुभीते से लड़ सकें यों कहता है ॥ ५ । कस्दियों से युद्ध करने को वे लोग आते तो हैं पर मैं कोप और जलजलाहट में आकर उन को मरवाऊंगा और उन की लोथें उसी स्थान में भरवा दूंगा क्योंकि उन की दुष्टता के कारण मैं ने इस नगर से मुख फेर लिया है ॥ ६ । सुन मैं इस नगर का इलाज करके इस के वासियों को चंगा करूंगा और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूंगा ॥ ७ । और मैं यहूदा और इस्राएल् के बन्धुओं को लौटा ले आऊंगा और उन्हें पहिले की नाईं बनाऊंगा ॥ ८ । और मैं उन को उन के सारे अधर्म्म और पाप के काम से जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किये हैं शुद्ध करूंगा और उन्हों ने जितने अधर्म्म और पाप और अपराध के काम मेरे विरुद्ध किये हैं उन सब को मैं क्षमा करूंगा ॥ ९ । क्योंकि वे वह सारी भलाई सुनेंगे जो मैं उन की करूंगा और उस सारे कल्याण और सारी शान्ति की चर्चा सुनकर जो मैं उन से करूंगा डरेंगे और थरथराएंगे वह पृथिवी की उन जातियों के लेखे में मेरे लिये हर्षानेवाला और

(१) मूल में गढ़ता । (२) मूल में कोटों से घिरी ।

स्तुति और शोभा का कारण हो जाएगा॥ १०। यहोवा यों कहता है कि यह स्थान जिस के विषय तुम लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हो गया है इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु अर्थात् यहूदा देश के नगर और यरूशलेम् की सड़कें जो ऐसी सुनसान पड़ी हैं कि उन में न तो कोई मनुष्य रहता है और न कोई पशु, ११। इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द दुल्हे दुल्हिन का शब्द और इस बात के कहनेहारों का शब्द फिर सुन पड़ेगा कि सेनाओं के यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि यहोवा भला है और उस की करुणा सदा की है और यहोवा के भवन में धन्यवादबलि ले आनेहारों का भी शब्द सुनाई देगा क्योंकि मैं इस देश की दशा पहिले की नाईं ज्यों की त्यों कर दूंगा[1] यहोवा का यही वचन है॥ १२। सेनाओं का यहोवा कहता है कि सब गांवों समेत यह स्थान जो ऐसा उजाड़ है कि इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु इसी में भेड़ बकरियां बैठानेहारे चरवाहे फिर रहेंगे॥ १३। क्या पहाड़ी देश के क्या नीचे के देश के क्या दक्खिन देश के नगरों में क्या बिन्यामीन् देश में क्या यरूशलेम् के आस पास निदान यहूदा देश के सब नगरों में भेड़ बकरियां फिर गिन गिनकर चराई[2] जाएंगी यहोवा का यही वचन है॥

१४। यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि कल्याण का जो वचन मैं ने इस्राएल् और यहूदा के घरानों के विषय कहा है उसे पूरा करूंगा॥ १५। उन दिनों में और उस समय में मैं दाऊद के वंश में धर्म्म का एक पल्लव उगाऊंगा और वह इस देश में न्याय और धर्म्म के काम करेगा॥ १६। उन दिनों में यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम् निडर बसा रहेगा और उस का यह नाम रक्खा जाएगा अर्थात् यहोवा हमारी धार्म्मिकता॥ १७। यहोवा यों कहता है कि दाऊद के कुल में इस्राएल् के घराने की गद्दी पर विराजनेहारे अटूट रहेंगे॥ १८। और लेवीय याजकों के कुलों में दिन दिन मेरे लिये होमबलि चढ़ानेहारे और अन्नबलि जलानेहारे और मेलबलि चढ़ानेहारे अटूट रहेंगे॥

१९। फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २०। यहोवा यों कहता है कि मैं ने दिन और रात के विषय जो वाचा बांधी है उस को जब तुम ऐसा तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने समय में न हों, २१। तब ही जो वाचा मैं ने अपने दास दाऊद के संग बांधी है कि तेरे वंश की गद्दी पर विराजनेहारे अटूट रहेंगे सो टूट सकेगी और जो वाचा मैं ने अपनी सेवा टहल करनेहारे लेवीय याजकों के संग बांधी है वह भी टूट सकेगी॥ २२। आकाश की सेना की गिनती और समुद्र की बालू के किनकों का परिमाण नहीं हो सकता इसी प्रकार मैं अपने दास दाऊद के वंश और अपनी सेवा टहल करनेहारे लेवियों को बढ़ाकर अनगिनित कर दूंगा॥

२३। फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २४। क्या तू ने नहीं सोचा कि ये लोग यह क्या कहते हैं कि जो दो कुल यहोवा ने चुन लिये थे उन दोनों से उस ने अब हाथ उठाया है यह कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते हैं यह जाति हमारे लेखे में जाती रहेगी॥ २५। यहोवा यों कहता है कि यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे और यदि आकाश और पृथिवी के नियम मेरे ठहराये हुए न रह जाएं, २६। तो मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊंगा और इब्राहीम् इस्हाक् और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊंगा परन्तु इस के उलटे मैं उन पर दया करके उन को बंधुआई से लौटा लाऊंगा॥

३४. जब बाबेल का राजा नबूकद्नेस्सर् अपनी सारी सेना समेत और पृथिवी के जितने राज्य उस के वश में थे उन सभों के लोगों समेत भी यरूशलेम् और उस के सब गांवों से लड़ रहा था तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह्

(१) मूल में क्योंकि मैं देश की बन्धुआई को लौटा लाऊंगा।
(२) मूल में चलाने चराई।

के पास पहुंचा कि, २। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जाकर यहूदा के राजा सिद्किय्याह् से कह यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इस नगर को बाबेल् के राजा के वश में कर देने पर हूं और वह इसे फुंकवा देगा॥ ३। और तू उस के वश से बच न निकलेगा निश्चय पकड़ा जाएगा और उस के वश में कर दिया जावेगा और तेरी और बाबेल् के राजा की चार आंखें होंगी और आम्हने साम्हने बातें करोगे और तू बाबेल् को जाएगा॥ ४। तौभी हे यहूदा के राजा सिद्किय्याह् यहोवा का यह भी वचन सुन जो यहोवा तेरे विषय कहता है कि तू तलवार से मारा न जाएगा, ५। तू शान्ति के साथ मरेगा और जैसा तेरे पितरों के लिये अर्थात जो तुझ से पहिले राजा थे उन के लिये सुगंध द्रव्य जलाया गया वैसा ही तेरे लिये भी जलाया जाएगा और लोग यह कहकर कि हाय मेरे प्रभु तेरे लिये छाती पीटेंगे यहोवा की यही वाणी है॥ ६। ये सब वचन यिर्मयाह् नबी ने यहूदा के राजा सिद्किय्याह् से यरूशलेम् में उस समय कहे, ७। जब बाबेल् के राजा की सेना यरूशलेम् से और यहूदा के जितने नगर बच गये थे उन से अर्थात् लाकीश् और अजेका से लड रही थी। क्योंकि यहूदा के जो गढ़वाले नगर थे उन में से केवल वे ही रह गये थे॥

८। यहोवा का वचन यिर्मयाह् के पास इस के पीछे आया कि सिद्किय्याह् राजा ने सारी प्रजा से जो यरूशलेम् में थी यह वाचा बन्धाई कि दासों के स्वाधीन होने का इस आशय का प्रचार किया जाए, ९। कि सब लोग अपने अपने दास दासी को जो इब्री वा इब्रिन हों स्वाधीन करके जाने दें और कोई अपने यहूदी भाई से फिर अपनी सेवा न कराए॥ १०। तब तो सब हाकिमों और सारी प्रजा ने यह वाचा बांधकर कि हम अपने अपने दास दासियों को स्वाधीन करके छोड़ेंगे और फिर उन से अपनी सेवा न कराएंगे उस वाचा के अनुसार किया और उन को छोड़ दिया॥ ११। पर पीछे से वे फिरे और जिन दास दासियों को उन्हों ने स्वाधीन करके जाने दिया था उन को फिर अपने वश में लाकर दास दासी बना लिया॥ १२। तब यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, १३। इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा तुम से यों कहता है कि जिस समय मैं तुम्हारे पितरों को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया उस समय मैं ने तो आप उन से यह कहकर वाचा बांधी कि, १४। तुम्हारा जो इब्री भाई तुम्हारे हाथ में बेचा जाए उस को तुम सातवें बरस में छोड़ देना छः बरस तो वह तुम्हारी सेवा करे पर पीछे तुम उस को स्वाधीन करके अपने पास से जाने देना पर तुम्हारे पितरों ने मेरी न सुनी न मेरी ओर कान लगाया॥ १५। तुम अभी फिरे तो थे और अपने अपने भाई को स्वाधीन कर देने का प्रचार कराके जो काम मेरे लेखे में भला है उसे तुम ने किया भी था और जो भवन मेरा कहावता है उस में मेरे साम्हने वाचा भी बांधी थी॥ १६। पर अब तुम ने फिरके मेरा नाम इस रीति अशुद्ध किया कि जिन दास दासियों को तुम स्वाधीन करके उन की इच्छा पर छोड़ चुके थे उन्हें तुम ने फिर अपने वश में कर लिया है और वे तुम्हारे दास दासियां फिर बन गये हैं॥ १७। इस कारण यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरी आज्ञा के अनुसार अपने अपने भाई के स्वाधीन होने का प्रचार नहीं किया सो यहोवा की यह वाणी है कि सुनो मैं तुम्हारे इस प्रकार के स्वाधीन होने का प्रचार करता हूं कि तुम तलवार मरी और महंगी के वश में पड़ो और मैं ऐसा करूंगा कि तुम पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरो, १८। और जो लोग मेरी वाचा का उल्लंघन करते हैं और जो वाचा उन्हों ने मेरे साम्हने और बछड़े को दो भाग करके उस के दोनों अंशों के बीच होकर गये पर उस के वचनों को पूरा न किया, १९। यहूदा देश और यरूशलेम् नगर के हाकिम और खोजे और याजक और साधारण लोग जो बछड़े के अंशों के बीच होकर गये थे, २०। उन को मैं उन के शत्रुओं अर्थात् उन के प्राण के खोजियों के वश कर दूंगा और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार हो जाएंगी॥ २१। और मैं

यहूदा के राजा सिद्किय्याह् और उस के हाकिमों को उन के शत्रुओं उन के प्राण के खोजियों अर्थात बाबेल् के राजा की सेना के वश में जो तुम्हारे साम्हने से चली गई है कर दूंगा॥ २२। यहोवा की यह वाणी है कि सुनो मैं उन को आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा ले आऊंगा और वे इस से लड़कर इसे ले लेंगे और फूंक देंगे और यहूदा के नगरों को मैं ऐसा उजाड़ कर दूंगा कि कोई उन में न रहेगा॥

३५. योशिय्याह्

के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के दिनों में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २। रेकाबियों के घराने के पास जाकर उन से बातें कर और उन्हें यहोवा के भवन की एक कोठरी में ले आकर दाखमधु पिला॥ ३। तब मैं याजन्याह् को जो हबस्सिन्याह् का पोता और यिर्मयाह् का पुत्र था और उस के भाइयों और सब पुत्रों को निदान रेकाबियों के सारे घराने को लेकर, ४। यिग्दल्याह् का पुत्र हानान् जो परमेश्वर का एक जन था उस के पुत्रों की यहोवा के भवन में उस कोठरी में आया जो हाकिमों की उस कोठरी के पास थी जो शल्लूम् के पुत्र डेवढ़ी के रखवाल मासेयाह् की कोठरी के ऊपर थी॥ ५। तब मैं ने रेकाबियों के घराने को दाखमधु से भरे हुए हण्डे और कटोरे देकर कहा दाखमधु पीओ॥ ६। उन्हों ने कहा हम दाखमधु न पीएंगे क्योंकि रेकाब् के पुत्र योनादाब् ने जो हमारा पुरखा था हम को यह आज्ञा दिई थी कि तुम सदा लों दाखमधु न पीना न तुम न तुम्हारे वंश का कोई कुछ दाखमधु पीए॥ ७। और न घर बनाना न बीज बोना न दाख की बारी लगाना न तुम्हारे कोई ऐसी बारी हो अपने जीवन भर तंबुओं ही में रहा करना इस से जिस देश में तुम परदेशी हो उस में बहुत दिन लों जीते रहोगे॥ ८। सो हम रेकाब् के पुत्र अपने पुरखा योनादाब् की बात मानकर उन की सारी आज्ञाओं के अनुसार करते हैं न तो हम अपने जीवन भर कुछ दाखमधु पीते हैं और न हमारी स्त्रियां वा बेटे बेटियां पीती हैं॥ ९। और न हम घर बनाकर उन में रहते हैं न दाख की बारी न खेत न बीज रखते हैं॥ १०। हम तंबुओं ही में रहा करते हैं और अपने पुरखा योनादाब् की मानकर उस की सारी आज्ञाओं के अनुसार काम करते हैं॥ ११। परन्तु जब बाबेल् का राजा नबूकद्रेस्सर् ने इस देश पर चढ़ाई किई तब हम ने कहा चलो कस्दियों और अरामियों के दलों के डर के मारे यरूशलेम् में जाएं इस कारण हम अब यरूशलेम् में रहते हैं॥

१२। तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, १३। इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जाकर यहूदा देश के लोगों और यरूशलेम् नगर के निवासियों से कह यहोवा की यह वाणी है कि क्या तुम शिक्षा मानकर मेरी न सुनोगे॥ १४। देखो रेकाब् के पुत्र योनादाब् ने जो आज्ञा अपने वंश को दिई थी कि तुम दाखमधु न पीना सो तो मानी गई है यहां लों कि आज के दिन लों भी वे लोग कुछ नहीं पीते वे अपने पुरखा की आज्ञा मानते हैं पर यद्यपि मैं तुम से बड़ा यत्न करके[1] कहता आया हूं तौभी तुम ने मेरी नहीं सुनी॥ १५। मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को बड़ा यत्न करके[1] यह कहने को भेजता आया हूं कि अपनी बुरी चाल से फिरो और अपने काम सुधारो और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उन की उपासना मत करो तब तुम इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम को भी दिया है बसे रहने पाओगे पर तुम ने मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है॥ १६। देखो रेकाब् के पुत्र योनादाब् के वंश ने तो अपने पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी॥ १७। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है यों कहता है कि सुनो यहूदा देश और यरूशलेम् नगर के सारे निवासियों पर जितनी विपत्ति डालने की मैं ने चर्चा किई है सो उन पर अब डालता हूं क्योंकि मैं ने

(१) मूल में तड़के उठकर।

उन को सुनाया पर उन्हों ने नहीं सुना और मैं ने उन को बुलाया पर वे नहीं बोले ॥ १८ । और यिर्मयाह् ने रेकाबियों के घराने से कहा इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम ने जो अपने पुरखा योनादाब् की आज्ञा मानी वरन उस की सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उस ने कहा उस के अनुसार काम किया है, १९ । इस लिये इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि रेकाब् के पुत्र योनादाब् के वंश में ऐसा जन सदा पाया जाएगा जो मेरे सन्मुख खड़ा रहे ॥

३६. फिर योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के राज्य के चौथे बरस में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २ । एक पुस्तक लेकर जितने वचन मैं ने तुझ से योशिय्याह् के दिनों से लेकर अर्थात जब मैं तुझ से बातें करने लगा आज के दिन लों इस्राएल् और यहूदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं सब को उस में लिख ॥ ३ । क्या जानिये यहूदा का घराना उस सारी विपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना करता हूं अपनी बुरी चाल से फिरे और मैं उन के अधर्म्म और पाप को क्षमा करूं ॥ ४ । सो यिर्मयाह् ने नेरिय्याह् के पुत्र बारूक् को बुलाया और बारूक् ने यहोवा के सब वचन जो उस ने यिर्मयाह् से कहे थे उस के मुख से सुनकर पुस्तक में लिख दिये ॥ ५ । फिर यिर्मयाह् ने बारूक् से कहा मैं तो रुका हुआ हूं मैं यहोवा के भवन में नहीं जा सकता ॥ ६ । सो तू उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उस को जो वचन तू ने मुझ से सुनकर लिखे हैं सो पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाना और जितने यहूदी लोग अपने अपने नगरों से आएंगे उन को भी पढ़कर सुनाना ॥ ७ । क्या जानिये वे यहोवा से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करें और अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें क्योंकि जो कोप और जलजलाहट यहोवा ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को कहा है सो बड़ी है ॥ ८ । यिर्मयाह् नबी की इस आज्ञा के अनुसार करके नेरिय्याह् का पुत्र बारूक् ने यहोवा के भवन में उस के वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाया ॥

९ । फिर योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के राज्य के पांचवें बरस के नौवें महीने में यरूशलेम् में जितने लोग थे और यहूदा के नगरों से जितने लोग यरूशलेम् में आये थे उन्हों ने यहोवा के साम्हने उपवास करने का प्रचार किया ॥ १० । तब बारूक् ने शापान् का पुत्र गमर्याह् जो प्रधान था उस की जो कोठरी ऊपरले आंगन में यहोवा के भवन के नये फाटक के पास थी यहोवा के भवन में सब लोगों को यिर्मयाह् के सब वचन पुस्तक में से पढ़कर सुनाये ॥ ११ । तब शापान् का पुत्र गमर्याह् का पुत्र मीकायाह् यहोवा के सारे वचन पुस्तक में से सुनकर, १२ । राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया और क्या देखा कि यहां एलीशामा प्रधान और शमायाह् का पुत्र दलायाह् और अक्बोर् का पुत्र एल्नातान् और शापान् का पुत्र गमर्याह् और हनन्याह् का पुत्र सिद्किय्याह् और सब हाकिम बैठे हुए हैं ॥ १३ । और मीकायाह् ने जितने वचन उस समय सुने थे जब बारूक् ने पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाया था सो सब वर्णन किये ॥ १४ । उन्हें सुनकर सब हाकिमों ने बारूक् के पास यहूदी को जो नतन्याह् का पुत्र और शेलेम्याह् का पोता और कूशी का परपोता था यह कहने को भेजा कि जिस पुस्तक में से तू ने सब लोगों को पढ़ सुनाया सो लेते आ सो नेरिय्याह् का पुत्र बारूक् वह पुस्तक हाथ में लिये हुए उन के पास आया ॥ १५ । तब उन्हों ने उस से कहा बैठ और हमें पढ़कर सुना सो बारूक् ने पढ़कर उन को सुना दिया ॥ १६ । और जब वे उन सब वचनों को सुन चुके तब थरथराते हुए एक दूसरे को देखने लगे और बारूक् से कहा निश्चय हम राजा से इन सब वचनों का वर्णन करेंगे ॥ १७ । फिर उन्हों ने बारूक् से कहा हम से कह कि तू ने ये सब वचन उस के मुख से सुनकर किस प्रकार से लिखे ॥ १८ । बारूक् ने उन से कहा वह ये सब वचन अपने मुख

से मुझे सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में स्याही से लिखता गया ॥ १९ । तब हाकिमों ने बारूक् से कहा जा तू और यिर्मयाह् दोनों छिप जाओ और कोई न जाने कि तुम कहां हो ॥ २० । तब वे पुस्तक को एलीशामा प्रधान की कोठरी में रखकर राजा के पास आंगन में आये और राजा को वे सब वचन कह सुनाये ॥ २१ । तब राजा ने यहूदी को पुस्तक ले आने के लिये भेजा सो उस ने उसे एलीशामा प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस पास खड़े थे उन को भी पढ़कर सुना दिया ॥ २२ । और राजा शीतकाल के भवन में बैठा हुआ था क्योंकि नौवां महीना था और उस के साम्हने अंगेठी जल रही थी ॥ २३ । सो जब यहूदी तीन चार कोठे पढ़ चुका तब उस ने उसे चक्कू से काटा और जो आग अंगेठी में थी उस में फेंक दिया सो अंगेठी की आग में सारी पुस्तक जलकर भस्म हो गई ॥ २४ । और कोई न थरथराया और न किसी ने अपने कपड़े फाड़े अर्थात् न तो राजा ने और न उस के कर्म्मचारियों में से किसी ने ऐसा किया जिन्हों ने वे सब वचन सुने थे ॥ २५ । पर एल्नातान् और दलायाह् और गमर्याह् ने राजा से बिनती किई थी कि पुस्तक को न जला तौभी उस ने उन की न सुनी ॥ २६ । राजा ने राजपुत्र यरह्मेल् को और अज्रीएल् के पुत्र सरायाह् को और अब्देल् के पुत्र शेलेम्याह् को आज्ञा दिई कि बारूक् लेखक और यिर्मयाह् नबी को पकड़ ले आओ पर यहोवा ने उन को छिपा रक्खा ॥

२७ । जब राजा ने उन वचनों की पुस्तक को जो बारूक् ने यिर्मयाह् के मुख से सुन सुनकर लिखे थे जला दिया उस के पीछे यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि. २८ । फिर एक और पुस्तक लेकर उस में यहूदा के राजा यहोयाकीम् की जलाई हुई पहिली पुस्तक के सारे वचन लिख दे ॥ २९ । और यहूदा के राजा यहोयाकीम् के विषय कह कि यहोवा यों कहता है कि तू ने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तू ने उस में यह क्यों लिखा है कि बाबेल् का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करके ऐसा करेगा कि उस में न तो मनुष्य रह जाएगा न पशु ॥ ३० । इस लिये यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम् के विषय यों कहता है कि उस का कोई दाऊद की गद्दी पर विराजमान न रहेगा और उस की लोथ ऐसी फेंक दिई जाएगी कि दिन को घाम में और रात को पाले में पड़ी रहेगी ॥ ३१ । और मैं उस को और उस के वंश और कर्म्मचारियों को अधर्म्म का दण्ड दूंगा और जितनी विपत्ति मैं ने उन पर और यरूशलेम् के निवासियों और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है पर उन्हों ने सच नहीं माना उन सब को मैं उन पर डालूंगा ॥ ३२ । सो यिर्मयाह् ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरिय्याह् के पुत्र बारूक् लेखक को दिई और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम् ने आग में जला दिई थी उस में के सब वचनों को बारूक् ने यिर्मयाह् के मुख से सुन सुनकर उस में लिख दिया और उन वचनों में उन के समान और भी बहुत से बढ़ाये गये ॥

३७. और

यहोयाकीम् के पुत्र कोन्याह् के स्थान पर योशिय्याह् का पुत्र सिदकिय्याह् राज्य करने लगा क्योंकि बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहराया था ॥ २ । और न तो उस ने और न उस के कर्म्मचारियों ने न साधारण लोगों ने यहोवा के वचनों को जो उस ने यिर्मयाह् नबी के द्वारा कहा था मान लिया ॥

३ । सिदकिय्याह् राजा ने शेलेम्याह् के पुत्र यहूकल् और मासेयाह् के पुत्र सपन्याह् याजक को यिर्मयाह् नबी के पास यह कहने के लिये भेजा कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर ॥ ४ । उस समय यिर्मयाह् बन्दीगृह में डाला न गया था सो लोगों के बीच वह आया जाया करता था ॥ ५ । और फिरौन् की सेना मिस्र से निकली थी सो जो कसदी यरूशलेम् को घेरे हुए थे वे उस का समाचार सुनकर यरूशलेम् के पास से उठ गये ॥ ६ । तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् नबी के पास

पहुंचा कि, ७ । इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि यहूदा के जिस राजा ने तुम को प्रार्थना कराने के लिये मेरे पास भेजा है उस से यों कहो कि सुन फिरौन् की जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये निकली है सो अपने देश मिस्र में लौट जाएगी ॥ ८ । और कस्दी फिर आकर इस नगर से लड़ेंगे और इस को ले लेंगे और फूंक देंगे ॥ ९ । यहोवा यों कहता है कि तुम यह कहकर अपने अपने मन मे धोखा न खाओ कि कस्दी हमारे पास से निश्चय चले गये हैं क्योंकि वे नहीं चले गये ॥ १० । सुनो यदि तुम ने कस्दियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ती है ऐसा मार भी लिया होता कि उन मे से केवल घायल लोग रह जाते तौभी वे अपने अपने तंबू में से उठकर इस नगर को फूंक देते ॥

११ । जब कस्दियों की सेना फिरौन् की सेना के डर के मारे यरूशलेम् के पास से उठ गई, १२ । तब यिर्मयाह् यरूशलेम् से निकलकर बिन्यामीन् के देश की ओर इस लिये जा रहा था कि वहां से और लोगों के संग अपना अंश ले ॥ १३ । जब वह बिन्यामीन् के फाटक में था तब यिरिय्याह् नामक पहरुओं का एक सरदार वहां था जो शेलेम्याह् का पुत्र और हनन्याह् का पोता था सो उस ने यिर्मयाह् नबी को यह कहकर पकड़ लिया कि तू कस्दियों के पास भागा जाता है ॥ १४ । यिर्मयाह् ने कहा यह झूठ है मैं कस्दियों के पास भागा नहीं जाता पर यिरिय्याह् ने उस की न मानी सो वह उस को पकड़कर हाकिमों के पास ले गया ॥ १५ । तब हाकिमों ने यिर्मयाह् से क्रोधित होकर उसे पिटवाया और योनातान् प्रधान का घर जो बन्दीगृह था उस में डलवा दिया क्योंकि उन्हों ने उसी को साधारण बन्दीगृह किया था ॥ १६ । जब यिर्मयाह् उस तलघर में जिस में कई एक कोठरियां थीं आकर वहां रहने लगा उस के बहुत दिन पीछे, १७ । सिद्किय्याह् राजा ने उस को बुलवा भेजा और अपने भवन में छिपकर यह प्रश्न किया कि क्या यहोवा की ओर से कोई वचन पहुंचा है यिर्मयाह् ने कहा हां पहुंचा तो है वह यह है कि तू बाबेल् के राजा के वश में कर दिया जाएगा ॥ १८ । फिर यिर्मयाह् ने सिद्किय्याह् राजा से कहा मैं ने तेरा और तेरे कर्म्मचारियों का और तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है कि तुम लोगों ने मुझ को बन्दीगृह में डलवाया है ॥ १९ । और तुम्हारे जो नबी तुम से नबूवत करके कहा करते थे कि बाबेल् का राजा तुम पर और इस देश पर चढ़ाई न करेगा सो अब कहां रहे ॥ २० । अब हे मेरे प्रभु हे राजा मेरी प्रार्थना तुझ से ग्रहण किई जाए कि मुझे योनातान् प्रधान के घर में फिर न भेज नहीं तो वहां मर जाऊंगा ॥ २१ । सो सिद्किय्याह् राजा की आज्ञा से यिर्मयाह् पहरे के आंगन में रक्खा गया और जब लों नगर मे की सब रोटी चुक न गई तब लों उस को रोटीवालों के हाट में से दिन दिन एक रोटी दिई जाती थी । सो यिर्मयाह् पहरे के आंगन में रहने लगा ॥

३८. फिर जो वचन यिर्मयाह् सब लोगों से कहता था उन को मत्तान् का पुत्र शपत्याह् और पशहूर् का पुत्र गदल्याह् और शेलेम्याह् का पुत्र यूकल् और मल्किय्याह् का पुत्र पशहूर् ने सुना कि, २ । यहोवा यों कहता है कि जो कोई इस नगर में रहे सो तलवार महंगी और मरी से मरेगा पर जो कोई कस्दियों के पास निकल भागे सो अपना प्राण बचाकर जीता रहेगा ॥ ३ । यहोवा यों कहता है कि यह नगर बाबेल् के राजा की सेना के वश में कर दिया जाएगा और वह इस को ले लेगा ॥ ४ । सो उन हाकिमों ने राजा से कहा कि उस पुरुष को मरवा डाल क्योंकि वह जो इस नगर मे रहे हुए योद्धाओं और और सब लोगों से ऐसे ऐसे वचन कहता है इस से उन के हाथ पांव ढीले हो जाते हैं और वह पुरुष इस प्रजा के लोगों की भलाई नहीं बुराई ही चाहता है ॥ ५ । सिद्किय्याह् राजा ने कहा सुनो वह तो तुम्हारे वश में है क्योंकि राजा ऐसा नहीं होता कि तुम्हारे विरुद्ध कुछ कर सके ॥ ६ । तब उन्हों ने यिर्मयाह् को लेकर राजपुत्र मल्कि-

याह् के उस गड़हे में जो पहरे के आंगन में था रस्सियों से उतारके डाल दिया और उस गड़हे में दलदल था सो यिर्मयाह् कीचड़ में धस गया ॥ ७ । उस समय राजा बिन्यामीन् के फाटक के पास बैठा था सो जब एबेद्मेलेक् कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा था सुना कि उन्हों ने यिर्मयाह् को गड़हे में डाल दिया, ८ । तब एबेद्मेलेक् राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा कि, ९ । हे मेरे स्वामी हे राजा उन लोगों ने यिर्मयाह् नबी से जो कुछ किया है सो बुरा किया है उन्हों ने उस को गड़हे में डाल दिया नगर में कुछ रोटी नहीं रही सो जहां वह है वहां वह भूख से मर जाएगा ॥ १० । तब राजा ने एबेद्मेलेक् कूशी को यह आज्ञा दिई कि यहां से तीस पुरुष साथ लेकर यिर्मयाह् नबी को मर जाने से पहिले गड़हे में से निकाल ॥ ११ । सो एबेद्मेलेक् उतने पुरुषों को साथ लेकर राजभवन में के भण्डार के तलघर में गया और वहां से पुराने फटे हुए कपड़े और पुराने सड़े चिथड़े लेकर उस गड़हे में यिर्मयाह् के पास रस्सियों से उतार दिये ॥ १२ । और एबेद्मेलेक् कूशी ने यिर्मयाह् से कहा ये पुराने फटे कपड़े और सड़े चिथड़े अपनी कांखों में रस्सियों के नीचे रख ले सो यिर्मयाह् ने वैसा ही किया ॥ १३ । तब उन्हों ने यिर्मयाह् को रस्सियों से खींचकर गड़हे में से निकाला और यिर्मयाह् पहरे के आंगन में रहने लगा ॥

१४ । सिद्किय्याह् राजा ने यिर्मयाह् नबी को अपने पास यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में बुलवा भेजा और राजा ने यिर्मयाह् से कहा मैं तुझ से एक बात पूछता हूं सो मुझ से कुछ न छिपा ॥ १५ । यिर्मयाह् ने सिद्किय्याह् से कहा यदि मैं तुझे बताऊं तो क्या तू मुझे मरवा न डालेगा और चाहे मैं तुझे सम्मति दूं तौभी तू मेरी न मानेगा ॥ १६ । तब सिद्किय्याह् राजा ने छिपकर यिर्मयाह् से किरिया खाई कि यहोवा जिस ने हमारा यह जीव रचा उस के जीवन की सोंह मैं न तो तुझे मरवा डालूंगा और न उन मनुष्यों के वश में जो तेरे प्राण के खोजी हैं कर दूंगा ॥ १७ । सो यिर्मयाह् ने सिद्किय्याह् से कहा सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो यों कहता है कि यदि तू बाबेल् के राजा के हाकिमों के पास सचमुच निकल जाए तब तो तेरा प्राण बचेगा और यह नगर फूंका न जाएगा और तू अपने घराने समेत जीता रहेगा ॥ १८ । पर यदि तू बाबेल् के राजा के हाकिमों के पास न निकल जाए तो यह नगर कस्दियों के वश में कर दिया जाएगा और वे इसे फूंक देंगे और तू उन के हाथ से बच न निकलेगा ॥ १९ । सिद्किय्याह् ने यिर्मयाह् से कहा जो यहूदी लोग कस्दियों के पास भाग गये हैं उन से मैं डरता हूं ऐसा न हो कि मैं उन के वश में कर दिया जाऊं और वे मुझ से ठट्ठा करें ॥ २० । यिर्मयाह् ने कहा तू उन के वश में कर दिया न जाएगा जो कुछ मैं तुझ से कहता हूं उसे यहोवा की बात समझकर सुन ले तब तेरा भला होगा और तेरा प्राण बचेगा ॥ २१ । और यदि तू निकल जाने को नकारे तो जो बात यहोवा ने मुझे दर्शन के द्वारा बताई है सो यह है कि, २२ । सुन यहूदा के राजा के रनवास में जितनी स्त्रियां रह गई हैं सो बाबेल् के राजा के हाकिमों के पास निकालकर पहुंचाई जाएंगी और वे उस से कहेंगी तेरे मित्रों ने तुझे बहकाया और उन की इच्छा पूरी हो गई अब तेरे पांव कीच में धस गये वे पीछे फिर गये हैं ॥ २३ । फिर तेरी सब स्त्रियां और लड़केबाले कस्दियों के पास निकालकर पहुंचाये जाएंगे और तू कस्दियों के हाथ से न बचेगा तू पकड़कर बाबेल् के राजा के वश में कर दिया जाएगा और इस नगर के फूंके जाने का कारण तू ही ठहरेगा ॥ २४ । सिद्किय्याह् ने यिर्मयाह् से कहा इन बातों को कोई न जानने पाए और तू मारा न जाएगा ॥ २५ । यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैं ने तुझ से बातचीत किई है तेरे पास आकर कहने लगें हमें बता कि तू ने राजा से क्या कहा हम से कोई बात न छिपा और हम तुझे मरवा न डालेंगे और यह भी बता कि राजा ने तुझ से क्या कहा, २६ । तो तू उन से कहना कि मैं ने राजा से गिड़गिड़ाकर बिनती किई

कि मुझे योनातान् के घर में फिर न भेज नहीं तो वहां मर जाऊंगा॥ २७। फिर सब हाकिमों ने यिर्मयाह् के पास आकर पूछा और जैसा राजा ने उस को आज्ञा दिई थी ठीक वैसा ही उस ने उन को उत्तर दिया सो वे उस से और कुछ न बोले और यह भेद न खुला॥ २८। इस प्रकार जिस दिन यरूशलेम् ले लिया गया उस दिन लों वह पहरे के आंगन ही में रहा॥

३९. यहूदा के राजा सिद्किय्याह् के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने में बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने अपनी सारी सेना समेत यरूशलेम् पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया॥ २। और सिद्किय्याह् के राज्य के ग्यारहवें बरस के चौथे महीने के नौवें दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़ी गई॥ ३। सो जब यरूशलेम् ले लिया गया तब नेर्गल्सरेसेर् और सम्गर्नबो और खोजों का प्रधान सर्सकीम् और मगों का प्रधान नेर्गल्सरेसेर् आदि बाबेल् के राजा के सब हाकिम आकर बीच के फाटक में बैठ गये॥ ४। जब यहूदा के राजा सिद्किय्याह् और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनों भीतों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकल भागते हुए चले और अराबा का मार्ग लिया॥ ५। और कस्दियों की सेना ने उन को खदेड़कर सिद्किय्याह् को यरीहो के अराबा में जा लिया और उस को बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के पास हमात् देश के रिब्ला में ले गये और उस ने वहां उस के दण्ड की आज्ञा दिई॥ ६। तब बाबेल् के राजा ने सिद्किय्याह् के पुत्रों को रिब्ला में उसी के साम्हने घात किया और सब कुलीन यहूदियों को भी घात किया॥ ७। और सिद्किय्याह् की आंखों को उस ने फुड़वा डाला और उस को बाबेल् ले जाने के लिये बेड़ियों से जकड़वा रक्खा॥ ८। और राजभवन को और प्रजा के घरों को कस्दियों ने आग लगाकर फूंक दिया और यरूशलेम् की शहरपनाह को ढा दिया॥ ९। तब जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह गये और जो लोग उस के पास भाग गये थे उन को अर्थात् प्रजा में से जितने रह गये उन सब को बन्धुआ करके बाबेल् को ले गया॥ १०। परन्तु प्रजा में से जो ऐसे कंगाल थे कि उन के पास कुछ न था उन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् यहूदा देश में छोड़ गया और जाते समय उन को दाख की बारियां और खेत दिये॥ ११। और बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने जल्लादों के प्रधान् नबूजरदान् को यिर्मयाह् के विषय में यह आज्ञा दिई थी कि, १२। उस को लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाये रखना और उस की कुछ हानि न करना जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उस से व्यवहार करना॥ १३। सो जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् और खोजों के प्रधान नबूशज्बान् और मगों के प्रधान नेर्गल्सरेसेर् और बाबेल् के राजा के सब प्रधानों ने, १४। लोगों को भेजकर यिर्मयाह् को पहरे के आंगन में से बुलवा लिया और गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुंचाए तब से वह लोगों के बीच में रहने लगा॥

१५। जब यिर्मयाह् पहरे के आंगन में कैद था तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा था कि, १६। जाकर एबेदमेलेक् कूशी से कह इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं अपने वे वचन जो मैं ने इस नगर के विषय कहे हैं ऐसे पूरे करूंगा कि इस का कुशल न होगा हानि ही होगी और उस समय उन का पूरा होना तुझे देख पड़ेगा॥ १७। पर यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तुझे बचाऊंगा और जिन मनुष्यों से तू भय खाता है उन के वश में तू कर दिया न जाएगा॥ १८। क्योंकि मैं तुझे निश्चय बचाऊंगा और तू तलवार से न मरेगा तेरा प्राण बचा रहेगा यहोवा की यह वाणी है कि यह इस कारण होगा कि तू ने मुझ पर भरोसा रक्खा है॥

४०. जब जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने यिर्मयाह् को रामा में उन सब यरूशलेमी और यहूदी बन्धुओं के बीच हथकड़ियों से बंधा हुआ पाकर जो बाबेल् जाने को थे छुड़ा लिया उस के पीछे यहोवा का वचन उस के पास पहुंचा ॥ २। जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने तो यिर्मयाह् को उस समय अपने पास बुला लिया और कहा इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है सो तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई थी ॥ ३। और जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उस ने पूरा भी किया है तुम लोगों ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया और उस की नहीं मानी इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है ॥ ४। और अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काटे देता हूं और यदि मेरे संग बाबेल् में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल वहां मैं तुझ पर कृपादृष्टि रक्खूंगा और यदि मेरे संग बाबेल् जाना तुझे न भाए तो रह जा देख सारा देश तेरे साम्हने पड़ा है जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक जचे उधर ही जा ॥ ५। वह जब तक लौट न गया था कि नबूजरदान् ने उस से कहा कि गदल्याह् जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता है जिस को बाबेल् के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है उस के पास लौट जा और उस के संग लोगों के बीच रह वा जहां कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वहीं जा। सो जल्लादों के प्रधान ने उस को सीधा और कुछ द्रव्य भी देकर बिदा किया ॥ ६। तब यिर्मयाह् अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास मिस्पा को गया और वहां उन लोगों के बीच जो देश में रह गये थे रहने लगा ॥

७। योद्धाओं के जो दल दिहात में थे जब उन के सब प्रधानों ने अपने अपने जनों समेत सुना कि बाबेल् के राजा ने अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् को देश का अधिकारी ठहराया और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबेल् को नहीं ले गया क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालबच्चे उन सभों को उसे सौंप दिया है, ८। तब नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् और कारेह् के पुत्र योहानान् और योनातान् और तन्हूमेत् का पुत्र सरायाह् और एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह् अपने जनों समेत गदल्याह् के पास मिस्पा में आये ॥ ९। और गदल्याह् जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था उस ने उन से और उन के जनों से किरिया खाकर कहा कसदियों के अधीन रहने से मत डरो इसी देश में रहते हुए बाबेल् के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा ॥ १०। और मैं तो इस लिये मिस्पा में रहता हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां आएं उन के साम्हने हाजिर हुआ करूं पर तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोरके अपने बरतनों में रखते अपने लिये हुए नगरों में बसे रहो ॥ ११। फिर जब मोआबियों अम्मोनियों एदोमियों और और सब जातियों के बीच रहनेहारे सब यहूदियों ने सुना कि बाबेल् के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोग बचाये और उन पर गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता है अधिकारी ठहराया है, १२। तब सब यहूदी जिन जिन स्थानों में तितर बितर हो गये थे उन से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह् के पास आये और बहुत सा दाखमधु और धूपकाल के फल बटोरने लगे ॥

१३। तब कारेह् का पुत्र योहानान् और मैदान में रहनेहारे योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में गदल्याह् के पास आकर, १४। कहने लगे क्या तू जानता है कि अम्मोनियों के राजा बालीस् ने नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् को तुझे प्राण से मारने के लिये भेजा है। पर अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् ने उन की प्रतीति न किई ॥ १५। फिर कारेह् के पुत्र योहानान् ने गदल्याह् से मिस्पा में छिपकर कहा मुझे जाकर नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा वह तुझे क्यों मार डाले और जितने यहूदी लोग तेरे पास एकट्ठे हुए हैं सो क्यों तितर बितर हो जाएं और बचे हुए यहूदी क्यों नाश हो जाएं ॥ १६। अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् ने कारेह् के पुत्र योहानान् से कहा ऐसा काम मत कर तू इश्माएल् के विषय में झूठ बोलता है ॥

४१. और सातवें महीने में इश्माएल् जो नतन्याह् का पुत्र और एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों में से था सो दस जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास आया और वहां मिस्पा में वे एक संग भोजन करने लगे ॥ २। तब नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् और उस के संग के दस जनों ने उठकर गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था और जिसे बाबेल् के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था तलवार से ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ ३। और गदल्याह् के संग जितने यहूदी मिस्पा में थे और जो कस्दी योद्धा वहां मिले उन सभों को इश्माएल् ने मार डाला ॥ ४। और गदल्याह के मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता था, ५। तब शकेम् और शीलो और शोमरोन् से अस्सी पुरुष डाढ़ी मुड़ाये वस्त्र फाड़े शरीर चीरे हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान् लिये हुए यहोवा के भवन में जाने को आते दिखाई दिये ॥ ६। तब नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् उन से मिलने को मिस्पा से निकला और रोता हुआ चला और जब वह उन से मिला तब कहा अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास चलो ॥ ७। जब वे उस नगर के बीच आये तब नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने अपने संगी जनों समेत उन को घात करके गड़हे के बीच फेंक दिया ॥ ८। पर उन में से दस मनुष्य इश्माएल् से कहने लगे हम को मार न डाल क्योंकि हमारे पास मैदान में रक्खा हुआ गेहूं जव तेल और मधु है सो उस ने उन्हें छोड़ दिया और उन के भाइयों के साथ मार न डाला ॥ ९। जिस गड़हे में इश्माएल् ने उन लोगों की सब लोथें जिन्हें उस ने मारा था गदल्याह् की लोथ के पास फेंक दिईं सो वही गड़हा है जिसे आसा राजा ने इस्राएल् के राजा बाशा के डर के मारे खुदवाया था उस को नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने मारे हुओं से भर दिया ॥ १०। तब जो लोग मिस्पा में बचे हुए थे अर्थात् राजकुमारियां और जितने और लोग मिस्पा में रह गये थे जिन्हें जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् को सौंप दिया था उन सभों को नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् बंधुआ करके अम्मोनियों के पास ले जाने को चला ॥

११। जब कारेह् के पुत्र योहानान् ने और योद्धाओं के दलों के उन सब प्रधानों ने जो उस के संग थे सुना कि नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने यह सब बुराई किई है, १२। तब वे सब जनों को लेकर नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् से लड़ने को निकले और उस को उस बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन् में है ॥ १३। कारेह् के पुत्र योहानान् को और दलों के सब प्रधानों को जो उस के संग थे देखकर इश्माएल् के संग जो लोग थे सो सब आनन्दित हुए ॥ १४। और जितने लोगों को इश्माएल् मिस्पा से बंधुआ करके लिये जाता था सो पलटकर कारेह् के पुत्र योहानान् के पास चले आये ॥ १५। पर नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् आठ पुरुष समेत योहानान् के हाथ से बचकर अम्मोनियों के पास चला गया ॥ १६। तब प्रजा में से जितने बच रहे थे अर्थात् जिन योद्धाओं स्त्रियों बालबच्चों और खोजों को कारेह् का पुत्र योहानान् अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के मिस्पा में मारे जाने के पीछे नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् के पास से छुड़ाकर गिबोन् से फेर ले आया था उन को वह अपने सब संगी दलों के प्रधानों समेत लेकर चल दिया, १७। और बेत्लेहेम् के निकट जो किम्हाम् की सराय है उस में वे इस लिये टिक गये कि मिस्र में जाएं ॥ १८॥ क्योंकि वे कस्दियों से डरते थे इस कारण कि अहीकाम् का पुत्र गदल्याह् जिसे बाबेल् के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था उसे नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने मार डाला था ॥

४२. तब कारेह् का पुत्र योहानान् और होशायाह् का पुत्र याजन्याह् और दलों के सब प्रधान छोटे से लेकर बड़े लों सब लोग यिर्मयाह् नबी के निकट आकर, २। कहने लगे हमारी

४०. जब जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने यिर्मयाह् को रामा में उन सब यरूशलेमी और यहूदी बंधुओं के बीच हथकड़ियों से बंधा हुआ पाकर जो बाबेल् जाने को थे छुड़ा लिया उस के पीछे यहोवा का वचन उसे के पास पहुंचा ॥ २। जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने तो यिर्मयाह् को उस समय अपने पास बुला लिया और कहा इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है सो तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई थी ॥ ३। और जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उस ने पूरा भी किया है तुम लोगों ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया और उस की नहीं मानी इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है ॥ ४। और अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काटे देता हूं और यदि मेरे संग बाबेल् में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल वहां मैं तुझ पर कृपादृष्टि रक्खूंगा और यदि मेरे संग बाबेल् जाना तुझे न भाए तो रह जा देख सारा देश तेरे साम्हने पड़ा है जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक जचे उधर ही जा ॥ ५। वह जब तक लौट न गया था कि नबूजरदान् ने उस से कहा कि गदल्याह् जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता है जिस को बाबेल् के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है उस के पास लौट जा और उस के संग लोगों के बीच रह वा जहां कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वहीं जा। सो जल्लादों के प्रधान ने उस को सीधा और कुछ द्रव्य भी देकर बिदा किया ॥ ६। तब यिर्मयाह् अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास मिस्पा को गया और वहां उन लोगों के बीच जो देश में रह गये थे रहने लगा ॥

७। योद्धाओं के जो दल दिहात में थे जब उन के सब प्रधानों ने अपने अपने जनों समेत सुना कि बाबेल् के राजा ने अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् को देश का अधिकारी ठहराया और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबेल् को नहीं ले गया क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालबच्चे उन सभों को उसे सौंप दिया है, ८। तब नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् और कारेह् के पुत्र योहानान् और योनातान् और तन्हूमेत् का पुत्र सरायाह् और एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह् अपने जनों समेत गदल्याह् के पास मिस्पा में आये ॥ ९। और गदल्याह् जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था उस ने उन से और उन के जनों से किरिया खाकर कहा कसदियों के अधीन रहने से मत डरो इसी देश में रहते हुए बाबेल् के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा ॥ १०। और मैं तो इस लिये मिस्पा में रहता हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां आएं उन के साम्हने हाजिर हुआ करूं पर तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोरके अपने बरतनों में रखते अपने लिये हुए नगरों में बसे रहो ॥ ११। फिर जब मोआबियों अम्मोनियों एदोमियों और और सब जातियों के बीच रहनेहारे सब यहूदियों ने सुना कि बाबेल् के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोग बचाये और उन पर गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता है अधिकारी ठहराया है, १२। तब सब यहूदी जिन जिन स्थानों में तितर बितर हो गये थे उन से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह् के पास आये और बहुत सा दाखमधु और धूपकाल के फल बटोरने लगे ॥

१३। तब कारेह् का पुत्र योहानान् और मैदान में रहनेहारे योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में गदल्याह् के पास आकर, १४। कहने लगे क्या तू जानता है कि अम्मोनियों के राजा बालीस् ने नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् को तुझे प्राण से मारने के लिये भेजा है। पर अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् ने उन की प्रतीति न किई ॥ १५। फिर कारेह् के पुत्र योहानान् ने गदल्याह् से मिस्पा में छिपकर कहा मुझे जाकर नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा वह तुझे क्यों मार डाले और जितने यहूदी लोग तेरे पास एकट्ठे हुए हैं सो क्यों तितर बितर हो जाएं और बचे हुए यहूदी क्यों नाश हो जाएं ॥ १६। अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् ने कारेह् के पुत्र योहानान् से कहा ऐसा काम मत कर तू इश्माएल् के विषय में झूठ बोलता है ॥

४१. और सातवें महीने में इश्माएल् जो नतन्याह् का पुत्र और एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों में से था सो दस जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास आया और वहां मिस्पा में वे एक संग भोजन करने लगे ॥ २ । तब नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् और उस के संग के दस जनों ने उठकर गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था और जिसे बाबेल् के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था तलवार से ऐसा मारा कि वह मर गया ॥ ३ । और गदल्याह् के संग जितने यहूदी मिस्पा में थे और जो कस्दी योद्धा वहां मिले उन सभों को इश्माएल् ने मार डाला ॥ ४ । और गदल्याह् के मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता था, ५ । तब शकेम् और शीलो और शोमरोन् से अस्सी पुरुष डाढ़ी मुड़ाये वस्त्र फाड़े शरीर चीरे हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान् लिये हुए यहोवा के भवन में जाने को आते दिखाई दिये ॥ ६ । तब नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् उन से मिलने को मिस्पा से निकला और रोता हुआ चला और जब वह उन से मिला तब कहा अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के पास चलो ॥ ७ । जब वे उस नगर के बीच आये तब नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने अपने संगी जनों समेत उन को घात करके गड़हे के बीच फेंक दिया ॥ ८ । पर उन में से दस मनुष्य इश्माएल् से कहने लगे हम को मार न डाल क्योंकि हमारे पास मैदान में रक्खा हुआ गेहूं जव तेल और मधु है सो उस ने उन्हें छोड़ दिया और उन के भाइयों के साथ मार न डाला ॥ ९ । जिस गड़हे में इश्माएल् ने उन लोगों की सब लोथें जिन्हें उस ने मारा था गदल्याह् की लोथ के पास फेंक दिई सो वही गड़हा है जिसे आसा राजा ने इस्राएल् के राजा बाशा के डर के मारे खुदवाया था उस को नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने मारे हुओं से भर दिया ॥ १० । तब जो लोग मिस्पा में बचे हुए थे अर्थात् राजकुमारियां और जितने और लोग मिस्पा में रह गये थे जिन्हे जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् को सौंप दिया था उन सभों को नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् बंधुआ करके अम्मोनियों के पास ले जाने को चला ॥

११ । जब कारेह् के पुत्र योहानान् ने और योद्धाओं के दलों के उन सब प्रधानों ने जो उस के संग थे सुना कि नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने यह सब बुराई किई है, १२ । तब वे सब जनो को लेकर नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् से लड़ने को निकले और उस को उस बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन् में है ॥ १३ । कारेह् के पुत्र योहानान् को और दलों के सब प्रधानों को जो उस के संग थे देखकर इश्माएल् के संग जो लोग थे सो सब आनन्दित हुए ॥ १४ । और जितने लोगों को इश्माएल् मिस्पा से बंधुआ करके लिये जाता था सो पलटकर कारेह् के पुत्र योहानान् के पास चले आये ॥ १५ । पर नतन्याह् का पुत्र इश्माएल् आठ पुरुष समेत योहानान् के हाथ से बचकर अम्मोनियों के पास चला गया ॥ १६ । तब प्रजा में से जितने बच रहे थे अर्थात् जिन योद्धाओं स्त्रियों बालबच्चों और खोजों को कारेह् का पुत्र योहानान् अहीकाम् के पुत्र गदल्याह् के मिस्पा में मारे जाने के पीछे नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् के पास से छुड़ाकर गिबोन् से फेर ले आया था उन को वह अपने सब संगी दलों के प्रधानों समेत लेकर चल दिया, १७ । और बेत्लेहेम् के निकट जो किम्हाम् की सराय है उस में वे इस लिये टिक गये कि मिस्र में जाएं ॥ १८ ॥ क्योंकि वे कस्दियों से डरते थे इस कारण कि अहीकाम् का पुत्र गदल्याह् जिसे बाबेल् के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था उसे नतन्याह् के पुत्र इश्माएल् ने मार डाला था ॥

४२. तब कारेह् का पुत्र योहानान् और होशायाह् का पुत्र याज़न्याह् और दलों के सब प्रधान छोटे से लेकर बड़े लों सब लोग यिर्मयाह् नबी के निकट आकर, २ । कहने लगे हमारी

बिनती ग्रहण करके अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे हुओं के लिये प्रार्थना कर क्योंकि तू अपनी आंखों से देखता है कि हम जो पहिले बहुत थे अब थोड़े ही रह गये हैं ॥ ३ । सो इस लिये प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर यहोवा हम को बताए कि हम किस मार्ग से चलें और कौन सा काम करें ॥ ४ । सो यिर्मयाह् नबी ने उन से कहा मैं ने तुम्हारी सुनी है देखो मैं तुम्हारे वचनों के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करूंगा और जो उत्तर यहोवा तुम्हारे लिये दे सो मैं तुम को बताऊंगा मैं तुम से कोई बात न रख छोड़ूंगा ॥ ५ । उन्हों ने यिर्मयाह् से कहा यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुंचाए और हम उस के अनुसार न करें तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विश्वासयोग्य साक्षी ठहरे ॥ ६ । चाहे वह भली बात हो चाहे बुरी तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा की जिस के पास हम तुझे भेजते हैं मानेंगे जिस से जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो ॥

७ । दस दिन के बीते पर यहोवा का वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा ॥ ८ । तब उस ने कारेह् के पुत्र योहानान् को और उस के साथ के दलों के प्रधानों को और छोटे से लेकर बड़े लों जितने लोग थे उन सभों को बुलाकर उन से कहा ॥ ९ । इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा जिस के पास तुम ने मुझ को इस लिये भेजा कि मैं तुम्हारी बिनती उस के आगे कह सुनाऊं सो यों कहता है कि, १० । यदि तुम इस देश में सचमुच रह जाओ तब तो मैं तुम को नाश न करूंगा बनाये रखूंगा और नहीं उखाड़ूंगा रोपे रखूंगा क्योंकि तुम्हारी जो हानि मैं ने किई है उस से मैं पछताता हूं ॥ ११ । तुम जो बाबेल् के राजा से डरते हो सो उस से मत डरो यहोवा की यह वाणी है कि उस से मत डरो क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम को उस के हाथ से बचाने के लिये तुम्हारे संग हूं ॥ १२ । और मैं तुम पर दया करूंगा और वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भूमि पर फेर बसा देगा ॥ १३ । पर यदि तुम यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानो कि हम इस देश में न रहेंगे, १४ । हम मिस्र देश जाकर वहीं रहेंगे क्योंकि वहां हम न तो युद्ध देखेंगे और न नरसिंगे का शब्द सुनेंगे न भोजन की घटी हम को होगी, १५ । तो हे बचे हुए यहूदियो अब यहोवा का वचन सुनो इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि यदि तुम सचमुच मिस्र की ओर जाने का मुंह करो और वहां रहने के लिये जाओ, १६ । तो जिस तलवार से तुम डरते हो वही वहां मिस्र देश में तुम को जा लेगी और जिस महंगी का भय तुम खाते हो सो मिस्र में तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी और वहां तुम मरोगे ॥ १७ । जितने मनुष्य मिस्र में रहने के लिये उस की ओर मुंह करें सो सब तलवार महंगी और मरी से मरेंगे और जो विपत्ति मैं उन के बीच डालूंगा उस से कोई उन में से बचा न रहेगा ॥ १८ । इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम् के निवासियों पर भड़क उठी थी उसी प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे और तुम्हारी उपमा देकर साप दिया और निन्दा किया करेंगे और तुम इस स्थान को फिर न देखने पाओगे ॥

१९ । हे बचे हुए यहूदियो यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है कि मिस्र में मत जाओ सो तुम निश्चय करके जानो कि मैं आज तुम को चिताकर यह बात कहता हूं ॥ २० । क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसी के अनुसार हम को बता और हम वैसा ही करेंगे तब तुम जान बूझके अपने ही को धोखा देते थे ॥ २१ । देखो मैं आज तुम को बताये देता हूं पर और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिये मुझ को भेजा है उस में से तुम कोई बात नहीं मानते ॥ २२ । सो अब तुम

निश्चय करके जानो कि जिस स्थान में तुम परदेशी होके रहने की इच्छा करते हो उस में तुम तलवार महंगी और मरी से मर जाओगे ॥

४३. जब यिर्मयाह उन के परमेश्वर यहोवा के सब वचन जिन के कहने के लिये उस ने उस को उन सब लोगों के पास भेजा था अर्थात् ये सब वचन कह चुका तब, २। होशायाह के पुत्र अजर्याह् और कोरह् के पुत्र योहानान् और सब अभिमानी पुरुषों ने यिर्मयाह् से कहा तू झूठ बोलता है हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को यह कहने के लिये नहीं भेजा कि मिस्र में रहने के लिये मत जाओ ॥ ३। पर नेरिय्याह का पुत्र बारूक् तुझ को हमारे विरुद्ध उसकाता है कि हम कस्‌दियों के हाथ में पड़ें और वे हम को मार डालें वा बन्धुआ करके बाबेल् को ले जाएं ॥ ४। सो कारेह् के पुत्र योहानान् और दलों के और सब प्रधानों और सब लोगों ने यहूदा देश में रहने की यहोवा की आज्ञा मानने को नकारा ॥ ५। और जो यहूदी उन सब जातियों में से जिन के बीच वे तितर बितर हो गये थे लौटकर यहूदा देश में रहने लगे थे उन को कारेह् का पुत्र योहानान् और दलों के और सब प्रधान ले गये ॥ ६। पुरुष स्त्री बालबच्चे राजकुमारियां और जितने प्राणियों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने गदल्याह् को जो अहीकाम् का पुत्र और शापान् का पोता था सौंप दिया था उन को और यिर्मयाह् नबी और नेरिय्याह् के पुत्र बारूक् को वे ले गये॥ ७। सो वे मिस्र देश में तह्‌पन्हेस् नगर लों आ गये क्योंकि उन्हों ने यहोवा की मानने को नकारा ॥

८। तब यहोवा का यह वचन तह्‌पन्हेस् में यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, ९। अपने हाथ से बड़े पत्थर ले और यहूदी पुरुषों के साम्हने उस ईंट के चबूतरे में जो तह्‌पन्हेस् में फिरौन के भवन के द्वार के पास है चूना फेरके छिपा दे ॥ १०। और उन पुरुषों से कह इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं बाबेल् के राजा अपने सेवक नबूकद्रेस्सर् को बुलवा भेजूंगा और वह अपना सिंहासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैं ने छिपा रक्खे हैं रखाएगा और अपना छत्र इन के ऊपर तनवाएगा ॥ ११। और वह आके मिस्र देश को मारेगा तब जो मरनेहारे हों सो मृत्यु के और जो बन्धुए होनेहारे हों सो बन्धुआई के और जो तलवार से कटनेहारे हों सो तलवार के वश में कर दिये जाएंगे ॥ १२। और मैं मिस्र के देवालयों में आग लगवाऊंगा वह उन्हें फुंकवा देगा और देवताओं को बन्धुआई में ले जाएगा और जैसा कोई चरवाहा अपना वस्त्र ओढ़ता है वैसा ही वह मिस्र देश को ओढ़ेगा और वह बेखटके चला जाएगा ॥ १३। और वह मिस्र देश के सूर्य्यगृह के खंभे को तुड़वा डालेगा और मिस्र के देवालयों को आग लगाकर फुंकवा देगा॥

४४. जितने यहूदी लोग मिस्र देश में मिग्दोल् तह्‌पन्हेस् और नोप् नगरों और पत्रोस् देश में रहते थे इन के विषय यह वचन यिर्मयाह् के पास पहुंचा कि, २ इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा के सब नगरों पर डाल चुका हूं वह सब तुम लोगों ने देखी है और देखो वे आज के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं ॥ ३। और इस का कारण उन के निवासियों की वह बुराई है जिस के करने से उन्हों ने मुझे रिस दिलाई थी कि वे जाकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाते और उन की उपासना करते थे जिन्हें न तो तुम जानते थे और न तुम्हारे पुरखा ॥४। मैं तुम्हारे पास अपने सब दास नबियों को यह कहने के लिये बड़े यत्न से[१] भेजता रहा कि यह घिनौना काम जिस से मैं घिन रखता हूं मत करो ॥ ५। पर उन्हों ने मेरी न सुनी न मेरी ओर कान लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और दूसरे देवताओं के लिये धूप न

(१) मूल में तड़के उठकर।

जलाएं ॥ ६ । इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप की आग यहूदा के नगरों और यरूशलेम् की सड़कों पर भड़क[2] गई और इस से वे आज के दिन उजाड़ और सुनसान पड़े हैं ॥ ७ । अब यहोवा सेनाओं का परमेश्वर जो इस्राएल् का परमेश्वर है सो यों कहता है कि तुम लोग अपनी यह बड़ी हानि क्यों करते हो कि क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालक क्या दूधपिउवा बच्चा तुम सब यहूदा के बीच से नाश किये जाओ और कोई न रहे ॥ ८ । क्योंकि इस मिस्र देश में जहां तुम परदेशी होकर रहने के लिये आये हो तुम अपने कामों के द्वारा अर्थात् दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिस से तुम नाश हो जाओगे और पृथिवी भर की सब जातियों के लोग तुम्हारी जाति की नामधराई करेंगे और तुम्हारी उपमा देकर साप दिया करेंगे ॥ ९ । जो जो बुराइयां तुम्हारे पुरखा और यहूदा के राजा और उन की स्त्रियां और तुम्हारी स्त्रियां वरन् तुम आप यहूदा देश और यरूशलेम् की सड़कों में करते थे उसे क्या तुम भूल गये हो ॥ १० । उन का मन आज के दिन लों चूर नहीं हुआ और न वे डरते हैं और न मेरी उस व्यवस्था और विधियों पर चलते हैं जो मैं ने तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सुनवाई हैं ॥ ११ । इस कारण इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे विमुख होकर तुम्हारी हानि करूंगा कि सारे यहूदियों का अन्त करूं ॥ १२ । और बचे हुए यहूदियों को जो हठ करके मिस्र देश में आकर रहने लगे हैं सो सब मिट जाएंगे[2] इस मिस्र देश में छोटे से लेकर बड़े लों वे तलवार और महंगी के द्वारा मरके मिट जाएंगे और लोग कोसेंगे और चकित होंगे और उन की उपमा देकर साप दिया और निन्दा किया करेंगे ॥ १३ । सो जैसा मैं ने यरूशलेम् को तलवार महंगी और मरी के द्वारा दण्ड दिया है वैसा ही मिस्र देश में रहनेहारों को भी दण्ड दूं ॥ १४ । सो बचे हुए यहूदी जो मिस्र देश में परदेशी होकर रहने के लिये आये हैं यद्यपि वे यहूदा देश में रहने के लिये लौटने की बड़ी अभिलाषा रखते हैं तौभी उन में से एक भी बचकर वहां लौटने न पाएगा, भागे हुओं को छोड़ कोई भी वहां न लौटने पाएगा ॥

१५ । तब मिस्र देश के पत्रोस में रहनेहारे जितने पुरुष जानते थे कि हमारी स्त्रियां दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाती हैं और जितनी स्त्रियां बड़ी मण्डली बांधे हुए पास खड़ी थीं उन सभों ने यिर्मयाह् को यह उत्तर दिया कि, १६ । जो वचन तू ने यहोवा के नाम से हम को सुनाया है उस को हम नहीं सुनने की ॥ १७ । जो जो मन्नतें हम मान चुके हैं सो सो हम निश्चय पूरी करेंगी कि हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाएं और तपावन दें जैसे कि हमारे पुरखा लोग और हम भी अपने राजाओं और और हाकिमों समेत यहूदा के नगरों में और यरूशलेम् की सड़कों में करती थीं, क्योंकि उस समय हम पेट भरके खाते और भली चंगी रहती थीं और किसी विपत्ति में न पड़ती थीं ॥ १८ । पर जब से हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाना और तपावन देना छोड़ दिया तब से हम को सब वस्तुओं की घटी है और हम तलवार और महंगी के द्वारा मिट चली हैं ॥ १९ । और जब हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाती और चंद्राकार रोटियां बनाकर तपावन देती थीं तब अपने अपने पति के बिन जाने ऐसा नहीं करतीं ॥

२० । तब क्या स्त्री क्या पुरुष जितने लोगों ने यिर्मयाह् को यह उत्तर दिया उन से उस ने कहा, २१ । तुम्हारे पुरखा और तुम जो अपने राजाओं और हाकिमों और लोगों समेत यहूदा देश के नगरों और यरूशलेम् की सड़कों में धूप जलाते थे क्या वह यहोवा के चित्त में नहीं चढ़ा था और क्या वह उस को स्मरण न रहा ॥ २२ । सो जब यहोवा तुम्हारे बुरे कामों और सब घिनौने कामों को और सह न सका तब से तुम्हारा देश उजाड़कर निर्जन और सुनसान हो गया यहां तक कि लोग उस को

(१) मूल में उण्डेली । (२) मूल में मैं उन्हें लूंगा और वे सब मिट जायेंगे ।

उपमा देकर स्राप दिया करते हैं जैसे कि आज होता है॥ २३। तुम जो धूप जलाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते और उस को न सुनते और उस की व्यवस्था और विधियों और चितौनियों के अनुसार न चलते थे इस कारण यह विपत्ति तुम पर आ पड़ी जैसे कि आज के दिन है॥

२४। फिर यिर्मयाह् ने उन सब लोगों से और उन सब स्त्रियों से कहा हे सारे मिस्र देश में रहनेहारे यहूदियो यहोवा का वचन सुनो॥ २५। इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम और तुम्हारी स्त्रियों ने मन्नतें मानीं[१] और यह कहकर उन्हें पूरी करते हो कि हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने और तपावन देने की जो जो मन्नतें मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे। भला अपनी अपनी मन्नतों को मानकर पूरी करो॥ २६। पर हे मिस्र देश में रहनेहारे सारे यहूदियो यहोवा का वचन सुनो कि मैं ने अपने बड़े नाम की किरिया खाई है कि अब सारे मिस्र देश में कोई यहूदी मनुष्य मेरा नाम लेकर फिर कभी यह कहने न पाएगा कि प्रभु यहोवा के जीवन की सोंह॥ २७। सुनो अब मैं उन की भलाई नहीं हानि ही की चिन्ता करूंगा सो मिस्र देश में रहनेहारे सब यहूदी तलवार और महंगी के द्वारा मिटकर नाश हो जाएंगे॥ २८। और जो तलवार से बचकर और मिस्र देश से लौटकर यहूदा देश में पहुंचेंगे सो थोड़े ही होंगे और मिस्र देश में रहने के लिये आये हुए सब यहूदियों में से जो बचेंगे सो जान लेंगे कि किस का वचन ठहरा मेरा वा उन का॥ २९। और यहोवा की यह वाणी है कि मैं जो तुम को इस स्थान में दण्ड दूंगा इस बात का यह चिन्ह मैं तुम्हें देता हूं जिस से तुम जान सको कि मेरे वचन तुम्हारी हानि करने में निश्चय पूरे होंगे॥ ३०। यहोवा यों कहता है कि सुनो जैसा मैं ने यहूदा के राजा सिद्किय्याह् को उस के शत्रु अर्थात् उस के प्राण के खोजी बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के हाथ में दिया वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन होप्रा को भी उस के शत्रुओं अर्थात् उस के प्राण के खोजियों के हाथ में कर दूंगा॥

४५. योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के

राज्य के चौथे बरस में जब नेरिय्याह् का पुत्र बारूक् यिर्मयाह् नबी से नबूवत के ये वचन सुनकर पुस्तक में लिख चुका था तब उस ने उस से यह वचन कहा कि, २। हे बारूक् इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि, ३। तू ने तो कहा है कि हाय हाय यहोवा ने मुझे दुःख पर दुःख दिया है[१] मैं कराहते कराहते हार गया और मुझे कुछ चैन नहीं मिलता॥ ४। सो तू उस से यों कह कि यहोवा यों कहता है कि सुन इस सारे देश में जिस को मैं ने बनाया था उसे मैं आप ढा दूंगा और जिन को मैं ने रोपा था उन को मैं आप उखाड़ूंगा॥ ५। सो तू जो अपनी बड़ाई का यत्न करता है सो मत कर क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं सारे मनुष्यों पर विपत्ति डालूंगा पर जहां कहीं तू जाए वहां मैं तेरा प्राण बचाकर जीता रक्खूंगा[२]॥

४६. अन्यजातियों के विषय में यहोवा का जो

वचन यिर्मयाह् नबी के पास पहुंचा सो यह है॥

२। मिस्र के विषय, मिस्र के राजा फिरौन नको की जो सेना परात् महानद के तीर पर कर्कमीश् में थी और बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने उसे योशिय्याह् के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम् के राज्य के चौथे बरस में मार लिया उस सेना के विषय, ३। ढालें और फरियां तैयार करके लड़ने को निकट आओ॥ ४। घोड़ों को जुतवाओ और हे सवारो घोड़ों पर चढ़कर टोप पहिने हुए खड़े हो जाओ भालों को पैना करो झिलमों को पहिन लो॥ ५। मैं ने इसे क्यों देखा है वे विस्मित होकर पीछे हट गये और उन के शूरवीर गिराये गये

(१) मूल में अपने अपने मुह से कहा। (२) मूल में जागताहुआ

(१) मेरी पीड़ा पर खेद बढ़ाया है। (२) मूल में तेरे प्राण को लूट समझकर तुझे दूंगा।

और उतावली करके भाग गये और पीछे देखते भी नहीं, यहोवा की यह वाणी है कि चारों ओर भय ही भय है ॥ ६ । न वेग चलनेहारे भागने और न वीर बचने पाए क्योंकि उत्तर की दिशा में परात् महानद के तीर पर वे सब ठोकर खाकर गिर पड़े ॥ ७ । यह कौन है जो नील नदी की नाईं जिस का जल महानदों का सा उछलता है बढ़ा आता है ॥ ८ । मिस्र नील नदी की नाईं बढ़ता और उस का जल महानदों का सा उछलता है वह कहता है मैं चढ़कर पृथिवी को भर दूंगा मैं निवासियों समेत नगर नगर को नाश करूंगा ॥ ९ । हे मिस्री सवारो चढ़ो हे रथियो बहुत ही वेग से चलाओ हे ढाल पकड़नेहारे कूशी और पूती वीरो हे धनुर्धारी लूदियो चले आओ ॥ १० । और वह दिन सेनाओं के यहोवा प्रभु के पलटा लेने का दिन होगा जिस में वह अपने द्रोहियों से पलटा लेगा सो तलवार खाकर तृप्त और उन का लोहू पीकर छक जाएगी क्योंकि उत्तर के देश में परात् महानद के तीर पर सेनाओं के यहोवा प्रभु का यज्ञ है ॥ ११ । हे मिस्र की कुमारी कन्या गिलाद् को जाकर बलसान् औषधि ले पर तू व्यर्थ ही बहुत इलाज करती है क्योंकि तू चंगी होने की नहीं ॥ १२ । सब जाति के लोगों ने सुना है कि तू नीच हो गई और पृथिवी तेरी चिल्लाहट से भर गई वीर से वीर ठोकर खाकर गिर पड़े वे दोनों एक संग गिर गये हैं ॥

१३ । यहोवा ने यिर्मयाह् नबी से इस विषय कि बाबेल् का राजा नबूकद्रेस्सर् क्योंकर आकर मिस्र देश को मार लेगा यह वचन भी कहा कि, १४ । मिस्र में वर्णन करो और मिग्दोल् में सुनाओ और नोप् और तहपन्हेस् में सुनाकर यह कहो कि खड़ा होकर तैयार हो जा क्योंकि तेरी चारों ओर सब कुछ तलवार खा गई है ॥ १५ । तेरे बलवन्त जन क्यों विलाय गये हैं, यहोवा ने उन्हें ढकेल दिया इस से वे खड़े न रह सके ॥ १६ । उस ने बहुतों को ठोकर खिलाई सो वे एक दूसरे पर गिर पड़े तब कहने लगे चलो हम कराल[१] तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगों और अपनी अपनी जन्मभूमि में फिर जाएं ॥ १७ । वहां वे पुकारके कहते हैं कि मिस्र का राजा फ़िरौन हौरा ही हौरा है उस ने अपना अवसर खो दिया है ॥ १८ । राजाधिराज जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है उस की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सों कि वह ऐसा आएगा जैसा ताबोर् और और पहाड़ों से और कर्मेल् समुद्र पर से देख पड़ता है ॥ १९ । हे मिस्र की रहनेहारी[१] बंधुआई के योग्य सामान तैयार कर रख क्योंकि नोप् नगर उजाड़ और ऐसा भस्म हो जाएगा कि उस में कोई न रहेगा ॥ २० । मिस्र बहुत ही सुन्दर बछिया तो है पर उत्तर दिशा से नाश चला आता है वह आ भी चुका है ॥ २१ । और उस के जो सिपाही किराये में आये हैं सो इस बात में पोसे हुए बछड़ों के समान हैं कि उन्हों ने मुंह मोड़ा और एक संग भाग गये और खड़े नहीं रहे क्योंकि उन की विपत्ति का दिन और दण्ड पाने का समय आ गया ॥ २२ । उस की आहट सर्प के भागने की सी होगी । क्योंकि वे वृक्षों के काटनेहारों की सेना और कुल्हाड़ियां लिये हुए उस के विरुद्ध आएंगे ॥ २३ । यहोवा की यह वाणी है कि चाहे उस का वन बहुत ही घना भी हो पर वे उस को काट डालेंगे क्योंकि वे टिड्डियों से भी अधिक अनगिनित हैं ॥ २४ । मिस्री कन्या की आशा टूटेगी क्योंकि वह उत्तर दिशा के लोगों के वश में कर दिई जाएगी ॥ २५ । इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा कहता है कि सुनो मैं नो नगरवासी आमोन् और फ़िरौन् राजा उस के सब देवताओं और राजाओं समेत मिस्र को और फ़िरौन् को उन समेत जो उस पर भरोसा रखते हैं दण्ड देने पर हूं, २६ । और मैं उन को बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् और उस के कर्म्मचारियों को जो उन के प्राण के खोजी हैं उन के वश में कर दूंगा । और उस के पीछे वह प्राचीन काल की नाईं फिर बसाया जाएगा यहोवा की यह वाणी है ॥ २७ । पर हे मेरे दास याकूब तू मत डर और हे इस्राएल्

(१) मूल में अधेर करनेहारी ।

(१) मूल में मिस्र की रहनेहारी कन्या ।

विस्मित न हो क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को बन्धुआई के दूर देश से छुड़ा ले आऊंगा सो याकूब लौटकर चैन और सुख से रहेगा और कोई उसे डराने न पाएगा ॥ २८। हे मेरे दास याकूब यहोवा की यह वाणी है कि तू मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और यद्यपि उन सब जातियों का जिन में मैं तुझे बरबस कर दूंगा अन्त कर डालूंगा पर तेरा अन्त न करूंगा तेरी ताड़ना मैं विचार करके करूंगा और तुझे किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा ॥

४७. फ़िरौन

के अज्जा नगर को मार लेने से पहिले यिर्मयाह् नबी के पास पलिश्तियों के विषय यहोवा का यह वचन पहुंचा कि, २। यहोवा यों कहता है कि देखो उत्तर दिशा से उमण्डनेहारी नदी देश को उस सब समेत जो उस में है और निवासियों समेत नगर को डुबो लेगी तब मनुष्य चिल्लाएंगे बरन देश के सब रहनेहारे हाय हाय करेंगे ॥ ३। शत्रुओं के बलवन्त घोड़ों की टाप और रथों के वेग चलने और उन के पहियों के चलने का कोलाहल सुनकर बाप के हाथ पांव ऐसे ढीले पड़ जाएंगे कि मुंह मोड़कर अपने लड़कों को भी न देखेगा ॥ ४। क्योंकि सब पलिश्तियों के नाश होने का दिन आता है और सोर् और सीदोन् के सब बचे हुए सहायक मिट जाएंगे क्योंकि यहोवा पलिश्तियों को जो कप्तोर् नाम समुद्रतीर के बचे हुए रहनेहारे हैं उन को नाश करने पर है ॥ ५। अज्जा के लोग सिर मुंड़ाए हैं अश्कलोन् जो पलिश्तियों के नीचान में अकेला रह गया है सो भी मिटाया गया है तू कब लों अपनी देह चीरता रहेगा ॥

६। हाय यहोवा की तलवार तू कब लों कल न पकड़ेगी अपने मियान में घुस जा शान्त हो और थमी रह ॥ ७। हाय तू क्योंकर थम सकती क्योंकि यहोवा ने तुझ को आज्ञा दिई और अश्कलोन् और समुद्रतीर के विरुद्ध ठहराया है ॥

४८. मोआब्

के विषय में इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि नबो पर हाय क्योंकि वह नाश हो गया किर्यातैम् की आशा टूटी है वह ले लिया गया है ऊंचा गढ़ निराश और विस्मित हो गया है ॥ २। मोआब् की प्रशंसा जाती रही हेश्बोन् में उस की हानि की कल्पना किई गई है कि आओ हम उस को ऐसा नाश करें कि राज्य न रहे। हे मद्मेन् तू सुनसान हो जाएगा तलवार तेरे पीछे पड़ेगी ॥ ३। होरोनैम् से चिल्लाहट का शब्द नाश और बड़े दुःख का शब्द सुनाई देता है ॥ ४। मोआब् सत्यानाश हो रहा है उस के नन्हे बच्चों की चिल्लाहट सुन[1] पड़ी ॥ ५। लूहीत् की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए चढ़ेंगे और होरोनैम् की उतार में नाश की चिल्लाहट का संकट हुआ है ॥ ६। भागकर अपना अपना प्राण बचाओ और उस अधमूए पेड़ के समान हो जाओ जो जंगल में होता है ॥ ७। क्योंकि तू जो अपने कामों और भण्डारों पर भरोसा रखता है इस कारण तू पकड़ा जाएगा और कमोश् देवता भी अपने याजकों और हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा ॥ ८। और यहोवा के वचन के अनुसार नाश करनेहारे तुम्हारे एक एक नगर पर चढ़ाई करेंगे और तुम्हारा कोई नगर न बचेगा और नीचानवाले और पहाड़ पर की चौरस भूमिवाले दोनों नाश किये जाएंगे ॥ ९। मोआब् को पंख दे कि वह उड़कर दूर हो जाए क्योंकि उन के नगर यहां लों उजाड़ हो जाएंगे कि उन में कोई न रह जाएगा ॥ १०। जो कोई यहोवा का काम आलस्य से करे और जो अपनी तलवार लोहू बहाने से रोक रक्खे सो स्रापित हो ॥ ११। मोआब् बचपन ही से सुखी है अपनी तलछठ पर बैठ गया है वह न एक बरतन से दूसरे बरतन में उण्डेला गया न बंधुआई में गया इस लिये उस का स्वाद उस में रहा और उस की गन्ध ज्यों की त्यों बनी रही है ॥ १२। इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन

(१) मूल में सुना गया।

आएंगे कि मैं लोगों को उस के उण्डेलने के लिये भेजूंगा और वे उस को उण्डेलेंगे जिन घड़ों में वह रक्खा हुआ है उन को टूके करके फोड़ डालेंगे ॥ १३। और जैसा इस्राएल् के घराने को बेतेल् से जिस पर वे भरोसा रखते थे लज्जित होना पड़ा, वैसा ही मोआबी लोग कमोश् से लजाएंगे ॥ १४। तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम तो वीर और पराक्रमी योद्धा हैं ॥ १५। मोआब् तो नाश हुआ और उस के नगर भस्म हो गये और उस के चुने हुए जवान घात होने को उतर गये राजाधिराज की जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है यही वाणी है ॥ १६। मोआब् की विपत्ति निकट आ गई और उस के संकट में पड़ने का दिन बहुत ही वेग से आता है ॥ १७। हे उस के आस पास के सब रहनेहारो हे उस की कीर्त्ति के सब जाननेहारो उस के लिये विलाप करो कहो हाय यह मजबूत सोंटा और सुन्दर छड़ी क्या ही टूट गई है ॥ १८। हे दीबोन् की रहनेहारी[1] अपना विभव छोड़कर प्यासी बैठी रह क्योंकि मोआब् के नाश करनेहारे ने तुझ पर चढ़ाई करके तेरे दृढ़ गढ़ों को नाश किया है ॥ १९। हे अरोएर् की रहनेहारी मार्ग में खड़ी होकर ताकती रह उस से जो भागता है और उस से जो बच निकलती है पूछ कि क्या हुआ है ॥ २०। मोआब् की आशा टूटेगी वह विस्मित हो गया सो हाय हाय करो और चिल्लाओ अर्नोन् में भी यह बताओ कि मोआब् नाश हुआ है ॥ २१। और चौरस भूमि के देश में होलोन् यहसा मेपात्, २२। दीबोन् नबो बेत्दिब्लातैम्, २३। किर्य्यातैम् बेत्गामूल बेत्मोन्, २४। करिय्योत् बोस्रा निदान क्या दूर क्या निकट मोआब् देश के सारे नगरों में दण्ड की आज्ञा पूरी हुई ॥ २५। यहोवा की यह वाणी है कि मोआब् का सींग कट गया और भुजा टूट गई है ॥ २६। उस को मतवाला करो क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है सो मोआब् अपनी छांट में लोटेगा और ठट्ठों में उड़ाया जाएगा ॥ २७। क्या तू ने भी इस्राएल् को ठट्ठों में नहीं उड़ाया क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया कि तू जब जब उस की चर्चा करता तब तब तू सिर हिलाता है ॥ २८। हे मोआब् के रहनेहारो अपने अपने नगर को छोड़कर ढांग की दरार में बसो और उस पिण्डुकी के समान हो जो गुफा के मुंह की एक ओर घोंसला बनाती हो ॥ २९। हम ने मोआब् के गर्व्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त गर्व्वी है उस का अहंकार और गर्व्व और अभिमान और उस का मन फूलना प्रसिद्ध है ॥ ३०। यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस के रोष को भी जानता हूं कि वह व्यर्थ ही है उस के बड़े बोल से कुछ बन न पड़ा ॥

३१। इस कारण मैं मोआबियों के लिये हाय हाय करूंगा मैं सारे मोआबियों के लिये चिल्लाऊंगा कीर्हेरेस् के लोगों के लिये विलाप किया जाएगा ॥ ३२। हे सिब्मा की दाखलता मैं तुम्हारे लिये याजेर से भी अधिक विलाप करूंगा तेरी डालियां तो ताल के पार बढ़ गईं वरन याजेर् के ताल लों भी पहुंची थीं पर नाश करनेहारा तेरे धूपकाल के फलों पर और तोड़ी हुई दाखों पर भी टूट पड़ा है ॥ ३३। और फलवाली बारियों और मोआब् के देश से आनन्द और मगन होना उठ गया है और मैं ने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डों में दाखमधु कुछ न रह गया लोग फिर दाख ललकारते हुए न रौंदेंगे जो ललकार होनेवाली है सो होगी नहीं ॥ ३४॥ हेश्बोन् की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले लों और यहस् लों भी और सोअर् से होरोनैम् और एग्लत्शलीशिय्या लों भी चिल्लाते हुए भागे चले गये हैं और निम्रीम् का जल भी सूख गया है ॥ ३५। फिर यहोवा की यह वाणी है कि मैं ऊंचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाना और देवताओं के लिये धूप जलाना दोनों मोआब् में बन्द कर दूंगा ॥ ३६। इस कारण मेरा मन मोआब् और कीर्हेरेस् के लोगों के लिये रो रोकर बांसुली सा आलापता है क्योंकि जो कुछ उन्हों ने कमाकर बचाया है सो नाश हो गया है ॥ ३७। क्योंकि सब के सिर मूंड़े गये और सब की डाढ़ियां नोची गईं सब के हाथ चीरे हुए और सब की कमरों में टाट बन्धा हुआ है ॥ ३८। मोआब् के सब घरों की छतों पर और सब चौकों में रोना

(१) मूल में दीबोन् की रहनेहारी बेटी ।

पीटना हो रहा है क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने मोआब् को तुच्छ बरतन की नाईं तोड़ डाला है ॥ ३९। मोआब् कैसे विस्मित हो गया हाय हाय करो क्योंकि उस ने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी है इस प्रकार मोआब् की चारों ओर के सब रहनेहारे उस से ठट्ठा करेंगे और विस्मित हो जाएंगे ॥ ४०। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि देखो वह उकाब सा उड़ेगा मोआब् के ऊपर अपने पंख फैलाएगा ॥ ४१। करिय्योत् ले लिया गया और गढ़वाले नगर दूसरों के वश में पड़ गये और उस दिन मोआबी वीरों के मन जननेहारी स्त्री के से हो जाएंगे ॥ ४२। और मोआब् ऐसा तितर बितर हो जाएगा कि उस का दल टूट जाएगा क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है ॥ ४३। यहोवा की यह वाणी है कि हे मोआब् के रहनेहारे तेरे लिये भय और गड़हा और फन्दा ठहराये गये हैं ॥ ४४। जो कोई भय से भागे सो गड़हे में गिरेगा और जो कोई गड़हे में से निकले सो फन्दे में फंसेगा क्योंकि मैं मोआब् के दण्ड का दिन उस पर ले आऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ४५। जो भागे हुए हैं सो हेश्बोन् में शरण लेकर खड़े हो गये हैं पर हेश्बोन् से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली जिस से मोआब् देश के कोने और बलवैयों के चोण्डे भस्म हो गये हैं ॥ ४६। हे मोआब् तुझ पर हाय कमोश् की प्रजा नाश हो गई क्योंकि तेरे स्त्री पुरुष दोनों बन्धुआई में गये हैं ॥ ४७। तौभी यहोवा की यह वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं मोआब् को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा। मोआब् के दण्ड का वचन यहीं लों वर्णन हुआ ॥

४९. अम्मोनियों के विषय में यहोवा यों कहता है कि

क्या इस्राएल् के पुत्र नहीं हैं क्या उस का कोई वारिस नहीं रहा फिर मल्काम् क्यों गाद् के देश का अधिकारी होने पाया और उस की प्रजा क्यों उस के नगरों में बसने पाई है ॥ २। यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि मैं अम्मोनियों के रब्बा नाम नगर के विरुद्ध युद्ध की ललकार सुनवाऊंगा और वह उजड़कर डीह हो जाएगा और उस की बस्तियां[1] फूंक दिई जाएंगी तब जिन लोगों ने इस्राएलियों के देश को अपना लिया है उन के देश को इस्राएली अपना लेंगे यहोवा का यही वचन है ॥ ३। हे हेश्बोन् हाय हाय कर क्योंकि ऐ नगर नाश हो गया हे रब्बा की बेटियो चिल्लाओ और कमर में टाट बांधो छाती पीटती हुई बाड़ों में इधर उधर दौड़ो क्योंकि मल्काम् अपने याजकों और हाकिमों समेत बन्धुआई में जाएगा ॥ ४। हे भंग छोड़नेहारी जाति[2] तू अपने देश की तराइयों पर विशेष करके अपनी बहुत ही उपजाऊ तराई पर क्यों फूलती है तू क्यों यह कहकर अपने रक्खे हुए धन पर भरोसा रखती है कि मेरे विरुद्ध कौन चढ़ाई कर सकेगा ॥ ५। प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि सुन मैं तेरी चारों ओर के सब रहनेहारों की तरफ से तेरे मन में भय उपजाने पर हूं और तेरे लोग अपने अपने साम्हने की ओर धकिया दिये जाएंगे और जब वे मारे मारे फिरेंगे तब कोई उन्हें एकट्ठे न करेगा ॥ ६। पर उस के पीछे मैं अम्मोनियों को बन्धुआई से लौटा लाऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

७। एदोम् के विषय में सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि क्या तेमान् में अब कुछ बुद्धि नहीं रही क्या वहां के ज्ञानियों की युक्ति निष्फल हो गई क्या उन की बुद्धि जाती रही है ॥ ८। हे ददान् के रहनेहारो भागो लौट जाओ वहां छिपकर बसो क्योंकि जब मैं एसाव् को दण्ड देने लगूं तब उस पर भारी विपत्ति पड़ेगी ॥ ९। यदि दाख के तोड़नेहारे तेरे पास आते तो क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते और यदि चोर रात को आते तो क्या वे जितना चाहते उतना धन लूटकर ले न जाते ॥ १०। क्योंकि मैं ने एसाव् को उघारा मैं ने उस के छिपने के स्थानों को प्रगट किया यहां लों कि वह छिप न सका उस के वंश और भाई और पड़ोसी

---

(१) मूल में बेटियां। (२) मूल में भग छोड़नेहारी बेटी।

सब नाश हो गये और वह जाता रहा है ॥ ११ । अपने बपमूए बालकों को छोड़ जाओ मैं उन को जिलाऊंगा और तुम्हारी विधवाएं मुझ पर भरोसा रक्खें ॥ १२ । क्योंकि यहोवा यों कहता है कि देखो जो इस के योग्य न थे कि कटोरे में से पीएं उन को तो निश्चय पीना पड़ेगा फिर क्या तू किसी प्रकार से निर्दोष ठहरके बचेगा तू निर्दोष ठहरके न बचेगा अवश्य ही पीना पड़ेगा ॥ १३ । क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने अपनी किरिया खाई है कि बोस्रा ऐसा उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे और उस की उपमा देकर निन्दा किया और साप दिया करेंगे और उस के सारे गांव सदा के लिये उजाड़ हो जाएंगे ॥

१४ । मैं ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है वरन जाति जाति में यह कहने को एक दूत भेजा गया है कि एकट्ठे होकर एदोम् पर चढ़ाई करो और उस से लड़ने को उठो ॥

१५ । मैं ने तुझे जातियों में छोटी और मनुष्यों में तुच्छ कर दिया है ॥ १६ । हे ढांग की दरारों में बसे हुए हे पहाड़ी की चोटी पर कोट बनानेवाले[१] तेरे भयानक रूप और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है चाहे तू उकाब की नाईं अपना बसेरा ऊंचे स्थान पर बनाये तौभी मैं वहां से तुझे उतार लाऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ १७ । एदोम् यहां लों उजाड़ होगा कि जो कोई उस के पास से चले सो चकित होगा और उस के सारे दुःखों पर ताली बजाएगा ॥ १८ । यहोवा का यह वचन है कि सदोम् और अमोरा और उन के आस पास के नगरों के उलट जाने से उन की जैसी दशा हुई थी वैसी ही होगी वहां न कोई मनुष्य रहेगा और न कोई आदमी उस में टिकेगा ॥ १९ । देखो वह सिंह की नाईं यर्दन के आस पास के घने जंगल से[२] सदा की चराई पर चढ़ेगा और मैं उन को उस के साम्हने से झट भगा दूंगा तब जिस को मैं चुन लूं उस को उन पर अधिकारी ठहराऊंगा देखो मेरे तुल्य कौन है और कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा[१] और वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा ॥ २० । सो सुनो यहोवा ने एदोम् के विरुद्ध क्या युक्ति किई है और तेमान् के रहनेहारों के विरुद्ध कौन सी कल्पना किई है निश्चय वह भेड़ बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा निश्चय वह चराई को भेड़ बकरियों से खाली कर देगा ॥ २१ । उन के गिरने के शब्द से पृथिवी कांप उठती और ऐसी चिल्लाहट मचती जो लाल समुद्र लों सुन पड़ती है ॥ २२ । देखो वह उकाब की नाईं निकलकर उड़ आएगा और बोस्रा पर अपने पंख फैलाएगा और उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन जननेहारी स्त्री का सा हो जाएगा ॥

२३ । दमिश्क् के विषय । हमात् और अर्पद् की आशा टूटी है क्योंकि उन्हों ने बुरा समाचार सुना है वे गल गये हैं समुद्र पर चिन्ता है वह शान्त नहीं हो सकता ॥ २४ । दमिश्क् बलहीन होकर भागने को फिरती है पर कंपकपी ने उसे पकड़ा जननेहारी की सी पीड़ें उस को उठी हैं ॥ २५ । हाय वह नगर, वह प्रशंसायोग्य पुरी जो मेरे हर्ष का कारण है सो क्यों छोड़ा न जाएगा ॥ २६ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस में के जवान चौकों में गिराये जाएंगे और सब योद्धाओं का बोलना बन्द हो जाएगा ॥ २७ । और मैं दमिश्क् की शहरपनाह में आग लगाऊंगा जिस से बेन्हदद् के राजभवन भस्म हो जाएंगे ॥

२८ । केदार् के विषय और हासोर् के राज्यों के विषय में जिन्हें बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने मार लिया यहोवा यों कहता है कि उठकर केदार् पर चढ़ाई करो और पूरबियों का नाश करो ॥ २९ । वे उन के डेरे और भेड़ बकरियां ले जाएंगे उन तंबू और सब बरतन उठाकर ऊंटों को भी हांक ले जाएंगे और उन लोगों से पुकारके कहेंगे कि चारों ओर भय ही भय है ॥ ३० । यहोवा की यह वाणी है कि हे हासोर् के रहनेहारो भागो दूर दूर

(१) मूल में चोटी की पकड़नेहारी । (२) मूल में यर्दन की बढ़ाई से ।

(१) मूल में कौन मेरे लिये समय ठहराएगा ।

मारे मारे फिरो कहीं जाकर छिपके बसो क्योंकि बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने तुम्हारे विरुद्ध युक्ति और कल्पना किई है॥ ३१। यहोवा की यह वाणी है कि उठकर उस चैन से रहनेहारी जाति के लोगों पर चढ़ाई करो जो निडर रहते हैं और बिना किवाड़ और बेंड़े यों ही बसे हुए हैं॥ ३२। उन के ऊंट और अनगिनित गाय बैल और भेड़ बकरियां लूट में आएंगी क्योंकि मैं उन की गाल के बाल मुंड़ानेहारों को उड़ाकर सब दिशाओं[1] में तितर बितर करूंगा और चारों ओर से उन पर विपत्ति लाकर डालूंगा यहोवा की यह वाणी है॥ ३३। और हासोर् गीदड़ों का वासस्थान और सदा के लिये उजाड़ होगा न कोई मनुष्य वहां रहेगा और न कोई आदमी उस में टिकेगा॥

३४। यहूदा के राजा सिद्किय्याह् के राज्य के आदि में यहोवा का यह वचन यिर्मयाह् नबी के पास एलाम् के विषय में पहुंचा कि, ३५। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं एलाम् के धनुष को जो उन के पराक्रम का मुख्य कारण है तोड़ूंगा॥ ३६। और मैं आकाश की चारों ओर से वायु बहाकर उन्हें चारों दिशाओं[1] की ओर तितर बितर करूंगा यहां लों कि ऐसी कोई जाति न रहेगी जिस में भागते हुए एलामी न आएं॥ ३७। और मैं एलाम् को उन के शत्रुओं और उन के प्राण के खोजियों के साम्हने विस्मित करूंगा और उन पर अपना कोप भड़काकर विपत्ति डालूंगा और यहोवा की यह वाणी है कि मैं तलवार को उन के पीछे चलवाते चलवाते उन का अन्त कर डालूंगा॥ ३८। और मैं एलाम् में अपना सिंहासन रखकर उन के राजा और हाकिमों का नाश करूंगा यहोवा की यही वाणी है॥ ३९। और यहोवा की यह भी वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं एलाम् को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा॥

५०. बाबेल्

और कसदियों के देश के विषय यहोवा ने यिर्मयाह् नबी के द्वारा यह वचन कहा कि, २। जातियों में बताओ और सुनाओ और झण्डा खड़ा करो सुनाओ मत छिपाओ कि बाबेल् ले लिया गया बेल् का मुंह काला हो गया मरोदक् विस्मित हो गया बाबेल् की प्रतिमाएं लज्जित हुईं और उस की बेडौल मूरतें विस्मित होगईं॥ ३। क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उस के देश को उजाड़ यहां लों कर देगी कि क्या मनुष्य क्या पशु उस में कोई भी न रह जाएगा सब भागकर चले जाएंगे॥ ४। यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा एक संग आएंगे वे रोते हुए अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चले आएंगे॥ ५। वे सिय्योन् की ओर मुंह किये हुए उस का मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएंगे कि आओ हम यहोवा के साथ ऐसी वाचा बांधकर जो कभी बिसर न जाए सदा ठहरी रहे उस से मिल जाएं॥

६। मेरी प्रजा खोई हुई भेड़ें हैं उन के चरवाहों ने उन को भटका दिया और पहाड़ों पर फिराया है वे पहाड़ पहाड़ और पहाड़ी पहाड़ी घूमते घूमते अपने बैठने के स्थान को भूल गई हैं॥ ७। जितनों ने उन्हें पाया सो उन को खा गये और उन के सतानेहारों ने कहा इस में हमारा कुछ दोष नहीं क्योंकि यहोवा जो धर्म्म का आधार है और उन के पितरों का आश्रय था उस के विरुद्ध उन्हों ने पाप किया है॥ ८। बाबेल् के बीच में से भागो कसदियों के देश से जैसे बकरे भेड़ बकरियों के अगुवे होते हैं वैसे निकल आओ॥ ९। क्योंकि देखो मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों को उभारके उन की मण्डली बाबेल् पर चढ़ा ले आऊंगा और वे उस के विरुद्ध पांति बांधेंगे उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा उन के तीर चतुर वीर के से होंगे उन में से कोई अकारथ न जाएगा॥ १०। और कसदियों का देश ऐसा लुटेगा कि सब लूटनेहारों का पेट भरेगा यहोवा की यही वाणी है॥ ११। हे मेरे भाग के लूटनेहारो तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और हुलसते हो और घास चरनेहारी बछिया की नाईं उछलते और बलवन्त घोड़ों के समान हिनहिनाते

(१) मूल में वायुओं।

हो, १२ । इस कारण तुम्हारी माता की आशा टूटेगी तुम्हारी जननी का मुंह काला होगा क्योंकि वह सब जातियों में से नीच होगी वह जंगल और मरु और निर्जल देश हो जाएगी ॥ १३ । यहोवा के क्रोध के कारण वह देश बसा न रहेगा वह उजाड़ ही उजाड़ होगा, जो कोई बाबेल् के पास से चले सो चकित होगा और उस के सब दुःख देखकर ताली बजाएगा ॥ १४ । हे सब धनुर्धारियो बाबेल् की चारो ओर उस के विरुद्ध पांति बांधो उस पर तीर चलाओ उन्हें रख मत छोड़ो क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है ॥ १५ । चारों ओर से उस पर ललकारो उस ने हार मानी उस के कोट गिराये और शहरपनाह ढाई गई क्योंकि यहोवा उस से अपना पलटा लेने पर है सो तुम भी उस से अपना अपना पलटा लो जैसा उस ने किया है वैसा ही तुम भी उस से करो ॥ १६ । बाबेल् में से बोनेहारा और काटनेहारा दोनों को नाश करो वे दुखदाई तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगों की ओर फीरें और अपने अपने देश को भाग जाएं ॥

१७ । इस्राएल् भगाई हुई भेड़ है सिंहों ने उस को भगा दिया है पहिले तो अश्शूर् के राजा ने उस को खा डाला और पीछे बाबेल् के इस राजा नबूकद्रेस्सर् ने उस की हड्डियों को तोड़ दिया है ॥ १८ । इस कारण इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो जैसा मैं ने अश्शूर् के राजा को दण्ड दिया था वैसे ही अब देश समेत बाबेल् के राजा को दण्ड दूंगा ॥ १९ । और मैं इस्राएल् को उस की चराई में फेर लाऊंगा और वह कर्म्मेल् और बाशान् में फिर चरेगा और एप्रैम् के पहाड़ों पर और गिलाद् में फिर पेट भर खाने पाएगा ॥ २० । यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में[१] इस्राएल् का अधर्म्म ढूंढ़ने पर भी पाया न जाएगा और यहूदा के पाप खोजने पर भी न मिलेंगे क्योंकि जिन को मैं बचा रखूंगा उन का पाप भी क्षमा करूंगा ॥

(१) मूल में उन दिनो और उस समय में।

२१ । तू मरातैम्[१] देश और पकोद्[२] नगर के निवासियों पर चढ़ाई कर मनुष्यों को तो मार डाल और धन को सत्यानाश कर[३] यहोवा की यह वाणी है कि जो जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं उन सभों के अनुसार कर ॥ २२ । सुनो उस देश में युद्ध और सत्यानाश का सा शब्द हो रहा है ॥ २३ । जो हथौड़ा सारी पृथिवी के लोगों को चूर चूर करता था सो कैसा काट डाला गया है बाबेल् सब जातियों के बीच में कैसा उजाड़ हो गया है ॥ २४ । हे बाबेल् मैं ने तेरे लिये फन्दा लगाया और तू अनजाने उस में फंस भी गया तू ढूंढ़कर पकड़ा गया है क्योंकि तू यहोवा से झगड़ा करता था ॥ २५ । प्रभु सेनाओं के यहोवा ने शस्त्रों का अपना घर खोलकर अपने क्रोध प्रगट करने का सामान निकाला है क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा को कस्दियों के देश में एक काम करना है ॥ २६ । पृथिवी की छोर से आओ और उस के बखरियों को खोलो उस को ढेर ही ढेर बना दो और सत्यानाश करो कि उस में का कुछ भी बचा न रहे ॥ २७ । उस में के सब बैलों का नाश करो वे घात होने के स्थान में उतर जाएं उन पर हाय क्योंकि उन के दण्ड पाने का दिन आ पहुंचा है ॥ २८ । सुनो बाबेल् के देश में से भागनेहारों का सा बोल सुन पड़ता है जो सिय्योन् में यह समाचार देने को दौड़े आते हैं कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपने मन्दिर का पलटा ले रहा है ॥ २९ । बहुत से बरन सब धनुर्धारियों को बाबेल् के विरुद्ध एकट्ठे करो उस की चारों ओर छावनी डालो उस का कोई भागकर निकलने न पाए उस के काम का बदला उसे देओ जैसा उस ने किया है ठीक वैसा ही उस के साथ करो क्योंकि उस ने यहोवा इस्राएल् के पवित्र के विरुद्ध अभिमान किया है ॥ ३० । इस कारण उस में के जवान चौकों में गिराये जाएंगे और सब योद्धाओं का बोल बन्द हो जाएगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ३१ । प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि हे अभिमानी मैं

(१) अर्थात् अत्यन्त बलवैये। (२) अर्थात् दण्डयोग्य।
(३) मूल में मार डाल और उन के पीछे हरम कर।

तेरे विरुद्ध हूं और तेरे दण्ड पाने का दिन आ गया है ॥ ३२ । सो अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और कोई उसे फिर न उठाएगा और मैं उस के नगरों में आग लगाऊंगा और उस से उस की चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा ॥

३३ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि इस्राएल् और यहूदा दोनों बराबर पिसे हुए हैं और जितनों ने उन को बंधुआ किया सो तो उन्हें पकड़े रहते हैं और जाने नहीं देते ॥ ३४ । उन का छुड़ानेहारा सामर्थी है सेनाओं का यहोवा यही उस का नाम है वह उन का मुकद्दमा भली भांति लड़ेगा इस लिये कि वह पृथिवी को चैन देकर बाबेल् के निवासियों को व्याकुल करे ॥ ३५ । यहोवा की यह वाणी है कि कसदियों और बाबेल् के हाकिम पण्डित आदि सब निवासियों पर तलवार चलेगी ॥ ३६ । उन बड़ा बोल बोलनेहारों पर तलवार चलेगी और वे मूर्ख बनेंगे उस के शूरवीरों पर भी तलवार चलेगी और वे विस्मित हो जाएंगे ॥ ३७ । उस में के सवारों और रथियों[1] पर और सब मिले जुले लोगों पर तलवार चलेगी और वे स्त्री बन जाएंगे उस के भण्डारों पर तलवार चलेगी और वे लुट जाएंगे ॥ ३८ । उस के जलाशयों पर सूखा पड़ेगा और वे सूख जाएंगे क्योंकि वह खुदी हुई मूरतों से भरा हुआ देश है और वे अपनी भयानक प्रतिमाओं पर बावले हैं ॥ ३९ । इस लिये निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर वहां बसेंगे और शुतर्मुर्ग उस में वास करेंगे और वह फिर सदा लों बसाया न जाएगा न उस में युग युग लों कोई वास करेगा ॥ ४० । यहोवा की यह वाणी है कि सदोम् और अमोरा और उन के आस पास के नगरों की जैसी दशा परमेश्वर के उलट देने से हुई थी वैसी ही बाबेल् की भी होगी यहां लों कि न कोई मनुष्य उस में रहेगा और न कोई आदमी उस में टिकेगा ॥ ४१ । सुनो उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं और पृथिवी की छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर चढ़ाई करेंगे ॥४२॥ वे धनुष और बर्छी पकड़े हुए हैं वे क्रूर और निर्दय हैं वे समुद्र की नाईं गरजेंगे और घोड़ों पर चढ़े हुए तुझ बाबेल् की बेटी के विरुद्ध पांति बांधे युद्ध करनेहारे की नाईं आएंगे ॥ ४३ । उन का समाचार सुनते ही बाबेल् के राजा के हाथ पांव ढीले पड़ जाते हैं और उस को जननेहारी की सी पीड़ें उठीं ॥ ४४ । सुनो सिंह की नाईं जो यर्दन[2] के आस पास के घने जंगल से सदा की चराई पर चढ़े मैं उन को उस के साम्हने से झट भगा दूंगा तब जिस को मैं चुन लूं उस को उन पर अधिकारी ठहराऊंगा देखो मेरे तुल्य कौन है और कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा[3] और वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा ॥ ४५ । सो सुनो कि यहोवा ने बाबेल् के विरुद्ध क्या युक्ति किई है और कसदियों के देश के विरुद्ध कौन सी कल्पना किई है निश्चय वह भेड़ बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा निश्चय वह सिंह चराइयों को भेड़ बकरियों से खाली कर देगा ॥ ४६ । बाबेल् के ले लिये जाने के शब्द से पृथिवी कांप उठती और उस की चिल्लाहट जातियों में सुन पड़ती है ॥

(१) मूल में घोड़ों और रथों।

५१.

यहोवा यों कहता है कि मैं बाबेल् के और लेब्कामै[3] के रहनेहारों के विरुद्ध एक नाश करनेहारी वायु चलाऊंगा ॥ २ । और मैं बाबेल् के पास ऐसे लोगों को भेजूंगा जो उस को फटक फटककर उड़ा देंगे और इस रीति उस के देश को सुनसान करेंगे और विपत्ति के दिन चारों ओर से उस के विरुद्ध होंगे ॥ ३ । धनुर्धारी के विरुद्ध धनुर्धारी धनुष चढ़ाए और अपना जो झिलम पहिने उठे उसके जवानों से कुछ कोमलता न करना उस की सारी सेना को सत्यानाश करना ॥ ४ । कसदियों के देश में लोग मारे हुए और उस की सड़कों में छिदे हुए गिरेंगे ॥ ५ ।

(१) मूल में यर्दन की बढ़ाई से। (२) मूल में कौन मेरे लिये समय ठहराएगा। (३) अर्थात् मेरे विरोधियों का हृदय। यह कसदियों के देश का एक नाम जान पड़ता है।

क्योंकि यद्यपि इस्राएल् और यहूदा के देश इस्राएल् के पवित्र के विरुद्ध किये हुए पापों से भरपूर हो गये हैं तौभी उन के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा ने उन को त्याग नहीं दिया ॥

६ । बाबेल् के बीच से भागो और अपना अपना प्राण बचाओ उस के अधर्म्म में भागी होकर तुम भी न मिट जाओ क्योंकि यह यहोवा के पलटा लेने का समय है वह उस को बदला देने पर है ॥ ७ । बाबेल् यहोवा के हाथ में सोने का कटोरा ठहरा था जिस से सारी पृथिवी के लोग मतवाले होते थे जाति जाति के लोगों ने उस के दाखमधु में से पिया इस कारण वे बावले हो गये ॥ ८ । बाबेल् अचानक ले लिई और नाश किई गई उस के लिये हाय हाय करो उस के घावों के लिये बलसान औषधि लाओ क्या जानिये वह चंगी हो सके ॥ ९ । हम बाबेल् का इलाज करते तो थे पर वह चंगी नहीं हुई सो आओ हम उस को तजकर अपने अपने देश को चले जाएं क्योंकि उस पर किया हुआ न्याय आकाश वरन स्वर्ग लों भी पहुंच गया है ॥ १० । यहोवा ने हमारे धर्म्म के काम प्रगट किये हैं सो आओ हम सिय्योन् में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें ॥ ११ । तीरें पैनी करो ढालें थांभे रहो क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है उस ने बाबेल् को नाश करने की कल्पना किई है और यहोवा का यही पलटा है जो वह अपने मन्दिर का लेगा ॥ १२ । बाबेल् की शहरपनाह् के विरुद्ध झण्डा खड़ा करो बहुत पहरुए बैठाओ घात लगानेहारों को बैठाओ क्योंकि यहोवा ने बाबेल् के रहनेहारों के विरुद्ध जो कुछ कहा था सो अब करने को ठाना और किया भी है ॥ १३ । हे बहुत जलाशयों के बीच बसी हुई और बहुत भण्डार रखनेहारी तेरा अन्त आया तेरे लोभ की सीमा पहुंच गई है ॥ १४ । सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही किरिया खाई है कि निश्चय मैं तुम को टिड्डियों के समान अनगिनित मनुष्यों से भर दूंगा और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे ॥

१५ । उस ने पृथिवी को अपने सामर्थ्य से बनाया और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है ॥ १६ । जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है वह पृथिवी की छोर से कुहरे उठाता और वर्षा के लिये बिजली बनाता और अपने भण्डार में से पवन निकाल ले आता है ॥ १७ । सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं सब सोनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना पड़ेगा क्योंकि उन की ढाली हुई मूरतें धोखा देनेहारी हैं और उन के कुछ भी सांस नहीं चलती ॥ १८ । वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं जब उन के नाश किये जाने का समय आएगा तब[1] वे नाश ही होंगी ॥ १९ । पर जो याकूब का निज अंश है वह उन के समान नहीं वह तो सब का बनानेहारा है और इस्राएल् उस का निज भाग है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है ॥

२० । तू मेरा फरसा और युद्ध के हथियार ठहरा है सो तेरे द्वारा मैं जाति जाति को तितर बितर करूंगा और तेरे ही द्वारा राज्य राज्य को नाश करूंगा ॥ २१ । और तेरे ही द्वारा मैं सवार समेत घोड़ों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और रथी समेत रथ को भी तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा ॥ २२ । और तेरे ही द्वारा मैं स्त्री पुरुष दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और जवान पुरुष और जवान स्त्री दोनों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा ॥ २३ । और तेरे ही द्वारा मैं भेड़ बकरियों समेत चरवाहे को टुकड़े टुकड़े करूंगा और तेरे ही द्वारा मैं किसान और उस के जोड़े बैलों को भी टुकड़े टुकड़े करूंगा और अधिपतियों और हाकिमों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा ॥ २४ । और बाबेल् को और सारे कस्दियों को भी मैं उस सारी बुराई का बदला दूंगा जो उन्हों ने तुम लोगों के साम्हने सिय्योन् में किई है यहोवा की यही वाणी है ॥

२५ । हे नाश करनेहारे पहाड़ जिस के द्वारा

(१) मूल में उन के दण्ड होने के समय ।

सारी पृथिवी नाश हुई है यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और हाथ बढ़ाकर तुझे ढांगों पर से लुढ़का दूंगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊंगा ॥ २६। और लोग तुझ से न तो घर के कोने के लिये पत्थर लेंगे और न नेव के लिये क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा यहोवा की यही वाणी है ॥ २७। देश में झण्डा खड़ा करो जाति जाति में नरसिंगा फूंको बाबेल् के विरुद्ध जाति जाति को तैयार करो अरारात् मिन्नी और अश्कनज् नाम राज्यों को उस के विरुद्ध बुलाओ उस के विरुद्ध सेनापति भी ठहराओ घोड़ों को शिखरवाली टिड्डियों के समान अनगिनित चढ़ा ले आओ ॥ २८। उस के विरुद्ध जातियों को तैयार करो मादी राजाओं और अधिपतियों और सब हाकिमों उस राज्य के सारे देश को तैयार करो ॥ २९। यहोवा का यह विचार है कि वह बाबेल् के देश को ऐसा उजाड़ करेगा कि उस में कोई भी न रह जाएगा सो अब पूरा होने पर है इस लिये पृथिवी कांपती और दुःखित होती है ॥ ३०। बाबेल् के शूरवीर गढ़ों में रहकर लड़ने को नकारते हैं उन की वीरता जाती रही है और वे यह देखकर स्त्री बन गये हैं कि हमारे वासस्थानों में आग लग गई और फाटकों के बेण्डे तोड़े गये हैं ॥ ३१। एक हरकारा दूसरे हरकारे से और एक समाचार देनेहारा दूसरे समाचार देनेहारे से मिलने और बाबेल् के राजा को यह समाचार देने के लिये दौड़ेगा कि तेरा नगर चारों ओर से ले लिया गया, ३२। और घाट शत्रुओं के वश हो गये[1] और ताल सुखाये[2] गये और योद्धा घबरा उठे हैं ॥ ३३। क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि बाबेल् की बेटी दांवते समय के खलिहान सरीखी है थोड़े ही दिनों में उस की कटनी का काल आएगा ॥

३४। बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने मुझ को खा लिया और मुझ को पीस डाला और मुझ को छूछे बर्तन के समान कर दिया उस ने मगरमच्छ की नाईं मुझ को निगल लिया और मुझ को स्वादिष्ट भोजन जानकर अपने पेट को मुझ से भर लिया उस ने मुझ को बरबस निकाल दिया है ॥ ३५। सो सिय्योन् की रहनेहारी कहेगी कि मुझ पर और मेरे शरीर पर जो उपद्रव हुआ है सो बाबेल् पर पलट आए और यरूशलेम् कहेगी कि मुझ में किये हुए खून का दोष कस्दियों के देश के रहनेहारों पर लगाया जाएगा ॥

३६। इस लिये यहोवा कहता है कि मैं तेरा मुकद्दमा लड़ूंगा और तेरा पलटा लूंगा और उस के ताल को सुखाऊंगा और उस के सोते को सुखा दूंगा ॥ ३७। और बाबेल् डीह ही डीह और गीदड़ों का वासस्थान होगा और लोग उसे देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे और उस में कोई न रह जाएगा ॥ ३८। लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और गुर्राएंगे जैसे युवा सिंह और सिंह के बच्चे अहेर पर करते हैं ॥ ३९। पर जब उन को बड़ा उत्साह होगा तब मैं जेवनार तैयार करके उन्हें ऐसा मतवाला करूंगा कि वे हुलसकर सदा की नींद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे यहोवा की यही वाणी है ॥ ४०। मैं उन को भेड़ों के बच्चों की और मेढ़ों और बकरों की नाईं घात करा दूंगा ॥ ४१। शेशक् कैसे ले लिया गया जिस की प्रशंसा सारी पृथिवी पर होती थी सो कैसे पकड़ा गया बाबेल् जाति जाति के बीच कैसे सुनसान हो गया है ॥ ४२। बाबेल् के ऊपर समुद्र चढ़ आया है वह उस की बहुत सी लहरों में डूब गया है ॥ ४३। उस के नगर उजड़ गये और उस का देश निर्जन और निर्जल हो गया है उस में कोई मनुष्य नहीं रहता और उस से होकर कोई आदमी नहीं चलता ॥ ४४। मैं बाबेल् में बेल् को दण्ड दूंगा और उस ने जो कुछ निगल लिया है सो उस के मुंह से उगलवाऊंगा और जातियों के लोग फिर उस की ओर तांता बांधे हुए न चलेंगे और बाबेल् की शहरपनाह गिराई जाएगी ॥ ४५। हे मेरी प्रजा उस के

---

(१) मूल में घाट पकड़े गये। (२) मूल में आग से जलाये

बीच से निकल आ और अपने अपने प्राण को यहोवा के भड़के हुए कोप से बचाओ ॥ ४६ । और जब उड़ती बात उस देश में सुनी जाए तब तुम्हारा मन न घबराए और तुम न डरना एक बरस में तो एक उड़ती बात आएगी और उस के पीछे दूसरे बरस में एक और उड़ती बात आएगी और उस देश में उपद्रव हुआ करेगा और हाकिम हाकिम के विरुद्ध होगा ॥ ४७ । उस के पीछे मैं बाबेल् की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड करूंगा और उस के सारे देश के लोगों का मुंह काला हो जाएगा और उस के सब लोग उस के बीच मार डाले जाएंगे ॥ ४८ । तब स्वर्ग और पृथिवी के सारे निवासी बाबेल् पर जयजयकार करेंगे क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेहारे उस पर चढ़ाई करेंगे यहोवा की यही वाणी है ॥ ४९ । जैसा बाबेल् ने इस्राएल् के लोगों को मार डाला वैसा ही सारे देश के लोग उसी में मार डाले जाएंगे ॥ ५० । हे तलवार से बचे हुए भागो खड़े मत रहो यहोवा को दूर से स्मरण करो और यरूशलेम् की भी सुधि लो ॥

५१ । हमारा मुंह काला है हम ने अपनी नामधराई सुनी है यहोवा के पवित्र भवन में जो परदेशी घुसने पाये इस से हमारे मुंह पर सियाही छाई हुई है ॥

५२ । इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि मैं उस की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड करूंगा और उस के सारे देश में लोग घायल होकर कराहते रहेंगे ॥ ५३ । चाहे बाबेल् ऐसा ऊंचा बनाया जाए कि आकाश से बातें करे और उस के ऊंचे गढ़ और भी दृढ़ किये जाएं तौभी मैं उसे नाश करने के लिये लोगों को भेजूंगा यहोवा की यह वाणी है ॥ ५४ । सुनो बाबेल् से चिल्लाहट का शब्द सुन पड़ता और कस्दियों के देश से सत्यानाश का बड़ा कोलाहल सुनाई देता है ॥ ५५ । यहोवा बाबेल् को नाश और उस में का बड़ा कोलाहल बन्द करता है इस से उन का कोलाहल महासागर का सा सुनाई देता है ॥ ५६ । बाबेल् पर भी नाश करनेहारे चढ़ आये हैं और उस के शूरवीर पकड़े गये और उन के धनुष तोड़ डाले गये क्योंकि यहोवा बदला देनेहारा ईश्वर है वह अवश्य ही पलटा लेगा ॥ ५७ । और मैं उस के हाकिमों पण्डितों अधिपतियों रईसों और शूरवीरों को ऐसा मतवाला करूंगा कि वे सदा की नींद में पड़ेंगे और फिर न जागेंगे सेनाओं के यहोवा नाम राजाधिराज की यही वाणी है ॥ ५८ । सेनाओं का यहोवा यों भी कहता है कि बाबेल् की चौड़ी शहरपनाह नेव से ढाई जाएगी और उस के ऊंचे फाटक आग लगाकर जलाये जाएंगे और उस में राज्य राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ठहरेगा और जातियों का परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे थक जाएंगे ॥

५९ । यहूदा के राजा सिदकिय्याह् के राज्य के चौथे बरस में जब उस के संग बाबेल् को सरायाह् भी गया जो नेरिय्याह् का पुत्र और महसेयाह् का पोता और राजभवन का अधिकारी भी था तब यिर्मयाह् नबी ने उस को आज्ञा दिई कि, ६० । इन सब बातों को जो बाबेल् पर पड़नेवाली सारी विपत्ति के विषय लिखी हुई हैं यिर्मयाह् ने पुस्तक में लिख दिया, ६१ । और यिर्मयाह् ने सरायाह् से कहा जब तू बाबेल् में पहुंचे तब अवश्य ही[1] ये सब वचन पढ़कर, ६२ । यह कहना कि हे यहोवा तू ने तो इस स्थान के विषय यह कहा है कि मैं इसे ऐसा मिटा दूंगा कि इस में क्या मनुष्य क्या पशु कोई भी न रह जाएगा बरन यह सदा उजाड़ पड़ा रहेगा ॥ ६३ । और जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुके तब इसे एक पत्थर के संग बांधकर परात् महानद के बीच में फेंक देना ॥ ६४ । और यह कहना कि यों ही बाबेल् डूब जाएगा और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि वह फिर कभी न उठेगा यों उस में का सारा परिश्रम व्यर्थ ही ठहरेगा और वे थके रहेंगे ॥

यहां लों यिर्मयाह् के वचन हैं ॥

---

(१) मूल में तब देख और ।

५२. जब सिद्‌किय्याह् राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम् में ग्यारह बरस लों राज्य करता रहा उस की माता का नाम हमूतल् है जो लिब्नावासी यिर्मयाह् की बेटी थी ॥ २। और उस ने यहोयाकीम् के सब कामों के अनुसार वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है ॥ ३। सो यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम् और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उन को अपने साम्हने से निकाला। और सिद्‌किय्याह् बाबेल् के राजा से बलवा किया ॥ ४॥ सो उस के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल् का राजा नबूकद्रेस्सर् ने अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम् पर चढ़ाई किई और उस ने उस के पास छावनी करके उस की चारों ओर कोट बनाये ॥ ५। यों नगर घेरा गया और सिद्‌किय्याह् राजा के ग्यारहवें बरस लों घिरा रहा ॥ ६। चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां लों बढ़ गई कि लोगों के लिये कुछ रोटी न रही ॥ ७। तब नगर की शहरपनाह में दरार किई गई और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस से सब योद्धा भागकर रात ही रात नगर से निकल गये और अराबा का मार्ग लिया ॥ ८। उस समय कसदी लोग नगर को घेरे हुए थे सो उन की सेना ने राजा का पीछा किया और उस को यरीहो के पास के अराबा में जा पकड़ा तब उस की सारी सेना उस के पास से तितर बितर हो गई॥ ९। सो वे राजा को पकड़कर हमात् देश के रिब्ला में बाबेल् के राजा के पास ले गये और वहां उस ने उस के दण्ड की आज्ञा दिई॥ १०। और बाबेल् के राजा ने सिद्‌किय्याह् के पुत्रों को उस के साम्हने घात किया और यहूदा के सारे हाकिमों को भी रिब्ला में घात किया ॥ ११। और सिद्‌किय्याह् की आंखों को उस ने फुड़वा डाला और उस को बेड़ियों से जकड़ाकर बाबेल् को ले गया फिर बाबेल् के राजा ने उस को दण्डगृह में डाल दिया सो वह मरने के दिन लों वहीं रहा ॥

१२। फिर उसी बरस अर्थात् बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें महीने के दसवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् जो बाबेल् के राजा के सम्मुख हाजिर हुआ करता था सो यरूशलेम् में आया ॥ १३। और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम् के सब बड़े बड़े घरों को आग लगवाकर फूंक दिया ॥ १४। और यरूशलेम् की चारों ओर की सब शहरपनाह को कसदियों की सारी सेना ने जो जल्लादों के प्रधान के संग थी ढा दिया ॥ १५। और कंगाल लोगों में से कितनों को और जो लोग नगर में रह गये और जो लोग बाबेल् के राजा के पास भाग गये थे और जो कारीगर रह गये थे उन सब को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् बंधुआ करके ले गया ॥ १६। पर दिहात के कंगाल लोगों में से कितनों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान् ने दाख की बारियों की सेवा और किसानी करने को छोड़ दिया ॥ १७। और यहोवा के भवन में जो पीतल के खंभे थे और पाये और पीतल का गंगाल जो यहोवा के भवन में था उन सभों को कसदी लोग तोड़कर उन का पीतल बाबेल् को ले गये ॥ १८। और हांड़ियों फावड़ियों कैंचियों कटोरो धूपदानों निदान पीतल के और सब पात्रों को जिन से लोग सेवा टहल करते थे वे ले गये ॥ १९। और तसलों करछों कटोरियों हांडियों दीवटों धूपदानो और कटोरों में से जो कुछ सोने का था सो सोने की और जो कुछ चांदी का था सो चांदी की लूट करके जल्लादों का प्रधान ले गया ॥ २०। दोनों खंभे एक गंगाल पीतल के बारहों बैल जो पायों के नीचे थे इन सब को तो सुलैमान राजा ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया था और इन सब का पीतल तौल से बाहर था ॥ २१। खंभे जो थे उन में से एक एक की ऊंचाई अठारह हाथ और घेरा बारह हाथ और मोटाई चार अंगुल की थी वे तो खोखले थे ॥ २२। और एक एक की कंगनी पीतल की थी एक एक कंगनी की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस पर चारों ओर जाली और अनार जो बने थे सो सब पीतल के थे ॥ २३। और कंगनियों की

चारों अलंगों पर छियानवे अनार बने थे सो जाली के ऊपर चारों ओर एक सौ अनार थे ॥ २४ । और जल्लादों के प्रधान ने सरायाह् महायाजक और उस के नीचे के याजक सपन्याह् और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया ॥ २५ । और नगर में से उस ने एक खोजा पकड़ लिया जो योद्धाओं के ऊपर ठहरा था और जो पुरुष राजा के सन्मुख रहा करते थे उन में से सात जन जो नगर में मिले और सेनापति का मुन्शी जो साधारण लोगों को सेना में भरती करता था और साधारण लोगों में से साठ पुरुष जो नगर में मिले, २६ । इन सब को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् रिब्ला में बाबेल् के राजा के पास ले गया ॥ २७ । तब बाबेल् के राजा ने उन्हें हमात् देश के रिब्ला में ऐसा मारा कि वे मर गये। सो यहूदी अपने देश से बंधुए होकर गये ॥ २८ । जिन लोगों को नबूकद्रेस्सर् बंधुए करके ले गया सो इतने हैं अर्थात् उस के राज्य के सातवें बरस में तीन हजार तेईस यहूदी ॥ २९ । फिर अपने राज्य के अठारहवें बरस में नबूकद्रेस्सर् यरूशलेम् से आठ सौ बत्तीस प्राणियों को ले गया ॥ ३० । फिर नबूकद्रेस्सर् के राज्य के तेईसवें बरस में जल्लादों का प्रधान नबूजरदान् सात सौ पैंतालीस यहूदी प्राणियों को बंधुए करके ले गया सो सब प्राणी मिलकर चार हजार छः सौ हुए ॥

३१ । फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन् की बंधुआई के सैंतीसवें बरस में अर्थात् जिस बरस में बाबेल् का राजा एवील्मरोदक् राजगद्दी पर विराजमान हुआ उसी के बारहवें महीने के पचीसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन् को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया, ३२ । और उस से मधुर मधुर वचन कहकर जो राजा उस के संग बाबेल् में बंधुए थे उन के सिंहासनों से उस के सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, ३३ । और उस के बन्दीगृह के वस्त्र बदला दिये और वह जीवन भर नित्य राजा के सन्मुख भोजन करने पाया ॥ ३४ । और दिन दिन के खरच के लिये बाबेल् के राजा के यहां से नित्य उस को कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ और यह उस के मरने के दिन लों उस के जीवन भर लगातार बना रहा ॥

विलापगीत ।

---

१. जो नगरी लोगों से भरपूर थी
सो अब क्या ही विधवा सी अकेली बैठी हुई है
जो जातियों के लेखे बड़ी और प्रान्तों में रानी थी
सो अब क्या ही कर देनेहारी हो गई है ॥

२ । वह रात को फूट फूटकर रोती है उस के आंसू गालों पर ढलकते हैं
उस के सब यारों में से कोई अब उस को शांति नहीं देता
उस के सब मित्रों ने उस से विश्वासघात किया और शत्रु बन गये हैं ॥

३ । यहूदा दु:ख और कठिन दासत्व से बचने के लिये परदेश चली गई
पर अन्यजातियों में रहती हुई चैन नहीं पाती

उस के सब खदेड़नेहारों ने उसे घाटी में पकड़
लिया ॥
४। सिय्योन् के मार्ग विलाप कर रहे हैं इस
लिये कि नियत पर्वों में कोई नहीं आता
उस के सब फाटक सुनसान पड़े हैं उस के
याजक कहरते हैं
उस की कुमारियां शोकित हैं और वह आप
कठिन दु:ख भोग रही है ॥
५। उस के द्रोही प्रधान हो गये उस के शत्रु
भाग्यवान हैं
क्योंकि यहोवा ने उस के बहुत से अपराधों के
कारण उसे दु:ख दिया
उस के बालबच्चों को शत्रु हांक हांककर बन्धुआई
में ले गये ॥
६। और सिय्योन् की पुत्री का सारा प्रताप
जाता रहा
उस के हाकिम ऐसे हरिणों के समान हो गये
जो कुछ चराई नहीं पाते
और खदेड़नेहारों के साम्हने से बलहीन होकर
भाग गये हैं ॥
७। यरूशलेम् ने इन दु:ख और मारे मारे फिरने
के दिनों में
अपनी सब मनभावनी वस्तुएं जो प्राचीन काल
से उस की बनी थीं स्मरण किई हैं
जब उस के लोग द्रोहियों के हाथ में पड़े और
उस का कोई सहायक न रहा
तब उन द्रोहियों ने उस को उजड़ा देखकर ठट्ठा
किया ॥
८। यरूशलेम् ने बड़ा पाप किया इस लिये वह
अशुद्ध वस्तु[1] सी ठहरी
जितने उस का आदर करते थे सो उसे तुच्छ
जानते हैं इस लिये कि उन्हों ने उस को
नंगी देखा
सो वह कहरती हुई पीछे को फिरी जाती है ॥
९। उस की अशुद्धता उस के वस्त्र पर है उस
ने अपना अन्तसमय स्मरण न रक्खा था

(१) वा स्त्री।

इस लिये वह अद्भुत रीति से पद से उतारी गई
और कोई उसे शांति नहीं देता
हे यहोवा मेरे दु:ख पर दृष्टि कर क्योंकि शत्रु ने
मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी है ॥
१०। द्रोहियों ने उस की सब मनभावनी वस्तुओं
पर हाथ बढ़ाया है
अन्यजातियां जिन के विषय तू ने आज्ञा दिई
थी कि वे मेरी सभा में भागी न होने पाएं
उन को उस ने अपने पवित्रस्थान ही में घुसी
हुई देखा है ॥
११। उस के सब निवासी कहरते हुए भोजनवस्तु
ढूंढ़ रहे हैं
उन्हों ने जी में जी ले आने के लिये अपनी
मनभावनी वस्तुएं बेचकर भोजन लिया
हे यहोवा दृष्टि कर और ध्यान से देख क्योंकि
मैं तुच्छ हो गई हूं ॥
१२। हे सब बटोहियो क्या इस बात की तुम्हें
कुछ चिन्ता नहीं
दृष्टि करके देखो कि जो पीड़ा मुझ पर पड़ी है
और यहोवा ने कोप भड़कने के दिन मुझे
दिई है
उस के तुल्य और पीड़ा कहां ॥
१३। ऊपर से उस ने मेरी हड्डियों में आग लगाई
है और वे उस से भस्म हो गईं
उस ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया और मुझ
को उलटा फेर दिया
उस ने ऐसा किया कि मैं छोड़ी हुई और रोग
से लगातार निर्बल रहती हूं ॥
१४। उस ने जूए की रस्सियों की नाईं मेरे
अपराधों को अपने हाथ से कसा है
उस ने उन्हें बटकर मेरी गर्दन पर चढ़ाया और
मेरा बल घटाया
जिन के साम्हने मैं खड़ी नहीं हो सकती उन्हीं
के वश में प्रभु ने मुझे कर दिया है ॥
१५। प्रभु ने मुझ में के सब पराक्रमी पुरुषों को
तुच्छ जाना
उस ने नियत पर्व का प्रचार करके लोगों को

मेरे विरुद्ध बुलाया कि मेरे जवानों को पीस डालें
प्रभु ने यहूदा की कुमारी कन्या को कोल्हू में पेरा है ॥
१६। इन बातों के कारण मैं रोती हूं मेरी आंखों से आंसू की धारा बहती रहती है
क्योंकि जिस शांति देनेहारे के कारण मेरे जी में जी आता था सो मुझ से दूर हो गया
मेरे लड़केवाले अकेले छोड़े गये इस लिये कि शत्रु प्रबल हुआ है ॥
१७। सिय्योन् हाथ फैलाये हुए है उस को कोई शांति नहीं देता
यहोवा ने याकूब के विषय में यह आज्ञा दिई है कि उस की चारों ओर के निवासी उस के द्रोही हो जाएं
यरूशलेम् उन के बीच अशुद्ध स्त्री सी हो गई है ॥
१८। यहोवा तो निर्दोष है क्योंकि मैं ने उस की आज्ञा का उल्लंघन किया है
हे सब लोगो सुनो और मेरी पीड़ा को देखो
मेरे कुमार और कुमारियां बन्धुआई में चली गई हैं ॥
१९। मैं ने अपने यारों को पुकारा पर उन्हों ने मुझे धोखा दिया
जब मेरे याजक और पुरनिये भोजनवस्तु इस लिये ढूंढ़ रहे थे कि खाने से उन के जी में जी आए
तब नगर ही में उन का प्राण छूट गया ॥
२०। हे यहोवा दृष्टि कर क्योंकि मैं संकट में हूं मेरी अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं
मेरा हृदय उलट गया कि मैं ने बड़ा बलवा किया है
बाहर तो मैं तलवार से निर्वंश होती हूं और घर में मृत्यु विराज रही है ॥
२१। उन्हों ने सुना है कि मैं कहरती हूं मुझे कोई शांति नहीं देता
मेरे सब शत्रुओं ने मेरी विपत्ति का समाचार सुना है वे इस कारण हर्षित हो गये कि तू ही ने यह किया है
पर जिस दिन की चर्चा तू ने प्रचार करके किई उस को तू दिखा भी देगा तब वे मेरे सरीखे हो जाएंगे ॥
२२। उन की सारी दुष्टता की ओर दृष्टि कर और जैसा तू ने मेरे सारे अपराधों के कारण मुझे दण्ड दिया वैसा ही उन को भी दण्ड दे
क्योंकि मैं बहुत ही कहरती हूं और मेरा हृदय रोग से निर्बल है ॥

२. प्रभु ने सिय्योन् की पुत्री को क्या ही अपने कोप के बादल से ढांप दिया
उस ने इस्राएल् की शोभा को आकाश से धरती पर पटक दिया
और कोप करने के दिन अपने पांवों की चौकी को स्मरण नहीं किया ॥
२। प्रभु ने याकूब की सब बस्तियों को निठुरता से निगल लिया
उस ने रोष में आकर यहूदा की पुत्री के दृढ़ गढ़ों को ढाकर मिट्टी में मिला दिया
उस ने हाकिमों समेत राज्य को अपवित्र ठहराया है ॥
३। उस ने भड़के हुए कोप से इस्राएल् के सींग को जड़ से[1] काट डाला
उस ने शत्रु का साम्हना करने से अपना दहिना हाथ खींच लिया
और चारों ओर भस्म करती हुई लौ की नाईं याकूब को जला दिया है ॥
४। उस ने शत्रु बनकर धनुष चढ़ाया वह बैरी बनकर दहिना हाथ बढ़ाये हुए खड़ा हुआ
और जितने दृष्टि में मनभावने थे सब को घात किया

(१) मूल में सारे सींग को।

सिय्योन् की पुत्री के तंबू पर उस ने आग
की नाईं अपनी जलजलाहट भड़का
दिई है॥
५। प्रभु शत्रु बन गया उस ने इस्राएल् को निगल
लिया
उस के सब महलों को उस ने निगल लिया उस
के दृढ़ गढ़ों को उस ने बिगाड़ डाला
और यहूदा की पुत्री का रोना पीटना बहुत
बढ़ाया है॥
६। और उस ने अपना मण्डप बारी में के
मचान की नाईं बरियाई से गिरा दिया
अपने मिलापस्थान को उस ने नाश किया
यहोवा ने सिय्योन् में नियत पर्व और विश्राम-
दिन दोनों को बिसरवा दिया
और अपने भड़के हुए कोप से राजा और याजक
दोनों को तिरस्कार किया है॥
७। प्रभु ने अपनी वेदी मन से उतार दिई और
अपना पवित्रस्थान अपमान के साथ तजा
उस के महलों की भीतों को उस ने शत्रुओं के
वश में कर दिया
यहोवा के भवन में उन्हों ने ऐसा कोलाहल
मचाया कि मानो नियत पर्व का दिन था॥
८। यहोवा ने सिय्योन् की कुमारी की शहर-
पनाह तोड़ डालने को ठाना था
सो उस ने डोरी डाली और अपना हाथ नाश
करने से नहीं खींच लिया
और कोट और शहरपनाह दोनों से विलाप
कराया वे दोनों एक साथ गिराये गये हैं॥
९। उस के फाटक भूमि में धस गये हैं उस ने
उन के बेंड़ों को तोड़कर नाश किया
उस का राजा और और हाकिम अन्यजातियों
में रहने से व्यवस्थारहित हो गये हैं
और उस के नबी यहोवा से दर्शन नहीं पाते॥
१०। सिय्योन् की पुत्री के पुरनिये भूमि पर
चुपचाप बैठे हैं
उन्हों ने अपने सिर पर धूल उड़ाई और टाट
का फेंटा बांधा है
यरूशलेम् की कुमारियों ने अपना अपना सिर
भूमि लों झुकाया है॥
११। मेरी आंखें आंसू बहाते बहाते रह गईं
मेरी अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं
मेरे लोगों की पुत्री के विनाश के कारण मेरा
कलेजा फट गया
क्योंकि बच्चे बरन दूधपिउवे बच्चे भी नगर के
चौकों में मूर्छित होते हैं॥
१२। वे अपनी अपनी मा से कहते हैं अन्न और
दाखमधु कहां हैं
वे नगर के चौकों में घायल किये हुए मनुष्य की
नाईं मूर्छित होकर
अपने अपने प्राण को अपनी अपनी माता की
गोद में छोड़ते हैं॥
१३। हे यरूशलेम् की पुत्री मैं तुझ से क्या कहूं
मैं तेरी उपमा किस से दूं
हे सिय्योन् की कुमारी कन्या मैं कौन सी वस्तु
तेरे समान ठहराकर तुझे शान्ति दूं
क्योंकि तेरा दुःख समुद्र सा अपार है तुझे कौन
चंगा कर सकता है॥
१४। तेरे नबियों ने दर्शन का दावा करके तुझ
से व्यर्थ और मूर्खता की बातें कही थीं
और तेरा अधर्म्म प्रगट न किया था नहीं तो
तेरी बन्धुआई न होने पाती
उन्हों ने तेरे लिये व्यर्थ के भारी वचन बताये हैं
जो देश से निकाल दिये जाने के कारण
हुए हैं॥
१५। सब बटोही तुझ पर ताली पीटते हैं
वे यरूशलेम् की पुत्री पर यह कहकर ताली बजाते
और सिर हिलाते हैं कि
क्या यह वह नगरी है जिसे परमसुन्दर और सारी
पृथिवी के हर्ष का कारण कहते थे॥
१६। तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुंह फैलाया है
वे ताली बजाते और दांत पीसते हैं वे कहते हैं
कि हम उसे निगल गये हैं
जिस दिन की हम बाट जोहते थे सो तो
यही है

वह हम को मिल गया हम उस को देख चुके हैं ॥
१७। यहोवा ने जो कुछ ठाना था सोई किया भी है
जो वचन वह प्राचीन काल से कहता आया सोई उस ने पूरा किया
उस ने निठुरता से तुझे ढा दिया
और शत्रुओं को तुझ पर आनन्दित किया
और तेरे द्रोहियों के सींग को ऊंचा किया है ॥
१८। वे प्रभु की ओर तन मन से चिल्लाये हैं
हे सिय्योन् की कुमारी की शहरपनाह अपने आंसू रात दिन नदी की नाईं बहाती रह
तनिक भी विश्राम न ले न तेरी आंख की पुतली थम जाए ॥
१९। रात के पहर पहर के आदि में उठकर चिल्लाया कर
प्रभु के सन्मुख अपने मन की बातों की धारा बांध[1]
तेरे जो बालबच्चे एक एक सड़क के सिरे पर भूख से मूर्छित हो रहे हैं
उन के प्राण के निमित्त अपने हाथ उस की ओर फैला ॥
२०। हे यहोवा दृष्टि कर और ध्यान से देख कि तू ने यह सब दुःख किस को दिया है
क्या स्त्रियां अपना फल अर्थात् अपनी गोद[2] के बच्चों को खा डालें
हे प्रभु क्या याजक और नबी तेरे पवित्रस्थान में घात किये जाएं ॥
२१। सड़कों में लड़के और बूढ़े दोनों भूमि पर पड़े हैं
मेरी कुमारियां और जवान लोग तलवार से गिरे
तू ने कोप करने के दिन उन्हें घात किया तू ने निठुरता के साथ वध किया ॥
२२। तू ने नियत पर्व की भीड़ के समान चारों ओर से मेरे भय के कारणों को बुलाया है
और यहोवा के कोप के दिन न तो कोई भाग निकला और न कोई बच रहा है
जिन को मैं ने गोद[1] में लिया और पोस पोसकर बढ़ाया था मेरे शत्रु ने उन का अन्त कर डाला है ॥

(१) मूल में अपना हृदय जल की नाईं उण्डेल।
(२) मूल में हथेली।

३.

उस के रोष की छड़ी से जो दुःख भोगनेहारा है वही पुरुष मैं हूं ॥
२। मुझ को वह ले जाकर उजियाले में नहीं अंधियारे ही में चलाता है ॥
३। मेरे ही विरुद्ध उस का हाथ दिन भर बार बार उठता[2] है ॥
४। उस ने मेरा मांस और चमड़ा गला दिया और मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है ॥
५। उस ने मुझे रोकने के लिये कोट बनाया और मुझ को कठिन दुःख[3] और श्रम से घेरा है ॥
६। उस ने मुझे बहुत दिन के मरे हुए लोगों के समान अन्धेरे स्थानों में बसा दिया ॥
७। मेरी चारों ओर उस ने बाड़ा बांधा इस से मैं निकल नहीं सकता उस ने मुझे भारी सांकल से जकड़ा है[4] ॥
८। फिर जब मैं चिल्ला चिल्लाके दोहाई देता हूं तब वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता ॥
९। मेरे मार्गों को उस ने गढ़े हुए पत्थरों से छेंका मेरी डगरों को उस ने टेढ़ी किया है ॥
१०। वह मेरे लिये घात में बैठे हुए रीछ और छुपा लगाये हुए सिंह के समान है ॥
११। उस ने मेरे मार्गों को टेढ़ा किया उस ने मुझे फाड़ डाला उस ने मुझ को उजाड़ दिया है ॥
१२। उस ने धनुष चढ़ाकर मुझे अपने तीर का निशाना ठहराया है ॥
१३। उस ने अपनी तीरों से मेरे गुर्दों को बेध दिया है ॥
१४। मुझ पर मेरे सब लोग हंसते और मुझ पर लगते गीत दिन भर गाते हैं ॥

(१) मूल में हथेली। (२) मूल में उलटता। (३) मूल में विष। (४) मूल में मेरी सांकल भारी किई।

१५ । उस ने मुझे कठिन दुःख से[1] भर दिया और नागदौना पिलाकर तृप्त किया है ॥
१६ । और उस ने मेरे दांतों को कंकरी से तोड़ डाला और मुझे राख से ढांप दिया है ॥
१७ । और तू ने मुझ को मन से उतारके कुशल से रहित किया है मुझे कल्याण बिसर गया है ॥
१८ । और मैं ने कहा कि मेरा बल नाश हुआ और मेरी जो आशा यहोवा पर थी सो टूट गई है ॥
१९ । मेरा दुःख और मारा मारा फिरना मेरा नागदौने और और विष का पीना स्मरण कर ॥
२० । मैं उन्हें भली भांति स्मरण रखता हूं इस से मेरा जीव ढया जाता है ॥
२१ । इस का स्मरण करके मैं इसी के कारण आशा रखूंगा ॥
२२ । हम मिट नहीं गये यह यहोवा की महा-करुणा का फल है क्योंकि उस का दया करना बन्द नहीं हुआ ॥
२३ । वह भोर भोर को नई होती रहती है तेरी सच्चाई बड़ी तो है ॥
२४ । मैं ने मन में कहा है कि यहोवा मेरा भाग है इस कारण मैं उस से आशा रखूंगा ॥
२५ । जो यहोवा की बाट जोहते और[2] उस के पास जाते हैं उन के लिये यहोवा भला है ॥
२६ । यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है ॥
२७ । पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है ॥
२८ । वह यह जानकर अकेला चुपचाप बैठा रहे कि उसी ने मुझ पर यह बोझ डाला है ॥
२९ । वह यह कहकर अपनी नाक भूमि पर रगड़े[3] कि क्या जानिये कुछ आशा हो ॥
३० । वह अपना गाल अपने मारनेहारे की ओर फेरे और नामधराई से बहुत ही भर जाए ॥
३१ । क्योंकि प्रभु मन से सदा उतारे नहीं रहता ॥
३२ । चाहे वह दुःख भी दे तौभी अपनी करुणा की बहुतायत के कारण वह दया भी करता है ॥
३३ । क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता न दुःख देता है ॥
३४ । पृथिवी भर के बन्धुओं को पांव के तले दल डालना,
३५ । किसी पुरुष का हक परमप्रधान के साम्हने मारना,
३६ । और किसी मनुष्य का मुकद्दमा बिगाड़ना इन तीन कामों को प्रभु देख नहीं सकता ॥
३७ । जब प्रभु ने आज्ञा न दिई हो तब कौन है कि जो वचन कहे सो पूरा हो ॥
३८ । विपत्ति और कल्याण क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते ॥
३९ । जीता मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाए पुरुष अपने पाप के दण्ड को क्यों बुरा माने ॥
४० । हम अपनी चालचलन को ध्यान से परखें और यहोवा की ओर फिरें ॥
४१ । हम स्वर्गवासी ईश्वर की ओर हाथ फैलाएं और मन भी लगाएं ॥
४२ । हम ने तो अपराध और बलवा किया है और तू ने क्षमा नहीं किई ॥
४३ । तेरा कोप हम पर भूम रहा तू हमारे पीछे पड़ा तू ने बिना तरस खाये घात किया है ॥
४४ । तू ने अपने को मेघ से घेर लिया है कि प्रार्थना तुझ लों न पहुंच सके ॥
४५ । तू ने हम को जाति जाति के लोगों के बीच कूड़ा कर्कट सा ठहराया है ॥
४६ । हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना अपना मुंह फैलाया है ॥
४७ । भय और गड़हा उजाड़ और विनाश ये ही हमारे भाग हुए हैं ॥
४८ । मेरी आंखों से मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण जल की धाराएं बह रही हैं ॥
४९ । मेरी आंख से आंसू तब लों लगातार बहते रहेंगे,

(१) मूल में कडुवाहटों से । (२) मूल में. और जो जीव । (३) मूल में वह अपना मुंह मिट्टी में देवे ।

५०। जब लों यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न देखे॥
५१। अपनी नगरी की सब स्त्रियों का हाल देखने से मेरा दुःख बढ़ता है[1]
५२। मेरे जो अकारण शत्रु हैं उन्हों ने चिड़िया का सा मेरा अहेर निर्दयता से किया॥
५३। उन्हों ने मुझे गड़हे में डालकर मेरे जीवन का अन्त कर दिया और मेरे ऊपर पत्थर डाला है॥
५४। जल मेरे सिर पर से बह गया मैं ने कहा मैं नाश हुआ॥
५५। हे यहोवा गहिरे गड़हे में से मैं ने तुझ से प्रार्थना किई है॥
५६। तू ने मेरी सुनी थी मैं जो दोहाई हांफ हांफकर देता हूं उस से कान न फेर[2] ले॥
५७। जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा उसी दिन तू ने निकट आकर कहा मत डर॥
५८। हे प्रभु तू ने मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा प्राण बचा लिया है॥
५९। हे यहोवा जो अन्याय मुझ पर हुआ सो तू ने देखा है सो तू मेरा न्याय चुका॥
६०। उन्हों ने जो पलटा मुझ से लिया और जो कल्पनाएं मेरे विरुद्ध किईं सो भी तू ने देखी हैं॥
६१। हे यहोवा वे जो निन्दा करते और मेरे विरुद्ध जितनी कल्पनाएं करते हैं,
६२। मेरे विरोधियों के वचन[3] भी और जो कुछ वे मेरे विरुद्ध लगातार सोचते हैं सो तू ने जाना है॥
६३। उन का उठना बैठना ध्यान से देख वे मुझ पर लगाते हुए गीत गाते हैं॥
६४। हे यहोवा तू उन के कामों के अनुसार उन को बदला देगा॥
६५। तू उन का मन सुन्न कर देगा उन के लिये तेरे साप का यही फल होगा॥

(१) मूल में मेरी आंख मेरे मन को दुःख देती है। (२) मूल में छिपा। (३) मूल में होठ।

६६। तू उन को कोप से खदेड़ खदेड़कर यहोवा की धरती पर से[1] विनाश करेगा॥

४. सोना क्या ही खोटा[2] हो गया है अत्यन्त खरा सोना क्या ही बदल गया है
पवित्रस्थान के पत्थर तो एक एक सड़क के सिरे पर फेंक दिये गये हैं॥
२। सिय्योन् के उत्तम पुत्र[3] जो कुन्दन के तुल्य हैं
सो कुम्हार के बनाये हुए मिट्टी के घड़ों के समान क्या ही तुच्छ गिने गये हैं॥
३। गीदड़िन भी थन लगाकर अपने बच्चों को पिलाती है
पर मेरे लोगों की बेटी बन के शुतर्मुर्गों के तुल्य निर्दय हो गई है॥
४। दूधपिउवे बच्चों की जीभ प्यास के मारे तालू मे चिपट गई
बालबच्चे रोटी मांगते हैं पर कोई उन को नहीं देता॥
५। जो आगे स्वादिष्ट भोजन खाते थे सो अब सड़कों में बिकल फिरते हैं
जो लाही रंग के वस्त्र में पले थे सो घूरों पर लोटते हैं[4]॥
६। और मेरे लोगों की बेटी का अधर्म्म सदोम् के पाप से भी अधिक ठहरा
जो किसी के हाथ डाले बिना क्षण भर में उलट गया॥
७। उन के नाज़ीर् हिम से भी निर्मल और दूध से अधिक उज्जल थे
उन की देह मूंगों से अधिक लाल और उन की सुन्दरता नीलमणि की सी थी॥
८। पर अब उन का रूप अन्धकार से भी अधिक काला है वे सड़कों में चीन्हे नहीं जाते
उन का चमड़ा हड्डियों में सट गया वह तो लकड़ी के समान सूख गया है॥
९। तलवार के मारे हुए भूख के मारे हुओं से कम दुःखी हैं

(१) मूल में आकाश के तले से। (२) मूल में फीके रंग का। (३) मूल में बेटे। (४) मूल में घूरों को गले लगाते हैं।

क्योंकि इन का प्राण तो खेत की उपज विना भूख के मारे झूरता जाता है ॥
१० । दयालु स्त्रियों ने अपने बच्चों को अपने ही हाथों से सिझाया है
मेरे लोगों के विनाश के समय वे ही उन का आहार हुए ॥
११ । यहोवा ने अपनी पूरी जलजलाहट प्रगट किई उस ने अपना कोप बहुत ही भड़काया[१]
और सिय्योन् में ऐसी आग लगाई है जिस से उस की नेव तक भस्म हो गई है ॥
१२ । पृथिवी का कोई राजा या जगत का कोई रहनेहारा इस की प्रतीति कभी न कर सकता था
कि द्रोही और शत्रु यरूशलेम् के फाटकों के भीतर घुसने पाएंगे ॥
१३ । यह उस के नबियों के पापों और उस के याजकों के अधर्म्म के कामों के कारण हुआ है
क्योंकि वे उस के बीच धर्म्मियों का खून करते आये ॥
१४ । अब वे सड़कों में अंधे से मारे मारे फिरते और मानो लोहू की छीटों से यहां लों अशुद्ध हैं
कि कोई उन के वस्त्र नहीं छू सकता ॥
१५ । लोग उन को पुकारते हैं कि रे अशुद्ध लोगो हट जाओ हट जाओ हम को मत छूओ
जब वे भागकर मारे मारे फिरने लगे तब अन्य-जाति के लोगों ने कहा वे आगे को यहां टिकने न पाएंगे ॥
१६ । यहोवा ने अपने प्रताप से उन्हें तितर बितर किया वह उन पर फिर दया दृष्टि न करेगा
न तो याजकों का सन्मान न पुरनियों पर कुछ अनुग्रह किया गया ॥
१७ । हमारी आंखें सहायता की बाट व्यर्थ जोहते जोहते रह गई हैं
हम ऐसी एक जाति का मार्ग लगातार देखते आये हैं जो बचा नहीं सकती ॥
१८ । वे लोग हमारे पीछे ऐसे पड़े हैं कि हम अपने नगर के चौकों में भी नहीं चल सकते
हमारा अन्त निकट आया हमारी आयु पूरी हुई हमारा अन्त आ गया है ॥
१९ । हमारे खदेड़नेहारे आकाश के उकाबों से भी अधिक वेग चलते थे
वे पहाड़ों पर हमारे पीछे पड़े और जंगल में हमारे लिये घात लगाते थे ॥
२० । यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा प्राण[१] था और जिस के विषय हम ने सोचा था कि अन्यजातियों के बीच हम उसी के छत्र के नीचे[२] जीते रहेंगे
सो उन के खोदे हुए गड़हों में पकड़ा गया ॥
२१ । हे एदोम् की पुत्री तू जो ऊस् देश में रहती है हर्षित और आनन्दित रह
पर कटोरा तुझ लों भी पहुंचेगा और तू मत-वाली होकर अपने को नंगी करेगी ॥
२२ । हे सिय्योन् की पुत्री तेरे अधर्म्म का फल भुगत गया वह तुझे फिर बंधुआई में न जाने देगा
हे एदोम् की पुत्री वह तेरे अधर्म्म का दण्ड देगा और तेरे पापों को प्रगट करेगा ॥

५. हे यहोवा स्मरण कर कि हम पर क्या क्या बीता है
हमारी ओर दृष्टि करके हमारी नामधराई को देख ॥
२ । हमारा भाग परदेशियों के
हमारे घर उपरी लोगों के हो गये हैं ॥
३ । हम अनाथ और बपमूए हो गये
हमारी माताएं विधवा सी हुई हैं ॥
४ । हम पानी मोल लेकर पीते हैं
हम को लकड़ी दाम से मिलती है ॥

---

(१) मूल में उंडेला ।

(१) मूल में हमारे नथनो का प्राण । (२) मूल में की छाया में ।

५ । खदेड़नेहारे हमारी गर्दन पर टूट पड़े हैं
हम थक गये और हमें विश्राम नहीं मिलता ॥
६ । हम मिस्र के अधीन हो गये
और अश्शूर् के भी कि पेट भर सकें ॥
७ । हमारे पुरखाओं ने पाप किया और जाते रहे
और हम को उन के अधर्म्म के कामों का भार उठाना पड़ा ॥
८ । हमारे ऊपर दास अधिकार रखते हैं
उन के हाथ से कोई हमें नहीं छुड़ाता ॥
९ । हम उस तलवार के कारण जो जंगल में चलती है
प्राण जोखिम में डालकर अपनी भोजनवस्तु ले आते हैं ॥
१० । भूख की आग के कारण
हमारा चमड़ा तंदूर की नाईं जल रहा है ॥
११ । सिय्योन् में स्त्रियां
और यहूदा के नगरों में कुमारियां भ्रष्ट किई गईं ॥
१२ । हाकिम हाथ के बल टांगे गये
और पुरनियों का कुछ आदरमान न किया गया ॥
१३ । जवानों को चक्की उठानी पड़ती
और लड़केवाले लकड़ी के बोझ उठाये ठोकर खाते जाते हैं ॥
१४ । अब फाटक पर पुरनिये नहीं बैठते
जवानों का गीत सुनाई नहीं पड़ता ।
१५ । हमारे मन का हर्ष जाता रहा
हमारा नाचना विलाप से बदल गया है ॥
१६ । हमारे सिर पर का मुकुट गिर पड़ा
हम पर हाय कि हम ने पाप किया है ॥
१७ । इसी कारण हमारा हृदय निर्बल हुआ
इन्हीं बातों से हमारी आंखें धुन्धली पड़ गई हैं ॥
१८ । सिय्योन् पर्वत उजाड़ पड़ा है
इस लिये सियार उस पर घूमते हैं ॥
१९ । हे यहोवा तू तो सदा लों विराजमान रहेगा
तेरा राज्य पीढ़ी पीढ़ी बना रहेगा ॥
२० । तू ने हम को क्यों सदा के लिये बिसरा दिया
क्यों बहुत काल के लिये हमें छोड़ दिया है ॥
२१ । हे यहोवा हम को अपनी ओर फेर तब हम फिरेंगे
हमारे दिन बहोरके प्राचीन काल की नाईं ज्यों के त्यों कर दे ॥
२२ । तू ने हम से बिलकुल तो हाथ नहीं उठाया होगा
तू ऐसा अत्यन्त क्रोधित न हुआ होगा ॥

यहेज़्केल् नाम पुस्तक ।

---

१. तीसवें बरस के चौथे महीने के पांचवें दिन को मैं बन्धुओं के बीच कबार् नदी के तीर था तब स्वर्ग खुल गया और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाये॥ २। यहोयाकीन् राजा की बन्धुआई के पांचवें बरस के चौथे महीने के पांचवें दिन को, ३ । कस्दियों के देश में कबार् नदी के तीर पर यहोवा का वचन बूजी के पुत्र यहेज़्केल् याजक के पास साफ साफ पहुंचा और यहोवा की शक्ति[1] उस पर वहीं हुई ॥ ४ । तब मैं देखने लगा तो क्या देखता हूं कि उत्तर दिशा से

(१) मूल में का हाथ ।

बड़ी घटा और लहराती हुई आग सहित बड़ी आंधी आ रही है और घटा की चारों ओर प्रकाश और आग के बीचोबीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है ॥ ५। फिर उस के बीच से चार जीवधारी सरीखे कुछ निकले और उन का रूप ऐसा था कि वे मनुष्य के सरीखे थे ॥ ६। और उन में से एक एक के चार चार मुख और चार चार पंख थे ॥ ७। और उन के पांव सीधे थे और उन के पांवों के तलुए बछड़ों के खुरों के से थे और व झलकाये हुए पीतल की नाईं चमकते थे ॥ ८। और उन की चारों अलंग पखों के नीचे मनुष्य के से हाथ थे और उन के मुख और पख इस प्रकार के थे कि, ९। उन के पंख एक दूसरे से मिले हुए थे और जीवधारी चलते समय मुड़ते नहीं सीधे ही अपने अपने साम्हने चलते थे ॥ १०। और उन के मुखों का रूप ऐसा था कि उन के मुख मनुष्य के से थे और उन चारों के दहिनी ओर के मुख सिंह के से और चारों के बाईं ओर के मुख बैल के से थे और चारों के उकाब पक्षी के से भी मुख थे॥ ११। और उन के मुख और पंख ऊपर की ओर अलग अलग थे और एक एक जीवधारी के दो दो पंख एक दूसरे के पंखों से मिले हुए थे और दो दो पंखों से उन का शरीर ढंपा हुआ था ॥ १२। और वे सीधे ही अपने अपने साम्हने चलते थे जिधर आत्मा जाना चाहता था उधर ही वे जाते थे और चलते समय वे मुड़ते नहीं ॥ १३। और जीवधारियों के रूप अंगारों वा जलते हुए पलीतों के सरीखे दिखाई देते थे और वह आग जीवधारियों के बीच इधर उधर चलती फिरती बड़ा प्रकाश देती रही और उस से बिजली निकलती रहती थी ॥ १४। और जीवधारियों का चलना फिरना बिजली का सा था ॥ १५। मैं जीवधारियों को देख रहा था तो क्या देखा कि भूमि पर उन के पास चारों मुखों की गिनती के अनुसार एक एक पहिया था ॥ १६। पहियों का रूप और बनावट फीरोजे की सी थी और चारों का एक ही रूप था और उन का रूप और बनावट ऐसी थी जैसी एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो ॥ १७। चलते समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते थे और चलने में मुड़े नहीं॥ १८। और उन के घेरे बड़े और डरावने थे और चारों पहियों के घेरों में चारों ओर आंख ही आंख भरी हुई थीं॥ १९। और जब जब जीवधारी चलते तब तब पहिये भी उन के पास पास चलते थे और जब जब जीवधारी भूमि पर से उठते तब तब पहिये भी उठते थे ॥ २०। जिधर आत्मा जाना चाहता था उधर ही वे जाते थे और आत्मा उधर ही जानेवाला था और पहिये जीवधारियों के संग उठते थे क्योंकि उन का आत्मा पहियों में भी रहता था ॥ २१। जब जब वे चलते तब तब ये भी चलते थे और जब जब वे खड़े होते तब तब ये भी खड़े होते थे और जब जब वे भूमि पर से उठते तब तब ये पहिये भी उन के संग उठते थे क्योंकि जीवधारियों का आत्मा पहियों में भी रहता था ॥ २२। और जीवधारियों के सिरों के ऊपर कुछ आकाशमण्डल सा था जो बरफ की नाईं भयानक रीति से चमकता था वह उन के सिरों के ऊपर ऊपर फैला हुआ था ॥ २३। और आकाशमण्डल के नीचे उन के पंख एक दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे और एक एक जीवधारी के दो दो और पंख थे जिन से उन के शरीर इधर और उधर ढंपे हुए थे ॥ २४। और उन के चलते समय उन के पंखों की फड़फड़ाहट की आहट बहुत से जल वा सर्वशक्तिमान की वाणी वा सेना के हलचल की सी मुझे सुन पड़ती थी और जब जब वे खड़े होते तब तब अपने पंख लटका लेते थे ॥ २५। फिर उन के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था उस के ऊपर एक शब्द सुन पड़ता था और जब जब वे खड़े होते तब तब अपने पंख लटका लेते थे ॥ २६। और उन के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था उस के ऊपर मानो कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन सा था फिर इस के ऊपर मनुष्य सरीखा कोई दिखाई देता था ॥ २७। और उस की मानो कमर से लेकर ऊपर की ओर मुझे झलकाया हुआ पीतल सा देख पड़ा और उस के भीतर और चारों ओर आग सी

कुछ देख पड़ती थी फिर उस मनुष्य की मानो कमर से लेकर नीचे की ओर मुझे कुछ आग सी देख पड़ती थी और उस मनुष्य की चारों ओर प्रकाश था ॥ २८ । जैसा धनुष वर्षा के दिन बादल में देख पड़ता है वह चारों ओर का प्रकाश वैसा ही दिखाई देता था । यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था और उसे देखकर मैं मुंह के बल गिरा तब किसी बोलनेहारे का शब्द सुना ॥

२. उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान अपने पांवों के बल खड़ा हो तब मैं तुझ से बातें करूंगा ॥ २ । ज्यों उस ने मुझ से यह कहा त्योंही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया तब जो मुझ से बातें करता था उस की मैं सुनने पाया ॥ ३ । सो उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात् बलवा करनेहारी जातियों के पास भेजता हूं जिन्हों ने मेरे विरुद्ध बलवा किया है उन के पुरखा और वे भी आज के दिन लों मेरा अपराध करते चले आये हैं ॥ ४ । फिर इस पीढ़ी के लोग[1] जिन के पास मैं तुझे भेजता हूं सो निर्लज्ज और हठीले[2] हैं और तू उन से कहना कि प्रभु यहोवा यों कहता है ॥ ५ । इस से वे जो बलवा करनेहारे घराने के हैं सो चाहे सुनें चाहे न सुनें तौभी इतना तो जान लेंगे कि हमारे बीच एक नबी प्रगट हुआ है ॥ ६ । और हे मनुष्य के सन्तान तू उन से न डरना चाहे तुझे कांटों और ऊंटकटारों और बिच्छुओं के बीच भी रहना पड़े तौभी उन के वचनों से न डरना यद्यपि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं तौभी न तो उन के वचनों से डरना और न उन के मुख देखकर तेरा मन कच्चा हो ॥ ७ । सो चाहे वे सुनें चाहे न सुनें तौभी तू मेरे वचन उन से कहना वे तो बड़े बलवा करनेहारे हैं ॥ ८ । पर हे मनुष्य के सन्तान जो मैं तुझ से कहता हूं उसे तू सुन ले उस बलवा करनेहारे घराने के समान तू भी बलवा करनेहारा न बन जो मैं तुझे देता हूं सो मुंह खोलकर खा ले ॥ ९ । तब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखा कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है और उस में एक पुस्तक है ॥ १० । उस को उस ने मेरे साम्हने खोलकर फैलाया और वह दोनों ओर लिखी हुई थी और जो उस में लिखा था सो विलाप और शोक और दुःखभरे वचन थे ॥

३. तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान जो तुझे मिला है सो खा ले अर्थात् इस पुस्तक को खा तब जाकर इस्राएल् के घराने से बातें कर ॥ २ । सो मैं ने मुंह खोला और उस ने मुझे वह पुस्तक खिला दिई ॥ ३ । तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूं उसे पचा ले और अपनी अन्तरियां इस से भर दे । सो मैं ने उसे खा लिया और वह मेरे मुंह में मधु के तुल्य मीठी लगी ॥ ४ । फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान चल इस्राएल् के घराने के पास जाकर उन को मेरे वचन सुना ॥ ५ । क्योंकि तू किसी अनोखी बोली वा कठिन भाषावाली जाति के पास नहीं भेजा जाता तू इस्राएल् ही के घराने के पास भेजा जाता है ॥ ६ । अनोखी बोली वा कठिन भाषावाली बहुत सी जातियों के पास जो तेरी बात समझ न सकें तू नहीं भेजा जाता । निःसंदेह यदि मैं तुझे ऐसों के पास भेजता तो वे तेरी सुनते ॥ ७ । पर इस्राएल् के घरानेवाले तेरी सुनने को नकारेंगे वे मेरी भी सुनने को नकारते हैं क्योंकि इस्राएल् का सारा घराना ढीठ[1] और कठोर मन का है ॥ ८ । सुन मैं तेरे मुख को उन के मुख के साम्हने और तेरे माथे को उन के माथे के साम्हने ढीठ कर देता हूं ॥ ९ । मैं तेरे माथे को हीरे के तुल्य जो चकमक पत्थर से भी कड़ा होता है कड़ा कर देता हूं सो तू उन से न डरना और न उन के मुख देखकर तेरा मन कच्चा हो चाहे वे बलवा करनेहारे घराने के भी हों ॥ १० । फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान जितने वचन मैं तुझ से कहूं सो सब हृदय में धारण कर और कानों से सुन रख ॥ ११ । और चल उन

(१) मूल में फिर लड़के । (२) मूल में कठोर मुखवाले और बलवन्त हृदयवाले ।

(१) मूल में बलवन्त माथे का ।

बंधुओं के पास जो तेरे जाति भाई हैं जाकर उन से बातें करना और ऐसा कहना कि प्रभु यहोवा यों कहता है, चाहे वे सुनें चाहे न सुनें ॥

१२। तब आत्मा ने मुझे उठाया और मैं ने अपने पीछे बड़ी घड़घड़ाहट के साथ ऐसा शब्द सुना कि यहोवा के स्थान से उस का तेज धन्य है ॥ १३। और उस के साथ ही उन जीवधारियों के पंखों का शब्द जो एक दूसरे से लगते थे और उन के संग के पहियों का शब्द और एक बड़ी ही घड़घड़ाहट सुन पड़ी ॥ १४। सो आत्मा मुझे उठाकर ले गया और मैं कठिन दुःख से भरा[1] और मन में जलता हुआ चला गया और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल थी[2]॥ १५। सो मैं उन बंधुओं के पास आया जो कबार् नदी के तीर पर तेलाबीब् में थे जहां वे रहते थे वहीं मैं आया और वहां सात दिन लों उन के बीच विस्मित हो बैठा रहा ॥

१६। फिर सात दिन के बीतने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १७। हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल् के घराने के लिये पहरुआ ठहराया है सो तू मेरे मुंह की बात सुनकर मेरी ओर से उन्हें चिताना ॥ १८। जब मैं दुष्ट से कहूं तू निश्चय मरेगा और तू उस को न चिताए और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से वह सचेत हो अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीता रहे तो वह दुष्ट अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर उस के खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा ॥ १९। पर यदि तू दुष्ट को चिताए और वह अपनी दुष्टता और दुष्ट मार्ग से न फिरे तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेहीगा पर तू अपना प्राण बचाएगा ॥ २०। फिर जब धर्म्मी जन अपने धर्म्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे और मैं उस के साम्हने ठोकर रक्खूं तो वह मर जाएगा तू ने जो उस को नहीं चिताया इस लिये वह अपने पाप में फंसा हुआ मरेगा और जो धर्म्म के कर्म्म उस ने किये हों उन की सुधि न लिई जाएगी पर उस के खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा ॥ २१। पर यदि तू धर्म्मी को ऐसा कहकर चिताए कि तू पाप न कर और वह पाप न करे तो वह चिताये जाने के कारण निश्चय जीता रहेगा और तू अपना प्राण बचाएगा ॥

२२। फिर यहोवा की शक्ति[1] वहीं मुझ पर हुई और उस ने मुझ से कहा उठकर मैदान में जा और वहां मैं तुझ से बातें करूंगा ॥ २३। तब मैं उठकर मैदान में गया और वहां क्या देखा कि यहोवा का तेज जैसा मुझे कबार् नदी के तीर पर वैसा ही यहां भी देख पड़ता है और मैं मुंह के बल गिरा ॥ २४। तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया फिर वह मुझ से कहने लगा जा अपने घर के भीतर घुसा रह ॥ २५। और हे मनुष्य के सन्तान सुन वे लोग तुझे रस्सियों से जकड़कर बांध रक्खेंगे और तू निकलकर उन के बीच जाने न पाएगा ॥ २६। और मैं तेरी जीभ तेरे तालू से लगाऊंगा जिस से तू मौन रहकर उन का डांटनेहारा न हो क्योंकि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं ॥ २७। पर जब जब मैं तुझ से बातें करूं तब तब तेरे मुंह को खोलूंगा और तू उन से ऐसा कहना कि प्रभु यहोवा यों कहता है जो सुने सो सुने और जो न सुने सो न सुने वे तो बलवा करनेहारे घराने के हैं ही ॥

४. फिर हे मनुष्य के सन्तान तू एक ईंट ले और उसे अपने साम्हने रखकर उस पर एक नगर अर्थात् यरूशलेम् का चित्र खींच ॥ २। तब उसे घेर अर्थात् उस के विरुद्ध कोट बना और उस के साम्हने धुस बांध और छावनी डाल और उस की चारों ओर युद्ध के यंत्र लगा ॥ ३। तब तू लोहे की थाली लेकर उस को लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के बीच खड़ा कर तब अपना मुंह उस की ओर कर और वह घेरा जाए इस रीति तू उसे घेर रख। यह इस्राएल् के घराने के लिये चिन्ह ठहरेगा ॥

४। फिर तू अपने बायें पांजर के बल लेटकर

(१) मूल में मैं कड़ुआ। (२) मूल में यहोवा का हाथ मुझ पर प्रबल था।

(१) मूल में का हाथ।

इस्राएल् के घराने का अधर्म्म उस पर मान जितने दिन तू उस के बल लेटा रहेगा उतने दिन लों उन लोगों के अधर्म्म का भार सहता रह ॥ ५ । मैं ने तो उन के अधर्म्म के बरस तेरे लिये दिन करके ठहराये अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन सो तू उतने दिन तक इस्राएल् के घराने के अधर्म्म का भार सहता रह ॥ ६ । और फिर जब इतने दिन पूरे हो जाएं तब अपने दहिने पांजर के बल लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म्म का भार सह लेना मैं ने उस के लिये भी तेरे लिये एक एक बरस की सन्ती एक एक दिन अर्थात् चालीस दिन ठहराये हैं ॥ ७ । सो तू यरूशलेम् के घेरने के लिये बांह उघाड़े अपना मुंह उधर करके उस के विरुद्ध नबूवत करना ॥ ८ । और सुन मैं तुझे रस्सियों से जकडूंगा और जब लों तेरे उसे घेरने के वे दिन पूरे न हों तब लों करवट न ले सकेगा ॥ ९ । और तू गेहूं जव सेम मसूर बाजरा और कठिया गेहूं लेकर एक बासन में रख और उन से रोटी बनाया करना जितने दिन तू अपने पांजर के बल लेटा रहेगा उतने अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन लों उसे खाया करना ॥ १० । और जो भोजन तू खाए सो तौल तौलकर खाना अर्थात् दिन दिन बीस बीस शेकेल् भर खाया करना और उसे समय समय पर खाना ॥ ११ । और पानी भी तू माप मापकर पिया करना अर्थात् दिन दिन हीन् का छठवां अंश पीना और उस को समय समय पर पीना ॥ १२ । और अपना वह भोजन जव की रोटियों की नाईं बनाकर खाया करना और उस को मनुष्य की विष्ठा से उन के देखते बनाया करना ॥ १३ । फिर यहोवा ने कहा इसी प्रकार से इस्राएल् उन जातियों के बीच अपनी अपनी रोटी अशुद्ध ही खाया करेंगे जहां मैं उन्हें बरबस पहुंचाऊंगा ॥ १४ । तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा सुन मेरा जीव कभी अशुद्ध नहीं हुआ और न मैं ने बचपन से ले अब लों अपनी मृत्यु से मरे हुए वा फाड़े हुए पशु का मांस खाया और न किसी प्रकार का घिनौना मांस मेरे मुंह में कभी गया है ॥ १५ । उस ने मुझ से कहा सुन मैं ने तेरे लिये मनुष्य की विष्ठा की सन्ती गोबर ठहराया है सो तू अपनी रोटी उसी से बनाना ॥ १६ । फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान सुन मैं यरूशलेम् में अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा सो वहां के लोग तौल तौलकर और चिन्ता कर करके रोटी खाया करेंगे और माप मापकर और विस्मित हो होकर पानी पिया करेंगे ॥ १७ । और इस से उन्हें रोटी और पानी की घटी होगी और वे सब के सब विस्मित होंगे और अपने अधर्म्म में फंसे हुए सूख जाएंगे[1] ॥

५. फिर हे मनुष्य के सन्तान एक पैनी तलवार ले और उसे नाऊ के छूरे के काम में लाकर अपने सिर और डाढ़ी के बाल मूंड़ तब तौलने का कांटा लेकर बालों का भाग कर ॥ २ । जब नगर के घिरने के दिन पूरे होंगे तब नगर के भीतर एक तिहाई आग में डालकर जलाना और एक तिहाई लेकर चारों ओर तलवार से मारना और एक तिहाई को पवन में उड़ाना और मैं तलवार खींचकर उस के पीछे चलाऊंगा ॥ ३ । तब इन में से थोड़े से बाल लेकर अपने कपड़े की छोर में बांधना ॥ ४ । फिर इन में से भी थोड़े से लेकर आग के बीच डालना कि वे आग में जल जाएं तब उसी से एक लौ भड़ककर इस्राएल् के सारे घराने में फैल जाएगी ॥

५ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि यरूशलेम् ऐसी ही है मैं ने उस को अन्यजातियों के बीच ठहराया और वह चारों ओर देश देश से घिरी है ॥ ६ । और उस ने मेरे नियमों के विरुद्ध काम करके अन्यजातियों से अधिक दुष्टता किई और मेरी विधियों के विरुद्ध चारों ओर के देशों के लोगों से अधिक बुराई किई है क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर नहीं चले ॥ ७ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम लोग जो अपनी चारों ओर की जातियों से अधिक हुल्लड़ मचाते और न मेरी विधियों पर चले हो न मेरे नियमों को माना है और न अपनी चारों ओर की जातियों के नियमों के अनुसार किया, ८ । इस

(१) मूल में गल जाएंगे ।

कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं आप तेरे विरुद्ध हूं और अन्यजातियों के देखते तेरे बीच न्याय के काम करूंगा ॥ ९। और तेरे सब घिनौने कामों के कारण मैं तेरे बीच ऐसा काम करूंगा जैसा न अब लों किया है न आगे को फिर करूंगा ॥ १०। सो तेरे बीच लड़केवाले अपने अपने बाप का और बाप अपने अपने लड़केबालों का मांस खाएंगे और मैं तुझ को दण्ड दूंगा और तेरे सब बचे हुओं को चारों ओर तितर बितर करूंगा ॥ ११। सो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि अपने जीवन की सोंह तू ने जो मेरे पवित्रस्थान को अपनी सारी घिनौनी मूरतों और सारे घिनौने कामों से अशुद्ध किया है इस लिये मैं तुझे घटाऊंगा और दया की दृष्टि तुझ पर न करूंगा और तुझ पर कुछ भी कोमलता न करूंगा ॥ १२। तेरी एक तिहाई तो मरी से मरेगी वा तेरे बीच भूख से मर मिटेगी और एक तिहाई तेरे आस पास तलवार से मारी जाएगी और एक तिहाई को मैं चारों ओर तितर बितर करूंगा और तलवार खींचकर उन के पीछे चलाऊंगा ॥ १३। इस प्रकार से मेरा कोप शान्त होगा मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़काकर[१] शान्ति पाऊंगा और जब मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़का चुकूंगा तब वे जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने जलन में आकर यह कहा है ॥ १४। और मैं तुझे तेरी चारों ओर की जातियों के बीच सब बटोहियों के देखते उजाड़ूंगा और तेरी नामधराई कराऊंगा ॥ १५। सो जब मैं तुझ को कोप और जलजलाहट और रिसवाली घुड़कियों के साथ दण्ड दूंगा तब तेरी चारों ओर की जातियों के साम्हने नामधराई ठट्ठा शिक्षा और विस्मय होगा क्योंकि मुझ यहोवा ने यह कहा है ॥ १६। यह तब होगा जब मैं उन लोगों को नाश करने के लिये तुम पर महंगी के तीखे तीर चलाकर तुम्हारे बीच महंगी बढ़ाऊंगा और तुम्हारे अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा, १७। और मैं तुम्हारे बीच महंगी और दुष्ट जन्तु भेजूंगा जो तुझे निःसन्तान करेंगे और मरी और खून तुम्हारे बीच चलते रहेंगे और मैं तुझ पर तलवार चलवाऊंगा मुझ यहोवा ने यह कहा है ॥

(१) मूल में जलजलाहट को विश्राम देकर।

६. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख इस्राएल् के पहाड़ों की ओर करके उन के विरुद्ध नबूवत कर ॥ ३। और कह कि हे इस्राएल् के पहाड़ो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों से यों कहता है कि सुनो मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा और पूजा के तुम्हारे ऊंचे स्थानों का नाश करूंगा ॥ ४। और तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और तुम्हारी सूर्य्य की प्रतिमाएं तोड़ी जाएंगी और मैं तुम में के मारे हुओं को तुम्हारी मूरतों के आगे फेंक दूंगा ॥ ५। मैं इस्राएलियों की लोथों को उन की मूरतों के साम्हने रखूंगा और उन की[१] हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के आस पास छितरा दूंगा ॥ ६। तुम पर के जितने बसे बसाये नगर हैं सो सब उजड़ जाएंगे और पूजा के ऊंचे स्थान उजाड़ हो जाएंगे कि तुम्हारी वेदियां उजड़ें और ढाई जाएं और तुम्हारी मूरतें जाती रहें और तुम्हारी सूर्य्य की प्रतिमाएं काटी जाएं और तुम पर जो कुछ बना है सो मिट जाए ॥ ७। और तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ८। तौभी मैं कितनों को बचा रखूंगा सो जब तुम देश देश में तितर बितर होगे तब अन्यजातियों के बीच तलवार से बचे हुए तुम्हारे कुछ लोग पाए जाएंगे ॥ ९। और तुम्हारे वे बचे हुए लोग उन जातियों के बीच जिन में वे बंधुए होकर जाएंगे मुझे स्मरण करेंगे और यह भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से कैसे हट गया है और हमारी व्यभिचारिन की सी आंखें मूरतों पर कैसे लगी हैं जिस से यहोवा का मन कैसा टूटा है। इस रीति वे उन बुराइयों के कारण जो उन्हों ने अपने सारे घिनौने काम करके किई हैं अपने लेखे में घिनौने ठहरेंगे ॥ १०। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं और मैं ने उन को

(१) मूल में तुम्हारी।

यह सारी हानि करने को जो कहा है सो व्यर्थ नहीं कहा ॥

११ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि अपना हाथ दे मारकर और अपना पांव पटककर कह हाय हाय इस्राएल् के घराने के सारे घिनौने कामों पर वे तलवार भूख और मरी से नाश हो जाएंगे ॥ १२ । जो दूर हो सो मरी से मरेगा और जो निकट हो सो तलवार से मार डाला जाएगा और जो बचकर नगर में रहते हुए घेरा जाए सो भूख से मरेगा इस भांति मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से उतारूंगा ॥ १३ । और जब हर एक ऊंची पहाड़ी और पहाड़ों की हर एक चोटी पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे और हर एक घने बांजवृक्ष की छाया में और जहां जहां वे अपनी सब मूरतों को सुखदायक सुगंध द्रव्य चढ़ाते हैं वहां वहां उन में के मारे हुए लोग अपनी वेदियों के आस पास अपनी मूरतों के बीच पड़े रहेंगे तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ १४ । मैं अपना हाथ उन के विरुद्ध बढ़ाकर उस देश को सारे घरों समेत जंगल से ले दिब्ला की ओर लों उजाड़ ही उजाड़कर दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि. २ । हे मनुष्य के संतान प्रभु यहोवा इस्राएल् की भूमि के विषय यों कहता है कि अन्त हुआ चारों कोनों समेत देश का अंत आ गया है ॥ ३ । तेरा अन्त अभी आ गया और मैं अपना कोप तुझ पर भड़काकर तेरी चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे दूंगा ॥ ४ । और मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं कोमलता करूंगा तेरी चालचलन का फल तुझे दूंगा और तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं ॥

५ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि विपत्ति है वह एक ही विपत्ति है देखो वह आया चाहती है ॥ ६ । अन्त आ गया सब का अन्त आया है वह तेरे विरुद्ध जागा है देखो वह आया चाहता है ॥ ७ । हे देश के निवासी तेरे लिये चक्र घूम चुका समय आ गया दिन नियरा गया पहाड़ों पर आनन्द के शब्द का दिन नहीं हुल्लड़ ही का होगा ॥ ८ । अब थोड़े दिनों में मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर भड़काऊंगा[१] और तुझ पर पूरा कोप करूंगा और तेरी चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे भुगताऊंगा ॥ ९ । और मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी न मैं तुझ से कोमलता करूंगा बरन तुझे तेरी चालचलन का फल भुगताऊंगा और तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा मारनेहारा हूं ॥ १० । देखो उस दिन को देखो वह आया चाहता है चक्र अभी घूम चुका दण्ड फूल चुका अभिमान फूला है ॥ ११ । उपद्रव बढ़ते बढ़ते दुष्टता का दण्ड बन गया न तो उन में से कोई रह जाएगा और न उन की भीड़ भाड़ वा उन के धन में से कुछ रहेगा और न उन में से किसी के लिये विलाप सुन पड़ेगा ॥ १२ । समय आ गया दिन नियरा गया न तो मोल लेनेहारा आनन्द और न बेचनेहारा शोक करे क्योंकि उस की सारी भीड़ भाड़ पर कोप भड़क उठा है ॥ १३ । सो चाहे वे जीते रहें तौभी बेचनेहारा बेची हुई वस्तु के पास कभी लौटने न पाएगा क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़ भाड़ पर घटेगी कोई न लौटेगा बरन कोई मनुष्य जो अधर्म्म में जीता रहता है बल न पकड़ सकेगा ॥ १४। उन्हों ने नरसिंगा फूंका और सब कुछ तैयार कर दिया पर युद्ध में कोई नहीं जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ भाड़ पर मेरा कोप भड़का हुआ है ॥ १५ । बाहर तो तलवार और भीतर महंगी और मरी हैं जो मैदान में हो सो तलवार से मरेगा और जो नगर में हो सो भूख और मरी से मारा जाएगा ॥ १६ । और उन में से जो बच निकलेंगे सो बचेंगे तो सही पर अपने अपने अधर्म्म में फंसे रहकर तराइयों में रहनेहारे कबूतरों की नाईं पहाड़ों के ऊपर विलाप करते रहेंगे ॥ १७ । सब के हाथ ढीले और

(१) मूल में उण्डेलूगा ।

सब के घुटने अति निर्बल हो जाएंगे॰ ॥ १८ । और वे कमर मे टाट कसेंगे और उन के रोएं खड़े होंगे सब के मुंह सूख जाएंगे और सब के सिर मूंड़े जाएंगे ॥ १९ । वे अपनी चान्दी सड़कों में फेंक देंगे और उन का सोना मैली वस्तु ठहरेगा यहोवा की जलन के दिन उन का सोना चान्दी उन को बचा न सकेगी न उस से उन का जी सन्तुष्ट होगा न उन के पेट भरेंगे क्योंकि वह उन के अधर्म्म के ठोकर का कारण हुआ है ॥ २० । उन का देश जो शोभायमान शिरोमणि था उस के विषय उन्हों ने गर्व्व ही गर्व्व करके उस मे अपनी घिनौनी वस्तुओं की मूरतें और और घिनौनी वस्तुएं बना रक्खीं इस कारण मैं ने उसे उन के लिये मैली वस्तु ठहराया है ॥ २१ । और मैं उसे लूटने के लिये परदेशियों के हाथ और धन छीनने के लिये पृथिवी के दुष्ट लोगों के वश कर दूंगा और वे उसे अपवित्र कर डालेंगे ॥ २२ । मैं उन से मुंह फेर लूंगा सो वे मेरे रक्षित स्थान को अपवित्र करेंगे और डाकू उस में घुसकर उसे अपवित्र करेंगे ॥ २३ । एक सांकल बना दे क्योंकि देश अन्याय के खून से और नगर उपद्रव से भरा हुआ है ॥ २४ । सो मैं अन्यजातियों के बुरे से बुरे लोग लाऊंगा जो उन के घरों के स्वामी हो जाएंगे और मै सामर्थियों का गर्व्व तोड़ दूंगा और उन के पवित्र स्थान अपवित्र किये जाएंगे ॥ २५ । सत्यानाश होने पर है उन्हें ढूंढ़ने पर भी शान्ति न मिलेगी ॥ २६ । विपत्ति पर विपत्ति आएगी और चर्चा के पीछे चर्चा सुनाई पड़ेगी और लोग नबी मे दर्शन की बात पूछेंगे पर याजक के पास से व्यवस्था और पुरनिये के पास से सम्मति देने की शक्ति जाती रहेगी ॥ २७ । राजा तो शोक करेगा और रईस उदासीरूपी वस्त्र पहिनेंगे और देश के लोगों के हाथ ढीले पड़ेंगे मैं उन के चलन के अनुसार उन से वर्ताव करूंगा और उन की कमाई के समान उन को दण्ड दूंगा तब वे जान लेंगे कि मै यहोवा हूं ॥

(१) मूल में जल [बनकर बह] जाएंगे ।

८. फिर छठवें बरस के छठवें महीने के पांचवें दिन को मैं अपने घर में बैठा था और यहूदियों के पुरनिये मेरे साम्हने बैठे थे कि प्रभु यहोवा की शक्ति॰ वहीं मुझ पर हुई ॥ २ । तब मैं ने देखा कि आग का सा एक रूप दिखाई देता है उस की कमर से नीचे की ओर आग है और उस की कमर से ऊपर की ओर झलकाये हुए पीतल की झलक सी कुछ है ॥ ३ । उस ने हाथ सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े तब आत्मा ने मुझे पृथिवी और आकाश के बीच मे उठाकर परमेश्वर के दिखाये हुए दर्शनों मे यरूशलेम् के मन्दिर के भीतरी आंगन के उस फाटक के पास पहुंचा दिया जिस का मुंह उत्तर ओर है और जिस मे उस जलन उपजानेहारी प्रतिमा का स्थान था जिस के कारण जलन होती है ॥ ४ । फिर वहां इस्राएल् के परमेश्वर का तेज वैसा ही था जैसा मैं ने मैदान में देखा था ॥ ५ । उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान अपनी आंखें उत्तर ओर उठाकर देख सो मै ने अपनी आंखें उत्तर ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक की उत्तर ओर उस के पैठाव ही में वह जलन उपजानेहारी प्रतिमा है ॥ ६ । तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं इस्राएल् का घराना क्या ही बड़े घिनौने काम यहां करता है जिस से मै अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊं फिर तुझे इन से भी अधिक घिनौने काम देखने को हैं ॥ ७ । तब वह मुझे आंगन के द्वार पर ले गया और मैं ने देखा कि भीत में एक छेद है ॥ ८ । तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान भीत को फोड़ सो मैं ने भीत को फोड़कर क्या देखा कि एक द्वार है ॥ ९ । उस ने मुझ से कहा भीतर जाकर देख कि ये लोग यहां कैसे कैसे अति घिनौने काम कर रहे हैं ॥ १० । सो मैं ने भीतर जाकर देखा कि चारों ओर की भीत पर जाति

(१) मूल में का हाथ ।

जाति के रेंगनेहारे जन्तुओं और घिनौने पशुओं और इस्राएल् के घराने की सब मूरतों के चित्र खिंचे हुए हैं ॥ ११। और इस्राएल् के घराने के पुरनियों में से सत्तर पुरुष जिन के बीच शापान् का पुत्र याजन्याह् भी है सो उन चित्रों के साम्हने खड़े हैं और एक एक पुरुष अपने हाथ में धूपदान लिये हुए है और धूप के धूंएं के बादल की सुगन्ध उठ रही है ॥ १२। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान क्या तू ने देखा है कि इस्राएल् के घराने के पुरनिये अपनी अपनी नक्काशीवाली कोठरियों के अन्धेरे में क्या कर रहे हैं वे कहते है कि यहोवा हम को नहीं देखता यहोवा ने देश को त्याग दिया है ॥ १३। फिर उस ने मुझ से कहा तुझे इन से और भी बड़े बड़े घिनौने काम जो वे करते हैं देखने को हैं ॥ १४। तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर ओर था और वहां स्त्रियां बैठी हुई तम्मूज़् के लिये रो रही थीं ॥ १५। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान क्या तू ने यह देखा है फिर इन से भी बड़े घिनौने काम तुझे देखने को हैं ॥ १६। सो वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आंगन में ले गया और वहां यहोवा के मन्दिर के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई पचीस पुरुष अपनी पीठ यहोवा के मन्दिर की ओर और अपने मुख पूरब ओर किये हुए थे और वे पूरब दिशा की ओर सूर्य्य को दण्डवत् कर रहे थे ॥ १७। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान क्या तू ने यह देखा है क्या यहूदा के घराने का ये घिनौने काम करना जो वे यहां करते हैं हलकी बात है उन्हों ने अपने देश को उपद्रव से भर दिया और फिर यहां आकर मुझे रिस दिलाते हैं वरन वे डाली को अपनी नाक के आगे लिये रहते हैं ॥ १८। सो मैं आप जलजलाहट के साथ काम करूंगा मेरी दयादृष्टि न होगी न मैं कोमलता करूंगा और चाहे वे मेरे कानों में ऊंचे शब्द से पुकारें तौभी मैं उन की न सुनूंगा ॥

९. फिर उस ने मेरे सुनते ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा नगर के अधिकारियों को अपने अपने हाथ से नाश करने का हथियार लिये हुए निकट लाओ ॥ २। इस पर छः पुरुष उत्तर ओर के ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने अपने हाथ में घात करने का हथियार लिये हुए आये और उन के बीच सन का वस्त्र पहिने कमर में दवात बांधे हुए एक और पुरुष था। और वे सब भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए ॥ ३। इस्राएल् के परमेश्वर का तेज तो करूबों पर से जिन के ऊपर वह रहा करता था भवन की डेवढ़ी पर उठ आया था और उस ने उस सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो कमर में दवात बांधे हुए था पुकारा ॥ ४। और यहोवा ने उस से कहा इस यरूशलेम् नगर के भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सारे घिनौने कामों के कारण जो उस में किये जाते हैं सांसें भरते और दुःख के मारे चिल्लाते हैं उन के माथों पर चिन्ह कर दे ॥ ५। तब दूसरों से उस ने मेरे सुनते कहा नगर में उस के पीछे पीछे चलकर मारते जाओ किसी पर दयादृष्टि न करना न कोमलता से काम करना ॥ ६। बूढ़े जवान कुंवारी बालबच्चे स्त्रियां सब को मारकर नाश करना जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो उस के निकट न जाना और मेरे पवित्रस्थान ही से आरंभ करो। सो उन्हों ने उन पुरनियों से आरंभ किया जो भवन के साम्हने थे ॥ ७। फिर उस ने उन से कहा भवन को अशुद्ध करो और आंगनों को लोथों से भर दो निकल आओ। सो वे निकलकर नगर में मारने लगे ॥ ८। जब वे मार रहे थे और मैं अकेला रह गया तब मैंने मुंह के बल गिर चिल्लाकर कहा हाय प्रभु यहोवा क्या तू अपनी जलजलाहट यरूशलेम् पर भड़काकर[1] इस्राएल् के सारे बचे हुओं को भी नाश करेगा ॥ ९। उस ने मुझ से कहा इस्राएल् और यहूदा के घरानों का अधर्म्म अत्यन्त ही बड़ा है यहां तक कि देश तो

(१) मूल में उंडेलते उंडेलते।

खून से और नगर अन्याय से भर गया है और वे कहते हैं कि यहोवा ने पृथिवी[1] को त्यागा और यहोवा कुछ नहीं देखता ॥ १० । सो मेरी दयादृष्टि न होगी न मैं कोमलता करूंगा बरन उन की चाल उन्हीं के सिर लौटा दूंगा ॥ ११ । तब मैं ने क्या देखा कि जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए और कमर में दवात बांधे था उस ने यह कहकर समाचार दिया कि जैसे तू ने आज्ञा दिई वैसे ही मैं ने किया है ॥

१०. इस के पीछे मैं ने देखा कि करूबों के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल है उस में नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है ॥ २ । तब यहोवा ने उस सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष से कहा घूमनेहारे पहियों के बीच करूबों के नीचे जा अपनी दोनों मुट्ठियों को करूबों के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर छितरा दे । सो वह मेरे देखते उन के बीच में गया ॥ ३ । जब वह पुरुष करूबों के बीच में गया तब तो वे भवन की दक्खिन ओर खड़े थे और बादल भीतरी आंगन में भरा हुआ था ॥ ४ । पर पीछे यहोवा का तेज करूबों के ऊपर से उठकर भवन की डेवढ़ी पर आ गया और बादल भवन में भर गया और आंगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर गया ॥ ५ । और करूबों के पंखों का शब्द बाहरी आंगन तक सुनाई देता था वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के बोलने का सा शब्द था ॥ ६ । जब उस ने सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष को घूमनेहारे पहियों के बीच से करूबों के बीच से आग लेने की आज्ञा दिई तब वह उन के बीच में जाकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ ॥ ७ । तब करूबों के बीच से एक करूब् ने अपना हाथ बढ़ाकर उस आग में डाल दिया जो करूबों के बीच में थी और कुछ उठाकर सन का वस्त्र पहिने हुए की मुट्ठी में दिई और वह उसे लेकर बाहर गया ॥ ८ । करूबों के पंखों के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ दिखाई देता था ॥ ९ । तब मैं ने देखा कि करूबों के पास चार पहिये हैं अर्थात् एक एक करूब् के पास एक एक पहिया है और पहियों का रूप फीरोजा का सा है ॥ १० । और उन का ऐसा रूप है कि चारों एक से दिखाई देते हैं अर्थात् जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो ॥ ११ । चलने के समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते हैं और चलते समय मुड़ते नहीं बरन जिधर उन का सिर रहता है उधर ही वे उस के पीछे चलते हैं चलते समय वे मुड़ते नहीं ॥ १२ । और पीठ हाथ और पंखों समेत करूबों का सारा शरीर और जो पहिये उन के हैं सो भी सब के सब चारों ओर आंखों से भरे हुए हैं ॥ १३ । पहिये मेरे सुनते यह कहलाये अर्थात् घूमनेहारे पहिये ॥ १४ । और एक एक के चार चार मुख थे एक मुख तो करूब् का सा दूसरा मनुष्य का सा तीसरा सिंह का सा और चौथा उकाब पक्षी का सा था ॥ १५ । करूब् तो भूमि पर से उठ गये ये तो वे ही जीवधारी हैं जो मैं ने कबार् नदी के पास देखे थे ॥ १६ । और जब जब वे करूब् चलते तब तब पहिये उन के पास पास चलते हैं और जब जब करूब् पृथिवी पर से उठने के लिये अपने पंख उठाते तब तब पहिये उन के पास से नहीं मुड़ते ॥ १७ । जब वे खड़े होते तब ये भी खड़े होते हैं और जब वे उठते तब ये भी उन के संग उठते हैं क्योंकि जीवधारियों का आत्मा इन में भी रहता है ॥ १८ । यहोवा का तेज तो भवन की डेवढ़ी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया ॥ १९ । और करूब् अपने पंख उठा मेरे देखते पृथिवी पर से उठकर निकल गये और पहिये भी उन के संग गये और वे सब यहोवा के भवन के पूरबी फाटक में खड़े हो गये और इस्राएल् के परमेश्वर का तेज उन के ऊपर ठहरा रहा ॥ २० । ये वे ही जीवधारी हैं जो मैं ने कबार् नदी के पास इस्राएल् के परमेश्वर के नीचे देखे थे और मैं ने जान लिया कि वे भी करूब् हैं ॥ २१ । एक एक के चार मुख और चार पंख और पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ भी हैं ॥ २२ । और उन के मुखों का रूप वही है जो मैं ने कबार् नदी के तीर पर देखा और

(१) वा इस देश ।

उन के मुख क्या बरन उन की सारी देह भी वैसी ही है वे सीधे अपने ही अपने साम्हने चलते हैं ॥

११. तब आत्मा ने मुझे उठाकर यहोवा के भवन के पूरबी फाटक के पास जिस का मुंह पूरब दिशा की ओर है पहुंचा दिया और वहां मैं ने क्या देखा कि फाटक ही में पचीस पुरुष हैं और मैं ने उन के बीच अज्जूर् के पुत्र याजन्याह् को और बनायाह् के पुत्र पलत्याह् को देखा जो प्रजा के हाकिम थे ॥ २ । तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान जो मनुष्य इस नगर में अनर्थ कल्पना और बुरी युक्ति करते हैं सो ये ही हैं ॥ ३ । ये तो कहते हैं घर बनाने का समय निकट नहीं यह नगर हंडा और हम उस में का मांस हैं ॥ ४ । इस लिये हे मनुष्य के सन्तान इन के विरुद्ध नबूवत कर नबूवत ॥ ५ । तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा और मुझ से कहा ऐसा कह कि यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल् के घराने तुम ने ऐसा ही कहा है । जो कुछ तुम्हारे मन में आता है उसे मैं जानता हूं ॥ ६ । तुम ने तो इस नगर में बहुतों को मार डाला बरन उस की सड़कों को लोथों से भर दिया है ॥ ७ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि जो मनुष्य तुम ने इस में मार डाले हैं उन की लोथें ही इस नगररूपी हंडे में का मांस हैं और तुम इस के बीच से निकाले जाओगे ॥ ८ । तुम तलवार से डरते हो और मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ ९ । मैं तुम को इस में से निकालकर परदेशियों के हाथ कर दूंगा और तुम को दण्ड दिलाऊंगा ॥ १० । तुम तलवार से मरकर गिरोगे और मैं तुम्हारा मुकद्दमा इस्राएल् के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ११ । न तो यह नगर तुम्हारे लिये हंडा और न तुम इस में का मांस होगे मैं तुम्हारा मुकद्दमा इस्राएल् के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा ॥ १२ । तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं तुम तो मेरी विधियों पर नहीं चले और मेरे नियमों को तुम ने नहीं माना पर अपनी चारों ओर की अन्यजातियों की रीतियों पर चले हो ॥ १३ । मैं इसी प्रकार की नबूवत कर रहा था कि बनायाह् का पुत्र पलत्याह् मर गया । तब मैं मुंह के बल गिरकर ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा और कहा हाय प्रभु यहोवा क्या तू इस्राएल् के बचे हुओं का नाश ही नाश करता है ॥

१४ । तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १५ । हे मनुष्य के सन्तान यरूशलेम् के निवासियों ने तेरे निकट भाइयों से[1] बरन इस्राएल् के सारे घराने से भी कहा है तुम यहोवा के पास से दूर हो जाओ यह देश हमारे ही अधिकार में दिया गया है ॥ १६ । पर तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने तुम को दूर दूर की जातियों में बसाया और देश देश में तितर बितर किया तो है तौभी जिन देशों में तुम आये हुए हो उन में मैं तुम्हारे लिये थोड़े दिन लों आप पवित्रस्थान ठहरा रहूंगा ॥ १७ । फिर उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को जाति जाति के लोगों के बीच से बटोरूंगा और जिन देशों में तुम तितर बितर किये गये हो उन में से तुम को एकट्ठा करूंगा और तुम्हें इस्राएल् की भूमि दूंगा ॥ १८ । और वे वहां पहुंचकर उस देश की सब घिनौनी मूरतें और सब घिनौने काम भी उस में से दूर करेंगे ॥ १९ । और मैं उन का एक ही मन कर दूंगा और तुम्हारे भीतर नया आत्मा उपजाऊंगा और उन की देह में से पत्थर का सा हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूंगा, २० । जिस से वे मेरी विधियों पर चलें और मेरे नियमों को मानें और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा ॥ २१ । पर वे लोग जो अपनी घिनौनी मूरतों और घिनौने कामों में मन लगाकर चलते रहते हैं मैं ऐसा करूंगा कि उन की चाल उन्हीं के सिर पर पड़ेगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २२ । इस पर करूबों ने अपने पंख उठाये और पहिये उन के संग रहे और इस्राएल् के परमेश्वर का तेज उन के ऊपर था ॥ २३ । तब यहोवा का तेज नगर के बीच पर से उठकर उस

(१) मूल में तेरे भाइयो तेरे भाइयो तेरे समीपीजनो से ।

पर्वत पर ठहर गया जो नगर की पूरब ओर है ॥ २४। फिर आत्मा ने मुझे उठाया और परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दर्शन में मुझे कस्दियों के देश में बन्धुओं के पास पहुंचा दिया। और जो दर्शन मैं ने पाया था सो लोप हो गया[१] ॥ २५। तब जितनी बातें यहोवा ने मुझे दिखाई थीं सो मैं ने बन्धुओं को बता दिईं ॥

१२. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान तू तो बलवा करनेहारे घराने के बीच रहता है जिन के देखने के लिये आंख तो हैं पर नहीं देखते और सुनने के लिये कान तो हैं पर नहीं सुनते क्योंकि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं ॥ ३। सो हे मनुष्य के सन्तान बंधुआई का सामान तैयार करके दिन को उन के देखते उठ जाना अपना स्थान छोड़कर उन के देखते दूसरे स्थान को जाना यद्यपि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं तौभी क्या जानिये वे ध्यान दें ॥ ४। सो तू दिन को उन के देखते बन्धुआई के सामान की नाईं अपना सामान निकालना और तू आप बन्धुआई में जानेहारे की रीति सांझ को उन के देखते उठ जाना ॥ ५। उन के देखते भीत को फोड़कर उसी में से अपना सामान निकालना ॥ ६। उन के देखते उसे अपने कंधे पर उठाकर अंधेरे में निकालना और अपना मुख ढांपे रहना कि भूमि तुझे न देख पड़े क्योंकि मैं ने तुझे इस्राएल् के घराने के लिये चिन्ह ठहराया है ॥ ७। आज्ञा के अनुसार मैं ने ऐसा ही किया दिन को मैं ने अपना सामान बन्धुआई के सामान की नाईं निकाला और सांझ को अपने हाथ से भीत को फोड़ा फिर अंधेरे में सामान को निकालकर उन के देखते अपने कंधे पर उठाये हुए चला गया ॥ ८। फिर बिहान को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ९। हे मनुष्य के सन्तान क्या इस्राएल् के घराने ने अर्थात् उस बलवा करनेहारे घराने ने तुझ से यह नहीं पूछा कि यह तू क्या करता है ॥ १०। तू उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि यह भारी वचन यरूशलेम् में के प्रधान पुरुष और इस्राएल् के सारे घराने के विषय में है जिस के बीच वे रहते हैं ॥ ११। तू उन से कह कि मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूं जैसा मैं ने आप किया है वैसा ही इस्राएली लोगों से भी किया जाएगा उन को उठकर बंधुआई में जाना पड़ेगा ॥ १२। उन के बीच जो प्रधान पुरुष है सो अंधेरे में अपने कंधे पर बोझ उठाये हुए निकलेगा वे अपना सामान निकालने के लिये भीत को फोड़ेंगे और वह प्रधान अपना मुख ढांपे रहेगा कि उस को भूमि न देख पड़े ॥ १३। फिर मैं उस पर अपना जाल फैलाऊंगा और वह मेरे फंदे में फंसेगा और मैं उसे कस्दियों के देश के बाबेल् में पहुंचा दूंगा पर यद्यपि वह उस नगर में मर जाएगा तौभी उस को न देखेगा ॥ १४। और जितने उस के आस पास उस के सहायक होंगे उन को और उस की सारी टोलियों को मैं सब दिशाओं में तितर बितर कर दूंगा और तलवार खींचकर उन के पीछे चलवाऊंगा ॥ १५। और जब मैं उन्हें जाति जाति में तितर बितर करूंगा और देश देश में छिन्न भिन्न कर दूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥ १६। और मैं उन में से थोड़े से लोगों को तलवार भूख और मरी से बचा रक्खूंगा और वे अपने घिनौने काम उन जातियों में बखान करेंगे जिन के बीच वे पहुंचेंगे तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

१७। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८। हे मनुष्य के सन्तान कांपते हुए अपनी रोटी खाना और थरथराते और चिन्ता करते हुए अपना पानी पीना ॥ १९। और इस देश के लोगों से यों कहना कि प्रभु यहोवा यरूशलेम् और इस्राएल् के देश के निवासियों के विषय यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खाएंगे और अपना पानी विस्मय के साथ पीएंगे और देश के सब रहनेहारों के उपद्रव के कारण उस सब से जो उस में हैं वह रहित होकर उजड़ जाएगा। २० ॥ और बसे

(१) मूल में मुझ पर से उठ गया।

हुए नगर उजड़ेंगे और देश भी उजाड़ हो जाएगा तबतुम जान लोગે कि मैं यहोवा हूं ॥

२१। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २२। हे मनुष्य के सन्तान यह क्या कहावत है जो तुम लोग इस्राएल् के देश में कहा करते हो कि दिन अधिक हो गये हैं और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई ॥ २३। इस लिये उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मै इस कहावत को बन्द करूंगा और यह कहावत इस्राएल् पर फिर न चलेगी तू उन से कह कि वह दिन निकट आया और दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं॥ २४। और इस्राएल् के घराने में न तो भूठे दर्शन की कोई बात और न भावी की कोई चिकनी चुपड़ी बात फिर कही जाएगी ॥ २५। क्योंकि मैं यहोवा हूं जब मैं बोलूं तब जो वचन मैं कहूं सो पूरा हो जाएगा उस मे विलम्ब न होगा हे बलवा करनेहारे घराने तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूंगा और वह पूरा हो जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

२६। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २७। हे मनुष्य के सन्तान सुन इस्राएल् के घराने के लोग यह कह रहे हैं कि जो दर्शन वह देखता है सो बहुत दिन के पीछे पूरा होनेवाला है और वह दूर के समय के विषय नबूवत करता है ॥ २८। इस लिये तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे किसी वचन के पूरे होने में फिर विलम्ब न होगा वरन जो वचन मैं कहूं सो पूरा ही होगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१३. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान इस्राएल् के जो नबी अपने ही मन से नबूवत करते हैं उन के विरुद्ध तू नबूवत करके कह कि यहोवा का वचन सुनो ॥ ३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उन मूढ़ नबियों पर जो अपनी ही आत्मा के पीछे भटक जाते और दर्शन नहीं पाया ॥ ४। हे इस्राएल् तेरे नबी खण्डहरों में की लोमड़ियों के समान बने हैं ॥ ५। तुम ने नाकों में चढ़कर इस्राएल् के घराने के लिये भीत नहीं सुधारी जिस से वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकें ॥ ६। जो लोग कहते हैं कि यहोवा की यह वाणी है उन्हों ने भावी का व्यर्थ और झूठा दावा किया है क्योंकि चाहे तुम ने यह आशा दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा करेगा तौभी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा ॥ ७। क्या तुम्हारा दर्शन झूठा नहीं है और क्या तुम झूठमूठ भावी नहीं कहते कि तुम कहते हो कि यहोवा की यह वाणी है, पर मैं ने कुछ नहीं कहा है ॥ ८। इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम ने जो व्यर्थ बात कही और झूठे दर्शन देखे हैं इस लिये मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

९। जो नबी झूठे दर्शन देखते और झूठमूठ भावी कहते हैं मेरा हाथ उन के विरुद्ध होगा और न वे मेरी प्रजा की गोष्ठी में भागी होंगे न उन के नाम इस्राएल् की नामावली में लिखे जाएंगे और न वे इस्राएल् के देश में प्रवेश करने पाएंगे इस से तुम लोग जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं ॥ १०। क्योंकि[१] उन्हों ने शान्ति ऐसा कहकर जब शान्ति नहीं है मेरी प्रजा को बहकाया है, फिर जब कोई भीत बनाता तब वे उस की कच्ची लेसाई करते हैं ॥ ११। उन कच्ची लेसाई करनेहारों से कह कि वह तो गिर जाएगी क्योंकि बड़े जोर की वर्षा होगी और बड़े बड़े ओले भी गिरेंगे और प्रचण्ड आंधी उसे गिराएगी ॥ १२। सो जब भीत गिर जाएगी तब क्या लोग तुम से यह न कहेंगे कि जो लेसाई तुम ने किई सो कहां रही ॥ १३। इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि मैं जलकर उस को प्रचण्ड आंधी के द्वारा गिराऊंगा और मेरे कोप से भारी वर्षा होगी और मेरी जलजलाहट से बड़े बड़े ओले गिरेंगे कि भीत को नाश करें ॥ १४। इस रीति जिस भीत पर तुम ने कच्ची लेसाई किई है उसे मैं ढा दूंगा वरन मिट्टी में मिलाऊंगा और उस की नेव खुल जाएगी और जब वह गिरेगी तब तुम भी उस के

(१) मूल में सब दर्शन नाश हुए ।

(१) मूल में क्योंकि और क्योंकि ।

नीचे दबकर नाश होगे तब तुम जान लेगी कि मैं यहोवा हूं ॥ १५। इस रीति मैं भीत और उस की कच्ची लेसाई करनेहारे दोनों पर अपनी जलजलाहट पूरी रीति से भड़काऊंगा फिर तुम से कहूंगा कि न तो भीत रही और न उस के लेसनेहारे रहे, १६। अर्थात् इस्राएल् के वे नबी जो यरूशलेम् के विषय नबूवत करते और उसकी शान्ति का दर्शन बताते हैं पर प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि शान्ति है ही नहीं॥

१७। फिर हे मनुष्य के संतान तू अपने लोगों की स्त्रियों[1] से विमुख होकर जो अपने ही मन से नबूवत करती हैं उन के विरुद्ध नबूवत करके, १८। कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जो स्त्रियां हाथ के सब जोड़ों के लिये तकिया सीतीं और प्राणियों का अहेर करने को डील डील के मनुष्यों के सिर के ढांपने के लिये कपड़े बनाती हैं उन पर हाय। क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणों का अहेर करके अपने निज प्राण बचा रक्खोगी॥ १९। तुम ने तो मुट्ठी मुट्ठी भर जव और रोटी के टुकड़ों के बदले मुझे मेरी प्रजा की दृष्टि में अपवित्र ठहराकर अपनी उन झूठी बातों के द्वारा जो मेरी प्रजा के लोग तुम से सुनते हैं उन प्राणियों को मार डाला जो नाश के योग्य न थे और उन प्राणियों को बचा रक्खा है जो बचने के योग्य न थे॥ २०। इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे उन तकियों के विरुद्ध हूं जिन के द्वारा तुम वहां प्राणियों का अहेर करके उड़ाती हो सो उन को तुम्हारी बांह पर से छीनकर उन प्राणियों को छुड़ा दूंगा जिन्हें तुम अहेर कर करके उड़ाती हो॥ २१। फिर मैं तुम्हारे सिर के कपड़े फाड़कर अपनी प्रजा के लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा और वे आगे को तुम्हारे वश में न रहेंगे कि तुम उन को अहेर कर सको तब तुम जान लेगी कि मैं यहोवा हूं॥ २२। तुम ने जो झूठ कहकर धर्म्मी के मन को उदास किया है जिस को मैं ने उदास करना नहीं चाहा और दुष्ट जन को हियाव बंधाया है जिस से वह अपने बुरे मार्ग से न फिरे और जीता रहे, २३। इस कारण तुम फिर न तो झूठा दर्शन देखोगी और न भावी कहोगी क्योंकि मैं अपनी प्रजा को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा तब तुम जान लेगी कि मैं यहोवा हूं॥

(१) मूल में बेटियों।

१४. फिर इस्राएल् के कितने पुरनिये मेरे पास आकर मेरे साम्हने बैठ गये॥ २। तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ३। हे मनुष्य के सन्तान इन पुरुषों ने तो अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित किई और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रक्खी है फिर क्या वे मुझ से कुछ भी पूछने पाएं॥ ४। सो तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि इस्राएल् के घराने में से जो कोई अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करके और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रखकर नबी के पास आए उस को मैं यहोवा उस की बहुत सी मूरतों के अनुसार ही उत्तर दूंगा, ५। जिस से इस्राएल् का घराना जो अपनी मूरतों के द्वारा मुझे त्यागकर सब का सब दूर हो गया है उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फंसाऊं॥ ६। सो इस्राएल् के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि फिरो और अपनी मूरतों को पीठ पीछे करो और अपने सब घिनौने कामों से मुंह मोड़ो॥ ७। क्योंकि इस्राएल् के घराने में से और उस के बीच रहनेहारे परदेशियों में से भी कोई क्यों न हो जो मेरे पीछे हो लेने को छोड़कर अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करे और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रक्खे और तब मुझ से अपनी कोई बात पूछने के लिये नबी के पास आए उस को मैं यहोवा आप ही उत्तर दूंगा॥ ८। और मैं उस मनुष्य से विमुख होकर उस को विस्मित करूंगा और चिन्ह ठहराऊंगा उस को कहावत चलाऊंगा और मैं उसे अपनी प्रजा में से नाश करूंगा तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं॥ ९। और यदि नबी ने धोखा खाकर कोई वचन कहा हो तो जानो कि मुझ यहोवा ने उस नबी को धोखा दिया है और अपना हाथ उस के विरुद्ध बढ़ाकर उसे अपनी प्रजा इस्राएल्

में से विनाश करूंगा ॥ १० । वे सब लोग अपने अपने अधर्म्म का बोझ उठाएंगे अर्थात् जैसा नबी से पूछनेहारे का अधर्म्म ठहरेगा नबी का भी अधर्म्म वैसा ही ठहरेगा, ११ । इस लिये कि इस्राएल् का घराना मेरे पीछे हो लेना आगे को न छोड़े न अपने भांति भांति के अपराधों के द्वारा आगे को अशुद्ध बने बरन वे मेरी प्रजा ठहरें और मैं उन का परमेश्वर ठहरूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१२ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १३ । हे मनुष्य के सन्तान जब किसी देश के लोग मुझ से विश्वासघात करके पापी हो जाएं और मैं अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उस में का अन्नरूपी आधार दूर करूं और उस में अकाल डालकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों को नाश करूं, १४ । तब चाहे उस में नूह् दानिय्येल् और अय्यूब् ये तीनों पुरुष हों तौभी वे अपने धर्म्म के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १५ । यदि मैं किसी देश में दुष्ट जन्तु भेजूं जो उस को निर्जन करके उजाड़ कर डालें और जन्तुओं के कारण कोई उस में होकर न जाए, १६ । तो चाहे उस में वे तीन पुरुष हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न बेटियों को बचा सकेंगे वे ही अकेले बचेंगे और देश उजाड़ हो जाएगा ॥ १७ । यदि मैं उस देश पर तलवार खींचकर कहूं हे तलवार उस देश में चल और इस रीति मनुष्य और पशु उस में से नाश करूं, १८ । तो चाहे उस में वे तीन पुरुष हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न बेटियों को बचा सकेंगे वे ही अकेले बचेंगे ॥ १९ । यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊं और उस पर अपनी जलजलाहट भड़काकर[1] उस में का लोहू ऐसा बहाऊं कि वहां के मनुष्य और पशु दोनों नाश हों, २० । तो चाहे नूह् दानिय्येल् और अय्यूब् उस में हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न बेटियों को बचा सकेंगे वे अपने धर्म्म के द्वारा अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे ॥ २१ । और प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं यरूशलेम् पर अपने चारों दण्ड पहुंचाऊंगा अर्थात् तलवार अकाल दुष्ट जन्तु और मरी जिन से मनुष्य और पशु सब उस में से नाश हों ॥ २२ । तौभी उस में थोड़े से बेटे बेटियां बचेंगी वहां से निकालकर तुम्हारे पास पहुंचाई जाएंगी और तुम उनकी चालचलन और कामों को देखकर उस विपत्ति के विषय जो मैं यरूशलेम पर डालूंगा बरन जितनी विपत्ति मैं उस पर डालूंगा उस सब के विषय तुम शान्ति पाओगे ॥ २३ । जब तुम उन की चाल चलन और काम देखो तब वे तुम्हारी शांति के कारण होंगे और तुम जान लोगे कि मैं ने यरूशलेम् में जो कुछ किया सो बिना कारण नहीं किया प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

(1) मूल में उंडेलकर।

१५. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के सन्तान सब वृक्षों में दाखलता की क्या श्रेष्ठता है दाख की शाखा जो जंगल के पेड़ों के बीच उत्पन्न होती है उस में क्या गुण है ॥ ३ । क्या कोई वस्तु बनाने के लिये उस में से लकड़ी लिई जाती वा कोई बर्तन टांगने के लिये उस में से खूंटी बन सकती है ॥ ४ । वह तो ईंधन बनकर आग में झोंकी जाती है उस के दोनों सिरे आग से जल जाते और उस का बीच भस्म हो जाता है क्या वह किसी काम की है ॥ ५ । सुन जब वह बनी थी तब भी वह किसी काम की न थी फिर जब वह आग का ईंधन होकर भस्म हो गई है तब किसी काम की कहां रही ॥ ६ । सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जैसे जंगल के पेड़ों में से मैं दाखलता को आग का ईंधन कर देता हूं वैसे ही मैं यरूशलेम् के निवासियों को नाश कर देता हूं ॥ ७ । और मैं उन से विमुख हूंगा और वे आग में से निकलकर फिर दूसरी आग का ईंधन हो जाएंगे और जब मैं उन से विमुख हूंगा तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ८ । और मैं उन का देश उजाड़ दूंगा क्योंकि

उन्हों ने मुझ से विश्वासघात किया है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१६. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान यरूशलेम् को उस के सब घिनौने काम जता दे ॥ ३। और उस से कह हे यरूशलेम् प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों के देश से हुई तेरा पिता तो एमोरी और तेरी माता हित्तिन थी ॥ ४। और तेरे जन्म पर ऐसा हुआ कि जिस दिन तू जन्मी उस दिन न तेरा नाल छीना गया न तू शुद्ध होने के लिये धोई गई न तेरे कुछ भी लोन मला गया न तू कुछ भी कपड़ों में लपेटी गई ॥ ५। किसी की दयादृष्टि तुझ पर न हुई कि इन कामों में से तेरे लिये एक भी काम किया जाता वरन अपने जन्म के दिन तू घिनौनी होने के कारण खुले मैदान में फेंक दिई गई थी ॥ ६। और जब मैं तेरे पास से होकर निकला और तुझे लोहू में लोटते हुए देखा तब मैं ने तुझ से कहा हे लोहू में लोटती हुई जीती रह फिर तुझ से मैं ने कहा लोहू में लोटती हुई जीती रह ॥ ७। फिर मैं ने तुझे खेत के बिरुले की नाईं बढ़ाया सो तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई तेरी छातियां सुडौल हुईं और तेरे बाल बढ़े और तू नंग धड़ंग थी ॥ ८। फिर मैं ने तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा कि तू पूरी स्त्री हो गई है सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर तेरा तन ढांप दिया और तुझ से किरिया खाकर तेरे संग वाचा बांधी और तू मेरी हो गई प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ ९। तब मैं ने तुझे जल से नहलाकर तेरा लोहू तुझ पर से धो दिया और तेरी देह पर तेल मला ॥ १०। फिर मैं ने तुझे बूटेदार वस्त्र और सूइसों के चमड़े की पनहिया पहिनाईं और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बांधा और तुझे रेशमी कपड़ा ओढाया ॥ ११। तब मैं ने तेरा सिंगार किया और तेरे हाथों में चूड़ियां और तेरे गले में तोड़ा पहिनाया ॥ १२। फिर मैं ने तेरी नाक में नत्थ और तेरे कानों में बालियां पहिनाईं और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा ॥ १३। सो तेरे आभूषण सोने चांदी के और तेरे वस्त्र सूक्ष्म सन रेशम और बूटेदार कपड़े के बने फिर तेरा भोजन मैदा मधु और तेल हुआ और तू अत्यन्त सुन्दर वरन रानी होने के योग्य हो गई ॥ १४। और तेरी सुन्दरता की कीर्त्ति अन्यजातियों में फैल गई क्योंकि उस प्रताप के कारण जो मैं ने अपनी ओर से तुझे दिया था तू पूर्ण सुन्दर थी प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१५। तब तू अपनी सुन्दरता का भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी और सब बटोहियों के संग बहुत कुकर्म्म किया जो कोई तुझे चाहता उसी से तू मिलती थी ॥ १६। और तू ने अपने वस्त्र लेकर रंग बिरंगे ऊंचे स्थान बना लिये और उन पर व्यभिचार किया ऐसे काम फिर न बन पड़ेंगे, ऐसा नहीं होने का ॥ १७। और तू ने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिये हुए सोने चान्दी के थे पुरुष की मूरतें बना लिईं और उन से भी व्यभिचार करने लगी, १८। और अपने बूटेदार वस्त्र लेकर उन को पहिनाये और मेरा तेल और मेरा धूप उन के साम्हने चढ़ाया ॥ १९। और जो भोजन मैं ने तुझे दिया था अर्थात् जो मैदा तेल और मधु मैं तुझे खिलाता था सो सब तू ने उन के साम्हने सुखदायक सुगन्ध करके रक्खा यों ही होता था प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २०। फिर तू ने अपने बेटे बेटियां जो तू मेरी जन्माई जनी थी लेकर उन मूरतों को नैवेद्य करके चढ़ाईं। क्या तेरा व्यभिचार करना ऐसी छोटी बात थी, २१। कि तू ने मेरे लड़केबाले उन मूरतों के आगे आग में चढ़ाकर घात किये हैं ॥ २२। और तू ने अपने सब घिनौने काम में और व्यभिचार करते हुए अपने बचपन के दिनों की सुधि कभी न लिई जब तू नंग धड़ंग अपने लोहू में लोटती थी ॥ २३। और तेरी उस सारी बुराई के पीछे क्या हुआ प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि हाय तुझ पर हाय, २४। कि तू ने एक डाटवाला घर बनवा लिया और हर एक चौक में एक ऊंचा स्थान बनवा लिया ॥ २५। और एक एक सड़क के सिरे पर भी तू ने अपना ऊंचा स्थान

बनवाकर अपनी सुन्दरता घिनौनी कर दिई और एक एक बटोही को कुकर्म्म के लिये बुलाकर महा-व्यभिचारिन हो गई॥ २६। तू ने अपने पड़ोसी मिस्री लोगों से भी जो मोटे ताजे हैं व्यभिचार किया, तू मुझे रिस दिलाने के लिये अपना व्यभिचार बढ़ाती गई॥ २७। इस कारण मैं ने अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तेरा दिन दिन का खाना घटा दिया और तेरी वैरिन पलिश्ती स्त्रियां जो तेरी महापाप की चाल से लजाती हैं उन की इच्छा पर मैं ने तुझे छोड़ दिया है॥ २८। फिर तेरी तृष्णा जो न बुझी इस लिये तू ने अश्शूरी लोगों से भी व्यभिचार किया और उन से व्यभिचार करने पर भी तेरी तृष्णा न बुझी॥ २९। फिर तू लेन देन के देश में व्यभिचार करते करते कस्दियों के देश लों पहुंची और वहां भी तेरी तृष्णा न बुझी॥ ३०। सो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तेरा हृदय कैसा चंचल है कि तू ये सब काम करती है जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम हैं॥ ३१। तू ने जो एक एक सड़क के सिरे पर अपना डाटवाला घर और चौक चौक में अपना ऊंचा स्थान बनवाया है इसी में तू वेश्या के समान नहीं ठहरी क्योंकि तू ऐसी कमाई पर हंसती है॥ ३२। तू व्यभिचारिन पत्नी है तू पराये पुरुषों को अपने पति की सन्ती ग्रहण करती है॥ ३३। सब वेश्याओं को तो रुपैया मिलता है पर तू ने अपने सब यारों को रुपैये देकर और उन को लालच दिखाकर बुलाया है कि वे चारों ओर से आकर तुझ से व्यभिचार करें॥ ३४। इस प्रकार तेरा व्यभिचार और और व्यभिचारिनों से उलटा है तेरे पीछे कोई व्यभिचारी नहीं चलता और तू दाम किसी से लेती नहीं बरन तू ही देती है इसी रीति तू उलटी ठहरी॥

३५। इस कारण हे वेश्या यहोवा का वचन सुन॥ ३६। प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू ने जो व्यभिचार में अति निर्लज्ज होकर अपनी देह अपने यारों को दिखाई और अपनी मूरतों से घिनौने काम किये और अपने लड़केबालों का लोहू बहाकर उन्हें बलि चढ़ाया है, ३७। इस कारण सुन मैं तेरे सब यारों को जो तुझे प्यारे हैं और जितनों से तू ने प्रीति लगाई और जितनों से तू ने बैर रक्खा उन सभों को चारों ओर से तेरे विरुद्ध एकट्ठा कर उन को तेरी देह नंगी करके दिखाऊंगा और वे तेरा तन देखेंगे॥ ३८। तब मैं तुझ को ऐसा दण्ड दूंगा जैसा व्यभिचारिनों और लोहू बहानेहारी स्त्रियों को दिया जाता है और क्रोध और जलन के साथ तेरा लोहू बहाऊंगा॥ ३९। इस रीति मैं तुझे उन के वश कर दूंगा और वे तेरे डाटवाले घर को ढा देंगे और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे और तेरे वस्त्र बरबस उतारेंगे और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे और तुझे नंग धड़ंग करके छोड़ेंगे॥ ४०। तब वे तेरे विरुद्ध एक सभा एकट्ठी करके तुझ पर पत्थरवाह करेंगे और अपने कटारों से वारपार छेदेंगे॥ ४१। तब वे आग लगाकर तेरे घरों को जला देंगे और तुझे बहुत सी स्त्रियों के देखते दण्ड देंगे और मैं तेरा व्यभिचार बन्द करूंगा और तू छिनाले के लिये दाम फिर न देगी॥ ४२। और जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चुकूंगा तब तुझ पर और न जलूंगा बरन शान्त हो जाऊंगा और फिर न रिसियाऊंगा॥ ४३। तू ने जो अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रक्खे बरन इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया इस कारण मैं तेरी चाल चलन तेरे सिर डालूंगा और तू अपने सब पिछले घिनौने कामों से अधिक और महापाप न करेगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४४। सुन कहावतों के सब कहनेहारे तेरे विषय यह कहावत कहेंगे कि जैसी मा वैसी बेटी॥ ४५। तेरी मा जो अपने पति और लड़केबालों से घिन करती है तू ठीक उस की बेटी ठहरी और तेरी बहिनें जो अपने अपने पति और लड़केबालों से घिन करती थीं तू ठीक उन की बहिन ठहरी उन की भी माता हित्तिन और उन का भी पिता एमोरी था॥ ४६। तेरी बड़ी बहिन तो शोमरोन् है जो अपनी बेटियों समेत तेरी बाईं ओर रहती है और तेरी छोटी बहिन जो तेरी दहिनी ओर रहती है सो बेटियों समेत सदोम् है॥ ४७। पर तू उन की

सो चाल नहीं चली और न उन के से घिनौने काम किये हैं यह तो बहुत छोटी बात ठहरती पर तेरी सारी चाल चलन उन से भी अधिक बिगड़ गई ॥ ४८। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सेंह तेरी बहिन सदोम् ने अपनी बेटियों समेत तेरे और तेरी बेटियों के समान काम नहीं किये ॥ ४९। सुन तेरी बहिन सदोम् का अधर्म्म यह था कि वह अपनी बेटियों सहित घमण्ड करती पेट भर भरके खाती और सुख चैन से रहती थी और दीन दरिद्र को न संभालती थी ॥ ५०। सो वह गर्व्व करके मेरे साम्हने घिनौने काम करने लगी और यह देखकर मैं ने उन्हें दूर कर दिया ॥ ५१। फिर शोमरोन् ने तेरे पाप के आधे भी नहीं किये तू ने तो उस से बढ़कर घिनौने काम किये और अपने सारे घिनौने कामों के द्वारा अपनी बहिनों को जीत लिया[1] ॥ ५२। सो तू ने जो अपनी बहिनों का न्याय किया इस कारण लज्जा करती रह क्योंकि तू ने जो उन से बढ़कर घिनौने पाप किये हैं इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं सो तू इस बात से लजा और लजाती रह कि तू ने अपनी बहिनों को जीत लिया है ॥ ५३। सो जब मैं उन को अर्थात् बेटियों सहित सदोम् और शोमरोन् को बन्धुआई से फेर लाऊंगा तब उन के बीच ही तेरे बन्धुओं को भी फेर लाऊंगा, ५४। जिस से तू लजाती रहे और अपने सब कामों से यह देखकर लजाए कि तू उन की शांति ही का कारण हुई है ॥ ५५। और तेरी बहिनें सदोम् और शोमरोन् अपनी अपनी बेटियों समेत अपनी पहिली दशा को फिर पहुंचेंगी और तू भी अपनी बेटियों सहित अपनी पहिली दशा को फिर पहुंचेगी ॥ ५६। अपने घमण्ड के दिनो में तो तू अपनी बहिन सदोम् का नाम भी न लेती थी, ५७। जब कि तेरी बुराई प्रगट न हुई थी अर्थात् जिस समय तू आसपास के लोगों समेत अरामी स्त्रियों की और पलिश्ती स्त्रियों की जो अब चारों ओर से तुझे तुच्छ जानती हैं नामधराई करती थी ॥ ५८। पर अब तुझ को अपने महापाप और घिनौने कामों का भार आप ही उठाना पड़ा यहोवा की यही वाणी है ॥ ५९। प्रभु यहोवा यह कहता है कि मैं तेरे साथ ऐसा वर्ताव करूंगा जैसा तू ने किया है तू ने तो वाचा तोड़कर किरिया तुच्छ जानी है ॥ ६०। तौभी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूंगा और तेरे साथ सदा की वाचा बांधूंगा ॥ ६१। और जब तू अपनी बहिनों को अर्थात् अपनी बड़ी बड़ी और छोटी छोटी बहिनों को ग्रहण करे तब तू अपनी चालचलन स्मरण करके लजाएगी और मैं उन्हें तेरी बेटियां ठहरा दूंगा पर यह तेरी वाचा के अनुसार न करूंगा ॥ ६२। और मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूंगा तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं, ६३। जिस से तू स्मरण करके लजाए और लज्जा के मारे फिर कभी मुंह न खोले यह तब होगा जब मैं तेरे सब कामों को ढांपूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान इस्राएल् के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह कि, ३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि एक लंबे पंखवाले और परों से भरे और रंग बिरंगे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन् जाकर एक देवदारु की फुनगी नोच लिई ॥ ४। तब उस ने उस फुनगी की सब से ऊपर पतली टहनी को तोड़ लिया और उसे लेन देन करनेहारों के देश में ले जाकर व्योपारियों के एक नगर में लगाया ॥ ५। तब उस ने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में बोया और उसे बहुत जल भरे स्थान में मजनू की नाईं लगाया ॥ ६। और वह उगकर छोटी फैलनेहारी दाखलता हो गई जिस की डालियां उकाब की ओर झुकीं और उस की सोर उस के नीचे फैलीं इस प्रकार से वह दाखलता होकर कनखा फोड़ने और पत्तों से भरने लगी ॥ ७। फिर और एक लंबे पंखवाला और परों से भरा हुआ बड़ा उकाब पक्षी था सो क्या हुआ कि वह दाखलता उस कियारी से जहां वह लगाई गई थी उसी दूसरे

(१) मूल में निर्दोष ठहराया।

उकाव की ओर अपनी सोर फैलाने और अपनी डालियां झुकाने लगी जिस से वही उसे सींचा करे ॥ ८। पर वह तो इस लिये अच्छी भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई थी कि कनखाएं फोड़े और फले और उत्तम दाखलता बने ॥ ९। सो तू यह कह कि प्रभु यहोवा यों पूछता है कि क्या वह फूले फलेगी क्या वह उस को जड़ से न उखाड़ेगा और उस के फलों को न झाड़ डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई पत्तियों समेत सूख जाए वह तो बहुत बल बिना किये और बहुत लोगों के बिना आये भी जड़ से उखाड़ी जाएगी ॥ १०। चाहे वह लगी भी रहे तौभी क्या वह फूले फलेगी जब पुरवाई उन को लगे तब क्या वह बिलकुल सूख न जाएगी वह तो उसी क्यारी में सूख जाएगी जहां उगी है ॥

११। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १२। उस बलवा करनेहारे घराने से कह कि क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते फिर उन से कह बाबेल् के राजा ने यरूशलेम् को जा उस के राजा और और हाकिमों को लेकर अपने यहां बाबेल् में पहुंचाया ॥ १३। तब उस राजवंश में से एक पुरुष को लेकर उस से वाचा बांधी और उस को वश में रहने की किरिया खिलाई और देश के सामर्थी सामर्थी पुरुषों को ले गया, १४। कि वह राज्य निर्बल रहे और सिर न उठा सके वरन वाचा पालने से स्थिर रहे ॥ १५। तौभी इस ने घोड़े और बड़ी सेना मांगने को अपने दूत मिस्र में भेजकर उस से बलवा किया। क्या वह फूले फलेगा क्या ऐसे कामों का करनेहारा बचेगा क्या वह अपनी वाचा तोड़ने पर बच जाएगा ॥ १६। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह जिस राजा की खिलाई हुई किरिया उस ने तुच्छ जानी और जिस की वाचा उस ने तोड़ी उस के यहां जिस ने उसे राजा किया था अर्थात् बाबेल् में वह उस के पास ही मर जाएगा ॥ १७। और जब वे बहुत से प्राणियों को नाश करने के लिये धुस बांधेंगे और कोट बनाएंगे तब फिरौन् अपनी बड़ी सेना और बहुतों की मण्डली रहते भी युद्ध में उस की सहायता न करेगा ॥ १८। क्योंकि उस ने किरिया को तुच्छ जाना और वाचा को तोड़ा देखो उस ने वचन देने पर भी ऐसे ऐसे काम किये हैं सो वह बच न जाएगा ॥ १९। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह कि उस ने मेरी किरिया तुच्छ जानी और मेरी वाचा तोड़ी यह पाप मैं उसी के सिर पर डालूंगा ॥ २०। और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फंदे में फंसेगा और मैं उस को बाबेल् में पहुंचाकर उस विश्वासघात का मुकद्दमा उस से लड़ूंगा जो उस ने मुझ से किया है ॥ २१। और उस के सब दलों में से जितने भागें सो सब तलवार से मारे जाएंगे और जो रह जाएं सो चारों दिशाओं में तितर बितर हो जाएंगे तब तुम लोग जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥

२२। फिर प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं भी देवदारु की ऊंची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊंगा और उस की सब से ऊपरवाली कनखाओं में से एक कोमल कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर, २३। अर्थात् इस्राएल् के ऊंचे पर्वत पर आप लगाऊंगा सो वह डालियां फोड़ बलवन्त होकर उत्तम देवदारु बन जाएगा और उस के नीचे अर्थात् उस की डालियों की छाया में भांति भांति के सब पक्षी बसेरा करेंगे ॥ २४। तब मैदान के सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊंचा किया फिर हरे वृक्ष को सुखा दिया और सूखे वृक्ष को फुलाया फलाया मुझ यहोवा ही ने यह कहा और कर भी दिया है ॥

१८. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। तुम लोग जो इस्राएल् के देश के विषय यह कहावत कहते हो कि जंगली दाख खाते तो पुरखा लोग पर दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के इस का क्या मतलब है ॥ ३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह तुम को इस्राएल् में यह कहावत कहने का फिर अवसर न मिलेगा ॥ ४। सुनो

सभों के प्राण तो मेरे हैं जैसा पिता का प्राण वैसा ही पुत्र का भी प्राण है दोनों मेरे ही हैं सो जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा॥ ५। जो कोई धर्म्मी हो और न्याय और धर्म्म के काम करे, ६। और न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो न इस्राएल् के घराने की मूरतों की ओर आंखें उठाया हो न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो न ऋतुमती के पास गया हो, ७। और न किसी पर अंधेर किया हो वरन ऋणी को उस का बंधक फेर दिया हो और न किसी को लूटा हो वरन भूखे को अपनी रोटी दिई हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, ८। न ब्याज पर रुपैया दिया हो न रुपैये की बढ़ोतरी लिई हो और अपना हाथ कुटिल काम से खींचा हो और मनुष्य के बीच सच्चाई से न्याय किया हो, ९। और मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो ऐसा मनुष्य धर्म्मी है वह तो निश्चय जीता रहेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १०। पर यदि उस का पुत्र डाकू खूनी वा ऊपर कहे हुए पापों में से किसी का करनेहारा हो, ११। और ऊपर कहे हुए उचित कामों का करनेहारा न हो और पहाड़ों पर भोजन किया हो पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १२। दीन दरिद्र पर अन्धेर किया हो औरों को लूटा हो बन्धक न फेर दिया हो मूरतों की ओर आंख उठाई हो घिनौना काम किया हो, १३। ब्याज पर रुपैया दिया हो और बढ़ोतरी लिई हो तो क्या वह जीता रहेगा वह जीता न रहेगा उस ने ये सब घिनौने काम किये हैं इस लिये वह निश्चय मरेगा उस का खून उसी के सिर पड़ेगा॥ १४। फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हो और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर विचारके उन के समान न करता हो, १५। अर्थात् न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो न इस्राएल् के घराने की मूरतों की ओर आंख उठाई हो न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १६। न किसी पर अन्धेर किया हो न कुछ बंधक लिया हो न किसी को लूटा हो वरन अपनी रोटी भूखे को दिई हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो १७। दीन जन की हानि करने से हाथ खींचा हो ब्याज और बढ़ोतरी न लिई हो और मेरे नियमों को माना हो और मेरी विधियों पर चला हो तो वह अपने पिता के अधर्म्म के कारण न मरेगा जीता ही रहेगा॥ १८। उस का पिता तो जिस ने अंधेर किया और लूटा और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है वही अपने अधर्म्म के कारण मर जाएगा॥ १९। तौभी तुम लोग कहते हो क्यों, क्या पुत्र पिता के अधर्म्म का भार नहीं उठाता जब पुत्र ने न्याय और धर्म्म के काम किये हों और मेरी सब विधियों को पालकर उन पर चला हो तो वह जीता ही रहेगा॥ २०। जो प्राणी पाप करे सोई मरेगा न तो पुत्र पिता के अधर्म्म का भार उठाएगा न पिता पुत्र का, धर्म्मी को अपने ही धर्म्म का फल और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा॥ २१। पर यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर मेरी सब विधियों को पाले और न्याय और धर्म्म के काम करे तो वह न मरेगा जीता ही रहेगा॥ २२। उस ने जितने अपराध किये हों उन में से किसी का स्मरण उस के विरुद्ध न किया जाएगा जो धर्म्म के काम उस ने किया हो उस के कारण वह जीता रहेगा॥ २३। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीता रहे॥ २४। पर जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरकर टेढ़े काम वरन दुष्ट के सब घिनौने कामों के अनुसार करने लगे तो क्या वह जीता रहेगा, जितने धर्म्म के काम उस ने किये हों उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा जो विश्वासघात और पाप उस ने किया हो उस के कारण वह मर जाएगा॥ २५। तौभी तुम लोग कहते हो कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल् के घराने सुन क्या मेरी गति एकसी नहीं क्या तुम्हारी ही गति बेठीक नहीं है॥ २६। जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरकर टेढ़े काम करने लगे तो वह उन के कारण से मरेगा अर्थात् वह अपने टेढ़े-काम ही के कारण फिर मर जाएगा॥ २७। फिर जब दुष्ट अपने

दुष्ट कामों से फिरकर न्याय और धर्म्म के काम करने लगे तो वह अपना प्राण बचाएगा ॥ २८ । वह जो सोच विचारकर अपने सब अपराधों से फिरा इस कारण न मरेगा जीता ही रहेगा ॥ २९ । तौभी इस्राएल् का घराना कहता है कि प्रभु की गति एकसी नहीं । हे इस्राएल् के घराने क्या मेरी गति एकसी नहीं क्या तुम्हारी गति बेठीक नहीं ॥ ३० । प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल् के घराने में तुम में से एक एक मनुष्य का उस की चाल के अनुसार न्याय करूंगा । फिरो और अपने सब अपराधों को छोड़ो इस रीति तुम्हारा अधर्म्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा ॥ ३१ । अपने सब अपराधों को जो तुम ने किये हैं दूर करो अपना मन और अपना आत्मा बदल डालो हे इस्राएल् के घराने तुम काहे को मरो ॥ ३२ । क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि जो मरे उस के मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता इस लिये फिरो तब तुम जीते रहोगे ॥

१९. फिर तू इस्राएल् के प्रधानों के विषय यह विलापगीत सुना कि, २ । तेरी माता कौन थी एक सिंहनी थी वह सिंहों के बीच बैठा करती और अपने डांवरुओं को जवान सिंहों के बीच पालती पोसती थी ॥ ३ । अपने डांवरुओं में से उस ने एक को पोसा और वह जवान सिंह हो गया और अहेर पकड़ना सीख गया उस ने मनुष्यों को भी फाड़ खाया ॥ ४ । और जाति जाति के लोगों ने उस की चर्चा सुनी और उसे अपने खोदे हुए गड़हे में फंसाया और उस के नकेल डालकर उसे मिस्र देश में ले गये ॥ ५ । जब उस की मा ने देखा कि मैं धीरज धरे रही मेरी आशा टूट गई तब अपने एक और डांवरु को लेकर उसे जवान सिंह कर दिया ॥ ६ । सो वह जवान सिंह होकर सिंहों के बीच चलने फिरने लगा और वह भी अहेर पकड़ना सीख गया और मनुष्यों को भी फाड़ खाया ॥ ७ । और उस ने उन के भवनों को जाना और उन के नगरों को उजाड़ा वरन उस के गरजने के डर के मारे देश और जो उस में था सो उजड़ गया ॥ ८ । तब चारों ओर के जाति जाति के लोग अपने अपने प्रान्त से उस के विरुद्ध आये और उस के लिये जाल लगाया और वह उन के खोदे हुए गड़हे में फंस गया ॥ ९ । तब वे उस के नकेल डाल उसे कठघरे में बन्द करके बाबेल् के राजा के पास ले गये और गढ़ में बन्द किया कि उस का बोल इस्राएल् के पहाड़ी देश में फिर सुनाई न दे ॥

१० । तेरी माता जिस से तू उत्पन्न हुआ[१] सो जल के तीर पर लगी हुई दाखलता के समान थी और गहिरे जल के कारण वह फलों और शाखाओं से भरी हुई थी ॥ ११ । और प्रभुता करनेहारों के राजदण्डों के लिये उस में मोटी मोटी टहनियां थीं और उस की ऊंचाई इतनी हुई कि वह बादलों के बीच लों पहुंची और अपनी बहुत सी डालियों समेत बहुत ही लम्बी दिखाई पड़ी ॥ १२ । तौभी वह जलजलाहट के साथ उखाड़कर भूमि पर गिराई गई और उस के फल पुरवाई लगने से सूख गये और उस की मोटी टहनियां टूटकर सूख गईं और वे आग से भस्म हो गईं ॥ १३ । और अब वह जंगल में वरन निर्जल देश में लगाई गई है ॥ १४ । और उस की शाखाओं की टहनियों में से आग निकली जिस से उस के फल भस्म हो गये और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड के लिये उस में अब कोई मोटी टहनी नहीं रही । विलापगीत यही है और विलाप गीत बना रहेगा ॥

२०. फिर सातवें बरस के पांचवें महीने के दसवें दिन को इस्राएल् के कितने पुरनिये यहोवा से प्रश्न करने को आये और मेरे साम्हने बैठ गये ॥ २ । तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ३ । हे मनुष्य के सन्तान इस्राएली पुरनियों से यह कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि क्या तुम मुझ से प्रश्न करने को आये हो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तुम मुझ से प्रश्न करने न पाओगे ॥ ४ ।

(१) मूल में तेरे लोहू में ।

हे मनुष्य के सन्तान क्या तू उन का न्याय न करेगा क्या तू उन का न्याय न करेगा । उन के पुरखाओं के घिनौने काम उन्हें जता दे ॥ ५ । और उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन मैं ने इस्राएल् को चुन लिया और याकूब के घराने के वंश से किरिया खाई और मिस्र देश में अपने को उन पर प्रगट किया और उन से किरिया खाकर कहा मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, ६ । उसी दिन मैं ने उन से यह भी किरिया खाई कि मै तुम को मिस्र देश से निकालकर एक देश में पहुंचाऊंगा जिसे मै ने तुम्हारे लिये चुन लिया है वह सब देशों का शिरोमणि है और उस मे दूध और मधु की धाराएं बहती हैं॥ ७। फिर मैं ने उन से कहा जिन घिनौनी वस्तुओं पर तुम में से एक एक की आंखें लगी हैं उन्हें फेंक दो और मिस्र की मूरतों से अपने को अशुद्ध न करो मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ ८ । पर वे मुझ से बिगड़ गये और मेरी सुननी न चाही जिन घिनौनी वस्तुओं पर उन की आंखें लगी थीं उन को एक एक ने फेंक न दिया और न मिस्र की मूरतों को छोड़ दिया तब मैं ने कहा मैं यहीं मिस्र देश के बीच तुम पर अपनी जलजलाहट भड़काऊंगा[1] और पूरा कोप दिखाऊंगा ॥ ९ । तौभी मै ने अपने नाम के निमित्त काम किया कि वह उन जातियों के साम्हने अपवित्र न ठहरे जिन के बीच वे थे और जिन के देखते मैं ने उन को मिस्र देश से निकालने के लिये अपने को उन पर प्रगट किया था ॥ १० । सो मै उन को मिस्र देश से निकालकर जंगल में ले आया ॥ ११ । वहां मैं ने उन को अपनी विधियां बताईं और अपने नियम बताये जो मनुष्य उन को माने सो उन के कारण जीता रहेगा ॥ १२ । फिर मैं ने उन के लिये अपने विश्रामदिन ठहराये जो मेरे और उन के बीच चिन्ह ठहरें कि वे जानें कि मैं यहोवा उन का पवित्र करनेहारा हूं ॥ १३ । तौभी इस्राएल् के घराने ने जंगल में मुझ से बलवा किया वे मेरी विधियो पर न चले और मेरे नियमों को तुच्छ जाना जिन्हें जो मनुष्य माने सो उन के कारण जीता रहेगा और उन्हों ने मेरे विश्रामदिनों को अति अपवित्र किया। तब मैं ने कहा मैं जंगल में इन पर अपनी जल-जलाहट भड़काकर[1] इन का अन्त कर डालूंगा ॥ १४ । पर मैं ने अपने नाम के निमित्त ऐसा काम किया कि वह उन जातियों के साम्हने जिन के देखते मैं उन को निकाल लाया था अपवित्र न ठहरे॥ १५ । फिर मैं ने जंगल में उन से किरिया खाई कि जो देश मैं ने उन को दे दिया और जो सब देशों का शिरोमणि है जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उस में उन्हे न पहुंचाऊंगा, १६ । इस कारण कि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर न चले और मेरे विश्रामदिन अपवित्र किये थे क्योंकि उन का मन अपनी मूरतों की ओर लगा हुआ था ॥ १७ । तौभी मैं ने उन पर तरस की दृष्टि किई और उन को नाश न किया और न जंगल में पूरी रीति से उन का अन्त कर डाला ॥ १८ । फिर मैं ने जंगल में उन की सन्तान से कहा अपने पुरखाओं की विधियों पर न चलो न उन की रीतियों को मानो न उन की मूरतें पूजकर अपने को अशुद्ध करो ॥ १९ । मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं मेरी विधियों पर चलो और मेरे नियमों के मानने में चौकसी करो, २० । और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो और वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें जिस से तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥ २१ । पर उस की सन्तान ने भी मुझ से बलवा किया वे मेरी विधियों पर न चले न मेरे नियमों के मानने में चौकसी किई जिन्हें जो मनुष्य माने सो उन के कारण जीता रहेगा फिर मेरे विश्रामदिनो को उन्हों ने अपवित्र किया । तब मैं ने कहा मैं जंगल में उन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर[1] अपना कोप दिखाऊंगा ॥ २२ । तौभी मैं ने हाथ खींच लिया और अपने नाम के निमित्त ऐसा काम किया जिस से वह उन जातियों के साम्हने जिन के देखते मैं उन्हें निकाल लाया था

(१) मूल में उंडेलूगा।

(१) मूल में उण्डेलकर ।

अपवित्र न ठहरे ॥ २३ । फिर मैं ने जंगल में उन से किरिया खाई कि मैं तुम्हें जाति जाति में तितर बितर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा, २४ । क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम न माने और मेरी विधियों को तुच्छ जाना और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया और अपने पुरखाओं की मूरतों की ओर उन की आंखें लगी रहीं ॥ २५ । फिर मैं ने उन की ऐसी ऐसी विधियां ठहराईं जो अच्छी न ठहरें और ऐसी ऐसी रीतियां जिन के कारण वे जीते न रहें, २६ । अर्थात् वे अपनी सब स्त्रियों के पहिलौठों को आग में होम करने लगे इस रीति मैं ने उन्हें उन्हीं की भेंटों के द्वारा अशुद्ध किया जिस से उन्हें निर्वंश कर डालूं और तब वे जान लें कि मैं यहोवा हूं ॥

२७ । सो हे मनुष्य के सन्तान तू इस्राएल् के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे पुरखाओं ने इस में भी मेरी निन्दा किई कि उन्हों ने मेरा विश्वासघात किया ॥ २८ । क्योंकि जब मैं ने उन को उस देश में पहुंचाया जिस के उन्हें देने की किरिया मैं ने उन से खाई थी तब वे हर एक ऊंचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपने मेलबलि करने लगे और वहीं रिस दिलानेहारी अपनी भेंटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना सुखदायक सुगन्धद्रव्य जलाने लगे और वहीं अपने तपावन देने लगे ॥ २९ । तब मैं ने उन से पूछा जिस ऊंचे स्थान को तुम लोग जाते हो उस का क्या[१] प्रयोजन है । इस से उस का नाम आज लों बामाः कहलाता है ॥ ३० । इस लिये इस्राएल् के घराने से कह प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है कि क्या तुम भी अपने पुरखाओं की रीति पर चलकर अशुद्ध बने हो और उन के घिनौने कामों के अनुसार क्या तुम भी व्यभिचारिन की नाईं काम करते हो ॥ ३१ । आज लों जब जब तुम अपनी भेंटें चढ़ाते और अपने लड़केबालों को होम करके आग में चढ़ाते हो तब तब तुम अपनी मूरतों के निमित्त अशुद्ध ठहरते हो । हे इस्राएल् के घराने क्या तुम मुझ से पूछने पाओ । प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तुम मुझ से पूछने न पाओगे ॥ ३२ । और जो बात तुम्हारे मन में आती है कि हम काठ और पत्थर के उपासक होकर अन्यजातियों और देश देश के कुलों के समान हो जाएंगे वह किसी भांति पूरी नहीं होने की ॥ ३३ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह निश्चय मैं बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से और भड़काई[१] हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर राज्य करूंगा ॥ ३४ । और मैं बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से और भड़काई[१] हुई जलजलाहट के साथ तुम्हें देश देश के लोगों में से अलगाऊंगा और उन देशों से जिन में तुम तितर बितर हो गये हो एकट्ठा करूंगा ॥ ३५ । और मैं तुम्हें देश देश के लोगों के जंगल में ले जाकर वहां आम्हने साम्हने तुम से मुकद्दमा लड़ूंगा ॥ ३६ । जिस प्रकार मैं तुम्हारे पितरों से मिस्र देशरूपी जंगल में मुकद्दमा लड़ता था उसी प्रकार तुम से मुकद्दमा लड़ूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ ३७ । फिर मैं तुम्हें लाठी के तले से चलाऊंगा और तुम्हें वाचा के बंधन में डालूंगा ॥ ३८ । और मैं तुम में से सब बलवाइयों को जो मेरा अपराध करते हैं निकालकर तुम्हें शुद्ध करूंगा और जिस देश में वे टिकते हैं उस में से मैं उन्हें निकाल दूंगा पर इस्राएल् के देश में घुसने न दूंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ३९ । और हे इस्राएल् के घराने तुम से तो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जाकर अपनी अपनी मूरतों की उपासना करो तो करो और यदि तुम मेरी न सुनोगे तो आगे को भी करो पर मेरे पवित्र नाम को अपनी भेंटों और मूरतों के द्वारा फिर अपवित्र न करना ॥ ४० । क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल् का सारा घराना अपने देश में मेरे पवित्र पर्वत पर इस्राएल् के ऊंचे पर्वत पर सब का सब मेरी उपासना करेगा वहीं मैं उन से प्रसन्न हूंगा और मैं वहीं तुम्हारी उठाई हुई भेंटें और चढ़ाई

(१) मूल में क्या स्थान ।

(१) अर्थात उंडेली ।

हुई उत्तम उत्तम वस्तुएं और तुम्हारी सब पवित्र किई हुई वस्तुएं तुम से लिया करूंगा ॥ ४१ । जब मैं तुम्हें देश देश के लोगों में से अलगाऊंगा और उन देशों से जिन में तुम तित्तर बित्तर हुए हो एकट्ठा करूंगा तब तुम को सुखदायक सुगन्ध जानकर ग्रहण करूंगा और अन्यजातियों के साम्हने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊंगा ॥ ४२ । और जब मैं तुम्हें इस्राएल् के देश में पहुंचाऊंगा जिस के मैं ने तुम्हारे पितरों को देने की किरिया खाई थी तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ४३ । और वहां तुम अपनी चालचलन और अपने सब कामों को जिन के करने से तुम अशुद्ध हुए स्मरण करोगे और अपने सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरोगे ॥ ४४ । और हे इस्राएल् के घराने जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी बुरी चाल चलन और बिगड़े हुए कामों के अनुसार नहीं पर अपने ही नाम के निमित्त बर्ताव करूंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

४५। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ४६ । हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख दक्खिन ओर कर और दक्खिन की ओर वचन सुना और दक्खिन देश के वन के विषय नबूवत कर, ४७ । और दक्खिन देश के वन से कह कि यहोवा का यह वचन सुन प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तुझ में आग लगाऊंगा और तुझ में क्या हरे क्या सूखे जितने पेड़ हैं सब को वह भस्म करेगी उस की धधकती ज्वाला न बुझेगी और उस के कारण दक्खिन से उत्तर लों सब के मुख झुलस जाएंगे ॥ ४८ । तब सब प्राणियों को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा की लगाई हुई है और वह कभी न बुझेगी ॥ ४९ । तब मैं ने कहा अहा प्रभु यहोवा लोग तो मेरे विषय कहा करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेहारा नहीं है ॥

२१. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख यरूशलेम् की ओर कर और पवित्रस्थानों की ओर वचन सुना[1] और इस्राएल् के देश के विषय नबूवत कर, ३ । और उस से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं और अपनी तलवार मियान में से खींचकर तुझ में से धर्म्मी अधर्म्मी दोनों को नाश करूंगा ॥ ४ । मैं जो तुझ में से धर्म्मी धर्म्मी सब को नाश करनेवाला हूं इस कारण मेरी तलवार मियान से निकलकर दक्खिन से उत्तर लों सब प्राणियों के विरुद्ध चलेगी ॥ ५ । तब सब प्राणी जान लेंगे कि यहोवा ने मियान में से अपनी तलवार खींची है और वह उस में फिर रक्खी न जाएगी ॥ ६ । सो हे मनुष्य के सन्तान तू आह मार भारी खेद और कमर टूटने के साथ लोगों के साम्हने आह मार ॥ ७ । और जब वे तुझ से पूछें कि तू क्यों आह मारता है तब कहना, समाचार के कारण क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन टूट जाएंगे और सब के हाथ ढीले पड़ेंगे और सब के आत्मा बेबस और सब के घुटने निर्बल[2] हो जाएंगे सुनो ऐसी ही बात आनेवाली है और वह अवश्य होगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

८ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ९ । हे मनुष्य के सन्तान नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि ऐसा कह कि देख तलवार, सान चढ़ाई और झलकाई हुई तलवार ॥ १० । वह इस लिये सान चढ़ाई गई कि उस से घात किया जाए और इस लिये झलकाई गई कि बिजली की नाईं चमके तो क्या हम हर्षित हों । वह तो यहोवा के[3] पुत्र का राजदण्ड और सब पेड़ों को तुच्छ जाननेहारी है ॥ ११ । और वह झलकाने को इस लये दिई गई कि हाथ में लिई जाए वह इस लिये सान चढ़ाई और झलकाई गई कि घात करनेहारे के हाथ में दिई जाए ॥ १२ । हे मनुष्य के सन्तान चिल्ला और हाय हाय कर क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चला चाहती वह इस्राएल् के सारे

(१) मूल में फिरकर टपका ।

(२) मूल में जल की नाईं निर्बल ।

(३) मूल में मेरे ।

प्रधानों पर चला चाहती है मेरी प्रजा के संग ये भी तलवार के वश में आ गये इस कारण तू अपनी छाती[1] पीट ॥ १३ । क्योंकि जांचना है और यदि तुच्छ जाननेहारा राज दण्ड भी न रहे तो क्या । प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १४ । सो हे मनुष्य के सन्तान नबूवत कर और हाथ पर हाथ दे मार और तीन बार तलवार का बल दुगना किया जाए वह तो घात करने की तलवार बरन बड़े से बड़े के घात करने की वह तलवार है जिस से कोठरियों में भी कोई नहीं बच सकता[2] ॥ १५ । मैं ने घात करनेहारी तलवार को उन के सब फाटकों के विरुद्ध इस लिये चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएं और वे बहुत ठोकर खाएं हाय हाय वह तो बिजली के समान बनाई गई और घात करने को सान चढ़ाई गई है ॥ १६ । सिकुड़कर दहिनी ओर जा फिर तैयार होकर बाईं ओर मुड़ जिधर ही तेरा मुख हो ॥ १७ । मैं भी हाथ पर हाथ दे मारूंगा और अपनी जलजलाहट को थांभूंगा मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

१८ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १९ । हे मनुष्य के सन्तान दो मार्ग ठहरा ले कि बाबेल् के राजा की तलवार आए दोनों मार्ग एक ही देश से निकलें फिर एक चिन्ह कर अर्थात् नगर के मार्ग के सिरे पर एक चिन्ह कर ॥ २० । एक मार्ग ठहरा कि तलवार अम्मोनियों के रब्बा नगर पर और यहूदा देश के गढ़वाले नगर यरूशलेम् पर चले ॥ २१ । क्योंकि बाबेल् का राजा तिर्मुहाने अर्थात् दोनों मार्गों के निकलने के स्थान पर भावी बूझने को खड़ा हुआ उस ने तीरों को हिला दिया गृहदेवताओं से प्रश्न किया और कलेजे को भी देखा ॥ २२ । उस के दहिने हाथ में यरूशलेम् का नाम[3] है कि वह उस की ओर युद्ध के यन्त्र लगाए और घात करने की आज्ञा गला फाड़कर दे और ऊंचे शब्द से ललकारे और फाटकों की ओर युद्ध के यन्त्र लगाए और धुस बांधे और कोट बनाए ॥ २३ । और लोग तो उस भावी कहने को मिथ्या समझेंगे पर उन्हों ने जो उन की किरिया खाई है इस कारण वह उन के अधर्म्म का स्मरण कराकर उन्हें पकड़ लेगा ॥

२४ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम्हारा अधर्म्म जो स्मरण आया और तुम्हारे अपराध जो खुल गये और तुम्हारे सब कामों में जो पाप ही पाप देख पड़ा है और तुम जो स्मरण में आये हो इस लिये तुम हाथ से पकड़े जाओगे ॥ २५ । और हे इस्राएल् के असाध्य घायल दुष्ट प्रधान तेरा दिन आ गया है अधर्म्म के अन्त का समय पहुंचा है ॥ २६ । तेरे विषय प्रभु यहोवा यों कहता है कि पगड़ी उतार और मुकुट दे वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का जो नीचा है उसे ऊंचा कर और जो ऊंचा है उसे नीचा कर ॥ २७ । मैं इस को उलट दूंगा उलट दूंगा उलट दूंगा वह भी जब लों उस का अधिकारी न आए तब लों उलटा हुआ रहेगा तब मैं उस को दूंगा ॥

२८ । फिर हे मनुष्य के सन्तान नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उन की किई हुई नामधराई के विषय यों कहता है सो तू यों कह कि खिंची हुई तलवार है तलवार वह घात के लिये झलकाई हुई है कि नाश करे और बिजली के समान हो. २९ । जब कि वे तेरे विषय झूठे दर्शन पाते और झूठे भावी तुझ को बताते हैं कि तू उन दुष्ट असाध्य घायलों की गर्दनों पर पड़े जिन का दिन आ गया और उन के अधर्म्म के अन्त का समय पहुंचा है ॥ ३० । उस को मियान में फिर रखा दे । जिस स्थान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई उसी में मैं तेरा न्याय करूंगा ॥ ३१ । और मैं तुझ पर अपना क्रोध भड़काऊंगा[1] और तुझ पर अपनी जलजलाहट की आग फूंक दूंगा और तुझे पशु सरीखे मनुष्यों के हाथ कर दूंगा जो नाश करने में निपुण हैं ॥ ३२ । तू आग का कौर होगी तेरा खून देश में बना रहेगा तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥

(१) मूल में जांघ । (२) मूल में जो उन की कोठरियों में पैठती है । (३) मूल में भावी ।

(१) मूल में उण्डेलूंगा ।

२२. **फिर** यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान क्या तू उस खूनी नगर का न्याय न करेगा क्या तू उस का न्याय न करेगा उस को उस के सब घिनौने काम जता दे ॥ ३। और कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि एक नगर जो अपने बीच में खून करता है जिस से उस का समय आए और अपनी हानि करने के लिये अशुद्ध होने को मूरतें बनाता है ॥ ४। जो खून तू ने किया है उस से तू दोषी ठहरी और जो मूरतें तू ने बनाई हैं उन के कारण तू अशुद्ध हो गई तू ने अपने अन्त के दिन नियरा लिये और अपने पिछले वरसों तक पहुंच गई इस कारण मैं ने तुझे जाति जाति के लोगों की ओर से नामधराई का और सब देशों के ठट्ठे का कारण कर दिया है ॥ ५। हे बदनाम हे हुल्लड़ से भरे हुए नगर जो निकट हैं और जो दूर हैं वे सब तुझे ठट्ठों में उड़ाएंगे ॥ ६। सुन इस्राएल् के प्रधान लोग अपने अपने बल के अनुसार तुझ में खून करनेहारे हुए हैं ॥ ७। तुझ में माता पिता तुच्छ किये गये हैं और तेरे बीच परदेशी पर अंधेर किया गया और तुझ में बपमूआ और विधवा पीसी गई हैं ॥ ८। तू ने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ जाना और मेरे विश्राम-दिनों को अपवित्र किया है ॥ ९। तुझ में लुतरे लोग खून करने को तत्पर हुए और तेरे लोगों ने पहाड़ों पर भोजन किया है और तेरे बीच महापाप किया गया है ॥ १०। तुझ में पिता की देह उघारी गई और तुझ में ऋतुमती स्त्री से भी भोग किया गया है ॥ ११। तुझ में किसी ने पड़ोसी की स्त्री के साथ घिनौना काम किया और किसी ने अपनी बहू को बिगाड़कर महापाप किया और किसी ने अपनी बहिन अर्थात् अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट किया है ॥ १२। तुझ में खून करने के लिये दाम लिया गया है तू ने ब्याज और बढ़ोतरी लिई और अपने पड़ोसियों को पीस पीसकर अन्याय से लाभ उठाया और मुझ को तो तू ने विसरा दिया है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १३। सो सुन जो लाभ तू ने अन्याय से उठाया और अपने बीच खून किया है उस पर मैं ने हाथ पर हाथ दे मारा है ॥ १४। सो जिन दिनों में मैं तेरा विचार करूंगा उन में क्या तेरा हृदय दृढ़ और तेरे हाथ स्थिर रह सकेंगे मुझ यहोवा ने यह कहा है और ऐसा ही करूंगा ॥ १५। और मैं तेरे लोगों को जाति जाति में तितर बितर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा और तेरी अशुद्धता को तुझ में से नाश करूंगा ॥ १६। और तू जाति जाति के देखते अपने लेखे अपवित्र ठहरेगी तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं ॥

१७। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८। हे मनुष्य के सन्तान इस्राएल् का घराना मेरे लेखे धातु का मैल हो गया वे सब के सब भट्ठी के बीच के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे के समान बन गये वे चांदी के मैल ही के सरीखे हो गये हैं ॥ १९। इस कारण प्रभु यहोवा उन से यों कहता है कि तुम सब के सब जो धातु के मैल के समान बन गये हो इस लिये सुनो मैं तुम को यरूशलेम् के भीतर एकट्ठे करने पर हूं ॥ २०। जैसे लोग चांदी पीतल लोहा शीशा और रांगा इस लिये भट्ठी के भीतर बटोरकर रखते कि उन्हें आग फूंककर पिघलाएं वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जलजलाहट से एकट्ठा कर वहीं रखकर पिघला दूंगा ॥ २१। मैं तुम को वहां बटोरकर अपने रोष की आग में फूंकूंगा सो तुम उस के बीच पिघलाये जाओगे ॥ २२। जैसा चांदी भट्ठी के बीच पिघलाई जाती है वैसे ही तुम उस के बीच पिघलाये जाओगे तब तुम जान लोगे कि जिस ने इस पर अपनी जलजलाहट भड़काई[1] है सो यहोवा है ॥

२३। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २४। हे मनुष्य के संतान उस देश से कह कि तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ और जलजलाहट के दिन में तुझ पर वर्षा नहीं हुई ॥ २५। तुझ में तेरे नबियों ने राजद्रोह की गोष्ठी किई उन्हों ने गरजनेहारे सिंह की नाईं अहेर पकड़ा और प्राणियों

(१) मूल में उंडेली।

को खा डाला है वे रक्खे हुए अनमोल धन को छीन लेते और तुझ में बहुत स्त्रियों को विधवा कर दिया है ॥ २६ । फिर उस के याजकों ने मेरी व्यवस्था का अर्थ खींच खांचकर लगाया और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है उन्हों ने पवित्र अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना और न औरों को शुद्ध अशुद्ध का भेद सिखाया है और वे मेरे विश्रामदिनों के विषय निश्चिन्त रहते हैं[1] और मैं उन के बीच अपवित्र ठहरता हूं ॥ २७ । फिर उस के हाकिम हुंडारों की नाईं अहेर पकड़ते और अन्याय से लाभ उठाने के लिये खून करते और प्राण घात करने को तत्पर रहते हैं ॥ २८ । फिर उस के नबी उन के लिये कच्ची लेसाई करते हैं उन का दर्शन पाना मिथ्या है और यहोवा के विना कुछ कहे वे यह कहकर झूठी भावी बताते हैं कि प्रभु यहोवा यों कहता है ॥ २९ । फिर देश के साधारण लोग अन्धेर करते और पराया धन छीनते और दीन दरिद्र को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अंधेर करते हैं ॥ ३० । और मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूंढ़ा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे साम्हने ऐसा खड़ा हो कि मुझे तुझ को नाश न करना पड़े पर ऐसा कोई न मिला ॥ ३१ । इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया[2] और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया और उन की चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दिई प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

२३. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि. २। हे मनुष्य के संतान दो स्त्रियां थीं जो एक ही मा की बेटी थीं ॥ ३ । वे अपने बचपन ही में वेश्या का काम मिस्र में करने लगीं उन की छातियां कुंआरपन में पहिले वहीं मींजी गईं और उन का मरदन भी हुआ ॥ ४ । उन लड़कियों में से बड़ी का नाम ओहोला और उस की बहिन का नाम ओहोलीबा था और वे मेरी हो गईं और मेरे जन्माये बेटे बेटियां जनीं। उन के नामों में से ओहोला तो शोमरोन् का और ओहोलीबा यरूशलेम् का नाम है ॥ ५ । और ओहोला जब मेरी थी तब व्यभिचारिन होकर अपने यारों पर मोहित होने लगी जो उस के पड़ोसी अश्शूरी थे ॥ ६ । वे तो सब के सब नीले वस्त्र पहिननेहारे और घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम थे ॥ ७ । सो उन्हीं के साथ जो सब के सब श्रेष्ठ अश्शूरी थे उस ने व्यभिचार किया और जिस किसी पर वह मोहित हुई उस की मूरतों से वह अशुद्ध हुई ॥ ८ । और जो व्यभिचार उस ने मिस्र में सीखा था उस को भी उस ने न छोड़ा बचपन में तो उस ने उन के साथ कुकर्म्म किया और उस की छातियां मींजी गईं और तन मन से उस के संग व्यभिचार किया गया था ॥ ९ । इस कारण मैं ने उस को उस के अश्शूरी यारों के हाथ कर दिया जिन पर वह मोहित हुई थी ॥ १० । उन्हों ने उस को नंगी कर उस के बेटे बेटियां छीनकर उस को तलवार से घात किया इस रीति उन के हाथ से दण्ड पाकर वह स्त्रियों में प्रसिद्ध हो गई ॥ ११ । फिर उस की बहिन ओहोलीबा ने यह देखा तौभी मोहित होकर व्यभिचार करने में अपनी बहिन से भी अधिक बढ़ गई ॥ १२ । वह अपने अश्शूरी पड़ोसियों पर मोहित होती थी जो सब के सब अति सुन्दर वस्त्र पहिननेहारे और घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम थे ॥ १३ । तब मैं ने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई उन दोनों बहिनो की एक ही चाल थी ॥ १४ । और ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई सो जब उस ने भीत पर सेंदूर से खिंचे हुए ऐसे कसदी पुरुषों के चित्र देखे. १५ । जो कटि में फेंटे बांधे हुए सिर में छोर लटकती रंगीली पगड़ियां दिये हुए और सब के सब अपनी जन्मभूमि कसदी बाबेल् के लोगों[1] की रीति प्रधानों का रूप धरे हुए थे, १६ । तब उन को देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उन के पास कसदियों के देश में

(१) मूल में अपनी आंखें छिपाते हैं।
(२) मूल में उंडेला।

(१) मूल में बेटों।

दूत भेजे ॥ १७ । सो बाबेली लोग उस के पास पलंग पर आये और उस के साथ व्यभिचार करके उस को अशुद्ध किया और जब वह उन से अशुद्ध हुई तब उस का मन उन से फिर गया ॥ १८ । तौभी वह तन उघाड़ती और व्यभिचार करती गई तब मेरा मन जैसे उस की बहिन से फिर गया था वैसे ही उस से भी फिर गया ॥ १९ । तौभी अपने बचपन के दिन जब वह मिस्र देश में वेश्या का काम करती थी स्मरण करके वह अधिक व्यभिचार करती गई ॥ २० । वह ऐसे यारों पर मोहित हुई जिन का मांस गदहों का सा और वीर्य घोड़ों का सा था ॥ २१ । इस प्रकार से तू अपने बचपन के उस समय के महापाप का स्मरण कराती है जब मिस्री लोग तेरी छातियां मींजते थे ॥

२२ । इस कारण हे ओहोलीबा प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं तेरे यारों को उभारकर जिन से तेरा मन फिर गया चारों ओर से तेरे विरुद्ध ले आऊंगा, २३ । अर्थात् बाबेलियों और सब कस्दियों को और पकोद् शो और को के लोगों को और उन के साथ सब अश्शूरियों को लाऊंगा जो सब के सब घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम प्रधान और नामी पुरुष हैं ॥ २४ । वे लोग हथियार रथ छकड़े और देश देश के लोगों का दल लिये हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे और ढाल और फरी और टोप धारण किये हुए तेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बांधेंगे और मैं न्याय का काम उन्हीं के हाथ सौंपूंगा और वे अपने अपने नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे ॥ २५ । और मैं तुझ पर जलूंगा और वे जलजलाहट के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे वे तेरी नाक और कान काट लेंगे और तेरा जो बचा रहेगा सो तलवार से मारा जाएगा वे तेरे बेटे बेटियों को छीन ले जाएंगे और तेरा जो बचा रहेगा सो आग से भस्म हो जाएगा ॥ २६ । और वे तेरे वस्त्र उतारकर तेरे सुन्दर सुन्दर गहने छीन ले जाएंगे ॥ २७ । इस रीति मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तू ने मिस्र देश में सीखा था उसे भी तुझ से छुड़ाऊंगा यहां लों कि तू फिर अपनी आंख उन की ओर न लगाएगी न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी ॥ २८ । क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं तुझे उन के हाथ सौंपूंगा जिन से तू बैर रखती और तेरा मन फिरा है ॥ २९ । और वे तुझ से बैर के साथ बर्ताव करेंगे और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे और तुझे नंग धड़ंग करके छोड़ देंगे और तेरे तन के उघाड़े जाने से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा ॥ ३० । ये काम तुझ से इस कारण किये जाएंगे कि तू अन्य-जातियों के पीछे व्यभिचारिन की नाईं हो लिई और उन की मूरतें पूजकर अशुद्ध हो गई है ॥ ३१ । तू अपनी बहिन की लीक पर चली है इस कारण मैं तेरे हाथ में उस का सा कटोरा दूंगा ॥ ३२ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि अपनी बहिन के कटोरे से जो गहिरा और चौड़ा है तुझे पीना पड़ेगा तू हंसी और ठट्ठों में उड़ाई जाएगी क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ समाता है ॥ ३३ । तू मतवालेपन और दुःख से छक जाएगी तू अपनी बहिन शोमरोन् के कटोरे को अर्थात् विस्मय और उजाड़ को पीकर छक जाएगी ॥ ३४ । उस में से तू गार गारकर पीएगी तू उस के ठिकरों को भी चबाएगी और अपनी छातियां घायल करेगी क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ ३५ । तू ने जो मुझे बिसरा दिया और पीठ पीछे कर दिया है इस लिये अपने महापाप और व्यभिचार का भार तू आप उठा ले प्रभु यहोवा का यही वचन है ॥

३६ । फिर यहोवा ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान क्या तू ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा तो उन के घिनौने काम उन्हें जता दे ॥ ३७ । उन्हों ने तो व्यभिचार किया है और उन के हाथों में खून लगा है उन्हों ने अपनी मूरतों के साथ भी व्यभिचार किया और अपने लड़केबाले जो वे मेरे जन्माये जनी थीं उन मूरतों के आगे भस्म होने के लिये चढ़ाये हैं ॥ ३८ । फिर उन्हों ने मुझ से ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी दिन मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया ॥ ३९ । वे अपने लड़केबाले

अपनी मूरतों के साम्हने बलि चढ़ाकर उसी दिन मेरा पवित्रस्थान अपवित्र करने को उस में घुसीं देख इस भांति का काम उन्हों ने मेरे भवन के भीतर किया है ॥ ४० । और फिर उन्हों ने पुरुषों को दूर से बुलवा भेजा और वे चले आये, और उन के लिये तू नहा धो आंखों में अंजन लगा गहने पहिनकर, ४१ । सुन्दर पलंग पर बैठी रही और उस के साम्हने एक मेज़ बिछी हुई थी जिस पर तू ने मेरा धूप और मेरा तेल रक्खा था ॥ ४२ । तब उस के साथ निश्चिन्त लोगों की भीड़ का कोलाहल सुन पड़ा और उन साधारण लोगों के पास जंगल से बुलाये हुए पियक्कड़ लोग भी थे जिन्हों ने उन दोनों बहिनों के हाथों में चूड़ियां पहिनाईं और उन के सिरों पर शोभायमान मुकुट रक्खे ॥ ४३ । तब जो व्यभिचार करते करते बुढ़ा गई थी उस के विषय मैं बोल उठा अब तो वे उसी के साथ व्यभिचार करेंगे ॥ ४४ । सो वे उस के पास ऐसे गये जैसे लोग वेश्या के पास जाते हैं वे ओहोला और ओहोलीबा नाम महापापिन स्त्रियों के पास वैसे ही गये ॥ ४५ । सो धर्म्मी लोग व्यभिचारिनों और खून करनेहारियों के साथ उन के योग्य न्याय करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारिन तो हैं और खून उन के हाथों में लगा है ॥ ४६ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं एक भीड़ से उन पर चढ़ाई कराकर उन्हें ऐसा करूंगा कि वे मारी मारी फिरेंगी और लूटी जाएंगी ॥ ४७ । और उस भीड़ के लोग उन पर पत्थरवाह करके उन्हें अपनी तलवारों से काट डालेंगे तब वे उन के बेटे बेटियों को घात करके आग लगाकर उन के घर फूंक देंगे ॥ ४८ । सो मैं महापाप को देश में से दूर करूंगा और सब स्त्रियां शिक्षा पाकर तुम्हारा सा महापाप करने से बची रहेंगी ॥ ४९ । और तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर पड़ेगा और तुम अपनी मूरतों की पूजा के पापों का भार उठाओगी और तुम जान लोगी कि मैं प्रभु यहोवा हूं॥

२४. फिर नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के संतान आज का दिन लिख रख क्योंकि आज ही के दिन बाबेल् का राजा यरूशलेम् के निकट आ पहुंचा है ॥ ३ । और इस बलवा करनेहारे घराने से यह दृष्टान्त कह कि प्रभु यहोवा कहता है कि हण्डे को आग पर धर दे धर फिर उस में पानी डाल ॥ ४ । तब उस में जांघ कंधा सब अच्छे अच्छे टुकड़े बटोरकर रख और उसे उत्तम उत्तम हड्डियों से भर दे ॥ ५ । झुंड में से सब से अच्छे पशु ले और उन हड्डियों का हण्डे के नीचे ढेर कर और उस को भली भांति सिझा और भीतर की हड्डियां भी सीझ जाएं ॥

६ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उस खूनी नगरी पर हाय उस हण्डे पर जिस का मोर्चा उस में बना है और छूटा न हो उस में से टुकड़ा टुकड़ा करके निकाल ला उस पर चिट्ठी न डाली जाए ॥ ७ । क्योंकि उस नगरी में किया हुआ खून उस में है उस ने उसे भूमि पर डालकर धूलि से नहीं ढांपा पर नंगी चटान पर रख दिया है ॥ ८ । इस लिये कि पलटा लेने को जलजलाहट भड़के मैं ने भी उस का खून नंगी चटान पर रक्खा है कि वह ढंप न सके ॥ ९ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उस खूनी नगरी पर मैं आप ढेर को बड़ा करूंगा ॥ १० । बहुत लकड़ी डाल आग को बहुत तेज़ कर मांस को भली भांति सिझा गाढ़ा जूस बना और हड्डियां जल जाएं ॥ ११ । तब हण्डे को छूछा करके अंगारों पर रख जिस से वह गर्म हो और उस का पीतल जले और उस में का मैल गले और उस का मोर्चा नाश हो जाए ॥ १२ । मैं उस के कारण परिश्रम करते करते थक गया पर उस का भारी मोर्चा उस से छूटता नहीं उस का मोर्चा आग के द्वारा भी नहीं छूटता ॥ १३ । हे नगरी तेरी अशुद्धता महापाप की है मैं तो तुझे शुद्ध करता था पर तू शुद्ध नहीं हुई इस कारण जब लों मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर से शान्त न करूं तब लों तू फिर शुद्ध न किई जाएगी ॥ १४ । मुझ यहोवा ही ने यह कहा है वह हो जाएगा और मैं ऐसा करूंगा मैं तुझे न छोड़ूंगा न तुझ पर तरस खाऊंगा न पछताऊंगा,

तेरी चालचलन और कामों के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१५। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १६। हे मनुष्य के सन्तान सुन मैं तेरी आंखों के प्यारे को[१] मारकर तेरे पास से ले लेने पर हूं पर तू न रोना न पीटना न आंसू बहाना ॥ १७। लम्बी सांसें खींच तो खींच पर सुनाई न पड़ें मरे हुओं के लिये विलाप न करना सिर पर पगड़ी बांधे और पांवों में जूती पहिने रहना और न तो अपने होंठ को ढांपना न शोक के योग्य रोटी खाना ॥ १८। सो मैं सवेरे लोगों से बोला और सांझ को मेरी स्त्री मर गई और बिहान को मैं ने आज्ञा के अनुसार किया ॥ १९। तब लोग मुझ से कहने लगे क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू करता है इस का हम लोगों के लिये क्या अर्थ है ॥ २०। मैं ने उन को उत्तर दिया कि यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २१। तू इस्राएल् के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं अपने पवित्रस्थान को अपवित्र करने पर हूं जिस के गढ़-वाले होने पर तुम फूलते हो और जो तुम्हारी आंखों का चाहा हुआ है और जिस को तुम्हारा मन चाहता है और अपने जिन बेटे बेटियों को तुम वहां छोड़ आये हो सो तलवार से मारे जाएंगे ॥ २२। और जैसा मैं ने किया है वैसा ही तुम लोग करोगे तुम भी अपने होंठ न ढांपोगे और न शोक के योग्य रोटी खाओगे ॥ २३। और तुम सिर पर पगड़ी बांधे और पांवों में जूती पहिने रहोगे तुम न रोओगे न पीटोगे वरन अपने अधर्म्म के कामों में फंसे हुए गलते जाओगे और एक दूसरे की ओर कराहते रहोगे ॥ २४। इस रीति यहेज्केल् तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा जैसा उस ने किया ठीक वैसा ही तुम भी करोगे और जब यह हो जाएगा तब तुम जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं ॥

२५। और हे मनुष्य के सन्तान क्या यह सच नहीं कि जिस दिन मैं उन का दृढ़ गढ़ उन की शोभा और हर्ष का कारण और उन के बेटे बेटियां जो उन की शोभा का आनन्द और उन की आंखों और मन का चाहा हुआ है उन को उन से ले लूंगा, २६। उसी दिन जो भागकर बचेगा से तेरे पास आकर तुझे समाचार सुनाएगा ॥ २७। उसी दिन तेरा मुंह खुलेगा और तू फिर चुप न रहेगा उस बचे हुए के साथ बातें ही करेगा सो तू इन लोगों के लिये चिन्ह ठहरेगा और ये जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

२५. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान अम्मोनियों की ओर मुंह करके उन के विषय नबूवत कर ॥ ३। और उन से कह हे अम्मोनियो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय जब वह अपवित्र किया गया और इस्राएल् के देश के विषय जब वह उजड़ गया और यहूदा के घराने के विषय जब वे बंधुआई में गये आहा कहा, ४। इस कारण सुनो मैं तुझ को पूरबियों के अधिकार में करने पर हूं और वे तेरे बीच अपनी छावनियां डालेंगे और अपने घर बनाएंगे तेरे फल वे खाएंगे और तेरा दूध वे पीएंगे ॥ ५। और मैं रब्बा नगर को ऊंटों के रहने और अम्मोनियों के देश को भेड़ बकरियों के बैठने का स्थान कर दूंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ६। क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो इस्राएल् के देश के कारण ताली बजाई और नाचे और अपने सारे मन के अभिमान से आनन्द किया, ७। इस कारण सुन मैं ने अपना हाथ तेरे ऊपर बढ़ाया है और तुझ को जाति जाति की लूट कर दूंगा और देश देश के लोगों में से तुझे मिटाऊंगा और देश देश में से नाश करूंगा मैं तेरा सत्यानाश कर डालूंगा तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं ॥

८। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मोआब् और सेईर् जो कहते हैं देखो यहूदा का घराना और सब जातियों के समान हो गया है, ९। इस कारण सुन

(१) मूल में तेरी आंख के चाहे हुए को।

मोआब् के देश के किनारे के नगरों को बेत्यशीमोत् बाल्मोन् और किर्यातैम् जो उस देश के शिरोमणि हैं मैं उन का मार्ग[1] खोलकर, १०। उन्हें पूरबियों के वश में मैं ऐसा कर दूंगा कि वे अम्मोनियों पर चढ़ाई करें और मैं अम्मोनियों को यहां लों उन के अधिकार में कर दूंगा कि जाति जाति के बीच उन का स्मरण फिर न रहे॥ ११। और मैं मोआब् को भी दण्ड दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

१२। प्रभु यहोवा यों भी कहता है कि एदोम् ने जो यहूदा के घराने से पलटा लिया और उन से पलटा लेकर बड़ा दोषी हो गया है, १३। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं एदोम् के देश के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों को मिटाऊंगा और तेमान् से लेकर ददान् लों उस को उजाड़ कर दूंगा और वे तलवार से मारे जाएंगे॥ १४। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के द्वारा अपना पलटा एदोम् से लूंगा और वे उस देश में मेरे कोप और जलजलाहट के अनुसार काम करेंगे तब वे मेरा पलटा लेना जान लेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५। प्रभु यहोवा यों कहता है कि पलिश्ती लोगों ने जो पलटा लिया वरन अपनी युग युग की शत्रुता के कारण अपने मन के अभिमान से पलटा लिया कि नाश करें, १६। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं पलिश्तियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने पर हूं और करेतियों को मिटा डालूंगा और समुद्रतीर के बचे हुए रहनेहारों को नाश करूंगा॥ १७। और मैं जलजलाहट के साथ मुकद्दमा लड़कर उन से कड़ाई के साथ पलटा लूंगा और जब मैं उन से पलटा लूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२६. फिर ग्यारहवें बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान सोर् ने जो यरूशलेम् के विषय कहा है

(१) मूल में फाटक। आहा जो देश देश के लोगों के फाटक सी थी वह नाश हो गई उस के उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा, ३। इस कारण प्रभु यहोवा कहता है कि हे सोर् सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसे उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं॥ ४। और वे सोर् की शहरपनाह को गिराएंगी और उस के गुम्मटों को तोड़ डालेंगी मैं उस की मिट्टी उस पर से खुरचकर उसे नंगी चटान कर दूंगा॥ ५। वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि यह मेरा ही वचन है और वह जाति जाति से लुट जाएगा॥ ६। और उस की जो बेटियां मैदान में हैं सो तलवार से मारी जाएंगी तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ ७। क्योंकि प्रभु यहोवा यह कहता है कि सुन मैं सोर् के विरुद्ध राजाधिराज बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् को घोड़ों और रथों और सवारों और बड़ी भीड़ और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊंगा॥ ८। और तेरी जो बेटियां मैदान में हैं उन को वह तलवार से मारेगा और तेरे विरुद्ध कोट बनाएगा और धुस बांधेगा और ढाल उठाएगा॥ ९। और वह तेरी शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यन्त्र चलाएगा और तेरे गुम्मटों को फरसों से ढा डालेगा॥ १०। उस के घोड़े इतने होंगे कि तू उन की धूलि से ढंपेगा और जब वह तेरे फाटकों में ऐसा घुसेगा जैसा लोग नाकेवाले नगर में घुसते हैं तब तेरी शहरपनाह सवारों छकड़ों और रथों के शब्द से कांप उठेगी॥ ११। वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को खुन्द डालेगा और तेरे निवासियों को तलवार से मार डालेगा और तेरे बल के खंभे भूमि पर गिराये जाएंगे॥ १२। और लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्योपार की वस्तुएं छीन लेंगे और तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे और तेरे पत्थर और काठ और तेरी धूलि जल में फेंक देंगे॥ १३। और मैं तेरे गीतों का सुरताल बन्द करूंगा और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी॥ १४। और मैं तुझे नंगी चटान

कर दूंगा तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा और फिर बसाया न जाएगा क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१५। प्रभु यहोवा सोर् से यों कहता है कि तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग कहरेंगे और तुझ में घात ही घात होगा तब क्या टापू टापू न कांप उठेंगे ॥ १६। तब समुद्रतीर के सब प्रधान लोग अपने अपने सिंहासन पर से उतरेंगे और अपने बागे और बूटेदार वस्त्र उतार थरथराहट के वस्त्र पहिनेंगे और भूमि पर बैठकर क्षण क्षण में कांपेंगे और तेरे कारण विस्मित रहेंगे ॥ १७। और वे तेरे विषय विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे हाय मल्लाहों की[१] बसाई हुई हाय सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियों समेत सामर्थी रही और सब टिकनेहारों की डरानेहारी नगरी थी तू कैसी नाश हुई है ॥ १८। अब तेरे गिरने के दिन टापू टापू कांप उठेंगे और तेरे जाते रहने के कारण समुद्र के सब टापू घबरा जाएंगे ॥ १९। क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मैं तुझे निर्जन नगरों के समान उजाड़ करूंगा और तेरे ऊपर महासागर चढ़ाऊंगा और तू गहिरे जल में डूब जाएगा, २०। तब गड़हे में और और गिरनेहारों के संग में तुझे भी प्राचीन लोगों में उतार दूंगा और गड़हे में और गिरनेहारों के संग तुझे भी नीचे के लोक में[२] रखकर प्राचीन काल के उजड़े हुए स्थानों के समान कर दूंगा यहां लों कि तू फिर न बसेगा और तब मैं जीवन के लोक में अपना शिरोमणि रक्खूंगा ॥ २१। और मैं तुझे घबराने का कारण करूंगा कि तू आगे रहेगा ही नहीं वरन ढूंढ़ने पर भी तेरा पता न लगेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

२७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान सोर् के विषय एक विलाप का गीत बनाकर, ३। उस से यों कह कि हे समुद्र के पैठाव पर रहनेहारी हे बहुत से द्वीपों के लिये देश देश के लोगों के साथ व्योपार करनेहारी प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे सोर् तू ने तो कहा है कि मैं सर्वांग सुन्दर हूं ॥ ४। तेरे सिवाने समुद्र के बीच हैं तेरे बनानेहारों ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया ॥ ५। तेरी सब पटरियां सनीर् पर्वत के सनौवर की लकड़ी की बनीं तेरे मस्तूल के लिये लबानोन् के देवदारु लिये गये ॥ ६। तेरे डांड़ बाशान् के बांजवृक्षों के बने तेरे जहाजों का पटाव कित्तियों के द्वीपों से लाये हुए सीधे सनौबर की हाथीदांत जड़ी हुई लकड़ी का बना ॥ ७। तेरे जहाजों के पाल मिस्र से लाये हुए बूटेदार सन के कपड़े के बने कि तेरे लिये झण्डे का काम दें तेरी चांदनी एलीशा के द्वीपों से लाये हुए नीले और बैंजनी रंग के कपड़े की बनी ॥ ८। तेरे खेवनेहारे सीदोन् और अर्वद् के रहनेहारे थे हे सोर् तेरे ही बीच के बुद्धिमान् लोग तेरे मांझी थे ॥ ९। तेरे गावनेहारे गबल् नगर के पुरनिये और बुद्धिमान् लोग थे तुझ में व्योपार करने के लिये मल्लाहों समेत समुद्र पर के सब जहाज तुझ में आ गये थे ॥ १०। तेरी सेना में फारसी लूदी और पूती लोग भरती हुए थे उन्हों ने तुझ में ढाल और टोपी टांगी तेरा प्रताप उन के कारण हुआ था ॥ ११। तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साथ अर्वद के लोग चारों ओर थे और तेरे गुम्मटों में शूरवीर खड़े थे उन्हों ने अपनी ढालें तेरी चारों ओर की शहरपनाह पर टांगी थीं तेरी सुन्दरता उन के द्वारा पूरी हुई थी ॥ १२। अपनी सब प्रकार की संपत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे व्योपारी थे उन्हों ने चांदी लोहा रांगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया ॥ १३। यावान् तूबल् और मेशेक् के लोग दास दासी और पीतल के पात्र तेरे माल के बदले देकर तेरे व्योपारी थे ॥ १४। तोगर्मा के घराने के लोगों ने तेरी संपत्ति लेकर घोड़े सवारी के घोड़े और खच्चर दिये ॥ १५। ददानी तेरे व्योपारी थे बहुत से द्वीप तेरे हाट बने थे वे तेरे पास हाथीदांत के सींग और आबनूस की लकड़ी व्योपार में ले आये थे ॥ १६। तुझ में जो बहुत

(१) मूल में, समुद्रों से। (२) मूल में निचले स्थानों के देश में।

कारीगरी हुई इस से अराम् तेरा व्योपारी था मरकत बैंजनी रंग का और बूटेदार वस्त्र सन मूंगा और लालड़ी देकर उन्हों ने तेरा माल लिया ॥ १७ । यहूदा और इस्राएल् वे तो तेरे व्योपारी थे उन्हों ने मिन्नीत् का गेहूं पन्नग और मधु तेल और बलसान् देकर तेरा माल लिया ॥ १८ । तुझ में जो बहुत कारीगरी हुई और सब प्रकार का धन हुआ इस से दमिश्क् तेरा व्योपारी हुआ तेरे पास हेल्बोन् का दाखमधु और उजला ऊन पहुंचाया गया ॥ १९ । वदान् और यावान् ने तेरे माल के बदले में सूत दिया और उन के कारण तेरे व्योपार के माल में फौलाद तज और बच भी हुआ ॥ २० । चारजामे के योग्य सुथरे कपड़े के लिये ददान् तेरा व्योपारी हुआ ॥ २१ । अरब् और केदार् के सब प्रधान तेरे व्योपारी ठहरे उन्हों ने मेम्ने मेढ़े और बकरे ले आकर तेरे साथ लेन देन किया ॥ २२ । शबा और रामा के व्योपारी तेरे व्योपारी ठहरे उन्हों ने उत्तम उत्तम जाति का सब भांति का मसाला सब भांति के मणि और सोना देकर तेरा माल लिया ॥ २३ । हारान् कन्ने और एदेन् और शबा के व्योपारी और अश्शूर् और कलमद् ये सब तेरे व्योपारी ठहरे ॥ २४ । इन्हों ने उत्तम उत्तम वस्तुएं अर्थात् ओढ़ने के नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियों से बंधी और देवदारु की बनी हुई चित्र विचित्र कपड़ों की पेटियां ले आकर तेरे साथ लेन देन किया ॥ २५ । तर्शीश् के जहाज तेरे व्योपार के माल के ढोनेहारे हुए उन के द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत धनवान और प्रतापवान हो गई थी ॥ २६ । तेरे खेवनेहारों ने तुझे गहिरे जल में पहुंचा दिया है और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया है ॥ २७ । जिस दिन तू टूट जाएगी उसी दिन तेरा धन संपत्ति व्योपार का माल मल्लाह मांझी गाथनेहारे व्योपारी लोग और तुझ में जितने सिपाही हैं और तुझ में की सारी भीड़ भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी । २८ । तेरे मांझियों की चिल्लाहट के शब्द के मारे तेरे आस पास के स्थान कांप उठेंगे ॥ २९ । और सब खेवनेहारे और मल्लाह और समुद्र में जितने मांझी रहते हैं वे अपने अपने जहाज पर से उतरेंगे, ३० । वे भूमि पर खड़े होकर तेरे विषय ऊंचे शब्द से बिलक बिलक रोएंगे और अपने अपने सिर पर धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे, ३१ । और तेरे शोक में अपने सिर मुंड़वा देंगे और कमर में टाट बांधकर अपने मन के कड़े दुःख[1] के साथ तेरे विषय रोएं पीटेंगे, ३२ । वे विलाप करते हुए तेरे विषय विलाप का ऐसा गीत बनाकर गाएंगे कि सोर् जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पड़ी है उस के तुल्य कौन नगरी है ॥ ३३ । जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता था तब तो बहुत सी जातियों के लोग तृप्त होते थे तेरे धन और व्योपार के माल की बहुतायत से पृथिवी के राजा धनी होते थे ॥ ३४ । जिस समय तू अथाह जल में लहरों से टूटी उस समय तेरे व्योपार का माल और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गये ॥ ३५ । टापू टापू के सब रहनेहारे तेरे कारण विस्मित हुए और उन के राजाओं के सब रोएं खड़े हो गये और उन के मुख उदास देख पड़े हैं ॥ ३६ । देश देश के व्योपारी तेरे विरुद्ध हथोड़ी बजा रहे हैं तू भय का कारण हो गई और फिर कभी रहेगी नहीं ॥

२८. फिर

यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के संतान सोर् के प्रधान से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू ने तो मन में फूलकर कहा है कि मैं ईश्वर हूं और समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूं, पर यद्यपि तू अपना मन परमेश्वर का सा दिखाता है तौभी तू ईश्वर नहीं मनुष्य ही है ॥ ३ । तू तो दानिय्येल् से भी अधिक बुद्धिमान है कोई भी भेद तुझ से छिपा न होगा ॥ ४ । अपनी बुद्धि और समझ के द्वारा तू ने धन प्राप्त किया और अपने भण्डारों में सोना चांदी रक्खी है ॥ ५ । तू ने तो बड़ी बुद्धि से लेन देन किया इस से तेरा धन बढ़ा और धन के कारण तेरा मन फूल उठा है ॥ ६ । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू जो अपना मन परमेश्वर का सा दिखाता है, ७ । इस

(१) मूल में मन की कड़ुवाहट।

लिये सुन मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढ़ाई कराऊंगा जो सब जातियों में से बलात्कारी हैं और वे अपनी तलवारें तेरी बुद्धि की शोभा पर चलाएंगे और तेरी चमक दमक को बिगाड़ेंगे॥ ८। वे तुझे कबर में उतारेंगे और तू समुद्र के बीच के मारे हुओं की रीति मर जाएगा॥ ९। क्या तू अपने घात करनेहारे के साम्हने कहता रहेगा कि मैं परमेश्वर हूं। तू अपने घायल करनेहारे के हाथ में ईश्वर नहीं मनुष्य ही ठहरेगा॥ १०। तू परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों की रीति से मारा जाएगा क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

११। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १२। हे मनुष्य के संतान सोर् के राजा के विषय विलाप का गीत बनाकर उस से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू तो उत्तम से भी उत्तम है[1] तू बुद्धि से भरपूर और सर्वाङ्ग सुन्दर है॥ १३। तू तो परमेश्वर की एदेन् नाम बारी में था तेरे आभूषण माणिक पद्मराग हीरा फीरोजा सुलैमानी मणि यशब नीलमणि मरकत और लाल सब भांति के मणि और सोने के थे तेरे डफ और बांसुलियां तुझी में बनाई गई थीं जिस दिन तू सिरजा गया था उस दिन वे भी तैयार किई गई थीं॥ १४। तू तो छानेहारा अभिषिक्त करूब् था मैं ने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था तू आग सरीखे चमकनेहारे मणियों के बीच चलता फिरता था॥ १५। जिस दिन से तू सिरजा गया और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई उस बीच में तो तू अपनी सारी चाल चलन मे निर्दोष रहा॥ १६। पर लेन देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया इस से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा और हे छानेहारे करूब् मै ने तुझे आग सरीखे चमकनेहारे मणियों के बीच से नाश किया है॥ १७। सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया और राजाओं के साम्हने तुझे रखा है कि वे तुझ को देखें॥ १८। तेरे अधर्म्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गये सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न किई जिस से तू भस्म हुआ और मैं ने तुझे सब देखनेहारों के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है॥ १९। देश देश में के लोगों से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए तू भय का कारण हुआ और तू फिर कभी पाया न जाएगा॥

२०। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २१। हे मनुष्य के संतान अपना मुख सीदोन् की ओर करके उस के विरुद्ध नबूवत कर॥ २२। और कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे सीदोन् मैं तेरे विरुद्ध हूं मै तेरे बीच अपनी महिमा कराऊंगा। जब मैं उस के बीच दण्ड दूंगा और उस में अपने को पवित्र ठहराऊंगा तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ २३। और मैं उस मे मरी फैलाऊंगा और उस की सड़कों में लोहू बहाऊंगा और उस की चारों ओर तलवार चलेगी तब उस के बीच घायल लोग गिरेंगे और वे जान लेंगे कि मै यहोवा हूं॥ २४। और इस्राएल् के घराने की चारों ओर की जितनी जातियां उन के साथ अभिमान का बर्ताव रखती हैं उन मे से कोई उन का चुभनेहारा कांटा वा बेधनेहारा शूल फिर न ठहरेगा तब वे जान लेंगी कि मै प्रभु यहोवा हूं॥

२५। प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मै इस्राएल् के घराने को उन सब लोगों मे से जिन के बीच वे तितर बितर हुए हैं एकट्ठा करूंगा और देश देश के लोगों के साम्हने उन के द्वारा पवित्र ठहरूंगा तब वे उस देश में बास करेंगे जो मैं ने अपने दास याकूब को दिया था॥ २६। वे उस में तब निडर बसे रहेंगे वे घर बनाकर और दाख की बारियां लगाकर निडर रहेंगे जब मैं उन की चारों ओर के सब लोगों को जो उन से अभिमान का बर्ताव करते हैं दण्ड दूंगा। निदान वे जान लेंगे कि हमारा परमेश्वर यहोवा ही है॥

(१) मूल में तू पूर्णता पर छाप देता है।

२९. दसवें बरस के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान अपना मुख मिस्र के राजा फिरौन की ओर करके उस के और सारे मिस्र के विरुद्ध नबूवत कर॥ ३। यह कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं हे मिस्र के राजा फिरौन हे बड़े मगर तू जो अपनी नदियों के बीच पड़ा रहता जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी निज की है और मैं ही ने उस को अपने लिये बनाया है, ४। मैं तो तेरे जबड़ों में आंकड़े डालूंगा और तेरी नदियों की मछलियों को तेरे चोंओं में चिपटाऊंगा और तेरे छिलकों में चिपटी हुई तेरी नदियों की सब मछलियों समेत तुझ को तेरी नदियों में से निकालूंगा॥ ५। तब मैं तुझे तेरी नदियों की सारी मछलियों समेत जंगल में निकाल दूंगा और तू मैदान में पड़ा रहेगा तेरी किसी प्रकार की सुधि न लिई जाएगी[1] मैं ने तुझे बनैले पशुओं और आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया है॥ ६। तब मिस्र के सारे निवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं वे तो इस्राएल् के घराने के लिये नरकट की टेक ठहरे थे॥ ७। जब उन्हों ने तुझ पर हाथ का बल दिया तब तू टूट गया और उन के पखौड़े उखड़ ही गये और जब उन्हों ने तुझ पर टेक लगाई तब तू टूट गया और उन की कमर की सारी नसें चढ़ गईं॥ ८। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तुझ पर तलवार चलवाकर तेरे क्या मनुष्य क्या पशु सभों को नाश करूंगा॥ ९। तब मिस्र देश उजाड़ ही उजाड़ होगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। उस ने तो कहा है कि मेरी नदी मेरी निज की है और मैं ही ने उसे बनाया, १०। इस कारण सुन मैं तेरे और तेरी नदियों के विरुद्ध हूं और मिस्र देश को मिग्दोल् से लेकर सवेने लों वरन कूश् देश के सिवाने लों उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा॥ ११। चालीस बरस लों उस में मनुष्य वा पशु का पग तक न पड़ेगा और न उस में कोई बसा रहेगा॥ १२। चालीस बरस तक मैं मिस्र देश को उजड़े हुए देशों के बीच उजाड़ कर रखूंगा और उस के नगर उजड़े हुए नगरों के बीच खण्डहर ही रहेंगे और मैं मिस्रियों को जाति जाति में छिन्न भिन्न कर दूंगा और देश देश में तितर बितर करूंगा॥ १३। प्रभु यहोवा तो यों कहता है कि चालीस बरस के बीते पर मैं मिस्रियों को उन जातियों के बीच से एकट्ठा करूंगा जिन में वे तितर बितर हुए॥ १४। और मैं मिस्रियों को बंधुआई से छुड़ाकर पत्रास् देश में जो उन की जन्मभूमि है फिर पहुंचाऊंगा और वहां उन का छोटा सा राज्य हो जाएगा॥ १५। वह सब राज्यों में से छोटा होगा और फिर अपना सिर और जातियों के ऊपर न उठाएगा क्योंकि मैं मिस्रियों को ऐसा घटाऊंगा कि वे फिर अन्यजातियों पर प्रभुता करने न पाएंगे॥ १६। और वह फिर इस्राएल् के घराने के भरोसे का कारण न होगा जो उन के अधर्म्म की सुधि तब कराता है जब वे फिरकर उन की ओर देखते हैं। वे तो जान लेंगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं॥

१७। फिर सताईसवें बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८। हे मनुष्य के संतान बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् ने सोर् के घेरने में[1] अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया हर एक का सिर चन्दला हो गया और हर एक के कंधों का चमड़ा उड़ गया तौभी इस बड़े परिश्रम की मजूरी सोर् से न तो कुछ उस को मिली और न उस की सेना को॥ १९। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् को मिस्र देश दूंगा और वह उस की भीड़ भाड़ को ले जाएगा और उस की धन संपत्ति को लूटकर अपना कर लेगा सो उस की सेना को यही मजूरी मिलेगी॥ २०। मैं ने उस के परिश्रम के बदले में उस को मिस्र देश इस कारण दिया है कि उन लोगों ने मेरे लिये काम किया था प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

२१। उसी समय मैं इस्राएल् के घराने के एक

(१) मूल में तू न तो एकट्ठा किया जाएगा न बटोरा जाएगा।

(१) मूल में सोर् के विरुद्ध।

सींग जमाऊंगा और उन के बीच तेरा मुंह खुलाऊंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

३०. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान नबूवत करके कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय हाय करो हाय उस दिन पर॥ ३। क्योंकि वह दिन अर्थात् यहोवा का दिन निकट है वह बादलों का दिन और जातियों के दण्ड का समय होगा॥ ४। मिस्र में तलवार चलेगी और जब मिस्र में लोग मारे जाकर गिरेंगे तब कूश् में भी संकट पड़ेगा लोग मिस्र की भीड़ भाड़ ले जाएंगे और उस की नेवें उलट दिई जाएंगी॥ ५। कूश् पूत् लूद् और सब दोगले और कूब् लोग और वाचा बांधे हुए देश के निवासी मिस्रियों के संग तलवार से मारे जाएंगे॥

६। यहोवा यों कहता है कि मिस्र के सभालनेहारे भी गिर जाएंगे और अपने जिस सामर्थ्य पर मिस्री फूलते हैं सो टूटेगा[1] मिग्दोल् से लेकर सवेने लों उस के निवासी तलवार से मारे जाएंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ ७। और वे उजड़े हुए देशों के बीच उजड़े ठहरेंगे और उन के नगर खंडहर किये हुए नगरों में गिने जाएंगे॥ ८। जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा और उस के सब सहायक नाश होंगे तब वे जान लेंगे कि मै यहोवा हूं॥ ९। उस समय मेरे साम्हने से दूत जहाजों पर चढ़कर निडर निकलेंगे और कूशियों को डराएंगे और उन पर संकट पड़ेगा जैसा कि मिस्र के दण्ड के समय, वह आता तो है॥

१०। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं बाबेल् के राजा नबूकद्रेस्सर् के हाथ से मिस्र की भीड़ भाड़ को नाश करा दूंगा॥ ११। वह अपनी प्रजा समेत जो सब जातियों में भयानक है उस देश के नाश करने को पहुंचाया जाएगा और वे मिस्र के विरुद्ध तलवार खींचकर देश को मरे हुओं से भर देंगे॥ १२। और मैं नदियों को सुखा डालूंगा और देश को बुरे लोगों के हाथ कर दूंगा और देश को और जो कुछ उस में है मैं परदेशियों से उजाड़ करा दूंगा मुझ यहोवा ही ने यह कहा है॥

१३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं नोप् में से मूरतों को नाश करूंगा मैं उस मे की मूरतों को रहने न दूंगा मिस्र देश में कोई प्रधान फिर न उठेगा और मैं मिस्र देश में भय उपजाऊंगा॥ १४। और मैं पत्रोस् को उजाडूंगा और सोअन् में आग लगाऊंगा और नो को दण्ड दूंगा॥ १५। और सीन् जो मिस्र का दृढ़ स्थान है उस पर मैं अपनी जलजलाहट भड़काऊंगा[1] और नो की भीड़भाड़ का अंत कर डालूंगा॥ १६। और मैं मिस्र में आग लगाऊंगा सीन् बहुत थरथराएगा और नो फाड़ा जाएगा और नोप् के विरोधी दिन दहाड़े उठेंगे॥ १७। आवेन् और पीबेसेत् के जवान तलवार से गिरेंगे और ये नगर बंधुआई में चले जाएंगे॥ १८। और जब मैं मिस्रियों के जूओं को तहपन्हेस् में तोडूंगा तब उस में दिन को अंधेरा होगा और उस का सामर्थ जिस पर वह फूलता है सो नाश हो जाएगा उस पर तो घटा छा जाएगी और उस की बेटियां बंधुआई में चली जाएंगी॥ १९। मैं मिस्रियों को दण्ड दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२०। फिर ग्यारहवें बरस के पहिले महीने के सातवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २१। हे मनुष्य के संतान मैं ने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा तोड़ी है और न तो वह जुड़ी न उस पर लेप लगाकर पट्टी चढ़ाई गई न वह बांधने से तलवार पकड़ने के लिये बली किई गई है॥ २२। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मै मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूं और उस की अच्छी और टूटी दोनों भुजाओं को तोडूंगा और तलवार को उस के हाथ से गिराऊंगा॥ २३। और मैं मिस्रियों को जाति जाति में तितर बितर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा॥ २४। और मैं बाबेल् के राजा की भुजाओं को बली करके अपनी तलवार उस के हाथ में दूंगा और फिरौन की भुजाओं को तोडूंगा और वह उस के साम्हने

(१) मूल में, उतरेगा।

(१) मूल में उण्डेलूगा।

ऐसा कराहेगा जैसा मर्म का घायल कराहता है॥ २५। मैं बाबेल् के राजा की भुजाओं को सम्भालूंगा और फिरौन की भुजाएं ढीली पड़ेंगी सो जब मैं बाबेल् के राजा के हाथ में अपनी तलवार दूंगा और वह उसे मिस्र देश पर चलाएगा तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ २६। और मैं मिस्रियों को जाति जाति में तितर बितर करूंगा और देश देश मे छितरा दूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

३१.

फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान मिस्र के राजा फिरौन और उस की भीड़ भाड़ से कह कि अपनी बड़ाई में तू किस के समान है॥ ३। सुन अश्शूर् तो लबानोन् का एक देवदारु था जिस की सुन्दर सुन्दर शाखा घनी छाया और बड़ी ऊंचाई थी और उस की फुनगी बादलों तक पहुंचती थी॥ ४। जल से वह बढ़ गया उस गहिरे जल के कारण वह ऊंचा हुआ जिस से नदियां उस के स्थान की चारों ओर बहती थीं और उस की नालियां निकलकर मैदान के सारे वृक्षों के पास पहुंचती थीं॥५। इस कारण उस की ऊंचाई मैदान के सब वृक्षों से अधिक हुई और उस की टहनियां बहुत हुईं और उस की शाखाएं लम्बी हो गईं क्योंकि जब वे निकलीं तब उन को बहुत जल मिला॥ ६। उस की टहनियों में आकाश के सब प्रकार के पक्षी बसेरा करते थे और उस की शाखाओं के नीचे मैदान के सब भांति के जीवजन्तु जन्मते थे और उस की छाया में सब बड़ी जातियां रहती थीं॥ ७। वह अपनी बड़ाई और अपनी डालियों की लम्बाई के कारण सुन्दर हुआ क्योंकि उस की जड़ बहुत जल के निकट थी॥ ८। परमेश्वर की बारी में के देवदारु भी उस को न छिपा सकते थे सनौवर उस की टहनियों के समान न थे और अर्मोन् वृक्ष उस की शाखाओं के तुल्य न थे परमेश्वर की बारी का कोई भी वृक्ष सुन्दरता में उस के बराबर न था॥ ९। मै ने उसे डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया था यहां लों कि एदेन् के सब वृक्ष जो परमेश्वर की बारी में थे उस से डाह करते थे॥

१०। इस कारण प्रभु यहोवा ने यों कहा है कि उस की ऊंचाई जो बढ़ गई और उस की फुनगी जो बादलों तक पहुंचती है और अपनी ऊंचाई के कारण उस का मन जो फूल उठा है, ११। सो जातियों में जो सामर्थी है उस के हाथ में उस को कर दूंगा और वह निश्चय उस से बुरा व्यवहार करेगा मै ने उस की दुष्टता के कारण उस को निकाल दिया है॥ १२। और परदेशी जो जातियों में भयानक लोग हैं उन्हों ने उस को काटकर छोड़ दिया उस की डालियां पहाड़ों पर और सब तराइयों में गिराई गईं और उस की शाखाएं देश के सब नालों में टूटी पड़ी हैं और जाति जाति के सब लोग उस की छाया को छोड़कर चले गये हैं॥ १३। उस गिरे हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा करते हैं और उस की शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढने पाते हैं, १४। इस लिये कि जल के पास के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊंचाई न बढ़ाए न अपनी फुनगी को बादलों तक पहुंचाए और उन में से जितने जल पाकर दृढ़ हो गये हैं सो ऊंचे होने के कारण सिर न उठाएं क्योंकि कबर में गड़े हुओं के संग मनुष्यों के बीच वे भी सब के सब मृत्यु के वश करके अधोलोक मे डाले जाएंगे॥

१५। प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया उस दिन मैं ने विलाप कराया मैं ने उस के कारण गहिरे समुद्र को ढांपा और नदियों को रोका बहुत जल रुका रहा और मै ने उस के कारण लबानोन् पर उदासी छा दिई और मैदान के सब वृक्ष उस के कारण मूर्छित हुए॥ १६। जब मैं ने उस को कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में फेंक दिया तब मै ने उस के गिरने के शब्द से जाति जाति को थरथरा दिया और एदेन् के सब वृक्षों अर्थात् लबानोन् के उत्तम उत्तम वृक्षों ने जितने जल पाते हैं अधोलोक में शांति पाई॥ १७। वे भी उस के संग तलवार से मारे हुओं के

(१) मूल में तेरी।

पास अधोलोक में उतर गये अर्थात् वे जो उस की भुजा थे और जाति जाति के बीच उस की छाया में रहते थे॥

१८। सो महिमा और बड़ाई के विषय एदेन् के वृक्षों में से तू किस के समान है तू तो एदेन् के और वृक्षों के संग अधोलोक में उतारा जाएगा और खतनाहीन लोगों के बीच तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा। फिरौन अपनी सारी भीड़ भाड़ समेत यों ही होगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

३२. फिर बारहवें बरस के बारहवें महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के संतान मिस्र के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत बनाकर उस को सुना कि तेरी उपमा जाति जाति में जवान सिंह से दिई गई थी पर तू समुद्र में के मगर के समान है तू अपनी नदियों में टूट पड़ा और उन के जल को पावों से मथकर गदला[1] कर दिया॥ ३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं बहुत सी जातियों की मण्डली के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊंगा और वे तुझे मेरे महाजाल में खींच लेंगे॥ ४। तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा और मैदान में फेंककर आकाश के सब पक्षियों को तुझ पर बैठाऊंगा और तेरे मांस से सारी पृथिवी के जीवजन्तुओं को तृप्त करूंगा॥ ५। और मैं तेरे मांस को पहाड़ों पर रक्खूंगा और तराइयों को तेरी डील से भर दूंगा॥ ६। और जिस देश में तू तैरता है उस को पहाड़ों तक तेरे लोहू से सींचूंगा और उस के नाले तुझ से भर जाएंगे॥ ७। और जिस समय मैं तुझे मलिन करूंगा उस समय मैं आकाश को ढांपूंगा और तारों को धुन्धला कर दूंगा सूर्य्य को मैं बादल से छिपाऊंगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा॥ ८। आकाश में जितनी प्रकाशमान ज्योतियां हैं सब को मैं तेरे कारण धुन्धला कर दूंगा और तेरे देश में अंधकार कर दूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ ९। तब मैं तेरे विनाश का समाचार जाति जाति में और तेरे अनजाने देशों में फैलाऊंगा तब बड़े बड़े देशों के लोगों के मन में रिस उपजाऊंगा॥ १०। और मैं बहुत सी जातियों को तेरे कारण विस्मित कर दूंगा और जब मैं उन के राजाओं के साम्हने अपनी तलवार भांजूंगा तब तेरे कारण उन के सब रोएं खड़े हो जाएंगे और तेरे गिरने के दिन वे अपने अपने प्राण के लिये छन छन कांपते रहेंगे॥

११। प्रभु यहोवा यों कहता है कि बाबेल् के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी॥ १२। मैं तेरी भीड़ भाड़ को ऐसे शूरवीरों की तलवारों के द्वारा गिराऊंगा जो सब के सब जातियों में भयानक हैं और वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे और उस की सारी भीड़ भाड़ का सत्यानाश होगा॥ १३। और मैं उस के सब पशुओं को उस के बहुतेरे जलाशयों के तीर पर से नाश करूंगा और वे आगे को न तो मनुष्य के पांव से और न पशु के खुरों से गदले किये जाएंगे॥ १४। तब मैं उन का जल निर्मल कर दूंगा और उन की नदियां तेल की नाईं बहेंगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १५। जब मैं मिस्र देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा और जिस से वह भरपूर है उस से छूछा कर दूंगा और उस के सब रहनेहारों को मारूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ १६। लोगों के विलाप करने के लिये विलाप का गीत यही है जाति जाति की स्त्रियां इसे गाएंगी मिस्र और उस की सारी भीड़ भाड़ के विषय वे यही विलापगीत गाएंगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१७। फिर बारहवें बरस के उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८। हे मनुष्य के सन्तान मिस्र की भीड़ भाड़ के लिये हाय हाय कर और उस को प्रतापी जातियों की बेटियों समेत कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में उतार॥ १९। तू किस से मनोहर है तू उतरकर खतनाहीनों के संग लिटाया जाए॥ २०। तलवार से मारे हुओं के बीच वे गिरेंगे उन[1] के

(१) मूल में उन की नदियों को मैली।

(१) मूल में उस।

लिये तलवार ही ठहराई गई है सो मिस्र को सारी भीड़ भाड़ समेत घसीट ले जाओ ॥ २१। सामर्थी शूरवीर उस से और उस के सहायकों से अधोलोक में से बातें करेंगे वहां वे खतनाहीन लोग तलवार से मारे जाकर उतरे पड़े हैं॥ २२। वहां सारी मण्डली समेत अश्शूर् भी है उस की कबरें उस की चारों ओर हैं सब के सब तलवार से मारे जाकर गिरे हैं॥ २३। उस की कबरें गड़हे के कोनों में बनी हुई हैं और उस की कबर की चारों ओर उस की मण्डली है, वे सब के सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे अब तलवार से मारे जाकर पड़े हुए हैं॥ २४। वहां एलाम् है और उस की कबर की चारों ओर उस की सारी भीड़ भाड़ है वे सब के सब तलवार से मारे जाकर गिरे हैं वे खतनाहीन अधोलोक में उतर गये हैं वे जीवनलोक में भय उपजाते थे पर अब कबर में और और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर सियाही छाई हुई है॥ २५। सारी भीड़ भाड़ समेत उस को मारे हुओं के बीच सेज मिली उस की कबरें उस की चारों ओर वहीं हैं सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गये उन्हों ने जीवनलोक में तो भय उपजाया था पर अब कबर में और और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर सियाही छाई हुई है और वह मारे हुओं के बीच रक्खा गया है॥ २६। वहां सारी भीड़ भाड़ समेत मेशेक् और तूबल् हैं उन की कबरें उन की चारों ओर हैं सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गये वे तो जीवनलोक में भय उपजाते थे॥ २७। क्या वे उन गिरे हुए खतनाहीन शूरवीरों के संग पड़े न रहेंगे जो अपने अपने युद्ध के हथियार लिये हुए अधोलोक में उतर गये हैं और वहां उन की तलवारें उन के सिरों के नीचे रक्खी हुई हैं और उन के अधर्म्म के काम उन की हड्डियों में व्यापे हैं क्योंकि जीवनलोक में उन से शूरवीरों को भी भय उपजता था॥ २८। सो खतनाहीनों के संग अंग भंग होकर तू भी तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा॥ २९। वहां एदोम् और उस के राजा और उस के सारे प्रधान हैं जो पराक्रमी होने पर भी तलवार से मारे हुओं के संग वहीं रक्खे हैं, गड़हे में गड़े हुए खतनाहीन लोगों के संग वे भी पड़े रहेंगे॥ ३०। वहां उत्तर दिशा के सारे प्रधान और सारे सीदोनी हैं मारे हुओं के संग वे भी उतर गये उन्हों ने अपने पराक्रम से भय उपजाया था पर अब वे लज्जित हुए और तलवार से और और मारे हुओं के संग वे भी खतनाहीन पड़े हुए हैं और कबर में और और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर भी सियाही छाई हुई है॥ ३१। इन को देखकर फिरौन अपनी सारी भीड़ भाड़ के विषय शांति पाएगा और फिरौन और उस की सारी सेना तलवार से मारी गई है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ ३२। क्योंकि मैं ने उस के कारण जीवन के लोक में भय उपजाया है और वह सारी भीड़ भाड़ समेत तलवार से और और मारे हुओं के संग खतनाहीनों के बीच लिटाया जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

३३. **फिर** यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान अपने लोगों से कह कि जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूं और उस देश के लोग अपने किसी को पहरुआ करके ठहराएं, ३। तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगों को चिता दे, ४। तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेत जाए और तलवार के चलने से वह मर जाए उस का खून उसी के सिर पड़ेगा॥ ५। उस ने नरसिंगे का शब्द तो सुना पर चेत न गया सो उस का खून उसी को लगेगा पर यदि वह चेत जाता तो अपना प्राण बचा लेता॥ ६। और यदि पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगों को चिता न दे और तब तलवार के चलने से उन में से कोई मर जाए तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मर जाएगा पर उस के खून का लेखा मैं पहरुए ही से लूंगा॥ ७। सो हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल् के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है सो तू मेरे मुंह से वचन सुन सुनकर मेरी

ओर से उन्हे चिता दे॥ ८। जब मैं दुष्ट से कहूं कि हे दुष्ट तू निश्चय मरेगा तब यदि तू दुष्ट को उस के मार्ग के विषय न चिताए तो वह दुष्ट अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर उस के खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा ॥ ९ । पर यदि तू दुष्ट को उस के मार्ग के विषय चिताए कि अपने मार्ग से फिर जाए और वह अपने मार्ग से न फिर जाए तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर तू अपना प्राण बचा लेगा ॥

१०। फिर हे मनुष्य के सन्तान इस्राएल् के घराने से यह कह कि तुम लोग कहते हो कि हमारे अपराधों और पापों का भार हमारे ऊपर लदा हुआ है हम उस के कारण गलते जाते हैं हम जीते कैसे रहें ॥ ११ । सो तू उन से यह कह प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता पर इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीता रहे हे इस्राएल् के घराने तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ तुम क्यों मर जाओ ॥ १२ । और हे मनुष्य के सन्तान अपने लोगों से यह कह कि जिस दिन धर्म्मी जन अपराध करे उस दिन वह अपने धर्म्म के कारण न बचेगा और दुष्ट की दुष्टता जो है जिस दिन वह उस से फिर जाए उस के कारण वह न गिर जाएगा फिर धर्म्मी जन जब वह पाप करे तब अपने धर्म्म के कारण जीता न रहेगा ॥ १३ । जब मैं धर्म्मी से कहूं कि तू निश्चय जीता रहेगा और वह अपने धर्म्म पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे तब उस के धर्म्म के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा जो कुटिल काम उस ने किये हों उन्हीं में फंसा हुआ वह मरेगा॥ १४ । फिर जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा और वह अपने पाप से फिरकर न्याय और धर्म्म के काम करने लगे, १५ । अर्थात् यदि दुष्ट जन बंधक फेर देने अपनी लूटी हुई वस्तुएं भर देने और विना कुटिल काम किये जीवनदायक विधियों पर चलने लगे तो वह न मरेगा निश्चय जीता रहेगा ॥ १६ । जितने पाप उस ने किये हों उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा उस ने न्याय और धर्म्म के काम किये वह निश्चय जीता ही रहेगा ॥ १७ । तौभी तेरे लोग कहते हैं कि प्रभु की चाल ठीक नहीं। पर उन्हीं की चाल ठीक नहीं ॥ १८ । जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे तब उन में फंसा हुआ वह मर जाएगा॥ १९ । और जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरकर न्याय और धर्म्म के काम करने लगे तब वह उन के कारण जीता रहेगा ॥ २० । तौभी तुम कहते हो कि[1] प्रभु की चाल ठीक नहीं हे इस्राएल् के घराने मैं तुम्हारा न्याय एक एक जन की चाल ही के अनुसार करूंगा ॥

२१ । फिर हमारी बन्धुआई के ग्यारहवें बरस के दसवें महीने के पांचवें दिन को एक जन जो यरूशलेम् से भागकर बच गया था सो मेरे पास आकर कहने लगा नगर ले लिया गया ॥ २२ । उस भागे हुए के आने से पहिले सांझ को यहोवा की शक्ति[2] मुझ पर हुई थी और भोर लों अर्थात् उस मनुष्य के आने लों उस ने मेरा मुंह खोल दिया, सो मेरा मुंह खुला ही रहा और मैं फिर चुप न रहा ॥ २३ । तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २४ । हे मनुष्य के संतान इस्राएल् की भूमि के उन खण्डहरों के रहनेहारे यह कहते हैं कि इब्राहीम् एक ही था तौभी देश का अधिकारी हुआ पर हम लोग बहुत से हैं और देश हमारे ही अधिकार मे दिया गया ॥ २५ । इस कारण तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम लोग तो मांस लोहू समेत खाते और अपनी मूरतों की ओर दृष्टि करते और खून करते हो फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे ॥ २६ । तुम तो अपनी अपनी तलवार पर भरोसा करते और घिनौने काम करते और अपने अपने पड़ोसी की स्त्री को अशुद्ध करते हो फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे ॥ २७ । तू उन से यह कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह निःसंदेह जो लोग खण्डहरों में रहते हैं सो तल-

(१) मूल में तुम कहते हो कि ।
(२) मूल में हाथ ।

धार से गिरेंगे और जो खुले मैदान में रहता है उसे मैं जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा और जो गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं सो मरी से मरेंगे ॥ २८ । और मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा और उस का अपने बल का घमण्ड जाता रहेगा और इस्राएल् के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न चलेगा ॥ २९ । सो जब मैं उन लोगों के किये हुए सब घिनौने कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥ ३० । और हे मनुष्य के संतान तेरे लोग भीतों के पास और घरों के द्वारों में तेरे विषय बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं कि आओ सुनो तो यहोवा की ओर से कौन सा वचन निकलता है ॥ ३१ । वे प्रजा की नाईं तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर तेरे साम्हने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं पर वह उन पर चलते नहीं मुंह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते हैं पर उन का मन लालच ही में लगा रहता है ॥ ३२ । और तू उन के लेखे मीठे गानेहारे और अच्छे बजानेहारे का प्रेमवाला गीत सा ठहरा है वे तेरे वचन सुनते तो हैं पर उन पर चलते नहीं ॥ ३३ । पर जब यह बात घटेगी, वह घटनेवाली तो है, तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक नबी आया था ॥

३४. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के संतान इस्राएल् के चरवाहों के विरुद्ध नबूवत करके उन चरवाहों से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है हाय इस्राएल् के चरवाहों पर जो अपने अपने पेट भरते हैं क्या चरवाहों को भेड़ बकरियों का पेट न भरना चाहिये ॥ ३ । तुम लोग चर्बी खाते ऊन पहिनते और मोटे मोटे पशुओं को काटते हो और भेड़ बकरियों को तुम नहीं चराते ॥ ४ । न तो तुम ने बीमारों को बलवान किया न रोगियों को चंगा किया न घायलों के घावों को बांधा न निकाली हुई को फेर लाये न खोई हुई को खोजा पर तुम ने बल और बरबस्ती से अधिकार चलाया है ॥ ५ । वे चरवाहे के न होने के कारण तितर बितर हुईं और सब बनैले पशुओं का आहार हो गईं वे तितर बितर हुई हैं ॥ ६ । मेरी भेड़ बकरियां सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं मेरी भेड़ बकरियां सारी पृथिवी के ऊपर तितर बितर हुईं और उन की न तो कोई सुधि लेता था न कोई उन को ढूंढ़ता था ॥ ७ इस कारण हे चरवाहो यहोवा का वचन सुनो ॥ ८ । प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह मेरी भेड़ बकरियां जो लुट गईं और मेरी भेड़ बकरियां जो चरवाहे के न होने के कारण सब बनैले पशुओं का आहार हो गईं और मेरे चरवाहों ने जो मेरी भेड़ बकरियों की सुधि नहीं लिई और मेरी भेड़ बकरियों का पेट नहीं अपना ही अपना पेट भरा, ९ । इस कारण हे चरवाहो यहोवा का वचन सुनो ॥ १० । प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं चरवाहों के विरुद्ध हूं और उन से अपनी भेड़ बकरियों का लेखा लूंगा और उन को उन्हें फिर चराने न दूंगा सो वे फिर अपना अपना पेट भरने न पाएंगे क्योंकि मैं अपनी भेड़ बकरियां उन के मुंह से छुड़ाऊंगा कि वे आगे को उन का आहार न हों ॥ ११ । और प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं आप ही अपनी भेड़ बकरियों की सुधि लूंगा और उन्हें ढूंढूंगा ॥ १२ । जैसे चरवाहा जब अपनी तितर बितर हुई भेड़ बकरियों के बीच होता है तब अपने झुण्ड को बटोरता है वैसे ही मैं भी अपनी भेड़ बकरियों को बटोरूंगा मैं उन्हें उन सब स्थानों से निकाल ले आऊंगा जहां जहां वे बादल और घोर अन्धकार के दिन तितर बितर हो गई हों ॥ १३ । और मैं उन्हें देश देश के लोगों में से निकालूंगा और देश देश से एकट्ठा करूंगा और उन्हीं की निज भूमि पर ले आऊंगा और इस्राएल् के पहाड़ों पर और नालों में और उस देश के सब बसे हुए स्थानों पर चराऊंगा ॥ १४ । मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा और इस्राएल् के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर उन को भेड़शाला मिलेगी वहां वे अच्छी भेड़शाला में बैठा करेंगी और इस्राएल् के पहाड़ों पर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी ॥ १५ । मैं आप ही अपनी भेड़ बकरियों का

चरवाहा हूंगा और मैं आप ही उन्हें बैठाऊंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १६। मैं खोई हुई को ढूंढूंगा और निकाली हुई को फेर लाऊंगा और घायल के घाव बांधूंगा और बीमार को बलवान करूंगा और जो मोटी और बलवन्त है उसे मैं नाश करूंगा मैं उन की चरवाही न्याय से करूंगा॥

१७। और हे मेरे भुण्ड तुम से प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं भेड़ भेड़ के बीच और मेढ़ों और बकरों के बीच न्याय करता हूं॥ १८। अच्छी चराई चर लेनी क्या तुम्हें ऐसी छोटी बात जान पड़ती है कि तुम शेष चराई को अपने पांवों से रौंदते हो और निर्मल जल पी लेना क्या तुम्हें ऐसी छोटी बात जान पड़ती है कि तुम शेष जल को अपने पांवों से गदला करते हो॥ १९। और मेरी भेड़ बकरियों को तुम्हारे पांवों के रौंदे हुए को चरना और तुम्हारे पांवों के गदले किये हुए को पीना पड़ता है॥ २०। इस कारण प्रभु यहोवा उन से यों कहता है कि सुनो मैं आप मोटी और दुबली भेड़ बकरियों के बीच न्याय करूंगा॥ २१। तुम जो सब बीमारों को पांजर और कन्धे से यहां तक ढकेलते और सींग से यहां तक मारते हो कि वे तितर बितर हो जाती हैं, २२। इस कारण मैं अपनी भेड़ बकरियों को छुड़ाऊंगा और वे फिर न लुटेंगी और मैं भेड़ भेड़ के बीच और बकरी बकरी के बीच न्याय करूंगा॥ २३। और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उन की चरवाही करेगा वह मेरा दास दाऊद होगा वही उन को चराएगा और वही उन का चरवाहा होगा॥ २४। और मैं यहोवा उन का परमेश्वर ठहरूंगा और मेरा दास दाऊद उन के बीच प्रधान होगा मुझ यहोवा ही ने यह कहा है॥ २५। और मैं उन के साथ शांति की वाचा बांधूंगा और दुष्ट जन्तुओं को देश में न रहने दूंगा सो वे जंगल में निडर रहेंगे और वन में सोएंगे॥ २६। और मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आस पास के स्थानों को आशीष का कारण कर दूंगा और मेंह को ठीक समय में बरसाया करूंगा और आशीषों की वर्षा होगी॥ २७। और मैदान के वृक्ष फलेंगे और भूमि अपनी उपज उपजाएगी और वे अपने देश में निडर रहेंगे। जब मैं उन के जूए को तोड़कर उन लोगों के हाथ से छुड़ाऊंगा जो उन से सेवा कराते हैं तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ २८। और वे फिर जाति जाति से न लूटे जाएंगे और न बनैले पशु उन्हें फाड़ खाएंगे वे निडर रहेंगे और उन को कोई न डराएगा॥ २९। और मैं बड़े नाम के लिये ऐसे पेड़ उपजाऊंगा कि वे देश में फिर भूखों न मरेंगे और न जाति जाति के लोग फिर उन की निन्दा करेंगे॥ ३०। और वे जानेंगे कि हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे संग है और हम जो इस्राएल का घराना हैं सो उस की प्रजा हैं मुझ प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ ३१। तुम तो मेरी भेड़ बकरियां मेरी चराई की भेड़ बकरियां हो तुम तो मनुष्य हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

३५. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २। हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख सेईर् पहाड़ की ओर करके उस के विरुद्ध नबूवत कर॥ ३। और उस से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे सेईर् पहाड़ मैं तेरे विरुद्ध हूं और अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा॥ ४। मैं तेरे नगरों को खण्डहर कर दूंगा और तू उजाड़ हो जाएगा तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं॥ ५। इस कारण कि तू इस्राएलियों से युग युग की शत्रुता रखता था और उन की विपत्ति के समय जब अधर्म्म के अंत का समय पहुंचा तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया[1], ६। इस कारण तुझे प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह खून किये जाने के लिये तुझे मैं तैयार करूंगा खून तेरा पीछा करेगा तू तो खून से न घिनाता था इस कारण खून तेरा पीछा करेगा॥ ७। इस रीति मैं सेईर् पहाड़ को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा और जो उस में आता

(१) मूल में तलवार के हाथों पर सौंप दिया।

जाता है उस को मैं नाश करूंगा ॥ ८ । और मैं उस के पहाड़ों को मारे हुओं से भर दूंगा तेरे टीलों तराइयों और सब नालों में तलवार से मारे हुए गिरेंगे ॥ ९ । मैं तुझे युग युग के लिये उजाड़ कर दूंगा और तेरे नगर न बसेंगे और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ १० । तू ने तो कहा है कि ये दोनों जातियां और ये दोनों देश मेरे होंगे और हम ही उन के स्वामी होंगे तौभी यहोवा वहां बना रहा, ११ । इस कारण प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तेरे कोप के अनुसार और जो जलजलाहट तू ने उन पर अपने बैर के कारण किई है उस के अनुसार मैं वर्ताव करूंगा और जब मैं तेरा न्याय करूंगा तब अपने को उन मे प्रगट करूंगा ॥ १२ । और तू जानेगा कि मुझ यहोवा तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी है जो तू ने इस्राएल् के पहाड़ों के विषय कही हैं कि वे तो उजड़ गये वे हम ही को दिये गये हैं कि हम उन्हें खा डालें तुम ने अपने मुंह से मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी और मेरे विरुद्ध बहुत बातें कही हैं इसे मै ने सुना है ॥ १४ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब पृथिवी भर में आनन्द होगा तब मै तुझे उजाड़ करूंगा ॥ १५ । तू तो इस्राएल् के घराने के निज भाग के उजड़ जाने के कारण आनन्दित हुआ और मैं तो तुझ से वैसा ही करूंगा हे सेईर् पहाड़ हे एदोम् के सारे देश तू उजाड़ हो जाएगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

३६. फिर हे मनुष्य के सन्तान तू इस्राएल् के पहाड़ों से नबूवत करके कह हे इस्राएल् के पहाड़ो यहोवा का वचन सुनो ॥ २ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि शत्रु ने तो तुम्हारे विषय कहा है कि आहा प्राचीन काल के ऊंचे स्थान अब हमारे अधिकार में आ गये ॥ ३ । इस कारण नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि लोगों ने जो तुम्हें उजाड़ा और चारों ओर से तुम्हें निगल लिया कि तुम बची हुई जातियों का अधिकार हो जाओ और लुतरे जो तुम्हारी चर्चा और साधारण लोग जो तुम्हारी निन्दा करते हैं, ४ । इस कारण हे इस्राएल् के पहाड़ो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है अर्थात् पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों और उजड़े हुए खण्डहरों और निर्जन नगरों से जो चारों ओर की बची हुई जातियों से लुट गये और उन के हंसने के कारण हो गये, ५ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी जलन की आग में बची हुई जातियों के और सारे एदोम् के विरुद्ध कहा है जिन्हों ने अपने मन के पूरे आनन्द और अभिमान से मेरे देश को अपने अधिकार में करने के लिये ठहराया है वह पराया होकर लूटा जाए ॥ ६ । इस कारण इस्राएल् के देश के विषय नबूवत करके पहाड़ों पहाड़ियों नालों और तराइयों से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो तुम ने तो जातियों की निन्दा सही है इस कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से बोला हूं ॥ ७ । सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने यह किरिया खाई है[२] कि निःसन्देह तुम्हारी चारों ओर जो जातियां हैं उन को अपनी निन्दा आप सहनी पड़ेगी ॥

८ । और हे इस्राएल् के पहाड़ो तुम पर डालियां पनपेंगी और उन के फल मेरी प्रजा इस्राएल् के लिये लगेंगे क्योंकि उस का लौट आना निकट है ॥ ९ । और सुनो मैं तुम्हारे पक्ष का हूं और तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करूंगा और तुम जोते बोये जाओगे ॥ १० । और मैं तुम पर बहुत मनुष्यों अर्थात् इस्राएल् के सारे घराने को बसाऊंगा और नगर फिर बसाये और खण्डहर फिर बनाये जाएंगे ॥ ११ । और मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनों को बहुत कर दूंगा और वे बढ़ेंगे और फूलें फलेंगे और मैं तुम को प्राचीन काल की नाईं बसाऊंगा और आरम्भ से अधिक तुम्हारी भलाई करूंगा और तुम जान लोगे कि मै यहोवा हूं ॥ १२ । और मैं ऐसा करूंगा कि मनुष्य अर्थात् मेरी प्रजा इस्राएल् तुम पर चले फिरेगी और वे तुम्हारे स्वामी होंगे और तुम उन का निज भाग होगे और वे फिर तुम्हारे कारण निर्वंश न हो जाएंगे ॥ १३ । प्रभु यहोवा यों कहता

(२) मूल में मैं ने हाथ उठाया है ।

है कि लोग जो तुम से कहा करते हैं कि तू तो मनुष्यों का खानेहारा है और अपने पर बसी हुई जाति निर्वंश कर देता है, १४। इस कारण तू फिर मनुष्यों को न खाएगा और न अपने पर बसी हुई जाति निर्वंश करेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १५। और मैं फिर तेरी निन्दा जाति जाति के लोगों से न सुनवाऊंगा और तुझे जाति जाति की ओर से नामधराई फिर सहनी न पड़ेगी और तू अपने पर बसी हुई जाति को फिर ठोकर न खिलाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१६। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १७। हे मनुष्य के सन्तान जब इस्राएल् का घराना अपने देश में रहता था तब वे उस को अपनी चाल चलन और कामों के द्वारा अशुद्ध करते थे उन की चाल चलन मुझे ऋतुमती की अशुद्धता सी जान पड़ती थी ॥ १८। सो जो खून उन्हों ने देश में किया था और देश को अपनी मूरतों के द्वारा अशुद्ध किया था इस के कारण मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट भड़काई[1], १९। और मैं ने उन्हें जाति जाति में तितर बितर किया और वे देश देश में छितरा गये मैं ने उन की चाल चलन और कामों के अनुसार उन को दण्ड दिया ॥ २०। और जब वे उन जातियों में जिन में पहुंचाये गये पहुंच गये तब मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया क्योंकि लोग उन के विषय कहने लगे ये यहोवा की प्रजा हैं पर अब उस के देश से निकाले गये हैं ॥ २१। पर मैं ने अपने पवित्र नाम की सुधि[2] लिई जिसे इस्राएल् के घराने ने उन जातियों के बीच अपवित्र ठहराया जहां वे गये थे ॥ २२। इस कारण तू इस्राएल् के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल् के घराने मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं पर अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहां तुम गये थे ॥ २३। और मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया जिसे तुम ने उन के बीच अपवित्र किया और जब मैं उन की दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २४। मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा और देशों में से एकट्ठा करूंगा और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा ॥ २५। और मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूंगा ॥ २६। और मैं तुम को नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नया आत्मा उपजाऊंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूंगा ॥ २७। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उन के अनुसार करोगे ॥ २८। और तुम उस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था बसोगे और मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा ॥ २९। और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा और अन्न उपजने की आज्ञा देकर उसे बढ़ाऊंगा और तुम्हारे बीच अकाल न डालूंगा ॥ ३०। और मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा कि जातियों में अकाल के कारण तुम्हारी नामधराई फिर न होगी ॥ ३१। तब तुम अपनी बुरी चाल चलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे स्मरण करके अपने अधर्म्म और घिनौने कामों के कारण अपने अपने से घिन खाओगे ॥ ३२। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तुम जान लो कि मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं करता हे इस्राएल् के घराने अपनी चाल चलन के विषय लजाओ और तुम्हारा मुख काला हो जाए ॥ ३३। प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म्म के कामों से शुद्ध करूंगा तब तुम्हारे नगरों को बसाऊंगा और तुम्हारे खण्डहर फिर बनाये जाएंगे ॥ ३४। और तुम्हारा देश जो सब आने जानेहारों के साम्हने उजाड़ है सो उजाड़ होने की सन्ती जोता बोया जाएगा ॥ ३५। और लोग कहा करेंगे यह देश जो उजाड़ था सो एदेन् की बारी सा हो गया

(१) मूल में उंडेली। (२) मूल में उस पर मैं ने दया किई है।

और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो गये और ढाये गये थे सो गढ़वाले हुए और बसाये गये हैं ॥ ३६। तब जो जातियां तुम्हारे आस पास बची रहेंगी सो जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाये हुए को फिर बनाया और उजाड़ में पेड़ रोपे हैं मुझ यहोवा ही ने यह कहा और करूंगा भी ॥

३७। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरी बिनती इस्राएल् के घराने से फिर किई जाएगी कि मैं उन के लिये यह करूं अर्थात् मैं उन में मनुष्यों की गिनती भेड़ बकरियों की नाईं बढ़ाऊंगा ॥ ३८। जैसे पवित्र समयों की भेड़ बकरियां अर्थात् नियत पर्वों के समय यरूशलेम् में की भेड़ बकरियां अनगिनित होती हैं वैसे ही जो नगर अब खण्डहर हैं सो अनगिनित मनुष्यों के झुण्डों से भर जाएंगे तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

३७. यहोवा की शक्ति[1] मुझ पर हुई और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया और तराई हड्डियों से भरी हुई थी ॥ २। तब उस ने मुझे उन के ऊपर चारों ओर घुमाया और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियां थीं और वे बहुत सूखी थीं ॥ ३। तब उस ने मुझ से पूछा हे मनुष्य के सन्तान क्या ये हड्डियां जी सकतीं मैं ने कहा हे प्रभु यहोवा तू ही जानता है ॥ ४। तब उस ने मुझ से कहा इन हड्डियों से नबूवत करके कह हे सूखी हड्डियो यहोवा का वचन सुनो ॥ ५। प्रभु यहोवा तुम[2] हड्डियों से यों कहता है कि सुनो मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा और तुम जी उठोगी ॥ ६। और मैं तुम्हारे नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा और तुम को चमड़े से ढांपूंगा और तुम में मांस समवाऊंगा और तुम जीओगी और यह जान लोगी कि मैं यहोवा हूं ॥ ७। इस आज्ञा के अनुसार मैं नबूवत करने लगा और नबूवत कर ही रहा था कि आहट आई और भुईंडोल हुआ और ये हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गईं ॥ ८। और मैं देखता रहा कि उन के नसें उपजीं और मांस चढ़ा और वे ऊपर चमड़े से ढंप गईं पर उन में सांस कुछ न थी ॥ ९। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान सांस से नबूवत कर और सांस से नबूवत करके कह हे सांस प्रभु यहोवा यों कहता है कि चारों दिशाओं से आकर इन घात किये हुओं में चल कि ये जी उठें ॥ १०। उस की इस आज्ञा के अनुसार मैं ने नबूवत किई तब सांस उन में आ गई और वे जीकर अपने अपने पांवों के बल खड़े हो गये और बहुत बड़ी सेना हो गई ॥

११। फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान ये हड्डियां इस्राएल् के सारे घराने की उपमा हैं वे तो कहते हैं कि हमारी हड्डियां सूख गईं और हमारी आशा जाती रही हम पूरी रीति से कट चुके हैं ॥ १२। इस कारण नबूवत करके उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे मेरी प्रजा के लोगो सुनो मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूंगा और इस्राएल् के देश में पहुंचा दूंगा ॥ १३। सो जब मैं तुम्हारी कबरें खोलूंगा और तुम को उन से निकालूंगा तब हे मेरी प्रजा के लोगो तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥ १४। और मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊंगा और तुम जीओगे और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा और किया है यहोवा की यही वाणी है ॥

१५। फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १६। हे मनुष्य के संतान एक लकड़ी लेकर उस पर लिख कि यहूदा की और उस के संगी इस्राएलियों की तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर लिख कि यूसुफ की अर्थात् एप्रैम् की और उस के संगी इस्राएलियों की लकड़ी ॥ १७। फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक ही लकड़ी बन जाएं ॥ १८। और जब तेरे लोग तुझ से पूछें कि क्या तू हमें न बताएगा कि इन से तेरा क्या अभिप्राय है, १९। तब उन से कहना प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम् के हाथ में है और इस्राएल् के जो

(१) मूल में यहोवा का हाथ। (२) मूल में इन।

गोत्र उस के संगी हैं उन को, ले यहूदा की लकड़ी से जोड़कर उस के साथ एक ही लकड़ी कर दूंगा और दोनों मेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी ॥ २० । और जिन लकड़ियों पर तू ऐसा लिखेगा वे उन के साम्हने तेरे हाथ में रहें ॥ २१ । और तू उन लोगों से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं इस्राएलियों को उन जातियों में से लेकर जिन में वे चले गये हैं चारों ओर से एकट्ठा करूंगा और उन के निज देश में पहुंचाऊंगा ॥ २२ । और मैं उन को उस देश में अर्थात् इस्राएल् के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूंगा और उन सभों का एक ही राजा होगा और वे फिर दो न रहेंगे न फिर दो राज्यों में कभी बंट जाएंगे ॥ २३ । और न वे फिर अपनी मूरतों और घिनौने कामों वा अपने किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को अशुद्ध करेंगे और मैं उन को उन सब बस्तियों से जहां वे पाप करते थे निकालकर शुद्ध करूंगा और वे मेरी प्रजा होंगे और मैं उन का परमेश्वर हूंगा ॥ २४ । और मेरा दास दाऊद उन का राजा होगा सो उन सभों का एक ही चरवाहा होगा और वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मानकर उन के अनुसार चलेंगे ॥ २५ । और वे उस देश में रहेंगे जिसे मैं ने अपने दास याकूब को दिया था और जिस में तुम्हारे पुरखा रहते थे और वे और उन के बेटे पोते सदा लों उस में बसे रहेंगे और मेरा दास दाऊद सदा लों उन का प्रधान रहेगा ॥ २६ । और मैं उन के साथ शांति की वाचा बांधूंगा वह सदा की वाचा ठहरेगी और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा और उन के बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाये रखूंगा ॥ २७ । और मेरे निवास का तंबू उन के ऊपर तना रहेगा और मैं उन का परमेश्वर हूंगा और वे मेरी प्रजा होंगे ॥ २८ । और जब मेरा पवित्रस्थान उन के बीच सदा के लिये रहेगा तब सब जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल् का पवित्र करनेहारा हूं ॥

३८.

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ । हे मनुष्य के संतान अपना मुख मागोग् देश के गोग् की ओर करके जो रोश् मेशेक् और तूबल् का प्रधान है उस के विरुद्ध नबूवत कर ॥ ३ । और यह कह कि हे गोग् हे रोश् मेशेक् और तूबल् के प्रधान प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं ॥ ४ । और मैं तुझे घुमा ले आऊंगा और तेरे जबड़ों में आंकड़े डालकर तुझे निकालूंगा और तेरी सारी सेना को अर्थात् घोड़ों सवारों को जो सब के सब कवच पहिने हुए होंगे एक बड़ी भीड़ को जो फरी और ढाल लिये हुए सब के सब तलवार चलानेहारे होंगे, ५ । और उन के संग फारस् कूश् और पूत् को जो सब के सब ढाल लिये और टोप लगाये होंगे, ६ । और गोमेर् और उस के सारे दलों को और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों के तोगर्मा के घराने और उस के सारे दलों को निकालूंगा तेरे संग बहुत से देशों के लोग होंगे ॥ ७ । सो तू तैयार हो जा तू और जितनी भीड़ें तेरे पास एकट्ठी हों अपनी तैयारी करना और तू उन का नाथ बनना ॥ ८ । बहुत दिनों के बीते पर तेरी सुधि लिई जाएगी और अन्त के बरसों में तू उस देश में आएगा जो तलवार के बश से छूटा हुआ होगा और जिस के निवासी[1] बहुत सी जातियों में से एकट्ठे होंगे अर्थात् तू इस्राएल् के पहाड़ों पर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं पर वे[2] देश देश के लोगों के बश से छुड़ाये जाकर सब के सब निडर रहेंगे ॥ ९ । और तू चढ़ाई करेगा तू आंधी की नाईं आएगा और अपने सारे दलों और बहुत देशों के लोगों समेत मेघ के समान देश पर छा जाएगा ॥ १० । प्रभु यहोवा यों कहता है कि उस दिन तेरे मन में ऐसी ऐसी बातें आएंगी कि तू एक बुरी युक्ति निकालेगा, ११ । और तू कहेगा कि मैं बिना शहरपनाह के गांवों के देश पर चढ़ाई करूंगा मैं उन लोगों के

(१) मूल में जो । (२) मूल में वह ।

पास जाऊंगा जो चैन से निडर रहते हैं जो सब के सब बिना शहरपनाह और बिना बेंड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं, १२। जिस से मैं छीनकर लूटूं कि तू अपना हाथ उन खण्डहरों पर बढ़ाए जो फिर बसाये गये और उन लोगों के विरुद्ध फेरे जो जातियों में से एकट्ठे हुए और पृथिवी के बीचोबीच[1] रहते हुए ढोर और और संपत्ति रखते हैं॥ १३। शबा और ददान् के लोग और तर्शीश् के व्यापारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से कहेंगे क्या तू लूटने को आता है क्या तू ने धन छीनने सोना चांदी उठाने ढोर और और संपत्ति ले जाने और बड़ी लूट अपनी कर लेने को अपनी भीड़ एकट्ठी[2] किई है॥

१४। इस कारण हे मनुष्य के संतान नबूवत करके गोग् से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस समय मेरी प्रजा इस्राएल् निडर बसी रहेगी क्या तुझे इस का समाचार न मिलेगा॥ १५। और तू उत्तर दिशा के दूर दूर स्थानों से अपने स्थान से आएगा तू और तेरे साथ बहुत सी जातियों के लोग जो सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे अर्थात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना॥ १६। और तू मेरी प्रजा इस्राएल् के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा जैसे बादल भूमि पर छा जाता है सो हे गोग् अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा कि मैं तुझ से अपने देश पर इस लिये चढ़ाई कराऊंगा, कि जब मैं जातियों के देखते तेरे द्वारा अपने को पवित्र ठहराऊंगा तब वे मुझे पहिचानें॥ १७। प्रभु यहोवा यों कहता है कि क्या तू वही नहीं जिस की चर्चा मैं ने प्राचीन काल में अपने दासों के अर्थात् इस्राएल् के उन नबियों के द्वारा किई थी जो उन दिनों में बरसों तक यह नबूवत करते गये कि यहोवा गोग् से इस्राएलियों पर चढ़ाई कराएगा॥ १८। और जिस दिन इस्राएल् के देश पर गोग् चढ़ाई करेगा उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख में प्रगट होगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १९। और मैं ने जलजलाहट और क्रोध की आग में कहा है कि निःसन्देह उस दिन इस्राएल् के देश में बड़ा भुईंडोल होगा, २०। और मेरे दर्शन से समुद्र की मछलियां और आकाश के पक्षी और मैदान के पशु और भूमि पर जितने जीव-जन्तु रेंगते हैं और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं सो सब कांप उठेंगे और पहाड़ गिराये जाएंगे और चढ़ाइयां नाश होंगी[1] और सब भीतें गिरकर मिट्टी में मिल जाएंगी॥ २१। और प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस के विरुद्ध तलवार चलाने के लिये अपने सब पहाड़ों को पुकारूंगा हर एक की तलवार उस के भाई के विरुद्ध उठेगी॥ २२। और मैं उस से मरी और खून के द्वारा मुकद्दमा लडूंगा और उस पर और उस के दलों पर और उन बहुत सी जातियों पर जो उस के पास होंगी मैं बड़ी झड़ी लगाऊंगा और ओले और आग और गन्धक बरसाऊंगा॥ २३। और मैं अपने को महान और पवित्र ठहराऊंगा और बहुत सी जातियों के साम्हने अपने को प्रगट करूंगा और वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं॥

३९. फिर हे मनुष्य के सन्तान गोग् के विरुद्ध नबूवत करके यह कह

कि हे गोग् हे रोश् मेशेक् और तूबल् के प्रधान प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं॥ २। और मैं तुझे घुमा ले आऊंगा और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों से चढ़ा ले आऊंगा और इस्राएल् के पहाड़ों पर पहुंचाऊंगा॥ ३। वहां मैं मारकर तेरा धनुष तेरे बाएं हाथ से गिराऊंगा और तेरी तीरों को तेरे दहिने हाथ से गिरा दूंगा॥ ४। तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इस्राएल् के पहाड़ों पर मार डाला जाएगा और मैं तुझे भांति भांति के मांसाहारी पक्षियों और बनैले जन्तुओं का आहार कर दूंगा॥ ५। तू खेत आएगा क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ ६। मैं मागोग् में और द्वीपों के निडर रहनेहारों के बीच आग लगाऊंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥ ७। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के बीच अपना पवित्र नाम प्रगट करूंगा और

(१) मूल में पृथिवी की नाभि में।
(२) मूल में तुझे।

(१) मूल में गिर जाएंगी।

अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र ठहरने न दूंगा तब जाति जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा इस्राएल् का पवित्र हूं ॥ ८। यह घटना हुआ चाहती वह हो जाएगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है यह वही दिन है जिस की चर्चा मैं ने किई है ॥ ९। और इस्राएल् के नगरों के रहनेहारे निकलेंगे और हथियारों में आग लगाकर जला देंगे क्या ढाल क्या फरी क्या धनुष क्या तीर क्या लाठी क्या बर्छे सब को वे सात बरस तक जलाते रहेंगे ॥ १०। और वे न तो मैदान में लकड़ी बीनेंगे न जंगल में काटेंगे क्योंकि वे हथियारों ही को जलाया करेंगे वे अपने लूटनेहारों को लूटेंगे और अपने छीननेहारों से छीनेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

११। उस समय मैं गोग् को इस्राएल् के देश में कबरिस्तान दूंगा वह ताल की पूरब और होगा और आने जानेहारों की वह तराई कहलाएगी और आने जानेहारों को वहां रुकना पड़ेगा वहां सारी भीड़ भाड़ समेत गोग् को मिट्टी दिई जाएगी और उस स्थान का नाम गोग् की भीड़ भाड़ की तराई पड़ेगा ॥ १२। और इस्राएल् का घराना उन को सात महीने मिट्टी देता रहेगा कि अपने देश को शुद्ध करे ॥ १३॥ देश के सब लोग मिलकर उन को मिट्टी देंगे और जिस समय मेरी महिमा होगी उस समय उन का भी बड़ा नाम होगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १४। तब वे मनुष्यों को अलग करेंगे जो निरन्तर इस काम में लगे रहेंगे अर्थात् देश में घूम घामकर आने जानेहारों के संग होकर उन को जो भूमि के ऊपर पड़े रह जाएंगे देश को शुद्ध करने के लिये मिट्टी देंगे और वे सात महीने के बीते पर ढूंढ़ ढूंढ़कर करने लगेंगे ॥ १५। और देश में आने जानेहारों में से जब कोई किसी मनुष्य की हड्डी देखे तब उस के पास एक चिन्ह खड़ा करेगा यह तब लों बना रहेगा जब लों मिट्टी देनेहारे उसे गोग् की भीड़ भाड़ की तराई में गाड़ न दें ॥ १६। और एक नगर का भी नाम हमोना[1] पड़ेगा। यों देश शुद्ध किया जाएगा ॥

(१) अर्थात्, भीड़भाड़ ।

१७। फिर हे मनुष्य के सन्तान प्रभु यहोवा यों कहता है कि भांति भांति के सब पक्षियों और सब बनैले जन्तुओं को आज्ञा दे कि एकट्ठे होकर आओ मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इस्राएल् के पहाड़ों पर करता हूं चारों दिशा से बटुरो कि तुम मांस खाओ और लोहू पीओ ॥ १८। तुम शूरवीरों का मांस खाओगे और पृथिवी के प्रधानों का और मेढ़ों मेम्नों बकरों बैलों का जो सब के सब बाशान् के तैयार किये हुए होंगे उन सब का लोहू पीओगे ॥ १९। और मेरे उस भोज की चर्बी जो मैं तुम्हारे लिये करता हूं तुम खाते खाते अघा जाओगे और उस का लोहू पीते पीते छक जाओगे ॥ २०। तुम मेरी मेज़ पर घोड़ों रथों शूरवीरों और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २१। और मैं जाति जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूंगा और जाति जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूंगा और मेरा हाथ जो उन पर पड़ेगा देख लेंगे ॥ २२। सो उस दिन से आगे को इस्राएल् का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है ॥ २३। और जाति जाति के लोग भी जान लेंगे कि इस्राएल् का घराना अपने अधर्म्म के कारण बन्धुआई में गया था उन्हों ने तो मुझ से विश्वासघात किया था सो मैं ने अपना मुख उन से फेर[1] लिया और उन को उन के बैरियों के वश कर दिया था और वे सब तलवार से मारे गये ॥ २४। मैं ने तो उन की अशुद्धता और अपराधों ही के अनुसार उन से बर्ताव करके उन से अपना मुख फेर[1] लिया था ॥

२५। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि अब मैं याकूब की बन्धुआई से फेर लाऊंगा और इस्राएल् के सारे घराने पर दया करूंगा और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी ॥ २६। और वे तब अपनी लज्जा उठाएंगे और उन का सारा विश्वासघात जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किया तब उन पर होगा जब वे अपने देश में निडर रहेंगे और कोई

(१) मूल में छिपा ।

उन को न डराएगा, २७। जब कि मैं उन को जाति जाति के बीच से फेर लाऊंगा और उन के शत्रुओं के देशों से एकट्ठा करूंगा और बहुत जातियों की दृष्टि में उन के द्वारा पवित्र ठहरूंगा, २८। तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है क्योंकि मैं ने उन को जाति जाति में बन्धुआ करके फिर उन के निज देश में एकट्ठा किया है और मैं उन में से किसी को फिर परदेश में[१] न छोड़ूंगा ॥ २९। और मैं उन से अपना मुंह फिर कभी न फेर[२] लूंगा क्योंकि मैं ने इस्राएल् के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

४०. हमारी

बन्धुआई के पचीसवें बरस अर्थात् यरूशलेम् नगर के ले लिये जाने के पीछे चौदहवें बरस के पहिले महीने के दसवें दिन को यहोवा की शक्ति[३] मुझ पर हुई और उस ने मुझे वहां पहुंचाया ॥ २। अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इस्राएल् के देश में पहुंचाया और वहां एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर खड़ा किया जिस पर दक्खिन ओर मानो किसी नगर का आकार था ॥ ३। वह मुझे वहीं ले गया और मैं ने क्या देखा कि पीतल का रूप धरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का बांस लिये हुए एक पुरुष फाटक में खड़ा है ॥ ४। उस पुरुष ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊंगा उस सब पर ध्यान दे क्योंकि तू इस लिये यहां पहुंचाया गया है कि मैं तुझे ये बातें दिखाऊं और जो कुछ तू देखे सो इस्राएल् के घराने को बता ॥

५। और भवन के बाहर चारों ओर एक भीत थी और उस पुरुष के हाथ में मापने का बांस था जिस की लम्बाई ऐसे छः हाथ की थी जो साधारण हाथों से चौवा चौवा भर अधिक हैं सो उस ने भीत[४] की मोटाई मापकर बांस भर की पाई फिर उस की ऊंचाई भी मापकर बांस भर की पाई ॥ ६। तब वह उस फाटक के पास आया जिस का मुख पूरब ओर था और उस की सीढ़ी पर चढ़ फाटक की दोनों डेवढ़ियों की चौड़ाई मापकर बांस बांस भर की पाई ॥ ७। और पहरेवाली कोठरियां बांस भर लम्बी और बांस बांस भर चौड़ी थीं और दो दो कोठरियों का अन्तर पांच हाथ का था और फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर थी सो बांस भर की थी ॥ ८। उस ने फाटक का वह ओसारा जो भवन के साम्हने था मापकर बांस भर का पाया ॥ ९। तब उस ने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया और उस के खंभे दो दो हाथ के पाये और फाटक का ओसारा भवन के साम्हने था ॥ १०। और पूरबी फाटक की दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां थीं जो सब एक ही माप की थीं और दोनों ओर के खंभे भी एक ही माप के थे ॥ ११। फिर उस ने फाटक के द्वार की चौड़ाई मापकर दस हाथ की पाई और फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ की पाई ॥ १२। और दोनों ओर की पहरेवाली कोठरियों के आगे हाथ भर का स्थान था और दोनों ओर की कोठरियां छः छः हाथ की थीं ॥ १३। फिर उस ने फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत लों मापकर पचीस हाथ की पाई और द्वार आम्हने साम्हने थे ॥ १४। फिर उस ने साठ हाथ के खंभे मापे[१] और आंगन फाटक के आस पास खंभों तक था ॥ १५। और फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर उस के भीतरी ओसारे के आगे लों पचास हाथ का अन्तर था ॥ १६। और पहरेवाली कोठरियों में और फाटक के भीतर चारों ओर कोठरियों के बीच के खंभों के बीच बीच में झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और खंभों के ओसारे में वैसी ही थीं सो भीतर की चारों ओर खिड़कियां थीं और एक एक खंभे पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे ॥

(१) मूल में. यहां । (२) मूल में छिपा । (३) मूल में यहोवा का हाथ । (४) मूल में बनाई हुई वस्तु ।

(१) मूल में- बनाये ।

१७। फिर वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया और उस आंगन की चारों ओर कोठरियां और एक फर्श बना हुआ था और फर्श पर तीस कोठरियां बनी थीं॥ १८। और यह फर्श अर्थात् निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ और उन की लम्बाई के अनुसार था॥ १९। फिर उस ने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी आंगन के बाहर के आगे लों मापकर सौ हाथ पाये सो पूरब और उत्तर दोनों ओर ऐसा था॥ २०। तब बाहरी आंगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई उस ने मापी॥ २१। और उस की दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां थीं और इस के भी खंभों और खंभों के ओसारे की माप पहिले फाटक के अनुसार थी इस की लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी॥ २२। और इस की भी खिड़कियों और खंभों के ओसारे और खजूरों की माप पूरबमुखी फाटक की सी थी और इस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं और उन के साम्हने इस का खंभों का ओसारा था॥ २३। और भीतरी आंगन की उत्तर और पूरब ओर दूसरे फाटकों के साम्हने फाटक थे और उस ने फाटक फाटक का बीच मापकर सौ हाथ का पाया॥ २४। फिर वह मुझे दक्खिन ओर ले गया और दक्खिन ओर एक फाटक था और उस ने इस के खंभे और खंभों का ओसारा मापकर इन की वैसी ही माप पाई॥ २५। और उन खिड़कियों की नाईं इस के भी और इस के खंभों के ओसारों के चारों ओर खिड़कियां थीं और इस की भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी॥ २६। और इस में भी चढ़ने के लिये सात सीढ़ियां थीं और उन के साम्हने खंभों का ओसारा था और उस की दोनों ओर के खंभों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे॥ २७। और दक्खिन ओर भी भीतरी आंगन का एक फाटक था और उस ने दक्खिन ओर के दोनों फाटकों का बीच मापकर सौ हाथ का पाया॥

२८। फिर वह दक्खिनी फाटक से होकर मुझे भीतरी आंगन में ले गया और उस ने दक्खिनी फाटक को मापकर वैसा ही पाया॥ २९। अर्थात् इस की भी पहरेवाली कोठरियां और खंभे और खंभों का ओसारा सब वैसे ही थे और इस के भी और इस के खंभों के ओसारे के भी चारों ओर खिड़कियां थीं और इस की लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी॥ ३०। और इस का भी चारों ओर के खंभों का ओसारा पचीस हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा था॥ ३१। और इस का खंभों का ओसारा बाहरी आंगन की ओर था और इस के भी खंभों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और इस पर चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥ ३२। फिर वह पुरुष मुझे पूरब की ओर भीतरी आंगन में ले गया और उस ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया॥ ३३। और इस की भी पहरेवाली कोठरियां और खंभे और खंभों का ओसारा सब वैसे ही थे और इस के भी और इस के खंभों के ओसारे के भी चारों ओर खिड़कियां थीं और इस की लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी॥ ३४। और इस का भी खंभों का ओसारा बाहरी आंगन की ओर था और इस के भी दोनों ओर के खंभों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और इस पर भी चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥ ३५। फिर उस पुरुष ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा और उस की वैसी ही माप पाई॥ ३६। और उस के भी पहरेवाली कोठरियां और खंभे और खंभों का ओसारा था और उस के भी चारों ओर खिड़कियां थीं और उस की भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी॥ ३७। और उस के भी खंभे बाहरी आंगन की ओर थे और उन पर भी दोनों ओर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और उस में भी चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥

३८। फिर फाटकों के पास के खंभों के निकट द्वार समेत कोठरी थी जहां होमबलि धोया जाता था॥ ३९। और होमबलि पापबलि और दोषबलि के पशुओं के बध करने के लिये फाटक के ओसारे के पास उस की दोनों ओर दो दो मेज़ें थीं॥ ४०। फाटक की एक बाहरी अलंग पर अर्थात् उत्तरी

फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेजें थीं और उस की दूसरी बाहरी अलंग पर जो फाटक के ओसारे के पास थी दो मेजें थीं ॥ ४१ । फाटक की दोनों अलंगों पर चार चार मेजें थीं सो सब मिलकर आठ मेजें थीं जो बलिपशु बध करने के लिये थीं ॥ ४२ । फिर होमबलि के लिये तराशे हुए पत्थर की चार मेजें थीं जो डेढ़ डेढ़ हाथ लम्बी डेढ़ डेढ़ हाथ चौड़ी और हाथ भर ऊंची थीं उन पर होमबलि और मेलबलि के पशुओं को बध करने के हथियार रखे जाते थे ॥ ४३ । और भीतर चारों ओर चौवे भर की अंकड़ियां लगी थीं और मेजों पर चढ़ावे का मांस रखा हुआ था ॥ ४४ । और भीतरी आंगन की उत्तरी फाटक की अलंग के बाहर गानेहारों की कोठरियां थीं जिन के द्वार दक्खिन ओर थे और पूरबी फाटक की अलंग पर एक कोठरी थी जिस का द्वार उत्तर ओर था ॥ ४५ । उस ने मुझ से कहा यह कोठरी जिस का द्वार दक्खिन ओर है उन याजकों के लिये है जो भवन की चौकसी करते हैं ॥ ४६ । और जिस कोठरी का द्वार उत्तर ओर है सो उन याजकों के लिये है जो वेदी की चौकसी करते हैं ये तो सादोक् की सन्तान हैं और लेवीयों में से यहोवा की सेवा टहल करने को उस के समीप जाते हैं ॥ ४७ । फिर उस ने आंगन को मापकर उसे चौकोना अर्थात् सौ हाथ लंबा और सौ हाथ चौड़ा पाया और भवन के साम्हने वेदी थी ॥

४८ । फिर वह मुझे भवन के ओसारे को ले गया और ओसारे की दोनों ओर के खंभों को मापकर पांच पांच हाथ का पाया और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई तीन तीन हाथ की थी ॥ ४९ । ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की थी और उस पर चढ़ने को सीढ़ियां थीं और दोनों ओर के खंभों के पास लाठें थीं ॥

४१. फिर वह मुझे मन्दिर के पास ले गया और उस की दोनों ओर के खंभों को मापकर छः छः हाथ चौड़े पाया यह तो तम्बू की चौड़ाई थी ॥ २ । और द्वार की चौड़ाई दस हाथ की थी और द्वार की दोनों अलंगें पांच पांच हाथ की थीं और उस ने मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ की और उस की चौड़ाई बीस हाथ की पाई ॥ ३ । तब उस ने भीतर जाकर द्वार के खंभों को मापा और दो दो हाथ के पाया और द्वार छ हाथ का था और द्वार की चौड़ाई सात हाथ की थी ॥ ४ । तब उस ने भीतर के भवन की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के साम्हने मापकर बीस बीस हाथ की पाई और उस ने मुझ से कहा यह तो परमपवित्रस्थान है ॥ ५ । फिर उस ने भवन की भीत को मापकर छः हाथ की पाया और भवन के आस पास चार चार हाथ की चौड़ी बाहरी कोठरियां थीं ॥ ६ । और ये बाहरी कोठरियां तिमहली थीं और एक एक महल में तीस तीस कोठरियां थीं और भवन के आस पास जो भीत इस लिये थी कि बाहरी कोठरियां उस के सहारे में हों उसी में कोठरियों की कड़ियां पैठाई हुई थीं और भवन की भीत के सहारे में न थीं ॥ ७ । और भवन के आस पास जो कोठरियां बाहर थीं उन में से जो ऊपर थीं वे अधिक चौड़ी थीं अर्थात् भवन के आस पास जो कुछ बना था सो जैसे जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया वैसे वैसे चौड़ा होता गया इस रीति इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी और लोग नीचले महल से बिचले में होकर उपरले महल को चढ़ जाते थे ॥ ८ । फिर मैं ने भवन के आस पास ऊंची भूमि देखी और बाहरी कोठरियों की ऊंचाई जोड़ लों छः हाथ के बांस की थीं ॥ ९ । बाहरी कोठरियों के लिये जो भीत थी सो पांच हाथ मोटी थी और जो रह गया था सो भवन की बाहरी कोठरियों का स्थान था ॥ १० । और बाहरी कोठरियों के बीच बीच भवन के आस पास बीस हाथ का अन्तर था ॥ ११ । और बाहरी कोठरियों के द्वार उस स्थान की ओर थे जो रह गया था अर्थात् एक द्वार उत्तर ओर दूसरा दक्खिन ओर था और जो स्थान रह गया उस की चौड़ाई चारों ओर पांच पांच हाथ की थी ॥ १२ । फिर जो भवन पच्छिम ओर के भिन्न

स्थान के साम्हने था सो सत्तर हाथ चौड़ा था और भवन के आस पास की भीत पांच हाथ मोटी थी और उस की लम्बाई नव्वे हाथ की थी॥ १३। तब उस ने भवन की लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई और भीतों समेत भिन्न स्थान की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई॥ १४। और भवन का साम्हना और भिन्न स्थान की पूरबी अलंग सौ सौ हाथ चौड़ी ठहरीं॥

१५। फिर उस ने पीछे के भिन्न स्थान के आगे की भीत की लम्बाई जिस की दोनों ओर छज्जे थे मापकर सौ हाथ की पाई और भीतरी भवन और आंगन के ओसारों को भी मापा॥ १६। तब उस ने डेवढ़ियों और झिलमिलीदार खिड़कियों और आस पास के तीनों महलों के छज्जों को मापा जो डेवढ़ी के साम्हने थे और चारों ओर उन की तखताबन्दी हुई थी और भूमि से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस पास सब कहीं तखताबन्दी हुई थी॥ १७। फिर उस ने द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन लों और उस के बाहर भी और आस पास की सारी भीत के भीतर और बाहर भी मापा॥ १८। और उस में करूब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो दो करूबों के बीच एक एक खजूर का पेड़ था और करूबों के दो दो मुख थे॥ १९। इस प्रकार से एक एक खजूर की एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ था और दूसरी ओर जवान सिंह का मुख बनाया हुआ था इसी रीति सारे भवन की चारों ओर बना था॥ २०। भूमि से लेकर द्वार के ऊपर लों करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे मन्दिर की भीत इसी भांति बनी हुई थी॥ २१। भवन के द्वारों के बाजू चौपहल थे और पवित्रस्थान के साम्हने का रूप मन्दिर का सा था॥ २२। वेदी काठ की बनी थी उस की ऊंचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ की थी और उस के कोने और उस का सारा पाट और अलंगें भी काठ की थीं और उस ने मुझ से कहा यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज़ है॥ २३। और मन्दिर और पवित्रस्थान के द्वारों के दो दो किवाड़ थे॥ २४। और एक एक किवाड़ में दो दो मुड़नेवाले पल्ले थे एक एक किवाड़ के लिये दो दो पल्ले॥ २५। और जैसे मन्दिर की भीतों में करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे वैसे ही उस के किवाड़ों में भी थे और ओसारे की बाहरी ओर लकड़ी की मोटी मोटी धरनें थीं॥ २६। और ओसारे की दोनों ओर झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और खजूर के पेड़ खुदे थे और भवन की बाहरी कोठरियां और मोटी मोटी धरनें भी थीं॥

४२. फिर

४२. फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर की ओर ले गया और मुझे उन दो कोठरियों के पास ले गया जो भिन्न स्थान और भवन दोनों के बाहर उन की उत्तर ओर थीं॥ २। सौ हाथ की दूरी पर उत्तरी द्वार था और चौड़ाई पचास हाथ की थी॥ ३। भीतरी आंगन के बीस हाथ के अन्तर और बाहरी आंगन के फर्श दोनों के साम्हने तीनों महलों में छज्जे थे॥ ४। और कोठरियों के साम्हने भीतर की ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा एक मार्ग था और हाथ भर का एक मार्ग था और कोठरियों के द्वार उत्तर ओर थे॥ ५। और उपरली कोठरियां छोटी थीं अर्थात् छज्जों के कारण वे निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं॥ ६। क्योंकि वे तिमहली थीं और आंगनों के से उन के खंभे न थे इस कारण उपरली कोठरियां निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं॥ ७। और जो भीत कोठरियों के बाहर उन के पास पास थी अर्थात् कोठरियों के साम्हने बाहरी आंगन की ओर थी उस की लम्बाई पचास हाथ की थी॥ ८। क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियां पचास हाथ लम्बी थीं और मन्दिर के साम्हने की अलंग सौ हाथ की थी॥ ९। और इन कोठरियों के नीचे पूरब की ओर मार्ग था जहां लोग बाहरी आंगन से इन में जाते थे॥ १०। आंगन की भीत की चौड़ाई में पूरब की ओर भिन्न स्थान और भवन दोनों के साम्हने कोठरियां थीं॥ ११। और उन के साम्हने का मार्ग उत्तरी कोठरियों के मार्ग सा था लम्बाई चौड़ाई निकास ढंग और द्वार उन के से थे॥

१२। और दक्खिनी कोठरियों के द्वारों के अनुसार मार्ग के सिरे पर द्वार था अर्थात् पूरब की ओर की भीत के साम्हने का जहां लोग उन में घुसते थे ॥ १३। फिर उस ने मुझ से कहा ये उत्तरी और दक्खिनी कोठरियां जो भिन्न स्थान के साम्हने हैं सो वे ही पवित्र कोठरियां हैं जिन में यहोवा के समीप जानेहारे याजक परमपवित्र वस्तुएं खाया करेंगे वे परमपवित्र वस्तुएं और अन्नबलि और पापबलि और दोषबलि वहीं रक्खेंगे क्योंकि वह स्थान पवित्र है ॥ १४। जब जब याजक लोग भीतर जाएंगे तब तब निकलने के समय वे पवित्रस्थान से बाहरी आंगन में यों ही न निकलेंगे अर्थात् वे पहिले अपने सेवा टहल के वस्त्र पवित्रस्थान में रख देंगे क्योंकि ये कोठरियां पवित्र हैं तब वे और वस्त्र पहिनकर साधारण लोगों के स्थान में जाएंगे ॥

१५। जब वह भीतरी भवन को माप चुका तब मुझे पूरब दिशा के फाटक के मार्ग से बाहर ले जाकर बाहर का स्थान चारों ओर मापने लगा ॥ १६। उस ने पूरबी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया ॥ १७। उस ने उत्तरी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया ॥ १८। उस ने दक्खिनी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया ॥ १९। उस ने पच्छिमी अलंग को घूम उस को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया ॥ २०। उस ने उस स्थान की चारों अलंगें मापीं और उस की चारों ओर भीत थी वह पांच सौ बांस लम्बा और पांच सौ बांस चौड़ा था भीत इस लिये बनी थी कि पवित्र अपवित्र अलग अलग रहें ॥

४३. फिर वह मुझे उस फाटक के पास ले गया जो पूरबमुखी था ॥ २। तब इस्राएल् के परमेश्वर का तेज पूरब दिशा से आया और उस की वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी हुई और उस के तेज से पृथिवी प्रकाशित हुई ॥ ३। और यह दर्शन उस दर्शन के सरीखा था जो मैं ने नगर के नाश करने को आते समय देखा था फिर ये दोनों दर्शन उस के समान थे जो मैं ने कबार् नदी के तीर पर देखा था। और मैं मुंह के बल गिर पड़ा ॥ ४। तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूरबमुखी था भवन में आ गया ॥ ५। और आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में पहुंचाया और यहोवा का तेज भवन में भरा था ॥ ६। तब मैं ने एक जन की सुनी जो भवन में से मुझ से बोल रहा था फिर एक पुरुष मेरे पास खड़ा हुआ ॥ ७। उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान यहोवा की यह वाणी है कि यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पांव रखने का स्थान है जहां मैं इस्राएल् के बीच सदा वास किये रहूंगा और न तो इस्राएल् का घराना और न उस के राजा अपने व्यभिचार से वा अपने ऊंचे स्थानों में अपने राजाओं की लोथों के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएंगे ॥ ८। वे तो अपनी डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास और अपने द्वार के बाजू मेरे द्वार के बाजुओं के निकट बनाते थे और मेरे और उन के बीच केवल भीत रही थी और उन्हों ने अपने घिनौने कामों से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया इस लिये मैं ने कोप करके उन्हें नाश किया ॥ ९। सो अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं की लोथें मेरे सम्मुख से दूर कर दें तब मैं उन के बीच सदा वास किये रहूंगा ॥

१०। हे मनुष्य के संतान तू इस्राएल् के घराने को इस भवन का नमूना दिखा कि वे अपने अधर्म्म के कामों से लजाएं फिर वे उस नमूने को मापें ॥ ११। और यदि वे अपने सारे कामों से लजाएं तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप और इस के बाहर भीतर आने जाने के मार्ग और इस के सब आकार और विधियां और नियम बतलाना और उन के साम्हने लिख रखना जिस से वे इस का सारा आकार और इस की सब विधियां स्मरण करके उन के अनुसार करें ॥ १२। भवन का नियम तो यह है कि पहाड़ की चोटी उस के चारों ओर के सिवाने के भीतर परमपवित्र है देख भवन का नियम यही है ॥

१३। और ऐसे हाथ के लेखे से जो साधारण हाथ से चौवा भर अधिक हो वेदी की माप यह है अर्थात् उस का आधार[1] एक हाथ का और उस की चौड़ाई एक हाथ की और उस की चारों ओर की छोर पर की पटरी एक चौवे की और यह वेदी का पाया ऐसा हो ॥ १४। और इस भूमि पर धरे हुए आधार[1] से लेकर निचली कुर्सी लों दो हाथ की ऊंचाई रहे और उस की चौड़ाई हाथ भर की हो और छोटी कुर्सी से लेकर बड़ी कुर्सी लों चार हाथ हों और उस की चौड़ाई हाथ भर की हो ॥ १५। और उपरला भाग चार हाथ ऊंचा हो और वेदी पर जलाने के स्थान से चार सींग ऊपर की ओर निकले हों ॥ १६। और वेदी पर जलाने का स्थान चौकोन अर्थात् बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो ॥ १७। और निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी हो और उस की चारों ओर की पटरी आध हाथ की हो और उस का आधार चारों ओर हाथ भर का हो और उस की सीढ़ी उस की पूरब ओर हो ॥

१८। फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन होमबलि चढ़ाने और लोहू छिड़कने के लिये वेदी बनाई जाए उस दिन की विधियां ये ठहरें ॥ १९। अर्थात् लेवीय याजक लोग जो सादोक् के सन्तान हैं और मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं उन्हें तू पापबलि के लिये एक बछड़ा देना प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २०। तब तू उस के लोहू में से कुछ लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर लगाना इस प्रकार से उस के लिये प्रायश्चित्त करने के द्वारा उस को पवित्र करना ॥ २१। तब पापबलि के बछड़े को लेकर भवन के पवित्रस्थान के बाहर ठहराए हुए स्थान में जला देना ॥ २२। और दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके चढ़ाना और जैसे वेदी बछड़े के द्वारा पवित्र किई जाए वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी किई जाए ॥ २३। जब तू उसे पवित्र कर चुके तब एक निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाना ॥ २४। तू इन्हें यहोवा के साम्हने ले आना और याजक लोग उन पर लोन डाल उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएं ॥ २५। सात दिन लों तू दिन दिन पापबलि के लिये एक बकरा तैयार करना और निर्दोष बछड़ा और भेड़ों में से निर्दोष मेढ़ा भी तैयार किया जाए ॥ २६। सात दिन लों याजक लोग वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें इसी भांति उस का संस्कार हो ॥ २७। और जब वे दिन समाप्त हों तब आठवें दिन और उस से आगे को याजक लोग तुम्हारे होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें तब मैं तुम से प्रसन्न हूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

(१) मूल में गोद।

४४. फिर

वह मुझे पवित्रस्थान की उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया जो पूरबमुखी है और वह बन्द था ॥ २। तब यहोवा ने मुझ से कहा यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए कोई इस से होकर भीतर जाने न पाए क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा इस से होकर भीतर आया है इस कारण यह बन्द रहे ॥ ३। प्रधान तो प्रधान होने के कारण मेरे साम्हने भोजन करने को वहां बैठेगा वह फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाए और इसी से होकर निकले ॥ ४। फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के साम्हने ले गया तब मैं ने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है तब मैं मुंह के बल गिर पड़ा ॥ ५। तब यहोवा ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान ध्यान देकर अपनी आंखों से देख और जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब विधियों और नियमों के विषय कहूं सो सब अपने कानों से सुन और भवन के पैठाव और पवित्रस्थान के सब निकासों पर ध्यान दे ॥ ६। और उन बलवाइयों अर्थात् इस्राएल् के घराने से कहना प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल् के घराने अपने सब घिनौने कामों से अब हाथ उठा ॥ ७। जब तुम

मेरा भोजन अर्थात् चर्बी और लोहू चढ़ाते थे तब तुम बिराने लोगों को जो मन और तन दोनों के खतनाहीन थे मेरे पवित्रस्थान में आने और मेरा भवन अपवित्र करने को ले आते थे और उन्हों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिस से तुम्हारे सब घिनौने काम बढ़ गये॥ ८। और तुम ने आप मेरी पवित्र वस्तुओं की रक्षा न किई वरन मेरे पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा करनेहारे अपने ही लिये ठहराये॥ ९। प्रभु यहोवा यों कहता है कि इस्राएलियों के बीच जितने बिराने लोग हों जो मन और तन दोनों के खतनाहीन हों उन में से कोई मेरे पवित्रस्थान में न आने पाएं॥ १०। फिर लेवीय लोग जो उस समय मुझ से दूर हो गये थे जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों के पीछे भटक गये थे सो अपने अधर्म्म का भार उठाएंगे॥ ११। पर वे मेरे पवित्रस्थान में टहलुए होकर भवन के फाटकों का पहरा देनेहारे और भवन के टहलुए रहें होमबलि और मेलबलि के पशु वे लोगों के लिये बध करें और उन की सेवा टहल करने को वे उन के साम्हने खड़े हुआ करें॥ १२। वे तो इस्राएल् के घराने की सेवा टहल उन की मूरतों के साम्हने करते थे और उन के ठोकर खाने और अधर्म्म में फंसने का कारण हो गये थे इस कारण मैं ने उन के विषय किरिया खाई है कि वे अपने अधर्म्म का भार उठाएं प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १३। सो वे मेरे समीप न आएं और न मेरे लिये याजक का काम करने और न मेरी किसी पवित्र वस्तु वा किसी परमपवित्र वस्तु को छूने पाएं, वे अपनी लज्जा का और जो घिनौने काम उन्हों ने किये उन का भार उठाएं॥ १४। तौभी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई वस्तुओं के रक्षक ठहराऊंगा उस में सेवा का जितना काम हो और जो कुछ करना हो उस के करनेहारे वे ही हों॥

१५। फिर लेवीय याजक जो सादोक् के सन्तान हैं और उन्हों ने उस समय मेरे पवित्रस्थान की रक्षा किई जब इस्राएली मेरे पास से भटक गये थे वे तो मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप आया करें और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १६। वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें और मेरी मेज के पास मेरी सेवा टहल करने को आएं और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें॥ १७। और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों से होकर जाया करें तब सन के वस्त्र पहिने हुए जाएं और जब वे भीतरी आंगन की फाटकों में वा उस के भीतर सेवा टहल करते हों तब कुछ ऊन के वस्त्र न पहिनें॥ १८। वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियां पहिनें और कमर में सन की जांघियां बांधे हों जिस कपड़े से पसीना होता है उसे वे कमर में न बांधें॥ १९। और जब वे बाहरी आंगन में लोगों के पास निकलें तब जो वस्त्र पहिने हुए वे सेवा टहल करते थे उन्हें उतारकर और पवित्र कोठरियों में रखकर दूसरे वस्त्र पहिनें जिस से लोग उन के वस्त्रों के कारण पवित्र न ठहरें॥ २०। और वे न तो सिर मुण्डाएं और न बाल लम्बे होने दें केवल अपने बाल कटाएं॥ २१। और भीतरी आंगन में जाने के समय कोई याजक दाखमधु न पीए॥ २२। और वे विधवा वा छोड़ी हुई स्त्री को ब्याह न लें केवल इस्राएल् के घराने के वंश में से कुंवारी वा ऐसी ही विधवा जो याजक की स्त्री हुई हो ब्याह लें॥ २३। और वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें॥ २४। और सब जब कोई मुकद्दमा हो तब तब न्याय करने को वे ही बैठें और मेरे नियमों के अनुसार वे न्याय करें और मेरे सब नियत पर्व्वों के विषय वे मेरी व्यवस्था और विधियां पालन करें और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानें॥ २५। और वे किसी मनुष्य की लोथ के पास न जाएं कि अशुद्ध हो जाएं केवल माता पिता बेटे बेटी भाई और ऐसी बहिन की लोथ के कारण जिस का विवाह न हुआ हो वे अशुद्ध हो सकते हैं॥ २६। और जब वे फिर शुद्ध हो जाएं तब से उन के लिये सात दिन गिने जाएं॥ २७। और जिस दिन वे पवित्रस्थान अर्थात् भीतरी आंगन

(१) मूल में मरे हुआ।

में सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करे उस दिन अपने लिये पापबलि चढ़ाए प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ २८। और उन के एक निज भाग तो होगा अर्थात् उन का भाग मैं ही हूं तुम उन्हें इस्राएल् के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उन की निज हो उन की निज भूमि मैं ही हूं ॥ २९। वे अन्नबलि पापबलि और दोषबलि खाया करें और इस्राएल् में जो वस्तु अर्पण किई जाए वह उन को मिला करे॥ ३०। और सब प्रकार की सब से पहिली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो तुम उठाकर चढ़ाओ याजकों को मिला करे और नवान्न का पहिला गूंधा हुआ आटा याजक को दिया करना जिस से तुम लोगों के घर में आशीष हो ॥ ३१। जो कुछ अपने आप मरे वा फाड़ा गया हो चाहे पक्षी हो चाहे पशु हो उस का मांस याजक न खाएं ॥

४५. फिर जब तुम चिट्ठी डालकर देश को बांटो तब देश में से एक भाग पवित्र जानकर यहोवा को अर्पण करना। उस की लम्बाई पचीस हजार बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो वह भाग अपने चारों ओर के सिवाने लों पवित्र ठहरे॥ २। उस में से पवित्रस्थान के लिये पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी चौकोनी भूमि हो और उस की चारों ओर पचास पचास हाथ चौड़ी भूमि छूटी पड़ी रहे॥ ३। सो तुम पचीस हजार बांस लम्बी और दस हजार बांस चौड़ी भूमि को मापना और उस में पवित्रस्थान हो जो परमपवित्र है ॥ ४। वह भाग देश में से पवित्र ठहरे जो याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएं उन के लिये वह हो उन के घरों के लिये स्थान और पवित्रस्थान के लिये पवित्र स्थान हो ॥ ५। फिर पचीस हजार बांस लम्बा और दस हजार बांस चौड़ा एक भाग भवन की सेवा टहल करनेहारे लेवीयों के लिये बीस कोठरियों के लिये हो ॥ ६। फिर तुम पवित्र अर्पण किये हुए भाग के पास पांच हजार बांस चौड़ी और पचीस हजार बांस लम्बी नगर के लिये विशेष भूमि ठहराना वह इस्राएल् के सारे घराने के लिये हो॥ ७। और प्रधान का निज भाग पवित्र अर्पण किये हुए भाग और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् दोनों की पच्छिम और पूरब दिशाओं में दोनों भागों के साम्हने हो और उस की लम्बाई पच्छिम से लेकर पूरब लों उन दो भागों में से किसी एक के तुल्य हो॥ ८। इस्राएल् के देश में प्रधान की तो यही निज भूमि हो और मेरे ठहराये हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अन्धेर न करें पर इस्राएल् के घराने को उस के गोत्रों के अनुसार देश मिले ॥

९। फिर प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल् के प्रधानो बस करो उपद्रव और उत्पात को दूर करो और न्याय और धर्म्म के काम किया करो मेरी प्रजा के लोगों का निकाल देना छोड़ दो प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥ १०। तुम्हारे पास सच्चा तराजू सच्चा एपा सच्चा बत् रहे ॥ ११। एपा और बत् दोनों एक ही नाप के हों अर्थात् दोनों में होमेर् का दसवां अंश समाए दोनों की नाप होमेर् के लेखे से हो ॥ १२। और शेकेल् बीस गेरा का हो और तुम्हारा माने चाहे बीस चाहे पचीस चाहे पन्द्रह शेकेल् का हो ॥ १३। तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो अर्थात् गेहूं के होमेर् में से एपा का छठवां अंश और जव के होमेर् में से एपा का छठवां अंश देना॥ १४। और तेल का नियत अंश कोर् में से बत् का दसवां अंश हो कोर् तो दस बत् अर्थात् एक होमेर् के तुल्य है क्योंकि होमेर् दस बत् का होता है ॥ १५। और इस्राएल् की उत्तम उत्तम चराइयों से दो दो सौ भेड़ बकरियों में से एक भेड़ वा बकरी दिई जाए। ये सब वस्तुएं अन्नबलि होमबलि और मेलबलि के लिये दिई जाएं जिस से उन के लिये प्रायश्चित्त किया जाए प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ १६। इस्राएल् के प्रधान के लिये देश के सब लोग यह भेंट दें ॥ १७। पर्वों नये चांद के दिनों विश्रामदिनों और इस्राएल् के घराने के सब नियत समयों में होमबलि अन्नबलि और अर्घ देना प्रधान

ही का काम हो इस्राएल् के घराने के लिये प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि अन्नबलि होमबलि और मेलबलि तैयार करे ॥

१८। प्रभु यहोवा ने यों कहा कि पहिले महीने के पहिले दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र करना ॥ १९। याजक इस पापबलि के लोहू में से कुछ लेकर भवन के चौखट के बाजुओं और वेदी की कुर्सी के चारों कोनों और भीतरी आंगन के फाटक के बाजुओं पर लगाए॥ २०। फिर महीने के सातवें दिन को सब भूल से पड़े हुओं और भोलों के लिये यों ही करना इसी प्रकार से भवन के लिये प्रायश्चित्त करना ॥ २१। पहिले महीने के चौदहवें दिन को तुम लोगों का फसह हुआ करे वह सात दिन का पर्व हो उस में अखमीरी रोटी खाई जाए ॥ २२। और उसी दिन प्रधान अपने और प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछड़ा पापबलि के लिये तैयार करे ॥ २३। और सातों दिन वह यहोवा के लिये होमबलि तैयार करे अर्थात् एक एक दिन सात सात निर्दोष बछड़े और सात सात निर्दोष मेढ़े और दिन दिन एक एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे, २४। और बछड़े और मेढ़े पीछे वह एपा भर अन्नबलि और एपा पीछे हीन् भर तेल तैयार करे ॥ २५। सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन लों अर्थात् पर्व के दिनों मे वह पापबलि होमबलि अन्नबलि और तेल इसी विधि के अनुसार किया करे ॥

४६. प्रभु यहोवा यों कहता है कि भीतरी आंगनका पूरबमुखी फाटक काम काज के छओं दिन बन्द रहे पर विश्रामदिन को खुला रहे और नये चांद के दिन भी खुला रहे ॥ २। और प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक बाजू के पास खड़ा हो जाए और याजक उस का होमबलि और मेलबलि तैयार करें और वह फाटक की डेवढ़ी पर दण्डवत् करे तब वह बाहर जाए और फाटक सांझ से पहिले बन्द न किया जाए ॥ ३। और लोग विश्राम और नये चांद के दिनों में उस फाटक के द्वार में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करें ॥ ४। और जो होमबलि प्रधान विश्रामदिन में यहोवा के लिये चढ़ाए सो भेड़ के छः निर्दोष बच्चों का और एक निर्दोष मेढ़े का हो ॥ ५। और अन्नबलि यह हो अर्थात् मेढ़े पीछे एपा भर अन्न और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन् भर तेल ॥ ६। और नये चांद के दिन वह एक निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छः बच्चे और एक मेढ़ा चढ़ाए ये सब निर्दोष हों ॥ ७। और बछड़े और मेढ़े दोनों के साथ वह एक एक एपा अन्नबलि तैयार करे और भेड के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन् भर तेल ॥ ८। और जब प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के ओसारे से होकर जाए और उसी मार्ग से निकल जाए ॥ ९। पर जब साधारण लोग नियत समयों में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करने आएं तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत् करने को भीतर आए सो दक्खिनी फाटक से होकर निकले और जो दक्खिनी फाटक से होकर भीतर आए सो उत्तरी फाटक से होकर निकले अर्थात् जो जिस फाटक से भीतर आया हो सो उसी फाटक से न लौटे अपने साम्हने ही निकल जाए ॥ १०। और सब वे भीतर आएं तब प्रधान उन के बीच होकर आएं और जब वे निकलें तब वे एक साथ निकलें ॥ ११। और पर्वों और और नियत समयों में का अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर और मेढ़े पीछे एपा भर का हो और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति का और एपा पीछे हीन् भर तेल॥ १२। फिर जब प्रधान होमबलि वा मेलबलि को स्वेच्छाबलि करके यहोवा के लिये तैयार करे तब पूरबमुखी फाटक उस के लिये खोला जाए और वह अपना होमबलि वा मेलबलि वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रामदिन को करता है तब वह निकले और उस के निकलने के पीछे फाटक बन्द किया जाए ॥ १३। और तू दिन दिन बरस भर का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के होमबलि के लिये तैयार करना यह भोर भोर को तैयार किया जाए ॥ १४। और भोर भोर को उस

के साथ एक अन्नबलि तैयार करना अर्थात् एपा का छठवां अंश और मैदा में मिलाने के लिये हीन् भर तेल की तिहाई यह यहोवा के लिये सदा का अन्नबलि नित्य विधि के अनुसार चढ़ाया जाए ॥ १५। भेड़ का बच्चा अन्नबलि और तेल भोर भोर को नित्य होमबलि करके चढ़ाया जाए ॥

१६। प्रभु यहोवा यों कहता है कि यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे तो वह उस का भाग होकर पोतों को भी मिले भाग के नियम के अनुसार वह उन का भी निज धन ठहरे ॥ १७। पर यदि वह अपने भाग में से अपने किसी कर्म्मचारी को कुछ दे तो वह छुट्टी के बरस लों तो उस का बना रहे पीछे प्रधान को लौटा दिया जाए और उस का निज भाग उस के पुत्रों को मिले ॥ १८। और प्रधान प्रजा का कोई भाग ऐसा न ले कि अन्धेर से उन की निज भूमि छीन ले वह अपने पुत्रों को अपनी ही निज भूमि में से भाग दे ऐसा न हो कि मेरी प्रजा के लोग अपनी अपनी निज भूमि से तितर बितर हो जाएं ॥

१९। फिर वह मुझे फाटक की एक अलंग में के द्वार से होकर याजकों की उत्तरमुखी पवित्र कोठरियों में ले गया और पच्छिम ओर के कोने में एक स्थान था ॥ २०। तब उस ने मुझ से कहा यह वह स्थान है जिस में याजक लोग दोषबलि और पापबलि के मांस को सिझाएं और अन्नबलि को पकाएं न हो कि उन्हें बाहरी आंगन में ले जाने से साधारण लोग पवित्र ठहरें ॥ २१। तब उस ने मुझे बाहरी आंगन में ले जाकर उस आंगन के चारों कोनों में फिराया और आंगन के एक एक कोने में एक एक ओटा बना था ॥ २२। अर्थात् आंगन के चारों कोनो में चालीस हाथ लम्बे और तीस हाथ चौड़े ओटे थे चारों कोनों के ओटों की एक ही माप थी ॥ २३। और चारों के भीतर चारों ओर भीत[1] थी और चारों ओर की भीतों[2] के नीचे सिझाने के चूल्हे बने हुए थे ॥ २४। तब उस ने मुझ से कहा सिझाने के घर जहां भवन के टहलुए लोगों के बलिदानों को सिझाएं सो ये ही हैं ॥

(१) मूल में पांति। (२) मूल में पांतियो।

४७. फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूरब ओर बह रहा था भवन का द्वार तो पूरबमुखी था और सोता भवन के पूरब और वेदी के दक्खिन नीचे से निकलता था ॥ २। तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूरबमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया और दक्खिनी अलंग से जल पसीजकर बह रहा था ॥ ३। जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिये हुए पूरब ओर निकला तब उस ने भवन से लेकर हजार हाथ तक उस सोते को मापा और मुझ से उसे पार कराया और जल टखनों तक था ॥ ४। फिर वह हजार हाथ मापकर मुझ से पार कराया और जल घुटनों तक था फिर हजार हाथ मापकर मुझ से पार कराया और जल कमर तक था ॥ ५। फिर उस ने एक हजार हाथ मापे तो ऐसी नदी हो गई थी जिस के पार मैं न जा सका क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था अर्थात् ऐसी नदी थी जिस के पार कोई न जा सके ॥

६। तब उस ने मुझ से पूछा कि हे मनुष्य के सन्तान क्या तू ने यह देखा है फिर मुझे नदी के तीर लौटाकर पहुंचा दिया ॥ ७। लौटकर मैं ने क्या देखा कि नदी के दोनों तीरों पर बहुत ही वृक्ष हैं ॥ ८। तब उस ने मुझ से कहा यह सोता पूरबी देश की ओर बह रहा है और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा और यह भवन से निकला हुआ सोता ताल में मिल जाएगा और उस का जल मीठा हो जाएगा ॥ ९। और जहां जहां यह नदी[1] बहे वहां वहां सब प्रकार के बहुत अंडे देनेहारे जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां बहुत ही हो जाएंगी क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है और ताल का जल मीठा हो जाएगा और जहां कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे ॥ १०। और ताल के तीर पर मछवे खड़े रहेंगे एनगदी से लेकर

(१) मूल में दो नदियां।

यिरूशलेम् लों जाल फैलाये जाएंगे और मछवों को भांति भांति की और महासागर की सी अनगिनित मछलियां मिलेंगी ॥ ११ । पर ताल के पास जो दल-दल और गड़हे हैं उन का जल मीठा न होगा वे खारे ही खारे रहेंगे ॥ १२ । और नदी के दोनों तीरों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे जिन के पत्ते न मुर्झाएंगे और उन का फलना कभी बन्द न होगा नदी का जल जो पवित्रस्थान से निकला है इस कारण उन में महीने महीने नये नये फल लगेंगे उन के फल तो खाने के और पत्ते औषधि के काम आएंगे ॥

१३ । प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस सिवाने के भीतर भीतर तुम को यह देश अपने बारहों गोत्रों के अनुसार बांटना पड़ेगा सो यह है । यूसुफ को दो भाग मिलें ॥ १४ । और उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पाओगे क्योंकि मैं ने किरिया खाई[1] कि तुम्हारे पितरों को दूंगा सो यह देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा ॥ १५ । देश का सिवाना यह हो अर्थात् उत्तर ओर का सिवाना महासागर से लेकर हेत्लोन् के पास से सदाद् की घाटी लों पहुंचे ॥ १६ । और उस सिवाने के पास हमात् बेरोता और सिब्रैम् हो जो दमिश्क् और हमात् के सिवानों के बीच में है और हसर्हत्तीकोन् जो हौरान् के सिवाने पर है ॥ १७ । और सिवाना समुद्र से लेकर दमिश्क् के सिवाने के पास के हसरेनोन् तक पहुंचे और उस की उत्तर ओर हमात् का सिवाना हो उत्तर का सिवाना तो यही हो ॥ १८ । और पूरबी सिवाना जिस की एक ओर हौरान् दमिश्क् और गिलाद् और दूसरी ओर इस्राएल् का देश हो सो यर्दन हो उत्तरी सिवाने से लेकर पूरबी ताल लों उसे मापना पूरब का सिवाना तो यही हो ॥ १९ । और दक्खिनी सिवाना तामार् से लेकर कादेश के मरीबोत् नाम सोते तक अर्थात् मिस्र के नाले तक और महासागर लों पहुंचे दक्खिनी सिवाना यही हो ॥ २० । और पच्छिमी सिवाना दक्खिनी सिवाने से लेकर हमात् की घाटी के साम्हने लों का महासागर हो पच्छिमी सिवाना यही हो ॥ २१ । इस देश को इस्राएल् के गोत्रों के अनुसार आपस में बांट लेना ॥ २२ । और इस को आपस में और उन परदेशियों के साथ बांट लेना जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकों को जन्माएं वे तुम्हारे लेखे में देशी इस्राएलियों की नाईं ठहरें और तुम्हारे गोत्रों के बीच अपना अपना भाग पाएं ॥ २३ । अर्थात् जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो वहीं उस को भाग देना प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

४८. गोत्रों

के भाग[1] ये हों । उत्तर सिवाने से लगा हुआ हेत्लोन् के मार्ग के पास से हमात् की घाटी लों और दमिश्क् के सिवाने के पास के हसरेनान् से उत्तर और हमात् के पास तक एक भाग दान् का हो और उस के पूरबी और पच्छिमी सिवाने भी हों ॥ २ । और दान् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों आशेर् का एक भाग हो ॥ ३ । और आशेर् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों नप्ताली का एक भाग हो ॥ ४ । और नप्ताली के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों मनश्शे का एक भाग हो ॥ ५ । और मनश्शे के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों एप्रैम् का एक भाग हो ॥ ६ । और एप्रैम् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों रूबेन् का एक भाग हो ॥ ७ । और रूबेन् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों यहूदा का एक भाग हो ॥

८ । और यहूदा के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों वह अर्पण किया हुआ भाग हो जिसे तुम्हें अर्पण करना होगा वह पचीस हजार बांस चौड़ा और पूरब से पच्छिम लों किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य लम्बा हो और उस के बीच में पवित्रस्थान हो ॥ ९ । जो भाग तुम्हें यहोवा को अर्पण करना होगा उस की लम्बाई पचीस हजार बांस और चौड़ाई दस हजार बांस की हो ॥ १० । और यह अर्पण किया हुआ पवित्र भाग याजकों को मिले

(१) मूल में मैं ने हाथ उठाया था ।

(१) मूल में नाम ।

वह उत्तर ओर पचीस हजार बास लम्बा पच्छिम ओर दस हजार बास चौड़ा और पूरब ओर दश हजार बास चौड़ा दक्खिन ओर पचीस हजार बास लम्बा हो और उस के बीचोबीच यहोवा का पवित्रस्थान हो ॥ ११ । यह विशेष पवित्र भाग सादोक् की सन्तान के उन याजकों का हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते रहे और इस्राए-लियों के भटक जाने के समय लेवीयों की नाईं भटक न गये थे ॥ १२ । सो देश के अर्पण किये हुए भाग में से यह उन के लिये अर्पण किया हुआ भाग अर्थात् परमपवित्र देश ठहरे और लेवीयों के सिवाने से लगा रहे ॥ १३ । और याजकों के सिवाने से लगा हुआ लेवीयों का भाग हो वह पचीस हजार बास लम्बा और दस हजार बास चौड़ा हो सारी लम्बाई पचीस हजार बास की और चौड़ाई दस हजार बास की हो ॥ १४ । और वे उस में से न तो कुछ बेचें न दूसरी भूमि से बदलें और न भूमि की पहिली उपज और किसी को दिई जाए क्योंकि वह यहोवा के लिये पवित्र है ॥ १५ । और चौड़ाई के पचीस हजार बास के साम्हने जो पांच हजार बचा रहेगा सो नगर और बस्ती और चराई के लिये साधारण भाग हो और नगर उस के बीच हो ॥ १६ । और नगर की यह माप हो अर्थात् उत्तर दक्खिन पूरब और पच्छिम ओर साढ़े चार चार हजार बास ॥ १७ । और नगर के पास चराइयां हों उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम ओर अढ़ाई अढ़ाई सौ बास चौड़ी हों ॥ १८ । और अर्पण किये हुए पवित्र भाग के पास की लम्बाई में से जो कुछ बचे अर्थात् पूरब और पच्छिम दोनों ओर दस दस हजार बास जो अर्पण किये हुए भाग के पास हो उस की उपज नगर में परिश्रम करनेहारों के खाने के लिये हो ॥ १९ । और इस्राएल् के सारे गोत्रों में से जो जो नगर में परिश्रम करें सो उस की खेती किया करें ॥ २० । सारा अर्पण किया हुआ भाग पचीस हजार बास लम्बा और पचीस हजार बास चौड़ा हो तुम्हें चौकोना पवित्र भाग जिस में नगर की विशेष भूमि हो अर्पण करना होगा ॥ २१ । और जो भाग रह जाए सो प्रधान को मिले अर्थात् पवित्र अर्पण किये हुए भाग की और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् उन की पूरब और पच्छिम अलंगों के पचीस पचीस हजार बास की चौड़ाई के पास और गोत्रों के भागों के पास जो भाग रहे सो प्रधान को मिले और अर्पण किया हुआ पवित्र भाग और भवन का पवित्रस्थान उन के बीच हो ॥ २२ । और प्रधान का भाग जो होगा उस के बीच लेवीयों और नगर की विशेष भूमि हो और प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन् के सिवानों के बीच हो ॥

२३ । अब और सब गोत्रों के भाग । पूरब से पच्छिम लों बिन्यामीन् का एक भाग हो ॥ २४ । और बिन्यामीन् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों शिमोन् का एक भाग हो ॥ २५ । और शिमोन् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों इस्साकार् का एक भाग हो ॥ २६ । और इस्साकार् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों जबूलून् का एक भाग हो ॥ २७ । और जबूलून् के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों गाद् का एक भाग हो ॥ २८ । और गाद् के सिवाने के पास दक्खिन ओर का सिवाना तामार् से लेकर कादेश के मरीबोत् नाम सोते तक और मिस्र के नाले और महासागर लों पहुंचे ॥ २९ । जो देश तुम्हें इस्राएल् के गोत्रों को बांट देना होगा सो यही है और उन के भाग ये ही हैं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

३० फिर नगर के निकास ये हों अर्थात् उत्तर की अलंग जिस की लम्बाई साढ़े चार हजार बास की हो, ३१ । उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक रूबेन् का फाटक एक यहूदा का फाटक और एक लेवी का फाटक हो क्योंकि नगर के फाटकों के नाम इस्राएल् के गोत्रों के नामों पर रखने होंगे ॥ ३२ । और पूरब की अलङ्ग साढ़े चार हजार बास लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक यूसुफ का फाटक एक बिन्यामीन् का फाटक और एक दान् का फाटक हो ॥ ३३ । और दक्खिन की अलङ्ग साढ़े चार हजार बास लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक शिमोन् का फाटक एक इस्सा-

कार् का फाटक और एक जबूलून् का फाटक हो ॥ और पच्छिम की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक गाद् का फाटक एक आशेर् का फाटक और एक नप्ताली का फाटक हो ॥ ३५ । नगर की चारों अलंगों का घेरा अठारह हजार बांस का हो और उस दिन से आगे को नगर का यह नाम यहोवा शाम्मा[१] रहेगा ॥

(१) अर्थात् यहोवा वहां है ।

दानिय्येल् नाम पुस्तक।

१. यहूदा के राजा यहोयाकीम् के राज्य के तीसरे बरस में बाबेल् के राजा नबूकदनेस्सर् ने यरूशलेम् पर चढ़ाई करके उस को घेर लिया ॥ २ । तब प्रभु ने यहूदा के राजा यहोयाकीम् और परमेश्वर के भवन के कितने एक पात्रों को उस के हाथ में कर दिया और उस ने उन पात्रों को शिनार् देश अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर अपने देवता के भण्डार में रख दिया ॥ ३ । तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अश्पनज् को आज्ञा दिई कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से. ४ । ऐसे कई जवानों को ले आकर जो बिन खोट सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण और ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर में हाज़िर रहने के योग्य हों कस्दियों के शास्त्र और भाषा सिखवा दे ॥ ५ । और राजा ने आज्ञा दिई कि मेरे भोजन और मेरे पीने के दाखमधु में से उन्हें दिन दिन खाने पीने को दिया जाए और तीन बरस लों उन का पालन पोषण होता रहे फिर उस के पीछे वे मेरे साम्हने हाज़िर किये जाएं ॥ ६ । सो उन में से दानिय्येल् हनन्याह् मीशाएल् और अज़र्याह् नाम यहूदी थे ॥ ७ । और खोजों के प्रधान ने उन के दूसरे नाम रक्खे अर्थात् दानिय्येल् का नाम उस ने बेलतशस्सर् और हनन्याह् का शद्रक् और मीशाएल् का मेशक् और अज़र्याह् का अबेदनगो नाम रक्खा ॥ ८ । दानिय्येल् ने अपने मन में ठाना कि मैं राजा का भोजन खाकर और उस के पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होऊं सो उस ने खोजों के प्रधान से बिनती किई कि मुझे अपवित्र होना न पड़े ॥ ९ । परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल् पर कृपा और दया बहुत उपजाई ॥ १० । सो खोजों के प्रधान ने दानिय्येल् से कहा मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूं क्योंकि तुम्हारा खाना पीना उसी ने ठहराया है वह तुम्हारे मुंह तुम्हारी जोड़ी के जवानों से उतरा हुआ क्यों देखे तुम मेरा सिर राजा के साम्हने जोखिम में डालोगे ॥ ११ । तब दानिय्येल् ने उस मुखिये से जिस को खोजों के प्रधान ने दानिय्येल् हनन्याह् मीशाएल् और अज़र्याह् के ऊपर ठहराया था कहा, १२ । अपने दासों को दस दिन लों जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी दिया जाए ॥ १३ । फिर दस दिन के पीछे हमारे मुंह को और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उन के मुंह को देख और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना ॥ १४ । उन की यह बिनती उस ने मान लिई और दस दिन लों उन को जांचता रहा ॥ १५ । दस दिन के पीछे उन के मुंह राजा के भोजन के खानेहारे सब

जवानों से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े ॥ १६ । सो वह मुखिया उन का भोजन और उन के पीने के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर उन को साग पात देने लगा ॥ १७ । और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धि और प्रवीणता दिई और दानिय्येल् सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का जानकार हो गया ॥ १८ । सो जितने दिन नबूकदनेस्सर् राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दिई थी उतने दिन बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उस के साम्हने ले गया, १९ । और राजा उन से बातचीत करने लगा तब दानिय्येल् हनन्याह् मीशाएल् और अजर्याह् के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा सो वे राजा के सन्मुख हाजिर रहने लगे ॥ २० । और बुद्धि और समझ के जिस किसी विषय में राजा उन से पूछता उस में वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दसगुणे और निपुण ठहरते थे ॥ २१ । और दानिय्येल् कुस्रू राजा के पहिले बरस लों बना रहा ॥

२. अपने राज्य के दूसरे बरस में नबूकदनेस्सर् ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उस का मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उस को नींद न आई ॥ २ । तब राजा ने आज्ञा दिई कि ज्योतिषी तन्त्री टोनहे और कस्दी बुलाये जाएं कि वे राजा को उस का स्वप्न बताएं सो वे आकर राजा के साम्हने हाजिर हुए ॥ ३ । तब राजा ने उन से कहा मैं ने एक स्वप्न देखा है और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूं ॥ ४ । कस्दियों ने राजा से अरामी भाषा में कहा हे राजा तू सदा लों जीता रहे अपने दासों को स्वप्न बता और हम उस का फल बताएंगे ॥ ५ । राजा ने कस्दियों को उत्तर दिया यह बात मेरे मुख से निकली कि यदि तुम मुझे फल समेत स्वप्न को न बताओ तो तुम टुकड़े टुकड़े किये जाओगे और तुम्हारे घर घूरे बनाये जाएंगे ॥ ६ । और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बताओ तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे इस लिये मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ ॥ ७ । उन्हों ने दूसरी बार कहा हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए और हम उस का फल समझा देंगे ॥ ८ । राजा ने उत्तर दिया मैं निश्चय जानता हूं कि तुम यह देखकर कि आज्ञा राजा के मुंह से निकल चुकी समय बढ़ाने चाहते हो ॥ ९ । सो यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है क्योंकि तुम ने एका किया होगा कि जब लों समय न बदले तब लों हम राजा के साम्हने झूठी और गपसप की बातें कहा करेंगे इस लिये मुझे स्वप्न को बताओ तब मैं जानूंगा कि तुम उस का फल भी समझा सकते हो ॥ १० । कस्दियों ने राजा से कहा पृथिवी भर में कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके और न कोई ऐसा राजा वा प्रधान वा हाकिम कभी हुआ जिस ने किसी ज्योतिषी वा तन्त्री वा कस्दी से ऐसी बात पूछी हो ॥ ११ । और जो बात राजा पूछता है सो अनोखी है और देवताओं को छोड़कर जिन का निवास प्राणियों के संग नहीं है कोई दूसरा नहीं जो राजा को यह बता सके ॥ १२ । इस से राजा ने खीझकर और बहुत ही क्रोधित होकर बाबेल् के सारे पण्डितों के नाश करने की आज्ञा दिई ॥ १३ । सो यह आज्ञा निकली और पण्डित लोगों का घात होने पर था और लोग दानिय्येल् और उस के संगियों को ढूंढ़ रहे थे कि वे भी घात किये जाएं ॥ १४ । तब दानिय्येल् ने जल्लादों के प्रधान अर्योक् से जो बाबेल् के पण्डितों को घात करने के लिये निकला था सोच विचारकर और बुद्धिमानी के साथ कहा, १५ । और वह राजा के हाकिम अर्योक् से पूछने लगा कि यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली । जब अर्योक् ने दानिय्येल् को इस का भेद बता दिया, १६ । तब दानिय्येल् ने भीतर जाकर राजा से बिनती किई कि मेरे लिये कोई समय ठहराया जाए तो मैं महाराज को स्वप्न का फल बताऊंगा ॥

१७ । तब दानिय्येल् ने अपने घर जाकर अपने संगी हनन्याह् मीशाएल् और अजर्याह् को यह हाल

बताकर, १८ । कहा इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो कि बाबेल् के और सब पण्डितों के संग दानिय्येल् और उस के संगी भी नाश न किये जाएं ॥ १९ । तब वह भेद दानिय्येल् को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया तब दानिय्येल् ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया कि, २० । परमेश्वर का नाम सदा से सदा लों धन्य है क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं ॥ २१ । और समयों और ऋतुओं को वही पलटता है राजाओं को अस्त और उदय भी वही करता है और बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ वही देता है ॥ २२ । वह गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है वह जानता है कि अन्धियारे में क्या क्या है और उस के संग सदा प्रकाश बना रहता है ॥ २३ । हे मेरे पितरों के परमेश्वर मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं कि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दिई है और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था सो तू ने समय पर मुझ पर प्रगट किया है तू ने हम को राजा की बात बताई है ॥ २४ । तब दानिय्येल् ने अर्योक् के पास जिसे राजा ने बाबेल् के पण्डितों के नाश करने के लिये ठहराया था भीतर जाकर कहा बाबेल् के पण्डितों का नाश न कर मुझे राजा के सन्मुख भीतर ले चल मैं फल बताऊंगा ॥

२५ । तब अर्योक् ने दानिय्येल् को भीतर राजा के सन्मुख उतावली से ले जाकर उस से कहा यहूदी बंधुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है जो राजा को स्वप्न का फल बताएगा ॥ २६ । राजा ने दानिय्येल् से जिस का नाम बेल्तशस्सर् भी था पूछा क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो फल समेत मुझे बताए ॥ २७ । दानिय्येल् ने राजा को उत्तर दिया जो भेद राजा पूछता है सो न तो पण्डित राजा को बता सकते हैं न तंत्री न ज्योतिषी न दूसरे होनहार बतानेहारे ॥ २८ । पर भेदों का खोलनेहारा स्वर्ग में परमेश्वर है और उसी ने नबूकदनेस्सर् राजा को बताया है कि अंत के दिनों में क्या क्या होनेवाला है । तेरा स्वप्न और जो कुछ तू ने पलङ्ग पर पड़े हुए देखा सो यह है ॥ २९ । हे राजा जब तुझ को पलङ्ग पर यह विचार हुआ कि पीछे क्या क्या होनेवाला है तब भेदों के खोलनेहारे ने तुझ को बताया कि क्या क्या होनेवाला है ॥ ३० । मुझ पर तो यह भेद कुछ इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूं केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा को बताया जाए और तू अपने मन के विचार समझ सके ॥ ३१ । हे राजा जब तू देख रहा था तब एक बड़ी मूर्त्ति देख पड़ी और वह मूर्त्ति जो तेरे साम्हने खड़ी थी सो लम्बी चौड़ी थी और उस की चमक अनुपम थी और उस का रूप भयंकर था ॥ ३२ । उस मूर्त्ति का सिर तो चोखे सोने का था उस की छाती और भुजाएं चान्दी की उस का पेट और जांघें पीतल की, ३३ । उस की टांगें लोहे की और उस के पांव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे ॥ ३४ । फिर देखते देखते तू ने क्या देखा कि एक पत्थर ने किसी के बिना खोदे आप ही आप उखड़कर उस मूर्त्ति के पांवों पर जो लोहे और मिट्टी के थे लगकर उन को चूर चूर कर डाला ॥ ३५ । तब लोहा मिट्टी पीतल चान्दी और सोना भी सब चूर चूर हो गये और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की नाईं बयार से ऐसे उड़ गये कि उन का कहीं पता न रहा और वह पत्थर जो मूर्त्ति पर लगा था सो बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथिवी में भर गया ॥ ३६ । स्वप्न तो यों ही हुआ और अब हम उस का फल राजा को समझा देते हैं ॥ ३७ । हे राजा तू तो महाराजाधिराज है क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझ को राज्य सामर्थ्य शक्ति और महिमा दिई है ॥ ३८ । और जहां कहीं मनुष्य पाये जाते हैं वहां उस ने उन सभों को और मैदान के जीवजन्तु और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिये हैं और तुझ को उन सब का अधिकारी ठहराया है यह सोने का सिर तू ही है ॥ ३९ । और तेरे पीछे उस से कुछ उतरके एक राज्य और उदय होगा फिर एक और तीसरा पीतल का

सा राज्य होगा जिस में सारी पृथिवी आ जाएगी ॥ ४० । और चौथा राज्य लोहे के तुल्य पोढ़ा होगा लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस जाती हैं सो जिस भांति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं उसी भांति उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर होकर पिस जाएगा ॥ ४१ । और तू ने जो मूर्त्ति के पांवों और उन की अंगुलियों को देखा जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं इस से वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा तौभी उस में लोहे का सा कड़ापन रहेगा जैसे कि तू ने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा ॥ ४२ । और पांवों की अंगुलियां जो कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं इस का फल यह है कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल[1] होगा ॥ ४३ । और तू ने जो लोहे को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा इस का फल यह है कि उस राज्य के लोग नीच मनुष्यों से[2] मिले जुले तो रहेंगे पर जैसे लोहा मिट्टी के साथ मिलकर एक दिल नहीं होता तैसे ही वे दोनों भी एक न बने रहेंगे ॥ ४४ । और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो सदा लों न टूटेगा और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ मे किया जाएगा परन्तु वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा और उन का अन्त कर डालेगा और वह आप स्थिर रहेगा ॥ ४५ । तू ने जो देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा और लोहे पीतल मिट्टी चान्दी और सोने को चूर चूर किया इसी रीति महान् परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इस के पीछे क्या क्या होनेवाला है और न स्वप्न में न उस के फल में कुछ संदेह है ॥ ४६ । इतना सुन नबूकद्नेस्सर् राजा ने मुंह के बल गिरके दानिय्येल् को दण्डवत् किया और आज्ञा दिई कि इस को भेंट चढ़ाओ और इस के साम्हने सुगंध वस्तु जलाओ ॥ ४७ । फिर राजा ने दानिय्येल् से कहा सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर सब ईश्वरों के ऊपर परमेश्वर और सब राजाओं का प्रभु और भेदों का खोलनेहारा है इस लिये तू यह भेद खोलने पाया ॥ ४८ । तब राजा ने दानिय्येल् का पद बड़ा किया और उस को बहुत से बड़े बड़े दान दिये और यह आज्ञा दिई कि वह बाबेल् के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबेल् के सब पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने ॥ ४९ । तब दानिय्येल् के बिनती करने से राजा ने शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो को बाबेल् के प्रान्त के कार्य्य के ऊपर ठहरा दिया पर दानिय्येल् आप राजा के दरबार में रहा करता था ॥

[1] (१) मूल में भुरभुरा। [2] (२) मूल में विनाशी मनुष्यों के वंश से।

३. नबूकद्नेस्सर्

राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई जिस की ऊंचाई साठ हाथ और चौड़ाई छः हाथ की थी और उस ने उस को बाबेल् के प्रान्त में के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया ॥ २ । तब नबूकद्नेस्सर् राजा ने अधिपतियों हाकिमों गवर्नरों जजों खजांचियों न्यायियों शास्त्रियों आदि प्रान्त प्रान्त के सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में जो उस ने खड़ी कराई थी आएं ॥ ३ । तब अधिपति हाकिम गवर्नर जज् खजांची न्यायी शास्त्री आदि प्रान्त प्रान्त के सारे अधिकारी नबूकद्नेस्सर् राजा की खड़ी कराई हुई मूरत की प्रतिष्ठा के लिये एकट्ठे हुए और उस मूरत के साम्हने खड़े हुए ॥ ४ । तब ढंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकारके कहा हे देश देश और जाति जाति के लोगो और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारो तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, ५ । जिस समय तुम नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो उसी समय गिरके नबूकद्नेस्सर् राजा की खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करो ॥ ६ । और जो कोई गिरके दण्डवत न करे सो उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा ॥ ७ । इस कारण उस समय ज्यों ही सब जाति के लोगों को नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा त्यों ही देश देश और जाति जाति के लोगो और भिन्न भिन्न भाषा बोलने-

हारों ने गिरके उस सोने की मूरत को जो नबूकद्नेस्सर् राजा ने खड़ी कराई थी दण्डवत किई॥ ८। उस समय कई एक कस्दी पुरुष राजा के पास गये और यह कहकर यहूदियों की चुगली खाई कि, ९। वे नबूकद्नेस्सर् राजा से कहने लगे हे राजा तू सदा लों जीता रहे॥ १०। हे राजा तू ने तो यह आज्ञा दिई है कि जो जो मनुष्य नरसिंगे बांसुली बीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुने सो गिरके उस सोने की मूरत को दण्डवत करे॥ ११। और जो कोई गिरके दण्डवत न करे सो धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा॥ १२। सुन शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं जिन्हें तू ने बाबेल् के प्रान्त के कार्य्य के ऊपर ठहराया है उन पुरुषों ने हे राजा तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं किई वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है उस को दण्डवत नहीं करते॥ १३। तब नबूकद्नेस्सर् ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दिई कि शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो को लाओ तब वे पुरुष राजा के साम्हने हाजिर किये गये॥ १४। नबूकद्नेस्सर् ने उन से पूछा हे शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत नहीं करते क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो॥ १५। यदि तुम अभी तैयार हो कि जब नरसिंगे बांसुली बीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो उसी क्षण गिरके मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत् करो तो बचोगे और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले जाओगे फिर ऐसा कौन देवता है जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके॥ १६। शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो ने राजा से कहा हे नबूकद्नेस्सर् हम विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता॥ १७। हमारा परमेश्वर जिस की हम उपासना करते हैं यदि ऐसा हो तो हम को उस धधकते हुए भट्ठे से छुड़ा सकता है वरन हे राजा वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है॥ १८। और जो हो सो हो पर हे राजा तुझे विदित हो कि हम लोग तेरे देवता की उपासना न करेंगे और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे॥ १९। तब नबूकद्नेस्सर् जल उठा और उस के चेहरे का रंग ढंग शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो की ओर बदल गया तब उस ने आज्ञा दिई कि भट्ठे को रीति से सातगुणा अधिक धधका दो॥ २०। फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान पुरुषों को उस ने आज्ञा दिई कि शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो को बांधकर उस धधकते हुए भट्ठे में डाल दो॥ २१। तब वे पुरुष अपने मोजों अंगरखों बागों और और वस्त्रों सहित बांधकर उस धधकते हुए भट्ठे में डाल दिये गये॥ २२। वह भट्ठा तो राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया था इस कारण जिन पुरुषों ने शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो को उठाया सो आग की आंच ही से जल मरे॥ २३। और उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो ये तीनों पुरुष बंधे हुए गिर पड़े॥ २४। तब नबूकद्नेस्सर् राजा अचंभित हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ और अपने मंत्रियों से पूछने लगा क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बंधे हुए नहीं डलवाये उन्हों ने राजा को उत्तर दिया हां राजा सच बात है॥ २५। फिर उस ने कहा अब क्या देखता हूं कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं और उन को कुछ भी हानि नहीं भासती और चौथे पुरुष का स्वरूप किसी ईश्वर के पुत्र का सा है॥ २६। फिर नबूकद्नेस्सर् उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा हे शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो निकलकर यहां आओ यह सुनकर शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो आग के बीच से निकल आये॥ २७। जब अधिपति हाकिम गवर्नर और राजा के मंत्रियों ने जो एकट्ठे हुए थे उन पुरुषों की ओर देखा तब क्या पाया कि इन की देह में आग का कुछ प्रभाव नहीं और न इन के सिर का एक बाल भी झुलसा न इन के मोजे कुछ बिगड़े न इन में जलने की गंध कुछ पाई जाती है॥ २८।

नबूकद्नेस्सर् कहने लगा धन्य है शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो का परमेश्वर जिस ने अपना दूत भेजकर अपने इन दासों को इस लिये बचाया कि इन्हों ने राजा की आज्ञा न मानकर उसी पर भरोसा रक्खा वरन यह सोचकर अपना शरीर भी अर्पण किया कि हम अपने परमेश्वर को छोड़ किसी देवता की उपासना वा दण्डवत न करेंगे ॥ २९। सो मैं यह आज्ञा देता हूं कि देश देश और जाति जाति के लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों में से जो कोई शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करे सो टुकड़े टुकड़े किया जाए और उस का घर घूरा बनाया जाए क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके ॥ ३०। तब राजा ने बाबेल् के प्रान्त में शद्रक् मेशक् और अबेद्नगो का पद बढ़ाया ॥

४. देश देश के और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे जितने सारी पृथिवी पर रहते हैं उन सभों से नबूकद्नेस्सर् राजा का यह वचन हुआ कि तुम्हारा कुशल क्षेम बढ़े ॥ २। मुझ को अच्छा लगा कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाये हैं उन को प्रगट करूं॥ ३। उस के दिखाये हुए चिन्ह क्या ही बड़े और उस के चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है उस का राज्य तो सदा का और उस की प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है ॥

४। मैं नबूकद्नेस्सर् अपने भवन में जिस में रहता था चैन से और प्रफुल्लित रहता था ॥ ५। मैं ने ऐसा स्वप्न देखा जिस के कारण मैं डर गया और पलंग पर पड़े पड़े जो विचार मेरे मन में आये और जो बातें मैं ने देखीं उन के कारण मैं घबरा गया ॥ ६। सो मैं ने आज्ञा दिई कि बाबेल् के सब पण्डित मेरे स्वप्न का फल मुझे बताने के लिये मेरे साम्हने हाज़िर किये जाएं ॥ ७। तब ज्योतिषी तंत्री कस्दी और और होनहार बतानेहारे भीतर आये और मैं ने उन को अपना स्वप्न बताया पर वे उस का फल न बता सके ॥ ८। निदान दानिय्येल् मेरे सम्मुख आया जिस का नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेल्तशस्सर् रक्खा गया था और जिस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और मैं ने उस को अपना स्वप्न यह कहकर बता दिया कि, ९। हे बेल्तशस्सर् तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान है मैं जानता हूं कि तुझ में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता सो जो स्वप्न मैं ने देखा है उसे फल समेत मुझे बताकर समझा दे ॥ १०। पलंग पर जो दर्शन मैं ने पाया सो यह है अर्थात् मैं ने क्या देखा कि पृथिवी के बीचोबीच एक वृक्ष लगा है जिस की ऊंचाई बड़ी है ॥ ११। वह वृक्ष बढ़ बढ़कर दृढ़ हो गया उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और वह सारी पृथिवी की छोर लों देख पड़ता है ॥ १२। उस के पत्ते सुन्दर हैं और उस में फल बहुत हैं यहां लों कि उस में सभों के लिये भोजन है उस के नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती है और उस की डालियों में सब आकाश की चिड़ियाएं बसेरा करती हैं और सारे प्राणी उस से आहार पाते हैं ॥ १३। मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग से उतर आया ॥ १४। उस ने ऊंचे शब्द से पुकारके यह कहा कि वृक्ष को काट डालो उस की डालियों को छांट दो उस के पत्ते झाड़ दो और उस के फल छितरा डालो पशु उस के नीचे से हट जाएं और चिड़ियाएं उस की डालियों पर से उड़ जाएं ॥ १५। तौभी उस के ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उस को लोहे और पीतल के बन्धन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो वह आकाश की ओस से भींगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान के पशुओं के संग भागी हो ॥ १६। उस का मन बदले और मनुष्य का न रहे पशु ही का सा बन जाए और सात काल उस पर बीतने पाएं ॥ १७। यह नियम पहरुओं के निर्णय से और यह बात पवित्र लोगों के वचन से निकली और उस की यह मनसा है कि जो जीते हैं सो जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और उस

को जिसे चाहे उसे दे देता है और तब उस पर नीच से नीच मनुष्य भी ठहरा देता है॥ १८। मुझ नबूकद्नेस्सर् राजा ने यही स्वप्न देखा सो हे बेल्तशस्सर् तू इस का फल बता क्योंकि मेरे राज्य में और कोई पण्डित तो इस का फल मुझे समझा नहीं सकता पर तुझ में जो पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है इस से तू उसे समझा सकता है॥

१९। तब दानियेल् जिस का नाम बेल्तशस्सर् भी था सो घड़ी भर घबराता रहा और सोचते सोचते व्याकुल हो गया। राजा कहने लगा हे बेल्तशस्सर् इस स्वप्न से वा इस के फल से तू व्याकुल मत हो। बेल्तशस्सर् ने कहा हे मेरे प्रभु यह स्वप्न तेरे वैरियों पर और इस का अर्थ तेरे द्रोहियों पर फले॥ २०। जिस वृक्ष को तू ने देखा जो बढ़ा और दृढ़ हो गया और उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची वह पृथिवी भर पर देख पड़ा, २१। उस के पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे उस में सभों के लिये भोजन था उस के नीचे मैदान के सब पशु रहते थे और उस की डालियों में, आकाश की चिड़ियाएं बसेरा करती थीं॥ २२। हे राजा उस का अर्थ तू ही है तू तो बढ़ा और सामर्थी हो गया तेरी महिमा बढ़ी और स्वर्ग लों पहुंच गई और तेरी प्रभुता पृथिवी की छोर लों फैली है॥ २३। और हे राजा तू ने जो एक पवित्र पहरुए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उस का नाश करो तौभी उस के ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उस को लोहे और पीतल के बन्धन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो यह आकाश की ओस से भींगा करे और उस को मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले और जब लों सात काल उस पर बीत न चुकें तब लों उस की ऐसी ही दशा रहे॥ २४। हे राजा इस का फल सो परमप्रधान ने ठाना है कि राजा पर घटे सो यह है कि. २५। तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा और मैदान के पशुओं के संग रहेगा और बैलों की नाईं घास चरेगा और आकाश की ओस से भींगा करेगा और सात काल तुझ पर बीतेंगे जब लों कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता और उस को जिसे चाहे उसे दे देता है॥ २६। और उस वृक्ष के ठूंठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई इस का फल यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा और जब तू जान ले कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है[1] तब से तू फिर राज्य करने पाएगा॥ २७। इस कारण हे राजा मेरी यह सम्मति तुझे मानने के योग्य जान पड़े कि तू पाप छोड़कर धर्म्म करने लगे और अधर्म्म छोड़कर दीन हीनों पर दया करने लगे क्या जानिये ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे॥

२८। यह सब कुछ नबूकद्नेस्सर् राजा पर घट गया॥ २९। बारह महीने के बीते पर वह बाबेल् के राजभवन की छत पर टहल रहा था॥ ३०। तब वह कहने लगा क्या यह बड़ा बाबेल् नहीं है जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है॥ ३१। यह वचन राजा के मुंह से निकलने न पाया कि यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा नबूकद्नेस्सर् तेरे विषय आज्ञा निकलती है राज्य तेरे हाथ से छूट गया॥ ३२। और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा और मैदान के पशुओं के संग रहेगा और बैलों की नाईं घास चरेगा और सात काल तुझ पर बीतेंगे जब लों कि तू जान न ले कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और उस को जिसे चाहे उसे दे देता है॥ ३३। उसी घड़ी यह वचन नबूकद्नेस्सर् के विषय में पूरा हुआ अर्थात् वह मनुष्यों में से निकाला गया और बैलों की नाईं घास चरने लगा और उस की देह आकाश की ओस से भींगती थी यहां लों कि उस के बाल उकाब पक्षियों के परों के और उस के नाखून चिड़ियाओं के पंजों के समान बढ़ गये॥ ३४। उन दिनों के बीते पर मुझ नबूकद्नेस्सर् ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं और

(१) मूल में कि स्वर्ग प्रभुता करता है।

मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा और जो सदा लों जीता रहता है उस की स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा कि उस की प्रभुता सदा की है और उस का राज्य पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहनेहारा है ॥ ३५ । और पृथिवी के सारे रहनेहारे उस के साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं और वह स्वर्ग की सेना और पृथिवी के रहनेहारों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उस को रोककर[1] उस से नहीं कह सकता कि तू ने यह क्या किया है ॥ ३६। उसी समय मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और श्री मुझ से फिर आ गई और मेरे मंत्री और और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने को आने लगे और मैं अपने राज्य में स्थिर हो गया और मेरी विशेष बड़ाई होने लगी ॥ ३७ । सो अब मैं नबूकद्नेस्सर् स्वर्ग के राजा को सराहता और उस की स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उस के सब काम सच्चे और उस के सब व्यवहार न्याय के हैं और जो लोग गर्व्व से चलते हैं उन को वह नीचा कर सकता है ॥

५. बेलशस्सर् नाम राजा ने अपने हजार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार किई और उन हजार लोगों के साम्हने दाखमधु पिया ॥ २ । दाखमधु पीते पीते बेलशस्सर् ने आज्ञा दिई कि सोने चांदी के जो पात्र मेरे पिता नबूकद्नेस्सर् ने यरूशलेम् के मन्दिर में से निकाले थे सो ले आओ कि राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत उन से पीए ॥ ३। तब जो सोने के पात्र यरूशलेम् में परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गये थे सो लाये गये और राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत उन से पीने लगा ॥ ४ । वे दाखमधु पी पीकर सोने चांदी पीतल लोहे काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति कर रहे थे कि, ५ । उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई अंगुलियां निकलकर दीवट के साम्हने राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगीं और हाथ का जो भाग लिख रहा था सो राजा को देख पड़ा ॥ ६ । उसे देखकर राजा की ओहत हो गई और वह सोचते सोचते घबरा गया और उस की कटि के जोड़ ढीले हो गये और कांपते कांपते उस के घुटने एक दूसरे से लगने लगे ॥ ७ । तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकारके तन्त्रियों कस्दियों और और होनहार बतानेहारों को हाजिर कराने की आज्ञा दिई । जब बाबेल् के पण्डित पास आये तब राजा उन से कहने लगा जो कोई वह लिखा हुआ बांचे और उस का अर्थ मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र और उस के गले में सोने का कण्ठा पहिनाया जाएगा और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा ॥ ८ । तब राजा के सब पण्डित लोग भीतर तो आये पर उस लिखे हुए को बांच न सके और न राजा को उस का अर्थ समझा सके ॥ ९ । इस पर बेलशस्सर् राजा निपट घबरा गया और उस की ओहत हो गई और उस के प्रधान भी बहुत व्याकुल हुए ॥ १० । राजा और प्रधानों के वचनों का हाल सुनकर रानी जेवनार के घर में आई और कहने लगी हे राजा तू युगयुग जीता रहे मन में न घबरा और न तेरी ओहत हो ॥ ११ । क्योंकि तेरे राज्य में दानिय्येल् एक पुरुष है जिस का नाम तेरे पिता ने बेलतशस्सर् रक्खा था उस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और उस राजा के दिनों में प्रकाश प्रवीणता और ईश्वरों के तुल्य बुद्धि उस में पाई गईं और हे राजा तेरा पिता जो राजा था उस ने उस को सब ज्योतिषियों तन्त्रियों कस्दियों और और होनहार बतानेहारों का प्रधान ठहराया था ॥ १२। क्योंकि उस में उत्तम आत्मा ज्ञान और प्रवीणता और स्वप्नों का फल बताने और पहेलियां खोलने और संदेह दूर करने की शक्ति पाई गई । सो अब दानिय्येल् बुलाया जाए और वह इस का अर्थ बताएगा ॥

१३ । तब दानिय्येल् राजा के साम्हने भीतर बुलाया गया । राजा दानिय्येल् से पूछने लगा कि

(१) मूल में उस का हाथ मारके ।

क्या तू वही दानिय्येल् है जो मेरे पिता नबूकद्नेस्सर् राजा के यहूदा देश से लाये हुए यहूदी बंधुओं में से है ॥ १४ । मैं ने तो तेरे विषय में सुना है कि ईश्वरों का आत्मा तुझ में रहता है और प्रकाश प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ में पाई जाती हैं ॥ १५ । सो अभी पण्डित और तंत्री लोग मेरे साम्हने इस लिये लाये गये थे कि वह लिखा हुआ बांचें और उस का अर्थ मुझे बतावें और वे तो उस बात का अर्थ न समझा सके ॥ १६ । पर मैं ने तेरे विषय में सुना है कि दानिय्येल् भेद खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता है सो अब यदि तू उस लिखे हुए को बांच सके और उस का अर्थ भी मुझे समझा सके तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र और तेरे गले में सोने का कंठा पहिनाया जाएगा और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा ॥ १७ । दानिय्येल् ने राजा से कहा अपने दान अपने ही पास रख और जो बदला तू देने चाहता है सो दूसरे को दे मैं वह लिखी हुई बात राजा को पढ़ सुनाऊंगा और उस का अर्थ भी तुझे समझाऊंगा ॥ १८ । हे राजा परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकद्नेस्सर् को राज्य बड़ाई प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था ॥ १९ । और उस बड़ाई के कारण जो उस ने उस को दिई थी देश देश और जाति जाति के सब लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे उस के साम्हने कांपते और थरथराते थे जिस को वह चाहता उसे वह घात कराता था और जिस को वह चाहता उसे वह जीता रखता था जिस को वह चाहता उसे वह ऊंचा पद देता था और जिस को वह चाहता उसे वह गिरा देता था ॥ २० । निदान जब उस का मन फूल उठा और उस का आत्मा कठोर हो गया यहां लों कि वह अभिमान करने लगा तब वह अपने राजसिंहासन पर से उतारा गया और उस की प्रतिष्ठा भंग किई गई, २१ । और वह मनुष्यों में से निकाला गया और उस का मन पशुओं का सा और उस का निवास बनैले गदहों के बीच हो गया वह बैलों की नाईं घास चरता और उस का शरीर आकाश की ओस से भींगा करता था जब लों कि उस ने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है ॥ २२ । तौभी हे बेल्शस्सर् तू जो उस का पुत्र है यद्यपि यह सब कुछ जानता था तौभी तेरा मन नम्र न हुआ ॥ २३ । बरन तू ने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठा उस के भवन के पात्र मंगवाकर अपने साम्हने धरवा लिये और अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत तू ने उन से दाखमधु पिया और चांदी सोने पीतल लोहे काठ और पत्थर के देवता जो न देखते न सुनते न कुछ जानते हैं उन की तो स्तुति किई परन्तु परमेश्वर जिस के हाथ में तेरा प्राण है और जिस के वश में तेरा सब चलना फिरना है उस का सन्मान तू ने नहीं किया ॥ २४ । तब ही यह हाथ का एक भाग उसी की ओर से प्रगट किया गया और वे शब्द लिखे गये ॥ २५ । और जो शब्द लिखे गये सो ये हैं अर्थात् मने[१] मने तकेल्[२] ऊपर्सीन्[३] ॥ २६ । इस वाक्य का अर्थ यह है मने परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उस का अन्त कर दिया है ॥ २७ । तकेल् तू मानो तुला में तौला गया और हलका जचा है ॥ २८ । परेस्[४] तेरा राज्य बांटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है ॥ २९ । तब बेल्शस्सर् ने आज्ञा दिई और दानिय्येल् को बैंजनी रंग का वस्त्र और उस के गले में सोने का कंठा पहिनाया गया और ढंढोरिये ने उस के विषय में पुकारा कि राज्य में तीसरा दानिय्येल् ही प्रभुता करेगा ॥ ३० । उसी रात को कसदियों का राजा बेल्शस्सर् मार डाला गया ॥ ३१ । और दारा मादी जो कोई बासठ बरस का था राजगद्दी पर विराजने लगा ॥

६. दारा को यह भाया कि अपने राज्य के ऊपर एक सौ बीस ऐसे अधिपति ठहराए जो सारे राज्य में अधिकार रखें ॥ २ । और उन के ऊपर उस ने तीन अध्यक्ष जिन में से दानिय्येल् एक था इस लिये ठहराये कि वे उन

(१) अर्थात् गिना । (२) अर्थात् तौला । (३) अर्थात् और बांटते हैं । (४) अर्थात् बांट दिया ।

अधिपतियों से लेखा लिया करें और इस रीति राजा की कुछ हानि न होने पाए ॥ ३ । जब यह देखा गया कि दानिय्येल् में उत्तम आत्मा रहता है तब उस को उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली बरन राजा यह भी सोचता था कि उस को सारे राज्य के ऊपर ठहराऊंगा ॥ ४ । तब अध्यक्ष और अधिपति दानिय्येल् के विरुद्ध राजकार्य्य के विषय गौं ढूंढने लगे पर वह जो विश्वासयोग्य था और उस के काम में कोई भूल वा दोष न निकला सो वे ऐसी कोई गौं वा दोष न पा सके ॥ ५ । तब वे लोग कहने लगे हम उस दानिय्येल् के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ और किसी विषय में उस के विरुद्ध कोई गौं न पा सकेंगे ॥ ६ । सो वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आये और उस से कहा हे राजा दारा तू युगयुग जीता रहे ॥ ७ । राज्य के सारे अध्यक्षों ने और हाकिमों अधिपतियों न्यायियों और गवरनरों ने भी आपस में संमति किई है कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी सख्त मनाही करे कि तीस दिन लों जो कोई हे राजा तुझे छोड़ किसी और मनुष्य से वा देवता से बिनती करे सो सिंहों के गड़हे में डाल दिया जाए ॥ ८ । सो अब हे राजा ऐसी मनाही कर दे और इस पत्र पर दस्तखत कर जिस से यह बात मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल बदल न हो ॥ ९ । तब दारा राजा ने उस मनाही के लिये पत्र पर दस्तखत किया ॥ १० । जब दानिय्येल् को मालूम हुआ कि उस पत्र पर दस्तखत किया गया है तब अपने घर में गया जिस की उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम् के साम्हने खुली रहती थीं और अपनी पहिली रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के साम्हने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था वैसा ही तब भी करता रहा ॥ ११ । सो उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल् को अपने परमेश्वर के साम्हने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया ॥ १२ । तब वे राजा के पास आकर उस की मनाही के विषय में उस से कहने लगे हे राजा क्या तू ने ऐसी मनाही के लिये दस्तखत नहीं किया कि तीस दिन लों जो कोई तुझे छोड़ किसी मनुष्य वा देवता से बिनती करे सो सिंहों के गड़हे में डाल दिया जाएगा । राजा ने उत्तर दिया हां मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर है ॥ १३ । तब उन्हों ने राजा से कहा यहूदी बंधुओं में से जो दानिय्येल् है उस ने हे राजा न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया न तेरे दस्तखत किये हुए मनाही के पत्र की ओर । वह दिन में तीन बार बिनती किया करता है ॥ १४ । यह वचन सुनकर राजा बहुत उदास हुआ और दानिय्येल् के बचाने के उपाय सोचने लगा और सूर्य्य के अस्त होने लों उस के बचाने का यत्न करता रहा ॥ १५ । तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे हे राजा यह जान रख कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो जो मनाही वा आज्ञा राजा ठहराए सो नहीं बदल सकती ॥ १६ । तब राजा ने आज्ञा दिई और दानिय्येल् लाकर सिंहों के गड़हे में डाल दिया गया । उस समय राजा ने दानिय्येल् से कहा तेरा परमेश्वर जिस की तू नित्य उपासना करता है सोई तुझे बचाएगा ॥ १७ । तब एक पत्थर लाकर उस गड़हे के मुंह पर रक्खा गया और राजा ने उस पर अपनी अंगूठी से और अपने प्रधानों की अंगूठियों से छाप दिई कि दानिय्येल् के विषय में कुछ बदलने न पाए ॥ १८ । तब राजा अपने मन्दिर में चला गया और उस रात को बिना भोजन बिताया और न उस के पास सुख बिलास की कोई वस्तु पहुंचाई गई और न नींद उस को कुछ भी आई ॥ १९ । भोर को पह फटते राजा उठा और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती करके चला ॥ २० । जब राजा गड़हे के निकट आया तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल् से कहने लगा हे दानिय्येल् हे जीवते परमेश्वर के दास क्या तेरा परमेश्वर जिस की तू नित्य उपासना करता है तुझे सिंहों से बचा सका है ॥ २१ । तब दानिय्येल् ने राजा से कहा हे राजा तू युगयुग जीता रहे ॥ २२ । मेरे परमेश्वर ने अपना

दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रक्खा है कि उन्हों ने मेरी कुछ भी हानि नहीं किई इस का कारण यह है कि मैं उस के साम्हने निर्दोष पाया गया और हे राजा तेरी भी मैं ने कुछ हानि नहीं किई ॥ २३। तब राजा ने दानियेल् के विषय में बहुत आनन्दित होकर उस को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दिई। सो दानियेल् गड़हे में से निकाला गया और उस में हानि का कोई चिन्ह पाया न गया इस कारण कि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था ॥ २४। और राजा ने आज्ञा दिई तब जिन पुरुषों ने दानियेल् की चुगली खाई थी सो अपने अपने लड़केबालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों के गड़हे मे डाल दिये गये और वे गड़हे की पेंदी लों न पहुंचे कि सिंहों ने उन को झापकर सब हड्डियों समेत उन को चबा डाला ॥

२५। तब दारा राजा ने सारी पृथिवी के रहनेहारे देश देश और जाति जाति के सब लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों के पास यह लिखा कि तुम्हारा बहुत कुशल हो ॥ २६। मैं यह आज्ञा देता हूं कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार है वहां वहां के लोग दानियेल् के परमेश्वर के सन्मुख कांपते और थरथराते रहें क्योंकि जीवता और युगायुग ठहरनेहारा परमेश्वर वही है और उस का राज्य अविनाशी और उस की प्रभुता सदा स्थिर रहेगी ॥ २७। जिस ने दानियेल् को सिंहों से बचाया है सो बचाने और छुड़ानेहारा और स्वर्ग में और पृथिवी पर चिन्हों और चमत्कारों का करनेहारा ठहरा है ॥ २८। और दानियेल् दारा और कुस्रू फ़ारसी दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान् रहा ॥

७. बाबेल् के राजा बेलशस्सर् के पहिले बरस में दानियेल् ने पलंग पर स्वप्न देखा पीछे उस ने वह स्वप्न लिखा और बातों का सार भी वर्णन किया ॥ २। दानियेल् ने यह कहा कि मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी बयार चलने लगी ॥ ३। तब समुद्र में से चार बड़े बड़े जन्तु जो एक दूसरे से भिन्न थे निकल आये ॥ ४। पहिला जन्तु सिंह के समान था और उस के उकाब के से पंख थे और मेरे देखते देखते उस के पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठाकर मनुष्य की नाईं पांवों के बल खड़ा किया गया और उस को मनुष्य का हृदय दिया गया ॥ ५। फिर मैं ने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था और एक पांजर के बल उठा हुआ था और उस के मुंह में दांतों के बीच तीन पसुली थीं और लोग उस से कह रहे थे कि उठकर बहुत मांस खा ॥ ६। इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है जिस की पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं और उस जन्तु के चार सिर हैं और उस को अधिकार दिया गया ॥ ७। फिर इस के पीछे मैं ने स्वप्न में दृष्टि किई और देखा कि चौथा एक जन्तु भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है और उस के लोहे के बड़े बड़े दांत हैं वह सब कुछ खा डालता और चूर चूर करता और जो बच जाता है उसे पैरों से रौंदता है और वह पहिले सब जन्तुओं से भिन्न है और उस के दस सींग हैं ॥ ८। मै उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उन के बीच एक और छोटा सा सींग निकला और इस के बल से उन पहिले सींगों में से तीन उखाड़े गये फिर मै ने क्या देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आंखें और बड़ा बोल बोलनेहारा मुंह भी है ॥ ९। मै ने देखते देखते अन्त में क्या देखा कि सिंहासन रक्खे गये और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ जिस का वस्त्र हिम सा उजला और सिर के बाल निर्मल ऊन के सरीखे हैं उस का सिंहासन अग्निमय और इस के पहिये धधकती हुई आग के देख पड़ते हैं ॥ १०। उस प्राचीन के सन्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही है फिर हज़ारों हज़ार लोग उस की सेवा टहल कर रहे हैं और लाखों लाख लोग उस के साम्हने हाज़िर हैं फिर न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गई हैं ॥ ११। उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मै देखता रहा और देखते देखते अन्त में क्या देखा

कि वह जन्तु घात किया गया और उस का शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया ॥ १२। और रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया पर उन को प्राण कुछ समय के लिये[1] बचाया गया ॥ १३। मैं ने रात में स्वप्न में दृष्टि किई और देखा कि मनुष्य का सन्तान सा कोई आकाश के मेघों समेत आ रहा है और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा और उस के समीप किया गया ॥ १४। तब उस को ऐसी प्रभुता महिमा और राज्य दिया गया कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे सब उस के अधीन हों उस की प्रभुता सदा की और अटल और उस का राज्य अविनाशी ठहरा ॥

१५। और मुझ दानिय्येल् का मन विकल हो गया[2] और जो कुछ मैं ने देखा था उस के कारण मैं घबरा गया[3] ॥ १६। तब जो लोग पास खड़े थे उन में से एक के पास जाकर मैं ने उन सारी बातों का भेद पूछा उस ने यह कहकर मुझे उन बातों का अर्थ बता दिया कि, १७। उन चार बड़े बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य[4] हैं जो पृथिवी पर उदय होंगे ॥ १८। परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे और युगयुग वरन सदा लों उन के अधिकारी बने रहेंगे ॥ १९। तब मेरे मन में यह इच्छा हुई कि उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लूं जो और तीनों से भिन्न और अति भयंकर था उस के दांत लोहे के और नखून पीतल के थे वह सब कुछ खा डालता और चूर चूर करता और बचे हुए को पैरों से रौन्द डालता था ॥ २०। फिर उस के सिर में के दस सींगों का भेद और जिस और सींग के निकलने से तीन सींग गिर गये अर्थात् जिस सींग की आंखें और बड़ा बोल बोलनेहारा मुंह और और सब सींगों से अधिक कठोर चेष्टा थी उस के भी भेद जानने की मुझे इच्छा हुई ॥ २१। और मैं ने देखा था कि वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर उस समय तक प्रबल भी हो गया, २२। जब तक कि वह अति प्राचीन न आ गया तब परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी ठहरे और उन पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय पहुंचा ॥ २३। उस ने कहा उस चौथे जन्तु का अर्थ एक चौथा राज्य है जो पृथिवी पर होकर और सब राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को नाश करेगा और दांव दांवकर चूर चूर करेगा ॥ २४। और उन दस सींगों का अर्थ यह है कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे और उन के पीछे उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा जो तीन राजाओं को गिरा देगा ॥ २५। और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा वरन साढ़े तीन काल लों वे सब उस के वश में कर दिये जाएंगे ॥ २६। और न्यायी बैठेंगे[1] तब उस की प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश किई जाएगी यहां लों कि उस का अन्त ही हो जाएगा ॥ २७। तब राज्य और प्रभुता और धरती भर पर के राज्य[2] की महिमा परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उस के पवित्र लोगों को दिई जाएगी उस का राज्य तो सदा का राज्य है और सब प्रभुता करनेवाले उस के अधीन होंगे और उस की आज्ञा मानेंगे ॥ २८। इस बात का वर्णन तो मैं अब कर चुका। पर मुझ दानिय्येल् के मन में बड़ी घबराहट बनी रही और मेरी औहत हो गई और मैं इस बात को अपने मन में रक्खे रहा ॥

८. बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे बरस में एक बात मुझ दानिय्येल् को दर्शन के द्वारा उस बात के पीछे दिखाई गई जो पहिले मुझे दिखाई गई थी ॥ २।

(१) मूल में समय और काल के लिये।
(२) मूल में आत्मा देह के बीच घबरा गया।
(३) मूल में मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे घबरा दिया।
(४) मूल में राजा।

(१) मूल में न्याय बैठेगा।
(२) मूल में आकाश भर के नीचे के राज्य।

जब मैं एलाम् नाम प्रान्त में के शूशन् नाम राजगढ़ में रहता था तब मैं ने दर्शन में क्या देखा कि मैं ऊले नदी के तीर पर हूं॥ ३। फिर मैं ने आंख उठाकर क्या देखा कि उस नदी के साम्हने दो सींगवाला एक मेढ़ा खड़ा है और सींग दोनों तो बड़े हैं पर उन में से एक अधिक बड़ा है और जो बड़ा है सो पीछे ही निकला॥ ४। मैं ने उस मेढ़े को देखा कि वह पच्छिम उत्तर और दक्खिन ओर सींग मारता रहता है और न तो कोई जन्तु उस के साम्हने खड़ा रह सकता और न कोई किसी को उस के हाथ से बचा सकता है और वह अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता है॥ ५। मैं सोच रहा था कि फिर क्या देखा कि एक बकरा पच्छिम दिशा से निकलकर सारी पृथिवी के ऊपर हो आया और चलते समय भूमि से पांव न छुआया और उस बकरे की आंखों के बीच एक देखने योग्य सींग था॥ ६। और वह उस दो सींगवाले मेढ़े के पास जा जिस को मैं ने नदी के साम्हने खड़ा देखा था उस पर जलकर अपने सारे बल से लपका॥ ७। मैं ने देखा कि वह मेढ़े के निकट आकर उस पर झुंझलाया और मेढ़े को मारके उस के दोनों सींगों को तोड़ दिया और उस का साम्हना करने को मेढ़े का कुछ बश न चला सो बकरे ने उस को भूमि पर गिराकर रौंद डाला और मेढ़े का उस के हाथ से छुड़ानेहारा कोई न मिला॥ ८। तब बकरा अत्यन्त बड़ाई मारने लगा और जब बलवन्त हुआ तब उस का बड़ा सींग टूट गया और उस की सन्ती देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे॥ ९। फिर इन में से एक सींग से एक छोटा सा सींग और निकला जो दक्खिन पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया॥ १०। बरन वह स्वर्ग की सेना लों बढ़ गया और उस में से और तारों में से भी कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला॥ ११। बरन वह उस सेना के प्रधान लों भी बढ़ गया और उस का नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया और उस का पवित्र वासस्थान गिरा दिया गया॥ १२। और लोगों के अपराध के कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी उस के हाथ में कर दिई गई और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह काम करते करते कृतार्थ हो गया॥ १३। तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते सुना फिर एक और पवित्र जन ने उस पहिले बोलनेहारे से पूछा कि नित्य होमबलि और उजड़वानेहारे अपराध के विषय में जो कुछ दर्शन देखा गया सो कब लों फलता रहेगा अर्थात् पवित्रस्थान और सेना दोनों का रौंदा जाना कब लों होता रहेगा॥ १४। उस ने मुझ से कहा जब लों सांझ और सबेरा दो हजार तीन सौ बार न हो तब लों वह होता रहेगा तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा॥

१५। यह बात दर्शन में देखकर मैं दानिय्येल् इस को समझने का यत्न करने लगा इतने में पुरुष का रूप धरे हुए कोई मेरे सन्मुख खड़ा हुआ देख पड़ा॥ १६। तब मुझे ऊले नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा जो पुकारके कहता था कि हे गब्रीएल् उस जन को उस की देखी हुई बातें समझा॥ १७। सो जहां मैं खड़ा था वहां वह मेरे निकट आया और उस के आते ही मैं घबरा गया और मुंह के बल गिर पड़ा तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान उन देखी हुई बातों को समझ ले क्योंकि उन का अर्थ अन्त ही के समय में फलेगा॥ १८। जब वह मुझ से बातें कर रहा था तब मैं अपना मुंह भूमि की ओर किये हुए भारी नींद में पड़ा पर उस ने मुझे छूकर सीधा खड़ा कर दिया॥ १९। तब उस ने कहा क्रोध भड़कने के अन्त के दिनों में जो कुछ होगा सो मैं तुझे जताता हूं क्योंकि अन्त के ठहराये हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा॥ २०। जो दो सींगवाला मेढ़ा तू ने देखा उस का अर्थ मादियों और फारसियों के राज्य[1] हैं॥ २१। और वह रोंआर बकरा यूनान का राज्य[2] ठहरा और उस की आंखों के बीच जो बड़ा सींग निकला सो पहिला राजा ठहरा॥ २२। और वह सींग जो टूट गया और उस की सन्ती चार सींग जो निकले इस का अर्थ

१) मूल में के राजा।
२) मूल में का राजा।

यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय तो होंगे पर उन का बल उस का सा न होगा ॥ २३। और उन राज्यों के अन्तसमय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे तब क्रूर दृष्टिवाला और पहेली बूझनेहारा एक राजा उठेगा ॥ २४। और उस का सामर्थ्य बड़ा तो होगा पर उस पहिले राजा का सा नहीं और वह अद्भुत रीति से लोगों को नाश करेगा और कृतार्थ होकर काम करता जाएगा और सामर्थियों को और पवित्र लोगों के समुदाय को नाश करेगा ॥ २५। और उस की चतुराई के कारण उस का छल सफल होगा और वह मन में फूलकर निडर रहते हुए बहुत लोगों को नाश करेगा वरन वह सब हाकिमों के हाकिम के विरुद्ध भी खड़ा होगा पर अन्त को वह किसी के हाथ से बिना मार खाये टूट जाएगा, २६। और सांझ और सवेरे के विषय में जो कुछ तू ने देखा और सुना है सो सच बात है पर जो कुछ तू ने दर्शन में देखा है उसे बन्द रख क्योंकि वह बहुत दिनों के पीछे फलेगा ॥ २७। तब मुझ दानिय्येल् का बल जाता रहा और मैं कुछ दिन तक बीमार पड़ा रहा तब मैं उठकर राजा का कामकाज फिर करने लगा पर जो कुछ मैं ने देखा था उस से मैं चकित रहा क्योंकि उस का कोई समझानेहारा न रहा ॥

९. मादी

क्षयर्ष का पुत्र दारा जो कस्दियों के देश पर राजा ठहराया गया उस के राज्य के पहिले बरस में, २। मुझ दानिय्येल् ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम् की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार जो यिर्मयाह् नबी के पास पहुंचा था कितने बरसों के बीते पर अर्थात् सत्तर बरस के पीछे निपट जाएगी॥ ३। तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा और उपवास कर टाट पहिन राख में बैठकर वर मांगने लगा ॥ ४। मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्थना किई और पाप का अंगीकार किया कि हे प्रभु तू महान् और भययोग्य ईश्वर है जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेहारों के साथ अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है॥ ५। हम लोगों ने तो पाप कुटिलता दुष्टता और बलवा किया और तेरी आज्ञाओं और नियमों को तोड़ दिया॥ ६। और तेरे जो दास नबी लोग हमारे राजाओं हाकिमों पितरों और सब साधारण लोगों से तेरे नाम से बात करते थे उन की हम ने नहीं सुनी ॥ ७। हे प्रभु तू धर्म्मी है और हम लोगों को आज के दिन लजाना पड़ता है अर्थात् यरूशलेम् के निवासी आदि सब यहूदी वरन क्या समीप क्या दूर के सब इस्राएली लोग जिन्हें तू ने उस विश्वासघात के कारण जो उन्हों ने तेरा किया था देश देश में बरबस कर दिया है उन सभों को लजाना ही है॥ ८। हे यहोवा हम लोगों ने जो अपने राजाओ हाकिमों और पितरो समेत तेरे विरुद्ध पाप किया है इस कारण हम को लजाना पड़ता है ॥ ९। पर यद्यपि हम अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गये तौभी वह दयासागर और क्षमा की खानि है ॥ १०। हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शिक्षा सुनने पर भी जो उस ने अपने दास नबियों से हम को सुनवा दिई उस पर नहीं चले॥ ११। वरन सारे इस्राएलियों ने भी तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया और ऐसे हट गये कि तेरी नहीं सुनी इस कारण जिस शाप की चर्चा[1] परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है वह शाप हम पर घट[2] गया क्योंकि हम ने उस के विरुद्ध पाप किया है॥ १२। सो उस ने हमारे और हमारे न्यायियों के विषय में जो वचन कहे थे उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है यहां लों कि जैसी विपत्ति यरूशलेम् पर पड़ी है वैसी सारी धरती पर[3] और कहीं नहीं पड़ी ॥ १३। जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसा ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है

(१) मूल में जिस शाप और किरिया।
(२) मूल में उंडेला।
(३) मूल में सारे आकाश के तले।

तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अधर्म्म के कामों से फिरे और न तेरी सत्य बातों में प्रवीणता प्राप्त किई॥ १४। इस कारण यहोवा ने सोच सोचकर[१] हम पर विपत्ति डाली है क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभों में धर्म्मी ठहरता है पर हम ने उस की नहीं सुनी॥ १५। और अब हे हमारे परमेश्वर हे प्रभु तू ने तो अपनी प्रजा को मिस्र देश से बली हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया जो आज लों प्रसिद्ध है पर हम ने पाप और दुष्टता ही किई है॥ १६। हे प्रभु हमारे पापों और हमारे पुरखाओं के अधर्म्म के कामों के कारण तो यरूशलेम् और तेरी प्रजा की हमारे आस पास के सब लोगों की ओर से नामधराई हो रही है तौभी तू अपने सारे धर्म्म के कामों के कारण अपना कोप और जलजलाहट अपने नगर यरूशलेम् पर से जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है उतार दे॥ १७। हे हमारे परमेश्वर अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका हे प्रभु अपने निमित्त यह कर॥ १८। हे मेरे परमेश्वर कान लगाकर सुन आंखें खोलकर हमारी उजाड़ की दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है क्योंकि हम जो तेरे साम्हने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं सो अपने धर्म्म के कामों पर नहीं तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं॥ १९। हे प्रभु सुन ले हे प्रभु पाप क्षमा कर हे प्रभु ध्यान देकर जो करना है सो कर विलम्ब न कर हे मेरे परमेश्वर तेरा नगर और तेरी प्रजा जो तेरी ही कहलाती है इस लिये अपने निमित्त ऐसा ही कर॥

२०। यों मैं प्रार्थना करता और अपने और अपने इस्राएली जातिभाइयों के पाप का अंगीकार करता और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उस के पवित्र पर्वत के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती करता ही था, २१। कि वह पुरुष गब्रीएल् जिसे मैं ने उस समय देखा था जब मुझे पहिले दर्शन हुआ उस ने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर सांझ के अन्नबलि के समय मुझ को छू लिया, २२। और मुझे समझाकर मेरे साथ बातें करने लगा और कहा हे दानिय्येल् मैं अभी तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को निकल आया हूं॥ २३। जब तू गिड़गिड़ाकर बिनती करने लगा तब ही इस की आज्ञा निकली सो मैं तुझे समझाने को आया हूं क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा सो उस विषय को समझ और दर्शन की बात का अर्थ बूझ ले॥ २४। तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सत्ते ठहराये गये कि उन के अन्त लों अपराध का होना बन्द हो और पापों का अन्त और अधर्म्म का प्रायश्चित्त किया जाए और युग युग की धार्म्मिकता प्रगट होए[१] और दर्शन की बात पर और नबूवत पर छाप दिई जाए और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए॥ २५। सो यह जान और समझ ले कि यरूशलेम् के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से ले अभिषिक्त प्रधान के समय लों सात सत्ते बीतेंगे फिर बासठ सत्तों के बीते पर चौक और खांई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा॥ २६। और उन बासठ सत्तों के बीते पर अभिषिक्त पुरुष नाश किया जाएगा[२] और उस के हाथ कुछ न लगेगा और आनेहारे प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश तो करेगी पर उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है तौभी उस अन्त लों लड़ाई होती रहेगी क्योंकि उजड़ जाना निश्चय करके ठाना गया है॥ २७। और वह प्रधान एक सत्ते के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बांधेगा पर आधे ही सत्ते के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा और घिनौनी वस्तुओं के कंगूरे पर उजड़वानेहारा दिखाई देगा और निश्चय से ठनी हुई समाप्ति के होने लों ईश्वर का कोप उजड़वानेहारे पर पड़ा रहेगा[३]॥

(१) मूल में जाग जागकर।

(१) मूल में लाया जाए।
(२) मूल में काटा जाएगा।
(३) मूल में. उंडेला जाएगा।

१०. फारस देश के राजा कुसू के राज्य के तीसरे बरस में दानिय्येल् पर जो बल्तशस्सर् भी कहावता है एक बात प्रगट किई गई और यह बात सच है कि बड़ा युद्ध होगा सो उस ने इस बात को बूझ लिया और इस देखी हुई बात की समझ उस को आ गई ॥ २ । उन दिनों में दानिय्येल् तीन अठवारों तक शोक करता रहा ॥ ३ । उन तीन अठवारों के पूरे होने लों मैं ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस वा दाखमधु अपने मुंह में छुवाया न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया ॥ ४ । फिर पहिले महीने के चौबीसवें दिन को मैं हिद्देकेल् नाम नदी के तीर पर था ॥ ५ । तब मैं ने आंखें उठाकर क्या देखा कि सन का वस्त्र पहिने हुए और ऊफज़ देश के कुन्दन से कमर बान्धे हुए एक पुरुष है ॥ ६ । उस का शरीर फीरोज़ा सा उस का मुख बिजली सा उस की आंखें जलते हुए दीपक सी उस की बांहें और पांव चमकाये हुए पीतल के से और उस के वचनों का शब्द भीड़ का सा था ॥ ७ । उस को केवल मुझ दानिय्येल् ही ने देखा और मेरे संगी मनुष्यों को उस का कुछ दर्शन न हुआ, वे बहुत ही थरथराने लगे और छिपने के लिये भाग गये ॥ ८ । सो मैं अकेला रहकर यह अद्भुत[1] दर्शन देखता रहा इस से मेरा बल जाता रहा और मेरी ओज्ञत हो गई और मुझ में कुछ भी बल न रहा ॥ ९ । तौभी मैं ने उस पुरुष के वचनों का शब्द सुना और जब वह शब्द मुझे सुन पड़ा तब मैं मुंह के बल गिरके भारी नींद में पड़ा हुआ भूमि पर औंधे मुंह था ॥ १० । फिर किसी ने अपना हाथ मेरी देह में छुवाया और मुझे उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल लड़खड़ाते बंकैया कर दिया ॥ ११ । तब उस ने मुझ से कहा हे दानिय्येल् हे अति प्रिय पुरुष जो वचन मैं तुझ से कहने चाहता हूं सो समझ ले और सीधा खड़ा हो क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं । जब उस ने मुझ से यह वचन कहा तब मैं खड़ा तो हो गया पर थरथराता रहा ॥ १२ । फिर उस ने मुझ से कहा हे दानिय्येल् मत डर क्योंकि जिस पहिले दिन को तू ने समझने बूझने और अपने परमेश्वर के साम्हने अपने को दीन हीन बनाने को ओर मन लगाया उसी दिन तेरे वचन सुने गये और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं ॥ १३ । फारस के राज्य का प्रधान तो इक्कीस दिन लों मेरा साम्हना किये रहा पर मीकाएल् नाम जो मुख्य प्रधानों में से है सो मेरी सहायता के लिये आया सो ऐसा होने पर फारस के राजाओं के पास मेरे रहने का प्रयोजन न रहा ॥ १४ । और अब मैं तुझे समझाने को आया हूं कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी क्योंकि जो तू ने दर्शन पाकर देखा है सो कुछ दिनों के पीछे फलेगा ॥ १५ । जब वह पुरुष मुझ से ऐसी बातें कह चुका तब मैं ने मुंह भूमि की ओर किया और चुपका रह गया ॥ १६ । तब क्या हुआ कि मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे होंठ छूए और मैं मुंह खोलकर बोलने लगा और जो मेरे साम्हने खड़ा था उस से कहा हे मेरे प्रभु दर्शन की बातों के कारण मुझ को पीड़ा सी उठी और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा ॥ १७ । सो प्रभु का दास अपने प्रभु के साथ क्योंकर बातें कर सके क्योंकि तब से मेरी देह में न तो कुछ बल रहा और न कुछ सांस ॥ १८ । तब मनुष्य के समान किसी ने फिर मुझे छूकर मेरा हियाव बन्धाया ॥ १९ । और कहा हे अति प्रिय पुरुष मत डर तुझे शान्ति मिले तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धे जब उस ने यह कहा तब मैं ने हियाव बांधकर कहा हे मेरे प्रभु अब कह क्योंकि तू ने मेरा हियाव बंधाया है ॥ २० । उस ने कहा मैं किस कारण तेरे पास आया हूं सो क्या तू जानता है अब तो मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूंगा और जब मैं निकलूंगा तब यूनान का प्रधान आएगा ॥ २१ । और जो कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है सो मैं तुझे बताता हूं और उन प्रधानों के विरुद्ध तुम्हारे प्रधान मीकाएल् को छोड़ मेरे संग स्थिर रहनेहारा कोई

---

(१) मूल में उहेला। (२) मूल में बड़ा।

११. सो नहीं है। और दारा नाम मादी राजा के राज्य के पहिले बरस में उस को हियाव बन्धाने और बल देने के लिये मैं ही खड़ा हो गया था॥

२। और अब मैं तुझ को सच्ची बात बताता हूं कि फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे और चौथा राजा उन सभों से अधिक धनी होगा और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा॥ ३। उस के पीछे एक पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा॥ ४। जब वह बड़ा होगा तब उस का राज्य टूटेगा और चारों दिशाओं की ओर बटकर अलग अलग हो जाएगा और न तो उस के राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी न उस के वंश को कुछ मिलेगा क्योंकि उस का राज्य उखड़कर उस को छोड़ और लोगों को प्राप्त होगा॥ ५। तब दक्खिन देश का राजा अपने एक हाकिम समेत बल पकड़ेगा वह उस से अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा यहां लों कि उस की बड़ी ही प्रभुता हो जाएगी॥ ६। कई बरस के बीते पर वे दोनों आपस में मिलेंगे और दक्खिन देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के पास सत्य वाचा बांधने को आएगी पर न तो उस का बाहुबल ठहरा रहेगा और न उस के पिता का वरन वह स्त्री अपने पहुंचानेहारों और जन्मानेहारे और उस समेत भी जो उन दिनों उसे संभालेगा परवश किई जाएगी॥ ७। फिर उस के कुल से कोई उत्पन्न होकर[1] उस के स्थान में विराजमान होके सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा और वहां उन से युद्ध करके प्रबल होगा॥ ८। तब वह उन के देवताओं की ढली हुई मूरतों और सोने चांदी के मनभाऊ पात्रों को छीनकर मिस्र में ले जाएगा इस के पीछे वह कुछ बरस लों उत्तर देश के राजा की ओर से हाथ रोके रहेगा॥ ९। तब वह राजा दक्खिन देश के राजा के राज्य के देश में आएगा पर फिर अपने देश में लौट जाएगा॥ १०। तब उस के पुत्र झगड़ा मचाकर बहुत से बड़े बड़े दल एकट्ठे करेंगे तब वह उमण्डनेहारी नदी की नाईं आ देश के बीच होकर जाएगा फिर लौटता हुआ अपने गढ़ लों झगड़ा मचाता जाएगा॥ ११। तब दक्खिन देश का राजा चिढ़ेगा और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध करेगा और वह राजा लड़ने के लिये बड़ी भीड़ भाड़ एकट्ठी करेगा पर वह भीड़ उस के हाथ में कर दिई जाएगी॥ १२। उस भीड़ को दूर करके उस का मन फूल उठेगा और वह लाखों लोगों को गिराएगा पर तौभी प्रबल न होगा॥ १३। क्योंकि उत्तर देश का राजा लौटकर पहिली से भी बड़ी भीड़ एकट्ठी करेगा और कई दिनों वरन बरसों के बीते पर वह निश्चय बड़ी सेना और धन लिये हुए आएगा॥ १४। और उन दिनों में बहुत से लोग दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध उठेंगे वरन तेरे लोगों में से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे जिस से इस दर्शन की बात पूरी हो जाएगी पर वे ठोकर खाकर गिरेंगे॥ १५। सो उत्तर देश का राजा आकर धुस बांधेगा और दृढ़ दृढ़ नगर ले लेगा और दक्खिन देश के न तो प्रधान[2] खड़े रहेंगे और न बड़े बड़े वीर न किसी को खड़े रहने का बल होगा॥ १६। सो उन के विरुद्ध जो आएगा वह अपनी इच्छा पूरी करेगा और उस का साम्हना करनेहारा कोई न रहेगा वरन वह हाथ में सत्यानाश लिये हुए शिरोमणि देश में भी खड़ा होगा॥ १७। तब वह अपने राज्य के सारे बल समेत कई सीधे लोगों को संग लिये हुए आने लगेगा और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा और उस को एक स्त्री[3] इस लिये दिई जाएगी कि बिगाड़ी जाए पर वह स्थिर न रहेगी न उस राजा की हो जाएगी॥ १८। तब वह द्वीपों की ओर मुंह करके बहुतों को ले लेगा पर एक सेनापति उस की किई हुई नामधराई को मिटाएगा[4] वरन पलटाकर उसी के ऊपर लगा देगा॥

(१) मूल में उस की मास्त में से।

(१) मूल में बाहे। (२) मूल में बन्द करेगा।
(३) मूल में स्त्रियों की बेटी।

१९ । तब वह अपने देश के गढ़ों की ओर मुंह फेरेगा और वहां ठोकर खाकर गिरेगा और उस का पता कहीं न रहेगा ॥ २० । तब उस के स्थान में ऐसा कोई उठेगा जो शिरोमणि राज्य में बरबस करनेहारे को घुमाएगा पर थोड़े दिन बीते वह कोप वा युद्ध किये बिना नाश होगा ॥ २१ । फिर उस के स्थान में एक तुच्छ मनुष्य उठेगा जिस की राजप्रतिष्ठा पहिले तो न होगी तौभी वह चैन के समय आकर चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा ॥ २२ । तब उस की भुजारूपी बाढ़ से लोग बरन वाचा का प्रधान भी उस के साम्हने से बहकर नाश होंगे ॥ २३ । क्योंकि वह उस के संग वाचा बांधने पर भी छल करेगा और थोड़े ही लोगों को संग लिये हुए चढ़कर प्रबल होगा ॥ २४ । चैन के समय वह प्रान्त के उत्तम से उत्तम स्थानों पर चढ़ाई करेगा और जो काम न उस के पुरखा न उस के पुरखाओं के पुरखा भी करते थे सो वह करेगा और लूटी छिनी धन संपत्ति में बहुत बांटा करेगा और वह कुछ काल लों दृढ़ नगरों के लेने की कल्पना करता रहेगा ॥ २५ । तब वह दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध बड़ी सेना लिये हुए अपने बल और हियाव को बढ़ाएगा और दक्खिन देश का राजा अत्यन्त बड़ी और सामर्थी सेना लिये हुए युद्ध तो करेगा पर ठहर न सकेगा क्योंकि लोग उस के विरुद्ध कल्पना करेंगे ॥ २६ । बरन उस के भोजन के खानेहारे भी उस को हरवाएंगे और यद्यपि उस की सेना बाढ़ की नाईं चढ़ेगी तौभी उस के बहुत से लोग खेत रहेंगे ॥ २७ । तब उन दोनों राजाओं के मन बुराई करने में लगेंगे यहां लों कि वे एक ही मेज पर बैठे हुए भी आपस में झूठ बोलेंगे और इस से कुछ बन न पड़ेगा क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत ही समय में होनेवाला है ॥ २८ । तब उत्तर देश का राजा बड़ी लूट लिये हुए अपने देश को लौटेगा और उस का मन पवित्र वाचा के विरुद्ध उभरेगा सो वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने देश को लौट जाएगा ॥ २९ । नियत समय पर वह फिर दक्खिन देश की ओर जाएगा पर उस अगली बार के समान इस पिछली बार उस का बश न चलेगा ॥ ३० । क्योंकि कित्तियों के जहाज उस के विरुद्ध आएंगे इस लिये वह उदास होकर लौटेगा और पवित्र वाचा पर चिढ़कर अपनी इच्छा पूरी करेगा और लौटकर पवित्र वाचा के तोड़नेहारों की सुधि लेगा ॥ ३१ । तब उस के सहायक[१] खड़े होकर दृढ़ पवित्रस्थान को अपवित्र करेंगे और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे और उजड़वानेहारी घिनौनी वस्तु को खड़ा करेंगे ॥ ३२ । और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे उन को वह चिकनी चुपड़ी बातें कह कहकर भक्तिहीन कर देगा पर जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे सो हियाव बांधकर बड़े कर्म्म करेंगे ॥ ३३ । और लोगों के सिखानेहारे जन बहुतों को समझाएंगे पर तलवार से छिदकर और आग में जलकर और बंधुए होकर और लुटकर बहुत दिन लों बड़े दुःख में पड़े रहेंगे ॥ ३४ । जब वे पड़ेंगे तब थोड़ा बहुत सम्भलेंगे तो सही पर बहुत से लोग चिकनी चुपड़ी बातें कह कहकर उन से मिल जाएंगे ॥ ३५ । और सिखानेहारों में से कितने जो गिरेंगे सो इस लिये गिरने पाएंगे कि जांचे जाएं और निर्मल और उजले किये जाएं यह दशा अन्त के समय लों बनी रहेगी क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत ही समय में होनेवाला है ॥ ३६ । सो वह राजा अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करेगा और सारे देवताओं के ऊपर अपने को ऊंचा और बड़ा ठहराएगा बरन सारे देवताओं के ऊपर जो ईश्वर है उस के विरुद्ध भी अनोखी बातें कहेगा और सब लों परमेश्वर का कोप शान्त न हो तब लों उस राजा का कार्य्य सफल रहेगा क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठना हुआ है सो अवश्य ही होनेवाला है ॥ ३७ । फिर वह अपने पुरखाओं के देवताओं की भी चिन्ता न करेगा और न तो

(१) मूल में बांहें ।

स्त्रियों की प्रीति की कुछ चिन्ता करेगा न किसी देवता को वरन वह सभों के ऊपर अपने ही को बड़ा ठहराएगा ॥ ३८। और वह अपने राजपद पर स्थिर रहकर दृढ़ गढ़ों ही के देवता का सन्मान करेगा अर्थात् एक देवता का जिसे उस के पुरखा न जानते थे वह सोना चान्दी मणि और और मनभावनी वस्तुएं चढ़ाकर सन्मान करेगा ॥ ३९। और उस बिराने देवता के सहारे से वह अति दृढ़ गढ़ों से लड़ेगा और जो कोई उस को माने उस को वह बड़ी प्रतिष्ठा देगा और ऐसे लोगों को बहुतों के ऊपर प्रभुता देगा और अपने लाभ के लिये अपने देश की भूमि को बांट देगा ॥ ४०। अन्त के समय दक्खिन देश का राजा उस को सींग मारने लगेगा पर उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर की नाईं बहुत से रथ सवार और जहाज संग लेकर चढ़ाई करेगा इस रीति वह बहुत से देशों में फैल जाएगा और यों निकल जाएगा ॥ ४१। वरन वह शिरोमणि देश में भी आएगा और बहुत से देश तो उजड़ जाएंगे पर एदोमी मोआबी और मुख्य मुख्य अम्मोनी इन जातियों के देश भी उस के हाथ से बच जाएंगे ॥ ४२। वह कई देशों पर हाथ बढ़ाएगा और मिस्र देश न बचेगा ॥ ४३। वरन वह मिस्र में के सोने चान्दी के खज़ानों और सब मनभावनी वस्तुओं का स्वामी हो जाएगा और लूबी और कूशी लोग भी उस के पीछे हो लेंगे ॥ ४४। उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर घबराएगा तब बड़े क्रोध में आकर बहुतों का सत्यानाश करने को निकलेगा ॥ ४५। और वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय तंबू खड़ा कराएगा इतना करने पर भी उस का अन्त आ जाएगा और उस का सहायक कोई न रहेगा ॥

१२.

१। उसी समय मीकाएल् नाम बड़ा प्रधान जो तेरे जातिभाइयों का पक्ष करने को खड़ा हुआ करता है सो खड़ा होगा और तब ऐसे संकट का समय होगा जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर तब लों कभी न हुआ होगा पर उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम ईश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं सो बच निकलेंगे ॥ २। और भूमि के नीचे[1] जो सोये रहेंगे उन में से बहुत लोग कितने तो सदा के जीवन के लिये और कितने अपनी नामधराई और सदा लों अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये जाग उठेंगे ॥ ३। तब सिखानेहारों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी और जो बहुतों को धर्म्मी बनाते हैं सो सदा सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे ॥ ४। और हे दानिय्येल् तू इन वचनों को अन्तसमय लों बन्द कर रख और इस पुस्तक पर छाप दे रख बहुत लोग पूछ पाछ और ढूंढ़ ढांढ़ तो करेंगे और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा ॥

५। यह सब सुन मुझ दानिय्येल् ने दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुरुष खड़े हैं एक तो नदी के इस तीर पर और दूसरा नदी के उस तीर पर है ॥ ६। तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था उस से उन पुरुषों में से एक ने पूछा कि इन आश्चर्य कामों का अन्त कब लों होगा ॥ ७। तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था उस ने मेरे सुनते दहिना और बायां दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर सदा जीते रहनेहारे की यह किरिया खाई कि यह दशा साढ़े तीन ही काल लों रहेगी और जब पवित्र प्रजा की शक्ति तोड़ते तोड़ते टूट जाएगी तब ये सब बातें पूरी होंगी ॥ ८। यह बात मैं सुनता तो था पर कुछ न समझा सो मैं ने कहा हे मेरे प्रभु इन बातों का अन्तफल क्या होगा ॥ ९। उस ने कहा हे दानिय्येल् चला जा क्योंकि ये बातें अन्तसमय के लिये बन्द हैं और इन पर छाप दिई हुई है ॥ १०। बहुत लोग तो अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे और स्वच्छ हो जाएंगे पर दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा पर सिखानेहारे समझेंगे ॥ ११। और जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी और उजड़वानेहारी घिनौनी

(१) मूलमें धूलि की भूमि में।

वस्तु स्थापित किई जाएगी तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे ॥ १२ । क्या ही धन्य वह होगा जो धीरज धरके तेरह सौ पैंतीस दिन के अंत लों भी पहुंचे ॥ १३ । सो तू जाकर अन्त लों ठहरा रह तब लों तू विश्राम करता रहेगा फिर उन दिनों के अन्त में निज भाग पर खड़ा होगा ॥

होशे ।

---

१. यहूदा के राजा उज्जिय्याह् योताम् आहाज् और हिज़्किय्याह् और इस्राएल् के राजा योआश् के पुत्र यारोबाम् के दिनो में यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुचा ॥

२ । जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले पहिल बातें किईं तब उस ने होशे से यह कहा कि जाकर एक वेश्या को अपनी स्त्री और उस के कुकर्म्म के लड़केबालो को अपने लड़केबाले कर ले क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे हो चलना छोड़कर वेश्या का सा काम बहुत करता रहा है ॥ ३ । सो उस ने जाकर दिब्लैम् की बेटी गोमेर् को अपनी स्त्री कर लिया और वह उस से गर्भवती होकर एक पुत्र जनी ॥ ४ । तब यहोवा ने उस से कहा इस का नाम यिज्रेल्[1] रख क्योंकि थोड़े ही काल में मैं येहू के घराने को यिज्रेल् के खून का दण्ड दूगा और इस्राएल् के घराने के राज्य का अन्त कर दूगा॥ ५। और उस समय में यिज्रेल् की तराई में इस्राएल् के धनुष को तोड़ डालूगा ॥ ६ । और वह स्त्री फिर गर्भवती होकर एक बेटी जनी तब यहोवा ने होशे से कहा इस का नाम लोरुहामा[2] रख क्योंकि मैं इस्राएल् के घराने पर फिर कभी दया करके उन का अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूंगा ॥ ७ । परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूंगा और उन का उद्धार करूंगा धनुष वा तलवार वा युद्ध वा घोड़ों वा सवारों के द्वारा नहीं परन्तु उन के परमेश्वर यहोवा के द्वारा उन का उद्धार करूंगा ॥ ८। जब उस स्त्री ने लोरुहामा का दूध छुड़ाया तब वह गर्भवती होकर एक पुत्र जनी ॥ ९ । तब यहोवा ने कहा इस का नाम लोअम्मी[3] रख क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो और न मैं तुम लोगो का रहूंगा ॥

१० । तौभी इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू के किनकों की सी हो जाएगी जिन का मापना गिनना अनहोना है और जिस स्थान में उन से यह कहा जाता है कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो उसी स्थान में वे जीवते ईश्वर के पुत्र कहलाएंगे ॥ ११ । तब यहूदी और इस्राएली दोनों एकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएंगे क्योंकि यिज्रेल् का दिन प्रसिद्ध[2] होगा ॥

२. १ । सो तुम लोग अपने भाइयों से अम्मी[3] और अपनी बहिनों से रुहामा[4] कहो ॥

२। अपनी माता से विवाद करो विवाद क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं और न मैं उस का पति हूं वह

(१) अर्थात् ईश्वर बोएगा वा तितर बितर करेगा यिज्रेल् एक नगर का भी नाम है। (२) अर्थात् जिस पर दया नहीं हुई।

(१) अर्थात् मेरी प्रजा नहीं। (२) मूल में बड़ा।
(३) अर्थात् मेरी प्रजा।
(४) अर्थात् जिस पर दया हुई है।

अपने मुंह पर से अपने छिनालपन को और अपनी छातियों के बीच से व्यभिचारों को अलग करे॥ ३। नहीं तो मैं उस के वस्त्र उतारकर उस को जन्म के दिन के समान नंगी कर दूंगा और उस को जंगल के समान और मरुभूमि के सरीखी बनाऊंगा और प्यास से मार डालूंगा॥ ४। और उस के लड़केवालों पर भी मैं कुछ दया न करूंगा क्योंकि वे कुकर्म्म के लड़के हैं॥ ५। अर्थात् उन की माता ने छिनाला किया जिस के गर्भ में वे पड़े उस ने लज्जा के योग्य काम किया उस ने कहा कि मेरे यार जो मेरी रोटी पानी ऊन सन तेल और मद्य देते हैं उन्हीं के पीछे मैं चलूंगी॥ ६। इस लिये सुनो मैं उस के मार्ग को कांटों से रूंधूंगा और ऐसा बाड़ा खड़ा करूंगा कि वह राह न पा सकेगी॥ ७। और वह अपने यारों के पीछे चलने से भी उन्हें जान लेगी और उन्हें ढूंढ़ने से भी न पाएगी तब वह कहेगी मैं अपने पहिले पति के पास फिर जाऊंगी क्योंकि मेरी पहिली दशा इस समय की दशा से अच्छी थी॥ ८। वह तो नहीं जानती कि अन्न नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता हूं और उस के लिये वह चांदी सोना जिस को वे बाल् देवता के काम में ले आते हैं मैं ही बढ़ाता हूं॥ ९। इस कारण मैं अन्न की ऋतु में अपने अन्न को और नये दाखमधु के होने के समय में अपने नये दाखमधु को हर लूंगा और अपना ऊन और सन भी जिन से वह अपना तन ढांपती है छीन लूंगा॥ १०। और अब मैं उस के यारों के साम्हने उस के तन को उघाड़ूंगा और मेरे हाथ से कोई उसे न छुड़ा सकेगा॥ ११। और मैं उस के पर्व्व नये चांद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सव को उठा दूंगा॥ १२। और मैं उस की दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को जिन के विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे यारों ने मुझे दिई है ऐसा बिगाड़ूंगा कि वे जंगल से हो जाएंगे और बनैले पशु उन्हें चर डालेंगे॥ १३। और वे दिन जिन में वह बाल् देवताओं के लिये धूप जलाती और नत्थ और हार पहिने अपने यारों के पीछे जाती और मुझ को भूले रहती थी उन दिनों का दण्ड मैं उसे दूंगा यहोवा की यही वाणी है॥ १४। इस लिये देखो मैं उसे मोहित करके जंगल में ले जाऊंगा और वहां उस से शांति की बातें कहूंगा॥ १५। और मैं उस को दाख की बारियां वहीं[1] दूंगा और आकोर[2] की तराई को आशा का द्वार कर दूंगा और वहां वह मुझ से ऐसी बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय कहती थी॥ १६। और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी[3] कहेगी और फिर बाली न कहेगी॥ १७। क्योंकि मैं उसे बाल् देवताओं के नाम आगे को लेने न दूंगा और न उन के नाम फिर स्मरण में रहेंगे॥ १८। और उस समय मैं उन के लिये बनैले पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेहारे जन्तुओं के साथ वाचा बांधूंगा और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उन के देश से दूर कर दूंगा और ऐसा करूंगा कि वे लोग निडर सोया करेंगे॥ १९। और मैं तुझे सदा के लिये अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा और यह प्रतिज्ञा धर्म्म और न्याय और करुणा और दया के साथ करूंगा॥ २०। और यह सच्चाई के साथ भी किई जाएगी और तू यहोवा का ज्ञान पाएगी॥ २१। और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तो आकाश की सुनकर उस को उत्तर दूंगा और वह पृथिवी की सुनकर उस को उत्तर देगा॥ २२। और पृथिवी अन्न नये दाखमधु और टटके तेल की सुनकर उन को उत्तर देगी और वे यिज्रेल को उत्तर देंगे॥ २३। और मैं अपने लिये उस को देश में बोऊंगा और लोरुहामा पर दया करूंगा और लोअम्मी से कहूंगा कि तू मेरी प्रजा है और वह कहेगा हे मेरे परमेश्वर॥

३. फिर यहोवा ने मुझ से कहा अब जाकर ऐसी एक स्त्री से प्रीति कर जो व्यभिचारिन होने पर भी अपने प्रिय की

(१) मूल में वहीं से। (२) अर्थात् कष्ट। (३) अर्थात् मेरे पति।

प्यारी हो क्योंकि उसी भांति यद्यपि इस्राएली पराये देवताओं की ओर फिरते और दाख की टिकियों में प्रीति रखते हैं तौभी यहोवा उन से प्रीति रखता है॥ २। सो मैं ने एक स्त्री को चांदी के पन्द्रह टुकड़े और डेढ़ होमेर् जव देकर मोल लिया॥ ३। और मैं ने उस से कहा तू बहुत दिन लों मेरे लिये बैठी रहना और न तो छिनाला करना और न किसी पुरुष की स्त्री हो जाना और मैं भी तेरे लिये ऐसा ही रहूंगा॥ ४। क्योंकि इस्राएली बहुत दिन लों बिना राजा बिना हाकिम बिना यज्ञ बिना लाठ और बिना एपोद् वा गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे॥ ५। उस के पीछे वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे और अन्त के दिनों में यहोवा के पास और उस की उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएंगे॥

४. हे इस्राएलियो यहोवा का वचन सुनो यहोवा का इस देश के वासियों के साथ मुकद्दमा है क्योंकि इस में न तो कुछ सच्चाई है और न कुछ करुणा न कुछ परमेश्वर का ज्ञान है॥ २। साप देने झूठ बोलने वध करने चुराने व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता वे व्यवस्था की सीमा को लांघकर निकल गये और खून ही खून होता रहता है[१]॥ ३। इस कारण यह देश विलाप करेगा और मैदान के जीव जन्तुओं और आकाश के पक्षियों समेत उस के सब निवासी कुम्हला जाएंगे समुद्र की मछलियां भी नाश हो जाएंगी॥ ४। देखो कोई वाद विवाद न करे न कोई उलहना दे क्योंकि तेरे लोग तो याजक से वाद विवाद करनेहारों के समान हैं॥ ५। तू दिनदुपहरी ठोकर खाएगा और रात को नबी भी तेरे साथ ठोकर खाएगा और मैं तेरी माता को नाश करूंगा॥ ६। मेरी प्रजा मेरे ज्ञान बिना नाश हो गई तू ने जो मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है इस लिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा और तू ने जो अपने परमेश्वर की व्यवस्था को बिसराया है इस लिये मैं भी तेरे लड़केबालों को बिसराऊंगा॥ ७। जैसे जैसे वे बढ़ते गये वैसे वैसे वे मेरे विरुद्ध पाप करते गये मैं उन के विभव के पलटे उन का अनादर करूंगा॥ ८। वे मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं और प्रजा के पापी होने की लालसा करते हैं॥ ९। सो प्रजा की जो दशा होगी वही याजक की भी होगी और मैं उन की चाल चलन का दण्ड दूंगा और उन के कामों का बदला उन को दूंगा॥ १०। वे खाएंगे तो पर तृप्त न होंगे और वेश्यागमन तो करेंगे पर न बढ़ेंगे क्योंकि उन्हों ने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है॥ ११। वेश्यागमन और दाखमधु और टटका दाखमधु ये तीनों बुद्धि[१] को भ्रष्ट करते हैं॥ १२। मेरी प्रजा के लोग अपने काठ से प्रश्न करते हैं और उन की छड़ी उन को बताती है क्योंकि छिनाला करानेहारे आत्मा ने उन्हें बहकाया और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं॥ १३। बांज चिनार और छोटे बांज वृक्षों की छाया जो अच्छी होती है इस लिये वे उन के तले पहाड़ों की चोटियों पर यज्ञ करते और टीलों पर धूप जलाते हैं इस कारण तुम्हारी बेटियां छिनाल और तुम्हारी बहुएं व्यभिचारिन हो गई हैं॥ १४। चाहे तुम्हारी बेटियां छिनाला और तुम्हारी बहुएं व्यभिचार करें तौभी मैं उन को दण्ड न दूंगा क्योंकि वे आप ही वेश्याओं के साथ एकान्त में जाते और देवदासियों के साथी होकर यज्ञ करते हैं और वे लोग जो समझ नहीं रखते सो गिरा दिये जाएंगे॥ १५। हे इस्राएल् यद्यपि तू छिनाला करता है तौभी यहूदा दोषी न बने न तो गिल्गाल् को आओ और न बेतावेन् को चढ़ आओ और न यह कहकर किरिया खाओ कि यहोवा के जीवन की सोंह॥ १६। क्योंकि इस्राएल् ने हठीली कलोर की नाईं हठ किया है सो अब यहोवा उन्हें भेड़ के बच्चे की नाईं लंबे चौड़े मैदान में चराएगा॥ १७। एप्रैम् तो मूरतों का संगी हो गया है सो उस को रहने दे॥ १८। जब पिलौवल कर चुकते हैं

(१) मूल में लोहू को लोहू पहुंचता है।

(१) मूल में, हृदय।

तब वेश्यागमन करने में लग जाते हैं उन के प्रधान लोग निरादर होने में अति प्रीति रखते हैं ॥ १९ । आंधी उन को अपने पंखों में बांधकर उड़ा ले जाएगी और उन के बलिदानों के कारण उन की आशा टूट जाएगी ॥

५. हे याजको यह बात सुनो और हे इस्राएल् के सारे घराने ध्यान देकर सुनो और हे राजा के घराने तुम कान लगाओ क्योंकि तुम पर न्याय किया जाएगा क्योंकि तुम मिस्पा में फन्दा और ताबोर् पर लगाया हुआ जाल बन गये हो ॥ २ । उन बिगड़े हुओं ने घोर हत्या किई है[1] सो मैं उन सभों को ताड़ना दूंगा ॥ ३ । मैं एप्रैम् का भेद जानता हूं और इस्राएल् की दशा मुझ से छिपी नहीं है हे एप्रैम् तू ने छिनाला किया और इस्राएल् अशुद्ध हुआ है ॥ ४ । उन के काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते क्योंकि छिनाला करानेहारा आत्मा उन में रहता है और यहोवा का ज्ञान उन में नहीं रहा ॥ ५। और इस्राएल् का गर्व्व उस के साम्हने ही साक्षी देता है और इस्राएल् और एप्रैम् अपने अधर्म्म के कारण ठोकर खाएंगे और यहूदा भी उन के संग ठोकर खाएगा ॥ ६ । वे अपनी भेड़ बकरियां और गाय बैल लेकर यहोवा को ढूंढ़ने चलेंगे पर वह उन को न मिलेगा क्योंकि वह उन के पास से अन्तर्धान हो जाएगा ॥ ७ । वे जो व्यभिचार के लड़के जनों इस में यहोवा का विश्वासघात किया इस कारण अब चांद उन के और उन के भागों के नाश का कारण होगा ॥

८ । गिबा में नरसिंगा और रामा में तुरही फूंको बेतावेन् में ललकारकर कहो कि हे बिन्यामीन् अपने पीछे देख ॥ ९ । एप्रैम् न्याय के दिन में उजाड़ हो जाएगा जिस बात का होना ठाना गया है उसी का सन्देश मैं ने इस्राएल् के सब गोत्रों को दिया है ॥ १० । यहूदा के हाकिम उन के समान हुए हैं जो सिवाना बढ़ा लेते हैं मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल की नाईं उण्डेलूंगा ॥ ११ । एप्रैम् पर अंधेर किया गया है और वह मुकद्दमा हार गया है क्योंकि वह उस आज्ञा के अनुसार जी लगाकर चला ॥ १२ । सो मैं एप्रैम् के लिये कीड़े और यहूदा के घराने के लिये सड़ाहट के समान हूंगा ॥ १३ । जब एप्रैम् ने अपना रोग और यहूदा ने अपना घाव देखा तब एप्रैम् अश्शूर् के पास गया और यारेब्[1] राजा से कहला भेजा पर वह न तुम को चंगा न तुम्हारा घाव अच्छा कर सकता है ॥ १४ । मैं एप्रैम् के लिये सिंह और यहूदा के घराने के लिये जवान सिंह बनूंगा मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊंगा और जब मैं उठा ले जाऊंगा तब मेरे पंजे से कोई छुड़ा न सकेगा ॥ १५ । जब लों वे अपने को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोजी न हों तब लों मैं जाकर अपने स्थान को लौटूंगा जब वे संकट में पड़ेंगे तब जी लगाकर मुझे ढूंढ़ने लगेंगे ॥

६. चलो हम यहोवा की ओर फिरें क्योंकि उसी ने फाड़ा और वही चंगा भी करेगा उसी ने मारा और वही हमारे घावों पर पट्टी बांधेगा ॥ २ । दो दिन के पीछे वह हम को जिलाएगा तीसरे दिन वह हम को उठाकर खड़ा करेगा तब हम उस के सम्मुख जीते रहेंगे ॥ ३ । आओ हम ज्ञान ढूंढ़ें बरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये बड़ा यत्न भी करें[2] क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है और वह हमारे ऊपर वर्षा की नाईं बरन बरसात के अंत की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती आएगा ॥

४ । हे एप्रैम् मैं तुझ से क्या करूं हे यहूदा मैं तुझ से क्या करूं तुम्हारा स्नेह तो भोर के मेघ और सवेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है ॥ ५ । इस कारण मैं ने नबियों के द्वारा उन पर मानो कुल्हाड़ी चलाई और अपने वचनों से उन को घात किया और तेरे नियम प्रकाश के सरीखे प्रगट होंगे[3] ॥ ६ । मैं तो बलिदान से नहीं कृपा ही से प्रसन्न होता हूं और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग

(१) मूल में दाखा में गहिराई किई ।

(१) अर्थात् झगड़नेहारे । (२) मूल में. पीछा भी करें । (३) मूल में. निकलनेवाले हैं ।

परमेश्वर का नाम रक्खें ॥ ७। पर उन लोगों ने आदम की नाईं वाचा को तोड़ दिया उन्हों ने यहां मुझ से विश्वासघात किया है ॥ ८। गिलाद् नाम गढ़ी तो अनर्थकारियों से भरी है वह खून से भरी हुई है ॥ ९। और जैसे डाकूओं के दल किसी के घात में बैठते हैं वैसे ही याजकों का दल शकेम् के मार्ग में वध करता है वरन उन्हों ने महापाप भी किया है ॥ १०। इस्राएल् के घराने में मैं ने रोंए खड़े होने का कारण देखा है उस में एप्रैम् का छिनाला और इस्राएल् की अशुद्धता पाई जाती है ॥ ११। फिर हे यहूदा जब मैं अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा उस समय के लिये तेरे निमित्त भी पलटा ठहराया हुआ है ॥

७. जब जब मैं इस्राएल् को चंगा करना चाहता हूं तब तब एप्रैम् का अधर्म्म और शोमरोन् की बुराइयां प्रगट हो जाती हैं वे छल से काम करते हैं चोर तो भीतर घुसता और डाकुओं का दल बाहर छीन लेता है ॥ २। और वे नहीं सोचते कि यहोवा हमारी सारी बुराई को स्मरण रखता है सो अब वे अपने कामों के जाल में फसेंगे क्योंकि उन के कार्य्य मेरी दृष्टि में बने हैं ॥ ३। वे राजा को बुराई करने से और और हाकिमों को झूठ बोलने से आनन्दित करते हैं ॥ ४। वे सब के सब व्यभिचारी हैं वे उस तंदूर के समान हैं जिस को पकानेहारा गर्म तो करता है पर जब लों आटा गूंधा नहीं जाता और खमीर से फूल नहीं चुकता तब लों वह आग को नहीं उसकाता ॥ ५। हमारे राजा के जन्म दिन दाखमधु पीकर चूर हुए उस ने ठट्ठा करनेहारों से अपना हाथ मिलाया ॥ ६। जब लों वे घात लगाये बैठे रहते हैं तब लों वे अपना मन तंदूर की नाईं तैयार किये रहते हैं उन का पकानेहारा रात भर सोता पर भोर को तंदूर धधकती लौ से लाल हो जाता है ॥ ७। वे सब के सब तंदूर की नाईं धधकते और अपने न्यायियों को भस्म करते हैं उन के सब राजा मारे गये हैं उन में से कोई नहीं है जो मेरी दोहाई देता हो ॥ ८। एप्रैम् देश देश के लोगों से मिला जुला रहता है एप्रैम् ऐसी चपाती ठहरा है जो उलटी न गई हो ॥ ९। परदेशियों ने उस का बल तोड़ डाला[1] पर वह इसे नहीं जानता और उस के सिर में कहीं कहीं पक्के बाल हैं पर वह इसे भी नहीं जानता ॥ १०। और इस्राएल् का गर्व्व उस के साम्हने ही साक्षी देता है यहां लों कि वे इन सब बातों के रहते न तो अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे न उस को ढूंढ़ा है ॥ ११। और एप्रैम् भोली पिण्डुकी के समान हो गया है जिस को कुछ बुद्धि नहीं वे मिस्रियों की दोहाई देते वे अश्शूर् को चले जाते हैं ॥ १२। जब जब वे जाएं तब तब मैं उन के ऊपर अपना जाल फैलाऊंगा और उन्हें ऐसा खींच लूंगा जैसे आकाश के पक्षी खींचे जाते हैं मैं उन को ऐसी ताड़ना दूंगा जैसी उन की मण्डली सुन चुकी है ॥१३। उन पर हाय क्योंकि वे मेरे पास से भटक गये उन का सत्यानाश होए क्योंकि उन्हों ने मुझ से बलवा है मैं तो उन्हें छुड़ाता आया पर वे मुझ से झूठ बोलते आये हैं ॥ १४। वे मेरी दोहाई मन से नहीं देते पर अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय हाय करते हैं वे अन्न और नये दाखमधु पाने के लिये भीड़ लगाते हैं और मुझ से हट जाते हैं ॥ १५। मैं तो उन को शिक्षा देता और उन की भुजाओं को बलवन्त करता आया हूं पर वे मेरे विरुद्ध बुरी कल्पना करते आये हैं ॥ १६। वे फिरते तो हैं पर परमप्रधान की ओर नहीं वे धोखा देनेहारे धनुष के समान हैं इस लिये उन के हाकिम अपनी क्रोधभरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएंगे मिस्र देश में उन के ठट्ठों में उड़ाये जाने का यही कारण होगा ॥

८. अपने मुंह में नरसिंगा लगा । वह उकाब् की नाईं यहोवा के घर पर झपटेगा इस लिये कि मेरे घर के लोगों ने मेरी वाचा तोड़ी और मेरी व्यवस्था उल्लंघन किई है ॥ २। वे मुझ को पुकारकर कहेंगे कि हे हमारे परमेश्वर हम इस्राएली लोग तुझे जानते हैं ॥ ३।

(१) मूल में खा तो लिया ।

पर इस्राएल् ने भलाई को मन से उतार दिया है, शत्रु उस के पीछे पड़ेगा ॥ ४ । वे राजाओं को ठहराते तो आये पर मेरी इच्छा से नहीं वे हाकिमों को भी ठहराते तो आये पर मेरे अनजाने उन्हों ने अपना सोना चान्दी लेकर मूरतें बना लिईं इस लिये कि वे नाश हो जाएं ॥ ५ । हे शोमरोन् उस ने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया है मेरा कोप उन पर भड़का वे कब लों निर्दोष होने में विलम्ब करेंगे ॥ ६ । यह तो इस्राएल् से हुआ है वह कारीगर से बना और परमेश्वर नहीं है इस कारण शोमरोन् का वह बछड़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा ॥ ७ । वे तो वायु बोते हैं और बवण्डर लवेंगे उस के लिये कुछ खेत रहेगा नहीं उन की उपज से कुछ आटा न होगा और यदि हो तो परदेशी उस को खा डालेंगे ॥ ८ । इस्राएल् निगला गया अब वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसा तुच्छ बरतन ठहरता है ॥ ९ । क्योंकि वे अश्शूर् को ऐसे चले गये हैं जैसा बनैला गदहा झुण्ड से बिछुरके रहता एप्रैम् ने यारों को मजूरी पर रक्खा है ॥ १० । यद्यपि वे अन्यजातियों में से मजूर कर रक्खें तौभी मैं उन को एकट्ठा करूंगा और वे हाकिमों के राजा के बोझ के कारण घटने लगेंगे ॥ ११ । एप्रैम् ने पाप करने को बहुत सी वेदियां बनाई हैं और वे वेदियां उस के पापी ठहरने का कारण भी ठहरीं ॥ १२ । मैं तो उस के लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बातें लिखता आता हूं पर वे उन्हें बिरानी समझते हैं ॥ १३ । वे मेरे लिये बलिदान करते हैं तब पशु बलि करते तो हैं पर उस का फल मांस ही है वे तो खाते हैं पर यहोवा उन से प्रसन्न नहीं होता अब वह उन के अधर्म्म की सुधि लेकर उन के पाप का दण्ड देगा वे मिस्र में लौट जाएंगे ॥ १४ । इस्राएल् ने अपने कर्त्ता को बिसराकर मन्दिर बनाये और यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है पर मैं उन के नगरों में आग लगाऊंगा जिस से उन के महल भस्म हो जाएंगे ॥

९. हे इस्राएल् तू देश देश के लोगों की नाईं आनन्द में मगन मत हो क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी तू ने अन्न के एक एक खलिहान पर छिनाले की कमाई आनन्द से लिई है ॥ २ । वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त होंगे और न कुण्ड के दाखमधु से और नये दाखमधु के घटने से वे धोखा खाएंगे ॥ ३ । वे यहोवा के देश में रहने न पाएंगे पर एप्रैम् मिस्र में लौट जाएगा और वे अश्शूर् में अशुद्ध अशुद्ध वस्तुएं खाएंगे ॥ ४ । वे यहोवा के लिये दाखमधु अर्घ जानकर न देंगे न उन के बलिदान उस को भाएंगे वरन शोक करनेहारों की सी भोजनवस्तु ठहरेंगे जितने उस से खाएंगे सब अशुद्ध हो जाएंगे उन की भोजनवस्तु उन की भूख बुझाने ही के लिये होगी वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी ॥ ५ । नियत समय के पर्व्व और यहोवा के उत्सव के दिन तुम क्या करोगे ॥ ६ । देखो वे सत्यनाश होने के डर के मारे चले गये पर वहां मर जाएंगे और मिस्री उन की लोथें एकट्ठी करेंगे और मोप् के निवासी उन को मिट्टी देंगे उन की मनभावनी चांदी की वस्तुएं बिच्छू पेड़ों के बीच में पड़ेंगी और उन के तंबुओं में झड़बेरी उगेंगी ॥ ७ । दण्ड के दिन आये हैं पलटा लेने के दिन आये हैं और इस्राएल् यह जान लेगा उन के बहुत से अधर्म्म और बड़े द्वेष के कारण नबी तो मूर्ख और जिस पुरुष पर आत्मा उतरता है वह बावला ठहरेगा ॥

८ । एप्रैम् मेरे परमेश्वर के संग एक पहरुआ तो है नबी के सब मार्गों में बहेलिये का फन्दा लगा और उस के परमेश्वर के घर में बैर हुआ है ॥ ९ । वे गिबा के दिनों की भांति अत्यन्त बिगड़े हुए हैं सो वह उन के अधर्म्म की सुधि लेकर उन के पाप का दण्ड देगा ॥

१० । मैं ने इस्राएल् को ऐसा पाया था जैसा कोई जंगल में दाख पाए और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसी दृष्टि किई थी जैसे अंजीर के पहिले फलों पर दृष्टि किई जाती है पर उन्हों ने पोर् के बाल् के पास जाकर अपने तईं उस वस्तु को अर्पण कर दिया जो लज्जा का कारण है और जिस से वे मोहित हो

(१) मूल में के अधिकार में। (२) मूल में. गहिराई करके बिगड़े ।

गये थे उस के समान घिनौने हो गये ॥ ११। एप्रैम् जो है उस का विभव पक्षी की नाईं उड़ जाएगा न तो किसी का जन्म होगा न किसी को गर्भ रहेगा और न कोई स्त्री गर्भवती होगी ॥ १२। चाहे वे अपने लड़केवालों को पोसकर बड़े भी करें तौभी मैं उन्हें यहां लों निर्वंश करूंगा कि कोई न रह जाएगा और जब मैं उन से दूर हो जाऊंगा तब उन पर हाय होगी ॥ १३। जैसा मैं ने सोर् को देखा वैसा एप्रैम् को भी मनभाऊ स्थान में बसा हुआ देखा तौभी उसे अपने लड़केवालों को घातक के लिये निकालना पड़ेगा ॥

१४। हे यहोवा उन को दण्ड दे तू क्या देगा यह कि उन की स्त्रियों के गर्भ गिर जाएं और स्तन सूख जाएं ॥

१५। उन की सारी बुराई गिल्गाल् में है सो वहीं मैं ने उन से घिन किई उन के बुरे कामों के कारण मैं उन को अपने घर से निकाल दूंगा और उन से फिर प्रीति न रक्खूंगा क्योंकि उन के सब हाकिम बलवा करनेहारे हैं ॥ १६। एप्रैम् मारा हुआ है उन की जड़ सूख गई उन मे फल न लगेगा और चाहे उन की स्त्रियां जनें भी तौभी मैं उन के जने हुए दुलारों को मार डालूंगा ॥

१७। मेरा परमेश्वर उन को निकम्मा ठहराएगा क्योंकि उन्हों ने उस की नहीं सुनी वे अन्यजातियों के बीच मारे मारे फिरनेहारे होंगे ॥

१०. इस्राएल् एक लहलहाती हुई दाखलता सा है जिस में बहुत से फल भी लगे पर ज्यों ज्यों उस के फल बढ़े त्यों त्यों उस ने अधिक वेदियां बनाईं जैसे जैसे उस की भूमि सुधरती आई वैसे वैसे वे सुन्दर लाठें बनाते आये ॥ २। उन का मन बटा हुआ है अब वे दोषी ठहरेंगे वह उन की वेदियों को तोड़ डालेगा और उन की लाठों को टुकड़े टुकड़े करेगा ॥ ३। अब तो वे कहेंगे कि हमारे कोई राजा नहीं है कारण यह है कि हम ने यहोवा का भय नहीं माना सो राजा हमारे लिये क्या कर सकता ॥ ४। वे बातें ही करके और झूठी किरिया खाकर वाचा बांधते हैं इस कारण खेत की रेघारियों में धतूरे की नाईं दण्ड फूले फलेगा ॥ ५। शोमरोन् के निवासी बेतावेन् के बछड़े[1] के लिये डरते रहेंगे और उस के लोग उस के लिये विलाप करेंगे और उस के पुजारी जो उस के कारण मगन होते थे सो उस के प्रताप के लिये इस कारण विलाप करेंगे कि वह उस में से उठ गया है ॥ ६। वह यारेब्[2] राजा की भेंट ठहरने के लिये अश्शूर् देश में पहुंचाया जाएगा एप्रैम् लज्जित होगा और इस्राएल् भी अपनी युक्ति से लजाएगा ॥ ७। शोमरोन् अपने राजा समेत जल के बुलबुले की नाईं मिट जाएगा ॥ ८। और आवेन् में के ऊंचे स्थान जो इस्राएल् का पाप हैं सो नाश होंगे और उन की वेदियों पर झड़बेरी पेड़ और ऊंटकटारे उगेंगे उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम को छिपा लो और टीलों से कि हम पर गिर पड़ो ॥ ९। हे इस्राएल् तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है उस में वे रहे, क्या वे कुटिल मनुष्यों के संग की लड़ाई में न फंसेंगे ॥ १०। जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूंगा और देश देश के लोग उन के विरुद्ध एकट्ठे हो जाएंगे इस लिये कि वे अपने दोनों अधर्म्मों के संग जुते हुए हैं ॥ ११। और एप्रैम् सीखी हुई बछिया है जो अन्न दांवने से प्रसन्न होती है पर मैं ने उस की सुन्दर गर्दन पर जूआ रक्खा है मैं एप्रैम् पर सवार चढ़ाऊंगा और यहूदा हल और याकूब हेंगा खींचेगा ॥ १२। धर्म्म का बीज बोओ तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे अपनी पड़ती भूमि को जोतो देखो अब यहोवा के पीछे हो लेने का समय है जब लों कि वह आकर तुम्हारे ऊपर धर्म्म न बरसाए ॥ १३। तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा और धोखे का फल खाया है और यह इस लिये हुआ कि तुम ने अपने कुव्यवहार पर और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रक्खा था ॥ १४। इस कारण तेरे लोगों में हुल्लड़ उठेगा और तेरे सब गढ़

(१) मूल में की तू बछियों। (२) अर्थात् झगड़नेहारे।

ऐसे नाश किये जाएंगे जैसा बेतर्बेल् नगर युद्ध के समय शल्मन् से नाश किया गया और उस समय माता अपने बच्चों समेत पटक दिई गई थीं ॥ १५। इसी प्रकार का व्यवहार बेतेल् भी तुम से तुम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण करेगा भोर होते इस्राएल् का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा ॥

११. जब इस्राएल् लड़का था तब मैं ने उस से प्रेम किया और अपने पुत्र को मिस्र से बुला लाया ॥ २। पर जैसे वे उन को बुलाते थे वैसे वे उन के साम्हने से भागे जाते थे वे बाल् देवताओं के लिये बलिदान करते और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गये ॥ ३। और मैं एप्रैम् को पांव पांव चलाता था और उन को गोद में लिये फिरता था पर वे न जानते थे कि उन का चंगा करनेहारा मै हूं ॥ ४। मैं उन को मनुष्य जानकर प्रेम की सी डोरी से खींचता था और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उस के साम्हने आहार रख दे वैसा ही मैं ने उन से किया ॥ ५। वह मिस्र देश में लौटने न पाएगा अश्शूर् ही उस का राजा होगा क्योंकि उस ने मेरी ओर फिरने को नकारा है ॥ ६। और तलवार उस के नगरों में चलेगी और उन के बेंड़ों का पूरा नाश करेगी और यह उन की युक्तियों के कारण से होगा ॥ ७। मेरी प्रजा मुझ से फिर जाने में लगी रहती है यद्यपि वे उन को परमप्रधान की ओर बुलाते हैं तौभी उन में से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता ॥ ८। हे एप्रैम् मैं तुझे क्योंकर छोड़ दूं हे इस्राएल् मैं तुझे शत्रु के वश में क्योंकर कर दूं मैं तुझे क्योंकर अदमा की नाईं छोड़ दूं और सबोयीम् के समान कर दूं मेरा हृदय तो उलट पुलट गया मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है[1] ॥ ९। मैं अपने कोप को भड़कने न दूंगा और न मैं फिरकर एप्रैम् को नाश करूंगा क्योंकि मैं मनुष्य नहीं ईश्वर हूं मै तेरे बीच में रहनेहारा पवित्र हूं मै क्रोध करके न आऊंगा ॥ १०। वे यहोवा के पीछे पीछे चलेंगे वह तो सिंह की नाईं गरजेगा और तेरे लड़के पच्छिम दिशा से थरथराते हुए आएंगे ॥ ११। वे मिस्र से चिड़ियों की नाईं और अश्शूर् के देश से पिण्डुकी की भांति थरथराते हुए आएंगे और मैं उन को उन्हीं के घरों में बसा दूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

१२। एप्रैम् ने मिथ्या से और इस्राएल् के घराने ने छल से मुझे घेर रक्खा है और यहूदा अब लों पवित्र और विश्वासयोग्य ईश्वर की ओर चंचल बना रहता है ॥

१२. १। एप्रैम् पानी पीटते और पुरवाई का पीछा करता रहता है वह लगातार झूठ और उत्पात को बढ़ाता रहता है वे अश्शूर् के साथ वाचा बांधते और मिस्र में तेल भेजते हैं ॥

२। यहूदा के साथ भी यहोवा का मुकद्दमा है और वह याकूब को उस की चाल चलन के अनुसार दण्ड देगा उस के कामों के अनुसार वह उस को बदला देगा ॥ ३। अपनी माता की कोख ही में उस ने अपने भाई को अड़ंगा मारा और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ लड़ा ॥ ४। अर्थात् वह दूत से लड़ा और जीत भी गया वह रोया और उस से गिड़गिड़ाकर विनती किई बेतेल् में भी वह उस को मिला और वहीं हम से उस ने बातें किई ॥ ५। अर्थात् यहोवा सेनाओं के परमेश्वर ने जिस का स्मरण यहोवा नाम से होता है ॥ ६। इस लिये अपने परमेश्वर की ओर फिर और कृपा और न्याय के काम करता रह और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह ॥

७। वह बनिया है और उस के हाथ छल का तराजू है अंधेर ही करना उस को भाता है ॥ ८। और एप्रैम् कहता है कि मैं धनी हो गया मैं ने संपत्ति प्राप्त किई है मेरे सब कामों में से किसी में ऐसा अधर्म्म न पाया जाएगा जिस से पाप लगे ॥ ९। मैं यहोवा तो मिस्र देश ही से तेरा परमेश्वर हूं मैं तुझे फिर तंबुओं में ऐसा बसाऊंगा जैसा नियत पर्ब्ब के दिनों में हुआ करता है ॥ १०। मैं नबियों से बातें करता और बार बार दर्शन देता और नबियों के द्वारा दृष्टान्त कहता आया हूं ॥ ११। क्या गिलाद्

[1] (१) मूल में मेरे पछतावे एक संग उभरते हैं।

अनर्थकारी नहीं है वे तो पूरे धोखेबाज हो गये हैं गिलाद् में बैल बलि किये जाते हैं वरन उन की वेदियां उन ढेरों के समान हैं जो खेत की रेघारियों के पास हों ॥ १२ । और याकूब अराम् के मैदान में भाग गया था वहां इस्राएल् ने स्त्री के लिये सेवा किई स्त्री के लिये वह चरवाही करता था ॥ १३ । और एक नबी के द्वारा यहोवा इस्राएल् को मिस्र से निकाल ले आया और नबी ही के द्वारा उस की रक्षा हुई ॥ १४ । एप्रैम् ने अत्यन्त रिस दिलाई है सो उस का किया हुआ खून उसी के ऊपर बना रहेगा और उस ने अपने प्रभु के नाम में जो बट्टा लगाया है सो उसी को लौटाया जाएगा ॥

१३. जब एप्रैम् बोलता था तब लोग कांपते थे और वह इस्राएल् में बड़ा था पर जब वह बाल् के कारण दोषी हो गया तब वह मर गया । २ । और अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं और अपनी बुद्धि से चांदी ढालकर ऐसी मूरतें बनाई हैं जो सब की सब कारीगरों ही से बनीं और उन्हीं के विषय लोग कहते हैं कि जो नरमेध करें वे बछड़ों को चूमें ॥ ३ । इस कारण वे भोर के मेघ और तड़के सूख जानेहारी ओस और खलिहान पर से आंधी के मारे उड़नेहारी भूसी और धूंआरे से निकलते हुए धूएं के समान होंगे ॥ ४ । मिस्र देश ही से मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं तू मुझे छोड़ किसी को परमेश्वर करके न जाने क्योंकि मेरे बिना तेरा कोई उद्धारकर्त्ता नहीं है ॥ ५ । मैं ने उस समय तुझ पर मन लगाया जब तू जंगल में बरन अत्यन्त सूखे देश में था ॥ ६ । जैसे इस्राएली चराये जाते वैसे ही वे तृप्त होते जाते थे और तृप्त होने पर उन का मन घमण्ड से भरता था इस कारण वे मुझ को भूल गये ॥ ७ । इस कारण मैं उन के लिये सिंह सा बना हूं मैं चीते की नाईं उन के मार्ग में घात लगाये रहूंगा ॥ ८ । मैं बच्चे छिनी हुई रीछनी के समान बनकर उन को मिलूंगा और उन के हृदय की झिल्ली को फाडूंगा और वहीं सिंह की नाईं उन को खा डालूंगा बनैला पशु उन को फाड़ डालेगा ॥ ९ । हे इस्राएल् तेरे विनाश का कारण यह है कि तू मुझ अपने सहायक के विरुद्ध है ॥ १० । अब तेरा राजा कहां रहा कि वह तेरे सब नगरों में तुझे बचाए और तेरे न्यायी कहां रहे जिन के विषय में तू ने कहा था कि राजा और हाकिम मेरे लिये ठहरा दे ॥ ११ । मैं ने कोप में आकर तेरे लिये राजा बनाया और फिर जलजलाहट में आकर उस को उठा भी दिया ॥ १२ । एप्रैम् का अधर्म्म गठा हुआ है उस का पाप संचय किया हुआ है ॥ १३ । उस को जननेहारी की सी पीड़ें उठेंगी वह तो निर्बुद्धि लड़का है जो जनने के समय ठीक से आता नहीं[1] ॥ १४ । मैं उस को अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा मैं मृत्यु से उस को छुटकारा दूंगा हे मृत्यु तेरी मारने की शक्ति[2] कहां रही हे अधोलोक तेरी नाश करने की शक्ति कहां रही मैं फिर कभी पछताऊंगा नहीं ॥ १५ । चाहे वह अपने भाइयों से अधिक फूले फले तौभी पुरवाई उस पर चलेगी और यहोवा की ओर से पवन जंगल से आएगा और उस का कुण्ड सूखेगा और उस का सोता निर्जल हो जाएगा और वह उस की रक्खी हुई सब मनभावनी वस्तुएं लूट ले जाएगा ॥ १६ । शोमरोन् दोषी ठहरेगा क्योंकि उस ने अपने परमेश्वर से बलवा किया है वे तलवार से मारे जाएंगे और उन के बच्चे पटके जाएंगे और उन की गर्भवती स्त्रियां चीर डाली जाएंगी ॥

१४. हे इस्राएल् अपने परमेश्वर यहोवा के पास फिर आ क्योंकि तू ने अपने अधर्म्म के कारण ठोकर खाई है ॥ २ । बातें सीखकर[3] और यहोवा की ओर फिरकर उस से कहो कि सारा अधर्म्म दूर कर जो भला हो सो ग्रहण कर तब हम धन्यवादरूपी बलि चढ़ाएंगे[4] ॥ ३ । अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा हम घोड़ों पर सवार न होंगे और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे कि

(१) मूल में लड़कों के टूट पड़ने के स्थान में । (२) मूल में तेरी मरियां । (३) मूल में अपने साथ बातें लो। (४) मूल में हम बैल अपने होठ फेर देंगे ।

तुम हमारे ईश्वर हो क्योंकि बपमूए पर तू ही दया करनेहारा है ॥

४ । उन को हट जाने की बान को दूर करूंगा मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा क्योंकि मेरा कोप उन पर से उतर गया है ॥ ५ । मैं इस्राएल् के लिये ओस के समान हूंगा सो वह सोसन की नाईं फूले फलेगा और लबानोन् की नाईं जड़ फैलाएगा ॥ ६ । उस की सोर से फूटकर पौधे निकलेंगे और उस की शोभा जलपाई की सी और उस की सुगन्ध लबानोन् की सी होगी ॥ ७ । जो उस की छाया से बैठेंगे सो अन्न की नाईं बढ़ेंगे और दाखलता की नाईं फूलें फलेंगे और उस की कीर्त्ति लबानोन् के दाखमधु की सी होगी ॥ ८ । एप्रैम् कहेगा कि मूरतों से अब मेरा और क्या काम मैं उस की सुनकर उस पर दृष्टि बनाये रक्खूंगा मैं हरे सनौबर सा हूं मुझी से तू फल पाया करेगा ॥

९ । जो बुद्धिमान हो वही इन बातों को समझेगा जो प्रवीण हो वही इन्हें बूझ सकेगा क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं धर्म्मी तो उन में चलते रहेंगे पर अपराधी उन में ठोकर खाकर गिरेंगे ॥

योएल्।

१. यहोवा का जो वचन पतूएल् के पुत्र योएल् के पास पहुंचा सो यह है ॥ २ । हे पुरनियो सुनो हे इस देश के सब रहनेहारो कान लगाकर सुनो क्या ऐसी बात तुम्हारे दिनों में वा तुम्हारे पुरखाओं के दिनों में कभी हुई है ॥ ३ । अपने लड़केवालों से इस का वर्णन करो और वे अपने लड़केवालों से और फिर उन के लड़केवाले आनेवाली पीढ़ी के लोगों से ॥ ४ । जो कुछ गाज़ाम् नाम टिड्डी से बचा सो अर्बे नाम टिड्डी ने खा लिया और जो कुछ अर्बे नाम टिड्डी से बचा सो येलेक् नाम टिड्डी ने खा लिया और जो कुछ येलेक् नाम टिड्डी से बचा सो हासील् नाम टिड्डी ने खा लिया है ॥ ५ । हे मतवालो जाग उठो और रोओ और हे सब दाखमधु पीनेहारो नये दाखमधु के कारण हाय हाय करो क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा[1] ॥ ६ । देखो मेरे देश पर एक जाति ने चढ़ाई किई है जो सामर्थी है और उस के लोग अनगिनित हैं उन के दांत सिंह के से और डाढ़ें सिंहनी की सी हैं ॥ ७ । उस ने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया और मेरे अंजीर के वृक्ष को तोड़ डाला है और उस की सारी छाल छीलकर उसे गिरा दिया है और उस की डालियां छिलने से सफेद हो गई हैं ॥ ८ । युवती अपने पति के लिये कटि में टाट बांधे हुए जैसा विलाप करती है वैसा तुम भी विलाप करो ॥

९ । यहोवा के भवन में न तो अन्नबलि और न अर्घ आता है उस के टहलुए जो याजक हैं सो विलाप कर रहे हैं ॥ १० । खेती मारी गई भूमि विलाप करती है क्योंकि अन्न नाश हो गया नया दाखमधु सूख गया तेल भी सूख गया है ॥ ११ । हे किसानो लजाओ हे दाख की बारी के मालियो गेहूं और जव के लिये हाय हाय करो क्योंकि खेती मारी गई है ॥ १२ । दाखलता सूख गई और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है अनार ताड़ सेब बरन मैदान के सारे वृक्ष सूख गये हैं और मनुष्यों का हर्ष जाता

(१) मूल में. वह तुम्हारे मुंह से कट गया ।

रहा है[1] ॥ १३ । हे याजको कटि में टाट बांधकर छाती पीट पीटके रोओ हे वेदी के टहलुओ हाय हाय करो हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ आओ टाट ओढ़े हुए रात बिताओ क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्घ अब नहीं आते ॥ १४ । उपवास का दिन ठहराओ[2] महासभा का प्रचार करो पुरनियों को वरन देश के सब रहनेहारों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में एकट्ठे करके उस की दोहाई दो ॥ १५ । उस दिन के कारण हाय हाय यहोवा का दिन तो निकट है वह सर्वशक्तिमान् की ओर से सत्यानाश का दिन होकर आएगा ॥ १६ । क्या भोजनवस्तुएं हमारे देखते नाश नहीं हुईं क्या हमारे परमेश्वर के भवन का आनन्द और आह्लाद् जाता नहीं रहा ॥ १७ । बीज ढेलों के नीचे झुलस गये भण्डार सून पड़े हैं खत्ते गिर पड़े हैं क्योंकि खेती मारी गई ॥ १८ । पशु कैसे कराहते हैं झुण्ड के झुण्ड गाय बैल विकल हैं क्योंकि उन के लिये चराई नहीं रही और झुण्ड के झुण्ड भेड़ बकरियां पाप का फल भोग रही हैं ॥ १९ । हे यहोवा मैं तेरी दोहाई देता हूं क्योंकि जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं और मैदान के सब वृक्ष लौ से जल गये ॥ २० । वरन बनैले पशु भी तेरे लिये हांफते हैं क्योंकि जल के सोते सूख गये और जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं ॥

२. सिय्योन् में नरसिंगा फूंको मेरे पवित्र पर्वत पर सांस बांधकर फूंको देश के सब रहनेहारे कांप उठें क्योंकि यहोवा का दिन आता है वरन वह निकट ही है ॥ २ । वह अंधकार और तिमिर का दिन है वह बदली का दिन है अंधियारा ऐसा फैलता है जैसा भोर का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है अर्थात् एक ऐसी बड़ी और सामर्थी जाति आएगी जैसी प्राचीन काल से कभी न हुई और न उस के पीछे भी पीढ़ी पीढ़ी में फिर होगी ॥ ३ । उस के आगे आगे तो आग भस्म करती जाएगी और उस के पीछे पीछे लौ जलाती है उस के आगे की भूमि तो एदेन् की बारी के सरीखी पर उस के पीछे की भूमि उजाड़ है और उस से कोई नहीं बच जाता ॥ ४ । उन का रूप घोड़ों का सा है और वे सवारी के घोड़ों की नाईं दौड़ते हैं ॥ ५ । उन के कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का वा पांति बांधे हुए बली योद्धाओं[1] का शब्द होता है ॥ ६ । उन के साम्हने जाति जाति के लोगों को पीड़ें लगती हैं और सब के मुख मलीन होते हैं ॥ ७ । वे शूरवीरों की नाईं दौड़ते और योद्धाओं की भांति शहरपनाह पर चढ़ते और अपने अपने मार्ग पर चलते हैं कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा ॥ ८ । एक का दूसरे को धक्का नहीं लगता वे अपनी अपनी राह लिये चले आते शस्त्रों का साम्हना करने से भी उन की पांति नहीं टूटती ॥ ९ । वे नगर में इधर उधर दौड़ते और शहरपनाह पर चढ़ते हैं और घरों में ऐसे घुसते जैसे चोर खिड़कियों से घुसते हैं ॥ १० । उन के आगे पृथिवी कांप उठती और आकाश थरथराता है न तो सूर्य्य और चंद्रमा काले हो जाते हैं और न तारे झलकते[2] हैं ॥ ११ । और यहोवा अपने उस दल के आगे अपना शब्द सुनाता है क्योंकि उस की सेना बहुत ही बड़ी है और जो उस का वचन पूरा करनेहारा है सो सामर्थी है और यहोवा का दिन बड़ा और अति भयानक है उस को कौन सह सकेगा ॥

१२ । तौभी यहोवा की यह वाणी है कि अभी सुनो उपवास के साथ रोते पीटते अपने पूरे मन से मेरी ओर फिरकर मेरे पास आओ ॥ १३ । और अपने वस्त्र नहीं अपने मन ही को फाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो क्योंकि वह अनुग्रहकारी और दयालु विलम्ब से कोप करनेहारा करुणानिधान और दुःख देकर पछतानेहारा है ॥ १४ । क्या जाने वह फिरकर पछताए और ऐसी आशीष दे जाए जिस से

(१) मूल में लजा गया है । (२) मूल में उपवास पवित्र करो । (३) मूल में पीढ़ी पीढ़ी के बरसों तक ।

(१) मूल में बली लोगों । (२) मूल में, तारे अपनी झलक समेटेंगे ।

तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए॥ १५। सिय्योन् में नरसिंगा फूंको उपवास का दिन ठहराओ[1] महासभा का प्रचार करो॥ १६। लोगों को एकट्ठा करो सभा को पवित्र करो पुरनियों को बुला लो बच्चों और दूधपीवकों को भी एकट्ठा करो दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आएं॥ १७। याजक जो यहोवा के टहलुए हैं सो ओसारे और वेदी के बीच में रो रोकर कहें कि हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस खा और अपने निज भाग की नामधराई होने न दे और न अन्यजातियां उस की उपमा देने पाएं जाति जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएं कि उन का परमेश्वर कहां रहा॥

१८। तब यहोवा को अपने देश के विषय जलन हुई और उस ने अपनी प्रजा पर तरस खाया॥ १९। और यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया कि सुनो मैं अन्न और नया दाखमधु और टटका तेल तुम्हें देने पर हूं और तुम उन्हें खा पीकर तृप्त होगे और मैं आगे को अन्यजातियों से तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा॥ २०। और मैं उत्तर ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूंगा और एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूंगा उस का आगा तो पूरब के ताल की ओर और उस का पीछा पच्छिम के समुद्र की ओर होगा और उस की दुर्गन्ध फैलेगी और उस की सड़ी गंध फैलेगी इस लिये कि उस ने बड़े बड़े काम किये हैं॥ २१। हे देश तू मत डर तू मगन हो और आनन्द कर क्योंकि यहोवा ने बड़े बड़े काम किये हैं॥ २२। हे मैदान के पशुओ मत डरो क्योंकि जंगल में चराई उगेगी और वृक्ष फलने लगेंगे अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना अपना बल दिखाने लगेंगी॥ २३। और हे सिय्योनियो[2] तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो और आनन्द करो क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा जितनी चाहिये उतनी[1] देगा और पहिले मास में की पिछली वर्षा को भी बरसाएगा॥ २४। सो खलिहान अन्न से भर जाएंगे और रसकुण्ड नये दाखमधु और टटके तेल से उमड़ेंगे॥ २५। और जिन बरसों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों और येलेक् और हासील् ने और गाज़ाम् नाम टिड्डियों ने अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिस को मैं ने तुम्हारे बीच भेजा खा लिई उस की हानि मैं तुम को भर दूंगा॥ २६। तब तुम पेट भरकर खाओगे और तृप्त होगे और तुम अपना परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे जिस ने तुम्हारे लिये आश्चर्य्य के काम किये हैं और मेरी प्रजा की आशा कभी न टूटेगी॥ २७। तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल् के बीच हूं और मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है और मेरी प्रजा की आशा कभी न टूटेगी॥

२८। उन बातों के पीछे मैं सारे प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां नबूवत करेंगी और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे॥ २९। वरन दासों और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा॥ ३०। और मैं आकाश में और पृथिवी पर चमत्कार अर्थात् लोहू और आग और धूएं के खंभे दिखाऊंगा॥ ३१। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य्य अंधियारा और चंद्रमा रक्त सा हो जाएगा॥ ३२। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करे वह छुटकारा पाएगा और यहोवा के कहे के अनुसार सिय्योन् पर्वत पर और यरूशलेम् में जिन भागे हुओं को यहोवा बुलाएगा वे उद्धार पाएंगे॥

३. सुनो जिन दिनों में और जिस समय में यहूदा और यरूशलेम्वासियों को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, २। उस समय मैं सब जातियों को एकट्ठी करके यहोशापात् की तराई में ले जाऊंगा और वहां उन के साथ अपनी

(१) मूल में उपवास पवित्र करो। (२) मूल में. सिय्योन् के लड़को।

(१) मूल में धर्म के लिये।

प्रजा अर्थात् अपने निज भाग इस्राएल् के विषय में जिसे उन्हों ने अन्यजातियों में तितर बितर करके मेरे देश को बांट लिया है मुकद्दमा लडूंगा ॥ ३ । उन्हों ने तो मेरी प्रजा पर चिट्ठी डाली और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया और एक लड़की बेचकर दाखमधु पिया है ॥ ४ । और हे सोर् और सीदोन् और पलिश्त के सब प्रदेशो तुम को मुझ से क्या काम क्या तुम मुझ को बदला दोगे यदि तुम मुझ को बदला देते हो तो झटपट मैं तुम्हारा दिया हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा ॥ ५ । क्योंकि तुम ने मेरी चांदी सोना ले लिया और मेरी अच्छी और मनभावनी वस्तुएं अपने मन्दिरों में ले जाकर रक्खी हैं, ६ । और यहूदियों और यरूशलेमियों को यूनानियों के हाथ इस लिये बेच डाला है कि वे अपने देश से दूर किये जाएं ॥ ७ । सो सुनो मैं उन को उस स्थान से जहां के जानेहारों के हाथ तुम ने उन को बेच दिया बुलाने[1] पर हूं और तुम्हारा दिया हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा ॥ ८ । और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूंगा और वे उन को शबाइयों के हाथ जो दूर देश के रहनेहारे हैं बेच देंगे, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥

९ । जाति जाति में यह प्रचारो कि तुम युद्ध की तैयारी करो[2] अपने शूरवीरों को उभारो सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़ें ॥ १० । अपने अपने हल की फाल को पीटकर तलवार और अपनी अपनी हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ जो बलहीन हो सो भी कहे कि मैं वीर हूं ॥ ११ । हे चारों ओर के जाति जाति के लोगो फुर्ती करके आओ और एकट्ठे हो जाओ ॥ हे यहोवा तू भी अपने शूरवीरों को वहां ले जा ॥

१२ । जाति जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएं और यहोशापात् की तराई जाएं क्योंकि वहां मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूंगा ॥ १३ । हंसुआ लगाओ क्योंकि खेत पक गया है आओ दाख रौंदो क्योंकि हौद भर गया रसकुण्ड उमण्डने लगे अर्थात् उन की बुराई बड़ी है ॥ १४ । निबटेरे की तराई में भीड़ की भीड़, क्योंकि निबटेरे की तराई में यहोवा का दिन निकट है ॥ १५ । न तो सूर्य्य और चंद्रमा अपना अपना प्रकाश देंगे और न तारे झलकेंगे ॥ १६ । और यहोवा सिय्योन् से गरजेगा और यरूशलेम् से बड़ा शब्द सुनाएगा आकाश और पृथिवी थरथराएंगी पर यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा ॥ १७ । सो तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन् पर वास किये रहता है सोई हमारा परमेश्वर है और यरूशलेम् पवित्र ठहरेगा और परदेशी फिर उस के होकर न जाने पाएंगे ॥ १८ । और उस समय पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने और टीलों से दूध बहने लगेगा और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएंगे और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा जिस से शित्तीम् नाम नाला सींचा जाएगा ॥ १९ । यहूदियों पर उपद्रव करने के कारण मिस्र उजाड़ और एदोम् उजड़ा हुआ जंगल होगा क्योंकि उन्हों ने उन के देश में निर्दोषी का खून किया था ॥ २० । पर यहूदा सदा लों और यरूशलेम् पीढ़ी पीढ़ी बनी रहेगी ॥ २१ । और उन का जो खून मैं ने निर्दोषियों का नहीं ठहराया उसे अब निर्दोषियों का ठहराऊंगा यहोवा सिय्योन् में वास किये रहता है ॥

(१) मूल में. जगाकना । (२) मूल में युद्ध पवित्र करो ।

तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए॥ १५। सिय्योन् में नरसिंगा फूंको उपवास का दिन ठहराओ[1] महासभा का प्रचार करो॥ १६। लोगों को एकट्ठा करो सभा को पवित्र करो पुरनियों को बुला लो बच्चों और दूधपीउवों को भी एकट्ठा करो दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आएं॥ १७। याजक जो यहोवा के टहलुए हैं सो ओसारे और वेदी के बीच में रो रोकर कहें कि हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस खा और अपने निज भाग की नामधराई होने न दे और न अन्यजातियां उस की उपमा देने पाएं जाति जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएं कि उन का परमेश्वर कहां रहा॥

१८। तब यहोवा को अपने देश के विषय जलन हुई और उस ने अपनी प्रजा पर तरस खाया॥ १९। और यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया कि सुनो मैं अन्न और नया दाखमधु और टटका तेल तुम्हें देने पर हूं और तुम उन्हें खा पीकर तृप्त होगे और मैं आगे को अन्यजातियों से तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा॥ २०। और मैं उत्तर और से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूंगा और एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूंगा उस का आगा तो पूरब के ताल की ओर और उस का पीछा पच्छिम के समुद्र की ओर होगा और उस की दुर्गन्ध फैलेगी और उस की सड़ी गंध फैलेगी इस लिये कि उस ने बड़े बड़े काम किये हैं॥ २१। हे देश तू मत डर तू मगन हो और आनन्द कर क्योंकि यहोवा ने बड़े बड़े काम किये हैं॥ २२। हे मैदान के पशुओ मत डरो क्योंकि जंगल में चराई उगेगी और वृक्ष फलने लगेंगे अब अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना अपना बल दिखाने लगेंगी॥ २३। और हे सिय्योनियो[2] तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो और आनन्द करो क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा जितनी चाहिये उतनी[1] देगा और पहिले मास में को पिछली वर्षा को भी बरसाएगा॥ २४। सो खलिहान अन्न से भर जाएंगे और रसकुण्ड नये दाखमधु और टटके तेल से उमड़ेंगे॥ २५। और जिन बरसों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों और येलेक् और हासील् ने और गाजाम् नाम टिड्डियों ने अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिस को मैं ने तुम्हारे बीच भेजा खा लिई उस की हानि मैं तुम को भर दूंगा॥ २६। तब तुम पेट भरकर खाओगे और तृप्त होगे और तुम अपना परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे जिस ने तुम्हारे लिये आश्चर्य्य के काम किये हैं और मेरी प्रजा की आशा कभी न टूटेगी॥ २७। तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल् के बीच हूं और मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है और मेरी प्रजा की आशा कभी न टूटेगी॥

२८। उन बातों के पीछे मैं सारे प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां नबूवत करेंगी और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे॥ २९। बरन दासों और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा॥ ३०। और मैं आकाश में और पृथिवी पर चमत्कार अर्थात् लोहू और आग और धूएं के खंभे दिखाऊंगा॥ ३१। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य्य अंधियारा और चंद्रमा रक्त सा हो जाएगा॥ ३२। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करे वह छुटकारा पाएगा और यहोवा के कहे के अनुसार सिय्योन् पर्वत पर और यरूशलेम् में जिन भागे हुओं को यहोवा बुलाएगा वे उद्धार पाएंगे॥

३. सुनो जिन दिनों में और जिस समय मैं यहूदा और यरूशलेमवासियों को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, २। उस समय मैं सब जातियों को एकट्ठी करके यहोशापात् की तराई में ले जाऊंगा और वहां उन के साथ अपनी

(१) मूल में उपवास पवित्र करो। (२) मूल में सिय्योन् की बेटियो।

(१) मूल में धर्म्म के लिये।

प्रजा अर्थात् अपने निज भाग इस्राएल् के विषय में जिसे उन्हों ने अन्यजातियों में तितर बितर करके मेरे देश को बांट लिया है मुकद्दमा लड़ूंगा ॥ ३ । उन्हों ने तो मेरी प्रजा पर चिट्ठी डाली और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया और एक लड़की बेचकर दाखमधु पिया है ॥ ४ । और हे सोर् और सीदोन् और पलिश्त के सब प्रदेशो तुम को मुझ से क्या काम क्या तुम मुझ को बदला दोगे यदि तुम मुझ को बदला देते हो तो झटपट में तुम्हारा दिया हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा ॥ ५ । क्योंकि तुम ने मेरी चांदी सोना ले लिया और मेरी अच्छी और मनभावनी वस्तुएं अपने मन्दिरों में ले जाकर रक्खी हैं, ६ । और यहूदियों और यरूशलेमियों को यूनानियों के हाथ इस लिये बेच डाला है कि वे अपने देश से दूर किये जाएं ॥ ७ । सो सुनो मैं उन को उस स्थान से जहां के जानेहारों के हाथ तुम ने उन को बेच दिया बुलाने[1] पर हूं और तुम्हारा दिया हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा ॥ ८ । और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूंगा और वे उन को शबाइयों के हाथ जो दूर देश के रहनेहारे हैं बेच देंगे, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥

९ । जाति जाति में यह प्रचारो कि तुम युद्ध की तैयारी करो[2] अपने शूरवीरों को उभारो सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़ें ॥ १० । अपने अपने हल की फाल को पीटकर तलवार और अपनी अपनी हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ जो बलहीन हो सो भी कहे कि मैं वीर हूं ॥ ११ । हे चारों ओर के जाति जाति के लोगो फुर्ती करके आओ और एकट्ठे हो जाओ ॥ हे यहोवा तू भी अपने शूरवीरों को वहां ले जा ॥

१२ । जाति जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएं और यहोशापात् की तराई जाएं क्योंकि वहां मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूंगा ॥ १३ । हंसुआ लगाओ क्योंकि खेत पक गया है आओ दाख रौंदो क्योंकि हौद भर गया रसकुण्ड उमण्डने लगे अर्थात् उन की बुराई बड़ी है ॥ १४ । निबटेरे की तराई में भीड़ की भीड़, क्योंकि निबटेरे की तराई में यहोवा का दिन निकट है ॥ १५ । न तो सूर्य्य और चंद्रमा अपना अपना प्रकाश देंगे और न तारे झलकेंगे ॥ १६ । और यहोवा सिय्योन् से गरजेगा और यरूशलेम् से बड़ा शब्द सुनाएगा आकाश और पृथिवी थरथराएंगी पर यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा ॥ १७ । सो तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन् पर वास किये रहता है सोई हमारा परमेश्वर है और यरूशलेम् पवित्र ठहरेगा और परदेशी फिर उस के होकर न जाने पाएंगे ॥ १८ । और उस समय पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने और टीलों से दूध बहने लगेगा और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएंगे और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा जिस से शित्तीम् नाम नाला सींचा जाएगा ॥ १९ । यहूदियों पर उपद्रव करने के कारण मिस्र उजाड़ और एदोम् उजड़ा हुआ जंगल होगा क्योंकि उन्हों ने उन के देश में निर्दोषी का खून किया था ॥ २० । पर यहूदा सदा लों और यरूशलेम् पीढ़ी पीढ़ी बनी रहेगी ॥ २१ । और उन का जो खून मैं ने निर्दोषी का नहीं ठहराया उसे अब निर्दोषी का ठहराऊंगा यहोवा सिय्योन् में वास किये रहता है ॥

(१) मूल में. जगाऊंगा । (२) मूल में युद्ध पवित्र करो ।

आमोस्।

---

१. आमोस् तकोई जो भेड़ बकरियों के चरानेहारों का था उस के ये वचन हैं जो उस ने यहूदा के राजा उज्जिय्याह् के और योआश् के पुत्र इस्राएल् के राजा यारोबाम् के दिनों में भुईंडोल से दो बरस पहिले इस्राएल् के विषय दर्शन देखकर कहे ॥

२। यहोवा सिय्योन् से गरजेगा और यरूशलेम से अपना शब्द सुनाएगा तब चरवाहों की चराइयां विलाप करेंगी और कर्म्मेल् की चोटी झुलस जाएगी ॥

३। यहोवा यों कहता है कि दमिश्क् के तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उन्हों ने गिलाद् को लोहे के दांवनेवाले यन्त्रों से दांया ॥ ४। सो मैं हजाएल् के राजभवन में आग लगाऊंगा और उस से बेन्हदद् के राजभवन भी भस्म हो जाएंगे ॥ ५। और मैं दमिश्क् के बेण्डों को तोड़ डालूंगा और आवेन् नाम तराई के रहनेहारों को और एदेन् के घर में रहनेहारे राजदण्डधारी को नाश करूंगा और अराम् के लोग बन्धुए होकर कीर् को जाएंगे यहोवा का यही वचन है ॥

६। यहोवा यों कहता है कि अज्जा के तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि वे सब लोगों को बंधुआ करके ले गये कि उन्हें एदोम् के वश में कर दें ॥ ७। सो मैं अज्जा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भस्म हो जाएंगे ॥ ८। और मैं अश्दोद् के रहनेहारों को और अश्कलोन् के राजदण्डधारी को नाश करूंगा और मैं अपना हाथ एक्रोन् के विरुद्ध चलाऊंगा और शेष पलिश्ती लोग नाश होंगे प्रभु यहोवा का यही वचन है ॥

९। यहोवा यों कहता है कि सोर् के तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा क्योंकि उन्हों ने सब लोगों को बंधुआ करके एदोम् के वश में कर दिया और भाई की सी वाचा का स्मरण न किया ॥ १०। सो मैं सोर् की शहरपनाह पर आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भी भस्म हो जाएंगे ॥

११। यहोवा यों कहता है कि एदोम् के तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उस ने अपने भाई को तलवार लिए हुए खदेड़ा और दया कुछ भी न किई[2] पर कोप से उन को लगातार सदा फाड़ता रहा और वह अपने रोष को अनन्त काल के लिये बनाये रहा ॥ १२। सो मैं तेमान् में आग लगाऊंगा और उस से बोस्रा के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

१३। यहोवा यों कहता है कि अम्मोन् के तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उन्हों ने अपने सिवाने को बढ़ा लेने के लिये गिलाद् की गर्भिणी स्त्रियों का पेट चीर डाला। सो मैं रब्बा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भी भस्म हो

---

(१) मूल में, मैं उस को न फेरूंगा। (२, मूल में मैं उस को न फेरूंगा।

(१) मूल में मैं उस को न फेरूंगा। (२) मूल में, अपनी दया को बिगाड़ा।

जाएंगे उस युद्ध के दिन में ललकार होगी वह आंधी बरन बवण्डर का दिन होगा ॥ १५ । और उन का राजा अपने हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा यहोवा का यही वचन है ॥

२. यहोवा यों कहता है कि मोआब् के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उस ने एदोम् के राजा की हड्डियों को जला-कर चूना कर दिया ॥ २ । सो मैं मोआब् में आग लगाऊंगा और उस से करिय्योत् के भवन भस्म हो जाएंगे और मोआब् हुल्लड़ और ललकार और नरसिंगे के शब्द होते होते मर जाएगा ॥ ३ । और मैं उस के बीच में से न्यायी का नाश करूंगा और साथ ही साथ उस के सारे हाकिमों को भी घात करूंगा यहोवा का यही वचन है ॥

४ । यहोवा यों कहता है कि यहूदा के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था को तुच्छ जाना और मेरी विधियों को नहीं माना और अपने झूठे के कारण जिन के पीछे उन के पुरखा चलते थे वे भी भटक गये हैं ॥ ५ । सो मैं यहूदा में आग लगाऊंगा और उस से यरूशलेम् के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

६ । यहोवा यों कहता है कि इस्राएल् के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[1] क्योंकि उन्हों ने निर्दोष को रुपैये पर और दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों के लिये बेच डाला है ॥ ७ । वे कंगालों के सिर पर की धूलि के लिये हांफते और नम्र लोगों को मार्ग से हटा देते हैं और बाप बेटा दोनों एक ही कुमारी के पास जाते हैं जिस से मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराएं ॥ ८ । और वे हर एक वेदी के पास बन्धक के वस्त्रों पर सोते हैं और जुरमाना लगाए हुओं का दाख-मधु अपने देवता के घर में पी लेते हैं ॥ ९ । मैं ने उन के साम्हने से एमोरियों को नाश किया था जिन की लम्बाई देवदारों की सी और बल बांज वृक्षों का सा था तौभी मैं ने ऊपर से उस के फल और नीचे से उस की जड़ नाश किई ॥ १० । फिर मैं तुम को मिस्र देश से निकाल लाया और जंगल में चालीस बरस लों लिये फिरता रहा जिस से तुम एमोरियों के देश के अधिकारी हो जाओ ॥ ११ । और मैं ने तुम्हारे पुत्रों में से नबी होने और तुम्हारे जवानों में से नाज़ीर् होने के लिये ठहराये हैं हे इस्राएलियो यहोवा की यह वाणी है कि क्या यह सब सच नहीं है ॥ १२ । पर तुम ने नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया और नबियों को आज्ञा दिई कि नबूवत मत करो ॥ १३ । सुनो मैं तुम को ऐसा दबाऊंगा जैसा पूलों से भरी हुई गाड़ी नीचे को दबाई जाए[1] ॥ १४ । सो वेग दौड़नेहारे को भाग जाने का स्थान न मिलेगा और सामर्थी का सामर्थ्य कुछ काम न देगा और पराक्रमी अपना प्राण बचा न सकेगा ॥ १५ । और धनुर्धारी खड़ा न रह सकेगा और फुर्ती से दौड़नेहारा न बचेगा और न सवार भी अपना प्राण बचा सकेगा ॥ १६ । और शूरवीरों में जो अधिक धीर हो सो भी उस दिन नंगा हो कर भाग जाएगा यहोवा की यही वाणी है ॥

३. हे इस्राएलियो यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में अर्थात् उस सारे कुल के विषय में कहा है जिस को मैं मिस्र देश से लाया ॥ २ । पृथिवी के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म्म के कामों का दण्ड दूंगा ॥

३ । दो मनुष्य यदि आपस में सम्मति न करें तो क्या एक संग चल सकेंगे ॥ ४ । क्या सिंह बिना अहेर पाये बन में गरजेगा क्या जवान सिंह बिना कुछ पकड़े अपनी मांद में से गुर्राएगा ॥ ५ । क्या चिड़िया फंदा बिना लगाये फंसेगी क्या बिना कुछ फंसे फंदा भूमि पर से उचकेगा ॥ ६ । क्या किसी नगर में नरसिंगा फूंकने पर लोग न थरथराएंगे क्या

(१) मूल में मैं उस को न फेरूंगा।

(१) वा तुम्हारे नीचे ऐसा दबा हूं जैसे गाड़ी जो पूलों से भरी हो दबी रहती है।

यहोवा के विना डाले किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी ॥ ७। इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास नबियों पर अपना मर्म विना प्रगट किये कुछ भी न करेगा ॥ ८। सिंह गरजा, कौन न डरेगा प्रभु यहोवा बोला, कौन नबूवत न करेगा ॥

९। अश्दोद् के भवन और मिस्र देश के राजभवन पर प्रचार करके कहो कि शोमरोन् के पहाड़ों पर एकट्ठे होकर देखो कि उस में क्या ही बड़ा कोलाहल और उस के बीच क्या ही अंधेर के काम हो रहे हैं ॥ १०। और यहोवा की यह वाणी है कि जो लोग अपने भवनों में उपद्रव और डकैती का धन बटोर रखते हैं सो सीधाई का काम करना जानते ही नहीं ॥

११। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि देश का घेरनेवाला एक शत्रु होगा और वह तेरा बल तोड़ेगा और तेरे भवन लूटे जाएंगे ॥ १२। यहोवा यों कहता है कि जिस भांति चरवाहा सिंह के मुंह से दो टांगें या कान का एक टुकड़ा छुड़ाए वैसे ही इस्राएली लोग जो शोमरोन् में बिछौने के एक कोने या रेशमी गद्दी पर बैठा करते हैं छुड़ाये जाएंगे ॥ १३। सेनाओं के परमेश्वर प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि सुनो और याकूब के घराने से यह बात चिताकर कहो कि, १४। जिस समय मैं इस्राएल् को उस के अपराधों का दण्ड दूंगा उसी समय मैं बेतेल् की वेदियों का भी दण्ड दूंगा और वेदी के सींग टूटकर भूमि पर गिर पड़ेंगे ॥ १५। और मैं जाड़े का भवन और धूपकाल का भवन दोनों गिराऊंगा और हाथीदांत के बने भवन भी नाश होंगे और बड़े बड़े घर नाश हो जाएंगे यहोवा की यही वाणी है ॥

४. हे बाशान् की गायो यह वचन सुनो तुम जो शोमरोन् पर्वत पर हो और कंगालों पर अंधेर करती और दरिद्रों को कुचल डालती हो और अपने अपने पति से कहती हो कि ला दे हम पीएं ॥ २। प्रभु यहोवा अपनी पवित्रता की किरिया खाकर कहता है कि सुनो तुम पर ऐसे दिन आनेहारे हैं कि तुम कांटियाओं से और तुम्हारे संतान मछली की बंसियों से खींच लिये जाएंगे ॥ ३। और तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्म्मोन् में डाली जाओगी यहोवा की यही वाणी है ॥

४। बेतेल् में आकर अपराध करो गिलगाल् में आकर बहुत से अपराध करो और अपने चढ़ावे भोर भोर को और अपने दशमांश तीसरे दिन में बराबर ले आया करो, ५। और धन्यवादबलि खमीर मिलाकर चढ़ाओ और अपने स्वेच्छाबलियों की चर्चा चलाकर उन का प्रचार करो क्योंकि हे इस्राएलियो ऐसा करना तुम को भावता है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥ ६। मैं ने तो तुम्हारे सब नगरों में दान्त की सफाई करा दिई और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की घटी किई है तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है ॥ ७। और जब कटनी के तीन महीने रह गये तब मैं ने तुम्हारे लिये वर्षा न किई या मैं ने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में न बरसाया या एक खेत में जल बरसा और दूसरा खेत जिस में न बरसा सो सूख गया ॥ ८। सो दो तीन नगरों के लोग पानी पीने को मारे मारे फिरते हुए एक ही नगर में आये पर तृप्त न हुए तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है ॥ ९। मैं ने तुम को लूह और गेरुई से मारा है और जब तुम्हारे बागीचे और दाख की बारियां और अंजीर और जलपाई के वृक्ष बहुत हो गये तब टिड्डियां उन्हें खा गईं तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है ॥ १०। मैं ने तुम्हारे बीच मिस्र देश की सी मरी फैलाई और मैं ने तुम्हारे घोड़ों को छिनवाकर तुम्हारे जवानों को तलवार से घात करा दिया और तुम्हारी छावनी की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुंचाई तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है ॥ ११। मैं ने तुम में से कई एक ऐसे उलट दिये जैसे परमेश्वर ने सदोम् और अमोरा को उलट दिया था और तुम आग से निकाली हुई लुकटी के समान ठहरे तौभी

तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है ॥ १२ । इस कारण हे इस्राएल् मैं तुझ से यह काम करूंगा और मैं जो तुझ से यह काम करूंगा सो हे इस्राएल् अपने परमेश्वर के साम्हने आने को लिये तैयार हो रह ॥ १३ । देख पहाड़ों का बनानेहारा और पवन का सिरजनेहारा और मनुष्य को उस के मन का विचार बतानेहारा और भोर को अंधकार करनेहारा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चलनेहारा जो है उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है ॥

५. हे इस्राएल् के घराने इस विलाप के गीत के वचन सुनो जो मैं तुम्हारे विषय कहता हूं कि, २ । इस्राएल् की कुमारी कन्या गिर गई और फिर उठ न सकेगी वह अपनी ही भूमि पर पटक दिई गई है और उस का उठानेहारा कोई नहीं ॥ ३ । क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस नगर से हजार निकलते थे उस में इस्राएल् के घराने के सौ ही बचे रहेंगे और जिस से सौ निकलते थे उस में दस बचे रहेंगे ॥ ४ । यहोवा इस्राएल् के घराने से यों कहता है कि मेरी खोज में लगो तब जीते रहोगे ॥ ५ । और बेतेल् की खोज में न लगो न गिल्गाल् में प्रवेश करो न बेर्शेबा को जाओ क्योंकि गिल्गाल् निश्चय बंधुआई में जाएगा और बेतेल् सूना पड़ेगा ॥ ६ । यहोवा की खोज करो तब जीते रहोगे नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं भड़केगा और वह उसे भस्म करेगी और बेतेल् में उस का कोई बुझानेहारा न होगा ॥ ७ । हे न्याय के बिगाड़नेहारो[1] और धर्म्म को मिट्टी में मिलानेहारो, ८ । जो कचपचिया और मृगशिरा का बनानेहारा है और घोर अंधकार को दूर करके भोर का प्रकाश करता और दिन को अंधकार करके रात बना देता और समुद्र का जल स्थल के ऊपर बहा देता है उस का नाम यहोवा है, ९ । वह तुरन्त ही बलवन्त को विनाश कर देता और गढ़ को भी सत्यानाश करता है ॥ १० । वे उस से बैर रखते हैं जो सभा में[2] उलहना देता है और खरी बात बोलनेहारे से घिन करते हैं ॥ ११ । तुम जो कंगालों को लताड़ा करते और भेंट कहकर उन से अन्न हर लेते हो इस लिये जो घर तुम ने गढ़े हुए पत्थरों के बनाये हैं उन में रहने न पाओगे और जो मनभावनी दाख की बारियां तुम ने लगाई हैं उन का दाखमधु पीने न पाओगे ॥ १२ । क्योंकि मैं तो जानता हूं कि तुम्हारे अपराध बहुत हैं और तुम्हारे पाप भारी हैं तुम धर्म्मी को सताते और घूस लेते और फाटक में दरिद्रों का न्याय बिगाड़ते हो ॥ १३ । समय तो बुरा है इस कारण जो बुद्धिमान हो सो ऐसे समय चुपका रहे ॥ १४ । हे लोगो बुराई को नहीं भलाई को ढूंढो कि तुम जीते रहो और तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा हमारे संग है ॥ १५ । बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रक्खो और फाटक में न्याय को स्थिर करो क्या जाने सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यूसुफ के बचे हुओं पर अनुग्रह करे ॥ १६ । इस कारण सेनाओं का परमेश्वर प्रभु यहोवा यों कहता है कि सब चौकों में रोना पीटना होगा और सब सड़कों में लोग हाय हाय करेंगे और वे किसान विलाप करने को और जो लोग विलाप करने में निपुण हैं सो रोने पीटने को बुलाये जाएंगे ॥ १७ । और सब दाख की बारियों में रोना पीटना होगा क्योंकि यहोवा यों कहता है कि मैं तुम्हारे बीच से होकर जाऊंगा ॥ १८ । हाय तुम पर जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हो यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा वह तो उजियाले का नहीं अंधियारे का दिन होगा ॥ १९ । जैसा कोई सिंह से भागे और उसे भालू मिले वा घर में आकर भीत पर हाथ टेके और सांप उस को डंसे ॥ २० । क्या यह सच नहीं है कि यहोवा का दिन उजियाले का नहीं अंधियारे ही का होगा बरन ऐसे घोर अंधकार का जिस में कुछ भी चमक न हो ॥

२१ । मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता और उन्हें निकम्मा जानता हूं और तुम्हारी महासभाओं से प्रसन्न न हूंगा[1] ॥ २२ । चाहे तुम मेरे लिये होमबलि

(१) मूल में. न्याय को नागदौना बनाने। (२) मूल में फाटक।

(१) मूल में मैं न सूंघूंगा ।

और अन्नबलि चढ़ाओ पर मैं प्रसन्न न हूंगा और न तुम्हारे पेसे हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर ताकूंगा ॥ २३ । अपने गीतों का कोलाहल मुझ से दूर करो तुम्हारी सारंगियों का सुर मैं न सुनूंगा ॥ २४ । न्याय तो नदी की नाईं और धर्म्म महानद की नाईं बहता जाए ॥ २५ । हे इस्राएल् के घराने तुम जंगल में चालीस बरस लों पशुबलि और अन्नबलि क्या मुझी को चढ़ाते रहे ॥ २६ । नहीं तुम तो अपने राजा का तंबू और अपनी मूरतों की चरणपीठ और अपने देवता का तारा लिये फिरते रहे ॥ २७ । इस कारण मैं तुम को दमिश्क् के उधर बन्धुआई में कर दूंगा सेनाओं के परमेश्वर नाम यहोवा का यही वचन है ॥

६. हाय उन पर जो सिय्योन् में सुख से रहते और उन पर जो शोमरोन् के पर्वत पर निश्चिन्त रहते हैं और श्रेष्ठ जाति में प्रसिद्ध हैं जिन के पास इस्राएल् का घराना आता है ॥ २ । कल्ने नगर को जाकर देखो और वहां से हमात् नाम बड़े नगर को चलो फिर पलिश्तियों के गत् नगर को जाओ क्या वे इन राज्यों से उत्तम हैं या उन का देश तुम्हारे देश से कुछ बड़ा है ॥ ३ । तुम तो बुरे दिन की चिन्ता को दूर कर देते और उपद्रव की गद्दी को निकट ले आते हो[1] ॥ ४ । तुम हाथी दांत के पलंगों पर सोते और अपने अपने बिछौने पर पांव फैलाये सोते हो और भेड़ बकरियों में से मेम्ने और गौशालाओं में से बछड़े खाते हो ५ । और सारंगी के साथ वाहियात गीत गाते और दाऊद की नाईं भांति भांति के बाजे बुद्धि से निकालते हो ६ । और कटोरों में से दाखमधु पीते और उत्तम से उत्तम तेल लगाते हो पर यूसुफियों पर आनेहारी विपत्ति का हाल सुनकर शोकित नहीं होते ॥ ७ । इस कारण वे अब बन्धुआई में पहिले ही जाएंगे और जो पांव फैलाये सोते थे उन की धूम जाती रहेगी ॥ ८ । सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि प्रभु यहोवा ने अपनी ही किरिया खाकर कहा है कि जिस पर याकूब घमंड करता है उस से मैं घिन और उस के राजभवनों से बैर रखता हूं और मैं इस नगर को उस सब समेत जो उस में है शत्रु के वश कर दूंगा ॥ ९ । और चाहे किसी घर में दस पुरुष बचे रहें तौभी वे मर जाएंगे ॥ १० । और जब किसी का चचा जो उस का फूंकनेहारा होगा उस की हड्डियों को घर से निकालने के लिये उठाएगा और जो घर के कोने में पड़ा हो उस से कहेगा कि क्या तेरे पास और कोई है और वह कहेगा कि कोई नहीं तब वह कहेगा कि चुप रह क्योंकि यहोवा का नाम लेना नहीं चाहिये ॥ ११ । क्योंकि यहोवा की आज्ञा से बड़े घर में छेद और छोटे घर में दरार होगी ॥ १२ । क्या घोड़े चटान पर दौड़ें क्या कोई ऐसे स्थान में बैलों से जोते कि तुम लोगों ने न्याय को विष से और धर्म्म के फल को कडुवे फल से बदल डाला है ॥ १३ । तुम ऐसी वस्तु के कारण जो निरी माया है आनन्द करते हो और कहते हो कि क्या हम अपने ही यत्न से सामर्थी नहीं हो गये ॥ १४ । इस कारण सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल् के घराने देख मैं तुम्हारे विरुद्ध एक ऐसी जाति खड़ी करूंगा जो हमात् की घाटी से लेकर अराबा की नदी लों तुम को संकट में डालेगी ॥

७. प्रभु यहोवा ने मुझे यों दिखाया और क्या देखता हूं कि वह पिछली घास के उगने के पहिले दिनों में टिड्डियां बना रही है और वह राजा की कटनी के पीछे हो की पिछली घास थी ॥ २ । जब वे घास खा चुकीं तब मैं ने कहा हे प्रभु यहोवा क्षमा कर नहीं तो याकूब किस रीति ठहर सकेगा वह तो निर्बल[1] है ॥ ३ । इस के विषय में यहोवा पछताया और कहा कि ऐसी बात न होगी ॥

४ । प्रभु यहोवा ने मुझे यों दिखाया और क्या देखता हूं कि प्रभु यहोवा ने आग के द्वारा मुकद्दमा लड़ने को पुकारा सो आग से महासागर सूख गया

(१) मूल में दूर कर देते ।

(१) मूल में छोटा ।

और देश भी मस्त हुआ चाहता था॥ ५। तब मैं ने कहा हे प्रभु यहोवा रह जा नहीं तो याकूब किस रीति ठहर सकेगा वह तो निर्बल[1] है॥ ६। इस के विषय भी यहोवा पछताया और प्रभु यहोवा ने कहा कि ऐसी बात न होगी॥

७। उस ने मुझे यों भी दिखाया कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी भीत पर खड़ा है और उस के हाथ में साहुल है॥ ८। और यहोवा ने मुझ से कहा हे आमोस् तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा एक साहुल तब प्रभु ने कहा सुन मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के बीच में साहुल लगाऊंगा मैं अब उन को न छोड़ूंगा॥ ९। और इसहाक् के ऊंचे स्थान उजाड़ और इस्राएल् के पवित्रस्थान सुनसान हो जाएंगे और मैं यारोबाम् के घराने पर तलवार खींचे हुए चढ़ाई करूंगा॥

१०। तब बेतेल् के याजक अमस्याह् ने इस्राएल् के राजा यारोबाम् के पास कहला भेजा कि आमोस् ने इस्राएल् के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी किई है उस के सारे वचनों को देश नहीं सह सकता॥ ११। आमोस् तो यों कहता है कि यारोबाम् तलवार से मारा जाएगा और इस्राएल् अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा॥ १२। अमस्याह् ने आमोस् से कहा हे दर्शी यहां से निकलकर यहूदा देश में भाग जा और वहीं रोटी खाया कर और वहीं नबूवत किया कर॥ १३। पर बेतेल् में फिर कभी नबूवत न करना क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और राजपुरी है॥ १४। आमोस् ने उत्तर देकर अमस्याह् से कहा मैं न तो नबी था और न नबी का बेटा मैं गाय बैल का चरवाहा और गूलर के वृक्षों का छांटनेहारा था॥ १५। और यहोवा ने मुझे भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरने से बुलाकर कहा जा मेरी प्रजा इस्राएल् से नबूवत कर॥ १६। सो अब तू यहोवा का वचन सुन तू तो कहता है कि इस्राएल् के विरुद्ध नबूवत मत कर और इसहाक् के घराने के विरुद्ध बार बार वचन मत सुना[2]॥ १७। इस कारण यहोवा यों कहता है कि तेरी स्त्री नगर में वेश्या हो जाएगी और तेरे बेटे बेटियां तलवार से मारी जाएंगी और तेरी भूमि डोरी डालकर बांट लिई जाएगी और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा और इस्राएल् अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा॥

(१) मूल में छोटा। (२) मूल में विरुद्ध मत टपका।

८.

प्रभु यहोवा ने मुझ को यों दिखाया कि धूपकाल के फलों[1] से भरी हुई एक टोकरी है॥ २। और उस ने कहा हे आमोस् तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा धूपकाल के फलों[1] से भरी एक टोकरी। यहोवा ने मुझ से कहा मेरी प्रजा इस्राएल् का अन्त[2] आ गया है मैं अब उस को और न छोड़ूंगा॥ ३। और प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन राजमन्दिर में के गीत हाहाकार से बदल जाएंगे और लोथों का बड़ा ढेर लगेगा और सब स्थानों में वे चुपचाप फेंक दिये जाएंगे॥ ४। यह सुनो तुम जो दरिद्रों को निगलने और देश के नम्र लोगों को नाश करने चाहते हो, ५। जो कहते हो नया चांद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें और विश्रामदिन कब बीतेगा कि हम अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल् को भारी कर दें और छल से दण्डी मारें, ६। और कंगालों को रुपैया देकर और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियां देकर मोल लें और निकम्मा अन्न बेचें॥ ७। यहोवा जिस पर याकूब को घमण्ड करना योग्य है वही अपनी किरिया खाकर कहता है कि मैं तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूंगा॥ ८। क्या इस कारण भूमि न कांपेगी और क्या उस पर के सब रहनेहारे विलाप न करेंगे यह देश सब का सब मिस्र की नील नदी के समान होगा जो बढ़ती फिर लहरें मारती और घट जाती है॥ ९। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं सूर्य को दोपहर के समय अस्त करूंगा और इस देश को दिन दुपहरी अंधियारा कर दूंगा॥ १०। और मैं तुम्हारे पर्बों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊंगा और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके

(१) मूल में कैस्। (२) मूल में केस्।
(३) मूल में हाहाकार करेंगे।

विलाप के गीत गवाऊंगा और मैं तुम सब की कटि में टाट बंधाऊंगा और तुम सब के सिरों को मुंड़ाऊंगा और ऐसा विलाप कराऊंगा जैसा एकलौते के लिये होता है और इस का अन्त कठिन दुःख के दिन का सा होगा[१] ॥ ११। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि सुनो ऐसे दिन आते हैं कि मैं इस देश में महंगी करूंगा। उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी पर यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी ॥ १२। और लोग यहोवा के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र लों और उत्तर से पूरब लों मारे मारे तो फिरेंगे पर उस को न पाएंगे ॥ १३। उस समय सुन्दर कुमारियां और जवान पुरुष दोनों प्यास के मारे मूर्छा खाएंगे ॥ १४। जो लोग शोमरोन् के पापमूल देवता की किरिया खाते हैं और जो कहते हैं कि दान् के[२] देवता के जीवन की सों और बेर्शेबा के पंथ की सों वे सब गिर पड़ेंगे और फिर न उठेंगे ॥

९. फिर मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा देखा और उस ने कहा खंभे की कंगनियों पर मार जिस से डेवढ़ियां हिलें और उन को सब लोगों के सिर पर गिराकर टुकड़े टुकड़े कर और जो नाश होने से बचें उन्हें मैं तलवार से घात करूंगा यहां लों कि उन में से जो भागे वह भाग न निकलेगा और जो अपने को बचाए सो बचने न पाएगा ॥ २। क्योंकि चाहे वे खोदकर अधोलोक में उतर जाएं तो वहां से मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें लाऊंगा और चाहे वे आकाश पर चढ़ जाएं तो वहां से मैं उन्हें उतार लाऊंगा ॥ ३। और चाहे वे कर्म्मेल् में छिप जाएं पर वहां भी मैं उन्हें ढूंढ़ ढूंढ़कर पकड़ लूंगा और चाहे वे समुद्र की थाह में मेरी दृष्टि की ओट हों पर वहां मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूंगा ॥ ४। और चाहे शत्रु उन्हें हांक हांककर बंधुआई में ले जाएं पर वहां भी मैं आज्ञा देकर तलवार से उन्हें घात कराऊंगा और मैं उन पर भलाई करने के लिये नहीं बुराई ही करने के लिये दृष्टि रखूंगा ॥ ५। और सेनाओं के प्रभु यहोवा के स्पर्श करने से पृथिवी पिघलती है और उस के सारे रहनेहारे विलाप करते हैं और वह सब की सब मिस्र की नदी के समान हो जाती है जो बढ़ती फिर लहरें मारती और घट जाती है ॥ ६। जो आकाश में अपनी कोठरियां बनाता और अपने आकाशमण्डल की नेव पृथिवी पर डालता और समुद्र का जल धरती पर बहा देता है उसी का नाम यहोवा है ॥ ७। हे इस्राएलियो यहोवा की यह वाणी है कि क्या तुम मेरे लेखे कूशियों के बराबर नहीं हो क्या मैं इस्राएल् को मिस्र देश से नहीं लाया और पलिश्तियों को कप्तोर् से और अरामियों को कीर् से नहीं लाया ॥ ८। सुनो प्रभु यहोवा की दृष्टि इस पापमय राज्य पर लगी है और मैं इस को धरती पर से नाश करूंगा तौभी पूरी रीति से मैं याकूब के घराने को नाश न करूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ९। मेरी आज्ञा से इस्राएल् का घराना सब जातियों में ऐसा चाला जाएगा जैसा अन्न चलनी में चाला जाता है पर उस में का एक भी पुष्ट दाना भूमि पर न गिरेगा ॥ १०। मेरी प्रजा में के सब पापी जो कहते हैं कि वह विपत्ति हम पर न आ पड़ेगी और न हमें घेरेगी सो तो तलवार से मारे जाएंगे ॥

११। उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोंपड़ी को खड़ा करूंगा। और उस के बाड़े के नाकों को सुधारूंगा और उस के खण्डहरों को फेर बनाऊंगा और प्राचीन काल में जैसा वह था वैसा ही उस को बना दूंगा, १२। जिस से वे बचे हुए एदोमियों वरन सब अन्यजातियों को जो मेरी कहावती हैं अपने अधिकार में लें यहोवा जो यह काम पूरा करता है उस की यही वाणी है ॥ १३। यहोवा की यह भी वाणी है कि सुनो ऐसे दिन आते हैं कि हल जोतते जोतते लवना आरंभ होगा और दाख रौंदते रौंदते बीज बोना आरंभ होगा[१] और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा और सब पहाड़ियां पिघल

(१) मूल में कड़ुवा दिन। (२) मूल में हे दान् तेरे

(१) मूल में, हल जोतनेहारा लवनेहारे को और दाख रौंदनेहारा बीज बोनेहारे को जा लेगा।

जाएंगे ॥ १४ । और मैं अपनी प्रजा इस्राएल् के बंधुओं को फेर ले आऊंगा और वे उजड़े हुए नगरों को सुधारकर बसेंगे और दाख की बारियां लगाकर दाखमधु पीएंगे और बगीचे लगाकर फल खाएंगे ॥ १५ । और मैं उन्हें उन्हीं की भूमि में रोपूंगा और वे अपनी भूमि में से जो मैं ने उन्हें दिई है फिर उखाड़े न जाएंगे तेरे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है ॥

ओबद्याह ।

ओबद्याह् का दर्शन । प्रभु यहोवा ने एदोम् के विषय यों कहा कि हम लोगों ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है और एक दूत अन्यजातियों में यह कहने को भेजा गया है कि उठो हम उस से लड़ने को उठें ॥ २ । मैं तुझे जातियों से छोटा करता हूं तू बहुत तुच्छ गिना जाएगा ॥ ३ । हे ढांग की दरारों में बसनेवाले हे ऊंचे स्थान में रहनेहारे तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है तू तो मन में कहता है कि कौन मुझे भूमि पर उतार देगा ॥ ४ । पर चाहे तू उकाब की नाईं ऊंचा उड़ता हो वरन तारागण के बीच अपना घोंसला बनाये हो तौभी मैं तुझे वहां से नीचे गिराऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ५ । यदि चोर डाका रात को तेरे पास आता (हाय तू कैसे मिटा दिया गया है) तो क्या वे चुराए हुए धन से तृप्त होकर चले न जाते और यदि दाख के तोड़नेहारे तेरे पास आते तो क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते ॥ ६ । पर एसाव् का जो कुछ है वह कैसा खोजकर निकाला गया है उस का गुप्त धन कैसा पता लगा लगाकर निकाला गया है ॥ ७ । जितने तुझ से वाचा बांधे थे सिवाने लों उन सभों ने तुझ को पहुंचवा दिया है जो लोग तुझ से मेल रखते थे वे तुझ को धोखा देकर तुझ पर प्रबल हुए हैं और जो तेरी रोटी खाते हैं वे तेरे लिये फन्दा लगाते हैं ॥ ८ । उस में कुछ समझ नहीं है, यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं उस समय एदोम् में से बुद्धिमानों को और एसाव् के पहाड़ में से चतुराई को नाश न करूंगा ॥ ९ । और हे तेमान् तेरे शूरवीर का मन कच्चा हो जाएगा और यों एसाव् के पहाड़ पर का एक पुरुष घात होने से नाश हो जाएगा ॥ १० । हे एसाव उस उपद्रव के कारण जो तू ने अपने भाई याकूब पर किया तू लज्जा से ढंपेगा और सदा के लिये नाश हो जाएगा ॥ ११ । जिस दिन परदेशी लोग उस की धन संपत्ति छीनकर ले गये और बिराने लोगों ने उस के फाटकों से घुसकर यरूशलेम् पर चिट्ठी डाली और उस दिन तू भी उन में से एक सा हुआ ॥ १२ । पर तू अपने भाई के दिन में अर्थात् उस के विपत्ति के दिन में उस की ओर देखता न रहना और यहूदियों के नाश होने के दिन उन के ऊपर आनन्द न करना और उन के संकट के दिन बड़ा बोल न बोलना ॥ १३ । मेरी प्रजा की विपत्ति के दिन तू उस के फाटक से न घुसना और उस की विपत्ति के दिन उस की दुर्दशा को देखता न रहना और उस की विपत्ति के दिन उस की धन संपत्ति पर हाथ न लगाना ॥ १४ । और तिरमुहाने पर उस के भागनेहारों को मार डालने के लिये खड़ा न होना और उस के संकट के दिन उस के बचे हुओं को पकड़ा न देना ॥ १५ । क्योंकि सारी अन्यजातियों पर यहोवा के दिन का आना निकट है जैसा तू ने किया है वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा ॥ १६ । जिस प्रकार तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया उसी प्रकार से सारी अन्यजातियां लगातार पीती रहेंगी वरन सुड़क सुड़ककर

पीएंगी और ऐसी हो जाएंगी मानो कभी हुईं ही नहीं ॥ १७। उस समय सिय्योन् पर्वत पर बचे हुए लोग रहेंगे और वह पवित्रस्थान ठहरेगा और याकूब का घराना अपने निज भागों का अधिकारी होगा ॥ १८। और याकूब का घराना आग और यूसुफ का घराना लौ और एसाव् का घराना खूंटी बनेगा और वे उन में आग लगाकर उन को भस्म करेंगे और एसाव् के घराने का कोई न बचेगा क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥ १९। और दक्खिन देश के लोग एसाव् के पहाड़ के अधिकारी हो जाएंगे और नीचे के देश के लोग पलिश्तियों के अधिकारी होंगे और यहूदी एप्रैम् और शोमरोन् के दिहात को अपने भाग में लेंगे और बिन्यामीन् गिलाद् का अधिकारी होगा ॥ २०। और इस्राएलियों के उस दल में से जो लोग बंधुआई में जाकर कनानियों के बीच सारपत् लों रहते हैं और यरूशलेमियों में से जो लोग बंधुआई में जाकर सपाराद् में रहते हैं सो सब दक्खिन देश के नगरों के अधिकारी हो जाएंगे ॥ २१। और उद्धार करनेहारे एसाव् के पहाड़ का न्याय करने के लिये सिय्योन् पर्वत पर चढ़ आएंगे और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा ॥

योना।

---

१. यहोवा का यह वचन अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुंचा कि २। उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा और उस के विरुद्ध प्रचार कर क्योंकि उस की बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है[1] ॥ ३। पर योना यहोवा के सन्मुख से तर्शीश् को भाग जाने के लिये उठा और यापो नगर को जाकर तर्शीश् जानेहारा एक जहाज़ पाया और भाड़ा दे उस पर चढ़ गया कि उन के साथ होकर यहोवा के सन्मुख से तर्शीश् को चला जाए ॥ ४। तब यहोवा ने समुद्र में प्रचंड बयार चलाई सो समुद्र में बड़ी आंधी उठी यहां लों कि जहाज़ टूटा चाहता था ॥ ५। तब मल्लाह लोग डरकर अपने अपने देवता की दोहाई देने लगे और जहाज़ में जो ब्योपार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे जिस से उन को कुछ कल हो जाए। योना जहाज़ के निचले भाग में उतरकर सो गया और भारी नींद में पड़ा हुआ था ॥ ६। तो मांझी उस के निकट आकर कहने लगा तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है उठ अपने देवता की दोहाई दे क्या जाने परमेश्वर हमारी चिन्ता करे कि हमारा नाश न हो ॥ ७। फिर उन्हों ने आपस में कहा आओ हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किस के कारण पड़ी है सो उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी योना के नाम पर निकली ॥ ८। तब उन्हों ने उस से कहा हमें बता कि किस के कारण यह विपत्ति हम पर पड़ी है तेरा उद्यम क्या है और तू कहां से आया है तू किस देश और किस जाति का है ॥ ९। उस ने उन से कहा मैं इब्री हूं और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने जल स्थल दोनों को बनाया है उसी का भय मानता हूं ॥ १०। तब वे निपट डर गये और उस से कहने लगे कि तू ने यह क्या किया है क्योंकि वे इस कारण जान गये थे कि वह यहोवा के सन्मुख से भाग आया है कि उस ने उन को ऐसा बता दिया था ॥ ११। फिर उन्हों ने उस से पूछा हम तुझ से क्या करें कि समुद्र में नैया पड़ जाए उस समय तो समुद्र की लहरें बढ़ती चली जाती थीं ॥ १२। उस

(१) मुझ से चढ़ आई है। (२) मुंह से दूर में [illegible]।

ने उन से कहा मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो तब समुद्र में ःनीवा पड़ जाएगा क्योंकि मैं जानता हूं कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है॥ १३। तौभी उन मनुष्यों ने बड़े यत्न से खेया जिस से उस को तीर में लगाएं पर पहुंच न सके इस लिये कि समुद्र की लहरें उन के विरुद्ध बढ़ती चली आती थीं॥ १४। तब उन्हों ने यहोवा को पुकारकर कहा हे यहोवा हम बिनती करते हैं कि इस पुरुष के प्राण की सन्ती हमारा नाश न होने दे और न हमें निर्दोष के खून के दोषी ठहरा क्योंकि हे यहोवा जो कुछ तेरी इच्छा थी सोई तू ने किया है॥ १५। तब उन्हों ने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया और समुद्र में हलकोरे उठने थम गये॥ १६। तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय माना और उस को चढ़ावे चढ़ाये और मन्नतें मानीं॥ १७। यहोवा ने तो एक बड़ा सा मच्छ ठहराया कि योना को निगल ले और योना उस मछ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा॥

२. तब योना ने उस के पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कहा कि

२। पड़े हुए मैं ने संकट में यहोवा की दोहाई दिई
और उस ने मेरी सुन लिई
अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा
और तू ने मेरी सुन लिई॥
३। तू ने मुझे गहिरे सागर में समुद्र की थाह तक डाल दिया
और मैं धारों के बीच पड़ा था
तेरे उठाये हुए सारे तरंग और ढेऊ मेरे ऊपर से चलते थे॥
४। मैं ने कहा कि मैं तेरे साम्हने से निकाल दिया गया हूं
तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा॥
५। मैं जल से यहां लों घिरा हुआ था कि मेरा प्राण जाता था
गहिरा सागर मेरी चारों ओर था,
और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था॥
६। मैं पहाड़ों की जड़ लों पहुंच गया था
मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था
तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने मेरे प्राण को गड़हे में से उठाया है॥
७। जब मैं मूर्छा खाने लगा तब मैं ने यहोवा को स्मरण किया
और मेरी प्रार्थना तेरे पास बरन तेरे पवित्र मन्दिर में पहुंच गई॥
८। जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं
सो अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं॥
९। पर मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलि चढ़ाऊंगा
मैं ने जो मन्नत मानी उस को पूरी करूंगा
उद्धार यहोवा ही से होता है॥
१०। इस पर यहोवा ने मच्छ को आज्ञा दिई
और उस ने योना को स्थल पर उगल दिया॥

३. फिर यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा कि,
२। उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा और जो बात मैं तुझ से कहूंगा उस का उस में प्रचार कर॥ ३। सो योना यहोवा के कहे के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था वह तीन दिन की यात्रा का था॥ ४। सो योना नगर में प्रवेश करके एक दिन के मार्ग लों गया और यह प्रचार करता गया कि अब से चालीस दिन के बीते पर नीनवे उलट दिया जाएगा॥ ५। तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति किई और उपवास का प्रचार किया और बड़े से लेकर छोटे लों सभों ने टाट ओढ़ा॥ ६। तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान लों पहुंचा सो उस ने सिंहासन पर से उठ अपना राजकीय ओढ़ना उतारकर टाट ओढ़ लिया और राख पर बैठ गया॥ ७। और राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का

ढंढोरा पिटवाया कि क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या भेड़ बकरी क्या और और पशु कोई कुछ भी न खाएं वे न खाएं न पानी पीवें ॥ ८ । और मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दें और अपने कुमार्ग से फिरें और उस उपद्रव से जो वे करते हैं फिरें ॥ ९ । क्या जानें परमेश्वर फिरे और पछताए और उस का भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नाश न हों ॥ १० । तब परमेश्वर ने उन के कामों को देखा कि वे कुमार्ग से फिरे जाते हैं सो परमेश्वर ने पछताकर उन की जो हानि करने को कहा था उस को न किया ॥

४. यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी और उस का क्रोध भड़का ॥ २ । और उस ने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना किई कि हे यहोवा मेरी बिनती यह है कि जब मैं अपने देश में था तब क्या मैं यही बात न कहता था इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश् को भागने को फुर्ती की क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर और बिलम्ब से कोप करनेहारा करुणानिधान और दुःख देने से पछतानेहारा है ॥ ३ । सो अब हे यहोवा मेरा प्राण ले ले क्योंकि मेरे लिये जीते रहने से मरना ही अच्छा है ॥ ४ । यहोवा ने कहा तेरा जो क्रोध भड़का है सो क्या अच्छा है ॥ ५ । इस पर योना उस नगर से निकलकर उस की पूरब ओर बैठ गया और वहां एक छप्पर बनाकर उस की छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर को क्या होगा ॥ ६ । तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो जिस से उस का दुःख दूर हो सो योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ ॥ ७ । बिहान को जब पह फटने लगी तब परमेश्वर ने एक कीड़ा ठहराया जिस ने रेंड़ का पेड़ ऐसा काटा कि वह सूख गया ॥ ८ । और जब सूर्य उगा तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लूह चलाई और घाम योना के सिर पर ऐसा लगा कि वह मूर्छा खाने लगा और यह कहकर मृत्यु मांगी कि मेरे लिये जीते रहने से मरना ही अच्छा है ॥ ९ । परमेश्वर ने योना से कहा तेरा क्रोध जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है क्या अच्छा है उस ने कहा हां मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है बरन क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता ॥ १० । तब यहोवा ने कहा जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने न तो कुछ परिश्रम किया न उस को बढ़ाया और वह एक ही रात में हुआ फिर एक ही रात में नाश भी हुआ उस पर तो तू ने तरस खाई है ॥ ११ । फिर यह बड़ा नगर नीनवे जिस में एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते और बहुत घरैले पशु भी रहते हैं उस पर क्या मैं तरस न खाऊं ॥

मीका ।

---

१. यहोवा का वचन जो यहूदा के राजा योताम् आहाज् और हिज़किय्याह् के दिनों में मीका मोरेशेती को पहुंचा जिस को उस ने शोमरोन् और यरूशलेम् के विषय में पाया ॥ २ । हे जाति जाति के सारे लोगो सुनो हे पृथिवी तू उस सब समेत जो तुझ में है ध्यान धर कि प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध बरन प्रभु अपने पवित्र मन्दिर में से साक्षी हो ॥ ३ । देखो यहोवा तो अपने स्थान में से निकलता

है और उतरकर पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चलेगा ॥ ४। और पहाड़ उस के नीचे ऐसे गल जाएंगे और तराई ऐसे फटेंगी जैसे मोम आग की आंच से और पानी जो घाट से नीचे बहता है ॥ ५। यह सब याकूब के अपराध और इस्राएल् के घराने के पाप के कारण से होता है याकूब का अपराध क्या है क्या शोमरोन् नहीं है और यहूदा के ऊंचे स्थान क्या हैं क्या वे यरूशलेम् नहीं ॥ ६। इस कारण मैं शोमरोन् को मैदान का डीह कर दूंगा और दाख की बारी ही बारी हो जाएंगी और मैं उस के पत्थरों को खड्ड में लुढ़का दूंगा और उस की नेव उघाड़ूंगा ॥ ७। और उस की सब खुदी हुई मूरतें टुकड़े टुकड़े किई जाएंगी और जो कुछ उस ने छिनाला करके कमाया है सो आग से भस्म किया जाएगा और उस की सब प्रतिमाओं को मैं चकनाचूर करूंगा क्योंकि छिनाले की सी कमाई से तो उस ने उन को बटोर रक्खा है और वे फिर छिनाले की सी कमाई ही हो जाएंगी ॥

८। इस कारण मैं छाती पीट पीटकर हाय हाय करूंगा मैं लुटा सा और नंगा चलूंगा मैं गीदड़ों की नाईं चिल्लाऊंगा और शुतर्मुर्गों की नाईं रोऊंगा ॥ ९। क्योंकि उस के घाव असाध्य हैं और विपत्ति यहूदा पर भी आ पड़ी बरन वह मेरे जातिभाइयों पर पड़कर यरूशलेम् के फाटक लों पहुंच गई है ॥ १०। गत् नगर में इस की चर्चा मत करो और कुछ भी मत रोओ बेतलाप्रा[1] में धूलि में लोटपोट करो ॥ ११। हे शापीर् नंगी होने से लज्जित होकर निकल जा सानान्[2] की रहनेहारी नहीं निकली बेतेसेल् में रोना पीटना तुम को उस में रहने न देगा ॥ १२। क्योंकि मारोत् की रहनेहारी तो कुशल की बाट जोहते जोहते पीड़ित उठती हैं इस लिये कि यहोवा की ओर से यरूशलेम् के फाटक लों विपत्ति आ पहुंची है ॥ १३। हे लाकीश् की रहनेहारी अपने रथों में वेग चलनेहारे घोड़े जोत सिय्योन् की प्रजा का[3] पाप उसी से आरंभ हुआ और इस्राएल् के अपराध तुझी में पाये गये ॥ १४। इस कारण तू गत् के

(१) अर्थात् धूलि के घर। (२) अर्थात् निकलना।
(३) मूल में, सिय्योन् की बेटी का।

मोरेशेत् को दान देकर दूर कर देगा क्योंकि अक्जीब्[1] के घर से इस्राएल् के राजा धोखा ही खाएंगे ॥ १५। हे मारेशा की रहनेहारी मैं फिर तुझ पर एक अधिकारी ठहराऊंगा और इस्राएल् के प्रतिष्ठित लोगों को[2] अदुल्लाम् में आना पड़ेगा ॥ १६। अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुंड़ा बरन अपना सारा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे क्योंकि वे बंधुए होकर तेरे पास से चले गये हैं ॥

२. हाय उन पर जो बिछौनों पर पड़े हुए अनर्थ कल्पना करते और दुष्ट काम विचारते हैं और बलवन्त होने के कारण बिहान को दिन होते ही वे उस को पूरा करने पाते हैं ॥ २। और वे खेतों का लालच करके उन्हें छीन लेते और घरों का लालच करके उन्हें ले लेते हैं और उस के घराने समेत किसी पुरुष पर और उस के निज भाग समेत किसी पुरुष पर अन्धेर करते हैं ॥ ३। इस कारण यहोवा यों कहता है कि मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने की कल्पना करता हूं जिस के नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे न अपने सिर ऊंचे किये हुए चल सकोगे क्योंकि विपत्ति का समय होगा ॥ ४। उस समय यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति गाया जाएगा कि हम तो नाश ही नाश हो गये वह मेरे लोगों के भाग को बिगाड़ता है हाय वह उसे मुझ से कितनी ही दूर कर देता है वह हमारे खेत बलवैये को दे देता है ॥ ५। इस कारण तेरा ऐसा कोई न होगा जो यहोवा की मण्डली में चिट्ठी डालकर डोरी डाले ॥ ६। वे तो कहा करते हैं कि कहते न रहना वे इन के लिये कहते न रहेंगे, अप्रतिष्ठा जाती न रहेगी ॥ ७। हे याकूब के घराने क्या यह कहा जाए कि यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है। क्या ये काम उसी के किये हुए हैं क्या मेरे वचनों से उस का भला नहीं होता जो सीधाई से चलता है ॥ ८। पर मेरी प्रजा आज कल शत्रु बनकर मेरे विरुद्ध उठी है

(१) अर्थात् धोखे। (२) मूल में, इस्राएल् की महिमा को।
(३) या, हे याकूब का घराना कहानेवाले क्या यहोवा का अधीर हो गया है।

जो लोग निधड़क और बिना लड़ाई का कुछ विचार किये चले जाते हैं उन से तुम चद्दर खींच लेते हो॥ ९। मेरी प्रजा में की स्त्रियों को तुम उन के सुखधामों से निकाल देते हो और उन के नन्हे बच्चों से तुम मेरी दिई हुई उत्तम वस्तुएं[1] सर्वदा के लिये छीन लेते हो॥ १०। उठो चले जाओ क्योंकि यह तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है इस का कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुःख के साथ तुम्हारा नाश करेगी॥ ११। यदि कोई झूठे आत्मा में चलता हुआ यह झूठी बात कहे कि मैं तुझ से नित्य दाखमधु और मदिरा का वचन सुनाता रहूंगा तो वही इन लोगों का नबी ठहरेगा॥

१२। हे याकूब मैं निश्चय तुम सभों को एकट्ठा करूंगा मैं इस्राएल् के बचे हुओं को निश्चय बटोरूंगा और बोस्रा की भेड़ बकरियों की नाईं एक संग रक्खूंगा उस झुण्ड की नाईं जो अच्छी चराई में हो वे मनुष्यों की बहुतायत के मारे कोलाहल करेंगे॥ १३। उन के आगे बाड़े का तोड़नेहारा निकल गया सो वे भी उसे तोड़ रहे हैं और फाटक से होकर निकल जा रहे हैं उन का राजा उन के आगे और यहोवा उन के सिरे पर निकला है॥

३. और

मैं ने कहा हे याकूब के प्रधानो हे इस्राएल् के घराने के न्यायियो सुनो क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं॥ २। तुम तो भलाई से बैर और बुराई से प्रीति रखते हो मानो तुम लोगों पर से उन की खाल और उन की हड्डियों पर से उन का मांस उधेड़ लेते हो, ३। वरन वे मेरे लोगों का मांस खा भी लेते और उन की खाल उधेड़ते वे उन की हड्डियों को हांडी में पकाने के लिये तोड़ डालते और उन का मांस हंडे में पकाने के लिये टुकड़े टुकड़े करते हैं॥ ४। वे उस समय यहोवा की दोहाई देंगे पर वह उन की न सुनेगा वरन उस समय वह उन के बुरे कामों के कारण उन से मुंह फेर लेगा॥ ५। यहोवा का यह वचन है जो नबी मेरी प्रजा को भटका देते हैं और अपने दांतों से काटकर शांति शांति पुकारते हैं और जो कोई उन के मुंह में कुछ नहीं देता उस के विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं[1], ६। इस कारण ऐसी रात तुम पर आएगी कि तुम को दर्शन न मिलेगा और तुम ऐसे अंधकार में पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे और नबियों के लिये सूर्य्य अस्त होगा और दिन रहते अंधियारा[2] हो जाएगा॥ ७। और दर्शी लज्जित होंगे और भावी कहनेहारों के मुंह काले होंगे और वे सब के सब इस लिये अपने होंठों को ढांपेंगे कि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता॥ ८। पर मैं तो यहोवा के आत्मा से शक्ति न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूं कि मैं याकूब को उस का अपराध और इस्राएल् को उस का पाप जता सकूं॥ ९। हे याकूब के घराने के प्रधानो हे इस्राएल् के घराने के न्यायियो हे न्याय से घिन करनेहारो और सब सीधी बातों को टेढ़ी मेढ़ी करनेहारो यह बात सुनो॥ १०। वे तो सिय्योन् को खून करके और यरूशलेम् को कुटिलता करके दृढ़ करते हो॥ ११। उस के प्रधान घूस ले लेकर विचार करते और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते और नबी रुपैये के लिये भावी कहते हैं और इतने पर भी वे यह कहकर यहोवा पर टेक लगाते हैं कि यहोवा हमारे बीच में तो है सो कोई विपत्ति हम पर न पड़ेगी॥ १२। इस कारण तुम्हारे हेतु सिय्योन् जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम् डीह ही डीह हो जाएगा और जिस पर्वत पर भवन बना है सो वन के ऊंचे स्थान हो जाएगा॥

४. ऐसा

होगा कि अन्त के दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा और हर जाति के लोग धारा की नाईं उस की ओर चलेंगे॥ २। और बहुत जातियों के लोग जाएंगे और आपस में कहेंगे कि आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब

(१) मूल में मेरा प्रताप।

(१) मूल में युद्ध पवित्र करते हैं। (२) मूल में काला।

के परमेश्वर के भवन में जाएं तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा और हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन् से और उस का वचन यरूशलेम् से निकलेगा॥ ३। वह बहुत देशों के लोगों का न्याय करेगा और दूर दूर लों की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे॥ ४ बरन वे अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे और कोई उन को डर न दिखाएगा सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है॥ ५। सब राज्यों के लोग तो अपने अपने देवता का नाम लेकर चलते हैं पर हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे॥

६। यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं प्रजा में के लंगड़ानेहारों[1] और बरबस निकाले हुओं[2] को और जिन को मैं ने दुःख दिया है उन को एकट्ठे करूंगा॥ ७। और मैं लंगड़ानेहारों[1] को बचा रखूंगा और दूर किये हुओं[3] को एक सामर्थी जाति कर दूंगा और यहोवा उन पर सिय्योन् पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा॥ ८। और हे एदेर् के गुम्मट हे सिय्योन्[4] की पहाड़ी पहिली प्रभुता अर्थात् यरूशलेम्[5] का राज्य तुझे मिलेगी॥ ९। अब हे सिय्योन्[6] की बेटी तू क्यों चीख मारती है क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा क्या तुझ में का युक्ति करनेहारा नाश हुआ कि जननेहारी स्त्री की नाईं तुझे पीड़ें उठती ही रहें क्योंकि अब तू गढ़ी में से निकलकर मैदान में बसेगी बरन बाबेल् लों जाएगी वहीं तू छुड़ाई जाएगी अर्थात् वहीं यहोवा तुझे तेरे शत्रुओं के वश से छुड़ा लेगा॥ ११। और अब बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध एकट्ठी होकर तेरे विषय कहेंगी कि सिय्योन् अपवित्र किई जाए और हम अपनी आंखों से उस को निहारें॥ १२। पर वे यहोवा की कल्पनाएं नहीं जानते न उस की युक्ति समझते हैं कि वह उन्हें ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं॥ १३। हे सिय्योन्[1] उठ और दांव में तेरे सींगों को लोहे के और तेरे खुरों को पीतल के बना दूंगा और तू बहुत सी जातियों को चूरचूर करेगी और उन की कमाई यहोवा को और उन की धन संपत्ति पृथिवी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी॥

५.

१। अब हे बहुत दलों की स्वामिनी[2] दल बांध बांधकर एकट्ठी हो क्योंकि उस ने हम लोगों को घेर लिया है वे इस्राएल् के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे॥

२। हे बेत्लेहेम् एप्राता तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेहारा होगा और उस का निकलना प्राचीन काल से बरन अनादि काल से होता आया है॥ ३। इस कारण वह उन को तब लों त्यागे रहेगा जब लों जननेहारी जन न ले तब इस्राएलियों के पास उस के बचे हुए भाई लौटकर उन से मिल जाएंगे॥ ४। और वह खड़ा होकर यहोवा की दिई हुई शक्ति से और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से उन की चरवाही करेगा और वे बैठे रहेंगे क्योंकि अब वह पृथिवी की छोर लों महान् ठहरेगा॥

५। और वह शान्ति का मूल होगा जब अश्शूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें और हमारे राजभवनों में पांव धरें तब हम उन के विरुद्ध सात चरवाहे बरन आठ प्रधान मनुष्य खड़े करेंगे॥ ६। और वे अश्शूर् के देश को बरन पैठाव के स्थानों तक निम्रोद् के देश को तलवार चला कर मार लेंगे और जब अश्शूरी लोग हमारे देश में आएं और उस के सिवाने के भीतर पांव धरें तब वही पुरुष हम को उन से बचा-

(१) मूल में लंगड़ानेहारी। (२) मूल में निकाली हुई। (३) मूल में किई हुई। (४) मूल में सिय्योन् की बेटी। (५) मूल में यरूशलेम् की बेटी। (६) मूल में हे सिय्योन् की बेटी।

(१) मूल में सिय्योन् की बेटी। (२) मूल में बेटी। (३) मूल में तू यहूदा के हजारों में होने से छोटा है। (४) मूल में फाटकों।

गा ॥ ७ । और याकूब के बचे हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा काम देंगे जैसा यहोवा की ओर से पड़नेहारी ओस और घास पर की वर्षा जो किसी के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों की बाट नहीं जोहती ॥ ८ । और याकूब के बचे हुए लोग जातियों में और देश देश के लोगों के बीच ऐसे ठहरेंगे जैसे बनैले पशुओं में सिंह वा भेड़ बकरियों के झुंडों में जवान सिंह ठहरता है कि यदि वह उन के बीच से जाए तो लताड़ता और फाड़ता जाएगा और कोई बचा न सकेगा ॥ ९ । तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर पड़े और तेरे सब शत्रु नाश हो जाएं ॥

१० । यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तेरे घोड़ों को तेरे बीच में से नाश करूंगा और तेरे रथों का विनाश करूंगा ॥ ११ । और मैं तेरे देश में के नगरों को भी नाश करूंगा और तेरे कोटों को ढा दूंगा ॥ १२ । और मैं तेरे तन्त्र मन्त्र नाश करूंगा और तुझ में टोनहे आगे न रहेंगे ॥ १३ । और मैं तेरी खुदी हुई मूरतें और तेरी लाठें तेरे बीच में से नाश करूंगा और तू आगे को अपने हाथ की बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत न करेगा ॥ १४ । और मैं तेरी अशेरा नाम मूरतों को तेरी भूमि में से उखाड़ डालूंगा और तेरे नगरों को विनाश करूंगा ॥ १५ । और मैं अन्यजातियों से जो मेरा कहा नहीं मानतीं कोप और जलजलाहट के साथ पलटा लूंगा ॥

६. जो बात यहोवा कहता है उसे सुनो कि उठकर पहाड़ों के साम्हने वादविवाद कर और टीले भी तेरी सुनने पाएं ॥ २ । हे पहाड़ो और हे पृथिवी की अटल नेव यहोवा का वादविवाद सुनो क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ मुकद्दमा है और वह इस्राएल से वादविवाद करता है ॥ ३ । हे मेरी प्रजा मैं ने तेरा क्या किया और क्या करके तुझे उकता दिया है मेरे विरुद्ध साक्षी दे ॥ ४ । मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया और तेरी अगुवाई करने को मूसा हारून और मरियम को भेज दिया ॥ ५ । हे मेरी प्रजा स्मरण कर कि मोआब् के राजा बालाक् ने तेरे विरुद्ध कौन सी युक्ति किई और बोर् के पुत्र बिलाम् ने उस को क्या सम्मति दिई और शित्तीम् से गिलगाल् लों की बातों का स्मरण कर जिस से तू यहोवा के धर्म्म के काम समझ सके ॥ ६ । मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊं और ऊपर रहनेहारे परमेश्वर के साम्हने झुकूं क्या मैं होमबलि के लिये एक एक बरस के बछड़े लेकर उस के सम्मुख आऊं ॥ ७ । क्या यहोवा हज़ारों मेढ़ों से वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माये हुए किसी को दूं ॥ ८ । हे मनुष्य वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है और यहोवा तुझ से इस को छोड़ क्या चाहता है कि तू न्याय से काम करे और कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के संग संग सिर झुकाये हुए चले ॥

९ । यहोवा इस नगर को पुकार रहा है और बुद्धि तेरे नाम का भय मानेगी दण्ड की और जो उसे दे रहा है उस की बात सुनो ॥ १० । क्या अब लों दुष्ट के घर में दुष्टता से पाया हुआ धन और छोटा एपा घिनित नहीं है ॥ ११ । क्या मैं कपट का तराजू और घटबढ़ के बटखरों की थैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूं ॥ १२ । यहां के धनवान लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं और यहां के सब रहनेहारे झूठ बोलते हैं और उन के मुंह से छल की बातें निकलती हैं[1] ॥ १३ । इस कारण मैं तुझे मारते मारते बहुत ही घायल कर देता और तेरे पापों के हेतु तुझ को उजाड़ डालता हूं ॥ १४ । तू खाएगा पर तृप्त न होगा और तेरा पेट जलता रहेगा और तू अपनी संपत्ति लेकर चलेगा पर न बचा सकेगा और जो कुछ तू बचा भी ले उस को मैं तलवार चलाकर लुटा दूंगा ॥ १५ । तू बोएगा पर लवेगा नहीं तू जलपाई का तेल निकालेगा पर न लगाने पाएगा और दाख रौंदेगा पर दाखमधु

(१) मूल में उन के मुंह में उन की जीभ धोखा देनेहारी है ।

पीने न पाएगा ॥ १६ । क्योंकि वे ओम्री की विधियों पर और अहाब के घराने के सब कामों पर चलते हैं और उन की युक्तियों के अनुसार तुम चलते हो इस लिये मैं तुझे उजाड़ूंगा और इस नगर के रहनेहारों पर हथेली बजवाऊंगा और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे ॥

७. हाय मुझ पर क्योंकि मैं उस जन के समान हो गया हूं जो धूपकाल के फल तोड़ने पर या रही हुई दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए मुझे तो पक्की अंजीरों की लालसा थी पर खाने के लिये कोई गुच्छा नहीं रहा ॥ २ । भक्त लोग पृथिवी पर से नाश हो गये हैं और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा वे सब के सब खून के लिये घात लगाते और जाल लगाकर अपने अपने भाई का अहेर करते हैं ॥ ३ । वे अपने दोनों हाथों से भली भांति बुराई करते हैं हाकिम तो कुछ मांगता और न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है और रईस मन की दुष्टता वर्णन करता है इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं ॥ ४ । उन में से जो उत्तम से उत्तम है सो कटीली झाड़ी के समान दुखदाई है जो सीधे से सीधा है सो कांटेवाले बाड़े से बुरा है तेरे पहरुओं का कहा हुआ दिन अर्थात् तेरा दण्ड आता है सो वे शीघ्र चौंधियां जाएंगे ॥ ५ । मित्र पर विश्वास मत करो परममित्र पर भी भरोसा मत रक्खो वरन अपनी अर्द्धांगिन[१] से भी संभालकर बोलना ॥ ६ । क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता और बेटी माता और के पतोह सास के विरुद्ध उठती है और एक एक जन के घर ही के लोग शत्रु होते हैं ॥

७ । पर मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा मैं अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा ॥ ८ । हे मेरी बैरिन मुझ पर आनन्द मत कर क्योंकि ज्यों मैं गिरूं त्योंही उठूंगा और ज्यों मैं अंधकार में पड़ूं त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा ॥ मैं ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया इस कारण मैं तब लों उस के क्रोध को सहता रहूंगा जब लों कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा और मैं उस का धर्म्म देखूंगा ॥ १० । तब मेरी बैरिन जो मुझ से यह कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहां रहा वह भी उसे देखेगी और लज्जा से ढंपेगी मैं अपनी आंखों से उसे देखूंगा तब वह सड़कों की कीच की नाईं लताड़ी जाएगी ॥ ११ । तब तेरे बाड़ों के बांधने का दिन आता है उस दिन सीमा बढ़ाई जायगी ॥ १२ । उस दिन अश्शूर से और मिस्र के नगरों से और मिस्र और महानद के बीच के और समुद्र समुद्र और पहाड़ पहाड़ के बीच के देशों से लोग तेरे पास आएंगे तौभी यह देश अपने रहनेहारों के कामों के कारण उजाड़ हो रहेगा ॥

१४ । अपनी प्रजा की अर्थात् अपने निज भाग की भेड़ बकरियों की जो कर्म्मेल पर[१] के वन में अलग बैठती हैं तू लाठी लिये हुए चरवाही कर वे अगले दिनों की नाईं बाशान् और गिलाद में चरा करें ॥

१५ । जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के दिनों में थे वैसे ही मैं उस को अद्भुत काम दिखाऊंगा ॥ १६ । अन्यजातियां देखकर अपने सारे पराक्रम के विषय लजाएंगी वह अपने मुंह को हाथ से मून्देंगी और उन के कान बहिरे हो जाएंगे ॥ १७ । वे सर्प की नाईं मिट्टी चाटेंगी और भूमि पर के रेंगनेहारे जन्तुओं की भान्ति अपने कोटों में से कांपती हुई निकलेंगी ॥

१८ । वे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएंगी और तुझ से डर जाएंगी ॥ १९ । तेरे समान ऐसा ईश्वर कहां है जो अधर्म्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध से आनाकानी करे वह अपने कोप को सदा लों बनाये नहीं रहता क्योंकि वह करुणा में प्रीति रखता है ॥ २० । वह फिरकर हम पर दया करेगा और हमारे

(१) मूल में अपनी गोद में सोनेवाली ।

(१) मूल में कर्म्मेल् के बीच ।

अधर्म्म के कामों को लताड़ डालेगा तू उन के सारे पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा ॥ २० । तू याकूब के विषय में वह सच्चाई और इब्राहीम के विषय में वह करुणा पूरी करेगा जिस की किरिया तू हमारे पितरों से प्राचीन काल के दिनों से लेकर खाता आया है ॥

नहूम् ।

१. नीनवे के विषय भारी वचन । एल्कोशी नहूम् के दर्शन की पुस्तक ॥ २ । यहोवा जल उठनेहारा और पलटा लेनेहारा ईश्वर है यहोवा पलटा लेनेहारा और जलजलाहट करनेहारा है यहोवा अपने द्रोहियों से पलटा लेता है और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता[१] ॥ ३ । यहोवा विलम्ब से कोप करनेहारा और बड़ा शक्तिमान् है और वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा यहोवा बवंडर और आंधी में होकर चलता है और बादल उस के पांवों की धूलि हैं ॥ ४ । उस के घुड़कने से महानद सूख जाते हैं और समुद्र भी निर्जल हो जाता है बाशान् और कर्म्मेल् कुम्हलाते और लबानोन् की हरियाली जाती रहती है ॥ ५ । उस के स्पर्श से पहाड़ कांप उठते और पहाड़ियां गल जाती हैं उस के प्रताप से पृथिवी वरन जगत भर भी अपने सारे रहनेहारों समेत फूल उठता है ॥ ६ । उस के क्रोध का साम्हना कौन कर सकता है और जब उस का कोप भड़कता है तब कौन ठहर सकता उस की जलजलाहट आग की नाईं भड़काई जाती और चटानें उस की शक्ति से फट फटकर गिरती हैं ॥ ७ । यहोवा भला है संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है और अपने शरणागतों की सुधि रखता है ॥ ८ । पर वह उमड़ती हुई धारा से उस के स्थान का अन्त कर देगा और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अंधकार में भगा देगा ॥ ९ । तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो वह तुम्हारा अन्त कर देगा विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी ॥ १० । क्योंकि चाहे वे कांटों से उलझे हुए हों और मदिरा के नशे में चूर भी हों[१] तौभी वे सूखी खूंटी की नाईं भस्म ही भस्म किये जाएंगे ॥ ११ । तुझ में से एक निकला है जो यहोवा के विरुद्ध कुकल्पना करता और ओछे की युक्ति बांधता है ॥ १२ । यहोवा यों कहता है कि चाहे वे सब प्रकार समर्थ और बहुत भी हों तौभी पूरी रीति से काटे जाएंगे और वह बिलाय जाएगा मैं ने तुझे दुःख दिया तो है पर फिर न दूंगा ॥ १३ । क्योंकि अब मैं उस का जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूंगा और तेरा बन्धन फाड़ डालूंगा ॥ १४ । और यहोवा ने तेरे विषय में यह आज्ञा दिई है कि आगे को तेरा वंश न चले मैं तेरे देवालयों में से ढली और गढ़ी हुई मूरतों को काट डालूंगा मैं तेरे लिये कबर खोदूंगा क्योंकि तू नीच है ॥ १५ । देखो पहाड़ों पर शुभसमाचार का सुनानेहारा और शान्ति का प्रचार करनेहारा आ रहा है अब हे यहूदा अपने पर्ब्ब मान और अपनी मन्नतें पूरी कर क्योंकि वह ओछा फिर कभी तेरे बीच होकर न चलेगा वह पूरी रीति से नाश हुआ है ॥

२. सत्यानाश करनेहारा तेरे विरुद्ध चढ़ आया है गढ़ को दृढ़ कर मार्ग देखती हुई चौकस रह अपनी कमर कस अपना बल बढ़ा दे ॥ २ । क्योंकि यहोवा याकूब की बड़ाई इस्राएल् की बड़ाई के समान ज्यों की त्यों कर देता है उजाड़नेहारों ने उन को उजाड़ तो

(१) मूल में अपने शत्रुओं के लिये रख छोड़ता है ।

(१) मूल में अपने पीने में खूब भीने हों ।

दिया और दाखलता की डालियों को नाश किया है ॥ ३ । उस के शूरवीरों की ढालें लाल रंग से रंगी गई और उस के योद्धा लाही रंग के वस्त्र पहिने हुए हैं तैयारी के दिन रथों का लोहा आग की नाई चमकता है और भाले हिलाये जाते हैं ॥ ४ । रथ सड़कों में बहुत वेग से हांके जाते और चौकों में इधर उधर चलाये जाते हैं वे पलीतों के समान दिखाई देते हैं और उन का वेग बिजली का सा है ॥ ५ । वह अपने शूरवीरों को स्मरण करता है वे चलते चलते ठोकर खाते हैं शहरपनाह की ओर फुर्ती से जाते हैं और काठ का गुम्मट तैयार किया जाता है ॥ ६ । नहरों के द्वार खुले जाते और राजमन्दिर गलकर बैठा जाता है ॥ ७ । यह ठहराया गया है वह नंगी करके बंधुआई में ले लिई जाएगी और उस की दासियां छाती पीटती हुई पिण्डुकों की नाई विलाप करेंगी ॥ ८ । नीनवे तो जब से बनी है तब से तलाव के समान है तौभी वे भागे जाते हैं और खड़े हो खड़े हो ऐसा पुकारे जाने पर भी कोई मुंह नहीं फेरता ॥ ९ । चांदी को लूटो सोने को लूटो उस के रक्खे हुए धन की बहुतायत का कुछ परिमाण नहीं और विभव की सब प्रकार की मनभावनी सामग्री का कुछ परिमाण नहीं ॥ १० । वह खाली और छूछी और सूनी हो गई है और मन कच्चा हो गया और पांव कांपते हैं और उन सभों की कटियों में बड़ी पीड़ा उठी और सभों के मुख का रंग उड़ गया है ॥ ११ । सिंहों की वह मांद और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान कहां रहा जिस में सिंह और सिंहनी डांवरुओं समेत बेखटके चलती थीं ॥ १२ । सिंह तो अपने डांवरुओं के लिये बहुत अहेर को फाड़ता था और अपनी सिंहनियों के लिये अहेर का गला घोंट घोंटकर ले आता था और अपनी गुफाओं और मान्दों को अहेर से भर लेता था ॥ १३ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और उस के रथों को भस्म करके धूंएं में उड़ा दूंगा और उस के जवान सिंह सरीखे बीर तलवार से मारे जाएंगे और मैं तेरे अहेर को पृथिवी पर से नाश करूंगा और तेरे दूतों का बोल फिर सुना न जाएगा ॥

(१) मूल में सनीबर ।

३. हाय उस खूनी नगरी पर वह तो कल और लूट के धन से भरी हुई है अहेर छूट नहीं जाती है[1] ॥ २ । कोड़ों की फटकार और पहियों की घड़घड़ाहट हो रही है घोड़े कूदते फांदते और रथ उछलते चलते हैं ॥ ३ । सवार चढ़ाई करते तलवारें और भाले बिजली की नाई चमकते हैं मारे हुओं की बहुतायत और लोथों का बड़ा ढेर है मुर्दों की कुछ गिनती नहीं लोग मुर्दों से ठोकर खा खाकर चलते हैं ॥ ४ । यह सब उस अति सुन्दर वेश्या और निपुण टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण हुआ जो छिनाले के द्वारा जाति जाति के लोगों को और टोने के द्वारा कुल कुल के लोगों को बेच डालती है ॥ ५ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और तेरे वस्त्र को उठाकर तुझे जाति जाति के साम्हने नंगी और राज्य राज्य के साम्हने नीच करके दिखाऊंगा ॥ ६ । और मैं तुझ पर घिनौनी वस्तुएं फेंककर तुझे तुच्छ कर दूंगा और सब से तेरी हंसी कराऊंगा ॥ ७ । और जितने तुझे देखेंगे सब तेरे पास से भागकर कहेंगे कि नीनवे नाश हो गई कौन उस के कारण विलाप करे हम उस के लिये शांति देनेहारे कहां से ढूंढ़ ले आएं ॥ ८ । क्या तू अामोन् नगरी से बढ़कर है जो नहरों के बीच बसी थी और उस की चारों ओर जल था और उस के धुस और शहरपनाह का काम महानद देता था ॥ ९ । कूश और मिस्री उस को अनगिनित बल देते थे पूत और लूबी तेरे सहायक थे ॥ १० । तौभी लोग उस को बन्धुवाई में ले गये और उस के नन्हे बच्चे एक सड़क के सिरे पर पटक दिये गये और उस के प्रतिष्ठित पुरुषों के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली और उस के सब रईस बेड़ियों से जकड़े गये ॥ ११ । तू भी मतवाली

(१) मूल में लूट हट नहीं जाती ।

होगी तू छिपाय[1] जाएगी तू भी शत्रु के डर के मारे शरण का स्थान ढूंढ़ेगी ॥ १२ । तेरे सब गढ़ ऐसे अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिन में पहिले पक्के अंजीर लगे हों यदि वे हिलाये जाएं तो फल खानेहारे के मुंह में गिरेंगे ॥ १३ । देख तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं सो लुगाई हैं तेरे देश में प्रवेश करने के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिये बिल्कुल खुले पड़े हैं और तेरे बेण्डे आग के कौर हो गये हैं ॥ १४ । घिर जाने के दिनों के लिये पानी भर ले और कोटों को अधिक दृढ़ कर कीचड़ में आकर गारा लताड़ और भट्ठे को सजा ॥ १५ । वहां तू आग में भस्म होगी और तू तलवार से नाश हो जाएगी वह येलेक् नाम टिड्डी की नाईं तुझे निगल जाएगी येलेक् नाम टिड्डी के समान अर्बे नाम टिड्डी के समान अनगिनित हो जाएगी ॥ १६ । तेरे ब्योपारी आकाश के तारागण से भी अधिक अनगिनित हुए टिड्डी छीलकर उड़ गई है ॥ १७ । तेरे मुकुटधारी लोग टिड्डियों के समान और तेरे सेनापति टिड्डियों के दलों के सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में बाड़ों पर टिकते हैं पर जब सूर्य्य दिखाई देता तब भाग जाते हैं और कोई नहीं जानता कि वे कहां गये ॥ १८ । हे अश्शूर् के राजा तेरे ठहराये हुए चरवाहे ऊंघते हैं तेरे शूरवीर भारी नीन्द में पड़ गये हैं तेरी प्रजा पहाड़ों पर तित्तर बित्तर हो गई है और कोई उन को फिर एकट्ठे नहीं करता ॥ १९ । तेरा घाव भर न सकेगा तेरा रोग असाध्य है जितने तेरा समाचार सुनेंगे सो तेरे ऊपर ताली बजाएंगे क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर लगातार तेरी दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो ॥

(१) मूल में छिप।

हबक्कूक् ।

१. भारी वचन जिस को हबक्कूक् नबी ने दर्शन में पाया ॥

२ । हे यहोवा मैं कब लों तेरी दोहाई देता रहूं और तू न सुने मैं तुझ से उपद्रव उपद्रव ऐसा चिल्लाता हूं और तू उद्धार नहीं करता ॥ ३ । तू मुझे क्यों अनर्थ काम दिखाता और क्या कारण है कि तू आप उत्पात को देखता रहता है और मेरे साम्हने लूट पाट और उपद्रव होते रहते हैं और झगड़ा हुआ करता और वादविवाद बढ़ता जाता है ॥ ४ । इस के कारण व्यवस्था ढीली हो जाती है और न्याय कभी नहीं प्रगट होता दुष्ट लोग धर्म्मी को घेर लेते हैं और इस कारण न्याय उलटा होकर प्रगट होता है ॥

५ । अन्यजातियों की ओर चित्त लगाकर देखो और बहुत ही चकित हो क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में ऐसा काम करने पर हूं कि चाहे वह तुम को बताया भी जाए तौभी तुम उस की प्रतीति न करोगे ॥ ६ । देखो मैं कस्दियों को उभारने पर हूं वे क्रूर और उतावली करनेहारी जाति के हैं जो पराये वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथिवी भर में फैल जाते हैं ॥ ७ । वह भयानक और डरावनी है उस का विचार और उस की बड़ाई उसी से होती हैं ॥ ८ । और उन के घोड़े चीतों से भी अधिक वेग चलनेहारे और सांझ को अहेर करते हुए हुंडारों से भी अधिक क्रूर हैं और उस के सवार दूर दूर फैल जाते हैं और अहेर पर झपटनेहारे उकाब् की नाईं झपट्टा मारते हैं ॥ ९ । वह सब के सब उपद्रव करने को आता है वे मुख साम्हने की ओर किये हुए हैं और वे बंधुओं को बालू के किनकों के समान बटोरते हैं ॥ १० । और वह राजाओं को

ठट्ठों में उड़ाता और हाकिमों का उपहास करता है वह सब दृढ़ गढ़ों पर भी हंसता क्योंकि वह धुस बांधकर[1] उन को ले लेता है ॥ ११ । तब वह वायु की नाईं चला आएगा और मर्यादा छोड़कर दोषी ठहरेगा उस का बल ही उस का देवता है ॥

१२ । हे मेरे परमेश्वर यहोवा हे मेरे पवित्र ईश्वर क्या तू अनादि काल से नहीं है इस कारण हम लोग नहीं मरने के हे यहोवा तू ने उस को न्याय करने के लिये ठहराया होगा हे चटान तू ने उलहना देने के लिये उस को बैठाया है ॥ १३ । तू तो ऐसा शुद्ध है कि बुराई को देख नहीं सकता और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता और जब दुष्ट उस को जो उस से कम दोषी है निगल जाता है तब तू क्यों चुप रहता है ॥ १४ । और तू क्यों मनुष्यों को समुद्र की मछलियों के और उन रेंगनेहारे जन्तुओं के समान जिन के राजा नहीं होता कर देता है ॥ १५ । वह उन सब मनुष्यों को बंसी से पकड़कर उठा लेता और जाल में घसीट लेता और महाजाल में फंसा लेता है इस कारण वह आनन्दित और मगन रहता है ॥ १६ । इस कारण वह अपने जाल के साम्हने बलि चढ़ाता और अपने महाजाल के आगे धूप जलाता है क्योंकि इन्हीं के द्वारा उस का भाग पुष्ट होता और उस का भोजन चिकना होता है ॥ १७ । पर क्या वह इस कारण जाल को खाली कर देगा और जाति जाति के लोगों को लगातार निर्दयता से घात करने पाएगा ॥

२. मैं अपने पहरे पर खड़ा हूंगा और गुम्मट पर ठहरा रहूंगा और ताकता रहूंगा कि देखूं मुझ से वह क्या कहेगा और मैं अपने दिये हुए उलहने के विषय क्या कहूं[2] ॥ २ । यहोवा ने मुझ से कहा दर्शन की बातें लिख दे वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि सहज से पढ़ी जाएं[3] ॥ ३ । क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेहारी है वरन इस के पूरी होने का समय वेग आता[1] है और इस में धोखा न होगा सो चाहे इस में विलम्ब हो तौभी उस की बाट जोहता रहना क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी[2] और इस में अबेर न होगी ॥ ४ । देख उस का मन फूला हुआ है वह सीधा नहीं है पर धर्म्मी अपने विश्वास के द्वारा जीता रहेगा ॥ ५ । फिर दाखमधु से धोखा होता है अहंकारी पुरुष घर में नहीं रहता और उस की लालसा अधोलोक की सी पूरी नहीं होती और मृत्यु की नाईं उस का पेट नहीं भरता अर्थात् वह सब जातियों को अपने पास खींच लेता और सब देशों के लोगों को अपने पास एकट्ठे कर रखता है ॥ ६ । क्या वे सब उस का दृष्टान्त चलाकर और उस पर ताना मारकर न कहेंगे कि हाय उस पर जो पराया धन छीन छीनकर धनवान हो जाता है । कब लों । हाय उस पर जो अपना घर बन्धक की वस्तुओं से भर लेता है ॥ ७ । क्या वे लोग अचानक न उठेंगे जो तुझ से व्याज लेंगे और क्या वे न जागेंगे जो तुझ को संकट में डालेंगे और क्या तू उन से लूटा न जाएगा ॥ ८ । तू ने जो बहुत सी जातियों को लूट लिया है सब बचे हुए लोग तुझे भी लूट लेंगे इस का कारण मनुष्यों का खून है और वह उपद्रव भी जो तू ने इस देश और राजधानी और इस के सब रहनेहारों पर किया है ॥

९ । हाय उस पर जो अपने घर के लिये अन्याय से लाभ का लोभी है इस लिये कि वह अपना घोंसला ऊंचे स्थान में बनाकर विपत्ति से बचे ॥ १० । तू ने बहुत सी जातियों को काट डालकर अपने घर के लिये लज्जा की युक्ति बांधी और अपने ही प्राण की हानि किई है ॥ ११ । क्योंकि घर की भीत का पत्थर दोहाई देता और उस की छत की कड़ी उन के स्वर में स्वर मिला देती है ॥

१२ । हाय उस पर जो खून कर करके नगर को बनाता और कुटिलता कर करके गढ़ी को दृढ़ करता है ॥ १३ । देखो क्या यह सेनाओं के यहोवा

(१) मूल में धूलि का ढेर लगाकर । (२) मूल में क्या उत्तर दूं । (३) मूल में जिस से उस का पढ़नेहारा दौड़े ।

(१) मूल में वरन यह अन्त की ओर हांफती है । (२) मूल में निश्चय आएगी ।

की ओर से नहीं होता कि देश देश के लोग परिश्रम तो करते हैं पर वह आग का कौर होने को होता है और राज्य राज्य के लोग थक जाते तो हैं पर व्यर्थ ही ठहरेगा ॥ १४ । क्योंकि पृथिवी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से[1] ॥

१५ । हाय उस पर जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता और उस में विष मिलाकर उस को मतवाला कर देता है कि वह उस को नंगा देखे ॥ १६ । तू महिमा की सन्ती अपमान ही से भर गया तू भी पी जा और तू खतनाहीन है जो कटोरा यहोवा के दहिने हाथ में रहता है सो घूमकर तेरी ओर भी जाएगा और तेरा विभव तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा ॥ १७ । क्योंकि लबानोन् में जो उपद्रव तेरा किया हुआ है और वहां के पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात जिस से वे भयभीत हो गये थे तुझ पर आ पड़ेंगे यह मनुष्यों के खून और उस उपद्रव के कारण से होगा जो इस देश और राजधानी और इस के सब रहनेहारों पर किया गया है ॥

१८ । खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेहारे ने उसे खोदा है फिर झूठ पर चलानेहारी ढली हुई मूरत में क्या लाभ देखकर ढालनेहारे ने उस पर इतना भरोसा रक्खा है कि अनबोल और निकम्मी मूरत बनाए ॥ १९ । हाय उस पर जो काठ से कहता है कि जाग या अनबोल पत्थर से कि उठ क्या यह सिखाएगा देखो यह सोने चांदी में मढ़ा हुआ तो है पर उस में आत्मा नहीं है ॥ २० । यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है समस्त पृथिवी उस के साम्हने चुपकी रहे ॥

३. हबक्कूक् नबी की प्रार्थना । शिग्योनोत् की रीति पर ॥

२ । हे यहोवा मैं तेरी कीर्त्ति सुनकर डर गया हे यहोवा बरसों के बीतते अपने काम में फिर प्राण डाल
बरसों के बीतते तू उस को प्रगट कर
क्रोध करते हुए भी दया करना न भूल ॥
३ । ईश्वर तेमान् से
अर्थात् पवित्र ईश्वर पारान् पर्वत से आ रहा है । सेला ।
उस का तेज आकाश पर छाया हुआ है
और पृथिवी उस की स्तुति से परिपूर्ण हुई है ॥
४ । और उस की ज्योति सूर्य्य की सी है
उस के हाथ से किरणें निकल रही हैं
और उस का सामर्थ्य छिपा हुआ है ॥
५ । उस के आगे आगे मरी फैल रही है
और उस के पीछे पीछे महाज्वर निकल रहा है ॥
६ । वह खड़ा होकर पृथिवी को मांक रहा है
वह जाति जाति को आंख दिखाकर घबरा रहा है
और सनातन पर्वत तितर बितर हो रहे हैं
और सनातन की पहाड़ियां झुक रही हैं
उस की गति सदा एक सी रहती है ॥
७ । मुझे कूशान् के तंबू में रहनेहारे दुःख से दबे देख पड़ते हैं
और मिद्यान् देश के डेरे थरथरा रहे हैं ॥
८ । क्या यहोवा नदियों पर रिसियाया है
क्या तेरा कोप नदियों पर भड़का है
क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर भड़की है
तू अपने घोड़ों पर और उद्धार करनेवाले रथों पर चढ़कर आ रहा है ॥
९ । तेरा धनुष खोल में से निकाला हुआ है
तेरे दण्ड का वचन किरिया के साथ हुआ है
तू धरती को फाड़कर बहुत सी नदियां निकाल रहा है ॥
१० । पहाड़ तुझे देखकर कांप उठे हैं
आंधी चल रही है पानी पड़ रहा है
गहिरा सागर बोलता और हाथ उठाता है
११ । सूर्य और चंद्रमा अपने अपने स्थान में ठहरे हैं ॥
तेरे तीरों के चलने से ज्योति
और तेरे भाले के चमकने से प्रकाश हो रहा है ॥

(१) मूल में जैसे जल समुद्र को ढांपता है ।

तू क्रोध में आकर पृथिवी पर चलता हुआ
जाति जाति को कोप से दांवता आ रहा है ॥
१३। तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये निकला
अर्थात् अपने अभिषिक्त के संग होकर उद्धार के
लिये निकला
तू दुष्ट के घर के सिर को फोड़कर
उस के गले लों नेव को उघाड़ रहा है(१)। सेला।
१४। तू उस के योद्धाओं के सिरों को उस
की बर्छी से छेद देता है
वे मुझ को तितर बितर करने के लिये आंधी
की नाईं तो आये
और दीन लोगों को घात लगाकर मार डालने
की आशा से हुलसते आये ॥
१५। तू अपने घोड़ों समेत समुद्र पर
अर्थात् बहुत जल के ढेर पर चला है ॥
१६। यह सब सुनते ही मेरा कलेजा थरथरा
उठा
मेरे होंठ कांप गये

(१) मूल में गले लों नेव नंगी करनी।

मेरी हड्डियां पिराने लगीं और मैं खड़े खड़े कांप
उठा
कि मैं उस दिन की बाट शान्ति से जोहता रहूं
जब दल बांधकर प्रजा चढ़ाई करे ॥
१७। क्योंकि चाहे न तो अंजीर के वृक्षों में फूल
और न दाखलताओं में फल लगें
और जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया
जाए
और खेतों में अन्न न उपजे
और न तो भेड़शालाओं में भेड़ बकरियां रह जाएं
और न थानों में गाय बैल रहें,
१८। तौभी मैं यहोवा के कारण हुलसूंगा
और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के हेतु मगन
हूंगा ॥
१९। यहोवा प्रभु मेरा बलमूल है
और वह मेरे पांव हरिणों के से करेगा
और मुझ को मेरे ऊंचे स्थानों पर चलाएगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये मेरे तारवाले बाजों के साथ।

सपन्याह्।

---

१. आमोन् के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह् के दिनों में यहोवा का जो वचन सपन्याह् के पास पहुंचा जो हिज्किय्याह् के पुत्र अमर्याह् का परपोता और गदल्याह् का पोता और कूशी का पुत्र था ॥ २। मैं धरती पर से सब का अन्त कर दूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ३। मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूंगा मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का और दुष्टों समेत उन की रक्खी हुई ठोकरों का भी अन्त कर दूंगा मैं मनुष्यजाति को भी धरती पर से नाश कर डालूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ४। और मैं यहूदा पर और यरूशलेम् के सब रहनेहारों पर हाथ उठाऊंगा और इस स्थान में बाल् के बचे हुओं को और याजकों समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को नाश कर दूंगा ॥ ५। और जो लोग अपने अपने घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते और जो लोग दण्डवत् करते हुए इधर तो यहोवा की सेवा करने की किरिया खाते और अपने मोलेक् की भी किरिया खाते हैं, ६। और जो यहोवा के पीछे चलने से फिर गये हैं और जिन्हों ने न तो यहोवा को ढूंढ़ा न उस की खोज में लगे उन को भी मैं नाश कर डालूंगा ॥

७। प्रभु यहोवा के साम्हने चुपके रहो क्योंकि यहोवा का दिन निकट है यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया और अपने नेवतहरियों को पवित्र किया है॥ ८। और यहोवा के यज्ञ के दिन मैं हाकिमों और राजकुमारों को और जितने परदेश के वस्त्र पहिना करते हैं उन को भी दण्ड दूंगा॥ ९। और उस दिन मैं उन सभों को दण्ड दूंगा जो डेवढ़ी को लांघते और अपने स्वामी के घर को उपद्रव और छल से भर देते हैं॥ १०। और यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का और नये टोले में हाहाकार का और टीलों पर बड़ी धड़ाम का शब्द होगा॥ ११। हे मक्तेश् के रहनेहारो हाय हाय करो क्योंकि सब व्योपारी मिट गये जितने चांदी से लदे थे उन सब का नाश हो गया है॥ १२। उस समय में दीपक लिये हुए यरूशलेम् में ढूंढ़ ढांढ़ करूंगा और जो लोग थिराये हुए दाखमधु के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा उन को मैं दण्ड दूंगा॥ १३। सो उन की धन संपत्ति लूटी जाएगी और उन के घर उजाड़ होंगे वे घर तो बनाएंगे पर उन में रहने न पाएंगे और वे दाख की बारियां तो लगाएंगे पर उन से दाखमधु पीने न पाएंगे॥ १४। यहोवा का भयानक दिन निकट है वह बहुत वेग से नियराता चला आता है यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है वहां वीर दुःख के मारे चिल्लाता है॥ १५। वह रोष का दिन होगा वह संकट और सकेती का दिन वह उजाड़ और उखाड़ का दिन वह अंधेरे और घोर अंधकार का दिन वह बादल और काली घटा का दिन होगा॥ १६। वह गढ़वाले नगरों और ऊंचे गुम्मटों के विरुद्ध नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन होगा॥ १७। और मैं मनुष्यों को संकट में डालूंगा और वे अन्धों की नाईं चलेंगे क्योंकि उन्हों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है और उन का लोहू धूलि के समान और उन का मांस विष्ठा के सरीखा फेंक[१] दिया जाएगा॥ १८। और यहोवा के रोष के दिन में न तो चांदी से उन का बचाव होगा और न सोने से क्योंकि उस के जलन की आग से सारी पृथिवी[१] भस्म हो जाएगी क्योंकि वह तो पृथिवी के सारे रहनेहारों को घबरवाकर उन का अन्त कर डालेगा॥

२. हे निर्लज्ज जाति के लोगो एकट्ठे हो उस से पहिले एकट्ठे हो कि दण्ड की आज्ञा पूरी हो जाए और बचाव का दिन भूसी की नाईं निकल जाए और यहोवा का भड़कता हुआ कोप तुम पर आ पड़े और यहोवा के कोप का दिन तुम पर आए॥ ३। हे पृथिवी के सब नम्र लोगो हे यहोवा के नियम के माननेहारो उस को ढूंढ़ते रहो धर्म्म को ढूंढ़ो नम्रता को ढूंढ़ो क्या जाने तुम यहोवा के कोप के दिन में शरण पाओ॥ ४। क्योंकि अज्जा तो निर्जन और अश्कलोन् उजाड़ हो जाएगा अश्दोद् के निवासी दिनदुपहरी निकाल दिये जाएंगे और एक्रोन्[२] उखाड़ा जाएगा॥ ५। हाय समुद्रतीर के रहनेहारों पर हाय करेती जाति पर हे कनान् हे पलिश्तियों के देश यहोवा का वचन तेरे विरुद्ध है मैं तुझ को ऐसा नाश करूंगा कि तुझ में कोई न रहेगा॥ ६। और उसी समुद्रतीर पर चरवाहों के घरों और भेड़शालाओं समेत चराई ही चराई होगी॥ ७। अर्थात् वही समुद्रतीर यहूदा के घराने के बचे हुओं को मिलेगी वे उस पर चराएंगे वे अश्कलोन् के छोड़े हुए घरों में सांझ को लेटेंगे क्योंकि उन का परमेश्वर यहोवा उन की सुधि लेकर उन के बन्धुओं को लौटा ले जाएगा॥ ८। मोआब् ने जो मेरी प्रजा की नामधराई और अम्मोनियों ने जो उस की निन्दा करके उस के देश की सीमा पर चढ़ाई किई सो मेरे कानों तक पहुंची है॥ ९। इस कारण इस्राएल् के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सों निश्चय मोआब् सदोम् के समान और अम्मोनी अमोरा के तुल्य बिच्छूपेड़ों के स्थान और लोन की खानियां हो जाएंगे और सदा लों उजड़े रहेंगे और मेरी प्रजा

(१) मूल में उंडेल।

(१) वा. देश। (२) एक्रोन् शब्द का अर्थ उखाड़ है।

के बचे हुए उन को लूटेंगे[1] और मेरी जाति के रहे हुए लोग उन को अपने भाग में पाएंगे ॥ १० । यह उन के गर्व्व का पलटा होगा उन्हों ने तो सेनाओं के यहोवा की प्रजा को नामधराई किई और उस पर बड़ाई मारी है ॥ ११ । यहोवा उन को डरावना दिखाई देगा वह पृथिवी भर के देवताओं को भूखों मार डालेगा और अन्यजातियों के सब द्वीपों के निवासी अपने अपने स्थान से उस को दण्डवत् करेंगे ॥ १२ । हे कूशियो तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे ॥ १३ । वह अपना हाथ उत्तर दिशा की ओर बढ़ाकर अश्शूर् को नाश करेगा और नीनवे को उजाड़ बरन जंगल के समान निर्जल कर देगा ॥ १४ । और उस के बीच में झुण्ड के सब जाति के बनैले पशु झुण्ड के झुण्ड बैठेंगे और उस के खंभों की कंगनियों पर धनेश और साही दोनों रात को बसेरा करेंगे और उस की खिड़कियों में बोला करेंगे उस की डेवढ़ियां सूनी पड़ी रहेंगी और देवदारु की लकड़ी उघारी जाएगी ॥ १५ । यह तो वही नगरी है जो हुलसता और निडर बैठा रहता था और सोचता था कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई है ही नहीं पर अब यह उजाड़ और बनैले पशुओं के बैठने का स्थान बन गया है यहां लों कि जो कोई इस के पास होकर चले सो हथेली बजाएगा और हाथ चमकाएगा ॥

३. हाय बलवा करनेहारी और अशुद्ध और अन्धेर से भरी हुई नगरी पर ॥ २ । उस ने मेरी नहीं सुनी उस ने ताड़ना से नहीं माना उस ने यहोवा पर भरोसा नहीं रक्खा वह अपने परमेश्वर के समीप नहीं आई ॥ ३ । इस में के हाकिम गरजनेहारे सिंह ठहरे इस के न्यायी सांझ को अहेर करनेहारे हुंडार हैं जो बिहान के लिये कुछ नहीं छोड़ते ॥ ४ । इस के नबी फूहर बकनेहारे और विश्वासघाती हैं इस के याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध और व्यवस्था में खींचखांच किई है ॥ ५ । मैं यहोवा जो उस के बीच में है सो धर्म्मी है वह कुटिलता न करेगा वह अपना न्याय भोर भोर प्रगट करता है चूकता नहीं पर कुटिल जन को लाज आती ही नहीं ॥ ६ । मैं ने अन्यजातियों को नाश किया यहां लों कि उन के कोनेवाले गुम्मट उजड़ गये मैं ने उन की सड़कों को सूनी किया यहां लों कि कोई उन पर नहीं चलता उन के नगर यहां लों नाश हुए कि उन में कोई मनुष्य बरन कोई भी प्राणी[1] नहीं रहा ॥ ७ । मैं ने कहा अब तो तू मेरा भय मानेगी और मेरी ताड़ना अंगीकार करेगी जिस से उस का धाम उस सब के अनुसार जो मैं ने ठहराया था नाश न हो पर वे सब प्रकार के बड़े बड़े काम करने लगे ॥ ८ । इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि जब लों मैं नाश करने को न उठूं तब लों तुम मेरी बाट जोहते रहो मैं ने यह ठाना है कि जाति जाति के और राज्य राज्य के लोगों को मैं एकट्ठा करूंगा कि उन पर अपने कोप की आग पूरी रीति से भड़काऊं क्योंकि समस्त पृथिवी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी ॥ ९ । और उस समय मैं देश देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊंगा कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें और एक मन[2] से कांधा जोड़े हुए उस की सेवा करें ॥ १० । मेरी तितर बितर किई हुई प्रजा[3] मुझ से बिनती करती हुई मेरी भेंट बनकर आएगी ॥ ११ । उस दिन क्या तू अपने सब बड़े से बड़े कामों से जिन करके तू मुझ से फिर गई लज्जित न होगी उस समय तो मैं तेरे बीच से सब फूले हुए घमंडियों को दूर करूंगा और तू मेरे पवित्र पर्वत पर फिर कभी अभिमान न करेगी ॥ १२ । और मैं तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगों का एक दल बचा रक्खूंगा और वे यहोवा के नाम की शरण लेंगे ॥ १३ । इस्राएल् के बचे हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ बोलेंगे और न उन के मुंह से छल की बातें निकलेंगी[4] वे चरेंगे और

(१) मूल में अपना लेंगे ।

(१) मूल में रहनेहारा ।
(२) मूल में एक कंधे या पीठ से ।
(३) मूल में किये हुओं की बेटी ।
(४) मूल में, मुंह में छली जीभ पाई जायगी ।

बैठा करेंगी और कोई डरानेहारा न होगा॥ १४। हे सिय्योन्[1] ऊंचे स्वर से गा हे इस्राएल् जयजयकार कर हे यरूशलेम्[2] अपने सारे मन से आनन्द कर और हुलस॥ १५। यहोवा ने तेरा दण्ड भोगना बन्द किया और तेरा शत्रु दूर किया इस्राएल् का राजा यहोवा तेरे बीच में है सो तू फिर विपत्ति न भोगेगी॥ १६। उस समय यरूशलेम से यह कहा जाएगा कि मत डर और सिय्योन् से यह कि तेरे हाथ ढीले न पड़ने पाएं॥ १७। तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है वह उद्धार करने में पराक्रमी है वह तेरे कारण आनन्द में मगन होगा वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा॥

१८। जो लोग नियत पर्व के विषय खेदित रहते हैं उन को मैं एकट्ठा करूंगा क्योंकि वे तेरे तो हैं और उस की नामधराई उन को बोझ जान पड़ती है॥ १९। उस समय मैं उन सभों से जो तुझे दुःख देते हैं उचित बर्ताव करूंगा और लंगड़ानेहारों[1] को चंगा करूंगा और बरबस निकाले[2] हुओं को एकट्ठा करूंगा और जिन की लज्जा की चर्चा समस्त पृथिवी पर फैली है उन की प्रशंसा और कीर्त्ति सब कहीं फैलाऊंगा[3]॥ २०। उसी समय मैं तुम्हें ले आऊंगा और उसी समय मैं तुम्हें एकट्ठा करूंगा और जब मैं तुम्हारे साम्हने तुम्हारे बन्धुओं को लौटा लाऊंगा तब पृथिवी की सारी जातियों के बीच तुम्हारी कीर्त्ति और प्रशंसा फैला दूंगा यहोवा का यही वचन है॥

(१) मूल में, सिय्योन की बेटी। (२) मूल में, यरूशलेम् की बेटी।

(१) मूल में, लंगड़ानेहारी। (२) मूल में निकाली हुई।
(३) मूल में उन को प्रशंसा और कीर्त्ति ठहराऊंगा।
(४) मूल में तुम को कीर्त्ति और प्रशंसा ठहराऊंगा।

हाग्गै।

---

१. दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें महीने के पहिले दिन यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के द्वारा शाल्तीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल् के पास जो यहूदा का अधिपति था और यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक के पास पहुंचा कि, २। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि ये लोग तो कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का हमारे आने का समय अभी नहीं है॥ ३। फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के द्वारा पहुंचा कि, ४। क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है और यह भवन उजाड़ पड़ा है॥ ५। सो अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी चाल चलन को सोचो विचारो॥ ६। तुम ने बोया बहुत पर लवा थोड़ा तुम खाते हो पर पेट नहीं भरता तुम पीते हो पर प्यास नहीं बुझती तुम कपड़े पहिनते पर गरमाते नहीं और जो मजूरी कमाता है सो उसे कमाकर फटी हुई थैली में डाल देता है॥ ७। सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि अपनी अपनी चाल चलन को सोचो॥ ८। पहाड़ पर चढ़कर लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ और मैं उस को देखकर प्रसन्न हूंगा और मेरी महिमा होगी यहोवा का यही वचन है॥ ९। तुम ने बहुत उपज की आशा रक्खी पर देखो थोड़ी ही है फिर जब तुम उसे घर ले आये तब मैं ने उस को उड़ा दिया सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि इस का क्या कारण

है क्या यह नहीं कि मेरा भवन तो उजाड़ पड़ा है और तुम अपने अपने घर के लिये दौड़ धूप करते हो ॥ १० । इस कारण आकाश से ओस गिरनी और पृथिवी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं ॥ ११ । और मेरी आज्ञा से पृथिवी पर सूखा पड़ा पृथिवी पर और पहाड़ों पर और अन्न और नये दाखमधु और टटके तेल पर और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर और मनुष्यों और घरैले पशुओं पर और उन के परिश्रम की सारी कमाई पर भी ॥

१२ । तब शाल्तीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल् और यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक ने सब बचे हुए लोगों समेत अपने परमेश्वर यहोवा की मानी और जो वचन उन के परमेश्वर यहोवा ने उन से कहने के लिये हाग्गै नबी को भेज दिया उन्हें मान लिया और लोगों ने यहोवा का भय माना ॥ १३ । तब यहोवा के दूत हाग्गै ने यहोवा से यह आज्ञा पाकर उन लोगों से कहा कि यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे संग हूं ॥ १४ । फिर यहोवा ने शाल्तीएल् के पुत्र जरुब्बाबेल को जो यहूदा का अधिपति था और यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक को और सब बचे हुए लोगों के मन को ऐसा उभारा कि वे आकर अपने परमेश्वर सेनाओं के यहोवा के भवन बनाने में काम करने लगे ॥ १५ । यह दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें महीने की चौबीसवें दिन को हुआ ॥

२. फिर सातवें महीने के एक्कीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के पास पहुंचा कि, २ । शाल्तीएल् के पुत्र यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल् और यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक और सब बचे हुए लोगों से यह बात कह कि, ३ । तुम में से कौन रह गया जिस ने इस भवन की पहिली महिमा देखी अब तुम इस को कैसी दशा देखते हो क्या यह सच नहीं कि यह तुम्हारे लेखे उस की अपेक्षा कुछ है ही नहीं ॥ ४ । तौभी अब यहोवा की यह वाणी है कि हे जरुब्बाबेल् हियाव बांध और हे यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक हियाव बांध और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश के सब लोगो हियाव बांधकर काम करो क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ ५ । तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने बांधी थी उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे मध्य में बना है सो तुम मत डरो ॥ ६ । क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अब थोड़ी ही बेर बाकी है कि मैं आकाश और पृथिवी और समुद्र और स्थल सब को कंपाऊंगा ॥ ७ । और मैं सारी जातियों को कंपाऊंगा और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी और मैं इस भवन को तेज से भर दूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ ८ । चान्दी तो मेरी है और सोना भी मेरा ही है सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ ९ । इस भवन की पिछली महिमा इस की पहिली महिमा से बड़ी होगी सेनाओं के यहोवा का यही वचन है और इस स्थान में मैं शांति दूंगा सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

१० । दारा के दूसरे बरस के नौवें महीने के चौबीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के पास पहुंचा कि, ११ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि याजकों से इस बात की व्यवस्था पूछ कि, १२ । यदि कोई अपने वस्त्र के अंचल में पवित्र मांस बांधकर उसी अंचल से रोटी वा सिझे हुए भोजन वा दाखमधु वा तेल वा किसी प्रकार के भोजन को छूए तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा याजकों ने उत्तर दिया कि नहीं ॥ १३ । फिर हाग्गै ने पूछा कि यदि कोई जन मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध होकर ऐसी किसी वस्तु को छूए तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी याजकों ने उत्तर दिया कि हां अशुद्ध ठहरेगी ॥ १४ । फिर हाग्गै ने कहा यहोवा की यह वाणी है कि मेरी दृष्टि में यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है और इन के सब काम भी वैसे हैं और जो कुछ वे वहां चढ़ाते हैं सो भी अशुद्ध है ॥ १५ । अब सोच विचार करो कि आज से पहिले अर्थात् जब यहोवा के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रक्खा न गया था, १६ । उन

दिनों में जब कोई अन्न के बीस नपुओं के पास जाता तब दस ही पाता था और जब कोई दाखरस कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बत् निकलें तब बीस ही निकलते थे ॥ १७ । मैं ने तुम्हारी सारी खेती को लूह और गेरुई और ओलों से मारा तौभी तुम मेरी ओर न फिरे यहोवा की यही वाणी है ॥ १८ । और अब सोच विचार करो कि आज से पहिले अर्थात् जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नेव डाली गई उस दिन से लेकर नौवें महीने को इसी चौबीसवें दिन लों क्या दशा थी इस का सोच विचार तो करो ॥ १९ । क्या अब लों अन्न खत्ते में रक्खा गया है सो नहीं अब लों तो दाखलता और अंजीर और अनार और जलपाई के वृक्ष नहीं फले पर आज के दिन से मैं आशीष देता रहूंगा ॥

२० । फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार यहोवा का यह वचन हाग्गै के पास पहुंचा कि, २१ । यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल् से यों कह कि मैं आकाश और पृथिवी दोनों को कंपाऊंगा ॥ २२ । और मैं राज्य राज्य की गद्दी को उलट दूंगा और अन्यजातियों के राज्य राज्य का बल तोड़ूंगा और रथों को चढ़वैयों समेत उलट दूंगा और घोड़ों समेत सवार एक दूसरे की तलवार से गिरेंगे ॥ २३ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन हे शालतीएल् के पुत्र मेरे दास जरुब्बाबेल् मैं तुझे लेकर मुन्दरी के समान रक्खूंगा यहोवा की यही वाणी है क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

जकर्याह् ।

---

१. दारा के राज्य के दूसरे बरस के आठवें महीने में यहोवा का यह वचन जकर्याह् नबी के पास जो बेरेक्याह् का पुत्र और इद्दो का पोता था पहुंचा कि, २ । यहोवा तुम लोगों के पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ था ॥ ३ । सो तू इन लोगों से कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि तुम मेरी ओर फिरो तब मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ ४ । अपने पुरखाओं के समान न बनो उन से तो अगले नबी यह पुकार पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अपने बुरे मार्गों से और अपने बुरे कामों से फिरो पर उन्हों ने न तो सुना न मेरी ओर ध्यान दिया यहोवा की यही वाणी है ॥ ५ । तुम्हारे पुरखा कहां रहे और नबी क्या सदा लों जीते रहे ॥ ६ । पर मेरे वचन और मेरी आज्ञाएं जिन को मैं ने अपने दास नबियों को दिया था क्या वे तुम्हारे पुरखाओं के विषय पूरी न हुईं[1] तब उन्हों ने फिरकर कहा कि सेनाओं के यहोवा ने हमारी चालचलन और कामों के अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने को कहा था वैसा ही उस ने हम से किया भी है ॥

७ । दारा के दूसरे बरस के शबात् नाम ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह् नबी के पास जो बेरेक्याह् का पुत्र और इद्दो का पोता है यहोवा का वचन यों पहुंचा कि, ८ । मैं ने रात को क्या देखा कि एक पुरुष लाल घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मेंहदियों के बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं और उस के पीछे लाल और सुरंग और श्वेत घोड़े भी खड़े हैं ॥ ९ । तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु ये कौन हैं तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ से कहा कि मैं तुझे बताऊंगा कि ये कौन हैं ॥ १० । फिर जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा

---

(१) मूल में. क्या उन्हों ने तुम्हारे पुरखाओं को न जा लिया ।

था उस ने कहा ये हैं जिन को यहोवा ने पृथिवी पर फेरा करने के लिये भेजा है ॥ ११ । तब उन्हों ने यहोवा के उस दूत से जो मेंहदियों के बीच खड़ा था कहा कि हम ने पृथिवी पर फेरा किया है और क्या देखा कि सारी पृथिवी चैन से चुपचाप रहती है ॥ १२ । तब यहोवा के दूत ने कहा हे सेनाओं के यहोवा तू जो यरूशलेम् और यहूदा के नगरों पर सत्तर बरस से क्रोधित है सो उन पर कब लों दया न करेगा ॥ १३ । और यहोवा ने उत्तर देकर उस दूत से जो मुझ से बातें करता था अच्छी अच्छी और शान्ति की बातें कहीं ॥ १४ । तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ से कहा तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मुझे यरूशलेम् और सिय्योन् के लिये बड़ी जलन हुई है ॥ १५ । और जो जातियां सुख से रहती हैं उन से मैं क्रोधित हूं क्योंकि मैं ने तो थोड़ा सा क्रोध किया था पर उन्हों ने विपत्ति को बढ़ा दिया ॥ १६ । इस कारण यहोवा यों कहता है कि अब मैं दया करके यरूशलेम् को लौट आया हूं मेरा भवन उस में बनेगा और यरूशलेम् पर मापने की डोरी डाली जाएगी सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ १७ । फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएंगे और यहोवा फिर सिय्योन् को शांति देगा और यरूशलेम् को फिर अपना ठहराएगा ॥

१८ । फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि चार सींग हैं ॥ १९ । तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस से मैं ने पूछा कि ये क्या हैं उस ने मुझ से कहा ये वे ही सींग हैं जिन्हों ने यहूदा और इस्राएल् और यरूशलेम् को तित्तर बित्तर किया है ॥ २० । फिर यहोवा ने मुझे चार लोहार दिखाये ॥ २१ । तब मैं ने पूछा कि ये क्या करने को आते हैं उस ने कहा कि ये वे ही सींग हैं जिन्हों ने यहूदा को ऐसा तित्तर बित्तर किया कि कोई सिर न उठा सका पर ये लोग उन्हें भगाने के लिये और उन जातियों के सींगों को काट डालने के लिये आये हैं जिन्हों ने यहूदा के देश को तित्तर बित्तर करने के लिये उस के विरुद्ध अपने अपने सींग उठाये थे ॥

२. फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि हाथ में मापने की डोरी लिये हुए एक पुरुष है ॥ २ । तब मैं ने उस से पूछा कि तू कहां जाता है उस ने मुझ से कहा यरूशलेम् को मापने को जाता हूं कि देखूं कि उस की चौड़ाई कितनी और लम्बाई कितनी है ॥ ३ । तब मैं ने क्या देखा कि जो दूत मुझ से बातें करता है सो जाता है और दूसरा दूत उस से मिलने के लिये आकर, ४ । उस से कहता है दौड़कर इस जवान से कह कि यरूशलेम् मनुष्यों और घरैले पशुओं की बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर बाहर भी बसेगी[1] ॥ ५ । और यहोवा की यह वाणी है कि मैं आप उस की चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूंगा और उस के मध्य में तेजोमय होकर दिखाई दूंगा[2] ॥ ६ । यहोवा की यह वाणी है कि अहो अहो उत्तर के देश में से भाग जाओ क्योंकि मैं ने तुम को आकाश के चारों वायुओं के समान तित्तर बित्तर किया है ॥ ७ । अहो बाबेल्वाली जाति[3] के संग रहनेहारी सिय्योन् बचकर निकल आ ॥ ८ । क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उस तेज के प्रगट होने के पीछे उस ने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती हैं क्योंकि जो तुम को छूता है सो उस की आंख की पुतली ही को छूता है ॥ ९ । क्योंकि सुनो, मैं अपना हाथ उन पर उठाऊंगा[4] तब वे उन से लूटे जाएंगे जो उन के दास हुए थे और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है ॥ १० । हे सिय्योन्[5] ऊंचे स्वर से गा और आनन्द कर क्योंकि देख मैं आकर तेरे बीच में बास करूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥ ११ । उस समय बहुत सी जातियां यहोवा से मिल जाएंगी और मेरी प्रजा

(१) मूल में बिना शहरपनाह के गांव होकर बसेगी ।
(२) मूल में तेज हूंगा । (३) मूल में बाबेल् की बेटी ।
(४) मूल में हिलाऊंगा ।
(५) मूल में सिय्योन की बेटी ।

हो जाएंगी और मैं तेरे मध्य में वास करूंगा और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है ॥ १२ । और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना भाग जान लेगा और यरूशलेम् को फिर अपना ठहराएगा ॥ १३ । हे सब प्राणियो यहोवा के साम्हने चुपके रहो क्योंकि वह जागकर अपने पवित्र निवासस्थान से निकला है ॥

३. फिर उस ने मुझे यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के साम्हने खड़ा दिखाया और शैतान उस की दहिनी ओर उस का विरोध करने को खड़ा था ॥ २ । तब यहोवा ने शैतान से कहा हे शैतान यहोवा तुझ को घुड़के यहोवा जो यरूशलेम् को अपना लेता है वही तुझे घुड़के क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है ॥ ३ । उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने कुचैले वस्त्र पहिने हुए खड़ा था ॥ ४ । सो दूत ने उन से जो साम्हने खड़े थे कहा इस के ये कुचैले वस्त्र उतारो फिर उस ने उस से कहा देख मैं ने तेरा अधर्म्म दूर किया है और तुझे सुन्दर सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं ॥ ५ । तब मैं ने कहा इस के सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रक्खी जाए सो उन्हों ने उस के सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रक्खी और उस को वस्त्र पहिनाये उस समय यहोवा का दूत पास खड़ा रहा ॥ ६ । तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा कि, ७ । सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों पर चले और जो कुछ मैं ने तुझे सौंप दिया है उस की रक्षा करे तो तू मेरे भवन में का न्यायी और मेरे आंगनों का रक्षक होगा और मैं तुझ को इन के बीच में जो पास खड़े हैं आने जाने दूंगा ॥ ८ । हे यहोशू महायाजक तू सुन ले और तेरे भाईबंधु जो तेरे साम्हने बैठा करते हैं वे भी सुनें क्योंकि वे अद्भुत चिन्ह से मनुष्य हैं सुनो कि मैं पल्लव नाम अपने दास को प्रगट करूंगा ॥ ९ । उस पत्थर को देख जिसे मैं ने यहोशू के आगे रक्खा है उस एक ही पत्थर के ऊपर सात आंखें बनी हैं सो सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि सुन मैं उस पत्थर पर खोद देता हूं और इस देश के अधर्म्म को एक ही दिन में दूर कर दूंगा ॥ १० । उसी दिन तुम अपने अपने भाईबन्धुओं को दाखलता और अंजीर के वृक्ष के नीचे आने को बुलाओगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

४. फिर जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने फिर आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नींद से जगाया जाए ॥ २ । और उस ने मुझ से पूछा कि तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मैं ने देखा कि एक दीवट है जो सम्पूर्ण सोने की है और उस का कटोरा उस की चोटी पर है और इस पर उस के सातों दीपक भी हैं और चोटी पर के इन दीपकों के लिये सात सात नलियां हैं ॥ ३ । और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं एक तो उस कटोरे की दहिनी ओर दूसरा उस की बाईं ओर ॥ ४ । तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था पूछा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं ॥ ५ । जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ को उत्तर दिया कि क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं मैं ने कहा हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता ॥ ६ । तब उस ने मुझ से उत्तर देकर कहा जरुब्बाबेल् के लिये यहोवा का यह वचन है कि न तो बल से और न शक्ति से पर मेरे आत्मा के द्वारा होगा मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ ७ । हे बड़े पहाड़ तू क्या है जरुब्बाबेल् के साम्हने तू मैदान हो जाएगा और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए लाएगा कि उस पर अनुग्रह हो अनुग्रह ॥ ८ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ९ । जरुब्बाबेल् ने अपने हाथों से इस भवन की नेव डाली है और वही अपने हाथों से उस को तैयार भी करेंगे और तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ॥ १० । क्योंकि किस ने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है यहोवा अपनी इन सातों आंखों से सारी पृथिवी पर दृष्टि करके साहुल को जरुब्बाबेल् के हाथ में देखेगा और आनन्दित

होगा ॥ ११ । तब मैं ने उस से फिर पूछा ये दो जलपाई के वृक्ष जो दीवट की दहिनी बाईं ओर हैं ये क्या हैं ॥ १२ । फिर मैं ने दूसरी बार उस से पूछा कि जलपाई की दोनों डालियां जो सोने की दोनों नलियों के द्वारा अपने पर से सुनहला तेल उण्डेलती है सो क्या हैं ॥ १३ । उस ने मुझ से कहा क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं मैं ने कहा हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता ॥ १४ । तब उस ने कहा इन का अर्थ टटके तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं[१] जो समस्त पृथिवी के प्रभु के पास हाजिर रहते हैं ॥

५. फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि एक लिखा हुआ पत्र उड़ रहा है ॥ २ । दूत ने मुझ से पूछा कि तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मुझे एक लिखा हुआ पत्र उड़ता देख पड़ता है जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ की है ॥ ३ । तब उस ने मुझ से कहा यह वह साप है जो इस सारे देश पर पड़ा चाहता है[२] अर्थात् जो कोई चोरी करता है सो उस की एक ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा और जो कोई किरिया खाता है सो उस को दूसरी ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा ॥ ४ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस को ऐसा चलाऊंगा[३] कि वह चोर के घर में और मेरे नाम की झूठी किरिया खानेहारे के घर में घुसकर ठहरेगा और उस को लकड़ी और पत्थरों समेत नाश करेगा ॥

५ । तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने बाहर जाकर मुझ से कहा आंखें उठाकर देख कि वह क्या वस्तु निकल जा रही है ॥ ६ । मैं ने पूछा कि वह क्या है । उस ने कहा वह वस्तु जो निकल जा रही है सो एक एपा का नपुआ है । उस ने फिर कहा सारे देश में लोगों का यही रूप है ॥ ७ । फिर मैं ने क्या देखा कि किक्कार् भर शीशे का एक बटखरा उठाया जा रहा है और यह एक स्त्री है जो एपा के बीच में बैठी है ॥ ८ । और दूत ने कहा इस का अर्थ दुष्टता है और उस ने उस स्त्री को एपा के बीच में दबा दिया और शीशे के उस बटखरे को लेकर उस से एपा का मुंह ढांप दिया ॥ ९ । तब मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि दो स्त्रियां चली आती हैं जिन के पंख पवन से फैले हुए हैं और उन के पंख लगलग के से हैं और वे एपा को आकाश और पृथिवी के बीच में उड़ाये लिये जा रही हैं ॥ १० । तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था पूछा कि वे एपा को कहां लिये जाती हैं ॥ ११ । उस ने कहा शिनार् देश में लिये जाती हैं कि वहां उस के लिये एक भवन बनाएं और जब वह तैयार किया जाए तब वह एपा वहां अपने ही पाये पर खड़ा किया जाएगा ॥

६. मैं ने जो फिर आंखें उठाईं तो क्या देखा कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ चले आते हैं और वे पहाड़ पीतल के हैं ॥ २ । पहिले रथ में लाल घोड़े और दूसरे रथ में काले, ३ । और तीसरे रथ में श्वेत और चौथे रथ में चितकबरे और बदामी घोड़े हैं ॥ ४ । तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था पूछा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं ॥ ५ । दूत ने मुझ से कहा ये तो आकाश के चारों वायु[१] हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के पास हाजिर रहते पर अब निकले आये हैं ॥ ६ । जिस रथ में काले घोड़े हैं वह उत्तर देश की ओर जाता है और श्वेत घोड़े उन के पीछे पीछे चले जाते हैं और चितकबरे घोड़े दक्खिन देश की ओर जाते हैं ॥ ७ । और बदामी घोड़ों ने निकलकर चाहा कि जाकर पृथिवी पर फेरा करें तब दूत ने कहा जाकर पृथिवी पर फेरा करो सो वे पृथिवी पर फेरा करने लगे ॥ ८ । तब उस ने मुझ से पुकारकर कहा देख वे जो उत्तर के देश की ओर जाते हैं उन्हों ने उत्तर के देश में मेरा जी ठण्डा किया है ॥

९ । फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा

(१) मूल में टटके तेल के पुत्र । (२) मूल में देश पर निकलता है । (३) मूल में मैं उस को निकालूगा ।

(१) वा आत्मा ।

कि, १०। बंधुआई के लोगों में से अर्थात् हेल्दै और तोबिय्याह् और यदायाह् से कुछ ले और उसी दिन तू सपन्याह् के पुत्र योशिय्याह् के घर जिस में वे बाबेल् से आकर उतरे हैं उस में जाकर, ११। उन के हाथ से सोना चांदी ले और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक् के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रखना॥ १२। और उस से यह कहना कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उस पुरुष को देख जिस का नाम पल्लव है वह अपने ही स्थान में मानो उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा॥ १३। वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा और वही महिमा पाएगा[1] और अपने सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा और सिंहासन पर विराजता हुआ याजक भी बनेगा और दोनों के बीच मेल की सम्मति ठहरेगी॥ १४। और वे मुकुट हेलेम् तोबिय्याह् यदायाह् और सपन्याह् के पुत्र हेन् को मिलें कि वे यहोवा के मन्दिर में स्मरण के लिये बने रहें॥ १५। फिर दूर दूर के लोग आ आकर यहोवा के मन्दिर बनाने में सहायता करेंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यदि तुम मन लगाकर अपने परमेश्वर यहोवा की मानो तो यह बात होगी॥

७. फिर दारा राजा के चौथे बरस के किस्लेव् नाम नौवें महीने के चौथे दिन को यहोवा का वचन जकर्याह् के पास पहुंचा॥ २। बेतेल्वासियों ने जनों समेत शरेसेर् और रेगेम्मेलेक् को इस लिये भेजा था कि यहोवा से बिनती करें ३। और सेनाओं के यहोवा के भवन के याजकों से और नबियों से भी यह पूछें कि क्या हमें उपवास करके रोना चाहिये जैसे कि पांचवें महीने में कितने बरसों से हम करते आये हैं॥ ४। तब सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ५। सब साधारण लोगों से और याजकों से कह कि जब तुम इन सत्तर बरसों के बीच पांचवें और सातवें महीनों में उपवास और विलाप करते थे तब क्या तुम सचमुच मेरे ही लिये उपवास करते थे॥ ६। और जब तुम खाते पीते हो तो क्या तुम आप ही खानेहारे और तुम आप ही पीनेहारे नहीं हो॥ ७। क्या यह वही वचन नहीं है जो यहोवा अगले नबियों के द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा जब यरूशलेम् अपनी चारों ओर के नगरों समेत बसी और चैन से थी और दक्खिन देश और नीचे का देश भी बसा हुआ था॥

८। फिर यहोवा का यह वचन जकर्याह् के पास पहुंचा कि, ९। सेनाओं के यहोवा ने यों कहा है कि खराई से न्याय चुकाना और एक दूसरे के साथ कृपा और दया से काम करना॥ १०। और न तो विधवा पर अंधेर करना न बपमूए न परदेशी न दीन जन पर और न अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना करना॥ ११। पर उन्हों ने चित्त लगाना न चाहा और हठ किया और अपने कानों को मून्द लिया कि न सुन सकें॥ १२। वरन उन्हों ने अपने हृदय को वज्र सा इस लिये बना लिया कि वे उस व्यवस्था और उन वचनों को न मान सकें जिन्हें सेनाओं के यहोवा ने अपने आत्मा के द्वारा अगले नबियों से कहला भेजा था इस कारण सेनाओं के यहोवा की ओर से उन पर बड़ा क्रोध भड़का॥ १३। और सेनाओं के यहोवा का यह वचन हुआ कि जैसा मेरे पुकारने से उन्हों ने नहीं सुना वैसे ही उन के पुकारने से मैं भी न सुनूंगा, १४। वरन मैं उन्हें उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नहीं जानते आंधी से तितर बितर कर दूंगा और उन का देश उन के पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उस में किसी का आना जाना न होगा। इसी प्रकार से उन्हों ने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया॥

८. फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन पहुंचा कि, २। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सिय्योन् के लिये मुझे बड़ी जलन हुई वरन बहुत ही जलजलाहट मुझ में उपजी

(१) मूल में [illegible]।

है ॥ ३ । यहोवा यों कहता है कि मैं सिय्योन् में लौट आया हूं और यरूशलेम् के बीच बास किये रहूंगा और यरूशलेम् सच्चाई का नगर कहाएगा और सेनाओं के यहोवा का पर्वत पवित्र पर्वत कहाएगा ॥ ४ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि यरूशलेम् के चौकों में फिर बूढ़े और बूढ़ियां बहुत दिनी होने के कारण अपने अपने हाथ में लाठी लिये हुए बैठा करेंगी ॥ ५। और नगर के चौक खेलनेवाले लड़कों और लड़कियों से भरे रहेंगे ॥ ६। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उन दिनों में चाहे यह बात इन बचे हुओं के लेखे अनोखी ठहरे पर क्या यह मेरे लेखे भी अनोखी ठहरेगी सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ ७ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं अपनी प्रजा का उद्धार करके उसे पूरब से और पच्छिम से ले आऊंगा ॥ ८ । और मैं उन्हें ले आकर यरूशलेम् के बीच बसाऊंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा यह तो सच्चाई और धर्म्म के साथ होगा ॥ ९ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम जो इन दिनों में ये वचन उन नबियों के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के यहोवा के भवन के नेव डालने के समय अर्थात् मन्दिर के बनने के समय में थे ॥ १० । उन दिनों के पहिले न तो मनुष्य की मजूरी मिलती थी और न पशु का भाड़ा बरन सतानेहारों के कारण न तो आनेहारे को चैन मिलता था और न जानेहारे को क्योंकि मैं सब मनुष्यों से एक दूसरे पर चढ़ाई कराता था ॥ ११ । पर अब मैं इस प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्ताव न करूंगा जैसा कि अगले दिनों में करता था सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥ १२ । सो शांति के समय की उपज अर्थात् दाखलता फला करेगी पृथिवी अपनी उपज उपजाया करेगी और आकाश से ओस गिरा करेगी क्योंकि मैं अपनी इस प्रजा के बचे हुओं को इन सब का अधिकारी कर दूंगा ॥ १३ । और हे यहूदा के घराने और इस्राएल् के घराने जिस प्रकार तुम अन्यजातियों के बीच स्राप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा और तुम आशीष के कारण होगे सो तुम मत डरो और न तुम्हारे हाथ ढीले पड़ने पाएं ॥ १४ । क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार जब तुम्हारे पुरखा मुझे रिस दिलाते थे तब मैं ने उन की हानि करने को ठाना था और फिर न पछताया, १५ । उसी प्रकार मैं ने इन दिनों में यरूशलेम् की और यहूदा के घराने की भलाई करने को ठाना है सो तुम मत डरो ॥ १६। जो जो काम तुम्हें करना चाहिये सो ये हैं अर्थात् एक दूसरे के साथ सत्य बोला करना अपनी कचहरियों[1] में सच्चाई का और मेलमिलाप की नीति का न्याय करना ॥ १७ । और अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना न करना और झूठी किरिया से प्रीति न रखना क्योंकि इन सब कामों से मैं घिन करता हूं यहोवा की यही वाणी है ॥

१८ । फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १९ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि चौथे और पांचवें और सातवें और दसवें महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं वे यहूदा के घराने के लिये हर्ष और आनन्द और उत्सव के पर्वों के दिन हो जाएंगे सो तुम सच्चाई और मेलमिलाप से प्रीति रक्खो ॥ २० । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि ऐसा समय आनेहारा है कि देश देश के लोग और बहुत नगरों के रहनेहारे आएंगे ॥ २१ । और एक नगर के रहनेहारे दूसरे नगर के रहनेहारों के पास जाकर कहेंगे कि यहोवा से बिनती करने और सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चलो मैं भी चलूंगा ॥ २२ । बरन बहुत से देशों के और सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम् में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और यहोवा से बिनती करने के लिये आएंगे ॥ २३ । सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उन दिनों में भांति भांति की भाषा बोलनेहारी सब जातियों में से दस मनुष्य एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे कि हम तुम्हारे संग चलेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है ॥

(१) मूल में फाटकों।

९. हद्राक् देश के विषय यहोवा का कहा हुआ भारी वचन जो दमिश्क् पर भी पड़ेगा[१] क्योंकि यहोवा की दृष्टि मनुष्यजाति की और इस्राएल् के सब गोत्रों की ओर लगी है, २। और हमात् की ओर जो दमिश्क् के निकट है और सोर् और सीदोन् की ओर ये तो बहुत ही बुद्धिमान हैं. ३। और सोर् ने अपने लिये एक गढ़ बनाया और चान्दी धूलि के किनकों की नाईं और चोखा सोना सड़कों की कीच के समान बटोर रक्खा है॥ ४। सुनो प्रभु उस को औरों के अधिकार में कर देगा और उस के घुस को तोड़कर समुद्र में डाल देगा और वह नगर आग का कौर हो जाएगा॥ ५। यह देखकर अश्कलोन् डरेगा और अज्जा को पीड़ें उठेंगी और एक्रोन् भी डरेगा क्योंकि उस की आशा टूटेगी और अज्जा में फिर राजा न रहेगा और अश्कलोन् फिर बसी न रहेगी॥ ६। और अश्दोद् में विदेशी लोग बसेंगे सो इसी प्रकार मैं पलिश्तियों के गर्व को तोड़ूंगा॥ ७। और मैं उस के मुंह में से अहेर का लोहू और घिनौनी वस्तुएं[२] निकाल दूंगा तब उन में से जो बचा रहेगा वह हमारे परमेश्वर का जन होगा और यहूदा में अधिपति सा होगा और एक्रोन के लोग यबूसियों के समान बनेंगे॥ ८। और मैं उस सेना के कारण जो पास से होकर जाएगी और फिर लौट आएगी अपने भवन के आसपास छावनी किये रहूंगा और कोई परिश्रम करानेहारा फिर उन के पास से होकर न जाएगा मैं तो ये बातें अब भी देखता हूं॥

९। हे सिय्योन्[३] बहुत ही मगन हो हे यरूशलेम्[४] जयजयकार कर क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा वह धर्म्मी और उद्धार पाया हुआ है वह दीन है और गदहे पर बरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा॥ १०। और मैं एप्रैम् के रथ और यरूशलेम् के घोड़े नाश करूंगा और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएंगे और वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा और वह समुद्र से समुद्र लों और महानद से पृथिवी के दूर दूर देशों लों प्रभुता करेगा॥ ११। और तू भी सुन तेरी वाचा के लोहू के कारण मैं ने तेरे बन्दियों को बिना जल के गड़हे में से उबार लिया है॥ १२। हे आशा धरे हुए बन्दियो गढ़ की ओर फिरो आज ही मैं बताता हूं कि मैं तुम को बदले में दूना सुख दूंगा॥ १३। क्योंकि मैं ने धनुष की नाईं यहूदा को चढ़ाकर उस पर तीर की नाईं एप्रैम् को सन्धाना और सिय्योन् के निवासियों को यूनान के निवासियों के विरुद्ध उभारूंगा और उन्हें वीर की तलवार सा कर दूंगा॥ १४। तब यहोवा उन के ऊपर दिखाई देगा और उस का तीर बिजली की नाईं छूटेगा और प्रभु यहोवा नरसिंगा फूंककर दक्खिन देश की सी आंधी में होके चलेगा॥ १५। सेनाओं का यहोवा ढाल से उन्हें बचाएगा और वे अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और उन के गोफन के पत्थरों पर पांव धरेंगे और वे पीकर ऐसा कोलाहल करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते हैं और वे कटोरे की नाईं वा वेदी के कोने की नाईं भरे जाएंगे॥ १६। और उस समय उन का परमेश्वर यहोवा उन को अपनी प्रजारूपी भेड़बकरियां जानकर उन का उद्धार करेगा और वे मुकुटमणि ठहरके उस की भूमि से बहुत ऊंचे पर चमकते रहेंगे॥ १७। उस का क्या ही कुशल और क्या ही शोभा होगी उस के जवान लोग अन्न खाकर और कुमारियां नया दाखमधु पीकर हृष्टपुष्ट हो जाएंगी॥

१०. यहोवा से बरसात के अन्त में वर्षा मांगो अर्थात् यहोवा से जो बिजली चमकाता है और वह उन को वर्षा देता और एक एक के खेत में हरियाली उपजाता है॥ २। क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी कहनेहारे झूठा दर्शन देखते और झूठे स्वप्न सुनाते और व्यर्थ शान्ति देते हैं इस कारण लोग भेड़बक-

(१) मूल में दमिश्क उस का विश्रामस्थान ।
(२) मूल में और उस के दांतों के बीच से उस की घिनौनी वस्तुएं । (३) मूल में सिय्योन् की बेटी ।
(४) मूल में यरूशलेम की बेटी ।

रियों की नाईं भटक गये और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पड़े ॥

३। मेरा कोप चरवाहों पर भड़का है और मैं उन्हें और बकरों को दण्ड दूंगा क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने भुण्ड अर्थात् यहूदा के घराने का हाल देखने को आएगा और लड़ाई में उन को अपना हृष्ट-पुष्ट घोड़ा सा बनाएगा ॥ ४। सो उसी में से कोने का पत्थर उसी में से खूंटी उसी में से युद्ध का धनुष्य उसी में से प्रधान सब के सब प्रगट होंगे ॥ ५। और वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो लड़ाई में अपने वैरियों को सड़कों की कीच की नाईं रौंदते हों और वे लड़ेंगे क्योंकि यहोवा उन के संग रहेगा इस कारण वे वीरता से लड़ेंगे और सवारों की आशा टूटेगी ॥ ६। और मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी करूंगा और यूसुफ के घराने का उद्धार करूंगा और मुझे जो उन पर दया आई इस कारण उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के देश में बसाऊंगा और वे ऐसे होंगे कि मानो मैं ने उन को मन से नहीं उतारा क्योंकि उन का परमेश्वर यहोवा हूं इस लिये उन की सुन लूंगा ॥ ७। और एप्रैमी लोग वीर के समान होंगे और उन का मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता है और यह देखकर उन के लड़केवाले आनन्द करेंगे और उन का मन यहोवा के कारण मगन होगा ॥ ८। मैं सीटी बजाकर उन को एकट्ठा करूंगा क्योंकि मैं उन का छुड़ानेहारा हूं और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे बढ़े थे ॥ ९। और मैं उन्हें जाति जाति के लोगों के बीच छितराऊंगा[1] और वे दूर दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे और अपने बालकों समेत जी जाएंगे तब लौट आएंगे ॥ १०। मैं उन्हें मिस्र देश से लौटा लाऊंगा और अश्शूर से एकट्ठा करूंगा और गिलाद् और लबानोन् के देशों में ले आकर इतना बढ़ाऊंगा कि वहां उन की समाई न होगी ॥ ११। और वह उस कष्टदाई समुद्र में से होकर उस की लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी[2] का सब गहिरा जल सूख जाएगा और अश्शूर् का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा ॥ १२। और मैं उन्हें यहोवा के द्वारा पराक्रमी करूंगा और वे उस के नाम से चलें फिरेंगे यहोवा की यही वाणी है ॥

(१) मूल में, बो दूंगा। (२) मूल में, योर्।

११. हे लबानोन् आग को रस्ता दे कि वह आकर तेरे देवदारुओं को भस्म करने पाए ॥ २। हे सनोवरो हाय हाय करो क्योंकि देवदारु गिर गया है और बड़े से बड़े वृक्ष नाश हो गये हैं हे बाशान् के बांज वृक्षो हाय हाय करो क्योंकि अगम्य वन काटा गया है ॥ ३। चरवाहों के हाहाकार का शब्द हो रहा है क्योंकि उन का विभव नाश हो गया है जवान सिंहों का गरजना सुनाई देता है क्योंकि यर्दन तीर का घना वन[1] नाश किया गया है ॥

४। मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दिई कि घात होनेहारी भेड़ बकरियों का चरवाहा हो जा ॥ ५। उन के मोल लेनेहारे उन्हें घात करने पर भी अपने को दोषी नहीं जानते और उन के बेचनेहारे कहते हैं कि यहोवा धन्य है हम धनी हो गये हैं और उन के चरवाहे उन पर कुछ दया नहीं करते ॥ ६। सो यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस देश के रहनेहारों पर फिर दया न करूंगा वरन मैं मनुष्यों को एक दूसरे के हाथ में और उन के राजा के हाथ में पकड़वा दूंगा और वे इस देश को नाश करेंगे और मैं इस के रहनेहारों को उन के वश से न छुड़ाऊंगा ॥ ७। सो मैं घात होनेहारी भेड़ बकरियों को और विशेष करके उन में से जो गरीब थीं उन को चराने लगा और मैं ने दो लाठियां लिईं एक का नाम मैं ने मनोहरता रक्खा और दूसरी का नाम बंधन इन के लिये हुए मैं उन भेड़ बकरियों को चराने लगा ॥ ८। और मैं ने उन के तीनों चरवाहों को एक महीने में विलाय दिया और मैं उन के कारण अधीर था और वे मुझ से घिन करती थीं ॥ ९। तब मैं ने उन से कहा मैं तुम को

(१) मूल में अपने किवाड़ खोल।
(२) मूल में गर्व।

न चराऊंगा तुम में से जो मरे सो मरे और जो विलाए सो विलाए और जो बची रहें सो एक दूसरे का मांस खाएं ॥ १० । और मैं ने अपनी वह लाठी जिस का नाम मनोहरता था तोड़ डाली कि जो वाचा मैं ने सब अन्यजातियों के साथ बांधी थी उसे तोड़ूं ॥ ११ । सो वह उसी दिन तोड़ी गई और इस से गरीब भेड़ बकरियां जो मुझे ताकती रहीं उन्हों ने जान लिया कि यह यहोवा का वचन है ॥ १२ । तब मैं ने उन से कहा यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजूरी दो और नहीं तो मत दो सो उन्हों ने मेरी मजूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिये ॥ १३ । तब यहोवा ने मुझ से कहा इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे अर्थात् यह क्या ही भारी दाम है जो उन्हों ने मेरा ठहराया है सो मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया ॥ १४ । और मैं ने अपनी दूसरी लाठी जिस का नाम बन्धन था इसलिये तोड़ डाली कि मैं उस भाई भाई के से नाते को जो यहूदा और इस्राएल् के बीच में है तोड़ूं ॥

१५ । तब यहोवा ने मुझ से कहा अब तू मूढ़ चरवाहे के हथियार ले ले ॥ १६ । क्योंकि मैं इस देश में ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो न खोई हुई को ढूंढ़ेगा न तितर बितर को एकट्ठी करेगा न घायलों को चंगी करेगा न जो भली चंगी हैं उन का पालन पोषण करेगा बरन मोटियों का मांस खाएगा और उन के खुरों को फाड़ डालेगा ॥ १७ । हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़ बकरियों को छोड़ जाता है उस की बांह और दहिनी आंख दोनों पर तलवार लगेगी तब उस की बांह सूख ही जाएगी और उस की दहिनी आंख बैठ ही जाएगी ॥

१२. इस्राएल् के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ।

यहोवा जो आकाश का ताननेहारा और पृथिवी की नेव डालनेहारा और मनुष्य के आत्मा का रचनेहारा है उस की यह वाणी है कि, २ । सुनो मैं यरूशलेम् को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूंगा और जब यरूशलेम् घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा ऐसी ही होगी ॥ ३ । और उस समय पृथिवी की सारी जातियां यरूशलेम् के विरुद्ध एकट्ठी होंगी तब मैं उस को इतना भारी पत्थर बनाऊंगा कि उन सभों में से जितने उस को उठाने लगें सो बहुत ही घायल होंगे ॥ ४ । यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं हर एक घोड़े को घबरा दूंगा और उस के सवार को बौरहा करूंगा और मैं यहूदा के घराने पर कृपादृष्टि रक्खूंगा पर अन्यजातियों के सब घोड़ों को अन्धा कर डालूंगा ॥ ५ । तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे कि यरूशलेम् के निवासी अपने परमेश्वर सेनाओं की यहोवा की सहायता से मेरे सहायक बनेंगे ॥ ६ । उस समय मैं यहूदा के अधिपतियों को ऐसा कर दूंगा जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अंगेठी वा पूले में जलती हुई मशाल होती है अर्थात् वे दहिने बांयें पर चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे और यरूशलेम् जहां अब बसी है वहीं यरूशलेम ही में बसी रहेगी ॥ ७ । और यहोवा पहिले यहूदा के तंबुओं का उद्धार करेगा कहीं ऐसा न हो कि दाऊद का घराना और यरूशलेम् के निवासी अपने अपने विभव के कारण यहूदा के विरुद्ध बड़ाई मारें ॥ ८ । उस समय यहोवा यरूशलेम् के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा और उस समय उन में से जो ठोकर खानेहारा हो सो दाऊद के समान होगा और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उन के आगे आगे चलता था ॥ ९ । और उस समय मैं उन सब जातियों को जो यरूशलेम् पर चढ़ाई करेंगे नाश करने का यत्न करूंगा ॥ १० । और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम् के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेहारा[1] और प्रार्थना सिखानेहारा[2] आत्मा उण्डेलूंगा सो वे मुझे अर्थात् जिसे उन्हों ने बेधा उसे ताकेंगे और उस के लिये ऐसे रोएं पीटेंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते पीटते हैं और ऐसा भारी शोक करेंगे जैसा पहिलौठे पर करते हैं ॥ ११ ।

(१) मूल में का । (२) मूल में ऐसे कहने के

उस समय यरूशलेम् में इतना रोना पीटना होगा जैसा मगिद्दोन् की तराई में के हदद्रिम्मोन् में हुआ था ॥ १२ । बरन सारे देश में विलाप एक एक कुल में अलग अलग होगा अर्थात् दाऊद के घराने का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग नातान् के घराने का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग ॥ १३ । लेवी के घराने का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग शिमीयों का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग, १४ । निदान जितने कुल रह गये हों एक एक कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग ॥

१३. उसी समय दाऊद के घराने और यरूशलेम् के निवासियों के लिये पाप और मलिनता धोने के निमित्त बहता हुआ सोता होगा ॥ २ । और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं इस देश में से मूरतों के नाम मिटा डालूंगा और वे फिर स्मरण में न रहेंगी और मैं नबियों और अशुद्ध आत्मा को इस देश में से निकाल दूंगा ॥ ३ । और यदि कोई फिर नबूवत करे तो उस के माता पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उस से कहेंगे कि तू जीता न बचेगा क्योंकि तू ने यहोवा के नाम से झूठ कहा है सो जब वह नबूवत करे तब उस के माता पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उस को बेध डालेंगे ॥ ४ । और उस समय नबी लोग नबूवत करते हुए अपने अपने दर्शन से लज्जित होंगे और न वे धोखा देने के लिये कम्बल का वस्त्र पहिनेंगे ॥ ५ । बरन एक एक कहेगा कि मैं नबी नहीं किसान हूं और लड़कपन ही से मैं औरों का दास हूं ॥ ६ । तब उस से यह पूछा जाएगा कि तेरी छाती में ये घाव कैसे हुए[1] और वह कहेगा ये वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे लगे हैं ॥

७ । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि हे तलवार मेरे ठहराये हुए चरवाहे के विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा सजाति है उस के विरुद्ध चल तू उस चरवाहे को काट तब भेड़ बकरियां तितर बितर हो जाएंगी पर बच्चों पर मैं अपने हाथ फेरूंगा ॥ ८ । यहोवा की यह भी वाणी है कि इस देश के सारे निवासियों की दो तिहाई मार डाली जाएंगी और बची हुई तिहाई उस में बनी रहेगी ॥ ९ । इस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूंगा जैसा रूपा निर्मल किया जाता है और ऐसा जांचूंगा जैसा सोना जांचा जाता है सो वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे और मैं उन की सुनूंगा मैं तो उन के विषय कहूंगा कि ये मेरी प्रजा हैं और वे मेरे विषय कहेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है ॥

१४. सुनो यहोवा का ऐसा एक दिन आनेहारा है कि तेरा धन लूटकर तेरे बीच में बांट लिया जाएगा ॥ २ । क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम् से लड़ने के लिये एकट्ठा करूंगा और वह नगर ले लिया जाएगा और घर लूटे जाएंगे और स्त्रियां भ्रष्ट किई जाएंगी और नगर के आधे लोग बन्धुआई में जाएंगे पर प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहने पाएंगे ॥ ३ । तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था ॥ ४ । और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर जो पूरब ओर यरूशलेम् के साम्हने है पांव धरेगा तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पच्छिम लों बीचों बीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा सो आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन की ओर हट जाएगा ॥ ५ । तब तुम मेरे बनाये हुए उस खड्ड से होकर भाग जाओगे क्योंकि वह खड्ड आसेल् लों पहुंचेगा बरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भूईंडोल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जिय्याह् के दिनों में हुआ था । तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा और सब पवित्र लोग तेरे साथ होंगे ॥ ६ । उस समय कुछ उजियाला न रहेगा क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएंगे ॥ ७ । और वह एक ही दिन होगा जिसे यहोवा ही जानता है न तो दिन होगा और न रात होगी पर सांझ को उजियाला होगा ॥ ८ । और उस समय यरूशलेम् से बहता हुआ जल फूट निकलेगा उस की एक शाखा पूरब के ताल

(१) मूल में तेरे हाथों के बीच ये क्या घाव हैं ।

और दूसरी पच्छिम के समुद्र की ओर बहेगी और धूप के दिनों में और जाड़े के दिनों में बराबर बहती रहेगी ॥ ९ । तब यहोवा सारी पृथिवी का राजा होगा और उस समय यहोवा एक ही और उस का नाम एक ही माना जाएगा ॥ १० । गेबा से लेकर यरूशलेम् की दक्खिन ओर के रिम्मोन् लों सारी भूमि अराबा के समान हो जाएगी और वह ऊंची होकर बिन्यामीन् के फाटक से लेके पहिले फाटक के स्थान लों और कोनेवाले फाटक लों और हननेल् के गुम्मट से लेकर राजा के दाखरसकुण्डों लों अपने स्थान में बसेगी ॥ ११ । और लोग उस में बसेंगे और फिर सत्यानाश का साप न होगा और यरूशलेम् बेखटके बसी रहेगी ॥ १२ । और जितनी जातियों ने यरूशलेम् से युद्ध किया हो उन सभों को यहोवा ऐसी मार से मारेगा कि खड़े खड़े उन का मांस सड़ जाएगा और उन की आंखें अपने गोलकों में सड़ जाएंगी और उन की जीभ उन के मुंह में सड़ जाएगी ॥ १३ । और उस समय यहोवा की ओर से उन में बड़ी घबराहट पैठेगी और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे और एक दूसरे पर अपने अपने हाथ उठाएंगे ॥ १४ । और यहूदा भी यरूशलेम् में लड़ेगा और सोना चान्दी वस्त्र आदि चारों ओर की सब जातियों की धन संपत्ति उस में बटोरी जाएगी ॥ १५ । और घोड़े खच्चर ऊंट और गदहे बरन जितने पशु उन की छावनियों में होंगे सो भी ऐसी मार से मारे जाएंगे ॥ १६ । और यरूशलेम् पर चढ़नेहारी सब जातियों में से जितने लोग बचे रहेंगे सो बरस बरस राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिये यरूशलेम् को जाया करेंगे ॥ १७ । और पृथिवी के कुलों में से जो लोग यरूशलेम् में राजा अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिये न जाएं उन के यहां वर्षा न होगी ॥ १८ । और यदि मिस्र का कुल वहां न आए तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिस से यहोवा उन जातियों को मारेगा जो झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिये न जाएं ॥ १९ । यह मिस्र का पाप और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा जो झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिये न जाएं ॥ २० । उस समय घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा रहेगा कि यहोवा के लिये पवित्र और यहोवा के भवन की हंडियां उन कटोरों के तुल्य पवित्र ठहरेंगी जो वेदी के साम्हने रहते हैं ॥ २१ । बरन यरूशलेम् में और यहूदा देश में सब हंडियां सेनाओं के यहोवा के लिये पवित्र ठहरेंगी और सब मेलबलि करनेहारे आ आकर उन हंडियों में मांस सिझाया करेंगे और उस समय सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर कोई कनानी न पाया जाएगा ॥

मलाकी ।

---

१. मलाकी के द्वारा इस्राएल् के विषय यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ॥

२ । यहोवा यह कहता है कि मैं ने तुम से प्रेम किया है पर तुम पूछते हो कि तू ने किस बात में हम से प्रेम किया है यहोवा की यह वाणी है कि क्या एसाव् याकूब का भाई न था तौभी मैं ने याकूब से प्रेम किया, ३ । पर एसाव को अप्रिय जानकर उस के पहाड़ों को उजाड़ डाला और उस के भाग को जंगल के गीदड़ों का कर दिया है ॥ ४ । एदोम् तो कहता है कि हमारा देश उजड़ गया है पर हम खंडहरों को फिरकर बसाएंगे सो सेनाओं का यहोवा

यों कहता है कि वे तो बनाएंगे पर मैं ढा दूंगा और उन का नाम दुष्ट जाति पड़ेगा और वे ऐसे लोग कहाएंगे जिन पर यहोवा सदा क्रोधित रहेगा ॥ ५ । और तुम अपनी आंखों से यह देखकर कहोगे कि यहोवा इस्राएल् की छोड़ और जातियों में भी[1] महान् ठहरेगा ॥

६ । पुत्र पिता का और दास स्वामी का आदर करता है सो मैं जो पिता हूं सो मेरा आदर कहां और मैं जो स्वामी हूं सो मेरा भय मानना कहां । सेनाओं का यहोवा तुम याजकों से जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है पर तुम पूछते हो कि हम ने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है ॥ ७ । तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो तौभी तुम पूछते हो कि हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते हैं इस बात में कि तुम कहते हो कि यहोवा की मेज तुच्छ है ॥ ८ । फिर जब तुम अंधे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते तो क्या यह बुरा नहीं और जब तुम लंगड़े वा रोगी पशु को ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ तो क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

९ । अब ईश्वर से बिनती करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे यह तुम्हारे हाथ से हुआ है क्या तुम समझते हो कि ईश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा सेनाओं का यहोवा का यही वचन है ॥ १० । भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग बारने न पाते सेनाओं के यहोवा का यह वचन है कि मैं तुम से कुछ भी सन्तुष्ट नहीं और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करूंगा ॥ ११ । उदयाचल से लेकर अस्ताचल लों अन्यजातियों में तो मेरा नाम बड़ा है और हर कहीं धूप और शुद्ध भेंट मेरे नाम पर चढ़ाई जाती है क्योंकि अन्यजातियों में मेरा नाम बड़ा है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ १२ । पर तुम लोग उस को यह कहकर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज अशुद्ध है और उस पर से जो भोजनवस्तु मिलती है सो तुच्छ है ॥ १३ । फिर तुम कहते हो कि यह कैसे बड़े क्लेश का काम है और सेनाओं के यहोवा का यह वचन है कि तुम ने उस भोजनवस्तु से नाक सिकोड़ी है और चोरी के और लंगड़े और रोगी पशु की भेंट ले आते हो फिर क्या मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूं यहोवा का यही वचन है ॥ १४ । जिस छली के झुण्ड में नरपशु हो पर वह मन्नत मानकर प्रभु को बर्जा हुआ पशु चढ़ाए वह शापित है मैं तो बड़ा राजा हूं और मेरा नाम अन्यजातियों में भययोग्य है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

(१) मूल में इस्राएल् के सिवाने की परली ओर ।

२. और अब हे याजको यह आज्ञा तुम्हारे लिये है ॥ २ । यदि तुम इसे न सुनो और न मन लगाकर मेरे नाम का आदर करो तो सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को शाप दूंगा और जो वस्तुएं मेरी आशीष से तुम्हें मिली हैं उन् पर मेरा शाप पड़ेगा वरन तुम जो मन नहीं लगाते इस कारण मेरा शाप उनपर पड़ चुका है ॥ ३ । सुनो मैं तुम्हारे खेतों के बीज को जमने न दूंगा[1] और तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे पर्वों के यज्ञपशुओं का मल फेंकूंगा[2] और उस के संग तुम भी उठा लिये जाओगे ॥ ४ । तब तुम जानोगे कि मैं ने तुम को यह आज्ञा इस लिये दिलाई है कि लेवी के साथ मेरी बंधी हुई वाचा बनी रहे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ ५ । मेरी जो वाचा उस के साथ बंधी वह जीवन और शांति की है और मैं ने उन्हें उस को इस लिये दिये कि वह भय माने और उस ने मेरा भय मान भी लिया और मेरे नाम से अत्यन्त भय खाता था ॥ ६ । उस को मेरी सच्ची व्यवस्था कंठ थी और उस के मुंह से कुटिल बात न निकलती थी वह शांति और सीधाई से मेरे संग संग चलता था और बहुतों को अधर्म्म से फेर लेता था ॥ ७ ।

(१) मूल में, मैं तुम्हारे कारण बीज को घुड़कूंगा ।
(२) मूल में फैलाऊंगा ।

याजक को तो चाहिये कि वह अपने होंठों से ज्ञान की रक्षा करे और लोग उस के मुंह से व्यवस्था पूछें क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है॥ ८। पर तुम लोग धर्म्म के मार्ग से आप हट गये तुम ने बहुतों को भी व्यवस्था के विषय ठोकर खिलाई है तुम ने लेवी की वाचा को तोड़ दिया है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥ ९। सो मैं ने भी तुम को सब लोगों के साम्हने तुच्छ और नीच कर दिया है क्योंकि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते बरन व्यवस्था देने में मुंह देखा विचार करते हो॥

१०। क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं क्या एक ही ईश्वर ने हम को नहीं सिरजा हम क्यों एक दूसरे का विश्वासघात करके अपने पितरों की वाचा को तोड़ देते हैं॥ ११। यहूदा ने विश्वासघात किया है और इस्राएल् में और यरूशलेम् में घिनौना काम किया गया है कैसे कि यहूदा ने बिराने देवता की कन्या से विवाह करके यहोवा के पवित्र स्थान को जो उस का प्रिय है अपवित्र किया है॥ १२। जो पुरुष ऐसा काम करे उस से सेनाओं का यहोवा उस के घर के रक्षक और सेनाओं के यहोवा की भेंट चढ़ानेहारे को यहूदा के तंबुओं में से नाश करे॥ १३। फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेहारों और सांस भरनेहारों को आंसुओं से भिगो दिया है यहां लों कि वह तुम्हारी भेंट की ओर दृष्टि नहीं करता और न प्रसन्न होकर उस को तुम्हारे हाथ से ग्रहण करता है तौभी तुम पूछते हो कि क्यों॥ १४। इस कारण कि यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और व्याही हुई स्त्री के बीच साक्षी हुआ जिस का तू ने विश्वासघात किया है॥ १५। क्या उस ने एक ही को नहीं बनाया तौभी शेष आत्मा उस के पास था[१] और एक ही क्यों इस लिये कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान चाहता था सो तुम अपने आत्मा के विषय चौकस रहो और तुम में से कोई अपनी जवानी की स्त्री में विश्वासघात न करे॥ १६। क्योंकि इस्राएल् का परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि मैं स्त्रीत्याग से घिन करता हूं और उस से भी जो अपने वस्त्र पर उपद्रव करता है सो तुम अपने आत्मा के विषय में चौकस रहो सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

१७। तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में उसे उकता दिया इस में कि तुम कहते हो कि जो कोई बुरा करता है सो यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है वा यह कि न्यायी परमेश्वर कहां रहा॥

(१) वा क्या एक ही पुरुष ने ऐसा किया जिस में आत्मा कुछ भी रहा था।

३. सुनो मैं अपने दूत को भेजता हूं और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा और वह प्रभु जिसे तुम ढूंढ़ते हो अचानक अपने मन्दिर में आएगा अर्थात् वाचा का वह दूत जिसे तुम चाहते हो सुनो वह आता है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥ २। पर उस के आने का दिन कौन सह सकेगा और जब वह दिखाई दे तब कौन खड़ा रह सकेगा क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है॥ ३। और वह रूपे का तावनेहारा और शुद्ध करनेहारा बन बैठेगा और लेवीयों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा तब वे यहोवा की भेंट धर्म्म से चढ़ाएंगे॥ ४। तब यहूदा और यरूशलेम् में की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी जैसी पहिले दिनों और प्राचीनकाल में भावती थी॥ ५। और मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा और टोनहों और व्यभिचारियों और झूठी किरिया खानेहारों के विरुद्ध और जो मजूर की मजूरी को दबाते और विधवा और बपमूए पर अंधेर करते और परदेशी का न्याय बिगाड़ते और मेरा भय नहीं मानते उन सभों के विरुद्ध में फुर्ती से साक्षी दूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥ ६। मैं यहोवा तो बदला नहीं इसी कारण हे याकूबियो तुम नाश नहीं हुए॥

७। अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आये हो और उन्हें पालन नहीं

करते मेरी ओर फिरो तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है पर तुम पूछते हो कि हम किस बात में फिरें ॥ ८। क्या मनुष्य परमेश्वर को भांसे देखो तुम तो मुझ को भांसते हो तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे भांसा है दशमांस और उठाने की भेंटों में ॥ ९। तुम पर भारी साप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे भांसते हो बरन यह सारी जाति ऐसा करती है ॥ १०। सारे दशमांश को भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे और सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर बेपरिमाण आशीश बरसाऊंगा कि नहीं ॥ ११। और मैं तुम्हारे कारण नाश करनेहारे को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ १२। और सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश[१] मनोहर देश होगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

१३। यहोवा यह कहता है कि तुम ने मेरे विरुद्ध ढिठाई की बातें कही हैं पर तुम पूछते हो कि हम तेरे विरुद्ध आपस में क्या बोले हैं ॥ १४। तुम ने कहा है कि परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है और हम ने जो उस के सौंपे हुए कामों को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए चले हैं इस से क्या लाभ हुआ ॥ १५। और अब हम अभिमानी लोगों को धन्य कहते हैं क्योंकि दुराचारी तो बन गये हैं बरन वे परमेश्वर की परीक्षा करने पर भी बच गये हैं ॥ १६। तब यहोवा का भय माननेहारे आपस में बात करते थे और यहोवा ध्यान धरकर उन की सुनता था और जो यहोवा का भय मानते और उस के नाम का संमान करते थे उन के स्मरण के निमित्त उस के साम्हने एक पुस्तक लिखी जाती थी ॥ १७। सो सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जो दिन मैं ने ठहराया है उस दिन वे लोग मेरे बरन मेरा निज धन ठहरेंगे और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा जैसी कोई अपने सेवा करनेहारे पुत्र से करे ॥ १८। तब तुम फिरकर धर्म्मी और दुष्ट का भेद अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है और जो उस की सेवा नहीं करता उन

४. दोनों का भेद पहिचान सकोगे ॥ १। क्योंकि सुनो वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है तब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे और उस आनेहारे दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उन का पता तक न रहेगा[१] सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥ २। पर तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो धर्म्म का सूर्य्य उदय होगा और उस की किरणों के द्वारा से तुम चंगे हो जाओगे[२] और निकलकर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदो फांदोगे ॥ ३। तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे अर्थात् मेरे उस ठहराये हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

४। मेरे दास मूसा की व्यवस्था अर्थात् जो जो विधि और नियम मैं ने सारे इस्राएलियों के लिये उस को होरेब् में दिये थे उन को स्मरण रक्खो ॥ ५। सुनो यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा ॥ ६। और वह पितरों[३] के मन को उन के पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को उन के पितरों[३] की ओर फेरेगा ऐसा न हो कि मैं आकर पृथिवी को सत्यानाश करूं ॥

(१) मूल में तुम।

(१) मूल में उन को न जड़ न डालिया छोड़ेगा।
(२) मूल में उस के पखों में चंगापन।
(३) वा माता पिता।

THE
NEW TESTAMENT
IN HINDI

धर्म्मपुस्तक का अन्तभाग

अर्थात

मत्ती औ मार्क औ लूक औ योहनरचित

प्रभु यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार ।

और

प्रेरितों की क्रियाओं का बृत्तान्त ।

और

धर्म्मोपदेश और भविष्यद्वाक्य की पत्रियां ।

जो

यूनानी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं ।

BRITISH AND FOREIGN BIBLE SOCIETY
(NORTH INDIA AUXILIARY)
ALLAHABAD

1914

मत्ती रचित सुसमाचार ।

१. इब्राहीम के सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु खीष्ट की बंशावलि ॥ २। इब्राहीम का पुत्र इसहाक इसहाक का पुत्र याकूब याकूब के पुत्र यिहूदा और उस के भाई हुए ॥ ३। तामर से यिहूदा के पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरस का पुत्र हिस्रोन हिस्रोन का पुत्र अराम ॥ ४। अराम का पुत्र अम्मीनादब अम्मीनादब का पुत्र नहशोन नहशोन का पुत्र सलमोन ॥ ५। राहब से सलमोन का पुत्र बोअस हुआ रूत से बोअस का पुत्र ओबेद हुआ ओबेद का पुत्र यिशी ॥ ६। यिशी का पुत्र दाऊद राजा ऊरियाह की बिधवा से दाऊद राजा का पुत्र सुलेमान हुआ ॥ ७। सुलेमान का पुत्र रिहबुआम रिहबुआम का पुत्र अबियाह अबियाह का पुत्र आसा ॥ ८। आसा का पुत्र यिहोशाफट यिहोशाफट का पुत्र यिहोरम यिहोरम का सन्तान उज्जियाह ॥ ९। उज्जियाह का पुत्र योथम योथम का पुत्र आहस आहस का पुत्र हिजकियाह ॥ १०। हिजकियाह का पुत्र मनस्सी मनस्सी का पुत्र आमोन आमोन का पुत्र योशियाह ॥ ११। बाबुल नगर को जाने के समय में योशियाह के सन्तान यिखनियाह और उस के भाई हुए ॥ १२। बाबुल को जाने के पीछे यिखनियाह का पुत्र शलतिएल शलतिएल का पुत्र जिरुब्बाबुल ॥ १३। जिरुब्बाबुल का पुत्र अबीहूद अबीहूद का पुत्र इलियाकीम इलियाकीम का पुत्र असोर ॥ १४। असोर का पुत्र सादोक सादोक का पुत्र आखीम आखीम का पुत्र इलीहूद ॥ १५। इलीहूद का पुत्र इलियाजर इलियाजर का पुत्र मत्तान मत्तान का पुत्र याकूब ॥ १६। याकूब का पुत्र यूसफ जो मरियम का स्वामी था जिस से यीशु जो खीष्ट कहावता है उत्पन्न हुआ ॥ १७। सो सब पीढ़ियां इब्राहीम से दाऊद लों चौदह पीढ़ी और दाऊद से बाबुल को जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को जाने के समय से खीष्ट लों चौदह पीढ़ी थीं ॥

१८। यीशु खीष्ट का जन्म इस रीति से हुआ। उस की माता मरियम की यूसफ से मंगनी हुई थी पर उन के एकट्ठे होने के पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मा से गर्भवती है ॥ १९। तब उस के स्वामी यूसफ ने जो धर्म्मी मनुष्य था और उस पर प्रगट में कलंक लगाने नहीं चाहता था उसे चुपके से त्यागने की इच्छा किई ॥ २०। जब वह इन बातों की चिन्ता करता था देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन दे कहा हे दाऊद के सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि उस को जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मा से है ॥ २१। वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा ॥ २२। यह सब इस लिये हुआ कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था सो पूरा होवे ॥ २३। कि देखो कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और वे उस का नाम इम्मानुएल रखेंगे जिस का अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग ॥ २४। तब यूसफ ने नींद से उठके जैसा परमेश्वर के दूत ने उसे आज्ञा दिई थी वैसा किया और अपनी स्त्री को अपने यहां लाया ॥ २५। परन्तु जब लों वह अपना पहिलौठा पुत्र न जनी तब लों उस को न जाना और उस ने उस का नाम यीशु रखा ॥

२. हेरोद राजा के दिनों में जब यिहूदिया देश के बैतलहम नगर में यीशु का जन्म हुआ तब देखो पूर्व्व से कितने ज्योतिषी यिरूशलीम नगर में आये ॥ २। और बोले यिहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है कहां है क्योंकि हम ने पूर्व्व में उस का तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आये हैं ॥ ३। यह सुनके हेरोद राजा और उस के साथ सारे यिरूशलीम के निवासी घबरा गये ॥ ४। और उस ने लोगों के सब प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे कर उन से पूछा खीष्ट

कहां जन्मेगा ॥ ५। उन्हों ने उस से कहा यिहूदिया के बैतलहम नगर में क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यूं लिखा गया है ॥ ६। कि हे यिहूदा देश के बैतलहम तू किसी रीति से यहूदा की राजधानियों में सब से छोटी नहीं है क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा जो मेरे इसायेली लोग का चरवाहा होगा ॥ ७। तब हेरोद ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाके उन्हें यत्न से पूछा कि तारा किस समय दिखाई दिया ॥ ८। और उस ने यह कहके उन्हें बैतलहम भेजा कि जाके उस बालक के विषय में यत्न से बूझो और जब उसे पावो तब मुझे संदेश देओ कि मैं भी जाके उस को प्रणाम करूं ॥ ९। वे राजा की सुनके चले गये और देखो जो तारा उन्हों ने पूर्व्व में देखा था सो उन के आगे आगे चला यहां लों कि जहां बालक था उस के स्थान के ऊपर पहुंचके ठहर गया ॥ १०। वे उस तारे को देखके अत्यन्त आनन्दित हुए ॥ ११। और घर में पहुंचके उन्हों ने बालक को उस की माता मरियम के संग देखा और दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और अपनी संपत्ति खोलके उस को सोना और लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई ॥ १२। और स्वप्न में ईश्वर से यह आज्ञा पाके कि हेरोद के पास मत फिर जाओ वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गये ॥

१३। उन के जाने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में यूसफ को दर्शन दे कहा उठ बालक और उस की माता को लेके मिसर देश को भाग जा और जब लों मैं तुझे न कहूं तब लों वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करने के लिये बालक को ढूंढ़ेगा ॥ १४। वह उठ रात ही को बालक और उस की माता को लेके मिसर को चला गया ॥ १५। और हेरोद के मरने लों वहीं रहा कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर में से बुलाया सो पूरा होवे ॥

१६। जब हेरोद ने देखा कि ज्योतिषियों ने मुझ से ठट्ठा किया है तब अति क्रोधित हुआ और लोगों को भेजके जिस समय को उस ने ज्योतिषियों से यत्न से पूछा था उस समय के अनुसार बैतलहम में और उस के सारे सिवानों में के सब बालकों को जो दो बरस के और दो बरस से छोटे थे मरवा डाला ॥ १७। तब जो वचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था सो पूरा हुआ ॥ १८। कि रामा नगर में एक शब्द अर्थात हाहाकार और रोना और बड़ा बिलाप सुना गया राहेल अपने बालकों के लिये रोती थी और शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं ॥

१९। हेरोद के मरने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने मिसर में यूसफ को स्वप्न में दर्शन दे कहा ॥ २०। उठ बालक और उस की माता को लेके इसायेल देश को जा क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं ॥ २१। तब वह उठ बालक और उस की माता को लेके इसायेल देश में आया ॥ २२। परन्तु जब उस ने सुना कि अर्खिलाव अपने पिता हेरोद के स्थान में यिहूदिया का राजा हुआ है तब वहां जाने से डरा और स्वप्न में ईश्वर से आज्ञा पाके गालील के सिवानों में गया ॥ २३। और नासरत नाम एक नगर में आके वास किया कि जो वचन भविष्यद्वक्ताओं से कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे ॥

३. उन दिनों में योहन बपतिसमा देनेहारा आके यिहूदिया के जंगल में उपदेश करने लगा ॥ २। और कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है ॥ ३। यह वही है जिस के विषय में यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पथ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो ॥ ४। इस योहन का वस्त्र ऊंट के रोम का था और उस की कटि में चमड़े का पटुका बंधा था और उस का भोजन टिड्डियां और वन मधु था ॥ ५। तब यिरूशलीम के और सारे यिहूदिया के और यर्दन नदी के आसपास सारे देश के रहनहारे उस पास निकल आये ॥ ६। और अपने अपने पापों को मानके यर्दन में उस से बपतिसमा लिया ॥

७। जब उस ने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियों को उस से बपतिसमा लेने को आते देखा तब उन

से कहा हे साँपों के वंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को चिताया है ॥ ८ । पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ ॥ ९ । और अपने अपने मन में यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है ॥ १० । और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है ॥ ११ । मैं तो तुम्हें पश्चात्ताप के लिये जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस की जूतियां उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा ॥ १२ । उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और अपने गेहूं को खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा ॥

१३ । तब यीशु योहन से बपतिसमा लेने को उस पास गालील से यर्दन के तीर पर आया ॥ १४ । परन्तु योहन यह कहके उसे वर्जने लगा कि मुझे आप के हाथ से बपतिसमा लेना अवश्य है और क्या आप मेरे पास आते हैं ॥ १५ । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म्म को पूरा करना हमें चाहिये तब उस ने होने दिया ॥ १६ । यीशु बपतिसमा लेके तुरन्त जल से ऊपर आया और देखो उस के लिये स्वर्ग खुल गया और उस ने ईश्वर के आत्मा को कपोत की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा ॥ १७ । और देखो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं ॥

४. तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान से उस की परीक्षा किई जाय ॥ २ । वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ ॥ ३ । तब परीक्षा करनेहारे ने उस पास आ कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें ॥ ४ । उस ने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु हर एक बात से जो ईश्वर के मुख से निकलती है जीयेगा ॥ ५ । तब शैतान ने उस को पवित्र नगर में ले जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा किया ॥ ६ । और उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे ॥ ७ । यीशु ने उस से कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर ॥ ८ । फिर शैतान ने उसे एक अति ऊंचे पर्व्वत पर ले जाके उस को जगत के सब राज्य और उन का विभव दिखाये ॥ ९ । और उस से कहा जो तू दंडवत कर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा ॥ १० । तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर ॥ ११ । तब शैतान ने उस को छोड़ा और देखो स्वर्गदूतों ने आ उस की सेवा किई ॥

१२ । जब यीशु ने सुना कि योहन बन्दीगृह में डाला गया तब गालील को चला गया ॥ १३ । और नासरत नगर को छोड़के उस ने कफर्नाहुम नगर में जो समुद्र के तीर पर जिबुलून और नप्ताली के वंशों के सिवानों में है आके बास किया ॥ १४ । कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे ॥ १५ । कि जिबुलून का देश और नप्ताली का देश समुद्र की ओर यर्दन के उस पार अन्यदेशियों का गालील ॥ १६ । जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई ॥

१७ । उस समय से यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है ॥ १८ । यीशु ने गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए दो भाइयों को अर्थात शिमोन को जो पितर कहावता है और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे ॥ १९ । उस ने उन से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को

मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा ॥ २० । वे तुरन्त जालों को छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥ २१ । वहां से आगे बढ़के उस ने और दो भाइयों को अर्थात जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को अपने पिता जबदी के संग नाव पर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें बुलाया ॥ २२ । और वे तुरन्त नाव को और अपने पिता को छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

२३ । तब यीशु सारे गालील देश में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ फिरा किया ॥ २४ । उस की कीर्त्ति सब सुरिया देश में भी फैल गई और लोग सब रोगियों को जो नाना प्रकार के रोगों औ पीड़ाओं से दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियों को उस पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया ॥ २५ । और गालील और दिकापलि और यिरूशलीम और यिहूदिया से और यर्दन के उस पार से बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई ॥

५. यीशु भीड़ को देखके पर्व्वत पर चढ़ गया और जब वह बैठा तब उस के शिष्य उस पास आये ॥ २ । और वह अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा ॥

३ । धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ॥ ४ । धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे ॥ ५ । धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवी के अधिकारी होंगे ॥ ६ । धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे ॥ ७ । धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया किई जायगी ॥ ८ । धन्य वे जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे ॥ ९ । धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वर के सन्तान कहावेंगे ॥ १० । धन्य वे जो धर्म्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ॥ ११ । धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बुरी बात कहें ॥ १२ । आनन्दित और आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे . उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से आगे थे इसी रीति से सताया ॥

१३ । तुम पृथिवी के लोण हो परन्तु यदि लोण का स्वाद बिगड़ जाय तो वह किस से लोणा किया जायगा . वह तब से किसी काम का नहीं केवल बाहर फेंके जाने और मनुष्यों के पांवों से रौंदे जाने के योग्य है ॥ १४ । तुम जगत के प्रकाश हो . जो नगर पहाड़ पर बसा है सो छिप नहीं सकता ॥ १५ । और लोग दीपक को बारके बर्त्तन के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं और वह सभों को जो घर में हैं ज्योति देता है ॥ १६ । वैसे ही तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के आगे चमके इस लिये कि वे तुम्हारे भले कामों को देखके तुम्हारे स्वर्गवासी पिता का गुणानुवाद करें ॥

१७ । मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक लोप करने को आया हूं मैं लोप करने को नहीं परन्तु पूरा करने को आया हूं ॥ १८ । क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों आकाश औ पृथिवी टल न जायें तब लों व्यवस्था से एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा हुए नहीं टलेगा ॥ १९ । इस लिये जो कोई इन अति छोटी आज्ञाओं में से एक को लोप करे और लोगों को वैसे ही सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहावेगा परन्तु जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा ॥ २० । मैं तुम से कहता हूं यदि तुम्हारा धर्म्म अध्यापकों और फरीशियों के धर्म्म से अधिक न होवे तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे ॥

२१ । तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो विचारस्थान में दण्ड के योग्य होगा ॥ २२ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई अपने भाई से अकारण क्रोध करे सो विचार स्थान में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयों की सभा में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो नरक की आग के

दण्ड के योग्य होगा ॥ २३ । सो यदि तू अपना चढ़ावा बेदी पर लावे और वहां स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा वहां बेदी के साम्ने छोड़के चला जा ॥ २४ । पहिले अपने भाई से मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा ॥ २५ । जब लों तू अपने मुद्दई के संग मार्ग में है उस से बेग मिलाप कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायी को सौंपे और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और तू बन्दीगृह में डाला जाय ॥ २६ । मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा ॥

२७ । तुम ने सुना है कि अगले के लोगों से कहा गया था कि परस्त्रीगमन मत कर ॥ २८ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुइच्छा से दृष्टि करे वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका है ॥ २९ । जो तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय॥ ३०। और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय ॥

३१ । यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्री को त्यागे सो उस को त्यागपत्र देवे ॥ ३२ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागे सो उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ॥

३३ । फिर तुम ने सुना है कि अगले के लोगों से कहा गया था कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी किरियाओं को पूरी कर ॥ ३४ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की क्योंकि वह ईश्वर का सिंहासन है ॥ ३५ । न धरती की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है न यिरूशलीम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है ॥ ३६ । अपने सिर की भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला नहीं कर सकता है॥ ३७ । परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे . जो कुछ इन से अधिक है सो उस दुष्ट से होता है ॥

३८ । तुम ने सुना है कि कहा गया था कि आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत ॥ ३९ । पर मैं तुम से कहता हूं बुरे का साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थपेड़ा मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे ॥ ४० । जो तुझ पर नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे उस को दोहर भी लेने दे ॥ ४१ । जो कोई तुझे आध कोश बेगारी ले जाय उस के संग कोश भर चला जा ॥ ४२ । जो तुझ से मांगे उस को दे और जो तुझ से ऋण लेने चाहे उस से मुंह मत मोड़ ॥

४३ । तुम ने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी को प्यार कर और अपने बैरी से बैर कर ॥ ४४ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि अपने बैरियों को प्यार करो . जो तुम्हें स्राप देवें उन को आशीस देओ जो तुम से बैर करें उन से भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें उन के लिये प्रार्थना करो ॥ ४५ । जिस्तें तुम अपने स्वर्गवासी पिता के सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ भले लोगों पर अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों पर मेंह बरसाता है ॥ ४६ । जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे . क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं ॥ ४७ । और जो तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करो तो कौन सा बड़ा काम करते हो . क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं ॥ ४८ । सो जैसा तुम्हारा स्वर्गवासी पिता सिद्ध है तैसे तुम भी सिद्ध होओ ॥

६. सचेत रहो कि तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये उन के आगे अपने धर्म्म के कार्य्य न करो नहीं तो अपने स्वर्गवासी पिता से कुछ फल न पाओगे ॥

२ । इस लिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजवा जैसा कपटी लोग सभा के घरों और मार्गों में करते हैं कि मनुष्य उन की बड़ाई करें .

मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं ॥ ३ । परन्तु जब तू दान करे तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा बायां हाथ न जाने ॥ ४ । कि तेरा दान गुप्त में होय और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है आप ही तुझे प्रगट में फल देगा ॥

५ । जब तू प्रार्थना करे तब कपटियों के समान मत हो क्योंकि मनुष्यों को दिखाने के लिये सभा के घरों में और सड़कों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना करना उन को प्रिय लगता है . मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं ॥ ६ । परन्तु जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरी में जा और द्वार मून्द के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रगट में फल देगा ॥ ७ ॥ प्रार्थना करने में देवपूजकों की नाई बहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत बोलने से हमारी सुनी जायगी ॥ ८ । सो तुम उन के समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगने के पहिले तुम्हारा पिता जानता है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है ॥ ९ । तुम इस रीति से प्रार्थना करो . हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय ॥ १० । तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय ॥ ११ । हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे ॥ १२ । और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणों को क्षमा कर ॥ १३ । और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं . आमीन] ॥

१४ । जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा ॥ १५ । परन्तु जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ॥

१६ । जब तुम उपवास करो तब कपटियों के समान उदासरूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई देवें . मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं ॥ १७ । परन्तु जब तू उपवास करे तब अपने सिर पर तेल मल और अपना मुंह धो ॥ १८ । कि तू मनुष्यों को नहीं परन्तु अपने पिता को जो गुप्त में है उपवासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रगट में फल देगा ॥

१९ । अपने लिये पृथिवी पर धन का संचय मत करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते और चुराते हैं ॥ २० । परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन का संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं ॥ २१ । क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ॥ २२ । शरीर का दीपक आंख है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा ॥ २३ । परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा होगा . जो ज्योति तुझ में है सो यदि अंधकार है तो वह अंधकार कैसा बड़ा है ॥ २४ । कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो ॥ २५ । इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे . क्या भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा नहीं है ॥ २६ । आकाश के पंछियों को देखो . वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को पालता है . क्या तुम उन से बड़े नहीं हो ॥ २७ । तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु की डौल को एक हाथ भी बढ़ा सकता है ॥ २८ । और तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो . खेत के सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं ॥ २९ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के तुल्य विभूषित न था ॥ ३० । यदि ईश्वर खेत की घास को जो आज है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्प विश्वासियो क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरावेगा ॥ ३१ । सो तुम यह चिन्ता

मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या पहिरेंगे॥ ३२। देवपूजक लोग इन सब वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं का प्रयोजन है॥ ३३। पहिले ईश्वर के राज्य और उस के धर्म्म का खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगी॥ ३४। सो कल के लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी वस्तुओं के लिये आप ही चिन्ता करेगा. हर एक दिन के लिये उसी दिन का दुःख बहुत है॥

७. दूसरों का विचार मत करो कि तुम्हारा विचार न किया जाय॥ २। क्योंकि जिस विचार से तुम विचार करते हो उसी से तुम्हारा विचार किया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा॥ ३। जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और तेरे ही नेत्र में का लट्ठा तुझे नहीं सूझता॥ ४। अथवा तू अपने भाई से क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्र से यह तिनका निकालूं और देख तेरे ही नेत्र में लट्ठा है॥ ५। हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब तू अपने भाई के नेत्र से तिनका निकालने को अच्छी रीति से देखेगा॥ ६। पवित्र वस्तु कुत्तों को मत देओ और अपने मोतियों को सूअरों के आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांवों से रौंदें और फिरके तुम को फाड़ डालें॥

७। मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा॥ ८। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा॥ ९। तुम में से कौन मनुष्य है कि यदि उस का पुत्र उस से रोटी मांगे तो उस को पत्थर देगा॥ १०। और जो वह मछली मांगे तो क्या वह उस को सांप देगा॥ ११। सो यदि तुम बुरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गवासी पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं उत्तम वस्तु देगा॥ १२। जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो क्योंकि यही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक का सार है॥

१३। सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकर है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है और बहुत हैं जो उस से पैठते हैं॥ १४। वह फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

१५। झूठे भविष्यद्वक्ताओं से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तर में लुटेरे हुंड़ार हैं॥ १६। तुम उन के फलों से उन्हें पहिचानोगे. क्या मनुष्य कांटों के पेड़ से दाख अथवा ऊंटकटारे से गूलर तोड़ते हैं॥ १७। इसी रीति से हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल फलता है॥ १८। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल फल सकता है॥ १९। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है॥ २०। सो तुम उन के फलों से उन्हें पहिचानोगे॥

२१। हर एक जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गवासी पिता की इच्छा पर चलता है॥ २२। उस दिन में बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने आप के नाम से भविष्यद्वाक्य नहीं कहा और आप के नाम से भूत नहीं निकाले और आप के नाम से बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये॥ २३। तब मैं उन से खोलके कहूंगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्म्म करनेहारो मुझ से दूर होओ॥

२४। इस लिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं उस की उपमा एक बुद्धिमान मनुष्य से देऊंगा जिस ने अपना घर पत्थर पर बनाया॥ २५। और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी॥ २६। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन न करे उस की उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्य से दिई जायगी जिस ने अपना घर बालू पर बनाया॥ २७। और मेंह

बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी और वह गिरा और उस का बड़ा पतन हुआ ॥

२८ । जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उस के उपदेश से अचम्भित हुए ॥ २९ । क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया ॥

८. जब यीशु उस पर्व्वत से उतरा तब बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई ॥ २ । और देखो एक कोढ़ी ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं ॥ ३ । यीशु ने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा . और उस का कोढ़ तुरन्त शुद्ध हो गया ॥ ४ । तब यीशु ने उस से कहा देख किसी से मत कह परन्तु जा अपने तईं याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ॥

५ । जब यीशु ने कफर्नाहुम में प्रवेश किया तब एक शतपति ने उस पास आ उस से बिनती किई ॥ ६ । कि हे प्रभु मेरा सेवक घर में अर्द्धांग रोग से अति पीड़ित पड़ा है ॥ ७ । यीशु ने उस से कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा ॥ ८ । शतपति ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें पर वचन मात्र भी कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा ॥ ९ । क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे वश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को यह कर तो वह करता है ॥ १० । यह सुनके यीशु ने अचम्भा किया और जो लोग उस के पीछे से आते थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया है ॥ ११ । और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूर्व्व और पश्चिम से आके इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे ॥ १२ । परन्तु राज्य के सन्तान बाहर के अंधकार में डाले जायेंगे जहां रोना औ दांत पीसना होगा ॥ १३ । तब यीशु ने शतपति से कहा जाइये जैसा तू ने विश्वास किया है वैसा ही तुझे होवे और उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया ॥

१४ । यीशु ने पितर के घर में आके उस की सास को पड़ी हुई और ज्वर से पीड़ित देखा ॥ १५ । उस ने उस का हाथ छूआ और ज्वर ने उस को छोड़ा और वह उठके उन की सेवा करने लगी ॥

१६ । सांझ को लोग बहुत से भूतग्रस्तों को उस पास लाये और उस ने वचन ही से भूतों को निकाला और सब रोगियों को चंगा किया ॥ १७ । कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ग्रहण किया और रोगों को उठा लिया सो पूरा होवे ॥

१८ । यीशु ने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार जाने की आज्ञा किई ॥ १९ । और एक अध्यापक ने आ उस से कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे चलूंगा ॥ २० । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पक्षियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने का स्थान नहीं है ॥ २१ । उस के शिष्यों में से दूसरे ने उस से कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाड़ने दीजिये ॥ २२ । यीशु ने उस से कहा तू मेरे पीछे हो ले और मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे ॥

२३ । जब वह नाव पर चढ़ा तब उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये ॥ २४ । और देखो समुद्र में ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि नाव लहरों से ढंप जाती थी परन्तु वह सोता था ॥ २५ । तब उस के शिष्यों ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं ॥ २६ । उस ने उन से कहा हे अल्प विश्वासियो क्यों डरते हो . तब उस ने उठके बयार और समुद्र को डांटा और बड़ा चैन हो गया ॥ २७ । और वे लोग अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं ॥

२८ । जब यीशु उस पार गिर्गाशियों के देश में पहुंचा तब दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थान में से निकलते हुए उस से आ मिले जो यहां लों अति

प्रचण्ड थे कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था ॥ २९ । और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा हे यीशु ईश्वर के पुत्र आप को हम से क्या काम . क्या आप समय के आगे हमें पीड़ा देने को यहां आये हैं ॥ ३० । बहुत से सूअरों का एक झुण्ड उन से कुछ दूर चरता था ॥ ३१ । सो भूतों ने उस से बिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरों के झुण्ड में पैठने दीजिये ॥ ३२ । उस ने उन से कहा जाओ और वे निकलके सूअरों के झुण्ड में पैठे और देखो सूअरों का सारा झुण्ड कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गया और पानी में डूब मरा ॥ ३३ । पर चरवाहे भागे और नगर में जाके सब बातें और भूतग्रस्तों की कथा भी सुनाईं ॥ ३४ । और देखो सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकले और उस को देखके बिन्ती किई कि हमारे सिवानों से निकल जाइये ॥

९. यीशु नाव पर चढ़के उस पार जाके अपने नगर में पहुंचा ॥

२ । देखो लोग एक अर्द्धांगी को खाट पर पड़े हुए उस पास लाये और यीशु ने उन्हों का विश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ॥ ३ । तब देखो कितने अध्यापकों ने अपने अपने मन में कहा यह तो ईश्वर की निन्दा करता है ॥ ४ । यीशु ने उन के मन की बातें जानके कहा तुम लोग अपने अपने मन में क्यों बुरी चिन्ता करते हो ॥ ५ । कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल ॥ ६ । परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (तब उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा ॥ ७ । वह उठके अपने घर को चला गया ॥ ८ । लोगों ने यह देखके अचंभा किया और ईश्वर की स्तुति किई जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया ॥

९ । वहां से आगे बढ़के यीशु ने एक मनुष्य को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा जिस का नाम मत्ती था और उस से कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके उस के पीछे हो लिया ॥ १० । जब यीशु घर में भोजन पर बैठा तब देखो बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये ॥ ११ । यह देखके फरीशियों ने उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापियों के संग क्यों खाता है ॥ १२ । यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को ॥ १३ । तुम जाके इस का अर्थ सीखो कि मैं दया को चाहता हूं बलिदान को नहीं . क्योंकि मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं ॥

१४ । तब योहन के शिष्यों ने उस पास आ कहा हम लोग और फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते ॥ १५ । यीशु ने उन से कहा जब लों दूल्हा सखाओं के संग रहे तब लों क्या वे शोक कर सकते हैं . परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उपवास करेंगे ॥ १६ । कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा वस्त्र से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है ॥ १७ । और लोग नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं . परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरते हैं और दोनों की रक्षा होती है ॥

१८ । यीशु उन से यह बातें कहता ही था कि देखो एक अध्यक्ष ने आके उस को प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी मर गई परन्तु आप आके अपना हाथ उस पर रखिये तो वह जीयेगी ॥ १९ । तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत उस के पीछे हो लिया ॥

२० । और देखो एक स्त्री ने जिस को बारह बरस से लोहू बहता था पीछे से आ उस के वस्त्र के आंचल को छूआ ॥ २१ । क्योंकि उस ने अपने मन में कहा यदि मैं केवल उस के वस्त्र को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी ॥ २२ । यीशु ने पीछे फिरके

उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है . सो वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हुई ॥

२३। यीशु ने उस अध्यक्ष के घर पर पहुंचके बजनियों को और बहुत लोगों को धूम मचाते देखा॥ २४। और उन से कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती है . और वे उस का उपहास करने लगे ॥ २५। परन्तु जब लोग बाहर किये गये तब उस ने भीतर जा कन्या का हाथ पकड़ा और वह उठी॥ २६। यह कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई॥

२७। जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और यह कहते हुए उस के पीछे हो लिये कि हे दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये॥ २८। जब वह घर में पहुंचा तब वे अंधे उस पास आये और यीशु ने उन से कहा क्या तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूं . वे उस से बोले हां प्रभु॥ २९। तब उस ने उन की आंखें छूके कहा तुम्हारे बिश्वास के समान तुम को होवे॥ ३०। इस पर उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताके कहा देखो कोई इस को न जाने॥ ३१। तौभी उन्हों ने बाहर जाके उस सारे देश में उस की कीर्त्ति फैलाई॥

३२। जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे मनुष्य को यीशु पास लाये॥ ३३। जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा कर कहा इस्राएल में ऐसा कभी न देखा गया॥ ३४। परन्तु फरीशियों ने कहा वह भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है॥

३५। तब यीशु सब नगरों और गांवों में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ फिरा किया॥ ३६। जब उस ने बहुत लोगों को देखा तब उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न किये हुए थे॥ ३७। तब उस ने अपने शिष्यों से कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं॥ ३८। इस लिये कटनी के स्वामी से बिनती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे॥

१०. यीशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करें॥ २। बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर कहावता है और उस का भाई अन्द्रिय . जबदी का पुत्र याकूब और उस का भाई योहन॥ ३। फिलिप और बर्थलमई . थोमा और मत्ती कर उगाहनेहारा . अलफई का पुत्र याकूब और लिब्बई जो थद्दई कहावता है॥ ४। शिमोन कानानी और यिहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वाया॥ ५। इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियों की ओर मत जाओ और शोमिरोनियों के किसी नगर में मत पैठो॥ ६। परन्तु इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ॥ ७। और जाते हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आया है॥ ८। रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों को शुद्ध करो मृतकों को जिलाओ भूतों को निकालो . तुम ने संतमेत पाया है संतमेत देओ॥ ९। अपने पटुकों में न सोना न रूपा न तांबा रखो॥ १०। मार्ग के लिये न झोली न दो अंगे न जूते न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजन के योग्य है॥ ११। जिस किसी नगर अथवा गांव में तुम प्रवेश करो बूझो उस में कौन योग्य है और जब लों वहां से न निकलो तब लों उस के यहां रहो॥ १२। घर में प्रवेश करते हुए उस को आशीस देओ॥ १३। जो वह घर योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे परन्तु जो वह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास फिर आवे॥ १४। और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस के घर से अथवा उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो॥ १५। मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन में उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा सहने योग्य होगी॥

१६। देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान हुंडारों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कपोतों की नाईं सूधे होओ ॥ १७। परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें पंचायतों में सौंपेंगे और अपनी सभाओं में तुम्हें कोड़े मारेंगे ॥ १८। तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर और अन्यदेशियों पर साक्षी होने के लिये पहुंचाये जाओगे ॥ १९। परन्तु जब वे तुम्हें सौंपें तब किस रीति से अथवा क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा ॥ २०। बोलनेहारे तो तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है ॥ २१। भाई भाई को और पिता पुत्र को वध किये जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के विरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे ॥ २२। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ॥ २३। जब वे तुम्हें एक नगर में सतावें तब दूसरे में भाग जाओ. मैं तुम से सत्य कहता हूं तुम इस्रायेल के सब नगरों में नहीं फिर चुकोगे कि उतने में मनुष्य का पुत्र आवेगा ॥ २४। शिष्य गुरु से बड़ा नहीं है और न दास अपने स्वामी से ॥ २५। यही बहुत है कि शिष्य अपने गुरु के तुल्य और दास अपने स्वामी के तुल्य होवे. जो उन्हों ने घर के स्वामी का नाम बाल-जिबूल रखा है तो वे कितना अधिक करके उस के घरवालों का वैसा नाम रखेंगे ॥ २६। सो तुम उन से मत डरो क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा ॥ २७। जो मैं तुम से अंधियारे में कहता हूं उसे उंजियाले में कहो और जो तुम कानों में सुनते हो उसे कोठों पर से प्रचार करो ॥ २८। उन से मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं पर आत्मा को मार डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है ॥ २९। क्या एक पैसे में दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिरेगी ॥ ३०। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं ॥ ३१। इस लिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओं से अधिक मोल के हो ॥ ३२। जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिता के आगे मान लेऊंगा ॥ ३३। परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरे उस से मैं भी अपने स्वर्गवासी पिता के आगे मुकरूंगा ॥ ३४। मत समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने को आया हूं मैं मिलाप करवाने को नहीं परन्तु खड्ग चलवाने को आया हूं ॥ ३५। मैं मनुष्य को उस के पिता से और बेटी को उस की मां से और पतोहू को उस की सास से अलग करने आया हूं ॥ ३६। मनुष्य के घर ही के लोग उस के बैरी होंगे ॥ ३७। जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्री को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं ॥ ३८। और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं ॥ ३९। जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा ॥ ४०। जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है ॥ ४१। जो भविष्यद्वक्ता के नाम से भविष्यद्वक्ता को ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ता का फल पावेगा और जो धर्म्मी के नाम से धर्म्मी को ग्रहण करे सो धर्म्मी का फल पावेगा ॥ ४२। जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलावे मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल न खोवेगा ॥

११. जब यीशु अपने बारह शिष्यों को आज्ञा दे चुका तब उन के नगरों में शिक्षा और उपदेश करने को वहां से चला ॥

२। योहन ने बन्दीगृह में खीष्ट के कार्य्यों का समाचार सुनके अपने शिष्यों में से दो जनों को उस से यह कहने को भेजा ॥ ३। कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें ॥ ४। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहन से कहो ॥

५। कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है॥ ६। और जो कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है॥

७। जब वे चले जाते थे तब यीशु योहन के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या पवन से हिलते हुए नरकट को॥ ८। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को. देखो जो सूक्ष्म वस्त्र पहिनते हैं सो राजाओं के घरों में हैं॥ ९। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को. हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है॥ १०। क्योंकि यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा॥ ११। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन वपतिसमा देनेहारे से बड़ा कोई प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में अति छोटा है सो उस से बड़ा है॥ १२। योहन वपतिसमा देनेहारे के दिनों से अब लों स्वर्ग के राज्य के लिये बरियाई किई जाती है और बरियार लोग उसे ले लेते हैं॥ १३। क्योंकि योहन लों सारे भविष्यद्वक्ताओं ने और व्यवस्था ने भविष्यद्वाणी कही॥ १४। और जो तुम इस बात को ग्रहण करोगे तो जानो कि एलियाह जो आनेवाला था सो यही है॥ १५। जिस को सुनने के कान हों सो सुने॥

१६। मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा. वे बालकों के समान हैं जो बाजारों में बैठके अपने संगियों को पुकारते॥ १७। और कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया और तुम ने छाती न पीटी॥ १८। क्योंकि योहन न खाता न पीता आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है॥ १९। मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते हैं देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र. परन्तु ज्ञान अपने सन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है॥

२०। तब वह उन नगरों को जिन्हों में उस के अधिक आश्चर्य्य कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्हों ने पश्चात्ताप नहीं किया॥ २१। हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिनके और राख में बैठके पश्चात्ताप करते॥ २२। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि विचार के दिन में तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य होगी॥ २३। और हे कफर्नाहुम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक लों नीचा किया जायगा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझ में किये गये हैं सो यदि सदोम में किये जाते तो वह आज लों बना रहता॥ २४। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि विचार के दिन में तेरी दशा से सदोम के देश की दशा सहने योग्य होगी॥

२५। इस पर उस समय में यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें बालकों पर प्रगट किया है॥ २६। हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा॥ २७। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्र को कोई नहीं जानता है केवल पिता और पिता को कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे॥

२८। हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम देऊंगा॥ २९। मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं और तुम अपने मनों में विश्राम पाओगे॥ ३०। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है॥

१२. उस समय में यीशु विश्राम के दिन खेतों में होके गया और उस के शिष्य भूखे थे वालें तोड़ने और खाने लगे॥ २। फरीशियों ने यह देखके उस से कहा देखिये जो काम विश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो आप के शिष्य करते हैं॥ ३। उस ने उन से कहा क्या तुम

ने नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया॥ ४। उस ने क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उस को न उस के संगियों को परन्तु केवल याजकों को उचित था॥ ५। अथवा क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा है कि मन्दिर में याजक लोग विश्राम के दिनों में विश्रामवार की विधि को लघन करते हैं और निर्दोष है॥ ६। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि यहां एक है जो मन्दिर से भी बड़ा है॥ ७। जो तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया को चाहता हूं बलिदान को नहीं तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठहराते॥ ८। मनुष्य का पुत्र विश्रामवार का भी प्रभु है॥

९। वहां से जाके वह उन की सभा के घर में आया॥ १०। और देखो एक मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा क्या विश्राम के दिनों में चगा करना उचित है॥ ११। उस ने उन से कहा तुम में से कौन मनुष्य होगा कि उस का एक भेड़ हो और जो वह विश्राम के दिन गढ़े में गिरे तो उसे पकड़के न निकालेगा॥ १२। फिर मनुष्य भेड़ से कितना बड़ा है. इस लिये विश्राम के दिनों में भलाई करना उचित है॥ १३। तब उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा. उस ने उस को बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं भला चगा हो गया॥

१४। तब फरीशियों ने बाहर जाके यीशु के विरुद्ध आपस में विचार किया इस लिये कि उसे नाश करें॥ १५। यह जानके यीशु वहां से चला गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और उस ने उन सभों को चगा किया॥ १६। और उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो॥ १७। कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे॥ १८। कि देखो मेरा सेवक जिसे मैं ने चुना है और मेरा प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है. मैं अपना आत्मा उस पर रखूंगा और वह अन्यदेशियों को सत्य व्यवस्था बतावेगा॥ १९। वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कों में कोई उस का शब्द सुनेगा॥ २०। वह जब लों सत्य व्यवस्था को प्रबल न करे तब लों कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआं देनेहारी बत्ती को न बुझावेगा॥ २१। और अन्यदेशी लोग उस के नाम पर आशा रखेंगे॥

२२। तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्य को उस पास लाये और उस ने उसे चंगा किया यहां लों कि वह जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने लगा॥ २३। इस पर सब लोग विस्मित होके बोले यह क्या दाऊद का सन्तान है॥ २४। परन्तु फरीशियों ने यह सुनके कहा यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता बिना भूतों को नहीं निकालता है॥ २५। यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिस में फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा॥ २६। और यदि शैतान शैतान को निकालता है तो उस में फूट पड़ी है फिर उस का राज्य क्योंकर ठहरेगा॥ २७। और जो मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं. इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे॥ २८। परन्तु जो मैं ईश्वर के आत्मा की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है॥ २९। यदि बलवन्त को कोई पहिले न बांधे तो क्योंकर उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री लूट सके. परन्तु उसे बांधके उस के घर को लूटेगा॥ ३०। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है॥ ३१। इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि सब प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों के लिये क्षमा किया जायगा परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा मनुष्यों के लिये नहीं क्षमा किई जायगी॥ ३२। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहे वह उस के लिये न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया जायगा॥

३३। यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उस के फल

को भी अच्छा कहो अथवा पेड़ को निकम्मा कहो तो उस के फल को भी निकम्मा कहो क्योंकि फल ही से पेड़ पहिचाना जाता है॥ ३४। हे सांपों के वंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है उसी को मुंह बोलता है॥ ३५। भला मनुष्य मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है॥ ३६। मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें कहें विचार के दिन में हर एक बात का लेखा देंगे॥ ३७। क्योंकि तू अपनी बातों से निर्दोष अथवा अपनी बातों से दोषी ठहराया जायगा॥

३८। इस पर कितने अध्यापकों और फरीशियों ने कहा हे गुरु हम आप से एक चिन्ह देखने चाहते हैं॥ ३९। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह॥ ४०। जिस रीति से यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में था उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवी के भीतर रहेगा॥ ४१। निनवीय लोग विचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है॥ ४२। दक्षिण की रानी विचार के दिन में इस समय के लोगों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है॥

४३। जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों में विश्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है॥ ४४। तब वह कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला फिर जाऊंगा और आके उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है॥ ४५। तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां वास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है. इस समय के दुष्ट लोगों की दशा ऐसी होगी॥

४६। यीशु लोगों से बात करता ही था कि देखो उस की माता और उस के भाई बाहर खड़े हुए उस से बोलने चाहते थे॥ ४७। तब किसी ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के भाई बाहर खड़े हुए आप से बोलने चाहते हैं॥ ४८। उस ने कहनेहारे को उत्तर दिया कि मेरी माता कौन है और मेरे भाई कौन हैं॥ ४९। और अपने शिष्यों की ओर अपना हाथ बढ़ाके उस ने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई॥ ५०। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गवासी पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

१३. उस दिन यीशु घर से निकलके समुद्र के तीर पर बैठा॥ २। और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़के बैठा और सब लोग तीर पर खड़े रहे॥ ३। तब उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि देखो एक बोनेहारा बीज बोने को निकला॥ ४। बोने में कितने बीज मार्ग की ओर गिरे और पंछियों ने आके उन्हें चुग लिया॥ ५। कितने पत्थरैली भूमि पर गिरे जहां उन को बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वे बेग उगे॥ ६। परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वे झुलस गये और जड़ न पकड़ने से सूख गये॥ ७। कितने कांटों के बीच में गिरे और कांटों ने बढ़के उन को दबा डाला॥ ८। परन्तु कितने अच्छी भूमि पर गिरे और फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे॥ ९। जिस को सुनने के कान हों सो सुने॥

१०। तब शिष्यों ने उस पास आ उस से कहा आप उन से दृष्टान्तों में क्यों बोलते हैं॥ ११। उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु उन को नहीं दिया गया है॥ १२। क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा और उस को बहुत होगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा॥ १३। इस लिये मैं उन से दृष्टान्तों में बोलता हूं क्योंकि वे देखते

हुए नहीं देखते हैं और सुनते हुए नहीं सुनते और न बूझते हैं ॥ १४ । और यिशैयाह की यह भविष्यद्वाणी उन में पूरी होती है कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा ॥ १५ । क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं ॥ १६ । परन्तु धन्य तुम्हारे नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं ॥ १७ । क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जो तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और धर्म्मियों ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना ॥

१८ । सो तुम बोनेहारे के दृष्टान्त का अर्थ सुनो ॥ १९ । जो कोई राज्य का बचन सुनके नहीं बूझता है उस के मन में जो कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है . यह वही है जिस में बीज मार्ग की ओर बोया गया ॥ २० । जिस में बीज पत्थरैली भूमि पर बोया गया सो वही है जो बचन को सुनके तुरन्त आनन्द से ग्रहण करता है ॥ २१ । परन्तु उस में जड़ न बंधने से वह थोड़ी बेर ठहरता है और बचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त ठोकर खाता है ॥ २२ । जिस में बीज कांटों के बीच में बोया गया सो वही है जो बचन सुनता है पर इस संसार की चिन्ता और धन की माया बचन को दबाती है और वह निष्फल होता है ॥ २३ । पर जिस में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वही है जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे फलता है ॥

२४ । उस ने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग के राज्य की उपमा एक मनुष्य से दिई जाती है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया ॥ २५ । परन्तु जब लोग सोये थे तब उस का बैरी आके गेहूं के बीच में जंगली बीज बोके चला गया ॥ २६ । जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब जंगली दाने भी दिखाई दिये ॥ २७ । इस पर गृहस्थ के दासों ने आ उस से कहा हे स्वामी क्या आप ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया . फिर जंगली दाने उस में कहां से आये ॥ २८ । उस ने उन से कहा किसी बैरी ने यह किया है . दासों ने उस से कहा आप की इच्छा होय तो हम जाके उन को बटोर लेवें ॥ २९ । उस ने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरने में उन के संग गेहूं भी उखाड़ लेओ ॥ ३० । कटनी लों दोनों को एक संग बढ़ने देओ और कटनी के समय में मैं काटनेहारों से कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलाने के लिये उन के गट्ठे बांधो परन्तु गेहूं को मेरे खत्ते में एकट्ठा करो ॥

३१ । उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपने खेत में बोया ॥ ३२ । वह तो सब बीजों से छोटा है परन्तु जब बढ़ जाता तब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पछी आके उस की डालियों पर बसेरा करते हैं ॥ ३३ । उस ने एक और दृष्टान्त उन से कहा कि स्वर्ग का राज्य खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया ॥

३४ । यह सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त से उन को कुछ न कहा ॥ ३५ । कि जो बचन भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा जो बातें जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं उन्हें बर्णन करूंगा सो पूरा होवे ॥

३६ । तब यीशु लोगों को बिदा कर घर में आया और उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा खेत के जंगली दाने के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझाइये ॥ ३७ । उस ने उन को उत्तर दिया कि जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्य का पुत्र है ॥ ३८ । खेत तो संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं ॥ ३९ । जिस बैरी ने उन को बोया सो शैतान है कटनी जगत का अन्त है और काटनेहारे स्वर्गदूत हैं ॥ ४० । सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आग से जलाये जाते हैं वैसा ही इस जगत के अन्त में होगा ॥ ४१ । मनुष्य का

पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म्म करनेहारों को बटोर लेंगे ॥ ४२। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना ओ दांत पीसना होगा ॥ ४३। तब धर्म्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य्य की नाईं चमकेंगे . जिस को सुनने के कान हों सो सुने ॥

४४। फिर स्वर्ग का राज्य खेत में छिपाये हुए धन के समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाके गुप्त रखा और वह उस के आनन्द के कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेत को मोल लेता है ॥ ४५। फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियों को ढूंढ़ता था ॥ ४६। उस ने जब एक बड़े मोल का मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया ॥

४७। फिर स्वर्ग का राज्य महाजाल के समान है जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की मछलियों को घेर लिया ॥ ४८। जब वह भर गया तब लोग उस को तीर पर खींच लाये और बैठके अच्छी अच्छी को पात्रों में बटोरा और निकम्मी निकम्मी को फेंक दिया ॥ ४९। जगत के अन्त में वैसा ही होगा . स्वर्ग दूत आके दुष्टों को धर्म्मियों के बीच में से अलग करेंगे ॥ ५०। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना ओ दांत पीसना होगा ॥

५१। यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने यह सब बातें समझीं . वे उस से बोले हां प्रभु ॥ ५२। उस ने उन से कहा इस लिये हर एक अध्यापक जिस ने स्वर्ग के राज्य की शिक्षा पाई है गृहस्थ के समान है जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तु निकालता है ॥

५३। जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहां से चला गया ॥ ५४। और उस ने अपने देश में आ उन की सभा के घर में उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो बोले इस को यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहां से हुए ॥ ५५। यह क्या बढ़ई का पुत्र नहीं है . क्या उस की माता का नाम मरियम और उस के भाइयों के नाम याकूब और योशी और शिमोन और यिहूदा नहीं हैं ॥ ५६। और क्या उस की सब बहिनें हमारे यहां नहीं हैं . फिर उस को यह सब कहां से हुआ ॥ ५७। सो उन्हों ने उस के विषय में ठोकर खाई परन्तु यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है ॥ ५८। और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये ॥

१४. उस समय में चौथाई के राजा हेरोद ने यीशु की कीर्त्ति सुनी ॥ २। और अपने सेवकों से कहा यह तो योहन बपतिसमा देनेहारा है वह मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म उस से प्रगट होते हैं ॥ ३। क्योंकि हेरोद ने अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण योहन को पकड़के उसे बांधा था और बन्दीगृह में डाला था ॥ ४। क्योंकि योहन ने उस से कहा था कि इस स्त्री को रखना तुझे उचित नहीं है ॥ ५। और वह उसे मार डालने चाहता था पर लोगों से डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे ॥ ६। परन्तु हेरोद के जन्मदिन की सभा में हेरोदिया की पुत्री ने सभा में नाचकर हेरोद को प्रसन्न किया ॥ ७। इस लिये उस ने किरिया खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे देऊंगा ॥ ८। वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर यहां थाल में मुझे दीजिये ॥ ९। तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण उस ने देने की आज्ञा किई ॥ १०। और उस ने भेजकर बन्दीगृह में योहन का सिर कटवाया ॥ ११। और उस का सिर थाल में कन्या को पहुंचा दिया गया और वह उस को अपनी मां के पास ले गई ॥ १२। तब उस के शिष्यों ने आके उस की लोथ को उठाके गाड़ा और आके यीशु से इस का समाचार कहा ॥

१३। जब यीशु ने यह सुना तब नाव पर चढ़के वहां से किसी जंगली स्थान में एकान्त में गया और लोग यह सुनके नगरों में से पैदल उस के पीछे हो लिये ॥ १४। यीशु ने निकलके बहुत लोगों को देखा और उन पर दया कर उन के रोगियों को चंगा किया ॥

१५। जब सांझ हुई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगों को विदा कीजिये कि वे बस्तियों मे जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें॥ १६। यीशु ने उन से कहा उन्हें जाने का प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खाने को देओ॥ १७। उन्हों ने उस से कहा यहां हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं॥ १८। उस ने कहा उन को यहां मेरे पास लाओ॥ १९। तब उस ने लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यवाद किया और रोटियां तोड़के शिष्यों को दिईं और शिष्यों ने लोगों को दिईं॥ २०। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन की बारह टोकरी भरी उठाईं॥ २१। जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे॥

२२। तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगों को विदा करूं तुम नाव पर चढ़के मेरे आगे उस पार जाओ॥ २३। वह लोगों को विदा कर प्रार्थना करने को एकान्त मे पर्व्वत पर चढ़ गया और सांझ को वहां अकेला था॥ २४। उस समय नाव समुद्र के बीच में लहरों से उछल रही थी क्योंकि बयार सन्मुख की थी॥ २५। रात के चौथे पहर में यीशु समुद्र पर चलते हुए उन के पास गया॥ २६। शिष्य लोग उस को समुद्र पर चलते देखके घबरा गये और बोले यह प्रेत है और डर के मारे चिल्लाये॥ २७। यीशु तुरन्त उन से बात करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत॥ २८। तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आप ही है तो मुझे अपने पास जल पर आने की आज्ञा दीजिये॥ २९। उस ने कहा आ. तब पितर नाव पर से उतरके यीशु पास जाने को जल पर चलने लगा॥ ३०। परन्तु बयार को प्रचंड देखके वह डर गया और जब डूबने लगा तब चिल्लाके बोला हे प्रभु मुझे बचाइये॥ ३१। यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाके उस को थांभ लिया और उससे कहा हे अल्पविश्वासी क्यों सन्देह किया॥ ३२। जब वे नाव पर चढ़े तब बयार थम गई॥ ३३। इस पर जो लोग नाव पर थे सो आके यीशु को प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वर के पुत्र हैं॥

३४। वे पार उतरके गिनेसरत देश में पहुंचे॥ ३५। और वहां के लोगों ने यीशु को चीन्हके आसपास के सारे देश मे कहला भेजा और सब रोगियों को उस पास लाये॥ ३६। और उस से बिन्ती किई कि वे केवल उस के वस्त्र के आंचल को छूवें और जितनों ने छूआ सब चंगे किये गये॥

१५. तब यिरूशलीम के कितने अध्यापकों और फरीशियों ने यीशु पास आ कहा॥ २। आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते तब अपने हाथ नहीं धोते हैं॥ ३। उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम भी क्यों अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को लंघन करते हो॥ ४। क्योंकि ईश्वर ने आज्ञा किई कि अपने माता पिता का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिता को निन्दा करे सो मार डाला जाय॥ ५। परन्तु तुम कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से लाभ होता सो संकल्प किया गया है तो उस को अपनी माता अथवा अपने पिता का आदर करने का और कुछ प्रयोजन नहीं॥ ६। सो तुम ने अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को उठा दिया है॥ ७। हे कपटियो यिशैयाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी अच्छी कही॥ ८। कि ये लोग अपने मुंह से मेरे निकट आते हैं और होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन मुझ से दूर रहता है॥ ९। पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं॥

१०। और उस ने लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा सुनो और बूझो॥ ११। जो मुंह मे समाता है सो मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंह से निकलता है सोई मनुष्य को अपवित्र करता है॥ १२। तब उस के शिष्यों ने आ उस से कहा

क्यों आप जानते हैं कि फरीशियों ने यह वचन सुनके ठोकर खाई ॥ १३ । उस ने उत्तर दिया कि हर एक गाछ जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया है उखाड़ा जायगा ॥ १४ । उन को रहने दो . वे अंधों के अंधे अगुवे हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग बतावे तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे ॥ १५ । तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि इस दृष्टान्त का अर्थ हमें समभाइये ॥ १६ । यीशु ने कहा तुम भी क्या अब लों निर्बुद्धि हो ॥ १७ । क्या तुम अब लों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंह में समाता सो पेट मे जाता है और सडास में फेंका जाता है ॥ १८ । परन्तु जो कुछ मुंह से निकलता है सो मन से बाहर आता है और वही मनुष्य को अपवित्र करता है ॥ १९ । क्योंकि मन से नाना भांति की कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी झूठी साक्षी और ईश्वर की निन्दा निकलती हैं ॥ २० । येही हैं जो मनुष्य को अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये हाथों से भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है ॥

२१ । यीशु वहां से निकलके सोर और सीदोन के सिवानों में गया ॥ २२ । और देखो उन सिवानों में की एक कनानी स्त्री ने निकलकर पुकारके उस से कहा हे प्रभु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये मेरी बेटी भूत से अति पीड़ित है ॥ २३ । परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया और उस के शिष्यों ने आ उस से बिन्ती कर कहा इस को बिदा कीजिये क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे पुकारती है ॥ २४ । उस ने उत्तर दिया कि इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया हूं ॥ २५ । तब स्त्री ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये ॥ २६ । उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे फेंकना अच्छा नहीं है ॥ २७ । स्त्री ने कहा सच है प्रभु तौभी कुत्ते जो चूरचार उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं सो खाते हैं ॥ २८ । तब यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे नारी तेरा विश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे होय . और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हुई ॥

२९ । यीशु वहां से जाके गालील के समुद्र के निकट आया और पर्ब्बत पर चढ़के वहां बैठा ॥ ३० । और बड़ी बड़ी भीड़ अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुत से औरों को लेके यीशु पास आईं और उन्हें उस के चरणों पर डाला और उस ने उन्हें चंगा किया ॥ ३१ । यहां लों कि जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इस्रायेल के ईश्वर की स्तुति किई ॥

३२ । तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके कहा मुझे इन लोगों पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है और मैं उन को भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूं न हो कि मार्ग में उन का बल घट जाय ॥ ३३ । उस के शिष्यों ने उस से कहा हमें इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें ॥ ३४ । यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्हों ने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां ॥ ३५ । तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दिई ॥ ३६ । और उस ने उन सात रोटियों को और मछलियों को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया और शिष्यों ने लोगों को दिया ॥ ३७ । सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन के सात टोकरे भरे उठाये ॥ ३८ । जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार सहस्र पुरुष थे ॥ ३९ । तब यीशु लोगों को बिदा कर नाव पर चढ़के मगदला नगर के सिवानों में आया ॥

१६. तब फरीशियों और सदूकियों ने यीशु पास आ उस की परीक्षा करके को उस से चाहा कि हमें आकाश का एक चिन्ह दिखाइये ॥ २ । उस ने उन को उत्तर दिया सांझ को तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और भोर को कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश लाल और धूमला है ॥ ३ । हे कपटियो तुम आकाश का रूप बूझ सकते

हो क्या तुम समयों के चिन्ह नहीं बूझ सकते हो ॥ ४। इस समय के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई-चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह . तब वह उन्हें छोड़के चला गया ॥

५। उस के शिष्य लोग उस पार पहुंचके रोटी लेना भूल गये॥ ६। और यीशु ने उन से कहा देखो फरीशियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहो॥ ७। वे आपस में विचार करने लगे यह इस लिये है कि हम ने रोटी न लिई॥ ८। यह जानके यीशु ने उन से कहा हे अल्पविश्वासियो तुम रोटी न लेने के कारण क्यों आपस में विचार करते हो॥ ९। क्या तुम अब लों नहीं बूझते हो और उन पांच सहस की पांच रोटी नहीं स्मरण करते हो और कितनी टोकरियां तुम ने उठाईं॥ १०। और न उन चार सहस की सात रोटी और कितने टोकरे तुम ने उठाये॥ ११। तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मैं ने तुम को फरीशियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहने को जो कहा सो रोटी के विषय में नहीं कहा॥ १२। तब उन्हों ने बूझा कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फरीशियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा॥

१३। यीशु ने कैसरिया फिलिपी के सिवानों में आके अपने शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्य का पुत्र कौन हूं॥ १४। उन्हों ने कहा कितने तो आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं और कितने यिर्मियाह अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं॥ १५। उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं॥ १६। शिमोन पितर ने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट हैं॥ १७। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे यूनस के पुत्र शिमोन तू धन्य है क्योंकि मांस औ लोहू ने नहीं परन्तु मेरे स्वर्गवासी पिता ने यह बात तुझ पर प्रगट किई॥ १८। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पितर है और मैं इसी पत्थर पर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे॥ १९। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा॥ २०। तब उस ने अपने शिष्यों को चिताया कि किसी से मत कहो कि मैं यीशु जो हूं सो ख्रीष्ट हूं॥

२१। उस समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यिरूशलीम में जाऊं और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं॥ २२। तब पितर उसे लेके उस को डांटके कहने लगा कि हे प्रभु आप पर दया रहे यह तो आप को कभी न होगा॥ २३। उस ने मुंह फेरके पितर से कहा हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है॥

२४। तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे॥ २५। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा॥ २६। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या लाभ होगा . अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा॥ २७। मनुष्य का पुत्र अपने दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा और तब वह हर एक मनुष्य को उस के कार्य्य के अनुसार फल देगा॥ २८। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे॥

१७. छः

दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और उस के भाई योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर एकान्त में ले गया॥ २। और उन के आगे उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूर्य्य के तुल्य चमका और

उस का वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हुआ ॥ ३ । और देखो मूसा और एलियाह उस के संग बात करते हुए उन को दिखाई दिये ॥ ४ । इस पर पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है . यदि आप की इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये ॥ ५ । वह बोलता ही था कि देखो एक ज्योतिमय मेघ ने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं उस की सुनो ॥ ६ । शिष्य लोग यह सुनके औंधे मुंह गिरे और निपट डर गये ॥ ७ । यीशु ने उन पास आके उन्हें छूके कहा उठो डरो मत ॥ ८ । तब उन्हों ने अपनी आंखें उठाके यीशु को छोड़के और किसी को न देखा ॥ ९ । जब वे उस पर्व्वत से उतरते थे तब यीशु ने उन को आज्ञा दिई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब लों इस दर्शन का समाचार किसी से मत कहो ॥

१० । और उस के शिष्यों ने उस से पूछा फिर अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाह को पहिले आना होगा ॥ ११ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा ॥ १२ । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह आ चुका है और उन्हों ने उस को नहीं चीन्हा परन्तु उस से जो कुछ चाहा सो किया . इस रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन से दुःख पावेगा ॥ १३ । तब शिष्यों ने बूझा कि वह योहन बपतिसमा देनेहारे के विषय में हम से कहता है ॥

१४ । जब वे लोगों के निकट पहुंचे तब किसी मनुष्य ने यीशु पास आ घुटने टेकके उस से कहा ॥ १५ । हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कीजिये वह मिर्गी के रोग से अति पीड़ित है कि बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है ॥ १६ । और मैं उस को आप के शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे चंगा नहीं कर सके ॥ १७ । यीशु ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और कब लों तुम्हारी सहूंगा . उस को यहां मेरे पास लाओ ॥ १८ । तब यीशु ने भूत को डांटा और वह उस में से निकला और लड़का उस घड़ी से चंगा हुआ ॥ १९ । तब शिष्यों ने निराले में यीशु पास आ कहा हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके ॥ २० । यीशु ने उन से कहा तुम्हारे अविश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता हूं यदि तुम को राई के एक दाने के तुल्य बिश्वास होय तो तुम इस पहाड़ से जो कहोगे कि यहां से वहां चला जा वह जायगा और कोई काम तुम से असाध्य नहीं होगा ॥ २१ । तौभी जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपाय से निकाले नहीं जाते हैं ॥

२२ । जब वे गालील में फिरते थे तब यीशु ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा ॥ २३ । वे उस को मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा . इस पर वे बहुत उदास हुए ॥

२४ । जब वे कफर्नाहुम में पहुंचे तब मन्दिर का कर लेनेहारे पितर के पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता है . उस ने कहा हां देता है ॥ २५ । जब पितर घर में आया तब यीशु ने उस के बोलने के पहिले उस से कहा हे शिमोन तू क्या समझता है . पृथिवी के राजा लोग कर अथवा खिराज किन से लेते हैं अपने सन्तानों से अथवा परायों से ॥ २६ । पितर ने उस से कहा परायों से . यीशु ने उस से कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं ॥ २७ । तौभी जिस्तें हम उन को ठोकर न खिलावें इस लिये तू समुद्र के तीर पर जाके बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उस को ले . तू उस का मुंह खोलने से एक रुपैया पावेगा उसी को लेके मेरे और अपने लिये उन्हें दे ॥

१८. उसी घड़ी शिष्यों ने यीशु पास आ कहा स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ॥ २ । यीशु ने एक बालक को अपने पास बुलाके उन के बीच में खड़ा किया ॥ ३ । और कहा मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिराओ और बालकों के समान न हो जाओ तो स्वर्ग के

राज्य में प्रवेश करने न पाओगे ॥ ४ । जो कोई अपने को इस बालक के समान दीन करे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा है ॥ ५ । और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है ॥ ६ । परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर बिश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता ॥

७। ठोकरों के कारण हाय संसार, ठोकरें अवश्य लगेंगीं परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से ठोकर लगती है ॥ ८ । जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे. लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाय ॥ ९ । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे. काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग मे डाला जाय ॥ १० । देखो कि तुम इन छोटों में से एक को तुच्छ न जानो क्योंकि मै तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गबासी पिता का मुंह नित्य देखते हैं ॥

११। मनुष्य का पुत्र खोये हुए को बचाने आया है ॥ १२ । तुम क्या समझते हो. जो किसी मनुष्य की सौ भेड़ होवें और उन मे से एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवे को पहाड़ों पर छोड़के उस भटकी हुई को नहीं जाके ढूंढ़ता है ॥ १३ । और मे तुम से सत्य कहता हू यदि ऐसा हो कि वह उस को पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गई थीं उन से अधिक वह उस भेड़ के लिये आनन्द करता है ॥ १४ । ऐसा ही तुम्हारे स्वर्गबासी पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक भी नाश होवे ॥

१५ । यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उस के संग एकान्त में उस को समझा दे. जो वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पाया है ॥ १६ । परन्तु जो वह न सुने तो एक अथवा दो जन को अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाय ॥ १७ । जो वह उन की न माने तो मंडली से कह दे परन्तु जो वह मंडली की भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर उगाहनेहारा सा होय ॥ १८ । मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर खोलोगे सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा ॥ १९ । फिर मैं तुम से कहता हूं यदि पृथिवी पर तुम में से दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बात के विषय में एक मन होवें तो वह उन के लिये मेरे स्वर्गबासी पिता की ओर से हो जायगी ॥ २०। क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तहां मैं उन के बीच में हूं ॥

२१ । तब पितर ने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै बेर मेरा अपराध करे और मैं उस को क्षमा करूं. क्या सात बेर लों ॥ २२ । यीशु ने उस से कहा मे तुझ से नहीं कहता हूं कि सात बेर लों परन्तु सत्तर गुणे सात बेर लों ॥ २३ । इस लिये स्वर्ग के राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है जिस ने अपने दासों से लेखा लेने चाहा ॥ २४ । जब वह लेखा लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था उस के पास पहुंचाया गया॥ २५। जब कि भर देने को उस पास कुछ न था उस के स्वामी ने आज्ञा किई कि वह और उस की स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उस का था सब बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय ॥ २६ । इस पर उस दास ने दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे प्रभु मेरे विषय मे धीरज धरिये मै आप को सब भर देऊंगा ॥ २७। तब उस दास के स्वामी ने दया कर उसे छोड़ दिया और उस का ऋण क्षमा किया ॥ २८ । परन्तु उसी दास ने बाहर निकलके अपने संगी दासों में से एक को पाया जो उस की एक सौ सूकी धारता था और उस को पकड़के उस का गला दाबके कहा जो कुछ तू धारता है मुझे दे ॥ २९ । इस पर उस के संगी दास ने उस के पांवों पड़के उस से बिन्ती कर कहा मेरे विषय में धीरज धरिये मैं आप को सब भर देऊंगा ॥ ३० ।

उस ने न माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृह में डाला कि जब लों ऋण को भर न देवे तब लों वहीं रहे॥ ३१। उस के संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके बहुत उदास हुए और आके सब कुछ जो हुआ था अपने स्वामी को बताया॥ ३२। तब उस दास के स्वामी ने उस को अपने पास बुलाके उस से कहा हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से बिन्ती किई तो मैं ने तुझे वह सब ऋण क्षमा किया॥ ३३। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया किई वैसा क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना उचित न था॥ ३४। और उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दंडकारकों के हाथ सौंप दिया कि जब लों वह उस का सब ऋण भर न देवे तब लों उन के हाथ में रहे॥ ३५। यूंही यदि तुम में से हर एक अपने अपने मन से अपने भाई के अपराध क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गवासी पिता भी तुम से वैसा करेगा॥

१९. जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालील से जाके यर्दन के उस पार यिहूदिया के सिवानों में आया॥ २। और बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और उस ने उन्हें वहां चंगा किया॥ ३। तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा करने को उस से कहा क्या किसी कारण से अपनी स्त्री को त्यागना मनुष्य को उचित है॥ ४। उस ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि सृजनहार ने आरंभ से नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया॥ ५। और कहा इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे॥ ६। सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इस लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे॥ ७। उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा ने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्री को त्यागने की आज्ञा किई॥ ८। उस ने उन से कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम को अपनी अपनी स्त्रियां त्यागने दिया परन्तु आरंभ से ऐसा नहीं था॥ ९। और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है॥ १०। उस के शिष्यों ने उस से कहा यदि पुरुष को स्त्री के संग इस प्रकार का संबंध है तो विवाह करना अच्छा नहीं है॥ ११। उस ने उन से कहा सब लोग यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे जिन को दिया गया है॥ १२। क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो माता के गर्भ से ऐसे ही जन्मे और कोई कोई नपुंसक हैं जो मनुष्यों से नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने को नपुंसक किये हैं. जो इस को ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे॥

१३। तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन पर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्यों ने उन्हें डांटा॥ १४। यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का है॥ १५। और वह उन पर हाथ रखके वहां से चला गया॥

१६। और देखो एक मनुष्य ने उस पास आ उस से कहा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन पाने को मैं कौन सा उत्तम काम करूं॥ १७। उस ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात् ईश्वर. परन्तु जो तू जीवन में प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओं को पालन कर॥ १८। उस ने उस से कहा कौन कौन आज्ञा. यीशु ने कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे॥ १९। अपने माता पिता का आदर कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर॥ २०। उस जवान ने उस से कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया है मुझे अब क्या घटी है॥ २१। यीशु ने उस से कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है तो जा अपनी संपत्ति बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले॥ २२। यह जवान यह बात सुनके उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था॥

२३। तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा ॥ २४। फिर भी मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है॥ २५। यह सुनके उस के शिष्यों ने निपट अचंभित हो कहा तब तो किस का त्राण हो सकता है ॥ २६। यीशु ने उन पर दृष्टि कर उन से कहा मनुष्यों से यह अनहोना है परन्तु ईश्वर से सब कुछ हो सकता है॥

२७। तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या मिलेगा ॥ २८। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के बारह कुलों का न्याय करोगे॥ २९। और जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा ॥ ३०। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे ॥

२०. स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला कि अपने दाख की बारी में बनिहारों को लगावे॥ २। और उस ने बनिहारों के साथ दिन भर की एक एक सूकी मजूरी ठहराके उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा॥ ३। जब पहर एक दिन चढ़ा तब उस ने बाहर जाके औरों को चौक में बेकार खड़े देखा ॥ ४। और उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ उचित होय मैं तुम्हें देऊंगा . सो वे भी गये ॥ ५। फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट बाहर जाके वैसा ही किया ॥ ६। घड़ी एक दिन रहते उस ने बाहर जाके औरों को बेकार खड़े पाया और उन से कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े हो॥ ७। उन्हों ने उस से कहा किसी ने हम को काम में नहीं लगाया है . उस ने उन्हें कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ उचित होय सो पाओगे ॥ ८। जब सांझ हुई तब दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा बनिहारों को बुलाके पिछलों से आरंभ कर अगलों तक उन्हें मजूरी दे ॥ ९। सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते काम पर आये थे उन्हों ने आके एक एक सूकी पाई ॥ १०। तब अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उन्हों ने भी एक एक सूकी पाई ॥ ११। इस को लेके वे उस गृहस्थ पर कुड़कुड़ाके बोले॥ १२। इन पिछलों ने एक ही घड़ी काम किया और आप ने उन को हमारे तुल्य किया है जिन्हों ने दिन भर का भार और घाम सहा ॥ १३। उस ने उन में से एक को उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझ से कुछ अनीति नहीं करता हूं . क्या तू ने मुझ से एक सूकी लेने को न ठहराया॥ १४। अपना ले और चला जा . मेरी इच्छा है कि जितना तुझ को उतना इस पिछले को भी देऊं ॥ १५। क्या मुझे उचित नहीं कि अपने धन से जो चाहूं सो करूं . क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है॥ १६। इस रीति से जो पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले हैं सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ॥

१७। यीशु ने यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में बारह शिष्यों को एकान्त में ले जाके उन से कहा॥ १८। देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को वध के योग्य ठहरावेंगे ॥ १९। और उस को अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे कि वे उस से ठट्ठा करें और कोड़े मारें और क्रूश पर घात करें . परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा॥

२०। तब जबदी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के संग यीशु पास आ प्रणाम कर उस से कुछ मांगा ॥ २१। उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है . वह उस से बोली आप यह कहिये कि आप के राज्य में मेरे इन दो पुत्रों में से एक आप की दहिनी और और दूसरा बाईं ओर बैठे ॥ २२। यीशु ने

उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो . जिस कटोरे से में पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो . उन्हों ने उस से कहा हम सकते हैं॥ २३। उस ने उन से कहा तुम मेरे कटोरे से तो पीओगे और जो बपतिसमा मै लेता हूं उसे लेओगे परन्तु जिन्हों के लिये मेरे पिता से तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है ॥

२४। यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयों पर रिसिआये ॥ २५। यीशु ने उन को अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशियों के अध्यक्ष लोग उन्हों पर प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं सो उन्हों पर अधिकार रखते हैं॥ २६। परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे॥ २७। और जो कोई तुम्हों में प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे ॥ २८। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है ॥

२९। जब वे यिरीहो नगर से निकलते थे तब बहुत लोग यीशु के पीछे हो लिये॥ ३०। और देखो दो अंधे जो मार्ग की ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके बोले हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये ॥ ३१। लोगों ने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारा हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये॥ ३२। तब यीशु खड़ा रहा और उन को बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं॥ ३३। उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु हमारी आंखे खुल जायें॥ ३४। यीशु ने दया कर उन की आंखें छूईं और वे तुरन्त आंखों से देखने लगे और उस के पीछे हो लिये ॥

२१. जब वे यिरूशलीम के निकट आये और जैतून पर्व्वत के समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशु ने दो शिष्यों को यह कहके भेजा ॥ २। कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उस में जाओ और तुम तुरन्त एक गदही को बंधी हुई और उस के साथ बच्चे को पाओगे उन्हें खोलके मेरे पास लाओ ॥ ३। जो तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन को भेजेगा॥ ४। यह सब इस लिये हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे॥ ५। कि सियोन की पुत्री से कहो देख तेरा राजा नम्र और गदहे पर हां लादू के बच्चे पर बैठा हुआ तेरे पास आता है॥ ६। सो शिष्यों ने जाके जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया ॥ ७। और वे उस गदही को और बच्चे को लाये और उन पर अपने कपड़े रखके यीशु को उन पर बैठाया ॥ ८। और बहुतेरे लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां काटके मार्ग में बिछाईं ॥ ९। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हों ने पुकारके कहा दाऊद के सन्तान की जय . धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है . सब से ऊंचे स्थान में जयजयकार होवे ॥ १०। जब उस ने यिरूशलीम में प्रवेश किया तब सारे नगर के निवासी घबराके बोले यह कौन है ॥ ११। लोगों ने कहा यह गालील के नासरत नगर का भविष्यद्वक्ता यीशु है ॥

१२। यीशु ने ईश्वर के मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन सभों को निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों की चौकियों को उलट दिया॥ १३। और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है ॥ १४। तब अंधे और लंगड़े उस पास मन्दिर में आये और उस ने उन्हें चंगा किया ॥ १५। जब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो उस ने किये और लड़कों को जो मन्दिर में दाऊद के सन्तान की जय पुकारते थे देखा तब उन्हों ने रिसियाके उस से कहा क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं ॥ १६। यीशु ने उन से कहा हां . क्या तुम ने कभी यह वचन नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीनेहारे लड़कों के मुंह से तू ने स्तुति

करवाई है ॥ १७। तब वह उन्हें छोड़के नगर के बाहर बैथनिया को गया और वहां टिका ॥

१८। भोर को जब वह नगर को फिर जाता था तब उस को भूख लगी ॥ १९। और मार्ग में एक गूलर का वृक्ष देखके वह उस पास आया परन्तु उस में और कुछ न पाया केवल पत्ते और उस को कहा तुझ में फिर कभी फल न लगें . इस पर गूलर का वृक्ष तुरन्त सूख गया ॥ २०। यह देखके शिष्यों ने अचंभा कर कहा गूलर का वृक्ष क्याही शीघ्र सूख गया ॥ २१। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं जो तुम विश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस गूलर के वृक्ष से किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु यदि इस पहाड़ से कहो कि उठ समुद्र में गिर पड़ तो वैसा ही होगा ॥ २२। और जो कुछ तुम विश्वास करके प्रार्थना में मांगोगे सो पाओगे ॥

२३। जब वह मन्दिर में गया और उपदेश करता था तब लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उस पास आ कहा तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और यह अधिकार किस ने तुझ को दिया ॥ २४। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उस का उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है॥ २५। योहन का बपतिसमा देना कहां से हुआ स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से . तब वे आपस में विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया ॥ २६। और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें लोगों का डर है क्योंकि सब लोग योहन को भविष्यद्वक्ता जानते हैं॥ २७। सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . तब उस ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ॥

२८। तुम क्या समझते हो . किसी मनुष्य के दो पुत्र थे और उस ने पहिले के पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाख की बारी में जाके काम कर ॥ २९। उस ने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया ॥ ३०। फिर उस ने दूसरे के पास आके वैसा ही कहा . उस ने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूं परन्तु गया नहीं ॥ ३१। इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी किई . वे उस से बोले पहिले ने . यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे और बेश्या तुम से आगे ईश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं ॥ ३२। क्योंकि योहन धर्म्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस का विश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों और बेश्याओं ने उस का बिश्वास किया और तुम लोग यह देखके पीछे से भी नहीं पछताये कि उस का विश्वास करते ॥

३३। एक और दृष्टान्त सुनो . एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और उस को चहुंओर बेड़ा दिया और उस में रस का कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को उस का ठीका दे परदेश को चला गया ॥ ३४। जब फल का समय निकट आया तब उस ने अपने दासों को उस का फल लेने को मालियों के पास भेजा ॥ ३५। परन्तु मालियों ने उस के दासों को लेके एक को मारा दूसरे को घात किया और तीसरे को पत्थरवाह किया ॥ ३६। फिर उस ने पहिले दासों से अधिक दूसरे दासों को भेजा और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया ॥ ३७। सब के पीछे उस ने यह कहके अपने पुत्र को उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे ॥ ३८। परन्तु मालियों ने उस के पुत्र को देखके आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उस का अधिकार ले लेवें ॥ ३९। और उन्हों ने उसे लेके दाख की बारी से बाहर निकालके मार डाला ॥ ४०। इस लिये जब दाख की बारी का स्वामी आवेगा तब उन मालियों से क्या करेगा ॥ ४१। उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठीका दूसरे मालियों को देगा जो फलों को उन के समयों में उसे दिया करेंगे ॥ ४२। यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी धर्म्मपुस्तक में यह वचन नहीं पढ़ा कि जिस

पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना यही कोने का सिरा हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है ॥ ४३। इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायगा और और लोगों को दिया जायगा जो उस के फल दिया करेंगे ॥ ४४। जो इस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा ॥ ४५। प्रधान याजकों और फरीशियों ने उस के दृष्टान्तों को सुनके जाना कि वह हमारे विषय में बोलता है ॥ ४६। और उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगों से डरे क्योंकि वे उस को भविष्यद्वक्ता जानते थे ॥

२२. इस पर यीशु ने फिर उन से दृष्टान्तों में कहा ॥ २। स्वर्ग के राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है जो अपने पुत्र का विवाह करता था ॥ ३। और उस ने अपने दासों को भेजा कि नेवतहरियों को विवाह के भोज में बुलावें परन्तु उन्हों ने आने न चाहा ॥ ४। फिर उस ने दूसरे दासों को यह कहके भेजा कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं ने अपना भोज तैयार किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे गये हैं और सब कुछ तैयार है विवाह के भोज में आओ ॥ ५। परन्तु नेवतहरियों ने इस का कुछ सोच न किया पर कोई अपने खेत को और कोई अपने ब्योपार को चले गये ॥ ६। औरों ने उस के दासों को पकड़के दुर्दशा करके मार डाला ॥ ७। यह सुनके राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन हत्यारों को नाश किया और उन के नगर को फूंक दिया ॥ ८। तब उस ने अपने दासों से कहा विवाह का भोज तो तैयार है परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे ॥ ९। इस लिये चौराहों में जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभों को विवाह के भोज में बुलाओ ॥ १०। सो उन दासों ने मार्गों में जाके क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभों को एकट्ठे किया और विवाह का स्थान जेवनहरियों से भर गया ॥ ११। जब राजा जेवनहरियों को देखने को भीतर आया तब उस ने वहां एक मनुष्य को देखा जो विवाहीय वस्त्र नहीं पहिने हुए था ॥ १२। उस ने उस से कहा हे मित्र तू यहां बिना विवाहीय वस्त्र पहिने क्योंकर भीतर आया . वह निरुत्तर हुआ ॥ १३। तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांव बांधो और उस को ले जाके बाहर के अंधकार में डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना होगा ॥ १४। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ॥

१५। तब फरीशियों ने जाके आपस में बिचार किया इस लिये कि यीशु को बात में फंसावें ॥ १६। सो उन्हों ने अपने शिष्यों को हेरोदियों के संग उस पास यह कहने को भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं करते हैं ॥ १७। सो हम से कहिये आप क्या समझते हैं . कैसर को कर देना उचित है अथवा नहीं ॥ १८। यीशु ने उन की दुष्टता जानके कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा क्यों करते हो ॥ १९। कर का मुद्रा मुझे दिखाओ . तब वे उस पास एक सूकी लाये ॥ २०। उस ने उन से कहा यह मूर्ति और छाप किस की है ॥ २१। वे उस से बोले कैसर की . तब उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ ॥ २२। यह सुनके वे अचंभित हुए और उस को छोड़के चले गये ॥

२३। उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से पूछा ॥ २४। कि हे गुरु मूसा ने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर जाय तो उस का भाई उस की स्त्री से विवाह करे और अपने भाई के लिये वंश खड़ा करे ॥ २५। सो हमारे यहां सात भाई थे . पहिले भाई ने विवाह किया और निःसन्तान मर जाने से अपनी स्त्री को अपने भाई के लिये छोड़ा ॥ २६। दूसरे और तीसरे भाई ने भी सातवें भाई तक वैसा ही किया ॥ २७। सब के पीछे स्त्री भी मर गई ॥ २८। सो मृतकों के जी उठने पर

वह इन सातों में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सभों ने उस से विवाह किया ॥ २९ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि तुम धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति न बूझके भूल में पड़े हो ॥ ३० । क्योंकि मृतकों के जी उठने पर वे न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में ईश्वर के दूतों के समान हैं ॥ ३१ । मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन जो ईश्वर ने तुम से कहा नहीं पढ़ा है ॥ ३२ । कि मैं इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं . ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है ॥ ३३ । यह सुनकर लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए ॥

३४ । जब फरीशियों ने सुना कि यीशु ने सदूकियों को निरुत्तर किया तब वे एकट्ठे हुए ॥ ३५ । और उन में से एक ने जो व्यवस्थापक था उस की परीक्षा करने को उस से पूछा ॥ ३६ । हे गुरु व्यवस्था में बड़ी आज्ञा कौन है ॥ ३७ । यीशु ने उस से कहा तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर ॥ ३८ । यही पहिली और बड़ी आज्ञा है ॥ ३९ । और दूसरी उस के समान है अर्थात् तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर ॥ ४० । इन दो आज्ञाओं से सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ॥

४१ । फरीशियों के एकट्ठे होते हुए यीशु ने उन से पूछा ॥ ४२ । खीष्ट के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का पुत्र है . वे उस से बोले दाऊद का ॥ ४३ । उस ने उन से कहा तो दाऊद क्योंकर आत्मा की शिक्षा से उस को प्रभु कहता है ॥ ४४ । कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ ॥ ४५ । यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उस का पुत्र क्योंकर है ॥ ४६ । इस के उत्तर में कोई उस से एक बात नहीं बोल सका और उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

२३. तब यीशु ने लोगों से और अपने शिष्यों से कहा ॥ २ । अध्यापक और फरीशी लोग मूसा के आसन पर बैठे हैं ॥ ३ । इस लिये जो कुछ वे तुम्हें मानने को कहें सो मानो और पालन करो परन्तु उन के कर्म्मों के अनुसार मत करो क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं ॥ ४ । वे भारी बोझे बांधते हैं जिन को उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्यों के कांधों पर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाने नहीं चाहते हैं ॥ ५ । वे मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने सब कर्म्म करते हैं ॥ ६ । वे अपने यंत्रों को चौड़े करते हैं और अपने वस्त्रों के आंचल बढ़ाते हैं ॥ ७ । जेवनारों में ऊंचे स्थान और सभा के घरों में ऊंचे आसन और बाजारों में नमस्कार और मनुष्यों से गुरु गुरु कहलाना उन को प्रिय लगते हैं ॥ ८ । परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् खीष्ट और तुम सब भाई हो ॥ ९ । और पृथिवी पर किसी को अपना पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा एक पिता है अर्थात् वही जो स्वर्ग में है ॥ १० । और गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् खीष्ट ॥ ११ । जो तुम्हों में बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा ॥ १२ । जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ॥

१३ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य का द्वार मूंदते हो . न आप ही उस में प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारों को प्रवेश करने देते हो ॥ १४ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम विधवाओं के घर खा जाते हो और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हो इस लिये तुम अधिक दण्ड पाओगे ॥ १५ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम एक जन को अपने मत में लाने को सारे जल और थल में फिरा करते हो और जब वह मत में आया है तब उस को अपने से दूना नरक के योग्य बनाते हो ॥ १६ । हाय तुम अंधे अगुवो जो कहते

हो यदि कोई मन्दिर की किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाय तो ऋणी है ॥ १७ । हे मूर्खो और अंधो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो सोने को पवित्र करता है ॥ १८ । फिर कहते हो यदि कोई वेदी की किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा वेदी पर है यदि कोई उस की किरिया खाय तो ऋणी है ॥ १९ । हे मूर्खो और अंधो कौन बड़ा है वह चढ़ावा अथवा वह वेदी जो चढ़ावे को पवित्र करती है ॥ २० । इस लिये जो वेदी की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो कुछ उस पर है उस की भी किरिया खाता है ॥ २१ । और जो मन्दिर की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो उस में बास करता है उस की भी किरिया खाता है ॥ २२ । और जो स्वर्ग की किरिया खाता है सो ईश्वर के सिंहासन की किरिया और जो उस पर बैठा है उस की भी किरिया खाता है ॥ २३ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम पोदीने और सोए और जीरे का दसवां अंश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था की भारी बातों को अर्थात् न्याय और दया और विश्वास को छोड़ दिया है. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित था ॥ २४ । हे अंधे अगुवो जो मच्छर को छान डालते हो और ऊंट को निगलते हो ॥ २५ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अंधेर और अन्याय से भरे हैं ॥ २६ । हे अंधे फरीशी पहिले कटोरे और थाल के भीतर शुद्ध कर कि वे बाहर भी शुद्ध होवें ॥ २७ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना फेरी हुई कबरों के समान हो जो बाहर से सुन्दर दिखाई देती हैं परन्तु भीतर मृतकों की हड्डियों से और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं ॥ २८ । इसी रीति से तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर कपट और अधर्म्म से भरे हो ॥ २९ । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें बनाते हो और धर्म्मियों की कबरें संवारते हो ॥ ३० । और कहते हो यदि हम अपने पितरों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाने में उन के संगी न होते ॥ ३१ । इस से तुम अपने पर साक्षी देते हो कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों के सन्तान हो ॥ ३२ । सो तुम अपने पितरों का नपुआ भरो ॥ ३३ । हे सांपो हे सर्पों के बंश तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे ॥

३४ । इस लिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और अध्यापकों को भेजता हूं और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूश पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और नगर नगर सताओगे ॥ ३५ । कि धर्म्मी हाबिल के लोहू से लेके बरखियाह के पुत्र जिखरियाह के लोहू तक जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला जितने धर्म्मियों का लोहू पृथिवी पर बहाया जाता है सब तुम पर पड़े ॥ ३६ । मैं तुम से सच कहता हूं यह सब बातें इसी समय के लोगों पर पड़ेंगी ॥ ३७ । हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा ॥ ३८ । देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है ॥ ३९ । क्योंकि मैं तुम से कहता हूं जब लों तुम न कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है तब लों तुम मुझे अब से फिर न देखोगे ॥

२४. जब यीशु मन्दिर से निकलके जाता था तब उस के शिष्य लोग उस को मन्दिर की रचना दिखाने को उस पास आये ॥ २ । यीशु ने उन से कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते हो. मैं तुम से सच कहता हूं यहां पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा ॥

३ । जब वह जैतून पर्व्वत पर बैठा था तब शिष्यों ने निराले में उस पास आ कहा हमों से कहिये यह कब होगा और आप के आने का और

जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा ॥ ४ । यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे ॥ ५ । क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं खीष्ट हूं और बहुतों को भरमावेंगे ॥ ६ । तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे . देखो मत घबराओ क्योंकि इन सभों का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं होगा ॥ ७ । क्योंकि देश देश के और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में अकाल और मरियां और भुईंडोल होंगे ॥ ८ । यह सब दुःखों का आरंभ होगा ॥

९ । तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पावो और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब देशों के लोग तुम से बैर करेंगे ॥ १० । तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरे को पकड़वायगा और एक दूसरे से बैर करेगा ॥ ११ । और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतों को भरमावेंगे ॥ १२ । और अधर्म्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जायगा ॥ १३ । पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ॥ १४ । और राज्य का यह सुसमाचार सब देशों के लोगों पर साक्षी होने के लिये समस्त संसार में सुनाया जायगा . तब अन्त होगा ॥

१५ । सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित वस्तु को जिस की बात दानियेल भविष्यद्वक्ता से कही गई पवित्र स्थान में खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) ॥ १६ । तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें ॥ १७ । जो कोठे पर हो सो अपने घर में से कुछ लेने को न उतरे ॥ १८ । और जो खेत में हो सो अपना वस्त्र लेने को पीछे न फिरे ॥ १९ । उन दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां ॥ २० । परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में अथवा विश्रामवार में भागना न होवे ॥ २१ । क्योंकि उस समय में ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगत के आरंभ से अब तक न हुआ और कभी न होगा ॥ २२ । जो वे दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता . परन्तु चुने हुए लोगों के कारण वे दिन घटाये जायेंगे ॥

२३ । तब यदि कोई तुम से कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा वहां है तो प्रतीति मत करो ॥ २४ । क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगों को भी भरमाते ॥ २५ । देखो मैं ने आगे से तुम्हें कह दिया है ॥ २६ । इस लिये जो वे तुम से कहें देखो जंगल में है तो बाहर मत जाओ अथवा देखो कोठरियों में है तो प्रतीति मत करो ॥ २७ । क्योंकि जैसे बिजली पूर्व्व से निकलती और पश्चिम लों चमकती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा ॥ २८ । जहां कहीं लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ॥

२९ । उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा हो जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जायगी ॥ ३० । तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से आकाश के मेघों पर आते देखेंगे ॥ ३१ । और वह अपने दूतों को तुरही के महा शब्द सहित भेजेगा और वे आकाश के इस सिवाने से उस सिवाने तक चहुं दिशा से उस के चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेंगे ॥

३२ । गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो . जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है ॥ ३३ । इस रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार पर है ॥ ३४ । मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों ये सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे ॥ ३५ । आकाश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ॥

३६ । उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्ग के दूत परन्तु केवल मेरा पिता ॥ ३७ । जैसे नूह के दिन हुए वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा ॥ ३८ । जैसे जलप्रलय के आगे के दिनों में लोग जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उसी दिन लों खाते औ

पीते विवाह करते श्रौ विवाह देते थे ॥ ३९। श्रौर जब लों जलप्रलय आके उन सभों को ले न गया तब लों उन्हें चेत न हुआ वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा ॥ ४०। तब दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा श्रौर दूसरा छोड़ा जायगा ॥ ४१। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी श्रौर दूसरी छोड़ी जायगी ॥

४२। इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा ॥ ४३। पर यही जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस पहर में आवेगा तो वह जागता रहता श्रौर अपने घर में सेंध पड़ने न देता ॥ ४४। इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा ॥ ४५। वह विश्वासयोग्य श्रौर बुद्धिमान दास कौन है जिसे उस के स्वामी ने अपने परिवार पर प्रधान किया हो कि समय में उन्हें भोजन देवे ॥ ४६। वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे ॥ ४७। मैं तुम से सत्य कहता हूं वह उसे अपनी सब संपत्ति पर प्रधान करेगा ॥ ४८। परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने मन में कहे मेरा स्वामी आने में विलम्ब करता है ॥ ४९। श्रौर अपने संगी दासों को मारने श्रौर मतवाले लोगों के संग खाने पीने लगे ॥ ५०। तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे श्रौर जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा ॥ ५१। श्रौर उस को बड़ी ताड़ना देके कपटियों के संग उस का अंश देगा जहां रोना श्रौ दांत पीसना होगा ॥

२५. तब स्वर्ग के राज्य की उपमा दस कुंवारियों से दिई जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हे से मिलने को निकलीं ॥ २। उन्हों में से पांच सुबुद्धि श्रौर पांच निर्बुद्धि थीं ॥ ३। जो निर्बुद्धि थीं उन्हों ने अपनी मशालों को ले अपने संग तेल न लिया ॥ ४। परन्तु सुबुद्धियों ने अपनी मशालों के संग अपने पात्रों में तेल लिया ॥ ५। दूल्हे के विलम्ब करने में वे सब ऊंघीं श्रौर सो गईं ॥ ६। आधी रात को धूम मची कि देखो दूल्हा आता है उस से मिलने को निकलो ॥ ७। तब वे सब कुंवारियां उठके अपनी मशालों को सजने लगीं ॥ ८। श्रौर निर्बुद्धियों ने सुबुद्धियों से कहा अपने तेल में से कुछ हम को दीजिये क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं ॥ ९। परन्तु सुबुद्धियों ने उत्तर दिया क्या जानें हमारे श्रौर तुम्हारे लिये बस न होय सो अच्छा है कि तुम बेचनेहारों के पास जाके अपने लिये मोल लेओ ॥ १०। ज्यों वे मोल लेने को जाती थीं त्योंही दूल्हा आ पहुंचा श्रौर जो तैयार थीं सो उस के संग विवाह के घर में गईं श्रौर द्वार मूंदा गया ॥ ११। पीछे दूसरी कुंवारियां भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये ॥ १२। उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम को नहीं जानता हूं ॥ १३। इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते हो जिस में मनुष्य का पुत्र आवेगा ॥

१४। क्योंकि वह एक मनुष्य के समान है जिस ने परदेश को जाते हुए अपने ही दासों को बुलाके उन को अपना धन सौंपा ॥ १५। उस ने एक को पांच तोड़े दूसरे को दो तीसरे को एक हर एक को उस के सामर्थ्य के अनुसार दिया श्रौर तुरन्त परदेश को चला ॥ १६। तब जिस ने पांच तोड़े पाये उस ने जाके उन से ब्योपार कर पांच तोड़े श्रौर कमाये ॥ १७। इसी रीति से जिस ने दो पाये उस ने भी दो तोड़े श्रौर कमाये ॥ १८। परन्तु जिस ने एक तोड़ा पाया उस ने जाके मिट्टी में खोदके अपने स्वामी के रुपैये छिपा रखे ॥ १९। बहुत दिनों के पीछे उन दासों का स्वामी आया श्रौर उन से लेखा लेने लगा ॥ २०। तब जिस ने पांच तोड़े पाये थे उस ने पांच तोड़े श्रौर लाके कहा हे प्रभु आप ने मुझे पांच तोड़े सौंपे देखिये मैं ने उन से पांच तोड़े श्रौर कमाये हैं ॥ २१। उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे उत्तम श्रौर विश्वासयोग्य दास तू थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर प्रधान करूंगा. अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर ॥ २२। जिस ने दो तोड़े पाये थे उस ने भी आके

कहा हे प्रभु आप ने मुझे दो तोड़े सौंपे देखिये मैं ने उन से दो तोड़े और कमाये हैं ॥ २३ । उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे उत्तम और विश्वास-योग्य दास तू थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर प्रधान करूंगा . अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर ॥ २४ । तब जिस ने एक तोड़ा पाया था उस ने आके कहा हे प्रभु मैं आप को जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं जहां आप ने नहीं बोया वहां लवते हैं और जहां आप ने नहीं छींटा वहां से एकट्ठा करते हैं ॥ २५ । सो मैं डरा और जाके आप का तोड़ा मिट्टी में छिपाया . देखिये अपना ले लीजिये ॥ २६ । उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी दास तू जानता था कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां लवता हूं और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से एकट्ठा करता हूं ॥ २७ । तो तुझे उचित था कि मेरे रुपैये महाजनों के हाथ सौंपता तब मैं आके अपना धन ब्याज समेत पाता ॥ २८ । इस लिये वह तोड़ा उस से लेओ और जिस पास दस तोड़े हैं उसे देओ ॥ २९ । क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा और उस को बहुत होगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा ॥ ३० । और उस निकम्मे दास को बाहर के अंधकार में डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना होगा ॥

३१ । जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य सहित आवेगा और सब पवित्र दूत उस के साथ तब वह अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा ॥ ३२ । और सब देशों के लोग उस के आगे एकट्ठे किये जायेंगे और जैसा गड़ेरिया भेड़ों को बकरियों से अलग करता तैसा वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा ॥ ३३ । और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा ॥ ३४ । तब राजा उन से जो उस की दहिनी ओर हैं कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो आओ जो राज्य जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उस के अधिकारी होओ ॥ ३५ । क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में लाये ॥ ३६ । मैं नंगा था और तुम ने मुझे पहिराया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सुध लिई मैं बन्दीगृह में था और तुम मेरे पास आये ॥ ३७ । तब धर्म्मी लोग उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब आप को भूखा देखा और खिलाया अथवा प्यासा और पिलाया ॥ ३८ । हम ने कब आप को परदेशी देखा और अपने घर में लाये अथवा नंगा और पहिराया ॥ ३९ । और हम ने कब आप को रोगी अथवा बन्दीगृह में देखा और आप के पास गये ॥ ४० । तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने मेरे इन अति छोटे भाइयों में से एक से जोई भर किया सो मुझ से किया ॥ ४१ । तब वह उन से जो बाईं ओर हैं कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पास से उस अनन्त आग में जाओ जो शैतान और उस के दूतों के लिये तैयार किई गई है ॥ ४२ । क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे नहीं पिलाया ॥ ४३ । मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में नहीं लाये मैं नंगा था और तुम ने मुझे नहीं पहिराया मैं रोगी और बन्दीगृह में था और तुम ने मेरी सुध न लिई ॥ ४४ । तब वे भी उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब आप को भूखा वा प्यासा वा परदेशी वा नंगा वा रोगी वा बन्दीगृह में देखा और आप की सेवा न किई ॥ ४५ । तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने इन अति छोटों में से एक से जोई भर नहीं किया सो मुझ से नहीं किया ॥ ४६ । सो ये लोग अनन्त दण्ड में परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवन में जा रहेंगे ॥

२६.

जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्यों से कहा ॥ २ । तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे निस्तार-पर्ब्ब होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर चढ़ाये जाने को पकड़वाया जायगा ॥ ३ । तब लोगों के प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग कियाफा

नाम महायाजक के घर में एकट्ठे हुए॥ ४। और आपस में विचार किया कि यीशु को छल से पकड़के मार डालें॥ ५। परन्तु उन्हों ने कहा पर्व्व में नहीं न हो कि लोगों में हुल्लड़ होवे॥

६। जब यीशु बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था॥ ७। तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में बहुत मोल का सुगंध तेल लेके उस पास आई और जब वह भोजन पर बैठा था तब उस के सिर पर ढाला॥ ८। यह देखके उस के शिष्य रिसियाके बोले यह क्षय क्यों हुआ॥ ९। क्योंकि यह सुगंध तेल बहुत दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता॥ १०। यीशु ने यह जानके उन से कहा क्यों स्त्री को दुःख देते हो. उस ने अच्छा काम मुझ से किया है॥ ११। कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा॥ १२। उस ने मेरे देह पर यह सुगंध तेल जो ढाला है सो मेरे गाड़े जाने के लिये किया है॥ १३। मैं तुम से सत्य कहता हूं सारे जगत मे जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा॥

१४। तब बारह शिष्यों में से यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य प्रधान याजकों के पास गया॥ १५। और कहा जो मै यीशु को आप लोगों के हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे क्या देंगे. उन्हों ने उस को तीस रुपैये देने को ठहराया॥ १६। सो वह उसी समय से उस को पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा॥

१७। अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन शिष्य लोग यीशु पास आ उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आप के लिये निस्तारपर्व्व का भोजन खाने की तैयारी करें॥ १८। उस ने कहा नगर में अमुक मनुष्य के पास जाके उस से कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने शिष्यों के संग तेरे यहां निस्तारपर्व्व का भोजन करूंगा॥ १९। सो शिष्यों ने जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया और निस्तारपर्व्व का भोजन बनाया॥

२०। सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग भोजन पर बैठा॥ २१। जब वे खाते थे तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा॥ २२। इस पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उस से कहने लगा हे प्रभु वह क्या मैं हूं॥ २३। उस ने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थाली में हाथ डालता है सोई मुझे पकड़वायगा॥ २४। मनुष्य का पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है. जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता॥ २५। तब उस के पकड़वानेहारे यिहूदा ने उत्तर दिया कि हे गुरु वह क्या मैं हूं. यीशु उस से बोला तू तो कह चुका॥

२६। जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के शिष्यों को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है॥ २७। और उस ने कटोरा लेके धन्य माना और उन को देके कहा तुम सब इस से पीओ॥ २८। क्योंकि यह मेरा लोहू अर्थात् नये नियम का लोहू है जो बहुतों के लिये पापमोचन के निमित्त बहाया जाता है॥ २९। मैं तुम से कहता हू कि जिस दिन लों मैं तुम्हारे संग अपने पिता के राज्य में उसे नया न पीऊं उस दिन लों मैं अब से यह दाख रस कभी न पीऊंगा॥ ३०। और वे भजन गाके जैतून पर्व्वत पर गये॥

३१। तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और झुंड की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं॥ ३२। परन्तु मैं अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा॥ ३३। पितर ने उस को उत्तर दिया यदि सब आप के विषय में ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा॥ ३४। यीशु ने उस से कहा मै तुझे सत्य कहता हूं कि इसी रात मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा॥ ३५। पितर ने उस से कहा जो आप के संग मुझे मरना हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा. सब शिष्यों ने भी वैसा ही कहा॥

३६। तब यीशु ने शिष्यों के संग गेतशिमनी नाम स्थान में आके उन से कहा जब लों मैं वहां जाके

प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो ॥ ३७। और वह पितर को और जबदी के दोनो पुत्रों को अपने संग ले गया और शोक करने और बहुत उदास होने लगा ॥ ३८। तब उस ने उन से कहा मेरा मन यहां लों अति उदास है कि मैं मरने पर हूं . तुम यहां ठहरके मेरे संग जागते रहो ॥ ३९। और थोड़ा आगे बढ़के वह मुंह के बल गिरा और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से टल जाय तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होय पर जैसा तू चाहता है ॥ ४०। तब उस ने शिष्यों के पास आ उन्हें सोते पाया और पितर से कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग सके ॥ ४१। जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है ॥ ४२। फिर उस ने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो विना पीने से यह कटोरा मेरे पास से नहीं टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय ॥ ४३। तब उस ने आके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं ॥ ४४। उन को छोड़के उस ने फिर जाके तीसरी बेर वही बात कहके प्रार्थना किई ॥ ४५। तब उस ने अपने शिष्यों के पास आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और विश्राम करते हो . देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है ॥ ४६। उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है ॥

४७। वह बोलता ही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था आ पहुंचा और लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उस के संग ॥ ४८। यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उस को पकड़ो ॥ ४९। और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु प्रणाम और उस को चूमा ॥ ५०। यीशु ने उस से कहा हे मित्र तू किस लिये आया है . तब उन्हों ने आके यीशु पर हाथ डालके उसे पकड़ा ॥ ५१। इस पर देखो यीशु के संगियों में से एक ने हाथ बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया ॥ ५२। तब यीशु ने उस से कहा अपना खड्ग फिर काठी में रख क्योंकि जो लोग खड्ग खींचते हैं सो सब खड्ग से नाश किये जायेंगे ॥ ५३। क्या तू समझता है कि मैं अभी अपने पिता से बिन्ती नहीं कर सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक पहुंचा न देगा ॥ ५४। परन्तु तब धर्म्मपुस्तक में जो लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होय ॥ ५५। उसी घड़ी यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो . मैं मन्दिर में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा ॥ ५६। परन्तु यह सब इस लिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक की बातें पूरी होवें . तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे ॥

५७। जिन्हों ने यीशु को पकड़ा सो उस को कियाफा महायाजक के पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग एकट्ठे हुए ॥ ५८। पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक के आंगने लों चला गया और भीतर जाके इस का अन्त देखने को प्यादों के संग बैठा ॥ ५९। प्रधान याजकों और प्राचीनों ने और न्याइयों की सारी सभा ने यीशु का घात करवाने के लिये उस पर झूठी साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई ॥ ६०। बहुतेरे झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्हों ने नहीं पाई ॥ ६१। अन्त में दो झूठे साक्षी आके बोले इस ने कहा कि मैं ईश्वर का मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिन में फिर बना सकता हूं ॥ ६२। तब महायाजक ने खड़ा हो यीशु से कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी देते हैं ॥ ६३। परन्तु यीशु चुप रहा इस पर महायाजक ने उस से कहा मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हूं हमों से कह तू ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट है कि नहीं ॥ ६४। यीशु उस से बोला तू तो कह चुका और मैं यह भी तुम्हों से कहता हूं कि इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे ॥ ६५। तब महा-

याजक ने अपने वस्त्र फाड़के कहा यह ईश्वर की निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन . देखो तुम ने अभी उस के मुख से ईश्वर की निन्दा सुनी है॥ ६६। तुम क्या विचार करते हो . उन्हों ने उत्तर दिया वह बधके योग्य है ॥ ६७। तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे ॥ ६८। औरों ने थपेड़े मारके कहा हे खीष्ट हम से भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा ॥

६९। पितर बाहर अंगने में बैठा था और एक दासी उस पास आके बोली तू भी यीशु गालीली के संग था ॥ ७०। उस ने सभों के साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता तू क्या कहती है ॥ ७१। जब वह बाहर डेवढ़ी में गया तब दूसरी दासी ने उसे देखके जो लोग वहां थे उन से कहा यह भी यीशु नासरी के संग था ॥ ७२। उस ने किरिया खाके फिर मुकरा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं ॥ ७३। थोड़ी बेर पीछे जो लोग वहां खड़े थे उन्हों ने पितर के पास आके उस से कहा तू भी सचमुच उन में से एक है क्योंकि तेरी बोली भी तुझे प्रगट करती है ॥ ७४। तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं . और तुरन्त मुर्गा बोला ॥ ७५। तब पितर ने यीशु का वचन जिस ने उस से कहा था कि मुर्गा के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक बिलक रोया ॥

२७. जब भोर हुआ तब लोगों के सब प्रधान याजकों और प्राचीनों ने आपस में यीशु के विरुद्ध विचार किया कि उसे घात करवावें ॥ २। और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाके पन्तिय पिलात अध्यक्ष को सौंप दिया ॥

३। जब उस के पकड़वानेहारे यिहूदा ने देखा कि वह दंड के योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयों को प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाया ॥ ४। और कहा मैं ने निर्दोषी लोहू पकड़वाने में पाप किया है . वे बोले हमें क्या तूही जान ॥ ५। तब वह उन रुपैयों को मन्दिर में फेंकके चला गया और जाके अपने को फांसी दिई ॥ ६। प्रधान याजकों ने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिर के भण्डार में डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहू का दाम है ॥ ७। सो उन्हों ने आपस में विचार कर उन रुपैयों से परदेशियों को गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया ॥ ८। इस से वह खेत आज तक लोहू का खेत कहावता है ॥ ९। तब जो वचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्हों ने वे तीस रुपैये हां इस्रायेल के सन्तानों से उस मुलाये हुए का दाम जिसे उन्हों ने मुलाया ले लिया ॥ १०। और जैसे परमेश्वर ने मुझ को आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हार के खेत के दाम में दिया ॥

११। यीशु अध्यक्ष के आगे खड़ा हुआ और अध्यक्ष ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . यीशु ने उस से कहा आप ही तो कहते हैं ॥ १२। जब प्रधान याजक और प्राचीन लोग उस पर दोष लगाते थे तब उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया ॥ १३। तब पिलात ने उस से कहा क्या तू नहीं सुनता कि ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं ॥ १४। परन्तु उस ने एक बात भी उस को उत्तर न दिया यहां लों कि अध्यक्ष ने बहुत अचंभा किया ॥ १५। उस पर्ब्ब में अध्यक्ष की यह रीति थी कि एक बंधुवे को जिसे लोग चाहते थे उन्हों के लिये छोड़ देता था ॥ १६। उस समय में उन्हों का एक प्रसिद्ध बंधुवा था जिस का नाम बरब्बा था ॥ १७। सो जब वे एकट्ठे हुए तब पिलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा यीशु को जो खीष्ट कहावता है ॥ १८। क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उस को डाह से पकड़वाया था ॥ १९। जब वह विचार आसन पर बैठा था तब उस की स्त्री ने उसे कहला भेजा कि आप उस धर्म्मी मनुष्य से कुछ काम न रखिये क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख पाया है ॥ २०। प्रधान याजकों और प्राचीनों ने लोगों को समझाया कि वे बरब्बा को मांग लेवें और यीशु को नाश करवावें ॥ २१। अध्यक्ष ने उन को उत्तर दिया कि

इन दोनों में से तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं . वे बोले बरब्बा को॥ २२। पिलात ने उन से कहा तो मैं यीशु से जो ख्रीष्ट कहावता है क्या करूं . सभों ने उस से कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय॥ २३। अध्यक्ष ने कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है . परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारके कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय॥

२४। जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और भी हुल्लड़ होता है तब उस ने जल लेके लोगों के साम्हने हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्य के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो॥ २५। सब लोगों ने उत्तर दिया कि उस का लोहू हम पर और हमारे सन्तानों पर होवे॥

२६। तब उस ने बरब्बा को उन्हों के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया॥ २७। तब अध्यक्ष के योद्धाओं ने यीशु को अध्यक्षभवन में ले जाके सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई॥ २८। और उन्हों ने उस का वस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया॥ २९। और कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेकके यह कहके उस से ठट्ठा किया कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम॥ ३०। और उन्हों ने उस पर थूका और उस नरकट को ले उस के सिर पर मारा॥ ३१। जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस से वह बागा उतारके और उसी का वस्त्र उस को पहिराके उसे क्रूश पर चढ़ाने को ले गये॥ ३२। बाहर आते हुए उन्हों ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को पाया और उसे बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले॥

३३। जब वे एक स्थान पर जो गलगथा अर्थात खोपड़ी का स्थान कहावता है पहुंचे॥ ३४। तब उन्हों ने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने चीखके पीने न चाहा॥ ३५। तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और चिट्ठियां डालके उस के वस्त्र बांट लिये कि जो वचन भविष्यद्वक्ता ने कहा था सो पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं॥ ३६। तब उन्हों ने वहां बैठके उस का पहरा दिया॥ ३७। और उन्हों ने उस का दोषपत्र उस के सिर से ऊपर लगाया कि यह यिहूदियों का राजा यीशु है॥ ३८। तब दो डाकू एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये॥

३९। जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर हिलाके और यह कहके उस की निन्दा किई॥ ४०। कि हे मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को बचा . जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर आ॥ ४१। इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संग ठट्ठा कर कहा॥ ४२। उस ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है . जो वह इस्राएल का राजा है तो क्रूश पर से अब उतर आवे और हम उस का विश्वास करेंगे॥ ४३। वह ईश्वर पर भरोसा रखता है . यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उस को अब बचावे क्योंकि उस ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं॥ ४४। जो डाकू उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्हों ने भी इसी रीति से उस की निन्दा किई॥

४५। दो पहर से तीसरे पहर लों सारे देश में अंधकार हो गया॥ ४६। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है॥ ४७। जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा वह एलियाह को बुलाता है॥ ४८। उन में से एक ने तुरन्त दौड़के इस्पंज लेके सिरके में भिंगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया॥ ४९। औरों ने कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे बचाने को आता है कि नहीं॥

५०। तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा॥ ५१। और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और धरती डोली और पर्व्वत तड़क गये॥ ५२। और कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें उठीं॥ ५३। और यीशु के जी उठने के पीछे वे

कबरों में से निकलके पवित्र नगर में गये और बहुतेरों को दिखाई दिये॥ ५४। तब शतपति और वे लोग जो उस के संग यीशु का पहरा देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वर का पुत्र था॥

५५। वहां बहुत सी स्त्रियां जो यीशु की सेवा करती हुई गालील से उस के पीछे आई थीं दूर से देखती रहीं॥ ५६। उन्हों में मरियम मगदलीनी और याकूब की औ योशी की माता मरियम और जबदी के पुत्रों की माता थीं॥

५७। जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगर का एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशु का शिष्य था आया॥ ५८। उस ने पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी, तब पिलात ने आज्ञा किई कि लोथ दिई जाय॥ ५९। यूसफ ने लोथ कों ले उसे उजली चद्दर में लपेटा॥ ६०। और उसे अपनी नई कबर में रखा जो उस ने पत्थर में खुदवाई थी और कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके चला गया॥ ६१। और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के साम्हने बैठी थीं॥

६२। तैयारी के दिन के पीछे प्रधान याजक और फरीशी लोग अगले दिन पिलात के पास एकट्ठे हुए॥ ६३। और बोले हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारे ने अपने जीते जी कहा कि तीन दिन के पीछे मैं जी उठूंगा॥ ६४। सो आज्ञा कीजिये कि तीसरे दिन लों कबर की रखवाली किई जाय न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जावें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है, तब पिछली भूल पहिली से बुरी होगी॥ ६५। पिलात ने उन से कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपने जानते भर रखवाली करो॥ ६६। सो उन्हों ने जाके पत्थर पर छाप देके पहरुए बैठाके कबर की रखवाली किई॥

२८. विश्रामवार

के पीछे अठवारे के पहिले दिन पह फटते मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबर को देखने आईं॥ २। और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा और आके कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़काके उस पर बैठा॥ ३। उस का रूप बिजली सा और उस का बस्त्र पाले की नाईं उजला था॥ ४। उस के डर के मारे पहरुए कांप गये और मृतकों के समान हुए॥ ५। दूत ने स्त्रियों को उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती हो॥ ६। वह यहां नहीं है जैसे उस ने कहा वैसे जी उठा है, आओ यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था॥ ७। और शीघ्र जाके उस के शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है और देखो वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है वहां उसे देखोगे, देखो मैं ने तुम से कहा है॥ ८। वे शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्द से उस के शिष्यों को संदेश देने को कबर से दौड़ीं॥

९। जब वे उस के शिष्यों को संदेश देने को जाती थीं देखो यीशु उन से आ मिला और कहा कल्याण हो और उन्हों ने निकट आ उस के पांव पकड़के उस को प्रणाम किया॥ १०। तब यीशु ने उन से कहा मत डरो जाके मेरे भाइयों से कह दो कि वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे॥

११। ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहरुओं में से कोई कोई नगर में आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान याजकों से कह दिया॥ १२। तब उन्हों ने प्राचीनों के संग एकट्ठे हो आपस में विचार कर योद्धाओं को बहुत रुपैये देके कहा॥ १३। तुम यह कहो कि रात को जब हम सोये थे तब उस के शिष्य आके उसे चुरा ले गये॥ १४। जो यह बात अध्यक्ष के सुन्ने में आवे तो हम उस को समझाके तुम को बचा लेंगे॥ १५। सो उन्हों ने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसा ही किया और यह बात यिहूदियों में आज लों चलित है॥

१६। ग्यारह शिष्य गालील में उस पर्व्वत पर गये जो यीशु ने उन को बताया था॥ १७। और उन्हों ने उसे देखके उस को प्रणाम किया पर कितनों

को सन्देह हुआ ॥ १८ । यीशु ने उन पास आ उन से कहा स्वर्ग में और पृथिवी पर समस्त अधिकार मुझ को दिया गया है ॥ १९ । इस लिये तुम जाके सब देशों के लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिसमा देओ ॥ २० । और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करने को सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूं । आमीन ॥

मार्क रचित सुसमाचार ।

१. ईश्वर के पुत्र यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार का आरंभ ॥ २ । जैसे भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पंथ बनावेगा ॥ ३ । किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पथ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो ॥ ४ । योहन ने जंगल में बपतिसमा दिया और पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश किया ॥ ५ । और सारे यिहूदिया देश के और यिरूशलीम नगर के रहनेहारे उस पास निकल आये और सभों ने अपने अपने पापों को मानके यर्दन नदी में उस से बपतिसमा लिया ॥ ६ । योहन ऊंट के रोम का वस्त्र और अपनी कटि में चमड़े का पटुका पहिनता था और टिड्डियां औ बन मधु खाया करता था ॥ ७ । उस ने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बंध झुकके खोलने के योग्य नहीं हूं ॥ ८ । मैं ने तुम्हें जल से बपतिसमा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा देगा ॥

९ । उन दिनों में यीशु ने गालील देश के नासरत नगर से आके योहन से यर्दन में बपतिसमा लिया ॥ १० । और तुरन्त जल से ऊपर आते हुए उस ने स्वर्ग को खुले और आत्मा को कपोत की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा ॥ ११ । और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं ॥

१२ । तब आत्मा तुरन्त उस को जंगल में ले गया ॥ १३ । वहां जंगल में चालीस दिन शैतान से उस की परीक्षा किई गई और वह बनपशुओं के संग था और स्वर्गदूतों ने उस की सेवा किई ॥

१४ । योहन के बन्दीगृह में डाले जाने के पीछे यीशु ने गालील में आके ईश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया ॥ १५ । और कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वर का राज्य निकट आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो ॥ १६ । गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए उस ने शिमोन को और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे ॥ १७ । यीशु ने उन से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा ॥ १८ । वे तुरन्त अपने जाल छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥ १९ । वहां से थोड़ा आगे बढ़के उस ने जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को देखा कि वे नाव पर जालों को सुधारते थे ॥ २० । उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदी को मजूरों के संग नाव पर छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

२१ । वे कफर्नाहुम नगर में आये और यीशु ने तुरन्त विश्राम के दिन सभा के घर में जाके उपदेश किया ॥ २२ । लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया ॥ २३ । उन की सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध

भूत लगा था ॥ २४ । उस ने चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं ईश्वर का पवित्र जन ॥ २५ । यीशु ने उस को डांटके कहा चुप रह और उस में से निकल आ ॥ २६ । तब अशुद्ध भूत उस मनुष्य को मरोड़के और बड़े शब्द से चिल्लाके उस में से निकल आया ॥ २७ । इस पर सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि आपस में विचार करके बोले यह क्या है . यह कौन सा नया उपदेश है कि वह अधिकारी की रीति से अशुद्ध भूतों को भी आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं ॥ २८ । सो उस की कीर्त्ति तुरन्त गालील के आसपास के सारे देश में फैल गई ॥

२९ । सभा के घर से निकलके वे तुरन्त याकूब और योहन के संग शिमोन और अन्द्रिय के घर में आये ॥ ३० । और शिमोन की सास ज्वर से पीड़ित पड़ी थी और उन्हों ने तुरन्त उस के विषय में उस से कहा ॥ ३१ । तब उस ने उस पास आ उस का हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वर ने तुरन्त उस को छोड़ा और वह उन की सेवा करने लगी ॥

३२ । सांझ को जब सूर्य्य डूबा तब लोग सब रोगियों को और भूतग्रस्तों को उस पास लाये ॥ ३३ । सारे नगर के लोग भी द्वार पर एकट्ठे हुए ॥ ३४ । और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार के रोगों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतों को निकाला परन्तु भूतों को बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे ॥

३५ । भोर को कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली स्थान में जाके वहां प्रार्थना किई ॥ ३६ । तब शिमोन और जो उस के संग थे सो उस के पीछे हो लिये ॥ ३७ । और उसे पाके उस से बोले सब लोग आप को ढूंढ़ते हैं ॥ ३८ । उस ने उन से कहा आओ हम आसपास के नगरों में जायें कि मैं वहां भी उपदेश करूं क्योंकि मैं इसी लिये बाहर आया हूं ॥ ३९ । सो उस ने सारे गालील में उन की सभाओं में उपदेश किया और भूतों को निकाला ॥

४० । एक कोढ़ी ने उस पास आ उस से बिनती किई और उस के आगे घुटने टेकके उस से कहा जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं ॥ ४१ । यीशु को दया आई और उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके उस से कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा ॥ ४२ । उस के कहने पर उस का कोढ़ तुरन्त जाता रहा और वह शुद्ध हुआ ॥ ४३ । तब उस ने उसे चिताके तुरन्त बिदा किया ॥ ४४ । और उस से कहा देख किसी से कुछ मत कह परन्तु जा अपने तईं याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ॥ ४५ । परन्तु वह बाहर जाके इस बात को बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा यहां लों कि यीशु फिर प्रगट होके नगर में नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा और लोग चहुं ओर से उस पास आये ॥

२. कई एक दिन के पीछे यीशु ने फिर कफर्नाहुम में प्रवेश किया और सुना गया कि वह घर में है ॥ २ । तुरन्त इतने बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घर में न द्वार के आसपास समा सके और उस ने उन्हें वचन सुनाया ॥ ३ । और लोग एक अर्द्धांगी को चार मनुष्यों से उठवाके उस पास ले आये ॥ ४ । परन्तु जब वे भीड़ के कारण उस के निकट पहुंच न सके तब जहां वह था वहां उन्हों ने छत उधेड़के और कुछ खोलके उस खाट को जिस पर अर्द्धांगी पड़ा था लटका दिया ॥ ५ । यीशु ने उन्हों का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ॥ ६ । और कितने अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने मन में विचार करते थे ॥ ७ । कि यह मनुष्य क्यों इस रीति से ईश्वर की निन्दा करता है . ईश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है ॥ ८ । यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा से जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार करते हैं और उन से कहा तुम लोग अपने अपने मन में यह विचार क्यों करते हो ॥ ९ । कौन बात सहज है अर्द्धांगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाके चल ॥ १० । परन्तु जिस्तें

तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है ॥ ११। (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा ॥ १२। वह तुरन्त उठके खाट उठाके सभों के साम्ने चला गया यहां लों कि वे सब विस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करके बोले हम ने ऐसा कभी नहीं देखा ॥

१३। यीशु फिर बाहर समुद्र के तीर पर गया और सब लोग उस पास आये और उस ने उन्हें उपदेश दिया ॥ १४। जाते हुए उस ने अलफई के पुत्र लेवी को कर उगाहने के स्थान मे बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ. तब वह उठके उस के पीछे हो लिया ॥ १५। जब यीशु उस के घर मे भोजन पर बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये क्योंकि बहुत थे और व उस के पीछे हो लिये॥ १६। अध्यापकों और फरीशियो ने उस को कर उगाहनेहारों और पापियो के संग खाते देखके उस के शिष्यों से कहा यह क्या है कि वह कर उगाहनेहारों और पापियों के संग खाता और पीता है ॥ १७। यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को. मै धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं ॥

१८। योहन के और फरीशियों के शिष्य उपवास करते थे और उन्हों ने आ उस से कहा योहन के और फरीशियो के शिष्य क्यो उपवास करते है परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते ॥ १९। यीशु ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं. जब लों दूल्हा उन के संग रहे तब लो वे उपवास नहीं कर सकते है ॥ २०। परन्तु वे दिन आवेंगे जिन मे दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब व उन दिनो मे उपवास करेंगे ॥ २१। कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र मे नहीं टांकता है नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपड़े से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है ॥ २२। और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ता है और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये ॥

२३। विश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था और उस के शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे ॥ २४। तब फरीशियों ने उस से कहा देखिये विश्राम के दिन में जो काम उचित नही है सो ये लोग क्यो करते हैं ॥ २५। उस ने उन से कहा क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को प्रयोजन था और वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब उस ने क्या किया ॥ २६। उस ने क्योंकर अबियाथर महायाजक के समय में ईश्वर के घर मे जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियो को भी दिईं ॥ २७। और उस ने उन से कहा विश्रामवार मनुष्य के लिये हुआ पर मनुष्य विश्रामवार के लिये नही ॥ २८। इस लिये मनुष्य का पुत्र विश्रामवार का भी प्रभु है ॥

३.

यीशु फिर सभा के घर में गया और वहां एक मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था ॥ २। और लोग उस पर दोष लगाने के लिये उसे ताकते थे कि वह विश्राम के दिन में इस को चंगा करेगा कि नहीं ॥ ३। उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा बीच मे खड़ा हो ॥ ४। तब उस ने उन्हों से कहा क्या विश्राम के दिनो मे भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा घात करना उचित है. परन्तु व चुप रहे ॥ ५। और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास हो उन्हों पर क्रोध से चारो ओर दृष्टि किई और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा. उस ने उस को बढ़ाया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला चंगा हो गया ॥

६। तब फरीशियों ने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियों के संग यीशु के विरुद्ध आपस में विचार किया इस लिये कि उसे नाश करें ॥ ७। यीशु अपने शिष्यो के

संग समुद्र के निकट गया और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और इदोम से और यर्दन के उस पार से बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई ॥ ८। सोर और सीदोन के आसपास के लोगों ने भी जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उन में की एक बड़ी भीड़ उस पास आई ॥ ९। उस ने अपने शिष्यों से कहा भीड़ के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि वे मुझे दबावें ॥ १०। क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया यहां लों कि जितने रोगी थे उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे ॥ ११। अशुद्ध भूतों ने भी जब उसे देखा तब उस को दण्डवत किई और पुकारके बोले आप ईश्वर के पुत्र हैं ॥ १२। और उस ने उन को बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो ॥

१३। फिर उस ने पर्व्वत पर चढ़के जिन्हें चाहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे उस पास गये ॥ १४। तब उस ने बारह जनों को ठहराया कि वे उस के संग रहें ॥ १५। और कि वह उन्हें उपदेश करने को और रोगों को चंगा करने और भूतों को निकालने का अधिकार रखने को भेजे ॥ १६। अर्थात् शिमोन को जिस का नाम उस ने पितर रखा ॥ १७। और जब्दी के पुत्र याकूब और याकूब के भाई योहन को जिन का नाम उस ने बनेरगश अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा ॥ १८। और अन्द्रिय और फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और थोमा को और अलफई के पुत्र याकूब को और थद्दई को और शिमोन कानानी को ॥ १९। और यिहूदा इस्करियोती को जिस ने उसे पकड़वाया . और वे घर में आये ॥

२०। तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहां लों कि वे रोटी खाने भी न सके ॥ २१। और उस के कुटुम्ब यह सुनके उसे पकड़ने को निकल आये क्योंकि उन्हों ने कहा उस का चित्त ठिकाने नहीं है ॥ २२। तब अध्यापक लोग जो यिरूशलीम से आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है ॥ २३। उस ने उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तों में उन से कहा शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है ॥ २४। यदि किसी राज्य में फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है ॥ २५। और यदि किसी घराने में फूट पड़ी होय तो वह घराना नहीं ठहर सकता है ॥ २६। और यदि शैतान अपने बिरोध में उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता है पर उस का अन्त होता है ॥ २७। यदि बलवन्त को कोई पहिले न बांधे तो उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री लूट नहीं सकता है . परन्तु उसे बांधके उस के घर को लूटेगा ॥ २८। मैं तुम से सत्य कहता हूं कि मनुष्यों के सन्तानों के सब पाप और सब निन्दा जिस से वे निन्दा करें क्षमा किई जायगी ॥ २९। परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा की निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा किया जायगा पर अनन्त दंड के योग्य है ॥ ३०। वे जो बोले कि उसे अशुद्ध भूत लगा है इसी लिये यीशु ने यह बात कही ॥

३१। सो उस के भाई और उस की माता आये और बाहर खड़े हो उस को बुलवा भेजा ॥ ३२। बहुत लोग उस के आसपास बैठे थे और उन्हों ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के भाई बाहर आप को ढूंढ़ते हैं ॥ ३३। उस ने उन को उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा मेरे भाई कौन हैं ॥ ३४। और जो लोग उस के आसपास बैठे थे उन पर चारों ओर दृष्टि कर उस ने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई ॥ ३५। क्योंकि जो कोई ईश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है ॥

४. यीशु फिर समुद्र के तीर पर उपदेश करने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़के समुद्र पर बैठा और सब लोग समुद्र के निकट भूमि पर रहे ॥ २। तब उस ने उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाईं और अपने उपदेश में उन से कहा ॥ ३। सुनो देखो एक बोनेहारा बीज बोने को निकला ॥ ४। बीज बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और आकाश के पक्षियों ने आके उसे चुग लिया ॥

५। कुछ पत्थरैली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वह बेग उगा॥ ६। परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वह झुलस गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया॥ ७। कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने बढ़के उस को दबा डाला और उस ने फल न दिया॥ ८। परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और फल दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला॥ ९। और उस ने उन से कहा जिस को सुनने के कान हों सो सुने॥

१०। जब वह एकान्त में था तब जो लोग उस के समीप थे उन्हों ने बारह शिष्यों के साथ इस दृष्टान्त का अर्थ उस से पूछा॥ ११। उस ने उन से कहा तुम को ईश्वर के राज्य का भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन्हों से सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं॥ १२। इस लिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और उन के पाप क्षमा किये जायें॥

१३। फिर उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते हो तो सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे॥ १४। बोनेहारा वह है जो वचन को बोता है॥ १५। मार्ग की ओर के जहां वचन बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त आके जो वचन उन के मन में बोया गया था उसे छीन लेता है॥ १६। वैसे ही जिन में बीज पत्थरैली भूमि पर बोया जाता है सो वे हैं कि जब वचन सुनते हैं तब तुरन्त आनन्द से उस को ग्रहण करते हैं॥ १७। परन्तु उन में जड़ न बंधने से वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब वचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त ठोकर खाते हैं॥ १८। जिन में बीज कांटों के बीच में बोया जाता है सो वे हैं जो वचन सुनते हैं॥ १९। पर इस संसार की चिन्ता और धन की माया और और वस्तुओं का लोभ उन में समाके वचन को दबाते हैं और वह निष्फल होता है॥ २०। पर जिन में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वे हैं जो वचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे॥

२१। और उस ने उन से कहा क्या दीपक को लाते हैं कि बर्तन के नीचे अथवा खाट के नीचे रखा जाय. क्या इस लिये नहीं कि दीवट पर रखा जाय॥ २२। कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु इस लिये कि प्रसिद्ध हो जावे॥ २३। यदि किसी को सुनने के कान हों तो सुने॥ २४। फिर उस ने उन से कहा सचेत रहो तुम क्या सुनते हो. जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुम को जो सुनते हो अधिक दिया जायगा॥ २५। क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा॥

२६। फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि मनुष्य भूमि में बीज बोय॥ २७। और रात दिन सोय और उठे और वह बीज जमे और बढ़े पर किस रीति से वह नहीं जानता है॥ २८। क्योंकि पृथिवी आप से आप फल फलती है पहिले अंकुर तब बाल तब बाल में पक्का दाना॥ २९। परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥

३०। फिर उस ने कहा हम ईश्वर के राज्य की उपमा किस से दें और किस दृष्टान्त से उसे वर्णन करें॥ ३१। वह राई के एक दाने की नाईं है कि जब भूमि में बोया जाता तब भूमि में के सब बीजों से छोटा है॥ ३२। परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता और सब सागपात से बड़ा हो जाता है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पंछी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

३३। ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तों में यीशु ने लोगों को जैसा वे सुन सकते थे वैसा वचन सुनाया॥ ३४। परन्तु बिना दृष्टान्त से उस ने उन को कुछ न कहा और एकान्त में उस ने अपने शिष्यों को सब बातों का अर्थ बताया॥

३५। उसी दिन सांझ को उस ने उन से कहा कि आओ हम उस पार चलें॥ ३६। सो उन्हों ने लोगों को विदा कर उसे नाव पर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी और नावें भी उस के संग थीं॥ ३७। और बड़ी आंधी उठी और लहरें नाव पर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी॥ ३८। परन्तु यीशु नाव की पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था और उन्हों ने उसे जगाके उस से कहा हे गुरु क्या आप को सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं॥ ३९। तब उस ने उठके बयार को डांटा और समुद्र से कहा चुप रह और थम जा और बयार थम गई और बड़ा नोवा हो गया॥ ४०। और उस ने उन से कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें विश्वास क्यों नहीं है॥ ४१। परन्तु वे बहुत ही डर गये और आपस में बोले यह कौन है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

५. वे समुद्र के उस पार गदेरियों के देश में पहुंचे॥ २। जब यीशु नाव पर से उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था कबरस्थान में से तुरन्त उस से आ मिला॥ ३। उस मनुष्य का बासा कबरस्थान में था और कोई उसे जंजीरों से भी बांध नहीं सकता था॥ ४। क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और जंजीरों से बांधा गया था और उस ने जंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था॥ ५। वह सदा रात दिन पहाड़ों और कबरों में रहता था और चिल्लाता और अपने को पत्थरों से काटता था॥ ६। वह यीशु को दूर से देखके दौड़ा और उस को प्रणाम किया॥ ७। और बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम. मैं आप को ईश्वर की किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये॥ ८। क्योंकि यीशु ने उस से कहा हे अशुद्ध भूत इस मनुष्य में से निकल आ॥ ९। और उस ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है. उस ने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत हैं॥ १०। और उस ने यीशु से बहुत बिन्ती किई कि हमें इस देश से बाहर न भेजिये॥ ११। वहां पहाड़ों के निकट सूअरों का बड़ा झुण्ड चरता था॥ १२। सो सब भूतों ने उस से बिन्ती कर कहा हमें सूअरों में भेजिये कि हम उन में पैठें॥ १३। यीशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअरों में पैठे और झुण्ड जो दो सहस्र के अटकल थे कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गये और समुद्र में डूब मरे॥ १४। पर सूअरों के चरवाहे भागे और नगर में और गांवों में इस का समाचार कहा और लोग बाहर निकले कि देखें क्या हुआ है॥ १५। और यीशु पास आके वे उस भूतग्रस्त को जिसे भूतों की सेना लगी थी बैठे और बस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके डर गये॥ १६। जिन लोगों ने देखा था उन्हों ने उन से कह दिया कि भूतग्रस्त मनुष्य को और सूअरों के विषय में कैसा हुआ था॥ १७। तब वे यीशु से बिन्ती करने लगे कि हमारे सिवानों से निकल जाइये॥ १८। जब वह नाव पर चढ़ा तब जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उस ने उस से बिन्ती किई कि मैं आप के संग रहूं॥ १९। पर यीशु ने उसे नहीं रहने दिया परन्तु उस से कहा अपने घर को अपने कुटुंबों के पास जाके उन्हों से कह दे कि परमेश्वर ने तुझ पर दया करके तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं॥ २०। वह जाके दिकापलि देश में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभों ने अचंभा किया॥

२१। जब यीशु नाव पर फिर पार उतरा तब बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्र के तीर पर था॥ २२। और देखो सभा के अध्यक्षों में से याईर नाम एक अध्यक्ष आया और उसे देखके उस के पांवों पड़ा॥ २३। और उस से बहुत बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरने पर है आप आके उस पर हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो वह जीयेगी॥ २४। तब यीशु उस के संग गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और उसे दबाती थी॥

२५। और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग था॥ २६। जो बहुत बैद्यों से बड़ा

दुःख पाके अपना सब धन उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक रोगी हुई ॥ २७। तिस ने यीशु का चर्चा सुनके उस भीड़ में पीछे से आ उस के बस्त्र को छूआ ॥ २८। क्योंकि उस ने कहा यदि मैं केवल उस के बस्त्र को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी ॥ २९। और उस के लोहू का सोता तुरन्त सूख गया और उस ने अपने देह में जान लिया कि मैं उस रोग से चंगी हुई हूं ॥ ३०। यीशु ने तुरन्त अपने में जाना कि मुझ में से शक्ति निकली है और भीड़ में पीछे फिरके कहा किस ने मेरे बस्त्र को छूआ ॥ ३१। उस के शिष्यों ने उस से कहा आप देखते हैं कि भीड़ आप को दबा रही है और आप कहते हैं किस ने मुझे छूआ ॥ ३२। तब जिस ने यह काम किया था उसे देखने को यीशु ने चारों ओर दृष्टि किई ॥ ३३। तब वह स्त्री जो उस पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई और उसे दण्डवत कर उस से सच सच सब कुछ कह दिया ॥ ३४। उस ने उस से कहा हे पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपने रोग से चंगी रह ॥

३५। वह बोलता ही था कि लोगों ने सभा के अध्यक्ष के घर से आ कहा आप की बेटी मर गई है आप गुरु को और दुःख क्यों देते हैं ॥ ३६। जो बचन कहा जाता था उस को सुनके यीशु ने तुरन्त सभा के अध्यक्ष से कहा मत डर केवल विश्वास कर ॥ ३७। और उस ने पितर और याकूब और याकूब के भाई योहन को छोड़ और किसी को अपने संग जाने नहीं दिया ॥ ३८। सभा के अध्यक्ष के घर पर पहुंचके उस ने धूमधाम अर्थात् लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा ॥ ३९। उस ने भीतर जाके उन से कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो . कन्या मरी नहीं पर सोती है ॥ ४०। वे उस का उपहास करने लगे परन्तु उस ने सभों को बाहर किया और कन्या के माता पिता को और अपने संगियों को लेके जहां कन्या पड़ी थी वहां पैठा ॥ ४१। और उस ने कन्या का हाथ पकड़के उस से कहा तालिथा कूमी अर्थात् हे कन्या मैं तुझ से कहता हूं उठ ॥ ४२। और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरस की थी . और वे अत्यन्त विस्मित हुए ॥ ४३। पर उस ने उन को दृढ़ आज्ञा दिई कि यह बात कोई न जाने और कहा कि कन्या को कुछ खाने को दिया जाय ॥

६. यीशु वहां से जाके अपने देश में आया और उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये ॥ २। विश्राम के दिन वह सभा के घर में उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो बोले इस को यह बातें कहां से हुईं और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म भी उस के हाथों से किये जाते हैं ॥ ३। यह क्या बढ़ई नहीं है मरियम का पुत्र और याकूब और योसी और यिहूदा और शिमोन का भाई और क्या उस की बहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं . सो उन्हों ने उस के विषय में ठोकर खाई ॥ ४। यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है ॥ ५। और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियों पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया ॥ ६। और उस ने उन के अविश्वास से अचंभा किया और चहुं ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा ॥

७। और वह बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा और उन को अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया ॥ ८। और उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि मार्ग के लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली न रोटी न पटुके में पैसे ॥ ९। परन्तु जूते पहिनो और दो अंगे मत पहिनो ॥ १०। और उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो जब लों वहां से न निकलो तब लों उसी घर में रहो ॥ ११। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी न सुने वहां से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों के नीचे की धूल झाड़ डालो . मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन में उस नगर की दशा से सदोम

अथवा अमोरा की दशा सहने योग्य होगी ॥ १२ । सो उन्हों ने निकलके पश्चात्ताप करने का उपदेश किया ॥ १३ । और बहुतेरे भूतों को निकाला और बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें चंगा किया ॥

१४ । हेरोद राजा ने यीशु की कीर्त्ति सुनी क्योंकि उस का नाम प्रसिद्ध हुआ और उस ने कहा योहन बपतिसमा देनेहारा मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म उस से प्रगट होते हैं ॥ १५ । औरों ने कहा यह एलियाह है औरों ने कहा भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से एक के समान है ॥ १६ । परन्तु हेरोद ने सुनके कहा जिस योहन का मैं ने सिर कटवाया सोई है वह मृतकों में से जी उठा है ॥ १७ । क्योंकि हेरोद ने आप अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण जिस से उस ने बिवाह किया था लोगों को भेजके योहन को पकड़ा था और उसे बन्दीगृह में बांधा था ॥ १८ । क्योंकि योहन ने हेरोद से कहा था कि अपने भाई की स्त्री को रखना तुझ को उचित नहीं है ॥ १९ । हेरोदिया भी उस से बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी पर नहीं सकती थी ॥ २० । क्योंकि हेरोद योहन को धर्म्मी और पवित्र पुरुष जानके उस से डरता था और उस की रक्षा करता था और उस की सुनके बहुत बातों पर चलता था और प्रसन्नता से उस की सुनता था ॥ २१ । परन्तु जब अवकाश का दिन हुआ कि हेरोद ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों और सहस्रपतियों और गालील के बड़े लोगों के लिये बियारी बनाई ॥ २२ । और जब हेरोदिया की पुत्री ने भीतर आ नाच कर हेरोद को और उस के संग बैठनेहारों को प्रसन्न किया तब राजा ने कन्या से कहा जो कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझ से मांग और मैं तुझे देऊंगा ॥ २३ । और उस ने उस से किरिया खाई कि मेरे आधे राज्य लों जो कुछ तू मुझ से मांगे मैं तुझे देऊंगा ॥ २४ । उस ने बाहर जा अपनी माता से कहा मैं क्या मांगूंगी . वह बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर ॥ २५ । उस ने तुरन्त उतावली से राजा के पास भीतर आ बिन्ती कर कहा मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर थाल में अभी मुझे दीजिये ॥ २६ । तब राजा अति उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण उसे टालने नहीं चाहा ॥ २७ । और राजा ने तुरन्त पहरुए को भेजकर योहन का सिर लाने की आज्ञा किई ॥ २८ । उस ने जाके बन्दीगृह में उस का सिर काटा और उस का सिर थाल में लाके कन्या को दिया और कन्या ने उसे अपनी मां को दिया ॥ २९ । उस के शिष्य यह सुनके आये और उस की लोथ को उठाके कबर में रखा ॥

३० । प्रेरितों ने यीशु पास एकट्ठे हो उस से सब कुछ कह दिया उन्हों ने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था ॥ ३१ । उस ने उन से कहा तुम आप एकान्त में किसी जंगली स्थान में आके थोड़ा बिश्राम करो . क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खाने का भी अवकाश न मिला ॥ ३२ । सो वे नाव पर चढ़के जंगली स्थान में एकान्त में गये ॥ ३३ । और लोगों ने उन को जाते देखा और बहुतों ने उसे चीन्हा और पैदल सब नगरों में से उधर दौड़े और उन के आगे बढ़के उस पास एकट्ठे हुए ॥ ३४ । यीशु ने निकलके बड़ी भीड़ को देखा और उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं थे और वह उन्हें बहुत सा उपदेश देने लगा ॥

३५ । जब अबेर हो गई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा यह तो जंगली स्थान है और अबेर हुई है ॥ ३६ । लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उन के पास कुछ खाने को नहीं है ॥ ३७ । उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम उन्हें खाने को देओ . उन्हों ने उस से कहा क्या हम जाके दो सौ सूकियों की रोटी मोल लेवें और उन्हें खाने को देवें ॥ ३८ । उस ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं जाके देखो . उन्हों ने बूझके कहा पांच और दो मछली ॥ ३९ । तब उस ने सब लोगों को हरी घास पर पांति पांति

बैठाने की आज्ञा उन्हें दिई ॥ ४० । वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति पांति बैठ गये ॥ ४१ । और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्यों को दिईं कि लोगों के आगे रखें और उन दो मछलियों को भी सभों में बांट दिया ॥ ४२ । सो सब खाके तृप्त हुए ॥ ४३ । और उन्हों ने रोटियों के टुकड़ों की और मछलियों की बारह टोकरी भरी उठाईं ॥ ४४ । जिन्हों ने रोटी खाई सो पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे ॥

४५ । तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगों को बिदा करूं तुम नाव पर चढ़के मेरे आगे उस पार बैतसैदा नगर को जाओ ॥ ४६ । वह उन्हें बिदा कर प्रार्थना करने को पर्व्वत पर गया ॥ ४७ । सांझ को नाव समुद्र के बीच में थी और यीशु भूमि पर अकेला था ॥ ४८ । और उस ने शिष्यों को खेवने में व्याकुल देखा क्योंकि बयार उन के सन्मुख की थी और रात के चौथे पहर के निकट वह समुद्र पर चलते हुए उन के पास आया और उन के पास से होके निकला चाहता था ॥ ४९ । पर उन्हों ने उसे समुद्र पर चलते देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये क्योंकि वे सब उसे देखके घबरा गये ॥ ५० । वह तुरन्त उन से बात करने लगा और उन से कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत ॥ ५१ । तब वह उन पास नाव पर चढ़ा और बयार थम गई और वे अपने अपने मन में अत्यन्त विस्मित और अचंभित हुए ॥ ५२ । क्योंकि उन्हों का मन कठोर था इस लिये उन रोटियों के आश्चर्य्य कर्म्म से उन्हें ज्ञान न हुआ ॥

५३ । वे पार उतरके गिनेसरत देश में पहुंचे और लगान किया ॥ ५४ । जब वे नाव पर से उतरे तब लोगों ने तुरन्त यीशु को चीन्हा ॥ ५५ । और आस-पास के सारे देश में दौड़के जहां सुना कि वह वहां है तहां रोगियों को खाटों पर ले जाने लगे ॥ ५६ । और जहां जहां उस ने बस्तियों अथवा नगरों अथवा गांवों में प्रवेश किया तहां उन्हों ने रोगियों को बाजारों में रखके उस से बिन्ती किई कि वे उस के वस्त्र के आंचल को भी छूवें और जितनों ने उसे छूआ सब चंगे हुए ॥

७. तब फरीशी लोग और कितने अध्यापक जो यिरूशलीम से आये थे यीशु पास एकट्ठे हुए ॥ २ । उन्हों ने उस के कितने शिष्यों को अशुद्ध अर्थात् बिन धोये हाथों से रोटी खाते देखके दोष दिया ॥ ३ । क्योंकि फरीशी और सब यिहूदी लोग प्राचीनों के व्यवहार धारण कर जब लों यत्न से हाथ न धोवें तब लों नहीं खाते हैं ॥ ४ । और बाजार से आके जब लों स्नान न करें तब लों नहीं खाते हैं और बहुत और बातें हैं जो उन्हों ने मानने को ग्रहण किई हैं जैसे कटोरों और बर्त्तनों और थालियों और खाटों को धोना ॥ ५ । सो उन फरीशियों और अध्यापकों ने उस से पूछा कि आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहारों पर नहीं चलते परन्तु बिन धोये हाथों से रोटी खाते हैं ॥ ६ । उस ने उन को उत्तर दिया कि यिशैयाह ने तुम कपटियों के विषय में भविष्यद्वाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये लोग होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन मुझ से दूर रहता है ॥ ७ । पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं ॥ ८ । क्योंकि तुम ईश्वर की आज्ञा को छोड़के मनुष्यों के व्यवहार धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और कटोरों को धोना . और ऐसे ऐसे बहुत और काम भी करते हो ॥ ९ । और उस ने उन से कहा तुम अपने व्यवहार पालन करने को ईश्वर की आज्ञा भली रीति से टाल देते हो ॥ १० । क्योंकि मूसा ने कहा अपनी माता और अपने पिता का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय ॥ ११ । परन्तु तुम कहते हो यदि मनुष्य अपने माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से लाभ होता सो कुर्बान अर्थात् सकल्प किया गया है तो बस ॥ १२ । और तुम उस को उस की माता अथवा उस

के पिता के लिये और कुछ करने नहीं देते हो॥ १३। सो तुम अपने व्यवहारों से जिन्हें तुम ने ठहराया है ईश्वर के वचन को उठा देते हो और ऐसे ऐसे बहुत काम करते हो॥

१४। और उस ने सब लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा तुम सब मेरी सुनो और बूझो॥ १५। मनुष्य के बाहर से जो उस से समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उस को अपवित्र कर सकता है परन्तु जो कुछ उस में से निकलता है सोई है जो मनुष्य को अपवित्र करता है॥ १६। यदि किसी को सुनने के कान हों तो सुने॥ १७। जब वह लोगों के पास से घर में आया तब उस के शिष्यों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा॥ १८। उस ने उन से कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो. क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ बाहर से मनुष्य में समाता है सो उस को अपवित्र नहीं कर सकता है॥ १९। क्योंकि वह उस के मन में नहीं परन्तु पेट में समाता है और संडास में गिरता है जिस से सब भोजन शुद्ध होता है॥ २०। फिर उस ने कहा जो मनुष्य में से निकलता है सोई मनुष्य को अपवित्र करता है॥ २१। क्योंकि भीतर से मनुष्यों के मन से नाना भांति की बुरी चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा॥ २२। चोरी लोभ औ दुष्टता और छल लुचपन कुदृष्टि ईश्वर की निन्दा अभिमान और अज्ञानता निकलती हैं॥ २३। यह सब बुरी बातें भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अपवित्र करती हैं॥

२४। यीशु वहां से उठके सोर और सीदोन के सिवानों में गया और किसी घर में प्रवेश करके चाहा कि कोई न जाने परन्तु वह छिप न सका॥ २५। क्योंकि सुरोफैनीकिया देश की एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिस की बेटी को अशुद्ध भूत लगा था उस का चर्चा सुनके आई और उस के पांवों पड़ी॥ २६। और उस से बिन्ती किई कि आप मेरी बेटी से भूत निकालिये॥ २७। यीशु ने उस से कहा लड़कों को पहिले तृप्त होने दे क्योंकि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे फेंकना अच्छा नहीं है॥ २८। स्त्री ने उस को उत्तर दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते मेज के नीचे बालकों के चूरचार खाते हैं॥ २९। उस ने उस से कहा इस बात के कारण चली जा भूत तेरी बेटी से निकल गया है॥ ३०। सो उस ने अपने घर जाके भूत को निकले हुए और अपनी बेटी को खाट पर लेटी हुई पाई॥

३१। फिर वह सोर और सीदोन के सिवानों से निकलके दिकापलि के सिवानों के बीच में होके गालील के समुद्र के निकट आया॥ ३२। और लोगों ने एक बहिरे तोतले मनुष्य को उस पास लाके उस से बिन्ती किई कि आप इस पर हाथ रखिये॥ ३३। उस ने उस को भीड़ में से एकान्त ले जाके अपनी उंगलियां उस के कानों में डालीं और थूकके उस की जीभ छूई॥ ३४। और स्वर्ग की ओर देखके लंबी सांस भरके उस से कहा इफ्फातह अर्थात् खुल जा॥ ३५। और तुरन्त उस के कान खुल गये और उस की जीभ का बंधन भी खुल गया और वह शुद्ध रीति से बोलने लगा॥ ३६। तब यीशु ने उन्हें चिताया कि किसी से मत कहो परन्तु जितना उस ने उन्हें चिताया उतना उन्हों ने बहुत अधिक प्रचार किया॥ ३७। और वे अत्यन्त अचंभित हो बोले उस ने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरों को सुनने और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

८. उन दिनों में जब बड़ी भीड़ हुई और उन के पास कुछ खाने को नहीं था तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा॥ २। मुझे इन लोगों पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है॥ ३। जो मैं उन्हें भोजन बिना अपने अपने घर जाने को बिदा करूं तो मार्ग में उन का बल घट जायगा क्योंकि उन में से कोई कोई दूर से आये हैं॥ ४। उस के शिष्यों ने उस को उत्तर दिया कि यहां जंगल में कहां से कोई इन लोगों को रोटी से तृप्त कर सके॥ ५। उस ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं. उन्हों ने कहा सात॥ ६। तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दिई और उन सात रोटियों

को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया कि उन के आगे रखें और शिष्यों ने लोगों के आगे रखा ॥ ७ । उन के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्यवाद कर उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा किई ॥ ८ । सो वे खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन के सात टोकरे उठाये ॥ ९ । जिन्हों ने खाया सो चार सहस्र पुरुषों के अटकल थे और उस ने उन को विदा किया ॥

१० । तब वह तुरन्त अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़के दलमनूथा नगर के सिवानों में आया ॥ ११ । और फरीशी लोग निकल आये और उस से विवाद करने लगे और उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा ॥ १२ । उस ने अपने आत्मा में हाय मारके कहा इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं . मैं तुम से सच कहता हूं कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा ॥ १३ । और वह उन्हें छोड़के नाव पर फिर चढ़के उस पार चला गया ॥

१४ । शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नाव पर उन के साथ एक रोटी से अधिक न थी ॥ १५ । और उस ने उन्हें चिताया कि देखो फरीशियों के खमीर से और हेरोद के खमीर से चौकस रहो ॥ १६ । वे आपस में विचार करने लगे यह इस लिये है कि हमारे पास रोटी नहीं है ॥ १७ । यह जानके यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास रोटी न होने के कारण तुम क्यों आपस में विचार करते हो . क्या तुम अब लों नहीं बूझते और नहीं समझते हो . क्या तुम्हारा मन अब लों कठोर है ॥ १८ । आंखें रहते हुए क्या नहीं देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या स्मरण नहीं करते हो ॥ १९ । जब मैं ने पांच सहस्र के लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरी उठाईं . उन्हों ने उस से कहा बारह ॥ २० । और जब चार सहस्र के लिये सात रोटी तब तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरे उठाये . वे बोले सात ॥ २१ । उस ने उन से कहा तुम क्यों नहीं समझते हो ॥

२२ । तब वह बैतसैदा में आया और लोगों ने एक अंधे को उस पास ला उस से बिन्ती किई कि उस को छूवे ॥ २३ । वह उस अंधे का हाथ पकड़के उसे नगर के बाहर ले गया और उस के नेत्रों पर थूकके उस पर हाथ रखके उस से पूछा क्या तू कुछ देखता है ॥ २४ । उस ने नेत्र उठाके कहा मैं वृक्षों की नाईं मनुष्यों को फिरते देखता हूं ॥ २५ । तब उस ने फिर उस के नेत्रों पर हाथ रखके उस से नेत्र उठवाये और वह चंगा हो गया और सभों को फरछाई से देखने लगा ॥ २६ । और उस ने उसे यह कहके घर भेजा कि नगर में मत जा और नगर में किसी से मत कह ॥

२७ । यीशु और उस के शिष्य कैसरिया फिलिपी के गांवों में निकल गये और मार्ग में उस ने अपने शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं ॥ २८ । उन्हों ने उत्तर दिया कि वे आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं ॥ २९ । उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं . पितर ने उस को उत्तर दिया कि आप खीष्ट हैं ॥ ३० । तब उस ने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मेरे विषय में किसी से मत कहो ॥

३१ । और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्य के पुत्र का अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीन दिन के पीछे जी उठे ॥ ३२ । उस ने यह बात खोलके कही और पितर उस लेके उस को डांटने लगा ॥ ३३ । उस ने मुंह फेरके और अपने शिष्यों पर दृष्टि करके पितर को डांटा कि हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है ॥

३४ । उस ने अपने शिष्यों के संग लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे ॥ ३५ । क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो

कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा ॥ ३६। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या लाभ होगा ॥ ३७। अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा ॥ ३८। जो कोई इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा ॥

९. यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य पराक्रम से आया हुआ न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ॥

२। छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर एकान्त में ले गया और उन के आगे उस का रूप बदल गया ॥ ३। और उस का वस्त्र चमकने लगा और पाले की नाईं अति उजला हुआ जैसा कोई धोबी धरती पर उजला नहीं कर सकता है ॥ ४। और मूसा के संग एलियाह उन को दिखाई दिया और वे यीशु के संग बात करते थे ॥ ५। इस पर पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है. हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये ॥ ६। वह नहीं जानता था कि क्या कहे क्योंकि वे बहुत डरते थे ॥ ७। तब एक मेघ ने उन्हें छा लिया और उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो ॥ ८। और उन्हों ने अचानक चारों ओर दृष्टि कर यीशु को छोड़के अपने संग और किसी को न देखा ॥ ९। जब वे उस पर्व्वत से उतरते थे तब उस ने उन को आज्ञा दिई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब लों जो तुम ने देखा है सो किसी से मत कहो ॥ १०। उन्हों ने यह बात अपने ही में रखके आपस में विचार किया कि मृतकों में से जी उठने का अर्थ क्या है ॥

११। और उन्हों ने उस से पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाह को पहिले आना होगा ॥ १२। उस ने उन को उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा. और मनुष्य के पुत्र के विषय में क्योंकर लिखा है कि वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा ॥ १३। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह भी आ चुका है और जैसा उस के विषय में लिखा है तैसा उन्हों ने उस से जो कुछ चाहा सो किया है ॥

१४। उस ने शिष्यों के पास आ बहुत लोगों को उन की चारों ओर और अध्यापकों को उन से विवाद करते हुए देखा ॥ १५। सब लोग उसे देखते ही बिस्मित हुए और उस की ओर दौड़के उसे प्रणाम किया ॥ १६। उस ने अध्यापकों से पूछा तुम इन से किस बात का विवाद करते हो ॥ १७। भीड़ में से एक ने उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्र को जिसे गूंगा भूत लगा है आप के पास लाया हूं ॥ १८। भूत उसे जहां पकड़ता है तहां पटकता है और वह मुंह से फेन बहाता और अपने दांत पीसता है और सूख जाता है और मैं ने आप के शिष्यों से कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके ॥ १९। यीशु ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और कब लों तुम्हारी सहूंगा. उस को मेरे पास लाओ ॥ २०। वे उस को उस पास लाये और जब उस ने उसे देखा तब भूत ने तुरन्त उस को मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा ॥ २१। यीशु ने उस के पिता से पूछा यह उस को कितने दिनों से हुआ. उस ने कहा बालकपन से ॥ २२। भूत ने उसे नाश करने को बार बार आग में और पानी में भी गिराया है परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हम पर दया करके हमारा उपकार कीजिये ॥ २३। यीशु ने उस से कहा जो तू विश्वास कर सके तो विश्वास करनेहारे के लिये सब कुछ हो सकता है ॥ २४। तब बालक के पिता ने तुरन्त पुकारके रो रोके कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं मेरे अविश्वास का उपकार कीजिये ॥ २५। जब यीशु

ने देखा कि बहुत लोग एकट्ठे दौड़े आते हैं तब उस ने अशुद्ध भूत को डांटके उस से कहा हे गूंगे बहिरे भूत मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और उस में फिर कभी मत पैठ॥ २६। तब भूत चिल्लाके और बालक को बहुत मरोड़के निकल आया और बालक मृतक के समान हो गया यहां लों कि बहुतों ने कहा वह तो मर गया है॥ २७। परन्तु यीशु ने उस का हाथ पकड़के उसे उठाया और वह खड़ा हुआ॥ २८। जब यीशु घर में आया तब उस के शिष्यों ने निराले में उस से पूछा हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके॥ २९। उस ने उन से कहा कि जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपाय से निकाले नहीं जा सकते हैं॥

३०। वे वहां से निकलके गालील में होके गये और वह नहीं चाहता था कि कोई जाने॥ ३१। क्योंकि उस ने अपने शिष्यों को उपदेश दे उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा और वे उस को मार डालेंगे और वह मरके तीसरे दिन जी उठेगा॥ ३२। परन्तु उन्हों ने यह बात नहीं समझी और उस से पूछने को डरते थे॥

३३। वह कफर्नाहुम में आया और घर में पहुंचके शिष्यों से पूछा मार्ग में तुम आपस में किस बात का विचार करते थे॥ ३४। वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में इसी का विचार किया था कि हम में से बड़ा कौन है॥ ३५। तब उस ने बैठके बारह शिष्यों को बुलाके उन से कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो सभों से छोटा और सभों का सेवक होगा॥ ३६। और उस ने एक बालक को लेके उन के बीच में खड़ा किया और उसे गोदी में ले उन से कहा॥ ३७। जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से एक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है॥

३८। तब योहन ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने किसी मनुष्य को जो हमारे पीछे नहीं आता है आप के नाम से भूतों को निकालते देखा और हम ने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है॥ ३९। यीशु ने कहा उस को मत बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर सकेगा॥ ४०। जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है॥ ४१। जो कोई मेरे नाम से एक कटोरा पानी तुम को इस लिये पिलावे कि ख्रीष्ट के हो मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल न खोवेगा॥ ४२। परन्तु जो कोई उन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह समुद्र में डाला जाता॥ ४३। जो तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल. टुण्डा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक में अर्थात् न बुझनेहारी आग में जाय॥ ४४। जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती॥ ४५। और जो तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल. लंगड़ा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरक में अर्थात् न बुझनेहारी आग में डाला जाय॥ ४६। जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती॥ ४७। और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल. काना होके ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय॥ ४८। जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती॥ ४९। क्योंकि हर एक जन आग से लोना किया जायगा और हर एक बलि लोन से लोना किया जायगा॥ ५०। लोन अच्छा है परन्तु यदि लोन अलोना हो जाय तो किस से उस को स्वादित करोगे. अपने में लोन रखो और आपस में मिले रहो॥

१०. यीशु वहां से उठके यर्दन के उस पार से होके यिहूदिया के सिवानों में आया और बहुत लोग फिर उस पास एकट्ठे आये और उस ने अपनी रीति पर उन्हों को

फिर उपदेश दिया॥ २। तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा करने को उस से पूछा क्या अपनी स्त्री को त्यागना मनुष्य को उचित है कि नहीं॥ ३। उस ने उन को उत्तर दिया कि मूसा ने तुम को क्या आज्ञा दिई॥ ४। उन्हों ने कहा मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और स्त्री को त्यागने दिया॥ ५। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने यह आज्ञा तुम को लिख दिई॥ ६। परन्तु सृष्टि के आरंभ से ईश्वर ने नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया॥ ७। इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे॥ ८। सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं॥ ९। इस लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे॥ १०। घर में उस के शिष्यों ने फिर इस बात के विषय में उस से पूछा॥ ११। उस ने उन से कहा जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह करे सो उस के विरुद्ध परस्त्रीगमन करता है॥ १२। और यदि स्त्री अपने स्वामी को त्यागके दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है॥

१३। तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने लानेहारों को डांटा॥ १४। यीशु ने यह देखके अप्रसन्न हो उन से कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत वर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का है॥ १५। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा॥ १६। तब उस ने उन्हें गोदी में लेके उन पर हाथ रखके उन्हें आशीस दिई॥

१७। जब वह मार्ग में जाता था तब एक मनुष्य उस की ओर दौड़ा और उस के आगे घुटने टेकके उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने को मैं क्या करूं॥ १८। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात् ईश्वर॥ १९। तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने माता पिता को आदर कर॥ २०। उस ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया है॥ २१। यीशु ने उस पर दृष्टि कर उसे प्यार किया और उस से कहा तुझे एक बात की घटी है. जा जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ क्रूश उठाके मेरे पीछे हो ले॥ २२। वह इस बात से अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था॥

२३। यीशु ने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्यों से कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन होगा॥ २४। शिष्य लोग उस की बातों से अचंभित हुए परन्तु यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया कि हे बालको जो धन पर भरोसा रखते हैं उन्हों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है॥ २५। ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है॥ २६। वे अत्यन्त अचंभित हो आपस में बोले तब तो किस का त्राण हो सकता है॥ २७। यीशु ने उन पर दृष्टि कर कहा मनुष्यों से यह अनहोना है परन्तु ईश्वर से नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ हो सकता है॥

२८। पितर उस से कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं॥ २९। यीशु ने उत्तर दिया मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा हो॥ ३०। ऐसा कोई नहीं है जो अब इस समय में उपद्रव सहित सौ गुणे घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और भूमि को और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा॥ ३१। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे॥

३२। वे यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में थे और यीशु उन के आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और उस के पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह शिष्यों को लेके जो कुछ उस

पर होनहार था सो उन से कहने लगा॥ ३३। कि देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को वध के योग्य ठहराके अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे॥ ३४। और वे उस से ठट्ठा करेंगे और कोड़े मारेंगे और उस पर थूकेंगे और उसे घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा॥

३५। तब जबदी के पुत्र याकूब और योहन ने यीशु पास आ कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो आप हमारे लिये करें॥ ३६। उस ने उन से कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं॥ ३७। वे उस से बोले हमें यह दीजिये कि आप के ऐश्वर्य्य में हम में से एक आप की दहिनी ओर और दूसरा आप की बाईं ओर बैठे॥ ३८। यीशु ने उन से कहा तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरे से मैं पीता हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो॥ ३९। उन्हों ने उस से कहा हम सकते हैं. यीशु ने उन से कहा जिस कटोरे से मैं पीता हूं उस से तुम तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे॥ ४०। परन्तु जिन्हों के लिये तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है॥

४१। यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहन पर रिसियाने लगे॥ ४२। यीशु ने उन को अपने पास बुलाके उन से कहा तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियों के अध्यक्ष समझे जाते सो उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन में के बड़े लोग उन्हों पर अधिकार रखते हैं॥ ४३। परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होगा॥ ४४। और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे सो सभों का दास होगा॥ ४५। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है॥

४६। वे यिरीहो नगर में आये और जब वह और उस के शिष्य और बहुत लोग यिरीहो से निकलते थे तब तीमई का पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्ग की ओर बैठा भीख मांगता था॥ ४७। वह यह सुनके कि यीशु नासरी है पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान यीशु मुझ पर दया कीजिये॥ ४८। बहुत लोगों ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये॥ ४९। तब यीशु खड़ा रहा और उसे बुलाने को कहा और लोगों ने उस अंधे को बुलाके उस से कहा ढाढ़स कर उठ वह तुझे बुलाता है॥ ५०। वह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास आया॥ ५१। इस पर यीशु ने उस से कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं. अंधा उस से बोला हे गुरु मैं अपनी दृष्टि पाऊं॥ ५२। यीशु ने उस से कहा चला जा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है. और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया॥

११. जब वे यिरूशलीम के निकट अर्थात् जैतून पर्व्वत के समीप बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचे तब उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा॥ २। कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते ही तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ॥ ३। जो तुम से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभु को इस का प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा॥ ४। उन्हों ने जाके उस बच्चे को दो बाटों के सिरे पर द्वार के पास बाहर बंधे हुए पाया और उस को खोलने लगे॥ ५। तब जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने उन से कहा कि तुम क्या करते हो कि बच्चे को खोलते हो॥ ६। उन्हों ने जैसा यीशु ने आज्ञा किई वैसा उन से कहा तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया॥ ७। और उन्हों ने बच्चे को यीशु पास लाके उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठा॥ ८। और बहुत लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये

और औरों ने वृक्षों से डालियां काटके मार्ग में बिछाईं ॥ ९। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हों ने पुकारके कहा जय जय धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है ॥ १०। धन्य हमारे पिता दाऊद का राज्य जो परमेश्वर के नाम से आता है . सब से ऊंचे स्थान में जयजयकार होवे ॥ ११। यीशु ने यिरूशलीम में आ मन्दिर में प्रवेश किया और जब उस ने चारों ओर सब वस्तुओं पर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब वह बारह शिष्यों के संग बैथनिया को निकल गया ॥

१२। दूसरे दिन जब वे बैथनिया से निकलते थे तब उस को भूख लगी ॥ १३। और वह पत्ते लगे हुए एक गूलर का वृक्ष दूर से देखके आया कि क्या जाने उस में कुछ पावे परन्तु उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते . गूलर के पकने का समय नहीं था ॥ १४। इस पर यीशु ने उस वृक्ष को कहा कोई मनुष्य फिर कभी तुझ से फल न खावे . और उस के शिष्यों ने यह बात सुनी ॥

१५। वे यिरूशलीम में आये और यीशु मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों की चौकियों को उलट दिया ॥ १६। और किसी को मन्दिर के बीच से कोई पात्र ले जाने न दिया ॥ १७। और उस ने उपदेश कर उन से कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहावेगा . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है ॥ १८। यह सुनके अध्यापकों और प्रधान याजकों ने खोज किया कि उसे किस रीति से नाश करें क्योंकि वे उस से डरते थे इस लिये कि सब लोग उस के उपदेश से अचंभित होते थे ॥ १९। जब सांझ हुई तब वह नगर से बाहर निकला ॥

२०। भोर को जब वे उधर से आते थे तब उन्हों ने वह गूलर का वृक्ष जड़ से सूखा हुआ देखा ॥ २१। पितर ने स्मरण कर यीशु से कहा हे गुरु देखिये यह गूलर का वृक्ष जिसे आप ने स्राप दिया सूख गया है ॥ २२। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि ईश्वर पर बिश्वास रखो ॥ २३। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं जो कोई इस पहाड़ से कहे कि उठ समुद्र में गिर पड़ और अपने मन में संदेह न रखे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं कहता हूं सो हो जायगा उस के लिये जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा ॥ २४। इस लिये मैं तुम से कहता हूं जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा ॥ २५। और जब तुम प्रार्थना करने को खड़े हो तब यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर कुछ होय तो क्षमा करो इस लिये कि तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे ॥ २६। परन्तु जो तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ॥

२७। वे फिर यिरूशलीम में आये और जब यीशु मन्दिर में फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग उस पास आये ॥ २८। और उस से बोले तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और ये काम करने को किस ने तुझ को यह अधिकार दिया ॥ २९। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ॥ ३०। योहन का बपतिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ मुझे उत्तर देओ ॥ ३१। तब वे आपस में बिचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया ॥ ३२। परन्तु जो हम कहें मनुष्यों की ओर से . तब उन्हें लोगों का डर लगा क्योंकि सब लोग योहन को जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वक्ता था ॥ ३३। सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . यीशु ने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ॥

१२. यीशु दृष्टांतों में उन से कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और चहुं ओर बेढ़ दिया और रस का

कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को उस का ठीका दे परदेश को चला गया ॥ २ । समय में उस ने मालियों के पास एक दास को भेजा कि मालियों से दाख की बारी का कुछ फल लेवे ॥ ३ । परन्तु उन्हों ने उसे लेके मारा और छूछे हाथ फेर दिया ॥ ४ । फिर उस ने दूसरे दास को उन के पास भेजा और उन्हों ने उसे पत्थरवाह कर उस का सिर फोड़ा और उसे अपमान करके फेर दिया ॥ ५ । फिर उस ने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे मार डाला और बहुत औरों से उन्हों ने वैसा ही किया कितनों को मारा और कितनों को घात किया ॥ ६ । फिर उस को एक ही पुत्र था जो उस का प्रिय था सो सब के पीछे उस ने यह कहके उसे भी उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे ॥ ७ । परन्तु उन मालियों ने आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें तब अधिकार हमारा होगा ॥ ८ । और उन्हों ने उसे लेके मार डाला और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया ॥ ९ । इस लिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा . वह आके उन मालियों को नाश करेगा और दाख की बारी दूसरों के हाथ देगा ॥ १० । क्या तुम ने धर्म्मपुस्तक का यह वचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है ॥ ११ । यह परमेश्वर का कार्य्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है ॥ १२ । तब उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे विरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों से डरे और उसे छोड़के चले गये ॥

१३ । तब उन्हों ने उसे बात में फंसाने को कई एक फरीशियों और हेरोदियों को उस पास भेजा ॥ १४ । वे आके उस से बोले हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं . क्या कैसर को कर देना उचित है अथवा नहीं . हम देवें अथवा न देवें ॥ १५ । उस ने उन का कपट जानके उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो . एक सूकी मेरे पास लाओ कि मैं देखूं ॥ १६ । वे लाये और उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति और छाप किस की है . वे उस से बोले कैसर की ॥ १७ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ . तब वे उस से अचंभित हुए ॥

१८ । सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से पूछा ॥ १९ । कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई मर जाय और स्त्री को छोड़े और उस को सन्तान न हों तो उस का भाई उस की स्त्री से विवाह करे और अपने भाई के लिये बंश खड़ा करे ॥ २० । सो सात भाई थे . पहिला भाई विवाह कर निःसन्तान मर गया ॥ २१ । तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया और मर गया और उस को भी सन्तान न हुआ . और वैसे ही तीसरे ने भी ॥ २२ । सातों ने उस से विवाह किया पर किसी को सन्तान न हुआ . सब के पीछे स्त्री भी मर गई ॥ २३ । सो मृतकों के जी उठने पर जब वे सब उठेंगे तब वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से विवाह किया ॥ २४ । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूल में न पड़े हो कि धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति नहीं बूझते हो ॥ २५ । क्योंकि जब वे मृतकों में से जी उठें तब न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान हैं ॥ २६ । मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा के पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा है कि ईश्वर ने उस से कहा मैं इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं ॥ २७ । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो ॥

२८ अध्यापकों में से एक ने आ उन्हें विवाद करते सुना और यह जानके कि यीशु ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया उस से पूछा सब से बड़ी आज्ञा कौन है ॥ २९ । यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यही बड़ी है कि हे इस्रायेल सुनो परमेश्वर

हमारा ईश्वर एक ही परमेश्वर है ॥ ३० । और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर . यही सब से बड़ी आज्ञा है ॥ ३१ । और दूसरी उस के समान है सो यह है कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर . इन से और कोई आज्ञा बड़ी नहीं ॥ ३२ । उस अध्यापक ने उस से कहा अच्छा हे गुरु आप ने सत्य कहा है कि एक ही ईश्वर है और उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है ॥ ३३ । और उस को सारे मन से और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी शक्ति से प्रेम करना और पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना सारे होमों से और बलिदानों से अधिक है ॥ ३४ । जब यीशु ने देखा कि उस ने बुद्धि से उत्तर दिया था तब उस से कहा तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है . और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

३५ । इस पर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि खीष्ट दाऊद का पुत्र है ॥ ३६ । दाऊद आप ही पवित्र आत्मा की शिक्षा से बोला कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ ॥ ३७ । दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र कहां से है . भीड़ के अधिक लोग प्रसन्नता से उस की सुनते थे ॥

३८ । उस ने अपने उपदेश में उन से कहा अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं ॥ ३९ । और बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे स्थान भी चाहते हैं ॥ ४० । वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे ॥

४१ । यीशु भंडार के साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्योंकर भंडार में रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला ॥ ४२ । और एक कंगाल विधवा ने आके दो छदाम अर्थात् आध पैसा डाला ॥ ४३ । तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिन्हों ने भण्डार में डाला है उन सभों से इस कंगाल विधवा ने अधिक डाला है ॥ ४४ । क्योंकि सभों ने अपनी बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से जो कुछ उस का था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाली है ॥

१३. **ज**ब यीशु मन्दिर में से निकलता था तब उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और कैसी रचना है ॥ २ । यीशु ने उसे उत्तर दिया क्या तू यह बड़ी बड़ी रचना देखता है . पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ॥

३ । जब वह जैतून पर्व्वत पर मन्दिर के साम्ने बैठा था तब पितर और याकूब और योहन और अन्द्रिय ने निराले में उस से पूछा ॥ ४ । कि हमों से कहिये यह कब होगा और यह सब बातें जिस समय में पूरी होंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा ॥ ५ । यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाये ॥ ६ । क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतों को भरमावेंगे ॥ ७ । जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं होगा ॥ ८ । क्योंकि देश देश के और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में भुईंडोल होंगे और अकाल और हुल्लड़ होंगे . यह तो दुःखों का आरंभ होगा ॥

९ । तुम अपने विषय में चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें पंचायतों में सौंपेंगे और तुम सभाओं में मारे जाओगे और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर साक्षी होने के लिये खड़े किये जाओगे ॥ १० । परन्तु अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब देशों के लोगों में सुनाया जाय ॥ ११ । जब वे तुम्हें ले जाके सौंप देवें तब क्या कहोगे इस की चिन्ता आगे से मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलने-

होगा ॥ १२ । भाई भाई को और पिता पुत्र को बध किये जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के विरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे ॥ १३ । और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ॥

१४ । जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित वस्तु को जिस की बात दानिएल भविष्यद्वक्ता ने कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें ॥ १५ । जो कोठे पर हो सो न घर में उतरे और न अपने घर में से कुछ लेने को उस में पैठे ॥ १६ । और जो खेत में हो सो अपना वस्त्र लेने को पीछे न फिरे ॥ १७ । उन दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां ॥ १८ । परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में भागना न होवे ॥ १९ । क्योंकि उन दिनों में ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टि के आरंभ से जो ईश्वर ने सृजी अब तक न हुआ और कभी न होगा ॥ २० । यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगों के कारण जिन को उस ने चुना है उस ने उन दिनों को घटाया है ॥

२१ । तब यदि कोई तुम से कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा देखो वहां है तो प्रतीति मत करो ॥ २२ । क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे इस लिये कि जो हो सके तो चुने हुए लोगों को भी भरमावें ॥ २३ । पर तुम चौकस रहो देखो मैं ने आगे से तुम्हें सब बातें कह दिई हैं ॥

२४ । उन दिनों में उस क्लेश के पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा ॥ २५ । आकाश के तारे गिर पड़ेंगे और आकाश में की सेना डिग जायगी ॥ २६ । तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्य से मेघों पर आते देखेंगे ॥ २७ । और तब वह अपने दूतों को भेजेगा और पृथिवी के इस सिवाने से आकाश के उस सिवाने तक चहुं दिशा से अपने चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेगा ॥

२८ । गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो . जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है ॥ २९ । इस रीति से जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार पर है ॥ ३० । मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों ये सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे ॥ ३१ । आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ॥

३२ । उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गवासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल पिता ॥ ३३ । देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते हो वह समय कब होगा ॥ ३४ । वह ऐसा है जैसे परदेश जानेवाले एक मनुष्य ने अपना घर छोड़ा और अपने दासों को अधिकार और हर एक को उस का काम दिया और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दिई ॥ ३५ । इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घर का स्वामी कब आवेगा सांझ को अथवा आधी रात को अथवा मुर्ग बोलने के समय में अथवा भोर को ॥ ३६ । ऐसा न हो कि वह अचांचक आके तुम्हें सोते पावे ॥ ३७ । और जो मैं तुम से कहता हूं सो सभों से कहता हूं जागते रहो ॥

१४. निस्तार पर्व्व और अखमीरी रोटी का पर्व्व दो दिन के पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर छल से पकड़के मार डालें ॥ २ । परन्तु उन्हों ने कहा पर्व्व में नहीं न हो कि लोगों का हुल्लड़ होवे ॥

३ । जब वह बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था और भोजन पर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र तोड़के उस के सिर पर ढाला ॥ ४ । कोई कोई अपने मन में रिसियाते थे और बोले सुगन्ध तेल का यह क्षय क्यों हुआ ॥ ५ । क्योंकि वह तीन सौ सूकियों से अधिक दाम में बिक

सकता और कंगालों को दिया जा सकता. और वे उस स्त्री पर कुड़कुड़ाये ॥ ६। यीशु ने कहा उस को रहने दो क्यों उस को दुःख देते हो. उस ने अच्छा काम मुझ से किया है ॥ ७। कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ॥ ८। जो कुछ वह कर सकी सो किया है. उस ने मेरे गाड़े जाने के लिये आगे से मेरे देह पर सुगन्ध तेल लगाया है ॥ ९। मैं तुम से सत्य कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा ॥

१०। तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्यों में से एक था प्रधान याजकों के पास गया इस लिये कि यीशु को उन्हों के हाथ पकड़वाय ॥ ११। वे यह सुनके आनन्दित हुए और उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय ॥

१२। अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन जिस में वे निस्तार पर्व्व का मेम्ना मारते थे यीशु के शिष्य लोग उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि आप निस्तार पर्व्व का भोजन खावें ॥ १३। उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे हो लेओ ॥ १४। जिस घर में वह पैठे उस घर के स्वामी से कहो गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग निस्तार पर्व्व का भोजन खाऊं ॥ १५। वह तुम्हें एक सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो ॥ १६। तब उस के शिष्य लोग चले और नगर में आके जैसा उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्व्व का भोजन बनाया ॥

१७। सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग आया ॥ १८। जब वे भोजन पर बैठके खाते थे तब यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वायगा ॥ १९। इस पर वे उदास होने और एक एक करके उस से कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरे ने कहा क्या मैं हूं ॥ २०। उस ने उन को उत्तर दिया कि बारहों में से एक जो मेरे संग थाली में हाथ डालता है सोई है ॥ २१। मनुष्य का पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है. जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता ॥

२२। जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के उन को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है ॥ २३। और उस ने कटोरा ले धन्य मानके उन्हें दिया और सभों ने उस से पीया ॥ २४। और उस ने उन से कहा यह मेरा लोहू अर्थात् नये नियम का लोहू है जो बहुतों के लिये बहाया जाता है ॥ २५। मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस दिन लों मैं ईश्वर के राज्य में उसे नया न पीऊं उस दिन लों मैं दाखरस फिर कभी न पीऊंगा ॥ २६। और वे भजन गाके जैतून पर्व्वत पर गये॥

२७। तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं ॥ २८। परन्तु मैं अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा ॥ २९। पितर ने उस से कहा यदि सब ठोकर खावें तौभी मैं नहीं ठोकर खाऊंगा ॥ ३०। यीशु ने उस से कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि आज इसी रात मुर्ग के दो बार बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा ॥ ३१। उस ने और भी दृढ़ता से कहा जो आप के संग मुझे मरना हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा. सभों ने वैसा ही कहा ॥

३२। वे गेतशिमनी नाम स्थान में आये और यीशु ने अपने शिष्यों से कहा जब लों मैं प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो ॥ ३३। और वह पितर और याकूब और योहन को अपने संग ले गया और व्याकुल और बहुत उदास होने लगा ॥ ३४। और उस ने उन से कहा मेरा मन यहां लों अति उदास है कि

में मरने पर हूं . तुम यहां ठहरो और जागते रहो॥ ३५। और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमि पर गिरा और प्रार्थना किई कि जो हो सके तो वह घड़ी उस से टल जाय॥ ३६। उस ने कहा हे अब्बा हे पिता तुझ से सब कुछ हो सकता है यह कटोरा मेरे पास से टाल दे तौभी जो मैं चाहता हूं सो न होय पर जो तू चाहता है॥ ३७। तब उस ने आ उन्हें सोते पाया और पितर से कहा हे शिमोन सो तू सोता है क्या तू एक घड़ी नहीं जाग सका॥ ३८। जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है॥ ३९। उस ने फिर आके वही बात कहके प्रार्थना किई॥ ४०। तब उस ने लौटके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं . और वे नहीं जानते थे कि उस को क्या उत्तर देवें॥ ४१। और उस ने तीसरी बेर आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और विश्राम करते हो . बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है॥ ४२। उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है॥

४३। वह बोलता ही था कि यिहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था तुरन्त आ पहुंचा और प्रधान याजकों और अध्यापकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उस के संग॥ ४४। यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उस को पकड़के यत्न से ले जाओ॥ ४५। और वह आया और तुरन्त यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उस को चूमा॥ ४६। तब उन्हों ने उस पर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा॥ ४७। जो लोग निकट खड़े थे उन में से एक ने खड्ग खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया॥ ४८। इस पर यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो॥ ४९। मैं मन्दिर में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा . परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्मपुस्तक की बातें पूरी होवें॥ ५०। तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे॥

५१। और एक जवान जो देह पर चद्दर ओढ़े हुए था उस के पीछे हो लिया और प्यादों ने उसे पकड़ा॥ ५२। वह चद्दर छोड़के उन से नंगा भागा॥

५३। वे यीशु को महायाजक के पास ले गये और सब प्रधान याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे हुए॥ ५४। पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक के अंगने के भीतर लों चला गया और प्यादों के संग बैठके आग तापने लगा॥ ५५। प्रधान याजकों ने और न्यायियों की सारी सभा ने यीशु को घात करवाने के लिये उस पर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई॥ ५६। क्योंकि बहुतों ने उस पर झूठी साक्षी दिई परन्तु उन की साक्षी एक समान न थी॥ ५७। तब कितनों ने खड़े हो उस पर यह झूठी साक्षी दिई॥ ५८। कि हमों ने इस को कहते सुना कि मैं यह हाथ का बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा और तीन दिन में दूसरा बिन हाथ का बनाया हुआ मन्दिर उठाऊंगा॥ ५९। पर यों भी उन की साक्षी एक समान न थी॥ ६०। तब महायाजक ने बीच में खड़ा हो यीशु से पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी देते हैं॥ ६१। परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया . महायाजक ने उस से फिर पूछा और उस से कहा क्या तू उस परमधन्य का पुत्र खीष्ट है॥ ६२। यीशु ने कहा मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे॥ ६३। तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़के कहा अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन॥ ६४। ईश्वर की यह निन्दा तुम ने सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता है . सभों ने उस को बध के योग्य ठहराया॥ ६५। तब कोई कोई उस पर थूकने लगे और उस का मुंह ढांपके उसे घूसे मारके उस से कहने लगे कि भविष्यद्वाणी बोल . प्यादों ने भी उसे थपेड़े मारे॥

६६। जब पितर नीचे अंगने में था तब महायाजक की दासियों में से एक आई॥ ६७। और

पितर को आग तापते देखके उस पर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरी के संग था ॥ ६८। उस ने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या कहती है . तब वह बाहर डेवढ़ी में गया और मुर्ग बोला ॥ ६९। दासी उसे फिर देखके जो लोग निकट खड़े थे उन से कहने लगी कि यह उन में से एक है . वह फिर मुकर गया ॥ ७०। फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग निकट खड़े थे उन्हों ने पितर से कहा तू सचमुच उन में से एक है क्योंकि तू गालीली भी है और तेरी बोली वैसी ही है ॥ ७१। तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिस के विषय में बोलते हो नहीं जानता हूं ॥ ७२। तब मुर्ग दूसरी बार बोला और जो बात यीशु ने उस से कही थी कि मुर्ग के दो बार बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा उस बात को पितर ने स्मरण किया और सोच करते हुए रोने लगा ॥

१५. भोर को प्रधान याजकों ने प्राचीनों और अध्यापकों के संग बरन न्याइयों की सारी सभा ने तुरन्त आपस में विचार कर यीशु को बांधा और उसे ले जाके पिलात को सौंप दिया ॥ २। पिलात ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . उस ने उस को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं ॥ ३। और प्रधान याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये ॥ ४। तब पिलात ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता . देख वे तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं ॥ ५। परन्तु यीशु ने और कुछ उत्तर नहीं दिया यहां लों कि पिलात ने अचंभा किया ॥ ६। उस पर्ब्ब में वह एक बंधुवे को जिसे लोग मांगते थे उन्हों के लिये छोड़ देता था ॥ ७। बरब्बा नाम एक मनुष्य अपने संगी राजद्रोहियों के साथ जिन्हों ने बलवे में नरहिंसा किई थी बंधा हुआ था ॥ ८। और लोग पुकारके पिलात से मांगने लगे कि जैसा उन्हों के लिये सदा करता था तैसा करे ॥ ९। पिलात ने उन को उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियों के राजा को छोड़ देऊं ॥ १०। क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उस को डाह से पकड़वाया था ॥ ११। परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उस्काया इस लिये कि वह बरब्बा ही को उन के लिये छोड़ देवे ॥ १२। पिलात ने उत्तर देके उन से फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहूदियों का राजा कहते हो उस से मैं क्या करूं ॥ १३। उन्हों ने फिर पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये ॥ १४। पिलात ने उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है . परन्तु उन्हों ने बहुत अधिक पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये ॥

१५। तब पिलात ने लोगों को सन्तुष्ट करने की इच्छा कर बरब्बा को उन्हों के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया ॥ १६। तब योद्धाओं ने उसे घर के अर्थात् अध्यक्षभवन के भीतर ले जाके सारी पलटन को एकट्ठे बुलाया ॥ १७। और उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिराया और कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रखा ॥ १८। और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम ॥ १९। और उन्हों ने नरकट से उस के सिर पर मारा और उस पर थूका और घुटने टेकके उस को प्रणाम किया ॥ २०। जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस से वह बैंजनी वस्त्र उतारके और उस का निज वस्त्र उस को पहिराके उसे क्रूश पर चढ़ाने को बाहर ले गये ॥ २१। और उन्हों ने कुरीनी देश के एक मनुष्य को अर्थात् सिकन्दर और रूफ के पिता शिमोन को जो गांव से आते हुए उधर से जाता था बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले ॥

२२। तब वे उसे गलगथा स्थान पर लाये जिस का अर्थ यह है खोपड़ी का स्थान ॥ २३। और उन्हों ने दाखरस में मुर मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने न लिया ॥ २४। तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और उस के कपड़ों पर चिट्ठियां डालके कि कौन किस को लेगा उन्हें बांट लिया ॥ २५। एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया ॥ २६। और उस का यह दोषपत्र

ऊपर लिखा गया कि यिहूदियों का राजा ॥ २७। उन्हों ने उस के संग दो डाकूओं को एक को उस की दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर चढ़ाया॥ २८। तब धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा हुआ कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया ॥

२९। जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर हिलाके और यह कहके उस की निन्दा किई ॥ ३०। कि हा मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को बचा और क्रूश पर से उतर आ ॥ ३१। इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों के संग आपस में ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है ॥ ३२। इस्रायेल का राजा खीष्ट क्रूश पर से अब उतर आवे कि हम देखके बिश्वास करें. जो उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्हों ने भी उस की निन्दा किई॥

३३। जब दो पहर हुआ तब सारे देश में तीसरे पहर लों अंधकार हो गया॥ ३४। तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है ॥ ३५। जो लोग निकट खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह एलियाह को बुलाता है ॥ ३६। और एक ने दौड़के इस्पंज को सिरके में भिंगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया और कहा रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारने को आता है कि नहीं ॥

३७। तब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा॥ ३८। और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया॥ ३९। जो शत-पति उस के सन्मुख खड़ा था उस ने जब उसे यूं पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था ॥

४०। कितनी स्त्रियां भी दूर से देखती रही जिन्हों में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब की औ योशी की माता मरियम और शालोमी थीं॥ ४१। जब यीशु गालील में था तब ये उस के पीछे हो लेती थी और उस की सेवा करती थीं. बहुत सी और स्त्रियां भी जो उस के संग यिरूशलीम में आई वहां थीं ॥

४२। यह दिन तैयारी का दिन था जो विश्राम-वार के एक दिन आगे है ॥ ४३। इस लिये जब सांझ हुई तब अरिमाथिया नगर का यूसफ एक आदरवन्त मंत्री जो आप भी ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था आया और साहस से पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी ॥ ४४। पिलात ने अचंभा किया कि वह क्या मर गया है और शतपति को अपने पास बुलाके उस से पूछा क्या उस को मरे कुछ बेर हुई ॥ ४५। शतपति से जानके उस ने यूसफ को लोथ दिई ॥ ४६। यूसफ ने एक चद्दर मोल लेके यीशु को उतारके उस चद्दर में लपेटा और उसे एक कबर मे जो पत्थर में खोदी हुई थी रखा और कबर के द्वार पर पत्थर लुढ़का दिया ॥ ४७। मरियम मगदलीनी और योशी की माता मरियम ने वह स्थान देखा जहां वह रखा गया॥

१६. जब बिश्रामवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शालोमी ने सुगंध मोल लिया कि आके यीशु को मलें ॥ २। और अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे कबर पर आईं॥ ३। और वे आपस मे बोलीं कौन हमारे लिये कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़कावेगा ॥ ४। परन्तु उन्हों ने दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है. और वह बहुत बड़ा था ॥ ५। कबर के भीतर जाके उन्हों ने उजले लंबे वस्त्र पहिने हुए एक जवान को दहिनी ओर बैठे देखा और चकित हुईं ॥ ६। उस ने उन से कहा चकित मत होओ तुम यीशु नासरीको जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती हो. वह जी उठा है वह यहां नहीं है. देखो यही स्थान है जहां उन्हों ने उसे रखा ॥ ७। परन्तु जाके उस के शिष्यों से और पितर से कहो कि वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है. जैसे उस ने तुम से कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे ॥ ८। वे शीघ्र निकलके कबर से भाग गईं और कंपित और बिस्मित हुईं और किसी से कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं ॥

९। यीशु ने अठवारे के पहिले दिन भोर को जी उठके पहिले मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात भूत निकाले थे दर्शन दिया॥ १०। उस ने जाके उस के संगियों को जो शोक करते और रोते थे कह दिया॥ ११। उन्हों ने जब सुना कि वह जीता है और मरियम से देखा गया है तब प्रतीति न किई॥

१२। इस के पीछे उस ने उन में से दो को जो मार्ग में चलते और किसी गांव को जाते थे दूसरे रूप में दर्शन दिया॥ १३। उन्हों ने भी जाके औरों से कह दिया परन्तु उन्हों ने उन की भी प्रतीति न किई॥

१४। पीछे उस ने ग्यारह शिष्यों को जब वे भोजन पर बैठे थे दर्शन दिया और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलहना दिया इस लिये कि जिन्हों ने उसे जी उठे हुए देखा था उन लोगों की उन्हों ने प्रतीति न किई॥ १५। और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाके हर एक मनुष्य को सुसमाचार सुनाओ॥ १६। जो विश्वास करे और बपतिसमा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो विश्वास न करे सो दण्ड के योग्य ठहराया जायगा॥ १७। और ये चिन्ह विश्वास करनेहारों के संग प्रगट होंगे. वे मेरे नाम से भूतों को निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे॥ १८। वे सांपों को उठा लेंगे और जो वे कुछ विष पीवें तो उस से उन की कुछ हानि न होगी. वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे॥

१९। सो प्रभु उन्हों से बोलने के पीछे स्वर्ग पर उठा लिया गया और ईश्वर की दहिनी ओर बैठा॥ २०। और उन्हों ने निकलके सर्व्वत्र उपदेश किया और प्रभु ने उन के संग कार्य्य किया और जो चिन्ह साथ में प्रगट होते थे उन्हों से बचन को दृढ़ किया। आमीन॥

लूक रचित सुसमाचार।

---

१. हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगों में अति प्रमाण हैं उन बातों का वृत्तान्त जिस रीति से उन्हों ने जो आरंभ से साक्षी और बचन के सेवक थे हम लोगों को सौंपा॥ २। उसी रीति से लिखने को बहुतों ने हाथ लगाया है॥ ३। इस लिये मुझे भी जिस ने सब बातों को आदि से ठीक करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओर से आप के पास लिखूं॥ ४। इस लिये कि जिन बातों का उपदेश आप को दिया गया है आप उन बातों की दृढ़ता जानें॥

५। यिहूदिया देश के हेरोद राजा के दिनों में अबियाह की पारी में जिखरियाह नाम एक याजक था और उस की स्त्री जिस का नाम इलीशिबा था हारोन के वंश की थी॥ ६। वे दोनों ईश्वर के सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलते थे॥ ७। उन को कोई लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे॥ ८। जब जिखरियाह अपनी पारी की रीति पर ईश्वर के आगे याजक का काम करता था॥ ९। तब चिट्ठियां डालने से उस को याजकीय व्यवहार के अनुसार परमेश्वर के मन्दिर में जाके धूप जलाना पड़ा॥ १०। धूप जलाने के समय लोगों की सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती थी॥ ११। तब परमेश्वर का एक दूत धूप की बेदी की दहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया॥ १२। जिखरियाह उसे देखके घबरा गया और उसे डर लगा॥

१३। दूत ने उस से कहा हे जिखरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरी स्त्री इलीशिवा पुत्र जनेगी और तू उस का नाम योहन रखना॥ १४। तुझे आनन्द और आह्लाद होगा और बहुत लोग उस के जन्मने से आनन्दित होंगे॥ १५। क्योंकि वह परमेश्वर के सन्मुख बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य पीयेगा और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा॥ १६। और वह इस्रायेल के सन्तानों में से बहुतों को परमेश्वर उन के ईश्वर की ओर फिरावेगा॥ १७। वह उस के आगे एलियाह के आत्मा और सामर्थ्य से जायगा इस लिये कि पितरों का मन लड़कों की ओर फेर दे और आज्ञा लंघन करनेहारों को धर्म्मियों के मत पर लावे और प्रभु के लिये एक सजे हुए लोग को तैयार करे॥ १८। तब जिखरियाह ने दूत से कहा यह मैं किस रीति से जानूं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है॥ १९। दूत ने उस को उत्तर दिया कि मैं जब्रायेल हूं जो ईश्वर के साम्ने खड़ा रहता हूं और मैं तुझ से बात करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं॥ २०। और देख जिस दिन लों यह सब पूरा न हो जाय उस दिन लों तू गूंगा हो रहेगा और बोल न सकेगा क्योंकि तू ने मेरी बातों पर जो अपने समय में पूरी किई जायेंगीं विश्वास नहीं किया॥ २१। लोग जिखरियाह की बाट देखते थे और अचंभा करते थे कि उस ने मन्दिर में बिलम्ब किया॥ २२। जब वह बाहर आया तब उन्हों से बोल न सका और उन्हों ने जाना कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया था और वह उन्हों से सैन करने लगा और गूंगा रह गया॥ २३। जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए तब वह अपने घर गया॥ २४। इन दिनों के पीछे उस की स्त्री इलीशिवा गर्भवती हुई और अपने को पांच मास यह कहके छिपाया॥ २५। कि मनुष्यों में मेरा अपमान मिटाने को परमेश्वर ने इन दिनों में कृपादृष्टि कर मुझ से ऐसा व्यवहार किया है॥

२६। छठवें मास में ईश्वर ने जब्रायेल दूत को गालील देश के एक नगर में जो नासरत कहावता है किसी कुंवारी के पास भेजा॥ २७। जिस की मंगनी यूसफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी. उस कुंवारी का नाम मरियम था॥ २८। दूत ने घर में प्रवेश कर उस से कहा हे अनुग्रहीत कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियों में तू धन्य है॥ २९। मरियम उसे देखके उस के वचन से घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा नमस्कार है॥ ३०। तब दूत ने उस से कहा हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है॥ ३१। देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम तू यीशु रखना॥ ३२। वह महान होगा और सर्व्वप्रधान का पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उस के पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा॥ ३३। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त न होगा॥ ३४। तब मरियम ने दूत से कहा यह किस रीति से होगा क्योंकि मैं पुरुष को नहीं जानती हूं॥ ३५। दूत ने उस को उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझ पर आवेगा और सर्व्वप्रधान की शक्ति तुझ पर छाया करेगी इस लिये वह पवित्र बालक ईश्वर का पुत्र कहावेगा॥ ३६। और देख तेरी कुटुम्बिनी इलीशिवा को भी बुढ़ापे में पुत्र का गर्भ रहा है और जो बांझ कहावती थी उस का यह छठवां मास है॥ ३७। क्योंकि कोई बात ईश्वर से असाध्य नहीं है॥ ३८। मरियम ने कहा देखिये मैं परमेश्वर की दासी मुझे आप के वचन के अनुसार होय. तब दूत उस के पास से चला गया॥

३९। उन दिनों में मरियम उठके शीघ्र से पर्व्वतीय देश में यिहूदा के एक नगर को गई॥ ४०। और जिखरियाह के घर में प्रवेश कर इलीशिवा को नमस्कार किया॥ ४१। ज्योंही इलीशिवा ने मरियम का नमस्कार सुना त्योंही बालक उस के गर्भ में उछला और इलीशिवा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुई॥ ४२। और उस ने बड़े शब्द से बोलते हुए कहा तू स्त्रियों में धन्य है और तेरे गर्भ का फल धन्य है॥ ४३। और यह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आवे॥ ४४। देख ज्योंही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा त्योंही

बालक मेरे गर्भ में आनन्द से उछला ॥ ४५ । और धन्य विश्वास करनेहारी कि परमेश्वर की ओर से जो बातें तुझ से कही गई हैं सो पूरी किई जायेंगीं ॥

४६ । तब मरियम ने कहा मेरा प्राण परमेश्वर की महिमा करता है ॥ ४७ । और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वर से आनन्दित हुआ है ॥ ४८ । क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनताई पर दृष्टि किई है देखो अब से सब समयों के लोग मुझे धन्य कहेंगे ॥ ४९ । क्योंकि सर्व्वशक्तिमान ने मेरे लिये महाकार्य्यों को किया है और उस का नाम पवित्र है ॥ ५० । उस की दया उन्हों पर जो उस से डरते हैं पीढ़ी से पीढ़ी लों नित्य रहती है ॥ ५१ । उस ने अपनी भुजा का बल दिखाया है उस ने अभिमानियों को उन के मन के परामर्श में छिन्न भिन्न किया है ॥ ५२ । उस ने बलवानों को सिंहासनों से उतारा और दीनों को ऊंचा किया है ॥ ५३ । उस ने भूखों को उत्तम वस्तुओं से तृप्त किया और धनवानों को छूछे हाथ फेर दिया है ॥ ५४ । उस ने जैसे हमारे पितरों से कहा ॥ ५५ । तैसे सर्व्वदा इब्राहीम और उस के वंश पर अपनी दया स्मरण करने के कारण अपने सेवक इस्रायेल का उपकार किया है ॥ ५६ । मरियम तीन मास के अटकल इलीशिबा के संग रही तब अपने घर को लौटी ॥

५७ । तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ और वह पुत्र जनी ॥ ५८ । उस के पड़ोसियों और कुटुम्बों ने सुना कि परमेश्वर ने उस पर बड़ी दया किई है और उन्हों ने उस के संग आनन्द किया ॥ ५९ । आठवें दिन वे बालक का खतना करने को आये और उस के पिता के नाम पर उस का नाम जिखरियाह रखने लगे ॥ ६० । इस पर उस की माता ने कहा सो नहीं परन्तु उस का नाम योहन रखा जायगा ॥ ६१ । उन्हों ने उस से कहा आप के कुटुम्बों में से कोई नहीं है जो इस नाम से कहावता है ॥ ६२ । तब उन्हों ने उस के पिता से सैन किया कि आप क्या चाहते हैं कि इस का नाम रखा जाय ॥ ६३ । उस ने पटिया मंगाके यह लिखा कि उस का नाम योहन है . इस से वे सब अचंभित हुए ॥ ६४ । तब उस का मुंह और उस की जीभ तुरन्त खुल गये और वह बोलने और ईश्वर का धन्यबाद करने लगा ॥ ६५ । और उन्हों के आसपास के सब रहनेहारों को भय हुआ और इन सब बातों की चर्चा यिहूदिया के सारे पर्व्वतीय देश में होने लगी ॥ ६६ । और सब सुननेहारों ने अपने अपने मन में सोचकर कहा यह कैसा बालक होगा . और परमेश्वर का हाथ उस के संग था ॥

६७ । तब उस का पिता जिखरियाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुआ और यह भविष्यद्वाणी बोला ॥ ६८ । कि परमेश्वर इस्रायेल का ईश्वर धन्य होवे कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि कर उन्हों का उद्धार किया है ॥ ६९ । और जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से जो आदि से होते आये हैं कहा ॥ ७० । तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के घराने में एक त्राण के सींग को ॥ ७१ । अर्थात् हमारे शत्रुओं से और हमारे सब बैरियों के हाथ से एक बचानेहारे को प्रगट किया है ॥ ७२ । इस लिये कि वह हमारे पितरों के संग दया का व्यवहार करे और अपना पवित्र नियम स्मरण करे ॥ ७३ । अर्थात् वह किरिया जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई ॥ ७४ । कि हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से बचके ॥ ७५ । निर्भय जीवन भर प्रतिदिन उस के सन्मुख पवित्रताई और धर्म्म से उस की सेवा करें ॥ ७६ । और तू हे बालक सर्व्वप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वर के आगे जायगा कि उस के पंथ बनावे ॥ ७७ । अर्थात् हमारे ईश्वर की महा करुणा से उस के लोगों को उन्हों के पापमोचन के द्वारा से निस्तार का ज्ञान देवे ॥ ७८ । उसी करुणा से सूर्य्य का उदय ऊपर से हमों पर प्रकाशित हुआ है ॥ ७९ । कि अंधकार में और मृत्यु की छाया में बैठनेहारों को ज्योति देवे और हमारे पांव कुशल के मार्ग पर सीधे चलावे ॥

८० । और वह बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्रायेली लोगों पर प्रगट होने के दिन लों जंगली स्थानों में रहा ॥

२. उन दिनों मे अगस्त कैसर महाराजा की ओर से आज्ञा हुई कि उस के राज्य के सब लोगों के नाम लिखे जावें ॥ २। कुरीनिय के सुरिया देश के अध्यक्ष होने के पहिले यह नाम लिखाई हुई ॥ ३। और सब लोग नाम लिखाने को अपने अपने नगर को गये ॥ ४। यूसफ भी इस लिये कि वह दाऊद के घराने औ बंश का था ॥ ५। मरियम स्त्री के संग जिस से उस की मंगनी हुई थी नाम लिखाने को गालील देश के नासरत नगर से यिहूदिया में बैतलहम नाम दाऊद के नगर को गया . उस समय मरियम गर्भवती थी ॥ ६। उन के वहां रहते उस के जनने के दिन पूरे हुए ॥ ७। और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उस को कपड़े में लपेटके चरनी मे रखा क्योंकि उन के लिये सराय मे जगह न थी ॥

८। उस देश में कितने गड़ेरिये थे जो खेत में रहते थे और रात को अपने झुण्ड का पहरा देते थे ॥ ९। और देखो परमेश्वर का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और परमेश्वर का तेज उन की चारों ओर चमका और वे बहुत डर गये ॥ १०। दूत ने उन से कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जिस से सब लोगों को आनन्द होगा ॥ ११। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात् खीष्ट प्रभु जन्मा है ॥ १२। और तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालक को कपड़े में लपेटे हुए और चरनी मे पड़े हुए पाओगे ॥ १३। तब अचांचक स्वर्गीय सेना में से बहुतेरे उस दूत के संग प्रगट हुए और ईश्वर की स्तुति करते हुए बोले ॥ १४। सब से ऊंचे स्थान में ईश्वर का गुणानुवाद और पृथिवी पर शांति होय : मनुष्यों पर प्रसन्नता है ॥ १५। ज्योंही दूतगण उन्हों के पास से स्वर्ग को गये त्योंही गड़ेरियों ने आपस मे कहा आओ हम बैतलहम लों जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वर ने हमों को बताया है देखें ॥ १६। और उन्हों ने शीघ्र जाके मरियम और यूसफ को और बालक को चरनी में पड़े हुए पाया ॥ १७। इन्हें देखके उन्हों ने वह बात जो इस बालक के विषय में उन्हों से कही गई थी प्रचार किई ॥ १८। और सब सुननेहारे उन बातों से जो गड़ेरियों ने उन से कहीं अचंभित हुए ॥ १९। परन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में रखा और उन्हें सोचती रही ॥ २०। तब गड़ेरिये जैसा उन्हों से कहा गया था तैसा ही सब बातें सुनके और देखके उन बातों के लिये ईश्वर का गुणानुवाद और स्तुति करते हुए लौट गये ॥

२१। जब आठ दिन पूरे होने से बालक का खतना करना हुआ तब उस का नाम यीशु रखा गया कि वही नाम उस के गर्भ मे पड़ने के आगे दूत से रखा गया था ॥ २२। और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तब वे बालक को यिरूशलीम में ले गये ॥ २३। कि जैसा परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौठा नर परमेश्वर के लिये पवित्र कहावेगा तैसा उसे परमेश्वर के आगे धरें ॥ २४। और परमेश्वर की व्यवस्था की बात के अनुसार पंडुको की जोड़ी अथवा कपोत के दो बच्चे बलिदान करें ॥

२५। तब देखो यिरूशलीम में शिमियोन नाम एक मनुष्य था . वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेल की शांति की बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उस पर था ॥ २६। पवित्र आत्मा से उस को प्रतिज्ञा दिई गई थी कि जब लों तू परमेश्वर के अभिषिक्त जन को न देखे तब लों मृत्यु को न देखेगा ॥ २७। और वह आत्मा की शिक्षा से मन्दिर मे आया और जब उस बालक अर्थात् यीशु के माता पिता उस के विषय मे व्यवस्था के व्यवहार के अनुसार करने को उसे भीतर लाये ॥ २८। तब शिमियोन ने उस को अपनी गोदी मे लेके ईश्वर का धन्यवाद कर कहा ॥ २९। हे प्रभु अभी तू अपने बचन के अनुसार अपने दास को कुशल से बिदा करता है ॥ ३०। क्योंकि मेरी आखों ने तेरे त्राणकर्त्ता को देखा है ॥ ३१। जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सम्मुख तैयार किया है ॥ ३२। कि वह अन्यदेशियों को प्रकाश करने की ज्योति और तेरे

इस्रायेली लोग का तेज होवे ॥ ३३। यूसफ और यीशु की माता इन बातों से जो उस के विषय में कही गई अचंभा करते थे ॥ ३४। तब शिमियोन ने उन को आशीस देके उस की माता मरियम से कहा देख यह तो इस्रायेल में बहुतों के गिरने और फिर उठने का कारण होगा और एक चिन्ह जिस के विरुद्ध में बातें किई जायेंगीं . हां तेरा निज प्राण भी खड्ग से वारपार छिदेगा ॥ ३५ इस से बहुत हृदयों के विचार प्रगट किये जायेंगे ॥

३६। और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्त्री थी जो आशेर के कुल के पनूएल की पुत्री थी . वह बहुत बूढ़ी थी और अपने कुंवारपन से सात बरस स्वामी के संग रही थी ॥ ३७। और वह बरस चौरासी एक की विधवा थी जो मन्दिर से बाहर न जाती थी परन्तु उपवास और प्रार्थना से रात दिन सेवा करती थी ॥ ३८। उस ने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वर का धन्य माना और यिरूशलीम में जो लोग उद्धार की बाट देखते थे उन सभों से यीशु के विषय में बात किई ॥

३९। जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तब गालील को अपने नगर नासरत को लौटे ॥ ४०। और बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था ॥

४१। उस के माता पिता बरस बरस निस्तार पर्ब्ब में यिरूशलीम को जाते थे ॥ ४२। जब वह बारह बरस का हुआ तब वे पर्ब्ब की रीति पर यिरूशलीम को गये ॥ ४३। और जब वे पर्ब्ब के दिनों को पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का यीशु यिरूशलीम में रह गया परन्तु यूसफ और उस की माता नहीं जानते थे ॥ ४४। वे यह समझके कि वह संगवाले पथिकों के बीच में है एक दिन की बाट गये और अपने कुटुंबों और चिन्हारों के बीच में उस को ढूंढ़ने लगे ॥ ४५। परन्तु जब उन्हों ने उस को न पाया तब उसे ढूंढ़ते हुए यिरूशलीम को फिर गये ॥ ४६। तीन दिन के पीछे उन्हों ने उसे मन्दिर में पाया कि उपदेशकों के बीच में बैठा हुआ उन की सुनता और उन से प्रश्न करता था ॥ ४७। और जो लोग उस की सुनते थे सो सब उस की बुद्धि और उस के उत्तरों से विस्मित हुए ॥ ४८। और वे उसे देखके अचंभित हुए और उस की माता ने उस से कहा हे पुत्र हम से क्यों ऐसा किया . देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे ॥ ४९। उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे . क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के विषयों में लगा रहना अवश्य है ॥ ५०। परन्तु उन्हों ने यह बात जो उस ने उन से कही न समझी ॥ ५१। तब वह उन के संग चला और नासरत में आया और उन के वश में रहा और उस की माता ने उन सब बातों को अपने मन में रखा ॥ ५२। और यीशु की बुद्धि और डील और उस पर ईश्वर का और मनुष्यों का अनुग्रह बढ़ता गया ॥

३. तिबरिय कैसर के राज्य के पन्द्रहवें बरस में जब पन्तिय पिलात यिहूदिया का अध्यक्ष था और हेरोद एक चौथाई अर्थात् गालील का राजा और उस का भाई फिलिप एक चौथाई अर्थात् इतूरिया और त्राखोनीतिया देशों का राजा और लुसानिय एक चौथाई अर्थात् अबिलीनी देश का राजा था ॥ २। और जब हनस और कियाफा महायाजक थे तब ईश्वर का वचन जंगल में जिखरियाह के पुत्र योहन पास आया ॥ ३। और वह यर्दन नदी के आसपास के सारे देश में आके पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश करने लगा ॥ ४। जैसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए पुस्तक में लिखा है कि किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पथ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो ॥ ५। हर एक नाला भरा जायगा और हर एक पर्ब्बत और टीला नीचा किया जायगा और टेढ़े पंथ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे ॥ ६। और सब प्राणी ईश्वर के त्राण को देखेंगे ॥

७। तब बहुत लोग जो उस से बपतिसमा लेने को निकल आये उन्हों से योहन ने कहा हे सांपों के वंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को

चिताया है॥ ८। पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में मत कहने लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है॥ ९। और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है॥ १०। तब लोगों ने उस से पूछा तो हम क्या करें॥ ११। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास न हो उस के साथ बांट लेवे और जिस पास भोजन होय सो भी वैसा ही करे॥ १२। कर उगाहनेहारे भी बपतिसमा लेने को आये और उस से बोले हे गुरु हम क्या करें॥ १३। उस ने उन से कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उस से अधिक मत ले लो॥ १४। योद्धाओं ने भी उस से पूछा हम क्या करें, उस ने उन से कहा किसी पर उपद्रव मत करो और न झूठे दोष लगाओ और अपने वेतन से सन्तुष्ट रहो॥

१५। जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने मन में योहन के विषय में विचार करते थे कि होय न होय यही खीष्ट है॥ १६। तब योहन ने सभों को उत्तर दिया कि मैं तो तुम्हें जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बंध खोलने के योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा॥ १७। उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और गेहूं को अपने खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा॥ १८। उस ने बहुत और बातों का भी उपदेश करके लोगों को सुसमाचार सुनाया॥

१९। पर उस ने चौथाई के राजा हेरोद को उस के भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के विषय में और सब कुकर्मों के विषय में जो उस ने किये थे उलहना दिया॥ २०। इस लिये हेरोद ने उन सभों के उपरान्त यह कुकर्म भी किया कि योहन को बन्दीगृह में मूंद रखा॥

२१। सब लोगों के बपतिसमा लेने के पीछे जब यीशु ने भी बपतिसमा लिया था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया॥ २२। और पवित्र आत्मा देही रूप में कपोत की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से अति प्रसन्न हूं॥

२३। और यीशु आप तीस बरस के अटकल होने लगा और लोगों की समझ में यूसफ का पुत्र था॥ २४। यूसफ एली का पुत्र था वह मत्तात का पुत्र वह लेवी का वह मलकि का वह यान्ना का वह यूसफ का॥ २५। वह मत्तथियाह का वह आमोस का वह नहूम का वह इसलि का वह नग्गई का॥ २६। वह माट का वह मत्तथियाह का वह शिमिई का वह यूसफ का वह यिहूदा का॥ २७। वह योहाना का वह रीसा का वह जिरुबाबुल का वह शलतिएल का वह नेरि का॥ २८। वह मलकि का वह अद्दी का वह कोसम का वह इलमोदद का वह एर का॥ २९। वह योशी का वह इलियेजर का वह योरीम का वह मत्तात का वह लेवी का॥ ३०। वह शिमियोन का वह यिहूदा का वह यूसफ का वह योनन का वह इलियाकीम का॥ ३१। वह मिलेया का वह मैनन का वह मत्तथ का वह नाथन का वह दाऊद का॥ ३२। वह यिशी का वह ओबेद का वह बोअस का वह सलमोन का वह नहशोन का॥ ३३। वह अम्मीनादब का वह अराम का वह हिस्रोन का वह पेरस का वह यिहूदा का॥ ३४। वह याकूब का वह इसहाक का वह इब्राहीम का वह तेरह का वह नाहोर का॥ ३५। वह सिरूग का वह रियू का वह पेलग का वह एबर का वह शेलह का॥ ३६। वह कैनन का वह अर्फक्सद का वह शेम का वह नूह का वह लमक का॥ ३७। वह मिथूशलह का वह हनोक का वह येरद का वह महललेल का वह कैनन का॥ ३८। वह इनोश का वह शेत का वह आदम का वह ईश्वर का॥

४. यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो यर्दन से फिरा और आत्मा की शिक्षा से जंगल में गया ॥ २। और चालीस दिन शैतान से उस की परीक्षा किई गई और उन दिनों में उस ने कुछ नहीं खाया पर पीछे उन के पूरे होने पर भूखा हुआ ॥ ३। तब शैतान ने उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाय ॥ ४। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु ईश्वर की हर एक बात से जीयेगा ॥ ५। तब शैतान ने उसे एक ऊंचे पर्व्वत पर ले जाके उस को पल भर में जगत के सब राज्य दिखाये ॥ ६। और शैतान ने उस से कहा मैं यह सब अधिकार और इन्हों का विभव तुझे देऊंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और मैं उसे जिस को चाहता हूं उस को देता हूं ॥ ७। इस लिये जो तू मुझे प्रणाम करे तो सब तेरा होगा ॥ ८। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर ॥ ९। तब उस ने उस को यिरूशलीम में ले जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा किया और उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को यहां से नीचे गिरा ॥ १०। क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें ॥ ११। और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे ॥ १२। यीशु ने उस को उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर ॥ १३। जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिये उस के पास से चला गया ॥

१४। यीशु आत्मा की शक्ति से गालील को फिर गया और उस की कीर्त्ति आसपास के सारे देश में फैल गई ॥ १५। और उस ने उन की सभाओं में उपदेश किया और सभों ने उस की बड़ाई किई ॥

१६। तब वह नासरत को आया जहां पाला गया था और अपनी रीति पर विश्राम के दिन सभा के घर में जाके पढ़ने को खड़ा हुआ ॥ १७। यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक उस को दिया गया और उस ने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया जिस में लिखा था ॥ १८। कि परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है इस लिये कि उस ने मुझे अभिषेक किया है कि कंगालों को सुसमाचार सुनाऊं ॥ १९। उस ने मुझे भेजा है कि जिन के मन चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बंधुओं को छूटने की और अंधों को दृष्टि पाने की वार्त्ता सुनाऊं और पेरे हुओं का निस्तार करूं और परमेश्वर के ग्राह्य बरस का प्रचार करूं ॥ २०। तब वह पुस्तक लपेटके सेवक के हाथ में देके बैठ गया और सभा में सब लोगों की आंखें उसे तक रहीं ॥ २१। तब वह उन्हों से कहने लगा कि आज ही धर्म्मपुस्तक का यह वचन तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ है ॥ २२। और सभों ने उस को सराहा और जो अनुग्रह की बातें उस के मुख से निकलीं उन से अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफ का पुत्र नहीं है ॥ २३। उस ने उन्हों से कहा तुम अवश्य मुझ से यह दृष्टान्त कहोगे कि हे वैद्य अपने को चंगा कर . जो कुछ हमों ने सुना है कि कफर्नाहुम में किया गया सो यहां अपने देश में भी कर ॥ २४। और उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में ग्राह्य नहीं होता है ॥ २५। और मैं तुम से सत्य कहता हूं कि एलियाह के दिनों में जब आकाश साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहां लों कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तब इस्रायेल में बहुत विधवा थीं ॥ २६। परन्तु एलियाह उन्हों में से किसी के पास नहीं भेजा गया केवल सीदोन देश के सारिफत नगर में एक विधवा के पास ॥ २७। और इलीशा भविष्यद्वक्ता के समय में इस्रायेल में बहुत कोढ़ी थे परन्तु उन्हों में से कोई शुद्ध नहीं किया गया केवल सुरिया देश का नामान ॥ २८। यह बातें सुनके सब लोग सभा में क्रोध से भर गये ॥ २९। और उठके उस को नगर से बाहर निकालके जिस पर्व्वत पर उन का नगर बना हुआ था उस की चोटी पर ले चले कि उस को नीचे गिरा

देवें ॥ ३० । परन्तु वह उन्हों के बीच में से होके निकला और चला गया ॥

३१ । और उस ने गालील के कफर्नाहूम नगर में आके विश्राम के दिन लोगों को उपदेश दिया ॥ ३२ । वे उस के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस का वचन अधिकार सहित था ॥ ३३ । सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत का आत्मा लगा था ॥ ३४ । उस ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं ईश्वर के पवित्र जन ॥ ३५ । यीशु ने उस को डांटके कहा चुप रह और उस में से निकल आ . तब भूत उस मनुष्य को बीच में गिराके उस में से निकल आया और उस की कुछ हानि न किई ॥ ३६ । इस पर सभों को अचंभा हुआ और वे आपस में बात करके बोले यह कौन सी बात है कि वह प्रभाव और पराक्रम से अशुद्ध भूतों को आज्ञा देता है और वे निकल आते हैं ॥ ३७ । सो उस की कीर्त्ति आसपास के देश में सर्व्वत्र फैल गई ॥

३८ । सभा के घर में से उठके उस ने शिमोन के घर में प्रवेश किया और शिमोन की सास बड़े ज्वर से पीड़ित थी और उन्हों ने उस के लिये उस से बिन्ती किई ॥ ३९ । उस ने उस के निकट खड़ा हो ज्वर को डांटा और वह उसे छोड़ गया और वह तुरन्त उठके उन की सेवा करने लगी ॥

४० । सूर्य्य डूबते हुए जिन्हों के पास दुःखी लोग नाना प्रकार के रोगों में पड़े थे वे सब उन्हें उस पास लाये और उस ने एक एक पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया ॥ ४१ । भूत भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि आप ईश्वर के पुत्र खीष्ट हैं बहुतों में से निकले परन्तु उस ने उन्हें डांटा और बोलने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह खीष्ट है ॥

४२ । बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थान में गया और लोगों ने उस को ढूंढ़ा और उस पास आके उसे रोकने लगे कि वह उन के पास से न जाय ॥ ४३ । परन्तु उस ने उन्हों से कहा मुझे और और नगरों में भी ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं ॥ ४४ । सो उस ने गालील की सभाओं में उपदेश किया ॥

५. एक दिन बहुत लोग ईश्वर का वचन सुनने को यीशु पर गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरत की झील के पास खड़ा था ॥ २ । और उस ने दो नाव झील के तीर पर लगी देखीं और मछुवे उन पर से उतरके जालों को धोते थे ॥ ३ । उन नावों में से एक पर जो शिमोन की थी चढ़के उस ने उस से बिन्ती किई कि तीर से थोड़ी दूर ले जाय और उस ने बैठके नाव पर से लोगों को उपदेश दिया ॥ ४ । जब वह बात कर चुका तब शिमोन से कहा गहिरे में ले जा और मछलियां पकड़ने को अपने जालों को डालो ॥ ५ । शिमोन ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आप की बात पर मैं जाल डालूंगा ॥ ६ । जब उन्हों ने ऐसा किया तब बहुत मछलियां बझाईं और उन का जाल फटने लगा ॥ ७ । इस पर उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि वे आके उन की सहायता करें और उन्हों ने आके दोनों नाव ऐसी भरीं कि वे डूबने लगीं ॥ ८ । यह देखके शिमोन पितर यीशु के गोड़ों पर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पास से जाइये मैं पापी मनुष्य हूं ॥ ९ । क्योंकि वह और उस के सब संगी लोग इन मछलियों के बझ जाने से जो उन्हों ने पकड़ी थीं बिस्मित हुए ॥ १० । और वैसे ही जबदी के पुत्र याकूब और योहन भी जो शिमोन के साझी थे बिस्मित हुए . तब यीशु ने शिमोन से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा ॥ ११ । और वे नावों को तीर पर लाके सब कुछ छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

१२ । जब वह एक नगर में था तब देखो एक मनुष्य कोढ़ से भरा हुआ वहां था और वह यीशु को देखके मुंह के बल गिरा और उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर

सकते हैं ॥ १३। उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा . और उस का कोढ़ तुरन्त जाता रहा ॥ १४। तब उस ने उसे आज्ञा दिई कि किसी से मत कह परन्तु जाके अपने तई याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में का चढ़ावा जैसा मूसा ने आज्ञा दिई तैसा लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ॥ १५। परन्तु यीशु की कीर्त्ति अधिक फैल गई और बहुतेरे लोग सुनने को और उस से अपने रोगों से चंगे किये जाने को एकट्ठे हुए ॥ १६। और उस ने जंगली स्थानों में अलग जाके प्रार्थना किई ॥

१७। एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदिया के हर एक गांव से और यिरूशलीम से आये थे वहां बैठे थे और उन्हें चंगा करने को प्रभु का सामर्थ्य प्रगट हुआ ॥ १८। और देखो लोग एक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाट पर लाये और वे उस को भीतर ले जाने और यीशु के आगे रखने चाहते थे ॥ १९। परन्तु जब भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने का कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्हों ने कोठे पर चढ़के उस को खाट समेत छत में से बीच में यीशु के आगे उतार दिया ॥ २०। उस ने उन्हों का विश्वास देखके उस से कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ॥ २१। तब अध्यापक और फरीशी लोग विचार करने लगे कि यह कौन है जो ईश्वर की निन्दा करता है . ईश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है ॥ २२। यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन को उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने मन में क्या क्या विचार करते हो ॥ २३। कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल ॥ २४। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा ॥ २५। वह तुरन्त उन्हों के साम्हने उठके जिस पर वह पड़ा था उस को उठाके ईश्वर की स्तुति करता हुआ अपने घर को चला गया ॥ २६। तब सब लोग विस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे और अति भयमान होके बोले हम ने आज अनोखी बातें देखी हैं ॥

२७। इस के पीछे यीशु ने बाहर आके लेवी नाम एक कर उगाहनेहारे को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ ॥ २८। वह सब कुछ छोड़के उठा और उस के पीछे हो लिया ॥ २९। और लेवी ने अपने घर में उस के लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहनेहारे और बहुत से और लोग थे जो उन के संग भोजन पर बैठे ॥ ३०। तब उन्हों के अध्यापक और फरीशी उस के शिष्यों पर कुड़कुड़ाके बोले तुम कर उगाहनेहारों और पापियों के संग क्यों खाते और पीते हो ॥ ३१। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को ॥ ३२। मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं ॥

३३। और उन्हों ने उस से कहा योहन के शिष्य क्यों बार बार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसे ही फरीशियों के शिष्य भी परन्तु आप के शिष्य खाते और पीते हैं ॥ ३४। उस ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या तुम उन से उपवास करवा सकते हो ॥ ३५। परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे ॥ ३६। उस ने एक दृष्टान्त भी उन से कहा कि कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने में मिलता भी नहीं ॥ ३७। और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ेगा और वह आप बह जायगा और कुप्पे नष्ट होंगे ॥ ३८। परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये तब दोनों की रक्षा होती है ॥ ३९। कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है पुराना ही अच्छा है ॥

६. पर्व्व के दूसरे दिन के पीछे बिश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था और उस के शिष्य बालें तोड़के हाथों से मल मलके खाने लगे ॥ २ । तब कई एक फरीशियों ने उन से कहा जो काम बिश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो क्यों करते हो ॥ ३ । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया ॥ ४ । उस ने क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां लेके खाईं जिन्हें खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियों को भी दिईं ॥ ५ । और उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र बिश्रामवार का भी प्रभु है ॥

६ । दूसरे बिश्रामवार को भी वह सभा के घर में जाके उपदेश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिस का दहिना हाथ सूख गया था ॥ ७ । अध्यापक और फरीशी लोग उस में दोष ठहराने के लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्राम के दिन में चंगा करेगा कि नहीं ॥ ८ । पर वह उन के मन की बातें जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ बीच में खड़ा हो . वह उठके खड़ा हुआ ॥ ९ । तब यीशु ने उन्हों से कहा मैं तुम से एक बात पूछूंगा क्या बिश्राम के दिनों में भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा नाश करना उचित है ॥ १० । और उस ने उन सभों पर चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा . उस ने ऐसा किया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला चंगा हो गया ॥ ११ । पर वे बड़े क्रोध से भर गये और आपस में बोले हम यीशु को क्या करें ॥

१२ । उन दिनों में वह प्रार्थना करने को पर्व्वत पर गया और ईश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई ॥ १३ । जब बिहान हुआ तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन में से बारह जनों को चुना जिन का नाम उस ने प्रेरित भी रखा ॥ १४ । अर्थात् शिमोन को जिस का नाम उस ने पितर भी रखा औ उस के भाई अन्द्रिय को और याकूब औ योहन को और फिलिप औ बर्थलमई को ॥ १५ । और मत्ती औ थोमा को और अलफई के पुत्र याकूब को औ शिमोन को जो उद्योगी कहावता है ॥ १६ । और याकूब के भाई यिहूदा को औ यिहूदा इस्करियोती को जो बिश्वासघातक हुआ ॥

१७ । तब वह उन के संग उतरके चौरस स्थान में खड़ा हुआ और उस के बहुत शिष्य भी थे और लोगों की बड़ी भीड़ सारे यिहूदिया से और यिरूशलीम से और सोर औ सीदोन के समुद्र के तीर से जो उस की सुनने को और अपने रोगों से चंगे किये जाने को आये थे ॥ १८ । और अशुद्ध भूतों के सताये हुए लोग भी . और वे चंगे किये जाते थे ॥ १९ । और सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उस से निकलती थी और सभों को चंगा करती थी ॥

२० । तब उस ने अपने शिष्यों की ओर दृष्टि कर कहा धन्य तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारा है ॥ २१ । धन्य तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे . धन्य तुम जो अब रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे ॥ २२ । धन्य तुम हो जब मनुष्य तुम से बैर करें और जब वे मनुष्य के पुत्र के लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा नाम दुष्ट सा दूर करें ॥ २३ । उस दिन आनन्दित हो और उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे . उन के पितरों ने भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही किया ॥ २४ । परन्तु हाय तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके हो ॥ २५ । हाय तुम जो भरपूर हो क्योंकि तुम भूखे होगे . हाय तुम जो अब हंसते हो क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे ॥ २६ । हाय तुम लोग जब सब मनुष्य तुम्हारे विषय में भला कहें . उन के पितरों ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही किया ॥

२७ । और भी मैं तुम्हों से जो सुनते हो कहता हूं कि अपने शत्रुओं को प्यार करो . जो तुम से बैर करें उन से भलाई करो ॥ २८ । जो तुम्हें स्राप देवें उन को आशीस देओ और जो तुम्हारा अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करो ॥ २९ । जो तुझे एक गाल पर मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो

तेरा दोहर छीन लेवे उस को अंगा भी लेने से मत वर्ज ॥ ३० । जो कोई तुझ से मांगे उस को दे और जो तेरी वस्तु छीन लेवे उस से फिर मत मांग ॥ ३१ । और जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो ॥ ३२ । जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम करनेहारों से प्रेम करते हैं ॥ ३३ । और जो तुम उन से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं ॥ ३४ । और जो तुम उन्हें ऋण देओ जिन से फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियों को ऋण देते हैं कि उतना फिर पावें ॥ ३५ । परन्तु अपने शत्रुओं को प्यार करो और भलाई करो और फिर पाने की आशा न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और सर्व्वप्रधान के सन्तान होगे क्योंकि वह उन्हों पर जो धन्य नहीं मानते हैं और दुष्टों पर कृपाल है ॥ ३६ । सो जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ ॥

३७ । दूसरों का विचार मत करो तो तुम्हारा विचार न किया जायगा . दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न ठहराये जाओगे . क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई जायगी ॥ ३८ । देओ तो तुम को दिया जायगा . लोग पूरा नाप दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में देंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जायगा ॥ ३९ । फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है . क्या दोनों गड़हे में नहीं गिरेंगे ॥ ४० । शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरु के समान होगा ॥ ४१ । जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और जो लट्ठा तेरे ही नेत्र में है सो तुझे नहीं सूझता ॥ ४२ । अथवा तू जो आप अपने नेत्र में का लट्ठा नहीं देखता है क्योंकर अपने भाई से कह सकता है कि हे भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्र में है निकालूं . हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे निकालने को तू अच्छी रीति से देखेगा ॥

४३ । कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और कोई निकम्मा पेड़ नहीं है जो अच्छा फल फले ॥ ४४ । हर एक पेड़ अपने ही फल से पहचाना जाता है क्योंकि लोग कांटों के पेड़ से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले झूड़ से दाख तोड़ते हैं ॥ ४५ । भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बात निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है सोई उस का मुंह बोलता है ॥

४६ । तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं कहता हूं सो नहीं करते ॥ ४७ । जो कोई मेरे पास आके मेरी बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा वह किस के समान है ॥ ४८ । वह एक मनुष्य के समान है जो घर बनाता था और उस ने गहरे खोदके पत्थर पर नेव डाली और जब बाढ़ आई तब धारा उस घर पर लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी ॥ ४९ । परन्तु जो सुनके पालन न करे सो एक मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया जिस पर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और उस घर का बड़ा विनाश हुआ ॥

७. जब यीशु लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तब कफर्नाहूम में प्रवेश किया ॥ २ । और किसी शतपति का एक दास जो उस का प्रिय था रोगी हो मरने पर था ॥ ३ । शतपति ने यीशु का चर्चा सुनके यिहूदियों के कई एक प्राचीनों को उस से यह बिन्ती करने को उस पास भेजा कि आके मेरे दास को चंगा कीजिये ॥ ४ । उन्हों ने यीशु पास आके उस से बड़े यत्न से बिन्ती किई और कहा आप जिस के लिये यह काम करेंगे सो इस के योग्य है ॥ ५ । क्योंकि वह हमारे लोग से प्रेम करता है और उसी ने सभा का घर हमारे लिये बनाया है ॥ ६ । तब यीशु उन के संग गया और

वह घर से दूर न था कि शतपति ने उस पास मित्रों को भेजके उस से कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें॥ ७। इस लिये मैं ने अपने को आप के पास जाने के भी योग्य नहीं समझा परन्तु बचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा॥ ८। क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को यह कर तो वह करता है॥ ९। यह सुनके यीशु ने उस मनुष्य पर अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उस के पीछे से आते थे उन्हों से कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया है॥ १०। और जो लोग भेजे गये उन्हों ने जब घर को लौटे तब उस रोगी दास को चंगा पाया॥

११। दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगर को जाता था और उस के अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उस के संग जाते थे॥ १२। ज्योंही वह नगर के फाटक के पास पहुंचा त्योंही देखो लोग एक मृतक को बाहर ले जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगर के बहुत लोग उस के संग थे॥ १३। प्रभु ने उस को देखके उस पर दया किई और उस से कहा मत रो॥ १४। तब उस ने निकट आके अर्थी को छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और उस ने कहा हे जवान मैं तुझ से कहता हूं उठ॥ १५। तब मृतक उठ बैठा और बोलने लगा और यीशु ने उसे उस की मां को सौंप दिया॥ १६। इस से सभों को भय हुआ और वे ईश्वर की स्तुति करके बोले कि हमारे बीच में बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है॥ १७। और उस के विषय में यह बात सारे यिहूदिया में और आसपास के सारे देश में फैल गई॥

१८। योहन के शिष्यों ने इन सब बातों के विषय में योहन से कहा॥ १९। तब उस ने अपने शिष्यों में से दो जनों को बुलाके यीशु पास यह कहने को भेजा कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें॥ २०। उन मनुष्यों ने उस पास आ कहा योहन बपतिसमा देनेहारे ने हमें आप के पास यह कहने को भेजा है कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें॥ २१। उसी घड़ी यीशु ने बहुतों को जो रोगों और पीड़ाओं और दुष्ट भूतों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत से अंधों को नेत्र दिये॥ २२। और उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि जो कुछ तुम ने देखा और सुना है सो जाके योहन से कहो कि अंधे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है॥ २३। और जो कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है॥

२४। जब योहन के दूत लोग चले गये तब यीशु योहन के बिषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या पवन से हिलते हुए नरकट को॥ २५। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को. देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और सुख से रहते हैं सो राजभवनों में हैं॥ २६। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को. हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है॥ २७। यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पथ बनावेगा॥ २८। मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन बपतिसमा देनेहारे से बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो ईश्वर के राज्य में अति छोटा है सो उस से बड़ा है॥ २९। और सब लोगों ने जिन्हों ने सुना और कर उगाहनेहारों ने योहन से बपतिसमा लेके ईश्वर को निर्दोष ठहराया॥ ३०। परन्तु फरीशियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिसमा न लेके ईश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया॥

३१। तब प्रभु ने कहा मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा वे किस के समान हैं॥ ३२। वे बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठके

एक दूसरे को पुकारके कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया और तुम न रोये ॥ ३३ । क्योंकि योहन बपतिसमा देनेहारा न रोटी खाता न दाख रस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा है ॥ ३४ । मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते हो देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र ॥ ३५ । परन्तु ज्ञान अपने सब सन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है ॥

३६ । फरीशियों में से एक ने यीशु से बिन्ती किई कि मेरे संग भोजन कीजिये और वह फरीशी के घर में जाके भोजन पर बैठा ॥ ३७ । और देखो उस नगर की एक स्त्री जो पापिनी थी जब उस ने जाना कि वह फरीशी के घर में भोजन पर बैठा है तब उजले पत्थर के पात्र में सुगंध तेल लाई ॥ ३८ । और पीछे से उस के पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उस के चरणों को आंसूओं से भिंगाने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछा और उस के पांव चूमके उन पर सुगंध तेल मला ॥ ३९ । यह देखके फरीशी जिस ने यीशु को बुलाया था अपने मन में कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उस को छूती है कौन और कैसी है क्योंकि वह पापिनी है ॥ ४० । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शिमोन मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं . वह बोला हे गुरु कहिये ॥ ४१ । किसी महाजन के दो ऋणी थे एक पांच सौ सूकी धारता था और दूसरा पचास ॥ ४२ । जब कि भर देने को उन्हों के पास कुछ न था उस ने दोनों को क्षमा किया सो कहिये उन में से कौन उस को अधिक प्यार करेगा ॥ ४३ । शिमोन ने उत्तर दिया मैं समझता हूं कि वह जिस का उस ने अधिक क्षमा किया . यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक विचार किया है ॥ ४४ । और स्त्री की ओर फिरके उस ने शिमोन से कहा तू इस स्त्री को देखता है . मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पांवों पर जल नहीं दिया परन्तु इस ने मेरे चरणों को आंसूओं से भिंगाया और अपने सिर के बालों से पोंछा है ॥ ४५ । तू ने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जब से मैं आया तब से मेरे पांवों को चूम रही है ॥ ४६ । तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं लगाया परन्तु इस ने मेरे पांवों पर सुगंध तेल मला है ॥ ४७ । इस लिये मैं तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत हैं क्षमा किये गये हैं . कि उस ने तो बहुत प्रेम किया है परन्तु जिस का थोड़ा क्षमा किया जाता है वह थोड़ा प्रेम करता है ॥ ४८ । और उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ॥ ४९ । तब जो लोग उस के संग भोजन पर बैठे थे सो अपने अपने मन में कहने लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है ॥ ५० । परन्तु उस ने स्त्री से कहा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है कुशल से चली जा ॥

८. इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश करता हुआ और ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरा किया ॥ २ । और बारहों शिष्य उस के संग थे और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतों से और रोगों से चंगी किई गई थीं अर्थात् मरियम जो मगदलीनी कहावती है जिस में से सात भूत निकल गये थे ॥ ३ । और हेरोद के भंडारी कूजा की स्त्री योहाना और सोसन्ना और बहुत सी और स्त्रियां . ये तो अपनी संपत्ति से उस की सेवा करती थीं ॥

४ । जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगर के लोग उस पास आते थे तब उस ने दृष्टान्त में कहा ॥ ५ । एक बोनेहारा अपना बीज बोने को निकला . बीज बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और पांवों से रौंदा गया और आकाश के पंछियों ने उसे चुग लिया ॥ ६ । कुछ पत्थर पर गिरा और उपजा परन्तु तरावट न पाने से सूख गया ॥ ७ । कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने एक संग बढ़के उस को दबा डाला ॥ ८ । परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उपजा और सौ गुणे फल फला . यह बातें कहके उस ने ऊंचे शब्द से कहा जिस को सुनने के कान हों सो सुने ॥

९। तब उस के शिष्यों ने उस से पूछा इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है॥ १०। उस ने कहा तुम को ईश्वर के राज्य के भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु श्रीर लोगों से दृष्टान्तों में बात होती है इस लिये कि वे देखते हुए न देखें श्रीर सुनते हुए न बूझें॥ ११। इस दृष्टान्त का अर्थ यह है. बीज तो ईश्वर का वचन है॥ १२। मार्ग की श्रोर के वे हैं जो सुनते हैं तब शैतान आके उन के मन में से वचन छीन लेता है ऐसा न हो कि वे विश्वास करके त्राण पावें॥ १३। पत्थर पर के वे हैं कि जब सुनते हैं तब आनन्द से वचन को ग्रहण करते हैं परन्तु उन में जड़ न बधने से वे थोड़ी बेर लों विश्वास करते हैं श्रीर परीक्षा के समय में बहक जाते हैं॥ १४। जो कांटों के बीच में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता श्रीर धन श्रीर जीवन के सुख बिलास से दबते दबते दबाये जाते श्रीर पक्के फल नहीं फलते हैं॥ १५। परन्तु अच्छी भूमि में का बीज वे हैं जो बचन सुनके भले श्रीर उत्तम मन में रखते हैं श्रीर धीरज से फल फलते हैं॥

१६। कोई मनुष्य दीपक को बारके बर्त्तन से नहीं ढांपता श्रीर न खाट के नीचे रखता है परन्तु दीवट पर रखता है कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें॥ १७। कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न होगा श्रीर न कुछ छिपा है जो जाना न जायगा श्रीर प्रसिद्ध न होगा॥ १८। इस लिये सचेत रहो तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जो कोई रखता है उस को श्रीर दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से जो कुछ वह समझता कि मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा॥

१९। यीशु की माता श्रीर उस के भाई उस पास आये परन्तु भीड़ के कारण उस से भेंट नहीं कर सके॥ २०। श्रीर कितनों ने उस से कह दिया कि आप की माता श्रीर आप के भाई बाहर खड़े हुए आप को देखने चाहते हैं॥ २१। उस ने उन को उत्तर दिया कि मेरी माता श्रीर मेरे भाई ये ही लोग हैं जो ईश्वर का वचन सुनके पालन करते हैं॥

२२। एक दिन वह श्रीर उस के शिष्य नाव पर चढ़े श्रीर उस ने उन से कहा कि आश्रो हम झील के उस पार चलें. सो उन्हों ने खोल दिई॥ २३। ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो गया श्रीर झील पर आंधी उठी श्रीर उन की नाव भर जाने लगी श्रीर वे जोखिम में थे॥ २४। तब उन्हों ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं. तब उस ने उठके बयार को श्रीर जल के हिलकोरे को डांटा श्रीर वे थम गये श्रीर नीवा हो गया॥ २५। श्रीर उस ने उन से कहा तुम्हारा विश्वास कहां है. परन्तु वे भयमान श्रीर अचंभित हो आपस में बोले यह कौन है जो बयार श्रीर जल को भी आज्ञा देता है श्रीर वे उस को आज्ञा मानते हैं॥

२६। वे गदेरियों के देश में जो गालील के साम्ने उस पार है पहुंचे॥ २७। जब यीशु तीर पर उतरा तब नगर का एक मनुष्य उस से आ मिला जिस को बहुत दिनों से भूत लगे थे श्रीर जो वस्त्र नहीं पहिनता न घर में रहता था परन्तु कबरस्थान में रहता था॥ २८। वह यीशु को देखके चिल्लाया श्रीर उस को दण्डवत कर बड़े शब्द से कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम. मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये॥ २९। क्योंकि यीशु ने अशुद्ध भूत को उस मनुष्य से निकलने की आज्ञा दिई थी. उस भूत ने बहुत बार उसे पकड़ा था श्रीर वह जंजीरों श्रीर बेड़ियों से बधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनों को तोड़ देता था श्रीर भूत उसे जंगल में खदेड़ता था॥ ३०। यीशु ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है. उस ने कहा सेना. क्योंकि बहुत भूत उस में पैठ गये थे॥ ३१। श्रीर उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमें अथाह कुण्ड में जाने की आज्ञा न दीजिये॥ ३२। वहां बहुत सूअरों का जो पहाड़ पर चरते थे एक झुण्ड था सो उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमें उन्हों में पैठने दीजिये श्रीर उस ने उन्हें जाने दिया॥ ३३। तब भूत उस मनुष्य से निकलके सूअरों में पैठे श्रीर वह झुण्ड

कड़ाड़े पर से झील में दौड़ गया और डूब मरा॥ ३४। यह जो हुआ था सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगर में और गांवों में उस का समाचार कहा॥ ३५। और लोग यह जो हुआ था देखने को बाहर निकले और यीशु पास आके जिस मनुष्य से भूत निकले थे उस को यीशु के चरणों के पास वस्त्र पहिने और सुबुद्धि बैठे हुए पाके डर गये॥ ३६। जिन लोगों ने देखा था उन्हों ने उन से कह दिया कि वह भूतग्रस्त मनुष्य क्योंकर चंगा हो गया था॥ ३७। तब गदेरा के आसपास के सारे लोगों ने यीशु से बिन्ती किई कि हमारे यहां से चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा. सो वह नाव पर चढ़के लौट गया॥ ३८। जिस मनुष्य से भूत निकले थे उस ने उस से बिन्ती किई कि मैं आप के संग रहूं पर यीशु ने उसे बिदा किया॥ ३९। और कहा अपने घर को फिर जा और कह दे कि ईश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं. उस ने जाके सारे नगर में प्रचार किया कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे॥

४०। जब यीशु लौट गया तब लोगों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि वे सब उस की बाट जोहते थे॥ ४१। और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभा का अध्यक्ष भी था आया और यीशु के पांवों पड़के उस से बिन्ती किई कि वह उस के घर जाय॥ ४२। क्योंकि उस को बारह बरस की एकलौती बेटी थी और वह मरने पर थी. जब यीशु जाता था तब भीड़ उसे दबाती थी॥

४३। और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग था जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे उठाके किसी से चंगी न हो सकी॥ ४४। तिस ने पीछे से आ उस के वस्त्र के आंचल को छूआ और उस के लोहू का बहना तुरन्त थम गया॥ ४५। यीशु ने कहा किस ने मुझे छूआ. जब सब मुकर गये तब पितर ने और उस के संगियों ने कहा हे गुरु लोग आप पर भीड़ लगाते और आप को दबाते हैं और आप कहते हैं किस ने मुझे छूआ॥ ४६। यीशु ने कहा किसी ने मुझे छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में से शक्ति निकली है॥ ४७। जब स्त्री ने देखा कि मैं छिपी नहीं हूं तब कांपती हुई आई और उसे दण्डवत कर सब लोगों के साम्ने उस को बताया कि उस ने किस कारण से उस को छूआ था और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी॥ ४८। उस ने उस से कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से चली जा॥

४९। वह बोलता ही था कि किसी ने सभा के अध्यक्ष के घर से आ उस से कहा आप की बेटी मर गई है गुरु को दुःख न दीजिये॥ ५०। यीशु ने यह सुनके उस को उत्तर दिया कि मत डर केवल बिश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी॥ ५१। घर में आके उस ने पितर और याकूब और योहन और कन्या के माता पिता को छोड़ और किसी को भीतर जाने न दिया॥ ५२। सब लोग कन्या के लिये रोते और छाती पीटते थे परन्तु उस ने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती है॥ ५३। वे यह जानके कि मर गई है उस का उपहास करने लगे॥ ५४। परन्तु उस ने सभों को बाहर निकाला और कन्या का हाथ पकड़के ऊंचे शब्द से कहा हे कन्या उठ॥ ५५। तब उस का प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी और उस ने आज्ञा किई कि उसे कुछ खाने को दिया जाय॥ ५६। उस के माता पिता बिस्मित हुए पर उस ने उन को आज्ञा दिई कि यह जो हुआ है किसी से मत कहो॥

९. यीशु ने अपने बारह शिष्यों को एकट्ठे बुलाके उन्हें सब भूतों को निकालने का और रोगों को चंगा करने का सामर्थ्य और अधिकार दिया॥ २। और उन्हें ईश्वर के राज्य की कथा सुनाने और रोगियों को चंगा करने को भेजा॥ ३। और उस ने उन से कहा मार्ग के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो अंगे तुम्हारे पास न होवें॥ ४। जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो उसी में रहो और वहीं से निकल जाओ॥ ५। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें उस नगर से निकलते हुए उन पर

साक्षी होने के लिये अपने पांवों की धूल भी झाड़ डालो॥ ६। सो वे निकलके सर्व्वत्र सुसमाचार सुनाते और लोगों को चंगा करते हुए गांव गांव फिरे॥

७। चौथाई का राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था सुनके दुवधा में पड़ा क्योंकि कितनों ने कहा योहन मृतकों में से जी उठा है॥ ८। और कितनों ने कि एलियाह दिखाई दिया है और औरों ने कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से एक जी उठा है॥ ९। और हेरोद ने कहा योहन का तो मैं ने सिर कटवाया परन्तु यह कौन है जिस के विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूं. और उस ने उसे देखने चाहा॥

१०। प्रेरितों ने फिर आके जो कुछ उन्हों ने किया था सो यीशु को सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम एक नगर के किसी जंगली स्थान में एकान्त में गया॥ ११। लोग यह जानके उस के पीछे हो लिये और उस ने उन्हें ग्रहण कर ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें किईं और जिन्हों को चंगा किये जाने का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया॥

१२। जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्यों ने आ उस से कहा लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर की बस्तियों और गांवों में जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां जंगली स्थान में हैं॥ १३। उस ने उन से कहा तुम उन्हें खाने को देओ. वे बोले हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लेवें तो होय॥ १४। वे लोग पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे. उस ने अपने शिष्यों से कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठाओ॥ १५। उन्हों ने ऐसा किया और सभों को बैठाया॥ १६। तब उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके उन पर आशीष दिई और उन्हें तोड़के शिष्यों को दिया कि लोगों के आगे रखें॥ १७। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्हों से बच रहे उन की बारह टोकरीं उठाई गईं॥

१८। जब वह एकान्त में प्रार्थना करता था और शिष्य लोग उस के संग थे तब उस ने उन से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं॥ १९। उन्हों ने उत्तर दिया कि वे आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है॥ २०। उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं. पितर ने उत्तर दिया कि ईश्वर का अभिषिक्त जन॥ २१। तब उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा दिई कि यह बात किसी से मत कहो॥ २२। और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी उठे॥

२३। उस ने सभों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे॥ २४। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा॥ २५। जो मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने को नाश करे अथवा गंवावे उस को क्या लाभ होगा॥ २६। जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र जब अपने और पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा॥ २७। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे॥

२८। इन बातों से दिन आठ एक के पीछे यीशु पितर और योहन और याकूब को संग ले प्रार्थना करने को पर्व्वत पर चढ़ गया॥ २९। जब वह प्रार्थना करता था तब उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का वस्त्र उजला हुआ और चमकने लगा॥ ३०। और देखो दो मनुष्य अर्थात् मूसा और एलियाह उस के संग बात करते थे॥ ३१। वे तेजोमय दिखाई दिये और उस की मृत्यु की जिसे वह यिरूशलीम में पूरी करने पर था बात करते थे॥ ३२। पितर और उस के संगियों की आंखें नींद से भरी थीं परन्तु वे जागते रहे और

उस का ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्यों को जो उस के संग खड़े थे देखा ॥ ३३ । जब वे उस के पास से जाने लगे तब पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है . हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये . वह नहीं जानता था कि क्या कहता था ॥ ३४ । उस के यह कहते हुए एक मेघ ने आ उन्हें छा लिया और जब उन दोनों ने उस मेघ में प्रवेश किया तब वे डर गये ॥ ३५ । और उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो ॥ ३६ । यह शब्द होने के पीछे यीशु अकेला पाया गया और उन्हों ने इस को गुप्त रखा और जो देखा था उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही ॥

३७ । दूसरे दिन जब वे उस पर्व्वत से उतरे तब बहुत लोग उस से आ मिले ॥ ३८ । और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने पुकारके कहा हे गुरु मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है ॥ ३९ । और देखिये एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंह से फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिन से छोड़ता है ॥ ४० । और मैं ने आप के शिष्यों से बिन्ती किई कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके ॥ ४१ । यीशु ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा . अपने पुत्र को यहां ले आ ॥ ४२ । वह आता ही था कि भूत ने उसे पटकके मरोड़ा परन्तु यीशु ने अशुद्ध भूत को डांटके लड़के को चंगा किया और उसे उस के पिता को सौंप दिया ॥ ४३ । तब सब लोग ईश्वर की महाशक्ति से अचंभित हुए ॥

४४ । जब समस्त लोग सब कामों से जो यीशु ने किये अचंभा करते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा तुम इन बातों को अपने कानों में रखो क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा ॥ ४५ । परन्तु उन्हों ने यह बात न समझी और यह उन से छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े और वे इस बात के विषय में उस से पूछने को डरते थे ॥

४६ । उन्हों में यह विचार होने लगा कि हम में से बड़ा कौन है ॥ ४७ । यीशु ने उन के मन का विचार जानके एक बालक को लेके अपने पास खड़ा किया ॥ ४८ । और उन से कहा जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है . जो तुम सभों में अति छोटा है वही बड़ा होगा ॥

४९ । तब योहन ने उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने किसी मनुष्य को आप के नाम से भूतों को निकालते देखा और हम ने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं चलता है ॥ ५० । यीशु ने उस से कहा मत बर्जो क्योंकि जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है ॥

५१ । जब उस के उठाये जाने के दिन पहुंचे तब उस ने यिरूशलीम जाने को अपना मन दृढ़ किया ॥ ५२ । और उस ने दूतों को अपने आगे भेजा और उन्हों ने जाके उस के लिये तैयारी करने को शोमिरोनियों के एक गांव में प्रवेश किया ॥ ५३ । परन्तु उन लोगों ने उसे ग्रहण न किया क्योंकि वह यिरूशलीम की ओर जाने का मुंह किये था ॥ ५४ । यह देखके उस के शिष्य याकूब और योहन बोले हे प्रभु आप की इच्छा होय तो हम आग को आकाश से गिरने और उन्हें नाश करने की आज्ञा देवें जैसा एलियाह ने भी किया ॥ ५५ । परन्तु उस ने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा क्या तुम नहीं जानते हो तुम कैसे आत्मा के हो ॥ ५६ । मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के प्राण नाश करने को नहीं परन्तु बचाने को आया है . तब वे दूसरे गांव को चले गये ॥

५७ । जब वे मार्ग में जाते थे तब किसी मनुष्य ने यीशु से कहा हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे चलूंगा ॥ ५८ । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पंछियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने का स्थान नहीं है ॥ ५९ । उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे आ . उस ने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाड़ने दीजिये ॥ ६० । यीशु ने उस से कहा मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे परन्तु

तू जाके ईश्वर के राज्य की कथा सुना ॥ ६१ । दूसरे ने भी कहा हे प्रभु मैं आप के पीछे चलूंगा परन्तु पहिले मुझे अपने घर के लोगों से बिदा होने दीजिये ॥ ६२ । यीशु ने उस से कहा अपना हाथ हल पर रखके जो कोई पीछे देखे सो ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं है ॥

१०. इस के पीछे प्रभु ने सत्तर और शिष्यों को भी ठहराके उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थान को जहां वह आप जाने पर था अपने आगे भेजा ॥ २ । और उस ने उन से कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इस लिये कटनी के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे ॥ ३ । जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नों की नाईं हुंड़ारों के बीच में भेजता हूं ॥ ४ । न थैली न झोली न जूते ले जाओ और मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो ॥ ५ । जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घर का कल्याण होय ॥ ६ । यदि वहां कोई कल्याण के योग्य हो तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास फिर आवेगा ॥ ७ । जो कुछ उन्हों के यहां मिले सोई खाते और पीते हुए उसी घर में रहो क्योंकि बनिहार अपनी बनि के योग्य है . घर घर मत फिरो ॥ ८ । जिस किसी नगर में तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ ॥ ९ । और उस में के रोगियों को चंगा करो और लोगों से कहो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है ॥ १० । परन्तु जिस किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उन की सड़कों पर जाके कहो ॥ ११ । तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमों पर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी यह जानो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है ॥ १२ । मैं तुम से कहता हूं कि उस दिन में उस नगर की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी ॥

१३ । हाय तू कोराजीन . हाय तू बैतसैदा . जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने राख में बैठके पश्चात्ताप करते ॥ १४ । परन्तु बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य होगी ॥ १५ । और हे कफर्नाहुम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक लों नीचा किया जायगा ॥ १६ । जो तुम्हारी सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता है सो मेरे भेजनेहारे को तुच्छ जानता है ॥

१७ । तब वे सत्तर शिष्य आनन्द से फिर आके बोले हे प्रभु आप के नाम से भूत भी हमारे बश में हैं ॥ १८ । उस ने उन से कहा मैं ने शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा ॥ १९ । देखो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओं को रौंदने का और शत्रु के सारे पराक्रम पर सामर्थ्य देता हूं और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी ॥ २० । तौभी इस में आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे बश में हैं परन्तु इसी में आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं ॥ २१ । उसी घड़ी यीशु आत्मा में आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें बालकों पर प्रगट किया है . हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा ॥ २२ । मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे ॥ २३ । तब उस ने अपने शिष्यों की ओर फिरके निराले में कहा जो तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो धन्य हैं ॥ २४ । क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना ॥

२५ । देखो किसी व्यवस्थापक ने उठके उस की परीक्षा करने को कहा हे गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी हूंगा ॥ २६ । उस

ने उस से कहा व्यवस्था में क्या लिखा है . तू कैसे पढ़ता है॥ २७। उस ने उत्तर दिया कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर॥ २८। यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया है . यह कर तो तू जीयेगा॥ २९। परन्तु उस ने अपने तईं धर्म्मी ठहराने की इच्छा कर यीशु से कहा मेरा पड़ोसी कौन है॥ ३०। यीशु ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीम से यिरीहो को जाते हुए डाकूओं के हाथ में पड़ा जिन्हों ने उस के वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमूआ छोड़के चले गये॥ ३१। संयोग से कोई याजक उस मार्ग से जाता था परन्तु उसे देखके साम्हने से होके चला गया॥ ३२। इसी रीति से एक लेवीय भी जब उस स्थान पर पहुंचा तब आके उसे देखा और साम्हने से होके चला गया॥ ३३। परन्तु एक शोमिरोनी पथिक उस स्थान पर आया और उसे देखके दया किई॥ ३४। और उस पास जाके उस के घावों पर तेल और दाख रस ढालके पट्टियां बांधीं और उसे अपने ही पशु पर बैठाके सराय में लाके उस की सेवा किई॥ ३५। बिहान हुए उस ने बाहर आ दो सूकी निकालके भठियारे को दिईं और उस से कहा उस मनुष्य की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा॥ ३६। सो तू क्या समझता है जो डाकूओं के हाथ में पड़ा उस का पड़ोसी इन तीनों में से कौन था॥ ३७। व्यवस्थापक ने कहा वह जिस ने उस पर दया किई . तब यीशु ने उस से कहा जा तू भी वैसा ही कर॥

३८। उन्हों के जाते हुए उस ने किसी गांव में प्रवेश किया और मर्था नाम एक स्त्री ने अपने घर में उस की पहुनई किई॥ ३९। उस की मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशु के चरणों के पास बैठके उस का वचन सुनती थी॥ ४०। परन्तु मर्था बहुत सेवकाई में घबराई हुई थी और वह निकट आके बोली हे प्रभु क्या आप को सोच नहीं है कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली सेवा करने को छोड़ी है . इस लिये उसे आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे॥ ४१। यीशु ने उस को उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है॥ ४२। परन्तु एक बात आवश्यक है . और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुना है जो उस से नहीं लिया जायगा॥

११. जब यीशु एक स्थान में प्रार्थना करता था ज्यों उस ने समाप्ति किई त्यों उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया तैसे आप हमें प्रार्थना करने को सिखाइये॥ २। उस ने उन से कहा जब तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय॥ ३। हमारी दिन भर की रोटी प्रतिदिन हमें दे॥ ४। और हमारे पापों को क्षमा कर क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा॥

५। और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि उस का एक मित्र होय और वह आधी रात को उस पास जाके उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये॥ ६। क्योंकि एक पथिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और उस के आगे रखने को मेरे पास कुछ नहीं है॥ ७। और वह भीतर से उत्तर देवे कि मुझे दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके तुझे नहीं दे सकता हूं॥ ८। मैं तुम से कहता हूं जो वह इस लिये नहीं उसे उठके देगा कि उस का मित्र है तौभी उस के लाज छोड़के मांगने के कारण उठके उस को जितना कुछ आवश्यक हो उतना देगा॥ ९। और मैं तुम्हों से कहता हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा॥ १०। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा॥ ११। तुम में से कौन पिता

होगा जिस से पुत्र रोटी मांगे, क्या वह उस को पत्थर देगा . और जो वह मछली मांगे तो क्या वह मछली की सन्ती उस को सांप देगा ॥ १२। अथवा जो वह अंडा मांगे तो क्या वह उस को विच्छू देगा ॥ १३। सो यदि तुम बुरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा॥

१४। यीशु एक भूत को जो गूंगा था निकालता था . जब भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा किया ॥ १५। परन्तु उन में से कोई कोई बोले यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है ॥ १६। औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा ॥ १७। पर उस ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य मे फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और घर से घर जो बिगड़ता है सो नाश होता है ॥ १८। और यदि शैतान में भी फूट पड़ी है तो उस का राज्य क्योंकर ठहरेगा . तुम लोग तो कहते हो कि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं ॥ १९। पर यदि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं . इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे ॥ २०। परन्तु जो मैं ईश्वर की उंगली से भूतों को निकालता हूं तो अवश्य ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है ॥ २१। जब हथियार बांधे हुए बलवन्त अपने घर की रखवाली करता है तब उस की संपत्ति कुशल से रहती है ॥ २२। परन्तु जब वह जो उस से अधिक बलवन्त है उस पर आ पहुंचकर उसे जीतता है तब उस के संपूर्ण हथियार जिन पर वह भरोसा रखता था छीन लेता और उस का लूटा हुआ धन बांटता है ॥ २३। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है ॥

२४। जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों मे बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता तब कहता है कि मैं अपने घर मे जहां से निकला फिर जाऊंगा ॥ २५। और वह आके उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है ॥ २६। तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को ले आता है और वे भीतर पैठके वहां वास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है ॥

२७। वह यह बातें कहता ही था कि भीड़ मे से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से उस से कहा धन्य वह गर्भ जिस ने तुझे धारण किया और वे स्तन जो तू ने पिये ॥ २८। उस ने कहा हां पर वेही धन्य हैं जो ईश्वर का वचन सुनके पालन करते हैं ॥

२९। जब बहुत लोगों की भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह कहने लगा कि इस समय के लोग दुष्ट हैं . वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह ॥ ३०। जैसा यूनस निनिवीय लोगों के लिये चिन्ह था वैसा ही मनुष्य का पुत्र इस समय के लोगों के लिये होगा ॥ ३१। दक्षिण की राणी विचार के दिन में इस समय के मनुष्यों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है ॥ ३२। निनिवी के लोग विचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है ॥

३३। कोई मनुष्य दीपक को बारके गुप्त में अथवा बर्त्तन के नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवट पर कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें ॥ ३४। शरीर का दीपक आंख है इस लिये जब तेरी आंख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर भी अंधियारा है ॥ ३५। सो देख लो कि जो ज्योति तुझ मे है सो अंधकार न होवे ॥ ३६। यदि तेरा सकल शरीर उजियाला हो और उस का कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि जब दीपक अपनी चमक से तुझे ज्योति देवे तैसा ही वह सब प्रकाशमान होगा ॥

३७। जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशी ने उस से बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर जाके भोजन पर बैठा॥ ३८। फरीशी ने जब देखा कि उस ने भोजन के पहिले नहीं धोया तब अचंभा किया॥ ३९। प्रभु ने उस से कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अंधेर और दुष्टता से भरा है॥ ४०। हे निर्बुद्धि लोगो जिस ने बाहर को बनाया क्या उस ने भीतर को भी नहीं बनाया॥ ४१। परन्तु भीतरवाली वस्तुओं को दान करो तो देखो तुम्हारे लिये सब कुछ शुद्ध है॥ ४२। परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम पोदीने और आरूदे का और सब भांति के सागपात का दसवां अंश देते हो परन्तु न्याय को और ईश्वर के प्रेम को उल्लंघन करते हो. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित था॥ ४३। हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभा के घरों में ऊंचे आसन और बाजारों में नमस्कार प्रिय लगते हैं॥ ४४। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम उन कबरों के समान हो जो दिखाई नहीं देतीं और मनुष्य जो उन के ऊपर से चलते हैं नहीं जानते हैं॥

४५। तब व्यवस्थापकों में से किसी ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु यह बातें कहने से आप हमों की भी निन्दा करते हैं॥ ४६। उस ने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे जिन को उठाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से नहीं छूते हो॥ ४७। हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे पितरों ने मार डाला॥ ४८। सो तुम अपने पितरों के कामों पर साक्षी देते हो और उन में सम्मति देते हो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कबरें बनाते हो॥ ४९। इस लिये ईश्वर के ज्ञान ने कहा है कि मैं उन्हों के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगा और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और सतावेंगे॥ ५०। कि हाबिल के लोहू से लेके जिखरियाह के लोहू तक जो वेदी और मन्दिर के बीच में घात किया गया जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति से बहाया जाता है सब का लेखा इस समय के लोगों से लिया जाय॥ ५१। हां मैं तुम से कहता हूं उस का लेखा इसी समय के लोगों से लिया जायगा॥ ५२। हाय तुम व्यवस्थापको तुम ने ज्ञान की कुंजी ले लिई है. तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया है और प्रवेश करनेहारों को बर्जा है॥

५३। जब वह उन्हों से यह बातें कहता था तब अध्यापक और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातों के विषय में उसे कहवाने लगे॥ ५४। और दांव ताकते हुए उस के मुंह से कुछ पकड़ने चाहते थे कि उस पर दोष लगावें॥

१२. उस समय में सहस्रों लोग एकट्ठे हुए यहां लों कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे इस पर यीशु अपने शिष्यों से पहिले कहने लगा कि फरीशियों के खमीर से अर्थात् कपट से चौकस रहो॥ २। कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा॥ ३। इस लिये जो कुछ तुम ने अंधियारे में कहा है सो उजियाले में सुना जायगा और जो तुम ने कोठरियों में कानों में कहा है सो कोठों पर से प्रचार किया जायगा॥ ४। मैं तुम्हों से जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीर को मार डालते हैं परन्तु उस के पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उन से मत डरो॥ ५। मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किस से डरो. घात करने के पीछे नरक में डालने का जिस को अधिकार है उसी से डरो. हां मैं तुम से कहता हूं उसी से डरो॥ ६। क्या दो पैसे में पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता है॥ ७। परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं इस लिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओं से अधिक मोल के हो॥ ८। मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्य का पुत्र भी ईश्वर के दूतों के आगे मान लेगा॥ ९। परन्तु जो मनुष्यों के आगे मुझे नकारे सो ईश्वर के दूतों के आगे नकारा जायगा॥

१०। जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे वह उस के लिये नहीं क्षमा किई जायगी ॥ ११। जब लोग तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियों के आगे ले जावें तब किस रीति से अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो ॥ १२। क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा ॥

१३। भीड़ में से किसी ने उस से कहा हे गुरु मेरे भाई से कहिये कि पिता का धन मेरे संग बांट लेवे ॥ १४। उस ने उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हा पर न्यायी अथवा बांटनेहारा ठहराया ॥ १५। और उस ने लोगों से कहा देखो लोभ से बचे रहो क्योंकि किसी को धन बहुत होय तौभी उस का जीवन उस के धन से नहीं है ॥ १६। उस ने उन्हों से एक दृष्टान्त भी कहा कि किसी धनवान मनुष्य की भूमि में बहुत कुछ उपजा ॥ १७। तब वह अपने मन में बिचार करने लगा कि मैं क्या करूं क्योंकि मुझ को अपना अन्न रखने का स्थान नहीं है ॥ १८। और उस ने कहा मैं यही करूंगा मैं अपनी बखारियां तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न और अपनी संपत्ति रखूंगा ॥ १९। और मैं अपने मन से कहूंगा हे मन तेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत संपत्ति रखी हुई है बिश्राम कर खा पी सुख से रह ॥ २०। परन्तु ईश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जायगा तब जो कुछ तू ने एकट्ठा किया है सो किस का होगा ॥ २१। जो अपने लिये धन बटोरता है और ईश्वर की ओर धनी नहीं है सो ऐसा ही है ॥

२२। फिर उस ने अपने शिष्यों से कहा इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे न शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे ॥ २३। भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा है ॥ २४। कौवों को देख लो . वे न बोते हैं न लवते हैं उन को न भंडार न खत्ता है तौभी ईश्वर उन को पालता है . तुम पक्षियों से कितने बड़े हो ॥ २५। तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु की दौड़ को एक हाथ भी बढ़ा सकता है ॥ २६। सो यदि तुम अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो ॥ २७। सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे बिभव में उन में से एक के तुल्य बिभूषित न था ॥ २८। यदि ईश्वर घास को जो आज खेत में है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता है तो हे अल्पबिश्वासियो कितना अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा ॥ २९। तुम यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे और न सन्देह करो ॥ ३०। जगत के देवपूजक लोग इन सब वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं का प्रयोजन है ॥ ३१। परन्तु ईश्वर के राज्य का खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगी ॥ ३२। हे छोटे झुण्ड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिता को तुम्हें राज्य देने में प्रसन्नता है ॥ ३३। अपनी संपत्ति बेचके दान करो . अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये स्वर्ग में एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा बिगाड़ता है ॥ ३४। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ॥

३५। तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते रहें ॥ ३६। और तुम उन मनुष्यों के समान होओ जो अपने स्वामी की बाट देखते हैं कि वह बिवाह से कब लौटेगा इस लिये कि जब वह आके द्वार खटखटावे तब वे उस के लिये तुरन्त खोलें ॥ ३७। वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते पावे . मैं तुम से सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें भोजन पर बैठावेगा और आके उन की सेवा करेगा ॥ ३८। जो वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और ऐसा ही पावे तो वे दास धन्य हैं ॥ ३९। तुम यह जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा तो वह जागता

रहता और अपने घर में सेंध पड़ने न देता॥ ४०। इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा॥ ४१। तब पितर ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप हमों से अथवा सब लोगों से भी यह दृष्टान्त कहते हैं॥ ४२। प्रभु ने कहा वह विश्वास-योग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसे स्वामी अपने परिवार पर प्रधान करेगा कि समय मे उन्हे सीधा देवे॥ ४३। वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे॥ ४४। मैं तुम से सच कहता हू वह उसे अपनी सब संपत्ति पर प्रधान करेगा॥ ४५। परन्तु जो वह दास अपने मन में कहे कि मेरा स्वामी आने में बिलम्ब करता है और दासों और दासियों को मारने लगे और खाने पीने और मतवाला होने लगे॥ ४६। तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा और उस को बड़ी ताड़ना देके अविश्वासियों के संग उस का अंश देगा॥ ४७। वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था परन्तु तैयार न रहा और उस की इच्छा के समान न किया बहुत सी मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था और मार खाने के योग्य काम किया सो थोड़ी सी मार खायगा॥ ४८। और जिस किसी को बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जायगा और जिस को लोगों ने बहुत सौंपा है उस से वे अधिक मांगेंगे॥

४९। मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हू और मैं क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती॥ ५०। मुझे एक बपतिसमा लेना है और जब लों वह सपूर्ण न होय तब लों मैं कैसे सकेते में हूं॥ ५१। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने आया हू. मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु फूट॥ ५२। क्योंकि अब से एक घर में पांच जन अलग अलग होंगे तीन दो के विरुद्ध और दो तीन के विरुद्ध॥ ५३। पिता पुत्र के विरुद्ध और पुत्र पिता के विरुद्ध मां बेटी के विरुद्ध और बेटी मा के विरुद्ध सास अपनी पतोह के विरुद्ध और पतोह अपनी सास के विरुद्ध अलग अलग होंगे॥

५४। और भी उस ने लोगों से कहा जब तुम मेघ को पश्चिम से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती है और ऐसा होता है॥ ५५। और जब दक्षिण की बयार चलते देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा और वह भी होता है॥ ५६। हे कपटियो तुम धरती और आकाश का रूप चीन्ह सकते हो परन्तु इस समय को क्योंकर नहीं चीन्हते हो॥ ५७। और जो उचित है उस को तुम आप ही से क्यों नहीं बिचार करते हो॥ ५८। जब तू अपने मुद्दई के संग अध्यक्ष के पास जाता है मार्ग ही में उस से छूटने का यत्न कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाय और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृह में डाले॥ ५९। मैं तुझ से कहता हू कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा॥

१३. उस समय में कितने लोग आ पहुंचे और उन गालीलियों के विषय में जिन का लोहू पिलात ने उन के बलिदानों के संग मिलाया था यीशु से बात करने लगे॥ २। उस ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग सब गालीलियों से अधिक पापी थे कि उन्हों पर ऐसी विपत्ति पड़ी॥ ३। मै तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे॥ ४। अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन्हों पर शीलोह में गुम्मट गिर पड़ा और उन्हें नाश किया सब मनुष्यों से जो यिरूशलीम में रहते थे अधिक अपराधी थे॥ ५। मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे॥

६। उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्य की दाख की बारी में एक गूलर का वृक्ष लगाया गया था और उस ने आके उस में फल ढूंढ़ा पर न पाया॥ ७। तब उस ने माली से कहा देख मैं तीन बरस से आके इस गूलर के वृक्ष में फल ढूंढ़ता हूं

पर नहीं पाता हूं . उसे काट डाल वह भूमि को क्यों निकम्मी करता है ॥ ८। माली ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी उस को इस बरस भी रहने दीजिये जब लों मैं उस का थाला खोदके खाद भरूं ॥ ९। तब जो उस में फल लगे तो भला . नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये ॥

१०। बिश्राम के दिन यीशु एक सभा के घर में उपदेश करता था ॥ ११। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी और किसी रीति से अपने को सीधी न कर सकती थी ॥ १२। यीशु ने उसे देखके अपने पास बुलाया और उस से कहा हे नारी तू अपनी दुर्ब्बलता से छुड़ाई गई है ॥ १३। तब उस ने उस पर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और ईश्वर की स्तुति करने लगी ॥ १४। परन्तु यीशु ने बिश्राम के दिन में चंगा किया इस से सभा का अध्यक्ष रिसियाने लगा और उत्तर दे लोगों से कहा छः दिन हैं जिन में काम करना उचित है सो उन दिनों में आके चंगे किये जाओ और बिश्राम के दिन में नहीं ॥ १५। प्रभु ने उस को उत्तर दिया कि हे कपटी क्या बिश्राम के दिन तुम्हों में से हर एक अपने बैल अथवा गदहे को थान से खोलके जल पिलाने को नहीं ले जाता ॥ १६। और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की पुत्री है जिसे शैतान ने देखो अठारह बरस से बांध रखा था बिश्राम के दिन में इस बंधन से खोली जाय ॥ १७। जब उस ने यह बातें कहीं तब उस के सब बिरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सब प्रताप के कर्म्मों के लिये जो वह करता था आनन्दित हुए ॥

१८। फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य किस के समान है और मैं उस की उपमा किस से देऊंगा ॥ १९। वह राई के एक दाने की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपनी बारी में बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और आकाश के पंछियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया ॥ २०। उस ने फिर कहा मैं ईश्वर के राज्य की उपमा किस से देऊंगा ॥ २१। वह खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया ॥

२२। वह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गांव गांव होके यिरूशलीम की ओर जाता था ॥ २३। तब किसी ने उस से कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं ॥ २४। उस ने उन्हों से कहा सकेत फाटक से प्रवेश करने को साहस करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे और नहीं सकेंगे ॥ २५। जब घर का स्वामी उठके द्वार मूंद चुकेगा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो ॥ २६। तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आप के साम्हे खाते और पीते थे और आप ने हमारी सड़कों में उपदेश किया ॥ २७। परन्तु वह कहेगा मैं तुम से कहता हूं मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो . हे कुकर्म्म करनेहारो तुम सब मुझ से दूर होओ ॥ २८। वहां रोना और दांत पीसना होगा कि उस समय तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को ईश्वर के राज्य में बैठे हुए और अपने को बाहर निकाले हुए देखोगे ॥ २९। और लोग पूर्व्व और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आके ईश्वर के राज्य में बैठेंगे ॥ ३०। और देखो कितने पिछले हैं जो अगले होंगे और कितने अगले हैं जो पिछले होंगे ॥

३१। उसी दिन कितने फरीशियों ने आके उस से कहा यहां से निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार डालने चाहता है ॥ ३२। उस ने उन से कहा जाके उस लोमड़ी से कहो कि देखो मैं आज और कल भूतों को निकालता और रोगियों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन सिद्ध हूंगा ॥ ३३। तौभी आज और कल और परसों फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम के बाहर नाश किया जाय ॥ ३४। हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के

नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा ॥ ३५। देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से सच कहता हूं जिस समय में तुम कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है वह समय जब लों न आवे तब लों तुम मुझे फिर न देखोगे ॥

१४. जब यीशु विश्राम के दिन प्रधान फरीशियों में से किसी के घर में रोटी खाने को गया तब वे उस को ताकते थे ॥ २। और देखो एक मनुष्य उस के साम्हने था जिसे जलंधर रोग था ॥ ३। इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीशियों से कहा क्या विश्राम के दिन में चंगा करना उचित है. परन्तु वे चुप रहे ॥ ४। तब उस ने उस मनुष्य को लेके चंगा करके विदा किया ॥ ५। और उन्हें उत्तर दिया कि तुम में से किस का गदहा अथवा बैल कूंए में गिरेगा और वह तुरन्त विश्राम के दिन में उसे न निकालेगा ॥ ६। वे उस को इन बातों का उत्तर नहीं दे सके ॥

७। जब उस ने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे ऊंचे स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्हों से कहा ॥ ८। जब कोई तुझे विवाह के भोज में बुलावे तब ऊंचे स्थान में मत बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से अधिक आदर के योग्य किसी को बुलाया हो ॥ ९। और जिस ने तुझे और उसे नेवता दिया सो आके तुझ से कहे कि इस मनुष्य को स्थान दीजिये और तब तू लज्जित हो सब से नीचा स्थान लेने लगे ॥ १०। परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सब से नीचे स्थान में जाके बैठ इस लिये कि जब वह जिस ने तुझे नेवता दिया है आवे तब तुझ से कहे हे मित्र और ऊपर आइये. तब तेरे संग बैठनेहारों के साम्ने तेरा आदर होगा ॥ ११। क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ॥

१२। तब जिस ने उसे नेवता दिया था उस ने उस से भी कहा जब तू दिन का अथवा रात का भोजन बनावे तब अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुम्बों वा धनवान पड़ोसियों को मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इस के बदले तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल होय ॥ १३। परन्तु जब तू भोज करे तब कंगालों टुण्डों लंगड़ों और अंधों को बुला ॥ १४। और तू धन्य होगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धर्म्मियों के जी उठने पर प्रतिफल तुझ को दिया जायगा ॥

१५। उस के संग बैठनेहारों में से एक ने यह बातें सुनके उस से कहा धन्य वह जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायगा ॥ १६। उस ने उस से कहा किसी मनुष्य ने बड़ी बियारी बनाई और बहुतों को बुलाया ॥ १७। बियारी के समय में उस ने अपने दास के हाथ नेवतहरियों को कहला भेजा कि आओ सब कुछ अब तैयार है ॥ १८। परन्तु वे सब एक मत होके क्षमा मांगने लगे पहिले ने उस दास से कहा मैं ने कुछ भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है मैं तुझ से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा ॥ १९। दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने को जाता हूं मैं तुझ से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा ॥ २०। तीसरे ने कहा मैं ने विवाह किया है इस लिये मैं नहीं आ सकता हूं ॥ २१। उस दास ने आके अपने स्वामी को यह बातें सुनाईं तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा नगर की सड़कों और गलियों में शीघ्र जाके कंगालों औ टुण्डों औ लंगड़ों और अंधों को यहां ले आ ॥ २२। दास ने फिर कहा हे स्वामी जैसे आप ने आज्ञा दिई तैसे किया गया है और अब भी जगह है ॥ २३। स्वामी ने दास से कहा राजपथों में और गाछों के नीचे जाके लोगों को बिन लाने से मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे ॥ २४। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्यों में से कोई मेरी बियारी न चीखेगा ॥

२५। बड़ी भीड़ यीशु के संग जाती थी और उस ने पीछे फिरके उन्हों से कहा ॥ २६। यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी माता और पिता और

स्त्री और लड़कों और भाइयों और बहिनों को हां और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है ॥ २७। और जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है ॥ २८। तुम में से कौन है कि गढ़ बनाने चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि समाप्ति करने की बिसात मुझे है कि नहीं ॥ २९। ऐसा न हो कि जब वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब सब देखनेहारे उसे ठट्ठे में उड़ाने लगें ॥ ३०। और कहें यह मनुष्य बनाने लगा परन्तु समाप्ति नहीं कर सका ॥ ३१। अथवा कौन राजा है कि दूसरे राजा से लड़ाई करने को जाता हो और पहिले बैठके बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे विरुद्ध आता है मैं दस सहस्र लेके उस का साम्हना कर सकता हूं कि नहीं ॥ ३२। और जो नहीं तो उस के दूर रहते ही वह दूतों को भेजके मिलाप चाहता है ॥ ३३। इसी रीति से तुम्हों में से जो कोई अपना सर्वस्व त्यागन न करे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है ॥ ३४। लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण का स्वाद बिगड़ जाय तो वह किस से स्वादित किया जायगा ॥ ३५। वह न भूमि के न खाद के लिये काम आता है. लोग उसे बाहर फेंकते हैं. जिस को सुनने के कान हों सो सुने ॥

१५. कर उगाहनेहारे और पापी लोग सब यीशु पास आते थे कि उस की सुनें ॥ २। और फरीशी और अध्यापक कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियों को ग्रहण करता और उन के संग खाता है ॥ ३। तब उस ने उन्हों से यह दृष्टान्त कहा ॥ ४। तुम में से कौन मनुष्य है कि उस की सौ भेड़ हों और उस ने उन में से एक को खोया हो और वह निन्नानवे को जंगल में न छोड़े और जब लों उस खोई हुई को न पावे तब लों उस के खोज में न जाय ॥ ५। और वह उसे पाके आनन्द से अपने कांधों पर रखता है ॥ ६। और घर में आके मित्रों औ पड़ोसियों को एकट्ठे बुलाके उन्हों से कहता है मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने अपनी खोई हुई भेड़ पाई है ॥ ७। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से जिन्हें पश्चात्ताप करने का प्रयोजन न होय ऐसे निन्नानवे धर्म्मियों से अधिक एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप करे स्वर्ग में आनन्द होगा ॥

८। अथवा कौन स्त्री है कि उस की दस सूकी हों और वह जो एक सूकी खोवे तो दीपक बारके औ घर बुहारके उसे जब लों न पावे तब लों यत्न से न ढूंढ़े ॥ ९। और वह उसे पाके सखियों औ पड़ोसिनियों को एकट्ठी बुलाके कहती है मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने जो सूकी खोई थी सो पाई है ॥ १०। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप करता है ईश्वर के दूतों में आनन्द होता है ॥

११। फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे ॥ १२। उन में से छुटके ने पिता से कहा हे पिता संपत्ति में से जो मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये. तब उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दिई ॥ १३। बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपन में दिन बिताते हुए अपनी संपत्ति उड़ा दिई ॥ १४। जब वह सब कुछ उठा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया ॥ १५। और वह जाके उस देश के निवासियों में से एक के यहां रहने लगा जिस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने को भेजा ॥ १६। और वह उन छीमियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था और कोई नहीं उस को कुछ देता था ॥ १७। तब उसे चेत हुआ और उस ने कहा मेरे पिता के कितने मजूरों को भोजन से अधिक रोटी होती है और मैं भूख से मरता हूं ॥ १८। मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उस से कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के साम्ने पाप किया है ॥ १९। मैं फिर आप का पुत्र कहावने के योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरों में से एक के समान कीजिये ॥ २०। तब वह उठके अपने पिता पास चला पर वह दूर ही था कि

उस के पिता ने उसे देखके दया किई और दौड़के उस के गले से लिपटके उसे चूमा ॥ २१। पुत्र ने उस से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के साम्हे पाप किया है और फिर आप का पुत्र कहावने के योग्य नहीं हूं ॥ २२। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा सब से उत्तम वस्त्र निकालके उसे पहिनाओ और उस के हाथ में अंगूठी और पांवों में जूती पहिनाओ ॥ २३। और मोटा बछड़ू लाके मारो और हम खावें और आनन्द करें ॥ २४। क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है. तब वे आनन्द करने लगे ॥ २५। उस का जेठा पुत्र खेत में था और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा तब बाजा और नाच का शब्द सुना ॥ २६। और उस ने अपने सेवकों में से एक को अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है ॥ २७। उस ने उस से कहा आप का भाई आया है और आप के पिता ने मोटा बछड़ू मारा है इस लिये कि उसे भला चंगा पाया है ॥ २८। परन्तु उस ने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा इस लिये उस का पिता बाहर आ उसे मनाने लगा ॥ २९। उस ने पिता को उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसों से आप की सेवा करता हूं और कभी आप की आज्ञा को उल्लंघन न किया और आप ने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के संग आनन्द करता॥ ३०। परन्तु आप का यह पुत्र जो वेश्याओं के संग आप की संपत्ति खा गया है ज्योंही आया त्योंही आप ने उस के लिये मोटा बछड़ू मारा है ॥ ३१। पिता ने उस से कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है ॥ ३२। परन्तु आनन्द करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है ॥

१६. यीशु ने अपने शिष्यों से भी कहा कोई धनवान मनुष्य था जिस का एक भंडारी था और यह दोष उस के आगे भंडारी पर लगाया गया कि यह आप की संपत्ति उड़ा देता है ॥ २। उस ने उसे बुलाके उस से कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हूं. अपने भण्डारपन का लेखा दे क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकेगा ॥ ३। तब भण्डारी ने अपने मन में कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भण्डारी का काम मुझ से छीन लेता है. मैं कोड़ नहीं सकता हूं और भीख मांगने से मुझे लाज आती है ॥ ४। मैं जानता हूं मैं क्या करूंगा इस लिये कि जब मैं भण्डारपन से छुड़ाया जाऊं तब लोग मुझे अपने घरों में ग्रहण करें ॥ ५। और उस ने अपने स्वामी के ऋणियों में से एक एक को अपने पास बुलाके पहिले से कहा तू मेरे स्वामी का कितना धारता है ॥ ६। उस ने कहा सौ मन तेल. वह उस से बोला अपना पत्र ले और बैठके शीघ्र पचास मन लिख ॥ ७। फिर दूसरे से कहा तू कितना धारता है. उस ने कहा सौ मन गेहूं. वह उस से बोला अपना पत्र ले और अस्सी मन लिख ॥ ८। स्वामी ने उस अधर्म्मी भण्डारी को सराहा कि उस ने बुद्धि का काम किया है. क्योंकि इस संसार के सन्तान अपने समय के लोगों के विषय में ज्योति के सन्तानों से अधिक बुद्धिमान हैं ॥ ९। और मैं तुम्हों से कहता हूं कि अधर्म्म के धन के द्वारा अपने लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जाओ तब वे तुम्हें अनन्त निवासों में ग्रहण करें ॥

१०। जो अति थोड़े में विश्वासयोग्य है सो बहुत में भी विश्वासयोग्य है और जो अति थोड़े में अधर्म्मी है सो बहुत में भी अधर्म्मी है ॥ ११। इस लिये जो तुम अधर्म्म के धन में विश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा ॥ १२। और जो तुम पराये धन में विश्वासयोग्य न हुए हो तो तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा ॥ १३। कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो ॥

१४। फरीशियों ने भी जो लोभी थे यह सब बातें सुनीं और उस का ठट्ठा किया ॥ १५। उस ने उन्हों से कहा तुम तो मनुष्यों के आगे अपने को

धर्म्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है . जो मनुष्यों के लेखे महान है सो ईश्वर के आगे घिनित है ॥ १६ । व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग योहन लों थे तब से ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जाता है और सब कोई उस में बरियाई से प्रवेश करते हैं ॥ १७ । व्यवस्था के एक बिन्दु के लोप होने से आकाश औ पृथिवी का टल जाना सहज है ॥ १८ । जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो स्त्री अपने स्वामी से त्यागी गई है उस से जो कोई विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ॥

१९ । एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र और मलमल पहिनता और प्रतिदिन विभव और सुख से रहता था ॥ २० । और इलियाजर नाम एक कंगाल उस की डेवढ़ी पर डाला गया था जो घावों से भरा हुआ था ॥ २१ । और उन चूरचारों से जो धनवान की मेज से गिरते थे पेट भरने चाहता था और कुत्ते भी आके उस के घावों को चाटते थे ॥ २२ । वह कंगाल मर गया और दूतों ने उस को इब्राहीम की गोद मे पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया ॥ २३ । और परलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई और दूर से इब्राहीम को और उस की गोद में इलियाजर को देखा ॥ २४ । तब वह पुकारके बोला हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके इलियाजर को भेजिये कि अपनी उंगली का छोर पानी में डुबोके मेरी जीभ को ठंढी करे क्योंकि मैं इस ज्वाला मे कलपता हूं ॥ २५ । परन्तु इब्राहीम ने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अपनी संपत्ति पा चुका है और वैसा ही इलियाजर विपत्ति परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है ॥ २६ । और भी हमारे और तुम्हारे बीच में बड़ा अन्तर ठहराया गया है कि जो लोग इधर से उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकें और न उधर के लोग इस पार हमारे पास आवें ॥ २७ । उस ने कहा तब हे पिता मै आप से बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिता के घर भेजिये ॥ २८ । क्योंकि मेरे पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान मे आवें ॥ २९ । इब्राहीम ने उस से कहा मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक उन के पास हैं वे उन की सुनें ॥ ३० । वह बोला हे पिता इब्राहीम सो नहीं परन्तु यदि मृतकों मे से कोई उन के पास जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे ॥ ३१ । उस ने उस से कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकों में से कोई जी उठे तौभी नहीं मानेंगे ॥

१७. **यीशु** ने शिष्यों से कहा ठोकरों का न लगना अन्होना है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से वे लगती हैं ॥ २ । इन छोटों मे से एक को ठोकर खिलाने से उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह समुद्र में डाला जाता ॥

३ । अपने विषय में सचेत रहो . यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उस को समझा दे और यदि पछतावे तो उसे क्षमा कर ॥ ४ । जो वह दिन भर में सात बेर तेरा अपराध करे और सात बेर दिन भर मे तेरी ओर फिरके कहे मै पछताता हूं तो उसे क्षमा कर ॥ ५ । तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा विश्वास बढ़ाइये ॥ ६ । प्रभु ने कहा यदि तुम को राई के एक दाने के तुल्य विश्वास होता तो तुम इस गूलर के वृक्ष से जो कहते कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा वह तुम्हारी आज्ञा मानता ॥

७ । तुम में से कौन है कि उस का दास हल जोतता अथवा चरवाही करता हो और ज्यों ही वह खेत से आवे त्यों ही उस से कहेगा तुरन्त आ भोजन पर बैठ ॥ ८ । क्या वह उस से न कहेगा मेरी बियारी बनाके जब लों मैं खाऊं और पीऊं तब लों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इस के पीछे तू खायगा और पीयेगा ॥ ९ । क्या उस दास का उस पर कुछ निहोरा हुआ कि उस ने वह काम किया जिस की आज्ञा उस को दिई गई . मै ऐसा नहीं समझता हूं ॥ १० । इस रीति से तुम भी जब सब काम कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दिई गई

है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना उचित था सोई भर किया है ॥

११ । यीशु यिरूशलीम को जाते हुए शोमिरोन और गालील के बीच में से होके जाता था ॥ १२ । जब वह किसी गांव में प्रवेश करता था तब दस कोढ़ी उस के सम्मुख आ दूर खड़े हुए ॥ १३ । और वे ऊंचे शब्द से बोले हे यीशु गुरु हम पर दया कीजिये ॥ १४ । यह देखके उस ने उन्हों से कहा जाके अपने तईं याजकों को दिखाओ . जाते हुए वे शुद्ध किये गये ॥ १५ । तब उन में से एक ने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करता हुआ फिर आया ॥ १६ । और यीशु का धन्य मानते हुए उस के चरणों पर मुंह के बल गिरा . और वह शोमिरोनी था ॥ १७ । इस पर यीशु ने कहा क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं ॥ १८ । क्या इस अन्यदेशी को छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वर की स्तुति करने को फिर आवें ॥ १९ । तब उस ने उस से कहा उठ चला जा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है ॥

२० । जब फरीशियों ने उस से पूछा कि ईश्वर का राज्य कब आवेगा तब उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि ईश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं आता है ॥ २१ । और न लोग कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वर का राज्य तुम्हों में है ॥

२२ । उस ने शिष्यों से कहा वे दिन आवेंगे जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने चाहोगे पर न देखोगे ॥ २३ । लोग तुम्हों से कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है पर तुम मत जाओ और न उन के पीछे हो लेओ ॥ २४ । क्योंकि जैसे बिजली जो आकाश की एक ओर से चमकती है आकाश की दूसरी ओर तक ज्योति देती है वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में होगा ॥ २५ । परन्तु पहिले उस को अवश्य है कि बहुत दुःख उठाय और इस समय के लोगों से तुच्छ किया जाय ॥ २६ । जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा ॥ २७ । जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन लों लोग खाते पीते विवाह करते औ विवाह दिये जाते थे . तब उस दिन जलप्रलय ने आके उन सभों को नाश किया ॥ २८ । और जिस रीति से लूत के दिनों में हुआ कि लोग खाते पीते मोल लेते बेचते बोते औ घर बनाते थे ॥ २९ । परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला उस दिन आग और गंधक आकाश से बरसी और उन सभों को नाश किया ॥ ३० । उसी रीति से मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन में होगा ॥ ३१ । उस दिन में जो कोठे पर हो और उस की सामग्री घर में होय सो उसे लेने को न उतरे और वैसे ही जो खेत में हो सो पीछे न फिरे ॥ ३२ । लूत की स्त्री को स्मरण करो ॥ ३३ । जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा और जो कोई उसे खोवे सो उस की रक्षा करेगा ॥ ३४ । मैं तुम से कहता हूं उस रात में दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा ॥ ३५ । दो स्त्रियां एक संग चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी ॥ ३६ । दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा ॥ ३७ । उन्हों ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु कहां . उस ने उन से कहा जहां लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ॥

१८. नित्य प्रार्थना करने और साहस न छोड़ने की आवश्यकता के विषय में यीशु ने उन्हों से एक दृष्टान्त कहा ॥ २ । कि किसी नगर में एक विचारकर्त्ता था जो न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता था ॥ ३ । और उसी नगर में एक विधवा थी जिस ने उस पास आ कहा मेरे मुद्दई से मेरा पलटा लीजिये ॥ ४ । उस ने कितनी बेर लों न माना परन्तु पीछे अपने मन में कहा यद्यपि मैं न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता हूं ॥ ५ । तौभी यह विधवा मुझे दुःख देती है इस कारण मैं उस का पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य नित्य आने से वह मेरे मुंह में कालिख लगावे ॥ ६ । तब प्रभु ने कहा सुनो यह अधर्म्मी विचारकर्त्ता क्या कहता

है ॥ ७। और ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगों के विषय में जो रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या उन का पलटा न लेगा ॥ ८। मैं तुम से कहता हूं वह शीघ्र उन का पलटा लेगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आवेगा तब क्या पृथिवी पर विश्वास पावेगा ॥

९। और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्म्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त कहा ॥ १०। दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को गये एक फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा ॥ ११। फरीशी ने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं कि मैं और मनुष्यों के समान नहीं हूं जो उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर उगाहनेहारे के समान ॥ १२। मैं अठवारे में दो वार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश देता हूं ॥ १३। कर उगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्ग की ओर आंखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे ईश्वर मुझ पापी पर दया कर ॥ १४। मैं तुम से कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ अपने घर को गया क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ॥

१५। लोग कितने बालकों को भी यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने यह देखके उन्हें डांटा ॥ १६। यीशु ने बालकों को अपने पास बुलाके कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत वर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का है ॥ १७। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा ॥

१८। किसी प्रधान ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होंगा ॥ १९। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है। कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात् ईश्वर ॥ २०। तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और अपने पिता का आदर कर ॥ २१। उस ने कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया है ॥ २२। यीशु ने यह सुनके उस से कहा तुझे अब भी एक बात की घटी है. जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को बांट दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले ॥ २३। वह यह सुनके अति उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था ॥

२४। यीशु ने उसे अति उदास देखके कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन होगा ॥ २५। ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है ॥ २६। सुननेहारों ने कहा तब तो किस का त्राण हो सकता है ॥ २७। उस ने कहा जो बातें मनुष्यों से अनहोनी हैं सो ईश्वर से हो सकती हैं ॥

२८। पितर ने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं ॥ २९। उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने ईश्वर के राज्य के लिये घर वा माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कों को त्यागा हो ॥ ३०। ऐसा कोई नहीं है जो इस समय में बहुत गुण अधिक और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा ॥

३१। यीशु ने बारह शिष्यों को लेके उन से कहा देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और जो कुछ मनुष्य के पुत्र के विषय में भविष्यद्वक्ताओं से लिखा गया है सो सब पूरा किया जायगा ॥ ३२। वह अन्यदेशियों के हाथ सौंपा जायगा और उस से ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर थूकेंगे ॥ ३३। और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा ॥ ३४। उन्हों ने इन बातों में से कोई बात न समझी और यह बात उन से गुप्त रही और जो कहा जाता था सो वे नहीं बूझते थे ॥

३५। जब वह यिरीहो नगर के निकट आता था तब एक अंधा मनुष्य मार्ग की ओर बैठा भीख मांगता था ॥ ३६। जब उस ने सुना कि बहुत लोग

सामने से जाते हैं तब पूछा यह क्या है॥ ३७। लोगों ने उस को बताया कि यीशु नासरी जाता है॥ ३८। तब उस ने पुकारके कहा हे यीशु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये॥ ३९। जो लोग आगे जाते थे उन्हों ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये॥ ४०। तब यीशु खड़ा रहा और उसे अपने पास लाने की आज्ञा किई और जब वह निकट आया तब उस से पूछा॥ ४१। तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं, वह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं॥ ४२। यीशु ने उस से कहा अपनी दृष्टि पा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है॥ ४३। और वह तुरन्त देखने लगा और ईश्वर की स्तुति करता हुआ यीशु के पीछे हो लिया और सब लोगों ने देखके ईश्वर का धन्यवाद किया॥

१९. यीशु यरीहो में प्रवेश करके उस के बीच से होके जाता था॥ २। और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो कर उगाहनेहारों का प्रधान था और वह धनवान था॥ ३। वह यीशु को देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है परन्तु भीड़ के कारण नहीं सका क्योंकि नाटा था॥ ४। तब जिस मार्ग से यीशु जाने पर था उस में वह आगे दौड़के उसे देखने को एक गूलर के वृक्ष पर चढ़ा॥ ५। जब यीशु उस स्थान पर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और उस से कहा हे जक्कई शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना होगा॥ ६। उस ने शीघ्र उतरके आनन्द से उस की पहुनई किई॥ ७। यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके बोले वह तो पापी मनुष्य के यहां पाहुन होने गया है॥ ८। जक्कई ने खड़ा हो प्रभु से कहा हे प्रभु देखिये मैं अपना आधा धन कंगालों को देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके किसी से कुछ ले लिया है तो चौगुणा फेर देता हूं॥ ९। तब यीशु ने उस को कहा आज इस घराने का त्राण हुआ है इस लिये कि यह भी इब्राहीम का सन्तान है॥ १०। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूंढ़ने और बचाने आया है॥

११। जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने लगा इस लिये कि वह यिरूशलीम के निकट था और वे समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त प्रगट होगा॥ १२। उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देश को जाता था कि राजपद पाके फिर आवे॥ १३। और उस ने अपने दासों में से दस को बुलाके उन्हें दस मोहर देके उन से कहा जब लों मैं न आऊं तब लों व्योपार करो॥ १४। परन्तु उस के नगर के निवासी उस से बैर रखते थे और उस के पीछे यह संदेश भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमों पर राज्य करे॥ १५। जब वह राजपद पाके फिर आया तब उस ने उन दासों को जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलाने की आज्ञा किई जिस्तें वह जाने कि किस ने कौन सा व्योपार किया है॥ १६। तब पहिले ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से दस मोहर लाभ हुई॥ १७। उस ने उस से कहा धन्य हे उत्तम दास तू अति थोड़े में विश्वास योग्य हुआ तू दस नगरों पर अधिकारी हो॥ १८। दूसरे ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से पांच मोहर लाभ हुई॥ १९। उस ने उस से भी कहा तू भी पांच नगरों का प्रधान हो॥ २०। तीसरे ने आके कहा हे प्रभु देखिये आप की मोहर जिसे मैं ने अंगोछे में धर रखा॥ २१। क्योंकि मैं आप से डरता था इस लिये कि आप कठोर मनुष्य हैं जो आप ने नहीं धरा सो उठा लेते हैं और जो आप ने नहीं बोया सो लवते हैं॥ २२। उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराऊंगा, तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं धरा सो उठा लेता हूं और जो मैं ने नहीं बोया सो लवता हूं॥ २३। तो तू ने मेरी रोकड़ कोठी में क्यों नहीं दिई और मैं आके उसे ब्याज समेत ले लेता॥ २४। तब जो लोग निकट खड़े थे उस ने उन्हों से कहा वह मोहर उस से लेओ और जिस पास दस मोहर हैं उस को देओ॥ २५। उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं॥ २६। मैं तुम से कहता हूं जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं

रखता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा॥ २७। परन्तु मेरे उन वैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मै उन्हों पर राज्य करूं यहां लाके मेरे साम्ने बध करो॥

२८। जब यीशु यह बातें कह चुका तब यिरूशलीम को जाते हुए आगे बढ़ा॥ २९। और जब वह जैतून नाम पर्व्वत के निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा॥ ३०। कि जो गांव सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते हुए तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ॥ ३१। जो तुम से कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उस से यूं कहो प्रभु को इस का प्रयोजन है॥ ३२। जो भेजे गये थे उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन से कहा वैसा पाया॥ ३३। जब वे बच्चे को खोलते थे तब उस के स्वामियों ने उन से कहा तुम बच्चे को क्यों खोलते हो॥ ३४। उन्हों ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन है॥ ३५। सो वे बच्चे को यीशु पास लाये और अपने कपड़े उस पर डालके यीशु को बैठाया॥ ३६। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा त्यों त्यों लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये॥ ३७। जब वह निकट आया अर्थात् जैतून पर्व्वत के उतार लों पहुचा तब शिष्यों की सारी मण्डली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो उन्हों ने देखे थे बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करने लगी॥ ३८। कि धन्य वह राजा जो परमेश्वर के नाम से आता है. स्वर्ग में शांति और सब से ऊंचे स्थान में गुणानुवाद होय॥ ३९। तब भीड़ में से कितने फरीशी लोग उस से बोले हे गुरु अपने शिष्यों को डांटिये॥ ४०। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से कहता हूं जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे॥

४१। जब वह निकट आया तब नगर को देखके उस पर रोया॥ ४२। और कहा तू भी अपने कुशल की बातें हां अपने इस दिन में भी जो जानता. परन्तु अब वे तेरे नेत्रों से छिपी हैं॥ ४३। वे दिन तुझ पर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझ पर मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक रखेंगे॥ ४४। और तुझ को औ तुझ में तेरे बालकों को मिट्टी में मिलावेंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि तू ने वह समय जिस में तुझ पर दृष्टि किई गई न जाना॥

४५। तब वह मन्दिर में जाके जो लोग उस में बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा॥ ४६। और उन से बोला लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है. परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है॥ ४७। वह मन्दिर में प्रतिदिन उपदेश करता था और प्रधान याजक और अध्यापक और लोगों के प्रधान उसे नाश करने चाहते थे॥ ४८। परन्तु नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उस की सुनने को लौलीन थे॥

२०. उन दिनों में से एक दिन जब यीशु मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याजक और अध्यापक लोग प्राचीनों के संग निकट आये॥ २। और उस से बोले हम से कह तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिस ने तुझ को यह अधिकार दिया॥ ३। उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ॥ ४। योहन का बपतिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ॥ ५। तब उन्हों ने आपस में विचार किया कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का विश्वास क्यों नहीं किया॥ ६। और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन भविष्यद्वक्ता था॥ ७। सो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते वह कहां से हुआ॥ ८। यीशु ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है॥

९। तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और

मालियों को उस का ठीका दे बहुत दिन लों परदेश को चला गया ॥ १० । समय में उस ने मालियों के पास एक दास को भेजा कि वे दाख की बारी का कुछ फल उस को देवें परन्तु मालियों ने उसे मारके छूछे हाथ फेर दिया ॥ ११ । फिर उस ने दूसरे दास को भेजा और उन्हों ने उसे भी मारके और अपमान करके छूछे हाथ फेर दिया ॥ १२ । फिर उस ने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे भी घायल करके निकाल दिया ॥ १३ । तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा मैं क्या करूं . मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उस का आदर करेंगे ॥ १४ । परन्तु माली लोग उसे देखके आपस में विचार करने लगे कि यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें कि अधिकार हमारा हो जाय ॥ १५ । और उन्हों ने उसे दाख की बारी से बाहर निकालके मार डाला . इस लिये दाख की बारी का स्वामी उन्हों से क्या करेगा ॥ १६ । वह आके इन मालियों को नाश करेगा और दाख की बारी दूसरों के हाथ देगा . यह सुनके उन्हों ने कहा ऐसा न होवे ॥ १७ । उस ने उन्हों पर दृष्टि कर कहा तो धर्म्मपुस्तक के इस वचन का अर्थ क्या है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है ॥ १८ । जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा ॥ १९ । प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उसी घड़ी उस पर हाथ बढ़ाने चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे विरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों से डरे ॥

२० । तब उन्हों ने दांव ताकके भेदियों को भेजा जो छल से अपने को धर्म्मी दिखावें इस लिये कि उस का वचन पकड़ें और उसे देशाध्यक्ष के न्याय और अधिकार में सौंप देवें ॥ २१ । उन्हों ने उस से पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं ॥ २२ । क्या कैसर को कर देना हमें उचित है अथवा नहीं ॥ २३ । उस ने उन की चतुराई बूझके उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो ॥ २४ । एक सूकी मुझे दिखाओ . इस पर किस की मूर्त्ति और छाप है . उन्हों ने उत्तर दिया कैसर की ॥ २५ । उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ ॥ २६ । वे लोगों के साम्ने उस की बात पकड़ न सके और उस के उत्तर से अचंभित हो चुप रहे ॥

२७ । सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उन्हों में से कितने उस पास आये और उस से पूछा ॥ २८ । कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई अपनी स्त्री के रहते हुए निःसन्तान मर जाय तो उस का भाई उस स्त्री से विवाह करे और अपने भाई के लिये वंश खड़ा करे ॥ २९ । सो सात भाई थे . पहिला भाई विवाह कर निःसन्तान मर गया ॥ ३० । तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से बिवाह किया और वह भी निःसन्तान मर गया ॥ ३१ । तब तीसरे ने उस से विवाह किया और वैसा ही सातों भाइयों ने . पर वे सब निःसन्तान मर गये ॥ ३२ । सब के पीछे स्त्री भी मर गई ॥ ३३ । सो मृतकों के जी उठने पर वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से विवाह किया ॥ ३४ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस लोक के सन्तान विवाह करते और विवाह दिये जाते हैं ॥ ३५ । परन्तु जो लोग उस लोक में पहुंचने और मृतकों में से जी उठने के योग्य गिने जाते हैं न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं ॥ ३६ । और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं और जी उठने के सन्तान होने से ईश्वर के सन्तान हैं ॥ ३७ । और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट किई है कि वह परमेश्वर को इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर कहता है ॥ ३८ । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है क्योंकि उस के लिये सब जीते हैं ॥ ३९ । अध्यापकों में से कितनों ने उत्तर दिया कि हे गुरु आप ने अच्छा कहा है ॥ ४० । और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

४१। तब उस ने उन से कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि खीष्ट दाऊद का पुत्र है॥ ४२। दाऊद आप ही गीतों के पुस्तक में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा॥ ४३। जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ॥ ४४। दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र क्योंकर है॥

४५। जब सब लोग सुनते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा॥ ४६। अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं और जिन को बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे स्थान प्रिय लगते हैं॥ ४७। वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दण्ड पावेंगे॥

२१. यीशु ने आंख उठाके धनवानों को अपने अपने दान भण्डार में डालते देखा॥ २। और उस ने एक कंगाल विधवा को भी उस में दो छदाम डालते देखा॥ ३। तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने सभों से अधिक डाला है॥ ४। क्योंकि इन सभों ने अपनी बढ़ती में से ईश्वर को चढ़ाई हुई वस्तुओं में कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से अपनी सारी जीविका डाली है॥

५। जब कितने लोग मन्दिर के विषय में बोलते थे कि वह सुन्दर पत्थरों से और चढ़ाई हुई वस्तुओं से संवारा गया है तब उस ने कहा॥ ६। यह सब जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे जिन्हों में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा॥

७। उन्हों ने उस से पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह बातें जिस समय में हो जायेंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा॥ ८। उस ने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जाओ क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है . सो तुम उन के पीछे मत जाओ॥ ९। जब तुम लड़ाइयों और हुल्लड़ों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है पर अन्त तुरन्त नहीं होगा॥ १०। तब उस ने उन्हों से कहा देश देश के और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेंगे॥ ११। और अनेक स्थानों में बड़े भुईंडोल और अकाल और मरियां होंगीं और भयकर लक्षण और आकाश से बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे॥

१२। परन्तु इन सभों के पहिले लोग तुम पर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नाम के कारण सभा के घरों और बन्दीगृहों में रखवावेंगे और राजाओं और अध्यक्षों के आगे ले जावेंगे॥ १३। पर इस से तुम्हारे लिये साक्षी हो जायगी॥ १४। सो अपने अपने मन में ठहरा रखो कि हम उत्तर देने के लिये आगे से चिन्ता न करेंगे॥ १५। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा वचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे सब विरोधी उस का खण्डन अथवा साम्हना नहीं कर सकेंगे॥ १६। तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और मित्र लोग तुम्हें पकड़-वायेंगे और तुम में से कितनों को घात करवायेंगे॥ १७। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे॥ १८। परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट न होगा॥ १९। अपनी धीरता से अपने प्राणों की रक्षा करो॥

२०। जब तुम यिरूशलीम को सेनाओं से घेरे हुए देखो तब जानो कि उस का उजड़ जाना निकट आया है॥ २१। तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें . जो यिरूशलीम के बीच में हों सो निकल जावें और जो गांवों में हों सो उस में प्रवेश न करें॥ २२। क्योंकि येही दण्ड देने के दिन होंगे कि धर्म्मपुस्तक की सब बातें पूरी होवें॥ २३। उन दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलाने-वालियां क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर क्रोध होगा॥ २४। वे खड्ग की धार से मारे पड़ेंगे और सब देशों के लोगों में बंधुवे किये जायेंगे और जब लों अन्यदेशियों का समय पूरा न होवे तब लों यिरूशलीम अन्यदेशियों से रौंदा जायगा॥

२५। सूर्य्य और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवी पर देश देश के लोगों को संकट

ओ घबराहट होगी और समुद्र ओ लहरों का गर्जना होगा ॥ २६। और संसार पर आनेहारी बातों के भय से और बाट देखने से मनुष्य मृतक के ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाश की सेना डिग जायगी ॥ २७। तब वे मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से मेघ पर आते देखेंगे ॥ २८। जब इन बातों का आरंभ होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट आता है ॥

२९। उस ने उन्हों से एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलर का वृक्ष और सब वृक्षों को देखो ॥ ३०। जब उन की कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखकर आप ही जानते हो कि धूपकाला अब निकट है ॥ ३१। इस रीति से जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि ईश्वर का राज्य निकट है ॥ ३२। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे ॥ ३३। आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ॥

३४। अपने विषय में सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन अफराई और मतवालपन और सांसारिक चिन्ताओं से भारी हो जावें और वह दिन तुम पर अचांचक आ पहुंचे ॥ ३५। क्योंकि वह फंदे की नाईं सारी पृथिवी के सब रहनेहारों पर आवेगा ॥ ३६। इस लिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेहारी बातों से बचने के और मनुष्य के पुत्र के सन्मुख खड़े होने के योग्य गिने जावो ॥

३७। यीशु दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाके जैतून नाम पर्व्वत पर टिकता था ॥ ३८। और तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में उस पास आते थे ॥

२२. अखमीरी रोटी का पर्व्व जो निस्तार पर्व्व कहावता

है निकट आया ॥ २। और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर मार डालें क्योंकि वे लोगों से डरते थे ॥

३। तब शैतान ने यिहूदा में जो इस्करियोती कहावता है और बारह शिष्यों में गिना जाता था प्रवेश किया ॥ ४। उस ने जाके प्रधान याजकों और पहरुओं के अध्यक्षों के संग बातचीत किई कि यीशु को क्योंकर उन्हों के हाथ पकड़वावे ॥ ५। वे आनन्दित हुए और रुपैये देने को उस से नियम बांधा ॥ ६। वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़ के उन्हों के हाथ पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा ॥

७। तब अखमीरी रोटी के पर्व्व का दिन जिस में निस्तार पर्व्व का मेम्ना मारना उचित था आ पहुंचा ॥ ८। और यीशु ने पितर और योहन को यह कहके भेजा कि जाके हमारे लिये निस्तार पर्व्व का भोजन बनाओ कि हम खायें ॥ ९। वे उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम बनावें ॥ १०। उस ने उन से कहा देखो जब तुम नगर में प्रवेश करो तब एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा. जिस घर में वह पैठे तुम उस के पीछे उस घर में जाओ ॥ ११। और उस घर के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग निस्तार पर्व्व का भोजन खाऊं ॥ १२। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखावेगा वहां तैयार करो ॥ १३। उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्व्व का भोजन बनाया ॥

१४। जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित उस के संग भोजन पर बैठे ॥ १५। और उस ने उन से कहा मैं ने यह निस्तार पर्व्व का भोजन दुःख भोगने के पहिले तुम्हारे संग खाने की बड़ी लालसा किई ॥ १६। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों वह ईश्वर के राज्य में पूरा न होवे तब लों मैं उसे फिर कभी न खाऊंगा ॥ १७। तब उस ने कटोरा ले धन्य मानके कहा इस को लेओ और आपस में बांटो ॥ १८। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों ईश्वर का राज्य न आवे तब लों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा ॥

१९। फिर उस ने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के उन को दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया जाता है. मेरे स्मरण के

लिये यह किया करो ॥ २० । इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी देके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नया नियम है ॥

२१ । परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारे का हाथ मेरे संग मेज पर है ॥ २२ । मनुष्य का पुत्र जैसा ठहराया गया है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से वह पकड़वाया जाता है ॥ २३ । तब वे आपस में विचार करने लगे कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा ॥

२४ । उन्हों में यह बिवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाय ॥ २५ । यीशु ने उन से कहा अन्यदेशियों के राजा उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन्हों के अधिकारी लोग परोपकारी कहावते है ॥ २६ । परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम्हों में बड़ा है सो छोटे की नाईं होवे और जो प्रधान है सो सेवक की नाईं होवे ॥ २७ । कौन बड़ा है भोजन पर बैठनेहारा अथवा सेवक . क्या भोजन पर बैठनेहारा बड़ा नहीं है . परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं ॥ २८ । तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे संग रहे हो ॥ २९ । और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा मैं तुम्हारे लिये ठहराता हू ॥ ३० । कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खावो और पीवो और सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के बारह कुलों का न्याय करो ॥

३१ । और प्रभु ने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतान ने तुम्हें मांग लिया है इस लिये कि गेहूं की नाईं तुम्हें फटके ॥ ३२ । परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास घट न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयों को स्थिर कर ॥ ३३ । उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं आप के संग बन्दीगृह में जाने को और मरने को तैयार हूं ॥ ३४ । उस ने कहा हे पितर मैं तुझ से कहता हूं कि आज ही जब लों तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूं तब लों मुर्गा न बोलेगा ॥

३५ । और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिन थैली और बिन झोली और बिन जूते भेजा तब क्या तुम को किसी बस्तु की घटी हुई . वे बोले किसू की नहीं ॥ ३६ । उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसे ही झोली भी और जिस पास खड्ग न होय सो अपना वस्त्र बेचके एक को मोल लेवे ॥ ३७ । क्योंकि मैं तुम से कहता हू अवश्य है कि धर्म्मपुस्तक का यह बचन भी कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया मुझ पर पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषय में की बातें संपूर्ण होने पर हैं ॥ ३८ । तब वे बोले हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग हैं . उस ने उन से कहा बहुत है ॥

३९ । तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीति के अनुसार जैतून पर्ब्बत पर गया और उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये ॥ ४० । उस स्थान में पहुंचके उस ने उन से कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ॥ ४१ । और वह आप ढेला फेंकने के टप्पे भर उन से अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना किई ॥ ४२ । कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय तो इस कटोरे को मेरे पास से टाल दे तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय ॥ ४३ । तब एक दूत उसे सामर्थ्य देने को स्वर्ग से उस को दिखाई दिया ॥ ४४ । और उस ने बड़े संकट में होके अधिक दृढ़ता से प्रार्थना किई और उस का पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहू के थक्के जो भूमि पर गिरें ॥ ४५ । तब वह प्रार्थना से उठा और अपने शिष्यों के पास आ उन्हें शोक के मारे सोते पाया ॥ ४६ । और उन से कहा क्या सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ॥

४७ । वह बोलता ही था कि देखो बहुत लोग आये और बारह शिष्यों में से एक शिष्य जिस का नाम यिहूदा था उन के आगे आगे चलता था और यीशु का चूमा लेने को उस पास आया ॥ ४८ । यीशु ने उस से कहा हे यिहूदा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है ॥ ४९ । यीशु के संगियों ने जब देखा कि क्या होनेवाला है तब उस से कहा हे प्रभु क्या हम खड्ग से मारें ॥ ५० । और उन में से एक ने महायाजक के दास को मारा और उस का दहिना कान उड़ा दिया ॥ ५१ । इस पर यीशु ने कहा यहां

तक रहने दो . और उस दास का कान छूके उसे चंगा किया ॥ ५२ । तब यीशु ने प्रधान याजकों और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्षों और प्राचीनों से जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो ॥ ५३ । जब मैं मन्दिर में प्रतिदिन तुम्हारे संग था तब तुम्हों ने मुझ पर हाथ न बढ़ाये परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अंधकार का पराक्रम है ॥

५४ । वे उसे पकड़के ले चले और महायाजक के घर में लाये और पितर दूर दूर उस के पीछे हो लिया ॥ ५५ । जब वे अंगने में आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब पितर उन्हों के बीच में बैठ गया ॥ ५६ । और एक दासी उसे आग के पास बैठे देखके उस की ओर ताकके बोली यह भी उस के संग था ॥ ५७ । उस ने उसे नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता हूं ॥ ५८ । थोड़ी बेर पीछे दूसरे ने उसे देखके कहा तू भी उन में से एक है . पितर ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं ॥ ५९ । घड़ी एक बीते दूसरे ने दृढ़ता से कहा यह भी सचमुच उस के संग था क्योंकि वह गालीली भी है ॥ ६० । पितर ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है . और तुरन्त ज्यों वह कह रहा त्यों मुर्गा बोला ॥ ६१ । तब प्रभु ने मुंह फेरके पितर पर दृष्टि किई और पितर ने प्रभु का वचन स्मरण किया कि उस ने उस से कहा था मुर्गे के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा ॥ ६२ । तब पितर बाहर निकलके बिलक बिलक रोया ॥

६३ । जो मनुष्य यीशु को धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्ठा करने लगे ॥ ६४ । और उस की आंखें ढांपके उस के मुंह पर थपेड़े मारके उस से पूछा कि भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा ॥ ६५ । और उन्हों ने बहुत सी और निन्दा की बातें उस के विरुद्ध में कहीं ॥ ६६ । ज्योंही बिहान हुआ त्योंही लोगों के प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक लोग एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्यायसभा में लाये और बोले क्या तू ख्रीष्ट है तो हम से कह ॥ ६७ । उस ने उन से कहा जो मैं तुम से कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे ॥ ६८ । और जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर देओगे न मुझे छोड़ोगे ॥ ६९ । अब से मनुष्य का पुत्र सर्व्वशक्तिमान ईश्वर की दहिनी ओर बैठेगा ॥ ७० । सभों ने कहा तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है . उस ने उन्हों से कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं ॥ ७१ । तब उन्हों ने कहा अब हमें साक्षी का और क्या प्रयोजन क्योंकि हम ने आप ही उस के मुख से सुना है ॥

२३. **तब** सारा समाज उठके यीशु को पिलात के पास ले गया ॥ २ । और उस पर यह कहके दोष लगाने लगा कि हम ने यही पाया है कि यह मनुष्य लोगों को बहकाता है और अपने को ख्रीष्ट राजा कहके कैसर को कर देना बर्जता है ॥ ३ । पिलात ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . उस ने उस को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं ॥ ४ । तब पिलात ने प्रधान याजकों और लोगों से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता हूं ॥ ५ । परन्तु उन्हों ने अधिक दृढ़ताई से कहा वह गालील से लेके यहां लों सारे यिहूदिया में उपदेश करके लोगों को उसकाता है ॥

६ । पिलात ने गालील का नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है ॥ ७ । जब उस ने जाना कि वह हेरोद के राज्य में का है तब उसे हेरोद के पास भेजा कि वह भी उन दिनों में यिरूशलीम में था ॥ ८ । हेरोद यीशु को देखके अति आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिन से उस को देखने चाहता था इस लिये कि उस के विषय में बहुत बातें सुनी थीं और उस का कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखने को उस को आशा हुई ॥ ९ । उस ने उस से बहुत बातें पूछीं परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया ॥ १० । और प्रधान याजकों और अध्यापकों ने खड़े हुए बड़ी धुन से उस पर दोष लगाये ॥ ११ । तब हेरोद ने अपनी सेना के संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा किया और भड़कीला वस्त्र पहिराके उसे पिलात के पास फेर भेजा ॥ १२ । उसी दिन पिलात और हेरोद जिन्हों के बीच में आगे से शत्रुता थी आपस में मित्र हो गये ॥

१३। पिलात ने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लोगों को एकट्ठे बुलाके उन्हों से कहा॥ १४। तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और देखो मैं ने तुम्हारे साम्हने विचार किया है परन्तु जिन बातों में तुम इस मनुष्य पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय में मैं ने उस में कुछ दोष नहीं पाया है॥ १५। न हेरोद ने पाया है क्योंकि मैं ने तुम्हें उस पास भेजा और देखो बध के योग्य कोई काम उस से नहीं किया गया है॥ १६। सो मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा॥ १७। पिलात को अवश्य भी था कि उस पर्व्व में एक मनुष्य को लोगों के लिये छोड़ देवे॥ १८। तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इस को ले जाइये और हमारे लिये बरब्बा को छोड़ दीजिये॥ १९। यही बरब्बा किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में डाला गया था॥ २०। पिलात यीशु को छोड़ने की इच्छा कर लोगों से फिर बोला॥ २१। परन्तु उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये॥ २२। उस ने तीसरी बेर उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है. मैं ने उस में बध के योग्य कोई दोष नहीं पाया है इस लिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा॥ २३। परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्द से यत्न करके मांगने लगे कि वह क्रूश पर चढ़ाया जाय और उन्हों के और प्रधान याजकों के शब्द प्रबल ठहरे॥ २४। सो पिलात ने आज्ञा दिई कि उन की बिन्ती के अनुसार किया जाय॥ २५। और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में डाला गया था जिसे वे मांगते थे उन के लिये छोड़ दिया और यीशु को उन की इच्छा पर सौंप दिया॥ २६। जब वे उसे ले जाते थे तब उन्हों ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को जो गांव से आता था पकड़के उस पर क्रूश धर दिया कि उसे यीशु के पीछे ले चले॥

२७। लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और बहुतेरी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटती और बिलाप करती थीं॥ २८। यीशु ने उन्हों की ओर फिरके कहा हे यिरूशलीम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने बालकों के लिये रोओ॥ २९। क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन्हों में लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्हों ने लड़के न जन्माये और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया है॥ ३०। तब वे पर्व्वतों से कहने लगेंगे कि हमों पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांपो॥ ३१। क्योंकि जो वे हरे पेड़ से यह करते हैं तो सूखे से क्या किया जायगा॥ ३२। वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्म्मी थे यीशु के संग घात करने को ले चले॥

३३। जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्हों ने वहां उस को और उन कुकर्म्मियों को एक को दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर चढ़ाया॥ ३४। तब यीशु ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं. और उन्हों ने चिट्ठियां डालके उस के कपड़े बांट लिये॥

३५। लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षों ने भी उन के संग ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया जो वह ईश्वर का चुना हुआ जन खीष्ट है तो अपने को बचावे॥ ३६। योद्धाओं ने भी उस से ठट्ठा करने को निकट आके उसे सिरका दिया॥ ३७। और कहा जो तू यिहूदियों का राजा है तो अपने को बचा॥ ३८। और उस के ऊपर में एक पत्र भी था जो यूनानीय औ रोमीय औ इब्रीय अक्षरों में लिखा हुआ था कि यह यिहूदियों का राजा है॥

३९। जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उन में से एक ने उस की निन्दा कर कहा जो तू खीष्ट है तो अपने को और हमों को बचा॥ ४०। इस पर दूसरे ने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वर से कुछ डरता भी नहीं. तुझ पर तो वैसा ही दण्ड दिया जाता है॥ ४१। और हमों पर न्याय की रीति से दिया जाता क्योंकि हम अपने कर्म्मों के योग्य फल भोगते हैं परन्तु इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया है॥ ४२। तब उस ने यीशु से कहा हे प्रभु जब आप अपने राज्य में आवें तब मेरी सुध लीजिये॥ ४३। यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा॥

४४। जब दो पहर के निकट हुआ तब सारे देश में तीसरे पहर लों अंधकार हो गया ॥ ४५। सूर्य्य अंधियारा हो गया और मन्दिर का परदा बीच से फट गया ॥ ४६। और यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा ॥ ४७। जो हुआ था सो देखके शतपति ने ईश्वर का गुणानुवाद कर कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था ॥ ४८। और सब लोग जो यह देखने को एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये ॥ ४९। और यीशु के सब चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालील से उस के संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे ॥

५०। और देखो यूसुफ नाम यिहूदियों के अरिमथिया नगर का एक मनुष्य था जो मंत्री था और उत्तम और धर्म्मी पुरुष होके दूसरे मंत्रियों के विचार और काम में नहीं मिला था ॥ ५१। और वह आप भी ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था ॥ ५२। उस ने पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांग लिई ॥ ५३। तब उस ने उसे उतारके चद्दर में लपेटा और एक कबर में रखा जो पत्थर में खोदी हुई थी जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था ॥ ५४। वह दिन तैयारी का दिन था और विश्रामवार समीप था ॥ ५५। वे स्त्रियां भी जो गालील से उस के संग आई थीं पीछे हो लिईं और कबर को और उस की लोथ क्योंकर रखी गई उस को देख लिया ॥ ५६। और उन्हों ने लौटके सुगंध द्रव्य और सुगंध तेल तैयार किया और आज्ञा के अनुसार विश्राम के दिन में विश्राम किया ॥

२४. तब अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर वे स्त्रियां और उन के संग कई एक और स्त्रियां वह सुगंध जो उन्हों ने तैयार किया था लेके कबर पर आईं ॥ २। परन्तु उन्हों ने पत्थर को कबर के साम्हने से लुढ़काया हुआ पाया ॥ ३। और भीतर जाके प्रभु यीशु की लोथ न पाई ॥ ४। जब वे इस बात के विषय में दुबधा कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते वस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े हो गये ॥ ५। जब वे डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उन से बोले तुम जीवते को मृतकों के बीच में क्यों ढूंढ़ती हो ॥ ६। वह यहां नहीं है परन्तु जी उठा है. स्मरण करो कि उस ने गालील में रहते हुए तुम से कहा ॥ ७। अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापी लोगों के हाथ में पकड़वाया जाय और क्रूश पर घात किया जाय और तीसरे दिन जी उठे ॥ ८। तब उन्हों ने उस की बातों को स्मरण किया ॥ ९। और कबर से लौटके उन्हों ने ग्यारह शिष्यों को और और सभों को यह सब बातें सुनाईं ॥ १०। मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूब की माता मरियम और उन के संग की और स्त्रियां थीं जिन्हों ने प्रेरितों से यह बातें कहीं ॥ ११। परन्तु उन की बातें उन्हों के आगे कहानी सी समझ पड़ीं और उन्हों ने उन की प्रतीति न किई ॥ १२। तब पितर उठके कबर पर दौड़ गया और झुकके केवल चद्दर पड़ी हुई देखी और जो हुआ था उस से अपने मन में अचंभा करता हुआ चला गया ॥

१३। देखो उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊ नाम एक गांव को जो यिरूशलीम से कोश चार एक पर था जाते थे ॥ १४। और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं आपस में बातचीत करते थे ॥ १५। ज्यों वे बातचीत और विचार कर रहे त्यों यीशु आपही निकट आके उन के संग हो लिया ॥ १६। परन्तु उन की दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्हों ने उस को नहीं चीन्हा ॥ १७। उस ने उन से कहा यह क्या बातें हैं जिन पर तुम चलते हुए आपस में बातचीत करते और उदास होते हो ॥ १८। तब एक जन ने जिस का नाम क्लियोपा था उत्तर देके उस से कहा क्या केवल तू ही यिरूशलीम में डेरा करके वे बातें जो उस में इन दिनों में हुई हैं नहीं जानता है ॥ १९। उस ने उन से कहा कौन सी बातें. उन्हों ने उस से कहा यीशु नासरी के विषय में जो भविष्यद्वक्ता और ईश्वर के और सब लोगों के आगे काम में और वचन में शक्तिमान पुरुष था ॥ २०। क्योंकर हमारे प्रधान याजकों और अध्यक्षों ने उसे

सौंप दिया कि उस पर बध किये जाने की आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूश पर घात किया है ॥ २१। परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो इस्रायेल का उद्धार करेगा . और भी जब से यह हुआ तब से आज उस को तीसरा दिन है ॥ २२ । और हमों में से कितनी स्त्रियों ने भी हमें बिस्मित किया है कि वे भोर को कबर पर गईं ॥ २३ । पर उस की लोथ न पाके फिर आके बोलीं कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता है ॥ २४ । तब हमारे संगियों में से कितने जन कबर पर गये और जैसा स्त्रियों ने कहा तैसा ही पाया परन्तु उस को न देखा ॥ २५ । तब यीशु ने उन से कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर बिश्वास करने में मन्दमति लोगो ॥ २६ । क्या अवश्य न था कि खीष्ट यह दु ख उठाके अपने ऐश्वर्य्य में प्रवेश करे ॥ २७ । तब उस ने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ कर सारे धर्म्मपुस्तक में अपने बिषय में की बातों का अर्थ उन्हों को बताया ॥ २८ । इतने में वे उस गांव के पास पहुचे जहां वे जाते थे और उस ने ऐसा किया जैसा कि आगे जाता है ॥ २९ । परन्तु उन्हों ने यह कहके उस को रोका कि हमारे संग रहिये क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल गया है . तब वह उन के संग रहने को भीतर गया ॥ ३० । जब वह उन के संग भोजन पर बैठा तब उस ने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के उन को दिया ॥ ३१ । तब उन की दृष्टि खुल गई और उन्हों ने उस को चीन्हा और वह उन से अन्तर्द्धान हो गया ॥ ३२ । और उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बात करता था और धर्म्मपुस्तक का अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन हम में न तपता था ॥ ३३ । वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीम को लौट गये और ग्यारह शिष्यों को और उन के संगियों को एकट्ठे हुए और यह कहते हुए पाया ॥ ३४ । कि निश्चय प्रभु जी उठा है और शिमोन को दिखाई दिया है ॥ ३५ । तब उन दोनों ने कह सुनाया कि मार्ग में क्या हुआ था और यीशु क्योंकर रोटी तोड़ने में उन से पहचाना गया ॥

३६ । वे यह कहते ही थे कि यीशु आप ही उन के बीच में खड़ा हो उन से बोला तुम्हारा कल्याण होय ॥ ३७ । परन्तु वे व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि हम प्रेत को देखते हैं ॥ ३८ । उस ने उन से कहा क्यों व्याकुल हो और तुम्हारे मन में संदेह क्यों उत्पन्न होता है ॥ ३९ । मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं आपही हूं . मुझे टोओ और देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझ में देखते हो तैसे प्रेत को हाड़ मांस नहीं होते हैं ॥ ४० । यह कहके उस ने अपने हाथ पांव उन्हें दिखाये ॥ ४१ । ज्यों वे मारे आनन्द के प्रतीति न करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उस ने उन से कहा क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है ॥ ४२ । उन्हों ने उस को कुछ भूनी मछली और मधु का छत्ता दिया ॥ ४३ । उस ने लेके उन के साम्हने खाया ॥ ४४ । और उस ने उन से कहा यही वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहीं कि जो कुछ मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं और गीतों के पुस्तकों में लिखा है सब का पूरा होना अवश्य है ॥ ४५ । तब उस ने धर्म्मपुस्तक समझने को उन का ज्ञान खोला ॥ ४६ । और उन से कहा यूं लिखा है और इसी रीति से अवश्य था कि खीष्ट दु.ख उठावे और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे ॥ ४७ । और यिरूशलीम से आरभ कर सब देशों के लोगों में उस के नाम से पश्चात्ताप की और पापमोचन की कथा सुनाई जावे ॥ ४८ । तुम इन बातों के साक्षी हो ॥ ४९ । देखो मेरे पिता ने जिस की प्रतिज्ञा किई उस को मैं तुम्हों पर भेजता हू और तुम जब लों ऊपर से शक्ति न पाओ तब लो यिरूशलीम नगर में रहो ॥

५० । तब वह उन्हें बैथनिया लों बाहर ले गया और अपने हाथ उठाके उन्हें आशीस दिई ॥ ५१ । उन्हें आशीस देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया ॥ ५२ । और वे उस को प्रणाम कर बड़े आनन्द से यिरूशलीम को लौट गये ॥ ५३ । और नित्य मन्दिर में ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद किया करते थे । आमीन ॥

योहन रचित सुसमाचार।

---

१. आदि में वचन था और वचन ईश्वर के संग था और वचन ईश्वर था ॥ २। वह आदि में ईश्वर के संग था ॥ ३। सब कुछ उस के द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया ॥ ४। उस में जीवन था और वह जीवन मनुष्यों का उजियाला था ॥ ५। और वह उजियाला अंधकार में चमकता है और अंधकार ने उस को ग्रहण न किया ॥

६। एक मनुष्य ईश्वर की ओर से भेजा गया जिस का नाम योहन था ॥ ७। वह साक्षी के लिये आया कि उस उजियाले के विषय में साक्षी देवे इस लिये कि सब लोग उस के द्वारा से विश्वास करें ॥ ८। वह आप तो वह उजियाला न था परन्तु उस उजियाले के विषय में साक्षी देने को आया ॥ ९। सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्य को उजियाला देता है जगत में आनेवाला था ॥ १०। वह जगत में था और जगत उस के द्वारा सृजा गया परन्तु जगत ने उस को नहीं जाना ॥ ११। वह अपने निज देश में आया और उस के निज लोगों ने उसे ग्रहण न किया ॥ १२। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया उन्हों को अर्थात् उस के नाम पर विश्वास करनेहारों को उस ने ईश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया ॥ १३। उन्हों का जन्म न लोहू से न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु ईश्वर से हुआ ॥ १४। और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उस की महिमा पिता के एकलौते की सी महिमा देखी . वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था ॥ १५। योहन ने उस के विषय में साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिस के विषय में मैं ने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझ से पहिले था ॥ १६। उस की भरपूरी से हम सभों ने पाया है हां अनुग्रह पर अनुग्रह पाया है ॥ १७। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा से दिई गई अनुग्रह और सच्चाई यीशु खीष्ट के द्वारा से हुए ॥ १८। किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है . एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने उसे वर्णन किया ॥

१९। योहन की साक्षी यह है कि जब यिहूदियों ने यिरूशलीम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने को भेजा कि तू कौन है ॥ २०। तब उस ने मान लिया और नहीं मुकर गया पर मान लिया कि मैं खीष्ट नहीं हूं ॥ २१। तब उन्हों ने उस से पूछा तो कौन . क्या तू एलियाह है . उस ने कहा मैं नहीं हूं . क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है . उस ने उत्तर दिया कि नहीं ॥ २२। फिर उन्हों ने उस से कहा तू कौन है कि हम अपने भेजनेहारों को उत्तर देवें . तू अपने विषय में क्या कहता है ॥ २३। उस ने कहा मैं किसी का शब्द हूं जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ सीधा करो जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा ॥ २४। जो भेजे गये थे सो फरीशियों में से थे ॥ २५। उन्हों ने उस से पूछके उस से कहा जो तू न खीष्ट और न एलियाह और न वह भविष्यद्वक्ता है तो क्यों बपतिसमा देता है ॥ २६। योहन ने उन को उत्तर दिया कि मैं तो जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु तुम्हारे बीच में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो ॥ २७। वही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं उस की जूती का बंध खोलने के योग्य नहीं हूं ॥ २८। यह बातें यर्दन नदी के उस पार बैथाबरा गांव में हुईं जहां योहन बपतिसमा देता था ॥

२९। दूसरे दिन योहन ने यीशु को अपने पास आते देखा और कहा देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा लेता है ॥ ३०। यही है जिस के विषय में मैं ने कहा कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझ से पहिले था ॥ ३१। मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु

जिस्तें वह इस्रायेली लोगों पर प्रगट किया जाय इसी लिये मैं जल से बपतिसमा देता हुआ आया हूं ॥ ३२ । और भी योहन ने साक्षी दिई कि मैं ने आत्मा को कपोत की नाईं स्वर्ग से उतरते देखा है और वह उस पर ठहर गया ॥ ३३ । और मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिसमा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा जिस पर तू आत्मा को उतरते और उस पर ठहरते देखे वही तो पवित्र आत्मा से बपतिसमा देनेहारा है ॥ ३४ । और मैं ने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वर का पुत्र है ॥

३५ । दूसरे दिन फिर योहन और उस के शिष्यों में से दो जन खड़े थे ॥ ३६ । और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस पर दृष्टि करके बोला देखो ईश्वर का मेम्ना ॥ ३७ । उन दो शिष्यों ने उस को बोलते सुना और यीशु के पीछे हो लिये ॥ ३८ । यीशु ने मुंह फेरके उन को पीछे आते देखके उन से कहा तुम क्या खोजते हो . उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी अर्थात् हे गुरु आप कहां रहते हैं ॥ ३९ । उस ने उन से कहा आके देखो . उन्हों ने जाके देखा वह कहां रहता था और उस दिन उस के संग रहे कि दो घड़ी के अटकल दिन रहा था ॥ ४० । जो दो जन योहन की सुनके यीशु के पीछे हो लिये उन में से एक तो शिमोन पितर का भाई अन्द्रिय था ॥ ४१ । उस ने पहिले अपने निज भाई शिमोन को पाया और उस से कहा हम ने मसीह को अर्थात् खीष्ट को पाया है ॥ ४२ । तब वह उसे यीशु पास लाया और यीशु ने उस पर दृष्टि कर कहा तू यूनस का पुत्र शिमोन है तू कैफा अर्थात् पितर कहावेगा ॥

४३ । दूसरे दिन यीशु ने गालील देश को जाने की इच्छा किई और फिलिप को पाके उस से कहा मेरे पीछे आ ॥ ४४ । फिलिप तो अन्द्रिय और पितर के नगर बैतसैदा का था ॥ ४५ । फिलिप ने नथनेल को पाके उस से कहा जिस के विषय में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उस को हम ने पाया है अर्थात् यूसफ के पुत्र नासरत नगर के यीशु को ॥ ४६ । नथनेल ने उस से कहा क्या कोई उत्तम वस्तु नासरत से उत्पन्न हो सकती है . फिलिप ने उस से कहा आके देखिये ॥ ४७ । यीशु ने नथनेल को अपने पास आते देखा और उस के विषय में कहा देखो यह सचमुच इस्रायेली है जिस में कपट नहीं ॥ ४८ । नथनेल ने उस से कहा आप मुझे कहां से पहचानते हैं . यीशु ने उस को उत्तर दिया कि फिलिप के तुझे बुलाने के पहिले जब तू गूलर के वृक्ष तले था तब मैं ने तुझे देखा ॥ ४९ । नथनेल ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वर के पुत्र हैं आप इस्राएल के राजा हैं ॥ ५० । यीशु ने उस को उत्तर दिया मैं ने जो तुझ से कहा कि मैं ने तुझे गूलर के वृक्ष तले देखा क्या तू इस लिये बिश्वास करता है . तू इन से बड़े काम देखेगा ॥ ५१ । फिर उस से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं इस के पीछे तुम स्वर्ग को खुला और ईश्वर के दूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे ॥

२. तीसरे दिन गालील के काना नगर में एक विवाह का भोज था और यीशु की माता वहां थी ॥ २ । यीशु भी और उस के शिष्य लोग उस विवाह के भोज में बुलाये गये ॥ ३ । जब दाखरस घट गया तब यीशु की माता ने उस से कहा उन के पास दाख रस नहीं है ॥ ४ । यीशु ने उस से कहा हे नारी आप को मुझ से क्या काम . मेरा समय अब लों नहीं पहुंचा है ॥ ५ । उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे सो करो ॥ ६ । वहां पत्थर के छ मटके यिहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार धरे थे जिन में डेढ़ डेढ़ अथवा दो दो मन समाते थे ॥ ७ । यीशु ने उन से कहा मटकों को जल से भर देओ . सो उन्हों ने उन्हें मुहामुंह भर दिया ॥ ८ । तब उस ने उन से कहा अब उंडेलो और भोज के प्रधान के पास ले जाओ . वे ले गये ॥ ९ । जब भोज के प्रधान ने वह जल जो दाखरस बन गया था चीखा और वह नहीं जानता था कि वह कहां से आया परन्तु जिन सेवकों ने जल उंडेला था वे जानते थे तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया ॥ १० । और उस से कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा

दाख रस देता और जब लोग पीके छक जाते तब मध्यम देता है. तू ने अच्छा दाख रस अब लों रखा है॥ ११। यीशु ने गालील के काना नगर में आश्चर्य्य कर्म्मों का यह आरंभ किया और अपनी महिमा प्रगट किई और उस के शिष्यों ने उस पर विश्वास किया॥

१२। इस के पीछे वह और उस की माता और उस के भाई और उस के शिष्य लोग कफर्नाहुम नगर को गये परन्तु वहां बहुत दिन न रहे॥ १३। यिहूदियों का निस्तार पर्व्व निकट था और यीशु यिरूशलीम को गया॥ १४। और उस ने मन्दिर में गोरुओं औ भेड़ों औ कपोतों के बेचनेहारों को और सर्राफों को बैठे हुए पाया॥ १५। तब उस ने रस्सियों का कोड़ा बनाके उन सभों को भेड़ों औ गोरुओं समेत मन्दिर से निकाल दिया और सर्राफों के पैसे बिथराके पीढ़ों को उलट दिया॥ १६। और कपोतों के बेचनेहारों से कहा इन को यहां से ले जाओ मेरे पिता का घर ब्योपार का घर मत बनाओ॥ १७। तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि लिखा है तेरे घर के विषय में की धुन मुझे खा जाती है॥

१८। इस पर यिहूदियों ने उस से कहा तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है॥ १९। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे तीन दिन में उठाऊंगा॥ २०। यिहूदियों ने कहा यह मन्दिर छयालीस बरस में बनाया गया और तू क्या तीन दिन में इसे उठावेगा॥ २१। परन्तु वह अपने देह के मन्दिर के विषय में बोला॥ २२। सो जब वह मृतकों से जी उठा तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि उस ने उन्हों से यह बात कही थी और उन्हों ने धर्म्मपुस्तक पर और उस वचन पर जो यीशु ने कहा था विश्वास किया॥

२३। जब वह निस्तार पर्व्व में यिरूशलीम में था तब बहुत लोगों ने उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था देखके उस के नाम पर विश्वास किया॥ २४। परन्तु यीशु ने अपने को उन्हों के हाथ नहीं सौंपा क्योंकि वह सभों को जानता था॥ २५। और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में साक्षी कोई देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य में क्या है॥

३. फरीशियों में से निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो यिहूदियों का एक प्रधान था॥ २। वह रात को यीशु पास आया और उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओर से उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो आप करते हैं जो ईश्वर उस के संग न हो तो नहीं कर सकता है॥ ३। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता है॥ ४। निकोदीम ने उस से कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है. क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बेर प्रवेश करके जन्म ले सकता है॥ ५। यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं कोई यदि जल और आत्मा से न जन्मे तो ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है॥ ६। जो शरीर से जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है सो आत्मा है॥ ७। अचंभा मत कर कि मैं ने तुझ से कहा तुम को फिरके जन्म लेना अवश्य है॥ ८। पवन जहां चाहता है तहां बहता है और तू उस का शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता है वह कहां से आता और किधर को जाता है. जो कोई आत्मा से जन्मा है सो इसी रीति से है॥

९। निकोदीम ने उस को उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर हो सकती हैं॥ १०। यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या तू इस्रायेली लोगों का उपदेशक है और यह बातें नहीं जानता॥ ११। मैं तुझ से सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो कहते हैं और जो देखा है उस पर साक्षी देते हैं और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो॥ १२। जो मैं ने तुम से पृथिवी पर की बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो तो यदि मैं तुम से स्वर्ग में की बातें कहूं तुम क्योंकर प्रतीति करोगे॥ १३। और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया है केवल वह जो स्वर्ग से उतरा

अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है॥ १४। जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचा किया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र ऊंचा किया जाय॥ १५। इस लिये कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे॥ १६। क्योंकि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे॥ १७। ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि जगत को दण्ड के योग्य ठहरावे परन्तु इस लिये कि जगत उस के द्वारा त्राण पावे॥ १८। जो उस पर विश्वास करता है सो दण्ड के योग्य नहीं ठहराया जाता है परन्तु जो विश्वास नहीं करता सो दण्ड के योग्य ठहर चुका है क्योंकि उस ने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया है॥ १९। और दण्ड के योग्य ठहराने का कारण यह है कि उजियाला जगत में आया है और मनुष्यों ने अंधियारे को उजियाले से अधिक प्यार किया क्योंकि उन के काम बुरे थे॥ २०। क्योंकि जो कोई बुराई करता है सो उजियाले से घिन्न करता है और उजियाले के पास नहीं आता है न हो कि उस के कामों पर उलहना दिया जाय॥ २१। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है सो उजियाले के पास आता है इस लिये कि उस के काम प्रगट होवें कि ईश्वर की ओर से किये गये हैं॥

२२। इस के पीछे यीशु और उस के शिष्य यिहूदिया देश में आये और उस ने वहां उन के संग रहके बपतिसमा दिलाया॥ २३। योहन भी शालीम के निकट ऐनन नाम स्थान में बपतिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके बपतिसमा लेते थे॥ २४। क्योंकि योहन अब लों बन्दीगृह में नहीं डाला गया था॥

२५। योहन के शिष्यों और यिहूदियों में शुद्ध करने के विषय में विवाद हुआ॥ २६। और उन्हों ने योहन के पास आके उस से कहा हे गुरु जो यर्दन के उस पार आप के संग था जिस पर आप ने साक्षी दिई है देखिये वह बपतिसमा दिलाता है और सब लोग उस के पास जाते हैं॥ २७। योहन ने उत्तर दिया यदि स्वर्ग से उस को न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं पा सकता है॥ २८। तुम आप ही मेरे साक्षी हो कि मैं ने कहा मैं खीष्ट नहीं हूं पर उस के आगे भेजा गया हूं॥ २९। दुलहिन जिस की है सोई दूलहा है परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा होके उस की सुनता है दूल्हे के शब्द से अति आनन्दित होता है. मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है॥ ३०। अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं॥ ३१। जो ऊपर से आता है सो सभों के ऊपर है. जो पृथिवी से है सो पृथिवी का है और पृथिवी की बातें कहता है. जो स्वर्ग से आता है सो सभों के ऊपर है॥ ३२। जो उस ने देखा और सुना है वह उस पर साक्षी देता है और कोई उस की साक्षी ग्रहण नहीं करता॥ ३३। जिस ने उस की साक्षी ग्रहण किई है सो इस बात पर छाप दे चुका कि ईश्वर सत्य है॥ ३४। इस लिये कि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो ईश्वर की बातें कहता है क्योंकि ईश्वर उस को आत्मा नाप से नहीं देता है॥ ३५। पिता पुत्र को प्यार करता है और उस ने सब कुछ उस के हाथ में दिया है॥ ३६। जो पुत्र पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है पर जो पुत्र को न माने सो जीवन को नहीं देखेगा परन्तु ईश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥

४. जब प्रभु ने जाना कि फरीशियों ने सुना है कि यीशु योहन से अधिक शिष्य करके उन्हें बपतिसमा देता है॥ २। तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उस के शिष्य बपतिसमा देते थे॥ ३। तब वह यिहूदिया को छोड़के फिर गालील को गया॥ ४। और उस को शोमिरोन देश में से जाना अवश्य हुआ॥ ५। सो वह शिकर नाम शोमिरोन के एक नगर पर उस भूमि के निकट पहुंचा जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसफ को दिया॥ ६। और याकूब का कूआं वहां था सो यीशु मार्ग में चलने से थकित हो उस कूंए पर यूहीं बैठ गया और दो पहर के निकट था॥ ७। एक शोमिरोनी स्त्री

जल भरने को आई . यीशु ने उस से कहा मुझे पीने को दीजिये ॥ ८ । उस के शिष्य लोग भोजन मोल लेने को नगर में गये थे ॥ ९ । शोमिरोनी स्त्री ने उस से कहा आप यिहूदी होके मुझ से जो शोमिरोनी स्त्री हूं क्योंकर पीने को मांगते हैं क्योंकि यिहूदी लोग शोमिरोनियों के संग व्यवहार नहीं करते ॥ १० । यीशु ने उस को उत्तर दिया जो तू ईश्वर के दान को जानती और वह कौन है जो तुझ से कहता है मुझे पीने को दीजिये तो तू उस से मांगती और वह तुझे अमृत जल देता ॥ ११ । स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु जल भरने को आप के पास कुछ नहीं है और कूआं गहिरा है तो वह अमृत जल आप को कहां से मिला है ॥ १२ । क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं जिस ने यह कूआं हमें दिया और आप ही अपने सन्तान और अपने ढोर समेत उस में से पिया ॥ १३ । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा होगा ॥ १४ । पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उस को देऊंगा सो फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊंगा सो उस में अनन्त जीवन लों उमगनेहारे जल का सोता हो जायगा ॥ १५ । स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु यह जल मुझे दीजिये कि मैं पियासी न होऊं और न जल भरने को यहां आऊं ॥ १६ । यीशु ने उस से कहा जा अपने स्वामी को बुलाके यहां आ ॥ १७ । स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे तईं स्वामी नहीं है . यीशु उस से बोला तू ने अच्छा कहा कि मेरे तईं स्वामी नहीं है ॥ १८ । क्योंकि तेरे पांच स्वामी हो चुके और अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा स्वामी नहीं है . यह तू ने सच कहा है ॥ १९ । स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं ॥ २० । हमारे पितरों ने इसी पहाड़ पर भजन किया और आप लोग कहते हैं कि वह स्थान जहां भजन करना उचित है यिरूशलीम में है ॥ २१ । यीशु ने उस से कहा हे नारी मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है जिस में तुम न इस पहाड़ पर और न यिरूशलीम में पिता का भजन करोगे ॥ २२ । तुम लोग जिसे नहीं जानते हो उस का भजन करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उस का भजन करते हैं क्योंकि त्राण यिहूदियों में से है ॥ २३ । परन्तु वह समय आता है और अब है जिस में सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाई से पिता का भजन करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारों को चाहता है ॥ २४ । ईश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उस का भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाई से भजन करें ॥ २५ । स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूं कि मसीह अर्थात ख्रीष्ट आता है . वह जब आवेगा तब हमें सब कुछ बतावेगा ॥ २६ । यीशु ने उस से कहा मैं जो तुझ से बोलता हूं वही हूं ॥

२७ । इतने में उस के शिष्य आये और अचंभा किया कि वह स्त्री से बात करता है तौभी किसी ने नहीं कहा कि आप क्या चाहते हैं अथवा किस लिये उस से बात करते हैं ॥ २८ । तब स्त्री ने अपना घड़ा छोड़ा और नगर में जाके लोगों से कहा ॥ २९ । आओ एक मनुष्य को देखो जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझ से कहा है . यह क्या ख्रीष्ट है ॥ ३० । सो वे नगर से निकलके उस पास आये ॥

३१ । इस बीच में शिष्यों ने यीशु से बिन्ती किई कि हे गुरु खाइये ॥ ३२ । उस ने उन से कहा खाने को मेरे पास भोजन है जो तुम नहीं जानते हो ॥ ३३ । शिष्यों ने आपस में कहा क्या कोई उस पास कुछ खाने को लाया है ॥ ३४ । यीशु ने उन से कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारे की इच्छा पर चलूं और उस का काम पूरा करूं ॥ ३५ । क्या तुम नहीं कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी . देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतों को देखो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं ॥ ३६ । और काटनेहारा बनि पाता और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है जिस्तें बोनेहारा और काटनेहारा दोनों एक संग आनन्द करें ॥ ३७ । इस में वह बात सच्ची है कि एक बोता है और दूसरा काटता है ॥ ३८ । जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया है उस को मैं ने तुम्हें काटने को भेजा . दूसरों ने परिश्रम किया है और तुम ने उन के परिश्रम में प्रवेश किया है ॥

३९। उस नगर के शोमिरोनियों में से बहुतों ने उस स्त्री के वचन के कारण जिस ने साक्षी दिई कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझ से कहा है यीशु पर बिश्वास किया॥ ४०। इस लिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उस से बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये. और वह वहां दो दिन रहा॥ ४१। और उस के वचन के कारण बहुत अधिक लोगों ने बिश्वास किया॥ ४२। और उस स्त्री से कहा हम अब तेरे वचन के कारण बिश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हम ने आप ही सुना है और जानते हैं कि यह सचमुच जगत का चाणकर्त्ता खीष्ट है॥

४३। दो दिन के पीछे यीशु वहां से निकलके गालील को गया॥ ४४। उस ने तो आप ही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अपने निज देश में आदर नहीं पाता है॥ ४५। जब वह गालील में आया तब गालीलियों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ उस ने यिरूशलीम में पर्व्व में किया था उन्हों ने सब देखा था कि वे भी पर्व्व में गये थे॥ ४६। सो यीशु फिर गालील के काना नगर में आया जहां उस ने जल को दाख रस बनाया था. और राजा के यहां का एक पुरुष था जिस का पुत्र कफर्नाहुम में रोगी था॥ ४७। उस ने जब सुना कि यीशु यिहूदिया से गालील में आया है तब उस पास जाके उस से बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्र को चंगा कीजिये. क्योंकि वह लड़का मरने पर था॥ ४८। यीशु ने उस से कहा जो तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखो तो बिश्वास नहीं करोगे॥ ४९। राजा के यहां के पुरुष ने उस से कहा हे प्रभु मेरे बालक के मरने के आगे आइये॥ ५०। यीशु ने उस से कहा चला जा तेरा पुत्र जीता है. उस मनुष्य ने उस बात पर जो यीशु ने उस से कही बिश्वास किया और चला गया॥ ५१। और वह जाता ही था कि उस के दास उस से आ मिले और सन्देश दिया कि आप का लड़का जीता है॥ ५२। उस ने उन से पूछा किस घड़ी उस का जी हलका हुआ. उन्हों ने उस से कहा कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वर ने उस को छोड़ा॥ ५३। सो पिता ने जाना कि उसी घड़ी में हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने और उस के सारे घराने ने बिश्वास किया॥ ५४। यह दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म यीशु ने यिहूदिया से गालील में आके किया॥

५. इस के पीछे यिहूदियों का पर्व्व हुआ और यीशु यिरूशलीम को गया॥ २। यिरूशलीम में भेड़ी फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रीय भाषा में बैथेसदा कहावता है जिस के पांच ओसारे हैं॥ ३। इन्हों में रोगियों अंधों लंगड़ों और सूखे अंगवालों की बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जल के हिलने की बाट देखते थे॥ ४। क्योंकि समय के अनुसार एक स्वर्गदूत उस कुण्ड में उतरके जल को हिलाता था इस से जो कोई जल के हिलने के पीछे उस में पहिले उतरता था कोई भी रोग उस को लगा हो चंगा हो जाता था॥ ५। एक मनुष्य वहां था जो अड़तीस बरस से रोगी था॥ ६। यीशु ने उसे पड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत दिन हो चुके उस से कहा क्या तू चंगा होने चाहता है॥ ७। रोगी ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुण्ड में उतारे और जब लों मैं जाता हूं दूसरा मुझ से आगे उतरता है॥ ८। यीशु ने उस से कहा उठ अपनी खाट उठाके चल॥ ९। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाके चलने लगा पर उसी दिन विश्रामवार था॥ १०। इस लिये यिहूदियों ने उस चंगा किये हुए मनुष्य से कहा यह विश्राम का दिन है खाट उठाना तुझे उचित नहीं है॥ ११। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से कहा अपनी खाट उठाके चल॥ १२। उन्हों ने उस से पूछा वह मनुष्य कौन है जिस ने तुझ से कहा अपनी खाट उठाके चल॥ १३। परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह कौन है क्योंकि उस स्थान में भीड़ होने से यीशु वहां से हट गया॥

१४। इस के पीछे यीशु ने उस को मन्दिर में पाके उस से कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इस से बुरी कोई विपत्ति तुझ पर आवे ॥ १५। उस मनुष्य ने जाके यिहूदियों से कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया सो यीशु है ॥ १६। इस कारण यिहूदियों ने यीशु को सताया और उसे मार डालने चाहा कि उस ने विश्राम के दिन में यह काम किया था ॥ १७। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा पिता अब लों काम करता है मैं भी काम करता हूं ॥ १८। इस कारण यिहूदियों ने और भी उसे मार डालने चाहा कि उस ने न केवल विश्रामवार की विधि को लंघन किया परन्तु ईश्वर को अपना निज पिता कहके अपने को ईश्वर के तुल्य भी किया ॥

१९। इस पर यीशु ने उन्हों से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह पिता को करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे पुत्र भी वैसे ही करता है ॥ २०। क्योंकि पिता पुत्र को प्यार करता है और जो वह आप करता सो सब उस को बताता है और वह इनसे बड़े काम उसको बतावेगा जिस्तें तुम अचंभा करो ॥ २१। क्योंकि जैसा पिता मृतकों को उठाता और जिलाता है वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है ॥ २२। और पिता किसी का विचार भी नहीं करता है परन्तु विचार करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है इस लिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुत्र का आदर करें ॥ २३। जो पुत्र का आदर नहीं करता है सो पिता का जिस ने उसे भेजा आदर नहीं करता है ॥ २४। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरा वचन सुनके मेरे भेजनेहारे पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है और दण्ड की आज्ञा उस पर नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होके जीवन में पहुंचा है ॥ २५। मैं तुम से सच सच कहता हूं वह समय आता है और अब है जिस में मृतक लोग ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे ॥ २६। क्योंकि जैसा पिता आप ही से जीता है तैसा उस ने पुत्र को भी अधिकार दिया है कि आप ही से जीवे ॥ २७। और उस को विचार करने का भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है ॥ २८। इस से अचंभा मत करो क्योंकि वह समय आता है जिस में जो कबरों में हैं सो सब उस का शब्द सुनके निकलेंगे ॥ २९। जिस से भलाई करनेहारे जीवन के लिये जी उठेंगे और बुराई करनेहारे दण्ड के लिये जी उठेंगे ॥

३०। मैं आप से कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा मैं सुनता हूं वैसा विचार करता हूं और मेरा विचार यथार्थ है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिता की इच्छा जिस ने मुझे भेजा ॥ ३१। जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं है ॥ ३२। दूसरा है जो मेरे विषय में साक्षी देता है और मैं जानता हूं कि जो साक्षी वह मेरे विषय में देता है सो साक्षी ठीक है ॥ ३३। तुम ने योहन के पास भेजा और उस ने सत्य पर साक्षी दिई ॥ ३४। मैं मनुष्य से साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह बातें कहता हूं इस लिये कि तुम त्राण पावो ॥ ३५। वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था और तुम कितनी बेर लों उस के उजियाले में आनन्द करने को प्रसन्न थे ॥ ३६। परन्तु योहन की साक्षी से बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरे करने को दिये हैं अर्थात् येही काम जो मैं करता हूं मेरे विषय में साक्षी देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है ॥ ३७। और पिता ने जिस ने मुझे भेजा आप ही मेरे विषय में साक्षी दिई है. तुम ने कभी उस का शब्द न सुना है और उस का रूप न देखा है ॥ ३८। और तुम उस का वचन अपने में नहीं रखते हो कि जिसे उस ने भेजा उस का विश्वास नहीं करते हो ॥ ३९। धर्म्मपुस्तक में ढूंढो क्योंकि तुम समझते हो कि उस में अनन्त जीवन हमें मिलता है और वही है जो मेरे विषय में साक्षी देता है ॥ ४०। परन्तु तुम जीवन पाने को मेरे पास आने नहीं चाहते हो ॥ ४१। मैं मनुष्यों से आदर नहीं लेता हूं ॥ ४२। परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि ईश्वर का प्रेम तुम में नहीं है ॥ ४३। मैं अपने पिता के नाम से आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो।

यदि दूसरा अपने ही नाम से आवे तो उसे ग्रहण करोगे ॥ ४४ । तुम जो एक दूसरे से आदर लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वर से है नहीं चाहते हो क्योंकर विश्वास कर सकते हो ॥ ४५ । मत समझो कि मैं पिता के आगे तुम पर दोष लगाऊंगा . तुम पर दोष लगानेहारा तो है अर्थात् मूसा जिस पर तुम भरोसा रखते हो ॥ ४६ । क्योंकि जो तुम मूसा का विश्वास करते तो मेरा विश्वास करते इस लिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा ॥ ४७ । परन्तु जो तुम उस के लिखे पर विश्वास नहीं करते हो तो मेरे कहे पर क्योंकर विश्वास करोगे ॥

६. इस के पीछे यीशु गालील के समुद्र अर्थात् तिबरिया के समुद्र के उस पार गया ॥ २ । और बहुत लोग उस के पीछे हो लिये इस कारण कि उन्हों ने उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा जो वह रोगियों पर करता था ॥ ३ । तब यीशु पर्व्वत पर चढ़के अपने शिष्यों के संग वहां बैठा ॥ ४ । और यिहूदियों का पर्व्व अर्थात् निस्तार पर्व्व निकट था ॥ ५ । यीशु ने अपनी आंखें उठाके बहुत लोगों को अपने पास आते देखा और फिलिप से कहा हम कहां से रोटी मोल लेवें कि ये लोग खावें ॥ ६ । उस ने उसे परखने को यह बात कही क्योंकि जो वह करने पर था सो आप जानता था ॥ ७ । फिलिप ने उस को उत्तर दिया कि दो सौ सूकियों की रोटी उन के लिये इतनी भी न होगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिले ॥ ८ । उस के शिष्यों में से एक ने अर्थात् शिमोन पितर के भाई अंद्रिय ने उस से कहा ॥ ९ । यहां एक छोकरा है जिस पास जव की पांच रोटी और दो मछली हैं परन्तु इतने लोगों के लिये ये क्या हैं ॥ १० । यीशु ने कहा उन मनुष्यों को बैठाओ . उस स्थान में बहुत घास थी सो पुरुष जो गिन्ती में पांच सहस्र के अटकल थे बैठ गये ॥ ११ । तब यीशु ने रोटियां ले धन्य मानके शिष्यों को बांट दिईं और शिष्यों ने बैठनेहारों को और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं ॥ १२ । जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने शिष्यों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न जाय ॥ १३ । सो उन्हों ने बटोरा और जव की पांच रोटियों के जो टुकड़े खानेहारों से बच रहे उन से बारह टोकरी भरीं ॥ १४ । उन मनुष्यों ने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशु ने किया था देखके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था ॥ १५ । जब यीशु ने जाना कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला पर्व्वत पर गया ॥

१६ । जब सांझ हुई तब उस के शिष्य लोग समुद्र के तीर पर गये ॥ १७ । और नाव पर चढ़के समुद्र के उस पार कफर्नाहुम को जाने लगे . और अंधियारा हुआ था और यीशु उन के पास नहीं आया था ॥ १८ । बड़ी बयार के बहने से समुद्र में लहरें भी उठती थीं ॥ १९ । जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये थे तब उन्हों ने यीशु को समुद्र पर चलते और नाव के निकट आते देखा और डर गये ॥ २० । परन्तु उस ने उन से कहा मैं हूं डरो मत ॥ २१ । तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने को प्रसन्न थे और तुरन्त नाव उस तीर पर जहां वे जाते थे लग गई ॥

२२ । दूसरे दिन जो लोग समुद्र के उस पार खड़े थे उन्हों ने जाना कि जिस नाव पर यीशु के शिष्य चढ़े उसे छोड़के और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्यों के संग उस नाव पर नहीं चढ़ा पर केवल उस के शिष्य चले गये ॥ २३ । तौभी पीछे और नावें तिबरिया नगर से उस स्थान के निकट आई थीं जहां उन्हों ने जब प्रभु ने धन्य माना था रोटी खाई ॥ २४ । सो जब लोगों ने देखा कि यीशु यहां नहीं है और न उस के शिष्य तब वे भी नावों पर चढ़के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफर्नाहुम को आये ॥ २५ । और वे समुद्र के पार उसे पाके उस से बोले हे गुरु आप यहां कब आये ॥ २६ । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे इस लिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा परन्तु इस लिये कि उन रोटियों में से खाके तृप्त हुए ॥

२७। नाशमान भोजन के लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन लों रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम को देगा क्योंकि पिता ने अर्थात् ईश्वर ने उसी पर छाप दिई है ॥ २८। उन्हों ने उस से कहा ईश्वर के कार्य्य करने को हम क्या करें ॥ २९। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया ईश्वर का कार्य्य यह है कि जिसे उस ने भेजा है उस पर तुम विश्वास करो ॥ ३०। उन्हों ने उस से कहा आप कौन सा आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं कि हम देखके आप का विश्वास करें . आप क्या करते हैं ॥ ३१। हमारे पितरों ने जंगल में मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उस ने उन्हें स्वर्ग की रोटी खाने को दिई ॥ ३२। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं मूसा ने तुम्हें स्वर्ग की रोटी न दिई परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्ग की रोटी देता है ॥ ३३। क्योंकि ईश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरती और जगत को जीवन देती है ॥ ३४। उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु यही रोटी हमें नित्य दीजिये ॥ ३५। यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं . जो मेरे पास आवे सो कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करे सो कभी प्यासा न होगा ॥ ३६। परन्तु मैं ने तुम से कहा कि तुम मुझे देख भी चुके और विश्वास नहीं करते हो ॥ ३७। सब जो पिता मुझ को देता है मेरे पास आवेगा और जो कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी रीति से दूर न करूंगा ॥ ३८। क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेहारे की इच्छा पूरी करने को स्वर्ग से उतरा हूं ॥ ३९। और पिता की इच्छा जिस ने मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उस ने मुझ को दिया है उन में से मैं किसी को न खोऊं परन्तु उन्हें पिछले दिन में उठाऊं ॥ ४०। मेरे भेजनेहारे की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊंगा ॥

४१। तब यिहूदी लोग उस के विषय में कुड़कुड़ाने लगे इस लिये कि उस ने कहा जो रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं हूं ॥ ४२। वे बोले क्या यह यूसफ का पुत्र यीशु नहीं है जिस के माता और पिता को हम जानते हैं . तो यह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं ॥ ४३। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ ॥ ४४। यदि पिता जिस ने मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है और उस को मैं पिछले दिन में उठाऊंगा ॥ ४५। भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि वे सब ईश्वर के सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिस ने पिता से सुना और सीखा है मेरे पास आता है ॥ ४६। यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है . केवल जो ईश्वर की ओर से है उसी ने पिता को देखा है ॥ ४७। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है ॥ ४८। मैं जीवन की रोटी हूं ॥ ४९। तुम्हारे पितरों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गये ॥ ५०। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है कि जो उस से खावे सो न मरे ॥ ५१। मैं जीवती रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी . यदि कोई यह रोटी खाय तो सदा लों जीयेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा मांस है जिसे मैं जगत के जीवन के लिये देऊंगा ॥ ५२। इस पर यिहूदी लोग आपस में विवाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर अपना मांस खाने को दे सकता है ॥ ५३। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं जो तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उस का लोहू न पीओ तो तुम में जीवन नहीं है ॥ ५४। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है उस को अनन्त जीवन है और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊंगा ॥ ५५। क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है और मेरा लोहू सच्ची पीने की वस्तु है ॥ ५६। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता है और मैं उस में रहता हूं ॥ ५७। जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता से जीता हूं तैसा वह भी जो मुझे खावे मुझ से जीयेगा ॥ ५८। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी . जैसा तुम्हारे पितरों ने मन्ना खाया और मर गये ऐसा नहीं . जो यह रोटी खाय सो सदा लों जीयेगा ॥ ५९। उस ने कफर्नाहुम में उपदेश करते हुए सभा के घर में यह बातें कहीं ॥

६०। उस के शिष्यों में से बहुतों ने यह सुनके कहा यह बात कठिन है इसे कौन सुन सकता है॥ ६१। यीशु ने अपने मन में जाना कि उस के शिष्य इस बात के विषय में कुड़कुड़ाते हैं इस लिये उन से कहा क्या इस बात से तुम को ठोकर लगती है॥ ६२। यदि मनुष्य के पुत्र को जहां वह आगे था उस स्थान पर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे॥ ६३। आत्मा तो जीवनदायक है शरीर से कुछ लाभ नहीं. जो बातें मैं तुम से बोलता हूं सो आत्मा हैं और जीवन हैं॥ ६४। परन्तु तुम्हों में से कितने हैं जो विश्वास नहीं करते हैं. यीशु तो आरंभ से जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वास करनेहारे नहीं हैं और वह कौन है जो मुझे पकड़वायगा॥ ६५। और उस ने कहा इसी लिये मैं ने तुम से कहा है कि यदि मेरे पिता की ओर से उस को न दिया जाय तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है॥ ६६। इस समय से उस के शिष्यों में से बहुतेरे पीछे हटे और उस के संग और न चले॥ ६७। इस लिये यीशु ने उन बारह शिष्यों से कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो॥ ६८। शिमोन पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किस के पास जायें. आप के पास अनन्त जीवन की बातें हैं॥ ६९। और हम ने विश्वास किया और जान लिया है कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट हैं॥ ७०। यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना और तुम में से एक तो शैतान है॥ ७१। वह शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के विषय में बोला क्योंकि वही उसे पकड़वाने पर था और वह बारह शिष्यों में से एक था॥

७. **इस** के पीछे यीशु गालील में फिरने लगा क्योंकि यिहूदी लोग उसे मार डालने चाहते थे इस लिये वह यिहूदिया में फिरने नहीं चाहता था॥ २। और यिहूदियों का पर्व्व अर्थात तंबूवास पर्व्व निकट था॥ ३। इस लिये उस के भाइयों ने उस से कहा यहां से निकलके यिहूदिया में जा कि तेरे शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें॥ ४। क्योंकि कोई नहीं गुप्त में कुछ करता और आप ही प्रगट होने चाहता है. जो तू यह करता है तो अपने तईं जगत को दिखा॥ ५। क्योंकि उस के भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे॥ ६। यीशु ने उन से कहा मेरा समय अब लों नहीं पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य रहता है॥ ७। जगत तुम से बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उस के विषय में साक्षी देता हूं कि उस के काम बुरे हैं॥ ८। तुम इस पर्व्व में जाओ. मैं अभी इस पर्व्व में नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अब लों पूरा नहीं हुआ है॥ ९। वह उन से यह बातें कहके गालील में रह गया॥ १०। परन्तु जब उस के भाई लोग चले गये तब वह आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पर्व्व में गया॥ ११। यिहूदी लोग पर्व्व में उसे ढूंढ़ते थे और बोले वह कहां है॥ १२। और लोग उस के विषय में बहुत बातें आपस में फुसफुसाके कहते थे. कितनों ने कहा वह उत्तम मनुष्य है परन्तु औरों ने कहा सो नहीं पर वह लोगों को भरमाता है॥ १३। तौभी यिहूदियों के डर के मारे कोई उस के विषय में खोलके नहीं बोला॥

१४। पर्व्व के बीचोबीच यीशु मन्दिर में जाके उपदेश करने लगा॥ १५। यिहूदियों ने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे क्योंकर विद्या जानता है॥ १६। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे का है॥ १७। यदि कोई उस की इच्छा पर चला चाहे तो इस उपदेश के विषय में जानेगा कि वह ईश्वर की ओर से है अथवा मैं अपनी ओर से कहता हूं॥ १८। जो अपनी ओर से कहता है सो अपनी ही बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेहारे की बड़ाई चाहता है सोई सत्य है और उस में अधर्म्म नहीं है॥ १९। क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था न दिई. तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता है. तुम क्यों मुझे मार डालने चाहते हो॥ २०। लोगों ने उत्तर दिया कि तुझे भूत लगा है. कौन तुझे मार डालने चाहता है॥ २१। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने

एक काम किया और तुम सब अचंभा करते हो ॥ २२। मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दिई . इस कारण नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु पितरों की ओर से है . और तुम विश्राम के दिन में मनुष्य का खतना करते हो ॥ २३। जो विश्राम के दिन में मनुष्य का खतना किया जाता है जिस्तें मूसा की व्यवस्था लंघन न होय तो तुम मुझ से क्यों इस लिये क्रोध करते हो कि मैं ने विश्राम के दिन में संपूर्ण एक मनुष्य को चंगा किया ॥ २४। मुंह देखके विचार मत करो परन्तु यथार्थ विचार करो ॥

२५। तब यिरूशलीम के निवासियों में से कितने बोले क्या यह वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं ॥ २६। और देखो वह खोलके बात करता है और वे उस से कुछ नहीं कहते . क्या प्रधानों ने निश्चय जान लिया है कि यह सचमुच खीष्ट है ॥ २७। परन्तु इस मनुष्य को हम जानते हैं कि वह कहां से है पर खीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं जानेगा कि वह कहां से है ॥ २८। यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां से हूं . मैं तो आप से नहीं आया हूं परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो ॥ २९। मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उस ने मुझे भेजा है ॥ ३०। इस पर उन्हों ने उस को पकड़ने चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उस का समय अब लों नहीं पहुंचा था ॥ ३१। और लोगों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया और कहा खीष्ट जब आवेगा तब क्या इन आश्चर्य्य कर्म्मों से जो इस ने किये हैं अधिक करेगा ॥

३२। फरीशियों ने लोगों को उस के विषय में यह बातें फुसफुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याजकों ने प्यादों को उसे पकड़ने को भेजा ॥ ३३। इस पर यीशु ने कहा मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब अपने भेजनेहारे के पास जाता हूं ॥ ३४। तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे ॥ ३५। यिहूदियों ने आपस में कहा यह कहां जायगा कि हम उसे नहीं पावेंगे . क्या वह यूनानियों में के तितर बितर लोगों के पास जायगा और यूनानियों को उपदेश देगा ॥ ३६। यह क्या बात है जो उस ने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे ॥

३७। पिछले दिन पर्ब्ब के बड़े दिन में यीशु ने खड़ा हो पुकारके कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके पीवे ॥ ३८। जो मुझ पर विश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तक ने कहा तैसा उस के अन्तर से अमृत जल की नदियां बहेंगी ॥ ३९। उस ने यह वचन आत्मा के विषय में कहा जिसे उस पर विश्वास करनेहारे पाने पर थे क्योंकि पवित्र आत्मा अब लों नहीं दिया गया था इस लिये कि यीशु की महिमा अब लों प्रगट न हुई थी ॥ ४०। लोगों में से बहुतों ने यह वचन सुनके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है ॥ ४१। औरों ने कहा यह खीष्ट है, परन्तु औरों ने कहा क्या खीष्ट गालील में से आवेगा ॥ ४२। क्या धर्म्मपुस्तक ने नहीं कहा कि खीष्ट दाऊद के वंश से और बैतलहम नगर से जहां दाऊद रहता था आवेगा ॥ ४३। सो उस के कारण लोगों में विभेद हुआ ॥ ४४। उन में से कितने उस को पकड़ने चाहते थे परन्तु किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाये ॥

४५। तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियों के पास आये और उन्हों ने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये हो ॥ ४६। प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ने कभी इस मनुष्य की नाईं बात न किई ॥ ४७। फरीशियों ने उन को उत्तर दिया क्या तुम भी भरमाये गये हो ॥ ४८। क्या प्रधानों अथवा फरीशियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है ॥ ४९। परन्तु ये लोग जो व्यवस्था को नहीं जानते हैं स्रापित हैं ॥ ५०। निकोदीम जो रात को यीशु पास आया और आप उन में से एक था उन से बोला ॥ ५१। हमारी व्यवस्था जब लों मनुष्य की न सुने और न जाने कि वह क्या करता है तब लों क्या उस को दोषी ठहराती है ॥ ५२। उन्हों ने उसे उत्तर दिया क्या आप भी गालील के हैं . ढूंढ़के देखिये कि गालील में से भविष्यद्वक्ता प्रगट

नहीं होता ॥ ५३ । तब सब कोई अपने अपने घर को गये ॥

८. परन्तु यीशु जैतून पर्ब्बत पर गया ॥ २ । और भोर को फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस पास आये और वह बैठके उन्हें उपदेश देने लगा ॥ ३ । तब अध्यापकों और फरीशियों ने एक स्त्री को जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी उस पास लाके बीच में खड़ी किई ॥ ४ । और उस से कहा हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करते ही पकड़ी गई ॥ ५ । व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह किई जावें सो आप क्या कहते हैं ॥ ६ । उन्हों ने उस को परीक्षा करने को यह बात कही कि उस पर दोष लगाने को गौं मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके उंगली से भूमि पर लिखने लगा ॥ ७ । जब वे उस से पूछते रहे तब उस ने उठके उन से कहा तुम्हों में से जो निष्पापी होय सो पहिले उस पर पत्थर फेंके ॥ ८ । और वह फिर नीचे झुकके भूमि पर लिखने लगा ॥ ९ । पर वे यह सुनके और अपने अपने मन से दोषी ठहरके बड़ों से लेके छोटों तक एक एक करके निकल गये और केवल यीशु रह गया और वह स्त्री बीच में खड़ी रही ॥ १० । यीशु ने उठके स्त्री को छोड़ और किसी को न देखके उस से कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं . क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दिई ॥ ११ । उस ने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं . यीशु ने उस से कहा मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर ॥

१२ । तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं जगत का प्रकाश हूं . जो मेरे पीछे आवे सो अंधकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन का उजियाला पावेगा ॥ १३ । फरीशियों ने उस से कहा तू अपने ही विषय में साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं है ॥ १४ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते हो कि मैं कहां से आता हूं और कहां जाता हूं ॥ १५ । तुम शरीर को देखके विचार करते हो मैं किसी का विचार नहीं करता हूं ॥ १६ । और जो मैं विचार करता हूं भी तो मेरा विचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिस ने मुझे भेजा ॥ १७ । तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि दो जनों की साक्षी ठीक होती है ॥ १८ । एक मैं हूं जो अपने विषय में साक्षी देता हूं और पिता जिस ने मुझे भेजा मेरे विषय में साक्षी देता है ॥ १९ । तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता कहां है . यीशु ने उत्तर दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिता को जानते हो . जो मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते ॥ २० । यह बातें यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए भण्डार घर में कहीं और किसी ने उस को न पकड़ा क्योंकि उस का समय अब लों नहीं पहुंचा था ॥

२१ । तब यीशु ने उन से फिर कहा मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे . जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो ॥ २२ । इस पर यिहूदियों ने कहा क्या वह अपने को मार डालेगा कि वह कहता है जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो ॥ २३ । उस ने उन से कहा तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूं . तुम इस जगत के हो मैं इस जगत का नहीं हूं ॥ २४ । इस लिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि जो तुम विश्वास न करो कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे ॥ २५ । उन्हों ने उस से कहा तू कौन है . यीशु ने उन से कहा पहिले जो मैं तुम से कहता हूं वह भी सुनो ॥ २६ । तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और विचार करना है परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है और जो मैं ने उस से सुना है सोई जगत से कहता हूं ॥ २७ । वे नहीं जानते थे कि वह उन से पिता के विषय में बोलता था ॥ २८ । तब यीशु ने उन से कहा जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचा करोगे तब जानोगे कि मैं वही हूं और कि मैं आप से कुछ नहीं करता हूं परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें बोलता हूं ॥ २९ । और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है . पिता

ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता है ॥ ३० । उस के यह बातें बोलते ही बहुत लोगों ने उस पर विश्वास किया ॥ ३१ । तब यीशु ने उन यिहूदियों से जिन्हों ने उस पर विश्वास किया कहा जो तुम मेरे वचन में बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो ॥ ३२ । और तुम सत्य को जानोगे और सत्य के द्वारा से तुम्हारा उद्धार होगा ॥

३३ । उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीम के वंश हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए हैं तू क्योंकर कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा ॥ ३४ । यीशु ने उन को उत्तर दिया मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है सो पाप का दास है ॥ ३५ । दास सदा घर में नहीं रहता है . पुत्र सदा रहता है ॥ ३६ । सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा ॥ ३७ । मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश हो परन्तु मेरा वचन तुम में नहीं समाता है इस लिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो ॥ ३८ । मैं ने अपने पिता के पास जो देखा है सो कहता हूं और तुम ने अपने पिता के पास जो देखा है सो करते हो ॥ ३९ । उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है . यीशु ने उन से कहा जो तुम इब्राहीम के सन्तान होते तो इब्राहीम के कर्म्म करते ॥ ४० । परन्तु अब तुम मुझे अर्थात् एक मनुष्य को जिस ने यह सत्य वचन जो मैं ने ईश्वर से सुना तुम से कहा है मार डालने चाहते हो . यह तो इब्राहीम ने नहीं किया ॥ ४१ । तुम अपने पिता के कर्म्म करते हो . उन्हों ने उस से कहा हम व्यभिचार से नहीं जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात् ईश्वर ॥ ४२ । यीशु ने उन से कहा यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वर की ओर से निकलके आया हूं . मैं आप से नहीं आया हूं परन्तु उस ने मुझे भेजा ॥ ४३ । तुम मेरी बात क्यों नहीं बूझते हो . इसी लिये कि मेरा वचन नहीं सुन सकते हो ॥ ४४ । तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता के अभिलाषों पर चला चाहते हो . वह आरंभ से मनुष्यघाती था और सच्चाई में स्थिर नहीं रहता क्योंकि सच्चाई उस में नहीं है . जब वह झूठ बोलता तब अपने स्वभाव ही से बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठ का पिता है ॥ ४५ । परन्तु मैं सत्य कहता हूं इसी लिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते हो ॥ ४६ । तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है . और जो मैं सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते हो ॥ ४७ । जो ईश्वर से है सो ईश्वर की बातें सुनता है . तुम ईश्वर से नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो ॥

४८ । तब यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया क्या हम अच्छा नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा है ॥ ४९ । यीशु ने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु मैं अपने पिता का सन्मान करता हूं और तुम मेरा अपमान करते हो ॥ ५० । पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूं . एक है जो चाहता और बिचार करता है ॥ ५१ । मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह कभी मृत्यु को न देखेगा ॥ ५२ । तब यिहूदियों ने उस से कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे लगा है . इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद न चीखेगा ॥ ५३ । क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से जो मर गया है बड़ा है . भविष्यद्वक्ता लोग भी मर गये हैं . तू अपने तईं क्या बनाता है ॥ ५४ । यीशु ने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई करूं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है . मेरी बड़ाई करनेहारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा ईश्वर है ॥ ५५ । तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूं और जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान झूठा होगा परन्तु मैं उसे जानता और उस के वचन को पालन करता हूं ॥ ५६ । तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने को हर्षित होता था और उस ने देखा और आनन्द किया ॥ ५७ । यिहूदियों ने उस से कहा तू अब लों पचास बरस का नहीं है और क्या तू ने

इब्राहीम को देखा है ॥ ५८ । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि इब्राहीम के होने के पहिले से मैं हूं ॥ ५९ । तब उन्हों ने पत्थर उठाये कि उस पर फेंकें परन्तु यीशु छिप गया और उन्हों के बीच में से होके मन्दिर से निकला और यूंहीं चला गया ॥

९. जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म का अंधा था ॥ २ । और उस के शिष्यों ने उस से पूछा हे गुरु किस ने पाप किया इस मनुष्य ने अथवा उस के माता पिता ने जो वह अंधा जन्मा ॥ ३ । यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पाप किया परन्तु यह इस लिये हुआ कि ईश्वर के काम उस में प्रगट किये जायें ॥ ४ । मुझे दिन रहते अपने भेजनेहारे के कामों को करना अवश्य है . रात आती है जिस में कोई नहीं काम कर सकता है ॥ ५ । जब लों मैं जगत में हूं तब लों जगत का प्रकाश हूं ॥ ६ । यह कहके उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी गोली करके वह गोली मिट्टी अंधे की आंखों पर लगाई ॥ ७ । और उस से कहा जाके शीलोह के कुण्ड में धो जिस का अर्थ यह है भेजा हुआ . सो उस ने जाके धोया और देखते हुए आया ॥

८ । तब पड़ोसियों ने और जिन्हों ने आगे उसे अंधा देखा था उन्हों ने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख मांगता था ॥ ९ । कितनों ने कहा यह वही है औरों ने कहा यह उस की नाईं है वह आप बोला मैं वही हूं ॥ १० । तब उन्हों ने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं ॥ ११ । उस ने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी गोली करके मेरी आंखों पर लगाई और मुझ से कहा शीलोह के कुण्ड को जा और धो सो मैं ने जाके धोया औ दृष्टि पाई ॥ १२ । उन्हों ने उस से कहा वह मनुष्य कहां है . उस ने कहा मैं नहीं जानता हूं ॥

१३ । वे उस को जो आगे अंधा था फरीशियों के पास लाये ॥ १४ । जब यीशु ने मिट्टी गोली करके उस की आंखें खोली थीं तब विश्राम का दिन था ॥ १५ । सो फरीशियों ने भी फिर उस से पूछा तू ने किस रीति से दृष्टि पाई . वह उन से बोला उस ने गोली मिट्टी मेरी आंखों पर लगाई और मैं ने धोया और देखता हूं ॥ १६ । फरीशियों में से कितनों ने कहा यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह विश्राम का दिन नहीं मानता है . औरों ने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है . और उन्हों में विभेद हुआ ॥ १७ । वे उस अंधे से फिर बोले उस ने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के विषय में क्या कहता है . उस ने कहा वह भविष्यद्वक्ता है ॥

१८ । परन्तु यिहूदियों ने जब लों उस दृष्टि पाये हुए मनुष्य के माता पिता को नहीं बुलाया तब लों उस के विषय में प्रतीति न किई कि वह अंधा था औ दृष्टि पाई ॥ १९ । और उन्हों ने उन से पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा . तो वह अब क्योंकर देखता है ॥ २० । उस के माता पिता ने उन को उत्तर दिया हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा जन्मा ॥ २१ । परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते अथवा किस ने उस की आंखें खोलीं हम नहीं जानते हैं . वह सयाना है उसी से पूछिये वह अपने विषय में आप कहेगा ॥ २२ । यह बातें उस के माता पिता ने इस लिये कहीं कि वे यिहूदियों से डरते थे क्योंकि यिहूदी लोग आपस में ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशु को खीष्ट करके मान लेवे तो सभा में से निकाला जायगा ॥ २३ । इस कारण उस के माता पिता ने कहा वह सयाना है उसी से पूछिये ॥

२४ । तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बेर बुलाके उस से कहा ईश्वर का गुणानुवाद कर . हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है ॥ २५ । उस ने उत्तर दिया वह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं ॥ २६ । उन्हों ने उस से फिर कहा उस ने तुझ से क्या किया . तेरी आंखें किस रीति से खोलीं ॥ २७ । उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं आप लोगों से कह चुका हूं और आप लोगों ने नहीं सुना . किस लिये फिर सुना चाहते

हैं . क्या आप लोग भी उस के शिष्य हुआ चाहते हैं ॥ २८। तब उन्हों ने उस की निन्दा कर कहा तू उस का शिष्य है पर हम मूसा के शिष्य हैं ॥ २९। हम जानते हैं कि ईश्वर ने मूसा से बातें किईं परन्तु इस को हम नहीं जानते कि कहां से है ॥ ३०। उस मनुष्य ने उन को उत्तर दिया इस मे अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते वह कहां से है और उस ने मेरी आंखें खोली हैं ॥ ३१। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वर का उपासक होय और उस की इच्छा पर चले तो वह उस की सुनता है ॥ ३२। यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आंखें खोली हों ॥ ३३। जो यह ईश्वर की ओर से न होता तो कुछ नहीं कर सकता ॥ ३४। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि तू तो संपूर्ण पापों में जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है . और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया ॥

३५। यीशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया था और उस को पा करके उस से कहा क्या तू ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है ॥ ३६। उस ने उत्तर दिया कि हे प्रभु वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं ॥ ३७। यीशु ने उस से कहा तू ने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता है वही है ॥ ३८। उस ने कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं और उस को प्रणाम किया ॥ ३९। तब यीशु ने कहा मैं इस जगत में विचार के लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें ॥ ४०। फरीशियों में से जो जन उस के संग थे सो यह सुनके उस से बोले क्या हम भी अंधे हैं ॥ ४१। यीशु ने उन से कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप बना रहा ॥

१०. मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाले में नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओर से चढ़ जाता है सो चोर औ डाकू है ॥ २। जो द्वार से पैठता है सो भेड़ों का रखवाला है ॥ ३। उस के लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उस का शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम ले ले बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है ॥ ४। और जब वह अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उन के आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उस का शब्द जानती हैं ॥ ५। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जायेंगी पर उस से भागेंगी क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं जानती हैं ॥ ६। यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्हों ने न बूझा कि यह क्या बातें हैं जो वह हम से बोलता है ॥ ७। तब यीशु ने फिर उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मैं भेड़ों का द्वार हूं ॥ ८। जितने मेरे आगे आये सो सब चोर औ डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी ॥ ९। द्वार मैं हूं . यदि मुझ में से कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराई पावेगा ॥ १०। चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी औ घात औ नाश करने को आता है . मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें और अधिकाई से पावें ॥ ११। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं . अच्छा गड़ेरिया भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है ॥ १२। परन्तु मजूर जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उस के निज की नहीं हैं हुंड़ार को आते देखके भेड़ों को छोड़ देता और भाग जाता है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है ॥ १३। मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ों की कुछ चिन्ता नहीं करता है ॥ १४। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं वैसा मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और अपनी भेड़ों से जाना जाता हूं ॥ १५। और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं ॥ १६। मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शाले की नहीं हैं . मुझे उन को भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुण्ड और एक रखवाला होगा ॥ १७। पिता इस कारण से मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं जिस्तें उसे फिर लेऊं ॥ १८। कोई उस

को मुझ से नहीं लेता है परन्तु मैं आप से उसे देता हूं . उसे देने का मुझे अधिकार है और उसे फिर लेने का मुझे अधिकार है . यह आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई ॥

१९ । तब यिहूदियों में इन बातों के कारण फिर विभेद हुआ ॥ २० । उन में से बहुतों ने कहा उस को भूत लगा है वह बौरहा है तुम उस की क्यों सुनते हो ॥ २१ । औरों ने कहा यह बातें भूतग्रस्त की नहीं हैं . भूत क्या अंधों की आंखें खोल सकता है॥

२२ । यिरूशलीम में स्थापनपर्व्व हुआ और जाड़े का समय था ॥ २३ । और यीशु मन्दिर में सुलेमान के ओसारे में फिरता था ॥ २४ । तब यिहूदियों ने उसे घेरके उस से कहा तू हमारे मन को कब लों दुबधा में रखेगा . जो तू खीष्ट है तो हम से खोलके कह ॥ २५ । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तुम से कहा और तुम बिश्वास नहीं करते हो . जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे विषय में साक्षी देते हैं ॥ २६ । परन्तु तुम बिश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो जैसा मैं ने तुम से कहा ॥ २७ । मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं ॥ २८ । और मै उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा ॥ २९ । मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझ को दिया है सभों से बड़ा है और कोई मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं सकता है ॥ ३० । मैं और पिता एक हैं ॥ ३१ । तब यिहूदियों ने फिर उसे पत्थरवाह करने को पत्थर उठाये ॥ ३२ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम तुम्हें दिखाये हैं उन में से किस काम के लिये मुझे पत्थरवाह करते हो ॥ ३३ । यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर की निन्दा के लिये और इस लिये कि तू मनुष्य होके अपने को ईश्वर बनाता है ॥ ३४ । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम ईश्वरगण हो ॥ ३५ । यदि उस ने उन को ईश्वरगण कहा जिन के पास ईश्वर का वचन पहुंचा और धर्म्मपुस्तक की बात लोप नहीं हो सकती है ॥ ३६ । तो जिसे पिता ने पवित्र करके जगत में भेजा है उस से क्या तुम कहते हो कि तू ईश्वर की निन्दा करता है इस लिये कि मैं ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं ॥ ३७ । जो मैं अपने पिता के कार्य्य नहीं करता हूं तो मेरी प्रतीति मत करो ॥ ३८ । परन्तु जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन कार्य्यों की प्रतीति करो इस लिये कि तुम जानो और विश्वास करो कि पिता मुझ में है और मैं उस मे हूं ॥

३९ । तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया ॥ ४० । और फिर यर्दन के उस पार उस स्थान पर गया जहां योहन पहिले बपतिसमा देता था और वहां रहा ॥ ४१ । और बहुत लोग उस पास आये और बोले योहन ने तो कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया परन्तु जो कुछ योहन ने इस के विषय में कहा सो सब सच था ॥ ४२ । और वहां बहुतों ने उस पर विश्वास किया ॥

११. इलियाजर

नाम बैथनिया का अर्थात मरियम और उस की बहिन मर्था के गांव का एक मनुष्य रोगी था ॥ २ । मरियम वही थी जिस ने प्रभु पर सुगंध तेल लगाया और उस के चरणों को अपने बालों से पोंछा और उस का भाई इलियाजर था जो रोगी था ॥ ३ । सो दोनों बहिनों ने यीशु को कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है ॥ ४ । यह सुनके यीशु ने कहा यह रोग मृत्यु के लिये नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के लिये है कि ईश्वर के पुत्र की महिमा उस के द्वारा से प्रगट किई जाय ॥ ५ । यीशु मर्था को और उस की बहिन को और इलियाजर को प्यार करता था ॥

६ । जब उस ने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस स्थान में वह था उस स्थान में दो दिन और रहा ॥ ७ । तब इस के पीछे उस ने शिष्यों से कहा कि आओ हम फिर यिहूदिया को चलें ॥ ८ ।

शिष्यों ने उस से कहा हे गुरु यिहूदी लोग अभी आप को पत्थरवाह किया चाहते थे और आप क्या फिर वहां जाते हैं ॥ ९। यीशु ने उत्तर दिया क्या दिन की बारह घड़ी नहीं हैं. यदि कोई दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगत का उजियाला देखता है ॥ १०। परन्तु यदि कोई रात को चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उजियाला उस में नहीं है ॥ ११। उस ने यह बातें कहीं और इस के पीछे उन से बोला हमारा मित्र इलियाजर सो गया है परन्तु मैं उसे जगाने को जाता हूं ॥ १२। उस के शिष्यों ने कहा हे प्रभु जो वह सो गया है तो चंगा हो जायगा ॥ १३। यीशु ने उस की मृत्यु के विषय में कहा परन्तु उन्हों ने समझा कि उस ने नींद में सो जाने के विषय में कहा ॥ १४। तब यीशु ने उन से खोलके कहा इलियाजर मर गया है ॥ १५। और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं था जिस्तें तुम विश्वास करो. परन्तु आओ हम उस पास चलें ॥ १६। तब थोमा ने जो दिदुम कहावता है अपने संगी शिष्यों से कहा कि आओ हम भी उस के संग मरने को जायें ॥ १७। सो जब यीशु आया तब उस ने यही पाया कि इलियाजर को कबर में चार दिन हो चुके ॥

१८। बैथनिया यिरूशलीम के निकट अर्थात् कोश एक दूर था ॥ १९। और बहुत से यिहूदी लोग मर्था और मरियम के पास आये थे कि उन के भाई के विषय में उन को शांति देवें ॥ २०। सो मर्था ने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उस से भेंट किई परन्तु मरियम घर में बैठी रही ॥ २१। मर्था ने यीशु से कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता ॥ २२। परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप ईश्वर से मांगें ईश्वर आप को देगा ॥ २३। यीशु ने उस से कहा तेरा भाई जी उठेगा ॥ २४। मर्था ने उस से कहा मैं जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थान में वह जी उठेगा ॥ २५। यीशु ने उस से कहा मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूं. जो मुझ पर विश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा ॥ २६। और जो कोई जीवता हो और मुझ पर विश्वास करे सो कभी नहीं मरेगा. क्या तू इस बात का विश्वास करती है ॥ २७। वह उस से बोली हां प्रभु मैं ने विश्वास किया है कि ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट जो जगत में आनेवाला था सो आप ही हैं ॥ २८। यह कहके वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं ॥ २९। मरियम जब उस ने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई ॥ ३०। यीशु अब लों गांव में नहीं आया था परन्तु उसी स्थान में था जहां मर्था ने उस से भेंट किई ॥ ३१। जो यिहूदी लोग मरियम के संग घर में थे और उस को शांति देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह कहके उस के पीछे हो लिये कि वह कबर पर जाती है कि वहां रोवे ॥ ३२। जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था तब उसे देखके उस के पांवों पड़ी और उस से बोली हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता ॥ ३३। जब यीशु ने उसे रोते हुए और जो यिहूदी लोग उस के संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब आत्मा में बिकल हुआ और घबराया ॥ ३४। और कहा तुम ने उसे कहां रखा है. वे उस से बोले हे प्रभु आके देखिये ॥ ३५। यीशु रोया ॥ ३६। तब यिहूदियों ने कहा देखो वह उसे कैसा प्यार करता था ॥ ३७। परन्तु उन में से कितनों ने कहा क्या यह जिस ने अंधे की आंखें खोलीं यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य नहीं मरता ॥ ३८। यीशु अपने में फिर बिकल होके कबर पर आया. वह गुफा थी और एक पत्थर उस पर धरा था ॥ ३९। यीशु ने कहा पत्थर को सरकाओ. उस मरे हुए की बहिन मर्था उस से बोली हे प्रभु वह तो अब बसाता है क्योंकि उस को चार दिन हुए हैं ॥ ४०। यीशु ने उस से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा कि जो तू विश्वास करे तो ईश्वर की महिमा को देखेगी ॥

४१। तब जहां वह मृतक पड़ा था वहां से उन्हों ने पत्थर को सरकाया और यीशु ने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता मैं तेरा धन्य मानता हूं कि

तू ने मेरी सुनी है ॥ ४२। और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत लोग आस-पास खड़े हैं उन के कारण मैं ने यह कहा कि वे बिश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा ॥ ४३। यह बातें कहके उस ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ॥ ४४। तब वह मृतक चद्दर से हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और उस का मुंह अंगोछे में लपेटा हुआ था. यीशु ने उन से कहा उसे खोलो और जाने दो॥

४५। तब बहुत से यिहूदी लोगों ने जो मरियम के पास आये थे यह जो यीशु ने किया था देखके उस पर बिश्वास किया ॥ ४६। परन्तु उन में से कितनों ने फरीशियों के पास जाके जो यीशु ने किया था सो उन्हों से कह दिया ॥ ४७। इस पर प्रधान याजकों और फरीशियों ने सभा एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं. यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य कर्म्म करता है॥ ४८। जो हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग उस पर बिश्वास करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और लोग को भी उठा देंगे॥ ४९। तब उन में से कियाफा नाम एक जन जो उस बरस का महायाजक था उन से बोला तुम लोग कुछ नहीं जानते हो॥ ५०। और यह बिचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये अच्छा है कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और यह संपूर्ण लोग नाश न होवे॥ ५१। यह बात वह आप से नहीं बोला परन्तु उस बरस का महायाजक होके भविष्यद्वाक्य से कहा कि यीशु उन लोगों के लिये मरने पर था॥ ५२। और केवल उन लोगों के लिये नहीं परन्तु इस लिये भी कि ईश्वर के सन्तानों को जो तितर बितर हुए हैं एक में एकट्ठे करे॥ ५३। सो उसी दिन से उन्हों ने उसे घात करने को आपस में बिचार किया॥ ५४। इस लिये यीशु प्रगट होके यिहूदियों के बीच में और नहीं फिरा परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्रईम नाम एक नगर को गया और अपने शिष्यों के संग वहां रहा ॥ ५५। यिहूदियों का निस्तार पर्व्व निकट था और बहुत लोग अपने तईं शुद्ध करने को निस्तार पर्व्व के आगे देश में से यिरूशलीम को गये॥ ५६। उन्हों ने यीशु को ढूंढ़ा और मन्दिर में खड़े हुए आपस में कहा तुम क्या समझते हो क्या वह पर्व्व में नहीं आवेगा॥ ५७। और प्रधान याजकों और फरीशियों ने भी आज्ञा दिई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहां है तो बतावे इस लिये कि वे उसे पकड़ें॥

१२. निस्तार पर्व्व के छः दिन आगे यीशु बैथनिया में आया जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उस ने मृतकों में से उठाया था॥ २। वहां उन्हों ने उस के लिये बियारी बनाई और मर्था ने सेवा किई और इलियाजर यीशु के संग बैठनेहारों में से एक था॥ ३। तब मरियम ने आध सेर जटामांसी का बहुमूल्य सुगंध तेल लेके यीशु के चरणों पर लगाया और उस के चरणों को अपने बालों से पोंछा और तेल के सुगंध से घर भर गया॥ ४। इस पर उस के शिष्यों में से शिमोन का पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो उसे पकड़वाने पर था बोला॥ ५। यह सुगंध तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियों पर बेचा गया और कंगालों को दिया गया॥ ६। वह यह बात इस लिये नहीं बोला कि वह कंगालों की चिन्ता करता था परन्तु इस लिये कि वह चोर था और थैली रखता था और जो उस में डाला जाता सो उठा लेता था॥ ७। यीशु ने कहा स्त्री को रहने दे. उस ने मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये यह रखा है॥ ८। कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा॥

९। यिहूदियों में से बहुत लोगों ने जाना कि यीशु वहां है और वे केवल यीशु के कारण नहीं परन्तु इलियाजर को देखने के लिये भी आये जिसे उस ने मृतकों में से उठाया था॥ १०। तब प्रधान याजकों ने इलियाजर को भी मार डालने का बिचार किया॥ ११। क्योंकि बहुत यिहूदियों ने उस के कारण जाके यीशु पर बिश्वास किया॥

१२। दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्व्व में आये थे अब उन्हों ने सुना कि यीशु यिरूशलीम में आता

है॥ १३। तब खजूरों के पत्ते लेके उस से मिलने को निकले और पुकारने लगे कि जय जय धन्य इस्रायेल का राजा जो परमेश्वर के नाम से आता है॥ १४। यीशु एक गदही के बच्चे को पाके उस पर बैठा॥ १५। जैसा लिखा है कि हे सियोन की पुत्री मत डर देख तेरा राजा गदही के बच्चे पर बैठा हुआ आता है॥ १६। यह बातें उस के शिष्यों ने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तब उन्हों ने स्मरण किया कि यह बातें उस के विषय में लिखी हुई थीं और कि उन्हों ने उस से यह किया था॥ १७। जो लोग उस के संग थे उन्हों ने साक्षी दिई कि उस ने इलियाजर को कबर में से बुलाया और उस को मृतकों में से उठाया॥ १८। लोग इसी कारण उस से आ मिले भी कि उन्हों ने सुना कि उस ने यह आश्चर्य्य कर्म्म किया था॥ १९। तब फरीशियों ने आपस में कहा क्या तुम देखते हो कि तुम से कुछ बन नहीं पड़ता. देखो संसार उस के पीछे गया है॥

२०। जो लोग पर्व्व में भजन करने को आये उन्हों में से कितने यूनानी लोग थे॥ २१। उन्हों ने गालील के बैतसैदा नगर के रहनेहारे फिलिप के पास आके उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु हम यीशु को देखने चाहते हैं॥ २२। फिलिप ने आके अंद्रिय से कहा और फिर अंद्रिय और फिलिप ने यीशु से कहा॥ २३। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मनुष्य के पुत्र की महिमा के प्रगट होने की घड़ी आ पहुंची है॥ २४। मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि गोहूं का दाना भूमि में पड़के मर न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो बहुत फल फलता है॥ २५। जो अपने प्राण को प्यार करे सो उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जाने सो अनन्त जीवन लों उस की रक्षा करेगा॥ २६। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा. यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उस का आदर करेगा॥ २७। अब मेरा मन व्याकुल हुआ है और मैं क्या कहूं. हे पिता मुझे इस घड़ी से बचा. परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ी लों आया हूं॥ २८। हे पिता अपने नाम की महिमा प्रगट कर. तब यह आकाशबाणी हुई कि मैं ने उस की महिमा प्रगट किई है और फिर प्रगट करूंगा॥ २९। तब जो लोग खड़े हुए सुनते थे उन्हों ने कहा कि मेघ गर्जा. औरों ने कहा कोई स्वर्गदूत उस से बोला॥ ३०। इस पर यीशु ने कहा यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ॥ ३१। अब इस जगत का बिचार होता है. अब इस जगत का अध्यक्ष बाहर निकाला जायगा॥ ३२। और मैं यदि पृथिवी पर से ऊंचा किया जाऊं तो सभों को अपनी ओर खींचूंगा॥ ३३। यह कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था॥ ३४। लोगों ने उस को उत्तर दिया कि हम ने व्यवस्था में से सुना है कि खीष्ट सदा लों रहेगा. तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचा किया जाना होगा. यह मनुष्य का पुत्र कौन है॥ ३५। यीशु ने उन से कहा उजियाला अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ है. जब लों उजियाला मिलता है तब लों चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे. जो अंधकार में चलता है सो नहीं जानता मैं कहां जाता हूं॥ ३६। जब लों उजियाला मिलता है उजियाले पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान होओ. यह बातें कहके यीशु चला गया और उन से छिपा रहा॥

३७। परन्तु यद्यपि उस ने उन के साम्ने इतने आश्चर्य्य कर्म्म किये थे तौभी उन्हों ने उस पर विश्वास न किया॥ ३८। कि यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा होवे जो उस ने कहा कि हे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का विश्वास किया है और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट किई गई है॥ ३९। इस कारण वे विश्वास न कर सके क्योंकि यिशैयाह ने फिर कहा॥ ४०। उस ने उन के नेत्र अंधे और उन का मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे नेत्रों से देखें और मन से बूझें और फिर आवें और मैं उन्हें चंगा करूं॥ ४१। जब यिशैयाह ने उस का ऐश्वर्य्य देखा और उस के विषय में बोला तब उस ने यह बातें कहीं॥ ४२। पर तौभी प्रधानों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया परन्तु

फरीशियों के कारण नहीं मान लिया न हो कि वे सभा मे से निकाले जायें ॥ ४३ । क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को ईश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी ॥

४४ । यीशु ने पुकारके कहा जो मुझ पर बिश्वास करता है सो मुझ पर नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे पर बिश्वास करता है ॥ ४५ । और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेहारे को देखता है ॥ ४६ । मै जगत में ज्योति सा आया हूं कि जो कोई मुझ पर बिश्वास करे सो अंधकार मे न रहे ॥ ४७ । और यदि कोई मेरी बातें सुनके बिश्वास न करे तो मै उसे दण्ड के योग्य नहीं ठहराता हूं क्योंकि मैं जगत को दण्ड के योग्य ठहराने को नहीं परन्तु जगत का त्राण करने को आया हूं ॥ ४८ । जो मुझे तुच्छ जाने और मेरी बातें ग्रहण न करे एक उस को दण्ड के योग्य ठहरानेहारा है . जो बचन मैं ने कहा है वही पिछले दिन में उसे दण्ड के योग्य ठहरावेगा ॥ ४९ । क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बात नहीं किई है परन्तु पिता ने जिस ने मुझे भेजा आप ही मुझे आज्ञा दिई है कि मैं क्या कहूं और क्या बोलूं ॥ ५० । और मैं जानता हू कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इस लिये मैं जो बोलता हूं सो जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं ॥

१३. निस्तार पर्ब्ब के आगे यीशु ने जाना कि मेरी घड़ी आ पहुंची है कि मैं इस जगत में से पिता के पास जाऊं और उस ने अपने निज लोगों को जो जगत में थे प्यार करके उन्हें अन्त लों प्यार किया ॥ २ । और बियारी के समय में जब शैतान शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के मन में उसे पकड़वाने का मत डाल चुका था ॥ ३ । तब यीशु यह जानके कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथों मे दिया है और कि मैं ईश्वर की ओर से निकल आया और ईश्वर के पास जाता हू ॥ ४ । बियारी से उठा और अपने कपड़े रख दिये और अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी ॥ ५ । तब पात्र में जल डालके वह शिष्यों के पांव धोने लगा और जिस अंगोछे से उस की कमर बंधी थी उस से पोंछने लगा ॥ ६ । तब वह शिमोन पितर के पास आया . उस ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप मेरे पांव धोते हैं ॥ ७ । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं जानता है परन्तु इस के पीछे जानेगा ॥ ८ । पितर ने उस से कहा आप मेरे पांव कभी न धोइयेगा . यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है ॥ ९ । शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे हाथ और सिर भी धोइये ॥ १० । यीशु ने उस से कहा जो नहाया है उस को पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो परन्तु सब नहीं ॥ ११ । वह तो अपने पकड़वानेहारे को जानता था इस लिये उस ने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो ॥

१२ । जब उस ने उन के पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे तब फिर बैठके उन्हों से कहा क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम से क्या किया है ॥ १३ । तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु पुकारते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मै वही हूं ॥ १४ । सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना उचित है ॥ १५ । क्योंकि मै ने तुम को नमूना दिया है कि जैसा मै ने तुम से किया है तुम भी वैसा करो ॥ १६ । मै तुम से सच सच कहता हू दास अपने स्वामी से बड़ा नही और न प्रेरित अपने भेजनेहारे से बड़ा है ॥ १७ । जो तुम यह बातें जानते हो यदि उन पर चलो तो धन्य हो ॥ १८ । मैं तुम सभों के विषय में नहीं कहता हू . जिन्हें मैं ने चुना है उन्हें मैं जानता हू . परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा होवे कि जो मेरे संग रोटी खाता है उस ने मेरे बिरुद्ध अपनी लात उठाई है ॥ १९ । मैं अब से इस के होने के आगे तुम से कहता हूं कि जब वह हो जाय तब तुम बिश्वास करो कि मैं वही हू ॥ २० । मैं तुम से सच सच कहता हू कि जिस किसी को मैं भेजूं उस को जो ग्रहण करता है

सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है॥

२१। यह बातें कहके यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा॥ २२। इस पर शिष्य लोग यह सन्देह करते हुए कि वह किस के विषय में बोलता है एक दूसरे की ओर ताकने लगे॥ २३। परन्तु यीशु के शिष्यों में से एक जिसे यीशु प्यार करता था उस की गोद में बैठा हुआ था॥ २४। सो शिमोन पितर ने उस को सैन किया कि पूछिये कौन है जिस के विषय में आप बोलते हैं॥ २५। तब उस ने यीशु की छाती पर उठंगके उस से कहा हे प्रभु कौन है॥ २६। यीशु ने उत्तर दिया वही है जिस को मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोके देऊंगा. और उस ने टुकड़ा डुबोके शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती को दिया॥ २७। उसी समय में टुकड़ा लेने के पीछे शैतान उस में पैठ गया. तब यीशु ने उस से कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर॥ २८। परन्तु बैठनेहारों में से किसी ने न जाना कि उस ने किस कारण यह बात उस से कही॥ २९। क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता था इस लिये कितनों ने समझा कि यीशु ने उस से कहा पर्ब्ब के लिये जो हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा कंगालों को कुछ दे॥ ३०। सो टुकड़ा लेने के पीछे वह तुरन्त बाहर गया. उस समय रात थी॥

३१। जब वह बाहर गया था तब यीशु ने कहा अब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रगट होती है और ईश्वर की महिमा उस के द्वारा प्रगट होती है॥ ३२। जो ईश्वर की महिमा उसके द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओर से उस की महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा॥३३। हे बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं. तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैं ने यिहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुम से भी कहता हूं॥ ३४। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे को प्यार करो. जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम भी एक दूसरे को प्यार करो॥ ३५। जो तुम आपस में प्यार करो तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो॥

३६। शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं. यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं तहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इस के उपरान्त तू मेरे पीछे आवेगा॥ ३७। पितर ने उस से कहा हे प्रभु मैं क्यों नहीं अब आप के पीछे आ सकता हूं. मैं आप के लिये अपना प्राण देऊंगा॥ ३८। यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा. मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जब लों तू तीन बार मुझ से न मुकरे तब लों मुर्ग न बोलेगा॥

१४. तुम्हारा मन व्याकुल न होवे. ईश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर विश्वास करो॥ २। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं नहीं तो मैं तुम से कहता. मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं॥ ३। और जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो॥ ४। और मैं कहां जाता हूं सो तुम जानते हो और मार्ग को जानते हो॥

५। थोमा ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम नहीं जानते हैं और मार्ग को हम क्योंकर जान सकें॥ ६। यीशु ने उस से कहा मैं ही मार्ग औ सत्य औ जीवन हूं. बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है॥ ७। जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से तुम उस को जानते हो और उस को देखा है॥

८। फिलिप ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखाइये तो हमारे लिये यही बहुत है॥ ९। यीशु ने उस से कहा हे फिलिप मैं इतने दिन से तुम्हारे संग हूं और क्या तू ने मुझे नहीं जाना है. जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें दिखाइये॥ १०। क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पिता में

हूं और पिता मुझ में है . जो बातें मैं तुम से कहता हूं सो अपनी ओर से नहीं कहता हू परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही इन कामों को करता है ॥ ११ । मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो ॥ १२ । मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर बिश्वास करे जो काम मैं करता हू उन्हे वह भी करेगा और इन से बड़े काम करेगा क्योंकि मै अपने पिता के पास जाता हूं ॥ १३ । और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे सोई मै करूंगा इस लिये कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा प्रगट होय ॥ १४ । जो तुम मेरे नाम से कुछ मांगो तो मै उसे करूगा ॥

१५ । जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओं को पालन करो ॥ १६ । और मैं पिता से मांगूंगा और वह तुम्हें दूसरा शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहे ॥ १७ । अर्थात् सत्यता का आत्मा जिसे ससार ग्रहण नहीं कर सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे जानता है . परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है और तुम्हों में होगा ॥ १८ । मैं तुम्हें अनाथ नही छोड़ूंगा मै तुम्हारे पास आऊगा ॥ १९ । अब थोड़ी बेर म ससार मुझे फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीओगे ॥ २० । उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता मे हूं और तुम मुझ मे हो और मै तुम मे हूं ॥ २१ । जो मेरी आज्ञाओं को पाके उन्हे पालन करता है वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिता का प्यारा होगा और मैं उसे प्यार करूंगा और अपने तई उस पर प्रगट करूंगा ॥

२२ । तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदा ने उस से कहा हे प्रभु आप किस लिये अपने तई हमों पर प्रगट करेंगे और ससार पर नही ॥ २३ । यीशु ने उस को उत्तर दिया यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बात को पालन करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उस के संग बास करेंगे ॥ २४ । जो मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिता की है जिस ने मुझे भेजा ॥ २५ । यह बातें मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कही हैं ॥ २६ । परन्तु शांतिदाता अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा और सब कुछ जो मै ने तुम से कहा है तुम्हें स्मरण करावेगा ॥ २७ । मैं तुम्हें शांति दे जाता हू मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूं . जैसा जगत देता है तैसा मै तुम्हें नहीं देता हू . तुम्हारा मन ब्याकुल न होय और डर न जाय ॥ २८ । तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा मै जाता हू और तुम्हारे पास फिर आऊगा . जो तुम मुझे प्यार करते तो मैं ने जो कहा कि मै पिता पास जाता हूं इस से तुम आनन्द करते क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है ॥ २९ । और मैं ने अब इस के होने के आगे तुम से कहा है कि जब वह हो जाय तब तुम बिश्वास करो ॥ ३० । मैं तुम्हारे संग और बहुत बातें न करूगा क्योंकि इस जगत का अध्यक्ष आता है और मुझ मे उस का कुछ नहीं है ॥ ३१ । परन्तु यह इस लिये है कि जगत जाने कि मै पिता को प्यार करता हू और जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दिई तैसा ही करता हूं . उठो हम यहा से चलें ॥

१५. मैं सच्ची दाखलता हूं और मेरा पिता किसान है ॥ २ । मुझ में जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता है और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है कि वह अधिक फल फले ॥ ३ । तुम तो उस बचन के गुण से जो मैं ने तुम से कहा है शुद्ध हो चुके ॥ ४ । तुम मुझ में रहो और मैं तुम मे . जैसे डाल जो वह दाखलता में न रहे तो आप से फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो मुझ में न रहो तो नहीं फल सकते हो ॥ ५ । मै दाखलता हू तुम लोग डालें हो . जो मुझ मे रहता है और मै उस में सो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझ से अलग तुम कुछ नहीं कर सकते हो ॥ ६ । यदि कोई मुझ में न रहे तो वह

ऐसा फेंका जाता जैसे डाल फेंकी जाती और सूख जाती और लोग ऐसी डालें बटोरके आग में डालते हैं और वे जल जाती हैं॥ ७। जो तुम मुझ में रहो और मेरी बातें तुम में रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा॥ ८। तुम्हारे बहुत फल फलने में मेरे पिता की महिमा प्रगट होती है और तुम मेरे शिष्य होओगे॥

९। जैसा पिता ने मुझ से प्रेम किया है तैसा मैं ने तुम से प्रेम किया है. मेरे प्रेम में रहो॥ १०। जैसे मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को पालन किया है और उस के प्रेम में रहता हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओं को पालन करो तो मेरे प्रेम में रहोगे॥ ११। मैं ने यह बातें तुम से इस लिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम्हों में रहे और तुम्हारा आनन्द संपूर्ण हो जाय॥ १२। यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम एक दूसरे को प्यार करो॥ १३। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं है कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण देवे॥ १४। तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं तो मेरे मित्र हो॥ १५। मैं आगे को तुम्हें दास नहीं कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी क्या करता है परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो अपने पिता से सुना है सो सब तुम्हें जनाया है॥ १६। तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम को देवे॥

१७। मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा देता हूं इस लिये कि तुम एक दूसरे को प्यार करो॥ १८। यदि संसार तुम से बैर करता है तुम जानते हो कि उन्हों ने तुम से पहिले मुझ से बैर किया॥ १९। जो तुम संसार के होते तो संसार अपनों को प्यार करता परन्तु तुम संसार के नहीं हो पर मैं ने तुम्हें संसार में से चुना है इसी लिये संसार तुम से बैर करता है॥ २०। जो वचन मैं ने तुम से कहा कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है सो स्मरण करो. जो उन्हों ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सतावेंगे जो मेरी बात को पालन किया है तो तुम्हारी भी पालन करेंगे॥ २१। परन्तु वे मेरे नाम के कारण तुम से यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारे को नहीं जानते हैं॥

२२। जो मैं न आता और उन से बात न करता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं है॥ २३। जो मुझ से बैर करता है सो मेरे पिता से भी बैर करता है॥ २४। जो मैं उन कामों को जो और किसी ने नहीं किये हैं उन्हों में न किये होता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हों ने देखके भी मुझ से और मेरे पिता से भी बैर किया है॥ २५। पर यह इस लिये है कि जो वचन उन्हों की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने मुझ से अकारण बैर किया सो पूरा होवे॥ २६। परन्तु शांतिदाता जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात् सत्यता का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है जब आवेगा तब वह मेरे विषय में साक्षी देगा॥ २७। और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे संग रहे हो॥

१६. मैं ने तुम से यह बातें कही हैं कि तुम ठोकर न खावो॥ २। वे तुम्हें सभा में से निकालेंगे हां वह समय आता है जिस में जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता हूं॥ ३। और वे तुम से इस लिये यह करेंगे कि उन्हों ने न पिता को न मुझ को जाना है॥ ४। परन्तु मैं ने तुम से यह बातें कही हैं कि जब वह समय आवे तब तुम उन्हें स्मरण करो कि मैं ने तुम से कह दिया. और मैं तुम से यह बातें आरंभ से न बोला क्योंकि मैं तुम्हारे संग था॥

५। पर अब मैं अपने भेजनेहारे के पास जाता हूं और तुम में से कोई नहीं मुझ से पूछता है कि आप कहां जाते हैं॥ ६। परन्तु मैं ने जो यह बातें तुम से कही हैं इस लिये तुम्हारे मन शोक से भर गये हैं॥ ७। तौभी मैं तुम से सच बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्योंकि जो मैं न

आऊं तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं आवेगा परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा ॥

८। और वह आके जगत को पाप के विषय में और धर्म्म के विषय में और विचार के विषय में समझावेगा ॥ ९। पाप के विषय में यह कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं ॥ १०। धर्म्म के विषय में यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे ॥ ११। विचार के विषय में यह कि इस जगत के अध्यक्ष का विचार किया गया है ॥ १२। मुझे और भी बहुत कुछ तुम से कहना है परन्तु तुम अब नहीं सह सकते हो ॥ १३। पर वह जब आवेगा अर्थात् सत्यता का आत्मा तब तुम्हें सारी सच्चाई लों मार्ग बतावेगा क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा सो कहेगा और वह आनेवाली बातें तुम से कह देगा ॥ १४। वह मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह मेरी बात में से लेके तुम से कह देगा ॥ १५। जो कुछ पिता का है सो सब मेरा है इस लिये मैं ने कहा कि वह मेरी बात में से लेके तुम से कह देगा ॥

१६। थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं ॥ १७। तब उस के शिष्यों में से कोई कोई आपस में बोले यह क्या है जो वह हम से कहता है कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे . और यह कि मैं पिता के पास जाता हूं ॥ १८। सो उन्हों ने कहा यह थोड़ी बेर की बात जो वह कहता है क्या है . हम नहीं जानते वह क्या कहता है ॥ १९। यीशु ने जाना कि वे मुझ से पूछा चाहते हैं और उन से कहा मैं जो बोला कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे क्या तुम इस के विषय में आपस में विचार करते हो ॥ २०। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और विलाप करोगे परन्तु संसार आनन्दित होगा . तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा ॥ २१। स्त्री को जनने में शोक होता है क्योंकि उस का समय आ पहुंचा है परन्तु जब वह बालक जन चुकी तब जगत में एक मनुष्य के उत्पन्न होने के आनन्द के कारण अपने क्लेश को फिर स्मरण नहीं करती है ॥ २२। और तुम्हें तो अभी शोक होता है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा ॥ २३। और उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे . मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगोगे वह तुम को देगा ॥ २४। अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा है . मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनन्द संपूर्ण होय ॥ २५। मैं ने यह बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं परन्तु समय आता है जिस में मैं तुम से दृष्टान्तों में और नहीं कहूंगा परन्तु खोलके तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा ॥ २६। उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम से नहीं कहता हूं कि मैं तुम्हारे लिये पिता से प्रार्थना करूंगा ॥ २७। क्योंकि पिता आप ही तुम्हें प्यार करता है इस लिये कि तुम ने मुझे प्यार किया है और यह विश्वास किया है कि मैं ईश्वर की ओर से निकल आया ॥ २८। मैं पिता की ओर से निकलके जगत में आया हूं . फिर जगत को छोड़के पिता पास जाता हूं ॥ २९। उस के शिष्यों ने उस से कहा देखिये अब तो आप खोलके कहते हैं और कुछ दृष्टान्त नहीं कहते हैं ॥ ३०। अब हमें ज्ञान हुआ कि आप सब कुछ जानते हैं और आप को प्रयोजन नहीं कि कोई आप से पूछे . इस से हम विश्वास करते हैं कि आप ईश्वर की ओर से निकल आये ॥ ३१। यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम अब विश्वास करते हो ॥ ३२। देखो समय आता है और अभी आया है जिस में तुम सब तितर बितर होके अपने अपने स्थान को जाओगे और मुझे अकेला छोड़ोगे . तौभी मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे संग है ॥ ३३। मैं ने यह बातें तुम से कही हैं इस लिये कि मुझ में तुम को शांति होय . जगत में तुम्हें क्लेश होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैं ने जगत को जीता है ॥

१७. यह बातें कहके यीशु ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है . अपने पुत्र की महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रगट करे ॥ २। क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया कि जिन्हें तू ने उस को दिया है उन सभों को वह अनन्त जीवन देवे ॥ ३। और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ को जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु खीष्ट को जिसे तू ने भेजा है पहचानें ॥ ४। मैं ने पृथिवी पर तेरी महिमा प्रगट किई है . जो काम तू ने मुझे करने को दिया सो मैं ने पूरा किया है ॥ ५। और अभी हे पिता तेरे संग जगत के होने के आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमा से तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर ॥

६। जिन मनुष्यों को तू ने जगत में से मुझ को दिया है उन्हों पर मैं ने तेरा नाम प्रगट किया है . वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझ को दिया और उन्हों ने तेरे वचन को पालन किया है ॥ ७। अब उन्हों ने जान लिया है कि सब कुछ जो तू ने मुझ को दिया है तेरी ओर से है ॥ ८। क्योंकि वह बातें जो तू ने मुझ को दिई हैं मैं ने उन्हों को दिई हैं और उन्हों ने उन को ग्रहण किया है और निश्चय जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकल आया और विश्वास किया है कि तू ने मुझे भेजा ॥ ९। मैं उन्हों के लिये प्रार्थना करता हूं . मैं संसार के लिये नहीं परन्तु जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन्हों के लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तेरे हैं ॥ १०। और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो मेरा है और मेरी महिमा इस में प्रगट हुई है ॥ ११। मैं अब जगत में नहीं रहूंगा परन्तु ये जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं . हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन को अपने नाम में रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें ॥ १२। जब मैं उन के संग जगत में था तब मैं ने तेरे नाम में उन की रक्षा किई . जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन को मैं ने रक्षा किई और उन में से कोई नाश नहीं हुआ केवल बिनाश का पुत्र जिस्तें धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे ॥ १३। अब मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगत में यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने में संपूर्ण पावें ॥ १४। मैं ने तेरा वचन उन्हों को दिया है और संसार ने उन से बैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार के नहीं हैं ॥ १५। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगत में से ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचा रख ॥ १६। जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार के नहीं हैं ॥ १७। अपनी सच्चाई से उन्हें पवित्र कर . तेरा वचन सच्चाई है ॥ १८। जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा तैसे मैं ने उन्हें भी जगत में भेजा है ॥ १९। और उन के लिये मैं अपने को पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाई से पवित्र किये जावें ॥

२०। और मैं केवल इन के लिये नहीं परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा से मुझ पर विश्वास करेंगे प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें ॥ २१। जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ में हूं तैसे वे भी हम में एक होवें इस लिये कि जगत विश्वास करे कि तू ने मुझे भेजा ॥ २२। और वह महिमा जो तू ने मुझ को दिई है मैं ने उन को दिई है कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें ॥ २३। मैं उन में और तू मुझ में कि वे एक में सिद्ध होवें और कि जगत जाने कि तू ने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा उन्हें प्यार किया है ॥ २४। हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं रहूं तहां वे भी जिन्हें तू ने मुझ को दिया है मेरे संग रहें कि वे मेरी महिमा को देखें जो तू ने मुझ को दिई क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति के आगे मुझे प्यार किया ॥ २५। हे धर्म्मी पिता संसार तुझे नहीं जानता है परन्तु मैं तुझे जानता हूं और ये लोग जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा ॥ २६। और मैं ने तेरा नाम उन को जनाया है और जनाऊंगा कि वह प्यार जिस से तू ने मुझे प्यार किया उन में रहे और मैं उन में रहूं ॥

१८. यीशु यह बातें कहके अपने शिष्यों के संग किद्रोन नाले के उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिस में वह और उस के शिष्य गये ॥ २। उस का पकड़वानेहारा यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार वहां अपने शिष्यों के संग एकट्ठा हुआ था ॥ ३। तब यिहूदा पलटन को और प्रधान याजकों औ फरीशियों की ओर से प्यादों को लेके दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये हुए वहां आया ॥ ४। सो यीशु सब बातें जो उस पर आनेवाली थीं जानके निकला और उन से कहा तुम किस को ढूंढ़ते हो ॥ ५। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि यीशु नासरी को . यीशु ने उन से कहा मैं हूं . और उस का पकड़वानेहारा यिहूदा भी उन के संग खड़ा था ॥ ६। ज्योंही उस ने उन से कहा मैं हूं त्योंही वे पीछे हटके भूमि पर गिर पड़े ॥ ७। तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किस को ढूंढ़ते हो . वे बोले यीशु नासरी को ॥ ८। यीशु ने उत्तर दिया मैं ने तुम से कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हों को जाने देओ ॥ ९। यह इस लिये हुआ कि जो वचन उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन में से मैं ने किसी को न खोया सो पूरा होवे ॥ १०। शिमोन पितर के पास खड्ग था सो उस ने उसे खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का दाहिना कान काट डाला . उस दास का नाम मलक था ॥ ११। तब यीशु ने पितर से कहा अपना खड्ग काठी में रख . जो कटोरा पिता ने मुझ को दिया है क्या मैं उसे न पीऊं ॥

१२। तब उस पलटन ने और सहस्रपति ने और यिहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़के बांधा ॥ १३। और पहिले उसे हन्नस के पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरस का महायाजक था उस का वह ससुर था ॥ १४। कियाफा वह था जिस ने यिहूदियों को परामर्श दिया कि एक मनुष्य का हमारे लोग के लिये मरना अच्छा है ॥

१५। शिमोन पितर और दूसरा शिष्य यीशु के पीछे हो लिये . वह शिष्य महायाजक का जान पहचान था और यीशु के संग महायाजक के अंगने के भीतर गया ॥ १६। परन्तु पितर बाहर द्वार पर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो महायाजक का जान पहचान था बाहर गया और द्वारपालिन से कहके पितर को भीतर ले आया ॥ १७। वह दासी अर्थात् द्वारपालिन पितर से बोली क्या तू भी इस मनुष्य के शिष्यों में से एक है . उस ने कहा मैं नहीं हूं ॥ १८। दास और प्यादे लोग जाड़े के कारण कोयले की आग सुलगाके खड़े हुए तापते थे और पितर उन के संग खड़ा हो तापने लगा ॥

१९। तब महायाजक ने यीशु से उस के शिष्यों के विषय में और उस के उपदेश के विषय में पूछा ॥ २०। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं ने जगत से खोलके बातें किई मैं ने सभा के घर में और मन्दिर में जहां यिहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा ॥ २१। तू मुझ से क्यों पूछता है . जिन्हों ने सुना उन्हों से पूछ ले कि मैं ने उन से क्या कहा . देख वे जानते हैं कि मैं ने क्या कहा ॥ २२। जब यीशु ने यह कहा तब प्यादों में से एक जो निकट खड़ा था उस को थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाजक को इस रीति से उत्तर देता है ॥ २३। यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है ॥ २४। हन्नस ने यीशु को बंधे हुए कियाफा महायाजक के पास भेजा ॥

२५। शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था . तब उन्हों ने उस से कहा क्या तू भी उस के शिष्यों में से एक है . उस ने मुकरके कहा मैं नहीं हूं ॥ २६। महायाजक के दासों में से एक दास जो उस मनुष्य का कुटुम्ब था जिस का कान पितर ने काट डाला बोला क्या मैं ने तुझे बारी में उस के संग न देखा ॥ २७। पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला ॥

२८। तब भोर हुआ और वे यीशु को कियाफा के पास से अध्यक्षभवन पर ले गये परन्तु वे आप

अध्यक्षभवन के भीतर नहीं गये इस लिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तार पर्व्व का भोजन खावें ॥ २९। सो पिलात उन पास निकल आया और कहा तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो ॥ ३०। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि जो यह कुकर्म्मी न होता तो हम उसे आप के हाथ न सौंपते ॥ ३१। पिलात ने उन से कहा तुम उस को लेओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का विचार करो . यिहूदियों ने उस से कहा किसी को बध करने का हमें अधिकार नहीं है ॥ ३२। यह इस लिये हुआ कि यीशु का वचन जिसे कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था पूरा होवे ॥

३३। तब पिलात फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु को बुलाके उस से कहा क्या तू यिहूदियों का राजा है ॥ ३४। यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या आप अपनी ओर से यह बात कहते हैं अथवा औरों ने मेरे विषय में आप से कही ॥ ३५। पिलात ने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं . तेरे ही लोगों ने और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौंपा . तू ने क्या किया है ॥ ३६। यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है . जो मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियों के हाथ में न सौंपा जाता . परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं है ॥ ३७। पिलात ने उस से कहा फिर भी तू राजा है . यीशु ने उत्तर दिया कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं राजा हूं . मैं ने इस लिये जन्म लिया है और इस लिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी देऊं . जो कोई सत्य की ओर है सो मेरा शब्द सुनता है ॥ ३८। पिलात ने उस से कहा सत्य क्या है और यह कहके फिर यिहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूं ॥ ३९। परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं निस्तार पर्व्व में तुम्हारे लिये एक जन को छोड़ देऊं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियों के राजा को छोड़ देऊं ॥ ४०। तब सभों ने फिर पुकारा कि इस को नहीं परन्तु बरब्बा को . और बरब्बा डाकू था ॥

१९.

तब पिलात ने यीशु को लेके उसे कोड़े मारे ॥ २। और योद्धाओं ने कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा और उसे बैंजनी वस्त्र पहिराया ॥ ३। और कहा हे यिहूदियों के राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे ॥

४। तब पिलात ने फिर बाहर निकलके लोगों से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूं ॥ ५। सो यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और उस ने उन्हों से कहा देखो यही मनुष्य है ॥ ६। जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा तब उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये . पिलात ने उन से कहा तुम उसे लेके क्रूश पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता हूं ॥ ७। यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्था के अनुसार वह बध होने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा ॥ ८। जब पिलात ने यह बात सुनी तब और भी डर गया ॥ ९। और फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु से बोला तू कहां से है . परन्तु यीशु ने उस को उत्तर न दिया ॥ १०। पिलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता है कि तुझे क्रूश पर चढ़ाने का मुझ को अधिकार है और तुझे छोड़ देने का मुझ को अधिकार है ॥ ११। यीशु ने उत्तर दिया जो आप को ऊपर से न दिया जाता तो आप को मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये जो मुझे आप के हाथ में पकड़वाता है उस को अधिक पाप है ॥ १२। इस से पिलात ने उस को छोड़ देने चाहा परन्तु यिहूदियों ने पुकारके कहा जो आप इस को छोड़ देवें तो आप कैसर के मित्र नहीं हैं . जो कोई अपने को राजा कहता है सो कैसर के विरुद्ध बोलता है ॥ १३। यह बात सुनके पिलात यीशु को बाहर लाया और जो स्थान चबूतरा परन्तु इब्रीय भाषा में गब्बथा कहावता है उस स्थान में विचार आसन पर बैठा ॥ १४।

निस्तार पर्व्व की तैयारी का दिन और दो पहर के निकट था . तब उस ने यिहूदियों से कहा देखो तुम्हारा राजा ॥ १५ । परन्तु उन्हों ने पुकारा कि ले जाओ ले जाओ उसे क्रूश पर चढ़ाओ . पिलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूश पर चढ़ाऊंगा . प्रधान याजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है ॥ १६ । तब उस ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाये जाने को उन्हों के हाथ सौंपा . तब वे उसे पकड़के ले गये ॥

१७ । और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थान को जो खोपड़ी का स्थान कहावता और इब्रीय भाषा में गलगथा कहावता है निकल गया ॥ १८ । वहां उन्हों ने उस को और उस के संग दो और मनुष्यों को क्रूशों पर चढ़ाया एक को इधर और एक को उधर और बीच में यीशु को ॥ १९ । और पिलात ने दोषपत्र लिखके क्रूश पर लगाया और लिखी हुई बात यह थी यीशु नासरी यिहूदियों का राजा ॥ २० । यह दोषपत्र बहुत यिहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूश पर चढ़ाया गया नगर के निकट था और पत्र इब्राय औ यूनानीय औ रोमीय भाषा में लिखा हुआ था ॥ २१ । तब यिहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलात से कहा यिहूदियों का राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उस ने कहा मैं यिहूदियों का राजा हूं ॥ २२ । पिलात ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिखा है सो लिखा है ॥

२३ । जब योद्धाओं ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाया था तब उस के कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धा के लिये एक भाग . और अंगा भी लिया परन्तु अंगा बिन सीअन ऊपर से नीचे लों बिना हुआ था ॥ २४ । इस लिये उन्हों ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठियां डालें कि वह किस का होगा . जिस्तें धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं . सो योद्धाओं ने यह किया ॥

२५ । परन्तु यीशु की माता और उस की माता की बहिन मरियम जो क्लियोपा की स्त्री थी और मरियम मगदलीनी उस के क्रूश के निकट खड़ी थीं ॥ २६ । सो यीशु ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिसे वह प्यार करता था उस के निकट खड़े हुए देखके अपनी माता से कहा हे नारी देखिये आप का पुत्र ॥ २७ । तब उस ने उस शिष्य से कहा देख तेरी माता . और उस समय से उस शिष्य ने उस को अपने घर में ले लिया ॥

२८ । इस के पीछे यीशु ने यह जानके कि अब सब कुछ हो चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा हो जाय इस लिये कहा मैं पियासा हूं ॥ २९ । सिरके से भरा हुआ एक बर्त्तन धरा था सो उन्हों ने इसपंज को सिरके में भिंगाके एसोब के नल पर रखके उस के मुंह में लगाया ॥ ३० । जब यीशु ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा ॥

३१ । वह दिन तैयारी का दिन था और वह विश्रामवार बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें विश्राम के दिन क्रूश पर न रहें यिहूदियों ने पिलात से विन्ती किई कि उन की टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें ॥ ३२ । सो योद्धाओं ने आके पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी जो यीशु के संग क्रूश पर चढ़ाये गये थे ॥ ३३ । परन्तु यीशु पास आके जब उन्हों ने देखा कि वह मर चुका है तब उस की टांगें न तोड़ीं ॥ ३४ । परन्तु योद्धाओं में से एक ने बर्छे से उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला ॥ ३५ । इस के देखनेहारे ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इस लिये कि तुम विश्वास करो ॥ ३६ । क्योंकि यह बातें इस लिये हुईं कि धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि उस की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी ॥ ३७ । और फिर धर्म्मपुस्तक का दूसरा एक वचन है कि जिसे उन्हों ने बेधा उस पर वे दृष्टि करेंगे ॥

३८ । इस के पीछे अरिमथिया नगर के यूसफ ने जो यीशु का शिष्य था परन्तु यिहूदियों के डर से इस को छिपाये रहता था पिलात से विन्ती किई कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं और पिलात ने आज्ञा दिई सो वह आके यीशु की लोथ ले गया ॥

३९। निकोदीम भी जो पहिले रात को यीशु पास आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्ध-रस और एलवा लेके आया ॥ ४०। तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यिहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध के संग चद्दर में लपेटा ॥ ४१। उस स्थान पर जहां यीशु क्रूश पर चढ़ाया गया एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था ॥ ४२। सो यिहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशु को वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी ॥

२०. अठवारे के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधियारा रहते ही कबर पर आई और पत्थर को कबर से सरकाया हुआ देखा ॥ २। तब वह दौड़ी और शिमोन पितर और उस दूसरे शिष्य के पास जिसे यीशु प्यार करता था आके उन से बोली वे प्रभु को कबर में से ले गये हैं और हम नहीं जानती कि उसे कहां रखा है ॥ ३। तब पितर और वह दूसरा शिष्य निकलके कबर पर आये ॥ ४। वे दोनों एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य पितर से शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा और कबर पर पहिले पहुंचा ॥ ५। और उस ने झुकके चद्दर पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर नहीं गया ॥ ६। तब शिमोन पितर उस के पीछे से आ पहुंचा और कबर के भीतर गया और चद्दर पड़ी हुई देखी ॥ ७। और वह अंगोछा जो उस के सिर पर था चद्दर के संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा ॥ ८। तब दूसरा शिष्य भी जो कबर पर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके विश्वास किया ॥ ९। वे तो अब लों धर्म्म-पुस्तक का वचन नहीं समझते थे कि उस को मृतकों में से जी उठना होगा ॥

१०। तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये ॥ ११। परन्तु मरियम रोती हुई कबर के पास बाहर खड़ी रही और रोते रोते कबर की ओर झुकी ॥ १२। और दो दूतों को उजला वस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां यीशु की लोथ पड़ी थी तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा था ॥ १३। उन्हों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है. वह उन से बोली वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है ॥ १४। यह कहके उस ने पीछे फिरके यीशु को खड़े देखा और नहीं जानती थी कि यीशु है ॥ १५। यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है किस को ढूंढ़ती है. उस ने यह समझके कि माली है उस से कहा हे प्रभु जो आप ने उस को उठा लिया है तो मुझ से कहिये कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी ॥ १६। यीशु ने उस से कहा हे मरियम. वह पीछे फिरके उस से बोली हे रब्बूनी अर्थात् हे गुरु ॥ १७। यीशु ने उस से कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता के पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयों के पास जाके उन से कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर औ तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता हूं ॥ १८। मरियम मगदलीनी ने जाके शिष्यों को सन्देश दिया कि मैं ने प्रभु को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं ॥

१९। अठवारे के उस पहिले दिन को सांझ होते हुए और जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियों के डर के मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीच में खड़ा होके उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय ॥ २०। और यह कहके उस ने अपने हाथ और अपना पंजर उन को दिखाये. तब शिष्य लोग प्रभु को देखके आनन्दित हुए ॥ २१। यीशु ने फिर उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय. जैसे पिता ने मुझे भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं ॥ २२। यह कहके उस ने फूंक दिया और उन से कहा पवित्र आत्मा लेओ ॥ २३। जिन्हों के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किये जाते हैं. जिन्हों के तुम रखो वे रखे हुए हैं ॥

२४। परन्तु बारहों में से एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम कहावता है जब यीशु आया तब उन के संग नहीं था ॥ २५। सो दूसरे शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु को देखा है. उस ने उन से कहा जो मैं उस के हाथों में कीलों का चिन्ह न देखूं और कीलों के चिन्ह में अपनी उंगली न डालूं और उस के

पंजर में अपना हाथ न डालूं तो मैं विश्वास न करूंगा॥ २६। आठ दिन के पीछे उस के शिष्य लोग फिर घर के भीतर थे और थोमा उन के संग था. तब द्वार बन्द होते हुए योशु आया और बीच में खड़ा होके कहा तुम्हारा कल्याण होय॥ २७। तब उस ने थोमा से कहा अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाके मेरे पंजर मे डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो॥ २८। थोमा ने उस को उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर॥ २९। योशु ने उस से कहा हे थोमा तू ने मुझे देखा है इस लिये विश्वास किया है. धन्य वे हैं जो विन देखे विश्वास करें॥

३०। योशु ने अपने शिष्यों के आगे बहुत और आश्चर्य्य कर्म्म भी किये जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥ ३१। परन्तु ये लिखे गये हैं इस लिये कि तुम विश्वास करो कि योशु जो है सो ईश्वर का पुत्र खीष्ट है और कि विश्वास करने से तुम को उस के नाम से जीवन होय॥

२१. इस के पोछे योशु ने फिर अपने तई तिबरिया के समुद्र के तीर पर शिष्यों को दिखाया और इस रीति से दिखाया॥ २। शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम कहावता है और गालील के काना नगर का नथनेल और जबदी के दोनों पुत्र और उस के शिष्यों में से दो और जन एक संग थे॥ ३। शिमोन पितर ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूं. वे उस से बोले हम भी तेरे संग जायेंगे. सो वे निकलके तुरन्त नाव पर चढ़े और उस रात कुछ नहीं पकड़ा॥ ४। जब भोर हुआ तब योशु तीर पर खड़ा हुआ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि योशु है॥ ५। तब योशु ने उन से कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है. उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि नहीं॥ ६। उस ने उन से कहा नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे. सो उन्हों ने डाला और अब मछलियों के झुण्ड के कारण वे उसे खींच न सके॥ ७। इस लिये वह शिष्य जिसे योशु प्यार करता था पितर से बोला यह तो प्रभु है. शिमोन पितर ने जब सुना कि प्रभु है तब कमर में अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नगा था और समुद्र में कूद पड़ा॥ ८। परन्तु दूसरे शिष्य लोग नाव पर मछलियों का जाल घसोटते हुए चले आये क्योंकि वे तीर से दूर नहीं प्राय दो सौ हाथ पर थे॥ ९। जब वे तीर पर उतरे तब उन्हों ने कोयले की आग धरी हुई और मछली उस पर रखी हुई और रोटी देखी॥ १०। योशु ने उन से कहा जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं उन में से ले आओ॥ ११। शिमोन पितर ने जाके जाल को जो एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा था तीर पर खींच लिया और इतनो होने से भी जाल नहीं फटा॥ १२। योशु ने उन से कहा कि आओ भोजन करो. परन्तु शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उस से पूछे आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है॥ १३। तब योशु ने आके रोटी लेके उन को दिई और वैसे ही मछली भी॥ १४। यह अब तीसरी बेर हुआ कि योशु ने मृतकों में से उठके अपने शिष्यों को दर्शन दिया॥

१५। तब भोजन करने के पीछे योशु ने शिमोन पितर से कहा हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्हों से अधिक प्यार करता है. वह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. उस ने उस से कहा मेरे मेम्नों को चरा॥ १६। उस ने फिर दूसरी बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. वह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की रखवाली कर॥ १७। उस ने तीसरी बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. पितर उदास हुआ कि योशु ने उस से तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार करता है और उस से बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. योशु ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा॥ १८। मैं तुझ से सच सच कहता हूं जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था वहां चलता था परन्तु जब तू

बूढ़ा होगा तब अपने हाथ फैलावेगा और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे वहां तुझे ले जायगा ॥ १९ । यह कहने से उस ने पता दिया कि पितर कैसी मृत्यु से ईश्वर की महिमा प्रगट करेगा और यह कहके उस से बोला मेरे पीछे हो ले ॥

२० । पितर ने मुंह फेरके उस शिष्य को जिसे यीशु प्यार करता था और जिस ने बियारी में उस की छाती पर उठंगके कहा हे प्रभु आप का पकड़वानेहारा कौन है पीछे से आते देखा ॥ २१ । उस को देखके पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु इस का क्या होगा ॥ २२ । यीशु ने उस से कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों रहे तो तुझे क्या . तू मेरे पीछे हो ले ॥ २३ । इस लिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा . तौभी यीशु ने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों रहे तो तुझे क्या ॥

२४ । यह तो वह शिष्य है जो इन बातों के विषय में साक्षी देता है और जिस ने यह बातें लिखीं और हम जानते हैं कि उस की साक्षी सत्य है ॥ २५ । और बहुत और काम भी हैं जो यीशु ने किये . जो वे एक एक करके लिखे जाते तो मुझे बूझ पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे जाते जगत में भी न समाते । आमीन ॥

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त।

---

१. हे थियोफिल वह पहिला वृत्तान्त मैं ने सब बातों के विषय में रचा जो यीशु उस दिन लों करने और सिखाने का आरंभ किये था ॥ २ । जिस दिन वह पवित्र आत्मा के द्वारा से जिन प्रेरितों को उस ने चुना था उन्हें आज्ञा दे करके उठा लिया गया ॥ ३ । और उस ने उन्हें बहुतेरे अचल प्रमाणों से अपने तईं दुःख भोगने के पीछे जीवता दिखाया कि चालीस दिन लों वे उसे देखा करते थे और वह ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें करता था ॥ ४ । और जब वह उन के संग एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरूशलीम को मत छोड़ जाओ परन्तु पिता की जो प्रतिज्ञा तुम ने मुझ से सुनी है उस की बाट जोहते रहो ॥ ५ । क्योंकि योहन ने तो जल से बपतिसमा दिया परन्तु थोड़े दिनों के पीछे तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा दिया जायगा ॥ ६ । सो उन्हों ने एकट्ठे होके उस से पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी समय में इस्रायेली लोगों को राज्य फेर देते हैं ॥ ७ । उस ने उन से कहा जिन कालों अथवा समयों को पिता ने अपने ही वश में रखा है उन्हें जानने का अधिकार तुम्हें नहीं है ॥ ८ । परन्तु तुम पर पवित्र आत्मा के आने से तुम सामर्थ्य पाओगे और यिरूशलीम में और सारे यिहूदिया और शोमिरोन देशों में और पृथिवी के अन्त लों मेरे साक्षी होओगे ॥ ९ । यह करके वह उन के देखते हुए ऊपर उठाया गया और मेघ ने उसे उन की दृष्टि से छिपा लिया ॥ १० । ज्योंही वे उस के जाते हुए स्वर्ग की ओर ताकते रहे त्योंही देखो दो पुरुष उजला वस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े हो गये ॥ ११ । और कहा हे गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्ग की ओर देखते हुए खड़े हो . यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा

लिया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से आवेगा ॥

१२। तब वे जैतून नाम पर्ब्बत से जो यिरूशलीम के निकट अर्थात् एक बिश्रामवार की बाट भर दूर है यिरूशलीम को लौटे ॥ १३। और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरी में गये जहां वे अर्थात् पितर औ याकूब औ योहन औ अंद्रिय और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और अलफई का पुत्र याकूब औ शिमोन उद्योगी और याकूब का भाई यिहूदा रहते थे ॥ १४। ये सब एक चित्त होके स्त्रियों के और यीशु की माता मरियम के संग और उस के भाइयों के संग प्रार्थना और बिन्ती में लगे रहते थे ॥

१५। उन दिनों में पितर शिष्यों के बीच में खड़ा हुआ . एक सौ बीस जन के अटकल एकट्ठे थे ॥ १६। और कहा हे भाइयो अवश्य था कि धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा होय जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यिहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेहारों का अगुवा था आगे से कह दिया ॥ १७। क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाई का अधिकार पाया था ॥ १८। उस ने तो अधर्म्म की मजूरी से एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीच से फट गया और उस की सब अन्तडियां निकल पड़ीं ॥ १९। यह बात यिरूशलीम के सब निवासियों को जान पड़ी इस लिये वह खेत उन की भाषा में हकलदामा अर्थात् लोहू का खेत कहलाया ॥ २०। गीतों के पुस्तक में लिखा है कि उस का घर उजाड़ होय और उस में कोई न बसे और कि उस का रखवाली का काम दूसरा लेवे ॥ २१। इस लिये प्रभु यीशु योहन के बपतिसमा के समय से लेके उस दिन लों कि वह हमारे पास से उठा लिया गया जितने दिन हमारे बीच में आया जाया किया ॥ २२। जो मनुष्य सब दिन हमारे संग रहे हैं उन्हों में से उचित है कि एक जन हमारे संग यीशु के जी उठने का साक्षी होय ॥ २३। तब उन्हों ने दो को अर्थात् यूसफ को जो बर्शबा कहावता है जिस का उपनाम युस्त था और मत्तथियाह को खड़ा किया ॥ २४। और प्रार्थना करके कहा हे प्रभु सभों के अन्तर्यामी इन दोनों में से एक को जिसे तू ने चुना है ठहरा दे ॥ २५। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का अधिकार पावे जिस से यिहूदा पतित हुआ कि अपने निज स्थान को जाय ॥ २६। तब उन्हों ने चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तथियाह के नाम पर निकली और वह एग्यारह प्रेरितों के संग गिना गया ॥

२. जब पेंतिकोष्ट पर्ब्ब का दिन आ पहुंचा तब वे सब एक चित्त होकर एकट्ठे हुए थे ॥ २। और अचांचक प्रबल बयार के चलने का सा स्वर्ग से एक शब्द हुआ जिस से सारा घर जहां वे बैठे थे भर गया ॥ ३। और आग की सी जीभें अलग अलग होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और वह हर एक जन पर ठहर गई ॥ ४। तब वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और जैसे आत्मा ने उन्हें बुलवाया तैसे आन आन बोलियां बोलने लगे ॥

५। यिरूशलीम में कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते थे जो स्वर्ग के नीचे के हर एक देश से आये थे ॥ ६। इस शब्द के होने पर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये क्योंकि उन्हों ने उन को हर एक अपनी ही भाषा में बोलते हुए सुना ॥ ७। और वे सब विस्मित और अचंभित हो आपस में कहने लगे देखो ये सब जो बोलते हैं क्या गालीली लोग नहीं हैं ॥ ८। फिर हम लोग क्योंकर हर एक अपने अपने जन्म देश की भाषा में सुनते हैं ॥ ९। हम जो पर्थी और मादी और एलमी लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया औ कपदोकिया और पन्त औ आशिया ॥ १०। और फ्रूगिया औ पंफुलिया और मिसर औ कुरीनी के आसपास का लूबिया देश इन सब देशों के निवासी और रोम नगर से आये हुए लोग क्या यिहूदी क्या यिहूदीय मतावलंबी ॥ ११। क्रीतीय भी औ अरब लोग हैं उन्हें अपनी अपनी बोलियों में ईश्वर के महाकार्य्यों की बात बोलते हुए सुनते हैं ॥ १२। सो वे सब विस्मित हो दुबधा में पड़े और एक दूसरे से कहने लगा इस का अर्थ क्या है ॥ १३। परन्तु और लोग

ठट्ठे में कहने लगे वे नई मदिरा से छकाछक हुए हैं॥

१४। तब पितर ने एग्यारह शिष्यों के संग खड़ा होके ऊंचे शब्द से उन्हें कहा हे यिहूदियो और यिरूशलीम के सब निवासियो इस बात को बूझ लो और मेरी बातों पर कान लगाओ॥ १५। ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो क्योंकि पहर ही दिन चढ़ा है॥ १६। परन्तु यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता से कही गई॥ १७। कि ईश्वर कहता है पिछले दिनों में ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्यों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां भविष्यद्वाक्य कहेंगे और तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे॥ १८। और भी मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा और वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे॥ १९। और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम और नीचे पृथिवी पर चिन्ह अर्थात् लोहू और आग और धूंए की भाफ दिखाऊंगा॥ २०। परमेश्वर के बड़े और प्रसिद्ध दिन के आने के पहिले सूर्य्य अंधियारा और चांद लोहू सा हो जायगा॥ २१। और जो कोई परमेश्वर के नाम की प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा॥

२२। हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो. यीशु नासरी एक मनुष्य जिस का प्रमाण ईश्वर से आश्चर्य्य कर्म्मों और अद्भुत कामों और चिन्हों से तुम्हें दिया गया है जो ईश्वर ने तुम्हारे बीच में जैसा तुम आप भी जानते हो उस के द्वारा से किये॥ २३। उसी को जब वह ईश्वर के स्थिर मत और भविष्यत ज्ञान के अनुसार सौंपा गया तुम ने लिया और अधर्म्मियों के हाथों के द्वारा क्रूश पर ठोंकके मार डाला॥ २४। उसी को ईश्वर ने मृत्यु के बंधन खोलके जिला उठाया क्योंकि अन्होना था कि वह मृत्यु के वश में रहे॥ २५। क्योंकि दाऊद ने उस के विषय में कहा मैं ने परमेश्वर को सदा अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी ओर है जिस्तें मैं डिग न जाऊं॥ २६। इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरी जीभ हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशा में बिश्राम करेगा॥ २७। क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न छोड़ेगा और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा॥ २८। तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है तू मुझे अपने सन्मुख आनन्द से परिपूर्ण करेगा॥

२९। हे भाइयो उस कुलपति दाऊद के विषय में मैं तुम से खोलके कहूं. वह तो मरा और गाड़ा भी गया और उस की कबर आज लों हमारे बीच में है॥ ३०। सो भविष्यद्वक्ता होके और यह जानके कि ईश्वर ने मुझ से किरिया खाई है कि मैं शरीर के भाव से खीष्ट को तेरे वंश में से उत्पन्न करूंगा कि वह तेरे सिंहासन पर बैठे॥ ३१। उस ने होन्हार को आगे से देखके खीष्ट के जी उठने के विषय में कहा कि उस का प्राण परलोक में नहीं छोड़ा गया और न उस का देह सड़ गया॥ ३२। इसी यीशु को ईश्वर ने जिला उठाया और इस बात के हम सब साक्षी हैं॥ ३३। सो ईश्वर के दहिने हाथ ऊंच पद प्राप्त करके और पवित्र आत्मा के विषय में जो कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पिता से पाके उस ने यह जो तुम अब देखते और सुनते हो उंडेल दिया है॥ ३४। क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया परन्तु उस ने कहा कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा॥ ३५। जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ॥ ३६। सो इस्रायेल का सारा घराना निश्चय जाने कि यह यीशु जिसे तुम ने क्रूश पर घात किया इसी को ईश्वर ने प्रभु और खीष्ट ठहराया है॥

३७। तब सुननेहारों के मन छिद गये और वे पितर से और दूसरे प्रेरितों से बोले हे भाइयो हम क्या करें॥ ३८। पितर ने उन से कहा पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु खीष्ट के नाम से बपतिसमा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे॥ ३९। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हों के लिये और तुम्हारे सन्तानों के लिये और दूर दूर के सब लोगों के लिये है जितनों को परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने पास बुलावे॥ ४०। बहुत और बातों से भी उस ने साक्षी और उपदेश दिया कि इस समय के टेढ़े लोगों से बच आओ॥

४१। तब जिन्हों ने उस का बचन आनन्द से ग्रहण किया उन्हों ने बपतिसमा लिया और उस दिन तीन सहस्र जन के अटकल शिष्यों में मिल गये॥ ४२। और वे प्रेरितों के उपदेश में और संगति में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना में लगे रहते थे॥ ४३। और सब मनुष्यों को भय हुआ और बहुतेरे अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे॥ ४४। और सब विश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्हों की सब संपत्ति साझे की थी॥ ४५। और वे धन संपत्ति को बेचके जैसा जिस को प्रयोजन होता था तैसा सभों में बांट लेते थे॥ ४६। और वे प्रतिदिन मन्दिर में एक चित्त होके लगे रहते थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सूधाई से भोजन करते थे॥ ४७। और ईश्वर की स्तुति करते थे और सब लोगों का उन पर अनुग्रह था. और प्रभु त्राण पानेहारों को प्रतिदिन मण्डली में मिलाता था॥

३. तीसरे पहर प्रार्थना के समय में पितर और योहन एक संग मन्दिर को जाते थे॥ २। और लोग किसी मनुष्य को जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था लिये जाते थे जिस को वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहावता है रख देते थे कि वह मन्दिर में जानेहारों से भीख मांगे॥ ३। उस ने पितर और योहन को देखके कि मन्दिर में जाने पर हैं उन से भीख मांगी॥ ४। पितर ने योहन के संग उस की ओर दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख॥ ५। सो वह उन से कुछ पाने की आशा करते हुए उन की ओर ताकने लगा॥ ६। परन्तु पितर ने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह जो मेरे पास है मैं तुझे देता हूं यीशु खीष्ट नासरी के नाम से उठ और चल॥ ७। तब उस ने उस का दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उस के पांवों और घुट्टियों में बल हुआ॥ ८। और वह उछलके खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्वर की स्तुति करता हुआ उन के संग मंदिर में प्रवेश किया॥ ९। सब लोगों ने उसे फिरते और ईश्वर की स्तुति करते हुए देखा॥ १०। और उस को चीन्हा कि यही है जो मंदिर के सुन्दर फाटक पर भीख के लिये बैठा रहता था और जो उस को हुआ था उस से वे अति अचंभित और बिस्मित हुए॥ ११। जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर और योहन को पकड़े रहा सब लोग बहुत अचंभा करते हुए उस ओसारे में जो सुलेमान का कहावता है उन के पास दौड़े आये॥

१२। यह देखके पितर ने लोगों से कहा हे इस्रायेली लोगो तुम इस मनुष्य से क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हम ने अपनी ही शक्ति अथवा भक्ति से इस को चलने का सामर्थ्य दिया होता॥ १३। इब्राहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे पितरों के ईश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा प्रगट किई जिसे तुम ने पकड़वाया और उस को पिलात के सन्मुख नकारा जब कि उस ने उसे छोड़ देने को ठहराया था॥ १४। परन्तु तुम ने उस पवित्र और धर्म्मी को नकारा और मांगा कि एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय॥ १५। और तुम ने जीवन के कर्त्ता को घात किया परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया और इस बात के हम साक्षी हैं॥ १६। और उस के नाम के बिश्वास से उस के नाम ही ने इस मनुष्य को जिसे तुम देखते औ जानते हो सामर्थ्य दिया है हां जो बिश्वास उस के द्वारा से है उसी से यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभों के साम्ने इस को मिला है॥

१७। और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्हों ने यह काम अज्ञानता से किया और वैसे तुम्हारे प्रधानों ने भी किया॥ १८। परन्तु ईश्वर ने जो बात उस ने अपने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से आगे बताई थी कि खीष्ट दुःख भोगेगा वह बात इस रीति से पूरी किई॥ १९। इस लिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें जीव का ठंढा होने का समय परमेश्वर की ओर से आवे॥ २०। और वह यीशु खीष्ट को भेजे

जिस का समाचार तुम्हें आगे से कहा गया है॥ २१। जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब बातों के सुधारे जाने के उस समय लों ग्रहण करे जिस की कथा ईश्वर ने आदि से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कही है॥

२२। मूसा ने पितरों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुम से कहे उन सब बातों में तुम उस की सुनो॥ २३। परन्तु हर एक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता को न सुने लोगों में से नाश किया जायगा॥ २४। और सब भविष्यद्वक्ताओं ने भी शमूएल से और उस के पीछे के भविष्यद्वक्ताओं से लेके जितनों ने बातें किईं इन दिनों का भी आगे से संदेश दिया है॥ २५। तुम भविष्यद्वक्ताओं के और उस नियम के सन्तान हो जो ईश्वर ने हमारे पितरों के संग बांधा कि उस ने इब्राहीम से कहा पृथिवी के सारे घराने तेरे वंश के द्वारा से आशीष पावेंगे॥ २६। तुम्हारे पास ईश्वर ने अपने सेवक यीशु को उठाके पहिले भेजा जो तुम में से हर एक को तुम्हारे कुकर्म्मों से फिराने में तुम्हें आशीष देता था॥

४. जिस समय वे लोगों से कह रहे याजक लोग और मन्दिर के पहरुओं का अध्यक्ष और सदूकी लोग उन पर चढ़ आये॥ २। कि वे अप्रसन्न होते थे इस लिये कि वे लोगों को सिखाते थे और मृतकों में से जी उठने की बात यीशु के प्रमाण से प्रचार करते थे॥ ३। और उन्हों ने उन्हें पकड़के बिहान लों बन्दीगृह में रखा क्योंकि सांझ हुई थी॥ ४। परन्तु वचन के सुननेहारों में से बहुतों ने बिश्वास किया और उन मनुष्यों की गिन्ती पांच सहस्र के अटकल हुई॥

५। बिहान हुए लोगों के प्रधान और प्राचीन और अध्यापक लोग॥ ६। और हन्नस महायाजक और कियाफा और योहन और सिकन्दर और महायाजक के घराने के जितने लोग थे ये सब यिरूशलीम में एकट्ठे हुए॥ ७। और उन्हों ने पितर और योहन को बीच में खड़ा करके पूछा तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से किया॥ ८। तब पितर ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उन से कहा हे लोगों के प्रधानो और इस्रायेल के प्राचीनो॥ ९। इस दुर्ब्बल मनुष्य पर जो भलाई किई गई है यदि उस के विषय में आज हम से पूछा जाता है कि वह किस नाम से चंगा किया गया है॥ १०। तो आप लोग सब जानिये और समस्त इस्रायेली लोग जानें कि यीशु खीष्ट नासरी के नाम से जिसे आप लोगों ने क्रूश पर घात किया जिसे ईश्वर ने मृतकों में से उठाया उसी से यह मनुष्य आप लोगों के आगे चंगा खड़ा है॥ ११। यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयों ने तुच्छ जाना जो कोने का सिरा हुआ है॥ १२। और किसी दूसरे से त्राण नहीं है क्योंकि स्वर्ग के नीचे दूसरा नाम नहीं है जो मनुष्यों के बीच में दिया गया है जिस से हमें त्राण पाना होगा॥

१३। तब उन्हों ने पितर और योहन का साहस देखके और यह जानके कि वे विद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा किया और उन को चीन्हा कि वे यीशु के संग थे॥ १४। और उस चंगा किये हुए मनुष्य को उन के संग खड़े देखके वे कोई बात बिरोध में न कह सके॥ १५। परन्तु उन को सभा के बाहर जाने की आज्ञा देके उन्हों ने आपस में विचार किया॥ १६। कि हम इन मनुष्यों से क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध आश्चर्य्य कर्म्म उन्हों से हुआ है यह बात यिरूशलीम के सब निवासियों पर प्रगट है और हम नहीं मुकर सकते हैं॥ १७। परन्तु जिस्तें लोगों में अधिक फैल न जावे आओ हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बात न करें॥ १८। और उन्हों ने उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि यीशु के नाम से कुछ भी मत बोलो और मत सिखाओ॥ १९। परन्तु पितर और योहन ने उन को उत्तर दिया कि ईश्वर से अधिक आप लोगों की मानना क्या ईश्वर के आगे उचित है सो आप लोग विचार कीजिये॥ २०। क्योंकि जो हम ने देखा और सुना है उस को न कहना हम से नहीं

हो सकता है ॥ २१ । तब उन्हों ने और धमकी देके उन्हें छोड़ दिया कि उन्हें दण्ड देने का लोगों के कारण कोई उपाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उस के लिये सब लोग ईश्वर का गुणानुबाद करते थे ॥ २२ । क्योंकि वह मनुष्य जिस पर यह चंगा करने का आश्चर्य्य कर्म्म किया गया था चालीस बरस के ऊपर का था ॥

२३ । वे छूटके अपने संगियों के पास आये और जो कुछ प्रधान याजकों औ प्राचीनों ने उन से कहा था सो सुना दिया ॥ २४ । वे सुनके एक चित्त होकर ऊंचा शब्द करके ईश्वर से बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया ॥ २५ । जिस ने अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा अन्यदेशियों ने क्यों कोप किया और लोगों ने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई ॥ २६ । परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त जन के विरुद्ध पृथिवी के राजा लोग खड़े हुए और अध्यक्ष लोग एक संग एकट्ठे हुए ॥ २७ । क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध जिसे तू ने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी अन्यदेशियों और इस्रायेली लोगों के संग एकट्ठे हुए ॥ २८ । कि जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मत ने आगे से ठहराया था कि हो जाय सोई करें ॥ २९ । और अब हे प्रभु उन की धमकियों को देख ॥ ३० । और चंगा करने के लिये और चिन्हों और अद्भुत कामों के तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किये जाने के लिये अपना हाथ बढ़ाने से अपने दासों को यह दीजिये कि तेरा बचन बड़े साहस से बोलें ॥ ३१ । जब उन्हों ने प्रार्थना किई थी तब वह स्थान जिस में वे एकट्ठे हुए थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और ईश्वर का वचन साहस से बोलने लगे ॥

३२ । विश्वासियों की मण्डली का एक मन और एक जीव था और न कोई अपनी संपत्ति में से कोई वस्तु अपनी कहता था परन्तु उन्हों की सब संपत्ति साझे की थी ॥ ३३ । और प्रेरित लोग बड़े सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की साक्षी देते थे और उन सभों पर बड़ा अनुग्रह था ॥ ३४ । और न उन में से कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरों के अधिकारी थे सो उन्हें बेचते थे ॥ ३५ । और बेची हुई वस्तुओं का दाम लाके प्रेरितों के पांवों पर रखते थे और जैसा जिस को प्रयोजन होता था तैसा हर एक को बांटा जाता था ॥ ३६ । और योशी नाम कुप्रस टापू का एक लेवीय जिसे प्रेरितों ने बर्णबा अर्थात शांति का पुत्र कहा उस की कुछ भूमि थी ॥ ३७ । सो वह उसे बेचके रुपैयों को लाया और प्रेरितो के पावों पर रखा ॥

५. परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्य ने अपनी स्त्री सफीरा के संग मे कुछ भूमि बेची ॥ २ । और दाम में से कुछ रख छोड़ा जो उस की स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके प्रेरितों के पांवों पर रखा ॥ ३ । परन्तु पितर ने कहा हे अननियाह शैतान ने क्यों तेरे मन मे यह मत दिया है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के दाम मे से कुछ रख छोड़े ॥ ४ । जब लों वह रही क्या तेरी न रही और जब बिक गई क्या तेरे वश मे न थी . यह क्या है कि तू ने यह बात अपने मन में रखी है . तू मनुष्यों से नहीं परन्तु ईश्वर से झूठ बोला है ॥ ५ । अननियाह यह बातें सुनते ही गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिया और इन बातों के सब सुननेहारों को बड़ा भय हुआ ॥ ६ । और जवानों ने उठके उसे लपेटा और बाहर ले जाके गाड़ा ॥ ७ । पहर एक के पीछे उस की स्त्री यह जो हुआ था न जानके भीतर आई ॥ ८ । इस पर पितर ने उस से कहा मुझ से कह दे क्या तुम ने वह भूमि इतने ही मे बेची . वह बोली हां इतने मे ॥ ९ । तब पितर ने उस से कहा यह क्या है कि तुम दोनों ने परमेश्वर के आत्मा की परीक्षा करने को एक संग युक्ति बांधी है . देख तेरे स्वामी के गाड़नेहारों के पांव द्वार पर है और वे तुझे बाहर ले जायेंगे ॥ १० । तब वह तुरन्त उस के पांवों के पास गिर पड़ी औ प्राण छोड़ दिया और जवानों ने भीतर आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले जाके उस के

स्वामी के पास गाड़ा॥ ११। और सारी मण्डली को और इन बातों के सब सुननेहारों को बड़ा भय हुआ॥

१२। प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में किये जाते थे और वे सब एक चित्त होके सुलेमान के ओसारे में थे॥ १३। औरों में से किसी को उन के संग मिलने का साहस नहीं था परन्तु लोग उन की बड़ाई करते थे॥ १४। और और भी बहुत लोग पुरुष और स्त्रियां भी विश्वास करके प्रभु से मिल जाते थे॥ १५। इस से लोग रोगियों को बाहर सड़कों में लाके खाटों और खटोलों पर रखते थे कि जब पितर आवे तब उस की परछाईं भी उन में से किसी पर पड़े॥ १६। आसपास के नगरों के लोग भी रोगियों को और अशुद्ध भूतों से सताये हुए लोगों को लिये हुए यिरूशलीम में एकट्ठे होते थे और वे सब चंगे किये जाते थे॥

१७। तब महायाजक उठा और उस के सब संगी जो सदूकियों का पंथ है और डाह से भर गये॥ १८। और प्रेरितों को पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृह में रखा॥ १९। परन्तु परमेश्वर के एक दूत ने रात को बन्दीगृह के द्वार खोलके उन्हें बाहर लाके कहा॥ २०। जाओ और मन्दिर में खड़े होके इस जीवन की सारी बातें लोगों से कहो॥ २१। यह सुनके उन्हों ने भोर को मन्दिर में प्रवेश किया और उपदेश करने लगे. तब महायाजक और उस के संगी लोग आये और न्याइयों की सभा को और इस्रायेल के सन्तानों के सारे प्राचीनों को एकट्ठे बुलाया और प्यादों को बन्दीगृह में भेजा कि उन्हें लावें॥ २२। प्यादों ने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृह में न पाया परन्तु लौटके सन्देश दिया॥ २३। कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी दृढ़ता से बन्द किये हुए और पहरुओं को बाहर द्वारों के साम्ने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर किसी को न पाया॥ २४। जब महायाजक और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्ष और प्रधान याजकों ने यह बातें सुनीं तब वे उन्हों के विषय में दुबधा में पड़े कि यह क्या हुआ चाहता है॥ २५। तब किसी ने आके उन्हें सन्देश दिया कि देखिये वे मनुष्य जिन को आप लोगों ने बन्दीगृह में रखा मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश देते हैं॥ २६। तब पहरुओं का अध्यक्ष प्यादों के संग जाके उन्हें ले आया परन्तु बरियाई से नहीं क्योंकि वे लोगों से डरते थे ऐसा न हो कि पत्थरवाह किये जायें॥

२७। उन्हों ने उन्हें लाके न्याइयों की सभा में खड़ा किया और महायाजक ने उन से पूछा॥ २८। क्या हम ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न दिई कि इस नाम से उपदेश मत करो. तौभी देखो तुम ने यिरूशलीम को अपने उपदेश से भर दिया है और इस मनुष्य का लोहू हमों पर लाने चाहते हो॥ २९। तब पितर ने और प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से अधिक ईश्वर की आज्ञा को मानना उचित है॥ ३०। हमारे पितरों के ईश्वर ने यीशु को जिसे आप लोगों ने काठ पर लटकाके घात किया जिला उठाया॥ ३१। उस को ईश्वर ने कर्त्ता औ त्राता का ऊंच पद अपने दहिने हाथ दिया है कि वह इस्रायेली लोगों से पश्चात्ताप करवाके उन्हें पापमोचन देवे॥ ३२। और इन बातों में हम उस के साक्षी हैं और पवित्र आत्मा भी जिसे ईश्वर ने अपने आज्ञाकारियों को दिया है साक्षी है॥

३३। यह सुनने से उन को तीर सा लग गया और वे उन्हें मार डालने का विचार करने लगे॥ ३४। परन्तु न्याइयों की सभा में गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक और सब लोगों में मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरितों को थोड़ी बेर बाहर करने की आज्ञा किई॥ ३५। और उन से कहा हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषय में सचेत रहो कि तुम इन मनुष्यों से क्या किया चाहते हो॥ ३६। क्योंकि इन दिनों के आगे थूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कोई हूं और लोग गिन्ती में चार सौ के अटकल उस के साथ लग गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग उस को मानते थे सब तितर बितर हुए और बिला गये॥ ३७। उस के पीछे नाम लिखाने के दिनों में यिहूदा गालीली उठा और बहुत लोगों को अपने पीछे बहका लिया. वह भी नष्ट हुआ और जितने लोग उस को मानते थे सब तितर बितर हुए॥ ३८। और अब मैं तुम्हों

से कहता हूं इन मनुष्यों से हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह विचार अथवा यह काम यदि मनुष्यों की ओर से होय तो लोप हो जायगा ॥ ३९। परन्तु यदि ईश्वर से है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो. ऐसा न हो कि तुम ईश्वर से भी लड़नेहारे ठहरो ॥

४०। तब उन्हों ने उस की मान लिई और प्रेरितों को बुलाके उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशु के नाम से बात मत करो. तब उन्हें छोड़ दिया ॥ ४१। सो वे इस बात से कि हम उस के नाम के लिये *निन्दित होने के योग्य गिने गये आनन्द करते हुए* न्याइयों की सभा के साम्हने से चले गये ॥ ४२। और प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर उपदेश करने और यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार सुनाने से नहीं थंभे ॥

६. उन दिनों में जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय भाषा बोलनेहारे इब्रियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी बिधवाओं की सुध नहीं लिई जाती ॥ २। तब बारह प्रेरितों ने शिष्यों की मंडली को अपने पास बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम लोग ईश्वर का बचन छोड़के खिलाने पिलाने की सेवकाई में रहें ॥ ३। इस लिये हे भाइयो अपने में से सात सुख्यात मनुष्यों को जो पवित्र आत्मा से और बुद्धि से परिपूर्ण हों चुन लो कि हम उन को इस काम पर नियुक्त करें ॥ ४। परन्तु हम तो प्रार्थना में और बचन की सेवकाई में लगे रहेंगे ॥ ५। यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी और उन्हों ने स्तिफान एक मनुष्य को जो बिश्वास से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था और फ़िलिप औ प्रखर औ निकानर औ तीमोन औ पर्मिना और अन्तैखिया नगर के यिहूदीय मतावलम्बी निकोलाव को चुन लिया ॥ ६। और उन्हें प्रेरितों के आगे खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे ॥ ७। और ईश्वर का बचन फैलता गया और यिरूशलीम में शिष्य लोग गिन्ती में बहुत बढ़ते गये और बहुतेरे याजक लोग बिश्वास के अधीन हुए ॥

८। स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्य से पूर्ण होके बड़े बड़े अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगों के बीच में करता था ॥ ९। तब उस सभा में से जो लिबर्त्तिनियों की कहावती है और कुरीनीय औ सिकन्दरीय लोगों में से और किलिकिया औ आशिया देशों के लोगों में से कितने उठके स्तिफान से बिवाद करने लगे ॥ १०। परन्तु उस ज्ञान का और उस आत्मा का जिस करके वह बात करता था साम्हना नहीं कर सकते थे ॥

११। तब उन्हों ने लोगों को उभाड़ा जो बोले हम ने उस को मूसा के और ईश्वर के बिरोध में निन्दा की बातें बोलते सुना है ॥ १२। और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकों को उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयों की सभा में लाये ॥ १३। और झूठे साक्षियों को खड़ा किया जो बोले यह मनुष्य इस पवित्र स्थान के और व्यवस्था के बिरोध में निन्दा की बातें बोलने से नहीं थंभता है ॥ १४। क्योंकि हम ने उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थान को ढायगा और जो व्यवहार मूसा ने हमें सौंप दिये उन्हें बदल डालेगा ॥ १५। तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे उस की ओर ताकके उस का मुंह स्वर्गदूत के मुंह के ऐसा देखा ॥

७. तब महायाजक ने कहा क्या यह बातें यूहीं हैं ॥ २। स्तिफान ने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो. हमारा पिता इब्राहीम हारान नगर में बसने के पहिले जब मिसपतामिया देश में था तब तेजोमय ईश्वर ने उस को दर्शन दिया ॥ ३। और उस से कहा तू अपने देश और अपने कुटुम्बों में से निकलके जो देश मैं तुझे दिखाऊं उसी में आ ॥ ४। तब उस ने कलदियों के देश से निकलके हारान में बास किया और वहां से उस के पिता के मरने के पीछे ईश्वर ने उस को इस देश में लाके बसाया जिस में आप लोग अब बसते हैं ॥ ५। और उस ने इस देश में उस को कुछ अधिकार न दिया पैर रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उस को पुत्र न रहते ही उस को प्रतिज्ञा दिई

कि मैं यह देश तुझ को और तेरे पीछे तेरे बंश को अधिकार के लिये देऊंगा॥ ६। और ईश्वर ने यूं कहा कि तेरे सन्तान पराये देश में बिदेशी होंगे और वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ बरस उन्हें दुःख देंगे॥ ७। और जिन लोगों के वे दास होंगे उन लोगों का (ईश्वर ने कहा) मैं बिचार करूंगा और इस के पीछे वे निकल आवेंगे और इसी स्थान में मेरी सेवा करेंगे॥ ८। और उस ने उस को खतने का नियम दिया और इस रीति से इसहाक उस से उत्पन्न हुआ और उस ने आठवें दिन उस का खतना किया और इसहाक ने याकूब का और याकूब ने बारह कुलपतियों का॥ ९। और कुलपतियों ने यूसफ से डाह करके उसे मिसर देश जानेहारों के हाथ बेचा परन्तु ईश्वर उस के संग था॥ १०। और उसे उस के सब क्लेशों से छुड़ाके मिसर के राजा फिरऊन के आगे अनुग्रह के योग्य और बुद्धिमान किया और उस ने उसे मिसर देश पर और अपने सारे घर पर प्रधान ठहराया॥ ११। तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल और बड़ा क्लेश पड़ा और हमारे पितरों को अन्न नहीं मिलता था॥ १२। परन्तु याकूब ने यह सुनके कि मिसर में अनाज है हमारे पितरों को पहिली बेर भेजा॥ १३। और दूसरी बेर में यूसफ अपने भाइयों से पहचाना गया और यूसफ का घराना फिरऊन पर प्रगट हुआ॥ १४। तब यूसफ ने अपने पिता याकूब को और अपने सब कुटुम्बों को जो पचहत्तर जन थे बुलवा भेजा॥ १५। सो याकूब मिसर को गया और वह आप मरा और हमारे पितर लोग॥ १६। और वे शिखिम नगर में पहुंचाये गये और उस कबर में रखे गये जिसे इब्राहीम ने चांदी देके शिखिम के पिता हमोर के सन्तानों से मोल लिया॥

१७। परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने किरिया खाके इब्राहीम से किई थी उस का समय ज्योंही निकट आया त्योंही वे लोग मिसर में बढ़े और बहुत हो गये॥ १८। इतने में दूसरा राजा उठा जो यूसफ को नहीं जानता था॥ १९। उस ने हमारे लोगों से चतुराई करके हमारे पितरों के साथ ऐसी बुराई किई कि उन के बालकों को बाहर फिंकवाया कि वे जीते न रहें॥ २०। उस समय में मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था और वह अपने पिता के घर में तीन मास पाला गया॥ २१। जब वह बाहर फेंका गया तब फिरऊन की बेटी ने उसे उठा लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला॥ २२। और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या सिखाई गई और वह बातों और कामों में सामर्थी था॥ २३। जब वह चालीस बरस का हुआ तब उस के मन में आया कि अपने भाइयों को अर्थात इस्राएल के सन्तानों को देख लेवे॥ २४। और उस ने एक पर अन्याय होते देखके रक्षा किई और मिसरी को मारके सताये हुए का पलटा लिया॥ २५। वह बिचार करता था कि मेरे भाई समझेंगे कि ईश्वर मेरे हाथ से उन्हों का निस्तार करता है परन्तु उन्हों ने नहीं समझा॥ २६। अगले दिन वह उन्हें जब वे आपस में लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें मिलाप करने को मनाया कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो एक दूसरे से क्यों अन्याय करते हो॥ २७। परन्तु जो अपने पड़ोसी से अन्याय करता था उस ने उस को हटाके कहा किस ने तुझे हमों पर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया॥ २८। क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार डाला तू मुझे मार डालने चाहता है॥ २९। इस बात पर मूसा भागा और मिदियान देश में परदेशी हुआ और वहां दो पुत्र उस को उत्पन्न हुए॥ ३०। जब चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वर के दूत ने सीनई पर्ब्बत के जंगल में उस को एक झाड़ी की आग की ज्वाला में दर्शन दिया॥ ३१। मूसा ने देखके उस दर्शन से अचंभा किया और जब वह दृष्टि करने को निकट आता था तब परमेश्वर का शब्द उस पास पहुंचा॥ ३२। कि मैं तेरे पितरों का ईश्वर अर्थात् इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं. तब मूसा कांपने लगा और दृष्टि करने का उसे साहस न रहा॥ ३३। तब परमेश्वर ने उस से कहा अपने पांवों की जूतियां खोल क्योंकि वह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है॥

३४। मैं ने दृष्टि करके अपने लोगों की जो मिसर में हैं दुर्दशा देखी है और उन का कहरना सुना है और उन्हें छुड़ाने को उतर आया हूं और अब आ मैं तुझे मिसर को भेजूंगा ॥ ३५। यही मूसा जिसे उन्हों ने नकारके कहा किस ने तुझे अध्यक्ष और न्यायी ठहराया उसी को ईश्वर ने उस दूत के हाथ से जिस ने उस को झाड़ी में दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्तारक करके भेजा ॥ ३६। यही मिसर देश में और लाल समुद्र में और जंगल में चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दिखाके उन्हें निकाल लाया ॥ ३७। यही वह मूसा है जिस ने इस्रायेल के सन्तानों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा तुम उस की सुनो ॥ ३८। यही है जो जंगल में मण्डली के बीच में उस दूत के संग जो सीनई पर्व्वत पर उस से बोला और हमारे पितरों के संग था और उस ने हमें देने के लिये जीवती वाणियां पाईं ॥ ३९। पर हमारे पितरों ने उस के आज्ञाकारी होने की इच्छा न किई परन्तु उसे हटाके अपने मन में मिसर की ओर फिरे ॥ ४०। और हारोन से बोले हमारे लिये देवों को बनाइये जो हमारे आगे जायें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश में से निकाल लाया उसे हम नहीं जानते क्या हुआ है ॥

४१। उन दिनों में उन्हों ने बछडू बनाके उस मूर्त्ति के आगे बलि चढ़ाया और अपने हाथों के कामों से मगन होते थे ॥ ४२। तब ईश्वर ने मुंह फेरके उन्हें आकाश की सेना पूजने को त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि हे इस्रायेल के घराने क्या तुम ने चालीस बरस जंगल में मेरे आगे पशुमेध और बलि चढ़ाये ॥ ४३। तौभी तुम ने मोलक का तंबू और अपनी देवता रिंफन का तारा उठा लिया अर्थात् उन आकारों को जो तुम ने पूजने को बनाये. और मैं तुम्हें बाबुल से और उधर ले जाके बसाऊंगा ॥

४४। साक्षी का तंबू जंगल में हमारे पितरों के बीच में था जैसा उसी ने ठहराया जिस ने मूसा से कहा कि जो आकार तू ने देखा है उस के अनुसार उस को बना ॥ ४५। और उस को हमारे पितर लोग यिहोशूआ के संग अगलों से पाके तब यहां लाये जब उन्हों से उन अन्यदेशियों का अधिकार पाया जिन्हें ईश्वर ने हमारे पितरों के साम्ने से निकाल दिया ॥ ४६। सोई दाऊद के दिनों तक हुआ जिस पर ईश्वर का अनुग्रह था और जिस ने मांगा कि मैं याकूब के ईश्वर के लिये डेरा ठहराऊं ॥ ४७। पर सुलेमान ने उस के लिये घर बनाया ॥ ४८। परन्तु सर्व्वप्रधान जो है सो हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में वास नहीं करता है जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा है ॥ ४९। कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणों की पीढ़ी है तुम मेरे लिये कैसा घर बनाओगे अथवा मेरे विश्राम का कौन सा स्थान है ॥ ५०। क्या मेरे हाथ ने यह सब वस्तु नहीं बनाईं ॥

५१। हे हठीले और मन और कानों के खतनाहीन लोगो तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो. जैसा तुम्हारे पितरों ने तैसा तुम भी ॥ ५२। भविष्यद्वक्ताओं में से तुम्हारे पितरों ने किस को नहीं सताया. और उन्हों ने उन्हें मार डाला जिन्हों ने इस धर्म्मी जन के आने का आगे से संदेश दिया जिस के तुम अब पकड़वानेहारे और हत्यारे हुए हो ॥ ५३। जिन्हों ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था पाई है तौभी पालन न किई ॥

५४। यह बातें सुनने से उन के मन को तीर सा लग गया और वे स्तिफान पर दांत पीसने लगे ॥ ५५। परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर ताकके ईश्वर की महिमा को और यीशु को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखा ॥ ५६। और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुले और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखता हूं ॥ ५७। तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त होके उस पर लपके ॥ ५८। और उसे नगर के बाहर निकालके पत्थरवाह करने लगे और साक्षियों ने अपने कपड़े शावल नाम एक जवान के पांवों पास उतार रखे ॥ ५९। और उन्हों ने स्तिफान को पत्थरवाह किया जो यह कहके

प्रार्थना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर ॥ ६० । और घुटने टेकके उस ने बड़े शब्द से पुकारा हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगा और यह कहके सो गया ॥

८. शावल

स्तिफान के मारे जाने में सम्मति देता था . उस समय यिरूशलीम में की मंडली पर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितों को छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन देशों में तितर बितर हुए ॥ २ । भक्त लोगों ने स्तिफान को कबर में रखा और उस के लिये बड़ा बिलाप किया ॥ ३ । शावल मंडली को नाश करता रहा कि घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियों को पकड़के बंदीगृह में डालता था ॥

४ । जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते हुए फिरा किये ॥ ५ । और फिलिप ने शोमिरोन के एक नगर में जाके खीष्ट की कथा लोगों को सुनाई ॥ ६ । और जो बातें फिलिप ने कहीं उन्हों पर लोगों ने उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था सुनने और देखने से एक चित्त होके मन लगाया ॥ ७ । क्योंकि बहुतों में से जिन्हें अशुद्ध भूत लगे थे वे भूत बड़े शब्द से पुकारते हुए निकले और बहुत अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये गये ॥ ८ । और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ ॥

९ । परन्तु उस नगर में आगे से शिमोन नाम एक मनुष्य था जो टोना करके शोमिरोन के लोगों को विस्मित करता था और अपने को कोई बड़ा पुरुष कहता था ॥ १० । और छोटे से बड़े तक सब उस को मानके कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वर की महा शक्ति ही है ॥ ११ । उस ने बहुत दिनों से उन्हें टोनों से विस्मित किया था इस लिये वे उस को मानते थे ॥ १२ । परन्तु जब उन्हों ने फिलिप का जो ईश्वर के राज्य के और यीशु खीष्ट के नाम के विषय में का सुसमाचार सुनाता था विश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी बपतिसमा लेने लगे ॥ १३ । तब शिमोन ने आप भी विश्वास किया और बपतिसमा लेके फिलिप के संग लगा रहा और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह जो होते थे देखके बिस्मित होता था ॥

१४ । जो प्रेरित यिरूशलीम में थे उन्हों ने जब सुना कि शोमिरोनियों ने ईश्वर का बचन ग्रहण किया है तब पितर और योहन को उन के पास भेजा ॥ १५ । और उन्हों ने जाके उन के लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें ॥ १६ । क्योंकि वह अब लों उन में से किसी पर नहीं पड़ा था केवल उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम से बपतिसमा लिया था ॥ १७ । तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया ॥

१८ । शिमोन यह देखके कि प्रेरितों के हाथों के रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है उन के पास रुपैये लाया ॥ १९ । और कहा मुझ को भी यह अधिकार दीजिये कि जिस किसी पर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे ॥ २० । परन्तु पितर ने उस से कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि तू ने ईश्वर का दान रुपैयों से मोल लेने का बिचार किया है ॥ २१ । तुझे इस बात में न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा मन ईश्वर के आगे सीधा नहीं है ॥ २२ । इस लिये अपनी इस बुराई से पश्चात्ताप करके ईश्वर से प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मन का बिचार क्षमा किया जाय ॥ २३ । क्योंकि मैं देखता हूं कि तू अति कड़वे पित्त में और अधर्म्म के बंधन में पड़ा है ॥ २४ । शिमोन ने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना कीजिये कि जो बातें आप लोगों ने कही हैं उन में से कोई बात मुझ पर न पड़े ॥

२५ । सो वे साक्षी देके और प्रभु का बचन सुनाके यिरूशलीम को लौटे और उन्हों ने शोमिरोनियों के बहुत गांवों में सुसमाचार प्रचार किया ॥ २६ । परन्तु परमेश्वर के एक दूत ने फिलिप से कहा उठके दक्षिण को उस मार्ग पर जा जो यिरूशलीम से अज्जा नगर को जाता है वह जंगल है ॥ २७ । वह उठके गया और देखो कूश देश का एक मनुष्य था जो नपुंसक और कूशियों की रानी कन्दाकी का एक प्रधान और उस के सारे धन पर अध्यक्ष था और यिरूशलीम को भजन करने को आया था ॥

२८। और वह लौटता था और अपने रथ पर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ता था॥ २९। तब आत्मा ने फिलिप से कहा निकट जाके इस रथ से मिल जा॥ ३०। फिलिप ने उस ओर दौड़के उस मनुष्य को यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ते हुए सुना और कहा क्या आप जो पढ़ते हैं उसे बूझते हैं॥ ३१। उस ने कहा यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ सकूं. और उस ने फिलिप से बिन्ती किई कि चढ़के मेरे संग बैठिये॥ ३२। धर्म्म-पुस्तक का अध्याय जो वह पढ़ता था यही था कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया और जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारे के साम्हने अबोल है तैसा उस ने अपना मुंह न खोला॥ ३३। उस की दीनताई में उस का न्याय नहीं होने पाया और उस के समय के लोगों का बर्णन कौन करेगा क्योंकि उस का प्राण पृथिवी से उठाया गया॥ ३४। इस पर नपुंसक ने फिलिप से कहा मैं आप से बिन्ती करता हूं भविष्यद्वक्ता यह बात किस के विषय में कहता है. अपने विषय में अथवा किसी दूसरे के विषय में॥ ३५। तब फिलिप ने अपना मुंह खोलके और धर्म्म-पुस्तक के इस बचन से आरंभ करके यीशु का सुसमाचार उस को सुनाया॥ ३६। मार्ग में जाते जाते वे किसी पानी के पास पहुंचे और नपुंसक ने कहा देखिये जल है बपतिसमा लेने में मुझे क्या रोक है॥ ३७। [फिलिप ने कहा जो आप सारे मन से बिश्वास करते हैं तो हो सकता है. उस ने उत्तर दिया मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु खीष्ट ईश्वर का पुत्र है]॥ ३८। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दिई और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जल में उतरे और फिलिप ने उस को बपतिसमा दिया॥ ३९। जब वे जल में से ऊपर आये तब परमेश्वर का आत्मा फिलिप को ले गया और नपुंसक ने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि वह अपने मार्ग पर आनन्द करता हुआ चला गया॥ ४०। परन्तु फिलिप असदोद नगर में पाया गया और आगे बढ़के जब लों कैसरिया नगर में न पहुंचा सब नगरों में सुसमाचार सुनाता गया॥

९. शावल जिस की अब लों प्रभु के शिष्यों को धमकाने और घात करने की सांस फूल रही थी महायाजक के पास गया॥ २। और उस से दमेसक नगर की सभाओं के नाम पर चिट्ठियां मांगीं इस लिये कि यदि कोई मिलें क्या पुरुष क्या स्त्रियां जो उस पंथ के हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीम को ले आवे॥ ३। परन्तु जाते हुए जब वह दमेसक के निकट पहुंचा तब अचांचक स्वर्ग से एक ज्योति उस की चारों ओर चमकी॥ ४। और वह भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना जो उस से बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है॥ ५। उस ने कहा हे प्रभु तू कौन है. प्रभु ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है॥ ६। उस ने कंपित और अचंभित हो कहा हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं. प्रभु ने उस से कहा उठके नगर में जा और तुझ से कहा जायगा तुझे क्या करना उचित है॥ ७। और जो मनुष्य उस के संग जाते थे सो चुप खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसी को नहीं देखते थे॥ ८। तब शावल भूमि से उठा परन्तु जब अपनी आंखें खोलीं तब किसी को न देख सका पर वे उस का हाथ पकड़के उसे दमेसक में लाये॥ ९। और वह तीन दिन लों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था॥

१०। दमेसक में अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभु ने दर्शन में उस से कहा हे अननियाह. उस ने कहा हे प्रभु देखिये मैं हूं॥ ११। तब प्रभु ने उस से कहा उठके उस गली में जो सीधी कहावती है जा और यिहूदा के घर में शावल नाम तारस नगर के एक मनुष्य को ढूंढ़ क्योंकि देख वह प्रार्थना करता है॥ १२। और उस ने दर्शन में यह देखा है कि अननियाह नाम एक मनुष्य ने भीतर आके उस पर हाथ रखा कि वह दृष्टि पावे॥ १३। अननियाह ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बहुतों से इस मनुष्य के विषय में सुना है कि उस ने यिरूशलीम में तेरे पवित्र लोगों से कितनी बुराई किई है॥ १४। और

यहां उस को तेरे नाम की सब प्रार्थना करनेहारों को बांधने का प्रधान याजकों की ओर से अधिकार है ॥ १५ । प्रभु ने उस से कहा चला जा क्योंकि वह अन्यदेशियों और राजाओं और इस्रायेल के सन्तानों के आगे मेरा नाम पहुंचाने को मेरा एक चुना हुआ पात्र है ॥ १६ । क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उस को कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा ॥

१७ । तब अननियाह ने जाके उस घर में प्रवेश किया और उस पर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभु ने अर्थात यीशु ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता था तुझ को दर्शन दिया मुझे भेजा है इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होवे ॥ १८ । और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और उठके बपतिस्मा लिया और भोजन करके बल पाया ॥

१९ । तब शावल कितने दिन दमेसक में के शिष्यों के संग था ॥ २० । और वह तुरन्त सभाओं में यीशु की कथा सुनाने लगा कि वह ईश्वर का पुत्र है ॥ २१ । और सब सुननेहारे विस्मित हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिस ने यिरूशलीम में इस नाम की प्रार्थना करनेहारों को नाश किया और यहां इसी लिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों के आगे पहुंचावे ॥ २२ । परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया और यही खीष्ट है इस बात का प्रमाण देके दमेसक में रहनेहारे यिहूदियों को व्याकुल किया ॥ २३ । जब बहुत दिन बीत गये तब यिहूदियों ने उसे मार डालने का आपस में विचार किया ॥ २४ । परन्तु उन की कुमंत्रणा शावल को जान पड़ी . वे उसे मार डालने को रात और दिन फाटकों पर पहरा भी देते थे ॥ २५ । परन्तु शिष्यों ने रात को उसे लेके टोकरे में लटकाके भीत पर से उतार दिया ॥

२६ । जब शावल यिरूशलीम में पहुंचा तब वह शिष्यों से मिल जाने चाहता था और वे सब उस से डरते थे क्योंकि वे उस के शिष्य होने की प्रतीति नहीं करते थे ॥ २७ । परन्तु बर्णबा उसे ले करके प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया कि उस ने क्योंकर मार्ग में प्रभु को देखा था और प्रभु उस से बोला था और क्योंकर उस ने दमेसक में यीशु के नाम से खोलके बात किई थी ॥ २८ । तब वह यिरूशलीम में उन के संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशु के नाम से खोलके बात करने लगा ॥ २९ । उस ने यूनानीय भाषा बोलनेहारों से भी कथा और विवाद किया पर वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे ॥ ३० । यह जानके भाई लोग उसे कैसरिया में लाये और तारस की ओर भेजा ॥

३१ । सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोन में मण्डली को चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शांति में चलती थीं और बढ़ जाती थीं ॥ ३२ । तब पितर सब पवित्र लोगों में फिरते हुए उन्हों के पास भी आया जो लुद्दा नगर में वास करते थे ॥ ३३ । वहां उस ने ऐनिय नाम एक मनुष्य को पाया जो अर्द्धांगी था और आठ बरस से खाट पर पड़ा हुआ था ॥ ३४ । पितर ने उस से कहा हे ऐनिय यीशु खीष्ट तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार . तब वह तुरन्त उठा ॥ ३५ । और लुद्दा और शारोन के सब निवासियों ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर फिरे ॥

३६ । याफो नगर में तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या थी . वह सुकर्म्मों और दानों से जो वह करती थी पूर्ण थी ॥ ३७ । उन दिनों में वह रोगी हुई और मर गई और उन्हों ने उसे नहलाके उपरौठी कोठरी में रखा ॥ ३८ । और इस लिये कि लुद्दा याफो के निकट था शिष्यों ने यह सुनके कि पितर वहां है दो मनुष्यों को उस पास भेजके बिन्ती किई कि हमारे पास आने में विलम्ब न कीजिये ॥ ३९ । तब पितर उठके उन के संग गया और जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरौठी कोठरी में ले गये और सब विधवाएं रोती हुईं और जो कुरते और वस्त्र दर्का उन के संग होते हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं ॥ ४० । परन्तु पितर ने सभों को बाहर निकाला और घुटने टेकके प्रार्थना किई और लोथ की ओर फिरके कहा हे

सबीथा उठ . तब उस ने अपनी आंखें खोलीं और पितर को देखके उठ बैठी॥ ४१। उस ने हाथ देके उस को उठाया और पवित्र लोगों और बिधवाओं को बुलाके उसे जीवती दिखाई॥ ४२। यह बात सारे याफो में जान पड़ी और बहुत लोगों ने प्रभु पर विश्वास किया॥ ४३। और पितर याफो में शिमोन नाम किसी चमार के यहां बहुत दिन रहा॥

१०. कैसरिया में कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इतलीय नाम पलटन का एक शतपति था॥ २। वह भक्त जन था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरता था और लोगों को बहुत दान देता था और नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता था॥ ३। उस ने दिन को तीसरे पहर के निकट दर्शन में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वर का एक दूत उस पास भीतर आया और उस से बोला हे कर्णीलिय॥ ४। उस ने उस की ओर ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है . उस ने उस से कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये ईश्वर के आगे पहुंचे हैं॥ ५। और अब मनुष्यों को याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला॥ ६। वह शिमोन नाम किसी चमार के यहां जिस का घर समुद्र के तीर पर है पाहुन है . जो कुछ तुझे करना उचित है सो वही तुझ से कहेगा॥ ७। जब वह दूत जो कर्णीलिय से बात करता था चला गया तब उस ने अपने सेवकों में से दो को और जो उस के यहां लगे रहते थे उन में से एक भक्त योद्धा को बुलाया॥ ८। और उन्हों को सब बातें सुनाके उन्हें याफो को भेजा॥

९। दूसरे दिन ज्योंही वे मार्ग में चलते थे और नगर के निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पहर के निकट प्रार्थना करने को कोठे पर चढ़ा॥ १०। तब वह बहुत भूखा हुआ और कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे वह बेसुध हो गया॥ ११। और उस ने स्वर्ग को खुले और बड़ी चद्दर की नाईं किसी पात्र को चार कोनों से बांधे हुए और पृथिवी की ओर लटकाये हुए अपनी ओर उतरते देखा॥ १२। उस में पृथिवी के सब चौपाये और वनपशु और रेंगनेहारे जन्तु और आकाश के पंछी थे॥ १३। और एक शब्द उस पास पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा॥ १४। पितर ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई॥ १५। और शब्द फिर दूसरी बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को तू अशुद्ध मत कह॥ १६। यह तीन बार हुआ तब वह पात्र फिर स्वर्ग पर उठा लिया गया॥

१७। जिस समय पितर अपने मन में दुबधा करता था कि यह दर्शन जो मैं ने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो कर्णीलिय की ओर से भेजे गये थे शिमोन के घर का ठिकाना पा करके डेवढ़ी पर खड़े हुए॥ १८। और पुकारके पूछते थे क्या शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है॥ १९। पितर उस दर्शन के विषय में सोचता ही था कि आत्मा ने उस से कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ते हैं॥ २०। पर तू उठके उतर जा और उन के संग बेखटके चला जा क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है॥ २१। तब पितर ने उन मनुष्यों के पास जो कर्णीलिय की ओर से उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम ढूंढ़ते हो सो मैं हूं तुम किस कारण से आये हो॥ २२। वे बोले कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और ईश्वर से डरनेहारा और सारे यिहूदी लोगों में सुख्यात है उस को एक पवित्र दूत से आज्ञा दिई गई कि आप को अपने घर में बुलाके आप से बातें सुने॥ २३। तब पितर ने उन्हें भीतर बुलाके उन की पहुनई किई और दूसरे दिन वह उन के संग गया और याफो के भाइयों में से कितने उस के साथ हो लिये॥

२४। दूसरे दिन उन्हों ने कैसरिया में प्रवेश किया और कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रों को एकट्ठे बुलाके उन की बाट जोहता था॥ २५। जब पितर भीतर आता था तब कर्णीलिय उस से आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम किया॥ २६। परन्तु पितर ने उस को उठाके कहा खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हूं॥ २७। और वह उस के संग

बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत लोगों को एकट्ठे पाया ॥ २८ । और उन से कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशी की संगति करना अथवा उस के यहां जाना यिहूदी मनुष्य को वर्जित है परन्तु ईश्वर ने मुझे बताया है कि तू किसी मनुष्य को अपवित्र अथवा अशुद्ध मत कह ॥ २९ । इस लिये मैं जो बुलाया गया तो इस के बिरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता हूं कि तुम्हों ने किस बात के लिये मुझे बुलाया है ॥ ३० । कर्णीलिय ने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ी लों उपवास करता था और तीसरे पहर अपने घर में प्रार्थना करता था कि देखो एक पुरुष चमकता वस्त्र पहिने हुए मेरे आगे खड़ा हुआ ॥ ३१ । और बोला हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान ईश्वर के आगे स्मरण किये गये हैं ॥ ३२ । इस लिये याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला . वह समुद्र के तीर पर शिमोन चमार के घर में पाहुन है . वह आके तुझ से बात करेगा ॥ ३३ । तब मैं ने तुरन्त आप के पास भेजा और आप ने अच्छा किया जो आये हैं सो अब ईश्वर ने जो कुछ आप को आज्ञा दिई है सोई सुनने को हम सब यहां ईश्वर के साम्हने हैं ॥

३४ । तब पितर ने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता है कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है ॥ ३५ । परन्तु हर एक देश के लोगों में जो उस से डरता है और धर्म्म के कार्य्य करता है सो उस से ग्रहण किया जाता है ॥ ३६ । उस ने वह वचन तुम्हों के पास भेजा है जो उस ने इस्रायेल के सन्तानों के पास भेजा अर्थात् यीशु खीष्ट के द्वारा से जो सभों का प्रभु है शांति का सुसमाचार सुनाया ॥ ३७ । तुम वह बात जानते हो जो उस बपतिसमा के पीछे जिस का योहन ने उपदेश किया गालील से आरंभ कर सारे यिहूदिया में फैल गई ॥ ३८ । अर्थात् नासरत नगर के यीशु के विषय में क्योंकर ईश्वर ने उस को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभों को जो शैतान से पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उस के संग था ॥ ३९ । और हम उन सब कामों के साक्षी हैं जो उस ने यिहूदियों के देश में और यिरूशलीम में भी किये जिसे लोगों ने काठ पर लटकाके मार डाला ॥ ४० । उस को ईश्वर ने तीसरे दिन जिला उठाया और उस को प्रगट होने दिया ॥ ४१ । सब लोगों के आगे नहीं परन्तु साक्षियों के आगे जिन्हें ईश्वर ने पहिले से ठहराया था अर्थात हमों के आगे जिन्हों ने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया ॥ ४२ । और उस ने हमों को आज्ञा दिई कि लोगों को उपदेश और साक्षी देओ कि वही है जिस को ईश्वर ने जीवतों और मृतकों का न्यायी ठहराया है ॥ ४३ । उस पर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो उस के नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा ॥

४४ । पितर यह बातें कहता ही था कि पवित्र आत्मा बचन के सब सुननेहारों पर पड़ा ॥ ४५ । और खतना किये हुए बिश्वासी जितने पितर के संग आये थे बिस्मित हुए कि अन्यदेशियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है ॥ ४६ । क्योंकि उन्हों ने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वर की महिमा करते सुना ॥ ४७ । इस पर पितर ने कहा क्या कोई जल को रोक सकता है कि इन लोगों को जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है बपतिसमा न दिया जावे ॥ ४८ । और उस ने आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभु के नाम से बपतिसमा दिया जाय . तब उन्हों ने उस से कई एक दिन ठहर जाने की बिन्ती किई ॥

११. जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदिया में थे उन्हों ने सुना कि अन्यदेशियों ने भी ईश्वर का वचन ग्रहण किया है ॥ २ । और जब पितर यिरूशलीम को गया तब खतना किये हुए लोग उस से विवाद करने लगे ॥ ३ । और बोले तू ने खतनाहीन लोगों के यहां जाके उन के संग खाया ॥ ४ । तब पितर ने आरंभ कर एक और से उन्हें कह सुनाया ॥ ५ । कि मैं याफो नगर में प्रार्थना करता था और बेसुध होके एक दर्शन अर्थात

स्वर्ग पर से चार कोनों से लटकाई हुई बड़ी चद्दर की नाईं किसी पात्र को उतरते देखा और वह मेरे पास लों आया॥ ६। मैं ने उस की ओर ताकके देख लिया और पृथिवी के चौपायों और बनपशुओं और रेंगनेहारे जन्तुओं को और आकाश के पंछियों को देखा॥ ७। और एक शब्द सुना जो मुझ से बोला हे पितर उठ मार और खा॥ ८। मैं ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई॥ ९। परन्तु शब्द ने दूसरी बेर स्वर्ग से मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को तू अशुद्ध मत कह॥ १०। यह तीन बार हुआ तब सब कुछ फिर स्वर्ग पर खींचा गया॥ ११। और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गये थे जिस घर मे मैं था उस घर पर आ पहुंचे॥ १२। तब आत्मा ने मुझ से उन के संग बेखटके चले जाने को कहा और ये छः भाई भी मेरे संग गये और हम ने उस मनुष्य के घर में प्रवेश किया॥ १३। और उस ने हमें बताया कि उस ने क्योंकर अपने घर में एक दूत को खड़े हुए देखा था जो उस से बोला कि मनुष्यों को याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला॥ १४। वह तुझ से बातें कहेगा जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे॥ १५। जब मैं बात करने लगा तब पवित्र आत्मा जिस रीति से आरंभ में हमों पर पड़ा उसी रीति से उन्हों पर भी पड़ा॥ १६। तब मैं ने प्रभु का वचन स्मरण किया कि उस ने कहा योहन ने जल से बपतिसमा दिया परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा दिया जायगा॥ १७। सो जब कि ईश्वर ने प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास करनेहारों को जैसे हमों को तैसे उन्हों को भी एकसां दान दिया तो मैं कौन था कि मैं ईश्वर को रोक सकता॥ १८। वे यह सुनके चुप हुए और यह कहके ईश्वर की स्तुति करने लगे कि तब तो ईश्वर ने अन्यदेशियों को भी पश्चात्ताप दान किया है कि वे जीवें॥

१९। स्तिफान के कारण जो क्लेश हुआ तिस के हेतु से जो लोग तितर बितर हुए थे उन्हों ने फैनीकिया देश औ कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगर लों फिरते हुए किसी और को नहीं केवल यिहूदियों को बचन सुनाया॥ २०। परन्तु उन में से कितने कुप्री और कुरीनिय मनुष्य थे जो अन्तैखिया में आके यूनानियों से बात करने और प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे॥ २१। और प्रभु का हाथ उन के संग था और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे॥ २२। तब उन के विषय में वह बात यिरूशलीम में की मंडली के कानों में पहुंची और उन्हों ने बर्णबा को भेजा कि वह अन्तैखिया लों जाय॥ २३। वह जब पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह को देखा तब आनन्दित हुआ और सभों को उपदेश दिया कि मन की अभिलाषा सहित प्रभु से मिले रहो॥ २४। क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था. और बहुत लोग प्रभु से मिल गये॥ २५। तब बर्णबा शावल को ढूंढ़ने के लिये तारस को गया॥ २६। और वह उस को पाके अन्तैखिया में लाया और वे दोनों जन बरस भर मंडली में एकट्ठे होते थे और बहुत लोगों को उपदेश देते थे और शिष्य लोग पहिले अन्तैखिया में ख्रीष्टियान कहलाये॥

२७। उन दिनों में कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम से अन्तैखिया में आये॥ २८। उन मे से आगाब नाम एक जन ने उठके आत्मा की शिक्षा से बताया कि सारे संसार में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदिय कैसर के समय में पड़ा॥ २९। तब शिष्यों ने हर एक अपनी अपनी संपत्ति के अनुसार यिहूदिया मे रहनेहारे भाइयों की सेवकाई के लिये कुछ भेजने को ठहराया॥ ३०। और उन्हों ने यही किया अर्थात् बर्णबा और शावल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेजा॥

१२. उस समय हेरोद राजा ने मण्डली के कई एक जनों को दुःख देने को उन पर हाथ बढ़ाये॥ २। उस ने योहन के भाई याकूब को खड्ग से मार डाला॥ ३। और जब उस ने देखा कि यिहूदी लोग इस से प्रसन्न होते

हैं तब उस ने पितर को भी पकड़ा और अखमीरी रोटी के पर्व्व के दिन थे॥ ४। और उस ने उसे पकड़के बन्दीगृह में डाला और चार चार योद्धाओं के चार पहरों में सौंप दिया कि वे उस को रखें और उस को निस्तार पर्व्व के पीछे लोगों के आगे निकाल लाने की इच्छा करता था॥

५। सो पितर बन्दीगृह में पहरे में रहता था परन्तु मंडली लौ लगाके उस के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती थी॥ ६। और जब हेरोद उसे निकाल लाने पर था उसी रात पितर दो योद्धाओं के बीच में दो जंजीरों से बंधा हुआ सोता था और पहरुए द्वार के आगे बन्दीगृह की रक्षा करते थे॥ ७। और देखो परमेश्वर का एक दूत आ खड़ा हुआ और कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पितर के पंजर पर हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ. तब उस की जंजीरें उस के हाथों से गिर पड़ीं॥ ८। दूत ने उस से कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और उस ने वैसा किया. तब उस से कहा अपना वस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले॥ ९। और वह निकलके उस के पीछे चलने लगा और नहीं जानता था कि जो दूत से किया जाता है सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन देखता हूं॥ १०। परन्तु वे पहिले और दूसरे पहरे में से निकले और नगर में जाने के लोहे के फाटक पर पहुंचे जो आप से आप उन के लिये खुल गया और वे निकलके एक गली के अन्त लों बढ़े और तुरन्त दूत पितर के पास से चला गया॥ ११। तब पितर को चेत हुआ और उस ने कहा अब मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभु ने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोद के हाथ से और सब बातों से जिन की आस यिहूदी लोग देखते थे छुड़ाया है॥

१२। और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है तिस की माता मरियम के घर पर आया जहां बहुत लोग एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे॥ १३। जब पितर डेवढ़ी के द्वार पर खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप सुनने को आई॥ १४। और पितर का शब्द पहचानके उस ने आनन्द के मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि पितर द्वार पर खड़ा है॥ १५। उन्हों ने उस से कहा तू बौराही है परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है. तब उन्हों ने कहा उस का दूत है॥ १६। परन्तु पितर खटखटाता रहा और वे द्वार खोलके उसे देखके विस्मित हुए॥ १७। तब उस ने हाथ से उन्हें चुप रहने का सैन किया और उन से कहा कि प्रभु क्योंकर उस को बन्दीगृह में से बाहर लाया था और बोला यह बातें याकूब से और भाइयों से कह दीजियो तब निकलके दूसरे स्थान को गया॥

१८। बिहान हुए योद्धाओं में बड़ी घबराहट होने लगी कि पितर क्या हुआ॥ १९। जब हेरोद ने उसे ढूंढ़ा और नहीं पाया तब पहरुओं को जांचके आज्ञा किई कि वे बध किये जायें. तब यिहूदिया से कैसरिया को गया और वहां रहा॥

२०। हेरोद को सोर औ सीदोन के लोगों से लड़ने का मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और बलास्त को जो राजा के शयनस्थान का अध्यक्ष था मनाके मिलाप चाहा क्योंकि राजा के देश से उन के देश का पालन होता था॥ २१। और ठहराये हुए दिन में हेरोद ने राजवस्त्र पहिनके सिंहासन पर बैठके उन्हों को कथा सुनाई॥ २२। और लोग पुकार उठे कि ईश्वर का शब्द है मनुष्य का नहीं॥ २३। तब परमेश्वर के एक दूत ने तुरन्त उस को मारा क्योंकि उस ने ईश्वर की स्तुति न किई और कीड़े उस को खा गये और उस ने प्राण छोड़ दिया॥ २४। परन्तु ईश्वर का वचन अधिक अधिक फैलता गया॥

२५। जब बर्णबा और शावल ने वह सेवकाई पूरी किई थी तब वे योहन को भी जो मार्क कहावता था संग लेके यिरूशलीम से लौटे॥

१३. अन्तैखिया

में की मण्डली में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे अर्थात् बर्णबा और शिमियोन जो निगर कहावता है और कुरीनीय लूकिय और

चौथाई के राजा हेरोद का दूधभाई मनहेम और शावल ॥ २ । जिस समय वे उपवास सहित प्रभु की सेवा करते थे पवित्र आत्मा ने कहा मैं ने बर्णबा और शावल को जिस काम के लिये बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो ॥ ३ । तब उन्हों ने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखके उन्हें बिदा किया ॥

४ । सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया नगर को गये और वहां से जहाज पर कुप्रस टापू को चले ॥ ५ । और सालामी नगर में पहुंचके उन्हों ने ईश्वर का वचन यिहूदियों की सभाओं में प्रचार किया और योहन भी सेवक होके उन के संग था ॥ ६ । और उन्हों ने उस टापू के बीच से पाफो नगर लों पहुचके एक टोन्हे को पाया जो भूठा भविष्यद्वक्ता और यिहूदी था जिस का नाम बरयीशु था ॥ ७ । वह सर्जिय पावल प्रधान के संग था जो बुद्धिमान पुरुष था . उस ने बर्णबा और शावल को अपने पास बुलाके ईश्वर का वचन सुनने चाहा ॥ ८ । परन्तु इलुमा टोन्हा कि उस के नाम का यही अर्थ है उन का साम्ना करके प्रधान को विश्वास की ओर से बहकाने चाहता था ॥ ९ । तब शावल अर्थात् पावल ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होके और उस की ओर ताकके कहा ॥ १० । हे सारे कपट और सब कुचाल से भरे हुए शैतान के पुत्र सकल धर्म्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा ॥ ११ । अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर है और तू कितने समय लों अंधा होगा और सूर्य्य को न देखेगा . तुरन्त धुन्धलाई और अंधकार उस पर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उस का हाथ पकड़ें ॥ १२ । तब प्रधान ने जो हुआ था सो देखके प्रभु के उपदेश से अचंभित हो विश्वास किया ॥

१३ । पावल और उस के संगी पाफो से जहाज खोलके पंफुलिया देश के पर्गा नगर में आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के यिरूशलीम को लौट गया ॥ १४ । और पर्गा से आगे बढ़के वे पिसिदिया देश के अन्तेखिया नगर में पहुचे और विश्राम के दिन सभा के घर में प्रवेश करके बैठ गये ॥ १५ । और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक के पढ़े जाने के पीछे सभा के अध्यक्षों ने उन के पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि लोगों के लिये उपदेश की कोई बात आप लोगों के पास होय तो कहिये ॥ १६ । तब पावल ने खड़ा होके और हाथ से सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और ईश्वर से डरनेहारो सुनो ॥ १७ । इन इस्रायेली लोगों के ईश्वर ने हमारे पितरों को चुन लिया और इन लोगों के मिसर देश में परदेशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त भुजा से उस देश में से निकाल लिया ॥ १८ । और उस ने चालीस एक बरस जंगल में उन का निर्व्वाह किया ॥ १९ । और कनान देश में सात राज्य के लोगों का नाश करके उन का देश चिट्ठियां डलवाके उन को बांट दिया ॥ २० । इस के पीछे उस ने साढ़े चार सौ बरस के अटकल शमुएल भविष्यद्वक्ता लों उन्हें न्याय करनेहारे दिये ॥ २१ । उस समय से उन्हों ने राजा चाहा और ईश्वर ने चालीस बरस लों बिन्यामीन के कुल के एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शावल को उन्हें दिया ॥ २२ । और उस को अलग करके उस ने उन्हों के लिये दाऊद को राजा होने को उठाया जिस के विषय में उस ने साक्षी देके कहा मैं ने यिशी का पुत्र दाऊद अपने मन के अनुसार एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छा को पूरी करेगा ॥ २३ । इसी के वंश में से ईश्वर ने प्रतिज्ञा के अनुसार इस्रायेल के लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात् यीशु को उठाया ॥ २४ । पर उस के आने के आगे योहन ने सब इस्रायेली लोगों को पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश दिया ॥ २५ । और योहन जब अपनी दौड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कौन हूं . मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिस के पांवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं हूं ॥

२६ । हे भाइयो तुम जो इब्राहीम के वंश के सन्तान हो और तुम्हों में जो ईश्वर से डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राण की कथा भेजी गई है ॥ २७ । क्योंकि यिरूशलीम के निवासियों ने और उन के प्रधानों ने यीशु को न पहचानके उस का विचार

करने में भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी जो हर एक विश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं॥ २८। और उन्हों ने बध के योग्य कोई दोष उस में न पाया तौभी पिलात से बिन्ती किई कि वह घात किया जाय॥ २९। और जब उन्हों ने उस के विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी किई थीं तब उसे काठ पर से उतारके कबर में रखा॥ ३०। परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया॥ ३१। और उस ने बहुत दिन उन्हों को जो उस के संग गालील से यिरूशलीम में आये थे दर्शन दिया और वे लोगों के पास उस के साक्षी हैं॥ ३२। हम उस प्रतिज्ञा का जो पितरों से किई गई तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं॥ ३३। कि ईश्वर ने यीशु को उठाने में यह प्रतिज्ञा उन के सन्तानों के अर्थात् हमों के लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीत में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्म दिया है॥ ३४। और उस ने जो उस को मृतकों में से उठाया और वह कभी सड़ न जायगा इस लिये यूं कहा है कि मैं ने दाऊद पर जो अचल कृपा किई सो तुम पर करूंगा॥ ३५। इस लिये उस ने दूसरे एक गीत में भी कहा है कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा॥ ३६। दाऊद तो ईश्वर की इच्छा से अपने समय के लोगों की सेवा करके सो गया और अपने पितरों में मिला और सड़ गया॥ ३७। परन्तु जिस को ईश्वर ने जिला उठाया वह नहीं सड़ गया॥ ३८। इस लिये हे भाइयो जानो कि इसी के द्वारा पापमोचन की कथा तुम को सुनाई जाती है॥ ३९। और इसी के हेतु से हर एक विश्वासी जन सब बातों से निर्दोष ठहराया जाता है जिन से तुम मूसा की व्यवस्था के हेतु से निर्दोष नहीं ठहर सकते थे॥ ४०। इस लिये चैाकस रहो कि जो भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में कहा गया है सो तुम पर न पड़े॥ ४१। कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और लोप हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुम से उस का वर्णन करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे॥

४२। जब यिहूदी लोग सभा के घर में से निकलते थे तब अन्यदेशियों ने बिन्ती किई कि यह बातें अगले विश्रामवार हम से कही जायें॥ ४३। और जब सभा उठ गई तब यिहूदियों में से और भक्तिमान यिहूदीय मतावलम्बियों में से बहुत लोग पावल और बर्णबा के पीछे हो लिये और उन्हों ने उन से बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वर के अनुग्रह में बने रहो॥

४४। अगले विश्रामवार नगर के प्राय सब लोग ईश्वर का बचन सुनने को एकट्ठे आये॥ ४५। परन्तु यिहूदी लोग भीड़ को देखके डाह से भर गये और विवाद औ निन्दा करते हुए पावल की बातों के विरुद्ध बोलने लगे॥ ४६। तब पावल और बर्णबा ने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हीं से कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर फिरते हैं॥ ४७। क्योंकि परमेश्वर ने हमें यूं ही आज्ञा दिई है कि मैं ने तुझे अन्यदेशियों की ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवी के अन्त लों त्राणकर्त्ता होवे॥ ४८। तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आनन्दित हुए और प्रभु के बचन की बड़ाई करने लगे और जितने लोग अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे उन्हों ने विश्वास किया॥ ४९। तब प्रभु का बचन उस सारे देश में फैलने लगा॥ ५०। परन्तु यिहूदियों ने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उसकाया और पावल और बर्णबा पर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानों में से निकाल दिया॥ ५१। तब वे उन के विरुद्ध अपने पांवों की धूल झाड़के इकोनिया नगर में आये॥ ५२। और शिष्य लोग आनन्द से और पवित्र आत्मा से पूर्ण हुए॥

१४. इकोनिया में उन्हों ने यिहूदियों के सभा के घर में एक संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों और यूनानियों में से भी बहुत लोगों ने विश्वास किया॥ २। परन्तु न माननेहारे यिहूदियों ने अन्यदेशियों के मन भाइयों के विरुद्ध उसकाये और बुरे

कर दिये ॥ ३। सो उन्हों ने प्रभु के भरोसे जो अपने अनुग्रह के बचन पर साक्षी देता था और उन के हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाता था साहस से बात करते हुए बहुत दिन बिताये ॥ ४। और नगर के लोग विभिन्न हुए और कितने तो यिहूदियों के साथ और कितने प्रेरितों के साथ थे ॥ ५। परन्तु जब अन्यदेशियों और यिहूदियों ने भी अपने प्रधानों के संग उन की दुर्दशा करने और उन्हें पत्थरवाह करने को हल्ला किया ॥ ६। तब वे जान गये और लुकाओनिया देश के लुस्त्रा और दर्बी नगरों में और आसपास के देश में भाग गये ॥ ७। और वहां सुसमाचार प्रचार करने लगे ॥

८। लुस्त्रा में एक मनुष्य पांवों का निर्बल बैठा था जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था ॥ ९। वह पावल को बात करते सुनता था और उस ने उस की ओर ताकके देखा कि इस को चंगा किये जाने का बिश्वास है ॥ १०। और बड़े शब्द से कहा अपने पांवों पर सीधा खड़ा हो . तब वह कूदने और फिरने लगा ॥

११। पावल ने जो किया था उसे देखके लोगों ने लुकाओनीय भाषा में ऊंचे शब्द से कहा देवगण मनुष्यों के समान होके हमारे पास उतर आये हैं ॥ १२। और उन्हों ने बर्णबा को जूपितर और पावल को हर्मि कहा क्योंकि वह बात करने में मुख्य था ॥ १३। और जूपितर जो उन के नगर के साम्हने था उस का याजक बैलों को और फूलों के हारों को फाटकों पर लाके लोगों के संग बलिदान किया चाहता था ॥ १४। परन्तु प्रेरितों ने अर्थात बर्णबा और पावल ने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगों की ओर लपक गये और पुकारके बोले ॥ १५। हे मनुष्यो यह क्यों करते हो . हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ विषयों से जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया ॥ १६। उस ने बीती हुई पीढ़ियों में सब देशों के लोगों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया ॥ १७। तौभी उस ने अपने को बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है कि वह भलाई किया करता और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देके हमों के मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता है ॥ १८। यह कहने से उन्हों ने लोगों को कठिनता से रोका कि वे उन के आगे बलिदान न करें ॥

१९। परन्तु कितने यिहूदियों ने अन्तैखिया और इकोनिया से आके लोगों को मनाया और पावल को पत्थरवाह किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे नगर के बाहर घसीट ले गये ॥ २०। परन्तु जब शिष्य लोग उस पास घिर आये तब उस ने उठके नगर में प्रवेश किया और दूसरे दिन बर्णबा के संग दर्बी को गया ॥

२१। जब उन्हों ने उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाया और बहुतों को शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और इकोनिया और अन्तैखिया को लौटे ॥ २२। और यह उपदेश करते हुए कि बिश्वास में बने रहो और कि हमें बड़े क्लेश से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा शिष्यों के मन को स्थिर करते गये ॥ २३। और हर एक मण्डली में प्राचीनों को उन पर ठहराके उन्हों ने उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने बिश्वास किया था ॥ २४। और पिसिदिया से होके वे पंफुलिया में आये ॥ २५। और पर्गा में बचन सुनाके आतालिया नगर को गये ॥ २६। और वहां से वे जहाज पर अन्तैखिया को चले जहां से वे उस काम के लिये जो उन्हों ने पूरा किया था ईश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गये थे ॥ २७। वहां पहुंचके और मण्डली को एकट्ठी करके उन्हों ने बताया कि ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे और कि उस ने अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार खोला था ॥ २८। और उन्हों ने वहां शिष्यों के संग बहुत दिन बिताये ॥

१५. कितने लोग यिहूदिया से आके भाइयों को उपदेश देने लगे कि जो मूसा की रीति के अनुसार तुम्हारा

खतना न किया जाय तो तुम त्राण नहीं पा सकते हो॥ २। जब पावल और बर्णबा से और उन्हों से बहुत विवाद और विचार हुआ था तब भाइयों ने यह ठहराया कि पावल और बर्णबा और हम में से कितने और जन इस प्रश्न के विषय में यिरूशलीम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जायेंगे॥ ३। सो मण्डली से कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फैनीकिया और शोमिरोन से होते हुए अन्यदेशियों के मन फेरने का समाचार कहते गये और सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया॥ ४। जब वे यिरूशलीम में पहुंचे तब मण्डली ने और प्रेरितों और प्राचीनों ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हों ने बताया कि ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे॥ ५। परन्तु फरीशियों के पंथ के लोगों में से कितने जिन्हों ने विश्वास किया था उठके बोले उन्हें खतना करना और मूसा की व्यवस्था को पालन करने की आज्ञा देना उचित है॥

६। तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बात का विचार करने को एकट्ठे हुए॥ ७। जब बहुत विवाद हुआ तब पितर ने उठके उन से कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए ईश्वर ने हम में से चुन लिया कि मेरे मुंह से अन्यदेशी लोग सुसमाचार का वचन सुनके विश्वास करें॥ ८। और अन्तर्यामी ईश्वर ने जैसा हम को तैसा उन को भी पवित्र आत्मा देके उन के लिये साक्षी दिई॥ ९। और विश्वास से उन्हों के मन को शुद्ध करके हमों के और उन्हों के बीच में कुछ भेद न रखा॥ १०। सो अब तुम क्यों ईश्वर की परीक्षा करते हो कि शिष्यों के गले पर जूआ रखो जिसे न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके॥ ११। परन्तु जिस रीति से वे उसी रीति से हम भी प्रभु यीशु खीष्ट के अनुग्रह से त्राण पाने को विश्वास करते हैं॥

१२। तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावल की जो यह बताते थे कि ईश्वर ने उन के द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियों के बीच में किये थे सुनती रही॥ १३। जब वे चुप हुए तब याकूब ने उत्तर दिया कि हे भाइयो मेरी सुन लीजिये॥ १४। शिमोन ने बताया है कि ईश्वर ने क्योंकर अन्यदेशियों पर पहिले दृष्टि किई कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग को ले लेवे॥ १५। और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं जैसा लिखा है॥ १६। कि परमेश्वर जो यह सब करता है सो कहता है इस के पीछे मैं फिरके दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उस के खंड़हर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा॥ १७। इस लिये कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब अन्यदेशी लोग जो मेरे नाम से पुकारे जाते हैं परमेश्वर को ढूंढें॥ १८। ईश्वर अपने सब कामों को आदि से जानता है॥ १९। इस लिये मेरा विचार यह है कि अन्यदेशियों में से जो लोग ईश्वर की ओर फिरते हैं हम उन को दुःख न देवें॥ २०। परन्तु उन के पास लिखें कि वे मूरतों की अशुद्ध वस्तुओं से और व्यभिचार से और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें॥ २१। क्योंकि पूर्वों के समय से मूसा के पुस्तक के नगर नगर में प्रचार करनेहारे हैं और हर एक विश्रामवार वह सभा के घरों में पढ़ा जाता है॥

२२। तब सारी मण्डली सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने में से मनुष्यों को चुनें अर्थात् यिहूदा को जो बर्शबा कहावता है और सीला को जो भाइयों में बड़े मनुष्य थे और उन्हें पावल और बर्णबा के संग अन्तैखिया को भेजें॥ २३। और उन के हाथ यही लिख भेजें कि प्रेरित औ प्राचीन औ भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया और किलिकिया में के उन भाइयों को जो अन्यदेशियों में से हैं नमस्कार॥ २४। हम ने सुना है कि कितने लोगों ने हम में से निकलके तुम्हें बातों से व्याकुल किया है कि वे खतना करवाने को और व्यवस्था को पालन करने को कहते हुए तुम्हारे मन को चंचल करते हैं पर हम ने उन को आज्ञा न दिई॥ २५। इस लिये हम ने एक चित्त होके अच्छा जाना है॥ २६। कि मनुष्यों को चुनके अपने प्यारे बर्णबा और पावल के संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणों को हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम के लिये सौंप दिया है तुम्हारे पास भेजें॥ २७। सो हम ने यिहूदा और सीला को भेजा है जो

आप भी यही बातें मुखवचन से कह देवें ॥ २८ । पवित्र आत्मा को और हम को अच्छा लगा है कि तुम्हों पर इन आवश्यक बातों से अधिक कोई भार न रखें ॥ २९ । अर्थात् कि मूरतों के आगे बलि किये हुओं से और लोहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से परे रहो . इन्हों से अपने को बचा रखने से तुम भला करोगे . आगे शुभ ॥

३० । सो वे विदा होके अन्तैखिया में पहुंचे और लोगों को एकट्ठे करके वह पत्र दिया ॥ ३१ । वे पढ़के उस शांति की बात से आनन्दित हुए ॥ ३२ । और यिहूदा और सीला ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातों से भाइयों को समझाके स्थिर किया ॥ ३३ । और कुछ दिन रहके वे प्रेरितों के पास जाने को कुशल से भाइयों से विदा हुए ॥ ३४ । परन्तु सीला ने वहां रहना अच्छा जाना ॥ ३५ । और पावल और बर्णबा बहुत औरों के संग प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते हुए अन्तैखिया में रहे ॥

३६ । कितने दिनों के पीछे पावल ने बर्णबा से कहा जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन प्रचार किया आओ हम हर एक नगर में फिरके अपने भाइयों को देख लेवें कि वे कैसे हैं ॥ ३७ । तब बर्णबा ने योहन को जो मार्क कहावता है संग लेने का विचार किया ॥ ३८ । परन्तु पावल ने उस को जो पम्फुलिया से उन के पास से चला गया और काम पर उन के साथ न गया संग ले जाना अच्छा नहीं समझा ॥ ३९ । सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरे को छोड़ गये और बर्णबा मार्क को लेके जहाज पर कुप्रस को गया ॥ ४० । परन्तु पावल ने सीला को चुन लिया और भाइयों से ईश्वर के अनुग्रह पर सोंपा जाके निकला ॥ ४१ । और मण्डलियों को स्थिर करता हुआ सारे सुरिया और किलिकिया में फिरा ॥

१६. तब पावल दर्बी और लुस्त्रा में पहुंचा और देखो वहां तिमोथिय नाम एक शिष्य था जो किसी विश्वासी यिहूदिनी का पुत्र था परन्तु उस का पिता यूनानी था ॥ २ । और लुस्त्रा और इकोनिया में के भाई लोग उस की सुख्याति करते थे ॥ ३ । पावल ने चाहा कि यह मेरे संग जाय और जो यिहूदी लोग उन स्थानों में थे उन के कारण उसे लेके उस का खतना किया क्योंकि वे सब उस के पिता को जानते थे कि वह यूनानी था ॥ ४ । परन्तु नगर नगर जाते हुए उन्हों ने उन विधियों को जो यिरूशलीम में के प्रेरितों और प्राचीनों से ठहराई गई थीं भाइयों को सोंप दिया कि उन को पालन करें ॥ ५ । सो मण्डलियां विश्वास में स्थिर होती थीं और प्रतिदिन गिनती में बढ़ती थीं ॥ ६ । और जब वे फ्रूगिया और गलातिया देशों में फिर चुके और पवित्र आत्मा ने उन्हें आशिया देश में बात सुनाने को बर्जा ॥ ७ । तब उन्हों ने मुसिया देश पर आके बिथुनिया देश को जाने की चेष्टा किई परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया ॥ ८ । और मुसिया से होके वे त्रोआ नगर में आये ॥

९ । रात को एक दर्शन पावल को दिखाई दिया कि कोई माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ उस से बिन्ती करके कहता था कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारा उपकार कीजिये ॥ १० । जब उस ने यह दर्शन देखा तब हम ने निश्चय जाना कि प्रभु ने हमें उन लोगों के तई सुसमाचार सुनाने को बुलाया है इस लिये हम ने तुरन्त माकिदोनिया को जाने चाहा ॥ ११ । सो त्रोआ से खोलके हम सामोत्राकी टापू को सोंधे आये और दूसरे दिन नियापलि नगर में पहुंचे ॥ १२ । वहां से हम फिलिपी नगर में आये जो माकिदोनिया के उस अंश का पहिला नगर है और रोमियों की बस्ती है और हम उस नगर में कुछ दिन रहे ॥

१३ । विश्राम के दिन हम नगर के बाहर नदी के तीर पर गये जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके स्त्रियों से जो एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे ॥ १४ । और लुदिया नाम थुयातीरा नगर की एक स्त्री बैंजनी वस्त्र बेचनेहारी जो ईश्वर की उपासना किया करती थी सुनती थी और प्रभु ने उस का मन खोला कि वह पावल की बातों पर चित्त लगावे ॥ १५ । और जब उस ने और उस के घराने ने बपतिसमा

लिया था तब उस ने बिन्ती किई कि यदि आप लोगों ने मुझे प्रभु की बिश्वासिनी जान लिई है तो मेरे घर में आके रहिये और वह हमें मनाके ले गई॥

१६। जब हम प्रार्थना को जाते थे तब एक दासी जिसे आगमवक्ता भूत लगा था हम को मिली जो आगम के कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कमा लाती थी॥ १७। वह पावल के और हमारे पीछे आके पुकारने लगी कि ये मनुष्य सर्व्वप्रधान ईश्वर के दास हैं जो हमें त्राण के मार्ग की कथा सुनाते हैं॥ १८। उस ने बहुत दिन यह किया परन्तु पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूत से कहा मैं तुझे यीशु खीष्ट के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया॥

१९। जब उस के स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा गई है तब उन्हों ने पावल और सीला को पकड़के चौक में प्रधानों के पास खींच लिया॥ २०। और उन्हें अध्यक्षों के पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगर के लोगों को व्याकुल करते हैं॥ २१। और व्यवहारों को प्रचार करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मानना हमों को जो रोमी हैं उचित नहीं है॥ २२। तब लोग उन के विरुद्ध एकट्ठे चढ़ आये और अध्यक्षों ने उन के कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दिई॥ २३। और उन्हें बहुत घायल करके बन्दीगृह में डाला और बन्दीगृह के रक्षक को उन्हें यत्न से रखने की आज्ञा दिई॥ २४। उस ने ऐसी आज्ञा पाके उन्हें भीतर की कोठरी में डाला और उन के पांव काठ में ठोंके॥

२५। आधी रात को पावल और सीला प्रार्थना करते हुए ईश्वर का भजन गाते थे और बंधुए उन की सुनते थे॥ २६। तब अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृह की नेवें हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभों के बंधन खुल पड़े॥ २७। तब बन्दीगृह का रक्षक जागा और बन्दीगृह के द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और अपने तईं मार डालने पर था कि वह समझता था कि बंधुए लोग भाग गये हैं॥ २८। परन्तु पावल ने बड़े शब्द से पुकारके कहा अपने को कुछ दुःख न देना क्योंकि हम सब यहां हैं॥ २९। तब वह दीपक मंगाके भीतर लपक गया और कम्पित होके पावल और सीला को दण्डवत किई॥ ३०। और उन को बाहर लाके कहा हे प्रभुओ त्राण पाने को मुझे क्या करना होगा॥ ३१। उन्हों ने कहा प्रभु यीशु खीष्ट पर बिश्वास कर तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा॥ ३२। और उन्हों ने उस को और सभों को जो उस के घर में थे प्रभु का बचन सुनाया॥ ३३। और रात को उसी घड़ी उस ने उन को लेके उन के घावों को धोया और उस ने और उस के सब लोगों ने तुरन्त बपतिसमा लिया॥ ३४। तब उस ने उन्हें अपने घर में लाके उन के आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत ईश्वर पर बिश्वास किये से आनन्दित हुआ॥

३५। बिहान हुए अध्यक्षों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ देओ॥ ३६। तब बन्दीगृह के रक्षक ने यह बातें पावल से कह सुनाई कि अध्यक्षों ने कहला भेजा है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके कुशल से जाइये॥ ३७। परन्तु पावल ने उन से कहा उन्हों ने हमें जो रोमी मनुष्य हैं दण्ड के योग्य ठहराये बिना लोगों के आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या चुपके से हमें निकाल देते हैं. सो नहीं परन्तु आप ही आके हमें बाहर ले जावें॥ ३८। प्यादों ने यह बातें अध्यक्षों से कह दिई और वे यह सुनके कि रोमी हैं डर गये॥ ३९। और आके उन्हें मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगर से निकल जाइये॥ ४०। वे बन्दीगृह में से निकलके लुदिया के यहां गये और भाइयों को देखके उन्हें उपदेश देके चले गये॥

१७. अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरों से होके वे थिसलोनिका नगर में आये जहां यिहूदियों की सभा का घर था॥ २। और पावल अपनी रीति पर उन के

यहां गया और तीन विश्रामवार उन से धर्म्मपुस्तक में से बातें किईं॥ ३। और यही खोल देता और समझाता रहा कि खीष्ट को दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना आवश्यक था और कि यह यीशु जिस की कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं वही खीष्ट है॥ ४। तब उन में से कितने जनों ने और भक्त यूनानियों में से बहुत लोगों ने और बहुत सी बड़ी बड़ी स्त्रियों ने मान लिया और पावल और सीला से मिल गये॥ ५। परन्तु न माननेहारे यिहूदियों ने डाह करके बाजारू लोगों में से कितने दुष्ट मनुष्यों को लिया और भीड़ लगाके नगर में धूम मचाई और यासोन के घर पर चढ़ाई करके पावल और सीला को लोगों के पास लाने चाहा॥ ६। और उन्हें न पाके वे यह पुकारते हुए यासोन को और कितने भाइयों को नगर के प्रधानों के आगे खींच लाये कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलटा पुलटा किया है यहां भी आये हैं॥ ७। और यासोन ने उन की पहुनई किई है और ये सब यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा राजा है कैसर की आज्ञाओं के विरुद्ध करते हैं॥ ८। सो उन्हों ने लोगों को और नगर के प्रधानों को जो यह बातें सुनते थे व्याकुल किया॥ ९। और उन्हों ने यासोन से और दूसरों से मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया॥

१०। तब भाइयों ने तुरन्त रात को पावल और सीला को बिरिया नगर को भेजा और वे पहुंचके यिहूदियों की सभा के घर में गये॥ ११। ये तो थिसलोनिका में के यिहूदियों से सुशील थे और उन्हों ने सब भांति से तत्पर होके वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तक में ढूंढ़ते रहे कि यह बातें यूंहीं हैं कि नहीं॥ १२। सो उन में से बहुतों ने और यूनानीय कुलवन्ती स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया॥ १३। परन्तु जब थिसलोनिका के यिहूदियों ने जाना कि पावल बिरिया में भी ईश्वर का वचन प्रचार करता है तब वे वहां भी आके लोगों को उसकाने लगे॥ १४। तब भाइयों ने तुरन्त पावल को विदा किया कि वह समुद्र की ओर जावे परन्तु सीला और तिमोथिय वहां रह गये॥ १५। पावल के पहुंचानेहारे उसे आथीनी नगर तक लाये और सीला और तिमोथिय के लिये उस पास बहुत शीघ्र जाने की आज्ञा लेके विदा हुए॥

१६। जब पावल आथीनी में उन की बाट जोहता था तब नगर को मूरतों से भरे हुए देखने से उस का मन भीतर से उभड़ आया॥ १७। सो वह सभा के घर में यिहूदियों और भक्त लोगों से और प्रतिदिन चौक में जो लोग मिलते थे उन्हों से बातें करने लगा॥ १८। तब इपिकूरीय और स्तोइकीय ज्ञानियों में से कितने उस से विवाद करने लगे और कितने बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरों ने कहा वह ऊपरी देवताओं का प्रचारक देख पड़ता है. क्योंकि वह उन्हें यीशु का और जी उठने का सुसमाचार सुनाता था॥ १९। तब उन्हों ने उसे लेके अरेयोपाग नाम स्थान पर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया उपदेश जो तुझ से सुनाया जाता है क्या है॥ २०। क्योंकि तू अनूठी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं कि इन का अर्थ क्या है॥ २१। सब आथीनीय लोग और परदेशी जो वहां रहते थे किसी और काम में नहीं केवल नई नई बात के कहने अथवा सुनने में समय काटते थे॥

२२। तब पावल ने अरेयोपाग के बीच में खड़ा होके कहा हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगों को सर्व्वथा बड़े देवपूजक देखता हूं॥ २३। क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगों की पूज्य वस्तुओं को देखता था तब एक ऐसी वेदी भी पाई जिस पर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वर की. सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसी की कथा मैं आप लोगों को सुनाता हूं॥ २४। ईश्वर जिस ने जगत और सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में वास नहीं करता है॥ २५। और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखने से मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह आप ही सभों को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है॥ २६। उस ने एक ही लोहू से मनुष्यों के सब जातिगण सारी पृथिवी पर बसने

को बनाये हैं और ठहराये हुए समयों को और उन के निवास के सिवानों को इस लिये बांधा है॥ २७। कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें क्या जानें उसे टटोलके पावें और तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं है॥ २८। क्योंकि हम उसी से जीते और फिरते और होते हैं जैसे आप लोगों के यहां के कितने कवियों ने भी कहा है कि हम तो उस के वंश हैं॥ २९। सो जो हम ईश्वर के वंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के अर्थात् मनुष्य की कारीगरी और कल्पना की गढ़ी हुई वस्तु के समान है हमें उचित नहीं है॥ ३०। इस लिये ईश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अभी सर्व्वत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है॥ ३१। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया है धर्म्म से जगत का न्याय करेगा और उस ने उस मनुष्य को मृतकों में से उठाके सभों को निश्चय कराया है॥

३२। मृतकों के जी उठने की बात सुनके कितने ठट्ठा करने लगे और कितने बोले हम इस के विषय में तुझ से फिर सुनेंगे॥ ३३। इस पर पावल उन के बीच में से चला गया॥ ३४। परन्तु कई एक मनुष्य उस से मिल गये और विश्वास किया जिन में दियोनुसिय अरेयोपागी था और दामरी नाम एक स्त्री और उन के संग कितने और लोग॥

१८. इस के पीछे पावल आथीनी से निकलके करिन्थ नगर में आया॥ २। और अकूला नाम पन्त देश का एक यिहूदी था जो उन दिनों में इतलिया देश से आया था इस लिये कि क्लौदिय ने सब यिहूदियों को रोम नगर से निकल जाने की आज्ञा दिई थी. पावल उस को और उस की स्त्री प्रिस्कीला को पाके उन के यहां गया॥ ३। और उस का और उन का एक ही उद्यम था इस लिये वह उन के यहां रहके कमाता था क्योंकि तंबू बनाना उन का उद्यम था॥ ४। परन्तु हर एक विश्रामवार वह सभा के घर में बातें करके यिहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था॥ ५। जब सीला और तिमोथिय माकिदोनिया से आये तब पावल आत्मा के बश में होके यिहूदियों को साक्षी देता था कि यीशु तो खीष्ट है॥ ६। परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे तब उस ने कपड़े झाड़के उन से कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे ही सिर पर होय. मैं निर्दोष हूं. अब से मैं अन्यदेशियों के पास जाऊंगा॥ ७। और वहां से जाके वह युस्त नाम ईश्वर के एक उपासक के घर में आया जिस का घर सभा के घर से लगा हुआ था॥ ८। तब सभा के अध्यक्ष क्रीस्य ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया और करिन्थियों में से बहुत लोग सुनके विश्वास करते और बपतिसमा लेते थे॥ ९। और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पावल से कहा मत डर परन्तु बात कर और चुप मत रह॥ १०। क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं॥ ११। सो वह उन्हों में ईश्वर का बचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा॥

१२। जब गालियो आखाया देश का प्रधान था तब यिहूदी लोग एक चित्त होकर पावल पर चढ़ाई करके उसे बिचार आसन के आगे लाये॥ १३। और बोले यह तो मनुष्यों को व्यवस्था के बिपरीत रीति से ईश्वर की उपासना करने को समझाता है॥ १४। ज्योंही पावल मुंह खोलने पर था त्योंही गालियो ने यिहूदियों से कहा हे यिहूदियो जो यह कोई कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित जानके मैं तुम्हारी सहता॥ १५। परन्तु जो यह विवाद उपदेश के और नामों के और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय में है तो तुम ही जानो क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी होने नहीं चाहता हूं॥ १६। और उस ने उन्हें बिचार आसन के आगे से खदेड़ दिया॥ १७। तब सारे यूनानियों ने सभा के अध्यक्ष सोस्थिनी को पकड़के बिचार आसन के साम्ने मारा और गालियो ने इन बातों की कुछ चिन्ता न किई॥

१८। पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयों से बिदा होके जहाज पर सुरिया देश को गया और उस के संग प्रिस्कीला और अकूला . उस ने किंक्रिया नगर में अपना सिर मुंड़वाया क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी ॥ १९। और उस ने इफिस नगर में पहुंचके उन को वहां छोड़ा और आप ही सभा के घर में प्रवेश करके यिहूदियों से बातें किईं॥ २०। जब उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमारे संग कुछ दिन और रहिये तब उस ने न माना ॥ २१। परन्तु यह कहके उन से बिदा हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब यिरूशलीम में करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा ॥ २२। तब उस ने इफिस से खोल दिया और कैसरिया में आया तब (यिरूशलीम को) जाके मण्डली को नमस्कार किया और अन्तैखिया को गया ॥ २३। फिर कुछ दिन रहके वह निकला और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया देशों में सब शिष्यों को स्थिर करता हुआ फिरा ॥

२४। अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगर का एक यिहूदी जो सुवक्ता पुरुष और धर्म्मपुस्तक में सामर्थी था इफिस में आया ॥ २५। उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और आत्मा में अनुरागी होके प्रभु के विषय में की बातें बड़े यत्न से सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहन के बपतिसमा की बात जानता था ॥ २६। वह सभा के घर में साहस से बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीला ने उस की सुनके उसे लिया और ईश्वर का मार्ग उस को और ठीक करके बताया ॥ २७। और वह आखाया को जाने चाहता था सो भाइयों ने उसे ढाढ़स देके शिष्यों के पास लिखा कि वे उसे ग्रहण करें और उस ने पहुंचके अनुग्रह से जिन्हों ने बिश्वास किया था उन्हों की बड़ी सहायता किई ॥ २८। क्योंकि यीशु जो ख्रीष्ट है यह बात धर्म्मपुस्तक के प्रमाणों से बतलाके उस ने बड़े यत्न से लोगों के आगे यिहूदियों को निरुत्तर किया ॥

१९. अपल्लो के करिन्थ में होते हुए पावल ऊपर के सारे देश में फिरके इफिस में आया ॥ २। और कितने शिष्यों को पाके उन से कहा क्या तुम ने बिश्वास करके पवित्र आत्मा पाया . उन्हों ने उस से कहा हम ने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा दिया जाता है ॥ ३। तब उस ने उन से कहा तो तुम ने किस बात पर बपतिसमा लिया . उन्हों ने कहा योहन के बपतिसमा पर ॥ ४। पावल ने कहा योहन ने पश्चात्ताप का बपतिसमा देके अपने पीछे आनेवाले ही पर बिश्वास करने को लोगों से कहा अर्थात ख्रीष्ट यीशु पर ॥ ५। यह सुनके उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम से बपतिसमा लिया ॥ ६। और जब पावल ने उन पर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उन पर आया और वे अनेक बोलियां बोलने और भविष्यद्वाक्य कहने लगे ॥ ७। ये सब मनुष्य बारह एक थे ॥

८। तब पावल सभा के घर में प्रवेश करके साहस से बात करने लगा और तीन मास ईश्वर के राज्य के विषय में की बातें सुनाता और समझाता रहा ॥ ९। परन्तु जब कितने लोग कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगों के आगे इस मार्ग की निन्दा करने लगे तब वह उन के पास से चला गया और शिष्यों को अलग करके तुरान नाम किसी मनुष्य के विद्यालय में प्रतिदिन बातें किईं ॥ १०। यह दो बरस होता रहा यहां लों कि आशिया के निवासी यिहूदी और यूनानी भी सभों ने प्रभु यीशु का वचन सुना ॥ ११। और ईश्वर ने पावल के हाथों से अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये ॥ १२। यहां लों कि उस के देह पर से अंगोछे और रूमाल रोगियों के पास पहुचाये जाते थे और रोग उन से जाते रहते थे और दुष्ट भूत उन में से निकल जाते थे ॥

१३। तब यिहूदी लोगों में से जो इधर उधर फिरा करते और भूत निकालने को किरिया देते थे कितने जन उन्हों पर जिन को दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशु का नाम यह कहके लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम उसी की तुम्हें किरिया

देते हैं॥ १४। स्कीवा नाम एक यिहूदीय प्रधान याजक के सात पुत्र थे जो यह करते थे॥ १५। परन्तु दुष्ट भूत ने उत्तर दिया कि यीशु को मैं जानता हूं और पावल को पहचानता हूं पर तुम कौन हो॥ १६। और वह मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा था उन पर लपकके और उन्हें वश में लाके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल उस घर में से भागे॥ १७। और यह बात इफिस के निवासी यिहूदी और यूनानी भी सब जान गये और उन सभों को डर लगा और प्रभु यीशु के नाम की महिमा किई जाती थी॥ १८। और जिन्हों ने विश्वास किया था उन्हों में से बहुतों ने आके अपने काम मान लिये और बतलाये॥ १९। टोना करनेहारों में से भी अनेकों ने अपनी पोथियां एकट्ठी करके सभों के साम्ने जला दिईं और उन्हों का दाम जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा॥ २०। यूं पराक्रम से प्रभु का वचन फैला और प्रबल हुआ॥

२१। जब यह बातें हो चुकीं तब पावल ने आत्मा में माकिदोनिया और आखाया के बीच से यिरूशलीम जाने को ठहराया और कहा कि वहां जाने के पीछे मुझे रोम को भी देखना होगा॥ २२। सो जो उस की सेवा करते थे उन में से दो को अर्थात तिमोथिय और इरास्त को माकिदोनिया में भेजके वह आप ही आशिया में कुछ दिन रह गया॥ २३। उस समय इस मार्ग के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ॥ २४। क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक सुनार आर्त्तिमी के मन्दिर की चांदी की मूरतें बनाने से कारीगरों को बहुत काम दिलाता था॥ २५। उस ने उन्हों को और ऐसी ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस काम से हमों को संपत्ति प्राप्त होती है॥ २६। और तुम देखते और सुनते हो कि इस पावल ने यह कहके कि जो हाथों से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल इफिस के नहीं परन्तु प्राय समस्त आशिया के बहुत लोगों को समझाके भरमाया है॥ २७। और हमों को केवल यह डर नहीं है कि यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी कि बड़ी देवी आर्त्तिमी का मन्दिर तुच्छ समझा जाय और उस की महिमा जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट हो जाय॥ २८। वे यह सुनके और क्रोध से पूर्ण होके पुकारने लगे इफिसियों की आर्त्तिमी की जय॥ २९। और सारे नगर में बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और आरिस्तार्ख दो माकिदोनियों को जो पावल के संगी पथिक थे पकड़के एक चित्त होके रंगशाला में दौड़ गये॥ ३०। जब पावल ने लोगों के पास भीतर जाने चाहा तब शिष्यों ने उस को जाने न दिया॥ ३१। आशिया के प्रधानों में से भी कितनों ने जो उस के मित्र थे उस पास भेजके उस से बिन्ती किई कि रंगशाला में जाने की जोखिम मत अपने पर उठाइये॥ ३२। सो कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घबराई हुई थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस कारण एकट्ठे हुए हैं॥ ३३। तब भीड़ में से कितनों ने सिकन्दर को जिसे यिहूदियों ने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के आगे उत्तर दिया चाहता था॥ ३४। परन्तु जब उन्हों ने जाना कि वह यिहूदी है सब के सब एक शब्द से दो घड़ी के अटकल इफिसियों की आर्त्तिमी की जय पुकारते रहे॥ ३५। तब नगर के लेखक ने लोगों को शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसियों का नगर बड़ी देवी आर्त्तिमी का और जूपितर की ओर से गिरी हुई मूर्त्ति का टहलुआ है॥ ३६। सो जब कि इन बातों का खण्डन नहीं हो सकता है उचित है कि तुम शांत होओ और कोई काम उतावली से न करो॥ ३७। क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाये हो जो न पवित्र वस्तुओं के चोर न तुम्हारी देवी के निन्दक हैं॥ ३८। सो जो दीमीत्रिय को और उस के संग के कारीगरों को किसी से विवाद है तो विचार के दिन होते हैं और प्रधान लोग हैं वे एक दूसरे पर नालिश करें॥ ३९। परन्तु जो तुम दूसरी बातों के विषय में कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक सभा में निर्णय किया जायगा॥ ४०। क्योंकि जो आज हुई है उस के हेतु से हम पर बलवे का दोष लगाये

जाने का डर है इस लिये कि कोई कारण नहीं है जिस करके हम इस भीड़ का उत्तर दे सकेंगे॥ ४१। और यह कहके उस ने सभा को बिदा किया॥

२०. जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्यों को अपने पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जाने को चल निकला॥ २। उस सारे देश में फिरके और बहुत बातों से उन्हें उपदेश देके वह यूनान देश में आया॥ ३। और तीन मास रहके जब वह जहाज पर सूरिया को जाने पर था यिहूदी लोग उस की घात में लगे इस लिये उस ने माकिदोनिया होके लौट जाने को ठहराया॥ ४। विरिया नगर का सोपातर और थिसलोनियों में से अरिस्तार्ख और सिकुन्द और दर्बी नगर का गायस और तिमोथिय और आशिया देश के तुखिक और त्रोफिम आशिया लों उस के संग हो लिये॥ ५। इन्हों ने आगे जाके त्रोआ में हमों की बाट देखी॥ ६। और हम लोग अखमीरी रोटी के पर्व्व के दिनों के पीछे जहाज पर फिलिपी से चले और पांच दिन में त्रोआ में उन के पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे॥

७। अठवारे के पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़ने को एकट्ठे हुए तब पावल ने जो अगले दिन चले जाने पर था उन से बातें किईं और आधी रात लों बात करता रहा॥ ८। जिस उपरौठी कोठरी में वे एकट्ठे हुए थे उस में बहुत दीपक बरते थे॥ ९। और उतुख नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींद से झुक रहा था और पावल के बड़ी बेर लों बातें करते करते वह नींद से झुकके तीसरी अटारी पर से नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया गया॥ १०। परन्तु पावल उतरके उस पर औंधे पड़ गया और उसे गोदी में लेके बोला मत धूम मचाओ क्योंकि उस का प्राण उस में है॥ ११। तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के और खाके और बड़ी बेर लों भोर तक बातचीत करके वह चला गया॥ १२। और वे उस जवान को जीते ले आये और बहुत शांति पाई॥

१३। तब हम लोग आगे से जहाज पर चढ़के आसस नगर को गये जहां से हमें पावल को चढ़ा लेना था क्योंकि उस ने यूं ठहराया था इस लिये कि आप ही पैदल जानेवाला था॥ १४। जब वह आसस में हम से आ मिला तब हम उसे चढ़ाके मितुलीनी नगर में आये॥ १५। और वहां से खोलके हम दूसरे दिन खीयो टापू के साम्हने पहुंचे और अगले दिन सामो टापू में लगान किया फिर त्रोगुलिया नगर में रहके दूसरे दिन मिलीत नगर में आये॥ १६। क्योंकि पावल ने इफिस को एक ओर छोड़के जाना ठहराया इस लिये कि उस को आशिया में अबेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उस से बन पड़े तो पेंतिकोष्ट पर्व्व के दिन लों यिरूशलीम में पहुंचे॥

१७। मिलीत से उस ने लोगों को इफिस नगर भेजके मण्डली के प्राचीनों को बुलाया॥ १८। जब वे उस पास आये तब उस ने उन से कहा तुम जानते हो कि पहिले दिन से जो मैं आशिया में पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीच में रहा॥ १९। कि बड़ी दीनताई से और बहुत रो रोके और उन परीक्षाओं में जो मुझ पर यिहूदियों की कुमंत्रणा से पड़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा॥ २०। और क्योंकर मैं ने लाभ की बातों में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई और लोगों के आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई॥ २१। कि यिहूदियों और यूनानियों को भी मैं साक्षी देके ईश्वर के आगे पश्चाताप करने की और हमारे प्रभु यीशु खीष्ट पर विश्वास करने की बात कहता रहा॥ २२। और अब देखो मैं आत्मा से बंधा हुआ यिरूशलीम को जाता हूं और नहीं जानता हूं कि वहां मुझ पर क्या पड़ेगा। २३। केवल यही जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं॥ २४। परन्तु मैं किसी बात की चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्द से अपनी दौड़ को और ईश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर साक्षी देने की सेवकाई को जो मैं ने प्रभु यीशु से पाई है

पूरी करना बहुमूल्य है ॥ २५। और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन्हों में मैं ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता फिरा हूं मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे ॥ २६। इस लिये मैं आज के दिन ईश्वर को साक्षी रखके तुम से कहता हूं कि मैं सभों के लोहू से निर्दोष हूं ॥ २७। क्योंकि मैं ने ईश्वर के सारे मत में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई ॥ २८। सो अपने विषय में और सारे झुण्ड के विषय में जिस के बीच में पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वर की मण्डली की चरवाही करो जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है ॥ २९। क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे क्रूर हुंड़ार तुम्हों में प्रवेश करेंगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे ॥ ३०। तुम्हारे ही बीच में से भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्यों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी बातें कहेंगे ॥ ३१। इस लिये मैं ने जो तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एक को चिताना न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो ॥ ३२। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और उस के अनुग्रह के बचन को सोंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये हुए लोगों के बीच में अधिकार देने सकता है ॥ ३३। मैं ने किसी के रुपे अथवा सोने अथवा वस्त्र का लालच नहीं किया ॥ ३४। तुम आप ही जानते हो कि इन हाथों ने मेरे प्रयोजन की और मेरे संगियों की टहल किई ॥ ३५। मैं ने सब बातें तुम्हें बताईं कि इस रीति से परिश्रम करते हुए दुर्बलों का उपकार करना और प्रभु यीशु की बातें स्मरण करना चाहिये कि उस ने कहा लेने से देना अधिक धन्य है ॥

३६। यह बातें कहके उस ने अपने घुटने टेकके उन सभों के संग प्रार्थना किई ॥ ३७। तब वे सब बहुत रोये और पावल के गले में लिपटके उसे चूमने लगे ॥ ३८। वे सब से अधिक उस बात से शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे. तब उन्हों ने उसे जहाज लों पहुंचाया ॥

२१. जब हम ने उन से अलग होके जहाज खोला तब सीधे सीधे कोस टापू को चले और दूसरे दिन रोद टापू को और वहां से पातारा नगर पर पहुंचे ॥ २। और एक जहाज को जो फैनीकिया को जाता था पाके हम ने उस पर चढ़के खोल दिया ॥ ३। जब कुप्रस टापू देखने में आया तब हम ने उसे बायें हाथ छोड़ा और सुरिया को जाके सोर नगर में लगान किया क्योंकि जहाज की बोझाई वहां उतरने पर थी ॥ ४। और वहां के शिष्यों को पाके हम वहां सात दिन रहे. उन्हों ने आत्मा की शिक्षा से पावल से कहा यिरूशलीम को न जाइये ॥ ५। जब हम उन दिनों को पूरे कर चुके तब निकलके चलने लगे और सभों ने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर लों पहुंचाया और हमों ने तीर पर घुटने टेकके प्रार्थना किई ॥ ६। तब एक दूसरे को गले लगाके हम तो जहाज पर चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे ॥

७। तब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके तलिमाई नगर में पहुंचे और भाइयों को नमस्कार करके उन के संग एक दिन रहे ॥ ८। दूसरे दिन हम जो पावल के संग के थे वहां से चलके कैसरिया में आये और फिलिप सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था प्रवेश करके उस के यहां रहे ॥ ९। इस मनुष्य की चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो भविष्यद्वाणी कहा करती थीं ॥

१०। जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक भविष्यद्वक्ता यिहूदिया से आया ॥ ११। वह हमारे पास आके और पावल का पटुका लेके और अपने हाथ और पांव बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटुका है उस को यिरूशलीम में यिहूदी लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे ॥ १२। जब हम ने यह बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थान के रहनेहारे भी पावल से बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीम को न जाइये ॥ १३। परन्तु उस ने उत्तर दिया कि तुम क्या करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते हो.

में तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यिरूशलीम में केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु मरने को भी तैयार हूं॥ १४। जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभु की इच्छा पूरी होवे॥

१५। इन दिनों के पीछे हम लोग बांध छांदके यिरूशलीम को जाने लगे॥ १६। कैसरिया के शिष्यों में से भी कितने हमारे संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रस के एक प्राचीन शिष्य के पास जिस के यहां हम पाहुन होवें हमें पहुंचाया॥ १७। जब हम यिरूशलीम में पहुंचे तब भाइयों ने हमें आनन्द से ग्रहण किया॥

१८। दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूब के यहां गया और सब प्राचीन लोग आये॥ १९। तब उस ने उन को नमस्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा से अन्यदेशियों में किये थे उन्हें एक एक करके वर्णन किया॥ २०। उन्हों ने सुनके प्रभु की स्तुति किई और उस से कहा हे भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियों ने बिश्वास किया है और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाये हैं॥ २१। और उन्हों ने आप के विषय में सुना है कि आप अन्यदेशियों के बीच में के सब यिहूदियों के तईं मूसा को त्याग करने को सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकों का खतना मत करो और न व्यवहारों पर चलो॥ २२। सो क्या है कि बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप आये हैं॥ २३। इस लिये यह जो हम आप से कहते हैं कीजिये. हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्हों ने मन्नत मानी है॥ २४। उन्हें लेके उन के संग अपने को शुद्ध कीजिये और उन के लिये खर्चा दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि जो बातें हम ने इस के विषय में सुनी थीं सो कुछ नहीं है परन्तु वह आप भी व्यवस्था को पालन करते हुए उस के अनुसार चलता है॥ २५। परन्तु जिन अन्यदेशियों ने विश्वास किया है हम ने उन के विषय में यही ठहराके लिख भेजा कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतों के आगे बलि किये हुए से और लोहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से बचे रहें॥ २६। तब पावल ने उन मनुष्यों को लेके दूसरे दिन उन के संग शुद्ध होके मन्दिर में प्रवेश किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होने के दिन अर्थात उन में से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाये जाने तक के दिन कब पूरे होंगे॥

२७। जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तब आशिया के यिहूदियों ने पावल को मन्दिर में देखके सब लोगों को उस्काया और उस पर हाथ डालके पुकारा॥ २८। हे इस्रायेली लोगो सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगों के और व्यवस्था के और इस स्थान के विरुद्ध सर्व्वत्र सब लोगों को उपदेश देता है. हां और उस ने यूनानियों को मन्दिर में लाके इस पवित्र स्थान को अपवित्र भी किया है॥ २९। उन्हों ने तो इस के पहिले त्रोफिम इफिसी को पावल के संग नगर में देखा था और समझते थे कि वह उस को मन्दिर में लाया था॥ ३०। तब सारे नगर में घबराहट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े और पावल को पकड़के उसे मंदिर के बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मूंदे गये॥

३१। जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटन के सहस्रपति को सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीम में घबराहट हुई है॥ ३२। तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियों को लेके उन पास दौड़ा और उन्हों ने सहस्रपति को और योद्धाओं को देखके पावल को मारना छोड़ दिया॥ ३३। तब सहस्रपति ने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो जंजीरों से बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और क्या किया है॥ ३४। परन्तु भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे और जब सहस्रपति हुल्लड़ के मारे निश्चय नहीं जान सकता था तब पावल को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई॥ ३५। जब वह सीढ़ी पर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़ की बरियाई के कारण योद्धाओं ने उसे उठा लिया॥ ३६। क्योंकि लोगों की भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे आती थी॥

३७। जब पावल गढ़ के भीतर पहुंचाये जाने पर था तब उस ने सहस्रपति से कहा जो आप से

कुछ कहने की मुझे आज्ञा होय तो कहूं . उस ने कहा क्या तू यूनानीय भाषा जानता है॥ ३८। तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन दिनों के आगे बलवा करके कटारबंध लोगों में से चार सहस्र मनुष्यों को जंगल में ले गया॥ ३९। पावल ने कहा मैं तो तारस का एक यिहूदी मनुष्य हूं . किलिकिया के एक प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं . और मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगों से बात करने दीजिये॥ ४०। जब उस ने आज्ञा दिई तब पावल ने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगों को हाथ से सैन किया . जब वे बहुत चुप हुए तब उस ने इब्रीय भाषा में उन से बात किई॥

२२. उस ने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं आप लोगों के आगे अब देता हूं सुनिये॥ २। वे यह सुनके कि वह हम से इब्रीय भाषा में बात करता है और भी चुप हुए॥ ३। तब उस ने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो किलिकिया के तारस नगर में जन्मा पर इस नगर में पाला गया और गमलियेल के चरणों के पास पितरों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया और जैसे आज तुम सब हो ऐसा ही ईश्वर के लिये धुन लगाये था॥ ४। और मैं ने इस पंथ के लोगों को मृत्यु लों सताया कि पुरुषों और स्त्रियों को भी बांध बांधके बन्दीगृहों में डालता था॥ ५। इस में महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिन से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां पाके दमेसक को जाता था कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना पाने को बांधे हुए यिरूशलीम में लाऊं॥ ६। परन्तु जब मैं जाता था और दमेसक के समीप पहुंचा तब दो पहर के निकट अचांचक बड़ी ज्योति स्वर्ग से मेरी चारों ओर चमकी॥ ७। और मैं भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना जो मुझ से बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है॥ ८। मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु तू कौन है . उस ने मुझ से कहा मैं यीशु नासरी हूं जिसे तू सताता है॥ ९। जो लोग मेरे संग थे उन्हों ने वह ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझ से बोलता था उस की बात न सुनी॥ १०। तब मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं . प्रभु ने मुझ से कहा उठके दमेसक को जा और जो जो काम करने को तुझे ठहराया गया है सब के विषय में वहां तुझ से कहा जायगा॥ ११। जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे नहीं सूझता था तब मैं अपने संगियों के हाथ पकड़े हुए दमेसक में आया॥ १२। और अननियाह नाम व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां के रहनेहारे सब यिहूदियों के यहां सुख्यात था मेरे पास आया॥ १३। और निकट खड़ा होके मुझ से कहा हे भाई शावल अपनी दृष्टि पा और उसी घड़ी में ने उस पर दृष्टि किई॥ १४। तब उस ने कहा हमारे पितरों के ईश्वर ने तुझे ठहराया है कि तू उस की इच्छा को जाने और उस धर्म्मी को देखे और उस के मुंह से बात सुने॥ १५। क्योंकि जो बातें तू ने देखी और सुनी हैं उन के विषय में तू सब मनुष्यों के आगे उस का साक्षी होगा॥ १६। और अब तू क्यों बिलम्ब करता है . उठके बपतिसमा ले और प्रभु के नाम की प्रार्थना करके अपने पापों को धो डाल॥ १७। जब मैं यिरूशलीम को फिर आया ज्योंही मन्दिर में प्रार्थना करता था त्योंही बेसुध हुआ॥ १८। और उस को देखा कि मुझ से बोलता था शीघ्रता करके यिरूशलीम से झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे॥ १९। मैं ने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि तुझ पर बिश्वास करनेहारों को मैं बंदीगृह में डालता और हर एक सभा में मारता था॥ २०। और जब तेरे साक्षी स्तिफान का लोहू बहाया जाता था तब मैं भी आप निकट खड़ा था और उस के मारे जाने में सम्मति देता था और उस के घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था॥ २१। तब उस ने मुझ से कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा॥

२२। लोगों ने इस बात लों उस की सुनी तब ऊंचे शब्द से पुकारा कि ऐसे मनुष्य को पृथिवी पर से दूर कर कि उस का जीता रहना उचित न था॥ २३। जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे॥ २४। तब सहस्रपति ने उस को

गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस कारण से उस के विरुद्ध ऐसा पुकारते हैं ॥ २५। जब वे पावल को चमड़े के बंधों से बांधते थे तब उस ने शतपति से जो खड़ा था कहा क्या मनुष्य को जो रोमी है और दण्ड के योग्य नहीं ठहराया गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है ॥ २६। शतपति ने यह सुनके सहस्रपति के पास जाके कह दिया कि देखिये आप क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है ॥ २७। तब सहस्रपति ने उस पास आके उस से कहा मुझ से कह क्या तू रोमी है . उस ने कहा हां ॥ २८। सहस्रपति ने उत्तर दिया कि मैं ने यह रोम निवासी की पदवी बहुत रुपैयों पर मोल लिई . पावल ने कहा परन्तु मैं ऐसा ही जन्मा ॥ २९। तब जो लोग उसे जांचने पर थे सो तुरन्त उस के पास से हट गये और सहस्रपति भी यह जानके कि रोमी है और मैं ने उसे बांधा है डर गया ॥

३०। और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि उस पर यिहूदियों से क्यों दोष लगाया जाता है इस लिये उस को बंधनों से खोल दिया और प्रधान याजकों को और न्याइयों की सारी सभा को आने की आज्ञा दिई और पावल को लाके उन के आगे खड़ा किया ॥

२३. पावल ने न्याइयों की सभा की ओर ताकके कहा हे भाइयो मैं इस दिन लों सर्वथा ईश्वर के आगे शुद्ध मन से चला हूं ॥ २। परन्तु अननियाह महायाजक ने उन लोगों को जो उस के निकट खड़े थे उस के मुंह में मारने की आज्ञा दिई ॥ ३। तब पावल ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीत्ति ईश्वर तुझे मारेगा . क्या तू मुझे व्यवस्था के अनुसार विचार करने को बैठा है और व्यवस्था को लंघन करता हुआ मुझे मारने की आज्ञा देता ॥ ४। जो लोग निकट खड़े थे सो बोले क्या तू ईश्वर के महायाजक की निन्दा करता है ॥ ५। पावल ने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है . क्योंकि लिखा है अपने लोगों के प्रधान को बुरा मत कह ॥ ६। तब पावल ने यह जानके कि एक भाग सदूकी और एक भाग फरीशी हैं सभा में पुकारा हे भाइयो मैं फरीशी और फरीशी का पुत्र हूं मृतकों की आशा और जी उठने के विषय में मेरा विचार किया जाता है ॥ ७। जब उस ने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियों में विवाद हुआ और सभा विभिन्न हुई ॥ ८। क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न मृतकों का जी उठना न दूत न आत्मा है परन्तु फरीशी दोनों को मानते हैं ॥ ९। तब बड़ी धूम मची और जो अध्यापक फरीशियों के भाग के थे सो उठके लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा दूत उस से बोला है तो हम ईश्वर से न लड़ें ॥ १०। जब बहुत विवाद हुआ तब सहस्रपति को शङ्का हुई कि पावल उन से फाड़ न डाला जाय इस लिये पलटन को आज्ञा दिई कि जाके उस को उन के बीच में से छीनके गढ़ में लाओ ॥

११। उस रात प्रभु ने उस के निकट खड़े हो कहा हे पावल ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तू ने यिरूशलीम में मेरे विषय में की साक्षी दिई है तैसा ही तुझे रोम में भी साक्षी देना होगा ॥

१२। बिहान हुए कितने यिहूदियों ने एका करके प्रण बांधा कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है ॥ १३। जिन्हों ने आपस में यह किरिया खाई थी सो चालीस जनों से अधिक थे ॥ १४। वे प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास आके बोले हम ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों यदि कुछ चीखें भी तो हमें धिक्कार है ॥ १५। इस लिये अब आप लोग न्याइयों की सभा समेत सहस्रपति को समझाइये कि हम पावल के विषय में की बातें और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे पास लाइये . परन्तु उस के पहुंचने के पहिले ही हम लोग उसे मार डालने को तैयार हैं ॥

१६। परन्तु पावल के भांजे ने उन का घात में

लगाना सुना और आके गढ़ में प्रवेश कर पावल को संदेश दिया॥ १७। पावल ने शतपतियों में से एक को अपने पास बुलाके कहा इस जवान को सहस्रपति के पास ले जाइये क्योंकि उस को उस से कुछ कहना है॥ १८। सो उस ने उसे ले सहस्रपति के पास लाके कहा पावल बंधुए ने मुझे अपने पास बुलाके बिन्ती किई कि इस जवान को सहस्रपति से कुछ कहना है उसे उस पास ले जाइये॥ १९। सहस्रपति ने उस का हाथ पकड़के और एकांत में जाके पूछा तुझ को जो मुझ से कहना है सो क्या है॥ २०। उस ने कहा यिहूदियों ने आप से यही बिन्ती करने को आपस में ठहराया है कि हम पावल के विषय में कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो आप उसे कल न्याइयों की सभा में लाइये॥ २१। परन्तु आप उन की न मानिये क्योंकि उन में से चालीस से अधिक मनुष्य उस की घात में लगे हैं जिन्हों ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है और अब वे तैयार हैं और आप की प्रतिज्ञा की आस देख रहे हैं॥

२२। सो सहस्रपति ने यह आज्ञा देके कि किसी से मत कह कि मैं ने यह बातें सहस्रपति को बताई हैं जवान को बिदा किया॥ २३। और शतपतियों में से दो को अपने पास बुलाके उस ने कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुडचढ़ों और दो सौ भालैतों को पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार करो॥ २४। और वाहन तैयार करो कि वे पावल को बैठाके फीलिक्स अध्यक्ष के पास बचाके ले जावें॥

२५। उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी॥ २६। क्लौदिय लुसिय महामहिमन अध्यक्ष फीलिक्स को नमस्कार॥ २७। इस मनुष्य को जो यिहूदियों से पकड़ा गया था और उन से मार डाले जाने पर था मैं ने यह सुनके कि वह रोमी है पलटन के संग जा पहुंचके छुड़ाया॥ २८। और मैं जानने चाहता था कि वे उस पर किस कारण से दोष लगाते हैं इस लिये उसे उन की न्याइयों की सभा में लाया॥ २९। तब मैं ने यह पाया कि उन की व्यवस्था के बिबादों के विषय में उस पर दोष लगाया जाता है परन्तु बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कोई दोष उस में नहीं है॥ ३०। जब मुझे बताया गया कि यिहूदी लोग इस मनुष्य की घात में लगेंगे तब मैं ने तुरन्त उस को आप के पास भेजा और दोषदायकों को भी आज्ञा दिई कि उस के बिरुद्ध जो बात होय उसे आप के आगे कहें. आगे शुभ॥

३१। योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पावल को लेके रात ही को अन्तिपात्री नगर में लाये॥ ३२। दूसरे दिन वे गढ़ को लौटे और घुड़चढ़ों को उस के संग जाने दिया॥ ३३। उन्हों ने कैसरिया में पहुंचके और अध्यक्ष को चिट्ठी देके पावल को भी उस के आगे खड़ा किया॥ ३४। अध्यक्ष ने पढ़के पूछा यह कौन प्रदेश का है और जब जाना कि किलिकिया का है॥ ३५। तब कहा जब तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा. और उस ने उसे हेरोद के राजभवन में पहरे में रखने की आज्ञा किई॥

२४. पांच दिन के पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनों के और तर्तूल नाम किसी सुवक्ता के संग आया और उन्हों ने अध्यक्ष के आगे पावल पर नालिश किई॥ २। जब पावल बुलाया गया तब तर्तूल यह कहके उस पर दोष लगाने लगा कि हे महामहिमन फीलिक्स आप के द्वारा हमारा बहुत कल्याण जो होता है और आप की प्रवीणता से इस देश के लोगों के लिये कितने काम जो सुफल होते हैं॥ ३। इस को हम लोग सर्व्वथा और सर्व्वत्र बहुत धन्य मानके ग्रहण करते हैं॥ ४। परन्तु जिस्तें मेरी ओर से आप को अधिक बिलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं कि आप अपनी सुशीलता से हमारी संक्षेप कथा सुन लीजिये॥ ५। क्योंकि हम ने यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरी के ऐसा है और जगत के सारे यिहूदियों में बलवा करानेहारा और नासरियों के कुपन्थ का प्रधान॥ ६। उस ने मन्दिर को भी अपवित्र करने की चेष्टा किई और हम ने उसे पकड़के अपनी

व्यवस्था के अनुसार विचार करने चाहा ॥ ७। परन्तु लुसिय सहस्रपति ने आके बड़ी बरियाई से उस को हमारे हाथों से छीन लिया और उस के दोषदायकों को आप के पास आने की आज्ञा दिई ॥ ८। उसी से आप पूछके इन सब बातों के विषय में जिन से हम उस पर दोष लगाते हैं आप ही जान सकेंगे ॥ ९। यिहूदियों ने भी उस के संग लगके कहा यह बातें यूंहीं हैं ॥

१०। तब पावल ने जब अध्यक्ष ने बोलने का सैन उस से किया तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप बहुत बरसों से इस देश के लोगों के न्यायी हैं और ही साहस से अपने विषय में की बातों का उत्तर देता हूं ॥ ११। क्योंकि आप जान सकते हैं कि जब से मैं यिरूशलीम में भजन करने को आया मुझे बारह दिन से अधिक नहीं हुए ॥ १२। और उन्हों ने मुझे न मन्दिर में न सभा के घरों में न नगर में किसी से बिवाद करते हुए अथवा लोगों की भीड़ लगाते हुए पाया ॥ १३। और न वे उन बातों को जिन के विषय में वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं ठहरा सकते हैं ॥ १४। परन्तु यह मैं आप के आगे मान लेता हूं कि जिस मार्ग को वे कुपथ कहते हैं उसी की रीति पर मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हूं और जो बाते व्यवस्था में औ भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखी हैं उन सभों का विश्वास करता हूं ॥ १५। और ईश्वर से आशा रखता हूं जिसे ये भी आप रखते हैं कि धर्म्मी और अधर्म्मी भी सब मृतकों का जी उठना होगा ॥ १६। इस से मैं आप भी साधना करता हूं कि ईश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे ॥ १७। बहुत बरसों के पीछे मैं अपने लोगों को दान देने को और चढ़ावा चढ़ाने को आया ॥ १८। इस में उन्हों ने नहीं पर आशिया के कितने यिहूदियों ने मुझे मन्दिर मे शुद्ध किये हुए न भीड़ के संग और न धूमधाम के संग पाया ॥ १९। उन को उचित था कि जो मेरे बिरुद्ध उन की कोई बात होय तो यहां आपके आगे होते और मुझ पर दोष लगाते ॥ २०। अथवा ये ही लोग आप ही कहें कि जब मैं न्याइयों की सभा के आगे खड़ा था तब उन्हों ने मुझ में कौन सा कुकर्म्म पाया ॥ २१। केवल इसी एक बात के विषय में जो मैं ने उन के बीच में खड़ा होके पुकारा कि मृतकों के जी उठने के विषय में मेरा बिचार आज तुम से किया जाता है ॥

२२। यह बातें सुनके फीलिक्स ने जो इस मार्ग की बातें बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषय में की बातें निर्णय करूंगा ॥ २३। और उस ने शतपति को आज्ञा दिई कि पावल की रक्षा कर पर उस को अवकाश दे और उस के मित्रों में से किसी को उस की सेवा करने में अथवा उस पास आने में मत रोक ॥

२४। कितने दिनों के पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्ला के संग जो यिहूदिनी थी आया और पावल को बुलवाके खीष्ट पर विश्वास करने के विषय में उस की सुनी ॥ २५। और जब वह धर्म्म और संयम के और आनेवाले विचार के विषय में बातें करता था तब फीलिक्स ने भयमान होके उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे बुलाऊंगा ॥ २६। वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे रुपैये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं इस लिये और भी बहुत बार उस को बुलवाके उस से बातचीत करता था ॥ २७। परन्तु जब दो बरस पूरे हुए तब पर्कियु फीष्टु ने फीलिक्स का काम पाया और फीलिक्स यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को बंधा हुआ छोड़ गया ॥

२५.

फीष्टु उस प्रदेश में पहुंचके तीन दिन के पीछे कैसरिया से यिरूशलीम को गया ॥ २। तब महायाजक ने और यिहूदियों के बड़े लोगों ने उस के आगे पावल पर नालिश किई ॥ ३। और उस से बिन्ती कर उस के बिरुद्ध यह अनुग्रह चाहा कि वह उसे यिरूशलीम में मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्ग में मार डालने को घात लगाये हुए थे ॥ ४। फीष्टु ने उत्तर दिया कि पावल कैसरिया में पहरे मे रहता है और मै आप

वहां शीघ्र जाऊंगा ॥ ५। फिर बोला तुम में से जो सामर्थी लोग हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्य में कुछ दोष होय तो उस पर दोष लगावें ॥

६। और उन के बीच में दस एक दिन रहके वह कैसरिया को गया और दूसरे दिन बिचार आसन पर बैठके पावल को लाने की आज्ञा किई ॥ ७। जब पावल आया तब जो यिहूदी लोग यिरूशलीम से आये थे उन्हों ने आसपास खड़े होके उस पर बहुत बहुत और भारी भारी दोष लगाये जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे ॥ ८। परन्तु उस ने उत्तर दिया कि मैं ने न यिहूदियों की व्यवस्था के न मन्दिर के न कैसर के विरुद्ध कुछ अपराध किया है ॥ ९। तब फीष्ट ने यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को उत्तर दिया क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां मेरे आगे इन बातों के विषय में विचार किया जायगा ॥ १०। पावल ने कहा मैं कैसर के विचार आसन के आगे खड़ा हूं जहां उचित है कि मेरा विचार किया जाय. यिहूदियों का जैसा आप भी अच्छी रीति से जानते हैं मैं ने कुछ अपराध नहीं किया है ॥ ११। क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और बध के योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्यु से छुड़ाया जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बातों से ये मुझ पर दोष लगाते हैं यदि उन में से कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे उन्हों के हाथ नहीं सौंप सकता है. मैं कैसर की दोहाई देता हूं ॥ १२। तब फीष्ट ने मंत्रियों की सभा के संग बात करके उत्तर दिया क्या तू ने कैसर की दोहाई दिई है. तू कैसर के पास जायगा ॥

१३। जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और बर्णीकी फीष्ट को नमस्कार करने को कैसरिया में आये ॥ १४। और उन के बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्ट ने पावल की कथा राजा को सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स बंध में छोड़ गया है ॥ १५। उस पर जब मैं यिरूशलीम में था तब प्रधान याजकों ने और यिहूदियों के प्राचीनों ने नालिश किई और चाहा कि दण्ड की आज्ञा उस पर दिई जाय ॥ १६। परन्तु मैं ने उन को उत्तर दिया रोमियों की यह रीति नहीं है कि जब लों वह जिस पर दोष लगाया जाता है अपने दोषदायकों के आम्ने साम्ने न हो और दोष के विषय में उत्तर देने का अवकाश न पाय तब लों किसी मनुष्य को नाश किये जाने के लिये सौंप देवें ॥ १७। सो जब वे यहां एकट्ठे हुए तब मैं ने कुछ बिलंब न करके अगले दिन बिचार आसन पर बैठके उस मनुष्य को लाने की आज्ञा किई ॥ १८। दोषदायकों ने उस के आसपास खड़े होके जैसे दोष मैं समझता था वैसा कोई दोष नहीं लगाया ॥ १९। परन्तु अपनी पूजा के विषय में और किसी मरे हुए यीशु के विषय में जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उस से कितने बिवाद करते थे ॥ २०। मुझे इस विषय के बिवाद में संदेह था इस लिये मैं ने कहा क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां इन बातों के विषय में बिचार किया जायगा ॥ २१। परन्तु जब पावल ने दोहाई दे कहा मुझे अगस्त महाराजा से विचार किये जाने को रखिये तब मैं ने आज्ञा दिई कि जब लों मैं उसे कैसर के पास न भेजूं तब लों उस की रक्षा किई जाय ॥ २२। तब अग्रिपा ने फीष्ट से कहा मैं आप भी उस मनुष्य की सुनने से प्रसन्न होता. उस ने कहा आप कल उस की सुनेंगे ॥

२३। सो दूसरे दिन जब अग्रिपा और बर्णीकी ने बड़ी धूमधाम से आके सहस्रपतियों और नगर के श्रेष्ठ मनुष्यों के संग समाज स्थान में प्रवेश किया और फीष्ट ने आज्ञा किई तब वे पावल को ले आये ॥ २४। और फीष्ट ने कहा हे राजा अग्रिपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हो आप लोग इस को देखते हैं जिस के विषय में सारे यिहूदियों ने यिरूशलीम में और यहां भी मुझ से बिन्ती करके पुकारा है कि इस का और जीता रहना उचित नहीं है ॥ २५। परन्तु यह जानके कि उस ने बध के योग्य कुछ नहीं किया है जब कि उस ने आप अगस्त महाराजा की दोहाई दिई मैं ने उसे भेजने को ठहराया ॥ २६। परन्तु मैं ने उस के विषय में कोई निश्चय की बात नहीं पाई है जो मैं महाराजा के पास लिखूं इस लिये मैं उसे आप लोगों के साम्ने

और निज करके हे राजा अग्रिपा आप के साम्ने लाया हूं कि विचार किये जाने के पीछे मुझे कुछ लिखने को मिले ॥ २७। क्योंकि बंधुवे को भेजने में दोष जो उस पर लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है ॥

२६. अग्रिपा ने पावल से कहा तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा दिई जाती है ॥ २। तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर देने लगा. कि हे राजा अग्रिपा जिन बातों से यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं उन सब बातों के विषय में मैं अपने को धन्य समझता हूं कि आज आप के आगे उत्तर देऊंगा ॥ ३। निज करके इसी लिये कि आप यिहूदियों के बीच के सब व्यवहारों और विवादों को बूझते हैं. सो मैं आप से बिन्ती करता हूं धीरज करके मेरी सुन लीजिये ॥ ४। लड़कपन से मेरी जैसी चाल चलन आरंभ से यिरूशलीम में मेरे लोगों के बीच में थी सो सब यिहूदी लोग जानते हैं ॥ ५। वे जो साक्षी देने चाहते तो आदि से मुझे पहचानते हैं कि हमारे धर्म्म के सब से खरे पंथ के अनुसार मैं फरीशी की चाल चला ॥ ६। और अब जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने पितरों से किई मैं उसी की आशा के विषय में विचार किये जाने को खड़ा हूं ॥ ७। जिसे हमारे बारहों कुल रात दिन यत्न से सेवा करते हुए पाने की आशा रखते हैं. इसी आशा के विषय में हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं ॥

८। आप लोगों के यहां यह क्यों विश्वास के अयोग्य जाना जाता है कि ईश्वर मृतकों को जिलाता ॥ ९। मैं ने तो अपने में समझा कि यीशु नासरी के नाम के विरुद्ध बहुत कुछ करना उचित है ॥ १०। और मैं ने यिरूशलीम में यही किया भी और प्रधान याजकों से अधिकार पाके पवित्र लोगों में से बहुतों को बन्दीगृहों में मूंद रखा और जब वे घात किये जाते थे तब मैं ने अपनी सम्मति दिई ॥ ११। और समस्त सभा के घरों में मैं बार बार उन्हें ताड़ना देके यीशु की निन्दा करवाता था और उन पर अत्यन्त क्रोध से उन्मत्त होके बाहर के नगरों तक भी सताता था ॥ १२। इस बीच में जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा लेके दमेसक को जाता था ॥ १३। तब हे राजा मार्ग में दो पहर दिन को मैं ने स्वर्ग से सूर्य्य के तेज से अधिक एक ज्योति अपनी और अपने संग जानेहारों की चारों ओर चमकती हुई देखी ॥ १४। और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तब मैं ने एक शब्द सुना जो मुझ से बोला और इब्रीय भाषा में कहा हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है. पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है ॥ १५। तब मैं ने कहा हे प्रभु तू कौन है. उस ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है ॥ १६। परन्तु उठके अपने पांवों पर खड़ा हो क्योंकि मैं ने तुझे इसी लिये दर्शन दिया है कि उन बातों का जो तू ने देखी हैं और जिन में मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊं ॥ १७। और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यदेशियों से बचाऊंगा जिन के पास मैं अब तुझे भेजता हूं ॥ १८। कि तू उन की आंखें खोले इस लिये कि वे अंधियारे से उजियाले की ओर और शैतान के अधिकार से ईश्वर की ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगों में जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें ॥

१९। सो हे राजा अग्रिपा मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली ॥ २०। परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीम के निवासियों को तब यिहूदिया के सारे देश में और अन्यदेशियों को पश्चात्ताप करने का और ईश्वर की ओर फिरने का और पश्चात्ताप के योग्य काम करने का उपदेश दिया ॥ २१। इन बातों के कारण यिहूदी लोग मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने की चेष्टा करते थे ॥ २२। सो ईश्वर से सहायता पाके मैं छोटे और बड़े को साक्षी देता हुआ आज लों ठहरा हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओं ने और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं ॥ २३। अर्थात् खीष्ट को दुःख भोगना होगा और वही मृतकों में से पहिले उठके हमारे लोगों को और अन्यदेशियों को ज्योति की कथा सुनावेगा ॥

२४। जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्टु ने बड़े शब्द से कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत विद्या तुझे बौड़हा करती है॥ २५। पर उस ने कहा हे महामहिमन फीष्टु मैं बौड़हा नहीं हूं परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं॥ २६। इन बातों को राजा बूझता है जिस के आगे मैं खोलके बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातों में से कोई बात उस से छिपी नहीं है कि यह तो कोने में नहीं किया गया है॥ २७। हे राजा अग्रिपा क्या आप भविष्यद्वक्ताओं का बिश्वास करते हैं. मैं जानता हूं कि आप बिश्वास करते हैं॥ २८। तब अग्रिपा ने पावल से कहा तू थोड़े में मुझे खीष्टियान होने को मनाता है॥ २९। पावल ने कहा ईश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में केवल आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं इन बंधनों को छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं॥

३०। जब उस ने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और बर्णीकी और उन के संग बैठनेहारे उठे॥ ३१। और अलग जाके आपस में बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कुछ नहीं करता है॥ ३२। तब अग्रिपा ने फीष्टु से कहा जो यह मनुष्य कैसर की दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता॥

२७. जब यह ठहराया गया कि हम जहाज पर इतलिया को जायें तब उन्हों ने पावल को और कितने और बंधुओं को भी यूलिय नाम अगस्त की पलटन के एक शतपति के हाथ सौंप दिया॥ २। और आद्रामुतिया नगर के एक जहाज पर जो आशिया के तीर पर के स्थानों को जाता था चढ़के हम ने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिका का एक माकिदोनी हमारे संग था॥ ३। दूसरे दिन हम ने सीदोन में लगान किया और यूलिय ने पावल के साथ प्रेम से व्यवहार करके उसे मित्रों के पास जाने और पाहुन होने दिया॥ ४। वहां से खोलके बयार के सन्मुख होने के कारण हम कुप्रस के नीचे से होके चले॥ ५। और किलिकिया और पफूलिया के निकट के समुद्र में होके लुकिया देश के मुरा नगर पहुंचे॥ ६। वहां शतपति ने सिकन्दरिया के एक जहाज को जो इतलिया को जाता था पाके हमें उस पर चढ़ाया॥ ७। बहुत दिनों में हम धीरे धीरे चलके और बयार जो हमें चलने न देती थी इस लिये कठिनता से कनीद के साम्ने पहुंचके सलमोनी के आम्ने साम्ने क्रीती के नीचे चले॥ ८। और कठिनता से उस के पास से होते हुए शुभ-लंगरबारी नाम एक स्थान में पहुंचे जहां से लासेया नगर निकट था॥

९। जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रा में जोखिम होती थी क्योंकि उपवास पर्ब्ब भी अब बीत चुका था तब पावल ने उन्हें समझाके कहा॥ १०। हे मनुष्यो मुझे सूझ पड़ता है कि इस जलयात्रा में हानि और बहुत टूटी केवल बोझाई और जहाज की नहीं परन्तु हमारे प्राणों की भी हुआ चाहती है॥ ११। परन्तु शतपति ने पावल की बातों से अधिक मांझी की और जहाज के स्वामी की मान लिई॥ १२। और वह लंगरबारी जाड़े का समय काटने को अच्छी न थी इस लिये बहुतेरों ने परामर्श दिया कि वहां से भी खोलके जो किसी रीति से हो सके तो फैनीकी नाम क्रीती की एक लंगरबारी में जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम की ओर खुलती है जा रहें और वहां जाड़े का समय काटें॥

१३। जब दक्षिण की बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्हों ने यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ है लंगर उठाया और तीर धरे धरे क्रीती के पास से जाने लगे॥ १४। परन्तु थोड़ी बेर में क्रीती पर से अति प्रचण्ड एक बयार उठी जो उरकूलदन कहावती है॥ १५। यह जब जहाज पर लगी और वह बयार के साम्ने ठहर न सका तब हम ने उसे जाने दिया और उड़ाये हुए चले गये॥ १६। तब क्लौदा नाम एक छोटे टापू के नीचे से जाके हम कठिनता से डिंगी को धर सके॥ १७। उसे उठाके उन्हों ने अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बांधा और सुर्त्ती नाम चढ़ पर टिक जाने के भय से मस्तूल गिराके यूंहीं उड़ाये जाते थे॥ १८। तब निपट बड़ी आंधी हम पर चलती थी इस लिये उन्हों ने

दूसरे दिन कुछ बोझाई फेंक दिई ॥ १९। और तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से जहाज की सामग्री फेंक दिई ॥ २०। और जब बहुत दिनों तक न सूर्य्य न तारे दिखाई दिये और बड़ी आंधी चलती रही अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही ॥

२१। जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावल ने उन के बीच में खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम मेरी बात मानते और क्रीती से न खोलते न यह हानि और टूटी उठाते ॥ २२। पर अब मैं तुम से विन्ती करता हूं कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम्हों में से किसी के प्राण का नाश न होगा केवल जहाज का ॥ २३। क्योंकि ईश्वर जिस का मैं हूं और जिस की सेवा करता हूं उस का एक दूत इसी रात मेरे निकट खड़ा हुआ ॥ २४। और कहा हे पावल मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वर ने सभों को जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिया है ॥ २५। इस लिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वर का विश्वास करता हूं कि जिस रीति से मुझे कहा गया है उसी रीति से होगा ॥ २६। परन्तु हमें किसी टापू पर पड़ना होगा ॥

२७। जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंही हम आद्रिया समुद्र में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंही आधी रात के निकट मल्लाहों ने जाना कि हम किसी देश के समीप पहुंचते हैं ॥ २८। और थाह लेके उन्हों ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये ॥ २९। तब पत्थरैले स्थानों पर टिक जाने के डर से उन्हों ने जहाज की पिछाड़ी से चार लंगर डाले और भोर का होना मनाते रहे ॥ ३०। परन्तु जब मल्लाह लोग जहाज पर से भागने चाहते थे और गलही से लंगर डालने के बहाना से डिंगी समुद्र में उतार दिई ॥ ३१। तब पावल ने शतपति से और योद्धाओं से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो ॥ ३२। तब योद्धाओं ने डंगी के रस्से काटके उसे गिरा दिया ॥

३३। जब भोर होने पर थी तब पावल ने यह कहके सभों से भोजन करने की विन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और कुछ भोजन न किया है ॥ ३४। इस लिये मैं तुम से विन्ती करता हूं कि भोजन करो जिस से तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम में से किसी के सिर से एक बाल न गिरेगा ॥ ३५। और यह बातें कहके औ रोटी लेके उस ने सभों के साम्ने ईश्वर का धन्य माना और तोड़के खाने लगा ॥ ३६। तब उन सभों ने भी ढाढ़स बांधके भोजन किया ॥ ३७। हम सब जो जहाज पर थे दो सौ छिहत्तर जन थे ॥ ३८। भोजन से तृप्त होके उन्हों ने गेहूं को समुद्र में फेंकके जहाज को हलका किया ॥

३९। जब विहान हुआ तब वे उस देश को नहीं चीन्हते थे परन्तु किसी खाल को देखा जिस का चौरस तीर था और विचार किया कि जो हो सके तो इसी पर जहाज को टिकावें ॥ ४०। तब उन्हों ने लंगरों को काटके समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बंधन खोल दिये और बयार के सन्मुख पाल चढ़ाके तीर की ओर चले ॥ ४१। परन्तु दो समुद्रों के संगम के स्थान में पड़के उन्हों ने जहाज को टिकाया और गलही तो गड़ गई और हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी लहरों की बरियाई से टूट गई ॥ ४२। तब योद्धाओं का यह परामर्श था कि बंधुओं को मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे ॥ ४३। परन्तु शतपति ने पावल को बचाने की इच्छा से उन्हें उस मत से रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके तीर पर निकल चलें ॥ ४४। और दूसरों को कि कोई पटरों पर और कोई जहाज में की वस्तुओं पर निकल जायें . इस रीति से सब कोई तीर पर बच निकले ॥

२८. जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता कहावता है ॥ २। और उन जंगली लोगों ने हमों से अनोखा प्रेम किया क्योंकि मेंह के कारण जो पड़ता था और जाड़े के कारण उन्हों ने आग सुलगाके हम सभों को ग्रहण किया ॥

३। जब पावल ने बहुत सी लकड़ी बटोरके आग पर रखी तब एक सांप ने आंच से निकलके उस का हाथ धर लिया ॥ ४। और जब उन जंगलियों ने सांप को उस के हाथ में लटकते हुए देखा तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी दण्डदायक ने जीते रहने नहीं दिया है ॥ ५। तब उस ने सांप को आग में झटक दिया और कुछ दुःख न पाया ॥ ६। पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जायगा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बड़ी बेर लों बाट देखते रहे और देखा कि उस का कुछ नहीं बिगड़ता है तब और ही बिचार कर कहा यह तो देवता है ॥

७। उस स्थान के आसपास पबलिय नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी, उस ने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीतिभाव से पहुनई किई ॥ ८। पबलिय का पिता ज्वर से और आंवलोहू से रोगी पड़ा था सो पावल ने उस पास घर में प्रवेश करके प्रार्थना किई और उस पर हाथ रखके उसे चंगा किया ॥ ९। जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी जो उस टापू में रोगी थे आके चंगे किये गये ॥ १०। और उन्हों ने हम लोगों का बहुत आदर किया और जब हम खोलने पर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया ॥

११। तीन मास के पीछे हम लोग सिकन्दरिया के एक जहाज पर जिस ने उस टापू में जाड़े का समय काटा था जिस का चिन्ह दियस्कूरे था चल निकले ॥ १२। सुराकूस नगर में लगान करके हम तीन दिन रहे ॥ १३। वहां से हम घूमके रीगिया नगर पहुंचे और एक दिन के पीछे दक्षिण की बयार जो उठी तो दूसरे दिन पुतियली नगर में आये ॥ १४। वहां भाइयों को पाके हम उन के यहां सात दिन रहने को बुलाये गये और इस रीति से रोम को चले ॥ १५। वहां से भाई लोग हमारा समाचार सुनके अप्पियचौक और तीन सराय लों हम से मिलने को निकल आये जिन्हें देखके पावल ने ईश्वर का धन्य मानके ढाढ़स बांधा ॥

१६। जब हम रोम में पहुंचे तब शतपति ने बंधुवों को सेनापति के हाथ सौंप दिया परन्तु पावल को एक योद्धा के संग जो उस की रक्षा करता था अकेला रहने की आज्ञा हुई ॥ १७। तीन दिन के पीछे पावल ने यिहूदियों के बड़े बड़े लोगों को एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उन से कहा हे भाइयो मैं ने हमारे लोगों के अथवा पितरों के व्यवहारों के विरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी बंधुआ होके यिरूशलीम से रोमियों के हाथ में सौंपा गया ॥ १८। उन्हों ने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि मुझ में बध के योग्य कोई दोष न था ॥ १९। परन्तु जब यिहूदी लोग इस के विरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसर की दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना है ॥ २०। इस कारण से मैं ने आप लोगों को बुलाया कि आप लोगों को देखके बात करूं क्योंकि इस्रायेल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से बंधा हुआ हूं ॥ २१। तब वे उस से बोले न हमों ने आप के विषय में यिहूदिया से चिट्ठियां पाईं न भाइयों में से किसी ने आके आप के विषय में बुरा कुछ बताया अथवा कहा ॥ २२। परन्तु आप का मत क्या है सो हम आप से सुना चाहते हैं क्योंकि इस पंथ के विषय में हम जानते हैं कि सर्व्वत्र उस के विरुद्ध में बातें किई जाती हैं ॥ २३। सो उन्हों ने उस को एक दिन ठहराया और बहुत लोग बासे पर उस पास आये जिन से वह ईश्वर के राज्य की साक्षी देता हुआ और यीशु के विषय में की बातें उन्हें मूसा की व्यवस्था से और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक से भी समझाता हुआ भोर से सांझ लों चर्चा करता रहा ॥ २४। तब कितनों ने उन बातों को मान लिया और कितनों ने प्रतीति न किई ॥ २५। सो वे आपस में एक मत न होके जब पावल ने उन से एक बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्मा ने हमारे पितरों से यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से अच्छा कहा ॥ २६। कि इन लोगों के पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा ॥

२७। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं॥ २८। सो तुम जानो कि ईश्वर के त्राण की कथा अन्यदेशियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे॥ २९। जब वह यह बातें कह चुका तब यिहूदी लोग आपस में बहुत विवाद करते हुए चले गये॥

३०। और पावल ने दो बरस भर अपने भाड़े के घर में रहके सभों को जो उस पास आते थे ग्रहण किया॥ ३१। और बिना रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में की बातें सिखाता रहा॥

रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री।

---

१. पावल जो यीशु ख्रीष्ट का दास और बुलाया हुआ प्रेरित और ईश्वर के सुसमाचार के लिये अलग किया गया है॥ २। वह सुसमाचार जिस की प्रतिज्ञा उस ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा धर्म्मपुस्तक में आगे से किई थी॥ ३। अर्थात् उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में का सुसमाचार जो शरीर के भाव से दाऊद के वंश में से उत्पन्न हुआ॥ ४। और पवित्रता के आत्मा के भाव से मृतकों जो उठने से पराक्रम सहित ईश्वर का पुत्र ठहराया गया॥ ५। जिस से हम ने अनुग्रह औ प्रेरिताई पाई है कि उस के नाम के कारण सब देशों के लोग विश्वास से आज्ञाकारी हो जायें॥ ६। जिन्हों में तुम भी यीशु ख्रीष्ट के बुलाये हुए हो॥ ७। रोम के उन सब निवासियों को जो ईश्वर के प्यारे और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले॥

८। पहिले मैं यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से तुम सभों के लिये अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं कि तुम्हारे विश्वास का चर्चा सारे जगत में किया जाता है॥ ९। क्योंकि ईश्वर जिस की सेवा मैं अपने मन से उस के पुत्र के सुसमाचार में करता हूं मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें कैसे निरन्तर स्मरण करता हूं॥ १०। और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिन्ती करता हूं कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास जाने को मेरी यात्रा ईश्वर की इच्छा से सुफल होय॥ ११। क्योंकि मैं तुम्हें देखने की लालसा करता हूं कि मैं कोई आत्मिक वरदान तुम्हारे संग बांट लेऊं जिस्तें तुम स्थिर किये जाओ॥ १२। अर्थात् कि मैं तुम्हों में अपने अपने परस्पर विश्वास के द्वारा से तुम्हारे संग शांति पाऊं॥ १३। परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस से अनजान रहो कि मैं ने बहुत बार तुम्हारे पास जाने का विचार किया जिस्तें जैसा दूसरे अन्यदेशियों में तैसा तुम्हों में भी मेरा कुछ फल होवे परन्तु अब लों मैं रोका रहा॥

१४। मैं यूनानियो औ अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों औ निर्बुद्धियों का ऋणी हूं॥ १५। यूं मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो सुसमाचार सुनाने को तैयार हूं॥ १६। क्योंकि मैं ख्रीष्ट के सुसमाचार से नहीं लजाता हूं इस लिये कि हर एक विश्वास करनेहारे के लिये पहिले यिहूदी फिर यूनानी के लिये

वह त्राण के निमित्त ईश्वर का सामर्थ्य है ॥ १७। क्योंकि उस में ईश्वर का धर्म्म विश्वास से विश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा ॥

१८। जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म्म से रोकते हैं उन की सारी अभक्ति और अधर्म्म पर ईश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रगट किया जाता है ॥ १९। इस कारण कि ईश्वर के विषय का ज्ञान उन में प्रगट है क्योंकि ईश्वर ने उन पर प्रगट किया ॥ २०। क्योंकि जगत की सृष्टि से उस के अदृश्य गुण अर्थात उस के सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उस के कार्य्यों से पहचाने जाते हैं यहां लों कि वे मनुष्य निरुत्तर हैं ॥ २१। इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर को जानके न ईश्वर के योग्य गुणानुवाद किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक वाद विचार करने लगे और उन का निर्बुद्धि मन अंधियारा हो गया ॥ २२। वे अपने को ज्ञानी कहके मूर्ख बन गये ॥ २३। और अविनाशी ईश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पक्षियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तुओं की मूर्त्ति की समानता से बदल डाला ॥

२४। इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें ॥ २५। जिन्हों ने ईश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृष्टि की पूजा और सेवा सृजनहार की पूजा और सेवा से अधिक किई जो सर्व्वदा धन्य है. आमीन ॥ २६। इस हेतु से ईश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में त्याग दिया कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उस से जो स्वभाव के विरुद्ध है बदल डाला ॥ २७। वैसे ही पुरुष भी स्त्री के संग स्वाभाविक व्यवहार छोड़के अपनी कामुकता से एक दूसरे की ओर जलने लगे और पुरुषों के साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते थे और अपने भ्रम का फल जो उचित था अपने में भोगते थे ॥ २८। और ईश्वर को चित्त में रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें निकृष्ट मन के वश में त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें ॥ २९। और सारे अधर्म्म औ व्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराई से भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ दुर्भाव से भरपूर हों ॥ ३०। और फुसफुसिये अपवादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा लंघन करनेहारे ॥ ३१। निर्बुद्धि झूठे मयारहित क्षमारहित औ निर्दय होवें ॥ ३२। जो ईश्वर की विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं ॥

२. सो

हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरों का विचार करता हो तू निरुत्तर है. जिस बात में तू दूसरे का बिचार करता है उसी बात में अपने को दोषी ठहराता है क्योंकि तू जो विचार करता है आप ही वे ही काम करता है ॥ २। पर हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारों पर ईश्वर की दंड की आज्ञा यथार्थ है ॥ ३। और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का विचार करता और आप ही वे ही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर की दण्ड की आज्ञा से बचूंगा ॥ ४। अथवा क्या तू उस की कृपा औ सहनशीलता औ धीरज के धन को तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वर की कृपा तुझे पश्चात्ताप करने को सिखाती है ॥ ५। परन्तु अपनी कठोरता और निःपश्चात्तापी मन के हेतु से अपने लिये क्रोध के दिन लों हां ईश्वर के यथार्थ विचार के प्रगट होने के दिन लों क्रोध का संचय करता है ॥ ६। वह हर एक मनुष्य को उस के कर्म्मों के अनुसार फल देगा ॥ ७। जो सुकर्म्म में स्थिर रहने से महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ती हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा ॥ ८। परन्तु जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते पर अधर्म्म को मानते हैं उन पर कोप औ क्रोध पड़ेगा ॥ ९। हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी के ॥ १०। पर हर एक को जो भला करता है महिमा और

आदर और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी को ॥ ११ । क्योंकि ईश्वर के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१२ । क्योंकि जितने लोगों ने विना व्यवस्था पाप किया है सो विना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगों ने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्था के द्वारा से दण्ड के योग्य ठहराये जायेंगे ॥ १३ । क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे ईश्वर के यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्था पर चलनेहारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे ॥ १४ । फिर जब अन्यदेशी लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उन के पास नहीं है तौभी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं ॥ १५ । वे व्यवस्था का कार्य्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दिखाते हैं और उन का मन भी साक्षी देता है और उन की चिन्तारं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोष का उत्तर देती हैं ॥ १६ । यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु खीष्ट के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का विचार करेगा ॥

१७ । देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्था पर भरोसा रखता है और ईश्वर के विषय में घमण्ड करता है ॥ १८ । और उस की इच्छा को जानता है और व्यवस्था की शिक्षा पाके विशेष्य बातों को परखता है ॥ १९ । और अपने पर भरोसा रखता है कि मैं अंधों का अगुवा और अंधकार में रहनेहारों का प्रकाश ॥ २० । और निर्बुद्धियों का शिक्षक और बालकों का उपदेशक हूं और ज्ञान औ सच्चाई का रूप मुझे व्यवस्था में मिला है ॥ २१ । सो क्या तू जो दूसरे को सिखाता है अपने को नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है आप ही चोरी करता है ॥ २२ । क्या तू जो परस्त्रीगमन न करने को कहता है आप ही परस्त्रीगमन करता है . क्या तू जो मूरतों से घिन करता है पवित्र वस्तु चुराता है ॥ २३ । क्या तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है व्यवस्था को लंघन करने से ईश्वर का अनादर करता है ॥ २४ । क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वर का नाम तुम्हारे कारण अन्यदेशियों में निन्दित होता है ॥

२५ । जो तू व्यवस्था पर चले तो खतने से लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्था को लंघन किया करे तो तेरा खतना अखतना हो गया है ॥ २६ । सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्था की विधियों का पालन करे तो क्या उस का अखतना खतना न गिना जायगा ॥ २७ । और जो मनुष्य प्रकृति से खतनाहीन होके व्यवस्था को पूरी करे सो क्या तुझे जो लेख और खतना पाके व्यवस्था को लंघन किया करता है दोषी न ठहरावेगा ॥ २८ । क्योंकि जो प्रगट में यिहूदी है सो यिहूदी नहीं और खतना जो प्रगट में अर्थात् देह में है सो खतना नहीं ॥ २९ । परन्तु यिहूदी वह है जो गुप्त में यिहूदी है और मन का खतना जो लेख से नहीं पर आत्मा में है सोई खतना है . ऐसे यिहूदी की प्रशंसा मनुष्यों की नहीं पर ईश्वर की ओर से है ॥

३. तो यिहूदी की क्या श्रेष्ठता हुई अथवा खतने का क्या लाभ हुआ ॥ २ । सब प्रकार से बहुत कुछ . पहिले यह कि ईश्वर की वाणियां उन के हाथ सोंपी गईं ॥ ३ । जो कितनों ने विश्वास न किया तो क्या हुआ . क्या उन का अविश्वास ईश्वर के विश्वास को व्यर्थ ठहरावेगा ॥ ४ । ऐसा न हो . ईश्वर सच्चा पर हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है कि जिस्तें तू अपनी बातों में निर्दोष ठहराया जाय और तेरा विचार किये जाने में तू जय पावे ॥

५ । परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वर के धर्म्म पर प्रमाण देता है तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है . इस को मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं ॥ ६ । ऐसा न हो . नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगत का विचार करेगा ॥ ७ । परन्तु यदि ईश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये मेरी झुठाई के हेतु से अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी पापी की नाईं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं ॥ ८ । तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा

वह त्राण के निमित्त ईश्वर का सामर्थ्य है ॥ १७। क्योंकि उस में ईश्वर का धर्म्म विश्वास से विश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा ॥

१८। जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म्म से रोकते हैं उन की सारी अभक्ति और अधर्म्म पर ईश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रगट किया जाता है ॥ १९। इस कारण कि ईश्वर के विषय का ज्ञान उन में प्रगट है क्योंकि ईश्वर ने उन पर प्रगट किया ॥ २०। क्योंकि जगत की सृष्टि से उस के अदृश्य गुण अर्थात उस के सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उस के कार्य्यों से पहचाने जाते हैं यहां लों कि वे मनुष्य निरुत्तर हैं ॥ २१। इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर को जानके न ईश्वर के योग्य गुणानुवाद किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक बाद विचार करने लगे और उन का निर्बुद्धि मन अंधियारा हो गया ॥ २२। वे अपने को ज्ञानी कहके मूर्ख बन गये ॥ २३। और अविनाशी ईश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पंछियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तुओं की मूर्त्ति की समानता से बदल डाला ॥

२४। इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें ॥ २५। जिन्हों ने ईश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृष्टि की पूजा और सेवा सृजनहार की पूजा और सेवा से अधिक किई जो सर्व्वदा धन्य है. आमीन ॥ २६। इस हेतु से ईश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में त्याग दिया कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उस से जो स्वभाव के विरुद्ध है बदल डाला ॥ २७। वैसे ही पुरुष भी स्त्री के संग स्वाभाविक व्यवहार छोड़के अपनी कामुकता से एक दूसरे की ओर जलने लगे और पुरुषों के साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते थे और अपने भ्रम का फल जो उचित था अपने में भोगते थे ॥ २८। और ईश्वर को चित्त में रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें निकृष्ट मन के वश में त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें ॥ २९। और सारे अधर्म्म औ व्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराई से भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ दुर्भाव से भरपूर हों ॥ ३०। और फुसफुसिये अपवादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा लंघन करनेहारे ॥ ३१। निर्बुद्धि झूठे मयारहित क्षमारहित औ निर्दय होवें ॥ ३२। जो ईश्वर की विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं ॥

२. सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरों का विचार करता हो तू निरुत्तर है. जिस बात में तू दूसरे का विचार करता है उसी बात में अपने को दोषी ठहराता है क्योंकि तू जो विचार करता है आप ही वे ही काम करता है ॥ २। पर हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारों पर ईश्वर की दंड की आज्ञा यथार्थ है ॥ ३। और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का विचार करता और आप ही वे ही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर की दण्ड की आज्ञा से बचूंगा ॥ ४। अथवा क्या तू उस की कृपा औ सहनशीलता औ धीरज के धन को तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वर की कृपा तुझे पश्चात्ताप करने को सिखाती है ॥ ५। परन्तु अपनी कठोरता और नि:पश्चात्तापी मन के हेतु से अपने लिये क्रोध के दिन लों हां ईश्वर के यथार्थ विचार के प्रगट होने के दिन लों क्रोध का संचय करता है ॥ ६। वह हर एक मनुष्य को उस के कर्म्मों के अनुसार फल देगा ॥ ७। जो सुकर्म्म में स्थिर रहने से महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ते हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा ॥ ८। परन्तु जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते पर अधर्म्म को मानते हैं उन पर कोप औ क्रोध पड़ेगा ॥ ९। हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी के ॥ १०। पर हर एक को जो भला करता है महिमा और

आदर और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी को ॥ ११ । क्योंकि ईश्वर के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१२ । क्योंकि जितने लोगों ने विना व्यवस्था पाप किया है सो विना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगों ने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्था के द्वारा से दण्ड के योग्य ठहराये जायेंगे ॥ १३ । क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे ईश्वर के यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्था पर चलनेहारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे ॥ १४ । फिर जब अन्यदेशी लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उन के पास नहीं है तौभी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं ॥ १५ । वे व्यवस्था का कार्य्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दिखाते हैं और उन का मन भी साक्षी देता है और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोष का उत्तर देती हैं ॥ १६ । यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का विचार करेगा ॥

१७ । देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्था पर भरोसा रखता है और ईश्वर के विषय में घमण्ड करता है ॥ १८ । और उस की इच्छा को जानता है और व्यवस्था की शिक्षा पाके विशेष्य बातों को परखता है ॥ १९ । और अपने पर भरोसा रखता है कि मैं अंधों का अगुवा और अंधकार में रहनेहारों का प्रकाश ॥ २० । और निर्बुद्धियों का शिक्षक और बालकों का उपदेशक हूं और ज्ञान औ सच्चाई का रूप मुझे व्यवस्था मे मिला है ॥ २१ । सो क्या तू जो दूसरे को सिखाता है अपने को नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है आप ही चोरी करता है ॥ २२ । क्या तू जो परस्त्रीगमन न करने को कहता है आप ही परस्त्रीगमन करता है . क्या तू जो मूरतों से घिन करता है पवित्र वस्तु चुराता है ॥ २३ । क्या तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है व्यवस्था को लंघन करने से ईश्वर का अनादर करता है ॥ २४ । क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वर का नाम तुम्हारे कारण अन्यदेशियों में निन्दित होता है ॥

२५ । जो तू व्यवस्था पर चले तो खतने से लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्था को लंघन किया करे तो तेरा खतना अखतना हो गया है ॥ २६ । सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्था की विधियों का पालन करे तो क्या उस का अखतना खतना न गिना जायगा ॥ २७ । और जो मनुष्य प्रकृति से खतनाहीन होके व्यवस्था को पूरी करे सो क्या तुझे जो लेख और खतना पाके व्यवस्था को लंघन किया करता है दोषी न ठहरावेगा ॥ २८ । क्योंकि जो प्रगट में यिहूदी है सो यिहूदी नहीं और खतना जो प्रगट में अर्थात् देह में है सो खतना नहीं ॥ २९ । परन्तु यिहूदी वह है जो गुप्त में यिहूदी है और मन का खतना जो लेख से नहीं पर आत्मा में है सोई खतना है . ऐसे यिहूदी की प्रशंसा मनुष्यों की नहीं पर ईश्वर की ओर से है ॥

३. तो यिहूदी की क्या श्रेष्ठता हुई अथवा खतने का क्या लाभ हुआ ॥ २ । सब प्रकार से बहुत कुछ . पहिले यह कि ईश्वर की बाणियां उन के हाथ सौंपी गईं ॥ ३ । जो कितनों ने विश्वास न किया तो क्या हुआ . क्या उन का अविश्वास ईश्वर के विश्वास को व्यर्थ ठहरावेगा ॥ ४ । ऐसा न हो . ईश्वर सच्चा पर हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है कि जिस्तें तू अपनी बातों में निर्दोष ठहराया जाय और तेरा विचार किये जाने में तू जय पावे ॥

५ । परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वर के धर्म्म पर प्रमाण देता है तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है . इस को मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं ॥ ६ । ऐसा न हो . नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगत का विचार करेगा ॥ ७ । परन्तु यदि ईश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये मेरी झुठाई के हेतु से अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी पापी की नाईं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं ॥ ८ । तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा

हमारी निन्दा किई जाती है और जैसा कितने लोग बोलते कि हम कहते हैं कि आओ हम बुराई करें जिस्तें भलाई निकले . ऐसों पर दण्ड की आज्ञा यथार्थ है ॥

९। तो क्या . क्या हम उन से अच्छे हैं . कभी नहीं क्योंकि हम प्रमाण दे चुके हैं कि यिहूदी और यूनानी भी सब पाप के वश में हैं ॥ १०। जैसा लिखा है कि कोई धर्म्मी जन नहीं है एक भी नहीं ॥ ११। कोई बूझनेहारा नहीं कोई ईश्वर का ढूंढ़नेहारा नहीं ॥ १२। सब लोग भटक गये हैं वे सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा नहीं एक भी नहीं है ॥ १३। उन का गला खुली हुई कबर है उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है सांपों का विष उन के होंठों के नीचे है ॥ १४। और उन का मुंह स्राप औ कड़वाहट से भरा है ॥ १५। उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं ॥ १६। उन के मार्गों में नाश और क्लेश है ॥ १७। और उन्हों ने कुशल का मार्ग नहीं जाना है ॥ १८। उन के नेत्रों के आगे ईश्वर का कुछ भय नहीं है ॥

१९। हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है सो उन के लिये कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं इस लिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार ईश्वर के आगे दण्ड के योग्य ठहरे ॥ २०। इस कारण कि व्यवस्था के कर्म्मों से कोई प्राणी उस के आगे धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है ॥

२१। पर अब व्यवस्था से न्यारे ईश्वर का धर्म्म प्रगट हुआ है जिस पर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी देते हैं ॥ २२। और यह ईश्वर का धर्म्म यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास करने से सभों के लिये और सभों पर है जो विश्वास करते हैं क्योंकि कुछ भेद नहीं है ॥ २३। क्योंकि सभों ने पाप किया है और ईश्वर की प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं ॥ २४। पर उस के अनुग्रह से उस उद्धार के द्वारा जो ख्रीष्ट यीशु में है सेंतमेंत धर्म्मी ठहराये जाते हैं ॥ २५। उस को ईश्वर ने प्रायश्चित्त स्थापन किया कि विश्वास के द्वारा उस के लोहू से प्रायश्चित्त होवे जिस्तें आगे किये हुए पापों से ईश्वर की सहनशीलता से आनाकानी जो किई गई तिस के कारण वह अपना धर्म्म प्रगट करे ॥ २६। हां इस वर्त्तमान समय में अपना धर्म्म प्रगट करे यहां लों कि यीशु के विश्वास के अवलंबी को धर्म्मी ठहराने में भी धर्म्मी ठहरे ॥

२७। तो वह घमण्ड करना कहां रहा . वह वर्ज्जित हुआ . कौन व्यवस्था के द्वारा से . क्या कर्म्मों की . नहीं परन्तु विश्वास की व्यवस्था के द्वारा से ॥ २८। इस लिये हम यह सिद्धान्त करते हैं कि बिना व्यवस्था के कर्म्मों से मनुष्य विश्वास से धर्म्मी ठहराया जाता है ॥ २९। क्या ईश्वर केवल यिहूदियों का ईश्वर है . क्या अन्यदेशियों का नहीं . हां अन्यदेशियों का भी है ॥ ३०। क्योंकि एक ही ईश्वर है जो खतना किये हुओं को विश्वास से और खतनाहीनों को विश्वास के द्वारा से धर्म्मी ठहरावेगा ॥ ३१। तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं . ऐसा न हो परन्तु व्यवस्था को स्थापन करते हैं ॥

४. तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीम ने शरीर के अनुसार पाया है ॥ २। यदि इब्राहीम कर्म्मों के हेतु से धर्म्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करने की जगह है ॥ ३। परन्तु ईश्वर के आगे नहीं है क्योंकि धर्म्मपुस्तक क्या कहता है . इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया ॥ ४। अब कार्य्य करनेहारे को मजूरी देना अनुग्रह की बात नहीं परन्तु ऋण की बात गिना जाता है ॥ ५। परन्तु जो कार्य्य नहीं करता पर भक्तिहीन के धर्म्मी ठहरानेहारे पर विश्वास करता है उस के लिये उस का विश्वास धर्म्म गिना जाता है ॥ ६। जैसा दाऊद भी उस मनुष्य की धन्यता जिस को ईश्वर बिना कर्म्मों से धर्म्मी ठहरावे बताता है ॥ ७। कि धन्य वे जिन के कुकर्म्म क्षमा किये गये और जिन के पाप ढांपे गये ॥ ८। धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न गिने ॥

९। तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगों

ही के लिये है अथवा खतनाहीन लोगों के लिये भी है, क्योंकि हम कहते हैं कि इब्राहीम के लिये बिश्वास धर्म्म गिना गया॥ १०। तो वह क्योंकर उस के लिये गिना गया, जब वह खतना किया हुआ था अथवा जब खतनाहीन था, जब खतना किया हुआ था सो नहीं परन्तु जब खतनाहीन था॥ ११। और उस ने खतने का चिन्ह पाया कि जो बिश्वास उस ने खतनाहीन दशा में किया था उस बिश्वास के धर्म्म की छाप होवे जिस्तें जो लोग खतनाहीन दशा में बिश्वास करते हैं वह उन सभों का पिता होय कि वे भी धर्म्मी ठहराये जायें॥ १२। और जो लोग न केवल खतना किये हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस बिश्वास की लीक पर चलनेहारे भी हैं जो उस ने खतनाहीन दशा में किया था उन लोगों के लिये खतना किये हुओं का पिता ठहरे॥

१३। क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगत का अधिकारी होगा न उस को न उस के बंश को व्यवस्था के द्वारा से मिली परन्तु बिश्वास के धर्म्म के द्वारा से॥ १४। क्योंकि यदि व्यवस्था के अवलंबी अधिकारी हैं तो बिश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है॥ १५। व्यवस्था तो क्रोध जन्माती है क्योंकि जहां व्यवस्था नहीं है तहां उल्लंघन भी नहीं॥ १६। इस कारण प्रतिज्ञा बिश्वास से हुई कि अनुग्रह की रीति पर होय इस लिये कि सारे बंश के लिये दृढ़ होय केवल उन के लिये नहीं जो व्यवस्था के अवलंबी हैं परन्तु उन के लिये भी जो इब्राहीम के से बिश्वास के अवलंबी है॥ १७। वह तो उस के आगे जिस का उस ने बिश्वास किया अर्थात् ईश्वर के आगे जो मृतकों को जिलाता है और जो बातें नहीं हैं उन का नाम ऐसा लेता कि जैसा वे हैं हम सभों का पिता है जैसा लिखा है कि मैं ने तुझे बहुत देशों के लोगों का पिता ठहराया है॥

१८। उस ने जहां आशा न देख पड़ती थी तहां आशा रखके बिश्वास किया इस लिये कि जो कहा गया था कि तेरा बंश इस रीति से होगा उस के अनुसार वह बहुत देशों के लोगों का पिता होय॥ १९। और बिश्वास में दुर्ब्बल न होके उस ने यद्यपि सौ एक बरस का था तौभी न अपने शरीर को जो अब मृतक सा हुआ था और न सार: के गर्भ की मृतक की सी दशा को सोचा॥ २०। उस ने ईश्वर की प्रतिज्ञा पर अबिश्वास से संदेह किया सो नहीं परन्तु बिश्वास में दृढ़ होके ईश्वर की महिमा प्रगट किई॥ २१। और निश्चय जाना कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा किई है उसे करने को भी सामर्थी है॥ २२। इस हेतु से यह उस के लिये धर्म्म गिना गया॥

२३। पर न केवल उस के कारण लिखा गया कि उस के लिये गिना गया॥ २४। परन्तु हमारे कारण भी जिन के लिये गिना जायगा अर्थात् हमारे कारण जो उस पर बिश्वास करते हैं जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से उठाया॥ २५। जो हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्म्मी ठहराये जाने के लिये उठाया गया॥

५. सो जब कि हम बिश्वास से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा हमें ईश्वर से मिलाप है॥ २। और भी उस के द्वारा हम ने इस अनुग्रह में जिस में स्थिर हैं बिश्वास से पहुंचने का अधिकार पाया है और ईश्वर की महिमा की आशा के विषय में बड़ाई करते हैं॥ ३। और केवल यह नहीं परन्तु हम क्लेशों के विषय में भी बड़ाई करते हैं क्योंकि जानते हैं कि क्लेश से धीरज॥ ४। और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है॥ ५। और आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा से जो हमें दिया गया ईश्वर का प्रेम हमारे मन में उंडेला गया है॥ ६। क्योंकि जब हम निर्ब्बल हो रहे थे तब ही खीष्ट समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा॥ ७। धर्म्मी जन के लिये कोई मरे यह दुर्लभ है पर हां भले मनुष्य के लिये क्या जाने किसी को मरने का भी साहस होय॥ ८। परन्तु ईश्वर हमारी ओर अपने प्रेम का माहात्म्य यूं दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे

थे तब ही खीष्ट हमारे लिये मरा ॥ ९। सो जब कि हम अब उस के लोहू के गुण से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उस के द्वारा क्रोध से बचेंगे ॥ १०। क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उस के जीवन के द्वारा त्राण पावेंगे ॥ ११। और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय में भी बड़ाई करते हैं ॥

१२। इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर बीती क्योंकि सभों ने पाप किया ॥ १३। क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता ॥ १४। तौभी आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था. यह आदम उस आनेवाले का चिन्ह है ॥ १५। परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा यह वरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात् यीशु खीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकाई से हुआ ॥ १६। और जैसा वह दण्ड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णय से एक अपराध के कारण दण्ड की आज्ञा हुई परन्तु वरदान से बहुत अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ ॥ १७। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रह की और धर्म्म के दान की अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्य के अर्थात् यीशु खीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे ॥ १८। इस लिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्यों के लिये धर्म्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय ॥ १९। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे ॥ २०। पर व्यवस्था का भी प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ ॥ २१। कि जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्म्म के द्वारा से राज्य करे ॥

६.

तो हम क्या कहें. क्या हम पाप में रहें जिस्तें अनुग्रह बहुत होय ॥ २। ऐसा न हो. हम जो पाप के लिए मूए हैं क्योंकर अब उस में जीयेंगे ॥

३। क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से जितनों ने खीष्ट यीशु का बपतिसमा लिया उस की मृत्यु का बपतिसमा लिया ॥ ४। सो उस की मृत्यु का बपतिसमा लेने से हम उस के संग गाड़े गये कि जैसे खीष्ट पिता के ऐश्वर्य्य से मृतकों में से उठाया गया तैसे हम भी जीवन की सी नई चाल चलें ॥ ५। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उस के संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उस के जी उठने की समानता में भी संयुक्त होंगे ॥ ६। क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया इस लिये कि पाप का शरीर लय किया जाय जिस्तें हम फिर पाप के दास न होवें ॥ ७। क्योंकि जो मूआ है सो पाप से छुड़ाया गया है ॥ ८। और यदि हम खीष्ट के संग मूए हैं तो विश्वास करते हैं कि उस के संग जीयेंगे भी ॥ ९। क्योंकि जानते हैं कि खीष्ट मृतकों में से उठके फिर नहीं मरता है. उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं है ॥ १०। क्योंकि वह जो मरा तो पाप के लिये एकही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वर के लिये जीता है ॥ ११। इस रीति से तुम भी अपने को समझो कि हम पाप के लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु खीष्ट यीशु में ईश्वर के लिये जीवते हैं ॥

१२। सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य

थे तब ही खीष्ट हमारे लिये मरा ॥ ९ । सो जब कि हम अब उस के लोहू के गुण से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उस के द्वारा क्रोध से बचेंगे ॥ १० । क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उस के जीवन के द्वारा त्राण पावेंगे ॥ ११ । और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय में भी बड़ाई करते हैं ॥

१२ । इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर बीती क्योंकि सभों ने पाप किया ॥ १३ । क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता ॥ १४ । तौभी आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था . यह आदम उस आनेवाले का चिन्ह है ॥ १५ । परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा यह वरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात् यीशु खीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकाई से हुआ ॥ १६ । और जैसा वह दण्ड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णय से एक अपराध के कारण दण्ड की आज्ञा हुई परन्तु वरदान से बहुत अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ ॥ १७ । क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रह की और धर्म्म के दान की अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्य के अर्थात् यीशु खीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे ॥ १८ । इस लिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्यों के लिये धर्म्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय ॥ १९ । क्योंकि जैसा एक[illegible] लंघन करने से बहुत लोग पा[illegible] एक मनुष्य के आज्ञा मानने [illegible] बनाये जायेंगे ॥ २० । पर व्य[illegible] हुआ कि अपराध बहुत होय[illegible] हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधि[illegible] जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य [illegible] यीशु खीष्ट के द्वारा अनुग्र[illegible] लिये धर्म्म के द्वारा से रा[illegible]

६. तो हम क्य[illegible] रहें जि[illegible]

२ । ऐसा न हो . हम जो [illegible] अब उस में जीयेंगे ॥

३ । क्या तुम नहीं [illegible] जितनों ने खीष्ट यीशु [illegible] मृत्यु का बपतिसमा [illegible] का बपतिसमा लेने से [illegible] जैसे खीष्ट पिता के [illegible] गया तैसे हम भी [illegible] ५ । क्योंकि यदि [illegible] उस के संयुक्त हुए [illegible] की समानता से [illegible] जानते हैं कि [illegible] पर चढ़ाया [illegible] किया जाय [illegible] ७ । क्योंकि [illegible] ८ । और [illegible] करते हैं [illegible] जानते हैं [illegible] मरता [illegible] १० । [illegible] बेर [illegible] है ॥ [illegible] कि [illegible] प्रभु [illegible]

थे तब ही ख्रीष्ट हमारे लिये मरा ॥ ९। सो जब कि हम अब उस के लोहू के गुण से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उस के द्वारा क्रोध से बचेंगे ॥ १०। क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उस के जीवन के द्वारा त्राण पावेंगे ॥ ११। और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय में भी बड़ाई करते हैं ॥

१२। इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर थोती क्योंकि सभों ने पाप किया ॥ १३। क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता ॥ १४। तौभी आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था. यह आदम उस आनेवाले का चिन्ह है ॥ १५। परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा यह वरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात् यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकाई से हुआ ॥ १६। और जैसा वह दण्ड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णय से एक अपराध के कारण दण्ड की आज्ञा हुई परन्तु वरदान से बहुत अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ ॥ १७। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रह की और धर्म्म के दान की अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्य के अर्थात् यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे ॥ १८। इस लिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्यों के लिये धर्म्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय ॥ १९। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे ॥ २०। पर व्यवस्था का भी प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ ॥ २१। कि जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्म्म के द्वारा से राज्य करे ॥

६. तो हम क्या कहें. क्या हम पाप में रहें जिस्तें अनुग्रह बहुत होय ॥ २। ऐसा न हो. हम जो पाप के लिए मूए हैं क्योंकर अब उस में जीयेंगे ॥

३। क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से जितनों ने ख्रीष्ट यीशु का बपतिसमा लिया उस की मृत्यु का बपतिसमा लिया ॥ ४। सो उस की मृत्यु का बपतिसमा लेने से हम उस के संग गाड़े गये कि जैसे ख्रीष्ट पिता के ऐश्वर्य्य से मृतकों में से उठाया गया तैसे हम भी जीवन की सी नई चाल चलें ॥ ५। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उस के संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उस के जी उठने की समानता में भी संयुक्त होंगे ॥ ६। क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया इस लिये कि पाप का शरीर क्षय किया जाय जिस्तें हम फिर पाप के दास न होवें ॥ ७। क्योंकि जो मूआ है सो पाप से छुड़ाया गया है ॥ ८। और यदि हम ख्रीष्ट के संग मूए हैं तो विश्वास करते हैं कि उस के संग जीयेंगे भी ॥ ९। क्योंकि जानते हैं कि ख्रीष्ट मृतकों में से उठके फिर नहीं मरता है. उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं है ॥ १०। क्योंकि वह जो मरा तो पाप के लिये एकही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वर के लिये जीता है ॥ ११। इस रीति से तुम भी अपने को समझो कि हम पाप के लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर के लिये जीवते हैं ॥

१२। सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य

न करे कि तुम उस के अभिलाषों से पाप के आज्ञाकारी होओ ॥ १३ । और न अपने अंगों को अधर्म्म के हथियार करके पाप को सौंप देओ परन्तु जैसे मृतकों में से जी गये हो तैसे अपने को ईश्वर को सौंप देओ और अपने अंगों को ईश्वर के तई धर्म्म के हथियार करके सौंपो ॥ १४ । क्योंकि तुम पर पाप की प्रभुता न होगी इस लिये कि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो ॥

१५ । तो क्या . क्या हम पाप किया करें इस लिये कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं . ऐसा न हो ॥ १६ । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम आज्ञा मानने के लिये जिस के यहां अपने को दास करके सौंप देते हो उसी के दास हो जिस की आज्ञा मानते हो चाहे मृत्यु के लिये पाप के दास चाहे धर्म्म के लिये आज्ञापालन के दास ॥ १७ । पर ईश्वर का धन्यबाद होय कि तुम पाप के दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेश के सांचे में ढाले गये मन से उस के आज्ञाकारी हुए ॥ १८ । और मैं तुम्हारे शरीर की दुर्व्वलता के कारण मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि तुम पाप से उद्धार पाके धर्म्म के दास बने हो ॥ १९ । जैसे तुम ने अपने अंगों को अधर्म्म के लिये अशुद्धता और अधर्म्म के दास करके अर्पण किया तैसे अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म्म के दास करके अर्पण करो ॥ २० । जब तुम पाप के दास थे तब धर्म्म से निर्बंध थे ॥ २१ । सो उस समय में तुम क्या फल फलते थे . वे कर्म्म जिन से तुम अब लजाते हो क्योंकि उन का अन्त मृत्यु है ॥ २२ । पर अब पाप से उद्धार पाके और ईश्वर के दास बनके तुम पवित्रता के लिये फल फलते हो और उस का अन्त अनन्त जीवन है ॥ २३ । क्योंकि पाप की मजूरी मृत्यु है परन्तु ईश्वर का बरदान हमारे प्रभु खीष्ट यीशु में अनन्त जीवन है ॥

७. हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं व्यवस्था के जाननेहारों से बोलता हूं कि जब लों मनुष्य जीता रहे तब लों व्यवस्था को उस पर प्रभुता है ॥ २ । क्योंकि बिवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामी के संग व्यवस्था से बंधी है परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामी की व्यवस्था से छूट गई ॥ ३ । इस लिये यदि स्वामी के जीते जी वह दूसरे स्वामी की हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह उस व्यवस्था से निर्बंध हुई यहां लों कि दूसरे स्वामी की हो जाने से भी वह व्यभिचारिणी नहीं ॥ ४ । इस लिये हे मेरे भाइयो तुम भी खीष्ट के देह के द्वारा से व्यवस्था के लिये मर गये कि तुम दूसरे के हो जावो अर्थात् उसी के जो मृतकों में से जी उठा इस लिये कि हम ईश्वर के लिये फल फलें ॥ ५ । क्योंकि जब हम शारीरिक दशा में थे तब पापों के अभिलाष जो व्यवस्था के द्वारा से थे हमारे अंगों में कार्य्य करवाते थे जिस्तें मृत्यु के लिये फल फलें ॥ ६ । परन्तु अभी हम जिस में बंधे थे उस के लिये मृतक होके व्यवस्था से छूट गये हैं यहां लों कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं परन्तु आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं ॥

७ । तो हम क्या कहें . क्या व्यवस्था पाप है . ऐसा न हो परन्तु बिना व्यवस्था के द्वारा से मैं पाप को न पहचानता हां व्यवस्था जो न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता ॥ ८ । परन्तु पाप ने अवसर पाके आज्ञा के द्वारा सब प्रकार का लालच मुझ में जन्माया क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मृतक है ॥ ९ । मैं तो व्यवस्था बिना आगे जीवता था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी गया और मैं मूआ ॥ १० । और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी ॥ ११ । क्योंकि पाप ने अवसर पाके आज्ञा के द्वारा मुझे ठगा और उस के द्वारा मुझे मार डाला ॥ १२ । सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ और उत्तम है ॥

१३ । तो क्या वह उत्तम वस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई . ऐसा न हो परन्तु पाप जिस्तें वह पाप सा दिखाई देवे उस उत्तम वस्तु के द्वारा से मेरे लिये मृत्यु का जन्मानेहारा हुआ इस लिये कि पाप आज्ञा

के द्वारा से अत्यन्त पापमय हो जाय॥ १४। क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है परन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हूं॥ १५। क्योंकि जो मैं करता हूं उस को नहीं समझता हूं क्योंकि जो मैं चाहता हूं सोई नहीं करता हूं परन्तु जिस से घिनाता हूं सोई करता हूं॥ १६। पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो मैं व्यवस्था को मान लेता हूं कि अच्छी है॥ १७। सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझ में बसता है॥ १८। क्योंकि मैं जानता हूं कि कोई उत्तम वस्तु मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में नहीं बसती है क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी करनी मुझे नहीं मिलती है॥ १९। क्योंकि वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु जो बुरा काम नहीं चाहता हूं सोई करता हूं॥ २०। पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो अब मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझ में बसता है॥ २१। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा काम किया चाहता हूं तब बुरा काम मेरे संग है॥ २२। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व के भाव से ईश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न हूं॥ २३। परन्तु मैं अपने अंगों में दूसरी व्यवस्था देखता हूं जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के जो मेरे अंगों में है बंधन में डालती है॥ २४। अभागा मनुष्य जो मैं हूं मुझे इस मृत्यु के देह से कौन बचावेगा॥ २५। मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से वही बचानेहारा है. सो मैं आप बुद्धि से तो ईश्वर की व्यवस्था की सेवा परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूं॥

८. सो अब जो लोग खीष्ट यीशु में हैं अर्थात शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है॥ २। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने खीष्ट यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से निर्बंध किया है॥ ३। क्योंकि जो व्यवस्था से अनहोना था इस लिये कि शरीर के द्वारा से वह दुर्ब्बल थी उस को ईश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पाप के शरीर की समानता में और पाप के कारण भेजके शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दिई॥ ४। इस लिये कि व्यवस्था की विधि हमों में जो शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय॥

५। जो शरीर के अनुसारी हैं सो शरीर की बातों पर मन लगाते हैं पर जो आत्मा के अनुसारी हैं सो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं॥ ६। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और कल्याण है॥ ७। इस कारण कि शरीर पर मन लगाना ईश्वर से शत्रुता करना है क्योंकि वह मन ईश्वर की व्यवस्था के वश में नहीं होता है क्योंकि हो नहीं सकता है॥ ८। और जो शारीरिक दशा में हैं सो ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं॥ ९। पर जब कि ईश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो. यदि किसी में खीष्ट का आत्मा नहीं है तो वह उस का जन नहीं है॥ १०। परन्तु यदि खीष्ट तुम में है तो देह पाप के कारण मृतक है पर आत्मा धर्म्म के कारण जीवन है॥ ११। और जिस ने यीशु को मृतकों में से उठाया उस का आत्मा यदि तुम में बसता है तो जिस ने खीष्ट को मृतकों में से उठाया सो तुम्हारे मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के कारण जो तुम में बसता है जिलावेगा॥

१२। इस लिये हे भाइयो हम शरीर के ऋणी नहीं हैं कि शरीर के अनुसार दिन काटें॥ १३। क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटो तो मरोगे परन्तु यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारो तो जीओगे॥ १४। क्योंकि जितने लोग ईश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं वे ही ईश्वर के पुत्र हैं॥ १५। क्योंकि तुम ने दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपन का आत्मा पाया है जिस से हम हे अब्बा अर्थात् हे पिता पुकारते हैं॥ १६। आत्मा आप ही हमारे आत्मा के संग साक्षी देता है कि हम ईश्वर के

सन्तान हैं ॥ १७। और यदि सन्तान हैं तो अधिकारी भी हैं हां ईश्वर के अधिकारी और खीष्ट के संगी अधिकारी हैं कि हम तो उस के संग दुःख उठाते हैं जिस्तें उस के संग महिमा भी पावें ॥

१८। क्योंकि मैं समझता हूं कि इस वर्त्तमान समय के दुःख उस महिमा के आगे जो हमों में प्रगट किई जायगी कुछ गिनने के योग्य नहीं हैं ॥ १९। क्योंकि सृष्टि की प्रत्याशा ईश्वर के सन्तानों के प्रगट होने की बाट जोहती है ॥ २०। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं परन्तु अधीन करनेहारे की ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा से किई गई ॥ २१। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से उद्धार पाके ईश्वर के सन्तानों की महिमा की निर्बंधता प्राप्त करेगी ॥ २२। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब लों एक संग कहरती और पीड़ा पाती है ॥ २३। और केवल वह नहीं पर हम लोग भी इस लिये कि हमारे पास आत्मा का पहिला फल है आप ही अपने में कहरते हैं और लेपालकपन की अर्थात अपने देह के उद्धार की बाट जोहते हैं ॥ २४। क्योंकि आशा से हमारा त्राण हुआ परन्तु जो आशा देखने में आती है सो आशा नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है वह उस की आशा भी क्यों रखता है ॥ २५। परन्तु यदि हम जो नहीं देखते हैं उस की आशा रखते हैं तो धीरज से उस की बाट जोहते हैं ॥

२६। इस रीति से पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्ब्बलताओं में सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते हैं कौन सी प्रार्थना किस रीति से किया चाहिये परन्तु आत्मा आप ही अकथ्य हाय मार मारके हमारे लिये बिन्ती करता है ॥ २७। और हृदयों का जांचनेहारा जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है कि वह पवित्र लोगों के लिये ईश्वर की इच्छा के समान बिन्ती करता है ॥

२८। और हम जानते हैं कि जो लोग ईश्वर को प्यार करते हैं उन के लिये सब बातें मिलके भलाई ही का कार्य्य करती हैं अर्थात् उन के लिये जो उस की इच्छा के समान बुलाये हुए हैं ॥ २९। क्योंकि जिन्हें उस ने आगे से जाना उन्हें उस ने अपने पुत्र के रूपके सदृश होने को आगे से ठहराया जिस्तें वह बहुत भाइयों में पहिलौठा होवे ॥ ३०। फिर जिन्हें उस ने आगे से ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्म्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्म्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दिई ॥

३१। तो हम इन बातों पर क्या कहें. यदि ईश्वर हमारी ओर है तो हमारे विरुद्ध कौन होगा ॥ ३२। जिस ने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभों के लिये सौंप दिया सो उस के संग हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा ॥ ३३। ईश्वर के चुने हुए लोगों पर दोष कौन लगावेगा. क्या ईश्वर जो धर्म्मी ठहरानेहारा है ॥ ३४। दण्ड की आज्ञा देनेहारा कौन होगा. क्या खीष्ट जो मरा हां जो जी भी उठा जो ईश्वर की दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये बिन्ती भी करता है ॥ ३५। कौन हमें खीष्ट के प्रेम से अलग करेगा. क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल वा नंगाई वा जोखिम वा खड्ग ॥ ३६। जैसा लिखा है कि तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम बध होनेवाली भेड़ों की नाईं गिने गये हैं ॥ ३७। नहीं पर इन सब बातों में हम उस के द्वारा से जिस ने हमें प्यार किया है जयवन्त से भी अधिक हैं ॥ ३८। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु न जीवन न दूतगण न प्रधानता न पराक्रम न वर्त्तमान न भविष्य ॥ ३९। न ऊंचाई न गहिराई न और कोई सृष्टि हमें ईश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु खीष्ट यीशु में है अलग कर सकेगी ॥

९. मैं खीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं और मेरा मन भी पवित्र आत्मा में मेरा साक्षी है ॥ २। कि मुझे बड़ा शोक और मेरे मन को निरन्तर खेद रहता है ॥ ३। क्योंकि मैं आप प्रार्थना कर सकता कि अपने भाइयों के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्ब हैं मैं खीष्ट से स्रापित होता ॥ ४। वे इस्रायेली लोग हैं और लेपालकपन औ तेज औ नियम औ व्यवस्था का निरू-

पण श्री सेवकाई श्री प्रतिज्ञाएं उन की हैं॥ ५। पितर लोग भी उन्हीं के हैं श्रीर उन में से शरीर के भाव से खीष्ट हुआ जो सर्व्वप्रधान ईश्वर सर्व्वदा धन्य है . आमीन॥

६। पर ऐसा नहीं है कि ईश्वर का वचन टल गया है क्योंकि सब लोग इस्रायेली नहीं जो इस्रायेल से जन्मे हैं॥ ७। श्रीर न इस लिये कि इब्राहीम के वंश हैं वे सब उस के सन्तान हैं परन्तु (लिखा है) इसहाक से जो हो सो तेरा वंश कहावेगा॥ ८। अर्थात् शरीर के जो सन्तान सो ईश्वर के संतान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं॥ ९। क्योंकि यह वचन प्रतिज्ञा का था कि इस समय के अनुसार मैं आऊंगा श्रीर सार: को पुत्र होगा॥ १०। श्रीर केवल यह नहीं परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती हुई॥ ११। श्रीर बालक नहीं जन्मे थे श्रीर न कुछ भला अथवा बुरा किया था तब ही उस से कहा गया कि बड़का छुटके का दास होगा॥ १२। इस लिये कि ईश्वर की मनसा जो उस के चुन लेने के अनुसार है कर्म्मों के हेतु से नहीं परन्तु बुलानेहारे की ओर से बनी रहे॥ १३। जैसा लिखा है कि मैं ने याकूब को प्यार किया परन्तु एसौ को अप्रिय जाना॥

१४। तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर के यहां अन्याय है . ऐसा न हो॥ १५। क्योंकि वह मूसा से कहता है मैं जिस किसी पर दया करूं उस पर दया करूंगा श्रीर जिस किसी पर कृपा करूं उस पर कृपा करूंगा॥ १६। सो यह न तो चाहनेहारे का न तो दौड़नेहारे का परन्तु दया करनेहारे ईश्वर का काम है॥ १७। क्योंकि धर्म्मपुस्तक फिरऊन से कहता है कि मैं ने तुझे इसी बात के लिये बढ़ाया कि तुझ मे अपना पराक्रम दिखाऊं श्रीर कि मेरा नाम सारी पृथिवी में प्रचार किया जाय॥ १८। सो वह जिस पर दया किया चाहता है उस पर दया करता है परन्तु जिसे कठोर किया चाहता है उसे कठोर करता है॥ १९। तो तू मुझ से कहेगा वह फिर दोष क्यों देता है क्योंकि कौन उस की इच्छा का साम्ना करता है॥ २०। हां पर हे मनुष्य तू कौन है जो ईश्वर से विवाद करता है . क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेहारे से कहेगी तू ने मुझे इस रीति से क्यों बनाया॥ २१। अथवा क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं है कि एक ही पिंड में से एक पात्र को आदर के लिये श्रीर दूसरे को अनादर के लिये बनावे॥ २२। श्रीर यदि ईश्वर ने अपना क्रोध दिखाने की श्रीर अपना सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के पात्रों की जो विनाश के योग्य किये गये थे बड़े धीरज से सही॥ २३। श्रीर दया के पात्रों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये आगे से तैयार किया अपनी महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा किई तो तू कौन है जो विवाद करे॥ २४। इन्हों को उस ने बुलाया भी अर्थात् हमों को जो केवल यिहूदियों में से नहीं परन्तु अन्यदेशियों में से भी हैं॥ २५। जैसा वह होशेया के पुस्तक में भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं अपने लोग कहूंगा श्रीर जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूंगा॥ २६। श्रीर जिस स्थान में लोगों से कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं हो वहां वे जीवते ईश्वर के सन्तान कहावेंगे॥ २७। परन्तु यिशैयाह इस्रायेल के विषय में पुकारता है यद्यपि इस्रायेल के सन्तानों की गिन्ती समुद्र के बालू की नाईं हो तौभी जो बच रहेंगे उन्हीं की रक्षा होगी॥ २८। क्योंकि परमेश्वर बात को पूरी करनेवाला श्रीर धर्म्म से शीघ्र निबाहनेवाला है कि वह देश में बात को शीघ्र समाप्त करेगा॥ २९। जैसा यिशैयाह ने आगे भी कहा था कि यदि सेनाश्रों का प्रभु हमारे लिये वंश न छोड़ देता तो हम सदोम की नाईं हो जाते श्रीर अमोरा के समान किये जाते॥

३०। तो हम क्या कहें . यह कि अन्यदेशियों ने जो धर्म्म का पीछा नहीं करते थे धर्म्म को अर्थात् उस धर्म्म को जो विश्वास से है प्राप्त किया॥ ३१। परन्तु इस्रायेली लोग धर्म्म की व्यवस्था का पीछा करते हुए धर्म्म की व्यवस्था को नहीं पहुंचे॥ ३२। किस लिये . इस लिये कि वे विश्वास से नहीं परन्तु जैसे व्यवस्था के कर्म्मों से उस का पीछा करते

थे कि उन्हों ने उस ठेस के पत्थर पर ठोकर खाई ॥ ३३। जैसा लिखा है देखो मैं सियोन में एक ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान रखता हूं और जो कोई उस पर बिश्वास करे सो लज्जित न होगा ॥

१०. हे भाइयो इस्रायेल के लिये मेरे मन की इच्छा और मेरी प्रार्थना जो मैं ईश्वर से करता हूं उन के त्राण के लिये है ॥ २। क्योंकि मैं उन पर साक्षी देता हूं कि उन को ईश्वर के लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञान की रीति से नहीं ॥ ३। क्योंकि वे ईश्वर के धर्म्म को न चीन्हके पर अपना ही धर्म्म स्थापन करने का यत्न करके ईश्वर के धर्म्म के अधीन नहीं हुए ॥

४। क्योंकि धर्म्म के निमित्त हर एक विश्वास करनेहारे के लिये खीष्ट व्यवस्था का अन्त है ॥ ५। क्योंकि मूसा उस धर्म्म के विषय में जो व्यवस्था से है लिखता है कि जो मनुष्य यह बातें पालन करे सो उन से जीयेगा ॥ ६। परन्तु जो धर्म्म विश्वास से है सो यूं कहता है कि अपने मन में मत कह कौन स्वर्ग पर चढ़ेगा . यह तो खीष्ट को उतार लाने के लिये होता ॥ ७। अथवा कौन पाताल में उतरेगा . यह तो खीष्ट को मृतकों में से ऊपर लाने के लिये होता ॥ ८। फिर क्या कहता है . परन्तु वचन तेरे निकट तेरे मुंह में और तेरे मन में है . यह तो विश्वास का वचन है जो हम प्रचार करते हैं ॥ ९। कि यदि तू अपने मुंह से प्रभु यीशु को मान लेवे और अपने मन से विश्वास करे कि ईश्वर ने उस को मृतकों में से उठाया तो तू त्राण पावेगा ॥ १०। क्योंकि मन से धर्म्म के लिये विश्वास किया जाता है और मुंह से त्राण के लिये मान लिया जाता है ॥ ११। क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो लज्जित न होगा ॥ १२। यिहूदी और यूनानी में कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभों का एक ही प्रभु है जो सभों के लिये जो उस से प्रार्थना करते हैं धनी है ॥ १३। क्योंकि जो कोई परमेश्वर के नाम की प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा ॥ १४। फिर जिस पर लोगों ने विश्वास नहीं किया उस से वे क्योंकर प्रार्थना करें और जिस की उन्हों ने सुनी नहीं उस पर वे क्योंकर विश्वास करें और उपदेशक बिना वे क्योंकर सुनें ॥ १५। और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुशल का सुसमाचार सुनाते हैं अर्थात् भली बातों का सुसमाचार प्रचार करते हैं उन के पांव कैसे सुन्दर हैं ॥ १६। परन्तु सब लोगों ने उस सुसमाचार को नहीं माना क्योंकि यिशैयाह कहता है हे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का विश्वास किया है ॥ १७। सो विश्वास समाचार से और समाचार ईश्वर के वचन के द्वारा से आता है ॥ १८। पर मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना . हां वरन (लिखा है) उन का शब्द सारी पृथिवी पर और उन की बातें जगत के सिवानों तक निकल गईं ॥ १९। पर मैं कहता हूं क्या इस्रायेली लोग नहीं जानते थे . पहिले मूसा कहता है मैं उन्हों पर जो एक लोग नहीं हैं तुम से डाह करवाऊंगा मैं एक निर्बुद्धि लोग पर तुम से क्रोध करवाऊंगा ॥ २०। परन्तु यिशैयाह साहस करके कहता है कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उन से मैं पाया गया जो मुझे नहीं पूछते थे उन पर मैं प्रगट हुआ ॥ २१। परन्तु इस्रायेली लोगों को वह कहता है मैं ने सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञालंघन औ विवाद करनेहारे लोग की ओर पसारे ॥

११. तो मैं कहता हूं क्या ईश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इस्रायेली जन इब्राहीम के वंश से और बिन्यामीन के कुल का हूं ॥ २। ईश्वर ने अपने लोगों को जिन्हें उस ने आगे से जाना त्याग नहीं दिया है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्म्मपुस्तक एलियाह की कथा में क्या कहता है कि वह इस्रायेल के विरुद्ध ईश्वर से बिन्ती करता है ॥ ३। कि हे परमेश्वर उन्हों ने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया है और तेरी वेदियों को खोद डाला है और मैं ही अकेला छूट गया हूं और वे मेरा प्राण लेने चाहते हैं ॥ ४। परन्तु ईश्वर की वाणी उस

से क्या कहती है . मैं ने अपने लिये सात सहस्र मनुष्यों को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के आगे घुटना नहीं टेका है॥ ५। सो इस रीति से इस वर्त्तमान समय में भी अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं॥ ६। जो यह अनुग्रह से हुआ है तो फिर कर्म्मों से नहीं है नहीं तो अनुग्रह अब अनुग्रह नहीं है . पर यदि कर्म्मों से हुआ है तो फिर अनुग्रह नहीं है नहीं तो कर्म्म अब कर्म्म नहीं है॥ ७। तो क्या है . इस्रायेली लोग जिस को ढूंढ़ते हैं उस को उन्हों ने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुओं ने प्राप्त किया है और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं॥ ८। जैसा लिखा है कि ईश्वर ने उन्हें आज के दिन लों जड़ता का आत्मा हां आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये हैं॥ ९। और दाऊद कहता है उन की मेज उन के लिये फन्दा और जाल और ठोकर का कारण और प्रतिफल हो जाय॥ १०। उन की आंखों पर अंधेरा छा जाय कि वे न देखें और तू उन की पीठ को नित्य झुका दे॥

११। तो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इस लिये ठोकर खाई कि गिर पड़ें . ऐसा न हो परन्तु उन के गिरने के हेतु से अन्यदेशियों को त्राण हुआ है कि उन से डाह करवावे॥ १२। परन्तु यदि उन के गिरने से जगत का धन और उन की हानि से अन्यदेशियों का धन हुआ तो उन की भरपूरी से वह धन कितना अधिक करके होगा॥ १३। मैं तुम अन्यदेशियों से कहता हूं . जब कि मैं अन्यदेशियों के लिये प्रेरित हूं मैं अपनी सेवकाई की बड़ाई करता हूं॥ १४। कि किसी रीति से मैं उन से जो मेरे शरीर के ऐसे हैं डाह करवाके उन में से कई एक को भी बचाऊं॥ १५। क्योंकि यदि उन के त्याग दिये जाने से जगत का मिलाप हुआ तो उन के ग्रहण किये जाने से क्या होगा . क्या मृतकों में से जीवन नहीं॥ १६। यदि पहिला फल पवित्र है तो पिण्ड भी पवित्र है और यदि जड़ पवित्र है तो डालियां भी पवित्र हैं॥ १७। परन्तु यदि डालियों में से कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली जलपाई होके उन्हों में साटा गया है और जलपाई के वृक्ष की जड़ और तेल का भागी हुआ है तो डालियों के विरुद्ध घमण्ड मत कर॥ १८। परन्तु जो तू घमण्ड करे तौभी तू जड़ का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है॥ १९। फिर तू कहेगा डालियां तोड़ डाली गईं कि मैं साटा जाऊं॥ २०। अच्छा वे अबिश्वास के हेतु से तोड़ डाली गईं पर तू बिश्वास से खड़ा है . अभिमानी मत हो परन्तु भय कर॥ २१। क्योंकि यदि ईश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुझे भी न छोड़े॥ २२। सो ईश्वर की कृपा और कड़ाई को देख . जो गिर पड़े उन पर कड़ाई परन्तु तुझ पर जो तू उस की कृपा में बना रहे तो कृपा . नहीं तो तू भी काट डाला जायगा॥ २३। और वे भी जो अबिश्वास में न रहें तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर साट सकता है॥ २४। क्योंकि यदि तू उस जलपाई के वृक्ष से जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के बिरुद्ध अच्छी जलपाई के वृक्ष में साटा गया तो कितना अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपने ही जलपाई के वृक्ष में साटे जायेंगे॥

२५। और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस भेद से अनजान रहो ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान होओ अर्थात कि जब लों अन्यदेशियों की संपूर्ण संख्या प्रवेश न करे तब लों कुछ कुछ इस्रायेलियों को कठोरता रहेगी॥ २६। और तब सारा इस्रायेल त्राण पावेगा जैसा लिखा है कि बचानेहारा सियोन से आवेगा और अधर्म्मीपन को याकूब से अलग करेगा॥ २७। जब मैं उन के पापों को दूर करूंगा तब उन से यही मेरी ओर से नियम होगा॥ २८। वे सुसमाचार के भाव से तुम्हारे कारण बैरी हैं परन्तु चुन लिये जाने के भाव से पितरों के कारण प्यारे हैं॥ २९। क्योंकि ईश्वर अपने बरदानों से और बुलाहट से कभी पछतानेवाला नहीं॥ ३०। क्योंकि जैसे तुम ने आगे ईश्वर की आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उन के आज्ञा उल्लंघन के हेतु से तुम पर दया किई गई है॥ ३१। तैसे इन्हों ने भी अब आज्ञा लंघन किई है कि तुम पर जो दया किई जाती है उस के हेतु से उन पर भी

दया किई जाय ॥ ३२। क्योंकि ईश्वर ने सभों को आज्ञा उल्लंघन में बन्द कर रखा इस लिये कि सभों पर दया करे ॥

३३। आहा ईश्वर के धन और बुद्धि और ज्ञान की गंभीरता. उस के बिचार कैसे अथाह और उस के मार्ग कैसे अगम्य हैं ॥ ३४। क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना अथवा उस का मन्त्री कौन हुआ ॥ ३५। अथवा किस ने उस को पहिले दिया और उस का प्रतिफल उस को दिया जायगा ॥ ३६। क्योंकि उस से और उस के द्वारा और उस के लिये सब कुछ है. उस का गुणानुवाद सर्व्वदा होय. आमीन ॥

१२. सो हे भाइयो मैं तुम से ईश्वर की दया के कारण बिन्ती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवता और पवित्र और ईश्वर की प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यह तुम्हारी मानसिक सेवा है ॥ २। और इस संसार की रीति पर मत चला करो परन्तु तुम्हारे मन के नये होने से तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिस्तें तुम परखो कि ईश्वर की इच्छा अर्थात उत्तम और प्रसन्नता योग्य और पूरा कार्य्य क्या है ॥ ३। क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उस से मैं तुम में के हर एक जन से कहता हूं कि जो मन रखना उचित है उस से ऊंचा मन न रखे परन्तु ऐसा मन रखे कि ईश्वर ने हर एक को बिश्वास का जो परिमाण बांट दिया है उस के अनुसार उस को सुबुद्धि मन होय ॥ ४। क्योंकि जैसा हमें एक देह में बहुत अंग हैं परन्तु सब अंगों का एक ही काम नहीं है ॥ ५। तैसा हम जो बहुत हैं खीष्ट में एक देह हैं और पृथक करके एक दूसरे के अंग हैं ॥ ६। और जो अनुग्रह हमें दिया गया है जब कि उस के अनुसार भिन्न भिन्न बरदान हमें मिले हैं तो यदि भविष्यद्वाणी का दान हो तो हम बिश्वास के परिमाण के अनुसार बोलें ॥ ७। अथवा सेवकाई का दान हो तो सेवकाई में लगे रहें. अथवा जो सिखानेहारा हो सो शिक्षा में लगा रहे. अथवा जो उपदेशक हो सो उपदेश में लगा रहे ॥ ८। जो बांटे देवे सो सीधाई से बांटे. जो अध्यक्षता करे सो यत्न से करे. जो दया करे सो हर्ष से करे ॥

९। प्रेम निष्कपट होय. बुराई से घिन करो भलाई में लगे रहो ॥ १०। भ्रात्रीय प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो. परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो ॥ ११। यत्न करने में आलसी मत हो. आत्मा में अनुरागी हो. प्रभु की सेवा किया करो ॥ १२। आशा से आनन्दित हो. क्लेश में स्थिर रहो. प्रार्थना में लगे रहो ॥ १३। पवित्र लोगों को जो आवश्यक हो उस में उन की सहायता करो. अतिथि सेवा की चेष्टा करो ॥ १४। अपने सतानेहारों को आशीष देओ. आशीष देओ. स्राप मत देओ ॥ १५। आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो और रोनेहारों के संग रोओ ॥ १६। एक दूसरे की ओर एक सा मन रखो. ऊंचा मन मत रखो परन्तु दीनों से संगति रखो. अपने लेखे बुद्धिमान मत होओ ॥ १७। किसी से बुराई के बदले बुराई मत करो. जो बातें सब मनुष्यों के आगे भली हैं उन की चिन्ता किया करो ॥ १८। यदि हो सके तुम तो अपनी ओर से सब मनुष्यों के संग मिले रहो ॥ १९। हे प्यारो अपना पलटा मत लेओ परन्तु क्रोध को ठांव देओ क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा काम है. परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा ॥ २०। इस लिये यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खिला यदि प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह करने से तू उस के सिर पर आग के अंगारों की ढेरी लगावेगा ॥ २१। बुराई से मत हार जा परन्तु भलाई से बुराई को जीत ले ॥

१३. हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियों के अधीन होवे क्योंकि कोई अधिकार नहीं है जो ईश्वर की ओर से न हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वर से ठहराये हुए हैं ॥ २। इस से जो अधिकार का बिरोध करता है सो ईश्वर की बिधि का साम्ना करता है और साम्ना करनेहारे अपने लिये दण्ड पावेंगे ॥ ३। क्योंकि अध्यक्ष लोग भले कामों से नहीं परन्तु बुरे कामों से डरानेहारे हैं.

क्या तू अधिकारी से निडर रहा चाहता है . भला काम कर तो उस से तेरी सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये ईश्वर का सेवक है॥ ४। परन्तु जो तू बुरा काम करे तो भय कर क्योंकि वह खड्ग को वृथा नहीं बांधता है इस लिये कि वह ईश्वर का सेवक अर्थात् कुकर्म्मी पर क्रोध पहुंचाने को दण्डकारक है ॥ ५। इस लिये अधीन होना केवल उस क्रोध के कारण नहीं परन्तु विवेक के कारण भी अवश्य है ॥ ६। इस हेतु से कर भी देओ क्योंकि वे ईश्वर के सेवक हैं जो इसी बात में लगे रहते हैं ॥ ७। सो सभों को जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ जिसे कर देना हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे महसूल देओ जिस से भय करना हो उस से भय करो जिस का आदर करना हो उस का आदर करो ॥

८। किसी का कुछ ऋण मत धारो केवल एक दूसरे को प्यार करने का ऋण क्योंकि जो दूसरे को प्यार करता है उस ने व्यवस्था पूरी किई है ॥ ९। क्योंकि यह कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि होय तो इस बात में अर्थात् तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सब का संग्रह है ॥ १०। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता है इस लिये प्रेम करना व्यवस्था को पूरा करना है ॥

११। यह इस लिये भी किया चाहिये कि तुम समय को जानते हो कि नींद से हमारे जागने का समय अब हुआ है क्योंकि जिस समय में हम ने विश्वास किया उस समय से अब हमारा त्राण अधिक निकट है ॥ १२। रात बहुत गई है और दिन निकट आया है इस लिये हम अंधकार के कामों को उतारके ज्योति की झिलम पहिन लें ॥ १३। जैसा दिन को चाहिये तैसा हम शुभ रीति से चलें . लीला क्रीड़ा और मतवालपन में अथवा व्यभिचार और लुचपन में अथवा बैर और डाह में न चलें ॥ १४। परन्तु प्रभु यीशु ख्रीष्ट को पहिन लो और शरीर के लिये उस के अभिलाषों को पूरा करने की चिन्ता मत करो ॥

१४.

जो विश्वास में दुर्ब्बल है उसे अपनी संगति में ले लेओ पर उस के मत का विचार करने को नहीं ॥ २। एक जन विश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित है परन्तु जो दुर्ब्बल है सो सागपात खाता है ॥ ३। जो खाता है सो न खानेहारे को तुच्छ न जाने और जो नहीं खाता है सो खानेहारे को दोषी न ठहरावे क्योंकि ईश्वर ने उस को ग्रहण किया है ॥ ४। तू कौन है जो पराये सेवक को दोषी ठहराता है . वह अपने ही स्वामी के आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है . परन्तु वह खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख सकता है ॥ ५। एक जन एक दिन को दूसरे दिन से बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिन को एक सा जानता है . हर एक जन अपने ही मन में निश्चय कर लेवे ॥

६। जो दिन को मानता है सो प्रभु के लिये मानता है और जो दिन को नहीं मानता है सो प्रभु के लिये नहीं मानता है . जो खाता है सो प्रभु के लिये खाता है क्योंकि वह ईश्वर का धन्य मानता है और जो नहीं खाता है सो प्रभु के लिये नहीं खाता है और ईश्वर का धन्य मानता है ॥ ७। क्योंकि हम में से कोई अपने लिये नहीं जीता है और कोई अपने लिये नहीं मरता है ॥ ८। क्योंकि यदि हम जीवें तो प्रभु के लिये जीते हैं और यदि मरें तो प्रभु के लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें अथवा यदि मरें तो प्रभु के हैं ॥ ९। क्योंकि इसी बात के लिये ख्रीष्ट मरा और उठा और फिरके जीआ भी कि वह मृतकों और जीवतों का भी प्रभु होवे ॥ १०। तू अपने भाई को क्यों दोषी ठहराता है अथवा तू भी अपने भाई को क्यों तुच्छ जानता है क्योंकि हम सब ख्रीष्ट के विचार आसन के आगे खड़े होंगे ॥ ११। क्योंकि लिखा है कि परमेश्वर कहता है जो मैं जीता हूं तो मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा और हर एक जीभ ईश्वर के आगे मान लेगी ॥ १२। सो हम में से हर एक ईश्वर को अपना अपना लेखा देगा ॥

१३। सो हम अब फिर एक दूसरे को दोषी न ठहरावें परन्तु तुम यही ठहराओ कि भाई के आगे हम ठेस अथवा ठोकर का कारण न रखेंगे॥ १४। मैं जानता हूं और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु आप से अशुद्ध नहीं है केवल जो जिस वस्तु को अशुद्ध जानता है उस के लिये वह अशुद्ध है॥ १५। यदि तेरे भोजन के कारण तेरा भाई उदास होता है तो तू अब प्रेम की रीति से नहीं चलता है. जिस के लिये खीष्ट मूआ उस को तू अपने भोजन के द्वारा से नाश मत कर॥

१६। सो तुम्हारी भलाई की निन्दा न किई जाय॥ १७। क्योंकि ईश्वर का राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धर्म्म और मिलाप और आनन्द जो पवित्र आत्मा से है॥ १८। क्योंकि जो इन बातों में खीष्ट की सेवा करता है सो ईश्वर को भावता और मनुष्यों के यहां भला ठहराया जाता है॥ १९। इस लिये हम मिलाप की बातों और एक दूसरे के सुधारने की बातों की चेष्टा करें॥ २०। भोजन के हेतु ईश्वर का काम नाश मत कर. सब कुछ शुद्ध तो है परन्तु जो मनुष्य खाने से ठोकर खिलाता है उस के लिये बुरा है॥ २१। अच्छा यह है कि तू न मांस खाय न दाख रस पीय न कोई काम करे जिस से तेरा भाई ठेस अथवा ठोकर खाता है अथवा दुर्ब्बल होता है॥

२२। क्या तुझे विश्वास है. उसे ईश्वर के आगे अपने मन में रख. धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख पड़ती है उस में अपने को दोषी नहीं ठहराता है॥ २३। परन्तु जो संदेह करता है सो यदि खाय तो दण्ड के योग्य ठहरा है क्योंकि वह विश्वास का काम नहीं करता है. परन्तु जो जो काम विश्वास का नहीं है सो पाप है॥

१५. हमें जो बलवन्त हैं उचित है कि निर्ब्बलों की दुर्ब्बलताओं को सहें और अपने ही को प्रसन्न न करें॥ २। हम में से हर एक जन पड़ोसी की भलाई के लिये उसे सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे॥ ३। क्योंकि खीष्ट ने भी अपने ही को प्रसन्न न किया परन्तु जैसा लिखा है तेरे निन्दकों की निन्दा की बातें मुझ पर आ पड़ीं॥ ४। क्योंकि जो कुछ आगे लिखा गया सो हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया कि धीरता के और शांति के द्वारा जो धर्म्मपुस्तक से होती है हमें आशा होय॥ ५। और धीरता और शांति का ईश्वर तुम्हें खीष्ट यीशु के अनुसार आपस में एक सां मन रखने का दान देवे॥ ६। जिस्तें तुम एक चित्त होके एक मुंह से हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का गुणानुवाद करो॥ ७। इस कारण ईश्वर की महिमा के लिये जैसा खीष्ट ने तुम्हें ग्रहण किया तैसे तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो॥

८। मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरों से किई गईं उन्हें दृढ़ करने को यीशु खीष्ट ईश्वर की सच्चाई के लिये खतना किये हुए लोगों का सेवक हुआ॥ ९। पर अन्यदेशी लोग भी दया के कारण ईश्वर का गुणानुवाद करें जैसा लिखा है इस कारण मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की गीतें गाऊंगा॥ १०। और फिर कहा है हे अन्यदेशियो उस के लोगों के संग आनन्द करो॥ ११। और फिर हे सब अन्यदेशियो परमेश्वर की स्तुति करो और हे सब लोगो उसे सराहो॥ १२। और फिर यिशैयाह कहता है यिशी का एक मूल होगा और अन्यदेशियों का प्रधान होने को एक उठेगा उस पर अन्यदेशी लोग आशा रखेंगे॥ १३। आशा का ईश्वर तुम्हें विश्वास करने में सर्व्व आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से तुम्हें अधिक करके आशा होय॥

१४। हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषय में निश्चय जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरपूर औ सारे ज्ञान से परिपूर्ण हो और एक दूसरे को चिता सकते हो॥ १५। परन्तु हे भाइयो मैं ने तुम्हें चेत दिलाते हुए तुम्हारे पास कहीं कहीं बहुत साहस से जो लिखा है यह उस अनुग्रह के कारण हुआ जो ईश्वर ने मुझे दिया है॥ १६। इस लिये कि मैं अन्यदेशियों के लिये यीशु खीष्ट का सेवक होऊं और ईश्वर के सुसमाचार का याजकीय

कर्म्म करूं जिस्तें अन्यदेशियों का चढ़ाया जाना पवित्र आत्मा से पवित्र किया जाके ग्राह्य होय॥

१७। सो उन बातों में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं मुझे खीष्ट यीशु में बड़ाई करने का हेतु मिलता है॥ १८। क्योंकि जो काम खीष्ट ने मेरे द्वारा से नहीं किये उन में से मैं किसी काम के विषय मे बात करने का साहस न करूंगा परन्तु उन कामों के विषय में कहूंगा जो उस ने मेरे द्वारा से अन्य-देशियों की अधीनता के लिये वचन औ कर्म्म से और चिन्हों औ अद्भुत कामों के सामर्थ्य से और ईश्वर की आत्मा की शक्ति से किये हैं॥ १९। यहां लों कि यिरूशलीम और चारों ओर के देश से लेके इल्लूरिया देश लों मैं ने खीष्ट के सुसमाचार का संपूर्ण प्रचार किया है॥ २०। परन्तु मैं सुसमाचार को इस रीति से सुनाने की चेष्टा करता था अर्थात कि जहां खीष्ट का नाम लिया गया तहां न सुनाऊं ऐसा न हो कि पराई नेव पर घर बनाऊं॥ २१। परन्तु ऐसा सुनाऊं जैसा लिखा है कि जिन्हें उस का समाचार नहीं कहा गया वे देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना है वे समझेंगे॥

२२। इसी हेतु से मैं तुम्हारे पास जाने में बहुत बार रुक गया॥ २३। परन्तु अब मुझे इस ओर के देशों में और स्थान नहीं रहा है और बहुत बरसों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है॥ २४। इस लिये मैं जब कभी इस्पानिया देश को जाऊं तब तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं आशा रखता हूं कि तुम्हारे पास से जाते हुए तुम्हें देखूं और जब मैं पहिले तुम से कुछ कुछ तृप्त हुआ हूं तब तुम से कुछ दूर उधर पहुंचाया जाऊं॥ २५। परन्तु अभी मैं पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यिरूशलीम को जाता हूं॥ २६। क्योंकि माकिदोनिया और आखाया के लोगों की इच्छा हुई कि यिरूशलीम के पवित्र लोगों में जो कंगाल हैं उन की कुछ सहायता करें॥ २७। उन की इच्छा हुई और वे उन के ऋणी भी हैं क्योंकि यदि अन्यदेशी लोग उन की आत्मिक वस्तुओं में भागी हुए तो उन्हें उचित है कि शारीरिक वस्तुओं में उन की भी सेवा करें॥ २८। सो जब मैं यह कार्य्य पूरा कर चुकूं और उन के लिये इस फल पर छाप दे चुकूं तब तुम्हारे पास से होके इस्पानिया को जाऊंगा॥ २९। और मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास जब मैं आऊं तब खीष्ट के सुसमा-चार की आशीष की भरपूरी से आऊंगा॥

३०। और हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के कारण और पवित्र आत्मा के प्रेम के कारण मैं तुम से विन्ती करता हूं कि ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करने में मेरे संग परिश्रम करो॥ ३१। कि मैं यिहूदिया में के अविश्वासियों से बचूं और कि यिरूशलीम के लिये जो मेरी सेवकाई है सो पवित्र लोगों को भावे॥ ३२। जिस्तें मैं ईश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द से आऊं और तुम्हारे संग विश्राम करूं॥ ३३। शांति का ईश्वर तुम सभों के संग होवे. आमीन॥

१६. मैं तुम्हारे पास हम लोगों की बहिन फैबी को जो किंक्रिया में की मंडली की सेवकी है सराहता हूं॥ २। जिस्तें तुम उसे प्रभु में जैसा पवित्र लोगों के योग्य है वैसा ग्रहण करो और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन होय उस के सहायक होओ क्योंकि वह भी बहुत लोगों की और मेरी भी उपकारिणी हुई है॥

३। प्रिस्कीला और अकूला को जो खीष्ट यीशु में मेरे सहकर्म्मी हैं नमस्कार॥ ४। उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ही गला धर दिया जिन का केवल मैं नहीं परन्तु अन्यदेशियों की सारी मण्डलियां भी धन्य मानती हैं॥ ५। उन के घर में की मण्डली को भी नमस्कार. इपेनित मेरे प्यारे को जो खीष्ट के लिये आशिया का पहिला फल है नमस्कार॥ ६। मरियम को जिस ने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया नमस्कार॥ ७। अन्द्रोनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बंधुओं को जो प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले खीष्ट में हुए थे नमस्कार॥ ८। अम्पलिय प्रभु में मेरे प्यारे को नमस्कार॥ ९। उर्ब्बान खीष्ट में हमारे सहकर्म्मी को और स्तखु मेरे प्यारे को नमस्कार॥ १०। अपिल्लि को जो खीष्ट में जांचा हुआ है नमस्कार. अरिस्तबूल के घराने

के लोगों को नमस्कार ॥ ११ । हेरोदियोन मेरे कुटुंब को नमस्कार . नर्किस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं उन्हों को नमस्कार ॥ १२ । त्रुफेना और त्रुफोसा को जिन्हों ने प्रभु में परिश्रम किया नमस्कार . प्यारी परसी को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया नमस्कार ॥ १३ । रूफ को जो प्रभु में चुना हुआ है और उस की औ मेरी माता को नमस्कार ॥ १४ । असुंक्रित औ फिलेगोन औ हर्मा औ पात्रोवा औ हर्मी को और उन के संग के भाइयों को नमस्कार ॥ १५ । फिलोग औ यूलिया को और नीरिय और उस की बहिन को और उलुम्पा को और उन के संग के सब पवित्र लोगों को नमस्कार ॥ १६ । एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो . तुम को खीष्ट की मण्डलियों की ओर से नमस्कार ॥

१७ । हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के बिपरीत जो तुम ने पाई है नाना भांति के विरोध और ठोकर डालते हैं उन्हें देख रखो और उन से फिर जाओ ॥ १८ । क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की नहीं परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं और चिकनी और मीठी बातों से सूधे लोगों के मन को धोखा देते हैं ॥ १९ । तुम्हारे आज्ञापालन का चर्चा सब लोगों में फैल गया है इस से मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान पर बुराई के लिये सूधे होओ ॥ २० । शांति का ईश्वर शैतान को शीघ्र तुम्हारे पांओं तले कुचलेगा . हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय ॥

२१ । तिमोथिय मेरे सहकर्म्मी का और लूकिय औ यासोन औ सोसिपातर मेरे कुटुम्बों का तुम से नमस्कार ॥ २२ । मुझ तर्त्तिय पत्री के लिखनेहारे का प्रभु मे तुम से नमस्कार ॥ २३ । गायस मेरे और सारी मण्डली के आतिथ्यकारी का तुम से नमस्कार . इरास्त का जो नगर का भण्डारी है और भाई क्कार्त का तुम से नमस्कार ॥ २४ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होय . आमीन ॥

२५ । जो मेरे सुसमाचार के अनुसार और यीशु खीष्ट के विषय के उपदेश के अनुसार अर्थात उस भेद के प्रकाश के अनुसार तुम्हें स्थिर कर सकता है ॥ २६ । जो भेद सनातन से गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और सनातन ईश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वाणी के पुस्तक के द्वारा सब देशों के लोगों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञाकारी हो जायें ॥ २७ । उस को अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को यीशु खीष्ट के द्वारा से धन्य हो जिस का गुणानुवाद सर्व्वदा होवे । आमीन ॥

करिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री ।

---

१. **पावल** जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का बुलाया हुआ प्रेरित है और भाई सोस्थिनी ॥ २ । ईश्वर की मण्डली को जो करिन्थ में है जो खीष्ट यीशु में पवित्र किये हुए और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभों के संग जो हर स्थान में हमारे हां उन के और हमारे भी प्रभु यीशु खीष्ट के नाम की प्रार्थना करते हैं ॥ ३ । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

४ । मैं सदा तुम्हारे विषय मे अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं इस लिये कि ईश्वर का यह अनुग्रह

तुम्हें खीष्ट यीशु में दिया गया ॥ ५। कि उस में तुम हर बात में अर्थात सारे वचन और सारे ज्ञान मे धनवान किये गये ॥ ६। जैसा खीष्ट के विषय की साची तुम्हों में दृढ़ हुई ॥ ७। यहां लों कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के प्रकाश की बाट जोहते हो ॥ ८। वह तुम्हें अन्त लों भी दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के दिन में निर्दोष होगे ॥ ९। ईश्वर विश्वासयोग्य है जिस से तुम उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की संगति मे बुलाये गये ॥

१०। हे भाइयो मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम के कारण बिन्ती करता हूं कि तुम सब एक ही प्रकार की बात बोलो और तुम्हों मे विभेद न होवे परन्तु एक ही मन और एक ही विचार में सिद्ध होओ ॥ ११। क्योंकि हे मेरे भाइयो क्लोई के घराने के लोगों से मुझ पर तुम्हारे विषय में प्रगट किया गया है कि तुम्हों में बैर विरोध हैं ॥ १२। और मैं यह कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते हो कोई कि मैं पावल का हूं कोई कि मैं अपल्लो का कोई कि मै कैफा का कोई कि मै खीष्ट का हूं ॥ १३। क्या खीष्ट विभाग किया गया है. क्या पावल तुम्हारे लिये क्रूश पर घात किया गया अथवा क्या तुम्हें पावल के नाम से बपतिसमा दिया गया ॥ १४। मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं कि क्रीस्प और गायस को छोड़के मै ने तुम मे से किसी को बपतिसमा नहीं दिया ॥ १५। ऐसा न हो कि कोई कहे कि मै ने अपने नाम से बपतिसमा दिया ॥ १६। और मै ने स्तिफान के घराने को भी बपतिसमा दिया. आगे मैं नहीं जानता हूं कि मैं ने और किसी को बपतिसमा दिया ॥ १७। क्योंकि खीष्ट ने मुझे बपतिसमा देने को नहीं परन्तु सुसमाचार सुनाने को भेजा पर कथा के ज्ञान के अनुसार नहीं जिस्तें ऐसा न हो कि खीष्ट का क्रूश व्यर्थ ठहरे ॥

१८। क्योंकि क्रूश की कथा उन्हें जो नाश होते हैं मूर्खता है परन्तु हमें जो त्राण पाते हैं ईश्वर का सामर्थ्य है ॥ १९। क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा और बुद्धिमानों की बुद्धि को तुच्छ कर देऊंगा ॥ २०। ज्ञानवान कहां है. अध्यापक कहां. इस संसार का विवादी कहां. क्या ईश्वर ने इस जगत के ज्ञान को मूर्खता न बनाई है ॥ २१। क्योंकि जब कि ईश्वर के ज्ञान से यूं हुआ कि जगत ने ज्ञान के द्वारा से ईश्वर को न जाना तो ईश्वर की इच्छा हुई कि उपदेश की मूर्खता के द्वारा से विश्वास करनेहारों को बचावे ॥ २२। यिहूदी लोग तो चिन्ह मांगते हैं और यूनानी लोग भी ज्ञान ढूंढ़ते हैं ॥ २३। परन्तु हम लोग क्रूश पर मारे गये खीष्ट का उपदेश करते हैं जो यिहूदियों को ठोकर का कारण और यूनानियों को मूर्खता है ॥ २४। परन्तु उन्हों को हां यिहूदियों को और यूनानियों को भी जो बुलाये हुए हैं ईश्वर का सामर्थ्य और ईश्वर का ज्ञानरूपी खीष्ट है। २५। क्योंकि ईश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक ज्ञानवान है और ईश्वर की दुर्ब्बलता मनुष्यों से अधिक शक्तिमान है ॥

२६। क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहट को देखते हो कि न तुम में शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत सामर्थी न बहुत कुलीन हैं ॥ २७। परन्तु ईश्वर ने जगत के मूर्खों को चुना है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे और जगत के दुर्ब्बलों को ईश्वर ने चुना है कि शक्तिमानों को लज्जित करे ॥ २८। और जगत के अधमों और तुच्छों को हां उन्हें जो नहीं हैं ईश्वर ने चुना है कि उन्हें जो हैं लोप करे ॥ २९। जिस्तें कोई प्राणी ईश्वर के आगे घमण्ड न करे ॥ ३०। उसी से तुम खीष्ट यीशु में हुए हो जो ईश्वर की ओर से हमों को ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ है ॥ ३१। जिस्तें जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वर के विषय में बड़ाई करे ॥

२.

हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब वचन अथवा ज्ञान की उत्तमता से तुम्हें ईश्वर की साची सुनाता हुआ नहीं आया ॥ २। क्योंकि मैं ने यही ठहराया कि तुम्हों में और किसी बात को न जानूं केवल यीशु खीष्ट को हां क्रूश पर मारे गये खीष्ट को ॥ ३। और मैं दुर्ब्बलता

और भय के साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे यहां रहा ॥ ४ । और मेरा बचन और मेरा उपदेश मनुष्यों के ज्ञान की मनानेवाली बातों से नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्य के प्रमाण से था ॥ ५ । जिस्तें तुम्हारा बिश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु ईश्वर के सामर्थ्य पर होवे ॥

६ । तौभी हम सिद्ध लोगों में ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसार का अथवा इस संसार के लोप होनेहारे प्रधानों का ज्ञान नहीं ॥ ७ । परन्तु हम एक भेद में ईश्वर का गुप्त ज्ञान जिसे ईश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया सुनाते हैं ॥ ८ । जिसे इस संसार के प्रधानों में से किसी ने न जाना क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूश पर घात न करते ॥ ९ । परन्तु जैसा लिखा है जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना है और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाया है वही है जो ईश्वर ने उन के लिये जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है ॥ १० । परन्तु ईश्वर ने उसे अपने आत्मा से हमों पर प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें हां ईश्वर की गम्भीर बातें भी जांचता है ॥ ११ । क्योंकि मनुष्यों में से कौन है जो मनुष्य की बातें जानता है केवल मनुष्य का आत्मा जो उस में है . वैसे ही ईश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता है केवल ईश्वर का आत्मा ॥ १२ । परन्तु हम ने संसार का आत्मा नहीं पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वर की ओर से है इस लिये कि हम वह बातें जानें जो ईश्वर ने हमें दिई हैं ॥ १३ । जो हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाके सुनाते हैं ॥ १४ । परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता है क्योंकि वे उस के लेखे मूर्खता हैं और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उन का विचार आत्मिक रीति से किया जाता है ॥ १५ । आत्मिक जन सब कुछ विचार करता है परन्तु वह आप किसी से विचार नहीं किया जाता है ॥ १६ । क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना है जो उसे सिखावे . परन्तु हम को खीष्ट का मन है ॥

३. हे भाइयो मैं तुम से जैसा आत्मिक लोगों से तैसा नहीं बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगों से हां जैसा उन्हों से जो खीष्ट में बालक हैं ॥ २ । मैं ने तुम्हें दूध पिलाया अन्न न खिलाया क्योंकि तुम तब लों नहीं खा सकते थे बरन अब लों भी नहीं खा सकते हो क्योंकि अब लों शारीरिक हो ॥ ३ । क्योंकि जब कि तुम्हों में डाह और बैर और विरोध हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते हो ॥ ४ । क्योंकि जब एक कहता है मैं पावल का हूं और दूसरा मैं अपल्लो का हूं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो ॥

५ । तो पावल कौन है और अपल्लो कौन है . केवल सेवक लोग जिन के द्वारा जैसा प्रभु ने हर एक को दिया तैसा तुम ने बिश्वास किया ॥ ६ । मैं ने लगाया अपल्लो ने सींचा परन्तु ईश्वर ने बढ़ाया ॥ ७ । सो न तो लगानेहारा कुछ है और न सींचनेहारा परन्तु ईश्वर जो बढ़ानेहारा है ॥ ८ । लगानेहारा और सींचनेहारा दोनों एक हैं परन्तु हर एक जन अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही बनि पावेगा ॥ ९ । क्योंकि हम ईश्वर के सहकर्म्मी हैं . तुम ईश्वर की खेती ईश्वर की रचना हो ॥

१० । ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया मैं ने ज्ञानवान थवई की नाईं नेव डाली है और दूसरा मनुष्य उस पर घर बनाता है . परन्तु हर एक मनुष्य सचेत रहे कि वह किस रीति से उस पर बनाता है ॥ ११ । क्योंकि जो नेव पड़ी है अर्थात् यीशु खीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेव कोई नहीं डाल सकता है ॥ १२ । परन्तु यदि कोई इस नेव पर सोना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा फूस बनावे ॥ १३ । तो हर एक का काम प्रगट हो जायगा क्योंकि वही दिन उसे प्रगट करेगा इस लिये कि आग सहित प्रकाश होता है और हर एक का काम कैसा है सो वह आग परखेगी ॥ १४ ।

यदि किसी का काम जो उस ने बनाया है ठहरे तो वह मजूरी पावेगा ॥ १५। यदि किसी का काम जल जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप बचेगा पर ऐसा जैसा आग के बीच से होके कोई बचे ॥

१६। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वर के मन्दिर हो और ईश्वर का आत्मा तुम में बसता है ॥ १७। यदि कोई मनुष्य ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर उस को नाश करेगा क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो ॥

१८। कोई अपने को छल न देवे. यदि कोई इस संसार में अपने को तुम्हों में ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने जिस्तें ज्ञानी हो जाय ॥ १९। क्योंकि इस जगत का ज्ञान ईश्वर के यहां मूर्खता है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में पकड़नेहारा है ॥ २०। और फिर परमेश्वर ज्ञानियों की चिन्तायें जानता है कि वे व्यर्थ हैं ॥ २१। सो मनुष्यों के विषय में कोई घमण्ड न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है ॥ २२। क्या पावल क्या अपल्लो क्या कैफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण क्या वर्तमान क्या भविष्य सब कुछ तुम्हारा है ॥ २३। और तुम खीष्ट के हो और खीष्ट ईश्वर का है ॥

४. यूंहीं मनुष्य हमें खीष्ट के सेवक और ईश्वर के भेदों के भंडारी करके जाने ॥ २। फिर भंडारियों में लोग यह चाहते हैं कि मनुष्य विश्वास योग्य पाया जाय ॥ ३। परन्तु मेरे लेखे अति छोटी बात है कि मेरा विचार तुम्हों से अथवा मनुष्य के न्याय से किया जाय हां मैं अपना विचार भी नहीं करता हूं ॥ ४। क्योंकि मेरे जानते में कुछ मुझ से नहीं हुआ परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूं पर मेरा विचार करनेहारा प्रभु है ॥ ५। सो जब लों प्रभु न आवे समय के आगे किसी बात का विचार मत करो. वही तो अंधकार की गुप्त बातें ज्योति में दिखावेगा और हृदयों के परामर्शों को प्रगट करेगा और तब ईश्वर की ओर से हर एक की सराहना होगी ॥

६। इन बातों को हे भाइयो तुम्हारे कारण मैं ने अपने पर और अपल्लो पर दृष्टान्त सा लगाया है इस लिये कि हमों में तुम यह सीखो कि जो लिखा हुआ है उस से अधिक ऊंचा मन न रखो जिस्तें तुम एक दूसरे के पक्ष में और मनुष्य के विरुद्ध फूल न जावो ॥ ७। क्योंकि कौन तुझे भिन्न करता है. और तेरे पास क्या है जो तू ने दूसरे से नहीं पाया है. और यदि तू ने दूसरे से पाया है तो क्यों ऐसा घमंड करता है कि मानो दूसरे से नहीं पाया ॥ ८। तुम तो तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुम ने हमारे बिना राज्य किया है हां मैं चाहता हूं कि तुम राज्य करते जिस्तें हम भी तुम्हारे संग राज्य करें ॥ ९। क्योंकि मैं समझता हूं कि ईश्वर ने सब के पीछे हम प्रेरितों को जैसे मृत्यु के लिये ठहराये हुओं को प्रत्यक्ष दिखाया है क्योंकि हम जगत के हां दूतों और मनुष्यों के आगे लीला के ऐसे बने हैं ॥ १०। हम खीष्ट के कारण मूर्ख हैं पर तुम खीष्ट में बुद्धिमान हो. हम दुर्बल हैं पर तुम बलवन्त हो. तुम मर्य्यादिक हो पर हम निरादर हैं ॥ ११। इस घड़ी लों हम भूखे और प्यासे और नंगे भी रहते हैं और घूसे मारे जाते और डांवाडोल रहते हैं और अपने ही हाथों से कमाने में परिश्रम करते हैं ॥ १२। हम अपमान किये जाने पर आशीष देते हैं सताये जाने पर सह लेते हैं निन्दित होने पर बिन्ती करते हैं ॥ १३। हम अब लों जगत का कूड़ा हां सब वस्तुओं की खुरचन के ऐसे बने हैं ॥

१४। मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करने को नहीं लिखता हूं परन्तु अपने प्यारे बालकों की नाईं तुम्हें चिताता हूं ॥ १५। क्योंकि तुम्हें खीष्ट में यदि दस सहस्र शिक्षक हों तौभी बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि खीष्ट यीशु में सुसमाचार के द्वारा तुम मेरे ही पुत्र हो ॥ १६। सो मैं तुम से बिन्ती करता हूं तुम मेरी सी चाल चलो ॥ १७। इस हेतु से मैं ने तिमोथिय को जो प्रभु में मेरा प्यारा और विश्वासयोग्य पुत्र है तुम्हारे पास भेजा है और खीष्ट में जो मेरे मार्ग हैं उन्हें वह जैसा मैं सर्व्वत्र हर एक मंडली में उपदेश करता हूं तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा ॥ १८। कितने लोग फूल गये हैं मानो कि मैं तुम्हारे पास नहीं

आनेवाला हूं ॥ १९ । परन्तु जो प्रभु की इच्छा होय तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास आऊंगा और उन फूले हुए लोगों का वचन नहीं परन्तु सामर्थ्य बूझ लेऊंगा ॥ २० । क्योंकि ईश्वर का राज्य वचन में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है ॥ २१ । तुम क्या चाहते हो . मैं छड़ी लेके अथवा प्रेम से और नम्रता के आत्मा से तुम्हारे पास आऊं ॥

५. यह सर्व्वत्र सुनने में आता है कि तुम्हों में व्यभिचार है और ऐसा व्यभिचार कि उस का चर्चा देवपूजकों में भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिता की स्त्री से विवाह करे ॥ २ । और तुम फूल गये हो यह नहीं कि शोक किया जिस्तें यह काम करनेहारा तुम्हारे बीच में से निकाला जाता ॥ ३ । मैं तो शरीर में दूर परन्तु आत्मा में साक्षात होके जिस ने यह काम इस रीति से किया है उस का विचार जैसा साक्षात में कर चुका हूं ॥ ४ । कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम से जब तुम और मेरा आत्मा हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के सामर्थ्य सहित एकट्ठे हुए हैं ॥ ५ । तब ऐसा जन शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाय जिस्तें आत्मा प्रभु यीशु के दिन में त्राण पावे ॥

६ । तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं है . क्या तुम नहीं जानते हो कि थोड़ा सा ख़मीर सारे पिण्ड को खमीर कर डालता है ॥ ७ । सो पुराना खमीर सब का सब निकालो कि जैसे तुम अखमीरी हो तैसे नया पिण्ड होओ क्योंकि हमारा निस्तार पर्व्व का मेम्ना अर्थात खीष्ट हमारे लिये बलि दिया गया है ॥ ८ । सो हम पर्व्व को न तो पुराने खमीर से और न बुराई औ दुष्टता के खमीर से परन्तु सीधाई औ सच्चाई के अखमीरी भाव से रखें ॥

९ । मैं ने तुम्हारे पास पत्री में लिखा कि व्यभिचारियों की संगति मत करो ॥ १० । यह नहीं कि तुम इस जगत के व्यभिचारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मूर्त्तिपूजकों की सर्व्वथा संगति न करो नहीं तो तुम्हें जगत में से निकल जाना अवश्य होता ॥ ११ । सो मैं ने तुम्हारे पास यही लिखा कि यदि कोई जो भाई कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा मूर्त्तिपूजक वा निन्दक वा मद्यप वा उपद्रवी होय तो उस की संगति मत करो वरन ऐसे मनुष्य के संग खाओ भी नहीं ॥ १२ । क्योंकि मुझे बाहरवालों का विचार करने से क्या काम . क्या तुम भीतरवालों का विचार नहीं करते हो ॥ १३ । पर बाहरवालों का विचार ईश्वर करता है . फिर उस कुकर्म्मी को अपने में से निकाल देओ ॥

६. तुम में से जो किसी जन को दूसरे से विवाद होय तो क्या उसे अधर्म्मियों के आगे नालिश करने का साहस होता है और पवित्र लोगों के आगे नहीं ॥ २ । क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र लोग जगत का विचार करेंगे और यदि जगत का विचार तुम से किया जाता है तो क्या तुम सब से छोटी बातों का निर्णय करने के अयोग्य हो ॥ ३ । क्या तुम नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें पीछे रहें हम तो स्वर्गदूतों ही का विचार करेंगे ॥ ४ । सो यदि तुम्हें सांसारिक बातों का निर्णय करना होय तो जो मण्डली में कुछ नहीं गिने जाते हैं उन्हीं को बैठाओ ॥ ५ । मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं . क्या ऐसा है कि तुम्हों में एक भी ज्ञानी नहीं है जो अपने भाइयों के बीच में विचार कर सकेगा ॥ ६ । परन्तु भाई भाई पर नालिश करता है और सोई अविश्वासियों के आगे भी ॥ ७ । सो तुम्हों में निश्चय दोष हुआ है कि तुम्हों में आपस में विवाद होते हैं . क्यों नहीं वरन अन्याय सहते हो . क्यों नहीं वरन ठगाई सहते हो ॥ ८ । परन्तु तुम अन्याय करते और ठगते हो हां भाइयों से भी यह करते हो ॥ ९ । क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्यायी लोग ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे ॥

१० । धोखा मत खाओ . न व्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न परस्त्रीगामी न शुहदे न पुरुषगामी न चोर न लोभी न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे ॥ ११ । और तुम में से कितने लोग ऐसे थे परन्तु तुम ने अपने को धोया परन्तु तुम

पवित्र किये गये परन्तु तुम प्रभु यीशु के नाम से और हमारे ईश्वर के आत्मा से धर्म्मी ठहराये गये ॥

१२ । सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु मैं किसी बात के अधीन नहीं होंगा ॥ १३ । भोजन पेट के लिये और पेट भोजन के लिये है परन्तु ईश्वर इस का और उस का दोनों का नाश करेगा . पर देह व्यभिचार के लिये नहीं है परन्तु प्रभु के लिये और प्रभु देह के लिये है ॥ १४ । और ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से प्रभु को जिला उठाया और हमें भी जिला उठावेगा ॥ १५ । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे देह खीष्ट के अंग हैं . सो क्या मैं खीष्ट के अंग ले करके उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं . ऐसा न हो ॥ १६ । क्या तुम नहीं जानते हो कि जो वेश्या से मिल जाता है सो एक देह होता है क्योंकि कहा है वे दोनों एक तन होंगे ॥ १७ । परन्तु जो प्रभु से मिल जाता है सो एक आत्मा होता है ॥ १८ । व्यभिचार से बचे रहो . हर एक पाप जो मनुष्य करता है देह के बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपने ही देह के विरुद्ध पाप करता है ॥ १९ । क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र आत्मा जो तुम में है जो तुम्हें ईश्वर की ओर से मिला है तुम्हारा देह उसी पवित्र आत्मा का मन्दिर है और तुम अपने नहीं हो ॥ २० । क्योंकि तुम दाम देके मोल लिये गये हो सो अपने देह में और अपने आत्मा में जो ईश्वर के हैं ईश्वर की महिमा प्रगट करो ॥

७. जो बातें तुम ने मेरे पास लिखीं उन के विषय में मैं कहता हूं मनुष्य के लिये अच्छा है कि स्त्री को न छूवे ॥ २ । परन्तु व्यभिचार कर्म्मों के कारण हर एक मनुष्य की अपनी ही स्त्री होय और हर एक स्त्री का अपना ही स्वामी होय ॥ ३ । पुरुष अपनी स्त्री से जो स्नेह उचित है सो किया करे और वैसे ही स्त्री भी अपने स्वामी से ॥ ४ । स्त्री को अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस के स्वामी को अधिकार है और वैसे ही पुरुष को भी अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस की स्त्री को अधिकार है ॥ ५ । तुम एक दूसरे से मत अलग रहो केवल तुम्हें उपवास औ प्रार्थना के लिये अवकाश मिलने के कारण जो दोनों की सम्मति से तुम कुछ दिन अलग रहो तो रहो और फिर एकट्ठे हो जिस्तें शैतान तुम्हारे असंयम के कारण तुम्हारी परीक्षा न करे ॥ ६ । परन्तु मैं जो यह कहता हूं तो अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं करता हूं ॥ ७ । मैं तो चाहता हूं कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आप ही हूं परन्तु हर एक ने ईश्वर की ओर से अपना अपना बरदान पाया है किसी ने इस प्रकार का किसी ने उस प्रकार का ॥ ८ । पर मैं अविवाहितों से और विधवाओं से कहता हूं कि यदि वे जैसा मैं हूं तैसे रहें तो उन के लिये अच्छा है ॥ ९ । परन्तु जो वे असंयमी होवें तो विवाह करें क्योंकि विवाह करना जलते रहने से अच्छा है ॥ १० । विवाहितों को मैं नहीं परन्तु प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामी से अलग न होय ॥ ११ । पर जो वह अलग भी होय तो अविवाहिता रहे अथवा अपने स्वामी से मिल जाय . और पुरुष अपनी स्त्री को न त्यागे ॥

१२ । दूसरों से प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूं यदि किसी भाई की अविश्वासिनी स्त्री होय और वह स्त्री उस के संग रहने को प्रसन्न होय तो वह उसे न त्यागे ॥ १३ । और जिस स्त्री का अविश्वासी स्वामी होय और वह स्वामी उस के संग रहने को प्रसन्न होय वह उसे न त्यागे ॥ १४ । क्योंकि वह अविश्वासी पुरुष अपनी स्त्री के कारण पवित्र किया गया है और वह अविश्वासिनी स्त्री अपने स्वामी के कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के अशुद्ध होते पर अब तो वे पवित्र हैं ॥ १५ । परन्तु जो वह अविश्वासी जन अलग होता है तो अलग होय . ऐसी दशा में भाई अथवा बहिन बंधा हुआ नहीं है . परन्तु ईश्वर ने हमें मिलाप के लिये बुलाया है ॥ १६ । क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामी को बचावेगी कि नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी स्त्री को बचावेगा कि नहीं ॥

१७ । परन्तु जैसा ईश्वर ने हर एक को बांट

दिया है जैसा प्रभु ने हर एक को बुलाया है तैसा ही वह चले . और मैं सब मण्डलियों में यूं ही आज्ञा देता हूं ॥ १८। कोई खतना किया हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीन सा न बने . कोई खतना-हीन बुलाया गया हो तो खतना न किया जाय ॥ १९। खतना कुछ नहीं है और खतनाहीन होना कुछ नहीं है परन्तु ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सार है ॥ २०। हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया उसी में रहे ॥ २१। क्या तू दास हो करके बुलाया गया . चिन्ता मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है तो वरन उस को भोग कर ॥ २२। क्योंकि जो दास प्रभु में बुलाया गया है सो प्रभु का निर्बंध किया हुआ है और वैसे ही निर्बंध जो बुलाया गया है सो खीष्ट का दास है ॥ २३। तुम दाम देके मोल लिये गये हो . मनुष्यों के दास मत बनो ॥ २४। हे भाइयो हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया ईश्वर के आगे उसी में बना रहे ॥

२५। कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली है परन्तु जैसा प्रभु ने मुझ पर दया किई है कि मैं विश्वासयोग्य होऊं तैसा मैं परामर्श देता हूं ॥ २६। सो मैं विचार करता हूं कि वर्त्त-मान क्लेश के कारण यही अच्छा है अर्थात मनुष्य को वैसे ही रहना अच्छा है ॥ २७। क्या तू स्त्री के संग बंधा है . छूटने का यत्न मत कर . क्या तू स्त्री से छूटा है . स्त्री की इच्छा मत कर ॥ २८। तौभी जो तू बिवाह करे तो तुझे पाप नहीं हुआ और यदि कुंवारी बिवाह करे तो उसे पाप नहीं हुआ पर ऐसों को शरीर में क्लेश होगा . परन्तु मैं तुम पर भार नहीं देता हूं ॥

२९। हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि अब तो समय संक्षेप किया गया है इस लिये कि जिन्हें स्त्रियां हैं सो ऐसे होवें जैसे उन्हें स्त्रियां नहीं ॥ ३०। और रोनेहारे भी ऐसे हों जैसे नहीं रोते और आनन्द करनेहारे ऐसे हों जैसे आनन्द नहीं करते और मोल लेनेहारे ऐसे हों जैसे नहीं रखते ॥ ३१। और इस संसार के भोग करनेहारे ऐसे हों जैसे अतिभोग नहीं करते क्योंकि इस संसार का रूप बीतता जाता है ॥

३२। मैं चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो . अबिवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता करता है कि प्रभु को क्योंकर प्रसन्न करे ॥ ३३। परन्तु बिवाहित पुरुष संसार की बातों की चिन्ता करता है कि अपनी स्त्री को क्योंकर प्रसन्न करे ॥ ३४। जोरू और कुंवारी में भी भेद है . अबिवाहिता नारी प्रभु की बातों की चिन्ता करती है कि वह देह और आत्मा में भी पवित्र होवे परन्तु बिवाहिता नारी संसार की बातों की चिन्ता करती है कि अपने स्वामी को क्योंकर प्रसन्न करे ॥ ३५। पर मैं यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं अर्थात मैं जो तुम पर फंदा डालूं इस लिये नहीं परन्तु तुम्हारे शुभचाल चलने और दुचित्त न होके प्रभु में लौलीन रहने के लिये कहता हूं ॥ ३६। परन्तु यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से अशुभ काम करता हूं जो वह स्यानी हो और ऐसा होना अवश्य है तो वह जो चाहता है सो करे उसे पाप नहीं है . वे बिवाह करें ॥ ३७। पर जो मन में दृढ़ रहता है और उस को आवश्यक नहीं पर अपनी इच्छा के विषय में अधिकार है और यह बात अपने मन में ठहराई है कि अपनी कन्या को रखे वह अच्छा करता है ॥ ३८। इस लिये जो बिवाह देता है सो अच्छा करता है और जो बिवाह नहीं देता है सो भी और अच्छा करता है ॥

३९। स्त्री जब लों उस का स्वामी जीता रहे तब लों व्यवस्था से बंधी है परन्तु यदि उस का स्वामी मर जाय तो वह निर्बन्ध है कि जिस से चाहे उस से ब्याही जाय . पर केवल प्रभु में ॥ ४०। परन्तु जो वह वैसी ही रहे तो मेरे विचार में और भी धन्य है और मैं समझता हूं कि ईश्वर का आत्मा मुझ में भी है ॥

८. मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के विषय में मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि हम सभों को ज्ञान है . ज्ञान फुलाता है परन्तु प्रेम सुधारता है ॥ २। यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा जानना उचित

है तैसा अब लों कुछ नहीं जानता है॥ ३। परन्तु यदि कोई जन ईश्वर को प्यार करता है तो वही ईश्वर से जाना जाता है॥

४। सो मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के खाने के विषय में मैं कहता हूं. हम जानते हैं कि मूर्त्ति जगत में कुछ नहीं है और कि एक ईश्वर को छोड़के कोई दूसरा ईश्वर नहीं है॥ ५। क्योंकि यद्यपि क्या आकाश में क्या पृथिवी पर कितने हैं जो ईश्वर कहलाते हैं जैसा बहुत से देव और बहुत से प्रभु हैं॥ ६। तौभी हमारे लिये एक ईश्वर पिता है जिस से सब कुछ है और हम उस के लिये हैं और एक प्रभु यीशु खीष्ट है जिस के द्वारा से सब कुछ है और हम उस के द्वारा से हैं॥

७। परन्तु सभों में यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग अब लों मूर्त्ति जानके मूर्त्तिके आगे बलि किई हुई वस्तु मानके उस वस्तु को खाते हैं और उन का मन दुर्व्वल होके अशुद्ध किया जाता है॥ ८। भोजन तो हमें ईश्वर के निकट नहीं पहुंचाता है क्योंकि यदि हम खावें तो हमें कुछ बढ़ता नहीं और यदि नहीं खावें तो कुछ घटता भी नहीं॥ ९। परन्तु सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारा यह अधिकार कहीं दुर्व्वलों के लिये ठोकर का कारण हो जाय॥ १०। क्योंकि यदि कोई तुझे जिस को ज्ञान है मूर्त्ति के मन्दिर में भोजन पर बैठे देखे तो क्या इस लिये कि वह दुर्व्वल है उस का मन मूर्त्ति के आगे बलि किई हुई वस्तु खाने को दृढ़ न किया जायगा॥ ११। और क्या वह दुर्बल भाई जिस के लिये खीष्ट मूआ तेरे ज्ञान के हेतु नाश न होगा॥ १२। परन्तु इस रीति से भाइयों का अपराध करने से और उन के दुर्व्वल मन को चोट देने से तुम खीष्ट का अपराध करते हो॥ १३। इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाता हो तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा न हो कि मैं अपने भाई को ठोकर खिलाऊं॥

९. क्या मैं प्रेरित नहीं हूं. क्या मैं निर्बंध नहीं हूं. क्या मैं ने हमारे प्रभु यीशु खीष्ट को नहीं देखा है. क्या तुम प्रभु में मेरे कृत नहीं हो॥ २। जो मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं हूं तौभी तुम्हारे लिये तो हूं क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई की छाप हो॥ ३। जो मुझे जांचते हैं उन के लिये यही मेरा उत्तर है॥ ४। क्या हमें खाने और पीने का अधिकार नहीं है॥ ५। क्या जैसा दूसरे प्रेरितों और प्रभु के भाइयों को और कैफा को तैसा हम को भी अधिकार नहीं है कि एक धर्म्म-बहिन से विवाह करके उसे लिये फिरें॥ ६। अथवा क्या केवल मुझ को और बर्णबा को अधिकार नहीं है कि कमाई करना छोड़ें॥ ७। कौन कभी अपने ही खर्च से योद्धापन किया करता है. कौन दाख की बारी लगाता है और उस का कुछ फल नहीं खाता है. अथवा कौन भेड़ों के झुण्ड की रखवाली करता है और झुण्ड का कुछ दूध नहीं खाता है॥ ८। क्या मैं यह बातें मनुष्य की रीति पर बोलता हूं. क्या व्यवस्था भी यह बातें नहीं कहती है॥ ९। क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है कि दावनेहारे बैल का मुंह मत बांध. क्या ईश्वर बैलों की चिन्ता करता है॥ १०। अथवा क्या वह निज करके हमारे कारण कहता है. हमारे ही कारण लिखा गया कि उचित है कि हल जोतनेहारा आशा से हल जोते और दावनेहारा भागी होने की आशा से दावनी करे॥ ११। यदि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तु बोई हैं तो हम जो तुम्हारी शारीरिक वस्तु लवें क्या यह बड़ी बात है॥ १२। यदि दूसरे जन तुम पर इस अधिकार के भागी हैं तो क्या हम अधिक करके नहीं हैं. परन्तु हम यह अधिकार काम में न लाये पर सब कुछ सहते हैं जिस्तें खीष्ट के सुसमाचार को कुछ रोक न करें॥ १३। क्या तुम नहीं जानते हो कि जो लोग याजकीय कर्म्म करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं और जो लोग वेदी की सेवा करते हैं सो वेदी के अंशधारी होते हैं॥ १४। यूं ही प्रभु ने भी जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उन के लिये ठहराया है कि सुसमाचार से उन की जीविका होय॥

१५। परन्तु मैं इन बातों में से कोई बात काम में नहीं लाया और मैं ने तो यह बातें इस लिये नहीं लिखीं कि मेरे विषय में यूं ही किया जाय क्योंकि

मरना मेरे लिये इस से भला है कि कोई मेरा बड़ाई करना व्यर्थ ठहरावे ॥ १६। क्योंकि जो मैं सुसमाचार प्रचार करूं तो इस से कुछ मेरी बड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे अवश्य पड़ता है और जो मै सुसमाचार प्रचार न करूं तो मुझे सन्ताप है॥ १७। क्योंकि जो मैं अपनी इच्छा से यह करता हू तो मजूरी मुझे मिलती है पर जो अनिच्छा से तो भंडारीपन मुझे सोंपा गया है ॥ १८। सो मेरी कौन सी मजूरी है. यह कि सुसमाचार प्रचार करने में मैं खीष्ट का सुसमाचार सेंत का ठहराऊं यहा लों कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है उस का मैं अति भोग न करू ॥ १९। क्योंकि सभों से निर्बंध होके मै ने अपने को सभों का दास बनाया कि मै अधिक लोगों को प्राप्त करू ॥ २०। और यिहूदियों के लिये मैं यिहूदी सा बना कि यिहूदियों को प्राप्त करू. जो लोग व्यवस्था के अधान हैं उन के लिये मै व्यवस्था के अधीन के ऐसा बना कि उन्हे जो व्यवस्था के अधीन है प्राप्त करू ॥ २१। व्यवस्थाहीनों के लिये मैं जो ईश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु खीष्ट की व्यवस्था के अधीन हूं व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को प्राप्त करूं॥ २२। मैं दुर्ब्बलों के लिये दुर्ब्बल सा बना कि दुर्ब्बलों को प्राप्त करू. मै सभों के लिये सब कुछ बना हूं कि मै अवश्य कई एक को बचाऊं॥ २३। और यही मै सुसमाचार के कारण करता हूं कि मै उस का भागी हो जाऊ॥

२४। क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़े मे दौड़नेहारे सब हो दौड़ते हैं परन्तु जीतने का फल एक ही पाता है. तुम वैसे ही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो॥ २५। और हर एक लड़नेहारा सब बातो मे संयमी रहता है. सो वे तो नाशमान मुकुट परन्तु हम लोग अविनाशी मुकुट लेने को ऐसे रहते है॥ २६। मै भी तो ऐसा दौड़ता हू जैसा बिन दुबधा से दौड़ता मै ऐसा नही मुष्टि लड़ता हू जैसा बयार को पीटता हुआ लड़ता॥ २७। परन्तु मै अपने देह को ताड़ना करके वश में लाता हू ऐसा न हो कि मै औरों को उपदेश देके आप ही किसी रीति से निकृष्ट बनूं॥

१०. हे भाइयो मै नहीं चाहता हूं कि तुम इस से अनजान रहो कि हमारे पितर लोग सब मेघ के नीचे थे और सब समुद्र के बीच में से गये॥ २। और सभों को मेघ में और समुद्र में मूसा के संबंध का बपतिसमा दिया गया॥ ३। और सभों ने एक ही आत्मिक भोजन खाया॥ ४। और सभों ने एक ही आत्मिक पानी पिया क्योंकि वे उस आत्मिक पर्ब्बत से जो उन के पीछे पीछे चलता था पीते थे और वह पर्ब्बत खीष्ट था॥ ५। परन्तु ईश्वर उन में के अधिक लोगों से प्रसन्न नहीं था क्योंकि वे जंगल में मारे पड़े॥ ६। यह बातें हमारे लिये दृष्टान्त हुई इस लिये कि जैसे उन्हों ने लालच किया तैसे हम लोग बुरी बस्तुओ के लालची न होवें॥ ७। और न तुम मूर्त्तिपूजक होओ जैसे उन्हों मे से कितने थे जैसा लिखा है लोग खाने और पीने को बैठे और खेलने को उठे॥ ८। और न हम व्यभिचार करें जैसा उन्हों में से कितनो ने व्यभिचार किया और एक दिन में तेईस सहस्र गिरे॥ ९। और न हम खीष्ट की परीक्षा करें जैसा उन्हों में से कितनों ने परीक्षा किई और सांपों से नाश किये गये॥ १०। और न कुड़कुड़ाओ जैसा उन्हों में से कितने कुड़कुडाये और नाशक से नाश किये गये॥ ११। पर यह सब बातें जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त थीं और वे हमारी चितावनी के कारण लिखी गईं जिन के आगे जगत के अन्त समय पहुंचे हैं॥ १२। इस लिये जो समझता है कि मैं खड़ा हूं सो सचेत रहे कि गिर न पड़े॥ १३। तुम पर कोई परीक्षा नहीं पड़ी है केवल ऐसी जैसी मनुष्य को हुआ करती है और ईश्वर विश्वासयोग्य है जो तुम्हें तुम्हारे सामर्थ्य के बाहर परीक्षित होने न देगा परन्तु परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको॥ १४। इस कारण हे मेरे प्यारो मूर्त्तिपूजा से बचे रहो॥

१५। मैं जैसा बुद्धिमानों से बोलता हू. जो मैं कहता हूं उसे तुम बिचार करो॥ १६। वह धन्यवाद का कटोरा जिस के ऊपर हम धन्यवाद करते

हैं क्या खीष्ट के लोहू की संगति नहीं है . वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या खीष्ट के देह की संगति नहीं है॥ १७। एक रोटी है इस लिये हम जो बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस एक रोटी के भागी होते हैं॥ १८। शारीरिक इस्रायेल को देखो . क्या बलिदानों के खानेहारे बेदी के साझी नहीं हैं॥ १९। तो मैं क्या कहता हूं . क्या यह कि मूर्त्ति कुछ है अथवा कि मूर्त्ति के आगे का बलिदान कुछ है॥ २०। नहीं पर यह कि देवपूजक लोग जो कुछ बलिदान करते हैं सो ईश्वर के आगे नहीं पर भूतों के आगे बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता हूं कि तुम भूतों के साझी हो जाओ॥ २१। तुम प्रभु के कटोरे और भूतों के कटोरे दोनों से नहीं पी सकते हो . तुम प्रभु की मेज और भूतों की मेज दोनों के भागी नहीं हो सकते हो॥ २२। अथवा क्या हम प्रभु को छेड़ते हैं . क्या हम उस से अधिक शक्तिमान हैं॥

२३। सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ नहीं सुधारता है॥ २४। कोई अपना लाभ न ढूंढ़े परन्तु हर एक जन दूसरे का लाभ ढूंढ़े॥ २५। जो कुछ मांस की हाट में बिकता है सो खाओ और विवेक के कारण कुछ मत पूछो॥ २६। क्योंकि पृथिवी और उस की सारी संपत्ति परमेश्वर की है॥ २७। और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता देय और तुम्हें जाने की इच्छा होय तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ और विवेक के कारण कुछ मत पूछो॥ २८। परन्तु यदि कोई तुम से कहे यह तो मूर्त्ति के आगे बलि किया हुआ है तो उसी बतानेहारे के कारण और विवेक के कारण मत खाओ (क्योंकि पृथिवी और उस की सारी संपत्ति परमेश्वर की है)॥ २९। विवेक जो मैं कहता हूं सो अपना नहीं परन्तु उस दूसरे का क्योंकि मेरी निर्बंधता क्यों दूसरे के विवेक से विचार किई जाती है॥ ३०। जो मैं धन्यवाद करके भागी होता हूं तो जिस के ऊपर मैं धन्य मानता हूं उस के लिये मेरी निन्दा क्यों होती है॥ ३१। सो तुम जो खाओ अथवा पीओ अथवा कोई काम करो तो सब कुछ ईश्वर की महिमा के लिये करो॥ ३२। न यिहूदियों न यूनानियों को न ईश्वर की मण्डली को ठोकर खिलाओ॥ ३३। जैसा मैं भी सब बातों में सभों को प्रसन्न करता हूं और अपना लाभ नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं कि वे त्राण पावें॥

११. तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं खीष्ट की सी चाल चलता हूं॥

२। हे भाइयो मैं तुम्हें सराहता हूं कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो और व्यवहारों को जैसा मैं ने तुम्हें ठहरा दिया तैसा ही धारण करते हो॥ ३। पर मैं चाहता हूं कि तुम जान लेओ कि खीष्ट हर एक पुरुष का सिर है और पुरुष स्त्री का सिर है और खीष्ट का सिर ईश्वर है॥ ४। हर एक पुरुष जो सिर पर कुछ ओढ़े हुए प्रार्थना करता अथवा भविष्यद्वाक्य कहता है अपने सिर का अपमान करता है॥ ५। परन्तु हर एक स्त्री जो उघाड़े सिर प्रार्थना करती अथवा भविष्यद्वाक्य कहती है अपने सिर का अपमान करती है क्योंकि वह मूंड़ी हुई से कुछ भिन्न नहीं है॥ ६। यदि स्त्री सिर न ढांके तो बाल भी कटवावे परन्तु यदि बाल कटवाना अथवा मुंडवाना स्त्री को लज्जा है तो सिर ढांके॥ ७। क्योंकि पुरुष को तो सिर ढांकना उचित नहीं है क्योंकि वह ईश्वर का रूप और महिमा है परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है॥ ८। क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ परन्तु स्त्री पुरुष से हुई॥ ९। और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सृजा गया परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सृजी गई॥ १०। इसी लिये दूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे॥ ११। तौभी प्रभु में न तो पुरुष बिना स्त्री से और न स्त्री बिना पुरुष से है॥ १२। क्योंकि जैसा स्त्री पुरुष से है तैसा पुरुष स्त्री के द्वारा से है परन्तु सब कुछ ईश्वर से है॥ १३। तुम अपने अपने मन में विचार करो . क्या उघाड़े सिर ईश्वर से प्रार्थना करना स्त्री को सोहता है॥

१४। अथवा क्या प्रकृति आप ही तुम्हें नहीं सिखाती है कि यदि पुरुष लम्बा बाल रखे तो उस को अनादर है॥ १५। परन्तु यदि स्त्री लम्बा बाल रखे तो उस को आदर है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिये दिया गया है॥ १६। परन्तु यदि कोई जन विवादी देख पड़े तो न हमारी न ईश्वर की मण्डलियों की ऐसी रीति है॥

१७। परन्तु यह आज्ञा देने में मैं तुम्हें नहीं सराहता हूं कि तुम्हारे एकट्ठे होने से भलाई नहीं परन्तु हानि होती है॥ १८। क्योंकि पहिले मैं सुनता हूं कि जब तुम मण्डली में एकट्ठे होते हो तब तुम्हों में अनेक विभेद होते हैं और मैं कुछ कुछ प्रतीति करता हूं॥ १९। क्योंकि कुपन्थ भी तुम्हों में अवश्य होंगे इस लिये कि जो लोग खरे हैं सो तुम्हों में प्रगट हो जावें॥ २०। सो तुम जो एक स्थान में एकट्ठे होते हो तो प्रभु भोज खाने के लिये नहीं है॥ २१। क्योंकि खाने में हर एक पहिले अपना अपना भोज खा लेता है और एक तो भूखा है दूसरा मतवाला है॥ २२। क्या खाने और पीने के लिये तुम्हें घर नहीं हैं अथवा क्या तुम ईश्वर की मण्डली को तुच्छ जानते हो और जिन्हें नहीं हैं उन्हें लज्जित करते हो. मैं तुम से क्या कहूं. क्या इस बात में तुम्हें सराहूं. मैं नहीं सराहता हूं॥

२३। क्योंकि मैं ने प्रभु से यह पाया जो मैं ने तुम्हें भी सौंप दिया कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया उसी रात को रोटी लिई॥ २४। और धन्य मानके उसे तोड़ा और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है. मेरे स्मरण के लिये यह किया करो॥ २५। इसी रीति से उस ने वियारी के पीछे कटोरा भी लेके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर नया नियम है. जब जब तुम इसे पीवो तब मेरे स्मरण के लिये यह किया करो॥

२६। क्योंकि जब जब तुम यह रोटी खावो और यह कटोरा पीवो तब प्रभु की मृत्यु को जब लों वह न आवे प्रचार करते हो॥ २७। इस लिये जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खावे अथवा प्रभु का कटोरा पीवे सो प्रभु के देह और लोहू के दण्ड के योग्य होगा॥ २८। परन्तु मनुष्य अपने को परखे और इस रीति से यह रोटी खावे और इस कटोरे से पीवे॥ २९। क्योंकि जो अनुचित रीति से खाता और पीता है सो जब कि प्रभु के देह का विशेष नहीं मानता है तो खाने औ पीने से अपने पर दण्ड लाता है॥ ३०। इस हेतु से तुम्हों में बहुत जन दुर्ब्बल औ रोगी हैं और बहुत से सोते हैं॥ ३१। क्योंकि जो हम अपना अपना विचार करते तो हमारा विचार नहीं किया जाता॥ ३२। परन्तु हमारा विचार जो किया जाता है तो प्रभु से हम ताड़ना किये जाते हैं इस लिये कि संसार के संग दण्ड के योग्य न ठहराये जावें॥ ३३। इस लिये हे मेरे भाइयो जब तुम खाने को एकट्ठे होओ तब एक दूसरे के लिये ठहरो॥ ३४। परन्तु यदि कोई भूखा होय तो घर में खाय जिस्तें एकट्ठे होने से तुम्हारा दण्ड न होवे. और जो कुछ रह गया है जब कभी मैं तुम्हारे पास आऊं तब उस के विषय में आज्ञा देऊंगा॥

१२. हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम आत्मिक विषयों में अनजान रहो॥ २। तुम जानते हो कि तुम देवपूजक थे और जैसे जैसे सिखाये जाते थे तैसे तैसे गूंगी मूरतों की ओर भटक जाते थे॥ ३। इस कारण मैं तुम्हें बताता हूं कि कोई जो ईश्वर के आत्मा से बोलता है यीशु को स्रापित नहीं कहता है और कोई यीशु को प्रभु नहीं कह सकता है केवल पवित्र आत्मा से॥

४। वरदान तो बंटे हुए हैं परन्तु आत्मा एक ही है॥ ५। और सेवकाइयां बंटी हुई हैं परन्तु प्रभु एक ही है॥ ६। और कार्य्य बंटे हुए हैं परन्तु ईश्वर एक ही है जो सभों से ये सब कार्य्य करवाता है॥

७। परन्तु एक एक मनुष्य को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है जिस्तें लाभ होय॥ ८। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा से बुद्धि की बात दिई जाती है और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की

बात ॥ ९ । और दूसरे को उसी आत्मा से विश्वास और दूसरे को उसी आत्मा से चंगा करने के वरदान ॥ १० । फिर दूसरे को आश्चर्य्य कर्म्म करने की शक्ति और दूसरे को भविष्यद्वाक्य बोलने की और दूसरे को आत्माओं को पहचानने की और दूसरे को अनेक प्रकार की भाषा बोलने की और दूसरे को भाषाओं का अर्थ लगाने की शक्ति दिई जाती है ॥ ११ । परन्तु ये सब कार्य्य वही एक आत्मा करवाता है और अपनी इच्छा के अनुसार हर एक मनुष्य को पृथक पृथक करके बांट देता है ॥

१२ । क्योंकि जैसे देह तो एक है और उस के अंग बहुत से हैं परन्तु उस एक देह के सब अंग यद्यपि बहुत से हैं तौभी एक ही देह हैं तैसे ही ख्रीष्ट भी है ॥ १३ । क्योंकि हम लोग क्या यिहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या निर्बन्ध सभों ने एक देह होने को एक आत्मा से बपतिसमा लिया और सब एक आत्मा पिलाये गये ॥ १४ । क्योंकि देह एक ही अंग नहीं है परन्तु बहुत से अंग ॥ १५ । यदि पांव कहे मैं हाथ नहीं हूं इस लिये मैं देह का अंश नहीं हूं तो क्या वह इस कारण से देह का अंश नहीं है ॥ १६ । और यदि कान कहे मैं आंख नहीं हूं इस लिये मैं देह का अंश नहीं हूं तो क्या वह इस कारण से देह का अंश नहीं है ॥ १७ । जो सारा देह आंख ही होता तो सुनना कहां . जो सारा देह कान ही होता तो सूंघना कहां ॥ १८ । परन्तु अब तो ईश्वर ने अंगों को और उन में से एक एक को देह में अपनी इच्छा के अनुसार रखा है ॥ १९ । परन्तु यदि सब अंग एक ही अंग होते तो देह कहां होता ॥ २० । पर अब बहुत से अंग हैं परन्तु एक ही देह है ॥ २१ । आंख हाथ से नहीं कह सकती है कि मुझे तेरा कुछ प्रयोजन नहीं और फिर सिर पांवों से नहीं कह सकता है कि मुझे तुम्हारा कुछ प्रयोजन नहीं ॥ २२ । परन्तु देह के जो अंग अति दुर्ब्बल देख पड़ते हैं सो बहुत अधिक करके आवश्यक हैं ॥ २३ । और देह के जिन अंगों को हम अति निरादर समझते हैं उन पर हम बहुत अधिक आदर रखते हैं और हमारे शोभाहीन अंग बहुत अधिक शोभायमान किये जाते हैं ॥ २४ । पर हमारे शोभायमान अंगों को इस का कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु ईश्वर ने देह को मिला लिया है और जिस अंग को घटी थी उस को बहुत अधिक आदर दिया है ॥ २५ । कि देह में विभेद न होय परन्तु अंग एक दूसरे के लिये एक समान चिन्ता करें ॥ २६ । और यदि एक अंग दुःख पाता है तो सब अंग उस के साथ दुःख पाते हैं अथवा यदि एक अंग की बड़ाई किई जाती है तो सब अंग उस के साथ आनन्द करते हैं ॥ २७ । सो तुम लोग ख्रीष्ट के देह हो और पृथक पृथक करके उस के अंग हो ॥

२८ । और ईश्वर ने कितनों को मंडली में रखा है पहिले प्रेरितों को दूसरे भविष्यद्वक्ताओं को तीसरे उपदेशकों को तब आश्चर्य्य कर्म्मों को तब चंगा करने के वरदानों को और उपकारों को और प्रधानताओं को और अनेक प्रकार की भाषाओं को ॥ २९ । क्या सब प्रेरित हैं . क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं . क्या सब उपदेशक हैं . क्या सब आश्चर्य्य कर्म्म करनेहारे हैं ॥ ३० । क्या सभों को चंगा करने के वरदान मिले हैं . क्या सब अनेक भाषा बोलते हैं . क्या सब अर्थ लगाते हैं ॥ ३१ । परन्तु अच्छे अच्छे वरदानों की अभिलाषा करो और मैं तुम्हें और भी एक श्रेष्ठ मार्ग बताता हूं ॥

१३.

जो मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं पर मुझ में प्रेम न हो तो मैं ठनठनाता पीतल अथवा झंझनाती झांझ हूं ॥ २ । और जो मैं भविष्यद्वाणी बोल सकूं और सब भेदों को और सब ज्ञान को समझूं और जो मुझे सम्पूर्ण विश्वास होय यहां लों कि मैं पहाड़ों को टाल देऊं पर मुझ में प्रेम न हो तो मैं कुछ नहीं हूं ॥ ३ । और जो मैं अपनी सारी संपत्ति कंगालों को खिलाऊं और जो मैं जलाये जाने को अपना देह सौंप देऊं पर मुझ में प्रेम न हो तो मुझे कुछ लाभ नहीं है ॥

४ । प्रेम धीरजवन्त और कृपाल है . प्रेम डाह

नहीं करता है. प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है और फूल नहीं जाता है ॥ ५। वह अनरीति नहीं चलता है वह आपस्वार्थी नहीं है वह खिजलाया नहीं जाता है वह बुराई की चिन्ता नहीं करता है ॥ ६। वह अधर्म्म से आनन्दित नहीं होता है परन्तु सच्चाई पर आनन्द करता है ॥ ७। वह सब बातें सहता है सब बातों का विश्वास करता है सब बातों की आशा रखता है सब बातों मे स्थिर रहता है ॥

८। प्रेम कभी नहीं टल जाता है परन्तु जो भविष्यद्वाणियां हों तो वे लोप होंगीं अथवा बोलियां हों तो उन का अन्त लगेगा अथवा ज्ञान हो तो वह लोप होगा ॥ ९। क्योंकि हम अंश मात्र जानते हैं और अंश मात्र भविष्यद्वाणी कहते हैं ॥ १०। परन्तु जब वह जो सपूर्ण है आवेगा तब यह जो अंश मात्र है लोप हो जायगा ॥ ११। जब मैं बालक था तब मैं बालक की नाईं बोलता था मैं बालक का सा मन रखता था मैं बालक का सा विचार करता था परन्तु मैं जो अब मनुष्य हुआ हूं तो बालक की बातें छोड दिई हैं ॥ १२। हम तो अभी दर्पण में गूढ़ अर्थ सा देखते हैं परन्तु तब साक्षात देखेंगे . मैं अब अंश मात्र जानता हूं परन्तु तब जैसा पहचाना गया हूं तैसा ही पहचानूंगा ॥

१३। सो अब विश्वास आशा प्रेम ये तीनों रहते हैं परन्तु इन में से प्रेम श्रेष्ठ है ॥

१४. प्रेम की चेष्टा करो तौभी आत्मिक बरदानों की अभिलाषा करो परन्तु अधिक करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहो ॥ २। क्योंकि जो अन्य भाषा बोलता है सो मनुष्यों से नहीं परन्तु ईश्वर से बोलता है क्योंकि कोई नहीं बूझता है पर आत्मा में वह गूढ़ बातें बोलता है ॥ ३। परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो मनुष्यों से सुधारने की और उपदेश और शांति की बातें करता है ॥ ४। जो अन्य भाषा बोलता है सो अपने ही को सुधारता है परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो मंडली को सुधारता है ॥ ५। मैं चाहता हूं कि तुम सब अनेक अनेक भाषा बोलते परन्तु अधिक करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहते क्योंकि अनेक भाषा बोलनेहारा यदि अर्थ न लगावे कि मंडली सुधारी जाय तो भविष्यद्वाक्य कहनेहारा उस से बड़ा है ॥

६। अब हे भाइयो जो मैं तुम्हारे पास अनेक भाषा बोलता हुआ आऊं तौभी जो मैं प्रकाश वा ज्ञान अथवा भविष्यद्वाणी वा उपदेश करके तुम से न बोलूं तो मुझ से तुम्हारा क्या लाभ होगा ॥ ७। निर्जीव वस्तु भी जो शब्द देती हैं चाहे बंशी चाहे बीणा यदि स्वरों में भेद न कर दें तो जो बंशी अथवा बीणा पर बजाया जाता है सो क्योंकर पहचाना जायगा ॥ ८। क्योंकि तुरही भी यदि अनिश्चय शब्द देवे तो कौन अपने को लड़ाई के लिये तैयार करेगा ॥ ९। वैसे ही तुम भी यदि जीभ से स्पष्ट बात न करो तो जो बोला जाता है सो क्योंकर बूझा जायगा क्योंकि तुम बयार से बात करनेहारे ठहरोगे ॥ १०। जगत में क्या जाने कितने प्रकार की बोलियां होंगीं और उन में से किसी प्रकार की बोली निरर्थक नहीं है ॥ ११। इस लिये जो मैं बोली का अर्थ न जानूं तो मैं बोलनेहारे के लेखे परदेशी होऊंगा और बोलनेहारा मेरे लेखे परदेशी होगा ॥ १२। सो तुम भी जब कि आत्मिक विषयों के अभिलाषी हो तो मंडली के सुधारने के निमित्त बढ़ जाने का यत्न करो ॥ १३। इस कारण जो अन्य भाषा बोले सो प्रार्थना करे कि अर्थ भी लगा सके ॥

१४। क्योंकि जो मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं तो मेरा आत्मा प्रार्थना करता है परन्तु मेरी बुद्धि निष्फल है ॥ १५। तो क्या है . मैं आत्मा से प्रार्थना करूंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा मैं आत्मा से गान करूंगा और बुद्धि से भी गान करूंगा ॥ १६। नहीं तो यदि तू आत्मा से धन्यवाद करे तो जो अनसिख की सी दशा मे है सो तेरे धन्य मानने पर क्योंकर आमीन कहेगा वह तो नहीं जानता तू क्या कहता है ॥ १७। क्योंकि तू तो भली रीति से धन्य मानता है परन्तु वह दूसरा सुधारा नहीं जाता है ॥ १८। मैं अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं कि मैं तुम सभों से अधिक करके अन्य अन्य भाषा बोलता हूं ॥ १९। परन्तु मंडली में दस सहस बातें अन्य भाषा में कहने

से मैं पांच बातें अपनी बुद्धि से कहना अधिक चाहता हूं जिस्तें औरों को भी सिखाऊं ॥ २० । हे भाइयो ज्ञान में बालक मत होओ तौभी बुराई में बालक होओ परन्तु ज्ञान में सयाने होओ ॥

२१ । व्यवस्था में लिखा है कि परमेश्वर कहता है मैं अन्य भाषा बोलनेहारों के द्वारा और पराये मुख के द्वारा इन लोगों से बात करूंगा और वे इस रीति से भी मेरी न सुनेंगे ॥ २२ । सो अन्य अन्य बोलियां विश्वासियों के लिये नहीं पर अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं परन्तु भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं पर विश्वासियों के लिये चिन्ह हैं ॥ २३ । सो यदि सारी मंडली एक संग एकट्ठी होय और सब अन्य अन्य भाषा बोलें और अनसिख अथवा अविश्वासी लोग भीतर आवें तो क्या वे न कहेंगे कि ये लोग बौरहे हैं ॥ २४ । परन्तु यदि सब भविष्यद्वाक्य कहें और कोई अविश्वासी अथवा अनसिख मनुष्य भीतर आवे तो वह सभों की ओर से दोषी ठहरता है और सभों से जांचा जाता है ॥ २५ । और इस रीति से उस के मन की गुप्त बातें प्रगट हो जाती हैं और यूं वह मुंह के बल गिरके ईश्वर को प्रणाम करेगा और बतावेगा कि ईश्वर निश्चय इन लोगों के बीच में है ॥

२६ । तो हे भाइयो क्या है . जब तुम एकट्ठे होते हो तब तुम में से हर एक के पास गीत है उपदेश है अन्य भाषा है प्रकाश है भाषा का अर्थ है . सब कुछ सुधारने के लिये किया जाय ॥ २७ । यदि कोई अन्य भाषा बोले तो दो दो अथवा बहुत होय तो तीन तीन और पारी पारी बोलें और एक मनुष्य अर्थ लगावे ॥ २८ । परन्तु यदि अर्थ लगानेहारा न हो तो मंडली में चुप रहे और अपने से और ईश्वर से बोले ॥ २९ । भविष्यद्वक्ता दो अथवा तीन बोलें और दूसरे विचार करें ॥ ३० । और यदि दूसरे पर जो बैठा है कुछ प्रगट किया जाय तो पहिला चुप रहे ॥ ३१ । क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाक्य कह सकते हो इस लिये कि सब सीखें और सब शांति पावें ॥ ३२ । और भविष्यद्वक्ताओं के आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में हैं ॥ ३३ । क्योंकि ईश्वर हुल्लड़ का नहीं परन्तु शांति का कर्त्ता है जैसे पवित्र लोगों की सब मंडलियों में है ॥

३४ । तुम्हारी स्त्रियां मंडलियों में चुप रहें क्योंकि उन्हें बात करने की नहीं परन्तु वश में रहने की आज्ञा दिई गई है जैसे व्यवस्था भी कहती है ॥ ३५ । और यदि वे कुछ सीखने चाहती हैं तो घर में अपने ही स्वामियों से पूछें क्योंकि मंडली में बात करना स्त्रियों को लज्जा है ॥

३६ । क्या ईश्वर का बचन तुम ही में से निकला अथवा केवल तुम्हारे ही पास पहुंचा ॥ ३७ । यदि कोई मनुष्य भविष्यद्वक्ता अथवा आत्मिक जन देख पड़े तो मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं वह उन्हें माने कि वे प्रभु की आज्ञाएं हैं ॥ ३८ । परन्तु यदि कोई नहीं समझता है तो न समझे ॥ ३९ । सो हे भाइयो भविष्यद्वाक्य कहने की अभिलाषा करो और अनेक भाषा बोलने को मत बर्जो ॥ ४० । सब कुछ शुभ रीति से और ठिकाने सिर किया जाय ॥

१५. हे भाइयो मैं वह सुसमाचार तुम्हें बताता हूं जो मैं ने तुम्हें सुनाया जिसे तुम ने ग्रहण भी किया जिस में तुम खड़े भी रहते हो ॥ २ । जिस के द्वारा जो तुम उस बचन को जिस करके मैं ने तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते हो तो तुम्हारा त्राण भी होता है . नहीं तो तुम ने वृथा विश्वास किया है ॥ ३ । क्योंकि सब से बड़ी बातों में मैं ने यही तुम्हें सौंप दिई जो मैं ने ग्रहण भी किई थी कि खीष्ट धर्म्मपुस्तक के अनुसार हमारे पापों के लिये मरा ॥ ४ । और कि वह गाड़ा गया और कि धर्म्मपुस्तक के अनुसार वह तीसरे दिन जी उठा ॥ ५ । और कि वह कैफा को तब बारहों शिष्यों को दिखाई दिया ॥ ६ । तब वह एक ही बेर में पांच सौ से अधिक भाइयों को दिखाई दिया जिन में से अधिक भाई अब लों बने रहे परन्तु कितने सो भी गये हैं ॥ ७ । तब वह याकूब को फिर सब प्रेरितों को दिखाई दिया ॥ ८ । और सब के पीछे वह मुझ को भी जैसे असमय के जन्मे हुए को दिखाई दिया ॥ ९ । क्योंकि मैं प्रेरितों में सब

से छोटा हूं और प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैं ने ईश्वर की मंडली को सताया॥ १० । परन्तु मैं जो कुछ हूं सो ईश्वर के अनुग्रह से हूं और उस का अनुग्रह जो मुझ पर हुआ सो व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैं ने उन सभों से अधिक करके परिश्रम किया तौभी मैं ने नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह ने जो मेरे संग था परिश्रम किया ॥ ११ । सो क्या मैं क्या वे हम यूं ही उपदेश करते हैं और तुम ने यूं ही बिश्वास किया ॥

१२ । परन्तु जो खीष्ट की यह कथा सुनाई जाती है कि वह मृतकों में से जी उठा है तो तुम में से कई एक जन क्योंकर कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है ॥ १३ । यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है ॥ १४ । और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा बिश्वास भी व्यर्थ है ॥ १५ । और हम ईश्वर के विषय में झूठे साक्षी भी ठहरते हैं क्योंकि हम ने ईश्वर पर साक्षी दिई कि उस ने खीष्ट को जिला उठाया पर यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो उस ने उस को नहीं उठाया ॥ १६ । क्योंकि यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है ॥ १७ । और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो तुम्हारा बिश्वास व्यर्थ है . तुम अब लों अपने पापों में पड़े हो ॥ १८ । तब वे भी जो खीष्ट में सो गये हैं नष्ट हुए हैं ॥ १९ । जो खीष्ट पर केवल इसी जीवन लों हमारी आशा है तो सब मनुष्यों से हम लोग अधिक अभागे हैं ॥

२० । पर अब तो खीष्ट मृतकों में से जी उठा है और उन्हीं का जो सो गये हैं पहिला फल हुआ है ॥ २१ । क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारा से मृत्यु हुई मनुष्य के द्वारा से मृतकों का पुनरुत्थान भी होगा ॥ २२ । क्योंकि जैसा आदम में सब लोग मरते हैं तैसा ही खीष्ट में सब लोग जिलाये जायेंगे ॥ २३ । परन्तु हर एक अपने अपने पद के अनुसार जिलाया जायगा खीष्ट पहिला फल तब खीष्ट के लोग उस के आने पर ॥ २४ । पीछे जब वह राज्य को ईश्वर अर्थात् पिता के हाथ सोंपेगा जब वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार औ पराक्रम लोप करेगा तब अन्त होगा ॥ २५ । क्योंकि जब लों वह सब शत्रुओं को अपने चरणों तले न कर ले तब लों राज्य करना उस को अवश्य है ॥ २६ । पिछला शत्रु जो लोप किया जायगा मृत्यु है ॥ २७ । क्योंकि (लिखा है) उस ने सब कुछ उस के चरणों तले करके उस के अधीन किया . परन्तु जब वह कहेगा कि सब कुछ अधीन किया गया है तब प्रगट है कि जिस ने सब कुछ उस के अधीन किया वह आप नहीं अधीन हुआ ॥ २८ । और जब सब कुछ उस के अधीन किया जायगा तब पुत्र आप भी उस के अधीन होगा जिस ने सब कुछ उस के अधीन किया जिस्तें ईश्वर सभों में सब कुछ होय ॥ २९ । नहीं तो जो मृतकों के लिये बपतिसमा लेते हैं सो क्या करेंगे . यदि मृतक निश्चय नहीं जी उठते हैं तो वे क्यों मृतकों के लिये बपतिसमा लेते हैं ॥ ३० । हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में रहते हैं ॥ ३१ । तुम्हारे विषय में खीष्ट यीशु हमारे प्रभु में जो बड़ाई मैं करता हूं उस बड़ाई की सोंह मैं प्रतिदिन मरता हूं ॥ ३२ । जो मनुष्य की रीति पर मैं इफिस में बनपशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ . यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो आओ हम खावें औ पीवें कि विहान मर जायेंगे ॥ ३३ । धोखा मत खाओ . बुरी संगति अच्छी चाल को बिगाड़ती है ॥ ३४ । धर्म्म के लिये जाग उठो और पाप मत करो क्योंकि कितने हैं जो ईश्वर को नहीं जानते हैं . मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं ॥

३५ । परन्तु कोई कहेगा मृतक लोग किस रीति से जी उठते हैं और कैसा देह धरके आते हैं ॥ ३६ । हे मूर्ख जो कुछ तू बोता है सो यदि मर न जाय तो जिलाया नहीं जाता है ॥ ३७ । और तू जो कुछ बोता है वह मूर्त्ति जो हो जायगी नहीं बोता है परन्तु निरा एक दाना चाहे गेहूं का चाहे और किसी अनाज का ॥ ३८ । परन्तु ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को मूर्त्ति कर देता है और हर एक बीज को अपनी अपनी मूर्त्ति ॥ ३९ । हर एक शरीर एक ही प्रकार का शरीर नहीं है परन्तु मनुष्यों

का शरीर और है पशुओं का शरीर और है मछलियों का और है पंछियों का और है ॥ ४० । स्वर्ग में के देह भी हैं और पृथिवी पर के देह हैं परन्तु स्वर्ग में के देहों का तेज और है और पृथिवी पर के देहों का और है ॥ ४१ । सूर्य्य का तेज और है चन्द्रमा का तेज और है और तारों का तेज और है क्योंकि तेज में एक तारा दूसरे तारे से भिन्न है ॥ ४२ । वैसे ही मृतकों का पुनरुत्थान भी होगा . वह नाशमान बोया जाता है अविनाशी उठाया जाता है ॥ ४३ । वह अनादर सहित बोया जाता है तेज सहित उठाया जाता है . दुर्ब्बलता सहित बोया जाता है सामर्थ्य सहित उठाया जाता है ॥ ४४ । वह प्राणिक देह बोया जाता है आत्मिक देह उठाया जाता है . एक प्राणिक देह है और एक आत्मिक देह है ॥ ४५ । यूं लिखा भी है कि पहिला मनुष्य आदम जीवता प्राणी हुआ . पिछला आदमी जीवन दायक आत्मा है ॥ ४६ । पर जो आत्मिक है सोई पहिला नहीं है परन्तु वह जो प्राणिक है तब वह जो आत्मिक है ॥ ४७ । पहिला मनुष्य पृथिवी से मिट्टी का था . दूसरा मनुष्य स्वर्ग से प्रभु है ॥ ४८ । वह मिट्टी का जैसा था वैसे वे भी हैं जो मिट्टी के हैं और वह स्वर्गवासी जैसा है वैसे वे भी हैं जो स्वर्गवासी हैं ॥ ४९ । और जैसे हम ने उस का रूप जो मिट्टी का था धारण किया है तैसे उस स्वर्गवासी का रूप भी धारण करेंगे ॥ ५० । पर हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस औ लोहू ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते हैं और न विनाश अविनाश का अधिकारी होता है ॥ ५१ । देखो मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं कि हम सब नहीं सो जायेंगे परन्तु हम सब पिछली तुरही के समय क्षण भर में पलक मारते ही बदले जायेंगे ॥ ५२ । क्योंकि तुरही फूंकी जायगी और मृतक अविनाशी उठाये जायेंगे और हम लोग बदले जायेंगे ॥ ५३ । क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान अविनाश को पहिन लेवे और यह मरनहार अमरता को पहिन लेवे ॥ ५४ । और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा तब वह वचन जो लिखा हुआ है कि जय में मृत्यु निगली गई पूरा हो जायगा ॥

५५ । हे मृत्यु तेरा डंक कहां . हे परलोक तेरी जय कहां ॥ ५६ । मृत्यु का डंक पाप है और पाप का बल व्यवस्था है ॥ ५७ । परन्तु ईश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से हमें जयवन्त करता है ॥ ५८ । सो हे मेरे प्यारे भाइयो दृढ़ और अचल रहो और यह जानके कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है प्रभु के काम में सदा बढ़ते जाओ ॥

१६. उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये ठहराया गया है जैसा मैं ने गलातिया की मण्डलियों को आज्ञा दिई तैसा तुम भी करो ॥ २ । हर अठवारे के पहिले दिन तुम में से हर एक मनुष्य जो कुछ उस की सम्पत्ति में बढ़ती दिई जाय सोई अपने पास एकट्ठा कर रखे ऐसा न हो कि जब मैं आऊं तब चंदे उगाहे जायें ॥ ३ । और जब मैं पहुंचूंगा तब जो कोई तुम्हें अच्छे देख पड़ें उन्हें मैं चिट्ठियां देके भेजूंगा कि तुम्हारा दान यिरूशलीम को ले जावें ॥ ४ । पर जो मेरा भी जाना उचित होय तो वे मेरे संग जायेंगे ॥

५ । जब मैं माकिदोनिया में होके निकल चुकूं तब तुम्हारे पास आऊंगा ॥ ६ । क्योंकि मैं माकिदोनिया से होके निकलता हूं पर क्या जाने तुम्हारे यहां ठहरूंगा वरन जाड़े का समय भी काटूंगा कि तुम जिधर कहीं मेरा जाना होय उधर मुझे कुछ दूर लों पहुंचाओ ॥ ७ । क्योंकि मैं तुम्हें अब मार्ग में चलते चलते देखने नहीं चाहता हूं पर आशा रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवे तो कुछ दिन तुम्हारे यहां ठहर जाऊं ॥ ८ । परन्तु पेंतिकोष्ट लों मैं इफिस में रहूंगा ॥ ९ । क्योंकि एक बड़ा और कार्य्य योग्य द्वार मेरे लिये खुला है और बहुत से विरोधी हैं ॥

१० । यदि तिमोथिय आवे तो देखो कि वह तुम्हारे यहां निर्भय रहे क्योंकि जैसा मैं प्रभु का

कार्य्य करता हूं तैसा वह भी करता है ॥ ११ । सो कोई उसे तुच्छ न जाने परन्तु उस को कुशल से आगे पहुंचाओ कि वह मेरे पास आवे क्योंकि मैं भाइयों के संग उस की बाट देखता हूं ॥ १२ । भाई अपल्लो के विषय में यह है कि मैं ने उस से बहुत बिन्ती किई कि भाइयों के संग तुम्हारे पास जाय पर उस को इस समय में जाने की कुछ भी इच्छा न थी परन्तु जब अवसर पावेगा तब जायगा ॥

१३ । जागते रहो . विश्वास मे दृढ़ रहो . पुरुषार्थ करो . बलवन्त होओ ॥ १४ । तुम्हारे सब कर्म्म प्रेम से किये जायें ॥ १५ । और हे भाइयो मैं तुम से यह बिन्ती करता हूं . तुम स्तिफान के घराने को जानते हो कि आखाया का पहिला फल है और उन्हों ने अपने तई पवित्र लोगों की सेवकाई के लिये ठहराया है ॥ १६ । तुम ऐसों के और हर एक मनुष्य के अधीन हो जो सहकर्म्मी औ परिश्रम करनेहारा है ॥ १७ । स्तिफान और फर्तुनात और आखायिक के आने से मैं आनन्दित हूं कि इन्हों ने तुम्हारी घटी को पूरी किई है ॥ १८ । क्योंकि उन्हों ने मेरे और तुम्हारे मन को सुख दिया है इस लिये ऐसों को मानो ॥

१९ । आशिया की मण्डलियों की ओर से तुम को नमस्कार . अक्कूला और प्रिस्कीला का और उन के घर मे की मण्डली का तुम से प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार ॥ २० । सब भाई लोगों का तुम से नमस्कार . एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो ॥ २१ । मुझ पावल का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार ॥ २२ । यदि कोई प्रभु यीशु खीष्ट को प्यार न करे तो स्रापित हो . मारानाथा (अर्थात् प्रभु आता है) ॥ २३ । प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय ॥ २४ । खीष्ट यीशु मे मेरा प्रेम तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥

करिन्थियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

---

१. पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथिय ईश्वर की मण्डली को जो करिन्थ मे है उन सब पवित्र लोगों के संग जो सारे आखाया देश में हैं ॥ २ । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का जो दया का पिता और समस्त शांति का ईश्वर है धन्यबाद होय ॥ ४ । जो हमें हमारे सारे क्लेश में शांति देता है इस लिये कि हम उन्हें जो किसी प्रकार के क्लेश मे हैं उस शांति से शांति दे सकें जिस करके हम आप ईश्वर से शांति पाते हैं ॥ ५ । क्योंकि जैसा खीष्ट के दुःख हमों में बहुत होते हैं तैसा हमारी शांति भी खीष्ट के द्वारा से बहुत होती है ॥ ६ । परन्तु हम यदि क्लेश पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तार के लिये है जो इन्हीं दुःखों मे जिन्हें हम भी उठाते हैं स्थिर रहने में गुण करता है . अथवा यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तार के लिये है ॥ ७ । और तुम्हारे विषय मे हमारी आशा दृढ़ है क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे दुःखों के तैसे शांति के भी भागी हो ॥

८ । हे भाइयो हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस क्लेश के विषय मे अनजान रहो जो आशिया में हम को हुआ कि सामर्थ्य से अधिक हम पर अत्यन्त भार पड़ा यहां लों कि प्राण बचाने का भा

हमें उपाय न रहा ॥ ९ । बरन हम आप मृत्यु की आज्ञा अपने में पा चुके थे कि हमारा भरोसा अपने पर न होय परन्तु ईश्वर पर जो मृतकों को जिलाता है ॥ १० । उस ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया और बचाता है . उस पर हम ने आशा रखी है कि वह फिर भी बचावेगा ॥ ११ । कि तुम भी हमारे लिये प्रार्थना करके सहायता करोगे जिस्तें जो वरदान बहुतों के द्वारा से हमें मिलेगा उस के कारण बहुत लोग हमारे लिये धन्यवाद करें ॥

१२। क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अर्थात् हमारे मन की साक्षी कि जगत में पर और भी तुम्हारे यहां हमारा व्यवहार ईश्वर के योग्य की सीधाई और सच्चाई सहित शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार था ॥ १३ । क्योंकि हम तुम्हारे पास और कुछ नहीं लिखते हैं केवल वह जो तुम पढ़ते अथवा मानते भी हो और मुझे भरोसा है कि अन्त लों भी मानोगे ॥ १४ । जैसा तुम ने कुछ कुछ हमों को भी माना है कि जिस रीति से प्रभु यीशु के दिन में तुम हमारे लिये बड़ाई करने के हेतु हो उसी रीति से तुम्हारे लिये हम भी हैं ॥ १५ । और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे पास आऊं जिस्तें तुम्हें दूसरी बेर दान मिले ॥ १६ । और तुम्हारे पास से होके माकिदोनिया को जाऊं और फिर माकिदोनिया से तुम्हारे पास आऊं और तुम्हों से यिहूदिया की ओर कुछ दूर लों पहुंचाया जाऊं ॥ १७ । सो इस का विचार करने में क्या मैं ने हलकाई किई अथवा मैं जो विचार करता हूं क्या शरीर के अनुसार विचार करता हूं कि मेरी बात में हां हां और नहीं नहीं होवे ॥ १८ । ईश्वर विश्वासयोग्य साक्षी है कि हमारा वचन जो तुम से कहा गया हां औ नहीं न था ॥ १९ । क्योंकि ईश्वर का पुत्र यीशु खीष्ट जिस का हमारे द्वारा अर्थात् मेरे औ सीला के औ तिमोथिय के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ हां औ नहीं न था पर उस में हां ही था ॥ २० । क्योंकि ईश्वर की प्रतिज्ञाएं जितनी हो उसी में हां और उसी में आमीन हैं जिस्तें हमारे द्वारा ईश्वर की महिमा प्रगट होय ॥ २१ । और जो हमें तुम्हारे संग खीष्ट में दृढ़ करता है और जिस ने हमें अभिषेक किया है सो ईश्वर है ॥ २२ । जिस ने हम पर छाप भी दिई है और हम लोगों के मन में पवित्र आत्मा का बयाना दिया है ॥ २३ । परन्तु मैं ईश्वर को अपने प्राण पर साक्षी बदता हूं कि मैं ने तुम पर दया किई जो अब लों करिन्थ नहीं गया ॥ २४ । यह नहीं कि हम तुम पर विश्वास के विषय में प्रभुताई करनेहारे हैं परन्तु तुम्हारे आनन्द के सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास से खड़े हो ॥

२. परन्तु मैं ने अपने लिये तुम्हारे विषय में यही ठहराया कि मैं फिर उन के पास उदास होके न जाऊंगा ॥ २ । क्योंकि जो मैं तुम्हें उदास करूं तो फिर मुझे आनन्दित करनेहारा कौन है केवल वह जो मुझ से उदास किया जाता है ॥ ३ । और मैं ने यही बात तुम्हारे पास इस लिये लिखी कि आने पर मुझे उन की ओर से शोक न होय जिन की ओर से उचित था कि मैं आनन्दित होता क्योंकि मैं तुम सभों का भरोसा रखता हूं कि मेरा आनन्द तुम सभों का आनन्द है ॥ ४ । बड़े क्लेश और मन के कष्ट से मैं ने बहुत रो रोके तुम्हारे पास लिखा इस लिये नहीं कि तुम्हें शोक होय पर इस लिये कि तुम उस प्रेम को जान लेओ जो मैं तुम्हारी ओर बहुत अधिक करके रखता हूं ॥

५ । परन्तु किसी ने यदि शोक दिलाया है तो मुझे नहीं पर मैं बहुत भार न देऊं इस लिये कहता हूं कुछ कुछ तुम सभों को शोक दिलाया है ॥ ६ । ऐसे जन के लिये यह दण्ड जो भाइयों में से अधिक लोगों ने दिया बहुत है ॥ ७ । इस लिये इस के विरुद्ध तुम्हें और भी चाहिये कि उसे क्षमा करो और शांति देओ न हो कि ऐसा मनुष्य अत्यन्त शोक में डूब जाय ॥ ८ । इस कारण मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि उस को अपने प्रेम का प्रमाण देओ ॥ ९ । क्योंकि मैं ने इस हेतु से लिखा भी कि तुम्हारी परीक्षा लेके जानूं कि तुम सब बातों में आज्ञाकारी

होते हो कि नहीं॥ १०। जिस का तुम कुछ क्षमा करते हो मैं भी क्षमा करता हूं क्योंकि मैं ने भी यदि कुछ क्षमा किया है तो जिस को क्षमा किया है उस को तुम्हारे कारण खीष्ट के साक्षात क्षमा किया है॥ ११। कि शैतान का हम पर दांव न चले क्योंकि हम उस की जुगतों से अज्ञान नहीं हैं॥

१२। जब मैं खीष्ट का सुसमाचार प्रचार करने को त्रोआ में आया और प्रभु के काम का एक द्वार मेरे लिये खुला था॥ १३। तब मैं ने अपने भाई तीतस को जो नहीं पाया तो मेरे मन को चैन न मिला परन्तु उन से बिदा होके मैं माकिदोनिया को गया॥

१४। परन्तु ईश्वर का धन्यवाद होय जो सदा खीष्ट में हमारी जय करवाता है और उस के ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा से हर स्थान में फैलाता है॥ १५। क्योंकि हम ईश्वर को उन में जो त्राण पाते हैं और उन में भी जो नाश होते हैं खीष्ट के सुगन्ध हैं॥ १६। इन को हम मृत्यु के लिये मृत्यु के गंध हैं पर उन को जीवन के लिये जीवन के गंध हैं. और इस काम के योग्य कौन है॥ १७। क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं हैं जो ईश्वर के बचन में मिलावट करनेहारे हैं परन्तु जैसे सच्चाई से बोलनेहारे परन्तु जैसे ईश्वर की ओर से बोलनेहारे तैसे ईश्वर के सन्मुख खीष्ट की बातें बोलते हैं॥

३. क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे हैं अथवा जैसा कितनों को तैसा क्या हमों को भी प्रशंसा की पत्रियां तुम्हारे पास लाने का अथवा तुम्हारे पास से ले जाने का प्रयोजन है॥ २। तुम हमारी पत्री हो जो हमारे हृदय में लिखी गई है और सब मनुष्यों से पहचानी औ पढ़ी जाती है॥ ३। क्योंकि तुम प्रत्यक्ष देख पड़ते हो कि खीष्ट की पत्री हो जिस के विषय में हम ने सेवकाई किई और जो सियाही से नहीं परन्तु जीवते ईश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियाओं पर नहीं परन्तु हृदय की मांसरूपी पटरियों पर लिखी गई है॥

४। हमें ईश्वर की ओर खीष्ट के द्वारा से ऐसा ही भरोसा है॥ ५। यह नहीं कि हम जैसे अपनी ओर से किसी बात का बिचार आप से करने के योग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता ईश्वर से होती है॥ ६। जिस ने हमें नये नियम के सेवक होने के योग्य भी किया लेख के सेवक नहीं परन्तु आत्मा के क्योंकि लेख मारता है परन्तु आत्मा जिलाता है॥

७। और यदि मृत्यु की सेवकाई जो लेखों में थी और पत्थरों में खोदी हुई थी तेजोमय हुई यहां लों कि मूसा के मुंह के तेज के कारण जो लोप होनेहारा भी था इस्रायेल के सन्तान उस के मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे॥ ८। तो आत्मा की सेवकाई और भी तेजोमय क्यों न होगी॥ ९। क्योंकि यदि दण्ड की आज्ञा की सेवकाई एक तेज थी तो बहुत अधिक करके धर्म्म की सेवकाई तेज में उस से श्रेष्ठ है॥ १०। और जो तेजोमय कहा गया था सो भी इस करके अर्थात् इस अधिक तेज के कारण कुछ तेजोमय न ठहरा॥ ११। क्योंकि यदि वह जो लोप होनेहारा था तेजवन्त था तो बहुत अधिक करके यह जो बना रहेगा तेजोमय है॥

१२। सो ऐसी आशा रखने से हम बहुत खोलके बात करते हैं॥ १३। और ऐसे नहीं जैसा मूसा अपने मुंह पर परदा डालता था कि इस्रायेल के सन्तान उस लोप होनेहारे विषय के अन्त पर दृष्टि न करें॥ १४। बरन उन की बुद्धि मन्द हुई क्योंकि आज लों पुराने नियम के पढ़ने में वही परदा पड़ा रहता है और नहीं खुलता है कि वह खीष्ट में लोप किया जाता है॥ १५। पर आज लों जब मूसा का पुस्तक पढ़ा जाता है उन के हृदय पर परदा पड़ा है॥ १६। परन्तु जब वह प्रभु की ओर फिरेगा तब वह परदा उठाया जायगा॥ १७। प्रभु तो आत्मा है और जहां प्रभु का आत्मा है तहां निर्बंधता है॥ १८। और हम सब उघाड़े मुंह प्रभु का तेज जैसे दर्पण में देखते हुए मानो प्रभु अर्थात् आत्मा के गुण से तेज पर तेज प्राप्त कर उसी रूप में बदलते जाते हैं॥

४. इस कारण जब कि उस दया के अनुसार जो हम पर किई गई यह सेवकाई हमें मिली है हम कातर नहीं होते हैं॥ २। पर लज्जा के गुप्त कामों को त्यागके न चतुराई से चलते हैं न ईश्वर के वचन में मिलावट करते हैं परन्तु सत्य को प्रगट करने से हर एक मनुष्य के विवेक को ईश्वर के आगे अपने विषय में प्रमाण देते हैं॥ ३। पर हमारा सुसमाचार यदि गुप्त भी है तो उन्हीं पर गुप्त है जो नाश होते हैं॥ ४। जिन्हों में देख पड़ता है कि इस संसार के ईश्वर ने अविश्वासियों की बुद्धि अंधी किई है कि खीष्ट जो ईश्वर की प्रतिमा है तिस के तेज के सुसमाचार की ज्योति उन पर प्रकाश न होय॥ ५। क्योंकि हम अपने को नहीं परन्तु खीष्ट यीशु को प्रभु करके प्रचार करते हैं और अपने को यीशु के कारण तुम्हारे दास कहते हैं॥ ६। क्योंकि ईश्वर जिस ने आज्ञा किई कि अंधकार में से ज्योति चमके वही है जो हम लोगों के हृदय में चमका कि ईश्वर का जो तेज यीशु खीष्ट के मुंह पर है उस तेज के ज्ञान की ज्योति प्रकाश होय॥

७। परन्तु यह संपत्ति हमें मिट्टी के बर्त्तनों में मिली है कि सामर्थ्य की अधिकाई ईश्वर की ठहरे और हमारी ओर से नहीं॥ ८। हम सर्व्वथा क्लेश पाते हैं पर सकेते में नहीं हैं॥ ९। दुबधा में हैं पर निरुपाय नहीं. सताये जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते. गिराये जाते हैं पर नाश नहीं होते॥ १०। हम नित्य प्रभु यीशु का मरण देह में लिये फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे देह में प्रगट किया जाय॥ ११। क्योंकि हम जो जीते हैं सदा यीशु के कारण मृत्यु भोगने को सोंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट किया जाय॥ १२। सो मृत्यु हमों में परन्तु जीवन तुम्हों में कार्य्य करता है॥

१३। परन्तु विश्वास का वही आत्मा जैसा लिखा है मैं ने विश्वास किया इस लिये बोला जब कि हमें मिला है हम भी विश्वास करते हैं इस लिये बोलते भी हैं॥ १४। क्योंकि जानते हैं कि जिस ने प्रभु यीशु को जिला उठाया सो हमें भी यीशु के द्वारा जिलाके तुम्हारे संग अपने आगे खड़ा करेगा॥ १५। क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिये है जिस्तें अनुग्रह बहुत होके ईश्वर की महिमा के लिये बहुत लोगों के धन्यवाद के हेतु से बढ़ता जाय॥ १६। इस लिये हम कातर नहीं होते हैं परन्तु जो हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता है तौभी भीतरी मनुष्यत्व दिन पर दिन नया होता जाता है॥ १७। क्योंकि हमारे क्लेश का क्षण भर का हलका बोझ हमारे लिये महिमा का अनन्त भार अधिक से अधिक करके उत्पन्न करता है॥ १८। कि हम तो दृश्य विषयों को नहीं परन्तु अदृश्य विषयों को देखा करते हैं क्योंकि दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु अदृश्य विषय नित्य हैं॥

५. हम जानते हैं कि जो हमारा पृथिवी पर का डेरा सा घर गिराया जाय तो ईश्वर से एक भवन हमें मिला है जो बिन हाथ का बनाया हुआ नित्यस्थायी घर स्वर्ग में है॥ २। क्योंकि इस डेरे में हम कहरते भी हैं और अपना वह बासा जो स्वर्गीय है ऊपर से पहिनने की लालसा करते हैं॥ ३। जो ऐसा ही ठहरे कि पहिने हुए हम नंगे नहीं पाये जायेंगे॥ ४। हां हम जो इस डेरे में हैं बोझ से दबे हुए कहरते हैं क्योंकि हम उतारने को नहीं परन्तु ऊपर से पहिनने की इच्छा करते हैं कि जीवन से यह मरनहार निगला जाय॥ ५। और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है सो ईश्वर है जिस ने हमें पवित्र आत्मा का बयाना भी दिया है॥ ६। सो हम सदा ढाढ़स बांधते हैं और यह जानते हैं कि जब लों देह में रहते हैं तब लों प्रभु से अलग होते हैं॥ ७। क्योंकि हम रूप देखने से नहीं परन्तु विश्वास से चलते हैं॥ ८। इस लिये हम साहस करते हैं और यही अधिक चाहते हैं कि देह से अलग होके प्रभु के संग रहें॥

९। इस कारण हम चाहें संग रहते हुए चाहें

अलग होते हुए उस की प्रसन्नता योग्य होने की चेष्टा करते हैं ॥ १०। क्योंकि हम सभों का खीष्ट के विचार आसन के आगे प्रगट किया जाना अवश्य है जिस्तें हर एक जन क्या भला काम क्या बुरा जो कुछ किया हो उस के अनुसार देह के द्वारा किये हुए का फल पावे ॥ ११। सो प्रभु का भय मानके हम मनुष्यों को समझाते हैं पर ईश्वर के आगे हम प्रगट होते हैं और मुझे भरोसा है कि तुम्हों के मन में भी प्रगट हुए हैं ॥ १२। क्योंकि हम तुम्हारे पास फिर अपनी प्रशंसा करते हैं सो नहीं परन्तु तुम्हें हमारे विषय में बड़ाई करने का कारण देते हैं कि जो लोग हृदय पर नहीं परन्तु रूप पर घमण्ड करते हैं उन के विरुद्ध बड़ाई करने को जगह तुम्हें मिले ॥ १३। क्योंकि हम चाहे बेसुध हों तो ईश्वर के लिये बेसुध हैं चाहें सुबुद्धि हों तो तुम्हारे लिये सुबुद्धि हैं ॥

१४। खीष्ट का प्रेम हमें बश कर लेता है क्योंकि हम ने यह विचार किया कि यदि सभों के लिये एक मरा तो वे सब मूए ॥ १५। और वह सभों के लिये इस कारण मरा कि जो जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें परन्तु उस के लिये जो उन के निमित्त मरा और जी उठा ॥ १६। सो हम अब से किसी को शरीर के अनुसार करके नहीं समझते हैं और यदि हम खीष्ट को शरीर के अनुसार करके समझते भी थे तौभी अब उस को नहीं ऐसा समझते हैं ॥ १७। सो यदि कोई खीष्ट में होय तो नई सृष्टि है. पिछली बातें बीत गई हैं देखो सब बातें नई हुई हैं ॥

१८। और सब बातें ईश्वर की ओर से हैं जिस ने यीशु खीष्ट के द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया और मिलाप की सेवकाई हमें दिई ॥ १९। अर्थात् कि ईश्वर जगत के लोगों के अपराध उन पर न लगाके खीष्ट में जगत को अपने साथ मिला लेता था और मिलाप का बचन हमों को सौंप दिया ॥ २०। सो हम खीष्ट की सन्ती दूत हैं मानो ईश्वर हमारे द्वारा उपदेश करता है. हम खीष्ट की सन्ती बिन्ती करते हैं, ईश्वर से मिलाये जाओ ॥ २१। क्योंकि जो पाप से अनजान था उस को उस ने हमारे लिये पाप बनाया कि उस में हम ईश्वर के धर्म्म बनें ॥

६. सो हम जो सहकर्म्मी हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वर के अनुग्रह को वृथा ग्रहण न करो ॥ २। क्योंकि वह कहता है मैं ने शुभ काल में तेरी सुनी और निस्तार के दिन में तेरा उपकार किया. देखो अभी वह शुभ काल है देखो अभी वह निस्तार का दिन है ॥ ३। हम किसी बात से कुछ ठोकर नहीं खिलाते हैं कि इस सेवकाई पर दोष न लगाया जाय ॥ ४। परन्तु जैसे ईश्वर के सेवक तैसे हर बात से अपने लिये प्रमाण देते हैं अर्थात् बहुत धीरता से क्लेशों में दरिद्रता में सकटों में ॥ ५। मार खाने में बन्दीगृहों में हुल्लड़ों में परिश्रम मे जागते रहने में उपवास करने में ॥ ६। शुद्धता से ज्ञान से धीरज से कृपालुता से पवित्र आत्मा से निष्कपट प्रेम से ॥ ७। सत्य के बचन से ईश्वर के सामर्थ्य से दहिने औ बायें धर्म्म के हथियारों से ॥ ८। आदर औ निरादर से अपयश औ सुयश से कि भरमानेहारों के ऐसे हैं तौभी सच्चे हैं ॥ ९। अनजाने हुओं के ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुओं के ऐसे हैं और देखो जीवते हैं ताड़ना किये हुओं के ऐसे हैं और घात नहीं किये जाते हैं ॥ १०। उदासों के ऐसे हैं परन्तु सदा आनन्द करते हैं कंगालों के ऐसे हैं परन्तु बहुतों को धनवान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है तौभी सब कुछ रखते हैं ॥

११। हे करिन्थियो हमारा मुंह तुम्हारी ओर खुला है हमारा हृदय विस्तारित हुआ है ॥ १२। तुम्हें हमों में सकेता नहीं है परन्तु तुम्हारे ही अन्तःकरण में तुम्हें सकेता है ॥ १३। पर मैं तुम को जैसा अपने लड़कों को इस का वैसा ही बदला बताता हूं कि तुम भी विस्तारित होओ ॥ १४। मत अविश्वासियों के संग असमान जूए में जुत जाओ क्योंकि धर्म्म और अधर्म्म का कौन सा साझा है और अंधकार के साथ ज्योति की कौन संगति ॥ १५। और बिलयाल के संग खीष्ट की कौन सम्मति

है अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासी का कौन सा भाग॥ १६। और मूरतों के संग ईश्वर के मन्दिर का कौन सा सबन्ध है क्योंकि तुम तो जीवते ईश्वर के मन्दिर हो जैसा ईश्वर ने कहा मैं उन में बसूंगा और उन में फिरूंगा और मैं उन का ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे॥ १७। इस लिये परमेश्वर कहता है उन के बीच में से निकलो और अलग होओ और अशुद्ध बस्तु को मत छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा॥ १८। और मैं तुम्हारा पिता होंगा और तुम मेरे पुत्र और पुत्रियां होगे सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है॥

७. सो हे प्यारो जब कि यह प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं आओ हम अपने को शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें और ईश्वर का भय रखते हुए संपूर्ण पवित्रता को प्राप्त करें॥

२। हमें ग्रहण करो हम ने न किसी से अन्याय किया न किसी को बिगाड़ा न किसी को ठगा॥ ३। मैं दोषी ठहराने को नहीं कहता हूं क्योंकि मैं ने आगे से कहा है कि तुम हमारे मन में हो ऐसा कि हम तुम्हारे संग मरने और तुम्हारे संग जीने को तैयार हैं॥ ४। तुम्हारी ओर मेरा साहस बहुत है तुम्हारे विषय में मुझे बड़ाई करने की जगह बहुत है हमारे सब क्लेश के विषय में मैं शांति से भर गया हूं और अधिक से अधिक आनन्द करता हूं॥

५। क्योंकि जब हम माकिदोनिया में आये तब भी हमारे शरीर को कुछ चैन नहीं मिला पर हम समस्त प्रकार से क्लेश पाते थे. बाहर से युद्ध भीतर से भय था॥ ६। परन्तु दीनों को शांति देनेहारे ने अर्थात् ईश्वर ने तीतस के आने से हमों को शांति दिई॥ ७। और केवल उस के आने से नहीं पर उस शांति से भी जिस करके उस ने तुम्हारी लालसा औ तुम्हारे बिलाप औ मेरे लिये तुम्हारे अनुराग का समाचार हम से कहते हुए तुम्हारे विषय में शांति पाई यहां लों कि मैं अधिक आनन्दित हुआ॥

८। क्योंकि जो मैं ने उस पत्री से तुम्हें शोक दिलाया तौभी मैं यद्यपि पछताता था अब नहीं पछताता हूं. मैं देखता हूं कि उस पत्री ने यदि केवल थोड़ी बेर लों तौभी तुम्हें शोक तो दिलाया॥ ९। अभी मैं आनन्द करता हूं इस लिये नहीं कि तुम ने शोक किया परन्तु इस लिये कि शोक करने से पश्चात्ताप किया क्योंकि तुम्हारा शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार था जिस्तें तुम्हें हमारी ओर से किसी बात में हानि न होय॥ १०। क्योंकि जो शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार है उस से वह पश्चात्ताप उत्पन्न होता है जिस करके त्राण है और जिस से किसी को नहीं पछताना है. परन्तु संसार के शोक से मृत्यु उत्पन्न होती है॥ ११। क्योंकि अपना यही ईश्वर की इच्छा के अनुसार शोक दिलाया जाना देखो कि उस से कितना यत्न हां उत्तर देने की कितनी चिन्ता हां कितनी रिस हां कितना भय हां कितनी लालसा हां कितना अनुराग हां दण्ड देने का कितना बिचार तुम में उत्पन्न हुआ. तुम ने समस्त प्रकार से अपने लिये इस बात में निर्दोष होने का प्रमाण दिया है॥ १२। सो मैं ने जो तुम्हारे पास लिखा तौभी न तो उस के कारण लिखा जिस ने अपराध किया न उस के कारण जिस का अपराध किया गया परन्तु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा यत्न है सो तुम्हों में ईश्वर के सन्मुख प्रगट किया जाय॥

१३। इस कारण से हम ने तुम्हारी शांति से शांति पाई और बहुत अधिक करके तीतस के आनन्द से और भी आनन्दित हुए क्योंकि उस के मन को तुम सभों की ओर से सुख दिया गया है॥ १४। क्योंकि यदि मैं ने उस के आगे तुम्हारे विषय में कुछ बड़ाई किई है तो लज्जित नहीं किया गया हूं परन्तु जैसा हम ने तुम से सब बातें सच्चाई से कहीं तैसा हमारा तीतस के आगे बड़ाई करना भी सत्य हुआ है॥ १५। और वह जो तुम सभों के आज्ञापालन को स्मरण करता है कि तुम ने क्योंकर डरते और कांपते हुए उस को ग्रहण किया तो बहुत अधिक करके तुम पर स्नेह करता है॥ १६। मैं आनन्द करता हूं कि तुम्हारी ओर से मुझे समस्त प्रकार से ढाढ़स बंधता है॥

८. हे भाइयो हम तुम्हें ईश्वर का वह अनुग्रह जनाते हैं जो माकिदोनिया की मंडलियों में दिया गया है ॥ २। कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उन के आनन्द की अधिकाई और उन की महा दरिद्रता इन दोनों के बढ़ जाने से उन की उदारता का धन प्रगट हुआ ॥ ३। क्योंकि मैं साक्षी देता हूं कि वे अपने सामर्थ्य भर और सामर्थ्य से अधिक आप ही से तैयार थे ॥ ४। और हमें बहुत मनाके बिन्ती करते थे कि हम उस दान को और पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस की संगति को ग्रहण करें ॥ ५। और जैसा हम ने आशा रखी थी तैसा नहीं परन्तु उन्हों ने अपने तईं पहिले प्रभु को तब ईश्वर की इच्छा से हमों को दिया ॥ ६। यहां लों कि हम ने तीतस से बिन्ती किई कि जैसा उस ने आगे आरंभ किया था तैसा तुम्हों में इस अनुग्रह के कर्म्म को समाप्त भी कर ले ॥

७। परन्तु जैसे हर एक बात में अर्थात् विश्वास में औ वचन में औ ज्ञान में औ सारे यत्न में औ हमारी ओर तुम्हारे प्रेम में तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुग्रह के कर्म्म में भी तुम्हारी बढ़ती होय ॥ ८। मैं आज्ञा की रीति पर नहीं परन्तु औरों के यत्न करने के कारण और तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिये कहता हूं ॥ ९। क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह जानते हो कि वह जो धनी था तुम्हारे कारण दरिद्र हुआ कि उस की दरिद्रता के द्वारा तुम धनी होओ ॥ १०। और इस बात मे मैं परामर्श देता हूं क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस दिन से केवल करने का नहीं परन्तु चाहने का भी आरंभ आगे से कर चुके ॥ ११। सो अब करने की भी समाप्ति करो कि जैसा चाहने को तुम्हारे मन की तैयारी थी वैसा तुम्हारी संपत्ति के समान तुम्हारा समाप्ति करना भी होवे ॥ १२। क्योंकि यदि आगे से मन की तैयारी होती है तो जो जिस के पास नहीं है उस के अनुसार नहीं परन्तु जो जिस के पास है उस के अनुसार वह ग्राह्य है ॥ १३। यह इस लिये नहीं है कि औरों को चैन और तुम को क्लेश मिले ॥ १४। परन्तु समता से इस वर्त्तमान समय में तुम्हारी बढ़ती उन्हों की घटती में काम आवे इस लिये कि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटती में काम आवे जिस्तें समता होय ॥ १५। जैसा लिखा है जिस ने बहुत संचय किया उस का कुछ उभरा नहीं और जिस ने थोड़ा संचय किया उस का कुछ घटा नहीं ॥

१६। और ईश्वर का धन्यवाद होय जो तुम्हारे लिये वही यत्न तीतस के हृदय मे देता है ॥ १७। कि उस ने वह बिन्ती ग्रहण किई बरन अति यत्नवान होके वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया है ॥ १८। और हम ने उस के संग उस भाई को भेजा है जिस की प्रशंसा सुसमाचार के विषय मे सब मण्डलियों में होती है ॥ १९। और केवल इतना नहीं परन्तु वह मण्डलियों से ठहराया भी गया कि इस अनुग्रह के कर्म्म के लिये जिस की सेवकाई हम से किई जाती है हमारे संग चले जिस्तें प्रभु की महिमा और तुम्हारे मन की तैयारी प्रगट किई जाय ॥ २०। हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस अधिकाई के विषय मे जिस की सेवकाई हम से किई जाती है कोई हम पर दोष न लगावे ॥ २१। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु के आगे नहीं परन्तु मनुष्यों के आगे भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं ॥ २२। और हम ने उन के संग अपने भाई को भेजा है जिस को हम ने बारम्बार बहुत बातों मे परखके यत्नवान पाया है पर अब तुम पर जो बड़ा भरोसा है उस के कारण बहुत अधिक यत्नवान पाया है ॥ २३। यदि तीतस की पूछी जाय तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये सहकर्म्मी है अथवा हमारे भाई लोग हों तो वे मण्डलियो के दूत और खीष्ट की महिमा है ॥ २४। सो उन्हें मण्डलियों के सन्मुख अपने प्रेम का और तुम्हारे विषय मे हमारे बड़ाई करने का प्रमाण दिखाओ ॥

९. पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस के विषय में तुम्हारे पास लिखना मुझे अवश्य नहीं है ॥ २। क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं जिस के लिये मैं तुम्हारे

विषय में माकिदोनियों के आगे बड़ाई करता हूं कि आखाया के लोग बरस दिन से तैयार हुए हैं और तुम्हारे अनुराग ने बहुतों को हिसका दिलाया है ॥ ३। परन्तु मैं ने भाइयों को इस लिये भेजा है कि तुम्हारे विषय में जो हम ने बड़ाई किई है सो इस बात में व्यर्थ न ठहरे अर्थात् कि जैसा मैं ने कहा तैसे तुम तैयार हो रहो ॥ ४। ऐसा न हो कि यदि कोई माकिदोनी लोग मेरे संग आके तुम्हें तैयार न पावें तो क्या जानें इस निर्भय बड़ाई करने में हम न कहें तुम लज्जित होओ पर हम ही लज्जित होवें ॥ ५। इस लिये मैं ने भाइयों से बिन्ती करना अवश्य समझा कि वे आगे से तुम्हारे पास जावें और तुम्हारी उदारता का फल जिस का संदेश आगे दिया गया था आगे से सिद्ध करें कि यह लोभ के नहीं परन्तु उदारता के फल के ऐसा तैयार होवे ॥

६। परन्तु यह है कि जो क्षुद्रता से बोता है सो क्षुद्रता से लवेगा भी और जो उदारता से बोता है सो उदारता से लवेगा भी ॥ ७। हर एक जन जैसा मन में ठाने तैसा दान करे कुढ़ कुढ़के अथवा दबाव से न देवे क्योंकि ईश्वर हर्ष से देनेहारे को प्यार करता है ॥ ८। और ईश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें अधिकाई से दे सकता है जिस्तें हर बात में और हर समय में सब कुछ जो अवश्य होय तुम्हारे पास रहे और तुम्हें हर एक अच्छे काम के लिये बहुत सामर्थ्य होय ॥ ९। जैसा लिखा है उस ने बिथराया उस ने कंगालों को दिया उस का धर्म्म सदा लों रहता है ॥ १०। जो बोनेहारे को बीज और भोजन के लिये रोटी देनेहारा है सो तुम्हें देवे और तुम्हारा बीज फलवन्त करे और तुम्हारे धर्म्म के फलों को अधिक करे ॥ ११। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा ईश्वर का धन्यवाद करवाती है धनवान किये जाओ ॥ १२। क्योंकि इस उपकार की सेवकाई न केवल पवित्र लोगों की घटियों को पूरी करती है परन्तु ईश्वर के बहुत धन्यवादों के द्वारा से उभरती भी है ॥ १३। क्योंकि वे इस सेवकाई से प्रमाण लेके तुम जो खीष्ट के सुसमाचार के अधीन होने का अंगीकार करते हो उस अधीनता के लिये और उन की और सभों की सहायता करने में तुम्हारी उदारता के लिये ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं ॥ १४। और ईश्वर का अत्यन्त अनुग्रह जो तुम पर है उस के कारण तुम्हारी लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करने से भी ईश्वर की महिमा प्रगट करते हैं ॥ १५। ईश्वर का उस के अकथ्य दान के लिये धन्यवाद होवे ॥

१०. मैं वही पावल जो तुम्हारे साम्हे तुम्हों में दीन हूं परन्तु तुम्हारे पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं तुम से खीष्ट की नम्रता और कोमलता के कारण बिन्ती करता हूं ॥ २। मैं यह बिन्ती करता हूं कि तुम्हारे साम्हे मुझे उस दृढ़ता से साहस करना न पड़े जिस से मैं कितनों पर जो हमों को शरीर के अनुसार चलनेहारे समझते हैं साहस करने का बिचार करता हूं ॥ ३। क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते हैं ॥ ४। क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को तोड़ने के लिये ईश्वर के कारण सामर्थी हैं ॥ ५। हम तर्कों को और हर एक ऊंची बात को जो ईश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठती है खण्डन करते हैं और हर एक भावना को खीष्ट की आज्ञाकारी करने के लिये बन्दी कर लेते हैं ॥ ६। और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो जाय तब हर एक आज्ञालंघन का दण्ड देवें ॥

७। क्या तुम जो कुछ सम्मुख है उसी को देखते हो. यदि कोई अपने में भरोसा रखता है कि वह खीष्ट का है तो आप ही फिर यह समझे कि जैसा वह खीष्ट का है तैसे हम लोग भी खीष्ट के हैं ॥ ८। क्योंकि जो मैं हमारे उस अधिकार के विषय में जिसे प्रभु ने तुम्हें नाश करने के लिये नहीं परन्तु सुधारने के लिये हमें दिया है कुछ अधिक करके भी बड़ाई करूं तो लज्जित न होऊंगा ॥ ९। पर यह न होवे कि मैं ऐसा देख पड़ूं कि तुम्हें पत्रियों से डराता

हूं ॥ १० । क्योंकि वह कहता है उस की पत्रियां तो भारी औ प्रबल हैं परन्तु साक्षात में उस का देह दुर्ब्बल और उस का बचन तुच्छ है ॥ ११ । ऐसा मनुष्य यह समझे कि हम लोग तुम्हारे पीछे पत्रियों के द्वारा बचन में जैसे हैं तुम्हारे साम्ने भी कर्म्म में वैसे ही होंगे ॥

१२ । क्योंकि हमें साहस नहीं है कि जो लोग अपनी प्रशंसा करते हैं उन में से कितनों के संग अपने को गिनें अथवा अपने को उन से मिलाके देखें परन्तु वे अपने को अपने से आप नापते हुए और अपने को अपने से मिलाके देखते हुए ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं ॥ १३ । हम तो परिमाण के बाहर बड़ाई नहीं करेंगे परन्तु जो परिमाण दण्ड ईश्वर ने हमें बांट दिया है कि तुम्हों तक भी पहुंचे उस के नाप के अनुसार बड़ाई करेंगे ॥ १४ । क्योंकि हम तुम्हों तक नहीं पहुंचते परन्तु अपने को सिवाने के बाहर पसारते हैं ऐसा नहीं है क्योंकि खीष्ट का सुसमाचार प्रचार करने में हम तुम्हों तक भी पहुंच चुके हैं ॥ १५ । और हम परिमाण के बाहर दूसरों के परिश्रम के विषय में बड़ाई नहीं करते हैं परन्तु हमें भरोसा है कि ज्यों ज्यों तुम्हारा बिश्वास बढ़ जाय त्यों त्यों हम अपने परिमाण के अनुसार तुम्हारे द्वारा अधिक अधिक बढ़ाये जायेंगे ॥ १६ । कि हम तुम्हारे देश से आगे बढ़के सुसमाचार प्रचार करें और यह नहीं कि हम दूसरों के परिमाण के भीतर तैयार किई हुई वस्तुओं के विषय में बड़ाई करें ॥ १७ । पर जो बड़ाई करे सो प्रभु के विषय में बड़ाई करे ॥ १८ । क्योंकि जो अपनी प्रशंसा करता है सोई नहीं परन्तु जिस की प्रशंसा प्रभु करता है वही ग्रहणयोग्य ठहरता है ॥

११. मैं चाहता हूं कि तुम मेरी अज्ञानता में थोड़ा सा मेरी सह लेते . हां मेरी सह भी लेओ ॥ २ । क्योंकि मैं ईश्वर के लिये तुम्हारे विषय में धुन लगाये रहता हूं इस लिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है जिस्तें तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं खीष्ट को सोंप देऊं ॥ ३ । परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को ठगा तैसे तुम्हारे मन उस सीधाई से जो खीष्ट की ओर है कहीं भ्रष्ट न किये जायें ॥ ४ । यदि वह जो तुम्हारे पास आता है दूसरे यीशु को प्रचार करता है जिसे हम ने प्रचार नहीं किया अथवा और आत्मा तुम्हें मिलता है जो तुम्हें नहीं मिला था अथवा और सुसमाचार जिसे तुम ने ग्रहण नहीं किया था तो तुम भली रीति से सह लेते ॥ ५ । मैं तो समझता हूं कि मैं किसी बात में उन अत्यन्त बड़े प्रेरितों से घट नहीं हूं ॥ ६ । यदि मैं बचन में अनाड़ी हूं तौभी ज्ञान में नहीं परन्तु हम हर बात में सभों के आगे तुम पर प्रगट किये गये ॥

७ । मैं जो अपने को नीचा करता था कि तुम ऊंचे किये जावो क्या इस में मैं ने पाप किया . क्योंकि मैं ने सेंतमेंत ईश्वर का सुसमाचार तुम्हें सुनाया ॥ ८ । मैं ने और मण्डलियों को लूट लिया कि तुम्हारी सेवा के लिये मैं ने उन से मजूरी लिई ॥ ९ । और जब मैं तुम्हारे संग था और मुझे घटी हुई तब मैं ने किसी पर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों ने माकिदोनिया से आके मेरी घटी को पूरी किई और मैं ने सर्व्वथा अपने को तुम पर भार होने से बचा रखा और बचा रखूंगा ॥ १० । जो खीष्ट की सच्चाई मुझ में है तो मेरे विषय में यह बड़ाई आखाया देश में नहीं बन्द किई जायगी ॥ ११ । किस कारण . क्या इस लिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूं . ईश्वर जानता है ॥ १२ । पर मैं जो करता हूं सोई करूंगा कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं उन्हें मैं दांव पाने न देऊं कि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं उस में वे हमारे ही समान ठहरें ॥

१३ । क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं छल का कार्य्य करनेहारे खीष्ट के प्रेरितों का रूप धरनेहारे ॥ १४ । और यह कुछ अचंभे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योति के दूत का रूप धरता है ॥ १५ । सो यदि उस के सेवक भी धर्म्म के सेवकों का सा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं है . पर उन का अन्त उन के कर्म्मों के अनुसार होगा ॥

१६ । मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे

और नहीं तो यदि मूर्ख जानके तौभी मुझे ग्रहण करो कि थोड़ा सा मैं भी बड़ाई करूं॥ १७। मैं जो बोलता हूं उस को प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं परन्तु इस निर्भय बड़ाई करने में जैसे मूर्खता से बोलता हूं॥ १८। जब कि बहुत लोग शरीर के अनुसार बड़ाई करते हैं मैं भी बड़ाई करूंगा॥ १९। तुम तो बुद्धिमान होके आनन्द से मूर्खों की सह लेते हो॥ २०। क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाता है यदि कोई खा जाता है यदि कोई ले लेता है यदि कोई अपना बड़ापन करता है यदि कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारता है तो तुम सह लेते हो॥ २१। इस अनादर की रीति पर मैं कहता हूं मानो कि हम दुर्ब्बल थे. परन्तु जिस बात में कोई साहस करता है मैं मूर्खता से कहता हूं मैं भी साहस करता हूं॥

२२। क्या वे इब्री लोग हैं. मैं भी हूं. क्या वे इस्रायेली हैं. मैं भी हूं. क्या वे इब्राहीम के वंश हैं. मैं भी हूं॥ २३। क्या वे खीष्ट के सेवक हैं. मैं बुद्धिहीन सा बोलता हूं उन से बढ़कर मैं बहुत अधिक परिश्रम करने से औ अत्यन्त मार खाने से औ बन्दीगृह में बहुत अधिक पड़ने से औ मृत्यु लों बारम्बार पहुंचने से खीष्ट का सेवक ठहरा॥ २४। पांच बार मैं ने यिहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाये॥ २५। तीन बार मैं ने बेत खाई एक बार पत्थरवाह किया गया तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था टूट गये एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा॥ २६। नदियों की अनेक जोखिम डाकूओं की अनेक जोखिम अपने लोगों से अनेक जोखिम अन्यदेशियों से अनेक जोखिम नगर में अनेक जोखिम जंगल में अनेक जोखिम समुद्र में अनेक जोखिम झूठे भाइयों में अनेक जोखिम इन सब जोखिमों सहित बार बार यात्रा करने से॥ २७। और परिश्रम औ क्लेश से बार बार जागते रहने से भूख औ प्यास से बार बार उपवास करने से जाड़े औ नंगाई से मैं खीष्ट का सेवक ठहरा॥ २८। और और बातों को छोड़के यह भीड़ जो प्रतिदिन मुझ पर पड़ती है अर्थात् सब मण्डलियों की चिन्ता॥ २९। कौन दुर्ब्बल है और मैं दुर्ब्बल नहीं हूं. कौन ठोकर खाता है और मैं नहीं जलता हूं॥ ३०। यदि बड़ाई करना अवश्य है तो मैं अपनी दुर्ब्बलता की बातों पर बड़ाई करूंगा॥ ३१। हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का पिता ईश्वर जो सर्व्वदा धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं॥ ३२। दमेसक में अरिता राजा की ओर से जो अध्यक्ष था सो मुझे पकड़ने की इच्छा से दमेसकियों के नगर पर पहरा दिलाता था॥ ३३। और मैं खिड़की देके टोकरे में भीत पर से लटकाया गया और उस के हाथ से बच निकला॥

१२. बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है. मैं प्रभु के दर्शनों और प्रकाशों का बर्णन करूंगा॥ २। मैं खीष्ट में एक मनुष्य को जानता हूं कि चौदह बरस हुए क्या देह सहित मैं नहीं जानता हूं क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग लों उठा लिया गया॥ ३। मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं क्या देह सहित क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है॥ ४। कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया और अकथ्य बातें सुनीं जिन के बोलने का सामर्थ्य मनुष्य को नहीं है॥ ५। ऐसे मनुष्य के विषय में मैं बड़ाई करूंगा परन्तु अपने विषय में बड़ाई न करूंगा केवल अपनी दुर्ब्बलताओं पर॥ ६। क्योंकि यदि मैं बड़ाई करने की इच्छा करूंगा तो मूर्ख न होऊंगा क्योंकि सत्य बोलूंगा परन्तु मैं रुक जाता हूं ऐसा न हो कि कोई जो कुछ वह देखता है कि मैं हूं अथवा मुझ से सुनता है उस से मुझ को कुछ बड़ा समझे॥ ७। और जिस्तें मैं प्रकाशों की अधिकाई से अभिमानी न हो जाऊं इस लिये शरीर में एक कांटा मानो मुझे घूसे मारने को शैतान का एक दूत मुझे दिया गया कि मैं अभिमानी न हो जाऊं॥ ८। इस बात पर मैं ने प्रभु से तीन बार विन्ती किई कि मुझ से यह दूर किया जाय॥ ९। और उस ने मुझ से कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिये बस है क्योंकि मेरा सामर्थ्य दुर्ब्बलता में सिद्ध होता है. सो मैं अति आनन्द से अपनी दुर्ब्बलताओं ही के

विषय में बड़ाई करूंगा कि खीष्ट का सामर्थ्य मुझ पर आ बसे ॥ १० । इस कारण मैं खीष्ट के लिये दुर्बलताओं से औ निन्दाओं से औ दरिद्रता से औ उपद्रवों से औ सकटों से प्रसन्न हूं क्योंकि जब मैं दुर्बल हूं तब बलवन्त हूं ॥

११ । मैं बड़ाई करने में मूर्ख बना हूं तुम ने मुझ से ऐसा करवाया है . उचित था कि मेरी प्रशंसा तुम्हों से किई जाती क्योंकि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूं तौभी उन अत्यन्त बड़े प्रेरितों से किसी बात में घट नहीं था ॥ १२ । प्रेरित के लक्षण तुम्हारे बीच में सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों औ अद्भुत कामों औ आश्चर्य्य कर्म्मों से दिखाये गये ॥ १३ । कौन सी बात थी जिस में तुम और और मण्डलियों से घट थे केवल यह कि मैं ने आप ही तुम पर भार नहीं दिया . मेरी यह अनीति क्षमा कीजियो ॥ १४ । देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं और मैं तुम पर भार न दूंगा क्योंकि मैं तुम्हारी संपत्ति को नहीं पर तुम ही को चाहता हूं क्योंकि उचित नहीं है कि लड़के माता पिता के लिये पर माता पिता लड़कों के लिये संचय करें ॥ १५ । परन्तु यद्यपि मैं जितना तुम्हें अधिक प्यार करता हूं उतना थोड़ा प्यारा हूं तौभी मैं अति आनन्द से तुम्हारे प्राणों के लिये खर्च करूंगा और खर्च किया जाऊंगा ॥

१६ । सो ऐसा होय मैं ने तुम पर बोझ नहीं डाला . तौभी [कहते हैं कि] मैं ने चतुर होके तुम्हें छल से पकड़ा ॥ १७ । क्या जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास भेजा उन में से किसी को कह सकते कि इस के द्वारा से मैं ने लोभ कर कुछ तुम से लिया ॥ १८ । मैं ने तीतस से बिन्ती किई और भाई को उस के संग भेजा . क्या तीतस ने लोभ कर कुछ तुम से लिया . क्या हम एक ही आत्मा से न चले . क्या एक ही लीक पर न चले ॥

१९ । फिर क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे साम्ने अपना उत्तर देते हैं . हम तो ईश्वर के साम्ने खीष्ट में बोलते हैं पर हे प्यारो सब बातें तुम्हारे सुधारने के लिये बोलते हैं ॥ २० । क्योंकि मैं डरता हूं ऐसा न हो कि क्या जानें मैं आके तुम्हें न ऐसे पाऊं जैसे मैं चाहता हूं और मैं तुम से ऐसा पाया जाऊं जैसा तुम नहीं चाहते हो . कि क्या जानें नाना भांति के बैर डाह क्रोध विवाद दुर्बचन फुसफुसाहट अभिमान और बखेड़े होवें ॥ २१ । और मेरा ईश्वर कहीं मुझे फिर आने पर तुम्हारे यहां हेठा करे और मैं उन्हों में से बहुतों के लिये शोक करूं जिन्हों ने आगे पाप किया था और उस अशुद्ध कर्म्म और व्यभिचार और लुचपन से जो उन्हों ने किये थे पश्चात्ताप नहीं किया है ॥

१३.

यह तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूं . दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जायगी ॥ २ । मैं पहिले कह चुका और जैसा तुम्हारे साम्ने दूसरी बेर आगे से कहता हूं और तुम्हारी पीठ के पीछे उन लोगों के पास जिन्हों ने आगे पाप किया था और और सब लोगों के पास अब लिखता हूं कि जो मैं फिर तुम्हारे पास आऊं तो नहीं छोड़ूंगा ॥ ३ । तुम तो खीष्ट के मुझ में बोलने का प्रमाण ढूंढ़ते हो जो तुम्हारी ओर दुर्बल नहीं है परन्तु तुम्हों में सामर्थी है ॥ ४ । क्योंकि यद्यपि वह दुर्बलता से क्रूश पर घात किया गया तौभी ईश्वर के सामर्थ्य से जीता है . हम भी उस में दुर्बल हैं परन्तु तुम्हारी ओर ईश्वर के सामर्थ्य से उस के संग जीयेंगे ॥ ५ । अपने को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं अपने को जांचो . अथवा क्या तुम अपने को नहीं पहचानते हो कि यीशु खीष्ट तुम्हों में है नहीं तो तुम निकृष्ट हो ॥ ६ । पर मेरा भरोसा है कि तुम जानोगे कि हम निकृष्ट नहीं हैं ॥ ७ । परन्तु मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि तुम कोई कुकर्म्म न करो इस लिये नहीं कि हम खरे देख पड़ें परन्तु इस लिये कि तुम सुकर्म्म करो . हम बरन निकृष्ट के ऐसे होवें तो होवें ॥ ८ । क्योंकि हम सत्य के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सत्य के निमित्त ॥ ९ । जब हम दुर्बल हैं पर तुम बलवन्त हो तब हम आनन्द करते हैं और हम इस बात की प्रार्थना

भी करते हैं अर्थात् तुम्हारे सिद्ध होने की ॥ १० । इस कारण मैं तुम्हारे पीछे यह बातें लिखता हूं कि तुम्हारे साम्ने मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने नाश करने के लिये नहीं परन्तु सुधारने के लिये मुझे दिया है कड़ाई से कुछ करना न पड़े ॥

११। अन्त में हे भाइयो यह कहता हूं कि आनन्दित रहो सुधर जाओ शांत होओ एक ही मन रखो मिले रहो और प्रेम औ शांति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा ॥ १२। एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो ॥ १३। सब पवित्र लोगों का तुम से नमस्कार ॥ १४। प्रभु योशु खीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति तुम सभों के साथ रहे। आमीन ॥

गलातियों को पावल प्रेरित की पत्री।

---

१. पावल जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा से परन्तु योशु खीष्ट के द्वारा से और ईश्वर पिता के द्वारा से जिस ने उस को मृतकों में से उठाया प्रेरित है ॥ २। और सब भाई लोग जो मेरे संग हैं गलातिया की मण्डलियों को ॥ ३। तुम्हें अनुग्रह और शांति ईश्वर पिता और हमारे प्रभु योशु खीष्ट से मिले ॥ ४। जिस ने अपने को हमारे पापों के लिये दिया कि हमें इस वर्तमान बुरे संसार से बचावे हमारे पिता ईश्वर की इच्छा के अनुसार ॥ ५। जिस का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होवे . आमीन ॥

६। मैं अचंभा करता हूं कि जिस ने तुम्हें खीष्ट के अनुग्रह के द्वारा बुलाया उस से तुम ऐसे शीघ्र और ही सुसमाचार की ओर फिरे जाते हो ॥ ७। और वह तो दूसरा सुसमाचार नहीं है पर केवल कितने लोग हैं जो तुम्हें व्याकुल करते हैं और खीष्ट के सुसमाचार को बदल डालने चाहते हैं ॥ ८। परन्तु यदि हम भी अथवा स्वर्ग से एक दूत भी उस सुसमाचार से भिन्न जो हम ने तुम को सुनाया दूसरा सुसमाचार तुम्हें सुनावे तो सापित होवे ॥ ९। जैसा हम ने पहिले कहा है तैसा मैं अब भी फिर कहता हूं कि जिस को तुम ने ग्रहण किया उस से भिन्न यदि कोई तुम्हें दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो सापित होवे ॥ १०। क्योंकि मैं अब क्या मनुष्यों को अथवा ईश्वर को मनाता हूं . अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने चाहता हूं . जो मैं अब भी मनुष्यों को प्रसन्न करता तो खीष्ट का दास न होता ॥

११। हे भाइयो मैं उस सुसमाचार के विषय में जो मैं ने प्रचार किया तुम्हें जनाता हूं कि वह मनुष्य के मत के अनुसार नहीं है ॥ १२। क्योंकि मैं ने भी उस को मनुष्य की ओर से नहीं पाया और न मैं सिखाया गया परन्तु योशु खीष्ट के प्रकाश करने के द्वारा से पाया ॥

१३। क्योंकि यिहूदीय मत में मेरी जैसी चाल चलन आगे थी सो तुम ने सुनी है कि मैं ईश्वर की मंडली को अत्यन्त सताता था और उसे नाश करता था ॥ १४। और अपने देश के बहुत लोगों से जो मेरी वयस के थे यिहूदीय मत में अधिक बढ़ गया कि मैं अपने पुर्खों के व्यवहारों के विषय में बहुत अधिक धुन लगाये था ॥ १५। परन्तु ईश्वर की जिस ने मुझे मेरी माता के गर्भ ही से अलग किया और अपने अनुग्रह से बुलाया जब इच्छा हुई ॥ १६। कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे जिस्तें मैं अन्यदेशियों में उस का सुसमाचार प्रचार करूं

तब तुरन्त मैं ने मांस और लोहू के संग परामर्श न किया ॥ १७ । और न यिरूशलीम को उन के पास गया जो मेरे आगे प्रेरित थे परन्तु अरब देश को चला गया और फिर दमेसक को लौटा । १८ । तब तीन बरस के पीछे मैं पितर से भेंट करने को यिरूशलीम गया और उस के यहां पन्द्रह दिन रहा ॥ १९ । परन्तु प्रेरितों में से मैं ने और किसी को नहीं देखा केवल प्रभु के भाई याकूब को ॥ २० । मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं देखो ईश्वर के साम्ने मैं कहता हूं कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं ॥ २१ । तिस के पीछे मैं सुरिया और किलिकिया देशों में गया ॥ २२ । पर यिहूदिया की मण्डलियों को सो खीष्ट में थीं मेरे रूप का परिचय नहीं हुआ था ॥ २३ । वे केवल सुनते थे कि जो हमें आगे सताता था सो जिस बिश्वास को आगे नाश करता था उसी का अब सुसमाचार प्रचार करता है ॥ २४ । और मेरे विषय में उन्हों ने ईश्वर का गुणानुवाद किया ॥

२. तब चौदह बरस के पीछे मैं बर्णबा के साथ फिर यिरूशलीमं को गया और तीतस को भी अपने संग ले गया ॥ २ । मैं प्रकाश के अनुसार गया और जो सुसमाचार मैं अन्यदेशियों में प्रचार करता हूं उस को मैं ने उन्हें सुनाया पर जो बड़े समझे जाते थे उन्हें एकान्त में सुनाया जिस्तें न हो कि मैं किसी रीति से वृथा दौड़ता हूं अथवा दौड़ा था ॥ ३ । परन्तु तीतस भी जो मेरे संग था यद्यपि यूनानी था तौभी उस के खतना किये जाने की आज्ञा न दिई गई ॥ ४ । और यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से भीतर ले लिये गये थे और हमें बंध में डालने के लिये हमारी निर्बन्धता को जो खीष्ट यीशु में हमें मिली है देख लेने को छिपके घुस आये थे ॥ ५ । उन के बश में हम एक घड़ी भी अधीन नहीं रहे इस लिये कि सुसमाचार की सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे ॥ ६ । फिर जो लोग कुछ बड़े समझे जाते थे वे जैसे थे तैसे थे मुझे कुछ काम नहीं ईश्वर किसी मनुष्य का पक्षपात नहीं करता है उन से मैं ने कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग बड़े समझे जाते थे उन्हों ने मुझे कुछ नहीं बताया ॥ ७ । परन्तु इस के बिरुद्ध जब याकूब और कैफा और योहन ने जो खंभे समझे जाते थे देखा कि जैसा खतना किये हुओं के लिये सुसमाचार पितर को सौंपा गया तैसा खतनाहीनों के लिये मुझे सौंपा गया ॥ ८ । क्योंकि जिस ने पितर से खतना किये हुओं में की प्रेरिताई का कार्य्य करवाया तिस ने मुझ से भी अन्यदेशियों में कार्य्य करवाया ॥ ९ । और जब उन्हों ने उस अनुग्रह को जो मुझे दिया गया था जान लिया तब उन्हों ने मुझ को और बर्णबा को संगति के दहिने हाथ दिये इस कारण कि हम अन्यदेशियों के पास और वे आप खतना किये हुओं के पास जावें ॥ १० । केवल यह चाहा कि हम कंगालों की सुध लेवें और यही काम करने में मैं ने तो यत्न भी किया ॥

११ । परन्तु जब पितर अन्तैखिया में आया तब मैं ने साक्षात उस का साम्ना किया इस लिये कि दोषी ठहराया गया था ॥ १२ । क्योंकि कितने लोगों के याकूब के पास से आने के पहिले वह अन्यदेशियों के साथ खाता था परन्तु जब वे आये तब खतना किये हुए लोगों के डर के मारे हटके अपने को अलग रखता था ॥ १३ । और उस के संग दूसरे यिहूदियों ने भी कपट किया यहां लों कि बर्णबा भी उन के कपट से बहकाया गया ॥ १४ । परन्तु जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधे नहीं चलते हैं तब मैं ने सभों के साम्ने पितर से कहा कि जो तू यिहूदी होके अन्यदेशियों की रीति पर चलता है और यिहूदीय मत पर नहीं तो तू अन्यदेशियों को यिहूदीय मत पर क्यों चलाता है ॥ १५ । हम तो जन्म के यिहूदी हैं और अन्यदेशियों में के पापी लोग नहीं ॥ १६ । यह जानके कि मनुष्य व्यवस्था के कर्म्मों से नहीं पर केवल यीशु खीष्ट के बिश्वास के द्वारा से धर्म्मी ठहराया जाता है हम ने भी खीष्ट यीशु पर बिश्वास किया कि हम व्यवस्था के कर्म्मों से नहीं पर खीष्ट के बिश्वास से धर्म्मी ठहरें इस कारण कि व्यवस्था के कर्म्मों से

कोई प्राणी धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा ॥ १७। परन्तु यदि खीष्ट में धर्म्मी ठहराये जाने का यत्न करने से हम आप भी पापी ठहरे तो क्या खीष्ट पाप का सेवक है . ऐसा न हो ॥ १८। क्योंकि जो वस्तु मैं ने गिराई थी यदि उसी को फिर बनाता हूं तो अपने पर प्रमाण देता हूं कि अपराधी हूं ॥ १९। मैं तो व्यवस्था के द्वारा से व्यवस्था के लिये मरा कि ईश्वर के लिये जीऊं ॥ २०। मैं खीष्ट के संग क्रूश पर चढ़ाया गया हूं तौभी जीता हूं . अब तो मैं आप नहीं पर खीष्ट मुझ में जीता है और मैं शरीर में अब जो जीता हूं सो ईश्वर के पुत्र के विश्वास से जीता हूं जिस ने मुझे प्यार किया और मेरे लिये अपने को सौंप दिया ॥ २१। मैं ईश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करता हूं क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा से धर्म्म होता है तो खीष्ट अकारण मूआ ॥

३. हे निर्बुद्धि गलातियो किस ने तुम्हें मोह लिया है कि तुम लोग सत्य को न मानो जिन के आगे यीशु खीष्ट क्रूश पर चढ़ाया हुआ साक्षात तुम्हारे बीच में प्रगट किया गया ॥ २। मैं तुम से केवल यही सुनने चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कर्म्मों के हेतु से अथवा विश्वास के समाचार के हेतु से पाया ॥ ३। क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो . क्या आत्मा से आरंभ करके तुम अब शरीर से सिद्ध किये जाते हो ॥ ४। क्या तुम ने इतना दुःख वृथा उठाया . जो ऐसा ठहरे कि वृथा ही उठाया ॥

५। जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम्हों में आश्चर्य्य कर्म्म करवाता है सो क्या व्यवस्था के कर्म्मों के हेतु से अथवा विश्वास के समाचार के हेतु से ऐसा करता है ॥ ६। जैसे इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया ॥ ७। सो यह जानो कि जो विश्वास के अवलम्बी हैं सोई इब्राहीम के सन्तान हैं ॥ ८। फिर ईश्वर जो विश्वास से अन्यदेशियों को धर्म्मी ठहराता है यह बात आगे से देखके धर्म्मपुस्तक ने इब्राहीम को आगे से सुसमाचार सुनाया कि तुझ में सब देशों के लोग आशीस पावेंगे ॥ ९। सो वे जो विश्वास के अवलम्बी हैं विश्वासी इब्राहीम के संग आशीस पाते हैं ॥

१०। क्योंकि जितने लोग व्यवस्था के कर्म्मों के अवलम्बी हैं वे सब स्रापवश हैं क्योंकि लिखा है हर एक जन जो व्यवस्था के पुस्तक में लिखी हुई सब बातें पालन करने को उन में बना नहीं रहता है स्रापित है ॥ ११। परन्तु व्यवस्था के द्वारा से ईश्वर के यहां कोई नहीं धर्म्मी ठहरता है यह बात प्रगट है क्योंकि विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा ॥ १२। पर व्यवस्था विश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य यह बातें पालन करे सो उन से जीयेगा ॥ १३। खीष्ट ने दाम देके हमें व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया कि वह हमारे लिये स्रापित बना क्योंकि लिखा है हर एक जन जो काठ पर लटकाया जाता है स्रापित है ॥ १४। यह इस लिये हुआ कि इब्राहीम की आशीष खीष्ट यीशु में अन्यदेशियों पर पहुंचे और कि जो कुछ आत्मा के विषय में प्रतिज्ञा किया गया सो विश्वास के द्वारा से हमें मिले ॥

१५। हे भाइयो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि मनुष्य के नियम को भी जो दृढ़ किया गया है कोई टाल नहीं देता है और न उस में मिला देता है ॥ १६। फिर प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उस के वंश को दिई गईं . वह नहीं कहता है वंशों को जैसे बहुतों के विषय में परन्तु जैसे एक के विषय में और तेरे वंश को . सोई खीष्ट है ॥ १७। पर मैं यह कहता हूं कि जो नियम ईश्वर ने खीष्ट के लिये आगे से दृढ़ किया था उस को व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि प्रतिज्ञा को व्यर्थ कर दे ॥ १८। क्योंकि यदि अधिकार व्यवस्था से होता है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं है . परन्तु ईश्वर ने उसे इब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा से दिया है ॥

१९। तो व्यवस्था क्या करती है . जब लों वह वंश जिस को प्रतिज्ञा दिई गई थी न आया तब लों अपराधों के कारण वह भी दिई गई और वह दूतों के द्वारा मध्यस्थ के हाथ में निरूपण किई

गई ॥ २० । मध्यस्थ एक का नहीं होता है परन्तु ईश्वर एक है ॥ २१ । तो क्या व्यवस्था ईश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है . ऐसा न हो क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दिई जाती कि जिलाने सकती तो निश्चय करके धर्म्म व्यवस्था से होता ॥ २२ । परन्तु धर्म्मपुस्तक ने सभों को पाप तले बन्द कर रखा इस लिये कि यीशु खीष्ट के विश्वास का फल जिस की प्रतिज्ञा किई गई विश्वास करनेहारों को दिया जावे ॥ २३ । परन्तु विश्वास के आने के पहिले हम विश्वास के लिये जो प्रगट होने पर था व्यवस्था के पहरे में बन्द किये हुए रहते थे ॥ २४ । सो व्यवस्था हमारी शिक्षक हुई है कि खीष्ट लों पहुंचावे जिस्तें हम विश्वास से धर्म्मी ठहराये जावें ॥

२५ । परन्तु विश्वास जो आ चुका है तो अब हम शिक्षक के वश मे नहीं हैं ॥ २६ । क्योंकि खीष्ट यीशु पर विश्वास करने के द्वारा से तुम सब ईश्वर के सन्तान हो ॥ २७ । क्योंकि जितनों ने खीष्ट में वपतिसमा लिया उन्हों ने खीष्ट को पहिन लिया ॥ २८ । उस में न यिहूदी न यूनानी है उस में न दास न निर्बंध है उस मे नर औ नारी नहीं है क्योंकि तुम सब खीष्ट यीशु मे एक हो ॥ २९ । पर जो तुम खीष्ट के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार अधिकारी हो ॥

४. पर मै कहता हूं कि अधिकारी जब लों बालक है तब लों यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है तौभी दास से कुछ भिन्न नहीं है ॥ २ । परन्तु पिता के ठहराये हुए समय लों रक्षकों और भण्डारियों के वश में है ॥ ३ । वैसे ही हम भी जब बालक थे तब संसार की आदिशिक्षा के वश से दास बने हुए थे ॥ ४ । परन्तु जब समय की पूर्णता पहुंची तब ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के वश में उत्पन्न हुआ ॥ ५ । इस लिये कि दाम देके उन्हें जो व्यवस्था के वश मे है छुड़ावे जिस्तें लेपालकों का पद हमें मिले ॥ ६ । और तुम जो पुत्र हो इस कारण ईश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो हे अब्बा अर्थात् हे पिता पुकारता है तुम्हारे हृदय में भेजा है ॥ ७ । सो तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और यदि पुत्र है तो खीष्ट के द्वारा से ईश्वर का अधिकारी भी है ॥

८ । भला तब तो तुम ईश्वर को न जानके उन्हों के दास थे जो स्वभाव से ईश्वर नहीं हैं ॥ ९ । परन्तु अब तुम ईश्वर को जानके पर और भी ईश्वर से जाने जाके क्योंकर फिर उस दुर्ब्बल और फल-हीन आदिशिक्षा की ओर मुंह फेरते हो जिस के तुम फिर नये सिर से दास हुआ चाहते हो ॥ १० । तुम दिनों औ मासों औ समयों औ बरसों को मानते हो ॥ ११ । मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं कि क्या जानें मैं ने वृथा तुम्हारे लिये परिश्रम किया है ॥ १२ । हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मै भी तुम्हारे समान हुआ हूं . तुम से मेरी कुछ हानि नहीं हुई ॥ १३ । पर तुम जानते हो कि पहिले मैं ने शरीर की दुर्ब्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया ॥ १४ । और मेरी परीक्षा को जो मेरे शरीर मे थी तुम ने तुच्छ नहीं जाना न घिन्न किया परन्तु जैसे ईश्वर के दूत को जैसे खीष्ट यीशु को तैसे ही मुझ को ग्रहण किया ॥ १५ । तो वह तुम्हारी धन्यता कैसी थी . क्योंकि मैं तुम्हारा साक्षी हूं कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी आंखें निकालके मुझ को देते ॥ १६ । सो क्या तुम से सत्य बोलने से मैं तुम्हारा वैरी हुआ हूं ॥ १७ । वे भली रीति से तुम्हारे अभिलाषी नहीं होते हैं परन्तु तुम्हें निकलवाया चाहते हैं जिस्तें तुम उन के अभिलाषी होओ ॥ १८ । पर अच्छा है कि भली बात में तुम्हारा अभिलाषा जिस समय मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उसी समय किई जाय सो नहीं परन्तु सदा किई जाय ॥ १९ । हे मेरे बालको जिन के लिये जब लों तुम्हों मे खीष्ट का रूप न बन जाय तब लों मैं फिर प्रसव की सी पीड़ उठाता हूं ॥ २० । मै चाहता कि अब तुम्हारे संग होता और अपनी बोली बदलता क्योंकि तुम्हारे विषय मे मुझे सन्देह होता है ॥

२१ । तुम जो व्यवस्था के वश मे हुआ चाहते हो मुझ से कहो क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते

॥ २२ । क्योंकि लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए एक तो दासी से और एक तो निर्बंध स्त्री से ॥ २३ । परन्तु जो दासी से हुआ सो शरीर के अनुसार जन्मा पर जो निर्बंध स्त्री से हुआ सो प्रतिज्ञा के द्वारा से जन्मा ॥ २४। यह बातें दृष्टान्त के लिये कही जाती हैं क्योंकि यह स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीनई पर्व्वत से जो दास होने के लिये लड़के जनता है सोई हाजिरा है ॥ २५ । क्योंकि हाजिरा का अर्थ अरब में सीनई पर्व्वत है और वह यिरूशलीम के तुल्य जो अब है गिनी जाती है और अपने बालकों समेत दासी होती है ॥ २६ । परन्तु ऊपर की यिरूशलीम निर्बंध है और वह हम सभों की माता है ॥ २७ । क्योंकि लिखा है हे बांझ जो नहीं जनती है आनन्दित हो तू जो प्रसव की पीड़ नहीं उठाती है ऊंचे शब्द से पुकार क्योंकि जिस स्त्री का स्वामी है उस के लड़कों से अनाथ के लड़के और भी बहुत हैं ॥ २८ । पर हे भाइयो हम लोग इसहाक की रीति पर प्रतिज्ञा के सन्तान हैं ॥ २९ । परन्तु जैसा उस समय में जो शरीर के अनुसार जन्मा सो उस को जो आत्मा के अनुसार जन्मा सताता था वैसा ही अब भी होता है ॥ ३० । परन्तु धर्म्मपुस्तक क्या कहता है . दासी को और उस के पुत्र को निकाल दे क्योंकि दासी का पुत्र निर्बंध स्त्री के पुत्र के संग अधिकारी न होगा ॥ ३१ । सो हे भाइयो हम दासी के नहीं परन्तु निर्बंध स्त्री के सन्तान हैं ॥

५. सो

उस निर्बंधता में जिस करके खीष्ट में हमें निर्बंध किया है दृढ़ रहो और दासत्व के जूए में फिर मत जोते जाओ ॥ २ । देखो मैं पावल तुम से कहता हूं कि जो तुम्हारा खतना किया जाय तो खीष्ट से तुम्हें कुछ लाभ न होगा ॥ ३ । फिर भी मैं साक्षी देता हर एक मनुष्य से जिस का खतना किया जाता है कहता हूं कि सारी व्यवस्था को पूरी करना उस को अवश्य है ॥ ४ । तुम में से जो जो व्यवस्था के अनुसार धर्म्मी ठहराये जाते हो सो खीष्ट से भ्रष्ट हुए हो . तुम अनुग्रह से पतित हुए हो ॥ ५ । क्योंकि पवित्र आत्मा से हम लोग विश्वास से धर्म्म की आशा की बाट जोहते हैं ॥ ६ । क्योंकि खीष्ट यीशु में न खतना न खतनाहीन होना कुछ काम आता है परन्तु विश्वास जो प्रेम के द्वारा से कार्य्यकारी होता है ॥

७ । तुम भली रीति से दौड़ते थे . किस ने तुम्हें रोका कि सत्य को न मानो ॥ ८ । यह मनावना तुम्हारे बुलानेहारे की ओर से नहीं है ॥ ९ । थोड़ा सा खमीर सारे पिण्ड को खमीर कर डालता है ॥ १० । मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारी कोई दूसरी मति न होगी पर जो तुम्हें व्याकुल करता है कोई हो वह इस का दण्ड भोगेगा ॥ ११ । पर हे भाइयो जो मैं अब भी खतने का उपदेश करता हूं तो क्यों फिर सताया जाता हूं . तब क्रूश की ठोकर तो जाती रही ॥ १२ । मैं चाहता हूं कि जो तुम्हें गड़बड़ाते हैं सो अपने हो को काट डालते ॥

१३ । क्योंकि हे भाइयो तुम लोग निर्बंध होने को बुलाये गये केवल इस निर्बंधता से शरीर के लिये गौं मत पकड़ो परन्तु प्रेम से एक दूसरे के दास बनो ॥ १४ । क्योंकि सारी व्यवस्था एक ही बात में पूरी होती है अर्थात् इस में कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर ॥ १५ । परन्तु जो तुम एक दूसरे को दांत से काटो औ खा जाओ तो चौकस रहो कि एक दूसरे से नाश न किये जाओ ॥ १६ । पर मैं कहता हूं आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे ॥ १७ । क्योंकि शरीर की लालसा आत्मा के विरुद्ध और आत्मा की शरीर के विरुद्ध होती है और ये दोनों परस्पर विरोध करते हैं इस लिये कि तुम जो करने चाहो उसे करने न पाओ ॥ १८ । परन्तु जो तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के वश में नहीं हो ॥ १९ । शरीर के कर्म्म प्रगट हैं सो ये हैं परस्त्रीगमन व्यभिचार अशुद्धता लुचपन ॥ २० । मूर्त्तिपूजा टोना औ नाना भांति की शत्रुता बैर ईर्षा क्रोध विवाद विरोध कुपंथ ॥ २१ । डाह नरहिंसा मतवालपन औ लीला क्रीड़ा और

इन के ऐसे और और कर्म्म . इन के विषय में मैं तुम को आगे से कहता हू जैसा मैं ने आगे भी कहा था कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे ॥ २१ । परन्तु आत्मा का फल यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कृपा भलाई विश्वास नम्रता औ संयम ॥ २३ । कोई व्यवस्था ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध नहीं है ॥ २४ । जो खीष्ट के लोग हैं उन्हों ने शरीर को उस के रागों और अभिलाषों समेत क्रूश पर चढ़ाया है॥ २५। जो हम आत्मा के अनुसार जीते हैं तो आत्मा के अनुसार चलें भी ॥ २६ । हम घमण्डी न हो जावें जो एक दूसरे को छेड़ें और एक दूसरे से डाह करें ॥

६. हे भाइयो यदि मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जावे तौभी तुम जो आत्मिक हो नम्रता संयुक्त आत्मा से ऐसे मनुष्य को सुधारो और तू अपने को देख रख कि तू भी परीक्षा मे न पड़े ॥ २ । एक दूसरे के भार उठाओ और इस रीति से खीष्ट की व्यवस्था को पूरी करो ॥ ३ । क्योंकि यदि कोई जो कुछ नही है समझता है कि मैं कुछ हूं तो अपने को धोखा देता है ॥ ४ । परन्तु हर एक जन अपने काम को जांचे और तब दूसरे के विषय में नहीं पर केवल अपने विषय में उस को बड़ाई करने की जगह होगी ॥ ५ । क्योंकि हर एक जन अपना ही बोझ उठावेगा ॥ ६ । जो वचन की शिक्षा पाता है सो समस्त अच्छी वस्तुओ मे सिखानेहारे की सहायता करे ॥ ७ । धोखा मत खाओ ईश्वर से ठट्ठा नहीं किया जाता है क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है उस को लवेगा भी ॥ ८ । क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है सो शरीर से विनाश लवेगा परन्तु जो आत्मा के लिये बोता है सो आत्मा से अनन्त जीवन लवेगा ॥ ९ । पर सुकर्म्म करने में हम कातर न होवें क्योंकि जो हमारा बल न घटे तो ठीक समय में लवेंगे ॥ १० । इस लिये जैसा हमें अवसर मिलता है हम सब लोगों से पर निज करके विश्वास के घराने से भलाई करें ॥

११ । देखो मैं ने कैसी बड़ी पत्री तुम्हारे पास अपने हाथ से लिखी है ॥ १२ । जितने लोग शरीर में अच्छा रूप दिखाने चाहते हैं वे ही तुम्हारे खतना किये जाने की दृढ़ आज्ञा देते हैं केवल इसी लिये कि वे खीष्ट के क्रूश के कारण सताये न जावें ॥ १३ । क्योंकि वे भी जिन का खतना किया जाता है आप व्यवस्था को पालन नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारे खतना किये जाने की इच्छा इस लिये करते हैं कि तुम्हारे शरीर के विषय में बड़ाई करें ॥ १४ । पर मुझ से ऐसा न होवे कि किसी और बात के विषय मे बड़ाई करूं केवल हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के क्रूश के विषय मे जिस के द्वारा से जगत मेरे लेखे क्रूश पर चढ़ाया गया है और मैं जगत के लेखे ॥ १५ । क्योंकि खीष्ट यीशु मे न खतना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई सृष्टि ॥ १६ । और जितने लोग इस विधि से चलेंगे उन्हों पर और ईश्वर के इस्रायेली लोग पर कल्याण और दया होवे ॥ १७ । अब तो कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं प्रभु यीशु के चिन्ह अपने देह मे लिये फिरता हू ॥ १८ । हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे । आमीन ॥

इफिसियों को पावल प्रेरित की पत्री।

---

१. पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है उन पवित्र और खीष्ट यीशु में विश्वासी लोगों को जो इफिस मे हैं ॥ २। तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३। हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने खीष्ट में हमों को स्वर्गीय स्थानों मे सब प्रकार की आत्मिक आशीस से आशीस दिई है ॥ ४। जैसा उस ने उस में जगत की उत्पत्ति के आगे हमें चुन लिया कि हम प्रेम से उस के सन्मुख पवित्र औ निर्दोष होवें ॥ ५। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें आगे से ठहराया कि यीशु खीष्ट के द्वारा से हम उस के लेपालक होवें ॥ ६। इस लिये कि उस के अनुग्रह की महिमा की स्तुति किई जाय जिस करके उस ने हमें उस प्यारे में अनुग्रह पात्र किया ॥ ७। जिस में उस के लोहू के द्वारा से हमें उद्धार अर्थात् अपराधों का मोचन ईश्वर के अनुग्रह के धन के अनुसार मिलता है ॥ ८। और उस ने समस्त ज्ञान औ बुद्धि सहित हम पर यह अनुग्रह अधिकाई से किया ॥ ९। कि उस ने अपनी इच्छा का भेद अपनी उस सुमति के अनुसार हमें बताया जो उस ने समयों की पूर्णता का कार्य्य निवाहने निमित्त अपने में ठानी थी ॥ १०। अर्थात् कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथिवी पर है सब कुछ वह खीष्ट में संग्रह करेगा ॥ ११। हां उसी में जिस में हम उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कार्य्य करता है आगे से ठहराये जाके अधिकार के लिये चुने गये भी ॥ १२। इस लिये कि उस की महिमा की स्तुति हमारे द्वारा से किई जाय जिन्हों ने आगे खीष्ट पर भरोसा रखा था ॥ १३। जिस पर तुम ने भी सत्यता का वचन अर्थात् अपने त्राण का सुसमाचार सुनके भरोसा रखा और जिस मे तुम ने विश्वास करके प्रतिज्ञा के आत्मा अर्थात् पवित्र आत्मा की छाप भी पाई ॥ १४। जो मोल लिये हुओं के उद्धार लों हमारे अधिकार का बयाना है इस कारण कि ईश्वर की महिमा की स्तुति किई जाय ॥

१५। इस कारण से मैं भी प्रभु यीशु पर जो विश्वास और सब पवित्र लोगों से जो प्रेम तुम्हों में हैं इन का समाचार सुनके ॥ १६। तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छोड़ता हूं और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करता हूं ॥ १७। कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का ईश्वर जो तेजस्वी पिता है तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान औ प्रकाश का आत्मा देवे ॥ १८। और तुम्हारे मन के नेत्र प्रकाशित होवें जिस्तें तुम जानो कि उस की बुलाहट की आशा क्या है और पवित्र लोगों में उस के अधिकार की महिमा का धन क्या है ॥ १९। और हमारी ओर जो विश्वास करते हैं उस के सामर्थ्य की अत्यन्त अधिकाई क्या है ॥ २०। सोई उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य्य के अनुसार है जो उस ने खीष्ट के विषय में किया कि उस को मृतकों में से उठाया ॥ २१। और स्वर्गीय स्थानों में समस्त प्रधानता और अधिकार और पराक्रम और प्रभुता के ऊपर और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में परन्तु परलोक में भी लिया जाता है अपने दहिने हाथ बैठाया ॥ २२। और सब कुछ उस के चरणों के नीचे अधीन किया और उसे मण्डली को सब वस्तुओं पर सिर बना करके दिया ॥ २३। जो मण्डली उस का देह है अर्थात् उस की जो सभों मे सब कुछ भरता है भरपूरी है ॥

२. तुम्हें भी ईश्वर ने जिलाया जो अपराधों और पापों के कारण मृतक थे ॥ २। जिन पापों में तुम आगे इस संसार की

रीति के अनुसार हां आकाश के अधिकार के अर्थात् उस आत्मा के अध्यक्ष के अनुसार चले जो आत्मा अब भी आज्ञा लंघन करनेहारों से कार्य्य करवाता है ॥ ३ । जिन के बीच मे हम सब भी आगे शरीर और भावनाओं की इच्छाएं पूरी करते हुए अपने शरीर के अभिलाषों की चाल चले और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध के सन्तान थे ॥ ४ । परन्तु ईश्वर ने जो दया के धन का धनी है अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस करके उस ने हम से प्रेम किया ॥ ५ । जब हम अपराधों के कारण मृतक थे तब ही हमें खीष्ट के संग जिलाया कि अनुग्रह से तुम्हारा त्राण हुआ है ॥ ६ । और संग ही उठाया और खीष्ट यीशु में संग ही स्वर्गीय स्थानों में बैठाया ॥ ७ । इस लिये कि खीष्ट यीशु में हम पर कृपा करने में वह आनेहारे समयों में अपने अनुग्रह का अत्यन्त धन दिखावे ॥ ८ । क्योंकि अनुग्रह से विश्वास के द्वारा तुम्हारा त्राण हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं हुआ ईश्वर का दान है ॥ ९ । यह कर्म्मों से नहीं हुआ न हो कि कोई घमंड करे ॥ १० । क्योंकि हम उस के बनाये हुए हैं जो खीष्ट यीशु में अच्छे कर्म्मों के लिये सृजे गये जिन्हें ईश्वर ने आगे से ठहराया कि हम उन में चलें ॥

११ । इस लिये स्मरण करो कि पूर्व्व समय में तुम जो शरीर में अन्यदेशी हो और जो लोग शरीर में हाथ के किये हुए खतने से खतनावाले कहावते हैं उन से खतनाहीन कहे जाते हो ॥ १२ । तुम लोग उस समय मे खीष्ट से अलग थे और इस्रायेल की प्रजा के पद से नियारे किये हुए थे और प्रतिज्ञा के नियमों के भागी न थे और जगत में आशाहीन और ईश्वररहित थे ॥ १३ । पर अब तो खीष्ट यीशु में तुम जो आगे दूर थे खीष्ट के लोहू के द्वारा निकट किये गये हो ॥ १४ । क्योंकि वही हमारा मिलाप है जिस ने दोनों को एक किया और रुकाव की बिचली भीत्ति गिराई ॥ १५ । और विधि संबन्धी आज्ञाओं की व्यवस्था को लोप करके अपने शरीर में शत्रुता मिटा दिई जिस्तें वह अपने में दो से एक नया पुरुष उत्पन्न करके मिलाप करे ॥ १६ । और शत्रुता को क्रूश पर नाश करके उस क्रूश के द्वारा दोनों को एक देह में ईश्वर से मिलावे ॥ १७ । और उस ने आके तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे मिलाप का सुसमाचार सुनाया ॥ १८ । क्योंकि उस के द्वारा हम दोनों को एक आत्मा में पिता के पास पहुंचने का अधिकार मिलता है ॥ १९ । इस लिये तुम अब ऊपरी और विदेशी नहीं हो परन्तु पवित्र लोगों के संगी पुरबासी और ईश्वर के घराने के हो ॥ २० । और प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर निर्माण किये गये हो जिस के कोने का पत्थर यीशु खीष्ट आप ही है ॥ २१ । जिस में सारी रचना एक संग जुटके प्रभु में पवित्र मन्दिर बनती जाती है ॥ २२ । जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा ईश्वर का बासा होने को एक संग निर्माण किये जाते हो ॥

३. इसी के कारण मैं पावल जो तुम अन्यदेशियों के लिये खीष्ट यीशु के कारण बंधुआ हूं ॥ २ । जो कि ईश्वर का जो अनुग्रह तुम्हारे लिये मुझे दिया गया उस के भंडारी-पन का समाचार तुम ने सुना ॥ ३ । अर्थात् कि प्रकाश से उस ने मुझे भेद बताया जैसा मैं आगे संक्षेप करके लिख चुका हूं ॥ ४ । जिस से तुम जब पढ़ो तब खीष्ट के भेद में मेरा ज्ञान बूझ सकते हो ॥ ५ । जो भेद और और समयों में मनुष्यों के सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था जैसा अब वह आत्मा से ईश्वर के पवित्र प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है ॥ ६ । अर्थात् कि खीष्ट में सुसमाचार के द्वारा से अन्यदेशी लोग संगी अधि-कारी और एक ही देह के और ईश्वर की प्रतिज्ञा के सभागी हैं ॥ ७ । और मैं ईश्वर के अनुग्रह के दान के अनुसार जो मुझे उस के सामर्थ्य के कार्य्य के अनुसार दिया गया उस सुसमाचार का सेवक हुआ ॥ ८ । मुझे जो सब पवित्र लोगों में से अति छोटे से भी छोटा हूं यह अनुग्रह दिया गया कि मैं अन्यदेशियों में खीष्ट के अगम्य धन का सुसमाचार प्रचार करूं ॥ ९ । और सभों पर प्रकाशित करूं कि इस भेद का निबाहना क्या है जो ईश्वर में आदि

से गुप्त था जिस ने यीशु खीष्ट के द्वारा सब कुछ सृजा ॥ १० । इस लिये कि अब स्वर्गीय स्थानों में के प्रधानों और अधिकारियों पर मण्डली के द्वारा से ईश्वर की नाना प्रकार की बुद्धि प्रगट किई जाय ॥ ११ । उस सनातन इच्छा के अनुसार जो उस ने खीष्ट यीशु हमारे प्रभु में पूरी किई ॥ १२ । जिस में हमों को साहस और निश्चय से निकट आने का अधिकार उस के विश्वास के द्वारा से मिलते हैं ॥ १३ । इस लिये मैं बिन्ती करता हूं कि जो अनेक क्लेश तुम्हारे लिये मुझे होते हैं इन में कातर न होओ कि यह तुम्हारा आदर है ॥

१४ । मैं इसी के कारण हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता के आगे अपने घुटने टेकता हूं ॥ १५ । जिस से क्या स्वर्ग में क्या पृथिवी पर सारे घराने का नाम रखा जाता है ॥ १६ । कि वह तुम्हें अपनी महिमा के धन के अनुसार यह देवे कि तुम उस के आत्मा के द्वारा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाके बलवन्त होओ ॥ १७ । कि खीष्ट विश्वास के द्वारा से तुम्हारे हृदय में बसे और प्रेम में तुम्हारी जड़ बंधी हुई और नेव डाली हुई होय ॥ १८ । जिस्तें यह चौड़ाई औ लम्बाई औ गहिराई और ऊंचाई क्या है इस को तुम सब पवित्र लोगों के साथ बूझने की शक्ति पावो ॥ १९ । और खीष्ट के प्रेम को जानो जो ज्ञान से ऊर्द्ध है इस लिये कि तुम ईश्वर की सारी पूर्णता लों पूरे किये जावो ॥

२० । उस का जो उस सामर्थ्य के अनुसार जो हमों में कार्य्य करता है सब बातों से अधिक हां हम जो कुछ मांगते अथवा बूझते हैं उस से अत्यन्त अधिक कर सकता है ॥ २१ । उसी का गुणानुवाद खीष्ट यीशु के द्वारा मंडली में पीढ़ी पीढ़ी नित्य सर्व्वदा होवे . आमीन ॥

४. सो मैं जो प्रभु के लिये बंधुआ हूं तुम से बिन्ती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाये गये उस के योग्य चाल चलो ॥ २ । अर्थात् सारी दीनता औ नम्रता सहित और धीरज सहित प्रेम से एक दूसरे की सह लेओ ॥ ३ । और मिलाप के बंध में आत्मा की एकता की रक्षा करने का यत्न करो ॥

४ । जैसे तुम अपनी बुलाहट की एक ही आशा में बुलाये गये तैसे ही एक देह है और एक आत्मा ॥ ५ । एक प्रभु एक विश्वास एक बपतिस्मा ॥ ६ । एक ईश्वर और सभों का पिता जो सभों पर और सभों के मध्य में और तुम सभों में है ॥

७ । परन्तु अनुग्रह हम में से हर एक को खीष्ट के दान के परिमाण से दिया गया ॥ ८ । इस लिये वह कहता है कि वह ऊंचे पर चढ़ा और बंधुओं को बांध ले गया और मनुष्यों को दान दिये ॥ ९ । इस बात का कि चढ़ा क्या अभिप्राय है . यही कि वह पहिले पृथिवी के निचले स्थानों में उतरा भी था ॥ १० । जो उतर गया सोई है जो सब स्वर्गों से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ पूर्ण करे ॥ ११ । और उस ने ये दान दिये अर्थात् जब लों हम सब लोग विश्वास की और ईश्वर के पुत्र के ज्ञान की एकता लों न पहुंचें और एक पूरा मनुष्य न हो जावें और खीष्ट की पूर्णता की डील के परिमाण लों न बढ़ें ॥ १२ । तब लों उस ने पवित्र लोगों की पूर्णता के कारण सेवकाई के कर्म्म के लिये औ खीष्ट के देह के सुधारने के लिये ॥ १३ । कितनों को प्रेरित करके औ कितनों को भविष्यद्वक्ता करके औ कितनों को सुसमाचार प्रचारक करके औ कितनों को रखवाले और उपदेशक करके दिया ॥ १४ । इस लिये कि हम अब बालक न रहें जो मनुष्यों की ठगविद्या के और भ्रम की जुगतें बांधने की चतुराई के द्वारा उपदेश की हर एक बयार से लहराते और इधर उधर फिराये जाते हों ॥ १५ । परन्तु प्रेम में सत्यता से चलते हुए सब बातों में उस के ऐसे बनते जावें जो सिर है अर्थात् खीष्ट ॥ १६ । जिस से सारा देह एक संग जुटके और एक संग गठके हर एक परस्पर उपकारी गांठ के द्वारा से उस कार्य्य के अनुसार जो हर एक अंश के परिमाण से उस में किया जाता है देह को बढ़ाता है कि वह प्रेम में अपने को सुधारे ॥

१७ । सो मैं यह कहता हूं और प्रभु के साक्षात

उपदेश करता हूं कि तुम लोग अब फिर ऐसे न चलो जैसे और और अन्यदेशी लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं ॥ १८। कि उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उन के मन की कठोरता के कारण उन की बुद्धि अंधियारी हुई है और वे ईश्वर के जीवन से नियारे किये हुए हैं ॥ १९। और उन्हों ने खेद रहित होके अपने तईं लुचपन को सौंप दिया है कि सब प्रकार का अशुद्ध कर्म्म लालसा से किया करें ॥ २०। परन्तु तुम ने खीष्ट को इस रीति से नहीं सीख लिया है ॥ २१। जो ऐसा है कि तुम ने उसी की सुनी और उसी में सिखाये गये जैसा यीशु में सच्चाई है ॥ २२। कि अगली चाल चलन के विषय में पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेहारी कामनाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार रखो ॥ २३। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव से नये होते जाओ ॥ २४। और नये मनुष्यत्व को पहिन लेओ जो ईश्वर के समान सत्यानुसारी धर्म्म और पवित्रता में सृजा गया ॥

२५। इस कारण झूठ को दूर करके हर एक अपने पड़ोसी के साथ सत्य बोला करो क्योंकि हम लोग एक दूसरे के अंग हैं ॥ २६। क्रोध करो पर पाप मत करो. सूर्य्य तुम्हारे कोप पर अस्त न होवे ॥ २७। और न शैतान को ठांव देओ ॥ २८। चोरी करनेहारा अब चोरी न करे बरन हाथों से भला कार्य्य करने में परिश्रम करे इस लिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे बांट देने को कुछ उस पास होवे ॥ २९। कोई अशुद्ध वचन तुम्हारे मुंह से न निकले परन्तु जहां जैसा आवश्यक है तहां जो वचन सुधारने के लिये अच्छा हो सोई मुंह से निकले कि उस से सुननेहारों को अनुग्रह मिले ॥ ३०। और ईश्वर के पवित्र आत्मा को जिस से तुम पर उद्धार के दिन के लिये छाप दिई गई उदास मत करो ॥ ३१। सब प्रकार की कड़वाहट औ कोप औ क्रोध औ कलह औ निन्दा समस्त बैरभाव समेत तुम से दूर किई जाय ॥ ३२। और आपस में कृपाल औ करुणामय होओ और जैसे ईश्वर ने खीष्ट में तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी एक दूसरे को क्षमा करो ॥

५. सो प्यारे बालकों की नाईं ईश्वर के अनुगामी होओ ॥ २। और प्रेम में चलो जैसे खीष्ट ने भी हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने को ईश्वर के आगे चढ़ावा और बलिदान करके सुगन्ध की बास के लिये सौंप दिया ॥

३। और जैसा कि पवित्र लोगों के योग्य है तैसा व्यभिचार का और सब प्रकार के अशुद्ध कर्म्म का अथवा लोभ का नाम भी तुम्हों में न लिया जाय ॥ ४। और न निर्लज्जता का न मूढ़ता की बातचीत का अथवा ठट्ठे का नाम कि यह बातें सोहती नहीं परन्तु धन्यवाद ही सुना जाय ॥ ५। क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी को अथवा अशुद्ध जन को अथवा लोभी मनुष्य को जो मूर्त्तिपूजक है खीष्ट और ईश्वर के राज्य में अधिकार नहीं है ॥ ६। कोई तुम्हें अनर्थक बातों से धोखा न देवे क्योंकि इन कर्म्मों के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा-लङ्घन करनेहारों पर पड़ता है ॥ ७। सो तुम उन के संग भागी मत होओ ॥

८। क्योंकि तुम आगे अन्धकार थे पर अब प्रभु में उजियाले हो. ज्योति के सन्तानों की नाईं चलो ॥ ९। क्योंकि सब प्रकार की भलाई औ धर्म्म औ सत्यता में आत्मा का फल होता है ॥ १०। और परखो कि प्रभु को क्या भावता है ॥ ११। और अंधकार के निष्फल कार्य्यों में भागी मत होओ परन्तु और भी उन पर दोष देओ ॥ १२। क्योंकि जो कर्म्म गुप्त में उन से किये जाते हैं उन्हें कहना भी लाज की बात है ॥ १३। परन्तु सब कर्म्म जब उन पर दोष दिया जाता है तब ज्योति से प्रगट किये जाते हैं क्योंकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सो उजियाला होता है ॥ १४। इस कारण वह कहता है हे सोनेहारे जाग और मृतकों में से उठ और खीष्ट तुझे ज्योति देगा ॥

१५। सो चौकस रहो कि तुम क्योंकर यत्न से चलते हो. निर्बुद्धियों की नाईं नहीं परन्तु बुद्धिमानों की नाईं चलो ॥ १६। और अपने लिये समय का लाभ करो क्योंकि ये दिन बुरे हैं ॥ १७। इस कारण

मे अज्ञान मत होओ परन्तु समझते रहो कि प्रभु की इच्छा क्या है ॥ १८। और दाख रस से मतवाले मत होओ जिस में लुचपन होता है परन्तु आत्मा से परिपूर्ण होओ ॥ १९। और गीतों और भजनों और आत्मिक गानों मे एक दूसरे से बातें करो और अपने अपने मन में प्रभु के आगे गान और कीर्त्तन करो ॥ २०। और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम से ईश्वर पिता का धन्य मानो ॥ २१। और ईश्वर के भय से एक दूसरे के अधीन होओ ॥

२२। हे स्त्रियो जैसे प्रभु के तैसे अपने अपने स्वामी के अधीन रहो ॥ २३। क्योंकि जैसा खीष्ट मण्डली का सिर है तैसा पुरुष भी स्त्री का सिर है ॥ २४। वह तो देह का त्राणकर्त्ता है तौभी जैसे मण्डली खीष्ट के अधीन रहती है वैसे स्त्रियां भी हर बात में अपने अपने स्वामी के अधीन रहें ॥ २५। हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्री को ऐसा प्यार करो जैसा खीष्ट ने भी मण्डली को प्यार किया और अपने को उस के लिये सौंप दिया ॥ २६। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर पवित्र करे ॥ २७। जिस्तें वह उसे अपने आगे मर्य्यादिक मण्डली खड़ा करे जिस में कलंक अथवा झुरी अथवा ऐसी कोई वस्तु भी न होवे परन्तु जिस्तें पवित्र औ निर्दोष होवे ॥ २८। यूं ही उचित है कि पुरुष अपनी अपनी स्त्री को अपने अपने देह के समान प्यार करें. जो अपनी स्त्री को प्यार करता है सो अपने को प्यार करता है ॥ २९। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं किया परन्तु उस को ऐसा पालता और पोसता है जैसा प्रभु भी मण्डली को पालता पोसता है ॥ ३०। क्योंकि हम उस के देह के अंग हैं अर्थात् उस के मांस में के और उस की हड्डियों में के हैं ॥ ३१। इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे ॥ ३२। यह भेद बड़ा है परन्तु मैं तो खीष्ट के और मण्डली के विषय में कहता हूं ॥ ३३। पर तुम भी एक एक करके हर एक अपनी अपनी स्त्री को अपने समान प्यार करो और स्त्री को उचित है कि स्वामी का भय माने ॥

६. हे लड़को प्रभु में अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है ॥ २। अपनी माता और पिता का आदर कर कि यह प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा है ॥ ३। जिस्तें तेरा भला हो और तू भूमि पर बहुत दिन जीवे ॥ ४। और हे पिताओ अपने अपने लड़कों से क्रोध मत करवाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा और चितावनी सहित उन का प्रतिपालन करो ॥

५। हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं डरते और कांपते हुए अपने मन की सीधाई से जैसे खीष्ट की तैसे उन की आज्ञा मानो ॥ ६। और मनुष्यों को प्रसन्न करनेहारों की नाईं मुंह देखी सेवा मत करो परन्तु खीष्ट के दासों की नाईं अन्तःकरण से ईश्वर की इच्छा पर चलो ॥ ७। और सुमति से सेवा करो मानो तुम मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की सेवा करते हो ॥ ८। क्योंकि जानते हो कि जो कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसी का फल वह चाहे दास हो चाहे निर्बन्ध हो प्रभु से पावेगा ॥ ९। और हे स्वामियो तुम उन्हों से वैसा ही करो और धमकी मत दिया करो क्योंकि जानते हो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी स्वामी है और उस के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१०। अन्त में हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त हो रहो ॥ ११। ईश्वर के संपूर्ण हथियार बांध लेओ जिस्तें तुम शैतान की जुगतों के साम्हने खड़े रह सको ॥ १२। क्योंकि हमारा यह युद्ध लोहू औ मांस से नहीं है परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के महाराजाओं से और आकाश में की दुष्टता की आत्मिक सेना से ॥ १३। इस कारण से ईश्वर के संपूर्ण हथियार ले लेओ कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको और सब कुछ पूरा करके खड़े रह सको ॥ १४। सो अपनी कमर सच्चाई से कसके और धर्म्म की झिलम पहिनके ॥ १५। और पांवों में मिलाप के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनके खड़े रहो ॥ १६। और सभों के

ऊपर विश्वास की ढाल लेओ जिस से तुम उस दुष्ट के सब अग्निबाणों को बुझा सकोगे ॥ १७ । और त्राण का टोप लेओ और आत्मा का खड्ग जो ईश्वर का वचन है ॥ १८ । और सब प्रकार की प्रार्थना और बिन्ती से हर समय आत्मा में प्रार्थना किया करो और इसी के निमित्त समस्त स्थिरता सहित और सब पवित्र लोगों के लिये बिन्ती करते हुए जागते रहो ॥ १९ । और मेरे लिये भी बिन्ती करो कि मुझे अपना मुंह खोलने के समय बोलने का सामर्थ्य दिया जाय कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बताऊं जिस के लिये मैं जंजीर से बंधा हुआ दूत हूं ॥ २० । और कि मैं उस के विषय में साहस से बात करूं जैसा मुझे बोलना उचित है ॥

२१ । परन्तु इस लिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं तुखिक जो प्यारा भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बतावेगा ॥ २२ । कि मैं ने उसे इसी के निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि तुम हमारे विषय में की बातें जानो और वह तुम्हारे मन को शांति देवे ॥

२३ । भाइयों को ईश्वर पिता से और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से शांति और प्रेम विश्वास सहित मिले ॥ २४ । जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अक्षय प्रेम रखते हैं उन सभों पर अनुग्रह होवे । आमीन ॥

फिलिपीयों को पावल प्रेरित की पत्री ।

---

१. पावल और तिमोथिय जो यीशु ख्रीष्ट के दास हैं फिलिपी में जितने लोग ख्रीष्ट यीशु में पवित्र लोग हैं उन सभों को मण्डली के रखवालों और सेवकों समेत ॥ २ । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं ॥ ४ । और तुम ने पहिले दिन से लेके अब लों सुसमाचार के लिये जो सहायता किई है ॥ ५ । उस से आनन्द करता हुआ नित्य अपनी हर एक प्रार्थना में तुम सभों के लिये बिन्ती करता हूं ॥ ६ । और इसी बात का मुझे भरोसा है कि जिस ने तुम्हों में अच्छा काम आरंभ किया है सो यीशु ख्रीष्ट के दिन लों उसे पूरा करेगा ॥ ७ । जैसे तुम सभों के लिये यह सोचना मुझे उचित है इस कारण कि मेरे बंधनों में और सुसमाचार के लिये उत्तर औ प्रमाण देने में मैं तुम्हें मन में रखता हूं कि तुम सब मेरे संग अनुग्रह के भागी हो ॥ ८ । क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि यीशु ख्रीष्ट की सी करुणा से मैं क्योंकर तुम सभों की लालसा करता हूं ॥ ९ । और मैं यही प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित अब भी अधिक अधिक बढ़ता जाय ॥ १० । यहां लों कि तुम विशेष्य बातों को परखो जिस्तें तुम ख्रीष्ट के दिन लों निष्कपट रहो और ठोकर न खावो ॥ ११ । और धर्म्म के फलों से परिपूर्ण होओ जिन से यीशु ख्रीष्ट के द्वारा ईश्वर की महिमा और स्तुति होती है ॥

१२ । पर हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम यह जानो कि मेरी जो दशा हुई है उस से सुसमाचार को बढ़ती ही निकली है ॥ १३ । यहां लों कि सारे राजभवन में और और सब लोगों पर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि ख्रीष्ट के लिये हैं ॥ १४ । और जो प्रभु में भाई लोग हैं उन में से बहुतेरे मेरे

बंधनों से भरोसा पाके बहुत अधिक करके वचन को निर्भय बोलने का साहस करते हैं ॥ १५। कितने लोग डाह और बैर के कारण भी और कितने सुमति के कारण भी खीष्ट का प्रचार करते हैं ॥ १६। वे तो सरलता से नहीं पर विरोध से खीष्ट की कथा सुनाते हैं और समझते हैं कि हम पावल के बंधनों में उसे क्लेश भी देंगे ॥ १७। परन्तु ये तो यह जानके कि पावल सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया है प्रेम से सुनाते हैं॥ १८। तो क्या हुआ. तौभी हर एक रीति से चाहे बहाना से चाहे सच्चाई से खीष्ट की कथा सुनाई जाती है और मैं इस से आनन्द करता हूं और आनन्द करूंगा भी॥

१९। क्योंकि मैं जानता हूं कि इसी से तुम्हारी प्रार्थना के द्वारा और यीशु खीष्ट के आत्मा के दान के द्वारा मेरी प्रत्याशा और भरोसे के अनुसार मेरा निस्तार हो जायगा ॥ २०। अर्थात् यह भरोसा कि मैं किसी बात से लज्जित न होंगा परन्तु खीष्ट की महिमा सब प्रकार के साहस के साथ जैसा हर समय में तैसा अब भी मेरे देह में चाहे जीवन के द्वारा चाहे मृत्यु के द्वारा प्रगट किई जायगी ॥ २१। क्योंकि मेरे लिये जीना खीष्ट है और मरना लाभ है ॥ २२। परन्तु यदि शरीर में जीना है यह मेरे लिये कार्य्य का फल है और मैं नहीं जानता हूं मैं क्या चुन लेऊंगा ॥ २३। क्योंकि मैं इन दो बातों के सकेती में हूं कि मुझे उठ जाने और खीष्ट के संग रहने का अभिलाष है क्योंकि यह और ही बहुत अच्छा है ॥ २४। परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण अधिक आवश्यक है ॥ २५। और मुझे इस बात का निश्चय होने से मैं जानता हूं कि मैं रहूंगा और विश्वास में तुम्हारी बढ़ती और आनन्द के लिये तुम सभों के संग ठहर जाऊंगा ॥ २६। इस लिये कि मेरे फिर तुम्हारे पास आने के द्वारा से मेरे विषय में खीष्ट यीशु में बड़ाई करने का हेतु तुम्हें अधिक होवे ॥

२७। केवल तुम्हारा आचरण खीष्ट के सुसमाचार के योग्य होवे कि मैं चाहे आके तुम्हें देखूं चाहे तुम से दूर रहूं तुम्हारे विषय में यह बात सुनूं कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ रहते हो और एक मन से सुसमाचार के विश्वास के लिये मिलके साहस करते हो ॥ २८। और विरोधियों से तुम्हें किसी बात में डर नहीं लगता है जो उन के लिये तो विनाश का प्रमाण परन्तु तुम्हारे लिये निस्तार का प्रमाण है और यह ईश्वर की ओर से है ॥ २९। क्योंकि खीष्ट के लिये यह बरदान तुम्हें दिया गया कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उस के लिये दुःख भी उठावो ॥ ३०। कि तुम्हारी वैसी ही लड़ाई है जैसी तुम ने मुझ में देखी और अब सुनते हो कि मुझ में है ॥

२. सो यदि खीष्ट में कुछ शांति यदि प्रेम से कुछ समाधान यदि कुछ आत्मा की संगति यदि कुछ करुणा औ दया होय ॥ २। तो मेरे आनन्द को पूरा करो कि तुम एकसां मन रखो और तुम्हारा एक ही प्रेम एक ही चित्त एक ही मत होय ॥ ३। तुम्हारा कुछ विरोध का अथवा घमंड का मत न होय परन्तु दीनता से एक दूसरे को अपने से बड़ा समझो ॥ ४। हर एक अपने अपने विषयों को न देखा करे परन्तु हर एक दूसरों के भी देख लेवे ॥

५। तुम्हों में यही मन होय जो खीष्ट यीशु में भी था ॥ ६। जिस ने ईश्वर के रूप में होके ईश्वर के तुल्य होना डकैती न समझा ॥ ७। परन्तु अपने तईं हीन करके दास का रूप धारण किया और मनुष्यों के समान बना ॥ ८। और मनुष्य के से डौल पर पाया जाके अपने को दीन किया और मृत्यु लों हां क्रूश की मृत्यु लों आज्ञाकारी रहा ॥ ९। इस कारण ईश्वर ने उस को बहुत ऊंचा भी किया और उस को वह नाम दिया जो सब नामों से ऊंचा है ॥ १०। इस लिये कि जो स्वर्ग में और जो पृथिवी पर और जो पृथिवी के नीचे हैं उन सभों का हर एक घुटना यीशु के नाम से झुकाया जाय ॥ ११। और हर एक जीभ से मान लिया जाय कि यीशु खीष्ट ही प्रभु है जिस्तें ईश्वर पिता का गुणानुवाद होय ॥

१२। सो हे मेरे प्यारो जैसे तुम सदा आज्ञा-

कारी हुए तैसे जब मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उस समय मे नहीं परन्तु मैं जो अभी तुम से दूर हूं बहुत अधिक करके इस समय में डरते और कांपते हुए अपने त्राण का कार्य्य निबाहो ॥ १३ । क्योंकि ईश्वर ही है जो अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हों से इच्छा और कार्य्य भी करवाता है ॥ १४ । सब काम बिना कुड़कुड़ाने और बिना बिवाद से किया करो ॥ १५ । जिस्तें तुम निर्दोष और सूधे बनो और टेढ़े और हठीले लोग के बीच मे ईश्वर के निष्कलंक पुत्र होओ ॥ १६ । जिन्हो के बीच में तुम जीवन का बचन लिये हुए जगत में ज्योतिधारियो की नाईं चमकते हो कि मुझे खीष्ट के दिन मे बड़ाई करने का हेतु होय कि मैं न वृथा दौड़ा न वृथा परिश्रम किया ॥ १७ । वरन जो मै तुम्हारे बिश्वास के बलिदान और सेवकाई पर ढाला जाता हूं तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम सभों के संग आनन्द करता हूं ॥ १८ । वैसे ही तुम भी आनन्दित होओ और मेरे संग आनन्द करो ॥

१९ । परन्तु मुझे प्रभु यीशु मे भरोसा है कि मैं तिमोथिय को शीघ्र तुम्हारे पास भेजूंगा जिस्तें मैं भी तुम्हारी दशा जानके ढाढ़स पाऊं ॥ २० । क्योंकि मेरे पास कोई नहीं है जिस का मेरे ऐसा मन है जो सच्चाई से तुम्हारे विषय मे चिन्ता करेगा ॥ २१ । क्योंकि सब अपने ही अपने ही लिये यत्न करते है खीष्ट यीशु के लिये नहीं ॥ २२ । परन्तु उस को तुम परखके जान चुके हो कि जैसा पुत्र पिता के संग तैसे उस ने मेरे संग सुसमाचार के लिये सेवा किई ॥ २३ । सो मुझे भरोसा है कि ज्यों हीं मुझे देख पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी त्यों हीं मै उसी को तुरन्त भेजूंगा ॥ २४ । पर मै प्रभु में भरोसा रखता हूं कि मै भी आप ही शीघ्र आऊंगा ॥

२५ । परन्तु मै ने इपाफ्रदीत को जो मेरा भाई और सहकर्म्मी और संगी योद्धा पर तुम्हारा दूत और आवश्यक बातों मे मेरी सेवा करनेहारा है तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा ॥ २६ । क्योंकि वह तुम सभों की लालसा करता था और बहुत उदास हुआ इस लिये कि तुम ने सुना था कि वह रोगी हुआ था ॥ २७ । और वह रोगी तो हुआ यहां लों कि मरने के निकट था परन्तु ईश्वर ने उस पर दया किई और केवल उस पर नहीं परन्तु मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न होवे ॥ २८ । सो मैं ने उस को और भी यत्न से भेजा कि तुम उसे फिर देखके आनन्दित होओ और मेरा शोक घटे ॥ २९ । सो उसे प्रभु में सब प्रकार के आनन्द से ग्रहण करो और ऐसे जनों को आदरयोग्य समझो ॥ ३० । क्योंकि खीष्ट के कार्य्य निमित्त वह अपने प्राण पर जोखिम उठाके मरने के निकट पहुंचा इस लिये कि मेरी सेवा करने मे तुम्हारी घटी को पूरी करे ॥

३. अन्त मे हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभु में आनन्दित रहो. वही बातें तुम्हारे पास फिर लिखने से मुझे कुछ दुःख नहीं है और तुम्हे बचाव है ॥ २ । कुत्तों से चौकस रहो दुष्ट कर्म्मकारियों से चौकस रहो काटे हुओं से चौकस रहो ॥ ३ । क्योंकि खतना किये हुए हम हैं जो आत्मा से ईश्वर की सेवा करते हैं और खीष्ट यीशु के विषय में बड़ाई करते हैं और भरोसा शरीर पर नही रखते हैं ॥ ४ । पर मुझे तो शरीर पर भी भरोसा है . यदि और कोई शरीर पर भरोसा रखना उचित जानता है मै और भी ॥ ५ । कि आठवें दिन का खतना किया हुआ इस्रायेल के वंश का बिन्यामीन के कुल का इब्रियों में से इब्री हूं व्यवस्था की कहो तो फरीशी ॥ ६ । उद्योग की कहो तो मण्डली का सतानेहारा व्यवस्था में के धर्म्म की कहो तो निर्दोष हुआ ॥ ७ । परन्तु जो जो बातें मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मै ने खीष्ट के कारण हानि समझी है ॥ ८ । हां सचमुच अपने प्रभु खीष्ट यीशु के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण मै सब बातें हानि समझता भी हूं और उस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई और उन्हें कूड़ा सा जानता हूं कि मै खीष्ट को प्राप्त करूं ॥ ९ । और उस में पाया जाऊं ऐसा कि मेरा अपना धर्म्म जो व्यवस्था से है सो नहीं परन्तु वह धर्म्म जो खीष्ट के विश्वास के द्वारा से है वही धर्म्म जो विश्वास के

कारण ईश्वर से है मुझे होय ॥ १० । जिस्तें मैं खीष्ट को और उस के जी उठने की शक्ति को और उस के दुःखों की संगति को जानूं और उस की मृत्यु के सदृश किया जाऊं ॥ ११ । जो मैं किसी रीति से मृतकों के जी उठने का भागी होऊं ॥ १२ । यह नहीं कि मैं पा चुका हूं अथवा सिद्ध हो चुका हूं परन्तु मैं पीछा करता हूं कि कहीं उस को पकड़ लेऊं जिस के निमित्त मैं भी खीष्ट यीशु से पकड़ा गया ॥

१३ । हे भाइयो मैं नहीं समझता हूं कि मैं ने पकड़ लिया है परन्तु एक काम मैं करता हूं कि पीछे की बातें तो भूलता जाता पर आगे की बातों की ओर झपटता जाता हूं ॥ १४ । और ऊपर की बुलाहट जो खीष्ट यीशु में ईश्वर की ओर से है झंडा देखता हुआ उस बुलाहट के जयफल का पीछा करता हूं ॥ १५ । सो हम में से जितने सिद्ध हैं यही मन रखें और यदि किसी बात में तुम्हें और ही मन होय तो ईश्वर यह भी तुम पर प्रगट करेगा ॥ १६ । तौभी जहां लों हम पहुंचे हैं एक ही विधि से चलना और एक ही मन रखना चाहिये ॥

१७ । हे भाइयो तुम मिलके मेरी सी चाल चलो और उन्हें देखते रहो जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुम्हारे लिये दृष्टान्त हैं ॥ १८ । क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिन के विषय में मैं ने बार बार तुम से कहा है और अब रोता हुआ भी कहता हूं कि वे खीष्ट के क्रूश के बैरी हैं ॥ १९ । जिन का अन्त विनाश है जिन का ईश्वर पेट है जो अपनी लज्जा पर बड़ाई करते हैं और पृथिवी पर की वस्तुओं पर मन लगाते हैं ॥ २० । क्योंकि हम तो स्वर्ग की प्रजा हैं जहां से हम त्राणकर्त्ता की अर्थात् प्रभु यीशु खीष्ट की बाट भी जोहते हैं ॥ २१ । जो इस कार्य्य के अनुसार जिस करके वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है हमारी दीनताई के देह का रूप बदल डालेगा कि वह उस के ऐश्वर्य्य के देह के सदृश हो जावे ॥

४. सो हे मेरे प्यारे और अभिलषित भाइयो मेरे आनन्द और मुकुट यूंही हे प्यारो प्रभु में दृढ़ रहो ॥

२ । मैं इवोदिया से बिन्ती करता हूं और सुन्तुखी से बिन्ती करता हूं कि वे प्रभु में एकसां मन रखें ॥ ३ । और हे सच्चे संघाती मैं तुझ से भी बिन्ती करता हूं इन स्त्रियों की सहायता कर जिन्हों ने क्लीमी के साथ भी और मेरे और और सहकर्म्मियों के साथ जिन के नाम जीवन के पुस्तक में हैं मेरे संग सुसमाचार के विषय में मिलके साहस किया ॥

४ । प्रभु में सदा आनन्द करो . मैं फिर कहूंगा आनन्द करो ॥ ५ । तुम्हारी मृदुता सब मनुष्यों पर प्रगट होवे . प्रभु निकट है ॥ ६ । किसी बात में चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में धन्यवाद के साथ प्रार्थना से और बिन्ती से तुम्हारे निवेदन ईश्वर को जनाये जावें ॥ ७ । और ईश्वर की शांति जो समस्त ज्ञान से ऊर्द्ध है खीष्ट यीशु में तुम लोगों के हृदय और तुम लोगों के मन की रक्षा करेगी ॥ ८ । अन्त में हे भाइयो यह कहता हूं कि जो जो बातें सत्य हैं जो जो आदरयोग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध हैं जो जो सुहावनी हैं जो जो सुख्यात हैं कोई गुण जो होय और कोई यश जो होय उन्हीं बातों की चिन्ता करो ॥ ९ । जो तुम ने सीखीं भी और ग्रहण किईं और सुनीं और मुझ में देखीं वही बातें किया करो और शांति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा ॥

१० । मैं ने प्रभु में बड़ा आनन्द किया कि मेरे लिये सोच करने में तुम अब भी फिर पनपे और इस बात का तुम सोच करते भी थे पर तुम्हें अवसर न था ॥ ११ । यह नहीं कि मैं दरिद्रता के विषय में कहता हूं क्योंकि मैं सीख चुका हूं कि जिस दशा में हूं उस में सन्तोष करूं ॥ १२ । मैं दीन होने जानता हूं मैं उभरने भी जानता हूं मैं सर्व्वत्र और सब बातों में तृप्त होने को और भूखा रहने को भी उभरने को और दरिद्र होने को भी सिखाया गया हूं ॥ १३ । मैं खीष्ट में जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूं ॥ १४ । तौभी तुम ने भला किया जो मेरे क्लेश में मेरी सहायता किई ॥ १५ । और हे फिलिपीयो तुम यह भी जानो कि सुसमाचार के आरंभ में जब मैं माकिदोनिया से निकला तब देने लेने के विषय में किसी मण्डली ने मेरी सहायता

न किई पर केवल तुम ही ने ॥ १६ । क्योंकि थिसलोनिका में भी तुम ने एक वेर और दो वेर भी जो मुझे आवश्यक था सो भेजा ॥ १७ । यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता हूं जिस से तुम्हारे निमित्त अधिक लाभ होवे ॥ १८ । पर मैं सब कुछ पा चुका हूं और मुझे बहुत है . जो तुम्हारी ओर से आया मानो सुगन्ध मानो ग्राह्य बलिदान जो ईश्वर को भावता है सोई इपाफ्रदीत के हाथ पाके मैं भरपूर हूं ॥ १९ । और मेरा ईश्वर अपने धन के अनुसार महिमा सहित खीष्ट यीशु में सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो भरपूर करके देगा ॥ २० । हमारे पिता ईश्वर का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होय . आमीन ॥

२१ । खीष्ट यीशु में हर एक पवित्र जन को नमस्कार . मेरे संग के भाई लोगों का तुम से नमस्कार ॥ २२ । सब पवित्र लोगों का निज करके उन्हों का जो कैसर के घराने के हैं तुम से नमस्कार ॥ २३ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥

कलस्सीयों को पावल प्रेरित की पत्री।

---

१. पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथिय कलस्सी में के पवित्र लोगों और खीष्ट में विश्वासी भाइयों को ॥ २ । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । हम नित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का धन्य मानते हैं ॥ ४ । कि हम ने खीष्ट यीशु पर तुम्हारे विश्वास का और उस प्रेम का समाचार पाया है जो सब पवित्र लोगों से उस आशा के कारण रखते हो ॥ ५ । जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्ग में धरी है जिस की कथा तुम ने आगे सुसमाचार की सत्यता के बचन में सुनी ॥ ६ । वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी जैसा सारे जगत में पहुंचा है और फल लाता और बढ़ता है जैसा तुम में भी उस दिन से फलता है जिस दिन से तुम ने सुना और सत्यता से ईश्वर का अनुग्रह जाना ॥ ७ । जैसे तुम ने हमारे प्यारे संगी दास इपाफ्रा से सीखा जो तुम्हारे लिये खीष्ट का विश्वासयोग्य सेवक है ॥ ८ । और जिस ने तुम्हारा प्रेम जो आत्मा से है हमें बताया ॥

९ । इस कारण से हम भी जिस दिन से हम ने सुना उस दिन से तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह मांगना नहीं छोड़ते हैं कि तुम सारे ज्ञान और आत्मिक बुद्धि सहित ईश्वर की इच्छा की पहचान से परिपूर्ण होओ ॥ १० । जिस्तें तुम प्रभु के योग्य चाल चलो ऐसा कि सब प्रकार से प्रसन्नता होय और हर एक अच्छे काम में फलवान होओ और ईश्वर की पहचान में बढ़ते जावो ॥ ११ । और समस्त बल से उस की महिमा के प्रभाव के अनुसार बलवन्त किये जावो यहां लों कि आनन्द से सकल स्थिरता और धीरज दिखावो ॥ १२ । और कि तुम पिता का धन्य मानो जिस ने हमें पवित्र लोगों का अधिकार जो ज्योति में है उस अधिकार के अंश के योग्य किया ॥ १३ । और हमें अंधकार के वश से छुड़ाके अपने प्रियतम पुत्र के राज्य में लाया ॥ १४ । जिस में उस के लोहू के द्वारा हमें उद्धार अर्थात् पापमोचन मिलता है ॥

१५ । वह तो अदृश्य ईश्वर की प्रतिमा और सारी सृष्टि पर पहिलौठा है ॥ १६ । क्योंकि उस से सब कुछ सृजा गया वह जो स्वर्ग में है और वह

जो पृथिवी पर है दृश्य और अदृश्य क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं क्या अधिकार सब कुछ उस के द्वारा से और उस के लिये सृजा गया है॥ १७। और वही सब के आगे है और सब कुछ उसी से बना रहता है॥ १८। और वही देह का अर्थात् मंडली का सिर है कि वह आदि है और मृतकों में से पहिलौठा जिस्तें सब बातों में वही प्रधान होय॥ १९। क्योंकि ईश्वर की इच्छा थी कि उस में समस्त पूर्णता वास करे॥ २०। और कि उस के क्रूश के लोहू के द्वारा से मिलाप करके उसी के द्वारा सब कुछ चाहे वह जो पृथिवी पर है चाहे वह जो स्वर्ग में है अपने से मिलावे॥

२१। और तुम्हें जो आगे नियारे किये हुए थे और अपनी बुद्धि से बुरे कर्म्मों में रहके बैरी थे उस ने अभी उस के मांस के देह में मृत्यु के द्वारा से मिला लिया है॥ २२। कि तुम्हें अपने सन्मुख पवित्र औ निष्कलंक औ निर्दोष खड़ा करे॥ २३। जो ऐसा ही है कि तुम विश्वास में नेव दिये हुए दृढ़ रहते हो और सुसमाचार जो तुम ने सुना उस की आशा से हटाये नहीं जाते. वह सुसमाचार जो आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में प्रचार किया गया जिस का मैं पावल सेवक बना॥

२४। और मैं अब उन दुःखों में जो मैं तुम्हारे लिये उठाता हूं आनन्द करता हूं और खीष्ट के क्लेशों की जो घटी है सो उस के देह के लिये अर्थात् मंडली के लिये अपने शरीर में पूरी करता हूं॥ २५। उस मंडली का मैं ईश्वर के भंडारीपन के अनुसार जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया सेवक बना कि ईश्वर के वचन को सम्पूर्ण प्रचार करूं॥ २६। अर्थात् उस भेद को जो आदि से और पीढ़ी पीढ़ी गुप्त रहा परन्तु अब उस के पवित्र लोगों पर प्रगट किया गया है॥ २७। जिन्हें ईश्वर ने बताने चाहा कि अन्यदेशियों में इस भेद की महिमा का धन क्या है अर्थात् तुम्हों में खीष्ट जो महिमा की आशा है॥ २८। जिसे हम प्रचार करते हैं और हर एक मनुष्य को चिताते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं जिस्तें हर एक मनुष्य को खीष्ट यीशु में सिद्ध करके आगे खड़ा करें॥ २९। और इस के लिये मैं उस के उस कार्य्य के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य सहित गुण करता है उद्योग करके परिश्रम भी करता हूं॥

२. क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि तुम्हारे और उन के जो लाओदिकेया में हैं और जितनों ने शरीर में मेरा मुंह नहीं देखा है सभों के विषय में मेरा कितना बड़ा उद्योग होता है॥ २। इस लिये कि उन के मन शांत होवें और वे प्रेम में गठ जावें जिस्तें वे ज्ञान के निश्चय का सारा धन प्राप्त करें और ईश्वर पिता का और खीष्ट का भेद पहचानें॥ ३। जिस में बुद्धि औ ज्ञान की गुप्त संपत्ति सब की सब धरी है॥

४। मैं यह कहता हूं न हो कि कोई तुम्हें फुसलाऊ बातों से धोखा देवे॥ ५। क्योंकि जो मैं शरीर में तुम से दूर रहता हूं तौभी आत्मा में तुम्हारे संग हूं और आनन्द से तुम्हारी रीति विधि और खीष्ट पर तुम्हारे विश्वास की स्थिरता देखता हूं॥ ६। सो तुम ने खीष्ट यीशु को प्रभु करके जैसे ग्रहण किया वैसे उसी में चलो॥ ७। और उस में तुम्हारी जड़ बंधी हुई होय और तुम बनते जाओ और विश्वास में जैसे तुम सिखाये गये वैसे दृढ़ होते जाओ और धन्यवाद करते हुए उस में बढ़ते जाओ॥

८। चौकस रहो कि कोई ऐसा न हो जो तुम्हें उस तत्त्वज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा से धर ले जाय जो मनुष्यों के परम्पराई मत के अनुसार और संसार की आदिशिक्षा के अनुसार है पर खीष्ट के अनुसार नहीं है॥ ९। क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी पूर्णता सदेह वास करती है॥ १०। और उस में तुम परिपूर्ण हुए हो जो समस्त प्रधानता और अधिकार का सिर है॥ ११। जिस में तुम ने बिन हाथ का किया हुआ खतना भी अर्थात् शारीरिक पापों के देह के उतारने में खीष्ट का खतना पाया॥ १२। और बपतिसमा लेने में उस के संग गाड़े गये और उसी में ईश्वर के कार्य्य के विश्वास के द्वारा जिस ने उस को मृतकों में से उठाया संग ही उठाये भी गये॥ १३। और तुम्हें जो अपराधों में और

अपने शरीर की खतनाहीनता में मृतक थे उस ने उस के संग जिलाया कि उस ने तुम्हारे सब अपराधों को क्षमा किया ॥ १४। और विधियों का लेख जो हमारे बिरुद्ध और हम से बिपरीत था मिटा डाला और उस को कीलों से क्रूश पर ठोंकके मध्य में से उठा दिया है ॥ १५। और प्रधानताओं और अधिकारों की सज्जा उतारके क्रूश पर उन पर जयजयकार करके उन्हे प्रगट में दिखाया ॥

१६। इस लिये खाने में अथवा पीने में अथवा पर्व्व वा नये चांद के दिन वा बिश्राम के दिनों के विषय में कोई तुम्हारा विचार न करे ॥ १७। कि यह बातें आनेहारी बातों की छाया हैं परन्तु देह खीष्ट का है ॥ १८। कोई जो अपनी इच्छा से दीनताई और दूतों की पूजा करनेहारा होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न करे जो उन बातों मे जिन्हे नहीं देखा है घुस जाता है और अपने शारीरिक ज्ञान से वृथा फुलाया जाता है ॥ १९। और सिर को धारण नहीं करता है जिस से सारा देह गांठो और बंधों से उपकार पाके और एक सग गठके ईश्वर के बढ़ाव से बढ़ जाता है ॥ २०। जो तुम खीष्ट के सग ससार की आदि शिक्षा की ओर मर गये तो क्यों जैसे संसार में जीते हुए उन विधियों के बश में हो जो मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार हैं ॥ २१। कि मत छू और न चीख और न हाथ लगा ॥ २२। बस्तुएं जो काम में लाने से सब नाश होनेहारी हैं ॥ २३। ऐसी विधियां निज इच्छा के अनुसार की भक्ति से और दीनता से और देह को कष्ट देने से ज्ञान का नाम तो पाती हैं पर वे कुछ भी आदर के योग्य नहीं केवल शारीरिक स्वभाव को तृप्त करने के लिये हैं ॥

३. सो जो तुम खीष्ट के संग जी उठे तो ऊपर की बस्तुओं का खोज करो जहां खीष्ट ईश्वर के दहिने हाथ बैठा हुआ है ॥ २। पृथिवी पर की बस्तुओं पर नहीं परन्तु ऊपर की बस्तुओं पर मन लगाओ ॥ ३। क्योंकि तुम तो मूए और तुम्हारा जीवन खीष्ट के सग ईश्वर में छिपाया गया है ॥ ४। जब खीष्ट जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब तुम भी उस के सग महिमा सहित प्रगट किये जाओगे ॥

५। इस लिये अपने अंगों को जो पृथिवी पर हैं व्यभिचार औ अशुद्धता औ कामना औ कुइच्छा को और लोभ को जो मूर्त्तिपूजा है मार डालो ॥ ६। कि इन के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारों पर पड़ता है ॥ ७। जिन्हों के बीच में आगे जब तुम इन में जीते थे तब तुम भी चलते थे ॥ ८। पर अब तुम भी इन सब बातों को क्रोध औ कोप औ बैरभाव को औ निन्दा औ गाली को अपने मुंह से दूर करो ॥ ९। एक दूसरे से झूठ मत बोलो कि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उस की क्रियाओं समेत उतार डाला है ॥ १०। और नये को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के रूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने को नया होता जाता है ॥ ११। उस में यूनानी और यिहूदी खतना किया हुआ और खतनाहीन अन्यभाषिया स्कुथी दास औ निर्बंध नहीं है परन्तु खीष्ट सब कुछ और सभों में है ॥

१२। सो ईश्वर के चुने हुए पवित्र और प्यारे लोगों की नाईं बड़ी करुणा औ कृपालुता औ दीनता औ नम्रता औ धीरज पहिन लेओ ॥ १३। और एक दूसरे की सह लेओ और यदि किसी को किसी पर दोष देने का हेतु होय तो एक दूसरे को क्षमा करो, जैसे खीष्ट ने तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी करो ॥ १४। पर इन सभों के ऊपर प्रेम को पहिन लेओ जो सिद्धता का बंध है ॥ १५। और ईश्वर की शांति जिस के लिये तुम एक देह मे बुलाये भी गये तुम्हारे हृदय में प्रबल होय और धन्य माना करो ॥ १६। खीष्ट का वचन तुम्हों में अधिकाई से बसे और गीतों और भजनों और आत्मिक गानों में समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ और अनुग्रह सहित अपने अपने मन मे प्रभु के आगे गान करो ॥ १७। और वचन से अथवा कर्म्म से जो कुछ तुम करो सब काम प्रभु यीशु के नाम से करो और उस के द्वारा से ईश्वर पिता का धन्य मानो ॥

१८। हे स्त्रियो जैसा प्रभु में सोहता है तैसा अपने अपने स्वामी के अधीन रहो॥ १९। हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्री को प्यार करो और उन की ओर कड़ुए मत होओ॥

२०। हे लड़को सब बातों में अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह प्रभु को भावता है॥ २१। हे पिताओ अपने अपने लड़कों को मत खिजाओ न हो कि वे उदास होवें॥

२२। हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं मनुष्यों को प्रसन्न करनेहारों की नाईं मुंह देखी सेवा से नहीं परन्तु मन की सीधाई से ईश्वर से डरते हुए सब बातों में उन को आज्ञा मानो॥ २३। और जो कुछ तुम करो सब कुछ जैसे मनुष्यों के लिये सो नहीं परन्तु जैसे प्रभु के लिये अन्तःकरण से करो॥ २४। क्योंकि जानते हो कि प्रभु से तुम अधिकार का प्रतिफल पाओगे क्योंकि तुम प्रभु खीष्ट के दास हो॥ २५। परन्तु अनीति करनेहारा जो अनीति उस ने किई है तिस का फल पावेगा और पक्षपात नहीं है॥

४. हे स्वामियो अपने अपने दासों से न्याययुक्त और यथार्थ व्यवहार करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा भी स्वर्ग में स्वामी है॥

२। प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद के साथ उस में जागते रहो॥ ३। और इस के संग हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि ईश्वर हमारे लिये बात करने का ऐसा द्वार खोल दे कि हम खीष्ट का भेद जिस के कारण मैं बांधा भी गया हूं बोल देवें॥ ४। जिस्तें मैं जैसा मुझे बोलना उचित है वैसा ही उसे प्रगट करूं॥ ५। बाहरवालों की ओर बुद्धि से चलो और अपने लिये समय का लाभ करो॥ ६। तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और लोण से स्वादित होय जिस्तें तुम जानो कि हर एक को किस रीति से उत्तर देना तुम्हें उचित है॥

७। तुखिक जो प्यारा भाई और बिश्वासयोग्य सेवक और प्रभु में मेरा संगी दास है मेरा सब समाचार तुम्हें सुनावेगा॥ ८। कि मैं ने उसे इसी के निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि वह तुम्हारे विषय में की बातें जाने और तुम्हारे मन को शांति देवे॥ ९। उसे मैं ने उनीसिम के संग जो बिश्वासयोग्य और प्यारा भाई और तुम्हों में का है भेजा है. वे यहां का सब समाचार तुम्हें सुनावेंगे॥

१०। अरिस्तार्ख जो मेरा संगी बंधुआ है और मार्क जो बर्णबा का भाई लगता है जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई. जो वह तुम्हारे पास आवे तो उसे ग्रहण करो॥ ११। और यीशु जो युस्त कहावता है इन तीनों का तुम से नमस्कार. खतना किये हुए लोगों में से केवल येही ईश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्म्मी हैं जिन से मुझे शांति हुई है॥ १२। इपाफ्रा जो तुम्हों में से एक खीष्ट का दास है तुम से नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में उद्योग करता है कि तुम ईश्वर की सारी इच्छा में सिद्ध और परिपूर्ण बने रहो॥ १३। क्योंकि मैं उस का साक्षी हूं कि तुम्हारे लिये और उन के लिये जो लाओदिकेया में हैं और उन के लिये जो हियरापलि में हैं उस का बड़ा अनुराग है॥ १४। लूक का जो प्यारा वैद्य है और दीमा का तुम से नमस्कार॥ १५। लाओदिकेया में के भाइयों को और नुम्फा को और उस के घर में की मण्डली को नमस्कार॥ १६। और जब यह पत्री तुम्हारे यहां पढ़ लिई जाय तब ऐसा करो कि लाओदिकियों की मण्डली में भी पढ़ी जाय और कि तुम भी लाओदिकेया की पत्री पढ़ो॥ १७। और अर्खिप से कहो जो सेवकाई तू ने प्रभु में पाई है उसे देखता रह कि तू उसे पूरी करे॥ १८। मुझ पावल का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार. मेरे बंधनों की सुध लेओ. अनुग्रह तुम्हारे संग होवे। आमीन॥

थिसलोनिकियों का पावल प्रेरित की पहिली पत्री।

---

१. पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकियों की मण्डली को जो ईश्वर पिता और प्रभु यीशु खीष्ट मे है . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

२। हम अपनी प्रार्थनाओं मे तुम्हें स्मरण करते हुए नित्य तुम सभों के विषय में ईश्वर का धन्य मानते हैं ॥ ३। क्योंकि हम अपने पिता ईश्वर के आगे तुम्हारे विश्वास के कार्य्य और प्रेम के परिश्रम को और हमारे प्रभु यीशु खीष्ट मे आशा की धीरता को निरन्तर स्मरण करते हैं ॥ ४। और हे भाइयो ईश्वर के प्यारो हम तुम्हारा चुन लिया जाना जानते है ॥ ५। क्योंकि हमारा सुसमाचार केवल वचन से नहीं परन्तु सामर्थ्य से भी और पवित्र आत्मा से और बड़े निश्चय से तुम्हारे पास पहुंचा जैसा तुम जानते हो कि तुम्हारे कारण हम तुम्हों में कैसे बने ॥ ६। और तुम लोग बड़े क्लेश के बीच मे पवित्र आत्मा के आनन्द से वचन को ग्रहण करके हमों के और प्रभु के अनुगामी बने ॥ ७। यहां लों कि माकिदोनिया और आखाया में के सब विश्वासियों के लिये तुम दृष्टान्त हुए ॥ ८। क्योंकि न केवल माकिदोनिया और आखाया मे तुम्हारी ओर से प्रभु के वचन का ध्वनि फैल गया परन्तु हर एक स्थान में भी तुम्हारे बिश्वास का जो ईश्वर पर है चर्चा हो गया है यहां लो कि हमें कुछ बोलने का प्रयोजन नहीं है ॥ ९। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना किस प्रकार का था और तुम क्योंकर मूरतों से ईश्वर की ओर फिरे जिस्तें जीवते और सच्चे ईश्वर की सेवा करो ॥ १०। और स्वर्ग से उस के पुत्र की जिसे उस ने मृतकों में से उठाया बाट देखो अर्थात् यीशु की जो हमें आनेवाले क्रोध से बचानेहारा है ॥

२. हे भाइयो तुम्हारे पास हमारे आने के विषय में तुम आप ही जानते हो कि वह व्यर्थ नहीं था ॥ २। परन्तु आगे फिलिपी में जैसा तुम जानते हो दुःख पाके और दुर्दशा भोगके हम ने ईश्वर का सुसमाचार बहुत रगड़े झगड़े मे तुम्हें सुनाने को अपने ईश्वर से साहस पाया ॥ ३। क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से और न अशुद्धता से और न छल के साथ है ॥ ४। परन्तु जैसा ईश्वर को अच्छा देख पड़ा है कि सुसमाचार हमें सौंपा जाय तैसा हम बोलते हैं अर्थात् जैसे मनुष्यों को प्रसन्न करते हुए सो नहीं परन्तु ईश्वर को जो हमों के मन को जांचता है ॥ ५। क्योंकि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बात किया करते थे जैसा तुम जानते हो और न लोभ के लिये बहाना करते थे ईश्वर साक्षी है ॥ ६। और यद्यपि हम खीष्ट के प्रेरित होके मर्य्यादा ले सकते तौभी हम मनुष्यों से चाहे तुम्हो से चाहे दूसरों से आदर नहीं चाहते थे ॥ ७। परन्तु तुम्हारे बीच में हम ऐसे कोमल बने जैसी माता अपने बालकों को दूध पिला पोसती है ॥ ८। वैसे ही हम तुम्हो से स्नेह करते हुए तुम्हें केवल ईश्वर का सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी बांट देने को प्रसन्न थे इस लिये कि हमारे तुम प्यारे बन गये ॥ ९। क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और क्लेश को स्मरण करते हो कि तुम में से किसी पर भार न देने के लिये हम ने रात औ दिन कमाते हुए तुम्हो में ईश्वर का सुसमाचार प्रचार किया ॥ १०। तुम लोग साक्षी हो और ईश्वर भी कि तुम्हा के आगे जो विश्वासी हो हम कैसी पवित्रता औ धर्म्म औ निर्दोषता से चले ॥ ११। जैसे तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने लड़कों को तैसे हम तुम्हो में से एक एक को क्योंकर उपदेश औ शांति औ साक्षी

देते थे॥ १२। जिस्तें तुम ईश्वर के योग्य चलो जो तुम्हें अपने राज्य और ऐश्वर्य्य में बुलाता है॥

१३। इस कारण से हम निरन्तर ईश्वर का धन्य भी मानते हैं कि तुम ने जब ईश्वर के समाचार का बचन हम से पाया तब मनुष्यों का बचन नहीं पर जैसा सचमुच है ईश्वर का बचन ग्रहण किया जो तुम्हों में जो विश्वास करते हो गुण भी करता है॥ १४। क्योंकि हे भाइयो खीष्ट यीशु में ईश्वर की मण्डलियां जो यिहूदिया में हैं उन के तुम अनुगामी बने कि तुम ने अपने स्वदेशियों से वैसा ही दुःख पाया जैसा उन्हों ने भी यिहूदियों से॥ १५। जिन्हों ने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला और हमों को सताया और ईश्वर को प्रसन्न नहीं करते हैं और सब मनुष्यों के विरुद्ध हैं॥ १६। कि वे अन्यदेशियों से उन के त्राण के लिये बात करने से हमें बर्जते हैं जिस्तें नित्य अपने पापों को पूरा करें, परन्तु उन पर क्रोध अत्यन्त लों पहुंचा है॥

१७। पर हे भाइयो हमों ने हृदय में नहीं पर देह में थोड़ी बेर लों तुम से अलग किये जाके बहुत अधिक करके तुम्हारा मुंह देखने को बड़ी अभिलाषा से यत्न किया॥ १८। इस लिये हम ने अर्थात् मुझ पावल ने एक बेर और दो बेर भी तुम्हारे पास आने की इच्छा किई और शैतान ने हमें रोका॥ १९। क्योंकि हमारी आशा अथवा आनन्द अथवा बड़ाई का मुकुट क्या है, क्या तुम भी हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के आगे उस के आने पर नहीं हो॥ २०। तुम तो हमारी बड़ाई और आनन्द हो॥

३. इस कारण जब हम और सह न सके तब हम ने आथीनी में अकेले छोड़े जाने को अच्छा जाना॥ २। और तिमोथिय को जो हमारा भाई और ईश्वर का सेवक और खीष्ट के सुसमाचार में हमारा सहकर्म्मी है तुम्हें स्थिर करने को और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाने को भेजा॥ ३। जिस्तें कोई इन क्लेशों से डगमगा न जाय क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इस के लिये ठहराये हुए हैं॥ ४। क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी तुम को आगे से कहते थे कि हम तो क्लेश पावेंगे जैसा हुआ भी है और तुम जानते हो॥ ५। इस कारण से जब मैं और सह न सका तब तुम्हारा विश्वास बूझने को भेजा ऐसा न हो कि किसी रीति से परीक्षा करनेहारे ने तुम्हारी परीक्षा किई और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो॥

६। पर अभी तिमोथिय जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आया है और तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार हमारे पास लाया है और यह कि तुम नित्य भली रीति से हमें स्मरण करते हो और हमें देखने की लालसा करते हो जैसे हम भी तुम्हें देखने की लालसा करते हैं॥ ७। तो इस हेतु से हे भाइयो तुम्हारे विश्वास के द्वारा से हम ने अपने सारे क्लेश औ दरिद्रता में तुम्हारे विषय में शांति पाई है॥ ८। क्योंकि अब जो तुम प्रभु में दृढ़ रहो तो हम जीवते हैं॥ ९। क्योंकि हम धन्यबाद का कौन सा फल तुम्हारे विषय में ईश्वर को इस सारे आनन्द के लिये दे सकते हैं जिस करके हम तुम्हारे कारण अपने ईश्वर के आगे आनन्द करते हैं॥ १०। कि रात औ दिन हम अत्यन्त बिन्ती करते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें और तुम्हारे विश्वास की जो घटी है उसे पूरी करें॥

११। हमारा पिता ईश्वर आप ही और हमारा प्रभु यीशु खीष्ट तुम्हारी ओर हमारा मार्ग सीधा करे॥ १२। पर तुम्हें प्रभु एक दूसरे की ओर और सभों की ओर प्रेम में अधिकाई देवे और बढ़ावे जैसे हम भी तुम्हारी ओर उभरते हैं॥ १३। जिस्तें वह तुम्हारे मन को स्थिर करे और हमारे पिता ईश्वर के आगे हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के अपने सब पवित्रों के संग आने पर पवित्रताई में निर्दोष भी करे॥

४. सो हे भाइयो अन्त में हम प्रभु यीशु में तुम्हें बिन्ती और उपदेश करते हैं कि जैसा तुम ने हम से पाया कि किस रीति से चलना और ईश्वर को प्रसन्न करना तुम्हें उचित है

तुम अधिक बढ़ते जाओ ॥ २। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से कौन कौन आज्ञा तुम्हें दिई ॥ ३। क्योंकि ईश्वर की इच्छा यह है अर्थात् तुम्हारी पवित्रता कि तुम व्यभिचार से परे रहो ॥ ४। कि तुम में से हर एक अपने अपने पात्र को उन अन्यदेशियों की नाईं जो ईश्वर को नहीं जानते हैं कामाभिलाषा से रखे सो नहीं ॥ ५। परन्तु पवित्रता और आदर से रखने जाने ॥ ६। कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे और न उस पर दांव चलावे क्योंकि जैसा हम ने आगे तुम से कहा और साक्षी भी दिई तैसा प्रभु इन सब बातों के विषय मे पलटा लेनेहारा है ॥ ७। क्योंकि ईश्वर ने हमों को अशुद्धता के लिये नहीं परन्तु पवित्रता मे बुलाया ॥ ८। इस कारण जो तुच्छ जानता है सो मनुष्य को नहीं परन्तु ईश्वर को जिस ने अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया तुच्छ जानता है॥

९। भ्रातीय प्रेम के विषय में तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि मैं तुम्हारे पास लिखूं क्योंकि एक दूसरे को प्यार करने को तुम आप ही ईश्वर के सिखाये हुए हो॥ १०। क्योंकि तुम सारे माकिदोनिया के सब भाइयों को ओर सोई करते भी हो परन्तु हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं कि अधिक बढ़ते जाओ ॥ ११। और जैसे हम ने तुम्हें आज्ञा दिई तैसे चैन से रहने का और अपना अपना काम करने का और अपने अपने हाथों से कमाने का यत्न करो ॥ १२। जिस्तें तुम बाहरवालों की ओर शुभ रीति से चलो और तुम्हें किसी वस्तु की घटती न होय ॥

१३। हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उन के विषय में जो सोये हुए हैं अनजान रहो न हो कि तुम औरों के समान जिन्हें आशा नहीं है शोक करो ॥ १४। क्योंकि जो हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी उठा तो वैसे ही ईश्वर उन्हें भी जो यीशु मे सोये हैं उस के संग लावेगा ॥ १५। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवते और प्रभु के आने लों बच जाते है उन के आगे जो सोये हैं नहीं बढ़ चलेंगे ॥ १६। क्योंकि प्रभु आप ही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूत के शब्द सहित और ईश्वर की तुरही सहित स्वर्ग से उतरेगा और जो खीष्ट मे मूए हैं सोई पहिले उठेंगे ॥ १७। तब हम जो जीवते और बच जाते हैं एक संग उन के साथ प्रभु से मिलने को मेघों में आकाश पर उठा लिये जायेंगे और इस रीति से हम सदा प्रभु के संग रहेंगे ॥ १८। सो इन बातों से एक दूसरे को शांति देओ ॥

५. पर हे भाइयो कालों और समयों के विषय मे तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि तुम्हारे पास कुछ लिखा जाय ॥ २। क्योंकि तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रात को चोर तैसा ही प्रभु का दिन आता है ॥ ३। क्योंकि जब लोग कहेंगे कुशल है और कुछ भय नहीं तब जैसी गर्भवती पर प्रसव की पीड़ तैसा उन पर विनाश अचाचक आ पड़ेगा और वे किसी रीति से नहीं बचेंगे ॥ ४। पर हे भाइयो तुम तो अंधकार मे नहीं हो कि तुम पर वह दिन चोर की नाईं आ पड़े ॥ ५। तुम सब ज्योति के सन्तान और दिन के सन्तान हो. हम न रात के न अंधकार के हैं ॥ ६। इस लिये हम औरों के समान सोवें सो नहीं परन्तु जागें और सचेत रहें ॥ ७। क्योंकि सोनेहारे रात को सोते हैं और मतवाले लोग रात को मतवाले होते हैं ॥ ८। पर हम जो दिन के हैं तो बिश्वास और प्रेम की झिलम और टोप अर्थात् त्राण की आशा पहिनके सचेत रहें ॥ ९। क्योंकि ईश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं पर इस लिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से त्राण प्राप्त करें ॥ १०। जो हमारे लिये मरा कि हम चाहे जागें चाहे सोवें एक संग उस के साथ जीवें ॥ ११। इस कारण एक दूसरे को शांति देओ और एक दूसरे को सुधारो जैसे तुम करते भी हो ॥

१२। हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं कि जो तुम्हों मे परिश्रम करते है और प्रभु मे तुम पर अध्यक्षता करते है और तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान रखो ॥ १३। और उन के काम के कारण उन्हें अत्यन्त प्रेम के योग्य समझो. आपस मे मिले रहो॥

१४ । और हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं अनरीति से चलनेहारों को चिताओ कायरों को शांति देओ दुर्ब्बलों को सभालो सभों की ओर धीरजवन्त होओ ॥ १५ । देखो कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे परन्तु सदा एक दूसरे की ओर और सभों की ओर भी भलाई की चेष्टा करो ॥ १६ । सदा आनन्दित रहो ॥ १७ । निरन्तर प्रार्थना करो ॥ १८ । हर बात में धन्य मानो क्योंकि तुम्हारे विषय में यही खीष्ट यीशु में ईश्वर की इच्छा है ॥ १९ । आत्मा को निवृत्त मत करो ॥ २० । भविष्यद्वाणियां तुच्छ मत जानो ॥ २१ । सब बातें जांचो अच्छी को धर लेओ ॥ २२ । सब प्रकार की बुराई से परे रहो ॥ २३ । शांति का ईश्वर आप ही तुम्हें संपूर्ण पवित्र करे और तुम्हारा संपूर्ण आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के आने पर निर्दोष रखा जाय ॥ २४ । तुम्हारा बुलानेहारा विश्वासयोग्य है और वही यह करेगा ॥

२५ । हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो ॥ २६ । सब भाइयों को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो ॥ २७ । मैं तुम्हें प्रभु की किरिया देता हूं कि यह पत्री सब पवित्र भाइयों को पढ़के सुनाई जाय ॥ २८ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होवे । आमीन ॥

थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

---

१. पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकियों की मण्डली को जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट में है ॥ २ । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । हे भाइयो तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है जैसा योग्य है क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता है और एक दूसरे की ओर तुम सभों में से हर एक का प्रेम अधिक होता जाता है ॥ ४ । यहां लों कि सब उपद्रवों में जो तुम पर पड़ते हैं और क्लेशों में जो तुम सहते हो तुम्हारा जो धीरज और विश्वास है उस के लिये हम आप ही ईश्वर की मण्डलियों में तुम्हारे विषय में बड़ाई करते हैं ॥

५ । यह तो ईश्वर के यथार्थ विचार का प्रमाण है जिस्तें तुम ईश्वर के राज्य के योग्य गिने जाओ जिस के लिये तुम दुःख भी उठाते हो ॥ ६ । क्योंकि यह तो ईश्वर के न्याय के अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें प्रतिफल में क्लेश देवे ॥ ७ । और तुम्हें जो क्लेश पाते हो हमारे संग उस समय में चैन देवे जिस समय प्रभु यीशु स्वर्ग से अपने सामर्थ्य के दूतों के संग धधकती आग में प्रगट होगा ॥ ८ । और जो लोग ईश्वर को नहीं जानते हैं और जो लोग हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के सुसमाचार को नहीं मानते हैं उन्हें दण्ड देगा ॥ ९ । कि वे तो प्रभु के सन्मुख से और उस की शक्ति के तेज की ओर से उस दिन अनन्त विनाश का दण्ड पावेंगे ॥ १० । जिस दिन वह अपने पवित्र लोगों में तेजोमय और सब विश्वास करनेहारों में आश्चर्य दिखाई देने को आवेगा . कि हम ने तुम को जो साक्षी दिई उस पर विश्वास तो किया गया ॥

११ । इस निमित्त हम नित्य तुम्हारे विषय में प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे और भलाई की सारी सुइच्छा को और विश्वास के कार्य्य को सामर्थ्य से पूरा

करे॥ १२। जिस्तें तुम्हों में हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम की महिमा और उस में तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वर के और प्रभु यीशु खीष्ट के अनुग्रह के समान प्रगट किई जाय॥

२. पर हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के आने के और हमों के उस पास एकट्ठे होने के विषय में हम तुम से बिन्ती करते हैं॥ २। कि अपना अपना मन शीघ्र डिगने न देओ और आत्मा के द्वारा अथवा वचन के द्वारा अथवा पत्री के द्वारा जैसे हमारी ओर से होते घबरा न जाओ कि मानो खीष्ट का दिन आ पहुंचा है॥ ३। कोई तुम्हें किसी रीति से न छले क्योंकि जब लों धर्म्म-त्याग न हो लेवे और वह पापपुरुष अर्थात् बिनाश का पुत्र॥ ४। जो बिरोध करनेहारा और सब पर जो ईश्वर अथवा पूज्य कहावता है अपने को ऊंचा करनेहारा है यहां लों कि वह ईश्वर के मन्दिर में ईश्वर की नाईं बैठके अपने को ईश्वर करके दिखावे प्रगट न होय तब लों वह दिन नहीं पहुंचेगा॥ ५। क्या तुम्हें सुरत नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहां था तब भी मैं ने यह बातें तुम से कहीं॥ ६। और अब तुम उस बस्तु को जानते हो जो इस लिये रोकती है कि वह अपने ही समय में प्रगट होवे॥ ७। क्योंकि अधर्म्म का भेद अब भी कार्य्य करता है पर केवल जब लों वह जो अभी रोकता है टल न जावे॥ ८। और तब वह अधर्म्मी प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंह के पवन से नाश करेगा और अपने आने के प्रकाश से लोप करेगा॥ ९। अर्थात् वह अधर्म्मी जिस का आना शैतान के कार्य्य के अनुसार झूठ के सब प्रकार के सामर्थ्य और चिन्हों और अद्भुत कामों के साथ॥ १०। और उन्हों में जो नष्ट होते हैं अधर्म्म के सब प्रकार के छल के साथ है इस कारण कि उन्हों ने सच्चाई के प्रेम को नहीं ग्रहण किया कि उन का त्राण होता॥ ११। और इस कारण से ईश्वर उन पर भ्रांति की प्रबलता भेजेगा कि वे झूठ का विश्वास करें॥ १२। जिस्तें सब लोग जिन्हों ने सच्चाई का बिश्वास न किया परन्तु अधर्म्म से प्रसन्न हुए दण्ड के योग्य ठहरें॥

१३। पर हे भाइयो प्रभु के प्यारो तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वर ने आदि से तुम्हें आत्मा की पवित्रता और सच्चाई के बिश्वास के द्वारा त्राण पाने को चुन लिया॥ १४। और इस के लिये तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा से बुलाया जिस्तें तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की महिमा को प्राप्त करो॥ १५। इस लिये हे भाइयो दृढ़ रहो और जो बातें तुम ने हमारे चाहे वचन के द्वारा चाहे पत्री के द्वारा सीखीं उन्हें धारण करो॥ १६। हमारा प्रभु यीशु खीष्ट आपही और हमारा पिता ईश्वर जिस ने हमें प्यार किया और अनुग्रह से अनन्त शांति और अच्छी आशा दिई है॥ १७। तुम्हारे मन को शांति देवे और तुम्हें हर एक अच्छे वचन और कर्म्म में स्थिर करे॥

३. अन्त मे हे भाइयो यह कहता हूं कि हमारे लिये प्रार्थना करो कि प्रभु का वचन जैसा तुम्हारे यहां फैलता है तैसा ही शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे॥ २। और कि हम अबिचारी और दुष्ट मनुष्यों से बच जायें क्योंकि बिश्वास सभों को नहीं है॥ ३। परन्तु प्रभु विश्वास-योग्य है जो तुम्हें स्थिर करेगा और दुष्ट से बचाये रहेगा॥ ४। और हम प्रभु में तुम्हारे विषय में भरोसा रखते हैं कि जो कुछ हम तुम्हें आज्ञा देते हैं उसे तुम करते हो और करोगे भी॥ ५। प्रभु तो ईश्वर के प्रेम की ओर और खीष्ट के धीरज की ओर तुम्हारे मन की अगवाई करे॥

६। हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु खीष्ट के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक भाई से जो अनरीति से चलता है और जो शिक्षा उस ने हम से पाई उस के अनुसार नहीं चलता है अलग हो जाओ॥ ७। क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारे अनुगामी होना उचित है क्योंकि हम तुम्हों में अनरीति से नहीं चले॥ ८। और सेंत की रोटी किसी के यहां से न खाई परन्तु परिश्रम और

क्लेश से रात औ दिन कमाते थे कि तुम में से किसी पर भार न देवें॥ ९। यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं है परन्तु इस लिये कि अपने को तुम्हारे कारण दृष्टान्त कर देवें जिस्तें तुम हमारे अनुगामी होओ॥ १०। क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई कमाने नहीं चाहता है तो खाना भी न खाय॥ ११। क्योंकि हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हों में अनरीति से चलते हैं और कुछ कमाते नहीं परन्तु औरों के काम में हाथ डालते हैं॥ १२। ऐसों को हम आज्ञा देते हैं और अपने प्रभु यीशु खीष्ट की ओर से उपदेश करते हैं कि वे चैन से कमाके अपनी ही रोटी खाया करें॥ १३। और तुम हे भाइयो सुकर्म्म करने में कातर मत होओ॥ १४। यदि कोई इस पत्री में का हमारा वचन नहीं मानता है उसे चीन्ह रखो और उस की संगति मत करो जिस्तें वह लज्जित होय॥ १५। तौभी उसे बैरी सा मत समझो परन्तु भाई जानके चिताओ॥

१६। शांति का प्रभु आप ही नित्य तुम्हें सर्व्वथा शांति देवे. प्रभु तुम सभों के संग होवे॥ १७। मुझ पावल का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार जो हर एक पत्री में चिन्ह है. मैं यूं ही लिखता हूं॥ १८। हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे। आमीन॥

तिमोथिय को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।

---

१. पावल जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की और हमारी आशा प्रभु यीशु खीष्ट की आज्ञा के अनुसार यीशु खीष्ट का प्रेरित है विश्वास में अपने सच्चे पुत्र तिमोथिय को॥ २। तुझे हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु खीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले॥

३। जैसे मैं ने माकिदोनिया को जाते हुए तुझ से विन्ती किई [तैसे फिर कहता हूं] कि इफिस में रहियो जिस्तें तू कितनों को आज्ञा देवे कि आन आन उपदेश मत किया करो॥ ४। और कहानियों पर और अनन्त वंशावलियों पर मन मत लगाओ जिन से ईश्वर के भण्डारीपन का जो विश्वास के विषय में है निबाह नहीं होता है परन्तु और भी विवाद उत्पन्न होते हैं॥ ५। धर्म्माज्ञा का अन्त वह प्रेम है जो शुद्ध मन से और अच्छे विवेक से और निष्कपट विश्वास से होता है॥ ६। जिन से कितने लोग भटकके बकवाद की ओर फिर गये हैं॥ ७। जो व्यवस्थापक हुआ चाहते हैं परन्तु न वह बातें बूझते जो वे कहते हैं और न यह जानते हैं कि कौन सी बातों के विषय में दृढ़ता से बोलते हैं॥ ८। पर हम जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उस को विधि के अनुसार यह जानके काम में लावे तो अच्छी है॥ ९। कि व्यवस्था धर्म्मी जन के लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु अधर्म्मी औ निरंकुश लोगों के लिये भक्तिहीनों औ पापियों के लिये अपवित्र और अशुद्ध लोगों के लिये पितृघातकों औ मातृघातकों के लिये॥ १०। मनुष्यघातकों व्यभिचारियों पुरुषगामियों मनुष्य-विक्रइयों झूठों और झूठी किरिया खानेहारों के लिये है और यदि दूसरा कोई कर्म्म हो जो खरे उपदेश के विरुद्ध है तो उस के लिये भी है॥ ११। परमधन्य ईश्वर की महिमा के सुसमाचार के अनुसार जो मुझे सौंपा गया॥

१२। और मैं खीष्ट यीशु हमारे प्रभु का जिस ने मुझे सामर्थ्य दिया धन्य मानता हूं कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझा और सेवकाई के लिये ठहराया॥ १३। जो आगे निन्दक और सतानेहारा

और उपद्रवी था परन्तु मुझ पर दया किई गई क्योंकि मैं ने अविश्वासता में अज्ञानता से ऐसा किया ॥ १४ । और हमारे प्रभु का अनुग्रह विश्वास के साथ और प्रेम के साथ जो खीष्ट यीशु मे है बहुत अधिकाई से हुआ ॥ १५ । यह वचन विश्वास-योग्य और सर्व्वथा ग्रहणयोग्य है कि खीष्ट यीशु पापियों को बचाने के लिये जगत में आया जिन्हों में मै सब से बड़ा हूं ॥ १६ । परन्तु मुझ पर इसी कारण से दया किई गई कि मुझ में सब से अधिक करके यीशु खीष्ट समस्त धीरज दिखावे कि यह उन लोगों के लिये जो उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करनेवाले थे एक नमूना होवे ॥ १७ । सनातन काल के अविनाशी और अदृश्य राजा को अर्थात् अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को सदा सर्व्वदा प्रतिष्ठा और गुणानुवाद होवे . आमीन ॥

१८ । यह आज्ञा हे पुत्र तिमोथिय मैं उन भविष्य-द्वाणियों के अनुसार जो तेरे विषय में आगे से किई गई तुझे सौंप देता हूं कि तू उन्हों की सहायता से अच्छी लड़ाई का योद्धा होय ॥ १९ । और विश्वास को और अच्छे विवेक को रखे जिसे त्यागने से कितनों के विश्वास का जहाज मारा गया ॥ २० । इन्हों में से हुमिनई और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखें कि निन्दा न करें ॥

२. सो मैं सब से पहिले यह उपदेश करता हूं कि बिन्ती औ प्रार्थना औ निवेदन औ धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किये जावें ॥ २ । राजाओं के लिये भी और सभों के लिये जिन का ऊंच पद है इस लिये कि हम विश्राम और चैन से सारी भक्ति और गंभीरता में अपना अपना जन्म बितावें ॥ ३ । क्योंकि यह हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर को अच्छा लगता और भावता है ॥ ४ । जिस की इच्छा यह है कि सब मनुष्य त्राण पावें और सत्य के ज्ञान लों पहुंचें ॥ ५ । क्योंकि एक ही ईश्वर है और ईश्वर और मनुष्यों का एक ही मध्यस्थ है अर्थात् खीष्ट यीशु जो मनुष्य है ॥ ६ । जिस ने सभों के उद्धार के दाम में अपने को दिया ॥ ७ । यही उपयुक्त समय में की साक्षी है जिस के लिये मैं प्रचारक औ प्रेरित और विश्वास औ सच्चाई में अन्यदेशियों का उपदेशक ठहराया गया . मैं खीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं ॥

८ । सो मैं चाहता हूं कि हर स्थान में पुरुष लोग बिना क्रोध औ बिना विवाद पवित्र हाथों को उठाके प्रार्थना करें ॥ ९ । इसी रीति से मैं चाहता हूं कि स्त्रियां भी सकोच और संयम के साथ अपने तईं उस पहिरावन से जो उन के योग्य है संवारें गूंथे हुए बाल वा सोने वा मोतियों से वा बहुमूल्य वस्त्र से नहीं परन्तु अच्छे कर्म्मों से ॥ १० । कि यही उन स्त्रियों को जो ईश्वर की उपासना की प्रतिज्ञा करती हैं सोहता है ॥ ११ । स्त्री चुपचाप सकल अधीनता से सीख लेवे ॥ १२ । परन्तु मैं स्त्री को उपदेश करने अथवा पुरुष पर अधिकार रखने की नहीं परन्तु चुपचाप रहने की आज्ञा देता हूं ॥ १३ । क्योंकि आदम पहिले बनाया गया तब हव्वा ॥ १४ । और आदम नहीं छला गया परन्तु स्त्री छली गई और अपराधिनी हुई ॥ १५ । तौभी जो वे संयम सहित विश्वास और प्रेम और पवित्रता में रहें तो लड़के जनने में त्राण पावेंगी ॥

३. यह वचन विश्वासयोग्य है कि यदि कोई मडली के रखवाले का काम लेने चाहता है तो अच्छे काम की लालसा करता है ॥ २ । सो उचित है कि रखवाला निर्दोष और एक ही स्त्री का स्वामी सचेत औ संयमी और सुशील और अतिथिसेवक औ सिखाने में निपुण होय ॥ ३ । मद्यपान में आसक्त नहीं और न मरकहा न नीच कमाई करनेहारा परन्तु मृदुभाव मिलनसार औ निर्लोभी ॥ ४ । जो अपने ही घर की अच्छी रीति से अध्यक्षता करता हो और लड़कों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो ॥ ५ । पर यदि कोई अपने ही घर की अध्यक्षता करने न जानता हो तो क्योंकर ईश्वर की मडली की रखवाली करेगा ॥ ६ । फिर नवशिष्य न होय ऐसा न हो कि अभिमान से फूलके शैतान के

दंड में पड़े ॥ ७। और भी उस को उचित है कि बाहरवालों के यहां सुख्यात होवे ऐसा न हो कि निन्दित हो जाय और शैतान के फंदे में पड़े ॥

८। वैसे ही मंडली के सेवकों को उचित है कि गंभीर होवें दोरंगी नहीं न बहुत मद्य की रुचि करनेहारे न नीच कमाई करनेहारे ॥ ९। परन्तु विश्वास का भेद शुद्ध विवेक से रखनेहारे हों ॥ १०। पर ये लोग पहिले परखे भी जावें तब जो निर्दोष निकलें तो सेवक का काम करें ॥ ११। इसी रीति से स्त्रियों को उचित है कि गंभीर होवें और दोष लगानेवालियां नहीं परन्तु सचेत औ सब बातों में विश्वासयोग्य ॥ १२। सेवक लोग एक एक स्त्री के स्वामी और लड़कों की और अपने अपने घर की अच्छी रीति से अध्यक्षता करनेहारे हों ॥ १३। क्योंकि जिन्हों ने सेवक का काम अच्छी रीति से किया है वे अपने लिये अच्छा पद प्राप्त करते हैं और उस विश्वास में जो खीष्ट यीशु पर है बड़ा साहस पाते हैं ॥

१४। मैं तेरे पास बहुत शीघ्र आने की आशा रखके भी यह बातें तेरे पास लिखता हूं ॥ १५। पर इस लिये लिखता हूं कि जो मैं बिलम्ब करूं तौभी तू जाने कि ईश्वर के घर में जो जीवते ईश्वर की मण्डली और सत्य का खंभा औ नेव है कैसी चाल चलना उचित है ॥ १६। और यह बात सब मानते हैं कि भक्ति का भेद बड़ा है कि ईश्वर शरीर में प्रगट हुआ आत्मा में निर्दोष ठहराया गया स्वर्गदूतों को दिखाई दिया आन आन देशियों में प्रचार किया गया जगत में उस पर विश्वास किया गया वह महिमा में उठा लिया गया ॥

४. पवित्र आत्मा स्पष्टता से कहता है कि इस के पीछे कितने लोग विश्वास से बहक जायेंगे और भरमानेहारे आत्माओं पर और भूतों की शिक्षाओं पर मन लगावेंगे ॥ २। उन झूठ बोलनेहारों के कपट के अनुसार जिन का निज मन दागा हुआ होगा ॥ ३। जो विवाह करने से बरजेंगे और खाने की वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे जिन्हें ईश्वर ने इस लिये सृजा कि विश्वासी लोग और सत्य के माननेहारे उन्हें धन्यबाद के संग भोग करें ॥ ४। क्योंकि ईश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है और कोई वस्तु जो धन्यबाद के संग ग्रहण किई जाय फेंकने के योग्य नहीं है ॥ ५। क्योंकि वह ईश्वर के बचन के और प्रार्थना के द्वारा पवित्र किई जाती है ॥

६। भाइयों को इन बातों का स्मरण करवाने से तू यीशु खीष्ट का अच्छा सेवक ठहरेगा जिस का विश्वास की और उस अच्छी शिक्षा की बातों में जो तू ने प्राप्त किई हैं अभ्यास होता है ॥ ७। परन्तु अशुद्ध और बुढ़िया की सी कहानियों से अलग रह पर भक्ति के लिये अपनी साधना कर ॥ ८। क्योंकि देह की साधना कुछ थोड़े के लिये फलदाई है परन्तु भक्ति सब बातों के लिये फलदाई है कि उस को अब के जीवन की और आनेवाले की भी प्रतिज्ञा है ॥ ९। यह बचन विश्वासयोग्य और सर्व्वथा ग्रहण योग्य है ॥ १०। क्योंकि हम इस के निमित्त परिश्रम करते हैं और निन्दित भी होते हैं कि हम ने जीवते ईश्वर पर भरोसा रखा है जो सब मनुष्यों का निज करके विश्वासियों का बचानेहारा है ॥ ११। इन बातों की आज्ञा और शिक्षा किया कर ॥

१२। कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने परन्तु बचन में चलन में प्रेम में आत्मा में विश्वास में और पवित्रता में तू विश्वासियों के लिये दृष्टान्त बन जा ॥ १३। जब लों मैं न आऊं तब लों पढ़ने में उपदेश में और शिक्षा में मन लगा ॥ १४। उस बरदान से जो तुझ में है जो भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीन लोगों के हाथ रखने के साथ तुझे दिया गया निश्चिन्त न रहना ॥ १५। इन बातों की चिन्ता कर इन में लगा रह कि तेरी बढ़ती सभों में प्रगट होवे ॥ १६। अपने विषय में और शिक्षा के विषय में सचेत रह कि तू उन में बना रहे क्योंकि यह करने में तू अपने को और अपने सुननेहारों को भी बचावेगा ॥

५. बूढ़े को मत डपट परन्तु उस को जैसे पिता जानके उपदेश दे और जवानों को जैसे भाइयों को ॥ २। बुढ़ियाओं को

जैसे माताओं को और युवतियों को जैसे बहिनों को सारी पवित्रता से उपदेश दे ॥ ३। बिधवाओं का जो सचमुच बिधवा हैं आदर कर ॥ ४। परन्तु जो किसी बिधवा के लड़के अथवा नाती पोते हों तो वे लोग पहिले अपने ही घर का सन्मान करने और अपने पितरों को प्रतिफल देने को सीखें क्योंकि यह ईश्वर को अच्छा लगता और भावता है ॥ ५। जो सचमुच बिधवा और अकेली छोड़ी हुई है सो ईश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन बिन्ती औ प्रार्थना में लगी रहती है ॥ ६। परन्तु जो भोग बिलास में रहती है सो जीते जी मर गई है ॥ ७। और इन बातों की आज्ञा दिया कर इस लिये कि वे निर्दोष होवें ॥ ८। परन्तु यदि कोई जन अपने कुटुंब के और निज करके अपने घराने के लिये चिन्ता न करे तो वह बिश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा है ॥ ९। बिधवा वही गिनी जाय जिस की बयस साठ बरस के नीचे न हो जो एक ही स्वामी की स्त्री हुई हो ॥ १०। जो सुकर्म्मों के बिषय में सुख्यात हो यदि उस ने लड़कों को पाला हो यदि अतिथिसेवा किई हो यदि पवित्र लोगों के पांओं को धोया हो यदि दुखियों का उपकार किया हो यदि हर एक अच्छे काम की चेष्टा किई हो तो गिन्ती में आवे ॥ ११। परन्तु जवान बिधवाओं को अलग कर क्योंकि जब वे खीष्ट के विरुद्ध सुख बिलास की इच्छा करती हैं तब बिवाह करने चाहती हैं ॥ १२। और दण्ड के योग्य होती है क्योंकि उन्हों ने अपने पहिले बिश्वास को तुच्छ जाना है ॥ १३। और इस के संग वे बेकार रहने और घर घर फिरने को सीखती हैं और केवल बेकार रहने नहीं परन्तु बकवादी होने और पराये काम में हाथ डालने और अनुचित बातें बोलने को सीखती हैं ॥ १४। इस लिये मैं चाहता हूं कि जवान बिधवाएं बिवाह करें औ लड़के जनें औ घरबारी करें औ किसी विरोधी को निन्दा के कारण कुछ अवसर न देवें ॥ १५। क्योंकि अब भी कितनी तो बहकके शैतान के पीछे हो लिई हैं ॥ १६। जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनी के यहां बिधवाएं हों तो वही उन का उपकार करे और मण्डली पर भार न दिया जाय जिस्तें वह उन्हों का जो सचमुच बिधवा हैं उपकार करे ॥

१७। जिन प्राचीनों ने अच्छी रीति से अध्यक्षता किई है सो दूने आदर के योग्य समझे जावें निज करके वे जो उपदेश और शिक्षा में परिश्रम करते हैं ॥ १८। क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि दावनेहारे बैल का मुंह मत बांध और कि बनिहार अपनी बनि के योग्य है ॥ १९। प्राचीन के विरुद्ध दो अथवा तीन साक्षियों की साक्षी बिना अपवाद को ग्रहण न करना ॥ २०। पाप करनेहारों को सभों के आगे समझा दे इस लिये कि और लोग भी डर जावें ॥ २१। मैं ईश्वर के और प्रभु यीशु खीष्ट के और चुने हुए दूतों के आगे दृढ़ आज्ञा देता हूं कि तू मन की गांठ न बांधके इन बातों को पालन करे और कोई काम पक्षपात की रीति से न करे ॥ २२। किसी पर हाथ शीघ्र न रखना और न दूसरों के पापों में भागी होना. अपने को पवित्र रख ॥ २३। अब जल मत पिया कर परन्तु अपने उदर के और अपने बारम्बार के रोगों के कारण थोड़ा सा दाख रस लिया कर ॥ २४। कितने मनुष्यों के पाप प्रत्यक्ष हैं और बिचारित होने को आगे ही चलते हैं परन्तु कितनों के वे पीछे भी हो लेते हैं ॥ २५। वैसे ही कितनों के सुकर्म्म भी प्रत्यक्ष हैं और जो और प्रकार के हैं सो छिप नहीं सकते हैं ॥

६. जितने दास जूए के नीचे हैं वे अपने अपने स्वामी को सारे आदर के योग्य समझें जिस्तें ईश्वर के नाम की और धर्म्मोपदेश की निन्दा न किई जाय ॥ २। और जिन्हों के स्वामी बिश्वासी जन हों सो उन्हें इस लिये कि भाई हैं तुच्छ न जानें परन्तु और भी उन की सेवा करें क्योंकि वे जो इस भलाई के भागी होते हैं बिश्वासी और प्यारे हैं. इन बातों की शिक्षा और उपदेश किया कर ॥

३। यदि कोई जन आन उपदेश करता है और खरी बातों को अर्थात् हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की

बातों को और उस शिक्षा को जो भक्ति के अनुसार है नहीं मानता है॥ ४। तो वह अभिमान से फूल गया है और कुछ नहीं जानता है परन्तु उसे विवादों का और शब्दों के झगड़ों का रोग है जिन से डाह बैर निन्दा की बातें और दूसरों की ओर बुरे संदेह॥ ५। और उन मनुष्यों के व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं जिन के मन बिगड़े हैं और जिन से सच्चाई हरी गई है जो समझते हैं कि कमाई ही भक्ति है. ऐसे लोगों से अलग रहना॥

६। पर संतोषयुक्त भक्ति बड़ी कमाई है॥ ७। क्योंकि हम जगत में कुछ नहीं लाये और प्रगट है कि हम कुछ ले जाने भी नहीं सकते हैं॥ ८। और भोजन और वस्त्र जो हमें मिला करें तो इन्हीं से सन्तुष्ट रहना चाहिये॥ ९। परन्तु जो लोग धनी होने चाहते हैं सो परीक्षा और फन्दे में और बहुतेरे बुद्धिहीन और हानिकारी अभिलाषों में फंसते हैं जो मनुष्यों को विनाश और विध्वंस में डुबा देते हैं॥ १०। क्योंकि धन का लोभ सब बुराइयों का मूल है उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए कितने लोग विश्वास से भरमाये गये हैं और अपने को बहुत खेदों से वारपार छेदा है॥

११। परन्तु हे ईश्वर के जन तू इन बातों से बचा रह और धर्म्म औ भक्ति औ विश्वास औ प्रेम औ धीरज औ नम्रता की चेष्टा कर॥ १२। विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ और अनन्त जीवन को धर ले जिस के लिये तू बुलाया भी गया और बहुत साक्षियों के आगे अच्छा अंगीकार किया॥ १३। मैं तुझे ईश्वर के आगे जो सभों को जिलाता है और ख्रीष्ट यीशु के आगे जिस ने पन्तिय पिलात के साम्हने अच्छे अंगीकार की साक्षी दिई आज्ञा देता हूं॥ १४। कि तू इस आज्ञा को निष्खोट औ निर्दोष हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के प्रकाश लों पालन कर॥ १५। जिसे वह अपने ही समयों में दिखावेगा जो परमधन्य और अद्वैत पराक्रमी और राज्य करनेहारों का राजा औ प्रभुता करनेहारों का प्रभु है॥ १६। और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में बास करता है और उस को मनुष्यों में से किसी ने नहीं देखा है और न कोई देख सकता है. उस को प्रतिष्ठा और अनन्त पराक्रम होय. आमीन॥

१७। जो लोग इस संसार में धनी हैं उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमानी न होवें और धन की चंचलता पर भरोसा न रखें परन्तु जीवते ईश्वर पर जो सुख प्राप्ति के लिये हमें सब कुछ धनी की रीति से देता है॥ १८। और कि वे भलाई करें और अच्छे कामों के धनवान होवें और उदार औ परोपकारी हों॥ १९। और भविष्यत्काल के लिये अच्छी नेव अपने लिये जुगा रखें जिस्तें अनन्त जीवन को धर लेवें॥

२०। हे तिमोथिय इस थाथी की रक्षा कर और अशुद्ध बकवादों से और जो झुठाई से ज्ञान कहावता है उस की विरुद्ध बातों से परे रह॥ २१। कि इस ज्ञान की प्रतिज्ञा करते हुए कितने लोग विश्वास के विषय में भटक गये हैं. तेरे संग अनुग्रह होय। आमीन॥

तिमोथिय को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।

---

१. **पावल** जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो ख्रीष्ट यीशु में है ईश्वर की इच्छा से यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है॥ २। मेरे प्यारे पुत्र तिमोथिय को ईश्वर पिता से और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले॥

३। मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं जिस को

सेवा में अपने पितरों की रीति पर शुद्ध मन से करता हूं कि रात दिन मुझे मेरी प्रार्थनाओं में तेरे विषय में ऐसे निरन्तर चेत रहता है ॥ ४ । और तेरे आंसूओं को स्मरण करके मैं तुझे देखने की लालसा करता हूं जिस्तें आनन्द से परिपूर्ण होऊं ॥ ५ । क्योंकि उस निष्कपट बिश्वास की मुझे सुरत पड़ती है जो तुझ में है जो पहिले तेरी नानी लोईस में और तेरी माता उनीकी में बसता था और मुझे निश्चय हुआ है कि तुझ में भी बसता है ॥

६ । इस कारण से मैं तुझे चेत दिलाता हूं कि ईश्वर के बरदान को जो मेरे हाथों के रखने के द्वारा से तुझ मे है जगा दे ॥ ७ । क्योंकि ईश्वर ने हमें कादराई का नहीं परन्तु सामर्थ्य औ प्रेम औ प्रबोध का आत्मा दिया है ॥ ८ । इस लिये तू न हमारे प्रभु की साक्षी से और न मुझ से जो उस का बंधुआ हूं लज्जित हो परन्तु सुसमाचार के लिये मेरे संग ईश्वर की शक्ति की सहायता से दु.ख उठा ॥ ९ । जिस ने हमें बचाया और उस पवित्र बुलाहट से बुलाया जो हमारे कर्म्मों के अनुसार नहीं परन्तु उसी की इच्छा और उस अनुग्रह के अनुसार थी जो खीष्ट यीशु में सनातन से हमें दिया गया ॥ १० । परन्तु अभी हमारे त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के प्रकाश के द्वारा प्रगट किया गया है जिस ने मृत्यु का क्षय किया परन्तु जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा से प्रकाशित किया ॥ ११ । जिस के लिये मै प्रचारक औ प्रेरित और अन्यदेशियो का उपदेशक ठहराया गया ॥ १२ । इस कारण से मैं इन दुःखों को भी भोगता हूं परन्तु मैं नहीं लजाता हूं क्योंकि मै उसे जानता हूं जिस का मै ने बिश्वास किया है और मुझे निश्चय हुआ है कि वह उस दिन के लिये मेरी थाथी की रक्षा करने का सामर्थ्य रखता है ॥ १३ । जो बातें तू ने मुझ से सुनीं सोई बिश्वास और प्रेम से जो खीष्ट यीशु से होते हैं तेरे लिये खरी बातों का नमूना होवें ॥ १४ । पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसता है इस अच्छी थाथी की रक्षा कर ॥

१५ । तू यही जानता है कि वे सब जो आशिया मे हैं जिन में फुगील और हर्मोगिनिस हैं मुझ से फिर गये ॥ १६ । उनीसिफर के घराने पर प्रभु दया करे क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जीव को ठंढा किया और मेरी जंजीर से नहीं लजाया ॥ १७ । परन्तु जब रोम में था तब बड़े यत्न से मुझे ढूंढ़ा और पाया ॥ १८ । प्रभु उस को यह देवे कि उस दिन में उस पर प्रभु से दया किई जाय . इफिस में भी उस ने कितनी सेवकाई किई सो तू बहुत अच्छी रीति से जानता है ॥

२. सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रह से जो खीष्ट यीशु में है बलवन्त हो ॥ २ । और जो बातें तू ने बहुत साक्षियों के आगे मुझ से सुनीं उन्हें बिश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य होवें ॥ ३ । सो तू यीशु खीष्ट के अच्छे योद्धा की नाईं दुःख सह ले ॥ ४ । जो कोई युद्ध करता है सो अपने को जीविका के ब्योपारों में नहीं उलझाता है इस लिये कि अपने भरती करनेहारे को प्रसन्न करे ॥ ५ । और यदि कोई मल्लयुद्ध भी करे जो वह विधि के अनुसार मल्लयुद्ध न करे तो उसे मुकुट नहीं दिया जाता है ॥ ६ । उचित है कि पहिले वह गृहस्थ जो परिश्रम करता है फलों का अंश पावे ॥ ७ । जो मैं कहता हूं उसे बूझ ले क्योंकि प्रभु तुझे सब बातों मे ज्ञान देगा ॥

८ । स्मरण कर कि यीशु खीष्ट जो दाऊद के वंश से था मेरे सुसमाचार के अनुसार मृतकों में से जी उठा है ॥ ९ । उस सुसमाचार के लिये मै कुकर्म्मी की नाईं यहां लों दुःख उठाता हूं कि बांधा भी गया हूं परन्तु ईश्वर का बचन बंधा नहीं है ॥ १० । मै इस लिये चुने हुए लोगों के कारण सब बातो में धीरज धरे रहता हूं कि अनन्त महिमा सहित वह त्राण जो खीष्ट यीशु मे है उन्हें भी मिले ॥ ११ । यह बचन बिश्वासयोग्य है कि जो हम उस के संग मूए तो उस के संग जीयेंगे भी ॥ १२ । जो हम धीरज धरे रहें तो उस के संग राज्य भी करेंगे . जो हम उस से मुकर जायें तो वह भी हम से मुकर जायगा ॥ १३ । जो हम अविश्वासी

होवें वह विश्वासयोग्य रहता है वह अपने को आप नहीं नकार सकता है॥

१४। इन बातों का उन्हें स्मरण करवा और प्रभु के आगे दृढ़ आज्ञा दे कि वे शब्दों के झगड़े न किया करें जिन से कुछ लाभ नहीं होता पर सुननेहारे बहकाये जाते हैं॥ १५। अपने तईं ईश्वर के आगे ग्रहणयोग्य और ऐसा कार्य्यकारी जो लज्जित न होय और सत्य के बचन का यथार्थ विभाग करवैया ठहराने का यत्न कर॥ १६। परन्तु अशुद्ध बकवादों से बचा रह क्योंकि ऐसे बकवादी अधिक अभक्ति में बढ़ते जायेंगे॥ १७। और उन का बचन सड़े घाव की नाईं फैलता जायगा॥ १८। उन्हों में हुमिनई और फिलीत हैं जो सत्य के विषय में भटक गये हैं और कहते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका है और कितनों के विश्वास को उलट देते हैं॥ १९। तौभी ईश्वर की दृढ़ नेव बनी रहती है जिस पर यह छाप है कि प्रभु उन्हें जो उस के हैं जानता है और यह कि हर एक जन जो खीष्ट का नाम लेता है कुकर्म्म से अलग रहे॥ २०। बड़े घर में केवल सोने और चांदी के बर्त्तन नहीं परन्तु काठ और मिट्टी के बर्त्तन भी हैं और कोई कोई आदर के कोई कोई अनादर के हैं॥ २१। सो यदि कोई अपने को इन से शुद्ध करे तो वह आदर का बर्त्तन होगा जो पवित्र किया गया है और स्वामी के बड़े काम आता है और हर एक अच्छे कर्म्म के लिये तैयार किया गया है॥ २२। पर जवानी की अभिलाषाओं से बचा रह परन्तु धर्म्म औ विश्वास औ प्रेम और जो लोग शुद्ध मन से प्रभु की प्रार्थना करते हैं उन्हों के संग मिलाप की चेष्टा कर॥ २३। पर मूढ़ता और अविद्या के विवादों को अलग कर क्योंकि तू जानता है कि उन से झगड़े उत्पन्न होते हैं॥ २४। और प्रभु के दास को उचित नहीं है कि झगड़ा करे परन्तु सभों की ओर कोमल और सिखाने में निपुण और सहनशील होय॥ २५। और विरोधियों को नम्रता से समझावे क्या जाने ईश्वर उन्हें पश्चात्ताप दान करे कि वे सत्य को पहचानें॥ २६। और जिन्हें शैतान ने अपनी इच्छा निमित्त बझाया था उस के फन्दे में से सचेत होके निकलें॥

३.

पर यह जान ले कि पिछले दिनों में कठिन समय आ पड़ेंगे॥ २। क्योंकि मनुष्य आपस्वार्थी लोभी दंभी अभिमानी निन्दक माता पिता की आज्ञा लंघन करनेहारे कृतघ्नी अपवित्र॥ ३। मयारहित क्षमारहित दोष लगानेहारे असंयमी कठोर भले के बैरी॥ ४। विश्वासघातक उतावले घमण्ड से फूले हुए और ईश्वर से अधिक सुखविलास ही को प्रिय जाननेहारे होंगे॥ ५। जो भक्ति का रूप धारण करेंगे परन्तु उस की शक्ति से मुकरेंगे. इन्हों से परे रह॥ ६। क्योंकि इन्हों में से वे हैं जो घर घर घुसके उन ओछी स्त्रियों को बश कर लेते हैं जो पापों से लदी हैं और नाना प्रकार की अभिलाषाओं के चलाये चलती हैं॥ ७। जो सदा सीखती हैं परन्तु कभी सत्य के ज्ञान लों नहीं पहुंच सकती हैं॥ ८। जिस रीति से यान्नी और यांब्री ने मूसा का साम्ना किया उसी रीति से ये मनुष्य भी जिन के मन बिगड़े हैं और जो विश्वास के विषय में निकृष्ट हैं सत्य का साम्ना करते हैं॥ ९। परन्तु वे अधिक नहीं बढ़ेंगे क्योंकि जैसे उन दोनों की अज्ञानता सभों पर प्रगट हो गई वैसे इन लोगों की भी हो जायगी॥

१०। परन्तु तू ने मेरा उपदेश औ आचरण औ मनसा औ विश्वास औ धीरज औ प्रेम औ स्थिरता॥ ११। और मेरा अनेक बार सताया जाना औ दुःख उठाना अच्छी रीति से जाना है कि मुझ पर अन्तैखिया में और इकोनिया में और लुस्त्रा में कैसी बातें बीतीं मैं ने कैसे बड़े उपद्रव सहे पर प्रभु ने मुझे सभों से उबारा॥ १२। और सब लोग जो खीष्ट यीशु में भक्ताई से जन्म बिताने चाहते हैं सताये जायेंगे॥ १३। परन्तु दुष्ट मनुष्य और बहकानेहारे धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए अधिक बुरी दशा लों बढ़ते जायेंगे॥

१४। पर तू ने जिन बातों को सीखा और निश्चय जाना है उन में बना रह क्योंकि तू जानता

है कि किस से सीखा॥ १५। और कि बालकपन से धर्म्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है जो बिश्वास के द्वारा जो खीष्ट यीशु में है तुझे त्राण निमित्त बुद्धिमान कर सकता है॥ १६। सारा धर्म्मपुस्तक ईश्वर की प्रेरणा से रचा गया और उपदेश के लिये औ समझाने के लिये औ सुधारने के लिये औ धर्म्म की शिक्षा के लिये फलदाई है॥ १७। जिस्तें ईश्वर का जन सिद्ध अर्थात् हर एक उत्तम कर्म्म के लिये सिद्ध किया हुआ होवे॥

४. सो मैं ईश्वर के आगे और प्रभु यीशु खीष्ट के आगे जो अपने प्रगट होने और अपने राज्य करने पर जीवतों और मृतकों का विचार करेगा दृढ़ आज्ञा देता हूं॥ २। बचन को प्रचार कर समय और असमय तत्पर रह सब प्रकार के धीरज और शिक्षा सहित समझा और डांट और उपदेश कर॥ ३। क्योंकि समय आवेगा जिस में लोग खरे उपदेश को न सहेंगे परन्तु अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये उपदेशकों का ढेर लगावेंगे क्योंकि उन के कान सुरसुरावेंगे॥ ४। और वे सच्चाई से कान फेरेंगे पर कहानियों की ओर फिर जावेंगे॥ ५। परन्तु तू सब बातों मे सचेत रह दुःख सह ले सुसमाचार प्रचारक का कार्य्य कर अपनी सेवकाई को सम्पूर्ण कर॥ ६। क्योंकि मैं अब भी ढाला जाता हूं और मेरे बिदा होने का समय आ पहुंचा है॥ ७। मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी किई है मैं ने बिश्वास को पालन किया है॥ ८। अब तो मेरे लिये वह धर्म्म का मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्मी विचारकर्त्ता है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभों को भी जिन्हों ने उस का प्रगट होना प्रिय जाना है॥

९। मेरे पास शीघ्र आने का यत्न कर॥ १०। क्योंकि दीमा ने इस संसार को प्रिय जानके मुझे छोड़ा है और थिसलोनिका को गया है क्रीस्की गलातिया को और तीतस दलमातिया को गया है॥ ११। केवल लूक मेरे साथ है. मार्क को लेके अपने संग ला क्योंकि वह सेवकाई के लिये मेरे बहुत काम आता है॥ १२। परन्तु तुखिक को मैं ने इफिस को भेजा॥ १३। उस लबादे को जो मैं त्रोआ मे कार्प के यहां छोड़ आया और पुस्तकों को निज करके चर्म्मपत्रों को जब तू आवे तब ले आ॥ १४। सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां किईं. प्रभु उस के कर्म्मों के अनुसार उस को फल देवे॥ १५। और तू भी उस से बचा रह क्योंकि उस ने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया है॥ १६। मेरे पहिली बेर उत्तर देने में कोई मेरे संग नहीं रहा परन्तु सभों ने मुझे छोड़ा. इस का उन पर दोष न लगाया जाय॥ १७। परन्तु प्रभु मेरे निकट खड़ा हुआ और मुझे सामर्थ्य दिया जिस्तें मेरे द्वारा से उपदेश संपूर्ण सुनाया जाय और सब अन्यदेशी लोग सुनें और मै सिंह के मुख से बचाया गया॥ १८। और प्रभु मुझे हर एक बुरे कर्म्म से बचावेगा और अपने स्वर्गीय राज्य के लिये मेरी रक्षा करेगा. उस का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होय. आमीन॥

१९। प्रिस्कीला और अकूला को और उनीसिफर के घराने को नमस्कार॥ २०। इरास्त करिन्थ में रह गया और त्रोफिम रोगी था उसे मैं ने मिलीत मे छोड़ा॥ २१। जाड़े के पहिले आने का यत्न कर. उबूल और पूदी और लीनस और क्लौदिया और सब भाई लोगों का तुझे नमस्कार॥ २२। प्रभु यीशु खीष्ट तेरे आत्मा के संग होय. अनुग्रह तुम्हों के संग होवे। आमीन॥

तीतस को पावल प्रेरित की पत्री।

१. पावल जो ईश्वर का दास और ईश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास के विषय में और जो सत्य वचन भक्ति के समान है उस सत्य वचन के ज्ञान के विषय में अनन्त जीवन की आशा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है॥ २। कि उस जीवन की प्रतिज्ञा ईश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता है सनातन से किई॥ ३। परन्तु उपयुक्त समय में अपने वचन को उपदेश के द्वारा जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया प्रगट किया॥ ४। तीतस को जो साधारण विश्वास के अनुसार मेरा सच्चा पुत्र है ईश्वर पिता और हमारे त्राणकर्त्ता प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और दया और शांति मिले॥

५। मैं ने इसी कारण तुझे क्रीती में छोड़ा कि जो बातें रह गईं तू उन्हें सुधारता जाय और नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे जैसे मैं ने तुझे आज्ञा दिई॥ ६। कि यदि कोई निर्दोष और एक ही स्त्री का स्वामी होय और उस को विश्वासी लड़के हों जिन्हें लुचपन का दोष नहीं है और जो निरंकुश नहीं हैं तो वही नियुक्त किया जाय॥ ७। क्योंकि उचित है कि मंडली का रखवाला जो ईश्वर का भंडारी सा है निर्दोष होय और न हठी न क्रोधी न मद्यपान में आसक्त न मरकहा न नीच कमाई करनेहारा हो॥ ८। परन्तु अतिथिसेवक औ भले का प्रेमी औ सुबुद्धि औ धर्म्मी और पवित्र औ संयमी होय॥ ९। और विश्वासयोग्य वचन को जो धर्म्मोपदेश के अनुसार है धरे रहे जिस्तें वह खरी शिक्षा से उपदेश करने का और विवादियों को समझाने का भी सामर्थ्य रखे॥

१०। क्योंकि बहुतेरे निरंकुश बकवादी और धोखा देनेहारे हैं निज करके खतना किये हुए लोग॥ ११। जिन का मुंह बन्द करना अवश्य है जो नीच कमाई के कारण अनुचित बातों का उपदेश करते हुए घराने का घराना बिगाड़ते हैं॥ १२। उन में से एक जन उन के निज का एक भविष्यद्वक्ता बोला क्रीतीय लोग सदा झूठे औ दुष्ट पशु औ निकम्मे पेटपोसू हैं॥ १३। यह साक्षी सत्य है इस हेतु से उन्हें कड़ाई से समझा दे जिस्तें वे विश्वास में निरखोट रहें॥ १४। और यिहूदीय कहानियों में और उन मनुष्यों की आज्ञाओं में जो सत्य से फिर जाते हैं मन न लगावें॥ १५। शुद्ध लोगों के लिये सब कुछ शुद्ध है परन्तु अशुद्ध और अविश्वासी लोगों के लिये कुछ नहीं शुद्ध है परन्तु उन्हीं का मन और विवेक भी अशुद्ध हुआ है॥ १६। वे ईश्वर को जानने का अंगीकार करते हैं परन्तु अपने कर्म्मों से उस से मुकर जाते हैं कि वे घिनौने और आज्ञा लंघन करनेहारे और हर एक अच्छे कर्म्म के लिये निकृष्ट हैं॥

२. परन्तु तू वह बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं॥ २। बूढ़ों से कह कि सचेत औ गंभीर औ संयमी होवें और विश्वास औ प्रेम औ धीरज में निरखोट रहें॥ ३। वैसेही बुढ़ियाओं से कह कि उन का आचरण पवित्र लोगों के ऐसा होय और न दोष लगानेवालियां न बहुत मद्यपान के वश में होवें पर अच्छी बातों की शिक्षा देनेवालियां॥ ४। इस लिये कि वे जवान स्त्रियों को सचेत करें कि वे अपने अपने स्वामी औ लड़कों से प्रेम करनेवालियां॥ ५। औ संयमी औ पतिव्रता औ घर में रहनेवाली औ भली होवें और अपने अपने स्वामी के अधीन रहें जिस्तें ईश्वर के वचन की निन्दा न किई जावे॥ ६। वैसे ही जवानों को संयमी रहने का उपदेश दे॥ ७। और सब बातों में अपने तईं अच्छे कर्म्मों का दृष्टान्त दिखा और

उपदेश में निर्बिकारता औ गंभीरता औ शुद्धता सहित ॥ ८। खरा औ निर्दोष बचन प्रचार कर कि बिरोधी हमों पर कोई बुराई लगाने का गौं न पाके लज्जित होय ॥

९। दासों को उपदेश दे कि अपने अपने स्वामी के अधीन रहें और सब बातों में प्रसन्नता योग्य होवें और फिरके उत्तर न देवें ॥ १०। और न चोरी करें परन्तु सब प्रकार की अच्छी सचौटी दिखावें जिस्तें वे सब बातों में हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर के उपदेश को शोभा देवें ॥ ११। क्योंकि ईश्वर का त्राणकारी अनुग्रह सब मनुष्यों पर प्रगट हुआ है ॥ १२। और हमें शिक्षा देता है इस लिये कि हम अभक्ति से और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरके इस जगत में संयम औ न्याय औ भक्ति से जन्म बितावें ॥ १३। और अपनी सुखदाई आशा की और महा ईश्वर और अपने त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के ऐश्वर्य्य के प्रकाश की बाट जोहते रहें ॥ १४। जिस ने अपने तई हमारे लिये दिया कि सब अधर्म्म से हमारा उद्धार करे और अपने लिये एक निज लोग को शुद्ध करे जो अच्छे कर्म्मों के उद्योगी होवें ॥ १५। यह बातें कहा कर और उपदेश कर और दृढ़ आज्ञा करके समझा दे. कोई तुझे तुच्छ न जाने ॥

३. लोगों को स्मरण करवा कि अध्यक्षों और अधिकारियों के अधीन और आज्ञाकारी होवें और हर एक अच्छे कर्म्म के लिये तैयार रहें ॥ २। और किसी की निन्दा न करें परन्तु मिलनसार औ मृदुभाव हों और सब मनुष्यों की ओर समस्त प्रकार की नम्रता दिखावें ॥ ३। क्योंकि हम लोग भी आगे निर्बुद्धि और आज्ञालंघन करनेहारे थे और भरमाये जाते थे और नाना प्रकार के अभिलाष और सुख बिलास के दास बने रहते थे और बैरभाव और डाह में समय बिताते थे और घिनौने और आपस के बैरी थे ॥ ४। परन्तु जब हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उस की प्रीति प्रगट हुई ॥ ५। तब धर्म्म के कार्य्यों से जो हम ने किये सो नहीं परन्तु अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान के द्वारा और पवित्र आत्मा से नये किये जाने के द्वारा उस ने हमें बचाया ॥ ६। जिस आत्मा को उस ने हमारे त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के द्वारा हमों पर अधिकाई से उण्डेला ॥ ७। इस लिये कि हम उस के अनुग्रह से धर्म्मी ठहराये जाके अनन्त जीवन की आशा के अनुसार अधिकारी बन जावें ॥ ८। यह बचन विश्वासयोग्य है और मैं चाहता हूं कि इन बातों के विषय में तू दृढ़ता से बोले इस लिये कि जिन लोगों ने ईश्वर का विश्वास किया है सो अच्छे अच्छे कर्म्म किया करने के सोच में रहें. यही बातें उत्तम और मनुष्यों के लिये फलदाई हैं ॥

९। परन्तु मूढ़ता के बिवादों से और वंशावलियों से और बैर विरोध से और व्यवस्था के विषय में के झगड़ों से बचा रह क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं ॥ १०। पाखण्डी मनुष्य को एक बेर बरन दो बेर चिताने के पीछे अलग कर ॥ ११। क्योंकि तू जानता है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया है और पाप करता है और अपने को आप दोषी ठहराता है ॥ १२। जब मैं अर्त्तिमा अथवा तुखिक को तेरे पास भेजूं तब निकोपलि में मेरे पास आने का यत्न कर क्योंकि मैं ने जाड़े का समय वहीं काटने को ठहराया है ॥ १३। जीनस व्यवस्थापक को और अपल्लो को बड़े यत्न से आगे पहुंचा कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होय ॥ १४। और हमारे लोग भी जिन जिन वस्तुओं का अवश्य प्रयोजन हो उन के लिये अच्छे अच्छे कार्य्य किया करने को सीखें कि वे निष्फल न होवें ॥ १५। सब लोगों का जो मेरे संग हैं तुझ से नमस्कार. जो लोग विश्वास के कारण हमें प्यार करते हैं उन को नमस्कार. अनुग्रह तुम सभों के संग होवे। आमीन ॥

फिलीमोन को पावल प्रेरित की पत्री।

पावल जो खीष्ट यीशु के कारण बंधुआ है और भाई तिमोथिय प्यारे फिलीमोन को जो हमारा सहकर्म्मी भी है ॥ २। और प्यारी आफिया को और हमारे संगी योद्धा आर्खिप को और आप के घर में की मंडली को ॥ ३। आप लोगों को हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

४। मैं आप के प्रेम और विश्वास का जो आप प्रभु यीशु पर और सब पवित्र लोगों से रखते हैं समाचार सुनके ॥ ५। अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में आप को स्मरण करता हूं ॥ ६। कि हम लोगों में की समस्त भलाई खीष्ट यीशु के लिये होती है इस बात के ज्ञान से यह सहायता जो आप विश्वास से किया करते हैं सुफल हो जाय ॥ ७। क्योंकि आप के प्रेम से हमें बहुत आनन्द और शांति मिलती है इस लिये कि हे भाई आप के द्वारा पवित्र लोगों के अन्तःकरण को सुख दिया गया है ॥

८। इस कारण जो बात सोहती है उस की यद्यपि आप को आज्ञा देने का मुझे खीष्ट से बहुत साहस है ॥ ९। तौभी मैं प्रेम के कारण बरन बिन्ती ही करता हूं क्योंकि मैं ऐसा हूं मानो बूढ़ा पावल और अब यीशु खीष्ट के कारण बंधुआ भी हूं ॥ १०। मैं अपने पुत्र के लिये जिसे मैं ने बंधन में रहते हुए जन्माया है आप से बिन्ती करता हूं सोई उनीसिम है ॥ ११। जो पहिले आप के कुछ काम का न था परन्तु अब आप के और मेरे बड़े काम का है। १२। उस को मैं ने लौटा दिया है और आप उस को मेरा अन्तःकरण सा जानके ग्रहण कीजिये ॥ १३। उसे मैं अपने पास रखा चाहता था इस लिये कि सुसमाचार के बंधनों में वह आप के बदले मेरी सेवा करे ॥ १४। परन्तु मैं ने आप की सम्मति बिना कुछ करने की इच्छा न किई जिस्तें आप की कृपा जैसे दबाव से न हो पर आप की इच्छा के अनुसार होय ॥ १५। क्योंकि क्या जानें वह इसी के कारण कुछ दिन अलग हुआ कि सदा आप का हो जावे ॥ १६। पर अब तो दास की नाईं नहीं परन्तु दास से बढ़के अर्थात् प्यारा भाई होय निज कर मेरा पर कितना अधिक करके क्या शरीर में क्या प्रभु में आप ही का प्यारा ॥ १७। इस लिये जो आप मुझे संभागी समझते हैं तो जैसे मुझ को तैसे उस को ग्रहण कीजिये ॥ १८। और जो उस से आप की कुछ हानि हुई अथवा वह आप का कुछ धारता हो तो इस को मेरे नाम पर लिखिये ॥ १९। मुझ पावल ने अपने हाथ से लिखा है मैं भर देऊंगा जिस्तें मुझे आप से यह कहना न पड़े कि अपने तईं भी मुझे देना आप को उचित है ॥ २०। हां हे भाई आप से प्रभु में मुझे आनन्द पहुंचे प्रभु में मेरे अन्तःकरण को सुख दीजिये ॥ २१। आप के आज्ञाकारी होने का भरोसा रखके मैं ने आप के पास लिखा है क्योंकि जानता हूं कि जो मैं कहता हूं इस से भी आप अधिक करेंगे ॥ २२। और भी मेरे लिये बासा तैयार कीजिये क्योंकि मुझे आशा है कि आप लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा मैं आप लोगों को दे दिया जाऊंगा ॥

२३। इपाफ्रा जो खीष्ट यीशु के कारण मेरा संगी बंधुआ है ॥ २४। औ मार्क औ अरिस्तार्ख औ दीमा औ लूक जो मेरे सहकर्म्मी हैं इन्हों का आप को नमस्कार ॥ २५। हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह आप लोगों के आत्मा के संग होवे। आमीन ॥

इब्रियों को (पावल प्रेरित की) पत्री।

१. ईश्वर ने पूर्व्वकाल में समय समय औा नाना प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पितरों से बातें कर॥ २। इन पिछले दिनों में हमों से पुत्र के द्वारा बातें किईं जिसे उस ने सब वस्तुओं का अधिकारी ठहराया जिस के द्वारा उस ने सारे जगत को सृजा भी॥ ३। जो उस की महिमा का तेज और उस के तत्व की मुद्रा और अपनी शक्ति के बचन से सब वस्तुओं का सम्भालनेहारा होके अपने ही द्वारा से हमारे पापों का परिशोधन कर ऊंचे स्थानों में की महिमा के दहिने हाथ जा बैठा॥ ४। और जितने भर उस ने स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ नाम पाया है उतने भर उन से बड़ा हुआ॥

५। क्योंकि दूतों में से ईश्वर ने किस से कभी कहा तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्माया है और फिर कि मैं उस का पिता होंगा और वह मेरा पुत्र होगा॥ ६। और जब वह फिर पहिलौठे को संसार में लावे वह कहता है ईश्वर के सब दूतगण उस को प्रणाम करें॥ ७। दूतों के विषय में वह कहता है जो अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों को आग की ज्वाला बनाता है॥ ८। परन्तु पुत्र से कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन सर्व्वदा लों है तेरे राज्य का राजदण्ड सीधाई का राजदण्ड है॥ ९। तू ने धर्म्म को प्रिय जाना और कुकर्म्म से घिन्न किई इस कारण ईश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे तेरे संगियों से अधिक करके आनन्द के तेल से अभिषेक किया॥ १०। और यह कि हे प्रभु आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों के कार्य्य हैं॥ ११। वे नाश होंगे परन्तु तू बना रहता है और वस्त्र की नाईं वे सब पुराने हो जायेंगे॥ १२। और तू उन्हें चद्दर की नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू एकसां रहता है और तेरे बरस नहीं घटेंगे॥ १३। और दूतों में से उस ने किस से कभी कहा है जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ॥ १४। क्या वे सब सेवा करनेहारे आत्मा नहीं हैं जो त्राण पानेवाले लोगों के निमित्त सेवकाई के लिये भेजे जाते हैं॥

२. इस कारण अवश्य है कि हम लोग उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं बहुत अधिक करके मन लगावें ऐसा न हो कि भूल जावें॥ २। क्योंकि यदि वह बचन जो दूतों के द्वारा से कहा गया दृढ़ हुआ और हर एक अपराध और आज्ञालंघन का यथार्थ प्रतिफल मिला॥ ३। तो हम लोग ऐसे बड़े त्राण से निश्चिन्त रहके क्योंकर बचेंगे अर्थात् इस त्राण से जो प्रभु के द्वारा प्रचारित होने लगा और हमों के पास सुननेहारों से दृढ़ किया गया॥ ४। जिन के संग ईश्वर भी चिन्हों और अद्भुत कामों से भी और नाना प्रकार के आश्चर्य्य कर्म्मों से और अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के दानों के बांटने से साक्षी देता था॥

५। क्योंकि उस ने इस होनेहार जगत को जिस के विषय में हम बोलते हैं दूतों के अधीन नहीं किया॥ ६। परन्तु किसी ने कहीं साक्षी दिई कि मनुष्य क्या है कि तू उस की सुध लेता है अथवा मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस पर दृष्टि करता है॥ ७। तू ने उस को कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया तू ने उसे महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया और उस को अपने हाथों के कार्य्यों पर प्रधान किया तू ने सब कुछ उस के चरणों के नीचे अधीन किया॥ ८। सब कुछ उस के अधीन करने से उस ने कुछ भी रख न छोड़ा जो उस के अधीन नहीं हुआ. तौभी हम अब लों नहीं देखते हैं कि सब कुछ उस के अधीन किया गया है॥ ९। परन्तु हम यह देखते हैं कि उस को जो कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया गया था अर्थात् यीशु को मृत्यु

भोगने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया गया है इस लिये कि वह ईश्वर के अनुग्रह से सब के लिये मृत्यु का स्वाद चीखे॥

१०। क्योंकि जिस के कारण सब कुछ है और जिस के द्वारा सब कुछ है उस के यह योग्य था कि बहुत पुत्रों को महिमा लों पहुंचाने में उन के त्राण के कर्त्ता को दुःख भोगने के द्वारा सिद्ध करे॥ ११। क्योंकि पवित्र करनेहारा और वे भी जो पवित्र किये जाते हैं सब एक ही से हैं और इस कारण से वह उन्हें भाई कहने में नहीं लजाता है॥ १२। वह कहता है मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा॥ १३। और फिर कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा और फिर कि देख मै और लड़के जो ईश्वर ने मुझे दिये॥ १४। इस लिये जब कि लड़के मांस औा लोहू के भागी हुए हैं वह आप भी वैसे ही इन का भागी हुआ इस लिये कि मृत्यु के द्वारा उस को जिसे मृत्यु का सामर्थ्य था अर्थात् शैतान को क्षय करे॥ १५। और जितने लोग मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में फंसे हुए थे उन्हें छुड़ावे॥ १६। क्योंकि वह तो दूतों को नहीं थांभता है परन्तु इब्राहीम के वंश को थांभता है॥ १७। इस कारण उस को अवश्य था कि सब बातों में भाइयों के समान हो जावे जिस्तें वह उन बातों में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं दयाल और विश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे॥ १८। क्योंकि जिस जिस बात में उस ने परीक्षा मे पड़के दुःख पाया है उस उस बात में वह उन की जिन की परीक्षा किई जाती है सहायता कर सकता है॥

३. इस कारण हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलाहट में सभागी हो हमारे अंगीकार किये हुए मत के प्रेरित औा महायाजक खीष्ट यीशु को देख लेओ॥ २। जो अपने ठहरानेहारे के विश्वासयोग्य है जैसा मूसा भी उस के सारे घर में विश्वासयोग्य था॥ ३। क्योंकि यह सो उतने भर मूसा से अधिक बड़ाई के योग्य समझा गया है जितने भर घर के आदर से घर के बनानेहारे का आदर अधिक होता है॥ ४। क्योंकि हर एक घर किसी का तो बनाया हुआ है परन्तु जिस ने सब कुछ बनाया सो ईश्वर है॥ ५। और मूसा तो जो बातें कही जाने पर थीं उन की साक्षी के लिये सेवक की नाईं उस के सारे घर में विश्वासयोग्य था॥ ६। परन्तु खीष्ट पुत्र की नाईं उस के घर का अध्यक्ष होकर विश्वासयोग्य है और हम लोग यदि साहस को और आशा की बड़ाई को अन्त लों दृढ़ थांभे रहें तो उस के घर हैं॥

७। इस लिये जैसे पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो॥ ८। तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ाव में और परीक्षा के दिन जंगल में हुआ॥ ९। जहां तुम्हारे पितरों ने मेरी परीक्षा लिई और मुझे जांचा और चालीस बरस मेरे कामों को देखा॥ १०। इस कारण मैं उस समय के लोगों से उदास हुआ और बोला उन के मन सदा भटकते हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं जाना है॥ ११। सो मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे॥ १२। तैसे हे भाइयो चौकस रहो कि जीवते ईश्वर को त्यागने में अविश्वास का बुरा मन तुम्हों में से किसी में न ठहरे॥ १३। परन्तु जब लों आज कहावता है प्रतिदिन एक दूसरे को समझाओ ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल से कठोर हो जाय॥ १४। क्योंकि हम जो भरोसे के आरंभ को अन्त लों दृढ़ थांभे रहे तब तो खीष्ट में संभागी हुए हैं॥ १५। जैसे उस वाक्य में है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ाव में हुआ॥ १६। क्योंकि किन लोगों ने सुनके चिढ़ाया, क्या उन सब लोगों ने नहीं जो मूसा के द्वारा मिसर से निकले॥ १७। और वह किन लोगों से चालीस बरस उदास हुआ, क्या उन लोगों से नहीं जिन्हों ने पाप किया जिन की लोथें जंगल में गिरीं॥ १८। और किन लोगों से उस ने किरिया खाई कि तुम मेरे बिश्राम में प्रवेश न करोगे केवल आज्ञालंघन करनेहारों से॥

१९। सो हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश नहीं कर सके॥

४. इस लिये हमों को डरना चाहिये न हो कि यद्यपि ईश्वर के विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा रह गई है तौभी तुम्हों में से कोई जन ऐसा देख पड़े कि उस में नहीं पहुंचा है॥ २। क्योंकि जैसे उन्हों को तैसे हमों को वह सुसमाचार सुनाया गया है परन्तु उन्हें समाचार के वचन से जो सुननेहारों से विश्वास से नहीं मिलाया गया कुछ लाभ न हुआ॥ ३। क्योंकि हम लोग जिन्हों ने विश्वास किया है बिश्राम में प्रवेश करते हैं, इस के विषय में यद्यपि उस के कार्य्य जगत की उत्पत्ति से बन चुके थे तौभी उस ने कहा है सो मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करेंगे॥ ४। क्योंकि सातवें दिन के विषय में उस ने कहीं यूं कहा है और ईश्वर ने सातवें दिन अपने सब कार्य्यों से विश्राम किया॥ ५। तौभी इस ठौर फिर कहा है वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करेंगे॥ ६। सो जब कि कितनों का उस में प्रवेश करना रह गया है और जिन्हों को उस का सुसमाचार पहिले सुनाया गया उन्हों ने आज्ञालंघन के कारण प्रवेश न किया॥ ७। और फिर वह आज कह करके किसी दिन का ठिकाना दे इतने दिनों के पीछे दाऊद के द्वारा बोलता है जैसे कहा गया है आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो॥ ८। परन्तु जो यिहोशुआ ने उन्हें विश्राम दिया होता तो ईश्वर पीछे दूसरे दिन की बात न करता॥ ९। तो जानो कि ईश्वर के लोगों के लिये बिश्रामवार सा एक विश्राम रह गया है॥ १०। क्योंकि जिस ने उस के विश्राम में प्रवेश किया है जैसे ईश्वर ने अपने ही कार्य्यों से तैसे उस ने भी अपने कार्य्यों से बिश्राम किया है॥ ११। सो हम लोग उस विश्राम में प्रवेश करने का यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन आज्ञालंघन के उसी दृष्टान्त के समान पतित होय॥ १२। क्योंकि ईश्वर का बचन जीवता औ प्रबल और हर एक दोधारे खड्ग से भी चोखा है और वारपार छेदनेहारा है यहां लों कि जीव और आत्मा को और गांठ गांठ औ गूदे गूदे को अलग अलग करे और हृदय की चिन्ताओं और भावनाओं का विचार करनेहारा है॥ १३। और कोई सृजी हुई वस्तु उस के आगे गुप्त नहीं है परन्तु जिस से हमें काम है उस के नेत्रों के आगे सब कुछ नंगा और खुला हुआ है॥

१४। सो जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग होके गया है अर्थात् ईश्वर का पुत्र यीशु आओ हम अपने अंगीकार किये हुए मत को धरे रहें॥ १५। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुर्ब्बलताओं के दुःख को बूझ न सके परन्तु विना पाप वह हमारे समान सब बातों में परीक्षित हुआ है॥ १६। इस लिये हम लोग अनुग्रह के सिंहासन के पास साहस से आवें कि दया हम पर किई जाय और हम समय योग्य सहायता के लिये अनुग्रह पावें॥

५. क्यों कि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाके मनुष्यों के लिये उन बातों के विषय में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं ठहराया जाता है कि चढ़ावों को और पापों के निमित्त बलिदानों को चढ़ावे॥ २। और वह अज्ञानों और भूलनेहारों की ओर दयाशील हो सकता है क्योंकि वह आप भी दुर्ब्बलता से घेरा हुआ है॥ ३। और इस के कारण उसे अवश्य है कि जैसे लोगों के लिये वैसे अपने लिये भी पापों के निमित्त चढ़ाया करे॥ ४। और यह आदर कोई अपने लिये नहीं लेता है परन्तु जो हारोन की नाईं ईश्वर से बुलाया जाता है सो लेता है॥ ५। वैसे ही ख्रीष्ट ने भी महायाजक बनने को अपनी बड़ाई न किई परन्तु जो उस से बोला तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्माया है उसी ने उस को बड़ाई किई॥ ६। जैसे वह दूसरे ठौर में भी कहता है तू मलकीखिदक की पदवी पर सदा लों याजक है॥ ७। उस ने अपने शरीर के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारके औ रो रोके उस से जो उसे मृत्यु से

बचा सकता था बिन्ती और निवेदन किये और उस भय के निमित्त सुना गया॥ ८। और यद्यपि पुत्र था तौभी जिन दुःखों को भोगा उन से आज्ञा मानना सीखा॥ ९। और सिद्ध बनके उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता हुआ॥ १०। और ईश्वर से मलकीसिदक की पदवी पर का महायाजक कहा गया॥

११। इस पुरुष के विषय में हमें बहुत वचन कहना है जिस का अर्थ बताना भी कठिन है क्योंकि तुम सुनने में आलसी हुए हो॥ १२। क्योंकि यद्यपि इतने समय के बीतने से तुम्हें उचित था कि शिक्षक होते तौभी तुम्हीं को फिर आवश्यक है कि कोई तुम्हें सिखावे कि ईश्वर की वाणियों की आदिशिक्षा क्या है और ऐसे हुए हो कि तुम्हें अन्न का नहीं परन्तु दूध का प्रयोजन है॥ १३। क्योंकि जो कोई दूध हीं पीता है उस को धर्म्म के वचन का परिचय नहीं है क्योंकि बालक है॥ १४। परन्तु अन्न उन के लिये है जो सयाने हुए हैं जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास के कारण भले औ बुरे के विचार के लिये साधे हुए हैं॥

६. इस कारण खीष्ट के आदि वचन को छोड़के हम सिद्धता की ओर बढ़ते जावें॥ २। और यह नहीं कि मृतवत कर्म्मों से पश्चात्ताप करने की और ईश्वर पर बिश्वास करने की और बपतिसमों के उपदेश की और हाथ रखने की और मृतकों के जी उठने की और अनन्त दण्ड की नेव फिरके डालें॥ ३। हां जो ईश्वर यूं करने देवे तो हम यही करेंगे॥ ४। क्योंकि जिन्हों ने एक बेर ज्योति पाई और स्वर्गीय दान का स्वाद चीखा और पवित्र आत्मा के भागी हुए॥ ५। और ईश्वर के भले वचन का औ होनेहार जगत की शक्ति का स्वाद चीखा॥ ६। और पतित हुए हैं उन लोगों को पश्चात्ताप के निमित्त फिरके नये करना अनहोना है क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूश पर चढ़ाते और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं॥ ७। क्योंकि जिस भूमि ने वर्षा जो उस पर बारम्बार पड़ती है पिई है और जिन लोगों के कारण वह जोती बोई जाती है उन लोगों के योग्य सागपात उपजाती है सो ईश्वर से आशीस पाती है॥ ८। परन्तु जो वह कांटे और ऊंटकटारे जन्माती है तो निकृष्ट है और सापित होने के निकट है जिस का अन्त यह है कि जलाई जाय॥ ९। परन्तु हे प्यारो यद्यपि हम यूं बोलते हैं तौभी तुम्हारे विषय में हमें अच्छी हो बातों और त्राण संयुक्त बातों का भरोसा है॥ १०। क्योंकि ईश्वर अन्यायी नहीं है कि तुम्हारे कार्य्य को और उस के नाम पर जो प्रेम तुम ने दिखाया उस प्रेम के परिश्रम को भूल जावे कि तुम ने पवित्र लोगों की सेवा किई और करते हो॥ ११। परन्तु हम चाहते हैं कि तुम्हों मे से हर एक जन अन्त लों आशा के निश्चय के लिये वही यत्न दिखाया करे॥ १२। कि तुम आलसी नहीं परन्तु जो लोग विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के अधिकारी होते हैं उन्हों के अनुगामी बनो॥

१३। क्योंकि ईश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देके जब कि अपने से किसी बड़े की किरिया नहीं खा सकता था अपनी ही किरिया खाके कहा॥ १४। निश्चय मैं तुझे बहुत आशीस देऊंगा और तुझे बहुत बढ़ाऊंगा॥ १५। और इस रीति से इब्राहीम ने धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किई॥ १६। क्योंकि मनुष्य तो अपने से बड़े की किरिया खाते हैं और किरिया दृढ़ता के लिये उन के समस्त विवाद का अन्त है॥ १७। इस लिये ईश्वर प्रतिज्ञा के अधिकारियों पर अपने मत की अचलता को बहुत ही प्रगट करने की इच्छा कर किरिया के द्वारा मध्यस्थ हुआ॥ १८। कि दो अचल विषयों के द्वारा जिन में ईश्वर का झूठ बोलना अनहोना है दृढ़ शांति हम लोगों को मिले जो साम्हने रखी हुई आशा धर लेने को भाग आये हैं॥ १९। वह आशा हमारे लिये प्राण का लंगर सा होती है जो अटल औ दृढ़ है और परदे के भीतर लों प्रवेश करता है॥ २०। जहां हमारे लिये अगुवा होके यीशु ने प्रवेश किया है जो मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों महायाजक बना है॥

७. यह मलकीसिदक शलीम का राजा और सर्व्वप्रधान ईश्वर का याजक जो इब्राहीम से जब वह राजाओं को मारने से लौटता था आ मिला और उस को आशीस दिई॥ २। जिस को इब्राहीम ने सब वस्तुओं में से दसवां अंश भी दिया जो पहिले अपने नाम के अर्थ से धर्म्म का राजा है और फिर शलीम का राजा भी अर्थात् शांति का राजा है॥ ३। जिस का न पिता न माता न वंशावलि है जिस के न दिनों का आदि न जीवन का अन्त है परन्तु ईश्वर के पुत्र के समान किया गया है नित्य याजक बना रहता है॥

४। पर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष था जिस को इब्राहीम कुलपति ने लूट में से दसवां अंश भी दिया॥ ५। लेवी के सन्तानों में से जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यवस्था के अनुसार लोगों से अर्थात् अपने भाइयों से यद्यपि वे इब्राहीम के देह से जन्मे हैं दसवां अंश लेने की आज्ञा होती है॥ ६। परन्तु इस ने जो उन की वंशावलि में का नहीं है इब्राहीम से दसवां अंश लिया है और उस को जिसे प्रतिज्ञाएं मिलीं आशीस दिई है॥ ७। पर अखण्डनीय बात है कि छोटे को बड़े से आशीस दिई जाती है॥ ८। और यहां मनुष्य जो मरते हैं दसवां अंश लेते हैं परन्तु वहां वह लेता है जिस के विषय में साक्षी दिई जाती है कि वह जीता है॥ ९। और यह भी कह सकते कि इब्राहीम के द्वारा लेवी से भी जो दसवां अंश लेनेहारा है दसवां अंश लिया गया है॥ १०। क्योंकि जिस समय मलकीसिदक उस के पिता से आ मिला उस समय वह अपने पिता के देह में था॥

११। सो यदि लेवीय याजकता के द्वारा जिस के संयोग में लोगों को व्यवस्था दिई गई थी सिद्धता हुई होती तो और क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलकीसिदक की पदवी पर खड़ा होय और हारोन की पदवी का न कहावे॥ १२। क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो अवश्य करके व्यवस्था की भी बदली होती है॥ १३। जिस के विषय में यह बातें कही जातीं सो दूसरे कुल में का है जिस में से किसी मनुष्य ने वेदी की सेवा नहीं किई है॥ १४। क्योंकि प्रत्यक्ष है कि हमारा प्रभु यिहूदा के कुल से उदय हुआ है जिस से मूसा ने याजकता के विषय में कुछ नहीं कहा॥ १५। और वह बात और भी बहुत प्रगट इस से होती है कि मलकीसिदक के समान दूसरा याजक खड़ा है॥ १६। जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं परन्तु अविनाशी जीवन की शक्ति के अनुसार बन गया है॥ १७। क्योंकि ईश्वर साक्षी देता है कि तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है॥ १८। सो अगली आज्ञा की दुर्व्वलता औ निष्फलता के कारण उस का तो लोप होता है इस लिये कि व्यवस्था ने किसी बात को सिद्ध नहीं किया॥ १९। परन्तु एक उत्तम आशा का स्थापन होता है जिस के द्वारा हम ईश्वर के निकट पहुंचते हैं॥

२०। और वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु यह तो किरिया के अनुसार उस से बना है जो उस से कहता है परमेश्वर ने किरिया खाई है और नहीं पछतावेगा तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है॥ २१। सो जब कि यीशु किरिया बिना याजक नहीं हुआ है॥ २२। वह उतने भर उत्तम नियम का जामिन हुआ है॥ २३। और वे तो बहुत से याजक बन गये हैं इस कारण कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती है॥ २४। परन्तु यह सदा लों रहता है इस कारण उस की याजकता अटल है॥ २५। इस लिये जो लोग उस के द्वारा ईश्वर के पास आते हैं वह उन का त्राण अत्यन्त लों कर सकता है क्योंकि वह उन के लिये बिन्ती करने को सदा जीता है॥ २६। क्योंकि ऐसा महायाजक हमारे योग्य था जो पवित्र औ सूधा औ निर्मल औ पापियों से अलग और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ है॥ २७। जिसे प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान याजकों की नाईं पहिले अपने ही पापों के लिये तब लोगों के पापों के लिये बलि चढ़ावे क्योंकि इस को वह एक ही बेर कर चुका कि अपने तई चढ़ाया॥ २८। क्योंकि व्यवस्था

मनुष्यों को जिन्हें दुर्ब्बलता है प्रधान याजक ठहराती है परन्तु जो किरिया व्यवस्था के पीछे खाई गई उस की वात पुत्र को जो सर्व्वदा सिद्ध किया गया है ठहराती है ॥

८. जो वातें कही जाती हैं उन में सार वात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है कि स्वर्ग में महिमा के सिंहासन के दहिने हाथ जा वैठा ॥ २ । और पवित्र स्थान का और उस सच्चे तंबू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं परन्तु परमेश्वर ने खड़ा किया ॥ ३ । क्योंकि हर एक प्रधान याजक चढ़ावे और वलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि इसी के पास भी चढ़ाने के लिये कुछ होय ॥ ४ । फिर याजक तो हैं जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ावे चढ़ाते हैं और स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप औ परछाईं की सेवा करते हैं जैसे मूसा को जव वह तंबू वनाने पर था आज्ञा दिई गई अर्थात् ईश्वर ने कहा देख जो आकार तुझे पहाड़ पर दिखाया गया उस के अनुसार सव कुछ वना ॥ ५ । इस लिये जो यह पृथिवी पर होता तो याजक नहीं होता ॥ ६ । परन्तु अव जैसे वह और उत्तम नियम का मध्यस्थ है जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं पर स्थापन किया गया है तैसी श्रेष्ठ सेवकाई भी उसे मिली है ॥

७ । क्योंकि जो वह पहिला नियम निर्दोष होता तो दूसरे के लिये जगह न ढूंढ़ी जाती ॥ ८ । परन्तु वह उन पर दोष देके वोलता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे दिन आते हैं कि मैं इस्रायेल के घराने के संग और यिहूदा के घराने के संग नया नियम स्थापन करूंगा ॥ ९ । जो नियम मैं ने उन के पितरों के संग उस दिन वांधा जिस दिन उन्हें मिसर देश में से निकाल लाने को उन का हाथ थांभा उस नियम के अनुसार नहीं क्योंकि वे मेरे नियम पर नहीं ठहरे और मैं ने उन की सुध न लिई परमेश्वर कहता है ॥ १० । परन्तु यही नियम है जो मैं उन दिनों के पीछे इस्रायेल के घराने के संग वांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन के मन में डालूंगा और उसे उन के हृदय में लिखूंगा और मैं उन का ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे ॥ ११ । और वे हर एक अपने पड़ोसी को और हर एक अपने भाई को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को पहचान क्योंकि उन में के छोटे से वड़े लों सव मुझे जानेंगे ॥ १२ । क्योंकि मैं उन के अधर्म्म के विषय में दया करूंगा और उन के पापों को और उन के कुकर्म्मों को फिर कभी स्मरण न करूंगा ॥

१३ । नया नियम कहने से उस ने पहिला नियम पुराना ठहराया है पर जो पुराना और जीर्ण होता जाता है सो लोप होने के निकट है ॥

९. सो उस पहिले नियम के संयोग में भी सेवकाई की विधियां और लौकिक पवित्र स्थान था ॥ २ । क्योंकि तंवू वनाया गया अगला तंवू जिस में दीवट और मेज और रोटी की भेंट थी जो पवित्र स्थान कहावता है ॥ ३ । और दूसरे परदे के पीछे वह तंवू जो पवित्रों में से पवित्र स्थान कहावता है ॥ ४ । जिस में सोने की धूपदानी थी और नियम का सन्दूक जो चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ था और उस में सोने की कलसी जिस में मन्ना था और हारोन की छड़ी जिस की कोंपलें निकलीं और नियम की दोनों पटियाएं ॥ ५ । और उस के ऊपर दोनों तेजस्वी किरूव थे जो दया के आसन को छाये थे . इन्हों के विषय में पृथक पृथक वात करने का अभी समय नहीं है ॥

६ । यह सव वस्तु जो इस रीति से वनाई गई हैं तो अगले तंवू में याजक लोग नित्य प्रवेश कर सेवा किया करते हैं ॥ ७ । परन्तु दूसरे में केवल महायाजक वरस भर में एक वेर जाता है और लोहू विना नहीं जाता है जिसे अपने लिये और लोगों की अज्ञानताओं के लिये चढ़ाता है ॥ ८ । इस से पवित्र आत्मा यही वताता है कि जव लों अगला तंवू स्थापित रहता तव लों पवित्र स्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ ॥ ९ । और यह तो वर्त्तमान समय के लिये दृष्टान्त है जिस में चढ़ावे और वलिदान चढ़ाये जाते हैं जो सेवा करनेहारे के मन को सिद्ध नहीं

कर सकते हैं ॥ १० । केवल खाने और पीने की वस्तुओं और नाना बपतिस्मों और शरीर की विधियों के सम्बन्ध में यह बातें सुधर जाने के समय लों ठहराई हुई हैं ॥ ११ । परन्तु खीष्ट जब होनेहार उत्तम विषयों का महायाजक होके आया तब उस ने और भी बड़े और सिद्ध तंबू में से जो हाथ का बनाया हुआ नहीं अर्थात् इस सृष्टि का नहीं है ॥ १२ । और बकरों और बछड़ुओं के लोहू के द्वारा नहीं परन्तु अपने ही लोहू के द्वारा से एक ही बेर पवित्रस्थान में प्रवेश किया और अनन्त उद्धार प्राप्त किया ॥ १३ । क्योंकि यदि बैलों और बकरों का लोहू और बछिया की राख जो अपवित्र लोगों पर छिड़की जाती शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है ॥ १४ । तो कितना अधिक करके खीष्ट का लोहू जिस ने सनातन आत्मा के द्वारा अपने तईं ईश्वर के आगे निष्कलंक चढ़ाया तुम्हारे मन को मृतवत कर्म्मों से शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वर की सेवा करो ॥

१५ । और इसी के कारण वह नये नियम का मध्यस्थ है जिस्तें पहिले नियम के सम्बन्धी अपराधों के उद्धार के लिये मृत्यु भोग किये जाने से बुलाये हुए लोग अनन्त अधिकार की प्रतिज्ञा को प्राप्त करें ॥ १६ । क्योंकि जहां मरणोपरान्त दान का नियम है तहां नियम के बांधनेहारे की मृत्यु का अनुमान अवश्य है ॥ १७ । क्योंकि ऐसा नियम लोगों के मरने पर दृढ़ होता है नहीं तो जब लों उस का बांधनेहारा जीता है तब लों नियम कभी काम नहीं आता है ॥ १८ । इस लिये वह पहिला नियम भी लोहू बिना नहीं स्थापन किया गया है ॥ १९ । क्योंकि जब मूसा व्यवस्था के अनुसार हर एक आज्ञा सब लोगों से कह चुका तब उस ने जल और लाल ऊन और एसोब के संग बछड़ुओं और बकरों का लोहू लेके पुस्तक ही पर और सब लोगों पर भी छिड़का ॥ २० । और कहा यह उस नियम का लोहू है जिसे ईश्वर ने तुम्हारे विषय में आज्ञा करके ठहराया है ॥ २१ । और उस ने तंबू पर भी और सेवा की सब सामग्री पर उसी रीति से लोहू छिड़का ॥ २२ । और व्यवस्था के अनुसार प्राय सब वस्तु लोहू के द्वारा शुद्ध किई जाती हैं और बिना लोहू बहाये पापमोचन नहीं होता है ॥

२३ । सो अवश्य था कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन्हों से शुद्ध किये जायें परन्तु स्वर्ग में की वस्तु आप ही इन्हों से उत्तम बलिदानों से शुद्ध किई जायें ॥ २४ । क्योंकि खीष्ट ने हाथ के बनाये हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे का दृष्टान्त है प्रवेश नहीं किया परन्तु स्वर्ग ही मे प्रवेश किया कि हमारे लिये अब ईश्वर के सन्मुख दिखाई देवे ॥ २५ । पर इस लिये नहीं कि जैसा महायाजक बरस बरस दूसरे का लोहू लिये हुए पवित्र स्थान में प्रवेश करता है तैसा वह अपने को बार बार चढ़ावे ॥ २६ । नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेके उस को बहुत बेर दुःख भोगना पड़ता . परन्तु अब जगत के अन्त में वह एक बेर अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर करने के लिये प्रगट हुआ है ॥ २७ । और जैसे मनुष्यों के लिये एक बेर मरना और उस के पीछे विचार ठहराया हुआ है ॥ २८ । वैसे ही खीष्ट बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बेर चढ़ाया गया और जो लोग उस की बाट जोहते हैं उन को त्राण के लिये दूसरी बेर बिना पाप से दिखाई देगा ॥

१०. व्यवस्था में तो होनेहार उत्तम विषयों की परछाईंमात्र है पर उन विषयों का स्वरूप नहीं इस लिये वह बरस बरस एक ही प्रकार के बलिदानों के सदा चढ़ाये जाने से कभी उन्हें जो निकट आते हैं सिद्ध नहीं कर सकती है ॥ २ । नहीं तो क्या उन्हों का चढ़ाया जाना बन्द न हो जाता इस कारण कि सेवा करनेहारों को जो एक बेर शुद्ध किये गये थे फिर पापी होने का कुछ बोध न रहता ॥ ३ । पर इन्हों मे बरस बरस पापों का स्मरण हुआ करता है ॥ ४ । क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे ॥ ५ । इस कारण खीष्ट जगत मे आते हुए कहता है तू ने बलिदान और

चढ़ावे को न चाहा परन्तु मेरे लिये देह सिद्ध किया॥ ६। तू होमों से और पाप निमित्त के बलियों से प्रसन्न न हुआ॥ ७। तब मैं ने कहा देख मैं आता हूं धर्म्मपुस्तक में मेरे विषय में लिखा भी है जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं॥ ८। ऊपर उस ने कहा है बलिदान और चढ़ावे को और होमों और पाप निमित्त के बलियों को तू ने न चाहा और न उन से प्रसन्न हुआ अर्थात् उन से जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाये जाते हैं॥ ९। तब कहा है देख मैं आता हूं जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं. वह पहिले को उठा देता है इस लिये कि दूसरे को स्थापन करे॥ १०। उसी इच्छा के अनुसार हम लोग यीशु खीष्ट के देह के एक ही बेर चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं॥

११। और हर एक याजक खड़ा होके प्रतिदिन सेवकाई करता है और एक ही प्रकार के बलिदानों को जो पापों को कभी मिटा नहीं सकते हैं वारंवार चढ़ाता है॥ १२। परन्तु वह तो पापों के लिये एक ही बलिदान चढ़ाके ईश्वर के दहिने हाथ सदा बैठ गया॥ १३। और अब से जब लों उस के शत्रु उस के चरणों की पीढ़ी न बनाये जायें तब लों बाट जोहता रहता है॥ १४। क्योंकि एक ही चढ़ावे से उस ने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा सिद्ध किया है॥

१५। और पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है क्योंकि उस ने पहिले कहा था॥ १६। यही नियम है जो मैं उन दिनों के पीछे उन के संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन के हृदय में डालूंगा और उसे उन के मन में लिखूंगा॥ १७। [तब पीछे कहा] मैं उन के पापों को और उन के कुकर्म्मों को फिर कभी स्मरण न करूंगा॥ १८। पर जहां इन का मोचन हुआ तहां फिर पापों के लिये चढ़ावा न रहा॥

१९। सो हे भाइयो जब कि यीशु के लोहू के द्वारा से हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करने को साहस मिलता है॥ २०। और हमारे लिये परदे में से अर्थात् उस के शरीर में से नया और जीवता मार्ग है जो उस ने हमारे लिये स्थापन किया॥ २१। और हमारा महायाजक है जो ईश्वर के घर का अध्यक्ष है॥ २२। तो आओ बुरे मन से शुद्ध होने को हृदय पर छिड़काव किये हुए और देह शुद्ध जल से नहलाये हुए हम लोग विश्वास के निश्चय के साथ सच्चे मन से निकट आवें॥ २३। और आशा के अंगीकार को दृढ़ कर थांभ रखें क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किई है वह विश्वासयोग्य है॥ २४। और प्रेम औ सुकर्म्मों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें॥ २५। और जैसे कितनों की रीति है तैसे आपस में एकट्ठे होना न छोड़ें परन्तु एक दूसरे को समझावें. और जितने भर उस दिन को निकट आते देखो उतने अधिक करके यह किया करो॥

२६। क्योंकि जो हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के पीछे जान बूझके पाप किया करें तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान नहीं॥ २७। परन्तु दंड का भयंकर बाट जोहना और विरोधियों को भक्षण करनेवाली आग का ज्वलन रह गया॥ २८। जिस ने मूसा की व्यवस्था को तुच्छ जाना है कोई हो वह दो अथवा तीन साक्षियों की साक्षी पर दया से वर्ज्जित होके मर जाता है॥ २९। तो क्या समझते हो कितने और भी भारी दण्ड के योग्य वह गिना जायगा जिस ने ईश्वर के पुत्र को पांवों तले रौंदा है और नियम के लोहू को जिस से वह पवित्र किया गया था अपवित्र जाना है और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया है॥ ३०। क्योंकि हम उसे जानते हैं जिस ने कहा कि पलटा लेना मेरा काम है परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा और फिर कि परमेश्वर अपने लोगों का विचार करेगा॥ ३१। जीवते ईश्वर के हाथों में पड़ना भयंकर बात है॥

३२। परन्तु अगले दिनों को स्मरण करो जिन में तुम ज्योति पाके दुःखों के बड़े युद्ध में स्थिर रहे॥ ३३। कुछ यह कि निन्दाओं और क्लेशों से तुम लीला से ऐसे बनाये जाते थे कुछ यह कि जिन के इस रीति से दिन कटते थे उन के संग तुम भागी हुए॥ ३४। क्योंकि तुम मेरे बंधनों के दुःख में भी दुःखी हुए और यह जानके कि स्वर्ग में हमारे लिये श्रेष्ठ और

अक्षय सम्पत्ति है तुम ने अपनी सम्पत्ति का लूटा जाना आनन्द से ग्रहण किया॥ ३५। सो अपने साहस को जिस का बड़ा प्रतिफल होता है मत त्याग देओ॥ ३६। क्योंकि तुम्हें स्थिरता का प्रयोजन है इस लिये कि ईश्वर की इच्छा पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पावो॥ ३७। क्योंकि थोड़ी ऐसी बेर में वह जो आनेवाला है आवेगा और बिलम्ब न करेगा॥ ३८। विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा परन्तु जो वह हट जाय तो मेरा मन उस से प्रसन्न नहीं॥ ३९। पर हम लोग हट जानेवाले नहीं हैं जिस से विनाश होता परन्तु विश्वास करनेहारे हैं जिस से आत्मा की रक्षा होगी॥

११. बिश्वास जिन बातों की आशा रखी जाती उन बातों का निश्चय और अनदेखी बातों का प्रमाण है॥

२। इसी के विषय में प्राचीन लोग सुख्यात हुए॥ ३। विश्वास से हम बूझते हैं कि सारा जगत ईश्वर के वचन से रचा गया यहां लों कि जो देखा जाता है सो उस से जो दिखाई देता है नहीं बनाया गया है॥ ४। विश्वास से हाबिल ने ईश्वर के आगे काइन से बड़ा बलिदान चढ़ाया और उस के द्वारा उस पर साक्षी दिई गई कि धर्म्मी जन है क्योंकि ईश्वर ने आप ही उस के चढ़ावों पर साक्षी दिई और उसी के द्वारा वह मूए पर भी अब लों बोलता है॥ ५। विश्वास से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे और नहीं मिला क्योंकि ईश्वर ने उस को उठा लिया था क्योंकि उस पर साक्षी दिई गई है कि उठा लिये जाने के पहिले उस ने ईश्वर को प्रसन्न किया था॥ ६। परन्तु विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना असाध्य है क्योंकि अवश्य है कि जो ईश्वर के पास आवे सो विश्वास करे कि वह है और कि वह उन्हें जो उसे ढूंढ़ लेते हैं प्रतिफल देनेहारा है॥ ७। विश्वास से नूह जो बातें उस समय में देख नहीं पड़ती थीं उन के विषय में ईश्वर से चिताया जाके डर गया और अपने घराने की रक्षा के लिये जहाज बनाया और उस के द्वारा से उस ने संसार को दोषी ठहराया और उस धर्म्म का अधिकारी हुआ जो विश्वास से होता है॥

८। विश्वास से इब्राहीम जब बुलाया गया तब आज्ञाकारी होके निकला कि उस स्थान को जाय जिसे वह अधिकार के लिये पाने पर था और मैं किधर जाता हूं यह न जानके निकल चला॥ ९। विश्वास से वह प्रतिज्ञा के देश में जैसे पराये देश में विदेशी रहा और इसहाक और याकूब के साथ जो उसी प्रतिज्ञा के संगी अधिकारी थे तम्बूओं में वास किया॥ १०। क्योंकि वह उस नगर की बाट जोहता था जिस की नेवें हैं जिस का रचनेहारा और बनानेहारा ईश्वर है॥ ११। विश्वास से सार. ने भी गर्भ धारण करने की शक्ति पाई और वयस के व्यतीत होने पर भी बालक जनी क्योंकि उस ने उस को जिस ने प्रतिज्ञा किई थी विश्वासयोग्य समझा॥ १२। इस कारण एक ही जन से जो मृतक सा भी हो गया था लोग इतने जन्मे जितने आकाश के तारे हैं और जैसे समुद्र के तीर पर का बालू जो अगणित है॥ १३। ये सब विश्वास ही में मरे कि उन्हों ने प्रतिज्ञाओं का फल नहीं पाया परन्तु उसे दूर से देखा और निश्चय कर लिया और प्रणाम किया और मान लिया कि हम पृथिवी पर ऊपरी और परदेशी हैं॥ १४। क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं सो प्रगट करते हैं कि देश ढूंढ़ते हैं॥ १५। और जो वे उस देश को जिस से निकल आये थे स्मरण करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर मिलता॥ १६। पर अब वे और उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश पहुंचने की चेष्टा करते हैं इस लिये ईश्वर उन का ईश्वर कहलाने में उन से लजाता नहीं क्योंकि उस ने उन के लिये नगर तैयार किया है॥ १७। विश्वास से इब्राहीम ने जब उस की परीक्षा लिई गई तब इसहाक को चढ़ाया॥ १८। जिस ने प्रतिज्ञाओं को पाया था और जिस को कहा गया था कि इसहाक से जो हो सो तेरा वंश कहावेगा सोई अपने एकलौते को चढ़ाता था॥ १९। क्योंकि उस ने विचार किया कि ईश्वर मृतकों में से भी उठा सकता है जिन में से उस ने दृष्टान्त

में उसे पाया भी ॥ २० । विश्वास से इसहाक ने याकूब और एसौ को आनेवाली बातों के विषय में आशीस दिई ॥ २१ । विश्वास से याकूब ने जब वह मरने पर था यूसफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीस दिई और अपनी लाठी के सिरे पर उठंगके प्रणाम किया ॥ २२ । विश्वास से यूसफ ने जब वह मरने पर था इस्रायेल के सन्तानों की यात्रा की चर्चा किया और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दिई ॥

२३ । विश्वास से मूसा जब उत्पन्न हुआ तब उस के माता पिता ने उसे तीन मास छिपा रखा क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुन्दर है और वे राजा की आज्ञा से न डरे ॥ २४ । विश्वास से मूसा जब सयाना हुआ तब फिरऊन की बेटी का पुत्र कहलाने से मुकर गया ॥ २५ । क्योंकि उस ने पाप का अनित्य सुखभोग भोगना नहीं परन्तु ईश्वर के लोगों के संग दु:खित होना चुन लिया ॥ २६ । और उस ने खीष्ट के कारण निन्दित होना मिसर में की संपत्ति से बड़ा धन समझा क्योंकि उस की दृष्टि प्रतिफल की ओर लगी रही ॥ २७ । विश्वास से वह मिसर को छोड़ गया और राजा के क्रोध से नहीं डरा क्योंकि वह जैसा अदृश्य पर दृष्टि करता हुआ दृढ़ रहा ॥ २८ । विश्वास से उस ने निस्तार पर्व्व को और लोहू छिड़कने की विधि को माना ऐसा न हो कि पहिलौठों का नाश करनेहारा इस्रायेली लोगों को छूवे ॥ २९ । विश्वास से वे लाल समुद्र के पार जैसे सूखी भूमि पर होके उतरे जिस के पार उतरने का यत्न करने में मिसरी लोग डूब गये ॥ ३० । विश्वास से यिरीहो की भीतें जब सात दिन घेरी गई थी तब गिर पड़ीं ॥ ३१ । विश्वास से राहब वेश्या अविश्वासियों के संग नष्ट न हुई इस लिये कि भेदियों को कुशल से ग्रहण किया ॥

३२ । और मैं आगे क्या कहूं . क्योंकि गिदियोन का और बाराक औ शमशोन का और यिप्ताह का और दाऊद औ शमूएल का और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करने को मुझे समय न मिलेगा ॥ ३३ । इन्हों ने विश्वास के द्वारा राज्यों को जीत लिया धर्म्म का कार्य्य किया प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया सिंहों के मुंह बन्द किये ॥ ३४ । अग्नि की शक्ति निवृत्त किई खड्ग की धार से बच निकले दुर्ब्बलता से बलवन्त किये गये युद्ध में प्रबल हो गये और परायों की सेनाओं को हटाया ॥ ३५ । स्त्रियों ने पुनरुत्थान के द्वारा से अपने मृतकों को फिर पाया पर और लोग मार खाते खाते मर गये और उद्धार ग्रहण न किया इस लिये कि और उत्तम पुनरुत्थान को पहुंचें ॥ ३६ । दूसरों को ठट्ठों और कोड़ों की हां और भी बंधनों की और बन्दीगृह की परीक्षा हुई ॥ ३७ । वे पत्थरवाह किये गये वे आरे से चीरे गये उन की परीक्षा किई गई वे खड्ग से मारे गये वे कंगाल औ क्लेशित औ दु:खी हो भेड़ों की और बकरियों की खालें ओढ़े हुए इधर उधर फिरते रहे ॥ ३८ । और जंगलों औ पर्ब्बतों औ गुफाओं में औ पृथिवी के दरारों में भरमते फिरे . संसार उन के योग्य न था ॥ ३९ । और इन सभों ने विश्वास के द्वारा सुख्यात होके प्रतिज्ञा का फल नहीं पाया ॥ ४० । क्योंकि ईश्वर ने हमारे लिये किसी उत्तम बात की तैयारी किई इस लिये कि वे हमारे बिना सिद्ध न होवें ॥

१२. इस कारण हम लोग भी जब कि साक्षियों के ऐसे बड़े मेघ से घेरे हुए हैं हर एक बोझ को और पाप को जो हमें सहज ही उलझाता है दूर करके वह दौड़ जो हमारे आगे धरी है धीरज से दौड़ें ॥ २ । और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेहारे की अर्थात् यीशु की ओर ताकें जिस ने उस आनन्द के लिये जो उस के आगे धरा था क्रूश को सह लिया और लज्जा को तुच्छ जाना और ईश्वर के सिंहासन के दहिने हाथ जा बैठा है ॥ ३ । उस को सोचो जिस ने अपने विरुद्ध पापियों का इतना विवाद सह लिया जिस्तें तुम थक न जाओ और अपने अपने मन का साहस न छोड़ो ॥

४ । अब लों तुम्हों ने पाप से लड़ते हुए लोहू बहाने तक साम्हना नहीं किया है ॥ ५ । और तुम उस उपदेश को भूल गये हो जो तुम से जैसे पुत्रों से

बातें करता है कि हे मेरे पुत्र परमेश्वर की ताड़ना को हलकी बात मत जान और जब वह तुझे डांटे तब साहस मत छोड़ ॥ ६। क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उस की ताड़ना करता है और हर एक पुत्र को जिसे ग्रहण करता है कोड़े मारता है॥ ७। जो तुम ताड़ना सह लेओ तो ईश्वर तुम से जैसे पुत्रों से व्यवहार करता है क्योंकि कौन सा पुत्र है जिस की ताड़ना पिता नहीं करता है॥ ८। परन्तु यदि ताड़ना जिस के भागी सब कोई हुए हैं तुम पर नहीं होती तो तुम पुत्र नहीं परन्तु व्यभिचार के सन्तान हो॥ ९। फिर हमारे देह के पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हम उन का आदर करते थे क्या हम बहुत अधिक करके आत्माओं के पिता के अधीन न होंगे और जीयेंगे॥ १०। क्योंकि वे तो थोड़े दिन के लिये जैसे अच्छा जानते थे तैसे ताड़ना करते थे परन्तु यह तो हमारे लाभ के निमित्त करता है इस लिये कि हम उस की पवित्रता के भागी होवें॥ ११। कोई ताड़ना वर्त्तमान समय में आनन्द की बात नहीं देख पड़ती है परन्तु शोक की बात तौभी पीछे वह उन्हें जो उस के द्वारा साधे गये हैं धर्म्म का शांतिदाई फल देती है॥

१२। इस लिये अबल हाथों को और निर्ब्बल घुटनों को दृढ़ करो॥ १३। और अपने पावों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि जो लगड़ा है सो बहकाया न जाय परन्तु और भी चंगा किया जाय॥ १४। सभों के संग मिलाप की चेष्टा करो और पवित्रता की जिस बिना कोई प्रभु को न देखेगा॥ १५। और देख लेओ ऐसा न हो कि कोई ईश्वर के अनुग्रह से रहित होवे अथवा कोई कड़वाहट की जड़ उगे और क्लेश देवे और उस के द्वारा से बहुत से लोग अशुद्ध होवें॥ १६। ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी वा एसौ की नाईं अपवित्र होय जिस ने एक बेर के भोजन पर अपने पहिलौठेपन को बेच डाला॥ १७। क्योंकि तुम जानते हो कि जब वह पीछे आशीस पाने की इच्छा करता भी था तब अयोग्य गिना गया क्योंकि यद्यपि उस ने रो रोके उसे ढूंढ़ा तौभी पश्चात्ताप की जगह न पाई॥

१८। तुम तो उस पर्ब्बत के पास नहीं आये हो जो छूआ जाता और आग से जल उठा और न घोर मेघ और अंधकार और आंधी के पास॥ १९। और न तुरही के ध्वनि और बातों के शब्द के पास जिस के सुननेहारों ने बिन्ती किई कि और कुछ भी बात हम से न किई जाय॥ २०। क्योंकि वे उस आज्ञा को नहीं सह सकते थे कि यदि पशु भी पर्ब्बत को छूवे तो पत्थरवाह किया जायगा अथवा बर्छी से बेधा जायगा॥ २१। और वह दर्शन ऐसा भयंकर था कि मूसा बोला मैं बहुत भयमान औ कंपित हूं॥ २२। परन्तु तुम सियोन पर्ब्बत के पास और जीवते ईश्वर के नगर स्वर्गीय यिरूशलीम के पास आये हो॥ २३। और स्वर्गदूतों की सभा के पास जो सहस्रों हैं और पहिलौठों की मण्डली के पास जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं और ईश्वर के पास जो सभों का विचार करता है और सिद्ध किये हुए धर्म्मियों के आत्माओं के पास॥ २४। और नये नियम के मध्यस्थ यीशु के पास और छिड़काव के लोहू के पास जो हाबिल से अच्छी बातें बोलता है॥

२५। देखो बोलनेहारे से मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे लोग जब पृथिवी पर आज्ञा देनेहारे से मुंह फेरा तब नहीं बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो स्वर्ग से बोलनेहारे से फिर जावें तो नहीं बचेंगे॥ २६। उस के शब्द ने तब पृथिवी को डुलाया परन्तु अब उस ने प्रतिज्ञा किई है कि फिर एक बेर मैं केवल पृथिवी को नहीं परन्तु आकाश को भी डुलाऊंगा॥ २७। यह बात कि फिर एक बेर यही प्रगट करती है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं सो सृजी हुई वस्तुओं की नाईं बदली जायेंगी इस लिये कि जो वस्तु डुलाई नहीं जातीं सो बनी रहें॥ २८। इस कारण हम लोग जो न डोलनेवाला राज्य पाते हैं अनुग्रह धारण करें जिस के द्वारा हम सन्मान और भक्ति सहित ईश्वर की सेवा उस की प्रसन्नता के योग्य करें॥ २९। क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनेहारो अग्नि है॥

१३ अध्याय

प्रेम बना रहे ॥ २। अतिथि-सेवा को मत भूल जाओ क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने बिन जाने स्वर्ग-दूतों की पहुनई किई है ॥ ३। बंधुओं को जैसे कि उन के संग बंधे हुए होते और दुःखित लोगों को जैसे कि आप भी शरीर में रहते हो स्मरण करो ॥ ४। विवाह सभों में आदरयोग्य और बिछौना शुचि रहे परन्तु ईश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का विचार करेगा ॥ ५। तुम्हारी रीति व्यवहार लोभरहित होवे और जो तुम्हारे पास है उस से सन्तुष्ट रहो क्योंकि उसी ने कहा है मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा ॥ ६। यहां लों कि हम ढाढ़स बांधके कहते हैं कि परमेश्वर मेरा सहायक है और मैं नहीं डरूंगा . मनुष्य मेरा क्या करेगा ॥ ७। अपने प्रधानों को जिन्हों ने ईश्वर का वचन तुम से कहा है स्मरण करो और ध्यान से उन की चाल चलन का अन्त देखके उन के विश्वास के अनुगामी होओ ॥ ८। यीशु खीष्ट कल और आज और सर्व्वदा एकसां है ॥ ९। नाना प्रकार की और ऊपरी शिक्षाओं से मत भरमाये जाओ क्योंकि अच्छा है कि मन अनुग्रह से दृढ़ किया जाय खाने की वस्तुओं से नहीं जिन से उन लोगों को जो उन की विधि पर चले कुछ लाभ नहीं हुआ ॥ १०। हमारी एक वेदी है जिस से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं है जो तंबू में की सेवा करते हैं ॥ ११। क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप के निमित्त पवित्र स्थान में ले जाता है उन के देह छावनी के बाहर जलाये जाते हैं ॥ १२। इस कारण यीशु ने भी इस लिये कि लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करे फाटक के बाहर दुःख भोगा ॥ १३। सो हम लोग उस की निन्दा सहते हुए छावनी के बाहर उस पास निकल जावें ॥ १४। क्योंकि यहां हमारा कोई ठहरनेहारा नगर नहीं है परन्तु हम उस होनेहार नगर को ढूंढ़ते हैं ॥ १५। इस लिये यीशु के द्वारा हम सदा ईश्वर के आगे स्तुति का बलिदान अर्थात् उस के नाम का धन्य माननेहारे होठों का फल चढ़ाया करें ॥ १६। परन्तु भलाई और सहायता करने को मत भूल जाओ क्योंकि ईश्वर ऐसे बलि-दानों से प्रसन्न होता है ॥ १७। अपने प्रधानों को मानो और उन के अधीन होओ क्योंकि वे जैसे कि लेखा देंगे तैसे तुम्हारे प्राणों के लिये चौकी देते हैं इस लिये कि वे इस को आनन्द से करें और कहर कहरके नहीं क्योंकि यह तुम्हारे लिये निष्फल है ॥ १८। हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हम भरोसा रखते हैं कि हमारा अच्छा विवेक है और हम लोग सभों में अच्छी चाल चला चाहते हैं ॥ १९। और मैं बहुत अधिक बिन्ती करता हूं कि यही करो इस लिये कि मैं और भी शीघ्र तुम्हें फेर दिया जाऊं ॥

२०। शांति का ईश्वर जिस ने हमारे प्रभु यीशु को जो सनातन नियम का लोहू लिये हुए भेड़ों का बड़ा गड़ेरिया है मृतकों में से उठाया ॥ २१। तुम्हें हर एक अच्छे कर्म्म में सिद्ध करे कि उस की इच्छा पर चलो और जो उस को भावता है उसे तुम्हों में यीशु खीष्ट के द्वारा उत्पन्न करे जिस का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होवे . आमीन ॥ २२। और हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं उपदेश का वचन सह लेओ क्योंकि मैं ने संक्षेप से तुम्हारे पास लिखा है ॥ २३। यह जानो कि भाई तिमोथिय छूट गया है . जो वह शीघ्र आवे तो उस के संग मैं तुम्हें देखूंगा ॥ २४। अपने सब प्रधानों को और सब पवित्र लोगों को नमस्कार करो . इतलिया के जो लोग हैं उन का तुम से नमस्कार ॥ २५। अनुग्रह तुम सभों के संग होय । आमीन ॥

याकूब प्रेरित की पत्री।

---

१. याकूब जो ईश्वर का और प्रभु यीशु खीष्ट का दास है बारहो कुलो को जो तितर बितर रहते हैं, आनन्द रहो॥

२। हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं मे पड़ो उसे सर्व्व आनन्द समझो॥ ३। क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे बिश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है॥ ४। परन्तु धीरज का काम सिद्ध होवे जिस्तें तुम सिद्ध और पूरे होओ और किसी बात में तुम्हारी घटी न होय॥ ५। परन्तु यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी होय तो ईश्वर से मांगे जो सभों को उदारता से देता है और उलहना नहीं देता और उस को दिई जायगी॥ ६। परन्तु बिश्वास से मांगे और कुछ संदेह न रखे क्योंकि जो सदेह रखता है सो समुद्र की लहर के समान है जो बयार से चलाई जाती और डुलाई जाती है॥ ७। वह मनुष्य न समझे कि मैं प्रभु से कुछ पाऊंगा॥ ८। दुचित्ता मनुष्य अपने सब मार्गो मे चंचल है॥ ९। दीन भाई अपने ऊंचे पद पर बड़ाई करे॥ १०। परन्तु धनवान अपने नीचे पद पर बड़ाई करता है क्योंकि वह घास के फूल की नाईं जाता रहेगा॥ ११। क्योंकि सूर्य्य ज्योंही घाम सहित उदय होता त्यों घास को सुखाता है और उस का फूल झड़ जाता है और उस के रूप की शोभा नष्ट होती है, वैसे ही धनवान भी अपने पथ ही में मुरझायगा॥ १२। जो मनुष्य परीक्षा मे स्थिर रहता है सो धन्य है क्योंकि वह खरा निकलके जीवन का मुकुट पावेगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने उन्हें जो उस को प्यार करते हैं दिई है॥ १३। कोई जन परीक्षित होने पर यह न कहे कि ईश्वर से मेरी परीक्षा किई जाती है क्योंकि ईश्वर बुरी बातों से परीक्षित होता नहीं और वह किसी की वैसी परीक्षा नहीं करता है॥ १४। परन्तु हर कोई जब अपनी ही अभिलाषा से खींचा और फुसलाया जाता है तब परीक्षा में पड़ता है॥ १५। फिर अभिलाषा को जब गर्भ रहता है तब वह कुक्रिया जनती है और कुक्रिया जब समाप्त होती तब मृत्यु को उत्पन्न करती है॥

१६। हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत खाओ॥ १७। हर एक अच्छा दानकर्म्म और हर एक सिद्ध दान ऊपर से उतरता है अर्थात् ज्योतियों के पिता से जिस में न अदल बदल न फेर फार की छाया है॥ १८। अपनी ही इच्छा से उस ने हमें सत्यता के बचन के द्वारा उत्पन्न किया इस लिये कि हम उस की सृजी हुई बस्तुओं के पहिले फल के ऐसे होवें॥ १९। सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुनने के लिये शीघ्रता करे पर बोलने में बिलम्ब करे औ क्रोध में बिलम्ब करे॥ २०। क्योंकि मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म्म को नहीं निबाहता है॥ २१। इस कारण सब अशुद्धता को और बैरभाव को अधिकाई को दूर करके नम्रता से उस रोपे हुए बचन को ग्रहण करो जो तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है॥ २२। परन्तु बचन पर चलनेहारे होओ और केवल सुननेहारे नहीं जो अपने को धोखा देओ॥ २३। क्योंकि यदि कोई बचन का सुननेहारा है और उस पर चलनेहारा नहीं तो वह एक मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है॥ २४। क्योंकि वह अपने को ज्यों ही देखता त्यों चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मै कैसा था॥ २५। परन्तु जो जन सिद्ध व्यवस्था को जो निर्बंधता की है झुक झुकके देखता है और ठहर जाता है वह जो ऐसा सुननेहारा नहीं कि भूल जाय परन्तु कार्य्य करनेहारा है तो वही अपनी करणी में धन्य होगा॥ २६। यदि तुम्हों में कोई

जो अपनी जीभ पर बाग नहीं लगाता है परन्तु अपने मन को धोखा देता है अपने को धर्म्माचारी समझता है तो इस का धर्म्माचार व्यर्थ है॥ २७। ईश्वर पिता के यहां शुद्ध और निर्मल धर्म्माचार यह है अर्थात् माता पिताहीन लड़कों के और विधवाओं के क्लेश में उन की सुध लेना और अपने तईं संसार से निष्कलंक रखना॥

२. हे मेरे भाइयो हमारे तेजोमय प्रभु यीशु खीष्ट के विश्वास में पक्षपात मत किया करो॥ २। क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और भड़कीला वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आवे और एक कंगाल मनुष्य भी मैला वस्त्र पहिने हुए आवे॥ ३। और तुम उस भड़कीला वस्त्र पहिने हुए पर दृष्टि करके उस से कहो आप यहां अच्छी रीति से बैठिये और उस कंगाल से कहो तू वहां खड़ा रह अथवा यहां मेरे पांवों की पीढ़ी के नीचे बैठ॥ ४। तो क्या तुम ने अपने मन में भेद न माना और कुविचार से न्याय करनेहारे न हुए॥ ५। हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या ईश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना है कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी होवें जिस की प्रतिज्ञा उस ने उन्हें जो उस को प्यार करते हैं दिई है॥ ६। परन्तु तुम ने उस कंगाल का अपमान किया. क्या धनी लोग तुम्हें नहीं पेरते हैं और क्या वेही तुम्हें विचार आसनों के आगे नहीं खींचते हैं॥ ७। जिस नाम से तुम पुकारे जाते हो क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते हैं॥ ८। जो तुम धर्म्मपुस्तक के इस वचन के अनुसार कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सचमुच राजव्यवस्था पूरी करते हो तो अच्छा करते हो॥ ९। परन्तु जो तुम पक्षपात करते हो तो पापकर्म्म करते हो और व्यवस्था से अपराधी ठहराये जाते हो॥ १०। क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था को पालन करे पर एक बात में चूके वह सब बातों के दण्ड के योग्य हो चुका॥ ११। क्योंकि जिस ने कहा परस्त्रीगमन मत कर उस ने यह भी कहा कि नरहिंसा मत कर. सो जो तू परस्त्रीगमन न करे परन्तु नरहिंसा करे तो व्यवस्था का अपराधी हो चुका॥ १२। तुम ऐसे बोलो और ऐसा काम करो जैसा तुम को चाहिये जिन का विचार निर्बंधता की व्यवस्था के द्वारा किया जायगा॥ १३। क्योंकि जिस ने दया न किई उस का विचार बिना दया के किया जायगा और दया न्याय पर जयजयकार करती है॥

१४। हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म्म उस से नहीं होवें तो क्या लाभ है. क्या उस विश्वास से उस का त्राण हो सकता है॥ १५। यदि कोई भाई वहिन नंगे हों और उन्हें प्रतिदिन के भोजन की घटी होय॥ १६। और तुम में से कोई उन से कहे कुशल से जाओ तुम्हें जाड़ा न लगे तुम तृप्त रहो परन्तु तुम जो वस्तु देह के लिये अवश्य हैं सो उन को न देओ तो क्या लाभ है॥ १७। वैसेही विश्वास भी जो कर्म्म सहित न होवे तो आप ही मृतक है॥ १८। वरन कोई कहेगा तुझे विश्वास है और मुझ से कर्म्म होते हैं तू अपने कर्म्म बिना अपना विश्वास मुझे दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कर्म्मों से तुझे दिखाऊंगा॥ १९। तू विश्वास करता है कि एक ईश्वर है. तू अच्छा करता है. भूत भी विश्वास करते और थरथराते हैं॥ २०। पर हे निर्बुद्धि मनुष्य क्या तू जानने चाहता है कि कर्म्म बिना विश्वास मृतक है॥ २१। क्या हमारा पिता इब्राहीम जब उस ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया कर्म्मों से धर्म्मी न ठहरा॥ २२। तू देखता है कि विश्वास उस के कर्म्मों के साथ कार्य्य करता था और कर्म्मों से विश्वास सिद्ध किया गया॥ २३। और धर्म्मपुस्तक का यह वचन कि इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया पूरा हुआ और वह ईश्वर का मित्र कहलाया॥ २४। सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं परन्तु कर्म्मों से भी धर्म्मी ठहराया जाता है॥ २५। वैसेही राहब वेश्या भी जब उस ने दूतों की पहुनई किई और उन्हें दूसरे मार्ग से बिदा किया

क्या कर्म्मों से धर्म्मी न ठहरी ॥ २६ । क्योंकि जैसा देह आत्मा बिना मृतक है वैसा बिश्वास भी कर्म्म बिना मृतक है ॥

३. हे मेरे भाइयो बहुतेरे उपदेशक मत बनो क्योंकि जानते हो कि हम अधिक दण्ड पावेंगे ॥ २ । क्योंकि हम सब बहुत बार चूकते हैं . यदि कोई बचन में नहीं चूकता है तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देह पर भी बाग लगाने का सामर्थ्य रखता है ॥ ३ । देखो घोड़ों के मुंह में हम लगाम देते हैं इस लिये कि वे हमें मानें और हम उन का सारा देह फेरते हैं ॥ ४ । देखो जहाज भी जो इतने बड़े हैं और प्रचण्ड बयारों से उड़ाये जाते हैं बहुत छोटी पतवार से जिधर कहीं मांझी का मन चाहता हो उधर फेरे जाते है ॥ ५ । वैसेही जीभ भी छोटा अंग है और बड़ी गालफटाकी करती है . देखो थोड़ी आग कितने बड़े बन को फूंकती है ॥ ६ । और यह अधर्म्म का लोक अर्थात् जीभ एक आग है . हमारे अंगों में जीभ है जो सारे देह को कलकी करनेहारी और भवचक्र में आग लगानेहारी ठहरती है और उस में आग लगानेहारा नरक है ॥ ७ । क्योंकि बनपशुओं औ पंछियों और रेंगनेहारे जन्तुओं औ जलचरों की भी हर एक जाति मनुष्य जाति के बश में किई जाती है और किई गई है ॥ ८ । परन्तु जीभ को मनुष्यों में से कोई बश में नहीं कर सकता है . वह निरंकुश दुष्ट है वह मारु विष से भरी है ॥ ९ । उस से हम ईश्वर पिता का धन्यवाद करते हैं और उसी से मनुष्यों को जो ईश्वर के समान बने हैं स्राप देते हैं ॥ १० । एक ही मुख से धन्यवाद औ स्राप दोनों निकलते हैं . हे मेरे भाइयो इन बातों का ऐसा होना उचित नहीं है ॥ ११ । क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और तीता दोनों बहते हैं ॥ १२ । क्या गूलर के बृक्ष में मेरे भाइयो जलपाई के फल अथवा दाख की लता में गूलर के फल लग सकते हैं . वैसे ही किसी सोते से खारा और मीठा दोनों प्रकार का जल नहीं निकल सकता है ॥

१३ । तुम्हों में ज्ञानवान और बूझनेहार कौन है . सो अपनी अच्छी चाल चलन से ज्ञान की नम्रता सहित अपने कार्य्य दिखावे ॥ १४ । परन्तु जो तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और बैर रखते हो तो सच्चाई के बिरुद्ध घमण्ड मत करो और झूठ मत बोलो ॥ १५ । यह ज्ञान ऊपर से उतरता नहीं परन्तु सांसारिक और शारीरिक और शैतानी है ॥ १६ । क्योंकि जहां डाह और बैर है तहां बखेड़ा और हर एक बुरा कर्म्म होता है ॥ १७ । परन्तु जो ज्ञान ऊपर से है सो पहिले तो पवित्र है फिर मिलनसार मृदुभाव और कोमल और दया से और अच्छे फलों से परिपूर्ण पक्षपात रहित और निष्कपट है ॥ १८ । और धर्म्म का फल मेल करवैयों से मिलाप में बोया जाता है ॥

४. तुम्हों में लड़ाई झगड़े कहां से होते . क्या यहां से नहीं अर्थात् तुम्हारे सुखाभिलाषों से जो तुम्हारे अंगों में लड़ते हैं ॥ २ । तुम लालसा रखते हो और तुम्हें मिलता नहीं तुम नरहिंसा और डाह करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते तुम झगड़ा और लड़ाई करते हो परन्तु तुम्हें मिलता नहीं इस लिये कि तुम नहीं मांगते हो ॥ ३ । तुम मांगते हो और पाते नहीं इस लिये कि बुरी रीति से मांगते हो जिस्तें अपने सुखबिलास में उड़ा देओ ॥ ४ । हे व्यभिचारियो और व्यभिचारिणियो क्या तुम नहीं जानते हो कि संसार की मित्रता ईश्वर की शत्रुता है . सो जो कोई संसार का मित्र हुआ चाहता है वह ईश्वर का शत्रु ठहरता है ॥ ५ । अथवा क्या तुम समझते हो कि धर्म्मपुस्तक वृथा कहता है . क्या वह आत्मा जो हमों में बसा है यहां लों स्नेह करता है कि डाह भी करे ॥ ६ । बरन वह अधिक अनुग्रह देता है इस कारण कहता है ईश्वर अभिमानियों से बिरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है ॥ ७ । इस लिये ईश्वर के अधीन होओ . शैतान का साम्हना करो तो वह तुम से भागेगा ॥ ८ । ईश्वर के निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा . हे पापियो

अपने हाथ शुद्ध करो और हे दुचित्ते लोगो अपने मन पवित्र करो ॥ ९। दुःखी होओ और शोक करो और रोओ . तुम्हारी हंसी शोक हो जाय और तुम्हारा आनन्द उदासी बने ॥ १० । प्रभु के सन्मुख दीन बनो तो वह तुम्हें ऊंचे करेगा ॥

११ । हे भाइयो एक दूसरे पर अपवाद मत लगाओ . जो भाई पर अपवाद लगाता और अपने भाई का विचार करता है सो व्यवस्था पर अपवाद लगाता और व्यवस्था का विचार करता है . परन्तु जो तू व्यवस्था का विचार करता है तो तू व्यवस्था पर चलनेहारा नहीं परन्तु विचारकर्त्ता है ॥ १२ । एक व्यवस्थाकारक और विचारकर्त्ता है अर्थात् वही जिसे बचाने और नाश करने का सामर्थ्य है . तू कौन है जो दूसरे का विचार करता है ॥

१३ । अब आओ तुम जो कहते हो कि आज वा कल हम उस नगर में जायेंगे और वहां एक बरस बितावेंगे और लेन देन कर कमावेंगे ॥ १४ । पर तुम तो कल की बात नहीं जानते हो क्योंकि तुम्हारा जीवन कैसा है . वह भाफ है जो थोड़ी बेर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है ॥ १५ । इस के बदले तुम्हें यह कहना था कि प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे और यह अथवा वह करेंगे ॥ १६ । पर अब तुम अपनी गलफटाकियों पर बड़ाई करते हो . ऐसी ऐसी बड़ाई सब बुरी है ॥ १७ । सो जो भला करने जानता है और करता नहीं उस को पाप होता है ॥

५. अब आओ हे धनवान लोगो अपने पर आनेवाले क्लेशों के लिये चिल्ला चिल्ला रोओ ॥ २ । तुम्हारा धन सड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गये हैं ॥ ३ । तुम्हारे सोने और रूपे में काई लग गई है और उन की काई तुम्हों पर साक्षी होगी और आग की नाईं तुम्हारा मांस खायगी . तुम ने पिछले दिनों में धन बटोरा है ॥ ४ । देखो जिन बनिहारों ने तुम्हारे खेतों की लवनी किई उन की बनि जो तुम ने ठग लिई है पुकारती है और लवनेहारों की दोहाई सेनाओं के परमेश्वर के कानों में पहुंची है ॥ ५ । तुम पृथिवी पर सुख में और बिलास में रहे तुम ने जैसे बध के दिन ही में अपने मन को सन्तुष्ट किया है ॥ ६ । तुम ने धर्म्मी को दोषी ठहराके मार डाला है . वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता है ॥

७ । सो हे भाइयो प्रभु के आने लों धीरज धरो . देखो गृहस्थ पृथिवी के बहुमूल्य फल की बाट जोहता है और जब लों वह पहिली और पिछली वर्षा न पावे तब लों उस के लिये धीरज धरता है ॥ ८ । तुम भी धीरज धरो अपने मन को स्थिर करो क्योंकि प्रभु का आना निकट है ॥ ९ । हे भाइयो एक दूसरे के विरुद्ध मत कुड़कुड़ाओ इस लिये कि दोषी न ठहरो . देखो विचारकर्त्ता द्वार के आगे खड़ा है ॥ १० । हे मेरे भाइयो भविष्यद्वक्ताओं को जिन्हों ने प्रभु के नाम से बातें किईं दुःखभोग और धीरज का नमूना समझ लेओ ॥ ११ । देखो जो स्थिर रहते हैं उन्हें हम धन्य कहते हैं . तुम ने ऐयूब की स्थिरता की सुनी है और प्रभु का अन्त देखा है कि प्रभु बहुत करुणामय और दयावन्त है ॥ १२ । परन्तु सब से पहिले हे मेरे भाइयो किरिया मत खाओ न स्वर्ग की न धरती की न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारा हां हां होवे और नहीं नहीं होवे जिस्तें तुम दंड के योग्य न ठहरो ॥

१३ । क्या तुम्हों में कोई दुःख पाता है . तो प्रार्थना करे . क्या कोई हर्षित है . तो भजन गावे ॥ १४ । क्या तुम्हों में कोई रोगी है . तो मंडली के प्राचीनों को अपने पास बुलावे और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलके उस के लिये प्रार्थना करें ॥ १५ । और विश्वास की प्रार्थना रोगी को बचावेगी और प्रभु उस को उठावेगा और जो उस ने पाप भी किये हों तो उस को क्षमा किई जायगी ॥ १६ । एक दूसरे के आगे अपने अपने अपराधों को मान लेओ और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिस्तें चंगे हो जाओ . धर्म्मी जन की प्रार्थना कार्य्यकारी होके बहुत सफल होती है ॥ १७। एलियाह हमारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य था और प्रार्थना में उस ने प्रार्थना किई कि मेंह न बरसे और भूमि पर साढ़े

तीन बरस मेंह न बरसा ॥ १८ । और उस ने फिर प्रार्थना किई तो आकाश ने वर्षा दिई और भूमि ने अपना फल उपजाया ॥

१९ । हे भाइयो जो तुम्हों में कोई सच्चाई से भरमाया जाय और कोई उस को फेर लेवे ॥ २० । तो जान जाय कि जो जन पापी को उस के मार्ग के भ्रमण से फेर लेवे सो एक प्राण को मृत्यु से बचावेगा और बहुत पापों को ढांपेगा ॥

पितर प्रेरित की पहिली पत्री।

---

१. पितर जो यीशु खीष्ट का प्रेरित है पन्त और गलातिया और कपदोकिया और आशिया और बिथुनिया देशों मे छितरे हुए परदेशियों को ॥ २ । जो ईश्वर पिता के भविष्यत ज्ञान के अनुसार आत्मा की पवित्रता के द्वारा आज्ञापालन और यीशु खीष्ट के लोहू के छिड़काव के लिये चुने हुए हैं . तुम्हें बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने अपनी बड़ी दया के अनुसार हमों को नया जन्म दिया कि हमें यीशु खीष्ट के मृतकों में से जी उठने के द्वारा जीवती आशा मिले ॥ ४ । और वह अधिकार मिले जो अविनाशी और निर्मल और अजर है और स्वर्ग में तुम्हारे लिये रखा हुआ है ॥ ५ । जिन की रक्षा ईश्वर की शक्ति से विश्वास के द्वारा किई जाती है जिस्तें तुम वह त्राण जो पिछले समय में प्रगट किये जाने को तैयार है प्राप्त करो ॥

६ । इस से तुम आह्लादित होते हो पर अब थोड़ी बेर लों यदि आवश्यक है तो नाना प्रकार की परीक्षाओं से उदास हुए हो ॥ ७ । इस लिये कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा होने से जो नाशमान है पर आग से परखा जाता है अति बहुमूल्य होके यीशु खीष्ट के प्रगट होने पर प्रशंसा और आदर और महिमा का हेतु पाई जाय ॥ ८ । उस यीशु को तुम बिन देखे प्यार करते हो। और उस पर यद्यपि उसे अब नहीं देखते हो तौभी विश्वास करके अकथ्य और महिमा संयुक्त आनन्द से आह्लादित होते हो ॥ ९ । और अपने विश्वास का अन्त अर्थात् अपने अपने आत्मा का त्राण पाते हो ॥

१० । उस त्राण के विषय मे भविष्यद्वक्ताओं ने जिन्हों ने इस अनुग्रह के विषय मे जो तुम पर किया जाता है भविष्यद्वाणी कही बहुत ढूंढ़ा और खोज विचार किया ॥ ११ । वे ढूंढ़ते थे कि खीष्ट का आत्मा जो हम मे रहता है जब वह खीष्ट के दुःखों पर और उन के पीछे की महिमा पर आगे से साक्षी देता है तब कौन और कैसा समय बताता है ॥ १२ । और उन पर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये नहीं परन्तु हमारे लिये उन बातों की सेवकाई करते थे जिन्हें जिन लोगों ने स्वर्ग से भेजे हुए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया उन्हों ने अभी तुम से कह दिया है और इन बातों को स्वर्गदूत झुक झुकके देखने की इच्छा रखते हैं ॥

१३ । इस कारण अपने अपने मन की मानो कमर बांधके सचेत रहो और जो अनुग्रह यीशु खीष्ट के प्रगट होने पर तुम्हें मिलनेवाला है उस की पूरी आशा रखो ॥ १४ । आज्ञाकारी लोगों की नाईं अपनी अज्ञानता मे की अगली अभिलाषाओं की रीति पर मत चला करो ॥ १५ । परन्तु उस परमपवित्र के समान जिस ने तुम को बुलाया तुम भी

आप सारी चाल चलन में पवित्र बनो॥ १६। क्योंकि लिखा है पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं॥ १७। और जो तुम उसे जो विना पक्षपात हर एक के कर्म्म के अनुसार विचार करनेहारा है पिता करके पुकारते हो तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ॥ १८। क्योंकि जानते हो कि तुम ने पितरों की ठहराई हुई अपनी व्यर्थ चाल चलन से जो उद्धार पाया सो नाशमान वस्तुओं के अर्थात् रूपे अथवा सोने के द्वारा नहीं॥ १९। परन्तु निष्कलंक और निखोट मेम्ने सरीखे खीष्ट के बहुमूल्य लोहू के द्वारा से पाया॥ २०। जो जगत की उत्पत्ति के आगे से ठहराया गया था परन्तु पिछले समय पर तुम्हारे कारण प्रगट किया गया॥ २१। जो उस के द्वारा से ईश्वर पर विश्वास करते हो जिस ने उसे मृतकों में से उठाया और उस को महिमा दिई यहां लों कि तुम्हारा विश्वास और भरोसा ईश्वर पर है॥

२२। तुम ने निष्कपट भ्रात्रीय प्रेम के निमित्त जो अपने अपने हृदय को सत्य के आज्ञाकारी होने में आत्मा के द्वारा पवित्र किया है तो शुद्ध मन से एक दूसरे से अतिशय प्रेम करो॥ २३। क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं परन्तु अविनाशी बीज से ईश्वर के जीवते और सदा लों ठहरनेहारे वचन के द्वारा नया जन्म पाया है॥ २४। क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं और मनुष्य का सारा विभव घास के फूल की नाईं है॥ २५। घास सूख जाती है और उस का फूल झड़ जाता है परन्तु प्रभु का वचन सदा लों ठहरता है और यही वचन है जो सुसमाचार में तुम्हें सुनाया गया॥

२. इस लिये सब बैरभाव और सब छल और समस्त प्रकार का कपट और डाह और दुर्वचन दूर करके॥ २। नये जन्मे बालकों की नाईं वचन के निराले दूध की लालसा करो कि उस के द्वारा तुम बढ़ जाओ॥ ३। कि तुम ने तो चाख लिया है कि प्रभु कृपाल है॥

४। उस के पास अर्थात् उस जीवते पत्थर के पास जो मनुष्यों से तो निकम्मा जाना गया है परन्तु ईश्वर के आगे चुना हुआ और बहुमूल्य है आके॥ ५। तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर और याजकों का पवित्र समाज बनते जाते हो जिस्तें आत्मिक बलिदानों को जो यीशु खीष्ट के द्वारा ईश्वर को भावते हैं चढ़ावो॥ ६। इस कारण धर्म्मपुस्तक में भी मिलता है कि देखो मैं सियोन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर रखता हूं और जो उस पर विश्वास करे सो किसी रीति से लज्जित न होगा॥ ७। सो यह बहुमूल्यता तुम्हारे ही लेखे है जो विश्वास करते हो परन्तु जो नहीं मानते हैं उन्हें वही पत्थर जिसे थवइयों ने निकम्मा जाना कोने का सिरा और ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान हुआ है॥ ८। कि वे तो वचन को न मानके ठोकर खाते हैं और इस के लिये वे ठहराये भी गये॥ ९। परन्तु तुम लोग चुना हुआ वंश और राजपदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और निज प्रजा हो इस लिये कि जिस ने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया उस के गुण तुम प्रचार करो॥ १०। जो आगे प्रजा न थे परन्तु अभी ईश्वर की प्रजा हो जिन पर दया नहीं किई गई थी परन्तु अभी दया किई गई है॥

११। हे प्यारो मैं बिन्ती करता हूं बिदेशियों और उपरियों की नाईं शारीरिक अभिलाषों से जो आत्मा के विरुद्ध लड़ते हैं परे रहो॥ १२। अन्यदेशियों में तुम्हारी चाल चलन भली होवे इस लिये कि जिस बात में वे तुम पर जैसे कुकर्म्मियों पर अपवाद लगाते हैं उसी में वे तुम्हारे भले कर्म्मों को देखके जिस दिन ईश्वर दृष्टि करे उस दिन उन कर्म्मों के कारण उस का गुणानुवाद करें॥ १३। प्रभु के कारण मनुष्यों के ठहराये हुए हर एक पद के अधीन होओ॥ १४। चाहे राजा हो तो उसे प्रधान जानके चाहे अध्यक्ष लोग हों तो यह जानके कि वे उस के द्वारा कुकर्म्मियों के दण्ड के लिये परन्तु सुकर्म्मियों की प्रशंसा के लिये भेजे जाते हैं दोनों के अधीन होओ॥ १५। क्योंकि ईश्वर की इच्छा यूंहीं है कि तुम

सुकर्म्म करने से निर्बुद्धि मनुष्यों की अज्ञानता को निरुत्तर करो ॥ १६। निर्बन्धों की नाईं चलो पर जैसे अपनी निर्बन्धता से बुराई की आड़ करते हुए वैसे नहीं परन्तु ईश्वर के दासों की नाईं चलो ॥ १७। सभों का आदर करो भाइयों को प्यार करो ईश्वर से डरो राजा का आदर करो ॥

१८। हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियों के अधीन रहो केवल भलों और मृदुभावों के नहीं परन्तु कुटिलों के भी ॥ १९। क्योंकि यदि कोई अन्याय से दु:ख उठाता हुआ ईश्वर की इच्छा के विवेक के कारण शोक सह लेता है तो यह प्रशंसा के योग्य है ॥ २०। क्योंकि यदि अपराध करने से तुम घूसे खावो और धीरज धरो तो कौन सा यश है परन्तु यदि सुकर्म्म करने से तुम दु:ख उठावो और धीरज धरो तो यह ईश्वर के आगे प्रशंसा के योग्य है ॥ २१। तुम इसी के लिये बुलाये भी गये क्योंकि खीष्ट ने भी हमारे लिये दु:ख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि तुम उस की लीक पर हो लेओ ॥ २२। उस ने पाप नहीं किया और न उस के मुंह में छल पाया गया ॥ २३। वह निन्दित होके उस के बदले निन्दा न करता था और दु:ख उठाके धमकी न देता था परन्तु जो धर्म्म से विचार करनेहारा है उसी के हाथ अपने को सौंपता था ॥ २४। उस ने आप हमारे पापों को अपने देह में काठ पर उठा लिया जिस्तें हम लोग पापों के लिये मर करके धर्म्म के लिये जीवें और उसी के मार खाने से तुम चंगे किये गये ॥ २५। क्योंकि तुम भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे पर अब अपने प्राणों के गड़ेरिये औ रखवाले के पास फिर आये हो ॥

३. वैसे ही हे स्त्रियो अपने अपने स्वामी के अधीन रहो इस लिये कि यदि कोई कोई वचन को न मानें तौभी वचन विना अपनी अपनी स्त्री की चाल चलन के द्वारा ॥ २। तुम्हारी भय सहित पवित्र चाल चलन देखके प्राप्त किये जावें ॥ ३। तुम्हारा सिंगार बाल गूंथने का और सोना पहरने का अथवा वस्त्र पहिनने का बाहरी सिंगार न होवे ॥ ४। परन्तु हृदय का गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और शान्त आत्मा के अविनाशी आभूषण सहित जो ईश्वर के आगे बहुमूल्य है तुम्हारा सिंगार होवे ॥ ५। क्योंकि ऐसे ही पवित्र स्त्रियां भी जो ईश्वर पर भरोसा रखती थीं आगे अपना सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने स्वामी के अधीन रहती थीं ॥ ६। जैसे सार: ने इब्राहीम की आज्ञा मानी और उसे प्रभु कहती थी जिस की तुम लोग जो सुकर्म्म करो और किसी प्रकार की घबराहट से न डरो तो बेटियां हुई हो ॥ ७। वैसे ही हे पुरुषो ज्ञान की रीति से स्त्री के संग जैसे अपने से निर्बल पात्र के संग बास करो और जब कि वे भी जीवन के अनुग्रह की संगी अधिकारिणियां हैं तो उन का आदर करो जिस्तें तुम्हारी प्रार्थनाओं को रोक न होय ॥

८। अन्त में यह कि तुम सब एक मन और परदु:ख के बूझनेहारे और भाइयों के प्रेमी और करुणामय और हितकारी होओ ॥ ९। और बुराई के बदले बुराई अथवा निन्दा के बदले निन्दा मत करो परन्तु इस के बिपरीत आशीस देओ क्योंकि जानते हो कि तुम इसी के लिये बुलाये गये जिस्तें आशीस के अधिकारी होओ ॥ १०। क्योंकि जो जीवन की प्रीति रखने और अच्छे दिन देखने चाहे सो अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके ॥ ११। वह बुराई से फिर जावे और भलाई करे वह मिलाप को चाहे और उस की चेष्टा करे ॥ १२। क्योंकि परमेश्वर के नेत्र धर्म्मियों की ओर और उस के कान उन की प्रार्थना की ओर लगे हैं परन्तु परमेश्वर कुकर्म्म करनेहारों से बिमुख है ॥

१३। और जो तुम भले के अनुगामी होओ तो तुम्हारी बुराई करनेहारा कौन होगा ॥ १४। परन्तु जो तुम धर्म्म के कारण दु:ख उठावो भी तो धन्य हो पर उन के भय से भयमान मत हो और न घबराओ ॥ १५। परन्तु परमेश्वर ईश्वर को अपने अपने मन में पवित्र मानो . और जो कोई तुम से उस आशा के विषय में जो तुम में है कुछ बात

पूछे उस को नम्रता और भय सहित उत्तर देने को सदा तैयार रहो ॥ १६। और शुद्ध मन रखो इस लिये कि जो लोग तुम्हारी खीष्टानुसारी अच्छी चाल चलन की निन्दा करें सो जिस बात में तुम पर जैसे कुकर्म्मियों पर अपवाद लगावें उसी में लज्जित होवें ॥ १७। क्योंकि यदि ईश्वर की इच्छा यूं होय तो सुकर्म्म करते हुए दुःख उठाना कुकर्म्म करते हुए दुःख उठाने से अच्छा है ॥

१८। क्योंकि खीष्ट ने भी अर्थात् अधर्म्मियों के लिये धर्म्मी ने एक बेर पापों के कारण दुःख उठाया जिस्तें हमें ईश्वर के पास पहुंचावे कि वह शरीर में तो घात किया गया परन्तु आत्मा में जिलाया गया ॥ १९। उसी में उस ने बन्दीगृह में के आत्माओं को भी जाके उपदेश दिया ॥ २०। जिन्हों ने अगले समय में न माना जिस समय ईश्वर का धीरज नूह के दिनों में जब लों जहाज बनता था जिस में थोड़े अर्थात् आठ प्राणी जल के द्वारा बच गये तब लों बाट जोहता रहा ॥ २१। इस दृष्टान्त का आशय बपतिसमा जो शरीर के मैल का दूर करना नहीं परन्तु ईश्वर के पास शुद्ध मन का अंगीकार है अभी हमों को भी यीशु खीष्ट के जी उठने के द्वारा बचाता है ॥ २२। जो स्वर्ग पर जाके ईश्वर के दहिने हाथ रहता है और दूतगण और अधिकारी और पराक्रमी उस के अधीन किये गये हैं ॥

४. सो जब कि खीष्ट ने हमारे लिये शरीर में दुःख उठाया और जब कि जिस ने शरीर में दुःख उठाया है वह पाप से रोका गया है तुम भी उसी मनसा का हथियार बांधो ॥ २। जिस्तें शरीर में का जो समय रह गया है उसे तुम अब मनुष्यों के अभिलाषों के नहीं परन्तु ईश्वर की इच्छा के अनुसार बितावो ॥ ३। क्योंकि हमारे जीवन का जो समय बीत गया है सो नाना भांति के लुचपन औ कामाभिलाष औ मतवालपन औ नाना क्रीड़ा औ मद्यपान औ धर्म्मविरुद्ध मूर्त्तिपूजा से चलते चलते देवपूजकों की इच्छा पूरी करने को बहुत हुआ है ॥ ४। इस से वे लोग जब तुम उन के संग लुचपन के उसी अत्याचार में नहीं दौड़ते हो तब अचंभा मानते और निन्दा करते हैं ॥ ५। पर वे उस को जो जीवतों औ मृतकों का विचार करने को तैयार है लेखा देंगे ॥ ६। क्योंकि इसी के लिये मृतकों को भी सुसमाचार सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का विचार किया जाय परन्तु आत्मा में वे ईश्वर के अनुसार जीवें ॥

७। परन्तु सब बातों का अंत निकट आया है इस लिये सुबुद्धि होके प्रार्थना के लिये सचेत रहो ॥ ८। और सब से अधिक करके एक दूसरे से अतिशय प्रेम रखो क्योंकि प्रेम बहुत पापों को ढांपेगा ॥ ९। बिना कुड़कुड़ाये एक दूसरे की अतिथिसेवा किया करो ॥ १०। जैसे जैसे हर एक ने बरदान पाया है वैसे ईश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भंडारियों की नाईं एक दूसरे के लिये उसी बरदान की सेवकाई करो ॥ ११। यदि कोई बात करे तो ईश्वर की वाणियों की नाईं बात करे यदि कोई सेवकाई करे तो जैसे उस शक्ति से जो ईश्वर देता है करे जिस्तें सब बातों में ईश्वर की महिमा यीशु खीष्ट के द्वारा प्रगट किई जाय जिस की महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहता है. आमीन ॥

१२। हे प्यारो जो ज्वलन तुम्हारे बीच में तुम्हारी परीक्षा के लिये होता है उस से अचंभा मत करो जैसे कि कोई अचंभे की बात तुम पर बीतती हो ॥ १३। परन्तु जितने तुम खीष्ट के दुःखों के संभागी होते हो उतना आनन्द करो जिस्तें उस की महिमा के प्रगट होने पर भी तुम आनन्दित और आह्लादित होओ ॥ १४। जो तुम खीष्ट के नाम के लिये निन्दित होते हो तो धन्य हो क्योंकि महिमा का और ईश्वर का आत्मा तुम पर ठहरता है. उन की ओर से तो उस की निन्दा होती है परन्तु तुम्हारी ओर से उस की महिमा प्रगट होती है ॥ १५। तुम में से कोई जन हत्यारा अथवा चोर अथवा कुकर्म्मी होने से अथवा पराये काम में हाथ डालने से दुःख न पावे ॥ १६। परन्तु यदि खीष्टियान होने

से कोई दुःख पावे तो लज्जित न होवे परन्तु इस बात में ईश्वर का गुणानुवाद करे ॥ १७ । क्योंकि यही समय है कि दंड ईश्वर के घर से आरंभ होवे पर यदि पहिले हमों से आरंभ होता है तो जो लोग ईश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते हैं उन का अन्त क्या होगा ॥ १८ । और यदि धर्म्मी कठिनता से त्राण पाता है तो भक्तिहीन और पापी कहां दिखाई देगा ॥ १९ । इस कारण जो लोग ईश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं सो सुकर्म्म करते हुए अपने अपने प्राण को उस के हाथ जैसे विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ सौंप देवें ॥

५. मैं जो संगी प्राचीन और खीष्ट के दुःखों का साक्षी और जो महिमा प्रगट होने पर है उस का संभागी भी हूं प्राचीनों से जो तुम्हारे बीच में हैं बिन्ती करता हूं ॥ २ । ईश्वर के झुण्ड को जो तुम में है चरवाही करो और दबाव से नहीं पर अपनी सम्मति से और न नीच कमाई के लिये पर मन की इच्छा से ॥ ३ । और न जैसे अपने अपने अधिकार पर प्रभुता करते हुए परन्तु झुण्ड के लिये दृष्टान्त होते हुए रखवाली करो ॥ ४ । और प्रधान रखवाले के प्रगट होने पर तुम महिमा का अक्षय मुकुट पाओगे ॥ ५ । वैसे ही हे जवानो प्राचीनों के अधीन होओ . हां तुम सब एक दूसरे के अधीन होके दीनता को पहिन लेओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियों से बिरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है ॥

६ । इस लिये ईश्वर के पराक्रमी हाथ के नीचे दीन होओ जिस्तें वह समय पर तुम्हें ऊंचा करे ॥ ७ । अपनी सारी चिन्ता उस पर डालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये सोच करता है ॥ ८ । सचेत रहो जागते रहो क्योंकि तुम्हारा बैरी शैतान गर्जते हुए सिंह की नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किस को निगल जाय ॥ ९ । विश्वास में दृढ़ होके उस का साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगों पर जो संसार में हैं दुःखों की वैसी ही दशा पूरी होती जाती है ॥

१० । सारे अनुग्रह का ईश्वर जिस ने हमें खीष्ट यीशु में बुलाया कि हम थोड़ा सा दुःख उठाके उस की अनन्त महिमा में प्रवेश करें आप ही तुम्हें सुधारे औ स्थिर करे औ बल देवे औ नेव पर दृढ़ करे ॥ ११ । उसी की महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे . आमीन ॥

१२ । सीला के हाथ जिसे मैं समझता हूं कि तुम्हारा विश्वासयोग्य भाई है मैं ने थोड़ी बातों में लिखा है और उपदेश और साक्षी देता हूं कि ईश्वर का सच्चा अनुग्रह जिस में तुम स्थिर हो यही है ॥ १३ । तुम्हारे संग की चुनी हुई जो बाबुल में है और मेरा पुत्र मार्क इन दोनों का तुम से नमस्कार ॥ १४ । प्रेम का चूमा लेके एक दूसरे को नमस्कार करो . तुम सभों को जो खीष्ट यीशु में हो शांति होवे । आमीन ॥

पितर प्रेरित की दूसरी पत्री।

---

१. शिमोन पितर जो यीशु खीष्ट का दास और प्रेरित है उन लोगों को जिन्हों ने हमारे ईश्वर औ त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के धर्म्म में हमारे तुल्य बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है ॥ २ । तुम्हें ईश्वर के और हमारे प्रभु यीशु के ज्ञान के द्वारा बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ । जैसे कि उस के ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब

कुछ जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है हमें उसी के ज्ञान के द्वारा दिया है जिस ने हमें अपने ऐश्वर्य्य और शुभगुण के अनुसार बुलाया ॥ ४। जिन के अनुसार उस ने हमें अत्यन्त बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दिई हैं इस लिये कि इन के द्वारा तुम लोग जो नष्टता कामाभिलाप के द्वारा जगत में है उस से बचके ईश्वरीय स्वभाव के भागी हो जावो ॥ ५। और इसी कारण भी तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास में शुभगुण और शुभगुण में ज्ञान ॥ ६। और ज्ञान में संयम और संयम में धीरज और धीरज में भक्ति ॥ ७। और भक्ति में भ्रात्रीय प्रेम और भ्रात्रीय प्रेम में प्यार संयुक्त करो ॥ ८। क्योंकि यह बातें जब तुम में होतीं और बढ़ती जातीं तब तुम्हें ऐसे बनाती हैं कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के ज्ञान के लिये तुम न निकम्मे न निष्फल हो ॥ ९। क्योंकि जिस पास यह बातें नहीं हैं वह अंधा है और धुन्धला देखता है और अपने अगले पापों से अपना शुद्ध किया जाना भूल गया है ॥ १०। इस कारण हे भाइयो और भी अपने बुलाये जाने और चुन लिये जाने को दृढ़ करने का यत्न करो क्योंकि जो तुम ये कर्म्म करो तो कभी किसी रीति से ठोकर न खाओगे ॥ ११। क्योंकि इस प्रकार से तुम्हें हमारे प्रभु और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के अनन्त राज्य में प्रवेश करने का अधिकार अधिकाई से दिया जायगा ॥

१२। इस लिये यद्यपि तुम यह बातें जानते हो और जो सत्य वचन तुम्हारे पास है उस में स्थिर किये गये हो तौभी मैं इन बातों के विषय में तुम्हें नित्य चेत दिलाने में निश्चिन्त न रहूंगा ॥ १३। पर मैं समझता हूं कि जब लों मैं इस डेरे में हूं तब लों स्मरण करवाने से तुम्हें सचेत करना मुझे उचित है ॥ १४। क्योंकि जानता हूं कि जैसा हमारे प्रभु यीशु खीष्ट ने मुझे बताया तैसा मेरे डेरे के गिराये जाने का समय निकट है ॥ १५। पर मैं यत्न करूंगा कि मेरी मृत्यु के पीछे भी तुम्हें इन बातों का स्मरण करने का उपाय नित्य रहे ॥

१६। क्योंकि हम ने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के सामर्थ्य का और आने का समाचार विद्या से रची हुई कहानियों के अनुसार जो सुनाया सो नहीं परन्तु हम उस की महिमा के प्रत्यक्ष साक्षी हुए थे ॥ १७। क्योंकि उस ने ईश्वर पिता से आदर और महिमा पाई कि प्रतापमय तेज से उस को ऐसा शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं ॥ १८। और यह शब्द स्वर्ग से सुनाया हुआ हम ने पवित्र पर्व्वत में उस के संग होते हुए सुन लिया ॥ १९। और भविष्यद्वाणी का वचन हमारे निकट और भी दृढ़ है. तुम जो उस पर जैसे दीपक पर जो अंधियारे स्थान में चमकता है जब लों पह न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदय में न उगे तब लों मन लगाते हो तो अच्छा करते हो ॥ २०। पर यही पहिले जानो कि धर्म्मपुस्तक की कोई भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही व्याख्यान से नहीं होती है ॥ २१। क्योंकि भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं आई परन्तु ईश्वर के पवित्र जन पवित्र आत्मा के बुलवाये हुए बोले ॥

२. परन्तु झूठे भविष्यद्वक्ता भी लोगों में हुए जैसे कि तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे जो विनाश के कुपंथों को छिपके चलावेंगे और प्रभु से जिस ने उन्हें मोल लिया मुकरेंगे और अपने ऊपर शीघ्र विनाश लावेंगे ॥ २। और बहुतेरे उन के लुचपन का पीछा करेंगे जिन के कारण सत्य के मार्ग की निन्दा किई जायगी ॥ ३। और लोभ से वे तुम्हें बनाई हुई बातों से बेच खायेंगे पर पूर्व्वकाल से उन का दंड आलस नहीं करता और उन का विनाश ऊंघता नहीं ॥

४। क्योंकि यदि ईश्वर ने दूतों को जिन्हों ने पाप किया न छोड़ा परन्तु पाताल में डालके अंधकार की जंजीरों में सौंप दिया जहां वे विचार के लिये रखे जाते हैं ॥ ५। और प्राचीन जगत को न छोड़ा बरन भक्तिहीनों के जगत पर जलप्रलय लाया परन्तु धर्म्म के प्रचारक नूह को लेके आठ जनों की रक्षा किई ॥ ६। और सदोम और अमोरा के नगरों को भस्म करके विध्वंस का दण्ड दिया और

उन्हें पीछे आनेवाले भक्तिहीनों के लिये दृष्टान्त ठहराया है॥ ७। और धर्म्मी लूत को जो अधर्म्मियों के लुचपन के चलन से अति दु:खी होता था बचाया॥ ८। क्योंकि वह धर्म्मी जन उन के बीच में बास करता हुआ देखने और सुनने से प्रतिदिन अपने धर्म्मी प्राण को उन के दुष्ट कर्म्मों से पीड़ित करता था॥ ९। तो परमेश्वर भक्तों को परीक्षा में से बचाने और अधर्म्मियों को दण्ड की दशा में बिचार के दिन लों रखने जानता है॥ १०। निज करके उन लोगों को जो शरीर के अनुसार अशुद्धता के अभिलाष से चलते हैं और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं. वे ढीठ औ हठी हैं और महत पदों की निन्दा करने से नहीं डरते हैं॥ ११। तौभी दूतगण जो शक्ति औ पराक्रम में बड़े हैं उन के विरुद्ध परमेश्वर के आगे निन्दायुक्त बिचार नहीं सुनाते हैं॥ १२। परन्तु ये लोग स्वभाववश अचैतन्य पशुओं की नाईं जो पकड़े जाने और नाश होने को उत्पन्न हुए हैं जिन बातों में अज्ञान हैं उन्हीं में निन्दा करते हैं और अपनी भ्रष्टता में सत्यानाश होंगे और अधर्म्म का फल पावेंगे॥ १३। वे दिन भर के विषयभोग को सुख समझते हैं वे कलंक और खोट रूपी हैं वे तुम्हारे संग भोज में जेवते हुए अपने छलों से सुख भोग करते हैं॥ १४। उन के नेत्र व्यभिचारिणी से भरे रहते हैं और पाप से रोके नहीं जा सकते हैं वे अस्थिर प्राणों को फुसलाते हैं उन का मन लोभ लालच में साधा हुआ है वे स्राप के सन्तान हैं॥ १५। वे सीधे मार्ग को छोड़के भटक गये हैं और बियोर के पुत्र बलाम के मार्ग पर हो लिये हैं जिस ने अधर्म्म की मजूरी को प्रिय जाना॥ १६। परन्तु उस के अपराध के लिये उसे उलहना दिया गया. अबोल गदहे ने मनुष्य की बोली से बोलके भविष्यद्वक्ता की मूर्खता को रोका॥ १७। ये लोग निर्जल कूंए और आंधी के उड़ाये हुए मेघ हैं. उन के लिये सदा का घोर अंधकार रखा गया है॥ १८। क्योंकि वे व्यर्थ गलफटाकी की बातें करते हुए शरीर के अभिलाषों से लुचपनों के द्वारा उन लोगों को फुसलाते हैं जो भ्रांति की चाल चलनेहारों से सचमुच बच निकले थे॥ १९। वे उन्हें निर्बंध होने की प्रतिज्ञा देते हैं पर आप ही नष्टता के दास हैं क्योंकि जिस से कोई हार गया है उस का वह दास भी बन गया है॥

२०। यदि वे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्ट के ज्ञान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले परन्तु फिर उस में फंसके हार गये हैं तो उन की पिछली दशा पहिली से बुरी हुई है॥ २१। क्योंकि धर्म्म के मार्ग को जानके भी उस पवित्र आज्ञा से जो उन्हें सौंपी गई फिर जाने से उस मार्ग को न जानना ही उन के लिये भला होता॥ २२। पर उस सच्चे दृष्टान्त की बात उन में पूरी हुई है कि कुत्ता अपनी ही छांट को और धोई हुई सूअरी कीचड़ में लोटने को फिर गई॥

३. यह दूसरी पत्री हे प्यारो मैं अब तुम्हारे पास लिखता हूं और दोनों में मैं स्मरण करवाने से तुम्हारे निष्कपट मन को सचेत करता हूं॥ २। जिस्तें तुम उन बातों को जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने आगे से कही थीं और हम प्रेरितों की आज्ञा को जो प्रभु औ त्राणकर्त्ता की आज्ञा है स्मरण करो॥ ३। पर यही पहिले जानो कि पिछले दिनों में निन्दक लोग आवेंगे जो अपने ही अभिलाषों के अनुसार चलेंगे॥ ४। और कहेंगे उस के आने की प्रतिज्ञा कहां है क्योंकि जब से पितर लोग सो गये सब कुछ सृष्टि के आरंभ से यूंही बना रहता है॥ ५। क्योंकि यह बात उन से उन की इच्छा ही से छिपी रहती है कि ईश्वर के वचन से आकाश पूर्व्वकाल से था और पृथिवी भी जो जल में से और जल के द्वारा से बनी॥ ६। जिन के द्वारा जगत जो तब था जल में डूबके नष्ट हुआ॥ ७। परन्तु आकाश औ पृथिवी जो अब हैं उसी वचन से धरे हुए हैं और भक्तिहीन मनुष्यों के बिचार और विनाश के दिन लों आग के लिये रखे जाते हैं॥

८। परन्तु हे प्यारो यह एक बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहां एक दिन सहस्र बरस के तुल्य और सहस्र बरस एक दिन के तुल्य हैं॥ ९। प्रभु प्रतिज्ञा के विषय में विलम्ब नहीं करता है जैसा

कितने लोग विलम्ब समझते हैं परन्तु हमारे कारण धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नष्ट होवें परन्तु सब लोग पश्चात्ताप को पहुंचें ॥ १० । पर जैसा रात को चोर आता है तैसा प्रभु का दिन आवेगा जिस में आकाश हड़हड़ाहट से जाता रहेगा और तत्त्व अति तप्त हो गल जायेंगे और पृथिवी और उस में के कार्य्य जल जायेंगे ॥ ११ । सो जब कि यह सब वस्तु गल जानेवाली हैं तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना और किस रीति से ईश्वर के दिन की बाट जोहना और उस के शीघ्र आने की चेष्टा करना उचित है ॥ १२ । जिस दिन के कारण आकाश ज्वलित हो गल जायगा और तत्त्व अति तप्त हो पिघल जायेंगे ॥ १३ । परन्तु उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम नये आकाश और नई पृथिवी की आस देखते हैं जिन में धर्म्म वास करेगा ॥

१४ । इस लिये हे प्यारो तुम जो इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम कुशल से उस के आगे निष्कलंक औ निर्दोष ठहरो ॥ १५ । और हमारे प्रभु के धीरज को त्राण समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पावल ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे दिया गया तुम्हारे पास लिखा ॥ १६ । वैसे ही उस ने सब पत्रियों में भी लिखा है और उन में इन बातों के विषय में कहा है जिन में से कितनी बातें गूढ़ हैं जिन का अनसिख और अस्थिर लोग जैसे धर्म्मपुस्तक की और और बातों का भी विपरीत अर्थ लगाके उन्हें अपने ही विनाश का कारण बनाते हैं ॥ १७ । सो हे प्यारो तुम लोग इस को आगे से जानके अपने तईं बचाये रहो ऐसा न हो कि अधर्म्मियों के भ्रम से बहकाये जाके अपनी स्थिरता से पतित होओ ॥ १८ । परन्तु हमारे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ . उस का गुणानुबाद अभी और सदाकाल लों भी होवे । आमीन ॥

योहन प्रेरित की पहिली पत्री ।

---

१. **जो** आदि से था जो हम ने जीवन के बचन के विषय में सुना है जो अपने नेत्रों से देखा है जिस पर हम ने दृष्टि किई और हमारे हाथों ने छूआ ॥ २ । कि यह जीवन प्रगट हुआ और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम्हें उस सनातन जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के संग था और हमों पर प्रगट हुआ ॥ ३ । जो हम ने देखा और सुना है उस का समाचार तुम्हें सुनाते हैं इस लिये कि हमारे साथ तुम्हारी संगति होय और हमारी यह संगति पिता के साथ और उस के पुत्र यीशु खीष्ट के साथ है ॥ ४ । और यह बातें हम तुम्हारे पास इस लिये लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा होय ॥

५ । जो समाचार हम ने उस से सुना है और तुम्हें सुनाते हैं सो यह है कि ईश्वर ज्योति है और उस में कुछ भी अंधकार नहीं है ॥ ६ । जो हम कहें कि उस के साथ हमारी संगति है और हम अंधियारे में चलें तो झूठ बोलते हैं और सच्चाई पर नहीं चलते हैं ॥ ७ । परन्तु जैसा वह ज्योति में है वैसे ही जो हम ज्योति में चलें तो एक दूसरे से संगति रखते हैं और उस के पुत्र यीशु खीष्ट का लोहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है ॥ ८ । जो हम कहें कि हम में कुछ पाप नहीं है तो अपने को धोखा देते हैं और सच्चाई

हम में नहीं है॥ ९। जो हम अपने पापों को मान लेवें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने को और हमें सब अधर्म्म से शुद्ध करने को बिश्वासयोग्य और धर्म्मी है॥ १०। जो हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया है तो उस को झूठा बनाते हैं और उस का बचन हम में नहीं है॥

२. हे मेरे बालको मैं यह बातें तुम्हारे पास लिखता हूं जिस्तें तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्म्मिक यीशु खीष्ट॥ २। और वही हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नहीं परन्तु सारे जगत के पापों के लिये भी॥

३। और हम लोग जो उस की आज्ञाओं को पालन करें तो इसी से जानते कि उस को पहचानते हैं॥ ४। जो कहता है मैं उसे पहचानता हूं और उस की आज्ञाओं को नहीं पालन करता है सो झूठा है और उस में सच्चाई नहीं है॥ ५। परन्तु जो कोई उस के वचन को पालन करे उस में सचमुच ईश्वर का प्रेम सिद्ध किया गया है. इस से हम जानते हैं कि हम उस में हैं॥ ६। जो कहता है मैं उस में रहता हूं उसे उचित है कि आप भी वैसा हो चले जैसा वह चला॥

७। हे भाइयो मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा नहीं लिखता हूं परन्तु पुरानी आज्ञा जो आरंभ से तुम्हारे पास थी. पुरानी आज्ञा वह वचन है जिसे तुम ने आरंभ से सुना॥ ८। फिर मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा लिखता हूं और यह तो उस में और तुम में सत्य है क्योंकि अंधकार बीता जाता है और सच्चा उजियाला अभी चमकता है॥ ९। जो कहता है मैं उजियाले में हूं और अपने भाई से बैर रखता है सो अब लों अंधकार में है॥ १०। जो अपने भाई को प्यार करता है सो उजियाले में रहता है और ठोकर खाने का कारण उस में नहीं है॥ ११। पर जो अपने भाई से बैर रखता है सो अंधकार में है और अंधकार में चलता है और नहीं जानता मैं कहां जाता हूं क्योंकि अंधकार ने उस की आंखें अंधी किई हैं॥

१२। हे बालको मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम्हारे पाप उस के नाम के कारण क्षमा किये गये हैं॥ १३। हे पितरो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम उसे जो आदि से है जानते हो. हे जवानो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है. हे लड़को मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम पिता को जानते हो॥ १४। हे पितरो मैं ने तुम्हारे पास लिखा है इस लिये कि तुम उसे जो आदि से है जानते हो. हे जवानो मैं ने तुम्हारे पास लिखा है इस लिये कि तुम बलवन्त हो और ईश्वर का वचन तुम में रहता है और तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है॥

१५। न तो संसार से न संसार में की वस्तुओं से प्रीति रखो. यदि कोई संसार से प्रीति रखता है तो पिता का प्रेम उस में नहीं है॥ १६। क्योंकि जो कुछ संसार में है अर्थात् शरीर का अभिलाष और नेत्रों का अभिलाष और जीविका का घमण्ड सो पिता की ओर से नहीं है परन्तु संसार की ओर से है॥ १७। और संसार और उस का अभिलाष बीता जाता है परन्तु जो ईश्वर की इच्छा पर चलता है सो सदा लों ठहरता है॥

१८। हे लड़को यह पिछला समय है और जैसा तुम ने सुना कि खीष्टबिरोधी आता है तैसे अब भी बहुत से खीष्टबिरोधी हुए हैं जिस से हम जानते हैं कि पिछला समय है॥ १९। वे हम में से निकल गये परन्तु हम में के नहीं थे क्योंकि जो वे हम में के होते तो हमारे संग रहते परन्तु वे निकल गये जिस्तें प्रगट होवें कि सब हम में के नहीं हैं॥ २०। पर तुम्हारा तो उस परमपवित्र से अभिषेक हुआ है और तुम सब कुछ जानते हो॥ २१। मैं ने तुम्हारे पास इस लिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को नहीं जानते हो परन्तु इस लिये कि उसे जानते हो और कि कोई झूठ सत्य में से नहीं है॥ २२। झूठा कौन है केवल वह जो मुकरके कहता है कि यीशु

जो है सो खीष्ट नहीं है . यही खीष्टविरोधी है जो पिता से और पुत्र से मुकरता है ॥ २३ । जो कोई पुत्र से मुकरता है पिता भी उस का नहीं है . जो पुत्र को मान लेता है पिता भी उस का है ॥

२४ । सो जो कुछ तुम ने आरंभ से सुना वह तुम में रहे . जो तुम ने आरंभ से सुना सो यदि तुम में रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में रहोगे ॥ २५ । और प्रतिज्ञा जो उस ने हम से किई है यह है अर्थात् अनन्त जीवन ॥ २६ । यह बातें मैं ने तुम्हारे पास तुम्हारे भरमानेहारों के विषय में लिखी हैं ॥ २७ । और तुम ने जो अभिषेक उस से पाया है सो तुम में रहता है और तुम्हें प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखावे परन्तु जैसा वही अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में शिक्षा देता है और सत्य है और झूठ नहीं है और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है तैसे तुम उस में रहो ॥ २८ । और अब हे बालको उस में रहो कि जब वह प्रगट होय तब हमें साहस हो और हम उस के आने पर उस के आगे से लज्जित होके न जावें ॥ २९ । जो तुम जानो कि वह धर्म्मी है तो जानते हो कि जो कोई धर्म्म का कार्य्य करता है सो उस से उत्पन्न हुआ है ॥

३. देखो पिता ने हमों पर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावें . इस कारण संसार हमें नहीं पहचानता है क्योंकि उस को नहीं पहचाना ॥ २ । हे प्यारो अभी हम ईश्वर के सन्तान हैं और अब लों यह नहीं प्रगट हुआ कि हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो हम उस के समान होंगे क्योंकि उस को जैसा वह है तैसा देखेंगे ॥ ३ । और जो कोई उस पर यह आशा रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसा ही अपने को पवित्र करता है ॥ ४ । जो कोई पाप करता है सो व्यवस्थालंघन भी करता है और पाप तो व्यवस्थालंघन है ॥ ५ । और तुम जानते हो कि वह तो हम लिये प्रगट हुआ कि हमारे पापों को उठा लेवे और उस में पाप नहीं है ॥ ६ । जो कोई उस में रहता है सो पाप नहीं करता है . जो कोई पाप करता है उस ने न उस को देखा है न उस को जाना है ॥

७ । हे बालको कोई तुम्हें न भरमावे . जैसा वह धर्म्मी है तैसा वह जो धर्म्म का कार्य्य करता है धर्म्मी है ॥ ८ । जो पाप करता है सो शैतान से है क्योंकि शैतान आरंभ से पाप करता है . ईश्वर का पुत्र इसी लिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को लोप करे ॥ ९ । जो कोई ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है क्योंकि उस का बीज उस में रहता है और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि ईश्वर से उत्पन्न हुआ है ॥ १० । इसी में ईश्वर के सन्तान और शैतान के सन्तान प्रगट होते हैं . जो कोई धर्म्म का कार्य्य नहीं करता है सो ईश्वर से नहीं है और न वह जो अपने भाई को प्यार नहीं करता है ॥ ११ । क्योंकि यही समाचार है जो तुम ने आरंभ से सुना कि हम एक दूसरे को प्यार करें ॥ १२ । ऐसा नहीं जैसा काइन उस दुष्ट से था और अपने भाई को वध किया . और उस को किस कारण वध किया . इस कारण कि उस के अपने कार्य्य बुरे थे परन्तु उस के भाई के कार्य्य धर्म्म के थे ॥ १३ । हे मेरे भाइयो यदि संसार तुम से वैर करता है तो अचंभा मत करो ॥

१४ । हम लोग जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होके जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि भाइयों को प्यार करते हैं . जो भाई को प्यार नहीं करता है सो मृत्यु में रहता है ॥ १५ । जो कोई अपने भाई से वैर रखता है सो मनुष्यघाती है और तुम जानते हो कि किसी मनुष्यघाती में अनन्त जीवन नहीं रहता है ॥ १६ । हम इसी में प्रेम को समझते हैं कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें उचित है कि भाइयों के लिये प्राण देवें ॥ १७ । परन्तु जिस किसी के पास संसार की जीविका हो जो वह अपने भाई को देखे कि उसे प्रयोजन है और उस से अपना अन्तःकरण कठोर करे तो उस में क्योंकर ईश्वर का प्रेम रहता है ॥ १८ । हे मेरे बालको हम बात से अथवा जीभ से नहीं परन्तु करणी से और सच्चाई से प्रेम करें ॥ १९ । और इसी में हम जानते हैं कि हम

सच्चाई के हैं और उस के आगे अपने अपने मन को समझावेंगे ॥ २० । क्योंकि जो हमारा मन हमें दोष देवे तो जानते हैं कि ईश्वर हमारे मन से बड़ा है और सब कुछ जानता है ॥ २१ । हे प्यारो जो हमारा मन हमें दोष न देवे तो हमें ईश्वर के सन्मुख साहस है ॥ २२ । और हम जो कुछ मांगते हैं उस से पाते हैं क्योंकि उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं और वे ही काम करते हैं जिन से वह प्रसन्न होता है ॥ २३ । और उस की आज्ञा यह है कि हम उस के पुत्र यीशु खीष्ट के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दिई वैसा एक दूसरे को प्यार करें ॥ २४ । और जो उस की आज्ञाओं को पालन करता है सो उस में रहता है और वह उस में और इसी से हम जानते हैं कि वह हमों में रहता है अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है ॥

४. हे प्यारो हर एक आत्मा का विश्वास मत करो परन्तु आत्माओं को परखो कि वे ईश्वर की ओर से हैं कि नहीं क्योंकि बहुत झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल आये हैं ॥ २ । इसी से तुम ईश्वर का आत्मा पहचानते हो . हर एक आत्मा जो मान लेता है कि यीशु खीष्ट शरीर में आया है ईश्वर की ओर से है ॥ ३ । और जो आत्मा नहीं मान लेता है कि यीशु खीष्ट शरीर में आया है ईश्वर की ओर से नहीं है और यही तो खीष्टबिरोधी का आत्मा है जिसे तुम ने सुना है कि आता है और अब भी वह जगत में है ॥ ४ । हे बालको तुम तो ईश्वर के हो और तुम ने उन पर जय किया है क्योंकि जो तुम में है सो उस से जो संसार में है बड़ा है ॥ ५ । वे तो संसार के हैं इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं और संसार उन की सुनता है ॥ ६ । हम तो ईश्वर के हैं . जो ईश्वर को जानता है सो हमारी सुनता है . जो ईश्वर का नहीं है सो हमारी नहीं सुनता . इस से हम सच्चाई का आत्मा और भ्रांति का आत्मा पहचानते हैं ॥

७ । हे प्यारो हम एक दूसरे को प्यार करें क्योंकि प्रेम ईश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है सो ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और ईश्वर को जानता है ॥ ८ । जो प्रेम नहीं करता है उस ने ईश्वर को नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम है ॥ ९ । इसी में ईश्वर का प्रेम हमारी ओर प्रगट हुआ कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है जिस्तें हम लोग उस के द्वारा से जीवें ॥ १० । इसी में प्रेम है यह नहीं कि हम ने ईश्वर को प्यार किया परन्तु यह कि उस ने हमें प्यार किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त होने को भेज दिया ॥ ११ । हे प्यारो यदि ईश्वर ने इस रीति से हमें प्यार किया तो उचित है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें ॥

१२ । किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है . जो हम एक दूसरे को प्यार करें तो ईश्वर हम में रहता है और उस का प्रेम हम में सिद्ध किया हुआ है ॥ १३ । इसी से हम जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और वह हम में कि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है ॥ १४ । और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को भेजा है कि जगत का त्राणकर्त्ता होवे ॥ १५ । जो कोई मान लेता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है ईश्वर उस में रहता है और वह ईश्वर में ॥ १६ । और हमारी ओर जो ईश्वर का प्रेम है उस को हम ने जान लिया है और उस की प्रतीति किई है . ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में रहता है सो ईश्वर में रहता है और ईश्वर उस में ॥ १७ । इसी में प्रेम हमों में सिद्ध किया गया है जिस्तें हमें विचार के दिन में साहस होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसार में वैसे ही हैं ॥ १८ । प्रेम में भय नहीं है परन्तु पूरा प्रेम भय को बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है . जो भय करता है सो प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ है ॥ १९ । हम उस को प्यार करते हैं क्योंकि पहिले उस ने हमें प्यार किया ॥ २० । यदि कोई कहे मैं ईश्वर को प्यार करता हूं और अपने भाई से बैर रखे तो झूठा है क्योंकि जो अपने भाई

को जिसे देखा है प्यार नहीं करता है सो ईश्वर को जिसे नहीं देखा है क्योंकर प्यार कर सकता है ॥ २१ । और उस से यह आज्ञा हमें मिली है कि जो ईश्वर को प्यार करता है सो अपने भाई को भी प्यार करे ॥

५. जो कोई बिश्वास करता है कि यीशु जो है सो खीष्ट है वह ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेहारे को प्यार करता है सो उसे भी प्यार करता है जो उस से उत्पन्न हुआ है ॥ २ । इस से हम जानते हैं कि जब हम ईश्वर को प्यार करते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं तब ईश्वर के सन्तानों को प्यार करते हैं ॥ ३ । क्योंकि ईश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को पालन करें और उस की आज्ञाएं भारी नहीं हैं ॥ ४ । क्योंकि जो कुछ ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो संसार पर जय करता है और वह जय जिस ने संसार पर जय पाया है यह है अर्थात् हमारा बिश्वास ॥ ५ । संसार पर जय करनेहारा कौन है केवल वह जो बिश्वास करता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है ॥

६ । जो जल और लोहू के द्वारा से आया सो यह है अर्थात् यीशु खीष्ट . वह केवल जल से नहीं परन्तु जल से और लोहू से आया . और आत्मा है जो साक्षी देता है क्योंकि आत्मा सत्य है ॥ ७ । क्योंकि तीन हैं जो [स्वर्ग में साक्षी देते हैं पिता और बचन और पवित्र आत्मा और ये तीनों एक हैं ॥ ८ । और तीन हैं जो पृथिवी पर] साक्षी देते हैं आत्मा और जल और लोहू और तीनों एक में मिलते हैं ॥ ९ । जो हम मनुष्यों की साक्षी को ग्रहण करते हैं तो ईश्वर की साक्षी उस से बड़ी है क्योंकि यह ईश्वर की साक्षी है जो उस ने अपने पुत्र के विषय में दिई है ॥ १० । जो ईश्वर के पुत्र पर बिश्वास करता है सो अपने ही में साक्षी रखता है . जो ईश्वर का बिश्वास नहीं करता है उस को झूठा बनाया है क्योंकि उस साक्षी पर बिश्वास नहीं किया है जो ईश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दिई है ॥ ११ । और साक्षी यह है कि ईश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उस के पुत्र में है ॥ १२ । पुत्र जिस का है उस को जीवन है . ईश्वर का पुत्र जिस का नहीं है उस को जीवन नहीं है ॥ १३ । यह बातें मैं ने तुम्हारे पास जो ईश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास करते हो इस लिये लिखी हैं कि तुम जानो कि तुम को अनन्त जीवन है और जिस्तें तुम ईश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास रखो ॥

१४ । और जो साहस हम को उस के यहां होता है सो यह है कि जो हम लोग उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनता है ॥ १५ । और जो हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी हुई वस्तु जो हम ने उस से मांगी हैं हमें मिली हैं ॥ १६ । यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जो मृत्युजनक पाप नहीं है तो वह बिन्ती करेगा और जो पाप मृत्युजनक नहीं है ऐसा पाप-करनेहारों के लिये वह उसे जीवन देगा . मृत्युजनक पाप भी होता है उस के विषय में मैं नहीं कहता हूं कि वह मांगे ॥ १७ । सब अधर्म्म पाप है और ऐसा पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है ॥

१८ । हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है परन्तु जो ईश्वर से उत्पन्न हुआ सो अपने तईं बचा रखता है और वह दुष्ट उसे नहीं छूता है ॥ १९ । हम जानते हैं कि हम ईश्वर से हैं और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है ॥ २० । और हम जानते हैं कि ईश्वर का पुत्र आया है और हमें बुद्धि दिई है कि हम सच्चे को पहचानें और हम उस सच्चे में उस के पुत्र यीशु खीष्ट में रहते हैं . यह तो सच्चा ईश्वर और अनन्त जीवन है ॥ २१ । हे बालको अपने तईं मूरतों से बचाओ । आमीन ॥

योहन प्रेरित की दूसरी पत्री।

प्राचीन पुरुष चुनी हुई कुरिया को और उस के लड़कों को जिन्हें मैं सच्चाई मे प्यार करता हूं॥ २। और केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सच्चाई को जानते हैं उस सच्चाई के कारण प्यार करते हैं जो हमों मे रहती है और हमारे साथ सदा लों रहेगी॥ ३। अनुग्रह औ दया औ शांति ईश्वर पिता की ओर से और पिता के पुत्र प्रभु यीशु खीष्ट की ओर से सच्चाई और प्रेम के द्वारा आप लोगों के सग होय॥

४। मैं ने बहुत आनन्द किया कि आप के लड़कों में से मैं ने कितनों को जैसे हम ने पिता से आज्ञा पाई तैसे ही सच्चाई पर चलते हुए पाया है॥ ५। और अब हे कुरिया मैं जैसा नई आज्ञा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु जो आज्ञा हमें आरंभ से मिली उसी को आप के पास लिखता हुआ आप से बिन्ती करता हूं कि हम एक दूसरे को प्यार करें॥ ६। और प्यार यही है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें. यही आज्ञा है जैसी तुम ने आरभ से सुनी जिस्तें तुम उस पर चलो॥ ७। क्योंकि बहुत भरमानेहारे जगत में आये हैं जो नहीं मान लेते हैं कि यीशु खीष्ट शरीर मे आया. यह भरमानेहारा और खीष्टबिरोधी है॥ ८। अपने विषय में चौकस रहिये कि जो कर्म्म हम ने किये उन्हें न खोवें परन्तु पूरा फल पावें॥ ९। जो कोई अपराधी होता है और खीष्ट की शिक्षा मे नहीं रहता है ईश्वर उस का नहीं है. जो खीष्ट की शिक्षा में रहता है पिता और पुत्र दोनों उसी के हैं॥ १०। यदि कोई आप लोगों के पास आके यह शिक्षा नहीं लाता है तो उसे घर में ग्रहण न कीजिये और उस से कल्याण होय न कहिये॥ ११। क्योंकि जो उस से कल्याण होय कहता है सो उस के बुरे कर्म्मों मे भागी होता है॥

१२। मुझे बहुत कुछ आप लोगों के पास लिखना है पर मुझे कागज औ सियाही के द्वारा लिखने की इच्छा न थी परन्तु आशा है कि मैं आप लोगों के पास आऊं और सन्मुख होके बात करूं जिस्तें हमारा आनन्द पूरा होय॥ १३। आप की चुनी हुई बहिन के लड़कों का आप से नमस्कार। आमीन॥

योहन प्रेरित की तीसरी पत्री।

प्राचीन पुरुष प्यारे गायस को जिसे मैं सच्चाई में प्यार करता हूं॥

२। हे प्यारे मेरी प्रार्थना है कि जैसे आप का प्राण कुशल क्षेम से रहता है तैसे सब बातों में आप कुशल क्षेम से रहें औ भले चंगे हों॥ ३। क्योंकि भाई लोग जो आये और आप की सच्चाई की जैसे आप सच्चाई पर चलते हैं साक्षी दिई तो मैं ने बहुत आनन्द किया॥ ४। मुझे इस से बड़ा कोई आनन्द नहीं है कि मैं सुनूं कि मेरे लड़के सच्चाई पर चलते हैं॥ ५। हे प्यारे आप भाइयों के लिये और

अतिथियों के लिये जो कुछ करते हैं सो विश्वासी की रीति से करते हैं ॥ ६ । इन्हों ने मण्डली के आगे आप के प्रेम की साक्षी दिई . जो आप ईश्वर के योग्य व्यवहार करके उन्हें आगे पहुंचावें तो भला करेंगे ॥ ७ । क्योंकि वे उस के नाम पर निकले हैं और देवपूजकों से कुछ नहीं लेते हैं ॥ ८ । इस लिये हमें उचित है कि ऐसों को ग्रहण करें जिस्तें हम सच्चाई के लिये सहकर्म्मी हो जावें ॥

९ । मैं ने मण्डली के पास लिखा परन्तु दियोत्रिफी जो उन में प्रधान होने की इच्छा रखता है हमें ग्रहण नहीं करता है ॥ १० । इस कारण मैं जो आऊं तो उस के कर्म्मों को जो वह करता है स्मरण कराऊंगा कि बुरी बातों से हमारे विरुद्ध बकता है और इन पर सन्तोष न करके वह आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता है और उन्हें जो ग्रहण किया चाहते हैं बर्जता है और मण्डली में से निकालता है ॥ ११ । हे प्यारे बुराई के नहीं परन्तु भलाई के अनुगामी हूजिये . जो भला करता है सो ईश्वर से है परन्तु जो बुरा करता है उस ने ईश्वर को नहीं देखा है ॥ १२ । दीमीत्रिय के लिये सब लोगों ने और सच्चाई ने आप ही साक्षी दिई है बरन हम भी साक्षी देते हैं और आप लोग जानते हैं कि हमारी साक्षी सत्य है ॥

१३ । मुझे बहुत कुछ लिखना था पर मैं आप के पास सियाही और कलम के द्वारा लिखने नहीं चाहता हूं ॥ १४ । परन्तु मुझे आशा है कि शीघ्र आप को देखूं तब हम सन्मुख होके बात करेंगे ॥ १५ । आप का कल्याण होय . मित्र लोगों का आप से नमस्कार . नाम ले ले मित्रों से नमस्कार कहिये ॥

यिहूदा की पत्री ।

यिहूदा जो यीशु खीष्ट का दास और याकूब का भाई है बुलाये हुए लोगों को जो ईश्वर पिता में पवित्र किये हुए और यीशु खीष्ट के लिये रक्षा किये हुए हैं ॥ २ । तुम्हें बहुत बहुत दया और शांति और प्रेम पहुंचे ॥

३ । हे प्यारो मैं साधारण त्राण के विषय में तुम्हारे पास लिखने का सब प्रकार का यत्न जो करने लगा तो मुझे अवश्य हुआ कि तुम्हारे पास लिखके उस विश्वास के लिये जो पवित्र लोगों को एक ही बेर सोंपा गया साहस करने का उपदेश करूं ॥ ४ । क्योंकि कितने मनुष्य जो पूर्व्वकाल से इस दण्ड के योग्य लिखे गये थे छिपके घुस आये हैं जो भक्तिहीन हैं और हमारे ईश्वर के अनुग्रह को लुचपन की ओर फेर देते हैं और अद्वैत स्वामी ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु खीष्ट से मुकर जाते हैं ॥

५ । पर यद्यपि तुम ने इस को एक बेर जाना था तौभी मैं तुम्हें स्मरण करवाने चाहता हूं कि प्रभु ने लोगों को मिसर देश से बचाके फिर जिन्हों ने विश्वास न किया उन्हें नाश किया ॥ ६ । उन दूतों को भी जिन्हों ने अपने प्रथम पद को न रखा परन्तु अपने निज निवास को छोड़ दिया उस ने उस बड़े दिन के विचार के लिये अंधकार में सदा के बंधनों में रखा है ॥ ७ । जैसे सदोम और अमोरा और उन के आस पास के नगर इन्हों की सी रीति पर व्यभिचार करके और पराये शरीर के पीछे जाके दृष्टान्त ठहराये गये हैं कि अनन्त आग का दण्ड भोगते हैं ॥

८ । तौभी उसी रीति से ये लोग भी स्वप्नदर्शी

हो शरीर को अशुद्ध करते हैं और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं और महत पदों की निन्दा करते हैं ॥ ९। परन्तु प्रधान दूत मीखायेल जब शैतान से मूसा के देह के बिषय में बाद बिबाद करता था तब उस पर निन्दासंयुक्त बिचार करने का साहस न किया परन्तु कहा परमेश्वर तुझे डांटे ॥ १० । पर ये लोग जिन जिन बातों को नहीं जानते हैं उन की निन्दा करते हैं परन्तु जिन जिन बातों को अचैतन्य पशुओं की नाईं स्वभाव ही से बूझते हैं उन में भ्रष्ट होते है ॥ ११। उन पर सन्ताप कि वे काइन के मार्ग पर चले हैं और मजूरी के लिये बलाम की भूल में ढल गये हैं और कोरह के बिवाद में नाश हुए हैं॥ १२। तुम्हारे प्रेम के भोजों में ये लोग समुद्र में छिपे हुए पर्ब्बत सरीखे हैं कि वे तुम्हारे संग निर्भय जेवते हुए अपने तईं पालते हैं वे निर्जल मेघ हैं जो बयारों से इधर उधर उड़ाये जाते हैं पतझड़ के निष्फल पेड जो दो दो बेर मरे हैं और उखाड़े गये है ॥ १३ । समुद्र की प्रचंड लहरें जो अपनी लज्जा का फेन निकालती हैं भरमते हुए तारे जिन के लिये सदा का घोर अन्धकार रखा गया है ॥ १४ । और हनोक ने भी जो आदम से सातवां था इन्हों का भविष्यद्वाक्य कहा कि देखो परमेश्वर अपने सहस्रो पवित्रों के बीच में आया ॥ १५ । कि सभों का बिचार करे और उन में के सब भक्तिहीन लोगों को उन के सब अभक्ति के कर्म्मों के बिषय में जो उन्हों ने भक्तिहीन होके किये हैं और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उस के बिरुद्ध कही हैं दोषी ठहरावे ॥ १६ । ये तो कुड़कुड़ानेहारे अपने भाग्य के दूसनेहारे और अपने अभिलाषों के अनुसार चलनेहारे हैं और उन का मुंह गलफटाकी की बातें बोलता है और वे लाभ के निमित्त मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं ॥

१७ । पर हे प्यारो तुम उन बातों को स्मरण करो जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के प्रेरितों ने आगे से कही हैं ॥ १८ । कि वे तुम से बोले कि पिछले समय मे निन्दक लोग होंगे जो अपने अभक्ति के अभिलाषों के अनुसार चलेंगे ॥ १९ । ये तो वे हैं जो अपने तईं अलग करते हैं शारीरिक लोग जिन्हें आत्मा नहीं है ॥

२० । परन्तु हे प्यारो तुम लोग अपने अति पवित्र बिश्वास के द्वारा अपने तईं सुधारते हुए पवित्र आत्मा की सहायता से प्रार्थना करते हुए ॥ २१ । अपने को ईश्वर के प्रेम में रखो और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की दया की आस देखो ॥ २२ । और भेद करते हुए कितनों पर तो दया करो ॥ २३ । पर कितनों को आग में से छीनके उस बस्त्र से भी जो शरीर से कलंकी किया गया है घिन्न करके डरते हुए बचाओ ॥

२४ । जो तुम्हें ठोकर से बचाये हुए रख सकता है और अपनी महिमा के सन्मुख आह्लाद सहित निर्दोष खड़ा कर सकता है ॥ २५ । उस को अर्थात् अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर हमारे त्राणकर्त्ता को ऐश्वर्य्य और महिमा औ पराक्रम और अधिकार अभी और सर्व्वदा लों भी होवे । आमीन ॥

योहन का प्रकाशित वाक्य।

---

१. यीशु खीष्ट का प्रकाशित वाक्य जो ईश्वर ने उसे दिया कि वह अपने दासों को वह बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है दिखावे और उस ने अपने दूत के हाथ भेजके उसे अपने दास योहन को बताया॥ २। जिस ने ईश्वर के वचन और यीशु खीष्ट की साक्षी पर अर्थात् जो कुछ उस ने देखा उस पर साक्षी दिई॥ ३। जो इस भविष्यद्वाक्य की बातें पढ़ता है और जो सुनते और इस में की लिखी हुई बातों को पालन करते हैं सो धन्य क्योंकि समय निकट है॥

४। योहन आशिया में की सात मंडलियों को. अनुग्रह और शांति उस से जो है और जो था और जो आनेवाला है और सात आत्माओं से जो उस के सिंहासन के आगे हैं॥ ५। और यीशु खीष्ट से तुम्हें मिले. विश्वासयोग्य साक्षी और मृतकों में से पहिलौठा और पृथिवी के राजाओं का अध्यक्ष वही है॥ ६। जिस ने हमें प्यार कर अपने लोहू में हमारे पापों को धो डाला और हमें अपने पिता ईश्वर यहां राजा और याजक बनाया उसी की महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे. आमीन॥ ७। देखो वह मेघों पर आता है और हर एक आंख उसे देखेगी हां जिन्हों ने उसे वेधा वे भी उसे देखेंगे और पृथिवी के सब कुल उस के लिये छाती पीटेंगे. ऐसा होय आमीन॥ ८। परमेश्वर ईश्वर वह जो है और जो था और जो आनेवाला है जो सर्व्वशक्तिमान है कहता है मैं ही अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं॥

९। मैं योहन जो तुम्हारा भाई और यीशु खीष्ट के क्लेश और राज्य और धीरज में संभागी हूं ईश्वर के वचन के कारण और यीशु खीष्ट की साक्षी के कारण पत्मो नाम टापू में था॥ १०। मैं प्रभु के दिन आत्मा में था और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना॥ ११। कि मैं ही अलफा और ओमिगा पहिला और पिछला हूं और जो तू देखता है उसे पत्र में लिख और आशिया में की सात मंडलियों के पास भेज अर्थात् इफिस को और स्मुर्णा को और पर्गाम को और थुआतीरा को और सार्दी को और फिलादिलफिया को और लाओदिकेया को॥

१२। और जिस शब्द ने मेरे संग बातें किई उसे देखने को मैं पीछे फिरा और पीछे फिरके मैं ने सात सोने की दीवट देखीं॥ १३। और उन सात दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र के समान एक पुरुष को देखा जो पांवों तक का वस्त्र पहिने और छाती पर सुनहला पटुका बांधे हुए था॥ १४। उस के सिर और बाल श्वेत ऊन के ऐसे और पाले के ऐसे उजले हैं और उस के नेत्र अग्नि की ज्वाला की नाईं हैं॥ १५। और उस के पांव उत्तम पीतल के समान भट्ठी में दहकाये हुए से हैं और उस का शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं है॥ १६। और वह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिये हुए है और उस के मुख से चोखा दोधारा खड्ग निकलता है और उस का मुंह ऐसा है जैसा सूर्य्य अपने पराक्रम में चमकता है॥ १७। और जब मैं ने उसे देखा तब मृतक की नाईं उस के पांवों पास गिर पड़ा और उस ने अपना दहिना हाथ मुझ पर रखके मुझ से कहा मत डर मैं ही पहिला और पिछला और जीवता हूं॥ १८। और मैं मूआ था और देख मैं सदा सर्व्वदा जीवता हूं. आमीन. और मृत्यु और परलोक की कुंजियां मेरे पास हैं॥ १९। इस लिये जो कुछ तू ने देखा है और जो कुछ होता है और जो कुछ इस के पीछे होनेवाला है सो लिख॥ २०। अर्थात् सात तारों का भेद जो तू ने मेरे दहिने हाथ में देखे और ये सात सोने की दीवटें. सात तारे सातों मंडलियों

के दूत हैं और सात दीवट जो तू ने देखी सातों मंडली हैं ॥

२. इफिस मे की मंडली के दूत के पास लिख . जो साती तारे अपने दहिने हाथ में धरे रहता है जो सातों सोने की दीवटों के बीच मे फिरता है सो यही कहता है ॥ २ । मैं तेरे कार्य्यों को और तेरे परिश्रम को और तेरे धीरज को जानता हू और यह कि तू बुरे लोगों को नहीं सह सकता है और जो लोग अपने तईं प्रेरित कहते हैं पर नहीं हैं उन्हे तू ने परखा और उन्हें झूठे पाया ॥ ३ । और तू ने सह लिया और धीरज रखता है और मेरे नाम के कारण परिश्रम किया है और नहीं थक गया है ॥ ४ । परन्तु मेरे मन मे तेरी ओर यह है कि तू ने अपना पहिला प्रेम छोड़ दिया है ॥ ५ । सो चेत कर कि तू कहां से गिरा है और पश्चात्ताप कर और पहिले कार्य्यों को कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हू और जो तू पश्चात्ताप न करे तो मै तेरी दीवट को उस के स्थान से हटा देऊंगा ॥ ६ । पर तुझे इतना तो है कि तू निकोलावियों के कर्म्मों से घिन्न करता है जिन से मै भी घिन्न करता हू ॥ ७ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियो से क्या कहता है . जो जय करे उस को मै जीवन के वृक्ष मे से जो ईश्वर के स्वर्गलोक मे है खाने को देऊंगा ॥

८ । और स्मुर्णा में की मंडली के दूत के पास लिख . जो पहिला और पिछला है जो मूआ था और जी गया सो यही कहता है ॥ ९ । मैं तेरे कार्य्यों को और क्लेश को और दरिद्रता को जानता हू तौभी तू धनी है और जो लोग अपने तई यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु शैतान की सभा हैं उन की निन्दा को जानता हूं ॥ १० । जो दु ख तू भोगेगा उस से कुछ मत डर देख शैतान तुम मे से कितनों को बन्दीगृह मे डालेगा कि तुम्हारी परीक्षा किई जाय और तुम्हें दस दिन का क्लेश होगा . तू मृत्यु लों विश्वासयोग्य रह और मै तुझे जीवन का मुकुट देऊंगा ॥ ११ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है . जो जय करे दूसरी मृत्यु से उस की कुछ हानि नहीं होगी ॥

१२ । और पर्गाम में की मंडली के दूत के पास लिख . जिस पास खड्ग है जो दोधारा और चोखा है सो यही कहता है ॥ १३ । मै तेरे कार्य्यों को जानता हू और तू कहां बास करता है अर्थात् जहां शैतान का सिंहासन है और तू मेरे नाम को धरे रहता है और मेरे विश्वास से उन दिनों में भी नहीं मुकर गया जिन मे अन्तिपा मेरा विश्वासयोग्य साक्षी था जो तुम्हों मे जहां शैतान वास करता है तहां घात किया गया ॥ १४ । परन्तु मेरे मन मे तेरी ओर कुछ थोड़ी सी बाते हैं कि वहा तेरे पास कितने है जो बलाम की शिक्षा को धारण करते हैं जिस ने बालाक को शिक्षा दिई कि इस्रायेल के सन्तानों के आगे ठोकर का कारण डाले जिस्तें वे मूर्त्ति के आगे के बलिदान खायें और व्यभिचार करें ॥ १५ । वैसे ही तेरे पास भी कितने हैं जो निकोलावियों की शिक्षा को धारण करते हैं जिस बात से मैं घिन्न करता हूं ॥ १६ । पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हू और अपने मुख के खड्ग से उन के साथ लडूंगा ॥ १७ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मडलियो से क्या कहता है . जो जय करे उस को मै गुप्त मन्ना मे से खाने को देऊंगा और उस को एक श्वेत पत्थर देऊंगा और उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे कोई नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता हैं ॥

१८ । और थुआतीरा मे की मण्डली के दूत के पास लिख . ईश्वर का पुत्र जिस के नेत्र अग्नि की ज्वाला की नाईं और उस के पांव उत्तम पीतल के समान हैं यही कहता है ॥ १९ । मै तेरे कार्य्यों को और प्रेम को और सेवकाई को और विश्वास को और तेरे धीरज को जानता हूं और यह कि तेरे पिछले कार्य्य पहिलो से अधिक है ॥ २० । परन्तु मेरे मन मे तेरी ओर यह है कि तू उस स्त्री ईज़िबल को जो अपने तईं भविष्यद्वक्त्री कहती है मेरे दासों को सिखाने और भरमाने देता है जिस्तें वे व्यभिचार करें और मूर्त्ति के आगे के बलिदान खायें ॥

२१ । और मैं ने उस को समय दिया कि वह पश्चात्ताप करे पर वह अपने व्यभिचार से पश्चात्ताप करने नहीं चाहती है ॥ २२। देख मैं उसे खाट पर डालता हूं और जो उस के संग व्यभिचार करते हैं जो वे अपने कर्म्मों से पश्चात्ताप न करें तो बड़े क्लेश में डालूंगा ॥ २३ । और मैं उस के लड़कों को मार डालूंगा और सब मण्डलियां जानेंगीं कि मैं ही हूं जो लंक को और हृदयों को जांचता हूं और मैं तुम में से हर एक को तुम्हारे कर्म्मों के अनुसार देऊंगा ॥ २४ । पर मैं तुम्हों से अर्थात् थुआतीरा में के और और लोगों से जितने इस शिक्षा को नहीं रखते हैं और जिन्हों ने शैतान की गभीर बातों को जैसा वे कहते हैं नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुम पर और कुछ भार न डालूंगा ॥ २५ । परन्तु जो तुम्हारे पास है उसे जब लों मैं न आऊं तब लों धरे रहो ॥ २६ । और जो जय करे और मेरे कार्य्यों को अन्त लों पालन करे उस को मैं अन्यदेशियों पर अधिकार देऊंगा ॥ २७ । और जैसा मैं ने अपने पिता से पाया है तैसा वह भी लोहे का दण्ड लेके उन की चरवाही करेगा जैसे मिट्टी के बर्त्तन चूर किये जाते हैं ॥ २८ । और मैं उसे भोर का तारा देऊंगा ॥ २९ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है ॥

३. और सार्दी में की मण्डली के दूत के पास लिख . जिस पास ईश्वर के सातों आत्मा हैं और सातों तारे सो यही कहता है . मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं कि तू जीने का नाम रखता है और मृतक है ॥ २ । जाग उठ और जो रह गया है और मरा चाहता है उसे स्थिर कर क्योंकि मैं ने तेरे कार्य्यों को ईश्वर के आगे पूर्ण नहीं पाया है ॥ ३ । सो चेत कर कि तू ने कैसा ग्रहण किया और सुना है और उसे पालन करके पश्चात्ताप कर . सो जो तू न जागे तो मैं चोर की नाईं तुझ पर आ पहुंचूंगा और तू कुछ नहीं जानेगा कि मैं कौन सी घड़ी तुझ पर आ पहुंचूंगा ॥ ४ । परन्तु तेरे पास सार्दी में भी थोड़े से नाम हैं जिन्हों ने अपना अपना वस्त्र अशुद्ध नहीं किया और वे उजला पहिने हुए मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं ॥ ५ । जो जय करे उसे उजला वस्त्र पहिनाया जायगा और मैं उस का नाम जीवन के पुस्तक में से किसी रीति से न मिटाऊंगा पर उस का नाम अपने पिता के आगे और उस के दूतों के आगे मान लेऊंगा ॥ ६ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है ॥

७ । और फिलादिलफिया में की मण्डली के दूत के पास लिख . जो पवित्र है जो सत्य है जिस पास दाऊद की कुंजी है जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता और बन्द करता है और कोई नहीं खोलता सो यही कहता है ॥ ८ । मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं . देख मैं ने तेरे आगे खुला हुआ द्वार रख दिया है जिसे कोई नहीं बन्द कर सकता है क्योंकि तेरा सामर्थ्य थोड़ा सा है और तू ने मेरे बचन को पालन किया है और मेरे नाम से नहीं मुकर गया है ॥ ९ । देख मैं शैतान की सभा में से अर्थात् जो लोग अपने तईं यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु झूठ बोलते हैं उन में से कितनों को सौंप देता हूं देख मैं उन से ऐसा करूंगा कि वे आके तेरे पांवों के आगे प्रणाम करेंगे और जान लेंगे कि मैं ने तुझे प्यार किया है ॥ १० । तू ने मेरे धीरज के वचन को पालन किया इस लिये मैं भी तुझे उस परीक्षा के समय से बचा रखूंगा जो सारे संसार पर आनेवाला है कि पृथिवी के निवासियों की परीक्षा करे ॥ ११ । देख मैं शीघ्र आता हूं . जो तेरे पास है उसे धरे रह कि कोई तेरा मुकुट न ले ले ॥ १२ । जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वर के मन्दिर में खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा और मैं अपने ईश्वर का नाम और अपने ईश्वर के नगर का नाम अर्थात् नई यिरूशलीम का जो स्वर्ग में से मेरे ईश्वर के पास से उतरती है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा ॥ १३ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है ॥

१४ । और लाओदिकेया में की मण्डली के दूत के पास लिख . जो आमीन है जो विश्वासयोग्य

और सच्चा साक्षी है जो ईश्वर की सृष्टि का आदि है सो यही कहता है ॥ १५ । मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं कि तू न ठंढा है न तप्त है . मैं चाहता हूं कि तू ठंढा अथवा तप्त होता ॥ १६ । सो इस लिये कि तू गुनगुना है और न ठंढा न तप्त है मैं तुझे अपने मुंह में से उगल डालूंगा ॥ १७ । तू जो कहता है कि मैं धनी हूं और धनवान हुआ हूं और मुझे किसी वस्तु का प्रयोजन नहीं है और नहीं जानता है कि तू ही दीनहीन और अभागा है और कंगाल और अंधा और नंगा है ॥ १८ । इसी लिये मैं तुझे परामर्श देता हूं कि आग से ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले जिस्तें तू धनवान होय और उजला वस्त्र जिस्तें तू पहिन लेवे और तेरी नंगाई की लज्जा न प्रगट किई जाय और अपनी आंखों पर लगाने के लिये अंजन ले जिस्तें तू देखे ॥ १९ । मैं जिन जिन लोगों को प्यार करता हूं उन का उलहना और ताड़ना करता हूं इस लिये उद्योगी हो और पश्चात्ताप कर ॥ २० । देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं . यदि कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोले तो मैं उस पास भीतर आऊंगा और उस के संग बियारी खाऊंगा और वह मेरे संग खायगा ॥ २१ । जो जय करे उसे मैं अपने संग अपने सिंहासन पर बैठने देऊंगा जैसा मैं ने भी जय किया और अपने पिता के संग उस के सिंहासन पर बैठा ॥ २२ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है ॥

४. इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखा स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है और वह पहिला शब्द जो मैं ने सुना अर्थात् मेरे संग बात करनेहारी तुरही का सा शब्द यह कहता है कि इधर ऊपर आ और मैं वह बातें जिन का इस पीछे पूरा होना अवश्य है तुझे दिखाऊंगा ॥ २ । और तुरन्त मैं आत्मा में हुआ और देखो एक सिंहासन स्वर्ग में धरा था और सिंहासन पर एक बैठा है ॥ ३ । और जो बैठा है सो देखने में सूर्य्यकान्त मणि और माणिक्य की नाईं है और सिंहासन की चहुंओर मेघधनुष है जो देखने में मरकत की नाईं है ॥ ४ । और उस सिंहासन की चहुंओर चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों पर मैं ने चौबीस प्राचीनों को बैठे देखा जो उजला वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने सिर पर सोने के मुकुट दिये हुए थे ॥ ५ । और सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन और शब्द निकलते हैं और सात अग्निदीपक सिंहासन के आगे जलते हैं जो ईश्वर के सातों आत्मा हैं ॥ ६ । और सिंहासन के आगे कांच का समुद्र है जो स्फटिक की नाईं है और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के आसपास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रों से भरे हैं ॥ ७ । और पहिला प्राणी सिंह के समान और दूसरा प्राणी बछड़ू के समान है और तीसरे प्राणी को मनुष्य का सा मुंह है और चौथा प्राणी उड़ते हुए गिद्ध के समान है ॥ ८ । और चारों प्राणियों में से एक एक को छः छः पंख हैं और चहुंओर और भीतर वे नेत्रों से भरे हैं और वे रात दिन विश्राम न लेके कहते हैं पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो था और जो है और जो आनेवाला है ॥ ९ । और जब जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा है जो सदा सर्व्वदा जीवता है महिमा औ आदर औ धन्यवाद करते हैं ॥ १० । तब तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेहारे के आगे गिर पड़ते हैं और उस को जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम करते हैं और अपने अपने मुकुट सिंहासन के आगे डालके कहते हैं ॥ ११ । हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू महिमा औ आदर औ सामर्थ्य लेने के योग्य है क्योंकि तू ने सब वस्तु सृजीं और तेरी इच्छा के कारण से हुईं और सृजी गईं ॥

५. और मैं ने सिंहासन पर बैठनेहारे के दहिने हाथ में एक पुस्तक देखा जो भीतर और पीठ पर लिखा हुआ था और सात छापों से उस पर छाप दिई हुई थी ॥ २ । और मैं ने एक पराक्रमी दूत को देखा कि बड़े शब्द से प्रचार करता है यह पुस्तक खोलने और उस की छापें तोड़ने

के योग्य कौन है ॥ ३ । और न स्वर्ग में न पृथिवी पर न पृथिवी के नीचे कोई वह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने सक्ता था ॥ ४ । और मैं बहुत रोने लगा इस लिये कि पुस्तक खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखने के योग्य कोई नहीं मिला ॥ ५ । और प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा मत रो देख वह सिंह जो यिहूदा के कुल में से है जो दाऊद का मूल है पुस्तक खोलने और उस की सात छापें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है ॥

६ । और मैं ने दृष्टि किई और देखो सिंहासन के और चारों प्राणियों के बीच में और प्राचीनों के बीच में एक मेम्ना जैसा वध किया हुआ खड़ा है जिस के सात सींग और सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवी में भेजे हुए ईश्वर के सातों आत्मा हैं ॥ ७ । और उस ने आके वह पुस्तक सिंहासन पर बैठनेहारे के दहिने हाथ से ले लिया ॥ ८ । और जब उस ने पुस्तक लिया तब चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन मेम्ने के आगे गिर पड़े और हर एक के पास बीणा थी और धूप से भरे हुए सोने के पियाले जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं ॥ ९ । और वे नया गीत गाते हैं कि तू पुस्तक लेने और उस की छापें खोलने के योग्य है क्योंकि तू वध किया गया और तू ने अपने लोहू से हमें हर एक कुल और भाषा और लोग और देश में से ईश्वर के लिये मोल लिया ॥ १० । और हमें हमारे ईश्वर के यहां राजा और याजक बनाया और हम पृथिवी पर राज्य करेंगे ॥ ११ । और मैं ने दृष्टि किई और सिंहासन को और प्राणियों की और प्राचीनों की चहुंओर बहुत दूतों का शब्द सुना और वे गिन्ती में लाखों लाख और सहस्रों सहस्र थे ॥ १२ । और वे बड़े शब्द से कहते थे मेम्ना जो वध किया गया सामर्थ्य औ धन औ बुद्धि औ शक्ति औ आदर औ महिमा औ धन्यवाद लेने के योग्य है ॥ १३ । और हर एक सृजी हुई वस्तु को जो स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के नीचे और समुद्र पर है और सब कुछ जो उन में है मैं ने कहते सुना कि उस को जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने को धन्यवाद औ आदर औ महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे ॥ १४ । और चारों प्राणी आमीन बोले और चौबीसों प्राचीनों ने गिरके उस को जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम किया ॥

६.

और जब मेम्ने ने छापों में से एक को खोला तब मैं ने दृष्टि किई और चारों प्राणियों में से एक को जैसे मेघ गर्जने के शब्द को यह कहते सुना कि आ और देख ॥ २ । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उस पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और जय करने को निकला ॥

३ । और जब उस ने दूसरी छाप खोली तब मैं ने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना कि आ और देख ॥ ४ । और दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला और जो उस पर बैठा था उस को यह दिया गया कि पृथिवी पर से मेल उठा देवे और कि लोग एक दूसरे को वध करें और एक बड़ा खड्ग उस को दिया गया ॥

५ । और जब उस ने तीसरी छाप खोली तब मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना कि आ और देख . और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक काला घोड़ा है और जो उस पर बैठा है सो अपने हाथ में तुला लिये हुए है ॥ ६ । और मैं ने चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना कि सूकी का सेर भर गेहूं और सूकी का तीन सेर जव और तेल औ दाख रस की हानि न करना ॥

७ । और जब उस ने चौथी छाप खोली तब मैं ने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना कि आ और देख ॥ ८ । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक पीला सा घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उस का नाम मृत्यु है और परलोक उस के संग हो लेता है और उन्हें पृथिवी की एक चौथाई पर अधिकार दिया गया कि खड्ग से और अकाल से और मरी से और पृथिवी के वनपशुओं के द्वारा से मार डालें ॥

९ । और जब उस ने पांचवीं छाप खोली तब

सो लोग ईश्वर के बचन के कारण और उस साक्षी के कारण जो उन के पास थी बध किये गये थे उन के प्राणों को मैं ने वेदी के नीचे देखा ॥ १० । और वे बड़े शब्द से पुकारते थे कि हे स्वामी पवित्र और सत्य कब लों तू न्याय नहीं करता है और पृथिवी के निवासियों से हमारे लोहू का पलटा नहीं लेता है ॥ ११ । और हर एक को उजला वस्त्र दिया गया और उन से कहा गया कि जब लों तुम्हारे संगी दास भी और तुम्हारे भाई जो तुम्हारी नाईं बध किये जाने पर हैं पूरे न हों तब लों और थोड़ी बेर विश्राम करो ॥

१२ । और जब उस ने छठवीं छाप खोली तब मैं ने दृष्टि किई और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ और सूर्य्य कम्मल की नाईं काला हुआ और चांद लोहू की नाईं हुआ ॥ १३ । और जैसे बड़ी बयार से हिलाये जाने पर गूलर के वृक्ष से उस के कच्चे गूलर झड़ते हैं तैसे आकाश के तारे पृथिवी पर गिर पड़े ॥ १४ । और आकाश पत्र की नाईं जो लपेटा जाता है अलग हो गया और सब पर्व्वत और टापू अपने अपने स्थान से हट गये ॥ १५ । और पृथिवी के राजाओं औ प्रधानों औ धनवानों औ सहस्रपतियों औ सामर्थी लोगों ने और हर एक दास ने औ हर एक निर्बंध ने अपने अपने को खोहों में और पर्व्वतों के पत्थरों के बीच में छिपाया ॥ १६ । और पर्व्वतों और पत्थरों से बोले हम पर गिरो और हमें सिंहासन पर बैठनेहारे के सन्मुख से और मेम्ने के क्रोध से छिपाओ ॥ १७ । क्योंकि उस के क्रोध का बड़ा दिन आ पहुंचा है और कौन ठहर सकता है ॥

७. और इस के पीछे मैं ने चार दूतों को देखा कि पृथिवी के चारों कोनों पर खड़े हो पृथिवी की चारों बयारों को थांभे हैं जिस्तें बयार पृथिवी पर अथवा समुद्र पर अथवा किसी पेड़ पर न बहे ॥ २ । और मैं ने दूसरे दूत को सूर्य्योदय के स्थान से चढ़ते देखा जिस पास जीवते ईश्वर की छाप थी और उस ने बड़े शब्द से उन चार दूतों से जिन्हें पृथिवी और समुद्र को हानि करने का अधिकार दिया गया पुकारके कहा ॥ ३ । जब लों हम अपने ईश्वर के दासों के माथे पर छाप न देवें तब लों पृथिवी को अथवा समुद्र को अथवा पेड़ों को हानि मत करो ॥ ४ । और जिन पर छाप दिई गई मैं ने उन की संख्या सुनी . इस्रायेल के सन्तानों के समस्त कुल में से एक लाख चवालीस सहस्र पर छाप दिई गई ॥ ५ । यिहूदा के कुल में से बारह सहस्र पर छाप दिई गई . रूबेन के कुल में से बारह सहस्र पर . गाद के कुल में से बारह सहस्र पर ॥ ६ । आशेर के कुल में से बारह सहस्र पर . नप्ताली के कुल में से बारह सहस्र पर . मनस्सी के कुल में से बारह सहस्र पर ॥ ७ । शिमियोन के कुल में से बारह सहस्र पर . लेवी के कुल में से बारह सहस्र पर . इस्साखर के कुल में से बारह सहस्र पर ॥ ८ । जिबूलून के कुल में से बारह सहस्र पर . यूसफ के कुल में से बारह सहस्र पर . बिन्यामीन के कुल में से बारह सहस्र पर छाप दिई गई ॥

९ । इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो सब देशों और कुलों और लोगों और भाषाओं में से बहुत लोग जिन्हें कोई नहीं गिन सकता था सिंहासन के आगे और मेम्ने के आगे खड़े हैं जो उजले वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने हाथ में खजूर के पत्ते लिये हुए हैं ॥ १० । और वे बड़े शब्द से पुकारके कहते हैं त्राण के लिये हमारे ईश्वर की जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने की जय जय होय ॥ ११ । और सब दूतगण सिंहासन की और प्राचीनों की और चारों प्राणियों की चहुंओर खड़े हुए और सिंहासन के आगे अपने अपने मुंह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम किया ॥ १२ । और बोले आमीन . हमारे ईश्वर का धन्यवाद औ महिमा औ बुद्धि औ प्रशंसा औ आदर औ सामर्थ्य औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे . आमीन ॥

१३ । इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा ये जो उजले वस्त्र पहिने हुए हैं कौन हैं और कहां से आये ॥ १४ । मैं ने उस से कहा हे प्रभु आप ही

जानते हैं . वह मुझ से बोला ये वे हैं जो बड़े क्लेश में से आते हैं और अपने अपने वस्त्र को मेम्ने के लोहू में धोके उजला किया ॥ १५ । इस कारण वे ईश्वर के सिंहासन के आगे हैं और उस के मन्दिर में रात और दिन उस की सेवा करते हैं और सिंहासन पर बैठनेहारा उन के ऊपर डेरा देगा ॥ १६ । वे फिर भूखे न होंगे और न फिर प्यासे होंगे और न उन पर धूप न कोई तपन पड़ेगी ॥ १७ । क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है उन की चरवाही करेगा और उन्हें जल के जीवते सोतों पर लिवा ले जायगा और ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा ॥

८. और जब उस ने सातवीं छाप खोली तब स्वर्ग में आध घड़ी के अटकल निःशब्दता हो गई ॥ २ । और मैं ने उन सात दूतों को जो ईश्वर के आगे खड़े रहते हैं देखा और उन्हें सात तुरही दिई गई ॥ ३ । और दूसरा दूत आके वेदी के निकट खड़ा हुआ जिस पास सोने की धूपदानी थी और उस को बहुत धूप दिया गया जिस्तें वह उस को सोने की वेदी पर जो सिंहासन के आगे है सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के संग मिलावे ॥ ४ । और धूप का धूआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के संग दूत के हाथ में से ईश्वर के आगे चढ़ गया ॥ ५ । और दूत ने वह धूपदानी लेके उस में वेदी की आग भरके उसे पृथिवी पर डाला और शब्द और गर्जन और बिजलियां और भुईंडोल हुए ॥ ६ । और उन सात दूतों ने जिन पास सातों तुरहियां थीं फूंकने को अपने तईं तैयार किया ॥

७ । पहिले दूत ने तुरही फूंकी और लोहू से मिले हुए ओले और आग हुए और वे पृथिवी पर डाले गये और पृथिवी की एक तिहाई जल गई और पेड़ों की एक तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई ॥

८ । और दूसरे दूत ने तुरही फूंकी और आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ सा कुछ समुद्र में डाला गया और समुद्र की एक तिहाई लोहू हो गई ॥ ९ । और समुद्र में की सृजी हुई बस्तुओं की एक तिहाई जिन्हें जीव था मर गई और जहाजों की एक तिहाई नाश हुई ॥

१० । और तीसरे दूत ने तुरही फूंकी और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं जलता था स्वर्ग से गिरा और नदियों की एक तिहाई पर और जल के सोतों पर पड़ा ॥ ११ । और उस तारे का नाम नागदौना कहावता है और एक तिहाई जल नागदौना सा हो गया और बहुतेरे मनुष्य उस जल के कारण मर गये क्योंकि वह कड़वा किया गया ॥

१२ । और चौथे दूत ने तुरही फूंकी और सूर्य्य की एक तिहाई और चांद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई मारी गई कि उन की एक तिहाई अंधियारी हो जाय और दिन की एक तिहाई लों दिन प्रकाश न होय और वैसे ही रात ॥

१३ । और मैं ने दृष्टि किई और एक दूत को सुनी जो आकाश के बीच में से उड़ता हुआ बड़े शब्द से कहता था कि जो तीन दूत फूंकने पर हैं उन की तुरही के शब्दों के कारण जो रह गये हैं पृथिवी के निवासियों पर सन्ताप सन्ताप सन्ताप होगा ॥

९. और पांचवें दूत ने तुरही फूंकी और मैं ने एक तारे को देखा जो स्वर्ग में से पृथिवी पर गिरा हुआ था और अथाह कुंड के कूप की कुंजी उस को दिई गई ॥ २ । और उस ने अथाह कुंड का कूप खोला और कूप में से बड़ी भट्ठी के धूंए की नाईं धूआं उठा और सूर्य्य और आकाश कूप के धूंए से अंधियारे हुए ॥ ३ । और उस धूंए में से टिड्डियां पृथिवी पर निकल गईं और जैसा पृथिवी के बिच्छूओं को अधिकार होता है तैसा उन्हें अधिकार दिया गया ॥ ४ । और उन से कहा गया कि न पृथिवी की घास को न किसी हरियाली को न किसी पेड़ की हानि करो परन्तु केवल उन मनुष्यों की जिन के माथे पर ईश्वर की छाप नहीं है ॥ ५ । और उन्हें यह दिया गया कि वे उन्हें मार न डालें परन्तु पांच मास उन्हें पीड़ा

दिई जाय और बिच्छू जब मनुष्य को मारता है तब उस की पीड़ा जैसी होती है तैसी ही उन की पीड़ा थी ॥ ६। और उन दिनों मे वे मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे और उसे न पावेंगे और मरने की अभिलाषा करेंगे और मृत्यु उन से भागेगी ॥ ७। और उन टिड्डियों के आकार युद्ध के लिये तैयार किये हुए घोड़ों के समान थे और उन के सिरों पर जैसे मुकुट थे जो सोने की नाईं थे और उन के मुंह मनुष्यों के मुंह के ऐसे थे ॥ ८। और उन्हें स्त्रियों के बाल की नाईं बाल था और उन के दांत सिंहों के से थे ॥ ९। और उन्हें लोहे की झिलम की नाईं झिलम थी और उन के पंखों का शब्द बहुत घोड़ों के रथों के शब्द के ऐसा था जो युद्ध को दौड़ते हों ॥ १०। और उन्हें पूंछें थीं जो बिच्छूओं के समान थीं और उन की पूंछों में डंक थे और पांच मास मनुष्यों को दुःख देने का उन्हें अधिकार था ॥ ११। और उन पर एक राजा है अर्थात् अथाह कुंड का दूत जिस का नाम इब्रीय भाषा में अबद्दोन है और यूनानीय में उस का नाम अपलुओन है ॥ १२। पहिला सन्ताप बीत गया है देखो इस पीछे दो सन्ताप और आते हैं ॥

१३। और छठवें दूत ने तुरही फूंकी और जो सोने की बेदी ईश्वर के आगे है उस के चारों सींगों में से मैं ने एक शब्द सुना ॥ १४। जो छठवें दूत से जिस पास तुरही थी बोला उन चार दूतों को जो बड़ी नदी फुरात पर बन्धे हैं खोल दे ॥ १५। और वे चार दूत खोल दिये गये जो उस घड़ी और दिन और मास और बरस के लिये तैयार किये गये थे कि वे मनुष्यों की एक तिहाई को मार डालें ॥ १६। और घुड़चढ़ों की सेनाओं की संख्या बीस करोड़ थी और मैं ने उन की संख्या सुनी ॥ १७। और मैं ने दर्शन में उन घोड़ों को यूं देखा और उन्हें जो उन पर चढ़े हुए थे कि उन्हें आग की सी और धूम्रकान्त की सी और गन्धक की सी झिलम है और घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों की नाईं हैं और उन के मुंह में से आग और धूंआ और गन्धक निकलते हैं ॥ १८। इन तीनों से अर्थात् आग से और धूंए से और गन्धक से जो उन के मुंह से निकलते हैं मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई ॥ १९। क्योंकि घोड़ों का सामर्थ्य उन के मुंह में और उन की पूंछों में है क्योंकि उन की पूंछें सांपों के समान हैं कि उन के सिर होते हैं और इन से वे दुःख देते हैं ॥ २०। और जो मनुष्य रह गये जो इन बिपतों में नहीं मार डाले गये उन्हों ने अपने हाथों के कार्यों से पश्चात्ताप भी नहीं किया जिस्ते भूतों की और सोने औ चान्दी औ पीतल औ पत्थर औ काठ की मूरतों की पूजा न करें जो न देखने न सुनने न फिरने सकती हैं ॥ २१। और न उन्हों ने अपनी नरहिंसाओं से न अपने टोनों से न अपने व्यभिचार से न अपनी चोरियों से पश्चात्ताप किया ॥

१०. और मैं ने दूसरे पराक्रमी दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जो मेघ को ओढ़े था और उस के सिर पर मेघधनुष था और उस का मुंह सूर्य्य की नाईं और उस के पांव आग के खंभों के ऐसे थे ॥ २। और वह एक छोटी पोथी खुली हुई अपने हाथ में लिये था और उस ने अपना दहिना पांव समुद्र पर और बायां पृथिवी पर रखा ॥ ३। और जैसा सिंह गर्जता है तैसा बड़े शब्द से पुकारा और जब उस ने पुकारा तब सात मेघ गर्जनों ने अपने अपने शब्द उच्चारण किये ॥ ४। और जब उन सात गर्जनों ने अपने अपने शब्द उच्चारण किये तब मैं लिखने पर था और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से बोला जो बातें उन सात गर्जनों ने कहीं उन पर छाप दे और उन्हें मत लिख ॥ ५। और उस दूत ने जिसे मैं ने समुद्र पर और पृथिवी पर खड़े देखा अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया ॥ ६। और जो सदा सर्व्वदा जीवता है जिस ने स्वर्ग औ जो कुछ उस में है और पृथिवी औ जो कुछ उस में है और समुद्र औ जो कुछ उस में है सृजा उसी की किरिया खाई कि अब तो बिलम्ब न होगा ॥ ७। परन्तु सातवें दूत के शब्द के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होय तब ईश्वर का भेद पूरा हो जायगा जैसा उस ने अपने दासों को अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं को इस का सुसमाचार सुनाया ॥

८। और जो शब्द मैं ने स्वर्ग से सुना था वह

फिर मेरे संग बात करने लगा और बोला जा जो दूत समुद्र पर और पृथिवी पर खड़ा है उस के हाथ में की खुली हुई छोटी पोथी ले ले॥ ९। और मैं ने दूत के पास जाके उस से कहा वह छोटीपोथी मुझे दीजिये. और उस ने मुझ से कहा उसे लेके खा जा और वह तेरे पेट को कड़वा करेगी परन्तु तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी॥ १०। और मैं ने छोटी पोथी दूत के हाथ से ले लिई और उसे खा गया और वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी लगी और जब मैं ने उसे खाया था तब मेरा पेट कड़वा हुआ॥ ११। और वह मुझ से बोला तुझे फिर लोगों और देशों और भाषाओं और बहुत राजाओं के विषय में भविष्यद्वाक्य कहना होगा॥

११. और लग्गी के समान एक नरकट मुझे दिया गया और कहा गया कि उठ ईश्वर के मन्दिर को और वेदी को और उस में के भजन करनेहारों को नाप॥ २। और मन्दिर के बाहर के आंगन को बाहर रख और उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यदेशियों को दिया गया है और वे बयालीस मास लों पवित्र नगर को रौंदेंगे॥ ३। और मैं अपने दो साक्षियों को यह देऊंगा कि टाट पहिने हुए एक सहस्र दो सौ साठ दिन भविष्यद्वाक्य कहा करें॥ ४। येही वे दो जलपाई के वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथिवी के प्रभु के सन्मुख खड़े रहते हैं॥ ५। और यदि कोई उन को दुःख दिया चाहे तो आग उन के मुंह से निकलती है और उन के शत्रुओं को भस्म करती है और यदि कोई उन को दुःख दिया चाहे तो अवश्य है कि वह इस रीति से मार डाला जाय॥ ६। इन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द करें जिस्तें उन की भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे और इन्हें सब जल पर अधिकार है कि उसे लोहू बनावें और जब जब चाहें तब तब पृथिवी को हर प्रकार की विपत्ति से मारें॥ ७। और जब वे अपनी साक्षी दे चुकेंगे तब वह पशु जो अथाह कुण्ड में से उठता है उन से युद्ध करेगा और उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा॥ ८। और उन की लोथें उस बड़े नगर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहावता है जहां उन का प्रभु भी क्रूश पर चढ़ाया गया॥ ९। और सब लोगों और कुलों और भाषाओं और देशों में से लोग उन की लोथें साढ़े तीन दिन लों देखेंगे और उन की लोथें कबरों में रखी जाने न देंगे॥ १०। और पृथिवी के निवासी उन पर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे क्योंकि इन दो भविष्यद्वक्ताओं ने पृथिवी के निवासियों को पीड़ा दिई थी॥ ११। और साढ़े तीन दिन के पीछे ईश्वर की ओर से जीवन के आत्मा ने उन में प्रवेश किया और वे अपने पांवों पर खड़े हुए और उन के देखनेहारों को बड़ा डर लगा॥ १२। और उन्हों ने स्वर्ग से बड़ा शब्द सुना जो उन से बोला इधर ऊपर आओ और वे मेघ में स्वर्ग पर चढ़ गये और उन के शत्रुओं ने उन्हें देखा॥ १३। और उसी घड़ी बड़ा भुईंडोल हुआ और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा और उस भुईंडोल में सात सहस्र मनुष्य मारे गये और जो रह गये सो भयमान हुए और स्वर्ग के ईश्वर का गुणानुवाद किया॥ १४। दूसरा सन्ताप बीत गया है देखो तीसरा सन्ताप शीघ्र आता है॥

१५। और सातवें दूत ने तुरही फूंकी और स्वर्ग में बड़े बड़े शब्द हुए कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उस के अभिषिक्त जन का हुआ है और वह सदा सर्व्वदा राज्य करेगा॥ १६। और चौबीसों प्राचीन जो ईश्वर के सन्मुख अपने अपने सिंहासन पर बैठते हैं अपने अपने मुंह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम करके बोले॥ १७। हे परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो है और जो था और जो आनेवाला है हम तेरा धन्य मानते हैं कि तू ने अपना बड़ा सामर्थ्य लेके राज्य किया है॥ १८। और अन्यदेशी लोग क्रुद्ध हुए और तेरा क्रोध आ पड़ा और मृतकों का समय पहुंचा कि उन का विचार किया जाय और कि तू अपने दासों अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं को और पवित्र लोगों को और छोटों और बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं प्रतिफल देवे और पृथिवी के नाश करनेहारों को नाश करे॥ १९। और स्वर्ग में ईश्वर का मन्दिर खोला गया

और उस के नियम का सन्दूक उस के मन्दिर में दिखाई दिया और बिजलियां और शब्द और गर्जन और भुईंडोल हुए और बड़े ओले पड़े ॥

१२. और एक बड़ा आश्चर्य्य स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य्य पहिने है और चांद उस के पांवों तले है और उस के सिर पर बारह तारों का मुकुट है ॥ २ । और वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि प्रसव की पीड़ उसे लगी है और वह जनने को पीड़ित है ॥ ३ । और दूसरा आश्चर्य्य स्वर्ग में दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिस के सात सिर और दस सींग हैं और उस के सिरों पर सात राजमुकुट हैं ॥ ४ । और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचके उन्हें पृथिवी पर डाला और वह अजगर उस स्त्री के साम्हने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ इस लिये कि जब वह जने तब उस के बालक को खा जाय ॥ ५ । और वह एक बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लेके सब देशों के लोगों की चरवाही करने पर है और उस का बालक ईश्वर के पास और उस के सिंहासन के पास उठा लिया गया ॥ ६ । और वह स्त्री जङ्गल को भाग गई जहां उस का एक स्थान है जो ईश्वर से तैयार किया गया है जिस्तें वे उसे वहां एक सहस्र दो सौ साठ दिन लों पालें ॥

७ । और स्वर्ग मे युद्ध हुआ मीखायेल और उस के दूत अजगर से लड़े और अजगर और उस के दूत लड़े ॥ ८ । और प्रबल न हुए और स्वर्ग में उन्हें जगह और न मिली ॥ ९ । और वह बड़ा अजगर गिराया गया हां वह प्राचीन सांप जो दियाबल और शैतान कहावता है जो सारे संसार का भरमानेहारा है पृथिवी पर गिराया गया और उस के दूत उस के संग गिराये गये ॥ १० । और मैं ने एक बड़ा शब्द सुना जो स्वर्ग में बोला अभी हमारे ईश्वर का त्राण औ पराक्रम औ राज्य और उस के अभिषिक्त जन का अधिकार हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक जो रात दिन हमारे ईश्वर के आगे उन पर दोष लगाता था गिराया गया है ॥ ११ । और उन्हों ने मेम्ने के लोहू के कारण और अपनी साक्षी के वचन के कारण उस पर जय किया और उन्हों ने मृत्यु लों अपने प्राणों को प्रिय न जाना ॥ १२ । इस कारण से हे स्वर्ग और उस में वास करनेहारो आनन्द करो . हाय पृथिवी और समुद्र के निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा है और यह जानके कि मेरा समय थोड़ा है बड़ा क्रोध किये है ॥

१३ । और जब अजगर ने देखा कि मैं पृथिवी पर गिराया गया हूं तब उस ने उस स्त्री को जो वह पुरुष जनी थी सताया ॥ १४ । और बड़े गिद्ध के दो पंख स्त्री को दिये गये इस लिये कि वह जङ्गल को अपने स्थान को उड़ जाय जहां वह एक समय और दो समय और आधे समय लों सांप की दृष्टि से छिपी हुई पाली जाती है ॥ १५ । और सांप ने अपने मुंह मे से स्त्री के पीछे नदी की नाईं जल बहाया कि उसे नदी में बहा देवे ॥ १६ । और पृथिवी ने स्त्री का उपकार किया और पृथिवी ने अपना मुंह खोलके उस नदी को जो अजगर ने अपने मुंह मे से बहाई थी पी लिया ॥ १७ । और अजगर स्त्री से क्रुद्ध हुआ और उस के वंश के जो लोग रह गये जो ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करते और यीशु ख्रीष्ट की साक्षी रखते हैं उन से युद्ध करने को चला गया ॥

१३. और मैं समुद्र के बालू पर खड़ा हुआ और एक पशु को समुद्र में से उठते देखा जिस के सात सिर और दस सींग थे और उस के सींगों पर दस राजमुकुट और उस के सिरों पर ईश्वर की निन्दा का नाम ॥ २ । और जो पशु मैं ने देखा सो चीते की नाईं था और उस के पांव भालू के से थे और उस का मुंह सिंह के मुंह के ऐसा था और अजगर ने अपना सामर्थ्य और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उस को दिया ॥ ३ । और मैं ने उस के सिरों में से एक को देखा मानो ऐसा घायल किया गया है कि मरने पर है फिर उस का प्राणहारक घाव चंगा किया गया और सारी पृथिवी के लोग उस पशु के पीछे अचंभा करते

गये ॥ ४ । और उन्हों ने अजगर की पूजा किई जिस ने पशु को अधिकार दिया और पशु की पूजा किई और कहा इस पशु के समान कौन है . कौन उस से लड़ सकता है ॥ ५ । और उस को बड़ी बड़ी बातें और निन्दा की बातें बोलनेहारा मुंह दिया गया और बयालीस मास लों युद्ध करने का अधिकार उसे दिया गया ॥ ६ । और उस ने ईश्वर के विरुद्ध निन्दा करने को अपना मुंह खोला कि उस के नाम की और उस के तंबू की और स्वर्ग में वास करनेहारों की निन्दा करे ॥ ७ । और उस को यह दिया गया कि पवित्र लोगों से युद्ध करे और उन पर जय करे और हर एक कुल और भाषा और देश पर उस का अधिकार दिया गया ॥ ८ । और पृथिवी के सब निवासी लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से बध किये हुए मेम्ने के जीवन के पुस्तक मे नहीं लिखे गये हैं उस की पूजा करेंगे ॥ ९ । यदि किसी का कान होय तो सुने ॥ १० । यदि कोई बंधुओं को घेर लेता है तो वही बंधुआई में जाता है यदि कोई खड्ग से मार डाले तो अवश्य है कि वही खड्ग से मार डाला जाय . यहीं पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास है ॥

११ । और मैं ने दूसरे पशु को पृथिवी में से उठते देखा और उसे मेम्ने की नाईं दो सींग थे और वह अजगर की नाईं बोलता था ॥ १२ । और वह उस पहिले पशु के सन्मुख उस का सारा अधिकार रखता है और पृथिवी से और उस के निवासियों से उस पहिले पशु की जिस का प्राणहारक घाव चंगा किया गया पूजा करवाता है ॥ १३ । और वह बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म्म करता है यहां लों कि मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग में से पृथिवी पर आग भी उतारता है ॥ १४ । और उन आश्चर्य्य कर्म्मों के कारण जिन्हें पशु के सन्मुख करने का अधिकार उसे दिया गया वह पृथिवी के निवासियों को भरमाता है और पृथिवी के निवासियों से कहता है कि जिस पशु को खड्ग का घाव लगा और वह जी गया उस के लिये मूर्त्ति बनाओ ॥ १५ । और उस को यह दिया गया कि पशु की मूर्त्ति को प्राण देवे जिस्तें पशु की मूर्त्ति बात भी करे और जितने लोग पशु की मूर्त्ति की पूजा न करें उन्हें मार डलवावे ॥ १६ । और छोटे औ बड़े और धनी औ कंगाल और निर्बंध औ दास सब लोगों से वह ऐसा करता है कि उन के दहिने हाथ पर अथवा उन के माथे पर एक छापा दिया जाय ॥ १७ । और कि कोई मोल लेने अथवा बेचने न सके केवल वह जो यह छापा अथवा पशु का नाम अथवा उस के नाम की संख्या रखता हो ॥ १८ । यहीं ज्ञान है . जिसे बुद्धि होय सो पशु की संख्या को जोड़ती करे क्योंकि वह मनुष्य की सी संख्या है और उस की संख्या छ. सौ छियासठ है ॥

१४. और मैं ने दृष्टि किई और देखो मेम्ना सियोन पर्व्वत पर खड़ा है और उस के संग एक लाख चवालीस सहस्र जन जिन के माथे पर उस का नाम और उस के पिता का नाम लिखा है ॥ २ । और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो बहुत जल के शब्द के ऐसा और बड़े गर्जन के शब्द के ऐसा था और वह शब्द जो मैं ने सुना वीणा बजानेहारों का सा था जो अपनी अपनी वीणा बजाते हैं ॥ ३ । और वे सिंहासन के आगे और चारों प्राणियों के औ प्राचीनों के आगे जैसा एक नया गीत गाते हैं और वह गीत कोई नहीं सीख सकता था केवल वे एक लाख चवालीस सहस्र जन जो पृथिवी से मोल लिये गये थे ॥ ४ । ये वे हैं जो स्त्रियों के संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं . ये वे हैं कि जहां कहीं मेम्ना जाता है वे उस के पीछे हो लेते हैं . ये तो ईश्वर के और मेम्ने के लिये एक पहिला फल मनुष्यों में से मोल लिये गये ॥ ५ । और उन के मुंह में झूठ नहीं पाया गया क्योंकि वे ईश्वर के सिंहासन के आगे निर्दोष हैं ॥

६ । और मैं ने दूसरे दूत को आकाश के बीच में से उड़ते देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था कि वह पृथिवी के निवासियों को और हर एक देश और कुल और भाषा और लोग को सुसमाचार सुनावे ॥ ७ । और वह बड़े शब्द से बोलता था कि ईश्वर से डरो और उस का गुणानुवाद करो क्योंकि उस के विचार करने का समय पहुंचा है

और जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जल के सोते बनाये उस को प्रणाम करो ॥

८। और दूसरा दूत यह कहता हुआ पीछे हो लिया कि गिर गई बाबुल वह बड़ी नगरी गिर गई है क्योंकि उस ने सब देशों के लोगों को अपने व्यभिचार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पिलाई है ॥

९। और तीसरा दूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ उन के पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशु की और उस की मूर्त्ति की पूजा करे और अपने माथे पर अथवा अपने हाथ पर छापा लेवे ॥ १०। तो वह भी ईश्वर के कोप की मदिरा जो उस के क्रोध के कटोरे में निराली ढाली गई है पीयेगा और पवित्र दूतों के साम्हने और मेम्ने के साम्हने आग और गंधक में पीड़ित किया जायगा ॥ ११। और उन की पीड़ा का धूआं सदा सर्व्वदा उठता है और न दिन न रात बिश्राम उन को है जो पशु की और उस की मूर्त्ति की पूजा करते हैं और जो कोई उस के नाम का छापा लेता है ॥ १२। यहीं पवित्र लोगों का धीरज है जो ईश्वर की आज्ञाओं को और यीशु के बिश्वास को पालन करते हैं ॥

१३। और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से बोला यह लिख कि अब से जो प्रभु में मरते हैं सो मृतक धन्य हैं . आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिश्रम से बिश्राम करेंगे परन्तु उन के कार्य्य उन के संग हो लेते हैं ॥

१४। और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक उजला मेघ है और उस मेघ पर मनुष्य के पुत्र के समान एक बैठा है जो अपने सिर पर सोने का मुकुट और अपने हाथ में चोखा हंसुआ लिये हुए है ॥ १५। और दूसरा दूत मन्दिर में से निकला और बड़े शब्द से पुकारके उस से जो मेघ पर बैठा था बोला अपना हंसुआ लगाके लवनी कर क्योंकि तेरे लिये लवने का समय पहुंचा है इस लिये कि पृथिवी की खेती पक चुकी है ॥ १६। और जो मेघ पर बैठा था उस ने पृथिवी पर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवी की लवनी किई गई ॥

१७। और दूसरा दूत स्वर्ग में के मन्दिर में से निकला और उस पास भी चोखा हंसुआ था ॥ १८। और दूसरा दूत जिसे आग पर अधिकार था वेदी में से निकला और जिस पास चोखा हंसुआ था उस से बहुत पुकारकर बोला अपना चोखा हंसुआ लगा और पृथिवी की दाख लता के गुच्छे काट ले क्योंकि उस के दाख पक गये हैं ॥ १९। और दूत ने पृथिवी पर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवी की दाख लता का फल काट लिया और उसे ईश्वर के कोप के बड़े रस के कुंड में डाला ॥ २०। और रस के कुंड का रौंदन नगर के बाहर किया गया और रस के कुंड में से घोड़ों की लगाम तक लोहू एक सै कोश तक वह निकला ॥

१५. और मैं ने स्वर्ग में दूसरा एक चिन्ह बड़ा और अद्भुत देखा अर्थात् सात दूत जिन के पास सात बिपत्ति थीं जो पिछली थीं क्योंकि उन में ईश्वर का कोप पूरा किया गया ॥

२। और मैं ने जैसा एक आग से मिले हुए कांच के समुद्र को और पशु पर और उस की मूर्त्ति पर और उस के छापे पर और उस के नाम की संख्या पर जय करनेहारों को उस कांच के समुद्र के निकट ईश्वर की बीणें लिये हुए खड़े देखा ॥ ३। और वे ईश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाते हैं कि हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे कार्य्य बड़े और अद्भुत हैं . हे पवित्र लोगों के राजा तेरे मार्ग यथार्थ और सच्चे हैं ॥ ४। हे परमेश्वर कौन तुझ से नहीं डरेगा और तेरे नाम की स्तुति नहीं करेगा . क्योंकि केवल तू ही पवित्र है और सब देशों के लोग आके तेरे आगे प्रणाम करेंगे क्योंकि तेरे बिचार प्रगट किये गये हैं ॥

५। और इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो स्वर्ग में साक्षी के तंबू का मन्दिर खोला गया ॥ ६। और सातों दूत जिन पास सातों बिपत्ते थीं शुद्ध और चमकता हुआ वस्त्र पहिने हुए और छाती पर सुनहले पटुके बांधे हुए मन्दिर में से

निकले ॥ ७ । और चारों प्राणियों में से एक ने उन सात दूतों को ईश्वर के जो सदा सर्व्वदा जीवता है कोप से भरे हुए सात सोने के पियाले दिये ॥ ८ । और ईश्वर की महिमा से और उस के सामर्थ्य से मन्दिर धूंए से भर गया और जब लों उन सात दूतों की सातों विपत्तें समाप्त न हुईं तब लों कोई मन्दिर में प्रवेश न कर सका ॥

१६. और मैं ने मन्दिर में से एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतों से बोला जाओ और ईश्वर के कोप के सात पियाले पृथिवी पर उंडेलो ॥

२ । और पहिले ने जाके अपना पियाला पृथिवी पर उंडेला और उन मनुष्यों को जिन पर पशु का छापा था और जो उस की मूर्त्ति की पूजा करते थे बुरा और दुःखदाई घाव हुआ ॥

३ । और दूसरे दूत ने अपना पियाला समुद्र पर उंडेला और वह मृतक का सा लोहू हो गया और समुद्र में हर एक जीवता प्राणी मर गया ॥

४ । और तीसरे दूत ने अपना पियाला नदियों पर और जल के सोतों पर उंडेला और वे लोहू हो गये ॥ ५ । और मैं ने जल के दूत को यह कहते सुना कि हे परमेश्वर जो है और जो था और जो पवित्र है तू धर्म्मी है कि तू ने यह न्याय किया है ॥ ६ । क्योंकि उन्हों ने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाया और तू ने उन्हें लोहू पीने को दिया है क्योंकि वे इस योग्य हैं ॥ ७ । और मैं ने वेदी में से यह शब्द सुना कि हां हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे विचार सच्चे और यथार्थ हैं ॥

८ । और चौथे दूत ने अपना पियाला सूर्य्य पर उंडेला और मनुष्यों को आग से झुलसाने का अधिकार उसे दिया गया ॥ ९ । और मनुष्य बड़ी तपन से झुलसाये गये और ईश्वर के नाम की निन्दा किई जिसे इन विपत्तों पर अधिकार है और उस का गुणानुवाद करने के लिये पश्चात्ताप न किया ॥

१० । और पांचवें दूत ने अपना पियाला पशु के सिंहासन पर उंडेला और उस का राज्य अंधियारा हो गया और लोगों ने क्लेश के मारे अपनी अपनी जीभ चबाई ॥ ११ । और उन्हों ने अपने क्लेशों के कारण और अपने घावों के कारण स्वर्ग के ईश्वर की निन्दा किई और अपने अपने कर्म्मों से पश्चात्ताप न किया ॥

१२ । और छठवें दूत ने अपना पियाला बड़ी नदी फुरात पर उंडेला और उस का जल सूख गया जिस्तें सूर्य्योदय की दिशा के राजाओं का मार्ग तैयार किया जाय ॥ १३ । और मैं ने अजगर के मुंह में से और पशु के मुंह में से और झूठे भविष्यद्वक्ता के मुंह में से निकले हुए तीन अशुद्ध आत्माओं को देखा जो मेंडकों की नाईं थे ॥ १४ । क्योंकि वे भूतों के आत्मा हैं जो आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं और जो सारे संसार के राजाओं के पास जाते हैं कि उन्हें सर्व्वशक्तिमान ईश्वर के उस बड़े दिन के युद्ध के लिये एकट्ठे करें ॥ १५ । देखो मैं चोर की नाईं आता हूं . धन्य वह जो जागता रहे और अपने वस्त्र की रक्षा करे जिस्तें वह नंगा न फिरे और लोग उस की लज्जा न देखें ॥ १६ । और उन्हों ने उन्हें उस स्थान पर एकट्ठे किया जो इब्रीय भाषा में हर्मगिद्दो कहावता है ॥

१७ । और सातवें दूत ने अपना पियाला आकाश में उंडेला और स्वर्ग के मन्दिर में से अर्थात् सिंहासन से एक बड़ा शब्द निकला कि हो चुका ॥ १८ । और शब्द और गर्जन और बिजलियां हुईं और बड़ा भुईंडोल हुआ ऐसा कि जब से मनुष्य पृथिवी पर हुए तब से वैसा और इतना बड़ा भुईंडोल न हुआ ॥ १९ । और वह बड़ा नगर तीन खण्ड हो गया और देश देश के नगर गिर पड़े और ईश्वर ने बड़ी बाबुल को स्मरण किया कि अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा का कटोरा उसे देवे ॥ २० । और हर एक टापू भाग गया और कोई पर्व्वत न मिले ॥ २१ । और बड़े ओले जैसे मन मन भरके स्वर्ग से मनुष्यों पर पड़े और ओलों की विपत्ति के कारण मनुष्यों ने ईश्वर की निन्दा किई क्योंकि उस से निपट बड़ी विपत्ति हुई ॥

१७. और जिन सात दूतों के पास वे सात पियाले थे उन में से एक ने आके मेरे संग बात कर मुझ से कहा आ मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊंगा जो बहुत जल पर बैठी है ॥ २। जिस के संग पृथिवी के राजाओं ने व्यभिचार किया है और पृथिवी के निवासी लोग उस के व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हुए हैं ॥ ३। और वह आत्मा में मुझे जंगल में ले गया और मैं ने एक स्त्री को देखा कि लाल पशु पर बैठी थी जो ईश्वर की निन्दा के नामों से भरा था और जिस के सात सिर और दस सींग थे ॥ ४। और वह स्त्री बैंजनी और लाल वस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से विभूषित थी और उस के हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घिनित वस्तुओं से और उस के व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा था ॥ ५। और उस के माथे पर एक नाम लिखा था अर्थात् भेद . बड़ी बाबुल . पृथिवी की वेश्याओं और घिनित वस्तुओं की माता ॥ ६। और मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लोहू से और यीशु के साक्षियों के लोहू से मतवाली देखी और उसे देखके मैं ने बड़ा आश्चर्य्य करके अचंभा किया ॥

७। और दूत ने मुझ से कहा तू ने क्यों अचंभा किया . मैं स्त्री का और उस पशु का भेद जो उस का वाहन है जिस के सात सिर और दस सींग हैं तुझ से कहूंगा ॥ ८। जो पशु तू ने देखा सो था और नहीं है और अथाह कुंड में से उठने और विनाश को पहुंचने पर है और पृथिवी के निवासी लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से जीवन के पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं पशु को देखके कि वह था और नहीं है और आवेगा अचंभा करेंगे ॥ ९। यहीं वह मन है जिसे बुद्धि है . वे सात सिर सात पर्व्वत हैं जिन पर स्त्री बैठी है ॥ १०। और सात राजा हैं पांच गिर गये हैं और एक है और दूसरा अब लों नहीं आया है और जब आवेगा तब उसे थोड़ी बेर रहने होगा ॥ ११। और वह पशु जो था और नहीं है आप भी आठवां है और सातों में से है और विनाश को पहुंचता है ॥ १२। और जो दस सींग तू ने देखे सो दस राजा हैं जिन्हों ने अब लों राज्य नहीं पाया है परन्तु पशु के संग एक घड़ी राजाओं की नाईं अधिकार पाते हैं ॥ १३। इन्हों का एक ही परामर्श है और वे अपना अपना सामर्थ्य और अधिकार पशु को देंगे ॥ १४। ये तो मेम्ने से युद्ध करेंगे और मेम्ना उन पर जय करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और जो उस के संग हैं सो बुलाये हुए और चुने हुए और विश्वासयोग्य हैं ॥ १५। फिर मुझ से बोला जो जल तू ने देखा जहां वेश्या बैठी है सो बहुत बहुत लोग और देश और भाषा हैं ॥ १६। और वे दस सींग जो तू ने देखे और पशु ये ही वेश्या से बैर करेंगे और उसे उजाड़ेंगे और नंगी करेंगे और उस का मांस खायेंगे और उसे आग में जलायेंगे ॥ १७। क्योंकि ईश्वर ने उन के मन में यह दिया है कि वे उस का परामर्श पूरा करें और एक परामर्श रखें और जब लों ईश्वर के वचन पूरे न होवें तब लों अपना अपना राज्य पशु को देवें ॥ १८। और जो स्त्री तू ने देखी सो वह बड़ी नगरी है जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य करती है ॥

१८. और इस के पीछे मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस का बड़ा अधिकार था और पृथिवी उस के तेज से प्रकाशमान हुई ॥ २। और उस ने पराक्रम से बड़े शब्द से पुकारा कि गिर गई बड़ी बाबुल गिर गई है और भूतों का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का बन्दीगृह और हर एक अशुद्ध और घिनित पंछी का पिंजरा हुई है ॥ ३। क्योंकि सब देशों के लोगों ने उस के व्यभिचार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पिई है और पृथिवी के राजाओं ने उस के संग व्यभिचार किया है और पृथिवी के व्योपारी लोग उस के सुख विलास की बहुताई से धनवान हुए हैं ॥

४। और मैं ने स्वर्ग से दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगो उस में से निकल आओ कि तुम उस के पापों में भागी न होओ और कि उस की विपतों में से कुछ तुम पर न पड़े ॥ ५। क्योंकि उस के पाप स्वर्ग लों पहुंचे हैं और ईश्वर ने उस के कुकर्म्मों को स्मरण किया है ॥ ६। जैसा उस ने तुम्हें दिया है तैसा उस को भर देओ और उस के कर्म्मों के अनुसार दूना उसे दे देओ . जिस कटोरे में उस ने भर दिया उसी में उस के लिये दूना भर देओ ॥ ७। जितनी उस ने अपनी बड़ाई किई और सुख विलास किया उतनी उस को पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मन में कहती है मैं रानी हो बैठी हूं और विधवा नहीं हूं और शोक किसी रीति से न देखूंगी ॥ ८। इस कारण एक ही दिन में उस की विपतें आ पड़ेंगी अर्थात् मृत्यु और शोक और अकाल और वह आग से जलाई जायगी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर जो उस का विचारकर्त्ता है शक्तिमान है ॥ ९। और पृथिवी के राजा लोग जिन्हों ने उस के संग व्यभिचार और सुख विलास किया जब उस के जलने का धूआं देखेंगे तब उस के लिये रोयेंगे और छाती पीटेंगे ॥ १०। और उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े हो कहेंगे हाय हाय हे बड़ी नगरी बाबुल हे दृढ़ नगरी कि एक ही घड़ी में तेरा विचार आ पड़ा है ॥ ११। और पृथिवी के ब्योपारी लोग उस पर रोयेंगे औ कलपेंगे क्योंकि अब तो कोई उन के जहाजों की बोझाई नहीं मोल लेगा ॥ १२। अर्थात् सोने औ रूपे औ बहुमूल्य पत्थर औ मोती औ मलमल औ बैंजनी वस्त्र औ पाटम्बर औ लाल वस्त्र की बोझाई और हर प्रकार का सुगन्ध काठ और हर प्रकार का हाथीदांत का पात्र और बहुमूल्य काठ के औ पीतल औ लोहे औ मरमर के सब भांति के पात्र ॥ १३। और दारचीनी औ इलायची औ धूप औ सुगन्ध तेल औ लोबान औ मदिरा औ तेल औ चोखा पिसान औ गेहूं औ ढोर औ भेड़ें और घोड़ों औ रथों औ दासों की बोझाई और मनुष्यों के प्राण ॥ १४। और तेरे प्राण के वांछित फल तेरे पास से जाते रहे और सब चिकनी और भड़कीली वस्तु तेरे पास से नष्ट हुई हैं और तू उन्हें फिर कभी न पावेगा ॥ १५। इन वस्तुओं के ब्योपारी लोग जो उस से धनवान हो गये उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे और रोते औ कलपते हुए कहेंगे ॥ १६। हाय हाय यह बड़ी नगरी जो मलमल और बैंजनी औ लाल वस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से विभूषित थी कि एक ही घड़ी में इतना बड़ा धन विला गया है ॥ १७। और हर एक मांझी और जहाजों पर के सब लोग और मल्लाह लोग और जितने लोग समुद्र पर कमाते हैं सब दूर खड़े हुए ॥ १८। और उस के जलने का धूआं देखते हुए पुकारके बोले कौन नगर इस बड़ी नगरी के समान है ॥ १९। और उन्हों ने अपने अपने सिर पर धूल डाली और रोते औ कलपते हुए पुकारके बोले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिस के द्वारा सब लोग जिन के समुद्र में जहाज थे उस के बहुमूल्य द्रव्य से धनवान हो गये कि एक ही घड़ी में वह उजड़ गई है ॥ २०। हे स्वर्ग और हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यद्वक्ता लोगो उस पर आनन्द करो क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे लिये उस से पलटा लिया है ॥

२१। और एक पराक्रमी दूत ने बड़े चक्की के पाट की नाईं एक पत्थर को लेके समुद्र में डाला और कहा यूं बरियाई से बड़ी नगरी बाबुल गिराई जायगी और फिर कभी न मिलेगी ॥ २२। और वीणा बजानेहारों और बजनियों और बंशी बजानेहारों और तुरही फूंकनेहारों का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा और किसी उद्यम का कोई कारीगर फिर कभी तुझ में न मिलेगा और चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा ॥ २३। और दीपक की ज्योति फिर कभी तुझ में न चमकेगी और दूल्हे औ दुल्हिन का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा क्योंकि तेरे ब्योपारी लोग पृथिवी के प्रधान थे इस लिये कि तेरे टोने से सब देशों के लोग भरमाये गये ॥ २४। और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों का लोहू और सो जो लोग पृथिवी पर बध किये गये थे सभों का लोहू उसी में पाया गया ॥

१९. और इस के पीछे मैं ने स्वर्ग में बहुत लोगों का बड़ा शब्द सुना कि हल्लिलूयाह परमेश्वर हमारे ईश्वर को त्राण के लिये जय जय औ महिमा औ आदर औ सामर्थ्य होय ॥ २। इस लिये कि उस के विचार सच्चे और यथार्थ हैं क्योंकि उस ने बड़ी बेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथिवी को भ्रष्ट करती थी विचार किया है और अपने दासों के लोहू का पलटा उस से लिया है ॥ ३। और वे दूसरी बार हल्लिलूयाह बोले और उस का धूआं सदा सर्व्वदा लों उठता है ॥ ४। और चौवीसों प्राचीन और चारों प्राणी गिर पड़े और ईश्वर को जो सिंहासन पर बैठा है प्रणाम करके बोले आमीन हल्लिलूयाह ॥ ५। और एक शब्द सिंहासन से निकला कि हे हमारे ईश्वर के सब दासो और उस से डरनेहारो क्या छोटे क्या बड़े सब उस की स्तुति करो ॥ ६। और मैं ने जैसे बहुत लोगों का शब्द और जैसे बहुत जल का शब्द और जैसे प्रचंड गर्जनों का शब्द वैसा शब्द सुना कि हल्लिलूयाह परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान ने राज्य लिया है ॥ ७। आओ हम आनन्दित और आह्लादित होवें और उस का गुणानुवाद करें क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है और उस की स्त्री ने अपने को तैयार किया है ॥ ८। और उस को यह दिया गया कि शुद्ध और उजली मलमल पहिने क्योंकि वह मलमल पवित्र लोगों का धर्म्म है ॥ ९। और वह मुझ से बोला यह लिख कि धन्य वे जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाये गये हैं . फिर मुझ से बोला ये वचन ईश्वर के सत्य वचन हैं ॥ १०। और मैं उस को प्रणाम करने के लिये उस के चरणों के आगे गिर पड़ा और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर मैं तेरा और तेरे भाइयों का जिन पास यीशु की साक्षी है संगी दास हूं . ईश्वर को प्रणाम कर क्योंकि यीशु की साक्षी भविष्यद्वाणी का आत्मा है ॥

११। और मैं ने स्वर्ग को खुले देखा और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है सो विश्वासयोग्य और सच्चा कहावता है और वह धर्म्म से विचार और युद्ध करता है ॥ १२। उस के नेत्र आग की ज्वाला की नाईं हैं और उस के सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं और उस का एक नाम लिखा है जिसे और कोई नहीं केवल वही आप जानता है ॥ १३। और वह लोहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहिने है और उस का नाम यूं कहावता है कि ईश्वर का वचन ॥ १४। और स्वर्ग में की सेना श्वेत घोड़ों पर चढ़े हुए उजली और शुद्ध मलमल पहिने हुए उस के पीछे हो लेती थी ॥ १५। और उस के मुंह से चोखा खड्ग निकलता है कि उस से वह देशों के लोगों को मारे और वही लोहे का दंड लेके उन की चरवाही करेगा और वही सर्व्वशक्तिमान ईश्वर के क्रोध की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में रौंदन करता है ॥ १६। और उस के वस्त्र पर और जांघ पर उस का यह नाम लिखा है कि राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु ॥

१७। और मैं ने एक दूत को सूर्य्य में खड़े हुए देखा और उस ने बड़े शब्द से पुकारके सब पंछियों से जो आकाश के बीच में से उड़ते हैं कहा आओ ईश्वर की बड़ी बियारी के लिये एकट्ठे होओ ॥ १८। जिस्तें तुम राजाओं का मांस और सहस्रपतियों का मांस और पराक्रमी पुरुषों का मांस और घोड़ों का और उन पर चढ़नेहारों का मांस और क्या निर्वन्ध क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगों का मांस खाओ ॥ १९। और मैं ने पशु को और पृथिवी के राजाओं को और उन की सेनाओं को घोड़े पर चढ़नेहारे से और उस की सेना से युद्ध करने को एकट्ठे किये हुए देखा ॥ २०। और पशु पकड़ा गया और उस के संग वह झूठा भविष्यद्वक्ता जिस ने उस के सन्मुख आश्चर्य्य कर्म्म किये जिन के द्वारा उस ने उन लोगों को भरमाया जिन्हों ने पशु का छापा लिया और जो उस की मूर्त्ति की पूजा करते थे . ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है डाले गये ॥ २१। और जो लोग रह गये सो घोड़े पर चढ़नेहारे के खड्ग से जो उस के मुंह से निकलता है मार डाले गये और सब पंछी उन के मांस से तृप्त हुए ॥

२०. और मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस पास अथाह कुंड की कुंजी थी और उस के हाथ में बड़ी जंजीर थी ॥ २ । और उस ने अजगर को अर्थात् प्राचीन सांप को जो दियावल और शैतान है पकड़के उसे सहस्र बरस लों बांध रखा ॥ ३ । और उस को अथाह कुंड में डाला और बन्द करके उस के ऊपर छाप दिई जिस्तें वह जब लों सहस्र बरस पूरे न हों तब लों फिर देशों के लोगों को न भरमावे और इस पीछे उस को थोड़ी बेर लों छूट जाने होगा ॥

४ । और मैं ने सिंहासन को देखा और उन पर लोग बैठे थे और उन लोगों को विचार करने का अधिकार दिया गया और जिन लोगों के सिर यीशु की साक्षी के कारण और ईश्वर के वचन के कारण काटे गये थे और जिन्हों ने न पशु की न उस की मूर्त्ति की पूजा किई और अपने अपने माथे पर और अपने अपने हाथ पर छापा न लिया मैं ने उन के प्राणों को देखा और वे जी गये और ख्रीष्ट के संग सहस्र बरस राज्य किया ॥ ५ । परन्तु और सब मृतक लोग जब लों सहस्र बरस पूरे न हुए तब लों नहीं जी गये . यह तो पहिला पुनरुत्थान है ॥ ६ । जो पहिले पुनरुत्थान का भागी है सो धन्य और पवित्र है . इन्हों पर दूसरी मृत्यु का कुछ अधिकार नहीं है परन्तु वे ईश्वर के और ख्रीष्ट के याजक होंगे और सहस्र बरस उस के संग राज्य करेंगे ॥

७ । और जब सहस्र बरस पूरे होंगे तब शैतान अपने बन्दीगृह में छूट जायगा ॥ ८ । और चहुं खूंट पृथिवी के देशों के लोगों को अर्थात् जूज और माजूज को जिन की संख्या समुद्र के बालू की नाईं होगी भरमाने को निकलेगा कि उन्हें युद्ध के लिये एकट्ठे करे ॥ ९ । और वे पृथिवी की चौड़ाई पर चढ़ आये और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लिया और ईश्वर की ओर से आग स्वर्ग से उतरी और उन्हें भस्म किया ॥ १० । और उन का भरमानेहारा शैतान आग और गंधक की झील में जिस में पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता है डाला गया और वे रात दिन सदा सर्व्वदा पीड़ित किये जायेंगे ॥

११ । और मैं ने एक बड़े श्वेत सिंहासन को और उस पर बैठनेहारे को देखा जिस के सन्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गये और उन के लिये जगह न मिली ॥ १२ । और मैं ने क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकों को ईश्वर के आगे खड़े देखा और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात् जीवन का पुस्तक खोला गया और पुस्तकों में लिखी हुई बातों से मृतकों का विचार उन के कर्म्मों के अनुसार किया गया ॥ १३ । और समुद्र ने उन मृतकों को जो उस में थे दे दिया और मृत्यु और परलोक ने उन मृतकों को जो उन में थे दे दिया और उन में से हर एक का विचार उस के कर्म्मों के अनुसार किया गया ॥ १४ । और मृत्यु और परलोक आग की झील में डाले गये . यह तो दूसरी मृत्यु है ॥ १५ । और जिस किसी का नाम जीवन के पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया ॥

२१. और मैं ने नये आकाश और नई पृथिवी को देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथिवी जाते रहे और समुद्र और न था ॥ २ । और मुझ योहन ने पवित्र नगर नई यिरूशलीम को जैसी दुलहिन जो अपने स्वामी के लिये सिंगार किई हुई है वैसी तैयार किई हुई स्वर्ग से ईश्वर के पास से उतरते देखा ॥ ३ । और मैं ने स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुना कि देखो ईश्वर का डेरा मनुष्यों के साथ है और वह उन के संग बास करेगा और वे उस के लोग होंगे और ईश्वर आप उन के साथ उन का ईश्वर होगा ॥ ४ । और ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और मृत्यु और न होगी और न शोक न विलाप न क्लेश और होगा क्योंकि अगली बातें जाती रहीं हैं ॥ ५ । और सिंहासन पर बैठनेहारे ने कहा देखो मैं सब कुछ नया करता हूं . फिर मुझ से बोला लिख ले क्योंकि ये वचन सत्य और विश्वासयोग्य हैं ॥ ६ । और उस ने मुझ से कहा हो चुका . मैं

अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं . जो प्यासा है उस को मैं जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत देऊंगा ॥ ७ । जो जय करे सो सब वस्तुओं का अधिकारी होगा और मैं उस का ईश्वर होंगा और वह मेरा पुत्र होगा ॥ ८ । परन्तु भयमानों और अविश्वासियों और घिनैानों और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्त्तिपूजकों और सब झूठे लोगों का भाग उन्हें उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती है . यही दूसरी मृत्यु है ॥

९ । और जिन सात दूतों के पास सात पिछली विपतों से भरे हुए सातों पियाले थे उन में से एक मेरे पास आया और मेरे संग बात करके बोला कि आ मैं दुल्हिन को अर्थात् मेम्ने की स्त्री को तुझे दिखाऊंगा ॥ १० । और वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊंचे पर्व्वत पर ले गया और बड़े नगर पवित्र यिरूशलीम को मुझे दिखाया कि स्वर्ग से ईश्वर के पास से उतरता है ॥ ११ । और ईश्वर का तेज उस में है और उस की ज्योति अत्यन्त मोल के पत्थर की नाईं अर्थात् स्फटिक सरीखे सूर्य्यकान्त मणि की नाईं है ॥ १२ । और उस की बड़ी और ऊंची भीत है और उस के बारह फाटक हैं और उन फाटकों पर बारह दूत हैं और नाम उन पर लिखे हैं अर्थात् इस्रायेल के सन्तानों के बारह कुलों के नाम ॥ १३ । पूर्व्व की ओर तीन फाटक उत्तर की ओर तीन फाटक दक्षिण की ओर तीन फाटक और पश्चिम की ओर तीन फाटक हैं ॥ १४ । और नगर की भीत की बारह नेव हैं और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के नाम ॥ १५ । और जो मेरे संग बात करता था उस पास एक सोने का नल था जिस्तें वह नगर को और उस के फाटकों को और उस की भीत को नापे ॥ १६ । और नगर चौखुंटा बसा है और जितनी उस की चौड़ाई उतनी उस की लम्बाई भी है और उस ने उस नल से नगर को नापा कि साढ़े सात सौ कोश का है . उस की लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई एक समान हैं ॥ १७ । और उस ने उस की भीत को मनुष्य के अर्थात् दूत के नाप से नापा कि एक सौ चवालीस हाथ की है ॥ १८ । और उस की भीत की जोड़ाई सूर्य्यकान्त की थी और नगर निर्म्मल सोने का था जो निर्म्मल कांच के समान था ॥ १९ । और नगर की भीत की नेवें हर एक बहुमूल्य पत्थर से संवारी हुई थीं पहिली नेव सूर्य्यकान्त की थी दूसरी नीलमणि की तीसरी लालड़ी की चौथी मरकत की ॥ २० । पांचवीं गोमेदक की छठवीं माणिक्य की सातवीं पीतमणि की आठवीं पेरोज की नवीं पुखराज की दसवीं लहसनिये की एग्यारहवीं धूम्रकान्त की बारहवीं मर्टीप की ॥ २१ । और बारह फाटक बारह मोती थे एक एक मोती से एक एक फाटक बना था और नगर की सड़क स्वच्छ काच के ऐसे निर्म्मल सोने की थी ॥ २२ । और मैं ने उस में मन्दिर न देखा क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान और मेम्ना उस का मन्दिर हैं ॥ २३ । और नगर को सूर्य्य अथवा चंद्रमा का प्रयोजन नहीं कि वे उस में चमकें क्योंकि ईश्वर के तेज ने उसे ज्योति दिई और मेम्ना उस का दीपक है ॥ २४ । और देशों के लोग जो त्राण पानेहारे हैं उस की ज्योति में फिरेंगे और पृथिवी के राजा लोग अपना अपना विभव और मर्य्यादा उस में लावेंगे ॥ २५ । और उस के फाटक दिन को कभी बन्द न किये जायेंगे क्योंकि वहां रात न होगी ॥ २६ । और वे देशों के लोगों का विभव और मर्य्यादा उस में लावेंगे ॥ २७ । और कोई अपवित्र वस्तु अथवा घिनित कर्म्म करनेहारा अथवा झूठ पर चलनेहारा उस में किसी रीति से प्रवेश न करेगा परन्तु केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन के पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥

२२. और उस ने मुझे जीवन के जल की निर्म्मल नदी स्फटिक की नाईं स्वच्छ दिखाई कि ईश्वर के और मेम्ने के सिंहासन से निकलती है ॥ २ । नगर की सड़क और उस नदी के बीच में इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष है जो एक एक मास के अनुसार अपना फल देके बारह फल फलता है और वृक्ष के पत्ते देशों के लोगों को चंगा करने के लिये हैं ॥ ३ । और अब कोई साप न होगा और ईश्वर का और मेम्ने का

सिंहासन उस में होगा और उस के दास उस की सेवा करेंगे ॥ ४। और उस का मुंह देखेंगे और उस का नाम उन के माथे पर होगा ॥ ५। और वहां रात न होगी और उन्हें दीपक का अथवा सूर्य्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देगा और वे सदा सर्व्वदा राज्य करेंगे ॥

६। और उस ने मुझ से कहा ये वचन विश्वास-योग्य और सत्य हैं और पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूत को भेजा है जिस्तें यह बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है अपने दासों को दिखावे ॥ ७। देख मैं शीघ्र आता हूं. धन्य वह जो इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातें पालन करता है ॥

८। और मैं योहन जो हूं सोई यह बातें देखता और सुनता था और जब मैं ने सुना और देखा तब जो दूत मुझे यह बातें दिखाता था मैं उस के चरणों के आगे प्रणाम करने को गिर पड़ा ॥ ९। और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर क्योंकि मैं तेरा और भविष्यद्वक्ताओं का जो तेरे भाई हैं और इस पुस्तक की बातें पालन करनेहारों का संगी दास हूं. ईश्वर को प्रणाम कर ॥

१०। और उस ने मुझ से कहा इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातों पर छाप मत दे क्योंकि समय निकट है ॥ ११। जो अन्याय करता है सो अब भी अन्याय करता रहे और जो अशुद्ध है सो अब भी अशुद्ध रहे और धर्म्मी जन अब भी धर्म्मी रहे और पवित्र जन अब भी पवित्र रहे ॥ १२। देख मैं शीघ्र आता हूं और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है जिस्तें हर एक को जैसा उस का कार्य्य ठहरेगा वैसा फल देऊं ॥ १३। मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त पहिला और पिछला हूं ॥ १४। धन्य वे जो उस की आज्ञाओं पर चलते हैं कि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले और वे फाटकों से होके नगर में प्रवेश करें ॥ १५। परन्तु बाहर कुत्ते और टोन्हे और व्यभिचारी और हत्यारे और मूर्त्तिपूजक हैं और हर एक जन जो झूठ को प्रिय जानता और उस पर चलता है ॥ १६। मुझ यीशु ने अपने दूत को भेजा है कि तुम्हें मण्डलियों में इन बातों की साक्षी देवे. मैं दाऊद का मूल और वंश और भोर का उज्जल तारा हूं ॥ १७। और आत्मा और दूल्हिन कहते हैं आ और जो सुने सो कहे आ और जो प्यासा हो सो आवे और जो चाहे सो जीवन का जल सेंतमेंत लेवे ॥

१८। मैं हर एक को जो इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातें सुनता है साक्षी देता हूं कि यदि कोई इन बातों पर कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन विपतों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ावेगा ॥ १९। और यदि कोई इस भविष्यद्वाक्य के पुस्तक की बातों में से कुछ उठा लेवे तो ईश्वर जीवन के पुस्तक में से और पवित्र नगर में से और उन बातों में से जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस का भाग उठा लेगा ॥

२०। जो इन बातों की साक्षी देता है सो कहता है हां मैं शीघ्र आता हूं. आमीन हे प्रभु यीशु आ ॥ २१। हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे। आमीन ॥

PRINTED BY E. CALEB, AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS 1910